

॥ कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ॥

॥ अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

॥ गणधर भगवंत श्री सुधर्मस्वामिने नमः ॥

॥ योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

॥ चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १



श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249

Websiet : www.kobatirth.org

Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद - ३८०००७
(079) 26582355

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक 156

राजस्थानी-हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश

प्रथम-खण्ड

['अ' से 'न']

सम्पादक

'पद्मश्री' सीताराम लातस

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1986

प्रथमावृत्ति 1000]

[मूल्य रु. 120.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रथांक 156

राजस्थानी-हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश

प्रथम-खण्ड

['अ' से 'न']

सम्पादक

'पद्मश्री' सीताराम लालस

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1986

प्रथमावृत्ति 1000]

[मूल्य रु. 120/-

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबन्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रबन्ध-सम्पादक

डा० पद्मधर पाठक

ग्रन्थाङ्क 156

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

मुद्रक

श्री पुखराज जांगिड, पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर

विक्रमाब्द 2043]

*

[शकाब्द 1986

समर्पण

पूज्य नानाजी स्व. श्री साईलसिंहजी बोगसा
सरवड़ी, मित्रवर ठा. गोरधनसिंहजी
मेड़तिया आई.ए.एस., तथा कर्नल
ठा. श्यामसिंहजी रोड़ला की
पावन स्मृति में समर्पित

— सीताराम लालस

प्रबन्ध सम्पादकीय

‘पद्मश्री’ श्री सीताराम लालस द्वारा संकलित कर सम्पादित किये गये संक्षिप्त राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश के मुद्रण एवं प्रकाशन का उत्तरदायित्व इस विभाग को सौंपा गया था। उक्त कोश को दो खण्डों में प्रकाशित कर विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत कोश का कलेवर विस्तृत होते हुए भी उसे पूर्वतः उपलब्ध अन्यान्य कोशों की तुलना में संकलनकर्ता ने संक्षिप्त नाम से अभिहित किया है। दूसरे, इस कोश में यद्यपि संस्कृत और अरबी-फ़ारसी के कतिपय शब्दों का यथावत् समावेश किया गया है, परन्तु वह संकलनकर्ता की अपनी दृष्टि है, उसकी अपनी मान्यताएँ हैं। विश्वास है, प्रस्तुत कोश से विद्वान् एवं अध्ययन-छात्र लाभान्वित होंगे।

प्रूफ-संशोधन आदि का कार्य स्वयं श्री लालस द्वारा किया है। उनका परिश्रम निरसदेह प्रेरणास्पद है।

पंकज प्रेस, जोधपुर के व्यवस्थापक श्री पुष्कराज जांगिड ने मुद्रण में पर्याप्त तत्परता एवं लगन से काम किया है जिसका यहाँ उल्लेख औपचारिक धन्यवाद से हट कर है।

दूसरे खण्ड का मुद्रण भी प्रायः समाप्ति पर है।

गंगा-दशहरा
ज्येष्ठ शुक्ल १० संवत् २०४३
जोधपुर

पद्मधर पाठक
निदेशक

संकेत-चिह्न

संकेत

पूर्ण

पु०

संज्ञा पुलिग

स्त्री०

संज्ञा स्त्रीलिग

बि०

विशेषण

क्रि०

क्रिया

यी०

यौगिक

अव्य०

अव्यय

क्रि०वि०

क्रिया विशेषण

सं०

संस्कृत

अ०

अरबी

फा०

फारसी

देश०

देशज शब्दावली

(=)

देखो





राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह, संरक्षण, शोधपूर्ण सम्पादन एवं राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन ।

शोधार्थियों के लिए विविध विषयक हस्तलिखित ग्रन्थों, सन्दर्भ पुस्तकों, जीरोक्स फोटो स्टेट, एवं माइक्रोफिल्म की पूर्ण सुविधा ।

प्रतिष्ठान-पत्रिका

| वार्षिकी |

वर्ष १९८५ से विशिष्ट शोधपूर्ण सामग्री सहित नियमित प्रकाशन ।
मूल्य रु. 31/-

निर्देशक:

राजस्थानी-हिन्दी संक्षिप्त शब्द-कोश

—अ—

अ—देवनागरी वर्णमाला का पहला स्वर-वर्ण। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है। समस्त व्यंजनों का उच्चारण इसी की महायता से होता है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इसके तीन भेद—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तथा अठारह अर्वांतर भेद होते हैं।

अं—पु० [सं०] १ कमल। २ पूर्ण ब्रह्म। ३ दुःख। ४ विरक्ति। ५ शंभु। ६ भक्ति। ७ श्री कृष्ण।

अंकार, अंजकार—देखो 'अंकार'।

अंक—पु० [सं०] १ प्राग्बन्ध, भाग्य। २ जन्मान्तर। ३ दुःख। ४ अपराध। ५ पाप। ६ एहमान। ७ शरीर, अंग। ८ कटि प्रदेश, कमर। ९ गोद, कोड़। १० चिह्न, निशान। ११ ० से ९ तक की संख्या। १२ दाग, धब्बा। १३ अक्षर, वर्ण। १४ लिखावट, लेख। १५ पत्र, चिट्ठी। १६ अंश, भाग। १७ अव्याय। १८ नाम। १९ व्याप, भुहर, मुद्रा। २० सामयिक पत्र-पत्रिका का कोई भाग। २१ पगेश्रा की योग्यता सूचक इकाइया। २२ ती की संख्या*। २३ पार्श्व, बगल। २४ पर्वत। —**कार**—गणितज्ञ। —**गणित**—संख्याओं की जोड़-बाकी में फल निकालने की विद्या। —**धारी**—वि० मुद्रा धारित, चिह्नित। —**पाली**—स्त्री० प्रायः। माता, माँ। पालित कन्या। —**माल**, **माळा**, **माला**—स्त्री० कंठ में लगाने, मेंढने अथवा गाल में लेने की क्रिया, आभूषण, परिभूषण। —**बिछा**—स्त्री० गणित शास्त्र।

अंकड़ी—१ देखो 'अंश'। २ देखो 'अंकाड़ी'।

अंकड़ी—वि० [सं० अंक + रा० प्र० डो] १ बीर, बहादुर। २ टेढ़ा, बक। ३ देखो 'अंकोड़ी' ४ देखो 'अंकाड़ी'।

अंकज—पु० [सं०] एक देश का नाम।

वि० जो अंक से उत्पन्न हो।

अंकणी—देखो 'अंकणी'।

अंकणी—देखो 'अंकणी'।

अंकणी, (बी)—देखो 'अंकणी (बी)'।

अंकधारण—पु० यौ० [सं०] मुद्रांकित या चिह्नित करने की क्रिया।

अंकरास—देखो 'उकरास'।

अंकवाली—वि०—१ अमीम, अधिक, बेहद। २ जिसमें अंक हों।

अंकविचार—पु० [सं०] ६४ कलाओं में से एक।

अंकस—देखो 'अंकुस'।

अंकस्थ—वि० [सं० अंक + स्थित] १ गोद लिया हुआ, दत्तक। २ गोद में बैठा हुआ।

अंकहूँतलेखाळ—पु० यौ०—मंत्री, दीवान।

अंका, अंका'—स्त्री०—१ हद, सीमा। २ चरम सीमा, पराकाष्ठा। ३. देखो 'आकाम'।

अंकाई—१ नाप-तौल, परिमाण, मूल्य आदि का अनुमान करने की क्रिया या भाव। २ मूल्यांकन। ३ मुद्रांकन। ४ दागने या चिह्नित करने की क्रिया।

अंका'गाडी—स्त्री० [सं० आकाश + शब्दिक] वायुयान, हवाई-जहाज।

अंकारणी, (बी) क्रि० म० १ मूल्य या परिमाण का अनुमान कराना। २ मूल्यांकन कराना। ३ चिह्नित कराना। ४ मुद्रांकन कराना। ५ दाग लगवाना।

अंकामूठ—स्त्री० एक देशी भेल।

अंकायत—वि० [सं० अंक + रा० प्र० आयत] गोद लिया हुआ, दत्तक। —पु० दत्तक पुत्र।

अंकारणी (बी), अंकावणी (बी)—देखो 'अंकारणी (बी)'।

अंकाळी (ली)—पु० [सं० अंक + आलुच] १ आक की लकड़ी का छिलका। २ दत्तक पुत्र। —वि० [सं० अंक + आलुच] दत्तक।

अंकित—वि० [सं०] १ वसित, लिखित। २ चिह्नित।

३ दागा हुआ। ४ चिह्नित। ५ जांभित।

अंकुड़ी—देखो 'अंकोड़ी'।

अंकुड़ीदार—वि० कांटा या टोक लगा हुआ।

अकुडो

अंग

अंकुड़ी-देखो 'अंकोड़ी'।

अंकुर-पु० म० १ नवोद्भव प्ररोह, अंशुवा। २ डाम, कल्ला, शोपन, कनखा। ३ नोक। ४ कली। ५ नव पल्लव, किमल्लय। ६ आशा। ७ गाँस के छोटे दाने।
= देखो 'अंकुर'। ८ मूखद भविष्य के सूचक चिह्न।
१० संतान, संतति। ११ रक्त, लून। १२ रोम, लोम।
१३ मनोगत भाव।

अंकुरणी, (बो) क्रि० प्र० [म० अंकुर] १ अंकुरित होना, उगना, उपजना। २ पल्लवित होना, फलना। ३ बजना, ध्वनित होना। ४ बाणों का खड़ा होना।

अंकुरित-वि० [म०] १ उगा हुआ, प्रस्फुटित।
२ पल्लवित।

अंकुस-पु० [म० अंकुश] १ हाथी की हाँकने का छोटा कांटा, अंकुश। २ नियंत्रण, दबाव। ३ प्रतिबध, रोक। ४ भय, डर, आतंक। ५ जंका, निहाज, शर्म। ६ मर्यादा, सीमा।
७ एक प्रकार का शस्त्र। = तीन लघु मावा का नाम।
८ एक प्रकार का सामुद्रिक चिह्न।

—ग्रह-पु० फीलवान, महाबल।—बंती, बंती-पु० एक दाँत भुका तथा दूसरा सीधे दाँत वाला हाथी।—बुरघर-पु० उन्मत्त व भस्त हाथी।—धारी-पु० महाबल, फीलवान।
—मुख-पु० रथ।

अंकुसणी, (बो) क्रि०—१ चुभना। २ दर्द होना, सावना।
३ कसकना।

अंकुर-देखो 'अंकुर'।

अंकुरी-पु०—१ बड़े कार्य का प्रारंभिक सूक्ष्म रूप।
२ जन्माक्षरी।

अंकोई-क्रि० वि०—१ अंकी में। २ देखो 'अंकोई'।

अंकोड़-पु०—१ रहस्य में 'अवडिणी' के ऊपर लगा रहने वाला लकड़ी का मोटा डंडा। २ रहस्य के चक्र के बीच लकड़ी के स्तंभ को नियंत्रित करने वाला उपकरण।
३ देखो 'अंकोड़ी'।

अंकोड़णी, अंकोड़ी-पु०—१ किसी लंबे बाँस के सिरे पर लगा रहने वाला लोहे का हंसियानुमा कांटा। २ लोहे का कांटा। ३ तीर का टेढ़ा फल। ४ टेढ़ी वस्तु जिसमें कुछ अटकाया जा सके।

अंकोट, अंकोल-पु०—१ देश नामक जंगली वृक्ष। २ पिछे का पेड़।

अंकी-देखो 'अंकी'।

अंख, अंखड़ी-देखो 'अंख'।

अंखफोड़-देखो 'अंखफोड़'।

अंखमीचणी-देखो 'अंखमीचणी'।

अंखि, अंखी-देखो 'अंख'।

अंग-पु० [म०] १ शरीर, देह। २ देह का कोई भाग, अवयव। ३ भाग, हिस्सा, खण्ड, अंग। ४ मन, इच्छा, वृत्ति। ५ प्रकृति, आदत्त, स्वभाव। ६ उपाय, तरीका। ७ पक्ष। ८ मित्र, साथी, महायक। ९ तरह, भाँति, प्रकार। १० वेद के छः अंग। ११ मेना के चार अंग। १२ पार्श्व, बगल। १३ गजनीति के सात अंग। १४ कार्य का साधन। १५ छः की संख्या।* १६ घाट की संख्या।* १७ एक प्राचीन देश का नाम। १८ जैन शास्त्र विशेष, वि०—प्रिय।

—उधार-पु० बिना रहन के लिया जाने वाला करण।

—अंगुल-पु० अंग रक्षक। अनुचर।—खंभ-पु० हाथी, गज।

—गव-पु० कामदेव, मदन।—ग्रह-पु० जालीक पीड़ा।

—ज, जात-पु० शरीर में उत्पन्न। पुत्र, बेटा। दाँत, रोम। पसीना। मूत्र। रोग। कामदेव। काम, क्रोध आदि विचार। जू।—जा-स्त्री० पत्नी, बेटी।—जाण-पु०

कवच। अंगरखा, कुरता। दाँत-पु० मंभोग के लिये ममपंग।—बार-वि० स्वाभिमानी।—द्वार-पु० शरीर

के द्वार। नों की संख्या*।—धारी-पु० प्राणी।

—पाळ-वि० अंग रक्षक।—कूटणी-स्त्री० शारीरिक दर्द, पीड़ा।—बल-पु० शी, घृत।—भूत-शरीर के टुकड़े, खण्ड।—मंग, मंगी-वि० खडित, अपाहिज। स्त्री० वशी-

करणिक शारीरिक चेष्टा। भाव पु० भाव-भंगिमा।

—भू-पु० वंशज। पुत्र, बेटा। भूत-वि० आन्तरिक,

भीतरी।—पु० पुत्र, बेटा। भरवत स्त्री० माविण। रति

त्रिया। ३२ कलाओं में से एक। रक्ष, रक्षक-पु० अंग

रक्षक। रंखि, रंखी-स्त्री० कवच।—रली-स्त्री० आनन्द,

मौज। मंभोग।—राग-पु० सुगंधित उबटन। वस्त्रा-

भूषण। शृंगार। सुगंधित वृकनी।—राज, राजा-पु०

कर्ण।—लज-वि० सुख, अजानी। बट-पु० प्रकृति,

स्वभाव।—बाधु-पु० घोड़ों का एक रोग।—बारी-पु०

किमानों का पारम्परिक सहयोग।—विकृति, विकृती,

विकृति-स्त्री० अपस्मार, मृगीरोग, मूर्च्छा, पक्षाघात।

विशेष, विलेप-पु० अंगों की सटकन। नृत्य, नर्तन। कला-

बाज।—विद्या-स्त्री० सामुद्रिक शास्त्र।—बोट-पु० देह

का गठन, हाँचा।—संग-पु० स्पर्श। मंभोग।—संस्कार-पु०

स्वभाव, प्रकृति।—सुद्धि-स्त्री० शरीर की सफाई।

—सेवक-पु० अंतर्गम सेवक।—होण-पु० कामदेव।

वि० अर्पण। स्थिति। होमा-स्त्री० मनी।

अंगड़ाई—स्त्री० १ आलस्य या जम्हाई के साथ देह में होने वाला तनाव । २ देह की टूटन । ३ करवट ।

अंगड़ाणी, (बौ)—क्रि० १ अंगड़ाई लेना, आलस्य में शरीर को तानना । २ करवट लेना ।

अंगचासन—पु० शरीर का मंचालन ।

अंगजितमल्ल, अंगजीतमल्ल—वि० अङ्ग के मर्मस्थलों पर जान बूझ कर चाँट करने वाला ।

अंगठ—पु० बैलगाड़ी के थाटे के नीचे का उपकरण जो घोड़े के मुँह की आकृति का होता है ।

अंगण, अंगणि १ देखो 'अंगणी' । २ देखो 'अंगना' ।

अंगद, अंगद—सं० पु० १ बाहु का आभूषण । २ नूपुर । ३ बानि नामक बानर का पुत्र । ४ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम ।

अंगन—देखो 'अंगण' ।

अंगना—स्त्री० [सं०] सुन्दर स्त्री । सुन्दरी । २ गाय, गौ । ३ उत्तर दिक्पत्नी हाथी की हथिनी । ४ वामन नामक दिग्गज की पत्नी ।

अंगनि—देखो 'अंगनि' ।

अंगन्यास—पु० मंत्र पढ़ते हुए अंगों का स्पर्श ।

अंगफूटरणी—स्त्री० एक रोग विशेष ।

अंगमणौ, (बौ) देखो 'अंगमणौ, (बौ)' ।

अंगमरव, अंगमरदन—पु० १ हड्डियों का दर्द । २ हाथ-पैर दबाने वाला नौकर । ३ शरीर के अंगों को दबाने की क्रिया । ४ मानिश ।

अंगमाठ—वि० १ बलिष्ठ, यत्नवान । २ दृढ़, मजबूत । ३ कृपण, कंजुस ।

अंगरक्षा—स्त्री० [सं० अंग + रक्षा] शरीर की रक्षा ।

अंगरखी, अंगरखी—पु० [सं० अंग + रक्षक] १ एक प्रकार का कमीज या कुर्ता । २ अचकन । ३ बड़े किले के चारों ओर बने हुए पनाह लेने के छोटे गड्ढों में से एक ।

अंग-रखी पु० प्रदने स्वभाव का व्यक्ति (स्त्री० अंग-रखी) ।

अंगरग—पु० [सं० अंग + रा. प्रा. रग] वस्त्र ।

अंगरस—पु० [सं०] १ किसी पत्नी या पत्नी का रस (वैद्यक) । २ संभोग, सुरति ।

अंगरह—पु० व्यायाम करने का स्थान, अखाड़ा ।

अंगराज—पु० १ राजा नाम गद्द । २ राजा कर्ग ।

अंगरी—पु० १ कवच, गताह । २ गोद के चमड़े का दस्ताना जो धनुष चलाने समय पहना जाता था ।

अंगरु—पु० पुत्र, बेटा ।

अंगरेज—पु० [पुनः अंग्रेज] १ इंग्लैंड का निवासी । २ अंग्रेज जाति ।

अंग्रेजी—स्त्री० इंग्लैंड की भाषा । वि० अंग्रेजों का, अंग्रेजों संबंधी । विलायती ।

अंगरेल—पु० एक भुगंधित पदार्थ । २ देखो 'अंगरपत्ती' ।

अंगरी—पु० १ बैलों का एक रोग । २ देखो 'अंगारी' ।

अंगळ—देखो 'अंगळ' ।

अंगळी—देखो 'अंगळी' ।

अंगळीलंग—पु० हंस ।

अंगलेखक—पु० राज्य पदाधिकारी विशेष ।

अंगलेझी—पु० अंगुलियों पर होने वाला एक फोड़ा ।

अंगवारौ—पु० किसानों द्वारा पारम्परिक सहयोग में कृषि कार्य करने की प्रथा, क्रिया ।

अंगसंखेख—पु० [सं० अंगसंप्रेक्ष] अंग देश का एक नाम ।

अंगसी—स्त्री [सं० अंकुश] १ हलका फल । २ स्वर्गकारों की छोटी बंकनाल ।

अंगसूत्र—पु० जैन साधुओं के आचरण सूत्रों में से एक ।

अंगां, अंगा—देखो 'अंगे' ।

अंगांगी—पु० [सं० अंगांगी] १ शारीरिक अवयवों का पारस्परिक संबंध । २ अंश का पूर्ण में संबंध ।

अंगाठी—देखो 'अंगारी' ।

अंगार—पु० सं० १ अग्निकण, अंगारा । २ अग्नि, आग । ३ अंगीठी । ४ लाल रंग । ५ एक राजा । ६ मंगल ग्रह । ७ जैन मत में एक दोष ।

—करम—पु० अग्नि संस्कार, दाह क्रिया —पुसप, पुसप, पुस्य—लान पुष्प । इंगुदी का वृक्ष । —मण, मणि, मणी—स्त्री० लाल मणि, मुँगा । —मति—कर्ग की स्त्री । —वली—चिरसी, वृषची ।

अंगारक—पु० [सं०] १ सूर्य, रवि । २ मंगल ग्रह । ३ एक अमुर का नाम । ४ कोयला । ५ चिनगारी ।

अंगारक-चौथ—स्त्री० माघ शुक्ला चतुर्थी तिथि व इस तिथि का व्रत ।

अंगारी—स्त्री० गायों के स्तनों का एक रोग ।

अंगारुड, अंगारी देखो 'अंगार' ।

अंगि—१ देखो 'अंग' । २ देखो 'अंगी' ।

अंगिका—देखो 'अंगिया' ।

अंगिखट—पु० [सं० पट् + अंग] वेदों के छे अंग ।

अंगित—देखो 'इंगित' ।

अंगिला—देखो 'अंगनी' ।

अंगिया—स्त्री० [सं० अंगिका] कंचुकी, चाली, अंगिका ।

अंगिणी देखो 'अंगारणी' । देखो 'जाम्बी' ।

अंगिरस-पु० १ एक प्रजापति । २ एक प्राचीन ऋषि ।
३ बृहस्पति । ४ तारा । ५ 'अंगिरसंहिता' के रचयिता
ऋषि । ६ अथर्ववेद के चौथे खण्ड का नाम । ७ एक
देव गण ।

अंगी-वि० [सं० अंग + ई] १ अंगर धारी । २ देखो 'अंग' ।
अंगीकरणो, (बी)-देखो 'अंगीकारणी' । (बी) ।

अंगीकार-पु० [सं०] १ स्वीकार करना, मंजूर करना । २ ग्रहण
करना, लेना ।

अंगीकारणी (बी)-वि० [सं० अंगीकरणम्] १ स्वीकार करना,
मंजूर करना । ग्रहण करना, लेना ।

अंगीकृत-वि० [सं० अंगीकृत] १ मंजूरशुदा, स्वीकृत ।
२ गृहीत ।

अंगीकृति-स्त्री० मंजूरी, स्वीकृति ।

अंगीठ-पु० [सं० अग्निस्था] १ अंगारा । स्त्री० २ अग्नि,
आग । ३ दाढ़ जलन । ४ देखो 'अंगीठी' --- वि०--अग्नि
की तरह लाल ।

अंगीठी-स्त्री० [सं० अग्निस्था, प्रा० अग्निठा] १ कोयले
जला कर भोजन बनाने का चूल्हा । २ भट्ठी ।

अंगीरी-देखो 'अंगारी' ।

अंगीली-पु० रस्मी बनाने में काम आने वाली सूटी, सेब । वि०--
(स्त्री० अंगीली) स्वभाव के विरुद्ध आचरण को सहन न
करने वाला, स्वाभिमानी ।

अंगुली-देखो 'अंगाली' ।

अंगुठी-देखो 'अंगूठी' ।

अंगुठी-देखो 'अंगूठी' ।

अंगुरो-देखो 'अंगुरी' ।

अंगुरिया-देखो 'अंगूरिया' ।

अंगुल, अंगुल-पु० [सं० अंगुल] १ अंगुली, अंगुठा । २ अंगुली
के बराबर की लम्बाई । ३ आठ जो के बराबर का माप ।
४ आग का बाहरवा भाग (ज्योतिष) । ५ हाथ की
सूँड का अग्र भाग ।

अंगुलि, अंगुली, अंगुलीय-स्त्री० [सं० अंगुलि] १ हाथ या पांव
की उंगली । २ हाथ की सूँड की नोक । ३ नाप
विशेष । ४ अंगुठी, मुद्रिका । --- त्रि०-पु० अंगुली की
टोपी । --- धक-स्त्री० अंगुठी ।

अंगुसट, अंगुसट-देखो 'अंगूठी' ।

अंगुस्तासन, अंगुस्तासन-पु० [सं० अंगुस्तासन] योग के चौगामी
आसनो में से एक ।

अंगू-देखो 'अंग' ।

अंगुठ, अंगुठ-देखो 'अंगूठी' ।

अंगूठी-स्त्री० १ मुद्रिका, अंगुठी । २ स्त्रियों के पांव की अंगुली
का आभूषण । ३ दर्जी की अंगुली की टोपी ।

अंगूठी-पु० [सं० अंगुठ] हाथ या पांव की मोटी अंगुली,
अंगुठा ।

अंगुलीयक-स्त्री० मुद्रिका, अंगुठी ।

अंगुलीय-पु० अंगूठे में पहनने का आभूषण ।

अंगूर-पु० [फा०] १ गोल या कच्ची दाख, किशमिश या
मुनक्का । २. उक्त फल की वेल ।

अंगूरिया-देखो 'अंगुरी' ।

अंगुरी-वि० १ अंगूर का, अंगूर से सम्बन्धित । २ अंगूरों से
बना हुआ । ३ अंगूर के समान रंग का ।

--- पु० १ अंगूर का शर्वन । २ अंगूर जैसे रंग का वस्त्र ।

--- स्त्री० ३ अंगूर की जराय ।

अंगुलीयक-स्त्री० अंगुठी, मुद्रा (जैन) ।

अंगे, अंगेई-क्रि० वि० १ कतई, नितान्त, विरुद्ध । २ किंचित,
थोड़ा, लेशमात्र । ३ वास्तव में, वस्तुतः । ४ स्वभाव
में, प्रकृति से ।

अंगेजणी, (बी)-क्रि० १ स्वीकार या मंजूर करना । २ लेना,
ग्रहण करना । ३ धारण करना, मानना । ४ जिम्मेदारी
लेना ।

अंगेठी-देखो 'अंगीठी' ।

अंगे, अंगेई-देखो 'अंगे' ।

अंगेअंग, अंगेअंग-क्रि० वि० १ देह के अनुसार, मन के
अनुसार । २ पूर्णरूपेण । ३ अंग-अन्वय में ।

--- वि० युक्तियुक्त, ठीक, उचित । २ सम्पूर्ण, पूर्ण ।

अंगोछ, अंगोछिया, अंगोछी-पु० [सं० अंग-प्रोक्षण] १. नालिया,
गमछा । २. उपवस्त्र ।

अंगोट, अंगोटी, अंगोठ-वि० अङ्गित, हट्ट, अटल ।

--- पु० १ अंग-प्रत्यंग । २ जागीर का गठन, सृजितता ।

अंगोठी-देखो 'अंगूठी' ।

अंगोठी-देखो 'अंगूठी' ।

अंगोपांग-पु० [सं० अंग + उपांग] अंग-उपांग । अंग-प्रत्यंग ।

अंगोभव, अंगोभव-पु० पुत्र, बेटा ।

अंगोल, अंगोल-पु० १ पुत्र, बेटा । २ अंग रक्षक ।

अंगोलणी (बी)-क्रि० स्नान करना, नहाना, धोना ।

अंगोलिया-स्त्री० नाट्यों की एक शाखा ।

अंगोलिया-पु० १ स्नानघर । २ पंजाबघर । ३ 'अंगोलिया'
जाति का नाई ।

श्रंगोली-स्त्री० १ स्नान, मज्जन । २ स्नानागार ।
 ३ पेशाबघर ।
 श्रंगेज-देखो 'श्रंगरेज' ।
 श्रंगेजी-देखो 'श्रंगरेजी' ।
 श्रंगड़-पु० [सं० श्रंगि] निम्नवर्गीय स्त्रियों के पैर के अंगूठे का जेवर ।
 श्रंगिणी-पु० जांघिया नामक अश्वोवस्त्र ।
 श्रंग्रप-पु० [सं० श्रंग्रिप] वृक्ष, पेड़ ।
 श्रंग्रि, श्रंग्रिप, श्रंग्रियस, श्रंग्री, श्रंग्रीयस-पु० [सं० श्रंग्रि] १ पैर चरगा । २ चतुर्थी । ३ वृक्ष । ४ वृक्ष की जड़ ।
 श्रंग-देखो 'श्रांग' ।
 श्रंगणी (बौ)-कि० [सं० श्रंग] १ बांधना, लटकाना । २ लगाना, भूषित करना । ३ पूजना, आराधना करना । ४ लेपन करना ।
 श्रंगल, श्रंगल-पु० [सं० श्रंगल] १ वस्त्र का छोर, पल्ला । २ वस्त्र । ३ सीमांत भाग । ४ किताब, तट । ५ गठ-बंधन । ६ वक्षस्थल पर रहने वाला स्त्रियों की ओष्ठगुप्ती का पल्ला । ७ कुत्त, स्तन । ८ सीमा, हद ।
 -- बंध-पु० वर-वध का गठ-बंधन ।
 श्रंगली-पु० १ माधु-सन्ध्यामियों का डील, व मोटा कुर्ता, कोता । २ देखो 'श्रंगल' ।
 श्रंगित-वि० [सं०] १ पूजा हुआ, पूजित । २ प्रतिष्ठित, सम्मानित । ३ मुड़ा हुआ, झुका हुआ । ४ मिला हुआ, बना हुआ । ५ तप्त, तपाया हुआ ।
 श्रंग्या, श्रंग्या-देखो 'इच्छा' ।
 श्रंग्यावस-वि० [सं० इच्छा-वण] लोभी, लालची ।
 श्रंग्यावाली-वि० लोभी ।
 श्रंग्या-देखो 'इच्छा' ।
 श्रंग्या-संपत्त-पु० यौ० [सं० इच्छा-सम्पत्ति] धनपति कुबेर ।
 श्रंगरा-१ देखो 'श्रंगर' । २ देखो 'श्रंगर' ।
 श्रंगराकेस-पु० [सं० श्रंगर-केस] दीपक ।
 श्रंगरा-देखो 'श्रंगरा' ।
 श्रंगरी-देखो 'श्रंगरी' ।
 श्रंगरी-पु० श्रंगरी पुत्र, हनुमान ।
 श्रंगरी (बौ)-देखो श्रंगरी (बौ) ।
 श्रंगर-पु० [सं०] १ सुरमा । २ काजल । ३ जप । ४ रात्रि, रात । ५ स्याही । ६ माया । ७ पश्चिम दिशा । ८ इस दिशा का हस्ती । ९ एक सर्प विशेष । १० एक पर्वत का नाम । ११ वृक्ष विशेष । १२ अग्नि । १३ एक

प्रकार काजल (श्रंगर) विशेष जिसको आंखों में लगाने वाला ग्रहण हो जाता है ।

--अरिस्ट-पु० रत्न ।

--केस-पु० दीपक, दीया । --केसी-वि० काजल के समान काले केशों वाला (वाली) । --योग-पु० ६४ कलाओं में से एक । --सलाक, सलाका-स्त्री० सुरमा सारने की सलाका, सलाई ।

श्रंगनवादी-वि० जिसकी आंखों में ग्रहण कर देने वाला श्रंगन लगा हो । २ जिसने ग्रहण कर देने वाला श्रंगन बनाया हो ।

श्रंगनामिका-स्त्री० नेत्रों का एक रोग ।

श्रंगना-स्त्री० [सं०] हनुमान की माता ।

--नंद, नंदन-पु० हनुमान ।

श्रंगनी-पु० [सं०] १ काला श्रंगन । २ कटुक वृक्ष । ३ घोड़ों का एक श्रंगुभ चिह्न । ४ उक्त चिह्न वाला घोड़ा । --स्त्री०-१ श्रंग पदार्थों का लेपन करने वाली स्त्री । २ श्रांश की पलक पर होने वाली फुंसी, गुहजनी । ३ हनुमान की माता । ४ चौथे नरक का नाम (जैन) --ज, नंदन, पूत-पु० हनुमान ।

श्रंगरि, श्रंगरी-देखो 'श्रंगली' ।

श्रंगरुत-पु० गोद ।

श्रंगल-१ देखो 'श्रंगल' । २ देखो 'श्रंगली' ।

श्रंगलउ देखो 'श्रंगल' ।

श्रंगलि, श्रंगली, श्रंगली-स्त्री० [सं० श्रंगलि] १ दोनों हथेलियों को कनिष्ठाओं की ओर में सटाकर बनायी हुई मुद्रा । २ इस मुद्रा का एक परिमाण । ३ इस मुद्रा में समाने वायक वस्तु । ४ इस मुद्रा में भरा जाने वाला जल जा पितृ-नर्पण के काम आता है । ५ कर संपुट ।

--उपेत-वि० करबद्ध ।

--गत-वि० हस्तगत, प्राप्त ।

--पुट-पु० कर संपुट ।

--बंध, बध-वि० करबद्ध, हाथ में बांधा हुआ प्राप्त ।

--क्रि० वि० हाथजोड़कर ।

श्रंगस-पु० १ अभिमान, गर्व । २ खुशी, प्रसन्नता । ३ श्रंग, कीर्ति । --वि० गौरवान्वित, अकृदित, सीधा ।

श्रंगसणी (बौ)-वि० १ गर्व या अभिमान करना । २ खुशी मनाना । ३ गर्वोन्नत होना ।

श्रंगसा क्रि० वि० [सं०] १ शीघ्रता से, तुरन्त । २ गीघाई में । ३ मच्चाई से । ४ उचित ढंग में ।

--स्त्री० १ वेग, तेजी । २ मरगला । ३ मच्चाई ।

श्रंग्रांश देखो 'श्रंग्रांश' ।

अंजाम्ने देखो 'अंजाम्ने' ।

अंजाम-पु० [का०] १ पश्चिम, नदीजा, फल । २ समाप्ति, अंत । ३ पुति । ४ इच्छा-संपत्ति ।

अंजार-पु० एक तीर्थ का नाम ।

अंजीर-पु० [का०] १ गुलर जाति का एक वृक्ष । २ इस वृक्ष का फल जो रेशक होता है ।

अंजील-देखो 'अंजील' ।

अंजुरणौ, (बी)-क्रि० अंकुरित होता ।

अंजुलि, अंजुली, अंजुलि, अंजुली देखो 'अंजुली' ।

अंज्या-देखो 'अंज्या' ।

अंठ-पु० १ भाग्य के लेख । २ अधिकार, कब्जा । ३ कलम की नोक । ४ कलम । ५ लिखावट, लेख । ६ कवच का टुक । ७ कमर के ऊपर घोती की लपेट, गेंठन । ८ शरासन, बंदमाशी । ९ कांटा या फांस निकालने की क्रिया । १० गेंठन ।

अंठ-संठ-वि० १ व्यर्थ, निरर्थक । २ अस्त-व्यस्त ।

अंठाणौ, (बी)-क्रि० १ छल-बल से किसी वस्तु या धन को कब्जे में करना । २ छीनना ।

अंठि, अंठौ-स्त्री० [सं० अंठ या अंठि, प्रा० अंठि] १ कमर के ऊपर घोती की लपेट, गेंठन । २ अंगुलियों के बीच की जगह । ३ तर्जनी पर मध्यमा को चढ़ाने से बनने वाली मुद्रा । ४ चलने या भागने वाले को दी जाने वाली पैर की आड़ । ५ मूत या रेशम की गुंडी । ६ मूत लपेटने की लकड़ी । ७ अधिकार, कब्जा । ८ क्षमता । ९ विरोध । १० लड़ाई, झगड़ा । ११ विगाड़, चुकमान । १२ कुश्ली का दाव ।

अंठ-पु० [सं० अंठ] १ अंठ । २ अंठकोश । ३ ब्रह्मांड । ४ शिव का एक नामान्तर । ५ मृग-नाभि । ६ बीज । ७ वस्तु । ८ कामदेव । ९ कोश । १० मृवृत्त ।

कटाह-पु० ब्रह्मांड, विश्व ।

कोस-पु० वृषण, फाता ।

ज, जज-पु० ब्रह्मा । अंठों में पैदा होने वाले जीव ।

अंठबंड-पु० अटपटा, असम्बद्ध, व्यर्थ का ।

अंठबद्धि, अंठबधी, अंठबद्धि, अंठबधी-स्त्री० [सं० अंठबद्धि] अंठकोश बढ़ने का एक रोग विशेष ।

अंठाकार, अंठाकृति-वि० [सं०] अंठ के समान गोल ।

अंठियौ-वि० १ नपुंसक । २ कमजोर, निर्बल । ३ देखो 'अंठौ' । ४ देखो 'अंठ' ।

अंठौ-देखो 'अंठौ' ।

अंठे-अर्थ, यहाँ ।

अंठौ-पु० [सं० अंठ] १ वह गोला या पिंड जिससे अंठज प्राणियों की उत्पत्ति होती है, अंठा । २ शरीर, देह, पिंड । ३ देवानथ के शिखर का कवच ।

अंठौ पु० दिन का तीसरा प्रहर ।

अंठव-देखो 'अंठव' ।

अंठराय-देखो 'अंठराय' ।

अंठहार-देखो 'अंठहार' ।

अंठियाळ-देखो 'अंठियाळी' ।

अंठि, अंठौ-देखो 'अंठि' । देखो 'अंठौ' ।

अंत-पु० [सं०] १ समाप्ति, पूर्णता, इति, अवसान । २ मृत्यु । ३ नाश, खान्मा । ४ सीमा, हृद । ५ छोर, किनारा । ६ चरमसीमा । ७ वस्त्र का आंचल । ८ सामोप्य, नजदीकी । ९ पड़ोस । १० उपस्थिति । ११ पिछला भाग । १२ जीवन की समाप्ति । १३ पश्चिम, नदीजा । १४ जन्म का अंतिम अक्षर । १५ प्रकृति, स्वभाव । १६ प्रलय । १७ अन्तःकर्म, अन्तर्गन्मा । १८ यमराज, अंतक । १९ पुति । २० अंतिम भाग ।

वि० १ समाप्ति, पूर्ण । २ नष्ट, खत्म । ३ अखीर । ४ निकुण्ट, नीच । ५ असीम, अपार । ६ अत्यधिक, बहुत । ७ सुन्दर, प्यारा । ८ लघुतम, छोटा । ९ पीछे का, पिछला ।

क्रि० वि० १ अन्त में, आखिरकार । २ देखो 'अंत' ।

अक्षर-आखर-पु० पद, शब्द या वर्णमाना का अन्तिम वर्ण ।

करण-पु० हृदय, मन, अन्तर्गन्मा । वि०-नाश करने वाला, संहारक ।

कर्म-पु० अन्त्येष्टि क्रिया, अन्तिम संस्कार ।

कार, कारक-पु० यमराज । वि० संहार करने वाला ।

काल-पु० अन्तिम समय, अवसान, इति । मृत्यु का समय ।

करिया-स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया, अन्तिम संस्कार ।

कुटिल-वि० वापटी, घोसबाज ।

कृत, कृत-पु० यमराज । वि० संहारक ।

क्रिया-स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया । अर-अंत आखर ।

गत-वि० मुक्ति प्राप्त करने वाला । पु० मोक्ष, निर्वाण । एक मूत्र ।

गति-स्त्री० मीन, मृत्यु । अन्तिम दशा । वि० अन्त की प्राप्त होने वाला । नष्ट होने वाला ।

घाती-वि० दगाबाज, कुटिल, धानक ।

चर-पु० सीमा पर जाने वाला, कार्य पूरा करने वाला ।

ज-पु० न्यून कुलीन व्यक्ति, शूद्र । वि० अलून । अन्त का, अन्तिम ।

—जया—स्त्री० डिङल काव्य रचना की एक प्रणाली ।
—विन—पु० मृत्यु दिन, आयु का अन्तिम दिन ।
—पाळ—पु० द्वारपाल । मंतेरी । दरबान । सीमांत प्रहरी ।
प्रतिहार ।

—पुर—पु० रतिवाम, हरम ।

—पुळ—पु० अन्तिम समय ।

—वरण, वरण—पु० अन्तिम वर्ग ।

—मेळ—पु० दोहा नामक छन्द जिसके प्रथम चरण और
अंतिम चरण का तुकांत मिलता है ।

—बिवारण—पु० सूर्य व चन्द्र के दश प्रकार के मोक्षों में
से एक ।

—समय, समे. समी—पु० अन्तिम समय, अवसान काल

—स्नान—पु० अवशेष-स्नान । —हीण—वि० अमीम,
अपार ।

अंतक, अंतकराय—पु० [सं० अंतक-राज] १ यमराज ।
२ जनिष्वर । ३ हर भय । ४ महादेव, रुद्र । ५ मृत्यु ।
मौत । ६ मन्त्रिपालक उवर । —वि० नाश करने वाला ।

—लोक—पु० यमपुरी ।

अंतकापुर, अंतकापुरी स्त्री० १ तीर्थ स्थान । २ देखा 'अंतकलोक'
अंतग—वि० [सं० अंतक] १ पारंगत, निपुण । २ मंहागक ।
पु० यमराज ।

अंतगड—पु० १ जन्म मरण से मुक्त तीर्थंकर । २ एक सूत्र का
नाम (जैन) ३ मोक्ष, निर्वाण ।

अंतत—अव्य० [सं०] १ आखिरकार, अंत में । २ मरने पीछे
३ कुछ-कुछ । ४ अन्तर, भीतर ।

अंतरंग, अंतरंगी—वि० १ अभिन्न, घनिष्ठ । २ विश्वस्त ।
३ अनिप्रिय । ४ भीतरी, आन्तरिक । ५ मानसिक ।
६ भेदिया । —पु० घनिष्ठ मित्र । ७ भीतरी अंग, हृदय,
मन । ८ विश्वस्त व्यक्ति ।

—क्रि० वि० बीच में, दरम्यान ।

अंतर—पु० [सं०] १ भेद, फर्क । २ अलग-अलग । ३ भीतरी
भाग । ४ आत्मा, मन, हृदय । ५ अवकाश । ६ अवधि,
काल । ७ भिन्नता, विभेद । ८ फामला, दूरी । ९ ओट,
छाड़ । १० परदा । ११ छिद्र, छेद, रंध । १२ जल,
पानी । १३ समय, अवधि । १४ विच्छेद, वियोग ।
१५ पार्श्ववय, जुदाई । १६ छल, कपट । १७ नर्व को
मंजित । १८ अग्नि । १९ अन्तःपुर । २० हेरफेर,
परिवर्तन । २१ भेदभाव परायापन । २२ हिमाव
की भुज । २३ विपमता । २४ जेपाण । २५ उव ।

वि० १ भीतरी । २. प्रिय, प्यारा । ३. अन्तर्धान, अवाप
४ भिन्न, दूभरा । ५ सभान ।

क्रि० वि० अन्दर, भीतर । २ समीप, पास में । ३ मध्य में,
बीच में ।

—आत्मा, आत्मा—स्त्री० मन, आत्मा, अन्तःकरण ।
ब्रह्म । मूलतत्त्व । सार ।

—काण, काणम, काणी—स्त्री० तराजू के संतुलन का दोष
या फर्क

—गत—वि० भीतरी, अन्तर्भूत । अधीन । सम्मिश्रित । गुण
आत्मिक, मानसिक । —क्रि० वि० बीच में, दरम्यान ।

—गति—स्त्री० आन्तरिक दशा । मन का भाव, चित्त
वृत्ति । भावना, इच्छा ।

—गिरा—स्त्री० अन्तःकरण की आवाज ।

—ग्यान—पु० आत्मज्ञान, सूक्ष्मज्ञान ।

—घट—पु० हृदय, अन्तःकरण ।

—चकर, चक्र—पु० शरीरस्थ छै चक्र । पक्षियों की आवाज
के अनुसार शकुन विचारने की विद्या ।

—छाळ—स्त्री० वृक्ष की छाल के नीचे की भित्ती ।

—जामी,—वि० मन की बात को जानने वाला ।
भूत, भविष्य को जानने वाला, त्रिकालदर्शी । —पु० ईश्वर ।

—दवार, द्वार—पु० गुहा-द्वार । खिड़की ।

—दसा—स्त्री० मन की अवस्था । ग्रहों की चाल का
विधान । (ज्योतिष)

—दाह—स्त्री० भीतरी जनन (रोग) । बिरह की आग ।
कष्ट, पीड़ा । ईर्ष्या, द्वेष ।

—दिस, दिसा—स्त्री० विविधा, कोण ।

—द्रस्ती, द्रस्ठी—स्त्री० आन्तरिक सूक्ष्म । आत्मचिन्ता ।

—धान, ध्यान—वि० अलोप, ओभल । तालीन, मभन ।

—पट—पु० परदा, छाड़, ओट । छिपाव, दुगव । ओपाध
का संपुट । छाड़ बनाने का वस्त्र ।

—पणी—पु० घनिष्ठता, आत्मीयता, अपनत्व ।

—पुरख, पुरस—पु० ईश्वर । आत्मा ।

—पुरी—स्त्री० स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

—बध—पु० आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान ।

—बछी—वि० आत्मबलि ।

भाव, भावना—पु० मन का भाव । आशय । प्रयोजन ।
भावना । आत्मावलोकन । आत्मचिन्ता ।

—भूत—वि० मिला हुआ । समुक्त अस्तित्व वाला । मध्यम
पु० जीवात्मा ।

मुख—वि० त्रिकला मुख भीतर की ओर हो । पु० आत्म-

रिक्त फोड़ा या फुंसी। शल्य चिकित्सा की कैंची। क्रि० वि० भीतर की ओर उन्मुख।	अंतरास-देखो 'अंतराय'
---शामी-'अंतरजामी'	अंतरि-देखो 'अंतर'
रत, रति-स्त्री० रति क्रिया का एक अंग।	अंतरिक, अंतरिक्ष, अंतरिक्ष, अंतरिक्ष, अंतरिक्ष, अंतरिक्ष, अंतरिक्ष-पु० [सं० अंतरिक्ष] १ आकाश, अंतरिक्ष।
लीन, लीन-वि० जो आत्म चिन्तन में लीन हो। व्यातावस्थित। भीतर लुप्त हुआ।	२ स्वर्ग, वैकुण्ठ। ३ एक केलु। ४ एक प्रसिद्ध योगेश्वर। ५ ऊँचा स्थान। ६ झूला।
वस्त्र-पु० मुख्य वस्त्र के नीचे का वस्त्र। अधोवस्त्र।	वि० गुप्त, अप्रगट। २ अन्तर्धान, लुप्त।
विकार-पु० भूख-प्यास आदि शारीरिक धर्म। मन का विकार।	अंतरित-वि० १ अन्तर्धान, लुप्त। २ भीतर रखा हुआ। ३ ढका हुआ।
वेग-पु० उन्माद, स्फूर्ति। उमंग। अज्ञाति, चिन्ता। छीक, पसीना आदि आन्तरिक वेग। उच्च विशेष।	अंतरी-वि० भीतर की। २ मार्मिक। ३ कठोर।
वेदना-स्त्री० अज्ञाति, दुःख, कष्ट पीड़ा। मानसिक कष्ट।	अंतरीक, अंतरीख-देखो 'अंतरिक'
संचारी-पु० वे अस्थिर मनोविकार जो काव्य में रस- सिद्धि करते हैं।	अंतरीज-पु० [सं० अंतःकरण] हृदय, अन्तःकरण।
संपाड़ी, सनांन पु० यज्ञान्तर स्नान, अवभृत्, स्नान।	अंतरीप-पु० [सं०] १ द्वीप, टापू। २ समुद्र में दूर तक गया हुआ पृथ्वी का भाग।
अंतर-अयण-पु० १ एक देश का नाम। २ तीर्थ की परि- ग्रामा। ३ तीर्थ यात्रा।	अंतरीय-पु० [सं०] अधोवस्त्र।
अंतरज-१ देखो 'अंतरि'। २ देखा 'अंतरी'। ३ देखो 'अंतर'।	अंतरे-देखो 'अंतर'।
अंतरसापका-स्त्री० यौ० वह पहली जिमका अर्थ उसी के शब्दों में होता है।	अंतरेख-देखो 'अंतरिक'
अंतरवेद, अंतरवेध-पु० यौ० [सं० अन्तर्वेद] गंगा यमुना के मध्य मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।	अंतरेखी-पु० लहंगे की लम्बाई कम करने के लिये बीच में लगाया जाने वाला टांका।
अंतरवेदी-पु० [सं० अन्तर्वेदी] उक्त प्रदेश का निवासी।	अंतरे-देखो 'अंतर'।
अंतरसेवी-देखो 'अंतरेवी'	अंतरी-पु० गाये जाने वाले पद का चरण। २ देखो 'अन्त' ३ देखो 'अंतरी' ४ देखो 'अंतर'।
अंतराई, अंतराय-स्त्री० [सं० अंतर्ग या अंतराय] १ विघ्न, बाधा। २ दूरी, फासला। ३ भेद, भिन्नता। ४ समय अवधि। ५ दो घटनाओं के बीच का समय, अवकाश।	अंतबप-पु० रात्रि का एक योद्धा।
६ अद्भुत, दिक्कत। ७ योग सिद्धि की ती बाधाएँ- व्याधि, म्लान, प्रमाद, मंथन, आलस्य, अविश्रुति अति- दर्शन, अलक्ष्य भूमिकत्व व अनवस्थित तत्व। ८ विपत्ति- वस्था १० आठवाँ कर्म जो आत्मा के अनन्त वीर्य रूप गुण का घातक होता है। (जैन) ११ स्कावट, रोक। १२ मन- मुटाव।	अंतवरण-पु० जूटवर्ण। २ अन्तिम वर्ण या अक्षर।
अंतरायण-वि० नज्ज्वंद, मोह में आवद्ध।	अंतस-पु० [सं०] १ हृदय, मन, अन्तःकरण। २ चित्त वृत्ति, भावना। ३ हादिक उच्छ्वा। ४ बुद्धि।
अंतरायाम-पु० एक प्रकार का वान रोग।	अंतस्थ-वि० [सं०] अन्दर की ओर स्थित, भीतरी।
अंतराळ, अंतराळि-पु० [सं० अन्तरालम्] १ आकाश, तम। २ घेरा, मंडल। ३ घिरा हुआ या बीच का स्थान या भाग। ४ बीच का समय, मध्याह्न। पु० अभ्यंतर।	---पु० य म्लान वर्ण जो सफेद और उम वर्णों के बीच के माने जाते हैं।
---क्रि० वि० १ बीच में। २ देखो 'अंतर'।	अंतहकरण-पु० यौ० [सं० अंतःकरण] १ हृदय, मन, अन्तःकरण। २ भावना। ३ बुद्धि, विवेक। ४ अन्दर की इन्द्रियाँ।
अंतरावळ (छी)-देखो 'अंतर'।	अंतहपरिजन, अंतहपुरीजन-पु० यौ० अंतःपुर के दाम-दाम्नी।
	अंतहपुर, अंतहपुरग्रह, अंतहपुरि, अंतहपुरी-पु० यौ० [सं० अंतःपुर] रनिवान, जनातलाना।
	अंताक्षरी, अंताक्षरी-स्त्री० [सं० अन्ताक्षरी] पूर्व पठित सूत्र या कविता के अन्तिम वर्णों में आगता एक आरंभ करने की प्रतियोगिता।
	अंताळ, अंतावळ, अंतावळि अंतावळी-देखो 'उतावळ'।
	अंतावळी देखो 'उतावळी' (स्त्री० अंतावळी)
	अंति-वि० [सं० अन्त्यन्त] अन्तिम, बहुत।

आधूंग, (गी)-कि० वि० पश्चिम की ओर ।

आधूंग-पु० 'आध' के बदले कृष्णक का कार्य करने वाला व्यक्ति ।
आधूंग-देखो 'आधूंग' ।

आधोमण (मण्णी)-वि० प्रयोजन वाला ।

आदंत-वि० वि० [सं० आदंत] प्रारम्भ से अन्त तक । — वि०
आदि तथा अन्त ।

आदंतर देखो 'आधूंग' ।

आदि १ देखो 'आदि' । २ देखो 'आदि' । ३ देखो 'इत्यादि' ।

आदिक-वि० [सं० आदिक] १ आदि, प्रथम । २ प्रारम्भ
का, प्रारम्भ । ३ निरन्तर । — पु० एक प्रकार का रोग ।
आदिक-अन्तः उत्पत्ति ।

आदिकवि (कवी)-देखो 'आदिकवि' ।

आधज्या-स्त्री० विमान भरी की रचना का एक नियम ।

आधुनाद, (दि, पी)-देखो 'आधुनाद' ।

आधुना-पु० [सं० आधुना] दात, चाबल आदि पकाने के
लिए गरम किया जाने वाला पानी ।

आधुना, (ति)-स्त्री० [अ०] १ स्वभाव, प्रकृति ।
२ अनुमान । ३ डेरा ।

आधुनाय, आधुनायः पु० [सं० आधुनाय] देवता ।

आधुना वि० वि० आदि, इत्यादि ।

आधुनायणी, (चक्रेश्वरी)-स्त्री० राठीयों की कुल देवी ।

आधुनाय, आधुनाय-पु० [सं० आधुनाय] कृष्ण पक्ष ।

आधुनाय, (रस) देखो 'आधुनाय' (स) ।

आधुना-पु० [अ०] १ मानव मृष्टि का आदि पुरुष । २ भुव ।
३ महादेव । — चरम-पु० मनुष्य की भी आधुना
वाला घोड़ा ।

आधुनी पु० [अ०] (स्त्री० आधुनी) १ आधुनी की संज्ञा,
मनुष्य, मानव । २ पति । ३ भजदूर ।

आधुना पु० [सं०] १ सम्मान, इज्जत । २ आस्था, श्रद्धा ।
३ उत्कार, विद्याचार ।

आधुना (वी)-कि० १ सम्मान व इज्जत करना । २ उत्कार
करना । ३ श्रद्धा रखना । ४ महत्व देना । ५ स्वीकार
करना । ६ निश्चय करना, रहू करना । ७ प्रारम्भ करना ।

आधुना पु० [सं० आधुना] १ दर्पण, जीजा । २ अमृतसिद्धि
वाला । ३ नृपति ।

आधुना (विष्णु)-देखो 'आधुना' ।

आधुनी-स्त्री० [अ० अन्त] गाय, इन्साफ ।

आधुनाह देखो 'आधुनाह' ।

आधुनाय-स्त्री० 'आधुनाय' ।

आधुना-पु० [सं० आधुना] ब्रह्मण, स्वीकार । — प्रदान-पु०
परम्पर लेना-देना । बहुत विनिमय ।

आधुना-पु० [अ०] १ निवम, कायदा । २ विहाज, इज्जत ।
३ अभिवादन । — अरज-पु० निवेदन ।

आधुनाय-देखो 'आधुनाय' ।

आधुना-वि० [सं०] १ प्रथम, पहला । २ प्रारम्भ का ।
३ विष्णु, विष्णु ४ मूल अर्थ । — पु० १ उत्पत्ति स्थान ।
२ प्रारम्भ । ३ बुनियाद । ४ मूलकारण ५ ईश्वर ।
६ पुरुष । — अर्थ० इत्यादि । वगैरह ।

आधुनाय पु० [अ०] वाचनिक कृषि जिन्होंने सर्व प्रथम
छेदीमृद काव्य की रचना की थी । २ शुद्धचार्य ।

आधुनाय-पु० [सं०] मूलकारण, पूर्वनिश्चित बात ।

आधुनाय (दि)-वि० वि० मृष्टि के प्रारम्भ से अन्त तक ।

आधुना, (चित्त, विष्णु)-पु० [सं० आधुना] १ भुव । २ इन्द्रादिक
देवता । ३ ब्रह्मण आदिस्थान ४ विष्णु का पांचवां अवतार ।
— पु० पु० पु० अदिति पुत्र, देवता । सूर्यपुत्र । मग
वात्सल्य । — पद-पु० रविवार ।

आधुनाय, (स)-देखो 'आधुनाय' ।

आधुनाय, (पुत्र)-पु० [सं० आधुनाय] १ विष्णु, ईश्वर ।
२ ब्रह्मा ।

आधुना-देखो 'आधुना' ।

आधुनायक, आधुनायक (ती)-स्त्री० [सं० आधुनायक]
१ दुर्गा, देवी । २ पार्वती ।

आधुनाय, आधुनाय-देखो 'आधुनाय' ।

आधुनाय-देखो 'आधुनाय' ।

आधुना-वि० [अ०] १ उदार । २ न्यायी ।

आधुनाय-पु० [सं०] १ विष्णु का वराह अवतार । २ शूकर,
नृशर ।

आधुनाविष्णु-स्त्री० आधुनायक का एक भेद ।

आधुनाय-पु० [सं० आधुनाय] मृत्योपरान्त मृतक के पीछे
मरने के दिन किया जाने वाला श्राद्ध ।

आधुना-वि० [अ०] १ प्रत्यक्ष । २ आदत वाला । ३ देखो 'आदि' ।

आधुना, आधुना (ती)-देखो 'आधुना' ।

आधुनाय-पु० [सं० आधुनाय] १ जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ।
२ ईश्वर । ३ आदि पुरुष ।

आधुना-वि० [अ०] १ आधुनाय, आधुनायक । २ बुनियादी ।
— अर्थ०-वि० निरर्थक, स्वच्छ ।

आधुनाय-वि० [स्त्री० आधुनाय] परम्परागत ।

आधुनाय-पु० 'आधुनाय' ।

आधुनाय, (पक्षी)-पु० शुद्धज्ञान, आदि ।

आधुना (ति)-पु० [सं० आधुना] १ आज्ञा, हुक्म । २ उपदेश ।
३ सम्मान, प्रशंसा । ४ निर्देश । ५ प्रतीक का फल ।
६ अर्थ परिवर्तन । (व्याकरण)

—क्रि० वि० आचिरकार, अंत में ।

अंतिक-क्रि०वि० [सं०] पाम, समीप, निकट ।-वि० गाम का, अन्त तक पहुँचने वाला ।

—पु० पड़ाम, सामिप्य, सानिध्य ।

अन्तिम-वि० [सं०] १ मर से पीछे या अन्त का, आखिरी ।
२ मर से बढकर ।

—जातरा, जात्रा, यातरा, यात्रा-स्त्री० महा प्रस्थान, मरण, मृत्यु ।

अन्तेउर, अन्तेउरि, अन्तेउरी, अन्तेवर, अन्तेवरि, अन्तेवरी-स्त्री०
१ अन्तःपुर की रानी, ठकुरानी । २ स्त्री, पत्नी, भार्या ।

—पु० ३ अन्तःपुर ।

अन्तेवासी-पु० [सं० अन्ते-वासः] १ जिथार्थ गुरु के पास रहने वाला शिष्य । २ भंगी, हरिजन ।

अन्तेस्टि, अन्तेस्टी-देखो 'अन्त्येस्टी' ।

अन्तपुर-देखो 'अन्तहपुर' ।

अन्त्यज-पु० [सं०] अन्तिम वर्ग में उत्पन्न व्यक्ति, शूद्र ।

—वि० नीच, दुष्ट ।

अन्त्यवरण-पु० [सं०] १ अन्तिम वर्ग, शूद्र वर्ग ।
२ वर्गमाला का अन्तिम वर्ग । ३ किसी कविता या छंद का अन्तिम अक्षर ।

अन्त्यविपुला-स्त्री० [सं०] आर्याल्लन्द का एक भेद ।

अन्त्याक्षरिका, अन्त्याक्षरी-स्त्री० [सं०] ६४ कलाओं में से एक ।

अन्त्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास-पु० [सं० अन्त्यानुप्रास] किसी छन्द या कविता की पंक्तियों में तुल्यत्व मेल से बनने वाला एक शब्दालंकार ।

अन्त्येस्टि, अन्त्येस्टी-स्त्री० [सं० अन्त्येस्टि] दाह-संस्कार, अन्तिम संस्कार ।

अंत्र, अंत्रक, अंत्राल-स्त्री० अंत्र, अंत्रि ।

—कूज, कूजन-पु० अंत्रों की गड़गड़ाहट ।

अंत्रों की आवाज ।

—वृद्धि, वृद्धी-स्त्री० अंत्रों का रोग, अंत्रकोण वृद्धि का एक रोग ।

अंत्रालजी-स्त्री० [सं० अंत्रालजी] वात-रक्त में होने वाली कुंसी, फोड़ा ।

अंत्रावळ, अंत्रावळि, अंत्रावळी, अंत्रावाळ, अंत्रि-देखो 'अंत्र' ।

अंत्र-पु० १ दोष, पाप । २ देखो 'इंद्र' । ३ देखो 'अंत्र' ।
४ देखो अंद्रुक ५ देखो 'अंत्रक' ।

—संद राजा-पु० एक देशी खेल विशेष ।

अंत्रक-१ देखो 'अंत्रक' । २ देखो 'अंद्रुक' ।

अंत्रर-क्रि०वि० [फा०] १ जो बाहर न हो, भीतर । २ देखो 'इंद्र' ।

अंत्ररी-वि० [फा०] १ आन्तरिक, भीतरी । २ देखो 'इन्द्रो' ।

अंत्ररुणी, अंत्ररुनी-वि० [फा० अंत्ररुनी] भीतरी, आन्तरिक ।

अंत्रावळी-देखो 'अंत्रावळी' ।

अंत्राज-पु० [फा०] १ अनुमान । २ दंग, लगीला । ३ वृत्ति, अटकल । ४ करीब, लगभग । ५ साप-नील । ६ हाव-भाव, चेष्टा । ७ उचित मात्रा ।

अंत्राजन-क्रि०वि० [फा०] करीबन, अनुमानतः, अनुमान में ।

अंत्राजी-देखो 'अंत्राज' ।

अंत्राता-देखो 'अन्नादाना' ।

अंत्रावुं-देखो 'अन्नावुं' ।

अंत्रार, अंत्रारी-देखो 'अन्नारी' ।

अंत्राळी-देखो 'अन्नाली' ।

अंत्राळी-देखो 'अन्नाली' ।

अंत्राहळी, अंत्राहोळी-देखो 'अन्नाहळी' ।

अन्धियारी-देखो 'अन्धारी' ।

अंद्रु, अंद्रुओ-देखो 'अंद्रुक' ।

अंद्रुक-पु० [सं०] १ हाथी का पैर बाँधने का रस्सा, सांकल, शृंगला । २ हाथी के पैर में डालने का काँटेदार यंत्र ।
३ म्त्रियों के पैर का आभूषण, पायजेव ।

अंद्रेस, अंद्रेसो-पु० [फा० अंद्रेशा] १ संशय संदेह । २ भ्रम, भ्रान्ति । ३ आणका, संभावना, भय । ४ अनुमान, अंदाज । ५ चिन्ता, फिक, सोच । ६ असमंजस, आभापीछा ।

अंद्रोर-पु० बोलाहल, जोर ।

अंद्रोळणी (बो)-क्रि० १ अंद्रोनिन करता, विनोड़ता ।
२ हिलाता । ३ उधर-उधर करता ।

अंद्रोह-पु० १ दुःख, संताप । २ खटका खतरा । ३ निन्हा, फिक । ४ खेद ।-वि० दुःख ।

अंद्रो-देखो 'अंध्री' ।

अंद्र-पु०-१ देखो 'आंध्र' । २ देखो 'इंद्र' ।

अंद्रजीत-देखो 'इंद्रजीत' ।

अंद्रससत्र-देखो 'इंद्रससत्र' ।

अंद्रायण-देखो 'इंद्रायण' ।

अंद्रासण-देखो 'इंद्रासण' ।

अंद्रि, अंद्रिय, अंद्रो, अंद्रोय-देखो 'इंद्रो' ।

अंध-वि० [सं०] १ दृष्टि हीन, अंधा । २ अचेत, अभावधान ।
३ निर्बुद्धि, जड़-बुद्धि । ४ उत्मत्त, पागल ।

—पु० १ अंधा प्राणी । २ अंधेरा, अंधकार । ३ जल, पानी ।
४ एक मुनि । ५ अंधकागुरु-दैत्य । ६ जिकारी । ७ डिगल गीतों का काव्य संबंधी एक दोष । ८ देखो 'आंध्र' ।

—क-पु० १ एक दैत्य । २ नेत्र ज्योतिहीन व्यक्ति ।

—कार-पु० १ अंधरा । २ पानाल । ३ शिव । ४ अज्ञान ।
५ मोह ।-कारी-पु० १ शिव, महादेव । २ एक रागिनी ।

—कूप-पु० १ घाम-हूस से भरा सूखा कुम्हाड़ा । २ एक तरह का

नाम । ३ अज्ञान । ४ घोर अंधकार ।—खोपड़ी-वि०
गुडि रहित मस्तिष्क वाला, मुख्य ।—घाती,
घातीक-पु० शिव । मूर्ध्नि । चन्द्रमा । अग्नि । दीपक ।

इ पु० आंधी, तूफान । ण-स्त्री० अन्धना । अंधापन ।

तमस पु० घोर अंधकार ।—ता-स्त्री० दृष्टिहीनता
की स्थिति, अंधापन । नेत्रों का एक रोग । सूखना,
अज्ञानता ।—तामसः तामिस-पु० घने अंधकार वाला
एक नरक । घोर अंधेरा ।—परंपरा-स्त्री० अनुकरण
मात्र । भड़ चाल ।—पूतना-स्त्री० बालकों का एक रोग ।
—विस्वास, विस्वास-पु० रुढ़िगत संस्कार । विवेकहीन
धारणा ।—सुत-पु० कृतराष्ट्र के पुत्र कौरव ।

अंधक-पु० [नं०] कश्यप व दिति का पुत्र एक दैत्य ।

—रप, रिप, रिपु, रिम-पु० शिव, महादेव ।

बिस्मिण पु० गोर देश का राजा व कुंति का पिता ।

अंधकार-पु० [गं०] १ अंधेरा । २ पाताल । ३ शिव, शंकर ।

४ अज्ञान, मोह ।

अंधकारयुग-पु० इतिहास का अज्ञातकाल ।

अंधायुध कि० वि० १ बिना किसी नियम या मिलमिले के ।

२ बेतहाशा । ३ बिना विचार के । ४ अधिकता से ।

—पु० १ अश्ववस्था, गड़बड़ी । २ अश्याय ।

३ भिगामस्ती । ४ घोर अंधकार ।

अंधारक-पु० [सं०] अंधेरा, तिमिर ।

अंधारी स्त्री० १ हाथी के कुम्भस्थल का आवरण । २ अंधड़ आंधी ।

३ अंधेरा, अंधकार । ४ दृष्टिहीनता की दशा । ५ मूर्च्छा ।

६ कृष्णपत्र की रात्रि । ७ योगियों द्वारा रखी जाने

वाली निमटी । ८ बैल की आंखों पर बांधने की पट्टी ।

—वि० अंधकारमय ।

अंधारु, अंधारु, अंधारु, अंधारी, अंधियार, अंधियारी-पु० [सं०]

अंधकार, प्रा०-अंधार] १ अंधेरा, अंधकार । २ धुंधलापन ।

—पञ्च-पु०-कृष्ण एक ।

अंधियारणी (बो)-कि० अंधेरा होना, अंधेरा करना ।

अंधियावणी-वि० धुंधला, अंधकार पूर्ण ।

अंधीझाड़, अंधीझाड़ी-देखो 'आंधीझाड़ी' ।

अंधेर-देखो 'अंधारी' ।

अंधेरखाती-पु० [सं० अंधकार-] फा० खाती] १ अश्ववस्था,

कृष्णवध । २ अश्वनिकम । ३ अश्विदेव । ४ अनाचार ।

अंधेरी-स्त्री० बैलों के आंखों पर की पट्टी (मेवात) २ देखो 'अंधारी' ।

अंधेरी-देखो 'अंधारी' ।

अंधी-देखो 'आंधी' ।

अंध्य-देखो 'आंध्र' ।

अंध्यानी देखो 'अंधारी' ।

अंध्र-देखो 'आंध्र' ।

अंध्रय-पु० एक देश का नाम ।

अन-देखो 'अन्न' ।—दाता, दातार=अन्नदाता ।

—पूरणा=अन्न पूरणा ।

अनार-देखो 'अनार' ।

अनि, अनेरी-देखो 'अन्य' ।

अनेसड़ी-देखो 'अनेसी' ।

अन, अंबक-पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ चन्द्रमा ।

३ आभा, कांति । ४ देखो 'अंबिका' । ५ देखो 'अंबुधि' ।

६ देखो 'अंबु' । ७ देखो 'अंबुद' । ८ देखो 'आंबी' ।

९ देखो 'अंबर' । १० देखो 'अंबा' । ११ विता । १२ आंख,

नेत्र ।

अंबकास, (आस)-देखो 'आंग्राम' ।

अंबकेसर, (केसर)-देखो 'अंबिकेसर' ।

अंबज-देखो 'अंबुज' ।

अंबजेत्र-पु० फत्वाग ।

अंबध (धि)-देखो 'अंबुधि' ।

अंबनिध (निधि)-देखो 'अंबुनिधि' ।

अंबर-पु०-[सं०] १ आकाश, तम । २ वस्त्र । ३ कपाम ।

४ केसर । ५ डब । ६ एक मृगधन द्रव्य विशेष । ७ अमृत ।

८ अंबक । ९ छामिर नगर । १० घेरा, परिधि । ११ पड़ोस ।

१२ पाप । १३ शून्य । १४ वादन । १५ देखो 'आंबी' ।

—चर-पु० पक्षी । आकाश में घूमने वाला ।—डंबर-पु०

सूर्यास्त का समय । संघा की नातिमा ।—सणि पु० सूखे ।

—राव-पु० सूखे ।

अंबरवेल, (वेलि)-देखो 'अमरवेल' ।

अंबराई स्त्री० [सं० आम्बर-राजि] आम वृक्षों की पंक्ति, समूह ।

अंबराळ-पु० [सं० अंबर-] रा-] आळ] आममान, आकाश ।

अंबरि-देखो 'अंबर' ।

अंबरीक, (ख, स), अंबरीसक-पु० [सं० अंबरीक] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव । ३ सूर्य, सूरज । ४ एक सूर्यवंशी

राजा । ५ भाड़ । ६ एक मर्ष ।

अंबवेळा-पु० [सं० अम्बु-वेळा] । समुद्र, सागर ।

अंबवठ-पु० [सं० अम्बवठ] १ चिनाय नदी के पास वमा एक

प्राचीन जनपद । २ उक्त स्थान का निवासी ।

अंबवठा स्त्री० [सं० अम्बवठा] मालती ।

अंबहर, अंबहरि-पु० [सं० अम्बुवर] १ उम्बर । २ वादल ।

३ समुद्र, सागर । ४ आकाश, आगमान । ५ देखो 'अंबुहर' ।

अंबा-स्त्री० [सं०] १ देवी, दुर्गा, शक्ति । २ माता, जननी ।

३ पार्वती, उमा । ४ काशीराज की बड़ी पुत्री । ५ शीतला

मातृका । ६ गृथी, घरनी । ७ ग्राम । ८ असुना की एक

महायक नदी ।—देवी-स्त्री० देवी, दुर्गा ।—पौहरण पु० शीतला

की सवारी, गध्रा । — य, यजो-स्त्री० दांता राज्य की आगध्या देवी ।

अंबाड़ी-स्त्री० १ हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला होता ।

२ पीछा विशेष जिसकी छांव से रस्सी बनती है ।

अंबाड़ी-वि० मिलने वाला ।

अंबार-पु० [फा०] ढेर, समूह । राशि ।

अंबारत, अंबारथ-देखो 'दमारत' ।

अंबारी-देखो 'अंबाड़ी' ।

अंबाळा, अंबाळिका, अंबाळी-स्त्री० [सं० अंबालिका] १ काशी नरेश की कन्या । २ मालती लता । ३ जननी, माता ।

अंबि, अंबिक, अंबिका, अंबिकी-स्त्री० [सं० अम्बिका] १ माता, जननी, दुर्गा, पार्वती । ३ माधवी लता ।

४ काशीराज की मध्यमा पुत्री । ५ जैनियों की एक देवी ।

—आलय-पु० देवी का मन्दिर । —नाथ पत, पति-पु० शिव, महादेव । —वन-पु० पुराण प्रसिद्ध इलायत खण्ड जहां जाने से पुरुष स्त्री हो जाते थे । —सुत-पु० धृतराष्ट्र ।

अंबिल-देखो 'अंमिल' ।

अंबोहल्लद (दी)-देखो 'अंबाहल्लदी' ।

अंबु-पु० [सं०] १ पानी, जल । २ रक्त का जन्मीय अंश । ३ जन्मकुंडली का चतुर्थ स्थान । —स्त्री० ४ कान्ति । ५ चार की संख्या । —ज-पु० चन्द्रमा । कमल । वेंत । जंख । कपूर । सारस पक्षी । घोषा । ब्रह्मा । वस्त्र । अवेत वर्ण । एक सामुद्रिक चिह्न । जल में उत्पन्न प्राणी । —वि० जल में उत्पन्न । —जात-पु० कमल । —द-पु० मेघ, बादल । —धर-पु० बादल, मेघ । इन्द्र । —धि-पु० समुद्र, जल निधि । जलपात्र । —नाथ-पु० समुद्र, सागर । —निध, निधि-पु० समुद्र, सागर । बादल, मेघ । —प-पु० समुद्र । वरुण । शनभिषा । नक्षत्र । —वि० पानी पीने वाला । —पत, पति, पती, राज-पु०-सागर, समुद्र । वरुण । —बाह, बाह-पु० बादल । —रासि, रासी-पु० समुद्र । —सायी-पु० विष्णु । अमुर । पितर । चार की संख्या* । —हर-पु० सूर्य, अग्नि ।

अंबुओ-अंबुवो

अंबुज-सुत-पु० यौ० [सं०] ब्रह्मा, विरंचि ।

अंबुजा-स्त्री० [सं०] १ एक रागिनी विशेष । २ कमलिनी । ३ कुमुदिनी ।

अंबुजासण, अंबुजासन-पु० [सं०] १ ब्रह्मा जिनका आसन कमल है । २ सरस्वती । ३ कमलासन ।

अंबुजासना-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी जिसका आसन कमल है ।

अंबुवा, अंबुवो-वि० १ आस्र के रंग का । २ खट्टा ।

अंबुवाळ-वि० तेजस्वी कानिबान । —पु० गावू राठौड़ का

नामान्तर ।

अंबु-देखो अंबु ।

अंबुऔदही-पु० खट्टा दही ।

अंबुडो-देख 'अंबो' ।

अंबोडु, अंबोडो-पु० [सं० आस्र-वृक्ष]-१ केरीनुमा बोटी, बेगि । २ एक प्रकार का वृक्ष ।

अंबोद-देखो अंबुद ।

अंभ-पु० [सं० अंभस्] १ जल, पानी । २ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । ३ आकाश, नभ । ४ लग्न से चौथी राशि । ५ चार की संख्या । ६ देव । ७ अमुर । ८ पितर । ९ राशि । १० बादल । ११ देखो 'अंबा' । —ज-पु० चन्द्रमा । सारस पक्षी । कमल । —द, धर-पु० बादल, मेघ । —धि, निध, निधि, रासि-पु० समुद्र, सागर ।

—रुह, रुह-पु० कमल । सारस ।

अंभा-देखो 'अंबा' ।

अंभोज, अंभज-पु० १ कमल । २ चन्द्रमा । ३ मोती । ४ अंज । ५ घोषा । ६ वज्र । ७ जल से उत्पन्न वस्तु । ८ ब्रह्मा । ९ वेंत । १० सारस पक्षी । ११ ब्रह्मा की उपाधि ।

अंभोद-पु० [सं०] बादल, मेघ ।

अंभोनिध, (निधि, रासि)-पु० समुद्र, सागर ।

अंभोर, अंभोरुह, अंभोरु, अंभोरुह-पु० [सं० अंभोरुह] कमल ।

अंमणीमाण-देखो 'अमलीमाण' ।

अंमोहल्लद (दी) देखो 'अंबाहल्लदी' ।

अंम्रत-देखो 'अमरत' ।

अंम्रां-मर्व० हम ।

अंबर-१ देखो 'अंबर' । २ देखो 'अवर' ।

अंबळउ, अंबळऊ-देखो 'अंबळी' ।

अंबळाई-स्त्री० १ चक्कर, एमाव, । २ देहापन, वक्रता । ३ कुटिलता । ४ दुरुहता ।

अंबळी-वि० (स्त्री० अंबळी) १ विपन्न, विपरीत । २ कष्ट-दायक, दुखदाई । ३ वक्र, टेढ़ा, तिरछा । ४ दुर्गम, दुरुह । ५ धुमावदार, चक्करदार । ६ सुन्दर । ७ अद्भुत, विचित्र । —पु० १ शत्रु । २ गिरवी रखा हुआ माल । ३ प्रसव के समय बच्चे का गर्म में ही देहा होने की क्रिया या स्थिति । ४ बुरा समय, आपाद् स्थिति ।

अंबार-स्त्री० १ विलंब, देर । २ अवसर, मौका, । ३ शीघ्रता, त्वरा । ३ भड़ बेरी के कटे पीछों का बड़ा गोला ।

अंबारणी-देखो 'वारणी' ।

अंबारियां, अंबारिये-स्त्री० एक प्रकार की अचेतावस्था (रोग)

जिसमें किसी व्यक्ति का जीव कुछ अवधि तक विभिन्न लोकों में भ्रमण कर पुनः लौट आता है। (रुद्रि)

अक्षर स्त्री० १ देखभाल, निगरानी। २ हिफाजत, सुरक्षा। ३ विलय, देना। ४ निवृत्ति। ५ समेटना क्रिया।

अक्षरणी (बौ)—क्रि० १ देखभाल करना, निगरानी करना। २ हिफाजत या सुरक्षा करना। ३ समेटना, पूर्ण करना।

अक्ष-पु० [गं० अक्ष-अंशः] १ भाग, हिस्सा। २ भाज्य अंक। ३ भिक्ष का अंश (लकीर के ऊपर का अंक)। ४ सोलहवां भाग। ५ चौथा भाग। ६ वृत्त की परिधि का ३६० वां भाग (रेखा ग.) ७ लाभ का हिस्सा। ८ बारह आदित्यों में से एक। ९ दिन। १० कंधा। ११ कला। १२ वंशज। १३ वीर्य। १४ शक्ति। १५ अक्षांश। १६ देखो 'अंशु'।
—रूढ-स्त्री० कुवड़, कुकुद। —धारी-वि० दैवि शक्ति भ युक्त। अवतारी। वंशज। बलवान, शक्तिशाली, वीर, बहादुर। हिस्सेदार, भागीदार।

अक्षक-पु० [गं० अक्षकः] १ मेघ आदि राजि का तीसरा भाग। २ अक्षधारी। ३ भाग, हिस्सा। ४ दिवस, दिन।

अक्षली-वि० अक्ष का।

अक्षाप, (फ)—देखो 'अक्षाप'।

अक्षावतार-पु० [सं० अक्ष-अवतार] वह पुरुष जिसमें ईश्वरी शक्ति का अंश हो।

अक्षी-वि० अक्षधारी, हिस्सेदार।

अंशु-पु० [सं० अंशु] १ सूर्य। २ तेज। ३ किरण, रश्मि। ४ दीप्ति, कानि, ज्योति। ५ छोर, सिरा। ६ सूक्ष्मांश, परमाणु। ७ किञ्चित्, लेशमात्र। ८ वेग। ९ पोशाक। १० गति, रफ्तार। ११ देखो 'अंशु'।

—जाळ-पु० किरणजाल, समूह। —धर, धारी-पु० गुर्वं। अग्नि। चन्द्रमा। दीपक। ब्रह्मा। देवता। वीर पुरुष। वंशज। —पति, पत्नी-पु० सूर्य। चन्द्रमा।

—अरतार-पु० सूर्य। —सांण, मनि-पु० सूर्य। चन्द्रमा। सूर्यवंशी राजा मगर का पति। —साळी-पु० सूर्य। चन्द्रमा। अग्नि। दीपक। देवता। —वन-पु० अंशु, अथु।

अंशुक-पु० [सं० अंशुक] १ आरीक या महीन वस्त्र। २ रेशमी वस्त्र।

अंशुपात-पु० अशुपात।

अंशु—१ देखो 'अंशु'। २ देखो 'अंशु'।

अह, अहंतम-पु० [सं० अहंस्, अहंति] १ बाधा, रुकावट, विघ्न। २ कष्ट, पीड़ा। ३ दुख, चिन्ता। ४ व्याकुलता, त्वरा। ५ अपमान, अन्याय। ६ पाप। सर्व०—मैं।

अनु०—खामने या टसकने का शब्द।

अहंति-स्त्री० [सं०] १ बलिदान, त्याग। २ दान। ३ योग, व्याधि। ४ कष्ट, पीड़ा। ५ अभिमान, गर्व।

अ, अ-उप० [सं०] संज्ञा या विशेषण शब्दों के पूर्व में लग कर विपरीत अर्थ सूचित करने वाला उपसर्ग। स्वर शब्दों के पूर्व लगने समय इसका रूप 'अन्' हो जाता है।

—पु० १ विष्णु, ब्रह्मा। २ ब्रह्मा। ३ अग्नि। ४ इन्द्र। ५ वायु। ६ कुबेर। ७ अमृत। ८ विश्व। ९ ललाट। १० शिव। ११ कृष्ण। १२ सूर्य। १३ चन्द्रमा। १४ प्राण। १५ मुख। १६ समय का भाग। १७ दण। कीर्ति। १८ प्रजा। १९ शिखा। २० पादपूरक वर्ण।

अहंघाण—देखो 'ईधण'।

अहंसज—देखो 'ऐसी' (स्त्री० अहंसी)

अह—देखो 'अति', 'अई'।

अहसज—सर्व० १ यह, ये। २ इसकी, इनकी।

अहयाळ—देखो 'अवाळ'।

अहयौ—देखो 'अईयौ'।

अहराक, अहराकि, (की) १ देखो 'गिराक'। २ देखो 'गिराकी'।

अहरापल, अहरापति, अहरापती—देखो 'गिरावत'।

अहरावती—देखो 'गिरावती'।

अहरेग—देखो 'अतिरेक'।

अहंसि—देखो 'ऐसी'।

अहहह—क्रि० वि० ऐसा, ऐसी।

अहहवि—क्रि० वि० [सं० अवाकि] १ अब। २ ऐसे।

अई, अईज—क्रि० वि० १ व्यर्थ, फिजूल, बेमतलब। २ ऐसे ही।

अई, अईयौ—अव्य [सं० अपि] १ अरे, हे। (संबोधन) २ बाह-वाह। (ध्वनि)

अउ—सर्व० १ ओ का प्राचीन रूप, वह। २ यह।

अउक—पु० गर्भवती स्त्री का जो मचलाने की अवस्था या भाव।

अउगाढ—देखो 'अवगाढ'।

अउगाळ—१ देखो 'अवगाळ'। २ देखो 'ओगाळ'।

अउगुण—देखो 'अवगुण'।

अउड़ी—देखो 'अहोड़ी'।

अउछाड़—देखो 'अछाड़'।

अउज—स्त्री० अयोध्या।

अउमकई—क्रि० वि० [प्रा०] अकस्मात्, अचानक, सहमा।

अउमणई, अउमणै—पु० १ दहेज। २ देखो 'उजमणौ'।

अउठणौ, (बौ)—क्रि० १ देखो 'ओठणौ'। २ देखा 'ऊठणौ (बौ) ३ देखो 'ओठणौ (बौ)।

अउठ—देखो 'आठ'। २ देखो 'ऊठ'।

अउत—देखो 'अऊत'।

अउथि, अउथी—देखो 'ओथ'।

अउधारिक—पु० आधार।

अउब—वि० [गं० अउभूत] आश्चर्यजनक, अदभुत, विचित्र।

—गत, गति, गति-स्त्री० विचित्र गति, अद्भुत रीति ।

—गत-क्रि० वि०—विचित्र ढंग से ।

अउबणी—१ कांपना, धरना । २ देखो 'ऊबणी' (बी)

अउर—१ देखो 'और' । २ देखो 'उर' । ३ देखो 'और' ।

४ देखो 'अपर' ।

अउरति—देखो 'औरत' ।

अउरसिहर—पु० एक प्रकार का भवन ।

अउल्लगंड, अउल्लगंड, क्रि० वि० [प्रा०] १ अतिदूर, दूर ।

२ अलग ।—पु० प्रवास ।

अउल्लगण—पु० [प्रा०] प्रवास । यात्रा ।—स्त्री० प्रवास में साथ रहने वाली स्त्री ।

अउल्लगणी, (बी)—देखो 'उल्लगणी, (बी)'

अउल्लौ—देखो 'अवल्ली' ।

अउसर—देखो 'अवसर' ।

अऊंकार—१ देखो 'ओंकार' । २ देखो 'आवकार' ।

अऊंली—देखो 'अवल्ली' (स्त्री० अऊंली)

अऊथाहणी, (बी) देखो 'उगाणी (बी) ।

अऊठ (ठी) देखो 'हूँठा' ।

अऊत, अऊतियौ—वि० [सं० अपुत्रक] १ निःसंतान, ना औलाद ।

[सं० अयुक्त] २ अयोग्य (संतान)(कुपुत्र) । ३ अनुचित ।

४ बेवकूफ । ५ अधोमति गया हुआ ।

अऊब—देखो १ 'अव' २ देखो 'ऊब' ।

अओड़ी—देखो 'ओहड़ी' ।

अकंटक—वि० [सं०] १ निर्विघ्न, निष्कंटक । २ शत्रुहीन ।

अकंपण, (न)—वि० [सं० अकंपन] कंपन रहित, स्थिर ।

—पु० १ कंपन का अभाव । २ रावण की सेना का एक योद्धा ।

अक—पु० [सं०] १ रंज, चिता । २ कण्ट, पीड़ा, दुःख । ३ पाप, अधर्म ।—बक—स्त्री० बकवास, प्रलाप । धड़का, खटका ।

चतुराई ।—वि० निस्तब्ध, भौचक्का । देखो 'अरक' ।

अकड़—स्त्री० १ ऐंठन, तनाव । २ अहंकार, घमंड, स्वाभिमान ।

३ डिठाई, वैशमी । ४ हठ, जिद्द, दुराग्रह । ५ वक्ता, वांका-

पन । ६ लड़ाई । ७ बंधन ।

—बाई, बाई, वायु, बाय—स्त्री० एक वात-रोग जिसमें

शरीर की नसों में तनाव आजाता है ।—बाज—वि०

हेकड़ीबाज, शेखीबाज । घमंडी ।—बाजी—स्त्री० हेकड़ी,

शेखी, ऐंठ, घमंड ।—मकड़—स्त्री० ऐंठन, तनाव, गर्व, तेजी,

आत-वान ।

अकड़णी, (बी)—क्रि० १ मूखने के कारण सिकुड़ कर ऐंठ

जाना । २ ऐंठन या तनाव पड़ना, मरोड़ खाना । ३ कड़ा

पड़ जाना, मस्त हो जाना । ४ मर्दी में ठिठुरना । ५ मुन्न

होना । ६ टेढ़ा होना, बक होना । ७ शरीर को

तानना, तान कर चलना । ८ हठ या जिद्द करना ।

९ अभिमान या गर्व करना । १० किसी बात पर अड़ जाना ।

११ गुस्सा या क्रोध करना । १२ धमकी देना, डराना,

रोव दिखाना । १३ धुष्टता करना ।

अकड़ाई—देखो 'अकड़' ।

अकड़ाळ—वि० १ जवरदस्त । २ हेकड़, अड़ियल । ३ घमंडी ।

अकड़ाव—पु० अकड़ने की अवस्था या भाव, ऐंठन, तनाव ।

अकड़ी (डी)—वि० शक्तिशाली, बलवान ।

अकड़ू, अकड़ूबाज—देखो 'अकड़वाज' ।

अकड़त—देखो 'अखड़ैत' ।

अकड़ौ—देखो 'आकड़ौ' ।

अकच—वि० [सं०] केज रहित, गंजा ।—पु० १ केतु का नामान्तर । २ जैन साधु ।

अकच्छ—वि० नंगा, नग्न । २ व्यभिचारी, लंपट ।

अकज, अकज्ज—देखो 'अकाज' ।

अकठ—स्त्री० वह मादा पशु जिसका दूध आसानी से निकलता हो ।

अकठौ—देखो 'ऊकठौ' ।

अकडोडियौ—देखो 'आकडोडियौ' ।

अकड, अकडियोडौ, अकडियो—वि० [सं० अकथित] बिना गर्म किया हुआ । (दूध)

अकतार, अकतियार, अकत्यार—देखो 'इकत्यार' ।

अकथ्य, अकथ—वि० [सं० अ+कथ्] १ न कहने योग्य । न कहा जा सके, अवर्णनीय । २ कथन या वर्णन शक्ति से परे ।—कथ, कथा—स्त्री० अकथनीय वान या कहानी ।

अकथा—स्त्री० [सं०] १ कुकथा । २ अपभाषा, चुनीबात ।

अकथ्य, अकथ्य—देखो 'अकथ' ।

अकनकुंवार स्त्री० [सं० अखण्ड + कौमार्य] १ कुंवारापन, कौमार्य, अविवाहिता अवस्था । [सं० अखण्ड—कुमारी] २ कुमारी कन्या, अविवाहिता कन्या ।—वि० अविवाहिता, कुमारी, अक्षन योनि ।

अकन कुंमारी, अकन कुंवारी वि० [सं० अखण्ड + कौमार्य] (स्त्री० अकन कुमारी, अकन कुंवारी) १ अविवाहित, कुंवारा । २ अखंड कौमार्य व्रत धारण करने वाला ।

अकपट—वि० [सं०] १ कपट रहित, निश्चय । २ सरल, सीधा ।

अकबक—वि० अवाक, निस्तब्ध ।—स्त्री० व्यर्थ वकभक, असंबद्ध प्रलाप ।

अकबकणी (बी), अकबकणी (बी)—क्रि० १ व्यर्थ प्रलाप करना, २ व्याकुल होना, चिंता करना । ३ अवाक् या निस्तब्ध रह जाना ।

अकबरी

(१४)

अकलाणी

अकबरी—स्त्री० प्राचीन सोने का सिक्का । २ एक प्रकार की मिटाई । ३ लकड़ी पर की जाने वाली खुदाई ।

—वि० अकबर का, अकबर संबंधी ।

अकबार—देखो, 'अखबार' ।

अकबाल—देखो 'दुकवाल' ।

अकथ, अकथ, अकथ—वि० [प्रा.] अकार्थ, व्यर्थ ।

अकर वि० [सं०] १ कर रहित, बिना हाथों का । २ जो कुछ करने योग्य न हो, अकर्मण्य । ३ न करने योग्य । ४ कठिन, दुष्कर । ५ जिस पर कोई कर या महशूल न हो, कर मुक्त । ६ जबरदस्त, भयंकर । ७ पराक्रमी । ८ निष्पाप ।

अकरण—पु० [सं०] १ इन्द्रियों से रहित, परमात्मा । २ फल रहित कर्म । ३ न करने योग्य कार्य । ४ पाप ।

[सं० अ-+कर्णः] ५ मर्ष, सांप । ६ बहुरा व्यक्तित्व ।

-वि० [सं० अ-+कर्णः] १ कर्ण रहित, बिना कानों का । २ बहुरा सं० [अ-+कारण] ३ बिना कारण का । ४ असंभाव्य ।—करण—पु० ईश्वर परमात्मा ।

अकरता—वि० [सं० अ-+कर्ता] १ कर्म न करने वाला, अकर्मण्य । २ जो कर्मों में निमित्त हो । कर्म मुक्त ।

करब—पु०-वृत्तिका राशि । २. मुख पर श्वेत वालों वाला अंगुष्ठ छोड़ा । ३ विच्छिन्न ।

अकरम—पु० [सं० अ-+कर्म] १ न करने योग्य कार्य, अनुचित कार्य । २ बुरा काम, पाप अधर्म । ३ अपराध, भूल । ४ बुरा आचरण या व्यवहार । ५ मन्यास । ६ काम न की दशा ।

-वि० [सं० अकरम] १ बेकार, काम रहित, अकर्मण्य । २ बिना काम का, अस्त-व्यस्त । ३ निष्क्रिय, आलसी, निकम्मा ४ क्रमहीन ।

अकरमक—स्त्री० [सं० अकरमक] एक प्रकार की क्रिया जिसमें कर्म की आवश्यकता नहीं होती ।—पु० कर्म से परे तत्त्व, ईश्वर ।

अकरमण्य, अकरमण्य—वि० [सं० अकरमण्य] १ निकम्मा, आलसी । २ कर्म रहित, बेकार, निष्ठला । ३ किसी कार्य के प्रति अयोग्य । ४ पापी, दुष्कर्मी । ५ अपराधी ।

अकरमी—वि० [सं० अ-+कर्मिन्] १ बुरा काम करने वाला । २ पापी, दुष्कर्मी । ३ अपराधी । ४ मुक्त, आलसी । ५ पतित, नीच । ६ अयोग्य । ७ जो कर्म न करता हो, मन्यासी ।

अकरम—देखो 'अकरम' ।

अकराड़णी, (बी)—क्रि० कंकरयुक्त ठोस जमीन पर नंग पाव अधिक चलने से पैरों के तलों में विकार होता, तनाव होना ।

अकरार—वि० कमजोर, अशक्त, निर्बल ।

अकराळ—देखो 'विकराळ' ।

अकरास—देखो 'उकरास' ।

अकरिती—देखो 'अकरती' ।

अकरण—वि० [सं०] १ जिसमें कण न हो, दयाहीन । २ जिसमें कोमलता न हो, सख्त, ठोस । ३ निर्दयी, हृदय हीन, क्रूर । ४ कण रस से हीन ।

अकरूर, अकरूरि—देखो 'अकरूर' ।

अकराळणी (बी) अकरेळणी (बी)—देखो 'उकराळणी, (बी) ।

अकलंक—वि० [सं० अ-+कलङ्क] १ कलंक रहित, निष्कलंक । २ दोष रहित, निर्दोष । ३ बेदाग, स्वच्छ ।

—ता—स्त्री० निष्कलंकता । निर्दोषता । स्वच्छता ।

अकळ—पु० [सं० अकल] १ ईश्वर, परब्रह्म । २ शिव । ३ परब्रह्म की उपाधि विशेष ।

-वि० १ जो विभक्त न हो सके, अविभाज्य, पूर्ण, । २ अपार, असीम विशाल । ३ अगम्य । ४ अगोचर । ५ निराकार, निर्गुण । ६ अखिल, सम्पूर्ण । ७ समर्थ, शक्तिशाली । जबरदस्त । ८ वीर, बहादुर । ९ व्याकुलता रहित । १० दोष रहित निर्दोष । ११ व्याकुल, आतुर । १२ अविचल । १३ पूर्ण, पूरा । १४ चतुर, निपुण । १५ भव्य । १६ चंचल । १७ दृढ़, अटल । १८ भयंकर, भयावह । १९ निष्कलंक—गति—स्त्री० वह अवस्था या गति जिसका ज्ञान मनुष्य न लगा सके ।

अकल—स्त्री० [अ० अकल] १ बुद्धि, ज्ञान, समझ । २ युक्ति । ३ चतुराई ।

—बाड, बाढ—स्त्री० बयस्क होने पर निकलने वाली दाढ़ विशेष ।—बार—वि० बुद्धिमान, समझदार ।—नघान, निघान—वि० बुद्धिमान । चतुर । पंडित ।—बायरी—वि० मूर्ख, अज्ञानी ।—संब—वि० बुद्धिमान, समझदार । चतुर ।—संदी—स्त्री० बुद्धिमान, चतुराई—वान, वाळी—वि० बुद्धिमान ।

अकलकरी—पु० [सं० अकल-करम] एक प्रकार की औषधि विशेष ।

अकलकुमारी—स्त्री० यौ० [सं० अखण्ड-कुमारी] पृथ्वी, धरती । —वि० अखण्ड कीमती वस्तु धारण करने वाली ।

अकलपनीक—वि० साधु की मर्यादा के विरुद्ध या विपरीत (जैन)

अकलमस—वि० [सं० अ-+कलमस] निष्पाप, निष्कलंक ।

अकळा—स्त्री० विजली ।

अकळाणी, (वणी)—वि० घबराहट पैदा करने वाला, अकुला देने वाला । (स्त्री० अकळावणी)

अकळाणी, (बी)—क्रि० १ व्याकुल होना, आतुर होना । २ घबराना, भयभीत होना ।

अकळावणो, (बौ)—घबराहट पैदा करना, अकुला देना ।

अकलाळो—देखो 'अकलवालो' ।

अकलि—देखो 'अकल' ।

अकलीम—पु [अ० अकलीम] १ देश, राष्ट्र, राज्य । २ बाद-शाहत, शासन । ३ ऊपर का मांतवां लोक ।

अकलीस, अकलेस—पु० [सं० अ-क्लेश] दुख का विपर्याय, मुख ।
—वि० क्लेश रहित, सुखी । देखो 'अखिलेस' ।

अकलेसर, अकलेसुर, अकलेस्वर—देखो 'अखिलेस' ।

अकली—पु० १ गर्मी, उष्णता । २ उमस, तपन ।

अकल्पत, अकल्पित—वि० [सं० अकल्पित] १ जो कल्पित न हो, मच्चा, वास्तविक । २ जो कल्पना से बाहर हो या परे हो ।

अकल्पनीक—देखो 'अकल्पनीक' ।

अकल्पवत—वि० बुद्धिमान ।

अकल्याण—पु० [सं० अकल्याण] १ अमंगल, अशुभ । २ अहित ।

अकवानन्द—पु० भीम ।

अकवीस—देखो 'इक्वीस' ।

अकस—पु० [अ०] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह । २ विरोध, वैर, शत्रुता ।
३ कोप, क्रोध । ४ अमर्ष । ५ ममता, बराबरी । ६ गर्व, घमंड । ७ जोश । ८ शौर्य, पराक्रम [फा० अवस] । ९ व्याघ्र ।
१० प्रतिविंब । ११ चित्र, तस्वीर । १२ प्रभाव ।
—[सं० आकाश] १३ व्योम, आकाश ।—कि० वि० १ गर्व से ।
२ गेठन के साथ । ३ ईर्ष्या से, द्वेष से ।

अकसणो, (बौ)—देखो 'अकस्मणी' (बौ) ।

अकसमात—देखो 'अकस्मात' ।

अकसर—कि० वि० [अ०] प्रायः, बहुधा, अधिकतर ।

अकसीर—स्त्री० [अ० अकसीर] १ रसायन, कीमिया । ३ सब रोगों को नष्ट करने वाली दवा—वि० १ अचूक, अमोघ, अव्यर्थ । २ निश्चित प्रभाववाली ।

अकसी—देखो 'अकस' ।

अकस्मात—कि० वि० [सं०] १ सहसा, अकाल, अनायास ।
२ संयोगवश ।

अकस्स—देखो 'अकस' ।

अकस्सर—वि० [अ० अकस] १ कोप करने वाला । २ ईर्ष्या करने वाला ।

अकस्सरणो, (बौ)—कि० १ कोप करना । २ ईर्ष्या करना ।
३ जोश में आना ।

अकह—देखो 'अकथ' ।

अकहो—वि० बिना कहा हुआ, बिना आज्ञा का ।

अकापा—वि० [सं० अ-कल्पित] १ न कांपने वाला, कंपन रहित । २ जितेन्द्रिय ।

अकाम—पु० [सं० अकाम] १ बुरा कार्य, दुष्कर्म । २ विघ्न ।

३ नाश, संहार ।—वि० १ कामना रहित, निष्काम, इच्छा रहित । २ उदासीन । ३ अकारण, व्यर्थ ।
४ देखो 'अकाज' ।

अकामो—वि० [सं० अ-कामिन्] १ कामना रहित, निष्काम, निस्पृह । २ जितेन्द्रिय । ३ बेकाम, निकम्मा ।

अकाई—वि० पूर्ण, सम्पूर्ण ।

अकाज—पु० [सं० अ-कार्य] १ कार्य की हानि, हर्जा, नुकसान ।
२ अनिष्ट, अहित, अमंगल । ३ विघ्न, बाधा, अड़चन ।
४ बुरा कार्य, कुकर्म । ५ नाश, ध्वंस । ६ मृत्यु, अवसान ।
७ दुख, कष्ट, पीड़ा । ८ अधर्म । ९ देखो 'अकाम' ।
—वि० १ बुरा, खराब । २ कायर, डरपोक ।—कि० वि० बिना मतलब से, व्यर्थ में ।

अकाजि, अकाजी—वि० १ 'अकाज' करने वाला ।
२ देखो 'अकाज' ।

अकाथ—कि० वि० १ अकारण, वृथा । २ देखो 'अकथ' ।

—वि० [सं० अकथ] अकथनीय ।

अकाय—वि० [सं०] १ काया या देह, रहित, अदेह, निर्गुण, निराकार । २ जन्म न लेने वाला, अजन्मा ।

—पु० १ ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्मा । २ कामदेव । ३ पवन ।

४ शक्ति, बल ।

अकार—पु० [सं०] १ 'अ' वर्ण । २ देखो 'आकार' ।

—वि० [सं० अ-कार-सीमा] १ मर्यादा रहित, सीमा रहित, वेहद । २ बेकार, बेकाम ।

अकारज—देखो 'अकाज' ।

अकारण, अकारणीक, अकारणीक—वि० १ बिना कारण का, हेतु रहित । २ स्वयंभू ।—कि० वि० बिना कारण के, व्यर्थ में, बेमब्रवमे ।

अकारथ—वि० [सं० अकारथार्थ] बेकार, व्यर्थ, फिजूल ।

अकारिप—वि० [सं० अ-कारिप] अकृत्रिम, स्वाभाविक ।

अकारी—स्त्री० कूले पर बैलों की बारी-बारी से जोतने का निर-धारित समय ।—वि० १ बुरी, खराब । २ दर्द करने वाली, दर्दनाक । ३ तेज, तीव्र ।

अकारी—वि० (स्त्री० अकारी) १ तीव्र, तेज । २ कठोर, कड़ा सख्त । ३ महान्तेजस्वी, औजस्वी । ४ बलवान, शक्तिशाली ।
५ समर्थ, सक्षम । ६ भयंकर, भीषण । ७ तीक्ष्ण, तेज ८ अत्यधिक, ज्यादा । ९ विकट, संकट पूर्ण, ।

अकारच—देखो 'अकाज' ।

अकाल—पु० [सं० अकाल] १ दुःख, दुष्काल । २ कुमय, अमय । ३ अनुपयुक्त समय, अशुभ समय । ४ अनुपयुक्त अवसर । ५ घाटा, टोटा, कमी । ६ मौत, मृत्यु । ७ काल ने परे, परमात्मा । ८ अमर ।

—क्रि० वि० असामयिक, बेसमय । —कुसम, कुमुम-पु०
विना मौसम या ऋतु का फूल । —जळव-पु० असमय के
बादल । पुरस, पुस-पु० सिक्ख धर्म का ईश्वर ।
—पुसप, पुस्प- = 'अकाल कुमुम' —सूरत-पु० अवि-
नाशी पुष्प, ईश्वर । —सौत, अतु, अितु-स्त्री० असामयिक
निधन, अत्यायु की मृत्यु । —वरसटो, वरसठी, वस्टो, वस्टो
—स्त्री० अमभय की वर्षा ।

अकाळही —स्त्री० विजली, बिजुत ।

अकाळणी-स्त्री० काली सपिणी ।

अकाळि, अकाळी-पु० [सं० अकाल-ई] १ सिक्खों का एक
संप्रदाय । २ इस संप्रदाय का अनुयायी । —वि० १ भयंकर,
भोग्य, कराल । २ जो श्याम वर्ण का न हो, श्वेत ।

अकाळी-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ जो श्याम न हो ।

अकास-देखो 'आकास' ।

अकासवांगी, अकासवांनी-देखो 'आकासवांगी' ।

अकासवेल, अकासवेल-देखो 'आकासवेल' ।

अकासविरत-देखो 'आकासवर्ति' ।

अकासि, अकासी-देखो 'आकासी' ।

अकिचन, अकिचनक-वि० [सं० अकिचन] १ निर्धन, कंगाल,
दीन । २ असमर्थ । ३ तुच्छ, न्यून । ४ कर्मशून्य,
अपरिश्रमी । ५ महत्वहीन ।

अकियारथ-देखो 'अकारथ' ।

अकिल-१ देखो 'अखिल' । २ देखो 'अकल' ।

अकिलज्योति-देखो 'अखिल ज्योति' ।

अकिलदाड, अकिलदाढ-देखो 'अकलदाड़' ।

अकीक, अकीकी-पु० [फा० अकीक] एक प्रकार का लाल पत्थर ।
जो गंडा-ताबीज में काम आता है ।

अकीन-पु० [अ० यकीन] विश्वास, भरोसा ।

अकीनी-वि० [अ० यकीनी] १ विश्वास करने योग्य, विश्वासी ।
२ निश्चित ।

अकीरत, अकीरति, अकीरतो-देखो 'अपकीरति' ।

अकीरतिकर अकीरतीकर-वि० [सं० अ-कीतिकर] अपयज-
कारी, बदनामी करने वाला ।

अकीरत-देखो 'अपकीरति' ।

अकुंठ, अकुंठत, अकुंठित-वि० [सं० अकुंठ] १ तीक्ष्ण, पैना ।
२ तीव्र, वेगवान । ३ खरा, उत्तम । ४ खुला हुआ ।

५ स्वतन्त्र । ६ निर्दिष्ट । ७ अत्यधिक । ८ जो कुंठित न हो ।
अकुंठित-वि० [सं०] १ जो टेढ़ा न हो, बक्र न हो । २ सीधा ।
३ सरल, सहज ।

अकुपार-पु० [सं० अकुपारः] १ सागर, समुद्र । २ सूर्य भानु ।
३ बड़ा, कच्छप । ४ वह विशाल कछुआ जिसकी पीठ पर
भूमि टिकी हुई है ।

अकुहड़-वि० १ अकूर, अकठोर । २ अक्रोधी । ३ सरलचित्त ।

—पु० १ नीच कुल । २ शिव का एक नाम ।

अकुल-वि० [सं० अकुल] १ परिवार हीन । २ नीच कुल का,
अकुलीन । —पु० १ नीच कुल । २ परमात्मा, परमेश्वर ।

अकुलणी-वि० १ व्यभिचारिणी । २ नीच कुल की ।

अकुलणी, (बौ)-देखो 'आकुलणी, (बौ) ।

अकुलाणी-वि० १ उत्तेजित । २ आतुर, व्यग्र । ३ भयभीत ।
४ शोघ्न आवेग वाला ।

अकुलाणी, (बौ), अकुलावणी (बौ)-क्रि० १ व्याकुल होना,
आतुर होना, व्यग्र होना । २ घबराना । ३ विह्वल होना ।
४ उत्तेजित होना । ५ कुड़ होना । ६ संज्ञाहीन या चेतना
हीन होना । ७ ऊबना, उकताना । ८ दुःखी होना ।

अकुली, अकुलीण, अकुलीन, अकुलीन-वि० [सं० अकुलीन]
१ नीच कुल का, कुजाति । २ वर्ण संकर । ३ शूद्र ।
४ कमीना, नीच, अधम ।

अकुसल-वि० [सं० अकुशल] १ अमंगलकारी, अशुभ, बुरा ।
२ अनाड़ी, अदक्ष । ३ भाग्यहीन, हतभाग्य । ४ गुणहीन ।
५ अयोग्य ।

अकुसलता स्त्री०-[सं० अकुशलता] १ अमंगलता, अशुभता ।
२ अदक्षता, अनाड़ीपन । ३ अयोग्यता । ४ गुणहीनता ।

अकुसली-वि० १ कौशलहीन । २ अप्रमत्त, नाखुश । ३ अयोग्य,
गुणहीन ।

अकूली-वि० १ पूर्ण, पूरा । २ अधिक । ३ निपुण, दक्ष ।

अकूत, अकूतण-वि० अपार, अपरिमित ।

अकूठ, अकूत, अकूतण-वि० अपरिमित, अत्यधिक ।

अकूपार-देखो, 'अकुपार' ।

अकूरड़ी-देखो 'उकरड़ी' ।

अकेल, अकेली-देखो 'एकली' (स्त्री० अकेनी)

अकेवड़ियो, अकेवड़ी अकेवळी-देखो 'इकेवड़ी' ।

अकोट-वि० [सं० आ-कोटि] १ करोड़ तक । २ करोड़ से
कम । ३ बिना कोट का । ४ जहाँ परकोटा न हो ।

अकोतर-देखो 'इकोतर' ।

अकोतरसी-देखो 'इकोतरसी' ।

अकोतरी-देखो 'इकोतरी' ।

अकोर-पु० १ भेंट उपहार । २ उत्सर्ग, बलि ।

अकोविद-वि० [सं०] १ मूर्ख, नासमझ, अज्ञानी । २ अपठित ।
३ अनाड़ी ।

अक्क-१ देखो 'आक' । २ देखो 'अरक' ।

अक्कल-देखो 'अकाल' ।

अक्कळा-स्त्री० भयंकर रूप धारण करने वाली देवी । दुर्गा,
कालिका । —वि० अंगहीन, अणिष्ठ ।

अक्षर-वि० उद्भूत, शरारती, उहड़ । २ वात-वात पर अक्षरने वाला । ३ भगवान् । ४ अमभ्य, बदतमीज । ५ निर्भय, निडर । ६ स्पष्ट वक्ता, खरा । ७ मस्त, मौजी । ८ पका, हुआ ।

अक्षरणी (बी)-देखो 'आखणी' (बी)

अक्षत-देखो 'अक्षत' ।

अक्षर-देखो 'अक्षर' ।

अक्षरावली-देखो 'अक्षरावली' ।

अक्षर-देखो 'अक्षर' ।

अक्षराया-पु० १ अनाज के कण । २ तीर्थकर (जैन)

अक्षरवट-देखो 'अक्षरवट' ।

अक्षरारथ, अक्षरार्थी-देखो 'अक्षरार्थ' ।

अक्षर-देखो 'अक्षर' ।

अक्ष-स्त्री० १ नृत्य की एक पद भुजा । २ नृत्य का एक भाव ।

अक्षत-पु० [सं० अ+कृत्य] पाप, अपराध, कुकृत्य, दुष्कर्म ।

अक्षर-वि० [सं० अ+कृत] १ बिना किया हुआ ।

२ बिगड़ा हुआ । २ स्वयंभू ।

अक्षतघण-वि० [सं० अक्षतघण] कुतज ।

अक्षति-स्त्री० [सं० अ+कृति] बुरी करनी, अकार्य, कुकृत्य ।

अक्षतिम, अक्षतिम-वि० [सं० अक्षतिम] १ जो बनावटी न हो,

प्राकृतिक । २ स्वाभाविक । ३ वास्तविक ।

अक्षर-पु० १ समय देना । २ कम का अभाव ।-वि० १ कम

होना बिना कम का । २ देखो 'अक्षर' ।

अक्षरमण्य-देखो 'अक्षरमण्य' ।

अक्षरमादावृत्त-वि० पाप नष्ट करने वाला । (ईश्वर)

अक्षर-१ देखो 'अक्षर' । २ देखो 'अक्षर' ।

अक्षर-पु० अक्षरमण, हमला ।-वि० अक्षरजित ।

अक्षर-देखो 'अक्षर' ।

अक्षरि, अक्षरि-देखो 'अक्षरि' ।

अक्षरि-देखो 'अक्षरि' ।

अक्षरि-वि० निरूप निराकार ।-पु० परमात्मा । ईश्वर ।

अक्षरि-वि० [सं०] १ जो खरीदा हुआ न हो ।

२ देखो 'अक्षरि' ।

अक्षर, अक्षरि, अक्षरि पु० एक यादव जो कृष्ण के चाचा

थे ।-वि० कूर न हो, दयालु, सहृदय ।

अक्षर-पु० क्रोध का अभाव ।

अक्षर-वि० [सं०] क्रोध रहित, शान्त ।

अक्ष-पु० [सं०] १ चौमर का खेल । २ चौमर का पाया ।

३ चक्र । ४ धुरी । ५ पृथ्वी की धुरी । ६ पृथ्वी की अक्षांश

रेखा । ७ माटी । ८ रुद्राक्ष । ९ तगरू की डांडी ।

१० सोलह माण के एक तोला, कर्प । ११ एक पैमाना ।

१२ काटन । १३ मुकदमा । १४ आँख, नेत्र । १५ जान ।

१६ जनेन्द्रिय । १७ आत्मा । १८ प्रतिविम्ब, छाया ।

१९ तस्वीर । २० गङ्गा । २१ नूतिया । २२ सुहागा ।

२३ बेहड़ा । २४ मर्प । २५ अक्षयकुमार ।

—क-पु० बेहड़ा ।-कुमार-पु० रावण का एक पुत्र ।

—माछा-स्त्री० रुद्राक्ष की माता ।

अक्षर-वि० [सं०] १ बिना दूटा हुआ, अव्यक्त । २ जिसकी

धृति न हो । २ समुचा । ३ जो विभाजित न हो, अवि-

भाजित ।-पु० १ शिव । २ चावल । ३ अनाज, अन्न ।

४ यव, जौ । ५ कल्याण, मंगल । ६ हिजड़ा नपुंसक ।

—जोनि, योनि-स्त्री० वह युवती या स्त्री, जिसका पुरुष

से समागम न हुआ हो ।

अक्षर-वि० [सं०] १ क्षमता रहित, अक्षम । २ अक्षत,

कमजोर । ३ विवश, लाचार । ४ अधीर, आतुर । ५ क्षमा

रहित, असहिष्णु । ६ ईर्ष्या ।-ता-स्त्री० असामर्थ्य,

अक्षमता । अक्षतता, कमजोरी । विवशता, लाचारी ।

अधीरता, । असहिष्णुता । ईर्ष्या ।

अक्षर-वि० [सं०] १ अनश्वर, अविनाशी । २ सदा बना रहने

वाला, स्थाई । ३ जिसकी धृति न हो । ४ जो कभी

समाप्त न हो । ५ अक्षर ।-पु० परमात्मा, ईश्वर ।

—अमावस-स्त्री० वैशाख की अमावस्या ।-कुमार-पु०

रावण के एक पुत्र का नाम ।-त्रितिया, तीज-स्त्री०

वैशाख शुक्ला तृतीया ।-घांस-पु० मोक्ष, वैकुण्ठ ।-नम,

नमी, नवमी-स्त्री० श्राद्धपक्ष की नवमी तिथि । कात्तिक शुक्ला

नवमी तिथि ।-पाव-पु० गौतम ऋषि ।-वट, वट-पु०

प्रयाग (गया) में स्थित वट वृक्ष जो अक्षय माना गया है ।

अक्षर-पु० [सं०] १ अक्षर, वर्ण, हर्फ । २ ध्वनि संकेत, स्वर ।

३ शब्द । ४ आकाशादि तत्त्व । ५ परमानन्द, मोक्ष ।

६ शिव । ७ विष्णु । ८ ब्रह्मा । ९ आत्मा । १० आकाश ।

११ खड्ग । १२ जल । १३ तपस्या । १४ मत्स्य ।

१५ इंद्रा मन । १६ प्रारब्ध, भाग्य ।-कि० वि०

१ प्रायः अक्षर । २ अक्षर, महत्ता ।-वि०

१ अविनाशी, अनश्वर, अक्षर । २ अपरिवर्तनशील,

स्थिर । ३ नित्य । ४ अच्युत । ५ मत्स्य । निर्विकार ।

—अक्षर-स्त्री० अक्षरों की पंक्ति, अक्षर समूह ।

—कछा-स्त्री० ६४ कलाओं में से एक ।-गणित-स्त्री०

बीजगणित ।-च, चण, चु-पु०-लेखक । प्रतिलिपि कार ।

निपिक ।-च्युतक-पु० किसी अक्षर के जोड़ देने से किसी

शब्द का भिन्न अर्थ करना । एक खेल विशेष ।

—अक्षर-पु० भाव, लयाट । भाग्य ।

—मुष्टिका कथन-पु० बीजगणित कथाओं में से एक । अंगुलियों

के संकेत द्वारा बोलना ।

अक्षरवृत्त-पु० अक्षरवृत्त के बीजगणित में से प्रथम । (जैन)

अक्षांस—पु० [सं० अक्षांश] १ भूमध्य रेखा से उत्तर-दक्षिण का अन्तर। २ किसी मानचित्र में उत्तर से दक्षिण की ओर खिंची हुई रेखा या उस रेखा का अंश। ३ भूमंडल पर पृथ्वी में पश्चिम की ओर जाने वाली कल्पित रेखा।

अक्षि—स्त्री० [सं०] १ आँख, नेत्र। २ दो की संख्या।

अक्षिर—देखो 'अक्षर'।

अक्षी—देखो 'अक्षि'।

अक्षीय—वि० [सं०] १ क्षीण का विपर्याय, मोटा ताजा, पुष्ट। २ मयल। ३ सक्षम। ४ अविनाशी, अतश्वर।

—महाणसी, महाणसी, मांणसी—स्त्री० अन्नपूर्णा शक्ति, दान के लिये स्थापित अक्षय रहने की मिट्टि।

अक्षुण—वि० [सं० अक्षुण्ण] १ कभी न छूटने वाला, कभी समाप्त न होने वाला। २ अनन्त, असीम। ३ अखण्डित, अभ्रम्य। ४ समस्त, समूचा। ५ अपराजित। ६ अनाड़ी, अकृण्व। ७ अमाशरण, विजिप्त। ८ सदैव व निरन्तर रहने वाला।

अक्षोभ—पु० [सं०] १ दुःख, शोक या कष्ट के अभाव की अवस्था। २ शान्ति। ३ स्थिरता, दृढ़ता। ४ धीरता। ५ लोभ रहित अवस्था। —वि० १ स्थिर। २ धीर, मंभीर आन्त।

अक्षौहिणी स्त्री० [सं०] १ पूरी चतुर्गुणिनी सेना। २ मेना का एक परिमाण या संख्या जिसमें १०९३२० पैदल, ६२६१० घोड़े २१८७० श्व व २१८७० हाथी होते थे।

अखण्ड—पु० १ वेदांग पञ्च। २ देखो 'अखंड'।

अखंड—वि० [सं०] १ जो खण्डित न हो, अभ्रम्य। २ कभी न टूटने वाला, अटूट। ३ जो निरन्तर हो, अविच्छिन्न, अबाध। ४ अविभक्त। ५ सम्पूर्ण, समूचा। ६ अजर, अमर, अनश्वर। —पु० १ ईश्वर, परमात्मा। —स्त्री० २ गिरिजा, पार्वती।

—कुमारी—स्त्री० गिरिजा, पार्वती, कुमारी कन्या।

अखंडत—देखो 'अखंडित'।

अखंडन—वि० [सं० अखण्डन] १ जिसका खण्डन न हो, अखण्डित। २ पूर्ण, पूरा। ३ स्वीकृत, मंजूर। —पु० १ जहाँ खण्डन का अभाव हो। २ परमात्मा, ईश्वर। ३ ज्ञान, ममय।

अखंडल, अखंडलीत—देखो 'अखंडल'।

अखंडित—वि० [सं०] १ जो खण्डित न हो, अभ्रम्य। २ पूरा, समूचा। ३ जो निरन्तर हो, त्रिमका कम न टूटना हो, अटूट, निबाध। ४ विभाग रहित, अविच्छिन्न।

अखंडियालि—स्त्री० अक्षतयोनि स्त्री, कीमारिका।

अखंडो, अखंडो—देखो 'अखंड'।

अख—पु० बाग, बगीचा।

अखगरियो—पु० [फा. अखगरिया] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

अखड़—स्त्री० बिना जोती हुई भूमि, पत्नी। —पु० १ एक अशुभ घोड़ा जो ठोकर खाकर चलता है। २ देखो 'अखड़'।

अखड़णी (बो)—देखो 'अखड़णी (बो)'।

अखड़भूत—पु० घोड़ों का एक रंग।

अखड़ित, अखड़ित—वि० १ अकड़ने वाला। २ अड़ियल, भयङ्कर। ३ अलगाव, अकिञ्चली। ४ थोड़ा, वीर। —पु० पहलवान, मल्ल।

अखज, अखज—वि० [सं० अखज] जो खाने योग्य न हो, अखाद्य, कुपथ्य।

अखट—पु० अकड़ता हुआ चलने वाला घोड़ा (शा. हो.)

अखडो—पु० अक्षर।

अखण—पु० मुख, मुँह।

अखसी—स्त्री० १ मांस का जोरबा। २ यक्षिणी। ३ जिह्वा, जीभ। ४ कहनी, कथनी।

अखणी, (बो)—देखो 'आखणी (बो)'।

अखणियो—वि० कहने वाला।

अखत—वि० १ अटल, स्थिर, निश्चल। २ देखो 'अक्षत'।

अखतपीला—देखो 'पीला-आखा'।

अखतियार, अखत्यार, अखितियार—देखो 'इखत्यार'।

अखत्यारपण, (पणौ)—पु० १ स्वत्वाधिकार की भावना। २ अधिकार की भावना।

अखत्र—वि० १ भयंकर, भयावह। २ अगणित, अपार। ३ देखो 'अक्षत'।

अखन—देखो 'अखंड'।

अखनकंवारी—देखो 'अकनकंवारी'। (स्त्री० अखन कंवारी, कुमारी)।

अखनी—पु० [फा० अखनी] १ गका हुआ मांस या मांस का जोरबा। २ मंचित अन्न या धन राशि।

अखबार—पु० [अ०] दैनिक समाचारपत्र, मामाधिक समाचारपत्र। —नबीस—पु० पत्रकार।

अखम—वि० १ दण्डहीन, अत्रा। २ देखो 'अक्षम'।

अखमता—देखो 'अक्षमता'।

अक्षमाला—स्त्री० १ वशिष्ठ की पत्नी अक्षमती। २ देखो 'अक्षमाला'।

अखय—देखो 'अक्षय'।

अखयकुमार—देखो 'अक्षयकुमार'।

अखयकुमारी—देखो 'अकन कंवारी'।

अखयबड़ (बड़, बट)—देखो 'अक्षयबट'।

अखया—स्त्री० [सं. अखया] १ देखी, दुर्गा, महामाया। २ देखो 'अक्षय'।

अखर—देखो 'अक्षर'।

अखरणी

(११)

अमोः

अखरणी, (बौ)-कि० १ वृत्त महशूस होना, खलना ।
२ खटकना । ३ चुभना । ४ कण्ट प्रद लगना । ५ पसंद न आना ।

अखरब-वि० अत्यधिक, जगार ।

अखरावळि, (वळी)-देखो 'अक्षरावळि' ।

अखरे, अखर-वि० [सं० अक्षर] १ अपरिवर्तनीय, निश्चित ।
२ हट्ट पक्का । ३ अविनाशी । ४ अंकों की वज्राय अक्षरों में मिलित ।

अखरोट-पु० [सं० अक्षोट] १ एक प्रकार का सूखा भेडा ।
२ इस भेदे का वृक्ष । ३ जायफल । ४ जायफल का वृक्ष ।
५ वयण मगई का एक भेद ।

अखरौ-वि० १ जो खरा न हो, खंडा । २ झूठा । ३ कुचिम ।

अखल-वि० [सं० अ+खलः] १ जो छुट या खल न हो ।
२ देखो 'अखिल' ।

अखलीस, अखलेस, अखलेसवर, अखलेसुर, अखलेस्वर-
देखो 'अखिलेस' ।

अखद-देखो 'अखित' ।

अखसत्र-देखो 'अक्षत' ।

अखा देखो 'अक्षत' ।

अखाड़-१ देखो 'अखाड़ी' २ देखो 'आगाड़' ।

अखाड़मल, (मल्ल), अखाड़सिद्ध, अखाड़सिध (ध)-पु० १ पहलवान मल्ल । २ योद्धा, वीर । ३ बलवान, शक्तिशाली व्यक्ति ।
४ महापुरुष, महात्मा ।

अखाड़ांसद पु० योद्धा, वीर ।

अखाड़ी-पु० [सं० अक्षवाट] १ कुशी या मल्ल-युद्ध करने का स्थान, व्यायामशाला । २ साधु-मंडली । ३ साधु-सम्प्रदाय का मठ । ४ माने बजाने या तमाशा दिवाने वालों की जमात । ५ दल-समूह । ६ सभा, दरबार । ७ रंग भूमि, नाट्यशाला । ८ अड्डा । ९ युद्धस्थल । १० युद्ध ।
११ चमत्कारपूर्ण कार्य । १२ दंगल ।

अखाड़िषी-वि० 'अखाड़े' में खेलने वाला, दंगली ।

अखाज, अखाध-देखो 'अखज' ।

अखाड (ड़) देखो 'आगाड़' ।

अखाडड़-देखो 'अखाड़ी' ।

अखि १ देखो 'अक्षि' । २ देखो 'अक्षय' । ३ देखो 'अखित' ।

अखिमात, अखिमाति-देखो 'अखियात' ।

अखित देखो 'अक्षत' ।

अखियात स्त्री [सं० अख्याति] १ कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि ।
२ अद्भुत या आश्चर्यजनक बात । ३ अपकीर्ति, अदनामी ।
४ स्मरणीय बात या कार्य । वि० १ प्रसिद्ध, मशहूर ।
२ अद्भुत, अनीखा । ३ चिन्स्यायी अविनाशी ।
४ देखो 'अख्याति' ।

अखिर १ देखो 'अखिर' । २ देखो 'अक्षय' ।

अखिल, अखिलि वि० [सं०] १ पूर्ण, सम्पूर्ण । २ अखण्ड ।

अखिलज्योति पु० परब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर ।

अखिलेसर, अखिलेस्वर पु० [सं० अखिलेश, अखिलेश्वर]
१ ईश्वर, परमात्मा । २ परब्रह्म ३ श्रीकृष्ण । ४ श्रीरामचंद्र ।

अखी-वि० विख्यात, प्रसिद्ध । -स्त्री० १ विजय, जीत ।

२ देखो 'अक्षि' । ३ देखो 'अक्षय' ।

अखीअमावस देखो 'अक्षयअमावस' ।

अखीबड़-देखो 'अक्षयवट' ।

अखीण-देखो 'अक्षीण' ।

अखीर-देखो 'अखिर' ।

अखूती-वि० (स्त्री० अखूनी) १ उतावला । २ आतुर ।
—पु० योद्धा ।

अखूनी-स्त्री० १ यवनों की एक जाति । २ इस जाति का व्यक्ति, मुसलमान ।

अखूट, अखूठ-वि० [सं० अ+क्षुत] (स्त्री० अखूटी) १ कभी न खुटने वाला, अक्षुण्ण । २ अत्यधिक, अपार । ३ अखण्डित, अभय । ४ समस्त, समूचा । ५ निरन्तर, अटूट ।

अखेग, अखेगी-देखो 'अखंग' ।

अखे देखो 'अक्षय' ।

अखेद पु० [सं० अखेद] प्रसन्नता, शांति । शोक या वेद का अभाव ।

अखेनम-देखो 'अक्षयनम' ।

अखेपाद-देखो 'अक्षयपाद' ।

अखेवड़, अखेयवड़, अखेयवट, (वड़) देखो 'अक्षयवट' ।

अखेट-देखो 'अखेट' ।

अखेटक-देखो 'अखेटक' ।

अखेल-वि० १ न खेलने वाला ईश्वर । २ देखो 'अखिल' ।

अखेली, अखेली-वि० [सं० अ+कल] १ सम्भावस्था में बचने व्याकुल । २ जो खेलता न हो । ३ विविध अद्भुत ।
४ जो खेलता न जा सके ।

अखेस-वि० [सं० अ+क्षेम] १ युद्ध में निर्विप्लव ।

[सं० अ+क्षेप] २ आश्विन, तिथि । ३ परब्रह्म, ईश्वर ।

अखेह, अखेह्य-वि० १ जिग पर रज न हो, निर्मल, साफ ।
२ देखो 'अक्षय' ।

अखंग, अखंगी देखो 'अखंग' ।

अखै-१ देखा 'अक्षय' । २ देखो 'अक्ष' ।

अखैकुमार देखो 'अक्षयकुमार' ।

अखेपाद देखो 'अक्षयपाद' ।

अखेवड़, अखेवड़, अखेवट-देखो 'अक्षयवट' ।

अखेमाळ-देखो 'अक्षमाला' ।

अखोड़, अखोड १ देखा 'अखरोट' । २ देखो 'अखोट' ।

अखोरा, अखोली, अखोहल, अखोहली, अखोहिल, अखोहलि,
अखोहीणी-देखो 'अखोहिणी' ।

अखा १. देखा 'अखा' (स्त्री० अखा) । २. देखो 'अक्षयकुमार' ।
अखोड़ वि० [गं० अ० अ० अ०] १. सज्जन, माधु, भद्र ।
२. निर्दोष निष्कलक । ३. सुन्दर । ४. अक्षयगुण रहित ।
५. देखा 'अखोड़' ।

अखाँल, अखाँली, अखाँहल, अखाँहली, अखाँहिल, अखाँहलि,
अखाँहीणी, अखोहीलि, अखोहीणी-देखो 'अखोहिणी' ।
अखखली, (बी) देखो 'अखखली' (बी) ।

अखखर देखो 'अखखर' ।

अखलावर, अखलावर-पु० [फा० आत्मनः] वह घोड़ा जिसके
जन्म से ही अण्डकोश की कौड़ी न हो । अधिक या घोड़ा ।
अखयर-देखो 'अखयर' ।

अख्यात-वि० [मं० अख्याति] १. जो प्रसिद्ध या मशहूर न हो ।
२. अविदित, अज्ञात । ३. बदनाम, निन्द्य
४. देखो 'अखियात' ।

अख्याति, अख्याती-स्त्री० [मं० अख्याति] १. अपकीर्ति,
अदनामी, निन्दा । २. अपसिद्धि । ३. देखो 'अखियात' ।
अख्यात-देखो 'अखयात' ।

अगज, अगजल, अगजली-वि० [मं० अगजल] १. जिसके पाग
कोई पहुँच न सके, अगम्य । २. जिसे कोई ज्ञान न सके,
अज्ञेय । ३. शीर घोड़ा । --पु० १. काम देव ।
२. देखो 'अगंजी' ।

अगंजली, (बी) क्रि० मं० [मं० अगजलन्] विजय
पटना, जीतना ।

अगंजी पु० [मं० अगजलन्] १. गद । २. देखो 'अगंज' ।

--गज, गंजली-वि० अज्ञेय को जीतने वाला, अप्रतिहत ।

अगंजी देखो 'अगंज' ।

अगंभ वि० [मं० अ० गंभ] जो गर्भाशय वाग न करे, अवतारी ।
१. पु० १. ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म । २. ब्रह्मा । ३. विष्णु ।
४. महेश, शिव ।

अग-वि० [मं०] १. चलने में अगमर्थ । २. जिसके पाग कोई
पहुँच न सके । अगम्य । ३. स्थावर । ४. वक्रगति ।

पु० [मं० अग] १. पहाड़ । २. पेड़, वृक्ष । ३. भड़ा,
पद । ४. मुख, रथि । ५. भय, माँस । ६. मान की मन्था ।
७. देखा 'अग' । ८. देखा 'अग्य' । ९. देखो 'अग्र' ।
१०. देखो 'अग्नि' । ११. यज्ञ कीर्ति । १२. मर्यादा, सीमा ।
१३. ज-वि० पहाड़ में उदय । पहाड़ों में रहने वाला । वृक्ष
पर रहने वाला । --पु० सिंह । हाथी । पक्षी । जिलाजीत ।
--जा-स्त्री० पार्वती । --नग- 'अग्नि-नग' । --जीत-वि०
जो जीता न जा सके, अज्ञेय । विजय में अग्रणी ।

देखो 'अग्रजीत'—भू= 'अग्निभू' । --हर= 'अग्रहर' ।
--हरणी= 'अग्रहरणी' ।

अगड़-देखो 'अगाड़ी' ।

अगजवी-देखो 'अगुगु' ।

अगड़-वि० [मं० अघटनम्] १. अघटित । २. अगम्य ।
३. भयंकर । ४. आगे रहने वाला, अग्रणी । --पु० १. दर्प,
चंद्र । --क्रि० वि०--१. अगाड़ी, आगे । २. देखो
'अगड़' । --वगड़-वि० व्यर्थ, निरर्थक । अगम्य, अगम्य ।
--पु० व्यर्थ प्रताप ।

अगड़, अगड़, अगड़-पु० [देग] १. गोक, आड़, छोट । २. बांध,
बंध, अवरोध । ३. प्रतिबंध, रुकावट, मनाही । ४. व्यवधान,
बाधा । ५. मर्यादा, सीमा । ६. दो हाथियों के बीच की
दीवार । ७. हाथी का बंधस्थल । ८. हाथियों का अक्षाड़ ।
९. देखो 'अकड़' । --झाड़-वि० भयंकर, डरावना । क्रूर ।

अगड़ाळ, अगड़ाळी-पु० १. मकान के अग्र भाग पर बना
ढलुवा छपर । २. ढलुवा छपर वाला भाग ।

अगणत-देखो 'अगणित' ।

अगण-पु० [मं०] १. काव्य रचना में अशुभ माने जाने वाले
गण । २. देखो 'अग्नि' । ३. देखो 'अग्र' । ४. देखो 'अगण्य' ।
अगणत, अगणित-वि० [मं० अगणित] १. जिसकी गणना न
की जा सके । २. अगम्य, अपार ।

अगली-देखो 'अगनी' ।

अगली-वि० [मं० अग्र+ग. गी] पूर्व का, पहले का,
प्राचीन, अगला ।

अगण्य वि० १. जिसकी गणना न हो । २. देखो 'अगण' ।

अगत, अगति, अगती-स्त्री० [मं० अगति] १. दुर्गति, दुर्दशा ।
२. प्रेत योनि । ३. नरक वास । ४. दाहादि क्रिया । ५. जीव
की अश्वगति में होने की अवस्था । ६. जड़ता, स्थिरता ।
--वि० १. जिसमें गति न हो, गतिहीन । २. उपाय रहित ।
३. मोक्ष से वंचित । ४. प्रेत योनि प्राप्त । ५. बुरी गति का ।
६. स्थिर । ७. दीर्घ सूत्री, आलसी ।

अगतिवार-देखो 'अगतिवार' ।

अगतिवी, अगतीवी-वि० [मं० अगति+वा. वी] १. जिसकी
गति या मोक्ष न हुआ हो, मोक्ष से वंचित । २. प्रेत योनि
में गया हुआ ।

अगती-पु० [देग] १. अहिंसा या देव पूजा की दृष्टि से किया
जाने वाला कायविक्रम । २. मजदूरों का अवकाश दिवस ।

अगत्य, अगत्य, अगत्य, अगत्य, अगत्य, अगत्य,

अगत्य, अगत्य-देखो 'अगस्त' ।

अगव-पु० [मं०] १. स्वास्थ्य । २. विष नाश करने का
विज्ञान । ३. वैद्य । ४. दवा, औषधि । --वि० १. स्वस्थ,
निर्दोष । २. न बोलने वाला, मौनी । --राज-पु० अमृत, मुधा ।

अग्न-स्त्री० १ दक्षिण-पूर्व के मध्य की दिशा, आग्नेय । २ इस दिशा का दिक्पाल । ३ देखो 'अगनी'।-कण= 'अगनी-कण'।

—कोट = 'अगनीकोट' । —कुंड = 'अगनीकुंड' ।

—कुळ= 'अगनीकुळ' । —कूण, कोण= 'अगनीकोण' ।

अग्न-पु० [सं० अग्नि-नग] ज्वाला मुखी पर्वत ।

अग्नियौ-पु० १ एक कांटेदार वृक्ष विशेष । २ एक रोग विशेष । ३ देखो 'अग्नियौ' ।

अग्न, अगनी-वि० १ काला, श्याम । २ रक्त मिश्रित रंग का —स्त्री० [सं० अग्नि] १ आग, अग्नि । २ गार्हपत्य, आहुनीय तथा दक्षिण तीन प्रकार की हवन की अग्नि । ३ उदरस्थ पाचन शक्ति, जठराग्नि, वैश्वानर । ४ पंच तत्वों में से एक, तेज, प्रकाश । ५ गरमी, उष्णता । ६ पित्तनामक दोष । ७ अग्नि-देव । ८ माया । ९ मोना, स्वर्ण । १० चित्रक, चीता । ११ भिलावा । १२ नीवू । १३ घांटे के मध्य की भौरी । १४ तीन की संख्या । १५ 'र' का प्रतीक । १६ अग्निकोण का देवता ।

—अगार, अगार-पु० अग्निदेव का मन्दिर, आग का घर ।

—अस्त्र पु० एक प्राचीनकालीन अस्त्र जिसे भय में चलाने पर आग की वर्षा होती थी । तोप । बंदूक ।

—आधान-पु० अग्नि की विधिवत स्थापना । अग्निहोत्र ।

—उत्पात-पु० अग्नि का कोई अणुम संकेत । अग्नि का उपद्रव । उत्कापात ।-कंवर, कंवार, कुंमर, कुंमार, कुंवर,

कुंवार, कुमार—पु० स्वामिकान्तिकेय, पंडान्त । एक रसोपधि । —कण-पु० अंगारा, शोला, चिनगारी ।

—करम-पु० आग का पूजन । अग्निहोत्र, हवन । श्रवदाह ।

—काठ, काष्ठ-पु० अग्न का वृक्ष व लकड़ी ।

—किरिया, क्रिया-स्त्री० दाह संस्कार, अस्थेष्टि क्रिया ।

—कोट-पु० आग में निवास करने वाला समंदर नामक कीड़ा । —कुंड-पु० आग जलाने का कुण्ड । यज्ञ कुण्ड ।

गर्म जल का मोता । एक तीर्थ का नाम । —कुळ-पु० एक क्षत्रिय वंश । —हूण, कोण-पु० दक्षिण-पूर्व का कोण,

आग्नेय दिशा । —केत, केतु —पु० शिव का एक नामान्तर । धूम, धुआ ।-क्रिया स्त्री० दाहसंस्कार ।

—कोड़ा-स्त्री० अग्निहोत्राजी । प्रकाश, दीपमानिका,

रोशनी । —गरब, गरभ-वि० जिसके भीतर आग हो ।-पु० शमोवृक्ष । पृथ्वी, धरती । सूर्यकान्त मणि । —जंतर,

जंत्र,—पु० बंदूक, तोपदि अस्त्र । —ज, जात-वि० आग से उत्पन्न । —पु० मोना, स्वर्ण । विष्णु । पंडान्त । —जीभ

—स्त्री० आग की लपट या ली । अग्नि की मात जिह्वएं-

करानी, धूमिनी, श्वेता, लोहिता, नील लोहिता, सुवर्णा

श्रीर पदरागा । —जुग, युग-पु० ज्योतिष के पांच-पांच

वर्ष के १२ युगों में से एक ।

—ज्वाळ, ज्वाळ-स्त्री० १ आग की लपट ज्वाला ।

कलितारी नामक पौधा, धव वृक्ष । —दाग, दाह

—पु० अग्नि संस्कार । दग्ध करने की क्रिया

—दीपक, दीपण-पु० पाचन शक्ति बढ़ाने वाली औषधि ।

—देवा-स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र । —नग-पु० ज्वालामुखी

पहाड़ । —पत्थर-पु० चकमक का पत्थर । —परीक्षा-स्त्री०,

अग्नि-स्नान । मोना, चांदी आदि को तपाने की क्रिया ।

—पुराण-पु० अठारह पुराणों में से एक । —प्रतिष्ठा,

प्रतीष्ठा-स्त्री० विवाहादि मांगलिक कार्यों पर अग्नि की

विधिवत् स्थापना । —प्रवेस, प्रवेसण-पु० सती होने की

क्रिया । —बाण-पु० वह तीर जो अग्नि की वर्षा करे ।

तोप । बंदूक । —बाप, बाव, बाधु-स्त्री० चाँगायों, विशेष-

कर घोड़ों का एक बात रोग । —बाहु-पु० धुआ, धुआ ।

—बीज-पु० मोना, स्वर्ण । 'र' वर्ण । —बोट-पु० भाग में

चलने वाली नाव, छोटा स्टीमर । —भं, भु, भू-पु० कृत्तिका

नक्षत्र । मोना, स्वर्ण । जल, स्वामिकान्तिकेय का एक

नामान्तर । —संथ-पु० यज्ञ के लिए आग निजालने का अरणी

नामक वृक्ष । मण, मणि, मणी, मिला, मिणि, मिला

—स्त्री० सूर्यकान्त मणि । आतशी, जीणा, आग्नी । —मांद

—पु० मंदग्निरोग-मुख-पु० देवता । ब्राह्मण । प्रेत । खटमल ।

—रोहणी, रोहिणी-स्त्री० काव का एक फोड़ा जिससे

तीव्र जलन होती है । —वंस-पु० अग्निकुल । —वाह-पु०

धुआ, धुआ । —वीरज-पु० मोना, स्वर्ण । —वि०

शक्तिशाली । —संस्कार, संस्कार-पु० दाह संस्कार,

अस्थेष्टि संस्कार । शव दाह । —सखा-सहाय-

पु० पवन, हवा । वीर अर्जुन । जंगली कन्नूर ।

धुआ, धुआ । —साक्षी, साख-स्त्री० अग्नि

(यज्ञ की) की माध्य में किया जाने वाला शृभाशुभ

कार्य । —साळ, साळा-स्त्री० वह स्थान जहाँ पवित्र अग्नि

रखी जाय । हवनस्थल । —सिखा-स्त्री० आग की लपट,

ली, ज्वाला । —मुद्धि, मुद्धी-स्त्री० अग्नि स्पर्श से

शुद्धिकरण । अग्नि-स्नान । —होतर, होत्र-पु० नियमपूर्वक

क्रिया करने वाला वैदिक कर्म । यज्ञ । —होतरी, होत्री

—वि० अग्निहोत्र या यज्ञ करने वाला । —पु० ब्राह्मणों

का एक वंश ।

अगनीवत-पु० [सं० अग्निवत] वेद की एक ऋचा का नाम ।

अगनीवति-स्त्री० जैनों के ८८ ग्रंथों में से ७९ वां ग्रंथ ।

अग्न-देखो 'अगनी' ।

अग्न्या-देखो 'अग्नित' ।

अग्न-वि० [सं०] १ जो चलने में असमर्थ हो । २ त्रिगो-

पाम कोई जान सके । ३ पहलें का । ४ दूरदर्शी ।

[सं० अग्न्या] ५ जहाँ कोई पहंच न सके, पहंच में गये ।

दुर्गम । ६ दुर्बोध, बुद्धि से परे । ७ न जानने योग्य ।
= काठेन । ९ विकट । १० दुर्लभ्य । ११ अघ्राप्य ।
१२ विकट । १३ बहुत गहरा, अथाह । १४ अत्यधिक,
अपार । --पुं० १ ईश्वर, परमात्मा । २ पर्वत, पहाड़ ।
३ वृक्ष, पेड़ । ४ मार्ग, रास्ता । ५ भविष्यत्काल ।
६ दूरदर्शिता । ७ सर्व । --गम-पुं० भीम । --इस्टी,
बुद्धि, बुद्धी बुधो वि० दृग्दर्शी । भविष्यहृष्टा ।
--साखी-वि० भविष्य वक्ता ।

अगमोपम-वि० [सं०] १ अथाह, अपार । २ अगम्य ।
--पुं० भीम ।

अगमू, अगम्य, अगम्य-देखो 'अगम' ।

अगम्या-स्त्री० सभोग या मैथुन के लिए अयोध्य या
निषिद्ध स्त्री ।

अगर-पुं० [सं० अगम] १ एक वृक्ष जिसकी लकड़ो
मुगंधित होती है । २ एक ग्रीष्मि । ३ चंदन ।
४ बैनिया सागोर का एक भेद । ५ एक छंद विशेष ।
--अश्व० [फा.] १ यदि । जो, मगर । २ देखो 'अश्व' ।

--वे-अश्व० यद्यपि । --दांन-पुं० मुगंधित अगर रखने
का स्थान । --वत्ती, वत्ती, वती वत्ती-देखो 'अगमवत्ती' ।

अगरगणी, (गंसी)-वि० [सं० अगमगण] १ 'प्रधान मुखिया' ।
२ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ अगुग्रा ।

अगरगणी देखो 'अगरगणी' ।

अगररत्न-मगररत्न-वि० वि० आगे पीछे, यथा विधि ।

अगररत्न अगररत्न-वि० [सं० अ-गर्भ] १ जिसने गर्भाशय में
वाम न किया हो, अवतारी । [सं० अ-गर्भ] २ गर्भ रहित ।
--पुं० ब्रह्म, ईश्वर । स्वयंभू ।

अगररवत्ती-स्त्री० अगर आदि से बनी मुगंधित वत्तिका ।

अगररवाळ-पुं० एक वैश्य-जाति । इस जाति का व्यक्ति ।

अगराजराणी, (बौ)-देखो 'अगराजराणी, (बौ) ।

अगरासरा देखो 'अगरासरा' ।

अगरैजी-पुं० एक प्रकार का पोड़ा विशेष ।

अगरैळ-पुं० [सं० अगम] ऊँट । अगर ।

अगळ-स्त्री० [सं० अगला] १ अगला । २ पार्श्व । --ज-वि० मुख ।
--बंध-पुं० एक प्रकार का आभूषण । --बगळ-वि० वि० अश्व
--उधर, आस-पाम, पार्श्व में ।

अगळ-उगळ-पुं० अंतर्मत्त, अंतर्गल प्रलाप ।

अगनू रणी, अगनू रणी-वि० [सं० अग-रणी] (स्त्री० अगनू रणी
अगनू रणी) । १ पूर्व का पहले का । २ प्राचीन, पुराना ।

अगनू देखो 'अगनू' (स्त्री० अगनी) ।

अगवांल-वि० [सं० अग-वांल] १ अगुवां, आगे वाला ।
२ प्रधान, नेता, प्रमुख । ३ अगवांली करने वाला ।

अगवांली, अगवाई-स्त्री० [सं० अग-वांली] १ स्वागत,
अगवाली । २ नेतागिरी, नेतृत्व । --वि० अगुवा,
अगणी नेता ।

अगवाडी, अगवार, अगवारी-पुं० [सं० अग-वाटक] घर के
आगे का भाग । पिछवाड़ा, पृष्ठ भाग ।

अगवारे, अगवारे-वि० वि० आगे, अगाडी, सामने, सम्मुख ।
अगस, अगसत, अगसत्त, अगसत्थ, अगसत्थ्य, अगसत्त, अगसत्ति,
अगसत्तय, अगसत्थो, अगसत्थ, अगसत्थो-पुं० [सं० अगसत्तिः,
अगसत्थः] १ एक पौराणिक कृषि, कुम्भज । २ एक
तारा । ३ एक पेड़ विशेष ।

अगहट, अगहटी-देखो 'अगहट' ।

अगहरण, अगहन-पुं० [सं० अगहण] मार्ग-शीर्ष मास ।

अगहर-वि० १ प्रथम, पहला । २ देखो 'अघहर' ।

अगांली-पुं० [देश] रूढ़ के किनारे पर गबी जाने वाली जिला
या बड़ा पत्थर ।

अगांली-स्त्री० [देश] लीपने (लान करने) की क्रिया ।

अगा-देखो 'आगे' ।

अगाऊ, अगाऊ-देखो 'अगाऊ' ।

अगाडी-वि० वि० [सं० अग, प्रा० अग-रा. डी] १ आगे ।
२ सामने, सम्मुख । ३ भविष्य में । ४ पूर्व, पहले ।
५ नाग नजदीक । --पुं० १ घोड़े के अगले पैर का बंधन ।
२ आगे का भाग । ३ गेता का प्रथम आक्रमण ।
--पिछाडी, पीछाडी-वि० वि० आगे-पीछे । --स्त्री०
घोड़े के अगले व पिछले पैरों में बांधी जाने वाली
सांकल या रस्ती ।

अगाजरणी, (बौ) देखो, अगाजरणी, (बौ) ।

अगाड़, अगाद, अगाध-वि० [सं० अगाध] १ बहुत गहरा,
अथाह । २ असीम, अपार । ३ अत्यधिक, बहुत । ४ अनिष्ट,
घना, गाढ़ा । गहन । ५ दुर्बोध । ६ वक्तव्य जटिलता ।
७ गंभीर । --जळ-पुं० अथाह-जल । लालाव, मरोवर ।
--वि० अनलस्पर्श । अगाध जल वाला । पण-पुं०
गहराई, गंभीरता, गहनता, घनापन । असीमता ।

अगात-वि० जलीर रहित, निराकार । --पुं० काम देव ।
गरब्रह्म, ब्रह्म ।

अगार-देखो 'अगा' ।

अगाळ-वि० १ अत्यधिक, बहुत । २ विशेष, खास ।
३ देखो 'अकाळ' ।

अगालग-वि० निरंतर ।

अगाळा-स्त्री० [देश] बगली ।

अगास-देखो 'आकास' ।

अगासुर-देखो 'अगामुर' ।

अगाह-वि० [का० अगाह] १ प्रगट, विदित । २ अनश्वर, अविनाशी । ३ जो जीता न जा सके, अजेय । [सं० गृ] ४ ग्रहण किया जाने वाला । —पु० परब्रह्म, ईश्वर ।
क्रि० वि०— १ आगे से, आईन्दा । २ पहले से ।
३ अगाड़ी ।

अगाहट, अगाठ-देखो 'आगाहट' ।

अगि-१ देखो 'अग्नि' । २ देखो 'आग' ।

अगिअर-देखो 'अजगर' ।

अगिअन-देखो 'अग्यान' ।

अगिअनी-देखो 'अग्यानी' ।

अगिना-स्त्री० [सं० अग्या] १ गाय, गी । २ देखो 'अगनी' ।

अगिनाभू-देखो 'अगनीभू' ।

अगियांन-देखो 'अग्यान' ।

अगियांनी-देखो 'अग्यानी' ।

अगिया-देखो 'आग्या' ।

अगियार, अगियार-देखो 'डग्यार' ।

अगिली अगित्स-देखो 'अगनी' (स्त्री० अगिनी) ।

अगिवांण-देखो 'आगीवांग' ।

अगिहिल-पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

अगी-देखो 'अग्नि' ।

अगीत-वि० १ न गाये जाने योग्य । २ न गाया जाने वाला ।

अगुंवा, अगुअ-वि० १ आगे चलने वाला, अग्रगण्य, अग्रणी ।

२ मुखिया, प्रधान । ३ नेता । ४ श्रेष्ठ । ५ मार्ग दर्शक ।

—क्रि० वि० अगाड़ी, आगे ।

अगुण-वि० [सं] १ जिसमें कोई गुण न हो, गुणहीन, निर्गुण ।

२ जिसमें कोई सदगुण न हो, अवगुणी । ३ निकम्मा ।

४ मूर्ख । ५ अनाड़ी । —पु० १ अपराध, दोष ।

२ खराबी, बुराई । ३ देखो 'उगुण' ।

अगुल-वि० १ [सं.] जो आत्मा का गोपन न करें । २ जो गुप्त न हो, प्रगट ।

अगुवाणी-देखो 'अगवाणी' ।

अगुवा-देखो 'अगुंवा' ।

अगुल-वि० मूर्ख, मूढ़ ।

अगुड-वि० [सं०] १ जो गूढ़ या रहस्य मय न हो, सीधा, सरल । २ जो छिपा न हो, प्रगट । ३ स्पष्ट ।

अगुण-१ देखो 'अगुण' । २ देखो 'उगुण' ।

अगेदर, अगेद-पु० [सं० अगेन्द्र] १ हिमालय । २ भुमरु पर्वत ।

अगे-देखो 'आगे' ।

अगेतो-वि० अग्रगामी, अग्रणी ।

अगेद-वि० [सं० अ + गे + म] निष्कलंक, वेदांग ।

अगेरणी (बी)-देखो 'उगेरणी (बी)' ।

अगे-देखो 'आगे' ।

अगेह-वि० [सं० अ + गृह] जिसका कोई घर न हो, बेघरवार ।

—पु० परब्रह्म, ईश्वर ।

अगोअगा-क्रि० वि० १ आगे, अगाड़ी । २ पूर्व, पहले ।

अगोखड़ी-पु० [सं० अग्र + वाट] घर का अग्रभाग ।

अगोचर-वि० [सं०] जिसका अनुभव इन्द्रियों से न हो

इन्द्रियातीत । २ अप्रत्यक्ष । ३ अप्रगट, अदृश्य ।

—पु० विष्णु, ईश्वर, परमात्मा । परब्रह्म ।

अगोली-देखो 'उगुणी' ।

अगोलग-देखो 'आगोलग' ।

अग-१ देखो 'अग्र' । २ देखो 'अगनी' । ३ देखो 'अग्र' ।

४ देखो 'अग्र' ।

अगली-देखो 'अगनी' ।

अगमबुद्धि, अगमबुद्धी-देखो 'अगमबुद्धि' ।

अगर-१ देखो 'अग्र' । २ देखो 'आगर' ।

अगल, अगली-क्रि० वि० १ सम्मुख, मगध । २ देखो 'आगल' ।

अगली-देखो 'आगल' (स्त्री० अगली) ।

अगली-देखो 'अगली' (स्त्री० अगली) ।

अगस्त-देखो 'अग्रस्त' ।

अगालि, अगाली-देखो 'अकाल' ।

अगि-देखो 'अगनी' । २ देखो 'अग्र' ।

अगिअन, अगियांण-देखो 'अग्यान' । २ देखो 'आगीवांग' ।

अगी, अगि-देखो 'अगनी' ।

अग्र-वि० [सं० अग्र] १ अनपद, अपद । २ जड़ बुद्धि, मूर्ख ।

३ अविवेकी । ४ जान हीन, अनुभव हीन ।

—ता०-स्त्री० अज्ञानता । जड़ता । मूर्खता ।

अग्र्यान-पु० [सं० अज्ञान] १ नाममकी, नादानी २ मूर्खता,

जड़ता । ३ अविद्या । ४ मिथ्या ज्ञान । ५ ज्ञानहीन-

अवस्था ।

अग्र्यानी-वि० [सं० अज्ञानी] १ नाममक, नादान । २ जड़-

बुद्धि, मूर्ख । ३ अपठित, अनाड़ी । ४ मिथ्या जानी ।

अग्र्या-देखो 'आग्या' ।

अग्र्यात-वि० [सं० अज्ञान] १ जो ज्ञात न हो । २ गुप्त, छिपा

हुआ । ३ अपरिचित । ४ वेगुध । ५ अज्ञानी ।

—जोवणा, यौवणा-स्त्री० उभरते यौवन के प्रति वेगुध,

मुग्धानाशिका । —वास-पु० गुप्त निवास स्थान, गुप्तवास ।

अग्र्यारस (सि, सी)-देखो 'एकादसी' ।

अग्नेय-वि० [सं० अजेय] १ जो जानने योग्य न हो, जिसे

जाना न जा सके । २ जो बुद्धि से परे हो, जानातीन ।

दुर्बोध ।

(अ-वि० [सं०] १ आगे का, अगला । २ सामने का, सम्मुख का ।
३ प्रथम, पहला । ४ पूर्व का आगे का । ५ श्रेष्ठ उत्तम ।
-क्रि० वि० १ आगे, अगली । २ सामने, सम्मुख । ३ पहले, पूर्व ।
-पु० १ आगे का भाग, मिरा । २ अवलंबन, सहारा ।
३ भूमि । ४ शिखर । ५ नेता, नायक । ६ आहार की
मात्रा । ७ प्रारंभ, शुरुआत । ८ मोर के ४८ अंशों के
बराबर का तीन । -कर-पु० अंगुली । पहली किरण ।
-कारी-वि० अग्रणी, अगुवा । -ग, गण्य, गन्ध-वि०
गणना में प्रथम । मुख्य । नेता, नायक । -गांभी-वि०
आगे चलने वाला, अगुवा । प्रधान, नेता । -ज, जनमा,
जन्मा, जात । जज-पु० बड़ाभाई । ब्रह्मा । ब्राह्मण नेता,
नायक । -वि० प्रथम जन्मा । श्रेष्ठ, उत्तम । प्रधान ।
जाति, जाती पु० ब्राह्मण । -दानी-वि० प्रथम दान
करने वाला । -पु० मृत-कर्म में दान देने वाला पतित
ब्राह्मण । -दूत-पु० आगे चलने वाला दूत, हतकार ।
-भाग-पु० आगे का हिस्सा । मिरा, नोक । जेब भाग ।
-भागी-वि० प्रथम भाग का अधिकारी । -महिषी-स्त्री०
पटरानी । -लेख-पु० मुख्य लेख, खाम समाचार-वांछ,
वांछी-वि० अग्रगण्य । नेता, प्रधान-संध्या-स्त्री० प्रातः
काल, सवेरा । -स-क्रि० वि० प्रारंभ से । -सर-वि० अग्रगण्य ।
अगुवा । प्रारंभ करने वाला । मुख्य प्रधान । -अव्य० आगे
की ओर । आगे-आगे । -साठ, साठा-स्त्री० मायबान,
ओमाया । -सोचि, सोची-वि० दूरदर्शी । -स्वां-पु०
प्रथम स्थान । -हस्त-पु० अंगुली । हाथी की सूंड ।
-हायण-पु० अग्रहन मास ।

अग्रणी-वि० आगे चलने वाला, अगुवा, नेता, श्रेष्ठ, उत्तम ।

अग्रम-देखो 'अग्रिम' ।

अग्रवाळ देखो 'अग्रवाळ' ।

अग्रसण-देखो 'अग्रामण' ।

अग्रज स्त्री० [सं० अ० गर्जनम्] जोश पूर्ण आवाज गर्जन,
दहाड़ । हुंकार ।

अग्रजणी, (बी)-क्रि० सं० जोश पूर्ण आवाज करना, गर्जना,
दहाड़ना, हुंकार भरना ।

अग्रसण-पु० [सं० अग्रसण] १ भोजन का अंश जो देवता,
गो आदि के लिये सर्व प्रथम निकाला जाय ।

[सं० अग्रसण] २ सम्मान पूर्ण आमन या स्थान ।

अग्रह-वि० [सं०] १ जो ग्रहण करने योग्य न हो । २ जो
ग्रहण करने योग्य न हो, त्याज्य । ३ जो विचार करने
मान्य, स्वीकारने योग्य न हो । ४ अविश्वसनीय ।

अग्रि-देखो 'अग्र' ।

अग्रिम-वि० [सं०] १ पेशगी, एडवांस । २ पहला, पूर्व का ।
३ अगला, बादका । ४ उत्तम श्रेष्ठ । ५ प्रधान मुख्य ।
६ सब से बड़ा । -पु० बड़ा भाई ।

अग्र-क्रि० वि० [सं०] १ आगे, अगली । २ सामने सम्मुख ।
३ आदि में, पहले । -ण-क्रि० वि० अग्र भाग से ।
-सर-वि० अगुवा । मुख्य, प्रधान । प्रारंभ कर्ता ।
-क्रि० वि० आगे की ओर, आगे । -गुर, स्वर-पु० गणेश,
गजानन ।

अग्र-पु० [सं० अग्र] १ अधर्म, पाप । २ अपराध, जुल्म ।
३ कुकर्म, दुष्कर्म । ४ व्यसन । ५ अशौच, सूतक । ६ दुःख,
विपत्ति । [सं० अग्रः] ७ कंस का सेनापति, अघासुर ।

-वि० १ खराब, बुरा, निकृष्ट । २ दुष्ट, पापी, अधम,
नीच । -जीत-वि० धर्मिन्मा । पापियों को जीतने वाला ।
-पु० श्रीकृष्ण । -इंडी-पु० ईश्वर । यमराज ।
न्यायाधीश । -नासक, मार, मारण, मारन, मोक्षण,
मोचन-वि० पापों का नाश करने वाला । -पु० विष्णु ।
श्रीकृष्ण, दान, जप । -स्त्री० गंगा । -वांन वि०
पापी । -वारण-वि० पापों का निवारण करने वाला ।
-हता-पु० श्रीकृष्ण, विष्णु । ईश्वर, श्रीराम ।
-हर, हरण-वि० पापों का हरण करने वाला । -पु०
ईश्वर । -हरणी-स्त्री० महादेवी । दुर्गा । गंगा । -हाता-
स्त्री० पापों का नाशकर मोक्ष देने वाली गंगा देवी ।
-हारी-वि० पापों का हरण करने वाला ।
-पु० ईश्वर, विष्णु ।

अग्र-देखो 'अग्रघट' ।

अग्रघट-वि० १ घट रहित, जो घटित न हो, न होने योग्य, कठिन
दुर्घट, जो ठीक न घटे अनुपयुक्त । २ अक्षय । ३ देखो 'अघटित' ।
अघटणी, (बी)-क्रि० वि० [सं० अ० घटनम्] विचित्र ढंग में
होना, अद्भुत तरीके से घटना ।

अघटित, अघट-वि० [सं० अघटित] १ जो घटित न हुआ हो ।
२ जिसका घटना संभव न हो । ३ असंभव । ४ अवश्य होने
वाला, अनिवार्य । ५ अनुचित अयोग्य । ६ अनुपयुक्त ।
७ अद्भुत, अनोखा, अपूर्व । ८ अपार, असीम, बहुत ।

अघटणी, (बी)-देखो 'अघटणी' (बी) ।

अघण, अघन-१ देखो 'अगनी' । २ देखो 'अग्रहन' ।

अघरणी-देखो 'आगरणी' ।

अघराधण-वि० [दिश] भयंकर, भीषण । -स्त्री० अत्यधिक
गर्म व तेज वायु, तू ।

अघहट-देखो 'आगाहट' ।

अघहण-पु० मार्ग शीर्ष का मास, अग्रहन ।

अघाणी (बी)-क्रि० [सं० आघ्राण] तृप्त होना, अघाना ।

अघात-देखो 'आघात' ।

अघारि

अडणी

अडणी

अघारि, अघारी-पुं० [सं. अघ+अरि] १ श्रीकृष्ण ।

२ विष्णु, ईश्वर ।-वि० पापों का नाश करने वाला ।

अघावणी (बो)-देखो 'अघाणी (बो)' ।

अघासुर-पुं०- [सं०] कंस का सेनापति व पूतना का भाई एक राक्षस ।

अघि, अघी-वि० १ पापी, दुराचारी । २ देखो 'अघ' ।

अघोर-वि० [सं०] १ जो घोर न हो । २ सौम्य, सुहावना ।

३ प्रिय, प्यारा । ४ मुलायम, नाजुक । ५ देखो 'अघोरी' ।

—पुं० १ शिव का एक रूप । २ एक शैव सम्प्रदाय । ३ तंत्र । —कुंड-पुं० एक तीर्थ का नाम ।

—नाथ-पुं० शिव, महादेव । अघोर पंथ का मुखिया ।

—वि० भयंकर, डरावना । —पंथ-पुं० एक शैव सम्प्रदाय ।

—पंथी-पुं० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी ।

अघोरा-स्त्री० [सं०] भादव कृष्ण चतुर्दशी ।

अघोरिणी-देखो 'अघोरी' ।

अघोरी, अघोरी-पुं० [सं० अघोरी] १ एक प्रकार का शैव सम्प्रदाय जो गृहित-तांत्रिक क्रियाएँ करवाता है ।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी जो गृहित पदार्थों का सेवन करता है । अघड़ । —वि० १ असम्यक्ता से खाने वाला ।

२ घृणित, गंदा ।

अघोस-वि० [सं० अघोष] १ जो शब्द, ध्वनि या घोष रहित हो, नीरव । २ अल्प ध्वनियुक्त । —पुं० १ एक वर्ण समूह

जिसके प्रत्येक वर्ण के प्रथम दो अक्षर तथा 'स' होते हैं ।

२ प्लुत स्वर ।

अघी-देखो 'आगी' ।

अघ्य-देखो 'अघ' ।

अघ्योर-देखो 'अघोर' ।

अघोरी-देखो 'अघोरी' ।

अघ्राण-देखो 'आगेवाण' ।

अघ्राण-देखो 'आघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

अघ्राण-देखो 'अघ्राण' ।

उद्दण्ड, बदमाश, गंवार । हठी, जिद्दी । —बार-वि०

अडियल । ऐंठदार, मस्त, मत्वाला । —प-स्त्री०

हठ, दुराग्रह । साहस, बल, शक्ति । प्रतिस्पर्धा,

होड़ । प्रभाव, रीति । —पत, पति, पती, पत्न, पत्ति, पत्नी-

वि० हठी, जिद्दी । —अरवपति, अडियल । उद्दण्ड,

उपद्रवी । साहसी, वीर । —बंक, बंग, बंगी, भंग, भंगी-

वि० अविश्रुताली, जवरदस्त, हड़, अटल, अडिग । हठी,

जिद्दी । उद्दण्ड, , कठिन, विकट । टेढ़ा-मेढ़ा, ऊंचा-नीचा,

ऊबड़-खाबड़ । विचित्र, अनीखा । चंचल, चपल ।

—बंध-पुं० कठिणयुक्त । —बी, बी-स्त्री० विघ्न, बाधा ।

आपत्ति विपत्ति । हठ, विरोध । भगड़ा । वैर, शत्रुता ।

बहस । —बीसी-वि० विघ्नकारक, बाधक । हठी, जिद्दी ।

(स्त्री० अडवीली) ।

अडक-पुं० १ बिना बोधे स्वतः उगने वाला कदम । २ कड़वो

बादाम ।

अडकण-देखो 'अडोकरण' ।

अडकणी-स्त्री० किसान स्त्रियों की बांह का चांदी का आभूषण ।

अडकणी, (बो)-क्रि. [देश०] १ छुआ जाना, स्पर्श होना ।

२ चिढ़ना । ३ अड़ना ।

अडकन-देखो 'अडोकरण' ।

अडकाइणी (बो), अडकाणी (बो), अडकावणी, (बो)-क्रि०

१ सहारा देना । २ अड़ाना, रोकना । ३ द्रव पदार्थ को

एकाएक उड़ेलना ।

अडकियाँ-देखो 'अडक' ।

अडखंज-देखो 'अडखंजौ' ।

अडखंजाबाज-वि० १ आडंबर या ढोंग करने वाला । २ बहु धंत्री ।

३ उद्यम करने वाला, उद्यमी ।

अडखंजौ-पुं० १ आडंबर, ढोंग । २ प्रपंच, बखेड़ा । ३ उद्योग,

धंधा । ४ अड़ंगा ।

अडड़, अडड़ाट-स्त्री० [अनु०] १ मजाकर रक्खी वस्तुओं या

दीवार के गिरने की ध्वनि । २ लगातार अड़-अड़

की ध्वनि । ३ वरसने की क्रिया व ध्वनि ।

अडचण, अडचन-स्त्री० [देश] १ बाधा, रुकावट । २ विघ्न;

व्यवधान । ३ दिक्कत, कठिनाई, परेशानी । ४ रोड़ा,

अटकाव ।

अडचल-स्त्री० [देश] १ कष्ट, तकलीफ । २ कठिनाई, दिक्कत ।

३ विघ्न । ४ बीमारी, रोग ।

अडणी, (बो)-क्रि० [देश०] १ अटकना । २ स्पर्श होना ।

३ मटजाना, लग जाना । ४ जुड़ जाना । ५ उलझना ।

६ अटल या अडिग होना । ७ अपनी बात पर हड़ होना ।

८ मकना । ९ फंस जाना । १० भिड़ना, टक्कर लेना ।

११ हठ करना, जिद्द करना ।

अड़ताळीस-वि० [सं० अष्टचत्वारिंशत्] १ सैंतालीस से आगे या बाद का । २ चालीस और आठ ।—पु० १ चालीस व आठ की संख्या । २ इस संख्या का अंक यथा-४८ ।

अड़ताळीसो, अड़ताळी-पु० अड़तालीसवां वर्ष ।

अड़तीस-वि० [सं० अष्टत्रिंशत्] १ सैंतीस से आगे या बाद का । २ तीस और आठ ।—पु० १ तीस व आठ की संख्या । २ उक्त संख्या का अंक-३८ ।

अड़तीसो-पु० अड़तीसवां वर्ष ।

अड़ती-वि० (स्त्री० अड़ती) स्पर्श करता हुआ । कि० वि० छूते हुए, स्पर्श करते हुए ।

अड़वड़णी (बौ)-देखो 'अड़वड़णी' (बौ) ।

अड़वू-पु० १ उत्पन्न, उत्पन्न । २ पाखंड, ढोंग । ३ माहीन ।

अड़प-स्त्री० १ माहम । २ बलशक्ति । ३ हठ, जिद्द । ४ प्रभाव, रीब । ५ होड़, स्पर्धा ।

अड़पणी, (बौ)-देखो 'अड़पणी, (बौ) ।

अड़पाई-स्त्री० १ हठ, जिद्द । २ प्रतिष्ठा, मान ।

—वि० १ हठी, जिद्दी । २ आन पर मरने वाला ।

अड़पायल, अड़पायली, अड़पायलो, अड़पायल, अड़पाल-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ भयंकर । ३ जबरदस्त । ४ वीर, योद्धा । ५ निडर, निर्भीक । ६ साहसी । ७ हठी, जिद्दी । ८ अड़ियल । ९ स्थायी, टिकाऊ ।

अड़पणी (बौ), अड़पणी (बौ)-देखो 'अड़पणी' (बौ) ।

अड़व-देखो 'अरव' ।

अड़वड़णी, (बौ)-देखो 'अड़वड़णी' (बौ) ।

अड़वड़ाट-देखो 'अड़वड़ाट' ।

अड़वड़ियो-देखो 'अड़वड़ियो' ।

अड़वड़ी-देखो 'अड़वड़ी' ।

अड़व-पसाव-देखो 'अरवपसाव' ।

अड़बो-स्त्री० १ विघ्न, बाधा, रुकावट । २ विरोध । ३ प्रतिस्पर्धा ।

अड़व-देखो 'अरव' ।

अड़घड़-स्त्री० ध्वनि, विशेष ।—वि० १ आतुर, व्याकुल । २ कठिन, दुर्गम । ३ अटपटा ।

अड़वड़णी (बौ)—कि० १ धक्कामुल करना, एक के ऊपर एक चढ़ना । २ हड़बड़ाना, घबराना । ३ एक साथ चलना । ४ आतुर होना, व्याकुल होना । ५ शीघ्रता करना ।

अड़वड़ाट-पु० १ भीड़-भाड़ । २ सामान या कार्य की उलझन । ३ ध्वनि, विशेष ।

अड़वड़ाणी (बौ) कि० १ तेज चलाना या हांकना । २ शीघ्रता या ताक़ीद करना । ३ डांट-फटकार लगाना । ४ तंग करना, जोश दिलाना ।

अड़वड़ियो-वि० उतावला, आतुर ।

अड़वड़ी-देखो 'अड़वड़' ।

अड़वाड़-स्त्री० बराबर दीड़ आगे से घेरना क्रिया, भाग आना क्रिया ।—कि० वि० सामने सम्मुख ।

अड़बो-देखो 'अड़बो' ।

अड़बी-पु० खेत में फसल की सुरक्षार्थ एवं पशु-पक्षियों को डराने के लिए खड़ा किया जाने वाला पुतला ।

—वि० विघ्न कारक, व्यर्थ व्यवधान डालने वाला ।

अड़स-स्त्री० १ डाह, ईर्ष्या । २ कोप, क्रोध । ३ जोश ।

अड़स, अड़सट्ट, अड़सट्ट, अड़सट्टि, अड़सठ-वि० [सं० अष्टषष्टि] १ 'सड़मठ' के आगे या बाद का । २ साठ व आठ ।

—पु० १ साठ व आठ की संख्या । २ इस संख्या का अंक-६८ ।

अड़सट्टी, अड़सट्टी-पु० अड़सठवां वर्ष ।

अड़सल, अड़सल, अड़सलौ-वि० [सं० अरि+शल्य] १ जो शत्रुओं के लिए शल्य रूप हो । २ वीर, बहादुर । ३ ईर्ष्यालु । ४ हठी, जिद्दी ।

अड़सल-देखो 'अड़सल' ।

अड़ा-स्त्री० [देश] लड़ाई, झगड़ा । २ युद्ध, समर ।—ई-स्त्री० बाधा, विघ्न । अटकाव । रुकावट ।—क, की, कू, ग-वि० १ अकड़ने वाला, अकड़ । २ जिद्दी । ३ अड़ियल । ४ शक्तिशाली बलवान । जबरदस्त, भयंकर ।—खड़ी-स्त्री० लड़ाई, टंट, फिमाद । ईर्ष्या, द्वेष । व्यर्थ की परेशानी ।—भीड़ी, भीड़-स्त्री० भीड़ समूह ।—वि० अस्त्र सुसज्जित ।—यत, यती, यती-वि० शक्तिशाली, बलवान । अड़ियल । हठी, जिद्दी । ओट करने वाला, आड करने वाला ।—ल-वि० अड़ियल ।

अड़ाड़-देखो 'अड़ाट' ।

अड़ासड़ (भड़)-स्त्री० ध्वनि विशेष ।—कि० वि० निरन्तर, लगातार ।

अड़ाट-पु० १ तेज प्रवाह या गति की ध्वनि । २ तेज वायु की ध्वनि ।

अड़ाणी (बौ)-कि० १ अटकाना । २ स्पर्श कराना, छुआना । ३ मटाना, संलग्न करना । ४ जोड़ना । ५ उलझाना । ६ अड़िग या अटल करना । ७ फंसाना, भिड़ाना । ८ भिड़ाना, टक्कर खिड़ाना । ९ हठ या जिद्द करने के लिए प्रेरित करना ।

अड़ापड़ी-वि० साधारण, मामूली ।

अड़ापड़-स्त्री० ध्वनि विशेष ।

अड़ाळ-पु० मयूर नृत्य ।

अड़ाव (बौ)—पु० १ विघ्न, बाधा । २ प्रतिबंध रोक । ३ रोक, मनाही । ४ परहेज । ५ आवश्यकता, जरूरत । ६ गरज । ७ पत्नी छोड़ा हुआ खेत । ८ देखो 'अड़णी' ।

अड़ावणी (बौ)—देखो 'अड़ावी' (बौ) ।

अड़ि, अड़ो—स्त्री० १ अत्यन्त आवश्यकता, सख्त जरूरत । २ जिद्द, हठ, दुराग्रह । ३ दिक्कत, परेशानी । ४ बाधा, रोक । ५ मौका । ६ लड़ाई, झगड़ा । ७ दंगा, फिसाद । ८ विरोध, शत्रुता । —**खंभ—वि०** शक्तिशाली, बलवान । हृष्ट-पुष्ट, तगड़ा । **अड़िग, अटल, अचल** । —**जंत—वि०** मजबूत, हड़ । सावधान, तैयार । —**जोध—वि०** योद्धा, वीर, महावीर । —**यल, यल्ल, याल—वि०** अभिमानो, घमण्डी । **अड़ियल, अकड़ू** । उद्दण्ड । जिद्दी, हठी, वीर, बहादुर । एक-एक कर चलने वाला । —**सौ—पु०** अस्त-व्यस्त या विखरा हुआ सामान । योद्धा, वीर । देखो, 'अड़ियल' ।

अड़ोसल, अड़ोसल, अड़ोसाली—देखो 'अड़सल' ।

अड़ूअ—देखो 'अड़ूमी' ।

अड़ूड़—पु० खेत में स्वतः उगने वाली कंटोली भाड़ियां । २ उक्त भाड़ियों को काटने की क्रिया । —**वि०** १ जोरदार, जबरदस्त । २ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ अत्यधिक ।

अड़ूवौ, अड़ूसौ—पु० [सं० आटरूप] १ एक प्रकार का वृक्ष । २ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां औषधि के काम आती हैं ।

अड़ैगड़े, अड़ैगड़े—वि० समान, सहज । —**क्रि० वि०** आस-पास, लगभग, करीब ।

अड़ैच, अड़ैज—१ प्रति बंध, परहेज । २ देखो 'अड़ैचण' ।

अड़ैल, अड़ैल—देखो 'अड़ियल' ।

अड़ोई—स्त्री० गौ-चारक खाले को दिया जाने वाला भोजन ।

अड़ोस-पड़ोस—देखो 'आड़ोस-पाड़ोस' ।

अड़ोसी-पड़ोसी—देखो 'आड़ोसी-पाड़ोसी' ।

अचंक—देखो 'अचांणक' ।

अचंचल—वि० [सं० अ+चंचल] १ धीर, गंभीर । २ शान्त । ३ स्थिर ।

अचंट—पु० रुपया । —**वि०** मीठा-सादा, सरल ।

अचंड—वि० [सं०] १ जो उग्र न हो, शान्त ।

२ मुण्डील सीधा-सादा ।

अचंडी—स्त्री० [सं०] १ मीठी गौ । २ शान्त स्त्री ।

अचंब, अचंभ—देखो 'अचंभौ' ।

अचंभणी, (बौ)—क्रि० चकित होना, दंग रहना ।

अचंभम, अचंभव—देखो 'अचंभौ' ।

अचंभित—वि० [सं० स्तंभित] चकित, विस्मित, स्तंभित ।

अचंभौ, अचंभम—पु० [प्रा० अचंचमूत्र] १ आश्चर्य, विस्मय ।

२ अद्भुत या विचित्र वस्तु, कार्य या घटना ।

अच—पु० [सं० अच्] १ स्वर वर्ण । २ देखो 'आच' ।

अचकन—पु० [सं० कञ्चुक प्रा० अञ्चुक] लंबा अंगा, चोगा ।

अचगळ, अचगळी, अचगळ, अचगळी—देखो 'अचागळ' ।

अचइ, अचइ—वि० १ श्रेष्ठ उत्तम । २ महान, बड़ा ।

३ अचल, स्थिर । —**स्त्री०** १ उत्तम कार्य । कीर्ति, यश ।

अचसौ, (बौ)—क्रि० [सं० आचमनम्] १ आचमन करना ।

२ खाना, भोजन करना ।

अचपड़ा—पु० व. व. चेचक से मिलता-जुलता एक रोग ।

अचपळी—स्त्री० १ चंचलता, चपलता, २ शैतानी, उद्दण्डता ।

अचपळ, अचपळउ, अचपळी अचपळ, अचपळउ, अचपळी—वि० [सं० चपल] (स्त्री अचपळी) १ नटखट, चंचल, चपल । २ उद्दण्ड, बदमाश । ३ उत्पाती, उपद्रवी ।

अचमन—देखो 'आचमन' ।

अचर—वि० [सं०] १ न चलने वाला, स्थिर, ठहरा हुआ ।

२ नड । ३ स्थावर । —**पु०** १ ऊंट का एक रोग ।

२ देखो 'अप्सरा' ।

अचरज, अचरज्ज, अचरिज, अचरिज्ज—पु० [सं० आश्चर्य] आश्चर्य, विस्मय ।

अचरजणी (बौ)—क्रि० आश्चर्य युक्त होना, चकित होना ।

अचरियो-बचरियो—पु० १ मिश्रण । २ सूर्य पूजा के दिन प्रसूता के लिये बनाया जाने वाला विभिन्न सब्जियों का मिश्रण ।

अचल, अचलल—वि० [सं० अचल] १ जो चलायमान न हो, स्थिर ।

२ गमन शक्ति हीन । ३ अड़िग, अटल । ४ हड़, पक्का ।

—**पु०** [सं० अचलः] १ पर्वत, पहाड़ । २ सूर्य ।

३ इन्द्रासन । ४ ध्रुव । ५ सुमेरु पर्वत । ६ यश, कीर्ति ।

७ श्रेष्ठ व उत्तम कार्य । ८ ब्रह्म, ईश्वर । ९ जैनियों के

प्रथम तीर्थंकर । १० सात की संख्या । —**कीला—स्त्री०**

पृथ्वी, धरती ।

अचला—स्त्री० [सं० अचला] पृथ्वी, धरती ।

अचलेस, अचलेसर, अचलेधुर, अचलेधुरध—पु० [सं० अचलेश्वर]

१ शिव, महादेव । २ आबू पर्वत का शिव मन्दिर ।

अचल्लणी—वि० पीछे न हटने वाला ।

अचवन—देखो 'आचमन' ।

अचांचक, अचांण, अचांणक, अचांणचक, अचांणचूकी,

अचांणजक, अचांणी, अचांन, अचांनक, अचाक—क्रि० वि०

अकस्मात्, यकायक, अचानक, सहसा एक दम ।

अचागळ, अचागळी—वि० [सं० अनिर्गुण] १ नटखट, चंचल

चपल । २ उद्दण्ड, बदमाश । ३ तेज, फुर्तीला । ४ प्रचण्ड,

अयंकर । ५ वीर बहादुर । [सं० अचछ] ६ यशस्वी,

कीर्तिवान् । ७ उदार, दातार । ८ विचारवान्, बुद्धिमान् ।
[सं० अचल] १ अटल, अडिग, दृढ़, मजबूत ।

अचाचूक-देखो 'अचोणक' ।

अचाणी, (बी)-देखो 'अचणी' (बी) ।

अचार-पु० १ मिर्च ममालों के साथ तेल में डाल कर तैयार किया गया आम की केरी, निबू आदि का चटपटा खाद्य ।
२ देखो 'आचार' ।

अचारज-देखो 'आचारज' ।

अचारवती, अचारवान-वि० जिसका आचरण शुद्ध हो ।

अचारवेदी-देखो 'आचार वेदी' ।

अचाल-वि० १ अत्यधिक बहुत, २ भयंकर, प्रचंड ।
३ तेज, तीव्र । ४ देखो 'अचल' ।

अचिंत, अचिंतनीय, अचिंतनीय, अचिंतु-वि० [सं० अचिन्त्य, अचिंतनीय] १ मन और बुद्धि से परे । २ अवोध गम्य, अज्ञेय । ३ कल्पनातीत । ४ अनुत्त, अभीम ।

१ आशा से अधिक :-पु० १ ब्रह्म । २ शिव ।

अचित्यो-वि० [सं० अचितित] १ जिसका विचार न किया गया हो, बिना सोचा हुआ, २ आकस्मिक ।

अचित-वि० [सं०] १ जो सोचा न गया हो, अविचारित ।
२ अनेकवित्त, बिखरा हुआ । ३ गया हुआ ।
४ नःसमझ, विवेकशून्य । ५ धर्म विचारशून्य ।
६ उल्टा, औंधा । ७ निर्जीव । (जैन) ।

अचिरज, अचिरज्ज, अचिरिज, अचिरिज्ज-देखो 'अचरज' ।

अचीत-देखो 'अचिंत' ।

अचीती-देखो 'अगचीती' (स्त्री० अचीती) ।

अचीत-देखो 'अचित' ।

अचीती-देखो 'अगचीती' । (स्त्री० अचीती) ।

अचूक, अचूकौ देखो 'अचूक' ।

अचूंड, अचूंडौ-देखो 'अचंड' ।

अचूक-वि० [सं० अच्युक्त] १ जिसमें कोई चूक न हो, भूल न हो ।
२ कभी न चूकने वाला, लक्ष्य सिद्ध । ३ अमोघ ।
४ कारगर । ५ भ्रम रहित । ६ अव्यर्थ ।
७ निश्चित, सही ।

अचूकी-वि० [सं० अच्युक्त] १ अदभुत, अनौखा, विचित्र ।
२ निश्चित, निःशंक ।

अचूकाळ, अचूगाळ-वि० जो स्वच्छता का विशेष ध्यान रखे, सफाई पसंद ।

अचेत, अचेतन, अचेतन, अचेती-वि० [सं० अचेतन]

१ चेतना रहित, बेहोश, मुच्छित । २ संज्ञा शून्य ।

३ जड़, मूढ़ । ४ जानहीन । ५ अमावधान, गाफिल ।

६ ना गमक । ७ माना रत । ८ विकल, व्याकुल बेचैन ।

९ निर्जीव ।—पु० १ जड़ पदार्थ । २ प्रकृति । ३ अज्ञान ।

४ माया ।

अचेलय-वि० [सं० अचेलक] वस्त्रहीन, नंगा ।

अचैन, अचैनु-वि [सं० अ+शयन] विकल, बेचैन ।

—स्त्री० १ विकलता, बेचैनी । २ अशान्ति ।

३ परेशानी । ४ कष्ट ।

अचोट-पु० [सं० अ+चुट=काटना] किला गढ़ ।

अचोल-वि० १ शिथिल, मुस्त, आलसी । २ जो लाल न हो ।

अची-पु० मवेशी के बालों में रहने वाला कीड़ा, कीट ।

अचंचकारी, अचंचकी-वि० सहसा उत्तेजित होने वाली ।

अचंचणी (बी)-कि० आश्चर्ययुक्त होना ।

अच्छ-वि० [सं०] १ स्वच्छ, निर्मल । २ विशुद्ध, पवित्र ।

३ उत्तम, श्रेष्ठ । ४ सुन्दर ।—पु० १ स्फटिक ।

२ गीछ, भातू । ३ स्वच्छ जल । ४ देखो 'अक्ष' ।

अच्छड़-देखो 'अच्छड़' ।

अच्छकछक-देखो 'अच्छकछक' ।

अच्छड़-देखो 'अच्छड़' ।

अच्छत-देखो 'अच्छत' ।

अच्छता-स्त्री० [सं० अच्छ+प्र. ता] १ स्वच्छता, निर्मलता ।

२ पवित्रता, विशुद्धता । ३ श्रेष्ठता । ४ सुन्दरता ।

अच्छतौ-देखो 'अच्छतौ' ।

अच्छर-वि० [सं० अच्छ] १ उत्तम, अच्छा । २ देखो 'अक्षर' ।

३ देखो 'अप्परा' ।

अच्छरा, अच्छरि, अच्छरी-देखो 'अप्परा' ।

अच्छड़-स्त्री० १ अच्छापन । २ भलाई । ३ विशेषता, खासियत । ४ महत्ता । ५ सुंदरता, सुघराई । ६ श्रेष्ठता ।

अच्छारी-देखो 'अच्छ' ।

अच्छिज्जवीस-पु० किमी दुर्बल पर दवाव डाल कर आहार दिलाने का दोष ।

अच्छगाळ-देखो 'अचूगाळ' ।

अच्छी-१ देखो 'आछी' । २ देखो-आंख ।

अच्छूती-देखो 'अच्छूती' ।

अच्छेप-देखो 'अछेप' ।

अच्छेर-देखो 'अछेर' ।

अच्छेर, अच्छेर-देखो 'अछेर' ।

अच्छेही-देखो 'अछेही' ।

अच्छेहीणी-देखो 'अक्षीहिणी' ।

अच्छौ-देखो 'आछौ' ।

अच्युत-वि० [सं०] १ अटल, दृढ़ । २ अविनाशी, अनश्वर ।

—पु० १ विष्णु । २ श्री कृष्ण । ३ परमेश्वर । ४ वैमानिक श्रेणी के कल्पभवन देवताओं का एक भेद (जैन) ।

—अञ्ज-पु० बलराम, बलभद्र ।—आनंद-पु० परब्रह्म, ईश्वर ।—वि० जिसका आनन्द नित्य हो ।

अञ्ज, अञ्ज-देखो 'अचरज' ।

अञ्ज-वि० १ अलग, पृथक । २ दूर ।—क्रि० वि० अचानक, अकस्मात् ।

अञ्ज (ई)-वि० [सं० अञ्ज] है, वर्तमान, मौजूद ।

अञ्ज-वि० [सं० अ + चक = तृप्ता] १ न छका हुआ, अतृप्त । २ भूखा । ३ उन्मत्त, मस्त ।—छक-वि० अपार, असोम ।

अञ्जकणो, (बो), अञ्जकणो, (बो)-क्रि० १ अतृप्त रहना । २ भूखा रहना । ३ उन्मत्त होना ।

अञ्ज-देखो 'अचङ्' ।

अञ्जो-स्त्री० सपेद रंग की घटिया किस्म की ज्वार ।

अञ्ज-वि० १ छिड़ा हुआ, गुप्त । २ अविद्यमान ।—क्रि० वि० १ विद्यमानता में, उपस्थिति में । २ सिवाय, अलावा । ३ होते हुए ।—स्त्री० अभिवादा इच्छा कामना । ४ सम्मान । ३ विद्यमानता । ४ देखो 'अक्षत' ।

अञ्जो-वि० (स्त्री० अञ्जो) १ निर्बल, दुर्बल । २ गायब, अलोप । ३ निर्धन, गरीब । ४ अभूतपूर्व, अनोखा । ५ असंभव ।

अञ्ज-१ देखो 'अक्षर' २ देखो 'अच्छर' ३ देखो 'अप्परा' । अञ्ज-वर, अञ्जरावर-पु० [सं० अप्परा + वर] वीर, योद्धा ।

अञ्जराण, अञ्जरा, अञ्जरायण, अञ्जरायन, अञ्जरी-देखो 'अप्परा' । अञ्जरी-वि० बहुत, अधिक ।

अञ्जरोट-देखो 'अखरोट' ।

अञ्ज-पु० [सं० अ + छल] १ छल का विपर्याय । २ कपटहीन अवस्था या भाव ।—वि० छल-कपट से रहित ।

अञ्जो-वि० (स्त्री० अञ्जो) १ जो छुपा या गुप्त न हो । २ प्रगट । ३ प्रसिद्ध । ४ परिचित । ५ अज्ञात ।

अञ्ज-वि० आहत, घायल ।

अञ्ज, अञ्जो-वि० १ आच्छादित । २ भरा हुआ परिपूर्ण । ३ व्याप्त । ४ जोशीला । ५ प्रसिद्ध, मशहूर । ६ स्वाभिमानी ।

अञ्ज-देखो 'अञ्जोनी' ।

अञ्जो-देखो 'अप्परा' ।

अञ्जो-वि० जिसरी क्षति न हो ।—पु० ईश्वर ।

अञ्ज, अञ्ज-क्रि० वि० हूँ ।

अञ्ज-वि० [सं० अ + छल, प्रा० अञ्ज] १ बिना छुपा हुआ । २ कोरा, नया । ३ पवित्र, शुद्ध । ४ असृष्ट ।—पु० असृज, शुद्ध ।

अञ्जो-वि० (स्त्री० अञ्जो) १ नया, ताजा, २ जो भरता न गया हो । ३ बिना छुपा हुआ । ४ कोरा । ४ पवित्र, शुद्ध । ६ असृष्ट । ७ अक्षय, अखण्ड । ८ अभूतपूर्व, अपूर्व । ९ पूर्ण स्पर्श करने का भाव ।

अञ्ज-वि० [सं० अञ्ज] १ छिद्र रहित । २ अमंग । ३ अखण्डित । ४ निर्दोष, ब्रुटि रहित । ५ जो चोटिल न हो ।

अञ्ज-वि० [सं० अञ्ज] १ जिसे छेदा न जा सके, अमंग । २ अखण्ड । ३ निष्कपट ।

अञ्ज-वि० अञ्ज, असृष्ट ।

अञ्ज-देखो 'अद्वेष्ट' ।

अञ्ज, अञ्ज-वि० [सं० अञ्ज] १ अपेक्षाकृत बढ़िया श्रेष्ठ ।—पु० आश्चर्य, विस्मय ।

अञ्ज, अञ्जो-वि० १ अनन्त, अथाह । २ अत्यधिक । ३ मर्यादा या सीमा रहित । ४ अखण्डित । ५ छेद न देने वाला ।

—क्रि० वि० लगातार, निरन्तर ।—पु० परब्रह्म ।

अञ्ज-देखो 'छे' ।

अञ्जो-देखो 'आछी' ।

अञ्जो-देखो 'अञ्जोनी' ।

अञ्जो-देखो 'अशोभ' ।

अञ्जो-वि० [सं०] जिसका कोई छोर या सीमा न हो, असीम ।

अञ्जो-देखो 'अशोभ' ।

अञ्जो-देखो 'आछी' ।

अञ्ज-वि० अकथनीय, अवर्णनीय ।

अञ्ज-वि० [सं०] १ जन्म रहित, स्वयंभू । २ अजर, अमर ।

३ अनादि । ४ क्रूर ।—पु० १ ब्रह्म । २ ईश्वर । ३ विष्णु । ४ शिव । ५ श्रीकृष्ण । ६ ब्रह्मा । ७ देवता । ८ कामदेव । ९ श्रीराम के पितामह का नाम । १० बकरा । ११ मेढ़ा, मेघ ।—स्त्री० १२ माया, शक्ति । १३ शुक की गति से तीन नक्षत्रों की वीथी । १४ छाया ।

—क्रि० वि० [सं० अञ्ज, प्रा० अञ्ज] १ अब । २ अभी तक । ३ आज ।—गलका, गल्लका, गल्लिका—

स्त्री० बच्चों का एक रोग ।—वेचना-पु० अग्नि । पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र ।—नंद, नंदन-पु० राजा दशम्य ।

—पत, पति, पती-पु० मंगल । सब से ऊँचा बकरा ।

—पय-वीथि, वीथी-पु० अत्रवीथी, छायापथ ।

—पाठ-पु० राजा दशम्य के पिता । गडरिया ।

—बंधु-वि० मूर्ख, मूढ़ ।—भक्ष, भक्ष-पु० बबूल का पेड़ । भट्ट बेरी के सूखे पत्ते । शमी वृक्ष के सूखे पत्ते ।

—मंडल-पु० आर्वावत, भारत ।—मार-पु० कमाई । अजमेर ।—मोद-पु० अजमेर का एक नाम । युधिष्ठिर की उपाधि । पुरुवंशीय हरित का बड़ा पुत्र ।—मुखी-स्त्री० अजोक वाटिका की एक राक्षसी ।

—मोद-पु० अजमेर का एक भेद ।

--सुत-पु० शिव, महादेव । राजा दशरथ ।

अजइपुर-पु० अजमेर का एक नाम ।

अजक-१ वेचैनी, घबराहट । २ देखो 'अजका' ।

अजकरण, अजकरणाक, अजकव, अजकाव-पु० [सं० अजकवः]

१ अमन वृक्ष । २ साल वृक्ष । ३ देखो 'अजगाव' ।

अजकी वि० (स्त्री० अजकी) १ व्याकुल, वेचैन ।

२ चंचल, चपल । ३ मर्कट । ४ वीर ।-अजर्ग-स्त्री०

१ व्याकुलता, वेचैनी । २ चंचलता, चपलता ।

३ मर्कटता । कि० वि० १ चंचलता से । २ मर्कटता मे ।

-णी वि० चंचल, चपल । उद्यत तैयार ।

अजगधका, (गंधाणी, गंधा, गंधिनी)-स्त्री० वन तुलसी, अजमोदा,

अज शृंगी पीथा ।

अजगर-पु० [मं०] १ एक जाति विशेष का मोटा सर्प ।

२ आलसी व्यक्ति । बरती, बलि, बिली-स्त्री० अकर्मण्यता, आलस्य ।

अजगरिणी-वि० अजगर का अजमेर मंत्रिणी ।

अजगरी-स्त्री० अकर्मण्यता, आलस्य ।

अजगाव, अजगाव-पु० [सं० अजगावा, अजगावः] शिव का धनुष, गिनाक ।

अजगेष्ट अजगेष्ट-कि० वि० अकस्मात्, अचानक । अनजाने ।

अजड़, अजडो अजड़ अजडो-वि० [मं० अ + जड़]

१ जो जड़ न हो । २ सजीव । ३ मूर्ख, ना समझ ।

४ उदण्ड । ५ असम्य । ६ स्वर्ण जटित (मेवात) ।

—पु० अशिक्षित ब्रैल, ऊंट या भैरा ।

अजचक-देखो अचांगक ।

अजटा-वि० केश या जटा रहित ।

अजण, अजन-वि० [मं०] १ अजन्मा, स्वयंभू । २ सुतमान, निर्जन ।-पु० १ निर्जन स्थान । २ महस्वार्जुन ।

३ अर्जुन ।

अजनबो वि० [फा०] अपरिचित, अनजान ।

अजनम, अजनमी-वि० [मं० अजन्मा] १ जन्म रहित,

स्वयंभू, अवतारी । २ नित्य, अनादि । ३ अनश्वर,

अकिमार्शी ।-पु० १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ शिव । ४ सूर्य ।

अजनी स्त्री० [सं० अजा] १ बकरी । २ देखो 'अजनी' ।

अजन्म-देखो 'अजन' ।

अजन्म-देखो 'अजनम' ।

अजप, अजपो-पु० [मं० अजप] १ परब्रह्म । २ गायत्री

३ गायत्री-मंत्र जिसका जाप श्वास-प्रश्वास होता है ।

४ देवता । ५ हंसमंत्र 'मोहम्' । ६ एक तांत्रिक मंत्र ।

७ मंथन न करने वाला आज्ञाण । ८ गडरिया ।

अजपाळ देखो 'अजपपाळ' ।

अजब, अजब्ब-वि० [अ०] अद्भुत, आश्चर्यजनक, विलक्षण ।

—घर-पु० प्राचीन व अद्भुत वस्तुओं का प्रदर्शनालय ।

अजमत, (ति)-स्त्री० [अ०] १ शान, प्रतिष्ठा, गौरव ।

२ सम्मान, इज्जत आदर । ३ बड़ाई, महत्व ।

४ बुजुर्गी । ५ प्रताप, प्रभाव । ६ चमत्कार ।

अजमाइस, अजमाईस-देखो 'आजमाइस' ।

अजमाणी, (बी)-देखो 'आजमाणी' (बी) ।

अजमेरा-पु० १ चौहान राजपूत वंश । २ गौड़ राजपूत वंश ।

अजमेरी-वि० अजमेर का, अजमेर सम्बन्धी ।-पु० १ अजमेर का निवासी ।-स्त्री० २ अजमेर प्रदेश की बोली ।

अजमेरी-पु० १ चौहान वंशीय क्षत्रिय । २ गौड़ वंशीय क्षत्रिय ।

३ अजमेर का निवासी । ४ अजमेर प्रदेश का ब्रैल ।

५ देखो 'अजमेरी' ।

अजमो-पु० [मं० यवनिका] १ अजवायन । २ अजवायन का पीथा । ३ एक लोक गीत ।

अजय-वि० [मं०] १ जो जीता न जा सके, अविजित ।

२ जो कभी पराजित न हो, जो हार न माने ।-स्त्री०

१ हार, पराजय । २ एक नदी ।-पु० ३ विष्णु ।

४ अस्ति । ५ एक छन्द ।

अजयगढ़-पु० अजमेर का किला ।

अजयण, अजयणा-स्त्री० [सं० अयत्नता] १ हिंसा ।

२ असावधानी, अयत्नता । ३ जैन धर्म के विपरीत

आचरण ।-वि० विवेक रहित

अजयपाळ-पु० [मं० अजयपाल] १ एक राजा का नाम ।

२ जमान घोड़ा ।

अजया-स्त्री० [मं०] १ दुर्गा देवी । २ माया । ३ भांग,

विजिया । ४ बकरी ।-वि० जो जीति न जा सके,

अविजित ।

अजर-वि० [मं०] १ जय रहित, सदैव युवा । अनश्वर,

अविनाशी । २ जिसका कभी क्षय न हो, अमर, सदाई ।

४ वनवान, जवग्दमन । ५ अविजित । ६ सुन्दर ।

७ जो हजम न हो सके ।-पु० १ देवता । २ परब्रह्म,

ईश्वर । ३ शिव, महादेव । ४ विष्णु । ५ श्री कृष्ण ।

६ हनुमान । ७ आत्मा । ८ एक आभूषण ।-अमर-वि०

जरावस्था व मृत्यु से रहित ।-पु० ईश्वर । आशीर्वचन ।

अजरख-स्त्री० तहमद, लुंगी ।

अजरठ, अजरठ-वि० [मं० अ + जठ] १ नर्म, नाजुक,

मुलायम । २ युवा । ३ वनवान । ४ कच्चा । ५ सहृदय ।

अजरामरा-स्त्री० एक महा विद्या ।

अजरायक, अजरायळ, अजराळ, अजरापर, अजरावळ,

अजरेत, अजरेळ, अजरैत, अजरेळ, अजरी

-वि० [मं० अजरः रा. प्र. आवन] १ सदा नवीन ।

२ अपरिवर्तनीय । ३ पक्का, दृढ़ । ४ अमिट ।
५ चिर स्थाई । ६ निर्भय, निडर, निशंक । ६ शक्तिशाली ।
८ चंचल, नटखट । ९ उद्दण्ड, उत्पाती । १० पहलवान ।
११ वीर, योद्धा । १२ जोशीला । १३ भयंकर, भयावह ।

अजवाण, अजवाणी, अजवाइन, अजवायण, अजवायणि,
अजवायन-स्त्री० अजवायन, अजमा ।

अजवाळ-१ देखो 'उजळ' । २ देखो 'उजाळी' ।

अजवाळणी (बी)-देखो 'उजाळणी (बी)' ।

अजवाळी-देखो 'उजाळी' ।

अजस-पु० [सं० अ-यश] १ अपयश, अपकीर्ति, बदनामी ।
२ निंदा, बुराई ।

अजसी-वि० १ यश या कीर्ति विहीन २ निन्दित ।
३ जो विख्यात न हो ।

अजस्र-क्रि० वि० [सं०] १ यदा, सर्वदा । २ निरन्तर,
लगातार ।-वि० चिरस्थायी ।

अजहति, अजहत्स्वारथा-स्त्री [सं० अजहत्त्वार्था] लक्षणा शब्द
शक्ति का एक भेद ।

अजहद-वि० [फा०] अत्यधिक, अपार, असीम ।

अजहू, अजा-क्रि० वि० अभी तक । अब तक ।

अजाण-वि० [सं० अज्ञान] १ अनभिज्ञ, अनजान,
अपरिचित । ३ मूर्ख । अजानी । ४ ना समझ ।-ता-स्त्री०
अनभिज्ञता, अपरिचय । मूर्खता, अज्ञानता ना समझी ।

अजाणकण-देखो 'आजाण बाहु' ।

अजाणवक, अजाणजक, अजाणजख-देखो 'अचाणक' ।

अजाणवी, अजाणु-देखो 'अजाण' ।

अजाणियो, अजाण्यो-वि० [सं० अज्ञान] (स्त्री० अजाणी)
१ अपरिचित । २ अज्ञात । ३ अजानी, मूर्ख ।
४ जिसे जानकारी न हो ।-क्रि० वि० १ बिना जाने ही ।
२ अकस्मात्, अचानक ।

अजान-स्त्री० [अ० अज्ञान] नमाज के लिये मुन्ना द्वारा लगाई
जाने वाली आवाज ।-वि० [सं० अ-ज्ञा, जान]
१ प्राणरहित, निर्जीव । २ देखो 'अजाण' ।

अजानकण, अजानबाहु, अजानबाहु-देखो 'आजाणबाहु' ।

अजाबिका-स्त्री० १ भावर कृपणा एकादशी ।
२ उम तिथि का व्रत ।

अजा-स्त्री० [सं०] १ माया, अक्ति । २ दुर्गा, पार्वती ।
३ प्रकृति । ४ वकरी । ५ भावर कृपणा एकादशी ।
६ उम तिथि का व्रत । [अ०] ७ शोक, मानस, मातमपुर्सी ।
-वि० जन्म रहित, जो उगल न हो गई हो ।

अजाच, अजाचक, अजाची-वि० [सं० अ-याचक, अ-याची]
जो कभी याचना न करे, जिसे कुछ मांगने की आवश्यकता
न हो । सम्पन्न ।

अजाजती, अजाजिती-स्त्री[फा०] इजाजत, आज्ञा, हुक्म, आदेश ।
-क्रि० वि० आज्ञा से, हुक्म से ।

अजात-वि० [सं०] १ जो अभी उत्पन्न न हुआ हो, अनुत्पन्न ।
अजन्मा २ जातिहीन, अजातीय । ३ अविकसित ।

—अरि, सत्र, सत्रु-वि० जिसका कोई शत्रु न हो ।

—पु० युधिष्ठिर की एक उपाधि । शिव का एक
नामान्तर । मगध नरेश बिंबसार का पुत्र ।

अजाति, अजाती-वि० १ जातिहीन, अजातीय । २ अन्य जाति
का, विजातीय । ३ जातिच्युत या बहिष्कृत । ४ पतित ।

अजाथर-पु० [देश] बोभा, वजन । २ संकट, दुःख ।
३ कलंक ।

अजाप-देखो 'अजप' ।

अजामळ, अजामिळ, अजामोळ, अजामेळ-पु० [सं० अजामिल]
एक पापी ब्रह्मण जो अपने पुत्र 'नारायण' का नाम
लेकर तर गया ।

अजामेघ-पु० [सं०] एक गज जिसमें बरफ की बनि दी
जाती है ।

अजायब-देखी 'अजब' ।

अजायबखानी, अजायबघर-देखो 'अजबघर' ।

अजायबी-स्त्री० विचित्रता ।

अजाधो-वि० [सं० अज्ञात] जन्म न लेने वाला, अजन्मा ।
—पु० ईश्वर ।

अजारी-देखो 'इजारी' ।

अजिउ-देखो 'अज' ।

अजिठा-स्त्री० मृगछाया ।

अजित-वि० [सं०] जो जीता न जा सके, अजय ।-पु०
१ विष्णु । २ शिव । ३ कृष्ण । ४ बुद्ध । ५ अजितनाथ ।
दूसरा तीर्थंकर (जैन) ।-वीरज, वीरघ-पु० २०वें
विश्वमान तीर्थंकर ।

अजितेंद्रिय, अजितेंद्रिय-वि० [सं० अ-जितेन्द्रिय] इन्द्रियों का
वशी भूत, इन्द्रियशक्त, इन्द्रियबलपुत्र ।

अजिन-स्त्री० [सं० अजिनम्] मगधर्म, मृग छाया ।

अजिय-देखो 'अजित' ।

अजिया-देखो 'अजा' ।

अजीय, अजीयड-क्रि० वि० यथापि अभी, यीक अभी इस समय ।

अजिर-पु० [सं०] १ आंगन, सहन । २ चौक । ३ अखाड़ा ।
४ शरीर । ५ इन्द्रियमय कोई पदार्थ । ६ पवन, हवा ।
७ मंडक ।-वि० १ नेत्र, नीत्र । २ फुर्तीला, चुस्त ।

अजिहम-पु० [सं० अजिहम] मेंढक, दादुर ।-वि० [सं० अजिहम]
१ सीधा-सादा, सरल । २ ईमानदार । ३ निष्कलंक,
बेदाग ।

अजिहमग पु० [सं० अजिहमगः] तीर वाग्य ।-वि०
[सं० अजिहमग] अपर्णा सीध में जाने वाला ।

अजौ-देखो 'अजै' ।

अजौ-अव्य [सं० अजि] १ सम्बोधन सूचक अव्यय शब्द,
अरे, न । २ देखो 'अजै' ।

अजौउ देखो 'अजै' ।

अजौज-वि० [अज] १ प्रिय, प्यारा । २ सम्माननीय,
प्रतिष्ठित । पु० १ मित्र दोस्त । २ सम्बन्धी, रिश्तेदार ।
३ देखो 'अजिजी' ।

अजौडी पु० स्वर्गकारों का श्रीजाल विजय ।

अजीत देखो 'अजित' ।

अजीतनाथ देखो 'अजितनाथ' ।

अजीर-वि० [अज] १ विरहमग, विचित्र, अकृता ।

२ बहू स्थिति शिक्ते हम आदि न हो । ३ असमान्य
तनुभूति ।

अजीय १ देखो 'अजित' । २ देखो 'अजै' ।

अजीया-देखो 'अजा' ।

अजीरण, अजीरण अजीरण पु० [सं० अजीर्ण] १ अपच,
वदहजमी । २ महाग्नि । ३ वीर्य । ४ शक्ति, पराक्रम ।
५ अजी, पारुष ।-वि० १ पचा हुआ । २ जो जीर्ण न
हो, नया ।

अजीरनग्रह पु० यों० पारमियों की तीसरी नमाज का अग्रत-
ह्मकाल ।

अजीव, अजीवन वि० [सं०] १ जीव वा प्राण रहित, निर्जीव ।
२ मृत, मरा हुआ । ३ चेतना, शून्य, मूर्छित ।-पु० मृत्यु,
मीन ।

अजु-अव्य १ और, अन्य । २ जो । ३ देखो 'अजै' ।

अजुआल देखो 'अजुआल' ।

अजुआलणी (बी)-वि० १ प्रकाशित करना, गोजन करना,
२ उज्ज्वल करना ।

अजुआली, (आली)-देखो 'उजाली' ।

अजुक्त, अजुगत-वि० [सं० अजुक्त] १ जो युक्तियुक्त न हो,
अनृचिन । २ अप्रयोग्य । ३ जो मिला हुआ न हो, जुड़ा हुआ
न हो । ४ अलग । ५ अनसब, भूटा ।

अजुगति स्त्री० [सं० अजुक्ति] असंगत बात । अनृचित बात ।

अजुध्या-देखो 'अयोध्या' ।

अजुसार पु० वेग ।

अजु-देखो १ 'अजु' । २ देखो 'अजै' ।

अजुंही वि० भयंकर, डरावना ।

अजुंस-देखो 'अजेस' ।

अजु-१ देखो 'अजै' । २ देखो 'अजु' ।

अजुआल-देखो 'उजाली' ।

अजुणी-देखो 'अजोणी' ।

अजुबा (बी)-वि० [अज] अनोखा, अद्भुत, विचित्र ।

अजुयाल-देखो 'उजुआल' ।

अजुयालउ-देखो 'उजाली' ।

अजुह-पु० १ युद्ध, लड़ाई । २ समूह, गूथ ।

अजे-देखो १ 'अजै' । २ देखो 'अजय' ।

अजेज-क्रि० वि० जीघ्र, तुरन्त अविलंब ।

अजेजी-वि० जो शीघ्रता करे, उतावला ।

अजेज-देखो 'अजित' ।

अजेय-वि० [सं०] जो जीता न जा सके ।

अजेव-१ देखो 'अजीव' । २ 'अजय' ।

अजेस, अजै क्रि० वि० [सं० अज] १ अब तक । २ अभी तक ।

अजेरा-देखो 'अजरा' ।

अजेपाळ अजेपाळपी अजेपाळयी-देखो 'अजयपाल' ।

अजे-विजै अजे-विजै देखो 'उजै-विजै' ।

अजोकरी, अजोकारी-वि० जो युक्तियुक्त न हो । असंगत ।

अप्रासंगिक ।-स्त्री० अप्रत्याशित तीर-तुक्का वाली
बात ।

अजोग-१ देखो 'अयोग्य' २ देखो 'अयोग' ।

अजोगाई-स्त्री० [सं० अयोग्यता] १ नाकाबलित, अयोग्यता ।
२ अभाव कभी ।

अजोगी-देखो 'अयोग्य' ।

अयोग्य देखो 'अयोग्य' ।

अजोग्य-जोग्य-जथा-पु० डिगल गीत रचना का एक नियम
जिसमें अयोग्य के साथ योग्य का वर्णन हो ।

अजोड़, अजोड़ी-वि० [सं० अ-जुगम] १ अद्वितीय, बेजोड़ ।
२ अद्भुत, विजय । ३ विरुद्ध ।

अजोराताथ-देखो 'अजोराताथ' ।

अजोरिया, अजोरी (नी)-वि० [सं० अयोनि] १ जिसकी कोई
योनि न हो । २ जो उत्पन्न न हुआ हो ।-पु० १ ईश्वर,
परमात्मा । २ शिव । ३ ब्रह्मा ।-ताथ-पु० शंकर, ब्रह्मा ।

अजोत-वि० योनिहीन ।

अजोधिपा, अजोधीपा, अजोध्या स्त्री० [सं० अयोध्या]-सरयु
नदी के किनारे वसा एक प्राचीन नगर ।-ताथ-पु०
श्रीरामचन्द्र ।

अजोरी-वि० अद्वितीय ।

अजोरी वि० निर्दल, कमजोर, अजकल ।

अजौ क्रि० वि० [सं० अज] अब तक, अब भी ।

अजी-वि० [सं० अज+रा० श्री] १ अजन्मा, जन्मरहित ।
[फा० अजव] २ अजव, अद्भुत । —पु० १ ब्रह्मा ।
२ वकरा ।

अज्ज-पु० [सं० आयावत्तं] १ भारतवर्ष । २ देखो 'अज' ।

अज्जण-देखो 'अजन' ।

अज्जमंडल-पु० भारतवर्ष ।

अज्जव-देखो 'अजव' ।

अज्जाणचक, अज्जाणजक, अज्जाणजक-देखो 'अचाणक' ।

अज्जाणवो-देखो 'अजाण' ।

अज्जा, अज्या-देखो 'अज' ।

अज्जुण-देखो 'अरजुण' ।

अज्यास, अज्यासो-पु० १ अज्ञाति । २ असंतोष । ३ अविश्वास ।

४ क्षोभ । ५ अस्थिरता । ६ अनिश्चय ।

अज्झ, अज्जर-वि० १ न बरसने वाला । २ न झड़ने वाला ।

अज्झकणी (बौ)—कि० उत्तेजित होना, आपे में न रहना ।

अज्झाळ-वि० १ देखीप्यमान, तेजस्वी । २ ज्वालास्वरूप ।
३ पराक्रमी ।

अटको-वि० १ निष्क, निडर । २ जबरदस्त । ३ अधिक ।

अटक-स्त्री० १ म्हावट, रोक । २ बाधा, अड़चन । ३ उलझन
हुविधा, हिचक । ४ सिंधु नदी का नाम । ५ परहेज ।
६ कारागृह, जेल ।

अटकण, अटकणी-स्त्री० १ रोक या बाधा देने वाली वस्तु ।
२ सहाय । ३ अर्पणा, रोक ।

अटकण-बटकण-पु० यौ० एक देशी खेन ।

अटकणी, (बौ)—कि० १ रोकना, अटकना । २ उलझना, फँसना ।
३ मक-मक कर बोलना, टकताना । ४ अड़ना । ५ डिगना
६ रोकना ।

अटकळ, (पञ्चू)-स्त्री० १ तरसीव, व्यक्ति । २ अनुमान, अंदाज ।
३ कल्पना ।

अटकळणी (बौ)—कि० १ तरसीव या कुत्ति लगाना, उगाय
करना । २ अनुमान या अंदाज लगाना । ३ कल्पना
करना ।

अटकाण-देखो 'अटकण' ।

अटकाणी (बौ)—कि० १ रोकना, अटकाना । २ उलझाना,
फँसाना । ३ अड़ाना । ४ डिगाना ।

अटकाव-पु० १ रुकावट । २ बाधा । ३ विघ्न । ४ परहेज ।
५ अड़चन ।

अटकावणी, (बौ)—देखो 'अटकाणी, (बौ) ।

अटकी-पु० देव-मंदिरों में नैवेद्य बनाने का बड़ा पात्र व नैवेद्य ।
२ देखो 'अटकाव' ।

अटकणी, (बौ)—देखो 'अटकणी' (बौ) ।

अटखेल, (ली)—[सं० अष्ट-कीड़ा] १ मनोरंजन, दिल बहलाव ।
२ खेल, कीड़ा । ३ कौतुक । ४ मस्जोल, मजाक । ५ कीड़ाई,
चंचलता । ६ मस्तचान ।

अटण-पु० [सं० अतनः] १ पैर, चरण । २ गर्भटक, यात्री ।

अटणी (बौ)—कि० [सं० अतनम्] १ चलना, फिरना ।
२ घूमना । ३ यात्रा या भ्रमण करना ।

अटपट-१ देखो 'अटपटो' । २ देखो 'अटपटी' ।

अटपटाई-स्त्री० १ अड़चन, असुविधा । २ झुंझलाहट ।
३ असुहावनी । ४ हिचक ।

अटपटाणी, (बौ), अटपटावणी, (बौ)—कि० १ अटपटा लगना ।
२ झुंझलाहट होना । ३ हिचकना । ४ घबराना ।
५ असुविधा होना ।

अटपटी-वि० १ तिरछी, टेढ़ी । २ नटखट, चंचल । ३ विचित्र,
अद्भुत । ४ चुभने वाली, असुहावनी । ५ उलझन वाली ।

अटपटी-वि० १ टेढ़ा-मेढ़ा । २ कठिन, विकट, दुस्तर, गूढ़
गहरा । ३ अनुचित, अनोखा ।

अटम-सटम-वि० यौ० १ अट-सट । २ वेतरनीव ।

अटयासो-देखो 'डटियासी' ।

अटयासीयी-देखो 'डटियामिरी' ।

अटल, अटल-वि० [सं० अटल] १ न टलने वाला, अडिग ।
२ लड़, पक्का । ३ ध्रुव । ४ निश्चय, शाश्वत ।
५ अवश्यभावी । ६ अचल, स्थिर ।

अटलज-स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

अटल-देखो 'अटल' ।

अटवि, (बौ)—स्त्री० [सं०] १ वन, जंगल । २ हिंस्र जंतुओं का
आवास स्थान ।

अटव्यासण (न) पु० जंगल का निवाग, वनवाग ।

अटसट-देखो 'अटपट' ।

अटान-देखो 'अटा' ।

अटामण-देखो 'अटायन' ।

अटा-स्त्री० १ अटारी । २ बादलों की घटा ।

अटाहूट-वि० १ विन्कुल, नितान्त । २ अत्यधिक ।

अटाटोप-वि० १ आच्छादित । २ आवृत ।

अटायण (न)—स्त्री० खाट की निवार ।

अटारी-स्त्री० [सं० अटाल] १ मकान की दूसरी मंजिल ।
२ प्रसाद, महल ।

अटाल-स्त्री० [सं० अटाल] १ ऊँचा स्थान । २ बुर्ज, मीनार ।
३ कोठा । ४ मकान । ५ विवाह के अवसर पर उपयोग में
लिया जाने वाला एक प्रकार का उबटन ।
६ देखो 'अटाल' ।

अटालि, अटालिका-स्त्री० [सं० अटालि, अटालिका] १ महल,
भवन । २ राज्य-प्रासाद । ३ अटारी ।

अटाली-पु० [सं० अटाल] १ वेकार वस्तुओं का ढेर ।
२ कचरा, कुड़ा ।

अट्टल (ढी)-वि० (स्त्री० अट्टल) १ अपाहिज । २ पंगु ।
अट्ट-वि० [सं० अ + ट्ट] १ न टूटने वाला, अन्वड ।
२ निरन्तर । ३ रद्द, मजबूत । ४ अगार, अनंत ।
५ अजेय ।

अटे, (टै)-देखो 'अटै' ।

अटेर-वि० १ न मुड़ने वाला । २ विजयी ।

अटेरणी, अटेरणी-पु० सूत की लच्छी बनाने का उपकरण ।

अटेरणी, (बौ)-क्रि० १ सूत को लपेटना, लच्छी बनाना ।
२ अधिक भोजन या नशा करना ।

अट्ट-देखो 'अटारी' ।

अट्टहास, (स्व)-पु० [सं० अट्टहासः, अट्टहास्यम्] अत्यधिक जोर
से हंसने की क्रिया, भाव या शब्द, ठहाका ।

अट्टी-स्त्री० १ सूत की लच्छी । २ आधी दमड़ी ।
३ देखो 'आटी' । ४ देखो 'अठी' ।

अट्टी-पु० [सं० अट्टम्] १ मचान । २ अदल-बदल ।
३ देखो 'अट्टी' ।

अट्ट-देखो 'आठ' ।

अट्टांगनी-वि० अट्टांग के स्थान वाला ।

अट्टांग-वि० नब्बे और आठ के योग के बराबर । —पु० नब्बे
और आठ के योग की संख्या, ६८ ।

अट्टांगक-वि० अट्टांग के लगभग ।

अट्टाईस, अट्टाईस-वि० [सं० अष्टविंशति] बीस और आठ के
बराबर । बीस और आठ के योग की संख्या, २८ ।

अट्टाईसी-पु० अट्टाईसवां वर्ष ।

अट्टोत्तर, अट्टोत्तरसठ अट्टोत्तरसी-पु० [सं० अष्ट-उत्तर-शत]
एक सौ आठ की संख्या ।

अठतर-देखो 'उठतर' ।

अठतरौ-देखो 'उठतरौ' ।

अठ-देखो 'आठ' ।

अठप-वि० [देशज] १ चंचल । २ न रुकने वाला । ३ रद्द ।

अठकल देखो 'अटकल' ।

अठकेल, (ली), अठखेल, (ली)-देखो 'अटखेल' ।

अठड़ोतर-पु० एक सौ आठ की संख्या ।

अठताली-पु० १ डिगल का एक गीत या छन्द ।
२ देखो 'अड़ताली' ।

अठतीस (त्रीस) देखो 'अड़तीस' ।

अठत्तर-देखो 'इठतर' ।

अठत्तरमी-देखो 'इठतरमी' ।

अठपेजू-वि० [सं० अष्ट-पटल] आठ पार्श्व या कोने वाला ।
—पु० १ अठपट्टा । २ अष्ट भुजा ।

अठमासियी, अठमासी-पु० १ आठ मासे का तोल । २ गर्भ
के आठवें मास से उत्पन्न शिशु । —वि० आठ महीने का ।

अठयासियी-देखो 'इठियासी' ।

अठयासी-देखो 'इठियासी' ।

अठलाणी (बौ), अठलावणी, (बौ)-क्रि० १ इठलाना, इतराना ।
२ नखरे करना, चोंचले करना । ३ गर्व करना ।
४ मदोन्मत्त होना ।

अठवाड़ी-पु० १ आठ दिन का समय या अवधि । २ आठवां दिन ।

अठवाळी-स्त्री० [सं० अष्ट + आलुच] आठ कहारों द्वारा उठाई
जाने वाली डोली ।

अठसठ, (ठि)-देखो 'अड़सठ' ।

अठअवण-पु० [सं० अष्ट-अवण] ब्रह्मा । —वि० आठ
कानों वाला ।

अठांगवौ-देखो 'अट्टांगमी' ।

अठांगी-वि० [सं० अष्टांग] १ रद्द, मजबूत, अटिग । २ आठ ।
३ बलवान, शक्तिशाली । ४ अधिक, बहुत ।

अठांगू-देखो 'अट्टांग' ।

अठांगूक-देखो 'अट्टांगक' ।

अठांस-वि० १ रद्द, मजबूत । २ संकीर्ण । ३ वीर ।

अठाइ, अठाई-स्त्री० अष्ट दिवसीय व्रत । (जैन)
२ देखो 'अट्टाईस' ।

अठाइसी देखो 'अट्टाईसी' ।

अठाउं, अठाऊं-क्रि० वि० यहां से, इधर से ।

अठाणू-देखो 'अट्टाणू' ।

अठार, (रे)-वि० [सं० अष्टादश] दस और आठ के बराबर ।
—पु० १ दस और आठ की संख्या । २ पुराणों की संख्या-
सूचक शब्द । ३ चौंकर का एक दाव ।

अठारहंकी देखो 'अट्टारहंकी' ।

अठारभार गु० अष्टादश भार वनस्पति ।

अठारह-वि० दस व आठ के बराबर । —पु० दस व आठ के
योग की संख्या, १८ ।

अठारौ-पु० अठारह का वर्ष ।

अठातग-क्रि० वि० यहां तक ।

अठावन-वि० पचास व आठ । —पु० अठावन की संख्या, ५८ ।

अठावनी-पु० अठावन का वर्ष ।

अठावीस-देखो 'अट्टाईस' ।

अठासी-देखो 'इठियासी' ।

अठि (ठो)-क्रि० वि० [सं० उतम्] १ यहां । २ इधर ।

— वि० [सं० अष्ट] १ आठ । २ देखो 'आठी' ।

अठिकाणी-(नी)-क्रि० वि० इधर, इधर से, इधर की ओर ।

अठिनाउं (ऊं)-क्रि० वि० यहां से, इधर से ।

अठी-क्रि० वि० इधर, यहां ।

अठी-उठी-क्रि०वि० [अनु०] यहाँ-वहाँ, इधर-उधर ।
 अठीक-वि० भूठ, मिथ्या ।
 अठीनली, अठीली-वि० (स्त्री० अठीनली, अठीली) इधर का ।
 अठीने-क्रि०वि० इस तरफ, इस ओर ।
 अठीफै-वि० (स्त्री० अठीफी) हूट-पुण्ट, मजबूत ।
 अठीली-वि० (स्त्री० अठीली) इस ओर का, इधर का ।
 अठे (ठे)-क्रि०वि० यहाँ, यहाँ पर ।
 अठेल, अठेलमो-वि० १ जिसे हटाया न जा सके, अचल । २ वीर ।
 ३ बहुत, अपार ।
 अठोकौ-वि० १ शक्तिशाली, बलवान । २ दृढ़, मजबूत । ३ वीर ।
 अठोट, अठोट-वि० १ पढ़ा-लिखा । २ विद्वान् ।
 अठोतर-देखो 'इठंतर' ।
 अठोतरसी-पु० [सं० अष्ट-शत] १०८ की संख्या ।
 अठोतरी-स्त्री० १०८ मणिकों की माला ।
 अठोतरी-देखो 'इठतरी' ।
 अठोर, अठोरी-वि० दृढ़, मजबूत । २ तीव्र, तेज ।
 अठ्ठी-१ देखो 'आठी' । २ देखो 'अठि' ।
 अठ्ठे, अठ्ठे-देखो 'अठे' ।
 अठ्ठी-पु० डिगल का एक गीत (छंद) ।
 अठंगाबाज-देखो 'अठंगाबाज' ।
 अठंगो-देखो 'अठंगो' ।
 अठंड-देखो १ 'अदंड' । २ देखो 'उदंड' ।
 अठंडणीय-वि० [सं० अदण्डनीय] जो दंड पाने योग्य न हो, अदण्ड्य ।
 अठंडा-डंड-वि० जिगको दण्ड देने की मामूली न हो, उसे भी दण्ड देने वाला ।-पु० ईश्वर ।
 अठंबर-देखो 'आठंबर' ।
 अठकारणी, (बौ)-क्रि० १ मारना, वध करना । २ खाना, हजम कर जना ।
 अठग, अठगी-देखो 'अठिग' ।
 अठगनियो-देखो 'अगनियो' (मेवात) ।
 अठपणी (बौ)-क्रि० १ हठ या जिद्द करना । २ साहस करना ।
 ३ अपनी बात पर अडिग रहना ।
 अठपेच, अठपेच-पु० पगड़ी की गड़ी लगेट ।
 अठबंध-देखो 'आठबंध' ।
 अठर-वि० डररहित, निडर ।
 अठल-पु० सोलह मात्रा का छंद जिसमें लघु-दीर्घ का नियम न हो ।
 अठवांसी-स्त्री० १ मिचाई की क्रिया । २ मिचाई की भूमि ।
 अठवांसी (बौ)-क्रि० अधिकार या वश में करना ।
 अठांण-पु० १ मकान बनाने समय लठ्ठे बांध कर बनाया जाने वाला चढ़ने-उतरने का रास्ता । २ ऊँची एवं खड़ी दीवार

पर पुताई आदि करते समय रस्से बांध कर बनाया जाने वाला आधार । ३ कमजोर छत के नीचे लगाया जाने वाला सहारा ।
 अठांणी, अठांणू, अठांणी-वि० गिरवी, रेहन ।-स्त्री० १ गिरवी रखने की क्रिया या भाव । २ गिरवी रखी हुई वस्तु ।
 अठाई, अठाई-देखो 'अठाई' ।
 अठागर-पु० एक प्रकार की नागरवेल व उसका पत्ता ।
 अठाघटी-पु० ओढ़ने का सूती वस्त्र ।
 अठारगिर-देखो 'अठारगिर' ।
 अठारटकी-देखो 'अठारटकी' ।
 अठारो-पु० अजीर्ण, अपच ।
 अठिय-वि० १ स्थिर, अचल । २ दृढ़, मजबूत । ३ वीर ।
 अठिला, अठिल्ला-पु० सोलह मात्राओं का छंद जिसमें 'जगण' वर्जित है ।
 अठिंग-वि० १ जवरदस्त, भयंकर । २ बलवान ।
 अठोक-देखो 'उठीक' ।
 अठोकणी (बौ)-देखो 'उठीकणी' (बौ) ।
 अठोठ-वि० [सं० अदृश्य] १ अदृश्य, लुप्त । २ छुपा हुआ, गुप्त । ३ दृष्टि से परे । ४ अन्तर्धान ।-पु० १ एक प्रकार का विपैना फोड़ा । २ दुर्भाग्य । ३ प्राकृतिक उत्पात ।
 -चक्र, चक्र-पु० देवी प्रकोप । भाग्य का चक्र ।
 अठोरल-वि० १ वीर, बहादुर । २ भयंकर ।
 अठोल (लौ)-वि० १ बिना जरीर का, देहविहीन । २ दृढ़ ।
 अठूर-वि० १ अत्यधिक, बहुत । २ निडर, निर्भय ।
 अठेल-वि० १ अडियल । २ सुस्त ।
 अठोकण-पु० लुढ़कने वाली वस्तु को स्थिर रखने के लिए लगायी जाने वाली वस्तु, रोक ।
 अठोळ (लौ)-वि० (स्त्री० अठोळी) १ अचल स्थिर । २ स्तब्ध ।
 ३ बिना गढ़ा हुआ । ४ सूखा हुआ । ५ आभूषण रहित ।
 -पु० १ पहाड़ । २ बड़ा पत्थर ।
 अठोळणी (बौ)-क्रि० १ मारना, वध करना । २ भक्षण करना खाना । ३ भ्रमण करना । ४ देखो 'ओळणी' (बौ) ।
 अठ्ठी-पु० ठहरने का स्थान । २ जूआरियों या आकारा व्यक्तियों के बैठने का स्थान । ३ वेश्याओं का स्थान, चक्का ।
 ४ केन्द्र स्थान । ५ वांस की पट्टी का गोना जिसमें कपड़ा फंसा कर कमीदा किया जाता है । ६ स्वर्णकारों का औजार विशेष ।
 अठंगाण, अठंगी, अठंगी-वि० १ विकट, दुर्गम । २ भयंकर ।
 ३ अगोखा, विचित्र ।-पु० कामदेव ।
 अठदृढ़-अव्य० खेद, क्लेश, जोक या आश्चर्य सूचक ध्वनि ।
 अठती-वि० १ समान, बराबर । २ विनिष्ठ ।

अक्षर-वि० १ मुंदर । २ हठ, मजबूत ।
 अक्षरह-देखो 'अठारह' ।
 अक्षरक-वि० उदार ।
 अक्षर-वि० १ अधिक । २ विशेष । ३ अद्भुत ।
 अक्षर-वि० दो आधे के बराबर, ढाई । —पु० ढाई की संख्या, २। या २½ ।
 अक्षरहटी-देखो 'अडायटी' ।
 अक्षर-पु० ढाई का पहाड़ा ।
 अक्षर-वि० १ अत्यधिक । २ देखो 'अठारह'—टंक, टंकी-धनुष विशेष ।
 अक्षरगर, (गिर, गिरि, गिरी)-पु० १ आठ पर्वत का एक नाम । २ अठारह भार अनस्पति वाला पर्वत ।
 अक्षरदांनी-स्त्री० एक प्रकार का दीपक ।
 अक्षरभार-देखो 'अठारभार' ।
 अक्षरियो-वि० लफंगा ।
 अक्षर (रे)-देखो 'अठारह' ।
 अक्ष-देखो 'अणु' ।
 अक्ष-पु० गर्व अभिमान ।—ल-वि० दोष रहित, निष्कलंक । निर्भय, निडर । वीर । स्वाधीन, स्वतंत्र । अपार, असीम ।
 अक्ष-पु० ईश्वर ।
 अक्ष-देखो 'अनंत' ।
 अक्षचोदस (चोदस)-देखो 'अनंतचतुर्दशी' ।
 अक्ष-देखो 'अनंद' ।
 अक्ष-देखो 'अणव' ।
 अक्ष-वि० विना, बगैर ।—वि० अन्य, दूसरा । देखो 'अण' ।
 —अक्ष-पु० ईश्वर । —अपराध-पु० निरपराध ।
 —अक्ष-पु० कुप्रश्न, बेमौका । अवकाश का अभाव ।
 —अक्ष-पु० बेकारी । —कमाऊ-वि० निठल्ला, निकम्मा ।
 —कल-पु० विष्णु । शिव । —कल-वि० विना आंका हुआ । —खोलीयो, खोली-वि० बंधन रहित । —खूट-वि० अक्षय । गणत, गणत, गणती-वि० अगणित, विना गिना । गम, गम, गम्य-वि० अगम्य । —गेम-वि० निष्पाप, अपार, बहुत । निष्कलंक । —चर-वि० अचर, जड़ । —चायो, —चाह, चाही-वि० अनिच्छित । —चेत-वि० अचेत ।
 —छेह-वि० अपार । —जाण-वि० अनजान । —जाची-वि० अयाची । —जीत-वि० अपराजित । —जीमियो-वि० भूखा ।
 —जेज-क्रि० वि० अविलंब । —डग-वि० अडिग ।
 —डोठ-वि० अदृश्य । —डोल, डोलक-वि० अचल, स्थिर ।
 —डोल-वि० अपरिमित । शक्तिशाली, बलवान ।
 —थग, थग, थाह-वि० अथाह, गंभीर । —थिर-वि० अस्थिर, चंचल । —दगियो, दब, दाग, दागल-वि० वेदाग, अदग्ध । —दिठौ-वि० अदृश्य ।

—देह, देही-वि० निराकार । अक्षरीर । —धार-वि० निराधार ।
 —अधिकार-वि० अनधिकृत । —घोर-वि० अक्षीर ।
 —ध्याप-पु० अवकाश, लुट्टी । —नाथ-वि० लावारिस ।
 —नमियो, नामो-वि० अनम्र । हठी, जिद्दी । वीर ।
 —नीतो-वि० अन्यायी । —पड़, पड़ियो-वि० अपठित । अनपढ़ । पूर्व । —पाण-वि० अत्यधिक शक्तिशाली ।
 —पार-वि० अपार । —पीणा-वि० न पीने वाला ।
 —फेर-वि० न फिरने वाला, वीर । —बंध-वि० अपार ।
 —बंधव-वि० बंधु या मित्र रहित । —बीह-वि० निडर ।
 —बोल, बोलियो, बोली-वि० मौन, मौनी । गुंगा, भूक ।
 —भंग, भंगी, भंगो-वि० अखंड । अमिट । अटूट । वीर ।
 —पु० सिंह, शेर । गरुड़ । —भग-वि० न भागने वाला ।
 —भजियो-वि० नास्तिक । —भणियो-वि० अनपढ़ ।
 —भाय, भावती, भावियो-वि० अवांछित । —मानेतरा, —मानंती-वि० मान्यताहीन । दुहागिन । [—भाप, भापी, भापे-वि० असीम, अपार । —भायो, भाव, भावती-वि० असीम, अपार । —मिळियो-क्रि० वि० बगैर मिले ।
 —मोत-वि० अपार, असीम । —मोल, मोली-वि० अमूल्य । —रसी, रागी-वि० वैरागी, विरक्त । सादा ।
 —रुचि-स्त्री० अरुचि । —रूप-वि० निराकार । —लेख, लेखे-वि० अगोचर । अपार । —बंछक, बंछी-वि० शत्रु । अवांछनीय । —वारीयो-क्रि० वि० इस समय, अभी ।
 विद्या-स्त्री० अविद्या । —बिलोयो-वि० बिना मथा हुआ । —संको, संख-वि० निशंक । —सोम-वि० असीम्य । —हब-वि० वेहद । —हित-पु० अहित ।
 —हितु, हितु-वि० शत्रु । —हुंती, हूत-वि० अनहोनी । गैर वाजिव । असंभव । —हूँती-अशोभनीय । —हूँतो, होखी-वि० अनहोनी ।
 अक्ष-वि० [सं०] १ कुत्तित, निदित । २ छोटा तुच्छ । ३ अधम, नीच । ४ अभागा ।
 अक्ष-वि० १ वीर । २ निष्कलंक । वेदान्त । ३ शुभ्र । ४ अपार । ५ बेचैन । ६ स्वतंत्र, निर्भय, निर्भीक । —क्रि० वि० विना विचार ।
 अक्ष-क्रि० वि० इस ओर ।
 अक्ष-कीली-वि० १ तुनक मीजाज । २ ईर्ष्यालु ।
 अक्ष-पु० [सं० अनक्ष] १ क्रोध, कोप । २ दुख । ३ ग्लानि । ४ ईर्ष्या । ५ भुंभलाहट । ६ नजर ।
 अक्ष-पु० नाराजगी, उदासीनता, अट-पटी ।
 अक्ष-पु० (बी) क्रि० १ ईर्ष्या करना । २ टोकना । ३ चिढ़ाना । ४ तिरस्कार करना ।
 अक्ष-वि० १ बहुत, अधिक । २ अपार ।
 अक्ष-स्त्री० भूमी, चापड़ ।

अणखादी

(३७)

अणीखा

अणखादी, (घी)-क्रि० वि० अकारणा, वेकार में ।
 अणखावणा, (णी) वि० १ अग्रिय । २ खिन्नचित्त ।
 अणखी (ली)-वि० १ क्रोधी । २ ईर्ष्यानु । ३ खिन्न ।
 अणगंज-पु० १ कामदेव । २ वीर ।
 अणगम-देखो 'अगम' ।
 अणगळ-वि० १ बिना छता हुआ । २ अपार, असीम ।
 अणगारी-पु० १ साधु । २ त्यागी ।
 अणगळ-वि० वीर ।
 अणगिण (त)-वि० अपार, असीम, बेहद ।
 अणगेम-वि० निष्कलंक, वेदांग ।
 अणगौ-पु० आवाण गुक्ला चतुर्दशी का आयोजित एक नागव्रत ।
 अणघड़-वि० बेडौल ।
 अणचित, अणचित्त्यौ, अणचित्यौ, अणचीतो, अणचीत्यौ—
 -वि० १ अकस्मात्, अचानक, सहसा । २ असंभव, अनहोनी ।
 अणचूक-देखो 'अचूक' ।
 अणचेत-देखो 'अचेत' ।
 अणछक-क्रि० वि० अकस्मात्, सहसा । वि० अपार, असीम ।
 अणछांगिण्यौ (छांग्यौ)-वि० यौ० बिना छाना हुआ ।
 अणडंड-वि० अदण्डनीय ।
 अणत-पु० [मं अनन्त] १ भुजा पर बांधने का ताम्राभूषण ।
 २ चौदह गंडों वाला मूत का गंडा । ३ देखो 'अनन्त' ।
 -मूळ-पु० जंगली, चमेली । एक औषधि ।
 -विजय-पु० पुष्पिष्ठिर के जंघ का नाम ।
 अणतिथी-वि० अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखने वाला ।
 अणदी-स्त्री० [देश] कुए की मोट के रस्से से जुड़ा लकड़ी का एक उपकरण ।
 अणदोह-देखो 'अदोह' ।
 अणपार-देखो 'अपार' ।
 अणवृक्ष-देखो 'अवृक्ष' ।
 अणभिग, अणभिग-वि० [मं० अनभिज्ञ] १ अजानी ।
 २ अनजान । ३ अनाड़ी । -ता-स्त्री० अज्ञानता । अनाड़ीपन ।
 अणभेव, (भं, भंव)- वि० १ प्रत्युत्पन्नमति । २ विचित्र, अद्भुत । ३ निडर, निर्भय । ४ मौलिक उपज वाला ।
 अणमण, (णी)-देखो 'अनमनी' ।
 अणमा-देखो 'अणिमा' ।
 अणमौत-क्रि० वि० बेसीत, अकाल, अममय ।
 अणराय-देखो 'अगाय' ।
 अणरेस, अणरेह, अणरेही-वि० [सं० अन्-रेखा] १ अपार, असीम । २ निराकार । ३ रेखाहीन । ४ निष्कलंक ।
 ५ विजयी । -स्त्री० पराजय ।
 अणवण, (त)-स्त्री० १ अनयन, खटपट । २ निरोध ।
 ३ मनमुटाव ।

अणवर-पु० विवाह के समय साथ रहने वाला दुल्हे का साथी या दुल्हन की साथिन ।
 अणसंभ, (व)-देखो 'असंभव' ।
 अणसाधु-देखो 'असाधु' ।
 अणसार-देखो 'असार' ।
 अणसुणिशी, (णी, लौ)-वि० बिना सुना, अनुसुना, अश्रुत ।
 अणसुब्ध (सुभ)-देखो 'असुभ' ।
 अणसूया-देखो 'अनसूया' ।
 अणसंदई-स्त्री० अपरिचय, पि० अपरिचित ।
 असंदौ (घी)-वि० अपरिचित, अजनबी ।
 अणहद (नाद)-१ देखो 'अनहद' । २ देखो 'अनाहत' ।
 अणहार-पु० १ अनाहार व्रत । २ जय-विजय ।
 अणहार (हारी)-देखो 'उणिहार' ।
 अणगम-पु० [सं० अनागम] १ आगमन का अभाव । २ अज्ञान ।
 अणाद, (दि)-देखो 'अनादि' ।
 अणादर-पु० अनादर ।
 अणाय-स्त्री० याद, स्मृति ।
 अणाल-पु० अल, असत्य ।
 अणावड़ी, (णी)-पु० [देश०] याद, स्मृति ।
 अणावौ-१ देखो 'आंगौ' । २ देखो 'अणावड़ी' ।
 अणास-स्त्री० कठिनाई ।
 अणाहार-पु० अमध्य पदार्थ (जैन) ।
 अणि, (णी)-स्त्री० [सं०] १ गुई, भाला आदि की नोक ।
 २ अस्त्र की धार । ३ किनारा, कोना । ४ नीचा, हद ।
 ५ सिरा । ६ भाला । ७ धुरी । ८ शिखर । [सं० अनीक]
 ९ सेना, फौज । १० सेना का अग्रभाग । ११ देखो 'इण' ।
 -आळी-स्त्री० कटार, टिटहरी । -पति-पु० सेनापति ।
 -पांगी-स्त्री० मान प्रतिष्ठा, शय । -अमर, मल-वि० वीर ।
 -मेळ-पु० अस्त्र संघर्ष भिड़न, टक्कर । -धार-वि० नुकीला, पैना । -स्त्री० आकृति, शक्ती । -याळा, याळी-वि० नौकरदार, तीक्ष्ण । -पु० अंत, भाला ।
 अणिमा-स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी । २ अष्ट सिद्धियों में से एक । ३ अति सूक्ष्म परिमाण ।
 अणिय-पु० १ कानों का अग्रभाग । २ देखो 'अग्नि' ।
 अणियाभंमर, (अंवर)-पु० १ सेनापति । २ योद्धा ।
 ३ शीकीत व्यक्ति ।
 अणियारे (रं)-अव्य० शस्त्र में मिलता-जुलता ।
 अणहारौ-पु० शक्ल, मूरत, चेहरा ।
 अणीक-स्त्री० [सं० अनीक] १ सेना, फौज । २ गुण्ड, दल ।
 -वि० घुरा, खराब ।
 अणीखा, (ली)-वि० [सं० अनञ] १ भयानक, भयंकर ।
 २ जिसके मामले न देखा जा सके ।

अस्तुताई-स्त्री० १ हृद से बाहर वात । २ अन्वयाय । ३ उद्वण्डता ।
 अस्तुती-वि० स्त्री० अणु० अति करने वाला, उद्वण्ड ।
 अणु (णूँ)-पु० [सं० अणु] १ परमाणु संबंधी । ३ कण,
 जरी । ३ रजकण । ४ लेश मात्र । ५ विष्णु । ६ शिव ।
 ७ नैयायिकों द्वारा स्वीकृत पदार्थ विशेष जो पदार्थों का
 मूल कारण होता है । —वि० १ अत्यल्प । ३ सूक्ष्म ।
 ३ लघुत्वम् । —पातक-पु० ब्रह्म हत्या के बराबर पाप ।
 —बंध-देखो 'अनुबंध' । —आमा-स्त्री० विद्युत् ।
 —राव-पु० अनुकरण । —वाद-पु० दर्शन शास्त्र का
 मित्रांत । —वीक्षण-पु० सूक्ष्म पदार्थ देखने का यन्त्र ।
 —हाणौ-वि० नंगे पैर ।
 अणुकंपा-देखो 'अनुकंपा' ।
 अनुबंध-देखो 'अनुबंध' ।
 अणुवाद-सं पु० [सं० अणुवादः] १ सिद्धान्त विशेष जिसमें
 जीव या आत्मा अणु माना गया है : २ सिद्धान्त
 विशेष जिसमें पदार्थों के अणु निव्य माने गये हैं ।
 ३ देखो 'अनुवाद' ।
 अणुवत-पु० आधक के बारह वनों में से प्रथम पांच व्रत ।
 अणुहार-देखो 'उगियार' ।
 अणुहारौ-देखो 'उगियारौ' ।
 अणूत-स्त्री० १ जैतानी, बदमाशी । २ अन्वयाय । ३ असम्भव
 कार्य । ४ अभाव ५ वेदद ।
 अणूतौ (अणूतौ)-वि० (स्त्री० अणूती) १ बदमाश, उद्वण्ड ।
 २ अन्वायी, आतताई । ३ चंचल, चाल । ४ अत्यधिक ।
 अणुहार-देखो 'उगियार' ।
 अणुहारौ-देखो 'उगियारौ' ।
 अणे, (णी)-पु० रथ । —अण्य० और । —तो-वि० असंभव ।
 अणोवर-स्त्री० दुष्टिन् की गहचरी ।
 अणूसौ-पु० १ दुश्च, शोक । २ मातृगिक कष्ट । ३ विरह ।
 ४ आर्जका । ५ ईर्ष्या, डाह ।
 अणोआई, अणोई, (हाई)-स्त्री० श्वास रोग, दमा ।
 अणोखी-देखो 'अनोखी' ।
 अणोदपोल-पु० स्त्रियों के पांव का आभूषण ।
 अतंक-देखो 'आतंक' ।
 अतंग-वि० दक्ष, निपुण ।
 अतंत-देखो 'अन्यंत' ।
 अतंत्र-वि० १ निरालम्ब, चंचल । २ विकल, आतुर ।
 अत. (तः)-वि० [सं० अति] १ अत्यधिक, बहुत । २ उच्चतर,
 श्रेष्ठतर । ३ वेहद । —स्त्री० १ अधिकता । २ शीघ्रता ।
 —पु० ३ ईश्वर, परब्रह्म । ४ अधिकता सूचक उपसर्ग ।

—कि०वि० यहाँ, इस जगह । —एव-कि०वि० इसलिये,
 इस प्रकार । —खंभ-पु० भाला । —ताई-वि० आततायी ।
 —प्रसंग-पु० अत्यन्त मेल । अति विस्तार । व्यभिचार ।
 —प्राण-वि० बलवान, शक्तिशाली । —वेध-पु० युद्ध, समर ।
 —सय-वि० अतिशय ।
 अतग, (गी)-वि० [सं० उत्तुंग] ऊंचा, उच्च ।
 अतट, अतड-पु० १ पर्वत-शिखर, चोटी । २ टीला ।
 ३ समुद्र, सागर ।
 अतण, (नौ)-पु० [सं० अतन] १ कामदेव । २ ईश्वर, ब्रह्म ।
 —वि० १ तन रहित । २ निर्बल । ३ पुंसत्वहीन ।
 अतमभवन, अतमभू-देखो 'आतमभू' ।
 अतरंग-वि० १ तरंग रहित । २ जान्त । — पु० शान्त समुद्र ।
 अतर (ह)- वि० १ अधिक, बहुत । २ तिरसे में कठिन ।
 —पु० १ समुद्री । २ देखो 'अत्तर' । ३ देखो 'इतर' ।
 अतरुज-देखो 'अतलूज' ।
 अतरे (रं)-कि०वि० १ इतने में । २ इस अवसर पर ।
 अतरोक-वि० [स्त्री० अतरी] १ इतना । २ अधिक ।
 अतरी-वि० [स्त्री० अतर] १ इतना । २ अधिक ।
 अतल, (ळी)-वि० [सं० अतलः] १ तल रहित । २ बिना पेंदे
 का । ३ अधिक । ४ निकृष्ट । —पु० [सं० अतलम्]
 दूसरा पानाल ।
 अतलस, (स्स)- पु० [अ०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
 अतलसो-वि० अतलस का, अतलस संबंधी । —पु० खोजाग्रों का
 एक भेद ।
 अतला-स्त्री० [सं० अचला] १ भूमि । २ नेत्रों की सुन्दरता ।
 अतलाग-स्त्री० [देश०] याद ।
 अतलीबल (वर)- देखो 'अतिबल' ।
 अतलुज-स्त्री० श्वास रोग में होने वाली खरखराहट ।
 अतली-वि० १ आधार शून्य, खराब, बुरा ।
 अतवार-वि० १ वेहद, अपार । २ देखो 'आदित्यवार' ।
 ३ देखो 'एतवार' ।
 अतस, अतसय-पु० [सं० अतिशय] बहुत, अधिक, अपार ।
 अतसो-स्त्री० अलसी ।
 अता-देखो 'इता' ।
 अताई-वि० १ अधिक । २ आततायी । ३ देखो 'इतई' ।
 ४ देखो 'इताई' ।
 अताक-वि० गुप्त ।
 अताग-वि० [सं० अत्याज्य] १ त्यागने योग्य । २ देखो 'अशाम' ।
 अतागे, (गं)- कि०वि० जल्दी, शीघ्र ।
 अतात-वि० निराश्रित, अनाथ । —पु० ईश्वर ।

अतार-पु० (स्त्री० अतारी) १ पंसारो । २ आततायी, दुष्ट ।

३ मुसलमान । ४ देखो 'अतार' ।

अतारां (रा)-क्रि०वि० इतने में ।

अतारी-वि० १ शीघ्रगामी, तेज । २ चंचल ।

अतारु, (रू)-देखो 'अतार' ।

अतारी-वि० अधिक, बहुत ।

अताळ-वि० १ अत्यधिक । २ भयंकर । ३ तीव्र । ४ शीघ्र ।

अताळी-वि० (स्त्री० अताळी) १ बलवान । २ दृढ़, मजबूत ।

३ भयंकर । ४ तीक्ष्ण । ५ देखो 'उतावळी' ।

अति-वि० [सं०] अधिक, ज्यादा ।-स्त्री० अधिकता, ज्यादानी ।

—कम, कमण, क्रम, क्रमण-पु० मीमोल्लंघन । अपमान ।

—काय-वि० मोटा, स्थूल । —कान्त-वि० अत्यन्त

कांतियान, बीता हुआ । —गज-पु० ज्योतिष का एक

योग । —गत, गति-स्त्री० १ अत्याचार । २ मोक्ष ।

—चार-पु० दोष । विघात, व्यतिक्रम (जैन) । ग्रहों की

शीघ्र चाल । व्रत मंग की चार श्रेणियों में से तीसरी

(जैन) । किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी में समय से

पूर्व गमन । —चारी-वि० अत्याचारी । अन्यायकारी ।

—चाह-स्त्री० उत्कण्ठा । —वि० आतुर । —वरप-वि०

घमण्डी, गविला । —देव-पु० शिव । विष्णु । बड़ा देवता ।

—पात-पु० अव्यवस्था । —पातक-वि० अपह्वापापी ।

—प्रसंग-देखो 'अतप्रसंग' । —प्राण-देखो 'अतप्राण' ।

—बरसण-स्त्री० अनिवृष्टि । —बळ-वि० थोड़ा

शक्तिशाली, बलवान । —बळा-स्त्री० एक प्रचीन युद्ध

विद्या । ककई नामक पीधा । —सूत्र-पु० बहुसूत्र रोग ।

—रंग-पु० अत्यन्त आनन्द । घनिष्ठ प्रेम । —रंजन-स्त्री०

अत्युक्ति । अधिक प्रसन्नता । —रश्मि, (श्री)-पु० एक

प्रकार का महारथी । —रय-पु० तीव्र वेग ।

—वाद-पु० डींग, गेडी । कटोक्ति, सच्चीवात ।

—वादक (वादी)-वि० मत्यवक्ता । कटुवादी । डींग

मारने वाला । —सय-वि० अत्यधिक । —सार-पु० मेचिण,

दस्त विकार । —हसित-पु० अट्टहास ।

अतिकान्तभावनीय-पु०यी० वैराग्य सम्पन्न योगी ।

अतियाचार-देखो 'अत्याचार' ।

अतिथि-पु० [सं०] १ मेहमात । २ एक स्थान पर एक रात में

अधिक न ठहरने वाला मन्थासी । —पूजा-स्त्री० ऐसे मन्थासी

का सत्कार । अतिथि का सत्कार ।

अतिरिक्त, अतिरिगत-क्रि०वि० [सं० अतिरिक्त] निवाय,

अलावा ।

अतरेक-पु० [सं०] आधिक्य, अतिशयता ।

अतीन्द्रियगान-पु० [सं० अतीन्द्रियज्ञान] इन्द्रियों के ऊपर

का ज्ञान ।

अती-अव्य० १ उतनी । २ देखो 'अति' ।

अतीत-पु० [सं०] १ भूत काल । २ ईश्वर । —वि० १ बीता हुआ,

विगत, भूत । २ पुराना । ३ विरक्त, निर्लेप । ४ पृथक्,

अलग । —क्रि०वि० बाहर, परे । देखो 'अतिथि' ।

अतीत्य, अतीथ-देखो 'अतिथि' ।

अतीर-पु० समुद्र, सागर ।

अतीसीळ-पु० हस्ती, गज ।

अतु-देखो १ 'अति' । २ देखो 'अत्' ।

अतुर-देखो 'आतुर' ।

अतुराई-देखो 'आतुराई' ।

अतुळ-वि० [सं० अतुल] १ जिसकी तुलना न की जा सके,

अनुपम । २ जिसे तोला या मापा न जा सके, असोम,

अपार । ३ जबरदस्त । —बळ-वि० अत्यधिक शक्तिशाली,

वीर, थोड़ा ।

अतुलित-वि० [सं० अतुलित] १ अपरिमित, अपार । २ असंख्य,

अगणित । ३ अनुपम, अद्वितीय ।

अतुळोबळ-देखो 'अतिबळ' ।

अत्-१ देखो 'अति' । २ देखो 'अत्' ।

अतूट, अतूठ, (ठौ)-वि० [सं० अ+तुष्ट] १ अप्रसन्न, नाराज ।

अतुष्ट । २ जो तुष्टमान न हो । [सं० अ+तुष्टित]

३ अग्रण्ड, अपार । न टूटने वाला ।

अतेश, (रू)-वि० जो तैरना न जानता हो । —पु० सागर, समुद्र ।

अतै-देखो 'इतै' ।

अतोड-पु० १ वज्र । २ देखो 'अतूट' ।

अतोताइयो-वि० (स्त्री० अतोताई) १ अधिक ध्यार के

कारण उन्मत्त । २ उद्वेग । ३ उन्मत्त । ४ गस्ताना । ५ पागल ।

अतोर-वि० १ न टूटने वाला, दृढ़ । २ अग्रंग ।

अतोल, अतोली, अतौज, अतोनी, (नौ)-१ गड़ाइ, पर्वत ।

२ देखो 'अतुल' ।

अत-देखो 'अत' ।

अतर-पु० [फा० इत्र] पुष्पसार, इत्र ।

अता-देखो 'इता' ।

अतार-पु० इत्र या तेन त्रेचने वाला ।

असि (स्त्री) देखो अति । देखो 'इती' ।

असीत-देखो 'अतीत' ।

असू-स्त्री० खाने की अवधि से पूर्व कर्ज पेटे जमा की जाने

वाली रकम ।

अतोता, (यौ)-वि० (स्त्री० अतोताई) १ उतावला । २ इतराया

हुआ । ३ देखो 'आतताई' ।

अथ-क्रि०वि० १ अथ । २ देखो 'अथ' ।

अथर्था-देखो 'अथ' ।

अत्याचार-पु० [सं०] हार, पराजय ।

अत्याचारी-पु० [सं०] १ अत्याच । २ अतिक्रमण । ३ ज्यादाती ।

४ आर्द्धवर, टकोमला । ५ विकृत आचरण ।

अत्याचारी-वि० [सं०] १ अत्याचार करने वाला, आततायी ।
२ उदण्ड ।

अत्र-क्रि०-वि० [सं०] यहाँ, इस जगह । —सण-वि० निर्लोभी ।
—स्थ-वि० यहाँ का ।

अत्रय, अत्रि-पु० [सं० अत्रि] १ सप्तकृषियों में से एक ।
२ सप्तकृषि मंडल का एक ताग । —ज, जात-पु० अत्रि
के पुत्र, चन्द्रमा, दत्तात्रेय, दुर्वास । —प्रिया-स्त्री० सती
अनुसूया ।

अत्रिपत-वि० [सं० अत्रिपत] अत्रिपत, अत्रिपुत्र ।

अथ-सं०-पु० [सं०] १ आरंभ । २ प्रथम या लेख का मंगल
सूचक प्रारंभिक शब्द । ३ मंगल । ४ संदेह, संशय ।
५ पूर्णता । —क्रि०-वि० १ अथ, इस समय । २ तदनन्तर ।
३ प्रारंभ में । ४ देखो 'अथ' । ५ देखो 'अस्त' ।

अथर्था (बी) देखो 'आथमणी' (बी) ।

अथऊ-पु० सूर्यास्त से पूर्व का भोजन । (जैन)
अथक-क्रि०-वि० बिना कहे, बिना अथके, । —वि० न थकने
वाला । अथाल ।

अथग-पु० १ हाथी । २ समुद्र । ३ अथाह ।

अथगणी, (बी) क्रि० क्वना, (सूर्य) । ठहरना ।

अथगरी-पु० [सं० अथगरी] चोर डाकू ।

अथङ्गी, (बी) देखो 'आथङ्गी' (बी) ।

अथमणी-पु० पश्चिम ।

अथमणी, (बी) देखो 'आथमणी' (बी) ।

अथर-वि० अस्थिर

अथर्व, (रा) [सं० अथर्व] १ अथर्ववेद ।

२ इस वेद का एक मन्त्र । —सिर-पु० यज्ञ वेदी की ईंट ।

—सिरा-स्त्री० वेद की कृचा ।

अथर्वण, (सि,न)-पु० [सं० अथर्वण] १ शिव, महादेव । २ एक
कृषि । ३ अथर्ववेद में निष्णात ब्राह्मण ।

अथर्वणी-पु० [सं० अथर्वणी] कर्मकाण्डी पुरोहित ।

अथरूज, (छुज)-देखो 'अतछुज' ।

अथळ-स्त्री० लगान पर दी जाने वाली भूमि ।

अथळस-स्त्री० १ घोड़े की निर्गोद्रीय सहलाने की क्रिया । २ हस्त-
मंथन ।

अथवा-अव्य० [सं०] या, वा, किवां ।

अथाह-देखो 'अथाह' ।

अथांशु, (राँ)-पु० केरी, मिर्च, नीबू आदि का आचार ।

अथांमणी (बी)-देखो 'आथमणी' (बी) ।

अथाई-देखो 'हताई' ।

अथाग, (गौ, घ, ङ)-देखो 'अथाह' ।

अथार-पु० योनि, भग ।

अथाल, अथाह-वि० [सं० अथाह] १ अत्यधिक गहरा, अगाध ।
२ अवार, अपरिमित । ३ गंभीर, गूढ़ । ४ बढ़िया ।
५ अगम्य । —पु० १ सागर, समुद्र । २ बड़ा जलाशय ।
३ गड्ढा । ४ गहराई ।

अथि, (थी)-वि० [सं० अथिन्] —१ धनी, वनाइय ।
२ देखो 'अथ' ।

अथिर-वि० [सं० अस्थिर] १ जो स्थिर न हो, चलायमान ।
२ नाशवान । ३ जंगम ।

अथूल-वि० [सं० अथूल] १ जो स्थूल न हो, पतला । २ मूल ।
अथोग-देखो 'अथाह' ।

अथ्य-देखो 'अथ' ।

अदंक-पु० [सं० अदंक] आतंक, डर, भय ।

अदंग-वि० [सं० अदंग] १ वेदांग । २ निर्दोष । ३ शुद्ध, पवित्र ।
४ आनकित । ५ स्तम्भित । ६ सुखी ।

अदंड-वि० [सं० अ + दण्ड] १ जिसे दंड न दिया जा सके,
अदंडनीय । २ दंड रहित । ३ निर्भय ।

अदंत-वि० [सं० अदंत] १ दंत रहित । २ दुधमुहा, अयोध ।
३ अत्यधिक वृद्ध । —पु० १ युवावस्था के दांत न आया
हुआ ऊँट या बछड़ा २ विष दंत रहित सर्प । ३ गोक ।

अदंतिका-स्त्री० एक देवी का नाम ।

अदंभ, (भी)-पु० [सं० अ + दंभ] १ शिव । २ दंभ का
अभाव । —वि० १ सच्चा, निश्छल । २ मोधा, सरल ।
३ नम्र । ४ जिष्ट ।

अदंस-वि० [सं० अ + दंस] १ दंत शून्य रहित । २ विप्रे के दाँतों
के दंत शून्य रहित । ३ बिना पाद का ।

अद-पु० [सं०] १ भोजन, खाना । २ आहार । ३ प्रतिष्ठा ।
४ देखो 'अध' ।

अदग, (घ)-वि० १ अस्पष्ट । २ अचा हुआ । ३ देखो 'अदंग' ।

अदति, (ती)-देखो 'अदिति' ।

अदतीपूत, (सुत)-देखो 'अदितिपूत' ।

अदतेव-पु० [सं० आदितेव] अदिति की संतान, देवता, सुर ।

अदती-वि० कृपण, कंजूस ।

अदत्त, (तू)-वि० [सं०] १ न दिया हुआ । २ न देने योग्य ।
३ अनुचित ढंग से दिया हुआ । ४ कृपण, कंजूस ।
—पु० मुकरा हुआ दान । —दांन-पु० चोरी । अपहरण ।

अदन्न-पु० [सं०] १ भक्षण, आहार । २ भोजन, खाना ।
३ अरब सागर का बंदरगाह । —वि० १ हतभाग्य ।
२ देखो 'अदित' । —बदन-क्रि०-वि० इधर-उधर ।

अदनासिधौ-वि० १ वित्त-वित्त, दूषी । २ दूष्ट । ३ शत्रु ।

अदनी, (ह) वि० [अ० अदना] (स्त्री० अदनी) १ तुच्छ, साधारण । २ शूद्र, नीच ।

अदक्ष-१ देखो 'अदक्ष' । २ देखो 'अदिन' ।

अदपत, (पति, पत्नी) देखो 'अधपति' ।

अदफर-पु० १ पहाड़ या टीले के बीच का हिस्सा । २ मध्य भाग । —कि०वि० १ बीच में । २ आधी दूरी-तक । ३ देखो 'अधर' ।

अदब-पु० [अ] १ शिष्टाचार, विनय । २ अनुशासन । ३ मान, सम्मान, आदर । ४ लिहाज ।

अदबवाकर-कि०वि० १ हठ करके । २ अवश्य ।

अदबी-वि० अदब संबंधी ।

अदवे, अदब-कि०वि० १ संभवतः । २ अपेक्षाकृत ।

अदभुत, (भुत, भूत)-वि० [सं० अदभुत] १ विलक्षण, विचित्र, अलौकिक । २ सुन्दर । ३ आश्चर्यजनक । —पु० काव्य के नौ रसों में से एक ।

अदभुज-देखो 'उदभिज' ।

अदभुताल-पु० अजायबघर ।

अदभ-वि० [सं०] असीम, अपार ।

अदम, (मु)-वि० १ दमन रहित । २ इन्द्रिय-निग्रह न करने का भाव । ३ स्वतंत्र, स्वाधीन । ४ दम रहित, निरर्थक । ५ देखो 'अदम्य' । —पु० [अ०] अनस्तित्व, अभाव —पता-पु० अनिश्चित दशा । —पंरवी-स्त्री० बिना कार्यवाही का मुकद्दमा । —सबूत-पु० प्रमाण का अभाव । —हाजरी-स्त्री० अनुपस्थिति ।

अदमू, अदमी-वि० (स्त्री० अदमी) १ तुच्छ, छोटा । २ नीच ।

अदम्य-वि० [सं०] १ जिसका दमन न किया जा सके । २ प्रचंड, प्रबल । ३ उत्कृष्ट ।

अदय-वि० निर्दय, निष्ठुर ।

अदरंग-पु० घोड़ों का एक रोग ।

अदर-पु० १ तीर, बाण । २ देखो 'अधर' ।

अदरक-स्त्री० [फा०] कच्ची व गीली सोंठ, एक औषधि । —की-स्त्री० सोंठ व गुड़ से बनाई जाने वाली एक दवा ।

अदरस-वि० [सं० अदरस] १ जो दिखाई न दे, ओझल । २ लुप्त, गायब, अलोप ।

अदरसन, (णि)-पु० [सं० अदर्शनम्] १ अविद्यमानता । २ लोप । ३ विनाश ।

अदरा-देखो 'आद्रा' ।

अदल (ल)-पु० [अ०] न्याय, इन्साफ । —वि० १ न्यायशील । २ मुख्य । ३ बढ़िया । ४ दिव्य । —इनसाफ-पु० न्याय । —बदल-पु० हेरफेर, विनिमय ।

अदलद, (ल्लिख) वि० [सं० अ + दारिद्र्य] घनवान । —पु० खुशहाली ।

अदली (ली)-वि० [सं० अ + दल] १ बिना पत्नों का । २ बिना सेना का । [अ०] ३ न्यायी । —पातसा-वि० १ मस्त । २ ब्रह्मज्ञानी । ३ न्याय कर्ता ।

अदल-देखो 'अदल' ।

अदव, (शौ)-वि० कृपण, कंजूस ।

अदवीटी-वि० अपूरा, आधा ।

अदांत-देखो 'अदंत' ।

अदांत, (नी)-वि० १ कृपण, कंजूस । २ नादान, नासमझ । ३ अनजान ।

अदांव, (बाव)-पु० [अ०] १ बुरा दांव । २ असमंजस, कठिनाई । —वि० कृपण, सूम ।

अदा, (ह)-स्त्री० [अ०] १ हाव-भाव, नखरा । २ आकर्षक चेष्टा । ३ हंग । —वि० १ चुकता, भुगतया हुआ । २ पूर्ण, प्रस्तुत । ३ कथित, कहा हुआ । —बान-वि० नखरे करने वाला ।

अदाग, (गी)-वि० [सं० अ० + दग्ध] १ निष्कलंक, बेदाग । २ निर्दोष । ३ पवित्र, शुद्ध । ४ स्पष्ट । —पु० पशुओं का संकेत चिन्ह ।

अदात, (ता, तार)-वि० कृपण ।

अदाप-वि० १ दर्पहीन, निरभिमान । २ शिष्ट, सज्जन । —पु० १ नम्रता । २ निरभिमान ।

अदाब-देखो 'अदब' ।

अदाबद, (दी)-स्त्री० १ प्रनिष्पर्श, होड़ । २ ईर्ष्या ।

अदायगी-स्त्री० चुकाग ।

अदालत-स्त्री० [अ०] न्यायालय, कचहरी ।

अदालति, (ती)-वि० न्यायालय संबंधी ।

अदावत, (ती)-स्त्री० दुश्मनी ।

अदिठ-देखो 'अडीठ' ।

अदिति, (ती)-स्त्री० [सं० अदिति] १ कश्यप की पत्नी एवं देवताओं की माता । २ पृथ्वी । ३ प्रकृति । ४ गौ । ५ वाणी । ६ मृत्यु । ७ निर्धनता । ८ असीमता । ९ स्वतन्त्रता । १० ईश्वर का एक विशेषण । ११ दूध । १२ पुनर्वसु नक्षत्र । १३ अंतरिक्ष । १४ माता-पिता । —नंदन, सुत-पु० देवता, सुर । सूर्य ।

अदिन-पु० [सं०] १ बुरा दिन । २ आपात्कालीन समय । ३ अभाग्य ।

अदिपुरख, (पुरख)-देखो 'आदिपुरख' ।

अदियण-वि० कृपण ।

अदिष्य-वि० [सं०] (स्त्री०-अदिष्या) १ लौकिक, साधारण । २ बुरा । —पु० लौकिक नायक ।

अदिस-वि० दिशा रहित ।

अविस्ट-वि० [सं० अदृष्ट] न दिखने वाला, लुप्त, गुप्त ।

अदिस्टी-स्त्री० [सं० अ+दृष्टि] १ अन्धापन । २ बुरी दृष्टि ।

३ अदृग्दृष्टि । —वि० १ दृष्टिहीन, अन्धा । २ अदूर-दर्शी । ३ मूर्ख । ४ अभागा ।

अदीठ, (ठी)-देखो 'अदीठ' ।

अदीठि (ठी) देखो 'अदिस्टी' ।

अदीत-देखो 'आदित्य' । —वार-देखो 'आदित्यवार' ।

अदीति, (ती)-देखो 'अदिति' ।

अदीन-वि० [सं०] १ धनवान्, सम्पन्न । [अ०] २ अनन्य । ३ नास्तिक ।

अदीयण-देखो 'अदियण' ।

अदीस्ट, (स्टे, स्टै)-वि० अविष्ठित ।

अदीह-पु० [सं० अ+दिवस] दिवस का अभाव । —[सं० अ+दीर्घ] जो लम्बा न हो, छोटा ।

अदुव (दुव)-पु० [सं० अद्वन्द्व] १ द्वन्द्व का अभाव, निर्वन्द्व । २ शांति । ३ सुलह । —वि० १ निश्चित । २ अद्वितीय, बेजोड़ ।

अदुषित, अदुषित-वि० [सं० अदूषित] १ दोष रहित, निर्दोष । २ शुद्ध, पवित्र । ३ स्वतन्त्र ।

अदुषित्य, अदूत-वि० [सं० अद्वितीय] बेजोड़ ।

अदूषण (सण) [सं० अ+दूषण] दूषण रहित ।

अदूर-क्रि० वि० [सं०] निकट, पास, समीप ।

-दरसी-वि० स्थूल बुद्धिवाला, अदूरदर्शी ।

अदेख, अदेखी-वि० १ जो न देखा गया । २ जो देखा न जा सके । ३ जिज्ञा हुआ । ४ न देखने योग्य । ५ अदृश्य । ६ ईर्ष्यान्तु ।

अदेली-देखो 'अधेली' ।

अदेली-देखो 'अधेली' ।

अदेव-पु० १ शिव, महादेव । २ वायु । ३ मनुष्य । ४ असुर राक्षस । ५ मुसलमान । —वि० कृपण, कंजूस ।

अदेवाळ-वि० १ न देने वाला । १ देने में असमर्थ । ३ कृपण ।

अदेस-पु० [सं० अ+देश] १ पराया देश, विदेश । २ देखो 'आदेश' ।

अदेह-पु० [सं० अ+देह] १ परमात्मा । १ कामदेव । २ निषेधात्मक शब्द । —वि० १ देह रहित, विदेह । २ कृपण, कंजूस ।

अदोख, (स)-पु० [सं० अ+दोष] अग्नि, आग । —वि० निर्दोष । निर्विकार । निष्कलंक । निरपराध ।

अदोखो (सी)-वि० १ जो शत्रु न हो, मित्र । २ देखो 'अदोख' ।

अदोड़ी-पु० मृत गाय या बैल का साफ किया हुआ आधा चमड़ा ।

अदोत-पु० [सं० उद्योत] १ प्रकाश । २ शोभा, कांति ।

३ उन्नति, विकास । ४ वृद्धि । —वि० १ द्युतिमान, प्रकाशित । २ शुभ, स्वच्छ । ३ उत्तम, श्रेष्ठ ।

अदोरी-वि० सुखी । आराममय ।

अदोळी-स्त्री० १ घी, तेल, दूध आदि लेने का कटोरीनुमा उपकरण । २ फसल में होने वाला आधा हिस्सा । ३ देखो 'अदोड़ी' ।

अदोफर-देखो 'अदफर' ।

अदोह-पु० १ दुःख, शोक । २ चिन्ता, सोच । ३ पश्चाताप ।

अदूण-वि० १ खाने वाला । २ देखो 'आदण' ।

अद्व-१ देखो 'आध' । २ देखो 'अध' ।

अद्वरण-देखो 'आधीरात' ।

अद्विकारी-देखो 'अधिकारी' ।

अद्वियावणी-देखो 'अधियावणी' । (स्त्री० अद्वियावणी) ।

अदी-देखो 'आधी' ।

अदी-वि० आधा । —रुक, रुक-पु० लहंगा ।

अध-क्रि० वि० [सं०] आज, अब, अभी । —पु० प्रारंभ । —अप, अवधि-क्रि० वि० आगतक ।

अदूत-देखो 'अदूत' ।

अद्र, (नि)-पु० [सं० अद्रि] १ पर्वत, पहाड़ । २ वृक्ष । ३ सूर्य । —जा-स्त्री० १ पार्वती, गिरिजा । २ गंगा । जमुना । ३ नदी ।

अद्रक-देखो 'अदरक' ।

अद्रकी-पु० दर, भय, आतंक ।

अद्रमणी देखो 'अधियावणी' (स्त्री० अद्रमणी)

अद्रस्ट-देखो 'अदीठ' ।

अद्राजणी, (बी) क्रि० नगाड़ा बजना ।

अद्रि, (न), अद्री-देखो 'अद्र' ।

अद्रियांमणी-देखो 'अधियावणी' (स्त्री० अद्रियांमणी)

अद्रितिय, (तीय, द्वीत)-वि० [सं० अद्वितीय] १ बेजोड़ । २ अपूर्व । ३ अनुपम । ४ अतुल्य । ५ अद्भुत । ६ एकाकी, अकेला । ७ प्रधान, मुख्य ।

अद्रेत, (द्वैत)-वि० [सं० अद्वैत] १ द्वैत भाव से रहित । २ द्वितीय शून्य । ३ अपरिवर्तनीय । ४ अनुपम । ५ बेजोड़ । ६ एकाकी । —पु० १ जीव व ब्रह्म के बीच ऐक्य का भाव । २ जीव-ब्रह्म के ऐक्य संबंधी शंकराचार्य का मत । ३ ब्रह्म । ४ सत्य । —वाच-पु० ब्रह्म-जीव में ऐक्य मानने का दर्शन । —वादी-पु० उक्त दर्शन का अनुयायी ।

अधंतर-देखो 'आधंतर' ।

अध-वि० [सं० अर्थ, अर्थ] १ आधा, आधे का सूक्ष्म रूप ।
 २ तुल्य, सम । —क्रि०वि० [सं० अवस्, अधः] १ नीचे,
 नीचे की ओर । २ तल में, तले । —पु० १ तल, पाताल ।
 २ नीचे की ओर की दिशा ।
 —अनां०-पु० अधस्त्री । —कचरियो, कचरी-वि० अधूरा ।
 आधा कुचला हुआ । आधा कुटा या पीसा हुआ । आधा
 जानकार । —कचरी-वि० अधपरिपक्व ।
 —कपाळी-पु० आधे सिर का दर्द, सूर्यावर्त । —कर
 —वि० प्रोढ़, अधेड़ । —काली-वि० आधा पागल मूर्ख ।
 —कोस-पु० एक मील की दूरी । —खड़=‘अधकर’ ।
 —खण-पु० आधा क्षण । —खरी-स्त्री० अर्द्धरात्रि ।
 —खायो-वि० आधा खाया, आधा पेट । —खिली-वि०
 आधा खिलती, अर्द्धविकसित । —खुली-वि० आधा खुला ।
 —गति, गती-स्त्री० अधोगति । —गावळी-वि० अंगहीन,
 निकम्मा, नपुंसक । —गेली-वि० अर्द्धविक्षिप्त, मूर्ख,
 पागल । —चरी-वि० आधा चराया हुआ । (चोपाया)
 —प-वि० अतृप्त, असंतुष्ट । —स्त्री० तृष्णा, आकांक्षा ।
 —पई, पाई-स्त्री० एक सेर का आठवां भाग । आधी पाई ।
 पत, पति, पती, पत्त, पत्नी, पत्त-पु० अधिपति । —पतन,
 पतन, पात-पु० अधःपतन । दुर्गति । दुर्दशा ।
 —फर, फरी=अधकर । —बिच बीच-क्रि०वि० मध्य में ।
 —बिचली, बीचली-वि० बीच का मध्य का, मध्यस्थ ।
 —बीठी-वि० अधूरा, अपूर्ण । पृथक्, भिन्न । —बुद्धि, बुध
 —वि० अर्द्धशिक्षित । —बूढ़, बूढ़ी-वि० प्रोढ़ ।
 अधेड़ । —मल, मलिकौ-पु० आधा मन का तेल ।
 —मरियो, मरी, मुआ, मुवी-वि० अधमरा, मृत प्रायः,
 अत्यधिक घायल । —मोलौ-वि० आधे मूल्य का ।
 —रांणी-वि० आधा पुराना । —रत, रात, रेनि, रंसी-
 —स्त्री० अर्द्धरात्रि । —रतियो, रातियो-वि० आधी रात
 को होने वाला । —पु० आधी रात का भोजन ।
 —राजियो-वि० आधे राज का स्वामी —लोक-पु०
 पाताल । —वसन-पु० अधोवस्त्र । —वीठी, वीठी,
 बीधी-देखो ‘अदबीठी’ —सिर, सिरौ-पु० त्रिसंकु ।
 —सेर, सेरौ-वि० आधा सेर । —पु० आधा सेर का वाट ।

अधक-देखो ‘अधिक’ । —मास-देखो ‘अधिकमास’ ।

अधकांणो, (नो)-वि० अत्यधिक ।

अधकाई देखो ‘अधिकाई’ ।

अधकार, (री) देखो ‘अधिकार’ ।

अधकाव-वि० अधिक, ज्यादा । —पु० अधिकता, विणेपता ।

अधकावणौ, (बी)-क्रि० अधिक करना ।

अधकि, (की)-स्त्री० विणेपता । अधिकता ।

अधकी, (डौ)-देखो ‘अधिकी’ । (स्त्री० अधकी) ।

अधस-देखो ‘अध्यक्ष’ ।

अधड़की-पु० शत्रु, दुश्मन ।

अधधपत, (पति, पती)-पु० [सं० उदधिपति] समुद्र, सागर ।

अधनी-देखो ‘अदनी’ । (स्त्री० अधनी) ।

अधप-वि० भूखा, अतृप्त । —पु० १ भूखा सिंह । [सं० अधिप]

२ पति, स्वामी । ३ राजा । ४ प्रभु । ५ सरदार ।

अधफर-देखो ‘अदफर’ ।

अधभुत-देखो ‘अदभुत’ ।

अधम-वि० [सं०] (स्त्री० अधमा) १ नीच, निकृष्ट, भुद्र ।

२ पापी, पातकी । ३ दुष्ट । ४ निर्लज्ज, धूर्त । ५ निन्दित ।

—उधारण-पु० ईश्वर, विष्णु । —रति-स्त्री०
 स्वार्थजन्य प्रेम ।

अधमई, (माई)-स्त्री० नीचता, दुष्टता ।

अधमता-स्त्री० अधम होने की अवस्था या भाव । तुच्छता,
 नीचता ।

अधमा-स्त्री० [सं०] १ दुष्टा स्वामिनी । २ कलहप्रिय स्त्री ।

३ कटुवचनों में संदेश देने वाली दूती । ४ देखो ‘अधम’ ।

अधर-पु० [सं०] १ नीचे का होंठ । २ बिना आधार का

स्थान । ३ अंतरिक्ष । ४ अधस्थल । ५ खंड, विभाग ।

६ पाताल । ७ रतिगृह । ८ योनि । ९ दक्षिण दिशा ।

१० बीच का स्थान । ११ शरीर का अधोभाग । १२ होंठ ।

१३ अग्नि, आग । —क्रि०वि० १ बीच में । २ बिना

आधार से । —वि० ३ नीच, बुरा । ४ घटिया । ५ पराभूत,

पराजित । ६ चुप किया हुआ । ७ चंचल । ८ रक्ताभ,

लाल । —रज-स्त्री० होंठों की लाली । —पांत-पु० होंठों

का चुम्बन, एक रति क्रिया । —बंब-क्रि०वि० त्रिसंकु की

तरह, बीच में । —बिब-पु० विवकल जैसे होंठ ।

—मधु, अत-पु० अधरामृत । —रांणी-पुराना ।

—लोक पाताल ।

अधरम-पु० [सं० अधर्म] १ धर्म का विपर्याय, धर्म विरुद्ध
 कार्य । २ दुष्कर्म, पाप । ३ अन्याय । —आचार-पु० अधर्म
 का कार्य या व्यवहार । —काय-पु० पाप । द्रव्य के छः
 भेदों में से एक ।

अधरमास्तिकाय-पु० छः द्रव्यों में से दूसरा द्रव्य (जैन) ।

अधरमी-वि० [सं० अधर्मिन्] १ पापी, अन्यायी । २ अधर्म
 करने वाला ।

अधराज-देखो ‘अधिराज’ ।

अधल-देखो ‘अदल’ ।

अधव, (वा)-वि० [सं० अध-+धव] १ बिना पति की, विधवा ।

२ बिना स्वामी का । —पु० [सं० अधव] पथ, रास्ता, मार्ग ।

अध्वर-पुं० [सं० अध्वर] १ यज्ञ । २ आकाश । ३ वायु ।
—वि० १ सीधा, सरल । २ अबाध या निरन्तर
चलने वाला ।

अध्वराचर पुं० अमर, भीम ।

अध्वसाय पुं० श्रीकृष्ण ।

अध्याम-वि० [सं० अ + धाम] १ जिनका कोई स्थान न हो ।
स्थान रहित । २ सर्वत्र मिलने वाला । —पुं० परब्रह्म ।

अध्याप वि० १ अनुत्पन्न, भूखा । २ देखो 'अधिप' ।

अध्याप्य, (घोड़ी, यौ)-वि० (स्त्री० अध्यापोड़ी) १ भूखा, अनुत्पन्न ।
२ असंतुष्ट । ३ बिना दीड़ा हुआ ।

अधार-देखो 'आधार' ।

अधारणी (बौ)-देखो 'आधारणी' (बौ)

अधारमिक-वि० [सं० अधार्मिक] १ पापी, दुष्ट । २ नास्तिक ।
३ धर्म को न मानने वाला ।

अधि उप० [सं०] लक्ष्यों के पूर्व लगने वाला उपसर्ग जो ऊंचा,
ऊपर प्रमुख आदि अर्थों का बोध कराता है । —करण-पुं०
व्याकरण का सातवां कारक । —देव, देवता-पुं० इष्टदेव,
गुप्तदेवता । —नाथ, नायक-पुं० स्वामी । सरदार ।
रति-स्त्री० अर्द्धराशि । —रथ-पुं० रथ का
मारथी । धर्म का पिता । बड़ा रथ । —वि०
ग्यारह । —राज, राजा-पुं० सम्राट्, राजा । अधीश्वर ।
—रोहण पुं० चढ़ना, चढ़ाना, फहराना आदि की क्रिया ।
—वि० चढ़ने वाला । सवार होने वाला । ऊपर उठने
वाला । —रोहणी, रोहिणी-स्त्री० निसर्गणी । मीठी ।
जीना । लोक-पुं० समार । ब्रह्माण्ड । —वर-
देखो 'अध्वर' । —वास-पुं० निवास स्थान । —स्त्री०
भुग्ध । —वासी-वि० निवास । —वेसन-पुं० समारोह,
सभा । सथांत स्थान-पुं० शहर, नगर ।

अधिक, (उ, त)-वि० [सं०] १ बहुत, ज्यादा, विशेष ।
२ बढ़कर । ३ उत्कृष्ट । ४ अतिरिक्त । ५ घना, गाढ़ा ।
६ विनिर्णयित । —अस-वि० ज्यादातर । —अथा-
देखो 'अप्रकजथा' । —तम-वि० सर्वाधिक । —तर-वि०
अत्यधिक । —कि०वि० प्रायः । —ता-स्त्री० बाहुल्य ।
बढ़ोतरी, वृद्धि । —दंत, दंतौ, दंतौ-वि० अधिक दांत
वाला । —पुं० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।
—मास-पुं० भाग्यवीर्य ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक तीसरे
वर्ष पड़ने वाला पुरुषोत्तम मास, मल-मास ।

अधिकार्ह-स्त्री० १ विशेषता । २ अधिकता । ३ महिमा ।
४ बहुमान ।

अधिकार-पुं० [सं०] १ हक, स्वत्व । २ कब्जा ।
३ आधिपत्य, स्वामित्व । ४ शक्ति, सामर्थ्य । ५ योग्यता ।

६ ज्ञान । ७ कर्तव्य । ८ प्रभुत्व । ९ पद । १० स्थान ।
११ राज्य । १२ नाटक में पात्र की विकसित स्थिति ।
१३ मुख्य नियम । १४ मान, प्रतिष्ठा ।

अधिकारी वि० [सं०] १ हकदार, दावेदार । २ स्वामी,
मालिक । ३ कब्जा करने वाला । —पुं०—१ किसी संस्था
या विभाग का अफसर । २ शासक । ३ अधिकार प्राप्त
व्यक्ति । ४ किसी कार्य के प्रति विशेष योग्यता वाला
व्यक्ति । ५ प्रधान फल प्राप्त करने वाला नाटक का पात्र ।

अधिकौ-देखो 'अधिक' । (स्त्री० अधिकी)

अधिद्विपत्र-वि० तंगड़ाया दृष्टा ।

अधिदो-देखो 'आधेटी' ।

अधिदेव (ता)-पुं० १ इष्टदेव, प्रधानदेव । २ पदार्थों के
अधिष्ठाता देवता, रक्षक देव ।

अधिदेव-पुं० [सं० अधिदैव] १ दैविक । २ आकस्मिक ।
३ देखो 'अधिदैवत' ।

अधिदैवत-पुं० [सं० अधिदैवतम्] १ किसी पदार्थ का अधिष्ठाता
देवता । २ अनेक पदार्थों में रहने वाला मूल तत्व ।

अधिप, (पत, पति, पती)-पुं० [सं० अधिप, अधिपति] १ राजा ।
२ नायक, सरदार । ३ स्वामी, मालिक । ४ ईश्वर, प्रभु ।
५ हकदार ।

अधिभूत-पुं० सब प्राणियों की नाम रूपात्मक नाशवान स्थिति
का नाम ।

अधिमात्र-देखो 'अधिकमास' ।

अधियत-पुं० [सं० अधियजः] १ परमेश्वर । २ प्रधान यज्ञ ।

अधियांमण, (रौ)-देखो 'अधियावणी' । (स्त्री-अधियांमणी)

अधियाळ-वि० आधा, अर्द्ध ।

अधियावरण, (रौ)-वि० (स्त्री० अधियावणी) १ वीर, वहादुर ।

अधियावणी-स्त्री० कटांग, कटांगी ।

२ प्रचंड, भयंकर । ३ त्वंमतांगी ।

अधियो-पुं० १ अर्द्धभाग, आधा हिस्सा । २ नांव में आधी
पट्टी का जमींदार । ३ फल का आधा भाग । ४ छोटी
रेलगाड़ी । —वि० आधा, अर्द्ध ।

अधिष्ठाता, (स्थाता)-वि० [सं० अधिष्ठाता] (स्त्री० अधिष्ठात्री)
१ अध्यक्ष । २ मुखिया, प्रधान । ३ रक्षक । ४ स्वामी ।
—पुं०—ईश्वर, परमात्मा ।

अधिष्ठात्री, (स्थात्री)-स्त्री० [सं० अधिष्ठात्री] १ देवी, दुर्गा ।
२ देखो 'अधिष्ठाता' (स्त्री०)

अधिश्मणी, अधिश्मणी स्त्री० [सं० अधिश्मणी, अधिश्मणी]
'बूढ़ा, अंगोठी' ।

अधी-देखो 'अधि' ।

अधीठ-देखो 'अधीठ' ।

अधीत-वि० [सं०] पढ़ा हुआ, पठित ।

अधीन-वि० [सं०] १ वशीभूत, वशवर्ती । २ आश्रित ।
 ३ मातहत । ४ नीचे । ५ आज्ञाकारी । ६ पराधीन ।
 ७ स्वाधिकार युक्त । ८ दीन । —ता, ता-स्त्री० 'अधीन'
 होने की दशा या भाव । विवशता । वशवतित्व । नम्रता ।
 अधीर, (रौ)-वि० [सं०] (स्त्री० अधीरा) १ धैर्यहीन, आतुर,
 उद्विग्न । २ भयभीत, घबराया हुआ । ३ उतावला ।
 ४ असंतोषी । ५ चंचल । ६ विह्वल ।
 अधीरज-पु० [सं० अधैर्य] १ धैर्य का अभाव । २ त्वरा ।
 ३ चंचलता । ४ घबराहट । —वि० चंचल ।
 अधीरा-स्त्री० [सं०] १ विद्युत । २ मध्या या प्रौढा नायिका
 का एक भेद । ३ नायक को पर-नारी-रत देखकर प्रत्यक्ष
 कोप करने वाली नायिका ।
 अधोस, (र)-पु० [सं० अधोश] १ स्वामी, मालिक ।
 २ अधीश्वर, मंडलेश्वर । ३ अध्यक्ष । ४ राजा, नृप ।
 अधुना-क्रि०-वि० [सं०] १ आजकल । २ इस समय ।
 अधुर-देखो 'अधुर' ।
 अधूत-वि० [सं०] १ अकंपित । २ निर्भय, निडर । ३ सज्जन ।
 ४ उचक्का ।
 अधूरी-वि० (स्त्री० अधूरी) १ अपूर्ण । २ अर्द्धपूर्ण । ३ बाकी
 रहा हुआ । ४ विचाराधीन । —पु० अपरिपक्व गर्भ ।
 अधेड़-वि० प्रौढ़ ।
 अधेटो-देखो 'आधेटो' ।
 अधेली-स्त्री० आधा रूपये का सिक्का, अठन्नी ।
 अधेली-पु० १ आधा पैसा । २ लगभग एक तौले का
 एक प्राचीन तौल ।
 अधोक-पु० प्रणाम, नमस्कार ।
 अधोक्षज, अधोक्षत्र-पु० [सं० अधोक्षज] १ परब्रह्म । २ विष्णु ।
 ३ कृष्ण । —वि० इन्द्रियातीत ।
 अधोगत, (गति, गती)-वि० अवनत, पतित । —स्त्री० १ पतन,
 अवनति । २ दुर्गति, अधःपतन । ३ भूत, प्रेत आदि गति ।
 अधोगमण, (न)-पु० [सं० अधोगमन] पतन, अधःपतन ।
 अधोगामी-वि० [सं० अधोगामिन्] १ अधोगति को प्राप्त होने
 वाला । २ पतित ।
 अधोड़ी-देखो 'अदोड़ी' ।
 अधोफर-देखो 'अदफर' ।
 अधोमवण, (भवन, भुवन)-पु० [सं० अधोभवन] गताल ।
 अधोमार्ग-पु० [सं० अधोमार्ग] १ पतन का मार्ग । २ नीचे का
 रास्ता । ३ मुरंग का रास्ता ४ गुहा ।
 अधोमुख-वि० [सं०] जिमका मुख नीचे हो, उल्टा, अधो ।
 —क्रि० वि० नीचे मुंह किये हुए, मुंह के धन ।
 अधोवाय, (वायु)-स्त्री० अपान वायु ।
 अधो, (धो)-पु० [सं० अधो] १ नरक । २ आधा भाग ।

३ आधे का पहाड़ा ४ आधाभाप । —अव्य०— १ नीचे ।
 २ तले । ३ देखो 'आधी' ।
 अध्वे-वि० [सं० ऊर्ध्व] १ ऊपर । २ उल्टा ।
 अध्यक्ष-पु० [सं०] (स्त्री० अध्यक्षा) १ स्वामी, मालिक ।
 २ सरदार, नायक । ३ मुखिया, प्रधान । ४ अधिष्ठाता ।
 अध्यक्षर-क्रि० वि० अक्षरशः, अक्षर-अक्षर ।
 अध्ययन-पु० [सं०] पठन-पाठन, पढ़ना क्रिया ।
 अध्यामण, (णौ)-देखो 'अधियावणौ' । (स्त्री० अध्यामणी) ।
 अध्यात्म, (त्म)-पु० [सं० अध्यात्म] १ प्रत्येक शरीर में रहने
 वाली परमात्मा या परब्रह्म की सत्ता का नाम । २ आत्मा,
 मन व देह । —विद्या-स्त्री० ब्रह्मविद्या । आत्मतत्त्व विष-
 यक शास्त्र ।
 अध्यात्मिक-वि० [सं० अध्यात्मिक] अध्यात्म संबंधी । आत्मा
 संबंधी ।
 अध्यापक-पु० [सं०] (स्त्री० अध्यापिका) विद्यागुरु ।
 शिक्षक । मास्टर ।
 अध्यापको, (पिकी)-स्त्री० पढ़ाने का व्यवसाय व कार्य ।
 अध्यापण, (न)-पु० [सं० अध्यापन] अध्यापक का कार्य । शिक्षण ।
 अध्याहार-पु० [सं०] १ तर्क-वितर्क, बहस । २ अस्पष्ट को
 स्पष्ट करने की क्रिया ।
 अध्वेय-पु० [सं०] १ पठन-पाठन । २ निरुद्देश्य ।
 अध्रम-देखो 'अध्रम' ।
 अध्र्यामण, (णौ), अध्र्यामण, (णौ) अध्र्यामण, (णौ)
 अध्र्यामण, (णौ)-देखो 'अधियावणौ' [स्त्री० अध्र्यामणी] ।
 अध्रुव-वि० [सं० अ+ध्रुव] १ अस्थिर । २ चलायमान ।
 अध्व-पु० [सं०] १ मार्ग, रास्ता । २ देखो 'अध्वर' ।
 —ग-पु० पथिक, राही । सूर्य । ऊंट । खच्चर ।
 अध्वर-पु० [सं०] १ यज्ञ । २ वसुभेद । ३ मावधान ।
 ४ अन्तरिक्ष । —पु-पु० यज्ञ में यजुर्वेद पढ़ने
 वाला ब्राह्मण ।
 अध्वासण, (न)-पु० [सं०] चौरासी घासनों में से एक ।
 अनंक-पु० १ परब्रह्म । २ नगडा । —वि० चिह्न रहित ।
 अनंग-पु० १ [सं०] ब्रह्म । २ कामदेव । ३ आकाश । ४ मन ।
 ५ पवन-वि० १ विना देह का । २ माकृतिहीन । ३ अंगहीन ।
 —झोड़ा-स्त्री० रति, संभोग, मैथुन । —पु० मुक्तक
 नामक त्रिपम वृत्त । —तेरत-स्त्री० चंद्र जुबल पक्ष की
 त्रयोदशी । —बती-स्त्री० कामवती । —सेखर-पु० दण्डक
 वर्ण वृत्त का एक भेद । —सेना-स्त्री० गिगला का एक
 नामान्तर ।
 अनंगारि, (री)-पु० [सं० अनंगारि] शिव, महादेव ।
 अनंगी-देखो 'अनंग' ।
 अनंजलि-देखो 'अनंजलि' ।

अनंजा देखो 'अनुजा' ।

अनंत-पुं० [सं० अनं- + अंत] १ विष्णु । २ शेषनाग ।
३ लक्ष्मण । ४ अनन्तग । ५ आकाश । ६ श्रीकृष्ण ।
७ जिव, महादेव । ८ रुद्र । ९ जंघ । १० वामुकि ।
११ बावला । १२ अश्वक । १३ श्रवण नक्षत्र । १४ नादिक
मुख, गंडा । १५ एक आभूषण । --वि० (स्त्री०) अनंता
१ अन्त रहित । २ अपार, असीम । ३ वेहद । ४ अक्षय,
अखण्ड । --चतुरदशी, चवदस-स्त्री० भाद्रपद शुक्ला
चतुर्दशी, एक पर्व दिन । --दरसन, दरसन-पुं० सम्भय
दर्शन (जैन) --नाथ-पुं० चौदहवें तीर्थंकर (जैन) ।
--मूल-पुं० एक रक्त जोधक वनस्पति । --बात-पुं० शिर
का एक रोग । --विजय-पुं० युधिष्ठिर के जंग का नाम ।
--वत-पुं० अनन्त चतुर्दशी का व्रत ।

अनंतर-क्रि० वि० [सं०] १ पीछे, उपरांत, बाद में ।
२ बावजूद । ३ पास, समीप । ४ निरंतर, लगातार ।

अनंता-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । २ पार्वती । ३ पीपल ।
४ दूर्वा, दूब । ५ अनंत मूल । ६ अनंत-मुख ।
--पति पत्नी, पुं० राजा नृप ।

अनंद-पुं० १ भोजन, खाता । २ हर्ष, लुब्ध । --वि० १ बिना
पुत्र का । २ देखो 'आनंद' ।

अनंदी-वि० आनन्द युक्त ।

अनंदी-पुं० देवता ।

अन पुं० [सं०] १ श्वाग । २ कुछ शब्दों के पूर्व में लगने वाला
निषेध या अभाव सूचक उपसर्ग । --क्रि० वि०
१ बिना, वर्ग । २ और, तथा । ३ देखो 'अन्न' ।
४ देखो 'अन्व' । ५ देखो 'आन' । --अवसर
क्रि० वि० वैर्भाव, असमय । --इच्छा-स्त्री० अरुति ।
--कार, कारी वि० वीर, योद्धा । --कूट, कोट-पुं०
दीपावली के दूसरे रोज या कुछ दिन बाद तक मनाया जाने
वाला पर्व । इस पर्व में भगवान के भोग के लिए बनाये
जाते वाले विभिन्न व्यंजन । --कूळ-देखो 'अनुकूल' ।
--गड़, गड़-वि० बिना गढ़ा हुआ, बेडौल, भद्दा ।
--चाहत वि० न चाहने वाला निर्मोही । --चाहे
--क्रि० वि० वेगन में ।

अनड, (ई)-क्रि० वि० और ।

अनख-पुं० [सं० अनख] १ क्रोध, रोष । २ अप्रगल्भता,
नाराजगी । ३ खिन्नता, दुःख । ४ ग्लानि । ५ ईर्ष्या, द्वेष ।
६ भंक्रुट । --वि० बिना जूत या नख का ।

अनघ-पुं० १ आश्चर्य, विस्मय । २ देखो 'अनघ' ।

अनघ-वि० [सं०] १ अघ रहित, निष्पाप । २ निर्मल, पवित्र ।
३ पुण्यवान । --पुं० पुण्य ।

अनड-वि० [सं० अनन्तः अनड] १ वीर, वनवान । २ अनघ

उड्ड । ३ न झुकने वाला । ४ बन्धन रहित, स्वतन्त्र ।
--पुं० १ किला, गढ़ । २ पहाड़, पर्वत । ३ राजा ।
४ हाथी । ५ सांड, वृषभ । ६ गदैव आकाश में उड़ने
वाला पक्षी, अनलपक्षी । --नड-वि० वीरातिवीर ।
उड्डों को वश में करने वाला । --पंख, पंखे-पुं० एक
प्रकार का कल्पित आकाशी पक्षी, अनलपक्षी । --पण,
पण-पुं० शीर्ष, वीरता । उड्डता, बदमाशी । स्वतंत्रता ।
--पै, राज-पुं० सुमेरु पर्वत ।

अनडी-स्त्री० मूर्खता, अनाड़ीपन । --वि० मूर्ख, अनाड़ी ।

अनचार-देखो 'अनाचार' ।

अनजळ-देखो 'अन्नजळ' ।

अनज-देखो 'अनुज' ।

अनज्जवंस-पुं० अनार्यवंश ।

अनडवाण, (बांन, बांण बांन)-वि० [सं० अनडवान] बंधन में
रहने का अन्वयस्त । --पुं० नांड, वृषभ ।

अनडर-वि० १ निडर, निर्भय २ वलवान ।

अनडीठ-वि० बिना देखा ।

अनडुह, (हौ)-पुं० [सं० अनुडुह] बैल, वृषभ ।

अनडू-पुं० दुर्ग, किला, गढ़ ।

अनत-वि० [सं०] [स्त्री० अनता] --१ न जुगा हुआ, सीधा ।
२ अनघ, नम्रता रहित । --क्रि० वि० १ अनयत्र, कहीं और ।
२ देखो 'अनत' ।

अनता देखो 'अनंता' ।

अनथ, (थू)-वि० १ बिना नाथा हुआ, स्वतंत्र । २ उड्ड ।
३ देखो 'अनरथ' ।

अनथानथो-वि० १ अनाथों का नाथ, स्वामी । २ उड्डों को
काबू में करने वाला ।

अनदान-पुं० अन्न का दान ।

अनदाता (र) देखो 'अन्नदाता' ।

अनदास-वि० १ भोजन भट्ट, पेटू । २ खुदगर्ज ।

अनधिकार-वि० [सं०] १ अधिकार रहित । २ अनुचित ।
--पुं० १ बेवसी । २ अयोग्यता । --वेस्टा-स्त्री० अनुचित
हरकत ।

अननास-देखो 'अनायाम' ।

अनन्य-वि० [सं०] १ अभिन्न । २ एकनिष्ठ । ३ एकाग्रधी ।
४ पनिष्ठ । ५ अविभक्त । ६ अद्वितीय ।

अनपच-देखो 'अपच' ।

अनपाणो-देखो 'अन्नजळ' ।

अनपूरण, (णा)-देखो 'अन्नपूरणा' ।

अनभे-देखो 'अगभे' ।

अनभंद, (मंघ, मंघी, मंघी) वि० १ अपार, असंख्य । २ वीर,

बहादुर । ३ स्वतंत्र, आजाद । —पु० १ परमेश्वर, ईश्वर । २ शत्रु, दुश्मन ।

अनम-वि० [सं० अनम] १ न नमने वाला, अनम्र । २ उद्धत बली । ३ उहड़ । ४ जिसमें नमी न हो, शुष्क । —पु० ब्राह्मण ।

अनमख-पु० [सं० अनमिष] नमय ।

अनमद-वि० मद या अहंकार रहित ।

अनमान-देखो 'अनुमान' ।

अनमानांम-वि० उहड़ों को झुकाने की सामर्थ्य रखने वाला ।

अनमाई-स्त्री० अनम्रता ।

अनमाप, (मापौ)-वि० जो नापा न जा सके । अपार, असीम ।

अनमिख, (मेख)-वि० [सं० अनमिष] निमेष रहित, निनिमेष ।

—कि० वि० १ एक टक । २ निरंतर । —पु० १ देवता ।

२ मछली । ३ सर्प ।

अनमित, (मित)-वि० अपरिमित अपार, असीम ।

अनमत्ति, अनमिस्ती-वि० १ अप्रमाण, अनिर्दिष्ट ।

२ देखो 'अनमित' ।

अनमिषी, अनमि, (मौ)-वि० १ अनम्र, उहड़ । २ न झुकने वाला । ३ बलवान, शक्तिशाली । —खंड-वि० जो अपना कंधा न झुकने दे । शक्तिशाली बलवान ।

अनमुखाद-देखो 'अनमिख' ।

अनमुनी-स्त्री० [सं० उन्मुनी] हठगोत्र में अंगविन्यास की मुद्रा ।

अनमेळ-पु० शत्रु, दुश्मन । —वि० बेमेल ।

अनम्भ, (म्भो)-देखो 'अनम' । —खंड-देखो 'अनमीखंड' ।

अनम्र-वि० [सं०] १ अविनीत । २ घृष्ट । ३ उहड़ ।

अनय-पु० [सं० अन्याय] अनीति, अन्याय ।

अनयास-देखो 'अनायास' ।

अनरगळ-वि० [सं० अनर्गल] १ बेहूदा । २ व्यर्थ । ३ बेगोक, बेधड़क । ४ विचारहीन । ५ मनमाना । ६ लगातार । ७ अनियंत्रित, निरंकुश ।

अनरत-पु० [सं० अनृत] झूठ, असत्य । —वि० झूठा ।

अनरत्थ, अनरथ-पु० [सं० अनर्थ] १ उपद्रव । २ अन्याय ।

३ अत्यधिक हानि । ४ विनाश । ५ सरामर मिथ्या ।

६ अत्याचार । ७ अधर्म का कार्य । ८ खराबी ।

—वि० १ जिसका कोई अर्थ नहीं, निरर्थक । २ व्यर्थ ।

—क-वि० निरर्थक । व्यर्थ । —कारी-वि० अनिष्टकारी,

उपद्रवी, उलटा मतलब निकालने वाला ।

अनरघ-देखो 'अनिरुद्ध' ।

अनरस, (रसा, रसी)-पु० १ रसहीनता, शुष्कता, रुखाई ।

२ कोप । ३ मनोमानिन्य, फूट । ४ दुःख, खेद, रंज ।

५ उदासी । ६ अन्ध रस ।

अनरूप-वि० १ कुरूप, भद्दा । २ असदृश ।

अनल स्त्री० [सं० अनल] १ अग्नि, आग । २ पित्त ।

३ तीन की संख्या । —कुंड-देखो 'अगनी कुंड' । —चूरण-

बाहद । —पंख-देखो 'अनडपंख' । —पंखचार-पु० हाथी ।

—पुड-पु० पहाड़ । —मुख-देवता । ब्राह्मण । —वि० जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ले । २ देखो 'अनिल' ।

अनलप-देखो 'अनल्प' ।

अनलस-वि० [सं० अनला] आलस्य रहित, परिश्रमी ।

अनला-स्त्री० १ कश्यप ऋषि की एक पत्नी । २ माल्यवान राक्षस की कन्या । ३ देखो 'अनल' । ४ देखो 'अनिल' ।

अनल्प-वि० [सं०] अत्यधिक, अपार ।

अनवय-पु० [सं० अन्वय] १ वंश, कुल । २ वाक्य विन्यास ।

अनवार-वि० अन्य दूसरा ।

अनवी-वि० १ नहीं नमने वाला । २ कीर ।

अनसन-पु० [सं० अनशन] १ निराहार व्रत, उपवास । २ भूख हड़ताल ।

अनसवर-वि० [सं० अनश्वर] १ अनश्वर, अविनाशी ।

२ अटल । ३ नित्य, मनातन । —पु० ईश्वर, परमात्मा ।

अनसार-पु० भोजन ।

अनसूया, अनसोया-स्त्री० [सं० अनसूया] १ अत्रि ऋषि की पत्नी । २ शकुन्तला की एक मन्त्री । ३ अन्-ईर्ष्या । द्वेष भावना का अभाव ।

अनस्व-पु० [सं० अनश्व] गंधा, गर्दभ ।

अनस्वार-देखो 'अनुस्वार' ।

अनहद, (ह)-वि० जिसकी कोई हद नहीं, अपार, बेहद । —पु० अनाहत नाद ।

अनांम, (मी)-वि० [सं० अनाम] १ बिना नाम का । २ अप्रसिद्ध । २ देखो 'इनाम' ।

अनांमति (तो)-वि० [सं० अनन्यमति] कुशलबुद्धि, चतुर ।

अनांमय-वि० [सं० अनामय] निरोग, तन्दुरुस्त ।

अनांमा, अनामिका-स्त्री० [सं० अनामिका] मध्यमा के बाद की उंगली ।

अनाक-कि० वि० नाहक, व्यर्थ । —कर, कार-वि० निराकार ।

अनाकांती-देखो 'अनाकांती' ।

अनागत-वि० [सं०] १ अनुपस्थित । २ आगे आने वाला ।

३ अजात । ४ होनहार । ५ अनादि, अजन्मा । ६ अपूर्व ।

७ अद्भुत ।

अनाग्रह-कि० वि० बिना आग्रह के । —पु० आग्रह का अभाव ।

अनाघात-वि० [सं०] १ आघात या चोट रहित । २ अनाग्रण ।

अनाड-देखो 'अनड' ।

अनाडवी, अनाड़ी-वि० १ अनाड़ी । २ सूर्य नाममभ ।

३ नादान । ४ अकुशल । —पण, पणौ-पु० सूर्या, नाशमभी, उहड़ना ।

अनाड़ी-देखो 'अनड' ।

अनाचार

(४८)

अनिपुण

अनाचार-पुं० [सं०] १ दुराचार, पापाचार । २ अन्याय, शरीर । ३ अत्याचार । -ता-स्त्री० दुर्गन्तागिता, कुरीति, दुर्ग आचरण ।

अनाज-पुं० [सं० अन्न] अन्न, धान्य ।

अनातप-पुं० [सं०] क्षुप या गर्मी का अभाव ।
वि० ताप रहित, शीतल ।

अनात्म-वि० [सं० अनात्म] आत्मा रहित, जड़ ।

अनाथ-वि० [सं०] १ जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो, लावारिस । २ असहाय, अशरण । ३ माता-पिता से हीन । ४ दीन, दुःखी । -आलय, आलय-पुं० लावारिस बच्चों को रखने का स्थान, यतीमखाना । -नाथ-वि० ईश्वर, विष्णु । -वि० अनाथों का महायक ।

अनाथी, (थी)-वि० १ बिना नाथ का । ३ उद्धृष्ट । ३ स्वतन्त्र । ४ अनाथ ।

अनाद-देखो 'अनादि' ।

अनादर-पुं० [सं०] अपमान, अवज्ञा, निरम्कार, अवहेलना ।

अनादि, (दी)-वि० [सं०] १ उत्पत्ति रहित, स्वयंभू । २ नित्य, अनन्त । ३ परम्परागत । --जोगी योगी-पुं० शिव, महादेव ।

अनाधार-वि० [सं०] १ आधार रहित, निराधार । ३ बेमहारा ।

अनानास-पुं० एक फल विशेष ।

अनाप-पुं० [सं० अन्न-अप] अप्रयत्न । -वि० १ नाप रहित । २ अपार । -सनाप-वि० वेहेर, अपार । ऊट-पटांग । निरर्थक । -पुं० व्यर्थ प्रलाप ।

अनाथक-वि० १ नाथक रहित । २ रक्षक रहित ।

अनाथत-देखो 'इनायत' ।

अनापास-क्रि० वि० [सं०] १ बिना प्रयास के, सहज में । २ अचानक, सहसा ।

अनार-पुं० [फा०] लाल दानों वाला फल दाड़िम । --दांणी --पुं० अनार का दाना ।

अनारज, अनारिज-पुं० [सं० अनार्य] अनार्य, अमुर, दस्यु । --वि० नीच, न्यून ।

अनारी-देखो 'अनाड़ी' ।

अनाल-वि० सर्वत्र ।

अनालसी-वि० नुस्त । परिश्रमी ।

अनावश्यक-वि० [सं० अनावश्यक] व्यर्थ, निरर्थक । --ता-स्त्री० जरूरत का अभाव ।

अनावृत, (अनित)-वि० [सं० अनावृत] आवरण रहित, खुला ।

अनावृष्टि, (वस्टी, व्रिस्टी)-स्त्री० [सं० अनावृष्टि] वर्षा का अभाव, अकाल । जलकण्ट ।

अनास-पुं० १ एक प्रकार का फल । २ देव वृक्ष । --वि० कायर ।

अनासतो-स्त्री० १ मनोत्वहीनस्त्री । २ कुसमय । --वि० १ बुरा । २ दुःखप्रद । ३ कायर ।

अनासिक-वि० नाक रहित, नकटा ।

अनासुरति (ती)-क्रि० वि० अकस्मात्, अचानक ।

अनास्था-स्त्री० [सं०] १ आस्था का अभाव, अश्रद्धा । २ अविश्वास । ३ अप्रतिष्ठा । ४ अनादर ।

अनात्म-वि० १ आश्रयहीन । २ पतित । ३ बिना अम का ।

अनाश्रमी-वि० [सं० अनाश्रमी] आश्रम भ्रष्ट, पतित ।

अनाश्रय, अनाश्रित-वि० [सं० अनाश्रय] १ निराश्रय, निरालंब । २ दीन, अनाथ ।

अनाह-पुं० [सं० अनाह] कब्ज का रोग, आफरा । देखो 'अनाथ' --क-क्रि० वि० नाहक, व्यर्थ में ।

अनाहत, (हद)-वि० [सं०] जो आहत न हो । --पुं० १ दोनों कानों को बंद करने पर सुनाई देने वाला जड़ । (योग) २ योग के आठ कमल चक्रों में से एक । ३ इन्द्रियों को अंतर्मुखी कर सुनी जाने वाली मंत्र ध्वनि । --नाद-पुं० प्रकृति में व्याप्त ध्वनि ।

--वांसी-स्त्री० आकाशवाणी या देववाणी ।

अनाहार-पुं० [सं०] १ भोजन का अभाव या त्याग । २ निराहार अन्न । --वि० १ निराहार, भूखा । २ विजयो ।

अनिद, (य)-वि० [सं० अनिद्य] १ जो निदा योग्य न हो । २ शेष रहित । ३ उत्तम, श्रेष्ठ । ४ जिसे नींद न आती हो । --क-वि० जो किसी की निदा न करे ।

अनिदित-वि० [सं०] १ जिसकी निदा न हो । २ उत्तम ।

अनिद्रा-पुं० १ देवता । २ अनिद्रा का रोग ।

अनिद्री, अनिद्रीपित-पुं० [सं० इन्द्रियपति] मन ।

अनि-सर्व० १ अन्य, दूसरा । २ भिन्न ।

अनिअग्नी-क्रि० वि० १ भिन्न-भिन्न । २ तरह-तरह से ।

अनिआई, (याई)-देखो 'अन्यायी' ।

अनिकार-पुं० दोर, मोढ़ा ।

अनिच्छ-स्त्री० [सं०] इच्छा का अभाव । --वि० १ इच्छा रहित । २ न चाहने वाला । ३ अनिश्चित ।

अनिच्छा-स्त्री० १ इच्छा का अभाव । २ अरुचि ।

अनित्य-वि० [सं०] १ जो सदा न रहे । २ नश्वर । ३ क्षणिक । ४ अनियमित । ५ अमत्य, सूटा । ६ अस्थायी । ७ अस्थिर । --ता-स्त्री० नश्वरता । अस्थिरता ।

अनिनज-पुं० [सं० अनन्यज] कामदेव, मदन ।

अनिप, (पति, पती)-पुं० [सं०] मेनापति, मेना नाथक ।

अनिपुण-वि० [सं०] १ अकृतज्ञ, अपढ़ । २ अनाड़ी ।

अनिबंध, (घी, धौ), अनिमंघ, घी धौ—देखो 'अनमंघ' ।
 अनिमिख—देखो 'अनमिख' ।
 अनिमित्त, (त्त)—वि० [सं० अ-निमित्त] १ बिना निमित्त का, हेतु रहित । २ अकारण ।
 अनिमिस, (मेख)—देखो 'अनमिख' ।
 अनियत—वि० [सं०] १ अनिश्चित । २ अस्थिर । ३ अनित्य ।
 अनियाई, (यायी)—देखो 'अन्यायी' ।
 अनियाऊ, (याव)—देखो 'अन्याय' ।
 अनिरण्य—पु० [सं० अनिरण्य] १ निर्णय का अभाव । २ दुविधा । ३ संशय, संदेह ।
 अनिरत, (रित)—पु० [सं० अनृतम्] झूठ, असत्य ।
 अनिरुद्ध, (रुध, रुध)—पु० [सं० अनिरुद्धः] श्रीकृष्ण का पौत्र व उषा का पति । —वि० जो अवरुद्ध न हो । —पिता कामदेव, मदन, प्रद्युम्न ।
 अनिरु—स्त्री० [सं० अनिरु] वायु, पवन, हवा । —कुमार—पु० भीम, हनुमान ।
 अनिरासी—पु० [सं० अनिराशिन] १ सर्प । २ एक व्रत विशेष । ३ केवल वायु के आधार पर रहने वाला प्राणी ।
 अनिवारित—वि० [सं०] जिसका निवारण न हो सके ।
 अनिस—क्रि० वि० [सं० अनिश] निरन्तर, लगातार ।
 —वि० निशा रहित ।
 अनिसचित—वि० [सं० अनिश्चित] १ जिसका निश्चय न हो । २ अनियत । ३ अनिर्दिष्ट ।
 अनिरुद्ध—वि० [सं० अनिरुद्ध] जो डूब न हो, अवांछित ।
 —पु० १ अमंगल, अहित । २ बुराई । ३ विनाश, हानि ।
 —कर, कार, कारी—वि० अहितकर । अमंगलकारी । हानिकारक ।
 अनिरुद्ध—वि० [सं० अनिरुद्ध] दयावान, सरलचित्त ।
 अनिरुद्धा—स्त्री० [सं० अ + निरुद्धा] १ अश्रद्धा, अविश्वास । २ विराग । ३ अप्रतिष्ठा । —वि० अवांछित ।
 अनिरुद्ध—देखो 'अनाहत' ।
 अनिरुद्ध—देखो 'अनिद' ।
 अनिरुद्ध—देखो 'अनिद्रा' ।
 अनिरुद्ध—१ देखो 'अनिद्रा' । २ देखो 'अनिद्रा' । देखो 'अनिद्रा' ।
 अनिरुद्ध—पु० [सं० अनिरुद्धः] १ सैन्य-समूह । २ युद्ध । ३ योद्धा, ४ माथी । सुभट । ५ भागीदार । —वि० जो ठीक न हो । बुरा ।
 अनिरुद्ध—स्त्री० [सं० अनिरुद्धा] १ सेना, फौज । २ अश्वोहिणी सेना का दशांश ।
 अनिरुद्ध—वि० [सं०] १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ ऊँचा, उच्च । ३ जो तुलना में कम न हो ।
 अनिरुद्ध—देखो 'अनिद्रा' ।

अनीत, (नीति)—स्त्री० [सं० अनीति] १ अन्याय, बेइन्साफ । २ अत्याचार । ३ अव्यवस्था, अन्धेरा ।
 अनीतौ—वि० (स्त्री० अनीती) १ अन्यायी । २ आततायी । ३ दुराचारी । ४ दुष्ट । ५ चंचल ।
 अनोप—देखो 'अनिप' ।
 अनोम—वि० [सं० अनम] १ न झुकने वाला । २ वीर ।
 अनोपाव—देखो 'अन्याय' ।
 अनोळबाजी, (बाजी)—पु० जिसके घोड़े श्वेत हों, अर्जुन ।
 अनोस—वि० [सं० अनोश] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि । २ जो किसी का स्वामी न हो । ३ लावारिस, अनाथ । —पु० १ विष्णु । २ जीव । ३ माया । ४ सेनापति ।
 अनोस्वर—वि० [सं० अनोस्वर] १ असंयत । २ अयोग्य । ३ नास्तिक । ४ जो ईश्वर संबंधी नहीं हो ।
 अनोह—वि० [सं०] १ निःस्पृह, निरपेक्ष । २ अनिच्छुक । ३ निर्लोभी ४ निष्काम । ५ निःस्पृष्ट । ६ आलसी । ६ निराश । —पु० समय, वक्त ।
 अनोहा—स्त्री० [सं०] अनिच्छा ।
 अनुद्यमी—देखो 'अनुद्यमी' ।
 अनु—अव्य० [सं०] १ शब्दों के आगे लगने वाला उपसर्ग । २ हाँ, ठीक । ३ अब । ४ आगे । ५ पीछे, पश्चान् । ६ साथ, पास-पास । ७ ओर, तरफ । ८ एक के बाद एक, क्रमशः । —कथा—स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह । सहानुभूति । करुणा । —कथन (न)—पु० वाद का कथन । वार्तालाप । अनुकूल कथन । पुनर्कथन । —करण—पु० नकल । प्रतिरूपकरण । देखा-देखी कार्य । —करणीय—वि० अनुकरण करने योग्य । —करता—वि० नकल करने वाला । —कार—वि० समान, तुल्य, सदृश, बराबर । —गमन—पु० अनुसरण । समान आचरण । सहगमन । स्त्री का मती होना ।
 अनुकूल—वि० [सं० अनुकूल] १ मुआफिक, मनोज्ञ । २ पक्ष में, तरफदार । ३ प्रसन्न, खुश । ४ सदैव, दोस्त । ५ समर्थनीय । ६ विश्वतः । ७ हितकर । —पु० विवाहिता स्त्री में ही अनुसक्त नायक । —ता—स्त्री० पक्षपात । सहायता । प्रसन्नता । हित होने की दशा ।
 अनुकूल—स्त्री० एक प्रकार का छंद ।
 अनुकोस—पु० [सं० अनुकोश] कृपा, दया, अनुग्रह ।
 अनुक्रम—पु० [सं०] १ क्रम, सिलसिला । २ यथाक्रम, तर्तीय । ३ परिपाटी । ४ विषय सूची ।
 अनुक्रमिका, (रीका)—स्त्री० [सं०] १ विषय सूची । २ सूची, फहरिस्त, तालिका ।
 अनुक्रमि—क्रि० वि० अनुक्रम में, क्रमशः ।

अनुग

(१०)

अनुलोम

अनुग, (गत)-वि० [सं०] १ अनुगत, अनुगामी । २ अनुयायी । ३ आजाकामी । ४ साथी, सहचर । ५ पिछलग्नु । ६ अनुकूल, मायिक । —पु० १ नौकर, अनुचर । २ दास, सेवक । ३ शिष्य ।

अनुग्या, (गिग्या)-स्त्री० [सं० अनुज्ञा] आज्ञा, आदेश ।

अनुग्रह-पु० [सं०] १ दया, कृपा । २ प्रसन्नता । ३ अनिष्ट-निवारण । ४ करुणा ।

अनुचर-पु० [सं०] १ नौकर, सेवक, दास । २ अनुयायी, अनुगामी । ३ साथी । ४ पिछलग्नु ।

अनुचित-वि० [सं०] १ जो उचित न हो, गैरवाजिब । २ बुरा, अयोग्य । ३ नीति विरुद्ध । ४ अयुक्त । ५ असाधारण ।

अनुज, (ज्ज)-पु० [सं०] (स्त्री० अनुजा) छोटा भाई । —वि० १ छोटा । २ पीछे जन्मा । ३ पिछला ।

अनुजीवी-वि० [सं०] १ पराधीन, पराश्रित । २ परावलम्बी । ३ आश्रित । —पु० दास, नौकर ।

अनुताप-पु० [सं०] १ ताप, तपन । २ दाह, जलन । ३ दुःख, रंज । ४ पश्चात्ताप । ५ अपमोस, खेद ।

अनुद्यमी-वि० [सं०] १ जो श्रम न करे, आलसी । २ उद्यम रहित, बेकार, ठाला ।

अनुदुत पु० [सं०] संगीत में ताल का एक भेद ।

अनुभावण, (न)-पु० [सं०] १ अनुगमन । २ अनुसरण । ३ अनुसंधान । ४ पीछा ।

अनुनय-पु० [सं०] १ विनय, प्रार्थना । २ विनय कथन । ३ मान्यता ।

अनुनासिक-वि० [सं०] नासिका की सहायता से उच्चारित होने वाले वर्ण ।

अनुप, (पम)-वि० [सं०] १ अद्वितीय, बेजोड़ । २ अनुल्य । ३ अनोखा, अद्भुत ।

अनुपयुक्त-वि० [सं०] १ जो उपयुक्त न हो । २ अयोग्य । ३ असंगत, अनुचित ।

अनुपात-पु० [सं०] १ गणित की श्रेणिक क्रिया, गणना । २ मात्रा । ३ माप ।

अनुपातक-पु० ब्रह्महत्या के बराबर का पाप ।

अनुपादक-पु० [सं०] आकाश से भी सूक्ष्म एक तत्व । (तंत्र)

अनुप्रास-पु० [सं०] एक प्रकार का शब्दालंकार ।

अनुबंध-पु० [सं०] १ बंधन, लगाव । २ इत्सर्जक वर्ण । ३ मिलमिला, आरंभ । ४ क्रम । ५ बंधन । ६ डेका । ७ दरादा, उद्देश्य ।

अनुभव, (भाव)-वि० [सं० अनुभवं] १ साक्षात् करने पर प्राप्त हुआ ज्ञान । २ व्यावहारिक ज्ञान । ३ गमक । ४ गनेशन ।

अनुभवी-वि० [सं०] व्यावहारिक या प्रत्यक्ष ज्ञान वाला, तजरबेदार, भुक्त-भोगी ।

अनुभाव-पु० [सं०] १ महिमा, बड़ाई । २ चमक-दमक । ३ अधिकार । ४ प्रभाव । ५ काव्य-रस के चार अंगों में से एक । ६ निश्चय ।

अनुभूत-वि० [सं०] १ अनुभव किया हुआ । २ परीक्षित । ३ भोगा हुआ ।

अनुभूति-स्त्री० [सं०] प्रत्यक्ष अनुभव, परिज्ञान, बोध ।

अनुमत, अनुमति-स्त्री० [सं० अनुमतम्, अनुमतिः] १ इजाजत । २ स्वीकृति । ३ सहमति । ४ सम्मति । ५ चतुर्दशी के योग की पूर्णिमा ।

अनुमरण-पु० [सं०] १ सहमरण । २ सती होना, पीछे मरना ।

अनुमान-पु० [सं० अनुमान] १ अटकल, अंदाजा । २ कल्पना । ३ न्याय शास्त्र के चार प्रमाणों में से एक । —वि० समान, तुल्य, बराबर । —क्रि० वि० अनुसार ।

अनुमति, (मिति)-देखो 'अनुमति' ।

अनुमोदक-वि० [सं०] समर्थक, अनुमोदनकर्ता ।

अनुमोदन-पु० [सं०] १ समर्थन, सहमति । २ स्वीकृति । ३ प्रसन्नता का प्रकाशन ।

अनुमोदित वि० [सं०] १ समर्थित । २ स्वीकृत ।

अनुयायी-वि० [सं०] १ अनुगामी । २ अनुकरण करने वाला । ३ पीछे चलने वाला । —पु० १ नौकर, सेवक । २ शिष्य ।

अनुयोग-पु० [सं०] १ योग, जोड़ । २ प्रश्न । ३ खोज, शोध । ४ परीक्षा । ५ भर्त्सना । ६ याचना । ७ प्रयास । ८ चिंतन ।

अनुयोजन-पु० [सं०] १ प्रश्न, जिज्ञासा । २ शोध, खोज ।

अनुरंजन (न)-पु० [सं०] १ मनोरंजन । २ अनुराग, प्रीति ।

अनुरक्त, (रत, रति)-वि० [सं०] १ आसक्त, लीन, रत । २ अनुराग युक्त ।

अनुराग, (ग्य)-पु० [सं०] १ प्रेम, प्यार, मोह । २ आसक्ति । ३ भक्ति । ४ संगोग, रति । ५ प्रशंसा । ६ ललाई ।

अनुरागी-वि० [सं०] १ अनुराग करने वाला, प्रेमी । २ आसक्त, अनुरक्त ।

अनुराधा-स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में से १७ वां नक्षत्र ।

अनुरूप-वि० [सं०] १ सदृश, समान । २ एक जैसा । ३ उपयुक्त । ४ अनुकूल ।

अनुरूपक-पु० [सं०] प्रतिमूर्ति, प्रतिबिंब ।

अनुरूपता-स्त्री० [सं०] १ समानता, सादृश्य । २ अनुकूलता ।

अनुरोध-पु० [सं० अनुरोधः, अनुरोधम्] १ विनय, प्रार्थना । २ आग्रह । ३ प्रेरणा । ४ उरोजना । ५ बाधा, रुकावट । ६ दवाव । ७ अनुवर्त्तन ।

अनुलोम-वि० [सं०] १ केश सहित । २ व्रमानुसार । ३ अनुकूल । ४ संकर । ५ अयिलोम, मोघा । ६ नियमित ।

अनुलोमनी

(५५५)

अनोड़

—पु० १ नीचे उतरने का कार्य । २ स्वरों का अवरोह (संगीत) । —ज-वि० उच्चवर्णीय पुरुष तथा निम्न वर्णीय स्त्री की संतान । वर्णसंकर ।

अनुलोमनी-स्त्री० [सं०] दस्तावर दवा ।

अनुवाद-पु० [सं०] १ भाषांतर । उल्था । तर्जुमा । २ पुनरुक्ति, दोहराना । —क-पु० अनुवाद करने वाला । —वित्त-वि० अनुवाद किया हुआ ।

अनुसंधान-पु० [सं०] शोध, अन्वेषण, खोज ।

अनुसर-पु० [सं० अनुसरः] १ अनुगामी । २ साथी । ३ अनुचर ।

अनुसरण-पु० [सं० अनुसरणम्] अनुगमन, पीछा करना ।

अनुसार-क्रि० वि० [सं०] १ मुताबिक । २ अनुरूप । ३ समान, सहज ।

अनुशासक-पु० [सं० अनुशासक] १ अनुशामन करने वाला अधिकारी । २ शिक्षक । ३ निर्देशक । —वि० १ शासक । २ हुकम देने वाला । ३ प्रबन्धक ।

अनुशासन, (न)-पु० [सं० अनुशासन] १ आज्ञा, आदेश । २ शिक्षा, उपदेश । ३ नियम पालन । ४ मर्यादा । ५ शिष्टता पूर्ण व्यवहार ।

अनुशीलन-पु० [सं० अनुशीलन] १ चिंतन, मनन । २ अभ्यास ।

अनुष्टुप, (स्टुप)-पु० [सं० अनुष्टुप] एक प्रकार का वर्ण वृत्त । अनुष्टान्, (स्टान्)-पु० [सं० अनुष्टान] कार्य सिद्धि निमित्त देव विशेष की पूजा ।

अनुहरणौ (बौ)-क्रि० समान होना, तुल्य होना, समानता करना ।

अनुहार-स्त्री० [सं०] १ आकृति, शकल । २ देखो 'अनुसार' ।

अनूतो-देखो 'अणूतो' (स्त्री० अनूती) ।

अनूकंपा-देखो 'अनुकंपा' ।

अनूग्रह-देखो 'अनुग्रह' ।

अनूठी-वि० [सं० अनुत्थ, प्रा० अनुठ्ठ] (स्त्री० अनूठी) १ अनोखा, अद्भुत, विचित्र । २ उत्तम बढ़िया ।

अनूढ़-वि० [सं०] (स्त्री० अनूढ़ा) १ अविवाहित, कुंवारा । २ न डोया हुआ । —पु० क्वारा व्यक्ति ।

अनूढ़ा-स्त्री० [सं०] १ किमी पुरुष से प्रेम संबंध रखने वाली अविवाहिता स्त्री । २ वेश्या । ३ एक प्रकार की नाविका । —नामी-वि० व्यभिचारी, वेश्यानामी । अविवाहित स्त्री से व्यभिचार करने वाला ।

अनूप, अनूपम-वि० अनुत्प, अनोखा । —जथा-स्त्री० डिगल छंद रचना का एक विधान ।

—तर-पु० आम का पेड़ व फल ।

अनूपां, (पे, पौ)-देखो 'अनूपा' ।

अनूरौ-वि० दूर रहित, कांतिहीन ।

अने-क्रि० वि० और, तथा । —पु० आज्ञा, आदेश ।

अनेक, (के, कं)-वि० [सं० अनेक] १ एक से अधिक । २ बहु संख्यक । ३ अगणित, अपार । ४ भिन्न-भिन्न । ५ वियुक्त, जो नेक न हो, बदमाश । —अरथ, अरथी-वि० जिसके कई अर्थ हों । (शब्द) —ता-स्त्री० अधिकता, बाहुल्य । भेद-विभेद । मताधिक्य । —प-पु० हाथी, गज । —लोचन-पु० इन्द्र । कार्तिकस्याम ।

अनेकांत-वि० १ जो एकान्त न हो । २ चंचल । ३ अनियत, अनिश्चित । ४ वास्तविक । ५ अनन्त धर्मों के समन्वित रूप को पूर्ण सत्य मानने का भाव (जैन) —वाद-पु० जैन दर्शन, आर्हत दर्शन ।

अनेकी-स्त्री० १ बुराई । २ अपकार । ३ अन्याय । ४ बदमाशी ।

अनेड़-वि० [सं० अनेड़] १ निकम्मा । २ टेढ़ा, तिरछा । ३ खराब, बुरा । ४ उद्दण्ड । ५ मूर्ख, अनाड़ी ।

अनेत-वि० [सं० नेति] अंतहीन । नेति ।

अनेम-वि० [सं० अ-नियम] जिसका कोई नियम न हो, नियम रहित ।

अनेर, (री, रौ)-वि० [सं० अन्य] अन्य, दूसरा, अपर ।

अनेरण-वि० १ न झुकने वाला । २ अजेय ।

अनेस-वि० १ स्नेह रहित । २ धर रहित । ३ अनेक ।

अनेसौ-स्त्री० खोटी बात, बुरी बात । —वि० १ अद्भुत, अनोखी । २ अतुल्य, बेजोड़ ।

अनेसौ-पु० १ शक, संदेह । २ दुःख, वेद । ३ देखो 'अनैसौ' ।

अनेह-पु० [सं० अ-स्नेह] १ स्नेह या प्रेम का अभाव । २ विरक्ति । ३ समय, काल ।

अनेहा-पु० [सं०] १ समय, काल । २ अवसर, मौका ।

अनेही-वि० शत्रुता रखने वाला, द्वेषी ।

अनेही-वि० शत्रुता रखने वाला, द्वेषी ।

अने-पु० [सं० अनय] अनोति, अन्याय । —प्रव्य० १ फिर, पुनः । २ और, तथा ।

अनेस-देखो 'अनेस' ।

अनैसी-देखो 'अनेसी' ।

अनेसौ-वि० १ दूर । २ अग्ररचित ३ । लापरवाह । ४ निशंक, निर्णय । ५ अप्रिय । बुरा । ६ देखो 'अनेसौ' ।

अनोघन, (अन)-क्रि० वि० [सं० अन्योन्य] परस्पर, आपस में ।

अनोकह, (कुह)-वि० [सं०] १ अपना स्थान न छोड़ने वाला । २ स्थावर । —पु० वृक्ष, पेड़ ।

अनोख, (खी)-वि० (स्त्री०-अनोखी) १ सुन्दर, खूबसूरत । २ अनूठा, निराला, अद्भुत । ३ विचित्र । —पण, पाणी-पु० सुन्दरता, अनूठापन ।

अनोड़-देखो 'अनड़' ।

अनौप, (पम) - देखो 'अनुपम' ।

अन्न-पुं० [मं०] १ अनाज, धान । २ भोजन खाना । ३ खाद्य पदार्थ । ४ भात । ५ विष्णु । ६ मूर्य । ७ जल । ८ पृथ्वी । ९ देखो 'अन्य' । -कूट-पुं० अन्न का पहाड़ । देखो 'अनकूट' । --क्षेत्र, सत्र-पुं० भूखों को भोजन देने का स्थान । --जल-पुं० अन्न-जल । खाने-पीने का योग । --जी, जी, बाजी-पुं० भोजन । --ङ-देखो 'अनङ्' । --था-देखो 'अन्यथा' । --दान-पुं० अन्न का दान । --दाता-वि० पोषक, परिपाणक, अन्न का दान देने वाला । --दास-पुं० भोजन-भट्ट, पट्ट । --पांणी-अन्नजल' । --पूरण (ण) -स्त्री० अन्न की अधिष्ठात्री देवी । काशीश्वरी, विश्वेश्वरी, वरवड़ी देवी का नाम । दुर्गा, पार्वती का एक नाम । --प्रतप्या, प्रतिप्या-स्त्री० अन्न त्याग का संकल्प । --प्रासन-पुं० अन्न खिलाने का प्रथम संस्कार । --मयकोस-पुं० त्वचा से वीर्य तक का समुदाय । पंचकोशों में से प्रथम ।

अन्नण-चक्रण-पुं० यौ० चन्दन का ईश्वर ।

अन्नल, (ला) - देखो 'अनल' ।

अन्नाद-देखो 'अनादि' ।

अन्नाहत-देखो 'अनाहत' ।

अन्नबंध-देखो 'अनमद' ।

अन्नक-देखो 'अनेक' ।

अन्य-वि० [मं०] १ दूसरा । भिन्न, २ विचित्र । ३ पगया, गैर । ४ अनिरिक्त । ५ नया । ६ अधिक । --क्रीत-वि० दूसरों का शरीर हुआ । --पुरुष-पुं० सर्वनाम का तीसरा भेद । दूसरा व्यक्ति ।

अन्यत्र-क्रि० वि० [सं०] १ दूसरी जगह पर । २ कहीं और ।

अन्यथा-क्रि० वि० [मं०] १ नहीं तो । २ प्रकारान्तर से ।

अन्याई, (यी) -वि० [सं० अन्यायी] १ अन्याय व अत्याचार करने वाला । २ आतताई । ३ पक्षपात करने वाला ।

अन्याय, (व) -पुं० [सं०] १ न्याय का अभाव । २ अत्याचार, जुल्म । ३ नीति विरुद्ध आचरण ।

अन्योक्ति-स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का अर्थालंकार । २ अप्रत्यक्ष कथन ।

अन्योन्य-क्रि० वि० [सं०] आपस में, परस्पर । --आश्रय-पुं० परस्पर आश्रित होने की दशा या भाव । सापेक्ष ज्ञान । एक अर्थालंकार ।

अन्यय-पुं० [सं०] १ परस्पर संबंध । २ संयोग, मेल । ३ कार्य कारण संबंध । ४ वंश ।

अन्वेसक-वि० [सं० अन्वेपक] १ शोधार्थी, गवेषक । २ खोज करने वाला ।

अन्वेक्षण-पुं० [सं० अन्वेक्षण] अनुसंधान, खोज, शोध । तलाश ।

अन्हायतर-स्त्री० शीघ्रता ।

अन्हेरी-वि० (स्त्री० अन्हेरी) अन्य, दूसरा ।

अपंग-वि० [सं० अपांग] (स्त्री० अपंगा, अपंगी) १ अंगहीन ।

२ लंगड़ा, लूला । ३ अशक्त, निर्बल । ४ असमर्थ, असहाय ।

अपथ-पुं० [सं० अपथ] १ कुपथ, कुमार्ग । २ बीहड़ रास्ता, विकट मार्ग, ३ पथ का अभाव ।

अपपर-देखो 'अपरंपार' ।

अप-अध्य० [सं०] शब्दों के आगे लगकर विरुद्ध या उल्टा अर्थ देने वाला उपसर्ग । सर्व० आप, अपने । --वि० बुरा, अशुभ । --पुं० [सं० अप्] पानी, जल । --अप्, आप-क्रि० वि० अपने आप, स्वयमेव । --इण-सर्व-अपना । --कंठ-पुं० बालक । --क-पुं० पानी । --कज-क्रि० वि० अपने लिये । --करण-पुं० दुराचार । अनुचित कार्य । --करता-वि० हानिकारक । अनिष्ट कारक । पापी । --करम-पुं० दुष्कर्म, कुकर्म । --काजी-वि० स्वार्थी । --कार-पुं० बुराई । हानि । क्षति । अनिष्ट । निरादर, अपमान । दुर्व्यवहार । --कारक कारी-वि० दुष्कर्मी । नीच । विरोधी । अनिष्ट कारक । द्वेषी । --कीरत, कीरति, कीरती-स्त्री० अपयश । बदनामी । निरा । हंसी । --पख-पक्ष रहित । अयहाय । पंख रहित । --कति-स्त्री० निरादर । अपमान । हानि बुराई । अगकार । --घन-पुं० शरीर, देह । --घातक, घातीक-वि० हत्यारा, हिंसक, आत्मघातक । --घात-स्त्री० आत्महत्या । हिंसा । हत्या । धोखा । --चय-पुं० नाश, संहार । --चाल-स्त्री० बुरी चाल । खोट । --चित-वि० पूज्य । --छंद-वि० कुमार्गगामी । --जय-स्त्री० पराजय । --जस-पुं० अपयश । --जोग-पुं० बुरा योग, कुसमय, अशुभयोग । --जोर-पुं० सामर्थ्य । --जोरी-वि० निरंकुश । --तंत्र-पुं० एक प्रकार का वात रोग । --तर-वि० नीच, पतित । क्लृप्त । --स्त्री० न जोती हुई भूमि । --ताई-स्त्री० निर्लज्जता । नीचता । --तानक-पुं० गर्भपात से होने वाला रोग । --ताप-पुं० मूर्य । --वि० नीच । --वत, दत्ता-वि० अपना दिया । धात, ध्यात-पुं० चन्द्रमा । --ध्वंस-पुं० अधःपतन । नाश । अप्रतिष्ठा । --नाम-पुं० अपकीर्ति । शिकायत ।

अपक्षपात-पुं० [सं०] १ पक्षपात का अभाव । तटस्थ नीति । २ न्याय । ३ न्याय पूर्ण निर्णय ।

अपखी-वि० जिसका कोई पक्षधर न हो, असहाय ।

अपगा-देखो 'आपगा' ।

अपंगी वि० (स्त्री० अपंगी) १ अविश्वामी । २ देखो 'अपंग' ।

अपङ्गुणौ, (बी) -क्रि० [सं० आपङ्] १ पकड़ना । २ गोकना,

अपच

(५३)

अपरचो

धामना । ३ बंदी करना । ४ दौड़ में किसी के बराबर या आगे जाना ।

अपच, (चौ)-पु० [सं० अपच] १ अजीर्ण, बदहजमी । २ बद परहेजी । ३ कुपथ्य । ४ अपथ्य । ५ मन में कोई बात न रहने की दशा (लाक्षणिक) ।

अपची-स्त्री० कण्ठ का एक रोग ।

अपछंदायण-वि० स्वतंत्र, आजाद ।

अपछर, (छर, छर, छरा)-स्त्री० [सं० अपसर] १ स्वर्ग लोक या इन्द्रलोक की नर्तकी, अप्सरा, परी । २ सुन्दर स्त्री । —लोक-पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग । —वर-पु० इन्द्र । वीर गति प्राप्त योद्धा ।

अपछर-पु० अफसर, अधिकारी ।

अपजससोर-पु० यौ० अपकीर्ति का फैलाव । बदनामी ।

अपट-वि० १ बेहद, अपार । २ मर्यादा रहित । ३ बस्त्रहीन । ४ नंगा, दिगंबर ।

अपटलौ, (बौ)-क्रि० १ मर्यादा से बाहर होना । २ उमड़ना, उबकना । ३ जलविधि न होना । ४ बसूली न होना । ५ मन-मुटाव होना ।

अपटां-क्रि० वि० बेहद मात्रा में, खूब ।

अपटाव-स्त्री० रोग, बीमारी । —पु० मन-मुटाव ।

अपटी-स्त्री० [सं०] १ कनात । २ शामियाना । ३ पर्दा । ४ आवरण । ५ वस्त्र ।

अपटु-वि० [सं०] १ अक्ष, अचतुर । २ निर्वृद्धि, अनाड़ी । ३ गेगी । ४ मुरत । —ता-स्त्री० कुशलता या चतुराई का अभाव ।

अपठ, (ड, ड)-वि० [सं० अपठिन] १ अनपढ़, अनाड़ी, मूर्ख । २ अशिक्षित ।

अपड-वि० अजेय वीर ।

अपरा, (एउ, ए, एौ)-वि० [सं० आत्मन्] (स्त्री० अपरागी) अपना, निज का, निजी । —पु० आत्मीयजन, स्वजन ।

अपरात, अपराहत, (ईतु, यत)-स्त्री० अपनत्व का भाव ।

अपराणौ, (बौ)-क्रि० १ अपनाना । २ ग्रहण करना । ३ संभाल लेना । ४ अपना बना लेना । ५ अपने अधिकार में या संरक्षण में रखना । ६ सहारा देना ।

अपरापरा, (परा)-पु० अपनत्व ।

अपरास, अपरास-पु० अपनापन, अपनत्व ।

अपरा, (णै)-सर्व० अपना ।

अपत-वि० [सं० अ + पत] १ पत या पत्नी से हीन । २ आच्छादन या आवरण रहित । ३ नग्न, नंगा ।

४ अधम, नीच । ५ निर्लज्ज । ६ अविश्वासी । ७ कायर, कमजोर । ८ नपुंसक । ९ पतनोन्मुख । —पु० [सं० अ + पत्य] १ पुत्र । २ संतान, औलाद । ३ अप्रतिष्ठा । ४ देखो 'अपति' ।

अपति-स्त्री० [सं०] १ अग्नि, आग । २ देखो 'अपती' ।

अपतियारी-पु० अविश्वास ।

अपतिथी-वि० अविश्वासपात्र, नीच ।

अपती-वि० [सं० अ + पत्नी] १ पापी, दुराचारी । २ प्रमादी । ३ कायर । ४ कृतघ्न । ५ आततायी । [सं० अ + पति] ६ पति विहीन । —स्त्री० १ दुर्गति, दुर्दशा । २ आपत्ति । ३ अग्नि, आग । ४ अनादर ।

अपप-पु० [सं०] १ कुमार्ग । २ कुपथ्य । —गामी, चारी —वि० दुराचारी, कुमार्गी ।

अपथ्य-पु० [सं०] कुपथ्य ।

अपद-पु० [सं०] १ बिना पैर वाला प्राणी, उरग । २ रेंगने वाला जंतु । ३ सर्प । —वि० १ पद रहित, पंगु । २ कर्मच्युत । ३ पैदल । —क्रि० वि० १ अनुचित रूप से । २ देखो 'आपदा' ।

अपवरजन-पु० [सं० अपवर्जनम्] १ दान । २ त्याग, उत्सर्ग ।

अपबाहुक-पु० बाहु का एक वात रोग ।

अपमड-पु० योद्धा, वीर ।

अपभ्रंस, (सी)-स्त्री० [सं० अपभ्रंश] १ प्राकृत भाषा का परवर्ती रूप जिससे पुरानी राजस्थानी व हिन्दी की व्युत्पत्ति मानी जाती है । —पु० २ पतन, गिराव । ३ विगाड़, विकृति ।

अपमल, (ल, लौ)-वि० १ मतवाला, मस्त, २ उहड़ ।

अपमान-पु० [सं० अपमान] १ अनादर, तिरस्कार । २ अवहेलना । ३ फटकार, दुत्कार ।

अपमानो-वि० तिरस्कार या अनादर करने वाला ।

अपमारग-पु० [सं० अपमार्ग] कुमार्ग ।

अपरंच-अथ० १ आगे । २ और भी । ३ पुनः । ४ अतः । ५ उपरान्त ।

अपरंपर, (पर, पार)-पु० ईश्वर, परमेश्वर । २ महादेव शिव । ३ विष्णु, अनंत । —वि० अपार, असीम, बेहद ।

अपर-वि० [सं०] १ पूर्व का, पहला । २ उत्तर, अन्य, दूसरा, भिन्न । ३ निजला । ४ अपकृष्ट, नीचा । ५ गैर । ६ देखो 'अपार' । —पक्ष-पु० कृष्णपक्ष । प्रतिपक्ष । —बल बली-पु० हूँकर का बल । —वि० अर्माग जकिशास्त्री ।

अपरचन-वि० गुप्त ।

अपरचो-अविश्वास ।

अपरणा (णा)-स्त्री० [सं० अपरणा] १ गिरिजा, पार्वती ।
 २ देवी, दुर्गा । —वि० [सं० अपरणा] पत्ता बिहीन ।
 अपरती पु० १ स्वार्थ । २ अविश्वाम । ३ जंका । ४ बडैमानी ।
 अपरसंज्ञ-देखो 'अपरसंज्ञ' ।
 अपरस-वि० [सं० अ-+स्पर्श] १ जो किसी का स्पर्श न हो ।
 २ न छूने योग्य, अस्पृश्य । ३ पवित्र, शुद्ध । ४ अछूत, शूद्र ।
 अपरांठी-देखो 'अपुंठी' । (स्त्री० अपरांठी) ।
 अपरा-स्त्री० [सं०] १ लौकिक विद्या । २ पश्चिम दिशा ।
 ३ गर्भाशय की झिल्ली । —एकादशी-स्त्री० ज्येष्ठ कृष्णा
 एकादशी ।
 अपराजित-वि० [सं०] १ जो पराजित न हो, अजेय ।
 २ विजयी । —पु० १ विष्णु । २ शिव ।
 अपराजिता-स्त्री० १ विष्णु कान्ता लता । २ दुर्गा । ३ कोयल ।
 ४ उषान कोण ।
 अपराध-पु० [सं० अपराध] १ गल्ती, भूल । २ दोष,
 दूषण । ३ चूक । ४ जुर्म । ५ अनीति । ६ पाप । ७ दुष्कर्म ।
 अपराधी-वि० [सं०] १ अपराध करने वाला । २ कसूरवार,
 दोषी । ३ पापी । ४ आनतायी ।
 अपराधीन-वि० [सं०] स्वतंत्र, स्वाधीन ।
 अपरिग्रह-पु० [सं० अपरिग्रह] १ अस्वीकृति । २ गरीबी,
 अभाव । ३ धन का त्याग । —वि० रंक, गरीब ।
 अपरोगी-वि० (स्त्री० अपरोगी) १ उरावना, भयंकर ।
 २ अजनबी, अपरिचित । ३ अप्रिय, अस्विकर ।
 ४ अमिलनमार । ५ हठी प्रकृति वाला ।
 अपलंग-वि० (स्त्री० अपलंगी) निर्बल, कमजोर, अशक्त ।
 अपल वि० १ वेद, अमीम । २ दानी, दानार । ३ योद्धा वीर ।
 अपलच्छ, (लच्छण)-पु० [सं० अपलक्षण] १ कुलक्षण ।
 २ बुरा चिह्न । ३ अवगुण ।
 अपलाशिणी, (लांणी)-पु० बिना चार जामाकसा (ऊंट) ।
 अपलाप-पु० मिथ्या बात । वकबाद, वाग्जाल ।
 अपल-देखो 'अपल' ।
 अपवन पु० [सं० अपवन] वमीचा उलान ।
 अपवर्ग, (भ)-पु० [सं० अपवर्ग] १ मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति ।
 २ त्याग, दान । ३ एक स्वर्ग का नाम । ४ पूर्णता,
 ममाप्ति । ५ स्वर्गीय आनन्द । ६ त्याग ।
 अपवस-वि० [सं० अपवश] स्ववश, स्वाधीन ।
 अपवाव-पु० [सं०] १ अपकीर्ति, अपयश, । २ दोष, कमी ।
 ३ साधारण नियमों से विपरीत नियम । ४ खण्डन ।
 अपवार-पु० अत्यधिक कार्य ।
 अपवाहक-वि० एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने वाला ।
 अपवाहक-देखो 'अपवाहक' ।

अपवितर, अपवित्र-वि० [सं० अपवित्र] अशुद्ध, गंदा । नापाक ।
 —ता-स्त्री० अशुद्धि, गंदगी ।
 अपव्यय-पु० [सं०] निरर्थक व्यय, फिजूलखर्ची ।
 अपस-पु० १ मृगी नामक रोग, अपस्मार । २ डिगल गीतों की
 रचना का एक दोष । ३ कार्य करने में असमर्थ व्यक्ति ।
 —वि० आलसी, मुस्ते ।
 अपसकुन, (सगन, सगुन)-पु० [सं० अपसकुन] १ बुरा शकुन ।
 २ अशुभ चिह्न । ३ अमंगल के लक्षण ।
 अपसव, (सहन)-वि० [सं० अपसदः] नीच, अधम ।
 अपसब्द-पु० [सं० अपशब्द] बुराशब्द, गाली, कुवाक्य ।
 अपसार, (सरा)-पु० [सं० अपसरा] १ देवांगना, अप्सरा ।
 २ एक देव जाति ।
 अपसवारथी-वि० स्वार्थी, खुदगर्ज ।
 अपसांण, अपसुकन-देखो 'अपसकुन' ।
 अपसोस-देखो 'अपसोम' ।
 अपसठ-पु० [सं० अपसठं] अंकुश का अग्रभाग ।
 अपस्मार, (री)-पु० विदोष (कुपित) से होने वाला एक
 वात रोग ।
 अपहृष्ट-पु० १ राजा । २ दानी पुरुष । ३ योद्धा । —वि०
 १ दानी, दानवीर । २ उदारचित्त । ३ अप्रतिहत ।
 ४ अजेय । ५ पूर्ण । ६ जो बोखा न दे ।
 अपहरण-पु० [सं०] १ बलात् कुछ ले के भागने की क्रिया,
 हरण, चोरी । २ लूट । ३ छिपाव । ४ छीना भपटी ।
 अपहरता-वि० [सं० अपहर्ता] अपहरण करने वाला, वीर,
 जुदेरा ।
 अपहार-पु० त्याग ।
 अपहास-देखो 'उपहास' ।
 अपहृति-पु० [सं०] एक काव्यालंकार ।
 अपां-देखो 'आपां' ।
 अपांग-पु० [सं०] १ कटाक्ष । २ आंख की कोर ।
 ३ देखो 'आपगा' । ४ देखो 'अपंग' ।
 अपाण-वि० [सं० अपाणि] १ बिना हाथ का । २ बिना
 कनप लगा । ३ आरहीन (शस्त्र) । [सं० अ-+प्राण]
 ४ अशक्त । ५ अतृप्त । —पु० बल, शक्ति ।
 अपाणी-देखो 'आपाणी' ।
 अपान-पु० [सं० अपान] १ पांच वायुओं में से एक । २ अपान-
 वायु । ३ गुदा । —वायु-स्त्री० अपानवायु, पाद ।
 अपा स्त्री० १ गर्व, गुमान । २ आत्मभाव ।
 —कि० वि० दूर । अलग । —मारण-पु० चित्रहा
 नामा एक झाड़ी ।
 अपाटव-वि० अपटु । —स्त्री० मूर्खता । बांदापन ।
 अपात्र-वि० कुपात्र । मूर्ख ।

अपादानं-पु० [सं० अपादानं] व्याकरण में एक कारक ।

अपाप-पु० [सं०] १ पुण्य । २ शुभ कार्य । ३ धर्म ।

अपायत- देखो 'आपायत' ।

अपार (रण)-वि० १ सीमा रहित, असीम, अनंत, बेहद ।

२ जो नजदीक न हो, दूर । ३ असंख्य ।

अपारथ-वि० [सं० अपार्थ] अर्थहीन, निरर्थक ।

अपारां, अपारार्य-वि० अनेक, बहुत ।

अपाळ-वि० १ जिसका पालन करने वाला न हो । २ जिसका पालन न किया जाता हो ।

अपाल-वि० रुकने वाला । २ बेरोक-टोक । ३ रोकने वाला ।

४ बहुत, अधिक, अपार ।

अपावन-वि० [सं०] अपवित्र, अशुद्ध । मलिन ।

अपाहिज-वि० [सं० अपभंज] १ लूटा, लंगड़ा, अपंग । २ बहुत ही असमर्थ । ३ अशक्त । ४ आलसी ।

अपि, अपी-पु० गुर्य ।

अपीतजा-स्त्री० अग्नि, आग ।

अपीधी-वि० (स्त्री० अपीधी) तृपित, प्यासा । बिना पिया ।

अपुत्र (क)-[सं०] (स्त्री० अपुत्री) १ पुत्रहीन । २ संतान रहित ।

३ निर्बंश । ४ अपने वंश को कलंकित करने वाला वुरे आचरण वाला पुत्र, कुपुत्र ।

अपुनित-वि० [सं०] १ अपवित्र, अशुद्ध । २ दूषित, मंदा ।

अपूठ-वि० १ उन्टा । २ पीठ की ओर का । ३ पीछे का ।

४ अप्रसन्न ।

अपूठी-वि० (स्त्री० अपूठी) १ पीठ घमाया हुआ । २ विमुख ।

३ उन्टा । ४ विरुद्ध । ५ पीठ फेरकर बैठने वाला ।

—कि० वि० उन्टे पैरों में बापिस ।

अपूर्णी-वि० पूर्ण, पूरा ।

अपूत-वि० [सं० अपुत्र] १ कुपुत्र, कपूत । २ पुत्रहीन ।

[सं० अपूत] ३ अशुद्ध, अपवित्र ।

अपूर-वि० भरपूर, पूरा ।

अपूरण-वि० [सं० अपूर्ण] १ जो पूर्ण न हो, अधूरा, अपूर्ण ।

२ कम होने वाला । —ता-स्त्री० अधूरापन, कमी ।

—भूत-पु० वह भूतकाल जिसकी क्रिया की समाप्ति न हुई हो ।

अपूरणी, (बी)-क्रि० १ पूर्ण करना । २ कम करना । ३ कम होना ।

अपूर्व, (पूरव, बी)-वि० [सं० अपूर्व] १ बिलक्षण, अनोखा ।

२ अपूर्व, अद्वितीय । ३ उत्तम श्रेष्ठ । ४ पूर्व जन्म का, पहले का । —ता-स्त्री० अनोखापन, अद्वितीयता ।

अपेक्षा-स्त्री० [सं०] १ आकांक्षा, अभिलाषा, उच्छ्वा । २ आशा,

उम्मीद । ३ तुलना, मुकाबला । ४ आवश्यकता ।

अपेक्षित-वि० [सं०] १ इच्छित, वांछित । २ आवश्यक ।

अपेय-वि० [सं० अ-+पेय] न पीने योग्य ।

अपेल-वि० १ अटल, स्थिर, दृढ़ । २ बहुत, अपार, असीम ।

अपैठ-वि० [सं० अप्रविष्ठ] १ दुर्गम, अगम । २ कठिन ।

दुःसाध्य । ३ अविश्वसी । —स्त्री० अविश्वाम ।

अपोही-स्त्री० निद्रा से उठने की क्रिया या भाव ।

अपीचणी, अपीचिणी, अपीची-वि० (स्त्री० अपीचणी, अपीची)

१ अपरिभ्रमी । २ आलसी, सुस्त । ३ निर्बल, अशक्त ।

अप्य, अप्यण, अप्यणू, अप्यणू, अप्यणी (नू)-सर्व० [सं० आत्मन्]

मैं हम, अपन । —वि० अपना, निजका ।

अप्यणी (बी)-देखो 'आपणी' (बी) ।

अप्परमाण-वि० [सं० अप्रमाण] १ प्रमाण रहित, अविश्वस्त ।

२ असीम, बेहद । ३ अप्रामाणिक । ४ जो प्रमाण के रूप में न माना जाय । ५ ग्रहणान्त ।

अप्यलांणी, (लांणी)-देखो 'अपलांणी' ।

अप्यवासी-पु० १ जल जंतु । २ जल के प्राणी । —वि० गुप्त रूप में रहने वाला ।

अप्यिस्त स्त्री० अग्नि, आग ।

अप्रंच-देखो 'अपरंच' ।

अप्रंर-देखो 'अप्रंगार' ।

अप्रंम-पु० परमहंसा । ईश्वर । —वि० बहुत ।

अप्रकाश-पु० [सं० अ-+प्रकाश] १ अंधकार । २ अज्ञान ।

—कि० वि० छिपकर, गुप्त रूप से ।

अप्रकाशित-वि० [सं० अ-+प्रकाशित] १ गुप्त, छिपा हुआ ।

२ तिमिराच्छन्न । ३ ढका हुआ ।

अप्रकाश्य-वि० [सं० अप्रकाश्य] जो प्रकट करने योग्य न हो, गोपनीय ।

अप्रखर-वि० [सं०] मृदु, कोमल । २ नर्म । ३ मंद ।

अप्रच्छन, (छन्न)-वि० [सं० अप्रच्छन्न] १ गुप्त, छिपा हुआ ।

२ प्रकट । ३ दुष्ट ।

अप्रजौ-वि० अपार बल वाला ।

अप्रतिबंध-पु० [सं०] प्रतिबंध का अभाव, स्वच्छन्दता ।

अप्रतिभ-वि० [सं०] १ प्रतिभा शुन्य । २ जयाव देने में

असमर्थ । ३ अप्रत्युत्पन्नमति । ४ चेष्टाहीन । ५ उदास । ६ सुस्त । ७ जीलवान् । ८ लजानु । ९ मंद ।

अप्रतिम-वि० [सं०] अद्वितीय, बेजोड़ ।

अप्रतिष्ठ, (तिष्ठत)-वि० [सं० अप्रतिष्ठत] १ जिमकी प्रतिष्ठा न हो । २ अप्रसिद्ध । ३ तिरस्कृत । ४ अनौकप्रिय ।

अप्रतीत-पु० वाक्य रचना का एक दोष । —वि० अविश्वस्त ।

अप्रत्यक्ष-वि० [सं०] परोक्ष ।

अप्रधान-वि० गौण ।

अप्रबल-वि० १ अति प्रबल, जनिजाली । २ महान पराक्रमी ।

३ जो प्रबल न हो, निर्बल । —पु० दैन्य ।

अप्रभिसी-देखो 'अप्रभ' में ।

अप्रमत्त-वि० मदा सावधान ।

अप्रमत्तावस्था-स्त्री० आत्म विकास के लिए सतत् जागरूकता ।

१ चांदल गुण स्थानों में से ७ से १४ तक गुण स्थानों में जीव की अवस्था । ३ मावधानी । ४ अप्रमाद (जैन) ।

अप्रमाण-देखो 'अपरमाण' ।

अप्रमाद-पु० चुस्ती, स्फूर्ति । --वि० १ प्रमाद रहित, चुस्त । २ गर्व रहित ।

अप्रमित-वि० [मं० अपरिमित] अपार, असीम ।

अप्रमेह-वि० [सं० अप्रमेय] अथाह, असीम ।

अप्रम-पु० परब्रह्म, ईश्वर ।

अप्रयुक्त-पु० एक साहित्यिक दोष । --वि० जो काम में न लिया गया हो । अव्यवहृत ।

अप्रवीत-देखो 'अप्रवित्र' ।

अप्रसन्न-वि० [सं०] १ नाखुश । २ उदास, खिन्न, मुस्त । ३ असंतुष्ट । ४ गंदला ५ मलिन । --ता-स्त्री० ना खुशी । उदासी, खिन्नता । मुस्ती, मलिनता ।

अप्रस्तुत-वि० [मं०] १ जो प्रस्तुत या उपस्थित न हो । २ जो तैयार न हो । ३ अप्रामाणिक, गौण । --प्रसंसा-पु० एक प्रशंसाकार ।

अप्राप्त-वि० [सं०] १ जो प्राप्त या उपलब्ध न हो । २ जो सुलभ न हो । ३ अप्रस्तुत ।

अप्रिय-वि० [सं०] १ जो प्रिय न हो । २ अरुचिकार ।

अप्रीति-स्त्री० [सं०] १ प्रीति या प्रेम का अभाव । २ शत्रुता, विरोध ।

अप्रेह-वि० अस्मृत, विलक्षण ।

अप्रोगी देखो 'अपयोगी' (स्त्री० अप्रोगी) ।

अप्रोगी-देखो 'अपयोगी' (स्त्री० अप्रोगी) ।

अप्रौढ़-वि० [सं०] १ जो प्रौढ़ न हो, युवा या वृद्ध । २ नात्रालिग ।

अप्सर-१ देखो 'अप्सर' । २ देखो 'अपछरा' ।

अप्सरा-देखो 'अपछरा' ।

अफंड, (ऊँ)-पु० १ धूर्तता, ठगी । २ पाखंड, ढकोसला । ३ ढोंग, स्वांग । ४ अड़ंगा, बाधा । ५ भगड़ा, टेढ़ा । ६ बवंडर ।

अफंडी-वि० १ अफंड करने वाला, धूर्त, पाखंडी । २ स्वांग रक्ते वाला, ढोंगी । ३ भगड़ालु ।

अफंद-पु० १ बंधन रहित, २ बाधा रहित ।

अफंडणी, (बी)-क्रि० भिड़ना, टक्कर लेना ।

अफंडर, (छरा)-देखो 'अपछरा' ।

अफताब-देखो 'आफताब' ।

अफताबी-वि० सूर्य संबंधी, आफताबी ।

अफर-वि० न मुड़ने वाला, न फिरने वाला ।

अफर-स्त्री० १ पीठ, पृष्ठ । २ पृष्ठभाग । ३ शत्रुता, वैर । ४ द्वेष, ईर्ष्या । --वि० १ न मुड़ने वाला । २ न फाड़ा जाने वाला ।

अफरांडी-देखो 'अपूठी' (स्त्री० अफरुंठी) ।

अफरा, (री)-स्त्री० बड़ी सेना । --वि० १ न मुड़ने वाली । २ शक्तिशाली ।

अफरीबी-स्त्री० पठानों की एक जाति ।

अफरुंठी (ठी)-देखो 'अपूठी' । (स्त्री० अफरुंठी) ।

अफल-वि० [सं० अफल] १ फलहीन, बिना फल का । २ निष्फल, निरर्थक ।

अफलातू, (तून)-वि० १ अत्यधिक घमंडी । २ बेपरवाह । ३ बेहद, असीम । ४ अत्यधिक, बहुत । --पु०-प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो का नामान्तर ।

अफवा, (बाह)-स्त्री० [अ०] १ उड़ती बात । २ झूठी खबर । ३ गप्प । ४ किवंदती, जनश्रुति ।

अफवाज-स्त्री० [अ०] १ वीरता । २ फौज, सेना ।

अफसर-पु० [फा.] बड़े ओहदे का नायक, सरदार, अधिकारी, प्रधान ।

अफसरी-स्त्री० अधिकार, हुकूमत, ठकुराई, शासन ।

अफसोस-पु० [फा०] वेद, रंज, दुःख ।

अफारी-वि० १ बहुत अधिक । २ शक्तिशाली । ३ बहादुर । ४ कुपित, क्रुद्ध । ५ भयानक । ६ अपार । ७ विस्तृत । ८ श्रेष्ठ बढ़िया ।

अफाळणी, (बी)-क्रि० १ तेजी से चलना/चलाना ।

२ देखो 'आफळणी' (बी) ।

अफीम, अफीम-पु० [सं० अफिम, अ० अफ्युम] १ पोस्त के ढोंह का रस जो नशे व ओषधि के काम आता है । २ अमल ३ विप । --ची-वि० अफीम का नशेवाज ।

अफीली-वि०-अफीम का अफीम संबंधी ।

अफुल्ल-वि० [सं०] १ बिना फुला हुआ, अविकसित । २ पुष्प रहित ।

अफूटी, (ठी)-देखो 'अपूटी' । (स्त्री०-अफूटी, ठी) ।

अफेर, (री)-वि० १ नहीं फिरने वाला, न मुड़ने वाला । २ योद्धा ।

अफी-पु० एक कंटीला क्षुप ।

अबक, (कौ)-वि० [सं० अ-वक] (स्त्री० अबकी) १ जो बक या टेढ़ा न हो, सीधा । २ सरल, सहज । ३ सीधा-सादा ।

अबब, (बंघ)-वि० [सं० अवबंघ] १ बन्धन रहित, खुला, मुक्त । २ विकसित, खिला हुआ ।

अब-क्रि० वि०-१ अभी, इसी समय । २ फिरना । ३ तदनन्तर, ४ तत्पश्चात् ।

अवक-वि० [सं० अ-वच्] न कहने योग्य, अकल्प्य । —सी, सं
 क्रि० वि०—इस बार । दूसरी बार । पुनः ।
 अवकाह, (ई)—स्त्री० १ अड़चन, बाधा । २ कठिनाई ।
 ३ आपत्ति । ४ भार या बोझ । ५ रजो दर्शन । (स्त्रियां) ।
 अवकी—क्रि० वि० १ इस बार । २ दूसरी बार । ३ पुनः ।
 वि० १ दुर्गम, दुरूह । २ संकटमय ।
 अवकी, (कै)—देखो 'अवकी' (क्रि० वि०) ।
 अवकी, (खी)—वि० (स्त्री० अवकी, अवखी) १ कठिन,
 मुश्किल । २ टेढ़ा । ३ दुर्गम, दुरूह । ४ संकटमय ।
 अवखानी (बी)—देखो 'आवखानी' (बी) ।
 अवखाई—देखो 'अवकाई' ।
 अवखरी—देखो, 'अभियह' ।
 अवगात—वि० वेदांग, निष्कलक ।
 अवचल, (छल)—वि० [सं० अवचल] १ अटल रह । २ निश्चल,
 अविचल । ३ निष्कलक । ४ स्थाई । ५ निरन्तर ।
 अवछर—देखो 'अपसरा' ।
 अवछांड—वि० १ सहायक, मददगार । २ रक्षक ।
 अवज—देखो 'अब्ज' ।
 अवजात—पु० दुश्मन, शत्रु ।
 अवजलगी, (बी)—क्रि० १ जोश करना । २ उत्साह करना ।
 ३ आकाश छूने की इच्छा करना ।
 अवट—पु० (सं० अ-वट) १ बुरा रास्ता । २ बिटक मार्ग ।
 ३ कुसंगति ।
 अवड, (बी)—वि० (स्त्री० अवडी) १ बलवान, साहसी । २ निडर ।
 ३ इतना । ४ बिना कटा या काटा हुआ ।
 अवणासी—देखो 'अविनासी' ।
 अववार—स्त्री० शराब, मदिरा ।
 अववाळ—पु० १ महान ईश्वर भक्त, जितकी संख्या तीस मानी
 गई है । (मुसलमान) २ यवन, मुसलमान । ३ शत्रु,
 दुश्मन । —वि० १ महान, श्रेष्ठ । २ उदार ।
 अवदूर—क्रि० वि० पाम, समीप ।
 अवद्ध—वि० [सं०] बंधन रहित, मुक्त ।
 अवधू, (धूत)—देखो 'अवधूत' ।
 अवध्य—देखो 'अवध्य' ।
 अवनमी, (निमी, नीमी)—देखो 'अवनमी' ।
 अवनाड़—पु० पर्वत, पहाड़ । —वि० १ अनस । २ वीर ।
 अवरक, (ख)—देखो 'अभ्रक' ।
 अवरके, (कै)—देखो 'अवके' ।
 अवरण—देखो 'अवरण' ।
 अवरस—पु० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ घोड़ों का एक रंग ।
 अवरी—देखो 'अभी' । २ देखो 'अवगी' ।
 अवरोसिधी, अवरोसी—देखो 'अभरोसी' ।

अवळ—वि० [सं० अ-वल] १ निर्बल, कमजोर, अशक्त ।
 २ दुर्बल, कुश । ३ अमर्ष । —पु० १ बल का अभाव ।
 २ देखो 'अवळा' ।
 अवलक, (की)—पु० [सं० अवलक] सफेद या काला, या सफेद
 या लाल रंग का घोड़ा । —वि० १ चितकबरा ।
 २ मोटे व लाल रंग का ।
 अवलका, (खा)—स्त्री० [सं० अभिलापा] १ इच्छा, अभिलाषा ।
 २ आशा ।
 अवलख, (खी)—देखो 'अवलक' ।
 अवलखा—स्त्री० १ एक चिड़िया विशेष । २ देखो 'अवलखा' ।
 अवलण—वि० १ सत्य । २ अटूट । ३ घमंडी । —स्त्री० १ एक
 गति । २ लौटना क्रिया या भाव । ३ न लौटना ।
 अवळावकी—वि० १ निर्बल का बल, सहारा । २ निर्बल, अशक्त ।
 अवळा—स्त्री० [सं० अवला] स्त्री, औरत, नारी । वि०—बल
 हीना । —भूल—स्त्री० सोलह भृंगार युक्त महिला । —पु०
 अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित योद्धा । —पण, पली—पु०
 स्त्रीत्व । कमजोरी, निर्बलता । —सेन—पु० रतिपति,
 कामदेव ।
 अवलाकी—देखो 'अभिलासी' ।
 अवळी—वि० (स्त्री० अवळा) कमजोर, अशक्त, निर्बल ।
 अववेल—स्त्री० १ सहायता, मदद । २ रक्षा, सुरक्षा ।
 अववात—वि० [सं० अ-वात] १ वातहीन, वायु रहित, निर्वात ।
 २ वार्तालाप या वृत्तान्त रहित ।
 अववाळी—स्त्री० [फा०] काले रंग की एक चिड़िया ।
 अववार, (रू)—क्रि० वि० १ अभी, इसी समय । २ तुरंत, शीघ्र ।
 अववाळ—वि० १ बिना बालक का । २ बाल्यावस्था रहित,
 जवान, युवा । —क्रि० वि० बालक पर्यन्त ।
 अववास—वि० (सं० अ-वास) १ आवास रहित, विश्राम रहित ।
 २ गंध रहित । ३ मुग्ध रहित । ४ देखो 'आवास' ।
 अवविणास (नास)—देखो 'अविनास' ।
 अवविणासी, (नासी)—देखो 'अविनासी' ।
 अवविरच—वि० १ प्रमत्त, सुश । २ अनुकूल ।
 अवविरचणी, (बी)—क्रि० —१ प्रमत्त होना, सुश होना ।
 २ अनुकूल होना ।
 अवविरळ—देखो 'अविरळ' ।
 अववीव—वि० [सं० अवविद्ध] १ बिना वेजा हुआ । २ अशक्ति ।
 ३ अक्षत । ४ निष्कलक ।
 अववीडी—वि० (स्त्री० अववीडी) १ अदृष्ट, अनायास । २ दुर्गम,
 दुरूह । ३ कठिन, टेढ़ा । ४ भयंकर । ५ जोशीला ।
 ६ ओजस्वी, वीररस पूर्ण ।
 अववीर, (री)—पु० पीवी गृत्वाक । —मई, मय, मयी—वि०
 अववीर-गृत्वाक से युक्त । कायरता युक्त ।

अबीरी-वि० अबीर के रंग का ।
 अबीर, अबीही-वि० [सं० अ + भय] १ निडर, निश्क, निर्भय । २ महान, जबरदस्त ।
 अबुधा-देखो 'अबुधा' ।
 अबुध-वि० [सं० अ + बुद्ध] १ निर्बुद्धि, अज्ञानी । २ मूर्ख अनाड़ी ।
 अबूज, (स)-वि० [सं० अ + बुद्ध] १ अवोध, नादान ।
 २ मूढ-वृद्ध से हीन । ३ मूर्ख । —[सं० अ-गृच्छ] ४ बिना पूछा हुआ, बिना जाना हुआ । ५ अज्ञेय ।
 —पण, (ली) १ मूर्खता, नादानी । २ अज्ञान ।
 अबूझली, (बी)-१ देखो 'अमूझली' (बी) ।
 २ देखो 'वूझली' (बी) ।
 अबूझी-वि० अचतुर, अदक्ष ।
 अबेध-वि० [सं० अबिद्ध] १ जिसे वेधा न जा सके । २ बिना वेधा हुआ । ३ अस्तिमित ।
 अबेर-स्त्री० [सं० अबेला] १ विलंब, देर । २ कुसमय ।
 ३ सम्हान, देखरेख । —क्रि० वि० अविलंब, शीघ्र ।
 अबेरणी, (बी)-क्रि० १ सम्हानना, देखरेख करना ।
 २ गृह्यस्थित कम्पा, संवारना ।
 अबेरी-पु० देखभाल करने की क्रिया ।
 अबेठा, (ठी, ठी)-स्त्री० १ अममय, कुसमय । २ विलंब, देरी ।
 अबेस-वि० [फा० बेज] १ अधिक, ज्यादा । २ आयु रहित ।
 ३ बेज रहित, नंगा । —पु० जोश, आवेश ।
 अबेह, अबे क्रि० वि० १ अममय कुसमय । २ अब, इस समय ।
 ३ इस बार ।
 अबोचन देखो 'अबोचन' ।
 अबोट-वि० १ पवित्र, शुद्ध । २ साफ, स्वच्छ । ३ अछूता ।
 ४ अमल । ५ विलकुल नया । ६ नश्यहीन ।
 अबोटो-स्त्री० १ पवित्र वस्त्र । २ शाकदीपीय ब्राह्मणों का एक गोत्र ।
 अबोध, (घ)-वि० [सं० अबोध] १ जिसे बोध न हो ।
 २ अवयस्क, नादान । ३ ना समझ, मूर्ख । ४ अज्ञानी ।
 अबोल, (ली)-पु० (स्त्री० अबोली) १ मौन, चुप्पी । २ शांति ।
 —क्रि० वि० बिना बोले, चुपचाप ।
 अबोलणी-वि० नहीं बोलने वाला, मूक । —पु० १ परस्पर न बोलने की अवस्था या भाव । २ शत्रु, बैरी । ३ गणु ।
 ४ शत्रुता ।
 अबज-वि० [सं० अबजम्] १ जल में उत्पन्न हुआ, जलज ।
 २ कमल । ३ श्वेत । ४ रक्तवर्ण ।
 अबद-पु० [सं० अबद] १ मेघ । २ आकाश । ३ वर्ष मान ।
 अबधि पु० [सं०] समुद्र, सागर ।
 अबल-देखो 'अवल' ।
 अबला-देखो 'अबला' ।

अब्बहि-वि० निडर, निर्भय, निश्क ।
 अब्बी-पु० [फा० अब्ब] पानी, जल । —क्रि० वि० अभी, इसी समय ।
 अब्बीर-देखो 'अबीर' ।
 अब्ब-देखो 'आभी' ।
 अब्बिमान-देखो 'अभिमान' ।
 अब्याई-वि० १ बिना प्रसव की (मादा पशु) । २ कुंआरी ।
 अब्यागत-देखो 'अभ्यागत' ।
 अब्रक-देखो 'अन्नक' ।
 अब्रद-वि० [सं० अ-वृद्ध] १ जो वृद्ध न हो । २ युवा ।
 ३ बालक ।
 अब्री-स्त्री० पुस्तकों आदि की जिल्द पर लगाने का छीटदार कागज ।
 अभंग-वि० [सं०] १ जो भंग न हुआ हो, अखंड, अटूट ।
 २ अक्षत । ३ पूर्ण । ४ वीर, बहादुर । ५ निर्भय, निश्चित ।
 ६ वेहद, असीम । —पु० १ सिंह, शेर । २ पद, भजन ।
 —पद-पु० श्लेष अलंकार का एक भेद ।
 अभंगी, (य)-वि० [सं० अभंगिन्] १ न भागने वाला, अटिग । २ देखो 'अभंग' ।
 अभंगुर-वि० [सं०] अखण्ड, अटूट । २ रूढ़ मजबूत ।
 ३ न मिटने वाला ।
 अभंज, (न)-वि० [सं०] अखण्ड, अटूट ।
 अभ-देखो 'आभी' ।
 अभक्त वि० [सं०] १ जो भक्त न हो । २ नास्तिक । ३ अश्रद्धालु ।
 अभक्स, (क्ष, क्ष्य, ख, खज)-वि० [सं० अभक्ष्य] १ न खाने योग्य, अखाद्य । २ जिसका खाना निषिद्ध हो ।
 अभगनी-देखो 'अभागो' । (स्त्री० अभगनी) ।
 अभड्छेट, (छोट)-देखो 'आभड्छेत' ।
 अभडीजली (बी)-देखो 'आभड्गनी' (बी) ।
 अभडीजयोड़ी-वि० रजस्वला ।
 अभधूत-देखो 'अवधूत' ।
 अभनम-पु० १ वंशज । २ गोत्र, प्रगोत्र । ३ देखो 'अभिनव' ।
 अभनमो, अभनमो-पु० १ अपने पूर्वजों के गुण धारण करने वाला । २ दूसरा, द्वितीय । ३ समान, मदन । ४ अभिनव ।
 ५ वंशज ।
 अभधूप-पु० [सं० आभा-भूप] कवि ।
 अभम, अभमान-देखो 'अभिमान' ।
 अभमानव-देखो 'अभिमन्वु' ।
 अभमांती-देखो 'अभिमांती' ।
 अभमाती-पु० [सं० अभ्यमित्र] शत्रु, दुश्मन ।
 अभय-पु० [सं०] १ भयहीनता । २ जरण । ३ कुशलता ।
 ४ निश्चिन्ता । —वि० निर्भय, निडर, कुशल । —धाम-

पु० मोक्ष, निर्वाण । स्वर्ग, वैकुण्ठ । —पद-पु० मोक्ष, मुक्ति । निर्भय-पद । —वचन-पु० रक्षा का वचन । अभयदान ।

अभया-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा, देवी, भगवती । २ आर्या, माधवी । ३ कन्या । ४ हरीतकी, हरि ।

अभयास-देखो 'अभ्यास' ।

अभय-वि० [सं०] १ निहाल, कृतकृत्य । २ दुर्मर, दुर्वह, गुरुतर । ३ खाली, रिक्त । ४ अपूर्ण ।

अभरण-पु० १ अंत गुरु की चार भाषा का नाम । '115' २ देखो 'आभरण' ।

अभराण-वि० धन-धान्य पूर्ण, सम्पन्न ।

अभराभरण-वि० १ भूखों को भोजन देने वाला । २ अपूर्ण को पूर्ण करने वाला ।

अभरी-वि० [सं० आभरी] १ धनाढ्य, संपत्तिशाली । २ संतुष्ट, तृप्त । ३ देखो 'अत्री' ।

अभरीसी-पु० अविश्वान, शक, सन्देह ।

अभल-वि० जो भला न हो, बुरा, अश्रेष्ठ ।

अभलाक, (ख)-देखो 'अभिलासा' ।

अभलाकी, (खी)-देखो 'अभिलासी' ।

अभलेछां, (लेखी)-देखो 'अभिलामा' ।

अभवनमत-पु० [सं०] काव्य का एक दोष ।

अभवहार-पु० [सं० अभ्यवहारः] भोजन, खाना ।

अभवी-वि० [सं० अभव्य] १ न होने योग्य । २ विलक्षण, अद्भुत । ३ भटा, बुरा । ४ अशुभ ।

अभाए-वि० [सं० अभात] १ अमुहावना । २ अरुचिकर ।

अभाग-पु० [सं० अभाग्य] १ दुर्भाग्य, बुरा भाग्य । २ मंद भाग्य ।

अभागिनी, (गो, गी, ग्यौ)-वि० [सं० अभिगिन्]-[स्त्री० अभागिणी, अभागिणी] १ भाग्यहीन, वद किस्मत । ३ हतभाग्य या मंदभाग्य वाला ।

अभावौ-वि० १ अप्रिय, खराब । २ अरुचिकर । ३ बुरा । ४ भययुक्त ।

अभाळ-वि० [सं० अ-भाळ्य] १ न देखने योग्य । २ जो न देखा जा सके । ३ अप्राप्त । —स्त्री० ललाट, भाल ।

अभाळौ-वि० बिना देखा, अनदेखा ।

अभाव-पु० [सं०] १ कमी, अभाव । २ घाटा, टोटा । ३ त्रुटि । ४ अविद्यमानता, असत्ता । ५ अपूर्णता, खामी । ६ विरोध । ७ बुरा भाव । ८ नाश । ९ मृत्यु ।

अभावण, (वणी)-पु० (स्त्री० अभावणी) १ अरुचि । २ दृच्छा का अभाव । —वि० १ अप्रिय । २ अरुचिकर । ३ अनुहावना ।

अभावणौ, (धी)-वि० १ अगद्व होना । २ अरुचिकर होना ।

अभावी-वि० [सं०] न होने वाली ।

अभावौ-वि० [सं० अभात] १ अप्रिय, अरुचिकर । २ भयावह । अभितरेण-क्रि० वि० [सं० अभ्यंतर] भीतर ।

अभि-अन्व० [सं०] १ शब्दों के आगे लगकर ओर, तर्फ, बोधक उपसर्ग । २ देखो 'अभी' । —अंतर-क्रि० वि० भीतर ।

अभिलेक-देखो 'अभिलेक' ।

अभिगम, अभिगम (ग्रह)-[सं० अभिग्रह] आहारादि ग्रहण करने संबंधी कठिन से कठिन प्रतिज्ञा । (जैन)

अभिचार-पु० [सं० अभिचारः] तांत्रिक प्रयोग । अनुष्ठान ।

अभिचारक, अभिचारी- [सं०] अनुष्ठानकर्ता, जादूगर, तांत्रिक ।

अभिच्छ-वि० [सं० अभिक्षा] याचना रहित ।

अभिजण (न)-पु० १ कुल, वंश, कुलबा । २ पूर्वजों का निवास स्थान । ३ जन्मभूमि, जन्म स्थान ।

अभिजाण-वि० कुणन, दक्ष, पटु ।

अभिजात-वि० (सं०) १ कुलीन । २ शिष्ट । ३ उत्तम । ४ सुन्दर । ५ पंडित ।

अभिजित-वि० विजयी । —पु० १ श्वर नक्षत्र के प्रथम चार दण्ड । २ उत्तरामाहा नक्षत्र के अंतिम पन्द्रह दण्ड । ३ तीन तारों वाला एक नक्षत्र । ४ विष्णु का एक नाम ।

अभिणांसी-देखो 'अविनासी' ।

अभित्ति-वि० निर्भय, निडर, निशंक ।

अभिधान-पु० [सं० अभिधानम्] १ कथन । २ शब्दकोश । ३ नाम ।

अभिधानी-वि० नामधारी ।

अभिधा-स्त्री० [सं०] १ तीन प्रकार की शब्द शक्तियों में से एक । २ नाम । ३ उपाधि । ४ वाचक शब्द ।

अभिधेय-वि० [सं०] १ नाम लेने योग्य । २ निरूपित ।

अभिनंदन-पु० [सं०] १ स्वागत । २ प्रणाम । ३ वधाई । ४ अभिवादन ।

अभिन-देखो 'अभिन्न' ।

अभिनमौ, (वी)-देखो 'अभिनमौ' ।

अभिनय-पु० [सं०] १ किसी नाटक या खेल के पात्र का कार्य । २ स्वांग । ३ किसी की बोल-चाल या हाव-भाव की नकल ।

अभिनव-वि० [सं०] १ नवीन, नया । २ कोश ।

अभिन्न-वि० [सं०] १ एकाकार, एकमय । २ जो पृथक् न हो सके । ३ सटा हुआ, चिपका हुआ । ४ अपरिवर्तित । ५ घनिष्ठ । —ता-स्त्री० अपर्यय । लगाव । संबंध । घनिष्ठता ।

अभिप्राय-पु० [सं०] १ आज्ञा, मतलब । २ अर्थ, तात्पर्य ।

अभिवादन-पु० देखो 'अभिवादन' ।

अभिभव-पु० [सं०] १ पराजय, हार । २ हीनता । ३ निरस्कार, अनादर । ४ बल, काबू । ५ दमन ।

अभिमत-पु० [सं०] १ अर्थ, आशय । २ सम्मति । ३ इच्छा, अभिलाषा ।

अभिमत, (मन्त्र. मन्त्रु)-पु० [सं० अभिमन्त्रु] अर्जुन-पुत्र अभिमन्त्रु ।

अभिमान, (मान)-पु० [सं० अभिमान] १ अहंकार, गर्व, घमंड । २ व्यक्तित्व ।

अभिमानि, (मानि)-वि० [सं० अभिमानि] घमंडी, अहंकारी । —पु०-शत्रु, दुश्मन ।

अभिमुख-वि० [सं०] १ सम्मुख, सामने । २ समीप । ३ अनुकूल । —क्रि०-वि० १ आम्ने-सामने । २ ओर, तरफ ।

अभिया-देखो 'अभया' ।

अभियागत-देखो 'अभ्यागत' ।

अभियास-देखो 'अभ्यास' ।

अभियुक्त-पु० [सं०] दोषी, अपराधी ।

अभियोग-पु० [सं०] १ अपराध । २ मुकद्दमा ।

अभियोगी-वि० [सं०] अभियोग चलाने वाला ।

अभिराम, (रामा)-वि० [सं० अभिराम] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य । २ प्रिय । —पु० १ आनन्द, हर्ष । २ प्रमोद । ३ अंत गुण की चार मात्रा का नाम ।

अभिरामी-वि० [सं० अभिरामिन्] रमणकर्ता ।

अभिरुचि, (ची)-स्त्री० [सं०] १ पसंद । २ चाह, इच्छा, अभिलाषा । ३ यश की चाह । ४ गृह्णत्वाकांक्षा ।

अभिरुता-स्त्री० [सं०] १ संगीत की एक भूछटना । २ आवाज, पुकार ।

अभिरूप-वि० [सं० अभिरूपः] १ मनोहर, सुन्दर । २ सहज । ३ प्रिय । —पु० १ विष्णु । २ शिव । ३ चन्द्रमा । ४ कामदेव । ५ पंडित । ६ वीर ।

अभिलाखणी (खी)-देखो 'अभिलासणी' (खी) ।

अभिलाख, (खा)-देखो 'अभिलासा' ।

अभिलाखी-देखो 'अभिलासी' ।

अभिलाषुक, (सक)-वि० [सं० अभिलाषुक] १ अभिलाषा करने वाला । २ लोभी । ३ इच्छुक ।

अभिलाष-पु० [सं०] १ कथन । २ वाक्य । ३ वार्तालाप ।

अभिलास-देखो 'अभिलासा' ।

अभिलासणी, (खी)-क्रि० १ आशा करना, अभिलाषा करना । २ इच्छा करना, चाहना ।

अभिलासा-स्त्री० [सं० अभिलाषा] १ इच्छा, आकांक्षा, कामना, चाह । २ आशा, अभिलाषा ।

अभिलासी-वि० [सं० अभिलाषी] अभिलाषा करने वाला, इच्छुक ।

अभिवादन-पु० [सं०] १ प्रणाम, नमस्कार । २ सम्मान, स्वागत । ३ वंदना ।

अभिवहार-देखो 'अभवहार' ।

अभिव्यक्ति-स्त्री० [सं०] १ प्रगटीकरण, प्रागट्य । २ प्रकाशन, प्रदर्शन । ३ स्पष्टीकरण । ४ साक्षात्कार ।

अभिसम्प-वि० [सं० अभिशप्त] १ जिसे शाप लगा हो, शापित । २ मिथ्या दोष से आरोपित ।

अभिसव-पु० [सं० अभिषव] १ एक प्रकार की शराब । २ अभिषेक ।

अभिसाव-पु० [सं० अभिषाव] १ शाप २ वदुआ, दुराशीष । ३ बड़ा इन्जाम, दोष । ४ झूठा दोषारोपण ।

अभिसार-पु० [सं०] १ युद्ध । २ हमला, आक्रमण । ३ प्रेमी-प्रेमिका के मिलन के लिए संकेत स्थान पर गमन । ४ प्रेमी-प्रेमिका के संकेत स्थान पर मिलने का समय ।

अभिसारिका, अभिसारिणी-स्त्री० [सं०] सांकेतिक स्थान पर नायक से मिलने जाने वाली नायिका ।

अभिशेक (ख)-पु० [सं० अभिषेक] १ जल से सिंचन । २ सिद्धकाव । ३ जल सिंचन एवं मंत्रों से किया जाने वाला शिव पूजन । ४ राजतिलक की क्रिया । ५ ऊपर से जल डालते हुए किया जाने वाला स्नान ।

अभिरट-देखो 'अभीष्ट' ।

अभिहृदोस-पु० [सं० अभिहृतदोष] रास्ते में सम्मुख लाकर भोजन देने का दोष (जैन) ।

अभिहांण-देखो 'अभिधान' ।

अभि-क्रि०-वि० ठीक इसी समय, इसी क्षण । —वि० निडर, निर्भय । —ङी-वि० असुहावना, अरुचिकर । कटु । जोषपूर्ण । —च-वि० वीर । —पु० योद्धा, सुभट । —त, ति, ती, तौ-वि० निडर, निशंक । साहसी । —पु० शत्रु, दुश्मन ।

अभीनमी-देखो 'अभनमी' ।

अभीमत-देखो 'अभिमत' ।

अभीमता-स्त्री० अभिमान, गर्व ।

अभीमान-देखो 'अभिमान' ।

अभीमुख-देखो 'अभिमुख' ।

अभीयास-देखो 'अभ्यास' ।

अभीर-वि० जिसका कोई सहायक न हो, बेसहारा ।

—पु० १ नाग, अहीर । २ प्रत्येक चरण में ग्यारह मात्रा का छंद ।

अभीष्ट-वि० [सं० अभीष्ट] १ वांछित, इच्छित ।

२ मन चाह ।

पसंद, इच्छानुरूप । ३ प्रिय, प्यारा । ४ कृपापात्र ।
—पु० मनोरथ, कामना ।

प्रभुत-देखो 'अभूत' ।

प्रभुषण, (न)-देखो 'आभूषण' ।

प्रभूत, (तो)-वि० [सं० अभूत, अद्भुत,] १ अनस्तित्व ।
२ अद्भुत, विचित्र । ३ अपूर्व, अद्वितीय । —पूरब (बी)
—वि० अपूर्व, अद्वितीय ।

प्रभूनी-देखो 'अभिमन्यु' ।

प्रभूनी-वि० (स्त्री० अभूनी) १ सुनसान, निर्जन । २ बिना
मुना हुआ । ३ मूर्ख । ४ उटपटांग ।

प्रभूमौ-वि० (स्त्री० अभूमौ) १ विचार शक्ति शून्य । २ मूर्ख,
अज्ञानी । ३ अनाड़ी ।

प्रभूतणी, (बी)-क्रि० याद या स्मरण रखना, न भूलना ।

प्रभेख-वि० [सं० अभेय] १ असाधु । २ दुष्ट । ३ निर्वेण ।

प्रभेड़ी-वि० कठिन, मुश्किल, दुष्ट ।

प्रभेद-पु० [सं०] १ एकत्व, अभिन्नता । २ भेद या दुराव का
अभाव । ३ घनिष्टता । ४ अतिसमानता । ५ रूपक
अलंकार का एक भेद । —वि० १ अभिन्न । २ एक सा ।
३ अविभक्त । ४ समान, सद्गुण । —बाबी-वि०
प्रद्वैतवादी ।

प्रभेधाम-देखो 'अभयधाम' ।

प्रभेळणी, (बी)-क्रि० १ न लूटना । २ न मिलाना या मिश्रण
करना ।

प्रभेव-देखो 'प्रभेद' ।

प्रभै-देखो 'अभय' । —दानं='अभयदान' । —पद='अभयपद' ।

—वचन='अभयवचन' ।

प्रभंमुनि-देखो 'अभिमन्यु' ।

प्रभोक्ता-वि० [सं०] १ जो भोग न करे । २ जो व्यवहार
न करे ।

प्रभोखण-१ देखो 'आभूषण' । २ देखो 'अवोचन' ।

प्रभोग, (गत)-पु० १ विस्तार, फैलाव । २ भोग का अभाव ।
३ विलास का अभाव । —वि० [सं० अभोग्य] १ जो
भोगने योग्य न हो । २ जिसका भोग न किया गया हो ।
३ अनुपयोगी, अप्रयोज्य । ४ जो कार्य या व्यवहार में न
आया हो ।

प्रभोगी-वि० [सं०] इन्द्रिय-मुख से उदासीन, विरक्त ।

प्रभोचन-देखो 'अवोचन' ।

प्रभौ-देखो 'आभी' ।

प्रभौतिक-वि० [सं०] १ अगोचर । २ पंचभूतों से संबंधित
न हो ।

अभम-देखो 'आभी' ।

अभमरी-देखो 'अमरी' ।

अभ्यंतर-पु० [सं०] १ मध्य, बीच । २ हृदय । —क्रि० वि०
१ भीतर । २ निकट, समीप । ३ दरम्यान ।

अभ्यसणी, (बी)-क्रि० अभ्यास करना, साधना करना ।

अभ्यस्त-वि० [सं०] १ आदी । २ अभ्यास किया हुआ ।
३ दक्ष, निपुण ।

अभ्यागत-वि० [सं० अभ्यागतः] १ गरीब, दरिद्र ।

२ अशक्त, निर्बल । ३ असमर्थ । —पु० १ अतिथि,
मेहमान । २ संन्यासी ।

अभ्यागम-पु० [सं० अभि-+आगम] १ युद्ध, समर ।

२ शत्रुता, वैर ।

अभ्यामरद-पु० [सं० अभ्यामरदः] १ युद्ध । २ दंगल । ३ हमला,
आक्रमण ।

अभ्यास-पु० [सं०] १ कोई विद्या या कला सीखने का
निरन्तर प्रयास । २ साधना । ३ गरिष्ठम, श्रम । ४ प्रयत्न,
कोशिश । ५ आदत, टेव । ६ पाठ, अध्ययन । ७ कसरत ।
८ युद्ध, समर । —कळा-स्त्री० योग की चार कलाओं में
से एक ।

अभ्यासी-देखो 'अभ्यस्त' ।

अभ्युद्य-पु० [सं०] १ उद्यम । २ उत्थान । ३ प्रादुर्भाव ।
४ तरक्की ।

अभ्र, (घ)-पु० १ मेघ, बादल । २ आकाश । ३ स्वर्ग ।

४ अभ्रक, धातु । ५ धन । ६ जीरो का अंक । शून्य ।

—वि० श्वेत । —क-पु० एक धातु । एक रसोपधि ।

—वि० श्वेत-श्याम । —त,ल-वि० पालन-पोषण रहित ।

भाई रहित । सेवक रहित । अपार । —मारग-पु०
आकाश ।

अभ्रमांश, (मां)-देखो 'अभिमांश' ।

अभ्रम, (म्)-पु० भ्रम का अभाव ।

अभ्रस्याम, (स्यामी)-पु० [सं० अभ्रस्यामी] इन्द्र ।

अभ्रान्त-वि० [सं०] १ भ्रम या भ्रान्ति रहित । २ स्थिर ।

अभ्रान्ति-स्त्री० [सं०] १ भ्रम या भ्रान्ति का अभाव । २ स्थिरता ।

अभ्रंख-देखो 'अभ्रंख' ।

अभ्रंखांचरेळ-पु० १ पलचर, मांगाहारी । २ मिह । ३ मिद्ध ।

अभ्रंग, (ण)-वि० १ न मांगने वाला, अग्रानक । २ न मांगने
योग्य ।

अभ्रंगळ-पु० [सं० अभ्रंगळ] १ अकल्याण, अनिष्ट । २ कष्ट,
दुःख । —वि० अशुभ ।

अभ्रंरंद-पु० [सं० अभ्रंरंद + रंद] जत्रु, गिपू, वैरी ।

अभ्रंद, (दो, ध)-१ तीव्र तेज । २ चंचल । ३ वेग पूर्ण ।

४ उद्यमी । ५ चूस्त । ६ उत्तम, श्रेष्ठ । ७ बड़े जोर का ।

८ वृद्धिमान । ९ स्वस्थ, निरोगी । १० उग्र । ११ दृढ़ ।
१२ प्रतिभावान ।

अमलीमांश-वि० १ ऐश्वर्य व अधिकारों को भोगने वाला ।
२ दातार, दानी ।

अम-मर्व० [सं० अस्मद्] हम, हमारा, मेरा, अपना ।

अमईणी-मर्व० (स्त्री० अमईणी) हमारा, अपना, मेरा ।

अमकड़ियाँ, अमकड़ौ-देखो 'अमक' ।

अमक-देखो 'अवक' ।

अमख-देखो 'आमिख' । —चर, चरौ= 'आमिखचर' ।

अमग, (ग)-पु० [सं० अ + मार्ग] १ कुमार्ग, बुरा मार्ग ।
२ अर्थम ।

अमडौ-पु० वृक्ष विशेष । (मेवात) ।

अमचूर-पु० [सं० आम्र चूर्ण] १ कच्चे आम की सूखी फाँकों ।
२ उन फाँकों का चूर्ण ।

अमट, (ट्ट), अमठ-वि० १ दातार, उदारचित्त ।
२ देखो 'अमिट' ।

अमणौ-मर्व० [सं० अमणाकम्] (स्त्री० अमणी) हमारा, अपना ।
हमको, हमें ।

अमत्र-पु० [सं०] वर्तन, पात्र ।

अमद-वि० [सं०] मद या गर्व रहित ।

अमदूत-देखो 'अमदूत' ।

अमन-पु० [अ०] १ चैन, आराम । २ जाति । ३ रक्षा, बचाव ।

अमम-स्त्री० ममता । —वि० निर्मम ।

अमर-वि० [सं० अमर] १ जो न मरे, चिरजीवी ।
२ अविनाशी, अश्वर । ३ चिरस्थायी । ४ नित्य ।

—पु० [सं० अमरः] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ देवता ।

३ मंत्रवे । ४ मुवर्ण । ५ पारा । ६ कुलिश । ७ आकाश ।

८ पृथ्वी । ९ अमरकोश । १० हड्डियों का ढेर ।

११ उनचास पत्तनों में से एक । १२ डिगल के बेनियो

सागोर का एक भेद । १३ अवश्य माना जाने वाला

वक्रण । १४ तेंतीस की संख्या । —आपगा-स्त्री० देवनदी,

गंगा । —कंठक-पु० सोन व नर्मदा नदियों का संगम

स्थल । —गिर-पु० आमेर का किला । आमेर का पर्वत ।

गुमरु पर्वत । —नदी-स्त्री० गंगा, सुरसरी । —मांसी-पु०

यश, कीर्ति । —वि० जिसका नाम अमर हो । —नाथ-पु०

काश्मीर का एक प्रसिद्ध तीर्थ । —पख-वि० पितृ पक्ष ।

—पति-पु० विष्णु । इन्द्र । —पद-पु० मोक्ष, निर्वाण ।

देव पद । स्वर्ग, वैकुण्ठ । —पुर, पुरी, पुरी-पु० देव लोक,

स्वर्ग, वैकुण्ठ । —बेल, बेल-स्त्री० बिना जड़ व पत्तों

वाली लता । —भुवण (न)-पु० वैकुण्ठ । —भेंद-पु०

नागिण । —सुख-पु० अग्नि । —लोरु-पु० देवलोक,

इन्द्रपुरी । स्वर्ग । —वंस-पु० देव वंश । जो वंश अमर
हो । —सुहाग-पु० अश्विष्ट मुहाग । मुहाग पूर्ण समस्त
जीवन । सतीत्व । —सुहागल-स्त्री० जीवन पर्यन्त सुहागल
रहने वाली स्त्री । सती । देश्या ।

अमरकोट-पु० मिथ का एक नगर ।

अमरक-देखो 'अमरख' ।

अमरक-देखो 'अवक' ।

अमरख-देखो 'अमरख' ।

अमरखणौ, (बौ)-देखो 'अमरखणौ' (बौ) ।

अमरख-पु० [सं० अमर्य] १ क्रोध, गुस्सा । २ जोश उत्साह ।
३ अमहिष्णुता । ४ प्रतिशोध की मापदण्ड । ५ एक
गंगा की भाव ।

अमरखणौ (बौ)-कि० १ क्रोध या गुस्सा करना । २ उत्साहित
होना । ३ प्रतिशोध लेना ।

अमरखी-वि० [सं० अमरिण्] १ क्रोधी, गुस्सेल । २ जोशीला,
उत्साही । ३ अमहिष्णु । ४ प्रतिशोधक ।

अमरत, (त)-पु० [सं० अमृत] १ अमरत्व देने वाला पेय
पदार्थ । २ अत्यन्त मधुर एवं स्वादिष्ट पेय । ३ अन्न ।

४ दूध । ५ औषधि । ६ विण । ७ बच्छताम । ८ पारा ।

९ स्वर्ग । १० अन्न । ११ मीठी वस्तु । १२ देवता ।

१३ यज्ञ की अवशिष्ट सामग्री । १४ वन मृग ।

१५ मोमरस । १६ जल । १७ की । १८ स्वर्ग । १९ ब्रह्म ।

२० धन्वन्तरी । —वि० जो मृत न हो, अमर ।

—कर-पु० चन्द्रमा । —का-स्त्री० हरीतकी, हरें ।

—दान-पु० सुधा दान । बी आदि रखने का चीनी का

पात्र । —घारा-स्त्री० पीपरमेंट, अजवायन के पुन व

कपूर के योग से बनने वाली औषधि ।

अमरता-स्त्री० [सं० अमरत्व, अमृता] १ अमर रहने की
अवस्था या भाव, अमरत्व । २ स्थावृत्व । ३ गिलोय ।

४ दुर्वा । ५ तुलसी । ६ मदिरा । ७ आमलकी ।

८ हरीतकी । ९ विप्लवी ।

अमरति, (ती)-वि० [सं० अ-मृत] १ अमर ।

२ देखो 'अमरती' ।

अमरस-पु० [सं० आम्र-रस] १ आम का रस ।

२ देखो 'अमरख' ।

अमरापुर, (पुरी)-देखो 'अमरांलोक' ।

अमरांलोक स्त्री० [सं० अमरमाला] १ देव माला । २ देव वृन्द
या सन्त ।

अमरांलोक पु० देव लोक । अमरलोक ।

अमई स्त्री० [सं० आम्रराजि] १ आम का दान । २ आमों
के पृष्ठों का भस्म । ३ अमरत्व ।

अमराखिख-देखो 'अमरख' ।

अमराभुज-पु० दैत्य ।

अमरालय-पु० [सं०] १ देवालय । २ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

अमराव-पु० [अ० अमीर] १ सामंत, सरदार । २ प्रतिष्ठित व्यक्ति । ३ घनाढ्य, अमीर । ४ उदार । ५ कार्याधिकार रखने वाला ।

अमरावती-स्त्री० १ देवलोक, इन्द्रपुरी । २ स्वर्ग ।

अमरित-देखो 'अमरत' ।

अमरियो-पु० वह बकरा जो बलि नहीं किया जाता हो ।
२ देखो 'अमर' ।

अमरी-स्त्री० [सं०] १ देवांगना, देवपत्नी । २ देवकन्या ।
३ अम्बरा । ४ दूर्वा, दूव । ५ एक वृक्ष । ६ आसन ।
७ गिलोय । ८ बहत्तर कलाओं में से एक ।

अमरीक, (ख)-पु० [सं० अमरीष] एक सूर्यवंशी ईश्वर भक्त राजा ।

अमर (रु)-देखो 'अमर' ।

अमरुव-पु० १ जामफल नामक फल, सफरी ।
२ इसका वृक्ष ।

अमरेस, (स्वर)-पु० [सं० अमरेण] देवराज इन्द्र ।

अमरौ-पु० [सं० अमरा] १ दूव । २ थूहर । ३ काली कोपल ।
४ गर्भस्थ शिशु पर लिपटी रहने वाली भिल्ली ।
५ आंवला । ६ देखो 'अमर' ।

अमर-वि० [मं० अ+मल] (स्त्री० अमरला) १ मल रहित ।
२ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ । ३ निष्कलंक । ४ संपेद ।
५ चमकदार ।

अमल, (ल्ल)-पु० [अ०] १ अधिकार, शासन । २ व्यवहार ।
३ आदत, देव । ४ प्रभाव, अमर । ५ समय, वक्त ।
६ नीला रंग । ७ आरंभ । ८ अफीम । ९ कार्य ।
१० विश्राम । ११ सिंह । १२ कपूर । १३ अघ्रक ।
१४ व्यसन, नशा । —वि० [सं० अमल] खट्टा, तुर्ण ।
—बस्तूर-पु० राज्याभिषेक की रथ । —बार-वि० अफीमची ।
—वारी-स्त्री० राज्य । शासन । अधिकार । अफीम का
आदी होने की अवस्था । —पट्टी-पु० अधिकार-पत्र ।
—पित-पु० अमल पित्त, अजीर्ण ।

अमलडो-देखो 'अमल' ।

अमलरी चिट्ठी-स्त्री० किसी जागीर के अधिकार के संबंध में
राजा द्वारा चोखरियों को लिखा जाने वाला पत्र ।

अमलतास-पु० १ एक औषधि विशेष । २ उमका वृक्ष ।

अमलांकाक-वि० अफीम के नशे में तूर ।

अमला-स्त्री० [मं० अमला] १ लक्ष्मी । २ पृथ्वी ।
३ देखो 'आंवला' ।

अमलियो, अमली, अमलीड़, (डौ)- अफीमची नशेवाज ।

अमलीमाण-देखो 'अमलीमाण' ।

अमली-पु० [अ० अमला] १ कार्याधिकारी । २ कर्मचारी,
कारिदा । [सं० आम्र] ३ आम ।

अमवी-पु० [सं० आम्र] आम ।

अमां-सर्व० [सं० अस्मद्] हम, हमारे, हमकी ।

—अव्य० ऐ, अरे ।

अमाण, (णौ)-वि० [देश०] १ बिना हिलाये-डुलाये, सीधा ।
२ देखो 'अमान' । —सर्व० हमारा, मेरा ।

अमान-वि० [सं० अमान] १ बहुत, वेशुमार । २ अपार,
असीम । ३ दृढ़, मजबूत । ४ अटल, स्थिर । ५ निरभिमान ।
६ अप्रमाण, प्रमाण रहित । ७ मान रहित, तिरस्कृत ।
८ तुच्छ । —पु० १ पांडु पुत्र भीम । २ रक्षा गरण ।
३ देखो 'अमानत' ।

अमानत-स्त्री० [अ० अमानत] धरोहर, धाती । —दार-वि०
जिसके पास कोई धरोहर रखी जाय ।

अमांती-वि० जिसे अभिमान न हो । —पु० १ मजदूरी से काम
करने का ढंग विशेष कर जिसमें केवल दैनिक मजदूरी
दी जाती है, काम का कोई मान निश्चित नहीं होती ।
२ अनुमान या कृत के आधार पर लगान में दी जाने
वाली छूट ।

अमानुस-वि० [सं० अमानुष] १ जो मनुष्य संबंधी न हो ।
अमानवीय । २ अलौकिक । ३ अवीरुषेय । ४ दैवान ।
५ जो मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर हो ।

अमानुसी-वि० [सं० अमानुषीय] मानव स्वभाव के विपरीत ।

अमानितण, (न)-स्त्री० दुहागिन ।

अमांम-वि० १ बहिया, ओष्ठ । २ तमाम, सब । ३ बहुत, अपार ।
४ अद्भुत, विचित्र । —दस्ती-देखो 'हमांगदस्ती' ।

अमांमी-वि० (स्त्री० अमांमी) १ अपार, असीम । २ अद्भुत,
विचित्र । ३ बहुत । ४ वीर बहादुर । ५ अपार शक्ति वाला ।

अमा-स्त्री० [सं०] १ अमावस्या की तिथि । २ माता, मां ।

अमाई-वि० अप्रमाण ।

असाडी-पु० युद्ध ।

असात्य-पु० [सं०] मंत्री, सचिव ।

अमाप, (पियो, पी)-वि० [सं० अमापनम्] जो गापा न जा
सके, अपार, असीम ।

अमार-देखो 'अवार' ।

अमारण-पु० १ बुरा मार्ग, कुमार्ग । २ कुमंगल ।

अमारड़ी-सर्व० (स्त्री० अमारड़ी) हमारा, मेरा ।

अमारी-१ देखो 'हमारी' । २ देखो 'अंवाई' ।

अमाङ्क-वि० दूसरा अन्य । -क्रि० वि० अभी, अब ।

अमारौ-सर्व० हमारा, मेरा ।

अमाव-वि० १ अत्यधिक, असीम, बेहद । २ योद्धा, युद्ध ।

३ शक्तिशाली । ४ सहनशील ।

अमावङ्क-१ देखो 'अमाव' । २ देखो 'अमावस' ।

अमावस, (वस्या, वास्या)-स्त्री० [सं० अमावस्या] प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि ।

अमास-पु० [सं० आवास] १ निवास स्थान, आवास । २ देखो 'आमखाम' । ३ देखो 'अमाव' ।

अमासव-देखो 'अमावस' ।

अमास्ती-सर्व० हम, हमारे ।

अमिट (ट्ट)-वि० १ न मिटने वाला, स्थायी । २ सड़, पक्का ।

अमित, (त्ती)-वि० अपरिमित, अपार, असीम । -पु० १ अमृत । २ शुक । ३ शत्रु, दुश्मन ।

अमित्र-वि० [सं०] १ जो मित्र न हो । २ शत्रु, वैरी । ---ता-स्त्री० मित्रता का अभाव । शत्रुता ।

अमिय-पु० [सं० अमृत] अमृत, सुधा ।

अमिरत, (ति, ती)-देखो 'अमरत' ।

अमिलणी (बी)-क्रि० १ न मिलना । २ प्राप्त न होना ।

अमिली-वि० १ न मिलने योग्य । २ बेमेल । ३ बेजोड़ ।

अमी-पु० [प्रा० अमिथ] १ अमृत, सुधा । २ दूध । ३ धूक । ४ पानी । -सर्व० मैं, मेरा, मुझे । हम, हमारा, हमें ।

अमीठी-वि० (स्त्री० अमीठी) जो मीठा न हो । कड़वा ।

अमीणी, (य)-सर्व० (स्त्री० अमीणि, णी) हमारा, मेरा ।

अमीत-देखो 'अमित्र' ।

अमीन-पु० [अ०] १ अदालत का कर्मचारी । २ भू-प्रबंध विभाग का कर्मचारी । -वि० पंडित । चतुर ।

अमीया-१ देखो 'अमी' । २ देखो 'उमा' ।

अमीर, (ळ)-पु० [अ० अमीर] १ सामंत, सरदार । २ शामताधिकारी । ३ धनवान । ४ अफगानिस्तान के शाह की उपाधि । -पण, पणी-पु० अमीर होने की अवस्था या भाव । अमीरों का स्वभाव ।

अमीरस-पु० अमृत ।

अमीरानौ-वि० अमीरों के समान ।

अमीरायत, [अमीरी-स्त्री० १ दीनतमंदी, संपन्नता, अमीरी । २ उदारता । ३ रईसी, अमीर होने का भाव ।

अमुक-वि० १ कहीं । २ कोई खास । ३ ऐसा-ऐसा ।

अमुख-देखो 'अमिख' । -चर= 'अमिखचर' ।

अमूजणी-स्त्री० [सं० अ० मुहाति] १ अल्प मूर्खी का रोग । २ घृटन । ३ अचेतन अवस्था ।

अमूजणी, (बी)-देखो अमूजणी (बी) ।

अमूक-वि० [सं०] जो १ गूंगा न हो, वाक्, वक्ता । २ चतुर ।

अमूकणी (बी)-क्रि० निकालना ।

अमूकणी (बी)-क्रि० निकालवाना ।

अमूजणी-(बी)-देखो 'अमूजणी' ।

अमूजौ-देखो 'अमूजी' ।

अमूजणी, -देखो 'अमूजणी' ।

अमूजणी, (बी), अमूजणी (बी)-क्रि० १ दम घुटना । २ मूर्खी होना । ३ दिल धराना । ४ अत्यन्त गर्मी होना । ५ उमस होना ।

अमूजी-पु० १ दम घुटने का भाव । २ उमस, गर्मी । ३ तपन ।

अमूड़-वि० [सं०] जो मूढ़ न हो । चतुर ।

अमूमन-क्रि० वि० प्रायः, बहुधा ।

अमूळ-वि० [सं० अमूल] १ मूल रहित, निर्मूल । २ कारण रहित, अकारण । ३ अमूल्य । ४ निराधार ।

अमूल, (क, लिक, मूल्य)-वि० [सं० अमूल्य] १ बहु मूल्य, २ अनमोल ।

अमे-सर्व० मेरा, हम । -क्रि० वि० अब ।

अमेद-देखो 'उमेद' ।

अमेध-पु० [सं० अमेध्य] १ मुख । २ मज, विण्डा ।

३ अपवित्र वस्तु । -वि० अपवित्र ।

अमेयु-वि० [सं० अमेय] असीम, अपार, अमाप ।

अमेळ-पु० १ मेल या मैत्री का अभाव । २ तनाव, मन-मुटाव ।

३ विरोध, शत्रुता । ४ शत्रु, दुश्मन । ५ डिंगल के छोटे माणोर छन्द का एक भेद । ---वि० १ बेमेल ।

२ बेतरतीब । ३ भद्दा ।

अमे (मै)-क्रि० वि० अब, अभी । -सर्व० हम ।

अमेव-वि० १ असीम । २ अजेय । -पु० अभिमान, घमंड ।

अमीणी, अमीध, (घी)-वि० [सं० अमीध] १ श्रेष्ठ, बढ़िया ।

२ अपार । ३ अनुक । ४ अर्थ । ५ समर्थ । ६ पूर्ण ।

७ भरपूर । -पु० १ शिव । २ विष्णु । ३ समुद्र ।

अमीड़ी-वि० १ न मुड़ने वाला । १ पीछे न हटने वाला । २ बोर, योद्धा ।

अमील (लक, लख, लिख) अमील्य-देखो 'अमूल्य' ।

अमीध-देखो 'अमीध' ।

अम्नाय-देखो 'आमना' ।

अम्भर-देखो 'अमर' ।

अम्भरईसर-देखो 'अमरेश्वर' ।

अम्भरी-देखो 'अमरी' ।

अम्भलीमांण-देखो 'अंगलीमांण' ।

अम्मा-स्त्री० जन्मदात्री, जननी, माता ।

अम्भकोस-पु० [सं० अम्भकोण] १ मृगनाभि । २ अम्भकोश ।

अम्भत-देखो 'अमरत' । -कर= 'अमरतकर' ।

अमृतचरण-पु० यो० [सं० अमृत चरण] गरुड़ ।
 अमृतवांन-देखो 'अमरतदान' ।
 अमृतधारा-देखो 'अमरतधारा' ।
 अमृतधुनि, (ध्वनि)-स्त्री० यो० [सं० अमृत-ध्वनि]-चौबीस
 मात्राओं का एक छंद ।
 अमृतबंधु-पु० यो० [सं०] देवता ।
 अमृतमई, (मय)-पु० यो० चन्द्रमा ।
 अमृतलोक-पु० यो० स्वर्ग ।
 अमृतसिद्धयोग-पु० यो० [सं० अमृतसिद्धयोग] एक प्रकार
 का शुभ योग ।
 अमृतास, (तेस)-पु० [सं० अमृतास] देवता ।
 अम्रित-पु० अमृत, सुधा । -वि० मधुर, मीठा । -बैली-वि०
 मधुभाषिणी । मधुरकण्ठी ।
 अम्लपित्त-देखो 'अमलपित्त' ।
 अम्ह, (अम्हां)-सर्व० [सं० अस्माक, अस्मदीय] हम हमारे,
 मेरे, मेरी, मैं, मैंने । -तरी-सर्व० हमारी, मेरी ।
 अम्हक-वि० [सं० अहमक] मूर्ख । उद्दण्ड ।
 अम्हस्यु-सर्व० हमसे ।
 अम्हारउ-सर्व० हमारा, मेरा ।
 अम्हि-सर्व० हम ।
 अम्हिणी, अम्हिणी-सर्व० (स्त्री० अम्हिणी अम्हिणी)
 हमारा, मेरा ।
 अम्हे, अम्है-सर्व० हम, हमें । मेरे ।
 अय-पु० [सं० अयस्] १ शस्त्र, हथियार । २ लोहा । २ अग्नि ।
 -वि० आगे आने वाला ।
 अयण, (न)-पु० [सं० अयन] १ गति, चाल । २ दिन ।
 ३ राशि चक्र की गति । ४ आश्रम, स्थान ५ घर ।
 ६ ज्योतिषशास्त्र । ७ काल, समय । ८ अंश । ९ पैर,
 चरण । १० दो की संख्या । -क-पु० मार्ग, रास्ता ।
 -काळ-पु० लगभग छः मास का समय । -संक्रम,
 संक्रांति-स्त्री० मकर व कर्क की संक्रांति ।
 अयणी-सर्व० अपना ।
 अयत-देखो 'अयुत' ।
 अयथा-वि० [सं०] १ झूठा, मिथ्या । २ अयोग्य ।
 अयराक-देखो 'ऐरावा' ।
 अयरावई, अयरापति-देखो 'ऐरावत' ।
 अयस-स्त्री० १ आज्ञा, हुक्म । २ आममान । ३ अपयश, निंदा ।
 ४ देखो 'अय' ।
 अयाण, (न), अयाणी, (नी)-वि० [सं० अज्ञान] (स्त्री०
 अयाणी) १ अज्ञानी, मूर्ख । २ अनाड़ी, असम्य
 -पु० अज्ञान, अज्ञानता ।

अयाचक, (ची)-वि० [सं० अयाचिन्] १ जिसने कभी कुछ
 मांगा न हो । २ जिसे मांगने की जरूरत न हो ।
 ३ समृद्ध, सम्पन्न ।
 अयार-वि० शत्रु, दुश्मन । अमित्र ।
 अयाळ-पु० घोड़े या सिंह के गर्दन के बाल ।
 अयास, (सि)-पु० [सं० आकाश] १ आकाश, आसमान ।
 २ चिह्न, लक्षण । ३ देखो 'आदेश' ।
 अयी-अव्य० १ अरे ! हे । २ ओह, हाय । ३ याहा ।
 अयुक्त-वि० [सं०] युक्ति संगत न हो, अनुचित, असंगत ।
 अयोग्य ।
 अयुल-पु० [सं०] दश हजार की संख्या व उसका स्थान ।
 अयोग-पु० [सं०] १ संयोग का अभाव । २ कुसमय ।
 ३ दुष्काल ४ संकट, कठिनाई ।
 अयोग्य-वि० [सं०] १ जो योग्य न हो, अनुपयुक्त ।
 २ अनुचित । ३ अपात्र, निकम्मा । ४ असमर्थ, अक्षम ।
 ५ अप्रशस्त, बुरा ।
 अयोध्या-देखो 'यजोध्या' ।
 अयोनि, (नी) वि० [सं०] १ जिसकी कोई योनि न हो ।
 २ अजन्मा । ३ नित्य । -पु० [सं० अयोनिः] १ शिव ।
 २ ईश्वर । ३ विष्णु । ४ ब्रह्मा ।
 अयोसा-पु० [सं० अयोषा] पुरुष, नर ।
 अरंग, (गी)-पु० सुगंध का झोंका । -वि० १ बिना रंग का ।
 २ आनन्द रहित । ३ भयावह ।
 अरंड-देखो 'एरंड' ।
 अरंडोली, अरंडोल्या-स्त्री० एरंड के बीज या डोडा ।
 अरंड, अरंडी-देखो 'अंडी' ।
 अरंत-वि० [सं० अरि-हंतृ] १ शत्रुओं का नाश करने वाला ।
 २ युद्ध में अड़ने वाला ।
 अरंव, (दो, ब्र)-पु० [सं० अरि-इन्द्र] शत्रु, दुश्मन ।
 अर-अव्य० १ और । २ अरे, अरं । -पु० [सं० अरि] १ अरि,
 शत्रु । -स्त्री० २ शीघ्रता । -वि० पीला ।
 अरक-पु० [सं० अर्क] १ सूर्य । २ इन्द्र । ३ तांदा । ४ स्फटिक ।
 ५ पंडित । ६ ज्येष्ठ भ्राता । ७ रविवार । ८ आक या
 मंदार वृक्ष । ९ विष्णु । १० बारह की संख्या ।
 ११ शराव । १२ नदी । १३ एक गुण विशेष ।
 -वि० १ तेज । २ उतारा हुआ, निचोड़ा हुआ ।
 -गौर-पु० जीन कसने का उपकरण । -ज, सुत-पु०
 यम, शनि । अश्विनी कुमार । मुग्धीव । कर्ण । मावन्ति मनु ।
 -जा-स्त्री० यमुना व ताप्ती नदी ।
 अरकाव-पु० सूर्य ।
 अरकासार-पु० तालाब, बांधी ।
 अरवक-देखो 'अरक' ।

अरखी-क्रि०वि० शीघ्र, फौरन ।

अरग-स्त्री० [सं० अरिग] तलवार ।

अरगजी-पु० युगधित उबटन ।

अरगणी (बी)-देखो 'अरघणी' (बी) ।

अरगत, (ती, ती)-पु० लोहा छीसने या घिसने का उपकरण ।

अरगनी-स्त्री० [देश०] कपड़ा सुखाने के लिए लटकाई जाने वाली रस्सी या लकड़ी ।

अरगला-स्त्री० [सं० अर्गला] दोनों कपाटों के बीच लगाई जाने वाली रोक, अर्गला ।

अरघ-पु० [सं० अर्घः] १ पूजन की एक विधि, अर्घ्य । २ जल की अर्जलि । —पात्र-पु० पूजन का जल-पात्र ।

अरघणी, (बी)-क्रि० जल के अर्घ्य से पूजा करना ।

अरघल-परघल-वि०यी० [अनु०] प्रचुर, बहुत ।

अरघी-पु० पूजन का जल-पात्र ।

अरड़-स्त्री० १ पेड़ या मोटी लकड़ी टूटने की ध्वनि । २ भैंस या ऊँट की आवाज । ३ वनान् धंसने की क्रिया । ४ भय, आतंक ।

अरड़णी, (बी)-देखो 'अरड़ाणी' (बी) ।

अरड़ाण-पु० रुदन, विनाप ।

अरड़ाट, (टी)-पु० १ आँधी की आवाज । २ तेज वर्षा की आवाज । ३ दर्द या दुःख भरी आवाज । ४ भैंस या ऊँट की आवाज ।

अरड़ाणी, (बी), अरड़ावणी, (बी)-क्रि० १ चिल्लाना, चीखना । २ दर्द या दुःख भरी आवाज करना । ३ धंसाता, फंसाना । ४ भैंस या ऊँट का दर्द पूर्ण आवाज करना ।

अरड़ाव-पु० १ चीख, चिल्लाहट । २ ध्वनि ।

अरड़िग, (डोंग, डींगी)-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ सहनशील । ३ योद्धा, शूरवीर । —पु० व्यवधान ।

अरड़ूणी, (सी)-देखो 'अरडूनी' ।

अरड़ू वि० क्वात् घुसने वाला । —पु० घबका ।

अरचणी, (बी)-क्रि० [सं० अर्चनम्] पूजन करना, पूजा करना । अर्चना करना ।

अरचन-पु० [सं० अर्चनम्] पूजन, अर्चन ।

अरचा-स्त्री० [सं० अर्चा] १ पूजा । २ शृंगार । ३ मूर्ति या प्रतिमा । ४ चर्चा ।

अरचाणी, (बी), अरचावणी (बी)-क्रि० पूजा करना ।

अरचित-वि० [सं० अर्चित] पूजित, पूजा हुआ ।

अरचणी (बी)-देखो 'अरचणी' ।

अरज-स्त्री० [अ० अर्ज] १ प्रार्थना, निवेदन, अर्जी । २ जोड़ाई । —पु० ३ राजा । ४ अर्जुन ।

अरजण, (न, न)-पु० [सं० अर्जनम्] १ उपार्जन, आय, कमाई । २ उपलब्धि, प्राप्ति । ३ संग्रह । ४ देखो 'अरजुण' ।

अरजणी (बी)-क्रि० उपार्जन करना, कमाना, प्राप्त करना ।

अरजनपता, (पिता)-पु० १ इन्द्र का नामान्तर । २ पांडु ।

अरजनी-स्त्री० गाय, गी ।

अरजम-पु० [सं० अर्जमा] सूर्य । —वि० अर्जमा ।

अरजल-वि० १ व्याकुल । २ धायल । —पु० घोड़ा, जिसका एक पांव श्वेत हो ।

अरजाऊ-वि० अर्ज करने वाला, प्रार्थी, निवेदक ।

अरजित-वि० [सं० अर्जित] १ कमाया हुआ, उपार्जित । २ जोड़ा हुआ, संगृहीत । ३ प्राप्त ।

अरजी-स्त्री० [फा० अर्जी] १ प्रार्थना, निवेदन । २ फरियाद । ३ प्रार्थना-पत्र । —दावी-पु० दीवानी दावे का आवेदन-पत्र ।

अरजुण (न, न)-पु० [सं० अर्जुनः] १ पांच पांडवों में से एक । २ सहस्रार्जुन । ३ स्वर्ण । ४ चांदी । ५ एक वृक्ष विशेष । —वि० १ श्वेत, सफेद । २ काला-श्याम —धुज, ध्वज-पु० हनुमान का नाम । —सखा-पु० श्रीकृष्ण ।

अरजुनी-स्त्री० [सं० अर्जुनी] गाय ।

अरज-देखो 'अरज' ।

अरज्जण, (ज्जन, ज्जुण)-देखो 'अरजुण' ।

अरजुला-स्त्री० जमीन ।

अरट, अरटियो, अरट्ट-पु० [सं० अरधट्ट] १ कुएं से पानी निकालने का मालाकार यंत्र । रहट । २ ढिगल का एक गीत (छंद) । ३ एक प्रकार की बन्दूक । ४ सूत कातने का चरखा । ५ एक लोक गीत विशेष ।

अरखीग-देखो 'अरडींग' ।

अरखी, (सी)-१ एक प्रकार का क्षुप विशेष । २ इस क्षुप के समान पत्तों वाला वृक्ष । (मेवात)

अरण, (ण्य)-पु० [सं० अरण्य] १ वन, जंगल । [सं० अरणिः] २ अग्नि, प्राग । ३ युद्ध । ४ चांदी । ५ देखो 'अरण्य' । ६ देखो 'ऐरण' ।

अरणव-पु० [सं० अर्णवः] १ समुद्र, सागर । २ इन्द्र । ३ सूर्य । —मंदिर-पु० वरुणदेव ।

अरणि, (णी)-स्त्री० [सं० अरणिः, अरणी] १ काण्ड से उत्पन्न अग्नि । २ ओषध बुटी । ३ अग्निमंत्र । ४ सूर्य । ५ एक लोकगीत विशेष । —अग्नी-स्त्री० यज्ञाग्नि । दावानल ।

अरणी-पु० [सं० अरण्य] १ जोधपुर के दक्षिण में स्थित एक तीर्थ कुंड । २ जंगली भैंसा । [सं० अरणि] ३ छेकुर का वृक्ष या उसकी लकड़ी । —वि० [सं० अरण्य] जंगल का, जंगल संबंधी ।

अरणीद, अरणीदय-पु० [सं० अरणीदय] १ उषाकाल, अरणीदय । २ सूर्य, भात ।

अरण्या, (ण्यु, ण्यु)-पुं [सं] १ दशनामी गोस्वामियों का एक भेद । २ कायफल । ३ वन । ४ देखो 'अरणी' ।

—सस्टी-स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी का व्रत ।

अरत-पुं [सं अराति] १ शत्रु, वैरी । २ देखो 'आरत' ।

अरतिमर-पुं यौ० [सं अरि+तिमिर] सूर्य ।

अरत-वि० [सं] १ जो लीन न हो, विरक्त, अलिप्त ।

२ जो रक्त वर्ण न हो । ३ देखो 'अरत' ।

अरत्थ, (त्थि), अरथ-पुं [सं अर्थः] १ शब्द का अभिप्राय, माने । २ प्रयोजन, मतलब, आशय । ३ कारण, हेतु । ४ आधार, जरिया । ५ इंद्रियों का विषय । ६ घन, संपत्ति । —क्रि० वि० लिये, वास्ते । —कर-वि० लाभकारी । फायदे मंद । —च-क्रि० वि० लिये, वास्ते ।

—मंत्री-पुं वित्त सचिव, वित्तमंत्री । —बाद-पुं तीन प्रकार के वाक्यों में से एक । —सचिव-पुं वित्त सचिव ।

अरथांतरन्यास-पुं [सं] एक अर्थालंकार ।
अरथाऊ-क्रि० वि० उदाहरण के तीर पर ।
अरथाणी, (बी)-क्रि० १ अर्थ करना, व्याख्या करना । २ अर्थ समझाना । ३ विवेचन करना ।

अरथात-अव्य० [सं अर्थात्] यानि, अर्थात्, फलतः ।

अरथाभास-पुं [सं अर्थाभास] १ शब्दार्थ का आभास ।

२ अर्थ का प्रभाव ।

अरथालंकार-पुं [सं अर्थालंकार] एक साहित्यिक अलंकार ।

अरथावणी (बी)-देखो 'अरथाणी (बी)' ।

अरथि, अरथी, (न)-पुं १ वादो, प्रार्थी, मुद्दई । २ सेवक ।

३ याचक । ४ धनी । —स्त्री० ५ मृतक को श्मशान ले जाने की वांस की सीढ़ी, मृतक यान । —वि० १ चाहने वाला, इच्छित । २ पैदल । ३ देखो 'अरथ' ।

अरथ्य (थ्य)-देखो 'अरथ' ।

अरद-देखो 'अरध' ।

अरवली-पुं सेवक, कर्मचारी । हाजरिया ।

अरदात (दाता)-स्त्री० प्रार्थना, अर्ज, विनती, स्तुति ।

अरदित-वि० [सं अदित] १ पीड़ित । २ दुखित, हिंसित ।

—पुं १ मुख का एक वात रोग विशेष । २ लकवा ।

अरद्धंग-देखो 'अरधंग' ।

अरद्ध-वि० [सं अर्द्ध] १ आधा । २ खंड, टुकड़ा । —चंद्र-पुं

आधा चन्द्रमा । एक प्रकार का त्रिपुंड । हथेली की एक मुद्रा । —समव्रत-पुं एक वर्ण वृत्त ।

अरद्धांगली, (गिणी)-स्त्री० [सं अर्द्धांगिनी] स्त्री,

पत्नी, भार्या ।

अरद्धाली-स्त्री० दो चरण की या आधी चौपाई ।

अरधंग-स्त्री० [सं अर्द्धांगिनी] १ स्त्री, भार्या, पत्नी । —पुं

[सं अर्धंग] २ शिव । ३ अर्धांगवात का रोग, पक्षाघात ।

अरधंगा, (गि, गो)-स्त्री० [सं अर्द्धांगिनी] स्त्री,

भार्या, पत्नी ।

अरध-वि० [सं अर्द्ध, अधः] आधा । —क्रि० वि० अंदर,

भीतर, नीचे । —कूरमासन-पुं एक योगासन ।

—गोख, गोखी-पुं डिगल का एक गीत या छंद ।

—चंद, चंद्र-देखो 'अरद्धचंद' । —नाराच-पुं नाराच छंद

का एक भेद । —निसा-स्त्री० अर्धरात्रि । —पादासन-

पुं एक योगासन । —पुंड-पुं संन्यासियों का खड़ा

तिलक । —साख-पुं डिगल का एक छन्द या गीत ।

—सरीरी-स्त्री० अर्द्धांगिनी । —पुं आधे शरीर का

शिव, महादेव । —सावझड़ी-पुं एक डिगल गीत ।

अरधंग, (गि, गो)-देखो 'अरधंग' ।

अरधाभेदक-पुं [सं अर्धाभेदक] अर्ध शिरशूल । सूर्यावृत्त ।

अरधियो अरधौ-देखो 'आधी' ।

अरधौ-देखो 'अरध' ।

अरधूस-स्त्री० [सं अरिध्वंस] सेना, फौज ।

अरनाव-पुं सूर्य ।

अरनी-स्त्री० १ विद्युत्, बिजली । २ देखो 'अरणि' ।

अरपण, (न)-पुं [सं अर्पण] १ भेंट, नजर । २ दान ।

३ समर्पण, देना । ४ त्याग । ५ वापसी ।

अरपणी, (बी)-क्रि० १ भेंट या नजर करना । २ दान देना ।

३ समर्पण करना । ४ त्यागना । ५ वापस करना,

लौटाना ।

अरबंद-देखो 'अरविद' ।

अरब-पुं [सं अर्बुद] १ सौ करीड़ की संख्या ।

[अ०] २ दक्षिण एशिया का एक रेगिस्तानी प्रदेश ।

३ इस देश का व्यक्ति । ४ इस देश का घोड़ा । —पसाव-

पुं करोड़ का पुरस्कार ।

अरबजियो, (बजियो)-पुं साधारण कांटेदार वृक्ष विशेष ।

अरबव (दियो, दीयो, अरबव)-पुं [सं अर्बुद] १ अरावली

पहाड़ का एक हिस्सा । २ आवू पहाड़ । —गिर-पुं आवू

पहाड़ ।

अरबद्ध-पुं १ गठिया रोग । २ देखो 'अरवद' ।

अरबिद (ब्यंद)-देखो 'अरविद' ।

अरबी, (ब्बी)-वि० [अ०] अरब देश का, अरब संबंधी ।

—पुं १ अरब का घोड़ा । —स्त्री० २ अरब की भाषा ।

अरबुद-देखो 'अरवद' ।

अरभ, (क)-पुं [सं अर्भक] बालक ।

अरमान-पुं [तु० अरमान] इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना ।

अर्यवं-देखो 'अरिद' ।

अर्यम्मा-पु० [सं० अर्यमन] बारह आदित्यों में से एक ।

अरर-अव्य पु० [सं० अररे] दर्द, शोक, आश्चर्य व व्यग्रता सूचक अव्यय ध्वनि । -पु० [सं०] कपाट, किवाड़ ।

अरराट (टी)-पु० [अनु०] १ घोर ध्वनि । २ दर्द की आवाज, कराहट ।

अरल-स्त्री० १ अर्गला, व्योड़ा । २ शत्रु ।

अरलाणी, (बौ), अरलावणी (बौ)-देखो 'अरडावणी' ।

अरल-स्त्री० १ कड़वी लोकी । २ एक औषधि का नाम । ३ एक फल ।

अरवत, अरवा-पु० [सं० अर्वेन] घोड़ा, अश्व ।

अरवळ-पु० घोड़े के कान की जड़ में होने वाली भौरी ।

अरवाचीन-वि० [सं० अर्वाचीन] १ आधुनिक । २ नवीन ।

अरविद-पु० [सं०] १ कमल । २ सारस । ३ तांबा । ४ कमल का फूल । -मयल-पु० विष्णु । कमल नयन । -नाभ-पु० विष्णु । -बंधु-पु० सूर्य । -योनि-पु० ब्रह्मा । -लोचन-पु० विष्णु । कमल नयन ।

अरवी-स्त्री० एक प्रकार का कंद जिसकी तरकारी बनती है ।

अरस, (सि)-पु० १ आकाश । २ सबसे ऊँचा स्वर्ग जहाँ ईश्वर रहता है । [सं० अर्जस्] ३ बवासीर रोग । ४ द्रव, पटाव । ५ महल । -वि० [सं०] १ रमहीन, नीरस । २ फीका । ३ मंद, निस्तेज । ४ निर्बल । ५ अगुणकारी । ६ शुष्क ।

अरस-परस-पु० [सं० दर्श-स्पर्श] १ दर्शन, साक्षात्कार । २ आँख मिचौनी का खेल । -कि०वि० प्रत्यक्ष, रूबरू ।

अरसाधनी-स्त्री० [सं० अरिसाधनी] सेना, फौज ।

अरसान, (सी)-पु० [सं० अरि-शल्य] १ गढ़, दुर्ग, किला । २ राजा कर्ग । ३ वीर, योद्धा ।

अरसिक-वि० [सं०] १ जो रसिक न हो । २ विरक्त । ३ रुखा, शुष्क । ४ अभावुक ।

अरसी-पु० [अ० अर्सा] १ समय, अवधि । २ विलंब, देर ।

अरस्त, (ए), अरस्ति-देखो 'अरस' ।

अरहंत-देखो 'अरिहंत' ।

अरहट, (ट, ठ)-देखो 'अरट' ।

अरहटणी-वि० शत्रुओं का नाश करने वाला ।

अरहटणी, (बौ)-कि० शत्रुओं का नाश करना ।

अरहड-देखो 'अरहर' ।

अरहरण-देखो 'अरिहंत' ।

अरहरणा-स्त्री० [सं० अर्हणा] १ पूजा, अर्चना । २ उपासना । ३ सम्मान । ४ शिष्ट व्यवहार ।

अरहत-देखो 'अरिहंत' ।

अरहर-पु० [सं० आठकी] १ एक द्विदल मोटा अनाज, तूर । २ शत्रु, रिपु ।

अरहित-वि० [सं० अहित] पूजित, अर्चित ।

अरही-पु० [सं० अर्ह] अत्यावश्यक कार्य ।

अरांणि-पु० [सं० रण] युद्ध ।

अरांन, (नी)-पु० [सं० अरि] १ रिपु, शत्रु । २ ऐववाला धोड़ा ।

अरांतौ-पु० बहादुर, वीर ।

अरांम-देखो 'आरांम' । -खोर='आरांमखोर' ।

अराई-स्त्री० [सं० अहार्य] घास-फूस की गेंदुरी, इंदुरी ।

अराक-वि० १ अकड़ने वाला । २ देखो 'ऐराक' ।

अरडाणी (बौ)-१ ऊंट, भैम आदि पशुओं द्वारा कष्ट में कराहना, आवाज करना । २ जोर से रोना, चिल्लाना ।

अराज-वि० बिना राज्य का । -पु० राज्य का अभाव ।

अराजक-वि० [सं०] १ राजा या शासन विहीन । २ उपद्रवी, विद्रोही ।

अराजकता-स्त्री० [सं०] १ शासन का अभाव । २ अशान्ति । ३ क्रान्ति ।

अराट-पु० [सं० अरि + राट] १ शत्रु-राजा २ देखो 'अरराट' ।

अरात, (ति, ती)-पु० [सं० आराति] १ शत्रु, दुश्मन । २ रात्रि का अभाव । ३ दुष्ट, आततायी । ४ फलित ज्योतिष में कुंडली का छठा स्थान ।

अराती-वि० विरक्त, उदासीन ।

अरावौ-देखो 'इरावौ' ।

अराधक-देखो 'आराधक' ।

अराधणा-देखो 'आराधना' ।

अराधणी (बौ)-देखो 'आराधणी' (वौ) ।

अरापत-देखो 'ऐराबत' ।

अराब, अराबा, अराबी-स्त्री० [फा०] १ तोप रखने की गाड़ी । २ फौज की टुकड़ी । ३ एक प्रकार की छोटी तोप । ४ युद्ध वाद्य विशेष ।

अरावळ-पु० [फा० हरावल] सेना का अग्र भाग ।

अराबी-पु० माँप की कुंडली ।

अराह-स्त्री० कुमार्ग ।

अरिद-पु० [सं० अरि + इन्द्र] शत्रु, दुश्मन ।

अरि-पु० [सं०] १ शत्रु, वैरी, रिपु । २ काम, क्रोधादि आन्तरिक शत्रु । ३ पहिया, चक्र । -अव्य० श्रीर ।

—अरण, परण, यांण-पु० शत्रुगण । -क-पु० संदेह, शंका ।

—केसी-पु० श्रीकृष्ण । -घड़-पु० शत्रुदल । -घन-पु० शत्रुधन ।

—जण, जण-पु० शत्रुगण । -थंड, थाट-पु० शत्रु समूह ।

—ब-पु० शत्रु । -बम-वि० शत्रुओं का दमन करने वाला ।

—बळ-पु० शत्रु सेना । -भंजण-वि० शत्रुओं का संहार करने वाला

—राज-पु० शत्रु राजा । शत्रुओं का नेता । —साल-वि० शत्रुओं के लिये शूल-समान । —हंत-पु० जैनियों के तीर्थंकर । —वि० शत्रुओं का हनन करने वाला । पूजनीय । —हंतनर-पु० ईश्वर । —हण, हन-पु० शत्रुघ्न ।
 अरिया-स्त्री० १ तर ककड़ी । २ कुंसी ।
 अरियौ-पु० फोड़ा ।
 अरिल्ल-पु० एक मात्रिक छंद ।
 अरिस्ट-पु० [सं० अरिष्ट, अरिष्ठ] १ दुःख, कष्ट । २ पीड़ा, वेदना । ३ विपत्ति, आपत्ति । ४ दुर्भाग्य । ५ अमंगल, अहित, ६ उत्पात, उपद्रव । ७ पौष्टिक मद्य (बैद्यक) । ८ नीम । ९ कौआ । १० गिद्ध । ११ दही का मट्ठा । १२ लहसुन । १३ वृषभासुर । १४ सूतिका गृह । १५ शराब । —वि० १ हठ, पक्का । २ अनश्वर । ३ बुरा, अशुभ । —नेमि-पु० दक्ष प्रजापति का नाम । जैनियों के तीर्थंकर ।
 अरिस्टा-स्त्री० [सं० अरिष्टा] दक्ष प्रजापति की पुत्री ।
 अरिहर, (हरि, हरी)-पु० शत्रु वंश का व्यक्ति । शत्रु ।
 अरिहा-पु० [सं० अरिहन्] शत्रुघ्न ।
 अरी-अव्य० १ स्त्री वाचक संबोधन । २ बुलाने की सांकेतिक ध्वनि । ३ देखो 'अरि' । —अंधार-पु० सूर्य ।
 अरीम-वि० जो प्रसन्न न हो ।
 अरीठी-देखो 'अरेठी' ।
 अरीठ-वि० पीठ न दिखाने वाला वीर ।
 अरीत-स्त्री० [सं० अरीति] कुरीति, बुरी रस्म ।
 अरीपुलोम-पु० यौ० इन्द्र ।
 अरबंघु-पु० चंद्रमा ।
 अरीयण, (याण, हण)-देखो 'अरिग्रण' ।
 अरीहरि-देखो 'अरिहर' ।
 अरुंखिका-स्त्री० शिर के बाल उड़ने का रोग ।
 अरुंधती-स्त्री० [सं०] १ वशिष्ठ मुनि की पत्नी । २ दक्ष प्रजापति की कन्या । ३ नासिका का अग्रभाग । ४ सप्तवि मंडल का छोटा तारा । ५ जिह्वा । —ईस-पु० वशिष्ठ मुनि ।
 अरु-अव्य० १ और । २ पुनः, फिर । —ख-वि० विरुद्ध, विमुख ।
 अरुचि-स्त्री० [सं०] १ अनिच्छा । २ अग्नि मांघ रोग । ३ षृणा, नफरत । ४ विरक्ति, उदासीनता । —कर-वि० अरुचि पैदा करने वाला । जो रुचिकर न हो ।
 अरुखि-स्त्री० अग्नि, आग ।
 अरुज-वि० [सं०] निरोग, स्वस्थ ।
 अरुजण, (न)-देखो 'अरजुण' ।
 अरुसण-देखो 'उलभाण' ।
 अरुसाणौ, (बौ)-देखो 'उलभाणौ' ।

अरुसाणौ, (बौ)-देखो 'उलभाणौ' ।
 अरुण-पु० [सं० अरुण] १ सूर्य । २ सूर्य का सारथी । ३ गुड़ । ४ कुंमकुंम । ४ सिन्दूर । ६ संघ्याराग । ७ आक, भंदार । ८ अव्यक्त राग । ९ कुष्ठ रोग । ७ माघ मास का सूर्य । ११ सुवर्ण । १२ लाल रंग । १३ रीप्य । १४ केसर । १५ युद्ध । —वि० [सं० अरुण] लाल, रक्ताभ । —चूड़-पु० मुर्गा, कुक्कुट । —ता-स्त्री० लालिमा, ललाई । —अ्रिया-स्त्री० सूर्य पत्नी । अप्सरा । —सिखा-पु० मुर्गा ।
 अरुणा-स्त्री० १ मजीठ । २ इन्द्रायण । ३ उषा । —वरज-पु० गरुड़ ।
 अरुणाई-स्त्री० लालिमा ।
 अरुणा-स्त्री० १ ललाई । २ मेंहदी ।
 अरुणोद, (वय)-पु० [सं० अरुणोदय] १ उषाकाल । २ ब्राह्म मुहूर्त ।
 अरुणोदधि-पु० मिश्र व अरब के बीच का लाल सागर ।
 अरुठ-देखो 'अरथ' । ४ देखो 'आरुठ' ।
 अरु-अव्य० और ।
 अरुह-वि० १ अत्यधिक । २ बढ़िया, श्रेष्ठ ।
 अरुडणी, (बौ)-क्रि० १ धक्का मार के भीड़ में घुसना । २ आवश्यक्ता से अधिक घुसना ।
 अरुध-देखो 'अरुचि' ।
 अरुड-वि० १ क्रुद्ध, नाराज । २ बलवान, जबरदस्त । ३ प्रसन्न, खुश ।
 अरुडणी (बौ), अरुडणी (बौ)-देखो 'आरुडणी' ।
 अरुप-वि० १ रूप रहित, निराकार । २ कुरूप । —पु० विष्णु ।
 अरुपी, अरुबी-वि० १ जिसमें वर्ण, रस, गंध और स्पर्श भौतिक गुण न हो (जैन) । २ जिसमें रूप का अभाव हो ।
 अरे-अव्य० आश्चर्यमय संबोधन ।
 अरेटी (ठौ)-पु० [सं० अरिष्टक] १ रोठा का वृक्ष, अरेटा । २ इस वृक्ष का डोडा ।
 अरेत-वि० [अ०अ + रथ्यत] दूसरों की प्रजा । —स्त्री० धूलि रहित ।
 अरेध-देखो 'आराधना' ।
 अरेस-वि० १ निष्कलंक, दाग रहित । २ शत्रु, दुश्मन । ३ पराजित न होने वाला । —पु० १ आकाश, आसमान । २ जीत, विजय ।
 अरेह, (हण, हो)-वि० १ निष्कलंक, वेदाग । २ नहीं नमने वाला वीर ।
 अरेहो-पु० दुश्मन, शत्रु ।
 अरेंट-देखो 'अरट' ।
 अरै-अव्य० सम्बोधन व आश्चर्य बोधक अव्यय ।

अरोग-वि० [सं० आरोग्य] रोग रहित, निरोग, स्वस्थ ।

-पु० १ मुख । २ रोग का अभाव । ३ खाना किया ।

अरोगण-देखो 'आरोगण' ।

अरोगणी-वि० (स्त्री० अरोगणी) भोजन करने वाला, खाने वाला । भक्षण करने वाला ।

अरोगणी (बौ)-क्रि० [सं० आरोग्य] खाना, भोजन करना, भक्षण करना ।

अरोगाणी, (बौ)-क्रि० भोजन कराना, खाना, खिलाना ।

अरोगी-वि० १ निरोग, स्वस्थ । २ देखो 'आरोगी' ।

अरोड़ (डौ)-वि० १ जबरदस्त । २ न रुकने वाला । ३ वीर बहादुर । ४ बहुत, अधिक । ५ समुदाय, झुंड । ६ देखो 'अरोड़ी' ।

अरोड़णी-वि० (स्त्री० अरोड़णी) रोकने वाला ।

आरोपा-वि० हट, मजबूत ।

अरोम-वि० [सं०] रोम या बाल रहित, निलोम ।

अरोळ, अरोळी-पु० [फा० हरावल] सेना का अग्रभाग, हरावल ।

अरोहक-देखो 'आरोहक' ।

अरोहण-देखो 'आरोहण' ।

अरोहणी, (बौ)-देखो 'आरोहणी' (बौ) ।

अरोहित, अरोही-देखो 'आरोहित' ।

अरौ-पु० बेल गाड़ी के पहिये का एक अवयव ।

अरोड़-पु० १ वेग । २ देखो 'अरोड़' ।

अलंकार-पु० [सं०] १ आभूषण, जेवर । २ काव्य रचना की चमत्कारिक विधि । ३ साहित्य के अलंकार । ४ नायिका के सौंदर्य को बढ़ाने वाले हाव-भाव । ५ वृत्तर कलाओं में से एक । ६ प्रथम गुरु महिम्न चार मात्रा का नाम । ७ उपाधि विशेष ।

अलंकृत, (क्रि०)-वि० [सं० अलंकृत] १ सजाया हुआ, शृंगारित । २ आभूषण या उपाधि धारित । ३ काव्यालंकार युक्त । ४ चार, चमत्कृत ।

अलंकृती-वि० [सं० अलंकृति] अलंकारों का जानकार । -पु० १ सजावट । २ आभूषण ।

अलंग, (तौ), अलंगां, (ए)-पु० १ सेना का पक्ष । २ दिशा । ३ आलिगन । -वि० [सं० अनुलंघय] १ ऊंचा, उत्तंग । २ पहुंच मे परे । ३ बहुत । -क्रि० वि० ४ ऊपर, दूर । ५ अतिदूर ।

अलंगणी, (बौ)-देखो 'आलिगणी' (बौ) ।

अलंगाणी, (बौ)-देखो 'आलिगणी' (बौ) ।

अलंगार-पु० सोढ़ा, वीर ।

अलंगी-देखो 'अलंग' ।

अलंगा क्रि० वि० दूर, अति दूर ।

अलंत-वि० व्यर्थ, निरर्थक ।

अलंब, अलंबै-वि० [सं० अवलंबित] आश्रित, अवलंबित, निर्भर ।

अलंबुसा-स्त्री० [सं० अलंबुपा] १ गोरख मुंडी । २ स्वर्ग की एक अप्सरा ।

अल-देखो 'डल' ।

अल-वि० [सं० अलम्] व्यर्थ, निरर्थक । -पु० [सं० अलि] १ भ्रमर, भौरा । २ बिच्छु का डंक । ३ बिच्छु । ४ पानी, जल । ५ वंश, गीत्र ।

अल-अली-वि० काला, श्याम ।

अलभार, (रौ)-वि० निस्सार, निरर्थक ।

अलड्यै-देखो 'अलिया' ।

अलक-स्त्री० [सं०] १ घुंघराले बालों की लटिका । जुल्फ । २ घुंघराले बाल । ३ हस्ताल । ४ मंदार । ५ महावर । ६ केसर का उद्वटन । —अवली-स्त्री० बालों की राशि, बालों का समूह । बालों की पंक्ति । —नंदा-स्त्री० गढ़वाल की नदी । —मध्य-पु० भाल, ललाट । —लडैती-वि० प्यारा, दुलारा ।

अलका-स्त्री० [सं०] १ कुबेर-नगरी । २ बालों की लटिका, अलक, जुल्फ । ३ केज । —धारी-पु० श्रीकृष्ण । —नगरी-स्त्री० कुबेरपुरी । —पत, पति-पु० कुबेर । आठ दिग्पालों में से एक । —पुरी-स्त्री० कुबेरपुरी । —यल, बलि-स्त्री० केशों की लटिकाएं ।

अलकाव-पु० [अ० अलकाव] उपाधि, पदवी ।

अलक-देखो 'अलक' ।

अलख, अलख (खी)-वि० [सं० अलख, अलख्य] १ जो लख या लाख के बराबर हो, लाख । २ न देखा हुआ, अलक्षित । ३ अदृश्य, अज्ञात । -पु० १ ईश्वर, परमेश्वर । २ दण नामी संन्यासियों द्वारा भिक्षा मांगते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द ।

अलक्षण-पु० [सं०] अशुभ, बुरा लक्षण । -वि० लक्षण रहित ।

अलक्ष्य-देखो 'अलख' ।

अलख पु० १ तीर । २ एक प्रकार का रोग । —पुरख-पु० ईश्वर । —अवन, भुयण-पु० स्वर्ग ।

अलखलडैती, अलखलडौ-वि० (स्त्री० अलखलडौ) प्यारा, प्रिय, प्रियतम ।

अलखामण-स्त्री० १ शरात, उद्दण्डता । २ उदामीनता, खिन्नता ।

अलखामणी, (वणी)-वि० (स्त्री० अलखामणी) १ अप्रिय, अलचिकर । २ बुरा, खराब । ३ खिन्न-चित्त । ४ उद्दण्ड, शराती । ५ अजनबी । ६ अनोखा, अमर्त्य ।

अलक्षितयो

(३१)

अलक्षितो

अलक्षितयो-पु० योद्धा, वीर ।

अलग-वि० [सं० अलग] १ पृथक् । २ दूर, अति दूर ।

अलगगीर-पु० घोड़े की जीन के नीचे की कंबल ।

अलगची-देखो 'अलगची' ।

अलगरज, (जी)-वि० [अ० अलगर] मस्त, उन्मत्त, बेपरवाह ।

अलगरब-पु० [सं० अलगर] विषहीन जल-जंतु ।

अलगोजी-पु० एक प्रकार की बांसुरी ।

अलगौ, (ग, गौ) अलघ, (घो)-क्रि० वि० दूर, अलग ।

(स्त्री० अलगौ) ।

अलड़-वि० १ जो लड़ा न हो । २ लापरवाह, अलहड़ ।

अलड़-बलड़-वि० १ अट-सट । २ अव्यवस्थित ।

अलड़ी-वि० (स्त्री० अलड़ी) १ मन मौजी, मस्त । २ लापरवाह । ३ भोला ।

अलज-वि० बुरा, खराब ।

अलजज-पु० १ मन-मुटाव । २ देखो 'अलज' ।

अलजगड (जयड) क्रि० वि० १ दूर, फासले पर । २ पृथक् से ।

अलजी-पु० १ विरह-स्मरण, वियोग-दुःख । —स्त्री० २ चिन्ता, उद्विग्नता । ३ उत्कंठा, अभिलाषा ।

अलज्ज-वि० [सं०] निर्लज्ज, बेशर्मा ।

अलट-वि० बलवान, शक्तिशाली ।

अलट-पलट-देखो, 'उलट-पलट' ।

अलटौ-पु० १ जुलम । २ कलंक ।

अलता, अलता-स्त्री० [सं० अलक्तक] मेंहदी, महावर ।

अलतौ, अलतौ-पु० ध्वंस, नाश ।

अलथा-वि० १ बहुत, अधिक । २ देखो 'अलता' ।

अलद्ध-वि० [सं० अलब्ध] १ अप्राप्य । २ पृथक् अलग, भिन्न ।

अलप-वि० ध्वनि रहित ।

अलप, (ल्प)-वि० [सं० अल्प] थोड़ा, किवित् । —ता, ताई-स्त्री० कमी न्यूनता । छोटाई, मूकता, लुच्छता, ओछापन । शैतानी ।

अलपतौ-वि० (स्त्री० अलपती) १ चंचल, २ बदमाश, उद्दंड, उत्पाती ।

अलफ-पु० पिछले पांवों पर खड़ा होने का भाव या क्रिया (घोड़ा) ।

अलबत्त, (ता, त, ता)-क्रि० वि० (अ० अलबत्ता) १ निस्संदेह, बेशक, २ हालांकि, यद्यपि । ३ किन्तु, परन्तु, लेकिन, —वि० ४ किंचित, न्यून । ५ कुछ, थोड़ा ।

अलबती-वि० १ प्रमाया हुआ, हिलाया हुआ । २ उद्दंड । ३ देखो 'अलपनी' ।

अलबेली, अलबेली-वि० (स्त्री० अलबेली) १ छैन-छबीला, बांका । २ सुन्दर, मनोहर । ३ बना-ठना । ४ अनोखा ।

५ अलहड़, मन-मौजी ।

अलबेस-पु० १ पहनावा, वेश । २ वेश-भूषा ।

अलबेसर-वि० अत्यन्त सुन्दर ।

अलब्ध-वि० [सं०] १ न मिलने योग्य, अप्राप्य । २ दुर्लभ, दुष्प्राप्य । ३ अमूल्य ।

अलम-पु० [अ०] १ रंज, दुःख । २ भंडा, पताका । ३ पहाड़, पर्वत । ४ भीड़, समूह । ५ सामर्थ्य । ६ निषेध ।

—वि० १ व्यर्थ, निरर्थक । २ बहुत । [सं० अलम्] ३ यथेष्ट, पूर्ण । ४ पर्याप्त ।

अलमस्त-वि० मौजी-मस्त ।

अलमारी-स्त्री० (पु० अलमारियो) पदार्थों को रखने के लिए खानादार बड़ा लंबा सटूक या दीवार में बना आलय ।

अलमित्र-पु० गरुड़ ।

अलरक-पु० [सं० अलर्क] १ पागल कुत्ता । २ सफेद आक ।

अलस, अलस्त, (लौ)-पु० [देश] १ घोड़ा । २ भाला । क्रि० वि० ऊपरा-ऊपरी । —टप्पू-वि० बेहिसाब, अंदाजिया ।

थोड़ा । —हिसाब-पु० अंदाज से गिना जाने वाला हिसाब ।

अलवदौ-पु० १ ग्राफत । २ कलंक । ३ बोझ ।

अलवळाट-स्त्री० १ वकवाम । २ निरर्थक कार्य । ३ भीड़ । ४ चंचलता ।

अलवळी-वि० १ शौकीन । २ सुन्दर, मनोहर ।

अलवांणी-वि० [सं० अनुपनाह] (स्त्री० अलवांणी) नंगे पैर । बिना जूते पहने ।

अलवावळी-स्त्री० [सं० अलिअवली] भौरों की पंक्ति ।

अलवेली-देखो 'अलवेली' । (स्त्री० अलवेली)

अलवौ-वि० (स्त्री० अलवी) १ चंचल, नटखट । २ निरर्थक बातें करने वाला । ३ अविश्वास पात्र । ४ अजीब ।

अलस-पु० १ अजीर्ण रोग । २ देखो 'आलस' । ३ देखो 'आलसी' ।

अलसक-पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।

अलसणी, (बी)-क्रि० १ आलस्य करना, सुस्ताना । २ प्रमाद करना ।

अलसाक-देखो 'आलस' ।

अलसाणी, (बी)-क्रि० १ आलस्य करना, सुस्ताना । २ मुरझाना, कुम्हलाना ।

अलसियौ-पु० केंचुआ नामक बरसानी कीड़ा ।

अलसी-स्त्री० [सं० अलसी] एक पौधा विशेष व उगके बीज ।

अलसीड़ी-पु० कूड़ा कचरा, घास-हून ।

अलसूद-देखो 'अलसूज' ।

अलसेट-स्त्री० [सं० अलस] १ लापरवाही । २ सुस्ती, दिमाई । ३ देर । ४ टालमटोल ।

अलसीटी पु० फसल के मारा होने वाला घास ।

अलह-वि० [सं० असफल] १ व्यर्थ, निरर्थक । २ अलग, पृथक्, भिन्न ।
 अलहबी-देखो 'अलायदी' ।
 अलहिषा-स्त्री० कोमल स्वरों की एक रागिनी ।
 अलहरी-पु० एक प्रकार का अरबी ऊंट ।
 अलाण, अलान-पु० [अ० इमलान] १ एक प्रकार का घास जिसके भाड़ू बनते हैं । २ घोषणा, एलान । ३ देखो 'आलांग' ।
 अलाणौ-पु० बिना चारजामा कसा ऊंट ।
 अलाबु-पु० [सं०] एक फल विशेष ।
 अलास-वि० [अ० अल्लाम] १ बदमाश, उदृष्ट । २ चंचल, नटखट । ३ नीच, दुष्ट । ४ चालाक, धूर्त । ५ बकवादी । ६ चोर ।
 अला-देखो 'इला' ।
 अला-देखो 'अल्लाह' ।
 अलाई-स्त्री० [सं० अलाती] १ नमियों की मौसम में शरीर पर होने वाली बाधीक फुंगी । २ मुस्ती । ३ आपत । ४ घोड़ों की एक जाति ।
 अलाखी-देखो 'इलाखी' ।
 अलाग-स्त्री० लक्ष्य पर टीक न लगने वाली बन्दूक । -वि० १ पृथक्, भिन्न । २ आसक्ति रहित, विरक्त । -कि०वि० दूर, फामले पर । -लाग-पु० नाचने का एक हंग ।
 अलागीर-पु० मुमनमान ।
 अलागी-पु० (स्त्री० अलागी) १ नहीं लगने वाला । २ बिना लगाव का । ३ विरक्त ।
 अलाचारी-देखो 'आलापचारी' ।
 अलाज-१ देखो 'अलज्ज' । २ देखो 'इलाज' ।
 अलाणी (बौ)-देखो 'आलाणी' (बौ) ।
 अलात-सं० पु० [सं०] १ अथजला काठ । २ अग्नि-कण, अंगारा । ३ अग्नि-समूह । ४ पलीता । ५ चक्र । -चकर, चक्र-पु० आग का घेरा, अग्नि वृत्त । एक नृत्य विशेष ।
 अलादी-देखो 'अलायदी' ।
 अलाप-देखो 'आलाप' ।
 अलापणी (बौ)-देखो 'आलापणी' (बौ) ।
 अलाव-वि० १ ओघित । २ लाल । ३ देखो 'अलाव' ।
 अलाबला, अलाप, (बलाप)-स्त्री० [फा०] १ इल्लत, आफत । २ व्यर्थ का संभट । ३ बेकारी ।
 अलायचा-देखो 'इलायची' ।
 अलायदी-वि० [अ० अलहदा] (स्त्री० अलामदी) १ अलग, पृथक् ।

२ जुदा, न्यारा । ३ भिन्न । -कि०वि० एक तरफ, एक ओर, दूर ।
 अलाव-पु० [सं० अलात] १ अग्नि-समूह या ढेर, अंगारा । २ बड़ी आग । ३ कुम्हार का आवां । ४ जलती हुई लकड़ी, लुआठ । ५ वह लकड़ी जो दोनों ओर से जलाकर घुमाई जाती है ।
 अलावा-कि०वि० [अ०] सिवाय, अतिरिक्त ।
 अलास-पु० गले का एक रोग ।
 अलाह-वि० १ लाभ रहित । २ विरक्त, वैरागी । ३ देखो 'अल्लाह' ।
 अलाहिदी-देखो 'अलायदी' । (स्त्री० अलाहिदी)
 अलिण-वि० १ लिग रहित । २ चिह्न रहित । -पु० १ ईश्वर (वेदांत) । २ दोनों लिगों में प्रयुक्त होने वाला शब्द ।
 अलि-पु० [सं० अलिः] १ भौरा, भ्रमर । २ गरुड़ । ३ कोयल । ४ विष्णु । ५ काक, कोआ । ६ वृश्चिक राशि । ७ मदिरा । -वि० १ अतिशय, बहुत । २ चंचल । ३ देखो 'आलि' । -अल-पु० भ्रमर, भौरा । -क-पु० ललाट, माथा, भाल । -वि० निष्कलंक । पवित्र, शुद्ध । -कंदु-पु० शिव, महादेव । -प-वि० अलिप्त, निर्लेप । -पद-वि० छः । -यल-पु० समुद्र, सागर । भ्रमर, भौरा । अग्नि, आग । -यार-पु० योद्धा । -वि० मस्त ।
 अलिकावलि, (ली), अलियावलि, (ली)-देखो 'अलकावलि' ।
 अलिथी-वि० १ नटखट, चंचल । २ उदृष्ट, बदमाश, शरारती । ३ व्यर्थ, बेकार । ४ बुरा, खराब । ५ बिना बीना हुआ (अनाज) । ६ बिना सफाई किया हुआ (खेत) । -पु० १ एक प्रकार का घास । २ फोड़ा । ३ कैचुआ ।
 अलियो-वि० छेला, शोकीन । -अंवर-पु० शोकीन ।
 अली-१ देखो 'अलि' । २ देखो 'आली' । ३ देखो 'अलियल' । ४ देखो 'अलियल' ।
 अलीक-वि० [सं०] १ मिथ्या, झूठा । २ अप्रिय । ३ अप्रतिष्ठित । -पु० १ कुमार्ग । २ अमर्यादा ।
 अलीण, (लीन)-वि० [सं० अलीन] १ अग्राह्य । २ अनुपयुक्त । ३ नाजायज ।
 अलीत-वि० अलिप्त ।
 अलीप्रम (प्रभा)-वि० श्याम ।
 अलीबंध-पु० ढाल का बंधन ।
 अलीमन-पु० यवन, मुगल ।
 अलीयल-देखो 'अलियल' ।
 अलील-पु० समुद्र, सागर ।
 अलीली-पु० १ ईश्वर । २ घोड़ा । -वि० १ लीला रहित । कीड़ा रहित । २ जो दगा न हो ।

अलुजाड़, (साड़, झाड़ी)—पु० १ गुत्थी, उलझन । २ बाधाएं, रुकावटें । ३ अव्यवस्थित सामान का ढेर । ४ झाड़ी समूह । ५ परस्पर उलझा होने की अवस्था या भाव ।
अलुज्ज—स्त्री० उलझन, गुत्थी ।—वि० १ उलझा हुआ । २ फैला हुआ, व्यापक ।
अलुजावणी (बो)—क्रि० निद्रायुक्त होना, उन्निदा होना ।
अलुचणी (बो)—क्रि० किसी देवता के नाम पर संकल्प करके कोई वस्तु रखना ।
अलूजाड़ी—देखो 'अलुजाड़' ।
अलूक—देखो 'उलूक' ।
अलूकी—स्त्री० [सं० उलूपी] मछली ।
अलूज (झ)—स्त्री० उलझन ।
अलूजणी, (बो), अलूझणी (बो)—क्रि० १ उलझना । २ किसी उलझन में फंसना । ३ फंसना, अटकना । ४ विवाद में पड़ना । ५ लड़ना, भिड़ना । ६ ध्वस्त होना । ७ लपेट में आना । ८ कठिनाई में पड़ना । ९ प्रेम में फंसना । १० समस्या में पड़ना ।
अलूजाणी, (बो) अलूझाणी (बो)—क्रि० १ उलझाना । २ किसी उलझन में फंसाना । ३ फंसाना, अटकाना । ४ विवाद में पटकना । ५ लड़ाना, भिड़ाना ।
अलूझाड़, (झी)—देखो 'अलुजाड़' ।
अलूणी—वि० [सं० अलावणिक] (स्त्री० अलूणी) १ नमक रहित, अलौना, फीका । २ नीरस, सारहीन । ३ लावण्य या कान्तिहीन । ४ बिना ऊन कटो (भेड़) ।
अलूधणी, (बो)—क्रि० फंदे में फंसना, उलझना ।
अलूधाली (बो)—क्रि० फंदे में फंसाना, उलझाना ।
अलूप—देखो 'अलोप' ।
अलूज-जलूज—वि० ऊल-जलूल, उटपटांग ।
अलेख, (छां, छू)—वि० [सं० अ-+लिख, अलेख्य] १ जो लक्ष्य न किया जा सके । अज्ञेय, दुर्बोध । २ जो लिखने योग्य न हो । ३ अग्रणीत, अपार । ४ अदृश्य । ५ व्यर्थ । —पु० १ घुरा लेप । २ ईश्वर ।
अलेखी—वि० १ आततायी, अन्यायी । २ असंख्य, अग्रणीत ।
अलेप—वि० १ निर्लिप्त, विरक्त । २ निर्दोष ।
अलेखण—पु० [सं० अलेपन] १ मामूली, मामान । २ वैभव, धन । ३ शरीर की बनावट । ४ हंग ।
अलेह—वि० १ लेन-देन रहित । २ विरक्त ।
अलेय—स्त्री० एक रागिनी ।
अलेहरी—पु० एक ककुद वाला घरबी ऊंट ।
अलोक—वि० [सं० अ-+लोक] १ निर्जन । २ जो इस लोक से संबंध न रखे । ३ अदृश्य । —पु० १ पातालादि लोक । २ कानि, दीप्ति, प्रभा । ३ देखो 'अलौकिक' ।

अलौकिक—देखो 'अलौकिक' ।
अलोखणी (बो)—देखो अलुखणी (बो) ।
अलोच—देखो 'अलोच' ।
अलोज—वि० स्वस्थ, निरोग ।
अलोणी (बो)—क्रि० [सं० अलोपन] १ मिलाना, मिश्रित करना । २ आटा, मेदा आदि में पानी डालकर गीला करना ।
अलोप—वि० [सं० आलुप्त] १ लुप्त, अन्तर्धान, अदृश्य । २ अप्रगट, गुप्त । —पु० परमेश्वर, ब्रह्म ।
अलोपणी (लो)—१ उल्लंघन करना, लांघना । ३ लुप्त होना ।
अलोम—वि० [सं०] लोम या बाल रहित ।
अलोप—वि० [सं० अलोचन] १ आंख रहित । नेत्रहीन । २ अनुचित ।
अलोळ—वि० [सं० अलोल] १ स्थिर, अचंचल । २ दृढ़, पक्का । ३ युवा, जवान ।
अलोवणी (लो)—देखो 'अलोणी' ।
अलोह—वि० १ शस्त्रों के धारों से रहित । २ शस्त्र रहित ।
अलोहित—पु० लाल कमल ।
अलौकिक—वि० [सं०] १ जो इस लोक का न हो, लोकोत्तर । २ अद्भुत, अनोखा । ३ अपूर्व, अद्वितीय । ४ चमत्कारिक । ५ अमानुषी, दैवी । ६ दिव्य ।
अल्प, (क, अल्पां)—वि० [सं० अल्प] १ बहुत कम, अत्यल्प । २ न्यूनतम । ३ तुच्छ, छोटा । —**जीवी**—वि० अल्पायु ।
अल्पय—वि० [सं० अल्पज] १ कम बुद्धि वाला । २ सीमित ज्ञान वाला । ३ नासमझ । —**ता**—स्त्री० नासमझी । ज्ञान की कमी ।
अल्पता—स्त्री० [सं०] कमी, छोटापन, न्यूनता ।
अल्पायु—त्रि० [सं०] कम आयु वाला ।
अल्प्यंग—पु० आलिंगन ।
अस्त—देखो 'अल' ।
अस्तांम—देखो 'अस्तांम' ।
अस्ता, (ह)—पु० [य०] ईश्वर, कुदा ।
अस्तू—देखो 'उल्लू' ।
अस्तहड़—वि० १ लापरवाह । २ पनमोजी, मस्त । ३ अलगह । ४ भोला ।—**पण, पणो**—पु० लापरवाही । मस्ती । भोलापन । —**बतहड़**—अनु० अंत-संत ।
अवकी—वि० [सं० अ-+वक] १ अवक, सीधा । २ गहज, मरल । ३ निश्चक, वीर ।
अवत, (ति), अवतिका, अवती—स्त्री० [सं० अवतिः, अवती] उज्जैन नगरी का प्राचीन नाम ।
अव—उग० [सं०] एक उपसर्ग जो निश्चय, अनादर, ईपत्,

नीवाई आदि अर्थों का बोध कराता है। —अत्त-देखो 'अव्यक्त'। —कंद, (घ)-पु० १ डाकू । ३ धीर, बहादुर । —कर-पु० कचरा, कूड़ा करकट । —कार-वि० विकार रहित । —पु० ईश्वर । —कास-पु० समय । अवसर । छुट्टी । खाली समय । आकाश । शून्य स्थान । दूरी, फासवा । —कीरण-वि० फैलाया या छितराया हुआ । ध्वस्त, नष्ट । —कीरण-वि० वृत्त तोड़ने वाला ।

अवकी-देखो 'अवकी' ।

अवकीबाण-स्त्री० [सं० अवाच्यवचन] न कहने योग्य वचन या वाणी ।

अवक-वि० [सं०] जो वक्र न हो, सीधा । सरल, सहज ।

अवख्य-वि० अक्षय । (जैन)

अवखलणी (खल्ल)-देखो 'ओखलणी' ।

अवखण, (खी)-देखो 'उखाणी' ।

अवखा-स्त्री० [सं० अभिख्या] १ नाम । २ कीर्ति, यज्ञ । ३ चक्रवर्त्मक सौन्दर्य ।

अवखलणी-वि० १ प्रसिद्ध । २ वीर, बहादुर ।

अवगत, (त)-वि० [सं० अवगत] १ विदित, ज्ञात ।

३ जाना हुआ, परिचित । ३ गिरा हुआ । ४ अज्ञात ।

५ विचित्र, अद्भुत । —पु० १ विष्णु । २ ईश्वर । ३ वेग ।

४ लीला, रचना । ५ अधोगति ।

अवगति-स्त्री० [सं० अवगति] १ बुद्धि, समझ, ज्ञान ।

२ धारणा । ३ बुरी गति । ४ देखो 'अवगत' ।

अवगन-पु० [सं० अवगन] १ ईश्वर । २ निर्गुण ।

अवगाढ़-पु० [सं०] युद्ध, समर । —वि० १ वीर, बहादुर ।

२ प्रबल, समर्थ, जक्तिशाली । ३ गंभीर, महान ।

४ निमज्जित । ५ छिपा हुआ । ६ घना, गाढ़ा ।

७ अथाह, गहरा ।

अवगात वि० निष्कर्षक, वेदांग ।

अवगाळ पु० [सं० उद्गार] १ ताना, व्यंग । २ कलंक, दोष ।

३ निन्दा । ४ जर्म, लज्जा । ५ देखो 'ओगाळ' ।

अवगाह-पु० [सं०] १ हाथी का ललाट । २ युद्ध । ३ कठिनाई ।

४ राकट का स्थान । ५ अवगाहण ।

अवगाहण, (न)-पु० [सं० अवगाहन] १ स्नान, निमज्जन ।

२ जन में दुवकी या गोता । ३ लीन होने या तल्लीन होने

की क्रिया । ४ लीज, छानबीन । ५ ग्रहण । ६ अधाह जल ।

७ गहरा स्थान ।

अवगाहणी, (बी)-कि० १ नहाना, स्नान करना । २ दुवकी

या गोता लगाना । ३ लीन या तल्लीन होना । ४ खोज

या छानबीन करना । ५ ग्रहण करना । ६ देखना,

विचारना । ७ पार करना । ८ हिलाना, विचलित करना ।

९ मारना । १० चलाना । ११ ध्वस्त करना, नाश करना ।

१२ टटोलना । १३ तपासना, जांच करना ।

अवगुठन-पु० १ घूँघट । २ पर्दा, आवरण । ३ छिपाव ।

अवगुण-पु० [सं०] १ दोष, बुराई, ऐत्र । २ दुर्गुण, बुरे गुण ।

—वाद-पु० निन्दा ।

अवगुणगारी (लौ)-देखो 'ओगुणगारी' ।

अवगुणी-वि० १ दोषी, ऐवी, । दुर्गुणी । २ कृतघ्न, कुकर्मी ।

अवग्या-स्त्री० [सं० अवज्ञा] १ आज्ञा की उपेक्षा, अवहेलना ।

२ अपमान, अनादर । ३ पराजय, हार । ४ एक अलंकार विशेष ।

अवग्रह-पु० [सं० अवग्रहः] १ रुकावट, अड़चन, रोक, बाधा ।

२ गज ममूह । ३ हाथी का माथा ।

अवघट-देखो 'ओघट' ।

अवडो-१ देखो 'ओहडो' । २ देखो 'अवडो' ।

अवचल-देखो 'अविचल' ।

अवचार-देखो 'आचार' ।

अवचोत-वि० अचिंतित । —कि० वि० अचानक, अकस्मात् ।

अवच्यन-वि० [सं० अविच्छिन्न] १ जो अलग-अलग न हो, टुकड़ों

में न हो । बिना टूटा । २ सीमा बद्ध । ३ अविभाजित ।

४ बाधरहित, निर्बाध । ५ निरन्तर, लगातार । ६ विशेष

गुणगुण । ७ गुप्त ।

अवछर, (रा)-देखो 'अपसरा' ।

अवछल-वि० [सं० अविचल] १ अटल, अविचलित । २ निरन्तर ।

३ स्थाई । ४ कपट या छद्म रहित ।

अवछाड़-देखो 'ओछाड़' ।

अवछाणी (बी)-कि० छाना, आच्छादित करना/होना ।

अवछाह-पु० [सं० उत्साह] उत्साह, जोश, खुशी ।

अवजसा-देखो 'अयोध्या' ।

अवजाली, (जीत)-पु० [सं० अवजालि] शत्रु, वैरी ।

अवजास-देखो 'उज्जाम' ।

अवजासणी (बी)-देखो 'उज्जामणी' (बी) ।

अवजोग-देखो 'अपजोग' ।

अवज्ज-देखो 'आवाज' ।

अवज्जड़, अवसड़, (आड़)-देखो 'ओभाड़' ।

अवजाड़णी, (बी)-देखो 'ओभाड़णी' (बी) ।

अवटक-देखो 'उपटक' ।

अवट कि० वि० [सं० अवटम्] १ बिना रास्ते, बेरास्ते ।

२ कुमार्ग में । —पु० १ कुमार्ग, कुराह । २ रास्ते का अभाव ।

३ पाताल । ४ आयु, उम्र । ५ गर्व, घमंड । ६ गढ़ा ।

७ हाथी की कंगाने का गर्त । ८ बुरी दशा ।

—वि० असीम, अपार ।

अवटणी, (बौ)—क्रि० [सं० अपवर्तयति] १ युद्ध करना ।
२ घूमना, फिरना । ३ चक्कर लगाना । ४ देखो 'आवटणी' ।
अवटाणी, (बौ) (बणौ, बौ)—क्रि० [सं० अपवर्तयति]
१ उवालना । २ ताप देकर द्रव पदार्थ को कम करना ।
३ हैरान करना ।
अवठाणी (बौ)—क्रि० पराजित करना, हराना । देखो 'अवटाणी'
अवठी—वि० कटु । कड़ुआ । तीक्ष्ण । —पु० उपालंब । कटु शब्द ।
अवड, (ड), **अवडिणी**—वि० जो कटा न हो ।
अवडी, (डौ)—सर्व० (स्त्री० अवडी, अवडी) १ ऐसा । २ इतना ।
—वि० १ बहुत बड़ा । २ भयंकर । ३ विचित्र । ४ कठिन,
दुर्गम । ५ टेढ़ा, तिरछा । ६ संकटमय ।
अवणासी—देखो 'अविणासी' ।
अवणि (णी)—देखो 'अवनि' ।
अवर्तस—पु० [सं०] १ भूषण, अलंकार । २ शिरोभूषण
टीका । ३ सिरपेच । ४ श्रेष्ठ व्यक्ति । ५ दूल्हा । ६ सबसे
उत्तम हार । ७ मुकुट । —वि० निष्कलंक, पवित्र ।
अवतमस—पु० [सं० अवतमसम्] अंधेरा, तम ।
अवतरण—पु० [सं० अवतरणम्] १ तरना, उतरना, पार होना
क्रिया । २ जन्म ग्रहण करना । ३ अवरोहण । ४ नमूना ।
५ प्रतिकृति, नकल । ६ प्रादुर्भाव, उदय । ७ उद्धारण ।
अवतार ।
अवतरणी—स्त्री [सं०] १ ग्रंथ की भूमिका, प्रस्तावना ।
२ परिपाटी ।
अवतरणी (बौ)—क्रि० [सं० अवतरणम्] १ प्रगट होना । २ उत्पन्न
होना, जन्म लेना । ३ अवतार लेना । ४ पार होना, तरना ।
५ उतरना । ६ उदय या प्रादुर्भाव होना । ७ उद्धारित होना ।
अवतार (रौ)—पु० [सं०] १ ईश्वर या किसी देवता द्वारा
शरीर धारण की अवस्था । २ जन्म । ३ नीचे आना या
उतरना क्रिया । ४ प्रागमन । ५ प्रादुर्भाव । ६ आकार ।
७ चौबीस की संस्था । ८ दश की संस्था ।
अवतारणी (बौ)—क्रि० [सं० अवतारणम्] १ ईश्वर या देवता
का शरीर धारण करना । २ दिव्य शक्तियों सहित
जन्मना । ३ नीचे आना, उतरना । ४ प्रागमन होना ।
५ प्रादुर्भाव होना । ६ रचना करना ।
अवतारी—वि० [सं०] १ अवतार लिया हुआ । २ दिव्य शक्ति
सम्पन्न ।
अवतीका—स्त्री० [सं० अवतीका] वह स्त्री या गाय जिसका
कारणवश गर्भवात हुआ हो ।
अवत्यी—स्त्री० [सं० अपस्थानम्] पराजय, हार ।
अवधरि, (रो)—क्रि० वि० तीव्र वेग से ।

अवदंस—पु० [सं० अवदंशः] १ मञ्चपान पर अच्छा लगने वाला
नमकीन पदार्थ । २ मजक । ३ बलवर्द्धक पदार्थ ।
अवदान—पु० [सं० अवदान, अपदान] १ अच्छा कार्य ।
२ शुद्ध आचरण । ३ तोड़-फोड़, खण्डन । ४ त्याग, उत्सर्ग ।
५ कुत्सित दान । ६ वध । ७ आच्छादन ।
अवदात, (दीत)—वि० [सं० अवदात] १ साफ, स्वच्छ ।
२ सुन्दर । ३ वेदांग । ४ सफेद । ५ पीला । ६ शुभ्र,
उज्ज्वल । ७ चितरंगा । ८ पुण्यात्मा । ९ शुद्ध, निर्मल ।
—पु० [अवदातः] १ हंस । २ एक मायिक छंद ।
३ शुल्क वर्ण, गौरवर्ण । ४ श्रेष्ठता । ५ चरित्र ।
६ नतीजा, परिणाम । —चल—पु० हंस ।
अवदारण (क)—पु० [सं०] १ फावड़ा । २ कुदाल । ३ खुरफा ।
अवदाळ—देखो 'अवदाळ' ।
अवदिता—स्त्री० [सं० विदिता] १ विपरीत दिशा । २ दिशा ।
३ दिशाओं के बीच का कोण ।
अवदीक—पु० युद्ध, समर ।
अवदोह, (ण)—पु० [सं० अवदोहः] १ दूध । २ दोहन ।
अवद्ध—देखो 'अवद्ध' ।
अवद्या—देखो 'अविद्या' ।
अवध, (धि, धी)—स्त्री० [सं० अयोध्या] १ अयोध्या नगरी ।
२ अवध की भाषा । [सं० आयुध] ३ शस्त्र, अस्त्र ।
[सं० अवधि] ४ अवधि, समय । —क्रि० वि० अल्प काल
के लिये । —ईस, नरेस, पति, पती, राज—पु० अवधेन,
श्रीरामचन्द्र । अयोध्या के राजा । —पुर, पुरी—स्त्री०
अयोध्या नगरी ।
अवधान—पु० [सं० अवधान] १ चित्त की एकाग्रता, मनोयोग ।
२ समाधि । ३ सावधानी, चौकसी । [सं० आधान]
४ गर्भ । [सं० अभिधाम्] ५ नाम । ६ कथन, निरूपण ।
अवधा—स्त्री० [सं० अभिधा] १ नाम । २ अभिधा ।
अवधार—पु० [सं० अवधारः] १ महायक, रथक । २ निश्चित,
निर्णय । ३ निश्चित मत ।
अवधारण—वि० सीमा बद्ध करने वाला, बंधन बांधने वाला ।
अवधारणी (बौ)—क्रि० [सं० अवधारणम्] १ धारण करना ।
ग्रहण करना । २ मानना, स्वीकार करना । ३ पूजन
करना । ४ नमस्कार करना । ५ विचार करना, निश्चय
करना । ६ महायता करना ।
अवधि, (धी)—स्त्री० [सं० अवधिः] १ समय, काल । २ मियाद ।
३ अंत समय । ४ सीमा । ५ अयोध्या । ६ अवध प्रदेश की
भाषा । —अवध० तक, नर्यन्त । —ग्यांन पु० अतीन्द्रिय ज्ञान ।
—मांत—पु० सागर, सिंधु ।
अवधू, अवधूत—पु० [सं० अवधूतः] १ योगी, संन्यासी ।

२ त्यागी पुरुष । ३ तन्मत्तानुयायी साधु । ४ दशनामी
संन्यासी, गोस्वामी । —वि० कपित । उदासीन । मस्त ।
(स्त्री० अवधनग अवधूतांगी) ।
अवधेस, (रं)-पु० [सं० अवधेश, अवधेश्वर] १ अवधपति ।
२ श्रीरामचन्द्र ।
अवधधी, अवधध-वि० [सं० अवधध] १ जो वध करने व मारने
योग्य न हो । २ अनाहत ।
अवध्वंस-पु० [सं०] १ स्थाग, परित्याग । २ निंदा । ३ कञ्जमर
करना । ४ संहार, नाश । ५ असम्मान, भर्त्सना ।
अवन-देखो 'अवनि' ।
अवनत-वि० [सं०] १ झुका हुआ । २ गिरा हुआ, पतित ।
३ नम्र । ४ दुर्दशाग्रस्त । ५ अस्त ।
अवनि, (ती)-स्त्री० [सं०] १ अद्योगति, पतन । २ दुर्दशा ।
३ झुकाव । ४ न्यूनता, कमी । ५ प्रणाम, नम्रता ।
६ अस्त होने की क्रिया ।
अवनाड़-देखो 'अनड़' ।
अवनि, अवनी-स्त्री० [सं० अवनि] १ पृथ्वी, धरती । २ नदी ।
—अमर-पु० ब्राह्मण । —ईस-पु० राजा । —नाथ-पु०
पृथ्वी पति, राजा । —प, पत, पति, पती-राजा, नृप ।
अवनीत-वि० [सं० अवनीत] अविनम्र । अशिष्ट । (जैन) ।
अवनीता-स्त्री० [सं० अ + विनीता] कुलटा ।
अवन्न, (बी)-देखो 'अवनि' ।
अवप, अवपु-पु० [सं० अवपु] १ कामदेव । २ ईश्वर ।
अवपाटिक-पु० पुरुषेन्द्रिय संबंधी रोग ।
अवपात-पु० [सं० अवपातः] १ हाथियों को फँसाने का गड्ढा ।
२ पतन, अधः पतन ।
अवबोध-पु० १ जागन । २ बोध, ज्ञान ।
अवभांमिनी-स्त्री० [सं० अवभांमिनी] उपरी त्वचा ।
अवभृथ-पु० [सं० अवभृथ] १ यज्ञ के बाद का शेष कर्म ।
२ यज्ञान्त स्नान ।
अवमरव-पु० [सं० अवमरवः] युद्ध लड़ाई । —ग्रहण-पु० एक
प्रकार का ग्रहण ।
अवयव-पु० [सं०] १ अंश, भाग, हिस्सा । २ शरीर के अंग-
प्रत्यंग । ३ तर्क पूर्ण वाक्य का एक भेद ।
अवर-वि० [सं० अवरः] १ आयु में छोटा । २ अनुवर्ती ।
३ अपेक्षा कृत नीचा, घटिया । ४ नीच । ५ देखो 'अपर' ।
—ज-पु० छोटा भाई । शूद्र, नीच ।
अवरजा-स्त्री० छोटी बहन ।
अवरण, (शी)-वि० [सं० अवर्ण] १ वर्ण रहित ।
२ रंगरहित । ३ बदरंग । ४ अवर्णनीय । ५ हीन
जाति वाला । —वरण पु० ईश्वर ।

अवरणवाद-पु० निन्दा (जैन) ।
अवरती-स्त्री० [सं० अवर्ती] घोड़ी ।
अवश्ल-देखो 'अविरल' ।
अवरसण, (शी)-पु० [सं० अवर्षणः] दुष्काल, अनावृष्टि ।
अवरसरप-पु० [सं० अवसर्प] १ जामूस, भेदिया ।
२ राजदूत, एलची ।
अवराह-देखो 'अपराध' ।
अवरी-स्त्री० १ कुमारी कन्या । २ अप्सरा । ३ नाग कन्या ।
४ सुसज्जित सेना ।
अवरेख-पु० [सं० अवलेख] १ लेख, लेखन । २ विचार, ध्यान ।
३ प्रतिज्ञा । ४ लकीर पंक्ति । ५ निश्चय ।
अवरेखणी (बी)-कि० १ देखना, अवलोकन करना । २ लिखना ।
३ विचार करना, सोचना, अनुमान करना । ४ निश्चय
करना । ५ प्रतिज्ञा करना ।
अवरेण-वि० अन्य, दूसरा, पराया ।
अवरेष-स्त्री० १ कपड़े की तिरछी काट, उरेब । २ पेंच,
उलभन ।
अवरोध, (न)-पु० [सं०] १ रुकावट, रोक । २ बाधा, अड़चन ।
३ घेरा । ४ अन्नपुर । ५ अनुरोध । —क-वि० बाधा
डालने वाला, बाधक ।
अवरोपण-पु० [सं० अवरोपण] उखाड़ना क्रिया ।
अवरोसी-देखो 'अभरोसी' ।
अवरोह-पु० १ उतार । २ पतन । ३ सीढ़ी, सीपान । ४ स्वर्गों
का उतार ।
अवलंब, (संबण, लंबन)-पु० [सं०] १ आश्रय, सहारा ।
२ सहायता । ३ संरक्षण । ४ आधार । ५ पांच प्रकार के
कफ में से एक ।
अवलंबणी (बी)-कि० १ आश्रय या सहारा लेना । २ सहायता
लेना । ३ संरक्षण प्राप्त करना । ४ आधार पाना ।
५ लटकना ।
अवलंबित-वि० [सं० अवलंबित] जीघ्र, तुरन्त । —पु० वेग ।
अवलंबित-वि० [सं०] १ आश्रित । २ आधारित । ३ लटका
हुआ । ४ संरक्षित ।
अवलंबी-वि० १ सहारा, आश्रय देने वाला । सहायक ।
२ संरक्षक ।
अवल-वि० [अ० अवल] १ प्रथम, सर्व प्रथम । २ उत्तम,
श्रेष्ठ । ३ पहला । —कि० वि० आदि या प्रारंभ में ।
अवलणी, (बी)-कि० १ वापस मुड़ना, लौटना । २ न लौटना ।
अवला-देखो 'अवला' ।
अवलाई-देखो 'अवलाई' ।
अवलाद-देखो 'अवीनाद' ।

अवलिप्रो, अवलियो-वि० १ महान, ओष्ठ । २ उदार ।
 -पु० सिद्ध पुरुष । —पातसा, पुरख, पुरस-पु० ब्रह्मजानी ।
 सिद्ध पुरुष । मस्ताना ।
 अवळी-१ देखो 'अवळी' । २ देखो 'ओळी' । ३ देखो 'अमली' ।
 अवळीमाण-देखो 'अमलीमाण' ।
 अवलुचन-पु० [सं०] १ काटना क्रिया । २ छेदना क्रिया ।
 ३ उखाड़ना या नोचना क्रिया ।
 अवळू (डो)-देखो 'ओळू' ।
 अवलू-देखो 'अवळी' ।
 अवलेप, (पन)-पु० [सं०] १ उवटन, मालिश । २ लेपन ।
 ३ पुताई । ४ उपयुक्त कार्य संबंधी पदार्थ ।
 अवलेह-पु० [सं०] १ चटनी, माजून । २ गाढ़ा द्रव पदार्थ ।
 ३ लेई ।
 अवळ-देखो 'ओळ' ।
 अवलोक्णी (बो)-क्रि० १ देख-भाल करना । २ निरीक्षण
 करना । ३ दृष्टिपात करना ।
 अवलोकन-पु० [सं०] १ देख-भाल । २ निरीक्षण ।
 ३ दृष्टि-पात ।
 अवळी-देखो 'अवळी' (स्त्री० अवळी) ।
 अवल्स-देखो 'अवल' ।
 अववेल्-स्त्री० सहायता, मदद ।
 अवस-वि० [सं० अ + वस] १ विवश, लाचार । २ पराधीन ।
 ३ असमर्थ । ४ बेकाबू । ५ देखो 'अवस्य' । —ता-स्त्री०
 विवशता, लाचारी । पराधीनता ।
 अवसप्पिणि-देखो 'अवसरपिणी' ।
 अवसमिव, अवसमेव-क्रि० वि० [सं० अवश्यमेव] निश्चय
 ही, अवश्य ही ।
 अवसथाय-पु० [सं० अवस्थाय] वर्ष, पाला, हिम ।
 अवसर-पु० [सं०] १ समय । २ मौका । ३ अवकाश, फुरसत ।
 ४ विश्राम, विराम । ५ महकिल, सभा । ६ प्रस्ताव ।
 ७ मंत्र विशेष । ८ वार, दफा । —क्रि० वि० भीतर, अंदर ।
 —वादी-वि० स्वार्थी । मौके का फायदा उठाने वाला ।
 अवसरप-पु० [सं० अवसरप] १ गुप्त दूत । जामूस ।
 २ राजप्रतिनिधि । ३ एलची ।
 अवसरपिणी-स्त्री० [सं० अवसरपिणी] दश कोड़ाकोड़ी सागरोपम ।
 प्रमाण (समय) समय-समय पर दानि दिखलाने वाला
 छः आरा परिमित काल विभाग, उत्तरता समय (काल)
 (जैन) ।
 अवसाण, (गौ) (सांन)-पु० [सं० अवसान] १ अवसर मौका ।
 २ समय । ३ विश्राम, विराम, अवकाश । ४ अंत ।
 ५ मौमा, हृद । ६ मरण मृत्यु । ७ मार्गकाल । ८ चेतना,
 होश, मंजा । ९ एहसान । १० युद्ध । —सद, सध, सिद्ध,

सिद्ध, सुध-वि० समय पर कार्य सिद्ध करने वाला । युद्ध
 में विजयी । वीर गति प्राप्त करने वाला ।
 अवसान-पु० १ भोजन । २ युद्ध । ३ देखो 'अवसाण' ।
 अवसाऊ-वि० आवश्यक, जरूरी । —क्रि० वि० अवश्य । अकस्मात ।
 अवसाव (न)-पु० [सं० अवसाद] १ विषाद, दुःख । २ दीनता ।
 ३ नाश, क्षय ।
 अवसाप-देखो 'ओसाप' ।
 अवसायिता-स्त्री० अष्ट सिद्धियों में से एक ।
 अवसि (सौ)-१ पराधीनता । २ असहाय अवस्था ।
 ३ देखो 'अवस्य' ।
 अवसिस्ट-वि० [सं० अवशिष्ट] बचा हुआ, शेष ।
 अवसेख-क्रि० वि० अवश्यमेव । —वि० [सं० अवशेष] १ बचा
 हुआ । २ देखो 'अभिसेक' ।
 अवसेचण-पु० [सं०] १ सींचन, पानी देना । २ पसीना ।
 अवसेस-पु० [सं० अवशेष] १ शेष, बाकी । २ अन्त समाप्ति ।
 —वि० १ बचा हुआ । २ धर्म रहित । ३ भेदक । ४ तुल्य
 समान । ५ देखो 'अभिसेक' ।
 अवस्कंद-पु० [सं० अवस्कंद] १ सेना का पड़ाव, शिविर ।
 २ आक्रमण, हमला ।
 अवस्ता, अवस्था-स्त्री० [सं० अवस्था] १ दशा, हालत ।
 २ परिस्थिति । ३ आयु, उम्र । ४ जीवन की आठ दशाएँ ।
 ५ चार की संख्या ।
 अवस्य-क्रि० वि० [सं० अवश्य] १ निस्सन्देह, जरूर, अवश्य ।
 २ सर्वथा, संभव । ३ निश्चित रूप से ।
 अवस्स-१ देखो 'अवस्य' । २ देखो 'अवस' ।
 अवस्ताण १ देखो 'अवसाण' । २ देखो 'अवसान' ।
 अवहरण-पु० १ दूर हटाना । २ चुरा लेना । ३ लूट लेना ।
 ४ सेना का पीछे हटकर ठहरना । ५ देखो 'अपहरण' ।
 अवहार-पु० [सं० अवहार] १ वंघन । २ नक्र, मगर ।
 ३ चोर । ४ शर्क मछली ।
 अवहि-देखो 'अवधि' ।
 अवहिथा अवहिथा-स्त्री० [सं० अवहिथा] साहित्य का
 एक संचारी भाव ।
 अवहिनाण-देखो 'अवधिग्यान' ।
 अवहेलण (न, ना) अवहेला-स्त्री० [सं० अवहेलना] १ अवज्ञा ।
 २ तिरस्कार, अपमान । ३ लापरवाही ।
 अवांतर-क्रि० वि० [सं०] मध्य, भीतर ।
 अवारियां, अवारिये-देखो 'अवारिया' ।
 अवास-देखो 'आवास' ।
 अवाई-स्त्री० १ आगमन । २ खबर, संदेश । ३ ध्वनि, शब्द ।
 ४ गहरी जुताई ।

अवाक, (कि, की)-वि० १ विस्मित, स्थम्भित । २ चुप, मौन ।
 ३ वहादुर, बलवान । ४ अप्रामाणिक । -पु० शत्रु, बैरी ।
 अवाङ्-पु० चोंगों के पद चिह्नों की खोज ।
 अवाङ्गी, (ङ्ग)-वि० चोंगों के पद चिह्नों की खोज करने वाला ।
 -पु० चिकित्सक ।
 अवाङ्गी-पु० १ कूरे के समीप बना पशुओं के जल पीने का
 स्थान । २ देखो 'उवाङ्गी' ।
 अवाचक-पु० काव्य का एक दोष ।
 अवाचा-पु० वादा या वचन का निरस्तीकरण ।
 अवाचि, (ची)-स्त्री० [सं० अवाचि] दक्षिण दिशा ।
 अवाच्य-वि० [सं०] १ जो कहा न जा सके, अकथ्य ।
 २ अनिर्दिष्ट । ३ विशुद्ध । ४ मौनी, चुप । ५ नीच, अधम ।
 -पु० कुचाक्य, गाली ।
 अवाज-देखो 'आवाज' ।
 अवाह, (डो)-वि० १ विपरीत, विरोध, उल्टा । २ द्रोण रखने
 वाला । ३ बुरा ।
 अवात-वि० [सं०] जहाँ वायु न लगे, वातशून्य ।
 अवाप्त-पु० मियाद, अवधि ।
 अवग-पु० [सं० आवापक] कर-भूषण, कंगन ।
 अवार्-देखो 'अवार' ।
 अवारणी (बी)-देखो 'वारणी' (बी) ।
 अवार् (रू)-देखो 'अवार' ।
 अवार्थ, अवार्थ-देखो 'अवारिया' ।
 अवाळ-१ रहट के चक्कों के कंगुरेदार भाग के मिलने की क्रिया ।
 २ रहट के चक्र के मिले । ३ जल प्रवाह के साथ आने
 वाला गुड़ा ।
 अवाळी-देखो 'अवाङ्गी' ।
 अवास-वि० १ आवास रहित । २ गंध रहित । -पु०
 [सं० उपवास] १ व्रत, उपवास, लंघन । २ देखो 'आवास' ।
 ३ देखो 'आभाग' ।
 अवाह-पु० १ ईंटों का बना बड़ा चूल्हा, भट्टी । २ बर्तन पकाने
 का कुम्हार का आवां । ३ योगिनी का खप्पर । -वि० जिस
 पर प्रहार न हो सके । -क्रि० वि० [सं० अवाध] निरंतर,
 लगातार ।
 अवाहण-देखो 'आवाहण' ।
 अविद, (विध)-वि० अछिद्रित, अविद्ध ।
 अवि-पु० [सं०] १ बकरा । २ भेड़ । -अट, अट्ट, अट्ट,
 आट-पु० युद्ध । योद्धा, वीर । झुण्ड, समूह, दल ।
 -स्त्री० तलवार, कृपाण । -वि० ललित, मनोहर ।
 -अविकल-वि० [सं० अविकल] १ ज्यों का त्यों ।
 परिवर्तनरहित । २ सम्पूर्ण, पूरा । ३ नियमित ।
 ४ निरन्तर । ५ निश्चल, शांत । ६ व्याकुल । ६ वीर ।

अविकार-वि० [सं०] १ विकार रहित, निर्विकार । २ निर्मल,
 स्वच्छ । ३ पवित्र । ४ जन्म-मरणादि से रहित ।
 -पु० १ विकार का अभाव । २ ईश्वर, ब्रह्म ।
 अविकारी-वि० [सं०] १ जिसमें कोई विकार न हो ।
 २ परिवर्तन शून्य । ३ अविभक्त । ४ सदा एक रस
 रहने वाला । -पु० ईश्वर, ब्रह्म ।
 अविकुल (ल)-वि० पूर्ण, पूरा ।
 अविगत, (ति, ती)-वि० १ जिसकी गति जानी न जा सके ।
 २ जो नष्ट न हो । ३ शाश्वत, नित्य । -पु० ईश्वर ।
 अविग्रह-वि० १ जो स्पष्ट रूप से जाना न जा सके ।
 २ निराकार ।
 अविचल-वि० [सं० अविचल] १ अचल, अटल । २ अमर ।
 ३ स्थिर । ४ जो विचलित न हो, निडर, धीर, वीर ।
 अविचार-पु० [सं०] १ विचार का अभाव । २ अविवेक ।
 ३ अन्याय ।
 अविच्छिन्न-वि० [सं०] १ अटूट, अखंड । २ निरन्तर, लगातार ।
 अविच्छेद-पु० [सं०] अखण्डता, निरन्तरता ।
 अविद्यो-वि० १ दुर्गम, टेढ़ामेढ़ा । २ वीर, बांकुरा ।
 ३ देखो 'अवद्यो' ।
 अविनाश, (नास)-पु० [सं० अविनाश] १ विनाश का विपर्याय ।
 २ अक्षयता, स्थायित्व । ३ ईश्वर, ब्रह्म ।
 अविनाशी, (मासी)-वि० [सं० अविनाशी] १ जो नाश को
 प्राप्त न हो, अक्षय, अमर । २ नित्य, शाश्वत ।
 -पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ शिव ।
 अवितंस-देखो 'अवतंस' ।
 अविवित-वि० [सं०] अज्ञात । गुप्त ।
 अविध-देखो 'अवधि' ।
 अविधान-पु० १ विधान का अभाव, नियम का अभाव ।
 २ देखो 'अभिधान' ।
 अविधा-देखो 'अभिधा' ।
 अविधूत-देखो 'अवधूत' ।
 अविन-देखो 'अविनि' ।
 अविनय-पु० [सं०] १ अवज्ञा, अनम्रता । २ उद्दण्डता,
 उन्मुखता । ३ अशिष्टता ।
 अविनासी-वि० [सं० अविनाशिन] १ जिसका नाश न हो,
 अनाशवान । २ अक्षय, नित्य, शाश्वत -पु० १ ईश्वर,
 परब्रह्म । २ जीव । ३ प्रकृति ।
 अविनीत-वि० [सं०] जो नम्र न हो, डीट, अशिष्ट ।
 अविबुध-पु० [सं०] अमुर, दैत्य, राक्षस ।
 अविभक्त-वि० जिसका विभाजन न हो । अभिन्न । २ संयुक्त ।
 अविभ्रस्य-विधेयस-पु० साहित्य का एक दोष ।

अविषट, अविषाट—देखो 'अविषट' ।

अविरथा—कि० वि० वृथा, फिजूल ।

अविरल—वि० [सं० अविरल] १ मिलाहुआ, अपृथक् ।
२ अभिन्न । ३ घना, सघन । ४ निरंतर, लगातार ।

५ स्थूल, मोटा । ६ जिसमें टूट या व्यवधान न हो ।

अविराम—कि० वि० [सं० अविराम] १ बिना रुके । २ बिना विश्राम किये । ३ निरंतर, लगातार । ४ शीघ्र, जल्दी ।

अविरुद्ध—वि० [सं०] १ जो विरुद्ध न हो, पक्ष में । २ स्पष्ट ।

अविरोध—पु० [सं०] १ विरोध का अभाव । २ मैत्री । ३ साम्य, सादृश्य । ४ एकता ।

अविलंबत—कि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।

अविळ—वि० टेढ़ा, तिरछा । —कि० वि० १ शीघ्र ।
२ देखो 'अवल' ।

अविषेक—पु० [सं०] १ विवेक का अभाव । २ अज्ञान ।
३ नासमझी, नादानी । ४ अन्याय ।

अविसेख—देखो 'अभिसेख' ।

अविस्वास—पु० विश्वास का अभाव ।

अविस्वासी—वि० [सं० अविस्वासी] १ जिसका विश्वास न हो ।
२ जो किसी पर विश्वास न करे ।

अविह—वि० निडर निर्भीक ।

अविहङ्ग—वि० [सं० अविषट] १ दृढ़, मजबूत । २ अखंड, अटूट । ३ अभंग, सातत्ययुक्त । —मर्व० ऐसा ।

अवीध—देखो 'अवीद' ।

अवी—देखो 'अवि' ।

अवीषट—देखो 'अविषट' ।

अवीचि—पु० [सं०] एक नरक का नाम ।

अवीदात—देखो 'अवदात' ।

अवीषाट—देखो 'अविषट' ।

अवीहङ्ग—देखो 'अविहङ्ग' ।

अवृणौ (बौ)—कि० वर्षा न होना, अनावृष्टि रहना ।

अवेखणौ (बौ), अवेखणौ (बौ)—कि० [सं० अवभ्रणम्] देखना, ध्यान लगाना ।

अवेङ्गी—वि० १ प्रतिकूल । २ एकांत ।

अवेर—१ देखो 'अवेर' । २ देखो 'अवेर' ।

अवेरणौ (बौ)—देखो 'अवेरणौ' ।

अवेरौ—कि० वि० १ वेवक्त, असमय । —पु० निवृत्ति, समाप्ति ।
२ देखो 'अवेरौ' ।

अवेळी—पु० [सं० अवेला] १ देर, विलंब । २ असमय । ३ गति ।
—कि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।

अवेद—पु० भेद, रहस्य । —वि० निर्धन, दुर्बल ।

अवेस—देखो 'अवेस' ।

अवे—मर्व० उमने । —कि० वि० अय ।

अवेतनिक—वि० बिना वेतन कार्य करने वाला ।

अवोङ्गी—देखो 'ओहङ्गी' ।

अवोचण (न)—पु० [सं० अवचन] पर्दानिमीन औरतों के शिर पर ओढ़ने का श्वेत वस्त्र ।

अव्यक्त—वि० [सं०] १ जो प्रत्यक्ष न हो, अप्रत्यक्ष । २ ग्रहस्थ, अगोचर । ३ अज्ञात । ४ अनिर्वचनीय । ५ अस्पष्ट । ६ अप्रकाशित । ७ अनुत्पन्न । ८ अचिन्त्य । ९ जो अवगत न हो । —पु० [सं० अव्यक्तः] १ विष्णु । २ शिव । ३ कामदेव । ४ मूल प्रकृति (सांख्य) । ५ परमात्मा । ६ आत्मा । ७ क्रिया रहित ब्रह्म, जीव, सूक्ष्म शरीर ।

अव्यय—वि० [सं०] १ सदा एकसा रहने वाला । २ अविकारी । ३ नित्य । ४ आद्यतहीन । ५ अनश्वर । ६ अक्षय । ७ जो व्यय न किया गया हो । ८ मितव्ययी । —पु० १ ब्रह्म । २ विष्णु ३ शिव । ४ व्याकरण का वह शब्द जो सब लिंगों, विभक्तियों और वचनों में समान रूप से प्रयुक्त हो ।

अव्ययीभाव—पु० यौ० [सं०] समास का एक भेद ।

अव्यवस्थित—वि० [सं०] १ जिसकी कोई व्यवस्था न हो, अस्त-व्यस्त । २ असंगठित । ३ शास्त्र मर्यादा रहित । ४ चंचल अस्थिर ।

अव्यापी—वि० [सं०] १ जो सब जगह पाया जाय । २ जिसका सर्वत्र गमन न हो ।

अवत—वि० व्रत का अभाव ।

अवर—१ देखो 'अपर' । २ देखो 'अवर' ।

अवल—देखो 'अवल' ।

असंक—वि० [सं० अशंक] १ निर्भय, निश्चक । [सं० असंख्य] २ असंख्य, बहुत । —पु० १ युधिष्ठिर । २ भव, आतंक ।

असंका—देखो 'आसंका' ।

असंकित, असंकी—वि० [सं० अशंकित] १ निर्भय, निडर । २ शंका रहित ।

असंख, (खी, खं) असंख्य, (ख्यात)—वि० [सं० असंख्य] अपार, अगणित, असंख्य ।

असंग—वि० [सं०] १ संग रहित, अलग । २ विरक्त, निखिप्त । ३ एकाकी, अकेला । ४ जवरदस्त, बलवान । ५ अपार, असंख्य । —पु० १ बुरासंग, कुसंग । २ वृक्ष, पेड़ ।

असंगति—स्त्री० १ कुसंगति, बुरी सोहबत । २ अगम्यता । ३ बेसिलसिलापन ।

असंगी—वि० जो किसी संग की परवाह न करे ।

असंग्यी—वि० १ जिसकी संज्ञा न हो । २ चेतना शून्य । —पु० चेतना शून्य प्राणी ।

असंजतो—वि० असंयमो ।

असंजोग-पु० [सं० असंयोग] १ बुरा संयोग । बुरायोग ।
 २ अनायाम प्रति । ३ भिन्नता, पार्थक्य ।
असंत-वि० [सं०] १ अमाधु । २ खल, नीच, दुष्ट । ३ दुर्जन ।
असंतुष्ट-वि० [सं० असंतुष्ट] १ जिसे संतोष न हो ।
 २ अप्रमत्त । ३ अतृप्त ।
असंतुष्टि, (स्टी)-स्त्री० १ असंतोष होने की दशा या भाव ।
 २ अप्रसन्नता । ३ अतृप्ति ।
असंतोष-पु० [सं० असंतोष] १ संतोष का अभाव । २ अप्रसन्नता ।
 ३ अतृप्ति ।
असंतोषी-वि० जिसे संतोष न हो । अप्रसन्न । अतृप्त ।
असंध, (धौ)-पु० [सं० असन्नद्ध] कवच, सनाह । -वि०
 १ कवच धारी । २ कवच रहित । ३ हथियार रहित ।
 [सं० असन्नद्ध, असंधि] ४ संधि या जोड़ रहित ।
 ५ न मिला हुआ । ६ वंशन रहित, स्वतंत्र ।
 [सं० असंधिक] ७ अपूर्व अद्वितीय ।
असंधरौ (बौ)-वियोग होना, पृथक् होना ।
असंधी-वि० १ असहमत । २ देखो 'असंधौ' (स्त्री० असंधी) ।
असंप-पु० स्नेहाभाव । विरोध । जघृता ।
असंपद-वि० [सं० असंपुट] १ असंभव । २ बिना स्नान
 किया हुआ ।
असंभ-वि० [सं० अ-]-संभाति अ-]-संभृ] १ भयंकर, भयावह ।
 २ बहुत, अपार । ३ बीर, बहादुर । -पु० १ युद्ध, लड़ाई ।
 २ देखो 'असंभव' ।
असंभव, **असंभव** (वी)-वि० [सं० असंभव] १ जो संभव या
 मुमकिन न हो, नामुमकिन । २ अजन्मा, अज, स्वयंभू ।
 ३ बीर, बहादुर । ४ अद्वितीय, अपूर्व । ५ जन्म व उत्पत्ति
 से रहित । -पु० एक प्रकार का अलंकार ।
असंभावना-स्त्री० [सं०] १ संभावना का अभाव, अभवितव्यता,
 असंभावनापन । २ एक प्रकार का अर्थानिंकार विशेष ।
असंभे-देखो 'असंभव' ।
असंभ-वि० राग रहित ।
असंयती-देखो 'असंजती' ।
असंय-वि० [सं० असंय] १ संयत रहित । २ निश्चित ।
 ३ यथार्थ ।
असंसारी-वि० [सं०] १ अनीकिक । २ विरक्त, वैरागी ।
अस-वि० [सं० ईडज] १ ऐमा, इस प्रकार का । २ तुल्य, समान ।
 -क० वि० १ इस तरह लग भाति, ऐसे । २ देखो 'असव' ।
 ३ देखो 'असव' । -साठ. साठा-स्त्री० अश्वशाला ।
असइ-स्त्री० [सं० असती] कुलटा, व्यभिचारिणी ।
असकंवर-पु० मिर्कंदर ।
असकत-देखो 'असक्त' ।

असकनी-पु० तलवार की म्यान साफ करने का लोहे का एक
 औजार ।
असकाज-पु० भाला । बरछा ।
असकुन, (सगुन)-पु० [सं० अशकुन] ग्रमंगल, सूचक लक्षण
 अपशकुन ।
असकेल-देखो 'असखेल' ।
असक्त-वि० [सं० अशक्त] निर्मल, कमजोर, दुर्बल ।
असखपरणी-पु० धनुष से तीर चलाने की क्रिया ।
असखेल-स्त्री० १ हंसी मजाक, मखील । २ लापरवाही,
 असावधानी । ३ मीज, मस्ती, खेल ।
असखंध-स्त्री० [सं० अश्वगंधा] गर्म देशों में होने वाली एक
 औषधि ।
असगी, (गौ)-वि० १ जो रिश्तेदार या संबंधी न हो । २ शत्रु ।
असडौ (डौ)-देखो 'इसडौ' (स्त्री० असडौ) ।
असज्जन-वि० [सं०] दुष्ट, नीच, खल ।
असज्य-वि० [सं० असह्य] जो सहने योग्य न हो, असह्य ।
असटंग-देखो 'असटांग' ।
असटंगी-देखो 'असटांगी' ।
असट-वि० [सं० अष्ट] आठ । -पु० आठ की संख्या ।
 -कुल-पु० सर्पों के आठ कुल । -कुली-पु० सर्प ।
 -पद, पदी-स्त्री० मकड़ी । आठ पदों का छंद या गीत ।
 सिंह, जैर स्वर्ण, सोना । -पात-पु० शरभ, शार्दूल ।
 मकड़ी । -पौर-पु० अष्ट प्रहर । -विधान-पु०
 राज्य के आठ चमत्कार । एक साथ विभिन्न आठ कार्य
 करने की क्षमता ।
असटमी-देखो 'असटमी' ।
असटांग-पु० [सं० अष्टांग] १ योग की क्रियाओं के आठ भेद ।
 २ आयुर्वेद के आठ विभाग । ३ जरीर के आठ अंग या
 अवयव ।
असटापद, **असटापाद**-पु० देखो 'असटपद' ।
असण (न)-पु० [सं० अशन] १ भोजन, खाना । २ आहार,
 भक्षण । ३ चित्रक, भिलावा । ४ तीर, वाण । ५ नवार
 ६ आग्रह । ७ जिह्वा । ८ गड्ढा । ९ वर्षा । १० देखो 'असणी' ।
असणी-पु० [सं० अशनि, असन्] १ इंद्राश्व, वज्र । २ विद्युत,
 बिजली । ३ अस्त्र । ४ भाला, बरछा । ५ अस्त्र की नोक ।
 ६ इन्द्र । ७ अग्नि । ८ देखो 'असनी' ।
असत (त्त)-वि० [सं० अशत्] १ मिथ्या, झूठ, असत्य ।
 २ अमाधु । ३ अन्धाधो, अधर्मी । ४ अनुचित, गलत ।
 ५ गराब, बुरा । ६ दूषित । ७ पापी । ८ कायर, डरपोक ।
 ९ श्याम, काया । १० छिपा हुआ, तिरोहित । ११ नष्ट ।
 १२ अनु, दुश्मन । १३ दुष्ट, पतित, नीच । -पु०
 भूरी दाढ़, मिथ्या वचन ।

असत-पु० १ अनस्तित्व । २ जड़ प्रकृति । ३ सत का अभाव ।
४ देखो 'अस्त' । ५ देखो 'अस्थि' ।

असतन-देखो 'स्तन' ।

असतर-पु० [सं० अस्त्र] १ फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार । २ फेंके हुए हथियार को रोकने का उपकरण ।
३ मंत्र द्वारा चलने वाला हथियार । ४ जल्य चिकित्सा के उपकरण । ५ खच्चर । ६ देखो 'अस्तर' ।

असतरी-१ देखो 'स्त्री' । २ देखो 'इस्त्री' ।

असतल-देखो 'अस्थल' ।

असता-देखो 'असाति' ।

असताचल-देखो 'अस्नाचल' ।

असति, असती वि० [सं० अ + मती, अ + सत्] १ जिसका सतीत्व भंग हो गया हो । २ कुलटा व्यभिचारिणी ।
३ अधर्मी, पापी, दुराचारी । ४ कायर, डरपोक ।
५ अशक्त, कमजोर । ६ काला, श्याम । -पु० १ असुर, राक्षस । २ देखो 'अमत' ।

असतुत, (ति, तो)-स्त्री० [सं० स्तुति] १ स्तवन, कीर्तन ।
२ प्रार्थना, विनती, स्तुति । ३ यशोगान, गुणगान ।
४ प्रशंसा, बड़ाई ।

असतुल-देखो 'स्वूल' ।

असतोत्र-पु० [सं० स्तोत्र] १ स्तुति, स्तवन, कीर्तन । २ किसी देवता को प्रगल्भ करने का मंत्र या छन्द ।

असतौ-वि० निर्लेप ।

असत्र-पु० [देश.] १ सूअर, शूकर । २ तीर, बाण । -वि० [सं० अ + शत्रु] १ निहत्या, निःशस्त्र । [सं० अ + शत्रु] २ मित्र, दोस्त । ३ देखो 'असतर' ।

असत्री-देखो 'स्त्री' ।

असथन-पु० मज्जा ।

असथल-देखो 'अस्थल' ।

असथांन-पु० [सं० स्थान] स्थान, जगह ।

असथांमा-देखो 'अस्वथांमा' ।

असथि, असथी-स्त्री० [सं० अस्थि] अस्थि, हड्डी ।
---पंजर-पु० हड्डियों का ढांचा, कंकाल ।

असद-वि० [सं०] दुष्ट, नीच ।

असन-वि० [सं० अस्त] १ पूर्व । २ देखो 'असग' ।

असनांन-पु० [सं० स्नान] नहाना क्रिया, स्नान, मज्जन ।

असनि, (नी)-१ देखो 'अमणी' । २ देखो 'अस्विनी' ।
---कंवार, कुमार= 'अस्विनी कुमार' ।

असनेह-पु० [सं० अस्नेह] १ स्नेह का अभाव । २ शत्रुता, दुश्मनी ।

असन्न-क्रि० वि० १ पाम में, पाम, निकट । २ देखो 'अामीन' ।
३ देखो 'अगण' ।

असली-वि० [सं० असंजिन] मन की संज्ञा रहित, मनोज्ञान से रहित । सम्यग दृष्टि भिन्न ।

असन्न, (न्तु)-पु० १ असुर, राक्षस । २ देखो 'असग' ।

असप-पु० [सं० अश्व] घोड़ा, अश्व । -पत, पति, पती-पु० घोड़े का स्वामी । बादशाह । रिसालदार ।

असपका-स्त्री० [सं० अश्वपंक्ति] घोड़ों की पंक्ति ।

असपताळ-पु० औषधानय, चिकित्सालय ।

असपतिराड, (राय, राव) असपतीराई, (राय, राव) असपत्त, (पति, पत्नी)-पु० [सं० अश्वपतिराज] १ घुड़ सेनापति ।
२ बादशाह । ३ मुसलमान ।

असपथ-पु० [सं० अश्वत्थ] पीपल ।

असपरा-पु० [सं० अम्परा] देवता । -स्त्री० [सं० अम्परा] देवांगना ।

असप्पति-देखो 'असपति' ।

असबल-देखो 'असमर्थ' ।

असबाब-१ सामान, सामग्री । २ अप्रयोज्य वस्तुएं ।

असभ्य-वि० [सं०] १ अशिक्षित, गंवार २ अनाड़ी । ३ उद्दण्ड ।
४ अशिक्षित ।

असमंजत-पु० एक सूर्यवंशी अत्याचारी राजा ।

असमंजस-पु० [सं०] पशोपेश, दुविधा । द्विचकिचाहट । संकोच ।

असमंद्र-देखो 'आसमुद्र' ।

असम-पु० [सं० अश्मन्] १ प्रस्थ, पत्थर । २ एक अलंकार विशेष ।
स्त्री० [सं० अ + श्रम] ३ लुब्धता । ४ अशांति ।
५ आग, अग्नि । -वि० [सं०] १ विषम, २ ऊबड़-खाबड़, ऊंचा-नीचा ।

असमक्ष-स्त्री० १ समझ की कमी । २ अज्ञानता । मूर्खता ।
-वि० असमर्थ, मूर्ख ।

असमत्थ, असमथ-देखो 'अगमरथ' ।

असमनेत्र-वि० जिसके नेत्र विषम हों । -पु० शिव, महादेव ।

असमय-पु० [सं०] १ विपत्तिकाल, कुसमय । २ कुअवसर ।
-वि० मिद्वान्तहीन, प्रतिज्ञाहीन ।

असमर-स्त्री० १ तनवार, खड़ग । २ देखो 'स्मर' ।

असमरथ, असमरथ्य-वि० [सं० असमर्थ] १ अशक्त, दुर्बल, कमजोर । २ अयोग्य । ३ अक्षम ।

असमसांण असमसर-पु० कामदेव ।

असमांण, (न)-देखो 'आसमांन' ।

असमांणि-(णी, नी)-देखो 'आसमांणी' ।

असमाथ-देखो 'असमरथ' ।

असमाथ्य-स्त्री० [सं० असमाधि] १ बीमारी, रोग । २ कष्ट पीड़ा । ३ उपद्रव, कलह । ४ अशांति । ५ युद्ध ।

असमाधर्मी (बी)-क्रि० मरणा, अवसान होना ।

असमाधि, (धी)-देखो 'असमाध' ।

असमाधियों-वि० १ बीमार, रुग्ण । २ अज्ञान, बेचैन ।

असमाप्त-वि० १ अपूर्ण । २ बाकी रहा हुआ । ३ कभी समाप्त न होने वाला ।

असमाहित-स्त्री० चित की अस्थिरता । --वि० चंचल ।

असमेद (मेघ)-देखो 'अस्वमेध' ।

असम्भर, असम्मी-देखो 'असमर' ।

असमानों-वि० १ नाराज, ताबाजिक । २ सीधा-सादा ।

असर-पु० [प्र] १ प्रभाव, दबाव । २ लाभ फायदा । ३ गुण ।
[सं० असृज] ४ खून, रश्मि । ५ देखो 'असुर' ।

असरची-पु० अगड़ा, सड़ा । तकरार । तनातनी ।

असरण-वि० [सं० अशरण] १ निराश्रय, निराश्रय ।
२ अनाथ । --सरण-पु० शिवर ।

असरधा-स्त्री० [देख] १ रुग्णता । २ कमजोरी । [सं० अश्रद्धा]
३ अद्भुत का अभाव, अश्रद्धा ।

असरफी-स्त्री० [का० अशरफी] १ मोने की मोहर । २ स्वर्ण मुद्रा, मोने का गिक्का । --पु० ३ पीले रंग का एक फूल ।

असरम, (रम)-स्त्री० शर्म का लज्जा का अभाव ।
-वि० देशर्म, निर्लज्ज ।

असराण-पु० [सं० अशुर] १ असुर । २ यवन, मुगलमान ।
३ बादशाह ।

असराफ-वि० [अ० अशराफ] शरीर, भद्र, नज्जन । सभ्य ।

असरायल-देखो, 'अस्मराल' ।

असरार-पु० [सं० अशुरारि] १ देवता । २ देखो, 'अस्मराल' ।

असस्थि-देखो 'आसरी' ।

असरीखों (उ)-वि० [सं० अशरण] असामान्य, असाधारण ।

असराल-देखो 'अस्मराल' ।

असल-वि० [अ०] १ सही, वास्तविक । २ मच्चा । ३ शुद्ध, खानिज । ४ कुलीन । ५ प्राकृतिक । ६ मूल ।

-पु० १ जड़, मूल । २ बुनियाद । ३ मूलधन ।

असलस देखो 'आलस' ।

असल सल स्त्री० पोछों की चाल से उत्पन्न ध्वनि ।

असलक, (ख, ग)-देखो 'आलक' ।

असलपत (लोपत)-स्त्री० [अ०] १ वास्तविकता, मच्चाई ।
२ बुनियाद । ३ सार, तथ्य ।

असली, (न)-वि० [अ०] १ मच्चा, वास्तविक । २ खरा ।
३ शुद्ध । ४ अकृत्रिम । --जड़ा-पु० श्रेष्ठ कुल का, कुलीन ।

असलील-वि० [सं० अश्लील] अश्लिष्ट, भद्रा, असभ्य । नंगा ।
-ता-स्त्री० अश्लिष्टता, भद्रापन । शुद्धपन, नंगापन ।

असलिया (शा)-पु० [सं० अश्लेषा] सताइस नक्षत्रों में से एक ।

असली-देखो 'असली' ।

असव-देखो 'अस्व' ।

असवत, (त्य)-देखो 'अस्वत्य' ।

असवनी-देखो 'अस्विनी' ।

असवान-देखो 'असमांग' ।

असवाई-पसवाई-देखो, 'आ' 'ई', 'पा' 'ई' ।

असवार-पु० [सं० अश्ववार] १ सवार । २ चढ़ना किया ।

असवारगी-स्त्री० १ फैलने का भाव । २ सवारी ।

असवारी-स्त्री० १ चढ़ना किया । २ सवारी ।

असवेत-देखो 'अस्वेत' ।

असवार-देखो 'असवार' ।

असह, (ण)-वि० [सं० असह] जो सहन न किया जा सके,
असह्य, दुस्सह । --पु० १ शत्रु । २ दुश्मन । ३ यवन,
मुसलमान । ४ हृदय । ५ अग्नि, आग । ६ पीड़ा ।
७ घोड़ा ।

असहत (न)-पु० [नं० असहनः] दुश्मन, शत्रु ।

असहाय (यी)-वि० निराश्रय । अनाथ ।

असही-देखो 'असह' ।

असही-वि० [सं० असह] असहनीय, बुरा, खराब ।

असांव-वि० सत्य, भूठ ।

असांजन-सर्व० हमारा, अपना ।

असांज, (सांजत)-वि० [सं० अज्ञांत] जो शांत न हो, चंचल,
व्याकुल, अस्थिर । असंतुष्ट ।

असांति, (ती)-स्त्री० [सं० अज्ञाति] शांति का अभाव,
व्याकुलता । चंचलता । अस्थिरता । असन्तोष ।

असांमरथ-वि० सामर्थ्यहीन, असमर्थ ।

असानान्य-वि० असाधारण । विशेष ।

असाउली-स्त्री० [सं० अश्वाली] अश्व सेना ।

असाकल-पु० [नं० अज्ञाकल्य] अखंड ।

असाक्षी-पु० [सं०] १ धर्म में शिथिली गवाही दजित हो ।
२ साक्ष्य का अभाव ।

असाड (डी, ड)-देखो 'आसाड' ।

असाडी (डी)-देखो 'आसाडी' ।

असात-पु० [सं० अशात] १ अपयश, अपकीर्ति । २ दुःख ।

असातना, असता-स्त्री० १ माता का अभाव । २ बेचैनी,
अज्ञानि, कष्ट । (जैन)

असातयेदनीय-पु० १ वैदनीय कर्म का एक भेद (जैन) ।
२ सप्त एवं दुःखप्रद अथम्भा (जैन) ।

असाब (उ)-वि० १ अस्माध्य, दुस्साध्य । २ देखो 'असात्र' ।

असादि-वि० अनादि ।

असाध, (धु)-वि० [सं० असाधु, असाध्य, असाध्रीय] १ असउजन, बुरा, दुष्ट, असाधु । २ प्रचंडकाय । ३ असाध्य, दुस्तर । कठिन । ४ असंभव । —ता-स्त्री० अशिष्टता, दुष्टता, खोटई ।

असाधारण-वि० विशेष ।

असाध, असाध्य-वि० [सं० असाध्य] १ जो साधा न जा सके, दुस्ताध्य । २ कठिन । ३ जिस पर काबू न पाया जा सके । ४ कठोर, तेज, तीव्र ।

असार-वि० [सं०] १ सार रहित, निःसार । २ तुच्छ । ३ बेमतलब, फालतू । —पु० १ विज्ञ, लक्षण । २ देखो 'आसार' । —ता-स्त्री० निःसारता । तुच्छता ।

असारो-देखो 'इसारी' ।

असालत-स्त्री० [अ०] १ कुलीनता । २ सच्चाई ।

असाळियो, असाळ्य-पु० [सं० अहालिसम] चन्द्रमूर, हाला ।

असावधान-वि० [सं० असावधान] १ जो सचेत न हो, गफिल, लापरवाह । २ बेखबर । ३ अनजान । —ता-स्त्री० असावधानी ।

असावधानी-स्त्री० [सं० असावधानी] १ सतर्कता का अभाव । २ बेपरवाही, लापरवाही । ३ अनजानता ।

असावरी-देखो 'आसावरी' ।

असास-वि० श्वास रहित, निःश्वास । —पु० आशीर्वाद ।

असाह-वि० निर्धन, कंगाल । —पु० वायु, पवन ।

असि-पु० स्त्री० [सं०] १ तलवार, खड्ग । [सं० अश्व] २ घोड़ा, अश्व । —वि० [सं० अश्वेत ईद] १ काला, श्याम । २ ऐसी । —धारण-वि० तलवार धारी । —धावक, धारक-पु० सिकलीगर । —हृत्पु० खड्गधारी घोड़ा ।

असिक्षित-वि० [सं० अशिक्षित] १ अनपढ़, अज्ञानी । २ उज्जड़, अनाड़ी ।

असिण-देखो 'अस्वनी' । २ देखो 'असणी' ।

असित-वि० [सं०] १ काला, श्याम । २ दुष्ट, बुरा, कुटिल । —पु० कृष्ण पक्ष । —अंग-वि० श्याम वर्ण का, काले रंग का ।

असिता-स्त्री० यमुना नदी ।

असिद्ध-वि० [सं०] १ जो सिद्ध न हो । २ अप्रामाणिक । ३ व्यर्थ ।

असिद्धि-स्त्री० [सं०] १ अप्राप्ति । २ अपूर्णता । ३ कच्चापन ।

असिनी स्त्री० [सं० अश्विनी] १ घोड़ी । २ एक नक्षत्र विशेष ।

असिपति, (पति)-देखो 'असपति' ।

असिबर, असिभर, (सरि)-स्त्री० लवदार, खड्ग ।

असिमेघ-देखो 'अस्वमेघ' ।

असिम्भ-देखो 'असीम' ।

असिम्भर-देखो 'असिबर' ।

असिय-पु० [सं० अश्व] १ घोड़ा । —स्त्री० २ अस्सी की संख्या । वि० अस्सी ।

असियो-पु० अस्सी का वर्ष । —वि० अस्सी के स्थान वाला ।

असिव-वि० [सं० अशिव] अशुभ, अमंगल ।

असिवर-वि० १ तलवार चलाने वाला वीर । २ योद्धा । ३ देखो 'असिबर' ।

असिसेत-पु० [सं० असिसेतु] गहड़ ।

असी-स्त्री० [सं० अश्विनी] १ घोड़ी । २ काशी के दक्षिण की एक नदी । —क्रि० वि० १ ऐसी । २ देखो 'असि' । ३ देखो 'अस्सी' । —बख-पु० पीपल का वृक्ष ।

असीख-स्त्री० [सं० अ + शिक्षा] १ शिक्षा का अभाव । २ बुरी सलाह, बुरी शिक्षा । ३ बिना सीखी हुई बात ।

असीत-वि० [सं० अशीत] १ शीत रहित, गर्म । २ तीव्र, तेज ।

असीम-वि० [सं०] १ सीमा रहित, बेहद । २ अपार । ३ असंख्य ।

असील-वि० [सं० अशील] १ शील रहित । [अ० अशील] २ खरा । ३ सच्चा । ४ सुशील । ५ कुलीन । —पु० [सं० असिल] १ योद्धा । २ एक प्रकार का शस्त्र ।

असीस-स्त्री० [सं० असि] १ गदा । २ आशीर्वाद, आशीर्वाद । —वि० बिना शिर का ।

असीसणी (बी)-क्रि० १ आशीर्वाद देना । २ दुआ देना ।

असु-पु० [सं० अश्व] १ अश्व, घोड़ा । [सं० असुः] २ प्राण, प्राण वायु । ३ जीवन । —क-पु० रक्त, खून ।

असुकन, (सुगन)-पु० [सं० अशुकन] १ बुरा शुकन, अप शुकन । २ अमांगलिक चिह्न । ३ बुरे लक्षण या चिह्न ।

असुख-पु० वैर, शत्रुता, दुश्मनी ।

असुचि, असुचि, (ची)-वि० [सं० अशुचि] १ अपवित्र, अशुद्ध । २ गंदा, मैला । ३ काला । —पु० १ अपवित्रता । २ गूतक । ३ गंदगी ।

असुद्ध-वि० [सं० अशुद्ध] १ अपवित्र । २ असंस्कृत । ३ दोष या गल्ती युक्त । ४ गलत । ५ गंदा । —ता-स्त्री० अपवित्रता । गल्ती, दोष । गंदगी ।

असुद्धि-स्त्री० [सं० अशुद्धि] १ अपवित्रता । २ दोष, भूल, गल्ती । ३ गंदगी ।

असुध-पु० बालक । —वि० १ अशुभ, बुरा, २ अशुद्ध ।

असुन-पु० [सं० अश्व] कुत्ता, श्वान ।

असुभ-वि० [सं० अशुभ] अमंगलकारी, बुरा, गराब । —पु० १ अमंगल, अनिष्ट । २ अहित । ३ अपराध, पाप ।

—भंवर-पु० वह घोड़ा जिसके शरीर का रंग श्याम हो ।

असुभकारियों, (कारी)—वि० अशुभ करने वाला । —पु० वणिज, बनिया ।

असुर—पु० [सं० असुरः] १ दैत्य, राक्षस । २ नीच वृत्ति का पुरुष । ३ भूत, प्रेत । ४ सूर्य । ५ बादल । ६ राहू की उपाधि । ७ विधर्मी । ८ यवन । ९ आठ दिक्पालों में से एक, नैऋत्य । १० बुध स्वर, अस्वर । —स्त्री० [सं० असुरा] ११ गति । १२ वेश्या । —वि० काला, श्याम । —पुरु, गुरु—पु० शुक्राचार्य । —पत पति, पत्नी—पु० रावण । कंस । हिरण्यकश्यप । यवन बादशाह । —पुरोहित—पु० शुक्राचार्य । —लोक—पु० राक्षसों का लोक, लंका, पाताल । —वहल—पु० श्रीकृष्ण । विष्णु । श्रीरामचन्द्र ।

असुरांड—देखो 'असुर' ।

असुराण, (रामण, रांपण, राइण, रायण, राई)—पु० [सं० असुरगट्] (स्त्री० असुरांगी) १ यवन बादशाह । २ राक्षस राजा । ३ यवन ।

असुरारि, (री)—पु० [सं०] १ श्रीविष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ श्रीरामचन्द्र । ४ लक्ष्मण । ५ देवता ।

असुरी—स्त्री० दानवी, राक्षसी, असुर की स्त्री ।

असुरेश्वर—पु० [सं० असुरेश्वर] १ दानवेन्द्र, असुरराज । २ यवन बादशाह ।

असुविधा—स्त्री० [सं०] सुविधा की कमी । २ अड़चन, कठिनाई, दिक्कत ।

असुहर—पु० जत्रु, रिपु, वैरी ।

असुहाइ, (ई)—वि० असुहावनी, दुःसह ।

असुहाणी—वि० [सं० अशोभन] १ अप्रिय, दुःखद । २ अरुचिकर ।

असुहाणी (बौ), असुहावणी, (बी)—क्रि० अप्रिय या अरुचिकर लगना ।

असू—स्त्री० [सं० अशु] १ किरण, रश्मि, प्रभा । २ देखो 'असु' ।

असूजनी, असूजनी—वि० शुद्धता रहित । अपवित्र (जैन)

असूया—स्त्री० [सं०] १ ईर्ष्या, डाह । २ निंदा, आलोचना । ३ अपवाद । ४ असहिष्णुता । ५ क्रोध, रोष । ६ निंदावाद । ७ साहित्य में एक संचारी भाव ।

असूर—वि० [सं० असूर] जो सूर न हो, कायर, डरपोक ।

असूल—देखो 'असूल' ।

असूस—वि० पूर्ण तृप्त ।

असेवी, (धी)—वि० [सं० अ + संहि] (स्त्री० असैदी) अपरिचित, अजनबी ।

असेख—वि० [सं० अशेष] १ पूर्ण, पूरा समस्त । २ अधिक, बहुत । ३ जिसका शेष कुछ न हो ।

असेत—वि० [सं० अश्वेत] १ जो श्वेत न हो । २ काला, श्याम ।

असेयी—वि० [सं० अमह्य] १ अमह्य, जो सहन न हो । २ जत्रु, वैरी ।

असेर—देखो 'आसेर' ।

असेवनी, असेवी—वि० गहरा, अगाध ।

असेस—देखो 'असेख' ।

असे—क्रि० वि० ऐसे ।

असैदी (धी)—देखो 'असैदी' । (स्त्री० असैदी) ।

असैघाई—स्त्री० अजनबीपन, अपरिचय ।

असे—स्त्री० असाधवी, असती, कुलटा ।

असोक (ग)—वि० [सं० अशोक] १ शोक रहित । २ लाल ।

—पु० १ विष्णु । २ एक वृक्ष विशेष । ३ पारद ।

४ एक मौर्य वंशीय प्रसिद्ध सम्राट —छठ—स्त्री० चैत्र शुक्ल पक्ष की षष्ठी । —वाटिका—स्त्री० लंका का एक बाग विशेष । (पौराणिक)

असोनी—वि० शोक रहित ।

असोज—देखो 'आसोज' ।

असोष—वि० [सं० अशोभा] १ शोभा रहित । २ कुरूप, बुरा ।

३ अनगढ़, भट्टा । स्त्री० अशोभा ।

असोभता, असोभा—स्त्री० [सं० अशोभा] १ शोभा का अभाव ।

२ भट्टापन, कुरूपता । ३ बेइज्जती, हंसी । ४ अपकीर्ति ।

असोम—वि० [सं० असोम्य] १ गर्म । २ बुरा, अप्रिय ।

३ भयानक । ४ भट्टा । ५ अकोमल, ठोस । ६ अशुभ ।

असोमजत्र—पु० १ वन्दूक । २ तोप । ३ नारदमुनि की वीणा ।

असौ—क्रि० वि० १ ऐसा, तैसा । २ देखो 'आसौ' ।

अस्खलित—वि० थारा प्रवाह । (जैन)

अस्टंग—देखो 'असटांग' ।

अस्ट—वि० [सं० अष्ट] आठ । —स्त्री० आठ की संख्या, ८ ।

—क—पु० आठ वस्तुओं का संग्रह । आठ छंदों का काव्य ।

—कमल—पु० हठयोग के अनुसार शरीरस्थ आठ चक्र ।

—कुल्ल—'असटकुल्ल' । —कुली—'असटकुली' । —कोण—

—पु० आठ कोण वाला क्षेत्र, भवन या कक्ष । —दल्ल—पु०

आठ दलों वाला कमल । —दिसा—स्त्री० आठ दिशाएँ ।

—द्रव्य—पु० हवन के काम आने वाले आठ पदार्थ ।

—धातु—पु० आठ मुख्य धातुएँ । —पदी—स्त्री० मकड़ी ।

आठ पदों का छंद । —भुता—स्त्री० दुग्दित्री । —मंगल—

पु० आठ मांगलिक वस्तुएँ । —मंगलिक—पु० शुभ लक्षणों

वाला घोड़ा । —मूरती—पु० जिव का एक नामान्तर ।

—वरग—पु० आठ औपधियों का समाहार । —वली—

क्रि० वि० आठों दिशाओं में । —सिद्धि, सिधि—स्त्री० योग

की आठ सिद्धियाँ ।

अस्टांग (जोग)—देखो 'असटांग' ।

अस्ताक्षर, (खर)—पु० [सं० अष्टाक्षर] आठ अक्षरों का मंत्र ।

अस्तापव—पु० १ स्वर्ण, सोना । २ मिट्टा । ३ शरभनामक गुण ।

४ मकड़ी । ५ धतूरा । ६ आदिगुरु की चार मात्रा का नाम । -वि० १ पीत, पीला । २ पीत-श्वेत ।
अस्तावक्र-पु० [सं० अष्टावक्र] एक ऋषि जिनका शरीर आठ से स्थानों से वक्र था ।
अस्टोली-एक प्रकार का रोग ।
अस्त-वि० [सं०] १ छिपा हुआ, डूबा हुआ, तिरोहित । २ हासो-मुख । ३ अदृश्य, ओभल । -पु० १ अवसान । २ पतन । ३ लोप । ४ अदर्शन । -मित-स्त्री० अस्त होने की क्रिया । -मुख-पु० कुत्ता, श्वान ।
अस्तबल-पु० घुड़शाला ।
अस्तर-पु० [फा०] १ मुख्य वस्त्र के नीचे लगने वाला वस्त्र । २ अंतरण्ट । ३ देखो 'अमतर' ।
अस्तल-देखो 'अस्थल' ।
अस्तस्व-पु० एक शुभ रंग का घोड़ा ।
अस्ताचल-पु० [सं० अस्ताचल] वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य अस्त होता है, पश्चिमाचल ।
अस्तीफो-देखो 'इस्तीफो' ।
अस्तु-अव्य० [सं०] १ तैर, अच्छा । २ चाहे जो हो । ३ ऐसा ही हो ।
अस्तुति-देखो 'अननुति' ।
अस्तेय-पु० चोरी न करना क्रिया ।
अस्त्र-पु० [सं०] १ हथियार, आशुत्र । २ देखो 'अस्तर' ।
अस्त्रकार-पु० हथियार बनाने वाला ।
अस्त्रचिकित्सा-स्त्री० शल्य चिकित्सा ।
अस्त्रसाळा-स्त्री० हथियार रखने का कक्ष । अस्त्रागार ।
अस्थिय, (स्त्री, स्त्रीय)-देखो 'स्त्री' ।
अस्थल, (छि)-पु० [सं० अस्थल] १ दाढ़ पंथियों का गुरुद्वारा या राम द्वारा । २ मैदान । ३ बुरा स्थान, कुठौर ।
अस्थानस्थनपद-पु० यौ० काव्य का एक दोष । -कि० वि० अनुचित स्थान में ।
अस्थायी-वि० [सं० अस्थायी] १ जो स्थायी न हो, अस्थिर । २ क्षणिक ।
अस्थि-स्त्री० [सं०] १ हड्डी । २ फल का छिलका या गुठली ।
—संस्कार-संस्कार-पु० हड्डियों का गंगा में विसर्जन ।
अस्थिकुंड-पु० यौ० [सं०] एक नरक का नाम ।
अस्थिर-वि० [सं०] १ जो स्थिर न हो । २ चंचल, चलावमान ।
अस्थिरा-वि० [सं०] चंचल । -स्त्री० लक्ष्मी ।
अस्पताल-देखो 'अस्पताल' ।
अस्परी-स्त्री० [सं० अस्परी] भुवनेन्द्रिय का एक रोग ।
अस्तिता-स्त्री० [सं०] पाँच प्रकार के क्लेशों में एक (ग्राह) ।

अल-पु० [सं०] १ रक्त, रुधिर । २ आंसू । -पीबणी-स्त्री० जोंक ।
अलानिक-पु० [सं० अलानिक] बलभद्र ।
अलु-पु० [सं० अलु] आंसू । -पात-आंसू गिराना, रुदन ।
अलुत-वि० [सं० अलुत] जो मुना हुआ न हो ।
अल्ली-देखो 'असली' ।
अल्लील-देखो 'असलील' । -ता= 'असलीलता' ।
अल्लेस-पु० १ श्लेषाभाव, अपरिहाम । २ श्लेषभित्त । ३ देखो 'अल्लेसा' ।
अल्लेसा-पु० [सं० अल्लेसा] २७ नक्षत्रों में से नौवां नक्षत्र ।
अल्व-पु० [सं० अल्व] १ घोड़ा, अश्व । २ सात की संख्या । -वि० १ सात । [सं० अल्व] २ गरीब, अकिंचन । -पति-पु० पुष्ट सेनापति । बादशाह । अश्विनी कुमार । -बंध-पु० एक प्रकार का चित्रकाव्य । -चल-पु० अश्वशाला । -मुख-पु० किलर । -मेघ-पु० चक्रवर्ती राजा द्वारा किया जाने वाला बड़ा यज्ञ । -रुद्ध-पु० रथ । -विद्या-स्त्री० घुड़सवारी संबंधी विद्या ।
अल्वक्राता-स्त्री० [सं० अल्वक्राता] संगीत में एक मूर्च्छना ।
अल्वत्थामा-पु० [सं० अल्वत्थामा] द्रोणाचार्य का पुत्र ।
अल्वत्थ (थ)-पु० [सं० अल्वत्थ] पीपल का पेड़ ।
अल्वनी-स्त्री० [सं० अल्वनी] १ सत्ताइस नक्षत्रों में से प्रथम नक्षत्र । २ घोड़ी । ३ सूर्य की पत्नी । -कुमार-पु० सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने गये हैं । -तात-पु० सूर्य ।
अल्वपन-पु० [सं०] १ सुर, देवता । २ यथार्थ ।
अल्वस्थ-वि० [सं०] रोगी, बीमार ।
अल्वार-देखो 'असवार' ।
अल्वालंब-पु० [सं० अल्वालंब] यज्ञोपरांत किया जाने वाला अश्व-दान ।
अल्वनी-देखो 'अल्वनी' । -कुमार= 'अल्वनी कुमार' ।
अल्वीकार-पु० [सं०] इन्कार, नामंजुरी ।
अल्वीकुमार-देखो 'अल्वनी कुमार' ।
अल्वेत-वि० [सं० अल्वेत] काला, श्याम ।
अल्व-१ देखो 'अल्व' । २ देखो 'अल' ।
अल्वणि, अल्वणी-१ देखो 'अल्वणी' । २ देखो 'अल्वणी' ।
अल्वर-देखो 'अल्वर' ।
अल्वराळ (ळ)-वि० [सं० अल्वराळ] १ भयंकर, भयानक । २ शक्तिशाली । ३ घातक । ४ बहुत । ५ चंचल, चंचल । ६ अत्रिरल, निरंतर ।
अल्वार-देखो 'अल्वार' ।
अल्वंड-सर्व० हमारे, मेरे ।

अस्ति-१ देखो 'अस्व' । २ देखो 'अस्मी' ।

अस्ती-वि० [सं० अस्तीति] सत्तर और दश का योग ।

—स्त्री० उक्त योग की संख्या, ८० ।

अहं-सर्व [सं० अहम्] मैं, स्वयं । —वि० आत्म संबंधी ।

—पुं० १ अहंकार, घमंड । २ पाप, दुष्कर्म, अपराध ।

३ विघ्न, बाधा । ४ क्रोध । ५ दुःख । —कार, कारज-पुं०

अहंकार, घमंड, गर्व । —कारण, कारिणी-वि० घमंडी,

गविना —कार तत्त्व-पुं० योद्धा । —कारी-वि० गविना ।

—वाद-पुं० शेषी, डींग । आत्मश्लाघा ।

अहंचो-पुं० १ आश्चर्य, अचंभा । २ देखो 'अंचो' ।

अहंङ-वि० [सं० अहंङि] लगड़ा ।

अहंता-स्त्री० [सं०] अहंकार, घमंड ।

अहंति, (ती)-पुं० दान ।

अहंसी-देखो 'अहंसी' ।

अह-पुं० [सं० अहन्, अहः, अहि] १ दिन । २ विष्णु । ३ सूर्य ।

४ शेषनाग । ५ सर्प । ६ राहु । ७ वृत्तामुर ।

८ हाथी । —स्त्री० ९ चोटी, वेणी । १० देखो 'आह' ।

—सर्व० यह । देखो 'अहि' । देखो 'अध' । देखो 'अय' ।

—कर-पुं० सूर्य, भानु । —काम-पुं० नियम । हुक्म ।

—कार-पुं० अहंकार । —गळी-क्रि०वि० सम्मुख सामने,

अगाड़ी । —इस-पुं० तनाव । वैमनस्य । —चल-पुं०

शेषनाग । —वि० अचल । निश्चल । —छुनो-वि० चंचल ।

—टाणो-(बो)-क्रि० पता लगाना । आहट करना ।

—वेव-पुं० शेषनाग । सूर्य । —नाण-पुं० निशान ।

चिह्न । —नाथ-पुं० शेषनाग । सूर्य । —पत, पति, पती-पुं०

सूर्य, भानु । —पंखाळ, पंखाळो-पुं० उड़ना, सर्प, पंखधारी

सर्प । —पर, पुर-पुं० नागलोक । पाताल लोक । नागौर

नगर का नाम । —प्रभु-पुं० शेषनाग । —फीण, फीन,

फेण, फेन-पुं० अफीम, अमल । सर्प के मुख की लार ।

—बेल-स्त्री० नाग लता । —मण, मणि-पुं० सूर्य ।

—मात-स्त्री० देवी, शक्ति । सर्पों की माता । —राण, राउ,

राज, राज-पुं० शेषनाग । —लोक, लोक-पुं० संसार ।

नागलोक । —वाळ-पुं० चिह्न, निशान । संकेत । वृत्तान्त,

कथा, चरित्र ।

अहक-पुं० [सं० ईहा] इच्छा, आकांक्षा, कामना ।

अहडो-वि० [अहडो] ऐमा ।

अहड-देखो 'आखेट' ।

अहत्य, अहय-पुं० [सं० अहित] अहित, अतर्क्य, बुरा काम ।

अहव-पुं० [अ०] १ वादा, प्रतिज्ञा, संकल्प । २ जासन,

राज्य । ३ एक प्रकार का राज्य कर । —दार-पुं० राज्या-

धिकारी । —नामी-पुं० प्रतिज्ञापत्र, डकार नाम ।

अहरी (घो)-वि० [अ० अहरी] १ आलसी । २ अकर्मण्य,

निष्ठलता । —पुं० वादशाही अनुचर विशेष ।

अहनाण-देखो 'ऐनाण' ।

अहनाय-क्रि० वि० [सं० अह्नाय] शीघ्र तुरन्त ।

अहनिस, (निसा, निसी)-अव्य० [सं० अहिनिष्] रात-दिन,

सदा, नित्य । लगातार, निरन्तर । —पुं० रात व दिन ।

अहम-देखो 'अधम' । देखो, 'अहं' ।

अहमक-वि० [अ०] मूर्ख, बेवकूफ ।

अहमकर, अहिमकर-पुं० [सं० अहिमकर] सूर्य, भानु ।

अहमत, (ति)-पुं० [सं० अहम्मतिः] गर्व, अहम्, अहंकार ।

अहमह-सर्व [सं० अहमस्मि] मैं । —पुं० गर्व, अहंकार ।

अहमेव-पुं० अभिमान, गर्व ।

अहर-पुं० [सं० अघर] १ अघर, होंठ । २ नीचे का होंठ ।

३ दिन । —वि० [सं० अफल] १ व्यर्थ, फिजूल ।

२ अममर्थ, बेकाम । ३ नीचे । ४ अन्य, दूसरा ।

—अळण-पुं० छप्पय छन्द का एक भेद ।

अहरण (णि)-पुं० [सं० अर्णव] १ समुद्र, सागर ।

२ देखो 'एरण' ।

अहरनिस-देखो 'अहनिम' ।

अहृ, (रु)-देखो 'ऐरु' ।

अहळ, (हु)-वि० [सं० अफल] व्यर्थ, बेकार ।

—क्रि० वि० व्यर्थ में ।

अहलकार-पुं० [फा०] कर्मचारी, कारिदा ।

अहलणी, (बी)-क्रि० हिलना-डुलना । कांपना ।

अहलमद-पुं० [अ० अहलमेद] अदालत का कर्मचारी ।

अहलाण-देखो 'ऐनाण' ।

अहला-देखो 'अहिल्या' ।

अहलाव-पुं० [सं० आह्लाद] प्रसन्नता, खुशी ।

अहली-देखो 'ऐली' ।

अहल्या-स्त्री० [सं०] गौतम ऋषि की पत्नी का नाम ।

अहव-१ देखो 'आहव' । २ देखो 'अथवा' ।

अहवानियो-वि० १ श्याम, काला । २ अभिनन्दनीय ।

—पुं० योद्धा, वीर ।

अहवात-देखो 'अहिवात' ।

अहवारिय-देखो 'अवारिये' ।

अहवाळ-पुं० [अ० हाव का बहु] १ वृत्तान्त, विवरण, हालत ।

२ चिह्न, निशान, लक्षण ।

अहवास-पुं० [सं० आवास] गफान, भवन ।

अहवि-देखो 'आहव' ।

अहवी-वि० (स्त्री० अहवी) ऐमा ।

अहसकर-पुं० [सं० आहसक] मूर्ख, बहि ।

अहसांण (न)-देखो 'एहसांन' । —संद= 'एहसांनमंद' ।
 अहह, अहा-अव्यं० आश्चर्य, खेद, दुःख के भाव प्रगट करने वाली ध्वनि ।
 अहाती-पु० [अ० अहाता] १ घेरा, अहाता । २ चहार दीवारी, प्राचीर ।
 अहार-देखो 'आहार' ।
 अहारणी, (बी)-कि० १ आहार करना । २ आचमन करना ।
 अहारा-स्त्री० अंगीठी (मेवात) ।
 अहारी-देखो 'आहारी' ।
 अहिकार-देखो 'अहंकार' ।
 अहिकारि, (री)-देखो 'अहंकारी' ।
 अहिसक-वि० [सं०] १ जो हिंसा न करे । २ जो कष्ट दायक न हो ।
 अहिंसा-स्त्री० [नं०] १ हिंसा का अभाव । २ ऐसा कार्य जिसमें किसी को कष्ट न हो ।
 अहि-पु० [सं०] १ सर्प, नाग । २ सूर्य, भानु । ३ बादल, मेघ । ४ राहु । ५ जल, पानी । ६ पृथ्वी । —स्त्री० ७ गी, गाय । ८ नाभि । ९ ठगण का छठा भेद । १० इक्कीस अक्षरों के वृत्तों का एक भेद । ११ आठ की संख्या । १२ ककैटिक नाग । १३ दिन, दिवस । —वि० १ कुटिल, दुष्ट । २ दगाबाज, योगेबाज । ३ भोगी । ४ देखो 'अह' । —कर= 'अहकर' । —क्षेत्र-पु० दक्षिण पांचाल की राजधानी । —गण-पु० सर्पगण । विष्णु । ठगण का सातवां भेद । बेलिया सांगौर का एक नाम (डिंगल) । —गति-स्त्री० सर्प चाल । —गाह-पु० गहड़ । —शिव, प्रीत-पु० शिव, महादेव । —पत, पति-पु० १ शेष नाग, यामुकि । —पिय, प्रिय-पु० चंदन । —पुर, पुराह, पुरी, पुर= 'अहपुर' । —फीण, फेण= 'अहफीण' । —बंध-पु० डिंगल का एक छंद । —बांण-पु० घोड़ों की एक जाति । —बेल-स्त्री० नाग लता । —भक, भख-पु० मोर मयूर । —मंत्री-पु० मंत्रवादी, गहड़ी । —मन-पु० चंदन । —माळी-पु० शिव । —मिरण-स्त्री० नागमणि । —मुख-पु० अशुभ घोड़ा । —सेध-पु० सर्प वज । —राट, राव-पु० शेष नाग । लक्ष्मण । —रिपु-पु० गहड़ । —लोक-अहलोक । पाताल । —लोळ-पु० समुद्र । —वल्गभ-पु० चंदन । —सुता-स्त्री० नागकन्या ।
 अहिमतजभा-स्त्री० बी० डिंगल गीत रचना का एक विध ।
 अहिडी (डी)-देखो 'आहेडी' ।
 अहिठांण देखो 'आइठांण' ।
 अहित-पु० [सं०] १ शिव का अभाव । २ अनिष्ट, अशंगत, नुकसान, क्षति । ३ शत्रुता । —वि० शत्रु, वैरी । शानिकारक ।

अहित-वि० १ अहित करने या चाहने वाला । २ शत्रु दुश्मन ।
 अहिधर, (धरण)-पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ शेष नाग ।
 अहिनांण, (नांणी)-देखो 'ऐनांण' ।
 अहिनाथ, (नाह)-पु० १ शेष नाग । ३ महादेव ।
 अहिनिस, (निसी)-देखो 'अहनिस' ।
 अहिमकर-पु० [सं०] सूर्य, रवि ।
 अहिमती, अहिमेव-देखो 'अहमत' ।
 अहिर-१ देखो 'अहीर' । २ देखो 'अहर' ।
 अहिरण-देखो 'एरणा' ।
 अहिळ-देखो 'अहळ' ।
 अहिलांण-देखो 'ऐनांण' ।
 अहिला, अहिलिक-देखो 'अहल्या' ।
 अहिवात-पु० [सं० अहिवातः] स्त्री का सौभाग्य, मधवापन ।
 अही, अहीज-वि० अर्थ, बेकार ।
 अही-पु० [सं० अहि] १ ठगण की छ मात्रा के छठे भेद का नाम । २ देखो 'अहि' —राजा, राव= 'अहिराज' ।
 अहीठांण-देखो 'आइठांण' ।
 अहीराणी-पु० [सं० अयेनुक] दूध देने वाले मवेशी का अभाव ।
 अहीवाह-सर्व० इन ।
 अहोर-पु० [सं० अहीर] १ पशु पालन व दूध दही का व्यवसाय करने वाली जाति । २ इस जाति का व्यक्ति । ३ एक मात्रिक छंद ।
 अहीवलभ-देखो 'अहिवलभ' ।
 अहीस-पु० [सं० अहीण] शेषनाग ।
 अहुड़-पु० १ युद्ध । २ टक्कर, भिड़ंत ।
 अहुटणी (बी)-कि० १ हटना । २ दूर होना, अलग होना । ३ वापस लौटना ।
 अहुटाणी (बी)-कि० १ हटाना, अलग करना । २ दूर करना । ३ वापस लौटाना ।
 अहुठ-वि० [सं० अहुठुठ] तीन और आधा, साढ़े तीन ।
 अहुड-देखो 'अहुड़' ।
 अहुडणी (बी)-कि० भिड़ना, लड़ना । युद्ध करना ।
 अहुणी-देखो 'अहंणी' ।
 अहुरमज्ज-पु० [फा०] ईश्वर का एक नाम (पारसी) ।
 अहं-मर्व० [सं० अहम्] मैं ।
 अहूठ-देखो 'अहुठ' ।
 अहूत-देखो 'अपूत' ।
 अहेड-देखो 'आयेड' ।
 अहेडी (डी)-देखो 'आहेडी' ।
 अहेडी, अहेडी-वि० ऐसा, इस तरह का । —कि० वि० अहं, इन प्रकार ।

अहेज-क्रि० वि० १ इसी समय, अभी । २ स्नेह छोड़कर ।
 अहेत-पु० १ प्रेम का अभाव । २ वैर, वैमनस्य ।
 अहेतु-पु० १ कारण या हेतु का अभाव । २ देखो 'अहितु' ।
 अहेर-देखो 'आवेष्ट' ।
 अहेवी-क्रि० वि० ऐसे । —वि० ऐसा ।
 अहेस-पु० [सं० अथ+ईश] १ गणेश, गजानन ।
 २ देखो 'अहीस' ।
 अहेसुर, (स्वर)-पु० [सं० अहि+ईश्वर, अह+ईश्वर]
 १ शेषनाग । २ सूर्य ।

अहो, अहो-देखो 'अहह' ।
 अहोड़ो-देखो 'अहड़ो' ।
 अहोणो-वि० १ असंभव । २ अयोग्य ।
 अहोनस, (निस, निसि)-देखो 'अहनिश' ।
 अहोभाग, (ग्य)-पु० अच्छा भाग्य, सीभाग्य ।
 अहोरात, (रात्रि)-क्रि० वि० अहनिश, रात दिन,
 लगातार नित्य ।
 अहोली-सर्व० (स्त्री० अहोली) हमारा, मेरा ।

—आ—

आ-पु० दर्शमाना का द्वितीय स्वर जो 'अ' का दोर्थ रूप है ।
 आ, आ-सर्व० इन, इन्होंने । —पु० [अनु०] वच्चों के
 राने का स्वर ।
 आइए-देखो 'आइए' ।
 आइणी-स्त्री० वह गाय या भैंस जो दूध देने की अवस्था
 में न हो ।
 आइणी-देखो 'अहीणी' ।
 आऊ-पु० अहंकार, गर्व ।
 आक-पु० [सं० अक] १ भाग्य, भाग्य के लेख । २ चिह्न,
 निशान । ३ पशुओं के शरीर पर दागा जाने वाला चिह्न ।
 ४ अक्षर । ५ स्वर्णकारों का औजार विशेष । ६ संख्या के
 अंक, ० से ९ तक । ७ लिखावट । ८ प्रतीक ।
 आकड़ी-स्त्री० १ पंक्ति, चरणा (पद्य) २ देखो 'आख' ।
 आकड़ी-पु० [सं० अंक+रा.प्र.ड़ी] १ आय-व्यय का लेख पत्र ।
 २ आय-व्यय की राशियां । ३ भाला । ४ चन्द्राकार
 तौर या शस्त्र । ५ देखो 'अंकोड़ी' ।
 आकणी-स्त्री [सं० अंकनिका] कविता या पद का प्रथम स्थायी
 पद जो टेक के रूप होता है, टेक ।
 आकणी-वि० अंकित करने वाला, दगने वाला । —पु० अंकित
 करने का उपकरण ।
 आकणी, (बो)-क्रि० १ अंकित करना । २ दागना । ३ चिह्न
 लगाना । ४ नाप-तौल का अनुमान लगाना । ५ जांचना,
 परखना । ७ ठहराना, निश्चित करना ।
 आकल (लस)-वि० [सं० अकल] १ अंकित किया हुआ ।
 २ दागा हुआ । ३ व्यभिचारी । ४ साहसी, वीर ।
 ५ चिह्नित । —पु० दागा हुआ या चिह्नित पशु ।

आकलणी, (बो)-देखो 'आकणी (बो)' ।
 आकवणी (बो)-देखो 'आकणी (बो)' ।
 आकस-देखो 'अंकुस' ।
 आकाणी, (बो) प्रे० क्रि० १ अंकित करना । २ दगवाना ।
 ३ चिह्न लगवाना । ४ नाप तौल का अनुमान कराना ।
 ५ जांच कराना, परखाना । ६ निश्चित कराना ।
 आकिल-वि० अंकित, चिह्नित ।
 आकुड़ी-देखो 'अंकोड़ी' ।
 आकुर-पु० [सं०] अंकुर ।
 आकुस-देखो 'अंकुस' ।
 आकूर, (कोर)-देखो 'अंकुर' ।
 आकेल-देखो 'आकल' ।
 आकोड़णी-देखो 'अंकोड़ी' ।
 आकी-पु० १ होनी, भवितव्यता । २ अंत, समाप्ति ।
 आख, आखंडी, आखंडिय, आखंडी-स्त्री० [सं० अक्षि]
 १ प्राणियों के शरीर की वह इन्द्रिय जिसमें देखने की
 शक्ति होती है । नेत्र, नयन, दृग, लोचन । २ नजर, दृष्टि ।
 ३ आलु, जमीकंद, आदि का अर्धांकुरित भाग । ४ पेड़
 पौधों का संधिस्थल । ५ ब्रॉम की अक्षि का वंशलोचन
 निकलने वाला भाग । ६ कमरे आदि यंत्रों का दर्पण युक्त
 भाग । ७ इमारती लकड़ी में गड़ने वाली अक्षि । ८ फोड़े
 का मुँह । ९ मुई का छेद । १० मोर पक्ष का चंदोवा ।
 ११ चर्म (भोट) के किनारे का छेद । १२ नाग्यल के
 मुँह पर धना गया ।

प्रांखड़ी-पु० १ कोल्ह के बेल की आंखों का दक्कन ।
 २ देखो 'प्रांख' ।
 प्रांखकूटणी, प्रांखफोड़-स्त्री० एक प्रकार की लता व उसका फल ।
 प्रांखमीचरणी-स्त्री० प्रांख-मिचौनी का खेल ।
 प्रांखरातंबर-पु० ऊंट ।
 प्रांखालाल-स्त्री० १ कमेड़ी, पंडुकी । -पु० २ ऊंट ।
 प्रांखि, प्रांखी-देखो 'प्रांख' ।
 प्रांखुड़णी, (बो)-देखो 'प्रांखड़णी' (बो) ।
 प्रांग-पु० [सं० प्रांग] शरीर, अंग ।
 प्रांगड़िपी-वि० अंगरक्षक ।
 प्रांगण, (राउ)-पु० [सं० अंगण] १ घर का भीतरी भाग, सहन,
 चौक । २ धरातल । ३ गुनाह, अपराध ।
 प्रांगणारोडावड़ी-स्त्री० दाम्नी, परिचारिका ।
 प्रांगणियी, प्रांगणी-देखो 'प्रांगण' ।
 प्रांगणी (बो)-देखो 'प्रांगमणी' (बो) ।
 प्रांगनियी-पु० स्त्रियों के कान का आभूषण ।
 प्रांगम, (रा)-पु० १ साहम । २ उत्साह । ३ शक्ति, बल ।
 ४ निश्चय । ५ काबू अधिकार । ६ विचार । ७ स्वीकृति,
 स्वीकार । -वि० दवाने वाला ।
 प्रांगमणी-स्त्री० १ अधीनता । २ पराजय । ३ अधिकार ।
 ४ देखो 'प्रांगमण' ।
 प्रांगमणी, (बो)-क्रि० [सं० अभ्यगमनम्] १ निश्चय करना ।
 २ साहस करना । ३ सहन या वरदास्त करना । ४ साध्य
 समझना, गालिब होना । ५ पराजित करना, दवाना ।
 ६ स्वीकार करना । ७ विचार करना । ८ अधिकार में
 करना ।
 प्रांगल-पु० [सं० अंगुल] १ अंगुली की मोटाई । २ अंगुली ।
 ३ आठ जब के बराबर का नाप । -वि० अंगुली की
 मोटाई के बराबर का माप ।
 प्रांगलड़ी, प्रांगली-देखो 'अंगुली' ।
 प्रांगलीमल-पु० पुनर्विवाह में स्त्री के साथ रहने वाली पूर्व
 पति की संतान ।
 प्रांगवण-देखो 'अंगमण' ।
 प्रांगवणी, (वांणी)-देखो 'अंगमणी' ।
 प्रांगस-देखो 'अंकुम' ।
 प्रांगिमिणि-देखो 'अंगमणी' ।
 प्रांगी-१ अगिया, चीली, कंचुकी । २ पुरुषों का एक पहनावा ।
 ३ जैन मूर्ति का पहनावा ।
 प्रांगीठ-देखो 'अंगीठ' ।
 प्रांगुठी-देखो 'अंगुठी' ।
 प्रांगुळ-देखो 'अंगुळ' ।

प्रांगुळी, प्रांगुळी-देखो 'अंगुळी' ।
 प्रांगू, प्रांगी-पु० १ स्वभाव, प्रकृति । २ कवच, बस्तर ।
 ३ शरीर, प्रांग । ४ कृषि कार्य में हिस्सा । ५ रूप, स्वरूप ।
 प्रांच-स्त्री० [सं० अचिप्] १ आग, अग्नि । २ आग की लौ ।
 ३ ताप, गरमी । ४ प्रकाश, तेज । ५ जोर, भार ।
 ६ कष्ट । ७ परेशानी । ८ हानि । ९ चोट, प्रहार ।
 १० भय, डर । ११ क्रोध । १२ जोश । -वि० किंचित, थोड़ा ।
 प्रांचम (बो)-देखो 'अचंभी' ।
 प्रांचल-पु० [सं० अंचल] १ उरोज, स्तन । २ देखो 'अंचल' ।
 प्रांचलणी, (बो)-क्रि० १ आच्छादित करना । २ प्रक्षालन करना ।
 प्रांचली-देखो 'अंचल' ।
 प्रांचांतांणी-वि० ऐंछाताना ।
 प्रांचं-क्रि० वि० तेज, शीघ्र, शीघ्रता से ।
 प्रांची (छो)-पु० शीघ्रता, ताकीद ।
 प्रांछ-पु० आभूषण विशेष ।
 प्रांजणी-स्त्री० प्रांख की पलकों पर होने वाली कुंसी ।
 प्रांजणी-पु० दहेज । (जाट) ।
 प्रांजणी, (बो)-क्रि० १ आंखों में अंजन लगाना ।
 २ माफ करना ।
 प्रांजली-देखो 'अंजली' ।
 प्रांजस-देखो 'अंजस' ।
 प्रांजसणी, (बो)-देखो 'अंजसणी' (बो) ।
 प्रांजुली-देखो 'अंजली' ।
 प्रांट, प्रांटड़ी-स्त्री० १ ऐंठन, तनाव । २ क्रोध । ३ शत्रुता,
 दुश्मनी । ४ हेकड़ी । ५ हठ, जिद्द । ६ कपट । ७ दांव,
 वश । ८ प्रतिज्ञा, मंकरूप । ९ मोड़, घुमाव । १० वांकुरा
 पन, वीरता । ११ घमंड, गर्व । १२ मनमुटाव ।
 १३ अंगूठा और तर्जनी के मध्य का भाग । १४ देखो 'अंट' ।
 १५ देखो 'प्रांटी' । १६ देखो 'अंटी' ।
 प्रांटण-पु० [सं० अट्टन] १ गांठ, ग्रंथि । २ ऐंठन । ३ चर्मग्रंथि ।
 प्रांटरोकोट-पु० यौ० आन-वाला वीर ।
 प्रांटल-वि० १ शत्रु, दुश्मन । २ द्वेषी । ३ नीच, दुष्ट ।
 प्रांट-सांट-स्त्री० यौ० १ गुप्त अभिसंधि, साजिश । २ मेक-जील ।
 प्रांटा-क्रि० वि० निमित्त, लिए, वास्ते । -द्वार-वि० घुमावदार,
 बक्र । लपेटदार । वीर ।
 प्रांटाघत, (तौ)-पु० (स्त्री० अंटाघती) शत्रु, दुश्मन ।
 प्रांटियौ-पु० कवच को जोड़ने की कड़ी ।
 प्रांटी-स्त्री० [सं० अंड] १ ईर्ष्या, द्वेष । २ शत्रुता, वैर ।
 ३ ऐंठन, तनाव । ४ उलझन, फंदा । ५ कुशती का एक
 दांव । -वि० १ टेढ़ी, तिरछी, बक्र । २ ऐंठनभरी ।
 ३ घुमावदार । ४ देखो 'अंटी' । -पल, पल्लो-पु० शक्ति,
 बल । वैर, शत्रुता । द्वेष । -तौ-वि० गविला, घमंडी ।

मान-मर्यादा वाला । रुठने वाला । बैर लेने वाला ।
लोपेटवार, लपेटवां । (स्त्री० आंटीली) ।

आंटी-टाटी-स्त्री० एक देशी खेल ।

आंटे. (टै)-क्रि०वि० लिगे, वाप्ते, निमित्त । बदले ।

आंटेस-देखो 'आंटीली' ।

आंटी-पु० [सं० अट्ट] (स्त्री० आंटी) १ बदला । २ जन्मृता, नैय । ३ लपेटा । ४ युद्ध । ५ घुमाव, चक्कर । ६ उलझन । ७ वंशधन । ८ कोई ऐसा पदार्थ या बात जिसके उद्देश्य से या उसके प्रति कोई कार्य या प्रक्रिया की जाती है । -वि० १ जैसा का नैसा । २ वक्र, टेढ़ा । ३ उलझन भरा । --अंबळी --वि० टेढ़ा-तिरछा । दुःखी । --टूटो, देखो-वि० टेढ़ा-मेढ़ा । जीर्ण-णीर्ण ।

आंठ-गांठ-वि० १ पूर्ण, पूरा । २ सब तरह से बढ़िया ।

आंठ-पु० १ चौपाये जानवरों के अगले पैर व छाती के जोड़ का स्थान । २ माहम, हिममत ।

आंठेव, (व)-पु० सहायक, रक्षक ।

आंठ-पु० [सं० अंड] अंडकोण ।

आंठळ-वि० १ बड़े अण्डकोण वाला । २ आलसी सुस्त ।

आंठिया-पु० अण्डकोण ।

आंठू-वि० अण्डकोण युक्त ।

आंठू-पु० करील का काला फल ।

आंण-स्त्री० [सं० आजा] १ शपथ, मौगंध । २ घोषणा दुहाई ।

३ आजा, आदेश । ४ हुकूमत । [सं० अघुना] ५ चालू यर्ग ।

६ वायु । -वि० अन्य, दूसरा । सर्व० इन, इस, यह ।

--डोण-स्त्री० दुहाई, मौगंध । --दवाई, दांण, दुआई,

दुवाई-स्त्री० दुहाई, आजा, आदेश ।

आंण-देखो 'आमण' ।

आंण-देखो 'आनन' । --पंच = 'आनन पांच' ।

आंणली. (बी)-क्रि० [सं० आनयन] १ लाना २ उपलब्ध करना ।

आंण-मांण-पु० इज्जत, मान, प्रतिष्ठा ।

आंण-स्त्री० [सं० आजा] हुकम, आदेश, आजा ।

आंणाली (बी)-प्रे०क्रि० १ मंगवाना । २ उपलब्ध कराना ।

आंणियो, आंणी-पु० १ गौता, विदाई । २ बहू को सुसराल व धेरी को मायके ले जाने का बुलावा । ३ बुलावा ।

--एडी, टांणी-मांगलिक अवसर । विवाह आदि विधेय उत्सवों का समय । --मुकळावो-पु० गौता, दिरागमन ।

आंत, आंतड़, (डो, डौ)-पु० [सं० अंत्र] १ प्राणियों के शरीर में होने वाली पेट से गुदा तक की नली, अंतड़ी, अंत्र । २ समता ।

आंतर-१ देखो 'अंतर' । २ देखो 'आंत' ।

आंतरउ-देखो 'आंतरी' ।

आंतरडी-१ देखो 'आंत' । २ देखो 'अंतर' ।

आंतरगद्दी, (गूँष, गेढी)-स्त्री० पशुओं के आंतों की बल देकर गूँथी हुई पिंडी जिसे सेंक कर खाया जाता है ।

आंतराळ-देखो 'आंत' ।

आंतरियो-१ देखो 'अति' । २ देखो 'अंतर' ।

आंतरी-देखो 'आंत' ।

आंतरे, (रे)-क्रि०वि० [सं० अन्तर] दूर, दूरी पर, परे ।

आंतरी, आंतारी, आंतरी-पु० [सं० अन्तर] १ फासला, दूरी ।

२ वियोग, विछोह । ३ द्विलम्ब । ४ देखो 'आंत' ।

आंतो-वि० तंग, हैरान, परेशान । -पु० कष्ट, दुःख ।

आंतरी-पु० कांटेदार लाल वृक्ष जिसके पत्ते बात रोग में काम आने हैं ।

आंतो-पु० पशुओं की पीठ पर लादे भार का असंतुलन ।

आंत्र, आंत्रबळ-देखो 'आंत' ।

आंधण-देखो 'आथण' ।

आंदळघोटी-देखो 'आंधळघोटी' ।

आंदळीपी, आंदळी-देखो 'आंधी' ।

आंवाउली, (हुली)-देखो 'आंवाउली' ।

आंदाझाडी-देखो 'आंधाझाडी' ।

आंदाहोळी-देखो 'आंधाउली' ।

आंदो-देखो 'आंधी' । --आंरसी = 'आंधीआरसी' । --खोपडी = 'आंधी खोपडी' । -भांडी = 'आंधा भांडी' । -डंडूळ, डंबर = 'आंधी डंडूळ' । --बाई = 'आंधी बाई' ।

आंदोळण, आंदोळन-पु० [सं० आंदोलन] १ उथल-पुथल, हलचल । २ भ्रमधाम । ३ विशेषात्मक कार्य । ४ बार-बार दिलाव-डुलाव ।

आंदोबाळी-पु० नहरुप्रा रोग जिनका कीड़ा बाहर नहीं निकलता ।

आंदो-देखो 'आंधी' ।

आंधयावणी-वि० 'अंधेरी' ।

आंधरी, आंधळ-देखो 'आंधी' ।

आंधळघोटी-पु० एक खिलाड़ी की आंखें बांधकर खेला जाने वाला एक खेल ।

आंधळियो, आंधळी-देखो 'आंधी' ।

आंधाउली-स्त्री० [सं० अंधः पूर्णा] १ लटजीरा या चिड़चिड़ा नामक क्षुप जो छितरा कर उगने वाली वनस्पति होती है वह औषधि के काम आती है ।

आंधाझाडी, आंधीझाडी-पु० अपामार्ग नामक पौधा ।

आंधाहुळी, आंधाहोळी-देखो 'आंधाउली' ।

आंधी-स्त्री० १ प्रखर व तीव्र बात चक्र जिसमें जमीन की गर्द उड़कर आकाश में छा जाती है, तूफान, अभ्यावान ।

२ ग्रंधी । —ग्रारसी-स्त्री० भुंधला दर्पण । —खोपड़ी-वि० मूर्ख, भोदू, निर्बुद्धि । —डूंडळ, डंडर-पु० वृक्षान, भंभावात । —बाई-स्त्री० नेत्रहीन स्त्री । एक बात रोग विशेष ।

ग्रंधी-वि० [सं० ग्रंध] (स्त्री० ग्रंधी) १ नेत्र हीन, दृष्टिहीन, ग्रंधा । २ विवेकहीन, अज्ञानी । ३ लापरवाह, बेपरवाह । ४ भुंधला, अस्पष्ट । —पु० वह प्राणी जिसकी ग्रंधों में ज्योति न हो । —काच-पु० भुंधला काच । —कूअरी-पु० ग्रंधवृक्ष । —संसी-पु० एक देशी सेल ।

ग्रंध्यारी-देखो 'ग्रंधारी' ।

ग्रंध्यारी-देखो 'ग्रंधारी' (स्त्री० ग्रंधियारी) ।

ग्रंध्र-पु० भारत का एक प्रान्त ।

ग्रान-स्त्री० [सं० प्राणि] १ मर्यादा, प्रतिष्ठा । २ ज्ञान-श्रौकत । ३ अद्व-लिहाज । ४ टेक, डञ्जत । ५ प्रतिज्ञा, पत्र । —वि० ग्रन्थ, दूसरा । —क-पु० नगारा, होल । मृदंग । भेरी, दुंदुभी । गरजता वादल । —ड्ड, घ-पु० नगारा, होल । —वि० मंढा हुआ, कमा हुआ ।

ग्रानन-पु० [सं० ग्रानन] चेहरा, मुख, शक्ल । —पाच-पु० सिंह, शेर । महादेव शिव ।

ग्रानाकानी-स्त्री० १ अस्वीकृति । २ टालमटोल । ३ सुनी-अनसुनी । ४ मनाही । —क्रि० वि० डधर-उधर ।

ग्रानाड़-देखो 'ग्रनड़' ।

ग्रानादेस-पु० [सं० ग्रन्थदेज] ग्रन्थ देश, विदेश, पराया देश ।

ग्रानी-कानी-क्रि० वि० डधर-उधर, मन्त्रेय ।

ग्रानुपूर्वी-स्त्री० [सं० ग्रानुपूर्वी] नाम कर्म की १४ प्रकृतियों में से एक जो अकर्मणि से जन्मांतर गमन के समय जीव को आकाश प्रदेश की श्रेणी के अनुगार गमन कराती है (जैन) ।

ग्रान्-१० इनको, इन्हें । २ देखो 'ग्रानों' ।

ग्रानिक-देखो 'ग्रमिक' ।

ग्राने-सर्व० इन्हें, इनको ।

ग्रानी-पु० [सं० ग्रानक] १ एक मिक्का जो रुपये का सोलहवां हिस्सा होता था, इकरी । २ एक मेर का सोलहवां भाग, एक तौल । छटांक ।

ग्रान्या-देखो 'ग्रान्ग' ।

ग्रान्प (ए)-सर्व० अपने ।

ग्रान्पणी, (ग्रान्पणी)-सर्व० [सं० आत्मन्] (स्त्री० ग्रान्पणी) अपना ।

ग्रान्पा-सर्व० अपने, हम ।

ग्रान्पारी-सर्व० अपना, हमारा ।

ग्रान्पे, ग्रान्पे-सर्व० हम, अपने । —क्रि० वि० स्वतः ।

ग्रान्प-देखो 'ग्राम' । —खास = 'ग्रामखाम' ।

ग्रान्पर-देखो 'ग्रंवर' ।

ग्रान्वली-देखो 'ग्रामनी' ।

ग्रान्वाड़ी-देखो 'ग्रंवाड़ी' ।

ग्रान्वाहलद, (हलदी)-स्त्री० कपूर हलदी जो औषधि में काम आती है ।

ग्रान्विल-पु० [सं० आचाम्ल] १ व्रत विशेष जिसमें रूखा-सूखा दिन में एक बार खाया जाता है । (जैन) २ रस परित्याग नामक तप का एक भेद ।

ग्रान्विल वरधमान-एक प्रकार की तपस्या । (जैन) ।

ग्रान्वीजणी, (बी)-क्रि० १ शरीर में पेंठन आना । २ पेट में विकार होना । ३ खटाई आना । ४ दांतों में खटाई बैठना । ५ कंकरीली भूमि में चलने से पैरों का सुन्न होना ।

ग्रान्वीहलद-देखो 'ग्रान्वाहलदी' ।

ग्रान्बी-पु० [सं० आम्र] १ आम का वृक्ष एवं फल । २ पुत्री की विदाई पर गाया जाने वाला लोक गीत ।

ग्रामख-देखो 'ग्रामिख' ।

ग्राम-पु० [सं० आम्र, आम] १ एक सुप्रसिद्ध रसीला एवं स्वादिष्ट फल व इसका वृक्ष । २ आमाशय का रोग । ३ अपचकृत मल, ग्राम । ४ रोग । [ग्र० ग्राम] ५ जन साधारण । ६ साधारण । —छानी-पु० दरबार ग्राम, राज सभा । —खास-पु० राज महल का भीतरी प्रकोष्ठ वह राज सभा जिसमें सब जा सके । —गोम-पु० ग्राममंजस । —जीरण-पु० अजीर्ण रोग । —रख रस-पु० आम का रस । —रसती, रसनी-पु० राजपथ, सार्वजनिक मार्ग । —चात-पु० रोग विशेष । —सूल-पु० रोग विशेष ।

ग्रामक (ख)-देखो 'ग्रामिम' ।

ग्रामटी-स्त्री० भय, आतंक, डर ।

ग्रामडणौ, (बी)-क्रि० गिटना, नष्ट होना ।

ग्रामण-दूमण (दूमणी)-वि० (स्त्री० ग्रामण-दूमणी) शिव, उदाम, विशिष्ट ।

ग्रामणा दूमणा-स्त्री० उदामीतडा ।

ग्रामणा (घ)-देखो 'ग्रामना' ।

ग्रामदां, (दानी, दांती)-स्त्री० [फा० ग्रामद] १ ग्रामदानी, आय । २ आवागमन ।

ग्रामदरफत-पु० [फा० ग्रामदरफत] आवागमन, आना-जाना ।

ग्रामना (घ)-स्त्री० [सं० ग्रामनाय] १ इच्छा कामना । २ प्रण, प्रणिजा । ३ अभ्यास । ४ पुण्य । ५ वेद, श्रुति । ६ ग्राह्य, उपनिषद् तथा आरण्यक संहिता । ७ परम्परा प्राप्त प्रचलन, कुल या राष्ट्रीय प्रथाएं । ८ परामर्श या शिक्षण ।

ग्रामने-सामने-क्रि० वि० एक दूमेरे के नामने, प्रत्यक्ष, माक्षात्, मुखानिव ।

ग्रामनी-पु० १ कोर । २ वैमनस्य । ३ पेटसात ।

श्रीमन्तो-सामन्तो-पु० परस्पर मुक्तवन्ता ।

श्रीमन्मार्ग-पु० श्रीमन् मार्ग । राज पथ ।

श्रीमन् १० [सं० श्रीमन्] १ रोग, बीमारी । २ आघात, चोट । सर्व० इनमें ।

श्रीमन्-पु० भावा । २ राज्य कर्मवागी । ३ छोटी कीज ।

श्रीमन्लण्ठो (बी)-क्रि० १ जोश बताना । २ भुजा ठोकना । ३ उत्तेजित होना ।

श्रीमन्लवांली, (वांली)-स्त्री० गुड़ मिला इमली का रस ।

श्रीमन्ली-वि० निर्मल, विमल ।

श्रीमन्ली-स्त्री० [सं० इम्लिका] १ इमली का पेड़ या फली । २ जटित मिश्रण ।

श्रीमन्सामन्ता, श्रीमन्-सामन्तो-क्रि० वि० मुख्यातिथि, प्रत्यक्ष, सामने ।

श्रीमन्जालो-श्रीमन् के कारण होने वाली बदहजमी ।

श्रीमन्स-पु० [सं० आश्रम] १ आश्रम, घर, मकान । २ आकाश । ३ आश्रम ।

श्रीमन्स-पु० [सं० आश्रम] पेट के अन्दर की वह श्रेणी जिसमें भोजन एकत्रित होकर पचता है ।

श्रीमन्स-श्रीमन्-देखो 'श्रीमन्स' । -चर, आहारी = 'श्रीमन्सचर' ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] १ हाकिम, अधिकारी । २ दक्ष, कारीगर । ३ जादू टोना करने वाला । ४ देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] मांस, गोस्त ।

—आहार, चर, हार-वि० मांसाहारी, मांस भक्षी ।

श्रीमन्स-देखो 'श्रीमन्स' (स्त्री० श्रीमन्स) ।

श्रीमन्सली, (बी)-देखो 'श्रीमन्सली' ।

श्रीमन्सली (हली)-देखो 'श्रीमन्सली' ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] १ किसी रचना की प्रस्तावना । २ देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्-देखो 'श्रीमन्' ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] १ मनोरंजन, दिल-बहुलाव । २ आनन्द, हर्ष । ३ मौरभ, सुगंध । —श्रीमन्स-पु० मनोरंजन । भोग विलास । हसी-खुशी ।

श्रीमन्स-सामन्तो-क्रि० वि० सम्मुख, सामने ।

श्रीमन्स-देखो 'श्रीमन्स' (य) ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] एक पर्वत विशेष ।

श्रीमन्स-सामन्तो, (सामा, सामन्तो)-देखो 'श्रीमन्स-सामन्तो' ।

श्रीमन्सली, श्रीमन्सली-देखो 'श्रीमन्सली' ।

श्रीमन्सली-देखो 'श्रीमन्सली' ।

श्रीमन्-पु० श्रीमन्, अश्व ।

श्रीमन्-सर्व० इनमें ।

श्रीमन्स-सर्व० (स्त्री० श्रीमन्स) इनका ।

श्रीमन्-पु० [सं० श्रीमन्] १ कच्चा व आवक मल । २ एक रोग । ३ देखो 'श्रीमन्' ।

श्रीमन्स-१ देखो 'श्रीमन्स' । २ देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-पु० १ सेना का घेरा । २ युद्ध ।

श्रीमन्स-पु० १ गर्भस्थ शिशु पर लिपटी रहने वाली झिल्ली । २ एक पीछा विशेष । ३ बैल गाड़ी के पहिये का एक उपकरण । ४ देखो 'श्रीमन्स' । —श्रीमन्स-पु० जरायु, जर । श्रीमन्सली, (बी)-क्रि० १ मरोड़ना, ऐंठना । २ घुमाना । ३ लपेटना ।

श्रीमन्स-पु० १ स्त्रियों के पैर व हाथों में धारण करने वाला सोना या चांदी का आभूषण । २ श्रीमन्स के काम आने वाला एक फल । —श्रीमन्स-स्त्री० फाल्गुन शुक्ला एकादशी । —श्रीमन्स-वि० शृंगार युक्त । सुसज्जित । योद्धा । —मन्, मी, नोमो-स्त्री० कार्तिक शुक्ला नवमी । —सार, सार गंधक-पु० माफ किया हुआ पारदर्शक गंधक ।

श्रीमन्स-स्त्री० १ गुदा की नलिका । २ देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] १ श्रीमन्स में काम आने वाला एक फल व उसका वृक्ष । २ स्त्रियों के पैरों का आभूषण । ३ बैलगाड़ी के पहिए पर बांधा जाने वाला डंडा । ४ देखो 'श्रीमन्स' (स्त्री० श्रीमन्स) ।

श्रीमन्स, श्रीमन्स-पु० कुम्हारों का, वर्तन पकाने का गड्ढा ।

श्रीमन्स-पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।

श्रीमन्स, (श्रीमन्स), श्रीमन्स-पु० [सं० अश्व] अश्व, आसू । —श्रीमन्स-स्त्री० घोड़े के नेत्र के नीचे की अशुभ भौरी ।

श्रीमन्स-देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-अव्य० नकारात्मक ध्वनि, इन्कार ।

श्रीमन्स-देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-पु० [सं०] १ शिव । २ कलावृक्ष । ३ ब्रह्मा । ४ चन्द्रमा । ५ चाणक्य । ६ पितामह । ७ हाथी । ८ घोड़ा । ९ परिश्रम । १० नेत्र । —स्त्री० ११ स्तुति । १२ लक्ष्मी । —वि० श्वेत । —क्रि० वि० १ और । २ इसको । ३ शब्दों के पूर्व लगने वाला उपसर्ग । —सर्व० यह । (स्त्री०)

श्रीमन्स-देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-पु० [सं० श्रीमन्स] आने वाला समय, भविष्य । क्रि० वि० भविष्य में, आगे से, दुबारा, फिर से । —वि० आगत्युक्त ।

श्रीमन्स-सर्व० यह । —क्रि० वि० १ इस प्रकार, ऐसे । २ देखो 'श्रीमन्स' ।

श्रीमन्स-क्रि० वि० १ आदि, इत्यादि । २ इसी प्रकार ।

श्रीमन्स-पु० वर्णमाला का 'श्री' स्वर ।

श्रीमन्स, श्रीमन्स-पु० [सं० अश्विष्ठानम्] १ हाथ या पांव की अङ्गुलियों में अधिक कांसे या रंग से मुक्त होकर पड़ने वाली चमड़ी की अस्थि, चर्मस्थि । २ चिह्न, गेकत ।

प्राइली-देखो 'आईनी' ।

प्राइयल-स्त्री० [सं० आर्या] १ देवी, दुर्गा, शक्ति । २ आवड़ देवी । ३ करणीदेवी ।

प्राइयो-अव्य० [सं० अपि] ऐ, अरे, हे ।

प्राइस-पु० [सं० आदेश] १ आदेश, आज्ञा । २ माधु, फकीर, सन्यासी । ३ आशीर्वाद । ४ आशा । देखो 'आयस' ५ देखो 'आयास' ।

प्राइसा, प्राइसु-स्त्री० १ आज्ञा । २ आयु ।

प्राईबड़ी-पु० वृक्ष विशेष ।

प्राईरी-पु० [सं० आश्रम] कच्चा मकान, कोठा ।

प्राई-स्त्री० [सं० आर्या] १ देवी, दुर्गा, शक्ति । २ करणीदेवी । ३ आवड़ देवी । ४ बिलाडा की देवी । ५ सांकल, शूखला । ६ उपमाता, धाय ७ माता, जननी ।
—सर्व० यही, यह ।

प्राईइसा-देखो 'आइइसा' ।

प्राईओ-अव्य० हे, ओ, अरे ।

प्राईड़ (ड़ी, डी)-देखो 'आहेड़ी' ।

प्राईठाण-देखो 'प्राइठाण' ।

प्राईनी-पु० [फा० आइना] १ शीजा, दर्पण । २ देखो 'अहीनी' ।

प्राईपंथ-पु० 'प्राई' देवी का सम्प्रदाय । —पंथो-पु० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी ।

प्राईरी-देखो 'आसरी' ।

प्राईवाळी-देखो, 'आहीवाळी' ।

प्राईस-१ देखो 'प्राइस' । २ देखो 'आयास' ।

प्राउ-देखो 'आयु' ।

प्राउखउ (खी)-देखो 'आवखी' (स्त्री० आउखी) ।

प्राउगळ-पु० १ वर्ण ऋतु का आगमन । २ उत्तरासाढ़ा नक्षत्र ।

प्राउगी-देखो 'आखी' । (स्त्री० आउगी) ।

प्राउज-पु० वाद्य विशेष ।

प्राउट्टमी-वि० आठवां ।

प्राउदी-देखो 'आसूरी' । (स्त्री० प्राउदी)

प्राउध-देखो 'आयुध' ।

प्राउधि-वि० ताजा, स्वस्थ । —पु० आयुध । युद्ध ।

प्राउधिक, (धोक)-वि० शस्त्र धारण करने वाला, जोड़ा ।

प्राउघी-देखो 'आसूधी' ।

प्राउपडोस-पु० आमंत्रित होकर किसी के घर का भोजन करने का दोग (जैन) ।

प्राउरवा-देखो 'आवड़वा' ।

प्राऊखाण-पु० १ भवेली का लमड़ा । २ चमड़े पर लिया जाने वाला कर ।

प्राऊ देखो 'आयु' ।

प्राऊखव, प्राऊखी-देखो, 'आवखी' ।

प्राऊठाण-देखो 'प्राइठाण' ।

प्राएड़ी-देखो 'आहेड़ी' ।

प्राकंप-पु० भय, घबराहट ।

प्राकंपणी, (बी)-कि० कंपना, घुटना ।

प्राक, प्राकड़, (डो)-पु० [सं० अक] १ आक, मंदार । २ बेलगाड़ी के थाने के नीचे लगाया जाने वाला एक अवयव । —डोडियौ-पु० 'प्राक' का डोडा ।

प्राकड़ा-काकड़ा-पु० हल्की चूचक ।

प्राकड़ियौ-पु० १ गेहूं के साथ होने वाला एवं घास । २ देखो 'प्राक' ।

प्राकर-पु० [सं०] १ खदान, खान । २ भुंड, समूह । ३ खजाना । ४ भेद, किस्म, जाति । ५ देखो 'आकर' । —ग्यान-पु० ६४ कलाओं में से एक ।

प्राकरखण-देखो 'आकरखण' ।

प्राकरखणी, (बी)-देखो 'आकरखणी (बी)' ।

प्राकरणांत-कि० वि० कान तक ।

प्राकरती-देखो 'आकती' ।

प्राकरस-पु० [सं० आकर्ष] १ खिचाव, तनाव । २ वशीकरण । ३ पास का खेल व पामा । ४ जानेन्द्रिय । ५ कमीठी ।

प्राकरसक-वि० [सं० आकर्षक] १ खींचने वाला । २ मोहने वाला । ३ मृन्दर —पु० चुम्बक पत्थर ।

प्राकरसण-पु० [सं० आकर्षण] १ खिचाव, तनाव । २ मोहने की क्षमता, मोहकता । ३ वशीकरण । ४ काम के पांच बाणों में से एक । —क्रीड़ा-स्त्री० ६४ कलाओं में एक कला ।

प्राकरसणी, (बी)-कि० १ खींचना, तानना । २ अपनी ओर आकर्षित करना । ३ केन्द्रित करना । ४ समेटना ।

प्राकरी-स्त्री० १ खान खोदने की क्रिया । २ देखो 'आकररी' । ३ देखो 'आखरी' ।

प्राकरी-वि० (स्त्री० आकरी) १ बहुत, अत्यधिक । २ असूक्ष्म, ३ खरा, जुद्ध । ४ श्रेष्ठ, उत्तम । ५ कठोर । ६ क्रूर । ७ भयंकर । ८ अप्रिय । ९ हठी, जिद्दी । १० उग्र । ११ तेज, तीव्र । १२ बहादुर । १३ महंगा ।

प्राकळ-वि० १ बुद्धिमान, मेधावी । २ देखो 'आकुल' । —वाकळ-वि० व्याकुल ।

प्राकलकरी-देखो 'अकलकरी' ।

प्राकळणी (बी)-१ युद्ध करना, भिड़ना । २ गणभना । ३ देखो 'आकुळणी' (बी) ।

प्राकवाक-वि० श्रद्धा-वक्ता, विस्मय ।

अकसमात-देखो 'अकसमात' ।

आकांक्षा-स्त्री० [सं०] अभिलाषा, इच्छा ।

आकांक्षी-वि० [सं०] इच्छुक, प्रत्याशी ।

आकाङ्क्ष-वि० १ शीघ्र में अपनी मर्चा छोड़ देने वाला ।
२ अमंजुलिन ।

आकाश-स्त्री० १ चिता की अग्नि । २ चिता । ३ शक्ति, बल ।
४ हिम्मत, साहस । ५ वीरता, शौर्य । -वि० १ भोमकाय,
प्रबल काय । २ वीर, बहादुर ।

आकार- (रौ)-पु० [सं० आकारः] १ स्वरूप । २ आकृति,
गठन । ३ टीलडोल । ४ कद । ५ बनावट । ६ ढांचा ।
७ 'आ' अक्षर । ८ गाना । ९ आह्वान, बुलावा ।
—स्थान-पु० चौमठ कलाओं में से एक ।

आकाशेठ, (रीठै)-पु० [प्रा० आकाशेठ] १ युद्ध, संग्राम ।
२ जस्त्र प्रहार । ३ जस्त्र प्रहार की ध्वनि । -वि०
१ अत्यन्त तीक्ष्ण स्वभाव वाला । २ जबरदस्त, बलवान ।

आकाळसी-स्त्री० [सं० आकालिणी] बिजली ।

आकास-पु० [सं० आकाश] १ आसमान, नभ, गगन ।
२ आकाश तत्त्व । ३ शुन्य स्थान । ४ स्थान । ५ ब्रह्म ।
६ प्रकाश । ७ स्वच्छता । ८ अश्रक । ९ सूर्य, भानु ।
—गंगा-स्त्री० आकाश में उत्तर-दक्षिण में फैला हुआ
तारा समूह । —गाड़ी-स्त्री० हवाई जहाज । —चारी-पु०
पक्षी । आकाश में विचरण करने वाला, विमान । —नदी-
स्त्री० आकाश गंगा । —बाणी, वाणी-स्त्री० देव वाणी ।
—बेल, बेल-स्त्री० अमर बेल नामक लता । —मंडळ-पु०
खगोल । —मुखी-पु० नभ की ओर मुंह करके तप करने
वाला । —लोचन-पु० ग्रहों की गति व स्थिति देखने का
स्थान । —वर्ति-स्त्री० अनिश्चित आय ।

आकासी-स्त्री० १ भूप से बचने के लिए तानी जाने वाली
चादर । २ चील । -पु० वादल, मेघ । -वि० १ आकाश
का, आकाश संबंधी । २ ईश्वरीय, दैवी । —विरत =
'आकास व्रति' ।

आकींद, आकीन-पु० [फा० यकीन] विश्वास, एतवार, यकीन ।
—वार-वि० विश्वसनीय ।

आकुळ, (ळी, ळेव)-वि० [सं० आकुल] १ व्यथ, व्याकुल ।
२ दुःखी, क्षुब्ध । ३ विह्वल, कातर । —ता-स्त्री०
व्याकुलता, घबराहट ।

आकुळणी, (बी)-क्रि० १ व्याकुल होना, विह्वल होना ।
२ दुःखी होना । ३ विह्वल होना । ४ तड़फड़ाना ।
५ क्षुब्ध होना ।

आकृत-पु० १ आज्ञा, अभिप्राय । २ भावना, इच्छा ।
३ आज्ञार्थ ।

आकेड-स्त्री० उत्तर और वायव्य कोण के मध्य (सप्तऋषि के
ग्रस्त स्थान) में चलने वाली वायु जो फसल को हानि
पहुँचाती है ।

आकेली-देखो 'एकली' ।

आकंद, (दन)-पु० १ रदन, विलाप । २ चीख, चिल्लाहट ।
३ तीक्ष्ण जब्द । ४ बुलावे की आवाज । ५ पुकार,
फरियाद । ६ युद्ध, संग्राम ।

आकन, (ति, ती) आकित, (ति, ती)-स्त्री० [सं० आकृति]
१ सूरत, शकल । २ बनावट, ढांचा । ३ गठन । ४ स्वरूप ।
५ मुख । ६ मूर्ति रूप । ७ आकार । ८ चेष्टा । ९ भाव ।
१० वाईस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त ।

आक्रम-पु० १ पराक्रम, शौर्य । शक्ति, साहस, बल ।
२ आक्रमण चढ़ाई ।

आक्रमण-पु० [सं०] १ हमला, धावा । २ सीमोल्लंघन ।

आक्रांत-वि० [सं०] १ जिस पर आक्रमण हो । २ धिरा हुआ ।
३ पराजित । ४ वशीभूत । ५ यसित । ६ दुःखी ।

आक्षेप-पु० [सं०] १ आरोप, दोष । २ अपराध । २ आपत्ति ।
४ कटु व्यंग, ताना । ५ ग्रंथ का अध्याय । ६ कोणिश,
प्रयत्न । —क-वि० आक्षेप करने या लगाने वाला ।

आखंड-पु० [सं० आखंडल] इन्द्र, सुरेश । -वि० संपूर्ण, पूर्ण ।
आखंडली-स्त्री० १ इन्द्राणी । पु० २ इन्द्र । -क्रि० वि० आगे,
आगाड़ी ।

आखड़णी, (बी)-क्रि० [सं० आखलनम्] १ ठोकर खाना ।
२ ठोकर खाकर मिरना । ३ मिरना, रखलित होना ।
४ लड़खड़ाना ।

आखड़ा-स्त्री० उदामीनता ।

आखड़ी-स्त्री० [सं० अखलिन] १ प्रतिज्ञा, प्रण । २ स्वाग ।
३ सौम्य । ४ निदान्त ।

आखराक-पु० [सं०] सूत्र ।

आखणी (बी)-क्रि० [सं० आख्यानम्] कहना, बयान करना ।

आखत-स्त्री० [सं० आख्यात] १ बयान, कथन । २ आख्यान ।
—क्रि० वि० तेजी से ।

आखती-पाखती-क्रि० वि० अगल-बगल, पार्श्व में । निकट ।

आखती-वि० [स्त्री० आखती] १ द्रुतगामी, उतावना । २ तेज,
तीव्र । ३ उग्र, क्रोधी । ४ अधीर, व्यग्र । ५ ऊँचा हुआ,
परेजान । [फा० आखता] ६ बधिया किया हुआ ।
—क्रि० वि० तीव्र, तेज ।

आखर-पु० [सं० अक्षर] १ किसी भाषा या लिपि के वर्ण,
हसक । २ अक्षर । ३ देखो 'आखिर' ४ देखो 'अखर' ।
—बंत-पु० अंतिम समय ।

आखर-हाई-आखणी-स्त्री० डाकिनी, प्रेयसी ।

आखरी-स्त्री० १ पशुओं का रात्रि विश्राम स्थान ।
 २ कूपे से पानी निकालने का समय । ३ देखो 'आखरी' ।
 आखली-स्त्री० १ पत्थर बेचने का स्थान । २ पथरीले रास्ते का गड़का ।
 आखा-पुं० [सं० अक्षत] १ मांगलिक अवसर पर काम आने वाले चावल या गेहूँ के दाने । २ भिक्षा में दिया जाने वाला अनाज । ३ अक्षय तृतीया —वि० [सं० अखिल] समस्त, सम्पूर्ण । —तीज, त्रीज-स्त्री० वैशाख शुक्ला तृतीया । उक्त तिथि को राजस्थान में मनाया, जाने वाला त्यौहार ।
 —नवमी-स्त्री० कार्तिक शुक्ला नवमी ।
 आखाई-पुं० अनेक युद्धों में विजयी होना । —वि० सम्पूर्ण ।
 आखाड़, आखाड़ी-देखो 'आखाड़ी' ।
 आखाड़मल, (मल्ल, सिद्ध सिद्ध)-देखो 'आखाड़मल' ।
 आखाड़ (ढ़)-देखो 'आमाड़' ।
 आखापाती-देखो 'आखा' ।
 आखारीठ-देखो 'आकारीठ' ।
 आखिर, (खोर)-क्रि० वि०- १ अन्त में, आखिर को, अंततः । २ अवश्य । ३ मगर । —पुं० १ अंत, समाप्ति । २ सीमा । ३ परिणाम । —वि० १ अन्तिम, पिछला । २ पीछे का ।
 —कार-क्रि० वि०- अंततः, अन्त में, खैर । अवश्य ।
 आखिरी-वि० [प्र०] १ अन्तिम । २ मंत्र से पीछे का ।
 आखी-देखो 'आखी' ।
 आखी-अणी-वि० १ अटल । २ सम्पूर्ण । ३ अग्रगण्य ।
 आखु, आखू-पुं० [सं० आखुः] १ चूहा, मूसा । २ छद्मदर । ३ सूअर । ४ चोर ।
 आखेट, (ठ), आखँट-पुं० [सं० आखेट] शिकार, मृगया ।
 —टक, टी-पुं० शिकारी ।
 आखेप-पुं० १ कटाक्ष, नजारा । २ देखो 'आक्षेप' ।
 आखी-वि० [सं० अक्षत] (स्त्री० आखी) १ अखण्ड । २ अक्षय । ३ पूरा, समूचा । —पुं० १ अन्न का दाना । २ अवधिया नर पशु ।
 आख्यान, (क)-पुं० [सं० आख्यान] १ वृत्तान्त, कथन । २ कहानी । ३ पौराणिक कथा । —वि० १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ कहा हुआ ।
 आगंतुक-वि० [सं०] १ आने वाला । २ भूला-भटका आया हुआ । ३ अकस्मात् आने वाला । ४ आकस्मिक ।
 —पुं० १ अतिथि । २ आगन्तुक व्यक्ति या प्राणी । ३ अकस्मात् होने वाला रोग ।
 आग-स्त्री० [सं० अग्नि] १ आग, ज्वाला । २ ज्वलन, ताप । ३ कामाग्नि । ४ देखो 'आघ' । —कुंड-पुं० वज्रकुंड ।
 —जंतर, जंत्र-पुं० तोप, बन्दूक । —मल्ल, माला-स्त्री० अग्नि की ज्वाला, ली । —बह-पुं० धूम्र, धुआ ।

—बोट-पुं० अग्निबोट । —मई-वि० अग्निवृत्त ।
 आगड़, आगई-क्रि० वि० आगे, अगाड़ी ।
 आगड़-पुं० चूल्हे के आगे का स्थान या धेरा ।
 आगड़दि, (दी), आगड़ै-क्रि० वि० आगाड़ी, सम्मुख ।
 आगड़ी-क्रि० वि० दूर । अलग । —पुं० १ कृष्ण पर लगी गिरी में रेम्मी से पड़ा हुआ गड़का । २ अनुमान, अन्दाज ।
 आगण-पुं० १ मार्गशीर्ष मास । २ देखो, 'आगड़' ।
 आगत-वि० [सं०] १ आया हुआ, प्राप्त । २ आने वाला । ३ उपस्थित । —स्त्री० १ सबसे पहले बोई हुई फसल । ३ देखो 'आगतरी' । —स्वागत-पुं० आने वाले का स्वाकार ।
 आगतरी-वि० (स्त्री० अगतरी) समय के कुछ पूर्व बोया गया । (अनाज)
 आगती-देखो 'आगती' (स्त्री० आगती) ।
 आगत-देखो 'आग' ।
 आगता, (न्या)-स्त्री० [सं० आज्ञा] १ आदेश, हुक्म । २ आज्ञा, ३ आज्ञात ।
 आगति, (नी)-देखो 'अगती' ।
 आगम, (स्म)-पुं० [सं० आगमः] १ आना, आगमन । २ आमदनी, अर्थार्थम । ३ भविष्य । ४ भवितव्यता, होनी । ५ शास्त्र । ६ पद मिट्टि में आया हुआ वर्ण । ७ बहतर कलाओं में से एक । ८ जन्म, उत्पत्ति । ९ वेद । १० परम्परागत सिद्धान्त । ११ ज्ञान । —वि० प्रथम, पहला ।
 —ग्यानी, जांण, जांणी-पुं० भविष्य को जानने वाला । वेदांती । शास्त्रज्ञ । —वक्ता-वि० भविष्य की कहने वाला ।
 —वांणी-स्त्री० भविष्य वाणी । वेद वाक्य । —विसट, विसटी-स्त्री० दूरदर्शिता । —सीसी-वि० दूरदर्शी, अग्रगोची ।
 आगमण (गौ), आगमन-पुं० १ आने की क्रिया या भाव, आना । २ आमद । ३ प्राप्ति ।
 आगमि, (मी)-१ देखो 'आगामी' २ देखो 'आगम' ।
 आगमियाकाळ-पुं० भविष्यकाल ।
 आगर-१ देखो 'आकर' । २ देखो 'आगार' ।
 आगरणी-स्त्री० गर्भवती स्त्री को दिया जाने वाला पोष्टिक व स्वादिष्ट भोजन ।
 आगरबंध-पुं० रोग विशेष, कंठमाला ।
 आगळ-स्त्री० [सं० अगला] १ अगला । २ रोक । —वि० १ रक्षा करने वाला, रक्षक । २ विशेष, अधिक । —क्रि० वि० अगाड़ी, सम्मुख । —कुँची-स्त्री० अगला की कुँची ।
 —छूँटी-पुं० दुमारी में काम आने वाली छूँटी ।
 आगलड, आगलड़ी-वि० (स्त्री० आगलडी) आगे का, अगला ।
 आगलणी (बी)-क्रि० जट का बदना ।
 आगळतू, (तौ)-वि० (स्त्री० आगळती) १ अधिक, आवश्यकता से अधिक, विशेष । २ व्यर्थ, किञ्चल ।

आगलसौंगी-पु० (स्त्री० आगलसौंगी) आगाड़ी लुके हुए सींगों वाला बैल ।

आगल्लि, (ली)-देखो 'आगल' ।

आगल्लियार (याळ), आगल्लिहार-वि० अगुवा, अग्रगण्य, अग्रणी ।

आगल्लू (च)-देखो 'आगल्लू' ।

आगळे, आगळे (लं)-वि० पहले के, पूर्व के । -कि० वि० आगे, आगाड़ी ।

आगळी-देखो 'आगल' (स्त्री०) ।

आगली-वि० (स्त्री० आगली) १ अगला, आगे का । २ अगुवा, अग्रगण्य । ३ विशेष, अधिक । ४ दूसरा, अन्य, अपर । ५ पूर्व का, पूर्व जन्म का । ६ विगत, पुराना । ७ आगामी । -कि० वि० सामने, सम्मुख ।

आगवण-देखो 'आगवण' ।

आगवी-देखो 'अगुवो' ।

आगस-पु० १ अग्नि, आग । २ दोष, अपराध ।

आगस्त, आगस्ति-देखो 'अगस्त' ।

आगह-कि० वि० पहले, पूर्व ।

आगमि, (मी)-वि० [सं० आगमिन्] १ आगे आने वाला । २ भविष्य में होने वाला ।

आगाळ-पु० मेना का अग्र भाग, हरावन । -वि० १ आगाड़ी का, प्रथम । २ अग्रिम ।

आगाड़ी-देखो 'अगाड़ी' ।

आगाज-पु० १ कोध, रोष । -स्त्री० २ गर्जना ध्वनि ।

आगा-पाछी-स्त्री० १ कुगली । २ निन्दा । ३ परस्पर भिड़ाने की बात ।

आगार-पु० [सं०] १ आवासस्थान, घर । २ स्थल, स्थान । ३ लजाना । ४ भण्डार । ५ छूट (जैन) ।

आगाली-वि० (स्त्री० आगाली) १ आगे का, अगला । २ अधिक, विशेष ।

आगासि, (सी)-१ देखो 'आकास' । २ देखो 'आकासी' ।

आगाहट, (ठ)-पु० [सं० अघात्य] चारणों की जागीरी के गांव ।

आगि-कि० वि० १ आगे, आगाड़ी । २ पड़ने पूर्व । ३ देखो 'आग' ।

आगिना-देखो 'आग्या' ।

आगिमि, (मी)-देखो 'आगामी' ।

आगियो पु० १ जुगद्ध । २ एक तांत्रिक मंत्र । ३ छोटे बच्चों का एक रोग । ४ एक प्रकार का पशुओं का रोग । ५ एक प्रकार की घास ।

आगिली-देखो 'आगली' । (स्त्री० आगली) ।

आगी-वि० १ कटुपनी, रजस्वला । २ देखो 'आगी' । -वांछ -वि० अग्रगण्य, नेता ।

आगीपाछ, आगीपाछी-देखो 'आगापाछी' ।

आगूच-कि० वि० १ पहले से, पूर्व में । २ अग्रिम, पेशगी ।

आगू-कि० वि० १ पहले से, पेशगी । २ आगाड़ी । -वि० मार्ग दिखाने वाला, अगुवा । -कथ-स्त्री० भविष्यवाणी ।

आगूत, (ती)-कि० वि० १ आगे, आगाड़ी । २ अग्रिम । ३ सामने ।

आगूतै-कि० वि० आगे की ओर, आगाड़ी ।

आगे (गै)-कि० वि० आगाड़ी, आगे । भविष्य में, सामने । बाद में । -वांछ-वि० अग्रगण्य । नेता ।

आगेटी-स्त्री० १ सेकने या तापने की धीमी अग्नि । २ देखो 'अंगीटी' ।

आगेतर-पु० १ पहला जन्म, पूर्वजन्म । २ भविष्य में होने वाला जन्म ।

आगेर-स्त्री० १ जलाशय के आस-पास की पड़नी भूमि जिसके वृक्षादि काटे नहीं जाते । २ जलाशय या खेत की परिसीमा । ३ मारंगी में ठाठ की ओर से पहिला तार ।

आगी-देखो 'आघी' ।

आगीकटिणी-पु० वेपार । वेमन का कार्य ।

आगी-पाछी-कि० वि० १ उधर-उधर । २ कभी आगे कभी पीछे । ३ हस्तान्तरण । ४ देखो 'आगीपीछी' ।

आगीपीछी-पु० १ जरीर या वस्तु का अगला या पिछला भाग । २ आगे पीछे का विचार ।

आगीलग, (सगा)-कि० वि० १ निरन्तर, लगातार । २ बराबर । ३ क्रमशः ।

आग्या-स्त्री० [सं० आजा] १ आदेश, हुक्म । २ अनुमति, स्वीकृति । ३ शासन । ४ आदेश-पत्र । -कारी-वि० आदेश का पालन करने वाला । -चक्र-पु० योग के आठ चक्रों में से छठा । -पत्र-पु० आदेश-पत्र ।

आगह-पु० [सं०] १ अनुरोध, मनुहार । २ हठ, जिद्द । ३ तत्परता ।

आगाज-स्त्री० जोज पूर्ण आवाज । गर्जना ।

आगाजणी, (वी)-कि० गर्जना करना, दहाड़ना ।

आघ (घि)-पु० [सं० अघ] १ मान, प्रतिष्ठा । २ आदर, सत्कार । ३ देखो 'अघ' । -उ-देखो 'प्रापी' । -रत-पु० आदर, सत्कार ।

आघज, आघड़ी-देखो 'आघी' । (स्त्री० आघड़ी) ।

आघण-देखो 'आगण' । २ देखो 'आगड़' ।

आघती-देखो 'आघती' (स्त्री० आघती) ।

आघमण (णौ, न, नौ)-वि० १ अग्रणी । २ उदारचित्त । ३ उसाह युक्त । ४ स्वानत करने वाला । ५ देखो 'आगमण' ।

आघसणी (वी)-कि० अग्रिम करना, धमना ।

आघसतड़ी-देखो 'अगस्त' ।

आघांगुण, (घुण)-पुं० भौरा, अमर ।

आघात-पुं० [सं०] १ प्रहार, चोट । २ आक्रमण, हमला, वार ।
३ धक्का, टक्कर । ४ दुःख, कष्ट । ५ ध्वनि । -वि०
भयंकर । -क-वि० चोट पहुंचाने वाला, घातक ।

आघार-पुं० [सं०] १ घी, घृत । २ छिड़काव । ३ हवि ।
४ हवि-मंत्र ।

आघाहट-देखो 'आगाहट' ।

आघेरी-वि० (स्त्री० आघेरी) दूर ।

आघं-देखो 'आमं' ।

आघी-वि० (स्त्री० आघी) १ आगे, आगाड़ी । २ दूर, फासले
पर । ३ पृथक, अलग, । ४ परे ।

आघ्राण-स्त्री० १ गंध, महक । २ गंध ग्रहण । ३ सूंघना,
वास लेना क्रिया ।

आघ्रात-पुं० [सं०] ग्रहण का एक भेद ।

आङ्ग-पुं० १ वर्षा-आगमन के पूर्व की उमस, गर्मी । २ वर्षा
के लक्षण ।

आङ्ग-स्त्री० अन्य व्यापारी का माल अपने स्तर पर बेचने
का कार्य । दलाली । २ उक्त कार्य में मिलने वाला
कमीशन । ३ पुराने समय का एक लगान । ४ गरज,
आवश्यकता, मतलब ।

आङ्गित्यो-पुं० आङ्ग का कार्य करने वाला व्यापारी । दलाल ।

आङ्गजीत-पुं० देखो, 'आङ्गजीत' ।

आङ्गी-स्त्री० १ बराबर को जोड़ी, युग्म । २ तबला या मृदंग
बजाने का ढंग । २ कलह, लड़ाई । -गारौ-वि० कलह-
प्रिय । भगड़ालू । -बाळ-वि० बराबर का ।
समान । समवयस्क ।

आङ्गू-वि० १ उड़, वदमाश । २ अड़ियल । ३ हठी, जिद्दी ।
४ उज्जड़, गवार, असम्य । -पुं० १ एक प्रकार का फल ।
२ एक प्रकार का पत्थर जो सवारा नहीं जा सकता है ।

आङ्गू-पाङ्गू-वि० १ अगल-बगल में, इधर-उधर ।
आस-पास, निकट ।

आङ्गोस-पाङ्गोस-पुं० अगल बगल के घर, स्थान आदि ।

आङ्गोसो-पाङ्गोसो-वि० अङ्गोस-पाङ्गोस में रहने वाला ।

आङ्गो-पुं० १ हठ, जिद्द । २ बालहठ । ३ किसी वस्तु के लिए
बराबर रुदन । ४ युद्ध । ५ चमड़ा साफ करने वालों से
लिया जाने वाला कर । ६ मवेशी खेत में घुमने पर लिया
जाने वाला दण्ड ।

आचंत-वि० आशयमान, सुशोभित -क्रि० वि० है ।

आच-पुं० १ हाथ, हस्त । २ समुद्र, सागर । -गळ, गळी-
देखो 'आचागळ' । -प्रभव-पुं० शत्रिय, राजपूत ।
-मण-आचमन' ।

आचमणौ (बौ)-क्रि० १ भोजन के बाद हाथ धोना, कुल्ला
करना, आचमन करना । २ भक्षण करना ।

आचमन, (न्)-पुं० [सं० आचमनम्] १ भोजनोपरांत जल से
हाथ-मुंह की सफाई, आचमन । २ अनुष्ठान या पूजन के
प्रारम्भ में दाहिनी हथेली से जलपान ।

आचमनी-स्त्री० पूजा का छोटा चम्मच जिससे आचमन करते
तथा चरखामृत आदि देते हैं ।

आचरज-पुं० १ आश्चर्य, विस्मय । २ आचार्य ।

आचरण-पुं० [सं० आचरणम्] १ व्यवहार, बर्ताव । २ चाल-
चलन । ३ आचार-विचार । ४ रीति-नीति ।
५ चिह्न, लक्षण ।

आचरणी (बौ)-क्रि० १ व्यवहार या बर्ताव करना । २ विचार
करना । ३ भक्षण करना, खाना । ४ उपयोग करना ।
५ आचमन करना ।

आचवणौ (बौ)-क्रि० आचमन करना ।

आचवन-देखो 'आचमन' ।

आचार-पुं० [सं०] १ व्यवहार, बर्ताव । २ चरित्र । ३ रीति
रिवाज । ४ सदाचार, शील । ५ स्नान । ६ आचमन ।
७ दान-पुण्य । ८ नियम । ९ लक्षण । १० शुद्धि ।
११ धार्मिक नियमों उप-नियमों का पालन करना (जैन) ।
१२ देखो 'अचार' । -गळ-गळी-देखो 'आचागळ' । -वान-
वि० सदाचारी, शीलवान । पवित्रता रखने वाला ।

आचारज-पुं० [सं० आचार्य] १ गुरु, आचार्य, पंडित, विद्वान ।
२ शुक्राचार्य । ३ कवि । ४ मृतक के पीछे कर्म कराने
वाला । ५ उपाधि विशेष । ६ पुरोहित ।

आचारजी-स्त्री० १ आचार्य । २ आचार्य का काम ।

आचारणौ (बौ)-देखो 'आचरणी' (बौ) ।

आचार-विचार-पुं० [सं०] १ सोचना-तमकना । २ विवेक ।
३ सद्भाव, चरित्र । ४ व्यवहार । ५ शौच ।

आचारवेदी-पुं० [सं०] भारतवर्ष ।

आचारहीण-वि० आचरण-अष्ट । अचरित्रवान ।

आचारि-देखो 'आचार' ।

आचारिज-देखो 'आचारज' ।

आचारौ, (क)-वि० [सं० आचारित्] १ आचारवान् ।
२ शास्त्रानुगामी । ३ चतुर, दक्ष । ४ चरित्रवान । ५ समान,
तुल्य । ६ दातार, उदार ।

आची, (चू)-देखो 'आच' ।

आचूगळ-देखो 'आचूगळ' ।

आच्छादन-पुं० [सं०] १ ढकना, ढाकना । २ छप्पर ।
३ आवरण । ४ वस्त्र, कपड़ा ।

आच्छी-देखो 'आळी' (स्त्री० आळी) ।

प्राछंटणी

(५८)

प्राप्ति

प्राछंटणी (बौ)-क्रि० १ डर फैकना । २ छिटकाना ।

३ पछाड़ना । ४ प्रहार करना । ५ टकराना ।

प्राछ-स्त्री० छाछ या नकके ऊपर आने वाला पीला पानी ।

प्राछइ, (ई)-देखो 'प्राछइ' ।

प्राछउ-देखो 'प्राछौ' ।

प्राछट-स्त्री० १ सटका, धक्का । २ पछाड़ । ३ आघात, चोट ।

-क्रि०वि० तीव्र वेग से ।

प्राछंटणी (बौ)-देखो 'प्राछंटणी' ।

प्राछण(णी)-देखो 'प्राछ' ।

प्राछत-स्त्री० [सं० प्राच्छत] छिप कर रहने का भाव ।

-क्रि०वि० होने हुए ।

प्राछत-क्रि०वि० [सं० प्राचत] पास, निकट ।

प्राछयो-देखो 'प्राछौ' ।

प्राछावृत्त (क्ष)-क्रि०वि० अचानक, अकस्मात् ।

प्राछाव, (दित)-वि० [सं० प्राच्छादित] १ ढका हुआ ।

२ आवृत । ३ छिपा हुआ, तिरोहित ।

प्राछावणी (बौ)-क्रि० १ ढकना । आवृत करना । २ छिपाना ।

३ छा देना ।

प्राछी-स्त्री० १ भलाई, अच्छाई । २ आवड़ देवी की बहिन ।

३ ज्वार नामक अन्न । ४ देखो 'प्राछी' । —सिल-वि०
स्फटिक मिला । स्फटिक मणि ।

प्राछेली-वि० (स्त्री० प्राछेली) श्रेष्ठ उत्तम, अच्छा ।

प्राछोड़ी-स्त्री० १ वालू रेत । २ चीनी शक्कर । ३ ज्वार ।

४ देखो 'प्राछी' ।

प्राछोड़ी, प्राछी-वि० [सं० अच्छ] १ अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ ।

२ गुन्दर । ३ पवित्र, शुद्ध । ४ स्वस्थ, निरोग । ५ ज्वेत,
मफेद ।

प्राज क्रि०वि० [सं० अय, प्रा० अयज] १ जो दिन वर्तमान है,

नित्य, वर्तमान में । २ अय । —पु० [सं० प्राजि] १ भूत ।
२ युद्ध । कल, काल क्रि०वि० इन दिनों, इस समय ।

जुगाद क्रि०वि० परम्परा से ।

प्राजगव देखो 'अजगव' ।

प्राजगम-क्रि०वि० [सं०] जीवतपर्यन्त, आजीवन ।

प्राजमखानौ-पु० एक राजकीय विभाग विशेष ।

प्राजमाइस-स्त्री० [फा० प्राजमाइस] परीक्षा, जांच, परख ।

प्राजमाणी (बौ), प्राजमावणी (बौ)-क्रि० परखना, परीक्षण
करना । काम लेकर देखना ।

प्राजजू-क्रि०वि० आज तक, अब तक ।

प्राजान, प्राजानु-वि० [सं० प्राजानु] १ जांच या पढ़ने तक
लेवा । २ आजानवाह । —देव-पु० सृष्टि के आदि
देवता । —कर, करग, बांह, बाहु, वाहू, भुज-पु० जानु तक
लंबी बस्ती वाला, विज्ञानवाह ।

प्राजाजीत-वि० [सं० प्राज्यजित] १ अजेय, अपराजित ।

२ बलवान, शक्तिशाली । ३ उत्पत्ति करने वाला, उद्भूत ।
४ चंचल ।

प्राजाद-वि० [फा०] १ स्वतन्त्र, मुक्त । २ उन्मुक्त, मस्त ।

३ निडर, निर्भय । ४ स्पष्ट वक्ता । ५ सूकी फकीर ।

प्राजावगी, प्राजावी-स्त्री० [फा०] १ स्वतंत्रता, स्वाधीनता ।

२ मुक्ति । ३ छूट ।

प्राजानेय-पु० घोड़ों की एक श्रेष्ठ जाति व इस जाति का घोड़ा ।

प्राजार-पु० [फा० प्राजार] १ रोग, बीमारी, व्याधि ।

२ लक्षण, चिह्न ।

प्राजि-पु० [सं० प्राजि] १ लड़ाई, युद्ध । २ गति, गमन ।

३ धी, दृढ़ । ४ देखो 'प्राज' ।

प्राजिज-वि० [अ०] १ वित्त, नम्र । २ दीन । ३ हैरान ।

प्राजिजी-स्त्री० [अ०] १ नम्रता । २ दीनता । ३ हैरानी ।

प्राजी-देखो 'प्राजि' ।

प्राजीजी-देखो 'प्राजिजी' ।

प्राजीवका, (विका)प्राजीका-स्त्री० [सं०प्राजीविका] १ रोजगार,

रोजी । २ जीवन का सहारा । ३ जागीर ।

प्राजीवन-क्रि०वि० [सं०] जीवन पर्यन्त, जीवन भर ।

प्राजुत-पु० [सं० प्रायुत] दश हजार की संख्या ।

-वि० दश हजार ।

प्राजूणी, (जूणी)-वि० (स्त्री० प्राजूणी, प्राजूणी) आज का ।

-क्रि०वि० जीवन पर्यन्त ।

प्राजू-पु० बेगार । बिना आय का श्रम । -क्रि०वि० अभी तक ।

प्राजूणई-वि० आज का, नवीन । -क्रि०वि० आज ।

प्राजूषाजू-क्रि०वि० आस-पास, अगल-बगल ।

प्राजे-क्रि०वि० आज ही, आज से ।

प्राजी-पु० १ बल, पीछा । २ साहस, हिम्मत । ३ आत्मबल ।

४ विश्वास, भरोसा । ५ सहारा । ६ आश्विन शुक्ला
प्रतिपदा को दोहित्र द्वारा सम्पन्न किया जाने वाला नाना-
नामी की श्राद्ध ।

प्राजीकी-वि० आज का ।

प्राजीली-स्त्री० जलपी लकड़ी से किया जाने वाला प्रकाश ।

प्राज्यस्थाळी-स्त्री० एक यज्ञ-पात्र ।

प्राशा-स्त्री० इच्छा, कामना ।

प्रासाड़ी-वि० १ काटने वाला, मारने वाला । २ योद्धा, वीर ।

प्रासाळ-स्त्री० [सं० ज्वाला] आग की लपट, ज्वाला ।

प्रासाळी-वि० (स्त्री० प्रासाळी) १ वीर बहादुर । २ जोशीला ।

३ तेजस्वी, ज्वालयमान । ४ मार-काट करने वाला ।

प्रासी-पु० १ साहस, उत्साह, जोश । २ शक्ति, बल, पराक्रम ।

३ दीप, कलंक । -वि० १ निकटतम, धनिष्ठ । २ बहुत
गहरा । ३ उदार ।

आठ-देखो 'आठिका' ।

आठइयो, आठइयो-देखो 'आठी' ।

आठपाटां, आठपांटां-क्रि० वि० १ दोनों किमियों से ऊपर होकर भरपूर अवस्था में (नदी) । २ ओत-प्रोत ।

आठबाट (बाट, बाटां)-क्रि० वि० उधर-उधर ।

आठियो-देखो 'आठी' ।

आठो-स्त्री० १ सूत की गुंथी । २ वेणी । ३ वेणी की डोरी ।
—बंद-पुं० रहट की माला का एक बंध ।

आठोड़ियो, आठी-पुं० १ अनाज का पिमा हुआ नुर्गा, 'बूत', पिसान । २ नुर्गा, बुकनी । —साठो-पुं० वस्तु विनिमय । बदला-दखनी ।

आठ (क) वि० [सं० अष्ट] सात और एक का योग । —स्त्री० उक्त योग की संख्या, ८ । —आंठो-स्त्री० पचास वैसे का मिकता । —क-वि० आठ के बराबर, लगभग । —करम-पुं० आठ प्रकार के कर्म (जैन) । —ब्रजन-पुं० ब्रह्मा, बिरचि । —पग-पुं० बिहू । मकड़ी । अष्टापद । —पुहूर, पौहूर-क्रि० [सं० अष्ट प्रहर, दिन-रात, हर समय ।

आठकि-पुं० प्रहार, आघात ।

आठम, (मि, मी)-स्त्री० अष्टमी तिथि ।

आठपों (पों)-वि० (स्त्री० आठपों, लीं) सात के बाद वाला, आठवा ।

आठपाट-वि० लपटा ।

आठांजाम-क्रि० वि० [सं० अष्ट-याम] आठ प्रहर, हर समय ।

आठांनो-देखो 'आठप्रांनी' ।

आठां-पौहूर-देखो 'आठपौहूर' ।

आठभुजा-स्त्री० [सं० अष्ट + भुजा] १ देवी, दुर्गा, पार्वती ।
२ आठ भुजा वाली ।

आठियो-पुं० १ अंठ पर कसी जाने वाली बड़ी मुंह की बंदूक ।
२ छोटी बंदूक ।

आठी-स्त्री० १ आठ चिह्नों वाला ताश का पत्ता ।
२ देखो 'आठी' ।

आठू-वि० [सं० अष्ट] आठों हो ।

आठूजाम-देखो 'आठांजाम' ।

आठूपहर-देखो 'आठपौहूर' ।

आठूवला-क्रि० वि० आठों दिशाओं में, सब तरफ ।

आठूवेला-क्रि० वि० हर समय ।

आठी-पुं० [सं० अष्ट] १ आठ का अंक । २ आठ की संख्या का वर्ग । ३ आठ सूटी वाला ताश का पत्ता ।

आठंभी-पुं० बैतपाड़ी का चमड़े का नाड़ा ।

आठंबर-पुं० [सं०] १ डोंग, पाखंड । २ दिमावा, बनावटी पन । ३ मजाकट, अंगार । ४ संसीर आवाज दर्जित ।

५ तुरही की आवाज । ६ अभिमान, मद । ७ रोप, क्रोध । ८ हर्ष, खुशी । ९ तड़क-भड़क । १० तंबू । ११ युद्ध बाद्य । १२ युद्ध की घोषणा । १३ ललकार । १४ हाथियों की चिंघाड़ । १५ तैपारी ।

आठंबरी-वि० [सं०] आठंबर करने वाला, डोंगी, पाखंडी ।

आड, (ई)-स्त्री० १ ओट, सहारा । २ पगदा । ३ रोक, बाधा । ४ नीमा, हृदय ५ आश्रय, गढ़रा, मदद । ६ बढाना । ७ आशा । ८ लम्बी टिकली । ९ स्त्रियों का कंठा भूषण । १० मस्तक का आडा तिलक । ११ रक्षा, शरण । १२ आधार । १३ तालाब में पानी आने की छोटी कच्ची गहर । १४ बतख । १५ सेतु । १६ पाल । १७ केसर या चंदन का तिलक । १८ महायक । १९ संन्यासियों का कमर बंध । २० फलगा में लगाई जाने वाली पड़ी सीधी लकड़ी । —क्रि० वि० ओर, तरफ । —पलांण, पिलांण-पुं० अंठ पर दोनों पैर एक ओर करके बैठने का ढंग ।

आड झौया (फा)-स्त्री० उच्छ्वन कूद ।

आडण, (सी)-स्त्री० १ डाल । २ आड । ३ अन्तर पर । ४ जुझा की आजी, दाव । ५ चार पाये वाला चौकोर आसन, छोटा तख्त, चौकी । ६ पहेली ।

आडणो (बी)-क्रि० १ जुझा में दाव लगाना ।

२ देखा अरझाणा (बी) ।

आडन देखा 'आडण' ।

आडनियो-देखो 'आडनियो' ।

आडबंद, (बंध)-पुं० १ लंगोटी । २ कटिवंध या कोपीर की चस्सी ३ दुन्हे की लालपणड़ी पर बांधा जाने वाला सफेद वस्त्र (भांभी) ।

आडबाहुर-वि० १ हृदय तोड़ने वाला । २ अपने आप को रोकने वाला ।

आडबली-पुं० [सं० अर्बुदावलि] अगवली पर्वत माला ।

आडवाही-वि० सम्मुख, सामने ।

आडागिर (रि)-पुं० विधवाचन पर्वत ।

आडाबीताळी-पुं० १४ मायाओं की एक ताल ।

आडाजीत-वि० धीर, बहादुर, शक्तिशाली ।

आडाडंबर-देखो 'आडंबर' ।

आडापती-स्त्री० [सं० अगला] १ किवाड़ के पीछे लगने वाली आड़ी लकड़ी, अगला, ब्यांडा । २ कपाट । ३ अवरोध । ४ कपौल । ५ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय दिखने वाले बादल । ६ तालवार ।

आडावळ (ळी)-देखो 'आडवळी' ।

आडि-१ देखो 'आड' । २ देखो 'आठी' ।

आडिया-काठिया-वि० बाधक ।

प्राडियो-पु० १ सामान लादने समय गाड़ी के आगे लगाया जाने वाला डंडा । २ एक प्रकार का आरा । ३ बांह से नाक पीछे की क्रिया या भाव । —वि० समान, बराबर ।

प्राडो-स्त्री० १ पहेली । २ धरातल के साथ लम्बाई । ३ देखो 'आड' । ४ देखो 'आडी' । ५ देखो 'आड़ी' ।

—प्राडो-वि० समस्त, सम्पूर्ण । —टांग-स्त्री० रास्ता रोकने या चलने हुए को गिराने हेतु लगाई जाने वाली पांव की रोक, लसी । २ बाधा, विघ्न । —धार-स्त्री० तलवार की धार । —माड-स्त्री० गांव की सरहद की समस्त कृषि भूमि । उस भूमि में होने वाली एक सी फसल ।

—लीक, लोह-वि० हद से ज्यादा, असीम ।

प्राडियो देखो 'प्राडियो' ।

प्राडू पु० १ लकड़ी या पत्थर चीरने का लोहे का बड़ा औजार ।

२ छट्टे-मीटे स्वादवाला एक प्रकार का फल ।

—कि० वि० सम्मुख, आगे ।

प्राडेग्रिक-वि० वेहद, अपार ।

प्राडेकट-क्रि० वि० १ आम लोगों के लिए । २ आम तौर पर ।

—वि० समस्त, सम्पूर्ण ।

प्राडेखंडे-वि० १ निर्विधि, खुला । २ स्वतन्त्र । ३ विरुद्ध ।

—कि० वि० बेरोक-टोक ।

प्राडेछाज-पु० गुप्त से अनाज साफ करने की क्रिया विशेष ।

प्राडेकरे-पु० मैदाने दीबे या गहाड़ का मध्य भाग ।

प्राडेग्रिक-देखो 'प्राडेग्रिक' ।

प्राडोवली-देखो 'प्राडवली' ।

प्राडोस-पाडोस-प्राडोस-पाडोस' ।

प्राडोहल्लणी (बौ)-कि० १ मदद करना । २ विरुद्ध चलना ।

प्राडो-वि० (स्त्री० प्राडो) १ विरुद्ध, विमुख । २ चौड़ाई के

आर-पार । ३ सम्मुख, सामने । ४ महायक, मददगार ।

५ शक । ६ रोकने वाला, बाधक । ७ धरातर के

गमानांतर । —पु० १ द्वार, दरवाजा । २ कपाट,

हिंदाड़ । ३ आट, परदा । ४ जयन । ५ निदायुक्त कविता ।

६ रोक । —क्रि० वि० बीच में, मध्य में । प्रंवली-क्रि०

वि० प्रवर-उप्रवर । जैसे-तैसे । —वि० देहा । —तिरछा ।

प्राडि, प्राडो-क्रि० वि० रक्षावट डालने हुए । —खेमटी-पु०

भुगंद की तरह माचीय ताल —घंस=प्राडो मारण ।

—चौताली डेकी-पु० एक ताल । —मारण-पु० प्राणों के

समाधानार्थ दाईं-बाईं ओर का मार्ग ।

प्राडित देखो 'प्राडित' ।

प्राडित्तिथी-देखो 'प्राडित्तिथी' ।

प्राणंद-पु० [सं० आनन्द] १ हर्ष, मृगी । २ मनोरंजन, आमोद-

प्रमोद । ३ उत्साह । ४ विष्णु, ईश्वर । ५ 'धितिया नागोर'

का एक भेद । ६ एक वार्षिक छंद । ७ प्रथम ढंगण के भेद

का नाम । —उद्भवन-पु० वीर्य । —कंद-पु० ईश्वर,

विष्णु । —कर, कारी-वि० सुखकर, हर्षप्रद । —घण-पु०

ईश्वर । श्रीकृष्ण । श्रीविष्णु । —निध, निधी-पु०

ईश्वर । आनन्द का सागर ।

प्राणंदणी-वि० आनन्द देने वाला ।

प्राणंदणी (बौ)-क्रि० आनन्दित होना, हर्षित होना ।

प्राणंदित-वि० [सं० आनन्दित] हर्षित, प्रसन्न ।

प्राण-देखो 'प्राण' ।

प्राणी, (बौ)-क्रि० १ आना, आगमन होना । २ उपस्थित

होना । ३ जन्मना, अवतरित होना । ४ प्राप्त होना ।

५ लौटना । ६ जानना, समझना । ७ किसी कार्य की क्रिया

याद होना । ८ सीख लेना ।

प्रातंक, (ख, ग)-पु० [सं० प्रातंक] १ भय, डर । २ प्रभाव,

रौब । ३ तनाव जोश । ४ उपद्रव । ५ वेग । ६ क्रोध,

गुस्सा । ७ गेग, पीड़ा ।

प्रातंकरी-वि० भयानक, डरावना, प्रातंकित करने वाला ।

प्रातंगी-पु० यमराज ।

प्रात-देखो 'प्रात' ।

प्रातणी-स्त्री० १ पुजारिन । २ देखो 'प्राथणी' ।

प्रातताई, (तायी)-वि० [सं० प्राततायी] १ अत्याचार करने

वाला, मत्ताने वाला । २ क्रूर शासक । ३ हत्यारा ।

४ दुष्ट, अत्याचारी । —पु० डाकू ।

प्रातप-पु० [सं०] १ धूप, धाम । २ गर्मी, उष्णता । ३ प्रकाश ।

४ आंच, ताप । ५ ज्वर । —वारण-पु० छत्र, चंबर, छाजा ।

प्रातपत्र-पु० [सं०] १ छत्र, चंबर । २ छतरी ।

प्रातम-पु० [सं० आत्मन्] १ आत्मा । २ अंधकार, अज्ञान ।

३ मन । ४ अहंकार । ५ बर्मा । ६ स्वभाव । ७ बुद्धि, चित ।

८ संसार । ९ परमात्मा । १० ब्रह्म । ११ जीव ।

[सं० आत्मज] १२ संतान । —वि० निजी, अपना । आत्म,

स्वकीय । —ग्यान्-पु० जीव और ब्रह्म के विषय में

जानकारी, ज्ञान । गत्यज्ञान । —ग्यानी-पु० आत्म ज्ञानी,

कृषि, ज्ञानी । —घात-स्त्री० आत्महत्या । —घातक,

घाती-वि० आत्महत्या करने वाला । —ज, जात-पु०

पुत्र, लड़का । कामदेव । अधिर । शरीर । —जोणी-पु०

ब्रह्म । विष्णु । शिव । कामदेव । आत्मज्ञान । —तपण-

—पु० स्वार्थी का त्याग । —दरस, दरसण-पु० मार्गाधि

द्वारा आत्मा व परमात्मा का दर्शन, जीणा, दर्शन ।

—दोही-वि० स्वयं को कष्ट देने वाला । —भू, भू-वि०

स्वतःउत्पन्न, स्वयंभू । —पु० ब्रह्मा । विष्णु । कामदेव ।

पुत्र । —राम-पु० परमात्मा । आत्मज्ञान व पुत्र धोना ।

जीव । ब्रह्मा । तोता । —सर्व० स्वयं, खुद । —विद्या—स्त्री०
आत्म या अध्यात्म विद्या । ब्रह्म विद्या । —समुद्भव—
पु० श्रद्धा । विष्णु । शिव । कामदेव । —साक्षी—पु० जीव
द्रष्टा । —सिद्ध—वि० विना प्रयास से होने वाला । स्वयं
सिद्ध । —सिद्धि—स्त्री० मुक्ति । —हृत्पा—स्त्री० खुदकुशी ।
आमता—स्त्री० आत्मा । —आनंद—पु० आत्म ज्ञान का सुख ।
—राम—पु० खुद, स्वयं ।
आतमासी—स्त्री० मछली, मीन ।
आत्मिक—वि० [सं० आत्मिक] आत्मा संबंधी । मानसिक ।
आत्मीय—वि० [सं० आत्मीय] १ निजी, अपना । २ अंतरंग,
घनिष्ठ । ३ आत्मा का, आत्मा संबंधी । —पु० मजदूरी की
रिश्तेदार ।
आतर—देखो 'आतुर' ।
आतरणी (बी)—क्रि० निकालना, बाहर करना ।
आतलीबल—देखो 'प्रतिबल' ।
आतली—वि० (स्त्री० आतली) दुष्ट, आततायी ।
आतस (स्स)—स्त्री० [फा० आतश] १ अग्नि, आग । २ गर्मी
उष्णता । ३ ओध गुस्सा । ४ सूर्यमुखी । ५ आतिशबाजी ।
६ तोप, बन्दूक । —क—स्त्री० फिरंगरोग । —खान्ती—पु०
अग्नि का भण्डार । आतिशबाजी का भण्डार । —बाज—पु०
बारूद के पटाखे बनाने वाला । —बाजी—स्त्री० बारूद के
पटाखे । —फूज—पु० सूर्यमुखी का फूल ।
आतसी—वि० [फा० आतशी] १ अग्नि संबंधी । २ अग्नि-उत्पादक ।
आताप—देखो 'आतप' ।
आतापना—स्त्री० १ धूप में बैठकर तपस्या करना, तपना ।
२ धूप में बैठना क्रिया । (जैन)
आतापी—स्त्री० [सं० आतापित्] १ चील पक्षी । २ एक असुर ।
आतापूँजी, आतापोती (पोथी)—देखो 'आथापूँजी' ।
आताळ, (ळी)—वि० [सं० उत्तान] १ शीघ्रगामी, तेज ।
२ उतावला । ३ आतुर, व्यग्र । ४ तेज मिजाज । ५ भयंकर ।
—क्रि० वि० तेजी से ।
आतिथ, (थ्य) आतीथ—पु० [सं० आतिथ्य] अतिथि सत्कार,
मेहमानदारी ।
आतिम, (मि)—देखो 'आनमा' ।
आतुर—वि० [सं० आतुर] १ व्याकुल, अधीर । २ घबराया
हुआ, उद्विग्न । ३ उत्कंठा युक्त । ४ घाबरा । ५ उतावला ।
६ उत्सुक । ७ दुःखी, कान्तर । ८ रोगी । ९ निर्बल, कमजोर ।
१० अस्थिर । —क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी । —ता—स्त्री०
अप्रीयता । दयाराहित । उत्सुकता । दुःख कान्तरता, रोमारी ।
कमजोरी । शीघ्रता ।
आतुराई—स्त्री० अशीयता ।

आत्तोताइयो, (तायो)—देखो 'अतोतायो' (स्त्री० आत्तोतायी)
आत्मज—पु० [सं०] १ पुत्र । २ कामदेव । ३ रुधिर ।
आत्मिक—वि० [सं०] आत्मा संबंधी, मानसिक ।
आथ—पु० [सं० अर्थ] १ दौलत, द्रव्य, धन । २ आशय,
मतलब । ३ सुधार, कुम्हार, नाई आदि जातियों को वर्ष
भर के कार्य के बदले किसानों द्वारा दिया जाने वाला
अनाज ।
आथड़णी (बी)—क्रि० १ युद्ध करना, लड़ना । २ भिड़ना,
टक्कर लेना । ३ संघर्ष करना । ४ लड़खड़ाता ।
५ अंधाधुंध चलना । ६ उमड़ना ।
आथल—स्त्री० [सं० अस्तमन्] १ संध्या, सांझ । २ निवास
स्थान, घर ।
आथलली—वि० (स्त्री० आथलली) संध्य संबंधी, सायंकालका ।
आथली—स्त्री० १ दूध जमाने का पात्र । २ देखो 'आथल' ।
आथध—पु० लगान, कर ।
आथमंग, (मंग, मणी, रौं)—स्त्री० [सं० अस्तमन्] १ पश्चिम
दिशा । २ सायंकाल, संध्या । ३ अस्त होने की क्रिया ।
आथमण्ण्यो—वि० १ अस्त होने वाला । २ पश्चिम दिशा का ।
आथमणी (बी), आथमणी (बी) आथमणी (बी)—क्रि०
[सं० अस्तमन्] १ अस्त होना, तिरोहित होना । २ अबसान
होना । ३ समाप्त होना । ४ लोप होना ।
आथमंगल—देखो 'आथमंग' ।
आथमंगी—वि० द्रव्य का उपभोग करने वाला ।
आथर (रिपौ)—स्त्री० [सं० आस्तर] १ सदी से बचाव के लिये
मवेशियों की पीठ पर डाला जाने वाला वस्त्र । २ जीन के
नीचे देने का वस्त्र । ३ चादर । ४ बिछोना ।
आथवण—देखो 'आथमंग' ।
आथवणी (बी)—देखो 'आथमणी' (बी) ।
आथांग, (णि, णी)—पु० [सं० स्थानम्] १ स्थान, जगह ।
२ नगर, शहर । ३ घर । ४ गढ़ किला । ५ सिंह की मांद ।
६ राजधानी । ७ पश्चिम दिशा ।
आथापूँजी, (पोती) स्त्री० १ जमीन, जायदाद । २ सम्पूर्ण
सम्पत्ति । ३ घर का सामान । ४ वैभव, ऐश्वर्य ।
आथिभुक—पु० मोनी ।
आथिमणी, (बी)—देखो 'आथमणी' (बी) ।
आथोड़ो-साथोड़ो—पु० दोस्त, मित्र आदि ।
आथीत—देखो 'आतिथ' ।
आथुड़णी (बी)—देखो 'आथड़णी' (बी) ।
आथुण—१ देखो 'आपूँण' । २ देखो 'आथांग' ।
आथुस—पु० लोहा ।
आधूँण, आधूँणी—स्त्री० पश्चिम दिशा । —क्रि० वि०
पश्चिम की ओर ।

आधूण, (णीं)-क्रि० वि० पश्चिम की ओर ।

आधू-पु० 'आध' के बदले कृपक का कार्य करने वाला व्यक्ति ।

आधूण-देखो 'आधूण' ।

आथोमण, (मणीं)-वि० प्रयोजन वाला ।

आदंत-क्रि० वि० [सं० आद्यंत] प्रारम्भ से अन्त तक । —वि०
आदि तथा अन्त ।

आदंतर-देखो 'आदंतर' ।

आद-१ देखो 'आदा' । २ देखो 'आदि' । ३ देखो 'इत्यादि' ।

आदक-वि० [सं० आदिक] १ आदि, प्रथम । २ प्रारम्भ
का, मूलका । ३ नितान्त । —पु० एक प्रकार का रोग ।
—आदक-श्रवण इत्यादि ।

आदकवि (कवी)-देखो 'आदिकवि' ।

आदजथा-स्त्री० डिगल भीमों की रचना का एक नियम ।

आदजुगाद, (दि, सी)-देखो 'आदिजुगाद' ।

आदण-पु० [सं० अदहन] दाल, चावल आदि पकाने के
निम्न गर्म किया जाने वाला पानी ।

आदत, (ति)-स्त्री० [अ०] १ स्वभाव, प्रकृति ।
२ अभ्यास । ३ देव ।

आदतिया, आदत्या-पु० [सं० आदित्य] देवता ।

आददे-क्रि० वि० आदि, इत्यादि ।

आदपंखणी, (चक्रेश्वरी)-स्त्री० राठीडों की कुल देवी ।

आदपण्ड, आदमपण्ड-पु० [सं० आदिपण्ड] कृष्ण पञ्च ।

आदपुरख, (रस)-देखो 'आदिपुरख' (स) ।

आदम-पु० [अ०] १ मानव सृष्टि का आदि पुरुष । २ मनु ।
३ महादेव । —चरम-पु० मनुष्य की सी आंखों
वाला घोड़ा ।

आदमी-पु० [अ०] (स्त्री० आदमण) १ आदम की संतान,
मनुष्य, मानव । २ पति । ३ मजदूर ।

आदर-पु० [सं०] १ सम्मान, इज्जत । २ आस्था, श्रद्धा ।
३ स्तकार, शिष्टाचार ।

आदरणी (वौ)-क्रि० १ सम्मान व इज्जत करना । २ स्तकार
करना । ३ श्रद्धा रखना । ४ महत्व देना । ५ स्वीकार
करना । ६ निश्चय करना, बढ़ करना । ७ प्रारम्भ करना ।

आदरस-पु० [सं० आदर्श] १ दर्पण, शीशा । २ अनुसरणीय
कार्य । ३ नमूना ।

आदरा (रियो)-देखो 'आदा' ।

आदली-स्त्री० [अ० अदल] न्याय, इन्साफ ।

आदवराह-देखो 'आदिवराह' ।

आदसगत-देखो 'आदियासगत' ।

आदान-पु० [सं० आदान] ग्रहण, स्वीकार । —प्रदान-पु०
परस्पर लेन-देन । वस्तु विनिमय ।

आदाब-पु० [अ०] १ नियम, कायदा । २ लिहाज, इज्जत ।

३ अभिवादन । —अरज-पु० निवेदन ।

आदासीसी-देखो 'आपासीसी' ।

आदि-वि० [सं०] १ प्रथम, पहला । २ प्रारम्भ का ।
३ विष्णु, निर्माता ४ मूल अग्र । —पु० १ उत्पत्ति स्थान ।
२ प्रारम्भ । ३ बुनियाद । ४ मूलकारण ५ ईश्वर ।
६ पृथ्वी । —अध्य० इत्यादि । बगैरह ।

आदिकवि पु० [सं०] वात्सीकि ऋषि जिन्होंने सर्व प्रथम
छंदोवद्ध काव्य की रचना की थी । २ गुणाचार्य ।

आदिकारण-पु० [सं०] मूलकारण, पूर्वनिश्चित बात ।

आदिजुगाद (दि)-क्रि० वि० सृष्टि के प्रारम्भ से अंत तक ।

आदित, (दित्त, दित्य)-पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य । २ इन्द्रादिक
देवता । ३ द्वादश आदित्यः ४ विष्णु का पांचवां अवतार ।
—पुत्र, पुत्र पु० अदिति पुत्र, देवता । सूर्यपुत्र । मग
आह्वण । —वार-पु० रविवार ।

आदिपण्ड, (ख)-देखो 'आदपण्ड' ।

आदिपुरुख, (पुरुष)-पु० [सं० आदिपुरुष] १ विष्णु, ईश्वर ।
२ ब्रह्मा ।

आदिम-देखो 'आदम' ।

आदियासगत, आदियासगत (ती)-स्त्री० [सं० आद्यशक्ति]
१ दुर्गा, देवी । २ पार्वती ।

आदिपाठ, आदिपौ-देखो 'आधिपौ' ।

आदिरस-देखो 'आदरस' ।

आदित-वि० [अ०] १ उदार । २ न्यायी ।

आदिवराह-पु० [सं०] १ विष्णु का बराह अवतार । २ शूकर,
सूअर ।

आदिविपुला-स्त्री० आर्या छन्द का एक भेद ।

आदिसराध-पु० [सं० आदिश्राद्ध] मृत्योपरान्त मृतक के पीछे
ग्यारहवें दिन किया जाने वाला श्राद्ध ।

आदी-वि० [अ०] १ अभ्यस्त । २ आदत वाला । ३ देखो 'आदि' ।

आदीत, आदीता (ती)-देखो 'आदित' ।

आदीश्वर-पु० [सं० आदीश्वर] १ जैतियों के प्रथम तीर्थंकर ।
२ ईश्वर । ३ आदि पुरुष ।

आदू-वि० [सं० आदि] १ प्रारम्भका, आदिकावक । २ बुनियादी ।
—खण-वि० निर्दोष, स्वच्छ ।

आदूणी-वि० [स्त्री० आदूणी] परम्परागत ।

आदूणी-पु० 'ऋद्धिवादी' ।

आदूण, (पणीं)-पु० शुक्रमान, आदि ।

आदेस (ति)-पु० [सं० आदेश] १ आज्ञा, हुक्म । २ उपदेश ।
३ नमस्कार, प्रणाम । ४ निर्देश । ५ ग्रंथों का फल ।
६ अर्थ परिवर्तन । (व्याकरण)

प्रादेशिक, (बौ)—क्रि० १ आजा देना । २ अभिवादन करना ।
 प्राधोड़ी—देखो 'प्राधोड़ी' ।
 प्रादोत—देखो 'प्रादित' ।
 प्राधोकर—देखो 'प्रदकर' ।
 प्राधो—पु० [सं० अद्रक] १ कच्ची सोंठ, अदरक । २ देखो 'प्राधो' ।
 प्राद—वि० [सं० आद्र] १ गीला, नम । २ हरा ।
 —क—पु० भय, आतंक ।
 प्राद्रकणी, (बौ)—क्रि० भयभीत होना, डरना ।
 प्राधा—स्त्री० [सं० आद्रा] सताईस नक्षत्रों में से एक, इस नक्षत्र में होने का मृत्यु का समय ।
 प्राधतर, (तरि, हर)—वि० १ आकाश के मध्य का । २ बीच का ।
 ३ आधा, अर्द्ध । —क्रि० वि० १ बीच में, मध्य में । २ ऊँचाई पर । ३ आकाश में । —पु० १ आकाश । २ सुमेरु पर्वत ।
 प्राध—पु० [सं० अर्द्ध] १ ठीक आधा हिस्सा, भाग या अंश । २ आधी सम्पत्ति या आय का हक । [सं० आधि] ३ चित्त, व्यथा । —वि० आधा । —ख—पु० प्रभुत्व, अधिकार ।
 —खड़—पु० अघेड़ । —पति, पती—पु० अधिपति, राजा ।
 —रत्त, रत्ति—स्त्री० अर्धरात्रि ।
 प्राधल—देखो 'प्रादल' ।
 प्राधम—देखो 'अधम' ।
 प्राधमी—स्त्री० १ उपज का आधा भाग कृषक व आधा मालिक को, इस शर्त पर की जाने वाली खेती । २ आधे मूल्य पर व पालने के लिए सौंपा जाने वाला पशु ।
 प्राधरं—क्रि० वि० धीरे, आहिस्ता ।
 प्राधान पु० [सं० आधान] १ गर्भाधान, गर्भ । २ स्थापना, रखाव । ३ गिरवी, रहेन । —वती—स्त्री० गर्भवती ।
 प्राधाईक—वि० आधा, अर्द्ध । आधे के लगभग ।
 प्राधाकम्म, प्राधाकरम्म—पु० भिक्षाचार संबंधी ४७ दोषों में से प्रथम दोष जो गृहस्थ की तरफ से लगता है ।
 प्राधाकरमी—वि० आधाकरम्म दोष युक्त ।
 प्राधार—पु० [सं०] १ आश्रय, अवलंब । २ मूलाधार ।
 ३ बुनियाद । ४ उपाय, तरकीब । ५ सहारा, मदद । ६ बांध । ७ नहर । ८ योग के अनुसार मूलाधार । ९ अधिकरण कारक । —वि० आश्रय दाता ।
 प्राधारणी (बौ)—क्रि० १ सहारा व आश्रय देना । २ उठाना । ३ लगाना । ४ सम्हालना । ५ सहारा देकर रखना । ६ धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाना ।
 प्राधारि, (री)—वि० सहारे पर रहने वाला । आश्रित ।
 प्राधासी, प्राधासीसी—स्त्री० [सं० अर्द्ध] जीर्ण आधे सिर की पीड़ा, अधकपाली । मूर्खवृत्त ।
 प्राधि—स्त्री० [सं०] १ मानसिक पीड़ा । २ विपत्ति, बाधा । ३ चिन्ता, जोक ।

प्राधिपत्य—पु० अधिकार, स्वामित्व ।
 प्राधिप्री, (प्री)—पु० आधे अंश का भागीदार ।
 प्राधिदेव, (देव, दैविक)—वि० [सं० आधिदैविक] १ देवता की प्रेरणा से होने वाला । २ प्राक्क से होने वाला । ३ प्रेत बाधा से उत्पन्न । ४ प्राकृतिक । ५ स्वभाव बल कृत ।
 —स्त्री० उक्त सभी कारणों से उत्पन्न विपत्ति ।
 प्राधिमूतक, (भूतग, भौतिक)—पु० [सं० आधिभौतिक] भौतिक कारणों से उत्पन्न संकट ।
 प्राधियाळ, प्राधियाळी, प्राधियाळी—१ आधा हिस्सा या भाग । २ देखो 'प्राधिमौ' ।
 प्राधी—वि० [सं० अर्द्ध] १ अपूर्ण । २ देखो 'प्राधो' ।
 —स्त्री० १ अर्ध रात्रि । २ देखो 'प्राधि' ।
 प्राधीन—देखो 'अधीन' ।
 प्राधीनता, प्राधीनी—देखो 'अधीनता' ।
 प्राधीनी—पु० १ उपज का आधा भाग । २ आधा अंश । ३ आधे भाग की मलिकपत ।
 प्राधीरात—स्त्री० अर्द्धरात्रि ।
 प्राधुनिक—वि० [सं०] वर्तमान, नवीन ।
 प्राधु—वि० आधे हिस्से के लिए कार्य करने वाला ।
 प्राधुप्राध—देखो 'प्राधोप्राध' ।
 प्राधुअऊखे—क्रि० वि० प्राधी कीमत में ।
 प्राधेटी—पु० दूरी या संवाई का मध्य भाग । मध्य स्थान ।
 प्राधेयं—क्रि० वि० आधे हिस्से की बुनियाद पर ।
 प्राधेय—वि० किसी आधार पर टिकी हुई ।
 प्राधोप्राध, (प्राधि)—देखो 'प्राधोप्राध' ।
 प्राधोक, प्राधोकेक—वि० आधे के लगभग ।
 प्राधोड़ी—स्त्री० मृत गाय या भैंस का साफ किया हुआ आधा चमड़ा ।
 प्राधोकर, (करई, करी)—देखो 'अदकर' ।
 प्राधोफेर—पु० १ छुज्जा । २ डालू, जमीन । ३. उपत्विका ।
 —क्रि० वि० पृथ्वी-आकाश के बीच बहुत ऊँचाई पर ।
 प्राधोरण—पु० [सं०] महावत ।
 प्राधोळी—स्त्री० १ लकड़ी की गोलाई देखने का उपकरण । २ देखो 'प्राधोड़ी' ।
 प्राधोसलं—क्रि० वि० आर-पार ।
 प्राधी—वि० [सं० अर्द्ध] (स्त्री० प्राधी) १ आधा, अर्द्ध । २ अपूर्ण ।
 —पु० आधा भाग या हिस्सा । —आध, आधि—क्रि० वि० बराबर दो भागों में । —मती—वि० धिा हुआ हुआ, कायर, डरपोक ।
 प्राधमान, प्राधमान—पु० [सं० अधमान] एक बात सोच, आकरा ।
 प्राध्यात्मिक—वि० [सं०] १ आत्मा संबंधी । २ ब्रह्म और जीव संबंधी ।

आनंद, (दी)-पु० [सं० आनंद] १ हर्ष, खुशी, प्रसन्नता ।
२ सुख । ३ मस्ती । ४ उत्साह । ५ फलित ज्योतिष का एक
योग । --कव-पु० ईश्वर । श्रीकृष्ण । --दत्त, दाता-
वि० आनन्ददायक । --स्त्री० प्रसन्नता । --बघाई-स्त्री०
मांगलिक उत्सव । --भैरव-पु० एक रसोपधि । --भैरवी-
स्त्री० एक गणिनी । --मदिरासण-पु० चौगामी आसनों
में से एक ।

आप सर्व० [सं० आत्मन, अप] १ स्वयं खुद । २ तुम और वह का
आदर गुरुक । --पु० जल, पानी । --कर्मो-वि० भाग्यशाली,
स्वकर्मी । --गरजी-वि० स्वार्थी । --घात-पु० आत्म
हत्या । --घाती-वि० आत्म हत्या । --च-स्त्री०
आत्म हत्या । --चफ-स्त्री० घबराहट, बेचैनी, भय ।

आपना-स्त्री० [सं०] नदी, सरिता ।

आपड़णी (बी)-क्रि० १ पकड़ना । २ दौड़कर पहुंचना ।

आपड़णी (बी)-प्रे० क्रि० पकड़ना ।

आपण-स्त्री० [सं०] १ दुकान, ह्राट । २ बाजार । --पु०
[सं० अपण] ३ अद्वा पूर्वक दान । --सर्व० [सं० आत्मन]
अपना, अपने अपन ।

आपणउ सर्व० अपना ।

आपणडी-वि० (स्त्री० आपणडी) अपने वाला ।

आपणपू (पी)-पु० अपनत्व, भक्तत्व ।

आपणा (पे)-सर्व० अपने, अपना ।

आपणाणी (बी), आपणावणी (बी)-क्रि० १ अपनाना, स्वीकार
करना । २ अधिकार में करना ।

आपणयो-वि० अप्रण करने वाला ।

आपणी-सर्व (स्त्री० आपणि, आपणी) अपना, हमारा ।

आपणी (बी)-क्रि० १ देना । २ अप्रण करना, भेंट करना ।
३ ह्वम देना । ४ धारण करना ।

आपत-क्रि० वि० आपस में, परस्पर । --स्त्री० [सं० आपति]
नकट, विपत्ति, कष्ट । --हार, हारी वि०-विपत्ति व
भय का हरण करने वाला ।

आपताप, (ताब) देखो 'आफताब' ।

आपती-सर्व० अपने, स्वयं । आप ।

आपति स्त्री० [सं०] १ विपत्ति, संकट । २ दुःख, क्लेश ।
३ विघ्न, बाधा । ४ दोषारोपण । ५ ऐतराज, उज्ज ।
६ दुर्गति, दुर्दशा कष्ट काय ।

आपथी-आप-सर्व० अपने-आप, स्वयं ।

आपद-देखो 'आपति' ।

आपडत-पु० दत्तात्रेय मुनि ।

आपदवित-वि० [सं० आपादग्रस्त] विपत्ति में फंसा हुआ ।

आपदा स्त्री० आपत । अडुचन ।

आपद्वरम-पु० आपात्कालीन धर्म ।

आपनामी-वि० [सं० आत्मन्, नाम्न] अपने नाम से प्रसिद्धि प्राप्त
करने वाला, लब्ध प्रतिष्ठित ।

आपन्न-वि० [सं०] १ प्राप्त, उत्पन्न । २ गिरा हुआ ।
३ आपाद् ग्रस्त ।

आपपर, आपबीच-क्रि० वि० आपस में, परस्पर ।

आपपत्नी-वि० सतर्क, सचेत ।

आपमल (ली)-वि० [सं० आत्ममल] १ अपनी इच्छा से कार्य
करने वाला । २ स्वतंत्र । ३ थोड़ा, वीर ।

आपमाहै-क्रि० वि० परस्पर, आपस में ।

आपमुरादो, (दी), आपरंगी-वि० १ स्वेच्छाचारी । २ स्वतंत्र,
आजाद । ३ अपने हल में मस्त ।

आपरूप-वि० मूर्तिमान, साक्षात् ।

आपरोळ-स्त्री० सहज स्वभाव, मस्ती ।

आपस-पु० १ परस्पर । २ निज संबंध, नाता । ३ भाई चारा ।
४ साथ । ५ अत्यधिक धन । ६ गुम्मा ।

आपसवारथी, आपस्वारथी-वि० अपनी स्वार्थ सिद्धि में तत्पर ।

आपहनामी-देखो 'आपनामी' ।

आपहमली-देखो 'आपमली' ।

आपा-सर्व० हम ।

आपाण-पु० [सं० आ+प्राण] १ शक्ति, बल, माहम ।
२ अपनापन । --वि० उत्पन्न, मस्त ।

आपाणी-वि० बलवान, शक्तिशाली, पराक्रमी । --सर्व० अपनी ।

आपाणौ-सर्व० (स्त्री० आपाणी) अपना ।

आपान-वि० १ उत्पन्न, मस्त । २ देखो 'अपान' ।

आपाउपेहर, (री)-वि० १ अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य करने
वाला । २ जोशीला । ३ सवेग, तीव्र ।

आपापंथी-वि० १ कुमार्गी । २ स्वार्थी । ३ मनमानी करने वाला ।

आपापणी-पु० अपनत्व ।

आपावली-वि० शक्तिशाली, अपार बली ।

आपायत, (तो, ती)-वि० [न० आप्यायित] १ बलवान,
शक्तिशाली । २ सहर्मी । ३ वीर बहादुर । ४ असंयत,
असंयमी । ५ स्वेच्छाचारी । ६ उद्दंड । ७ अदम्य । ८ दुष्ट ।

आपाळणी, (बी)-क्रि० १ टकराना । २ देखो 'आफळणी' ।

आपित-स्त्री० [सं० अप्पित] अप्पित, आग ।

आपुपा-वि० अपने आप, स्वतः कार्य करने वाला ।

आपूआप, आपे, आपेज, आपै-सर्व० अपने आप, स्वतः ।

आपेटणकी-वि० (स्त्री० आपेटणी) बलवान, वीर ।

आपोआप, आपोपै-क्रि० वि० अपने आप, स्वतः ।

आपोपरि-क्रि० वि० परस्पर, आपस में ।

प्रापी-पु० १ स्वत्व । २ अस्थित्व । ३ अपना असली रूप ।
४ अपनी मता । ५ प्राप्ता । ६ ब्रह्म । ७ भरोसा,
विश्वास । ८ अहंकार, गर्व । ९ जोश । १० होश-हवास ।
११ शक्तियल । १२ अवतार । —प्राप-सर्व० अपने आप
स्वतः ।

प्राप्त-वि० [सं०] १ प्राप्त । २ किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता,
कुशल । ३ विश्वस्त । ४ पूर्ण तत्त्वज्ञ का कहा हुआ
प्रामाणिक । —पु० ऋषि ।

प्राप्त-स्त्री० [अ०] १ विपत्ति, संकट । २ परेशानी, उलझन ।
३ दुःख, कष्ट । ४ बाधा, रुकावट ।

प्राफताब-पु० [फा०] सूर्य ।

प्राफताबगिरी-स्त्री० एक प्रकार का राज्य छत्र, सूरजमुखी ।

प्राफताबो-वि० १ सूर्य संबंधी । २ कांतिमान, चमकीला ।
—पु० पान के आकार का पंखा जिस पर सूर्य का चिह्न हो ।

प्राफरणी, (बी)-क्रि० १ वायु प्रकोप से पेट फूलना । आफरा
ग्राना । २ सूजन ग्राना ।

प्राफरीबाव (बाव)-पु० धन्यवाद, साधुवाद ।

प्राफरी-पु० [सं० आस्फार] १ पेट का वायु प्रकोप, आफा,
गैम । २ अजीर्ण ।

प्राफल-स्त्री० १ प्रयत्न, कोशिश । २ युक्ति उपाय ।

प्राफलणी, (बी)-क्रि० [सं० आस्फारणम्] १ श्रम करना,
परिश्रम करना । २ प्रयत्न करना, प्रयास करना । ३ चेष्टा
करना । ४ तड़फना । ५ हैरान होना, तंग होना ।
६ टक्कर लेना, भिड़ना । ७ लड़ना । ८ तेजी से चलाना ।

प्राकू-पु० अफीम, अमल ।

प्राकूआफे, प्राफेई, प्राफे-क्रि० वि० अपने-आप, स्वतः ।

प्राफ्रीबाव-देखो 'आफरीबाव' ।

प्राचंद, (चंद)-स्त्री० आमइनी, आय ।

प्राब-पु० [फा०] १ पानी, जल । २ चमक आभा, कान्ति ।
३ शोभा, रौनक, छवि । ४ प्रतिष्ठा, मान । ५ तलवार की
चमक का पानी । ६ शराब । —कार-पु० शराब का व्यापारी,
कलान । —कारो-स्त्री० शराब का व्यवसाय । इस
व्यवसाय पर निगरानी रखने वाला विभाग । —खोरी-पु०
जल पात्र । —दार-वि० चमकीला । कान्तिमान । —पु०
तोपों की देखभाल करने वाला । पानी पिलाने वाला
नौकर ।

प्राबइली, (बी)-क्रि० १ परिश्रम करना । २ युद्ध करना ।
३ टक्कर लेना ।

प्राबइछेट (छोट)-देखो 'आमइछेट' ।

प्राबदारखानो-पु० १ पेयजल कक्ष या स्थान । २ महाराजा या
राजा के पेयजल के प्रबंध का विभाग ।

प्राबध-देखो 'प्रायुष' ।

प्राबनूस-पु० [फा०] एक प्रकार का जंगली वृक्ष ।

प्राबनूसी-वि० १ काला । २ प्राबनूस की लकड़ी का ।

प्राबपासी-स्त्री० सिचाई ।

प्राबरत-देखो 'प्रावरत' ।

प्राबरी-वि० प्रतिष्ठित ।

प्राबह (ह)-स्त्री० [फा०] इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । —बार-
वि० इज्जतदार, प्रतिष्ठित ।

प्राबल-स्त्री० [सं० बल] शक्ति, बल, सामर्थ्य । —बायरी-
वि० अशक्त, कमजोर ।

प्राबहवा-स्त्री० [फा०] जलवायु, मौसम ।

प्राबाद-वि० [फा०] १ बसा हुआ । २ प्रसन्न, खुश ।
३ उपजाऊ ।

प्राबाबी-स्त्री० [फा०] १ बस्ती, जन-स्थान । ३ जनसंख्या ।

प्राबी-वि० [फा०] १ पेयजल संबंधी । २ हल्के रंग का, फीका ।
—स्त्री० १ चमक-दमक । २ तलवार का पानी ।

प्राबू, प्राबूइ-पु० [सं० अबुद] १ शरावली पहाड़ का एक
हिस्सा अबुदाचल । २ इसके समीप बसा एक नगर ।

प्राबूध-पु० १ अबू पहाड़ । २ इस प्रदेश के निवासी ।

प्राबी-देखो 'प्राभी' ।

प्राभ-१ देखो 'प्राभा' । २ देखो 'प्राब' । ३ देखो 'प्राभी' ।

प्राभग्रंथारी-स्त्री० स्त्रियों की कंवुकी बनाने का बहुमूल्य कपड़ा ।

प्राभइयो-देखो 'प्राभी' ।

प्राभइ, (चेट, छेट, छौल)-पु० १ अछूतोस्पर्श का दोष, अशीच ।
२ स्पर्श ।

प्राभइणी, (बी)-क्रि० १ छूना, स्पर्श करना । २ व्याप्त होना ।
३ लिपटना, आतिगन करना । ४ भिड़ना, टक्कर लेना ।
५ अशीच लगना ।

प्राभमंडल-पु० आकाश मंडल ।

प्राभय-पु० [सं० प्रभम्] १ बादल, मेघ । २ आकाश, आसमान ।

प्राभरण, प्राभरण, प्रभूरण (णी)-पु० [सं० आभरणम्]
आभूषण, गहना ।

प्राभा-स्त्री० [सं०] १ चमक, दमक, कान्ति । २ रूप, सौंदर्य ।
३ भलक, छवि । ४ ज्योति, प्रकाश । ५ शोभा ।
६ प्रतिबिंब । ७ बादल मेघ ।

प्राभानरां-स्त्री० तलवार ।

प्राभार-पु० [सं०] एहसान, उपकार । धन्यवाद ।

प्राभारी-वि० [सं०] एहसान भंद, उपकार मानने वाला ।
कृतज्ञ ।

आभास-पु० [सं० आभास] १ मालूम, पता । २ ज्ञान, जानकारी ।
 ३ संकेत । ४ आभा, चमका । ५ भावना । ६ समानता
 माहृष्य । ७ तात्पर्य, अभिप्राय । ८ झलक ।
आभि-देखो 'आभी' ।
आभीर-पु० [सं०] १ अहीर, भाला । २ एक प्रकार का राग ।
 ३ एक देश विशेष । ४ प्रत्येक चरण में ११ मात्रा व अंत में
 उगण का एक छन्द । --**नट-पु०** एक संकर राग ।
आभीरी-स्त्री० भारत की एक प्राचीन भाषा ।
आभीज-पु० [सं० आभीलम्] दुःख, क्लेश, कष्ट । --**वि०**
 भयानक, भयप्रद ।
आभूषण, आभूषण, (सण)-पु० [सं० आभूषण] १ गहना,
 जेवर, आभूषण । २ वेलियो साणोर का एक भेद ।
आभूषित-वि० [सं० आभूषित] १ अलंकृत, सजा हुआ, आभूषणों
 से युक्त । २ विराजमान ।
आभोग-पु० [सं० आभोगः] १ पूर्ण लक्षण । २ किसी पद्य के
 बीच कवि के नाम का उल्लेख । ३ भोगने की क्रिया या
 भाव । ४ ध्रुपद का चौथा भाग जिसमें चांगेयकार का
 नाम होता है । ५ विस्तार, पेरा, परिधि । ६ भोग विलास ।
आभी-पु० [सं० अभ्र] आकाश, आसमान, नभ, गगन ।
आभरण-देखो 'आभरण' ।
आमंत्रण-पु० निमंत्रण, बुलावा । आह्वान ।
आमियाजी-कितली-पांसी-पु० एक देशी खेल ।
आमूझणी (बी)-देखो 'अमूझणी' ।
आयबा-देखो 'आइबा' ।
आयबिल-देखो 'आविल' ।
आय-स्त्री० [सं०] १ आमदनी, धनागम । २ प्राप्ति, उपलब्धि ।
 ३ लाभ, नफा । ४ आगमन । [सं० आयु] ५ आयु ।
 उम्र । --**कर-पु०** आमदनी पर लगने वाला कर, टेक्स ।
आयटल (ठल)-देखो 'आइठल' ।
आयण-वि० [सं० अज्ञान] मूर्ख, अज्ञानी । --**पु०** अज्ञान ।
आयणी-वि० (स्त्री० आयणी) १ आने वाला । २ देखो 'अहीणी' ।
आयत, (ति)-वि० [सं० आयत, आयतः] १ विस्तृत ।
 २ लंबा-चौड़ा, विशाल । ३ लंबा । ४ जिसकी सीमा हो,
 छोटा । ५ मूढ़, मुढ़ा हुआ । --**पु०** [सं०] १ समानान्तर
 चतुर्भुज क्षेत्र । --**स्त्री०** [अ०] २ आवेष्टन, घेरा, परिधि ।
 ३ कुरान का वाक्य । ४ शब्दों के पीछे लगाने वाला एक
 प्रत्यय । ५ देखो 'आयत्त'
आयत्त (तर)-वि० [सं०] १ अवलंबित, आश्रित । २ पराधीन ।
 ३ शिक्षणीय । ४ नम्र ।
आयत्तन-पु० स्थान, जगह । (जैन)
आयबल-देखो 'आयबल' ।

आयबिल-देखो 'आविल' (जैन)
आयबी-पु० एक प्रकार का घास ।
आयरिय-पु० [सं० आचार्य] आचार्य, गुरु ।
आयरिस-पु० [सं० आदर्श] दर्पण, आईना, काच ।
आयल-स्त्री० [सं० आर्या] १ पुंश्चली स्त्री । २ आवड़ या
 करनी देवी का एक नाम । ३ देवी, दुर्गा ।
 ४ एक लोक गीत । ५ माँ, माता ।
आयलड़-देखो 'आंगलीभल' ।
आयव-पु० शब्द, ध्वनि ।
आयवात पु० एक प्रकार का रोग ।
आयस, (सी, सु)-पु० [सं० आयस, आयसम्] १ लोहा । २ लोहे
 का कवच । ३ मोहे की वस्तु । ४ हथियार, शस्त्र । ५ नाथ
 सम्प्रदाय के फकीरों की पदवी । ६ सिद्ध, तपस्वी ।
 ७ जोगियों का एक भेद । ८ आज्ञा, आदेश ।
आया-देखो, 'आयु' ।
आयात-पु० [सं०] विदेशी सामान मंगाने की क्रिया, आगम ।
आयास, (सि, सी)-वि० काला, श्याम --**पु०** आकाश, गगन ।
आयी-देखो 'आई' ।
आयु-स्त्री० [सं०] १ उम्र, वय । २ जीवन, जिंदगी ।
आयुष-स्त्री० [सं० आयुष] उम्र, आयु ।
आयुत-देखो 'आयत' ।
आयुद्ध, आयुध-पु० [सं० आयुध] १ अस्त्र-शस्त्र, हथियार ।
 २ ढाल । ३ उपस्थ । ४ लिंग । ५ पांच मात्रा का
 एक नाम ।
आयुधन-देखो 'आयोधन' ।
आयुबल-पु० आयु, उम्र, आयुवल ।
आयुरवेद, (वेद)-पु० [सं० आयुर्वेद] १ चिकित्सा शास्त्र ।
 २ ध्रुवतरी प्रणीत आयुर्विद्या । ३ अथर्ववेद का उपवेद ।
आयुस-स्त्री० [सं० आयुस] १ उम्र, आयु [सं० आदेश]
 २ आज्ञा, आदेश ।
आयोदिन-वि० [सं०] प्रति दिन, नित्य, हमेशा ।
आयोधन, आयौधन-पु० [सं० आयोधन] संग्राम, रण ।
आरंक-वि० मगान, सहस्र ।
आरंग-पुर-पु० [सं०] मकान का ऊपरी भाग, छत ।
आरंब-राय-पु० राठीयों की कुलदेवी ।
आरंभ-पु० [सं०] १ प्रारंभ, शुरुआत । २ आदि । ३ प्राथमिक
 अवस्था । ४ भूमिका । ५ बड़ा कार्य । ६ उपद्रव । ७ युद्ध ।
 ८ उत्सव, जलसा । ९ तैयारी । १० वैभव । ११ शीघ्रता,
 तेजी । १२ चेष्टा, प्रयत्न । १३ वध, हनन । --**राम-पु०**—
 श्रीराम की तरह कार्य करने वाला व्यक्ति ।

प्रारंभणी

(१०७)

प्रारभट

प्रारंभणी, (बी)—कि० १ प्रारंभ करना, शुरू करना । २ युद्ध करना, चढाई करना । ३ युद्धार्थ तैयार होना ।
प्रार-पु० [सं०] १ अस्वच्छ या अशुद्ध लोहा । २ किनारा, कोना । ३ पहिए का आरा । ४ कांटा । ५ अंकुश । ६ पतली कोल । ७ नुकीली वस्तु । ८ हरताल । ९ शक्ति । १० तांबा । ११ पीतल । १२ बिच्छु या मधुमक्खी का डंक । १३ मंगल ग्रह । १४ हठ, जिद । १५ चमड़ा सीने का सूत्र । १६ देखो 'आस्य' । (५)
प्रारकगिरी-पु० [सं० आरक गिरि] सुमेरु पर्वत ।
प्रारकूट-पु० [सं०] पीतल ।
प्रारक्ख-देखो, 'आरख'
प्रारक्त-वि० [सं०] लाल । —ता-स्त्री०—लालिमा ।
प्रारक्षक-पु० [सं०] १ गज-कुंभ के नीचे का भाग । २ चौकीदार, संतरो । ३ सुरक्षा करने वाला । ४ देहाती न्यायाधीश । ५ पुलिस ।
प्रारख, प्रारखद-वि० समान, तुल्य । —स्त्री० १ दशा अवस्था । २ चिह्न, निशान । ३ गुण । ४ शक्ति, बल । ५ जोश । ६ परीक्षा । ७ प्रभाव ।
प्रारखो-वि० (स्त्री० आरखी) समान, सहज ।
प्रारगत (त्त)-देखो 'आरक्त' ।
प्रारगवध-पु० अमलतास ।
प्रारङ्गणी, (बी)—देखो 'अरङ्गणी' ।
प्रारज-पु० [सं० आर्य] (स्त्री० आरजिया) १ श्रेष्ठ पुरुष, उच्च कुलीन । २ सर्वप्रथम सभ्यता प्राप्त करने वाली मानव-जाति । ३ हिन्दू तथा ईरानियों का नाम । ४ ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण । ५ गुरु, शिक्षक । ६ मित्र । —वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ बड़ा । ३ प्रतिष्ठित । —धर्म-पु० हिन्दू-धर्म, आर्य-धर्म । —भोम-स्त्री० आर्य भूमि, भारतवर्ष । —वंस-पु० आर्यवंश, आर्य । —वरत-पु० उत्तरी भारत का प्राचीन नाम ।
प्रारजिया-स्त्री० [सं० आर्या] जैन साध्वी ।
प्रारजू-स्त्री० [फा०] १ अनुनय, विनय, विनती । २ इच्छा, वांछा ।
प्रारट (ट्ट, ट्टी)—स्त्री० सेना, फौज ।
प्रारख-पु० [सं० आरशिः, अरण्य] १ युद्ध, समर । २ लुहार की भट्टी । ३ तलवार । ४ प्रेत मंडली । ५ वन, जंगल, अरण्य । ६ ऐरन । ७ अग्नि, आग । ८ देखो 'आरणी' ।
प्रारखी-घांणी-पु० सूखा हुआ गोबर, कंडा ।
प्रारणी-पु० [न० आरण्य] १ कंडा । २ जंगली भैंसा । —वि० जंगल संबंधी ।
प्रारण्य-वि० [सं०] १ जंगल का, वन संबंधी, जंगली । २ देखो 'अरण्य' । —वदन-पु० कानन-वदन ।

प्रारत-पु० [सं० आर्त] १ दुःख, पीड़ा, कष्ट । २ करुणा जनक पुकार । ३ परिश्रम । ४ क्रोध । ५ आपदा, विपत्ति । ६ देखो, 'आरती' । —वि० १ दुःखी, व्याकुल । २ दीन । ३ अस्वस्थ, पीड़ित । —नाद-पु० वेदना भरा शब्द ।
प्रारतड़ी-देखो 'आरती' ।
प्रारतड़ी-देखो 'आरत' ।
प्रारति, (ती)—स्त्री० [सं० आरात्रिक] १ किसी मूर्ति या तस्वीर की धूप-दीप के साथ की जाने वाली पूजा । २ किसी पात्र में धूप-दीप रख कर, घंटा-ध्वनि व स्तोत्र गायन के साथ धुमाने की क्रिया । ३ धूप-दीप करने का पात्र । ४ आरती का स्तोत्र या कविता । ५ अमिलाषा, इच्छा । ६ दुःख । ७ आर्त वाणी । ८ देखो 'आरत' । ९ तोरण द्वार पर दूल्हे की जाने वाली नीरांजन ।
प्रारती, आरत-देखो 'आरत' ।
प्रारत्तव-पु० [सं० आर्त्तव] स्त्रियों का रज । —वि० ऋतु संबंधी ।
प्रारत्ती-देखो, 'आरती' ।
प्रारदा-देखो 'आदा' ।
प्रारवास-देखो 'अरदास' ।
प्रारद-वि० [सं० आर्द्र] गीला, नम । —क-स्त्री० अदरक । —ता-स्त्री० गीलापन, नमी ।
प्रारदा-देखो 'आदा' ।
प्रारनी-पु० १ चांदी साफ करने का 'राख' का पात्र । २ देखो 'आरणी' ।
प्रारपार-कि० वि० १ एक छोर से दूसरे छोर तक । २ सतह को चीरते हुए पार । ३ एक तल से दूसरे तल तक । —वि० सीधा । —पु० दोनों किनारे ।
प्रारब-पु० [सं० आरव] १ शब्द, आवाज । २ आहट । ३ तोप । ४ तोप रखने की गाड़ी । ५ मुसलमान । ६ युद्ध । ७ एक देश का नाम । —वि० भयंकर, कष्टजनक ।
प्रारबळ-पु० [सं० आयु + बल] १ शक्ति, बल । २ आयु, उम्र । —वि० अरब देश का ।
प्रारबी (य)-पु० १ घोड़ा, अश्व । २ अरब देश का घोड़ा । ३ एक यवन जाति । ४ अरबी भाषा । ५ कुरान शरीफ । ६ युद्ध का वाद्य । —वि० अरब संबंधी ।
प्रारबी-पु० १ युद्ध सामग्री । २ अस्त्र-शस्त्र । ३ युद्ध का वाद्य । ४ छोटी तोप । ५ लोगों का समूह ।
प्रारब-देखो 'आरव' ।
प्रारबी-देखो 'आरबी' ।
प्रारभट-पु० एक म्लेच्छ जाति ।

आर्यामत-पु० आर्य समाज की विचारधारा ।

आर्या-स्त्री० [सं० आर्या] १ एक प्रकार का ग्रंथ मात्रिक छन्द । २ जैन साध्वी । —गौत-पु० आर्या छंद का एक भेद । —वरत-पु० आर्यावर्त ।

आरव-देखो 'आरव' ।

आरवार-पु० [सं०] भोम या मंगलवार ।

आरस-पु० [सं० आर्य, आर्यम्, आर्यः] ऋषि प्रणीत ग्रंथ । —वि० लाल, रक्ताभ ।

आरसि, (सी)-स्त्री० १ शीशा, दर्पण । २ शीशा जड़ा आभूषण । ३ स्त्रियों के हाथ का आभूषण ।

आरहट-पु० १ युद्ध, समर । २ तोप । ३ तोप चक्र । ४ शत्रु, दुश्मन । ५ सेना ।

आरांक-पु० निशान, चिह्न, संकेत ।

आराण, (णि, एी, एौ), आरांन-पु० [सं० अणव] १ युद्ध भूमि, रणभूमि । २ युद्ध, समर । ३ सागर, समुद्र । ४ सूर्य । ५ श्मशान । ६ आंगन । —वि० [सं० अरण्य] १ जंगल का । २ शून्य निर्जन ।

आरांम-पु० [सं० आराम] १ उपवन, वाटिका । २ मकान, निवास स्थान । [फा०] ३ चैन, सुख । ४ विश्राम, शांति । ५ चंगापन, स्वस्थता । —कुरसी-स्त्री० एक प्रकार की लम्बी कुरसी जिस पर लेटा जा सकता । —खोर-वि० आराम तलब आराम करने वाला । —तलब-वि० सुख की इच्छा रखने वाला । सुस्त, आलसी ।

आरा-पु० भोजन (जैन)

आराडी-देखो 'आराहडी' ।

आरात-क्रि० वि० [सं० आरात्] १ निकट, पाम, समीप । २ दूर फामले पर ।

आराति-पु० [सं० आरातिः] शत्रु, दुश्मन ।

आराध, (ण)-देखो 'आराधना' ।

आराधक-वि० [सं०] आराधना करने वाला ।

आराधणी, (बी)-क्रि० १ प्रार्थना करना, स्तुति करना । २ पूजा करना । ३ रक्षा करना । ४ वन में करना, अश्वीन करना । ५ श्रान देना । ६ प्रमत्त करना ।

आराधना-स्त्री० [सं०] १ प्रार्थना, स्तुति । २ सेवा, पूजा । ३ पुकार, फरिषाद ।

आराधा-स्त्री० तोप ।

आराबी-पु० तोपें ले जाने का शकट ।

आरातिक-पु० [सं० आरातिक] रसोईदार ।

आराबी-पु० १ गोला वाहद । २ देखो 'आरब' । ३ देखो 'आरी' ।

आरास-स्त्री० १ सजावट । २ देखो 'आरसी' ।

आराहडी-वि० [सं० आराहडी] शक्तिशाली, बलवान ।

आराहणा-देखो 'आराधना' ।

आराहणी, (बी), आराहिणी (बी)-देखो 'आराधणी' ।

आरि-स्त्री० १ एक प्रकार की चिड़िया । २ झिल्ली । ३ देखो 'आरी' ।

आरिख, (खि, खे)-वि० समान, बराबर, मद्दश । —पु० १ निशान, चिह्न, संकेत । २ रक्षा-स्थान ।

आरिज-देखो 'आरज' ।

आरिजधर-पु० आर्यावर्त, भारतवर्ष ।

आरितवंत, (य)-वि० १ दुःखी, पीड़ित । २ कातर । ३ अस्वस्थ ।

आरियण-देखो 'आरोग्य' ।

आरिया-स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी ।

आरियपंथ-पु० आर्य समाज ।

आरिषामत-पु० आर्य समाज की विचारधारा ।

आरिस्ट-देखो 'अरिस्ट' ।

आरी-स्त्री० [सं० आरा] १ लकड़ी चीरने का उपकरण । २ छोटा आरा । ३ छोटी करोती । ४ देखो 'गेंडुरी' । ५ देखो 'आर' । ६ देखो 'आरि' । —कारी-स्त्री० कार्य । व्यवस्था । ढंग । उपाय ।

आरीख, (खं)-देखो 'आरिख' ।

आरोग्य-पु० [सं० आर्यजन] १ आर्यस्थान, भारत । २ आर्यजन, हिन्दू । [सं० अरिजन] ३ शत्रु, दुश्मन ।

आरीस, (उ)-देखो 'आरसि' ।

आरुड, आरुद्ध-वि० [सं० आरुद्ध] १ बढ़ा हुआ, सवार । २ हृद, स्थिर । ३ सन्नद्ध, तत्पर । —हंस-पु० ब्रह्मा । —स्त्री० सरस्वती ।

आरुहणी, (बी) आरुहणी, (बी), आरुहिणी, (बी)-क्रि० १ सवार होना, सवारी करना, चढ़ाई करना । २ आक्रमण करना ।

आरे-प्रव्य० [सं० उररीकृत] १ स्वीकार, मंजूर । —पु० १ तट, किनारा । २ अधिकार, वश ।

आरेख-देखो 'आरिख' ।

आरेटी, (ठी)-देखो 'अरेठी' ।

आरेण-देखो 'आरांग' ।

आरे-देखो 'आरे' ।

आरंल-पु० एक प्रकार का मोटे दाने का अनाज ।

आरोगण-पु० १ भोजन करने या खाने की क्रिया । २ आहार, भोजन ।

आरोगणी-देखो 'अरोगणी' । (स्त्री० आरोगणी) ।

आरोगणी (बी)-देखो 'अरोगणी' (बी) ।

आरोगाणी, (बी)-देखो 'अरोगाणी' (बी) ।

आरोगी-स्त्री० चिता ।

आरोगीवन-स्त्री० [फा० आरिगीदना] उद्गार, डकार ।
 आरोड़, आरोड़ी, आरोड़ी-वि० बलवान, वीर ।
 आरोड़णी (बौ)-क्रि० रोकना, छेकना ।
 आरोड़ी-पु० केसर कस्तूरी युक्त अफीम ।
 आरोध-१ देखो 'अवरोध' । २ देखो 'आयुध' ।
 आरोधणी (बौ)-क्रि० १ रोकना । २ छेकना । ३ घाड़ देना ।
 आरोप-पु० [सं०] १ कलंक, दोष, इल्जाम । २ संस्थापन, स्थापन । ३ लगाना क्रिया । ४ थोपना क्रिया । ५ रोपन, जमाव । ६ मंढना क्रिया । ७ कल्पना । ८ अम । ९ प्रत्यारोपण । —क-वि० आरोप लगाने वाला ।
 आरोपण-पु० [सं०] आरोपित करने की क्रिया या भाव ।
 आरोपणी, (बौ)-क्रि० १ आरोपित करना । २ स्थापित करना । ३ लगाना, जमाना । ४ मंढना । ५ रोपना । ६ धारण करना । ७ शोभित होना । ८ दोष लगाना, कलंकित करना ।
 आरोपा-वि० दृढ़, अटल ।
 आरोपित-वि० [सं०] लगाया हुआ, स्थापित, मंढा हुआ, रोपा हुआ ।
 आरोपी-पु० १ चमत्कार, देवप्रभा । २ बड़ा या उत्तम कार्य । ३ देखो 'आरोप' ।
 आरोमार-पु० स्तनों से दूध सूखने की क्रिया या भाव । —वि० सुप्त ।
 आरोह-पु० [सं०] १ चढ़ाई । २ आक्रमण । ३ सवारी । ४ क्रमशः उत्तमोत्तम योनि । ५ विकास, उत्थान । ६ आविर्भाव । ७ नितंब । ८ स्वरों का चढ़ाव । ९ सीढ़ी । १० ग्रहण के दश भेदों में से एक । ११ सवार । —क-पु० सवार, आरोही । —ण-पु० सवारी, चढ़ाई । प्रादुर्भाव । सीढ़ी, निसेनी ।
 आरोहणी (बौ)-१ आरूढ़ होना, सवार होना । २ चढ़ना । ३ प्रादुर्भाव होना । ४ अंकुरित होना ।
 आरोहा-स्त्री० सवारी । चढ़ाई ।
 आरोहित-वि० चढ़ा हुआ, ऊपर गया हुआ ।
 आरोही-पु० १ चढ़ा हुआ सवार । २ आरोहण करने वाला । ३ संगीत में स्वर साधन का भेद विशेष ।
 आरोही-पु० तीर, बाण । २ चढ़ने वाला, सवार ।
 आरोह्य-देखो 'आरोह' ।
 आरो-पु० [सं० आरक] १ बड़ी गेंदुगी । २ मट्टी का चूल्हा । ३ मर्प की कुंडली । ४ चक्र । ५ कपड़े या रस्सी का चक्र । ६ बैलगाड़ी के पहिये का एक भाग । ७ हल्का, आवाज । ८ समय । ९ जैनियों द्वारा माने गये दश काल विभागों में से एक । १० देखो 'आर' ।

आरच-पु० [सं०] हिंदुओं और ईरानियों का नाम ।
 आरचावरत-पु० [सं० आर्यावर्त] भारतवर्ष ।
 आरचावरती-पु० [सं० आर्यावर्ती] भारतवासी ।
 आलंकृत-देखो 'अलंकृत' ।
 आसंग-स्त्री० घोड़ी की मस्ती । —क्रि० वि० १ दूर, जुदा । २ पृथक, भिन्न ।
 आसंगण-देखो 'आलिंगण' ।
 आलंगणी (बौ)-देखो 'आलिंगणी' (बौ) ।
 आलंबण, (न)-पु० [सं० आलंबन] १ आश्रय, अवलंबन । २ सहारा । ३ साहित्यिक रस का एक विभाग ।
 आलंबणी, (बौ)-क्रि० १ आश्रय, अवलंबन लेना । २ सहारा लेना । ३ लटकना ।
 आलंबण, (न)-पु० १ छूना, स्पर्श । २ पकड़ । ३ मिलन । ४ वध ।
 आल-स्त्री० १ युद्ध, लड़ाई । २ भंफट, बसेड़ा । ३ झूठ, असत्य । ४ मोर, मयूर । ५ खेल, केलि । ७ छेड़-छाड़ । ८ आलस्य । ९ मादा पशुओं की योनि । १० घोंसला । ११ कलंक । १२ विपदा । १३ संसार चक्र । —वि० व्यर्थ, फिजूल । सामान्य, साधारण । —जंजाळ, संसाळ-पु० प्रपंच, मायामोह, मोहाजाल स्वप्न, जंजाल ।
 आल-स्त्री० १ हस्ताल । २ एक पीछा जिसकी जड़ व छाल से लाल रंग बनता है । ३ इस पीछे से बना रंग । ४ लौकी, धीया । ५ गीलापन, आर्द्रता । ६ लड़की की संतान । ७ आंसू । —आलाद-स्त्री० बाल-बच्चे, परिवार । वंश । एक कीड़ा ।
 आलका-स्त्री० छिपने की क्रिया या भाव ।
 आलण-देखो 'अलण' ।
 आलणणी, (बौ)-क्रि० [सं० आलण] १ मन लगना, बहलना । २ संतोष या चैन मिलना । ३ अच्छा लगना, सुहाना लगना ।
 आलणोळ-स्त्री० टालमटोल, बहाना ।
 आलण-पु० [सं० आलण] १ खीच में दाल का मिश्रण । २ रसदार सब्जी में दही व वेसन का मिश्रण । ३ आलस्य ।
 आलणी (बौ)-क्रि० १ आलस्य करना । २ थकना, निराश होना । ३ पराजित होना, हार मानना ।
 आलणी (बौ)-क्रि० १ देना । २ मगन करना, जाना । ३ कहना । ४ छोड़ना, त्यागना ।
 आलत-स्त्री० हँसी-मजाक ।
 आलती-वि० लाल ।
 आलथी-पालथी-स्त्री० पालथी ।
 आलथपाळ-देखो 'आळ भंफाळ' ।
 आलप-देखो 'अल्प' ।

आलवणी (बौ)-पु० देखो 'आलवणी' ।

आल-वाल-पु० पाखंड । २ देखो 'मलिवाल' ।

आलम, (डौ), आलमी, आलम-पु० [अ० आलम] १ दुनिया, संसार, विश्व । २ जनता, जन-समूह । ३ दशा, अवस्था । ४ खुदा, ईश्वर । ५ तसाशा, नकल । ६ नगाड़ा, निशान । ७ डोली । ८ स्वामी, बादशाह । ९ मुसलमान । १० पंडित । -खानी-पु० राजाओं के समय का एक विभाग विशेष जिसमें गाने वाली जातियों को दिये जाने वाले दान आदि का विवरण रहता था । नगर खाना । -गौर-पु० विश्वविजयी । विश्व-व्यापी । औरंगजेब का नाम । —पत, पति, पत्नी-पु० बादशाह, राजा । ईश्वर । —पना, पनाह-पु० संसार को शरण देने वाला, बादशाह, ईश्वर ।

आलमारी-देखो 'अलमारी' ।

आलमीन-पु० 'आलम' का बहुवचन ।

आलय-पु० [सं०] १ घर, मकान, आवासस्थान । २ कक्ष । ३ स्थान, जगह । ४ आधार ।

आलर-पु० १ दान । २ उदारता ।

आलरणी (बौ)-१ वर्षा होना । २ दान देना । ३ फिसलना । ४ द्रवित होना ।

आलवणी (बौ)-देखो 'आलापणी' (बौ) ।

आलवाल-पु० [सं० आलवाल] १ वृक्ष के चारों ओर का घेरा, बांझला, बाला । २ घेरा, मंडल, वृत्त ।

आलस, (लौ)-पु० [सं० आलस्य] १ सुस्ती, आलस्य, प्रमाद । २ बेपरवाही । ३ अकर्मण्यता ।

आलसणी (बौ)-क्रि० १ आलस्य करना । २ बेपरवाही करना । ३ विलंब करना ।

आलसबी, आलसी-वि० [सं० आलस] सुस्त, आलसी, काहिल, अकर्मण्य ।

आलमुवाय-स्त्री० सद्यप्रसूता गाय ।

आलसेट-क्रि० वि० १ आनन्द के लिये । २ देखो 'अलसेट' ।

आलस्य-पु० [सं०] सुस्ती प्रमाद ।

आलाण, (न)-पु० [सं० आलानम्] १ हाथी को बांधने का स्तंभ या खूँटा । २ हाथी को बांधने का स्थान । ३ हाथी के बांधने का रस्सा, बेड़ी । ४ जंजीर, सकड़ी । ५ वंधन ।

आलाणी-पु० १ निश्चय या इरादे का स्थगन । २ आलस्य ।

आला-वि० [प्र० अमला] श्रेष्ठ, बढ़िया, उत्तम ।

आलाक-वि० दुष्ट, नीच ।

आलाणी (बौ)-प्रे० क्रि० १ हराना । २ धकाना ।

आलात-स्त्री० जलती हुई लकड़ी ।

आलाप-स्त्री० [सं०] १ संभाषण, बात-चीत । २ कथोपकथन । ३ रागालाप, तान । राग विस्तार । ४ सात स्वरों का

साधन । ५ वाणी । -वि० बोलने वाला । -चारी-स्त्री० स्वर साधन की क्रिया, स्वरों का आलाप करने की क्रिया । -एक-वि० बोलने वाला ।

आलापक-पु० [सं०] १ एक ही संबंध के वाक्यों का समूह । (जैन) २ ग्रंथ का छोड़ा भाग । (जैन) -वि० १ वार्तालाप करने वाला । २ गाने वाला । ३ बातचीत करने वाला ।

आलापणी (बौ)-१ बोलना, संभाषण करना । २ स्वर खींचना, गाना । ३ ध्वनि या आवाज करना ।

आलापी-वि० गाने वाला ।

आला-मुसाब-पु० १ राजा का प्रधानमंत्री । २ श्रेष्ठ दरबारी । ३ खास आदमी ।

आलावणी (बौ)-क्रि० १ जुगाली करते समय ऊँट के दाँतों का टकराकर आवाज करना । २ देखो 'आलाणी' (बौ) । ३ देखो 'आलापणी' (बौ) ।

आलावरत-पु० [सं० आर्द्रावर्त] पंखा, पंखी ।

आलिग, (गल, गन)-पु० [सं० आलिगन] १ स्पर्श, छूना क्रिया । २ परिरंभण, संप्रति । ३ परस्पर मिलन । ४ लिपटना या चिपटना क्रिया । ५ मेंट । ६ रतिक्रिया ।

आलिगणी, (बौ)-क्रि० १ लिपटना । २ स्पर्श करना, छूना । ३ परस्पर मिलना । ४ हृदय लगाकर मेंटना । ५ लिप्त होना । ६ रतिक्रिया करना ।

आलिगी-वि० आलिगन करने वाला ।

आलि-स्त्री० १ मधु मक्खी । २ बिच्छु । ३ पंक्ति, धवली, रेखा । ४ अमरी । ५ सेतु । ६ तुच्छ वस्तु । ७ देखो 'आली' । -वि० १ ईमानदार । २ सुस्त, निकम्मा ।

आलिगणी (बौ)-देखो 'आलिगणी' ।

आसिम-देखो 'आलम' ।

आलिपी-१ देखो 'असालिपी' । २ देखो 'आली' ।

आली-स्त्री० १ सखी, सहेली । २ रेखा, पंक्ति । ३ सेतु, बांध । -वि० १ गीली, नम, आर्द्र । २ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ बड़ा, उच्च ।

आलीगारी, आलीजी-वि० (स्त्री० आलीगारी, आलीजी) १ शौकीन, छैला । २ रसिक । ३ मस्त, मोजी । ४ उदार ।

आलीधन-देखो, 'आलिगन' ।

आलीणी-वि० [सं० आलीन] १ तन्मय, लीन । २ अनुरक्त । ३ लिप्त ।

आलीनक-पु० कलई, रांगा ।

आलीमाट-वि० व्यर्थ, निरर्थक ।

आलीसान-वि० [अ० आलीशान] १ भव्य, सुन्दर । २ विशाल । ३ श्रेष्ठ, उत्तम ।

आलीह-पु० शर संधान के समय का आसन । -वि० मुक्त ।

आलुक-पु० १ शेष नाग । २ सर्प । ३ छेड़-छाड़ ।

आलू धरणी (बी)-क्रि० उलभना ।

आलू- पु० गोलाकार एक प्रसिद्ध कंद ।

आलूजणी, (बी)-क्रि० उलभना ।

आलूझ, (रु)-स्त्री० [सं० अवलुद्धनम्] १ उलभन. अटकवा ।

२ गिरह, ग्रंथि । ३ बाधा, रुकावट । ४ पेच । ५ ऐंठन ।

६ फेर, चक्कर । ७ समस्या । ८ टकराव, लड़ाई ।

आलूझणी (बी)-क्रि० १ उलभना, फंसना, अटकना । २ लपेट में आना । ३ तकरार वा लड़ाई करना । ४ काम में फंसना ।

आलूद, (बी)-वि० (स्त्री० आलूदी) सजा हुआ, बना-ठना ।

आलूधरणी (बी)-देखो 'आलू धरणी (बी)' ।

आलूबुखारा-पु० [फा०] आलुच नामक वृक्ष का फल ।

आले-क्रि० वि० [सं० अल-कल्प] आज-कल, इस समय ।
-वि० अव्वल, बढ़िया, प्रथम ।

आलेख-पु० [गं०] १ लिखावट, लिपि । २ ईश्वर । ३ देखो 'अलेख' ।

आलेड़ी-पु० [सं० आर्द्रता] १ गीलापन, नमी, तरी ।
२ कीचड़ ।

आलेप-पु० मलहम, लेपन ।

आलेमाट, आलेयमाट,-वि० व्यर्थ, निरर्थक ।

आले-पु० उत्सर्ग, त्याग, दान । -क्रि० वि० इधर । पास ।
—नाहर-पु०-सिंह की मांद ।

आलोक-पु० [सं०] १ प्रकाश, उजाला । २ चमक, छुति ।
३ संदर्भ । —श्रीमका-स्त्री० लीकोत्तर क्षेत्र ।

आलोकन-पु० १ दर्शन । २ अवलोकन ।

आलोच, आलोच-पु० [सं० आलोच] १ सोच, चिन्ता ।
२ सोच-विचार, मनन । ३ सलाह, मंत्रणा । ४ हाल, वृत्तान्त । ५ विवेचन । ६ गुप्त रहस्य । ७ उद्दिष्टता ।
८ आनुचन, बीनाई । ९ दर्शन ।

आलोचक-वि० [सं०] १ देखने वाला । २ समीक्षक ।
३ निन्दक ।

आलोचन, (णा)-स्त्री० [सं० आलोचनं] १ गुण दोष निरूपण, समीक्षा । २ निन्दा । ३ दर्शन । ४ गुप्तमंत्रणा ।

आलोचणी (बी)-क्रि० १ आलोचना करना, समीक्षा करना ।
२ निन्दा करना । ३ समझना, विचार-विमर्श करना ।

आलोचना-स्त्री० [सं०] समीक्षा, विवेचन, निन्दा ।

आलोज, आलोभ-पु० १ बात-चीत । २ संकल्प, प्रण । ३ भाव, विचार । -क्रि० वि० मोच कर, समझ-विचार कर ।

आलोचणी, (बी), आलोचणी, (बी) देखो 'आलोचणी' (बी) ।

आलो-दोवालो-पु० टाक ।

आलोप-देखो 'अलोप' ।

आलो-भोली-वि० तामसक ।

आलोमल-वि० १ शोकीन, छैत्र छबीला । २ वीर, योद्धा ।

आलोयल-देखो 'आलोचना' ।

आलोळ-वि० चंचल, चपल, अस्थिर ।

आलोवणा-स्त्री० [सं० आलोचना] १ अपने पापों को गुरु के सम्मुख अपने ही मुख से यथा रूप वर्णन करनेकी क्रिया ।
(जैन) २ आलोचना ।

आलो-पु० [सं० आलय, आलुच] १ ताक, आला । २ घोंसला ।
-वि० अपरिपक्व । अव्यं० का । क्रियान्तक प्रत्यय ।
—रौटी-पु० कच्ची ककड़ी ।

आलो-वि० [सं० आर्द्र] (स्त्री० आली) १ गीला, नम ।
२ बढ़िया, अद्वितीय । ३ ताजा । —पु० १ प्रकार का घास का कीड़ा । २ आलस्य ।

आलो-लिंगतर-पु० एक देशी खेल ।

आल्यंगल-देखो 'आलिंगन' ।

आलुव-पु० प्रसन्नता खुशी ।

आवण-१ देखो 'आवल' । २ देखो 'जावण' ।

आवतंड, आवंता-वि० आगामी, भावी ।

आवंद-देखो 'आमदनी' ।

आव-पु० १ उत्साह । २ आव-भगत, अतिथि सत्कार ।
३ आयु । ४ आय । —आवर-पु० स्वागत, सत्कार ।

आवकार-पु० १ एक सरकारी लगान । २ सत्कार ।

आवखाल-पु० मवेशी का साफ किया हुआ चमड़ा ।

आवखी-वि० (स्त्री० आवखी) १ पूरा, पूर्ण । २ अखंडित ।
३ बिना वधिया किया । -पु० [सं० आयुष्मं] जीवन, आयु ।

आवगमन-देखो 'आवागमन' ।

आवगी-वि० १ स्वयं का, निजी । २ देखो 'आवखी' ।
(स्त्री० आवगी) ।

आवड़ (डा)-स्त्री० चारण कुलोत्पन्न देवी विशेष जो भाटो राजवंश की इष्टदेवी है ।

आवड़णी, (बी)-क्रि० [सं० आपटनं] १ मन लगाना, सुहाना ।
२ अटपटी महसूस न होना । ३ युद्ध करना ।

आवड़वा (रुवा)-स्त्री० [सं० आयु] आयु, उम्र ।

आवड़ी-स्त्री० [सं० आवृत्ति] १ एक दिन में जोतने लायक सेत का भाग । २ फसल की कटाई के लिए क्रमशः बनाई जाने वाली लम्बाई । ३ एक कल्पित लम्बाई । ४ आयु, उम्र ।

आवड़ी-वि० अयंकर ।

आवट-पु० [सं० आवर्त्त] १ नाश, संहार । २ युद्ध । ३ सेना ।
४ डच्छा । ५ हलचल ।

आवटकूट (टी)-पु० १ संहार, नाश । २ युद्ध ।

आवटणी, (बी)-क्रि० [सं० आवर्त्त] १ गर्म होना, उबलना ।
२ झोटना । ३ क्रुद्ध होना, कुटना । ४ जलना, भस्म होना ।
५ युद्ध में मरना या मारना । ६ दुःखी होना । ७ नष्ट होना ।

प्रावटना-पु० [सं० आवर्त] १ हलचल, उथल-पुथल । २ डावां-डोलपन, अस्थिरता । ३ जलन, कुहन ।
 प्रावटिपल-वि० बीर, योद्धा ।
 प्रावट्ट-देखो 'प्रावट' ।
 प्रावट्टणी (बी)-देखो 'प्रावटणी' (बी) ।
 प्रावट्ट देखो 'प्रावट्टी' ।
 प्रावण-देखो 'प्रावल' । (३)
 प्रावणियौ-कूदावणियौ-पु० एक देशी खेल ।
 प्रावणू-वि० आगन्तुक ।
 प्रावणी (बी)-देखो 'प्राणी' (बी) ।
 प्रावदांनी-स्त्री० १ प्रवेश । २ देखो 'प्रागदानी' ।
 प्रावदा-स्त्री० आयु, उम्र ।
 प्रावद्ध (डि), प्रावद्ध-पु० [सं० आयुध] १ हथियार, शस्त्र । २ आय, आमद । —नख-पु० सिंह, शेर । —पांख-पु० गणेश, गजानन । —मांजण-पु० सिकलीघर ।
 प्रावधान-देखो 'प्राधान' ।
 प्रावधी (क)-वि० [सं० आयुधिक] १ शस्त्र रखने वाला । अस्त्रधारी । २ बीर, योद्धा ।
 प्रावधगत, (भाव)-स्त्री० आदर-सत्कार ।
 प्रावबल-पु० [सं० आयुर्वल] आयु का बल ।
 प्रावर-देखो 'अवर' ।
 प्रावरण-पु० [सं०] १ परदा । २ आच्छादन । ३ ढक्कन । ४ ढाल । ५ दीवार आदि का घेरा । ६ अज्ञान । —सक्ति, सगती-स्त्री० आत्म व चेतन्य की दृष्टि पर परदा ढालने वाली शक्ति ।
 प्रावरत-पु० [सं० आवर्त, आवृत्त] १ पानी का संवर । २ चक्कर, फेर, घुमाव । ३ न बरसने वाला बादल । ४ चिता, सोच । ५ प्रलयकाल । ६ एक प्रकार का रत्न । ७ संसार । ८ हस्ती । ९ भुंड, समूह । १० सेना, फौज । ११ समुद्र, सागर । १२ घनी बस्ती । १३ सोना मक्खी । १४ युद्ध, संग्राम । १५ संहार ध्वंस । १६ देखो 'प्रावर्त' ।
 प्रावरतक-वि० [सं० आवर्तक] १ आने वाला । २ निश्चित प्राप्त होने वाला ।
 प्रावरती-स्त्री० [सं० आवृत्ति] १ परिक्रमा । २ किसी कार्य की पुनरावृत्ति । ३ चक्कर । ४ बार-बार जन्म-मरण । ५ बार-बार किसी बात का अभ्यास । ६ प्रत्यावर्तन । ७ पलटाव । ८ पाठ पढ़ना ।
 प्रावरत्त-देखो 'प्रावर्त' ।
 प्रावरदा-देखो 'प्रावड्डा' ।
 प्रावरित-देखो 'प्रावर्त' ।
 प्रावरौ-पु० १ आय का स्रोत । २ आमदनी ।
 प्रावळ-पु० १ शक्ति, बल, पुरुषार्थ । २ देखो 'प्रावळ' ।

प्रावळमूल-देखो 'प्रावळामूल' ।
 प्रावळणी, (बी)-क्रि० १ बट देना, पेंठन देना । २ तनाव देना । ३ मोड़ना ।
 प्रावळीयौ-वि० गर्व या अभिमान रहित । —पु० एक देशी खेल ।
 प्रावळी-वि० भयंकर । —स्त्री० १ पारी, बारी (टिप) । २ घायु । ३ अभिलाषा । ४ पंक्ति, श्रेणी । ५ वह विधि जिसके द्वारा उपज का अनुमान किया जाता हो । —घड़ा-स्त्री० सुगन्धित सेना । विकट सेना ।
 प्रावळी-वि० १ मस्त उन्मत्त । २ देखो 'प्रावळी' । (स्त्री० अवळी)
 प्रावस-१ देखो 'प्रावस्य' । २ देखो 'प्रावास' ।
 प्रावस्यक-वि० [सं० आवश्यक] जरूरी । सार्विक ।
 प्रावस्यकता-स्त्री० [सं० आवश्यकता] जरूरत । मतलब ।
 प्रावह-पु० [सं० आहवः] युद्ध ।
 प्रावा-पु० [सं० आपाक] वर्तन पकाने का कुम्हारों का गड्ढा ।
 प्रावागम, (गमण, गमन, गवन, गौन)-पु० [सं० आवागमन] १ आवागमन, आना-जाना । आमदरफ्त । २ बारम्बार जन्म-मरण ।
 प्रावाचि, प्रावाची-देखो 'प्रावाची' ।
 प्रावाज (जि)-स्त्री० [फा० प्रावाज] १ शब्द, ध्वनि, नाद । २ बोली, वारी । ३ शोर ।
 प्रावाजणी (बी)-क्रि० १ आवाज होना, २ ध्वनि होना । ३ बोलना, बजना ।
 प्रावाजाण-देखो 'प्रावागमन' ।
 प्रावादांनी-स्त्री० आय, आमदनी ।
 प्रावांन-पु० [सं० आह्वान] बुलावा, आह्वान, आमन्त्रण ।
 प्रावाप-पु० [सं० आपापः] थांक्ला, थाना ।
 प्रावारा, प्रावारी-वि० [फा०] (स्त्री० प्रावारी) १ निकम्मा, निठल्ला । २ गुंडा, बदमाश, लुच्चा । —गरव-वि० व्यर्थ घूमने या गुंडापन करने वाला । —गरवी-स्त्री० व्यर्थ भटकने या उद्दण्डता करने की क्रिया ।
 प्रावास (सि)-पु० [सं० आवासः] १ घर, पकान । २ निवास स्थान । ३ निवास, रहवास । ४ विश्राम ५ आसमान । ६ आभाम । ७ चिह्न, लक्षण ।
 प्रावाह-देखो 'प्रावह' ।
 प्रावाहण, (हन)-पु० [सं० आह्वान] १ बुलावा, आमन्त्रण । २ आह्वान मंत्र ।
 प्रावाहणी (बी)-क्रि० १ आह्वान करना, बुलाना । २ प्रहार करना, शस्त्र चलाना ।
 प्राविडा-वि० बीर, बाँकुरा ।
 प्राविद्धा-स्त्री० तलवार चलाने की एक कला ।
 प्राविल-वि० [सं०] गंदा, गंदवा ।

आविष्कार

(११३)

आसनी

आविष्कार-पु० [सं० आविष्कार] कोई ऐसा पदार्थ तैयार जो पहिले न हो ईजाद ।

आविष्कारक-पु० [सं० आविष्कारक] आविष्कारकर्त्ता ।

आवेग-पु० [सं०] १ जोश, उत्साह । २ साहित्य का संचारी भाव । ३ उद्दिग्भता ।

आवेर-स्त्री० देख भाल, संभाल ।

आवेरणी (बी)-देखो 'अवेरणी' (बी) ।

आवेस-पु० [सं० आवेश] १ जोश, उत्साह । २ प्रेरणा । ३ वेग । ४ रोष, क्रोध । ५ अहंकार । ६ प्रेतवाधा । ७ मृगी रोग ।

आवेसटन-पु० [सं० आवेष्टन] खोल, घेरा, लपेटने या ढकने की वस्तु ।

आव्रत, आव्रति-स्त्री० [सं० आवृत्ति] १ परिक्रमा । २ प्रत्यावर्तन । ३ पुनरावृत्ति । ४ चक्र, फेरा । ५ दोनों हाथों से चरण स्पर्श कर अपने शिर पर लगाकर की गई वंदना । ६ पाठ । -वि० [सं० आवृत्त] १ घिरा हुआ । २ छिपा हुआ । ३ लिपटा हुआ । -पु० युद्ध समर ।

आसंका, आसंक्या-स्त्री० [सं० आशंका] १ डर, भय । २ संदेह, शक । ३ संभावना । ४ वास, आतंक ।

आसंग-पु० १ साथ, संग, संसर्ग । २ संबंध, लगाव । ३ आसक्ति, अनुराग । ४ हिंस्र, साहस । ५ सामर्थ्य । ६ बल, शक्ति, पराक्रम ।

आसंगणौ, (बी)-क्रि० १ साहस करना । २ दिल बहलना, मन लगना । ३ स्वीकार करना । ४ अधिकार या वश में करना ।

आसंगल-वि० शक्तिशाली, समर्थ ।

आसंगावत-वि० आश्रमवर्ती, अधीन । (जैन)

आसंगिरी-स्त्री० साहस ।

आसंगीर-वि० १ आशावान । २ साहसी । ३ बलवान, शक्तिशाली ।

आसंगी-पु० १ विश्वास, भरोसा । २ बल, पौरुष । ३ साहस, हिंस्र ४ आशा ।

आस-स्त्री० [सं० आशा] १ आशा, लालसा, उम्मीद । २ काच । ३ वेग । ४ दम । ५ युद्ध । ६ तांबा । ७ देखो 'आस्य' । ८ देखो 'आसा' । -इक्षु, ईक्षु-पु० धनुष । -उदर-स्त्री० अग्नि, जठराग्नि । -कंद-देखो 'आसंगंध' । -क-वि०-आशिक, प्रेमी । -कर, करियौ-पु० यात्रक, भिखारी । आशावान । -पेंध-स्त्री० अश्वगंधा । -गिरी-स्त्री० आशा, उम्मीद । -गीर-वि० आशावान । -पण, पणौ-पु० आस्तिक्य । -पास-क्रि० वि० इधर-उधर, निकट समीप, चारों ओर ।

आसका-स्त्री० [सं० आस्यका] १ विभूति, राख । २ अगरबत्ती, धूप या महात्माओं की धूनी की राख ।

आसक्त-वि० [सं०] १ अनुरक्त, मुग्ध । २ लीन, लिप्त । ३ आशिक, प्रेमी ।

आसक्ति-स्त्री० [सं०] १ अनुरक्ति, मुग्धता । २ लगाव, लिप्तता । ३ इश्क, प्रेम ।

आसचरज-पु० [सं० आश्चर्य] १ विस्मय, आश्चर्य । २ चमत्कार । ३ विलक्षणता । -वि० अद्भुत, अलौकिक, विचित्र ।

आसण, (न), आसणियौ-पु० [सं० आसन] १ बैठने की विधि, बैठक । २ बैठने समय बिछाने की वस्तु, चटाई, मृगचर्म । ३ पीड़ा, तिरपाई । ४ ८४ योगासनों में से एक । ५ रतिक्रिया का एक ढंग । ६ अष्टांगयोग का तीसरा अंग । ७ घोड़े, ऊंट, हाथी आदि की पीठ । ८ घोड़े ऊंट हाथी की पीठ पर डाला जाने वाला वस्त्र । ९ निवास डेरा । १० नितंब । १० शत्रु के मुकाबले की फौज । ११ सवारी, वाहन । १२ दशनामी संन्यासियों का सठ ।

आसणोट-पु० घोड़े की पीठ का तंग ।

आसत-पु० [सं० आस्] १ अस्तित्व । २ सामर्थ्य, सत्ता । ३ देखो 'आसथा' । ४ देखो 'आसक्तिक' ।

आसता-देखो 'आसथा' ।

आसति-स्त्री० [सं० आस्तिकता] १ आस्तिकता, श्रद्धा, आस्था । २ शक्ति, बल । ३ सत्वता । ४ देखो 'आसथा' ।

आसतिक, (तीक)-वि० [सं० आस्तिक] १ ईश्वर व धर्म ग्रंथों में आस्था, श्रद्धा व विश्वास रखने वाला । २ सच्चा, पवित्र । ३ श्रद्धालु । ४ समर्थ, शक्तिशाली ।

आसतो-वि० १ शक्तिशाली, समर्थ । २ अच्छा, सुन्दर, उत्तम । ३ आस्तिक । -पु० १ अस्तित्व का भाव । २ सग्य ।

—पण, पणौ-पु० बहादुरी, शौर्य । सत्यता । अस्तित्व । आस्तिकता ।

आसते, (तें)-क्रि० वि० [फा० आहिस्ता] धीरे-धीरे, आहिस्ता, शनैः शनैः ।

आसथान-पु० [सं० स्थान] १ बैठने का स्थान, बैठक । २ सभा, समाज ।

आसथा-स्त्री० [सं० आस्था] १ श्रद्धा, पूज्य भाव । २ विश्वास, भरोसा । ३ आशा । ४ सहारा, आश्रय । ४ समारोह । ५ सभा । ६ शक्ति, बल । ७ अंगीकार ।

आसना-स्त्री० [फा० आशना] चाहने वाली, प्रेमिका ।

आसनाई, आसनाही-स्त्री० [फा० आशनाई] पर स्त्री से प्रेम संबंध ।

आसनोट-देखो 'आसणोट' ।

आसनी-पु० [सं० आश्रयण] आश्रय स्थल । -क्रि० वि० निकट, नभाप ।

प्रासन्न, (त्रौ)-वि० १ निःकटवर्ती, समीपस्थ । २ पास बैठा हुआ । ३ गेय । ४ उपस्थित । -पु० अवसान । -सिद्धि -वि० सिद्धि के निःकट मोक्षगामी । (जैन)

प्रासप-देखो 'ग्रामप' ।

प्रासपद-पु० [सं० ग्रामपद] घर, मदन ।

प्रासब-देखो 'ग्रामब' ।

प्रासमांण, (मांन)-पु० [फा० आसमान] १ आकाश, गगन, व्योम । २ स्वर्ग, देवलोक ।

प्रासमांणी, (मांनी) वि० [फा० आसमानी] १ आसमान जैसा, हल्का नीला । २ आसमान संबंधी । ३ दैवी । -क्रि० वि० अकम्पात, अचानक ।

प्रासमुद्र-क्रि० वि० समुद्र तक, समुद्र पर्यन्त ।

प्रासमेद, (मेध, मेधो)-देखो 'अस्वमेध' ।

प्रासय-पु० [सं० आशय] १ अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य । २ नीयन, कामना । ३ वासना । ४ बुद्धि । ५ शयन गृह, विश्रामस्थल । ६ घर । ७ स्थान । ८ मन, हृदय । ९ प्रारब्ध ।

प्रासर-पु० १ अंत । २ अनुर । ३ श्मशान भूमि । ४ अवसर । ५ देखो 'प्रासार' ।

प्रासरम-पु० आश्रम ।

प्रासरित-वि० [सं० आश्रित] १ महाग पाया हुआ, आश्रित, निर्भर । २ भरोसे पर रहने वाला । ३ अधीन । ४ सेवक, नीकर ।

प्रासरियो-देखो 'ग्रामरी' ।

प्रासरी-बचन, (वाद, वाच)-देखो 'ग्रामीरवाद' ।

प्रासरन-१ देखो 'अमुर' । २ देखो 'ग्रामरी' ।

प्रासरी-पु० [सं० आश्रय] १ सड़ारा, आश्रय, अश्रय । २ भरोसा, विश्वास । ३ आशा । ४ जीवन निर्वाह का हेतु । ५ महायता का विश्वास । [सं० आश्रम] ६ मकान, घर । ७ मकान का छोटा भाग जो चारों ओर से आच्छादित हो । ८ शरण, पनाह । ९ प्रतीक्षा, इस्तजार । १० अनुमान अंदाजा ।

प्रासल-पु० हमला, आक्रमण ।

प्रासलेट-रबी० मकान की दीवार के कोने या बीच में लगाये जाने वाले चौड़े पत्थर, स्तंभ ।

प्रासव-पु० [सं०] १ भ्रमके से खींच कर बनाया हुआ बढ़िया व उत्तम शराब, मद्य । २ फलों का खमीर । ३ अर्क । ४ काढ़ा ।

प्रासवार-पु० सवार ।

प्रासवणी (बी)-देखो 'ग्रामीणों' (बी) ।

प्रासहणी (बी)-क्रि० आक्रमण करना, धावा बोलना ।

प्रासांण, (न)-वि० [फा० आमान] सरल, सुगम, सीधा । -पु० [फा० एहसान] उपकार, एहसान ।

प्रासांणी (नी)-स्त्री० [फा० आमानी] सरलता, सुगमता । सुभीता ।

प्रासांमी-पु० [फा० आमांमी] १ अभियुक्त । २ देनदार । ३ काश्तकार । ४ धनवान या प्रतिष्ठित व्यक्ति । ५ लगान पर खेत जोतने वाला किसान । ६ व्यक्ति विशेष । -दार-पु० मुखिया, प्रधान ।

प्रासा-स्त्री० [सं० आशा] १ अभिलाषा, इच्छा, कामना । २ भरोसा, उम्मीद । ३ दिशा । ४ दश प्रजापति की कन्या । ५ एक देवी का नाम । ६ गर्भ ।

प्रासाऊ-वि० आशावान, आशार्थी, उम्मीदवार ।

प्रासाणज-पु० [सं० आशागज] दिक्पाल ।

प्रासागीर-देखो 'ग्रामगीर' ।

प्रासाढ़-पु० [सं०] वर्षा ऋतु का प्रथम मास ।

प्रासाढ़ाऊ, प्रासाढ़ी-वि० प्रासाढ़ का, प्रासाढ़ संबंधी । -पु० १ खरीफ की फसल । २ प्रासाढ़ की पूर्णिमा ।

प्रासातना-स्त्री० सत्कार न करना, मान न देना किया ।

प्रासापाढी-पु० अशोक वृक्ष ।

प्रासापुरा-स्त्री० बरबड़ी देवी ।

प्रासापुरी-पु० देव पूजन में काम आने वाला द्रुप ।

-स्त्री० चौहानों की कुल देवी । दुर्गा ।

प्रासाबरी-वि० आशावान ।

प्रासामुखी-वि० उम्मीदवार ।

प्रासार-पु० [ग्र०] १ विह्वल, लक्षण । २ दीवार की नींव की मोटाई । ३ दीवार की चौड़ाई । ४ अनिवार्य । ५ आश्रय ।

प्रासाढ, प्रासालुप्यो, (सूँध, लूँधौ) प्रासाढ (त)-वि० १ आशावान, उम्मीदवार । २ प्रेमातुर ।

प्रासावंत-वि० आशावान ।

प्रासावरी-स्त्री० [सं०] १ श्री नामक प्रसिद्ध राग । -पु० २ एकप्रकार का सुगंधित पदार्थ । ३ एक प्रकार का कव्तर । ४ एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा ।

प्रासावार-स्त्री० आशापूर्णा देवी ।

प्रासिक-वि० [सं० आशिक] (स्त्री० आसिका) १ इश्क करने वाला, प्रेमी । २ अनुरक्त, मुग्ध ।

प्रासिख-१ देखो 'ग्रामोस' । २ देखो 'ग्रामिक' ।

प्रासि-पासि-देखो 'ग्राम-पास' ।

प्रासिरी-देखो 'ग्रामरी' ।

प्रासी-स्त्री० सर्प की दाढ़ ।

प्रासौंगली (बौ)-क्रि० मन लगना, दिल बहलना ।

आसीन-वि० [सं०] १ बैठा हुआ, विराजमान । २ उपस्थित ।
३ स्थित । ४ सुशोभित ।
आसीरवाद, (वाद)-पु० [सं० आशीर्वाद] १ शुभकामना
मुचक शब्द । २ वरदान । ३ दुःखा, आशिस ।
आसीविष, (स)-पु० [सं० आशीविष] सर्प, साँप ।
आसीत (हो)-स्त्री० [सं० आशिस] आशीर्वाद, मंगल
कामना । दुःखा ।
आसीसणो (जो)-क्रि० १ आशीर्वाद देना, दुःखा देना । २ मंगल
कामना करना । ३ वरदान देना ।
आसु-क्रि० वि० [सं० आसु] जल्दी, शीघ्र, तत्काल । -पु०
१ वर्षाकालीन एक धान्य । २ प्राण । ३ आश्विन मास ।
--कवि-पु० तत्काल कविता रचने वाला व्यक्ति । कवि ।
आसुग-पु० [सं० आसुग] १ वाण, शर, तीर । २ वायु ।
३ मन । -वि० द्रुतगामी । -आसन-पु० धनुष ।
आसुतो-स्त्री० [सं० आसुतिः] शराब, आसव ।
आसुतोस-वि० [सं० आसुतोष] शीघ्र तुष्टमान होने वाला ।
-पु० शिव, महादेव ।
आसुपाळी-देखो 'आमापाळी' ।
आसुर-पु० [सं० अस्र] १ रक्त, खून । २ देखो 'असुर' ।
-वि० असुर संबंधी ।
आसुराण-देखो 'असुर' ।
आसुरी-वि० [सं०] असुर संबंधी, राक्षसी । -स्त्री०
१ संख्या । २ राक्षसी, पिशाचनी । ३ शल्य चिकित्सा ।
--धरम-पु० असुरों की प्रकृति, स्वभाव, धर्म ।
आसू-पु० [सं० आश्विन] १ आश्विन मास, आसोज ।
२ देखो 'आसू' । ३ देखो 'आसु' ।
आसूदनी-स्त्री० सम्पन्नता, वैभव ।
आसूदी (घो)-वि० [फा० आसूद] (स्त्री० आसूदी, घी)
१ आलसी, अकर्मण्य । २ संतुष्ट तृप्त । ३ सम्पन्न ।
४ भरा-पूरा । ५ विना जुता । ६ थकान रहित ।
आसूरण-पु० मुसलमान ।
आसूखण-स्त्री० [सं० आसुखणः] अग्नि, धाग ।
आसे-देखो 'आमय' ।
आसेर-पु० १ किला, गढ़ । २ एक राजपूत वंश ।
आसोज-पु० [सं० अश्वयुज] आश्विन या क्वार मास ।
आसोजी-वि० उक्त मास संबंधी । -स्त्री० उक्त
मास की तिथि ।
आसो-पु० [सं० आम्र, आश्रव] १ लाल रंग की एक शराब
विशेष । २ नपुंसा के समान काम करने वाला काण्ड

का उपकरण । ३ सोने या चांदी से मंडा डंडा । ४ शीश-
धियों का अर्क । ५ बड़ई का एक उपकरण । ६ यम पाश ।
७ एक राग विशेष ।
आस्त-पु० आपत्ति, कष्ट, विपदा, दुःख । -वि० आस्तिक ।
आस्तर-पु० [सं० अस्तर] बिछोना ।
आस्तिक-वि० [सं०] ईश्वर व धर्म में आस्था रखने वाला ।
आस्तिकता-स्त्री० [सं०] ईश्वर व धर्म में आस्था ।
आस्थान-पु० [सं० स्थान] १ बैठने का स्थान । २ सभा,
बैठक, मंडप ।
आस्था-स्त्री० [सं०] श्रद्धा, भक्ति ।
आस्थिसंस्कार-पु० एक प्रकार का दाह संस्कार ।
आस्पद-पु० [सं० आस्पदम्] १ स्थान । २ कारण । ३ प्रतीक ।
आस्फाळ-पु० [सं०] १ मुजा ठोकने की आवाज । २ हाथी के
कानों की फड़फड़ाहट ।
आस्य-पु० [सं० आस्यं] १ मुख । २ डाढ़ । ३ चेहरा, शक्व ।
४ छेद । ५ कमजोर गाय के गर्भाशय का भाग जो प्रसव के
बाद बाहर निकल जाता है । ६ छाछ के ऊपर आने वाला
पानी । [सं० आशय] ७ प्रयोजन, मतलब, तात्पर्य ।
आस्यप-देखो 'आसो' ।
आस्या-स्त्री० प्राणा, अभिलाषा । -पुरी-स्त्री० एक देवी ।
-भंग-स्त्री० निराशा ।
आश्रम, (म्मे)-पु० [सं० आश्रम] १ ऋषि-मुनियों का निवाम
स्थान, तपोवन । २ कुटिया । ३ मठ । ४ विश्राम स्थान ।
५ स्थान । ६ आर्यों के जीवन की चार अवस्थाएँ ।
७ विद्यालय । ८ वन, उपवन । ९ चार की संख्या ।
-वि० चार ।
आश्रय-पु० [सं० आश्रय] १ आश्रय, अवलम्ब । २ सहारा,
मदद । ३ आधार वस्तु । ४ शरण, पनाह । ५ घर, मकान ।
आलपयास-स्त्री० [सं० आश्रयास] अग्नि, धाग ।
आलव-पु० [सं० आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश द्वार, कर्म बंध ।
हिंस्र आदि । २ दोष । ३ प्रण ।
आलवकाळ (ळ)-पु० यों समय की ऐसी अवधि जब नवीन
कर्म पुद्गल आत्मा के द्वारा गृहीत होते हैं ।
आलित-वि० [सं० आश्रित] १ किसी पर आधारीत, अव-
लंबित । २ शरणागत । -पु० सेवक, दास ।
आलीवाद-देखो 'आसीरवाद' ।
आस्वाद-पु० [सं०] स्वाद, जायका ।
आस्वासन-पु० [सं०] चक्कना या स्वाद लेना क्रिया ।
आस्वासन-पु० [सं० आश्रवापन] सांत्वना, तसल्ली । ढाढ़स ।
आहंघणी (बो)-क्रि० [सं० अश्रयचन] १ झटका देना, धक्का
देना । २ मारना, ध्वंस करना । ३ छीनना, भण्डना ।

आह्वि

(११६)

आह्वान

आह्वि-वि० अभिमानि, गविला ।
 आहंस-पु० [सं० अभ्यंग] १ साहन, हिम्मत । २ शक्ति
 बल, पराक्रम ।
 आहंसणी (बौ)-कि० १ साहस व हिम्मत करना । २ बल
 प्रयोग करना ।
 आहंसी (क)-वि० माहसी, बलवान, शक्तिशाली ।
 आह-सर्व० यद्वा । -अर्थ०- पीड़ा व शोक सूचक ध्वनि । -स्त्री०
 १ तड़पन, उमंग, ठंडी सांभ । २ हाय । -कि० वि०
 १ अगो, अथ । २ देखो 'आम्य' ।
 आहुङ्ग-स्त्री० १ मेला, फौज । २ युद्ध, समर ।
 आहुडी (आहेडी)-पु० [सं० आखेटक] १ शिकारी । २ भील ।
 आहुई-राहुई-कि० वि० शगल-वगल, आसपास ।
 आहचणी (बौ)-देखो 'आहचणी' (बौ)
 आहुज (ज)-पु० [सं० आज्य] १ घन, घी । २ आहुति ।
 आहट-स्त्री० १ ध्वनि, शब्द । २ खटका ।
 आहटणी (बौ), आहुटणी (बौ)-कि० पीछे हटना, पराजित
 होना ।
 आहण-पु० [सं० आहवनम्] १ युद्ध । २ प्रहार । ३ यज्ञ,
 होम । ४ देखो 'आमत' ।
 आहणणी (बौ)-कि० वार करना । प्रहार करना ।
 आहण, (य) आहणी-स्त्री० १ फौज, सेना । २ युद्ध, समर ।
 आहणी, (बौ)-कि० १ युद्ध करना । २ वार करना । ३ मारना
 ४ हनन करना ।
 आहत-वि० [सं०] १ धायल । २ कुचला हुआ । ३ चोट
 खाया हुआ, पिटा हुआ । ४ मरा हुआ ।
 आहमी-साहमी-देखो 'आमी-मांमही' ।
 आहर-पु० [सं० अहः] १ समय, वक्त, काल । २ दिन ।
 ३ देखो 'आहव' ।
 आहरट, (ट्ट)-पु० १ फौज, सेना । २ युद्ध । ३ संहार ।
 आहरण-पु० १ हरण, अपहरण । २ स्त्रीना-भपटो, लूट ।
 ३ हस्तान्तरण । ४ ग्रहण, प्राप्ति । ५ दहेज । ६ आभूषण ।
 आहरणी (बौ)-कि० १ युद्ध करना, भिड़ना । २ टक्कर लेना ।
 आहरी-पु० १ घाम-रूम की कुटिया । २ देखो 'आसगी' ।
 आहृणाणी-देखो 'आहृणाणी' ।
 आह्व-पु० [सं० अहव] युद्ध रण ।
 आह्वान-पु० [सं० आह्वान] १ निमंत्रण, बुलावा । २ देवताओं
 का आह्वान ।
 आह्वि, (बौ)-पु० १ पीड़ा, वीर । २ देखो 'आहव' ।
 आह्वि-प्रत्य० [सं० अह्वे] १ हर्ष-विस्मय युक्त ध्वनि । २ खेद
 सूचक ध्वनि ।
 आहाडाखंड-पु० वेदपाठ, मेवाट ।
 आहाट-देखो 'आहट' ।

आहार-पु० [सं०] १ भोजन, खाना । २ भक्षण । ३ खाद्य
 पदार्थ । [सं० आहार] ४ घी, घृत ।
 आहारज, (राज, रिज)-पु० पहाड़, श्वेत ।
 आहारी-वि० भोजन करने वाला ।
 आहाल-पु० चिह्न, निशान ।
 आहावि-देखो 'आहव' ।
 आहि-देखो 'अहि' ।
 आहिज, (जि)-१ देखो 'आही' । २ देखो 'आहज' ।
 आही, (ज)-सर्व० यही ।
 आहीडी (डौ)-देखो 'आर्ड' (डी) ।
 आहीठाण (न)-देखो 'आडठाण' ।
 आहीर-देखो 'अहीर' ।
 आहीवाली-पु० कृष्ण संबंधी शर्वनामा ।
 आहु, आहुई-देखो 'आहव' ।
 आहुड-पु० युद्ध, संग्राम ।
 आहुङ्गी (बौ)-कि० युद्ध करना, लड़ना, भिड़ना ।
 आहुट-पु० युद्ध, समर । आहट ।
 आहुटणी (बौ)-कि० १ वीर गति प्राप्त होना । २ युद्ध करना ।
 ३ मिटना, नष्ट होना । ४ मिड़ना, टक्कर लेना ।
 ५ हटना, दूर होना । ६ वापिस मुड़ना ।
 आहुटि-देखो 'आहट' ।
 आहुडणी (बौ)-देखो 'आहुङ्गी' (बौ) ।
 आहुति, (ती)-स्त्री० [सं० आहुतिः] १ मंत्रोच्चारण के साथ
 यज्ञाग्नि में साकल्य डालने की क्रिया । २ साकल्य की वह
 मात्रा जो एक बार में यज्ञ में डाली जाय । ३ हवन, यज्ञ ।
 ४ हवन सामग्री । ५ आह्वान, आमंत्रण ।
 आहूत-वि० १ बुलाया हुआ, निमंत्रित । २ देखो 'आह्वि' ।
 आहूत-स्त्री० आण ।
 आहूति (नो)-देखो आहुती ।
 आहे-कि० वि० है ।
 आहेड (डा)-स्त्री० [सं० आखेट] शिकार । -पु० [सं० आखेटक]
 १ शिकारी । २ भील । ३ देखो 'आहेडी' ।
 आहेडिबो, आहेडी-पु० [सं० आखेटक] १ शिकारी । २ भील ।
 ३ लुब्धक नामक तारा । ४ आर्द्र नक्षत्र का नाम ।
 आहेत-पु० [सं० अहीज] १ जेवाण । २ नशा । ३ अफीम ।
 आहोइणी, (बौ)-कि० चलना, निशान लगाना ।
 आहोइणी, (बौ)-देखो 'आहुटणी' (बौ) ।
 आह्वान-पु० [सं०] अत्यन्त हर्ष, आनन्द ।
 आह्वणी (बौ)-कि० आक्रमण करना ।
 आह्वन-वि० आग्रह, प्रवृत्ति ।
 आह्वण-पु० १ नाम । २ गीत-वदय आदि का लड़ाई ।
 आह्वान-पु० [सं०] १ बुलावा, निमंत्रण । २ देवताओं का आह्वान ।

-इ-

इ-देव नागरी लिपि का तीसरा स्वर ।
 ई-सर्व० इस, इमने । -क्रि०वि० व्यर्थ में, ब्रकार में ।
 इंजं, (ऊं)-क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे ।
 इंक्लाब-पु० [ग्र०] १ कोई बड़ा परिवर्तन । २ क्रांति ।
 इंग, इंगन-पु० १ कान, हिलना । २ चिह्न, संकेत ।
 इंगरेज-देखो 'अंगरेज' ।
 इंगलयांन (सतान)-पु० अंग्रेजों का देश, इंग्लिस्तान, इंग्लैंड ।
 इंगलस, (लिस)-स्त्री० अंग्रेजी ।
 इंग्ला-स्त्री० इड़ा नामक नाड़ी ।
 इंगलैंड-स्त्री० अंगरेजों के देश का नाम ।
 इंगार-पु० अग्निकण, अंगारा ।
 इंगाल-पु० एक प्रकार का आहार संबंधी दोष । (जैन)
 इमित-पु० [सं०] संकेत, चिह्न ।
 इंच-पु० [ग्र०] एक छोटा नाग ।
 इच्छा-स्त्री० इच्छा ।
 इंजन-पु० १ किसी मशीन को चलाने वाला यंत्र । २ रेल का इंजन ।
 इंजीनियर-पु० [ग्र०] यंत्र विद्या का पूरा जानकार । यांत्रिक, अभियंता ।
 इंजील-स्त्री० ईसाइयों की धर्म पुस्तक ।
 इंठे, इंठे-क्रि०वि० यहाँ ।
 इंडकाकड़ी-देखो 'एरंड काकड़ी' ।
 इंडांगी-देखो 'इडांगी' ।
 इंडियी-देखो 'एरंड' ।
 इंडी-पु० अंडा, गोला ।
 इंडी-देखो 'इडांगी' ।
 इण, इण सर्व० इगने ।
 इंतकाळ-देखो 'अंतकाळ' ।
 इंतजाम-पु० प्रबंध, व्यवस्था ।
 इंतजार-स्त्री० [ग्र०] प्रतीक्षा ।
 इंद्र-पु० १ इन्द्र, सुरेश । २ चंद्रमा शशि । ३ छप्पय छंद का बारहवां भेद । ४ एक की संख्या । -अरि-पु० असुर, दैत्य ।
 -गोप-पु० १ वीर बहूटी नामक कीड़ा । २ जुगल ।
 -पत्न्य-पु० इन्द्रपत्न्य । -पुरी-स्त्री० स्वर्ग । -पूत-पु० जयंत, बालि । अर्जुन । बधू-स्त्री० शची । वीर बहूटी ।
 -लोक-स्त्री० इंद्रपुरी । -ससतर-पु० वज्र ।
 इंद्रजव-पु० [सं० इंद्रजव] इंद्र या इंद्रज के वीज ।
 इंद्रण (णी)-देखो 'रथण' ।
 इंदर-देखो 'इन्द्र' । -जाळ== 'इंद्रजाल' । -धनक== 'इंद्र धनुष' ।
 -लोक== इंद्रलोक ।

इंदरा-देखो 'इंदिरा' । -वर== 'इंदिरावर' ।
 इंदराज-पु० कपाटों में लगने की आड़ी लकड़ी ।
 इंदरी-देखो 'इंद्री' ।
 इंदव-पु० एक छन्द विशेष ।
 इंदसेन-देखो 'इंद्रसेन' ।
 इंदारौ-देखो 'अंधारौ' ।
 इंदिरा-स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी । २ शोभा । ३ आभा, क्रांति ।
 -वर-पु० लक्ष्मीपति विष्णु । आश्विन के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।
 इंदीवर-पु० [सं०] कमल ।
 इंदु-पु० [सं०] १ चन्द्रमा । २ देखो 'इंद्र' । -क== 'अंधुक' ।
 -जाँ-स्त्री० नर्वदा नदी । -वदना-स्त्री० चन्द्रमुखी, सुन्दरी । -वार-पु० सोमवार । ज्योतिष का एक योग ।
 इंद्र-पु० [सं०] १ देवताओं का राजा । २ स्वामी, पति । ३ पूर्व दिशा । ४ पूर्व दिशा का दिग्गज । ५ घाट दिशाओं में से एक । ६ छप्पय छंद का बारहवां भेद । ७ एक की संख्या ।
 -जाळ-पु० जादूगरी, नजरबंदी की कला । मायाजाल । बहलर कलाओं में से एक । -अरि-पु० असुर राक्षस -गोप-पु० वीरबहूटी नामक जंतु । -जाळक-पु० जादूगर, ऐंद्रजातिक । -जीत-पु० मेघनाद । -जीत, जेत-पु० लक्ष्मण । -धनुष, धनुस, धानक-पु० वर्षाकालिक विविध रंगीय इन्द्र धनुष । -पुर, पुरी-पु० स्वर्ग । -बधू-स्त्री० वीर बहूटी । शची । -मंडळ-पु० सात नक्षत्रों का समूह । -तुल-पु० शिर के बाल उड़ने का रोग । -लोक-पु० स्वर्ग । -बाड़ी-स्त्री० नन्दनवन । -वाहण-पु० १ ऐरावत । २ गज हाथी । -ससतर-सस्त्र-पु० वज्र । -सुत-पु० बालि, जयंत, अर्जुन ।
 इंद्रकील-स्त्री० हिमालय का एक शिखर ।
 इंद्रजव-देखो 'इंद्रजव' ।
 इंद्रजवज-पु० १ एक वहुत ऊंचा ध्वज जिस पर हजार छोटी-छोटी झण्डियों होती हैं । (जैन) २ तीर्थंकरों के चौतीस प्रतिश्रयों में दसवां प्रतिश्रय ।
 इंद्राण, (णी), इंद्रा-स्त्री० [सं० इंद्राणी] १ इन्द्र-पत्नी शची । २ देवी, दुर्गा ।
 इंद्राणिक-पु० [सं० इंद्राणिक] एक शृंगरिक आसन ।
 इंद्रानुज-पु० [सं०] १ विष्णु हरि । २ श्री कृष्ण । ३ वामन ।
 इंद्रापुर (री)-देखो 'इंद्रपुर' ।
 इंद्रायण (णी)-स्त्री० [सं० इंद्रायन] एक प्रकार की लता व उगका फल ।
 इंद्रावध-पु० [सं० इंद्रावध] इन्द्र का वज्र ।

इंद्रावरज-पु० [सं०] ईश्वर ।

इंद्रावाहण-देखो 'इंद्रवाहण' ।

इंद्रासण-पु० [सं० इन्द्रासन] १ स्वर्ग का राज्य । २ इन्द्र का महानन । ३ ढगण के प्रथम भेद का नाम ।

इंद्रि, इंद्रिय, इंद्री-स्त्री० [सं० इन्द्रिय] १ पंचेन्द्रिय जिनसे ज्ञान प्राप्त होता है । २ शारीरिक शक्ति । ३ धीर्य । ४ शिष्ट, लिंग । ५ शक्ति, बल । ६ पाँच की संख्या । ७ दस की संख्या । —जुलाब-पु० मूत्र विरेचन । —सुर-पु० इन्द्रियों के देवता ।

इंद्रोक्तो-पु० एक वृक्ष विशेष ।

इंद्री-देखो 'इंद्र' ।

इंधण (घांण. एणो)-पु० [म० इंधन] जलाने की लकड़ी, कंडा, तेल आदि ।

इंधारी-देखो 'अंधारी' ।

इंधारीजणो (बो)-क्रि० अंधकार मय होना ।

इंधारी-देखो 'अंधारी' ।

इंनण, इंनणी-देखो 'इंधण' ।

इंधुं-अव्य० यों, ऐसे ।

इंसान-पु० [म०] मनुष्य ।

इंसाफ-पु० [म०] १ न्याय । २ फैसला, निर्णय ।

इंहकार-देखो 'अहंकार' ।

इंहकारी-देखो 'अहंकारी' ।

इ-पु० [सं०] १ भेद । २ कोप । ३ वेद, संताप, दुःख । ४ अनुकम्पा ।

५ अपाकरण, खंडन । ६ साधना । ७ पवित्रता ।

८ कामदेव । ९ गणेश । १० शिव । ११ सूर्य । १२ स्वामि

कार्तिकेय । १३ ब्रह्मा । १४ इन्द्र । १५ चन्द्रमा ।

१६ सर्प । १७ दया । —सर्व० इत, इसने । इस ।

—अव्य० १ आश्चर्य, दया, क्रोध सूचक ध्वनि । २ निश्चय-

यार्थ सूचक शब्द । २ पादपूर्त्यक प्रत्ययशब्द ।

—वि० व्यर्थ ।

इअ, इए—सर्व० यह । —अव्य० इतने में । इससे ।

इउं, (ऊं)-क्रि० वि० इस तरह, ऐसे । —वि० व्यर्थ ।

इकांत इकांत-देखो 'एकांत' ।

इक (की)-वि० [सं० एक] एक । —टक-क्रि० वि० अपलक,

निस्पंद नेत्रों से, लगातार । —इंकी-स्त्री० एक छत्रता ।

—इंडो-वि० एकाधिकारी । —डाळियो-वि० एक तरफ

ढालू रहने वाला । —साखियो-पु० खरीफ की

फसल वाला ।

इकखरौ-पु० डिगल का एक गीद, (छंद) ।

इकठी, इकठी (ठूी)-वि० एकत्र, संगृहीत ।

इकइंकी-स्त्री० एक छत्रता, एकाधिकारी ।

इकतर (तर)-वि० १ सत्तर से एक अधिक । २ एकत्र ।

—स्त्री० सत्तर व एक की संख्या, ७१ ।

इकतरफो-वि० एक ही पक्ष का, पक्षपातपूर्ण ।

इकता-देखो 'एकता' ।

इकतार-वि० एक रस, समान, बराबर । —क्रि० वि० निरन्तर ।

इकतारो-पु० १ एक तार का वाद्य । २ डकहरे मूत्र का वस्त्र ।

इकताळ-पु० १ एक क्षण, पल । २ बारह मावाओं की ताल ।

इकताळी (स)-वि० चालीस व एक । —पु० चालीस व एक की संख्या, ४१ । —क्रि० वि० जल्दी ।

इकताळीसौ, इकताळी-पु० ४१ का वर्ष ।

इकतीस-वि० तीस व एक । —पु० तीस व एक की संख्या, ३१ ।

इकतीसौ-पु० ३१ का वर्ष ।

इकदरो-पु० १ पुरानी इमारतों के नीचे बना तहखाना ।

२ एक दरवाजे का कमरा या कोठड़ी ।

इकपतनी-स्त्री० पतिव्रता ।

इकपदी-स्त्री० राह, रास्ता, मार्ग ।

इकपोथ्यो-पु० एक ग्रंथ वाला लहमुत ।

इकबाल-पु० १ स्वीकार, कबूल । २ भाग्य । ३ प्रताप ।

इकमझा-वि० एक मत वाला, संगठित ।

इकमात-भाई, इकमायो-पु० यों सहोदर । भाई ।

इकमोलो-वि० एक ही मूल्य का ।

इकयासियो-पु० ८१ वां वर्ष ।

इकयासी-वि० अस्मी और एक की संख्या के बराबर ।

इकरंगो-वि० समान रंग का ।

इकर, इकरां-क्रि० वि० एक बार ।

इकरबखो-वि० (स्त्री० इकरबखी) सदा एकमा स्वभाव वाला ।

इकरथ-वि० व्यर्थ ।

इकरदन-पु० यों गजानन,, गणेश ।

इकरवा (चाप)-स्त्री० दीवार में लगाया जाने वाला सीधा पत्थर ।

इकराणवो-पु० ९१ का वर्ष ।

इकराणु, (णू)-वि० नब्बे व एक । —पु० नब्बे व एक की संख्या, ९१ ।

इकराणूमौ-वि० इकराणवों के स्थान वाला ।

इकरार-पु० [म०] वादा, प्रण, संकलन । —नांभी-पु० प्रतिज्ञा पत्र, शर्तनामा ।

इकरारा-क्रि० वि० १ एक बार । २ तेजी से ।

इकलंथ-क्रि० वि० लगातार, निरन्तर । २ देखो 'एकलिंग' ।

इकलवाइ (ई)—पु० स्वर्णकारों का एक औजार ।
 इकलाण-वि० एकांत, निर्जन । —क्रि० वि० १ एक दफा, एक बार । २ देखो 'इकलामियो' ।
 इकलाई-स्त्री० १ बट्टई का एक औजार । २ मोची का एक औजार । ३ एक तह वाला वस्त्र । ४ अकेलापन ।
 इकलाप (पी)-वि० अकेला, एकाकी (स्त्री० इकलानी) ।
 इकलायी-देखो 'इकलामियो' ।
 इकलालियौ-वि० १ समान स्वभाव वाला । २ एकता और प्रेम का वर्तव करने वाला । ३ देखो 'इकलामियो' ।
 इकलास-पु० [अ० इस्लाम] १ प्रेम, मेल, मित्रता । २ देखो 'इकलामियो' ।
 इकलामियो-पु० एक सवारी का ऊंट ।
 इकलिंग-देखो 'एकलिंग' ।
 इकलिषो-देखो 'एकलियो' ।
 इकलीम-देखो 'अकलीम' ।
 इकलीयण-पु० [सं० एक लोचन] १ कौआ, काग । २ शुक्राचार्य । ३ काना-व्यक्ति । —वि० एक नेत्र वाला ।
 इकलोती-पु० (स्त्री० इकलोती) मां-बाप का अकेला पुत्र ।
 इकलोस-देखो 'इक्लीस' ।
 इकस-देखो 'अकस' ।
 इकसठ-वि० [सं० एकपष्टि] साठ व एक । —पु० साठ व एक की संख्या, ६१ ।
 इकसठी-पु० इकसठ का वर्ष ।
 इकससियौ-क्रि० वि० १ बिना विश्राम या सांस लिये । २ तेजी से । —वि० ३ एक सांस में सब काम करने वाला । ४ बहुत तेज ।
 इकसाखिरी-वि० एक फसल वाला ।
 इकसार (री)-वि० समान, एक जैसा । —क्रि० वि० लगातार, निरन्तर ।
 इकसूत-वि० एक माथ, एक मूत्र में ।
 इकहतर (त्तर)-देखो 'इकोतर' ।
 इकहती (त्ती, त्यो, थो)-स्त्री० शस्त्र विशेष ।
 इकाण्णमौ, (वौ)-क्रि० नद्वे के बाद वाला । —पु० इक्काणू का वर्ष ।
 इकाणू-वि० नद्वे व एक । —पु० नद्वे व एक की संख्या, २१ ।
 इकांत-देखो 'एकांत' ।
 इकांत, (रं)-क्रि० वि० एक दिन छोड़ कर ।
 इकांतरौ-देखो 'एकांतरौ' ।
 इकाई-स्त्री० १ एक की संख्या । २ एक अंश या विभाग ।
 इकावहावुर-पु० गोला व्यक्ति ।

इकार-पु० वर्णमाला का तृतीय स्वर, 'इ' । —क्रि० वि० एक दफा, एक बार ।
 इकावन-वि० पचास व एक । —पु० उक्त की संख्या, ५१ ।
 इकावनी-पु० इक्कावन का वर्ष ।
 इकियासियौ-पु० इक्कामो का वर्ष ।
 इकियासी-वि० अस्सी व एक । —पु० अस्सी व एक की संख्या, ८१ ।
 इकी इकीस-देखो 'इक्कीस' ।
 इकीसी-पु० २१ का वर्ष । —वि० पूर्णतया विश्वस्त, खरा ।
 इकेली-देखो 'एकली' (स्त्री० इकेली) ।
 इकेवड़-स्त्री० १ एक धागे की रस्सी । २ वस्त्र की एक परत ।
 इकेवड़ी ताजीम-स्त्री० राजा महाराजाओं द्वारा दिया जाने वाला सम्मान विशेष ।
 इकेवड़ी-वि० १ एक तह वाला । २ एक परत वाला । ३ एक धागे वाला । ४ इकहरा । ५ समाज में एकाकी ।
 इकोतर-वि० [सं० एक सप्तति] सत्तर व एक, इकहतर । —पु० सत्तर व एक की संख्या, ७१ ।
 इकोतरी-पु० इकहतरवां वर्ष ।
 इकी-देखो 'इक्की' ।
 इक्क-वि० एक ।
 इक्कबाल-पु० [अ० एकबाल] एक ग्रहयोग । (ताजक ज्योतिष) ।
 इक्कड़-बिक्कड़-पु० १ एक देशी खेल । २ इस खेल के बोन ।
 इक्कल-वि० एक, अकेला ।
 इक्काण्णमौ (वौ)-देखो 'इकाण्णमौ' ।
 इक्कावन-वि० पचास व एक । —पु० पचास व एक का अंक, ५१ ।
 इक्कावनी-पु० इकावन की संख्या का वर्ष ।
 इक्कावांन-पु० इक्का (तांगा) चलाने वाला ।
 इक्की-स्त्री० १ कटार रखने की चमड़े की पेटी । २ एक ।
 इक्कीस-वि० १ बीस व एक । २ बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम । —पु० बीस व एक का अंक, २१ ।
 इक्कीसी-पु० २१ का वर्ष ।
 इक्केकई-वि० एक ।
 इक्की-पु० १ शस्त्र विद्या में प्रवीण बड़े-बड़े काम करने वाला योद्धा । २ अपने भुंड से बिछड़ जाने वाला गधु । ३ अकेला बैक । ४ तांगा । ५ एक बूटी वाला नाश का पत्ता । —वि० १ अकेला, एकाकी । २ अद्वितीय, बेबाड़ ।
 इक्खणौ (बौ)-क्रि० देखना, अवलोकन करना ।
 इक्खावन-देखो 'इक्कावन' ।

इक्यावनौ-देखो 'इक्यावनी' ।

इक्यासी-देखो 'इक्यासी' ।

इक्ष्वाक, इक्ष्वाकु-पुं० [सं० इक्ष्वाकु] १ सूर्यवंश का प्रथम राजा । २ इस नाम से चलने वाला वंश ।

इखरौ (खी)-देखो 'इखरौ' (वी) ।

इखतार, (री)-पुं० [अ० इखतार] १ अधिकार, काबू, वश । २ प्रभाव । —क्रि० वि० अधिकार में, वश में ।

इखला-पुं० तीर ।

इखलास-देखो 'इखलास' ।

इखु, ईखु-पुं० [सं० इखु] तीर, बाण ।

इख्य-स्त्री० [सं० इख्य] वसंत ऋतु ।

इख्यारत, (थ)-वि० व्यर्थ, निष्फल ।

इमताळी, (स)-देखो 'इकताळी' ।

इमताळीसौ, इमताळी-देखो 'इकताळीसौ' ।

इमतीस-देखो 'इकतीस' ।

इमतीसी-देखो 'इकतीसी' ।

इमसठ (ठ)-देखो 'इकमठ' ।

इमसठौ (ठी)-देखो 'इकमठौ' ।

इगियार-देखो 'इग्यारे' ।

इगियारस-देखो 'इग्यादसी' ।

इगियारे (रै)-देखो 'इग्यारे' ।

इगियारी-देखो 'इग्यारी' ।

इगुणहत्तरि-वि० १ साठ और नौ के योग के बराबर, उनहत्तर । २ उनहत्तर की संख्या, ६९ ।

इगुसीस-देखो 'उगगीस' ।

इग्या-देखो 'आग्या' । —कारी-देखो 'आग्याकारी' ।

इग्यारस (सि)-देखो 'इग्यादसी' ।

इग्यारे (रै)-वि० दण्ड व एक । —पुं० दण्ड व एक की संख्या, ११ ।

इग्यारोतड़ो, इग्यारी पुं० ग्यारह का वर्ष ।

इडा स्त्री० [सं० इडा] १ शरीर में वाम भाग में रहने वाली नाडी । २ श्वास नली । ३ बुध की पत्नी । ४ पृथ्वी । ५ वाणी ।

६ गो । ७ दुर्गा, पार्वती । ८ सरस्वती । ९ स्तुति ।

इडो-देखो 'पिडो' ।

इचरज-पुं० आश्चर्य, विस्मय । —वंत-वि० आश्चर्यान्वित ।

इच्छ-देखो 'इच्छा' ।

इच्छा, (बी)-क्रि० १ इच्छा करना, चाहना । २ अभिलाषा रखना ।

इच्छा-देखो 'इच्छा' ।

इच्छा-स्त्री० [सं०] १ चाह, कामना, अभिलाषा । २ मनोवृत्ति ।

३ भावना । —भेदी-स्त्री० जुलाब की औपधि ।

इच्छु (छु)-पुं० [सं० इच्छु] १ ईख । २ गुड़ ।

इच्छुक-वि० [सं०] चाहने वाला, अभिलाषी । —पुं० ईख ।

इच्छणी (बी)-क्रि० चाहना, इच्छा करना ।

इज देखो 'ईज' ।

इजगर-देखो 'अजगर' ।

इजत, (ति)-देखो 'इज्जत' ।

इजमी-देखो 'अजमी' ।

इजराय-पुं० [अ०] १ जारी करना । २ अमल में लाना । ३ प्रचार करना ।

इजळकणी (बी)-क्रि० छलकना, मर्दाबाद बाहर होना ।

इजळकौ-पुं० छलकने की क्रिया या भाव । उफान ।

इजळास-पुं० [अ०] १ बैठक । २ न्यायालय ।

इजहार-पुं० [अ०] १ प्रकाशन । २ वयान, गवाही ।

इजाजत, (ती)-स्त्री० [अ० इजाजत] आज्ञा, स्वीकृति, अनुमति ।

इजाफे, (फं, फी)-पुं० [अ० इजाफा] १ तरफकी, बढ़ावारी । २ बचत ।

इजार-पुं० [अ०] पायजामा, सूदल । —बंघ-पुं० नाड़ा, नारा ।

इजारदार, इजारेदार-पुं० ठेकेदार ।

इजारानामी-पुं० [अ० + फा० नाम] इजारे का शर्तनामा ।

इजारी-पुं० [अ० इजार] १ उधार या किराये पर देने का अधिकार । २ छत के ऊपर उठी हुई मकान की दोवार ।

इजे-विजे-वि० बराबर, समान, लगभग ।

इज्जत-स्त्री० [अ०] मान, प्रतिष्ठा, आदर ।

इठियासी-देखो 'इठियासी' ।

इटीडांड इट्टी-स्त्री० गुल्ली ।

इठंतर-वि० [सं० अष्टमशतति] सतर व आठ । —पुं० सत्तर व आठ की संख्या, ७८ ।

इठतरी पुं० इठतर का वर्ष ।

इठतर-देखो 'उठतर' ।

इठांणमौ (वी)-देखो 'अठांणमौ' ।

इठांण-देखो 'अठांण' ।

इठासी-देखो 'इठियासी' ।

इठियासियो-पुं० ८८ का वर्ष ।

इठियासी-वि० [सं० अष्टाशीति] अस्सी व आठ । —पुं० अस्सी व आठ का योग ।

इठे (ठै)-क्रि० वि० यहाँ, इस जगह ।

इडकरी-वि० मल ।

इडग-देखो 'अडिग' ।

इडांणी इहूणी इडांणी-स्त्री० माथे पर जयपात्र के नीचे रखने की ऋषे की गोल चकरी, गिरी, गेंडूरी । २ गेंडूरी के आकार का मस्तक में बालों का चक्र । ३ गेंडूरी के आकार की बनी रोटी जो घाग में सेक कर खाई जाती है ।

इई-क्रि०वि० यहां, यों ।

इए-सर्व० इमने, इस । —क्रि०वि० इधर, यहां । —गत-
क्रि०वि० इस प्रकार । —गी-क्रि०वि० इस ओर, इधर ।
—बीच-क्रि०वि० इतने में ।

इएां-सर्व० इन्होंने, इन । —क्रि०वि० इधर, यहां ।

इएि, (एी)-सर्व० इसीने, इसी । —क्रि०वि० इसमें ।

इएिया-गिणिया-वि० इने-गिने, कुछेक ।

इएियाळी-देखो 'अएियाळी' (स्त्री० इएियाळी) ।

इएी-देखो 'अएी' । देखो 'अएी-पांएी' ।

इत, इतकू-क्रि० वि० १ इधर, इस ओर । २ यहां ।

इतएी-सर्व० इतनी ।

इतफाक-पु० [अ० इतफाक] १ मौका, अवसर । २ संयोग ।
३ सहमति । ४ सहयोग ।

इतफाकी-क्रि० वि० संयोग से होने वाला ।

इतबार-देखो 'एतबार' ।

इतबारी-देखो 'एतवारी' ।

इतमाम-पु० [अ० एहतमाम] १ व्यवस्था, प्रबन्ध । २ बादशाह की
सवारी के आगे नकीब की आवाज । —क्रि०वि० बेरोकटोक ।

इतमीनान-पु० [अ० इतमीनान] विश्वास, भरोसा, संतोष ।

इतमीनानी-वि० विश्वास पात्र ।

इतर, (त)-वि० [सं०] १ दूसरा । २ अपर, अन्य । ३ भिन्न ।
४ माधारण । ५ पामर, नीच, ६ देखो 'इत्र' ।

इतरएी (बी)-क्रि० इठलाना, मचलना । घमंड करना ।

इतराज-देखो 'एतराज' ।

इतराएी (बी), इतरावएी (बी)-देखो 'इतरएी' (बी) ।

इतरे, (रे)-क्रि० वि० इतने में ।

इतरी-वि० (स्त्री० इतरी) इतना ।

इतळड-वि० इतनी मात्रा का ।

इतला-स्त्री० सूचना । —नामो-पु० सूचना पत्र ।

इतलै-क्रि० वि० इतने में ।

इतवरी-स्त्री० [सं० इतवरी] १ कुलटा या छिनाल स्त्री ।

इतवार, इतवार-१ देखो 'आदित्यवार' । २ देखो 'एतवार' ।

इतां (ता, ई)-वि० इतने । —सर्व० इन्होंने । —क्रि० वि०
इतने में ।

इति-स्त्री० समाप्ति, अंत, पूर्णता । —अव्य० समाप्ति
सूचक ध्वनि ।

इतिआचार-देखो 'प्रत्याचार' ।

इतिआस, इतिहास-पु० [सं० इतिहास] १ पूर्व वृत्तांत । २ पूर्व
काल का वर्णन । ३ वह पुस्तक जिसमें बीते युग का
वृत्तः लिखा हो । ४ वहनर कलाओं में से एक ।

इतिहासी-वि० ऐतिहासिक ।

इती-वि० इतनी ।

इतेइ-क्रि० वि० इतने में ।

इतै-क्रि०वि० १ इतने में । २ तब तक । ३ अब तक । ४ इधर ।

इतीलएी (बी)-देखो 'उतीलएी' (बी) ।

इतौ (त्त, तौ)-वि० (स्त्री० इती) इतना ।

इत्ताला-स्त्री० [अ० इत्ताला] खबर, सूचना, समाचार ।

इत्ते(इ), इत्तै-देखो 'इतै' ।

इत्थंतरी-क्रि० वि० [सं०] इस समय, ऐसे मीके पर ।

इत्थ-क्रि० वि० [सं०] ऐसे, यों, इस तरह । —साल-पु०
कुंडली में सोलह योगों में से एक ।

इत्थाचार-देखो 'अत्थाचार' ।

इत्थाव, (वि, दिक्, दिका, दीक)-अव्य० [सं० इत्थादिक] आदि,
प्रभृति, और ।

इत्र-पु० [अ०] पुष्पसार, अत्तर ।

इथ, इथिये (ये)-क्रि० वि० यहां ।

इवक, (कौ)-देखो 'अधिक' । —मास-देखो 'अधिकमास' ।

इवकाइ (इधकाइ)-देखो 'अधिकारी' ।

इवकार (इधकार)-देखो 'अधिकार' ।

इवत, इव-वि० प्रकाश मान, शोभित ।

इधक-देखो 'अधिक' ।

इधकजथा-स्त्री० डिगल गीत रचना की एक विधि ।

इधकार-देखो 'अधिकार' ।

इधकारी-पु० मान, सम्मान ।

इधकेरी, इधकी-वि० (स्त्री० इधकेरी) अधिक, विशेष ।

इधणहार-पु० लकड़हारा ।

इधराएी (बी), इधरावएी (बी)-देखो 'उद्धारणी' (बी) ।

इधराण-पु० [सं० अमिज्ञान] १ निशान, चिह्न । २ देखो 'इंधण' ।

इनकार-स्त्री० [अ०] नामंजूरी, मनाही ।

इनसान-पु० मनुष्य ।

इनसानियत-स्त्री० मनुष्यत्व, अलमनसाहत ।

इनसाफ-देखो 'इसाफ' ।

इनाम-पु० [फा० इनमाम] पुरस्कार, पारितोषिक ।

इनायत-स्त्री० [अ०] १ कृपा, अनुग्रह । २ एहसान । ३ न्याया-
वर । ४ वकशीग करने की क्रिया । ५ तुष्टमान होने का
भाव । —नामो-पु० कृपापूर्वक दी हुई वस्तु का लेख-पत्र ।

इनायाय, (याव)-देखो 'अन्याय' ।

इने, इनै-सर्व० इसे, इसको । —क्रि० वि० इस ओर, इस तरफ ।

इन्पाम-देखो 'इनाम' ।

इकरात-वि० [अ०] अधिकतः, बाहुल्य । -वि० बहुत, अधिक ।
 इव-क्रि० वि० १ ऐसे । २ देखो 'अव' ।
 इबड़ी-वि० (स्त्री० इबड़ी) दतना, ऐमा ।
 इबावत-स्त्री० [अ०] ईश्वर की उपासना। पूजा, अर्चना ।
 —खानो-पु० इबावतगृह, मंदिर ।
 इबारत-स्त्री० [अ०] १ लिखावट । २ लेखन शैली । ३ गद्यलेख ।
 ४ मजमून ।
 इबारती-वि० गद्यश्रमक ।
 इभ-पु० [सं०] (स्त्री० इभी) १ हाथी । २ तलवार ।
 —फौज-पु० तलवार की म्यान । —रमणी-पु०
 हस्ती कोड़ा ।
 इभचार-पु० [गं० इभ, = राजा + चर] गुप्तचर ।
 इभीयाळियो, इभ्याळियो (छो)-पु० (स्त्री० इभीयाळी इभ्याळी)
 माता-पिता रहित गरीब दत्तवा । -वि० १ अशक्त, कमजोर ।
 २ दया पात्र । ३ मातृ-पितृ होत ।
 इभ-क्रि० वि० इन प्रकार, ऐसे ।
 इभतिहान, इभत्यान, -पु० [अ० इभतिहान] परीक्षा, जांच ।
 इमदाद-स्त्री० मदद, सहायता ।
 इमरत-देखो 'अमरत' ।
 इमरतियो-पु० पिटल का बना हुक्का ।
 इमरती-स्त्री० कंगननुमा बनी रसदार मिठाई ।
 इमरस-देखो 'अमरस' ।
 इमरित-देखो 'अमरत' ।
 इमली-स्त्री० १ पेरेदार, फलीनुमा खट्टा फल । २ इसका वृक्ष ।
 इमांम-पु० [अ०] पथप्रदर्शक, नेता । —बाड़ी-पु० ताजिए
 दफ्ताने व उनका मातम मनाने का स्थान ।
 इमारत-स्त्री० बड़ा और पक्का मकान, बड़ा भवन ।
 इमि, (मी)-क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार । देखो 'अमो' ।
 इमिया-देखो 'उमा' ।
 इअत-देखो 'अमरत' ।
 इअति-देखो 'अमरती' ।
 इयां-क्रि० वि० १ ऐसे, इस तरह । २ इधर ।
 इयाजी-स्त्री० सन्धियों की दासी ।
 इयार-देखो 'अयार' ।
 इयाळी-वि० (स्त्री० इयाळी) इधर का ।
 इयुं (यूँ)-क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार ।
 इये, (ये)-सर्व० हम, हमने । —वि० ऐमा । —क्रि० वि०
 १ यहां, इधर । २ ऐसे ।
 इरंड-पु० एरंड । —ककड़ी-स्त्री० पपीता ।
 इरकांणी (इरकी)-स्त्री० १ ऊंट के घुटने के ऊपर का
 भाग । २ कोहनी ।

इरकांणी-पु० अगले पांव के ऊपरी भाग (इरकी) से जखमी ऊंट ।
 इरकुणी-देखो 'इरकांणी' ।
 इरखा-देखो 'ईरसा' ।
 इरची-गिरची-पु० एक देशी खेल ।
 इरद-गिरद-क्रि० वि० १ चारों ओर । २ आस-पास ।
 ३ इधर-उधर ।
 इरमद-स्त्री० [सं०] मेघज्योति, बिजली ।
 इरणी, (रानी)-वि० ईरान का, ईरान संबंधी । -पु० १ ईरान
 का निवासी । —स्त्री० २ ईरान की भाषा ।
 इरा-स्त्री० [सं०] १ बृहस्पति की माता । २ पृथ्वी ।
 ३ वाणी । ४ भाषा । ५ शराव । ६ सरस्वती । ७ जल ।
 ८ भोज्य पदार्थ ।
 इरक-पु० पश्चिम एशिया का एक देश ।
 इराकी-पु० इराक का निवासी । देखो 'एराकी' ।
 इरादी-पु० १ विचार, उद्देश्य, मंसुवा । २ संकल्प ।
 ३ प्रेम, मित्रता ।
 इरावत-पु० [सं० इरावत्] १ एक पर्वत का नाम । २ एक सर्प
 का नाम । ३ नाग कन्या । ४ उलूपी व अर्जुन का पुत्र ।
 ५ सागर, समुद्र ।
 इरावती-स्त्री० १ कश्यप की एक कन्या । २ ब्रह्म देश
 की एक नदी ।
 इरिण-स्त्री० [सं० इरिणम्] वंजर भूमि ।
 इल-देखो 'इला' ।
 इलकाब, (काब)-देखो 'अलकाब' ।
 इलकार, इलगर-पु० १ जोश, उत्साह । २ गर्व, घमंड ।
 ३ हर्ष, प्रसन्नता । ४ प्रस्थान, कूच ।
 इलगौ-वि० १ अलग, जुदा, पृथक । २ भिन्न ।
 इलचक्र-पु० [सं० इलाचक्र] १ धिनिज, जहां पृथ्वी-आकाश
 मिलते तजर आते हैं । २ धूमिल बेला ।
 इलजाम इलजाम-पु० [अ० इलजाम] १ दोष, कलंक ।
 २ आक्षेप । ३ अभियोग ।
 इलजी-पु० मेहदी ।
 इलपत (ति)-देखो 'इलापति' ।
 इलपती-देखो 'अलपती' ।
 इलपुड-पु० पृथ्वीतल । सतह ।
 इलम-पु० [अ० इलम] १ विद्या, ज्ञान । २ कला, हुनर ।
 ३ जानकारी, अभ्यास । —घोर, दार-वि० ज्ञानी, पंडित ।
 कलाकार । जानने वाला । चतुर ।
 इलमी-वि० 'इलम' जानने वाला ।
 इलम-देखो 'इलम' ।

इल्लला, (ह)-पु० [अ० इल्लल्लाह] १ ईश्वर, खुदा ।
 २ खुदा को याद करने का शब्द (ईश्वर सहायता करे) ।
 इल्लिला-स्त्री० कुबेर की माता । २ पुनस्तरी की पत्नी ।
 इल्लवीस पु० आदम के पाम रहने वाला जंतान ।
 इल्ला-स्त्री० [सं० इला] १ पृथ्वी, भूमि । २ धूलि, रजकण ।
 ३ हठयोग में इला नामक नाड़ी । —कंत, पत, पति-पु०
 राजा, वादशाह । —रथ-पु० राजा । शेषनाम ।
 —यत-पु० जम्बूद्वीप के नौ खण्डों में से एक ।
 इला-स्त्री० खेल से दूर रहने के लिए उच्चरित शब्द ।
 इलाकी-पु० [अ० इलाका] १ अपना क्षेत्र २ रियासत ।
 ३ अधिकार क्षेत्र । २ कोई क्षेत्र विशेष ।
 इलाज-पु० [अ०] १ चिकित्सा । २ उपाय । ३ प्रबन्ध,
 इतजाम ।
 इलाजी-वि० १ चिकित्सक । २ प्रबन्धक ।
 इलापणी (बी)-देखो 'आलापणी' (बी) ।
 इलापची-स्त्री० [सं० एला + ची] १ तीव्र सुगंध वाले बीजों का
 डोडानुमा सूत्रा फल । २ इस फल का पौधा । ३ एक
 प्रकार का घोड़ा ।
 इलायची-पु० एक प्रकार का कीमती वस्त्र ।
 इलाली-बिलाली-वि० (स्त्री० इलाली-बिलाली) शौकीन,
 रतिक, छेला ।
 इलाह-पु० [अ०] खुदा, ईश्वर । —गज-पु० अरब वादशाह का
 चलाया हुआ सन् जो ३३.३/५ इन्च लम्बा होता था और
 इमारतों के निर्माण में काम आता था । —सन-पु०
 बादशाह अरब का चलाया हुआ सन् ।
 इलि-देखो 'इली' ।
 इली-देखो 'इली' ।
 इल्लरी-पु० एक प्रकार का पत्थर ।
 इल्लोजी-पु० १ होली पर बनाई जाने वाली मनुष्य की विशाल
 तंगी मूर्ति । २ सूखी व्यक्ति ।
 इल्लो-स्त्री० १ चाल, गति । २ ढंग, रीति । ३ लहर, तरंग ।
 इल्लाम-देखो 'इल्लाम' ।
 इल्लम-देखो 'इल्लम' ।
 इल्लत-स्त्री० [अ०] १ रोग, बीमारी । २ झंझट, बखेड़ा ।
 ३ फलतू का बोझ । ४ जबरदस्ती का कार्य ।
 इल्लो-स्त्री० १ एक छोटा कीटाणु जो मनाज, आटा, मेदा आदि
 में पैदा हो जाता है । २ एक प्रकार का आभूषण ।
 इल्लो-बिल्लो-पु० १ एक देशी मेल । २ अस्थि-पंजर ।
 इल्लव-पु० एक असुर विशेष ।
 इल्लला-स्त्री० पांच तारों का एक गमूड़ ।
 इल्ल-प्रबन्ध साहचर्यार्थक अव्यय । —क्रि० वि० १ ऐसे,
 ऐसा । २ अब ।

इल्लड, इल्लडी (डी)-वि० (स्त्री० इल्लडी) ऐसा ।
 इला-मर्व० वह ।
 इवे, इवै-क्रि० वि० अब । —सर्व० वे ।
 इल्लाक-देखो 'इल्लाकु' ।
 इल्ल-क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे । —पु० [सं० इल्लः]
 आश्विन मास ।
 इल्ल (उ)-अव्य० ऐसे । —वि० ऐसा, ऐसी ।
 इल्लकंदर-देखो 'सिकंदर' ।
 इल्लक-पु० [अ० इल्लक] प्रेम, मुहब्बत । —वि० आशिक, माशूक ।
 इल्लकपेची-पु० एक प्रकार की लता ।
 इल्लकी-वि० [अ० इल्लकी] इल्ल करने वाला, आशिक । रसिक ।
 इल्लकेल-देखो 'असखेल' ।
 इल्लई, (सै)-क्रि० वि० १ ऐसे, इस प्रकार । २ इतने में ।
 इल्लडी वि० (स्त्री० इल्लडी) ऐसा ।
 इल्लट-देखो 'इल्लट' ।
 इल्लगुल (गोल)-देखो 'इल्लगुल' ।
 इल्लान-क्रि० वि० ऐसे । —पु० अहसान ।
 इल्ल-वि० ऐसे ।
 इल्लारत, इल्लारी-पु० [अ० इल्लारा] १ संकेत, सैन । २ संक्षिप्त
 कथन । ३ सूक्ष्म आधार । ४ गुप्त प्रेरणा । ५ सूचना ।
 इल्लि-पु० [सं० ऋषि] ऋषि, मुनि । (जैन)
 इल्लिह, इल्लो-वि० ऐसी ।
 इल्लु-पु० [सं० इल्लु] बाण, तीर ।
 इल्लुध-पु० ठगण की पांच मात्राओं के तृतीय भेद का नाम ।
 इल्लुधो-पु० [सं० इल्लुध] तूणीर, तरकस ।
 इल्ल-वि० ऐसा ।
 इल्लपल-स्त्री० [सं० इल्लपल] किले के द्वार पर रहने वाली
 तोप विशेष ।
 इल्ल-क्रि० वि० ऐसे, इस तरह ।
 इल्लोसोक-वि० ऐसा, इस प्रकार का ।
 इल्लो-वि० (स्त्री० इल्लो) ऐसा । इस प्रकार का ।
 इल्लूल-स्त्री० स्कूल, पाठशाला ।
 इल्ल-वि० [सं० इल्ल] १ चाहा हुआ, अभीष्ट । २ पूज्य, पूजित ।
 ३ अनुकूल । ४ प्रिय । ५ उद्दिष्ट । ६ मान्य । ७ कृपापात्र ।
 —पु० १ यज्ञादि शुभ कर्म । २ इष्टदेव । ३ कुलदेव ।
 ४ मित्र । ५ अधिकार । ६ पति । —कर-पु० एक प्रकार
 का घोड़ा । —काळ-पु० किसी बटना का ठीक समय ।
 —देव, देवता-पु० आराध्यदेव । कुल देवता ।
 इल्लि, (स्टी)-वि० [सं० इल्लि] इल्ल रखने वाला ।
 —पु० १ पति । २ यज्ञ ।
 इल्लरी-देखो 'इल्लरी' ।

इतिहास

(१२४)

ईडरिणी

इतिहास-पु० [अ० इतिहास] १ विज्ञापन । २ सूचना, नोटिस ।
 इत्तीकी-पु० [अ० अस्त अफ=रतफा] त्याग-पत्र ।
 इस्तीयार, इस्तीहार-देखो 'इतिहास' ।
 इस्तेमात्-पु० [अ०] उपयोग, व्यवहार ।
 इस्त्री-स्त्री० १ कपड़ों की तह बैठाने का धोवियाँ, दावियों का
 उपकरण विशेष । २ देखो 'स्त्री' ।
 इस्दी-वि० ऐसी । —सर्व० इसकी ।
 इस्पत्त-देखो 'इस्पी' ।
 इस्पू-क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे ।
 इस्पौ-वि० ऐसा ।
 इस्ताम्-पु० [अ० इस्लाम] १ मुस्लिम धर्म । २ मुसलमान ।
 इहंकार-देखो 'अहंकार' ।

इहंकारी-देखो 'अहंकारी' ।

इह-सर्व० [सं० एषः] यह । इस । —वि० ऐसी, ऐसा ।
 —क्रि० वि० [सं०] १ यहाँ, इस स्थान पर । २ इस
 समय । ३ इस प्रकार । ४ देखो 'अहि' ।

इहड़ी-वि० (स्त्री० इहड़ी) ऐसा ।

इहनाण-देखो 'ऐनाण' ।

इहनीकिक-वि० इस लोक से संबंधित ।

इहां, इह्यां-क्रि० वि० यहां, इस ओर, इधर ।

इहि-देखो १ 'इह' । २ देखो 'अहि' ।

इहे, इहै-सर्व० इस, यह ।

इहो-क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार । —वि० ऐसा ।

—सर्व० यह, इस ।

—ई—

ई-देवनागरी वर्णमाला का चौथा स्वर ।

ई-सर्व० इसने, इस, यह । —क्रि० वि० बिना काम के ।
 वैसे ही, योंही ।

ईगुर-पु० [प्रा० इंगुल] चटखोली ललाई लिये हुये एक खनिज
 पदार्थ । हिगुल ।

ईंट, ईंटोड़ी-स्त्री० १ चिकनी मिट्टी का पकाकर तैयार किया
 खण्ड । २ ताण में एक रंग ।

ईंठी-देखो 'ऐंठी' ।

ईंड़ी-देखो 'अंड़ी' ।

ईंड़-स्त्री० [सं० ईंड़ण] समानता, बराबरी ।

ईंड़ाणी, ईंड़ा, ईंड़ी, ईंड़णी-देखो 'इडाणी' ।

ईंत-स्त्री० पशुओं के शरीर से चिपक कर खून चूमने वाला
 एक कीड़ा ।

ईंद-देखो 'इंद' ।

ईंदरापुर-देखो 'इंदुर' ।

ईंदीवर-पु० कमल ।

ईंधण (न), ईंधणी (णी)-देखो 'इंधण' ।

ईने-क्रि० वि० इधर, इस ओर । —सर्व० इसने । इसको । इस ।

ईसू-सर्व० इससे ।

ई-पु० १ कामदेव । २ महादेव । ३ ईश्वर । ४ काच ।

५ टेढ़ापन । ६ बगुला । —स्त्री० ७ लक्ष्मी । ८ पुत्रवती ।

९ बाँक स्त्री । १० शंका । ११ स्मृति । १२ उदासी ।

१३ दुःख । १४ देखो 'ईस' । —वि० लाल, अरुण । —सर्व०

यह, इस, यही । —अव्य० किसी शब्द पर जोर देने की
 ध्वनि । भी ।

ई--देखो 'ईम' ।

ईऊ-क्रि० वि० ऐसे ।

ईए-सर्व० इस, इसी, ये ।

ईकंत-देखो 'एकांत' ।

ईकड़-पु० एक प्रकार का पीथा ।

ईकरकौ-देखो 'एकरकौ' । (स्त्री० इकरकी)

ईकार-पु० 'ई' अक्षर । —क्रि० वि० एक बार ।

ईंख-स्त्री० [सं० इक्षु] गन्ने की फसल, गन्ना ।

ईखण-पु० [सं० इक्षणम्] नेत्र, चक्षु ।

ईखणी (बी)-क्रि० देखना ।

ईखद-वि० [सं० ईषत्] तनिक ।

ईया-देखो 'आया' ।

ईड़ा-देखो 'इड़ा' ।

ईंछणी (बी)-क्रि० इच्छा करना, अभिलाषा करना ।

ईज-अव्य० निश्चयात्मक ध्वनि, ही ।

ईजत, (ति, तो)-देखो 'इज्जत' ।

ईटकोल-पु० १ गेंद बल्ले का एक देशी खेल । २ एक प्रकार का
 क्षुन । ३ अंगला ।

ईठ-देखो 'इस्ट' ।

ईठि-स्त्री० मित्रता, दोस्ती ।

ईठी-पु० भाला ।

ईठे, (ठे)-क्रि० वि० यहां ।

ईड-देखो 'ईड़' ।

ईडक-पु० तगाड़ा ।

ईडगरी-देखो 'ईडगरी' ।

ईडर-पु० ऊंट की छाती पर बना गद्दे के आकार का चिह्न ।

ईडरिणी-पु० १ वह ऊंट जिसके ईडर में जकम हो । २ ईडर
 प्रदेश का निवासी ।

ईडरी-देखो 'ईडरी' । (स्त्री० ईडरी) ।

ईड-क्रि० वि० यहां (मेवात) ।

ईड-स्त्री० १ बराबरी । २ नकल । ३ चेष्टा । ४ ईर्ष्या, डाह ।

५ शयुता । ६ जिह्वा, हठ । —वि० समान, बराबर, तुल्य ।

—गर, गरी, बार-वि० बराबरी करने वाला, ईर्ष्यालु ।

ईडरी-वि० (स्त्री० ईडरी) १ ईर्ष्यालु । २ समान बराबर का ।

ईडाणी, ईडूणी-देखो 'इडाणी' ।

ईरा, ईरि, (सी), ईर-वि० यह । —भव-पु० यह जन्म, दुहलोक ।

ईत, (ति, तो)-पु० [सं० ईति] फसल के लिये हानिकारक उपद्रवी तत्व ।

ईतर-वि० १ इतराने वाला । २ गुस्ताख, ठीठ । ३ नीच । ४ देखो 'इतर' ।

ईव-स्त्री० [ग्र०] मुसलमानों का एक त्यौहार । —गा-स्त्री० ईव की नमाज पढ़ने का स्थान ।

ईदी-स्त्री० [ग्र०] १ त्यौहार का तोहफा । २ त्यौहार संबंधी कविता ।

ईधकाई-देखो 'अधिकारी' ।

ईनली-देखो 'इंधली' ।

ईनली-वि० (स्त्री० ईन ली) डबर का, इस ओर का ।

ईम-देखो 'इम' ।

ईमरति (ती)-देखो 'इमरती' ।

ईमान-पु० [ग्र०] १ धर्म । २ धर्म संबंधी विश्वास ।

३ आस्तिकता । ४ सच्चाई । ५ कर्तव्य परायणता ।

६ सद्वृत्ति । —दार-वि० कर्तव्य परायण एवं सच्चा ।

धार्मिक । —दारी-स्त्री० ईमानदार होने की क्रिया या भाव ।

ईमी-देखो 'ममी' ।

ईय-सर्व० इस । —क्रि० वि० ऐसे । यहां, इधर ।

ईयां-सर्व० इन्होंने ।

ईया-क्रि० वि० इधर, यहां ऐसे ।

ईये (यै)-सर्व० इसने । —बल-क्रि० वि० इस तरफ ।

ईरखा (खी)-देखो 'ईरसा' ।

ईरखावाल, ईरखाळू-देखो 'ईरसाळू' ।

ईरसा-स्त्री० [सं० ईर्ष्या] डाह, जलन, कुढ़न ।

ईरसाळू-वि० [सं० ईर्ष्यालु] १ दूसरे का उत्कर्ष देखकर जलने वाला । २ डाह करने वाला । ३ ईर्ष्या करने या रखने वाला ।

ईल-स्त्री० १ मर्यादा । २ दुःख ।

ईला-वि० १ दुःखी । २ देखो 'इला' ।

ईली-देखो 'उल्ली' ।

ईव-देखो 'इव' ।

ईस-पु० [सं० ईश, ईश] १ ईश्वर, परमात्मा । २ इष्ट

देव । ३ प्रभु, मालिक । ४ पति । ५ शिव, महादेव ।

६ राजा । ७ प्रधान, मुखिया । ८ अधिष्ठाता, अधिकारी ।

९ शासक । १० पारा । ११ आर्द्रा नक्षत्र । १२ आश्विन मास ।

—स्त्री० १३ खाट की लम्बाई । १४ लम्बाई ।

१५ गाड़ी की एक बाजू । १६ ग्यारह की संख्या । —प-पु०

राजा । —सख-पु० कुबेर ।

ईसउ-देखो 'इसउ' ।

ईसकी-पु० द्वेष, ईर्ष्या । २ बराबरी । ३ नकल ।

ईसतत्व-पु० [सं० ईशत्व] यज्ञ ।

ईसता, (ति, तो)-स्त्री० [सं० ईशिता] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक ।

ईसबगुल, (गोळ)-पु० १ फारस की एक भाड़ी जिसके बीज दवाइयों में काम आते हैं । २ एक औषधि ।

ईसबर-देखो 'ईश्वर' ।

ईसर, (जी)-पु० १ 'गणगौर' पर्व पर बनाई जाने वाली ईश्वर या शिव की प्रतीकात्मक मूर्ति । २ देखो 'ईश्वर' ।

ईसरता-देखो 'ईसता' ।

ईसरि (री)-देखो 'ईश्वरी' ।

ईसरेस-पु० [सं० ईश्वर] शिव, महादेव ।

ईसवर (रु. रु)-देखो 'ईश्वर' ।

ईसवरी-देखो 'ईश्वरी' ।

ईसवी-वि० ईसा संबंधी । —स्त्री० ईसा संवत् ।

ईससीस-स्त्री [सं० ईश-शीश] गंगा ।

ईसाण, ईसान-पु० [सं० ईशान] १ शिव । २ विष्णु ३ सूर्य ।

४ राजा । ५ उत्तर-पूर्व मध्य की दिशा । —स्त्री०

६ गिरिजा, पार्वती । ५ एहसान । —का-स्त्री० देवी,

दुर्गा, पार्वती ।

ईसानका-स्त्री० देवी, दुर्गा, भवानी ।

ईसा-वि० लम्बा । —क्रि० वि० ऐसा । —पु० १ ईसा मशीह ।

[सं० ईषा] २ हल का लम्बा लकड़ा, हरीसा ।

ईसाई-पु० ईसामशीह द्वारा चलाया हुआ, धर्म । २ इस धर्म का अनुयायी ।

ईसाखंड-पु० [सं० ईशान] १ शिव, महादेव । २ विष्णु । ३ शासक ।

ईसार-पु० [सं० ईश+अरि] कामदेव ।

ईसालय-पु० शिवालय, देवालय ।

ईसामुदंत-पु० लम्बे दांत वाला हाथी ।

ईसिता-देखो 'ईसता' ।

ईसीय-वि० ऐसी ।

ईसुर

(१२६)

उकटणी

ईसुर-देखो 'ईस्वर' ।

ईसुरी-देखो 'ईस्वरी' ।

ईसून-देखो 'ईसान' ।

ईसो-देखो 'इसो' । (स्त्री० ईसी)

ईस्वर-पु० [सं० ईश्वर] १ परमेश्वर, ईश्वर । २ शिव, महादेव ।

३ स्वामी । ४ राजा । ५ धनी, धनवान । ६ मपर्य पुरुष ।

—ता-स्त्री० प्रभुत्व, ईश्वरत्व ।

ईस्वरी-स्त्री० [सं० ईश्वरी] १ दुर्गा, भगवती, महामाया ।

२ पार्वती । ३ श्रीकरणी देवी । ४ श्रीआवह देवी ।

ईह-सर्व० १ यह । २ देखो 'ईहा' ।

ईहण-पु० १ कवि । २ चारण ।

ईहड़ी-वि० (स्त्री० ईहड़ी) ऐना ।

ईहण-पु० १ कवि । २ चारण ।

ईहणी (बी)-क्रि० इच्छा करना, चाहना ।

ईहा-स्त्री० [सं०] १ इच्छा, कामना । २ चेष्टा प्रयत्न ।

—वि० ऐसा ।

ईहित-वि० [सं०] इच्छित, अभीष्ट ।

-उ-

उ-नागरी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वर ।

उ-प्रत्यय [सं०] विरोध, कष्ट आदि भाव प्रगट करने वाली ध्वनि ।

उंगस्तनी-स्त्री० जादू का अंगूठे का छल्ला [मेवात] ।

उंचाई-देखो 'ऊंचाई' ।

उंचाली-देखो 'ऊंचाली' (बी) ।

उंचास-देखो 'ऊंचास' ।

उंछइंती-पु० एक दांत की कमीवाला घोड़ा ।

उंडांग, उंडाई, उंडायत-देखो 'ऊंडवण' ।

उण-देखो 'उण' ।

उणी-देखो 'ऊणी' ।

उंतावळ, उंतावळी, उंताळ उंतावळ उंतावळी-देखो 'उतावळ' ।

उंतावळू, (ळी)-देखो 'उतावळी' ।—(स्त्री० उंतावळी) ।

उंदर (री)-देखो 'ऊंदर' ।

उंदायली-देखो 'ऊंदायली' ।

उंदाइकी-देखो ऊंदाइकी (स्त्री० उंदाइकी) ।

उंदाइही-पु० वह घोड़ा जिसके अगले पैर लम्बे हों ।

उंधोखोपड़ी-वि० नासमझ, मूर्ख । जिद्दी ।

उंतमंत-पु० मनस्थैर्य ।—वि० मनका, मन संबंधी ।

उंवर, उंवर-स्त्री० [सं० उम्बर, उम्बुरः] १ चौखट के ऊपर वाली लकड़ी । २ देखो 'उपर' ।

उंवरण-पु० एक बड़ा वृक्ष जिसका तना सड़े व फल नीम्बू जैसे होते हैं ।

उंबरी-स्त्री० एक काटेदार वृक्ष ।

उंबरी-१ देखो 'अमराव' । २ देखो 'ऊमरी' ।

उंवाइ-पु० जलाने की लकड़ियों का गटुर ।

उंबी-देखो 'ऊंबी' ।

उंवार-देखो 'अवार' ।

उंवारणी, (बी)-देखो 'वारणी' (बी) ।

उंह-देखो 'ऊंह' ।

उ-पु० [सं० उः] १ ब्रह्म । २ शिव । ३ नारद । ४ प्रजापति ।

५ सूर्य । ६ स्वामिकांतिकेय । ७ सार । ८ आशीर्वाद ।

९ रावण । १० काल । ११ त्रिकाव संख्या । १२ त्रिगुण ।

१३ त्रिजली । १४ पार्वती । —वि० अधीन । —सर्व०

वह । —अव्य० अनुकम्पा, नियोग, पादपूति या स्वीकृति सूचक अव्यय ।

उअंकार-पु० प्रणवमंत्र, ऊंकार ।

उअर, (अरि, अवर)-देखो 'उर' ।

उअल्ली-वि० (स्त्री० उअल्ली) इस ओर का ।

उअह-पु० [सं० उदधि] सागर, समुद्र ।

उअहांणउ-देखो 'उवांणी' ।

उआ-सर्व० अ का विकारी रूप, वह, उस (स्त्री) ।

उआही-१ देखो 'उवाही' । २ देखो 'अवाही' ।

उआरण-वि० रक्षा करने वाला ।—(स्त्री० न्यौछावर) ।

उआरणी-पु० १ न्यौछावर, बर्तैया । २ रक्षक ।

उआरणी (बी)-क्रि० [सं० अवतारणम्] न्यौछावर करना, २ बर्तैया लेना । ३ रक्षा करना । बचाना ।

उइखणी (बी)-क्रि० उपदेश करना ।

उइल्ली-वि० (स्त्री० उइल्ली) इस ओर का ।

उओल-देखो 'अवाळ' ।

उकड़छी-वि० १ उत्कट इच्छा वाली । २ बड़ी आंखों वाली ।

उकड़णी (बी)-देखो 'उकटणी' (बी) ।

उकड़ू (डू)-पु० [सं० उक्कतीक] पांशों पर बैठने का एक ढंग ।

—वि० उक्त प्रकार से बैठा हुआ ।

उकटणी (बी)-क्रि० १ कगिया जाना । २ क्रोध करना ।

३ बार-बार कहना । ४ स्थान छोड़ कर निकलना ।

५ भागना । ६ तलवार निकालना । ७ आक्रमण करना,

हमला करना । ८ आगे बढ़ना । ९ गुप्त करना । १० उपदेश

होना । ११ बढ़ना ।

उकट्ट-पु० १ जोश । २ एहसान ।

उकट्टणी(बी), उकठणी (बी) देखो 'उकटणी' ।

उकडच्यो-वि० [सं० उक्त+घडी] मादक नेत्रों वाली ।

उकड़णी (बी), (इड़णी, बी)-क्रि० १ बाहर निकलना, कढ़ना ।

२ आक्रमण करना । ३ चमकना । ४ निकालना ।

उकत-१ देखो 'उक्त' । २ देखो 'उकति' ।

उकताणी (बी)-क्रि० १ ऊबना, उकता जाना । २ खीजना ।

३ अघोष होना । ४ जल्दी मचाना ।

उकति-स्त्री० [सं० उक्ति] १ चमत्कार पूर्ण कथन । २ वाक्य, वचन । ३ भाव व्यक्त करने की शक्ति । —घांत-वि०

चमत्कार पूर्ण वचन कहने वाला ।

उकती-वि० शस्त्र युक्त व प्रहार करने को उद्यत ।

उकत्ती-देखो 'उकति' ।

उकर-पु० तीर, बाण ।

उकरड़ी, उकरड़ी-स्त्री० [सं० उत्करी] पुस, कचरा आदि का बड़ा ढेर । —खत, खरच-पु० गांव के सामूहिक खर्च का पंचायत का खत ।

उकराळणी (बी), उकरेळणी (बी)-क्रि० १ जमी हुई राख आदि को खोदना, कुदेना । २ ढेर को उधर उधर करना ।

उकरास-पु० १ उपाय, युक्ति । २ मौका, अवसर । ३ खेल का दांव ।

उकळणी (बी)-क्रि० १ खीजना । २ उबलना । ३ क्रोध करना ।

४ अक्रान्ता । ५ ऊपर उठना । ६ विकट रूप होना ।

उकलणी(बी)-क्रि० १ दिमाग में उपजना । २ समझ में आना ।

३ उधड़ना । ४ उच्चारण करना । ५ अलग होना, उखड़ना ।

उकळाणी (बी), उकळावणी (बी)-१ खीलाना, गर्म करना ।

२ उबालना । ३ क्रोध करना । ४ अकुलाहट पैदा करना ।

५ ऊपर उठाना । ६ विकट बनाना ।

उकस-पु० १ जोश । २ अभिलाषा, लाकसा ।

उकसणी(बी)-क्रि० १ जोश आना, उत्तेजित होना । २ उभरना,

ऊपर उठना । ३ निकलना, अंकुरित होना । ४ उधड़ना,

खुलना । ५ अत्रुना खनना । ६ उचकना । ऊंचा होना,

७ ऊपर उठना ।

उकसाणी (बी), उकसावणी (बी)-प्रे० क्रि० १ जोश

दिलाना, उत्तेजित करना । २ उभारना । उठाना ।

३ निकालना । ४ उधड़ना, खीलना । ५ अत्रुता कराना ।

६ उचकाना ।

उकानह-पु० [सं० उकानह] लाल प्रौर धोले रंग का थोड़ा ।

उकाव-पु० [अ०] १ बड़ा गिद्ध । २ गम्ढ़ । —वि० चालाक, दुर्त ।

उकाळणी, (बी)-क्रि० १ खीलाना, गर्म करना । २ उबालना ।

३ गिराना । ४ डिगाना ।

उकाळी-स्त्री० काष्ठादि औषधि का काड़ा, क्वाथ ।

उकाळी-पु० उवाल ।

उकासणी (बी)-देखो 'उकसाणी' (बी) ।

उकीरी-पु० गोबर का कीड़ा ।

उकील-देखो 'वकील' ।

उकीलायत-देखो 'वकालात' ।

उकुसणी (बी)-क्रि० १ उजाड़ना । २ उधेड़ना । ३ देखो 'उकसणी' (बी) ।

उकेकळ-वि० मुक्त ।

उभरणी (बी)-क्रि० उभरना, चित्र बनाना ।

उकेरी-देखो 'उकीरी' ।

उकेलणी-देखो 'उखेलणी' ।

उक्कंठणी (बी)-क्रि० उत्कंठित होना ।

उक्कंबणी (बी)-क्रि० ऊंची गर्दन करना ।

उक्कति (ती)-देखो 'उकति' ।

उक्कोत-वि० १ उत्कृष्ट । २ उत्क्रोश, ऊंचा ।

उक्त-वि० ऊपर कथित, पूर्व कथित । कहा हुआ । —स्त्री० डिगल छंद रचना का एक नियम ।

उकणी (बी)-क्रि० १ जोश बताना । २ गर्जना, दहाड़ना ।

उकमणी (बी)-क्रि० १ कूदना । २ नृत्य करना ।

४ छलांग लगाना ।

उकसणी, (बी)-देखो 'उकसणी' (बी) ।

उस, उख-पु० [सं० उक्षन्] १ वैल । सूर्य । २ देखो 'ऊख' ।

उखड़णी (बी)-क्रि० १ जमी हुई वस्तु का स्थान से हटना,

उखड़ना । २ जड़ सहित निकलना । ३ जमी हुई स्थिति

का बदलना । ४ चाल में भेद पड़ना । ५ हटना, अलग

होना । ६ क्रोध करना । ७ हारना । ८ श्वास की

गति बिगड़ना ।

उखड़ियोबी-पु० जानु (घुटने) में कमर वाला ऊंट ।

उखरणी (बी)-क्रि० १ बोझा मिर पर उठाना । २ ऊपर

उठाना । ३ उत्तरदायित्व लेना । ४ नीचना ।

५ शस्त्र उठाना । ६ खोदना ।

उखरा-स्त्री० [सं० ऊरणा] कानी भिन्न ।

उखराणी (बी), उखरावणी, (बी)-प्रे० क्रि० १ मिर पर

बोझा उठवाना । २ ऊपर उठवाना । ३ उत्तरदायित्व

डालना । ४ नुचवाना । ५ शस्त्र उठवाना । ६ खुदवाना ।

उखध-देखो 'ओखध' ।

उखरड़ी, (डी)-देखो 'उकरड़ी' ।

उखरविध, (बुध, विध)-स्त्री० [सं० उपबुध] अग्नि, आग ।

उखरांटी

(१२८)

उगांण

उखरांटी, उखरांटी, (राटी)-वि० (स्त्री० उखरांटी) विस्तर रहित ।
 उखराळी-स्त्री० १ बिना विस्तर की खाट । २ ऐसी खाट पर सोने वालों स्त्री । ३ कुत्ते आदि की गुमांली, खड़ा । ३ उथल-पुथल ।
 उखलणी, (बी)-देखो 'उकलणी' ।
 उखलणी (बी)-देखो 'उकलणी' (बी) ।
 उखांखी-वि० १ जोशीला, जोश पूर्ण । २ वीर, साहसी । ३ क्रुद्ध ।
 उखांण, (एँ, णी)-पु० [सं० उपाख्यान] १ कहावत उक्ति । २ दृष्टान्त । ३ मुहावरा ।
 उखा-स्त्री० [सं० उपा] १ सवेरा, तड़का, प्रभात । २ अरुणोदय का प्रकाश । ३ बाणासुर की कन्या । ४ रात्रि । ५ गाय । —ईस, पत, पति, पती-पु० अनिरुद्ध । कामदेव ।
 उखाड़-स्त्री० [सं० उल्खात] १ उखाड़ने या हटाने की क्रिया । २ अलगवा, पार्थक्य । ३ दांव-पेच । -पछाड़, पिछाड़-स्त्री० उथल-पुथल, उलटपलट करने की क्रिया । उत्पात । जोड़-तोड़, दांव-पेच ।
 उखाड़णी (बी)-प्रे० कि० [सं० उल्खातनम्] १ जमी हुई वस्तु को स्थान से हटाना, उखाड़ना । २ जड़ सहित निकालना । ३ जमी हुई दशा को मिटाना । ४ हटाना, अलग करना । ५ क्रोध दिलाना । ६ हराना । ७ नष्ट करना, ध्वस्त करना । ८ खोदकर निकालना । ९ खोलना ।
 उखि-देखो 'उव' ।
 उखेड़णी (बी), उखेड़णी (बी)-देखो 'उखाड़णी' (बी) ।
 उखेल (ली)-पु० [सं० उत्खेल] १ युद्ध । २ उत्पात । ३ कलह । ४ उपद्रव, उत्पात । ५ देखो 'उखाड़' ।
 उखेलण-वि० उखाड़ने वाला, मिटाने वाला ।
 उखेलणी (बी)-देखो 'उखाड़णी' (बी) ।
 उखेबणी (बी)-कि० देवताओं के आगे धूप-दीप करना ।
 उखटणी (बी)-कि० [सं० उद्धटन] १ उदय होना । २ प्रगट होना । ३ कसिया जाना । ४ देखो 'उकटणी' (बी) ।
 उखट्टि (ट्टी)-वि० प्रगट, प्रत्यक्ष, उत्पन्न ।
 उगणतरी-देखो 'गुणतरी' ।
 उगणतोसी-देखो 'उततोसी' ।
 उगणाऊ-देखो 'उगुणी' ।
 उगणिस, (णीस)-वि० दश और ९ के योग के समान । —पु० दश और नौ के योग की संख्या, १९ ।
 उगणीसी-पु० १९ का वर्ष ।

उगत-स्त्री० १ युक्ति, उपाय । २ बुद्धि, ज्ञान । ३ उद्भव, उत्पत्ति, जन्म । ४ ढंग, तरीका । ५ न्याय, नीति । ६ उक्ति । ७ कथन ।
 उगति, (ती)-देखो 'उकति' ।
 उगनिथी (नीथी)-देखो 'ओगनियी' ।
 उगम-पु० [सं० उद्गम] १ आकिर्भाव, उदय । २ अंकुरन । ३ उत्पत्ति स्थान । ४ सूर्योदय के समय का प्रकाश । ५ मादा पशुओं के स्तन का रोग विशेष ।
 उगमण-स्त्री० १ पूर्व दिशा । २ देखो 'उगम' ।
 उगमणियाँ-देखो 'ऊगमणियाँ' ।
 उगमणी-देखो 'ऊगमणी' ।
 उगमण-पु० पूर्व दिशा । —कि० वि० पूर्व दिशा की ओर ।
 उगमणी-वि० पूर्व का, पूर्व दिशा संबंधी । —पु० पूर्व दिशा ।
 उगमणी (बी) देखो 'ऊगणी' ।
 उगरणी (बी)-कि० १ बचना । २ शेष रहना । ३ गाना प्रारम्भ करना । ४ देखो 'ऊगणी' (बी) ।
 उगरांटी-देखो 'उखरांटी' (स्त्री० उगरांटी) ।
 उगरांणी (बी)-कि० [सं० उद्ग्रहणम्] १ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना । २ प्रहार करने को उद्यत होना ।
 उगराणी (बी) उगरावणी, (बी) उगराहणी (बी)-कि० १ वसूल करना । २ बदला लेना । ३ प्राप्त करना । ४ दण्ड स्वरूप लेना । ५ बकाया लेना । ६ रक्षा करना । बचाना ।
 उगळ-स्त्री० [सं० उद्गल] १ हथिये-पैसे व सामान की अधिकता । २ आकण्यकता ।
 उगळणी (बी)-कि० [सं० उद्गलन्] १ वस्तु या बात मुंह से निकालना, उगल देना । २ उल्टी करना, कै करना । ३ गुप्त बात प्रगट करना । ४ पुनः लौटना । ५ भीतर से बाहर निकालना । ६ गर्मपात होना ।
 उगळतू (ती)-देखो 'आगळतू' ।
 उगळांची-स्त्री० [सं० उत्कंचुकि] बिना कंचुकी खुले स्तन वाली स्त्री ।
 उगळांची, उगळांणी-वि० [स्त्री० उगळांणी] निर्वस्त्र, नंगा ।
 उगळाणी (बी)-प्रे० कि० १ बात या वस्तु मुंह से निकलवाना, उगलवाना । २ उल्टी कराना, कै कराना । ३ गुप्त भेद लेना । ४ भीतर से बाहर निकलवाना ।
 उगळी-स्त्री० उल्टी, वमन, कै ।
 उगवणी-कि० वि० पूर्व की ओर । —पु० पूर्व ।
 उगसाणी (बी)-देखो 'उकसाणी' (बी) ।
 उगहणी (बी)-देखो 'ऊगणी' (बी) ।
 उगांची-देखो 'उगांळींची' ।
 उगांण-देखो 'ऊगांण' ।

उगाई-स्त्री० १ वसूली । २ वसूली का धन । ३ उगने की क्रिया ।
उगाड़-पु० १ समझ । २ खुलासा । ३ प्रागट्य । ४ निराकरण ।
उगाइणी, (बी)-देखो 'उगाइणी' (बी) ।
उगाड़ी-वि० (स्त्री० अगाड़ी) १ खुलासा । २ नंगा, निर्वस्त्र ।
३ निरावरण । ४ स्पष्ट ।

उगाणी (बी)-क्रि० १ उगाना, उत्पन्न करना । २ अंकुरित करना । ३ उदित करना । ४ प्रगट करना । ५ वसूल करना । ६ तानना । ७ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना ।

उगारणी (बी)-देखो 'उवारणी' (बी) ।

उगाळ-१ देखो 'ओगाळ' । २ देखो 'जुगाळ' ।

उगाळणी (बी)-देखो 'ओगाळणी' (बी) ।

उगाळवांत-पु० पीकदान, धूकदान ।

उगाळबंध-देखो 'ओगाळबंध' ।

उगाळी-स्त्री० १ गर्भोदय । २ जुगाली ।

उगाव-पु० १ उदय । २ अंकुरण ।

उगावणी, (बी)-देखो 'उगाणी' (बी) ।

उगाह, (हा, हो)-देखो 'उगाह' ।

उगाहणी (बी)-देखो 'उगाणी' (बी) ।

उगाहो-देखो 'उगाई' ।

उगाही-पु० १ 'उगाई' करने वाला । २ देखो 'उगाह' ।

उगुण, उगुण-स्त्री० पूर्व दिशा ।

उगुणी, उगुणाऊ, उगुणी, उगुणी-क्रि० वि० पूर्व की ओर ।
-वि० पूर्व का, पूर्व दिशा संबंधी ।

उगेरणी (बी)-क्रि० गाना प्रारंभ करना ।

उगेरे, उगेरे-अव्य० इत्यादि, वगैरह ।

उगेस-१ देखो 'ओगेस' । २ देखो 'उगळ' ।

उगेळणी(बी)-१ रक्षा करना, बचाना । २ देखो 'ओगाळणी' (बी) ।

उगोड़ी-वि० (स्त्री० उगोड़ी) १ उत्पन्न, अंकुरित । २ उदित ।
३ वसूल ।

उगामणी (बी)-देखो 'ऊगणी' (बी) ।

उगाह-पु० आर्या छन्द का एक भेद ।

उगाड़कंवाड-पु० द्वार खुला कर भिक्षा लेने का एक दोष । (जैन)

उग्र-वि० [सं०] १ क्रोधो । २ तेज मिजाज । ३ प्रचंड । ४ तेज, तीव्र । ५ भयानक । ६ कठिन । ७ निष्ठुर । ८ हिंसक ।
९ बलवान । १० तीक्ष्ण । ११ उच्च कुलिन । -पु०
१ शिव, महादेव । २ वच्छ नाग । ३ सूर्य । ४ ऊंचा स्वर ।
५ रोद्र रम । -कारो-वि० भयंकर । वीर । -गंध-पु०
चंपा का वृक्ष । चमेरी । लहसुन । हींग । -वि० तेज महक
या गंध वाला । -गंधा-स्त्री० अजवाइन । वच ।
-गति, गती-पु० हंस । गवड़ । -चंडा-स्त्री० दुर्गा,

शक्ति । -तप-पु० कठिन तपस्या । ऋषि, मुनि, तपस्वी ।

-ता, ताई-स्त्री० तेजी, प्रचण्डता, तीव्रता । कठोरता ।

शौर्य । -तारा-स्त्री० मातंगिनी नामक देवी की मूर्ति ।

-ताळ-वि० भाग्यशाली । -धन, धनु-पु० इन्द्र । शिव ।

-भागो-वि० भाग्यवान ।

उग्रणी (बी)-देखो 'उग्रहणी' (बी) ।

उग्र-वि० तेजस्वी, पराक्रमी । -पु० तेज, पराक्रम ।

उग्रसेण (न)-पु० मधुरा का राजा व कंस का पिता ।

उग्रहणी (बी)-क्रि० [सं० उद्ग्रहणम्] १ छोड़ना, मुक्त करना ।

२ रक्षा करना । ३ बदला लेना । ४ ग्रहण करना ।

५ खाना, भक्षण करना ।

उघा-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ कर्कशा स्त्री । ३ अजवाइन ।

४ वच । ५ धनिया ।

उघावणी (बी)-देखो 'उघाहणी' (बी) ।

उघाहणारि-पु० भाला ।

उघाहणी (बी)-देखो 'उगराणी' (बी) ।

उघउ (घो)-देखो 'ओघो' ।

उघड़णी, (बी)-क्रि० [सं० उद्घाटनम्] १ अनावरण या
निरावरण होना । २ खुलना । ३ नग्न होना । ४ प्रगट
होना, प्रकाशित होना । ५ दिखने योग्य होना । ६ भण्डा
फूटना । ७ भेद खुलना । ८ परिचय देना ।

उघड-पु० [सं० उत्कथन] १ संगीत में ताल या तम ।
२ उछाल । ३ उदय ।

उघटणी (बी)-क्रि० १ उदय होना । २ उभरना । ३ उछलना ।
४ कसिया जाना । ५ क्रोध करना ।

उघरणी (बी)-क्रि० प्रवेश करना ।

उघरांमणी (बी)-देखो 'उगरांमणी' (बी) ।

उघराणी (बी), उघरावणी (बी)-देखो 'उगराणी' (बी) ।

उघाई-देखो 'उगाई' ।

उघाड़-देखो 'उगाड़' ।

उघाड़णी-वि० १ खोलने वाला । २ निरावरण या नंगा करने
वाला । ३ काटने वाला ।

उघाड़णी (बी)-क्रि० १ निरावरण, अनावरण करना ।
२ खोलना । ३ नंगा करना । ४ प्रगट करना प्रकाशित
करना । ५ भेद खोलना, भण्डा फोड़ना । ६ परिचय देना ।

उघाड़ी-देखो 'उगाड़ी' । (स्त्री० उगाड़ी)

उघाणी (बी)-देखो 'उगाणी' (बी) ।

उघेरणी (बी)-देखो 'उगेरणी' (बी) ।

उघड़-देखो 'अणगड़' ।

उड़-पु० एक प्रकार का मोटा अनाज, द्विदल अनाज ।
-परणी='उदयरणी' । -रेख, रेखा-स्त्री० पंर के

उड़वावी

(१३०)

उच्चोत्त

तलवे की सीधी रेखा । —वेगल, विगल, वेगल, वेगल,
वेगली, वेगी, वेगल-स्त्री० मर्दाने वेश में रहने वाली शाही
दासी, गैतान स्त्री ।

उड़वावी-पु० १ घाड़ों का एक खाद्य पदार्थ । २ घोड़ों को
बिलाने के लिए तैयार किया हुआ चारा ।

उड़वी-स्त्री० वर्दी, पोशाक ।

उड़ू-पु० १ बड़ा जलसा । २ उड़ू भाषा । ३ सेना, फौज ।
४ छावनी का बाजार । ५ देखो 'घड़ू' ।

उड़ांगर-पु० भ्रमल पक्षी । पक्षी ।

उड़ी-१ ऐसी । वैसी । २ देखो 'उडी' ।

उचंगी-वि० (स्त्री० उचंगी) उचक्का, उठाईगीर ।
अजनबी ।

उचंडणी (बी)-क्रि० १ ऊपर फेंकना, उछालना । २ उठना,
आकाश में फैलना ।

उच-देखो 'उच्च' ।

उचकणी (बी)-क्रि० १ उचकना । २ ऊपर उठना ।
३ उछलना । ४ आक्रमक होकर आना । ५ चौकना,
चमकना ।

उचकन-खोराबाय-पु० यो० आंखों से आंसू गिरते रहने
वाला घोड़ा ।

उचकाणी (बी) उचकावणी (बी) —प्रे० क्रि० १ उचकाना ।
२ ऊपर उठाना । ३ उछालना । ४ आक्रमण कराना ।
५ चोर लेना, चोरी करना ।

उचकणी (बी)-देखो 'उचकणी' (बी) ।

उचक्की-वि० १ चोर । २ ठग । ३ बदमाश, उद्दंड । ४ छली,
पाखंडी । ५ ऊंचा, तेज ।

उचड़णी (बी)-क्रि० १ जमी हुई या चिपकी हुई वस्तु का अलग
होना । २ पृथक होना । ३ जाना भागना ।

उचजणी (बी) उचजणी (बी)-क्रि० १ उछल कर वार करना,
होना भपटना । २ शस्त्र उठाना । ३ वार करना ।

उचटणी (बी)-क्रि० [सं० उच्चाटनम्] १ जमी हुई वस्तु
का उखड़ना, उचड़ना । २ उखड़ना । ३ अलग होना ।
पृथक होना । ४ भड़कना, चमकना । ५ विरक्त होना ।
६ उदास होना । ७ मन न लगना । ८ विचकना,
चौकना ।

उचट्ट-देखो 'उचाट' ।

उचणी (बी)-क्रि० [सं० वच्] १ कहना, कथना । २ बोलना ।

उचत-देखो 'उचित' ।

उचरंग-देखो 'उच्छरंग' ।

उचरणी (बी)-देखो 'उच्चारणी' (बी) ।

उचरी-स्त्री० कीर्ति, प्रशंसा, यश ।

उचळणी (बी)-क्रि० १ चलायमान होना, कंपित होना ।
२ देखो 'उछळणी' (बी) ।

उचस्ट-देखो 'उच्छिस्ट' ।

उचांत, उचांयत-स्त्री० ऊंचाई, ऊंचापन ।

उचात (टण, टन) उचाटी-वि० [सं० उच्चाट] १ विरक्त ।
२ खिन्न उदास । ३ पीड़ित । ४ व्याकुल । ५ चिंतित ।
—स्त्री० १ चिंता, व्यग्रता । २ उदासीनता, उदासी, विरक्ति ।
३ कै, वमन ।

उचाणी (बी)-देखो 'ऊंचाणी' (बी) ।

उचार, उचारण-देखो 'उच्चारण' ।

उचारणी (बी)-देखो 'उच्चारणी' (बी) ।

उचारण-पु० [सं० उत्तमर्ण] १ कुबेर । २ सेठ, महाजन ।

उचाळउ, उचाळी-देखो 'उछाळी' ।

उचाळणी (बी)-देखो 'उछाळणी' (बी) ।

उचास-देखो 'उच्चीसवा' ।

उचासिरी-देखो 'ऊंचासरी' ।

उचित-वि० [सं०] १ ठीक, मुनासिब, वाजिब । २ योग्य । समीचीन ।

उचिता-स्त्री० प्रकृति, कुदरत । —पति-पु० ईश्वर ।

उचिल्ल, उचील्ल-देखो 'उच्चील्लवा' ।

उचूळ-वि० [सं० उच्चूल] ऊंचा ।

उचेसव, उचैसव-देखो 'उच्चीसवा' ।

उच्वंडणी (बी)-देखो 'उचडणी' (बी) ।

उच्च-वि० [सं०] १ श्रेष्ठ, महान, ऊंचा । २ उन्नत, उत्तुंग ।
३ उत्तम, बढ़िया । ४ बड़ा । —ता-स्त्री० श्रेष्ठता,
महानता । ऊंचाई । उत्तमता, बड़ाई । —मन, मनी-वि०
ऊंचे विचारों वाला । उदार हृदय ।

उच्चय-पु० [सं० उच्चयः] १ कटिबंध, नाड़ा । २ साड़ी ।
३ लहंगा ।

उच्चरणी (बी)-देखो 'उच्चारणी' (बी) ।

उच्चचिस्ती-वि० अस्थिर-चित्त वाला ।

उच्चाट-देखो 'उचाट' ।

उच्चाटण (न)-पु० एक तांत्रिक अभिचार या मंत्र ।

उच्चातुर-पु० [सं०] राक्षस ।

उच्चार, उच्चारण-पु० [सं० उच्चारः] १ मुंह से निकले
वाली किसी शब्द की घोषाज । २ कथन, वार्ता ।
३ निरूपण । ४ विसर्जन । ५ मज, विष्टा । (जैन)

उच्चारणी (बी)-क्रि० उच्चारण करना, बोलना । कहना ।

उच्चोत्त, उच्चोत्तवा, उच्चैसवा-पु० [सं० उच्चैश्रवा] इन्द्र का
घोड़ा । —वि० १ बड़े बड़े कानों वाला । २ बहुरा ।

उच्चोल-पु० [सं० उच्चोलः] १ चन्द्रातप, वितान । २ शामियाना ।
३ राजछत्र ।

उच्छ्रं, (गी)-देखो 'उच्छ्रं' ।

उच्छ्रक-वि० [सं० उत्सुक] १ आतुर, उद्विग्न, व्याकुल ।
२ उत्कण्ठित ।

उच्छ्ररणी(बी)-क्रि० १ दूटना, दूटकर दूर पड़ना । २ उछलना ।
उच्छ्रव-देखो 'उत्सव' ।

उच्छ्ररंग-१ देखो 'उच्छ्ररंग' । २ देखो 'उत्सव' ।

उच्छ्ररणी (बी)-क्रि० १ बड़ा होना । २ पुष्ट होना ।
३ उछलना । ४ उच्चारण करना । ५ उखाड़ना । ६ देखो
'उच्छ्ररणी' (बी) ।

उच्छ्रलग-पु० उत्सव ।

उच्छ्राणी (बी)-देखो 'उच्छ्राणी' (बी) ।

उच्छ्रव-देखो 'उत्सव' ।

उच्छ्राह, उच्छ्राव, उच्छ्राह-पु० [सं० उत्साह] १ उत्साह, जोश ।
२ हर्ष, उर्मग । ३ धूम-धाम, उत्सव ।

उच्छ्राणी (बी)-देखो 'उच्छ्राणी' (बी) ।

उच्छ्रित-वि० [सं० उच्छ्रित] ऊँचा, उन्नत ।

उच्छ्रिष्ट-पु० जूँठन ऐंठन । -वि० जूँठा ।

उच्छ्रवणी (बी)-क्रि० १ छेदन करना । २ तोड़ना । ३ उखाड़ना ।
४ सोमोल्लंघन करना ।

उच्छ्ररणी (बी)-देखो 'उच्छ्ररणी' (बी) ।

उच्छ्रल-वि० [सं० उच्छ्रल] १ चंचल । २ उद्विग्न, बदमाश ।
३ स्वेच्छाचारी । ४ उछल कूद करने वाला ।

उच्छ्राय-पु० १ पर्वत, वृक्षादि की ऊँचाई । २ उच्च परिणाम ।

उच्छ्रं (गति)-पु० [सं० उत्संग] १ गोदी, अंक । २ मध्य
भाग । ३ ऊपरी भाग । [सं० उत्सुक] १ निलिप्त, विरक्त ।
२ उत्सुक, उत्कण्ठित ।

उच्छ्रल-देखो, 'चंचल' ।

उच्छ्रटी-वि० १ अधिक । २ बड़ी ।

उच्छ्रणी (बी)-क्रि० छोड़ना, त्यागना ।

उच्छ्र-देखो 'ओछी' ।

उच्छ्र-स्त्री० १ मस्ती, उन्मत्तता । २ देखो 'उच्छ्रक' ।

उच्छ्र-छाक-वि० मदोन्मत्त ।

उच्छ्रणी (बी)-देखो 'उच्छ्रणी' (बी) ।

उच्छ्रणी (बी)-क्रि० १ जोश में आना । २ फूलना ।

उच्छ्र-स्त्री० १ तरंग, लहर । २ गति, चाल । ३ उदारता ।
-वि० अधिक ।

उच्छ्रणी (बी)-क्रि० १ कूटना, उछलना । २ कटना ।
३ खण्डित होना ।

उच्छ्र-देखो 'उत्सव' ।

उच्छ्रं (गि, गी)-देखो [सं० उत्सव+रंग] १ इच्छा, अभि-
लाषा । २ उत्सव । ३ हर्ष, आनन्द । ४ उत्साह, जोश ।

५ सुखद मनोवेग, उर्मग । -वि० १ उत्सुक ।
२ ऊँचा, उन्नत ।

उच्छ्ररणी (बी)-क्रि० १ भयंकर युद्ध करना । २ प्रबल पराक्रम
दिखाना । ३ प्रलय नृत्य करना । ४ उच्छ्रंखल होना ।
५ प्रसन्न होना । ६ उत्साह दिखाना ।

उच्छ्ररंजण, (न)-पु० [सं० उत्सर्जन] दान । उत्सर्ग ।
-त्याग-पु० दान ।

उच्छ्ररणी, (बी)-क्रि० १ जन्मना, उत्पन्न होना । २ उछलना,
कूदना । ३ पोषण पाना । ४ चरने के लिए जंगल में
जाना (मवेशी) । ५ लम्बी दूर जाने के लिए रवाना होना ।
उच्छ्ररणी (बी)-प्र० क्रि० १ उछालना, कुदना । २ पैदा
करना । ३ पोषण करना । ४ चराने के लिए जंगल
में ले जाना ।

उच्छ्रेल-वि० जवरदस्त, बलवान ।

उच्छ्रं-देखो 'उच्छ्रंखल' ।

उच्छ्र-स्त्री० १ छलांग, कुदान । २ लाभ वाला हिस्सा ।
३ चुनाव में प्राथमिकता । -वि० बढ़िया, श्रेष्ठ ।
-श्रुद-स्त्री० खेलकूद । अत्यधिक प्रयास । हलचल । दौड़-
दूप । अवीरता । चंचलता । गड़बड़ी । -पांती-स्त्री०
लाभ वाला हिस्सा । प्रथम इच्छा ।

उच्छ्र-पु० १ उत्सव । २ देखो 'उच्छ्रंखल' ।

उच्छ्रणी (बी)-क्रि० १ उछलना, कूदना । २ फांदना । ३ भटके के
साथ ऊपर उठना । ४ ग्राह्य लादित होना, प्रसन्न होना ।
५ चौकना, चमकना । ६ क्रोध में बकना । ७ तूट कर
पृथक गिरना, दूर पड़ना ।

उच्छ्र-देखो 'उत्सव' ।

उच्छ्राह-१ देखो 'उच्छ्राह' । २ देखो 'उत्सव' ।

उच्छ्राणी (बी)-वि० (स्त्री० उच्छ्राणी, उच्छ्राणी) चंचल,
चपल । २ मग्न । ३ मदोन्मत्त ।

उच्छ्राट-स्त्री० १ इच्छा, उत्कंठा । २ प्रबलता । ३ शक्तिबल
४ वमन, उल्टी, कै ।

उच्छ्राणी-देखो 'उच्छ्राणी' ।

उच्छ्राणी (बी)-देखो 'उच्छ्राणी' (बी) ।

उच्छ्राक-पु० [सं० उत्सारक] द्वारपाल, प्रतिहार ।

उच्छ्रा-स्त्री० १ सहसा ऊपर उठने की क्रिया या भाव ।
२ कुदान, छलांग । ३ उछलने की सीमा । ४ वृष्टि, वर्षा ।
५ ऊपर फेंकने की क्रिया । ६ पानी का छोटो । ७ लहर,
तरंग । ८ उल्टी, वमन । ९ शव आदि के प्रस्थान पर
ऊपर फेंका जाने वाला रुपया पैसा ।

उच्छ्राणी (बी)-क्रि० १ कुदान । २ ऊपर उठना । ३ ऊपर
फेंकना । ४ वर्षा करना । ५ उत्साहित या प्रेरित करना ।
६ प्रकट करना । ७ श्रात का प्रचार करना ।

उछाळी

(१३२)

उजाळणी

उछाळी-पु० १ उछालने की क्रिया या भाव । २ इमारत की कुर्मी । ३ सामूहिक पलायन । ४ पलायन । ५ क्रोध आवेश । ६ वमन, कै, उल्टी ।

उछाव (ह)-देखो 'उत्साह' । २ देखो उत्सव ।

उछाही-देखो 'उत्साही' ।

उछिस्ट-देखो 'उच्छिस्ट'

उछीरी-पु० [सं० असूक] खून, रक्त ।

उछेद-पु० सीना ।

उछेव-पु० [सं० उच्छेद] १ खण्डन, नाश । २ छेदन ।

उछेर-पु० वंश । संतान । श्रोलाद । -वि० चलाने वाला ।

उछेरणी(बी)-क्रि० १ चराने निमित्त मवेशियों को एकत्र करके जंगल में ले जाना । २ भेजना । ३ हांकना ।

उछित-वि० [सं०] १ ऊंचा, उत्तुंग । २ बड़ा हुआ, उन्नत । ३ उठा हुआ, ऊंचा किया हुआ । ४ ऊपर गया हुआ ।

उछक-वि० १ निःशंक, साहसी । २ उद्दण्ड ।

उज-पु० [सं० अश्रु] आंसू ।

उजआळ (ळी)-देखो 'उजाळी' ।

उजड़-१ देखो 'ऊजड़' । २ देखो 'उजाड़' ।

उजड़णी(बी)-क्रि० १ बीरान होना, सूना होना । २ उखड़ना । ३ ध्वस्त होना, नष्ट होना । ४ बिखरना । ५ पृथक होना । ६ फट जाना ।

उजड़ी-वि० उजड़ा हुआ, बीरान । २ विनष्ट ।

उजड़, उजड़ु-वि० १ मूर्ख, अनाड़ी । २ असम्य । ३ ढीट । ४ अदक्ष । ५ निरंकुश । -पण, पणी-पु० मूर्खता । असम्यता । ढीटाई । अदक्षता ।

उजवार-पु० वजीर, मंत्री ।

उजवक, (की), उजवक्क (क्की)-पु० १ तातारियों की एक जाति । २ एक प्रकार की घास । ३ एक प्रकार का छोड़ा । -वि० मूर्ख, अनाड़ी । उद्दण्ड, आततायी । -क्रि० वि० विचित्र ढंग से ।

उजमणी-पु० [सं० उचापन] १ किसी वस्तु का उचापन । २ उचापन का उत्सव ।

उजमणी(बी)-क्रि० १ वर्षा होना । २ छटा छाना । ३ आच्छादित होना । ४ उचापन करना ।

उजयाळी-देखो 'उजाळी' । (स्त्री० उजयाळी)

उजर-पु० [अ० उज] १ विरोध, आपत्ति । २ विरुद्ध कथन, वक्तव्य या विनय । ३ हक दावा, स्वत्व । ४ अधिकार ।

उजरत-पु० १ 'उजर' के बदले दिया जाने वाला द्रव्य । २ पारिश्रमिक ।

उजळ(ळी)-वि० [सं० उज्ज्वल] (स्त्री० उजळी) १ दीप्तिमान, कांतिमान, प्रकाशित । २ शुभ्र, स्वच्छ । ३ श्वेत ।

४ निर्मल । ५ बढ़िया । ६ यशस्वी । ७ पवित्र, शुद्ध । ८ सुन्दर, मनोहर । -ता-स्त्री० कांति, दीप्ति । स्वच्छता । सफेदी ।

उजळी-स्त्री० सरस्वती, शारदा ।

उजळणी(बी)-क्रि० १ प्रकाशित होना । २ स्वच्छ होना । चमकना । ४ निर्मल होना । ५ गौरवान्वित होना । ६ कीर्ति बढ़ाना । ७ उद्धार करना ।

उजळाई-स्त्री० १ कांति, दीप्ति, चमक । २ स्वच्छता । ३ शौचादि की निवृत्ति के उतरांत की जाने वाली सफाई, धावदस्त ।

उजळाणी(बी)-प्रे० क्रि० १ प्रकाशित करना । २ स्वच्छ करना । ३ चमकाना । ४ गौरवान्वित करना ।

उजळी-लोहड़ी-देखो 'ऊजळीलोह' ।

उजवणी-देखो 'उजमणी' ।

उजवळ, (धाळ)-देखो 'उजळ' (बी) ।

उजवाळणी(बी)-देखो 'उजाळणी' (बी) ।

उजवाळी-देखो 'उजाळी' ।

उजवाळी-देखो 'उजाळी' । (स्त्री० उजवाळी)

उजा-स्त्री० १ हिम्मत, साहस । २ शक्ति पुहकार्य । -वि० बाहुदुर साहसी, वीर ।

उजागर-वि० १ जगमगाता हुआ, प्रकाशित । २ उज्ज्वल । ३ प्रसिद्ध, विख्यात । ४ लब्ध प्रतिष्ठित । ५ समर्थ, शक्ति शाली । ६ उदार । ७ अद्भुत, विचित्र । ८ जागृत करने वाला, जगाने वाला । ९ उज्ज्वल करने वाला । -पु० १ सूर्य । २ प्रकाश, तेज ।

उजाड़-वि० १ निर्जन, बीरान । २ ध्वस्त, नष्ट, बर्बाद । ऊसर । -पु० नुकसान, हानि । विनाश ।

उजाड़णी(बी)-क्रि० १ बीरान करना, जन शून्य करना । २ नष्ट करना, बर्बाद करना । ३ नुकसान करना । ४ बिखरना, छिन्न-भिन्न करना । ५ उधेड़ना ।

उजाघर-पु० १ बोका. भार । २ संकट । ३ तलवार । ३ देखो 'उजागर' ।

उजार-स्त्री० १ रोजनी, प्रकाश । २ देखो 'उजाड़' ।

उजारौ-देखो 'उजाळी' ।

उजाळ-पु० [सं० उज्ज्वल] १ उजलापन, चमक । २ उज्ज्वल करने की क्रिया । ३ उजाला, प्रकाश । ४ कान्ति, दीप्ति । ५ रोजनी, प्रकाश । ६ हस । -वि० १ प्रकाशमान, उज्ज्वल । २ कीर्ति बढ़ाने वाला । -क-वि० उज्ज्वल करने वाला ।

उजाळउ-देखो 'उजाळी' ।

उजाळणी-वि० उज्ज्वल करने वाला ।

उजाळणो (बो)—क्रि० उज्ज्वल करना, प्रकाशित करना ।

२ साफ करना, निर्मल करना । ३ जलाना । ४ यश, कीर्ति या गौरव बढ़ाना ।

उजाळवान—पु० रोशनदान ।

उजाळी—स्त्री० धोने के घाँखों पर डाली जाने वाली जाली ।

—वि० १ उज्ज्वल, प्रकाशित । २ शुक्ल पक्ष की, शुक्ल पक्ष संबंधी ।

उजाळी—पु० [सं० उज्ज्वल] १ प्रकाश, उजाला, रोशनी ।

२ तेज । ३ कुल जाति से श्रेष्ठ व्यक्ति ।

४ एक प्रकार का घोड़ा । ५ चांदनी, चंद्रिका । ६ कुल का दीपक । —वि० १ उज्ज्वल, प्रकाशित । २ उज्ज्वल करने वाला । ३ श्रेष्ठ उत्तम । —पक्ष—पु० शुक्ल पक्ष ।

—वि० निष्कलंक ।

उजास, (डो, णो)—पु० [सं० उद्भास] १ प्रकाश रोशनी ।

२ कांति दीप्ति । ३ किरण । ४ तेज । ५ हंस ।

उजासणो (बो)—क्रि० १ प्रकाशित करना, चमकाना । २ उज्ज्वल करना । ३ प्रज्वलित होना ।

उजासी—स्त्री० रोशनी, प्रकाश ।

उजियार—१ देखो 'उजागर' । २ देखो 'उजास' ।

उजियारी, (याळी)—देखो 'उजाळी' ।

उजियास—देखो 'उजास' ।

उजीर—देखो 'वजीर' ।

उजुप्राळ—वि० १ उज्ज्वल करने वाला । २ देखो 'उजाळी' ।

उजुयाळी—देखो 'उजाळी' (स्त्री० उजुयाळी) ।

उजूबा—पु० [अ० अजूबा] बैंगनी रंग का एक पत्थर विशेष ।

उजेड़—वि० विगाड़ या विदास करने वाला ।

उजेळी—देखो 'उजाळी' ।

उजे—पु० प्रकार, तरह ।

उजोत—पु० [सं० उद्योत] १ प्रकाश, चमक । २ कांति । ३ ग्रंथ का ग्रन्थाय । —वि० उज्ज्वल ।

उजो—पु० साहस, पुरुषार्थ, शक्ति ।

उज्जळ—क्रि० वि० १ नदी के चढ़ाव की ओर । २ देखो 'उजळ' ।

उज्जळी—देखो 'उजळी' ।

उज्जाल—पु० समूह, दल ।

उज्जागर—देखो 'उजागर' ।

उज्जोवकर—वि० [सं० उद्योतकर] प्रकाश करने वाला ।

उज्जड़ (ड)—वि० १ भक्ती, वक्तादी । २ उद्धत । ३ मूर्ख ।

४ मन मौजी । ५ देखो 'ऊजड़' ।

उज्जेल, (लत)—देखो 'ऊजेल' ।

उज्यागर—देखो 'उजागर' ।

उज्यास—देखो 'उजास' ।

उज्ज—देखो 'उजर' ।

उज्जळण—देखो 'उजळ' ।

उसकणी, (बो) उसकणी, (बो)—क्रि० १ भिभकना ।

२ चौकना । ३ उछलना, कूदना । ४ ऊपर उठना ।

५ उमरना ।

उसड़—१ देखो 'उज्जड़' । २ देखो 'ऊजड़' ।

उसणी—देखो 'ऊसणी' ।

उसळणी (बो)—क्रि० १ छलकना । २ छिल-छिलकर निकलना ।

३ छिछोरापन करना । ४ आवेग में आना । ५ हृदय मर्यादा से बाहर होना । ६ उमड़ना, बढ़ना । ७ पति को छोड़कर अन्य पुरुष के साथ जाना ।

उसळ—देखो 'उज्जेल' ।

उसांकणी (बो)—क्रि० १ भांकना, ताकना । २ ऊपर सिर करके देखना ।

उभाळी—पु० उजाला, प्रकाश ।

उभाळ—स्त्री० [सं० ज्वाला] १ आग की लपट, ज्वाला ।

२ देखो 'उज्जेल' ।

उभाळणी (बो)—क्रि० १ छलकाना । २ बहाना ।

३ देखो 'उजाळणी' (बो) ।

उभेळणी (बो)—क्रि० १ उमड़ना । २ मर्यादा का उल्लंघन करना

आगे बढ़ना । ३ बढ़ना, अग्रसर होना । ४ तेजी से बढ़ना ।

५ तरबतर होना । ६ मस्ती में आना । ६ खुश होना ।

८ दान देना ।

उभेळ—देखो ऊभेळ ।

उभेल—स्त्री० उछलने की क्रिया या भाव ।

उटभ—स्त्री० [सं०] पराङ्कुटी, भोंपड़ी ।

उटगण—पु० उट्टेग ।

उठंग—पु० [सं० उत्तम] तकिया ।

उठतरी—देखो 'उठातरी' ।

उठ—१ देखो 'ऊट' । २ देखो 'ऊठ' ।

उठाणी (बो)—देखो 'ऊठाणी' (बो) ।

उठावणी—स्त्री० नेतापन, नेतागिरी । २ देखो 'उठावणी' ।

उठाण, (न)—स्त्री० [सं० उत्थान] १ उठने की क्रिया या भाव ।

२ उत्थान उन्नति । ३ वृद्धि, बड़ोतरी । ४ उदय, उदगम ।

५ विकास । ६ उत्पत्ति । ७ क्रियाशीलता । ८ स्फूर्ति ।

९ हर्ष, आनन्द । १० भाक्ति, बल, पौरुष । ११ युद्ध ।

१२ सेना । १३ प्रारम्भ । १४ बाढ़ । १५ व्यय । १६

मोमा, मर्यादा । १७ आंगन । १८ मण्डप । १९ सजगता,

जागरुकता । २० व्यवस्था ।

उठाणी—देखो 'उठावणी' ।

उठांतरो-स्त्री० [सं० उत्थान्तरम्] १ उठाने की क्रिया या भाव ।

२ मौफ, खारिज, विसर्जित । ३ नाश । ४ जागीरदार की भूमि जस्त हो जाने पर उसे पुनः अधिकार में लेने की राजाज्ञा ।

उठांमणी-देखो 'उठावणी' ।

उठाईगीर. (गीरी)-वि० (स्त्री० उठाईगीरी) चोर, उचक्का, बदमाश, ठग ।

उठाईगीरी-स्त्री० १ किसी के पदार्थों को उठा कर ले जाने की क्रिया, चोरी । २ देखो 'उठाईगीर' ।

उठाउं (ऊं)-क्रि० वि० वहाँ से ।

उठाउं (ऊं)-वि० १ उठाने वाला उचक्का । २ हस्तान्तरण योग्य ।

उठा-क्रि० वि० उधर वहाँ । -क-वि० उठाने वाला । -पु० शोध उठाने की क्रिया या भाव ।

उठाइणी (बी), उठाणी (बी)-प्रे० क्रि० [सं० उत्थानम्]

१ उठाना, खड़ा करना । २ जगाना । ३ पड़े हुए को हाथ में लेना । ४ नीचे से ऊपर करना । ५ धारण करना । ६ बहन करना । ७ अपने ऊपर लेना । ८ निकालना । ९ ऊपर किये रहना । १० उन्नत करना, बढ़ाना । ११ चढ़ाना । १२ गोद में लेना । १३ प्रारम्भ करना । १४ तैयार करना, उद्यत करना । १५ उत्साहित करना । १६ बंद करना । १७ समाप्त करना, पूर्ण करना । १८ खर्च करना । १९ किराये पर देना । २० भोग करना । २१ अनुभव करना । २२ कुछ लेकर सकल्प करना । २३ उधार देना । २४ लगान पर देना । २५ जिम्मेदारी लेना । २६ सहन या बर्दाश्त करना । २७ स्वीकार करना । २८ प्राप्त करना । २९ खोलना । ३० हटाना ।

उठाव-देखो 'उठावणी' ।

उठावणी-स्त्री० १ तेजी से लपकने की क्रिया । २ आक्रमण, हमला । ३ नेतापन ।

उठावणी-पु० मृतक के पीछे रखी जाने वाली तीन या बाहर दिक्मोक्ष बैठक की नमाप्ति ।

उठावणी (बी)-देखो 'उठाणी' (बी) ।

उठावो-वि० १ जिसका कोई स्थान निश्चित न हो । २ जो उठाया जाता हो । ३ उठाने वाला । ४ चुपके से उठाकर चलने वाला ।

उठा-क्रि० वि० उधर, उस ओर ।

उठे (ठे)-क्रि० वि० वहाँ, उस जगह, उधर ।

उठेल-पु० फेंकने की क्रिया या भाव ।

उठेरू-वि० १ उड़ने वाला, उड़ने योग्य । २ चलने, फिरने या डोलने वाला ।

उडंग, उडंड, उडंडाणी-देखो 'उडंड' ।

उडंत-पु० कुशी का एक दाव । -क्रि० वि० उड़ना हुआ ।

उडंबर-पु० गूलर ।

उडंबरी-स्त्री० एक तार वाद्य विशेष ।

उड-पु० [सं० उडु] तारा, नक्षत्र । -गण, गन, गांण-पु० तारागण, नक्षत्रगण । -पत, पति, पती-पु० चन्द्रमा, शशि । -माळ-स्त्री० तारागण । नक्षत्र, सितारे । -राज-पु० चन्द्रमा ।

उडण-स्त्री० उड़ने की क्रिया । -वि० उड़ने वाला । -खटोलड़ी, खटोलणी, खटोली-पु० छोटा विमान । हेलीकोप्टर ।

उडणी (बी)-क्रि० [सं० उड्डयन] १ पंख, मंत्र शक्ति या मशीन के जरिये आकाश में विचरण करना, उड़ना । २ हवा में तैरना । ३ लम्बी छलांग भरना । ४ शून्याकाश में वायु के सहारे रहना । ५ बहुत तेज चलना । ६ काट कर अलग होना । ७ कपूर आदि पदार्थों का गैस बन कर अदृश्य होना, समाप्त होना । ८ रंगादि का फीका पड़ना । ९ अफवाह आदि का फैलना । १० हवा में फहरना । ११ वायु के सहारे आकाश में फैलना । १२ अलोप या गायब होना । १३ खर्च होना । १४ भोगा जाना । १५ मार या आघात पड़ना । १६ धोखा या चकमा देना । १७ बारूद आदि से नष्ट होना, ध्वस्त होना ।

उडप-देखो 'उडुप' ।

उडळभरि (भरी)-पु० हाथी, गज ।

उडवा-स्त्री० [सं० उटज] कुटी, भोंगड़ी ।

उडाण, (डान, य)-स्त्री० [सं० उड्डयन] १ उड़ने की क्रिया या भाव । २ छलांग । ३ कवि तर्क ।

उडाऊ-वि० १ उड़ने वाला । २ उड़ाने वाला । ३ अपव्ययी ।

उडाक-वि० उड़ने में निपुण ।

उडाइणी, (बी) उडाणी (बी)-प्रे० क्रि० १ पंखों द्वारा, मंत्र शक्ति या मशीन के जरिये आकाश में उड़ने को प्रेरित करना, उड़ाना । २ हवा में तैरना । ३ वायु में ऊंचा उठाना । ४ हवा में फेंकना । ५ लम्बी छलांग भरना । ६ काट कर अलग करना । ७ गायब करना, चुराना । ८ छक कर खाना । ९ प्रहार करना, मारना । १० बर्बाद करना । ११ खर्च करना । १२ हवा में फहराना । १३ धोखा देना । १४ बात को टालना । १५ निंदा या मखौल द्वारा हतोत्साहित करना । १६ तेज दौड़ाना, भगाना । १७ फरार करना, भगाना । १८ प्रतिस्पर्धा कराना ।

उडायण-क्रि० वि० १ अत्यन्त तीव्र गति से । २ देखो 'उडियण' ।

उडाळणी (बी)-देखो 'उंळणी' (बी) ।

उडावणी (बी)-देखो 'उडाणी' (बी) ।

उडि, उडी-पु० १ पक्षी । -स्त्री० २ आकाश में उड़ने वाली भूलि । -यण-पु० तारे, पक्षी, पंखे । -उडियाण-पु०

आकाश, आरामान । ओढ़ने का वस्त्र । हठ योग का एक बंध विशेष, कटि पर का लंगोटी का बंध ।
 उडीक-स्त्री० [सं० उदीक्षा] १ प्रतीक्षा, इंतजार । २ चिंता ।
 ३ पूर्व व आग्नेय के मध्य की दिशा । ४ चाह, अभिलाषा ।
 उडीकणी (बी)-क्रि० [सं० उदीक्षण] १ प्रतीक्षा व इंतजार करना । २ चिंता करना ।
 उडु (ह)-पु० [सं०] १ तारा, नक्षत्र । २ पक्षी । [सं० उदक]
 ३ जल, पानी । -वि० सपेद, श्वेत । -पत, पति, राज,
 -पु० चन्द्रमा, चांद । -पथ-पु० आकाश, गगन ।
 उडुप-पु० [सं०] १ चन्द्रमा, शशि । २ गरुड़ । ३ बड़ा पक्षी ।
 ४ आकाश, नभ । ५ तारा, नक्षत्र । ६ नाव, डोंगी ।
 ७ नाविक । ८ नृत्य का एक भेद । -पत, पति, राज-पु०
 चन्द्रमा । प्रथम तथु व दो दीर्घ मात्रा का नाम ।
 उडुस, उडूस-पु० खटमल ।
 उडेल-स्त्री० १ हल के पीछे लगने वाली छोटी लकड़ी ।
 २ घास, घूस ।
 उडेलणी (बी)-क्रि० १ एक बर्तन से दूसरे में डालना,
 उडेलना । २ ढालना । ३ गिराना, ढुलकाना । ४ रिक्त या
 खाली करना ।
 उडेलभरी-देखो 'उडेलभरि' ।
 उडै-क्रि० वि० वैसे ।
 उडुणी (बी)-देखो 'उडणी' (बी) ।
 उडुयन, उडुयन-स्त्री० १ उड़ान । २ देखो 'उडि (डी) याण' ।
 उडंग-वि० अत्यन्त ऊंचा । उन्नत ।
 उडंगी-वि० (स्त्री० उडंगी) १ ऊंचे शरीर वाला । २ बेढंगा ।
 उणंतरी-देखो 'गुणंतरी' ।
 उण-सर्व० उस, उसने । वह ।
 उणगी-क्रि० वि० उस ओर, उधर ।
 उणत (प)-स्त्री० [सं० ऊनत्व] १ कमी । कसर । २ याद,
 स्मृति । ३ अभिलाषा, इच्छा । ४ निर्धनता ।
 उणमण, (मणिणी, मणी)-वि० [सं० उन्मनस्] (स्त्री० उणमणी)
 १ खिन्नचित्त, उदास । २ व्याकुल, बेचैन ।
 उणमुख (मुखी)-वि० [सं० उन्मुख] (स्त्री० उणमुखी) १ उदास,
 खिन्न । २ वित्तित । ३ उत्सुक । -ता-स्त्री० उदासी ।
 चिन्ता । उत्सुकता ।
 उणहार (रि)-देखो 'उणियार' ।
 उणायत (रत, रथ)-देखो 'उणत' ।
 उणि-सर्व० उस, उसी, उसीने । वही ।
 उणियार, उणियार, उणियारी, उणियार (री)-वि० १ हमशक्ल ।
 बराबर । ३ उपयुक्त । ४ अनुकूल । -स्त्री० १ शक्ल, सूरत ।
 आकृति, मुखाकृति, चेहरा । २ समानता ।

उणी-देखो 'उणि' ।
 उणीयार, उणीयारी, उणीहार, उणीहारी-देखो 'उणियारी' ।
 उणी-पु० [सं० ऊन] १ अपरिपक्व गर्म । २ देखो 'ऊणी' ।
 -पूणी-वि० अपूर्ण ।
 उण्यारी-देखो 'उणियारी' ।
 उत्तक-पु० [सं० उत्तक] १ वेदमुनि के शिष्य । २ गौतम ऋषि
 के शिष्य ३ देखो 'उत्तुंग' ।
 उत्तंग (ह)-पु० सूर्य । देखो 'उत्तुंग' ।
 उत्त-उप० एक उपसर्ग । -क्रि० वि० १ वही । २ उधर । ३ उस
 ओर । -पु० [सं० वत्स] पुत्र, लड़का ।
 उत्तकंठ-वि० [सं० उत्तकंठ] १ ऊपर की गर्दन उठाए हुए ।
 २ तत्पर । ३ उत्सुक ।
 उत्तकंठा-देखो 'उत्तकंठा' ।
 उत्तकंठित-देखो 'उत्तकंठित' ।
 उत्तकंठिता-देखो 'उत्तकंठिता' ।
 उत्तकट-देखो 'उत्तकट' ।
 उत्तकलिका-स्त्री० [सं० उत्तकलिका] १ उत्तकंठा । २ लहर,
 तरंग । ३ फूल की कली ।
 उत्तकस्ट-देखो 'उत्तकस्ट' ।
 उत्तकू-क्रि० वि० वहां ।
 उत्तप्य-पु० [सं०] १ अंगिरा के पुत्र एक मुनि । २ बृहस्पति के
 ज्येष्ठ सहोदर ।
 उत्तन, उत्तन-पु० [अ० वतन] १ अग्रपदा देश । २ जन्म-भूमि ।
 उत्तनी-वि० (स्त्री० उत्तनी) निश्चित मात्रा का ।
 उत्तपत, (पति, पती, पत्नी)-देखो 'उत्पत्ति' ।
 उत्तपन, (न्)-देखो 'उत्पन्न' ।
 उत्तपनणी (बी)-क्रि० उत्पन्न होना, पैदा होना ।
 उत्तपल-देखो 'उत्पल' ।
 उत्तपात-देखो 'उत्पात' ।
 उत्तपाती-देखो 'उत्पाती' ।
 उत्तफुल-वि० [सं० उत्तकुल्ल] विकसित, प्रफुल्लित,
 खिला हुआ ।
 उत्तबंग, उत्तमंग-देखो 'उत्तमंग' ।
 उत्तम (मि)-देखो 'उत्तम' । -तर-देखो 'उत्तम-तर' ।
 -दशा-देखो 'उत्तम-दशा' -रस-देखो 'उत्तम-रस' ।
 उत्तरंग-पु० मकान के दरवाजे के ऊपर-नीचे लगने
 वाला पत्थर ।
 उत्तर-देखो 'उत्तर' ।
 उत्तरण-स्त्री० १ उत्तरा हुआ वस्त्र । २ उत्तरन । ३ पुरानी
 वस्तु । ५ उतरने की क्रिया ।

उतरणी (बौ)—क्रि० [सं० अवतरण] १ ऊंचाई से नीचे आना, नीचे उतरना । २ अवनति पर होना । ३ ढलना । ४ हड्डियों का संघिस्थल से हटना । ५ फीका पड़ना । ६ लज्जित या उदास होना । ७ कांति या दीप्ति मंद पड़ना । ८ घटना, कम होना । ९ उद्देग कम होना । १० पूर्ण होना, समाप्त होना । ११ बेसुरा होना । १२ काम में आने योग्य न रहना । १३ खोला या हटाया जाना (वस्त्र) । १४ टल कर या निर्मित होकर आना । १५ कम होना, घटना (भाव) । १६ पकना (रोटी, फल) । १७ डेरा देना, पड़ाव डालना । १८ लेख बढ़ या नकल होना । १९ विशिष्ट क्रिया से तैयार होना । २० माप-तोल में ठीक बैठना । २१ चुकता होना । २२ एकत्रित होना । २३ जागीरी जस्त होना । २४ पद से हटना । २५ अहविकर होना । २६ पार होना । २७ भूलना, भूल में पड़ जाना । २८ कट कर अलग होना, कटना । २९ ऊपर बढ़ना, चलना । ३० जाना, गमन करना । ३१ देव मूर्ति के आगे धूप दीप आदि धुमाया जाना ।

उतराण—देखो 'उतरायण' ।

उतरा—देखो 'उत्तरा' ।

उतराई—स्त्री० १ उतरने की क्रिया । २ नदी पार करने का पारिश्रमिक । ३ नदी पार करने की क्रिया ४ ढलान, निचाई ।

उतराद (घ)—स्त्री० उत्तर दिशा । —क्रि० वि० उत्तर दिशा में ।

उतरादी (घी)—वि० (स्त्री० उतरादी) उत्तर दिशा की ओर ।
उतरादौ—वि० उत्तर दिशा का, उत्तर, दिशा संबंधी ।

उतराधू, (घी)—देखो 'उतरादौ' ।

उतराफालगुणी (नी)—देखो उत्तराफालगुनी ।

उतरायण—देखो 'उत्तरायण' ।

उतरायी—देखो 'उतराई' ।

उतराव—देखो 'उत्तरा' ।

उतरासंग—पु० कंधे पर के दुपट्टे को हाथ में लेकर साधु से वंदना करना [जैन] ।

उतरासण (णि, णी)—पु० १ गृह-द्वार के छज्जे के नीचे समानांतर लगने वाला पत्थर । २ देखो 'उतरासंग' ।

उत्तरस—पु० [सं० उत्तर+ईश] कुबेर ।

उत्तरोक, उत्तरी—वि० (स्त्री० उत्तरी) उतना, उतना-सा ।

उतळ—स्त्री० उदारता की प्रत्याशा ।

उतळीवळ—देखो 'अतिवळ' ।

उतषंग—देखो 'उत्तमंग' ।

उत्तरजन—देखो 'उत्तरजन' ।

उत्तरपणा—स्त्री० [सं० उत्तरपणा] दण कोडा-कोड़ी सागरोपम प्रमाण रासय । उत्कर्ष या उन्नति बतलाने वाले छ आरा परिमित काल विभाग । (जैन)

उत्सारक—पु० [सं० उत्सारकः] १ प्रतिहार, द्वारपाल । २ सिपाही । ३ चौकीदार ।

उत्साह—देखो 'उत्साह' ।

उत्सुक—देखो 'उत्सुक' ।

उत्सूर—पु० [सं० उत्सूरः] संध्याकाल, शाम ।

उत्तान—पु० ध्रुव के पिता । —जात—पु० ध्रुव । देखो 'उत्तान' ।

उत्तानसहाय, (सहि, सही)—पु० [सं० उत्तानसय] बालक ।

उत्तामळी (उतावल)—देखो 'उतावळ' ।

उत्तामळड (ळी)—देखो 'उतावळी' । (स्त्री० उत्तामळी) ।

उताग्रह—वि० जल्दी करने वाला ।

उताप, (पौ)—देखो 'उत्ताप' ।

उतायळ, उतायळी (वळी)—वि० १ आतुर, जल्दवाज । —स्त्री० २ शीघ्रता । ३ देखो 'उतायळी' ।

उतार—पु० १ उतरने या क्रमशः नीचे आने की क्रिया । २ उतरने योग्य स्थान । ३ क्रमशः होने वाली कमी । ४ घटाव, कमी । ५ समुद्र का भाटा । ६ ढालू भूमि, ढलान । ७ उतारन, त्यक्त । ८ न्योछावर । ९ प्रभावशून्य करने वाली वस्तु । १० बहाव । ११ पतन, अवनति । १२ चढ़ाई का विपर्याय । १३ नदी पार करने की आसान जगह । १४ उद्देग में कमी । १५ पूर्णता या समाप्ति की अवस्था ।

उतारण (णी)—वि० १ उतारने वाला । २ पट्टा खाने वाला । ३ मिटाने वाला ।

उतारणी (बौ)—क्रि० १ ऊंचाई से नीचे लाना, उतारना । २ अवनति करना । ३ ढलाना । ४ हड्डियों को संघि-स्थल से हटाना । ५ फीका पटकना । ६ लज्जित करना । ७ उदास करना । ८ श्रीहीन करना । ९ घटाना, कम करना । १० आदेश या उद्देग काम करना । ११ ढीला या बेसुरा करना । (वाद्य) १२ काम में आने योग्य न रहना । १३ खोलना, हटाना । १४ ढालना, निर्मित करना । १५ पकाना । (रोटी आदि) १६ डेरा दिरवाना, ठहराना । १७ लेख बढ़ या नकल करना । १८ विशिष्ट क्रिया से तैयार करना । १९ माप-तोल में ठीक बैठाना । २० चुकाना । २१ एकत्र करना । २२ जागीरी जस्त करना । २३ पद से हटाना । २४ पार करना । २५ मुलाना, भूल में डालना । २६ काट कर अलग करना । २७ छीलना । २८ चित्रांकित करना । २९ छलाड़ना । ३० पृथक् करना । ३१ प्रभावशून्य करना । ३२ न्योछावर

उत्तर

(१३७)

उत्तर

करना । ३३ पीना । ३४ नजरो से गिराना । ३५ तोड़ना, चुनना । ३६ मुकाबले में लाना । ३७ कष्ट निवारणार्थ कोई वस्तु धारण । ३८ आरती करना, देवमूर्ति के आगे धूप, ज्योति आदि धुमाना ।

उताव (क)-वि० १ उद्यत, तैयार, तत्पर । २ उतरा हुआ । ३ काम में लिया हुआ ।

उतारौ-पु० १ ठहरने का स्थान, पड़ाव डेरा । २ ठहरने की क्रिया । ३ नदी पार करने की क्रिया । ४ नदी पार कराने पर दिया जाने वाला पारिश्रमिक । ५ टोना का दस्तूर । ६ नकल । ७ फहराव ।

उताव-देखो 'उतावळ' ।

उतावळ-क्रि० वि० शीघ्र जल्दी ।

उतावळी-देखो 'उतावळी' । (स्त्री० उतावळी)

उतावळ (ठि, ठी)-स्त्री० जल्दी, शीघ्रता, त्वरा ।

उतावळी-वि० (स्त्री० उतावळी) १ आतुर । २ जो हर काम में शीघ्रता करता हो । ३ उत्सुक । ४ बिना विचारे शीघ्रता करने वाला ।

उतिग-पु० चींटियों का घर ।

उतिम, उतिम, उतीम-पु० १ पांच सगरा व एक ह्रस्व का छन्द विशेष । २ देखो 'उतम' । —रस-देखो 'उत्तररस' ।

उतिपति-देखो 'उत्पति' ।

उतुळीबळ-देखो 'अतिबळ' ।

उतं-क्रि० वि० वहां, उधर, उस ओर ।

उतोलणी (बो)-क्रि० १ तोलना । २ प्रश्न उठाना । ३ मारना, बध करना ।

उतो-वि० (स्त्री० उती) उतना ।

उत्कंठा-स्त्री० [सं०] १ प्रबल इच्छा, अभिलाषा, त्वरा । २ खेद । ३ एक प्रकार का संचारी माध ।

उत्कंठित-वि० [सं०] १ उत्सुक, चिंतित । २ व्याकुल आतुर । ३ प्रबल इच्छा वाला ।

उत्कंठिता-स्त्री० [सं०] उत्सुका-नायिका ।

उत्कट-पु० [सं०] १ हाथी का मद । २ मदमाता हाथी । —वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम । २ लम्बा चौड़ा, विस्तृत । ३ शक्तिशाली । ४ विकट, भयंकर । ५ उग्र । ६ अत्यधिक । ७ नष्ट में चूर, मशोन्मल । ८ विषम । ९ प्रबल, तीव्र । —आसण-पु० एक योगसन ।

उत्करस-पु० [सं० उत्कर्ष] १ श्रेष्ठता, उत्तमोत्तम गुण । २ बढ़ाई, प्रशंसा । ३ उन्नति । ४ प्रसिद्धि । ५ समृद्धि । ६ उदय, विकास । ७ तृप, आनन्द । ८ अहंकार । ९ प्रभाव । १० प्रचुरता ।

उत्कर्मण-पु० [सं०] १ अतिक्रमण, उल्लंघन । २ मृत्यु ।

उत्कस्ट-वि० [सं० उत्कृष्ट] श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।

उत्कस्टता-स्त्री० [सं० उत्कृष्टता] श्रेष्ठता, बढ़ापन ।

उत्तंग, (गौ)-देखो 'उत्तुंग' ।

उत्त-पु० [सं० उत्] १ आश्चर्य, संदेह । २ पुत्र, लड़का । —क्रि० वि० उधर, उस ओर ।

उत्तन-पु० [अ० वतन] १ वतन, देश । २ जन्म भूमि ।

उत्तपत्त (त्ति)-देखो 'उत्पत्ति' ।

उत्तपाती-देखो 'उत्पाती' ।

उत्तप्त-वि० [सं०] १ खूब तपा हुआ । २ तप्त, संतप्त । ३ दुःखी पीड़ित । ४ दग्ध । ५ चिंतित ।

उत्तमंग-देखो 'उत्तमंग' ।

उत्तम-वि० [सं०] १ श्रेष्ठ, बढ़िया । २ पवित्र, शुद्ध । ३ मुख्य, प्रधान । ४ सर्वोच्च । ५ सबसे बड़ा । ६ प्रथम । —पु० १ विष्णु का नाम । २ श्रेष्ठ नायक । ३ राजा उत्तानपाद व सुहवि का पुत्र । —अंग-पु० मस्तक, शिर । —गंधा-स्त्री० मालती —तथा-क्रि० वि० भली प्रकार, अच्छी तरह । —तर, तर-पु० चंदन वृक्ष । —ता, ताई-स्त्री० श्रेष्ठता । पवित्रता । मुख्यता, प्रधानता । सर्वोच्चता । भलाई । उत्कृष्टता । —बसा-स्त्री० ज्योति, दीपक । श्रेष्ठ दशा । —पद-पु० श्रेष्ठ पद, मोक्ष । —पुरुष-पु० सर्वनाम के अनुसार प्रथम पुरुष, कर्ता । ईश्वर । —रस-पु० दूध । —संग्रह-पु० सम्पत् संग्रह । एकांत में पर स्त्री से प्रालिप्त ।

उत्तमंग-पु० [सं०] मस्तक, शिर ।

उत्तमा-स्त्री० [सं०] सर्वश्रेष्ठ स्त्री ।

उत्तमाई-स्त्री० उत्तमता, पवित्रता ।

उत्तर-पु० [सं०] १ दक्षिण के सामने की दिशा । २ प्रश्न; बात या पत्र का जवाब । ३ अस्वीकृति, मनाही । ४ मांग के बदले किया जाने वाला कार्य । ५ बहाना, मिस, व्याज । ६ प्रतिकार । ७ एक प्रकार का झलंकार । ८ उत्तर दिशा का पवन । ९ शिव । १० विष्णु । ११ भविष्य । १२ राजा विराट का पुत्र । —वि० १ पिछला, बाद का । २ ऊपर का । ३ श्रेष्ठ । ४ तेज, तीव्रगामी । ५ अपेक्षाकृत ऊंचा । ६ बायाँ । ७ सम्पन्न । —क्रि० वि० पीछे, बाद में, अनन्तर । —आखाडा-स्त्री० आपड़ा नामक २१ वां नक्षत्र । —कळा-स्त्री० बहतर कलाओं में से एक । —काल-पु० भविष्यत् काल । —काशी-स्त्री० उत्तर का एक तीर्थ स्थान । —कुरु, कुरु-पु० जम्बू द्वीप के नव वर्षों में एक, जनपद, देश । —क्रिया-स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया । पितृकर्म, श्राद्ध । जीवन के अंतिम समय में लो जाने वाली प्रतिज्ञाएं ।

उत्तरणी

(१३८)

उत्तरंग

(जैन) अस्थायी रूप से ली जाने वाली प्रतिज्ञाएं
(जैन)। —वाता-वि० जवाब देने वाला। —दायित्व-
पु० जिम्मेदारी। —दायो-वि० जिम्मेदार। —दिकपति,
दिसपति-पु० कुवेर। वायु। —पक्ष, पख-पु० जवाब की
दलील। —पति-पु० कुवेर। वायु। —पय-पु० देवयान।
—पद-पु० योगिग शब्द का अंतिम अक्षर। —कालगुनी-
वारहवां नक्षत्र। —चात्रपद-पु० छात्रीसवां नक्षत्र।
—मानस-पु० गया तीर्थ का एक सरोवर। —मीमांसा-
स्त्री० वेदान्त दर्शन। —मोड़-पु० उत्तर दिशा का रक्षक।
हिमालय।

उत्तरणी (बी)—देखो 'उत्तरणी' (बी)।

उत्तरा-स्त्री० [सं०] १ उत्तर दिशा। २ विराट की कन्या का
नाम। —खंड-पु० भारत का उत्तरी प्रान्त।

उत्तराङ्ग-स्त्री० उत्तर दिशा की ओर से आने वाली हवा।

उत्तराद, (त)—देखो 'उत्तराध'।

उत्तराधी (धो)—देखो 'उत्तराधी'।

उत्तरायण-पु० [सं०] १ वे छः मास जिसमें सूर्य की गति उत्तर
की ओर शुरू हुई होती है। २ मकर से मिथुन तक के सूर्य
का छः मास का समय व अवस्था। सूर्य की मकर
रेखा से उत्तर वर्क रेखा की ओर की गति। ३ छः मास
का ऐसा समय जब सूर्य मकर रेखा में चलकर वरावर
उत्तर की ओर बढ़ता है।

उत्तरायण-देखो 'उत्तरायण'।

उत्तरायण-वि० १ उत्तराखंड का, उत्तर भारत का। २ देखो
'उत्तरायण'।

उत्तरी-स्त्री० उत्तर दिशा की वायु। —वि० उत्तर की।

उत्तर-देखो 'उत्तर'।

उत्तान-वि० [सं० उत्तान] ऊर्ध्व मुख, चित्त। —पु० राजा उत्तान
पाद का नाम। —जात-पु० ध्रुव। —पाव-पु० ध्रुव के
का नाम।

उत्ता-सर्व० उतने।

उत्ताप-पु० [सं०] १ कष्ट, पीड़ा। २ ज्वर, बुखार।
३ उष्णता, ताप।

उत्तारणी (बी)—देखो 'उत्तरणी' (बी)।

उत्ताळ-वि० [सं० उत्ताळ] १ उत्कट। २ मयानक। ३ उग्र,
तेज। ४ दुरुह, कठिन। ५ ऊंचा, लंबा। ६ त्वरित।
—स्त्री० शीघ्रता, त्वरा।

उत्ताळी, (उत्तावळी)—देखो 'उत्तावळी'। (स्त्री० उत्तावळी)

उत्तावळी-स्त्री० आतुरता, जल्दबाजी, शीघ्रता।

उत्तिमंग-देखो 'उत्तमांग'।

उत्तिम-देखो 'उत्तम'।

उत्तिमंग-देखो 'उत्तमांग'।

उत्तोरण-वि० [सं० उत्तोरण] १ परीक्षा या प्रतियोगिता में
सफल, प्राप्त। २ पारंगत। ३ पार गया हुआ।

उत्तुंग, उत्तुंगि(गी)-पु० [सं० उत्तुंग] घोड़ा अश्व। —वि० १ बहुत,
ऊंचा। २ लंबा। ३ दीर्घ। ४ बढ़िया, श्रेष्ठ। ५ बुद्धिमान।

उत्तू-पु० [फा०] कसीदे के कार्य का एक औजार।

उत्त-क्रि० वि० १ तब तक। २ कहां तक। —सर्व० उतने।

उत्थप-पु० १ उखड़ने की क्रिया या भाव। २ देखो 'उत्थाप'।

उत्थपणी (बी)—देखो 'उत्थपणी' (बी)।

उत्थलणी (बी)—देखो 'उत्थलणी' (बी)।

उत्थवणी (बी)—देखो 'उत्थपणी' (बी)।

उत्थान-पु० [सं० उत्थान] १ उठने का कार्य, उठान।
२ उन्नति, बढ़ोतरी। ३ विकास। ४ प्रारंभ। ५ समृद्धि।

६ वृद्धि। ७ जागृति। —**एकादशी-स्त्री०** कार्तिक शुक्ला
एकादशी।

उत्थाप-पु० मिटाने या हटाने की क्रिया। —वि० उन्मूलन
करने वाला।

उत्थापन-पु० [सं०] १ उठाना, खड़ा करने की क्रिया।
२ भडकाने की क्रिया। ३ जगाना। ४ वमन, कै।

उत्पत्ति-स्त्री० [सं०] १ जन्म। २ उद्गम। ३ सृष्टि। निर्माण।
४ प्रारंभ। ५ उदय। ६ लाभ, मुनाफा। ७ उद्गम स्थल।

—**एकादशी-स्त्री०** मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की
एकादशी।

उत्पन्न-वि० [सं०] १ जन्मा हुआ। २ उदित। उगा हुआ।
३ निमित्त, सृजित।

उत्पन्ना स्त्री० [सं०] अग्रहण कृष्णा एकादशी।

उत्पल-पु० [सं०] नील कमल।

उत्पात-पु० [सं०] १ उपद्रव, दंगा। २ उघम, बदमाशी।
३ विद्रोह, क्रान्ति। ४ अशान्ति। ५ आकस्मिक दुर्घटना।

६ शरारत। ७ अशुभ सूचक चिह्न।

उत्पातक-पु० [सं०] कान का एक रोग। —वि० उत्पात करने
वाला।

उत्पाती-वि० [सं० उत्पाति] उत्पात या बदमाशी करने
वाला, उपद्रवी।

उत्पादक-वि० [सं०] उत्पन्न करने वाला, सृष्टा।

उत्पावन-पु० [सं०] १ पंदावार, उपज। २ उत्पत्ति, जन्म।
३ निर्माण, सृजन।

उत्पमतर-देखो 'उत्तमतर्'।

उत्रा स्त्री० उत्तरा। —**ग्रन्थ-पु०** परीक्षित।

उत्संग (गि)—स्त्री० गोद, कोड।

उत्सरंग-पु० उत्सव, आनन्द, उमंग।

उत्तरग-पु० [सं० उत्तरग] १ त्याग । २ नवीछावर । ३ दान ।
 ४ समाप्ति । ५ प्राणदान ।
 उत्तरजन-पु० [सं० उत्तरजन] त्याग । दान ।
 उत्तरव (वु)-पु० [सं०] १ मांगलिक महोत्सव । २ हर्ष आनन्द
 या खुशी का कार्य । ३ त्योहार, पर्व । ४ जलसा ।
 ५ ग्रामाद-प्रमोद ।
 उत्साह-पु० [सं०] १ उमंग, जोश । २ साहस, हिम्मत ।
 ३ वीर रस का स्थायी भाव ।
 उत्साही-वि० [सं०] साहसी । उमंगी । जोशीला ।
 उत्सुक-वि० [सं०] अत्यन्त इच्छुक, आतुर । उत्कण्ठित ।
 उत्सुकता-स्त्री० [सं०] १ प्रबल इच्छा, उत्कण्ठा । २ व्याकुलता ।
 ३ एक प्रकार का संतारी भाव ।
 उथ, उथक-क्रि० वि० वहाँ ।
 उथकणी (बी)-क्रि० कूटना, छानांग लगाना ।
 उथड़कणी, (बी), उथड़णी (बी)-क्रि० १ गिरना, गिर पड़ना ।
 २ गिराना, पटकना ।
 उथल-देखो 'उत्थाप' ।
 उथपणी (बी), उथपणी (बी)-क्रि० १ ऊपर उठाना ।
 २ तानना । ३ मिटाना, नाश करना । ४ घ्राज्ञा का उल्लंघन
 करना । ५ उठलना । ६ अनुष्ठान करना । ७ आरम्भ
 करना । ८ उन्मूलन करना ।
 उथल(ल)-स्त्री० १ चाल गति । २ मस्तिष्क की उपज शक्ति ।
 ३ गिरने का भाव । —पथल, पथल्ल, पुथल, पूथल-स्त्री०
 उलटने । ४ हेरा-फेरी ।
 उथलणी (बी), उथलणी (बी)-क्रि० १ उलटना, फेर देना ।
 २ उथमगाना । ३ उलट फेर होना । ४ पानी का कम
 होना । ५ शीघ्र कर देना । ६ गिराना । ७ मारना ।
 ८ उठना । ९ गिरना । १० पादा पशु की पुनः गर्भ
 धारण करने की कामेच्छा होना ।
 उथली-वि० १ कम गहरा, छिल्ला । २ उल्टा । —पु० १ उल्टा
 गिराने का भाव । २ पादा पशु की प्रथम समागम में
 गर्भ न रहने पर होने वाली कामेच्छा । ४ अनुवाद,
 भाषांतर ।
 उथापणी (बी)-क्रि० १ उण्डेलना । २ उखेलना । ३ उन्मूलन
 करना । ४ गिराना ।
 उथाप-पु० उन्मूलन । नाश । उलट-फेर । प्रतिरोधात्मक कार्य ।
 उथापण-वि० उन्मूलन करने वाला, मिटाने वाला । —स्त्री०
 उन्मूलन की क्रिया या भाव ।
 उथापणी-वि० १ मिटाने वाला । २ उन्मूलन करने वाला,
 ध्वंस करने वाला ।
 उथापणी (बी)-क्रि० १ उन्मूलन करना । मिटाना । २ उलटना,
 उल्टा करना । ३ उखाड़ना । ४ जल करना छीनना ।

उथापना-स्त्री० नवरात्रि में अष्टमी का दिन ।
 उथापिथाप-वि० बनाने-बिगाड़ने वाला । स्थापित करने और
 उन्मूलन करने की शक्तिवाला ।
 उथापी-वि० उलटने वाला । उन्मूलन करने वाला ।
 उथाल-स्त्री० १ उन्मूलन, नाश । २ उखाड़-पछाड़ । ३ मस्तिष्क
 की उपज ।
 उथालणी (बी)-देखो 'उथापणी' (बी) । देखो 'उथलणी' (बी) ।
 उथाली-देखो 'उथली' ।
 उथि, उथिय-क्रि० वि० वहाँ ।
 उथेड़णी (बी)-देखो 'उथलणी' (बी) ।
 उथेल-वि० पछाड़ने वाला । उन्मूलन करने वाला । —स्त्री०
 १ पछाड़ने की क्रिया । २ उलटने पलटने की क्रिया ।
 ३ मस्तिष्क ।
 उथेलणी (बी) उथेलणी (बी)-क्रि० १ पछाड़ना । २ गिराना ।
 ३ उल्टा या शीघ्र करना । ४ उठाना । ५ हटाना ।
 ६ मिटाना ।
 उथेली-पु० १ बचाव, प्रयत्न । २ प्रत्याक्रमण । ३ पुनः
 स्मरण । ४ उलटना, गिराना या पछाड़ने की क्रिया ।
 उथै-क्रि० वि० वहाँ ।
 उथोपणी (बी)-१ निश्चय करना । २ स्थापित करना ।
 ३ देखो 'उथापणी' (बी) ।
 उर्बगल-पु० १ उत्पात, उपद्रव । २ दंगा, फिसाव । ३ लड़ाई
 युद्ध । ४ झमेला, टंटा, धिवाड़ ।
 उर्बड-वि० [सं० उर्बड] १ बदमाश, चूट, उर्बड । ३ घनाड़ी,
 उज्जड़ । ३ निडर, निर्भीक । ४ भयंकर, डरावना ।
 ५ प्रचण्ड ।
 उर्बडी-वि० (स्त्री० उर्बडी) १ उर्बड व्यक्तियों को दण्ड देने
 वाला । २ बदमाशों का उत्पात । ३ देखो 'उर्बड' ।
 उर्बत-वि० [सं० उर्बत] १ जिसके तौर न हो, दैन रहित ।
 २ बृहद्ग, दंढुला । —पु० शिष्ट । २ वृत्तित, विवरण ।
 ३ देखो 'अर्बत' ।
 उर्बर, उर्बसर-पु० [सं० उर्बसर] १ अष्टारह प्रकार के कृष्ण
 रोगों में से एक । २ एक ब्राह्मण वंश । —पु० ताँवा, गुलर ।
 उर्बडगिरि-पु० उदयगिरि पर्वत ।
 उर्बई स्त्री० चीटीनुमा एक ज्वेल पिड़ा । शीमक ।
 उर्वक-पु० [सं०] १ जल, पानी । २ शासन । ३ माफ की हुई
 दान की भूमि । ४ संकल्प निकर दी हुई वस्तु । —अर्बजि—
 —स्त्री० जलांजलि, जल तर्पण । —अर्बि-पु० हिमालय
 पर्वत । —क्रिया-स्त्री० जलतर्पण, तिलांजलि । —घात-
 स्त्री० बहतर कथाओं में से एक । —ज-पु० मोती ।
 काल । घरा-स्त्री०—जा मंगल्य द्वारा दान की हुई

भूमि । —परीक्षा-स्त्री० हाथ में पानी लेकर दी जाने वाली शपथ । —बाद्य-पु० चौमठ कलाओं में से एक ।
 उदकणी (बो)-क्रि० १ निमित्त लेकर ध्यागता । ध्याग देना ।
 २ जल लेकर संकल्प लेना । ३ काम घाना ।
 ४ उछलना, बूदना ।
 उदकाणी-स्त्री० जल संकल्प द्वारा दी हुई भूमि । 'देखो उदकी' ।
 उदकी-वि० [सं० उदक+रा. प्र. ई] उक्त प्रकार की भूमि को गृहण करने वाला ।
 उदक (की)-देखो 'उदक' ।
 उदग-देखो 'उदक' ।
 उदगणी (बो)-क्रि० १ उगलना । २ देखो 'उदकणी' (बो) ।
 उदगम-पु० [सं० उदगम] १ उदय, आविर्भाव । २ उत्पत्ति स्थान । ३ प्रस्थान । ४ उत्तरति, सृष्टि । ५ ऊँचाई, ऊँचा स्थान । ६ पीथे का अंकुर । ७ वमन, कै । ८ नदी का विकास ।
 उदगमन-पु० [सं०] ऊपर जाना । ऊर्ध्वगमन ।
 उदगरणी (बो)-क्रि० १ देने का विचार करना । २ संकल्प करना । ३ संकल्प द्वारा छोड़ना ।
 उदगाता-पु० [सं० उदगातृ] यज्ञ के चार प्रकार के ऋत्विजों में से एक ।
 उदगाथा-स्त्री० आर्या छंद का एक भेद ।
 उदगार-पु० [सं० उदगार] १ मन के भाव । २ इन भावों का सहसा प्रगटीकरण । ३ उबाल, उफान । ४ वमन, कै । ५ डकार । ६ धूक । ७ बाढ़ ।
 उदगारणी (बो)-क्रि० १ मन के भाव व्यक्त करना । २ बाहर निकालना । ३ फैलना । ४ उमाड़ना, उत्तेजित करना । ५ डकार लेना । ६ कै करना । ७ उगलना ।
 उदगारी-पु० [सं०] वृहस्पति के बारहवें युग का द्वितीय वर्ष ।
 उदगाह-वि० १ जल संकल्प द्वारा दान देने वाला ।
 २ दान देने वाला । —पु० प्ररब्ध का फल ।
 उदगीत, (गीति)-पु० आर्या छंद का एक भेद ।
 —वि० उच्च स्वर से गाया हुआ ।
 उदगीरणी (बो)-देखो 'उदगारणी (बो)' ।
 उदग-देखो 'उदक' ।
 उदगण, (गनि, गिनि)-वि० १ ऊँचा । २ उन्नत । ३ तंगी (तलवार) । ४ अग्र, प्रचंड ।
 उदघ-वि० [सं०] १ ऊँचा । उन्नत । ऊँचा उठा हुआ । २ बाहर निकला हुआ । ३ चौड़ा प्रशस्त । ४ बूढ़ा । ५ मुख्य, प्रसिद्ध । ६ प्रचण्ड । ७ भयानक, कराल । —त्रि०-पु० लंबे व ऊँचे दांतों वाला हाथी ।
 उदघटणी (बो)-क्रि० १ प्रकट होना । २ उदय होना । ३ निकलना । ४ उद्घटित होना ।

उदघाटक-वि० [सं० उद्घाटक] १ उद्घाटन करने वाला ।
 २ प्रकाशक । ३ खोलने वाला ।
 उदघाटणी (बो)-क्रि० १ प्रकट करना । २ प्रवाहित करना ।
 खोलना । ३ उद्घाटन करना ।
 उदघाटक-वि० [सं०] १ बक्का या ठोकर मारने वाला ।
 २ धारण करने वाला ।
 उदगी (बो)-क्रि० उदय होना, प्रकट होना ।
 उदद, उदद्ध, उदध (धि, धी) उदध (धि)-पु० [सं० उदधि]
 १ समुद्र । २ तालाब । ३ झील । —खीर-पु० क्षीर सागर ।
 —सत-वि० गंभीर बुद्धि वाला । —मेखला-स्त्री० पृथ्वी ।
 —सुत-पु० चन्द्रमा । प्रभूत । —सुता-स्त्री० लक्ष्मी ।
 रंसा । कामधेनु ।
 उदनमत (वत, वान)-पु० [सं० उदनवत्] समुद्र, सागर ।
 उदवाह-पु० विवाह, शादी ।
 उदबुद्ध, (दि), उदबुध-वि० [सं० अद्भुत, उद्बुद्ध] १ विचित्र, अद्भुत । २ विकसित, प्रबुद्ध, चैतन्य । —स्त्री० माया ।
 उदवेग-पु० [सं० उद्वेग] १ उद्वेग, भय । २ कंपन । ३ आशंका ।
 ४ चिंता । ५ आश्चर्य ।
 उदमज-देखो 'उदभिज' ।
 उदमट-वि० [सं० उद्मट] प्रबल । श्रेष्ठ । दातार ।
 उदमणी (बो)-क्रि० प्रकट होना, उद्भव होना ।
 उदमव-पु० [सं० उद्भव] १ उत्पत्ति, जन्म । २ निर्माण, सृष्टि । ३ विकास । ४ वृद्धि । —रतन-पु० सागर ।
 उदभावना-स्त्री० [सं० उद्भावना] १ उत्पत्ति । २ प्रकाश ।
 ३ मन की उपज, कल्पना । ४ रचना । ५ निरस्कार ।
 उदभास-पु० [सं० उद्भास] १ प्रकाश, दीप्ति, आभा । २ मन में किंगी बात का उदय ।
 उदभिज-पु० [सं० उद्भिज] भूमि को फोड़कर निकलने वाले गेड़ पीपे, वृक्षादि ।
 उदभूत-वि० उत्पन्न, निकला हुआ, अंकुरित । देखो 'अद्भुत' ।
 उदभेद (भेदन)-पु० १ अंकुरन । २ उद्घाटन । ३ प्रगटी-
 करना, प्रकाशन ।
 उदघ्रांत-वि० [सं०] १ धूमना हुआ, चक्कर खाता हुआ ।
 २ भूला-भटका । ३ अभित । ४ भौचक्का ।
 उदम-पु० [सं० उदाम, उद्यम] १ बंजन रहित पशु ।
 २ स्वतन्त्र । ३ प्रयाम, उद्योग । ४ उत्साह । ५ काम धंधा ।
 ६ अध्यवसाय । ७ परिश्रम । ८ देखो 'उदंघर' ।
 उदमणी (बो)-देखो 'अधमणी' (बो) ।
 उदमाद-स्त्री० १ हर्ष, प्रसन्नता, आनंद । २ उमंग । ३ उत्साह, जोश । ४ कामझीड़ा, मूर्ति । ५ इच्छा, अभिलाषा ।
 ६ खलबली । ७ उन्मत्तता, मस्ती, व्याकुलता । ८ उर्ध्वास, परिश्रम । ९ प्रयत्न कामच्छा । १० देखो 'उदमद' ।

उदमादणी (बौ)—देखो 'ऊद्यमणी' (बौ) ।

उदमादणी, (मादी)—वि० (स्त्री० उदमादणी) १ मतवाला, मस्त । २ आमोद-प्रमोद करने वाला । ३ उत्पाती, उपद्रवी ।

उदमी—वि० उद्यम करने वाला, परिश्रमी, उद्योगशील ।

उदय—पु० [सं०] १ प्रागट्य, उद्गम । २ निकाल, निकास । ३ उत्पत्ति । ४ विकास । ५ वृद्धि, बढ़ोतरी । ६ उद्गम स्थान । ७ उदयाचल । ८ प्रकाश । ९ मंगल । १० उपज । ११ पदोन्नति, उन्नति । १२ सृष्टि । १३ लाभ, नफा । १४ व्याज । १५ कांति, दीप्ति । १६ आय । १७ आगमन । अचल (गिरि)—पु० उदयगिरि । —अद्वि—पु० उदयाचल पर्वत । —काल—पु० प्रभात काल । —परणी—स्त्री० एक जड़ी विशेष ।

उदयणी (बौ)—वि० उदय होना, निकलना ।

उदयगिरि, उदयाचल—देखो 'उदयगिरि' ।

उदयातिथि—स्त्री० सूर्योदय से प्रारंभ होने वाली तिथि ।

उदयादीतइ—पु० सूर्योदय ।

उदयौतकर—वि० [सं० उद्यौतकर] दीपायमान, प्रकाश युक्त ।

उदर—पु० [सं०] १ पेट । जठर । २ गर्म । ३ वस्तु का मध्य भाग । —ज्वाला—स्त्री० जठराग्नि, भूख । —आण—पु० कमर पेटी ।

उदरक—पु० [सं० उदक] १ भविष्यत्काल । २ भविष्य का परिणाम ।

उदरक—स्त्री० अग्नि, आग ।

उदराग्नि—स्त्री० [सं०] जठराग्नि, भूख ।

उदरि, (रित) उदरी—वि० १ बड़े पेट वाला, तोंडू । २ देगो 'उदर' ।

उदसणी (बौ)—देखो 'ऊदसणी' (बौ) ।

उदवांत—पु० [सं० उदवांत] मद उतरा हुआ हाथी ।

उदस—पु० [सं० उदश्वित] १ दही, दधि । २ सूखी खांसी ।

उदसटिथौ—वि० बुद्धिहीन, मूर्ख ।

उदस्त—देखो 'उदय' ।

उदांत—पु० [सं० उदान] १ शरीरस्थ १२ प्रकार के वायु में से एक । २ एक मर्ग विशेष ।

उदांम—वि० [सं० उदाम] १ श्रेष्ठ, महान् । २ उद्विग्न, जैतान । ३ बंधन रहित, स्वतंत्र । —पु० वरुण ।

उदाई—देखो 'उदई' ।

उदात, (दाता), उदात्त—वि० [सं० उदात्त] १ ऊँचे स्वर ने उच्चारित । २ कृपालु, दयालु । ३ दातार । ४ श्रेष्ठ । ५ पवित्र, निर्मल । ६ उत्तम । ७ प्रख्यात । —पु० १ वेद-संश्लेषार्थ का एक स्वर भेद । २ दात । ३ न्याय । ४ दान ।

उदाधि, (धि)—देखो 'उदधि' ।

उदायन—पु० [सं० उद्यान] उद्यान, बगीचा ।

उदार—वि० [सं०] १ दाता, दानी, दानशील । २ श्रेष्ठ, महान् । ३ ऊँचे विचार वाला । ४ सरल, सीधा । ५ अनुकूल । ६ धर्मात्मा । ७ ईमानदार । ८ विशाल हृदय । —पु० १ शिव, महादेव । २ एक काव्यालंकार । ३ २८ वर्ण का एक छंद विशेष । ३ देखो 'उधार' । —चरित—वि० ऊँचे दिल वाला । स्वभाव से ही दानी । —चेता—वि० उदार हृदय । कृपालु, दयालु । —ता, पर, परणी—पु० दानशीलता । सहृदयता । उच्च विचार ।

उदाळी—वि० उन्मूलन करने वाला । —पु० प्रकाश, रोजनी ।

उदावरत, (त)—पु० १ गुदा का एक रोग, गुदा ग्रह । २ एक रंग विशेष का घोड़ा ।

उदास—वि० [सं०] १ खिन्नचित्त, चिंतित । २ दुःखी, पणेशान । ३ विरक्त । ४ निरपेक्ष, तटस्थ । ५ दार्शनिक । ६ मुरझाया हुआ । ७ निर्जन, शून्य ।

उदास्त—पु० तेज ।

उदासन—वि० तटस्थ ।

उदासी, (न)—वि० [सं०] १ विरक्त, बैरागी । २ त्यागी । ३ संन्यासी । ४ एकांतवासी । ५ खिन्नचित्त । —पु० नानक शाही साधु । —स्त्री० १ खिन्नता, चिन्ता । २ निरुत्साह । ३ कांति का अभाव ।

उदाहरण—पु० [सं०] १ मिसाल, आदर्श । २ कीर्तिमान । ३ सबूत । ४ दृष्टांत, निदर्शन । ५ तर्क के पांच अवयवों में से तीसरा । ६ एक साहित्यालंकार विशेष ।

उदचित—स्त्री० [सं० उदश्वित] छाछ, तक्र । दधि ।

उदित—वि० [सं०] १ जो उदय हो गया हो, उदगत । २ प्रकाशित, आलोकित । ३ उज्ज्वल, स्वच्छ । ४ प्रफुल्लित । ५ प्रसन्न । ६ कथित । ७ उगा हुआ । ८ उत्पन्न । ९ ऊँचा, लंबा । १० उच्च गति । —जोवना—स्त्री० मुग्धा नायिका ।

उदियणी (बौ)—देखो 'उदयणी' (बौ) ।

उदियांत—पु० विकट वन, घना जंगल ।

उदियांमणी—देखो 'उदियावणी' । (स्त्री० उदियांमणी) ।

उदियाड़ी—पु० बुरा समय, बर्बाद होने का समय ।

उदियारण—देखो 'उदाहरण' ।

उदियावणी—वि० (स्त्री० उदावणी) गदप्रद, भवावना । उदासीन खिन्नचित्त ।

उदीचि—वि० उत्तर दिशा का उत्तर दिशा संबंधी । —पु० ब्राह्मणों की एक शाखा ।

उदीचि (चौ)—स्त्री० उत्तर दिशा ।

उद्योपण, (पन)-देखो 'उद्योपन' ।

उद्योरण-पु० कथन । वाक्य । उच्चारण । -स्त्री० सत्तागत कर्मोंके प्रयत्न विशेष से खींचकर नियत समय से नहिले हो उनके फल का भोग [जैन] । -वि० दातार ।

उद्युंबर-पु० [सं०] १ ताम्र, तांबा । २ गुल्मर । ३ देहली, ह्योदी । ४ कुष्ठ रोग । -वि० तपुंसक ।

उद्युल्ल-पु० ओल्लली ।

उदे-देखो 'उदय' ।

उदेई-देखो 'उदई' ।

उदेक, उदेग-देखो 'उद्देग' ।

उद्देरुंग(बाज)-पु०रंग विशेष का घोड़ा । घोड़ों की एक जाति ।

उदई-देखो 'उदय' । -षट्= 'उदयग्रदि' ।

उदोगर-पु० उदयगिरि ।

उद्योत-वि० [सं० उद्योत] प्रकाशित —कर-वि० प्रकाशमान ।

—धाम-पु० दीपक ।

उद्योता-वि० प्रकाशित करने वाला ।

उद्योति-पु० १ प्रकाश, उजाला । २ चमक, आभा । ३ उदय । -स्त्री० ३ वृद्धि, बढ़ोतरी । -वि० १ उदित, प्रकाशित । २ प्रगट ।

उद्यौ-पु० [सं० उदय] १ उदय । २ अच्छा समय । ३ प्रारब्ध, होनहार ।

उदई-वि० [सं०] १ चंद, बदमाश । २ जैतान, भगड़ालु । ३ अड़ियल । ४ निर्भीक ।

उदंत-वि० [सं०] १ बृहदंत, दंतुला । २ देखो 'उदंत' ।

उदम-देखो 'उद्यम' ।

उदमी, उदमी-देखो 'उद्यमी' ।

उहां-पु० वधन ।

उद्दाम-वि० [सं० उद्दाम] १ वधन रहित, म्भ्रतम्भ । २ निरकृश । ३ उग्र । ४ प्रथम । ५ उद्गृह । ६ गम्भीर । ७ महान । ८ अकथित । -पु० १ वरुण । २ एक प्रकार का दंडक वृत् ।

उद्दालक-पु० [सं०] १ आलस नामक एक प्राचीन ऋषि । २ एक व्रत विशेष ।

उद्दाल-देखो 'उद्दाम' ।

उद्दित-देखो 'उदित' ।

उद्दिम-देखो 'उद्यम' ।

उद्दिष्ट-वि० [सं० उद्दिष्ट] १ दिखाया हुआ । २ इंगित किया हुआ । ३ अभिप्रेत, सम्मत । -पु० १ गिज (छंदशास्त्र) के प्रत्ययों में से एक ।

उद्दीपक-वि० उत्तेजक ।

उद्योपण (न)-पु० [सं० उद्योपन] १ भड़काने व उत्तेजित करने की क्रिया । २ रम सिद्धान्त में एक विभाव । ३ भड़काने वाली वस्तु ।

उद्देस, उद्देस्य-पु० [सं० उद्देस्य] १ इच्छा, अभिलाषा । २ मंशा, आशय । ३ मतलब, प्रयोजन, स्वार्थ । ४ हेतु, कारण । ५ अन्वेषण । ६ नाम निर्देश पूर्वक वस्तु निरूपण । ७ लक्ष्य ।

उद्द्योत-पु० [सं०] १ प्रकाश । २ उदय, वृद्धि । -वि० १ प्रकाशित । २ उदित । ३ प्रगटित । ४ देखो 'उद्योत' ।

उद्द-कि० वि० ऊपर ।

उद्दली (बी)-कि० ऊपर उठना, फैलना ।

उद्दत-वि० [सं०] १ चंद, उदई । २ उग्र प्रचण्ड । ३ अड़ियल । ४ धृष्ट, दुष्ट । ५ असम्य, अतर्क्य । ६ निंदर, निर्भीक । ७ अभिमानी । -पु० चाभीत मात्रा का एक छंद ।

उद्दर-पु० [सं०] १ उद्धार, वाग । २ पुस्तक का लेख का अंग जो उद्धारण के तीरे पर लिखा गया हो । -वि० उद्धारक ।

उद्दरणी (वी)-कि० [सं० उद्दरणम्] १ करना । २ धारण करना । ३ जरना, पार होना । ४ उद्धार करना । ५ छूटना, बाण पाना । ६ अलग होना । ७ मुक्त होना ।

उद्दरी-देखो 'उद्घरी' ।

उद्दव-पु० [सं०] १ उत्सव । २ आनंद-प्रमोद । ३ यज्ञ की घग्नि । ४ श्रीकृष्ण का मित्र ।

उद्धार-पु० [सं०] १ मुक्ति, छूटकारा, निस्तार, वाण । २ रक्षा, बचाव । ३ मुखा । ४ निताप, उन्नति । ५ दुस्मृती, मरम्मत । -वि० उद्धार करण वाला ।

उद्धारणी (दी)-कि० १ कारना, पार करना । २ मुक्ति देना छूटकारा देना । ३ उद्धारण, वनाना । ४ अलग करना । ५ सुधारण । ६ विकसित करना । ७ ऊपर उठना ।

उद्धार-पु० एक छंद विशेष ।

उद्दवध-पु० वधन, फल, जाल ।

उद्बोधक-वि० [सं०] १ बोध कराने वाला । २ जेताने वाला । ३ जगाने वाला । ४ सूचित करने वाला । ५ उत्तेजित करने वाला । ६ भेरेक । ७ प्रकाशक । -पु० सूर्य का एक नाम ।

उद्भिज (मिब)-देखो 'उदभिज' ।

उद्यत-वि० [सं०] १ तैयार । २ तत्पर, सावधान । ३ ऊपर उठा हुआ । ४ उत्पुर्क । ५ तुला हुआ । ६ तना हुआ ।

उद्यम-पु० [सं०] १ काम प्रस्था । २ योजना । ३ व्यवसाय । ४ उद्योग, प्रयास । ५ परिश्रम । ६ अध्यवसाय । ७ मेयारी ।

उद्यमी-वि० [सं०] उद्यम करने वाला । परिश्रमी ।

उद्योत-पु० वाग, वशीका ।

उद्यापन-पु० [सं०] किसी व्रत की समाप्ति का उत्सव ।

उद्योग-पु० [सं०] १ काम, पंथा । २ व्यवसाय । ३ व्यापारिक सामान का निर्माण । ४ प्रयत्न । ५ परिश्रम । ६ उपाय ।

उद्योगी-वि० [सं०] उद्योग करने वाला ।

उद्योत (ति, ती)-पु० [सं०] १ ज्योति, प्रकाश । २ दीपक । ३ जोभा, कांति । ४ उन्नति, वृद्धि । -वि० प्रकाशित, प्रदीप्त । -वंत-वि० दीप्तिवान्, कांतिवान्, प्रकाशवान् ।

उद्व-पु० [सं०] १ उद्विलाव । २ उदर, पेट । ३ गर्भ । -बट-वि० प्रत्यधिक ।

उद्वक-पु० [सं०] १ भय, डर । २ आधिबय ।

उद्वार-पु० भय, आतंक ।

उद्वारणी, उद्विभ्रामण, उद्वियावणी-देखो 'अधियांमणी' ।

उद्वीधकौ-पु० छूटने समय सीने में धक्का मारने वाली बन्दूक ।

उद्वेक-पु० [सं०] १ वृद्धि, बढ़ोतरी । २ ज्यादती । ३ उन्नति, उत्थान । ४ प्रारम्भ । ५ उपक्रम । ६ काव्यालंकार विशेष ।

उद्धाह-पु० विवाह ।

उद्विग्न-वि० [सं०] उत्तेजित । व्याकुल, व्यग्र । चिंतित । -ता-स्त्री० उत्तेजना । व्यग्रता । चिंता ।

उद्वेग (गौ)-पु० [सं०] १ मन की अकूलाहट, आतुरता । २ घबराहट । ३ चिंता । ४ आवेश, जोश, उत्तेजना । ५ तीव्र वृत्ति । ६ एक संचारी भाव । ७ सात प्रकार के चोषद्वियों में से एक ।

उद्वेगी-वि० जो उद्विग्न हो, आतुर ।

उधड़णी (बी)-क्रि० १ सिलाई खुलना, टांके खुलना । २ चिपका या जमा हुआ न रहना । ३ अलग होना पृथक् होना । ४ उखड़ना । ५ उजड़ना । ६ कटना कट, कर दूर पड़ना । ७ खुलना ।

उधड़वाई-स्त्री० १ उधेड़ने की क्रिया या भाव । २ उधेड़ने की मजदूरी ।

उधध (पति)-देखो 'उदध' ।

उधम-पु० [सं० उद्धम] १ बदमाशी, शैतानी, उद्वण्डता, उत्थात । २ अचलता, नटखटपन । ३ हल्लागुल्ला । ४ देखो 'उद्यम' ।

उधर-क्रि० वि० उस ओर, उस तरफ, दूसरी तरफ ।

उधरणी, (बी)-देखो 'उद्वरणी' (बी) ।

उधरत-स्त्री० १ बिना लिखा पढ़ी का ऋण । २ ऋण, उधार । ३ ऋण का ण ।

उधरती-स्त्री० उधार, मुक्ति, छुटकारा । २ देखो 'उधरत' ।

उधराणी (बी)-क्रि० [सं० उद्वरण] १ हवा में छितराना । २ बिखेरना, तितर-बितर करना । ३ ऊधम मचाना । ४ उन्मत्त होना ।

उधरी-देखो 'ऊधरी' (स्त्री० उधरी) ।

उधलणी, (बी)-देखो 'ऊदलणी' (बी) ।

उधसि, (सी)-पु० [सं० ऊधस्यं] दुग्ध, दूध ।

उधामणी (बी)-क्रि० १ प्रहार के लिए शस्त्र उठाना । २ प्रहार करना । ३ उदास होना । ४ आनन्द, उप भोग या उदारता से द्रव्य खर्च करना ।

उधाड़-पु० कुश्ती का एक दाव ।

उधात-पु० अशुद्ध धातु ।

उधार-पु० [सं० उद्धार] १ मुक्ति, मोक्ष । २ ऋण, कर्ज । ३ खाते में नाम लिखकर सामान देने की क्रिया । ४ ग्राहकों की तरफ बकाया रकम । ५ अमानत के रूप में दी जाने वाली वस्तु । -वि० १ जो नगद न हो । २ बकाया, शेष । ३ बेकार, निकम्मा, कायर ।

उधारक-वि० [सं० उद्धारक] उधार करने वाला, मुक्ति दिलाने वाला ।

उधारण-वि० उधार करने वाला । -पु० समुद्र, सागर ।

उधारणी-वि० (स्त्री० उद्धारणी) उधार करने वाला ।

उधारणी (बी)-देखो 'उद्धारणी' (बी) ।

उधारियौ-वि० उधार लेने वाला ।

उधारी-पु० १ उधार दी गई वस्तु या रकम । ३ देखो 'उधार' ।

उधाळ-वि० उल्टा, ग्राँथा ।

उधि-देखो 'अधधि' ।

उधियार-देखो 'उधार' ।

उधेड़णी, (बी), उधेरणी, (बी)-क्रि० १ सिलाई या टांके खोलना । २ चीरना काटना । ३ लगाया हुआ वापस हटाना । ४ छितराना । ५ मंग करना । ६ तह या परत हटाना । ७ खाल उतारना ।

उधेड़नुन-पु० यौ० १ सोच-विचार । उहापोह । २ उलझन ।

उधोर-वि० १ श्रेष्ठ वीर । २ उद्धारक । -पु० बारह या चौदह मात्रा का छंद जिसके अन्त में जगण होता है ।

उध्यांन-देखो 'उद्यांन' ।

उन्म-वि० १ बिना म्यान की तलवार । २ शस्त्र उठाने की क्रिया ।

उन्मणी (बी)-क्रि० प्रहार हेतु शस्त्र उठाना ।

उन्गी, (नगी)-वि० [सं० नग्न] (स्त्री० उन्गी) १ नंगा । २ म्यान रहित तलवार या कटार ।

उन्म-वि० [सं० उन्मिद्र] १ निद्रा रहित, जागृत । २ कलियों से युक्त, फैला हुआ ।

उन्मणी (बी)-देखो 'उमडणी' (बी) ।

उन्ज-देखो 'अनुज' ।

उनताडित (लीस)-वि० [सं० ऊनचत्वारिंशत्] तीस और
नी का योग । -पु० तीस व नी के योग की संख्या, ३९ ।
उनतालीसी-पु० उनवालीसवां वर्ष ।
उनतीनाह-पु० [सं० उन्नतिनाथ] पञ्चीराज गरुड़ ।
उनतीस-वि० तीस से एक कम । -पु० बीस व नी के योग की
संख्या, २६ ।
उनतीसी-पु० उन्तीसवां वर्ष ।
उनत्थ, उनथ-वि० [सं० उन्नाथ] १ बंधन, रहित, स्वतन्त्र ।
२ उड़्ड । -नथ-वि० बंधन रहित को बंधन में
ढालने वाला ।
उनसंवा-देखो 'उमवा' ।
उनमणी, उनमन, (मनी)-वि० [सं० उन्मनस] (स्त्री० उनमणी)
उदास, खिन्न, चिंतित । विकल व्याकुल, बेचैन उद्विग्न, प्रिय
वियोग से संतप्त ।
उनमत (स)-वि० [सं० उन्मत] १ मस्त, मौजी । २ मदमस्त ।
३ मदान्ध । ४ पागल ।
उनमनो-देखो 'उममुनी' ।
उनमानि-देखो 'प्रनुमान' ।
उनपाद-पु० [सं० उन्मादः] १ पागलपन, विक्षिप्तावस्था ।
२ नशा । ३ उन्मत्तता, मस्ती । ४ जैतानी, शरारत ।
३३ संचारी भावों में से एक । -वि० [सं० उन्माद]
पागल, सनकी, डांवाडोल ।
उनपादक-वि० [सं० उन्मादक] १ उन्मत्त करने वाला ।
२ नशा युक्त, नशीला । ३ पागल या भ्रमिन् करने वाला ।
४ हर्ष प्रद । -पु० काम के पांच वाणों में से एक ।
उनमादी-वि० उन्माद रोग से पीड़ित । २ पागल । ३ विक्षिप्त ।
उनमुनी-स्त्री० हठ योग की एक मुद्रा विशेष ।
उनमुनो-देखो 'उनमणी' (स्त्री० उनमुनी) ।
उनमूछण (न)-पु० नष्ट करने, मिटाने या उखाड़ने की क्रिया
या भाव ।
उनमूछणी (घो)-क्रि० नष्ट करना । मिटाना । उखाड़ना ।
उनसट (ठ)-वि० [सं० ऊनषष्ठि] साठ से एक कम । -पु०
पचास व नी की संख्या, ५६ ।
उनसठो-पु० उनमाठवां वर्ष ।
उनहणी (बी)-क्रि० उमड़ना, उमड़ कर छा जाना । घना
होना । सघन होना । उमड़-धुमड़कर आना ।
उनहीघो (झी)-वि० सघन । घनघोर (स्त्री० उनहीघोड़ी) ।
उनाम (व)-पु० १ वर्षा के जल की फसल वाला खेत । २ वर्षा
का जल एकत्र होने का स्थल ।
उनाग-देखो 'उनगौ' ।
उनारण-पु० उष्ण पदार्थ ।

उनाळ-पु० १ उष्णकाश, गर्मी । २ अग्नि, आग ।
उनाळी (ळु)-स्त्री० १ रबी की फसल । २ दक्षिण पश्चिम की
हवा । -वि० ग्रीष्मऋतु की । -साख-स्त्री० रबी
की फसल । इस पर लिया जाने वाला सरकारी लगान ।
उनाळो-पु० [सं० उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु । गर्मी का मौसम ।
उनासाही-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
उनि-सर्व० उन । उसने ।
उनीवो, (दो)-वि० [सं० उनिद्र] नींद से भरा हुमा, ऊंघता
हुमा । निद्रित ।
उने (ने)-क्रि० वि० उस ओर, उस तरफ ।
उनोदरी-पु० बारह प्रकार तप में से दूसरे प्रकार का तप
जिसमें जितनी भूख हो उससे कम आहार किया जाता है ।
उनो-देखो, ऊनी (स्त्री० उनी) ।
उस्त-वि० [सं०] १ ऊंचा, उत्तुंग । २ ऊपर, उठा हुमा ।
३ श्रेष्ठ, उच्च । ४ विकसित । ५ विख्यात, प्रसिद्ध ।
६ उन्नति पाया हुमा । ७ किसी कला या विद्या
में निपुण ।
उस्तता उस्तति-स्त्री० [सं० उन्नति] १ तरक्की, बढ़ोतरी, वृद्धि ।
२ ऊंचाई, चढ़ाव । ३ समृद्धि ।
उस्तोदर-पु० [सं०] १ गणेश, गजानन । २ चाप या वृत्त का
ऊपरी भाग ।
उत्तयन-पु० [सं०] १ ऊर्ध्व प्रथाण । २ ऊपर का खिचाव ।
३ विचार, अटकल ।
उन्नाव-पु० [अ०] बेरनुमा एक ग्रीष्मि ।
उन्नावी-वि० [अ० उन्नाव + रा. प्र. + ई.] उन्नाव के रंग का,
कालापन लिए हुए लाल ।
उन्नावक-वि० [सं०] उन्नत करने वाला ।
उन्नाळी-देखो 'उनाळो' ।
उन्नासी-वि० [सं० ऊनाशीति, प्रा० एगूणासीह] प्रस्ती से एक
कम । -स्त्री० सत्तर व नी के योग की संख्या, ७९ ।
उन्मत-वि० [सं०] मदमाता, नशे में चूर, पागल, सिड़ी ।
उन्मत्ता-स्त्री० [सं० उन्मत्तता] उन्मत्त होने की दशा या भाव,
पागलपन, मस्ती । नशा ।
उन्मन-वि० मनस्वीर्य । मन का, मन संबंधी ।
उन्मथ-पु० [सं०] कर्श लुंघ का एक रोग ।
उन्माद-देखो 'उन्माद' ।
उन्मादक, (रु)-देखो 'उन्मादक' ।
उन्मादी-देखो 'उन्मादी' ।

उन्मीलित-वि० [सं०] १ खुला हुआ । २ विकसित ।
 ३ प्रस्फुटित । ४ तना हुआ । ५ जागृत । -पु० एक प्रकार का अर्थालंकार ।
 उन्मेष-पु० [सं० उन्मेष] १ विकास । २ खिलावट । ३ वृद्धि, बढ़ाव, विकास । ४ रोशनी, प्रकाश । ५ चमक, कांति ।
 ६ जागृति । ७ ज्ञानवृद्धि । ८ पलक ।
 उन्माळी-देखो 'उनाळी' ।
 उन्मूह-देखो 'ऊनौ' (स्त्री० उन्ही) ।
 उन्हाणी, (बौ)-कि० तपाना, गर्म करना । गर्मी देना ।
 उन्हाळ, (ऊँ, ळसो) उन्हाळी-देखो 'उनाळी' ।
 उन्हू, उन्ही-मंत्र० १ उसका । २ देखो 'ऊनौ' । (स्त्री० उन्ही)
 उपंखी-पु० पंखी, पंखी ।
 उपंग-पु० [सं० उपंग] १ शरीर का अवयव । २ अवयवों की पूति करने वाली वस्तु । ३ तिलक, टीका । ४ एक प्राचीन वाद्य । ५ उद्धव के पिता का नाम ।
 उपंगो-वि० १ नसरंग बजाने वाला । २ देखो 'उपंग' ।
 उपंत-देखो 'ऊपांत' ।
 उप-उप० [सं०] १ शब्दों के पूर्व लगने वाला उपसर्ग जो शब्द के अर्थ को प्रभावित करता है । [सं०अप०] २ पानी, जल ।
 ३ देखो 'वपु' । -कि०वि० निकट, समीप ।
 -कंठ, कंठ-पु० किनारा, तट । सामीप्य । पड़ोस ।
 -कि०वि० निकट, पाम, पड़ोस में । -करण-पु० अजीवार ।
 सामग्री । साज-बाज । शोधक वस्तु । राजसीचिह्न । गौण वस्तु या द्रव्य । पूजन सामग्री ।
 उपकार (इ०न)-पु० [सं०] १ भलाई, नेकी, हित । २ सलूक ।
 ३ लाभ, फायदा । ४ सहायता, मदद । ५ कृपा, अनुग्रह ।
 ६ शृंगार । ७ 'आभार' ।
 उपकारक, (कारी)-वि० [सं०] १ उपकार करने वाला, हितेयी । २ सहायक, मददगार ।
 उपकूप, (क)-पु० वापिका ।
 उपकृत-वि० [सं०] कृतज्ञ ।
 उपक्रम-पु० कार्यारंभ । प्रयत्न । आयोजन । भूमिका ।
 उपक्रमणिका-स्त्री० पुस्तक की विषय सूची ।
 उपक्रमणी (बौ)-कि० उच्छलना, वृद्धता, छलांग लगाना ।
 उपखीण-पु० [सं० उपखीण] शोक मूचक वस्त्र ।
 उपगत-वि० १ प्राप्त । २ स्वीकृत । अंगीकृत । ३ ज्ञात ।
 उपगरण-पु० [सं० उपकरण] साधु के काम आने वाले उपकरण, रजोहरणादि (जैन) ।
 उपगरणो (बौ)-वि० १ ग्रहण करता, लेता । २ पकड़ना ।
 ३ उपकार करना ।
 उपगार-देखो 'उपकार' ।

उपगारी, उपगार-देखो 'उपकारी' । २ देखो 'उपकार' ।
 उपगीत, (गीति)-पु० १ आर्या छन्द का एक भेद ।
 उपगूहन-पु० आलींगन, भेंट ।
 उपग्रह-पु० [सं०] १ छोटा ग्रह (राहु, केतु) । २ प्रधान ग्रह के आस-पास रहने वाला कोई छोटा ग्रह । ३ वैज्ञानिक परीक्षण से छोड़े गये कृत्रिम उपग्रह । ४ उपद्रव । ५ कंद, पकड़ । ६ हार, पराजय । ७ बंदी, कैदी । ८ अनुग्रह ।
 ९ योग । १० प्रोत्साहन ।
 उपघात-पु० १ नाश करने की क्रिया । २ रोग, पीड़ा ।
 ३ आघात । ४ आक्रमण । ५ छल, कपट ।
 उपङ्गो (बौ)-कि० १ खर्च होना । २ समाप्त होना, खत्म होना । ३ उठना । ४ उभरना (चोर) । ५ उखड़ना ।
 ६ उड़ना, आकाश में छा जाना । ७ वीरगति प्राप्त होना, रणायन में युद्ध करने मरना ।
 उपङ्गाणौ (बौ)-कि० १ उन्मूलन करना, मिटाना । २ उमड़ाना ।
 ३ ऊभारना । ४ भार उठाना । ५ उठाना । ६ दौड़ाना ।
 ७ व्यय कराना । ८ समाप्त कराना । ९ उखाड़ना ।
 उपचय-पु० [सं०] १ उन्नति, तरक्की । २ वृद्धि । ३ संचय संग्रह । ४ परिणाम, फेर । ५ जन्म कुंडली में लगन से तीसरा, छठवाँ और ग्यारहवाँ स्थान ।
 उपचार-पु० [सं०] १ इलाज, चिकित्सा । २ सेवा शुभूषा ।
 ३ व्यवहार, प्रयोग । ४ परिचर्या । ५ पूजन । ६ सत्कार ।
 ७ तमस्कार, प्रणाम । ८ उपाय । ९ व्यवस्था, प्रबन्ध ।
 १० रीतिरिवाज ।
 उपचारक-वि० [सं०] १ चिकित्सक । २ उपचार करने वाला ।
 ३ सेवा करने वाला ।
 उपचारणी (बौ)-कि० १ व्यवहार में लाना । प्रयोग में लाना ।
 काम में लेना । २ सेवा करना, परिचर्या करना ।
 ३ चिकित्सा करना ।
 उपचारी-देखो 'उपचारक' ।
 उपछंब-पु० चौबीस से अधिक मात्राओं का छंद ।
 उपछर-देखो 'अपछर' ।
 उपज-स्त्री० १ उत्पत्ति, उद्भव । २ पैदावार । ३ भूक-भूभ ।
 ४ काल्पनिक बात । ५ स्फूर्ति, स्फुरण ।
 उपजण-पु० जन्म ।
 उपजणी (बौ)-कि० १ जन्मना । २ उपजना, उगना, पैदा होना । ३ उत्पन्न होना । ४ सूझना । ५ होना ।
 उपजलपण (न)-पु० [सं० उपजलपण] बातलाप ।
 उपजस-वि० १ काला, श्याम । २ देखो 'अपजस' ।

उपजाऊ

(१४६)

उपभोग

उपजाऊ-वि० जहाँ पैदावार अच्छी हो, उर्वरक ।
 उपजावणी, (बो) उपजावणी, (बो)-क्रि० १ पैदा करना, उत्पन्न करना । उगाना । २ मुझाना ।
 उपजाप-पु० [सं० उपजापः] कानाफूसी, चुपचाप कान में कहना ।
 उपजीविका-स्त्री० [सं०] रोजी, जीविका ।
 उपजीहा-स्त्री० दीपक ।
 उपज्जणी (बो)-देखो 'उपजणी' (बो) ।
 उपकूलण-पु० एक प्रकार का छंद ।
 उपटक-पु० उपाधि, खिताब ।
 उपट-पु० १ दान । २ उदारता । ३ लिखावट के निशान ।
 ---क्रि० वि० ऊपर । ---घट-क्रि० वि० ऊपर तक ।
 उपटणी (बो)-क्रि० १ उभरना, निशान पड़ना । २ उखड़ना ।
 ४ उमड़ना । ४ मर्यादा या हद से बाहर होना ।
 ५ उछलना । ६ उत्पन्न होना ।
 उपटा-क्रि० वि० ऊपर से । विशेष तौर पर । -वि० विशेष ।
 उपटणी (बो)-देखो 'उपटणी' (बो) ।
 उपणी (बो)-क्रि० उत्पन्न होना, पैदा होना ।
 उपन-१ देखो 'उपान' । २ देखो 'उत्पत्ति' ।
 उपणी (बो)-क्रि० कष्ट पाना, दुखो होना ।
 उपनय-पु० [सं०] व्याधि, बीमारी ।
 उपनारी-स्त्री० १ शत्रु तक्षक । २ नेत्रों की मोलक ।
 उपति-देखो 'उत्पत्ति' ।
 उपत्पिका-स्त्री० [सं०] पर्वत के निकट की भूमि, तराई, घाटी ।
 उपदंस-पु० [सं० उपदणः] १ सूर्य देश । २ डंक की मार ।
 ३ गर्भी का रोग । ४ भूख-प्यास बढ़ाने वाली वस्तु ।
 ५ शराब के बाद खाई जाने वाली गजक ।
 उपदरी-देखो 'उपद्रव' ।
 उपवा-स्त्री० [सं०] १ भेंट, नजराना । २ दर्शन । ३ पीड़ा ।
 ४ बाधा ।
 उपदिसा-स्त्री० मुख्य दिशाओं के बीच का कोण ।
 उपदिष्ट-वि० [सं० उपदिष्ट] उपदेजित । जाति ।
 उपकुहो (बो)-पु० दोहा छंद का एक भेद ।
 उपदेस (सि)-पु० [सं० उपदेश] १ शिक्षा, ज्ञान । २ हित की बात । ३ नसीहत, सोच । ४ गुणमंत्र, दीक्षा । ५ धर्म का उपदेश ।
 उपदेसक-वि० [सं० उपदेशक] १ शिक्षा या ज्ञान की बात कहने वाला । २ हितपी । ३ नसीहत या सीख देने वाला ।
 उपदेसणी (बो)-क्रि० १ शिक्षा देना, ज्ञान देना । २ हित की बात कहना । ३ धर्म के सिद्धान्त समझाना । ४ सीख या नसीहत देना ।

उपदेहिका-स्त्री० दीपक ।
 उपद्रव-पु० [सं०] १ उत्पात, गड़बड़ी । २ विप्लव, गदर ।
 ३ दंगा-फसाद । ४ रोग विकार । ५ अत्याचार ।
 ६ विपत्ति, संकट ।
 उपद्रवी-वि० [सं०] उपद्रव करने वाला । क्रान्तिकारी ।
 भण्डालू ।
 उपध-१ देखो 'उपाधि' । २ देखो 'उपधा' ।
 उपधान-पु० [सं०] १ ऊपर रखने या ठहराने की क्रिया ।
 २ महार की वस्तु । ३ तकिया, मिरधाना । ४ तप विशेष ।
 (जैन) ---आसन-पु० चौरामी आसनों में से एक ।
 उपधा-स्त्री० [सं०] १ प्रबंधना, छल । २ उपाधि । ३ ईमान-दारी की परीक्षा ।
 उपधात, उपधातु-स्त्री० [सं० उपधातुः] १ प्रधान धातु का भेज । २ चर्वी । ३ पसीना ।
 उपधि-पु० छल, कपट ।
 उपनणी (बो)-देखो 'उपनणी' (बो) ।
 उपनय, (नयण, नयन)-पु० [सं० उपनयन] १ यज्ञोपवीत-संस्कार । २ यज्ञोपवीत ।
 उपनह-स्त्री० 'उपनाह' ।
 उपनम-पु० [सं० उपनाम्] जाति, पदवी या उपाधि के कारण प्रचलित अनिश्चित नाम ।
 उपनाय-देखो 'उपनय' ।
 उपनायक-पु० नायक का सहायक ।
 उपनाह-पु० [सं०] १ सितार, वीणा आदि की लुंटी ।
 २ मरहम पट्टी । ४ मलहम, लेपन । ५ उबटन ।
 उपनिम-पु० [सं०] छल, कपट ।
 उपनिसत (सब), उपनीसत-पु० [सं० उपनिषद्] वेदों के वे अंश जिनमें ब्रह्म विद्या का निरूपण है ।
 उपनो-देखो 'उपनी' (स्त्री० उपनी) ।
 उपनणी (बो)-देखो 'उपनणी' (बो) ।
 उपपत, (पति)-पु० [सं० उपपति] किसी स्त्री का वार, प्रेमी । जार ।
 उपपतनी (पत्नी)-स्त्री० [सं० उपपतनी] वेश्या, रखैल । प्रेमिका ।
 उपवरतन (वरतन)-पु० [सं० उपवर्तन] १ देश, वनस ।
 २ जिना परगना । ३ अवाडा ।
 उपवसथ (वसथ)-पु० [सं० उपवसथः] १ ग्राम, बस्ती । २ यज्ञ करने से पूर्व का दिन ।
 उपवाहा (वाह्य)-पु० [सं० उपवाह्य] १ राजा की सवारी का हाथी । २ राजा की सवारी ।
 उपभोग-पु० [सं० उपभोगः] १ वस्तु का भोग, उपभोग ।
 २ आनन्द । ३ आस्वादन । ४ भोजन । ५ भोग-विश्राम, गडबग । ६ सुख की मायमा ।

उपमजाणौ(वौ)-१ उपमर्दन करना । २ देखो 'उपजाणौ' (वौ) ।
उपमाण, (मान)-पु० [सं० उपमान] वह वस्तु जिसको उपमा दी जाती है ।

उपमा-स्त्री० [सं०] १ तुलना, समानता । २ एक प्रकार का अर्थालंकार ।

उपमेय-वि० [सं०] १ जिसकी उपमा दी जाय । २ वर्ण्य ।

उपमंद्-पु० [सं० उपमंद्] १ इन्द्र का छोटा भाई । २ वामन ।
३ विष्णु । ४ श्रीकृष्ण ।

उपपम, (याम)-पु० [सं० उपपमः] विवाह ।

उपयुक्त-वि० [सं०] ठीक, उचित, यथायोग्य ।

उपयोग-पु० [सं०] १ व्यवहार प्रयोग । इस्तेमाल । २ आव-
श्यकता । ३ योग्यता । ४ लाभ, फायदा । ५ प्रयोजन ।

उपयोगिता-स्त्री० [सं०] १ आवश्यकता । २ काम में आने की योग्यता, क्षमता । ३ लाभकारिता । ४ महत्व ।

उपयोगी-वि० [सं०] १ महत्वपूर्ण । २ काम में आने योग्य ।
३ लाभकारी । ४ अनुकूल ।

उपरं-वि० [सं०] १ उपर के बाद, पश्चात् ।

उपरंत-देखो 'उपरंत' ।

उपर-देखो 'ऊपर' ।

उपरक्षण, (रक्षणा)-[सं० उपरक्षण] १ चौकी, पहरा । २ सेना की लड़ाई ।

उपरति-स्त्री० [सं० उपरतिः] १ विपण से वैराग्य, विरति ।
२ उदात्तगोत्रता । ३ मृत्यु, मौन । ४ त्याग, निवृत्ति ।
५ संभोग में अग्रचि ।

उपरम-पु० [सं० उपरमः] १ अक्षयता, विलीनीकरण ।
२ विरति, वैराग्य । ३ मृत्यु ।

उपरमणौ (वौ)-कि० वि० विहीन होना, अन्तर्धान होना ।

उपरमाड (वाडी)-कि० वि० ऊपर ही ऊपर । -स्त्री० महा-
जनी गणित की एक प्रक्रिया ।

उपरमाडी-देखो 'उपरवाडी' ।

उपरलियां (ल्यां)-देखो 'मावलियां' ।

उपरवाडी, उपरवाडी-पु० [सं० उपरि-वाट] १ हिसाब या गुणन की एक विधि विशेष । २ ऊपर का मार्ग । ३ गुप्त मार्ग ।
सूक्ष्म मार्ग । ४ पल्लवाड़े या वगल का वह स्थान जहाँ से अन्विष्ट रूप में आना-जाना हो ।

उपरवार-पु० वर्षा कितारे की भूमि । बांगर जमीन ।

उपरस-पु० [सं०] मधक आदि पदार्थ ।

उपरांठ, (रांडर, रांडिणौ, रांडी)-देखो 'अपुठी' । (स्त्री० उपरांडी) ।

उपरांत (ति ती)-कि० वि० १ तदनन्तर, बाद में । २ ऊपर से ।
३ फिर ।

उपरांम-पु० [सं० उपराम] १ निवृत्ति । २ विरक्ति । ३ उदा-
सीनता । ४ विराम, आराम । ५ मृत्यु ।

उपरांथ-वि० अधिक, विशेष । उपरांत ।

उपरा-कि० वि० ऊपर । -उपरी-कि० वि० एक पर एक ।
निरन्तर । -चड़ी-स्त्री० प्रतिद्वंद्विता, स्पर्धा ।

उपराठी-१ चितालु । २ चितित । ३ देखो 'अपुठी' ।
(स्त्री० उपराठी) ।

उपराध-देखो 'अपराध' ।

उपरायण-कि० वि० १ ऊपर से । २ शीघ्रता पूर्वक ।

उपराळी-पु० १ पक्ष ग्रहण । २ सहायता, मदद ।

उपरावटी-वि० (स्त्री० उपरावटी) १ गर्वीनत । २ अकड़ा
हुआ । ३ देखो 'अपुठी' (स्त्री० उपरावटी) ।

उपरास-कि० वि० ऊपर से, ऊपरी । -वि० अधिक, विशेष ।

उपरि-वि० ऊपर का ।

उपरियाळ-वि० एक से एक बढ़कर । विशेष, अधिक ।

उपरीजणौ (वौ)-कि० वच्चे का रोय अस्त होना ।

उपरेचो-पु० दरवाजे पर लगने वाला काष्ठ का डण्डा ।

उपरोक्त-वि० [सं० उपर्युक्त] जो ऊपर कहा गया हो ।

उपरोध-पु० [सं०] १ अवरोध, अटकाव । २ रुकावट ।
३ आच्छादन, ढक्कन । ४ आड़ । ५ आज्ञा, आदेश ।

उपलंगी-पु० [सं०] पर्वत, पहाड़ ।

उपल-पु० [सं०] १ पत्थर । २ घोड़ा । ३ रत्न । ४ बालू ।
५ घाम विशेष । ६ लट्ठान ।

उपलक्ष-पु० [सं०] १ चिह्न, संकेत । २ उद्देश्य, कारण ।
३ इष्टि । ४ खुशी ।

उपलक्षित-वि० [सं०] १ चिह्नित, लक्षित । २ सूचित ।

उपलब्ध-वि० [सं०] १ प्राप्त । २ जाना हुआ ।

उपलब्धि (ब्धि)-स्त्री० [सं०] १ प्राप्ति । २ वृद्धि । ३ ज्ञान ।
४ अनुभव ।

उपलेप-पु० १ मरहम, लेपन । २ लोपा-पोती । ३ लेपन करने
की वस्तु ।

उपलेपण (न)-पु० [सं०] लेपन का कार्य ।

उपलौ-वि० (स्त्री० उपली) ऊपर का, ऊपरी । -पु० जलाने
का कंडा, उपला ।

उपव-देखो 'उपमेय' ।

उपवन-पु० [सं०] १ बाग, बगीचा । २ छोटा जंगल ।
३ कृत्रिम वन ।

उपवरतव, (नी)-देखो 'उपवरतन' ।

उपवसत-देखो 'उपवसथ' ।

उपवास-पु० [सं०] व्रत, संघन । अन्नशन ।

उपवासी-वि० उपवास करने वाला, व्रता ।

उपवाह्य-देखो उपवाह्य' ।

उपविद्या-स्त्री० [सं०] शिल्प कला । शिला ।

उपविप्त-पु० [सं० उपविपः] १ हल्का विष । २ धतूरा ।
३ अफीम । ४ कुचैला ।

उपविष्ट-वि० [सं० उपविष्ट] बैठा हुआ, आसीन ।

उपवीत-पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ । —उतार-पु० तलवार का एक प्रकार ।

उपवेद-पु० [सं०] वेदों से निकले हुए शास्त्र । धनुर्वेद, गंधर्ववेद, आयुर्वेद तथा स्वाध्याय ।

उपसंस्थान-पु० १ अधोवस्त्र । २ साईं के नीचे का वस्त्र ।

उपसंपादक-पु० [सं०] सहायक संपादक ।

उपसंहार-पु० [सं०] १ समाप्ति, पूर्णता । २ नाश । ३ निष्कर्ष ।
४ शेष अंग । ५ किसी लेख या पुस्तक का अंतिम अंग ।

उपसर्णी (जौ)-क्रि० १ पूजना । २ उभरना ।

उपसर्पिण-देखो 'उसरपिणी' ।

उपसर्ग-पु० [सं० उपसर्ग] १ इन्द्रिय निग्रह । २ शांति ।
३ क्षमा । ४ प्रतिकार । ५ सत्त-गत कर्मों का उदय बिल्कुल नष्ट जाने पर होने वाली अस्मशुद्धि । ६ आवेश का समन (जैन) ।

उपसमण (न)-पु० इन्द्रिय निग्रह की क्रिया । दमन । निवारण ।

उपसमय-पु० [सं० उपसमय] निदान ।

उपसरण-पु० [सं० उपसर्ग] १ किसी शब्द के आगे लगने वाला अव्यय शब्द । २ एक रोग । ३ उत्पात, उद्भव । ४ उर्विक प्रकोप । ५ विघ्न । ६ कष्ट । ७ साधना में डाला जाने वाला विघ्न । ८ शुभाशुभ सूचक चिह्न । ९ साधना में मग्न व्यक्ति को साधना से विचलित करने के उपाय (जैन) ।

उपसरजन-पु० [सं० उपसर्जन] १ ढलाई । २ उडेलना । ३ उपद्रव ।
४ दैविक उत्पात । ५ त्याग । ६ गोण वस्तु ।

उपसरण-पु० [सं० उपसर्पण] १ उपासना । २ अनुवृत्ति ।

उपसरी-पु० सहायता, मदद ।

उपसास-पु० [सं० उपशवास] निःश्वास । आह ।

उपस्त्री-स्त्री० [सं०] रखेल ।

उपस्थ-पु० [सं० उपस्थः] १ मध्य या नीचे का भाग । २ पुरुष चिह्न, लिंग । [सं० उपस्थम्] ३ स्त्री चिह्न, योगि ।

उपस्थल-पु० [सं० उपस्थल] चूतड़, दूधड़ा ।

उपस्थित-वि० [सं०] १ हाज़र, मौजूद । २ वर्तमान, विद्यमान ।
३ निकट बंठा हुआ ।

उपस्थिति-स्त्री० [सं०] १ हाज़री । २ मौजूदगी ।

उपहा-वि० [सं०] १ नष्ट, बर्बाद । २ बिगड़ा हुआ ।
३ क्षत-विक्षत । ४ निर्धन ।

उपहार-पु० [सं०] १ भेंट, नजराना दक्षिणा । २ दान ।

३ पुरस्कार । ४ सम्मान । ५ सामग्री । ६ शीत । ७ नृत्य ।
८ मेहमानों में बांटा हुआ भोजन । ९ बलि पशु ।

उपहारीभूत-पु० यौ० भेंट, उपहार ।

उपहास-पु० [सं०] १ परिहास, हंसी । २ मजाक, मखौल ।
३ निन्दा, आलोचना ।

उपह्वर-पु० [सं० उपह्वर] एकान्त स्थान ।

उपांग-पु० [सं०] अवयव, अंग ।

उपांन (नत, नह)-पु० [सं० उपांनह] जूता, जूती ।

उपांणली-वि० (स्त्री० उपांणली) १ उत्पाती । २ नटखट, चंचल ।
३ व्यग्र, चिंतित ।

उपाङ्क-वि० उत्पन्न करने वाला । २ यत्न करने वाला ।

उपाई, उपाउ (ऊ) देखो 'उपाय' ।

उपाङ्क-देखो 'ऊपाउ' ।

उपाङ्गणी (बौ), उपाङ्गिणी (बौ)-क्रि० १ उठाना । २ उखाड़ना,
उन्मूलन करना । ३ खर्च, व्यय करना । ४ अधिभार में करना । ५ बोझ उठाना । ६ भड़काना । बल पूर्वक आगे बढ़ाना, भोंकना ।

उपाङ्क-वि० खर्चीला । जीजीला ।

उपाङ्क-पु० १ खर्चा, व्यय । २ बोझ, वजन । ३ झड़ बेरी के डंठलों का समूह ।

उपाणी-पु० [सं० उत्पन्न] आय ।

उपाणी (बौ)-क्रि० १ उत्पन्न करना, पैदा करना । २ उपाजन करना । ३ रचना, बनाना ।

उपावांन-पु० [सं० उपादन] १ प्राप्ति । २ ग्रहण । ३ स्वीकार ।
४ अपने अपने विषयों की ओर इन्द्रियों का गमन । ५ कारण ।

उपाघ, उपाधि-स्त्री० [सं० उपाधि] १ उपद्रव । २ अन्याय, छल, कपट । ३ युद्ध । ४ विघ्न, बाधा । ५ पदवी, खिताब ।
६ उपनाम ।

उपाय-पु० [सं० उपायह] १ युक्ति, तदवीर । २ इलाज ।
३ व्यवस्था । ४ नीति । ५ उपचार । ६ प्रयत्न । ७ साधन ।
८ निकट पहुँचने की क्रिया । ९ मार्ग, रास्ता ।

उपायण-वि० चार । —स्त्री० [सं० उपायनम्] १ मान्यता, प्रण, प्रतिज्ञा । २ निकट पहुँचना, शिष्यबनना ।

उपायन-पु० [सं० उपायनम्] १ उपहार, भेंट । २ मान्यता ।
३ प्रण, प्रतिज्ञा । ४ निकट पहुँचना । ५ शिष्य बनना ।

उपाजन (न)-पु० [सं० उपाजन] १ कमाई, आमदनी, अर्जन । २ लाभ, नफा । ३ एकत्रीकरण, संवय ।

उपालभ, (न)-पु० [सं० उपाळम्] उलाहना, शिकायत, तिरछा ।

उपाळी-वि० (स्त्री० उपाळी) १ नंगे पैर । २ पैदल ।

उपाव-पु० १ उत्पात, बखेड़ा, उपद्रव । २ देखो 'उपाय' ।

अपभ्रंश

(१४९)

उवासी

उपासक-वि० उत्पन्न करने वाला ।

उपावली (बौ)-देखो उपाणी (बौ) ।

उपासंग-पु० तर्कश ।

उपास-देखो 'उपवास' ।

उपासक-वि० पूजा, उपासना करने वाला ।

उपासण, (न)-पु० १ सेवा शुश्रूषा । २ आराधना । -वि० उपासना करने वाला ।

उपासणा (ना)-स्त्री० [सं० उपासना] १ पूजा, आराधना । २ सेवा परिचर्या । ३ ध्यान ।

उपासणी (बौ)-कि० उपासना करना । आराधना करना । सेवा करना ।

उपासरी-पु० [सं० उपाश्रय] जैन यतियों का निवास स्थान ।

उपासी, (क), उपासु, (सू)-वि० उपासक ।

उपास्य-वि० [सं०] १ उपासक या पूजा करने योग्य । २ आराध्य, सेव्य । ३ पूजनीय ।

उपसय-देखो 'उपासरी' ।

उपाही-पु० उपासक ।

उपिद्र-पु० [सं० उपेन्द्र] ईश्वर ।

उपिच्छगाह-पु० गाथा छंद का एक भेद ।

उपूठी-देखो 'अपूठी' (स्त्री० उपूठी) ।

उपेन्द्रवज्रा-पु० एक वर्ण वस्तु ।

उपेक्षण-पु० [सं०] १ विरक्ति का भाव । २ किनारा । ३ बिचाव । ४ निरस्कार ।

उपेक्षा-स्त्री० [सं०] १ अवहेलना, लापरवाही । २ असम्मान । ३ अस्वीकृति । ४ त्याग । ५ विरक्ति, उदासीनता । ६ निरस्कार ।

उपेक्षित-वि० [सं०] तिरस्कृत । निन्दित । त्यक्त ।

उपेट, उपेत-वि० महित, युक्त । एकत्रित ।

उपोषात-पु० [सं० उपोक्षात] प्रस्तावना, भूमिका । प्रारम्भ । उपरि-देखो 'ऊपर' ।

उपाङ्गली (बौ)-देखो 'उपाङ्गली' (बौ) ।

उपवट, (वाट)-वि० अधिक, विशेष ।

उफ-अव्य० [अ०] अफसोस सूचक ध्वनि । ओह ।

उफणली (बौ)-देखो 'ऊफणली' (बौ) ।

उफाण, (न)-पु० १ उवाल । उफान । २ जोश । ३ क्रोध । ४ आडम्बर । ५ फेन ।

उफारवा-वि० बड़ा दिखने वाला ।

उफारी-पु० ग्रहंकार ।

उबध-देखो 'ऊबध' ।

उबंवर, (वरी)-देखो 'ऊबंवर' ।

उबकणी, (बौ), उबकणी (बौ)-देखो 'ऊबकणी' (बौ) ।

उबड़बाड़-वि० ऊंचा-नीचा, विपण । असमतल ।

उबड़ाक-स्त्री० उबकाई, मिचली, बमन ।

उबड़ियो-देखो 'ऊबड़ियो' ।

उबट-देखो 'ऊबट' ।

उबटरण, (टन, टणौ)-पु० [सं० उद्वर्तन] १ शरीर पर मलने का सुगंधित लेपन । २ मालिश ।

उबटरणी (बौ)-कि० १ शरीर पर सुगंधित द्रव्य मलना, मालिश करना । २ रंग उड़ना । ३ उत्पन्न होना । ४ कसला होना ।

उबरण (न)-पु० [सं० उदुम्बर] गूलर का वृक्ष या फल ।

उबरांगणी (बौ)-कि० शस्त्र, लाठी, हाथ आदि प्रहार के लिए उठाना ।

उबरांगी-देखो 'उबांगी' (स्त्री० उबरांगी) ।

उबरेड़ी, (रेलौ)-पु० १ वर्षा के उपरांत बादलों की छंटनी । २ वर्षा के बाद होने वाला कुछ कुछ सूखापन ।

उबरी-देखो 'अमीर' ।

उबळणी (बौ)-कि० खोलना । उफनना । पानी में उबल कर पकना ।

उबांगणी (बौ)-१ प्रहार के निमित्त । उठाना । २ खड़ा रखना, करना ।

उबांगी (हणौ)-वि० (स्त्री० उबांगी) १ बिना जुते पहने हुए । २ नंगे पैर । ३ नग्न । -कि० वि० ४ नंगी तलवार लिये ।

उबांदरी-देखो 'ऊबांदरी' ।

उबाई-स्त्री० जंभाई ।

उबाक-स्त्री० बमन, कै ।

उबाड़-स्त्री० चीर-फाड़ । दरार ।

उबाड़ि-देखो 'उबाड़' ।

उबार-पु० [सं० उद्धारण] १ छुटकारा, उद्धार, निस्तार । २ रक्षा, बचाव ।

उबारक, (ली), उबारण (ली)-वि० उबारने वाला, बचाने वाला, रक्षक ।

उबारणी (बौ)-कि० उबारना, तारना, बचाना । रक्षा करना । शेष रखना । उन्मुक्त करना, छोड़ना ।

उबारि-वि० १ रक्षक । २ बचाने वाला, हिफाजत करने वाला ।

उबारी-पु० १ बचा हुआ सामान । २ रक्षा, सहायता । बचाव ।

उबाळ-पु० उफान, जोश ।

उबाळणी (बौ)-कि० १ ताप देकर खोलना । १ उवालकर पकाना । ३ जोश दिताना । ४ पसोजना ।

उबासणी (बौ)-कि० जंभाई लेना, उवासी लेना ।

उवासी-स्त्री० जंभाई ।

उबाहणी (बी)-क्रि० प्रहार हेतु उठाना । उलीचना ।
उमारना ।

उबेड़-पु० कूंग के पानी का उठाव । गहराई ।

उबेड़णी (बी)-क्रि० १ उन्मूलन करना, उखाड़ना । २ टांके
खोलना । ३ नोड़ना । ४ चीरना ।

उबेड़ो-देखो 'ऊबड़ो' ।

उबेड़ी-वि० उदृष्ट । दुष्ट । उत्पातो । अमुर ।

उबेल, लण-देखो 'उबेल' (ल) ।

उबेलणी (बी)-क्रि० १ रस्सी की एंठन खोलना । २ सीमा
रहित करना ।

उबेलणी (बी)-क्रि० गहायना, मदद करना । रक्षा करना ।
बचाना ।

उबेलू-देखो 'ऊबेलू' ।

उबे-देखो 'अभय' ।

उबेली देखो 'अबेल' ।

उबेड़णी (बी)-देखो 'उबेड़णी' (बी) ।

उबे-देखो 'ऊबे' ।

उबे-देखो 'अभय' ।

उबे-देखो 'अभय' ।

उमड़णी (बी)-क्रि० उभरना । ऊंचा उठना । बढ़कना ।
भड़कना ।

उमभत-पु० विचित्र, अद्भुत ।

उमभ-वि० [मं०] दो, दोनों । —बाढी-वि० द्विपक्षी । स्वर
ताल दोनों का बोध कराने वाला । —विपुला-स्त्री० आयाँ
छद का एक भेद ।

उभराण, (रांणी)-देखो 'उबांणी' । (स्त्री० उभरांणी) ।

उभांवरियो, उभांखरी-वि० (स्त्री० उभांखरी) १ अमरगुणिल ।
२ योद्धा, वीर ।

उभांणी-देखो 'उबांणी' । (स्त्री० उभांणी) ।

उभांवरौ-देखो 'उबांवरौ' ।

उभाड़, उभार-पु० [सं० उद्भिदन] १ उठान, ऊंचाई ।
२ श्रोज । ३ विक्रम । ४ जोश । —दार-वि० उभरा
हुमा ।

उभारणी (बी)-क्रि० १ ऊपर उठाना, ऊंचा करना । २ प्रगट
करना । ३ स्पष्ट करना । ४ विकसित, करना । ५ उठाये
रखना । ६ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना । ७ उकसाना, उत्तेजित
करना । ८ मूँछ पर हाथ रखना, ताव देना । ९ बचाना,
रक्षा करना ।

उभोकील-स्त्री० गीधी जड़ । मूसला जड़ ।

उभे, उभसये, उभस-देखो 'अभय' ।

उभंग-स्त्री० १ चित्त का उभाड़, सुखद मनोवेग, उत्साह ।

२ जोश । ३ आनन्द, उल्लास । ४ अभिभाषा, इच्छा ।
५ एक डिगल गीत ।

उमंगणी (बी)-क्रि० १ उत्साहित होना, सुखद मनो भाव जागृत
होना । २ जोश आना । ३ आनन्दित होना । ४ अभिभाषा
या इच्छा करना । ५ उमड़ना, ऊपर उठना । ६ आवेश युक्त
होना । ७ छा जाना, आच्छादित होना । ८ बढ़ना ।

उमड़णी (बी)-क्रि० १ उमड़ना, ऊपर उठना । २ आवेश
में आना । ३ बढ़ना । ४ खीलना । ५ छाना, आच्छादित
होना । ६ दान देना ।

उमंत (त)-१ देखो 'उमन्त' । २ देखो 'उमत' ।

उमदा-देखो 'उमदा' ।

उमभ-देखो 'उमंग' ।

उमगणी (बी), उमगाणी (बी)-देखो 'उमंगणी' (बी) ।

उमंग-विना मार्ग, उवट ।

उमड़ (ण)-पु० १ बाढ़, बढ़ाव । २ भगव । ३ धराव, धावा ।
४ उठान ।

उमड़णी (बी), उमटणी (बी)-क्रि० १ जोर से बढ़ना, बढ़कर
आना । २ ऊपर उठना । ३ छाना, आच्छादित होना ।
४ खीलना । ५ धरना । ६ आवेश में आना ।

उमल दूमणी-देखो 'उमगादूमणी' । (स्त्री० उमगा दूमणी)

उमत-पु० [मं० उम्मत] १ धर्म विशेष के अनुयायी । २ देखो
उमंगन ।

उमदा वि० [फा० उम्दा] १ श्रेष्ठ उत्तम, ब्राह्म । २ अच्छी
जाति का । —पु० ऊँट ।

उमदा-देखो 'उमा' । —ईस्ट वर-पु० शिव ।

उमर-स्त्री० [अ० उम्र] १ अवस्था, वय, आयु । २ एक प्रकार
का वृक्ष ।

उमराव, उमरौ-देखो 'अमराव' ।

उमस-स्त्री० उष्णता, गर्मी । अत्यधिक गर्मी । २ वर्षा सूचक
गर्मी ।

उमा-स्त्री० [सं०] १ पार्वती, देवी, दुर्गा । २ कान्ति, दीप्ति ।
३ कीर्ति । ४ शांति । ५ रात्रि । ६ हल्दी । ७ अलसी ।
—कंवर, कुमार-पु० कातिकेय । गणेश । —गुरु-पु०
हिमाचल । —धव, पत, पति-पु० शिव ।

उमाज-पु० उनमाद ।

उमादे-पु० राजस्थानी लोक गीत ।

उमाथी-वि० (स्त्री० उमाथी) उमंगित ।

उमाव (डौ), उमावी-पु० १ उम्माह, उमंग । २ उत्कण्ठ ।
३ अभिभाषा । ४ याद, स्मरण । —वि० उत्कण्ठित ।
उत्साहित । उत्सुक ।

उमावणी (बी)-देखो 'उमाहणी' (बी) ।

उभास-स्त्री० १ उमंग । २ उमन ।

उमाह, (हव)-देखो 'उमाव' ।

उमाहड़ (हड़)-देखो 'उमाव' ।

उमाहणी (बो) उमाहिणी (बो)-क्रि० १ उत्साहित होना,

उमंगित होना । २ हर्षित होना, प्रसन्न होना । ३ आवेश में आना, जोश में आना । ४ कटिवद्ध होना । ५ उत्कट इच्छा करना । ६ उमंगित होना ।

उमाही-देखो 'उमाव' ।

उमिया-स्त्री० उमा । --रत, पति, घर-पु० शिव ।

उमिरायत-देखो 'अमीरायत' ।

उमीर-देखो 'अमीर' ।

उमीरी देखो 'अमीरी' ।

उमेद-स्त्री० [फा० उम्मीद] १ आशा, भरोसा । २ आश्रय ।

३ एक प्रकार का घोड़ा । --वार-पु० आशावादी । परीक्षार्थी । रंग विरोध का घोड़ा ।

उमेतली (बो) -क्रि० [मं० उम्मेतलम्] उठाना ।

उमेस-पु० [मं० उमा + ईश] १ शिव, महादेव । २ गर्व, घमंड ।

उम्दा-देखो 'उमरा' ।

उम्मया-देखो 'उमा' ।

उम्मी-स्त्री० गेहूँ या 'जी' की बाली ।

उम्मीद, उम्मेद-देखो 'उमेद' । --वार-उमेदवार ।

उम्हाणी (बो)-देखो 'उमाहणी' (बो) ।

उयड़-सर्व० उम ।

उयवर-पु० लकिया ।

उयां-सर्व० उत, उन्हीने ।

उयं-सर्व० इस ।

उरंग, (गम)-पु० [मं० उरग] सर्प, साँप ।

उर-पु० [मं० उरस्] १ हृदय । २ मन । ३ वक्षःस्थल, छाती ।

४ रत्न, कुच । [सं० उरः] ५ भेड़ ।

उरग-पु० [सं०] सर्प, साँप । --अरि-पु० गहड़ ।

उरगाद-पु० गहड़ ।

उरगाधीव-पु० शेषनाग ।

उरड़ (डो)-स्त्री० १ युद्ध, लड़ाई । २ आक्रमण, हमला ।

३ माहूम, पराक्रम । ४ जोश, आवेश । ५ उमंग । ६ ज्वर दस्ती । ७ निर्भीकता । ८ ध्वनि विशेष । ९ उत्कंठा । १० शक्ति, बल । --उरड़-क्रि० वि०-धीमामस्ती से । --वि० अधिक, बहुत ।

उरड़णी (बो)-क्रि० १ आगे बढ़ना । २ जोश में आना ।

३ नाइस करना । ४ लड़ाई या आक्रमण करना । ५ उत्साहित होना । ६ वदान् धंसना ।

उरड़ो-पु० ज्वरदस्ती धंसने का भाव । --वि० ज्वरदस्ती धंसने वाला ।

उरज-पु० [सं० ऊर्ज] १ कांतिक मास । २ देखो 'उरोज' ।

उरजस-पु० [सं० ऊर्जस्] १ अक्सर, मीका । २ सामर्थ्य । --वि० समर्थ शक्तिशाली ।

उरण-पु० [सं० उरणः] १ भेड़, भेय । २ बाबल । ३ भेड़ की ऊत । ४ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था । ५ घूरेनम-ग्रह ।

--वि० [सं० उच्छ्रण] कृणुमुक्त ।

उरण्यौ-पु० भेड़ का बच्चा । भेमना ।

उरतल-पु० [सं०] १ वक्षस्थल के नीचे का भाग । २ स्तन ।

उरवी-देखो 'उड़वी' ।

उरवुत-पु० स्तन ।

उरद्ध-वि० [सं० ऊर्ध्व] १ उन्नत, ऊँचा । २ उल्टा, विपरीत ।

३ उठा हुआ, उभरा हुआ । ४ खड़ा हुआ, सीधा । ५ टूटा हुआ । --पु० आकाश । --क्रि० वि० ऊपर, ऊपर की ओर ।

--लोक-पु० देवलोक, स्वर्ग ।

उरद्धर-पु० हृदय, दिल ।

उरध-देखो 'उरद्ध' ।

उरधशोक-पु० अट्टालिका । अटारी ।

उरधगत (गति)-स्त्री० १ ऊर्ध्व गति । २ स्वर्ग । --वि० ऊँचा ।

उरधविड-पु० इन्द्र ।

उरधबाह-देखो 'ऊरधबाह' ।

उरधमूल-पु० शिर ।

उरधलिंग-पु० शिव ।

उरधसास पु० ऊर्ध्व श्वास, उल्टी श्वास ।

उरध्यानी-पु० ऋषि ।

उरन-१ देखो 'उरण' । २ देखो 'उरिण' ।

उरनेम-स्त्री० सती ।

उरनी-पु० भेड़ का बच्चा (मेवात) ।

उरप-पु० एक प्रकार का नृत्य ।

उरवरा-स्त्री० [सं० उर्वरा] १ उपजाऊ भूमि । २ पृथ्वी ।

३ एक अप्सरा ।

उरबल (ळळ)-पु० १ माहस । २ शीर्ष । बहादुरी ।

उरवती (बवती)-स्त्री० [सं० उर्वती] १ एक अप्सरा का नाम । २ अप्सरा ।

उरवांगी, (भांगी)-देखो 'उवांगी' (स्त्री० उरवांगी) ।

उरबी (बिब्य)-देखो 'उरबी' ।

उरमंडग, (मंडन मांडण)-पु० स्तन, उरोज ।

उरम-देखो 'ऊरमी' ।

उरमळ-पु० अज्ञान ।

उरमला, (मिला)-स्त्री० [सं० उर्मिला] लक्ष्मण की पत्नी का नाम ।

उरमी-देखो 'ऊरमी' । -माळ, माळा, माळी-देखो 'ऊरमीमाळ' ।
 उरमउ (ळी)-वि० (स्त्री० उरळी) १ उदार । २ विशाल, विस्तीर्ण । ३ हल्का, शांत ।
 उरलाण उरळाई-स्त्री० १ अधिकता । २ विस्तीर्णता । ३ खुला मैदान । -स्त्री० ४ अवकाश, कुसंत । ५ मुकिया । ५ विस्तार चौड़ाई ।
 उरले-परले-क्रि० वि० इधर-उधर । इस ओर से उस ओर ।
 उरळी-वि० (स्त्री० उरळी) १ चौड़ा, विस्तृत । २ खुला । ३ हल्का । ४ भार मुक्त ।
 उरली-क्रि० वि० (स्त्री० उरली) नजदीक, पास, निकट । इधर नजदीक का, इधर का ।
 उरवड़ (वड़)-पु० १ ध्वनि, कोलाहल । २ गणु समूह की तेज चाल की ध्वनि । ३ ऊपरा-ऊपरी धंसने की क्रिया । ४ एक साथ लगने की क्रिया । ५ आक्रमण । -वि० मत्त, तैयार ।
 उरवसियो-पु० प्रेमी, आशिक, प्यारा ।
 उरवसी-देखो 'उरवसी' ।
 उरवांणी-देखो 'उवांणी' ।
 उरवार-पु० आकाश का मध्य भाग ।
 उरवार-पारु-क्रि० वि० आर-पार ।
 उरवि-स्त्री० [सं० उर्वी] भूमि, पृथ्वी । -ईस, ईस्वर, धध, पति -पु० राजा नृप ।
 उरविज-पु० [सं० उर्वीज] मंगल ग्रह ।
 उरवी-स्त्री० भूमि । -जा-स्त्री० सीता ।
 उरवड़णी (बो)-१ एक साथ भागना । २ ऊपरा-ऊपरी धंसना, धसना । ३ शीघ्र चलना । ४ आक्रमण करना । ५ तड़फड़ाना ।
 उरस-पु० [सं० उरस्] १ आकाश । २ स्वर्ग । ३ वक्षस्थल, छाती । ४ हृदय, मन । [सं० उर्म] ५ मुसलमान पीरों का मेला या उत्सव । ६ मरण तिथि पर होने वाला उत्सव । (मुसलमान) ७ किसी की मरण तिथि पर दिया जाने वाला भोजन । (मुसलमान) -थळ, थळी, स्वळ, स्थळि-पु० सीना, छाती । स्तन, कुच ।
 उरहाणी-पु० १ उलाहना, उपालंभ । २ देखो 'उवांणी' । -क्रि० वि० इधर ।
 उरही-देखो 'उगी' । (स्त्री० उरही)
 उराणी-देखो 'उवांणी' । (स्त्री० उराणी)
 उरा-क्रि० वि० इधर, इस ओर । -वि० थोड़ा, अल्प । -स्त्री० पृथ्वी ।
 उराट, उराळ-पु० हृदय, छाती, मीना ।

उरासेव-पु० बंधन, पाश ।
 उराह-पु० [सं०] काली पिंडलियों वाला श्वेत घोड़ा ।
 उराही-पु० बंधन ।
 उरि (री)-१ देखो 'उर' । २ देखो 'अरि' ।
 उरिण (न)-वि० [सं० उरुण] १ ऋण मुक्त, एहमान मुक्त । २ जिम्मेदारी से मुक्त ।
 उरिया-क्रि० वि० १ इधर, इस ओर । २ पास, नजदीक ।
 उरीस-देखो 'उरस' ।
 उरु-वि० [सं०] १ विस्तृत, बड़ा । चौड़ा । २ देखो 'ऊरु' ।
 उरुडि, (घ)-पु० १ वक्षस्थल, छाती । २ हृदय । -वि० ऊंचा, ऊपर, उर्ध्व ।
 उरुस्तंभ-पु० एक रोग विशेष ।
 उरु-देखो 'ऊरु' ।
 उरे (रं)-क्रि० वि० इस ओर, इधर ।
 उरेड़णी (बो)-क्रि० टकलाना, धक्का देना ।
 उरेड़ी-देखो 'ऊरेड़ी' ।
 उरेव (रं)-पु० [सं० उर] हृदय । -वि० [फा०] १ टेढ़ा, तिरछा । २ धूर्ततापूर्ण ।
 उरोड़ी-देखो 'ऊरेड़ी' ।
 उरोज-पु० [सं०] स्तन, कुच ।
 उरोही, उरी-वि० (स्त्री० उरी) १ यहां । इधर । २ वापस । ३ नजदीक पास ।
 उलंगणी (बो) उलंगणी (बो)-क्रि० १ लांघना, फांदना । २ उल्लंघन करना । ३ यशमान करना । ४ मीत माना ।
 उलंडणी (बो)-क्रि० १ त्यागना, छोड़ना । २ उल्लंघन करना ।
 उलंदे-क्रि० वि० इस तरफ ।
 उलंभी-देखो 'ओलंभी' ।
 उलक-१ देखो 'उलूक' । २ देखो 'उल्का' । -पात='उल्कापात' ।
 उलका-देखो 'उल्का' । -पात='उल्कापात' । -पाती='उल्कापाती' ।
 उलखणी (बो)-देखो 'ओलखणी' (बो) ।
 उलखाणी(बो)उलखावणी (स्वणी(बो)-देखो 'ओलखाणी' (बो) ।
 उलग (गई, गई)-स्त्री० १ सेवा, चाकरी । २ कीर्तिमान । ३ परदेश, विदेश ।
 उलगणी (बो)-क्रि० १ गायन करना, गाना । २ यशमान करना । ३ वंशावली पढ़ना ।
 उलगणी-वि० प्रवासी प्रीतम ।
 उलगि, (गी)-पु० १ विदेश, परदेश । २ एकान्त ।
 उलड़णी (बो)-क्रि० उमड़ना, उलटना ।
 उलच-पु० [सं० उल्चोच] बितान, चंदोवा ।

उल्लेखणी

(१५३)

उल्लाङ्गणी

उल्लवणी (बौ)—देखो 'उल्लवणी' (बौ) ।

उल्लजणी (बौ)—देखो 'उल्लजणी' (बौ) ।

उल्लजाणी (बौ)—देखो 'उल्लजाणी' (बौ) ।

उल्लमण (न)—स्त्री० १ बाधा, रुकावट । २ समस्या । ३ गांठ ।

४ फंसाव । ५ चिंता । ६ भगड़ा ।

उल्लभणी (बौ)—क्रि० १ फंसना, अटकना । २ रुकना । ३ बाधा में पड़ना । ४ लपेट में आना । ५ व्यस्त होना । ६ लड़ाई, तकरार होना । ७ कठिनाई में पड़ना । ८ प्रेम में फंसना । ९ समस्या पड़ना ।

उल्लभाड़—देखो 'अल्लभाड़' ।

उल्लभाणी (बौ)—क्रि० १ फंसाना, अटकाना । २ रोकना । ३ बाधा में पटकना । ४ लपेटना । ५ काम में उलझना । ६ लड़ाई करना । ७ कठिनाई में पटकना । ८ प्रेम में फंसाना । ९ समस्या में डानना ।

उल्लसाव—पु० १ बाधा, रुकावट । २ समस्या । ३ गांठ । ४ फंसाव । ५ भगड़ा । ६ चिंता । ७ चक्कर ।

उल्लट—पु० १ परिवर्तन । २ तब्दीली । ३ उलटने की क्रिया या भाव ।

उल्लटणी (बौ)—क्रि० १ नीचे-ऊपर करना । २ झोंधा या उल्टा करना । ३ बदलना, पलटना । ४ पीछे मुड़ना । ५ घुमाना । ६ उमड़ना, दूट पड़ना । ७ उफान कर आना । ८ विरुद्ध होना । ९ अस्त-व्यस्त होना । १० इतराना । ११ घमंड करना । १२ झोंधा गिराना । १३ दोहराना । १४ वमन करना । १५ आक्रमण करना ।

उल्लट-पलट (पालट, पुलट), उल्लटफेर—पु० १ बदल-बदल । २ परिवर्तन । ३ अव्यवस्था ।

उल्लटाणी (बौ)—क्रि० १ नीचे-ऊपर कराना । २ झोंधा या उल्टा कराना । ३ बदलाना, पलटाना । ४ पीछे मोड़ना । ५ लोटाना । ६ शराब को झोटाना । ७ विरुद्ध करना ।

उल्लटापलटो, (पलटो)—देखो 'उल्लट-पलट' ।

उल्लटी—स्त्री० वमन, कै । —वि० विरुद्ध, विपरीत । —क्रि० वि० वापस ।

उल्लटीखड़ी—स्त्री० एक प्रकार की कसरत ।

उल्लटी—वि० (स्त्री० उल्लटी) १ झोंधा, उल्टा । २ विरुद्ध, विपरीत । ३ पीठ की ओर का । —क्रि० वि० विरुद्ध क्रम से । बैठिकाने । विपरीत न्याय से । —पु० कर्मक, दोष ।

उल्लटणी (बौ)—देखो 'उल्लटणी' (बौ) ।

उल्लणौ (बौ)—क्रि० १ फलों का पकना । २ बूढ़ होना । ३ आंख में कच्चापन आना । ४ मुँह में दाम-पाकोले पड़ना ।

उल्लत—स्त्री० अग्नि, अग्न ।

उल्लता—वि० लान, अदण ।

उल्लथी—पु० अनुवाद, खुलासा । निवारण ।

उल्लथ्यणी (बौ)—क्रि० १ उलटना, पलटना । २ इतरना । ३ भार मुक्त होना । ४ अनुवाद करना ।

उल्लभंग—स्त्री० अज्ञान । पुकार ।

उल्लमुक (ख)—पु० [सं० उल्लमुक] कोयला, खोरा, अंगारा ।

उल्लरणी (बौ)—देखो 'अल्लरणी (बौ)' ।

उल्लङ्गणी (बौ)—क्रि० १ कूदना, फांदना । २ ढरकना, डलना । ३ हमला करना । ४ कमजोर, निर्बल होना । ५ कच्चा पड़ना । ६ भार का मत्तुलन बिगड़ने से उल्टा होना, झुकना । ७ हुलस कर आना । ८ किसी पर अधिक झुकना । ९ बंधन डीला होना ।

उल्लङ्गी—वि० होली ।

उल्लवड़—वि० प्रच्छन्न, गुप्त ।

उल्लवण—वि० [सं० उल्लवण] १ प्रगट । २ स्पष्ट । ३ प्रकाशित, रोशन ।

उल्लवांणी—देखो 'उवांणी' ।

उल्लसणी (बौ)—देखो 'उल्लसणी' (बौ) ।

उल्लहांणी—देखो 'उवांणी' ।

उल्लही—पु० उत्साह, उमंग । हर्ष ।

उल्लां—क्रि० वि० इस तरफ ।

उल्लांगाणउ—वि० विदेशी, प्रवासी ।

उल्लांगणी, (बौ), उल्लाघणी, (बौ) उल्लाङ्गणी, (बौ)—क्रि० [सं० उल्लंघनम्] १ लांघना, फांदना । २ प्रवृत्ता करना ।

उल्लांण—वि० शान्ति, चैन ।

उल्लांम—देखो 'अल्लांम' ।

उल्ला—वि० १ इधर का, इस ओर का । नजदीक का । २ युवा । —क्रि० वि० इधर ।

उल्लाभलबेली—वि० (स्त्री० उल्लाभलबेली) यौवनोन्मत्त ।

उल्लाक—स्त्री० वमन, कै ।

उल्लाकणी (बौ)—क्रि० कै या वमन करना ।

उल्लाट—पु० धक्का, झटका ।

उल्लाटणी (बौ)—क्रि० धक्का देना, झटका देना । गिरा देना ।

उल्ला-पैला—क्रि० इधर-उधर का । —क्रि० वि० इधर-उधर ।

उल्लाळ—पु० १ भार का अमत्तुलन । २ पीछे की ओर वजन का दबाव (शकट) ।

उल्लाळणी (बौ)—क्रि० १ झुकाना । २ डिगाना । ३ उल्टा करना । ४ पीछे झुका कर खानी करना (गाड़ी) । ५ दूर फेंकना । फेंकना । ६ उठाना । ७ ऊंचा करना । ८ प्रहार हेतु उठाना (शस्त्र) । ९ नेत्र डीठाना । १० उड़ाना । ११ फेंकना, उछालना ।

उत्ताल्पी-पु० नडस या मोट के साथ बांधा जाने वाला वजन ।
उत्तावणी (बौ)-क्रि० [सं० घलापनम्] १ पुकारना आवाज देना ।
वृत्ताना । २ जपना । ३ ध्वनि करना । ४ उपभोग करना ।
मौज करना । ५ देना । ६ कामना करना । ७ उछालना,
फेंकना ।

उत्तास-देखो 'उत्ताम' ।

उत्तासित-देखो 'उत्तासित' ।

उत्ताहणी (नौ)-पु० [प्रा० उवाहन्] उपालम्भ, उलाहना ।
मानभरी शिकायत ।

उत्तिगण (गणव, गांणव, गांणउ, गांणौ)-वि० विदेशी,
परदेशी, प्रवासी ।

उत्तिपोकाचर-१ एक राजस्थानी लोक गीत । २ परिपक्व
बकड़ी ।

उळी-देखो 'ओळी' ।

उत्तीग (गांण, गांणौ)-देखो 'उत्तिगण' ।

उत्तीवणी (बौ)-क्रि० १ अंजली या तगारी भर कर वाहर
फेंकना (पानी) । २ दान करना ।

उत्तीपंसो-वि० इधर-उधर की । दोनों ओर की । ऐसी-वैसी ।

उत्तीवुळी-वि० भली बुरी । खरी-खोटी ।

उत्तुकी-स्त्री० मछली ।

उत्तुवक, उत्तुक-पु० [सं० उत्तुक] १ उत्तल नामक पक्षी ।
२ कणादि मुनि का एक नाम । ३ लूता के समान आकाश
का धूम समूह । -वि० क्रूर ।

उत्तूत-पु० भजगर जाति का साँप ।

उत्तेपास-क्रि० वि० इस तरह ।

उत्तेळ-स्त्री० १ तरंग, हिलोर । २ उमंग । ३ जोश ।

उत्त-क्रि० वि० इस ओर । नजदीक ।

उत्तोचि-पु० [सं० उत्तोच] राजध्वज ।

उत्तो-देखो 'ऊतो' ।

उत्तंघणी (बौ)-देखो 'उत्तंघणी' (बौ) ।

उत्ता-स्त्री० [सं०] १ आकाश से गिरने वाला अग्नि खण्ड ।
२ अग्नि, आग । ३ प्रकाश, रोशनी । ४ मशाल, चिराग ।
५ दीपक । -पात-पु० आकाश से टूट कर अग्नि खण्ड
गिरने की क्रिया । -मुख-पु० शिव । सीढ़, प्रेत ।

उत्ती-देखो 'उलती' ।

उत्तड-पु० हर्ष, प्रसन्नता ।

उत्तटणी (बौ)-देखो 'उत्तटणी' (बौ) ।

उत्तस-देखो 'उत्तास' ।

उत्तसण (न)-स्त्री० आनन्द, हर्ष आदि की क्रिया या भाव ।
रोमांच ।

उत्तसणी (बौ)-क्रि० १ उत्साहित होना, उमंगित होना ।
२ उत्कंठित होना । ३ प्रकुलित, हर्षित होना । ४ जोश में
ग्राना । ५ ऊंचा उठना, ऊपर उठना । ६ चमकना,
दमकना । ७ प्रभावान होना, कातिवान होना । ८ आनंदित
होना, प्रसन्न होना । ९ वर्षा का होना, बरसना ।

उत्ताई-क्रि० वि० इस ओर के भी । -स्त्री० स्थान को मुविधा ।

उत्ताळ-पु० १ एक मात्रिक छंद । २ देखो 'उत्ताळ' ।

उत्ताळणी (बौ)-देखो 'उत्ताळणी' (बौ) ।

उत्ताळी-पु० धक्का, भटका ।

उत्तालो-पु० एक मात्रिक छंद ।

उत्तावणी (बौ)-देखो 'उत्तावणी' (बौ) ।

उत्तास-पु० [सं०] १ हर्ष आनन्द । २ चमक-दमक, आभा
दीप्ति । ३ उत्साह, उमंग । ४ आलस्य । ५ ग्रंथ का एक
भाग । ६ एक व्यर्थालंकार ।

उत्तासक-वि० हर्षित । हर्ष-प्रद ।

उत्तू-पु० [सं० उत्तुक] दिन में अंधा रहने वाला एक पक्षी ।
-वि० मूर्ख, बुढ़ू ।

उत्तेख-पु० [सं०] १ जिक्र, चर्चा, हवाला, दाखिला । २ वर्णन ।
३ एक काव्यालंकार ।

उत्तूण-पु० मद्यपात्र ।

उत्तूरणी (बौ)-देखो 'ओतूरणी' (बौ) ।

उत्तूवण-वि० हर्ष-प्रद, मनोरंजक ।

उत्तूसणी (बौ)-देखो 'उत्तूसणी' (बौ) ।

उत्तास-देखो 'उत्तास' ।

उत्तंग-देखो 'उमंग' ।

उत्तंघ-देखो 'उत्तंघ' ।

उत्तचरणी (बौ)-देखो 'उत्तचरणी' (बौ) ।

उत्तट-१ देखो 'उत्तट' । २ देखो 'उत्तट' ।

उत्तटणी (बौ)-देखो 'उत्तटणी' (बौ) ।

उत्तटणी (बौ)-देखो 'उत्तटणी' (बौ) ।

उत्तस-देखो 'उत्तस' ।

उत्तर, (रि रो)-पु० [सं० उत्तर] हृदय, उत्तर । -क्रि० वि० उपर ।
-वि० १ ऊंचा । २ दूसरा, अपर ।

उत्तलखणी (बौ)-देखो 'ओत्तलखणी' (बौ) ।

उत्तसग-देखो 'उत्तसग' ।

उत्तह-सर्व० वह । उसे । -पु० [सं० उदधि] समुद्र, सागर ।

उत्तां-मर्व० उन्होंने, उन, उसी, उस, उन्होंने, वह ।

-क्रि० वि० वहां ।

उत्तावणी (बौ)-देखो 'वावणी' (बौ) ।

उत्ताङ्-पु० १ पद-चिह्न । २ विचार ।

उवाड़ी-पु० [सं० ऊधस] १ गाय, मँस घादि का ऐन ।
२ देखो 'अवाड़ी' ।

उवारणा-पु० बलैया, न्यौछावर ।

उवारणी (बौ)-देखो 'वारणी' (बौ) ।

उवारसी-स्त्री० सहायता, मदद । -वि० मददगार ।

उवारो-वि० १ गृहित, वंचित । २ देखो 'उवारो' ।

उवासी-देखो 'उवासी' ।

उवे-सर्व० वे, उन, उस । उसने ।

उवेलणी (बौ)-देखो 'उवेलणी' (बौ) ।

उवेलो-पु० १ विलंब । २ देखो 'ऊबेल' ।

उवं-सर्व० १ वह, वे । २ उस, उन ।

उव्री-सर्व० वह, उम ।

उत-सर्व० १ वह का विभक्ति रूप । २ देखो 'ऊत' ।

उसड़ी-वि० (स्त्री० उमड़ी) १ वैसा । ऐसा । २ देखो 'ऊस' ।

उसण(न)-वि० गर्म, [उष्ण] -प्रागम-स्त्री० ग्रीष्म ऋतु ।

उसतरी-देखो 'उसरी' ।

उसतरी-पु० बाल माफ करने का उपकरण, उस्तरा ।

उसताज, उसताव-पु० १ युद्ध लड़ाई । २ उस्ताद, गुरु ।

-वि० १ दक्ष, चतुर । २ चालाक, धूर्त ।

उसध-देखो 'असध' ।

उसन-देखो 'उसण' ।

उसनरसम-पु० [सं० उष्ण-रश्मि] सूर्य ।

उसना-पु० [सं० उशनस्] १ शुक्र ग्रह । २ शुक्राचार्य ।

उसपिणि-देखो 'उसपिणी' ।

उसभ-पु० [सं० कृपभ] कृपभ ।

उसर-पु० [सं० औसरस] १ नाच नृत्य । २ देखो 'ऊसर' ।
३ देखो 'असुर' ।

उसरणी (बौ)-क्रि० १ गर्म पानी में पकना । २ वर्षा का होना । ३ कूपे के पानी में उतरना (बर्तन) । ४ बटोरना, एकत्र करना । ५ निकालना । ६ पीछे खाना होना, जाना ।

७ हटना, टलना । ८ बीतना, गुजरना । ९ आक्रमण करना । १० भूलना । ११ फैलना, व्यापना ।

उसराण (घण)-देखो 'असुर' ।

उसह (हू)-देखो 'असुर' ।

उसवास-पु० [सं० उच्छवास] उच्छवास, उसास ।

उससणी (बौ)-देखो 'उससणी' (बौ) ।

उसांरणी (बौ)-क्रि० उठाना, ऊचा करना ।

उसांस देखो 'उसास' ।

उसा-स्त्री० [सं० उसा] १ गाय । २ बड़का भोर । [सं० उवा] ३ बागासुर की पृथ्वी का नाम । -काळ-पु० प्रातःकाल ।

... पति-पु० आतिथ्य, कामदेव ।

उसाड़ी-देखो 'उवाड़ी' ।

उसारणी (बौ)-क्रि० १ गर्म पानी में पकाना । २ कूपे में उतारना, पानी में उतारना (पात्र) । ३ बटोरना एकत्र करना । ४ निकालना (चबूती में से छून) । ५ पीछे खाना करना, भेजना । ६ हटना, टलना । ७ कूप से पात्र द्वारा पानी निकालना । ८ आक्रमण करना ।

उसास, उसासी-पु० [सं० उच्छवास] १ लंबी सांस, निश्वास । २ उच्छवास, ग्राह । ३ ठंडी सांस । ४ श्वास ।

उसीनर-पु० [सं० उशीनर] १ जिवि का पिता एक राजा । २ गांधार देश । ३ इम देश का निवासी ।

उसीर (कौ)-पु० [सं० उशीर] गांडरनामक श्वास, खसखस ।

उसीली-पु० वसीला, सहायता, मदद । जगिया ।

उसीस (सी)-पु० [सं० उन्शीर्ष या उपशीर्ष] तकिया ।

उसीलणी (बौ)-क्रि० देवता के निमित्त संकल्प पूर्वक कुछ वस्तु रखना ।

उसुत-पु० सिद्धान्त ।

उस्ट-पु० [सं० उष्ट] ऊंट । -आसन-पु० चौरामी आसनों में से एक । -श्रीव-पु० भगंदर रोग । -खंगी-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

उष्ण-वि० [सं० उष्ण] १ गर्म, उष्ण । २ तेज, तीव्र । ३ फुर्तीला । ३ तीक्ष्ण । -स्त्री० १ धनि । २ गर्मी । ३ ताप । ४ धुन । ५ ग्रीष्म ऋतु । -कटिबंध-पु० कर्क और मकर रेखाओं के बीच का भू-भाग । -ता-स्त्री० गर्मी, ताप, धूप ।

उष्णांस-पु० [सं० उष्णांस] सूर्य, रवि ।

उष्णारश्म-पु० [सं० उष्णारश्मि] सूर्य, रवि ।

उसा-स्त्री० [सं०] गाय । -पु० तड़का । प्रकाश ।

उससि, उसपिणि(णी)-पु० [सं० उसपिणी] चढ़ना छ आरा पूर्ण होने का समय, काल ।

उह-सर्व० वह ।

उहकाळणी (बौ)-क्रि० १ उछालना, कुदाना । २ डियाना ।

उहदो-देखो 'अहदो' ।

उहव-वि० १ त्याज्य । २ देखो 'उह' ।

उहां-क्रि० वि० वहां, उधर । -सर्व० उन्हींने । उन ।

उहाळ-देखो 'अहाळ' ।

उहास (त)-१ प्रकाश, चमक । २ विद्युत रेखा । ३ तेज । ४ उल्हास । -हास-पु० परिहास ।

उहासिणी-वि० उमंगित उत्साहित । जोशीला ।

उहि, उहि उहो (ज) उहे-सर्व० वही, वह । उम, उमी । -क्रि० वि० वही ।

उहण उहण-क्रि० वि० [सं० अहण] उम वर्ष, उम साल ।

--ऊ--

ऊ-पु० [सं०] देवनागरी वर्णमाला का छठा स्वर वर्ण ।
ऊ-मर्द० उस । वह । -क्रि० वि० ऐसे । उघर । उस तरफ ।
-स्त्री० १ बच्चों के रोने की ध्वनि । २ निद्रेघात्मक ध्वनि । -पु० बड़ा ।
ऊंकार-देखो 'घोंकार' ।
ऊंखल (ळी)-देखो 'ऊखल' ।
ऊंग-देखो 'ऊष' ।
ऊंगट, (ठ, ठी)-देखो 'घंमठ' ।
ऊंगल (गलियो)-देखो 'ऊयल' ।
ऊंगली (बी)-देखो 'ऊंयली' (बी) ।
ऊंगी-पु० एक प्रकार का काँटेदार घास ।
ऊंय-स्त्री० तन्द्रा, नींद की भपकी ।
ऊंयड़, ऊंयल-वि० निद्रालु । तन्द्रा में रहने वाला । -पु० रहट पर लगने वाला एक डंडा ।
ऊंयली-पु० निद्रा । -वि० उनिद्रा, तन्द्रायुक्त ।
ऊंयली (बी)-क्रि० १ नींद की भपकी लेना, ऊंयना । २ नींद लेना । ३ मुस्ती से कार्य करना ।
ऊंयाई-स्त्री० तन्द्रा, भपकी । निद्रा ।
ऊंयाकली-देखो 'ऊंयल' । (स्त्री० ऊंयाकली) ।
ऊंयाळु-वि० निद्रालु, तन्द्रा में रहने वाला ।
ऊंय-स्त्री० [सं० उच्च] १ ऊंचापन, ऊंचाई । २ श्रेष्ठता । -वि० (स्त्री० ऊंय) उच्च, श्रेष्ठ, कुलीन । -पल, पली-पु० ऊंचाई । उच्चता । बड़प्पन ।
ऊंयली (बी)-क्रि० १ बोझ उठाया जाना । २ कोई वस्तु उठा कर सिर या कंधे पर रखना । ३ उठाना ।
ऊंयमोत्री-वि० कीमती, बहुमूल्य । अमूल्य ।
ऊंयरती-वि० [सं० उच्चरित] १ भाग्यशाली । २ महत्वाकांक्षी ।
ऊंयळ-पु० [सं० उच्चल] मन, अन्तःकरण ।
ऊंयली-वि० (स्त्री० ऊंयली) ऊपर वाला ।
ऊंयवही-वि० [सं० उच्चवह] १ ऊँच वस्त्र । २ बोझा उठाने वाला । ३ सहिष्णु ।
ऊंयांत, ऊंयाई-स्त्री० १ उच्चता, ऊंचापन । २ लम्बाई । ३ बड़ाई । ४ ऊपर उठी हुई भूमि । ५ गौरव ।
ऊंयाणी (बी)-क्रि० १ उठाना, उठाकर सिर पर रखना । २ ऊपर करना ।

ऊंयावी, ऊंयास (सी) ऊंयाही-१ पु० ऊंचाई । २ ऊंचास्थल । ३ देखो 'उच्चोन्नवा' ।
ऊंयासरी (सिरी)-पु० [सं० उच्चाश्रय] १ पूर्वजों का निवास स्थान । २ ऊंचा आश्रय । -वि० उदारचित्त । वीर । श्रेष्ठ । गर्वोन्नत ।
ऊंयासी-देखो 'उच्चोन्नवा' ।
ऊंयियाण-स्त्री० विलम्ब से गर्भवती होने वाली मादा पशु ।
ऊंयी-वि० उच्च, लंबी । -क्रि० वि० ऊपर, ऊंचाई पर ।
-तांण-स्त्री० महत्वाकांक्षा । -धरा-स्त्री० महत्वाकांक्षी, उदारचित्त ।
ऊंयीखवस-देखो 'उच्चोन्नवा' ।
ऊंयीखवाह-पु०यी० [सं० उच्चैश्चवाह] इंद्र, सुरेश ।
ऊंयू-देखो 'ऊंवी' ।
ऊंये-क्रि०वि० १ ऊंचाई पर, ऊपर । २ ऊपर की ओर । ३ जोर से ।
ऊंयेरी, ऊंयोड़ी, ऊंयी-वि० [सं० उच्च] (स्त्री० ऊंयी, ऊंयेरी, ऊंयोड़ी) १ कुछ ऊंचा । २ ऊपर वाला । ३ ऊपर उठा हुआ, उन्नत । ४ उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया । ५ महान । ६ बुलंद । ७ कुलीन ।
ऊंयादेह-वि० झोधा, उल्टा ।
ऊंय-पु० [सं० उष्ट्र] (स्त्री० ऊंयड़ी, ऊंयणी) ऊंट उष्ट्र ।
-ऊंयाळी, ऊंयाळी-पु० कटोली भाड़ी विशेष । -गाडी-धाली-स्त्री० एक प्राचीन सरकारी कर । -फोग-पु० एक प्रकार का फोग ।
ऊंयड़ी, ऊंयणी, ऊंयणी, ऊंयणी-पु० १ बैलगाड़ी के अग्रभाग का एक उपकरण । २ देखो 'ऊंय' ।
ऊंयादेवी-स्त्री० एक देवी ।
ऊंय-पु० [सं० उष्ट्र] लंबी गर्दन व लंबे पांव वाला प्रसिद्ध मनुष्य वंशीय चीपाया जानवर ।
ऊंयणी-पु० २ एक जाति विशेष का सिंह । २ देखो 'ऊंय' ।
ऊंय-देखो 'ऊंय' ।
ऊंयांमणी-पु० मकान के बाहर जूँटे बर्तन मांजने का स्थान ।
ऊंयावड़ी (यावड़ी)-स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री ।
ऊंयावड़ी (यावड़ी)-पु० (स्त्री० ऊंयावड़ी) १ उच्छिष्ट (जूठन) खाने वाला व्यक्ति । २ उच्छिष्ट बर्तन साफ करने तथा उठाकर रखने वाला ।

ऊं

(१५७)

ऊकस

ऊंङ-स्त्री० १ गहराई । २ सिचाई की नाली ।
 ऊंङळ-पु० १ मोट पर लगा लकड़ी का उगकरण । २ गोद, श्रृंग ।
 ३ बाहुपाश । ४ बेलगाड़ी के नीचे लगाया जाने वाला डंडा । -वि० वशीभूत आधीन ।
 ऊंङवण, ऊंङाण, ऊंङात, ऊंङाणण, ऊंङाणत, ऊंङाई-स्त्री० गहराई । नीची भूमि । गंभीरता ।
 ऊंङाळकी-स्त्री० नीची भूमि ।
 ऊंङाळकी (ळी)-वि० (स्त्री० ऊंङाळकी (ळी) गहरा ।
 ऊंङियण-वि० गहरा, ग्राहाह ।
 ऊंङी-वि० (स्त्री० ऊंङी) १ गहरा । २ गंभीर । ३ अग्राध, ग्राहाह । -पु० तहखाना ।
 ऊंण-अव्य० [सं० अणुना] इस वर्ष ।
 ऊंणत, ऊंणारत-देखो 'उणत' ।
 ऊंणी-वि० (स्त्री० ऊंणी) १ निर्धारित समय से पूर्व जन्मा । २ अघुरा, अपूर्ण । ३ उदास, खिन्न । -पु० छोटा बच्चा ।
 -पूणी-वि० अपूर्ण, अपरिपक्व (बालक) ।
 ऊंताळ (वळ)-देखो 'उतावळ' ।
 ऊंतावळी-देखो 'उतावळी' । (स्त्री० ऊंतावली)
 ऊंतोळ-स्त्री० संहार, वध, नाश ।
 ऊंतोळणौ (बी)-देखो 'उतोळणौ' (बी) ।
 ऊंवफोग-पु० एक प्रकार का फोग ।
 ऊंवर (रियो) ऊंवरी-पु० (स्त्री० ऊंवरी) १ चूहा, मूसा । २ दोहा छंद का एक भेद ।
 ऊंवरी-स्त्री० १ शिर के बाल उड़ने का एक रोग । २ मादा चूहा ।
 ऊंवायली-देखो 'ऊंवायली' ।
 ऊंघ-स्त्री० उत्तर और वायव्य के मध्य की दिशा ।
 ऊंघाङ्की-वि० (स्त्री० ऊंघाङ्की) उल्टे या अनुचित कार्य करने वाला । विपरीत बुद्धि वाला ।
 ऊंघाङ्कली-देखो 'आंघाङ्कली' ।
 ऊंघायली-पु० १ उल्टा गाड़ कर शकरकंद सेकने का पात्र । २ उल्टा चढ़ाया जाने वाला तवा । ३ छाजन के मध्य का छपरेल । -वि० (स्त्री० ऊंघायली) विरुद्ध बुद्धि का, भौंडू, मूर्ख ।
 ऊंघी-वि० (स्त्री० ऊंघी) १ आंध्रा, उल्टा । २ विलोम, विपरीत । -ऊंघीखोपड़ी-देखो 'आंघीखोपड़ी' ।
 -चूंघी-वि० उल्टा-सीधा ।
 ऊंन-देखो 'ऊन' ।
 ऊंनतभवा-स्त्री० जुगभवा नदी ।
 ऊंनाळ-देखो 'उनाळी' ।

ऊंनाळी-देखो 'उनाळी' ।
 ऊंनियो (नीयो)-देखो 'ऊनियो' ।
 ऊंनी-देखो 'ऊनी' ।
 ऊंने (नं)-देखो 'ऊनै' ।
 ऊंनी-देखो 'ऊनी' ।
 ऊंन-पु० कम जल वाला बादल जो प्रायः दक्षिण से उत्तर या पश्चिम से पूर्व गति वाला होता है ।
 ऊंबरी-देखो 'ऊमरी' ।
 ऊंबां-ऊंबां-पु० ऊंट के चारजामे में लगने वाले गूँदे ।
 ऊंबी, ऊंमी-स्त्री० गेहूँ की बाल ।
 ऊंळी-१ देखो 'अंळी' । २ देखो 'ऊळी' । (स्त्री० ऊंळी)
 ऊंही-सर्व० उसी, वही । -क्रि० वि० वैसे ही ।
 ऊंहुं, ऊंहुं-अव्य० निषेधात्मक शब्द या ध्वनि ।
 ऊं-सर्व० वह । उस । -पु० १ शिव । २ ब्रह्मा । ३ सूर्य । ४ चन्द्रमा । ५ पवन । ६ आकाश । ७ अग्नि । ८ मोक्ष । ९ प्रेत । १० कुत्ता । ११ शेषनाग । १२ मुनि । १३ स्थल । १४ भाव । १५ निर्घनता । १६ रक्षा । -वि० १ मुख्य, प्रधान । २ दातार । ३ सुखी । ४ व्यभिचारी । ५ लघु, छोटा । -अव्य० १ विभक्ति चिह्न, से । २ आरम्भ सूचक ध्वनि ।
 ऊंघर-देखो 'उर' ।
 ऊंघह-देखो 'उघह' ।
 ऊंईज-सर्व० वही ।
 ऊंएले-वि० इधर के ।
 ऊंक-पु० १ बन्दर । २ देखो 'ग्रोक' ।
 ऊंकटणी, (बी), ऊंकटणी, (बी) ऊंकटणी, (बी)- १ देखो 'उगटणी (बी) २ देखो 'उकटणी' (बी) ।
 ऊंकटी, ऊंकटी-पु० घोड़े व ऊंट का चारजामा कसने का चमड़े का फीता ।
 ऊंकडी-देखो 'उकडू' ।
 ऊंकरड-पु० एक पर एक का डेर । २ जवरदस्ती उधंसने का भाव । ३ देखो 'उंकरडो' ।
 ऊंकरांटी-वि० (स्त्री० ऊंकरांटी) १ बितातुर । २ बिना बिस्तर के, बिना बिछोने के ।
 ऊंकलंभणी (बी)-क्रि० आंधा लटकना ।
 ऊंकळ-स्त्री० ध्वनि, ग्रावाज ।
 ऊंकळणी (बी)-देखो 'उंकळणी' (बी) ।
 ऊंकलणी (बी)-देखो 'उंकलणी' (बी) ।
 ऊंकळापात-स्त्री० वेचनी, धबराहट ।
 ऊंकस-देखो 'उकस' ।

अकसणी (बी)-देखो 'उकसणी' (बी) ।
 अकांठ-अकांटी-वि० [सं० उत्कठ] (स्त्री० अकांटी) उत्साह का उद्रेक, रोमांच गुत्त ।
 अकाळणी (बी)-देखो 'उकाळणी' (बी) ।
 अकू-स्त्री० ऊट के चारजामें के आगे लगी खूँटी ।
 अक-पु० [सं० इक्षु] १ गन्ना, ईख । २ वन, जंगल । ३ मादा गधुओं के स्तन । -रस-पु० गन्ने का रस, दूध ।
 अकड़णी (बी)-देखो 'उखड़णी' (बी) ।
 अखलणी (बी) (गिणी, बी)-देखो 'उखलणी' (बी) ।
 १ देखो 'उखड़णी' (बी) ।
 अखणी (बी)-कि० उखड़ना, उठना ।
 अखध-अखत्री-देखो 'प्रोखत्र' ।
 अखमल (मेली)-पु० १ युद्ध, लड़ाई । २ उपद्रव, उत्पात । ३ योद्धा, वीर ।
 अखल-पु० [सं० उदूखल] भूमल से अनाज कूटने का पात्र या खट्टा, प्रोखत्री ।
 अखलणी (बी)-देखो 'उकलणी' (बी) । देखो 'उखलणी' (बी) ।
 अखली-स्त्री० लोहे की चूल । चूल का पत्थर । देखो 'उखल' ।
 अखवणी (बी)-कि० १ दौड़ना । २ देखो 'खेवणी' (बी) ।
 अखांखणी (बी)-कि० १ कोप करना । २ जोश में आना ।
 अखांणी-देखो 'उखांणी' ।
 अखा-देखो 'उखा' ।
 अखापति-देखो 'उखापति' ।
 अखाड़णी (बी), अखेड़णी, (बी)-उखाड़णी (बी) ।
 अखेल (बी)-देखो 'उखेल' ।
 अखेलणी (बी)-देखो 'उखाड़णी' (बी) ।
 अखेवणी (बी)-देखो 'उखेवणी' (बी) ।
 अगइणी (बी)-देखो 'उघइणी' (बी) ।
 अगट, अगठ (बी)-पु० सुगंधित लेप, उबटन ।
 अगटणी, (बी) अगठणी, (बी)-देखो 'उगटणी' (बी) ।
 अगटि-देखो 'उवटण' ।
 अगटी (बी)-देखो 'अकटी' ।
 अगण-पु० १ उदय काल । २ पूर्वदिशा । ३ रहट चलाने वाले के बैठने के स्थान के पीछे का डंडा ।
 अगणी (बी)-कि० १ उदय होना, निकलना । २ अंकुरित होता । ३ पैदा होता । ४ नशा आना ।
 अगत-१ देखो 'उगत' । २ देखो 'उकति' ।
 अगम-देखो 'उगम' ।
 अगमण-देखो 'उगमण' ।

अगमणियी-वि० १ उदय होने वाला, उगन वाला । २ पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा संबंधी । -पु० पूर्व दिशा का निवासी ।
 अगमणी-स्त्री० १ पूर्व दिशा । २ अंकुरित होने की क्रिया । ३ उदय काल ।
 अगमणी-१ देखो 'अगणी' । २ देखो 'उगमणी' ।
 अगमणी (बी)-देखो 'अगणी' (बी) ।
 अगरण-पु० उपकरण (जैन) ।
 अगरणी (बी)-कि० १ गिरना, पड़ना । २ देखो 'उगरणी' (बी) ।
 अगलणी (बी)-देखो 'अगलणी' (बी) ।
 अगलतू-देखो 'अगलतू' ।
 अगवण-पु० १ उदय । २ देखो 'उगुण' ।
 अगवणी-देखो 'उगवणी' ।
 अगवणी, (बी), अगवणी, (बी)-देखो 'अगणी' (बी) ।
 अगसणी (बी)-कि० ऊपर उठना, ऊँचा होना ।
 अगाण-पु० १ उदय । २ उदयकाल । ३ अंकुरित होने की क्रिया ।
 अगणी (बी)-कि० सुकाना । उगाना ।
 अगारणी (बी)-देखो 'उबारणी' (बी) ।
 अगाळ-१ देखो 'उगाळ' । २ देखो 'जुगाळ' ।
 अगाळणी (बी)-देखो 'अगालणी' (बी) ।
 अगाव-पु० उदय, उदयकाल ।
 अगुण (बी, बी)-देखो 'उगुण' ।
 अगेरणी (बी)-देखो 'उगेरणी' (बी) ।
 अग्रहणी (बी)-कि० १ उगलित करना । २ कहना । ३ कथन । ४ कै करना । ५ देखो 'उग्रहणी' (बी) ।
 अघइणी (बी)-देखो 'उघइणी' (बी) ।
 अघण-वि० १ नंगा, नग्न । २ मुला । ३ स्पष्ट । -स्त्री० उपजशक्ति ।
 अघरणी (बी)-देखो 'उघटणी' (बी) ।
 अघसणी (बी)-देखो 'अघसणी' (बी) ।
 अघाड़, अघाड़ी-वि० देखो 'उगाड़ी' । [स्त्री० अघाड़ी]
 अघाड़णी-देखो 'उघाड़णी' ।
 अघाड़णी (बी)-देखो 'उघाड़णी' (बी) ।
 अड़क-पु० वाद्य विशेष (बाजा) ।
 अड़ीपंद-पु० [सं० उडु-इन्द्र] चन्द्रमा ।
 अड़ी-वि० (स्त्री० उड़ी) मेसा, बैसा ।
 अचंड-देखो 'अचौ' ।
 अचड़णी (बी)-१ देखो 'अचंडणी' (बी) । २ देखो 'उचड़णी' (बी) ।
 अचरणी (बी)-देखो 'अचरणी' (बी) ।
 अचवही-देखो 'अचवही' ।
 अचार-वि० १ बड़ा । २ ऊँचा । ३ उत्तम, श्रेष्ठ ।
 अचाट-देखो 'अचाट' ।

ऊचाळउ, ऊचाळी-देखो 'उछाळी' ।

ऊचासरी-देखो 'ऊचामरी' ।

ऊचीनव (नवा)-देखो 'ऊचीनवा' ।

ऊचेइणी (बी)-देखो 'उच्चाइणी' (बी) ।

ऊचेनव, ऊचैनव, ऊचीनव, (वा)-पु० [सं० उच्चैः श्रवस्]
घोड़े का नाम ।

ऊच्छकणी, (बी)-देखो 'उच्छकणी' (बी) ।

ऊच्छरणी (बी)-देखो 'उच्छरणी' (बी) ।

ऊच्छरावर-वि० [सं० अप्सरा + वर] युद्ध में वीर गति प्राप्त
करने वाला योद्धा, वीर ।

ऊच्छव-देखो 'उत्सव' ।

ऊच्छेरणी (बी)-देखो 'उच्छेरणी' (बी) ।

ऊछजणी (बी)-कि० १ प्रहार हेतु शस्त्रादि उठाना । २ देखो
'उछजणी' (बी) ।

ऊछटणी (बी)-देखो 'उछटणी' (बी) ।

ऊछरणी (बी)-देखो 'उछरणी' (बी) ।

ऊछलणी (बी)-देखो 'उछलणी' (बी) ।

ऊछव-देखो 'उत्सव' ।

ऊछाछल (ली)-देखो 'उछाछली' ।

ऊछाळणी (बी)-देखो 'उछाळणी' (बी) ।

ऊछाळी-देखो 'उछाळी' ।

ऊछाह-१ देखो 'उत्साह' । २ देखो 'उत्सव' ।

ऊछेर-देखो 'उछेर' ।

ऊजड़-वि० निर्जन, जन शून्य । -कि० वि० राह छोड़कर ।
बिना मार्ग के । -पु० १ मार्ग का अभाव । २ देखो 'ऊभड़' ।

ऊजड़णी (बी)-देखो 'उजड़णी' (बी) ।

ऊजटल-वि० १ चंचल । तेज । २ जवरदस्त । ३ वीर, बहादुर ।

ऊजम-पु० १ उत्साह । २ देखो 'उद्यम' ।

ऊजमणी-देखो 'उजमणी' ।

ऊजळ(ली)-वि० [सं० उज्ज्वल] {स्त्री० ऊजळी} १ उजला, चमकीला
२ देखो 'उजल' । -दान-पु० रोशनदान । -पख, पाख-
पु० शुक्ल पक्ष ।

ऊजळणी (बी)-देखो 'उजळणी' (बी) ।

ऊजळो-ळोह-पु० यौ० १ तलवार । २ अच्छे लोहे का शस्त्र ।

ऊजळी-देखो 'उजळी' ।

ऊजाणणी (बी)-कि० अश्रुज करना ।

ऊजाळणर-वि० १ उज्ज्वल करने वाला, चमकाने वाला ।
२ स्वच्छ व निर्मल करने वाला । ३ कीर्ति व मान बढ़ाने
वाला । -पु० रोशनदान ।

ऊजाळणी (बी)-देखो 'उजाळणी' (बी) ।

ऊजाळी-देखो 'उजाळी' ।

ऊजास-देखो 'उजान' ।

ऊजासड़ (ड़ी)-देखो 'उजाम' ।

ऊजासह, ऊजासी-देखो 'उजाग' ।

ऊजौ-वि० शक्तिशाली, बलवान । -पु० साहस हिम्मत ।

ऊझ-देखो 'घोज' ।

ऊझड़-वि० १ विकट, दुर्गम । २ ऊंचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़ ।

४ असम्य । ४ देखो 'ऊजड़' ।

ऊझटल-देखो 'ऊजटल' ।

ऊझणउ, ऊझणी-पु० पुत्रो के द्विरागमन के समय दिया जाने
वाला वस्त्रादि सामान ।

ऊझणी (बी)-देखो 'उजमणी' (बी) ।

ऊमळ (ली)-१ देखो 'उजळ' । २ देखो 'उभेज' ।

ऊमळणी (बी)-देखो 'उभेजणी' (बी) ।

ऊमळ-पु० समूह ।

ऊमेल-पु० १ तूफान, अंधड़ । २ टक्कर । ३ प्रहार । ४ दान ।

५ तरंग, हिलोर । -वि० अपार, असीम, अत्यधिक ।

-कि० वि० पूर्ण जोश से ।

ऊमेलणी (बी)-देखो 'उभेजणी' (बी) ।

ऊटपटांग-वि० अव्यवस्थित । अंठ-संठ । बेमेन ।

ऊठ-स्त्री० [सं० उट] १ उठने की क्रिया या भाव । २ स्फूर्ति,
चंचलता । ३ पुरुषार्थ । ४ शक्ति, बल । ५ आभा, कान्ति ।
६ तिनका, तृण । ७ ऊर्ण, पत्ता । ८ देखो 'ऊँठ' ।

ऊठणी (बी)-कि० १ उदय होना । २ ऊपर उठना, ऊंचा
उठना । ३ उन्नत होना । ४ चढ़ना । ५ खड़ा होना ।
६ जागना । ७ उद्गम होना । ८ हटना । ९ आकाश में
छा जाना । १० उछलना । ११ निकलना । १२ उभरना ।
१३ महान् आरम्भ होना । १४ उत्पन्न या पैदा होना ।
१५ चेतन्य होना । १६ तैयार, उद्यत होना । १७ उन्नति
करना । १८ उपटना, खमीर आना । १९ बंद होना ।
२० हटना । २१ चल पड़ना । २२ दूर होना, मिटना ।
२३ व्यथ होना । २४ उपजना, वाद आना । २५ क्रमशः
ऊपर उठना, जुड़ना । २६ जवान होना । २७ उद्दीप्त
होना । २८ तन्दुरुस्त होना ।

ऊठड़-वि० फुटिला ।

ऊठमणी (बी)-देखो 'उठावणी' ।

ऊठाणी, ऊठावण (णी)-देखो 'उठावणी' ।

ऊठी-देखो 'घोठी' ।

ऊङणल-पु० नेत्र स्वर, ध्वनि, शब्द ।

ऊङड़-पु० घोड़ा, अश्व ।

ऊङण-स्त्री० ढाल ।

ऊइणी (बी)-देखो 'उइणी' (बी) ।

ऊइवणी (बी)-क्रि० अ० १ प्रहार करना । २ देखो 'उइणी' (बी) ।

ऊडाँल-स्त्री० उड़ने की क्रिया, तेजबाल, छलांग, कुदान ।

ऊइणी-देखो 'उइणी' (स्त्री० ऊइणी) ।

ऊढ-पु० [सं० ऊढः] (स्त्री० ऊढा) १ दुल्हा । २ विवाहित पुरुष । ३ पर स्त्री से प्रेम करने वाला नायक ।

ऊइणी-देखो 'ओइणी' ।

ऊइणी (बी)-देखो 'ओइणी' (बी) ।

ऊइ-स्त्री० १ विवाहिता स्त्री । २ विवाहिता किन्तु अन्य पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री ।

ऊण-क्रि० वि० [सं० अघुना] इस वर्ष, इस साल ।

ऊणत, ऊणांयतो, ऊणायत, ऊणारत-देखो 'ऊणत' ।

ऊणमणी, ऊणमनी-देखो 'ऊणमण' (स्त्री० ऊणमणी) ।

ऊणिपा-स्त्री० १ भाले की नोक । २ हरावल । ३ आवश्यकता ।

ऊणियारी, ऊणीयारी, ऊणीयाळी, (हार, हारी)-देखो 'उणियारी' ।

ऊणी-वि० [सं० ऊत] (स्त्री० ऊणी) १ कम, न्यून । २ अधूरा, अपूर्ण । ३ उदास, खिन्न । -सर्व० उसका । -अव्य० का ।

ऊतंग-देखो 'उतंग' ।

ऊत-वि० [सं० अघुव] १ निःसंतान, निपूता । २ सूख । ३ उज्जड़, असम्य । ४ भूत प्रेतादि की योनी वाला ।

ऊतजणी (बी)-क्रि० त्यागना, छोड़ना ।

ऊतर-देखो 'उतर' ।

ऊतरणी (बी)-देखो 'उतरणी' (बी) ।

ऊतरायण-देखो 'उतरायण' ।

ऊतलीबळ-देखो 'अतिबळ' ।

ऊतारणी (बी)-देखो 'उतारणी' (बी) ।

ऊतारी-देखो 'उतारी' ।

ऊताळी-देखो 'उतावळी' (स्त्री० ऊताळी) ।

ऊतावळी (नी)-देखो 'उतावळी' ।

उतावळ, उतावळी-देखो 'उतावळी' । (स्त्री० उतावळी) ।

ऊतम-देखो 'उत्तम' ।

ऊतोलणी (बी)-देखो 'उतोलणी' (बी) ।

ऊतील-वि० अन्यधिक, भरपूर ।

ऊय-क्रि० वि० वहाँ ।

ऊयणी-वि० (स्त्री० उयणी) मिटाने वाला, उन्मुलन करने वाला, नाश या नष्ट करने वाला ।

ऊयणी, (बी), ऊयणी, (बी)-देखो 'उयणी' (बी) ।

ऊयल-देखो 'उयल' ।

ऊयलणी (बी)-देखो 'उयलणी' (बी) ।

ऊयल-पयल (पुथल, पूथल)-देखो 'उयल-पुथल' ।

ऊयापणी (बी)-देखो 'उयापणी' (बी) ।

ऊयालणी (बी)-१ देखो 'उयलणी' (बी) । २ देखो 'उयापणी' (बी) ।

ऊयि (थी)-देखो 'उयि' ।

ऊयेइणी (बी)-देखो 'उयेलणी' (बी) ।

ऊयेल-देखो 'उयेल' ।

ऊयेलणी (बी)-देखो 'उयेलणी' (बी) ।

ऊदंगळ-देखो 'उदंगळ' ।

ऊद (ण)-पु० १ गाड़ी का मुख्य उपकरण । २ डोंडी, घोषणा । ३ देखो 'ऊदबिलाव' ।

ऊदक-पु० १ आतंक । २ देखो 'उदक' ।

ऊदड़ी (डी)-वि० एक मुश्त, एक साथ ।

ऊदधि-देखो 'उदधि' ।

ऊदबिलाव-पु० बिलाव नामक प्राणी ।

ऊदम-देखो 'उदम' ।

ऊदमाव-देखो 'उदमाद' ।

ऊदळणी (बी)-क्रि० १ स्त्री का किसी पर पुरुष के साथ भाग जाना । २ आचारा फिरना या घूमना ३ अपहरण होना ।

ऊदळवाली-वि० असामाजिक ढंग से किसी के साथ भाग जाने वाली युवती ।

ऊदाळ, ऊदाळू-वि० उद्योगी, परिश्रमी ।

ऊदाळणी (बी)-क्रि० [सं० उद्गलिन] बलात् छीन कर लेना । छीन लेना ।

ऊदेइ (ई)-देखो 'उदई' ।

ऊदेक-देखो 'उद्रेक' ।

ऊदमणी (बी)-क्रि० दौड़ना, भागना ।

ऊधंणी-वि० कलह प्रिय । उत्पाति ।

ऊध-पु० १ मादा पशुओं का ऐस । २ देखो 'ऊद' ।

ऊधइणी (बी)-देखो 'उधइणी' (बी) ।

ऊधड़ी-वि० १ एक मुश्त । २ सामूहिक । ३ ठेके में । ४ सब नमस्त । -क्रि० वि० किस तौल व भाव किये ।

ऊधम-१ देखो 'उधम' । २ देखो 'उधम' ।

ऊधमणी-वि० १ मस्त, मन-मोजी । २ दानी ।

ऊधमणी (बी)-क्रि० १ दान करना । २ आमोद-प्रमोद में खर्चा करना । ३ बहादुरी दिखाना । ४ उद्दंडता या उपद्रव करना ।

ऊधमा-स्त्री० १ मौज, मस्ती । २ उत्सव ।

अधमी-वि० १ उपद्रवी, उद्दंड । २ बहादुर । ३ देखो 'उद्यमी' ।
 अधरणी (णी)-देखो 'उद्धरणी' ।
 अधरणी (बी)-देखो 'उद्धरणी' (बी) ।
 अधरी-वि० (स्त्री० अधरी) १ उत्तुंग, ऊंचा । २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ ।
 ३ बहुत, प्रधिक, अपार । ४ जोशपूर्ण । ५ तीव्र विकट
 उप्र । ६ दानशील, दानी । ७ सरल मोधा, अनुकूल ।
 -सं० पु० मस्तर ऊपर उठाए हुए चलने वाला बैल ।
 अधली (बी)-देखो 'उदली' (बी) ।
 अधस-पु० [सं० अधस, अधस्य, अध्वं] १ दूध, पय । २ पशुओं के
 स्नान । ३ ऊंचा, उच्च । ४ सूखी खांसी । ५ देखो 'उधार' ।
 अधसणी (बी)-क्रि० १ स्पर्ण करना, छूना, रगड़खाना । २ लड़-
 खड़ाना, लड़वणकर मारना ।
 अधमणी (बी)-देखो 'उधमणी' (बी) ।
 अधारणी (बी)-देखो 'उद्धारणी' (बी) ।
 अधारिणी-देखो 'उधारिणी' ।
 अधूल-वि० वीर बहादुर ।
 अधोलणी (बी)-क्रि० धूलि से ढकना, आच्छादित करना ।
 अधी-पु० [सं० उद्धव] श्रीकृष्ण का मित्र, उद्धव ।
 ऊक्वनी-स्त्री० ऊंची या तेज ध्वनि ।
 ऊनंग-देखो 'उनंग' ।
 ऊन-स्त्री० [सं० ऊर्ण] १ भेड़-बकरी के बाल । २ इन बालों
 का ढेर । ३ इन बालों का डोरा । ४ उष्णता ।
 ५ जोश, आवेग । ६ श्रोत्र । ७ ऊपर । [सं० ऊन्] ८ छोटी
 तलवार -वि० कम, थोड़ा, अल्प । -अधोड़ी-स्त्री० एक
 प्राचीन सरकारी लगान ।
 ऊनकूल-देखो 'अनुकूल' ।
 ऊनणी (बी) ऊनमणी (बी)-देखो 'उमड़णी' (बी) ।
 ऊनथ-देखो 'उनथ' ।
 ऊनपु-वि० [सं० उन्नत] 'उन्नत' ।
 ऊनवणी (बी)-देखो 'उमड़णी' (बी) ।
 ऊनांगी-देखो 'उनंग' ।
 ऊना-स्त्री० एक प्रकार की ईरानी तलवार । -क्रि० वि०
 इस ओर, इसर ।
 ऊनामणी (बी)-क्रि० १ प्रहार के लिए शस्त्र निकालना ।
 २ नंगा होना । निरावरण होना ।
 ऊनाणी-देखो 'उनंग' (स्त्री० ऊनांगी) ।
 ऊनाळ-देखो 'उनाळी' ।
 ऊनाळी (झु)-देखो 'उनाळी' ।
 ऊनाळी-देखो 'उनाळी' ।
 ऊनियी-[सं० ऊर्ण] छोटा मंडा, भेड़ का बच्चा ।
 ऊनी-वि० १ ऊपर का, ऊन संबंधी । २ ऊन का बना । ३ गर्म
 उष्ण । ४ देखो 'उनि' ।

ऊनीवरी-स्त्री० बारह प्रकार के तप में दूसरा तप जिसके
 अन्तर्गत जितनी भूख हो उससे कम आहार किया
 जाता है । (जैन)
 ऊनी-वि० [सं० उष्ण] (स्त्री० ऊनी) उष्ण, गर्म ।
 ऊनाळी-देखो 'उनाळी' ।
 ऊना-क्रि० वि० उम तरफ ।
 ऊनाळह (ळउ, ली)-देखो 'ऊनाळी' ।
 ऊनाळगम-पु० [सं० उष्णकालगम] शोधम ऋतु, उष्णकाल ।
 ऊनाळी (ह)-देखो 'उनाळी' ।
 ऊनी-देखो 'ऊनी' ।
 ऊप-वि० [सं० उपम] १ समान, तुल्य । २ उपम लायक ।
 -क्रि० वि० ऊपर ।
 ऊपड़णी (बी)-देखो 'उपड़णी' (बी) ।
 ऊपजणी (बी)-देखो 'उपजणी' (बी) ।
 ऊपजस-देखो 'प्रपजस' ।
 ऊपजणी (बी)-देखो 'उपजणी' (बी) ।
 ऊपटणी (बी) ऊपटणी (बी)-देखो 'उपटणी' (बी) ।
 ऊपनणी (बी) ऊपनणी (बी)-क्रि० १ उत्पन्न होना, पैदा
 होना । २ उपार्जन होना । ३ उपजना ।
 ऊपनी-वि० (स्त्री० ऊपनी) १ पैदा हुवा हुआ । २ प्रकृतित ।
 -पु० विक्रय की आश ।
 ऊपम-देखो 'उपमा' ।
 ऊपर (रि)-क्रि० वि० [सं० उपरि] १ ऊंचाई या ऊंचे स्थान
 पर । २ आकाश की ओर । ३ आवाज या सहारे पर ।
 ४ ऊपर की ओर । ५ ऊपरी सतह पर । ६ प्रकट या
 सामने । ७ उच्च श्रेणी में । ८ तट पर । ९ अतिरिक्त तौर
 पर । १० प्रथम, पहले । -स्त्री० १ सहायता, मदद । २ रक्षा ।
 ३ दया, कृपा । ४ संरक्षण । -वि० १ अधिक, ज्यादा ।
 २ अतिरिक्त । ३ प्रतिकूल । -छूंटनी, छूंटो-वि० अति-
 रिक्त । -तळ-क्रि० वि० एक पर एक, लगातार ।
 -नेत, नैत-स्त्री० एक प्रकार की घेंट । -माळ-स्त्री०
 पहाड़ के ऊपर की भूमि । -वट-पु० दो में से एक पक्ष ।
 स्त्री० अधिकता । -क्रि० वि० बढ़कर । -वाड़ी=
 'उपरवाड़ी' । -वाड़ी='उपरवाड़ी' । -सांपर-स्त्री०
 निगरानी, देखभाल, सहायता ।
 ऊपरकीयां-स्त्री० स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष ।
 ऊपरची-पु० १ सहायता, मदद । २ रक्षा ।
 ऊपरट-वि० विशेष, अधिक ।
 ऊपरणी-स्त्री० पगड़ी पर बांधा जाने वाला वस्त्र ।
 ऊपरलीपुल, (रत)-स्त्री० १ बर्बा ऋतु । २ इस ऋतु के पूर्व या
 पश्चात् का समय । ३ दैनिक अवसर । ४ अवसर ।

ऊपरलो

(१६२)

ऊरड़ाणी

ऊपरलो-पु० ईश्वर, परमात्मा । -वि० (स्त्री० ऊपरली)
 १ ऊपर वाला । २ ऊपर का । ३ उस्ताद । ४ बलवान ।
 ऊपरबाड़ (डो)-वि० १ थोड़ा, बढ़िया । २ देखो 'उपरवाड़ी' ।
 ३ देखो 'उपरवाड़ी' ।
 ऊपरऊपरी-देखो 'उपराऊपरी' ।
 ऊपरांठी-१ देखो 'उपरांठी' । २ देखो 'अपूठी' ।
 ऊपरा-देखो 'ऊपर' ।
 ऊपरि, (री)-वि० १ ऊपर का । २ अतिरिक्त । ३ मुख्य के
 मिवाय । ४ बाहरी । ५ विदेशी । ६ पराया ।
 ७ देखो 'ऊपर' ।
 ऊपरे (रं)-क्रि० वि० ऊपर, पर ।
 ऊपठो (ठौ)-स्त्री० १ गाड़ी के थाटे या खाट में चौड़ाई की
 ओर लगने वाली लकड़ी । २ चौड़ाई का हिस्सा ।
 ऊपल्लाणी-वि० बिना चारजामा का ऊंट या घोड़ा ।
 ऊपसणी (बो)-क्रि० रोटी का आंच पाकर फूलना, ऊपर
 उठना । २ क्रोध करना । ३ आवेग में आना । ४ चोट
 लगने से अंग की चमड़ी फूलना ।
 ऊपहरी-वि० १ विशेष, अधिक । २ पृथक, दूर, अलग ।
 ऊपांत-वि० [सं० उपांत्य] अन्त वाले से पूर्व का ।
 -तिथि-स्त्री० मासांत की चतुर्दशी । मासांत के पहले
 का दिन ।
 ऊपान-वि० क्रुद्ध, कुपित ।
 ऊपाई-देखो 'उपाय' ।
 ऊपाड़-पु० १ नाश, विनाश । २ सूजन । ३ फोड़ा । ४ खर्च ।
 ऊपाड़णी (बो)-देखो 'उपाड़णी' (बो) ।
 ऊपाणी(बो)-क्रि० १ उत्पन्न करना, पैदा करना, उपार्जन करना ।
 २ देखो 'उपाणी' (बो) ।
 ऊपाव-१ देखो 'उपाय' । २ देखो 'उपाव' ।
 ऊपावणी (बो)-देखो 'उपावणी' (बो) ।
 ऊप्रवट-देखो 'उप्रवट' ।
 ऊफणणी(बो)-क्रि० [सं० उत्फणनम्] १ उबलना, उफान आना ।
 २ अनाज को हवा में उछाल कर साफ करना । ३ जोश में
 आना । ४ उमड़ना । ५ कोप करना । ६ हृद से
 बाहर होना ।
 ऊफणणी (बो)-क्रि० हैशान होना, परेशान होना, तंग होना ।
 ऊफरांठउ (ठो)-देखो 'अपूठी' (स्त्री० ऊफरांठी) ।
 ऊफराटी (ठो)-वि० (स्त्री० ऊफराटी) चितातुर, उद्विग्न ।
 ऊबंध (धि, धी)-वि० [सं० उद्बंधन] १ बंधन रहित, मुक्त ।
 २ अमर्यादित । ३ अपार, असीम । ४ उद्दण्ड, बदमाज ।
 ऊबंधर (रो, री)-वि० १ ऊंचा । २ बहादुर । ३ शक्तिशाली,
 समर्थ । ४ ओजस्वी । ५ कांतियवान । ६ माहमी ।

ऊब-स्त्री० १ खिन्नता, उकताहट । २ अरुचि । ३ परेशानी ।
 ४ आकुलता । ५ घबराहट । ६ धीमी गति से लगातार ।
 बरसने वाले बादल । ७ खड़ा रहने का ढंग । -छठ-स्त्री०
 भाद्रव कृष्णा षष्ठी । इस तिथि का व्रत ।
 ऊबकणी (बो)-क्रि० १ कै करना, दमन करना । २ जोश करना ।
 ३ ऊंचा होना । ४ उगलना । ५ उमड़ना । ६ द्रव पदार्थ का
 आधिक्य के कारण ऊपर उठना ।
 ऊबकौ-पु० मोकाई, मिचली की पूर्वावस्था ।
 ऊबगणी (बो)-देखो 'ऊबकणी' (बो) ।
 ऊबड़खाबड़-देखो 'उबड़खाबड़' ।
 ऊबड़णी (बो)-क्रि० १ उलटना । २ खुलना । ३ उभरना, ऊपर
 उठना । ४ फटना । दरार पड़ना । ५ विदीर्ण होना ।
 ऊबड़िणी-पु० रहट के चक्र के मध्य का सीधा लंबवत काष्ठ या
 लोहका दण्ड ।
 ऊबड़ी-स्त्री० एक प्रकार की घास ।
 ऊबट-क्रि० वि० [सं० उदवृत्त] १ बिना रास्ते, बेवाट ।
 २ उजड़ । -वि० विरुद्ध, विपरीत ।
 ऊबटणी-देखो 'उबटणी' ।
 ऊबटणी (बो)-देखो 'उबटणी' (बो) ।
 ऊबटी-पु० चारजामे का रसा ।
 ऊबणी (बो)-क्रि० १ खिन्न होना । २ उदास होना । ३ परेशान
 होना । ४ अरुचि की दशा में होना । ५ उकताना । ६ देखो
 'ऊबणी' (बो) ।
 ऊबता (ताळ)-स्त्री० हाथ उठा कर खड़े मनुष्य की ऊंचाई
 का माप, पुरुष ।
 ऊबताल-क्रि० वि० यथाशक्त ।
 ऊबर-१ देखो 'ऊपर' । २ देखो 'अभीर' ।
 ऊबरणी-पु० रक्षा वाद ।
 ऊवरणी (बो)-क्रि० १ उद्धार पाना । २ मृत्यु होना । ३ बचना,
 रक्षा पाना । ४ अमर होना, बचना, शेष रहना ।
 ऊबराव-देखो 'अमराव' ।
 ऊवरिणी-देखो 'ऊबड़िणी' ।
 ऊबळ-वि० चंचल ।
 ऊबह-पु० [सं० उदधि] समुद्र ।
 ऊबाणणी (बो)-देखो 'उबाणणी' (बो) ।
 ऊबाणी-देखो 'उबाणी' । (स्त्री० ऊबाणी) ।
 ऊबांबर (री)-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ माहमी । ३ वीर
 बहादुर ।
 ऊबाऊब-क्रि० वि० यथाशक्त, खड़े-खड़े, अवातक ।
 ऊबाड़णी (बो)-क्रि० १ खड़ा करना । २ उखेड़ना । उन्मूलन
 करना ।

ऊबाड़ी

(१६३)

ऊरयो

ऊबाड़ी-पु० कुचवन, अपशब्द । -वि० १ अपशब्द कहने वाला ।

२ विरुद्ध, विपरीत ।

ऊबाणी (बो)-देखो 'ऊबाणी' (बो) ।

ऊबारणी (बो)-देखो 'उबारणी' (बो) ।

ऊबारी-देखो 'उबारी' ।

ऊबास (सो, सौ)-देखो 'उबासी' ।

ऊबाहणी-१ देखो 'उबाहणी' ।

ऊबियोवगार-पु० विना छींक का साम ।

ऊबोठ-वि० निविड़, गाढ़ा, घना ।

ऊबेड़खंभ-वि० बलवान, शक्तिशाली ।

ऊबेड़णी (बो)-देखो 'उबेड़णी' (बो) ।

ऊबेड़ी-वि० १ दाहिनी ओर से आने वाला (भेड़िया) । २ दाहिनी ओर से बोलने वाला (तीतर) । ३ विरुद्ध, विमुख ।

ऊबेछाज-पु० [सं० उच्छर्षण] अनाज साफ करने की एक क्रिया ।

ऊबेल-स्त्री० १ सहायता, मदद । २ रक्षा । ३ क्षरण । -वि० रक्षक । सहायक ।

ऊबेलणी (बो)-देखो 'उबेलणी' (बो) ।

ऊबेजू-वि० सहायक, रक्षक ।

ऊबेली-देखो 'उबेल' ।

ऊबोड़ी-देखो 'ऊबोड़ी' (स्त्री० ऊबोड़ी) ।

ऊब्राणी-देखो 'उबांगी' (स्त्री० उब्राणी) ।

ऊभ-स्त्री० १ खड़े होने की क्रिया या भाव । २ देखो 'ऊब' ।

ऊभणी (बो)-क्रि० १ खड़ा होना । २ ठहरना ।

ऊभति-पु० [सं० उद्भक्ति] खराब भात ।

ऊभरणी (बो)-क्रि० १ धारण करना । उठाए हुए रखना । २ उठाना । ३ शोभा देना ।

ऊभराणी-देखो 'उबांगी' । (स्त्री० ऊभराणी) ।

ऊभसूक-पु० खड़ा हुआ सूखा वृक्ष ।

ऊमाणी (बो)-क्रि० १ खड़ा करना । २ ठहराना ।

ऊमापणां, ऊमाताळ-क्रि० वि० अचानक, सहसा । तुरन्त । खड़े-खड़े ।

ऊमारणी (बो)-देखो 'उभरणी' (बो) ।

ऊमोकेटाळी-स्त्री० वृद्धती कंटाळी ।

ऊमोड़ी, ऊमी-वि० (स्त्री० ऊमी, ऊमोड़ी) १ खड़ा हुआ । २ मीधा ऊपर उठा हुआ ।

ऊसंगणी (बो)-देखो 'उसंगणी' (बो) ।

ऊमंड-स्त्री० [सं० उन्मण्डन] १ वाढ़, बढ़ाव । २ घिराव । ३ घावा, हमला । ४ आवेज ।

ऊमंडणी (बो)-देखो 'उमंडणी' (बो) ।

ऊम-देखो 'ऊब' ।

ऊमड़णी, (बो), ऊमटणी, (बो)-देखो 'उमड़णी' (बो)

ऊमण-वि० १ उत्सुक, व्याकुल । २ उदासीन, चिंतित ।

३ खिन्न । -दूमणी (णी)-वि० खिन्न, उदास ।

ऊमतो-देखो 'उतमत' ।

ऊमदा-देखो 'उमदा' ।

ऊमर-१ देखो 'उमर' । २ देखो 'अमीर' ।

ऊमरड़-वि० १ जोश पूर्ण । बलवान, शक्तिशाली । २ विरुद्ध । -पण, णी-पु० जोश । बल । शक्ति ।

ऊमरवराज-वि० दीर्घायु ।

ऊमरो-पु० १ हल को लकीर, सीता । २ देखो 'अमराज' ।

ऊमस-देखो 'उमस' ।

ऊमहणी (बो)-क्रि० १ उमंगित होना, उत्साहित होना । २ उमड़ना । ३ उठना, उभरना । ४ उत्साह युक्त होना, उमंग युक्त होना ।

ऊमाणी (बो)-देखो 'उमाहणी' (बो) ।

ऊमाह, ऊमाही-देखो 'उमाव' ।

ऊमिधा-देखो 'उमा' ।

ऊमी-देखो 'उम्मी' ।

ऊमीणी-देखो 'उमीणी' (स्त्री० ऊमीणी) ।

ऊपड़-सर्व० उस, वह ।

ऊरंग-देखो 'उर' । देखो 'उरग' ।

ऊरंगी-वि० खिन्नचित्त, उदास ।

ऊरड़ (ढ)-देखो 'उरड़' ।

ऊर-वि० [सं० ऊर] ग्रीव । अपर । स्त्री० जंघा, जांघ । देखो 'उर' ।

ऊरज-वि० [सं० ऊर्ज] बलवान । जवरदस्त ।

ऊरजस-देखो 'उरजस' ।

ऊरण-पु० [सं० ऊरणः] १ मंडा, मेघ । २ देखो 'उरण' देखो 'उरिण' । -नाभ-स्त्री० मकड़ी ।

ऊरणा-स्त्री० [सं० ऊर्णा] १ ऊन । २ चित्ररथ-गंधर्व की स्त्री ।

ऊरणिणी-देखो 'उरणिणी' ।

ऊरणी-स्त्री० १ मादा भेड़ । २ एक प्रकार का ओठों का रोग ।

ऊरणी (बो)-क्रि० १ चक्की में अनाज डालना । २ सेन में अनाज बोना । ३ युद्ध में घोंड़े भोंकना । ४ मुट्ठियों भर-भर खाना । ५ आक्रमण करना । ६ घिराना, डालना ।

ऊरध-देखो 'उरध' ।

ऊरधपाद-पु० एक प्रकार का आमन । एक कीड़ा विशेष ।

ऊरधपुंड-पु० लनाट का खड़ा तिलक ।

ऊरधबाहु-वि० एक बाहु ऊपर उठाकर तपस्या करने वाला ।

ऊरबांगो-देखो 'उबांगी' (स्त्री० ऊरबांगी) ।

ऊरबी-पु० १ आशा, उम्मीद । २ भरोसा विश्वास । ३ इज्जत ।

ऊरमि, (बो) ऊरम्म-स्त्री० [सं० ऊर्मी] १ लहर, तरंग ।
 २ कपड़े की मलबट । ३ पीड़ा, कष्ट । ४ छै की संस्था ।
 --माळ, माळा, माळी, म्माळ-पु० समुद्र, नागर ।
 ऊरवड़ (वड़) -देखो 'उरवड़' ।
 ऊरवांगी-देखो 'उवांगी' (स्त्री० ऊरवांगी) ।
 ऊरि-देखो 'उर' ।
 ऊरिण-देखो 'उरग' ।
 ऊरु (रु)-स्त्री० [सं०] जांघ, जंघा । -ज-वि० जांघ से उत्पन्न ।
 -पु० वैश्य जाति । बल । --त्र-स्त्री० रान । रान का कवच ।
 ऊरेड़ी, ऊरेड़ी-पु० बलात् घंसने की क्रिया ।
 ऊळ-पु० नेत्रों में होने वाला दात नाड़ी शूल ।
 ऊल-स्त्री० १ चमड़े की भिल्ली । २ जिह्वा का मेल ।
 ऊलकणी (बो)-कि० कुदाना, छलांग भराना ।
 ऊळखणी (बो)-देखो 'मोळखणी' (बो) ।
 ऊलग-देखो 'अलग' ।
 ऊलजणी (बो) ऊळजणी (बो)-देखो 'अळजणी' (बो) ।
 ऊसजाणी (बो) ऊलजाणी (बो)-देखो 'अळजाणी' (बो) ।
 ऊसजुल-वि० अंत-संत । असंबद्ध । नासमझ, असम्य ।
 ऊलट-पु० उमंग, जोश, उत्साह, आवेग ।
 ऊलटणी (बो)-देखो 'उलटणी' (बो) ।
 ऊलकल-पु० १ उत्पात, उपद्रव । २ नखरा । ३ अनावश्यक खर्च ।
 ऊलरणी (बो)-देखो 'मोलरणी' (बो) ।
 ऊलळणी (बो), ऊललणी (बो)-देखो 'उलळणी' (बो) ।
 ऊलसणी (बो), ऊलसणी (बो)-देखो 'उलसणी' (बो) ।
 ऊला-वि० १ निकट पास, नजदीक । २ विपरीत, उल्टा ।
 -कि० वि० इधर ।
 ऊलाळणी, (बो), ऊलाळणी, (बो)-देखो 'उलाळणी' (बो) ।
 ऊली-वि० वि० इस ओर । -वि० इस ओर की, इधर की, नजदीक वाली । -मर्व० इस ।
 ऊलेचणी (बो)-देखो 'उलोचणी' (बो) ।
 ऊलेभोउ-देखो 'मोळभी' ।
 ऊलेरन-पु० गर्व, दप ।
 ऊलोड़ी, ऊलो-वि० (स्त्री० ऊलोड़ी, ऊली) १ इधर वाला ।
 २ नजदीक वाला । -पैली-वि० इधर-उधर का ।
 ऊलोच-पु० चंदोवा ।
 ऊल्क-देखो 'उल्का' ।
 ऊवकणी (बो)-देखो 'ऊवकणी' (बो) ।
 ऊवट-देखो 'ऊवट' ।
 ऊवटणी (बो)-देखो 'उवटणी' (बो) ।
 ऊवट्ट-देखो 'ऊवट' ।

ऊवडणी (बो)-देखो 'उमडणी' (बो) ।
 ऊवरणी (बो)-देखो 'ऊवरणी' (बो) ।
 ऊवर, ऊवरि-देखो 'ऊर' ।
 ऊवळणी (बो)-१ वचना शप रहना । २ देखो 'उवळणी' (बो) ।
 ऊवत्स-वि० [सं० उदवत्स] निर्जन, जनशून्य ।
 ऊवहणी (बो)-कि० १ ऊंचा होना । २ वचना ।
 ऊवा, ऊवा-सर्व० वे, उन्होंने । -कि० वि० वहाँ ।
 ऊवाड़ी-१ देखो 'उवाड़ी' । २ देखो 'प्रवाड़ी' ।
 ऊवारणी (बो)-देखो 'उवारणी' (बो) ।
 ऊवाळ-१ देखो 'ऊहाळ' । २ देखो 'मोळ' ।
 ऊवेखणी (बो)-कि० उपेक्षा करना ।
 ऊवेलणी (बो)-देखो 'उबेलणी' (बो) ।
 ऊवेळी-वि० (स्त्री० ऊवेळी) श्लाघा-मुक्त, उच्छ्लाघ ।
 ऊवं-सर्व० वे ।
 ऊवो-सर्व० वह, उस ।
 ऊस-पु० १ मादा पशु का ऐन । २ श्वार । ३ अक्षय ।
 ऊसनउ-वि० [सं० अवसन्न] उत्पन्न, खिन्न, अवसन्न ।
 ऊसमक-पु० [सं० उष्मक] १ गरमी, तप, तपन ।
 २ ग्रीष्म ऋतु ।
 ऊसर-पु० १ अनउपजाऊ भूमि । २ असुर -वि० कटु, कड़वा ।
 ऊसरणी (बो)-देखो 'उसरणी' (बो) ।
 ऊसराण-देखो 'असुर' ।
 ऊसस-पु० १ जोश, आवेग ।
 ऊससणी (बो)-कि० [सं० उत्-श्वसति] १ जोश में आना ।
 २ उठना । ३ जोश में शरीर का फूलना, फैलना बढ़ना ।
 ४ बढ़ना । ५ उमंग युक्त होना । ६ जोश में आना । ७ तेज गति से श्वास लेना ।
 ऊसा-देखो 'उसा' ।
 ऊसारणी (बो)-देखो 'उगारणी' (बो) ।
 ऊसारी-पु० बरामदा ।
 ऊसासणी (बो)-कि० बांध या किनारे फोड़ कर निकलना ।
 तेजी से श्वास लेना ।
 ऊसीसी-देखो 'मोसीसी' ।
 ऊह-पु० तक । विचार । -मर्व० वह ।
 ऊहरण-देखो 'गरण' ।
 ऊहविणी (बो)-कि० विचार करना । तक-वितर्क करना ।
 ऊहा-अव्य० मोह, मोह (ध्वनि) । -पु० १ अनुमान । २ विचार ।
 ३ तक, दलील । ४ किंवदंती ।
 ऊहाड़ी-देखो 'उवाड़ी' ।
 ऊहाळ-पु० [सं० उहावलि] जल के साथ बहने वाला कुड़ा ।
 ऊहो-कि० वि० उस तरफ । -सर्व० वहाँ ।

--ए--

ए-देवनागरी वर्णमाला का सातवाँ स्वर-वर्ण ।

एकार, एकारी, ऐंठ-पुं १ मन मुटाव । २ अनादर सूचक संबोधन । ३ अस्पष्ट ध्वनि । ४ देखो 'ऐंठ' ।

एंघाण-देखो 'इंधण' ।

एंब्रुल्लेस-स्त्री० [ग्र०] रोमीबाहन ।

ए-पुं [सं०] १ विष्णु । २ सूर्य । ३ जेपनाग । ४ जीव । ५ द्विज । ६ दालक । ७ दानव । ८ बाण । -स्त्री० ९ अनुसूया । १० अनुकम्पा । -वि० १ संबंधी । २ सिद्ध । ३ बुद्धिमान । ४ उद्यत, तैयार । ५ द्वेषी । -अव्य० हे, अरे । -मर्व० ये, यह, इस ।

एअ, एउ-सर्व० यह, इस । -क्रि० वि० ऐसा ।

एककार-देखो 'एकाकार' ।

एकंग-वि० एकंग, अकेला ।

एकंगी-वि० (स्त्री० एकंगी) एक ही रंग व एक ही स्वभाव में रहने वाला ।

एकंत, (ति, तो, तु), एकथ-देखो 'एकांत' ।

एक-पुं [सं०] १ अंक माला की प्रथम इकाई, एक की संख्या, १ । २ इकाई । ३ विष्णु -वि० १ दो से आधा, एक केवल । २ जो इकाई के रूप में ही । ३ पहला, प्रथम । ४ अद्वितीय, बेजोड़ । ५ मुख्य, प्रधान । ६ अकेला, एकाकी । ७ सत्य । ८ भेद रहित, एक रूप । ९ इकहरा । १० हड़ । ११ अपरिवर्तित । १२ समान । १३ कोई । -क-वि० अकेला । असहाय । निराला । -कारण-पुं शिव, महादेव । -कुंडल-पुं जेपनाग । -ग-क्रि० वि० एक साथ । -प्र-एकप्र । -चक्र-पुं सूर्य । सूर्य का रथ । चक्रवर्ती । -चख-वि० एक आँख वाला । काना । -पुं काग । शिव का मामातर । शुक्राचार्य । -छत्र-पुं वह राज्य या राजा जिस पर किसी का अधिकार न हो । पूर्ण स्वतंत्र । -क्रि० वि० एकाधिकार से, निरंतर । -ज-पुं प्रवाहण, शुद्ध । राजा । -वि० एक-मात्र । -टगी-वि० संगड़ा । -टक-क्रि० वि० निनिमेष, लगातार । -टकी-स्त्री० टकटकी । स्तब्धदृष्टि । -डंकी-इकाई । -ढाल-स्त्री० मूठ सहित एक धातु की कटार । -ढाल-वि० एक समान, सत्य, तुल्य । -ढालियो-पुं कच्चे मकान के किमी कक्ष के आगे बना डरवा छप्पर । -तरखी-वि० एक पक्ष का । पक्षपात युक्त । एकपक्षा । -ता-स्त्री० प्रेम, मेल-जोल । संगठन की आवन । समावना । -तारी-पुं एक

तार का वाद्य । -ताळ-पुं एक रस, एक स्वर, समताल । -वंत, वंतौ, वसन-पुं गजानन, गणेश । हाथी विशेष । एक की संख्या । -नथन-पुं कौम्रा । कुबेर । शुक्राचार्य । काना । -पग, पिंग-पुं कुबेर । -पत, पति-स्त्री० पतिव्रता । -मंडळ-पुं वह छोड़ा जिसके नेत्र की पुतली सफेद हो । -मते, मतं-क्रि० वि० एक मत से । संगठन में । -सनी-वि० एक मत । संगठित । -मुखी-वि० एक मुख या छिद्र वाला । -रंग, रंगी रंगी-वि० समान, तुल्य । निष्कपट । एक सा । एकीभूत । आनन्दित । एक ही स्वभाव या प्रकृति वाला । -रखी, रखी-वि० एक रंग या स्वभाव वाला । -रदन-पुं गणेश, गजानन । -रवा-पुं एक तरफ से टाँचा हुआ पत्थर । -वार-क्रि० वि० एक दफा, एक बार । -रस-एकरंग । -रूप-एक रंग । -वचन-पुं इकाई सूचक शब्द । -देरी-स्त्री० विरहणी । विधवा । -संग-पुं विष्णु । सहवास । -संथ-पुं एकमत । -सरा-वि० सब एक साथ ।

एकड़-पुं [ग्र०] ४८४० वर्ग गज के बराबर कृषि भूमि का एक नाप ।

एकचित-वि० एकाग्रचित्त, तन्मय ।

एकट, (ठ), एकठी-वि० [सं० एकस्थकः] (स्त्री० एकठी) एकचित, इकट्ठा । -क्रि० वि० एक साथ, साथ-साथ ।

एकडा-क्रि० वि० एक स्थान पर । -वि० एकचित, इकट्ठा ।

एकण (णि, णी)-वि० १ एक, एकही । २ अकेला । ३ अद्वितीय । -मल्ल-वि० अद्वितीय वीर । -साथ-क्रि० वि० अकस्मात् । एकदम । एक साथ । समग्र ।

एकताळीस-देखो 'इकताळीस' ।

एकताळीसौ-देखो 'इकताळीसौ' ।

एकत्र-वि० [सं०] १ एक स्थान पर । २ साथ-साथ । ३ सब एक साथ । ४ इकट्ठा ।

एकत्रित-वि० संगृहीत । एकत्र किया हुआ । जमा ।

एकदम-क्रि० वि० १ यकायक, एकाएक, अकस्मात् । २ निरंतर, लगातार ।

एकदाई-१ सम-वयस्क । २ देखो 'एतादा' ।

एकदा-क्रि० वि० एक बार । एक समय ।

एकपत (ति, तो)-स्त्री० पतिव्रता, साध्वी स्त्री ।

एकबारगी-क्रि० वि० १ एक बार में, यत्कृत । २ अकस्मात् । ३ एक दफा ।

एकवात

(१६६)

एकाधपत

एकवात-पु० [अ० इकवात] १ प्रताप, ऐश्वर्य । २ सौभाग्य ।

३ इकवाल स्वीकार ।

एकबीज (बी)-पु० फल में एक ही बीज वाला वृक्ष ।

एकम-स्त्री० प्रत्येक माम की प्रतिपदा तिथि ।

एकमेक-वि० १ बराबर, समान, तुल्य । २ एकाकार । ३ रूप, गुण, वर्ण की दृष्टि से भिन्न न हो । ४ अभिन्न, धुले-मिले ।

एकर, एकरा (रा, रथी)-क्रि० वि० एक बार ।

एकरखी-वि० १ निरन्तर एक ही स्वभाव या प्रकृति में रहने वाला । २ सदा एक ही रूप या अवस्था में रहने वाला ।

एकरसी (सु, सू)-क्रि० वि० एक बार, एक दफा । लगातार ।

एकरार-देखो 'इकरार' ।

ऐकरिये, एकरू-क्रि० वि० एक बार, एक दफा ।

एकल (उ)-पु० अकेला रहने वाला सूअर, बड़ा सूअर । -वि० १ अकेला, एकाकी । २ अद्वितीय वीर ।

एकलखोरी-वि० (स्त्री० एकलखोरी) १ एकाग्रवासी । २ सदा अकेला रहने वाला । २ स्वार्थी, ईर्ष्यालु ।

एकलगड़-पु० सूअर बराह । २ देखो 'एकल' ।

एकलड़ी-वि० (स्त्री० एकलड़ी) १ अकेला । २ एक लटिका या पटवाला ।

एकनबैली-पु० डिंगल का एक गीत विशेष ।

एकलनल (ल)-पु० परब्रह्म, विष्णु । -वि० १ अकेला । २ अद्वितीय वीर ।

एकलवाई-स्त्री० तुहार, मोची बढ़ई आदि का औजार विशेष ।

एकलवाड़-पु० बड़ा व शक्तिशाली सूअर ।

एकलवु-टोणाचार्य के शिष्य एक भील का नाम ।

एकलापी (लापी)-वि० (स्त्री० एकलापी) १ अकेला । २ असहाय । -पु० १ अकेला कार्यकर्ता । २ अकेलापन ।

एकलिंग-पु० शिव का एक रूप ।

एकलि (ली)-वि० एक ।

एकलियो-वि० १ अकेला । २ एक से संबंधित । -पु० एक बैल का हल ।

एकलीम-देखो 'अकलीम' ।

एकलोती-देखी 'इकलोती' ।

एकली-वि० (स्त्री० एकली) अकेला, एकाकी ।

एकलप्रल-देखो 'एकलमल' ।

एकलौ-देखो 'एकली' ।

एकलीस-देखो 'इकलीस' ।

एकसांस, एकसांसियो-देखो 'इकसांसियो' ।

एकसाखियो-देखो 'इकसाखियो' ।

एकसी-वि० (स्त्री० एकसी) एक जैसा, समान, तुल्य ।

एकहत्थी (थी)-देखो 'इकहत्थी' ।

एकांग, (गी)-वि० [सं०] १ एक अंग का । एक पक्ष का । २ एक ओर का । ३ हठी ।

एकाण (रि)-वि० एक ।

एकाणव (वै), एकाणवी-पु० इकवानवां वर्ष । इकवान ।

एकाणी-देखो 'एकासणी' ।

एकांत (ति, ती)-वि० निर्जन, शून्य । सूना । पृथक, छलग । -पु० शून्य-स्थान ।

एकांतरकोण-पु० एक तरफ का कोण ।

एकांतरी-पु० [सं० एक+अन्तर] १ एक दिन छोड़ कर आने वाला दिन । २ एक दिन छोड़कर आने वाला ज्वर । ३ एक के अन्तर से चलने वाला क्रम ।

एकांती-पु० अनन्य भक्त ।

एकांयन, एकांयत-देखो 'एकांत' ।

एका-स्त्री० दुर्गा । वि० एक ।

एकाई-देखो 'इकाई' ।

एकाउलि (लि)-देखो 'एकाउलहार' ।

एकाएक (की)-क्रि० वि० अचानक, अकस्मात् । -वि० इकलौता ।

एकाकार-पु० [सं०] १ रूप, गुण, आकार की दृष्टि से अभिन्नता की अवस्था या भाव । -वि० एक रूप । समान, तुल्य ।

एकाकी-वि० अकेला ।

एकाक्ष-वि० काना । -पु० कौआ । २ शुक्राचार्य ।

एकाक्षरी-वि० एक अक्षर का । -पु० १ एक अक्षर का मंत्र, ओंकार । २ एकाक्षरी छन्द ।

एकापर-देखो 'एकाग्र' ।

एकापर (गारक, गारी)-वि० [सं० एकापारिक] १ दुष्ट, नीच, पतित । २ चोर ।

एकाग्र-वि० [सं०] १ अचंचल, स्थिर । २ ध्यानावस्थित । ३ एकाग्रचित्त । -चित्त-वि० चित्त या वृत्ति को एक जगह केन्द्रित किए हुए । ध्यानावस्थित । -ता-स्त्री० चित्त की स्थिरता । स्थिरता । मनोयोग ।

एकातपत्र-वि० एक छत्र । सार्वभौम । चक्रवर्ती ।

एकात्मा-स्त्री० एकता, अभिन्नता, एक रूपता । आत्मिक एकता ।

एकावस-वि० [सं० एकादश] दश और एक, ग्यारह । -पु० ग्यारह की संख्या, ११ । -छत्र-पु० हनुमान । छत्रगण ।

एकादसी-स्त्री० [सं० एकादशी] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, ग्यारस ।

एकाधपत, एकाधपति, एकाधपत्त, एकाधपत्ति, एकाधपत्य-पु० [सं० एकाधपत्य] १ पूर्ण प्रभुत्व की अवस्था, एकाधिकार । २ महान् योद्धा । ३ चक्रवर्ती सम्राट् ।

एकाबादर, एकाबाह्वर-देखो 'इकावहादुर' ।

एकार-पु० १ वर्णमाला का 'ए' स्वर । २ देखो 'एकार' ।

एकारकी-वि० (स्त्री० एकारकी) एक बार की । एक इफा की ।

एकारां, एकारां-कि० वि० एक बार । एक समय ।

एकावन-देखो 'इकावन' ।

एकावनी-देखो 'इकावनी' ।

एकावल्हार-पु० एक प्रकार का भ्रूल्यहार ।

एकावलि, (ळी)-स्त्री० १ एक से सौ तक की गिनती । २ एक-लड़ी की माला । ३ एक प्रकार का अर्थालंकार । ४ एक प्रकार का आभूषण ।

एकावणी, एकासणी-पु० १ दिन में एक बार एक आसन से किया जाने वाला भोजन । २ उक्त प्रकार का व्रत ।

एकासणी-वि० एकासना व्रत रखने वाला ।

एकसिधो-देखो 'इकियासिधो' ।

एकावित-वि० एक पर ही आधारित, आश्रित ।

एकाम्री-वि० अकेला ।

एकाहिक-वि० एक दिन का, एक दिवसीय ।

एकी-स्त्री० १ इकाई । २ अविभाज्य संख्या । ३ छात्र द्वारा एक अंगुली उठा कर अध्यापक को दिया जाने वाला पेशाब का संकेत । -वि० एक । -करण-पु० एकत्रीकरण, संग्रह । मिलाकर एक करने की क्रिया । -बेकी-पु० एक राजस्थानी खेल ।

एकीस-देखो 'इक्कीस' ।

एकीसार-वि० समान, एकसा ।

एकी-कि० वि० एक-एक करके, क्रमशः । एक ही । -वि० (स्त्री० एकी) प्रत्येक, हरेक ।

एकींद्रिय (त्री)-वि० [सं०] १ अपनी इन्द्रियों को विषयों से हटाकर मन में केन्द्रित करने वाला । २ एक ही इन्द्रिय वाला ।

एके, एक-वि० एक । एक और एक । एक मत, एक राय ।

एकोतड़, एकोतड़ी-वि० एक सौ एक । -पु० उक्त प्रकार की संख्या, १०१ । २ देखो 'इकोतर' ।

एकोतर-देखो 'इकोतर' ।

एकोतरसौ-वि० एक सौ एक । -पु० १ एक सौ एक की संख्या, १०१ । २ सप्त द्वजार एक सौ की संख्या, ७१०० ।

एकोतरी-देखो 'इकोतरी' ।

एकोटाई-स्त्री० बूढ़ी का एक आजार ।

एकी (क्की)-पु० १ एक का अंक, १ । २ एकता, संगठन । ३ देखो 'इक्की' ।

एकवांन-देखो 'इकवांन' ।

एखट, एखटी-वि० [सं० एकस्थः] (स्त्री० एखटी) एकत्रित, एक स्थान पर इकट्ठा किया हुआ ।

एगरउ-कि० वि० एक बार, एक समय ।

एगारह-देखो 'ग्यारह' ।

एङ्गरी (बी)-कि० एकत्र करना, संगृहीत करना, जोड़ना । जुड़ बनाना ।

एङ्-छेङ्-कि० वि० इधर-उधर । ओर-ओर पर । ग्रामपास ।

एङ्गी-देखो 'ऐङ्गी' ।

एङ्गी-बेङ्गी-कि० वि० ऊपर-नीचे । -वि० ऐसा-वैसा । -पु० द्विघटक । गगरी ।

एङ्गी-स्त्री० आवाइदेवी की बहन ।

एठित-देखो 'ऐठित' ।

एङ्क (डक)-पु० [सं० एङ्क] मेंढा, भेड़ा ।

एङ्-पु० [सं०] तर भेड़ । -स्त्री० ऐङ्गी ।

एङ्गज-पु० [सं०] पुवाड़, चकवड़ ।

एङ्गी-स्त्री० १ पांव तले का पिछला भाग, एङ् । २ नीचला शिरा ।

एङ्गी-पु० १ हर्ष या शोक का अवसर । २ ईर्ष्या, द्वेष । ३ बर ।

एङ्गी-पु० विशेष अवसर । खास मौका ।

एण-पु० [सं० एणः] (स्त्री० एणी) १ एक जाति विशेष का हरिण, कृष्णमृग । २ हरिण । ३ मृगचर्म, मृगछाला । [सं० अयन] ४ घर, मकान । -सर्व० [सं० एतेन] इस यह । इन । -पताका-स्त्री० चन्द्रमा । -सार-पु० मृगमद, कस्तूरी ।

एणि (णी)-१ देखो 'इणि' । २ देखो 'ण' ।

एतड़ा (डा)-वि० इतने ।

एतत-सर्व० [सं०] यह । -वि० इतना ।

एतबार-पु० [अ०] भरोसा, विश्वास ।

एतबारी-वि० [अ०] जिस पर विश्वास किया जाय, विश्वसनीय ।

एतराज (जी)-पु० [अ०] आपत्ति, विरोध ।

एतलई, एतले (ले)-वि० इतने । -कि० वि० तब तक, अब तक ।

एतली-वि० (स्त्री० एतली) इतना । ऐसा ।

एतां, एता-सर्व० इतने ।

एति, एती-वि० इतनी, ऐसी । -सर्व० इस ।

एतेह-वि० इनना ।

एती-वि० [सं० इयत्] (स्त्री० एती) इतना ।

एथ, (ऐथि) एथिई, एथी, एथीई-कि० वि० यहीं, इस ओर, इधर ।

एघस-पु० [सं०] १ यज्ञ का उध्वन । २ इंधन ।

एधांग-१ देखो 'ईधांग' । २ देखो 'इधांग' ।

एधूली-देखो 'ऐधूली' (स्त्री० एधूली) ।

एन-पु० [मं० घनन] १ रास्ता, मार्ग । [सं० एनम्] २ पाप ।

-क्रि०वि० [अ०] ठीक से । विशेष या खास मौके पर ।

एनांग-देखो 'ऐनांग' ।

एम-क्रि०वि० इस प्रकार ऐसे । सर्व० यह, इस ।

एमो-क्रि०वि० इस ओर ।

एमरत-देखो 'अमरत' ।

एरंड, एरंडियौ-पु० [सं० एरंड] १ रेंडी का पौधा । २ पपीता का पौधा ।

एरंडकाकडी-स्त्री० पपीता ।

एरंडो-स्त्री० ओढ़ने का वस्त्र विशेष ।

एरंडोली-स्त्री० एरंड का बीज ।

एरण-पु० [सं० आहरण] लोहे की चौकी जिस पर लोहार लोहा व मुक्तार सोना-चांदी पीटता है ।

एरस (सौ)-देखो 'ऐरसौ' । (स्त्री० एरसी)

एराक-देखो 'ऐराक' ।

एराकी, एराकी-देखो 'ऐराकी' ।

एरापत-देखो 'ऐरापत' ।

एरावण (यु, वत)-देखो 'ऐरावण' ।

ऐरसौ, ऐरसौ-वि० (स्त्री० एरसी) इतना । ऐसा ।

ऐरी-वि० ऐसा । -अन्य० हे, अरी ।

ऐरी-पु० [सं० एरक] एक प्रकार की घास । -सर्व० ऐसा ।

एळ-१ देखो 'ऐला' । २ देखो 'इळा' ।

एलची-पु० [तु०] १ राजदूत । २ पत्रवाहक । ३ देखो 'इलायची' ।

एलम-देखो 'इलम' । -गीर= 'इलमगीर' ।

एलवळ (थिळी)-पु० [सं० एलविल:] कुबेर ।

एनांग-१ देखो 'ऐनांग' । २ देखो 'ऐनांग' ।

एळा-देखो 'इळा' ।

एला-स्त्री० [सं० एला] इलायची ।

एलाज-देखो 'इलाज' ।

एलाबेला, (बेली)-क्रि०वि० परस्पर विपरीत दिशा में ।

एळियो, (ळियो)-पु० धी-कुमार-रस एक श्रौषधि विशेष ।

एवं, एव-क्रि०वि० [सं०] उसी प्रकार, ऐसे, ही । और, तथा । भी । निश्चय ही । -स्त्री० माहृष्य, समानता ।

एवड़-पु० [सं० अजपटल] १ भेड़ों का झुण्ड, समूह । २ भेड़ चराने वालों से लिया जाने वाला प्राचीन कर ।

एवड़लेवड़-क्रि०वि० अगल-वगल । आस-पास । किनारे पर ।

एवत-पु० [अ०] १ प्रतिफल । २ प्रतिकार, बदला । ३ स्थानापन्न ।

एवजानी-पु० १ प्रतिफल । २ बदला । ३ हरजाना ।

एवजी-स्त्री० १ बदले में काम करने की क्रिया या भाव । २ बदले में काम करने वाला । ३ देखो 'एवज' ।

एवड़, (डु, डी)-वि० [सं० इवत्] (स्त्री० एवड़ी) १ इतना । ऐसा । २ देखो 'एवड़' ।

एवही-वि० (स्त्री० एवही) ऐसा ।

एवाडी-पु० भेड़-बकरी-समूह को रात्रि में बंधाने या रखने का स्थान ।

एवाळ (ळियो, डी)-पु० [सं० अजापाल] १ भेड़ चराने वाला गडरिया । २ भाला । ३ जलाशय के किनारे एकत्र होने वाला ठूड़ा-करकट ।

एवास-देखो 'आवास' ।

एवासी-पु० निवासी ।

एवाही, एवू-वि० (स्त्री० एवाही) ऐसा ।

एवे (वै)-सर्व० वे ।

एस-सर्व० यह । इसका । -क्रि० वि० इस वर्ष ।

एसणासुमति-स्त्री० [सं० एषणा समिति] ४२ प्रकार के दूधण दूर कर शुद्ध आहार प्राप्त करने की गवेषणा ।

एसरब-पु० मुसलमानों का तीर्थ स्थान विशेष ।

एसान-देखो 'एहसान' ।

एह-सर्व० [सं० एय] १ यह, ये । २ इस । -वि० ऐसा ।

एहडली (डी)-वि० (स्त्री० एहडली) १ ऐसा । २ व्यर्थ ।

एहज-सर्व० ये, यही । -वि० इसी । सही ।

एहवू, एहवी-वि० (स्त्री० एहवा, एहवी) ऐसा ।

एहलांग-पु० निशान, चिह्न । स्मृति-चिह्न ।

एहळो-वि० [सं० अफल] (स्त्री० एहळी) निष्फल, व्यर्थ ।

एहवड (वां, वू, वी)-वि० (स्त्री० एहवी) ऐसा ।

एहसांग (सान)-पु० [अ०] १ उपकार । २ भलाई । ३ नेकी । -संब-वि० उपकृत ।

एहास-वि० [सं० एहादश] ऐसा ।

एहि एहिवू, (ही)-वि० १ ये, यही । २ ऐसा ।

एहु, एह-वि० यह । ऐसा । इस प्रकार का ।

एहौ-वि० (स्त्री० ऐही) ऐसा, इस प्रकार का । -अन्य० हे, अरे (संबोधन)

--ऐ--

ऐ-वर्णमाला का आठवां स्वर वर्ण ।

ऐ-अव्यं आशचर्य सूचक या प्रश्न वाचक अव्यय ध्वनि ।

ऐचरण-स्त्री० खिचाव, तनाव ।

ऐचणी (बौ)-क्रि० खींचना, तानना । ऐठना ।

ऐचाताणी-वि० (स्त्री० ऐचाताणी) तिरछा या टेढ़ा देखने वाला ।

ऐठ-देखो 'ऐठ' ।

ऐठो-देखो 'ऐठी' ।

ऐठ (ए)-स्त्री० १ झकड़, ऐठन । २ गर्व । ३ राग-द्वेष, विरोध । ४ जूठन ।

ऐठणी (बौ)-क्रि० १ जूठा करना । २ चखना । ३ मरोड़ना, बल देना । ४ बलात् बमूल करना । ५ झकड़ना । ६ तानना, खींचना ।

ऐठवाड़ी-स्त्री० १ व्यवहारिणी स्त्री० । २ जूठन । ३ जूठा पात्र ।

ऐठवाड़ी-पु० १ जूठा, उच्छिष्ट । २ जूठन ।

ऐठाणी (बौ), ऐठावणी (बौ)-क्रि० १ जूठा करना । २ चखाना । ३ बल दिराना । ४ बलात् बमूल कराना । ५ तनवाना, खिंचवाना ।

ऐठाल (ळी)-वि० दुष्ट, पात्री, चुगलखोर ।

ऐठिन-वि० [सं० उच्छिष्ट] जूठा, उच्छिष्ट । -पु० जूठन ।

ऐठियोड़ी, ऐठोड़ी, ऐठी-वि० (स्त्री० ऐठी) जूठा । उच्छिष्ट । -पु० जूठन । -बूँटो, बूँटो, छूँटो-पु० जूठन । जूठा पदार्थ ।

ऐड़णी (बौ)-क्रि० चलना, विचरना ।

ऐड-बैड-वि० १ अंठ-संठ, निरर्थक । २ प्रस्त-व्यस्त । ३ घनाप-सनाप ।

ऐडी-बैडी-वि० (स्त्री० ऐडीबैडी) उल्टा सीधा, अंठ-संठ ।

ऐडो, ऐडो-पु० १ अंशज, अनुमान । २ भोजन के समय साथ ले जाया जाने वाला बालक । -वि० १ ऊबड़-खावड़, दुर्गम । विकट, भयावह । २ टेढ़ा-मेढ़ा, झकड़ा हुमा । ३ विरुद्ध । ४ साथ वाला ।

ऐण-देखो 'एण' ।

ऐंद्र-पु० ज्योतिष का एक योग ।

ऐंद्रि (द्रो)-स्त्री० [सं०] चौसठ में से अष्टावनवी योगिनी ।

ऐंठी-देखो 'गिंठी' (स्त्री० ऐंठी) ।

ऐ-पु० [सं० ऐः] १ शिव । २ कामदेव । ३ बालक । ४ कपि, बंदर । ५ असुर । ६ ऊंट । ७ निमंत्रण । ८ वचन । ९ शीत । १० राजा । ११ विश्व । १२ कुम्हार ।

-स्त्री० १ मरस्वती । १४ मुक्ति । -वि० १ मुख्य । २ विषम ।

३ व्यापक । ४ पूज्य । ५ एकत्र । -सर्व० यह, ये ।

-अव्य० संशोधन सूचक शब्द, हे, अरे ।

ऐक्य-पु० [सं० ऐक्यं] १ समता का भाव । २ एकत्व । ३ प्रेम, मेल । ४ अभेद । ५ जोड़, योग ।

ऐड़-पु० हठ, दुराग्रह ।

ऐड़ियो-वि० ऐसा ।

ऐड़ी-वि० (स्त्री० ऐड़ी) ऐसा, इस प्रकार का ।

ऐजन-अव्य० [अ०] तथा, और, तदैव ।

ऐजनगाळी-वि० (स्त्री० ऐजनगाळी) नखराला, छेला ।

ऐठति, ऐठित-देखो 'ऐठित' ।

ऐठ-पैठ-स्त्री० १ परिचय । २ विश्वास ३ इज्जत । ४ साल ।

ऐठो-देखो 'ऐठी' ।

ऐठो-पु० अवसर, मौका । -मेढ़ो-वि० तिरछा, टेढ़ा ।

ऐण-१ देखो 'अयन' । २ देखो 'एण' । ३ देखो 'ऐन' । ४ देखो 'इण' ।

ऐतडो-देखो 'गेतो' ।

ऐतराज-देखो 'एतराज' ।

ऐते-क्रि० वि० इतने में ।

ऐतो-वि० इतना । (स्त्री० ऐती)

ऐथ, ऐथो-देखो 'एथ' ।

ऐवी (धी)-देखो 'ग्रहवी' ।

ऐघुत-देखो 'अवघुत' ।

ऐघुळी-वि० (स्त्री० ऐघुळी) शौकीन, छेला । मस्त । बीर, बहादुर ।

ऐन-पु० [सं० अयन] १ घर, मकान । २ नेत्र, नयन । -वि० [अ०] १ ठीक, उपयुक्त । २ खाम । ३ बिलकुल । ४ पूरा । ५ निश्चित ।

ऐनक-पु० आँख का चश्मा ।

ऐनाण-पु० १ निशान चिह्न । २ देखो 'ऐलाण' ।

ऐफेण-पु० मादक वस्तु । अफीम ।

ऐब-पु० [अ०] १ अवगुण, बुराई, दोष । २ कलंक । ३ बुरी आदत । ४ गुनाह, दोष । -गैब-क्रि० वि० अचानक । गुप्त रूप से । -वि० अंठ-संठ । अनोखा ।

ऐबाकी-वि० १ जबरदस्त । २ विशाल । ३ प्रचंड । ४ भयभीत करने वाला ।

ऐबात-देखो 'अह्वात' ।

ऐबी ऐबीली-वि० (स्त्री० ऐबली) १ अवगुणी, बुरा, दोषी ।
२ कलकित । ३ बुरी आदत वाला । ४ गुनाहगार, दोषी ।
५ दुष्ट । ६ विकलांग ।

ऐम-क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे ।

ऐमक-वि० [अ० अहमक] बेवकूफ, भूख ।

ऐमो-क्रि०वि० १ इधर, इस ओर । २ इस प्रकार ।

ऐयार-वि० [अ० ऐयार] १ धूर्त, चालाक । २ छलिया, ठग ।
३ मायावी, प्रपंची ।

ऐयास (सो)-वि० [अ०] १ विपयी, भोगी । २ लंपट ।
-पु० भोग-विलास ।

ऐरंगपत्ती-पु० स्त्रियों के कान का आभूषण ।

ऐरंड-देखो 'परंड' ।

ऐरण, ऐरन-देखो 'एरण' ।

ऐरपत-देखो 'ऐरावत' ।

ऐरसी-वि० (स्त्री० ऐरसी) ऐसा । -क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे ।

ऐराक-पु० १ एक प्रकार की जगब । २ एक राण वाद्य विशेष ।
३ घोड़ा । ४ अरब देशोत्पन्न घोड़ा । ५ अरब देश ।
६ तलवार । -वि० १ तेज प्रचंड । २ भयंकर । ३ जबरदस्त ।
-राग-स्त्री० सिंधु राग का एक नाम ।

ऐराकी-वि० १ ईराक देश का, ईराक देश संबंधी । २ अरबी ।
पु० घोड़ा । देखो 'ऐराक' ।

ऐरापत (झी) ऐरापति-देखो 'ऐरावत' ।

ऐराब-स्त्री० १ एक छोटी तोप । २ शतरंज की एक चाल ।

ऐरावण-वि० [सं० ऐरावणः] इंद्र का हाथी ।

ऐरावत-पु० [सं० ऐरावतः] १ इंद्र का हाथी । २ हाथी ।
३ पूर्व दिशा का दिग्गज । ४ इंद्र धनुष । ५ बिजली से
चमकता बादल । ६ बिजली । ७ प्रथम तपु व दो दीर्घ
(पांच) माश्राओं का नाम । ८ पाताल निवासी नाग जाति
का मुखिया । -वि० श्वेत, सफेद ।

ऐरावता (तो)-स्त्री० [सं० ऐरावती] १ बिजली, विद्युत ।
२ हथिनी । ३ पंजाब की रावी नदी का नाम ।

ऐरिसा-क्रि०वि० एतादृश, इस प्रकार ।

ऐरोमंसो-पु०यी० जंगली भैंसा । बिना बधिया किया भैंसा ।

ऐरु-पु० [सं० अहिरूप] सब जाति के सर्प । -आंजह-पु०
विपरीत जंतु ।

ऐळ-देखो 'इळा' ।

ऐल-स्त्री० १ किंचित क्षति । २ साधारण जोर, दबाव या
कष्ट । ३ हल्का झटका, धक्का । ४ प्रवाह, बाढ़ ।

ऐलकार-पु० [अ० अहलकार] कर्मचारी, सरकारी कर्मचारी ।

ऐलके-क्रि० वि० इस समय, अभी ।

ऐलची-पु० राजदूत ।

ऐलमंद-पु० किसी विभाग का प्रथम कर्मचारी ।

ऐलाण, ऐलान-पु० १ घोषणा । २ विज्ञापन, प्रकाशन ।
३ निशान, चिह्न । ४ लक्षण, गुण ।

ऐळा-देखो 'इळा' ।

ऐळो-वि० (स्त्री० ऐळी) निष्फल, व्यर्थ ।

ऐवंविह-क्रि०वि० [सं० एवंविधि] इस प्रकार, इस तरह ।

ऐवडड (डो)-क्रि०वि० ऐसा । सर्व० इतना ।

ऐवाकी-देखो 'ऐबाकी' ।

ऐवात-देखो 'अहिवात' ।

ऐवाळ-देखो 'एवाळ' ।

ऐवाळियो-देखो 'एवाळियो' ।

ऐवास-देखो 'आवास' ।

ऐवेहे, ऐवंहै-सर्व० वे ।

ऐवो-सर्व० वह । -वि० ऐसा । (स्त्री० ऐवा, ऐवी)

ऐस-अव्य० [सं० ऐषमः] इस वर्ष । इस मौके । -पु० [अ० ऐषा]
आराम, चैन । भोग-विलास । [सं० अष्व] घोड़ा ।

ऐसान-देखो 'अहसान' ।

ऐसे-वि० इस प्रकार के । -क्रि०वि० इस तरह । इस प्रकार ।

ऐसी, ऐह, ऐहड़ी-वि० ऐसा, इस तरह का । (स्त्री० ऐसी,
ऐहड़ी, ऐही)

ऐहकार-देखो 'अहंकार' ।

ऐहड़ी-वि० (स्त्री० ऐहड़ी) १ विकट, दुर्गम । २ भयानक ।
३ देखो 'ऐदौ' ।

ऐहमकाई-स्त्री० मूर्खता । बेवकूफी ।

ऐहरी-वि० ऐसा । (स्त्री० ऐहरी)

ऐहळ-देखो 'ऐल' ।

ऐहलाण-देखो 'ऐलाण' ।

ऐहळी-देखो 'ऐळी' । (स्त्री० ऐहळी)

ऐहवात-देखो 'अहिवात' ।

ऐहवो-वि० ऐसा । (स्त्री० ऐहवी)

ऐहिक-वि० [सं०] लौकिक, सांसारिक ।

ऐही-वि० ऐसा । (स्त्री० ऐही)

--ओ--

ओ-देव नागरी वर्णमाला का तीका स्वर-वर्ण ।
 ओ-अव्यं स्वीकृति सूचक ध्वनि । -पुं ओश्म् का सूक्ष्म रूप ।
 ओकड़ो-पुं कोल्हू के बैल की आँखें बांधने का चमड़े का उपकरण ।
 ओंकार-पुं [सं] परब्रह्म वाचक प्रणव मंत्र —नाथ-पुं शिव का एक स्तंभ ।
 ओंगली (बी)-देखो ओंगली (बी) ।
 ओंगलो-स्त्री० १ बैल गाड़ी के धाटे के अंगल-वंगल लगने वाले हुक । २ देखो 'आंगली' ।
 ओ-पुं [सं] १ परब्रह्म । २ विष्णु । ३ ब्रह्मा । ४ शेषनाथ । ५ अलगम । -सर्व० वह । यह ।
 ओग्रहकार-देखो 'ओंकार' ।
 ओगरी-देखो 'ओरी' ।
 ओइचली (बी)-देखो 'ओहीचली' (बी) ।
 ओईनाली-पुं [सं] अवधिजाल १ वस्तुओं का अव्यवस्थित ढेर । २ वह स्थान जहाँ पर अव्यवस्थित सामान का ढेर हो ।
 ओईयाली-देखो 'ओयाली' । (स्त्री० ओईयाली)
 ओक-पुं [सं] ओक १ घर, मकान । २ छाया । ३ बचाव, प्राङ् । ४ शरण, आश्रय । ५ पक्षी । ६ शूद्र । ७ स्थान, जगह । ८ स्वाग, परहेज । ९ नक्षत्र समूह । १० देखो 'बूक' ।
 ओकखग-पुं वृक्ष ।
 ओकड़-स्त्री० सप्ताह के अस्त होने के स्थान से चलने वाली वायु ।
 ओकड़ो-देखो 'ऊकड़ो' ।
 ओकणी (बी)-किं १ शस्त्र प्रहार करना । २ क्रूरता से देखना ।
 ओकर-पुं १ ताना, ध्यंग । २ तूँ कहकर पुकारने का अव्यव, अवज्ञा सूचक शब्द । ३ देखो 'ओखर' ।
 ओकरणी (बी)-देखो 'ओखरणी' (बी) ।
 ओकळ, ओकळी-स्त्री० [सं] उत्कण्ठिका १ अधिक भूखा रहने या गर्मी में छिड़ने से होने वाली उत्पन्ना । २ हवा के कारण उड़ उड़ कर बने वाली बल की लंबी डेरियाँ ।
 ओकलो-स्त्री० [सं] उत्कण्ठिका १ हेला, कीड़ा विषेण । २ लहर । ३ कड़ी । ४ उत्कटा, चिंता, विकलता ।
 ओका-पुं १ देवी का खप्पर । २ देखो 'बूक' ।
 ओकाई (ओकारी)-स्त्री० वगल, कं ।
 ओकात-देखो 'ओकात' ।
 ओकीरी-पुं [सं] अवकीट गोबर-कीट ।

ओकूव-वि० दुष्टिमान ।
 ओकळ-देखो 'ओकळ' ।
 ओखंगी-देखो 'ओखंगी' ।
 ओखंगली (बी)-किं चलायमान करना, चलाना ।
 ओखड़-पुं चाँक में अन्न राशि का उतरना, सीमा रेखा टूटना ।
 ओखड़मल-देखो 'अखाड़मल' ।
 ओखड़ो (डो)-पुं सड़ा हुआ नारियल या गिरी ।
 ओखण-पुं अनाज कूटने का मूसल, मस्तूल ।
 ओखव (दि, बी), ओखध, ओखयी-स्त्री० [सं] ओपधि १ ओपधि, दवा । २ जड़ी-बूटी । —थथीस-पुं चन्द्रमा । —पत, पति-पुं चन्द्रमा ।
 ओखर-पुं मल, विष्टा, गू ।
 ओखराईयो-पुं (स्त्री० ओखराई) वह पशु जिसे विष्टा खाने की आदत हो ।
 ओखरी-स्त्री० ओखरी, ऊखल ।
 ओखळ-पुं १ प्रहार, वार । २ देखो 'ऊखळ' ।
 ओखळणी-पुं [सं] अपस्खलनम् अपस्खलन, पतन, गिरावट ।
 ओखळणी (बी)-किं १ गिरना, फिसलना । २ पथ भ्रष्ट होना । ३ उत्तेजित होना । ४ ठोकर खाना । ५ प्रहार करना या होना । ६ मारना ।
 ओखळमेळी-देखो 'ऊखळमेळी' ।
 ओखळ, ओखळी-१ देखो 'ओकळी' २ देखो 'ऊखळ' ।
 ओखाण (ली)-देखो 'उखांगी' ।
 ओखागिर-पुं गिरि-कंदरा । पहाड़ी गुफा ।
 ओखापुरी (मंडळ)-पुं द्वारिका का एक नाम ।
 ओखाळ-पुं [सं] ओखाल १ युद्ध, रण । २ विवेचन ।
 ओखाळमल-देखो 'अखाड़मल' ।
 ओखिद-देखो 'ओखद' ।
 ओखी-वि० (स्त्री० ओखी) १ अटपटा । २ भटा । ३ अनुचित । ४ व्यर्थ का निन्दक । ५ कठिन । ६ भयंकर, विकट । ७ खराब, बुरा ।
 ओग-स्त्री० १ ताप, आंच । २ जलन, दाह ।
 ओगड़-दोगड़-वि० अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त ।
 ओगण-देखो 'अवगुण' ।
 ओगणगारी-वि० १ अवगुणों से भरा पुर्ण, दुर्गुण युक्त । २ क्रान्तन ।

श्रीगणेश—देखो 'श्रीगणेश' ।

श्रीगणी, श्रीगणौ—वि० १ कृतघ्न । २ नीच ।

श्रीगणेश—देखो 'उगणेश' ।

श्रीगणौ (बौ)—क्रि० तंग करना । घर्षण करना ।

श्रीगण—स्त्री० अशोभित, बुरी गति । अगति ।

श्रीगणित्यौ—वि० अधोगति को प्राप्त ।

श्रीगणित्यौ—पुं० स्त्रियों के कान का आभूषण ।

श्रीगण—देखो 'उगण' ।

श्रीगणौ—स्त्री० बाजरी के कटे पीपों का ढेर ।

श्रीगणौ—स्त्री० अपामार्ग का पीप ।

श्रीगणौ (बौ)—क्रि० गरजना ।

श्रीगण—देखो 'अवगाढ़' ।

श्रीगण—पुं० १ पशुओं की जुगाली । २ ताना, व्यंग । ३ कलंक ।

४ अपयश ।

श्रीगणौ (बौ)—क्रि० १ पशुओं का जुगाली करना । २ वमन करना । ३ कै करना ।

श्रीगण—बन्ध—पुं० चौपाये पशु का एक रोग जिसमें वह जुगाली करना बंदकर देता है ।

श्रीगणौ—पुं० पशुओं द्वारा चरने के पश्चात् छोड़ा हुआ चारे का अवशिष्ट भाग ।

श्रीगण—पुं० अवगुण, दोष । —गारौ—'श्रीगणगारौ' ।

श्रीगण—पुं० [सं० श्रीगणः] १ समूह, ढेर । २ बाढ़ । ३ जल प्रवाह या धारा । ४ बहाव । ५ संतोष—स्त्री० ६ गर्मी, ताप, छाँच ।

श्रीगण—देखो 'श्रीगण' ।

श्रीगण—पुं० १ जोगियों की एक शाखा । २ परब्रह्म ज्ञान प्राप्त संन्यासी—वि० निकट, घृणित ।

श्रीगण—स्त्री० १ बुरी घटना । २ विपत्ति, संकट । ३ मृत्यु ।

४ विकट स्थान । ५ दुर्गम-पथ । वि०—१ अघटित ।

२ विकट, भयंकर । ३ अद्भुत, विचित्र । —घाट—पुं० दुर्गम-पथ । —वि० भयंकर । —स्त्री० हिचकिचाहट ।

श्रीगणित्यौ—देखो 'श्रीगणित्यौ' ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० [सं० अवघर्षण] १ खजली मिटाने के लिये किसी वस्तु से शरीर को रगड़ना । २ रगड़ना, घिसना ।

३ जोश में भरना ।

श्रीगणौ—पुं० [सं० श्रीगणः] जैन साधुओं के हाथ में रहने का चंवर-नुमा भाड़ू ।

श्रीगण—क्रि० वि० ओर तरफ । —पार—क्रि० वि० चारों ओर ।

वि० समान, बराबर ।

श्रीगण—क्रि० वि० ऐमे, इस । कार । वि० ऐसा ।

श्रीगणित्यौ, श्रीगणौ—पुं० १ ऊंट के ईडर में होने वाली ग्रथि ।

२ इस रोग से पीड़ित ऊंट ।

श्रीगण—पुं० कूरे पर बना कोठा, कुण्ड ।

श्रीगण—वि० समान, तुल्य, मृदु ।

श्रीगणौ—पुं० १ पनाह स्थान, आड । २ देखो 'श्रीगणौ' ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० १ चौंकना । २ उचकना । ३ लपकना ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० उच्चारण करना, बोलना ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० मनोगत भावों में परिवर्तन होना ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० त्यागना छोड़ना ।

श्रीगण—स्त्री० लघुता । २ कमी । ३ तुच्छता । ४ क्षुद्रता । ५ तुच्छ भावना ।

श्रीगण, श्रीगण—देखो 'श्रीगण' ।

श्रीगणौ—वि० तुच्छ या ओछी भावना वाला ।

श्रीगणौ (बौ)—क्रि० कम होना, घट जाना ।

श्रीगण (बौ)—देखो 'उत्सव' ।

श्रीगण—देखो 'श्रीगण' ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—देखो 'श्रीगणित्यौ' (बौ) ।

श्रीगण—पुं० प्रहार के लिए शस्त्र उठाने का भाव ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—देखो 'श्रीगणित्यौ' (बौ) ।

श्रीगणित्यौ (पणौ)—पुं० १ श्रीगणित्यौ, क्षुद्रता, तुच्छता । २ छोटापन, लघुता । ३ कमी । ४ नीचता ।

श्रीगणित्यौ—वि० १ अपशब्द बोलने वाला । २ असभ्य ।

श्रीगणित्यौ—देखो 'उच्छाळी' ।

श्रीगण—पुं० १ आच्छादन । २ देखो 'उत्साह' । ३ देखो 'उत्सव' ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना ।

२ उत्सव करना, हर्ष करना ।

श्रीगणित्यौ (बौ)—क्रि० कम पड़ना, घटना । कम होना ।

सिकुड़ना ।

श्रीगणित्यौ—स्त्री० ऊंट की एक चाल विशेष ।

श्रीगणित्यौ—स्त्री० १ अदूरदर्शिता । २ न्यून या हेय भावना ।

३ दूसरे के प्रति असम्मान का दृष्टिकोण ।

श्रीगण, श्रीगण, श्रीगण, श्रीगण—वि० (स्त्री० श्रीगण) १ जो गहरा न हो, छिछला । २ शक्तिहीन, कमजोर, निर्बल ।

३ तुच्छ, ओछा । ४ क्षुद्र, नीच । ५ ठिगना, बीना ।

६ जो लंबा न हो । ७ छोटा लघु । ८ अल्प कम ।

९ अपूर्ण । १० सूक्ष्म । ११ छोटी भावना वाला ।

—श्रीगण—वि० काम चलाऊ । जैसा-तैसा ।

श्रीगण—पुं० [सं० श्रीगणः] १ बल, पराक्रम शक्ति, प्राण बल ।

२ कौशल । ३ आभा, कांति, दीप्ति । ४ काव्यगुण

विशेष । ५ जल । ६ उजात्ता, प्रकाश । ७ शरीरस्थ रसों

का सार भाग । ८ पेट । ९ मृत पशुओं के पेट का मेला ।

१० उदग्गता, गर्मी । —वि० विषम । ऊँचा । —आहार—पुं० एक

जन्म समाप्त करने के बाद जन्मांतर को धारण करने के समय ग्रहण किया जाने वाला आहार ।

प्रोजक-स्त्री० १ घबराहट, बेचैनी । २ भिन्न । ३ चौकने की किया या भाव । -वि० चौकना ।

प्रोजकणी (बो)-क्रि० १ चौकना, चमकना । २ घबराना, बेचैन होना । ३ कांपना । ४ भयभीत होना ।

प्रोजकी (गो)-पु० १ रात्रि भर का जागरण । २ इस जागरण से उत्पन्न थकावट ।

प्रोजक-देखो 'प्रोजक' ।

प्रोजणी-पु० रात्रि में जागरण करने वाला व्यक्ति । -स्त्री० रात्रि के जागरण की थकावट ।

प्रोजणी (बो)-क्रि० १ जंचना, फबना, शोभित होना । २ देखो 'प्रोजणी' (बो) ।

प्रोजर (रो)-पु० [सं० उदर] पेट ।

प्रोजरी-स्त्री० [सं० उदर + रा.प्र.ई.] १ आमामय । २ पेट । ३ गेट की शैली ।

प्रोजळ-पु० बिना सिचाई में प्रकुरित होने वाले गेहूँ या जौ ।

प्रोजागणी (बो)-क्रि० १ रात भर जगना । जागरण करना । २ नींद न लेना ।

प्रोजास-पु० १ अपयश, निन्दा । २ देखो 'उजास' ।

प्रोजासणी (बो)-क्रि० अपयश होना । देखो 'उजासणी' (बो) ।

प्रोजासी-देखो 'उजासी' ।

प्रोजियाळी-देखो 'प्रोईजाळी' ।

प्रोजीगणी-स्त्री० पतली लकड़ी जिमको जलाकर दीपक का काम लिया जाता है ।

प्रोजू (झू)-क्रि० वि० अब भी । फिर, पुनः । अभी तक । दुबारा ।

प्रोजू-पु० [अ० बुज] नमाज पढ़ने पूर्व शुद्धि के लिए हाथ पांच धोने की क्रिया ।

प्रोजोळी-स्त्री० बड़ई का एक प्रोजार ।

प्रोजी-पु० बहाना, मिस ।

प्रोज-देखो 'प्रोज' ।

प्रोजक-देखो 'प्रोजक' ।

प्रोजकणी (बो)-देखो 'प्रोजकणी' (बो) ।

प्रोजकी-पु० १ स्मृति, स्मरण । २ देखो 'प्रोजकी' ।

प्रोजख-स्त्री० लचक ।

प्रोजड़ (ड)-वि० १ भयंकर, प्रबल । २ अपार, प्रमत्त, अपाह । -पु० १ प्रहार, चोट । २ देखो 'प्रोजर' ।

प्रोजड़ी-देखो 'प्रोजरी' ।

प्रोजड़ी-पु० १ भटका, धक्का । २ देखो 'प्रोजरी' ।

प्रोजणी (गु. लो)-पु० १ कन्या की विदाई के समय दिया जाने

वाला सामान । २ दहेज । ३ गीना ।

प्रोजर-देखो 'प्रोजर' ।

प्रोजरी-देखो 'प्रोजरी' ।

प्रोजळ-वि० [सं० अवबन्धन] १ अदृश्य, लुप्त, । २ गुप्त । ३ दूर । ४ छुपा हुआ । -पु० मोट, घाड़ ।

प्रोजळणी (बो)-क्रि० १ कूदना, फांदना । २ चौकना । ३ मिटना, नष्ट होना । ४ अदृश्य होना । ५ छुपना ।

प्रोजळा-स्त्री० अग्नि की लपट । आग ।

प्रोजाड़-१ देखो 'प्रोजाड़' । २ देखो 'उजाड़' ।

प्रोजाड़णी (बो)-देखो 'प्रोजाड़णी' (बो) ।

प्रोजाड़ी-पु० १ गुस्से में डांटना । २ प्रताड़ना । ३ झिड़की । ४ धक्का, भटका ।

प्रोजाट-देखो 'प्रोजाड़' ।

प्रोजाळ-देखो 'प्रोजाळ' ।

प्रोजाळी-वि० (स्त्री० प्रोजाळी) १ तेजस्वी । २ देखो 'प्रोजाळ' ।

प्रोजावी-पु० झलक । (स्त्री० प्रोजाळी)

प्रोजीसाळी-देखो 'प्रोईजाळी' ।

प्रोजी-पु० १ खतरा । २ बहाना । ३ उपाध्याय ।

प्रोट-स्त्री० १ आड़, रोक । २ शरण, आश्रय । ३ सहारा, आधार । ४ बाधा, व्यवधान । ५ दोष । ६ किनारे की गोटा । ७ घास-फूस ।

प्रोटण, प्रोटणी-स्त्री० १ चरखे का एक उपकरण । २ मोटाना क्रिया । ३ राख या मिट्टी से आग को दबाने की क्रिया । ४ वस्त्र का छोर जरासा मोड़ कर की जाने वाली सिलाई ।

प्रोटणी (बो)-क्रि० [सं० आवर्तन] १ रुई और बिनीले अलग अलग करना । २ पुनरुक्ति करना । ३ चूर्ण बनाना, पीसना । ४ कष्ट देना । ५ वस्त्र के छोर को किंचित मोड़ कर सिलाई करना । ६ राख या धूल के नीचे आग दबाना । ७ आंच पर उबाल कर गाढ़ा करना । ८ पैर के नीचे दबाना । ९ मोड़ना । १० अधिकार में करना ।

प्रोटपी-वि० (स्त्री० प्रोटपी) विचित्र, अद्भुत ।

प्रोटरी-वि० शरणागत ।

प्रोटवणी (बो)-देखो 'प्रोटणी' (बो) ।

प्रोटवी-देखो 'प्रोटपी' ।

प्रोटाळ-देखो 'प्रोटाळ' ।

प्रोटि (टी)-१ देखो 'प्रोट' । २ देखो 'प्रोटी' ।

प्रोटोजट-देखो 'प्रोटीजट' ।

श्रोटी-पु० १ जलाशय का वह नाला जिसमें से आवश्यकता से अधिक पानी आने पर स्वतः बाहर निकल जाता है। मोरा। २ ऊँचा स्थान। ३ देखो 'श्रोठी'।

श्रोठंगी, श्रोठंग, श्रोठंगी, श्रोठण, (ठम)-पु० [सं० श्रवणम्] १ नहाय, अटकन। २ आश्रय। ३ महाप्रक। ४ रक्षक। ५ रक्षा का स्थान।

श्रोठ-पु० [सं० श्रोष्ठः] मधुर, श्रोठ। देखो 'श्रोठ'।

श्रोठाणी (बौ)-देखो 'श्रोठावणी' (बौ)।

श्रोठारु (रु)-पु० उंट।

श्रोठावणी (बौ)-कि० १ ऐंठा करना, ऐंठाना। २ दृष्टांत देना। ३ देखो 'उठावणी' (बौ)।

श्रोठियाँ, श्रोठी (डो)-पु० [सं० श्रोष्टिकः] १ ऊंट सवार। २ ऊंट पर सरकारी डाक आदि ले जाने वाला व्यक्ति। ३ ऊंटों वाला डान।

श्रोठीजट-स्त्री० ऊंट के बाल। ऊंट की जटा।

श्रोठीपो-पु० १ जट का माल। २ श्रोठी। ३ श्रोठी के ऊंट का पालन पोषण।

श्रोठी-बालदो-पु० श्रोठी १ ऊंट व बैल की जोड़ी। २ अतमेल, असमानता। ३ अतमेल कार्य।

श्रोठम-देखो 'श्रोठम'।

श्रोठ-कि० वि० वहाँ। श्रोठ में।

श्रोठी-पु० १ श्राद्ध, श्राद्ध। २ रक्षा, बचाव। ३ आश्रय, शरण। ४ सहाय। ५ विषय। ६ किसी देवता का छोटा चवूतरा। ७ भाव। ८ अभिप्राय। ९ मौका, अवसर। १० ऊँचा स्थान। ११ दृष्टान्त। १२ ऊंट। १३ मादा ऊंट का दूध। -वि० विपरीत, विरुद्ध।

श्रोडो-वि० जो दंडित न किया जाय। -स्त्री० भुष्टिका।

श्रोडोस-वि० [सं० ऊद्वेडीग] बचवान, जबरदस्त।

श्रोड-पु० (स्त्री० श्रोडण, श्रोडणी) १ कूएँ पर बना घास-फूस का छप्पर। २ तालाब की मिट्टी निकालने व पत्थर तोड़ने का कार्य करने वाली जाति। ३ उक्त जाति का व्यक्ति। -कि० वि० शोर, तरफ। -वि० समान, तुल्य।

श्रोडक-स्त्री० १ भेड़ की ऋतुमति होने की अवस्था। २ उस अवस्था की भेड़।

श्रोडकश्रावणी (बौ)-कि० भेड़ का ऋतुमति होना।

श्रोडण (णि, णी)-स्त्री० १ ढाल। २ निधि, खजाना। ३ मालय, घर। ४ देखो 'श्रोडण'। ५ श्रोड जाति की स्त्री।

श्रोडणी-देखो 'श्रोडणी'।

श्रोडणी (बौ) कि० १ सहन करना। २ भेंटना। ३ स्पर्श करना। ४ हाथ फैलाना। ५ स्पर्धा करना, होड़ लगाना। ६ रथ आदि में बैलों को जोड़ना। ७ सम्भालना। ८ धारण करना। उठाना, उठाना। देखो 'श्रोडणी' (बौ)।

श्रोडव-स्त्री० १ ढाल, फलक। २ एक राग विशेष।

श्रोडवण-देखो 'श्रोडण'।

श्रोडवणी (बौ) श्रोडाणी (बौ)-१ देखो 'श्रोडणी' (बौ) २ देखो 'श्रोडणी' (बौ)।

श्रोडाणी (बौ)-कि० १ कपाट देना, थोड़ा बंद करना। २ कटने में करना।

श्रोडावणी (नी)-स्त्री० विशेष अवसरों पर कन्या के पिता द्वारा, कन्या व उसके पति के परिवार को दिया जाने वाला वस्त्रानुषण।

श्रोडावणी (बौ)-देखो 'श्रोडाणी' (बौ)।

श्रोडियाळ (श्रोडो)-देखो 'श्रोडियाळ'।

श्रोडियो, श्रोडी-स्त्री० १ बांस वगैरे खपचियों की छोटी-बड़ी डलिया। टोकरी। २ कूएँ पर बनी घास की झोंपड़ी। कि० वि० १ शोर, तरफ। २ देखो 'श्रोडो'।

श्रोडु-देखो 'श्रोडू'।

श्रोडे, श्रोड-कि० वि० शरण व आश्रय में। -वि० समान, बराबर।

श्रोडो-पु० १ शोक, खोचा। २ आश्रय, पनाह, शरण।

श्रोडण-स्त्री० १ श्रोडने की क्रिया या भाव। २ श्रोडने का वस्त्र। ३ रक्षक। ४ देखो 'श्रोडण'।

श्रोडणियो (णी)-देखो 'श्रोडणी'।

श्रोडणी-१ चादर। उपरनी। २ देखो 'श्रोडणी'।

श्रोडणी-पु० स्त्रियों के शिर (शरीर) पर धारण करने का वस्त्र। -वि० धारण करने वाला।

श्रोडणी (बौ)-कि० शरीर को वस्त्र से ढकना। २ पहनना धारण करना। ३ आवेष्टित करना। ४ रक्षा करना। ५ जिम्मेदारी लेना।

श्रोडवण-वि० १ धारण करने वाला। २ देखो 'श्रोडण'।

श्रोडाणी (बौ), श्रोडावणी (बौ)-१ शरीर को वस्त्र से ढकवाना। २ पहनाना, धारण कराना। ३ आवेष्टित कराना। ४ रक्षा कराना। ५ जिम्मेदारी डालना या उत्तरदायित्व लेना या देना।

श्रोडो-वि० (स्त्री० श्रोडो) १ विकट। २ टंढा। ३ भयंकर, डरावना। -पु० १ मौका, अवसर। २ देखो 'श्रोडो'।

श्रोण-पु० [सं० श्रणः] १ कृष्णमृग। २ हरिण। ३ देखो 'श्रोण'। ४ देखो 'श्रोण'।

श्रोणपोत-वि० १ बहुत उलझा हुआ। २ गुंथा हुआ। ३ फँसा हुआ, व्याप्त। ४ भगा हुआ। ५ मना हुआ।

श्रोतार-१ देखो 'श्रवतार'। २ देखो 'उतारी'।

श्रोतारी-१ देखो 'उतारी'। २ देखो 'श्रवतार'।

श्रोताळ-देखो 'उतावळ' ।

श्रोताळणी (बो)-कि० प्रहार करना, आपात करना ।

श्रोतु-पु० [सं०] बिलाव, बिल्लो ।

श्रोतोळणी (बो), श्रोतोळणी (बो)-कि० १ भोंकना, डालना ।

२ प्रहार करना, वार करना ।

श्रोथ, श्रोथक-कि०वि० वहाँ ।

श्रोथणी (बो)-कि०वि० [सं० अस्तमन] १ अस्त होना ।

अवसान होना । २ बुरे दिन आना । [सं० अमुत्थ]

३ उकताना, ऊबना ।

श्रोथिय, श्रोथी, श्रोथे-कि०वि० वहाँ, उस जगह ।

श्रोव-स्त्री० १ वंश, खानदान । २ श्रोलाद ।

श्रोवक-वि० १ भयभीत, डरा हुआ । २ चौकन्ना । -पु० डर, भय, आतंक ।

श्रोवकणी (बो)-देखो 'श्रोवकणी' (बो) ।

श्रोवण (धरु)-पु० गाड़ी के तस्ते के नीचे लगी, लंबी पूरी दो मोटी लकड़ियाँ ।

श्रोवव, श्रोवध-पु० [सं० उदधि] समुद्र ।

श्रोवन-पु० [सं०] १ अन्न । २ भोजन । ३ खाद्य पदार्थ । ४ एक प्रकार का चावल । ५ देखो 'श्रोवण' ।

श्रोदनिक-पु० [सं० श्रोदनिक] रसोईया, पाक-शास्त्री ।

श्रोवसा-स्त्री० [सं० अपदशा] १ बुरी दशा या हालत । २ पूँहड़ कुलक्षणी स्त्री ।

श्रोवादार, (श्रोहदेवार)-पु० [अ० श्रोहदः + फा. दार] पदाधिकारी ।

श्रोवाधन-पु० [अ० श्रोहदः + रा. प्र. आयत] पदाधिकारी ।

श्रोवी-स्त्री० १ शिकार के लिए बैठने का स्थान । २ मोर्चा । ३ सेंध । ४ बुई आंवला का पौधा या फल ।

श्रोवीजली (बो)-कि० अधिक आंच व पानी की कमी के कारण पकने वाले पदार्थ का बर्तन के पेंदे में चिपककर जल जाना । बेस्वाद हो जाना, विकृत होना ।

श्रोवी-पु० (स्त्री० श्रोवी) १ तीव्र आंच के कारण पकते समय पात्र के पेंदे में चिपक कर जला व जले की बदबू वाला खाद्य पदार्थ । २ देखो 'श्रोवी' ।

श्रोचम-देखो 'उचम' ।

श्रोचकणी (बो)-कि०वि० १ डरना, भयभीत होना । २ चौकन्ना । ३ किभकना ।

श्रोचक, श्रोचकी, श्रोचव, श्रोचाव, श्रोचावी-पु० १ डर, भय, आतंक । २ किभक । ३ धाक । ४ प्रभाव ।

श्रोचास, श्रोचाह-पु० १ संहार, नाश । २ आतंक ।

श्रोध-१ देखो 'श्रोद' । २ देखो 'श्रोदण' ।

श्रोधकणी (बो)-देखो 'श्रोधकणी' (बो) ।

श्रोधण-देखो 'श्रोदण' ।

श्रोधवार, श्रोधवाळ-वि० उत्तम वंश का, कुलीन ।

श्रोधादार-देखो 'श्रोदादार' ।

श्रोधायत-देखो 'श्रोदायत' ।

श्रोधार, श्रोधारी-१ देखो 'उधार' । २ देखो 'उधारी' ।

श्रोधि (घो)-वि० १ धूर्त, चालाक । २ वंशज । ३ देखो 'श्रोद' ।

४ देखो 'अवधि' । ५ देखो 'अवध' ।

श्रोवूळ, श्रोवूळी-पु० १ आनंद, मोज, मस्ती । २ देखो 'ऐधूळी' ।

श्रोवूळणी (बो)-कि० धूलि से आच्छादित होना या करना । (स्त्री० श्रोवूळी)

श्रोवेदार-देखो 'श्रोदादार' ।

श्रोवी-पु० १ पद । २ अधिकार । ३ दर्जा । ४ देखो 'श्रोदो' ।

श्रोनाड़ (डी)-देखो 'अनड़' ।

श्रोप (ण)-स्त्री० १ कांति, दीप्ति, चमक । २ शोभा छवि ।

४ रंग-रोगन । ४ उपमा । ५ जिरह, कवच । -वि० समान, अनुरूप । शोभायमान । --ची-पु० कवच घारी थोड़ा ।

--धार-पु० दीपक ।

श्रोपणत-पु० ऊपर का होठ ।

श्रोपणणी (बो)-कि० १ चमकाना । २ धार पेंनी करना । ३ उज्ज्वल करना ।

श्रोपणी (ली)-स्त्री० १ सोने पर घिसाई करने का पत्थर । २ स्वर्णकारों का लोहे का एक लंबा समतल नौकार खंड (श्रीजार) जो काठ की डंडी में कसा जाता है । ३ शस्त्र पेंना करने की सिल्ली, शान । ४ चमक, कांति । ५ शोभा । ६ कवच, जिरह ।

श्रोपणी (बो)-कि० १ चमकना, भक्तकना । २ शोभित होना, फवना । ३ उज्ज्वल करना, साफ करना । ४ धार देना, पेंना करना ।

श्रोपत-स्त्री० [सं० उत्पत्ति] १ आय, आमदनी । २ उत्पादन । ३ धन, सम्पत्ति । ४ उत्पत्ति ।

श्रोपती-वि० (स्त्री० श्रोपती) १ शोभित, फवती । २ उपयुक्त । ३ देखो 'श्रोपत' ।

श्रोपन-स्त्री० बहुमूल्य नग वाली अंगूठी ।

श्रोपम-पु० १ जेवर, आभूषण । २ उपमा । -वि० १ सुन्दर, अनुपम । २ समान, सदृश ।

श्रोपमा-देखो 'उपमा' ।

श्रोपमाणी (बो)-कि० १ उपमा देना । २ प्रशंसा करना ।

श्रोपर-देखो 'ऊपर' ।

श्रोपरी (हरी)-वि० (स्त्री० श्रोपरी) १ अपरिचित, अजनबी । २ नया । ३ व्यंग्यात्मक, टेढ़ा । ४ भयंकर, भयावह ।

श्रोपवणत-पु० ओंठ, ओष्ठ ।

श्रोपवणी (बो)-देखो 'श्रोपणी' (बो) ।

श्रीपञ्च-वि० शोभायमान, शोभित ।

श्रीपाणी (बी), श्रीपावणी (बी)-क्रि० १ चमकाना, भलकाना ।
२ शोभायमान करना । ३ स्वच्छ व उज्ज्वल करना ।
४ सजाना ।

श्रीफ-अव्य० पीड़ा या खेद सूचक ध्वनि ।

श्रीवरङ्गी, श्रीवरी-पु० १ पक्की कोठरी, श्रीरा । २ पीजरा ।

श्रीवासणी (बी)-क्रि० जमुहाई लेना, मुस्ताना ।

श्रीवासी-देखो 'उवासी' ।

श्रीम (श्रीरम) श्रीमकार-पु० [सं०] १ प्रणव मंत्र, श्रींकार ।
२ ईश्वर, ब्रह्म ।

श्रीमगोम-वि० १ गुप्त । २ अचानक ।

श्रीमजी-श्रीमजी-पु० साधारण व्यक्ति, अमुक, फला ।

श्रीमाहणी (बी)-देखो 'उमाहणी' (बी) ।

श्रीमाही-देखो 'उमावी' ।

श्रीय-देखो 'श्रीह' ।

श्रीयङ्गी-पु० १ ऋषकों द्वारा, जागीरदार या उसके प्रतिनिधियों को खलिहान में दिया जाने वाला भोज । २ सरकारी कार्य से गांव में आने वाले कर्मचारियों को दिया जाने वाला भोजन । ३ गांव वालों की तरफ से खाले को दिया जाने वाला भोजन ।

श्रीयण, श्रीयणु, श्रीयणी-पु० [सं० उपवन] १ शूद्र । २ उपवन ।
३ पैर, चरण । ४ देखो 'श्रीरण' ।

श्रीयाळी-वि० [सं० ग्राजापालक] स्त्री० श्रीयाळी (दबकर) रहने वाला, दबू ।

श्रीर-पु० १ नियत स्थान से अतिरिक्त शेष विस्तार । २ दिशा ।
३ पक्ष । ४ किनारा, छोर । ५ आरंभ, आदि । ६ स्वीकार ।
-क्रि० वि० १ तरफ । २ देखो 'श्रीर' ।

श्रीरङ्गी (श्रीरङ्गी)-वि० १ अन्य, दूसरा । २ देखो 'श्रीरी' ।

श्रीरङ्गी-१ देखो 'श्रीरी' । २ देखो 'श्रीरी' ।

श्रीरठे-क्रि० वि० अन्य स्थान पर, दूसरी जगह ।

श्रीरण-पु० [सं० उपारण्य] किसी देवस्थान या देवालय के ग्रास-प्रास की गोचर-भूमि जहां की लकड़ी काटता वज्रित होता है ।

श्रीरणी-पु० १ स्त्रियों की ओढ़नी, लुंगड़ी । २ अनाज बीने की बीजनी । ३ अनाज बीजने का ढंग ।

श्रीरणी (बी), श्रीवरणी (बी)-क्रि० १ वर्षा शुरू होना । २ वृष्टि होना, बरसना । ३ देखो 'ऊरणी' (बी) ।

श्रीरवसी-देखो 'उरवसी' ।

श्रीरस-स्त्री० १ लज्जा, शर्म । २ पश्चाताप । खेद । ३ देखो 'श्रीरीसी' । ४ देखो 'श्रीरस' ।

श्रीरसियौ-देखो 'श्रीरीयौ' ।

श्रीरिया-क्रि० वि० इस श्रीर, उधर ।

श्रीरियौ-देखो 'श्रीरी' ।

श्रीरी-स्त्री० १ हल्की चेचक का रोग । २ मकान में छन्दर की श्रीर का छोटा कक्ष ।

श्रीरीसौ-पु० [सं० अवधर्पः] केमर-चंदन घिसने का छोटा चकला (पत्थर) ।

श्रीर, श्रीर, (रू)-क्रि० वि० पुनः द्वारा ।

श्रीरुली-पु० वर्षा के अभाव में कूए के पानी से की जाने वाली साधारण सिचाई ।

श्रीरेम-पु० केवट ।

श्रीरी-पु० मकान का भीतरी कक्ष । स्टोर ।

श्रीरंग, श्रीरंगणी, श्रीरंग-पु० १ परिचय, पहिचान । २ कन्या या वधू के लिये बुलावा । ३ पृथक्ता, दूरी । प्रवास ।
४ ढोली गायक । -वि० (स्त्री० श्रीरंगणी) वियोगी ।
पृथक्, दूर ।

श्रीरंगी, (श्रीरूंगी)-स्त्री० [सं० उपनंदिनी] नव वधू के साथ जाने वाली लड़की या स्त्री । सखी ।

श्रीरंगी, (रू, श्री)-देखो 'श्रीरंगी' ।

श्रीर-पु० [सं० श्रीरः] १ जमानती व्यक्ति । [सं० अवति] २ हल की रेखा, सीता । ३ पंक्ति, लकीर । ४ पैतृक परंपरा, संस्कार, गुण । ५ लिखावट । -वि० सामान, तुल्य । -क्रि० वि० तरह से, भांति ।

श्रीर (रू)-देखो 'श्रीर' ।

श्रीरखणी (बी)-देखो 'श्रीरखणी' (बी) ।

श्रीरख, श्रीरखण, (रू, श्री)-स्त्री० जानकारी, ज्ञान । देखो 'श्रीरखण' ।

श्रीरखणी-वि० प्रसिद्ध, विख्यात । (स्त्री० श्रीरखणी)

श्रीरखणी (बी)-क्रि० १ पहिचानना, जानना । २ शिनाख्त करना ।

श्रीरखण (रू)-स्त्री० १ परिचय, पहिचान । २ प्रसिद्धि ।
३ पहिचान के चिह्न, संकेत । ४ ज्ञान । -वि० १ परिचित ।
२ देखो 'श्रीरखण' ।

श्रीरखणी (बी) श्रीरखणी (बी)-क्रि० १ परिचय कराना, पहिचान कराना । २ शिनाख्त कराना ।

श्रीरखणी (बी)-देखो 'श्रीरखणी' (बी) ।

श्रीरग (गणी)-स्त्री० १ स्मृति, याद । २ कीर्ति, पश । ३ स्तुति ।
४ सेवा । ५ विदेश । ६ प्रवास । -क्रि० वि० दूर, अलग ।
-वि० कीर्ति माने वाला ।

श्रीरगणी (गणी)-स्त्री० वियोगिनी ।

श्रीरगणी (बी)-क्रि० १ यशोगान करना । २ गायन करना ।
३ स्तुति करना । ४ यात्रा करना, प्रवास करना ।

श्रीरग (गी), श्रीरगणी-वि० १ प्रयास । २ देखो 'श्रीरग' ।

श्रीलुगुवो, श्रीलुगु-पु० १ वंशावली गाने वाला । २ कीर्ति गाने वाला । ३ स्तुति करने वाला । ३ प्रवासी ।

श्रीलग्न-देखो 'श्रीलग्न' ।

श्रीलगणी (बो)-देखो 'श्रीलगणी' (बो) ।

श्रीलज, (अ)-स्त्री० लज्जा, शर्म । लिहाज ।

श्रीलण, श्रीलणियो-पु० रोटी के साथ लगा कर खाया जाने वाला पदार्थ ।

श्रीलणी (बो)-कि० १ मिलाना, मिश्रित करना । २ अवलेह की तरह बनाना । ३ भिगोना । तर करना । ४ छिपाना ।

श्रीलनाल-स्त्री० वह किल्ली जिसमें बंधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है, जरायु ।

श्रीलबो (बो, मौ)-पु० [सं० उपालंभ] १ उपालंभ, उलाहना । २ शिकायत । ३ कलंक, बदनामी । ४ कसूर । ५ विलंब ।

श्रीलमोला-वि० समान, तुल्य ।

श्रीलरणी (बो)-कि० १ झुकना । २ झुककर बरसना । ३ आच्छादित होना । ४ तरंग या लहर उठना । ५ मंडराना उमड़ना ।

श्रीलवणी (बो)-देखो 'श्रीलवणी' (बो) ।

श्रीलस-वि० उमड़ा हुआ ।

श्रीलांडणी (बो)-कि० उल्लंघन करना । ध्यायना ।

श्रीला, श्रीला-कि० वि० [सं० उपल] १ वर्षा में गिरने वाले हिम कण । २ बिनीला । ३ मिश्री या दाणा शक्कर के लड्डू । ४ वज्र । ५ आश्रय, सहारा । -कि० वि० इधर, इस ओर । -श्रीला-वि० सब, समस्त । -दोला, दोला-कि० वि० आस-पास, चारों ओर, इर्द-गिर्द । -श्रीला-वि० समान, बराबर । -पु० भ्रम ।

श्रीलाटणी (बो)-कि० १ लौटना, वापस आना । २ लुटना, लोट-पोट करना ।

श्रीलाणी-पु० वहाना ।

श्रीलाणी (बो)-कि० १ मिलवाना, मिश्रित कराना । २ अवलेह बनवाना । ३ तर कराना ।

श्रीलाव-देखो 'श्रीलाव' ।

श्रीलाळ-स्त्री० १ तर्ही बूंदों की मामूली वर्षा । २ देखो 'उलाळ' ।

श्रीलावो-पु० धहाना, मिस ।

श्रीला-देखो 'श्रीला' ।

श्रीलाया-पु० मेढ़े बोनो का एक ढग ।

श्रीलायी-पु० १ लिखने का लंबा पत्र, चिट्ठी पत्र । २ खत । ३ गिरवा रहने वाला व्यक्ति ।

श्रीलायी-देखो 'अवलायी' ।

श्रीलीचली(बो)-देखो 'उलीचली(बो)'; देखो 'श्रीहीचली(बो) ।

श्रीलीकणी (बो)-कि० विचार में पड़ना, उलझना ।

श्रीलीडणी (बो)-कि० १ ऊपर चढ़ना । २ उल्लंघन करना । लांघना । ३ पशुओं का संभोग करना ।

श्रीलीदी-देखो 'श्रीलंदी' ।

श्रीली-स्त्री० [सं० अवली] १ पंक्ति, रेखा । २ लिखावट । ३ हल की सीता । ४ कतार । -दोली-कि० वि० आस-पास । चारों ओर ।

श्रीली, श्रीलीकानी-कि० वि० इधर, इस ओर । नजदीक ।

श्रीलीकणी (बो)-कि० विचार करना, विचार में पड़ना ।

श्रीलीबो (बो), श्रीलीबो-पु० १ बिच्छू के डंक लगाने से होने वाला दर्द । २ देखो 'श्रीलीबो' ।

श्रीली (डी), श्रीली (डी)-स्त्री० [सं० अवली] १ याद, स्मृति । २ प्रिय की याद, वियोग । ३ इस वियोग में गाया जाने वाला गीत ।

श्रीलीदी-देखो 'श्रीलंदी' ।

श्रीलीदोली-देखो 'श्रीलादोली' ।

श्रीली, श्रीली-कि० वि० आड़ या पदों में-दोली-कि० वि० चारों ओर । आस-पास ।

श्रीलीडी-वि० (स्त्री० श्रीलीडी) १ जूठा । २ जगह-जगह जूठा करने वाला । ३ मुंह मारने वाला ।

श्रीली, श्रीली-कि० वि० १ आड़ या ओट में । २ परदे में । ३ शरण में । ४ छुप कर । ५ इस ओर इधर । ६ गुप्त रूप से । -दोली-दोली-कि० वि० आस-पास । अगल-बगल । चारों ओर ।

श्रीलीकणी (बो)-कि० १ उलझना । २ विचार करना ।

श्रीली-पु० [सं० उपल] १ वर्षा में गिरने वाला हिम-कण । २ मिश्री या शक्कर का लड्डू । ३ बिनीला । ४ वज्र । ५ रक्षा, बचाव । -श्रीली-वि० पंक्ति-वद्ध । क्रमशः । पूर्ण ।

श्रीली (श्रीली)-पु० १ ओट, आड़ । २ बचाव । ३ रक्षा, शरण । ४ आश्रय । ५ सर्दी से बचाव के लिये की जाने वाली व्यवस्था ।

श्रीली-दोली-कि० वि० चारों ओर आस-पास ।

श्रीली, (डी)-देखो 'श्रीली' ।

श्रीलीहणी (बो)-देखो 'श्रीलीहणी' (बो) ।

श्रीली-देखो 'श्रीली' ।

श्रीली-देखो 'श्रीली' ।

श्रीली-१ देखो 'श्रीली' । २ देखो 'श्रीली' ।

श्रीली-पु० हाथी-कंसाने का थड़ा गड्डा ।

श्रीलीकणी (बो), श्रीलीकणी (बो)-कि० १ हारना, पराजित होना । २ शंका खाना, भिन्नकना । ३ स्थान छोड़ना, स्थान पर न आना (जानवर) । ४ ध्यायना ।

श्रीस-पु० [सं० अवधाय] वाष्प के कारण रात में गिरने वाले
जलकण जो सूर्योदय से पूर्व तक रहते हैं, शबनम ।
-क्रि० वि० अवश्य ।

श्रीसण-वि० [सं० ओपणः] कड़वा, कटु । अप्रिय ।
-स्त्री० चरपराहट, तीक्ष्णता ।

श्रीसणणी (बौ)-क्रि० गूँदना, भिंगोना (घाटा) ।

श्रीसता (या)-देखो 'अवस्था' ।

श्रीसध (धि धी)-देखो 'ओखध' ।

श्रीसधीस-देखो 'ओखधीस' ।

श्रीसपिणि-स्त्री० [सं० अवसपिणी, उत्सपिणी] गिरने का
समय, अधःपतन का समय ।

श्रीसर-पु० १ मृतक के पीछे किये जाने वाला विशेष भोज ।
२ अवसर, मौका । ३ असुर ।

श्रीसरणी (बौ)-क्रि० १ वर्षा प्रारंभ होना, बरसना, वृष्टि
होना । २ तृप्त होना, अघाना । ३ गिरना, पड़ना ।
४ देखो 'उसरणी' (बौ) ।

श्रीसरी-पु० १ एक दिन छोड़ कर आने वाला ज्वर । २ किसी
कार्य के लिए क्रमशः आने वाला अवसर, पारी ।

श्रीसल-वि० बराबर, समान, तुल्य ।

श्रीसलणी (बौ)-क्रि० १ डरना, भयभीत होना । २ भागना,
दुर्द्ध स्थल छोड़ कर भागना ।

श्रीसविण-पु० चावलों का पानी ।

श्रीसाण-पु० १ एहसान, उपकार, अनुग्रह । २ अवसर, मौका ।
३ विश्राम, अवकाश । ४ अवसान ।

श्रीसाप-पु० १ शौर्य, पराक्रम । २ साहस, हिम्मत । ३ शक्ति,
बल । ४ वदान्यता, उदारता । ५ प्रभाव, धाक । ६ दान ।
६ कीर्ति, महिमा । ७ एहसान ।

श्रीसारौ-पु० बरामदा, दालान ।

श्रीसावण-पु० किसी खाद्य पदार्थ के साथ उबाला हुआ पानी ।

श्रीसास-पु० निश्वास ।

श्रीसियाळ, श्रीसियाळी-देखो 'ओयाळी' । (स्त्री० ओसियाळी)

श्रीसोकरण, श्रीसोखल-पु० वारना लेना, बलैया लेना क्रिया ।
उपकृत होना क्रिया ।

श्रीसोसव, श्रीसोसू, श्रीसोसो-देखो 'उसीसो' ।

श्रीसुर-देखो 'असुर' ।

श्रीसी-पु० [सं० अवसव] १ आँखों का सुरमा । २ अंजन,
काजल । ३ दवा, औषध ।

श्रीहं-सर्व० मैं । वह ।

श्रीह-अव्य० शोक, पीड़ा या खेद सूचक ध्वनि । -सर्व० यह ।

श्रीहड़णी (बौ)-क्रि० [सं० अवहिडनम्] १ पीछे हटाना ।
२ रोकना, बाधा देना । ३ पराजित करना । ४ हतोत्साहित
करना ।

श्रीहड़ो-पु० [सं० अवहेडनम्] १ टोकना, धर्जें आदि का
भाव । २ कटु उत्तर । ३ प्रत्युत्तर । ४ उपालंभ ।

श्रीहटणी (बौ), श्रीहट्टणी (बौ)-क्रि० [सं० अवटंक] १ टकना,
आच्छादित करना । २ हटाना । ३ धामना, रोकना, धमना ।
रुकना । ४ पीछे लौटाना ।

श्रीहणी (बौ)-क्रि० होना ।

श्रीहथणी (बौ)-क्रि० १ अस्त होना । २ बुरे दिन आना ।
३ पराजित होना । ४ अवसान होना, मरना ।

श्रीहदावार, श्रीहदेवार-देखो 'ओदावार'

श्रीहदी-देखो 'ओदी' ।

श्रीहरियो-पु० [सं० आश्रम] १ मकान, घर । देखो 'ओरी' ।

श्रीहरिसौ-देखो 'ओरीसौ' ।

श्रीहसणी (बौ)-देखो 'ओहोसणी' (बौ) ।

श्रीहार-पु० [सं० अवधार] रथ या पालकी का पर्दा ।

श्रीहाळ-पु० [सं० उहावलि] पानी के साथ बहने या ऊपर
तैरने वाला बूड़ा करकट ।

श्रीहासणी (बौ)-क्रि० धूप-अगरबत्ती जलाना । सुवासित
करना ।

श्रीहि, श्रीहिज, श्रीही-सर्व० १ निश्चय यही । २ देखो 'ओह' ।

श्रीहिचणी (बौ), श्रीहीचणी (बौ)-देखो 'अळूचणी' (बौ) ।

श्रीहिनाण-देखो 'अवधिग्यांन' ।

श्रीहिनाणी-वि० [सं० अवधिज्ञानी] अवधिज्ञानी (जैन) ।

श्रीहीनी-वि० [सं० अवहीन] १ न्यून, छोटा । २ देखो
'ओखणी' ।

श्रीहोड़ी-देखो 'ओहड़ी' ।

श्रीहोसणी (बौ)-क्रि० १ उद्भासित होना, प्रगट होना ।
२ उदय होना । ३ प्रकाशित होना ।

--औ--

औ-वर्णमाला का दशवां स्वर वर्ण ।

औंकार-देखो 'औंकार' ।

औंकारणी (बौ)-देखो 'हुंकारणी' (बौ) ।

औंड़ी-वि० गहरा । (स्त्री० औंड़ी)

औ-पु० [सं०] १ परब्रह्म । २ शेषनाग । ३ अभिमान ।
४ पृथ्वी । ५ शब्द । -अव्य० १ संबोधन, आश्चर्य, शोक
आदि भावों की सूचक ध्वनि । २ अरे, हे, ओ । -सर्व०
वह । यह । उस । -वि० और, अनन्त ।

औक-स्त्री० किसी मांगलिक अवसर (त्योहार) के बाद या
समाप्ति के पूर्व यदि किसी संबंधी या कौटुम्बिक व्यक्ति की
मृत्यु से अहर्ष की दशा हो ।

औकट-पु० संहार, ध्वंस ।

औकात-स्त्री० [अ० 'वक्त' का बहुव.] १ सामर्थ्य । शक्ति ।
२ हेमियत, बिसात, । ३ वक्त, समय ।

औखंगी-वि० [सं० अभिषंग] १ अयंकर, भयावह । २ टेढ़ा,
तिरछा ।

औख-वि० जबरदस्त, जोरदार । -स्त्री० त्याग, परहेज ।
देखो 'औक' ।

औखण्णी (बौ)-कि० सूखा अनाज कूटना ।

औखद (घ, धी)-देखो 'औखध' । —ईस='औखधीस' ।

औखर-देखो 'आखर' ।

औखलणी-वि० [सं० अपस्खलनं] वीर, बहादुर, टक्कर
लेने वाला ।

औखाणी-देखो 'उखाणी' ।

औग-देखो 'ओग' ।

औगल-देखो 'अवगुल' ।

औगत-१ देखो 'अवगत' । २ देखो 'अवगति' ।

औगाढ़-देखो 'अवगाढ़' ।

औगाळ-देखो 'ओगाळ' ।

औगाळणी (बौ)-देखो 'ओगाळणी' (बौ) ।

औगाळी-देखो 'ओगाळी' ।

औगाहणी (बौ)-देखो 'अवगाहणी' (बौ) ।

औगुल (न)-पु० [सं० अवगुल] दोप, कुराई । —गारी-वि०
कृतघ्नी, अवगुणी । —गाळी-वि० अवगुणों का नाश
करने वाला ।

औगी-देखो 'ओगी' ।

औग्रह-देखो 'उग्र' ।

औघ-देखो 'ओघ' ।

औघड़-देखो 'ओघड़' ।

औघट-देखो 'ओघट' । —घाट='ओघट-घाट' ।

औघाट-देखो 'ओघट' ।

औघी-देखो 'ओघी' ।

औड़ी-देखो 'ओड़ी' ।

औचट-स्त्री० १ कठिनाई । २ संकट । ३ धर्म संकट, असमंजस ।
—कि०वि० सहसा, अचानक ।

औचाट-देखो 'उचाट' ।

औछंडणी (बौ)-देखो 'ओछंडणी' (बौ) ।

औछ-देखो 'ओछ' ।

औछाड़ (णी)-पु० १ उमंग, लहर, तरंग । २ पर्दा । ३ उफान,
उबाल । ४ आच्छादन । ५ छाया । ६ रक्षक । ७ वस्त्र
विशेष ।

औछाड़णी (बौ)-१ आच्छादित करना, ढकना । २ रक्षा
करना, बचाना ।

औछारणी (बौ)-कि० छाना, आच्छादित करना या होना, ढकना,
ढका जाना ।

औछारणी (बौ)-कि० १ चुराना । २ गायब करना । ३ आकषित
करना । ४ देखो 'उछारणी' (बौ) ।

औछाव, औछाह-१ देखो 'उत्साह' । २ देखो 'उत्सव' ।

औज-देखो 'ओज' ।

औजार-पु० [अ०] १ कारीगरी में काम आने वाले उपकरण ।
२ हथियार ।

औजास-देखो 'उजास' ।

औजासणी (बौ)-देखो 'उजासणी' (बौ) ।

औजी-देखो 'ओजी' ।

औसड़ (साड़)-पु० १ तलवार का तिरछा प्रहार । २ प्रहार,
चोट । ३ धक्का, भटका । ४ टक्कर । ५ प्रताड़ना, निंदा ।
६ झिड़की । —कि०वि० लगातार, निरन्तर ।

औसड़णी (बौ)-कि० [सं० अवभटनम्] १ तलवार का तिरछा
प्रहार करना । २ धक्का या भटका देना । ३ टक्कर लेना ।
४ गुद करना ।

श्रीजाङ्गली (बौ)—क्रि० १ चीरना । २ काटना । ३ मारना, संहार करना । ४ प्रहार करना, वार करना । ५ आक्रमण करना । ६ ग्राह करना, रोकना । ७ अस्त-व्यस्त करना, विखेरना । ८ प्रताड़ना देना, झिड़कना ।

श्रीफाट—स्त्री० झपट, उलटा प्रहार ।

श्रीसाळ—स्त्री० १ माग की ऊंची लपट, तेज लपट । २ देखो 'श्रीफाट' ।

श्रीटणो (बौ)—देखो 'श्रीटणी' (बौ) ।

श्रीटाणी (बौ)—देखो 'श्रीटाणी' (बौ) ।

श्रीटाळ—वि० घर्न, चालाक, बदमाश ।

श्रीटो—देखो 'श्रीटो' ।

श्रीठंभण, श्रीठंभ—देखो 'श्रीठंभ' ।

श्रीठी—देखो 'श्रीठी' ।

श्रीड—क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ ऐसे, इस तरह । —स्त्री० १ जाति, प्रकार । २ देखो 'श्रीड' ।

श्रीडणी (बौ)—देखो 'श्रीडणी' (बौ) ।

श्रीडणी—देखो 'श्रीडणी' ।

श्रीदूर—वि० मनमौजी, स्वच्छन्द ।

श्रीड़ाळ—पु० डलुवां भाग ।

श्रीढो—देखो 'श्रीढो' ।

श्रीण—१ देखो 'श्रीण' । २ देखो 'श्रीरण' ।

श्रीतार—देखो 'श्रीतार' ।

श्रीतारी—देखो 'श्रीतारी' ।

श्रीतारी—१ देखो 'उतारी' । २ देखो 'श्रीतार' ।

श्रीतमि—पु० [सं० श्रीतमिः] चौदह मन्वन्तरों में से तीसरा ।

श्रीथरणी (बौ)—क्रि० फैलना, विस्तार पाना ।

श्रीथि—क्रि० वि० वहां ।

श्रीदनिक—पु० [सं०] सूफकार, रसोईया ।

श्रीदधिक—पु० कर्मों के विपाकानुभव रूप होने वाली आत्मा की वैभाविक स्थिति ।

श्रीदसा—'श्रीदसा' ।

श्रीदात—वि० [सं० अवदात] श्वेत, गौर ।

श्रीदुंबर—पु० एक प्रकार का कृष्ण रोग ।

श्रीदो—१ देखो 'श्रीदो' । २ देखो 'श्रीदो' ।

श्रीद्रकणी (बौ)—देखो 'श्रीद्रकणी' (बौ) ।

श्रीद्रव, श्रीद्राव—देखो 'श्रीद्रव' ।

श्रीद्राह, (हो)—पु० भय, आतंक ।

श्रीध—१ देखो 'श्रीध' । २ देखो 'श्रीध' । ३ देखो 'श्रीध' ।

श्रीधकणी (बौ)—देखो 'श्रीधकणी' (बौ) ।

श्रीधमोहरी—पु० ऊंचा मुंह कच्चे चलने वाला हाथी ।

श्रीधूळणी (बौ)—देखो 'श्रीधूळणी' (बौ) ।

श्रीधूळणी—वि० भस्त, उन्मत्त । बेपरवाह ।

श्रीधेस—देखो 'श्रीधेस' ।

श्रीनाड़ (डो)—देखो 'श्रीनाड़' ।

श्रीनींदो—देखो 'श्रीनींदो' ।

श्रीपणी (बौ)—देखो 'श्रीपणी' (बौ) ।

श्रीपत—देखो 'श्रीपत' ।

श्रीपम (मा)—१ देखो 'श्रीपम' । २ देखो 'उपमा' ।

श्रीवासणी (बौ)—देखो 'श्रीवासणी' (बौ) ।

श्रीवासी—स्त्री० उबासी, जम्हाई ।

श्रीमाह—देखो 'उमाव' ।

श्रीमाहणी (बौ)—देखो 'उमाहणी' (बौ) ।

श्रीयण—१ देखो 'श्रीयण' । २ देखो 'श्रीरण' ।

श्रीरंग—पु० [अ०] १ सिंहासन । २ भिन्न रंग ।

श्रीर—पु० पशु के भरने के बाद निकलने वाला पशु का मल ।

श्रीर—वि० [सं० अपर] १ अन्य, दूसरा । २ भिन्न । ३ अतिरिक्त, अलावा । ४ अधिक, ज्यादा । —अव्य० १ पुनः पुनः ।

२ संयोजक शब्द, अरु ।

श्रीरठं—क्रि० वि० अन्यत्र, दूसरी जगह पर ।

श्रीरणी (नी)—देखो 'श्रीरणी' ।

श्रीरणी (बौ)—देखो 'श्रीरणी' (बौ) ।

श्रीरत—स्त्री० [अ०] १ स्त्री, महिला । २ पत्नी, भार्या ।

श्रीरती—पु० [सं० उरस्तापः] १ शक, संदेह । २ दुःख, शोक । ३ खेद, पश्चाताप ।

श्रीरस—पु० [सं०] १ बारह प्रकार के पुत्रों में से श्रेष्ठ पुत्र जो अपनी धर्मपत्नी के गर्भ से पैदा हुआ हो । २ देखो 'श्रीरस' ।

श्रीरहकणी (बौ)—क्रि० वीररमपूर्ण राग गाना ।

श्रीरां—वि० दूसरे, अन्य । —क्रि० वि० फिर, पुनः ।

श्रीराळ—वि० भयंकर, प्रचंड ।

श्रीरावो, (सी)—पु० [सं० अवरोध] उदंड पशुओं को बांधने का लम्बा रस्सा ।

श्रीरं (रू, री)—१ देखो 'श्रीरं' । २ देखो 'श्रीरं' ।

श्रीरंगु (गू) श्रीरंग—देखो 'श्रीरंगु' ।

श्रीरंगणी (बौ)—देखो 'श्रीरंगणी' (बौ) ।

श्रीरंगि (गी)—देखो 'श्रीरंगु' ।

श्रीररणी (बौ)—देखो 'श्रीररणी' (बौ) ।

श्रीरस—क्रि० वि० इर्द-गिर्द, आम-पाम । चारों ओर ।

श्रीराङ्गणी (बौ)—देखो 'उलटणी' (बौ) ।

श्रीराव—स्त्री० [अ०] संतान, संतति । नस्ल ।

श्रीरियो—देखो 'श्रीरियो' ।

श्रीरि (ळी)—देखो 'श्रीरि' ।

श्रीले (लं)—देखो 'श्रीले' ।

श्रीवात-पु० विधोग, विरह । विच्छोह ।
 श्रीसलणौ (बौ)-देखो 'श्रीसलणौ' (बौ) ।
 श्रीसत-पु० [ग्र०] समष्टि का सम विभाग । अनुपात ।
 -वि० सामान्य, साधारण । माध्यमिक ।
 श्रीसध (घि)-देखो 'श्रीसध' ।
 श्रीसर (श्रीसर-मोसर)-देखो 'श्रीसर' ।
 श्रीसरणी (बौ)-देखो 'श्रीसरणी' (बौ) ।
 श्रीसरि (री)-१ देखो 'श्रीसर' । २ देखो 'श्रीसर' ।

श्रीसांण (न)-१ देखो 'श्रीसांण' । २ देखो 'एहसांण' ।
 श्रीसाप-देखो 'श्रीसाप' ।
 श्रीसार-देखो 'श्रीसार' ।
 श्रीसास-देखो 'श्रीसास' ।
 श्रीस्था-देखो 'श्रीस्था' ।
 श्रीहथणी (बौ)-देखो 'श्रीहथणी' (बौ) ।
 श्रीहरी-देखो 'श्रीरी' ।
 श्रीहिज (हीज)-देखो 'श्रीहीज' ।

—क—

क-देव नागरी वर्ण माला का प्रथम व्यंजन-वर्ण ।
 कं-पु० [सं० कम्] १ कामदेव । २ कमल । ३ कार्य । ४ शिर ।
 ५ जल । ६ मुख । ७ स्वर्ण । ८ दूध । ९ हर्ष । १० दुःख ।
 ११ विष । १२ अग्नि । -वि० शुभ ।
 कंड़ (इ)-देखो 'कंड़' ।
 कंड़्यां-कि०वि० [सं० कियत] १ कब तक । [सं० कथम्] २ कैसे, किस तरह ।
 कंई (ई), कंईक-सर्व० [सं० किम्] जिज्ञासामुचक सर्वनाम,
 क्या, कैसे, कैसी । -वि० १ बहुत अच्छा । २ कितना ।
 [सं० किंचित्] ३ तनिक, थोड़ा ।
 कंक-पु० [सं०] (स्त्री० कंकी) १ श्वेत चील । २ एक
 मांसाहारी पक्षी । ३ बगुला, बक । ४ यमराज । ५ नर
 कंकाल । ६ बाण, तीर । ७ क्षत्रिय । ८ अज्ञातवास में
 युधिष्ठिर का नाम । ९ सूर्य । १० शिव । ११ युद्ध ।
 १२ शृगाल । १३ कौभ्रा । १४ युद्ध । १५ कंस का भाई ।
 १६ बनावटी, ब्राह्मण । १७ एक की संख्या । -वि० १ तंग ।
 २ थका हुआ । ३ एक । -पञ्च-पु० तीर, बाण ।
 कंकमाळण-देखो 'कंकमाळण' ।
 कंकड़-पु० [सं० कंकर] १ पत्थर का छोटा खंड । २ धूलि करण, रवा ।
 ३ नगीना ।
 कंकडीली-पु० [सं० कंकडिल] कंकड़ युक्त स्थान या भूमि ।
 कंकट-पु० [सं० कंकटः] १ कवच मैलिक उपकरण । २ असुर,
 राक्षस । ३ अंकुश । -वि० १ दुष्ट, घातकामी ।
 कंकण-पु० [सं० कंकणः] १ कलाई पर धारण करने का
 आभूषण, कड़ा, छड़ी । २ विवाह सूत्र । ३ चोटी, कलंगी ।
 ४ एक प्रकार का राग । ५ एक प्रकार का डिगल गीत ।
 ६ देखो 'कोकण' । -वि० कृतिल ।

कंकणी (नी, नीय)-स्त्री० [सं० कंका] १ ग्रीधनी [सं० कंकणी]
 २ पायल । ३ घंघरू, नूपुर । ४ बजने वाला आभूषण ।
 कंकतक-पु० [सं०] केश-मार्जक, कंघा ।
 कंकर-१ देखो 'कंकड़' । २ देखो 'कंकरीट' ।
 कंकरी-१ देखो 'कंकर' । २ देखो 'कंकरीट' ।
 कंकरीट-स्त्री० [ग्र० कंकरीट] १ छोटे-छोटे कंकरों का समूह ।
 २ छत बनाने का मसाला ।
 कंकला-स्त्री० शोभा ।
 कंकाणी-देखो 'कंकणी' ।
 कंका-स्त्री० [सं०] १ कंस की वहिन का नाम । २ देखो
 'कंकणी' ।
 कंकाड़ी-देखो 'कंकड़ी' ।
 कंकाळ-पु० [सं० कंकालः] १ अस्थिपंजर, ठठरी । २ युद्ध ।
 ३ कलह । ४ सिंह । -मातल-स्त्री० पार्वती, दुर्गा ।
 -माळी-पु० शिव, महादेव ।
 कंकाळण, कंकाळी-स्त्री० १ दुर्गा का एक रूप । २ कलहारी स्त्री ।
 ३ भैंरवी । -वि० भगड़ालू, कलहप्रिय ।
 कंकु, (म)-देखो 'कुकुम' ।
 कंकुपत्री-देखो 'कुंकुमपत्रिका' ।
 कंकुदमान (वान)-देखो 'कुंकुदमान' ।
 कंकड़, कंकड़ी-पु० १ करेल को जाति का छोटा शाक, इसकी
 लता प्रायः केर वृक्ष पर छितरा कर फलती है । २ एक
 प्रकार का कांटेदार वृक्ष ।
 कंकैलो-पु० [सं० कंकैलि] अशोक वृक्ष ।
 कंकड़ी-देखो 'कंकड़ी' ।
 कंकोतरो (त्री)-देखो 'कुंकुम पत्रिका' ।
 कंकोळ-पु० शीतल चीनी के वृक्ष का एक भेद ।

कंखणी-देखो 'कंकणी' ।
 कंखर-पुं० पीला वस्त्र । -वि० पीला ।
 कंखा-स्त्री० [सं० आकांक्षा] इच्छा ।
 कंखी-वि० [सं० आकांक्षिन्] इच्छुक, कामना करने वाला ।
 कंग-देखो 'कंगल' ।
 कंगड़ारीराय-देखो 'कांगड़ारीराय' ।
 कंगड़ी-देखो 'कांगड़ी' ।
 कंगण (न)-देखो 'कंकण' ।
 कंगर, कंगार (रौ)-पुं० १ दीवार पर बना नोकदार किनारा ।
 २ किनारा ।
 कंगल (त्ल)-पुं० [सं० कंकटः] कवच ।
 कंगली-वि० [सं० कंकालू] (स्त्री० कंगली) १ कंगाल, निर्धन ।
 २ दरिद्र । ३ अशक्त, निर्बल ।
 कंगवा-स्त्री० १ श्वेत रंग की ज्वार । २ ज्वार की फसल का एक रोग ।
 कंगवी-पुं० खड़ी फसल में अनाज विकृत होने का एक रोग ।
 कंगस-पुं० १ कवच । २ देखो 'कांगसी' ।
 कंगहड़ी-पुं० वृक्ष विशेष ।
 कंगसी-देखो 'कांगसी' ।
 कंगाल-वि० [सं० कंकाल] (स्त्री० कंगालण, कंगालणी) निर्धन, दरिद्र, गरीब ।
 कंगली-स्त्री० निर्धनता, गरीबी ।
 कंगी (घी)-स्त्री० [सं० कंकती] १ स्त्रियों के केश सजाने का छोटा उपकरण, कंधी । २ कपड़ा बुनने का एक उपकरण ।
 कंगूर, (रौ)-पुं० [फा० कुंगर] १ मुकुट-मणि । २ आभूषणों पर बना छोटा रत्न । ३ शिखर । ४ दीवार पर लगे तीक्ष्ण प्रस्तर-खण्ड ।
 कंगी, कंगी-पुं० [सं० कंकतक] १ बाल बनाने का उपकरण, केश-मार्जक, कंधा । २ करघे में भरनी के तागों को कमने का एक यंत्र ।
 कंचड, कंचकी-देखो 'कंचुकी' ।
 कंचण (न)-पुं० [सं० कंचन] १ स्वर्ण, सोना । २ घट्टा ।
 ३ धन, दौलत । -वि० निर्मल, निरोग । -गिर, गिरि-पुं० सुमेरु पर्वत । २ लंका का पर्वत । ३ जालौर का पर्वत ।
 -वशी, वस-वि० सुनहरा । -शिखर-पुं० १ सुमेरु पर्वत ।
 कंचली (नी)-स्त्री० १ वेश्या । २ नर्तकी । ३ वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों का एक वर्ग ।
 कंचरी, कंचली, कंचली(वी)-स्त्री० १ मुसलमान वेश्याओं का एक भेद । २ देखो 'कांचली' । ३ देखो 'कंचुकी' ।
 कंचो-१ देवी 'कंचुकी' । २ देखो 'कांचो' ।
 कंचु, कंचुक, कंचुकी, कंचुवी, कंचुवी, कंचुकी-स्त्री० [सं० कंचुक] १ अंगिया, चोली । २ मर्प चर्म, कंचुल ।

३ पोशाक । ४ कवच । ५ घचकन । ६ अंतःपुर का नपुंसक चौकीदार । ७ सांप, भुजंग । ८ वह घोड़ा जिसका घुटने पर से एक पैर सफेद हो ।
 कंचोली-देखो 'कंचोली' ।
 कंज-पुं० [सं०] १ कमल । २ ब्रह्मा । ३ ब्रह्म । ४ महादेव ।
 ५ अमृत । ६ फूल । ७ सिर के बाल । ८ चरण की एक रेखा । ९ दोष । -वि० रक्त-वर्ण, लाल । -ग्रि-पुं० चन्द्रमा । -कल्याणी-स्त्री० कमल नाल । -ज-पुं० पुं० विधि, ब्रह्मा । -जुण, जोनी-पुं० ब्रह्मा, विधि ।
 -विकास-पुं० सूयं ।
 कंजर, कंजार-पुं० [सं० कंजरः, कंजारः] (स्त्री० कंजरी) १ चन्द्रमा । २ हाथी । ३ ब्रह्मा की उपाधि । ४ उदर, पेट ।
 ५ एक पिछड़ी जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
 कंजासण (न)-पुं० [सं०] ब्रह्मा, विधि ।
 कंजुलिक-पुं० [सं० कंजलिक] १ कमल का फूल । २ फूल । ३ फूल का रेशा ।
 कंजूस-वि० कृपण, सूम ।
 कंजूसी-स्त्री० कृपणता ।
 कंक्ष-पुं० १ क्रींच पक्षी । २ देखो 'कुंज' ।
 कंक्षणी (बी)-क्रि० १ कंज की दशा में शीघ्र के लिए अधिक जोर करना । २ उक्त प्रकार से जोर करते समय मुंह से टपकने की ध्वनि ।
 कंटक, (कि, की)-पुं० [सं० कंकटः] १ कांटा । २ डंक । ३ नख । ४ नोक । ५ लोहे का अंकुर । ६ मूल । ७ बाधा, विघ्न । ८ कष्ट । ९ जन्म कुंडली में पहला, चौथा, सातवां व दसवां स्थान । १० अंकुर । ११ अमुर, राक्षस । १२ रावण । १३ शत्रु । -वि० १ दुष्ट । २ कठोर, निर्दयी । ३ बाधक । ४ छोटा, लघु । -ग्रि (री)-पुं० शोराम । उपानह, जूता । -असण-पुं० विष्णु । ऊंट । देवी ।
 कंटाळ, कंटाळु, (कंटाळी)-वि० (स्त्री० कंटाळी) कांटेदार, कंटीला । -पुं० एक प्रकार का घास ।
 कंटाळियौ-पुं० ऊंट का चारजामा विशेष जो बोझा लादने के समय उपयोग में लिया जाता है ।
 कंटाळी-स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति ।
 कंठि, कंठी-१ देखो 'कांठो' । २ देखो 'कंठी' ।
 कंठीर-देखो 'कंठीर' ।
 कंठोली-वि० (स्त्री० कंठोली) कांटेदार, कांटों वाला ।
 कंठेस्वरी-स्त्री० सोलंकीयों की कुल देवी ।
 कंठोलियौ-पुं० गोखरू कांठी नामक औषधि या इसका फल ।
 कंठ-पुं० [सं० कंठः] १ शीवा, गला । २ देहवा । ३ स्वर, आवाज । ४ जड़ । ५ अनुप्रास । ६ तलवार की मूठ की चकरी ।

७ पात्र का किनारा । ८ पड़ोस । ९ तलवार ।
 -वि० १ अच्छे स्वर वाला सुस्वर । २ बैंगनिया रंग का ।
 —आभरण-पु० गले का हार, माला । —आँग-पु०
 गले का कवच, जाली, पट्टी । —मणि-स्त्री० घोड़े के
 कंठ पर होने वाली भंवरी (शुभ) । —माळ, माळा-स्त्री० गले
 का हार । गले का एक रोग । —मूळ-पु० घोड़े के कंठ
 पर होने वाली मीरी (अशुभ) । कंठ का रोग विशेष ।
 कंठळ(ळा, ळिथ, ळी)-पु० १ गले का आभूषण । २ देखो 'कंठळ' ।
 कंठळी-देखो 'कंठळी' ।
 कंठसरी-स्त्री० [सं० कंठश्री] गले का हार, माला ।
 कंठस्थ-वि० [सं० कंठस्थः] १ जवानी याद, कंठाग्र । २ कंठ
 से उच्चारण किया जाने वाला । ३ कंठगत । ४ गले में
 अटका हुआ ।
 कंठाग्र, कंठाग्रहण-पु० आलिंगन । -वि० कंठस्थ ।
 कंठाळ (क)-पु० अंठ ।
 कंठाळी-वि० १ बनवान । २ मधुर राग से गाने वाला ।
 ३ देखो 'कंठाळक' ।
 कंठि (का, य)-स्त्री० १ तट । २ कगार । ३ देखी 'कंठी' ।
 —राव-पु० सिंह, व्याघ्र ।
 कंठी-स्त्री० [सं०] १ गर्दन । २ गले की माला । ३ गले का
 आभूषण । ४ रक्त चंदन की माला । ५ कुछ पक्षियों के
 गले की लकीर । ६ तलवार की म्यान का एक भाग ।
 ७ गुंज, पट्टा । ८ कालर । —बंध-वि० अनुयायी, शिष्य ।
 —र, रव-पु० सिंह, शेर । कबूतर । मादा हथिनी ।
 —रण, रणी-स्त्री० सिंहनी । —रत्न, रवौ, रौम्री-पु० सिंह ।
 कंठी-पु० मणियों का हार । २ बड़े मनिकों की माला ।
 ३ कंठ का आभूषण । ४ गला, कंठ ।
 कंठ, (म)-वि० १ चालाक, धूर्त । २ पाखंडी, ठोंगी । ३ बेकार,
 व्यर्थ । ४ समुत्त ।
 कंठाळ-पु० [सं० करनाल] तुरही नामक वाद्य ।
 कंठी-स्त्री० टोकरी ।
 कंठोज-पु० १ पत्थर की चुनाई करने वाला । २ देखी 'कंठियी' ।
 कंठोर-वि० (स्त्री० कंठोरण) १ भयंकर, भयावह । २ पेह,
 बटु भस्मी । ३ बड़ा प्रफीमची । -स्त्री० करवीर ।
 कंठुकर-पु० [सं०] कपि कच्छ नामक लता, कज्ज ।
 कंठू, (य) कंठूया-स्त्री० [सं० कंठूया] मृजली ।
 कंण-देखो 'कण' ।
 कंणदोरौ-देखो 'कणदोरौ' ।
 कंणयर-देखो 'कणर' ।
 कंणारी-देखो 'कणसारी' ।

कंत, (झी) (ती)-पु० [सं० कान्त] १ पति । २ ईश्वर ।
 ३ स्वामी, मालिक । ४ सात मात्राओं का एक मात्रिक
 छंद । —हरख-स्त्री० शय्या, सेज ।
 कंता-स्त्री० [सं० कान्ता] स्त्री, पत्नी ।
 कंतार, कंतारक-देखो 'कंतार' ।
 कंतुकी-स्त्री० केतकी ।
 कंतैर-पु० १ खलिहान में पड़ा रहने वाला भूसा । २ एक
 कंटीला वृक्ष विशेष । ३ देखो 'कान्ता' ।
 कंती, कंय (घौ)-देखो 'कंत' ।
 कंथड़ (झी)-पु० १ नाथ सम्प्रदाय का साधु । २ देखो 'कंत' ।
 कंथड़ी, कंथी-स्त्री० चीथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ पहनने
 का वस्त्र । २ फकीरों का चोगा । ३ गुदड़ी । —घार,
 घारी-पु० शिव, महादेव, संन्यासी ।
 कंव-पु० [सं०] १ घातु, मूली, गाजर आदि जड़ीय पदार्थ । मूल,
 जड़ । २ गुलाब के फूल चीनी के साथ जमा कर बनाया
 हुआ खाद्य पदार्थ (गुलकंद) । ३ मेघ, बादल । ४ योनि का
 एक रोग । ५ एक वर्ण वृत्त । ६ छप्पय छंद का एक भेद ।
 ७ दुःख, उदासी । ८ कलंक । ९ श्यामता । १० नो
 निधियों में से एक । ११ समूह । १२ कंवा । -वि० मूर्ख ।
 —क-पु० कितान, चंदोवा । —चर-पु० सूअर । —मूळ-
 -पु० जड़ीय पदार्थ ।
 कंदल (न)-१ देखो 'कंदळ' । २ देखो 'कुंदन' ।
 कंदप, कंदरप-पु० [सं० कंदर्पः] १ कामदेव । २ श्रीकृष्ण के
 पौत्र का नाम । ३ पौरुष, पुंसत्व । -वि० कुत्सित वर्षावाला,
 अभिमानी । —ग्रह-स्त्री० त्रयोदशी ।
 कंदरा (री)-स्त्री० [सं० कंदरा] गुफा, गुप्त स्थान ।
 —कर-पु० पर्वत, गहाड़ ।
 कंदळ-पु० [सं० कंदलः] १ नाश, संहार, ध्वंस । २ युद्ध,
 कलह । ३ शोरगुल । ४ सोना, स्वर्ण । ५ टुकड़ा ।
 ६ समूह ।
 कंधळी-स्त्री० १ ध्वजा, पताका । २ देव वृक्ष । ३ छठी बार
 निकाला गया तेज शराब । ४ एक प्रकार का हरिण ।
 ५ युद्ध, समर । ६ देखो 'कंदळी' ।
 कंदार-देखो 'गंधार' ।
 कंदारी-पु० पथ, रास्ता ।
 कंवाळ-पु० [सं० स्कंधालय] धनुष ।
 कंदोजणी (बी)-देखो 'किदणी' (बी) ।
 कंदोल-पु० अशुआ, नोक, तीर ।
 कंदुक-पु० [कंदुकः] गंद ।
 कंदू, कंदूड़ी-पु० ग्वार या तिल के कटे पीसों का व्यवस्थित-
 ढेर । गंज ।

कं बोई

(१८४)

कं बाड़ी

कं बोई—पु० [सं० कांदविक] हलवाई । —लाग—स्त्री० हलवाईयों से लिया जाने वाला कर ।
 कं बोराबंध—वि० मेखला धारण करने वाला । —पु० वह व्यक्ति या बालक जिसके करघनी बंधी हो ।
 कं बोरी—देखो 'कणदोरी' ।
 कं बो—देखो 'कुं बो' ।
 कं ब्रप—देखो 'कंदरप' ।
 कं घ (डक)—पु० [सं० स्कंध] १ कंधा, अंश । २ गर्दन, ग्रीवा । ३ डाली । ४ आश्रय, सहारा । —क—पु० गला, गर्दन । —रूढ़ा—स्त्री० एक देवी विशेष ।
 कंधर—पु० १ तालाब । २ देखो 'गंधार' । ३ देखो 'कंधी' ।
 कंधाळधुर—पु० बेल ।
 कंधुर, कंधी—पु० [सं० स्कंध] कंधा, अंश ।
 कंन—१ देखो 'कस्न' । २ देखो 'कान' ।
 कंनोर—देखो 'कणेर' ।
 कं प (ण, ए, न)—स्त्री० [सं० कम्प] १ कंपन, धरंहुट । २ चंचलता । ३ घड़कन । ४ कंपकंपी । ५ दोष, कलंक । ६ महीन धूलि, रज । ७ भय, डर । ८ शृंगार का एक सात्विक स्थाई भाव । —कंपी—स्त्री० धरधराहुट, भय ।
 कं पटुयण—स्त्री० कंउच नामक लता ।
 कं पणो (बो)—देखो 'कंपणो' (बो) ।
 कं पणो (नो)—स्त्री० [सं०] १ व्यावसायिक संप । २ मित्र मंडली ।
 कं पाणो (बो)—प्रे०क्रि० १ कंपन, पैदा करना । २ डरना । ३ हिलाना । ४ झंकृत करना ।
 कं पाळ—देखो 'कपाळ' ।
 कं पावणो (बो)—देखो 'कंपाणो' (बो) ।
 कं पास—पु० १ दिशा ज्ञान कराने वाला एक यंत्र । २ पैमाइश में काम माने वाला यंत्र । ३ बटुई का एक औजार ।
 कं पित—वि० [सं०] कंपायमान, कंपने वाला । २ चंचल, अस्थिर । ३ भयभीत, डरा हुआ ।
 कं पी—स्त्री० १ कंपन, धरंहुट । २ कंपकंपी । ३ महीनतम, रज, धूलि ।
 कं पु (पू)—पु० १ सेवा, फौज । २ सम्य जिविर । ३ जन समूह । ४ देखो 'कंप' ।
 कं ब—स्त्री० [सं० कंबा] १ छड़ी । २ देखो 'कंबू' ।
 कं बड़ी—देखो 'कांबड़ी' ।
 कं बंध—देखो 'कवंध' ।
 कं बर, कं बळ (ळि, ली)—स्त्री० [सं० कंबल:] १ ऊन का मोटा वस्त्र, कम्बल । २ गाय के गर्दन के नीचे लटकने वाला पांस । ३ एक प्रकार का हिरन । ४ घोवार ।

कं बाइस—स्त्री० छड़ी, बेंत ।
 कं बु (बू)—पु० [सं० कम्बु:] १ शंख । २ हाथी । ३ घोषा । ४ गर्दन । —ठांण—पु० हाथी बांधने का स्थान, हाथी बांधने का स्तंभ ।
 कं बोज—पु० [सं० कम्बोज:] १ घोड़ा । २ पंजाब से अफगानिस्तान तक का भू भाग (प्राचीन) । ३ उक्त प्रदेश का घोड़ा । ४ हाथी ।
 कं म—१ देखो 'कंब' । २ देखो 'कुं म' ।
 कं भी—स्त्री० पिघले हुए मोने या चांदी की बनी सलाका ।
 कं मन—वि० [सं० कम्नीय] सुन्दर, मनोहर ।
 कं मळा—देखो 'कमळा' ।
 कं माड़—देखो 'कपाट' ।
 कं माळ—स्त्री० मुंडमाला ।
 कं मेड़ो—पु० कपोत ।
 कं व—देखो 'कांब' ।
 कं वर—देखो 'कुमार' ।
 कं वर—कलेवी—पु० दूल्हे को तोरण द्वार पर कराया जाने वाला स्वल्पाहार । २ दूल्हे का नाश्ता ।
 कं वरपद (पदो)—पु० कुमारावस्था ।
 कं वराणी—स्त्री० १ युवराज की पत्नी । २ पुत्र वधू ।
 कं वरापति—पु० राजकुमार ।
 कं वराई—स्त्री० कुमारावस्था ।
 कं वराईपणी—पु० कुमारावस्था या भाव ।
 कं वरिपी—देखो 'कुमार' ।
 कं वरी—देखो 'कुमारी' ।
 कं वळ—१ देखो 'कमळ' । २ देखो 'कवळ' । ३ देखो 'कोल' ।
 कं वळ पूजा—देखो 'कमळ पूजा' ।
 कं वळा—देखो 'कमळा' ।
 कं वळापति—देखो 'कमळापति' ।
 कं वळासड़ी—वि० कोमल ।
 कं वळियो—पु० १ कामना, रोग । २ देखो 'कंवळी' । ३ देखो 'कमळ' ।
 कं वळी—स्त्री० दरवाजे या खिड़की में चौखट के पीछे लगने वाला खड़ा पत्थर ।
 कं वळी—वि० (स्त्री० कंवळी) कोमल, नरम, नाजुक । —पु० १ मुख्य द्वार में लगा खड़ा पत्थर । २ सफेद गिद्ध । ३ बिना मात्रा का व्यंजन । ४ देखो 'कमळ' ।
 कं वाड़—देखो 'कपाट' ।
 कं वाड़ी—स्त्री० १ छोटी कुंहाड़ी । २ छोटे दरवाजे, खिड़की या छाले का कपाट ।

कंवार-स्त्री० १ कौमार्यविस्था । २ कुमारी । ३ देखो 'कुमार' ।
—छल-स्त्री० वेश्या की कुमारावस्था । —पणो-पुं०
कुमारावस्था ।

कंवारी-स्त्री० [सं० कुमारी] १ अविवाहित लड़की । २ कुमारी ।
—वि० अविवाहिता । —घड़, घड़ा-स्त्री० युद्ध के लिए
मुसज्जित सेना । —जान-स्त्री० विवाह के एक समय या एक
दिन पूर्व आने वाली बरात व इस बारात को दिया
जाने वाला भोजन । —भाती, लापसी-स्त्री० विवाह से पूर्व
बरात को दिया जाने वाला भोज ।

कंवारी-पुं० [सं० कुमार] (स्त्री० कंवारी) कुमार, लड़का ।
—वि० अविवाहित । —भात-पुं० पाणिप्रहण से पूर्व
बरात का भोज ।

कंस-पुं० [सं०] १ राजा उषसेन का पुत्र व श्रीकृष्ण का
गामा । २ कंस्य-पात्र । ३ पीने का पात्र । ४ झंझ-
मजीरा । ५ कसीम नामक धातु । —निकंदण (न)-पुं०
श्रीकृष्ण । विष्णु । —विष्णु-स्त्री० विजली, विद्युत ।
—पुं० श्रीकृष्ण ।

कंसरी-पुं० कांसी-पीतल के बर्तन बनाने वाला कारीगर ।

कंसली-पुं० कनखजूर नामक जंतु ।

कंसार-पुं० [सं० कंसारि] १ श्रीकृष्ण । २ देखो 'कसार' ।

कंसारी-स्त्री० १ घरों में पाया जाने वाला छोटा जंतु विशेष,
कंसारी । २ देखो 'कंसार' । ३ देखो 'कंसरी' ।

कंसालि-पुं० कांसी आदि मिश्र धातु का बना याजा ।

कंसस-देखो 'कंस' ।

कंसामुर-पुं० [सं०] कंस ।

क-पुं० [सं०] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ सूर्य । ४ अग्नि ।
५ प्रकाश । ६ कामदेव । ७ दक्ष प्रजापति । ८ वायु ।
९ राजा । १० यम । ११ भ्रातृमा । १२ मन । १३ शरीर ।
१४ काल । १५ धन । १६ मोर । १७ शब्द । १८ जल ।
१९ ग्रंथि, गांठ । २० शिर । २१ मुख । २२ केश ।
२३ वन । २४ निवास । २५ दास । २६ ज्योतिषी ।
२७ पक्षी । २८ वादल, मेघ । २९ स्वर, शब्द । —अव्य०
१ अथवा, या । २ जब । ३ पादपूर्ति अव्यय । —सर्व० क्या ।
कह-अव्य० क्यों ।

कह-अव्य० १ संबंध कारक चिह्न, का । २ अथवा, या ।
३ देखो 'कई' ।

कहक (यक)-वि० [सं० कतिपय] कई, अनेक । —क्रि० वि०
कहीं । —सर्व० किसी । कोई ।

कहकाण-देखो 'केकाण' ।

कहवा-वि० कैसा ।

कहप-क्रि० वि० कब, कदा । —सर्व० किन, कौन, कोई ।

कइयां-क्रि० वि० कैसे, क्यों । —सर्व० कई ।

कइर-देखो 'करीर' ।

कइलि-देखो 'कदली' ।

कइवार-देखो 'कैवार' ।

कइसइ-क्रि० वि० कैसे ।

कई-क्रि० वि० १ थोड़ा, किंचित । २ देखो 'कइक' ।

कई-वि० [सं० कति] १ अनेक, बहुत । २ कुछ ।

—क्रि० वि० कभी । देखो 'कस्सी' ।

कईक-देखो 'कइक' ।

कईवरत (वरतक)-पुं० [सं० कंवर्तक] मल्लाह ।

कउण-सर्व० [सं० किम्] १ कौन । २ क्या ।

कउ-स्त्री० १ तापने की आग का छोटा गड़ड़ा । २ संयासियों
की धुनि । —सर्व० १ क्या । २ कोई । —अव्य० संबंधकारक
चिह्न, का ।

कउम्री (कऊवौ)-पुं० [सं० काक] बौया ।

कउडि (डो)-देखो 'करोड़' ।

कउण-सर्व० १ कौन । २ क्या ।

कउतिग (ग)-देखो 'कौतक' ।

कउतेप-देखो 'कौतिय' ।

कउरब-देखो 'कौरव' ।

कउल-१ देखो 'कवल' । २ देखो 'कौल' ।

ककखट-देखो 'ककखट' ।

ककड़ाजीग-देखो 'करकटजोग' ।

ककड़ी-पुं० १ दाढ़ी-भूँछों के लाल-केश । २ ज्योतिष का एक
अशुभयोग ।

ककट-पुं० दंत-कटाकट ।

ककरेजियां-पुं० स्याही लिए हुए रंग से रंगा कपड़ा ।

ककसो-पुं० [सं० कक्ष, कक्षा] १ ग्रहों का भ्रमण-मार्ग ।
२ परिधि । ३ बराबरी, समानता । ४ श्रेणी । ५ देहनी ।
६ कांछ-कंछोटा । —वि० बराबर, तुल्य ।

ककाण-पुं० १ देश विशेष । २ देखो 'केकाण' ।

ककी-पुं० [सं० केकी] १ मोर, मयूर । २ मादा कौआ ।
—लक-पुं० कवच ।

ककुब-पुं० [सं०] बैल के कंधे का कूबड़ । —मान-पुं० बैल ।

ककुभ, ककुमा-स्त्री० [सं० ककुम्] १ दिशा । २ दक्ष की पुत्री व
धर्म की पत्नी । [सं० ककुभः] ३ बीणा की सूंटी की लकड़ी ।

ककुमाळी-स्त्री० आंघी, तूफान ।

ककोड़ी-देखो 'कंकेड़ी' ।

ककौ, कवकौ-पुं० १ कंवरा । २ व्यंजन । —सर्व० कोई ।

ककखट-वि० [सं०] १ बड़ा, कठोर, मजबूत । २ दृढ़, पक्का ।

कक्ष-पु० [सं०] १ बगल, कांख । २ दर्जा, श्रेणी । ३ वर्ग ।
 ४ पार्श्व, भाग । ५ कमरा, भवन का कोई भाग ।
 ६ अंतःपुर । ७ वन, जंगल । ८ जंगल का भीतरी भाग ।
 ९ मुखा घास । १० मैसा । ११ फाटक ।
 कख-पु० १ आंख का कोना । २ कसौटी, परीक्षा । ३ एक प्रकार का पत्थर । ४ देखो 'कक्ष' ।
 कखती-मगरी-स्त्री० यौ० एक प्रकार की तलवार ।
 कखवा-पु० [सं० कक्षवान] वन, जंगल ।
 कग (ग)-पु० [सं० काक] १ कौआ, काग । २ देखो 'कंगल' ।
 कगण-पु० १ कर्ग । २ देखो 'कंगल' ।
 कगर-देखो 'कागज' ।
 कगळी-देखो 'काक' ।
 कगल्ल-देखो 'कंगल' ।
 कगवा-देखो 'कंगवा' ।
 कगार-पु० [देश] नदी या जलाशय का ऊंचा स्थान, तट ।
 कगार, कगल-पु० १ किनारा तट । २ देखो 'कंगल' ।
 ३ देखो 'कागज' ।
 कगी-देखो 'काक' ।
 कड़-स्त्री० [सं० कटि] १ कमर, कटि । २ करवट, पक्ष ।
 ३ तट, किनारा । ४ पाम, निकट । ५ झूतड़, नितंब ।
 कड़क-स्त्री० १ क्रोध, कोप । २ क्रोध या रोबोली आवाज ।
 ३ बिजली की गर्जना । ४ बिजली । ५ बंदूक की आवाज ।
 ६ शक्ति, सामर्थ्य । ७ कड़ापन, दृढ़ता । ८ चटकन ।
 ९ देखो 'किड़क' । -वि० सख्त, कड़ा, कच्चा, ठोस ।
 कड़कड़-स्त्री० १ मुश्ती या गुड़िया शक्कर । २ कड़कने की ध्वनि ।
 कड़कड़ाट-स्त्री० कड़कड़ाहट ।
 कड़कड़ी-देखो 'किड़किड़ी' ।
 कड़कणी (बो)-क्रि० १ जाश में दांत पीसना । २ क्रोध में गरजना । ३ बिजली का जोर से चमक कर गरजना ।
 ४ डाँटते हुए बोलना ।
 कड़कनाळ-स्त्री० अपानक शब्द करने वाली तोप ।
 कड़कम-पु० पुरुषों के कान का आभूषण ।
 कड़कणी (बो)-क्रि० १ जोश दिलाना । २ कड़कने लिए प्रेरित करना ।
 कड़कोली, कड़कोल्यो-१ देखो 'ठोली' । २ देखो 'कड़खी' ।
 कड़की-१ शृंगुलियों के चटकने की आवाज । २ जोर का शब्द ।
 ३ ताकत, बल । ४ जोर का भटका । ५ युद्ध का गीत ।
 ६ बिजली । ७ कविता । ८ लंघन, उपवास । ९ निर्धन ।
 कड़क-देखो 'कड़क' ।
 कड़कड़-देखो 'कड़कड़' ।

कड़कणी (बो)-देखो कड़कणी (बो) ।
 कड़ख-पु० किनारा । तट ।
 कड़खणी (बो)-देखो 'कड़कणी' (बो) ।
 कड़खो-पु० १ नदी तट का उभरा हुआ भाग । २ एक छंद विशेष । ३ विजय गान ।
 कड़-स्त्री० लकड़ी के लट्टे के चिरने या बिजली के गरजने की आवाज ।
 कड़ड़ी (बो)-क्रि० १ लकड़ी का लट्टा जोर से फटना ।
 २ फटने की आवाज होना । ३ बिजली का गरजना ।
 कड़ड़ाट-देखो 'कड़ड़' ।
 कड़च-क्रि० वि० १ जल्दी, शीघ्र । २ देखो 'कड़च्छ' ।
 कड़चणी (बो)-देखो 'कड़छणी' (बो) ।
 कड़च्छ-पु० बंध, बंधन । -वि० तैयार, मस्त । मुसज्जित ।
 कड़छ-स्त्री० कटाक्ष ।
 कड़छणी (बो)-क्रि० १ तैयार होना । २ सन्नद्ध होना, सावधान होना । ३ शस्त्र सुसज्जित होना । ४ आक्रमण के लिए तैयार होना ।
 कड़छली (ल्यो)-पु० १ बड़ा करझुल । २ छोटा कड़ाहला ।
 कड़ल-पु० काठ का बना चम्मच (मि० डोई)
 कड़जोड़ी-पु० कजच, सनाह ।
 कड़दी-पु० खड़डा, गर्त ।
 कड़तल (तल)-स्त्री० [सं० कटि + तल] १ तलवार, खड्ग ।
 २ भाला राजपूतों का विहद ।
 कड़तु-स्त्री० कटि, कमर ।
 कड़तोड़ी-पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ कमर पर भौरी वाला बेल । ३ आभूषण विशेष । -वि० १ कमर तोड़ने वाला ।
 २ भयंकर । ३ दुर्गम ।
 कड़तल-पु० १ संहार, नाश । २ देखो 'कड़तल' ।
 कड़वी-१ किसी द्रव पदार्थ के नीचे जमने वाला भेल । २ मोने चांदी के साथ मिलाया जाने वाला विजातीय धातु ।
 कड़प-पु० विजाव ।
 कड़पी-पु० १ खेत में काम करने वाले मजदूरों को दिया जाने वाला गेहूँ का पुआल । २ मृदा में गावे उतना घासादि ।
 कड़प्रोथ-पु० [सं० कटि-प्रोथः] नितंब, कूल्हा ।
 कड़बंध-पु० १ कटिबंध आभूषण । २ करघनी । ३ कमर बंध ।
 ४ तलवार ।
 कड़ब-स्त्री० ज्वार का मूला पीधा जिस पर से अनाज की दान काट दी गई हो । -चेन-स्त्री० एक प्रकार की जंजीर ।
 कड़बांध-स्त्री० मूँज की करघनी ।
 कड़बोड़ी-स्त्री० ज्वार के चाने से भरी गाड़ी ।
 कड़बणी (बो)-क्रि० प्रकुपित होना ।

कड़मूल-स्त्री० [सं० कलि-मूल] सेना, फौज ।

कड़लियौ-पु० १ मिट्टी का वर्तन । २ मिट्टी का दीपक ।
३ देखो 'कड़ी' ।

कड़लोला-पु० [सं० कटिलोलनम्] यकावट मिटाने के लिए
गिया जाने वाला विश्राम ।

कड़ली-पु० स्त्रियों के पांव का चांदी का मोटा कड़ा ।

कड़व, कड़वाई, कड़वापण, कड़वास-पु० १ कड़वापन, खारापन,
कटुता । २ कठोरता ।

कड़वीरोटी-स्त्री० किसी की मृत्यु के दिन उसके पड़ोसियों द्वारा
शोक संगत परिवार को भेजी जाने वाली रोटी ।

कड़वू-देखो 'कड़वी' ।

कड़वी-वि० [सं० कटु] (स्त्री० कड़वी) १ कड़ुवा, खारा ।
२ कटु, अप्रिय । ३ स्वाद की दृष्टि से तीक्ष्ण । ४ तीक्ष्ण
प्रकृति वाला । ५ एक बड़ा वृक्ष । —तेल-पु० सरसों या
जाम्बे का तेल ।

कड़ाई-स्त्री० [सं० कटाह] १ अधिक मात्रा में भोजन बनाने
का लोहे का चौड़ा पात्र । २ कड़ापन, गरुती । ३ तलुए
का फोड़ा । ४ देखो 'कराई' ।

कड़ाऊ-पु० १ दीवार की चुनाई का एक ढंग । २ ऐसी चुनाई में
लगने वाला चौड़ा पत्थर ।

कड़ाक'ब-देखो 'कळाकंद' ।

कड़ाकड़-स्त्री० [प्रनु०] ध्वनि विशेष ।

कड़ाकौ-पु० १ टकराने की ध्वनि । २ देखो 'कड़की' ।

कड़ाछी-स्त्री० बड़ा व मोटा चम्मच ।

कड़ाझूड़ (झूड़), कड़ाजूज (झूज)-वि० १ पहन-भोड़ कर तैयार ।
२ मन्द । ३ कटिवद्ध । ४ शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित ।

कड़ाबंध-वि० १ आवेष्टित । २ घिरा हुआ, घेरा हुआ ।
३ सज्जित ।

कड़ावीण, (वीन)-स्त्री० [तु० कुरावीन] बड़े मुंह की एक
प्रकार की वस्तु ।

कड़ामीड़-स्त्री० भीड़-भाड़ । जमघट । -वि० सुसज्जित ।

कड़ाव, कड़ायलियौ, कड़ायली-१ देखो 'कड़ाव' । २ देखो 'कड़ायी' ।

कड़ायौ-पु० १ नाल बने वाला एक वृक्ष । २ छोटी कड़ाही ।

कड़ाळ-पु० कवच ।

कड़ाव-पु० [सं० कटाह] बड़े भोज का भोजन बनाने का लोहे
का बड़ा पात्र ।

कड़ावली, कड़ावी-पु० १ छोटी कड़ाही । २ देखो 'कड़ायी' ।

कड़ाह (हो)-देखो 'कड़ाव' ।

कड़ि (य, हि)-स्त्री० [सं० कटि] १ कमर, कटि । २ अध
लिप्ता वृक्ष । ३ कंकण, कड़ा । ४ झुंखला का एक घटक ।
५ स्त्रियों के पैर का आभूषण, कड़ी । ६ गोद । —बन्धी-
स्त्री० कठार ।

कड़ियळ (याळ)-पु० १ कवचधारी योद्धा । २ कवच ।

कड़ियां-स्त्री० [सं० कटि] १ कमर, कटि । २ स्त्रियों के पैरों में
धारण करने का आभूषण ।

कड़िया-देखो 'करिया' ।

कड़ियाळी-स्त्री० १ घोड़े की लगाम । २ लोहे की कड़ियां लगा
डंडा ।

कड़ियाळी-पु० १ अमलताक्ष का वृक्ष । २ देखो 'कड़ियळ' ।

कड़ियौ-पु० १ चुनाई करने वाला कारीगर । २ छोटा संत ।

कड़ी-स्त्री० [सं० कटक] १ हाथ या पैर का आभूषण । २ लोहे
की कड़ी । ३ लगाम । ४ कवच । ५ कमर, कटि ।
६ हुकका । ७ मोटा रस्सा । ८ छंद का एक चरण ।
-वि० १ तेज, तीव्र, तीक्ष्ण । २ कठोर । ३ भयंकर ।
—रुत-स्त्री० ग्रीष्म व शीत ऋतु ।

कड़ीकड़ी-स्त्री० १ दो बकरों या भेड़ों की गरुपर लड़ाने के
निमित्त जोश दिलाने का शब्द । २ जोश दिलाने का शब्द ।

कड़ीड़-पु० १ प्रहार, चोट । २ प्रहार की ध्वनि ।

कड़ू'ब (बी)-देखो 'कटुम्ब' ।

कड़ू'बवाळ-पु० किसान । -वि० जिसका कटुम्ब बड़ा हो ।

कड़ू'घी, कड़ू'घी-देखो 'कड़वी' ।

कड़ू'ळी-पु० कड़ा (आभूषण) ।

कड़ू'ली-स्त्री० सफेद पांवों वाली बकरी ।

कड़ू'-क्रि० वि० पास, निकट, नजदीक । —छंट-स्त्री० मस्ती में
आए हुए ऊंट का पेशाब करते समय पूंछ भटकना क्रिया ।

कड़ू'ली-स्त्री० मिट्टी का तवा ।

कड़ोपी-वि० बदसूरत, भद्दा ।

कड़ोमी-देखो 'कुटू'ब' ।

कड़ोलियौ-पु० १ दोनों आंखों में कुंडली वाला बेल । २ कड़ा ।

कड़ौ-पु० [सं० कटक] १ किसी धातु का गोल कड़ा । २ ऐसा
कड़ा जो किसी देवता के नाम से पहना जाता है । ३ स्त्रियों
की भुजा का स्वर्णभूषण । पड़ोचो । ४ पैरों व हाथों में
धारण करने का आभूषण । ५ कंगन । ६ पंथरों को जोड़
कर बनाया जाने वाला अर्थ चन्दाकार । ७ आवेष्टित, घेरा ।
८ किसी उपकरण का पकड़ने का मोलाकार भाग ।
९ छत का छूना । १० झुंड, समूह । ११ नट, कितारा ।
१२ चक्र, पहिया । १३ वृत्त । -वि० (स्त्री० कड़ी)
१ कठोर, मरुत । २ कट, अप्रिय । ३ असह्य । ४ रुद,
मजबूत । ५ अड़ियल । ६ तेज । ७ धीर, गंभीर ।

कड़ीट-स्त्री० पंक्ति चलाने की क्रिया या भाव (काव्य) ।

कड़ीमी-देखो 'कटू'ब' ।

कच-पुं [सं०] १ केश, बाल । २ रोम । ३ चोटी, शिखा ।
 ४ मूखा हुश्रा जहम । ५ झुंड । ६ अंगरखे का भाग ।
 ७ काच । ८ देखो 'कुच' । -वि० १ कच्चा । २ श्याम ।
 ३ देखो 'कच्छ' । -कबरी-स्त्री० बालों में पुष्प भूषण की
 क्रिया । -कोली-स्त्री० काच की चूड़ी । -घोड़ी-स्त्री०
 लाख की चूड़ी जिसमें काच जड़े हों । -मेड़ी-स्त्री० रंग
 महल । -लूण-पुं एक प्रकार का नमक ।
 कचनार-पुं १ एक प्रकार का वृक्ष । २ इस वृक्ष का पुष्प ।
 कचपच, (पिच)-स्त्री० अस्पष्ट ध्वनि या आवाज ।
 कचर-पुं १ कुड़ा-कचरा । २ कुचल कर किया गया चूरा ।
 ३ कोरू में अथ कचरे तिलों का समूह ।
 कचरण, (घन, घांण)-पुं कुचल कर किया गया चूरा ।
 २ कचमर । ३ बीचड़ । ४ संहार, नाश । ५ विध्वंस ।
 ६ अथकवरी अवस्था ।
 कचरणी (बो)-क्रि० १ कुचलना । २ मसलना । ३ चूरा करना ।
 कचराबी (ह)-पुं ध्वंम, संहार ।
 कचरोली-पुं १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला । २ कचरा ।
 कचरी-पुं १ कुड़ा-करकट । २ वर्ध सामान का ढेर । ३ कच्चा
 खरबूजा । ४ निरर्थक वस्तु, फूस ।
 कचहड़ी-देखो 'कचेड़ी' ।
 कचाई-स्त्री० १ कच्चापन, कच्चाई । २ कमजोरी । ३ अनुभव
 की कमी ।
 कचारा-स्त्री० काच की चूड़ी धनाने का व्यवसाय करने वाली
 जाति ।
 कचारी-पुं उक्त जाति का व्यक्ति ।
 कचिया-स्त्री० कंकुकी ।
 कचूँबरि-स्त्री० बालों का जूड़ा ।
 कचूर-पुं हल्दी की जाति की एक औषधि विशेष । नर कचूर ।
 कचेड़ी, कचैड़ी-स्त्री० न्यायालय, अदालत । दरबार ।
 कचोट-स्त्री० घातक प्रहार । आघात ।
 कचोरी, कचोरी-स्त्री० [सं० कचूरिका] नगकीन खाद्य पदार्थ
 विशेष ।
 कचोळ (उ, डी)-१ निंदा, बुराई । २ देखो 'कचाळी' ।
 कचोलड़ी कचोलड़ी कचोलड़, कचोली, कचोलु-स्त्री० १ कटोरा ।
 २ तश्तरी । ३ चिलम के नीचे का हिस्सा । ४ काच
 की चूड़ी ।
 कचोली-पुं १ कटोरा, प्याला । २ निंदा, अपवाद ।
 कचर-वि० [सं०] १ मलिन, मैला । २ दुषित । ३ अस्थस्थ ।
 ४ देखो 'कचर' ।
 कच्ची कुड़क (की)-स्त्री० किसी मुकद्दमे के फैसले से पहले जारी
 किया जाने वाला आदेश जिससे जायदाद में हेरा-फेरी
 न हो

कच्चीनकल (रोकड़)-स्त्री० एक प्रकार की बही जिसमें व्या-
 पारी दैनिक आय-व्यय का हिसाब रखता है ।
 कच्चीपक्की-स्त्री० एक देशी खेस ।
 कच्ची-देखो 'काची' ।
 कच्छ-पुं [सं० कच्छ, कक्ष] १ कांख, लगल । २ पार्श्व ३ तट,
 किनारा । ४ हाशिया । ५ सीमा । ६ गोटा, मरजी । ७ नाव
 का एक हिस्सा । ८ सूखी घास । ९ जंगल । १० भूमि ।
 ११ घर । १२ कांख का फोड़ा । १३ पाप, दोष ।
 १४ काँछ । १५ जलप्रायः देश । १६ नदी या समुद्र किनारे की
 भूमि । १७ गुजरात के समीप एक प्रदेश । १८ धोती की
 लांग । १९ छप्पय छंद का एक भेद । २० देखो 'कच' ।
 २१ देखो 'कच्छप' । २२ देखो 'काछी' ।
 कच्छप-पुं [सं० कच्छपः] १ कछुआ । २ विष्णु के चौबीस
 अवतारों में से एक । ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक ।
 ४ दोहे छंद का एक भेद । ५ घोड़े के मस्तक का एक रोग ।
 -वंस-पुं कछुवाहा वंश ।
 कच्छपी-स्त्री० [सं०] १ सरस्वती की वीणा । २ कछुवी ।
 कच्छिपी-१ देखा 'कच्छप' । २ देखो 'कछिपी' ।
 कच्छी-स्त्री० १ जांधिया । २ एक प्रकार की मलवार । ३ कच्छ
 का निवासी । ४ कच्छ का घोड़ा । ५ कच्छ का ऊंट या
 मादा ऊंट ।
 कछ-१ देखो 'कच्छप' । २ देखो 'कच्छ' । ३ देखो 'काछ' ।
 ४ देखो 'कुछ' ।
 कछणी-देखो 'कसणी' ।
 कछणी(बो)-क्रि० १ शस्त्रास्त्र से भुसझित होना । २ कसना ।
 ३ बांधना ।
 कछदाद-पुं पेड़ के संधिस्थल व अण्डकोश पर होने वाला
 दह रोग ।
 कछनी-स्त्री० १ कच्छी, जांधिया । २ कछोट ।
 कछप-देखो 'कच्छप' ।
 कछपी (बो)-देखो 'कच्छपी' ।
 कछर-पुं [सं० कच्छुर] १ दुःख, वलेश । २ कष्ट, पीड़ा ।
 ३ पाप का दुःख ।
 कछव-देखी 'कच्छप' ।
 कछवी-पुं १ घोड़ों का एक राग । २ देखो 'कच्छपी' ।
 कछांट-स्त्री० कठिनाई से दूध देने वाली गाय या भैंस ।
 कछियांगो-स्त्री० १ कच्छ देशोत्पन्न देवी । २ आवड़ या सेंगी देवी ।
 कछियो-पुं जांधिया, कच्छा । -वि० रसिक ।
 कछी-देखो 'कच्छी' ।

कछोटियो-देखो 'कछोटो' ।

कछोटो (टो)-स्त्री० लंगोट । कच्छा ।

कछी-पु० ऊट ।

कछ-देखो 'कच्छ' ।

कज-पु० [सं० क + ज] १ बाल, केश । २ रोम । ३ झुर्रा ।
[फा०] ४ टेंढापन । ५ दोष । ६ कार्यक्रम । ७ युद्ध ।
-कि० वि० लिये, वास्ते, निमित्त ।

कजळ-पु० काजळ । —अंक-पु० दीपक, चिराग । ज्योति ।

कजळाणी (बो)-कि० कांतिहीन होना । बुझना ।

कजळियो-वि० १ प्रयाम, काला । २ देखो 'काजळ' ।

कजळी-स्त्री० [सं० कदली] १ केला, कदली । २ केले की फली ।

३ एक प्रकार का हिरन । ४ भयंकर व पारे की एक साथ
पिमी बुकनी । ५ कालिख । ६ अंगारे के ऊपर की राख ।

—तीज-स्त्री० भादव कृष्ण तृतीया । —वन, वन-पु०
केले का जंगल । आसाम का एक जंगल ।

कजळीजणी (बो)-कि० १ दहकते अंगारे ठंडे पड़ना । २ ठंडा
पड़ना ।

कजा-स्त्री० [अ०] १ मृत्यु, मौत । २ वद किस्मत, दुर्भाग्य ।
३ आपत ।

कजाई-स्त्री० घोड़े के चारजामे का उपकरण ।

कजामो-पु० [फा० पजावः] १ ईंट की भट्टी । २ खड़िया मिट्टी
पकाने का एक ढंग ।

कजाक-वि० [तु० कज्जाक] १ मारने वाला, हिंसक ।
२ घाततायी । ३ लुटेरा । ४ उद्दण्ड । ५ बलवान ।
६ भयंकर । ७ योद्धा । —पु० [अ० कजाकंद] एक प्रकार
का पहनावा जिस पर रेशम लपेटा होता है । इस पर
तलवार के प्रहार का असर नहीं होता ।

कजाकिए (रौ)-स्त्री० माकिनी, पिशाचिनी ।

कजाकी-वि० [अ० कज्जाकी] १ नीच, पतित । २ देखो 'कजाक' ।
—स्त्री० लूटमार, डकैती ।

कजावो-पु० १ छंट का चारजामा विशेष ।
२ देखो 'कजामो' ।

कजि-वि० १ लाचार, बेबस । २ देखो 'काज' । ३ देखो 'कज' ।

कजियाखोर-वि० [अ० कजीयः + फा० खोर] भगड़ालु ।
कलहप्रिय ।

कजियो-पु० [अ० कजीयः] १ युद्ध, लड़ाई । २ दंगा-फिमाद ।
३ कलह ।

कजी-स्त्री० [फा०] १ हानि, नुकसान । २ दोष । ३ देखो 'कजि' ।
४ देखो 'कज' । ५ देखो 'काज' ।

कजे, (जं)-देखो 'कज' ।

कज्ज-१ देखो 'कज' । २ देखो 'काज' ।

कज्जळ-१ देखो 'काजळ' । २ देखो 'कजळी' ।
—वन='कजळीवन' ।

कज्जा-देखो 'कजा' ।

कज्जि(ज्जो)-१ देखो 'कजि' । २ देखो 'कजी' । ३ देखो 'कज' ।
४ देखो 'काज' ।

कज्जे (ज्जं)-देखो 'कज' ।

कज्जाली (बो)-देखो 'कजळाली' (बो) ।

कट-पु० [सं० कटः] पु० १ कमर कटि । २ मेखला, करधनी ।
३ हाथी का गंडस्थल । ४ चटाई । ५ शव, मुर्दा ।
६ कटने की क्रिया या भाव । ७ शव-वाहन । ८ समाप्ति ।
९ तीर, बाण ।

कटक-पु० [सं० कटकः] १ सेना, फौज । २ झुंड, समूह ।
३ लुटेरों का गिरोह । ४ कंगन, कड़ा । ५ राज-शिविर ।
६ समुद्री नमक । ७ पहिया, चक्र । ८ नितंब । ९ पहाड़ के
बीच का भाग । १० हाथी दांत का गहना । ११ सेंधा
नमक । १२ घास की चटाई । १३ काबुल की एक नदी ।
१४ मेखला । १५ चटाई । १६ उपत्यका । १७ राजधानी ।
१८ घर, मकान । १९ वृत्त, घेरा । २० पीठ, पृष्ठ भाग ।
—ईस-पु० सेनापति । —बंध-स्त्री० सुसज्जित सेना ।

कटकड़ी-स्त्री० [सं० कटन] सेना, फौज ।

कटकड़ो-पु० सोना-चांदी के तारों पर खुदाई करने का उपकरण ।

कटकटाहट-स्त्री० [अनु०] १ परस्पर टकराने की ध्वनि ।
२ दंत कटाकट ।

कटकर-वि० क्रोधी ।

कटकणी (बो)-कि० १ कड़कना । २ विजली का जोर से
चमकना । ३ क्रोध करना । ४ आक्रमण करना । ५ उचक
कर घाना ।

कटकारी-पु० किसी के प्रस्थान के समय 'कठै' का उच्चारण ।

कटकि-अव्य० आश्चर्य और प्रशंसा बोधक अव्यय ।
देखो 'कटक' ।

कटकियो-पु० गांव-गांव फिर कर फुटकर व्यापार करने वाला
विसाली ।

कटकी-स्त्री० १ सेना । २ कोप । ३ वज्रपात । ४ आक्रमण ।

कटकेस-पु० सेनापति ।

कटकौ-पु० १ अंगुली या किसी अंग के चटकने का शब्द ।
२ टुकड़ा, खण्ड ।

कटपक-देखो 'कटक' ।

कटककट-देखो 'कटकटाहट' ।

कटकियां-स्त्री० क्रोध में दांत कटकटाने की ध्वनि । २ क्रोध, कोप ।

कटखडो-स्त्री० कुए से पानी निकालने का काण्ड का पात्र ।

कटखडो, कटपरी-देखो 'कटहडो' ।

कटणी-स्त्री० १ आसूषणों पर खुदाई करने का औजार ।
२ गेंठन । ३ पेट की मरोड़ ।

कटणी (बो)-क्रि० १ किसी शस्त्रादि से टुकड़े होना, कटना ।
२ समाप्त होना, बीतना, गुजरना । ३ कतराना, दूर
गटना । ४ मोहित होना । ५ पेट में मरोड़ चलना । ६ जलन
होना । ७ फीटा पड़ना, भँपना । ८ व्यर्थ व्यय होना ।
९ फटना । १० काट-छोट होना ।

कटफाड़-स्त्री० [सं० काष्ठ पट्टिका] १ लकड़ी । २ लकड़ी की
पट्टी । ३ जलाने की लंबी लकड़ी ।

कटमी-देखो 'कटमी' ।

कटमेखला-स्त्री० करधनी, मेखला ।

कटि-पञ्च० प्राणचक्र और प्रथमा बोधक ग्रन्थ ।

कटली-पु० रही नामान, रही सामान बिकने का स्थान ।

कटवण (न)-वि० निदा ।

कटवळ (कठवळ)-पु० मोठ, ग्वार, चौवा, मूंग आदि श्रित्त
प्रनाज ।

कटवाड़-स्त्री० कांटों का अहाता ।

कटवी-स्त्री० निदा, बुराई, श्लोचना ।

कटसेली-देखो 'कटसेली' ।

कटहड़ो-पु० १ कठघरा । २ राज सिंहासन के डेढ़-गिरे बनी
काठ की प्रवेष्टिनी । ३ हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला
काठ का बना चारजामा ।

कटहळ-पु० काटेदार बड़े फल वाला वृक्ष व इसका फल ।

कटाकड़ि-स्त्री० प्रहार की ध्वनि

कटा-स्त्री० १ कटारी । २ कत्ते आम । ३ छटा, शोभा ।

कटाईजणी (बो)-क्रि० जंग लगना ।

कटाकट (टि)-स्त्री० १ दांतों की किट-किट । २ किट-किट की
ध्वनि । ३ तुं-तुं-मै-मै । ४ काटने की क्रिया या भाव ।

कटाक्ष, कटाख-पु० [सं० कटाक्ष] १ दृष्टि, नजर । २ निरखी
चित्रवन । ३ भृकुटिचित्राम । ४ नेत्रों का संकेत । ५ व्यंग,
आक्षेप । ६ वक्र दृष्टि । ७ नयन, नेत्र । -वि० अति
तीक्ष्ण ।

कटाइणी (बो)-देखो 'कटाणी' (बो)

कटड़ी-देखो 'कटारी' ।

कटाख, कटाख (छि)-देखो 'कटाक्ष' ।

कटाणी (बो)-क्रि० १ किसी शस्त्रादि से टुकड़े कराना, खण्ड
कराना, कटवाना । २ समाप्त कराना । ३ हटवाना, निरस्त
करवाना । ४ व्यर्थ खर्च कराना । ५ फड़वाना । ६ काट-
छोट कराना ।

कटाघत-वि० वीर गति प्राप्त करने वाला ।

कटार-स्त्री० १ कटारी, छुरी । २ मोखियों, चमारों, पिजारों
आदि का सिवाई का एक औजार विशेष । —उड़, डड़ो-वि०

तीक्ष्ण दांतों वाला । कटार के समान दांतों वाला । —मल
—पु० कटारी रखने वाला योद्धा । एक प्रकार का घोड़ा ।

कटारियाभांत, कटारीभांत-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

कटारी-स्त्री० [सं० कटार] एक बालिश लंबा, तिकोना और
द्वारा हथियार ।

कटाली-स्त्री० १ भूइरिणी, भटकटैया । २ देखो 'कट्याली' ।

कटाव-पु० १ कटने-काटने की क्रिया या भाव । २ भू-क्षरण ।
३ अत्यन्त तेज शराव । ४ देखो 'कटणी' ।

कटि (टी)-स्त्री० [सं०] १ कमर, कटि । २ नितम्ब ।
३ पीपल । —काळी-स्त्री० कटियों की पंक्ति । —पह-पु०

कमर का एक रोग । —बंध-पु० कमरबंध । —मेखला
—स्त्री० करधनी । —सजियी-वि० सज्ज, तैयार ।

कटियाली-देखो 'कट्याली' ।

कटिये-पु० छोटी बोरी ।

कटोर (क)-पु० [कटोर, सं० कटोरकम्] १ चूतड़,
नितम्ब । २ गुफा, कंदरा । ३ कटि, कमर । ४ खोखलापन ।

कटु (जं, क)-वि० [सं०] १ कड़वा, खारा । २ कसैला ।
३ अप्रिय । ४ चरपरा, तीक्ष्ण । ५ ईर्ष्यालु । ६ तेज,
तीव्र । ७ प्रचण्ड । —फळ-पु० बेटड़ा नामक वृक्ष व
इसका फल ।

कटुंबर (री)-पु० मध्य आकार का वृक्ष विशेष व इसका फल ।

कटुंम-देखो 'कटुं' ।

कटुड़ी-पु० [सं० काष्ठ+हिड] १ बच्चे का झूला । २ हाथी
का चारजामा । ३ खिड़कियों में लगने वाला झूलता हुआ
तख्ता । ४ कठघरा । ५ घास काटकर महीन करने
का स्थान ।

कटेल-वि० १ कटा हुआ । २ वीर गति पाया हुआ ।

कटुड़ी-देखो 'कटुड़ी' ।

कटेल-देखो 'कटेल' ।

कटोर-पु० १ तलवार की मूठ का एक भाग । २ देखो 'कटोरी'
३ देखो 'कठोर' ।

कटोरदान-पु० रोटी आदि रखने का हथकनदार, बर्तन ।

कटोरी-स्त्री० १ छोटा प्याला, बटकी, कटोरी । २ पुष्पदल
के बाहर की ओर हरि पत्तियों की प्यासीनुमा आकृति ।

कटोरी-पु० १ चौड़े पैदे का सुले मुंह का धातु का पात्र, प्याला,
कटोरा । २ तलवार की मूठ का एक भाग ।

कटोल-देखो कटवल ।

कटु-देखो 'कट' ।

कटुक-देखो 'कटक' ।

कटुण-वि० कृपण ।

कटुधार-वि० कटागीधारी योद्धा ।

कटार-देखो 'कटार' ।

कटि-देखो 'कटि' ।

कटिण-देखो 'कठिन' ।

कट्ट-१ देखो 'कोढ़' । २ देखो 'कष्ट' ।

कट्पाळी-स्त्री० कटिदार छोटा धुप जो औषधि में काम आता है ।

कठंजर (री)-देखो 'कठपींजरी' ।

कठ-१ देखो 'काठ' । २ देखो 'कट' ।

कठकालर-स्त्री० कठोर व कंकरीली भूमि ।

कठचित्र, चोत्र-पुं० लकड़ी में खुदा चित्र, पुतली ।

कठमंडळ (मंदिर)-पुं० चिता ।

कठकारी-देखो 'कटकारी' ।

कठठणो (बो)-देखो 'कठठणो' (बो) ।

कठ-स्त्री० [अनु०] सेना या बोझ से लदी गाड़ी के चलने पर होने वाली 'कट-कट' की ध्वनि ।

कठठणो (बो), कठठणो (बो)-क्रि० १ निकलना, बाहर आना । २ चलने समय कट-कट की ध्वनि होना । ३ जोश में आकर चलना । ४ ऐठना ।

कठठी-वि० १ बलवान । २ कठोर ।

कठण (न)-वि० कठिन, कठोर । —कांचळी-स्त्री० नारियल ।

—ता-स्त्री० कठिनता, कठोरता ।

कठणी (नो)-स्त्री० [सं० कठिनी] सपेद मिट्टी, खड़िया मिट्टी ।

कठपींजरी-पुं० [सं० काष्ठ पंजर] काठ का बना पिंजरा ।

कठपूतळी (ळो)-स्त्री० १ काष्ठ की बनी पुतली । २ तार द्वारा नचाई जाने वाली गुड़िया ।

कठफोड़ी-पुं० पेड़ों की छाल छेदने वाली एक चिड़िया ।

कठबंध (बंधण)-पुं० [सं० कठबंधन] हाथी के गर्दन का रस्सा ।

कठरूप-वि० कुरूप, बदशक्ल ।

कठवल-देखो 'कटवल' ।

कठसेडो-स्त्री० कठोर स्तनों वाली गाय या भैंस ।

कठसेली-स्त्री० काले पीले पुष्प का पीछा विशेष ।

कठहडो-देखो 'कटहडो' ।

कठां-क्रि० वि० कहाँ । किस जगह ।

कठाई-क्रि० वि० कहीं भी ।

कठांजरी, कठांतरौ-देखो 'कठपींजरी' ।

कठा-क्रि० वि० १ कहाँ । २ कब ।

कठाई-स्त्री० ओठों पर या दाँतों पर जमने वाला मैल ।

—क्रि० वि० कहीं भी ।

कठाऊं-क्रि० वि० कहाँ से ।

कठाती-क्रि० वि० कहाँ से ।

कठामठी-वि० ऋण, कंजूस ।

कठालग-क्रि० वि० कहाँ तक ।

कठामू-क्रि० वि० कहाँ से ।

कठाही-क्रि० वि० कहीं ।

कठिण (न)-वि० [सं० कठिन] १ कड़ा, सख्त । २ कठोर, ठोस । ३ दृढ़, मजबूत । ४ दुर्गम । ५ निष्ठुर, निर्दयी । ६ अनार्द्र । ७ उग्र, प्रचण्ड । ८ कष्टकारक । ९ दुष्कर, दुसाध्य । १० तीक्ष्ण । —सं० पुं० १ वन, जंगल । २ बेहड़ा । ३ दुःख, कष्ट ।

कठिनाऊ-क्रि० वि० कहाँ से ।

कठियळ-पुं० खड़ाऊ, पादुका ।

कठियारा-स्त्री० १ लकड़ी काटने का कार्य करने वाली जाति । २ शमशान में लकड़ी बेचने वाली जाति ।

कठियारी-पुं० 'कठियारा' जाति का व्यक्ति ।

कठियावाड़ी-देखो 'काठियावाड़ी' ।

कठी-क्रि० वि० १ कहाँ, किस ओर । २ किधर ।

कठीक-क्रि० वि० १ कहीं, कहीं । २ किधर ।

कठोड़-पुं० लकड़ी का टुकड़ा ।

कठोणीणी-देखो 'काठियावाड़ी' ।

कठूंमर-देखो 'कटूंमर' ।

कठैड़ी-देखो 'कटहडो' ।

कठैक-देखो 'कठैक' ।

कठै-क्रि० वि० कहाँ, किधर ।

कठैई(क)कठैक, कठैक(क)-क्रि० वि० १ कहीं-कहीं । २ कहीं भी ।

कठोर-वि० [सं०] १ कड़ा, सख्त । २ दृढ़, पक्का । ३ मजबूत ।

४ निष्ठुर । ५ तीक्ष्ण । ६ सम्पूर्ण । ७ सुसंस्कारित ।

कठौतरौ-देखो 'कठपींजरी' ।

कठौतो-स्त्री० [सं० काष्ठपात्री] १ काष्ठ की परात । २ काष्ठ-पात्र ।

कडकड़ती-वि० (स्त्री० कडकड़ती) निर्दोष, शुद्ध, पवित्र ।

कडक-देखो 'कटक' ।

कडकख, कडख-पुं० कटास ।

कडम-देखो 'कदम' ।

कड़ाळ, कड़ाही-१ देखो 'कड़ाई' । २ देखो 'कड़ाळ' ।

कडि-स्त्री० कटि, कमर । —चौर, चौह-पुं० अघोवस्त्र ।

कडियाळ-देखो 'कडियाळ' ।

कडोली-पुं० मिट्टी का बना तवा ।

कडुवौ-वि० १ कठोर । २ देखो 'कड़वी' ।

कडुणौ (बो)-देखो 'कटणी' (बो) ।

कड़-पुं० १ पानी का बहाव । २ पानी का नाला । ३ जंगल, वन । ४ खलिहान में भूसा गिराने का स्थान । ५ घास-फूस का कच्चा मकान । ६ ऊसर भूमि । ७ निकाल ।

कड़णी (बो)-क्रि० १ निकलना, निकल कर आना । २ म्यान से तलवार निकाला जाना । ३ खेत में लकड़ी आदि काट कर सफा करना । ४ दुष्ट छोड़ना ।

कड़मांणी (नी) कड़ामणी कड़ावणी-स्त्री० दूध ओटाने का पात्र ।

कड़ाई-देखो 'कड़ाही' ।

कड़ाणी (बी), कड़ावणी (बी)-क्रि० १ निकलवाना । २ भ्रान्त में तलवार निकलवाना । ३ खेत में लकड़ी आदि कटा कर साफ कराना । ४ दूध ओटाना ।

कड़ार-पु० कोल्हू के ऊपर चारों ओर लगे तख्ते ।

कड़ी-स्त्री० छाछ में बेसन व मसाले मिलाकर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ । साग ।

कड़ीणी-पु० धी या तेल में तल कर बनाये जाने वाले खाद्य पदार्थ ।

कण-पु० [सं०] १ अनाज का दाना, कण । २ अनाज । ३ सार भाग । ४ अणु, जर्मी । ५ स्वल्प परिमाण । ६ रज कण । ७ बूँद, कतरा । ८ अंगारा । ९ गुंजाईश । १० खंडित अंश । ११ हीरा या जवाहरात । १२ रत्न । १३ मोती । १४ अनाज की बाल । १५ राजा कर्ण । १६ चावल का कड़ा । १७ तीर, बाण । १८ युद्ध, रण । १९ सेना, फौज । २० साहस, हिम्मत । २१ पायल की ध्वनि । २२ भिक्षा । २३ बुद्धि । २४ बीज का अनाज । २५ कंचन, स्वर्ण । -मवं० कौन, किम ।

कणह्वर-वि० किंचित, अल्प । देखो 'कणेर' ।

कणइठ (एठिय, एठी)-देखो 'कणैठीय' ।

कणक-पु० १ सफेद गेहूँ । २ देखो 'कनक' ।

कण-कण-क्रि० वि० [प्रनु०] १ खंड-खंड । २ दाना-दाना अलग । ३ नितर-वितर । -स्त्री० ध्वनि विशेष ।

कणकली-देखो 'कणकली' ।

कणकली-देखो 'कणकली' । (स्त्री० कणकली)

कणकामण-पु० जादू-टोना ।

कणकौ-पु० १ रण, रवा, जर्मी, मूक्षमांश । २ साहस । ३ योग्यता । ४ समता । ५ शक्ति, बल ।

कणकण-देखो 'कण-कण' ।

कणगज-स्त्री० एक औषधि ।

कणगती-स्त्री० १ कमर में बांधी जाने वाली डोरी । २ करधनी ।

कणगवळि-स्त्री० [सं० कनक + प्रवलि] १ एक प्रकार की तपस्या । २ कटि प्रदेश का आभूषण ।

कणगिर (गिरि)-पु० [सं० कंचनगिरि] १ सुमेरु पर्वत । २ लंका का गढ़ । ३ जालौर का किला ।

कणगूगळ (ळी)-पु० दानेदार गुग्गुलु ।

कणगेठ्यौ-पु० छिपकली जाति का एक जोय, गिरगिट ।

कणठणी(बी)-क्रि० काटना, मारना । २ देखो 'कणणी' (बी) ।

कणज-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

कणडोर-पु० विवाह के समय वर-वधू के हाथ-पावों में बांधे जाने वाले डोरे ।

कणकणी (बी), कणकणी(बी)-क्रि० १ युद्धार्थ उत्तेजित करने लिए जोश पूर्ण ध्वनि करना । २ दहाड़ना, गरजना । ३ वीरों द्वारा जोश पूर्ण ध्वनि करना ।

कणकण-स्त्री० जोश पूर्ण ध्वनि, दहाड़, गरजन । बकवाद ।

कणदोराबंध-देखो 'कंदोराबंध' ।

कणदोरी-पु० कमर का आभूषण, करधनी ।

कणपांण-वि० श्रंष्ट, बढ़िया । -स्त्री० बढ़िया लोहे की पंजी तलवार ।

कणवार-देखो 'कणवार' ।

कणवारिणी-देखो 'कणवारिणी' ।

कणबीक-देखो 'कणबी' ।

कणमणणी (बी)-क्रि० १ हिलना-डुलना । २ गुन गुमाना । ३ दर्द भरी आवाज करना ।

कणमुठी-स्त्री० मुठ्ठी भर अनाज की मात्रा ।

कणय-देखो 'कनक' ।

कणयर-देखो 'कणेर' ।

कणयाचल-पु० [सं० कनक-अचल] १ सुमेरु पर्वत । २ जालौर का एक पर्वत ।

कणलाल-पु० अनार ।

कणवार-स्त्री० १ 'कणवारिणी' का पद व इस पद का वेतन । २ सहायता या संदेश देने की क्रिया ।

कणवारिणी-पु० किसी जागीरदार या चतुर्थ श्रेणी का नौकर ।

कणसारी-पु० गोबर व बांस की खपचियों का बना अनाज भरने का कोठा ।

कणसि (सी)-पु० एक प्रकार का जम्बू ।

कणां-क्रि० वि० कब । कब से ।

कणाई-क्रि० वि० कभी भी ।

कणांकली (कणाकली)-वि० कभी का । (स्त्री० कणांकली)

कणा-स्त्री० [सं० कृष्ण] पीपल । -क्रि० वि० कब ।

कणाउळि (ळी)-स्त्री० भिक्षा ।

कणाद-पु० [सं०] वैशेषिक शास्त्र के रचयिता एक मुनि का कुमित नाम ।

कणापोच-स्त्री० फसल को सिचाई के लिये बयारियों के बीच बनाई जाने वाली नाली ।

कणारी-स्त्री० भींगुर ।

कणारी-देखो 'कणसारी' ।

कणावा-पु० खेत का किनारा ।

कणिआगरी-देखो 'कणिआगर' ।

कणियर-देखो 'कणेर' ।

कणियांशु-वि० शक्तिशाली, बुद्धिमान ।

कणियागिर (गरी, गिर, गिरि, गीरी) कणियाबल-पु० [सं० कनक-गिरि] १ सुमेरु पर्वत । २ जालौर का एक पर्वत । ३ सोनगढ़ चौहान ।

कणिया-पु० १ पर्वत की खड़ी खपची में बंध कर त्रिकोण बनाने वाला डोरा । २ पाये की आड़ी लकड़ी में लगने वाला कीला । ३ कुएं से पानी निकालने के चक्र की धुरी । ४ देखो 'कणी' ।

कणी-स्त्री० १ खपरल या छाजन में लगने वाला मोटा सीधा लट्टा । २ कनेर का पौधा या पुष्प । ३ चावल के टुकड़े, कण । ४ एक खाद्य पदार्थ विशेष । ५ टुकड़ा, कण । ६ तराजू की नोक पर बंधी रहने वाली छोटी डोरी जो पलड़े की डोरी से बंधी रहती है । सर्व०-१ किस । २ कौन । ---कुंड-पु० एक तीर्थ स्थान ।

कणीसक-पु० [सं० कणिश] घनाज की बाल, भुट्टा ।

कणूकी-१ देखो 'कण' । २ देखो 'कणकौ' ।

कण-कि० वि० कब । कब तक । -सर्व० कितने ।

कणई-कि० वि० अभी का । बहुत पहले ।

करोठ (ठी, ठी) करोठिय-पु० [सं० कनिष्ठ] छोटा भाई, कनिष्ठ । वि० १ हीन, निकृष्ट । २ छोटा, लघु । ३ तुच्छ ।

करोर-पु० १ प्रायः राग बगीचों में लगाया जाने वाला पौधा । २ इस पौधे का फूल ।

करोरीपाद (व)-पु० [सं० कृष्णपादः] नाथ सम्प्रदाय के एक महात्मा, कृष्णपाद ।

कर्ण-पु० [सं० कंचन] सोना स्वर्ण ।

कर्णई-देखो 'कर्णई' ।

कर्णगढ़-पु० [सं० कंचन-गढ़] १ जालौर का किला । २ सुमेरु पर्वत । ३ लंका ।

कर्णगिर, कर्णगिरी-देखो 'कणियागिर' ।

कणी-पु०-१ खेत की सीमा । २ सीमा पर डाले हुए भाड़ी के डंठल । ३ स्वारियों की सिचाई के लिये बनी नाली । ४ गेहूँ का सूखा दलिया । ५ पड़चा, कलाई ।

कन-कि० वि० १ कहाँ । २ कब । ३ कैसे, क्यों । -पु० १ भू-छों की कतरन । २ कतावट ।

कतई-कि० वि० निवांत, विन्कुल ।

कनक-पु० केंचु की पुष्प ।

कतरण-स्त्री० १ काट-छांट करने की क्रिया या भाव । २ कटाई की कला । ३ बम्बाई की काटने के बाद रहने वाला छोटा टुकड़ा (कुरपण) ।

कतरणी (नी)-स्त्री० कैंची ।

कतरणी (नौ)-कि० १ काटना । २ काट कर टुकड़े करना । ३ मारना, गद्गार करना ।

कतरा'क (हेक)-वि० [सं० कियत्] (स्त्री० कतरी'क) कितने ।

कतराणी (बौ), कतरावणी (बौ)-कि० १ कटाई कराना, कटवाना । २ काटने के लिये प्रेरित करना । ३ किसी की निगाह बचा कर चलना ।

कतरी-पु० जनकण, बूंद, कतरा । -वि० (स्त्री० कतरी) कितना ।

कतल (ल)-स्त्री० [अ० कत्ल] वध, हत्या, संहार ।

—ग्राम='कतले-ग्राम' ।

कतले-ग्राम-पु० [अ० कत्लेग्राम] ग्राम-जनता का सामूहिक कतल । संहार, वध ।

कतल्ल-देखो कतल' ।

कतवारो-स्त्री० सूत कातने वाली ।

कतई-स्त्री० १ कातने का कार्य । २ कातने का पारिश्रमिक । -वि० कितने ही ।

कतार-स्त्री० [अ० कितार] १ पंक्ति । २ पंक्तिबद्ध चलने वाला काफिला ।

कतारियौ-पु० अंटों के काफिले में यामान ढोने वाला ध्वनि ।

कति-स्त्री० क्रीड़ा ।

कतियांण, कतियांणी-देखो 'कात्यांगी' ।

कतिया-स्त्री० एक प्रकार की छुरी ।

कतियौ-पु० १ छोटी कैंची । २ धातु काटने का एक औजार ।

कतिलौ-पु० एक प्रकार का महीन कपड़ा । २ एक प्रकार का गोंद ।

कती-वि० कितनी । -स्त्री० १ एक प्रकार का शस्त्र । २ छोटी तलवार । ३ तलवार । ४ छुरी । ५ कटारी ।

कतीन-पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

कतीरामपुरी-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

कतीरौ-पु० एक प्रकार का गोंद ।

कतूळ, कतूहळ(ळि)-देखो 'कतुहल' ।

कतेई-अव्य० [अ० कतई] निवांत, बिन्कुल ।

कतेइ-वि० कताई के कार्य में निपुण ।

कतेव-पु० १ वेद । २ शास्त्र । ३ पुराण । ४ किताब ।

कतोदई, कतोदईव-कि० वि० शायद, कदाचित् ।

कती-देखो 'कती' । (स्त्री० कनी)

कतली-स्त्री० १ कतरन, टुकड़े । २ संहार, नाश ।

कत्तिन-स्त्री० एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

कतियांणी-देखो 'कात्यांगी' ।

कती-देखो 'कनी' ।

कतेव-देखो 'कतेव' ।

कतौ-देखो 'कितौ' । (स्त्री० कती)

कत्य-देखो 'कत्य' ।

कथ्यई-पु० कथ्ये की तरह का रंग । -वि० उक्त रंग का ।
 कथ्यणी (बी)-देखो 'कथणी' (बी) ।
 कथ्य-पु० [सं० कथ्य] अंतिम संस्कार ।
 कथ्याणी, कथ्याणी-देखो 'कात्याणी' ।
 कथवाली-पु० सफेद पांवी वाला पीले रंग का घोड़ा ।
 कथ-स्त्री० [सं० कथा, कथ्य] १ कथा, वार्ता । २ वृत्तान्त, हल । ३ विवरण । ४ वचन, शब्द । ५ कीर्ति, यश । ६ धन, श्रेष्ठ । ७ कहानि । ८ वक्तव्य ।
 कथक (ककड़)-वि० [सं०] १ नर्तक । २ कथावाचक । ३ वक्ता । ४ वादी । ५ बड़ी संघी चौड़ी कथा कहने वाला ।
 कथणी-स्त्री० १ कथन, कहने की क्रिया । २ बातचीत । ३ कहने का रंग । ४ वक्तव्य, हज्जत । ५ रचना, काव्य ।
 कथणी (बी)-क्रि० [सं० कथ] १ कहना २ वर्णन करना । ३ जपना । ४ काव्य-रचना करना ।
 कथन-पु० [सं०] १ कहने की क्रिया या भाव । २ वर्णन, निरूपण । ३ विवरण । ४ उक्ति । ५ बयान । ६ वचन, शब्द, बोल । ७ हुक्म ।
 कथा-स्त्री० [सं०] १ कहानी । २ इतिवृत्त । ३ वृत्तान्त । ४ वर्णन । ५ किस्सा ६ वार्तालाप ७ आख्यायिका । ८ धार्मिक प्रसंग । ९ पुराणादि का पठन, पाठ या सुनाने की क्रिया । १० चर्चा, जिज्ञासा । ११ कीर्ति, यश ।
 कथित-वि० [सं०] कहा हुआ ।
 कथोपी-पु० १ मंडप का वस्त्र । २ एक प्रकार का वड़िया रेशमी वस्त्र ।
 कथोर (रु)-पु० बर्तनों पर कलाई करने का एक सफेद तम घातु । जस्ता ।
 कथेब-देखो 'कतेब' ।
 कथ्य-१ देखो 'कथ' । २ देखो 'कथा' ।
 कथ्यणी (बी)-देखो 'कथणी' (बी) ।
 कदंब-क्रि० वि० कभी ।
 कदंब-पु० [सं०] १ एक सदा बहार वृक्ष । २ घास विशेष । ३ समूह, द्वेर । ४ हल्दी । ५ सेना, फौज ।
 कदंबरी-देखो 'कादंबरी' ।
 कद-पु० [सं०] १ ऊंचाई । २ शरीर की लम्बाई । ३ माप । -क्रि० वि० १ कब । २ कभी ।
 कदई-क्रि० वि० कभी ।
 कदक-पु० [सं० कदक] १ डेरा, खेमा, शिविर । २ चंदोवा, विनान ।
 कदकोई, कदकी-वि० कभी का ।
 कदच-देखो 'कदाचिन' ।
 कदनाणी-क्रि० वि० कब तक ।

कदधव-पु० [सं० कदधा] कुमार्ग, कुपथ ।
 कदन-पु० [सं० कदनम्] १ दुःख । २ युद्ध । ३ नाश, ध्वंस । ४ पाप । ५ वध, हत्या ।
 कदन्त-पु० [सं०] मोटा प्रनाज ।
 कदम, कदमू, कदम्प-पु० [अ० कदम] १ डग २ पांव । ३ गति । ४ छोड़े की एक चाल । ५ कदंब । ६ एक डिगल छंद । ७ पदचिह्न ।
 कदर-स्त्री० [अ० कदर] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । २ श्रद्धा, आदर । ३ मात्रा । ४ माप ।
 कदरज-वि० [सं० कदर्य] १ नीच कुलोत्पन्न । २ पतित, नीच । ३ कायर । ४ कृपण । -स्त्री० धूल, मिट्टी ।
 कदरदान-वि० [अ० कदर + दा + क्त] गुण ग्राहक । कदर करने वाला ।
 कदराय-स्त्री० कायरता ।
 कदरी-वि० (स्त्री० कदरी) कभी का ।
 कदली-पु० [सं० कदली] १ केला । २ एक हिरन । ३ हाथी पर रखने का झंडा । ४ झंडा, ध्वज । -खंड, धन-पु० केले का जंगल ।
 कदद-वि० [सं० कदद] मूर्ख ।
 कदा-क्रि० वि० कब, कभी ।
 कदाक, कदाच, कदाचि, कदाचित्-क्रि० वि० कदाचित्, शायद । कभी ।
 कदापि-क्रि० वि० हरगिज, किसी सूरत में, कभी भी ।
 कदास-देखो 'कदाच' ।
 कदि-देखो 'कदी' ।
 कदियक-क्रि० वि० कब, कभी ।
 कदियाई-क्रि० वि० किसी दिन ।
 कदियो-पु० घी भरने या परोसने की कटोरी ।
 कदी, कदीक-क्रि० वि० १ कभी । २ किसी दिन । ३ कब ।
 कदीकी-वि० कभी का । (स्त्री० कदीकी)
 कदीम-क्रि० वि० [अ० कदीम] १ परम्परा से, सदैव । -वि० १ प्राचीन । २ परंपरागत ।
 कदीमी-वि० परंपरागत । प्राचीन ।
 कदीय-क्रि० वि० कभी ।
 कदीरी-वि० (स्त्री० कदीरी) कभी का ।
 कदीसेक-क्रि० वि० कभी-कभी ।
 कदू-पु० लौकी, बीया । सूष्माणु ।
 कदे, कदेइक, कदेई-देखो 'कदे' ।
 कदेईन-क्रि० वि० कभी भी ।
 कदेक-क्रि० वि० कब तक ।
 कदेकण-क्रि० वि० कभी ।

कदेकरी, कदेकौ-वि० कभी का । (स्त्री० कदेकरी)
 कदेय-क्रि०वि० कभी ।
 कदेरोई, कदेरी-वि० कभी का । (स्त्री० कदेरी)
 कदेव-पु० कृपण, कंजूस ।
 कदेहिक, कदेहीक-क्रि०वि० कभी ।
 कदेई (ई)-क्रि०वि० कब । कभी भी ।
 कदेईसेक-क्रि०वि० कभी-कभी ।
 कदेक-देखो 'कदेक' ।
 कदेकवास, कदेकौई, कदेकौ-वि० कभी का । (स्त्री० कदेकौ)
 कदौ-वि० श्याम, कृष्ण, काला ।
 कदवान-देखो 'कदरदान' ।
 कन-अव्य० १ या, अथवा । २ ओर, तरफ । -पु० [सं० कर्ण]
 १ कान । २ राजा कर्ण । ३ श्रीकृष्ण । —बाल-पु० कान
 के बाल या केश ।
 कनक (कक)-पु० [सं० कनक] १ सोना, स्वर्ण । [सं० कनकः]
 २ धतूरा । ३ एक प्रकार का घोड़ा । ४ पलाश । ५ छप्पय
 छंद का एक भेद । ६ वेलियो सांणीर छंद का एक भेद ।
 -वि० पीत, पीला । —अचल-पु० सुमेरु पर्वत ।
 —केसर-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा । —गढ़-पु०
 लंका । जालौर का किला । —गिर, गिरि-पु० सुमेरु
 पर्वत । जालौर का पर्वत । —तता-स्त्री० स्वर्णलता ।
 —वरीसण-पु० सूर्य पुत्र कर्ण । —बेल, लि, ली-स्त्री०
 स्वर्णलता । —खण-पु० स्वर्णदान करने वाला राजा कर्ण ।
 कनकुकडी-स्त्री० १ कान के ऊपर का भाग जहां वाली पहनी
 जाती है । २ इस पर पहनी जाने वाली वाली ।
 कनखल-पु० १ हरिद्वार के पास का एक तीर्थ स्थान ।
 २ हंगामा, शोरगुल ।
 कनड़-पु० श्रीकृष्ण ।
 कनड़ी-स्त्री० एक राग विशेष ।
 कनड़ी-पु० १ वस्त्र का छोर । २ कान । ३ देखो 'कानड़ी' ।
 कनन-वि० [सं०] एकाक्षी, काना ।
 कनपड़ी, कनपटी, कनपट्टी, कनफड़ी-स्त्री० कान के आगे का
 भाग ।
 कनफड़ी-पु० १ कनफटा गोरखपंथी योगी । २ देखो 'कनपड़ी' ।
 कनफटी-पु० नाथ संप्रदाय का संन्यासी ।
 कनफूठ-पु० [सं० कर्ण-फूल] कान का आभूषण, कर्ण फूल ।
 कनमूठ-पु० कान के पास होने वाला एक ग्रन्थि-रोग ।
 कनली-वि० (स्त्री० कनली) पास का, निकट का ।
 कनवत-पु० घोड़े के कान ।
 कनसलाई-देखो 'कानसलाई' ।
 कनमूरि (रौ)-पु० कान के आगे का हिस्सा, कनपटी ।

कनस्ट-देखो 'कनिष्ठ' ।
 कना-क्रि०वि० [सं० कर्ण] १ निकट, पास । २ या, अथवा ।
 ३ मानो, संभवतः ।
 कनाघण-पु० घोड़े के कान ।
 कनाई-पु० श्रीकृष्ण । —क्रि०वि० पास, निकट ।
 कनात (थ)-स्त्री० [तु०] १ तीन तरफ से घेर कर किया जाने
 वाला आड़ा पर्दा । २ छोर, किनारा ।
 कनार-पु० १ घोड़े का एक रोग । २ देखो 'किनार' ।
 कनारी-देखो 'किनार' ।
 कनारी-देखो 'किनारी' ।
 कनिभान, कनिषी (बी)-पु० छोटा भाई ।
 कनिषाण, (रि, ए)-देखो 'कनिषाणी' ।
 कनिष्ठ (सठ)-पु० [सं० कनिष्ठ] छोटा भाई । —वि० १ सबसे
 छोटा । २ छोटा, लघु । ३ कम ।
 कनी-स्त्री० [सं०] १ कन्या, बालिका । २ सेना, फौज ।
 ३ हीरे का छोटा टुकड़ा । ४ देखो 'कर्णी' ।
 कनीघस-देखो 'कनीघस' ।
 कनीषाव-पु० गुरु कृष्णपाद ।
 कनीघस-पु० [सं० अकनीघस] तांबा ।
 कनीर-देखो 'कनेर' ।
 कनूर (रौ)-पु० १ कान, कर्ण । २ कनपटी ।
 कनेउर-पु० कान का आभूषण विशेष ।
 कने-क्रि०वि० १ समीप, पास । २ कब्जे में । ३ साथ में ।
 ४ निकट ।
 कनीयौ-पु० १ श्रीकृष्ण । २ एक छोटा पक्षी ।
 कनेल, कनीतो, कनीतो-स्त्री० १ घोड़े का कान । २ कान की
 नोक । ३ कान का आभूषण ।
 कन-पु० [सं० कर्ण] १ कान, कर्ण । २ राजा कर्ण ।
 ३ श्रीकृष्ण । ४ देखो 'कन्या' ।
 कनफड़-देखो 'कनफड़ी' ।
 कनि, कनी-पु० [सं० कर्ण] १ कान । २ छोटी पतंग ।
 कन्यका, कन्या-स्त्री० [सं०] १ बालिका, कन्या लड़की ।
 २ अविवाहिता लड़की । ३ पद्य-काव्य की नायिका ।
 ४ एक राशि । ५ दुर्गा का नाम । ६ बड़ी इलायची ।
 ७ पुत्री । ८ घृतकुमारी । ९ अक्षत योनि की स्त्री ।
 १० दिशा । ११ पांच की संख्या । —काल-पु० कन्या का
 या कुंवारापन । लड़की की रजोदर्शन के पूर्व की अवस्था ।
 लड़कियों का अभाव । —दान-पु० कन्या का विवाह या
 दान । दहेज । गऊदान । —थल, हल-पु० कन्या के विवाह
 के दिन पारिग्रहण होने तक रखा जाने वाला व्रत ।
 कन्यादान ।

कन्ह-पु० १ श्रोत्राणा का एक नाम । २ देखो 'कान' ।
-क्रि०वि० या, प्रथवा ।

कन्हई, कन्हई-क्रि०वि० १ पास, निकट । २ समीप । ३ अगाड़ी ।
कन्हड़, (डो, ड, डो)-१ देखो 'कानडो' । २ देखो 'कन्ह' ।

कन्हर-पु० श्रोत्राणा ।

कन्हली-वि० (स्त्री० कन्हली) पास का, निकट का ।

कन्ह-क्रि०वि० पास में ।

कन्है-क्रि०वि० पास में ।

कन्हैयो (इयो)-देखो 'कनैयो' ।

कप-पु० [अ०] १ प्याना । २ देखो 'कपि' ।

कपड़-पु० कपड़ा, वस्त्र । —कोड़-पु० पहिने का वस्त्र । तंबू,
बेमा । —छाँण-पु० बारीक कपड़े से छानने की क्रिया ।
बारीक कपड़े से छाना हुआ पदार्थ । —दार, विदार-
पु० दर्ज ।

कपड़द्वारो-पु० १ वस्त्रागार । २ राजा महाराजा, की राजकीय
पोशाक, जेवर, रोकड़, जवाहरात संबंधी सामान को
सुरक्षित रखने व उसकी व्यवस्था करने का विभाग विशेष ।
(जयपुर)

कपड़ां-रो-कोठार (भंडार)-पु० राजा महाराजाओं के वस्त्र संबंधी
एक विभाग का नाम ।

कपड़ा-पु० १ वस्त्र । २ रजस्वला स्त्री का दूषित रक्त ।
३ रक्त प्रदर रोग ।

कपड़ाणी (बी)-क्रि० १ कपड़ा लपेट कर किसी सचे में फिट
करना । २ पकड़ाना ।

कपड़ी-पु० [सं० कपट] १ वस्त्र । २ वस्त्र खण्ड । ३ चीर पट ।
४ पोशाक ।

कपट (ता, ताई)-पु० [सं०] १ घोखा, छल । २ पाखण्ड ।
३ दुराव । ४ बनावट । ५ नुकाव-छिपाव । ६ बहतर
कलाओं में से एक । ७ चालाकी, धूर्तता ।

कपटो-वि० [सं०] (स्त्री० कपटणी) १ धोखेबाज, छलिया ।
२ पाखण्डी । ३ बनावटी । ४ कुटिल ।

कपटिणी-पु० दीपक की ली से बाजल बनाने का मिट्टी का बना
उपकरण ।

कपणो-वि० काटने वाला, मिटाने वाला ।

कपणी (बी)-क्रि० १ कटना, नाण होना, मिटना । २ देखो
'खपाणी (बी)' । ३ देखो कपणी (बी) ।

कपरदी, कपरदीम-पु० [सं० कपर्दी] शंकर, शिव ।

कपरी-पु० १ नमक पैदा होने की भूमि । २ पानी के पड़ाव का
स्थान ।

कपल-देखो 'कपिल' ।

कपला-देखो 'कपिला' ।

कपाण-स्त्री० [सं० कृपाण] १ कटार, कृपाण । २ तलवार,
खड्ग ।

कपाट-पु० [सं०] १ द्वार-पट । २ दरवाजे का पल्ला, किवाड़ ।
३ ग्राह ।

कपाणी (बी)-क्रि० कटाना, कतराना ।

कपायो-पु० [सं० कर्पास] १ कपास का बीज । २ हाथ या पैर-
तले में होने वाली चर्म ग्रंथि । ३ मस्तिष्क का सार भाग ।

कपाल-पु० [सं० कपाल] १ शिर का ऊपरी भाग । २ शिर,
मस्तक । ३ लताट, भाल । ४ भाग्य । ५ मिट्टी का-भिक्षा-
पात्र । ६ याज्ञिक देवताओं का पुरोडाश पढ़ने का पात्र ।
७ खप्पर । ८ प्याला । ९ ढक्कन । —किरिया, क्रिया-
स्त्री०-दाह संस्कार के समय गव के मस्तक की क्षत करने
की क्रिया ।

कपाली (क)-वि० [सं० कपालित्] १ कपालधारी । २ खप्पर
धारी । ३ खोपड़ी का कनफटी से जुड़ने वाला मांस । —पु०
१ शिव, महादेव । २ एक नीच जाति । ३ देखो 'कपाल' ।

कपालेश्वर-पु० [सं० कपालेश्वर] शिव, महादेव ।

कपालौंडी-स्त्री० ऊँट के शिर में होने वाली एक ग्रंथि ।

कपाणी (बी)-१ देखो 'खपाणी (बी)' । २ देखो 'कपाणी' (बी) ।

कपास-पु० [सं० कर्पास] १ रूई व विनोद का पोथा । २ रूई ।
३ विनोला ।

कपासियों-१ देखो 'कपासियों' । २ देखो 'कपास' ।

कपासी-स्त्री० एक प्रकार का भाड़-वृक्ष ।

कपि-पु० [सं० कपि + इन्द्र] १ सिंह । २ हनुमान । ३ सुग्रीव ।
४ जाम्बवंत ।

कपि-पु० [सं०] १ बंदर, लंगूर । २ हाथी । ३ हनुमान ।
४ सुग्रीव । —केत, धाय, धुज, धुजा-पु० अर्जुन । —पत्त
-पु०-सुग्रीव । —रथ-पु० श्रीराम । अर्जुन । —राज,
राय-पु० सुग्रीव । हनुमान । बालि ।

कपिस्थ-पु० कैथा ।

कपिल (ल)-पु० [सं० कपिल] १ मांखण शास्त्र के रचयिता एक
मुनि । २ शिव, महादेव । ३ बानर । ४ अग्नि । ५ चूड़ा ।
६ कुत्ता । ७ धूप । ८ मट मैला रंग । ९ देखो 'कपिला'
-वि० पीला, पीत ।

कपिला (ता)-स्त्री० [सं० कपिला] १ सफेद गाय । २ काम-
श्रेणु । ३ पुंडरीक त्रिगुण की पत्नी व दक्ष की पुत्री ।
४ शिलाजोत । ५ मटमैले रंग की गाय ।

कपी-पु० १ सूर्य भानु । २ देखो 'कपि' । —केव= 'कपिकेव' ।
—मुक्खी-वि० बंदर जैसे मुख वाला । —राज, राय=
कपिराज' ।

कपीली-पु० [सं० कम्पिल्ल] एक प्रकार का छोटा वृक्ष व इसके फल ।
 कपीस (स्वर)-पु० [सं० कपीश, कपीश्वर] १ वानरराज वाली, सुपीव । २ हनुमान ।
 कपूत-पु० [सं० कुपुत्र] दुराचारी या निठल्ला पुत्र ।
 कपूती-स्त्री० कपूत का कार्य या गुण । कपूत होने का भाव ।
 कपूर-पु० [सं० कपूर] १ स्फटिक रंग का एक गंध-द्रव्य । २ कपूरी रंग का घोड़ा । ३ सोलह वर्ण का एक छंद । -वि० १ श्वेत । २ काला ।
 कपूरियी-पु० बकरे, मर भेड़, (मेघ) के श्रृङ्गकोश का मांस या श्रृङ्गकोश ।
 कपूरि, कपूरी-पु० १ एक प्रकार का पान । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ देखो 'कपूर' ।
 कपेली-पु० लाल मिट्टी ।
 कपोत-पु० [सं०] १ कबूतर । २ पंडुकी ३ चिड़िया । ४ पक्षी । -वि० वैगनी रंग का । -वाय-पु० घोड़े का एक रोग ।
 कपोल-पु० १ गाल । २ हाथी का गंडस्थल ।
 कप्पड़, कप्पड़ी-देखो 'कपड़ी' ।
 कप्पड़-कोट-देखो 'कपड़कोट' ।
 कप्पणी-वि० [सं० कल्पनः] काटना, कतरना ।
 कप्पोल, कप्पोल-देखो 'कपोल' ।
 कफ-पु० [सं०] १ श्लेष्मा वस्त्रगम । २ शरीरस्थ त्रिधातुओं में से एक । ३ पैन, भाग ।
 कफ्त-वि० [सं० कपत] अग्रोप्य ।
 कफन-पु० शव को लपेटने का वस्त्र ।
 कफनी-स्त्री० [फा०] साधुओं का चोगा ।
 कफल-स्त्री० [सं० कफल] सुपारी ।
 कफोणी-स्त्री० [सं० कफोणिः] हाथ व बाहु के जोड़ की हड्डी, कोहनी ।
 कबंध-पु० [सं० कबंध] १ शिर कटा घड़ । २ पेट । ३ बादल । ४ धूमकेतु । ५ जल । ६ राहु । ७ एक राक्षस । ८ राठीड वंश का उपदंत ।
 कब-क्रि० वि० १ किस समय । २ देखो 'कवि' ।
 कबज-१ देखो 'कबजी' । २ देखो 'कवजी' ।
 कबजी-स्त्री० [अ० कब्ज] १ मलावरोध का रोग । २ कोष्ठ-बद्धता ।
 कबजी-पु० [अ० कब्जा] १ अधिकार, आधिपत्य । २ नियंत्रण, काबू । ३ बाजू । ४ दस्ता, बेंट । ५ पीतल या लोहे का पुर्जा । ६ स्थियों का वक्षस्थल ढकने का वस्त्र ।
 कबडाळी-पु० १ चितकबरा मांस । २ कोड़ियों से बना ऊंट का गहना । -वि० (स्त्री० कबडाळी) चितकबरा ।
 कबडियो-पु० एक प्रकार का पक्षी ।
 कबड़ी (डो)-पु० १ एक खेल विशेष कबड्डी । २ कीड़ी ।

कबडो-देखो 'कोडी' ।
 कबध्य-वि० [सं० कुबुद्धि] नीच, दुष्ट, कुबुद्धि वाला ।
 कबर-स्त्री० [अ० कब्र] शव दफनाने का गड्ढा या स्थान ।
 —असतान, अस्तान-पु० शव दफनाने का क्षेत्र ।
 कबरराजा-देखो 'कविराजा' ।
 कबरी-स्त्री० [सं०] चोटी, वेणी ।
 कबरी-पु० एक पक्षी विशेष । -वि० चितकबरा । (स्त्री० कबरी)
 कबळ (ळी)-पु० घास, कौर ।
 कबलेजहान, कबलेजिहान-पु० [अ. कबलः + फा. जहान] बादशाहों के प्रति संबोधन शब्द ।
 कबल्लो-पु० १ घोड़ा । २ सूअर ।
 कबाण (न)-पु० [फा० कमान] १ धनुष । २ लंबी टहनियों का एक क्षुप । ३ धनुषाकार चुनाई ।
 कबाणो-स्त्री० ऐंठन देकर नलीदार बनाया हुआ तार जो फैला व सिकुड़ता रहता है । २ बढई के काम आने वाला उपकरण । -कतियो-पु० बढई का एक औजार —दार-वि० जिसमें कमानी लगी हो । धनुषाकार ।
 कबाह-पु० [अ० कबा] चोगा ।
 कबाड़णी (बी)-क्रि० १ चतुराई से प्राप्त करना । २ दुर्लभ वस्तु ढूँढ कर प्राप्त करना ।
 कबाड़ी-पु० १ रद्दी सामान का व्यापारी । २ लकड़हारा । -वि० दुर्लभ वस्तुएँ प्राप्त करने वाला । २ चतुर, निपुण । ३ प्रपंची ।
 कबाड़ी-पु० १ कचरा-सामान, अटाला । रद्दी वस्तुओं का डेर । २ दक्षता का कार्य । ३ उपद्रव, बखेड़ा । ४ प्रपंच ।
 कबाब (बी)-पु० [अ० कबाब] १ कीमे का तला हुआ मांस टिकिया या सीखे पर भुना मांस । २ मसाले के साथ बनाए हुए चावल । ३ चावल की मसालेदार खिचड़ी ।
 कबाबचीनी-स्त्री० [फा०] एक प्रसिद्ध बीज, शीतल चीनी ।
 कबाबी-वि० १ 'कबाब' ब्रेचने वाला या खाने वाला । २ मांसाहारी । -वि० कबाब संबंधी ।
 कबाय-पु० प्राचीन-कालीन एक वस्त्र ।
 कबि-१ देखो 'कवि' । देखो 'कभी' ।
 कविका-स्त्री० [सं० कविका] लगाम ।
 कबी-१ देखो 'कभी' । २ देखो 'कवि' । ३ देखो 'कविका' ।
 कबीर-पु० [फा०] सुप्रसिद्ध निर्गुण पंथी महात्मा । —पंथ-पु० कबीर का मत । —पंथी-पु० कबीर के अनुयायी । -वि० महान, बड़ा, महात्मा ।
 कबीरी-स्त्री० उदरपूर्णार्थ किया जाने वाला छोटा-सोटा उद्यम ।
 कबीली-पु० [अ० कबीलः] १ वंश । २ कुटुम्ब । ३ अन्तःपुर का स्त्री समाज । ४ एक वृक्ष विशेष । ५ देखो 'कपीली' ।
 कबुडी-क्रि० वि० कभी ।

कबू-१ देखो 'कब' । २ देखो 'कबूतर' ।
 कबूड़ी-देखो 'कबूतर' । (स्त्री० कबूड़ी)
 कबूठाँल-स्त्री० [सं० कुंभिस्थान] हाथी बांधने का स्थान ।
 कबूतर (री)-पु० [फा०] १ एक प्रसिद्ध निरामिष पक्षी, कपोत ।
 २ नट जाति या नट जाति का व्यक्ति । (स्त्री० कबूतरी)
 ३ कबूतर के रंग का घोड़ा ।
 कबूतरखानो-पु० १ कबूतर पाल कर रखे जाने का स्थान । २ एक राजकीय विभाग जिसमें नटवादी या इस प्रकार के खेल खेलने वाली जातियों के पुरस्कार आदि का प्रबंध रहता था तथा इनके भण्डे, टंटे मिटाने का प्रबंध रहता था । ३ घनाथालय ।
 कबूल-वि० [प्र० कुबूल] स्वीकार, मंजूर ।
 कबूलगो (बी)-क्रि० १ स्वीकार करना, मंजूर करना ।
 २ अंगीकार करना ।
 कबूलाइत, कबूलायत-स्त्री० कबूल करने की क्रिया या भाव ।
 २ मनोती । ३ जागीर के उपलक्ष में सामंत द्वारा स्वीकार की गई सेवाएं ।
 कबूली-स्त्री० १ मांस-भसाले डाल कर पकाये हुए चावल ।
 २ स्वीकृति ।
 कबोल-देखो 'कुबोल' ।
 कब्जो-देखो 'कब्जो' ।
 कब्ब-१ देखो 'काव्य' । २ देखो 'कवि' । ३ देखो 'कब' ।
 कब्बरी-१ देखो 'कबरी' । २ देखो 'काबरौ' ।
 कमंडल-पु० [सं० कमंडलु] साधु संन्यासियों का जलपात्र ।
 कमंद (बज, घज)-१ देखो 'कंबंध' । २ देखो 'कमद्वज' ।
 कम-वि० [फा०] थोड़ा, कम, न्यून । सर्व०-कौन, किस ।
 -कि०वि० १ कैसे । २ देखो 'करम' । ३ देखो 'क्रम' । —असल, अस्त-वि० दोगला । बरांसंकर । —खरची, खरचीली-वि०-मितव्ययी । —नसीब-वि० हतभाग्य । —बोली-वि० मितभाषी ।
 कमक-पु० १ ग्रामपण । २ देखो 'कुमक' ।
 कमकमो (म्मो)-देखो 'कुमकुमो' ।
 कमख-पु० [सं० कमख] १ पाप । २ देखो 'कुमक' ।
 कमखाब-पु० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
 कमगर-वि० १ निरन्तर कार्य करने वाला । २ कार्य कुशल, चतुर, दक्ष ।
 कमची-स्त्री० एक धारदार शस्त्र विशेष ।
 कमजा-देखो 'कमज्या' ।
 कमजोर-वि० [फा०] १ दुबल, अशक्त । २ दुबला-पतला ।
 ३ क्षीण ।
 कमजोरी-स्त्री० [फा०] निर्बलता, कमजोरी, दुर्बलता ।

कमज्या-स्त्री० [सं० कमर्जन] १ कर्म, कार्य, कर्तव्य ।
 २ प्रारब्ध ।
 कमठ, कमठ-पु० [सं० कमठ] १ कच्छप, कछुआ । २ घनुष, कमान । ३ बांस । ४ घड़ा । ५ एक दैत्य । ६ एक प्रकार का बाजा ।
 कमठाँल (नौ)-पु० [सं० कुंभिस्थान] १ हाथी बांधने का स्थान या स्तंभ । २ भवन-निर्माण-कार्य । ३ शरीर का ढाँचा ।
 ४ भवन ।
 कमठाकत-हरि, कमठाधरूप-पु० यो० विष्णु का कच्छपावतार ।
 कमठाळ, कमठाळय-पु० १ हाथी । २ घनुषधारी घोड़ा । ३ भील ।
 कमठेस-पु० कच्छपावतार ।
 कमठो-पु० [सं० कमठः] १ घनुष । २ कच्छप । ३ भवन-निर्माण-कार्य ।
 कमण, कमणि-सर्व० [सं० किम्] १ कौन । २ किस । -वि० १ कितना । २ देखो 'कबाँल' ।
 कमणीगर-पु० घनुष बनाने वाला ।
 कमणैत-देखो 'कमनैत' ।
 कमतर-पु० १ काम, धंधा । २ व्यवसाय, पेशा । ३ परिश्रम ।
 ४ सामग्री ।
 कमतरी (रियो)-पु० १ कमतर करने वाला । २ श्रमिक ।
 कमती-वि० [फा०] कम, अल्प । निश्चित से कम ।
 कमब, कमघ-देखो 'कबंध' ।
 कमदली-देखो 'कमोदली' ।
 कमद्वज (घज, घजियो, घज्ज, घांणी, छवज)-पु० १ राठीड़ वंशीय क्षत्रियों का उपदंठक । २ राठीड़ । ३ गति, खाविद ।
 कमन-वि० [सं०] १ विषयी, कामी । २ लम्पट । ३ मुन्दर, मनोहर । ४ बढ़िया श्रेष्ठ । -पु० १ कामदेव । २ अशोक वृक्ष । ३ ब्रह्मा ।
 कमनीय-वि० [मं०] १ मुन्दर, मनोहर । २ वाञ्छनीय । ३ प्रिय ।
 ४ कोमल, नाजुक ।
 कमनैत (नैत)-वि० तीरंदाज ।
 कममिखण-पु० [सं० कर्मावीक्षणः, कर्माभिक्षणः] यम ।
 कमर-स्त्री० [फा०] १ कटि, कटि प्रदेश । २ शरीर का मध्य भाग (पशु) । —चड़ी-स्त्री० तलवार । —बाप-स्त्री० दीवार के बीच लगने वाली पत्थर की पट्टी । —तोड़-पु० एक प्रकार की पोष्टिक ओषधि । —बुकूळ, पछेबड़ी-पु० कटिवंध । कटि में बांधने का वस्त्र । —पटो, पट्टी-पु० कमर बंध । —पेटो-स्त्री० कमर का कवच । —बंद, बंध, बंधी-पु० कटिवंधन, साफा, पगड़ी ।
 कमरख-पु० १ एक प्रकार का वृक्ष जिसमें पीछे फूल लगते हैं ।
 २ उक्त वृक्ष का फल ।

कमरांसचोका

(१९९)

कमुव

कमरांसचोका-वि० कटिबद्ध, तैयार।

कमरी-स्त्री० १ ऊँट का एक प्रकार का वात रोग। २ इस रोग से पीड़ित ऊँट। ३ एक प्रकार की कुरती, अंगरखी।

कमरी-पु० [लै० कैमरा] बैठक का कक्ष। कक्ष।

कमल-पु० [सं० कमल] १ जलाशयों में होने वाला एक प्रसिद्ध पौधा व इसका पुष्प। २ जन। ३ तांबा। ४ अर्क या देवा विशेष। ५ सारस पक्षी। ६ मूत्रस्थली। ७ मुख, वदन। ८ एक हिरन विशेष। ९ ब्रह्मा। १० शिव। ११ मस्तक। १२ आकाश। १३ योग के अनुसार शरीरस्थ चक्र। १४ डिंगल का एक छंद। १५ छप्पय छंद का २९ वां भेद। १६ वेलियो साणौर का एक भेद। १७ मछली। १८ चन्द्रमा। १९ सूर्य। २० शंख। २१ मोती। २२ समुद्र। २३ एक प्रकार का घोड़ा। २४ ऊँट। २५ पृथ्वी। -वि० १ कोमल। २ श्वेत। ३ नाल, रक्ताभ। -कोसरौ-वि० पीला, पीत। -गट्टी-पु० कमल का बीज। -ज, जूरा, जोरा, जोणी जोनी-पु० ब्रह्मा। -तन, पीतू-पु० चन्द्रमा। -दल-पु० कमल का पत्ता। -नयण, निघण-पु० विष्णु। -वि० कमल के फूल के समान नेत्रों वाला, सुन्दर। -नाल-स्त्री० कमल का डंठल। -पूजा-स्त्री० देवी के सम्मुख शिर काट कर अर्पण कर की जाने वाली देवी की पूजा। -सब, भू-पु० ब्रह्मा। -योनि-पु० ब्रह्मा। -रंग-पु० एक प्रकार का घोड़ा। -विकास, विकासण-पु० सूर्य। -सुत, सुतन पु० ब्रह्मा। -सुरंग-पु० एक प्रकार का घोड़ा।

कमलणी, कमलिणी (नी)-स्त्री० [सं० कमलिनी] १ कमल का फूल। २ छोटा कमल। ३ अधिक कमलों वाला स्थान। ४ कमल समूह।

कमला-स्त्री० [सं० कमला] १ सर्वोत्तम स्त्री। २ लक्ष्मी। ३ देवी, शक्ति। ४ धन सम्पत्ति। ५ भूमि। ६ एक नदी का नाम। ७ महामाया। ८ एक वर्ण वृत्त। ९ एक लोक गीत। १० अतगुरु की चार मात्रा का नाम। -एकादशी-स्त्री० चैत्र शुक्ला एकादशी। -कंत-पु० विष्णु। श्रीकृष्ण। राजा। -कर-पु० विष्णु। छप्पय का ४६ वां भेद। -गेह, यह-पु० लक्ष्मी का निवास, लक्ष्मी का घर। पत, पति-पु०-विष्णु। श्रीकृष्ण। राजा। -सण, संन-पु० ब्रह्मा।

कमलाणी (बी), कमलावणी (बी)-देखो 'कुमलाणी' (बी)।

कमलि-स्त्री० १ कमला। २ पृथ्वी। -चख-पु० कमल-चक्र। विष्णु।

कमलिणी (नी)-देखो 'कमलनी'।

कमलिथी-पु० [सं० कामला] रक्त की कमी के कारण होने वाला एक रोग।

कमलीक-पु० एक नाम वंश व उम वंश का नाम।

कमलू-देखो 'कमल'।

कमली-पु० १ ऊँट। २ देखो 'कवली'। ३ देखो 'कमल'।

कमसल-देखो 'कमग्रसल'।

कमसीस-पु० १ शिरस्त्राण, शिर कवच। २ गढ़ का कंगुरा।

कमहत-पु० बादल।

कमारण (न)-पु० १ घनुष, कमान। २ कमाई। ३ मेहराव।

४ आज्ञा, आदेश। ५ फौज का नेतृत्व।

कमाणी-देखो 'कवाणी'।

कमाई-स्त्री० १ परिश्रम द्वारा की जाने वाली आय, अर्जन, उपार्जन। २ अर्जित धन। ३ लाभ, मुनाफा। ४ कार्य, व्यवसाय। -वि० अर्जित।

कमाऊ-वि० १ कमाने वाला, उपार्जन करने वाला। २ उद्यमी।

कमागर-स्त्री० शस्त्र बनाने का कार्य करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति।

कमाड़-देखो 'कपाट'।

कमाड़ी-देखो 'किवाड़ी'।

कमाणी (बी), कमावणी (बी)-क्रि० १ परिश्रम द्वारा प्राप्त करने, कमाना। २ अर्जन करना। ३ काम लायक करना, सुधारना। ४ उत्पादन करना। ५ मुनाफा करना। ६ घटाना, कम करना। ६ मांस साफ करना।

कमावणियाँ-वि० उपार्जन करने वाला कमाई करने वाला।

कमायची-पु० एक वाद्य विशेष।

कमायी-देखो 'कमाई'।

कमाळ-स्त्री० मुंडमाला। -पु० ऊँट।

कमाल-पु० [अ०] १ अद्भुत व चमत्कारी कार्य। २ पूर्णता, पर्याप्तता। ३ निपुणता, कुशलता। ४ कारीगरी। ५ ऊँट। ६ गुण, खूबी। ७ कला, फन। ८ चालाकी, धूर्तता। ९ विद्वत्ता, काबलियत। -वि० १ अद्भुत, विचित्र। २ अधिक बहुत।

कमाळी-पु० १ शिव, महादेव। २ मौरव। ३ भिखारी। ४ मुगल। ५ द्वार के ऊपर का काठ।

कमाळू-देखो 'कमाऊ'।

कमी-स्त्री० १ कटौती। २ न्यूनता। ३ घाटा, हानि।

कमीज-पु० [फा०] शरीर पर धारण करने का मर्दाना वस्त्र।

कमीण-वि० [फा० कमीन:] १ नीच, शूद्र। २ तुच्छ व्यक्ति वाला। ३ धूर्त, पाजी। ४ अकुलीन। [सं० कामेण] ५ किसी कार्य की मुन्नारूप से पूरा करने वाला।

कमीण-कार (कारू)-पु० [सं० कामेण + कारू] १ सुधार, दर्जी, कुम्हार आदि वर्ग। २ शिल्प का कार्य करने वाला शिल्पी। ३ किसी कार्य विशेष में निपुण व्यक्ति। ४ नौकर, भेवक।

कमुद-देखो 'कुमुद'। २ देखो 'कमोद'।

रमेड़ी

(२००)

करकट

कमेड़ी-स्त्री० १ काष्ठा नामक पक्षी, पंडुखी । २ पशुओं के गींग का एक गींग ।
 कमेड़ी-पु० १ छंटों के खाने का एक सफेद फूलों वाला पौधा ।
 २ तर पंडुक पक्षी । ३ चक्कर ।
 कमेत, कमेतीष-पु० जाल रंग का घोड़ा । -- पिलंग-पु० शुभ रंग का घोड़ा । -- सोनहरी-पु० शुभ रंग घोड़ा ।
 कमेदुधारी-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
 कमेर-पु० कुवेर ।
 कमेत-देखो 'कमेत' ।
 कमेरी-पु० कृगि मजदूर ।
 कमेद-पु० १ कुई । २ रंग विशेष का घोड़ा । ३ तरहवी बार उलट कर बनाया हुआ शराब । ३ एक प्रकार का बड़िया चावल । ४ देखो 'कुमुद' ।
 कमेदण (बणि, दगी, नी)-स्त्री० [सं० कुमुदिनी] १ गफेद कमल का पौधा । २ कुई । ३ कुमुद पुष्पों का समूह ।
 ४ चांदनी । -- हित-पु० चन्द्रमा ।
 कमेदो-पु० [सं० कुमुदिन] चन्द्रमा ।
 कम्म-१ देखो 'करम' । २ देखो 'क्रम' ।
 कम्मर-स्त्री० कटि, कमर । -- सूत-पु० करधनी, मेखला ।
 कम्मल-१ देखो 'कंबल' । २ देखो 'कमल' ।
 कमेड़ी-देखो 'कमेड़ी' ।
 कय-स्त्री० [सं०] कनपटी ।
 कयकाण-देखो 'कैकाण' ।
 कयर-देखो 'केर' ।
 कयली-देखो 'कायली' ।
 कयवार-देखो 'कैवार' ।
 कया-कि०वि० १ कैंग, किम तरह, क्यों । २ देखा 'काया' ।
 कयाहोफ-कि०वि० [सं० कोरण] कैसे ही । कर्मा ।
 --वि० १ कुच्छेद । २ कितनेतः ।
 कयागरी-वि० भ्राजाकारी ।
 कयामत-स्त्री० [अ०] १ पलक । २ भयंकर विपत्ति । ३ बहुत बड़ी हत्याना । ४ मृष्टि का ग्रंथ, जब मुर्दे उठ खड़े होंगे ।
 कयास-पु० [अ०] १ खयाल, ध्यान विचार । २ अनुमान ।
 कयाहिक-देखो 'कयाहिक' ।
 कयी-सर्व० बीनसा ।
 करंक (उ, ड, डी)-पु० १ अस्थिपर्वज, कंकाव । २ रीढ़ की हड्डी । ३ पशुओं के बीनने का शब्द । ४ सुखी हड्डी ।
 करंग-कुरंग ।
 करंगल-देखो 'कंगल' ।
 करंड (क)-पु० [सं० करंडः] १ बांम की पिटारी । २ लकड़ी की पेटो जिमसे देवी की मुर्ति रखी जाती है । ३ भंडूचा ।
 ४ तलवार ।

करंडव-पु० हंस-जाति का एक पक्षी ।
 करंडी-देखो 'करंड' ।
 करंडराज-पु० [सं० करि-इंद्र-राज] गजराज ऐरावत ।
 करंबक-देखो 'करंबी' ।
 करंबित-पु० फूलों का ढेर या गुच्छा ।
 कर-पु० [सं०] १ हाथ । २ हाथ का अंगला भाग । ३ किरण ।
 ४ हाथी की सूंड । ५ चुंगी, लगान । ६ ओका । ७ चीवीस अंगुल का एक माप । ८ हस्त नक्षत्र । ९ हाथी ।
 १० भरना । ११ विषयवासना । १२ रहट का एक पुर्जा ।
 -- धन, धाले-प्र० करतल, हथेली संज्ञा जन्मों के अगाड़ी लगने वाला प्रत्यय । -- कंधू-पु० बदरी फल, वेर ।
 -- कड़ी-पु० रीढ़ की हड्डी । अस्थिपर्वज । -- कारू-पु० कुम्हड़ा । -- काळ-पु० सांप, सर्प । -- कोच-पु० कर कच । हाथ का दस्ताना । -- ग, गि, गा-पु० हाथ । लगाम । कटारी । तलवार । -- ग्रहण-पु० पाणिग्रहण । -- ग्राही-वि० कर ग्रहण करने वाला ।
 -- ठाळ, ठाळण-स्त्री० तलवार । भाला । -- डंड-पु० तीर ।
 -- तळ-स्त्री० हथेली । सिंह का पंजा । प्रंत गुरु की चार मात्रा । छप्पय छंद का ४५ वां भेद । -- ताळ, -- ताळीक-स्त्री० तलवार, खड्ग । प्रथम गुरु ढगण के भेद का नाम । एक वाद्य विशेष । -- ताळी-स्त्री० दोनों हथेलियों से की जाने वाली आवाज । -- धार-स्त्री० शस्त्र । -- पल्लव-पु० हाथ की अंगुली । -- बाळ-स्त्री० तलवार । -- भूसण-पु० हाथ का गहना । कंगन ।
 -- मठ-पु० कृपण कंगुल । -- गाल, माळी, म्याळ-स्त्री० तलवार । -- साख, साखा-स्त्री० अंगुली । -- लोकर-पु० हाथी की सूंड का पानी ।
 करणल, (ळि, यळ)-देखो 'करतल' ।
 करक-पु० [सं० करक कर्कः] १ कमंडल । २ करवा ।
 ३ तारिखल की खोपड़ी । ४ अनाम । ५ हाथ । ६ मौलमिरी ।
 ७ कचतार । ८ करील वृक्ष । ९ महंगूल । १० एक पक्षी ।
 ११ ओला । उपल । १२ पृथ्वी की विपुल रेखा के उत्तर या दक्षिण में २३ अक्षांश पर निकलने वाली कल्पित रेखाएँ । १३ बारह राशियों में से एक । १४ कंकड़ा ।
 १५ अग्नि । १६ जलपात्र । १७ आईना । १८ सफेद घोड़ा ।
 १९ एक लग्न । २० शक्ति बल । २१ खेत । २२ चीम, पांछा, दई । २३ खटकन । २४ सूखी हड्डी, करंक । २५ रीढ़ ।
 करकड़ी-पु० १ रीढ़ की हड्डी । २ हड्डी अस्थि ।
 करकट (क)-पु० [सं० करकट] १ कंकड़ा । २ गिरगिट । ३ कर्क राशि । ४ सारंग पक्षी । ५ लोकी, घोषा । ६ कमल की मोटी जड़ । ७ लड़ा करकट । ८ घाम-भूम । ९ सफेद रंग का थोड़ा । -- जोग, योग-पु० ज्योतिष का अशुभ योग ।

करकटणो

(२०१)

करणानिधान

करकटणो (बो)—क्रि० १ मरना । २ कटना ।

करकटिका (कटो)—स्त्री० ककड़ी ।

करकणो (बो)—क्रि० १ दर्द से चिल्लाना । २ कराहना ।

३ कसकना । ४ रगड़ लगना । ५ फटना । ६ खटकना ।

करकर—स्त्री० [सं० कर्कर] १ समुद्री नमक । २ हड्डी ।

३ कंकर । ४ धूलि कण । ५ करीर-वृक्ष ।

करकस—वि० [सं० कर्कश] १ कठोर । सख्त । २ क्रूर, तेज ।

३ तीक्ष्ण । ४ अप्रिय । ५ कलह प्रिय ।

करकसा—स्त्री० [सं० कर्कशा] १ असदाचारिणी, अमनी अपति-
व्रता स्त्री । २ कलह प्रिय ।करकांड—स्त्री० अगूठा फंलाकर, मुष्टिका जितनी लंबाई
का नाप ।

करका—वि० श्वेत, नफेद ।

करको—देखो 'किरको' ।

करकणो (बो)—देखो 'करकणो' (बो) ।

करख—पु० [सं० कर्ष] १ खिंचाव, तनाव । २ हठ, जिद्द । ३ क्रोध,
रोग । ४ दुःख, कष्ट । ५ एक तौल । —घञ्—पु० दीपक ।करखणी (बो), करखणी (बो)—क्रि० [सं० कर्षणम्] खींचना ।
तानना ।

करगसा—देखो 'करवसा' ।

करड़—स्त्री० १ खंभे तंतुदार एक घास । २ कटि, कमर ।

३ ध्वनि विशेष । ४ ऊंट के बाजों का बना धिछाने का वस्त्र

जिसे गंदा (गद्दा) भी कहते हैं । —वि० हड़, मजबूत । —कौ-

—पु० कठोर वस्तु को खाने, तोड़ने आदि से उत्पन्न ध्वनि ।

—दंतौ—वि० मजबूत दांतों वाला । —घञ्—वि० जबरदस्त

शक्तिशाली । गविला । सजा हुआ । —पटौली, बटौली

—वि० चितकबरा । —मरड़—स्त्री० चुंचर्मर की ध्वनि ।

—बाळ—पु० दाढ़ी के खेत-ग्राम बाल ।

करड़कणो (बो)—क्रि० १ दांतों से काट कर खाना । २ टूटना ।

३ टूटने समय ध्वनि होना ।

करड़ाण, करड़ाई, करड़ाट, करड़ाण (ए) करड़ाण—स्त्री०

१ कड़ाई, कठोरता । २ अभिमान, गर्व । ३ कृता ।

४ एक ध्वनि विशेष ।

करड़ाणो (बो), करड़ाणो (बो)—क्रि० १ अकड़ना, ऐंठना ।

२ दांतों से काटना । ३ कुचलना ।

करडीखुआं—स्त्री० रात्रि का द्वितीय प्रदृग् ।

करडीमूठ—स्त्री० १ कृपणता, कजूसी । २ कठोरता ।

—वि० कृपण ।

करड़—पु० अनाज का वह दाना जो पकाने पर भी पकता न हो ।

करडी—वि० (स्त्री० कड़डी) १ कठोर, मजबूत । २ हड़ मजबूत ।

३ कठिन, दुष्कर । ४ उग्र । ५ ठोस । ६ निष्पूर । ७ उस्त ।

८ अप्रिय । ९ अप्रिय । —पु० १ एक प्रकार का घोंडा

जो अरबी-तुर्की का वर्णसंकर होता है । २ श्वेत अश्व ।

३ एक प्रकार का सर्प । —लकड़, लकड़—वि० लकड़ी के
ममान ठोस ।करज (जौ)—पु० [सं० करज] १ नाखून, नख । २ एक
मुशघित द्रव्य । ३ प्रकाश । [अ० कर्ज] ४ ऋण । —वार-

वि० ऋणी । —बारी—स्त्री० ऋण । लेनदारी ।

करजायत—पु० कर्ज लेने-देने वाला ।

करजडी—देखो 'करज' ।

करजाळ—स्त्री० तलवार ।

करट—पु० [सं० करटः] १ कौवा । २ हाथी का कपोल ।

३ पतित ब्राह्मण । —वि० १ दुष्ट । २ नास्तिक ।

करठो—स्त्री० कंठ ।

करडू—देखो 'करडू' ।

करण—पु० [सं०] १ करने की क्रिया या भाव । २ हथियार ।

३ दश इन्द्रिय, मन, बुद्धि और अहंकार । ४ देह । ५ क्रिया,

कार्य । ६ स्थान । ७ हेतु । ८ कान । ९ राजा अर्ण ।

१० दो गुरु की मात्रा का नाम, ऽऽ । ११ हाथ । १२ अल्प

छन्द का एक भेद । १३ व्याकरण का नीमरा कारक ।

१४ धनुष । १५ विरग । १६ समूह । १७ ज्योतिष में

तिथियों का एक विभाग । १८ ज्योतिष की एक गणित ।

१९ लिखित दस्तावेज । —अस्थ—पु० धनुष । —कंड़—पु०

कान का एक रोग । —कारक—पु० साधन बनाने वाला

कारक । —कारण—पु० कारण रूप ईश्वर । —आण—पु०

शिर, मस्तक । —नाब—पु० कान का एक रोग । —पत्र

मंग—पु० कानों के गहने बनाने का कार्य । ६४ कलाओं में

से एक । —पसाव—पु० मुतने का भाव । —पांण—पु० तीर,

बाण । —पाक—पु० कान का एक रोग । —पित, पिता-

पु० सूर्य, भानु । —पिसाचिनी—स्त्री० एक प्रकार की

साधना । —पुरी—स्त्री० चंपापुरी । —पोत—पु० भाला

—कूल—पु० कान का एक आसूषण । एक पुष्प विशेष ।

—विवाह—पु० पति । —मूळ—पु० कान के मूल में होने

वाला ग्रन्थि-रोग । —रस—'कर्मरस' । —रोगवाय—पु०

घोंडे का एक रोग । —संब—पु० गधा । —वि० लड़े कानों

वाला । —सत्र—पु० अर्जुन । —मूळ—पु० कान का रोग ।

—सोच—वि० कायर, डरपोक । —खाव—कान का रोग ।

—हार—पु० ईश्वर ।

करणा—देखो 'करणा' ।

करणाकर (कार)—पु० [सं० करणाकर] ईश्वर ।

करणाधपत—पु० [सं० करणाधिपति] १ ईश्वर । २ सूर्य, भानु ।

करणाधिधान—पु० [सं० करणाधिधान] १ ईश्वर । २ दयालु,

दयालु ।

करलामई-करलामय-वि० [सं० करलामय] करुणा, दया करने वाला । -पु० ईश्वर ।
 करलाळ-पु० [सं० कदमालय] १ ईश्वर । [सं० करण + आलुच] २ सूर्य भानु । ३ करनी देवी । ४ एक वाद्य विशेष ।
 करणि-पु० १ कणेर का पुष्प । २ कनक । ३ कार्य, करनी । -कि० वि० करने के लिए । देखो 'करणी' ।
 करणिका-स्त्री० [सं० कणिका] १ मुँड की नोक । २ अंगुली का सिरा ।
 करणिकार-पु० १ कणेर का गोधा । २ कनक चंपा का वृक्ष ।
 करणियो-देखो 'किरणियो' ।
 करणी-स्त्री० १ कार्य । २ करतूत, हरकत । ३ लीला, रचना । ४ मुरपी । ५ मृतक-संस्कार । ६ हथिनी । ७ सार्थक दिन-चर्या । ८ बाल-चरन, व्यवहार । ९ जूता या सिमेंट की निपाई करने का उपकरण । १० एक वृक्ष विशेष । ११ एक प्रसिद्ध देवी । -गर-पु० ईश्वर । कर्ता ।
 करलेजप-वि० [सं० कर्लेजप] १ दुष्ट, खल । २ जुगलखोर । -पु० मर्प, माँप ।
 करणी-पु० एक प्रकार का वृक्ष । -वि० करने वाला ।
 करणी (बौ)-कि० १ कोई कार्य या कुछ करना । २ काम पूरा कर देना । ३ किसी क्रिया या कार्य में संलग्न रहना । ४ जुट जाना ।
 करतब-पु० [सं० कर्तव्य] १ कार्य, कर्तव्य । २ धर्म । ३ उपाय, प्रयत्न । ४ दान । ५ कौशल, हुनर । ६ प्रारब्ध । ७ जादू के चमत्कार । [सं० करितव्य] ८ छल कपट । ९ पाप कर्म । १० विस्तार, फैलाव ।
 करतबी-वि० १ करतब करने वाला । २ प्रपंची, छली । ३ जादूगर । ४ पापी ।
 करतमकरता-वि० १ किसी कार्य को पूरा करने का अधिकारी । २ अंतिम-निर्णायक, कर्ता-धर्ता । ३ मुखिया ।
 करतरी-स्त्री० १ कैची । २ कटारी । ३ धाण का पिछला हिस्सा । ४ एक शस्त्र विशेष ।
 करतव्य-देखो 'करतब' ।
 करता-स्त्री० अपेक्षा, तुलना, मुकाबिला, बनिस्पत ।
 करता-वि० [सं० कर्ता] १ करने वाला । २ बनाने वाला । ३ निर्माता । -वि० १ ईश्वर । २ ब्रह्मा, विधाता । ३ शिव की उपाधि । ४ श्रीकृष्ण । ५ व्याकरण का प्रथम कारक । ६ दुर्गा । ७ पार्वती । ---पुरस, पुरिस, पुरस-पु०-रचनाकार ईश्वर । -वर-पु०-ईश्वर ।
 करतार-पु० [सं० कर्तार] ईश्वर, विधाता । रचनाकार ।
 करतारय-देखो 'कृतारय' ।
 करताळ (ठीक)-स्त्री० १ तलवार, खड्ग । २ एक वाद्य विशेष । ३ प्रथम गुरु ढगण के भेद का नाम ।

करताळी-स्त्री० दोनों हाथों से बजाई जाने वाली तानी ।
 करतिम-देखो 'कत्रिम' ।
 करतुत, करतूत (ति, ती)-स्त्री० [सं० कर्तृत्व] १ काम, कार्य । रक्षाव्य । ३ हस्तक । ४ शरासत, बदमाशी । ५ छल, प्रपंच । ६ कला ।
 करतोया (यार)-स्त्री० जलपाइगुडी के जंगलों में निकलने वाली नदी ।
 करत्या-देखो 'कनिका' ।
 करव-पु० [सं० कर्दम] १ कीचड़ । २ गाढ़ा द्रव पदार्थ । ३ मैल । ४ कूड़ा । ५ तलवार । ६ कटार, छुरा । -वि० [सं० कर + दा] १ करदाता । २ सहायक ।
 करवमेश्वर-पु० [सं० करमदेश्वर] काशी का मंदिर ।
 करद (हम)-१ देखो 'करद' । २ देखो 'करदग' ।
 करधणी (नी)-स्त्री० [सं० कटि + धुनि] फटि का आभूषण, मेखना ।
 करधार-स्त्री० १ शस्त्र । २ तलवार ।
 करन-देखो 'करण' ।
 करनल (ला, ल)-स्त्री० करणीदेवी ।
 करनाटकीघोष-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
 करनाद-पु० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ करनीदेवी ।
 करनादे-स्त्री० करणीदेवी ।
 करनाळ (छि, छी)-पु० १ एक प्रकार की तीप । २ एक वाद्य विशेष, भोंपू । ३ एक प्रकार का ढोल । ४ सूर्य ।
 करनाळी-पु० वनस्पति विशेष ।
 करनी-देखो 'करणी' ।
 करनी-पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।
 करपट-पु० [सं० कर्पट] १ वस्त्र, कपड़ा । २ पुराना कपड़ा ।
 करपण-पु० वि० [सं० कृपण] १ कजूस, सूख । २ दीन । ३ देखो 'कृपण' ।
 करपणता-देखो 'कृपणता' ।
 करपत (पत्रक, पत्री)-देखो 'करोत' ।
 करपर-पु० [सं० कर्पर] भीख मांगने का खप्पर । ---बास-पु० शिव, महादेव ।
 करपाण (पान)-वि० १ कृपण, कजूस । २ बढ़िया । ३ देखो 'कृपाण' ।
 करपा-देखो 'कृपा' ।
 करपाळ-देखो 'कृपाळ' ।
 करपास-पु० [सं० कर्पास] कपास ।
 करपूर, (पूरक)-देखो 'कपूर' ।
 करपी-देखो 'कड़पी' ।
 करब-पु० वन, जंगल ।
 करबक-पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

करबट-पु० [सं० करबट] कुनगर जिसके चारों ओर दो-दो कोम तक कोई वस्ती न हो ।

करबळ-पु० शिकार के लिए सिंह की खबर देने वाला ।

करबला-स्त्री० [अ०] १ अरब का वह स्थान जहाँ हसन मारा गया । २ ताजिये दफनाने का स्थान ।

करबाळ-देखो 'करवाळ' ।

करबीकर-पु० रमजान ।

करबुर-पु० [सं० कबुर] १ घुरा । २ मोता, स्वर्ण । ३ राक्षस । ४ प्रेन । ५ जेतान । ६ चितकवरा रंग । ७ पाप । -वि० १ भुरा । २ कबूतरिया । ३ चितकवरा ।

करबुरक-पु० ८८ ग्रहों में से १६ वां ग्रह (जैन) ।

करबी-पु० [सं० करंब या करंभः] १ छाछ या दही में डबले हुए चावल डाल कर बनाया जाने वाला पेय पदार्थ । २ एक प्रकार का कीट या कीड़ा जो यनाज को हानि पहुँचाता है । करभ-पु० [सं० करभः] १ ऊँट । २ हाथी । ३ हाथी का वच्चा । ४ हाथ का मणिवंध से कनिष्ठा तक का पृष्ठ भाग । ५ दोहा नामक छंद का भेद । -वि० १ क्रूर । २ बैंगनी रंग का ।

करभाजन-पु० नौ योगेश्वरों में से एक ।

करसंबी-पु० काटेदार छोटा क्षुप जिसके फल भीने होते हैं ।

करम-पु० [सं० कर्मः] १ कार्य, काम । २ कर्त्तव्य । ३ मृतक-संस्कार । ४ भाग्य, प्रारब्ध । ५ ललाट, भाल । ६ अभिलाषा, मनोरथ । ७ संचितकर्म । ८ पाप, दुष्कर्म । ९ यज्ञ । १० यह शब्द जिसके वाच्य पर क्रिया का फल गिरे । ११ लक्ष्मी, धन । १२ नित्य क्रिया । १३ धंधा । १४ आचरण । १५ देखो 'क्रम' । --कमाई-स्त्री० भाग्य, प्रारब्ध । पूर्व संचित छच्छे कर्मों का फल । --कर-पु० अनुग्रह सेवक । --कांड-पु० यज्ञादि विधान । ग्रामिक कर्म । --गत-स्त्री० कर्म की गति । भवितव्यता । --चंविथी-पु० निर, मस्तक । ललाट । भाग्य । --चड़ी, छड़ी-स्त्री० तलवार । --जाळ-पु० कर्म का बंधन । --जोग-पु० शुभ संयोग । देवयोग । --ठोक-वि० हतभाग्य, बदतमीय । --धवज-वि० अपने कर्म से पहिचाना जाने वाला । --बंध, बंधन-पु० जन्मादि का बंधन । --साखा-पु० मृग । --सिद्धि-स्त्री० सफलता, मनोरथ की सफलता । --होरा-वि० हतभाग्य, बदतमीय ।

करमक-वि० शुद्धाचरण करने वाला । -पु० शुद्धाचरण ।

करमकली-स्त्री० उंट गरीबी ।

करमत-(ठ)-वि० [सं० कर्मट] १ कर्म निष्ठ । २ कार्य कुशल । ३ पवित्रता । ४ ग्रामिक अनुष्ठानों में सीत ।

करमण-पु० [सं० कर्मणः] मेघना, दाम ।

करनदी-पु० छोटा भाड़ीदार एक नुस्स ।

करमनासा-स्त्री० [सं० कर्मनाशा] एक नदी का नाम ।

करमप्रसाद-वि० भाग्यशाली, मृगकिस्मत ।

करमर-स्त्री० तलवार ।

करमांतरी-पु० मृतक के पीछे क्रियाकर्म कराने वाला ब्राह्मण ।

करमाळ (ळी)-पु० १ तलवार । २ मृग ।

करमाळी-पु० अमलनाश वृक्ष ।

करमी-वि० [सं० कर्मिन्] १ कार्य निष्ठ, कर्मठ । २ भाग्यशाली । ३ अत्याचारी ।

करमेत-वि० १ वंश में उत्कृष्ट, कर्म करने वाला । २ वीर, बहादुर ।

करम्म-१ देखो 'कर्म' । २ देखो 'क्रम' ।

करयल-देखो 'करतळ' ।

करयावर, करियावर-देखो 'क्रयावर' ।

करयावरी, करियावरी-देखो 'क्रयावरी' ।

कररावणी (बी)-क्रि० १ कराहना । २ चिल्लाना ।

करळ-पु० १ हथेली का मध्यभाग । २ मुट्ठी में आवे उतना पदार्थ । ३ देखो 'कराळ' । ४ देखो 'कुरळ' ।

करळणी (बी)-देखो 'कुरळणी' (वी) ।

करळव-देखो 'कलरव' ।

करळाटी-देखो 'कुरळाटी' ।

करळाणी (बी), करळावणी (बी)-देखो 'कुरळाणी' (वी) ।

करली-पु० १ युवा ऊँट । २ देखो 'कुरली' ।

करवड़ाचीथ-देखो 'करवाचीथ' ।

करवट-स्त्री० [सं० करवत्तं] १ पार्श्व, बगल । २ पार्श्व पर सोने की क्रिया । ३ सोते हुए पार्श्व बदलने की क्रिया ।

करवत (ती, वत्त)-देखो 'करोत' ।

करवतीमगरी-स्त्री० यौ० दुधारी तलवार ।

करवरसणी-वि० १ उदार, दानी । ३ अधिक खर्चीला ।

करवरी-पु० साधारण फसल वाला वर्ष ।

करवली-पु० छोटा ऊँट ।

करवाण-देखो 'क्रपाण' ।

करवांन (क)-पु० एक प्रकार का पक्षी ।

करवाचीय-स्त्री० १ कालिक व्रध्णा चतुर्थी । २ इस तिथी का वत ।

करवाळ (ळक, वाळा, ळी)-स्त्री० [सं० करवालः] तलवार सज्ज ।

करवीराक्ष-पु० खर नामक असुर का मेनागति ।

करवी-पु० [सं० करक, करभ] १ छोटा जल-पक्ष, शिकोरा । २ छोटा ऊँट । ३ देखो 'करवी' ।

करस

(२०४)

करावळ

करस-पु० [सं० करं] १ मोना चांदी तोलने का बाट । २ तौल, बाट । ३ खिचाव तनाव । -वि० [सं० कृश] १ दुबला । २ पतला । ३ क्षीण । ४ सूक्ष्म । ५ निर्बल । ६ तुच्छ, निर्धन । ७ सूखे गोबर का चूरा ।

करसक-पु० [सं० कृषक] किसान, खेतोहर ।
-वि० खींचने वाला ।

करसण-पु० [सं० कर्यण] १ खेती । २ कृषि कार्य । ३ बागवानी का कार्य । ४ किसान । -स्त्री० ५ खिचाव, तनाव ।

करसणी-स्त्री० १ कृषक जाति । २ कृषक स्त्री ।
-पु० [सं० कर्यणम्] किसान, कृषक ।

करसणीक-पु० किसान, कृषक ।

करसणी (बौ)-क्रि० [सं० कर्यणम्] १ खींचतान करना, खेंचना । २ केन्द्रित करना । ३ एकत्र करना । ४ मन मुटाव होना । ५ तनाव बढ़ना ।

करसल-स्त्री० १ दीवार का निचला शिरा । २ प्रांगण में लगने वाली पत्थर की गच्च । ३ देखो 'करसली' ।

करसलियो, करसली-पु० ऊंट ।

करसाण-देखो 'किमान' ।

करसाख, (खा)-स्त्री० [सं० करसाखा] अंगुली ।

करसुक (सूक)-पु० [सं० करसूक] १ नावून । २ किसान ।

करसोड़ी-स्त्री० मादा ऊंट ।

करसो-पु० १ ऊंट । २ बाजरी को बाल में होने वाला कीड़ा । ३ किमान, कृषक । ४ बेलों द्वारा खींचा जाने वाला एक प्रकार का शकट ।

करहेच-पु० एक छंद विशेष ।

करह (उ, लउ, लौ) करहो-पु० [सं० करमः] १ ऊंट । २ ऊंट का बच्चा । ३ हाथी का बच्चा । ४ फूल की कली । ५ दोहा छंद का सातवां भेद ।

करहेलडो-स्त्री० मादा ऊंट ।

करा-क्रि० वि० कब, कब तक ।

कराई-क्रि० वि० कभी भी ।

कराक-स्त्री० कांख में हाने वाली ग्रंथि ।
-क्रि० वि० कब तक ।

कराकियो-पु० बाजरी के पीने की ग्रंथि में निकलने वाला अंकुर ।

करांगणी-स्त्री० कांजी नामक अन्न ।

करांगी-पु० एक प्रकार का कवच ।

करांचणी (बौ)-क्रि० १ मंहार करना, मारना । २ चिल्लाना । ३ जोर करना ।

कराछ-स्त्री० छलांग ।

करांमत, करांमात, करांमाति-स्त्री० [प्र० करामात] १ चमत्कार, प्रभाव । २ कीजल ।

करांमाती (क)-वि० १ चमत्कार पूर्ण । २ प्रभावशाली । ३ निपुण ।

कराइ (इ)-स्त्री० १ मुरझित रखा धास का ढेर । २ कुच्छ करवाने का पारिस्थमिक । ३ जैन की मेड़ या पानी बनाने का उपकरण । ४ देखो 'कडाई' ।

कराखी-स्त्री० पहनने के वस्त्र का वह भाग जो कांख में लगाया जाता है ।

कराग-पु० [सं० कराग] १ हाथ का अग्र भाग । २ अंगुली । ३ अंगुली की नोक । ४ हाथ ।

करागी-स्त्री० तलवार ।

कराइ-वि० १ प्रचल । २ तेज, तीव्र । ३ अधिक । -स्त्री० १ सीमा, हद । २ देखो 'किराइ' ।

कराड़ी-देखो 'किराइ' ।

कराटी-पु० आग पर तेज सिकी रोटी ।

कराणी (बौ)-क्रि० १ कोई कार्य या कुदृष्ट करवाना । २ कार्य पूरा कराना । ३ संलग्न करना ।

कराबीण (बीणी, बीन)-स्त्री० [तु० कराबीन] १ चौड़े मुंह को तोड़ादार पुरानी बंदूक । २ एक प्रकार की छोटी बंदूक ।

करार-पु० १ बल, शक्ति । २ जोश । ३ वीर्य । ४ नदी का किनारा । ५ इकरार, कील, वादा ।

करारी-वि० (स्त्री० करारी) १ बलवान, शक्तिशाली । २ समर्थ । ३ हृष्ट-पुष्ट । ४ दृढचित्त । ५ जोशीला । ६ वीर्यवान । ७ कठोर, कडा । ८ दृढ़, मजबूत । ९ भयंकर । १० कठिन, दुष्कर । ११ तेज सिका हुआ ।
-पु० १ विश्वास । २ किनारा । ३ कौवा ।

कराळ, (उ)-सं० [सं० कराळः] १ भयानक, भयंकर । २ लंबा-चौड़ा, विशाल । ३ प्रत्यधिक फटा हुआ या खुला हुआ । ४ निषम । ५ नुकीला । ६ बड़े बड़े दांतों वाला ।
-पु० १ हथेली का अग्र भाग । २ नाड़ी या शकट का अग्र भाग । -कुमळ-पु० भीचे में लगे जवड़े वाला घोड़ा ।
-तेज-पु० मोटी ठोड़ी वाला घोड़ा । -दंती-पु० बड़े दांतों वाला घोड़ा ।

कराळक (ळिक)-पु० [सं० कराळिकः] दृष्ट ।

कराळी-स्त्री० १ भूमि को समतल बनाने का उपकरण । २ देखो 'कराळ' ।

कराळू (ळी)-देखो 'कराळ' । (स्त्री० कराळी)

करावळ-पु० [तु० करावल] १ सेना का मध्य भाग । २ घुड़ सवार । ३ गहरेदार, सतरी । ४ गंगा के बसिमाही जो शत्रु

का भेद लेने जाते हैं । ५ युद्ध के मैदान को ठीक करने वाले सिपाही । ६ बंदूक से शिकार करने वाला शिकारी ।

करिब (डो)—पुं० [सं० करीन्द्र] हाथी । —अव्य० १ करग और अपादानकारक चिह्न, मे ।

करि—देखो 'कर' ।

करिधळ (ळि, ली)—देखो 'करतळ' ।

करिणि—देखो 'कराग' ।

करिछय—पुं० कामदेव ।

करिणि (सी)—स्त्री० हथिनी ।

करिबत—देखो 'करोत' ।

करिमरि, करिमाळ—स्त्री० १ कृपाण । २ तलवार ।

करिया—पुं० कुण के बाहर लगे लट्टे जो मोट से पानी निकालने के काम देने हैं ।

करियावर—देखो 'वगावर' ।

करियो—पुं० छोटा ऊंट, करहा ।

करिबाण, करिवाल (ल)—स्त्री० [सं० कृपाण] तलवार, कृपाण ।

करिसण—देखो 'करसण' ।

करीद—देखो 'करिद' ।

करी—पुं० [सं०] १ हाथी, गज । —स्त्री० २ पथ्र, परहेज । ३ छत्र पाटने का शहतीर । ४ कृषक स्त्री । —अव्य० करण या अपादान कारक, का । विभक्ति चिह्न, मे ।

करीट—देखो 'किरीट' ।

करीटी—देखो 'किरीटी' ।

करीठ—वि० अत्यन्त काला ।

करीनि (नी)—देखो 'करिणी' ।

करीब—क्रि० वि० [अ०] १ पास, समीप, नजदीक । २ लगभग । ३ प्रायः ।

करीम (मी)—पुं० [अ० करीम] ईश्वर का विशेषण । —वि० १ दयालु, कृपालु । २ उदार, दाना ।

करीमार—पुं० निह ।

करीमी—स्त्री० [अ०] दया, कृपा, ईश्वर की माया ।

करीपळी—देखो 'करतळ' ।

करीर (री)—पुं० [सं० करीर] १ बाँस का नया वृक्ष । २ करील वृक्ष ।

करीळ—पुं० [सं० करीर] झाड़ीदार व विना पत्तों का वृक्ष, केर ।

करीवर—पुं० हाथी, गज ।

करीस—पुं० [सं० करीप] १ उपना, कंडा । २ उपनों का चूर्ण ३ महीनतम चूर्ण । [सं० करीण] ४ श्रेष्ठ हाथी, गजराज । —आग—स्त्री० उपलों की अग्नि ।

करु—पुं० १ एक प्रकार का वाम । २ देखो 'किरु' ।

करुण—वि० [सं०] १ कोमल । २ दया पात्र । ३ दुःखी । ४ करुणा जगाने वाला । —पुं० [सं० करुणः] १ दया, रहम, कृपा । २ अनुग्रह । ३ दुःख, शोक । ४ साहित्य में एक रस । ५ ईश्वर ।

करुणा—स्त्री० [सं०] १ कृपा, मेहरबानी, दया । २ दुःख, कष्ट । ३ वियोग । ४ आर्त्त-पुकार । ५ अनुनय-विनय । —कर, करण, करि—वि० दया करने वाला । —पुं० ईश्वर, विष्णु श्रीकृष्ण । —निघ, निघान, निधि—पुं० ईश्वर । —वि० दया का भण्डार । —नितय—पुं० दया का घर । ईश्वर । —मय, मे—वि० कृपालु, दयालु । —सिधु—पुं० दया का मागर । ईश्वर ।

करुण (पक)—देखो 'करुण' ।

करुंदो—पुं० बेर के आकार का खट्टा फल । इस फल का पौधा । करु—देखो 'कर' ।

करुणौ (बी)—क्रि० १ कवि का बोलना । २ चिल्लाना ।

करुर—देखो 'कूर' ।

करे—क्रि० वि० कब । कब तक ।

करैकी—वि० [सं० करैकी] कभी का ।

करेणपती—पुं० [सं० करेणुः-पति] हाथी, गज ।

करेणी—स्त्री० [सं० करेणुः] हथिनी ।

करेणपती—देखो 'करेणपती' ।

करे-री-रोग—पुं० पशुओं के अगले पांवों में होने वाला भयंकर रोग ।

करेलड़ी—पुं० १ ऊंट । २ एक राजस्थानी लोक गीत ।

करेलियो, करेली—पुं० १ तरकारी के काम का एक कड़ा फल । २ करील वृक्ष । ३ देखो 'करली' ।

करेवो—पुं० भूलिग पक्षी ।

करे—देखो 'करै' ।

करैक—क्रि० वि० १ कब तक । २ कभी कभी ।

करैवो—पुं० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ देखो 'करेवो' ।

करोई—देखो 'किरोई' ।

करोड़—वि० [सं० कोटि] लाख का सौ गुना । —पुं० लाख की सौ गुनी संख्या, १,००,००,००० । —पति—पुं० धनवान, वैभवशाली, करोड़ों की सम्पत्ति वाला ।

करोड़ी—वि० १ करोड़ की संख्या का स्वामी । २ देखो 'किरोड़ी' । —धज, मल—पुं० करोड़पति ।

करोट—स्त्री० १ सहायता । २ रक्षा । ३ करवत । ४ देखो 'करोटि' ।

करोटि—स्त्री० [सं० करोटे, करोटि] मस्तक की हड्डी ।

करोत (नी)—पुं० [सं० करणत्र] लकड़ी चोरने की दाँतेदार पत्ती; आग । करोती ।

करोती

(२०६)

कलसी

करोती-देखो 'करोत' ।

करोल-पुं० [तु०] १ शिकार को घेरने वाला व्यक्ति । २ वन-रक्षक । -वि० कराव ।

करोली-स्त्री० एक प्रकार की कृपाण । -वि० शिकार का पीछा करने वाला ।

करी-पुं० [सं० कृपक] (स्त्री० करी) १ किसान, कृषक । २ अनाज का एक कीड़ा । ३ गिड़ गिड़ी फंसाने का गड़ड़ा ।

करोट-स्त्री० करवट ।

करोळ-देखो 'करोल' ।

कलक-पुं० [सं० कलक] १ दाग, धब्बा । २ बदनामी, अपराध । ३ लांछन, आक्षेप । ४ काला दाग । ५ दोष, त्रुटि । ६ पाप । -वि० काला, श्याम ।

कलकी-वि० [सं० कलकिन्] १ दोष युक्त । २ दागी, अपराधी । ३ बदनाम । ४ पापी । ५ दाग युक्त । -पुं० [सं० कल्कि] विष्णु का चौबीसवां अवतार, कल्कि ।

कलंग-स्त्री० १ हिंदवाणी । २ एक पक्षी विशेष । ३ कलिंग देश । ४ एक राग विशेष । ५ मृगी नामक कीट-पतंग ।

कलंगी-स्त्री० [सं० कलंगी] १ शुनूपुर्ग आदि चिड़िया के पंख २ मोती या मोने का आभूषण । ३ पक्षियों के सिर पर की चोटी । ४ इमारत का शिखर ।

कलश-पुं० कण्ट, दुःख ।

कलवर-पुं० [का०] १ एक प्रकार के फकीर जो मस्त रहते हैं, मस्त साधु । २ आजाद, मस्त । ३ सूफी साधु । ४ योगी । ५ मदारो । -स्त्री० ६ निर्धनता, गरीबी ।

कलवरी, कलवरी-पुं० १ एक प्रकार का तीर । २ देखो 'कालिंदी' ।

कलंब-पुं० [सं० कलम्बः] १ बाग, तौर । २ लोहे की कोल । ३ कदम वृक्ष ।

कलंबी-देखो 'कलंबी' ।

कल-पुं० [सं० कल, कलः, कलिः] १ यश, कीर्ति । २ चैन, सुख, शांति । ३ संतोष । ४ विश्राम । ५ यंत्र, पुर्जा । ६ दुःख, मकट । ७ कलह । ८ युद्ध, लड़ाई । ९ प्रभाव, दबाव । १० कलियुग । ११ इतिवृत्त, कथा । १२ शत्रु, दुश्मन । १३ वीर । १४ राक्षस । १५ मंसार, जगत । १६ थोड़ा, बार । १७ कुल, वंश । १८ कामदेव । १९ उपद्रव । २० कपट, छल । २१ बन्दूक का घोड़ा । २२ वल, पराक्रम । २३ ममय, वक्त । २४ कल-कल ध्वनि । २५ कला । २६ युक्त, संकीर्ण । २७ कांति दीप्ति । २८ कृपा, दया । २९ टगग क नीर्वे भेद का नाम । ३० श्रद्धा शास्त्रानुसार मात्रा । -वि० १ सुन्दर, मनोहर, प्रिय । २ मधुर । ३ स्वस्थ । ४ काला, श्याम । -क्रि० वि० नरह से, भांति, प्रकार से । -अभगली, अभगली-वि० मेना में अश्रुणां ।

-पुं० सेनापति । -कंठ-वि० मधुर भाषिणी ।

-स्त्री० कोयल ।

कल-पुं० [सं० कल्य] १ आगामी दिवस । २ विगत दिन ।

-क्रि० वि० १ अगले दिन । २ पिछले दिन । ३ कुछ दिन पूर्व ।

कलकठी-पुं० १ पक्षी । २ कोयल ।

कलक-देखो 'कलक' ।

कलकली (बी)-क्रि० १ प्रकाशमान होना, चमकना । २ गर्म होना, खोलना । ३ कड़कना, गरजना, दहाड़ना । ४ आवाज करना । ५ संतप्त होना ।

कल-कल, कल-कल-स्त्री० [अनु०] कल-कल ध्वनि । -वि० अति उष्ण ।

कलकली (बी)-देखो 'कलकली' (बी) ।

कलकलाट-स्त्री० १ सलह, लड़ाई । २ कण्ट, पीड़ा ।

कलकली-स्त्री० गर्मी, उष्णता ।

कलकली-वि० उष्ण, गर्म । -पुं० कलह, उत्पान ।

कलका-स्त्री० [सं० कलिका] कौंच नामक लता व फली ।

कलकार-देखो 'कलकारी' ।

कलकाळ-स्त्री० कठारी ।

कलकी-पुं० [सं० कल्कि] विष्णु का चौबीसवां अवतार ।

कलकी-पुं० पानी या द्रव पदार्थ की खोलने की अवस्था, उबाल, उफान ।

कलक-देखो 'कलक' ।

कलकल-देखो 'कलकल' ।

कलकली (बी)-देखो 'कलकली' (बी) ।

कलकारी-वि० कलहप्रिय, झगड़ालु ।

कलकली (बी)-क्रि० जोश पूर्ण आवाज करना ।

कलकाळ (ळी)-पुं० १ युद्ध, झगड़ा । २ युद्ध प्रिय थोड़ा । ३ छेड़-छाड़ । ४ उत्पान, उपद्रव । ५ कलह उत्पन्न करने वाला, चुगलखोर ।

कलकल-देखो 'कलकल' ।

कलकल-पुं० [सं० कलियुग] १ चार युगों में से अंतिम व बुरा युग । २ बुरा समय ।

कलकलियौ (जुगो)-वि० १ कलियुग संबंधी । २ दुराचारी, पापी ।

कलकल-स्त्री० १ कलह । २ लकड़मारा । ३ दुःख । ४ रुदन । ५ चिलाप । ६ चिन्ता ।

कलकल-स्त्री० बड़े-पकों के बनाने हेतु मूंग, मोठ आदि को भिगो कर बनाई हुई चटनी । २ कण्ट, दुःख । ३ दल-दल ।

कलली (बी)-क्रि० मूंग मोठ आदि को भिगोकर पीमना । २ भाग होना, मिटना । ३ दल-दल में फटना । ४ डूबना ।

कलरणी (बौ)-क्रि० १ पहिचानना, जानना । २ विचार करना समझना ।

कलत-देखो 'कलत्र' ।

कलतकंठ-पु० [सं० कलित कंठ] पपीहा ।

कलतरा-पु० लोहे की तगारी ।

कलतान-पु० १ ऊपर तानने या बिछाने का वस्त्र । २ जूट का पनला वस्त्र, टाट । २ महीनतम पीसने की क्रिया ।

कलतीतर-पु० एक प्रकार का तीतर पक्षी ।

कलस, कलत्र-स्त्री० [सं० कलत्र] १ स्त्री, पत्नी । २ कटि कमर । ३ कूल्हा ।

कलदार-वि० जिसमें यंत्र, पुर्जे आदि लगे हों । -पु० रुपये का निक्का ।

कलधन-पु० दीपक, ज्योति ।

कलधारण (न)-पु० इन्द्र ।

कलधूत (धोत, धौत)-पु० [सं० कलधौत] १ सोना, स्वर्ण । २ चांदी ।

कलन-देखो 'कलण' ।

कलपंत-देखो 'कलपांत' ।

कलप. कल्प-पु० [सं० कल्पः] १ वेद के छै अंगों में से एक । २ धर्मशास्त्र का आदेश । ३ ब्रह्मा का एक दिवस । ४ समय का एक विभाग जो ४३२००००००० वर्षों के बराबर माना गया है । ५ निदिष्ट या ऐच्छिक नियम । ६ संकल्प । ७ विधान । ८ रीति, ढंग । ९ प्रस्ताव । १० कल्प वृक्ष । ११ प्रलय । १२ दिन । १३ चिकित्सा विधि । १४ प्रकाश । १५ बुद्धि । १६ कपट । १७ रथ । १८ संकल्प-विकल्प । १९ साधु का आचार-व्यवहार, मर्यादा (जैन) । —तर, तह, तरु, तरुवर, तरौवर, त्तरी, डूम-पु० कल्पवृक्ष । —बेलि, लता, बेलि-स्त्री० स्वर्गीय लता विशेष । —धिरख वृक्ष, वृख, व्रिख, व्रिछ-पु० कल्पवृक्ष ।

कलपणी (बौ)-क्रि० [सं० कल्पनम्] १ विलाप करना, रोना, विलसना । २ दुःखी होना । ३ कुड़ना, चिड़ना । ४ वियोग में तरसना । ५ त्यागना । संकल्प करना । ६ चिन्तना । ७ देखो 'कलपणी' (बौ) ।

कलपणी (बौ)-क्रि० १ कल्पना करना । २ अंदाज लगाना । ३ संकल्प करना । ४ साधु का आचार-व्यवहार और मर्यादा के अनुसार कर्तव्य करना (जैन) । ५ देखो 'कलपणी' (बौ) ।

कलपत-पु० दोप, कलंक ।

कलपता-स्त्री० [सं० कल्पना] १ कल्पना, कल्पित भावना । २ संभावना । ३ रचना । ४ उद्भावना । ५ ग्रन्थारोप, रचना । ६ मन की उड़ान ।

कलपनी-स्त्री० [सं० कल्पनी] कंचो ।

कलपांत, (तर)-पु० [सं० कल्पांत] १ कल्प का अन्त, युगांतकाल ।

२ प्रलय । ३ नाश, संहार । ४ ब्रह्मा का दिवावसान ।

कलपाणी (बौ)-क्रि० १ तरसाना, मताना । २ दुःख देना ।

३ कुड़ना । ४ विलाप करना, क्लाना । ५ संकल्प करना ।

कलपित-वि० [सं० कल्पित] १ मनगढ़ने । २ कल्पना से बनाया हुआ । ३ नकली । ४ प्रतीकरूप ।

कलपी-पु० फसलयुक्त जोती हुई भूमि में से ब्रैल जोत कर घास काटने का एक उपकरण विशेष ।

कलबल्लू-वि० कलशा जनक प्रकार या आवाज ।

कलबांणी-देखो 'कलबांणी' ।

कलबी-देखो 'कलबी' ।

कलब्रछपता-पु० [सं० कल्पवृक्षपिता] समुद्र ।

कलभ-पु० [सं० कलभः] १ हाथी का बच्चा । २ ऊँट का बच्चा, करभ । ३ हाथी । ४ धतूरे का पेड़ । ५ आश्रय । ६ शीघ्रता । ७ शकुन । ८ आकाश । ९ भादवमास ।

कलम-स्त्री० [ग्र०] १ लेखनी, कलम । २ भाषा । ३ किसी पीढ़े की हरी टहनी जो काट कर अन्यत्र लगाई जाय । ४ मान, प्रतिष्ठा । [ग्र० कलमः] ५ कलमा पढ़ने वाला मुसलमान । ६ स्वर्णभूषणों में जड़ाई करने का औजार । ७ रंग भरने की कूची । ८ कनपटी पर रहने वाले बाल । ९ इस्लाम का मूल मंत्र । —कसाई-वि० लिखावट में मारने वाला ।

कलमख-देखो 'कलमस' ।

कलमत-पु० युद्ध ।

कलमलणी (बौ)-क्रि० १ भुंक्षाना । २ कुलबुलाना । ३ कराहना । ४ अपने अंगों को घुमाना ।

कलमस-पु० [सं० कलमसः] १ पाप । २ मेल । ३ नरक । ४ श्याम वर्ण । —वि० [सं० कलमस] १ पापी, दुष्ट । २ मैला, गंदा । ३ श्याम, काला ।

कलमांछात, कलमांश, कलमांश-पु० १ वादशाह । २ मुसलमान ।

कलमा-पु० वह बात, वस्तु जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है ।

कलमास-वि० [सं० कल्माषः] चितकबरा, मफेद और काले रंग वाला ।

कलमी-स्त्री० १ श्याम रंग की घोड़ी । २ आमों की एक जाति । कलमुख-देखो 'कलमस' ।

कलमूल-पु० [सं० कलिमूल] १ मेला, फोज । २ रोनापति । ३ भगड़े का मुख्य कारण ।

कलमेपाक (पाख)-वि० कलमा पढ़ कर पवित्र ।

कलमी-पु० [ग्र० कलमः] १ मुसलमान धर्म का मूल मंत्र । २ कलमा पढ़ने वाला मुसलमान ।

कळपळ-१ देखो 'कळकळ' । २ देखो 'कळवळ' ।
 कळपुग-देखो 'कळपुग' ।
 कळरव-पु० [सं० कलरव] १ मंद-मधुर-ध्वनि । २ हल्का कोलाहल । ३ कुंजन, गुंजन । ४ करुण ध्वनि । ५ कल-कल ध्वनि । ६ कपोत, कबूतर । ७ ऊसर भूमि ।
 कळल (स)-पु० [अनु०] १ युद्ध । २ युद्ध का शोर । ३ कोलाहल । ४ युद्ध का बाज । ५ ध्वनि विशेष । ६ हिनहिनाहट । [मं० कललः] ७ योनि, गर्भ की झिली ।
 कळलणो (बौ)-कि० १ युद्ध का शोर होना । २ कोलाहल होना । ३ हिनहिनाहट ।
 कळल-हूँकळ-देखो 'हूँकळकळल' ।
 कळळाट (टो. हट)-पु० हाहाकार, चीत्कार ।
 कळवकळ-वि० १ भयभीत । २ अस्थिर चित्त पवराया हुआ । ३ विवर्कपूर्ण ।
 कळवर-पु० [सं० कलेवर] १ शरीर, देह ।
 कळवरी-स्त्री० रहट की माल की कोल ।
 कळवळ-स्त्री० अस्पष्ट ध्वनि ।
 कळवांणी-स्त्री० १ गंदा पानी । २ मंत्रित जल । ३ जल पात्र में हाथ डालकर गंदा करने की क्रिया ।
 कळवळ (बच्छ, बछो)-पु० [मं० कल्पवृक्ष] कल्पवृक्ष ।
 -कळो-पु० इन्द्र ।
 कळस (सौ)-पु० [सं० कलशः] १ कुंभ, घड़ा, गगरी । २ मंगल-कलश । ३ मंदिर आदि के शिखर पर लगे धातु के पात्र । ४ चोटी, मिरा । ५ प्रधान अंग । ६ श्रेष्ठ व्यक्ति । ७ नृत्य की एक वर्तनी । ८ काव्य या ग्रंथ के उपसंहार की कविता । ९ देवी का अर्चित जल । १० प्रत्येक धरम में २० मात्रा का मात्रिक छन्द । ११ डिगल का एक छन्द । १२ कुंभ राशि । १३ सुवृत्तः ।
 -भव-पु० अगस्त्य ऋषि ।
 कळसियो-पु० १ छोटा जल-पात्र, लीटा । २ बेलों की पीठ का कुकुद । ३ तलवार की मूठ पर लगा उपकरण । ४ देखो 'कलम' ।
 कळसी-स्त्री० आठ मन अनाज का एक माप । २ मिट्टी का बड़ा जल-पात्र । ३ कुंभ राशि । ४ देखो 'कळम' ।
 कळसी-देखो 'कळम' ।
 कळहंस (क)-पु० [सं० कलहंस] १ परमान्मा । २ ब्रह्मा । ३ श्रेष्ठ राजा । ४ राजहंस । ५ हम । ६ वनक । ७ भक्तिवर्षों की एक शाखा । -त्रि० सुस्वरः ।
 कळहंत-पु० [सं० कलिहंत] युद्ध, ममर ।
 कळह (हण, हणि, हु)-पु० [सं० कलहः] १ भगड़ा, विवाद । २ युद्ध, ममर । ३ तूँ-तूँ में-वै । ४ दांव-पेच, पात-प्रतिपात । ५ छल-कपट । ६ झूठ । ७ प्रहार,

चोट । ८ रास्ता । ९ नारद की उपाधि । १० दलदल । -वि० काला, श्यामः । --क्रि०-स्त्री० युद्ध की प्रणमा । -गुर-पु० योद्धा, वीर । नारद मुनि । -प्रो-वि० भगड़ानु, कलहप्रिय । --प्रेमा-स्त्री० रण पिशाचिनी, महाकाली । -बरीस-पु० योद्धा । कलहप्रिय ।
 कळहणो (बौ)-क्रि० युद्ध करना, भगड़ा करना ।
 कळहळ-१ देखो 'कोलाहळ' । २ देखो 'कळ-कळ' । ३ देखो 'कळल' ।
 कळहळणो (बौ)-क्रि० १ कोलाहल करना । शोर करना । २ चमकना, दमकना ।
 कळहारी-देखो 'कळिहारी' ।
 कळहिल-पु० [सं० कटुहिल] गधु, दृष्टमन ।
 कळहिवा-पु० योद्धा ।
 कळहो-वि० १ भगड़ालु । २ देखो 'कळसी' ।
 कळहीण (हीणो)-वि० [सं० कला-हीन] जिसमें कोई कला न हो, कलाहीन । २ अशक्त, तमजोर ।
 कळहो-देखो 'कळह' ।
 कलां-वि० [फा०] बड़ा, बड़े वाला ।
 कलांतर-पु० व्याज ।
 कळाम-पु० [अ० कलाम] १ बातचीत, कथन । २ वाक्य, वचन । ३ प्रतिज्ञा, वादा । ४ उच्च, एतराज, आपत्ति । ५ उक्ति । ६ रचना ।
 कळा-स्त्री० [सं० कला] १ अंश, भाग । २ चन्द्रमा का सोलहवां भाग, चन्द्रकला । ३ सूर्य का बारहवां भाग । ४ चतुराई । ५ कौशल निपुणता । ६ प्रतिभा । ७ समय का विभाग । ८ कोई धन्धा । ९ सामर्थ्य, शक्ति । १० नौका । ११ विभूति, तेज । १२ चन्द्रमा । १३ शोभा, छटा, प्रभा । १४ कीर्ति, यश । १५ स्त्री का रज । १६ शरीरस्थ भात विशेष भिल्लियों । १७ तीम काष्ठा के समय का एक विभाग । १८ राशि के तीसवें अंश का सातवां भाग । १९ वृत्त की डिग्री का । २० वा भाग । २० बोटुक, लीला, खेल । २१ छल, कपट । २२ अग्नि मंडल का एक भाग । २३ किसी छंद की मात्रा । २४ मनुष्य शरीर के सोलह आध्यात्मिक विभाग । २५ तन्त्रानुसार वर्षा या अक्षर । २६ नटों की विद्या । २७ युक्ति, ढग । २८ चमत्कार । २९ पुरुषों की ७२ कलाएँ । ३० कामशास्त्र की ६४ कलाएँ । ३१ बन्दूक चलाने की विद्या । ३२ बन्दूक छोड़ने का खटका । ३३ कला । ३४ दीपक । ३५ दीपक की लौ, ज्योति । ३६ किरण । ३७ व्याज । ३८ धनु । ३९ भ्रूण । ४० संगीत, काव्य आदि मिलित कला । ४१ अक्षर, वर्ण । ४२ शिव का नाम । ४३ संबंध । ४४ जीम, जिह्वा । ४५ एक प्रकार का नृत्य ।

—घर-पु० चन्द्रमा, सूर्य, शिव, कलावंत । —घारी-वि० शक्तिशाली । वंशज । कलाधर । —घिप-पु० चन्द्रमा । —निघ, निधि, निघो-पु० चन्द्रमा । कलाविद् । —घतमंडी-पु० मोर, मयूर । —पाती-वि० नटखट । उद्दण्ड । —पी-पु० मयूर, मोर । —बाज-कला-विद् । नट । —बाजी-स्त्री० नट क्रिया, खेल । चाल । —लीक-पु० भौरा, भ्रमर । —वंत, वत, वांत-वि० कलाओं का जाता । कलाकार । चतुर, बुद्धिमान, समर्थ, शक्तिशाली संगीतज्ञ, गवैया । —होण-वि० कलाहीन, कमजोर, श्रणक्त, अयोग्य ।

कलाइल (लि, ईल)-देखो 'कलायल' ।

कलाइणी (वो)-कि० शोर करना, कोलाहल करना ।

कलाइयो-पु० न्यूझावर ।

कलाई-स्त्री० [सं० कलाची] १ हाथ की कलाई, मणिबंध, गट्टा । २ कोठरी । ३ कोठरियों के बीच का आंगन । ४ तरह, प्रकार, भांति ।

कलाउ-देखो 'कलाप' ।

कलाकंद-पु० [फा०] खोये की मिठाई ।

कलाक-पु० [ग्रं० कलॉक] १ समय का विभाग । २ घड़ी ।

कलातरौ-१ देखो 'कलांतरौ' । २ देखो 'कातरौ' ।

कलाव-पु० [सं०] स्वर्णकार ।

कलाप-पु० [सं० कलाप] १ समूह, ढेर । २ झुण्ड । ३ गठड़ी, गांठ । ४ संग्रह । ५ मोर की पूंछ । ६ करधनी । ७ पायल । ८ तूलीर । ९ हाथी की गर्दन की रस्सी । १० तीर, बाण । ११ चन्द्रमा । १२ चतुर मनुष्य । १३ भौरा, भ्रमर । १४ वेद की एक शाखा । १५ एक अर्द्धचन्द्राकार शस्त्र । १६ भूषण । १७ प्रयत्न, कोशिश । १८ प्रपंच, जाल । १९ प्रक्रिया । २० विलाप, रुदन । २१ एक ही छन्द की रचना ।

कलापक-पु० [सं० कलाप] हाथी की गर्दन का रस्सा ।

कलापो-पु० [सं० कलापिन्] मोर, मयूर । -वि० १ प्रयत्न करने वाला । २ प्रपंच करने वाला । ३ धूर्त, चालाक ।

कलाबाज-पु० १ कलापूर्ण ढंग से खेल दिखाने या खेलने वाला व्यक्ति । -वि० धूर्त, चालाक ।

कलाबाजी-स्त्री० कलाबाज की कोई क्रिया या खेल ।

कलाबूत-पु० [तु० कलाबूत] १ रेशम के डोरे पर चढ़ाया हुआ पतला सुतहरा तार । २ रेशम का सुतहरा तार लपेट कर बनाया हुआ डोरा ।

कलाबी-पु० १ पहाट के ऊपर चुल गमाने का गह्वा । २ देखो 'कलाव' ।

कलाथुंज-पु० एक प्रकार का बाण लोग ।

कलाय, कलायल (न) कलापर-पु० १ श्याम घन घटा । २ मोर, मयूर, विवाह ।

कलार-पु० १ संग्रहीत घास का लम्बा ढेर । २ एक प्रकार का वृक्ष । ३ एक प्रकार का पुष्प ।

कलारी-स्त्री० जमीन को समतल बनाने का उपकरण ।

कलाळ-स्त्री० (स्त्री० कलाळी कलाळण) १ शराब बेचने का कार्य करने वाली एक जाति । -पु० २ उस जाति का व्यक्ति ।

कलाळी-स्त्री० १ शराब, मदिरा । २ एक राजस्थानी लोकगीत । ३ एक सुगंधित पौधा । ४ कलाल जाति की स्त्री ।

कलाव, कलावण, कलावौ-पु० [सं० कलापक] १ हाथी की गर्दन । २ हाथी की गर्दन पर बांधने का रस्सा । ३ मोर-पंखों का छत्र । ४ दल-दल । ५ रेतीली जमीन ।

कलावान, कलावादी-वि० १ कलाओं का ज्ञानकार । २ चतुर, दक्ष ।

कलास-पु० [सं० कलास] कलुषा । -वि० ममान, तुल्य ।

कलासरी (वो)-कि० १ मत्त युद्ध करना । २ कुम्भी लड़ना । ३ मारना, बध करना ।

कलाहक-पु० [सं०] युद्ध के समय बजाया जाने वाला वाजा ।

कलाहळ-देखो 'कलह' ।

कलिंग-पु० १ पुरुषों के सिर का आभूषण, कर्तवी । २ एक प्राचीन देश । ३ एक पक्षी विशेष । ४ भ्रमर ।

कलिंगड़ा-स्त्री० एक राग विशेष ।

कलिद-पु० [सं०] १ सूर्य, रवि । २ वह पहाड़ जिसमें यमुना नदी निकलती है ।

कलिदा-स्त्री० [सं० कलिद+जा] यमुना नदी । -वि० शीतलः ।

कलि-पु० [सं० कलि] १ लड़ाई, झगड़ा, कलह । २ युद्ध, समर । ३ कलियुग । ४ क्लेश, दुःख । ५ तीर, बाण । ६ योद्धा, वीर । ७ शिव । ८ पाप । ९ कला । १० छंदशास्त्र में मात्रा का नाम । ११ टगर की छै मात्रा के तीनों भेद का नाम (SSII) । १२ वहेड़ा-वृक्ष । १३ देखो 'कळी' । -वि० काला, श्यामः । —कळ-पु०-कल्लारव । मथुर ध्वनि । —कळ-पु० श्वेत-काले मुंह वाला घोड़ा । —का-स्त्री० एकवर्णिक छंद कनी । —कारक-पु० नारद । -वि० कलह प्रिय । —काळ, काळो-पु०-युद्ध । योद्धा । नारद । —जुग-पु० कलियुग । —जुगि, जुगी-वि०-कलियुग का, कलियुग संबंधी । —मूळ-देखो 'कळमूळ' ।

कळिजणी (वो)-देखो 'कळीजणी' (वो) ।

कळिट्ट ३० [सं० कलिट्ट] शिवलिंग ।

कलित

(२१०)

कल्प

कलित (त्र) = वि० [सं०] १ सुन्दर, मनोहर । २ विकसित, उन्नत । -स्त्री० [सं० कलत्र] १ स्त्री । २ कटि, कमर । ३ पत्नी, भार्या । —कंठ-पु०—चातक ।
 कलिव्रुम (ब्रु) = पु० [सं० कलिवृक्ष] बहेड़ा वृक्ष ।
 कलियुग = पु० १ कलियुग । २ पाप ।
 कलिस्त्य (ध) = पु० १ घोड़ा । २ वीर, बहादुर । ३ युद्ध ।
 कलिमूल = पु० घोड़ा, वीर ।
 कलियर = पु० कलियुग ।
 कलिपल = पु० कलरव ।
 कलिपसी = वि० कलियुगी ।
 कलियाण = दे० 'कल्याण' ।
 कलियार = स्त्री० [सं० कलिचार] सेना ।
 कलियुग = पु० [सं० कलियुग] चार युगों में चौथा युग ।
 कलियुगि (गी) = वि० कलियुग का, कलियुग संबंधी ।
 कलियौ = पु० १ श्वेत का काम । २ देखो 'कलसी' ।
 कलिराज = पु० कलियुग ।
 कलित = पु० पाप ।
 कलिहरा = पु० युद्ध, समर ।
 कलिहारी = वि० कलह प्रिय, भगड़ालू ।
 कलौ = स्त्री० [सं० कलिका] १ बिना खिला फूल, कलिका । २ कन्या । ३ अक्षत योनि युवती या स्त्री । ४ स्त्रियों के लहंगे की परत । ५ छवि, शोभा । ६ वृक्ष । ७ बीज । ८ गण्य । ९ बाल, केश । १० नाक से बाल उखाड़ने का नाइयों का एक उपकरण । ११ शिव । १२ युद्ध । १३ कीर्ति, यश । १४ प्रकाश । १५ कला । १६ जम्मे या रांगे का बना हुक्का । १७ छन्दशास्त्र में मात्रा का नाम । १८ टगण का एक भेद (शा) । १९ मिट्टी का बड़ा जल-पात्र । -वि० १ घानतायी । २ अनर्थकारी ३ अदभुत कार्य करने वाला । ४ विकारग्रस्त । ५ समान, महेश : ६ काला श्याम । -क्रि० वि० इस तरह से । -वार = वि० जिसमें कनियाँ हों ।
 कली = स्त्री० १ चूना जो कलाई के काम आता है । २ कलाई, रोगन । ३ चमक-दमक । ४ देखो 'कली' । —कोठार = पु० भवन व्यवस्था का सरकारी दफ्तर । --वार = वि० जिसके कली की गई हो । चमकदार ।
 कलीट = वि० काला-कलुटा ।
 कलीयंक = देखो 'कलंक' ।
 कलीयण = पु० युद्ध, समर ।
 कलीळ = पु० [सं० कलिल] पाप ।
 कलीव = पु० [सं० क्लीव] १ हिजड़ा, नपुंसक । २ कायर, डरपोक ।
 कलीधार = पु० कलियुग ।

कलुख = पु० [सं० कलुष] १ कलंक, दोष । २ पाप । ३ दाग । ४ मलिनता ।
 कलुजी = पु० कलियुग । वि० १ पापी । २ दुष्ट ।
 कलुल = पु० पाप । दोष ।
 कलुस = पु० १ गंदा पानी । २ देखो 'कलुष' ।
 कलूबर, कलूबरी = देखो 'कलुदरी' ।
 कलू = पु० [सं० कलि] १ कलियुग । २ बुरा समय । ३ देखो 'कल्ला' । —काळ = पु०—कलिकाल, कलियुग ।
 कलूरौ = पु० एक घास विशेष ।
 कलूला = स्त्री० भोजन का नशा या भोजन के बाद का विश्राम ।
 कलूस = १ देखो 'कलुष' । २ देखो 'कलुम' ।
 कलुधन = पु० [सं० कला + उन्धन] दीपक ।
 कलुज (उ) = देखो 'काळजी' ।
 कलुजी = स्त्री० कलेजे का मांस ।
 कलुजी = देखो 'काळजी' ।
 कलेवड़ी = देखो 'कलेवी' ।
 कलेवर = पु० [सं०] १ शरीर, देह । २ आकार, प्रकार । ३ आकृति, शक्ल ।
 कलेवी = पु० [सं० कल्पवर्त] १ नाशता, जलपान । २ स्वल्पाहार । ३ पाथेय ।
 कलेस = पु० [सं० कलेज] १ दुःख, कष्ट । २ पीड़ा, वेदना । ३ कलह, भगड़ा । ४ परिश्रम ।
 कलंगारी = वि० (स्त्री० कलंगारी) कलहप्रिय, भगड़ालू ।
 कलौदरी = पु० बैलगाड़ी के थाटे में लगने का लोहे का उपकरण ।
 कलौठ = स्त्री० करवट (सेवान) ।
 कलौतर = पु० ग्रजान ।
 कलौधर = पु० [सं० कुल + धर] १ पुत्र । २ वंशज ।
 कलौल (ल) = पु० [सं० कल्लोल] १ आमोद-प्रमोद । २ कीड़ा, कलि । ३ उन्हास, खुशी, हर्ष । ४ मोत्र, मस्ती । ५ अठसैलि । ६ लहर, तरंग । ७ शब्द ।
 कलौहळ = देखो 'कोलाहळ' ।
 कलौजी = स्त्री० कालाजीरा ।
 कलौ = देखो 'कलह' ।
 कली = पु० १ आभूषण बनाने का एक औजार । २ फेंफड़ा । ३ देखो 'किलो' ।
 कलिक, कलकी = पु० [सं० कलिकन्] विष्णु का भावी दशवां अवतार जो कलियुग के अन्त में कुमारी कन्या के गर्भ से संभल (मुरादाबाद) में होगा । (कल्पना)
 कलडू = पु० रहट की माल में लगने वाला लकड़ी का गुटका ।
 कल्पंत = देखो 'कलपांत' ।
 कल्प = १ देखो 'कलप' : २ देखो 'कल्प' ।

कल्पण (न), कल्पणा (ना)—देखो 'कल्पना' ।

कल्पणी (बो)—१ देखो 'कल्पणी' (बो) । २ देखो 'कल्पणी' (बो) ।

कल्पत—पु० १ ईर्ष्या, द्वेष । २ वैर, शत्रुता ।

कल्पतरी (द्रुम, कंख)—देखो 'कल्पतरु' ।

कल्पांत—देखो 'कल्पांत' ।

कल्पित—पु० १ दुष्ट, हाथी । २ देखो 'कल्पित' ।

कल्पो—वि० १ कल्पना करने वाला । २ काव्य शास्त्र का रचयिता । ३ आचार व्यवहार का विशेष ध्यान रखने वाला माधु (जैन) ।

कल्पो—देखो 'कल्पो' ।

कल्याण—पु० [सं० कल्याण] १ मोक्ष, मुक्ति । २ मंगल, कुशल । ३ सुख । ४ सौभाग्य । ५ भलाई । ६ शुभ कर्म । ७ स्वर्ग । ८ अभ्युदय । ९ मोना । १० विष्णु । ११ ईश्वर । १२ जल, पानी । १३ एक घोड़ा विशेष । १४ एक राग विशेष । १५ एक प्रकार का छंद । —कलस—पु० मंगल-कलश । —कुंबर—स्त्री० पंवार वंशोत्पन्न एक देवी ।

कल्याणी—स्त्री० [सं० कल्याणी] सौभाग्यवती स्त्री, सधवा ।

कलस—पु० एक प्रकार की घास ।

कलसर—पु० १ एक प्रकार का छोटा कीड़ा । २ खट्टी छाछ का बना एक पेय पदार्थ । ३ एक प्रकार का रण-वाद्य ।

कलहण—पु० १ युद्ध । २ संस्कृत का एक प्राचीन पण्डित ।

कलहार—पु० १ पुष्प । २ श्वेत एवं सुगंधित कमल ।

कवच—१ देखो 'कविद' । २ देखो 'कवि' ।

कवक—पु० १ घास, निवाला । २ वादा, वजन । —कि० वि० १ कसी । २ कब । ३ कैसे ।

कवच—पु० [सं०] १ बर्म, मन्त्राह, जिह्वर-वस्त्र । २ आवरण । ३ ताबीज । ४ छान । ५ बड़ा नगाड़ा । ६ शरीरांग रक्षार्थ मंत्र द्वारा प्रार्थना । ७ ऐसी रक्षा का मंत्र या मंत्रयुक्त ताबीज । ८ क्रीच । —दीप—पु० कौचदीप ।

कवडपंच—पु० [सं० कपट + प्रपंच] कपट जान, गड्यन्त्र ।

कवडाळी, कवडिणी—वि० [सं० कपटिका] १ कौडियों जैसे छापे वाला । २ कौडियों से युक्त । ३ उर्मग युक्त । —पु० १ एक पक्षी विशेष । २ कौड़ी छाप सर्प । ३ ऊंट की सजावट का कपटिका युक्त उपकरण ।

कवडी—१ देखो 'कौडी' । २ देखो 'कवडी' ।

कवडी, कवडु—पु० १ बड़ी कौडी, कौड़ा । २ कौडी के रंग का छोड़ा ।

कवडु—१ देखो 'कवडु' । २ देखो 'कौडी' ।

कवण (न)—देखो 'कवण' ।

कवत—देखो 'कवित' ।

कवतर—देखो 'कविता' ।

कवर—देखो 'कुमार' ।

कवररस—पु० [सं० कमल-रस] हंस ।

कवरांगुर—पु० [सं० कुमार-गुरु] १ प्रधान राजकुमार । २ राज कुमार का गुरु ।

कवराणी—देखो 'कवराणी' ।

कवरांपत (पति)—पु० युवराज ।

कवराज (राजा, राय, राव)—देखो 'कविराज' ।

कवळ, कवल—पु० [सं० कवलः] १ कौर, ग्राम । २ देखो, 'कमल' । ३ देखो 'कौल' । —घात—पु० सूर्य ।

कवळापति—देखो 'कमलपति' ।

कवलास—देखो 'कैलाम' ।

कवलिपौ—पु० १ ग्रामपणों में खुदाई करने का औजार । २ कामला रोग ।

कवळी—स्त्री० [सं० कपिला] १ एक प्रकार की गाय, कपिला । २ देखो 'कंवळी' ।

कवळी—पु० १ बैल । २ मृग । ३ सफेद रंग का मृग । ४ घोड़ा । ५ देखो 'कंवळी' । —कि० वि० १ पास, निकट । २ देखो 'कौल' ।

कवल्यापीड—देखो 'कुबल्यापीड' ।

कवल्यासव—देखो 'कुबल्यासव' ।

कवल्ली—पु० कुबेर ।

कवसलेद—पु० [सं० कौशलेन्द्र] श्रीरामचन्द्र ।

कवसल्या—स्त्री० [सं० कौशल्या] श्रीराम की माता का नाम ।

कवाण (न)—देखो 'कपान' ।

कवार—पाठी—देखो 'कुमार पाठी' ।

कवाड़—देखो 'कपाट' ।

कवाड़, पण, पणी—पु० रक्षा करने का भाव ।

कवाड़ियो, कवाड़ी (ड़ी)—पु० १ छोटी कुन्हाड़ी । २ छोटा कपाट । ३ लकड़ियों की बनी रोक । ४ घनाज को खाने वाला कीट ।

कवाज—स्त्री० [सं० कवायद] १ मेना का युद्धाभ्यास, परेड । २ नियम, कायदा ।

कवाव—पु० १ कवि । २ मीन के टुकड़ों का धनुष । ३ कवायद कवाडु (डू)—स्त्री० कवायद । —वि० जिसे कवायद का अभ्यास हो ।

कवार—१ देखो 'कुमार' । २ देखो 'कवार' । —पाठी—'कुमार-पाठी' ।

कवारी—देखो 'कंवारी' । —धड़—देखो 'कंवारीधड़' ।

कवारी—देखो 'कंवारी' । (स्त्री० कंवारी) ।

कविद—पु० [सं० कवीन्द्र] १ कवियों में श्रेष्ठ । २ श्रेष्ठ काव्यकार ।

कवि

(२१२)

कसबी

कवि-पु० [सं०] १ कविता, काव्य या पद्यों का रचयिता । काव्यकार, शायर । २ पंडित । ३ आदि कवि वाल्मीकि । ४ बृहस्पति । ५ गुकाचार्य । ६ व्यासदेव । ७ ब्रह्मा । ८ मर्य । ९ सोडा । १० लगाम । -वि० १ बुद्धिमान, चतुर । २ विवेकशील । ३ सर्वज्ञ । ४ ज्ञातृ । ५ प्रतिभाशाली । -प्रण, यण-पु० पंडित समुदाय । कविजन । -रजा राज, राजा, राय, राज-पु० श्रेष्ठ कवि या काव्यकार श्रेष्ठ वैद्य (उपाधि) ।

कविईलोळ-पु० डिगल का एक छंद ।

कवित (त्त)-पु० [सं० कवित] १ छप्पय छन्द । २ इकनीस यथवा बत्तीस अक्षरों का एक वृत्त । ३ कविता ।

कविता (ई)-स्त्री० [सं०] १ कोई पद्यमय रचना । २ काव्य । ३ पद्य । ४ गीत । ५ काव्य रचना की शक्ति ।

कवित-१ देखो 'कविता' । २ देखो 'कवित' ।

कविळास, (ळासि, ळासी)-देखो 'कळास' ।

कविलौ-पु० गग विणेश का घोड़ा ।

कवीद (दो)-देखो 'कविद' ।

कवी-स्त्री० १ माया कौशली । २ देखो 'कवि' ।

कवीयंद-देखो 'कविद' ।

कवीयण, यांण-देखो 'कविग्रण' ।

कवीलौ-देखो 'कवीली' ।

कवीस, कवीसर, कवीस्वर-पु० [सं० कवीश्वर] १ श्रेष्ठ कवि, कविराज । २ मूर्हप ।

कवेरजा-स्त्री० कावेरी नदी ।

कवेळ-पु० [सं० कवलय] १ श्रीकृष्ण । २ मोक्ष ।

कवेळा(ळी)-देखो 'कुवेळा' ।

कवेळू-देखो 'केळ' ।

कवेस, (सर,सुर)-देखो 'कवीस्वर' ।

कवी-पु० [सं० कवयः] गाय, कौर, निधाला ।

कव्यंद-देखो 'कविद' ।

कव्य-पु० पितरों के प्रति तैयार किया जाने वाला अन्न ।

कव्वाल-पु० [अ०] १ मुसलमान गायक । २ 'कव्वाली' गाने शाना गायक ।

कव्वाली-स्त्री० [अ०] १ मुसलमान पीरों की स्मृति में गाया जाने वाला विशिष्ट गाना । २ इस राग का कोई गीत, गजन ।

कस-पु० [सं० कश, कशा, कष] १ सार, निचोड़ । २ तत्व । ३ रस । ४ छिद्राण हुए छोटे-से बरतल । ५ खण । ६ शक्ति, ताकत । ७ कंचुकी आदि बांधने की डोरी । ८ बांधने के लिये किसी वस्त्र के लगी डोरी । ९ कमीटी । १० चाबुक, कौड़ा । ११ खिंचाव । १२ कमी । १३ कायदा ।

१४ गुंजाईश । १५ मितव्ययता । १६ तलवार की लचक । -वि० योड़ा, काग ।

कसक-स्त्री० १ पीड़ा, वेदना, दर्द । २ टीस । ३ कसीस धातु । ४ चुभन ।

कसकणौ (बौ)-कि० १ दर्द से कराहना, टीस उठना । २ टनना । हटना । ३ भागना । ४ लचकना ।

कसकत-देखो 'कसक' ।

कसट (टि)-देखो 'कस्ट' ।

कसटणी (बौ)-देखो 'कस्टणी' (बौ) ।

कसण-पु० [सं० कृशानु] १ प्राण, अग्नि । २ कंचुकी का बंधन । ३ बंधन । ४ कसावट । ५ देखो 'कसणी' ।

कसणका (कक)-पु० कवच ।

कसणी(खौ)-स्त्री० १ कमीटी । २ कमीटी का पत्थर । ३ परीक्षा । ४ रगड़ । ५ कष्ट, तकलीफ । ६ चारजामे का बंधन । ७ बंधन । ८ कंचुकी, डोरी । ९ कवच का टुक । १० कसने का उपकरण । ११ गर्प की गर्दन । १२ फीता ।

कसणी(बौ)-कि० १ डोरी से खींच कर बांधना । २ मजबूती से गठित करना । ३ मजबूत, बंधना । ४ कसाटी पर घिसना । रगड़ना । ५ दवाना, भीजना । ६ कटिबद्ध होना । ७ मस्ती में काम लेना । ८ प्रत्यंचा चढ़ाना । ९ ननाव देना । १० यत्र के पुर्जे कमना । ११ कमियाजाना । १२ कम होना, घटना ।

कस्तूरिखी-वि० १ कस्तूरी का, कस्तूरी संबंधी । २ कस्तूरी रंग का । -पु० कस्तूरी रंग का घोड़ा । -अग, अग, अघ-पु० कस्तूरी वाला हरिन ।

कस्तूरिख(रीय, पूरी)कस्तूरी, कस्तूरीय-स्त्री० [सं० कस्तूरी] एक सुरंधित द्रव्य, मृगमद, मुश्क ।

कसती-पु० कम तोलने की क्रिया या भाव, कम तापने की क्रिया । -दि० कम ।

कसन-१ देखो 'कसण' । २ देखो 'कसण' ।

कसनाग (नागर, नागरी)-देखो 'किमनागर' ।

कसनावास-पु० [सं० कृष्ण + आवास] पीपल-वृक्ष ।

कसप-पु० कश्यप । -तनु-पु० गरड़ ।

कसपरजवाळी-स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

कसब-पु० १ वेश्या वृत्ति । २ व्यभिचार की कमाई । ३ धंधा, पेशा । ४ एक प्रकार की बढ़िया मलमल ।

कसबन-स्त्री० १ वेश्या । २ वेश्या वृत्ति करने वाली स्त्री ।

कसबी-स्त्री० १ ऊंट के चारजामे का फीता या रस्सी । २ एक प्रकार का बढ़िया रेशमी वस्त्र ।

कसबाई (बोय, बोह, बी)-देखो 'खसब' ।

कसबी-पु० [अ० कस्बा] १ छोटा शहर । बड़ा गांव । २ एक प्राचीन कर् । ३ देखो 'खसब' ।

कसम-स्त्री० [ध०] १ जपक, सीमंध । २ प्रतिज्ञा, माक्षी ।
 -पु० [अ० खमम] ३ पति, खाविद ।
 कसमल-पु० [सं० कश्मल] पाप, दुष्कर्म । —प्रिय-पु० भौरा, भ्रमर । पापी ।
 कसमसणी (बौ), कसमसणी (बौ)-क्रि० १ हितकथाना ।
 २ बेचैन होना, घबराना । ३ परेशान होना । ४ उलझन में पड़ना । ५ दबना, झुकना ।
 कसमसाट-स्त्री० १ हिचकिचाहट । २ उलझन । ३ परेशानी । ४ बेचैनी ।
 कस्यार-पु० दोनों ओर से बांधने का पीता, बसकल ।
 कसमीर-पु० [सं० कश्मीर] भारत के उत्तर में स्थित एक प्रदेश । कश्मीर । —ज-पु० केसर । कश्मीर में पैदा हुआ । —सो-स्त्री० शारदा, सरस्वती ।
 कसमीरी (मेरि, मेरी)-स्त्री० १ सरस्वती । २ कश्मीर का निवासी । —वि० कश्मीर का, कश्मीर संबंधी ।
 कसर-स्त्री० [अ०] १ कमी, ग्लानता । २ खोटा, दोष । ३ वैर द्वेष । ४ हानि, घाटा । ५ चूट ।
 कसरत-स्त्री० [अ०] १ व्यायाम, दण्ड-वैठक । २ शारीरिक या मानसिक श्रम ।
 कसरायल-स्त्री० १ कमी, कसर । २ फसलों को पशुओं द्वारा हानि पहुँचाने संबंधी एक प्राचीन सरकारी कर ।
 -वि० कमी रखने वाला ।
 कसरायली-वि० (स्त्री० कसरायली) दोप पूर्ण, कमर वाला ।
 कसरियो-पु० बड़ई का एक औजार ।
 कसरी-पु० निशान, चिह्न ।
 कसवटी-देखो 'कसौटी' ।
 कसवर-पु० [सं० कु + शकुन] प्रपञ्चकुन ।
 कसवर-पु० [सं० कस्वर] द्रव्य, धन, सम्पत्ति ।
 कसवारु-पु० १ कमी । २ अभाव । ३ कसर । ४ देरी, विलंब ।
 कससणी (बौ), कससणी (बौ)-क्रि० १ जोश में एक साथ चलना । २ एक के आगे एक चलने की कोशिश करना । ३ आगे बढ़ना ।
 कसांबर (वर)-पु० पीताम्बर वस्त्र, भगवा वस्त्र ।
 कसा-स्त्री० अभिमान, घमंड । —सर्व० कौतभा ।
 कसाइली-वि० १ कसैला, दुपित, विकृत । २ निर्धन ।
 -स्त्री० निर्धनावस्था ।
 कसाई-पु० [अ०] १ अधिक, बूचड़ । २ मांस का व्यवसाय करने वाली एक मुस्लिम जाति । —वि० १ क्रूर, निर्दयी । २ हत्यारा । —खानी-पु० बूचड़ खाना । वह स्थान जहाँ जानवरों को काटा जाता है । —वाड़ी-पु० कसाइयों का मुहल्ला ।

कसाणी (बौ)-क्रि० १ डोरी या रस्सी से बंधवाना । २ मजबूती से गठित करना । ३ मजबूत बंधवाना । ४ कसौटी पर घिसवाना । रगड़वाना । ५ मस्ती करवाना । ६ प्रत्यंचा चढ़वाना । ७ दबवाना । ८ कटिबद्ध कराना । ९ तनाव दिराना । १० किंगी यंत्र के पुर्जे कसवाना ।
 कसाय-पु० [सं० कपाय] क्रोध, मान, माया और लोभ । (जैन)
 कसाय (ज, लौ)-वि० कसैला ।
 कसार-पु० [सं०] घी में सिके आटे में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाया हुआ साख पदार्थ ।
 कसारा-पु० घातु के बत्तेन बनाने वाली जाति, ठेंहरा ।
 कसारी-स्त्री० १ भिगुर नामक जंतु । २ कमारा जाति की स्त्री ।
 कसारी-पु० (स्त्री० कसारी) १ ठेंहरा । २ देखो 'कमार' ।
 कसाल (लौ)-पु० १ निर्धनता, कंगाली । २ कष्ट, तकलीफ । ३ संकट । ४ अभाव । —दार-वि० निर्धन, दरिद्र ।
 कसि-१ देखो 'कसौटी' । २ देखो 'कमी' ।
 कसिपु-पु० [सं० कशिपु] १ पलंग शय्या । २ लकिया । ३ अन्न भात । ४ ब्रह्मर्षि का पिता हिरण्यकशिपु ।
 कसियो-वि० १ कटिबद्ध, सन्नद्ध, तैयार । २ देखो 'कस्मी' ।
 कसो-स्त्री० १ कसौटी । २ कसौटी का पत्थर । ३ एक प्रकार का शस्त्र । ४ देखो 'कस्मी' । —सर्व० १ कमी । २ कौनसी ।
 कसोजणी (बौ)-क्रि० कसैला होना, विकृत होना ।
 कसोनाली-स्त्री० दीवार के सहारे छत का पानी नीचे उतरने का नल ।
 कसोनाली-पु० छत पर बना नाला ।
 कसोत (क)-पु० १ विधवा स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र । २ एक रंग विशेष । ३ कमीस नामक धातु ।
 कसोसणी (बौ)-क्रि० १ कसा जाना । २ प्रत्यंचा चढ़ाना । ३ फिमलना ।
 कसुंबी-पु० १ पानी में गला हुआ प्रफीम । २ लाल रंग ।
 कसुटी-देखो 'कसौटी' ।
 कसूँरा-पु० अपञ्चकुन ।
 कसूँरी-वि० अपञ्चकुनी ।
 कसूँबल-वि० १ लाल । २ लाल रंग का । —पु० १ लाल रंग । २ लाल रंग का वस्त्र ।
 कसूँबी (भी, भी)-पु० १ वह धूप जियमें से लाल रंग निकलता है । २ लाल रंग । ३ गला हुआ प्रफीम । ४ प्रफीम । ५ एक रंग विशेष का घोड़ा । —वि० लाल रंग का ।

कसूँ/बो

(२१४)

कहवा

कसूँ/बो-वि० कुसुम के समान लाल ।

कसूँ/मल-देखो 'कसूँ/बल' ।

कसूत-वि० सीधा न चलने वाला ।

कसूम-देखो 'कुसुम' ।

कसूमल-देखो 'कसूँ/बल' ।

कसूमो-देखो 'कसूँ/बो' ।

कसूर-पु० [अ०] १ अपराध, गुनाह । २ दोष, बुराई ।
३ ग्रवगुल । ४ ब्रुटि, कमी । ५ भूल । —वार-वि०
गुनाहवार, अपराधी ।कसेर (क)-पु० [सं० कशेर] १ पीठ के मध्य की हड्डी मेरुदण्ड ।
२ एक प्रकार का तृण । ३ जल में उत्पन्न होने वाला
एक फल विशेष ।

कसेल-वि० थोड़ा, वीर ।

कसोणी (बो)-कि० १ विद्याना । २ कसना ।

कसोमी-वि० अशोभनीय ।

कसोयरी-वि० [सं० कशोदरी] पतली कमर वाली ।

कसो-वि० कैसा । —सर्व० कौनसा । देखो 'कस्सो' ।

कसोटण, कसोटी-स्त्री० १ मोना, चांदी का परीक्षण करने का
पत्थर । २ पत्थर जांच, परीक्षा । ३ कसोटी पर रखने की
क्रिया या भाव । ४ दुःख । ५ कष्ट ।

कसोटी-पु० [सं० कष्ट] १ कष्ट, दुःख २ संकट ।

कस्ट-पु० [सं० कष्ट] १ दर्द, पीड़ा, वेदना । २ दुःख ।
३ अपात, संकट, विपत्ति । ३ अडचन, कठिनाई । ५ पाप ।
६ दुष्टता । ७ तकलीफ, परिश्रम ।कस्टणी (बो), कस्टीजणी (बो)-कि० १ कष्ट से पीड़ित होना ।
२ प्रभव पीड़ा से ग्रस्त होना । ३ आपत या कठिनाई
में पड़ना ।

कस्टी-वि० [सं० कष्ट] दुःखी, पीड़ित ।

कस्तूरियो-देखो 'कमतूरियो' ।

कस्तूरी-देखो 'कमतूरी' ।

कस्ती-देखो 'कमतो' ।

कस्मस-वि० गंदा, मैला, घृणित ।

कस्मप-पु० [सं० कश्यप] १ कलुषा । २ दिति व सविति के
पति एक ऋषि । ३ देखो 'कमिपु' ।

—आत्मज, सुत, सुतन-पु० सूर्य । गरुड ।

कस्स-१ देखो 'कस' । २ देखो 'कमर' ।

कस्सण-देखो 'कसण' ।

कस्सणी (बो)-देखो 'कमणी' (बो) ।

कस्सी-स्त्री० १ एक प्रकार की खुरपी जिसमें फसल के साथ उगे
घास को माफ किया जाता है । २ बधियाकरण (बंस
आदि) । ३ देखो 'कसी' ।

कस्सी-सर्व० कौनसा । —पु० फीता ।

कह-पु० [सं० कथ] १ कोलाहल, शोर । २ कल-कल ध्वनि ।
३ कथा ।कहक-स्त्री० [सं० कुहुक] १ मोर, कोकिल आदि की बोली ।
२ कलरव । ३ कोयल की कूक । ४ बिजली की चमक ।कहकहाट, कहकहो, कहकह-पु० [अ० कहकाह] जोर की
हंसी, ठट्ठा ।

कहड़ी-वि० (स्त्री० कहड़ी) कैसा ।

कहण-स्त्री० [सं० कथन] १ कहना क्रिया या भाव । २ उक्ति ।
३ वचन, वाक्य । ४ कहावत । ५ वरान, निरूपण ।
—सर्व० किस ।

कहणनु-कि० वि० १ किसलिये, क्यों । २ कहने के लिए ।

कहणार-वि० १ कहने वाला । २ कहने योग्य ।

कहणावत-देखो 'कहावत' ।

कहणी-स्त्री० [सं० कथन] १ कहने की क्रिया या भाव ।
२ कहावत । ३ चर्चा, कथनी ।कहणी-पु० [सं० कथन] १ अपयश । २ डांट-फटकार ।
३ आज्ञा, आदेश । ४ कथन । ५ अनुरोध ।कहणी (बो)-कि० [सं० कथनम्] १ बोलकर अपनी बात कहना,
बोलना । २ व्यक्त करना, प्रगट करना । ३ उच्चारण
करना । ४ समझना । ५ कहा-सुनी करना, डांटना ।
६ सूचना करना, खबर देना । ७ पुकारना । ८ बहकाना,
मुलाना ।कहत-पु० [अ० कहत] १ दुःभिक्ष, अकाल । २ अभाव, कमी,
किल्लत ।

कहनाण-पु० [सं० कथन] कहने योग्य बात, शब्द, कथन ।

कहवत-देखो 'कहावत' ।

कहर-पु० [अ० कल] १ प्रलय । २ घोर विपत्ति, संकट ।
३ रीढ़ की हड्डी । ४ दर्द, कष्ट । ५ व्याधात । ६ गुड ।
७ क्रोध, कोप । ८ विप. जहर । ९ रोव, प्रभाव ।
१० तलवार । ११ शत्रु, दुश्मन । १२ दुःभिक्ष, अकाल ।
१३ कुआ । १४ नक्कारा-वाद्य । १५ भय, आतंक ।
१६ जोशपूर्ण ध्वनि, गरजन । १७ सातवीं बार उलट कर
बनाया गया शराव । १८ दैवी विपत्ति । १९ अमानुषिक
कार्य । २० अत्याचार । २१ मोर, मृत्यु । —वि० १ भयानक,
भयावह । २ जबरदस्त । ३ महान् । ४ अत्यधिक, बहुत ।
५ तीव्र, तेज । ६ उग्र । ७ दुष्ट । ८ नीच, मोछा ।

कहरवा-स्त्री० १ एक नाल विशेष । २ एक पत्थर विशेष ।

कहरी-पु० एक प्रकार का थोड़ा ।

कहवत-देखो 'कहावत' ।

कहवो-पु० [अ० कहाव] एक वृक्ष विशेष का बीज ।

कहाणी (नी)-स्त्री० [सं० कथानिका] १ कोई किस्सा, प्राचयायिका । २ कथा, वार्ता । ३ गल्प, मन गर्हत बात । ४ काल्पनिक कथा ।

कहारिक (रेके)-क्रि० वि० १ कभी । २ कभी न कभी ।

कहार (रु)-पु० १ पानी भरने व पालकी उठाने का व्यवसाय करने वाली जाति । २ उक्त जाति का व्यक्ति । ३ बोझ उठाने वाला ।

कहाव, कहावत (ति, ती)-स्त्री० १ लोकोक्ति, उक्ति । २ संदेश खबर । ३ वचन, शब्द, कथन । ४ प्रपञ्च, कलंक । ५ प्रचलित बात ।

कहि-सर्व० १ किस । २ कोई ।

कहिके (कै)-सर्व० किमी ।

कहिणी-स्त्री० कथनी ।

कहिम-प्रव्य० चाहे ।

कहियो-पु० कहना, आज्ञा, प्रादेश ।

कहिर-पु० [सं० कंधरा] १ गर्दन । २ कंधा । ३ देखो 'कहर' ।

कही-सर्व० १ कोई । २ किसी ।

कहीघ-क्रि० वि० कहाँ ।

कहीक-सर्व० किली ।

कहीका-क्रि० वि० कहीं ।

कहीकै-प्रव्य० किमी ।

कहीर्य-क्रि० वि० कभी ।

कहीयो-पु० कथन, कहना, आज्ञा, प्रादेश ।

कहुं (हैं)-क्रि० वि० कहीं-कहीं । कहीं पर ।

कहुकणी (बो), कहुकणी (बो)-क्रि० १ कोयल का बोलना । २ पक्षियों का कूजन करना । ३ ऊँट का बोलना ।

कहुको-देखो 'कहुक' ।

कहर-पु० मोठ, ग्वार आदि के फूल ।

कहेण-पु० [सं० कथन] कथन ।

कां-प्रव्य० १ या, के आदि संयोजक प्रव्यय । २ क्या, कैसे । -सर्व० ३ क्यों, किसलिए ।

काइ (क)-सर्व० [सं० किम्] क्या । -क्रि० वि० क्यों, कैसे । -वि० कुछ, कुछेक, तनिक ।

काइणी-स्त्री० प्लेग की गांठ ।

काइणी-पु० १ संधिस्थलों पर पड़ने वाली मोच । २ तराजू या पतंग का कौना ।

काई (क)-देखो 'काइक' ।

काऊं-स्त्री० कौवे के बोलने का शब्द, कौवे की आवाज ।

कांक-१ देखो 'कांक' । २ देखो 'कांख' ।

कांकड़-पु० [सं० कांकट] १ जंगल, वन । २ कृषि भूमि, खेत आदि । ३ सीमा, सरहद । ४ श्रेष्ठफल ।

कांकड़ेल-वि० १ सरहद पर रहने वाला । २ योद्धा, वीर ।

कांकण-पु० [सं० कांकण] १ कंगन, कांकण । २ विवाह के समय वर-वधू के हाथ-पावों में बांधे जाने वाले मांगलिक सूत्र । ३ युद्ध । -डोर, डोरड़ी, डोरणी-पु० विवाह संबंधी मांगलिक सूत्र । -छोड़, छोड़णी-पु० एक वैवाहिक रश्मि ।

कांकणस, कांकणयी-पु० स्त्रियों की चोटी में गुंथी जाने वाली ऊन की डोरी ।

कांकणी-स्त्री० हाथ की कलाई का प्राभूषण । कंगन ।

कांकर-स्त्री० [सं० कर्कर] १ छोटे-छोटे कंकरों का समूह जो इमारत की छत, प्रांगण आदि में काम आता है । २ छोटा कांकड़ । ३ कंकरीली भूमि । ४ एक झाड़ीनुमा पौधा जिसके फल मोठे होते हैं । -क्रि० वि० कैसे, किस तरह ।

कांकरड़ी, कांकरी-देखो 'कांकर' । देखो 'कांकरण' ।

कांकरी-देखो 'कांकड़' ।

कांकळ-पु० [सं० कांकल] १ युद्ध । २ सरहद । ३ देखो 'कांकड़' ।

कांकी, कांक-सर्व० किसकी, किमकै ।

कांख-स्त्री० [सं० कसः] १ बगल, कांख । २ पार्श्व ।

कांगड़ारीराय-स्त्री० ज्वालामुखी देवी ।

कांगड़ी-पु० १ पश्चिमी हिमालय का एक प्रदेश । २ मटमैले रंग का एक पक्षी ।

कांगणी-स्त्री० १ माल कांगणी । २ एक प्रकार का कदम ।

कांगणी-देखो 'कांकण' ।

कांगरि-देखो 'कांगरी' ।

कांगर (देस)-देखो 'कांमरूप' ।

कांगरी-पु० [का० कंगूर] १ बुज । २ कंगुरा ।

कांगळ-देखो 'कांगज' ।

कांगसियी-पु० १ कंधा । २ एक राजस्थानी लोकगीत ।

कांगसी-स्त्री० [सं० कांकती] स्त्रियों के केश मवारने की कंधी ।

कांगाई-स्त्री० १ दरिद्रता, कंगाली । २ याचकता । ३ नीचता । ४ बुरा स्वभाव । ५ भगड़ा ।

कांगारोळी, कांगरोळी-पु० १ भगड़ा, फिसाद । २ तू-तू-मै-मै । ३ कलह ।

कांगी-देखो 'कांगमी' ।

कांगुरी-देखो 'कांगरी' ।

कांगी-वि० (स्त्री० कांगी) १ कंगाल, निर्धन । २ याचक । ३ बुरे स्वभाववाला ।

कांच-स्त्री० [सं० कक्ष] १ गुदेन्द्रिय का भीतरी भाग । २ देखो 'काच' ।

कांचणी (बो)-क्रि० अधिक कब्जित की दशा में शीव जाने के लिये जोर लगाना, कांछना ।

कांचळ, कांचळियो—देखो 'कांचळी' ।

कांचळप्रचल—पु० मुमेरुपर्वत ।

कांचळपंथ—पु० वाम मार्ग का एक भेद ।

कांचळी (ळी), कांचव (उ, वी)—स्त्री० [सं० कंचुक] १ सर्पादि के शरीर पर होने वाली झिल्ली, कंचुल । २ स्त्रियों की कंचुकी ।

कांचि, कांची—स्त्री० १ कर्धनी, मेखला । २ कौशा । ३ सप्तपुत्रियों में से एक । —पद—पु० कमर, कटि ।

कांचु (झी) कांचू—पु० [सं० कंचुक] कंचुकी ।

कांची—पु० कौशा ।

कांक्षा—स्त्री० [सं० कांक्षा] १ इच्छा, अभिलाषा, चाह । २ लोभ ।

कांजर, कांजरियो—पु० (स्त्री० कांजरी) कांजर जाति का व्यक्ति ।

कांजिक, कांजी—स्त्री० [सं० कांजिकम्] एक हाजमेदार पेय पदार्थ ।

कांजीवड़ी—पु० एक देशी खेद ।

कांभर—वि० नीच ।

कांट—स्त्री० [सं० कंटक] १ घास के महीन कांटे । २ खार, मोठ आदि का भूसा । ३ कांटों के टुकड़े व ढेर ।

—कंटोली वि० कांटेदार । —कांटाळी, किंटाळी—वि० कांटेदार, कांटों से परिपूर्ण ।

कांटरखी—स्त्री० जूती, पगरशिका ।

कांटाळ, (ळी)—पु० [सं० कंटक] १ कांटेदार घास जिसे ऊंट खाता है । २ सिंह ३ सर्प, बिच्छु आदि । ४ वीर, योद्धा । —वि० कांटेदार, कंटोला ।

कांटावेड़—पु० कांटेदार आहता वाला मकान ।

कांटियो—पु० १ लोहे का एक हुकदार उपकरण । २ हुंमिया । ३ हंसली की हड्डी । ४ हृदय, दिल । ५ कफन ।

कांटी—स्त्री० १ भूमि पर छितराने वाला कांटेदार घास । २ छोटा तराजू । ३ कांटों का समूह । —वि० समान, सहज ।

कांटी—पु० [सं० कंटक] १ पेड़ या घास का कांटा । २ लोहे का मुकीला खण्ड । ३ अंकुश । ४ अंकुड़ा । ५ विषैले जीव । ६ बिच्छु का डंक । ७ बड़ा तराजू । ८ स्त्रियों के नाक का आभूषण । ९ स्वर्णकारों का औजार विशेष । १० बाधा । ११ शूल । १२ कण्ट, पीड़ा । १३ राक्षस । —वि० १ बाधक । २ दुःखदाई तत्व । ३ आततायी, दुष्ट । —कांटरियो, कांटरियो—पु० बारीक कांटा निकालने का उपकरण ।

कांटी—पु० १ दरवाजे की कुंडी । २ आतुरता ।

कांठळ (ळि, ळी)—स्त्री० कान्ठी घन पट्टा ।

कांठलियो, कांठळी—पु० १ गले का आभूषण, कंठा । २ हाथों के कट का आभूषण ।

कांठाघत—वि० १ नदी किनारे रहने वाला । २ अरावली पहाड़ का निवासी । ३ लुटेरा ।

कांठे—क्रि० वि० नजदीक, पास ।

कांठेलियो—पु० १ पहाड़ के पास रहकर लुट-पाट का काम करने वाला व्यक्ति । २ देखो 'कांठाघत' ।

कांठी—पु० १ सीमा, मरहद । २ किनारा, तट । —क्रि० वि० समीप, पास, निकट ।

कांड (डी)—पु० [सं० काण्डम्] १ भाग, अंश । २ किसी ग्रंथ का अध्याय, परिच्छेद । ३ दुर्घटना, घटना । ४ धनुष के बीच का मोटा भाग । ५ तीर, बाण । ६ हाथ या पांव की मीथी लंबी हड्डी । —वि० कुत्तित, बुरा । —पद—पु० यवनिका, पर्दा ।

कांडी, कांडोरप—पु० [सं० कांडीरः] १ भील । २ धनुष । —वि० धनुर्धारी ।

काण (लि)—स्त्री० [सं० काण] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । २ शर्म, लिहाज । ३ मर्यादा । ४ तराजू के संतुलन का अंतर । ५ महत्त्व, बड़ाई । ६ मृत प्राणी के परिवार वालों को दी जाने वाली संवदना । ७ कानापन । ८ संकीच । ९ सीमा, हद । १० फलों का एक रोग । ११ अट्टाईस योगों में से एक । १२ देखो 'कांणी' । —क्रि० वि० लिये, वास्ते । —कुरब—स्त्री० मान, प्रतिष्ठा ।

कांणेटो, कांणोटो—देखो 'कांणी' ।

कांणण—पु० [सं० काणन] वन, जंगल । —रांण, राब—पु० सिंह, शेर ।

कांणम—स्त्री० तराजू के संतुलन का अंतर ।

कांणाब—पु० १ वैशेषिक शास्त्र । २ देखो 'कण्णाद' ।

कांणि—देखो 'कांण' ।

कांणियर—पु० १ कणेर । २ कनक चम्पा ।

कांणी—देखो 'कांणी' ।

कांणीदीवाळी—स्त्री० दीपावली का पूर्व दिवस ।

कांणेटो, कांणोटो—पु० मध्य का दांत ।

कांणी—वि० [सं० काण] (स्त्री० कांणी) १ एक नेत्र वाला, एकक्षी । २ कोड़े पड़ा हुआ (फल) । —पु० १ शुक्राचार्य । २ कौशा । —घूँघट, घूँघटी—पु० दो अंगुलियों की बीच में डाल कर बनाई जाने वाली घूँघट की स्थिति जिसमें केवल एक आंख खुली रहती है । —सूकर—पु० शुक्राचार्य ।

कांण्डो—पु० [प्रा. कण्ह] १ श्रौकण्ड । २ एक राग विशेष ।

कांत—पु० [सं० कांत] (स्त्री० कांता) १ पति, प्रियतम । २ आशिक । ३ पक्षी विशेष । —वि० १ सुन्दर, मनोहर । २ प्रिय, प्यारा । ३ इष्ट । ४ देखो 'कांति' । —मणि—वि० ज्योत, नयेदंश । —लोह—पु० बढ़िया लोहा ।

कांतर-पु० वरुण ।

काता-स्त्री० [सं०] १ पत्नी, प्रिया । २ सुन्दर स्त्री ।

३ प्रियंगुवेल । ४ बड़ी इलायची । ५ पृथ्वी । -वि० सुन्दरी ।

कातार-पु० [सं०] १ सघन-वन, महावन । २ निर्जन वन ।

३ ऊबड़-खावड़ सड़क या रास्ता । ४ गड्ढा । ५ एक प्रकार का ईख ।

काति, कांती-स्त्री० [सं० काति] १ आभा, चमक, दीप्ति ।

२ प्रकाश, रोशनी । ३ यश, कीर्ति । ४ सौंदर्य, मनोहरता ।

५ कामना, इच्छा । ६ सुन्दर स्त्री । ७ दुर्ग की एक उपाधि । ८ रुक्मिणी की एक सखी ।

कातेर (रण)-स्त्री० कंटोली-भाड़ी ।

कांथड़ी-स्त्री० [सं० कंथा] संन्यासियों की कंथड़ी, झोला ।

कांथसोक-वि० [सं० कान्दिशोक] भयभीत ।

कांधियो-देखो 'कांधी' ।

कांवी-पु० [सं० कंद] १ प्याज । २ देखो 'कांधी' ।

कांथ-स्त्री० [सं० स्कंध] १ कंधा । २ णवयान या ग्रंथों की दिया जाने वाला कंधा । --मल-वि० वीर, योद्धा । महायक ।

कांधार-देखो 'गंधार' ।

कांधाळ-वि० १ बड़े कंधों वाला । २ वीर ।

कांधियो-वि० [सं० स्कंधिक] शक्यान् को कंधों पर उठा कर भ्रमण ले जाने वाला ।

कांधी-स्त्री० [सं० स्कंध] १ बैल की गर्दन जहां जूआ रखता जाता है । २ इस स्थान पर होने वाला रोग । ३ कंधा ।

कांधिली, कांधोटी-पु० १ सर्दी से बचाव के लिए घोड़े को घोड़ाया जाने वाला वस्त्र । २ कंधे का सहारा ।

कांधोघर-वि० १ बड़े कंधों वाला । २ वीर, योद्धा ।

कांधी-पु० [सं० स्कंध] कंधा ।

कान-पु० [सं० कर्ण] १ श्रवणेन्द्रिय, कर्ण, कान । २ बन्दूक की नली पर टोपी रखने का स्थान । [सं० कृष्ण प्रा० कण्ह] ३ श्रीकृष्ण । ४ देखा 'कान्हू' । --कुचरणिगौ, कुरेबरी-पु० कानों का मैल साफ करने का उपकरण । --खजूरी-पु० अत्यधिक पांवों वाला रेंगने वाला जानवर । --गाय-स्त्री० कान्हू गाय । बांभ गाय । -वि० कायर, डरपोक । --सड़-स्त्री० सुनकर याद की गई कविता । -वि० श्रुतिनिष्ठ । --पसाब-पु० कर्मागोचर । --फाड़-पु० नाथ सम्प्रदाय का कनफड़ा योगी ।

कानड़ (झी), कानजी-पु० [सं० कृष्ण] १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।

३ देखो 'कान्हड़ी' । ४ देखो 'कान' ।

कानन-पु० [सं० कानन] वन, जंगल । --चारी-वि० वनवासी । ग्रहपि, मुनि । --झाडी-स्त्री० हरिमणि ।

कानली-वि० (स्त्री० कानली) ओर की, तरफ की ।

कानवी, कानहरी-पु० श्रीकृष्ण ।

कानस-स्त्री० १ अर्द्धवृत्ताकार आकृति । २ लोहा साफ करने का औजार । ३ दीवार का कंगुरा ।

कानसछाई (सछायी)-पु० कनखजूरा नामक जानवर ।

कानाकड़मत-स्त्री० आ की मात्रा ।

कानाकूसी-स्त्री० १ गुप्तगूँ । २ गुप्त वार्ता, ३ फुसफुसाहट ।

कानामात (मात्रा)-स्त्री० १ वर्ण के ध्राने की खड़ी पाई 'i' । २ आ की मात्रा ।

कानिया, कानी-क्रि० वि० ओर, तरफ । स्त्री० किनारा, छोर ।

कानियो, कानुड़ी, (डौ) कानू-पु० १ श्रीकृष्ण । २ किनारा, छोर ।

३ पृथक्त्व, अलगत्व । ४ देखो 'कानी' ।

कानूनी-पु० १ जमीन-बन्दोबस्त-विभाग का कर्मचारी । २ काबूत का जानकार ।

कानुड़ी (डौ)-पु० श्रीकृष्ण ।

कानून-पु० [अ० कानून] १ राज्य का विधान, नियम । २ न्याय की विधि ।

कानै-क्रि० वि० १ तरफ, ओर । २ पास, नजदीक । ३ दूर, दूरी पर ।

कानी-पु० १ 'आ' की मात्रा का चिह्न । २ बर्तन का किनारा ।

३ पार्श्व, बगल । ४ किनारा । ५ तटस्थता । ६ श्रीकृष्ण ।

७ पगड़ी का एक प्रकार का बंधन जिसका बायाँ भाग मुकीला होता था । -वि० अलग, दूर, पृथक् ।

कान्यकुब्ज-पु० १ कन्नौज के पास-पास का प्रदेश । २ इस स्थान के ब्राह्मण ।

कान्हू-१ देखो, 'कन्हू' । २ देखो 'कानगाय' ।

कान्हू (हु)-देखो 'कन्हू' ।

कान्हड़ी-स्त्री० दीपक राग की स्त्री एक राग ।

कान्हड़ी-पु० १ एक राग जो मेघराग का पुत्र माना जाता है । २ कान, कर्ण । ३ देखो 'कन्हू' ।

कान्हरी, कान्हरी-पु० १ श्रीकृष्ण । २ कृष्ण का वंशज । ३ यादव ।

कान्हरी, कान्हरी-क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ पास, निकट ।

कान्हू, कान्हरी-पु० १ श्रीकृष्ण । २ 'आ' की मात्रा ।

कांप-स्त्री० तालाब आदि का पानी सूखने पर जमने वाली पपड़ी ।

कांपली-स्त्री० १ कंपकंपी । २ एक बात रोग ।

कांपली (बी)-क्रि० १ कांपना, धरना । २ डरना, घबराना । ३ रोग से घृष्टता ।

कांभ (डी)-स्त्री० [सं० कंदा] १ हरे वृक्ष की डाली ।
२ छड़ी, बेंत ।

कांभड़-पु० चमार जाति का याचक ।

कांभड़ी-पु० कपड़ा धोने की लकड़ी ।

कांभळ, कांभळी, कांभळी-देखो 'कंबळ' ।

कांभो-स्त्री० स्त्रियों का आश्रयण विशेष ।

कांभोजली (बी)-क्रि० १ पशुओं के पेट में ऐंठन होना ।
२ मादा पशुओं को प्रबल कामेच्छा होना ।

कांभोज-पु० [सं०] १ छोड़ा । २ कंबोज देश का ।
३ देखो 'कंबोज' ।

कांभोजी-पु० कंबोज देश का घोड़ा ।

काम-पु० [सं० काम] १ कामदेव । २ शिव, महादेव ।
३ मंथनेच्छा । ४ मनोरथ, इच्छा । ५ इन्द्रियों की स्व-
विषयों की ओर प्रवृत्ति । ६ स्नेह, प्रेम । ७ चार पदार्थों
में से एक । ८ आजा, अभिलाषा । ९ बनराम । १० प्रद्युम्न
का नाम । ११ पुत्रपार्थ विशेष । १२ अभीष्ट वस्तु ।
१३ वीर्य । १४ विष्णु । १५ वृष्णा । [सं० काम] १६ कार्य,
व्यापार, कर्म । १७ प्रयोजन उद्देश्य । १८ स्वार्थ, मतलब ।
१९ वास्ता, गरज, लगाव । २० व्यवहार, उपयोग,
इस्तेमाल । २१ रोजगार, धंधा । २२ रचना, कारीगरी ।
२३ बेल बूटे आदि नक्काशी का कार्य । २४ पदवी ।
२५ बादल । २६ पृथ्वी । २७ पथेष्ट वार्ता । २८ स्वीकृति ।
२९ छड़ी । -वि० १ काला । २ देखो 'कामणी' ।
—अंकुर, अंकुर-पु० कुच, स्तन । नख । पुरुषेन्द्रिय ।
—अंध-स्त्री० कोकिल । -वि० वासना में अंधा ।
—अंधा, अंधी-स्त्री० कस्तूरी । कामातुर स्त्री ।
—आतुर-वि० मंथन के लिए व्याकुल । —कला-स्त्री०
कामदेव की स्त्री, रति । संभोग किया । —कांता-स्त्री०
कामदेव की स्त्री रति । —कामा-स्त्री० भवानी, दुर्गा ।
—का-स्त्री० कामिनी स्त्री । —काळ-पु० शिव, महादेव ।
—की-स्त्री० वेश्या, गरिका । स्त्री, नारी । —केळि-स्त्री०
रति किया, मंथन । —केळ-वि० विषयी, भोगी ।
—कौतूहल-पु० रति श्रीड़ा, संभोग । —ख-पु० पति,
खासिद । —शबी, गा-स्त्री० कामधेनु गाय ।
—चलाऊ-वि० तत्कालीन कार्य साधने योग्य, अस्थाई ।
—चोर-वि० मालसी । कार्य से जी चुराने वाला ।
—छंद-पु० एक वर्णिक छन्द विशेष । —जुर ज्वर
—पु० कामेच्छा के कारण होने वाला ज्वर ।
—तर, तर-पु० कल्पवृक्ष । —तिथ-स्त्री० त्रयोदशी ।
—ब-वि० इच्छा पूर्ण करने वाला । —बम, बमणी-स्त्री०
मणि विशेष । —दहण-पु० शिव, महादेव । —दांनी-

स्त्री० सलमे-सतारे के बने बेल बूटे । —दा-स्त्री०
कामधेनु । —दुधा, दुहा-स्त्री० कामधेनु । —देव-पु० रति
क्रिया की प्रेरणा देने वाला एक देवता । —धंधी-पु०
व्यवसाय, रोजगार । —घज-पु० काम के रथ की ध्वजा,
पताका, मछली । —घनि-स्त्री० कामधेनु । —घरम-पु०
विषय-वासना, रतिक्रिया । —घोठ-स्त्री० नयन, नेत्र ।
—धुक, धेन, धेनि, धेनु, धेनुका-स्त्री० कामधेनु गाय । —पाळ
—पु० बलराम । श्रीकृष्ण । —बाण-पु० कामदेव के पांच
बाण । —भुह-पु० कल्पवृक्ष । —रिपु-पु० शिव,
महादेव । —रुचि-पु० विश्वामित्र द्वारा रचित एक
शस्त्र । —रूप-पु० देवता । —रूपी-वि० स्वेच्छित रूप
धारने वाला । —लता-स्त्री० एक लता विशेष । —वन
—पु० वह वन जहां कामदेव को भस्म को किया गया ।
—वान, वाळ-वि० विषयी, कामी । —वक्ष-पु० कल्पवृक्ष ।
—सछा-पु० वसंत ऋतु । —सास्त्र-पु० कोक शास्त्र ।
—मुत-पु० अनिरुद्ध ।

कामखानी-पु० क्यामखानी जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

कामगर-देखो 'कमगर' ।

कामड़, कामड़िया-पु० रामदेव का भक्त चमार जाति का व्यक्ति
जो तंदूरे पर रामदेव के भजन गाता है ।

कामड़ी-स्त्री० १ छड़ी । २ कामड़ जाति की स्त्री । —कसौ
—पु० छड़ी प्रहार से चलने वाला ऊंट ।

कामठ-पु० धनुष ।

कामठड़ी, कामठो-देखो 'कामड़ी' ।

कामठिया-पु० १ कमठावतार । २ कच्छप । ३ देखो 'कामठ' ।

कामठी-पु० १ धनुष का चन्द्राकार होने वाला भाग ।
२ देखो 'कामठ' ।

कामण-स्त्री० [सं० कामण] १ शीतल हवा । २ वशीकरण
मंत्र, जादू टोना । ३ एक राजस्थानी लोक गीत ।
४ आर्द्रता, नमी । ५ देखो 'कामणी' । —गर, गारी-वि०
वशीभूत करने वाला । —हार-वि० जादूगर ।

कामणि (णी)-स्त्री० [सं० कामिनी] १ सुन्दर स्त्री । २ प्यार
करने वाली स्त्री । ३ स्त्री, श्रीरत । ४ डरपोक स्त्री ।
५ मदिरा, शराब । ६ युवती । ७ मालकोश की एक
रागिनी । —मोहणा-स्त्री० वीम मात्रा का एक छंद ।
कामदार-वि० [अ० कामदार] बेल बूटे आदि नक्काशी के
काम से युक्त, नक्काशीदार । —पु० १ जागीर या किसी बड़ी
जायदाद का प्रबंधक । २ प्रमुख कर्मचारी ।

कामना-स्त्री० [सं० कामना] १ इच्छा, अभिलाषा । २ मनोरथ ।
कामनि (नी)-देखो 'कामणी' ।

कामरू-स्त्री० आसाम की एक देवी । —देस-पु० यामाम का
प्राचीन नाम ।

कामल-देखो 'कंबल' ।

कामला-स्त्री० एक वर्णिक छंद विशेष ।

कामलपौ, कामली, कामली-पु० [सं० कंबल; कामला]

१ ऊनी वस्त्र, कम्बल । २ रक्त विकृति का रोग विशेष ।

३ एक बड़ा वृक्ष । ४ एक अन्य प्रकार का वृक्ष ।

कामवल्सी-देखो 'कामलता' ।

कामह्री-स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

कामांग-पु० [सं० काम-अंग] ग्राम वृक्ष ।

कामाक्षी, कामाखी-स्त्री० [सं० कामाक्षी] १ आसाम की एक देवी । २ दुर्गा ।

कामागनि, (नी, गि, ग्नी)-स्त्री० [सं० काम+अग्नि] काम की उवाला ।

कामातुर-वि० [सं० काम+आतुर] रतिक्रीड़ा के लिये व्याकुल ।

कामारि-पु० [सं० काम+अरि] शिव, महादेव ।

कामि-देखो 'कामी' ।

कामिण, (णी, नी,)-देखो 'कामिणी' ।

कामित-वि० इच्छित ।

कामियौ, कामी, कामुक-वि० [सं० कामी, कामुक] १ कामुक, विषय-लोत्पुल । २ व्यभिचारी, लंपट । ३ रसिक अय्याश । ४ प्रेमी । ५ इच्छुक, अभिलाषी, कामना करने वाला । -पु० [सं० कामुक:] १ चकवा । २ कबूतर । ३ चन्द्रमा । ४ सारस । ५ पति । ६ एक शुभ लक्षण का घोड़ा । ७ बादल ।

कामु (की)-स्त्री० १ छिनाल या अय्याश औरत । २ एक वन का नाम ।

कामू-वि० १ उपयोगी । २ उपयोग के लिये महत्वपूर्ण । ३ अधिक कार्य वाला । ४ कार्य कुशल । ५ विषयी, कामी । ६ गर्भ धारण करने वाली गाय । ७ देखो 'काम' ।

कामेड़ी-वि० कार्य करने वाला ।

कामेत, कामेती, कामेती-पु० (स्त्री० कामेतण) कामदार, प्रधान कार्य कर्ता ।

कामेतण-वि० प्रियतमा ।

कामोद-पु० १ विष्णु । २ मालकोश का पुत्र एक राग । ३ चांदी, रूपा । ४ देखो 'कामोदणी' ।

कामोदोपण, (पन)-वि० [सं० काम+उद्दीपन] कामेच्छा को उद्दीप्त करने वाला ।

कामी-देखो 'काम' ।

काय-स्त्री० १ कौए की बोली । २ एक राजस्थानी खेल । -कि० वि० १ किसलिये, क्योंकर । २ क्या । -अव्य०-या, अथवा । -सर्व० १ किस । २ क्यों । ३ कुछ ।

कायक-देखो 'काइक' ।

कायगी-देखो 'कौ' (वी) ।

कायगी-पु० १ रहट की माल की एक लकड़ी । २ देखो 'कंची' ।

कायणी-देखो 'काइणी' ।

कायरी-सर्व० १ क्या । २ किसका । ३ काहेका ।

काव-स्त्री० पतली-लंबी टहनी ।

कावर-१ देखो 'कंवर' । २ 'कावर' ।

कावली-स्त्री० चील ।

कावली-पु० (स्त्री० कावली) १ गिद्ध जाति का एक सफेद पक्षी । २ कौआ ।

कांस-पु० [सं० काश] १ एक प्रकार की घास । २ कंस ।

कांसी-स्त्री० [सं० कांस्य] एक प्रकार का मिश्र धातु ।

कांसु, कांसु-कि० वि० कैसे । -सर्व० १ किससे । २ कौनसा । ३ क्या ।

कांसखोज-स्त्री० विजली, विद्युत् ।

कांसो-पु० १ भोजन परोसा हुआ थाल । २ ग्रामंत्रित व्यक्ति के न ग्राने पर उसके घर भेजा जाने वाला भोजन का थाल । ३ भोजन का अंश । [सं० कांस्य] ४ कांसी का पात्र । [फा० कामः] ५ दरियाई नारियल का बना फकीरों का भीख मांगने का पात्र । छप्पर ।

कांहि, कांहिक-कि० वि० १ कैसे । २ क्योंकर । -वि० कुछ, कुछेक ।

कांहित-कि० वि० किसलिये ।

काही-वि० कुछ । कहीं । -सर्व० क्या । किसी ।

का-पु० १ शेषनाग । २ रथ । ३ दिन । ४ प्रकाश । ५ निरादर । ६ पृथ्वी । -वि० १ अल्प । २ कायर । -सर्व० १ क्या । २ कोई । ३ कुछ । -अव्य० या, अथवा । -प्रत्य० पण्डि विभक्ति का चिह्न ।

काअंतर-देखो 'कांतर' ।

काअति (तो)-देखो 'कांति' ।

काअर-देखो 'कायर' ।

काइ-सर्व० १ कुछ । २ क्यों । ३ कोई । ४ अथवा । ५ क्या ।

काइक-१ देखो 'काइक' । २ देखो 'कोई' ।

काइव-देखो 'काव्य' ।

काइम-देखो 'कायम' ।

काइमी-स्त्री० १ कमजोरी, प्रशक्तता । २ चक्कर, घबराहट ।

काइमी (मरी)-पु० ईश्वर । -वि० कमजोर ।

काइयरता, काइरता-देखो 'कायरता' ।

काइर-देखो 'कायर' ।

काइरी-१ देखो 'कायरी' । २ देखो 'कायर' । (स्त्री० काइरी) ।

काई-स्त्री० १ जल में होने वाली बारीक घास । २ पानी का मैल । ३ मैल, पंक । ४ लील । -वि० १ क्लान्त, थकित । २ परेशान, तंग । ३ कुछ । -सर्व० कोई । किसी । क्या । -अव्य० या, अथवा ।

काउ (ऊ)-सर्व० कीन। क्या। किस। -पु० कीवे की
ग्रावाज, कांव-कांव।
काउसग (ग)-पु० [सं० कायोत्सर्ग] १ शारीरिक व्यापार का
त्याग। २ शरीर की ममता का त्याग। (जैन)
काक-पु० [सं०] १ कौवा। २ बोतल का डाट। -वि० श्वेत।
श्यामः। -कंठ-वि० धुन्नवर्ण। -इ-पु० कंकर। कच्चे
बेर। -इ-पु० कपास के बीज। एक वृक्ष विशेष।
-नदी-स्त्री० जंसलमेर की एक नदी।
काकड़-पु० शृगाल, सियार।
काकड़ासिगी-स्त्री० [सं० कर्कट शृंगी] एक प्रकार की पर
जीवी वनस्पति जो काकड़ा वृक्ष पर चढ़कर फैलती है।
काकड़ियो-पु० १ एक प्रकार का सुगंधित घास। २ छोटी
काकड़ी। ३ कंकर।
काकड़ी-स्त्री० [सं० कर्कटो] ककड़ी-फल।
काकड़ी-पु० १ एक प्रकार का वृक्ष। २ एक प्रकार का हिरन।
३ कपास का बीज।
काकपव-पु० [सं०] छूटे हुए शब्द के लिए प्रयुक्त चिह्न।
काकपुसट-स्त्री० [सं० काकपुष्ट] कोयल, कोकिला।
काकब-पु० ओटा कर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
काकबली-स्त्री० [सं० काकबलि] श्राद्ध के दिन कौवों को
खिलाया जाने वाला भोजन।
काकबांस (झी)-स्त्री० [सं० काकबंध्या] एक संतान के बाद
बंध्या होने वाली स्त्री।
काकभुसुंडी-पु० [सं० काकभुण्डि] एक ब्राह्मण जो लोमश
ऋषि के शाप से कौवा हो गये।
काकर-स्त्री० [सं० कर्कर] १ कपड़ा घोने की सिला।
२ कंकर।
काकरी-देखो 'कांकरी'।
काकरेची-स्त्री० एक प्रकार का घोड़ा। २ एक प्रकार का रंग।
काकरी-देखो 'कांकरी'।
काकळ-पु० युद्ध, संग्राम।
काकळहरी-स्त्री० एक भाड़ी विशेष।
काकस-स्त्री० चचेरी सास।
काकसरी-पु० चचिया श्वसुर।
काकाणी-वि० १ काका के वंशज। २ चचेरा।
काका-स्त्री० १ मसी। २ काकोली।
काकाई-वि० चचेरा।
काकातुघ्री-पु० तोते की जाति का एक सफेद पक्षी।
काकाळका-स्त्री० [सं० काकालिका] हरड़।
काकाह-पु० [सं०] भफेद घोड़ा।
काकीडी-पु० गिरगिट।

काकी-स्त्री० १ चाची। २ मादा कौवा। -बडिया-स्त्री०
चाचियांव ताइयां। -सासू-स्त्री० चचेरी सास। -सुसरी
-पु० चचिया श्वसुर।
काकुसथ (स्त, स्थ)-पु० [सं० काकुस्थ] १ श्रीरामचन्द्र।
२ एक सूर्यवंशी राजा, ककुस्थ। -कुळ-पु० श्रीराम।
काफू-सर्व० किससे, किसको।
काकोजो-पु० चाचा।
काकोबर (घर)-पु० [सं० काकोवरः] (स्त्री० काकोदरी)
सर्प, सांप।
काकोरी-पु० छोटा कंकर।
काकी-पु० १ पिता का भ्रानुज, चाचा। २ कौवा।
काख-स्त्री० कांख। -बिलाय-पु० कांख का फोड़ा।
काखेंयक-स्त्री० [सं० कौसयक] तलवार।
काखोळी-स्त्री० [सं० कक्षालात] कांख का फोड़ा, कंखवार।
काग-वि० सतर्क, सावधान। देखो 'काक'। देखो 'कागज'।
कागड़ी-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा।
कागज-पु० [फा०] सन, बांस, रूई आदि को गला कर बनाया
हुआ पदार्थ विशेष जो लिखने व छापने के काम आता है,
पत्र। २ चिट्ठी, पत्र। ३ समाचार-पत्र। ४ प्रामाणिक
दस्तावेज। ५ एक लोक गीत।
कागजी-वि० १ कागज का, कागज संबंधी। २ लिखित।
३ कागज का बना। ४ दिखावटी। -नीबू-पु० पतले
छिलके का रसदार नीबू। -बादाम-स्त्री० पतले
छिलके की बादाम। -सबूत-पु० लिखित साक्ष्य।
प्रमाण।
कागडवि (वी)-वि० कठोर।
कागडोड-पु० द्रौण काक।
कागण-पु० १ ज्वार की फसल का एक रोग। २ कागत्र-पत्र।
कागणी-देखो 'कांगणी'।
कागव (इपौ)-पु० कागज। -बाई-स्त्री० कागज की
लिखा-पढ़ी।
कागदीजवान-वि० निर्बल, भ्रष्ट।
कागनर-पु० धरावली पहाड़ में होने वाला एक शीघा।
कागबांस, (झी)-देखो 'काकबांस'।
कागभसुंड, (भुसंड, भुसुंड)-देखो 'काकभसुंडी'।
कागमुखीसंडासी-स्त्री० एक प्रकार की संडासी।
कागमुखी (मुही)-पु० प्रागे से तीखा व लम्बा मकान।
-वि० कौवे के मुख के समान।
कागर, कागल-देखो 'कागज'।
कागलियो-पु० [सं० काकलक] १ तालू के पीछे गले में लटकने
वाला मांस, गल तुंडिका। २ कौवा। ३ बादल का छोटा
खण्ड। ४ देखो 'कागज'।

कागली-स्त्री० चिट्ठी-पत्री ।

कागली-पु० [सं० काक] (स्त्री० कागली) कौवा ।

कागली-१ देखो 'कागलिया' । २ देखो 'कागली' ।

कागवाय (वाव)-पु० ऊंटों का एक रोग ।

कागवौ-पु० बेलगाड़ी की नोक ।

कागरोटी-स्त्री० पास विशेष ।

कागरोठ (ली)-पु० १ शोरगुल, हुल्लड़ । २ कौवों की कांव कांव की ध्वनि ।

कागोठ-स्त्री० श्राद्ध के दिन कौवों को खिलाया जाने वाला भोजन ।

कागोसड़-पु० छोटे-छोटे बादल ।

कागो-पु० १ जोधपुर का एक तीर्थ स्थान । २ देखो 'काक' ।

काड़ा-देखो 'कड़ाह' ।

काच-पु० [सं० काचः] १ दर्पण, आइना, शीशा । २ एक पार दर्शक पदार्थ जो कई काम आता है । ३ जांच । ४ नेत्रों का एक रंग । ५ मोम । ३ खारी मिट्टी । -वि० काला, कृष्णः ।

काचड़कूटी, (गारी)-वि० (स्त्री० काचड़कूटी (गारी) १ निदक, चुगल खोर । २ बेगारी । ३ किसी कार्य में घास काटने वाला । -पु० १ बेमेल वस्तुओं का मिश्रण । २ अव्यवस्थित कार्य ।

काचड़ी-पु० १ निदा, अपयश । २ चुगली, शिकायत ।

काचड़ी-स्त्री० काच के छोटे टुकड़े जड़ी हुई लाख की चूड़ी ।

काचमय (मै)-वि० काच युक्त, काच के घोंस से बना ।

काचर (रियो, री)-पु० १ ककड़ी जाति का छोटा-फल ।

२ शोखेदार मांस । ३ एक प्रकार का शिरोभूषण ।

काचठ-वि० १ काच का, काच संबंधी । २ कायर डरपोक ।

काचो-वि० (स्त्री० काची) १ अपरिपक्व, कच्चा । २ अपूर्ण, अधूरा । ३ अस्थिर । ४ अशक्त, कमजोर । ५ नीच पतित । ६ कायर, डरपोक । ७ अनुभवहीन । ८ जो आंच पर न पका हो । ९ असत्य, झूठ । १० निराधार । ११ निकृष्ट । १२ अस्थाई । १३ नया । -कुररी-पु० अच्छी फसल न होने वाला वर्ष । कच्चा ।

काच्छली-वि० १ कच्छ देश का । २ कच्छ संबंधी । -पु० १ कच्छ का निवासी । २ कच्छ का चारण ।

काछ (लि)-स्त्री० [सं० कक्ष] १ जाधों का संघिस्थल । २ अंडकोण । ३ लंगोट । ४ धोती की लांग । ५ छोटी नेकर, कच्छी । [सं० कच्छः] ६ जल के पास की भूमि । ७ कच्छ देश । ८ कच्छ की एक देवी । ९ सयणी देवी का एक नाम । १० कच्छ देश का एक घोड़ा । -जती-वि० जितेन्द्रिय । चरित्रवान । -इड़, इड़ी-वि० चरित्रवान ।

-पंचाळ (ळी)-स्त्री० कच्छ और कच्छ के पास का पंचाल प्रदेश । उक्त प्रदेशोत्पन्नदेवी । -पाक-वि० जितेन्द्रिय । मच्चरित्र । -राय-स्त्री० भावद देवी का नाम । -बाचू-वि० जितेन्द्रिय ।

काछड़, काछड़ियो (ड़ी)-पु० १ भाय का नवजात बछड़ा । २ घटनों तक का पहनावा, कच्छा ।

काछण-स्त्री० कच्छ प्रदेश की घोड़ी ।

काछनी-स्त्री० १ छोटी कच्छी । २ घोती, कछोटा । ३ कटि, कमर ।

काछब, काछबियो, काछबो (बो)-पु० [सं० कच्छप] १ कच्छप । २ ऊपर कोट का एक राजा । ३ उक्त राजा की प्रशस्ती का एक लोक गीत । ४ कच्छप अवतार ।

काछबो-पु० १ कछुए की पीठ के रंग का घोड़ा । २ देखो 'काछबी' ।

काछियो-पु० कछनी, कच्छा, पुरुषों का छोटा अधोवस्त्र ।

काछी-वि० कच्छ का, कच्छ संबंधी । -पु० १ घोड़ा, अश्व । २ कच्छ का घोड़ा । ३ एक जाति विशेष । ४ ऊंट ।

-कुरंग-पु० हिरन के रंग का कच्छ का घोड़ा । -कुरियो-पु० ऊंट । एक लोकगीत । -मंगळ-पु० जामुनी रंग का घोड़ा ।

काछु, काछु-देखो 'काछ' ।

काछेल-स्त्री० काछेला चारणों की देवी । -वि० कच्छ का ।

काछेला-स्त्री० चारणों की एक जाति । -वि० कच्छ का ।

काछी-पु० डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

काज-पु० [सं० कार्य] १ कार्य, काम । २ कर्म, कर्तव्य, व्यवसाय, उद्योग । ३ प्रयोजन, उद्देश्य । ४ सोलह संस्कारों के अन्तर्गत एक । ५ पहिने के वस्त्रों में बना बटन का छेद । -क्रि० वि० लिये, वास्ते, निमित्त । -किरियावर, किरियावर-पु० सोलह संस्कारों के अन्तर्गत महत्वपूर्ण कार्य । -मैन-पु० मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान ।

काजकिरायवरी, काजकिरियावरी-वि० श्रेष्ठ कार्य करने में यश प्राप्त व्यक्ति ।

काजळ-पु० [सं० कज्जल] १ दीपक के धुएँ की कालिख जो आंख में डाली जाती है, अंजन । २ सुरमा । ३ नील कमल । ४ बादल । ५ एक पर्वत । ६ श्याम रंगी गाय । -वि० काला, श्यामः । -कर-पु० दीपक, ज्योति । -गिर, गिरि-पु० काला पहाड़ । -घलाई-स्त्री० विवाह संबंधी एक रश्मि । -घुजा, छुजा-पु० दीपक ।

काजलिया (ळी)-वि० काले रंग की, श्याम वर्णी । -तीज-स्त्री० मादव कृष्णा तृतीया ।

काजलियो-पु० काले रंग का वस्त्र । -वि० काले रंग का ।
 काजली-स्त्री० १ काली घटा । २ काजलियानीज ।
 काजो-पु० [अ०] १ न्यायकर्त्ता, मुंसिफ । २ निकाह पढ़ने वाला । ३ उद्देश देने वाला ।
 काजू-पु० एक प्रकार का सूखा भेवा ।
 काजे, (जै)-क्रि० वि० लिए, वास्ते ।
 काठ-पु० [सं० विट्] १ लोहे का मैल, जंग । २ कलंक, दोष । ३ दाम । ४ दुर्गुण, ऐव । ५ विरोध । ६ निंदा । ७ वैर । ८ कपट, छल । ९ पाप । १० क्रोध । ११ खण्डन । १२ काटने की क्रिया या भाव । १३ कमी । १४ ताश के खेल में तुरूप का रंग —क-वि० क्रीधी, उग्र । शक्तिशाली ।
 काटक-वि० १ जबरदस्त, शक्तिशाली । २ देखो 'कटक' ।
 काटकड़ी-स्त्री० कटाकट की ध्वनि ।
 काटकरणी (बी)-क्रि० १ क्रोध करना । २ आक्रामक होकर आना । ३ कड़कना ।
 काटकि (की)-स्त्री० विद्युत, बिजली ।
 काटकूटी-पु० मार-काट । ध्वंस, विनाश ।
 काटण-स्त्री० १ काटने की क्रिया या भाव । २ काटने का औजार । -वि० १ काटने वाला । २ नीच, दुष्ट ।
 काटणी (बी)-क्रि० [सं० कर्त्तन] १ किसी औजार या कैंची से काटना, कतरना । २ काट-छांट करना, कमी वेशी करना । ३ लिखावट पर कलम फेरना । ४ छण्डित करना । ५ पीसना । ६ रगड़ना । ७ निकालना, हटाना । ८ विछिन्न करना । ९ धाव करना । १० डंक मारना । ११ डसना । १२ विभाजन करना । १३ फाड़ना । १४ रद्द करना ।
 काटल-वि० १ जंग लगा हुआ । मुरचा युक्त । २ कपटी । ३ नीच दुष्ट ।
 काठी-पु० १ पहलवान । २ हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा बेल । ३ जग । -वि० १ शक्तिशाली । २ देखी 'काठी' ।
 काठीजणी (बी)-क्रि० १ जंग खाना, जंग लगना । २ काटा जाना । ३ कर्मला होना ।
 काठी-पु० १ रुपया या वस्तु के लेन-देन में कमी करके अलग किया जाने वाला अंश । कमी । कटौती । २ रसीद देने पर लिया जाने वाला कर ।
 काठ-पु० [सं० काष्ठ] १ लकड़ी, सूखी लकड़ी । २ शव दाह की लकड़ी । ३ देव वृक्ष । ४ कंदी की यातना देने का मोटा लट्ठा । ५ नाव, डोंगी । -वि० कठोर । —काट-पु० लकड़-हारा, बड़ई, जंग खाने वाला । —गढ़-पु० लकड़ी का दुर्ग । —गणगोर-पु० एक प्रकार का छोटा वृक्ष । —गुणौ-पु० दीवार की चुनाई मापने का उपकरण । —पैरी-स्त्री० काठ की चकरी । —खण-पु० अग्नि । लकड़ी का कांडा ।

—अमरणी-स्त्री० काठ चकरी । —सेड़ी, सेड़ी-स्त्री० कठोर स्तनों वाली गाय या भैंस ।
 काठड़ियौ-पु० भैंस का बच्चा ।
 काठमांडू-पु० [सं० काष्ठ-मण्डप] १ नेपाल की राजधानी का नगर । २ लकड़ी का मण्डप ।
 काठा-स्त्री० १ बादाम की एक किस्म । २ गेहूं की एक किस्म । ३ ढोलियों की एक शाखा ।
 काठि (मांण, मांणी) - पु० १ काठियावाड़ की एक जाति । २ घोड़ा । -वि० काठियावाड़ का, काठियावाड़ संबंधी ।
 काठिया-पु० [सं० कण्टिक] १ जिस कारण से जीव हित का कार्य न कर सके । २ बिना सिचाई के हीने वाले लाल गेहूं ।
 काठियावाड़-पु० १ गुजरात का एक प्रदेश । २ घोड़ा ।
 काठियावाड़ी-वि० काठियावाड़ संबंधी । -पु० १ उक्त प्रदेश का घोड़ा । २ उक्त प्रदेश का निवासी ।
 काठी-स्त्री० १ घोड़े का चारजामा, जीन । २ लकड़ियों का गट्टर, भारो । ३ शरीर का गठन । ४ लकड़हारा । ५ म्यान । ६ एक जाति । ७ एक राजपूत वंश । ८ काठियावाड़ का घोड़ा । -वि० १ सख्त । २ कंजूस । ३ कठोर हृदय । ४ हड़, मजबूत । ५ काठियावाड़ का ।
 काठीघो (घी)-पु० [सं० कण्टिक प्रा. कठ्विष] द्वारपाल । -वि० जीव के हितकारी कार्य में विघ्न डालने वाला ।
 काठेड़ी, काठेड़ियी-पु० १ नवजात भैंसा । २ जयपुर राज्यान्तर्गत एक प्रदेश ।
 काठेड़ी-देखो 'काठी' (स्त्री० काठीड़ी) ।
 काठीतरी-पु० आटा गूंदने का काष्ठ का पात्र, परात ।
 काठी-वि० (स्त्री० काठी) १ कृपण, कंजूस । २ मितव्ययी । ३ सख्त, कठोर । ४ हड़ । ५ तंग, संकुचित । ६ मोटा, गाढ़ा । ७ कम लचीला । ८ बहुत, अधिक । ९ पूर्ण, पूरा ।
 काड-पु० शिष्ट । उपस्थ ।
 काडणी (बी)-क्रि० १ निकालना । २ बाहर करना । ३ निरावरण करना । ४ खीलकर दिखाना । ५ अलग करना । ६ ढूँढ निकालना । ७ घी या तेल में तलना । ८ बाकी निकालना । ९ कपड़ों पर बेलवूट बनाना ।
 काडी-देखी 'काठी' ।
 काड़-स्त्री० निकालने की क्रिया या भाव ।
 काडणी (बी)-देखी 'काडणी' (बी) ।
 काड़ाक-वि० खोजने, निकालने में निपुण ।
 कढ़ेची-स्त्री० एक देवी विशेष ।

काढ़ी-पु० [सं० क्वाथ] काष्ठादि श्लेषधियों का क्वाथ ।
 काण्डी-वि० कानी, एकाक्षी ।
 कात-स्त्री० १ काटने का औजार । २ कतिया । ३ कैंची ।
 ४ एक प्रकार का शस्त्र । ५ कतरने का ढंग या क्रिया ।
 ६ काता हुआ घागा । —क-पु० कातने वाला । कार्तिकेय ।
 कातकसाम-पु० स्वामि कार्तिकेय ।
 कातकी-स्त्री० [सं० कार्तिकी] कार्तिकी पूर्णिमा ।
 —वि० कार्तिक संबंधी ।
 कातणी (बो)-क्रि० चरखे, तकली या 'देरे' पर रुई, ऊन, कच्चे
 सूत आदि का डोरा बनाना ।
 कातर-पु० १ भेड़ या ऊंट की ऊन काटने की बड़ी कैंची ।
 २ कैंची । ३ कतरन । ४ एक प्रकार का शस्त्र । —वि०
 [सं०] १ कायर, डरपोक । २ अधीर, व्याकुल ।
 कातरही-देखो 'काठोतरी' ।
 कातरियों-पु० १ स्त्रियों के भुजा का आभूषण । २ गाड़ी के
 पहियों का लोहे का घेरा । ३ देखो 'कातरौ' ।
 कातरौ-पु० खरीफ की फसल के साथ उत्पन्न होने वाला
 एक रेंगने वाला कीड़ा जो फसल को हानि पहुंचाता है ।
 कातरया-स्त्री० हजामत ।
 कातळ-स्त्री० १ पत्त, परत । २ पत्थर की पट्टी का खण्ड ।
 ३ बनजारों द्वारा रखा जाने वाला लकड़ी का एक शस्त्र ।
 ४ देखो 'कातिल' ।
 कातळी-स्त्री० शरीर की बनावट ।
 कातळी-पु० १ कतरा । २ तकुआ ।
 कातिक, कातिग, कातिग, कातिय-पु० [सं० कार्तिक]
 कार्तिक मास । —सुर-स्वामिकार्तिकेय ।
 कातियी (तोमो)-पु० जबड़ा, जबड़े की हड्डी ।
 कातिळ-वि० [ग्र० कातिल] बंध करने वाला, मारने वाला,
 बधिक, हत्याश ।
 काती-पु० [सं० कार्तिक] १ कार्तिक मास । २ शस्त्र विशेष ।
 कातीन-पु० एक प्रकार का शस्त्र ।
 कातीरौ, कातीसरो-पु० [सं० कार्तिक+राज. सरी] खरीफ
 की फसल ।
 कातुर-वि० [सं०] कायर, भीम ।
 कात्याइन, कात्याइणी, कात्याणी, कात्याणी-स्त्री० [सं०
 कात्याणी] १ उमा, पार्वती । २ नौ दुर्गाओं में से एक ।
 ३ चौसठ योमिनियों में से नौवीं योमिनी । ४ काषाय वस्त्र
 धारी स्त्री । ५ प्रवेड प्रायु की विधवा ।
 कात्र-देखो 'कातर' ।
 काथ-पु० १ शरीर । २ सामर्थ्य, शक्ति । ३ क्षमता । ४ चरित्र ।
 ५ वृत्ति, कथा । ६ वैभव । ७ शीघ्रता । ८ क्वाथ, काढ़ा ।
 —क्रि० वि० शीघ्र गुरंत ।

काथरटो-देखो 'काठोतरी' ।
 काथरौ-वि० १ शीघ्रता करने वाला । २ स्थिर रहने वाला ।
 काथळी-स्त्री० मिट्टी का घड़ा, मटकी ।
 काथी-पु० [फा० कथा] खैर की लकड़ियों का काढ़ा जो पान
 में खाया जाता है । —वि० १ बलवान, शक्तिशाली ।
 २ भयंकर, जबरदस्त । ३ तेज, तीव्र । ४ शीघ्रता करने
 वाला । ५ व्यग्र, आतुर । —क्रि० वि० शीघ्र, गुरंत ।
 कादंब-पु० [सं० कदम्बः] १ मेघ, बादल । २ तीर, बाण ।
 ३ देखो 'कदंब' । ४ देखो 'कादंबनी' ।
 कादंबनी-स्त्री० [सं० कादम्बिनी] मेघमाला ।
 कादंबरी-स्त्री० [सं०] १ कदम्ब के पुष्पों की खींची शराव ।
 २ शराव ।
 कादंबाणी (बिणी, बिनी)-स्त्री० [सं० कादम्बिनी] मेघमाला ।
 कादम (म्भ)-पु० [सं० कर्दमः] १ कीचड़, दलदल । २ देखो
 'कादंबनी' ।
 कादमियोबुखार-पु० यौ० जोर्षा उदर ।
 कावमी-स्त्री० १ कमजोरी से होने वाला पसीना । २ बीने के
 लिए कृषि भूमि दी जाने के उपलक्ष में ली जाने वाली
 रकम ।
 कावर-वि० [सं० कायर] कायर, डरपोक ।
 कावरियों-पु० सुंफियों का एक सम्प्रदाय ।
 कावरी-स्त्री० १ पहिने का एक वस्त्र विशेष । २ कवच ।
 कावव-पु० [सं० कर्दम] कीचड़, पंक ।
 कावागो-स्त्री० [सं० कर्दम गोधा] कीचड़ में रहने वाली गोह ।
 काविम, कावू, कावो-पु० [सं० कर्दमः] १ कीचड़, पंक,
 कादा । २ बूझा, कचरा । ३ मैल । ४ द्रव पदार्थ का मैल ।
 ५ सोने-चांदी में मिलाया जाने वाला विजातीय धातु ।
 काववेय-पु० [सं०] नाम, सर्प ।
 काप-पु० १ वस्त्रों की कटाई । २ सिलाई के ग्राम छोड़ा जाने
 वाला या अन्दर दबाया जाने वाला वस्त्र का ग्रंथ ।
 कापड़-पु० कपड़ा, वस्त्र । —छाण-पु० महीन वस्त्र से छानने
 की क्रिया । —वि० महीन वस्त्र से छाना हुआ ।
 कापड़िया-स्त्री० भाटों की एक शाखा ।
 कापड़ी-स्त्री० गणगौर का उत्सव मनाने वाली क्वारी कन्या ।
 २ देखो 'कापड़िया' ।
 कापड़ी-पु० कपड़ा, वस्त्र ।
 कापण (णी)-वि० १ काटने वाला । २ नष्ट करने वाला,
 गिटाने वाला । ३ संहार करने वाला ।
 कापणी (बो)-क्रि० १ काटना, कतरना । २ नष्ट करना,
 मिटाना । ३ संहार करना, मारना । ४ कम करना ।
 ५ व्यय करना । ६ खण्ड-खण्ड करना ।
 कापथ-पु० [सं०] १ शराब मड़क । २ कुपथ कुमार्ग ।

कापरी-पु० कपड़ा, वस्त्र ।

कापाळ (लिक)-पु० [सं० कापालिक] शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत तांत्रिक एवं श्रमोरी साधु ।

कापी-स्त्री० पंजिका ।

कापुर-वि० १ तुच्छ, हीन । २ नीच, दुष्ट । ३ नगण्य ।

कापुरख, कापुरस (पुरुष)-वि० [सं० कापुरुष] १ कायर, डरपोक । २ कृपण, कंजूस । ३ नीच, पतित । ४ हीन ।

काफर-वि० [अ० काफिर] १ भिन्नधर्मावलंबी । २ नास्तिक ।

काफरी-स्त्री० एक बहुमूल्य बन्दूक ।

काफली, काफिली-पु० [अ० काफिलः] यात्रियों का समूह, झुंड ।

काफी-स्त्री० १ एक राग विशेष । २ कहवा । -वि० पर्याप्त, बहुत ।

काबर-स्त्री० १ एक प्रकार का पक्षी । २ देखो 'काबरी' ।

काबरझी-पु० चितकबरा माँप । -वि० चितकबरा ।

काबरियो-पु० १ कबूतर के आकार का एक पक्षी । २ कबरा कुत्ता । ३ एक प्रकार का सर्प । -वि० (स्त्री० काबरी, काबरकी) चितकबरे रंग का ।

काबरी-स्त्री० १ कबरी गाय । २ कबरी चिड़िया ।

काबरी-पु० कबरा सर्प । -वि० चितकबरा ।

काबल-१ देखो 'काबिल' । २ देखो 'काबुल' ।

काबलियो-पु० १ मुसलमान, यवन । २ काबुल का निवासी ।

काबलियत-स्त्री० योग्यता, विद्वत्ता, पांडित्य ।

काबली-वि० काबुल का, काबुल संबंधी । -पु० १ सफेद चना । २ काबुल का घोड़ा ।

काबा-स्त्री० १ एक लुटेरी जाति । २ चूहों की एक जाति । ३ छोटा बच्चा ।

काबाड़ी-देखो 'कबाड़ी' ।

काबिज, काबिल-वि० [अ०] १ योग्य, लायक । २ विद्वान, पंडित । ३ योग्य, अधिकारी, हकदार ।

काबिलो, काबिलियत-स्त्री० काबलियत, योग्यता ।

काबी-स्त्री० [फा० काबा] कुश्ती का एक दाव ।

काबुल-पु० [फा०] १ अफगानिस्तान की राजधानी का नगर । २ इस नगर के पास वाली नदी ।

काबुली-देखो 'काबली' ।

काबू-पु० [तु०] १ अधिकार । २ वश, जोर । ३ श्रद्धा, ४ दबाव ।

काय-स्त्री० [सं०] १ देह, तन, काया । २ तना । ३ मूल धन । ४ समुदाय । ५ तार रहित वीणा । ६ संग्रह । ७ घर । ८ पैरा । ९ स्वभाव, प्रकृति । -क्रि० वि० [सं० किम्] क्यों, कैसे । -अव्य० या, अथवा, क्योंकि । -मर्ब० क्या ।

कौन । किस । कोई । -वि० १ थोड़ा, कुछ । २ काया संबंधी, दैहिक ।

कायजौ-पु० १ सवारी के लिए घोड़े को सुसज्जित, करने का ढंग । २ सुसज्जित घोड़े की लगास को खींच कर दुमकी में बांधने की क्रिया । ३ इस प्रकार बांध कर तैयार किया हुआ घोड़ा ।

कायय-पु० कायस्थ ।

कायथरा-पु० १ ऐश्वर्य, वैभव । २ मलवा ।

कायथा-स्त्री० [सं० कायस्था] हरीतकी, हरे ।

कायवाई-वि० नियम संबंधी ।

कायदौ-पु० [अ० कायद] १ नियम । २ कानून । ३ परम्परा, रीति । ४ रश्म । ५ मान, प्रतिष्ठा, शर्म । -कुरख-पु० प्रतिष्ठा, डज्जत ।

कायफळ-पु० [सं० कटफल] एक वृक्ष विशेष की छाल जो औषधि में काम आती है ।

कायव (बौ)-देखो 'काव्य' ।

कायन-वि० [अ०] १ ठहरा हुआ, स्थिर । २ तय शुदा, निश्चित । ३ मौजूद, तैयार । ४ दृढ़, पक्का, ठोस । -क्रि० वि० अधिकार में । -मुकाम-वि० एवजी, स्थानापन्न ।

कायमान-स्त्री० घास-फूस की भोंपड़ी ।

कायमी-वि० (स्त्री० कायमी) १ अशक्त, कमजोर । २ अयोग्य । ३ दुर्बल । ४ कायर ।

कायम्म-देखो 'कायम' ।

कायर-वि० [सं० कातर] १ डरपोक, भीरु । २ कमजोर । ३ नपुंसक ।

कायरता (कायरी)-स्त्री० [सं०] १ भीरुता, डर । २ कमजोरी । ३ नपुंसकता ।

कायरी-वि० (स्त्री० कायरी) भूरी आँखों वाला । -पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

कायल-वि० [अ०] १ तर्क-वितर्क में परास्त । २ हार मानने वाला । ३ कायर, भीरु । ४ प्रभावित । ५ डरपोक । ६ हैरान, तंग, पोजित ।

कायलाणी-पु० १ ऐसा वन जहाँ जलाशय होता है तथा सब प्रकार के प्राणियों की शिकार मिल सकती है । २ इस वन के मध्य का तालाब ।

कायली-स्त्री० [अ० काहिली] १ सुस्ता, आलस्य । २ थकावट, कमजोरी । ३ लज्जा, श्लाघा । ४ शराब का नशा उतरने के बाद की थकान या सुस्ती । ५ मटक ।

कायस-स्त्री० १ चिढ़ने से होने वाला दुःख । २ राह, जलन । ३ बक-भक्त ।

कायसबा-स्त्री० [सं० कायसबा] हरीतकी, हरें ।

काया-स्त्री० [सं०] १ शरीर, देह, तन । २ तना, पेड़ । ३ एक प्रकार की झरी । —कल्प-पु० उपचार । चिकित्सा से शरीर में आने वाला निखार । —गव-हरणी-स्त्री० हरें, हरीतकी । —चाळी-पु० युद्ध । —जळ-पु० नेत्र, नयन । —घर, धार-पु० मनुष्य । —पलट-पु० नव निर्माण । —सज-पु० नेत्र, नयन ।

कायी-वि० (स्त्री० कायी) हेरान, परेशान, तंग ।

कारंजी-पु० एक वृक्ष विशेष ।

कारंड, कारंडव-पु० [सं० कारंडवः] १ एक प्रकार की बतख । २ एक प्रकार का हंस ।

कार-स्त्री० [सं० कारा] १ सीमा, सरहद । २ सीमा रेखा । ३ मर्यादा । ४ काम, कार्य । ५ मदद, सहायता । ६ असर । ७ कगार । ८ दूत, चर । ९ कुछ शब्दों के आगे लगकर संज्ञत्व बोध कराने वाला प्रत्यय । १० छोटी मोटर । —आमब-वि० उपयोगी । —गर-वि० असरदार । —गुजार-पु० मली प्रकार कर्तव्य पालन । कार्य कौशल । —बोम-पु० जरूरीतारी का कार्य । —बार-पु० ध्वसाय, व्यापार । —मुख-पु० अर्जुन । धनुष । —साजी-स्त्री० कार्य बनाने की कला । होशियारी, चालाकी ।

कारक-पु० [सं०] १ व्याकरण में मात प्रकार के कारकों में से कोई एक । २ संज्ञा व सर्वनाम का क्रिया से संबंध जोड़ने वाला शब्द । ३ विधाता, विधि । ४ शब्दों के आगे लगकर गुणबोध कराने वाला प्रत्यय । —वि० करने वाला । —बोधक-पु० एक अर्थालंकार ।

कारकून-पु० [फा०] १ लिपिक, लेखक (क्लर्क) २ किमी के प्रतिनिधि रूप में काम करने वाला । ३ किसी की ओर से प्रबन्ध करने वाला ।

कारख-स्त्री० [सं० कातुष्य] १ राख, भस्मी । २ कारिख, कात्सिख । ३ विद्वेष । ४ विद्वेषजन्य बुरी भावना । ५ मन का मेल ।

कारखानी-पु० [फा० कारखाना] १ लकड़ी, लोहा आदि का व्यापारिक सामान बनाने की दुकान या यन्त्रशाला । २ निर्माण-कक्ष । ३ उद्योग-स्थल । ४ कारखाना, व्यवसाय । ५ खजाना, धनागार । ६ टुकड़ा । ७ जवाहिर खाना । ८ अतःपुर विशेष । ९ विभाग, महकमा । १० निजी, निवास के प्रतिरिक्त भवन ।

कारङ्ग-देखो 'कारट' ।

कारज (जौ)-पु० [सं० कार्य] १ काम, कार्य । २ कर्तव्य । ३ उद्देश्य, भवन्त्र । ४ मृत्यु भोज । ५ अग्निम संस्कार ।

कारट-पु० १ मृतक-संस्कार कराने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति । २ खेल में दिया जाने वाला चकमा । ३ पोस्टकार्ड ।

कारटून-पु० हास्य चित्र ।

कारण (णियो)-पु० [सं०] १ वह आचार जिस पर किसी बात का निर्णय अवलम्बित हो । २ वजह । ३ हेतु, निमित्त । ४ प्रयोजन, उद्देश्य । ५ साधन जरिया । ६ तत्त्व, सार । ७ मूल बात । ८ कर्त्ता, जनक । ९ गर्भ, आधान । १० वंशज । ११ प्रीति, प्रेम । १२ इन्द्रिय । १३ शरीर । १४ चिह्न । १५ दस्तावेज, प्रमाण । १६ निदान, हल । १७ विष्णु । १८ शिव । १९ श्रीकृष्ण । २० मान, प्रतिष्ठा । २१ गौरव । —करण-पु० ईश्वर । —भाळा-स्त्री० एक अर्थालंकार । —सरीर-पु० नैमित्तिक शरीर (वेदान्त) ।

कारणई-देखो 'कारण' ।

कारणीक-वि० १ कुछ करने योग्य । २ बुद्धिमान, चतुर । ३ अद्भुत, विचित्र । ४ काम करने वाला । ५ कारण उत्पन्न करने वाला । ६ प्रतिष्ठावान, प्रभावशाली । ७ चालाक, घूर्त । ८ उत्पाती ।

कारण-क्रि० वि० कारण से, वास्ते, लिए ।

कारणोपाधि-पु० ईश्वर ।

कारतक-देखो 'कारतिक' ।

कारतबीरज (बीरज)-पु० कृतवीर्य का पुत्र सहस्रबाहु ।

कारतिक-पु० [सं० कार्तिक] १ स्वामिकार्तिकेय । २ कार्तिक मास ।

कारतूस-पु० बन्दूक की गोली ।

कारतिक-देखो 'कारतिक' ।

कारतीक-देखो 'कारणीक' ।

कारमुकासण (न)-पु० [सं० कार्मुकामन] चौरासी आसनों में से एक ।

कारमी-वि० (स्त्री० कारमी) १ कमजोर अशक्त । २ कायर, भौर । ३ व्यर्थ बेकार ।

कारय, कार्य-देखो 'कारज' ।

कार्यारथी-वि० [सं० कार्याधिन्] १ अपने कार्य को सफल करने का इच्छुक । २ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील । ३ प्रार्थी । ४ किमी दावे की वकालत करने वाला ।

कारवां, (न)-पु० [फा०] यात्री-समूह, काफिला ।

कारस्कर-पु० [सं० कारस्कर] कृपाक नामक वृक्ष ।

कारा-स्त्री० १ कैद । २ बंधन । ३ कैदखाना, कारागार । ४ पीड़ा, क्लेश । [सं० कार्पुः] ५ गोबर का महीनतम मूखा चूरा । —गार, ग्रह-पु० कैदखाना, जेल । —ग्रह-राक्षस-पु० इन्द्र । —सघन-पु० कारागार ।

कारायण-पु० १ भाग्य, नसीब । २ मस्तिष्क ।
 कारिदौ-पु० [फा० कारिदः] कर्मचारी । गुमास्ता ।
 कारिज (जौ)-देखो 'कारज' ।
 कारिमौ-देखो 'कारमी' (स्त्री० कारिमी) ।
 कारी-स्त्री० १ युक्ति, उपाय । २ समाधान । ३ इलाज, चिकित्सा । ४ आँख की गन्ध चिकित्सा । ५ फटे वस्त्र या टूटे-फूटे बर्तनों में लगाया जाने वाला जोड़ । ६ हस्त-कौशल ।
 कारीगर-पु० [फा०] १ शिल्पी । २ कलाकार । ३ मिस्त्री ।
 कारीगरी-स्त्री० [फा०] १ कला । २ शिल्प । ३ कौशल, दक्षता । ४ चतुराई । ५ कारीगर का कार्य । ६ कारीगर का पारिश्रमिक ।
 कारीस-पु० [सं० कारीय] उपलों का चूरा ।
 कारुण्यसिंधु, (सिंधु)-देखो 'करुणासिंधु' ।
 कारु-पु० [सं० कारु] १ करने वाला, कर्ता । २ कारिदा, नीकर । ३ कलावाला कारीगर । ४ युवा हाथी या हाथी का बच्चा ।
 कारौ-पु० १ भगडा, तकरार । २ दंगा, फिसाद । ३ निंदा, अपकीर्ति । ४ शिकायत । ५ एक जाति विशेष का घोड़ा ।
 कार्लक (ग)-पु० कल्कि अवतार ।
 कार्लतर-देखो 'कालतर' ।
 काळंदर (दार)-देखो 'काळिंदर' ।
 काळंदी, काळंदी-स्त्री० जमुना । —सौंदर-पु० यमराज ।
 काळ-पु० [सं० काल] १ यमराज, महाकाल । २ मृत्यु, मौत । ३ प्रतिम, समय । ४ शनिग्रह । ५ शिव । ६ विष्णु । ७ मर्त्य, माय । ८ लोहा । ९ अकाल, दुष्काल । १० समय । ११ समय का विभाग । १२ सिंह । १३ तीन की संख्या* । १४ सातवा चौपड़िया । १५ वीररस । १६ व्याकरण में क्रियाओं के रूपों से सूचित होने का समय ।-वि० १ काला । २ क्रूर । ३ तीन* । —घंजनी-पु० सीने पर ध्याम रंग की भंवरी वाला घोड़ा । —आखरी-पु० मृत्यु संदेशक । मृत्यु की खबर का पत्र । —कूट-पु० विप, अहंर, भयंकर विप । काला बच्छताम । सींगिया जाति का पौधा । —कोठड़ी (रौ)-स्त्री० कंद खाते की बहुत तंग और अंधेरी कोठरी जहाँ कैदी रखे जाते थे । —कोड-पु० यमराज । —गत-वि० मृत । भूत । व्यतीत । —स्त्री० काल गति, चक्र । —चकर, (चक्क, चक्र)-पु० समय का फेर । —जीरण-पु० मृत्युंजय । —संप, संपी, सांपी-वि० मौत से लड़ने वाला । —रंड-पु० ज्योतिष का एक योग । —डूत-पु० यमदूत । —रक्षण, रात, रात्रि, रात्री-स्त्री० कानरात्रि । अमावस्या की रात । भयंकर अंधेरी रात ।

प्रलय की रात । दीपावली के पूर्व की रात । शिव रात्रि । चौमठ में से बाईसवीं योगिनी ।
 काल (उ)-पु० [सं० कल्य] १ तड़का, मवेरा । २ घाने वाला दिन, अगला दिन । ३ तुलना कर दोनने की क्रिया । —वि० तुलना कर बोलने वाला ।
 काळउ-१ देखो 'काळी' । २ देखी 'काळ' ।
 काळकंध-पु० [सं० कालस्कंध] तमाल-पत्र ।
 काळक-देखो 'काळिका' ।
 काळकड़ी-देखो 'काळी' । (स्त्री० काळकड़ी)
 काळका-देखो 'काळिका' ।
 कालकी-वि० १ पगली । २ कल की ।
 काळकी-देखो 'काळी' ।
 काळक, काळबख, काळख, काळण-पु० [सं० कलुष, कल्मष] १ कालिया । २ काला रंग । ३ तबे की कालिख । [सं० कालिकम्] ४ कलंक, दोष, पाप । ५ कृष्ण चंदन ।
 काळचाळही (चाळी)-पु० १ युद्ध । २ युद्धोन्मत्त घोड़ा ।
 काळज-देखो 'काळजी' ।
 काळजवन-पु० १ कालयवन, राक्षस । २ गीदाली ग्रन्थरा व गर्ग ऋषि के संयोग से उत्पन्न एक यवनराज ।
 काळजुर (ज्वर)-पु० छोटे का एक रोग विशेष ।
 काळजियी-देखो 'काळजी' ।
 काळजीबो (जोबो)-वि० (स्त्री० काळजीबी) १ काली जिह्वा वाला । २ अशुभ भापी ।
 काळजौ-पु० [सं० कलेज] १ प्राणी के शरीर का रक्त संचारक प्रमुख अवयव, दिल, हृदय । २ लुनी, वल्लस्थल । ३ हिम्मत, साहस । ४ मन ।
 काळणि-स्त्री० घंघेरी, ग्रंथकार ।
 काळदार-देखो 'काळिंदार' ।
 काळद्री-देखो 'काळिंदी' ।
 काळनळ-देखो 'कालानळ' ।
 काळप-स्त्री० १ दुष्काल की अवस्था या भाव । २ दया, करुणा ।
 कालप-स्त्री० पागलपन ।
 काळपी-स्त्री० मिश्री का एक भेद ।
 काळपूछिपी-वि० १ जंतान, जवरदस्त । २ काली पूंछ वाला । —पु० १ काली पूंछ का मर्ष । २ काले बालों वाली पूंछ का बेल ।
 काळपूछी-स्त्री० काले बालों वाली पूंछ की भैंस ।
 काळब-पु० १ श्वेत शरीर व काले पांखों वाला घोड़ा । २ यमदूत ।

काळबुट-पु० [फा० कालबुत] चमारों के काम घाने वाला एक लकड़ी का गट्टा ।
 काळबेलिया-पु० १ सपेरा, गारुड़ी । २ काळबेलिया जाति का व्यक्ति ।
 काळबंतक-पु० [सं० कालवृन्तक] उड़द की तरह एक मोटा अनाज ।
 काळम-देखो 'काळिमा' ।
 कासम-पु० १ पागलपन । २ मस्ती । ३ कोष्ठक ।
 काळमा-देखो 'काळिमा' ।
 काळमी-स्त्री० श्याम रंग की घोड़ी ।
 काळमुंह, (मुंछी, मुंही)-पु० काले मस्तक व मुंह वाला घोड़ा ।
 काळमूक-पु० मूर्ख ।
 काळमेछ-पु० कालयवन ।
 काळमोख-स्त्री० दाख, दाक्ष ।
 काळयो-देखो 'काळी' ।
 कालर-पु० १ घास का संग्रह या ढेर । २ पत्थर का एक कीड़ा । ३ स्त्रियों के पैरों का एक आभूषण विशेष । ४ खराब भूमि । ५ ऊमर भूमि । ६ कीचड़, पंक । ७ पहनने के वस्त्र में गले के ऊपर लगने वाली पट्टी । ८ स्त्रियों का कण्ठाभरण ।
 काळब-पु० [सं० काल] महाकाल, मृत्यु, मौत ।
 काळवाचक, काळवाची-वि० [सं० कालवाचक कालवाच्य] समय सूचक, समय बोधक (व्याकरण) ।
 काळवादी-वि० १ जगत को काल कृत मानने वाला । २ काल (समय) की पक्ष करने वाला । (जैन)
 काळवी-देखो 'काळमी' ।
 काळव-स्त्री० [सं० कालुष्य] १ कालिमा, कालिख । २ कलंक, दोष ।
 काळसार-पु० [सं० कालसारः] काले रंग का हिरन, कृष्णमृग ।
 काळसेय-पु० [सं० कालेशयम्] १ दही । २ मट्ठा, छाछ ।
 काळांग (न)-पु० १ एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी मजबूत होती है । २ देखो 'कळायण' ।
 काळांतर-पु० उल्लिखित समय से भिन्न या बाद का समय ।
 काळाआखरियो, काळाआखरी-पु० मृत्यु का समाचार देने वाला पत्र तथा इस पत्र का वाहक ।
 काळाई-स्त्री० १ पागलपन । २ नादानो । ३ मूर्खता ।
 काळाकंबल-पु० १ करणीदेवी का एक नाम । २ काली ऊन का वस्त्र ।
 काळाकेस (बाळ)-पु० १ मुलेन्द्रिय के बाल । २ युवावस्था के बाल ।
 काळाखरी-देखो 'काळाआखरी' ।

काळागर-पु० अफीम ।
 काळानळ (झळ)-पु० [सं० काल-अनल] १ मृत्यु की घण्टि । २ प्रलय की अग्नि । ३ काल, मौत । ४ योगियों के अग्निकुण्ड की आग ।
 काळायण-देखो 'कळायण' ।
 काळायस-पु० [सं० कालायस] १ लोह । २ देखो 'काळाम' ।
 काळहण (हणी)-वि० [सं० काल-अयन] १ प्रलय कारिणी । २ देखो 'कळायण' ।
 काळिक (ग), काळिगडो, काळिगौ-पु० १ उषा कालीन एक राग विशेष । २ तरबूज की जाति का वर्षा ऋतु में होने वाला एक फल विशेष । ३ एक पक्षी विशेष । ४ देखो 'कल्कि' ।
 काळिबर, काळिबार-पु० १ सर्प, सांप । २ काला सर्प ।
 काळिदी (दी)-स्त्री० [सं० कालिन्दी] १ यमुना नदी । २ श्रीकृष्ण की एक पटरानी । ३ एक रागिनी ।
 काळिका (वका)-स्त्री० [सं० कालिका] १ शक्ति, देवी, महाकाली । २ कालिका देवी । ३ दुर्गा देवी । ४ कालिख । ५ स्याहि, मसि । ५ शराब मदिरा । ६ आंख की पुतली । ७ चार वर्ष की कन्या । ८ दक्ष की कन्या । ९ कश्यप ऋषि की पत्नी । १० हरे, हरीतकी । -वि० श्याम रंग की ।
 काळिज, (जो)-देखो 'काळजो' ।
 काळिपर, काळिपार-पु० १ कृष्ण भृग । २ कृष्ण सर्प । -वि० कपटी धूर्त ।
 काळियो-पु० १ अफीम । २ काली नाग । ३ श्रीकृष्ण । ४ साधारण घास । ५ शिरोष जाति का एक बड़ा वृक्ष । -वि० काला, श्याम ।
 काळीगडो, काळीगौ-देखो 'काळिगडो' ।
 काळीबर-देखो 'काळिबर' ।
 काळी-पु० १ काली नाग । २ नाग, सर्प । ३ अफीम । -स्त्री० ३ महाकाली, दुर्गा । ४ काली माता । -वि० १ कृष्ण वर्णी, काला । २ जवरदस्त । -कांठळ, घटा-स्त्री० श्याम घटा । -बमण-पु० श्रीकृष्ण ।
 कासी-वि० पगली पागल ।
 काळोड-पु० एक प्रकार का आभूषण ।
 काळीचकर (चक)-पु० महाकाली का अस्त्र ।
 काळीचोठी-स्त्री० १ राजाओं द्वारा राजपूत को पुरस्कार में दी गई भूमि का प्रमाण-पत्र । २ मृत्यु संदेश-पत्र ।
 काळीजोरी-स्त्री० एक ग्रीष्म विशेष ।
 काळीताली-स्त्री० अकाल के समय लिया जाने वाला एक लगान विशेष ।

काळीवह (बाह, वो, दह)—पु० १ वृन्दावन के पास यमुना नदी का एक कुण्ड । २ अत्यन्त काला ।
 काळीधार (धह)—क्रि० वि० १ बहुत बुरे ढंग में । २ देखो 'काळीवह' ।
 कालीनदी—स्त्री० १ यमुना । २ मालवा की एक नदी का नाम ।
 काळीपहाड़ (पाड़)—पु० एक प्रकार का पहाड़ी पौधा विशेष ।
 काळीपीली (बोली)—वि० १ अशुभ एवं भयंकर । २ क्रोधावेश युक्त । —स्त्री० १ भयंकर व गहरी आंखी । २ अंधेरी ।
 काळीबूई—स्त्री० एक प्रकार का क्षुप विशेष ।
 कालोमिरच—स्त्री० काली एवं गोल मिरच ।
 काळीमूसली—स्त्री० एक औषधी विशेष ।
 कालोरात—देखो 'काळरात्रि' ।
 काळीसर—स्त्री० कृष्ण सारिवा ।
 काळीसिंध—स्त्री० बम्बल की एक सहायक नदी ।
 कळीसीतळा—स्त्री० एक प्रकार की चेचक ।
 काळीमुत्तन—पु० गणेश, गजानन ।
 कालुग्री—पु०—एक प्रकार का षोड़ा ।
 काळूंडी—स्त्री० [सं० कालतुण्ड + रा. प्र. ई] १ बदनामी, अपकीर्ति । २ कलंक, दोष ।
 कालुग्री—देखो 'कालुग्री' ।
 काळूस—देखो 'काळस' ।
 काले—क्रि० वि० [सं० कल्य] १ आने वाले या गत दिवस को । २ कल ।
 कालेज—पु० [धं०] स्नातक एवं उससे ऊपर की पढ़ाई का विद्यालय ।
 कालेयक—पु० [सं० कालेयम्, कालीयक] १ केसर । २ कलेजा । ३ एक प्रकार का चंदन ।
 काळेरौ—पु० काला हिरन ।
 काळनळ—पु० कालाग्नि ।
 कालें—देखो 'काले' ।
 कालोप—वि० काल या यमराज के सदृश, भयंकर, भयावह ।
 काळोवा, काळोवाच—पु० पशुओं का एक वात रोग ।
 काळौ—पु० [सं० कालः] १ काला सर्प । २ हाथी । ३ काला रंग । ४ अफीम । ५ श्रीकृष्ण । ६ कलंक । ७ काला भैरव । ८ काला पदार्थ । ९ अपयश का या अवैधानिक कार्य । १० अनिष्ट-कारी कार्य । ११ षोड़ा विशेष । १२ ऊंट विशेष । —वि० १ कृष्ण वर्णी, श्याम, काला । २ प्रकाशहीन, अंधकार युक्त । ३ कपटी, धूर्त । ४ बदनाम, कुरूप । ५ अस्वच्छ, सलिन । ६ निंदनीय, बुरा । ७ योद्धा, वीर । ८ अशुभ, भयंकर, ९ नीला । १० महान, जबरदस्त । —कट, कीट, कुट—वि० अत्यन्त काला । —खेत—पु० कानी मिट्टी की उपजाऊ

भूमि । वर्षा के पानी से फसल होने वाले खेत । —जुर—पु० काला-ज्वर । —तुड, धह—वि० गहरा काला । —नमक—पु० एक प्रकार का नमक । —पटौ—पु० नौकरी के उपलक्ष में मिलने वाली जागीर की 'सनद' । —पांणी—पु० एक प्रकार की सजा । अंडमान निकोबार । —मजरंग, भूँछ, मिट—वि० अत्यन्त काला । —मांगड़ी—पु० कृष्ण भृंगराज । —मोडल—पु० कृष्ण अभ्रक । —भूँडी—पु० अपकीर्ति, कलंक । देश निकाला । हमेशा के लिये स्थान का त्याग । —लूण—'काळोनमक' । —सुरमौ—पु० कृष्णांजन । कालौ—वि० (स्त्री० काली) १ पागल । २ उन्मत्त । —पांणी शराब, मदिरा ।
 काल्ह, काल्हि, काल्है—देखो 'काल या कल' ।
 कावड़ (ड़ि)—स्त्री० १ काष्ठ पट्टियों की चित्रित पुस्तिका । २ इस पुस्तिका संबंधी कविता । ३ टोकरीयों का तराजू बहंगी । ४ एक जाति विशेष । —वि० १ कुटिल । २ बुरा । ३ कुबड़ा ।
 कावड़ियाँ—वि० १ कावड़ दिखाने वाला । २ बहंगी में बोझा देने वाला ।
 कावतरी—पु० धोका, छल, कपट, प्रपंच ।
 कावर—देखो 'कावर' ।
 कावरजाळी—वि० कपटी । धूर्त ।
 कावळ—वि० १ बुरा । २ निकृष्ट । ३ विपरीत ।
 कावळयार—वि० १ कपटी, छलिया । २ धूर्त, चालाक । ३ उत्पाती । ४ विघ्नकारक । ५ कुटिल । ६ पाखंडी । ७ दोषी । ८ खोटा ।
 कावळयारी, कावळाई—स्त्री० १ चालकी, धूर्तता । २ छल, कपट । ३ उत्पात । ४ विघ्न, बाधा । ५ कुटिलता । ६ पाखंड । ७ दोष । ८ खोट ।
 कावळियार, कावळियाळ, कावळियाँ—देखो 'कावळयार' ।
 कावळी—स्त्री० १ बंगड़ी, चुड़ी । २ देखो कावली ।
 कावळी—वि० (स्त्री० कावळी) भयंकर, भोषण । —पु० १ एक प्रकार का रंग वाद्य । २ कीवा ।
 कावेरी—स्त्री० [सं०] १ रंडी, वेश्या । २ हल्दी । ३ दक्षिण भारत की एक नदी । ४ एक रागिनी विशेष ।
 कावौ—पु० [फा० कावा] १ षोड़े को वृत्त में घुमाने की क्रिया । २ चक्कर, फेरा ।
 काव्य—पु० [सं०] १ पद्य मय कोई रचना । २ कविता, शायरी । ३ कविता या पद्य मय रचना की पुस्तक । ४ पद्य मय कथा या इतिवृत्त । ५ कोई स्मात्मक वाक्य या पंक्ति । [सं० काव्यः] ६ शुक्राचार्य का एक नाम । ७ कवि ।

८ प्रसन्नता । ९ स्वस्थता । १० बुद्धि । ११ ईश्वरीय प्रेरणा । १२ स्फूर्ति । १३ विद्वान्, पण्डित । १४ चौबीस मायाओं का एक छंद विशेष । १५ बहतर कलाओं में से एक ।

कास-पुं० [सं० काशः या काशम्] १ एक तृण विशेष ।

२ इस तृण का पुष्प । ३ खांसी रोग । -वि० श्वेतः ।

कासग-सर्व० १ किसका, किसकी । २ देखो 'काउसग' ।

कासगरहीउ, कासगि-देखो 'काउसग' ।

कासप (ब)-पुं० [सं० कश्यप] १ कश्यप ऋषि । २ मांस ।

३ कछुआ । -सुतन-पुं० सूर्य । गरुड़, अरुण का नाम ।

कासपी-पुं० [सं० काश्यपि] १ गरुड़ । २ सूर्य ।

कासबांणी-पुं० १ सूर्य । २ गरुड़ । ३ गरुड़ का बड़ा भाई ।

कासमेरी-स्त्री० १ एक देवी का नाम । २ काश्मीरी ऊन का वस्त्र ।

-वि० काश्मीर का ।

कासर-पुं० [सं० कासरः] १ जंगली भैंसा । २ देखो 'कासार' ।

कासलक (बक)-देखो 'कासलक' ।

कासार-पुं० [सं० कासार] १ तालाब । २ देखो 'कासर' ।

कासारी-स्त्री० [सं० कासर] भैंस, महिषी ।

कासि-देखो 'कामी' ।

कासिका-स्त्री० पाणिनीय व्याकरण पर एक प्रसिद्ध वृत्ति ग्रंथ ।

कासिदा (सौद)-पुं० १ संदेश वाहक । १ दूत । २ इरादा करने वाला ।

कासिबी, कासीबी-स्त्री० १ संदेश वाहक का कार्य । २ इस कार्य संबंधी पद । ३ दूतकर्म । ४ उक्त कार्य की मजदूरी ।

कासी-स्त्री० [सं० काशी] १ सप्त मोक्ष पुरियों में से एक पुरी । २ आधुनिक बनारस का नाम । ३ उत्तर भारत का एक तीर्थ । ४ कास रोग, खांसी । -वि० विपुल, बहुत ।

—करबत, करबत, करोत-पुं० काशी का एक तीर्थ स्थान ।

मोक्ष के लिए काशी में जाकर कटने का भ्रार । -पत, पति-पुं० शिव, महादेव । -फळ-पुं० कुम्हड़ा, कट्ठू ।

कासीद (क)-देखो 'कामिद' ।

कासीबी-देखो 'कासिबी' ।

कासीस (क)-पुं० एक धातु विशेष ।

कासू, कासू, कासू-क्रि० वि० १ कैस, किस प्रकार से । २ किस कारण से । ३ क्या । -स्त्री० [सं० कासू] १ बरछी । २ शक्ति नामक जस्त्र ।

कासौ-पुं० [फा० कासः] भूमलमान फकीरों का भिक्षापात्र ।

कास्टघटन-पुं० बहतर कलाओं में से एक ।

कास्टफळ-पुं० दाख, दाक्षा ।

कास्टा-स्त्री० दिशा । -वि० कष्ट प्रद । देखो 'कास्टा' ।

काष्ठ-पुं० [सं० काष्ठ] १ लकड़ी, काष्ठ । २ इन्धन ।

कास्टा-स्त्री० [सं० काष्ठा] १ अर्वाधि । २ सीमा, हृद ।

३ चरम सीमा । ४ उत्कर्ष । ५ ऊंचाई, चोटी ।

६ अट्टारह पल का समय या काल का ३०वां भाग ।

७ चन्द्रमा की कला । ८ दिशा ।

कास्त-पुं० [फा० काश्त] १ कृषि कार्य । २ जुताई ।

—कार-पुं० कृषक । खेतिहर ।

कास्मीरी-पुं० एक प्रकार का वस्त्र । -वि० काश्मीर का, काश्मीर संबंधी ।

कास्यावत-पुं० एक प्रकार का घोड़ा ।

काह-स्त्री० [सं० काश] नदी किनारे दल-दल में होने वाली घाम । -क्रि० वि० १ कहां से । २ अथवा, या । -सर्व० १ कौनसा । २ क्या ।

काहण-क्रि० वि० क्यों, किसलिये ।

काहरउ (ऊ)-पुं० काड़ा, वषाध ।

काहरा-क्रि० वि० १ कब, किस समय । २ कहां ।

काहल-पुं० [सं० काहल] १ युद्ध में बजने वाला बड़ा ढोल । २ दो लघु के गणगण के द्वितीय भेद का नाम । ३ जीघ्रता । ४ भय ।

काहलणौ (बौ)-क्रि० १ डरना, भयभीत होना । २ कांपना, घृजना ।

काहलाई-देखो 'कालाई' ।

काहलि-वि० [अ० काहलि] १ डरपोक, कायर । २ काहिल, सुस्त । ३ अधीर, व्यग्र । [सं० काहल] ४ परेशान । ५ सूखा ।

६ मुरझाया हुआ । ७ उत्पत्ती । ८ देखो 'कायली' ।

काहली-स्त्री० [सं०] युवती । युवास्त्री ।

काहिक-सर्व० कौनसी, किस ।

काहिल-क्रि० वि० किसलिए ।

काहिलौ-स्त्री० [सं० कथनी] कथन, कथनी, वचन ।

काहिल (ली)-देखो 'काहलि' ।

काही-सर्व० किसी ।

काहुल-देखो 'काहलि' ।

काहुलणौ (बौ)-क्रि० [सं० क्रोध-विह्वलम्] १ क्रोध करना, जोश करना । २ युद्ध करना । ३ भिड़ना ।

काहू-सर्व० १ क्या । २ कैसा । ३ कोई । ४ किसी । -वि० कुछ ।

काहूल-देखो 'काहलि' ।

काहे, काहेर-क्रि० वि० क्यों ।

काहेर-सर्व० किस, कुछ ।

काहेली-स्त्री० [सं० काहेऽऽलय] १ मटक । २ थराब की खुमारी ।

कि-सर्व० [सं किम्] क्या ।

किउं कि-वि० १ कुछ । २ क्योंकि ।

किकर (रिण, री) -स्त्री० [सं० किकिणी] १ करधनी, मेखला । २ छोटी धंटी ।

किकर-पु० [सं०] (स्त्री० किकरि, री) १ सेवक, दास । २ अनुचर ।
३ राक्षसों की एक जाति । ४ घोड़ा । ५ कामदेव ।
६ भ्रमर । ७ लाल रंग ।

किकिनी-देखो 'किकिणी' ।

किचित-वि० [सं०] १ थोड़ा, अल्प । २ तनिक । ३ न्यून ।

किचुळ-पु० [सं० किचुलुक] केंचवा ।

किजळक (ळिक) -पु० [सं० किजळक] १ केसर । २ पराग, पुष्प रज । ३ कमल का पुष्प । ४ पुष्प का रेशा ।

किवणी (बो) -कि० हरे पीले या नर्मो वाले पदार्थों का दवे रहने या उमस वाले स्थान पर अधिक रहने के कारण सड़ना ।

किदर-१ देखो कंदरा । २ देखो 'किन्नर' ।

किदरपह-पु० कंदरा निवासी, सिद्ध ।

किदू, किदूड़ी-देखो 'कदूड़ी' ।

किदू-अव्य० १ अथवा, या । २ मानो ।

किनरेस-पु० [सं० किन्नर + ईश] कुवेर ।

किपाक-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

किपि-वि० [सं० किम्-अपि] कुछ, कुछ भी ।

किपुरसेस (खेसर) किपुसख, किपुसस, किपुससेस-पु० [सं० किपुस] १ कुवेर । २ किन्नर ।

किवाड़ी-देखो 'किवाड़ी' ।

किमाड़-देखो 'कपाट' ।

किववंती-स्त्री० [सं०] १ जन-श्रुति । दंतकथा । २ कहावत ।

किवाड़-देखो 'कपाट' ।

किवाड़िणी-पु० [सं० कपाट] १ छोटा कपाट । २ वक्ष स्थल के एक बाजू का हिस्सा ।

किवाड़िया (रिया) बोल-पु० कपाट खोलकर भिक्षा लेने के लिए भन्दर जाने व बाहर आने पर लगने वाला दोप ।

किवाड़ी-स्त्री० १ श्रमचियों या पट्टियों का छोटा दरवाजा, कपाट । २ छोटा कपाट । ३ पशुओं के बाड़ों पर निया जाने वाला कर ।

किसारी-देखो 'कसारी' ।

किसुक, (ख) -पु० [सं० किशुक] १ पलाश, ढाक । २ तोता, सुग्रा । -वि० १ कुछ । २ लाल ।

किह, किहो-सर्व० किसी । कोई ।

कि-पु० १ श्रीकृष्ण । २ इंद्र । ३ सूर्य । ४ शिकारी । ५ गुरा ।
६ विचार । -स्त्री० ७ लक्ष्मी । ८ अग्नि । ९ निदा ।

१० जुगुप्सा । -वि० १ प्रसन्न । २ तुच्छ । ३ वृथा ।
-अव्य० १ मानो । २ या, अथवा । ३ किस तरह, कैसे ।
-सर्व० क्या ।

किआवर-देखो 'क्यावर' ।

किआवरी-देखो 'क्यावरी' ।

किउं, किऊं-कि० वि० १ क्यों । २ कैसे, किस तरह । -वि० कुछ ।

किकंध-देखो 'किस्किंधा' ।

किकर-कि० वि० कैसे । -वि० कैसी, किस प्रकार की ।

किको-देखो 'कीको' ।

किखि-पु० [सं० कीश] बंदर । -वि० [सं० कृश] दुर्बल, कृश ।

किड़क-स्त्री० १ उच्च कर या चमक कर मागने की क्रिया या भाव । २ देखो 'कड़क' ।

किड़कणी (बो)-देखो 'कड़कणी' (बो) ।

किड़किड़ो-स्त्री० १ क्रोध में दांत पीसने की क्रिया या भाव ।
२ सर्दों के कारण होने वाली दांतों की कट-कट ।
३ जोश, आवेश । ४ साहस, हिम्मत । ५ बल शक्ति ।
६ देखो 'कड़ीकड़ी' ।

किड़की-देखो 'कड़की' ।

किड़वा-स्त्री० किसी के आने-जाने, बोलने-चालने, हिलने-डुलने से होने वाला धीमा शब्द, आहट ।

किचकारी-स्त्री० पशुओं को हांकने के लिए मुंह से की जाने वाली किचकिच ध्वनि ।

किचकारी-देखो 'किचकारी' ।

किचकिच, किचकिचाहट-स्त्री० १ पशुओं को हांकने की ध्वनि ।
२ स्त्रियों की सांकेतिक ध्वनि । ३ किसी बात पर असहमति या नकारात्मक उत्तर देने की ध्वनि । ४ विवाद, तकरार । ५ चर्चा ।

किचकिची-स्त्री० १ क्रोध में दांत पीसने की क्रिया । २ साहस, हिम्मत । ३ जोश आवेश । ४ अरुचि ।

किचपिच-देखो 'कचपिच' ।

किचरणी (बो)-कि० १ रोदना, कुचलना । २ चवाना ।

किचळावणी (बो)-कि० रह होता ।

किटकड़ो-पु० १ शिर, मस्तक । २ गोपड़ी ।

किटकली-स्त्री० जलाने की छोटी लकड़ी ।

किटकिट-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ दंत कटाकट ।
३ देखो 'किचकिच' ।

किटिस-पु० [सं०] १ मत्कुल, मच्छर । २ खटमल । ३ जू ।

किट्टी-स्त्री० [सं० किट्ट] १ रात का मैल । २ तनछट ।

किठई-कि० वि० कहाँ, किम जगह ।

किरा-सर्व० [सं० किम] १ किस, किसने । २ कौन । -पु०
[सं० किरा:] १ 'आईटांरा' नामक निशान । २ जखम
भरने के बाद रहने वाला निशान ।
किराकतो-स्त्री० १ करखनी । २ कमर पर बंधी पतली डोरी ।
किराकी-पु० १ वाना, कण । २ टुकड़ा, खण्ड । ३ पतंग ।
४ शक्ति बल ।
किरागच-स्त्री० एक प्रकार की झाड़ी, करंज ।
किराबली(बो)-क्रि० १ बार-बार चिढ़ना । २ कृपणता दिखाना ।
३ टसकना । ४ पछतावा करना ।
किराबाली(बो), किराबाली(बो)-क्रि० १ बार-बार
चिढ़ना । २ कृपणता कराना । ३ पछतावा कराना ।
४ टसकना ।
किराजली(बो)-क्रि० १ टसकना । २ जोर लगाना ।
किरायक-सर्व० १ किसी । २ किसीने । ३ कोई । -क्रि० वि०
कभी ।
किरासारी-देखो 'कसारी' ।
किराहिक (हीक, हेक)-देखो 'किगयक' ।
किरा-क्रि० वि० किधर ।
किरागै-देखो 'कगसारी' ।
किरा-सर्व० १ किस, किसीने । २ कोई । ३ कौन ।
--क्रि० वि० कभी ।
किरायन-सर्व० किसी ने ।
किरायागर (गिरी)-देखो 'कगियागर' ।
किरायो-देखो 'कगियायो' ।
किरा, किराक-देखो 'किरा' ।
किरायक-देखो 'किरायक' ।
किरा-सर्व० किस, किमने, किमने ।
किरा-सर्व० किमका ।
कित-क्रि० वि० कहां, किधर ।
किनक-सर्व० कितने ।
कितक-१ देखो 'कितक' । २ देखो 'कितना' ।
कितना (ना)-वि० कितने ।
कितक-स्त्री० किस्मत, भाग्य ।
कितरड-सर्व० कितना ।
कितराइक, कितराई, कितराक, कितरायक, (हिक, हेक)
--वि० १ कितनेक । २ किमने ही । ३ कुद्रेक ।
कितरो'क-वि० किमनी ।
कितरेक, कितरैक (हेक)-वि० कितने ।
कितरोइ, कितरोइक, कितरो'क, कितरो, कितरोहेक,
कितलाइक, कितली-वि० कितना ।
कितव-वि० [सं० कितव] १ छड़ी, कपटी । २ लपट,
लवार । ३ जुझावी । ४ मुझा ।

कितां, किता-वि० (स्त्री० किती) कितने ।
किताइ, किताइक, (ई, ईक, एक) किताक-वि० कितने ही ।
किताब-स्त्री० [ग्र०] १ किताब पुस्तक । २ ग्रन्थ । ३ पंजिका ।
४ बही । ५ देखो 'खिताब' । -खानो-पु० पुस्तकालय ।
कितावें रखने का स्थान ।
कितावी-वि० १ पुस्तक का, पुस्तक संबंधी । २ केवल पुस्तक
तक सीमित ।
किति-देखो 'कीरति' ।
किति, कितिइक, कितिक, कितियक, कितो, कितोइक, कितोक
कितोयक, कितोयेक, कितेएक, कितेक, कितेयक, कितेयेक
(हेक) -वि० १ कितनी, कितनी ही । २ ज्यादातर ।
३ बहुत, कितने ।
किते (एक), कितेक (हेक)-क्रि० वि० १ कहां, किधर ।
२ देखो 'कितेक' ।
कितेब-देखो 'कतेब' ।
कितो-वि० (स्त्री० कितो) कितना ।
कितोइक, (एक) कितो'क, कितोयक, (रोक)-वि० कितना'क ।
कितोसोक, कितोसोक-वि० कितना मा, थोड़ा मा ।
कित-देखो 'कित' ।
कितो-१ देखो 'कीरति' २ देखो 'कितो' ।
कितो-देखो 'कितो' । (स्त्री० कितो) ।
कितोइक, कितोएक, कितोक, कितोयक-देखो 'कितो' ।
कित-वि० कहां ।
कित-सर्व० क्या ।
कितिए, कितिये, कितोय, किते, किते, कितो-क्रि० वि० कहां ।
किधर-क्रि० वि० कहां, किस ओर ।
किधुं, (धुं) किधुं-अव्य० १ या, अथवा । २ मानो ।
कित-सर्व० कौन, किस का बहुवचन । -क्रि० वि० कहां ।
अथवा, या ।
किनक, किनकी-पु० १ पतंग । २ देखो 'किराकी' ।
किनर-देखो 'किन्नर' । -पति, पति (ती) = 'किन्नरपति' ।
किनरेस-देखो 'किन्नरेस' ।
किनां, किना-क्रि० वि० १ या, अथवा । २ मानो । -सर्व०
१ क्या । २ किमका ।
किनारी-स्त्री० १ छोर, किनारा । २ वस्त्र के छोर पर लगने
वाली जरी, गोद आदि ।
किनारी-पु० [फा० किनारा] १ नदी या जलाशय की तीर,
किनारा, तट । २ वस्त्रादि का छोर । ३ सीमा, हद
४ हाशिया । ५ लम्बाई की ओर की कोर । ६ पार्श्व, बगल ।
३ तटस्थता । -क्रि० वि० तरफ, ओर ।
किनाराणी-स्त्री० तरंगी देवी का एक नाम ।

किनिया

(२३२)

किरखी

किनिया-देखो 'कन्या' । —बल-देखो 'कन्यावल' ।

किनै-सर्व० किसे, किमको । —क्रि० वि० किस तरफ । पास, निकट ।

किन्न-देखो 'कसर' ।

किन्नर-पु० [सं० किन्नर] (स्त्री० किन्नरी) १ संगीत विद्या में कुशल एक अश्वानर देव जाति । २ इस जाति का देवता । ३ गाने बजाने वाली एक जाति ।

किन्नरी-स्त्री० १ सारंगी । २ एक प्रकार की छोटी तंबूरी । २ किन्नर जाति की स्त्री ।

किन्नरेश-पु० [सं० किन्नरेश] धनपति, कुबेर ।

किन्ना-१ देखो 'किना' । २ देखो 'कन्या' ।

किन्नी-स्त्री० पतंग के मध्य का डोरा जिम पर मंझा बांधा जाता है ।

किन्या-देखो 'कन्या' —बल, बल='कन्यावल' । —रास, रासि, (सौ)='कन्यारसि' ।

किप-देखो 'कपि' ।

किपर-देखो 'कपर' ।

किफायत-स्त्री० १ काफी ३ अप्रति होने का भाव । २ कम खर्च । ३ थोड़े में काम चलने की स्थिति । ४ बचत ।

किफायती-वि० कम खर्च करने वाला, मितव्ययी ।

किबला-स्त्री० [अ०] १ पश्चिम दिशा । २ मक्का नामक पवित्र स्थान ।

किपि-वि० कुछ, कुछ भी ।

किम-सर्व० [सं० किम्] क्या । —क्रि० वि० कैसे ।

किमए-क्रि० वि० महान कष्ट से ।

किमकरि, किमन्न-क्रि० वि० कैसे ।

किमाड़, किम्माड़-देखो 'कपाट' ।

किमाड़ी-देखो 'किवाड़ी' ।

किमि-वि० कम । २ देखो 'किम' ।

किम्ह-क्रि० वि० कैसे ।

कियकर-देखो 'किकर' ।

कियां, किया-क्रि० वि० १ कैसे । २ क्यों, क्योंकर । ३ किधर ।

कियारथ-देखो 'कतारथ' ।

कियारी (रौ)-स्त्री० [सं० केदार] बमारी, केदार ।

कियावर-देखो 'क्यावर' ।

कियावरी (रौ)-देखो 'क्यावरि' । (रौ)

कियाह-पु० लाल रंग का घोड़ा । —क्रि० वि० कहाँ ।

किये, कियै-क्रि० वि० कहाँ ।

कियो-पु० १ कहने का कार्य । २ आदेश । —सर्व० कौनसा ।

किरंटी-पु० [सं० किरिटी] १ इन्द्र । २ अर्जुन । —वि०

—वि० मुकुटधारी ।

किरंड-देखो 'करंड' ।

किरंडी-पु० सर्प, मांप ।

किर-अव्य० मानो । —पु० १ निश्चय । [सं० किरि] २ मृगर, वराह । ३ किम्प । ४ पृथ्वी ।

किरड़-स्त्री० रहट की माल या रस्से को जोड़ने के काम आने वाली लकड़ी ।

किरक-१ दर्द । २ अस्थियों की पीड़ । ३ देखो 'करक' ।

किरकटी-पु० गिरगिट ।

किरकर-देखो 'किरकिर' ।

किरकांट (ठ)-१ देखो 'करकांट' । २ देखो 'कुरकांट' ।

किरकांट, (कांठियौ, कांठ्यौ, कांठियौ, कांठौ)-पु० १ गिरगिट । २ एक देशी खेल (गेवावाटी) ।

किरकिर, (रौ)-स्त्री० [सं० कंकर] १ पिसे हुए घाटे या खुरों के अन्दर रह जाने वाले धूलि कण । २ बारीक धूलि कण । ३ निदाजनक या हास्यास्पद अवस्था । ४ हंसी ।

किरकिरी धांनी-पु० [सं० किरकिराकखानः] १ ऊन । २ ऊनी वस्त्र । ३ तदशाह या राजा के सब प्रकार के बिना सिले कपड़ों का संग्रह स्थान । ४ इस प्रकार के कपड़ों संबंधी विभाग ।

किरकिरी-वि० [सं० कंकर] (स्त्री० किरकिरी) १ कंकर या धूलिकणों से युक्त । २ कंकरीला । ३ वेस्वाद । —पु० मीटे लोहे में छेद करने का एक औजार ।

किरकोळ-पु० परचून या फुटकर सामान ।

किरकौ-पु० १ टुकड़ा, खण्ड, दाना । २ शक्ति, बल । ३ साहस ।

किरकोड़-स्त्री० कंकाल, अस्थिपंजर ।

किरखी-स्त्री० [सं० कृषि] खेती, कृषि ।

किरण-पु० [सं० करटी] हाथी ।

किरगांठियौ-देखो 'किरकांठियौ' ।

किरड़णी (बौ)-क्रि० १ किमी टोम वस्तु को दांतों से चबाना । २ क्रोध या निद्रावस्था में दांत पीसना । ३ दांत पीसने से ध्वनि उत्पन्न होना ।

किरड़ा-स्त्री० [सं० कीड़ा] कीड़ा, बेल, भ्रामोद-प्रमोद ।

किरड़ियौ-देखो 'किरडौ' ।

किरडौ-पु० १ गिरगिट । २ हाथी ।

किरडू-स्त्री० १ रहट का रस्सा जोड़ने की काष्ठ की कील । २ अनाज को भिगोने या पकाने पर भी सूखा या मस्त रह जाने वाला दाना ।

किरडौ-पु० गिरगिट ।

किरच-स्त्री० १ एक प्रकार की मीठी तलवार । २ टुकड़ा या खण्ड ।

किरची-स्त्री० १ रेशम की लच्छी । २ कोई न्यूनतरा टुकड़ा, खण्ड । ३ टुकड़ा, खण्ड ।

किरचो-पु० १ टुकड़ा, खण्ड, कण । २ सुपारी का टुकड़ा ।
 किरट, किरठ-वि० ध्याम, काला ।
 किरब-देखो 'किरडू' ।
 किरण-स्त्री० [सं०] १ सूर्य, चन्द्रमा या दीपक आदि से निकलने वाली प्रकाश की सूक्ष्म रेखा, रश्मि । प्रभा । २ रजकण । —उजळ, ऊजळ-पु० चन्द्रमा । —केतु-पु० सूर्य । —साळ-पु० तपता सूर्य । —पत, पति, पती-पु० सूर्य । —बाळ-पु० एक प्रकार का घोड़ा । —माळी-पु० सूर्य । —सेत-पु० चांद, चन्द्रमा ।
 किरणांपल (पति, पती) किरणार-पु० सूर्य ।
 किरणाळ (र)-वि० १ तेजस्वी । २ वीर, योद्धा । -पु० सूर्य ।
 किरणाळी-पु० [सं० किरण-आनुष] सूर्य ।
 किरणावळी-स्त्री० किरण समूह ।
 किरणि-देखो 'किरण' ।
 किरणियो-पु० १ छाता । २ संकेत देने का उपकरण । ३ एक बड़ा वृत्ताकार पंखा जो राज्य चिह्न होता है और जिस पर सूर्य का चित्र होता है ।
 किरत-वि० [सं० कृत] किया हुआ, कृत । -पु० १ नितंब के ऊपर का हिस्सा । २ स्तन का ऊपरि भाग । ३ कार्य, काम । ४ जाल, प्रपंच । —गुराणी-वि० कृतघ्न, उपकार न मानने वाला, गुणचोर ।
 किरतका-देखो 'क्रतिका' ।
 किरतब (ब, ब्य)-देखो 'करतब' ।
 किरतबी-देखो 'करतबी' ।
 किरतम-वि० बनाबटी, कृत्रिम ।
 किरतार-देखो 'करतार' ।
 किरतारथ-देखो 'करतारथ' ।
 किरति, किरतियां, किरती (पु)-देखो 'क्रतिका' ।
 किरतू-पु० दो रस्सों को परस्पर जोड़ने की काष्ठ की कील ।
 किरत्यां-देखो 'क्रतिका' ।
 किरन-देखो 'किरण' ।
 किरनाळ-देखो 'किरणाळ' ।
 किरपण-देखो 'क्रपण' ।
 किरपाण (णी)-वि० मजबूत, दृढ़ । देखो 'क्रपाण' ।
 किरपा-देखो 'क्रपा' ।
 किरपाळ-देखो 'क्रपाळ' ।
 किरबाण (न)-देखो 'करवाळ' ।
 किरम-पु० [सं० कृमि] कीट, कीड़ा ।
 किरमची-पु० १ मट मिला या करोड़िया रंग । २ इस रंग का कपड़ा । ३ इस रंग का घोड़ा ।
 किरमर (धमर)-स्त्री० १ तलवार, कृपाण । २ मुसलमान ।

किरमाळ-स्त्री० [सं० करवाल] १ तलवार । [सं० किरणमाली] २ सूर्य, भानु ।
 किरमाळी-पु० [सं० कृतमाल] अमलताश ।
 किरमिज-पु० १ एक प्रकार का रंग । २ इस रंग का घोड़ा । ३ किरिमदाने का चूर्ण ।
 किरमिजी-वि० [सं० कृमिज] १ किरमिज रंग का । २ चितकबरा ।
 किरमिर-पु० [सं० किमीरः] १ भीम द्वारा वधित एक राजस । २ पांडु पुत्र भीम ।
 किरम्माळ किरम्माळा-स्त्री० तलवार ।
 किरळक, किरळी-स्त्री० १ चीत्कार, चिल्लाहट । २ किलकारी ।
 किरळावणी (बी)-क्रि० १ चिल्लाना, चीत्कार करना । २ किलकना ।
 किरबाणी-देखो 'करवाळ' ।
 किरसाण (न)-१ देखो 'किमान' । २ देखो 'क्रपाण' ।
 किरसाणी (नी)-देखो 'किसाणी' ।
 किराणी-पु० [सं० क्रवण] १ नमक, तेल, मसाले आदि पसारी का सामान । २ इस वर्ग की कोई एक वस्तु ।
 किरांत-स्त्री० [सं० क्रांति] शोभा, प्रकाश ।
 किराड़-पु० १ वैश्य, बनिया, व्यापारी । २ नदी का तट ।
 किराड़ी-पु० पशुओं का एक चर्म रोग ।
 किराड़ी-देखो 'किराड़' ।
 किरात-पु० [सं०] (स्त्री० किरातणी, किरातिणी) १ एक प्राचीन जंगली जाति, भील । २ विरायता । ३ एक प्राचीन प्रदेश । ४ सईस, घुड़सवार । ५ शिव । —पत, पति-पु० शिव ।
 किरातासी-पु० [सं० किरताशी] गरुड़ ।
 किराती-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ स्वर्ग गंगा । ३ चंवर हुलाने वाली स्त्री । ४ जटामासी । ५ किरात जाति की स्त्री ।
 किरायची (ती)-पु० प्याज के काले बीज जो आचार में डाले जाते हैं ।
 किरायणी (बी)-क्रि० १ चिल्लाना, चीत्कार करना । २ कराहना । ३ रोना ।
 किरायामट्टी-स्त्री० चूने के भट्टों के मालिकों से लिया जाने वाला कर ।
 किरायी-पु० [सं० किराया] १ मकान, सवारी आदि का भाड़ा । २ ढोवाई । ३ किसी वस्तु के उपयोग के बदले दिया जाने वाला धन ।
 किरावर-देखो 'क्यावर' ।
 किरावळ-देखो करवाळ ।
 किरि-अव्य० १ मानो, जैसे । २ देखो 'किरी' । ३ देखो 'केरी' ।

किरिट्ट, (ठ)-देखो 'किरट' ।

किरिण-देखो 'किरण' ।

किरित्पा-देखो 'कृतिका' ।

किरियाणो-पु० पौष्टिक पदार्थों का बना पाक, अथवा
या लड्डू ।

किरिया-देखो 'क्रिया' । -कर्म='क्रियाकर्म' ।

किरियावर-देखो 'क्यावर' ।

किरियावरी-देखो 'क्यावरी' ।

किरियावरी-देखो 'क्यावरी' ।

किरिराज-पु० [सं० करीराज] १ बड़ा हाथी । २ अंजन
नामक दिग्गज ।

किरी-स्त्री० काष्ठ का भीनरी ठोस भाग ।

किरोट-पु० [सं० किरोटः] मुकुट, ताज ।

किरोटी-वि० [सं० किरिट्ठिन्] मुकुट धारी । -पु० १ इन्द्र ।
२ अर्जुन । ३ राजा । ४ मुर्गा । ५ मुकुट । ६ २४ वर्णों
का एक छंद ।

किरण-देखो 'करुण' ।

किरु-पु० १ त्रिन्दुवाणी या इन्द्रायण के फलों का ढेर ।
२ छाजन के महारे के लिए लगाई जाने वाली लकड़ी ।

किरे (रं)-अव्य० मानो, जैसे ।

किरोई-स्त्री० १ संधि स्थान की नर्म हड्डी । २ वक्षस्थल के मध्य
की हड्डी जो पसलियों को जोड़ती है ।

किरोड़-देखो 'करोड़' ।

किरोड़ी-पु० १ राज्य के लिए माल गुजारी उगाहने वाला
स्मंचारि । -वि० १ करोड़, कोटि । २ देखो 'करोड़ी' ।

किरोध-देखो 'क्रोध' ।

किरोळी-स्त्री० रहट की माल में लगने वाली एकड़ी की
छोटी कील ।

किरो-पु० अंगारयुक्त राख का ढेर ।

किल्का-देखो 'किल्क' ।

किलिंग-पु० [सं० कल्कि] १ विष्णु का १० वां कल्कि अवतार ।
२ कलिंग का निवासी ।

किलिंगी-देखो 'कलिंगी' ।

किलिंगी-पु० एक प्रकार का पुष्प ।

किलंब (बि, व, बि)-पु० [अ० कल्मः] यवन, मुसलमान ।
- राई, राय-पु० बादशाह ।

किल, किल-अव्य० [सं० किल] १ निस्सन्देह, निश्चय ही, जरूर ।
२ उम्मी प्रकार वैसे ही ।

किलक, (का)-स्त्री० १ हर्षध्वनि, खिलखिलाहट । २ किलकारी ।
३ कलरव । ४ कोलाहल । ५ कल्लोल, क्रीड़ा ।

किलकटारी-स्त्री० गिलहरी ।

किलकणी (बो)-क्रि० खिलखिला कर हंसना । २ किलकारी
मारना । ३ कलरव करना । ४ कोलाहल करना । ५ कल्लोल
या क्रीड़ा करना । ६ पक्षियों (चीलादि) का वीलना ।

किलकार, (री, री)-स्त्री० १ खिल-खिलाहट । २ जोर की
हर्षध्वनि । ३ चीख, चिल्लाहट । ४ पुकार या
तीखी आवाज ।

किलकिलित-पु० संयोग शृंगार के ११ हावों में से एक ।

किलकिल-देखो 'खिलखिल' ।

किलकिलणी (बो)-क्रि० खिलखिलाना, हर्ष ध्वनि करना ।

किलकिला (लो)-स्त्री० [सं० किलकिला] १ हर्ष ध्वनि,
किलकारी । २ एक प्रकार की बड़ी तोप । ३ समुद्र
का वह भाग जहां लहरें मथंकर शब्द करती हैं ।
४ मछलियों पर भपट्टा मारने वाली चिड़िया । ५ मुदगुदी ।

किलकिलाहट (हट)-स्त्री० किलकिलकी ध्वनि, खिलखिलाहट ।

किलकी-पु० १ एक प्रकार का वाण । २ देखो 'किलक' ।
३ देखो 'कलकी' ।

किलक-देखो 'किलक' ।

किलकणी (बो)-देखो 'किलकणी' (बो) ।

किलचू-पु० एक प्रकार का पक्षी ।

किलणी (बो)-देखो 'कीलणी' (बो) ।

किलब (वांइण) किलम, किलमाण, किलमाण, किलमी,
किलमीर, किलम्म-पु० [अ० कल्मः] १ मुसलमानों का
धार्मिक मूल मन्त्र, कलमा । २ उक्त मन्त्र का पाठ करने
वाला मुसलमान । ३ मुसलमान । -नाथ, पत, पति, राई,
रा -पु० बादशाह ।

किललोळ-स्त्री० केलि, क्रीड़ा, कल्लोल ।

किलवांक-पु० काबुल देशोत्पन्न एक घोड़ा ।

किलवाण (णी)-वि० मुसलमान संबंधी ।

किलविख (स)-पु० [सं० किल्बिष] पाप, कल्मस ।

किलाण-देखो 'कल्याण' ।

किलाणी-स्त्री० [सं० कल्याणी] १ पार्वती । २ दुर्गा, देवी ।

किलाजात-पु० किले या दुर्गों के प्रबन्ध संबंधी एक विभाग ।
(जयपुर)

किलावार-पु० किले का अधिकारी ।

किलाबंदी-स्त्री० १ दुर्ग का निर्माण । २ व्यूह रचना । ३ सुरक्षा
४ शतरंज में बादशाह की सुरक्षा ।

किलावी-पु० १ स्वर्णकारों का एक औजार । २ हाथी के गले
में बंधा रहने वाला रस्सा ।

किलि-अव्य० निश्चय ही ।

किलिबिख-देखो 'किलबिख' ।

किल्किचि

(२३४)

किस्टांश

किल्किचि, (छद्म)-पु० १ अमुर । २ मुसलमान ।
 किलीखानौ-पु० १ लोह के उपकरण अस्त्र-शस्त्र बनाने का कारखाना । २ औजारों की खरीद व उनके मरम्मत आदि की व्यवस्था करने वाला विभाग ।
 किलेदार-देखो 'किलादार' ।
 किलोड़ी-पु० छोटा बेल ।
 किलोळ-देखो 'कलोळ' ।
 किलोहड़ी-देखो 'किलोड़ी' ।
 किलोळी-पु० वर्षा उपल, पिड़ा । हिमकण ।
 किलो-पु० [अ० किजा] १ दुर्ग, गढ़, किला । २ सुरक्षित स्थान ।
 किली-लूटणी-पु० एक देशी खेल ।
 किल्याण (ल्ल्याण)-देखो 'कल्याण' ।
 किल्लणी (बी)-देखो 'कीलणी' (बी) ।
 किल्लावार-देखो 'किलादार' ।
 किल्लाहर-पु० पुष्प ।
 किल्लेदार-देखो 'किलादार' ।
 किल्लो-देखो 'किलो' ।
 किच-कि० वि० १ किस, कारण, क्यों । २ देखो 'कपाचार्य' । ३ देखो 'कवि' । —राज, राय= 'कविराज' ।
 किचळी-अव्य० केवल ।
 किचहरि-पु० १ बिना मात्रा का व्यंजन । [सं० कृपाचार्य गृह] २ कृपाचार्य का भवन ।
 किबाण (णी)-स्त्री० [सं० कृपाण] तलवार खड्ग ।
 किबाड़-देखो 'कपाट' ।
 किवाड़ी-देखो 'किवाड़ी' ।
 किवाचार-पु० [सं० क्लीव + आचार्य] क्लीवाचार्य ।
 किवि-वि० [सं० किमपि] कुछ, कुछ भी ।
 किबे-वि० [सं० क्लीव] क्लीव, नपुसक, हिजड़ा ।
 किस-सर्व० कौन । क्या । विभक्ति का पूर्व रूप ।
 किसइ (ई)-वि० कौनसा । —क्रि० वि० किस प्रकार ।
 किसउ-वि० १ कौनसा । २ कैसा ।
 किसकंवा, किसकंधा-देखो 'किस्किंधा' ।
 किसडी, किसडीक-वि० कैसी । कौनसी ।
 किसई, किसडी-वि० कैसा । कौनसा ।
 किसण, किसणी-१ देखो 'किमन' । २ देखो 'क्रमणपक्ष' ।
 किसत-देखो 'किस्त' ।
 किसतूरी (दूरी)-देखो 'कमतूरी' ।
 किसन-वि० १ काला श्याम । २ देखो 'कसण' । —ताळू ताळू-पु० काले तातु का थोड़ा या द्वाधा । —बरण-पु० श्याम, काला । —हर-पु० वर्षा ऋतु का एक लोक गीत ।

किसना-पु० [सं० कृष्णा] १ दक्षिण भारत की एक नदी । २ द्वीपदी । ३ देवी, दुर्गा । —वि० काली, श्यामा ।
 —गर, गरि-पु० १ अफीम, अमल । २ एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ विशेष । —मिछ-पु० लोहा ।
 किसनियो, किसन-देखो 'किसन' ।
 किसब-पु० [अ० कस्ब] १ वेश्यावृत्ति, व्यभिचार । २ व्यभिचार की कमाई । ३ व्यवसाय, धंधा । ४ भावाभिव्यक्ति ।
 किसबण (न)-स्त्री० १ वेश्या, रंडी । २ व्यभिचारिणी स्त्री ।
 किसम-देखो 'किस्म' ।
 किसमत-देखो 'किस्मत' ।
 किसमिस-स्त्री० [फा० किशमिश] सूखा अमूर, दाख, दाखा ।
 किसमिसो-वि० १ किशमिश का, किशमिश से बना । २ अमूरी रंग का —पु० १ इम रंग का थोड़ा । २ देखो 'किममिस' ।
 किसांक-वि० कैसा ।
 किसाण (न)-पु० [सं० कृपाण] १ कृषि कार्य करने वाला, कृषक, किसान । २ रहस्य सम्प्रदाय में शरीर की इन्द्रियां ।
 किसाणी (नो)-वि० १ किमान का, किमान संबंधी । २ कृषि संबंधी । ३ देखो 'कसाण' ।
 किसान, (उ) किसानक, किसानहक (हीक, हेक)-वि० १ कैसा । २ कौनसा । ३ किसका । —क्रि० वि० कैसे, किस तरह ।
 किसानो-देखो 'कसारी' ।
 किसियक, किसी (क, थक)-सर्व० १ कौन, कौनसी । २ कोई । ३ कैसी । ४ कुछ ।
 किस्-सर्व० क्या, कौन । —वि० कैसा, कौनसा । —क्रि० वि० किसी तरह ।
 किस्क-सर्व० कोई ।
 किसोड, किसोइक, (ईकी) किसोक, किसोयक-वि० [सं० किदश] १ कैसा । २ कौनसा । ३ किसका ।
 किसोयरी-पु० [सं० कुशोदरी] पतली कमर वाली स्त्री ।
 किसोर-पु० [सं० किशोर] (स्त्री० किशोरी) १ ग्यारह से पंद्रह वर्ष की आयु का लड़का । २ पुत्र, बेटा । ३ घोड़े का बच्चा । ४ बछड़ा । ५ सूर्य । ६ एक मात्रिक छंद । —वि० किशोरावस्था संबंधी ।
 किसोरया-स्त्री० १ एक प्रकार की जड़ी । २ एक पक्षी विशेष ।
 किसी, किसीक-वि० [सं० किदश] (स्त्री० किमी) १ कौनसा । २ कैसा । —सर्व० १ कौन । २ देखो 'किस्सो' ।
 किस्किंध (धा)-पु० [सं० किक्किंधा] १ मैसूर के आन-पास का एक प्राचीन प्रदेश । २ इस प्रदेश की राजधानी । ३ इस प्रदेश के पास का एक पर्वत । ४ रामचरित मानस का एक काण्ड ।
 किस्टांश (न)-वि० ईसाई मन का अनुयायी ।

किस्त-स्त्री० [ग्र०] १ सम्पूर्ण ऋण का चुकाया जाने वाला एक निश्चित अंश । २ उक्त प्रकार से अंशों में ऋण चुकाने की विधि । ३ बकाया या जमा राशि में मे निर्धारित समय में प्राप्त होने वाला अंश । ४ पराजय, हार । ५ शतरंज में बादशाह की कमजोर स्थिति । —बंदो-स्त्री० छोटे-छोटे टुकड़ों में ऋण चुकाने की व्यवस्था । —बार-पु० पटवारियों के भूमि संबंधी दस्तावेज । —क्रि० वि० किस्तों में । किस्तों पर ।

किस्ती-स्त्री० [फा० किस्ती] छोटी नाव, नौका । —नुमा-वि० नाव के आकार का ।

किस्म-स्त्री० [फा०] १ जाति, श्रेणी । २ प्रकार, भेद । ३ ढंग, रीति । ४ तरह भांति । ५ चाल, तर्ज ।

किस्मत-स्त्री० [ग्र०] भाग्य, तकदीर । प्रारब्ध । —वर-वि० भाग्यशाली ।

किस्मतो-वि० १ भाग्यवान् । २ किस्मत संबंधी ।

किस्मय, किर्या, (क) किर्यु, किर्यो (क)-वि० १ कैसा । २ कौनसा ।

किस्सो-पु० [ग्र० किस्सः] १ कहानी, कथा । २ आख्यान । ३ घटना का विवरण । ४ हाल, वृत्तान्त । ५ समाचार । ६ भ्रमड़ा, तकरार ।

किहड़ी-वि० (स्त्री० किहड़ी) कैसा ।

किहां (ई)-क्रि० वि० कहाँ, विधर, किस जगह । कहीं पर ।

किहांए-सर्व० कौन । किम ।

किहांएतू-वि० कौनको, किसको । —क्रि० वि० किमलिये ।

किहाड़ी-वि० (स्त्री० किहाड़ी) कैसा । —पु० घोड़ों की एक जाति ।

किहारि-क्रि० वि० १ किस धोर, किस तरफ । २ किम समय ।

किहि-क्रि० वि० कहाँ, विधर ।

किहिक-सर्व० कोई । किम । —वि० कुछ, जरा ।

किहि (हो)-सर्व० १ किसी । २ कोई ।

किहिक, किहोक-देसो 'किहिक' ।

किहिए, किहिए-पु० कथन, कहना ।

कह्यां-क्रि० वि० कहीं पर ।

को-वि० [सं० किम्] कुछ, जरा, किंचित् । —सर्व० किम ।

कोक-वि० कुछ तो, जरा, किंचित् ।

कोकर-क्रि० वि० [सं० किकर] कैसे, किन प्रकार । —पु० नोकर । दास । गुलाम ।

कोकू-सर्व० किसको । —पु० कुंकुम । —पत्नी-स्त्री० वैवाहिक या मांगलिक निमंत्रण-पत्र ।

कोकोड़ी-देखो 'ककेड़ी' ।

कोजरी, कोमरी-पु० १ कलंक, दोष । २ कुल-कलंक । ३ लांछन ।

कोट-पु० १ बच्चा, शिशु । २ श्रीलाद, संतान । ३ फल ।

कोटे, कोंटे, कोडे-क्रि० वि० कहाँ, किस जगह, यहाँ से ।

कोहो-वि० कुछ ।

की-पु० १ घोड़ा । २ हाथी । ३ मर्प । ४ वृषभ । ५ गुलाबी रंग । ६ व्यभिचारी व्यक्ति । ७ पुरुष । ८ बांस । ९ कुल । १० कीध । —स्त्री० ११ पृथ्वी । १२ कमला १३ चींटी । १४ जिह्वा । १५ कुबुद्धि । १६ कुंजी । —प्रत्य० १ एक विभक्ति । २ या, प्रथवा । —मर्क० क्या । —वि० कौनसा, कौनसी ।

कीउं (ऊं) (क)-क्रि० वि० क्यों । —वि० कुछ ।

कीकट-पु० [सं० कीकटः] १ कीड़ा । २ निर्धनता, कंगाली । ३ मगध देश । —वि० निर्धन, कंगाल ।

कीकर-क्रि० वि० १ कैसे, किस प्रकार । २ देखो 'कीकरियो' ।

कीकरियो-पु० बबूल का वृक्ष ।

कीकस-पु० [सं० कीकसम्] १ हड्डी, ग्रस्थि । २ क्षुद्र कीट । —वि० [सं० कीकस] रूढ़, मजबूत ।

कीकी-स्त्री० १ मांश की पुतली । २ बच्ची, लड़की । ३ पुत्री, बेटी ।

कीकी-पु० (स्त्री० कीकी) १ बच्चा, शिशु । २ लड़का, बेटा ।

कीड़-स्त्री० [सं० कीड़ा] केलि, क्रीड़ा ।

कीड़ापरबत-पु० यौ० [सं० कीट-पर्वत] दीमक द्वारा बनाया गया मिट्टी का ढेर । टीढा । बल्मीक ।

कीड़ी-स्त्री० [सं० कीटी] १ चींटी, पीपिलिका । २ ज्वार के पौधे का एक कीड़ा । —नगरी-पु० वह स्थान जहाँ कीड़ियाँ अधिक मात्रा में रहती हैं । चींटियों का घर । अंगुलि पर्व या पैर के तले में होने वाला एक रोग ।

कीड़ीरोखाल-स्त्री० १ कुलाँचे मार कर मेला जाने वाला एक खेल । २ कठिन कार्य ।

कीड़ी-पु० [सं० कीट] १ कीड़ा, चींटी, मकीड़ा । २ कीट, कृमि । ३ गिरगिट । ४ माँप । ५ जूँ । ६ खटमल । ७ थोड़े दिनों का बच्चा । ८ पशुओं के रक्त विकार का एक रोग ।

कीच-पु० १ कीचड़, पंक, कादा । २ दलदल । ३ गाढ़ा द्रव पदार्थ, मैला । ४ सेवी को भोगकर तैयार किया गया स्वर्ण-करण चिपकाने का पानी । ५ कीचक । —वि० काला, श्यामः ।

कीचक-पु० [सं०] १ विराट राजा का माता जो भीम द्वारा मारा गया । २ खोखला बांस । ३ कीचड़ । —अरि, धरी, मारण-पु० भीम । रिपि, रिपु, सूदन-पांडुपुत्र भीम का नाम ।

कीचड़ (ल)-पु० दलदल, कीच, पंक । २ गंदी बाल ।

कीट-पु० [सं०] १ रेंगने वाला या उड़ने वाला छोटा जीव, कीड़ा । २ बच्चा । ३ तेल या घी का मेल जो बर्तनों पर जम जाता है । -वि० काला, श्यामः ।

कीटी-स्त्री० १ दूध का खोआ । २ देखो 'कीट' ।

कीटी-देखो 'कीट' ।

कीठ-पु० १ लोहे का शिरस्त्राण । २ देखो 'कीट' ।

कीठे (ठे)-क्रि० वि० कहां ।

कीडीऊँ, कीडीमौ-पु० मोती विशेष, 'चोड' ।

कीली-पु० [सं० कयण] शाक, तरकारी आदि खरीदने के बदले दिया जाने वाला अन्न ।

कील-१ देखो 'कीरति' । २ देखो 'कित' । ३ देखो 'कीत' ।

कीलबर (वर)-देखो 'कीरतवर' ।

कीति (ती)-देखो 'कीरती' ।

कीन-पु० कृत । -पु० मांस ।

कीनास-पु० [सं० कीनाशः] १ यमराज । २ एक प्रकार का वन्दर । ३ किसान ।

कीनू (नै, नौ, न्ही)-सर्व० किमकी ।

कीप-पु० कीचड़, पंक । २ रम, प्रानंद । -वि० काला, श्यामः ।

कीपजा-स्त्री० [सं० करवीड] कीड़ी छोटा मिवका ।

कीम-सर्व० कैसे, किस प्रकार ।

कीमदाव-पु० स्वर्ण-चांदी के तारों से युक्त एक कीमती वस्त्र ।

कीमत-पु० [अ०] १ मूल्य, दाम । २ महत्व ।

कीमति (ती)-वि० [अ०] १ मूल्यवान्, बहुमूल्य । २ महत्वपूर्ण । ३ परीक्षक ।

कीमियागर-वि० रासायनिक ।

कीमियागरी-स्त्री० रासायनिक विद्या ।

कीमिथी-पु० १ रासायनिक क्रिया । २ देखो 'कीमियागर' ।

कीमी-पु० [अ० कीमा] हड्डी रहित खाने का मोस्त ।

कीमी-वि० कीमती ।

कीर-पु० [सं०] १ तोता, शुक । २ धीवर, केवट । ३ कटार । ४ वहेलिया, व्याध । [सं० कीरम] ५ मांस, गोष्ठ ।

कीरड़णी (बी)-देखो 'किरड़णी' (बी) ।

कीरत-देखो 'कीरति' ।

कीरतका-देखो 'कृतिका' ।

कीरतन-पु० [सं० कीर्तन] १ भगवत् भजन, कथा, कीर्तन । २ यशोगान, कीर्तिगान । ३ जप, जप । ४ किसी के नाम को बार-बार कहने की क्रिया ।

कीरतनिथी (तन्थी)-वि० [सं० कीर्तनम्] १ भगवान की कथा भजन आदि करने वाला । २ रामजीवा के खेल करने वाला व्यक्ति ।

कीरतवर (वर राय)-पु० [सं० कीर्तिवर या राज] १ उदार, यशस्वी । २ न्यायी ।

कीरति (ती, ती)-स्त्री० [सं० कीर्तिः] १ यश, बड़ाई, प्रशंसा । २ ख्याति, प्रसिद्धि । ३ अनुग्रह । ४ विस्तार, फैलाव । ५ पुण्य । ६ प्रसाद । ७ सीना की एक मखी । ८ राधा की माता । ९ दक्ष की कन्या व धर्म की पत्नी । १० एक मातृका । ११ दीप्ति, कांति, आभा । १२ आवाज । १३ कीचड़, पंक । १४ शब्द । १५ आर्या छन्द का एक भेद । १६ दश अक्षरों का एक वृत्त । -वि० १ श्वेत, सफेद । २ उज्ज्वल । —यंम, यंम, स्तंभ-पु० कीर्ति का आधार या प्रतीक ।

कील-स्त्री० [सं०] १ कील, परेक, खील । २ पित । ३ कांटा, अंकुश । ४ जड़ । ५ लूंटा । ६ धुरी । ७ लूंटी । ८ एक तांत्रिक देव । ९ स्तम्भ, खंभा । १० अनाज पोसने की सबकी के मध्य की लूंटी । ११ कांटा लगने से या जूती की कील पैर में गड़ने से होने वाली मांस ग्रंथि । १२ देखो 'खील' ।

कीलक-पु० [सं० कीलकः] १ किसी मंत्र की शक्ति या उसके प्रभाव का नाशक मंत्र । २ स्तंभित करने वाला ।

कीलणी (बी)-क्रि० [सं० कील बंधनं] १ कीलें लगाकर मजबूत करना, सुरक्षित करना । २ मंत्रों से वश में करना । ३ देखो 'खीलणी' (बी) ।

कीला-स्त्री० [सं० कीड़ा] १ केलि, कीड़ा । २ खेल, कौतुक । ३ निमाणी छंद का एक भेद । ४ अग्नि, आग । ५ ताप, आंच । —तंद-पु० प्रत्येक चरण से छः यगण का एक वर्ण वृत्त । —पति-पु० सूर्य, भानु ।

कीलाल-पु० [सं०] १ अमृत । २ शहद । ३ जन, पानी । ४ हैवान । ५ जानवर । ६ लून, रक्त । ७ सीमरम ।

कीलालप-पु० भ्रमर ।

कीलित-वि० [सं०] १ मंच से स्तंभित या रोका हुआ । २ सुरक्षित । ३ कील से जड़ा हुआ ।

कीलिथी-पु० मोट के रस्से में कील लगाने व निकालने वाला ।

कीली-स्त्री० [सं० कीलिका] धुरी, कील ।

कीस-पु० [सं० कीजः] १ बंदर । २ चिड़िया । ३ सूर्य । ४ पक्षी । ५ राग या मैस का प्रथम बार दुहा हुआ दुष । —वर, वर-पु० हनुमान ।

कीसउ-वि० १ कौनसा । २ कैसा ।

कीसर-स्त्री० [सं० कीकम्] हड्डी, अस्थि ।

कीसु (सूँ, सी)-सर्व० [सं० कीहृ] कैसा, क्यों ।

कीहूँ, कीहूँ-क्रि० वि० कहां ।

कीहूँक-वि० ननिक, जरा थोड़ा ।

कुं-क्रि० वि० १ क्यों । २ कैसा । ३ कौन । -वि० कृद्ध ।

कुंअर (र)-देखो 'कुमार' ।

कुंअरी-देखो 'कुमारी' ।

कुंअरु (रु)-१ देखो 'कमल' । २ देखो 'कामल' ।

कुंभार-स्त्री० [सं० कौमार्य] १ कुंभारवन, कौमार्य ।
 २ देखो 'कुमार' । ३ देखो 'कुम्भार' ।
 कुंभार मग-पु० माकाश गंगा ।
 कुंभारी-देखो 'कुमारी' । घड़, घड़ा-देखो 'कुमारीघड़ा' ।
 कुंभारी-वि० [सं० कुमार] प्रवित्राहित ।
 कुंडे, कुंडीक-वि० कुण्ड ।
 कुंघो-देखो 'कुंघो' ।
 कुंरुइती-देखो 'कुंरुमपत्री' ।
 कुंकर-पु० दक्षिण भारत का एक प्रदेश, कोंकण ।
 कुंक्रम, कुंकु, कुंकु, कुंकुम-पु० [सं० कुकुमम्] १ केसर ।
 २ कुंकुम, रोली । ३ हाथी । ४ कश्मीर । -पत्रिका, पत्री
 -स्त्री० विवाह आदि मांगलिक अवसरों का निमंत्रण-पत्र ।
 कुंकुमी-वि० १ केसरिया । २ कुंकुम के रंग का ।
 कुंगळ-देखो 'कंगळ' ।
 कुंचकी, कुंचवड-देखो 'कंचुकी' ।
 कुंचित-वि० [सं०] १ वक्र, टेढ़ा । २ निकुड़ा हुआ । ३ मुड़ा
 हुआ, झका हुआ ।
 कुंचुक, कुंचूक-देखो 'कंचुकी' ।
 कुंज-पु० [सं०] १ वृक्ष व लताओं से परिवेष्टित मघन स्थल,
 लतागुह । २ हाथी का दांत । ३ मंगल ग्रह । ४ कमल ।
 ५ कौंच पक्षी । ६ अनाज रखने की मिट्टी की
 कोठी -वि० लाल, रक्तवर्णः । -क-पु० कंचुकी ।
 -कुटीर-पु० लतावेष्टित कुटीर । -गळी-स्त्री०
 लतावीथी । तंग गल्ली, रास्ता । -बिहारी बिहारी-पु०
 ईश्वर । श्रीकृष्ण । -माळा-स्त्री० वनमाला, फुलमाला ।
 कुंजटियो-पु० घिसा हुआ व छोटा भाड़ू ।
 कुंजर-पु० [सं०] १ हाथी । २ एक नाग । ३ बाल, केश ।
 ४ एक पर्वत । ५ छप्पय छन्द का इक्कीसवां भेद । -वि०
 श्रेष्ठ, उत्तम । -अरि, आराति-पु० सिंह । -असन,
 असन-पु० पीपल का पेड़ । -आरोह-पु० महावत ।
 कुंजरछाय-पु० ज्योतिष का एक योग ।
 कुंजळ-पु० १ छाछ, सट्टा । २ हाथी, गज ।
 कुंजा-देखो 'कुंज' ।
 कुंजी-स्त्री० [सं० कुंचिका] १ चाबी, ताली । २ किसी पुस्तक
 की टीका । ३ उपाय ।
 कुंजी-पु० [अ० कूजा] १ पुरवा, चुक्कड़ । २ सुराही ।
 कुंम-देखो 'कुंज' ।
 कुंटे-पु० [सं० कुट] वृक्ष ।
 कुंठ, कुंठित-वि० [सं० कुंठित] १ जो तीक्ष्ण न हो, भोटा ।
 २ स्थूल बुद्धि । ३ मूर्ख । ४ उदाम । ५ मंद, फीका ।
 ७ निवम्मा ।

कुंड-पु० [सं० कुण्डः] १ छोटा जलाशय । २ हीज । ३ चौड़े
 मुंह का गहरा वर्तन । ४ अग्निहोत्र करने का गड़्ढा या
 पात्र । ५ लोहे का टोप । ६ चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर
 का वृत्त विशेष । ७ छप्पर । ८ कूप । ९ तगारी । १० शिव ।
 ११ एक नाग । १२ चन्द्र मण्डल का एक भेद । १३ अग्नि,
 आग । १४ पर पुरुष की संतान । १५ कौमार्यविस्था की
 संतान । -कीट-पु० चार्वाक मत का अनुयायी । पतित
 ब्राह्मण । -दामोदर-पु० द्वारका के निकट एक तीर्थ ।
 कुंडल-पु० [सं० कुंडल] १ मंडलाकार कान का आभूषण ।
 २ बाला । ३ मुरकी । ४ संन्यासियों के कान का भूषण ।
 ५ कोल्लू के चारों ओर लगा बंद । ६ सूर्य या चन्द्रमा का
 वृत्त । ७ मोट के मुंह पर लगा रहने वाला मोटा गोल
 छल्ला । ८ ढोल पर लगाया जाने वाला गोल कड़ा,
 छल्ला । ९ शेषनाग । १० सर्प । ११ नाभि । १२ छन्द में
 द्विमातृक गण । १३ बाईस मात्रा का एक छन्द । १४ आंख
 का गड़्ढा ।
 कुंडली (नी)-स्त्री० [सं० कुण्डलिनी] १ दृढयोग के अनुसार
 नाभि के नीचे प्रायः सुषुप्तावस्था में रहने वाली एक शक्ति ।
 २ इमरती नामक मिठाई । ३ सोमलता । ४ हाथी की
 सूंड । ५ डिगल का एक छंद ।
 कुंडलिका-स्त्री० [सं० कुण्डलिका] दोहा व रोला युक्त एक
 डिगल छंद ।
 कुंडली-पु० १ वृत्ताकार रेखा । २ घेरा, वृत्त, गोला । ३ एक
 मात्रिक छंद ।
 कुंडली-स्त्री० [सं० कुंडली] १ जलेबी या इमरती-मिठाई ।
 २ कचनार । ३ जन्म पत्री । ४ जन्म काल के ग्रहों की
 स्थिति बताने वाला चक्र । ५ सर्प की बैठक । ६ गेंदुरी ।
 ७ सर्प । ८ विष्णु । ९ मोर । १० धनुष । ११ मुरा भेंस ।
 १२ भेंस के सींगों की बनावट । १३ वक्रण । १४ एक
 वाद्य । १५ चितकवरा हिरन । १६ कुंडल । १७ लोहे में
 छेद करने का औजार । १८ पशुओं का वृत्ताकार दाग ।
 १९ आंखों का एक रोग । २० अंगुठी के ऊपर का घेरा ।
 कुंडलीक-पु० मुदर्गत चक्र ।
 कुंडूरज-पु० सूर्य कुण्ड नामक तीर्थ ।
 कुंडावड़ी-स्त्री० गेंद का एक खेल ।
 कुंडापथ-पु० वाम मार्ग का एक भेद या शाखा ।
 कुंडापथी-वि० कुंडापथ का अनुयायी ।
 कुंडारी-देखो 'कुंडली' ।
 कुंडाळी-स्त्री० १ चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र । २ मुरा भेंस ।
 कुंडाळ (ळियो), कुंडाळी-पु० १ गोल चक्र । २ घेरा, वृत्त ।
 ३ मिट्टी का बना चौड़ा व गहरा जल पात्र । ४ नगरा ।

कुंडियो-देखो 'कुंडियो' ।

कुंडी-स्त्री० १ धोड़ा । २ मच्छी पकड़ने का यन्त्र । ३ मिट्टी या पत्थर का बना मोलाकार पात्र ।

कुंडेल-पु० [सं० कुण्ड] चन्द्रमा या सूर्य के दर्द-गिर्द बना वृत्त जो वर्षा या वायु का सूचक माना जाता है ।

कुंडोबर-पु० शिव का एक गण ।

कुंडी-देखो 'कुंडी' ।

कुण-सर्व० कौन ।

कुंत-पु० [सं०] भाला, बरछी । —अप्र-पु० भाले की नोक । —ग्रह-पु० वीर । योद्धा ।

कुंतल-पु० [सं० कुंतलः] १ सिर के बाल । २ बरछी । ३ सम्पूर्ण जाति का एक राग । ४ बहुरूपिया । ५ एक प्राचीन देश । —मुखी-स्त्री० कटार ।

कुंता-देखो 'कुंती' ।

कुंतिभोज-पु० [सं०] पृथा को गोद लेने वाला राजा ।

कुंती-स्त्री० [सं०] १ कुल नरेश पाण्डु की ज्येष्ठ पत्नी । पृथा । २ बरछी ।

कुंतल-देखो 'कुंतल' ।

कुंथवी-देखो 'कुंथवी' ।

कुंद-पु० [सं०] १ कुंवर की नौ निधियों में से एक । २ सफेद फूलों का पौधा । ३ एक पर्वत का नाम । ४ विष्णु । ५ कमल । ६ मोगरा । ७ नौ की संख्या । —वि० [फा०] १ उदास, मंद । २ खिन्न । ३ कुण्ठित । ४ श्वेत, सफेद । —स्तता-स्त्री० छत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति ।

कुंदण, (न)-पु० [सं० कुंदन] १ स्वच्छ एवं उत्तम स्वर्ण । २ शुद्ध मोने का पत्र । ३ इस रंग का घोड़ा । —वि० १ खालिण, शुद्ध । २ स्वच्छ । ३ उत्तम । ४ स्वर्णिम । —साज-पु० मोने के स्वच्छ पत्तर बनाने वाला ।

कुंदणी (नी)-वि० सुवर्ण का, मोने का ।

कुंदम-पु० [सं०] १ कुंद पुष्प । २ बिल्ली ।

कुंदाळ-पु० एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

कुंदी-स्त्री० १ धुने या रंगे हुए वस्त्र को लकड़ी से पीट कर तह जमाने की क्रिया । २ कूट-पीट । —गर-पु० उक्त कार्य करने वाला व्यक्ति ।

कुंदेरणी (बी)-क्रि० १ छीलना । २ खरोंचना । ३ कुरंदना ।

कुंदी-पु० १ बन्दूक का पृष्ठ भाग, कुंदा । २ आभूषणों में मोती पिरोने के लिए लगाया जाने वाला घेरा । ३ दरवाजे का कुंदा । —वि० (स्त्री० कुंदी) १ हड़, मजबूत । २ हृष्ट-पृष्ट, मोटा-ताजा ।

कुंदुंध-बंधु-पु० चन्द्रमा ।

कुंव-देखो 'कुंभ' ।

कुंवाण-स्त्री० १ वृगे व खांदी आदन । २ देखो 'कुवाण' ।

कुंवाणल-देखो 'कुंवाणल' ।

कुंवारियो-देखो 'कुंवारियो' ।

कुंबी-देखो 'कुंभी' ।

कुंभ-पु० [सं० कुंभः] १ मिट्टी का घड़ा, मटका । २ हाथी के शिर के दोनों ओर उभरे हुए भाग । ३ बारह राशियों में से एक । ४ प्राणायाम का एक भाग । ५ प्रति बारहवें वर्ष पड़ने वाला एक पर्व मेला । ६ गुग्गल । ७ संपूर्ण जाति का एक राग । ८ उन्नीसवें अर्हंत । ९ प्रह्लाद का पुत्र । १० कुंभकरण । ११ कुंभकरण का पुत्र । १२ एक वानर । १३ वेश्यापति । १४ अगस्त्य ऋषि । १५ मोर, मयूर । १६ हाथी । १७ हाथी का मस्तक । १८ धन । १९ आर्या गोत का एक भेद । २० शिव का एक गण । २१ देखो 'कुंभीपाक' । —कंदन-पु० श्री रामचन्द्र । —क-पु० प्राणायाम का एक भाग । —करण-पु० रावण का छोटा भाई । —कद्वन-पु० ईश्वर । श्रीराम । —करभ= 'कुंभकरण' । —कलस-पु० विवाहादि में बंदाने के काम आने वाला मांगलिक कलश । —कार-पु० मिट्टी के पात्र बनाने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति । कुत्तकट, मुर्गा । —कारो-स्त्री० कुलधी नामक औषधि । कुंभकार स्त्री । —ऊन (न)= 'कुंभकरण' । —ज, जात-पु० —संभ्रम-अगस्त्य । द्रोणाचार्य । वसिष्ठ । कुंभकरण । —थल-पु० हाथी का गंडस्थल । —दासी-स्त्री० दुती, कुतनी । —नरक-पु० कुंभीपाक नरक । —नी-स्त्री० पृथ्वी, धरती । मच्छी फंसाने का यंत्र । —ठा-स्त्री० गोरखमुंडी औषधि । —संधि-पु० हाथी के मस्तक के बीच का गड्ढा । —स्थल, स्थलि-पु० हाथी का गंडस्थल । —हनु-पु० रावण दल का एक राजस ।

कुंभाथल-पु० [सं० कुंभस्थल] हाथी का गंडस्थल ।

कुंभार-पु० [सं० कुंभकार] (स्त्री० कुंभारी) मिट्टी के बर्तन बनाने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

कुंभारियो-पु० १ सिन्धूरिया रंग का एक विपला सर्प । २ देखो 'कुंभार' ।

कुंभि (भी)-पु० [सं० कुंभी] १ हाथी । २ मगर । ३ एक विपला कीड़ा । ४ कुंभ मंत्राति । ५ बच्चों का एक रोग । ६ सर्प । ७ कुंभीपाक नरक । ८ कायफल । ९ छोटा घड़ा । १० हंडिया ।

कुंभिक-स्त्री० एक प्रकार का तपुमक ।

कुंभिका-स्त्री० [सं०] १ वेश्या । २ कुंभी । ३ कायफल । ४ आँख का एक रोग । ५ सूख रोग । ६ परवल की जड़ ।

कुंभिनी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि ।

कुंभिला-स्त्री० गक्षमों की एक देवी ।

कुंभी-देखो 'कुंभि' ।

कुंभीक-पु० [सं०] १ जन कुंभी । २ पुत्राग वृक्ष । ३ एक प्रकार का नपुंसक ।

कुंभीघान्य-पु० एक मटका घनाज ।

कुंभीनस-पु० [सं०] १ क्रूर सांप । २ एक विषैला कीड़ा । ३ रावण ।

कुंभीपाक-पु० [सं०] १ एक नरक विशेष । २ एक प्रकार का सन्निपात ।

कुंभीपाळक-पु० हाथीवान, फीलवान, महावत ।

कुंभीपुर-पु० [सं०] हस्तिनापुर का प्राचीन नाम ।

कुंभीमुख-पु० [सं०] चरक मतानुसार का एक फोड़ा ।

कुंभीर-पु० [सं०] १ मगर, नेत्र । २ एक प्रकार का कीड़ा ।

—भासण (न)-पु० एक प्रकार का योगासन ।

कुंभेश (भैरव)-देखो 'कुंभकरग' ।

कुंभोवर-पु० [सं०] शिव का एक गण ।

कुंभोलूक-पु० [सं०] बड़ा जलू ।

कुंभी-देखो 'कुंभि' ।

कुंभकुंभपत्नी-देखो 'कुंभपत्नी' ।

कुंभलाणी (बो)-क्रि० १ मुरझा जाना, कुम्हलाना । २ सुस्त होना, उदास होना । ३ फीका या मंद पड़ना ।

कुंभुव-देखो 'कुमुदिनी' ।

कुंभर-१ देखो 'कुमार' । २ देखो 'कुमारी' ।

कुंभुई-क्रि० वि० क्योँ ।

कुंळ-१ देखो 'कोमळ' । २ देखो 'कमळ' । (स्त्री० कुंळी) ।

कुंवर-देखो 'कुमार' । —कलेवी=देखो 'कंवरकलेवी' ।

कुंवरी-देखो 'कुमारी' ।

कुंवरेस-पु० [सं० कुमार+ईश] ज्येष्ठ पुत्र ।

कुंवळ-१ देखो 'कमळ' । २ देखो 'कोमळ' ।

कुंवाड़-देखो 'कपाट' ।

कुंवाड़ी-स्त्री० १ छोटी कुल्हाड़ी । २ देखो 'कपाट' ।

कुंवार-पु० १ प्राश्विन मास । २ देखो 'कुमार' ।

कुंवारी-देखो 'कुमारी' । —घड़ा=कंवारीघड़ा ।

कुंवारो-देखो 'कंवारी' ।

कु-पु० [सं० कुः] १ पृथ्वी । २ हृदय । ३ पोखर, ताल ।

४ तट । ५ सरसशब्द । —वि० तनिक, थोड़ा । —उप०

संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक उपसर्ग ।

कुषर-देखो 'कुमार' ।

कुषरि-पु० [सं० कु + क्षरि] १ बैरी, शत्रु, दुश्मन । २ देखो 'कुमारी' ।

कुषवर-देखो 'कुमार' ।

कुमाड़ी, कुमाड़ियो-देखो 'कवाड़ियो' ।

कुमार-पु० १ प्राश्विन मास । २ देखो 'कुमार' ।

कुमारी-देखो 'कंवारी' । (स्त्री० कुमारी) ।

कुइसी-देखो 'कोयली' ।

कुईजणी (बी)-क्रि० मड़ना खुमार उठना, विह्वल होना । (फल, हरि सज्जी आदि) ।

कुघो-देखो 'कूवो' ।

कुइल्लो-पु० १ दामाद संबंधी एक लोक गीत । २ देखो 'कूकड़ो' ।

कुइलो-स्त्री० १ सूत की लच्छी । २ काले बालों वाली भेड़ । ३ मुर्गी ।

कुइलो-देखो 'कूकड़ो' ।

कुकर (रियो)-पु० [सं० कुकर] (स्त्री० कुकरी) १ कुत्ता, श्वान । २ कुत्तो का बच्चा ।

कुकरडो-स्त्री० १ एक प्रकार का पीवा । २ कुतिया ।

कुकरडो-पु० कुत्ता, श्वान (बच्चा) ।

कुकरम-पु० [सं० कुकर्म] बुरा कर्म, पाप, कुकृत्य ।

कुकरमी-वि० बुरे कर्म करने वाला, पाप कृत्य करने वाला ।

कुकरीनेपालो-स्त्री० एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

कुकव (वि, वो)-पु० मूर्ख कवि ।

कुकस-पु० १ प्रमथ एवं निकृष्ट अन्न, कच्चा । २ सूसी चारा ।

कुकसाई-वि० १ नीव, दुष्ट । २ निर्दयी । ३ हत्यारा, बधिक ।

कुकाई-स्त्री० १ कुकने की क्रिया या भाव । २ चिल्लाहट, पुकार ।

कुकाउ (ऊ)-वि० पुकारने, चिल्लाने या कूकने वाला ।

कुकुंवर-पु० १ जूतड़ का गड्ढा । २ कुकरोँघा ।

कुकुव (क)-पु० [सं० ककुद] बैल का कूबड़ । —खान-पु० बैल, वृषभ ।

कुकुम-पु० [सं०] १ एक राग विशेष । २ एक मात्रिक ज्ञप्ति विशेष ।

कुकुर-पु० [सं०] १ एक सांप । २ कुत्ता । —खांसी-स्त्री० सूखी खांसी ।

कुकुळ-पु० [सं० कुकूल] १ तुषारिण । २ नीव वंश ।

कुकुस्त-देखो 'काकुस्थ' ।

कुकोह-पु० [सं० कुकोध] १ अनुचित क्रोध । २ पर्वत ।

कुक्क-देखो 'कूक' ।

कुक्कटबाहणी-स्त्री० बहोचरा देवी ।

कुक्कुट-पु० [सं०] मुर्गा । —भासण (न)-पु० एक योगासन ।

—पाव-पु० एक प्राचीन पर्वत । —बत-पु० भादव शुक्ला

सप्तमी का व्रत । —सिखा-वि० रक्ताभ, चाल ।

कुक्कुर-पु० [सं०] १ कुत्ता, श्वान । २ एक ऋषि ।

कुक्काउ, कुक्काऊ-देखो 'कूकाउ' ।

कुक्ष, कुक्षि, कुख, कुखि-स्त्री० [सं० कुक्षि] १ पेट, उदर । २ कोख, गर्भ । ३ गोद । ४ भीतरी हिस्सा । —भेद-पु०

ग्रहण-मांस का एक भेद ।

कुखेत-पु० बुरी भूमि । कुठोर ।
 कुख्यात-वि० [सं०] बदनाम, निन्दित ।
 कुख्याति-स्त्री० [सं०] बदनामी, निंदा ।
 कुगति (ती)-स्त्री० दुर्दशा, दुर्गति ।
 कुगात-पु० बेडौल, बुरा शरीर ।
 कुघट, कुघाट-पु० १ बुरा शरीर, बेडौल । २ विनाश, नाश ।
 -वि० १ कुरूप । २ बेदुंगा । भद्दा ।
 कुघात-स्त्री० [सं०] १ कुप्रवसर । २ छल-कपट ।
 कुड़-पु० १ हिरन पकड़ने का लोहे का पंख, फंदा । २ कूप, कूप्रा (मेवाड़) ।
 कुड़क, (कुड़की)-स्त्री० [फा० कुर्क] १ ऋणी व्यक्ति की चल या चल संपत्ति जन्तु करने का आदेश । २ कान में डाला जाने वाला तार का छल्ला । ३ कान का बाला । ४ जानवरों को फंसाने का फंदा । ५ नौ नाग वंशों में से एक । ६ इस वंश का नाग । ७ मुर्गी की, कुछ समय के लिये अंडे देना बंद कर देने की अवस्था । —अमीन-पु० सम्पत्ति कुर्क करने वाला राज्य कर्मचारी ।
 कुड़कली-स्त्री० कान का आभूषण विशेष, वाली ।
 कुड़कुड़ी-स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया ।
 कुड़की-पु० कठोर वस्तु चबाने से होने वाला शब्द ।
 कुड़चिपी-पु० छोटा चम्मच ।
 कुड़वी, कुड़व्यो, कुड़खी-स्त्री० बड़ा चम्मच ।
 कुड़णी (बी)-क्रि० १ कमर से झुक जाना । २ मोठ या ज्वार का पीछा अत्यधिक सूख जाना ।
 कुड़ती-देखो 'कुरती' ।
 कुड़ती (त्यो)-देखो 'कुरती' ।
 कुड़बड़ी-पु० चड़स के बीच लगने वाली लकड़ी ।
 कुड़सी-देखी 'कुरसी' ।
 कुड़ाछाल-स्त्री० वृद्ध की छाल ।
 कुड़बी-देखो 'कूटुब' ।
 कुड़ी-पु० (स्त्री० कुड़ी) १ लड़का, पुत्र । २ देखो 'कूड़ी' ।
 कुचंबरा (न)-पु० [सं०] १ रक्त चंदन । २ कुंकुम ।
 कुच-पु० [सं०] १ स्तन, उरोज । २ वक्ष स्थल, छाती । -वि० १ संकुचित । २ कठोर । ३ कृपण, कंजूस । ४ अति तीक्ष्ण ।
 कचकुचमोहणी-स्त्री० एक देशी खेल ।
 कुचक्र-पु० [सं०] षड्यन्त्र ।
 कुचकी-वि० [सं०] पड़पन्धकारी ।
 कुचपाद-स्त्री० १ चालकी, धूर्तता । २ बदमाशी । ३ छेड़-छाड़ ।
 कुचमादी-वि० (स्त्री० कुचमादण) १ चालाक, धूर्त । २ बदमाश । ३ छेड़-छाड़ करने वाला ।
 कुचरकी, कुचरड़ी, कुचरी-स्त्री० डघन की पतली लकड़ी ।

कुचरड़ी-पु० १ अपयश, निंदा । २ देखो 'कुचरकी' ।
 कुचरणी (बी)-क्रि० १ घाव को खरोंचना, कुचरना । २ रण कर साफ करना ।
 कुचरी-देखो 'कुचरकी' ।
 कुचलणी(बी)-क्रि० १ पैरों से रोंदना । २ मसलना । ३ तोड़ना-फोड़ना, कूटना ।
 कुचार, कुचाल, कुचाली-वि० १ दुष्ट, नीच । २ बदृष्ट । ३ कुमार्गी । -स्त्री० १ बदमाशी, धूर्तानी । २ कुचाल । ३ बुरा आचरण, दुष्टता ।
 कुचालक-वि० जिसकी चाल या आचरण बुरा हो ।
 कुचाव-पु० १ बुरा शौक । २ बुरी भावना ।
 कुचित-वि० १ वक्र, टेढ़ा, तिरछा । २ कुटिल । ३ छलिया ।
 कुचियावड़ी-स्त्री० एक देशी खेल ।
 कुचिस-वि० कुमार्गी ।
 कुचील-वि० [सं० कुचेल] (स्त्री० कुचीलणी) १ गंदा, मलिन । २ मंले वस्त्रों वाला । ३ दुष्ट । ४ नीच, पतित । -स्त्री० दुष्टता, नीचता ।
 कुचीली-पु० एक काष्ठोधि विशेष ।
 कुचन-पु० १ दुःख । २ व्याकुलता, व्यग्रता ।
 कुचेस्ता-स्त्री० [सं० कुचेष्टा] १ बुरी चेष्टाएँ । २ बुरी चाल । ३ बुरे भाव ।
 कुचोप-वि० खराब, बुरा । -पु० प्रसुर ।
 कुचबड़ी-वि० कूची के समान दाढ़ी वाला ।
 कुछ-वि० [सं० किचित्] १ तनिक, थोड़ा । २ कम मात्रा या संख्या में । -सर्व० [सं० किमिचित्] कोई । -पु० कुण ।
 कुछाट-देखो 'कछाट' ।
 कुछित-वि० [सं० कुत्सित] निन्दनीय, कुत्सित ।
 कुछेक-वि० जरासा, थोड़ा बहुत ।
 कुज-पु० [सं०] १ मंगल ग्रह । २ वृक्ष । ३ नरकासुर । -सर्व० कोई । -वि० १ कुछ । २ रक्त वर्ण, लाल । -कोई-वि० हरेक, प्रत्येक । माधारण, सामान्य । तुच्छ, छोटा ।
 -वार-पु० मंगलवार ।
 कुजरबी-वि० (स्त्री० कुजरबी) १ बुरा, खराब । २ विकट, ३ अतिभयंकर ।
 कुजलपणी-पु० [सं० कु+जल्पनं] बकवास ।
 कुजस-पु० [सं० कुयश] अपयश, अपकीर्ति, बदनामी ।
 कुजारी-वि० भ्रम में डालने वाली ।
 कुजा-स्त्री० [सं०] मीठा, जानकी ।
 कुजान-स्त्री० १ नीच जाति, शूद्र जाति । २ बकरी । -पु० ३ पतित पुरुष ।
 कुजाब-पु० १ अपशब्द, गाली । २ अनुचित जवाब ।

कुजीव (बौ)-पु० (स्त्री० कुजीवी) नीच या बुरा जीव, दुष्ट ।
 कुजोग-पु० [सं० कुयोग] १ बुरायोग, बुरा संयोग ।
 २ अशुभ योग ।
 कुज्जी-पु० [फा० कूजा] १ मिट्टी का प्याला । २ मिश्री का
 डला, खंड । ३ देखो 'कुंजी' ।
 कुटंब-देखो 'कुटुंब' । -जातरा, जात्रा, यात्रा='कुटुंबयात्रा' ।
 कुट-पु० [सं० कुटः] १ छद्म, घर । २ गढ़, कोट । ३ घड़ा,
 कलशा जलपात्र । ४ हथोड़ा । ५ घन । ६ वृक्ष । ७ पर्वत ।
 ८ एक बड़ी भाड़ी ।
 कुटक (कौ, बक)-पु० १ विष, जहर । २ एक औषधि
 विशेष । ३ हल के पीछे हलवानी के साथ लगने वाली
 लकड़ी । ४ एक लता की जड़ । ५ खट्टा टुकड़ा ।
 ६ खण्ड, टुकड़ा ।
 कुटकड़ी-पु० स्वर्णकारों का पीतल का बना सांचा जिसमें तारों
 की विभिन्न डिजाइनें खुदी रहती हैं ।
 कुटज-पु० १ एक वृक्ष का नाम । २ अगस्त्य ऋषि का नाम ।
 ३ द्रोणाचार्य का नाम ।
 कुटकाणी (बौ)-क्रि० चवाना ।
 कुटको-स्त्री० १ पहाड़ी प्रदेशों में होने वाला एक क्षुप । २ टुकड़ा ।
 कुटको-पु० १ खण्ड, टुकड़ा । २ विभाग । ३ छोटा कण ।
 ४ सुपारी का टुकड़ा ।
 कुटणी (नी)-स्त्री० [सं० कटुनी] १ दूती, कुटुनी । २ भली
 स्त्रियों को बहका कर भ्रष्ट करने वाली स्त्री । ३ कूटने का
 हथियार । ४ कूटने की क्रिया ।
 कुटम-देखो 'कुटुंब' ।
 कुटल-वि० [सं० कुटिल] १ वक्र, टेढ़ा तिरछा । २ छली,
 कपटी । ३ दुःखदायी, क्रूर, दुष्ट । ४ मुड़ा हुआ । ५ झुका
 हुआ । ६ बेईमान । ७ चंचल । ८ श्वेत, पीत और लाल
 नेत्रों वाला । -पु० तगर का फूल । -पल, पल्लो-पु०
 टेढ़ापन । खोटाई । छल कपट ।
 कुटसांण, (साईं)-स्त्री० कुटिलता । छल, कपट ।
 कुटाई-स्त्री० १ कूटने की क्रिया या भाव । २ कूटने का
 पारिश्रमिक ।
 कुटाणी (बौ)-क्रि० कुटवाना, पिटवाना ।
 कुटिल-देखो 'कुटल' ।
 कुटिलकीट-पु० [सं० कुटिलकीटः] मोप ।
 कुटिलता-स्त्री० [सं० कुटिलता] १ टेढ़ापन । २ खोटाई ।
 ३ छल, कपट ।
 कुटिला-स्त्री० [सं० कुटिला] १ सरस्वती नदी । २ एक
 प्राचीन लिपि ।
 कुटो, कुटीरडौ-स्त्री० [सं०] १ कुटिया, पणशाला । भोंपड़ी ।
 २ घास का भूसा, चूरा ।

कुटुंब-पु० [सं०] १ परिवार । २ वंश, कुल । -जातरा, जात्रा,
 यात्रा-स्त्री० संन्यास लेने के पश्चात् भिक्षार्थ पुनः परिवार
 में आकर भिक्षा मांगने की प्रथा ।
 कुटेव, (टेंब)-स्त्री० बुरी घावत, बुरा स्वभाव ।
 कुट्टण-वि० १ पाजी, दुष्ट, बदमाश । २ मारने वाला । ३ मिथी
 मुसलमानों की गाली ।
 कुट्टिम-पु० [सं०] १ पक्का अंगन, फर्श । २ अनार, दाड़िम ।
 कुट्टी-स्त्री० घास की कतरन, भूसा ।
 कुठाम-पु० [सं० कु+स्थान] १ बुरा स्थान, कुठौर ।
 २ अनुचित जगह । ३ नाजुक जगह । ४ अपात्र, कुपात्र ।
 ५ देखो 'कुठौर' ।
 कुठार-स्त्री० [सं० कुठारः] १ कुल्हाड़ी, परसा । २ विध्वंसक ।
 ३ कठिनाई में दूध देने वाली भैंस या गाय ।
 कुठाळियो-देखो 'पलाणियो' ।
 कुठाली-स्त्री० स्वर्णकारों का औजार विशेष ।
 कुठोड़ (ठोड़, ठौर)-स्त्री० १ बुरा स्थान । २ गुप्तांग ।
 ३ देखो 'कुठाम' ।
 कुठंड-देखी 'कोदंड' ।
 कुड-स्त्री० चट्टान, शिला ।
 कुडावड़ी-देखो 'कुंदादडी' ।
 कुडाव-पु० घातक या बुरा दाव, कुदाव ।
 कुडुब (उ)-देखो 'कुटुंब' ।
 कुडौ-पु० १ साक किये अन्न की खलिहान में पड़ी ठेरी ।
 २ इन्द्रिय का वृक्ष । ३ देखो 'कूडी' ।
 कुड्यापट्टी-स्त्री० १ घोड़े को गोल चक्र में दौड़ाने का ढंग ।
 २ इन्द्रिय का वृक्ष ।
 कुडंग-पु० १ बुरा ढंग, कुरीति । २ कुचाल । ३ अनुचित
 प्रणाली । -वि० १ खराब । २ बेदंश । ३ भद्दा ।
 कुडंगी-वि० (स्त्री० कुडंगी) १ कुमारी, चरित्रहीन । २ बेदंश ।
 ३ कुत्त, भद्दा ।
 कुड-१ देखो 'कुडण' । २ देखो 'कूड' ।
 कुडण (न)-स्त्री० १ मन में दबा हुआ क्रोध । २ घुटन । ३ चिड़,
 ईर्ष्या । ४ आन्तरिक दुःख ।
 कुडणी (बौ)-क्रि० १ मन ही मन क्रोध करना । २ खीजना,
 चिड़ना । ३ मन मसोसना । ४ डाह करना । ५ बुरा
 मानना । ६ शरीर को समेट कर चलना ।
 कुडव-देखो 'कुडण' ।
 कुडाणी (बौ), कुडावणी (बौ)-क्रि० १ मन ही मन क्रोध ही,
 ऐसी हरकत करना । २ खीजना, चिड़ना । ३ दुःख देना,
 तरसाना । ४ उल्लिखना, डलवाना ।
 कुडिणी-पु० दूए पर काम करने वाला ।

कुण-सर्व० १ कौन । २ किस । [सं० ववरण] -पु० शब्द, आवाज ।

कुणका-पु० अन्न, अनाज ।

कुणकाई, कुणकी-स्त्री० 'मां' का अपमान सूचक संबोधन ।

कुणकियो-पु० 'पिता' का अपमान सूचक संबोधन ।

कुणकुण, कुणकुणहट-स्त्री० १ कुनकुनाहट, गुनगुनाहट । २ कलह ।

कुणकणो-वि० (स्त्री० कुणकुणो) गुनगुना, कम गर्म ।

कुणकी-पु० अनाज का दाना ।

कुणखल्हो-पु० छोटी कड़ाई ।

कुणव-पु० [सं० ववरण] शब्द, आवाज ।

कुणप-पु० [सं०] मृत शरीर, शव ।

कुणबी-पु० एक कृपक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

कुणबु, कुणबी-पु० कुटुंब ।

कुणरिबो-पु० बालक की दर्दपूर्ण आवाज ।

कुणसोड़ी, कुणसो-वि० कोनसा ।

कुण-देखो 'कुण' ।

कुणै-सर्व० किसे, किसको ।

कुणै-सर्व० कोन, किसे ।

कुण्यां-देखो 'कुण' ।

कुत-देखो 'कृत' ।

कुतक, कुतकी-पु० १ डंडा । २ छोटी लकड़ी ।

कुतड़ी-देखो 'कुत्ती' (स्त्री० कुतड़ी) ।

कुतदबी-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

कुतप-पु० [सं० कुतपः, कुतपः] १ मध्याह्न में होने वाला आठवां मुहूर्त । २ तेल डालने का चमड़े का बना कुप्पा ।

कुतब (स्व)-पु० [अ० कुतब] १ मुसलमान महात्मा विशेष । २ कुतब मोनार । ३ ध्रुव तारा ।

कुतर-पु० १ वस्त्रों के चिपकने वाली घास । २ ज्वार-बाजरी के डंठलों के कटे हुए छोटे टुकड़ों का ढेर । ३ कतरन । -वि० नीच, दुष्ट ।

कुतरक-पु० [सं० कुतरक] १ बुरा तर्क, बेढंगी दलील । २ बकवाद । ३ चितंडावाद ।

कुतरड़ी-देखो 'कुत्ती' । (स्त्री० कुतरड़ी) ।

कुतरखेड़-पु० कुत्तों का समूह ।

कुतरी-देखो 'कुत्ती' ।

कुतवार-पु० १ फसल का कूँता करने वाला व्यक्ति । २ कोतवाल ।

कुतवी-पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ, चूरमा ।

कुतवारी-स्त्री० कोतवाल का पद या कार्य ।

कुतांधासी-देखो 'कुकरांधासी' ।

कुतालिकणो-स्त्री० एक प्रकार का टुंडी (हिचकी) पर होने वाला रोग । २ कुत्तों के खाने पीने के लिए रोटी आदि डालने का पत्थर का पात्र ।

कुतिक, (ज) -देखो 'कौतुक' ।

कुतिषो-देखो 'कुत्ती' ।

कुतुक-देखो 'कौतुक' ।

कुतुबनुमा-पु० दिशा निर्देश करने वाला यंत्र ।

कुतुहल, कुतुहल-पु० [सं० कुतुहल] १ कुछ जानने या देखने की उत्कंठा, उत्सुकता । २ अभिलाषा । ३ क्रीड़ा, विनोद, कौतुक । ४ विस्मय, आश्चर्य । ५ विनोदपूर्ण खेल ।

कुत्तर-देखो 'कृतर' ।

कुत्ता मिथी-स्त्री० एक देशी खेल ।

कुत्ती-पु० [सं० कुक्कुर] (स्त्री० कुत्ती) १ प्रायः ग्राम या नगरों में रहने वाला, मांस व अन्न भक्षी चौपाया छोटा जानवर, श्वान, कुत्ता । २ पाइप आदि कम्पने का रिच ।

कुत्र-क्रि० वि० कहाँ, कहाँ पर ।

कुथ-पु० [सं० कुथः] १ गिलाफ, खोल । २ कुश, दर्म । ३ हाथी की मूल । ४ गलीचा ।

कुथपणी (बी)-क्रि० १ विलोम या विपरीत होना या करना । २ खराब होना ।

कुथान-देखो 'कुठाम' ।

कुथाळ-वि० १ विपरीत, उल्टा । २ खराब । ३ विपरीत दिशा में ।

कुथि-पु० एक सूर्यवंशी राजा ।

कुदतार, कुवती-वि० १ कृपण, कंजूस । २ नीच ।

कुदरत, (ता)-स्त्री० [अ०] १ प्रकृति, पंचभौतिक प्रकृति । २ माया, लीला । ३ अदृश्य शक्ति । ४ महिमा, प्रभाव । ५ स्वभाव, आदत । ६ बनावट, आकार । -पत, पति-पु० ईश्वर ।

कुदरती-वि० [अ०] १ प्राकृतिक । २ स्वतः निर्मित । ३ स्वाभाविक । ४ दैवी, ईश्वरीय ।

कुबरसणी (नी)-वि० दिखने में भद्दा, अशुभ ।

कुदान-पु० [सं० कु-दान] १ बुरा दान । २ अपात्र को दिया जाने वाला दान । ३ कूदने की क्रिया या भाव । ४ एक छलांग की दूरी । ५ पैर की जूनी ।

कुबाणी (बी)-क्रि० १ कूदने के लिए प्रेरित करना । २ उछालना ।

कुदात-वि० कृपण, कंजूस ।

कुबार, कुबारा-स्त्री० [सं० कुदारा] १ बदचलन स्त्री पतिता । २ कलहगारी स्त्री ।

कुबाळ, (ळी, ळी)-स्त्री० [सं० कुहाल] १ मिट्टी खोदने का बड़ा उपकरण । २ कुदाली, फावड़ा । -बंतौ-पु० १ लम्बे जबड़े का घोड़ा । (अशुभ) २ देखो 'कुंदाळ' ।
 कुदाव-पु० [सं०] १ बुग व घातक दाव । २ बुरा अवसर । ३ बुरी चाल ।
 कुदिन-पु० [सं०] १ बुरा दिन । २ आपात् कालीन समय । ३ दुःख का दिन । ४ एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच का समय ।
 कुविस्त्री-स्त्री० [सं० कुदृष्टि] १ बुरी नजर । २ कोप दृष्टि । ३ पाप भरी नजर ।
 कुदीळ-देखो 'कुदाळ' ।
 कुदेव-पु० [सं० कुः+देव] १ भूदेव, ब्राह्मण । [सं० कुदेव] २ दैत्य, राक्षस ।
 कुदो-देखो 'कुंदो' (स्त्री० कुंदी) ।
 कुहाळ-देखो 'कुदाळ' ।
 कुधन-पु० [सं०] १ पाप की कमाई । २ काला धन । ३ लूट का माल । ४ बकरी ।
 कुधर-पु० [सं० कुः+ध्र] पहाड़, पर्वत ।
 कुधार-वि० १ ओधी । २ क्रुद्ध ।
 कुधिक-वि० क्रुद्ध ।
 कुधी-वि० मंद बुद्धि, मूर्ख ।
 कुनख-पु० नाखून का फोड़ा ।
 कुनटी-स्त्री० [सं०] मनःशिल, मैनशिल ।
 कुनण-१ देखो 'कुंदन' । २ देखो 'कुनैन' ।
 कुनणपुर-पु० १ एक प्राचीन नगर । २ लंका का एक नाम ।
 कुनफो-पु० नुकसान, हानि ।
 कुनबी-देखो 'कुणबी' ।
 कुनबी-देखो 'कुटुंब' ।
 कुनर-पु० बुरा आदमी ।
 कुनाम (नाम)-वि० बदनाम, निंदित ।
 कुनामि-पु० धन, द्रव्य ।
 कुनार-स्त्री० [सं० कुनारी] पतिता स्त्री ।
 कुनै-क्रि० वि० किस तरफ ।
 कुनैन-पु० बुहार की कड़ी ओषधि ।
 कुप्रण-देखो 'कुंदन' ।
 कुभ्याय-पु० १ पक्षपात पूर्ण न्याय । २ अन्याय ।
 कुपथ-पु० कुमार्ग ।
 कुपथी-वि० कुमार्गी ।
 कुपड़ी-देखो 'कुप्पी' ।
 कुपछि, कुपथ, कुपथ्य-पु० [सं० कुपथ्य] १ स्वास्थ्य के लिए हानि-कारक पदार्थ । २ गरिष्ठ भोजन । ३ कुपथ, कुमार्ग ।

कुपळी-स्त्री० कोंपल ।
 कुपह-पु० [सं० कूप्रमु] १ दुष्ट व अन्यायी राजा । २ कुपथ, कुमार्ग ।
 कुपही-वि० [सं० कुपथ + ई] कुमार्ग पर चलने वाला दुष्ट, नीच ।
 कुमातर (पात्र)-वि० [सं० कुपात्र] १ अयोग्य, कुपात्र । २ जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो । ३ कपूत ।
 कुपातो-वि० १ कुपथगामी, नीच, पामर । २ उद्वण्ड । ३ उत्पात करने वाला ।
 कुपाळी-स्त्री० [सं० कपाल] १ खोपड़ी, कपाल । -पु० २ [सं० कापालिक] श्मशान योगी ।
 कुपि-देखो 'कुप्पी' ।
 कुपियौ-पु० १ सुराईनुमा मिट्टी का जल-पात्र । २ मशीनों में तेल देने का पतले व लंबे मुंह का पात्र । ३ कुप्पा ।
 कुपी (प्पी)-स्त्री० [सं० कुतुप] १ मशीनों में तेल देने की कुप्पी । २ छोटे व संकरे मुंह वाला मिट्टी या धातु का बना जलपात्र ।
 कुपीच-पु० १ कण्ट । संकट । २ यातना । ३ कुपथ्य ।
 कुपुरिस्-पु० १ कापुरुष । २ कुपुरुष ।
 कुफंड-पु० धूर्तता, पाखंड, ठगी ।
 कुफंडी-वि० धूर्त, पाखंडी, ठग ।
 कुबंग, (गो)-वि० विरुद्ध ।
 कुबड़-देखो 'कूबड़' ।
 कुबड़ी-देखो 'कूबड़ी' । (स्त्री० कुबड़ी) ।
 कुबज-वि० १ नीच २ नीचा । ३ टेढ़ा, वक्र । ४ कुबड़ा । -पु० एक बात रोग विशेष ।
 कुबजक-पु० १ कुंज । २ कूजा नामक वृक्ष ।
 कुबजका, कुबजा, कुबजोका, कुबज्जा, कुबज्या-स्त्री० [सं० कुब्जिका] १ दुर्गा का एक नाम । २ आठ वर्ष की कन्या । ३ कंस की एक कुबड़ी दासी ।
 कुबजंत-पु० बाण विद्या में निपुण ।
 कुबत-स्त्री० [अ० कुप्रत] १ बुद्धि, अवल । २ उपज । ३ बुरी बात । ४ चालाकी ।
 कुबद (घ)-स्त्री० [सं० कुबुद्धि] १ धूर्तता, नीचता । २ चालाकी बटमाशी । ३ छेड़-छाड़ । ४ मूर्खता, खराब बुद्धि । -सूळ-वि० चोर । कलह प्रिय ।
 कुबदो, कुबदोड़ी, कुबधिडो, कुबधी-वि० [सं० कु+बुद्धि] १ धूर्त, चालाक । २ नीच, शैतान । ३ उद्वण्ड, नटखट । ४ पाखंडी । -पु० चोर ।
 कुबलय-वि० नीला, आसमानो ।

कुबलयापीड-पु० कंस का एक हाथी ।
 कुबलयासव-पु० [सं० कुबलयाश्व] १ सूर्य वंशी राजा धुंधुभार का नाम । २ पाताल केतु को मारने वाला घोड़ा ।
 कुबस-वि० अग्रमंगलिक, अशुभ ।
 कुबाण-स्त्री० १ बुरी आदत । २ अशुभ वाणी । ३ देखो 'कबाण' ।
 कुबाक-पु० [सं० कुवाक्य] कटु वचन ।
 कुबुध-देखो 'कुबद' ।
 कुबुधि-देखो 'कुवदी' ।
 कुबेणी (नौ)-स्त्री० [सं० कुबेनी] १ मछली फंसाने का यंत्र । २ शिकार की मछली रखने की डलिया ।
 कुबेर-पु० [सं०] नौ निधियों के भण्डारी व यक्षों के राजा एक देवता ।
 कुबेरियां-देखो 'कुबेला' ।
 कुबेरी-स्त्री० १ कुबेर की स्त्री । २ दुर्गा का एक नाम । ३ लक्ष्मी ।
 कुबेला-स्त्री० [सं० कु + वेला] १ असमय, कुसमय । २ अनुपयुक्त समय ।
 कुबेण-पु० [सं० कृ-वचन] बुरे व कड़वे वचन । अपशब्द ।
 कुबोध-पु० [सं० कु + बुद्धि] १ मूर्खता, नासमझी । २ ज्ञानाभाव । ३ दुर्बोध ।
 कुबोल-देखो 'कुबेण' ।
 कुबोली-वि० (स्त्री० कुबोली) अपशब्द कहने वाला । कटुभाषी ।
 कुबो-वि० (स्त्री० कुबो) मुड़ा या झुका हुआ । कुबड़ा ।
 कुब्ज-पु० वात विकार से होने वाला कुबड़ का रोग ।
 कुमच्छ-वि० प्रमत्त । कुपथ्य ।
 कुमट-वि० कायर, डरपोक ।
 कुमरी-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
 कुमारजा-स्त्री० [सं० कुमाया] १ कुपत्नी, कलह प्रिय स्त्री । २ पतिता स्त्री ।
 कुमंछी-वि० क्रोध करने वाला ।
 कुमंछ्या-स्त्री० आसाम की कामरुपा देवी ।
 कुमंत्रो-पु० [सं०] बुरी सलाह देने वाला अमात्य ।
 कुमक-स्त्री० [तु० कुमुकी] १ सैनिक कार्यों के लिए दी जाने वाली सहायता । २ सेना, फौज । ३ सेना द्वारा दी जाने वाली मदद । ४ किसी प्रकार की मदद या सहायता ।
 कुमकणी (बी) कुमखणी (बी)-क्रि० कोप करना ।
 कुमकी-स्त्री० [तु० कुमका] १ हाथियों को पकड़ने में सहायता देने वाली हथिनी । २ देखो 'कुमक' ।
 कुमकुमई-देखो 'कुमकुमी' ।
 कुमकुमी-स्त्री० नस्वी, उन्मत्तना ।

कुमकुमी (कुमकुमी)-पु० [तु० कुमकुमा] १ साख का खोखला गोला । २ कुंकुम । ३ सिंदूर । ४ रंग विशेष का घोड़ा । ५ गुलाब । ६ केसर, कस्तूरी, कपूर को मिलाकर घिसा हुआ चंदन । ७ मकान की छत में लटकाए जाने वाला काच का गोला ।
 कुमख, कुमख-स्त्री० १ क्रोध, गुस्सा । २ हीरा । ३ देखो 'कुमक' ।
 कुमखणी (बी), कुमखणी (बी)-क्रि० कोप करना, क्रोध करना ।
 कुमखा-स्त्री० १ कृष्टि । २ प्रकोप ।
 कुमजा-देखो 'कुमज्या' ।
 कुमट, कुमट्टी-पु० १ एक कांटेदार वृक्ष जिसकी फली के बीजों का शाक बनता है । २ उक्त वृक्ष का बीज ।
 कुमसा-स्त्री० क्रोध, गुस्सा ।
 कुमणैली-स्त्री० बाण विद्या में निपुणता ।
 कुमत, (ति,ती)-स्त्री० [सं० कुमतिः] कुबुद्धि, दुर्बुद्धि । उल्टी मति ।
 कुमद-देखो 'कुमुद' ।
 कुमवणी-देखो 'कमोदणी' ।
 कुमददंती-पु० नैर्ऋत्य दिशा का दिग्गज ।
 कुमवनि (नौ)-देखो 'कमोदनी' ।
 कुमवबंधु-पु० [सं० कुमुदबंधु] चंद्रमा, चांद ।
 कुमया-स्त्री० नाराजगी, गुस्सा ।
 कुमर-देखो 'कुमार' ।
 कुमरक-पु० [सं० कुवरक] भयानक गड़ढा ।
 कुमरीणी-स्त्री० [सं० कुमार-रानी] १ राजकुमार की पत्नी । २ राजकुमारी ।
 कुमरि-स्त्री० राजकन्या, राजकुमारी । कुमारी ।
 कुमरिया-स्त्री० हाथियों की एक उत्तम जाति ।
 कुमल, कुमलय-पु० कमल ।
 कुमलणी (बी) कुमलाणी (बी) कुमलावणी (बी)-क्रि० कुम्हलाना, मुरझाना ।
 कुमलियापीड-देखो 'कुबलियापीड' ।
 कुमली-वि० महामलिन, नीच ।
 कुमाण, (एस)-पु० [सं० कु-मानस] १ बुरा व नीच मनुष्य । २ राक्षस । -वि० १ दुष्ट । २ क्रूर, निर्दयी । ३ कपटी, छलिया । ४ पतित ।
 कुमानेतस-वि० दुहागिन ।
 कुमाई-देखो 'कमाई' ।
 कुमाया-स्त्री० ढोंग ।
 कुमाणी (बी), कुमावणी (बी)-देखो 'कमाणी' (बी) ।

कुमार-पु० [सं०] (स्त्री० कुमारी) १ पांच वर्ष की आयु तक का बालक । २ पुत्र, बेटा । ३ वह लड़का जिसका पिता जीवित हो । ४ युवराज । ५ राजकुमार । ६ स्वामि कातिकेय । ७ अग्नि । ८ तोता । ९ सिन्धु नदी । १० मंगल ग्रह । ११ एक प्रजापति । १२ सन्तकुमार । १३ बालकों पर असर करने वाला एक ग्रह । १४ सोना, स्वर्ण । १५ अविवाहित अवस्था । १६ देखो 'कुंभार' । -वि० अविवाहित, कुंवारा । —पण, पत्नी-पु० कुमारावस्था । कौमार्यावस्था । —मग-पु० आकाश गंगा । —महि, मही-पु० मंगल ।

कुमारग-पु० [सं० कुमार्ग] १ बुरा मार्ग, बुरी राह । २ बुरा कर्म । ३ बुरा आचरण । ४ जीवन की असामाजिक दिशा । ५ अधर्म । —गांभी-वि० बुरे रास्ते जाने वाला । बदचलन । अधर्म ।

कुमारड़ी-देखो 'कुमारी' ।

कुमारपाठी-पु० घृतकुमारी का क्षुप ।

कुमारिका-देखो 'कुमारी' ।

कुमारिकाक्षेत्र, (मण्डल)-पु० वर्ग व्यवस्था वाला देश, भारतवर्ष ।

कुमारिणी-पु० १ एक प्रकार का सर्प । २ देखो 'कुमार' ।

कुमारि-भट्ट-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध मीमांसक ।

कुमारी-स्त्री० [सं०] १ बारह वर्ष तक की लड़की, कन्या । २ धीकुंभार । ३ श्यामा पक्षी । ४ सीताजी का एक नाम । ५ राजकुमारी । ६ पार्वती । ७ दुर्गा । ८ चमेली । ९ बड़ी इलायची । १० नव मल्लिका । ११ एक नदी । १२ भारत के दक्षिण का एक अन्तरीप । द्वीप । १३ कुंभकार स्त्री, कुम्हारी । १४ एक प्रकार की मक्खी । -वि० अविवाहिता । —घड़ घड़-स्त्री० बिना युद्ध की हुई सेना । —पूजन-पु० देवी पूजा के समय कुमारी बालिकाओं का पूजन ।

कुमार (रु)-देखो 'कुमार' ।

कुमो-देखो 'कमी' ।

कुमीठ-स्त्री० कुटुम्ब ।

कुमुख-पु० [सं०] १ दुर्मुख नामक रावण का एक घोड़ा । २ सूअर । ३ देखो 'कुम्बख' । -वि० भटे चेहरे वाला, कुरूप ।

कुमुद-पु० १ विष्णु । २ एक दैत्य । ३ कमल, कोका । ४ एक द्वीप । ५ आठ दिगजों में से एक । ६ एक केतु तारा । ७ चांदी । ८ कपूर । ९ एक नाग । १० एक बन्दर । ११ श्वेत कमल । १२ रक्त कमल ।

कुमुदणी (नौ)-देखो 'कमोदनी' ।

कुमेड़ियौ-पु० एक छोटी जाति का हाथी ।

कुमेत, (मेत)-पु० स्याहिलिए हुए लाल रंग का घोड़ा ।

कुमेर(री)-स्त्री० १ पाठनामक लता । २ महरवानी का अभाव । ३ देखो 'कुदेर' ।

कुमेळ-पु० १ अनवन, द्वेप, वैमनस्य । २ वेमेल । ३ शत्रु ।

कुमोवणी-देखो 'कमोदण' ।

कुमोज-पु० १ कष्ट, दुःख । २ नाखुशी । ३ अनिच्छा । ४ अशिष्ट कीड़ा ।

कुमोत-पु० अकाल मृत्यु, वेमोत ।

कुम्भ-पु० [सं० कूर्म] कच्छप, कछुआ ।

कुम्भाथळ-देखो 'कुम्भस्थळ' ।

कुम्भेव-देखो 'कुमेत' ।

कुम्भेर-देखो 'कुवेर' ।

कुम्हलाणी, (बौ), कुम्हलाणी (बौ)-क्रि० १ मुरझाना, कुम्हलाना । २ सूखना । ३ उदास या खिन्न होना ।

कुम्हार-देखो 'कुंभार' । (स्त्री० कुम्हारी) ।

कुम्हारिणी-पु० १ अत्यन्त जहरीला मर्प । २ देखो 'कुंभार' ।

कुयोजणी (बौ)-क्रि० खमीर उठना, सड़ना ।

कुयोग-पु० १ बुरायोग, कुअवसर । २ बुरा मौका । ३ अशुभ योग । -वि० अयोग्य ।

कुरंग (गोख) (गि, गी)-पु० [सं० कुरंग] १ हिरन, मृग । २ 'कुमेत' रंग का घोड़ा । ३ संगार । ४ पतन । ५ अशुभ या बुरा रंग । -वि० १ बदरंग । २ असुहावना । ३ चंचल ।

कुरंज-पु० क्रीच पक्षी ।

कुरंड-स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष व उसकी छाल ।

कुरंब (बा, झा)-स्त्री० निर्धनता, दरिद्रता ।

कुरंब-देखो 'कुरव' ।

कुरंभ-पु० [सं० निकुरंभ] समूह ।

कुरंभी, कुरंभ (म्भ)-देखो 'कूरम' ।

कुर-१ देखो 'कुर' । २ देखो 'कौरव' ।

कुरक-देखो 'कुड़क' । —नांमो-देखो 'कुड़कनांमो' ।

कुरकांट (काठ)-देखो 'करकांट' ।

कुरकर-पु० १ कुत्ता, श्वान : २ शब्द, ध्वनि । ३ कड़ी वस्तु के टूटने की आवाज ।

कुरकरी-स्त्री० लाव या वरत के छोर पर लगाई जाने वाली वह कील जो लाव को बेलों के जुए से जोड़ती है ।

कुरकुरी-स्त्री० १ धोड़ों का एक रोग । २ पेट का दर्द ।

कुरकरी-वि० दरदरा, मोटा ।

कुरकौ-डंकौ-पु० एक देशी खेल ।

कुरख-पु० [सं० कुलक्षय] १ क्रोध । २ कवच का टुकड़ा । ३ शत्रु । ४ राजा, नृप ।

कुरखेत

(२४७)

कुरिणी

कुरखेत (खेत)-देखो 'कुरुखेत'।

कुरड़-स्त्री० १ पीठ, पृष्ठ । २ देखो 'कोरड़' । ३ देखो 'करड़' ।

कुरड़ी-पु० १ अरबी व तुर्की जाति के छोड़े-घोड़ी के संयोग से उत्पन्न घोड़ा । २ देखो 'कुरुळी' ।

कुरचणी (बी)-देखो 'खुरचणी' (बी) ।

कुरचिल-पु० [सं० कुरचिल्लः] केंकड़ा ।

कुरछी-स्त्री० गोल चम्मच । कलछी ।

कुरज-स्त्री० १ औंछ पक्षी । २ एक राजस्थानी लोक गीत ।

कुरजणियो, कुरजणी, कुरजिली-पु० एक राजस्थानी लोकगीत ।
२ एक बरसाती घास ।

कुरभीत-पु० [सं० कुरु-जित्] युधिष्ठिर ।

कुरु, कुरु (ए, ओ)-देखो 'कुरुज' ।

कुरट-वि० काला, श्याम । -स्त्री० दांतों से कुतरने की क्रिया
या भाव ।कुरटणी (बी)-क्रि० १ दांतों से कुतरना । २ छोटे-छोटे
टुकड़े करना ।कुरणा-स्त्री० १ हल्का-बुखार । २ आलस्य, मुस्ती ।
३ देखो 'करुणा' ।कुरणाटी-पु० १ बक-भक्त करने की क्रिया । २ रह-रह
कर कराहना ।

कुरणी-स्त्री० [सं० करेणु] हथिनी ।

कुरत-स्त्री० [सं० कु + कृतु] बेमौसम ।

कुरती-स्त्री० औरतों की कमीज, बड़ा कब्जा ।

कुरती-पु० पुरुषों की कमीज, कुर्ता, चौला ।

कुरवसियो-वि० कुलक्षणों वाला ।

कुरदांतली-स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया ।

कुरवाळ (ळी)-स्त्री० चावल दाल का भोजन ।

कुरनस-पु० [तु० कुर्नुंश] प्रणाम, अभिवादन ।

कुरबक-पु० वस्त्र या चमड़े के कटे हुए छोटे टुकड़े, कतरन ।
-वि० कृपण, कंजूस ।

कुरपत, कुरपति-पु० [सं० कुरु-पति] कौरव पति । दुर्योधन ।

कुरपी-पु० वस्त्र या चमड़े का बेकार टुकड़ा ।

कुरब-पु० १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । २ सत्कार । ३ राजा के
दरबार में आने पर राजा द्वारा हाथ उठाकर सम्मान देने
की क्रिया या संकेत ।

कुरपण-पु० [सं० कुरवक] एक कांटेदार पौधा ।

कुरबरा-स्त्री० इज्जत प्रतिष्ठा ।

कुरबाण (न)-वि० १ न्योछावर । २ बलिदान । -पु० एक
प्रकार का धातु का बना बर्तन विशेष ।

कुरवांली (नी)-स्त्री० १ दवाग । २ वज्रिदात । ३ उत्तम ।

कुरन्व-देखो 'कुरुव' ।

कुरम (मम)-देखो 'कूरम' ।

कुरराव-पु० कुरराव । कौरवराज, दुर्योधन ।

कुररि, (री)-स्त्री० [सं० कुररी] १ मादा, भेड़ । २ एक पक्षी
विशेष । ३ औंछ पक्षी । ४ प्राणी छंद का एक भेद ।कुररी-वि० १ अप्रिय, कटु । २ कच्चा । ३ तीक्ष्ण ।
४ देखो 'करवरी' ।

कुरळ-पु० लाल रंग । -वि० लाल रंग का, लाल ।

कुरळणी (बी)-क्रि० १ दर्द से चिल्लाना । २ कराहना ।
३ चीखना । ४ कलह करना । ५ रुदन करना, रोना ।
६ व्याकुल होना । ७ कलरव करना, किल्लोल करना ।

कुरळाट (टी), कुरळाहट-पु० रुदन विलाप ।

कुरळाणी (बी) कुरळावणी (बी)-देखो 'कुरुळणी' (बी) ।

कुरली-पु० [सं० कुरलः] १ गरारा, कुल्ला । २ आचमन ।
३ देखो 'कड़पी' ।

कुरवंशी-पु० कुरुवंशी, कौरव-पांडव ।

कुरव-१ देखो 'कौरव' । २ देखो 'कुरुव' ।

कुरवावरत-पु० घोड़े का एक अशुभ चिह्न ।

कुरसी-स्त्री० [अ०] १ सिंहासननुमा बैठने एक आसन ।
चौकी । २ किसी इमारत की नीचे की सतह । ३ पीढ़ी,
वंश । ४ पद । -नामी-पु० वंशावली । -बंध-वि०
सदा पास रहने वाला सेवक ।

कुरस्ती-पु० बुरा रास्ता, कुमार्ग ।

कुरहाणी (बी), कुरहावणी (बी)-क्रि० [सं० कुरुलाघनम्]
१ नापसंद करना । २ अवगुण बताना, दोष बताना ।
३ बदनाम करना । ४ अप्रशय देना । ५ घृणा करना ।

कुरांड-स्त्री० १ बदचलन स्त्री । २ कलहगारी स्त्री ।

कुराण (न)-पु० [अ० कुरान] मुसलमानों का प्रमुख
धार्मिक ग्रंथ ।

कुराणिन, कुराणी-पु० कुरान के अनुयायी, मुसलमान ।

कुरापाती-वि० (स्त्री० कुरापातण) १ दुष्ट प्रकृति या स्वभाव
वाला । २ उपद्रव करने वाला । ३ उत्पाती ।

कुरापिंड-पु० चावल या आटे के पिंड ।

कुरावणी (बी)-देखो 'कुरहाणी' (बी) ।

कुराह-स्त्री० [सं० कु + श्लाघा] १ अप्रशय, अपकीर्ति ।
निंदा । २ कुमार्ग, बुरी राह ।

कुराही-वि० बदचलन । दुराचारी ।

कुरिद, कुरिषद-पु० [सं० कुरु] १ पहाड़ । २ निर्धनता,
गरीबी । ३ भील । [सं० कुरुद्वेद] ४ रुद्र, महादेव ।
-वि० दरिद्र, निर्धन ।

कुरिणी-पु० १ ऊट का चच्चा । २ देखो 'करवरी' ।

कुरी-पु० १ शत्रु, दुश्मन । २ दुष्ट, नीच । ३ एक प्रकार का पास ।

कुरीजणी (बी)-क्रि० चित्रित होना, रेखांकित होना, कोरा जाना । २ मंडित होना, खींचा जाना ।

कुरीति-स्त्री० १ कुप्रथा । २ गलत परंपरा ।

कुर-पु० [सं०] १ दिल्ली के पास पास का एक प्राचीन प्रदेश । २ उक्त प्रदेश का राजा । ३ देखो 'कीरव' । —ईस, नाथ-पु० कुरु राज । युधिष्ठिर, दुर्योधन । भीष्म । -सेत, क्षेत्र, (त्रि)-पु० एक प्राचीन प्रदेश । एक तीर्थ स्थान । कुरुक्षेत्र । —बल-पु० कीरव सेना ।

कुरुकुत्ती-पु० जंगली कुत्ता विशेष ।

कुरुख-पु० बेहखी, नाराजगी ।

कुरुगुट्ट-पु० [सं० कुक्कुटः] मुर्गा ।

कुरुजंगल-पु० पांचाल के पश्चिम का एक प्रदेश ।

कुरुदेव कुरुनारिब-पु० १ भीष्म । २ कुरुनरेश ।

कुरुब-१ देखो 'कीरव' । २ देखो 'कुरुब' ।

कुरी-पु० १ मच्छी खाने वाला एक प्रकार का पक्षी । २ देखो 'कुरी' ।

कुरुत-पु० [सं० कुरुल] वांकुरे केश, बाल ।

कुरु-पु० एक प्रकार का जंगली काला कुत्ता जिसका मुंह लंबा होता है ।

कुरुङ्गी-पु० कूप पर कार्य करने वाला । -वि० बुरा ।

कुरुप-वि० [सं०] बदसूरत, बदशक्ल । भद्दा, बेहोल ।

कुरुपत (ति)-देखो 'कुरुपति' ।

कुरुपता-स्त्री० बदशक्ल होने की अवस्था या भाव । भद्दापन ।

कुरेसी-पु० एक प्रकार का वृंजन ।

कुरेस, कुरेसी-स्त्री० मुसलमानों की एक जाति ।

कुरोगी-वि० भयंकर रोग से पीड़ित ।

कुसंक, कुसंग-पु० [फा० कुलंग] १ लाल शिर व मटमैले रंग का पंखी । २ शिर पर बार करने का हथियार विशेष । ३ मुर्गा ।

कुलखण्ड-पु० १ अपराधियों व दासी की दागने का उपकरण । २ देखो 'कुलक्षण' ।

कुलजन-पु० [सं०] १ अदरक की जाति का एक पौधा । २ नागरबेल की जड़ ।

कुल (कुल)-पु० [सं० कुल] १ वंश, खानदान । २ जाति गोत्र । ३ घर, घराना । ४ घर, मकान । ५ स्थान । ६ झुंड, समूह । ७ संघ । ८ देश । ९ शरीर । १० अग्र भाग । ११ समुदाय । १२ तंत्र के अनुसार भौतिक तत्त्व । १३ संगीत में एक ताल । १४ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम । —ऊधोर-वि० वंश का गौरव बढ़ाने वाला । —कंडक-वि० परिकर का दुखदायी ।

—करता (त्ता)-वि० कुल या वंश का संस्थापक ।

—पु० आदि पुरुष । —कांश-स्त्री० वंश का गौरव ।

—काट-वि० कुल को कलंकित करने वाला । —किसख-पु०

सूर्य वंश । —कुंडलिणी (नी)-स्त्री० तंत्रानुसार एक

महाशक्ति । —खय, खयक, खायक-वि० कुल का क्षय

करने वाला । —स्त्री० मछली । —गांम, गांम-पु० छोटा

ग्राम । —गुर, गुरु (रु)-पु० वंश का गुरु, पुरोहित ।

—चार, चाळी-पु० वंश मर्यादा के अनुसार कार्य ।

—जा-स्त्री० पुत्री । —डसण-पु० एक प्रकार का

महाविपैला सर्प । —धंभ-पु० कुल स्तम्भ, कुल रक्षक ।

—दीत-पु० श्रीराम । —देव, देवता-पु० वंश परम्परा ।

से माना जाने वाला देव । —देवी-स्त्री० वंश परम्परा से

पूज्य देवी, कुल की देवी । —घ-स्त्री० श्रेष्ठ कुलीन ।

—घर-पु० वंश का नाम चलाने वाला, पुत्र । —नायिका-स्त्री०

वाम मार्ग में पूजी जाने वाली स्त्री । —पत, पति-पु० घर

का मालिक । सरदार । अधिष्ठाता । वंश का गौरव रखने

वाला । महंत । —पांति-स्त्री० वंश । —पाजा, पाजू-स्त्री०

कुल को प्रतिष्ठा । —बधू, बहू-पु० कुलीन स्त्री । घर की

नव वधू । —बाहिरी-वि० कुल हीना । जाति बहिष्कृत ।

—बती-स्त्री०-कुल का व्यवहार । —बड= 'कुलवधू' ।

—भांण-पु० कुल दीपक । सूर्य वंश । —भार-वि० वंश

का उत्तरदायित्व लेने वाला । —भंड, भंडण-स्त्री०

अग्नि -वि० कुल में श्रेष्ठ व्यक्ति । —लोक-स्त्री० वंश

परम्परा । वंश गौरव । —वट (वट्ट)-स्त्री० वंश

परम्परा । वंश गौरव । —वधू, वहू= 'कुलवधू' ।

—वाट= 'कुलवट' । —सार-पु० कुलधर्म । कुलरीति ।

—स्वासणी-स्त्री० पुत्री । —हाणी-स्त्री० कुल का विनाश ।

कुल-वि० [अ०] सत्र, समस्त, सम्पूर्ण, पूर्ण, पूरा ।

कुलक-स्त्री० १ खुजली, पीड़ा । २ रति क्रीड़ा की प्रबल इच्छा ।

—पु० [सं०] २ किसी गुट का प्रधान । २ बांबी ।

३ समूह । ४ जोड़ा (सेट) ।

कुलकत-स्त्री० गायन की मधुर ध्वनि ।

कुलखण्ड, कुलखण्ड-पु० [सं० कुलखण्ड] १ बुरा लक्षण ।

२ बुरी भादत । ३ बुरा चिह्न । ४ अवगुण, ऐव ।

कुलखणी, कुलखणी-वि० (स्त्री० कुलखणी) १ बुरी भादतों

वाला । २ दुराचारी । ३ अवगुणी ।

कुलखण्ड (चि, छि) कुलखण्ड-पु० १ चिकना कंकड़ । २ कुरंज ।

कुलड़, कुलड़ियो, कुलड़ो-पु० [सं० कुम्भक] मिट्टी का छोटा

पात्र, कुलहड़ ।

कुलच-पु० अवगुण, दोष, कुलक्षण ।

कुलची-पु० पिछले पैर से लंगड़ा कर चलने वाला ऊंट ।

कुलच्छवत, कुलच्छवती-देखो 'कुलखणी' । (स्त्री० कुलच्छणी) ।
 कुलछ, कुलछण-देखो 'कुलच' ।
 कुलट (टा)-स्त्री० [सं० कुलटा] १ व्यभिचारिणी स्त्री ।
 २ नृत्य में पैरों की एक मुद्रा । ३ वेश्या । ४ घोड़े की एक चाल । ५ नृत्य, नाच । ६ टेढ़ी आकृति । ७ जमीन, भूमि ।
 -वि० चंचलः ।
 कुलटाई-स्त्री० नीचता, दुष्टता । बुराई ।
 कुलखी (बो)-क्रि० टीस मारना, दर्द करना ।
 कुलत-स्त्री० बुरी आदत, ऐब । भ्रवगुण ।
 कुलतियो-वि० बुरी आदत वाला, ऐबी । भ्रवगुणी ।
 कुलथ, कुलथ-१ देखो 'कुलत' । २ देखो 'कुलयी' ।
 कुलथी (थी)-स्त्री० उरद की तरह का एक मोटा घन्न ।
 कुलथी-पु० कुलथ के रंग का धोड़ा ।
 कुलवातरी-स्त्री० श्याम रंग की चिड़िया ।
 कुलदेवसी-देखो 'कुलदेवी' ।
 कुलनाह (नास)-पु० ऊट ।
 कुलप (फ)-पु० १ ताला । २ पालतू चीतों की आंखों पर बांधने की पट्टी । ३ मोट को लाव से जोड़ने का कड़ा ।
 कुलफी-स्त्री० १ मीठा पानी, दूध या खबड़ी का वैज्ञानिक तरीके से जमाया हुआ खण्ड । २ पेंच ।
 कुलबधु-स्त्री० मर्यादा में रहने वाली स्त्री ।
 कुलबसणी (बो)-क्रि० १ छोटे जीवों के हिलने-डुलने से आहत होना । २ व्याकुल होना । ३ चंचल होना ।
 कुलब-क्रि० वि० गुप्त रूप से ।
 कुलमी-पु० १ एक कृषक जाति । २ इस जाति का व्यक्ति ।
 कुलथ (पा)-स्त्री० [सं० कुल्या] १ छोटी नदी । २ नदी ।
 कुलराईजणी (बो)-क्रि० व्याकुल होना, आतुर होना ।
 कुलल-पु० [सं० कलिल] पाप ।
 कुलली-वि० (स्त्री० कुलली) १ असभ्य गंवार । २ अप्रश्रेष्ठ । ३ अश्लील । -पु० फूहड़बोलचाल, गाली ।
 कुलवंत (ति, ती, वान्)-वि० [सं० कुलवान्] (स्त्री० कुलवंती) श्रेष्ठ कुल का कुलीन ।
 कुलवट-पु० कुटुम्ब के रीति रश्म कुटुम्ब के शुभगुण ।
 कुलब-देखो 'कुलब' ।
 कुलसंकुल-पु० [सं० कुल संकुल] एक नरक का नाम ।
 कुलस-पु० [मं० कुलिश] वज्र ।
 कुलसणी-देखो 'कुलखणी' (स्त्री० कुलसणी) ।
 कुलसिणगर (री)-वि० कुल में श्रेष्ठ, कुल को सम्मानित करने वाला ।
 कुलमुद्ध (पुध)-वि० उच्च कुल का, कुलीन । -पु० उच्चकुल, श्रेष्ठ कुल ।

कुलाव (छ)-स्त्री० छलांग, कुदान, फलांग ।
 कुलाकुल-पु० [सं० कुलाकुल] तन्त्र के अनुसार कुछ निश्चित नक्षत्र, वार और तिथियां ।
 कुलाव (छ)-देखो 'कुलाव' ।
 कुलावणी (बो)-क्रि० छलांग, मारना, कूटना ।
 कुलावल-पु० एक पर्वत का नाम, कुल पर्वत ।
 कुलातरौ-पु० १ मकड़ी नामक जीव । २ मनुष्य के ओठों का एक रोग । ३ देखो 'कातरौ' ।
 कुलाघ्रम (म्म)-देखो 'कुलघरम' ।
 कुलाबी-पु० १ कपाट के चूल का कड़ा । २ हुक्के की नलिका का बंद । ३ तलवार की मूठ की धनुषाकार शलाका ।
 कुलायतौ-देखो 'कुलातरौ' ।
 कुलाळ-पु० [सं० कुलालः] १ कुम्हार, कुम्भकार । २ ब्रह्मा, विधाता । ३ जंगली मुर्गा, हुक ।
 कुलालच-पु० प्रतिशय लोभ ।
 कुलालची-वि० अत्यन्त लोभी (बुरा) ।
 कुलाळी-स्त्री० दूरबीन ।
 कुलावळ-स्त्री० संघिस्थानों में होने वाली ग्रंथि ।
 कुलाह-पु० [सं० कुलाह] १ धुटने के नीचे से काले पैरों वाला भूरा घोड़ा । २ श्वेत घुटने का पीला घोड़ा ।
 कुलाहल-देखो 'कोलाहल' ।
 कुलिग (क)-पु० १ एक प्रकार की चमकीली नर चिड़िया । २ चटकचिड़िया ।
 कुलिजन-देखो 'कुसंजन' ।
 कुलि-१ देखो 'कुल' । २ देखो 'कुली' ।
 कुलि-गामझौ-पु० छोटा ग्राम ।
 कुलित-वि० निन्दनीय, कुत्सित ।
 कुलि-मंड-वि० कुल रक्षक । -स्त्री० अग्नि, आग ।
 कुलियो-पु० १ घूल का गुब्बारा । २ स्त्री पुरुष के गुप्तेन्द्रिय के आगे का उमरा हुआ भाग ।
 कुलिर-देखो 'कुलीर' ।
 कुलिस-पु० [सं० कुलिश] १ इन्द्र का वज्र । २ नोक । ३ हीरा । ४ बिजली । ५ कुठार । ६ गर्जन, गाज ।
 -कोण-पु० छः की संख्याः । -खर-पु० घोड़े का एक रोग । -घर-पु० इन्द्र ।
 कुलिसी-स्त्री० एक देवोक्त आकाशीय नदी ।
 कुली-पु० [तु० कुली] १ यात्रियों का सामान ढोने वाला मजदूर । २ गूदा, मिर्गो । ३ बीज, दाना । ४ पुष्प, फूल । ५ तरबूज के आकार का एक लता-फल । ६ कृषि भूमि को उर्वरक व पोती बनाने का उपकरण । ७ देखो 'कुल' ।
 -नस-पु० जल, पानी ।

कुलीक (ल, न)-वि० [सं० कुलीन] १ वंश का, वंश संबंधी ।
 २ उच्च वंशीय । -पु० अच्छी नस्ल का घोड़ा । -ता-स्त्री०
 उत्तम कुल के सक्षर ।
 कुसीर-पु० [सं०] १ कैंकड़ा, कर्क । २ कर्क राशि ।
 कुल-देखो 'कुल' ।
 कुलेस-देखो 'कुलिस' ।
 कुलोक्त-पु० १ बुरा आदमी । २ बुरा लोक ।
 कुल्यंकका, कुल्यकर, कुल्या-स्त्री० [सं० कुल्यंकका कुल्या] नदी ।
 कुल्ली-पु० [सं० कुल] १ मुंह साफ करने के लिए मुंह में
 भरा जाने वाला पानी । २ उक्त प्रकार से पानी भर कर
 धुने की क्रिया । ३ आचमन ।
 कुल्हड़, कुल्हड़िया, (डो)-पु० मिट्टी का छोटा पात्र ।
 कुल्हाड़ी-पु० कुठार, गंडासा ।
 कुवक पु० टेढ़ापन, बाँकापन ।
 कुवड़ी-स्त्री० छोटा कूषा ।
 कुवच (वचन)-पु० १ कटवचन । २ अपशब्द ।
 कुवचज-देखो 'कमलज' ।
 कुवजा-स्त्री० कुंजा ।
 कुवट-पु० बुरा रास्ता, बुरा पथ ।
 कुवटी-पु० कूषा ।
 कुवयर-देखो 'कुवचन' ।
 कुवरपद (पद्म)-देखो 'कुवरपद' ।
 कुवल-पु० [सं० कुवल] १ कमल विशेष । २ मोती ।
 कुवलप-पु० [सं० कुवलप] १ नील कमल । २ पृष्ठी ।
 ३ कमल ।
 कुवलयापीड-देखो 'कुवलयापीड' ।
 कुवलयास्व-देखो 'कुवलयास्व' ।
 कुवली-स्त्री० [सं० कुवली] बेरी ।
 कुवल्यापीड-देखो 'कुवलयापीड' ।
 कुवां-स्त्री० कावेरी नदी का प्राचीन नाम ।
 कुवाण-स्त्री० [फा० कबाण] १ कमान, अनुष । २ तलवार ।
 [सं० कु + वाच्] ३ कुवाक्य । ४ बुरी आदत ।
 कुवाड़-देखो 'कपाट' ।
 कुवाड़ियाफाड़-वि० १ बकवादी । २ कटुभाषी । ३ कुल्हाड़ी से
 फाड़ा हुआ ।
 कुवाड़िया, कुवाड़ी, कुवाड़ी-देखो 'कुवाड़िया' ।
 कुवाच-देखो 'कुवच' ।
 कुवाट-स्त्री० १ कुमार्ग, बुरा पथ । २ देखो 'कपाट' ।
 कुवाबीवाट-पु० शत्रु ।
 कुवाव-स्त्री० विपरीत हवा ।
 कुवेला-स्त्री० १ असमय, बुरा समय । २ संकट कालीन स्थिति ।

कुवौ-पु० [सं० कूप, सं० कवल] १ कूषा, कूप । २ घास, कोर ।
 कुसंग (संगत)-स्त्री० १ बुरी संगति, बुरी सोहबत । २ बुरे
 लोगों से मिश्रता ।
 कुसंगी-वि० १ बुरा संग करने वाला । २ बुरे लोगों में बैठने
 वाला ।
 कुसंप-पु० द्वेष, वैर, वैमनस्य ।
 कुसंस्कार-पु० बुरे संस्कार, बुरी भावना ।
 कुस-पु० [सं० कुश] १ जल । २ एक पवित्र घास, तृण, दम,
 डाभ । ३ सात द्वीपों में से एक । ४ लोहे का लम्बा व
 नुकीला कीला । ५ फाल, कुसिया, कुसी । ६ श्रीराम के
 बड़े पुत्र का नाम । -वि० १ मस्त, मतवाला । २ पापी ।
 —कंडिका-स्त्री० वेदी पर अग्नि स्थापना का अनुष्ठान ।
 —ताळ-पु० मस्तक पर काले चकत्ते वाला घोड़ा ।
 —बीष, डीप-पु० सात द्वीपों में से एक । —खज, धुज, ध्वज
 —पु० राजा जनक के छोटे भाई ।
 कुसड़ी-पु० कूप पर काम करने वाला ।
 कुसती-वि० १ पतिता, कुलटा । २ असत्यवादी । ३ कायर,
 डरपोक । ४ देखो 'कुस्ती' ।
 कुसनेही-वि० १ कपटी, छलिया । २ अहिर्निषी ।
 कुसब-वि० [सं० कुशुभ] अशुभ ।
 कुसम (क)-पु० [सं० कुसुम] १ फूल, पुष्प । २ लाल फूल ।
 ३ आंख का एक रोग । ४ रजोदर्शन । ५ एक मासिक छंद
 विशेष । ६ छप्पय का साठवां भेद । ७ ठगण का
 छठा भेद ।
 कुसमगर-पु० कुसुमों का ढेर ।
 कुसमव-पु० पेड़, वृक्ष ।
 कुसमलमिय-पु० भौरा, भ्रमर ।
 कुसमसर-पु० [सं० कुसुमसर] कामदेव ।
 कुसमांडा-स्त्री० १ नौ दुर्गाओं में से एक । २ शिव का एक
 अनुचर । ३ कुम्हड़ा ।
 कुसमाक (र) कुसमागर-पु० [सं० कुसुम + आगर] १ कुसुमों
 का घर । २ वसंत ।
 कुसमाव-पु० १ फूल वाले वृक्ष या पौधे । २ धूर्तता, चालाकी ।
 कुसमायुध देखो 'कुसुमायुध' ।
 कुसमाळय-पु० भौरा, भ्रमर ।
 कुसमावळत-पु० [सं० कुसुमावर्त] वसंत ।
 कुसमावळी-पु० [सं० कुसुमावलिद्] भौरा, भ्रमर ।
 कुसमाहिम-पु० चंपा ।
 कुसमित-वि० १ प्रफुल्लित । २ फूलों से पूर्ण ।
 कुसमै-क्रि० वि० [सं० कु + समा] कुसमय, बुरे समय ।
 कुसम्भो-पु० [सं० कु + समा] १ दुमिष्ठ, दुष्काल ।
 २ बुरा समय ।

कुसराणो (बो), कुसरावणो (बो)—क्रि० दोष बताना, अप्रशंसा, करना। निंदा करना, भर्त्सना करना।
 कुसळ-वि० [सं० कुशल] चतुर, दक्ष, निपुण, श्रेष्ठ, भला।
 -पु० १ कुशल-मंगल, खैरियत। २ शिव का एक नाम।
 -लेम-स्त्री० खैरियत। -ता-स्त्री० चतुराई, निपुणता।
 योग्यता। खैरियत। -पांग-पु० मोर, मयूर।
 -समाध-स्त्री० कुशल-मंगल।
 कुसळा, कुसळाई, कुसळाल, कुसळाता, कुसळावत-देखो 'कुसळता'।
 कुसळी-स्त्री० [सं० शकुली] मछली।
 कुसवावळ-स्त्री० [सं० कुसुमावली] १ पुष्प, कुसुम। २ पुष्प माला।
 कुससथळी, (स्यळी)-स्त्री० द्वारका का एक नाम।
 कुसागड़ी-पु० अकुशल गाड़ीवान।
 कुसाप-वि० [सं० कुशाप] १ नुकीला, पैना। २ तीक्ष्ण तेज।
 -पु० कोरड़ा, चायुक।
 कुसामद-देखो 'कुशामद'।
 कुसामरी-देखो 'कुशामरी'।
 कुसावरत-पु० हरिद्वार के पास का एक तीर्थ।
 कुसासन-पु० १ कुश का आसन। २ बुध शासन।
 कुसिक-पु० [सं० कुशिक] १ एक प्राचीन आर्य वंश। २ हल का फाल।
 कुसियो-पु० स्वर्णकाणों का एक झोजार विशेष।
 कुसी-स्त्री० १ घाम काटने का झोजार। २ बीणा।
 ३ देखो 'कुसी'।
 कुसीक-क्रि० वि० खुशी से।
 कुसीलि, कुसोल, कुसीली-वि० [सं० कुशील] १ दुराचारी, पतित। २ आचार मर्यादा को भंग करने वाला (जैत)।
 कुसुंम, कुसुंभी-वि० लाल रंग का, लाल।
 कुसुधउ-पु० अपशकुन।
 कुसुम-वि० १ लाल, रक्त वर्ण। २ कोमल। ३ देखो 'कुसुम'।
 कुसुमापुध-पु० [सं०] १ कामदेव। २ कामदेव का वाण।
 कुसू-पु० कंचुआ।
 कुसेसप-पु० [सं० कुशेसप] कमल।
 कुसोभी-वि० अपयश, अपकीर्ति।
 कुस्ट-पु० [सं० कुष्ठ] रक्त विकार जनित एक रोग।
 कुस्तपकुस्ता-पु० गुल्मगुल्मा, लड़ाई, मुठभेड़।
 कुस्ती-स्त्री० [फा० कुशी] १ मल्ल युद्ध। २ द्रव्य युद्ध।
 ३ दो व्यक्तियों की लड़ाई। ४ दंगल। -गीर, बाज-पु० पहलवान, दंगली। घोड़ा।
 कुस्ती-पु० [फा० कुशन] रामायनक क्रिया द्वारा पातुओं को फूँककर बनाई गई भस्म।
 कुसपळो-स्त्री० सृणहाथी, खैरियत।

कुस्त्री-स्त्री० [सं०] बुरी या कलह प्रिय स्त्री।
 कुसुतो-स्त्री० [सं० कुसुति] १ ठगई, धूर्तता। २ माया, इन्द्रजाल।
 कुस्वारख-पु० [सं० कु + स्वार्थ] ग्रहित, बुरा स्वार्थ।
 कुस्सम-देखो 'कुसुम'।
 कुह-स्त्री० [सं० कुहः] १ मधुर स्वर या ध्वनि। २ अमावस्या।
 ३ कोयल की बोली। ४ पक्षियों की ध्वनि। [सं० कुहः] ५ कुबेर।
 कुहक- [सं० कुहकः] १ माया, इन्द्रजाल। २ घोषा, छल।
 ३ धूर्तता, मक्कारी। ४ मेंदक। ५ नाग विशेष। ६ एक अस्त्र विशेष। ७ मुर्गा। ८ मदारी। ९ ऐन्द्रजातिक।
 १० नाजायज हक। ११ मोर या कोयल की आवाज।
 १२ भय। -वि० धूर्त, ठग। -बाण-पु० एक बाण विशेष। अग्निबाण। एक तीप विशेष।
 कुहकणी-स्त्री० १ कोयल। २ कफोरिण, कोहनी।
 कुहकणी (बो)-क्रि० १ कोयल का बोलना। २ पक्षियों का चहकना।
 कुहक, कुहकड़ी-पु० १ जोर की आवाज, आवाज। २ कण कंदन। ३ रुदन, विलाप।
 कुहड़ि-देखो 'कूड़'।
 कुहटणी (बो)-क्रि० दंभन में करना, बांधना।
 कुहटाऊ-पु० हक के समान एक उपकरण।
 कुहणि (नी)-स्त्री० [सं० कफोरिण] कोहनी।
 कुहन-वि० मक्कार। ईर्ष्यालु। -पु० [सं० कुहनः] १ चूहा।
 २ सांप। [सं० कुहनम्] ३ मिट्टी का पात्र। ४ शीशे का पात्र।
 कुहनी-जडान-पु० कुश्ती का एक पेश।
 कुहर-पु० [सं० कुहर] १ अमावस्या की रात। २ अमावस्या की देवी। ३ प्लक्ष द्वीप की एक नदी। ४ अरेरा।
 ५ पाताल। ६ कुहरा। ७ कूआ। ८ रंध्र, छिद्र। ९ गुफा, बिल।
 कुहाडउ, कुहाड़ी-पु० [सं० कुठारः] १ विध्वंसक। २ बिरुद्ध।
 ३ कुल्हाड़ी।
 कुहोंक-वि० कुथ, कुछेक।
 कुही-स्त्री० १ एक शिकारी पक्षी। २ एक घोड़ा विशेष।
 कुहू, (ह)-स्त्री० [सं० कहुः, कहुः] १ अमावस्या, अमावस।
 २ अमावस्या की देवी। ३ अमावस्या की रात्रि।
 ४ कोकिल की कूक।
 कुहूक-स्त्री० १ कोकिल या मोर की आवाज। २ देखो 'कुहूक'।
 कू-अव्य० द्वितीया विभक्ति, को, पण्डित विभक्ति, की।
 -वि० कुत्र। -मबं० कीई।

कूँभर-१ देखो 'कुमार' । २ देखो 'कुमारी' ।
 कूँभरी-देखो 'कुमारी' ।
 कूँकड़ी-पु० १ ऊँट के मस्तक का एक रोग । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ मुर्गा ।
 कूँकण-देखो 'कुंकण' ।
 कूँकणी (बी)-देखो 'कूकणी' (बी) ।
 कूँकड़ी-देखो 'कुंकमपत्री' ।
 कूँकम-देखो 'कुंकम' ।
 कूँकावटी-पु० कंकुम का पात्र ।
 कूँक-पु० कंकुम । —पत्नी-स्त्री० विवाह का निमंत्रण-पत्र ।
 —वरणी-वि० कंकुम के रंग की ।
 कूँकय-देखो 'कुंकुम' ।
 कूँख. (खि, खो)-देखो 'कुक्ष' ।
 कूँखी-पु० १ काला पदार्थ विशेष (जैन) । २ देखो 'कूँगची' ।
 कूँगची (सी), कूँगी-पु० इमली का बीज ।
 कूँघी-पु० इमली का बीज ।
 कूँच-देखो 'कूच' ।
 कूँचला-पु० दाढ़ व सामने के दाँतों के बीच के दाँत ।
 कूँची (य)-स्त्री० १ ताले की चाबी, ताली । २ छोटा ब्रूण ।
 ३ मकान की पुताई करने का झाड़ू । ४ ऊँट का चारजामा ।
 ५ ऊँट का शिपन । ६ अमला खोलने का उपकरण ।
 ७ गृह विषय या रहस्य समझने की विधि । ८ जड़ फ्रीड़ा का एक प्रकार । —ऊस-पु० चाबियाँ डालने की कड़ी ।
 कूँचो-पु० १ छोटा मार्ग, गली । २ वनस्पति समूह । ३ एक प्रकार का तृण विशेष जिसकी सरकी या मूँज बनती है ।
 कूँज-पु० १ एक मिट्टी का बर्तन विशेष । २ देखो 'कुरज' ।
 कूँजड़ा-स्त्री० सब्जी बेचने वाली जाति विशेष ।
 कूँजड़ी (झी)-१ देखो 'कुरज' । २ देखो 'कूँजड़ी' (स्त्री) ।
 कूँजड़ी-पु० (स्त्री० कूँजड़ी) कूँजड़ा जाति का व्यक्ति ।
 कूँजणी (बी)-देखो 'कूँजणी' (बी) ।
 कूँजा-बरवार-पु० पानी पिलाने वाला सेवक ।
 कूँस. (झी)-देखो 'कूरज' ।
 कूँट-स्त्री० १ कोण, दिशा । २ किनारा, छोर । ३ ऊँट के पैर का बचन । ४ देखो 'कुंटी' । —कूँटाळी-वि० चित्रित ।
 कोनेदार । —बार-स्त्री० एक प्रकार की जूती विशेष ।
 कूँटणी (बी)-क्रि० १ ऊँट का एक पैर मोड़ कर बांधना ।
 २ बंधन में रखना । ३ ऊँट के पैरों में बंधन डालना ।
 ४ बांधना ।
 कूँटाळी-देखो 'कूँटदार' ।
 कूँटियो-पु० १ मंकुण, मंकुण नुभा कीला । २ देखो 'कुंटी' ।

कूँटी-स्त्री० किसी की वेशभूषा, स्वांग । रहन-सहन, हाव-भाव का ज्यों का त्यों अनुकरण ।
 कूँटी, कूँठ, कूँठौ-पु० [सं० कुण्ठ] १ दरवाजे का कुन्दा ।
 २ द्वार बंद का ताला लगाने की शृंखला । ३ जंजीर की कड़ी । ४ दाढ़ और सामने के दाँत के मध्य का दाँत ।
 ५ लकड़ी आदि छीलने व काटने का औजार ।
 कूँड-पु० १ लोहे का टोप । २ देखो 'कुण्ड' ।
 कूँड-देखो 'कुंडल' ।
 कूँडली-पु० १ घोड़ा । २ देखो 'कुंडली' ।
 कूँडली-देखो 'कुंडल' ।
 कूँडाळी-देखो 'कुंडाळी' ।
 कूँडाळिय, कूँडिय-स्त्री० वृत्ताकार घूमने या घमाने की क्रिया ।
 कूँडाळियो-देखो 'कूँडी' ।
 कूँडियो-पु० [सं० कूँड] १ घेरा, वृत्त । २ गोल मंदारन ।
 ३ चक्र । ४ चौड़े मुह का मिट्टी का पात्र । ५ घोड़े को गोल घुमाने की क्रिया । ६ गोल घुमाने से बनने वाला चिह्न । ७ देखो 'कूँडी' ।
 कूँडी-स्त्री० [सं० कुंडी] १ घोड़ा । २ मिट्टी या पत्थर का गोल चौड़ा पात्र । ३ अग्निहोत्र करने का स्थान । ४ जंजीर की कड़ी ।
 कूँडी-पु० [सं० कुंड] १ लोहे या मिट्टी का चौड़ा व गोल पात्र । २ कुण्ड । ३ वृत्त, घेरा ।
 कूँडली-देखो 'कुंडली' ।
 कूँडी-स्त्री० १ गोल सींगों वाली भैंस । २ देखो 'कूँडी' ।
 कूँण-१ देखो 'कूण' । २ देखो 'कूण' ।
 कूँणी-देखो 'कूणी' ।
 कूँत(बी)-स्त्री० १ पांडु की पत्नी, कुंती । २ करामात, चमत्कार ।
 ३ तंत्र । ४ अनुमान, अंदाज । ५ अक्ल, बुद्धि । ६ भाला, बरछी । ७ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । ८ कीर्ति, यश ।
 कूँतणी (बी)-क्रि० १ अनुमान करना, अंदाज करना । २ नाप-तोल निर्धारित करना ।
 कूँतल-देखो 'कुंतल' ।
 कूँतहर-पु० भाला, बरछी ।
 कूँता-देखो 'कुंती' ।
 कूँताई-स्त्री० १ 'कुंती' करने की क्रिया या ढंग । २ इसका पारिश्रमिक । ३ एक देशी खेल ।
 कूँताणी (बी)-क्रि० १ अंदाज या अनुमान कराना ।
 २ नाप-तोल तय करवाना ।
 कूँति (ती)-देखो 'कुंती' ।
 कूँतो-पु० १ खड़ी फसल का तय किया जाने वाला परिणाम ।
 २ अंदाज, अनुमान ।
 कूँयवौ, कूँववौ-पु० एक खोन्दीय अति सूक्ष्म जीव । (जैन)

कूब-स्त्री० गोल लकड़ी के बने चक्र पर लंबा पड़ा रहने वाला लट्ठा जिसके एक सिरे पर बेल जोते जाते हैं।

कूबड़ी, कूबड़ी-पु० घास का छोटा डेर।

कूब-१ देखो 'कूग'। २ देखो 'कूण'।

कूपल (कू)-पु० [सं० कूपलव] १ वृक्ष या पौधे की नई पत्ती। २ अंकुर। ३ पसलियों के संघिस्यल पर रहने वाली छाती की हड्डी।

कूपल, (ली, लौ)-पु० स्त्रियों को काजल रखने की काष्ठ की डिबिया।

कूपलणी (बो)-क्रि० वृक्षों, पौधों का पल्लवित या अंकुरित होना।

कूपी-स्त्री० तेल की कुप्पी।

कूप-स्त्री० [सं० कूपी] सेना, फौज।

कूपल-पु० मस्तक, शिर।

कूबरी-वि० कोमलांगी।

कूष-देखो 'कूभ'। -कलस-देखो 'कूभकलस'। -संभ्रम-देखो 'कूभसंभ्रम'।

कूभ-देखो 'कूभक'।

कूभट-पु० एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष।

कूषाय, कूषायल (कू)-देखो 'कूभस्थल'।

कूषार-देखो 'कूभार'।

कूभिला-स्त्री० एक देवी विशेष।

कूषी-देखो 'कूभ'।

कूभ-देखो 'कूभ'।

कूषर (र)-देखो 'कुमार' (स्त्री० कूषरी)।

कूषार-देखो 'कुमार'।

कूषारि (री)-देखो 'कुमारी'।

कूळ-पु० कमल।

कूळी-देखो 'कूवळी'। (स्त्री० कूळी)।

कूवळी-देखो 'कूवळी'।

कूस-वि० दुष्ट।

कूहटी-देखो 'कूटो'।

कू-पु० १ कूषा। २ राजा। ३ कूभ। ४ कारण। ५ कार्य। ६ द्रव्य। ७ प्रकाश। ८ कूजने का शब्द। ९ भूमि। -वि० १ गम्भीर। २ मंद। -ग्रन्थ० द्वितीय विभक्ति का चिह्न, का।

कूमत (ति)-स्त्री० [ग्र० कुमत] बुद्धि।

कूपलउ (कू)-देखो 'कूवळी' (स्त्री० कूपल)।

कूई-स्त्री० छोटा कूप।

कूपी-पु० कूप।

कूक-स्त्री० १ चिल्लाहट, चीख। २ पुकार, फरियाद। ३ लम्बी आवाज। ४ रुदन। ५ कराह। ६ त्राहि-त्राहि। ७ कोयल की बोली। ८ हल्ला।

कूकड़-पु० [सं० कुक्कुट] मुर्गा, कुक्कुट। -कंध, कंधी-पु० मुर्गे की गर्दन की आकृति वाला घोड़ा।

कूकड़ली-स्त्री० एक बरसाती पौधा जिसके पत्तों का साम बनता है।

कूकड़ली-१ देखो 'कूकड़ली'। २ देखो 'कूकड़ी'। ३ देखो 'कोकड़ी'।

कूकड़िया, कूकड़िया-१ देखो 'कूकड़ी'। २ देखो 'कोकड़ी'।

कूकड़ी-पु० [सं० कुक्कुट] १ सोने-चांदी को गलाने का पीतल का गोला। २ मुर्गा। ३ पशुओं के शिर का एक रोग। ४ ऊंट के कंठ का एक रोग। ५ लोकगीत विशेष।

कूकली (बो)-क्रि० १ चिल्लाना, चीखना। २ त्राहि-त्राहि करना। ३ रोना। ४ कराहना। ५ पुकार या फरियाद करना। ६ हल्ला करना। ७ लम्बी आवाज करना। ८ कोयल, मोर आदि का बोलना।

कूकबी-देखो 'कूकबी'।

कूकर, (डो) कूकरिया, कूकरी-पु० [सं० कुक्कुर] १ श्वान, कुत्ता। २ छोटा कुत्ता। ३ कुत्ती का बच्चा। -खांसी-स्त्री० सूखी या काली खांसी। -बगरी, भांगरी-पु० बरसात में होने वाली एक जड़ औषधि, कसरौंधा।

कूकबी-पु० दर्द भरी आवाज, त्राहि-त्राहि।

कूकस-देखो 'कूकस'।

कूका-स्त्री० नानकशाही सम्प्रदाय की एक शाखा।

कूकाऊ-वि० आर्त पुकार करने वाला। रोने वाला। त्राहि करने वाला।

कूकाणी (बो)-क्रि० १ कूकने या चीखने के लिए मजबूर करना। २ रुजाना। ३ हल्ला करना। ४ पुकार या फरियाद करना। ५ लम्बी आवाज करना।

कूकारोळ, कूकारोळी-पु० चीख-चिल्लाहट। रोना-धोना रुदन। हल्ला।

कूकिया-पु० १ चीत्कार, चीख। २ हल्ला।

कूकी-स्त्री० लड़की।

कूकुल-पु० वर्फ, तुषार।

कूकुप्राट (टी)-पु० १ चिल्लाहट। २ आवाज, कोलाहल।

कूकी-पु० (स्त्री० कुकी) १ शिशु। २ लड़का। ३ देखो 'कूक'।

कूक्याऊ-देखो 'कूकाऊ'।

कूख, कूखइली कूखि-स्त्री० कुक्षि, कोख। -धारण-स्त्री० माता।

कूड-पु० [सं० कूट, कपट] १ झूठ, मिथ्या, असत्य। २ कुऐ के मुंहपर लगा पत्थर जिस पर पोट खाली किया जाता है। ३ रहट में लगने वाला एक काष्ठ का डंडा। ४ कुबड़ापन।

५ ऊंट या बैल का कुकुद । ६ कपट, छल ।—चाळी-स्त्री० कपटी । मिथ्यावादी ।

कूडमूड-अव्य० बिना किसी आधार के, झूठमूठ ।

कूडगण-स्त्री० झूठापन, असत्यता ।

कूडाबोली-वि० (स्त्री० कूडाबोली) मिथ्या भाषी ।

कूडिणी-पु० कुए पर घूमने वाले चक्र (भूए) की धुरी रखने की लकड़ी । २ ऊंट के चमड़े का कुप्पा ।

कूडी-वि० (स्त्री० कूडी) १ झूठा, मिथ्यावादी । २ असत्य, गलत । ३ निकम्मा । ४ शैतान, जबरदस्त । ५ कपटी, छली, धोखेबाज ।—पु० १ कचरा, करकट । २ बुरा समय । ३ कुप्पा । ४ कुटज । ५ देखो 'कूडी' ।

कूच(उ)-पु० [तु०] १ खानगी, प्रस्थान । २ फौज का प्रयाण । ३ टुड़डी पर की दाढ़ी । [सं० कूच] ४ मृत्यु, मौत । ५ देखो 'कुच' ।

कूचबंदिया-स्त्री० एक पिछड़ी जाति ।

कूचा-स्त्री० [फा०] संकरा रास्ता, गली ।

कूचील-वि० गंदा, मैला ।

कूचीली-देखो 'कुचीली' ।

कूची-पु० १ घास, भूसा । २ मुहल्ला ।

कूजणी (बो)-क्रि० [सं० कूज] १ मधुर ध्वनि में बोलना । २ चहकना ।

कूजा-पु० १ मोतिया या बेले का फूल ।—स्त्री० २ क्रीच पक्षी ।

कूजित-वि० [सं०] ध्वनित ।

कूट-पु० [सं०] १ अनाज का ढेर या संग्रह । २ हथौड़ा । ३ छल, कपट । ४ गुप्त वैर । ५ म्यान में छुपा हथियार । ६ गुप्त रहस्य । ७ नगर का द्वार । ८ व्यंग । ९ अगस्त्य मुनि का एक नाम । १० आँखों के ऊपर का भाग । ११ नकल, चित्राने का भाव । १२ किनारा । १३ शिखर । १४ ऊट के पैर का बंधन । १५ पहाड़ । १६ वृक्ष । १७ एक औषधि विशेष । १८ कूटने-पीटने की क्रिया या भाव । १९ कुटी, झोपड़ी ।—वि० १ झूठा । २ छलिया, कपटी । ३ दुष्ट । ४ बनावटी, नकली ।—बुद्ध-पु० कपट युद्ध । ५ दैवीतिक लड़ाई ।

कूटणज-वि० [सं० कुट्टनम्] दुर्वचन ।

कूटणी (बो)-क्रि० १ मारना, पीटना । २ आघात करना, चोट मारना । ३ किसी उपकरण के आघात से छीटे-छोटे खण्ड या बारीक टुकड़े करना । ४ सिल या चक्की टांचना । ५ बंधन में डालना ।

कूटपाठ-पु० मंदंग के चार वर्णों में से एक ।

कूटल (ली)-पु० १ कूडा, कचरा । २ रही कागजों की लुगदी ।

कूटि (टी)-स्त्री० १ ऊंट के पैर का बंधन । २ देखो 'कूटी' ।

कूटी-पु० १ रही कागज या चिथड़ों की लुगदी । २ हरि निर्वर्च की सड़की । ३ देखो 'कूटी' ।

कूटी-पु० कुष्ठ ।

कूठीड़-देखो 'कुठीड़' ।

कूड-पु० १ कुए के मुँह पर लगा पत्थर जिस पर मोठ खाली होता है । २ रहट में लगने वाला काष्ठ का डंडा । ३ देखो 'कुड' ।

कूडीउ-वि० [सं० कूटिक] कपटी, छली, धोखेबाज ।

कूडी-पु० खलिहान में पड़ा अनाज का ढेर ।

कूण-स्त्री० १ दिशा । २ कोना । ३ देखो 'कुण' ।

कूणन-स्त्री० [सं० ववणन] शब्द, ध्वनि ।

कूणिका-स्त्री० [सं०] बीणा, सितार आदि तारों की जुंटी ।

कूणी-देखो 'कूणी' ।

कूणी-पु० कोना, कोण ।

कूत-पु० १ एक छोटा मच्छर । २ एक प्रकार की घास ।

कूतणी (बो)-देखो 'कूतणी' (बो) ।

कूतर (डो)-१ देखो 'कुतर' । २ देखो 'कुत्ती' ।

कूतरडो-देखो 'कुत्ती' । (स्त्री० कूतरडी)

कूतरियो-वि० १ घास की कुट्टी करने वाला । २ देखो 'कुत्ती' ।

कूतरी, कूत्तरी, कूवरी-देखो 'कुत्ती' । (स्त्री० कूतरी)

कूवणी-स्त्री० बच्चों का एक खेल ।

कूवली-पु० १ एक प्रकार का घोंडा । २ कूदने की क्रिया या भाव ।—वि० कूदने के स्वभाव वाला ।

कूदणी (बो)-क्रि० [सं० कूदने] १ उछलना, छलांग लगाना, फांदना । २ उछल कर नीचे आना । ३ अत्यंत प्रसन्न होता । ४ गुस्से में तमकना । ५ लांघना, पार करना । ६ एकाएक हस्तक्षेप करना ।

कूदायण-स्त्री० कूदने या छलांग मारने का भाव ।

कूदारण-स्त्री० कुदाली ।

कूधर-पु० [सं०] पर्वत, पहाड़ ।

कूप (क)-पु० [सं०] १ कूमा । २ गड्ढा । ३ छेद । ४ नदी के बीच अवस्थित वृक्ष या चट्टान । ५ मस्तूल । ६ कपाचार्य ।

कूपर-देखो 'कूपर' ।

कूपल, कूपली-स्त्री० १ काजल रखने की डिबिया । २ देखो 'कूपल' ।

कूपाण-पु० [सं० कपार] समुद्र ।

कूबड़-स्त्री० [सं० कुब्ज] १ पीठ का टेढ़ापन । २ वक्रता । ३ नाथ सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध साधु ।

कूबड़ी-स्त्री० कुब्जा नामक कंस की दासी ।
 कूबड़ी-वि० [सं० कुब्ज] (स्त्री० कूबड़ी) झुकी हुई या उठी हुई पीठ का कुब्ज । वक्र ।
 कूबियौ, कूबो-वि० (स्त्री० कूबी) १ जिसका पीठ, मुहं टेढ़ा या मुड़ा हुआ हो । २ कुबड़ा ।
 कूभटी-पु० एक प्रकार का कंटीला वृक्ष ।
 कूनी-स्त्री० [सं० कुम्भिका] छोटा पात्र ।
 कूम-देखो 'कोम' ।
 कूमेतकसमोरी-पु०यौ० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।
 कूमेव-पु० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।
 कूमोत-देखो 'कुमोत' ।
 कूयां-सर्व० कोई भी ।
 कूरम-देखो 'कूरम' ।
 कूर-पु० [सं० कूरः] १ भोजन, खाना । २ भात । ३ चावल ।
 -वि० [सं० कूर] १ निर्दयी, क्रूर । २ नीच, दुष्ट । ३ बुरा, खोटा । ४ कुमार्मी । ५ झूठा, असत्य । ६ भयंकर, डरावना ।
 -कपूर-पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ । —पर-स्त्री० कोहनी ।
 कूरवा-स्त्री० एक देशी खेल ।
 कूरबी-देखो 'उकरड़ी' ।
 कूरबाण-पु० एक प्रकार का पात्र विशेष ।
 कूरम (म्) -पु० [सं० कूर्म] १ कच्छप, कछुआ । २ विष्णु का कच्छप अवतार । ३ पृथ्वी । ४ प्रजापति का एक अवतार । ५ नाभिक के पास की नाड़ी । ६ एक प्रसिद्ध राजपूत वंश । ७ शरीरस्थ दश वायुओं में से एक । ८ एक तांत्रिक मुद्रा । ९ छप्पय छन्द का एक भेद । —चक्र-पु० एक नात्रिक चक्र । —द्वादशी-स्त्री० कच्छप अवतार की पौव शुक्ला द्वादशी की तिथि । —पुराण-पु० एक पुराण ।
 —वंस-पु० कच्छवाहा वंश ।
 कूरमा-स्त्री० एक प्रकार की वीणा ।
 कूरमासण (न)-पु० [सं० कूर्मासन] चौरासी ग्रामनों में से एक ।
 कूरम्म, कूरिम-देखो 'कूरम' ।
 कूरि (री)-स्त्री० एक प्रकार की घास ।
 कूरी-पु० मेवाड़ की तरफ होने वाला एक अनाज ।
 कूळ(ळ)-पु० [सं० कूल] १ तट, किनारा । २ मेना का पृष्ठ भाग । ३ बड़ा नाला । ४ तालाब । —क्रि०वि० पास, समीप ।
 कूलड़ी (ड़ी)-मिट्टी का छोटा पात्र ।
 कूळातरी-देखो 'कूळातरी' ।

कूलीय-पु० [सं० कवलिका] कौर, शास ।
 कूलौर-पु० कंकड़ा ।
 कूल्यस-देखो 'कुल्लिस' ।
 कूल्लणी (बी)-क्रि० तिरछी निगाहें या आंखों को कुछ छोटी करके एकटक देखना ।
 कूल्लर-स्त्री० घी में भुना व शक्कर मिला घाटा ।
 कूल्ली-स्त्री० आंखों पर बांधने की पट्टी ।
 कूल्ली-पु० जांघ का संधि स्थान । नितंब ।
 कूवड़ी (डी)-स्त्री० छोटा व संकरा कूआ ।
 कूवाळी-वि० कूआ संबंधी ।
 कूवौ-पु० [सं० कूप] कूप । कूआ । —सर्व० कौन ।
 कूतमांड-पु० कुम्हड़ा, कोला ।
 कूह-१ देखो 'कुहर' । २ देखो 'कुह' ।
 कंकड़ी-पु० [सं० कर्कटः] घाट पांवों का एक जंतु ।
 कंगार-स्त्री० मोर के बोलने की ध्वनि, मोर की आवाज ।
 कंडी-स्त्री० स्वर्णकारों का एक औजार ।
 कंडौ-पु० बठई का एक औजार ।
 कंड-पु० [सं०] १ किसी वृत्त के ठीक बीच का बिन्दु । २ किसी क्षेत्र का मध्यस्थल । ३ मुख्यस्थान । ४ किसी कार्य या शासन का प्रमुख स्थान । ५ ज्योतिष में ग्रहों का केन्द्र । ६ जन्म कुंडली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम व दशम स्थान । ७ बीच का स्थान ।
 कंडव-स्त्री० एक प्रकार की औषधि ।
 के-पु० १ रत्न । २ खान । ३ मयूर । ४ प्राण । —वि० १ कुछ । २ कितने, कई । —सर्व० १ कौन । २ किस । ३ क्या । —प्रत्य० १ संबंध कारक का विभक्ति चिह्न, का का बहु-वचन । २ देखो 'कै' ।
 केइक-वि० कितने ही, अनेक ।
 केई-वि० १ अनेक, बहुत, कई । २ कितने ही । —सर्व० किस, किसी ।
 केईक-वि० कितने ही, अनेकों । कुछेक ।
 केउर-देखो 'केयूर' ।
 केकंध, केकंध-देखो 'किस्किंधा' ।
 केक-पु० मोर, मयूर । —वि० कुछ । कितने कई, बहुत । —सर्व० १ किसी । २ देखो 'केको' ।
 केकय-पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश । २ इस देश का राजा ।
 केकयी-स्त्री० [सं०] १ केकय देश के राजा की पुत्री । २ भरत की माता ।
 केकाण-पु० (स्त्री० केकाणी) घोड़ा, अश्व ।
 केका-स्त्री० मादा मोर, मोरनी ।

केकिवा, केकिवा-देखो 'किस्किवा' ।

केकी-पु० [सं० केकिन्] (स्त्री० केका) १ मोर, मयूर ।
२ सुस्वर ।

केगड़-देखो 'केकयी' ।

केगर-पु० एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी मंदिर के ध्वज दण्ड में काम प्राती है ।

केगाह (हो)-देखो 'केकयी' ।

केड़-पु० १ वंश । २ पीछा ।

केड़ाहत, केड़ापत-वि० वंशज ।

केड़-क्रि० वि० १ पोछे । २ बाद में, पश्चात् ।

केड़ी-पु० १ बछड़ा । २ घास का ढेर । ३ पीछा । ४ वंश ।

केथ-पु० एक देश विशेष ।

केची-पु० कच्छ देशोत्पन्न घोड़ा ।

केजम (म्म)-देखो 'कंजम' ।

केरा-सर्व० १ कौन । २ किस, किसने ।

केरिका-स्त्री० लेमा ।

केत-स्त्री० [सं० केतः] १ बस्ती, आबादी । २ घर, मकान ।
३ जगह, स्थान । ४ भंडा, पताका । ५ संकल्प । ६ मंत्रणा ।
७ बुद्धि, विवेक । ८ घन । ९ आकाश । १० निमंत्रण ।
११ केतु ।

केतक-पु० [सं०] १ केवड़ा, केतकी । २ केतकी का फूल ।
३ पताका । -वि० कितने । बहुत । -क्रि० वि० किस कदर ।
केतकी-स्त्री० [सं०] १ एक पुष्प वृक्ष, केवड़ा । २ इसका पुष्प ।
३ केवड़ा जल । ४ यात्रा में साथ रखने का जलपात्र ।
५ ध्वेत-सुगंधित पुष्प ।

केतड़ी (ड़ा)-वि० [सं० केतन्] कितना, कितने ।

केतन-पु० [सं०] १ निमंत्रण, आह्वान । २ ध्वजा । ३ चिह्न ।
४ अनिवार्य कर्म । ५ घर । ६ स्थान ।

केतमक-पु० [सं० मक-केतु] कामदेव ।

केतळ-वि० (स्त्री० केतली) कितने ।

केतसायक, केतसायक-वि० कितने ।

केतली-स्त्री० यात्रा में साथ रखने का जलपात्र । -वि० कितनी ।

केतसत, केतली-वि० (स्त्री० केतली) कितना ।

केतां, केता-वि० कितने, कितना ।

केताई, केतिय-वि० कितने ही । -क्रि० वि० कहां तक ।

केतो-वि० कितनी ।

केतु-पु० [सं० केतुः] १ ध्वजा, पताका । २ चिह्न, निशान ।
३ दीप, प्रकाश । ४ पुच्छल तारा । ५ नी ग्रहों में से एक
६ एक राक्षस का कबंध । -कुंडली-स्त्री०-बारह कोष्ठों
का एक चक्र जिससे प्रत्येक बर्ष का स्वामी देखा जाता है ।
(ज्योतिष) -भांज-वि०- तेजवान, तेजस्वी । बुद्धिमान ।

—माळ-पु०- जंबू द्वीप के नौ खंडों में से एक । -वक्ष
पु०-एक पौराणिक वृक्ष ।

केतुहल-देखो 'कुतुहल' ।

केतु-वि० १ विध्वंसक । २ श्रेष्ठ । ३ देखो 'केतु' ।

केतुड़ी-देखो 'केतु' ।

केतेऊ-वि० [सं० कियत्] कितना ।

केतेक-वि० कितने । -पु० केतकी, केवड़ा ।

केतोइक, केतो-वि० कितने ।

केथ, केथि (थी, थे)-क्रि० वि० १ कहां, किधर । २ कहीं ।

केथी-पु० एक प्रकार का कंठीला वृक्ष । -क्रि० वि० क्या ।

केदार (रि, री)-पु० [सं० केदारः] १ एक प्रसिद्ध तीर्थ ।

२ हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी । ३ शिव का एक रूप ।

४ पर्वत, शिखर । ५ पानी से भरा खेत । ६ चारागाह ।

७ एक प्रसिद्ध राग । -नट-पु० एक संकर राग विशेष ।

-नाथ-पु० हिमालय स्थित एक तीर्थ । शिव का एक रूप ।

केदारि (री)-स्त्री० १ दीपक राग की पांचवीं रागिनी ।

२ एक जाति विशेष ।

केदारेस्वर-पु० [सं० केदारेस्वरः] काशी स्थित शिव मंदिर ।

केदारी-पु० १ राग विशेष । २ पोचापन, दिवालिघापन ।

केन-पु० केन उपनिषद् । -सर्व० किस ।

केवत-देखो 'कहावत' ।

केबाण-देखो 'कबाण' ।

केबी-देखो 'केवि' ।

केथ-क्रि० वि० [सं० क्रिम्] १ किस प्रकार, कैसे । २ कहां,

किधर । -हुम-पु० ज्योतिष में चन्द्रमा का एक योग ।

केमर (री)-पु० [सं० कामुर्क] १ धनुष । २ भाड़ीमुमा छोटा वृक्ष ।

केमि-देखो 'केम' ।

केमु (मू)-क्रि० वि० कहां, किधर ।

केय (क)-देखो 'केइक' ।

केपुर (पूर)-पु० [सं० केयूरः] १ बाजूबंद । २ तारवीज ।

केरंटी (ठी)-पु० [सं० केरंटी] १ मत्स्य, मकर । २ मछली ।

३ देखो 'किरीटी' ।

केर-अध्य० १ संबंध सूचक ध्वन्य, का, के, की । २ देखो 'केर' ।

३ देखो 'केड़' ।

केरक-पु० [सं०] हाथी ।

केरड़, केरड़िणी, केरड़ी-पु० १ बछड़ा । २ देखो 'केर' ।

केरल-पु० भारत का एक दक्षिणी प्रान्त ।

केरव-पु० १ रदट का एक पत्थर । २ देखो 'कीरव' ।

केराटी (डी)-देखो 'केरंटी' ।

केरा-प्रत्य० १ संबंध सूचक अव्यय का, के । २ जैसा, समान ।

केरी-स्त्री० १ कच्चा आम । २ जुलाहे की एक लकड़ी ।

३ निवार लपेटने की एक लकड़ी । -अव्य० संबंध सूचक शब्द, की ।

केरु, केरु-देखो 'कीरव' ।

केरुड़ी-स्त्री० १ मिट्टी का बना छोटा पात्र विशेष । २ मिट्टी का बना रोटी पकाने का तवा ।

केरे-देखो 'कैर' ।

केरी-प्रत्य० संबंध बोधक अव्यय । -सर्व० किसका ।

केरु-पु० १ भाला । २ कामदेव । -स्त्री० [सं० कदली] १ केले का वृक्ष व फल । २ किसी वृक्ष की शाखा, डाली । ३ केले का चित्र । ४ कौपल । ५ देखो 'केरि' ।

केरुड़ी-स्त्री० मिट्टी का तवा ।

केरुसक्यारी-स्त्री० काम क्रीड़ा का साधन, योनि ।

केरुवणी (बो)-क्रि० १ सुधार करना । २ शुद्ध करना ।

केरुवर-पु० [सं० कलेवर] शरीर, देह, ढांचा ।

केरु, केरि, (ली)-स्त्री० [सं० केलि] १ स्त्री प्रसंग, संभोग, रति क्रीड़ा । २ क्रीड़ा, खेल । ३ मनोरंजन, आमोद-प्रमोद । ४ हंसी-मजाक । ५ हर्ष, खुशी, आनन्द । ६ पृथ्वी । ७ एक प्रकार का छोड़ा । -प्रत्य०-पु० केले का तना । -ग्रह-पु० रतिग्रह, शयनागार । क्रीड़ा स्थल ।

केरिनि (नी)-स्त्री० [सं० कदली] केले का वृक्ष तथा फल ।

केरिणी-पु० १ छोटा शमी वृक्ष । २ अंकुर निकला हुआ छोटा पौधा ।

केरिहर-पु० [सं० केलिग्रह] केलिघर ।

केरु, केरुड़ी-देखो 'केरु' ।

केरु, केरुड़ी (री)-पु० खपरल ।

केरु-पु० [सं० कदली] १ केले का वृक्ष या फल । २ छोटा शमी वृक्ष ।

केरुड़ी-पु० १ खुशबूदार सफेद फूलों वाला पौधा । २ इसका फूल । ३ इसके फूलों का आसव, केवड़ा जल । ४ एक लोक गीत ।

केरुट-पु० [सं० कंवत्त] १ मल्लाह, नाविक । २ एक वर्ण-संकर जाति ।

केरुटणी (बो)-क्रि० १ निभाना, निर्वह करना । २ बटोरना, संभालना । ३ चतुराई से काम लेना । ४ मांस को कमा कर तैयार करना । ५ देखभाल, हिफाजत करना । ६ मितव्ययता करना ।

केरुटिणी-देखो 'केरुट' ।

केवदु-वि० १ निभाने वाला । २ संभालने या बटोरने वाला । ३ सुधारने वाला । ४ चतुराई से काम लेने वाला । ५ देखभाल करने वाला । ६ मितव्ययी ।

केवड़ीगाली-देखो 'कवडाली' ।

केवड़ी-देखो 'केतवी' ।

केवड़ी-वि० (स्त्री० केवड़ी) कितना, कंस ।

केवत-स्त्री० यज्ञ-प्रणयण । कहावत ।

केवल-पु० [सं० केवल] १ विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ कल्याण, मोक्ष । ४ सर्व भेष्टज्ञान । ५ एक छंद विशेष । -वि० १ विशिष्ट । २ एक मात्र, अकेला । ३ अद्वितीय, बेजोड़ । ४ समस्त, समूचा । ५ बिना ढका, खुला । ६ शुद्ध, साफ । ७ अमिश्रित । -अव्य० [सं० केवलम्] सिर्फ, मात्र, फकत । -गत, गति-स्त्री० चार प्रकार की भुक्तियों में से एक । -ग्याणी (नी)-पु० कंवलय ज्ञान प्राप्त महात्मा । २ निकटस्थ और दूरस्थ रहते हुए भी अन्य की प्रकृति को जान लेने का ज्ञान (जैन) । -ग्यान-पु० आत्म-परमात्म संबंधी ज्ञान । दुःखों की निवृत्ति । निरहंकार की भावना । अद्वितीय ब्रह्म भाव की प्राप्ति ।

केवली-पु० १ केवल ज्ञानी । २ ब्रह्मात्म ज्ञानी । ३ मुक्ति का अधिकारी । ४ तीर्थंकर और सिद्ध भगवान (जैन) । -विधिकला-स्त्री० बहतर कलाओं में से एक ।

केवाण, केवाणी-देखो 'कपाण' ।

केवा-स्त्री० १ आपत्ति, दुःख, कष्ट । २ द्वेष, शत्रुता । ३ कमर, कमी । ४ दीप, अग्निरूप । ५ कर्लक । ६ कहावत । ७ युद्ध भगड़ा । ८ दंगा, फिमाद । ९ कलह ।

केवाड-देखो 'कपाट' ।

केवाट-पु० [सं० किवत्तम्] १ वृत्तांत, डाल । २ समाचार, खबर ।

केविय, केवी(वी)-पु० शत्रु । -क्रि० वि० कैसी । -वि० कोई भी ।

केवी-पु० १ प्रतिकार, बदला, वैर । २ देखो 'केवा' ।

केस-पु० [सं० केण] १ बाल । २ अयाल । ३ जानवरों के बाल । ४ विश्व । ५ सूर्य । ६ विष्णु । ७ केशी नामक दैत्य । -काट-पु० नाई, नापित । -कार-पु० बाल सवारने वाला हज्जाम । -बाड, बाडी-स्त्री० घोड़े की गर्दन के बालों के पंक्ति । घोड़े की गर्दन का जालीनुमा आभूषण । -मारजन-पु० कंधा ।

केसट-पु० [सं० केणट] १ कामदेव का एक बाण । २ विष्णु । ३ भाई । ४ बकरा । ५ खटमल ।

केसर-स्त्री० [सं०] १ ठंठे मुत्कों में होने वाला एक पौधा जिसके फूलों के रंगे स्थाई सुगंध व पीले रंग के लिये प्रसिद्ध हैं, जाफरान । २ फूलों के बीच के रंगे । ३ सिंह की गर्दन के बाल । ४ नाग केसर । ५ बकुल । ६ मौलवी । ७ स्वर्ण । ८ देववृक्ष । -वि० नाल, रक्तवर्णः । -आळी -वि० केसरिया रंग का । -बाई -स्त्री० करमी देवी की बड़ी बहन ।

केसरक-देखो 'कासल' ।

केसरपूत-पु० हनुमान, बजरंग ।

केसरियाकंवर-पु० १ राजस्थान के एक लोक देवता । २ पति ।

केसरियो-पु० १ अफीम । २ नायक, रतिक । -वि० केसर जैसे रंग का ।

केसरी-पु० [सं० केसरिन्] १ सिंह । २ घोड़ा । ३ नाग केसर । ४ पुत्राग । ५ ब्रिजोरा नीव । ६ हनुमान के पिता । ७ एक प्रकार का बगुला । ८ सर्वोत्तम व्यक्ति । -वि० केसरिया रंग का, पीला । -नंदन (नि, नी), पूत-पु० हनुमान ।

केसव (बुं)-पु० [सं० केशव] १ परमेश्वर, ब्रह्म । २ विष्णु । ३ श्रीकृष्ण । ४ विष्णु की एक मूर्ति । -राह-पु० श्रीकृष्ण ।

केसवाळी-स्त्री० [सं० केश + अवली] १ केश राशि । केशों पंक्ति । अलक । २ देखो 'केसवाळी' ।

केसवी-देखो 'केसव' ।

केसि-देखो 'कमी' ।

केसिनी-स्त्री० [सं० केशिनी] १ जटामासी । २ सुन्दर व बड़े धातों वाली स्त्री । ३ एक अम्परा । ४ रावण की माता का नाम । ५ दुर्गा ।

केसिनी-पु० १ सिर के आजू-बाजू बालों में लगाया जाने वाला पुष्प । २ रमिक ।

केसी-पु० [सं० केशिन्] १ सिंह । २ घोड़ा । ३ श्रीकृष्ण द्वारा ध्वज एक राक्षस । ४ इन्द्र द्वारा बधित एक अन्य राक्षस । ५ श्रीकृष्ण । ६ एक यादव । -वि० १ प्रकाश वाला । २ प्रच्छन्न बालों वाला ।

केसू, केसूल (लौ)-पु० १ पलाश वृक्ष, टेसू । २ पलाश का पुष्प । केह-सर्व० कौन, किस । कृच्छ ।

केहड़-वि० कौनसा, ऐसा । कृच्छ ।

केहड़ली-वि० (स्त्री० केहड़ली) कैसा, कमी ।

केहड़ो-वि० (स्त्री० केहड़ो) कैसा ।

केहर-पु० [सं० केसरी] १ सिंह, जेर । २ वाद, केश ।

केहरी (री)-देखो 'केसरी' ।

केहवी-वि० (स्त्री० केहवी) कैसा । कौनसा ।

केहा-वि० कैसा । -कि० वि० कैसे ।

केहि (ही)-सर्व० किस । कौन । क्या । -वि० कौनसा, कैसा । अनेक, कई ।

केहेक-वि० कुछ । थोड़ा ।

केही-वि० (स्त्री० केही) कैसा । कौनसा । -सर्व० क्या । कि० वि० क्यों ।

कैकौ-सर्व० (स्त्री० कैकी) किसका ।

कैची-स्त्री० [तु०] १ वस्त्रादि काटने का उपकरण, कतरणी ।

२ परस्पर तिरछी करके रखी गई तीलियां या लकड़ियां ।

३ क्रोश चिह्न । ४ कुश्ती का एक दाव । ५ मालखंब की एक कसरत । ६ दोहरी समस्या ।

कैडू-कि० वि० कहाँ ।

कैत-पु० कपित्थ का वृक्ष ।

कैवा-पु० दमली के बीज ।

कैवार-स्त्री० [सं० कीर्ति + वार] कीर्ति, यश । प्रशंसा, स्तुति ।

कै-न० १ हिंजड़ा, क्लीब । -पु० २ भर्द । ३ पुरुष । ४ वायु ।

५ शब्द । -स्त्री० ६ सरम्बती । ७ वारणी । ८ वमन, कै,

उल्टी । -वि० १ बनवान, शक्तिशाली । २ पवित्र, शुद्ध ।

३ नञ् । ४ कितने, कितना । -अव्य० [सं० किम्] या,

अथवा । से । -सर्व० १ किस । २ क्या ।

कई-वि० कई, अनेक, कितने ही ।

कंक-वि० कितने ।

कंकळ-पु० एक प्रकार का गारा ।

कंडी (क)-वि० (स्त्री० कंडी) कैसा ।

कैजम (म्)-पु० १ घोड़े की झूल । २ युद्ध के समय घोड़े को धारण कराया जाने वाला कवच या पाखर ।

कैतम-पु० [सं०] मयु नामक दैत्य का छोटा भाई । -अरि, कदन, कदन, जित, रिपु, हनु-पु० विष्णु । ईश्वर ।

कैण-स्त्री० १ नमड़े की छोटी रस्मी । २ देखो 'केण' ।

कैण-सर्व० क्या ।

कैणावत-स्त्री० १ कहावत । २ किवंदनी ।

कैणी-स्त्री० [सं० कय्] १ कहने की क्रिया, साव या हंग । २ कथनी, चर्चा । ३ कहावत ।

कैणी (बी)-देखो 'कहणी' (बी) ।

कैतन-देखो 'कितन' ।

कैतसंयक-वि० कितने, कितना ।

कैतव-पु० [सं० कैतवः] १ झूल, कपट, धोखा । २ जूया, छूत । ३ बढ़ाना । ४ ठग, छलिया । ५ धनुरा । ६ वैदूर्यमणि ।

७ मुंगा । ८ चिरायता ।

कैतवापनति-स्त्री० [सं० कैतवापनति] एक अर्थालंकार ।

कैतवाली-स्त्री० [य० कहत + का. वाली] अज्ञान, दुष्काल ।

कैतूहल-देखो 'कुतूहल' ।

कंध-पु० १ कपित्थ वृक्ष । २ देखो 'कैय' ।
 कंद-स्त्री० [अ०] १ कारावास, जेल । २ बंधन । ३ अवरोध, रुकावट । ४ शर्त, प्रतिबंध । —खानो-पु० बंदीगृह, जेलखाना । —तनहाई-स्त्री० जेल की काल कोठरी में अकेले रहने की सजा । —महज-स्त्री० सादी कंद ।
 कंदारो-स्त्री० वासुदेवा नामक भाटों की जाति ।
 कंदी-पु० [अ०] बंदी ।
 कंधो-अव्य० या, अव्यवा, मानो ।
 कन-सर्व० कौन ।
 कनु, कने-सर्व० किमको ।
 कफ-पु० [अ०] १ नशा, मद । २ अफीम । ३ मातृन । ४ आनंद, हर्ष ।
 कैफियत-स्त्री० [अ०] समाचार, हाल, विवरण ।
 कैबर-पु० तीर, बाण ।
 कैम-पु० १ एक वृक्ष विशेष । २ देखो 'कैम' ।
 कैमखानी-पु० १ राजपूत से मुसलमान हुई एक जाति । २ इस जाति का व्यक्ति, क्यामखानी ।
 कैमर (री)-पु० धनुष ।
 कैमल-पु० [सं० क्रमेलक] ऊंट ।
 कैयां-क्रि० वि० कैसे, किस तरह ।
 कैर (झिंघो)-पु० १ एक कटिदार झाड़ी, करील वृक्ष । २ इस वृक्ष का फल । ३ देखो 'केर' ।
 कैरव-पु० [सं० कैरवः] १ जुआरी । २ ठग, प्रवचक । ३ शत्रु । ४ सफेद कमल । ५ कुमुद, कुई । ६ देखो 'कोरव' ।
 —दछल-पु० भीम । —बंघु-पु० चन्द्रमा ।
 कैरवि (बी)-पु० [सं० कैरविन्, कैरवी] १ चन्द्रमा । २ कुमुदिनी । ३ चन्द्रमा की चांदनी, जुन्हाई ।
 कैरसालो-स्त्री० दुःख, दुष्काल ।
 कैरी-पु० १ आंध्र में बल्लभ कुंडली वाला अशुभ बैल । २ एक आंध्र में चक्र वाला घोड़ा । ३ कच्चा आम । —वि० भूरे रंग की । २ तिरछी (आंध्र) । —सर्व० किसकी ।
 कैह-पु० कोरव ।
 कैहंडी-पु० नेर के आकार का एक खट्टा फल व इसका वृक्ष ।
 कैहंडी-स्त्री० मिट्टी का छोटा तवा ।
 कैरों-वि० १ भूरे रंग का । २ तिरछा । —सर्व० १ किसका । २ देखो 'कोरव' ।
 कैलडी-स्त्री० मिट्टी का तवा ।
 कैलास-पु० [सं० कैलास] १ हिमालय की एक चांदी जा तिब्बत में है । २ शिव का निवास स्थान । —उत्थाळ-पु० रावण । —नाथ-पु० शिव । कुबेर । —ग्रथ-पु० महादेव, शिव । कुबेर । —पत, पति, पत्नी-पु० महादेव, शिव । कुबेर ।

कैलासी-पु० [सं० कैलासिन्] १ कैलासनिवासी शिव । २ कुबेर ।
 कैलि-देखो 'कैलि' ।
 कैलू-पु० खपरैल ।
 कैवच-देखो 'कैवच' ।
 कैवली (बी)-देखो 'कहाली' (बी) ।
 कैवत-स्त्री० १ कहावत । २ किंवदन्ती ।
 कैवल्प-पु० [सं० कैवल्यम्] १ मोक्ष विशेष । २ एकत्व ।
 कैवा-देखो 'केवा' ।
 कैवाली (बी)-देखो 'कहाली' (बी) ।
 कैवार-पु० १ डिगल का एक गीत । २ एक मात्रिक छंद विशेष । ३ स्तुति, प्रशंसा । ४ देखो 'कैवार' ।
 कैवायली (बी)-देखो 'कहाली' (बी) ।
 कैवी-देखो 'केवा' ।
 कैसिको-स्त्री० नाटक की चार प्रमुख वृत्तियों में से एक ।
 कैसीक-वि० कैसी ।
 कैसोहेक-वि० कैसा ।
 कैहवत-देखो 'कैवत' ।
 कैही-वि० १ कैसी । कैसा । २ कई । —सर्व० कौनसी ।
 कैकल-स्त्री० १ परशुराम की माता रेणुका का एक नाम । २ दक्षिण भारत एक प्रदेश ।
 कैकलियार-स्त्री० रहट पर लगने वाली एक लकड़ी की कील ।
 कैकली-स्त्री० [सं०] १ कैकल देश की भाषा जो आर्य एवं द्रविड़ भाषा के मेल से बनी है । २ चांदी का एक कंगन विशेष ।
 कैकर-क्रि० वि० क्योंकर, कैसे ।
 कैचा-स्त्री० बहेलियों की चिड़िया फंसाने की छड़ ।
 कैल-सर्व० कौन ।
 को-पु० १ शोक । २ सोना । ३ चातक । ४ बालक । ५ क्रोध । ६ बाज पक्षी । —सर्व० [सं० कोऽपि] कोई, कौन, कुछ, कितना । —क्रि० वि० कभी नहीं । —अव्य० संबंध सूचक अव्यय, का ।
 को'-१ देखो 'कोह' । २ देखो 'कोस' । ३ देखो 'कौती' ।
 कोयल-देखो 'कोयल' ।
 कोइ, कोइक (यक)-सर्व० [सं० कोऽपि] कोई ।
 कोइट (टी)-देखो 'कोयटी' ।
 कोइडी-देखो 'कोयडी' ।
 कोइपन-सर्व० कोई नहीं ।
 कोइयो-देखो 'कोयी' ।
 कोइल (सी)-स्त्री० [सं० कोविल] कोयल ।

कोई (क)—सर्व० [सं० कोऽपि] १ ऐसा एक जो अनिर्दिष्ट व अज्ञात हो । २ बहुतेकों में से जो चाहे एक । —क्रि० वि० १ एक भी । २ लगभग, करीब ।

कोईको—वि० (स्त्री० कोइकी) कोईसा ।

कोईठो—देखो 'कोयठी' ।

कोईरी—देखो 'कोहिरा' । (स्त्री० कोईरी)

कोईसी—१ देखो 'कोइल' । २ देखो 'कोयसी' ।

कोईसी—देखो 'कोयसी' ।

कोउ (ऊ. क)—सर्व० [सं० कोऽपि] कोई । —स्त्री० [सं० कुपक] अग्निकुंड ।

कोक—पु० [सं०] (स्त्री० कोकी) १ चक्रवाक पक्षी । २ कोकिल । ३ मेंढक । ४ भेड़िया । ५ विष्णु । ६ रतिविद्या । ७ काम शास्त्र । ८ काम शास्त्र का ज्ञाता, पंडित । ९ संगीत का छठा भेद । —मर्क्० कोई । —कळा—स्त्री० रति विद्या, काम कला । काम शास्त्र । संभोग । —वेव—पु० कोक शास्त्र का पंडित । —नव—पु० लाल कमल । कमल । श्वेत कमल । —सार, सास्त्र—पु० काम शास्त्र, रतिशास्त्र ।

कोकड़—पु० [सं० कोकुट] १ बाल-वच्चे । २ पीलू के सूखे फल । कोकड़ियाँ—देखो 'कोकड़ी' ।

कोकड़ी—स्त्री० १ कच्चे मूत की लच्छी । २ डोरे की गिट्टी । ३ मदार का डोडा या फल । ४ पीलू के सूखे फल । ५ बंधन । ६ बाहु (भुजा) की मांस पेशी । ७ देखो 'कोकरड़ी' ।

कोकरणी (बी)—क्रि० १ कच्ची सिलाई करना । २ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना । ३ बुलाना । ४ भाले से छेदना । ५ मारना ।

कोकन, कोकम—पु० दक्षिण भारत का एक प्रदेश ।

कोकर—पु० कंकड़ ।

कोकरड़ी—स्त्री० १ छोटे कानों की बकरी । २ कान कटी बकरी । ३ देखो 'कोकड़ी' ।

कोकरी—स्त्री० हल के जूए के मध्य लगने वाली काष्ठ की कोनी ।

कोकरू (रू)—पु० स्त्रियों के कान का आभूषण ।

कोकरौ—पु० रहस्य के जूए में लगा कोना ।

कोकळ—स्त्री० बाल-बच्चे ।

कोकल, (ला)—स्त्री० [सं० कोकिल] १ कोयल । २ ककड़ी के मूँद टुकड़े ।

कोकव—पु० [सं०] एक संकर राग विशेष ।

कोका—स्त्री० [सं०] १ एक वृक्ष की सूखी पत्तियाँ जो चाय की तरह मानी जाती हैं । २ कंकड़ ।

कोकारी—स्त्री० १ चीत्कार, चोख । २ तेज आवाज ।

कोकाह—पु० माँद रंग का घोड़ा ।

कोकिल, (ला)—स्त्री० [सं० कोकिला] १ कोयल । २ छप्पय छंद का उन्नीसवाँ भेद । ३ जलता हुआ अंगारा । ४ युद्धप्रिय बावन बीरों में से एक । —आसण (न) —पु० चौरासी आसनों में से एक ।

कोकी—स्त्री० चकवी ।

कोकीन—स्त्री० कोका वृक्ष की पत्तियों से बनी एक तेज औषधि ।

कोकी—वि० १ थोथा, पोला, खोखला । —पु० नाक का एक आभूषण विशेष ।

कोख—स्त्री० [सं० कुक्षि] १ उदर, पेट । २ गोद । ३ गर्भाशय । —जली—स्त्री० वह स्त्री जिसके संतान होकर मर जाती है । —बंद, बंध—स्त्री० बंध्या स्त्री, बांझ ।

कोखक—स्त्री० [सं० कौक्षेयक] तलवार । कृपाण ।

कोखा—पु० गेहूँ का भूसा ।

कोयत—स्त्री० [सं० कौतुक] हंसी, मजाक, दिव्यगी ।

कोयति, (तो)—वि० मजाकिया, दिव्यगी करने वाला । —स्त्री० बुरी गति, अयोग्यति ।

कोड़, (ड़ि)—वि० [सं० कोटि] करोड़, कोटि । —स्त्री० १ करोड़ की संख्या । [सं० कोड] २ वक्षस्थल, गोद । ३ सूअर । —पसाव—पु० करोड़ रुपये का दान, पुरस्कार । —बरीस—वि० उक्त पुरस्कार देने वाला ।

कोड़िक—पु० [सं० कोटिक] कसाई ।

कोड़िकवाली—वि० करोड़ रूपयों के मूल्य का ।

कोड़ी—पु० [सं० कोड] १ सूअर । २ बीस की संख्या । —आळ—पु० सूअर । —डड़ौ—पु० सूअर, बराह । —धज—पु० करोड़पति ।

कोड़ीक, (ग)—वि० [सं० कोटिक] १ करोड़, अगणित । २ करोड़ रुपये के मूल्य का, अमूल्य ।

कोड़ू, कोड़ूक—वि० करोड़ के लगभग, करोड़ ।

कोड़ूसरी—पु० [सं० कोटि + ईश्वर + ई] करोड़पति ।

कोच—पु० [अ०] १ गद्देदार सीटों वाली गाड़ी या डिब्बा । २ देखो 'कवच' । —बकस, बरस, वगस—पु० घोड़ागाड़ी का वह ऊँचा स्थान जहाँ पर चालक बैठता है । —दाँन—पु० घोड़ागाड़ी का चालक ।

कोचर—पु० १ कोचरी । २ दाँतों में होने वाला छेद । ३ सुराख । ४ कोटर ।

कोचरणी (बी)—देखो 'कुचरणी' (बी) ।

कोचरी—स्त्री० उल्लू की जाति की एक चिड़िया ।

कोचोन—पु० दक्षिण भारत की एक प्राचीन रियासत ।

कोज—सर्व० कोई ।

कोजळिया—पु० बिना घोड़ा लट्टा ।

कोजागरीपूतम—स्त्री० आश्विन मास की पूर्णिमा ।

कोजी (सौ)-वि० (स्त्री० कोजी) १ कुरूप, भट्टा । २ बुरा, अनिष्टकारी ।

कोट-पु० [सं० कोटः] १ दुर्ग, गढ़, किला । २ शहर-पत्ताह, प्राचीर । ३ करोड़ की संख्या । ४ कमीज पर पहनने का, पूरी बांहों का मोटा वस्त्र । ५ शहर, नगर । ६ बिल, कोटर । [अं० कोट] ७ ताश का खेल । -वि० रक्षक ।

—चक्र-पु० शुभाशुभ जानने का एक तांत्रिक चक्र ।

—पाळ-पु० किलेदार ।

कोटक-वि० [सं० कोटिक] करोड़ ।

कोटडी (क)-स्त्री० [सं० कोट्टी] १ छोटा कमरा, कक्ष । २ बैठक । ३ छोटे जागीरदार की कचहरी । ४ छोटी जागीर । —खरच-पु० जागीरदारों द्वारा वसूल किया जाने वाला एक कर । —हावी-पु० आतिथ्य । मेजबानी ।

कोटबर-पु० नूढ़ में कटे वीरों के शिरों का ढेर ।

कोटर-पु० [सं० कोटरः] १ पेड़ का खोखला भाग, बिल । २ दुर्ग की रक्षार्थ चारों ओर का कृत्रिम वन ।

कोटरा-स्त्री० बाणामुर की माता का नाम ।

कोटवाळ-पु० [सं० कोटवाल] १ दुर्गरक्षक, किलेदार । २ कोतवाल । ३ नगर न्यायाधीश । ४ फक्कड़ों का चिमटा । ५ पिजारा जाति की एक शाखा ।

कोटवाळी-पु० १ नगर न्यायाधीश का कार्यालय । २ कोतवाल या किलेदार का कार्य । ३ देखो 'कोतवाली' ।

कोटसलेप-पु० राजा या जागीरदार को बंदी बनाकर रखने का स्थान । सलेमकोट ।

कोटोण-पु० करोड़ ।

कोटि (टी)-स्त्री० [सं० कोटिः] १ धनुष का शिरा, नोक । २ शस्त्र की नोक या धार । ३ समूह, जत्था । ४ वर्ग, श्रेणी । ५ श्रेष्ठता, उत्कृष्टता । ६ अग्र भाग । ७ घाट या तीर । ८ चरम सीमा या बिन्दु । ९ चन्द्रकला । १० करोड़ की संख्या । ११ राज्य या सत्तनत । १२ कोना । -वि० करोड़ ।

कोटिक (कक)-वि० [सं०] १ करोड़ों । २ अमरूप, बहुत । -पु० १ एक तरह का मेढ़क । २ इन्द्रगोप, वीर बहूटी । ३ मांस घेचने वाला कसाई । ४ खटीक । —तीरथ-पु० एक तीर्थ विशेष ।

कोटीक-देखो 'कोटिक' ।

कोटीर-पु० [सं० कोटीरः] १ मुकुट, ताज । २ कलंगी । ३ चोटी ।

कोटीसर (स्वर)-पु० [सं० कोटीस्वर] १ शिव का एक रूप । २ धनवान, करोड़पति ।

कोट्टी-स्त्री० [सं०] १ दान खोलने नंगी स्त्री । २ दुर्गा । ३ बाणामुर की माता ।

कोठ-पु० [सं०] १ एक प्रकार का कोढ़ । २ कोष्ठक, खाना । -वि० कुंठित ।

कोठई-क्रि० वि० कहाँ ।

कोठलियौ पु० मिट्टी की बनी छोटी कोठी, टंकी ।

कोठाकुचाल-पु० हाथियों का एक उदर रोग ।

कोठानील-पु० रंगरेजों से लिया जाने वाला कर ।

कोठार, कोठारियौ-पु० १ अन्नादि का भण्डार कक्ष, गोप । २ गाड़ी के नीचे बना सामान रखने का कोठा । ३ कुठार, कुल्हाड़ी ।

कोठारी-पु० भण्डारी, कोषाध्यक्ष, कोष प्रबंधक ।

कोठाळियो-देखो 'कोठार' ।

कोठी-स्त्री० १ बड़ा व पक्का मकान, भवन, हवेली, बंगला । २ बड़ी दुकान । ३ नौहे, मिट्टी या सीमेंट की टंकी, अनाज डालने का लंबोतरा मिट्टी का बड़ा पात्र । ४ वस्तु में बाँध रखने का भाग । ५ स्थान की साम । ६ बड़ा व गोल पात्र । ७ कूआ, झूप । ८ कोल्ह में तिल डालने का स्थान । ९ कूप के नीचे का भाग । —चल-स्त्री० एक प्रकार की वस्तु । —चाली, वाळ-पु० साहूकार, कारोवारी । महाजनी प्रक्षर ।

कोठे, कोठेड़-क्रि० वि० कहाँ, किधर ।

कोठेसर (स्वर)-पु० [सं० कोठेश्वर] शिव, महादेव ।

कोठे-देखो 'कोठे' ।

कोठी-पु० [सं० कोठक] १ बड़ा व चौड़ा कक्ष, कमरा । २ कोष, भण्डार । ३ भवन का ऊपरी कमरा, घटारी । ४ उदर, पेट । ५ गर्भाशय । ६ खाना, कोष्ठक, घर । ७ किसी एक अंग का पहाड़ा । ८ शरीर या मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग । ९ जलकुण्ड, झील । १० अनाज आदि के लिये बना गृह या तलगृह ।

कोठ्यार-देखो 'कोठार' ।

कोठेड़-पु० [सं० कोठेड़] १ धनुष, कमान । २ भौ ।

—धर-पु० धनुर्धारी योद्धा ।

कोठेड़ी (स)-पु० [सं० कोठेड़+ईश] १ अर्जुन का गांडीव धनुष । २ बड़ा धनुष । ३ धनुष ।

कोड़-पु० १ चाव, उत्साह, उमंग, जोश । २ हर्ष, खुशी । ३ उत्कण्ठा, अभिलाषा । ४ लाड, प्यार । ५ शोक । ६ सत्कार । ७ सूझ, वराह । ८ करोड़ की संख्या । ९ कोढ़ ।

कोड़पाळी-स्त्री० १ उवार (अन्न) की एक किस्म । २ देखो 'कोडायली' (पु०) ।

कोडाणी (बौ)-क्रि० कर्म करना, उमंगित होना ।

कोडायती, कोडायती, कोडायी, कोडायली-वि० (स्त्री० कोडायती कोडाई, कोडायली) १ उमंगित, उत्साहित । २ जोशीला । ३ हर्षित, खुश, जीकीन ।

कोडाळी-वि० (स्त्री० कोडाळी) १ स्वागत करने वाला । २ प्यार करने वाला । ३ उमंगित । -पु० १ एक प्रकार का घबड़ेदार सर्प । २ ऊंट के गले का प्राभूपण । ३ छोटा शंख ।

कोड़ि-स्त्री० १ किनारा, तट, कोर । २ देखो 'कोड़ी' ।

कोड़ियाळ (ळी)-पु० [सं० कोड़-पाल] १ सूअर, बराह । २ बराह अवतार । ३ देखो 'कोडायती' ।

कोड़ियाळी-स्त्री० १ कोड़ियों की माला । २ एक प्रकार की चिड़िया । ३ देखो 'कोडयाळी' ।

कोड़ियी-पु० १ कुम्हार का एक उपकरण । २ घास विशेष ।

कोड़ियी-देखो 'कोड़ियी' ।

कोड़ी-स्त्री० [सं० कपटिका] १ कोड़ी, कपटिका । २ आंख के अंदर का श्वेत भाग । ३ आंख का देला । ४ उमंग, उत्साह । ५ तट, किनारा । -वि० १ हृषित, प्रसन्न । २ अभिलाषी, उमंगित । ३ श्वेत, सफेद । ४ देखो 'करोड़' । ५ देखो 'कोड़ी' ।

कोड़ीकी (ळी)-वि० (स्त्री० कोड़ीकी) हृषित, उमंगित, शोकीन ।

कोड़े, (डे)-क्रि० वि० १ उत्साह से उत्सुकता से । २ कहां किधर ।

कोड़ी-पु० १ एक प्रकार का घबड़ेदार सर्प । २ बड़ी कोड़ी । ३ चल्चा, बालक । ४ कुहन, जलन । ५ वर्षा की छोटी छोटी बूदें ।

कोड़याळी-देखो 'कोड़ियाळी' ।

कोढ़-स्त्री० [सं० कुष्ठ] रक्त एवं त्वचा संबंधी एक संक्रामक रोग, कुष्ठरोग ।

कोढ़ण (णी)-स्त्री० कुष्ठ रोग से पीड़ित कोई स्त्री । -वि० दुष्टा ।

कोड़ियी, कोड़ी-पु० (स्त्री० कोढ़णी) कुष्ठ का रोगी । -वि० दुष्ट ।

कोण-पु० १ कोना । २ दो रेखाओं के बीच का अंतर । ३ दिशा । ४ दो दिशाओं के बीच की विदिशा । ५ सितार बजाने की नखिया । ६ मंगल ग्रह । ७ शनिग्रह । ८ तलवार आदि शस्त्रों की पैनी धार । ९ जन्म कुंडली में लग्न से नवम् व पंचम् स्थान । -बंड-स्त्री० घर के कोने में की जाने वाली कसरत । -सग-पु० चलते हुए लगड़ाने वाला घोड़ा । -संकु-पु० मूर्य की एक स्थिति जब वह न तो कोणवृत्त में होता है न उन्मंडल में ।

कोणप-पु० [सं० कोणप] १ राक्षस, असुर, दैत्य । २ शव, मुर्दा । -कोण-पु० नैर्ऋत्य कोण ।

कोणस्त-पु० शनिश्चर ।

कोणाकोणी-क्रि० वि० एक कोने से दूसरे कोने तक ।

कोणाघात-पु० [सं०] एक लाख हुडक व दस हजार डोलों की एक साथ बजने की आवाज ।

कोत-पु० बन्दूकों का जूड़ा ।

कोतक (ग)-देखो 'कौतुक' ।

कोतकी (गी)-देखो 'कौतकी' ।

कोतरणी (बी)-देखो 'कूतरणी' (बी) ।

कोतल-पु० [फा०] १ बिना सवार का सजा-सजाया घोड़ा । २ राजा की सवारी का घोड़ा । ३ आदर्यता के लिए तैयार रहने वाला अन्य घोड़ा ।

कोतवाळ-पु० [सं० कोटपाल] १ नगर रक्षक, पुलिस अधिकारी । २ साधु का चिमटा । ३ कुत्ता । ४ देखो 'कोटवाळ' ।

कोतवाळी-स्त्री० १ कोतवाल का पद । २ कोतवाल का कार्य । ३ कोतवाल के कार्य करने का दफ्तर ।

कोता-वि० [फा० कोतह] १ छोटा, लघु । २ कम, अल्प । -खानी-स्त्री० एक प्रकार की कटार ।

कोताई-स्त्री० [फा० कोनाही] १ कमी, अल्पता । २ लघुता, छोटापन । ३ भूल, गफलत । ४ नापरवाही ।

कोताड़ी-स्त्री० छोटे कानों की बकरी ।

कोतिक (क, ग)-देखो 'कौतुक' ।

कोतिल-देखो 'कोतल' ।

कोतुक-देखो 'कौतुक' ।

कोतुहळ (हल)-देखो 'कौतुहळ' ।

कोथळियी, कोथळी-स्त्री० १ कपड़े की छोटी धैली । २ ऐसी धैली में भरा सामान ।

कोथळी-पु० १ बड़ा धैला । २ जाटों की एक वैवाहिक प्रथा ।

कोथी-स्त्री० म्यान के शिरे पर लगा धातु का छल्ला ।

कोवंड-पु० [सं०] धनुष ।

कोव-स्त्री० १ दिशा । २ कोना । ३ नोक । -क्रि० वि० ओर, तरफ ।

कोवाळ-पु० १ एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । २ कुदाल ।

कोवाळी (ळी)-देखो 'कुदाळी' ।

कोवू-पु० कौदा नामक हल्का अनाज ।

कोन, कोनन-देखो 'कोण' ।

कोनार-स्त्री० किमानों से लिया जाने वाला एक कर ।

कोनी (कोन्यां)-क्रि० वि० नहीं, कभी नहीं ।

कोनीयो-पु० चौकोर वस्तु की मजबूती के लिए चारों ओर लगाया जाने वाला लोहे की पत्ती का बंद ।

कोप-पु० [सं०] १ क्रोध, गुस्सा, रोष । २ लठ्ठने का भाव । ३ नायिका का मान । ४ नाराजगी । -भवन-पु० राज महल का एक कक्ष जिसमें रानियां रुठ कर जाती थीं ।

कोपट-पु० संहार, ध्वंस ।

कोपणी

(२६३)

कोरडी

कोपणी (बौ)-क्रि० [सं० कुप्] १ कुपित होना, क्रोध करना ।
२ नाराज होना । ३ क्रूर दृष्टि डालना ।

कोपनल-पु० कोपानि । क्रोधाग्नि ।

कोपर, कोपरियो, कोपरी-पु० १ पत्थर का छोटा खण्ड ।
२ मकान के द्वार में दोनों ओर लगाये जाने वाले चपटे पत्थर । -स्त्री० [सं० कूर्परः] ३ कोहनी । ४ बड़ई का एक औजार ।

कोपवाळ-पु० क्रोधी व्यक्ति, गुस्सेल ।

कोपान-पु० [सं० कोषपान] खुद को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अभियुक्त द्वारा किया जाने वाला देव-कलश का जलपान ।

कोपानलि-स्त्री० क्रोधाग्नि ।

कोपायत-वि० क्रुद्ध ।

कोरि (पो)-वि० क्रोधी, गुस्सेल । कोई भी ।

कोपीन-पु० [सं० कौपीन] माधु या ब्रह्मचारी की लंगोटी, वस्त्र ।

कोफळी-पु० १ बकरा, बकरी । २ कनड़ी के मूखे टुकड़े ।

कोपत-पु० [पा०] १ लोहे पर सोने-चांदी की पच्चीकारी ।
२ पके मांस का मासक विशेष । ३ रंज, दुःख, खेद ।
४ हेरानी । -गरी-स्त्री० पच्चीकारी का कार्य ।

कोपती-पु० [फा० कोपता] मांस व अन्य मसालों के योग से बना एक गंदनुमा नमकीन व्यंजन ।

कोविद-देखो 'कोविद' ।

कोबीदार-पु० [सं० कोविदार] कचनार का वृक्ष ।

कोमंकी, कोमंखो-वि० [सं० कोपांकी] १ क्रोधी स्वभाव वाला । २ उग्र योद्धा ।

कोमंड-देखो 'कोरंड' ।

कोम-पु० [सं० कूर्म] १ कछुआ, कच्छप । २ कूर्मावतार ।
३ देखो 'कीम' ।

कोमल-वि० [सं० कोमल] १ मुलायम, नरम । २ मृदु, यधुर ।
३ मंद, धीमा । ४ सुकुमार । ५ सुन्दर, मनोहर ।
६ कच्चा । -पु० संगीत में एक स्वर भेद । -ता-स्त्री० मुलायमी, नरमी । मधुरता, मृदुलता । धीमापन ।
नुकुमारता । सुन्दरता ।

कोमाज-पु० १ एक प्रकार का चमकीला काज । २ सफाई ।

कोमारी-देखो 'कुमारी' ।

कोमुंड-देखो 'कोरंड' ।

कोय-सर्व० १ कोई । २ किसी को । -वि० कुछ ।

कोयक-सर्व० कोई एक, कोईसा ।

कोयडी-पु० १ एक प्रकार का चाबुक । २ कपड़े की बनी गेद ।
३ एक देशी खेल विशेष । ४ देखो 'कोयी' ।

कोयटी (डी)-पु० [सं० कूरोत्यर] चरम से पानी मींचा जाने वाला कुम्हा ।

कोयण (न)-पु० [सं० कोचन] १ ग्रांथ का कोना । २ ग्रांथ का डेना । ३ ग्रांथ, नेत्र । [सं० कोपन] ४ शत्रु ।

कोयनी-देखो 'कोनी' ।

कोयसळ-देखो 'कोपानळ' ।

कोयर-देखो 'कोहर' ।

कोयरी-देखो 'कोईरी' । (स्त्री० कोयरी)

कोयल (डी)-स्त्री० [सं० कोकिल] १ काले रंग की एक मधुर भाषी चिड़िया । २ मकंद व नीले फूलों की एक लता विशेष । ३ एक लोक गीत ।

कोयलक-पु० [सं० कौलकेय] कृत्ता, श्वान ।

कोयलाराणी-स्त्री० यो० १ लक्ष्मी । २ एक देवी विशेष ।

कोयली-स्त्री० १ बाहुमूल के नीचे पीठ में होने वाली एक ग्रंथि ।
२ इस ग्रंथि से व्यर्थ होने वाला शरीरांग । ३ रस्सी के निचे में घटका रहने वाला लकड़ी का एक टुकड़ा ।
४ अपराजिता । ५ देखो 'कोयल' ।

कोयली-पु० [सं० कोकिल] १ अधजली लकड़ी का खंड या बुझा हुआ अंगारा जो दुबारा जलाने के काम आता है ।
२ रेल के इंजन या मंगीठी में जलाने का एक खनिज पदार्थ ।

कोयी-देखो 'कोई' ।

कोयी-पु० [सं० कोच] १ ग्रांथ का कोना । २ ग्रांथ की पुतली ।
३ सूत की छोटी लच्छी या गुंठा ।

कोरंभ-पु० १ मिट्टी का बर्तन, कुंभ । २ देखो 'कूरम' ।

कोर-स्त्री० [सं० कोटि] १ किनारा, छोर । २ मिरा । ३ सीमा ।
४ पंक्ति, कतार । ५ दृष्टि । ६ कोना । ७ अंतराल ।
८ हाथिया । ९ दोष, ऐब । १० हथियार की धार ।
११ द्वेष, वैर । १२ स्त्रियों के वस्त्रों में लगने वाला तार गोटा । -कतरणी-स्त्री० एक देशी खेल । -कसर-स्त्री० कमी, दोष, ऐब । -गोटो-पु० तार-गोटे का फीता ।
-पांख (ली)-वि० मांड लगा या बिना धुला (कपड़ा) ।
-स्त्री० रबी की फसल की प्रथम सिचाई ।

कोरक-पु० [सं० कोरक] १ कली (पुष्प) । २ सुगंध द्रव्य विशेष ।

कोरड़ (डी)-पु० १ एक प्रकार का वास । २ मोठ की फनी, दाना आदि महिज मोठ का चारा ।

कोरडू-पु० भिगाने या ग्रांथ पर पकाने पर भी सूखा रह जाने वाला द्रिदल अनाज का दाना ।

कोरडो-पु० १ लकड़ी का दस्ता लगा चाबुक । २ ननेजक वात ।
३ मर्म की बात । ४ कुशी का एक दाब । -क्रि० वि० मात्र, सिर्फ ।

कोरट-पु० [सं० कोर्ट] १ अदालत, कचहरी । [रा०] २ कटारी ।
कोरड-देखो 'कोरड' ।

कोरल-पु० १ काले बादल के किनारे का श्वेत बादल ।
२ बूल की आंधी ।

कोरलावटी-स्त्री० मारवाड़ के अन्तर्गत एक प्रदेश ।

कोरलण्णी-पु० वधू के मामा की ओर से दी जाने वाली पोशाक विशेष ।

कोरली (नी)-स्त्री० [सं० कोटनी] १ चित्रकारी । २ पत्थर पर खुदाई, संगतराशी । ३ एक प्रकार की हजामत ।
—वार-वि० चित्रित ।

कोरली (बी)-क्रि० [सं० कोटनम्] १ चित्रकारी करना । २ पत्थर पर खुदाई करना । ३ आड़ी, तिरछी रेखाएं खींचना ।

कोरम-पु० [सं०] १ किसी सभा या ममिति के सदस्यों की अपेक्षित संख्या । २ देखो 'कूरम' ।

कोरमी-पु० १ खलिहान में अनाज साफ करने पर अवशिष्ट रहा अनाज व मूसा । २ मूंग या चने की दाल का चूरा । ३ एक प्रकार का सूना हुआ मांस । -वि० (स्त्री० कोरमी) चित्रित ।

कोराह्वाइट-पु० एक प्रकार का बरूद विशेष ।

कोरवाण-देखो 'कोरवाण' ।

कोराई-स्त्री० १ रुखापन, रुखाई । २ चित्रकारी या नक्काशी का कार्य । ३ चित्रकारी का पारिश्रमिक ।

कोराड़ी-पु० आकाश से बादलों के हट जाने पर मूखा दृश्य ।

कोराणी (बी), कोराधणी (बी)-क्रि० १ चित्रकारी कराना । २ पत्थर पर खुदाई कराना ।

कोरी-वि० (स्त्री० कोरी) १ जिसका अभी उपयोग न हुआ हो । नया, अद्युता । २ जिस पर लिखा न गया हो, खाली, रिक्त, सादा । ३ साफ । ४ जिससे जल-स्पर्श न हुआ हो । ५ अंचित, रहित । ६ निदोष, बेदाग, निष्कलंक । ७ शुष्क, सूखा । ८ रूखे स्वभाव का । ९ उदासीन । १० अशिक्षित, मूढ़ । ११ निरोध । —गोफिया-पु० एक प्रकार का शस्त्र । —मोरी-वि०-बिल्कुल कोरा । टकामा ।

कोलबक-पु० [सं०] बीणा का डंडा व तूंबा । बीणा का डंडा ।

कोल, कोल-पु० [सं० कोलः] १ मूअर, बराह । २ बराह अवतार । ३ नाव । ४ वेड़ा । ५ वक्षन्वय । ६ गोड । ७ कुल्हा । ८ कुबड़ा । ९ अतिमन । १० शनियद्र । ११ एक जंगली जाति । १२ एक प्राचीन प्रदेश । १३ पुरुवंशीय राजा आक्रीड का पुत्र । १४ एक तोले का तोल । १५ एक प्रकार का घेर । १६ काली या गोद मिर्च । १७ कौंच नामक लता

विशेष । १८ देखो 'कोल' । —मुखी-स्त्री० मूअर के समान मुंह वाली एक तोप ।

कोलक-पु० [सं०] १ अश्वरोट का वृक्ष । २ काली मिर्च । ३ भारी तेज करने का एक औजार ।

कोलक्षेम-देखो 'कुसलक्षेम' ।

कोलगिरि-पु० [सं०] दक्षिण भारत का एक पर्वत ।

कोलजोडियो-पु० विवाह के समय दुल्हन के पहनने का वस्त्र ।

कोलणो (बी)-क्रि० खोदना, गहरा करना ।

कोलर-पु० हड्डी, अस्थि ।

कोलाण-पु० गुलाबी फूलों वाला एक छोटा वृक्ष ।

कोलांमण-पु० वर्षा ऋतु का भूरा बादल ।

कोलात, (यत)-पु० [सं० कपिलपद] बीकानेर के पास स्थित कपिल मुनि का एक आश्रम जो तीर्थ माना जाता है ।
—स्त्री० कुशलक्षेम ।

कोलाल, (क)-पु० [सं० कुलाल] १ कुम्भकार, कुम्हार । २ जंगली मुर्गा ।

कोलाळी-पु० [सं० कुलाल] १ बह्ना । २ उल्लू । ३ जंगली मुर्गा । ४ कुम्हार । ५ एक पक्षी विशेष ।

कोलाहट-पु० [सं०] नृत्य कला में प्रवीण व्यक्ति ।

कोलाहळ (ळ)-पु० [सं० कोलाहल] १ शोर मूल, हल्ला-गुल्ला । २ चीख, चिल्लाहट । ३ जोर की अव्यक्त ध्वनि, आवाज ।

कोलियी-पु० [सं० कवलक] पशु के मुंह में एक साथ घास आदि का दिया जाने वाला भाग ।

कोलियो, कोली-वि० १ छोटी आंख वाला । २ तिरछी आंख से देखने वाला ।

कोळी-स्त्री० १ एक जंगली जाति । २ काठियावाड़ की एक शासक जाति । ३ मुजबंद । —कांदी-पु० एक औषधि विशेष । —वाड़-स्त्री० मकड़ी ।

कोळू-पु० पश्चिमी राजस्थान का एक स्थान जहां प्रसिद्ध बीर पात्र राठीह का स्मारक है ।

कोलेयक-पु० [सं० कोलकेय] कुत्ता, श्वान ।

कोळी-क्रि० वि० मकुशल, कुशलता पूर्वक ।

कोळी-पु० १ कुम्मांड नामक फल, कुम्हड़ा । २ मूअर ।

कोल्हू-पु० १ तेल निकालने या उख पेलने का यन्त्र । २ खपरल ।

कोवड-देखो 'कोदंड' ।

कोवंस-पु० [सं० को-वंश्य] श्राद्ध के दिन कौओं को खाने के लिये बुलाने की आवाज ।

कोविड-वि० [सं०] १ बुद्धिमान, पंडित, विद्वान । २ अनुभवी । ३ चतुर, वक्ष ।

कोस-पु० [सं० कोश] १ प्रायः दो मील की दूरी का नाप ।
[सं० केश, कोष] २ पंच पात्र नामक पूजा का पात्र ।
३ तलवार की म्यान । ४ वह ग्रंथ जिसमें किसी भाषा के शब्दों का अर्थ संहित क्रमशः संग्रह किया गया हो ।
५ शब्द संग्रह । ६ संग्रह । ७ खजाना, भण्डार । ८ अण्डकोश ।
९ आवरण, खोला । १० अण्डा । ११ गर्भाशय ।
१२ योनि । १३ लिग । १४ गोला । १५ गेंद । १६ फल की गुठली । १७ फूल की कली । १८ जायफल । १९ सुपारी ।
२० कठौती । २१ बाट्टी । २२ संदूक । २३ धन, दौलत । २४ मोना-चांदी । २५ वेदान्त के अनुसार पांच प्रकार के कोण । २६ मोट, चरम । २७ रेशम का कोया । २८ कपट-छल । २९ ऊंट का गुत्ता ।
—कार-पु० शब्दकोश बनाने वाला । म्यान बनाने वाला ।
—नायक, पति-पु० कोषाध्यक्ष, खजांची ।

कोसक-देखो 'कोमिक' ।

कोसणी (बौ)-क्रि० १ छोटना, झपटना । २ लूटना ।
३ भला-बुरा कहना । ४ विलाप करना, रोना ।
५ शाप देना । ६ निंदा करना ।

कोसल, कोसल्या-पु० [सं० कोशल] १ अयोध्या का एक नाम ।
२ देखो 'कोसल्या' । —नंदन (न)-पु० श्रीरामचन्द्र ।

कोसातकी-स्त्री० तीराई, तोह ।

कोसाध्यक्ष-पु० [सं० कोषाध्यक्ष] खजांची, कोष का अधिकारी ।
कोसिक-देखो 'कोसिक' ।

कोसी-स्त्री० [सं० कोशिकी] १ नेपाल के पहाड़ों से निकलने वाली एक नदी । २ एक राग विशेष । [सं० कोशी]
३ फली ।

कोसीटी-देखो 'कोयटी' ।

कोसीद-पु० [सं० कोसीदम्] आलस्य, सुस्ती ।

कोसीस-पु० [सं० कपि-शीर्षक] १ किले या गढ़ की दीवार के कंगूरे । २ शिखर । [फा० कोशिश] ३ प्रयत्न, प्रयास ।

कोसेक-क्रि० वि० कोम के लगभग ।

कोमेश-पु० [सं० कोशेश] रेशम ।

कोसी-पु० कोल्ह में से खनी हटाने का लोह दण्ड । २ वादल में पानी का संग्रह । ३ देखो 'कोम' ।

कोस्तब-देखो 'कौस्तुभ' ।

कोह-पु० [फा०] १ पर्वत, पहाड़ [सं० कोषपान] २ अपराध या कलंक से मुक्ति हेतु किया जाने वाला देवजल का पान ।
३ क्रोध, गुस्सा । ४ धूल, रज । —काह-पु० यूरोप व एशिया के बीच का पहाड़ । देखो 'कोम' ।

कोहक-देखो 'कुहक' ।

कोह्मि-स्त्री० [सं० कोशमि] क्रोशमि । गुस्सा ।

कोहनूर-पु० १ एक प्रसिद्ध हीरा, कोहिनूर । २ मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान ।

कोहमंद-पु० कोदंड ।

कोहमा-स्त्री० यलि, रज ।

कोहर-पु० [सं० अकूपार] कूप, कूआ ।

कोहा-सर्व० कीत ।

कोहिक-सर्व० कोई ।

कोहिर-देखो 'कोहर' ।

कोहीरौ-वि० [सं० कोधी] १ कोधी स्वभाव का । २ तुच्छ विचारों वाला । ३ मन ही मन कुड़ने वाला । ४ द्वेषी, ईर्ष्यालु ।

कोहेतुबानान-पु० मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान ।

कोँझर-देखो 'कुमार' ।

कौकुम-पु० [सं०] पुच्छल तारा ।

कौच (छ, छि)-पु० १ कौच नामक लता । २ कौच पक्षी ।

कौण-१ देखो 'कोण' । २ देखो 'कौन' ।

कौतयस, कौतेय-पु० [सं० कौतेय] कुन्ती का कोई पुत्र ।

कौपल-देखो 'कौपल' ।

कौम-पु० [सं०] सौ वर्ष पुराना घी ।

कौसलर-पु० [अ०] परामर्श दाता, सलाहकार । पार्षद ।

कौसिल-स्त्री० [अ०] सलाहकार समिति, परिषद् ।

कौ-पु० १ वृषभ । २ नर । ३ कामदेव । ४ यम । ५ कार्य, कर्म । —वि० धृष्ट । —सर्व० कोई । —अन्य संबंध सूचक अव्यय, का ।

कौगत-स्त्री० हंसी, मजाक, दिल्लगी ।

कौगतीयो, कौगती-वि० १ हंसी मजाक करने वाला । २ ठिठोली करने वाला ।

कौड़ि-१ देखो 'कौड़ी' । २ देखो 'कोड़ि' ।

कौड़ियाली-वि० (स्त्री० कौड़ियाली) १ कौड़ियों से युक्त । २ कौड़ी के रंग का । —पु० १ केकई रंग । २ एक विपैला सर्प ।

कौड़ियो, कौड़ीयो-पु० खंजरीट नामक पक्षी ।

कौच-पु० कवच, वस्त्र ।

कौचुमार-पु० कुरूप को सुन्दर बनाने की विद्या ।

कौडी-स्त्री० [सं० कपदिका] १ कपदिका, कौड़ी । २ सबसे कम मूल्य का एक प्राचीन सिक्का । ३ आंख का डेला । ४ पसत्रियों का संविस्थल ।

कौण-१ देखो 'कौन' । २ देखो 'कोण' ।

कौतक-देखो 'कौतुक' ।

कौतकी-वि० [सं० कौतुक + ई] १ कौतुक करने वाला । २ विह्वल । ३ हंसी मजाक करने वाला ।

कौतल-देखो 'कौतल' ।

कीर्तिक, कीर्तिक (ग) कीर्तिक-पु० [सं० कीर्तिक] १ खेल, तमाशा ।
 २ कीड़ा, ग्रामोद-प्रमोद । ३ हंसी, मजाक । ४ हर्ष
 ब्राह्मण । ५ महोत्सव ।
 कीर्तुहल, कीर्तुहल-पु० [सं० कीर्तुहल] १ कीर्तिक उत्सुकता ।
 २ कीर्तुहल । ३ ब्राह्मण, विस्मय । -वि० १ अद्भुत,
 विलक्षण । २ श्लाघ्य, प्रसिद्ध ।
 कीर्वाळ-देखो 'कुदाळ' ।
 कीर्त-मर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम ।
 कीर्त-पु० बर्दई का एक छोटा ।
 कीर्त-देखो 'खीक' ।
 कीर्तरी-वि० काफिर की, काफिर संबंधी ।
 कीर्त-स्त्री० [अ०] १ जाति वर्ग । २ वर्ग ।
 कीर्तदी-स्त्री० [सं० कीर्तदी] १ चांदनी । २ प्रकाश देने वाला
 पदार्थ । ३ कान्तिक माम की पूर्णिमा ।
 कीर्तार-देखो 'कुमार' ।
 कीर्तारी-स्त्री० १-६४ योगनियों में से एक । २ देखा 'कुमारी' ।
 कीर्तियत-स्त्री० [अ०] ज्ञानीय भावना । -क्रि० वि० कीर्त के
 बारे में ।
 कीर्त-वि० कीर्त या ज्ञान संबंधी ।
 कीर्त-पु० [सं०] १ राजा कुरु की संतान । २ धृतराष्ट्र के
 माँ पुत्र । -दृष्ट-पु० भीम ।
 कीर्त-१ स्त्री० एक प्रकार बड़ा चूहा ।
 २ देखो 'कीर्त' ।
 कीर्त-पु० [अ०] १ वादा, वचन, इकरार । २ प्रण, प्रतिज्ञा ।
 ३ कथन । ४ प्रतिज्ञापत्र । [सं०] ५ वाम मार्ग के सिद्धांत ।
 ६ वाम मार्ग का तांत्रिक । ७ ब्रह्मज्ञानी ।
 -वि० १ कृत्नी । २ पैतृक । ३ देखो 'कीर्त' ।
 -नामी-पु० इकरारनामा ।
 कीर्तका-स्त्री० [सं० कीर्तका] कालीमिर्च ।
 कीर्तलेम-देखो 'कुमलक्षेम' ।
 कीर्तपु० ज्योतिष में एक करण ।
 कीर्त-स्त्री० [सं० कीर्त] पिप्पली ।
 कीर्तपो-पु० १ बैल के मुख में हाथ से एक माष खिलाया जाने
 वाला घास । २ घास, कीर्त ।
 कीर्तक-पु० इन्द्र । -बाहरण, बाहरण-पु० इन्द्र का हाथी
 गिरावत ।
 कीर्तकी-देखो 'कीर्तकी' ।
 कीर्तक, कीर्तक-देखो 'कीर्तक' ।
 कीर्तका-स्त्री० कुश की शय्या ।
 कीर्तक-पु० [सं० कीर्तक] १ कुशलक्षेम, प्रसन्नता । २ समृद्धि ।
 ३ कुशलता, दक्षता, चतुर्गद ।
 कीर्तलि, कीर्तल्या-स्त्री० [सं० कीर्तल्या] श्रीराम की माता ।

कीर्तक-पु० [सं० कीर्तक] १ विश्वामित्र । २ इन्द्र ।
 ३ उल्लू । ४ कोशकार । ५ संपेरा । ६ नेवला । ७ गूगल ।
 ८ गूदा, मज्जा, सार । ९ शृंगार । १० एक राग विशेष ।
 कीर्तकी-स्त्री० [सं० कीर्तकी] १ बिहार की एक नदी ।
 २ एक रागिनी । ३ काव्य में एक वृत्ति । ४ दुर्गा देवी ।
 ५ चौसठ योगिनियों में से त्रेपनवी योगिनी ।
 कीर्तकी-स्त्री० [सं० कीर्तकी] १ अगस्त्य की स्त्री ।
 २ ऋग्वेद की एक शाखा ।
 कीर्त (या)-वि० [सं० कीर्त] रेशम का, रेशमी । -पु० रेशमी
 वस्त्र, लहंगा । -स्त्री० [सं० कु-शय्या] बुरी शय्या ।
 कीर्तुम-स्त्री० [सं०] १ समुद्र मंथन से प्राप्त एक प्रसिद्ध
 मणि । २ विष्णु की एक उपाधि । ३ एक तांत्रिक मुद्रा ।
 क्यउं, क्यऊं-क्रि० वि० क्यो, किमलिये । किस प्रकार ।
 क्यम-देखो 'किम' ।
 क्यव-देखो 'कवि' । -राज-कविगज ।
 क्य-क्रि० वि० क्यो, किमलिये । -मर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम ।
 किस । कीर्त ।
 क्यमखानी, क्यमखुल-देखो 'कैमखानी' ।
 क्यार-क्रि० वि० कैसे । -वि० कैसा ।
 क्यारो-वि० (स्त्री० क्यारो) कैसा । किस बात का ।
 -सर्व० किसका ।
 क्यारि, क्यारो, क्यारो-सर्व० किम, कीर्त । -वि० कुछ ।
 -क्रि० वि० किधर, कहीं ।
 क्य-सर्व० [सं० किम] एक प्रश्न वाचक सर्वनाम ।
 क्यार-क्रि० वि० १ किम प्रकार, कैसे । २ देखो 'क्याट' ।
 क्यारो-देखो 'किदाओ' ।
 क्यार-देखो 'क्यार' ।
 क्यारो-देखो 'क्यारो' ।
 क्यारो-स्त्री० [सं० केदार] खेत या बगीचे की क्यारी ।
 क्यारो-सर्व० किसका । -पु० खेत या बगीचे का क्यारा ।
 क्यार-पु० १ कार्य, काम, बड़ा काम । २ दान । ३ एहसान,
 उपकार । ४ उदारता । ५ पश, गौरव । ६ यशस्वी कार्य ।
 क्यार (री, री)-वि० १ उदार, दातार । २ यशस्वी ।
 ३ बड़ा काम करने वाला । ४ देखो 'क्यार' ।
 क्यार-क्रि० वि० क्यो-क्यों पर ।
 क्युं, क्युं, क्यो, क्यो-प्रत्यय [सं० किम] क्यो, किमलिये ।
 वि० कुछ ।
 क्यार, क्यार-पु० कवच ।
 क्यार, क्यार-स्त्री० कौचपक्षी, कुंज ।
 क्य-देखो 'क्यार' ।
 क्यार (खी)-स्त्री० कवि, खेती ।

कंदन

(२३०)

कपीट

कंदन-पु० [सं० कंदनं] १ रुदन, रोना, विलाप । २ पारस्परिक लज्जकार (युद्ध) ।

कग (ग)-देखो 'करग' ।

कगल, कगलिधू (ल)-देखो 'कगल' ।

कण-१ देखो 'करण' । २ देखो 'कण' ।

कतंत-पु० [सं० कृतांत] १ यमराज, काल । २ मृत्यु, मौत । ३ शनिग्रह । ४ शनिवार । ५ देवता । ६ पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मफल, प्राग्बन्ध । ७ सिद्धांत । ८ पाप । ९ भरणी नक्षत्र । १० दो की संस्था । -वि० घन करने वाला ।

कत-पु० [सं० कृत, कृत्य] १ कार्य, कर्म । २ शुभ कार्य । ३ कर्त्तव्य । ४ सेवा । ५ क्रिया । ६ फल, परिणाम । ७ प्रयोजन, उद्देश्य । ८ चार युगों में प्रथम, युग । सतयुग । ९ चार की संस्था । १० कपट, छल । [सं० कृतिन् कृती] ११ कवि, पंडित । १२ विद्वान् व्यक्ति । १३ देवता । -स्त्री० १४ कीर्ति । -वि० [कृत, कृतं] १ किया हुआ । २ करने योग्य, उपयुक्त । ३ संभव-साध्य । ४ विश्वासघाती । -गुण-वि० भाला या उपकार करने वाला, उपकारक । -घण, घणी, घन, घनी, घन, घनी-वि० उपकार न मानने वाला कृतघ्न । -जुग-पु० सतयुग । -ब्रूखार-पु० इंद्र । -धंती, धुंसी, ध्वंसी-पु० शिव, महादेव । -पूर-शोभायुक्त । -भुज-पु० देवता । -माळा-स्त्री० दक्षिण की एक छोटी नदी । -मुख-वि० कुशल । पुण्यात्मा । -वासा-पु० शिव, महादेव ।

कतका-देखो 'कृतिका' ।

कतब-देखो 'करतब' ।

कतवरमा-पु० [सं० कृतवर्मन्] कौरव पक्षीय एक घोड़ा ।

कतवीरज (य)-पु० [सं० कृतवीर्यं] कृतवर्मा का भाई ।

कतांत-देखो 'कतंत' ।

कतान-स्त्री० [सं० कृतवन्न] अग्नि ।

कतारथ (यी)-वि० [सं० कृतार्थ] १ नफल । २ संतुष्ट । ३ प्रसन्न । ४ निहाल । ५ कृतकृत्य । ६ दक्ष, चतुर ।

कति-स्त्री० [सं० कृति] १ काम, कार्य । २ रचना । ३ कारकृत । ४ पुण्यार्थ । ५ चोट । ६ जादू टोना, इन्द्रजाल । ७ पंडित, विद्वान् । ८ धोस की संस्था ।

कतिका-स्त्री० [सं० कृतिका] १ सप्ताह नक्षत्रों में से तारा । २ इस नक्षत्र के तारों का समूह । -नंद-पु० स्वामि कार्तिकेय । -सुत, सूत-पु० स्वामिकार्तिकेय ।

कतिम-वि० बनावटी, नकली ।

कती-देखो 'कति' ।

कतु (तु)-पु० [सं० कृतुः] १ विष्णु की एक उपाधि । २ विष्णु । ३ निश्चय, संकल्प । ४ इच्छा, कामना । ५ विदेक, प्रजा । ६ इन्द्रिय जीव । ७ आपाद । ८ धर्म, पुण्य । ९ ब्रह्मा का एक मानव पुत्र । १० सतयुग । ११ यज्ञ । -ध्वंसी-पु० शिव, महादेव । -पशु-पु० घोड़ा, भ्रष्ट । -भक्षण-१० देवता, भुज ।

कतिकर्जि-पु० [सं०] भ्रष्टमेव यज्ञ के घोड़े या शकटाकार तिलक ।

कतिका-देखो 'कृतिका' ।

कत्य-१ देखो 'कत' । २ देखो 'कृतिका' ।

कत्या-स्त्री० [सं० कृत्या] १ एक देवी विशेष । २ नाविकों की एक राक्षसी । ३ दुष्टा व कर्कशा स्त्री । ४ अभिचार ।

कन-देखो 'करण' ।

कनतात-पु० [सं० कर्णतात] सूर्य । २ वि

कनाण-१ देखो 'किरण' । २ देखो 'किरणाळ' ।

कनाळ-स्त्री० १ बंदूक । २ देखो 'किरणाळ' ।

कन-देखो 'करण' ।

कन्ना-स्त्री० [सं० कृष्णा] १ यमुना नदी । २ द्रोणो ।

कप-वि० [सं० कृप] दयालु -पु० १ कृपाचार्य । -स्त्री० २ कृपा, दया ।

कपण (न)-वि० [सं० कृपण] १ कजूस, सूम । २ कायर, डरपोक । ३ धुद्र, नीच । -ता-स्त्री० कजूसी, नीचता ।

कपणासय-पु० कजूसी, कृपणता ।

कपथा-क्रि० वि० कृपा करके, अनुग्रह पूर्वक ।

कपर (बोस)-देखो 'कपरबोस' ।

कपाण (क), कपाणिका, कपाणी-स्त्री० [सं० कृपाण] १ तलवार । २ कटार । ३ बाण, तीर । ४ कीची । ५ दंडक वृत्त का एक भेद ।

कपा-स्त्री० [सं० कृपा] १ दया, अनुग्रह । २ क्षमा, माफी । ३ भलाई, हित । -आचार्य-पु० कृपाचार्य । -नाथ, निधान, निधि-पु० ईश्वर । -वि० दयावान् । -पात्र-वि० दया वा कृपा का अधिकारी । जिस पर दया की गई या की जाती है । -सिधु-पु० ईश्वर । विष्णु । श्रीकृष्ण । -वि० दयालु, दया का भण्डार ।

कपाळ(ळ, लू)-वि० [सं० कृपालु] दयावान्, दयालु । -सु० ईश्वर, परमात्मा । -ता-स्त्री० दया, अनुग्रह ।

कपाळी-देखो 'कपाळी' ।

कपी-स्त्री० [सं० कपी] द्रोणाचार्य की गीत ।

कपी-पु० [सं० कृपाटम्] नीर, जल ।

क्रम-पु० [सं० क्रमः] १ पैर रखने या क्रमशः चलने की क्रिया ।
२ किसी कार्य की गति । ३ वस्तु या कार्य के आगे पीछे का नियम । ४ नियम । ५ शैली, प्रणाली । ६ सिलसिला, अनुक्रम । ७ लीला, रचना । ८ कार्य, क्रिया । ९ वेद पढ़ने की शैली । १० पैर, चरण । ११ डग, कदम । १२ मार्ग, रास्ता । १३ तरीका, ढंग । १४ पकड़ । १५ तैयारी, तत्परता । १६ शक्ति, बल । १७ देखो 'करम' ।
क्रम-क्रि० वि० क्रमशः शनैः शनैः । —**गत-स्त्री०** प्रारब्ध वि० क्रमशः मिलने वाला । —**जा-स्त्री०** लाख ।

क्रमण-पु० [सं० क्रमण, क्रमणः] १ पैर, कदम । २ गति, चाल । ३ गमन । ४ उल्लंघन, भंग । ५ धोड़ा, अश्व ।

क्रमणा-स्त्री० [सं० कर्मणा] काम ।

क्रमणो (बो)-क्रि० [सं० क्रम] १ जाना । २ चलना । ३ वार करना । ४ गुजरना । ५ निकल जाना । ६ कूटना । ७ चढ़ना । ८ कठना करना । ९ ठकना । १० बढ़ जाना । ११ पूरा करना, सम्पन्न करना । १२ स्त्री मैथुन करना ।

क्रमनासा-देखो, 'करमनासा' ।

क्रमपासी-पु० [सं० कर्मपाणी] यमराज ।

क्रमसाखी-देखो 'करमसाखी' ।

क्रमाणक-पु० [सं० क्रमाणक] धोड़ा, अश्व ।

क्रमाळ-देखो 'करमाळ' ।

क्रमाळी-स्त्री० [सं० क्रमेलक] मादा ऊंट । ऊंटनी ।

क्रमि (मो)-पु० [सं० क्रमि] १ रोग का कीटाणु । २ कीड़ा । ३ चीटी । ४ पेट में क्रमि पैदा होने का रोग । ५ मकड़ी । ६ गधा । ७ लाख । ८ देखो 'करमी' ।

क्रमिक-वि० [सं०] १ क्रमशः होने वाला । २ सिलसिले वार । ३ पैतृक, पुष्टनी ।

क्रमिजा-देखो 'करमजा' ।

क्रमिक्रमि-क्रि० वि० क्रमशः ।

क्रमु, क्रमुक-पु० [सं० क्रमु, क्रमुकः] १ सुपारी का पेड़ । २ सुपारी । ३ नागर मोथा । ४ कपास । ५ शहतूत ।

क्रमेल (क)-पु० [सं० क्रमेलः] ऊंट, गुरुर ।

क्रम्-१ देखो 'करम' । २ देखो, 'करम' ।

क्रम्य (रा)-पु० [सं०] अरीद ।

क्रम्य-पु० [सं०] कच्चा मांस ।

क्रम्याह-पु० [सं०] १ मांसाहारी । २ राक्षस असुर । ३ चिता की आग । ४ दूँड नामक राक्षस ।

क्रम-वि० [सं० क्रम] १ दुबला-पतला, क्षीण-काय । २ तुच्छ, प्रपञ्च, थोड़ा । ३ निर्धन । ४ देखो 'करम' । ५ देखो 'क्रमि' । —**भाव-पु०** दुबलापन ।

क्रमक-पु० [सं० कृषक] १ किसान, कृषक । २ हल का फाल ।

क्रमण (न)-पु० [सं० कृष्ण, कृष्णम्] १ श्रीकृष्ण । २ वेद व्यास । ३ अर्जुन । ४ कोयल । ५ काक, कौआ । ६ लोहा । ७ सुरमा । ८ कालिख । ९ आंख की पुतली । १० सीसा । ११ कलियुग । १२ कृष्ण पक्ष । १३ काली मिर्च । १४ काला मृग । १५ काला रंग । १६ अंगर की लकड़ी । १७ छप्पय छंद का एक भेद । १८ देखो 'कसण-पक्ष' । —**वि०** १ श्याम, काला । २ दुष्ट, नीच । —**प्रचल-पु०** रैवतक व नीलगिरि पर्वत । —**अभिसारिका-स्त्री०** एक प्रकार की नायिका । —**अष्टमी-स्त्री०** भादव कृष्ण अष्टमी । —**द्वैपायन-पु०** वेदव्यास । —**पक्ष, पख-पु०** अश्वेरापक्ष । —**वरण-वि०** काला । —**सखा-पु०** अर्जुन ।

क्रमणा (ना)-स्त्री० [सं० कृष्णा] १ द्रौपदी । २ यमूना । ३ पोपल । ४ काली दाख । ५ काली देवी । ६ पार्वती । ७ एक योगिनी । ८ अग्नि की मात जिह्वाओं में से एक । ९ दक्षिण की एक नदी । —**पित, पिता-पु०** सूर्य । —**पुला-स्त्री०** काली मिर्च ।

क्रमनी-स्त्री० [कर्पणी] बिजली, विद्युत ।

क्रमन्न-देखो 'कसण' ।

क्रमाण (न, नु)-स्त्री० [सं० कृषानु] १ आग, अग्नि । २ किसान, हलधर । —**द्रग, रैता-पु०** शिव ।

क्रमि (सी)-स्त्री० [सं० कृषि] खेती का काम । काश्त ।

क्रमिक-स्त्री० हल की हलवानी ।

क्रमट (स्टि, स्टी)-पु० [सं० कृष्टि] पंडित, कवि, विद्वान ।

क्रमण (न)-पु० [सं० कृष्ण] १ श्रीकृष्ण । २ अर्जुन । ३ कृष्ण पक्ष । ४ अग्नि, आग । ५ शनिश्चर । —**पिण्डा-स्त्री०** चौसठ योगिनियों में से एक । —**मुख-पु०** लोहा । —**वि०** विमुख ।

क्रमणमात्रज-पु० [सं० कृष्ण + अत्रज] बलराम ।

क्रमणार-स्त्री० [सं० कृष्णाला] भूगर्ची, गुंजा ।

क्रमणवरतमा-स्त्री० [सं० कृष्णवर्त्मन] अग्नि, आग ।

क्रमा-देखो 'कसणा' ।

कहकणो (बो)-क्रि० भूत-प्रेत का युद्ध के समय प्रसन्न होना ।

कहकह, कहकह-पु० [सं० कहकाह] १ भूत प्रेत की हंसी । कहकहा । २ अट्टहास ध्वनि । —**स्त्री०** ३ चमक-दमक । ४ प्रभा, कांति ।

कहका-स्त्री० ऊंट की आवाज ।

कांडत, कांयंती, कांहक-स्त्री० कांति, दीप्ति ।

कांत-वि० [सं०] १ पीता हुआ । २ लांघा हुआ । ३ दबा हुआ । ४ चढ़ा हुआ । ५ गया हुआ, गन । ६ सुन्दर,

मनोहर । ७ भयभीत । ८ अस्त । -पु० १ घोड़ा । २ पैर ।
३ देखो 'कांति' ।

कांति-स्त्री० [सं०] १ उपद्रव । २ विद्रोह । ३ आन्दोलन ।
४ उलटफेर । ५ भारी परिवर्तन । ६ आक्रमण । ७ गति ।
८ अग्रगमन । ९ पग, कदम । १० विपुलत रेखा से किसी
ग्रह मण्डल की दूरी । ११ एक कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य
भूमि के चारों ओर भ्रमण करता है ।

कांतिसाम्य-पु० [सं०] ज्योतिष में ग्रहों की तुल्य कांति ।

कांमत (ति, ती)-स्त्री० १ चमत्कार, करामात । २ शौर्य,
पराक्रम । ३ युद्ध । ४ देखो 'कांति' ।

कांयंती-१ देखो 'कांति' । २ देखो 'कांति' ।

कांय-कांय, कांव-कांव-स्त्री० कौवे की बोली, कांव-कांव ।

काय-पु० [सं०] १ एक नाम का नाम । २ एक बंदर ।

कासळरु (बक)-पु० मस्ती में प्राण हुए ऊंट के दाँतों के टकराने
की ध्वनि ।

काससकी (बकी)-पु० मस्ती में दाँत बजाने वाला ऊंट ।

काह-स्त्री० पशुओं की बांधने की रस्मी, पाज, रास ।

काहि-स्त्री० करुण कन्दन, बाहि-बाहि ।

क्रिखि (खी)-देखो 'कसि' ।

क्रिगळ-देखो 'कंगळ' ।

क्रित-देखो 'कृत' ।

क्रितवक-देखो 'कृतिका' ।

क्रित-क्रित-देखो 'कृतकृत्य' ।

क्रितमन-पु० [सं० कृतुमनाः] इन्द्र ।

क्रिताघंत-देखो 'क्रांत' ।

क्रितारथ-देखो 'क्रतारथ' ।

क्रितारथी-क्रि० वि० १ लिए वास्ते । २ देखो 'क्रतारथी' ।

क्रिति-देखो 'कृति' ।

क्रिपण-देखो 'क्रण' ।

क्रिपाण-देखो 'क्रपाण' ।

क्रिपा-देखो 'क्रपा' । -नाथ = 'क्रपानाथ' ।

क्रिपमाण-वि० [सं० क्रिपमाण] १ करने योग्य । २ किया जाने
वाला । -पु० १ कर्म के चार भेदों में से एक । २ वे कर्म जो
वर्तमान समय किए जाने हों ।

क्रिया-स्त्री० [सं०] १ कोई कार्य, कर्म । २ प्रयास, प्रयत्न,
चेष्टा । ३ प्रक्रिया, विधि । ४ अनुष्ठान । ५ प्रारंभ ।
६ औचादि नित्य कर्म । ७ प्रायश्चित्त । ८ उद्यम, उद्योग,
व्यापार । ९ उपाय । १० उपचार । ११ परिश्रम ।
१२ शिक्षण । १३ व्याकरण का एक खंड । १४ मृतक-
संस्कार । १५ अभ्यास । १६ आद्वि आदि कर्म । १७ न्याय
या विचार का माधन । १८ पूजन । १९ शुभाशुभ कर्म ।
२० व्याकरण में वे शब्द जो किसी कार्य, घटना आदि के होने

या किये जाने के वाचक हों, खासों, मोसों आदि ।

-करम-पु० मृतक-संस्कार । -कांड-पु० कर्म कांड का शास्त्र ।

—जोग-पु० देव पूजन । देवालय निर्माण । —फट-पु०

कर्मानुसार फल । —सक्ति-स्त्री० वार्ध कर्म की क्षमता ।

उपवीर्य शक्ति । —सून्य-वि० कर्मशून्य, कर्महीन । —स्नान

—स्त्री० स्नान की एक विधि ।

क्रिस-देखो 'कस' ।

क्रिसन-देखो 'क्रमण' ।

क्रिसनवरतमा-स्त्री० [सं० कृष्णवर्त्मन्] अग्नि, आग ।

क्रिसनागर (री)-देखो 'किसनागर' ।

क्रिसाण (न, तु)-स्त्री० [सं० कृणातु] १ अग्नि । २ किमान,
कृपक ।

क्रिसोदरीय-वि० [सं० कृशोदरी] पतली कमर या कटि की ।

क्रिसागर (री)-देखो 'किमानागर' ।

क्रिस-देखो 'कस' ।

क्रोड़णी (बी)-क्रि० क्रोड़ा करना, मेलना ।

क्रोड़ा-स्त्री० [सं०] १ केवि, कल्लोल । २ खेल । ३ आनंद-
प्रमोद । ४ रति-क्रोड़ा, सम्भोग । ५ मजाक, दिव्यता ।

—प्रिय-वि० विलासी । रसिक ।

कीट-१ देखो 'किरोट' । २ देखो 'कीट' ।

क्रोड़णी (बी)-क्रि० क्रोड़ा करना, मेलना ।

कीट-वि० [सं०] खरीदा हुआ । मोल लिया हुआ । -पु० १ बारह
प्रकार के पुत्रों में से खरीदा हुआ पुत्र । २ देखो 'कीरती' ।

कीतड़ी-देखो 'कीरती' ।

कीला-देखो 'कीड़ा' ।

कीस-स्त्री० चिन्मया ।

कुंचपद-पु० एक वर्गिक अक्षर विशेष ।

कुंझड़ी कुसि कुंझी, कुस-देखो 'कुरज' ।

कुद्ध, कुध-नि० [सं०] कपित, क्रोध युक्त ।

कुधांगरी (नी)-स्त्री० क्रोधाग्नि ।

कुधार-वि० क्रोधी ।

कुमुक-देखो 'कमुक' ।

कुंझ (डी)-देखो 'कुरज' ।

कूर-वि० [सं०] १ निर्दयी । २ नृगम । ३ पगरीडक ।
४ आतयाधी । ५ नीच, बुरा । ६ घोर । ७ तीक्ष्ण, तीखा ।

८ उष्ण, गरम । ९ भयानक । -पु० १ ज्योतिष में विषम

राशियां । २ पाप ग्रह । —बंती-स्त्री० दुर्गा का एक नाम ।

—इक-पु० अनिग्रह । मंगलग्रह । —वि० दुष्ट, नीच ।

कैता-वि० [सं० केतु] खरीददार । -पु० [सं० कृतुः] सतयुग ।

कैय-वि० खरीदने योग्य ।

कैलड़ी-पु० ऊंट ।

क्रौंच-पु० [सं०] १ हिमालय की एक पर्वत श्रेणी ।
२ देखो 'क्रौंच' ।

क्रोड़ (ड)-स्त्री० [सं० क्रोड़ः] १ वक्षस्थल । २ गोद ।
३ मूत्रर । ४ मध्य भाग । ५ वृक्ष का खोहर ।
६ बराह अवतार । ७ देखो 'करोड़' । ---पण-पु० कछुआ ।

क्रोधणी-वि० गुस्मिल, कोधी । बीर थोड़ा ।

क्रोध-पु० [सं० क्रोधः] १ कोप, गुस्सा, रोष । २ कृष्ण पक्ष ।
---अनल-स्त्री० क्रोधाग्नि । ---झाळा-स्त्री० क्रोधाग्नि ।
कोधी, गुस्मिल । ---वसा-स्त्री० दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

क्रोधार, (ळ, ळ)-वि० [सं० क्रोधात्] कोधी, क्रुद्ध ।

क्रोधी-वि० [सं०] क्रोध करने वाला । गुस्मिल । -पु० क्रोध नामक मंत्रसर ।

क्रौंच-पु० [सं०] १ कुरंग पक्षी । २ एक पर्वत । ---दार-पु०
स्वामिकार्तिकेय । ---दोष-पु० सप्त महाद्वीपों में से एक ।

क्रौंचार-पु० [सं० क्रौंचारि] स्वामिकार्तिकेय ।

क्रौंचो-स्त्री० [सं०] कश्यप व नाम्ना की पांच कन्याओं में से एक ।

क्रोड़-१ देखो 'करोड़' । २ देखो 'क्रोड़' ।

क्लान्ति-वि० [सं०] १ शक्ति, परिश्रान्त । २ कुम्हलाया हुआ ।
३ उदास । ४ निर्बल ।

क्लान्ति-स्त्री० [सं०] थकावट । परिश्रम । कमजोरी

क्लान्तिना-स्त्री० १ थकावट, मृगहाट, उदासी । २ पोड़ा, कण्ट (जंत)

क्लिष्ट-वि० [सं० क्लिष्टः] १ कठिन, मुश्किल । २ दुस्माध्य ।
३ क्लेशयुक्त ४ दुःखी । ५ मुरझाया हुआ ।

क्लोच-वि० [सं०] १ तपुंसक, हिजड़ा, नामर्द । २ कायर, डरपोक । ३ मुस्त, काहिल ।

क्लेबल (न)-पु० पांच प्रकार के कर्कों में से एक ।

क्लेस-पु० [सं० क्लेशः] १ कलह, लड़ाई, झगड़ा । २ दुःख, कष्ट । ३ व्यथा, वेदना, दर्द । ४ क्रोध । ५ भ्रंश ।

क्लण-पु० [सं०] १ वीणा की भंकार । २ घंघरू की ध्वनि ।

क्लार-देखो 'क्वार' ।

क्लारी-देखो 'क्वारी' । (-स्त्री० क्वारी)

क्वाड़-पु० १ कुन्हाड़ी । २ देखो 'क्वाट' ।

क्वाथ-पु० [सं०] औषधि का काढ़ा ।

क्वार-पु० १ आश्विन मास । २ देखो 'कुमार' ।

क्षण, क्षण-पु० [सं०] १ समय का अत्यल्प भाग, पल । लहमा ।
२ अवसर, मौका । ३ समय वक्त । ४ अवकाश, फुर्सत ।

---दा-स्त्री० शक्ति । ---वाकार-पु० चन्द्रमा । ---भंगुर-
---वि० क्षण में नष्ट होने वाला । क्षणिक ।

क्षणिक-वि० [सं०] क्षण भर का, दम भर का । ---ता-स्त्री०
अस्थिरता, क्षण भर की बात ।

क्षणिका-स्त्री० [सं०] बिजली, विद्युत् ।

क्षत-पु० घाव, जख्म । २ फोड़ा । ३ भय । ४ दुःख । ५ खतरा ।
---वि० १ घायल । २ टूटा हुआ । ३ कटा हुआ । ४ भंग ।
५ चीरा हुआ । ---ज-वि० घाव से उत्पन्न । जान, सुख ।
---पु० एक प्रकार की खांसी ।

क्षतज-देखो 'क्षतिज' ।

क्षत्रिय, क्षत्री-पु० [सं० क्षत्रियः] चार वर्णों में दूसरे वर्ण का पुरुष,
राजपूत ।

क्षत्रवट-पु० क्षत्रित्व ।

क्षत्री-पु० [सं० क्षत्रियः] क्षत्रिय, राजपूत ।

क्षपण, क्षपणक-वि० [सं०] निर्लज्ज । वेशमं । पु०-१ बौद्ध
संन्यासी या भिक्षुक । २ जन यदि । ३ विक्रमादित्य की
सभा का एक रत्न ।

क्षपा-स्त्री० [सं०] १ रात, रजनी । २ हल्दी । ---कर, नाथ-
---पु० चन्द्रमा । कर्पूर ।

क्षमा-स्त्री० [सं०] १ माफी, प्रतिकार की दया । २ धैर्य, सहन
शीलता । ३ पृथ्वी । ४ दक्ष की एक कन्या । ५ दुर्गा का एक
नाम । ---प-पु० भूमि और जल ।

क्षय-पु० [सं०] १ यक्ष्मा रोग, टी. बी. । २ ह्लास, कमी ।
३ नाश, अंत । ४ प्रलय ।

क्षयी-पु० [सं० क्षयिन्] १ चन्द्रमा । २ क्षय रोग । ---वि०
क्षय का रोगी ।

क्षांतकारी-वि० [सं० क्षांतिकारी] १ क्षमा करने वाला ।
२ सहनशील, शांत ।

क्षार-पु० [सं०] १ खार, नमक । २ पानी, जल । ३ रस, मार
४ औषधियों के लिए तैयार किया हुआ नमक । ५ औषधि
विशेष । ६ सज्जी खार । ७ भस्म राख । ८ गुहाग ।
९ शोरा । १० खारापन । ---वि० खारा । कड़वा ।

क्षिति-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि । २ गृह, निवास स्थान ।
३ हानि, नाश । ४ प्रलय । ---ज-पु० आवागण । वृक्ष ।
केंचुआ । मंगल ग्रह । ---जा-स्त्री० सीता ।

क्षीण-वि० [सं०] १ दुबला, पतला, कुश । २ नाशुक । ३ स्वल्प,
थोड़ा । ४ घनहीन । ५ निर्बल ।

क्षीरदरी-पु० [सं० क्षीरहृदः] दुध की भोल, दुध का होज ।

क्षीरोदक क्षीरोदधि-पु० क्षीर सागर ।

क्षुणी-स्त्री० [सं० क्षोणी] पृथ्वी, भूमि ।

क्षुधा-स्त्री० [सं०] १ भोजन की इच्छा, भूख । २ अभिलाषा ।

क्षेत्र-पु० [सं० क्षेत्रम्] १ भेत, मैदान, भूमि । २ भू-सम्पत्ति ।
३ स्थान, आवास । ४ पुण्य स्थान तीर्थ । ५ जन्म स्थान ।
६ स्त्री ।

क्षेत्रपाठ

(२७१)

खंजरी

क्षेत्रपाठ-पु० [सं०] १ एक देव विशेष । २ खेत का रखवाला ।
 ३ ४९ भैरवों में से एक । ४ द्वारपाल । ५ व्यवस्थापक ।
 क्षेत्रफल-पु० [सं०] स्थान की लम्बाई-चौड़ाई का परिमाण ।
 क्षेत्र-स्त्री० [सं०] १ उछान, कुदान । २ फेंकना क्रिया ।
 ३ ठोकर । ४ निंदा, अपकीर्ति । ५ कलंक । ६ दूरी ।
 ७ अक्षांश । ८ गुजारना, बिताना । ९ चालान । १० पर्यटन,
 भ्रमण । ११ समूह । १२ आवृत्ति ।
 क्षेत्रणी-स्त्री० [सं०] १ नाव की बल्ली, डांड । २ जान ।
 ३ एक प्रकार का शस्त्र ।
 क्षेत्रकरी-स्त्री० १ एक चिड़िया विशेष । २ देखो 'क्षेमकरी' ।

क्षेम-पु० [सं०] १ सुरक्षा, प्राप्त वस्तु की रक्षा । २ कुशल ।
 क्षेमकरण-पु० अर्जुन का एक पौत्र ।
 क्षेमकरी-स्त्री० [सं०] १ श्वेत गले की चील । २ एक देवी,
 कुशल करने वाली ।
 क्षेमकल्याण-पु० १ कुशलक्षेम । २ एक राग विशेष ।
 क्षेमकारी-देखो 'क्षेमकरी' ।
 क्षोण, (रा, एी)-स्त्री० [सं० क्षोणि] १ पृथ्वी, भूमि ।
 २ एक की संख्या ।
 क्षोणिप-पु० [सं०] राजा ।
 क्षोहण (णि, एी)-देखो 'अक्षोहिणी' ।

- ख -

ख-नागरी वर्णमाला का द्वितीय व्यंजन वर्ण ।
 खंक-देखो 'खंख' ।
 खंकार (री)-देखो 'खंखार' ।
 खंख-स्त्री० [सं० ख+खंक] बादल या धूँए की तरह उठने
 वाले धूल के वारीक कण-समूह । गर्द, रज ।
 खंखर (री)-वि० १ बहुत पुराना । २ अति वृद्ध । ३ सूखा हुआ
 व शोया । ४ जो आकर्षक न हो । ५ निर्जन, उजाड़ ।
 खंखल, खंखाड़-स्त्री० [सं० खंखोल] आंधी ।
 खंखाट-स्त्री० तेज आंधी की आवाज ।
 खंखार (री)-पु० १ धीमे से खांसने की क्रिया या भाव ।
 २ हल्की खांसी । ३ गाढ़ा थूक, बलगम, कफ ।
 ४ नाश, ध्वंस ।
 खंखाळ-देखो 'खंखळ' ।
 खंखाळणी (बी)-देखो 'खंखोळणी (बी)' ।
 खंखेरणी (बी)-क्रि० १ पकड़ कर जोर से हिलाना ।
 २ झुक-झोरना । ३ भाड़ना ।
 खंखोळणी (बी)-क्रि० [सं० खालन] १ पानी में डुबो कर
 निकाल लेना । २ हस्के से धोना । ३ प्रक्षालन करना ।
 ४ स्नान करना ।
 खंखोळी (ळी)-स्त्री० १ स्नान । २ स्नान के लिए लगाई जाने
 वाली डुब्की ।
 खंग-देखो 'खग' ।
 खंगवाळी-देखो 'खंगाली' ।
 खंगापति (ती)-देखो 'खंगापत' ।
 खंगाल-पु० १ तीर, बाण । २ नाश, ध्वंस ।

खंगालणी-वि० संहार या नाश करने वाला ।
 खंगालणी (बी)-क्रि० संहार या नाश करना ।
 खंगेल-देखो 'खंगेल' ।
 खंच-स्त्री० [सं० कर्प] १ खिचावट, तनाव । २ कमी ।
 ३ तंगी । ४ मन-मुटाव । ५ शत्रुता । ६ तिरछापन ।
 ७ भौंह का तनाव । ८ खींच-तान । ९ आग्रह,
 मनुहार ।
 खंचणी (बी)-क्रि० [सं० कर्पणम्] १ खिचना, खींचा जाना ।
 २ तन जाना । ३ ऐंठ जाना । ४ चिह्नित या मंडित
 होना । ५ तंगी या कमी सहना ।
 खंचमास-स्त्री० अर्द्ध मंडलाकार पत्थर की चपटी गढ़न ।
 खंचाणी (बी)-क्रि० १ खिचवाना । २ तनवाना । ३ ऐंठन
 डलवाना । ४ चिह्नित या मण्डित कराना । ५ तंगी या
 कमी में रखना ।
 खंज, खंजक-वि० [सं० खंज] १ लंगड़ा, पंगु । २ रुका हुआ ।
 -पु० १ पैर जकड़ जाने का एक रोग । २ खंजन पक्षी ।
 ३ एक सेल विशेष ।
 खंजड़ी-देखो 'खंजरी' ।
 खंजन-पु० [सं०] सुन्दर आँखों वाला एक पक्षी विशेष ।
 वि० काला, श्यामः । --आसन-पु० चौरामी ग्रामनों में
 से एक ।
 खंजर-पु० [का०] १ एक प्रकार का शस्त्र । धरा । २ वृद्ध,
 बूढ़ा । ३ देखो 'खंजन' ।
 खंजरी-स्त्री० १ छोटी डफली । २ स्त्री के हाथ का आभूषण
 विशेष ।

खंजरीट (र)-पु० [सं०] १ खंजन पक्षी । २ एक प्रकार की ताल ।

खंजा-पु० एक मात्रिक छंद विशेष ।

खंजी-वि० (स्त्री० खंजी) वह जिसके शिर के बाल न हों, गंजा ।

खंड-पु० [सं० खंड; खंडम्] १ विभाग, अनुभाग । २ हिस्सा,

भाग, अंश । ३ टुकड़ा । ४ अध्याय, सर्ग । ५ समूह, झुण्ड ।

६ शक्कर, चीनी । ७ रत्न का दोष । ८ देश, मुल्क ।

९ काला नमक । १० दिशा । ११ वन । १२ मंजिल ।

१३ महादेव । १४ परिच्छेद । १५ तलवार । १६ मांस ।

१७ नी की संख्याः । —काव्य-पु० काव्य का अंश । लघु

काव्य । —पति-पु० राजा । —परस, परसु-पु० शिव,

महादेव । परशुराम । विष्णु । राहु । दांत टूटा हुआ हाथी ।

—पीन-स्त्री० मछली । —पुरी-स्त्री० मीठी पुड़ी (पूरी) ।

—प्रलय-पु० ब्रह्मा का एक दिन बीतने पर होने वाला

प्रलय । —फरा-पु० एक प्रकार का मांस । —बंड, बिहंड,

बिहंड-पु० विध्वंस, नाश । वि०-अपूर्ण । टुक-टुक ।

—मेरु-पु० पिंगल की एक रीति ।

खंडन (न)-पु० [सं० खण्डन] १ तोड़-फोड़ की क्रिया ।

२ छेदन । ३ किसी बात या मिश्रित की काट, निराकरण ।

४ विरोध । ५ विप्लव । ६ विसर्जन । —वि० १ तोड़ा हुआ ।

२ टूटा हुआ । ३ कटा हुआ । ४ विभाजित ।

खंडणी (वो)-क्रि० [सं० खण्डनम्] १ टूट-फूट होना, टूटना ।

खंडित होना । २ कम होना, घटना । ३ विभक्त हो जाना ।

४ खंडन करना, तोड़ना । ५ नष्ट करना । ६ संहार करना ।

७ मारना । ८ निराकरण करना । ९ साथी को छोड़ देना ।

१० पृथक् होना ।

खंडत-देखो 'खंडित' ।

खंडर-पु० १ नाश, संहार, ध्वंस । २ देखो 'खंडहर' ।

खंडरणी (वो)-क्रि० १ विध्वंस या नाश करना । २ मारना,

संहार करना ।

खंडल-पु० [सं० खंडल] १ खड्गधारी योद्धा, वीर ।

२ देखो 'खंड' ।

खंडव देखो 'खांडव' ।

खंडवालिणी-पु० [सं० खंड-+आलुच] गान में पत्थर निकालने वाला श्रमिक ।

खंडहर-पु० [सं० खंड-+धर] उमरत का भग्नावशेष । टूटा मकान ।

खंडा-स्त्री० [सं० खंड] तलवार, खड्ग ।

खंडाक-वि० [सं० खंड-+रा० प्र० आक] संहार करने वाला ।

खंडाखोरा (पीरा)-स्त्री० [सं० शुद्राण्डपीन] मछली ।

खंडार-देखो 'खंडहर' ।

खंडाळि-स्त्री० [सं० खंड-+आलि:] १ तेल का एक नाप ।

२ सरोवर, झील । ३ देवी, दुर्गा । ४ कामेच्छा वाली स्त्री ।

खंडाळी-पु० [सं० खंड-+आलुच] खड्गधारी योद्धा ।

खंडाहळ-स्त्री० [सं० खंड-+अवली] नंगी तलवारों की पंक्ति ।

खंडिक-स्त्री० [सं०] कुक्षि, कांछ ।

खंडित-वि० [सं०] १ टूटा हुआ, भग्न । २ अपूर्ण ।

खंडिता-स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका पति अन्यत्र रात्रि व्यतीत करता हो । २ आठ प्रकार की ताविकाओं में से एक ।

खंडिनी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि ।

खंडिवन-देखो 'खांडव' ।

खंडी-स्त्री० [सं० खंडिनी] १ पृथ्वी । २ एक प्रकार का व्यंजन ।

३ देखो 'खंड' । ४ देखो 'खांडव' । ५ देखो 'खांड' ।

खंडीवन-पु० खांडववन । —खावक-पु० अग्नि, आग ।

खंडोखंडि-वि० खंड-खंड, टुक-टुक ।

खंडी-पु० [सं० खण्ड] १ चुनई का पत्थर । २ देखो 'खंड' ।

३ देखो 'खांडी' ।

खणकौ-पु० १ धातु के वर्तनों की आवाज । २ भग्नभग्नाहट ।

[सं० खनक] ३ चूहा ।

खंत-स्त्री० १ अभिलाषा, इच्छा, उत्कण्ठा । २ दाढ़ी ।

३ देखो 'खत' ।

खंति (ती)-स्त्री० १ लगन, इच्छा, अभिलाषा । २ होश, चेतना ।

३ देखो 'खाति' ।

खंतौ-देखो 'खाती' ।

खंदक (डो)-स्त्री० [अ०] १ शहर या किले के चारों ओर खोदी

हुई खाई । २ खदान । ३ खाई, खड्डा, गर्त ।

खंदाखिणी-देखो 'खंधी' ।

खंदाखोळ-स्त्री० मदहमस्ती, हाथापाई ।

खंदार-देखो 'गांधार' ।

खंदी-देखो 'खंधी' ।

खंदेड़ी (डो)-देखो 'खांधेड़ी' ।

खंदी-देखो 'खंधी' ।

खंध-पु० [सं० स्कंध] १ कंधा, अंश । २ शवधान के कंधा देने की क्रिया । ३ शरीर । ४ गर्दन । ५ काव्य छन्द का एक भेद । ६ आर्या छन्द का एक भेद ।

खंधवालि-वि० [स्कंध-+वाल] वह जिसके कंधे पर बान विखरे हुए हों ।

खंधाण (न)-पु० [सं० स्कंधानम्] गाथा छन्द का एक भेद ।

खंधागळि-स्त्री० [सं० स्कंधकलि] एक प्रकार का खेल ।

खंधाबार, खंधार-पु० [सं० स्कंधावारः] १ राजधानी । २ मैन्य शिविर । ३ फौज, सेना । ४ खोड़ा । ५ राजा, सरदार ।

६ एक प्राचीन देश, 'कांधार' ।

खंवारो (रौ)-वि० कंधार का, कंधार संबंधी । -पु० कंधार का घोड़ा ।
 खंधियो-पु० १ मकान के बाहर की छोटी दीवार । २ देखो 'खंधी' ।
 खंधी-स्त्री० [सं० स्कंधक] ऋण की किश्त । -वाल्-वि० किश्त देने वाला ऋणी ।
 खंवेड़ (झी, डी)-देखो 'खंधेड़ी' ।
 खंधी-पु० १ मकान की त्रिकोणात्मक ऊंची दीवार । २ देखो 'खंधी' ।
 खंब (म)-पु० [सं० स्कम्भः] १ स्तंभ, खंभा । २ सहारा, आश्रय । ३ पहाड़ की तलहटी का मध्य भाग । ४ कंधा । ५ टेढ़ापन, तिरछापन । ६ गुफा, कंदरा । ७ हाथी ।
 खंभायची-१ देखो 'खम्माच' । २ देखो 'खमायची' ।
 खंबी-देखो 'खंब' ।
 खंभउ-देखो 'खंब' ।
 खंभट-पु० नीकर, सेवक ।
 खंभणी (बो)-क्रि० रोकना, प्रवरुद्ध करना ।
 खंभायच (चो)-१ देखो 'खम्माच' । २ देखो 'खमायची' ।
 खंभारी-पु० हाथी बांधने का स्थान ।
 खंभूअंण (णो)-पु० [सं० कुंभी + स्थान] हाथी बांधने का स्थान ।
 खंभी-देखो 'खंब' ।
 खंवेद-देखो 'खाविद' ।
 खंवी-पु० [सं० स्कंध] १ कंधा । २ रहट के मध्य का स्तंभ ।
 खंसणी (बो)-१ देखो 'खंसणी' (बो) । देखो 'खंसणी' (बो) ।
 ख-पु० [सं० खः, खं] १ सूर्य । २ स्वर्ग । ३ आकाश । ४ शून्य । ५ गड़ढा, गर्त । ६ छेद, बिल । ७ क्रुमा । ८ इन्द्रिय । ९ कर्म । १० मुख । ११ बिन्दु । १२ शब्द । १३ ब्रह्मा । १४ सुख, आनन्द । १५ कमल । १६ पहाड़ । १७ प्रलय । १८ निर्गम, निकाम । १९ अनुस्वार । २० ज्ञान । २१ ब्राह्मण । २२ घाव । २३ अवरक । २४ लक्ष्मी । २५ पृथ्वी । २६ खाई ।
 खइंग-पु० [फा० खिग] छोड़ा, अश्व ।
 खइ-देखो 'क्षय' ।
 खइग-पु० खड्ग, तलवार ।
 खइर (रौ)-देखो 'खैर' ।
 खई-स्त्री० कंटीली भाड़ियों का ढेर ।
 खईस-वि० [सं० ख + शीर्ष] १ नीच, पापी, दुष्ट । २ उदण्ड, यातनायी । ३ परिश्रमी । ४ वेशिग का, भूत, प्रेत ।
 खइंवालिम (मि)-देखो 'खुंवालिम' ।
 खकट-वि० १ सत्ता, कठोर । २ प्रतिवृद्ध, बूढ़ा ।
 खकर-पु० मोर ।

खकार-पु० १ 'ख' वर्ण । २ खंखार ।
 खखड़-देखो 'खखड़' ।
 खख-देखो 'खंख' ।
 खखड़-पु० [सं० ख + खड़] १ आकाश । २ कुक्कुट । -वि० १ जोरदार, जबरदस्त । २ वृद्ध । -घज-वि० प्रचंड । बलशाली, वृद्ध ।
 खखपति-वि० कंगाल, निर्बल ।
 खखल-स्त्री० कलकल की ध्वनि ।
 खखाटी-स्त्री० श्यामी, मरखरी ।
 खगंड-देखो 'खगंड' ।
 खग-पु० [सं०] १ पक्षी, पंखी । २ चिड़िया । ३ मोर । ४ पवन । ५ टिड्डा । ६ बादल । ७ तारा । ८ चन्द्रमा । ९ ग्रह । १० सूर्य । ११ देवता । १२ गरुड । १३ खड्ग तलवार । १४ नीर, बाण । १५ मिट्टनी । १६ मूषर व जट के मध्य के दांत । १७ गंधर्व । १८ गेहे श्री पुष्प के घनाड़ी का अवयव विंगेष । -ईस, ईसवर-पु० गरुड । -लेल-पु० लड़ाई, युद्ध । -चाळी-पु० युद्ध । -झलौ, झलौ धर-पु० खड्गधारी योद्धा । -धार-पु० तलवार । -पंच, पंच-पु० आकाश । -पत, पति, पती-पु० पक्षिराज, गरुड । -मेळ-पु० युद्ध । -राज, राजा, राय, राव-पु० गरुड । -वाट-पु० युद्ध, ममर । -वाह, वाहो-पु० तलवार चलाने में निपुण, योद्धा ।
 खगट-वि० उदार, दानार ।
 खगणी (बो)-क्रि० नाश करना । जंडित करना ।
 खगांधर-पु० १ पेड़, वृक्ष । २ ध्यान ।
 खगांधीस, (पत, पती, राज)-पु० [सं० खग + अधीश] गरुड ।
 खगाट-स्त्री० १ तलवार, खड्ग । २ योद्धा, वीर ।
 खगाधिप-पु० गरुड ।
 खगारण-पु० गरुड ।
 खगाळी-स्त्री० देवी । -वि० खड्ग धारण करने वाली ।
 खगिद, खगिर खगोत्र-देखो 'खगोत्र' ।
 खगि, खगू-देखो 'खग' ।
 खगोत्र-पु० [सं०] गरुड ।
 खगेल (खगेल)-पु० १ मूषर । २ लम्बे दांतों वाला हाथी । ३ योद्धा वीर ।
 खगेस (रौ)-पु० [सं० खगेश] गरुड । -अर, अरि-पु० जेपनाग ।
 खगोल-पु० [सं०] १ आकाश मण्डल । २ ज्योतिर्विद्या ।
 खग, (मि, गी)-पु० १ तलवार । २ पक्षी । -बम्ब-पु० तलवार का युद्ध । -बांशी, बांशी-स्त्री० तलवारों की झनझनाहट । पक्षियों का कलश । -वारी-स्त्री० तलवार की धार । -वाहो-देखो 'खगवाहो' ।

खगाट—देखो 'खगाट' ।

खपास—पु० सूर्य, चंद्र का पूर्ण ग्रहण ।

खड़—स्त्री० [सं० खड] १ घास । २ सोनापाठा वृक्ष । ३ वन, जंगल । ४ एक ऋषि । ५ खर । ६ पयाल । ७ गति, चाल । ८ हांकना क्रिया ।

खड़क—स्त्री० १ जलाशय या नदी तट । २ बाँध । ३ चिता । ४ एक प्रकार का खाद्य, पदार्थ । ५ खटका, ध्वनि ।

खड़कणी (बौ)—क्रि० [सं० खिट्] १ खड़कना, भंकृत होना । २ वजना । ३ ध्वनि करते हुए बहना । ४ तह पर तह लगाना । ५ खटकना । ६ खट-पट होना । ७ उत्तरदायित्व देना ।

खड़काखर—पु० बड़ा काखर, छोटी ककड़ी ।

खड़काणी (बौ)—क्रि० १ बजाना । २ भंकृत करना । ३ आवाज या ध्वनि करना । ४ खटकाना । ५ ऊपर ऊपर रगाना, चुनाना ।

खड़कारी—पु० १ खटका, शब्द । २ इशारा, कटाक्ष ।

खड़कियापाग—देखो 'खड़कियापाग' ।

खड़की—स्त्री० १ घर का मुख्य द्वार, मुख्य द्वार बंद करने के कपाट । २ खिड़की ।

खड़की—पु० १ खटका, ध्वनि । २ नदी, तट, किनारा । ३ मृत्यु-भोज के बाद बजने वाला ढोल ।

खड़कणी (बौ)—देखो 'खड़कणी (बौ)' ।

खड़खड़—देखो 'खड़खड़' ।

खड़ख—देखो 'खड़ख' ।

खड़खड़—स्त्री० खट-खट ध्वनि ।

खड़खड़ाट (त)—स्त्री० खड़-खड़ ध्वनि ।

खड़खड़ियाँ—पु० १ पालकी, पीतस । २ घोड़ागाड़ी, तांपा । ३ टूटी गाड़ी । -वि० खड़-खड़ करने वाला ।

खड़खड़ी (डौ)—स्त्री० कंपकंपी ।

खड़खड़—देखो 'खड़खड़' ।

खड़ग (गो. गग)—पु० [सं० पडज] १ सरगम का प्रथम या चतुर्थ स्वर पडज । -स्त्री० [सं० खड्ग] २ तलवार, कृपाण । ३ गेंडा, हाथी । -खेल—पु० युद्ध । -खल, खल्ल—पु० योद्धा, वीर । -धर, धारी—पु० योद्धा । -धारणी—स्त्री० दुर्गा । -सिध—पु० वीर । -हत, हय—वि० योद्धा, शस्त्र से प्राप्त वीर ।

खड़गी—पु० [सं० खड्गिन्] १ गेंडा । २ योद्धा ।

खड़ड़—स्त्री० [प्रसु०] ध्वनि विशेष ।

खड़ड़णी (बौ)—क्रि० १ घबरावना, हड़बड़ाना । २ भवतादि का गिरना । ३ इस प्रकार गिरने से ध्वनि होना ।

खड़खर—पु० पशु, मवेशी ।

खड़खरई—स्त्री० एक प्रकार का प्राचीन लगान ।

खड़खंज—पु० पड्यन्त्र ।

खड़ज—पु० [सं० पडज] संगीत के सात स्वरों में प्रथम स्वर ।

खड़णी (नी)—स्त्री० [सं० खेटनम्] १ खेत की जुताई । २ बाहन चलाने की क्रिया या ढंग ।

खड़णी (बौ)—क्रि० [सं० खेटनम्] १ खेत की जुताई करना । २ चलाना, हांकना । ३ भरना ।

खड़बोखड़, (डौ)—पु० यौ० चारे के अभाव वाला वर्ष । दुर्भिक्ष ।

खड़बड़—स्त्री० १ खट-खट ध्वनि । २ व्यतिक्रम, उलटफेर । ३ हलचल । ४ बोलचाल, लड़ाई ।

खड़बड़णी (बौ) क्रि० १ खट-खट होना । २ हलचल होना । ३ लड़ाई होना । ४ उतावना होना । ५ चौकना । ६ मतर्क होना ।

खड़बड़हट, खड़बड़ी—देखो 'खड़बड़' ।

खड़बूझी—देखो 'खड़बूझी' ।

खड़बी—पु० १ मोटा लौघा । २ छीलकर उतारा हुआ भाग । ३ हिंदुवानी का विकृत फल ।

खड़बूझ, खड़बूझ—देखो 'खड़बड़' ।

खड़बड़णी (बौ)—देखो 'खड़बड़णी (बौ)' ।

खड़वा—स्त्री० १ जोती हुई भूमि । २ पशु की चाम । ३ यात्रा ।

खड़सल—स्त्री० चार पहियों का रथ ।

खड़हड़—स्त्री० १ एक बारगी ऊपर से नीचे, कूदने या गिरने की ध्वनि । २ देखो 'खड़बड़' ।

खड़हड़णी (बौ) क्रि० १ लड़खड़ाना । २ गिरना । ३ बिजली चमकना । ४ ध्वनि होना । ५ देखो 'खड़बड़णी (बौ)' ।

खड़हरी—स्त्री० एक प्रकार की गाड़ी, शकट ।

खड़हियो, खड़हियो—देखो 'खड़हियो' ।

खड़ाऊ—स्त्री० काष्ठ को चरण पादुका ।

खड़ाक—क्रि० वि० १ एक ही झटके में, खट्ट से । २ सहसा, अचानक । -वि० सीधा, खड़ा ।

खड़ाखड़—स्त्री० १ शस्त्रों के टकराने की ध्वनि । २ सस्त्र प्रहार । -क्रि० वि० नेत्री से, नुरन-फुरत । फटा-फट ।

खड़ाखड़ी—क्रि० वि० १ खड़े-खड़े ही । २ एकाएक । -स्त्री० १ खट-पट, लड़ाई । २ अश्रुता । ३ ध्वनि विशेष ।

खड़ाखर—पु० [सं० पड़ाखर] छः वर्ग का मंत्र या जाप ।

खड़ाणी (बौ), खड़ावणी (बौ)—क्रि० [सं० खेटनम्] १ जुताई करना । २ चलवाना, हांकवाना । ३ खिलाना ।

खड़ि—स्त्री० खड़िया मिट्टी । -वि० गाँव, श्वेत ।

खड़ियो—पु० याचकों का भोला ।

खड़ीखंस—वि० १ पूर्ण स्वस्थ । २ शक्तिशाली, वनवान । ३ खड़ा, सीधा ।

खड़ोड़—पु० भारी वस्तु के गिरने का शब्द ।

खड़ोङकी-स्त्री० मालखंभ की एक कसरत ।

खड़ोण-स्त्री० वर्षा का पानी एकत्र होने वाली नीची भूमि ।

खड़ूलो-देखो 'खेडूलो' ।

खड़ो-वि० [सं० खड़क] (स्त्री० खड़ी) १ पृथ्वी पर पैर रखकर शिर आकाश की ओर करके सीधा, खड़ा । २ एक शिरा धरती पर दूसरा आसमान में रहने की दशा में । ३ जो आड़ा न हो, ऊमा । ४ ऊपर उठा हुआ । ५ उन्नत । ६ सीधा तना हुआ । ७ प्रस्तुत, उपस्थित । ८ तैयार, समझ । ९ जो गतिमान न हो, ठहरा हुआ । १० बनावट के अनुसार अपनी सही दशा में स्थित । ११ आरंभ, जारी । १२ बिना कटा । १३ समूचा, पूरा । १४ चंतन्य । १५ उठाया हुआ, विचाराधीन । १६ जलाशय की मिट्टी की जमी हुई तह ।

खचत-वि० [सं० खचित] १ लिखित । २ चित्रित, अंकित । ३ जड़ित । ४ निमित्त ।

खचर-पु० [सं०] १ सूर्य, रवि । २ बादल । ३ हवा । ४ पक्षी । ५ आकाशचारो । ६ देखो 'खचचर' ।

खचाखच-कि० वि० ठसाठस । लबालब ।

खचचर-पु० गंधे व घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु ।

खज-पु० [सं० खाद्य] १ खाद्य पदार्थ । २ देखो 'खाज' ।

खजक-पु० [सं०] मयनी ।

खजमत-स्त्री० [अ० खिदमत] १ हजामत । २ देखो 'खिदमत' ।

खजर-वि० क्रोधित, क्रुद्ध ।

खजलो-पु० खाजा ।

खजानची-पु० खजाने का अधिकारी । केसियर ।

खजानबेहद-पु० कपड़दार का अनुभाग विशेष जिसमें ऐसी रकम रहती थी जिसके खर्च का हिसाब नहीं पूछा जाता था । (जयपुर)

खजानासार-पु० धन, दौलत । संपत्ति ।

खजानू, (नौ)-पु० [अ० खजानः] १ धनागार, कोष, खजाना । २ तलवार का एक भाग ।

खजाणी (बो)-कि० १ खिजाना, चिहाना । २ क्रोधित करना ।

खजार-स्त्री० बंध्या बकरी ।

खजीनी-देखो 'खजानी' ।

खजूर, खजूरड़ी, खजूरि-पु० [सं० खजूर] लुहारे का पेड़, लुहारा, खजूर ।

खजूरिणी-पु० जलाशय में छितरने वाली घास विशेष के फल ।

खजुरियोबांछ-पु० खजूर के वृक्ष जैसा लंबोतरा बबूल ।

खटंग-पु० [सं० पटंग] वेद के छः अंग ।

खट-वि० [सं० पट] छः । -पु० खटका, आवाज । -कि० वि० शीघ्र, जल्दी ।

खटक-पु० १ खटका, आवाज । २ दर्द, कष्ट । ३ मानसिक कष्ट । कसक । ४ द्वेष । ५ शत्रुता । ६ प्रहार । ७ आशंका । ८ चिंता । ९ त्रुटि, गलती ।

खटकड़, खटकण-देखो 'खटकळ' ।

खटकणी (बो)-कि० १ गिरने, पड़ने या टकराने से खटका होना, शब्द होना । २ चुभना । ३ दर्द या कष्ट होना । ४ बुरा लगना । ५ विरक्त होना । ६ डरना । ७ प्रहार होना । ८ अनिष्ट की आशंका होना । ९ न सुहाना ।

खटकरम-पु० [सं० पटकर्म] ब्राह्मणों के छः कर्म ।

खटकळ-स्त्री० १ दरवाजे पर लगी छोटी फाटक । २ छः मात्रा का समूह (पिंगल) ।

खटकाय-पु० जीया-जूरा ।

खटकूली-पु० [सं० पटकूली] वज्र ।

खटकोण-वि० छः कोणों का । -पु० वज्र ।

खटको-पु० १ 'खट' की आवाज, खटका । २ भय, डर । ३ चिंता आशंका । ४ 'खट' से खुलने वाला पेंच । ५ चिटफण्णी ।

खटखट-स्त्री० खटखट का शब्द । भंभट, भंभेरा । थपड़ा, तकरार ।

खटखटाणी (बो)-कि० १ दरवाजे पर खट-खट करना । २ स्मरण करना । ३ पुकारना ।

खटचक्र (चक्र)-पु० [सं० पट्-चक्र] शरीरस्थ छै चक्र यथा-आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि और प्रज्ञा ।

खटचरण (चरण)-पु० [सं० पट् चरण] भौरा, भ्रमर । टिड्डी ।

खटजती-पु० [सं० पट्-यति] लक्ष्मण, हनुमान, भीष्म, मेरु, दत्त और गोरख छः यति ।

खटजाति-वि० छः प्रकार की जाति ।

खटणी-स्त्री० १ खड़िया मिट्टी । २ सहनशक्ति, सहनशीलता ।

खटणी (बो)-कि० १ समाना । २ निभना । ३ सहन होना । ४ पर्याप्त होना । ५ हजम होना । ६ जरूरत होना । ७ उपाजित करना, प्राप्त करना । ८ जीतना ।

खटवरसण-पु० [सं० पट्दर्शन] १ छः प्रकार के दर्शन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, मीमांसा, वेदान्त, योग । २ छः की संख्या । ३ ब्राह्मण, जोगी, जंमम, भाट, संन्यासी और साध इन छः जातियों का समूह । ४ इन जातियों से संबंधित एक विभाग ।

खटवरसणी-पु० [सं० पट्दर्शनी] १ छः प्रकार के दर्शनों का ज्ञाता, पंडित । २ छः दर्शन समूह से संबंधित ज्ञान । १ छः जातियों से संबंधित ।

खटपट-स्त्री० १ लड़ाई, झगड़ना । २ काम, कार्य । ३ टकराहट का शब्द ।

खटपटणी (बो)-कि० १ टकराना । २ लड़ना, झगड़ना ।

खटपटियो, खटपटी-वि० १ झगड़ाना । २ प्रपंची ।

खटपटो-पु० १ काम, कार्य । २ देखो 'खटपट' ।
 खटपट-पु० [सं० पट-पट] १ छः चरण । २ भौरा, भ्रमर ।
 ३ टिट्टी । ४ छः की संख्या* ।
 खटपटो-पु० [सं० पट-पटो] १ जू । २ भौरा, भ्रमर । ३ टिट्टी ।
 ४ छप्पय छंद ।
 खटव्रज (व्रज)-देखो 'खटवरमण' ।
 खटमाख (भाखा)-स्त्री० [सं० पट-भाखा] छः भाषण-संस्कृत,
 प्राकृत, गोरसेनी, प्राच्या, आवन्ती, नागरापञ्च ।
 खटमल-पु० [सं० खट्वा-मल] १ खाट में रहने वाला
 मटमैले रंग का कीड़ा, उडुस । २ एक राजस्थानी लोक
 गीत ।
 खटमात (माता, मातुर)-पु० [सं० पाणमातुर] स्वामि कार्तिकेय ।
 खटमिट्टी (मिट्टी, मोट्टी)-वि० खट्टे व मोटे स्वाद का ।
 खटमुख-पु० [सं० पट-मुख] स्वामि कार्तिकेय ।
 खटरस-पु० [सं० पट-रस] १ खाद्य पदार्थों के माने गये छः
 रस, स्वाद । २ छः रसों में युक्त आचार । ३ खटाई ।
 खटराण (रास)-स्त्री० [सं० पट-राण] १ संगीत के प्रसिद्ध छः
 राग । २ भंभट । ३ भगडा । ४ छः की संख्या* ।
 खटरित (तु)-स्त्री० [सं० पट-रुतु] छः ऋतुएं ।
 खटरी-देखो 'खाटरी' । (स्त्री० खटरी)
 खटवदन-पु० [सं० पटवदन] स्वामि कार्तिकेय ।
 खटवांग-पु० [सं०] १ एक शस्त्र विशेष । २ एक सूर्यवंशी
 राजा । ३ चारपाई का पाया या पट्टी । ४ एक तांत्रिक
 मुद्रा ।
 खटवांगी-पु० [सं०] शिव, भूदेव ।
 खटवाटी-स्त्री० १ जिह्वा, हठ । २ प्रण, प्रतिज्ञा ।
 खटाई-स्त्री० १ अम्लता, खट्टापन । २ खट्टा पदार्थ । ३ छल,
 कपट । ४ वैमनस्य, मन-मुटाव ।
 खटाऊ-वि० १ प्राप्त करने वाला । २ सहन करने वाला ।
 ३ निभने वाला । ४ समाने वाला ।
 खटाक, खटाखट-क्रि० वि० १ खटके के साथ । २ तुरन्त, शीघ्र ।
 ३ जल्दी-जल्दी । -स्त्री० खटखट ध्वनि ।
 खटाखरी-पु० [सं० पडाखरी] छः प्रक्षरों का मंत्र ।
 खटाणी (बो)-क्रि० १ ममाहित कर देना । २ निभाना ।
 ३ सहन करना । ४ उपार्जन करना । ५ ममभाना ।
 खटापट (पटो)-देखो 'खटपट' ।
 खटायत-देखो 'खटाऊ' ।
 खटाछिपौ, खटाछो, खटाछी-वि० [सं० खट् वामन] १ टूटा-
 फूटा । २ जीर्ण-शीर्ण । ३ व्यर्थ, बेकार । ४ खट-खट करके
 चलने वाला । -पु० ऊट पर पत्थर होते समय चार जामा
 ने नीचे लगाया जाने वाला उपकरण ।

खटाव (वण)-पु० १ निर्वाह, गुजर-बसर । २ सहनशीलता,
 धैर्य । शांति । ३ देर, विलम्ब । ४ प्रतीक्षा, इंतजार ।
 ५ प्रतीक्षा करने की क्षमता ।
 खटावणी (बो)-देखो 'खटाणी' (बो) ।
 खटास-पु० १ खट्टापन, खटाई । २ मन-मुटाव । ३ तनाव,
 खिंचाव ।
 खटासियौ-पु० पशुओं के शरीर में होने वाली एक धँली ।
 खटि (टी)-स्त्री० खड़िया मिट्टी । -वि० पांच के बाद
 का, छठा ।
 खटीक-पु० (स्त्री० खटीकण) १ एक अनुसूचित जाति ।
 २ चमड़ा बेचने वाली एक जाति या उसका व्यक्ति ।
 ३ कसाई ।
 खटीकण-पु० दूध जमाने के लिए दूध में या शाक का स्वाद बढ़ाने
 के लिए शाक में डाला जाने वाला खटा पदार्थ ।
 खट्टंबर-पु० एक वृक्ष विशेष ।
 खट्टरी-वि० खट्टा ।
 खट्ट-वि० योद्धा, वीर ।
 खटोलडो (जो), खटोलियो, खटोली-स्त्री० १ छोटी खाट,
 खटिया । २ उड़न-खटोला ।
 खटोलवो, खटोली-पु० १ खाट, पलंग । २ वायुयान ।
 खट्ट-देखो 'खट' ।
 खट्टणी (बो)-देखो 'खटणी' (बो) ।
 खट्टाचक-वि० अत्यधिक खट्टा ।
 खट्ट-पु० जंसलमेर में पाया जाने वाला पीले रंग का पत्थर ।
 खडंगी-पु० [सं० पडांग] पडांग शास्त्र ।
 खडंगा-स्त्री० ईंटों की खड़ी चुनाई ।
 खड-पु० वन ।
 खडकणी (बो)-देखो 'खडकणी' (बो) ।
 खडकी-देखो 'खडकी' ।
 खडखडणी (बो)-देखो 'खडखडणी' (बो) ।
 खडवाटी-पु० घास संबंधी एक प्राचीन कर ।
 खडखोण (पीण)-स्त्री० [सं० पडभीण] मछली ।
 खडग-देखो 'खडग' ।
 खडगी (गो)-पु० [सं० खडग] नाक पर पैंने सींग वाला गेंडा ।
 खडज-देखो 'खडज' ।
 खडबूजी-देखो 'खरबूजी' ।
 खडहंड-देखो 'खरहंड' ।
 खडांत-स्त्री० १ नीची भूमि । २ मड़हा ।
 खडांड (खडाल)-पु० १ ४९ क्षेत्रपालों में से ४७वां ।
 २ जंसलमेर का एक प्रदेश ।
 खडांली-पु० खडाल का निवासी ।

खडाबूज-देखी 'खाडाबूज' ।

खडियाळी-पु० अधिक दाँतो वाला घोड़ा ।

खडी-स्त्री० खड़िया मिट्टी ।

खडुग्री-पु० गिर का साफा ।

खड्डलो-पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक कंद ।

खडोअली-स्त्री० १ आमोद-प्रमोद के लिए बनाया हुआ जल कुंड । २ मनोरंजन के लिए बनी छोटी नाव ।

खडो, खड्ड, खड्डो-पु० [सं० खात्] गड्ढा, गर्त, खड्डा ।

खड्ग-पु० तलवार, खांडा ।

खड्डू-पु० मध्य आकार का एक वृक्ष विशेष ।

खणक-स्त्री० ध्वनि, भंकार ।

खणकणी (बी)-क्रि० १ बजना, भंक्रत होना । २ तलवार का प्रहार होना । ३ तलवारों के प्रहार की ध्वनि होना ।

खण (खु)-पु० [सं०] १ प्रण, व्रत, मंकल्प । [सं० क्षण] २ पल, क्षण । ३ समय, वक्त । [सं० खण्ड] ४ खंड, विभाग । ५ मंजिल । ६ कोष्ठक, कोठा । ७ घर । ८ एक वर्षला जीव । --नाडिका-पु० धर्म घड़ी । शुभ या मांगलिक समय ।

खणक-स्त्री० [सं० खनक] १ भंकार, ध्वनि । २ चूहा, मूसा । ३ कनछ, कैवच । --वि० नितान्त सूखा ।

खणका-स्त्री० [सं० क्षणिका] बिजली, विद्युत ।

खणकारी-पु० खटका, ध्वनि ।

खणकण, खणखण, खणखणाट, खणखणाटो, खणखणाहट-स्त्री० १ खन खन ध्वनि, भंकार । २ शस्त्राघात । ३ द्रव पदार्थों का उबाल, उबाल की ध्वनि ।

खणणी (बी)-क्रि० १ खोदना । २ कुचरना, खिनना । ३ टीका लगाना (शीतला) ।

खणत-वि० नीचा, अध ।

खणदा-स्त्री० [सं० क्षणदा] रात्रि ।

खणस (सी)-पु० १ शत्रुता, दुश्मनी । २ नागाजगी । ३ खटक ।

खणणी (बी)-क्रि० १ खुदवाना । २ कुचराना, खिनाना । ३ टीका लगवाना ।

खणज-पु० [सं० खनिजः] १ खदान । २ खनिज पदार्थ । ३ खजाना ।

खण-देखो 'क्षण' ।

खणोतरी-पु० मिट्टी खोदने का औजार ।

खतंग-वि० [सं० क्षत-अंग] १ निडर, निर्भय । २ नाहर्मी । ३ शक्तिशाली पराक्रमी । ४ तीक्ष्ण, तेज । ५ घायल । ६ आश्चर्यजनक । ७ श्रेष्ठ, उत्तम । ८ संतान रहित । ९ अंग हीन । --पु० १ आकाश । २ विष-बाण । ३ बाण तोर । ४ धोड़ा । ५ अभिमान । ६ एक वस्तु विशेष ।

खत-पु० [अ० खत] १ चिट्ठी, पत्र । २ लिखावट, अक्षर । ३ ऋण-पत्र, दस्तावेज । ४ दाढ़ी के बाल, दाढ़ी । [सं० क्षत्र] ५ घाव, जखम । [सं० क्षिति] ६ पृथ्वी, जमीन । ७ क्षत्रियत्व ।

खतकस-पु० बढई का एक औजार ।

खतजात-पु० [सं० क्षतजात] रुधिर, रक्त ।

खतणी (नी)-पु० [अ० खन्] मुम्त ।

खतमंडौ-पु० श्वेत व श्याम, पूँछ के बालों वाला बैल । (अशुभ)

खतम-वि० [अ० खत्म] १ अंत, समाप्त । २ नष्ट । ३ पूर्ण । ४ अत्यन्त ।

खतमाळ-पु० खुआ ।

खतमेटण-पु० लाख, लाक्षा ।

खतम्प-देखो 'खतम' ।

खतरनाक-वि० [अ०] १ भयानक, डरावना । २ उद्दण्ड, बदमाश । ३ अनिष्टकारी । ४ धोखेबाज, कपटी । ५ बीर, बहादुर ।

खतरी-पु० [अ० खतर] १ डर, भय । २ जोखिम (रिस्क) । ३ आशंका, संभावना । ४ संकट, आफत ।

खतघट (ट्ट)-पु० [सं० क्षत्रियत्व] १ क्षत्रियत्व । २ बहादुरी, शौर्य, पराक्रम ।

खता-स्त्री० [अ०] १ अपराध, कसूर । २ भूल, गल्ती । ३ बदमाशी, उद्दण्डता । ४ धोखा, फरेब । ५ धक्का, भटका । ६ दण्ड, सजा । ७ भगड़ा, फिसाद ।

खतावण (वणी)-स्त्री० खाता बही का कार्य ।

खतावणी (बी)-क्रि० खाता बही का कार्य करना ।

खति (ती)-स्त्री० [सं० क्षति] १ हानि, नुकसान । २ कमी, घाटा । ३ ह्रास । ४ विनाश । ५ तलवार की मूठ के नीचे का भाग । [सं० क्षिति] ६ पृथ्वी, भूमि ।

खतिया-पु० लोह-कीट, जंग ।

खतेड़-देखो 'खातरोड़' ।

खतोब-वि० [अ०] १ खुतबा पढ़ने वाला । २ लोगों को संबोधन करके कुछ कहने वाला ।

खतोती-देखो 'खतावणी' ।

खती-पु० १ एक घटिया ऊनी वस्त्र । २ मुगलमानों का अधोवस्त्र ।

खत्ती-स्त्री० [सं० क्षत्रिय] क्षत्रियानी, राजपूत स्त्री ।

खत्थे (थे)-क्रि० वि० शीघ्रता से, तेजी से ।

खत्थी-१ देखो 'खाथी' । २ देखो 'खती' ।

खत्र-पु० [सं० क्षत्रः] (स्त्री० खत्रणी, खत्रांगी) १ क्षत्रियत्व, बीरता । २ शत्रु, दुश्मन । ३ युद्ध । ४ क्षत्रिय । ५ प्रसूता, अधिकार । --वि० श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया, अच्छा । --वाच, धोड़, बट, बाट-पु० क्षत्रिय, बहादुरी । --वेष्ट-पु० गुद ।

खत्रि, खत्रिय, खत्री—पु० [सं० क्षत्रिय] १ वेदोक्त चार वर्णों में से द्वितीय वर्ण, क्षत्रिय । राजपूत । २ वेश्य वर्ण के अंतर्गत एक जाति विशेष या डम जाति का व्यक्ति । —**धर्म**—पु० क्षात्र धर्म ।

खत्रियाण—पु० [सं० क्षत्रिय] (स्त्री० क्षत्रियाणी) क्षत्रिय, राजपूत ।

खत्रीठ, खत्रीयांवट, खत्राल, खत्रीवाट, खत्रीट—स्त्री० [सं० क्षत्रियत्व] १ क्षत्रित्व, रजपूती । २ बहादुरी, वीरता ।

खत्रेस—पु० [सं० क्षत्रिय + ईश] वीर, योद्धा ।

खथीघी—देखो 'खती' ।

खदग—पु० [फा०] तीर, बाण ।

खद—पु० [सं० क्षुद्र] १ यवन । २ शूद्र ।

खदकी—पु० १ प्रहार, आघात । २ चोट । ३ कष्ट, दुःख । ४ मस्ती । ५ खदबद ध्वनि ।

खदबब—स्त्री० १ खाद्य पदार्थ की छाग पर पकने की क्रिया । २ पकते समय होने वाली ध्वनि ।

खदबदणी (बो), खदबदणी (बो)—क्रि० खदबद ध्वनि करते हुए पकना ।

खदराळ—पु० मुमलमान ।

खदीव—पु० [फा० खिदेव] वादशाह ।

खदेड़णी (बो)—क्रि० बलपूर्वक हटाना, खदेड़ना ।

खद, **खदन**, **खदाह**, **खदाह**, **खद**—देखो 'खद' ।

खद्योत—पु० [सं०] १ सूर्य । २ जुगनू ।

खदाल—पु० यवन ।

खनक, **खननक**—देखो 'खगंक' ।

खनै—क्रि० वि० पाम, समीप, निकट ।

खप—स्त्री० १ खगणी क्रिया का भाव । २ खपत । ३ नाश, विनाश, संहार । ४ परेशानी । ५ प्रयास, श्रम, प्रयत्न, कौशिल्य ।

खपड़ी—पु० [सं० खर्पर] खप्पर ।

खपणी (बो)—क्रि० [सं० क्षेपणम्] १ मरना, समाप्त होना । २ व्यय होना, खर्च होना । ३ काम में आना, लगना । ४ गुजारा होना, निभना । ५ प्रयास, प्रयत्न करना । ६ परेशान होना । ७ तड़पना । ८ खपा होना ।

खपत (ती, त्ति)—स्त्री० [सं० क्षपति] १ मांग । २ समावेश, समाई । ३ गुंजाईश । ४ माल की विक्री । ५ नाश, संहार । ६ मनक । ७ खर्च, व्यय । लागत । ८ परिश्रम, मेहनत । ९ कौशिल्य, प्रयत्न ।

खपती, (त्ति)—वि० [प्र० खन्ती] १ मनकी । २ विक्षिप्त, पागल । ३ देखो 'खपत' ।

खपर—देखो 'खप्पर' ।

खपरियो—पु० [सं० खर्परी] १ भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ । २ अनाज का कीड़ा ।

खपरी—स्त्री० तरबूज के आधे भाग का खोल ।

खपा—देखो 'खफा' ।

खपाऊ—वि० १ संहार या विनाश करने वाला । २ परिश्रमी ।

खपाक—क्रि० वि० तुरंत, शीघ्रता से ।

खपाखप—क्रि० वि० शीघ्र, अतिशीघ्र ।

खपाणी (बो), खपावणी (बो)—क्रि० [सं० क्षेपणम्] १ समाहित करना, मिलाना । २ नाश करना, मारना । ३ व्यय करना, खर्च करना । ४ निभाना । ५ खपा करना । ६ परिश्रम कराना, प्रयत्न कराना ।

खपीड़—पु० [सं० क्षपति] १ हानि, नुकसान । २ अत्यन्त वृद्ध ।

खपुआ—स्त्री० मुगलकालीन एक प्रकार की छोटी तलवार ।

खपुर—पु० [सं०] १ मधुर्वं मंडल । २ राजा हरिश्चन्द्र की पुरी । ३ बाघ-तख ।

खप्पत—देखो 'खपत' ।

खप्पर—पु० [सं० कर्परः] फकीरों का भिक्षा-पात्र ।

खप्पराल (राळी)—स्त्री० खप्पर धारिणी काली देवी ।

खप्फा—देखो 'खफा' ।

खप्र—देखो 'खप्पर' ।

खप्राळी—देखो 'खप्पराळी' ।

खफणी—स्त्री० [फा०] १ नाराजगी । २ क्रोध, कोप ।

खफत—देखो 'खपत' ।

खफनी—स्त्री० कफन ।

खफा (फफा)—वि० [प्र०] १ नाराज । २ क्रुद्ध । ३ तंग, परेशान । —स्त्री० कुशती का एक दाव ।

खबड़वार—देखो 'खबरदार' ।

खबड़दारी—देखो 'खबरदारी' ।

खबची—पु० १ पानी भरा छोटा खड़ा, मड्डा । २ क्रिया, कार्य । ३ विघ्न, बाधा । ४ झगड़ा, टंटा । ५ दंगा, फिमाद । ६ हाथ के पंजे की एक आकृति विशेष ।

खबर—स्त्री० [प्र०] १ समाचार । २ सन्देश, सूचना । ३ सुधि । ४ जानकारी, मालूम । ५ पता, खोज । ६ देख-भाल । ७ अफवाह । ८ जांच, परीक्षा ।

खबरदार—वि० [प्र०] १ होशियार भावधान । २ चेतन्य, सजग । ३ प्रवीण, दक्ष । ४ सन्देह बाहक ।

खबरदारी—स्त्री० [प्र०] १ होशियारी, सावधानी । २ चेतना, सजगता । ३ दक्षता । ४ सन्देहबाहक का कार्य ।

खबरनवेस—पु० १ सन्देह बाहक, डाकिया । २ दूत ।

खबरि (री)—देखो 'खबर' ।

खबीड़णी (बो)—क्रि० १ मारना, पीटना । २ प्रहार या चोट करना । ३ पूरा भरना । ४ धोखा देना ।

खबोड़ी-पु० [सं० खवेष्टनः] १ प्रहार, चोट । २ घोखा ।
३ भटका, धक्का । ४ मदमा । ५ नुकसान ।
खबोस-वि० [अ०] १ पापी । २ नीच, दुष्ट । ३ प्रचण्ड,
भयंकर । ४ कृपण, कंजूस । -पु० १ दैत्य, दानव । २ भूत,
प्रेत । (मि० खईस) ।
खबोचिपी-देखो 'खबचो' ।
खब्बो-पु० कंधा ।
खमोळी-पु० चोट ।
खमकणी (बो)-क्रि० [सं० खमंकि + मंडन] खमकना, दमकना ।
खम-पु० [सं० क्षम] १ संतोष । २ क्षमता । ३ धैर्य । ४ टेढ़ापन,
बल ।
खमकरी-स्त्री० १ चंचलता । २ व्यथता । ३ आतुरता ।
४ उतावलापन । ५ बौखलाने की क्रिया ।
खमकरी-पु० 'क्षमा' सूचक शब्द ।
खमडोळ-स्त्री० मखील, हंसी, मजाक ।
खमण, खमणा, (श्री)-स्त्री० [सं० क्षमणः] १ क्षमा शीलता ।
२ सहनशीलता । ३ सहनशीलता रखने वाला साधु ।
४ तप, उपवास ।
खमणी (बो)-क्रि० [सं० क्षमणं] १ क्षमा करना । २ महन
करना । ३ फल भोगना । ४ अपने ऊपर लेना । ५ क्षमा
याचना करना ।
खमत-स्त्री० १ अग्नि, आग । २ देखो 'खमता' ।
खमत-खामणा-पु० क्षमा याचना ।
खमता-स्त्री० [सं० क्षमता] १ सामर्थ्य, ओकात, क्षमता ।
२ शक्ति, बल । ३ महन शीलता ।
खमदाह-स्त्री० कष्ट सहने की क्रिया या भाव ।
खमया-देखो 'क्षमा' ।
खमसा-स्त्री० १ एक प्रकार की गजल । २ संगीत की एक ताल ।
खमा-स्त्री० [सं० आयुष्यमान] १ राजा महाराजाओं का किया
जाने वाला एक सम्मान सूचक अभिवादन जिसका अर्थ
चिरायु होता है । २ एक लोक गीत । ३ देखो 'क्षमा' ।
खमाई-स्त्री० १ महनशीलता । २ क्षमाशीलता ।
खमाच-देखो 'खम्माच' ।
खमाणी (बो), खमावणी (बो)-क्रि० क्षमा करवाना या करना ।
क्षमा मांगना ।
खमावची-पु० १ एक राग विशेष । २ जामाता को गाया जाने
वाला एक लोक गीत ।
खमार-देखो 'खुमार' ।
खमियाजो-पु० १ हानि, नुकसान करने का फल । २ हानि
नुकसान के उपलक्ष में लिया या दिया जाने वाला धन ।
खमि-पु० [सं० क्षमा] क्षमा ।

खनौर (रौ)-पु० [अ०] १ प्रकृति, स्वभाव । २ नशा, मादकता ।
३ गीते आटे या मेदे की सड़न । ४ श्रीरघुओं को मटा कर
निकाला जाने वाला ग्रामव ।
खम्भया-देखो 'क्षमा' ।
खम्माच-स्त्री० मालकोश की दूसरी रागिनी । —कांन्हड़ा-पु०
एक प्रकार की संकर राग । —टोरी-स्त्री० सम्पूर्ण जाति
की एक रागिनी ।
खम्भिया-देखो 'क्षमा' ।
खम्भ्या-स्त्री० [सं० क्षमा] १ आर्षा छन्द का एक भेद । २ पृथ्वी ।
३ क्षमा, माफी । —खयस्त-स्त्री० पृथ्वी ।
खयंकर-वि० [सं० क्षयकर] संहारक ।
खयंग-पु० [फा० खिम] १ घोड़ा, अश्व । २ तजवार ।
३ फौज, सेना । ४ नाश, संहार ।
खय-पु० क्षय, नाश । —कर, कार-पु० नाश, विनाश, गंवारक ।
खयण-वि० नाश करने वाला ।
खयपत्रगिर-पु० वज्र ।
खयानत-स्त्री० [अ०] १ अमानत का गवन । २ येटीभागी, बद-
नियती । ३ विचार ।
खयाबल-पु० [सं० क्षया + बल] नाश करने की क्षमता ।
खयाल-देखो 'खयाल' ।
खरंड-देखो 'खरहंड' ।
खर-पु० [सं० खरः] १ गधा । २ खच्चर । ३ पशु । ४ बगला ।
५ कीआ । ६ तोता । ७ रावण का भाई एक राक्षस ।
८ तुन, घास । ९ उष्णता, गरमी । १० माठ संवत्सरों में
से पच्चीसवां संवत्सर । ११ छप्पय छन्द का बीसवां भेद ।
—वि० [सं० खर] १ तेज, तीक्ष्ण । २ गर्म, उष्ण ।
३ कड़ा, कठोर । ४ मोटा । ५ घना, सघन । ६ निष्ठुर ।
७ हानिकर । ८ बैंगनी रंग का । ९ धूम ध्वज । १० मूर्ख,
नासमझ । —ईस-पु० कुम्हार । —कर-पु० सूर्य, आनु ।
—कोण-पु० तीतर विशेष । —खर-पु० एक प्राचीन
लगान । —खंड-पु० कपन । —खुखण, बूसण-पु०
खरदूषण राक्षस । —ख्वंसी-पु० श्रीरामचंद्र । श्रीकृष्ण ।
—नाद-पु० गधे की रेंक । —नाळ-स्त्री० कपन ।
खरड-देखो 'खरी' ।
खरक-पु० १ जुलाहे का एक औजार । २ एक दिशा विशेष ।
३ वक्रियों का वाड़ा ।
खरखर-पु० प्रति हल लिया जाने वाला कर ।
खरखराणी (बो)-क्रि० १ खांसी होना, खांशना । २ तबे पर
हल्का मक्का ।
खरखरियो-पु० बिना मजदूरी लिये केवल भोजन के लिये
जागीरदार के खेत में काम करने वाला ।

खरखरी-स्त्री० गले में होने वाली खरास ।
 खरखोवरियो, खरखोदरी-पु० १ वृक्ष का खोखला भाग ।
 २ घर का छोटा-मोटा कार्य, गृहकार्य ।
 खरगड़ी-पु० एक प्राचीन लगान ।
 खरगू (गौ), खरगोस-पु० शशक, खरहा ।
 खरड़ (क. कौ)-स्त्री० १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । २ मफीम का बुरादा । ३ बड़ी दरी, लाजम । ४ रगड़ धर्षण ।
 ५ घसीट की लिखावट । ६ ऊंट के बालों का बस्त्र, गंदा ।
 ७ पानी बहने की ध्वनि, कलकल ।
 खरड़कणी (बौ)-क्रि० १ टकराना । २ चुभना, खटकना ।
 ३ कमकना ।
 खरड़णी (बौ), खरड़णी (बौ)-क्रि० १ कुचलना । २ कुचल कर मील दूर करना । ३ घसीट में लिखना । ४ खरोंचना ।
 ५ वेदना से तड़कना ।
 खरड़ो-पु० १ ऋण का दस्तावेज । २ सूचना पत्र । ३ लंबा पत्र । ४ एक प्रकार का प्राचीन कर । ५ घसीट में लिखा लंबा पत्र ।
 खरच-पु० [फा० खर्च] १ व्यय । २ लागत । ३ ह्याम, कमी ।
 ४ त्याग । ५ क्षय, नाश । ६ मृत्यु-भोज ।
 खरचणी (बौ)-क्रि० खर्च करना, व्यय करना ।
 खरची-स्त्री० १ निर्वाह योग्य धन । २ यात्रा-व्यय, खर्ची ।
 खरचीली-वि० (स्त्री० खरचीली) १ अधिक व्यय करने वाला ।
 २ अधिक खर्च का ।
 खरखी-देखो 'खरच' ।
 खरजूर-पु० [सं० खजूँर] १ रजत, चांदी । २ हस्ताल ।
 ३ खजूर का वृक्ष । —बेध-पु० ज्योतिष का एक योग ।
 खरजूरी-स्त्री० [सं० खजूँरी] खजूर का वृक्ष ।
 खरड़-पु० निरुद्ध कोटि का व्यक्ति, नीच व्यक्ति ।
 खरड़ची-पु० गेहूँ की फसल में होने वाला एक प्रास ।
 खररा-स्त्री० १ शस्त्र पैना करने की मान । २ उबलने की ध्वनि ।
 खरराणी-देखो 'खरराणी' ।
 खरराणी-स्त्री० १ मुखबरी करने के लिये चोरों को दिया जाने वाला गुप्त धन । [सं० क्षीरणी] २ मौलश्री का वृक्ष व फल । ३ राजाश्री द्वारा दिया जाने वाला कर ।
 खरराणी-पु० [सं० क्षरणी] वंश, कुल, गोत्र ।
 खरराणी (बौ)-क्रि० [सं० क्षरणी] १ वीर गति प्राप्त होना, मरना ।
 २ गिरना, पड़ना । ३ झड़ना । ४ रिसना, टपकना ।
 खरतर-पु० नेजमिवता का भाव । —वि० १ नेज, तीक्ष्ण ।
 २ कठिन, प्रतिकठिन । —गद्य-पु० एक जैन सम्प्रदाय ।

खरतरी-वि० (स्त्री० खरतरी) तेज, तीक्ष्ण ।
 खरदांवली-पु० स्त्रियों का एक आभूषण ।
 खरघरी-देखो 'खुरदरी' । (स्त्री० खरघरी)
 खरपट, खरपटी-वि० [सं० खपट] १ अति वृद्ध । २ देखो 'खुरपो' ।
 खरपतवार-पु० निराई के समय सेत से निकाला जाने वाला घास-फूस ।
 खरपांट-स्त्री० बांस आदि का महीन या बारीक खंड जो शरीर में घुस जाता है, कमाची । फांस ।
 खरब-वि० [सं० खर्व] १ सौ घरब । २ नीच, बुरा । ३ नाटा, बीना, वामन । ४ छोटा लघु । —पु० १ सौ घरब की संख्या । २ नव निधियों में से एक । —साख-वि० नाटा, बीना ।
 खरबूजी-पु० [फा० खर्बुजा] ककड़ी जाति का एक लता-फल ।
 खरळ-स्त्री० [सं० खल] १ औपधियां बूटने की पत्थर आदि की नावनुमा कुण्डी । २ एक दिशा ।
 खरळकणी-पु० एक ध्वनि विशेष ।
 खरळकणी (बौ), खरळकणी (बौ)-क्रि० १ ध्वनि करना, खड़कना । २ खिसकना । ३ निकलना । ४ कलकल की ध्वनि करने हुए बहना ।
 खरळी-स्त्री० १ स्नान । २ सेत में पानी देने की नाली ।
 ३ खरवादी, हानि । ४ नाश ।
 खरब-देखो 'खरब' ।
 खरबळा-पु० पैर, खुरयुक्त पैर ।
 खरबांस-पु० [सं० खरमांस] पौष व चैत्र मास ।
 खरबिता-स्त्री० [सं० खबिता] १ चतुर्दशी मिली अमावस्या ।
 २ कम कालमान की तिथि ।
 खरसंडियो-पु० एक प्रकार का बेल ।
 खरसणियो, खरसणी-पु० १ जमो, करील आदि वृक्ष की भाड़ी । २ एक प्रकार का धूप ।
 खरसल-स्त्री० एक प्रकार की गाड़ी ।
 खरसुमो-पु० गंधे के समान सुमों वाला घोड़ा ।
 खरहंड खरहंड (हड़)-पु० १ घोड़ा । २ सेना, फौज । ३ चिता ।
 ४ युद्ध में शस्त्र खण्डन ।
 खरहर-स्त्री० [प्रा०] खरखराहट, ध्वनि विशेष ।
 खरांडक-पु० शिव का एक अनुचर ।
 खरांसु-पु० [सं० खरांशु] सूर्य ।
 खराई-स्त्री० १ खरा होने का भाव । २ पक्कापन ।
 ३ विशुद्धता ।
 खराखर (रो)-१ पक्का । हड़ । २ ठीक, उचित, मही ।
 ३ कठिन, मुश्किल । —स्त्री० १ हड़-निष्पत्ति । २ कठिनाई ।
 खराड़णी (बौ)-क्रि० १ खिलाना । २ पक्का कराना ।
 खराड़ी-पु० पशुओं का एक संक्रामक रोग ।

खराणी

(२८१)

खळखळणी

खराणी (बो)-क्रि० १ किसी बात पर पक्का व हड़ करना ।
२ वचन लेना ।
खराब-पु० [फा०] १ लकड़ी या धातु की सतह चिकनी करने का औजार । -स्त्री० २ बनावट, ढंग ।
खराबणी (बो)-क्रि० १ खराब लगाकर साफ करना । २ सुडील बनाना ।
खरादी-देखो 'खराती' ।
खरापण (णी)-पु० १ पक्कापन, दृढ़ता । २ सत्यता ।
३ शिशुद्वेष ।
खराब-वि० [अ०] १ बुरा, नीच । २ निकृष्ट, हीन । ३ भ्रष्ट ।
४ नष्ट, बर्बाद । ५ दुर्दशाग्रस्त । ६ पतित ।
खराबो (बो)-स्त्री० [अ०] १ बुराई, नीचता । २ दोष, अवगुण ।
३ दुरावस्था । ४ मंदगी । ५ क्षति, हानि, बर्बादी ।
६ दुर्दशा ।
खरारि (रो)-पु० [सं०] १ विष्णु । २ श्रीराम । ३ श्रीकृष्ण ।
४ ईश्वर । ५ वलराम ।
खरारी-पु० एक क्षप विशेष का झाड़ु ।
खरास-स्त्री० खर्गोच, रगड़ ।
खरियळ-वि० खरी कमाई करने वाला ।
खरी-वि० १ निश्चय । २ देखो 'खरी' ।
खरीकी (बो)-वि० (स्त्री० खरीकी, बो) स्पष्टवादी, सच्चा ।
खरोधाहि-पु० विश्वास ।
खरीटिया-स्त्री० बकरी की एक जाति ।
खरीटियो-पु० खरीटिया जाति का एक बकरा ।
खरीटी-देखो 'खरैटी' ।
खरीती-पु० [अ० खरीत] १ पैला, थैली । २ जेब, खीसा ।
३ ग्राजापत्र का लिफाफा ।
खरीद-स्त्री० १ क्रय, क्रयण । २ क्रय की गई वस्तु ।
खरीदणी (बो)-क्रि० क्रय करना, मोल लेना ।
खरीददार-वि० १ क्रय करने वाला, ग्राहक । २ चाहने वाला,
इच्छुक ।
खरीददारी-स्त्री० मामान क्रय करने को किया ।
खरीदो-पु० खरीददार, ग्राहक ।
खरूखानळ-पु० ४९ क्षेत्रपालों में से अठारहवां क्षेत्रपाल ।
खरू-देखो 'खरी' ।
खरूट-पु० फोड़े-फुंभी पर जमने वाली सूखी पपड़ी ।
खरेड़ी-स्त्री० घाम-फूस का छप्पर ।
खरेबरकत, खरेलाम-पु० शुभारंभ ।
खरै-क्रि० वि० निश्चय ही ।
खरैटी-स्त्री० [सं० खरपटिका] अष्टवर्ग की एक औशधि विशेष ।

खरौंच-स्त्री० [सं० क्षुरण] १ जोर से लगने वाली रगड़ ।
२ ऐसी रगड़ से पड़ने वाला चिह्न ।
खरोड़ी-स्त्री० घास से भरी गाड़ी ।
खरोट-देखो 'खर्गोच' ।
खरोटी-पु० १ एक प्रकार का जामीरदारी कर । २ लेपन के लिये गोबर के साथ मिलाई जाने वाली मिट्टी विशेष ।
३ देखो 'खरौंच' ।
खरोटक-पु० [सं० क्षीरोद] १ समुद्र । २ श्वेत वस्त्र ।
खरी-वि० (स्त्री० खरी) १ विशुद्ध, खानिष । २ सच्चा, स्पष्टवादी ।
३ तीखा, तेज । ४ सेका हुआ, करारा । ५ पक्का, दृढ़ ।
६ सख्त, कड़ा । ७ नकद । ८ ईमानदार । ९ कटु सत्यवादी ।
१० श्यामल, गेहूँभरा । ११ महान, जबरदस्त । १२ निश्चित ।
खळ-वि० [सं० खल] १ नीच, दुष्ट, पापी । २ क्रूर । ३ चुगल-खोर । ४ धोखेबाज, कपटी । ५ शत्रु, विरोधी । ६ मूर्ख ।
-पु० १ सूर्य । २ रावण । ३ राक्षस । ४ खलिहान ।
५ गुद्ध भूमि । ६ खरल । [सं० खलिः] ७ तिलों की खली ।
८ प्रसीम का वुरादा ।
खलक-पु० [अ०] १ सृष्टि जगत, दुनिया । २ अधिक भीड़ या समूह ।
खळकट (ट्ट)-पु० संहार, विध्वंस ।
खळकणी (बो)-क्रि० १ बहना, प्रवाहित होना । २ छलकना ।
३ कलकल ध्वनि करना । ४ निकलना । ५ खड़कना, खनकना । ६ ढहना । ७ बहना ।
खळकत-देखो 'खलक' ।
खळकळी-वि० (स्त्री० खळकळी) ढीलाढाला, ढिलढिला ।
खळकाणी (बो), खळकावणी (बो)-क्रि० १ बहना, प्रवाहित करना । २ उड़ेलना । ३ छलकाना । ४ निकालना ।
५ खड़काना, खनकाना । ६ ढहाना । ७ प्रहार करना ।
८ बंघन में डालना । ९ खीलाना । १० कह डालना, कह देना ।
खळकाळ-पु० १ श्रीकृष्ण । २ श्रीरामचन्द्र । ३ तलवार ।
खळकी-स्त्री० स्नान ।
खळकुलीक-वि० नीच, दुष्ट, क्रूर ।
खळकौ, खलकौ-पु० १ कुर्ता, भंगा । २ नाला । ३ प्रवाह ।
४ स्नान । ५ कल-कल ध्वनि । ६ देखो 'खलकौ' ।
खलक-देखो 'खलक' ।
खळकणी (बो)-देखो 'खळकणी' (बो) ।
खळकट-देखो 'खळकट' ।
खळखळ-पु० [सं० कलकल] १ पानी आदि पदार्थ का कलकल कर बहने की क्रिया । २ ऐसे बहाव से उत्पन्न ध्वनि ।
खळखळणी (बो)-क्रि० कलकल करते हुए बहना ।

खळखळी-वि० (स्त्री० खळखळी) १ कुछ दीला । २ घासानी से
पिरोने लायक । ३ अधिक विशेष । ४ पर्याप्त ।
५ उदारता पूर्ण ।

खळखल्ल-१ देखो 'खिलखिल' । २ देखो 'खलखल' ।

खळखायक-वि० दुष्टों का संहार करने वाला ।

खळखेवू-पु० १ ईश्वर । २ विष्णु ।

खलखुला-पु० संसार (मवात) ।

खळखळ-देखो 'खलखल' ।

खळगट (ट्ट)-देखो 'खलकट' ।

खलड़ी-स्त्री० [सं० खल्ल] १ छाल । २ चमड़ी ।

खळखली (बो)-क्रि० मारना, नाश करना ।

खळखारण-पु० [सं०] १ मुदगन चक्र । २ दुष्ट संहारक ।

खळणी (बो)-क्रि० [सं० खलन] १ हिलना-डुलना ।

२ विचलित होना, डिगना । ३ गिरना, पतन होना ।

४ मधीर होना । ५ बिगड़ना । ६ पथभ्रष्ट होना ।

७ मरना । ८ संहार करना । ९ मिटाना ।

खळघान-पु० [सं० खल-स्थान] खलिहान ।

खळबट-पु० [सं०] १ युद्ध । २ संहार, नाश ।

खळबत-स्त्री० १ प्रेमालाप । २ मेल-जोल । ३ गोष्ठी ।

खळबधकर-पु० शिव, महादेव ।

खळबळ-स्त्री० १ हलचल, कुलबुलाहट । २ शोर, हल्लागुल्ला ।
३ अशांति, बेचैनी, घबराहट । ४ पेट में होने वाला
विकार ।

खळबळणी (बो), खळबळणी (बो)-क्रि० १ हलचल होना,
कुलबुलाना । २ शोर गुल या हल्ला होना । ३ बेचैन होना,
घबराना । ४ वात विकार से पेट कुरकुराना । ५ खौलना ।
६ हिलना-डुलना । ७ विचलित होना । ८ चौकना ।
९ चमकना ।

खळबळी, खळभळ-देखो 'खळबळ' ।

खळभळणी (बो)-देखो 'खळबळणी' (बो) ।

खळभळी, खळभळ-देखो 'खळबळ' ।

खलल-स्त्री० [ग्र०] १ रिक्तता । २ कमी । ३ रोक, बाधा ।
४ विघ्न । ५ दूट । ६ व्यवधान । ७ गलती, भूल ।
८ हंसी मजाक ।

खळळ, खळळोट-स्त्री० १ नेज प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि ।
२ झन्झनाहट ।

खळबट-पु० युद्ध ।

खळसाल-पु० [सं० खल-शल्य] १ युद्ध । २ वज्र । ३ विष्णु ।
४ श्रीराम । ५ रावण ।

खळखेरणी (बो)-देखो 'खलखेरणी' (बो) ।

खळहळ-स्त्री० १ कलकल ध्वनि । २ देखो 'खळबळ' ।

खळहळणी (बो)-क्रि० १ कलकल करके बहना । २ देखो
'खळबळणी' (बो) ।

खळहाणी (बो)-क्रि० १ नष्ट करना । २ संहार करना ।

खळहिउ-पु० दूसरों द्वारा दिया जाने वाला कष्ट ।

खळांढळी-वि० खंड-खंड ।

खळांहळ-स्त्री० कलकल ध्वनि ।

खळांत-पु० दुष्टों का अंत । शत्रुओं का विनाश ।

खळांभयंकर-पु० ईश्वर, परमेश्वर ।

खळांहळि-स्त्री० कलकल ध्वनि ।

खळाक-पु० [सं० खलन] १ चिकित्सा के अनन्तर परहेज तोड़ने
की क्रिया या भाव । २ कपड़ा बुनने की नली से उत्पन्न
शब्द । ३ वर्ष भर की बेगार के बदले फसल पर दिया जाने
वाला अनाज ।

खळाट-पु० [सं० खल] २ वैरी, शत्रु । २ दुष्ट, खल ।

खळाडसा-वि० खण्ड-खण्ड ।

खलाधर-स्त्री० धौकनी ।

खलास-वि० [ग्र०] १ खतम, समाप्त । २ रिक्त, खाली ।
३ छूटा हुआ, मुक्त ।

खलासी-स्त्री० [ग्र०] १ सभापति, खातमा । २ रिक्तता, रीतापन ।
३ मुक्ति, छुटकारा । -पु० ४ यंत्र या मोटर चालक का
सहायक । ५ तोपची ।

खलिब (बो)-पु० [अनु०] १ ऊपर से गिरने से होने वाली,
ध्वनि । २ नाश, वंश ।

खळि-पु० [सं० खलि] १ पाप, दोष । २ देखो 'खळी' ।

खळित-वि० [सं० खलित] १ गिरा हुआ । २ टपका हुआ ।
३ पतित, भ्रष्ट । ४ उत्तेजित । ५ चलायमान । ६ चंचल ।
-पु० [ग्र० खिलप्रत] राजा द्वारा सम्मानार्थ दिया जाने
वाला वस्त्र ।

खलियौ-पु० छोटे बच्चे की जूती ।

खळीपणी (बो)-क्रि० १ उडेलना । २ खाली करना । ३ खोलना ।

खलींबो-पु० १ नाश, चकनाचूर । २ गिरने पर होने वाली
ध्वनि ।

खळी-स्त्री० [सं० खलि:] १ भाग, मोठ आदि के फूस का ढेर ।
२ मिचलाहट । ३ गिलहरी । ४ देखो 'खळ' । ५ देखो
'खल' ।

खलीता-वि० व्यर्थ, निश्चक्र ।

खलीतो-देखो 'खलेचो' ।

खलीतो-पु० [ग्र० खगत:] १ धौला । २ जेब । ३ आज्ञा-पत्र का
लिफाफा ।

खलीन-स्त्री० [सं०] नगाम, राम ।

खलीफा

(२२३)

खल्ल

खलीफा-पु० [अ० खलीफ] १ अध्यक्ष । २ अधिकारी । ३ कोई बड़ा व्यक्ति । ४ हज्जाम, नाई । ५ उत्तराधिकारी । ६ मनुष्यायी । ७ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी ।
खलील, खलोलु-वि० [अ० खलील] १ बीर, योद्धा । २ जोरदार, जबरदस्त । ३ सच्चा मित्र । ४ देखो 'खलीन' ।
खलू-१ देखो 'खल' । २ देखो 'खालू' ।
खलेची (बौ)-स्त्री० त्रिकोणारमक मुंह का हक्कनदार एक पैला विशेष ।
खलौ-पु० [सं० खलः] १ खलिहान । २ खलिहान में पड़ा हुआ अनाज । ३ राशि, ढेर । ४ युद्धस्थल । ५ संहार, नाश ।
खलौ-पु० १ जूता, जूती । २ राज्य की तरफ से मिलने वाला भोजन ।
खल्ल, खल्लड़- १ देखो 'खल' । २ देखो 'खान' ।
खल्लासर-पु० [सं०] ज्योतिष में दमकों योग ।
खल्ली-पु० [सं०] चौरामी प्रकार के बात रोगों में से एक ।
खल्लोटी-पु० [सं०] १ गंजा होने का रोग । २ गंजापन ।
खल्लो-देखो 'खलो' ।
खल्व, खल्वार-वि० [सं० खल्वार] गंजा ।
खल्लौ-देखो 'खली' ।
खल्लौ (बौ)-१ देखो 'खोली' (बौ) । २ देखो 'खिवली' (बौ) ।
खल्लोखल्व-वि० [सं० स्कंध-खचित] कंधे तक का ।
खल्लोनी-पु० सरदार, खान प्रादि लोग ।
खल्लौ (बौ)-क्रि० १ खिलाना, खाने के लिए प्रेरित करना । २ खाने के लिए देना ।
खल्लव-पु० [अ० खल्व] स्वप्न ।
खल्वार (रो)-स्त्री० [फा० खल्वारी] १ वरवादी, नाश, दुर्दशा । २ धोखा, कपट । ३ बुरा काम । ४ बदनामी । ५ दुःख ।
खल्वार-वि० [फा० खल्वार + रा. ऊ.] दुर्दशाग्रस्त । बदहाल ।
खल्वार-पु० [अ० खल्वार] (स्त्री० खल्वार) १ राजा रईसों का निदमतरार । २ नाई, हज्जाम । ३ दासी, सेविका । ४ उप-पत्नी, रखैल । —**बाळ-पु०** १ रखैल स्त्री की संतान । २ रखैल स्त्री ।
खल्वारि, (सी)-स्त्री० [अ०] १ खल्वार का कार्य, चाकरी । २ इस कार्य की मजदूरी । ३ हाथी के होंठों के पीछे का स्थान । ४ देखो 'खल्वार' ।
खल्वारोण-पु० १ उपपत्नी की संतान । २ उपपत्नी युक्त (राजा) ।
खल्वी-देखो 'खली' ।
खल्वी-वि० १ खाने वाला । २ खेवैया, नाविक ।
खल्वी-देखो 'खली' ।
खल्व-पु० [सं० ख + ल्व] हवा, वायु ।
खल्व-पु० [फा०] १ एक प्रकार की मुगंधिन धाम की जड़ । २ एक देश का नाम ।

खसकली (बौ)-क्रि० १ धीरे से चल देना । २ स्थान छोड़ देना । ३ इधर-उधर हो जाना । ४ मरक जाना । ५ विचलित होना ।
खसकली (बौ)-क्रि० १ धीरे से या चुपके से जाने के लिए प्रेरित करना । २ स्थान छोड़ देना । ३ इधर-उधर कर देना । ४ खिसकाना, सरकाना, धकेलना । ५ विचलित करना ।
खसखस-पु० [सं० खसखस] पोस्त के दाने ।
खसखसली (बौ)-क्रि० परास्त होना, पराजित होना ।
खसखसिया, खसखसी-वि० खसखस की, खसखस संबंधी, खस-खस युक्त । —**स्त्री०** १ खसखस की भांग । २ खसखसहट ।
खसडकी-पु० १ रगड़, खरोंच । २ घमीट की लिखावट ।
खसल-स्त्री० १ खिसकने की क्रिया या भाव । २ लड़ाई, युद्ध ।
खसली (बौ)-क्रि० [सं० कप्=हिमायाम्] १ लटना, भिड़ना । २ युद्ध करना । ३ खुजाने के लिए रगड़ खाना । ४ प्रयत्न या कोशिश करना । ५ खिमकना । ६ मिरना, ठह जाना ।
खसपोस-पु० खम का पर्दा ।
खसबोई, खसबोप खसबोह, खसबो-देखो 'ममबू' ।
खसम-पु० [अ० खसम] १ पति, खांविद । २ स्वामी ।
खसर-पु० युद्ध, लड़ाई ।
खसरी-पु० [अ०] १ राजकीय अभिलेख में प्रत्येक खेत का नाप व संख्या । २ किसी हिसाब का कच्चा चिट्ठा । ३ सिर का सूखा मेल ।
खसखस-स्त्री० १ लड़ाई । २ कलह । ३ वैमनस्य । ४ खींचतान । —**क्रि०** वि० ठसाठस ।
खसियौ-वि० बधिया ।
खसू-स्त्री० खांसने की ध्वनि ।
खसरल-स्त्री० [सं० ख + सरल] रजकण, धुलिका ।
खसोलणी (बौ)-क्रि० किमी में कुछ घुमाना, फंसाना ।
खसौ-पु० नाश, मंहार ।
खस्ता-स्त्री० [फा० खस्तः] टक्कर भिड़ंत । —**वि०** १ नाजुक । २ कमजोर । ३ दबनीय । ३ टूटा हुआ, भग्न । ४ दबाने से जल्दी टूट जाने वाला, चुरमुटा । ५ शायल । ६ दुःखी, खिन्न ।
खस्म-देखो 'धमम' ।
खल्लड़-पु० १ अश्व, घोड़ा । २ मेना । ३ देखो 'खंड' ।
खल्व-पु० [सं० ख] १ आकाश, खोम । २ रज, धूलि । ३ गर्म राख ।
खल्व-पु० प्रहार ।
खल्व (लि, ली)-पु० युद्ध ।

खहणो (बौ)-देखो 'खसणो' (बौ) ।

खहदल-पु० आकाश, गगन ।

खह-मुधार-पु० [सं० श्रुत + मुधार] घी ।

खहावत-वि० धून से आच्छादित ।

खहीड़णो (बौ)-क्रि० मारना, पीटना ।

खहेड़-वि० बलवान, जबरदस्त ।

खां-पु० [फा०] १ मुसलमानों के नाम के आगे लगने वाला शब्द, खान । २ मुसलमानों का एक सम्बोधन । ३ देखो 'खान' ।

खांक (ख)-१ देखो 'कांख' । २ देखो 'खांखर' ।

खांकोळई-स्त्री० [सं० कुल + अलात्] बगल में होने वाली ग्रंथि ।

खांखर-स्त्री० १ एक प्रकार का शस्त्र । २ वह मादा ऊँट जिसे एक बार ही बच्चा दिया हो । -वि० १ वृद्ध, बुढ़ा । २ अत्यन्त पुराना । ३ जीर्ण-शीर्ण ।

खांखरियो, खांखरी-देखो 'खांखरी' ।

खांखरी-स्त्री० बंध्या ऊँटनी ।

खांखल-स्त्री० आकाश में छा जाने वाली गर्द, रज, धूलि ।

खांखलणो (बौ)-क्रि० धूलियुक्त होना । धूलि छा जाना ।

खांखो-देखो 'खांखर' ।

खांखोलणो (बौ)-देखो 'खंखोलणी (बौ) ।

खांखो-पु० (स्त्री० खांखी) १ वृद्ध पुरुष । २ वीर पुरुष ।

खांगड़ी-वि० १ टेढ़ा । २ अड़ियाल, अक्खड़ । ३ उद्दण्ड, बदमाश ।

४ योद्धा, वीर । ५ अटल, अडिग ।

खांगोबंघ-पु० १ साफा बांधने का एक ढंग । २ इस ढंग से साफा बांधने वाला व्यक्ति । ३ राठीड़ ।

खांगो, खांगड़ी, खांगो-देखो 'खांगड़ी' ।

खांब-स्त्री० [सं० खब] १ बाहु पर धारण करने का स्थियों का चूड़ा । २ आग्रह, मनुहार ।

खांचणो (बौ)-देखो 'खींचणो' (बौ) ।

खांचाताण (णी, न, नो)-देखो 'खीचाताण' ।

खांचो-पु० १ मभि स्थान, जाड़ । २ कोना । ३ दीव की खाली जगह । ४ खींच कर बनाया हुआ निशान, गठन । ५ तनाव, खिचाव ।

खांट-स्त्री० १ आसानी से न दुहाने वाली गाय । -वि० अमम्य, जंगली ।

खांड (श्री)-स्त्री० [सं० खंड] १ बिना साफ की हुई चीनी, कच्ची शक्कर । २ संहार, विनाश ।

खांडखोपरो-पु० मृत्युभोज के पश्चात् पुत्रो या बहन द्वारा पिता (स्वर्गस्थ) के नाम पर छोटी २ कन्याओं को शक्कर भरकर दिया जाने वाला खोपरा ।

खांडखोरो-पु० शक्कर खाने का आदी ।

खांडगळी-पु० एक देशी खेल ।

खांडणोत-वि० संहारने वाला, मारने वाला ।

खांडणी, खांडणियो, खांडणू-पु० मूसल ।

खांडणी (बौ)-क्रि० १ मूसल से कूटना । २ मारना । ३ काटना ।

खांडतारो-देखो 'खांड खोपरो' ।

खांडबारी-पु० मृतक के पीछे द्वादशे का भोज ।

खांडभील-पु० एक पहाड़ी जाति विशेष ।

खांडरणो (बौ)-१ देखो 'खांडणी' (बौ) । २ देखो 'खंडणी' (बौ) ।

खांडलो, खांडलू-देखो 'खांडियो' ।

खांडव-पु० [सं० खांडवम्] १ कुरुक्षेत्र के समीप इन्द्र का एक प्राचीन वन । [सं० खांडवः] २ मिश्री, कंद ।

खांडहल-स्त्री० तलवार ।

खांडादेवळराय-स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी, खूबड़ देवी ।

खांडाघर (घार), खांडापत-पु० [सं० खड्ग-धारिन्] तलवार-धारी, योद्धा ।

खांडाळी-स्त्री० टूटे सींग की गाय या भैंस ।

खांडा सरभु-पु० तलवार से युद्ध करने वाला, तलवार से मुकाबला करने वाला ।

खांडियो-पु० १ टूटे सींग वाला पशु । २ एक कृषि उपकरण । -वि० खण्डित ।

खांडोव-देखो 'खांडव' ।

खांडू-देखो 'खांडी' ।

खांडेराउ-पु० खड्गधारी योद्धा ।

खांडेल (सौ)-पु० १ होली जलाने के लिए प्रत्येक घर से डाला जाने वाला लकड़ी का डंडा । २ जंगली जमीकंद विशेष । ३ देखो 'खांडी' ।

खांडी-पु० [सं० खड्ग] १ तलवार । २ दुधारी तलवार । ३ टूटे सींग का पशु । -वि० खण्डित, भग्न ।

खांण-पु० [सं० खाण, खान] १ भोजन सामग्री, भोजन, खाना । २ भोजन का ढंग । स्त्री० [सं० खनि] ३ धातु-पत्थर प्रादि का खदान, खान । ४ उत्पत्ति स्थान । ५ भण्डार, खजाना । ६ चार प्रकार की सृष्टि । ७ कुण की सफाई ।

खांणकी-देखो 'खानगी' ।

खांणखडी (दी), खांणगंडी-वि० (स्त्री० खांणखंडी, खांणगंडी) भोजन-प्रिय, भोजन भट्ट ।

खांणघर-पु० १ रहोईघर । २ लोहा ।

खांणास-वि० १ खाने वाला । २ नाश करने वाला ।

खांणि (णी)-स्त्री० १ खाने का ढंग, रीति । २ जाति । ३ प्रकार, ढंग । ४ खान, खदान ।

खांणूकरण-पु० हलवाई, कंदोई ।

खांणराव-पु० बादशाह ।

खांणव-देखो 'खान्ग' ।

जाति

(२८५)

खामी

खात (ति, ती) खातिइ-स्त्री० [सं० ख + अंत] १ खयाल, विचार, ध्यान । २ चतुराई, बुद्धिमान् । ३ इच्छा, रुचि । ४ व्यवस्था । ५ उमंग । ६ लगन । ७ बुद्धि । ८ सावधानी । ९ भिन्नता, भेद । १० धैर्य । -क्रि० वि० १ गौर से । २ विचार पूर्वक ।

खातिली, खांतीली-वि० (स्त्री० खांतीली) १ चतुर, बुद्धिमान । प्रवीण, निपुण ।

खांदियो (खांधियो)-पु० १ अर्थी के कंधा देने वाला । २ दाह संस्कार में जाने वाला ।

खांदी-स्त्री० राज मिस्त्रियों से लिया जाने वाला कर ।

खांदेड़ी (डौ)-देखो 'खांथेड़ी' ।

खांथ-स्त्री० [सं० स्कंध] १ अर्थी के कंधा देने की क्रिया या भाव । २ कंधा ।

खांथड़ी-पु० कंधा ।

खांधीवाळ (ळी)-वि० किशों में ऋण चुकाने वाला ।

खांथेड़ी-पु० मिट्टी का खदान ।

खांधी-पु० [सं० स्कंध] १ कंधा, अंस । २ पीठ । ३ गर्दन ।

खान-पु० [फा० खान] १ फारस और पठान सरदारों की उपाधि । २ कई ग्रामों का सरदार । ३ देखो 'खाण' । ४ देखो 'खा' ।

खानाखान-पु० [अ० खानखाना] १ बहुत बड़ा सरदार । २ बादशाह द्वारा मुगलों को दी जाने वाली उपाधि ।

खानगी-वि० [फा० खानगी] १ घरेलू, निजका । २ आंतरिक ।

खानडी-वि० वीर, बहादुर । -पु० मुसलमान, यवन ।

खानजादी-पु० १ मुसलमान शाहजादा । २ अमीर घराने का पुत्र । ३ मुसलमान बना अक्खी जाति का हिन्दू ।

खानदान-पु० [फा० खानदान] कुल, वंश ।

खानदानी-वि० [फा० खानदानो] १ ऊंचे कुल का, कुलीन । २ परंपरागत, पुरतनी, पंतक ।

खानपान-पु० १ खाना-पीना । २ खाने-पीने का ढंग ।

खानबहादुर-पु० [फा०] ब्रिटिश काल की उपाधि विशेष ।

खानसामी-पु० [फा०] रमोइया ।

खानाणो-पु० १ भोजन । २ भोज्य पदार्थ । ३ एक यवन प्रदेश ।

खानाखराब-वि० [फा० खानाखराब] १ बिगाड़ करने वाला । २ चौकट करने वाला । ३ आवारा, लफंगा । ४ पथ-भ्रष्ट । ५ दोगला । ६ अभाग ।

खानाजंग (नी)-पु० १ आपसी लड़ाई । २ गृहकलह ।

खानाजाद-पु० १ घर में पला-भीसा या पैदा हुआ । २ सेवक, दास, गुलाम ।

खानानलासी-स्त्री० [फा० खानातलाशी] खोई हुई चीज के लिए मकान में तलाशी करना ।

खानापुरी-स्त्री० [फा०] किसी चक्र या सारणी में माप, स्थान, शब्द या संख्या लिखना, नक्शा भरना । क्रिया ।

खानाबदोश-वि० [फा० खानाबदोश] १ अपनी गृहस्थी का सामान कंधे या सिर पर रखकर इधर-उधर घूमने वाला । २ वह जिसका घर बार न हो ।

खानामुमारी-स्त्री० [फा० खानामुमारी] किसी शहर, ग्राम या कस्बे के मकानों की गणना ।

खानी-क्रि० वि० घोर, तरफ ।

खानेजाद-देखो 'खानाजाद' ।

खानो-पु० [फा० खानः] १ वंश, कुल । २ घर, मकान । ३ आलमारी का खण, विभाग । ४ कोष्ठक । ५ सारणी या चक्र का विभाग ।

खाप-स्त्री० १ गोत्र, वंश । २ वर्ण, भेद, जाति । ३ शाखा । ४ तलवार । ५ तलवार की म्यान ।

खापण-पु० [अ० कफन] कफन । [सं० क्षण] बौद्ध या जैन साधु, बौद्ध भिक्षु । कमी, अभाव ।

खापायिक-पु० १ विनाश, सत्यानाश । २ संहार ।

खापी-वि० १ कलहप्रिय, लड़ाकु । २ विघ्नकारक । ३ लकड़ी आदि की फांस, घोचा । -खरड़ी, खोली-वि० उद्गृह्य, आजाद, आवारा, दुष्ट ।

खाम-देखो 'खंव' ।

खामली (बी), खामिणी (बी)-क्रि० १ मारना, संहार करना । २ रोकना ।

खामी-पु० कुएँ पर बँल हाँकने वाला ।

खामंव-देखो 'खामंव' ।

खाम-स्त्री० [सं० स्कम्भ] १ संधि जोड़ने की क्रिया या भाव । २ रोक, अवरोध । ३ चपड़ी आदि लगाकर मुहरबंद करना । ४ सीमेंट, चूना आदि लगाकर बंद कर देना । ५ खान । ६ पहाड़ की कंदरा । ७ दल सेना । ८ वह माल गुजारी जो आधी दर से वसूल की जाती है ।

खामखां, (मी)-क्रि० वि० व्यर्थ ही, बेकार में ।

खामचाई-स्त्री० चतुराई, हस्तकौशल ।

खामवी-वि० चतुर, दक्ष ।

खामण-देखो 'खाम' ।

खामिणी-पु० १ छोटा गड्ढा । २ कुल्हे के आगे बर्तन रखने का स्थान । -वि० मुड़र बंद करने वाला । रोकने वाला ।

खामणी-पु० १ कद । २ देह ।

खामिणी (बी)-क्रि० वि० [सं० स्कम्भ] १ संधि जोड़ना । २ रोकना । ३ मुड़र बंद करना । ४ सीमेंट आदि लगाकर बंद करना ।

खामी-स्त्री० [फा० खामी] १ कमी, कसर । २ दोष, अकृपा । ३ कच्चाबंद । ४ अभाव ।

खामेड़ी-पु० लाव की कील जोड़ने वाला । कुएँ पर बँल
 हांकने वाला ।
खामोखाम, खामोखां-देखो 'खामखां' ।
खामोस-वि० [फा० खामोश] १ चुप, मौन । २ शांत ।
खामोसी-स्त्री० [फा० खामोशी] १ चुप्पी, मौन । २ शांति ।
खांब, खांबिद-पु० [फा० खांबिद] १ पति, भर्ता । २ स्वामी,
 मालिक ।
खांसड़ी-देखो 'खूसड़ी' ।
खांसी (बी)-क्रि० [सं० कासनम्] १ खांसी लेना, खांसना ।
 २ खंखारा करना ।
खांसी-स्त्री० [सं० कास] १ कफ या जुखाम से गले में होने
 वाली खरास । २ खंखारा । ३ जुकाम । ४ छीक ।
खा-स्त्री० १ लक्ष्मी । २ पृथ्वी । ३ खाई । -पु० ४ पहाड़ ।
 ५ कमल ।
खाग्रड़ी-देखो 'खूसड़ी' ।
खाइको-'लायकी' ।
खाइयाळ-वि० १ खाने वाला । २ कपटी । ३ दुष्ट ।
खाई-स्त्री० [सं० खानि] १ लंबा बड़ा खड्डा, गड्ढा ।
 २ खंदक ।
खाउकड़ी-देखो 'खाऊ' ।
खाऊ-वि० १ बहुत खाने वाला, पेटू । २ कुछ खाने के लिए
 लालायित रहने वाला । ३ रिश्वतखोर । ४ मुंह से
 काटने वाला ।
खायी (बी)-पु० मूरत, शकल ।
खाक-स्त्री० [फा०] १ धूल, रज । २ राख, भस्म । ३ पृथ्वी
 भूमि । ४ देखो 'कांख' । -वि० अकिंचन, तुच्छ । -**रौख**
 -पु० भाड़ू देने वाला मंगी ।
खाकली-देखो 'खाखली' ।
खाकी-पु० १ शिव, महादेव । २ भस्मी रमाने वाला साधु ।
 ३ बंरागी साधुओं का एक सम्प्रदाय । ४ मटिया रंग ।
 -वि० मटिया रंग का ।
खाकी-पु० [फा०] १ मानचित्र । २ ढाँचा । ३ तख्तीना ।
 ४ कच्चा चिट्ठा, मस्विदा । ५ डील । ६ सूरत, शकल ।
खाख-१ देखो 'खाक' । २ देखो 'कांख' ।
खाखण-स्त्री० भस्मी लगाने वाली स्त्री ।
खाखरियो, खाखरी-पु० [सं० खरखर] १ बना या मोठ की
 बनी पतली रोटी । २ गेहूँ की सूखी रोटी । ३ पलाश वृक्ष ।
 ४ खेत में चिड़िया उड़ाने का, ऊँट के चमड़े का बना
 उपकरण विशेष । ५ होली का दूसरा दिन, धुलेड़ी ।
 ६ गोबरधन पूजा के दिन गाय व भैंस में मस्ती आने
 का भाव ।

खाखली-पु० गेहूँ का भूसा ।
खाखसि-स्त्री० जंभाई ।
खाखी-देखो 'खाकी' ।
खाखोळी-स्त्री० कांख के अंदर होने वाली ग्रंथि ।
खाखी-देखो 'खाकी' ।
खाखी-बिलखी-वि० व्याकुल, बेचैन, उदास ।
खान-पु० [सं० खड्ग] खड्ग, तलवार । -**बंद-वि०** योद्धा,
 वीर । -**बल-पु०** तलवार का बल । -**हण, हणो-वि०**
 तलवारधारी, योद्धा ।
खानडेल-पु० १ सूयर । २ गेंडा । ३ योद्धा ।
खानचाळी-देखो 'खगचाळी' ।
खानणी (बी)-क्रि० तलवार चलाना, तलवार का प्रहार करना ।
 तलवार से मारना, संहार करना ।
खानरणी-स्त्री० तलवार ।
खानवळ-स्त्री० तलवार, कृपाण ।
खानवाही-देखो 'खगवाही' ।
खानाट-स्त्री० तलवार, खड्ग ।
खानल-पु० [सं० खग + ऐल] १ सूयर । २ ऊँट । ३ गेंडा ।
 ४ योद्धा ।
खाईती-पु० १ गाड़ी हांकने वाला, चालक । २ हलधर ।
खाड़ी-देखो 'खारड़ी' ।
खान-स्त्री० [सं० खर्ज] १ खजली, चुनचुनाहट । २ गुदगुदी ।
 [सं० खाद्य] ३ खाद्य पदार्थ । -वि० १ निकम्मा ।
 २ डरपीक, कायर । ३ दीन ।
खानटणी (बी)-क्रि० १ खाना, भक्षण करना । २ भिड़की
 भरना ।
खानरू-पु० मांस खाने के लिए मारा जाने वाला बकरा ।
खानल्यी-पु० बूढ़ा घोड़ा ।
खान्जी-पु० [सं० खाद्य] १ खाद्य पदार्थ, खाद्य । २ भेदे की
 छोटी पुड़ी ।
खाट-स्त्री० [सं० बट्वा] चारपाई, खाट, पलंग ।
खाटक-वि० १ खटकाने वाला । २ प्राप्त करने वाला ।
 ३ महान् । ४ प्रचंड, जबरदस्त । ५ वीर, योद्धा ।
 -स्त्री० १ टक्कर, भिड़ंत । २ खटक, कसक ।
खाटकणी (बी)-क्रि० [सं०] १ प्राप्त करना । २ प्रहार करना ।
 ३ कोप करना ।
खाटकाई-स्त्री० पैतृक संपत्ति, जायदाद ।
खाटकी-पु० [सं० खट्टिक] बूचड़, पशुओं को काटने वाला ।
खाटखड़, (डि, डी)-स्त्री० खटखट ध्वनि ।
खाटडू, खली-पु० पुरानी व डीली-डाली खाट ।
खाटण (णी)-वि० खाने वाला । प्राप्त करने वाला ।

खाटणी (बो)-क्रि० १ प्राप्त करना । उपार्जन करना ।
 २ अधिकार में करना ।
 खाटम, (मा)-स्त्री० १ धन लक्ष्मी । २ उपार्जन । ३ कीर्ति, यश ।
 खाटरी-वि० (स्त्री० खाटरी) १ ठिगना, नाटा । २ बीना, वामन ।
 खाटली-पु० खाट ।
 खाटो-स्त्री० १ कीर्ति, यश । २ वैभव । -वि० खट्टी ।
 खाटू-देखो 'खाटो' । (स्त्री० खाटी)
 खाटूल-पु० पहाड़ों में होने वाला एक छोटा वृक्ष ।
 खाटो-वि० (स्त्री० खाटी) १ खट्टा, घमेल । २ बेमजे, बेस्वाद ।
 ३ बेरस । ४ उत्साह रहित, खिन्न । -पु० १ छाछबेसन की बनी कढ़ी । २ मिश्रण । ३ एक प्रकार की वनस्पति ।
 —तूड़, बड़छ, बड़स-वि० अत्यन्त खट्टा ।
 खाटघो-पु० एक प्रकार का हल्का शराब ।
 खाड-स्त्री० [सं० खात्] १ गड़हा, गर्त । २ बड़ी कंदरा ।
 खाडखो-पु० उबड़-खाबड़ भूमि ।
 खाडरी-देखो 'खाड' ।
 खाडव-स्त्री० [सं० पाडवः] १ राग की एक जाति जिसमें केवल छः स्वर (म रे ग म प ध) लगते हैं । २ संगीत ।
 खाडाबूज (बूझ)-वि० [सं० खात + रा. बूझ] जमींदोज । भूमिगत ।
 खाडाळीयो-पु० खाडाल प्रदेश का एक प्रकार का ऊंट ।
 खाडळी-स्त्री० मैस ।
 खाडो-स्त्री० [सं० खात] १ तीखी भूमि, जिसमें वर्षा का पानी एकत्र होता है । २ समुद्र का एक भाग ।
 खाडू-पु० मैसों का समूह । —कर-पु० उक्त समूह की देख-रेख करने वाला ।
 खाडेनी-स्त्री० स्वर्णकारों का एक चिनी मिट्टी का पात्र ।
 खाडो-पु० गड़हा, गर्त ।
 खाणकी (गी)-स्त्री० रिश्वत, घूस । -वि० काटने के स्वभाव वाली ।
 खाणी-पु० [सं० खादन] १ भोजन । २ देखो 'खावणी' । (स्त्री० खाणी)
 खाणी (बो)-क्रि० [सं० खादन्] १ कुछ खाना, भक्षण करना । २ भोजन करना । ३ काटना, डंक लगाना, दंशना ।
 खात-स्त्री० १ खेत में डालने का खाद । २ गोबर का सूखा चूरा । ३ संघ ।
 खातक-पु० छोटा जलाशय ।
 खातभी-पु० [अ० खातिम] १ अंत, समाप्ति, खात्मा । २ विनाश । ३ मृत्यु ।

खातर-स्त्री० [अ० खातिर] १ विश्वास, भरोसा । २ साख । ३ इच्छा, मर्जी । ४ आदर, सम्मान । ५ स्वागत । ६ दया, कृपा । ७ ध्यान, विचार । ८ खाद । -क्रि० वि० लिये, निमित्त । —बारी-स्त्री०-मेहमानी, स्वागत ।
 खातरजमा-देखो 'खातिरजमा' ।
 खातरी-स्त्री० १ स्वागत । २ मान मनुहार, आवभगत । ३ सम्मान, आदर । ४ सेवा, बंदगी । ५ देखो 'खातर' ।
 खातरोड़-स्त्री० १ बड़ई के कण्ठादि का धंधा करने का स्थान । २ बड़ई से लिया जाने वाला कर ।
 खाताई (बही, बही)-स्त्री० व्यक्तिवार लेखों की पुस्तिका, खाता बही (लेजर बुक) ।
 खाताई, खाताळ (बळ)-देखो 'खाथाई' ।
 खाताळी (बळी)-वि० (स्त्री० खाताळी, खातावळी) तेज चाल से चलने वाला, शीघ्रगामी शीघ्रता करने वाला, त्वरायुक्त ।
 खातिका-स्त्री० खाई ।
 खातिर-देखो 'खातर' ।
 खातिरजमा-स्त्री० तमल्ली, संतोष ।
 खातिरदारी-देखो 'खातरदारी' ।
 खाती-स्त्री० (स्त्री० खातण, खातणी) १ बड़ई जाति । २ इस जाति का व्यक्ति, सुधार । —खानो-पु० बड़ई के बैठने व काम करने का स्थान । —चिड़ा, चोड़ी-पु० तीखी चोंच का पक्षी विशेष । —छोड़-पु० एक देशी खेल ।
 खातून-स्त्री० [तु] भले घर की स्त्री, भद्र स्त्री ।
 खातोड़-स्त्री० १ बड़इयों, खातिरों से लिया जाने वाला राजकीय कर । २ देखा 'खातरोड़' ।
 खातो-पु० १ व्यक्तिगत हिसाब । २ मद, विभाग । ३ निजी खातों की बही । ४ रहट का एक भाग । ५ कटा हुआ स्थान, खांचा । ६ देखो 'खाथो' । —पीतो-वि०-सम्पन्न ।
 खाथाई, खाथाळ (बळ बळी)-स्त्री० शीघ्रता, उतावली, त्वरा ।
 खाथो-वि० (स्त्री० खाथी) १ शीघ्र गति का, तेज, तीव्र । उतावला । क्रि०वि० १ शीघ्र, जल्दी । २ नेजी मे ।
 खाव-पु० [सं० खाद्य] १ खेत में डालने का एक उर्वरक पदार्थ । २ सूखे गोबर का चूरा । ३ देखो 'खाव' ।
 खावण (न)-पु० [सं० खादन्] १ भोजन । २ भक्षण । ३ दांत । ४ खाने की क्रिया या भाव ।
 खावर-स्त्री० कछाई या तराई की भूमि ।
 खावरी-पु० [सं० खातक] छोटा गड़हा, पोखर ।
 खाबिड़ियाभटकी-पु० घोड़े के पैरों के मुर्चों में शोथ होने का रोग ।
 खावी-स्त्री० मृती वस्त्र की एक किस्म ।
 खाध-स्त्री० १ भोजन । २ खुराक । ३ खाद्य पदार्थ । ४ देखो 'खाद' ।

खाधोकड़-वि० (स्त्री० खाधोकड़ी) १ भोजन भट्ट । २ चटोरा । ३ महत्वपूर्ण ।
खाप-स्त्री० १ तलवार । २ म्यान की पट्टी । -वि० स्वच्छ उज्ज्वलः ।
खापगर-पु० घोड़ों की काठी बनाने वाला (बागड़) ।
खापगा-स्त्री० [सं० ख-+आपगा] गंगा, सुरसरी ।
खापड़ो-देखो 'खाप' ।
खापट-स्त्री० १ बांस पट्टी । २ प्रस्तर पट्टिका ।
खापटागोठोठार-पु० जवाहर खाना ।
खापटी-पु० १ एक शस्त्र विशेष । २ पत्थर की लंबी चौड़ी शिला ।
खापन-१ देखो 'खाप' । २ देखो 'खापण' ।
खापर-देखो 'काफिर' ।
खापरियो-पु० [सं० खर्पर] १ धूर्त, बदमाश । २ चोर, ठग । ३ अनाज का एक बीड़ा । ४ भूरे रंग का एक खनिज ।
खापरी-स्त्री० खड़िया मिट्टी का बना स्वर्णकारों का एक ममाला ।
खापी-स्त्री० आवश्यकता जरूरत ।
खाफर-देखो 'काफिर' ।
खाबकी-पु० १ शाहीदरबार । २ राजारानी की निजी मजलिस । ३ उक्त मजलिस करने का स्थान । ४ राजारानी का शयनगार ।
खाबड़ी-पु० पोखर, गड्ढा ।
खाबेड़ी-वि० बायें हाथ से कार्य करने का अभ्यस्त । -पु० बायां हाथ ।
खाबोचियो-पु० १ पानी का गड्ढा । २ योनि ।
खाबो-पु० १ पांव का पंजा । २ एक सींग ऊपर एक नीचे मुड़ा पशु । -वि० १ ऐंजाताना । २ बायां । ३ वीर, बलवान ।
खायक-वि० १ खाने वाला, चर्वया । २ नाश करने वाला, मारने वाला ।
खायकी-स्त्री० १ शिष्य, धूस । २ खयान्त, गबन ।
खायस-स्त्री० [फा० खाहिश] चाह, इच्छा, लालसा ।
खार-पु० [फा०] १ क्रोध, गुम्मा । २ ईर्ष्या, द्वेष । ३ कांटा, कंटक । ४ रज, घृति । ५ राख । ६ खारापन । ७ नमक । ८ अम्लता । ९ बंदूक को नाल में पड़ी हुई तिरछी व मोधी धारियां, जिन पर छोटी-छोटी बिंदियां होती हैं ।
खारक-स्त्री० १ गुवा खजूर, लुहारा । २ देव वृक्ष । -**तोड़ियो-पु०** एक प्रकार का लोग गीत ।
खारकियाबोर-पु० लुहारों के आकार के मोटे वेर ।
खारबंध (धी)-वि० प्रति कोषी ।
खारड़ो-पु० पुराना जूता । जूता ।

खारच-स्त्री० [सं० क्षार + स्थल] खारी व बंजर भूमि ।
खारचियो-पु० खारे पानी से उत्पन्न गेहूं । -वि० खारे पानी का ।
खारज-वि० [अ० खारिज] १ रद्द, निरस्त । २ निकाला हुआ, बहिष्कृत । ३ अलग, भिन्न ।
खारण-पु० अजवाइन ।
खारतीकई-स्त्री० एक देशी खेल ।
खारमंगला (मंजरण, मंनणा)-पु० १ अफीम लेने के बाद मोठे का सेवन । २ गजक, चुरचुरा ।
खारवाळ-पु० १ नमक का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति । २ एक प्रकार का देशी खेल ।
खारबो-पु० पानी या कीचड़ में पांव रहने से होने वाला चर्म विकार ।
खारसमुद्र-पु० [सं० क्षार-समुद्र] लवणोद, समुद्र ।
खारास-पु० खारापन, तीखापन, कड़वाहट ।
खारिक-देखो 'खारक' ।
खारियो-पु० १ बाजरी का सूखा पौधा । २ चने के सूखे पत्ते । ३ पशुओं को घाम डालने का टोकरा । ४ क्षार युक्त पदार्थ । ५ एक देशी खेल ।
खारो-स्त्री० १ वह चौकोर छतड़ा या डलिया जो किसानों के अनाज या अनाज की बालें भरने के काम आता है । २ बाजरी के सूखे डंठल । ३ अनाज आदि का एक निश्चित माप । ४ बनारस की सहायक एक नदी । ५ खराब नमक । -**साट-स्त्री०** नील का रंग तैयार करने का एक ढंग । -**झूल-पु०** एक प्रकार का नमक ।
खारीलो-वि० (स्त्री० खारीली) क्रोधो, गुस्सेल ।
खारीवा-पु० [सं० क्षीरवाह] केबट ।
खारीवार-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
खारोठियो, खारो-पु० [सं० क्षार] १ नमक । २ क्षार । ३ पापड़ बनाने का क्षार । ४ कटु वन । ५ बड़ा टोकरा । ६ चने का भूसा । ७ मैथुन । -वि० १ कड़वा, कटु । २ अप्रिय । ३ अनिष्टकर । ४ अहंकार । ५ जोशीला । ६ तेज, तीव्र । ७ क्रोधी, क्रूर । ८ कड़ा, कठोर । ९ भयंकर ।
खारीळ-देखो 'खारवाळ' ।
खाल-पु० १ नीची भूमि । २ मोरी । ३ गहरा खड्डा । ४ नाला । ५ छोटी नदी । ६ कबड्डी में खेल का स्थान । ७ 'चोखड़' नामक खेल में क्रीडकों द्वारा बनाया जाने वाला दाव ।
खाल-स्त्री० [सं० खाल] १ किमी जानवर की चमड़ी । २ त्वचा । ३ खाली जगह । ४ देखो 'खयाल' ।
खालक-देखो 'खालिक' ।
खालड़ (डो)-पु० १ जूता । २ वृद्ध, बुढ़ड़ा । ३ देखो 'खाल' ।
खालणी-पु० स्वर्णकारों का औजार विशेष ।

खालसाई-वि० १ सरकारी । २ खालसा संबंधी ।

खालसी-पु० १ सरकारी भूमि या सम्पत्ति । २ सिक्खों का एक सम्प्रदाय । ३ मिख ।

खाला-स्त्री० [ग्र० खालः] १ मोसी । २ वेश्या, भणिका ।

खालाखोली-पु० बर्तन को साफ करने के बाद का पानी ।

खालाय-देखो 'खाली' ।

खालि-देखो 'खाली' ।

खालिक (कि,की)-पु० [ग्र०] १ सृष्टिकर्ता, ईश्वर । २ संसार ।

खालियो-पु० पानी बहने का छोटा नाला । नाली ।

खाली-स्त्री० [सं० क्षालक] १ छोटी नाली २ मोरी ।

खाली-वि० १ जिसमें कुछ न हो, रिक्त । २ जहाँ कोई न हो, शून्य, सूना । ३ रहित, विहीन । ४ कार्यहीन, निकम्मा । ५ जिसके पास कुछ न हो, रिक्त-हाथ । ६ जो काम में न आ रहा हो, निरर्थक । ७ व्यर्थ, निष्फल । ८ अशुभ । -क्रि० वि० केवल, मात्र, सिर्फ । -पु० तबला ।

खालीचोपल-स्त्री० आभूषणों पर नक्काशी करने का औजार ।

खालू-पु० १ कबड्डी खेल का नायक । २ टोली-नायक । ३ चौखड़ या चौहू नामक खेल का वह क्रीडक जिसमें दाव होता है ।

खालेड़-वि० १ आवारा । २ रिक्त, खाली । -पु० १ व्यर्थ गया प्रयत्न । २ शिकार की निराशा । ३ देखो 'खालड़' ।

खालेड़णी (बो)-क्रि० मरे पशु की खाल उतारना ।

खाली, खाल्यो-पु० १ वर्षा के पानी का प्रवाह । २ बड़ा नाला, मोरा । ३ जंत । ४ प्रवाह से पड़ा हुआ खड़ा ।

खाली-वि० (स्त्री० खाली) १ खाली, रिक्त । २ निकम्मा । -पु० स्वर्णकारों का औजार विशेष ।

खालद-देखो 'खालिद' ।

खावण-स्त्री० १ खाने की क्रिया या भाव । २ खाने का ढंग । -खंडो, खंडी-वि० चटोरा, भोजनभट्ट ।

खावणी-वि० (स्त्री० खावणी) १ खाने वाला । २ खाने या काटने के स्वभाव वाला । ३ नाश करने वाला ।

खावणी (बो)-देखो 'खावणी' (बो) ।

खाबिब-पु० [फा०] १ पति, भर्तार । २ स्वामी, मालिक ।

खास-वि० [ग्र०] १ मुख्य, प्रधान । २ विशेष । ३ निजी, निज का । ४ प्रिय । ५ आत्मीय । ६ टेढ़ । --खजानो-पु० शामक निजी खजाना, राज कोषागार । --खेळो-स्त्री० मंडली । --जात-पु० प्रधान अधिकारी । --डोबड़ा-पु० एक पकवान विशेष । --नवीस-पु० राजा या बादशाह का मुख्य लेखक । --बरदार-पु० वह जो राजा या बादशाह के अम्बर-अम्बर लेकर चढ़ता हो । --बाड़ो, बाड़ो-पु० मुख्य घेरा ।

खासकर-क्रि० वि० विशेषतः विशेषरूप से ।

खासड़ी (द)-पु० जूता, उपानह ।

खासमहल-पु० १ वह महल जिसमें विवाहित रानी रहती हो । २ विवाहिता रानी ।

खासरसोड़ी-पु० राजा के निमित्त भोजन बनने का स्थान ।

खासरको-पु० शासक द्वारा भेजा जाने वाला पत्र ।

खाससवारी-स्त्री० राजा के लिए आरक्षित सवारी ।

खासियत-स्त्री० [ग्र०] १ विशेषता । २ महत्ता । ३ प्रधानता । ४ स्वभाव प्रकृति, आदत । ५ गुण ।

खासी-स्त्री० राजा की खास वस्तु ।

खासी-वि० [ग्र० खासः] (स्त्री० खासी) १ बहुत, अधिक । २ पर्याप्त, पूर्ण । ३ अच्छा भना । ४ उत्तम । ५ मध्यम श्रेणी का । ६ सुडौल, स्वस्थ । -पु० १ राजा का भोजन । २ राजा की सवारी का हाथी या घोड़ा । ३ एक प्रकार का सूती वस्त्र । ४ राजा या बादशाह का निजी अम्बरबल । ५ स्वभाव, प्रकृति ।

खाहड़ी-देखो 'खासड़ी' ।

खहणी (बो)-देखो 'खाणी' (बो) ।

खाही-देखो 'खाई' ।

खाहेड़णी-पु० १ कोचवान । २ मारपी ।

खिआल, खिआली-पु० कोपला ।

खिखर-स्त्री० हंपी, मजाक, मगकरी, छेड़छाड़ ।

खिग-पु० सफेद रंग का एक छोड़ा विशेष जिसके मुँह पर पट्टा हो और चारों पैर गुलाबीपन लिए सफेद हों ।

खिजर-देखो 'खंजन' ।

खिटर, खिटोर-पु० व्यर्थ में तंग करने की क्रिया या भाव । छेड़छाड़ ।

खिडणी (बो)-क्रि० १ धीरे-धीरे छंटना, बिखरना । २ जाना । ३ भेजना ।

खिडाणी (बो), खिडावणी (बो)-क्रि० १ धीरे-धीरे छंटाना, बिखरना । ३ भेजना । ४ खडित करना ।

खिडाणी (बो) खिडावणी (बो)-देखो 'खिडाणी' (बो) ।

खिबना, खिमिया-स्त्री० [सं० क्षमा] क्षमा, दया ।

खियाळ-पु० वह ऊँट जिसके अगले पाँच चरणों में सवय रंग का खाने हों ।

खियाळो-देखो 'खिआली' ।

खिवण-स्त्री० १ चमक, दमक । २ प्रकाश, रोशनी । ३ बिजली । ४ भाला । ५ आक्रामक दृष्टि । ६ सहन करना क्रिया ।

खिबरी (बी)-क्रि० १ चमकना, दमकना । २ प्रकाशित होना ।
३ बिजली चमकना । ४ आक्रामक दृष्टि रखना । ५ सहन करना ।
खि-पु० [मं० चित्] इन्द्र ।
खिप्राति-देखो 'व्याति' ।
खिखिब (दा)-देखो 'किस्किंधा' ।
खिलेर (रु)-वि० १ बिखेरने वाला, छितराने वाला, फैलाने वाला । २ तितर-बितर करने वाला ।
खिड़क-पु० १ दरवाजा, कपाट । २ द्वार । ३ खिड़की ।
खिड़कणी (बी)-क्रि० तह पर तह जमाना ।
खिड़कियावाण-स्त्री० १ सिर पर धारण करने की एक प्रकार की पगड़ी । २ सिर पर पगड़ी का बंधन या धारण करने की एक प्रकार का क्रिया या ढंग ।
खिड़की-स्त्री० १ गवाक्ष । २ द्वार के कपाट । ३ छोटी बारी ।
खिड़णी (बी)-क्रि० १ टीका लगाना । २ बिखरना, इधर-उधर होना । ३ हांकना । ४ क्रुद्धा खोदना । ५ खिड़कना, जमाना ।
खिड़बिड़णी (बी)-क्रि० टकराना, भिड़ना, लड़ना ।
खिड़गो (बी)-क्रि० १ टीका लगवाना । २ बिखरना, इधर, उधर करना । ३ हांकना । ४ भगाना । ५ खुदवाना । ६ खिड़कवाना, जमवाना ।
खिड़ड़ी-स्त्री० [मं० कसर] १ मूंग की दाल व चावलों को मिश्रित कर पकाया हुआ भोजन । २ मिरच मसालों के साथ बनाई हुई चावलों की तयारी । ३ कबूली । ४ काली व सफेद वस्तुओं का मिश्रण । ५ मिश्रण । —लाग-पु० जागीरदार द्वारा अपने जागीर में दौरा करने के निमित्त किसानों से लिया जाने वाला कर ।
खिजणी (बी)-देखो 'खीजणी' (बी) ।
खिजमत (ति, ती)-स्त्री० १ हजामत । २ देखो 'खिदमत' ।
खिजाणी (बी), खिजावणी (बी)-क्रि० १ क्रोधित करना, गुस्सा दिलाना । २ तंग करना, खेड़ना ।
खिजाव-पु० ध्वेत बालों को बान्ना करने की श्रौषधि ।
खिटाणी (बी)-क्रि० १ क्रोध करना । २ द्वेष करना ।
खिटाणी (बी), खिटावणी (बी)-क्रि० १ गुस्सा दिलाना । २ द्वेष कराना ।
खिड़की-देखो 'खड़की' ।
खिड़ली-पु० जंगली जमीकंद ।
खिणक-पु० १ चूहा । २ गोदने वाला । ३ क्षणभंगुर ।
खिण-स्त्री० [सं० क्षण] १ क्षण, पल । २ बिजली ।
खिणक-वि० [सं० क्षणिक] १ क्षण का, क्षणभंगुर । २ अनित्य, अस्थायी । —स्त्री० क्षण, पल ।
खिणकर-पु० सिंह ।

खिणका-स्त्री० [सं० क्षणिका] बिजली, विद्युत ।
खिणली (बी)-क्रि० १ टीका लगाना । २ खुजलाना, कुचरना । ३ खोदना ।
खिणवा, खिणवर-स्त्री० [सं० क्षणदा] रात्रि ।
खिणप्रभा-स्त्री० [सं० क्षणप्रभा] बिजली, विद्युत ।
खिणवाळी-स्त्री० भूमि ।
खिणमंग-वि० क्षण भंगुर, अनित्य ।
खिणमंत-क्रि० वि० क्षण मात्र ।
खिणवाणी (बी), खिणाणी (बी)-क्रि० १ टीका लगवाना । २ खुजलवाना, कुचरना । ३ खुदवाना ।
खिणारी-पु० १ टीके लगाने वाला । २ खोदने वाला ।
खिणि-देखो 'क्षण' ।
खित-स्त्री० [सं० क्षिति] १ पृथ्वी, भूमि । २ द्रव्य, घन । [सं० क्षति] ३ हानि, नुकसान । ४ क्षति, कमी । ५ घोड़ा, शय्व । —ग= 'खितंग' । —जात-पु० रुधिर, खून । —इसल-पु० भाला, बरछी । —घर, घारी, नाथ, पति-पु० राजा, नृप । —पुङ्ग-पु० पृथ्वीतल । —रह-पु० वृक्ष ।
खितवा-स्त्री० [अ० खुत्वा] प्रशंसा, तारीफ ।
खिताव-पु० [अ०] पदवी, उपाधि ।
खिति (ती)-स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी, धरती ।
खितिज-पु० [सं० क्षितिज] अन्तरिक्ष जहाँ पृथ्वी-आकाश मिले दिखते हों ।
खितिह-देखो 'खितरह' ।
खित्रवट-देखो 'खत्रवट' ।
खित्री-देखो 'खत्री' । —वट= 'खत्रीवट' ।
खिवमत-स्त्री० [अ०] १ सेवा, टहल, चाकरी । —गार-पु० सेवक, नौकर । हजाम ।
खिवर-पु० खैर का वृक्ष ।
खिनणी-स्त्री० बिजली, विद्युत ।
खिनली (बी)-देखो 'खिणली' (बी) ।
खिनाणी (बी), खिनावणी (बी)-क्रि० १ भेजना, पहुँचाना । २ देखो 'खिणाणी' (बी) ।
खिपा-स्त्री० [सं० क्षिपा] रात्रि ।
खिपणी (बी)-देखो 'खपणी' (बी) ।
खिप्र-क्रि० वि० [सं० क्षिप्र] शीघ्र, तुरन्त ।
खिमण-स्त्री० १ सहनशीलता । २ देखो 'खिदण' ।
खिमणी (बी)-देखो 'खिदणी' (बी) ।
खिमत (ता)-स्त्री० [सं० क्षमता] १ सामर्थ्य, शक्ति । २ सहनशीलता । ३ क्षमता, धैर्य ।
खिमाधंत-वि० [सं० क्षमावान्] दयानु, कृपानु ।
खिमा, खिमिया, खिम्या-स्त्री० [सं० क्षमा] १ दुर्ग का एक नाम । २ क्षमा ।

खियाळी-देखो 'खिहाळी' ।

खियो-पु० १ प्लोहा, तिल्ली रोग । २ जेब, खीसा ।

खिर-देखो 'खैर' ।

खिरक (का)-स्त्री० [ग्र०] १ बुनाई का एक उपकरण, खर-करवट । २ मुसलमान फकीरों की मुदड़ी । ३ साधु, त्यागी । ४ देखो 'खरक' ।

खिरकोळियो, खिरकोळी-पु० बुनाई के उपकरण का खूंट ।

खिरजूर-देखो 'खजूर' ।

खिरणियो-वि० १ कच्चा । २ जिसका स्वतः श्रय हो । -पु० सूखी भाड़ी या कंटीला वृक्ष ।

खिरणो-देखो 'खरणी' ।

खिरणी (बी)-क्रि० १ स्वतः टूट कर गिरना । २ गिरना । ३ मरना ।

खिराज-पु० [ग्र० खिराज] राजस्व कर, माल गुजारी ।

खिरेंटी-स्त्री० [सं० खरयष्टिका] बीजबंद, बल ।

खिल-स्त्री० १ पख्त की भूमि की प्रथम जुताई । २ नई भूमि ।

खिलमत-पु० [ग्र०] किसी के सम्मानार्थ राजा या बादशाह की ओर से दिया जाने वाला वस्त्र ।

खिलकत-स्त्री० [ग्र० खिलकत] १ सृष्टि, संसार । २ भोड़, समूह ।

खिलकी-पु० १ खेन, तमाशा । २ हंसी, दिल्लगी । ३ विनोद ।

खिलखिल (लट्ट, हट)-स्त्री० मुक्त हास्य, खिलखिलाहट ।

खिलखिलणी (बी)-क्रि० १ खिलखिलाकर हंसना । २ प्रफुल्लित होना ।

खिलखिली-स्त्री० १ हंसी, मजाक । २ देखो 'खिलखिलाट' ।

खिलणी (बी)-क्रि० [सं० खिल] १ खिलना, विकसित होना । २ प्रसन्न होना, खुश होना । ३ जंचना, शोभित होना । ४ खेलना ।

खिलत-देखो 'खिलमत' ।

खिलवत (बत)-स्त्री० १ साथ रहने का भाव, संघ । २ सभा-समाज । ३ मैत्री । ४ हंसी, मजाक । ५ खिलवाड़ । ६ केलि, क्रीड़ा । ७ एकान्त स्थान ।

-वि० निज का, निजी । खासगी ।

खिलवाड़, (खिलस)-पु० १ खेल, तमाशा । २ हंसी, दिल्लगी । ३ विनोद । ४ कौतुक ।

खिलवार-स्त्री० हंसी, मजाक, दिल्लगी ।

खिलसणी (बी)-क्रि० १ क्रीड़ा करना, खेल करना । २ हंसी करना, मजाक करना । ३ खुश होना ।

खिलहरी-देखो 'खिलोरी' ।

खिलाई-स्त्री० खिलाने का कार्य ।

खिलाड़ी-वि० १ खेलने वाला । २ खेलने में दक्ष । ३ जादूगर । ४ चतुर ।

खिलाणी (बी), खिलावणी (बी)-क्रि० १ भोजन करना । २ खाने के लिए देना । ३ खेलना । ४ विकसित करना । ५ प्रसन्न करना । ६ सजाना, शोभित करना ।

खिलाफ-वि० [ग्र०] १ विरुद्ध, विपरीत । २ सामने, प्रतिकूल । -क्रि० वि० मुकाबले में । --त-स्त्री० विरोध । साधना, मुकाबला । प्रतिकार ।

खिलाहर-वि० १ योद्धा, वीर । २ खेलने वाला । ३ खिलाने वाला ।

खिलियार-पु० १ खिलाड़ी । २ देखो 'खिलवाड़' ।

खिलोरी-पु० [सं० खिलचारी] गडरिया । -वि० १ श्रमम्प, जंगली । २ मूर्ख ।

खिलोरी-पु० १ किसी धातु या पदार्थ की बनी बच्चों के खेलने की वस्तु, खिलौना । २ दूसरों के हाथों में नाचने वाला ।

खिल्लत-देखो 'खिलमत' ।

खिल्ली-स्त्री० १ किमी का उपहान । २ हंसी, दिल्लगी ।

खिल्ली-खिल्ल-वि० १ एकाकार । २ धुले-मिले । ३ प्रफुल्ल, प्रसन्न ।

खिवण-देखो 'खिवण' ।

खिवणी-स्त्री० १ बिजली, विद्युत । २ सहनशक्ति ।

खिवणी (बी)-देखो 'खिवणी (बी)' ।

खिसकणी (बी)-देखो 'खसकणी' (बी) ।

खिसकाणी (बी), खिसकावणी (बी)-देखो 'खसकाणी' (बी) ।

खिसणी (बी)-क्रि० १ पीछे हटना । २ अलग होना, दूर होना । ३ फिसलना । ४ क्रोध करना । ५ खिसियाना । ६ भागना । ७ लज्जित होना । ८ भेषना ।

खिसाण, खिसाणी-वि० लज्जित, शर्मिंदा ।

खिसाणी (बी) खिसावणी (बी)-क्रि० १ पीछे हटाना । २ अलग करना, दूर करना । ३ फिसलाना । ४ क्रोध कराना । ५ लज्जित करना, भेषना । ६ भागाना ।

खिसिणी (बी)-देखो 'खिसणी' (बी) ।

खिसी-मर्द० १ कौनसा । २ देखो 'खीसी' ।

खिहाळी-पु० कोयला ।

खिहाली-पु० खाद्य वस्तु विशेष ।

खी-देखो 'खी' ।

खींचणी (बी)-क्रि० [सं० कर्षणम्] १ किसी वस्तु को पकड़ कर अपनी ओर बढ़ाना, करना, खींचना । २ किसी वस्तु के घागे होकर चलाते या घसीटते हुए कहीं ले जाना । ३ बलपूर्वक कहीं ले जाना । ४ आकर्षित करना । ५ बाहर निकालना । ६ तानना, तनाव देना । ७ खोसना, छीनना । ८ सोखना, चूसना । ९ अर्क निकालना । १० मरव निकालना । ११ रेखांकित या चित्रांकित करना ।

१२ आवरण वस्त्र आदि हटाना । १३ रोक रखना ।
१४ व्यापार का माल मंगाना । १५ चारों ओर से
एकत्र कर लेना । १६ किसी बात पर अड़ जाना ।

खीचताण (न), खीचाताणी (नो)—स्त्री० १ खींचा-खींची ।
खीचातान । २ गूढ़ विषय पर विचार विमर्श, अर्थ निकालने
का प्रयास । ३ प्रयास, प्रयत्न । ४ जोड़-तोड़ । ५ आग्रह
पूर्वक मनुहार । ६ आपाघापी ।

खीचाणी (बी), खीचावणी (बी)—क्रि० १ एकड़ कर अपनी ओर
बढ़वाना । २ घसीटवाना, चलाने के लिए खिचवाना ।
३ लेजाने के लिए प्रेरित करना । ४ आकर्षित कराना ।
५ बाहर निकलवाना । ६ तनाव दिराना, तनवाना ।
७ सीखाना, चुसाना । ८ अर्क निकलवाना । ९ सत्व
निकलवाना । १० रेखांकित या चित्रांकित कराना ।
११ आवरण हटवाना । १२ हकवाना । १३ व्यापारिक
माल मंगवाना । १४ एकत्र कराना । १५ बात अड़ाना ।

खीटणी (बी)—देखो 'खिटणी' (बी) ।

खीटली—स्त्री० स्त्रियों के कान का आभूषण ।

खींसी—वि० १ नष्ट, नाश । २ देखो 'खीण' (णी) ।

खींप—पु० मरुस्थल में होने वाला एक तंतुदार क्षुप ।

खींपोढी—स्त्री० 'खीं' की फली ।

खींयाळ—देखो 'खियाळ' ।

खींवर—देखो 'खीवर' ।

खींवली—स्त्री० गले का एक आभूषण विशेष ।

खी—पु० १ विधि, विधाता । २ कामदेव । ३ इन्द्र । ४ कुशल
श्रेम । ५ भृंगाल । ६ अप्सर ।

खीखा—स्त्री० १ अति, हानि । २ हंसी, मजाक, मखौल ।

खीच, खीचड़—पु० [सं० कसर] १ बाजरी या गेहूँ आदि को
ओखली में कूट कर पकाया हुआ खाद्य पदार्थ । २ जाल,
करील, नीम आदि वृक्षों का बीर । ३ बीर के वृक्ष पर
होने वाला विकृत पदार्थ ।

खीचड़ी—देखो 'खिचड़ी' ।

खीचड़ी—देखो 'खीच' ।

खीचणी (बी)—देखो 'खीचणी' (बी) ।

खीचाणी (बी)—देखो 'खीचाणी' (बी) ।

खीचियो—पु० [सं० क्षार + चित्] माजी या क्षार के पानी में
घाटे को पका कर बनाया हुआ छोटा पापड़ ।

खीज—स्त्री० [सं० क्षीज] १ कोप, क्रोध । २ चिढ़ । ३ झलनाहट,
झिड़की । ४ शीतकाल में होने वाली ऊंट की मस्ती ।

खीजणी (बी)—क्रि० [सं० क्षीज] १ क्रोध करना, गुस्सा करना ।
२ चिढ़ना, खीजना । ३ झलवाना । ४ झुझलाना ।
५ निरुत्साहित करना या होना । ६ ऊंट का मस्ती में
ग्राना ।

खीजाणी (बी), खीजावणी (बी)—क्रि० १ क्रोध दिराना ।
२ चिढ़ाना, खिजाना ।

खीजाळ—वि० १ खीजने वाला । २ आतंक जमाने वाला ।

खीझ—देखो 'खीज' ।

खीटणी (बी)—देखो 'खिटणी' (बी) ।

खीटली—देखो 'खीटली' ।

खीटाणी (बी)—देखो 'खिटणी' (बी) ।

खीण (णी)—वि० [सं० क्षीण] १ दुर्बल, निर्बल, कृश ।
२ अत्यन्त पतला । ३ सूक्ष्म, बारीक । ४ मंद, मध्यम ।
५ उदासीन, चितित । —ता—स्त्री० दुर्बलता, निर्बलता ।
पतलापन । सूक्ष्मता । मंदापन ।

खीनखाप—पु० एक जरीदार बड़िया रेशमी वस्त्र ।

खीबर, खीमर—देखो 'खीवर' ।

खीर (रि)—स्त्री० [सं० क्षीर] १ दूध । २ दूध में चावल-शक्कर
डालकर बनाया हुआ पकवान । ३ पानी । ४ आर्य गीत
या कंधाण का भेद विशेष । —कंठ—पु० बालक ।
—काफीली—स्त्री० एक औषधि विशेष । —ज—पु० दही,
दधि, घृत, घी । —वध—पु० समुद्र । क्षीर-सागर ।
—वधि, पत, पति, पती—पु० समुद्र । —संघ, समंघ,
समुद्र, सापर—पु० क्षीर सागर ।

खीरड़ी—स्त्री० १ एक पीघा विशेष । २ देखो 'खीर' ।

खीरसागर—पु० १ खीर परोसने का पात्र । २ क्षीर समुद्र ।

खीरू—देखो 'खीर' ।

खीरोब—पु० [सं० क्षीरोद] समुद्र, सागर ।

खीरोवक—देखो 'क्षीरोदक' ।

खीरी—पु० [सं० क्षरण] १ जलता हुआ कोयला, अंगारा ।
२ एक प्रकार की लकड़ी । ३ दूधिया दांत वाला बैल ।

खीरीलिखी(ली)—पु० १ एक प्रकार का जंगली प्याज । २ बाजरी
के घाटे की खीर ।

खील—स्त्री० [सं० कील] १ लोहे या काष्ठ का कीला, कील ।
२ खूँटी । ३ नुकीला फोड़ा या फुंसी । ४ रहट का
स्तंभ । ५ चक्की की धुरी । ६ भूँज कर फुलाए हुए
चावल, जौ आदि ।

खीलण—स्त्री० १ दो वस्त्रों को परस्पर जोड़ने की क्रिया ।
२ एक प्रकार की सिलाई । ३ अंकुश । ४ मंत्रों द्वारा किया
जाने वाला वशीकरण ।

खीलणी (बी)—क्रि० १ दो वस्त्रों परस्पर जोड़ना ।
२ सिलाई करना, टांकना । ३ बांधना । ४ जुती शोठना
सीना । ५ मंत्रों द्वारा वश में करना ।

खीलहरी—देखो 'खिलोरी' ।

खोसाइणी (बो), खोसाणी (बो), खोसावणी (बो)-क्रि०
 १ दो वस्त्रों को परस्पर जुड़वाना । २ सिलाई करवाना ।
 ३ बंधवाना । ४ जूती गंठवाना । ५ वण में कराना ।
 खीलो-देखो 'खील' ।
 खीलोखानी-पु० १ बड़ई का कारखाना । २ देखो 'किलीखानी' ।
 खोलोरी, खोलोहरी, खोल्योरी, खोलहरी-देखो 'खिलोरी' ।
 खीब-पु० [सं० क्षीवृ] थोड़ा, शूरवीर ।
 खीवरण-पु० १ स्त्रियों के नाक का आभूषण विशेष ।
 २ देखो 'खिवरण' ।
 खीवर-देखो 'खीव' ।
 खीस-पु० गाय या मंस का प्रसव के बाद पहली बार निकाला
 जाने वाला दूध ।
 खीसाणी (बो), खोसावणी (बो)-देखो 'खिसाणी' (बो) ।
 खोसी-पु० [अ० कीस] १ जेब, खीसा, पाकेट । २ पैला,
 खलोता । ३ ओठों के बाहर निकला हुआ दांत ।
 खुंजाळणी (बो)-देखो 'खुजाळणी' (बो) ।
 खुंठ-वि० १ दुष्ट, पतित, नीच । २ निरंकुश, स्वतंत्र ।
 ३ देखो 'खूट' ।
 खुंटाणी (बो)-देखो 'खूटाणी' (बो) ।
 खुंडासोंग, खुंडी-पु० १ वृत्ताकार मुड़े हुए सींगों वाला पशु ।
 २ मुड़ा हुआ मींग ।
 खुंद-देखो 'खूंद' ।
 खुंदवाणी (बो)-क्रि० १ पांवों से दबवाना । २ पांवों से
 रोंदवाना ।
 खुंदाळिम-देखो 'खूंदाळिम' ।
 खुंप-पु० तिर का पुष्प शृंगार ।
 खुंभो-स्त्री० स्तंभ की आधारशिला ।
 खुंवणी-स्त्री० क्षमाशीलता, सहनशीलता ।
 खु-पु० १ कामदेव । २ विकल या दुःखी व्यक्ति । ३ उल्लू ।
 ४ ब्रह्मा । ५ स्थान । ६ मिखावन । ७ खोत ।
 खुक-स्त्री० १ प्यास । २ प्यास की अवस्था में सूखा मुख ।
 खुखरी-स्त्री० एक प्रकार की छुरी ।
 खुगाहड़ी-पु० एक प्रकार का धोड़ा ।
 खुड़-पु० १ पाद चिह्न । २ ऐड़ी । ३ पैर । —खोज-पु० पावों
 के निशान ।
 खुड़क-पु० १ जलाशय या नदी तट । २ पशुओं का एक
 संक्रामक रोग । ३ खटका । ४ पर्यंत की तलहटी ।
 खुड़कणी (बो)-क्रि० १ खटखट ध्वनि होना । २ खटकना ।
 खुड़काणी (बो), (वणी) (बो)-क्रि० १ खुड़-खुड़की ध्वनि
 करना । २ हुक्का पीना । ३ हुक्के की ध्वनि करना ।
 खुड़की-पु० १ खटका, आहत । २ देखो 'खड़की' ।

खुड़व-पु० १ मंहार नाश । २ खुरद । —खीन= 'खुरदवीन' ।
 खुड़वसांणीर-पु० डिगल गीत का एक भेद ।
 खुड़वा-स्त्री० [फा० खुर्द:] १ छोटी-मोटी वस्तु । २ छोटा
 सिक्का । ३ सूक्ष्म चीज । —फोस-पु० फुटकर सामान
 बेचने वाला व्यापारी ।
 खुड़वियो-पु० [फा० खुर्द:] रेजगारी, कौड़ी आदि छोटे सिक्कों
 का विनिमय करने वाला बनिया ।
 खुड़ाणी (बो), खुड़ावणी (बो)-क्रि० लंगड़ा कर चलना ।
 लंगड़ाना ।
 खुड़ियो-खाती-पु० पक्षी विशेष ।
 खुड़ी-स्त्री० ऐड़ी ।
 खुचखुचियं-क्रि० वि० छोटे डग या कदम में । (चाल में) -स्त्री०
 चलने की एक क्रिया ।
 खुचणी (बो)-क्रि० १ धंसना, फंसना । २ चुभना ।
 खुचरी-पु० १ वस्त्र विशेष । २ देखो 'कुचरी' ।
 खुचाणी (बो)-क्रि० १ धंसाना, फंसाना । २ चुभाना ।
 खुजळणी (बो)-देखो 'खुजाळणी' (बो) ।
 खुजळाणी (बो)-देखो 'खुजाळणी' (बो) ।
 खुजळी, खुजाळ (डि)-स्त्री० १ खाज, खुजलाहट । २ एक
 चर्म रोग ।
 खुजाळणी (बो), खुजावणी (बो)-क्रि० नाखून से कुचरना,
 खुजालाना ।
 खुटक-देखो 'खटक' ।
 खुटकणी (बो)-क्रि० १ कसकना, दर्द करना, पीव पड़ना ।
 २ ठोकर खाना, लड़खड़ाना ।
 खुटणी (बो)-क्रि० १ नष्ट होना, बर्बाद होना । २ समाप्त होना ।
 ३ खुलना । ४ मुक्त होना । ५ मिटना ।
 खुटहड़-वि० १ जबरदस्त, शक्तिशाली । २ उन्मत्त, मस्त ।
 खुटाणी (बो)-क्रि० १ नष्ट करना, बरबाद करना । २ समाप्त
 करना । ३ खोलना, मुक्त करना । ४ मिटाना ।
 खुटिया-स्त्री० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।
 खुटोड़ी-देखो 'खूटोड़ी' । (स्त्री० खुटोड़ी) ।
 खुटणी (बो)-देखो 'खूटणी' (बो) ।
 खुडी-पु० १ वर्तन विशेष । २ देखो 'खुडी' ।
 खुडी, खुडौ-पु० [सं० खात] १ मुर्गा आदि रखने का कठधरा,
 दड़बा । २ गुफा आदि का मुख, द्वार । ३ ऊंची भूमि ।
 ४ छोटा टीका ।
 खुडौ-पु० १ कुत्ते की गुखाली, मांद । २ छोटा घर । ३ गुफा ।
 खुणखुणियो-पु० १ खन-खन बोलने वाला खिलौना । २ धोनि ।
 खुणचियो, खुणची-पु० अंजली । चुल्लू ।
 खुणणी (बो)-देखो 'खिराणी' (बो) ।

खुणस-स्त्री० १ क्रोध, गुस्सा, रोष । २ मन-मुटाव ।
 खुणो-पु० कोना ।
 खुतग-देखो 'खतंग' ।
 खुतराळी-स्त्री० पशु द्वारा खुर से जमीन कुचरने की क्रिया ।
 खुयो-पु० बकरी के बालों की दरी जो कृषि कार्य में उपयोगी होती है । पट्टु ।
 खुबंग-पु० एक प्राचीन देश ।
 खुद-अव्य० [फा०] स्वयं । आप । —कास्त-स्त्री० निजी खेती । निजी खेती की भूमि । —कुसी-स्त्री० आत्महत्या । खुदकशी । —गरज-वि० स्वार्थी । —गरजो-स्त्री० स्वार्थीपन । —मुस्तार-वि० धनिरुद्ध । स्वच्छन्द । स्वतंत्र । —मुस्तारी-स्त्री० स्वच्छन्दता ।
 खुइली (बो)-कि० [सं० क्षुदिरम्] १ कुचलना, रोंदना । २ कुचरना, कुजलाना ।
 खुदणी (बो)-कि० खेदा जाना । स्वतः खुद जाना ।
 खुदरी-पु० [फा०] अपने आप उगने वाला (पौधा या वृक्ष) ।
 खुवाई-स्त्री० १ खुदाई का कार्य । २ खुदाई की मजदूरी ।
 खुवाई-स्त्री० [फा०] १ ईश्वरत्व । २ संसार सृष्टि । ३ खोदने का कार्य । ४ खोदने की मजदूरी ।
 खुवा (य)-पु० [फा०] १ ईश्वर, परमात्मा, स्वयम्भू । २ दक्ष निर्माता ।
 खुवाणी (बो), खुवावणी (बो)-कि० खुदवाना ।
 खुवायबब-पु० १ ईश्वर, खुदा । २ स्वामी मालिक ।
 खुवाळ-पु० १ रथ । २ सूर्य का रथ, वाहन ।
 खुवाळम-देखो 'खुदाळम' ।
 खुदिया, खुद्या, खुधा-स्त्री० [सं० क्षुधा] क्षुधा, भूख ।
 खुधार, खुधाळ, खुधावंत-वि० क्षुधित, भूखा ।
 खुधियारत-वि० [सं० क्षुधार्त] भूखा, क्षुधा पीड़ित ।
 खुध्या-देखो 'खुधा' ।
 खुग्यायो-वि० हल्का गर्म, गुनगुना ।
 खुपणी (बो)-देखो 'खुदणी' (बो) ।
 खुरी-स्त्री० १ खोपड़ी । २ तरबूज की खपरी ।
 खुराणी (बो), खुरावणी (बो)-देखो 'खुवाणी' (बो) ।
 खुफिया-वि० [अ० खुफीयः] १ गुप्त । २ सूझ, पेचीदा । —पु० पुलिस का एक विभाग ।
 खुफियो-पु० [अ० खुफीयः] १ गुप्तचर, भेदिया । २ जासूस ।
 खुब-स्त्री० घोड़ी की भट्टी ।
 खुबक-पु० घोड़ों का एक रोग विशेष ।
 खुबली (बो)-कि० १ चुभना । २ धंसना, गड़ना । ३ रुपना ।
 खुबली (बो)-कि० १ उत्तेजित होना, करना । २ क्षुब्ध होना, करना । ३ आंदोलन करना, हिलना ।

खुवाणी (बो), खुवावणी (बो), खुवाणी (बो), खुवावणी (बो)-१ चुभाना । २ धंसाना, गड़ना । ३ रोपना ।
 खुर-स्त्री० जलन, दाह, ईर्ष्या (येबात) ।
 खुरी-स्त्री० एक विड़िया विशेष ।
 खुमाह (रो)-पु० [अ०] १ हल्का नशा, जन्माद । २ मस्ती । ३ नशे के उतार की अवस्था । ४ जानरण की उदासी । ५ गर्मी में भिगो कर ओढ़ने का वस्त्र ।
 खुरंट-पु० [सं० क्षुर + अंड] १ घाव पर जमने वाली सूखी पपड़ी । २ कट्टा बात, जो दब चुकी हो ।
 खुर-पु० [सं० खुरः] १ चौपाये जानवरों के पैरों का निचला सख्त भाग, खुर, टाप । २ नख नामक गंध द्रव्य । ३ पैर, चरण । ४ दुरा, उम्तरा । ५ तीर, बाण ।
 खुरखुराणी (बो), खुरखुरावणी (बो)-देखो 'खुरखुराणी' (बो) ।
 खुरखुरी-स्त्री० रहट के स्वामियों से लिया जाने वाला कर ।
 खुरखुरी-वि० खुरदरा, दरदरा । —पु० पशु की चाल विशेष ।
 खुरखू-स्त्री० पृथ्वी ।
 खुरइली (बो)-कि० १ धसीटना । २ कुचरना । ३ छटपटाना ।
 खुरइ-पु० पैर, चरण ।
 खुरचण (णी)-स्त्री० [सं० कूर्चनम्] १ बचा-खुचा सामान । २ किसी पदार्थ का पकाते समय बर्तन में चिपका रहने जाने वाला भाग । ३ इस प्रकार कुचरकर एकत्र किया गया पदार्थ । ४ एक औजार विशेष ।
 खुस्चलियो, खुरचणी-पु० कुचरने का उपकरण । छोटी खुरपी ।
 खुरचणी (बो)-कि० [सं० क्षुरणं] १ कुचरना, कुचर कर एकत्र करना । २ कुरेदना । ३ कुरेद कर अलग करना ।
 खुरज-स्त्री० खाज, खुजली ।
 खुरजी-स्त्री० घोड़े पर दोनों ओर लटका रहने वाला थैला, झोला ।
 खुरणीख-स्त्री० धूलि, रज, गर्द ।
 खुरतार, खुरताळ, (छि. लो. लु)-स्त्री० [सं० क्षुरत्राण] १ घोड़े या गधे की टाप, सुम । २ सुम के नीचे लगने वाली लोहे की नाल । ३ जूती की मजबूती के लिए उसके तल में लगाई जाने वाली लोहे की नाल ।
 खुरब-देखो 'खुइद' ।
 खुरदम, खुरप-पु० गधा, खर ।
 खुरपी-स्त्री० १ कुरेदने या कुचरने का एक छोटा उपकरण । २ एक औजार विशेष ।
 खुरपी (फो)-पु० १ कड़ाई में पकवान बनाते समय हिलाने का उपकरण । खुरपा । २ तलवार ।
 खुरप्र-पु० तीर, बाण ।
 खुरबाणी-देखो 'खुबानी' ।

खुरभी-पु० छोटा, बछड़ा। -वि० १ कायर, डस्फोक। २ कमजोर, निर्बल।

खुरमत्तो-पु० खाद्य पदार्थ विशेष।

खुरमुरी-स्त्री० १ जोश, आवेश। २ होशियारी, सावधानी।

खुरमी-पु० [अ० खुरमा] १ एक प्रकार का एकवान, चूरमा। २ छुहरा। ३ एक प्रकार का घोड़ा।

खुरराट-वि० [सं० खुराट] १ नुहा, वृद्ध। २ अनुभवी। ३ चालाक होशियार।

खुररी-पु० [सं० खुरक] १ पशुओं की पीठ से मेल उतारने का उपकरण। २ पशुओं की पीठ से मेल उतारने की क्रिया। ३ ऊंची भूमि पर चढ़ने का ठलुआं रास्ता।

खुरल्लणी (बी)-क्रि० नाखून या क्षुरों से खोदना।

खुरल्लियो-पु० खाद्य होते समय गाड़ी पर लगाया जाने वाला उपकरण।

खुरळी-स्त्री० शस्त्र विद्या।

खुरसनी-स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

खुरसळी-स्त्री० चोपाये पशुओं के खुर।

खुरसाण-पु० १ तलवार। २ यवन, मुसलमान। ३ घोड़ा। ४ तीर, बाण। ५ सेना, फौज। ६ बादशाह। ७ शस्त्र पैना करने का उपकरण। ८ देखो 'खुरसाण'।

खुरसाणज-पु० तीर, बाण।

खुरसाणियो-वि० १ शस्त्र पैना करने वाला। २ खुरसाण का निवासी।

खुरसाणी-पु० १ खुरसान देश का निवासी। २ खुरसान का घोड़ा। ३ एक प्रकार का अजमा। -वि० मुसलमान।

खुरसांन-देखो 'खुरसाण'।

खुरसाड़ी-पु० पशुओं के खुरों में होने वाला एक रोग।

खुरसी-देखो 'कुरसी'। -बंध= 'कुरसीबंध'।

खुराई-स्त्री० १ पशुओं के दोनों पैर परस्पर बांधने की रस्मी। २ उद्दण्ड बेल को पकड़ने का फंदा।

खुराक-स्त्री० [फा०] १ भोजन की क्षमता। २ भोजन, आहार। ३ एक बार में ली जाने वाली श्रौषधि की मात्रा। ४ एक समय का भोजन।

खुराकी-स्त्री० भोजन का नकद-मुगतान। -वि० अधिक खाने वाला। अच्छी खुराक वाला।

खुराट-देखो 'खुरराट'।

खुराफात-स्त्री० [नं०] १ बेहूदी या भ्रष्टा हरकत। २ उद्दण्डता, बदमाशी। ३ छेड़-छाड़। ४ झगड़ा, कलह। ५ उपद्रव।

खुराफाती-वि० 'खुराफात' करने वाला।

खुराळणी (बी)-क्रि० नाखून या क्षुरों से खोदना।

खुरासण (न)-पु० १ अफगानिस्तान का एक प्रान्त। २ मुगल-मान, यवन। ३ सेना, फौज। ४ बादशाह। ५ इस देश का

घोड़ा। ६ एक प्रकार की तलवार। ७ देखो 'खुरसाण'।

खुरियोखातो-पु० एक देशी खेन।

खुरी-स्त्री० १ चुराण हुवे पशुओं को लौटाने के लिये दिया जाने वाला गुप्त धन। २ खुरों से जमीन खोदने की क्रिया। ३ मोज, आनन्द। ४ घोड़ा फेरने की क्रिया विशेष। ५ खुर, सुम। ६ खुर वाला पशु। ७ घोड़ा, अश्व।

खुरी-पु० १ फर्श, आंगन। २ ऊंची भूमि। ३ शिर का मेल।

खुलखुल्लणी (बी), खुलखुल्लणी (बी)-क्रि० कोड़ियों को या पैसों को हाथ में लेकर बजाना, हिलाना या हिलाते हुए डालना।

खुलखुल्लियो-पु० कुक्कर खांसी।

खुलखुल्ली-स्त्री० १ अस्थवस्था। २ खांसी। ३ शीघ्रता, उतावली। ४ गुदगुदी।

खुल्लणी (बी)-क्रि० १ पानी से घोया जाना। २ दोष फैला जाना। ३ मुट्ठी में डालकर हिलाना।

खुल्लणी (बी)-क्रि० १ ठक्कन आदि का खुलना, अलग होना। २ जुड़ा हुआ अलग होना। ३ बंधन मुक्त होना। ४ दरार पड़ना, फटना। ५ चालु होना। ६ प्रारम्भ होना। ७ जारी होना। ८ प्रतिबंध हटना। ९ शिकार के पशु की चमड़ी उतरना। १० बात प्रकट होना, रहस्य खुलना। ११ भेद देना। १२ मन की बात साफ कहना। १३ शोभित होना, खिलना। १४ निकलना, उदय होना। १५ स्थापित होना। १६ अवरोध हटने से साफ होना।

खुल्लमखुल्ल-क्रि० वि० खुले आम, चौड़े में। प्रगट रूप में।

खुल्लणी (बी), खुल्लणी (बी)-क्रि० १ खोलना, अलग कराना। २ जुड़ा हुआ, अलग कराना। ३ दरार पटकाना, फटवा देना। ४ चालु कराना। ५ प्रारम्भ कराना। ६ जारी कराना। ७ बंधन मुक्त कराना, खोलना। ८ प्रतिबंध हटवाना। ९ शिकार के पशु की चमड़ी उतारना। १० बात प्रगट कराना, रहस्य खुलाना। ११ भेद खिलाना। १२ मन की बात कहना। १३ खिलाना, शोभित कराना।

खुल्लणी (बी)-क्रि० १ खुलाना। २ दांव फैलाना। ३ मुट्ठी में डालकर सारी आदि हिलाना।

खुल्लसाळ-स्त्री० बरामदा। खुला बरंडा।

खुल्लासी-पु० [अ० खुलासा:] १ मारांश, संक्षेप। २ निपटारा। ३ फैसला। ४ स्पष्टीकरण। ५ व्याख्या। ६ खुली बात।

खुलेपनी-वि० १ मुक्त, आजाद। २ उच्छिखल।

खुली-वि० (स्त्री० खुली) १ बंधन रहित, मुक्त। २ आवरण रहित। ३ स्वच्छन्द। ४ स्पष्ट, प्रगट।

खुल्यो-वि० पथ अष्ट, पतित।

खुल्लमखुल्ल-क्रि० वि० खुले आम, चौड़े में। -वि० १ अव्यवस्थित। २ अट संट। -पु० बेकार मामान, अटाला।

खुल्लमखुल्ला-देखो 'खुल्लमखुल्ला' ।

खुल्लणी (बो)-देखो 'खुल्लणी' (बो) ।

खुल्लणी (बो)-देखो 'खुल्लणी' (बो) ।

खुल्लार-पु० [फा० खुल्लार] १ खराबी, दोष । २ नशा ।
३ विध्वंस, नाश । ४ अनर्थ । -वि० खराब ।

खुल्ल-वि० [फा० खुल्ल] १ प्रसन्न, खुश । २ हर्षित आनन्दित ।
३ मस्त, मग्न । ४ अच्छा । -किस्मत-वि० भाग्यशाली ।

---खल्ल-वि० सुन्दर लिखावट वाला । ---खल्लरी-स्त्री० शुभ
समाचार । अच्छी खबर । ---खल्ल-वि० प्रसन्नचित्त । मस्त
रहने वाला । मसखरा । -नवीस-वि० 'खुल्लखल्ल' । -नवीसी-
स्त्री० सुन्दर लिखावट । लेखन कला । -नसीब-वि०
भाग्यशाली । -नसीबी-स्त्री० सौभाग्य । -नुमा-वि०
सुन्दर, मनोहर । -मिजाज-वि० विनोद प्रिय ।
खुशदिल । ---रंग-वि० चटकीले रंगों वाला । सुन्दर ।
---हाल-वि० सुखी । नम्पन्न । ---हाली-स्त्री० सम्पन्नता ।
सुख । अच्छी दशा ।

खल्लकी-देखो 'खुल्लकी' ।

खल्लणी (बो)-कि० निकट पहुँचना, नजदीक आना, बरबाद
करना, लुटजाना ।

खल्लवू (बोय, बोह)-स्त्री० [फा० खुल्लवू] सुगंध, सुगंधित हवा ।
---दार-वि० सुगंधित, अच्छी जूशू वाला ।

खल्लामंद, खल्लामंद-स्त्री० [फा० खुल्लामंद] १ गरज, जी हजुरो ।
२ चापलूसी । ३ झूठी प्रशंसा । -गोय-वि० खुल्लामंदी ।

खल्लामंदी, खल्लामंदी-वि० चापलूस, चाटुकार ।

खल्लाल-देखो 'खुल्लाल' ।

खल्लाली-देखो 'खुल्लाली' ।

खल्लियाळ, खुल्लियाळ (हाळ)-देखो 'खुल्लियाळ' ।

खल्लियाळी (हाळी)-देखो 'खुल्लियाळी' ।

खल्लो-स्त्री० [फा० खुल्लो] १ प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द । २ शुभ
घटना ।

खल्लुरफुर-स्त्री० कानाफुसी, गुप्तगू ।

खल्ल-वि० [फा० खुल्ल] १ सुखा । २ नीरम । ३ रुखे स्वभाव
वाला ।

खल्लो-स्त्री० [फा० खुल्लो] १ मूलापन । २ नीरमता ।
३ रुखापन । ४ शारीरिक खुशी । ५ स्थल या महभूमि ।
६ पैदल यात्रा । ७ अकाल, अवर्षण ।

खल्लाल-वि० [फा० खुल्लाल] १ प्रसन्न, खुश, आनन्दित ।
२ सुखी, सम्पन्न । -पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

खल्लाली-स्त्री० [फा० खुल्लाली] १ प्रसन्नता, हर्ष । २ सुख,
सम्पन्नता ।

खुल्ल-पु० तीर, बारण ।

खूँकियो, खूँकौ-वि० वह जिसका टूटा हुआ हाथ पुनः जोड़ने पर
देढ़ापन रहा हुआ हो ।

खूँखाट-पु० तेज हवा या आंधी की आवाज, खेलाट ।

खूँखाणी (बो)-कि० १ तीव्र ध्वनि करना । २ तीव्र गति से
चलाना ।

खूँखार-वि० [फा० खूँखार] १ क्रूर, क्रोधी । २ प्रचंड,
भयंकर । २ रक्त पिपासु । ४ निर्देयी । -पु० विनाश, ध्वंस ।

खूँगाळी-स्त्री० गले का एक आभूषण विशेष ।

खूँगाळी-देखो 'खूँगाळी' ।

खूँच-स्त्री० गंधे की चाल ।

खूँचणी-पु० दोष, अवगुण, ऐव ।

खूँजियो, खूँजियो, खूँजी-पु० खीसा, जेव ।

खूँज्यो-पु० १ बिना बधिया किया बेल, सांड बेल । २ देखो 'कूँट' ।
३ देखो 'खूँट' । ४ देखो 'खूँटी' । ५ देखो 'खूँजी' ।

खूँटणी-स्त्री० १ चुनाई । २ चुनने या बीनने की क्रिया या
भाव । ३ तोड़ने योग्य होने की अवस्था ।

खूँटणी (बो)-कि० [सं० चूट-छेदने] १ तोड़ना, चुनना, बीनना ।
२ तोड़ना ।

खूँटाउखाड़ (उखेड़)-वि० वंश मिटाने वाला । निकम्मा ।

खूँटाउपाड़ (ऊपाड़)-पु० १ वक्षस्थल पर भीरी वाला घोड़ा ।
२ घोड़े के वक्षस्थल पर होने वाली भीरी ।

खूँटागाव-स्त्री० घोड़े के घटने के नीचे होने वाली भीरी ।

खूँटाचिटकण-पु० पांवों से चट-चट आवाज करने वाला बेल ।

खूँटाडांणचराई-स्त्री० एक प्रकार का जागीरदारी कर ।

खूँटाणी (बो), खूँटावणी (बो)-कि० १ तुड़वाना । २ चुनवाना,
बीनाना ।

खूँटापाड़-पु० घोड़े की जंघ के मध्मस्थल की भीरी ।

खूँटारोप-पु० एक प्रकार का घोड़ा । (शुभ)

खूँटियो-पु० खेती में काम लिया जाने वाला बधिया किया हुआ
बेल ।

खूँटी-स्त्री० १ दीवार में लगने वाली लकड़ी की कील । २ कील,
परेक । ३ ज्वार-बाजरी के ईंटों का खंड । ४ बालों का
नुका । -उखाड़, गाड़-पु० घोड़े की एक भीरी ।

खूँटी-पु० १ पशुओं को बांधने के लिए गोरी जाने वाली मोटी
लकड़ी । २ पशुओं की बांधने का स्थान । ३ ज्वार बाजरी
आदि के पौधे काटने पर पीछे रहा नुका ।

खूँडियो-पु० एक तरफ से मुड़ी हुई लाठी ।

खूँडो-स्त्री० मुड़े हुए मीनों वाली मँस ।

खूँली-स्त्री० कोहनी ।

खूँलो-पु० १ कोना । २ कोण ।

खूँब-पु० [फा० खाविद] १ बादशाह, राजा । २ स्वामी मालिक । ३ पावों से दबाने की क्रिया या भाव । ४ कष्ट तकलीफ । ५ रोंदने की क्रिया या भाव । ६ योद्धा । ७ सहनशील । —कार-पु० बादशाह । मुसलमान ।

खूँदली (बो)-क्रि० १ रोंदना, कुचलना । २ पावों से दबाना ।

खूँदलम, (बो)-देखो 'खूँदाळम' ।

खूँदाङली (बो), खूँदाणी (बो), खूँदाबली (बो)-क्रि० १ पावों से रोंदना । कुचलना । २ पावों से दबवाना ।

खूँदाळम, खूँदाळिम-पु० [फा० सुदा-ग्रालय] १ बादशाह, राजा । २ मुसलमान । -वि० सहनशील । वीर । विनम्र ।

खूँन-देखो 'खून' ।

खूँनली (बो)-देखो 'खूँदली' (बो) ।

खूँनी-देखो 'खूनी' ।

खूँपली (बो)-क्रि० गोता लगाना ।

खूँपु-पु० पुष्पों का सेहरा जो दुल्हिन या दूल्हे को धारण कराया जाता है ।

खूँबो (बो)-स्त्री० १ वर्षा ऋतु में स्वतः पैदा होने वाला बिना पत्ते का एक पौधा, भूँफोड़ । २ शिखर, गुंबज ।

खूँम-देखो 'खूम' ।

खूँसड़ो (डो)-स्त्री० जूती ।

खूँ-पु० १ कविजन । २ बृहस्पति । ३ सूर्य । ४ जीव । ५ किनारा । ६ पृथ्वी के जीव । ७ देखो 'खूब' ।

खूँव-पु० सूअर, शूकर ।

खूँजियो, खूँजो-देखो 'खूँजियो' ।

खूँट-स्त्री० १ मभाप्ति, खात्मा । २ पूर्णता । ३ मौत मृत्यु ।

खूँटली (बो)-क्रि० १ समाप्त होना, खत्म होना । २ पूर्ण होना, पूरा होना । ३ चुक जाना, चुकता होना । ४ मरना । ५ नष्ट होना । ६ बंधन मुक्त होना । ७ हारना । ८ फहरना ।

खूँटल-वि० निर्लज्ज, बेशर्म ।

खूँटवण-वि० समाप्त या संहार करने वाला ।

खूँटवणी (बो)-क्रि० समाप्त करना, शिक्षा देना ।

खूँटाणी (बो), खूँटावणी (बो)-क्रि० १ समाप्त करना, खत्म करना । २ पूर्ण करना, पूरा करना । ३ चुकता करना । ४ मारना । ५ नाश करना । ६ बंधन मुक्त करना । ७ हारना । ८ फहरना । ९ निराजनक कार्य करना ।

खूँटोड़ी-वि० (स्त्री० खूँटोड़ी) १ समाप्त । २ मृतक । ३ निकम्मा ।

खूँटो-वि० (स्त्री० खूँटो) १ भूखा । २ बंधन मुक्त ।

खूँड-स्त्री० १ हज की रेखा, मीना । २ देखो 'कूड़' ।

खूँण-स्त्री० [सं० कोण] १ कोना । २ कोण । ३ नदी का एक भाग । ४ पहाड़ की गुफा, कंदरा । ५ मकान का एक तरफ का अधिक लंबा भाग ।

खूँणियो-पु० १ रहट का एक किनारा । २ देखो 'खूँली' ।

खूँणी-देखो 'खूँली' ।

खूँणीदार-वि० कोणधारी, कोने वाला ।

खूँण-देखो 'खूँली' ।

खूँणी-देखो 'खूँली' ।

खूँतली (बो)-क्रि० डुबकी लगाना । गोता लगाना ।

खूँब-पु० १ हरे जव जो घोड़ों को खिलाए जाते हैं । २ देखो 'खूँद' । ३ देखो 'युद्ध' ।

खूँदली (बो)-१ देखो 'खूँदली' (बो) । २ देखो 'खोदली' (बो)

खूँदाळम, खूँदाळम-देखो 'खूँदाळम' ।

खूँन-पु० [फा०] १ रक्त, रुधिर, लहू । २ वध, हत्या । ३ अपराध, गुनाह । —लिप-स्त्री० रक्त-प्लीहा ।

खूँन (बो)-वि० [फा०] १ हथियार, कातिल, मारने वाला । २ अपराधी, गुनहवार । ३ जालिम, अत्याचारी । ४ क्रुद्ध । -पु० १ बवासीर । २ सिंह ।

खूँब-वि० [फा०] १ अधिक, बहुत । २ बढ़िया, उत्तम । ३ भला । ४ तारीफ लायक । -क्रि० वि० अच्छी तरह, भली प्रकार ।

खूँबकळा-स्त्री० पोस्त की तरह की एक ओषधि व इसका पौधा ।

खूँबड़-स्त्री० एक देवी विशेष ।

खूँबड़-खाबड़-वि० ऊबड़-खाबड़ ।

खूँबसुरंग-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

खूँबसुरत-वि० [फा०] सुन्दर, रूपवान । मनोहर ।

खूँबसुरती-स्त्री० सुन्दरता । सौन्दर्य ।

खूँबाणी (नी)-स्त्री० [फा० खूबानी] जख्मा नामक फल ।

खूँबी-स्त्री० [फा०] १ अच्छाई, अच्छापन । २ गुण, विशेषता । ३ विलक्षणता । ४ घानन्द, मौज । ५ भलाई । ६ शक्ति ।

खूँम-पु० १ मुसलमान । २ एक प्रकार का सूती साफा । ३ बांस की खपचियों की बनी एक प्रकार की डलिया । ४ हिस्सा, विभाग । ५ गुच्छा ।

खूँमची-पु० १ चाट-नमकीन या फल आदि बेचने का डेला । २ ऐसी ही वस्तुओं का पात्र । खोंवा ।

खूँमपोस-पु० घाल आदि पर ठकने का वस्त्र ।

खूँमाणी-वि० १ भयंकर, घनिष्ठकारी । २ देखो 'खूँबाणी' ।

खूर-पु० १ धोड़ा । २ फौज, दल । ३ समूह, झुंड । ४ बाण, तीर । ५ सेना, फौज । -वि० १ घना, अधिक । २ देखों 'खुर' । —बम-पु० गधा, गर्दभ ।
 खूरन-स्त्री० हाथी के पांवों की बीमारी ।
 खूसडी (बौ)-देखो 'बूसडी' ।
 खूसणी (बौ)-क्रि० १ बढ़ाना, अगाड़ी करना । २ छीनना । ३ हंसना । ४ देखो 'खोसणी' (बौ) ।
 खूसाणी (बौ), खूसावणी (बौ)-देखो 'खोसाणी' (बौ) ।
 खूह-पु० १ कृष्ण, कृप । २ देखो 'वूड' ।
 खे-खे-देखो 'खे-खे' ।
 खेखार-देखो 'खंखार' ।
 खेखाट-पु० १ तीव्र वायु का झोंका । २ तीव्र वायु की ध्वनि ।
 खेखारो-देखो 'खंखारो' ।
 खेगरणी (बौ)-क्रि० नाश करना, मारना, संहार करना ।
 खेंच-स्त्री० खींचने की क्रिया या भाव, खिचाव, तनाव ।
 खे-पु० १ कवि । २ पक्षी । ३ दुःख, वेद । ४ सभा द्वार । ५ नभचर । ६ प्राण । ७ तलवार । ८ शिव । ९ आकाश । १० धूल, गर्द । ११ राख । १२ अंगारों का ढेर ।
 खेई-स्त्री० भड़ बेरी के मुखे डंठलों का समूह 'पाई' ।
 खेउ-पु० वेद, रंज, उदासीनता ।
 खेकी (बौ)-पु० बड़ा अफीमची ।
 खेगाळ-पु० १ तेज प्रवाह । २ तेज गति । ३ देखो 'खोगाळ' ।
 खेड़-स्त्री० १ बड़ा भोज । २ खेत की जुताई । ३ यात्रा की दूरी । ४ एकत्रीकरण ।
 खेड़णी (बौ)-क्रि० १ चलना । २ चलाना, हांकना । २ खेत की जुताई करना । ४ एकत्र करना । ५ दूरी तय करना ।
 खेड़ा-स्त्री० १ कुछ-कुछ दिनों के फासले से होने वाली वर्षा । २ कण ।
 खेड़ाऊ-पु० प्रकाल पड़ने पर मवेशियों की चारा-पानी के लिए अन्य प्रदेश में ले जाने वाला ।
 खेड़ी-स्त्री० १ पक्का लोहा, फीलाद । २ युद्ध ।
 खेड़ासाग-पु० नए बसे हुए गांवों व डागियों वालों में लिया जाने वाला कर ।
 खेड़-वि० हांकने वाला, चन्दाने वाला ।
 खेड़ो-पु० एक प्रकार का कंद विशेष ।
 खेड़ेंच, खेड़ेंचउ, खेड़ेंचो-पु० राठोड़ राजपूत ।
 खेड़ी-पु० [सं० क्षेत्र] छोटी डागो या बसा हुआ छोटा गांव ।
 खेवर (ह)-पु० [सं०] १ नभचारी । २ मूर्य, चन्द्रादि ग्रह । ३ तारागण । ४ देवता । ५ विमान । ६ पक्षी । ७ बादल । ८ राक्षस । ९ शिव । १० भूत-प्रेत । ११ कमीम । १२ चौगट भैरवों के अन्तर्गत एक । १३ वायु ।

-स्त्री० १४ अप्सरा । १५ दुर्गा । १६ पिशाचिनी । १७ योगिनी । १८ बहतर कलाओं में से एक ।
 —गुटका, गुटिका-स्त्री० तांत्रिक योग सिद्धि की गोली ।
 —मुद्रा-स्त्री० तांत्रिक मुद्रा विशेष ।
 खेचरी-स्त्री० जीम को तालु से लगाने की एक मुद्रा ।
 खेचल-स्त्री० १ श्रम, परिश्रम । २ कष्ट, तकलीफ । ३ तंगी, परेशानी ।
 खेचलणी (बौ)-क्रि० १ थकाना । २ कष्ट देना । ३ परेशान करना । ४ चलाना ।
 खेचाई, खेचो-स्त्री० १ ईर्ष्या, द्वेष । २ शत्रुता, वैर । ३ व्यंग, ताना । ४ मखौल, दिल्लगी ।
 खेज-पु० खाद्य पदार्थ ।
 खेजड़, खेजड़सो, खेजड़ियो, खेजड़ी, खेजड़ी-पु० छोटी पत्ती व छोटे कांटेदार एक मधुप्रदेशीय वृक्ष, शमी ।
 खेट-पु० [सं०] १ सूर्यादि ग्रह । २ धोड़ा । ३ ढाल । ४ चमड़ा । ५ एक अस्त्र विशेष । ६ युद्ध, संग्राम । ७ आगुध रूप मूल । ८ कफ । ९ वह वस्ती जिसके चारों ओर घूल का कोट हो ।
 खेटक-पु० [सं०] १ बलरामजी का मूसल, गदा । २ ढाल । -वि० १ शक्तिशाली, समर्थ । २ देखो 'खेट' ।
 खेटकी-स्त्री० ढाल । -पु० योद्धा ।
 खेटणी (बौ)-क्रि० १ नाश करना, संहार करना । २ हराना ।
 खेटर, (खल)-पु० फटा पुराना जूता ।
 खेटाणी (बौ), खेटावणी (बौ)-क्रि० १ हराना, पराजित करना । २ क्रोधित करना ।
 खेटावत-वि० वीर, बहादुर ।
 खेटी-वि० [सं० खेटिन्] १ नागर । २ कापुक ।
 खेटी-पु० [सं० खेट] १ युद्ध, झगड़ा । २ ईर्ष्या, द्वेष ।
 खेड-पु० १ तीर, बाण । २ युद्ध ।
 खेड़णी (बौ)-देखो 'खेड़णी' (बौ) ।
 खेडार-वि० ग्रामवासी, देहाती ।
 खेडूर-वि० बहादुर, जबरदस्त ।
 खेडूली-पु० एक प्रकार का कंद ।
 खेडो-पु० खड्ग, तलवार ।
 खेणी (बौ)-क्रि०सं० [सं० खेव्] १ नाव चलाना, खेना । २ काल क्षेप करना, समय बिताना । ३ देव पूजन के लिए भुज दान करना ।
 खेत (डो), खेतर-पु० [सं० क्षेत्र] १ वह भूखण्ड जिसमें किसी प्रकार की खेती की जाती है । २ खेत में खड़ी फसल । ३ उत्पत्ति स्थान या प्रदेश । ४ रण क्षेत्र, युद्धस्थल । ५ प्रमशान भूमि । ६ वंश, खानदान । ७ पृथ्वी । ८ तलवार की धार का मध्य भाग । ९ भूखण्ड । —गर-पु० किसान ।

योद्धा, वीर । —जोष-पु० किसान, कृषक । —पाळ-पु०
क्षेत्रपाल, ये ४६ माने गये हैं ।
खेतस, (खेतली)-पु० १ क्षेत्रपाल । ३ द्वारपाल । —घस,
रघ, वाहण-पु० प्रधान, कुत्ता ।
खेतहर-पु० [सं० क्षेत्रधर] किसान, कृषक ।
खेती-स्त्री० [सं० क्षेत्र, कृषि] १ कृषि कार्य, काश्तकारी प्रनाज की
बोवाई । २ फसल । —गर-पु० किसान । कुम्हारों की
एक जाति । —पासी-स्त्री० कृषि, काश्तकारी । —बळ-
किसान, काश्तकार । —बाड़ी, बाड़ी-स्त्री० कृषि कार्य ।
खेतु (तु)-देखो 'खेत' ।
खेतर, खेच-१ देखो 'क्षेत्र' । २ देखो 'खेत' ।
खेत्रज-पु० १ क्षेत्रज संतान । २ सोलंकियों की आराध्य देवी ।
खेत्रपाळ-देखो 'खेतर-पाळ' ।
खेत्राड़ी-देखो 'खोत्राड़ी' ।
खेचि (त्री)-१ देखो 'खेती' । २ देखो 'खेत' ।
खेव-पु० [सं०] १ घफसोस, कष्ट, पीड़ा । २ रंज ।
३ पश्चाताप । ४ त्पानि, घृणा । ५ यकान । ६ उदासी,
खिन्नता । ७ ईर्ष्या, द्वेष ।
खेवज्वर-पु० घोड़ा का ज्वर विशेष ।
खेदणी (बी)-क्रि० १ भागना । २ पीछा करना । ३ खदेड़ना ।
४ तंग करना । ५ कष्ट या पीड़ा देना ।
खेदाई-स्त्री० १ खदेड़ने की क्रिया । २ खदेड़ने का पारिश्रमिक ।
३ वंमनस्य ४ ईर्ष्या ।
खेवित-वि० [सं०] दुःखी । खिन्न ।
खेवी-पु० [सं० खेद] १ हठ, जिद्द । २ शिकार, घाबेट ।
३ पीछा । ४ शिकार का हाका । ५ देखो 'खेद' ।
खेघ-पु० १ विरोध । २ युद्ध, रण । ३ क्रोध । ४ वाद-विवाद ।
५ देखो 'खेद' ।
खेघाऊ-वि० १ क्रोध करने वाला । २ ईर्ष्या करने वाला ।
३ विरोध करने वाला ।
खेघो-पु० शत्रु, वैरी, दुश्मन ।
खेघो-देखो 'खेदी' ।
खेप-स्त्री० [सं० क्षेत्र] १ घातक, भय, डर । २ गाड़ी या नाव
की एक बार की यात्रा । ३ एक बार में लाई-लेजाई जाने
वाली वस्तु । ४ थोक । ५ नर भेड़ों का समूह । ६ खजाना ।
७ मित्तियत, जायदाद ।
खेपणी-स्त्री० नाव की बल्ली, डांड ।
खेव-देखो 'खेप' ।
खेम-पु० [सं० क्षेत्र] १ रक्षा, सुरक्षा । २ कुशलता, आनन्द
मंगल । —करी, कल्याणी-स्त्री० श्वेत रंग की बोल ।
—कुसळ-पु० कुशल क्षेत्र । आनन्द मंगल । —खाप-पु०
एक प्रकार का वस्त्र ।

खेमा-स्त्री० [सं० क्षमा] पृथ्वी, भूमि । खेत, क्षेत्र ।
खेमाळ-स्त्री० तलवार ।
खेनी-पु० [प्र० खेमा] तंबू, डेरा, शिविर ।
खेपारा-पु० [सं० खचार] नक्षत्र ।
खेरज-पु० रजत, चांदी ।
खेरख-वि० [सं० धरण] १ नाश करने वाला । २ नोड़कर
गिराने वाला । ३ बचा-खुचा । —पु० १ बचा-खुचा या
अवशिष्ट भाग । २ बार, प्रहार । ३ चलनी । ४ एक प्रकार
का वृक्ष ।
खेरणियो-पु० १ हिन्दू लुहार, सिकनीगर । २ प्रनाज साफ
करने का उपकरण । ३ छोटी चलनी ।
खेरणी-स्त्री० १ चलनी । २ देखो 'खेरण' ।
खेरणी-पु० बड़ी चलनी ।
खेरणी (बी)-क्रि० [सं० क्षरण] १ गिराना, टपकाना ।
२ उखाड़ना, पटकना । ३ तोड़ना । ४ संहार करना, मारना ।
५ वृक्ष को जोर से हिलाकर फल-फूल, पत्ते गिराना ।
खेरणी (बी)-क्रि० १ गिरवाना, टपकवाना । २ उखड़वाना,
पटकवाना । ३ तुड़वाना । ४ संहार कराना, मरवाना ।
५ वृक्ष को हिला कर फल-फूल व पत्ते गिरवाना ।
खेरी-पु० १ एक प्रकार का पुष्प । २ देखो 'खेड़ी' ।
खेहूँ, खेहूँ-पु० १ नष्ट, ध्वंस । २ क्रोध । ३ गिराने या
पटकने की क्रिया । ४ व्यर्थ में खर्च, क्षय या कमी होने
की दशा । ५ पशुओं द्वारा पांव से धूल उछालने की
क्रिया । —वि० ध्वस्त, बर्बाद, विकृत ।
खेरी-पु० ग्रंथ, कण ।
खेळ-पु० १ कुल-भेद । २ देखो 'खेळी' ।
खेल (रा)-पु० [सं०] १ क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद । २ कोई खेल
विशेष । ३ नाटक अभिनय । ४ चल-चित्र सिनेमा ।
५ हंसी, दिल्लगी, मनोरंजन । ६ काप-क्रीड़ा । विषय
विहार । ७ लीला, रचना, माया । ८ कोई अद्भुत कार्य ।
९ पंक्ति, परम्परा । —कबूतर-स्त्री० नट-विद्या । नटों
का खेल ।

खेसड़ी-देखो 'खेलरी' ।

खेलणी (बी)-क्रि० १ आमोद-प्रमोद करना, क्रीड़ा करना ।
२ कोई विशेष प्रकार का खेल खेलना । ३ नाटक करना,
अभिनय करना । ४ हंसी करना, दिल्लगी करना ।
५ रतिक्रीड़ा या संभोग करना । ६ लीला करना, रचना
करना । ७ अद्भुत कार्य करना ।

खेलर, खेलरी-पु० [सं० खेल] १ ककड़ी आदि का काटकर
सुखाया हुआ टुकड़ा । —वि० कृशकाय । अत्यन्त सूखा ।

खेतवाड़-पु० [सं० केलि] खिलवाड़, क्रीड़ा, तमाशा ।

खेला-स्त्री० [सं० केलि] क्रीडा, कौतुक ।

खेलाई-स्त्री० १ खेलने की क्रिया । २ खेलने का पारिश्रमिक ।

खेलाड़ी-देखो 'खिलाड़ी' ।

खेलाणी, (बो), खेलावणी, (बो)-क्रि० १ खिलाना । २ खेलने के लिए प्रेरित करना । ३ नाटक या अभिनय करना । ४ विशिष्ट खेलों में मार्गदर्शन या नियन्त्रण करना । ५ हंसी-मजाक कराना । ६ रतिक्रीडा या संभोग के लिए प्रेरित करना । ७ लीला या रचना कराना ।

खेळी-स्त्री० १ मवेशियों के लिए पानी पीने का छोटा-कुण्ड । २ पत्थर की कुण्डी । ३ महेली, सखी । ४ मस्त-स्त्री । ५ मित्र मंडली ।

खेळू-वि० १ मृदु, प्रधान । २ देखो 'खाळू' ।

खेळूर-वि० घनिष्ठ ।

खेळी-पु० १ लड़का । २ नौजवान, पट्टा । -वि० १ मूर्ख, नासमझ । २ पागल । ३ मस्त ।

खेसो-पु० कौतुक, तमाशा ।

खेल्हणी (बो)-देखो 'खेसणी' (बो) ।

खेच-क्रि० वि० १ शीघ्र, तुरन्त । २ देखो 'खेप' ।

खेवट-पु० १ परिश्रम, कौशिल्य । २ देखो 'केवट' ।

खेवटियो-देखो 'केवट' ।

खेवटणी (बो)-क्रि० नाव खेना । नदी पार करना, पार कराना ।

खेवरा, खेवली-देखो 'खेपणी' ।

खेवली (बो)-देखो 'खेणी' (बो) ।

खेवाई-स्त्री० [सं० खेव] १ नाव चलाने का कार्य । २ नाव का किराया । ३ नदी पार करने का पारिश्रमिक । ४ धूप-दीप करने का कार्य ।

खेवाली, (बो) खेवावली, (बो)-क्रि० १ नाव चलवाना, खेवाना । २ पार कराना । ३ धूपदीन करना ।

खेवी-वि० खेनेवाला, केवट ।

खेस-पु० १ दो सूती वस्त्र । २ ऐसे वस्त्र की चादर । ३ मिटाना क्रिया । ३ द्वेष, वैमनस्य । ४ क्षति, कमी, अभाव । -वि० १ नष्ट । २ लुप्त । ३ समाप्त, खत्म ।

खेसणी (बो)-क्रि० १ नष्ट करना, मिटाना । २ विनाश करना, ध्वंस करना । ३ मारना, संहार कराना । ४ समाप्त करना, खत्म करना । ५ हराना, पराजित करना । ६ युद्ध करना, ७ पीछे हटाना । ८ घक्का देना । ९ छीनना ।

खेसलियो, खेसली-पु० १ दो सूती तार का चादरा, वस्त्र । २ सूत व ऊन के मिश्रण से बना मोटा वस्त्र ।

खेसवणी (बो)-देखो 'खेसणी' (बो)

खेसोत-वि० संहार या विनाश करने वाला ।

खेसी-पु० १ एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । २ वर । ३ द्वेष, डाह ।

खेह-स्त्री० १ धूल, मिट्टी, रज, गर्द । २ छाक, राख, भस्म । ३ गर्म राख । ४ मस्ती, उन्मत्तता ।

खेहणी (बो)-क्रि० कर्तव्य पर चलना, कर्तव्य निभाना ।

खेहली, खेह्नी-देखो 'खेह' ।

खेहटियो-वि० मिट्टी का बना । -विनायक-पु० विवाह के अवसर पर प्रतिष्ठित की जाने वाली गजानन की मिट्टी की मूर्ति ।

खेहरी-१ देखो 'केहरी' । २ देखो 'खेह' ।

खेहा, खेहाट-स्त्री० रज, धूलि ।

खेहाडंबर (रव, रवण)-पु० १ धूल का बादल । २ प्रचंड आंधी ।

खेह-देखो 'खेह' ।

खंकार-देखो 'खूंखार' ।

खंकाळ-देखो 'खंगाळ' ।

खंखाड़ (ट)-देखो 'खंखाट' ।

खंखार-देखो 'खूंखार' ।

खंखारी-देखो 'खूंखारी' ।

खं-खं-स्त्री० तेज हवा या आंधी की आवाज ।

खंग-देखो 'खेंग' ।

खंगरणी (बो)-देखो 'खंगरणी' (बो) ।

खंगाळ (ळी)-पु० १ संहार, नाश । २ ध्वंस । ३ वध । -वि० विनाश लीला करने वाला ।

खंच (बो)-१ स्त्रियों के सिर का घामूषण । २ देखो 'खांच' । ३ देखो 'खेंच' ।

खंचली (बो)-देखो 'खेंचली' (बो) ।

खंचासाण (ली)-देखो 'खेंचासाण' ।

खंझूर-वि० शक्तिशाली व बलवान योद्धा ।

खंण-देखो 'क्षय' ।

खंसाण-पु० १ मुसलमान यवन । २ संहार, नाश । -वि० वृद्ध ।

खं-पु० १ शिव । २ नंदीगण । ३ भाई । ४ लड़का । [सं० क्षय] ५ क्षय । ६ नाश ७ संहार, नाश, ध्वंस । ८ देखो 'खे' ।

खंकार-वि० [सं० क्षयकार] १ नष्ट । २ ध्वस्त । -पु० १ नाश, २ संहार । ३ आकाश ।

खंकारी-वि० [सं० क्षयकारी] विनाश करने वाला ।

खंकाळ-पु० १ नाश, संहार । २ युद्ध संश्राम ।

खंगमल-पु० घोड़ा ।

खंगरणी-वि० विनाश करने वाला ।

खंगरणी (बो)-क्रि० १ संहार करना, मारना । २ विनाश करना ।

खंगाळ-वि० संहारक । -पु० संहार, विनाश ।

खंगोळ-देखो 'खंगोळ' ।

खंडंच-देखो 'खेडेच' ।

खंडी-पु० [सं० खेट] १ छोटा गांव । २ गांव के पास वाला खेत । ३ बरं, तर्तिया का छत्ता । ४ मृत्युपरांत का भोज ।
 ५ एक प्रकार का सरकारी कर ।
 खंडर-पु० हिमालय का पश्चिमी दर्रा ।
 खंडर (न)-वि० [सं० क्षयवान] नाश होने लायक । -पु० नाश, ध्वंस, संहार ।
 खंडग-पु० [फा० खिंग] घोड़ा ।
 खंड-पु० [सं० खदिर] १ बबूल की जाति का एक वृक्ष । २ कट्ये का वृक्ष व इस वृक्ष का गोंद । ३ कट्या । [फा०] ४ दान । ५ पुण्य । -क्रि० वि० प्रस्तु. खंड, कोई बात नहीं । —खाह, खा-पु० भलाई चाहने वाला, शुभ चिंतक । —खाही-स्त्री० शुभ चिंतन । भलाई । —सार-पु० खंड, वृक्ष का रस, कट्या ।
 खंडाइट-देखो 'खंडात' ।
 खंडाहती-देखो 'खंडाती' ।
 खंडात-स्त्री० [प्र०] दान, पुण्य ।
 खंडाती-वि० दान लेने वाला । -पु० खराद का कार्य करने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
 खंडाद-पु० १ हाथी दांत की चूड़ी बनाने या लकड़ी के खिलौने प्रादि बनाने का यंत्र । २ देखो 'खंडात' ।
 खंडासी-पु० १ चूड़ी प्रादि बनाने का कार्य करने वाला कारीगर । २ मुसलमानों की एक जाति । ३ बर्दई । ४ देखो 'खंडाती' ।
 खंडायत-देखो 'खंडात' ।
 खंडायति (ती)-देखो 'खंडाती' ।
 खंडी-पु० १ एक फूल विशेष । २ एक वृक्ष विशेष । —गूँद-पु० खंड वृक्ष का गोंद ।
 खंडू-देखो 'खेरू' ।
 खंडौ-पु० क्रोध पूर्ण दृष्टि से देखने का भाव ।
 खंडसर (चार)-देखो 'खंडर' ।
 खंडवणी (बी)-देखो 'खंडवणी' (बी) ।
 खंड-देखो 'खेरू' ।
 खंडो-पु० खांसने का शब्द ।
 खंडाह-पु० पीलापन लिये सफेद रंग का घोड़ा ।
 खो-पु० १ खंजन । २ सूर्य । ३ पुण्य । ४ सम्मान । ५ भय । ६ नाश, संहार । ७ गर्त, गड्ढा । ८ एक प्रकार का खेल ।
 खो-स्त्री० १ खोज । २ गुफा, कंदरा । ३ एक देशी खेल ।
 खो खो-पु० दूध का खोया, मावा, कीटी ।
 खोको-पु० १ हल्की या पुरानी लकड़ी की पेट्टी जिसमें सामान पैक किया जाता है । २ खाली पात्र । ३ शमी वृक्ष की फली ।

खोखली-वि० (स्त्री० खोखली) पोला, खाली, शुन्य ।
 खोखल-देखो 'खोखल' ।
 खोखलणी (बी)-क्रि० पोला करना, खाली करना ।
 खोखी-पु० १ एक प्रकार का खेल । २ देखो 'खोखी' ।
 खोखल-स्त्री० १ वृक्ष के तने का मोटा खड्डा, पोला भाग । २ कंदरा, गुफा । ३ मांद ।
 खोखली-पु० तलुकों में भौरी वाला घोड़ा ।
 खोखल-स्त्री० १ संहार, नाश । २ खोखलापन । ३ गुफा, मांद ।
 खोखी (र)-पु० [फा० खोगीर] घोड़े के चारजामें के नीचे लगाया जाने वाला ऊनी वस्त्र ।
 खोड़-स्त्री० [सं० खोट] १ ऐब, बुरी आदत । २ दीव घबगुण । ३ कमी, कसर । ४ शत्रु सेना । ५ धूर्तता, चालाकी । ६ कलंक । ७ बुरी बीमारी । ८ देखो 'खोळ' । ९ देखो 'खोड़' ।
 खोड़की-वि० लंगड़ी । -स्त्री० १ बच्चों का एक खेल । २ बच्चों का एक रोग ।
 खोड़ची-पु० मुनार, लुहारों के ऐरन के नीचे लगा रहने वाला मोटा लकड़ा । -वि० लंगड़ा ।
 खोड़स-देखो 'मोड़स' ।
 खोड़णी (बी), खोड़वती (बी)-क्रि० लंगड़ाना ।
 खोड़ियाल-स्त्री० चारण वंशोत्पन्न एक देवी । -वि० बाधक विघ्नकारक ।
 खोड़्यो-पु० [सं० खोल] १ हनुमान । २ कंधा । ३ देखो 'खोड़ी' ।
 खोड़ी-स्त्री० खेत की मेड़ पर बनी पगडंडी या संकरा रास्ता ।
 खोड़ीलाई-स्त्री० १ व्यर्थ की छेड़-छाड़ । २ परेशान करने की क्रिया । ३ शरारत, गैतानी, दुष्टता । ४ विघ्न, बाधा ।
 खोड़ीली-वि० (स्त्री० खोड़ीली) १ व्यर्थ की छेड़-छाड़ करने वाला । २ बाधा डालने वाला, व्यवधान डालने वाला । ३ चिड़-चिड़े स्वभाववाला । ४ शरारती, गैतान, दुष्ट । ५ विघ्नकारक, बाधक ।
 खोड़ू, खोड़ी-वि० (स्त्री० खोड़ी) लंगड़ा । -पु० कंदी का पांव डालकर कैद किया जाने वाला एक उपकरण ।
 खोज-स्त्री० १ तलाश, खान-बीन । २ अनुसंधान, शोध । ३ पदचिह्न । ४ निशान, चिह्न । ५ पता, ठिकाना । ६ पूछ-ताछ । ७ वंश, कुल ।
 खोजक-वि० १ तलाश करने वाला । २ शोधकर्ता, गवेषक ।
 खोजणी (बी)-क्रि० १ तलाश करना ढूँढना । २ अनुसंधान, शोध करना । ३ पद चिह्न देखना ।
 खोजाणी (बी), खोजवणी (बी)-क्रि० १ तलाश कराना, ढूँढवाना । २ शोध कराना । ३ पद चिह्न दिखाना ।

खोजी-वि० १ हुंढने, तलाश करने वाला । २ पद चिह्न-विशेषज्ञ । -पु० वह ऊंट जिसके जन्म से ही ग्रंथकोश की गोली न हो ।

खोजी-पु० [फा० खजा] १ नपुंसक व्यक्ति जो मुसलमानी रनिवास का द्वाररक्षक होता था । २ बकरी के बालों की दरी । ३ नपुंसक व्यक्ति । ४ बिना गोली के ग्रंथकोशों वाला ऊंट । ५ सेवक, अनुचर । -वि० वह जो महलों में सेवा करने के लिए हिजड़ा बनाया गया हो ।

खोजी, खोजी-पु० [फा० खज] १ जेब । २ छोटा घंटा ।

खोटंगी-वि० (स्त्री० खोटंगी) १ छली, कपटी, धूर्त । २ अंगहीन, अंग-अंग ।

खोट-स्त्री० [सं० खोट] १ भूल, गलती । २ अशुद्धि । ३ दोष अवगुण । ४ मिलावट । ५ कपट, छल । ६ पाप । ७ अपराध । ८ हानि, क्षय, कमी । ९ कलंक । १० काम से जो चुराने का भाव । ११ असत्य, झूठ । -वि० १ लंगड़ा । २ मिथ्यावादी । ३ नाशवान । -**खंगी-वि०** छली, कपटी, धूर्त । अंगहीन । -**करमी, करसी-वि०** दूषित कर्म करने वाला, पापी । छली कपटी । व्यभिचारी । -**खबाड़-स्त्री०** भूल-चूक ।

खोटड़-वि० बखवान, जक्तिशानी ।

खोटण-स्त्री० बालों को कूटकर अनाज निकालने का डंडा ।

खोटणी (बो)-क्रि० १ ठोकना । २ पीटना ।

खोटबो, खोटमो, (बो)-पु० १ गुप्तांग के बाल । २ शीघ्र क्रिया ।

खोट-रखी-वि० कपटी, धूर्त, छलिया ।

खोटहड़, खोटहड़ियौ-वि० १ वीर, बहादुर । २ फुला हुआ । ३ विस्तृत ।

खोटई-स्त्री० १ बुराई, अवगुण । २ क्षुद्रता, तुच्छता । ३ मिलावट । ४ कपट, छल । ५ हरामखोरी । ६ असत्य ।

खोटि-स्त्री० सीमा, हद ।

खोटो-क्रि० वि० १ प्रतीक्षा में, इन्तजार में । २ व्यर्थ में । -**स्त्री०** प्रतीक्षा, इन्तजार । -**वि०** दोषपूर्ण । खराब ।

-**कब-स्त्री०** झूठी बात ।

खोटोपी-पु० १ विलम्ब, देर । २ कार्य का व्यवधान । ३ कार्य रुके रहने की दशा । ४ प्रतीक्षा में व्यर्थ गंवाया हुआ समय ।

खोटो-वि० (स्त्री० खोटो) १ अवगुणी, दोषी । २ बुरा, अनुचित । ३ मिथ्यावादी, झूठा । ४ कामचोर । ५ निकम्मा । ६ विकट, भयंकर । ७ भाग्यहीन, अभाग । ८ जो खरा न हो । ९ अशुद्ध ।

खोड-पु० [सं०] १ नाश होने वाली वस्तु । २ शंख । ३ शरीर । ४ जंगल । -**स्त्री०** ५ खेतों में क्यारी बनाने की विधि । ६ देखो 'खेड' । ७ लकड़ी, काष्ठ । -**वि०** १ नाशवान । २ लंगड़ा ।

खोडसोपचार-देखो 'सोडसोपचार' ।

खोडि, (डो)-स्त्री० १ कमी न्यूनता । २ चूरा, भूसा । ३ दाढ़ी बनाने का रेजर । ४ एक कृषि उपकरण । ५ बेरों को कूटकर महीन किया हुआ चूर्ण । ६ भुरट नामक घास के बीज । ७ देखो 'खोडी' ।

खोडी-पु० १ खेत की क्यारी । २ नमक की क्यारी । ३ खाद्य पदार्थ विशेष ।

खोण, खोणा, (णि, रणी)-स्त्री० [सं० क्षोणि] पृथ्वी, धरती ।

खो'णी (बो)-देखो 'खोसणी' (बो) ।

खोणी (बो)-क्रि० १ गंवाता, खोना । २ नष्ट करना, नाश करना । ३ हाथ से निकल जाने देना ।

खोत-देखो 'खोथ' ।

खोतरणी (बो)-क्रि० कुदेना । कुचरना । रगड़ना ।

खोतली-देखो, 'खोयली' ।

खोतरी (बो)-पु० वह ऊंट जिसके शरीर के बाल उड़ गये हों ।

खोती-पु० १ ऊत के अन्दर का मूल । २ गधा । -**वि०** १ जाति च्युत । २ देखो 'खोथो' ।

खोत्राड़ी-पु० [सं० क्षोणि-त्रोड] १ सूत्र । २ बीर बहादुर ।

खोथ-पु० ऊंट या बकरी के बाल उड़ने का एक रोग ।

खोथळी, खोथी-पु० (स्त्री० खोथी, खोथली) १ बिना साफ की हुई ऊत का गुच्छा । २ खोथ रोग से पीड़ित ऊंट या बकरी । ३ नपुंसक, हिजड़ा ।

खोब-पु० [फा०] १ लोह का टोप, शिरवाण । २ खुदाई ।

खोवणी (बो)-क्रि० [सं० खन्] १ जमीन या किसी स्थान की खुदाई करना । २ उखाड़ना । ३ बर्तनों आदि पर खुदाई का कार्य करना, नक्काशी करना ।

खोबरडो-पु० गृहस्थ संबंधी कार्यों का सिलमिला ।

खोवाई-स्त्री० १ उदंडता, उज्जड़पन, अड़ियलपन । २ देखो 'खुदाई' ।

खोवाणी (बो), खोवावणी (बो)-क्रि० १ जमीन या किसी स्थान की खुदाई कराना । २ उखाड़वाना । ३ बर्तनों पर नक्काशी कराना ।

खोदालाप-स्त्री० नये आबाद गांवों व ढाणियों वालों से वसूल किया जाने वाला एक कर ।

खोवो, खोव्यो-देखो 'खोवो' ।

खोघ-पु० शोध, रोप, गुस्सा ।

खोनेड़ी-स्त्री० [सं० खन्] मिट्टी की खदान स्थान ।

खोपड़ी-स्त्री० [सं० कर्पर] १ शिर का ऊपरी भाग, उपरी हड्डी । २ कपाल । ३ मस्तक । ४ बूढ़ी गाय ।

खोपड़ी-पु० १ नारियल । २ नारियल की गिरी का आधा भाग । ३ सिर कपाल ४ बूढ़ा बैल ।

खोपणी

(२७३)

खोमाळ

खोपणी (बौ)-क्रि० १ रोपना, गाड़ना । २ चुभाना । ४ धंसाना ।

खोपरी-देखो 'खोपड़ी' ।

खोपरेल-पु० नारियल का तेल ।

खोपरी-देखो 'खोपड़ी' ।

खोपाणी (बौ) खोपावणी (बौ)-क्रि० १ रोपाना, रुपवाना । गड़वाना । २ चुभवाना । ३ धंसवाना ।

खोपी-स्त्री० मस्तक का ऊपरी भाग ।

खोपी-पु० (स्त्री० खोपी) वृद्ध बैल ।

खोबाबाजी-स्त्री० अफीम का पानी कुत्तू में भर कर पीने या पिलाने की क्रिया ।

खोबो-पु० श्रंजली ।

खोभ-पु० [सं० क्षोभ] १ भय, घबराहट । २ दुःख, रंज । ३ शोक, पश्चाताप । ४ क्रोध । ५ सोच, फिक्र । ६ रोपाई, रोप ।

खोभणी (बौ)-क्रि० १ घबराना । २ दुःख या रंज करना । ३ शोक या पश्चाताप करना । ४ क्रोध करना । ५ फिक्र करना । ६ रोपना ।

खोभ-स्त्री० कुर्ज ।

खोभणी-स्त्री० सोने या चांदी की गोली बनाने का उपकरण ।

खोय-पु० दोष, कलंक ।

खोयण-स्त्री० अक्षौहिणी सेना ।

खोर-पु० १ बाल कटाई, क्षीर कर्म, हजामत । २ कुम्हों के मालिकों से लिया जाने वाला कर । ३ देखो 'खीर' । -वि० १ लंगड़ा । २ शब्दों के आगे लग कर 'वाला' अर्थ देने वाला प्रत्यय ।

खोरड़ी-पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ वृद्ध ।

खोरी-देखो 'खोरी' ।

खोळ-पु० १ पर्वतों का दर्रा । २ शरीर, गात । ३ अंक, गोद । ४ आवरण, गिलाफ । ५ खोखला भाग । ६ दुल्हन की भोजी भरने की क्रिया या रस्म । ७ सिंह की मांड । ८ देखो 'खोळो' ।

खोलड़ (डो)-पु० खंडहर ।

खोलजोळियो-देखो 'कोळजोळियो' ।

खोळण-पु० १ देवमूर्ति का प्रक्षालन कराया हुआ जल, चरणा-मृत । २ धोवण । ३ पात्रादि को धोकर लिया गया जल ।

खोलणी (बौ)-देखो 'खोळणी' (बौ) ।

खोलाणी (बौ)-क्रि० १ ढक्कन हटाना, खुला करना । २ जुड़े हुए को अलग करना । ३ अवरोध या रोक हटाना । ४ आवरण हटाना । ५ बंधन मुक्त करना । ६ फाड़ना । ७ चालु करना, जागि करना । ८ प्रारम्भ करना । ९ शिकार के पशु की चमड़ी उतारना । १० भेद, रहस्य प्रगट करना ।

११ मन की बात कहना । १२ नष्ट करना । १३ वस्त्र आदि उतारना ।

खोलवी-स्त्री० धनाढ्यो या गैर कृषकों से लिया जाने वाला कर ।

खोळाणी (बौ) देखो 'खोळाणी' (बौ) ।

खोलाणी (बौ), खोलावणी (बौ)-क्रि० १ ढक्कन हटवाना, खुला करना । २ जुड़े हुए को अलग करवाना । ३ अवरोध हटवाना, रोक हटवाना । ४ आवरण हटवाना । ५ बंधन मुक्त करवाना । ६ फाड़वाना । ७ चालु करवाना । ८ प्रारम्भ करवाना । ९ शिकार के पशु की चमड़ी उतारवाना । १० मन की बात उमलवाना । ११ भेद या रहस्य खुलवाना । १२ नष्ट कराना । १३ वस्त्रादि उतारवाना ।

खोळाघत (ती)-वि० गोदलिया हुआ, दत्तक ।

खोळीयो-देखो 'खोळी' ।

खोळी-स्त्री० १ गिलाफ, आवरण । २ भोजी । ३ केसर का शरीर पर किया हुआ लेप । ४ ऊट के चारजामे का एक वस्त्र विशेष ।

खोळीड़ी-स्त्री० बोलने के बीज की धँली जो कृषक के कमर में बंधी रहती है ।

खोळी-पु० १ शरीर, गात । २ गोद, अंक । ३ आवरण । ४ गिलाफ । ५ भोज । ६ देखो 'खोळी' ।

खोवणी-वि० १ नाश करने वाला । २ गुमाने वाला ।

खोवणी (बौ)-देखो 'खोणी' (बौ) ।

खोवणी (बौ)-देखो 'खोसणी' (बौ) ।

खोवाखूँ-बौ-पु० १ लूट-पाट । २ छीना-भपटी । ३ मारकाट ।

खोवाणी (बौ)-क्रि० १ नष्ट कराना, नाश कराना । २ हाथ से निकल जाने का अवसर देना । ३ गुम कराना, गमवाना ।

खोवाणी (बौ)-क्रि० १ नष्ट कराना । २ देखो 'खोसाणी' (बौ) ।

खोसणी (बौ)-क्रि० १ छीनना, भपटना । २ लुटना, डाका डालना । ३ जबरदस्ती ले लेना । ४ गुमाना, खो देना ।

खोसरी-पु० वेश्या का दलान ।

खोसाणी (बौ), खोसावणी (बौ)-क्रि० १ छीना-भपटी करना । २ लुटवाना, डाका डालवाना । ३ जबरदस्ती लिया लेना ।

खोसो-पु० लुटेरा, डाकू ।

खोह-स्त्री० [सं० गुहा] १ गुफा, कन्दरा । २ बड़े पेड़ के तने का खोखलापन । ३ सुखने, सोखने या झुलसने का भाव ।

खोहण (णी)-स्त्री० अक्षौहिणी सेना ।

खोहल देखो 'खोह' ।

खोहळो-पु० १ पानी का गड्ढा । २ जलाशय । ३ देखो 'खोळो' ।

खोहण (णि, णी)-देखो 'खोहण' ।

खोमाळ-देखो 'खोमाळ' ।

औखो-देखो 'खांडो' ।

औखाट-देखो 'खेंखाट' ।

औड़ो-१ देखो 'खोड़' । २ देखो 'खोळ' ।

खोड़-पु० १ शंख । २ देखो 'खोड़ी' ।

खोड़ियो-पु० खजूर नामक फल ।

खोड़ी-देखो 'खोड़ी' ।

खोड़ी-देखो 'खोड़ी' ।

खोरी-पु० बिना बधिया किया बेल, सांड, बिजार । २ उद्ण्ड
एव बदमाश व्यक्ति । ३ उज्जड़, अड़ियल ।

खोप (फ)-पु० [अ० खोफ] १ डर, भय, आतंक । २ सदमा ।
३ खतरा, जोखिम । ४ संदेह, सुबहा ।

खोर-स्त्री० १ वृद्ध मादा ऊंट, वृद्ध ऊंटनी । देखो 'खोर' ।

खोरी-पु० १ खजली का एक रोग । २ बालों के नीचे जमने
वाला मेल । ३ मैस । ४ वृद्ध ऊंटनी ।

खोळ, खौळ-स्त्री० १ कोमल घाम । २ टीका । ३ पर्वत की
गुफा । ४ देखो 'खोळ' ।

खोळायत (ती)-देखो 'खोळायत' ।

खौळियो-पु० १ शरीर, देह । २ देखो 'खौळो' ।

खोळो, खौळो-पु० १ गोद, अक । २ पहने हुए वस्त्र का कुछ
डालने के लिए बनाया हुआ भोला । ३ इस भोले में
भाने वाला सामान । ४ देखो 'खोळ' ।

खोहण-देखो 'खोहण' ।

खयत्री-१ देखो 'क्षत्री' । २ देखो 'खत्री' ।

ख्यात-देखो 'खांत' ।

ख्यांतोली-देखो 'खांतोली' । (स्त्री० ख्यांतोली)

ख्यात-स्त्री० [सं०] १ इतिहास संबंधी विवरण । २ प्रशस्ति
मूचक रचना । ३ वृत्तान्त, वर्णन । ४ कथा । ५ वन ।

६ यश, ख्याति । -वि० १ प्रसिद्ध । २ विदित ।

ख्यातनी, ख्याति-स्त्री० [सं० ख्यातः] १ प्रसिद्धि, यश ।
शीहरत । २ गौरव । ३ पदवी, उपाधि । ४ प्रशंसा ।
५ वर्णन । ६ ज्ञान ।

ख्याल-पु० [अ० खयाल] १ ध्यान, विचार स्मृति, याद ।
२ अनुमान, अंदाज, कल्पना । ३ भाव, सम्मति । ४ आदर,
लिहाज । ५ एक गायन विशेष । ६ खेल, क्रीड़ा । ७ नाच-
गाना । ८ हंसी-मजाक । ९ इतिवृत्तात्मक प्रेमगाथा जो
अभिनय के साथ नाच-गा के सुनाई जाय ।

ख्यालक-वि० १ खयाल करने वाला । २ कलाकार । ३ वाद्यकार ।

ख्यालबती-स्त्री० हंसी, दिल्लगी करने वाली ।

ख्याली-वि० [अ० खयाली] १ मन-गढ़न्त, कल्पित । २ फर्जी,
झूठी । ३ खल्ली, सनकी । ४ खयाल संबंधी ।

ख्योली-स्त्री० [सं० खोली] पृथ्वी, घरा । -यति-पु० राजा,
नरेश ।

खब-देखो 'खरब' ।

खबाजा-पु० [फा०] १ मालिक मरदार । २ ऊंचा फकीर ।
३ नवाबों के हरम का नपुंसक प्रहरी । ४ अजमेर की एक
दरगाह । ५ एक बादशाही पद ।

खबाजेसरी-पु० बादशाह के हरम का नपुंसक प्रहरी ।

खबाब-पु० [फा०] स्वप्न ।

खबार-वि० [फा०] १ नष्ट, बर्बाद । २ खराब, बेकार ।
३ तिरस्कृत । ४ दुर्दशाप्रस्त ।

खबारी-स्त्री० [फा०] १ खराबी । २ बरबादी, विनाश ।
३ अनादार, तिरस्कार । ४ दुर्दशा ।

खबास-देखो 'खवास' ।

खबाहिस-स्त्री० [फा०] इच्छा, अभिलाषा । -मव-वि०
इच्छुक, अभिलाषी ।

— ग —

ग-नागरी लिपि के क वर्ग का तीसरा वर्ण ।

गं-पु० [सं०] भजन, गीत ।

गंऊ (गौ)-पु० [सं० गोधूमः] गेहूं ।

गंऊआळ (वाळ)-देखो 'गंवाळ' ।

गंग-पु० १ अकबर कालीन एक कवि । २ नाक का दाहिना
छिद्र (योग) । ३ तीर, बाण । ४ गंगा नदी । ५
मकान की नींव । -गाज-पु० भीष्म । -गरधर-पु०
शिव, महादेव । -जळ-पु० गंगाजल । -घर-पु० शिव,

महादेव । -वर-पु० सागर, समुद्र । -वर-पु० शिव,
महादेव । -वार-पु० गंगाजल । -सिर, सीस-पु०
शिव, महादेव ।

गंगई-स्त्री० मेना जाति की चिड़िया ।

गंगला-स्त्री० एक का प्रकार शलजम ।

गंगा-स्त्री० [सं०] १ भारत की एक प्रधान नदी जो हिमालय
से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है । २ राजा
शांतनु की स्त्री, भीष्म की माता । -वि० श्वेत, सफेद,

उज्ज्वलः । —गङ्गदी, गङ्गदी-स्त्री०—हुंकार की आवाज ।
—जमना, जमनी-स्त्री०—दो पदार्थों के मेल से बनी वस्तु । एक प्रकार की चिमल । एक वस्त्र विशेष । एक प्रकार का ग्रामपण विशेष । एक देशी खेल । —वि०दुरंगा, श्वेत-श्यामः । —जल्ल-पु० गंगा नदी का पवित्र जल । घोड़ों की एक जाति, उक्त जाति का घोड़ा । एक उत्तम श्रेणी का वस्त्र । डिगल के बेलियो साखोर का एक भेद । —जळी-पु० कांच या घातु का बना एक पात्र विशेष । टोंटीदार जन पात्र । एक प्रकार का घण्ट । मृतक की श्रद्धियां गंगा प्रवेश करने के उपरांत निश्चित समय पर किया जाने वाला भोज । —जान्ना-स्त्री० गंगा की यात्रा । मृत्यु के समय गंगा की ओर गमन । मृत्यु । —बसपो-स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ला दशमी । —द्वार-पु० गंगा का उद्गम स्थल । हरिद्वार । —धर-पु० शिव महादेव । एक धौषधि विशेष । चौबीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त । —नंद, नंदन-पु० स्वामिकार्तिकेय । भीष्म । —पष-पु० गंगा का रास्ता । आकाश, व्योम । आकाश गंगा । —पुत्र-पु० भीष्म । स्वामिकार्तिकेय । गंगाघाट के पंजे । गंगा नदी से प्राप्त छोटे-छोटे पत्थर । —मग-पु० आकाश । तीन की संख्याः । —सप्तमी, सप्तमी-स्त्री० वैशाख शुक्ला सप्तमी । —सागर-पु० कलकत्ते के पास का एक तीर्थ जहां गंगा समुद्र में मिलती है । एक टोंटीदार जल पात्र —सुत-पु० भीष्म । स्वामिकार्तिकेय ।

गंगिकाज-पु० १ गंगा सुत, भीष्म । २ स्वामिकार्तिकेय ।
गंगेड (ऊँ)-देखो 'गंगेय' ।
गंगेड़-स्त्री० १ नशा । २ नशे की दशा में आने वाला चक्र ।
गंगेड़ियो, गंगड़ी-१ देखो 'घड़ोटियो' । २ देखो 'गंगूड़ी' ।
गंगेड़ियो-पु० १ जाति विशेष का घोड़ा । २ देखो 'घड़ोटियो' ।
गंगेय-देखो, 'गंगेय' ।
गंगेरण-पु० [सं० गंगेहकी] नागबला ।
गंगेय-देखो 'गंगेय' ।
गंगेस-पु० [सं० गंगेश] शिव, महादेव ।
गंगोतरी-स्त्री० [सं० गंगावतार] गंगा का उद्गम स्थल ।
गंगोव (बक)-पु० [सं०] १ गंगाजल । २ चौबीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त ।
गंगोलियो-पु० एक प्रकार का नींबू ।
गंज-पु० [सं० कंज] १ शिर के बाल उड़ने का एक रोग । २ शरीर में फुंसियां उठने का एक रोग । ३ चौबीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त । ४ काव्य छंद का एक भेद । ५ ज्योतिष के २७ योगों में से एक । [सं० गंजा] ६ शराब । ७ शराबघर । ८ डेर, समूह । ९ घुंघरी । १० ऊंट ।

११ युद्ध । १२ कोप, खजाना ।
गंजका-स्त्री० एक वर्णिक छंद विशेष ।
गंजगोळी-पु० तोप का वह गोला जिसमें छोटी-छोटी गोल्फियां भरी हों ।
गंजण (न)-पु० [सं० गंजन] संगीत का एक ताल भेद । —वि० १ नाश करने वाला, मिटाने वाला । २ पराजित करने वाला । ३ दवाने वाला ।
गंजणरोर-पु० १ मेघ, बादल । २ ईश्वर । ३ दातार ।
गंजणी-देखो 'गंजण' ।
गंजणी (बी)-क्रि० १ नाश करना, नष्ट करना, मारना । २ जीतना पराजित करना । ३. दवाना, दमन करना ।
गंजवाळ-वि० १ पराजित करने वाला । २ नष्ट करने वाला ।
गंजा-स्त्री० खदान, खान ।
गंजापह-पु० [सं० गंजापह] शराब खाना ।
गंजार-स्त्री० १ तोप की आवाज । २ देखो 'गुंजार' ।
गंजी-स्त्री० १ कपड़े की सिली हुई बनियान । २ गुड़ और चावल के साथ बना खाद्य पदार्थ (मेवात) । ३ बिना बालों की ।
गंजीफा-पु० [फा०] ताल का एक खेल विशेष ।
गंजेकेरु-पु० भीष्म ।
गंजेड़ी-वि० गंजे का नशेबाज ।
गंजी-वि० [सं० कंज] गंज रोग से उड़े बालों वाला, गंजा । —पु० गंजा ।
गंठ-देखो 'गांठ' ।
गंठकटी-वि० जब कतरा, चोर ।
गंठड़ी-देखो 'गांठ' ।
गंठड़ी-देखो 'गंठी' ।
गंठजोड़ी-देखो 'गंठजोड़ी' ।
गंठणी (बी)-क्रि० [सं० ग्रंथन्] १ गांठा जाना । २ मित्रता होना । ३ धन प्राप्त होना, मिलना । ४ जूती को सिलाई किया जाना । ५ कस कर बंधना ।
गंठाई-स्त्री० १ गांठने या सीने का कार्य । २ ऐसे कार्य की भजदूरी । ३ मित्रता ।
गंठाणी (बी), गंठावणी (बी)-क्रि० १ गंठवाना । २ मित्रता कराना । ३ धन प्राप्त कराना । ४ जूता सिलवाना । ५ कस कर बंधवाना ।
गंठि-देखो 'गांठ' ।
गंठियो, गंठिलियो-पु० [सं० ग्रंथिल] १ जमीन पर छितराने वाला एक घास । २ एक प्रकार का वात रोग । ३ देखो 'गंठियो' ।
गंठैली-वि० गांठ वाला ।
गंठी-पु० [सं० ग्रंथिक] १ गांठ, गठूर, बोझा । २ ऊंट पर लादा जाने वाला लकड़ियों का गट्टर ।

गंड-पु० [सं०] १ कनपटी, गंडस्थल । २ हाथी का कुम्भस्थल ।
 ३ ताबीज, गंडा । ४ मलद्वार, गुदा ।
 गंडक (झी)-पु० (स्त्री० गंडकी, गंडकड़ी) कुत्ता, श्वान ।
 गंडको-स्त्री० १ भारत की एक नदी । २ एक ताल विशेष ।
 ३ कुतिया ।
 गंडमाल-स्त्री० [सं० गंडमाला] १ गले में ग्रंथियां होने का एक रोग । २ घोड़े का एक रोग ।
 गंडसूर-पु० ग्राम शूकर, ठट्टी खाने वाला सूअर ।
 गंडासी (सी)-स्त्री० १ किसी वस्तु को पकड़ने का औजार ।
 संडासी । २ एक प्रकार शस्त्र । ३ झाड़ी आदि काटने का उपकरण ।
 गंडियों-देखो 'गांडू' ।
 गंडी-स्त्री० १ दीपावली पर बनी मोर पंख की माला ।
 (मेवात) । २ मूर्ख स्त्री । ३ देखो 'गांड' ।
 गंडूपदधव-पु० [सं०] १ शीशा नामक धातु । २ जस्ता ।
 गंडूपदी-पु० एक कीट विशेष, गिजाई ।
 गंडी-पु० [सं० गंडक] १ गांठ, ग्रंथि । २ ताबीज के लिए बांधा जाने वाला गांठदार धागा, ताबीज, गंडा ।
 ३ घोड़े की गर्दन का बंध । ४ ईख का पौधा ।
 गंतव्य-वि० [सं०] १ जानने योग्य । २ गम्य । ३ निर्धारित लक्ष्य ।
 गंता-वि० राहगीर, यात्री ।
 गंठक-देखो 'गंधक' ।
 गंडगी-स्त्री० [फा०] १ मलिनता, मैलापन । २ मल, मेल ।
 ३ कूड़ा, कचरा । ४ अशुद्धता, अपवित्रता । ५ दुर्गन्ध ।
 ६ भ्रष्टता ।
 गंदणी (बी)-देखो 'गोदणी' (बी)
 गंधरप-१ देखो 'गंधरव' । २ देखो 'गंधक' ।
 गंठल-स्त्री० [सं० कंदल] १ कोपल, किसलय । २ मूली, प्याज आदि की रसदार कच्ची नाल ।
 गंठली-वि० (स्त्री० गंदली) १ मैला, कुचला । २ गंदा ।
 ३ अपवित्र । -पु० गंदला पानी ।
 गंवागल-पु० दोनों बगल में औरियों वाला घोड़ा ।
 गंदियों-पु० १ गेहूं की फसल के साथ होने वाला एक घास ।
 २ वर्षा ऋतु में होने वाला एक कोट । ३ देखो 'गंदी' ।
 गंदीवाड़ी-पु० १ गंदगी मैलापन । २ किसी स्थान पर पड़ा हुआ कूड़ा, कचरा, मल । ३ भ्रष्टाचार ।
 गंदली, गंदली-स्त्री० एक लुशबूदार घास ।
 गंदी-वि० [फा० गंदा] (स्त्री० गंदी) १ मैला, कुचला, गंदा ।
 २ मलिन, अशुद्ध । ३ धनीना । ४ संदे कार्य करने

वाला, भ्रष्ट । ५ सड़ा हुआ, बदबूदार । -पु० ऊंट के बालों की बनी दरी । -पांसी-पु० शराब, मद्य ।
 धातु, वीर्य ।
 गंधप, गंधव-१ देखो 'गंधक' । २ देखो 'गंधरव' ।
 गंध-स्त्री० [सं०] १ वास, बू । २ सुगंध । ३ बदबू । ४ पृथ्वी तत्त्व का गुण । ५ गंधक । ६ सुगंधित द्रव्य । ७ चंदन ।
 -रस-पांछक-पु० भौरा, भ्रमर ।
 गंधक-स्त्री० [सं०] १ एक पीला खनिज पदार्थ जो औषधि व बारूद बनाने के काम आता है । -वि० पीत, पीला ।
 -बटी-स्त्री० एक औषधि विशेष ।
 गंधगज-पु० [सं०] मस्त हाथी ।
 गंधगात-पु० [सं०] चंदन ।
 गंधग्राही (जाण)-स्त्री० घ्राणेन्द्रिय, नासिका ।
 गंधपत्र-पु० तमाल-पत्र ।
 गंधवह-देखो 'गंधवाह' ।
 गंधमद, गंधमाद-पु० हाथी, गज ।
 गंधमादन-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत का नाम ।
 गंधमायण-देखो 'गंधमादन' ।
 गंधमृग-पु० [सं० गंधमृग] कस्तूरी मृग ।
 गंधरव (व), गंधव-पु० [सं० गंधर्व] १ एक देव जाति जो गायन कार्य करते थे । २ घोड़ा । ३ गर्वियों का भेद ।
 ४ कस्तूरी मृग । ५ काली कोयल । ६ एक जाति जिसकी कन्यायें वेश्यावृत्ति व गायन करती हैं । -विद्या-स्त्री० संगीत । -विवाह-पु० प्रेम विवाह । -वेव-पु० चार उपवेदों में से एक ।
 गंधवती-स्त्री० एक पौराणिक नगरी ।
 गंधवह, (वहण)-पु० [सं० गंधवाह] १ वायु, हवा । २ नाक, नासिका ।
 गंधवाद-पु० बहतर कलाओं में से एक ।
 गंधवाह-पु० [सं०] १ वायु, पवन । २ नाक, नासिका ।
 -सुत-पु० भीम । हनुमान ।
 गंधविरोजा-पु० चीड़ वृक्ष का गोद ।
 गंधसार-पु० [सं०] चंदन ।
 गंधसुख-पु० [सं०] भ्रमर, मधुप ।
 गंधहर-पु० [सं०] नासिका, नाक ।
 गंधहस्ती-पु० [सं०] मदनोन्मत्त हस्ती ।
 गंधार-स्त्री० [सं० गांधार] १ सिंधु नदी के पश्चिम का प्रदेश ।
 २ इस प्रदेश का निवासी । ३ संगीत में एक स्वर ।
 ४ प्राणवायु । ५ स्वरस्थान, नासिका । ६ एक राग

विशेष । —पंचम-स्त्री० एक मांगलिक राग । —धैरव-
पु० एक राग विशेष ।

गंधारि (री)-स्त्री० [सं० गंधारी] १ गंधार देश की राज
कन्या । २ धृतराष्ट्र की पत्नी व कौरवों की माता ।
३ मेवराग । ४ गांजा । [सं० गंधहारिन्] ५ हवा, पवन ।
६ शरीरस्थ नौ नाड़ियों में से एक ।

गंधिनी-स्त्री० मदिरा, शराब ।

गंधियौ-देखो 'गंदियौ' ।

गंधी-देखो 'गंधी' ।

गंधीलौ-१ देखो 'गंदी' । २ देखो 'गंदियौ' ।

गंधोवाड़ी-देखो 'गंदीवाड़ी' ।

गंधेल. (घैल)-पु० एक शुश्रूषदार घास ।

गंधप. (अ व)-देखो 'गंधरव' ।

गंधवपति. (पत्नी)-पु० गंधर्व पति, कुबेर ।

गंधारी-स्त्री० [सं०] एक वृक्ष विशेष ।

गंधारी-पु० गर्भ-गृह ।

गंधीर-वि० [सं०] १ गहरा. अथाह । २ सघन, घना, गहन ।
३ गूढ़, जटिल । ४ धीर, पहा. भारी । ५ शांत, सौम्य ।
६ संगीत । ७ दृढ़ । ८ दुरभिगम्य । —पु० १ समुद्र ।
२ कमल । ३ शिव । ४ एक राग । ५ गुदा में होने वाला
एक फोड़ा । ६ नीम्बू ।

गंधीरता-स्त्री० १ गहराई । २ गहनता, घनत्व । ३ गूढ़ता ।
४ धीर व संगीत होने की दशा । ५ शांति, सौम्यता ।
६ दृढ़ता । ७ बड़प्पन, गौरव । ८ दुर्गम्यता ।

गंधीरवेदी-पु० अंकुश की परवाह न करने वाला हाथी ।

गंधीरा-स्त्री० एक नदी विशेष ।

गंधीरिया-स्त्री० गंधीरता, गहरापन ।

गंधीरी-पु० समुद्र ।

गंधर-पु० गर्व, दर्प ।

गंधार, गंधार-वि० [सं० ग्राम्य] (स्त्री० गंधारी) १ ग्रामीण,
देहाती । २ अग्रमध्य, अनाड़ी । ३ मूर्ख । ४ अज्ञान ।
अज्ञानी ।

गंधारिणा-स्त्री० चूड़ी, कांच, कंघे का व्यवसाय करने वाली
एक जाति ।

गंधारी-स्त्री० १ गंधारपन, देहातीपन, ग्रामीणता ।
२ मूर्खता । ३ अज्ञानता ।

गंधारु-वि० १ गंधार की तरह । २ गंधार जैसा । ३ असम्भ्यता
पूर्ण ।

गंधाळ-पु० [सं० गोधूमपाल] रबी की फसल की भूमि ।

गंस-स्त्री० १ शोध, गुस्मा । २ ईर्ष्या, द्वेष । ३ ग्रथि,
गांठ । ४ कसर । ५ व्यंग्योक्ति, ताना ।

ग-पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण । २ गणेश । ३ प्रधान व्यक्ति ।
४ हाथ । ५ पत्नी । ६ प्राण । ७ जल । ८ एक राग ।
९ वायु । १० गंध । ११ प्रीति १२ छंदशास्त्र में गुरु-
बोध सूचक अक्षर । १३ गंधर्व ।

गइंद. गइंदव (हो)-पु० [सं० गजेन्द्र, गजवर] हाथी, गज ।

गइ-१ देखो 'गति' २ देखो, 'गज' ।

गइजूह-पु० [सं० गज-युध] हस्ती समूह, गज-समूह ।

गइणंग गइणग, गइणंग (गि. रिण) देखो 'गगन'

गहन-१ देखो, 'गजेंद्र' २ देखो, गहन ३ देखो 'गगन' ।

गहली-स्त्री० सवारी । —वि० पगली ।

गहली-पु० रास्ता, पथ । —वि० पागल ।

गईंद (घ)-देखो 'गइंद'

गई-स्त्री० [सं० गति] १ गति । २ गपन । ३ मार्ग । ४
उपाय । ५ दशा । ६ धूप । ७ किसी बात को छोड़ देने की
क्रिया या भाव । —वाळ-वि० अयोग्य । अपाय ।
—वाळण-वि० गुमी हुई को प्राप्त करने वाला ।

गउ-देखो 'गऊ'-खानौ='गऊखानौ'

गउख-देखो 'गऊख'

गउगूळक-देखो 'गोधूळिक' ।

गउर (उ)-पु० [सं० गौरव] १ वर के सम्मानार्थ कन्यापक्ष को
धोर से दिया जाने वाला भोजन । —स्त्री० [सं० गौ]
२ पृथ्वी, भूमि । ३ देखो 'गवर' । ४ देखो 'गऊ' ।

गउख-देखो 'गऊ' ।

गऊ-पु० गेहूं नामक अनाज ।

गऊ (व)-स्त्री० [सं० गौ] गाय, गी । —खानौ-पु० गोशाला ।
२ बैलगाड़ियाँ, रथ आदि रखने का स्थान व इनकी व्यवस्था
करने का राजकीय विभाग । —चरी-पु० गोचर । —बान-
पु० गाय का दान, गोदान । —भेक, भेक-वि० भोला भाला,
सीधा सादा । कायर । —मुख='गोमुख' । —मुखी='गोमुखी' ।

गऊड़ी-स्त्री० [सं० गौ] गाय का वंशज । बैल । —वि०
गरीब, निर्बल ।

गएण, गगण (न, ण)-पु० [सं० गगन] १ आकाश, नभ ।
२ अन्तरिक्ष । ३ शून्य । ४ स्वर्ग । ५ छप्पय छंद का ६१ वां
भेद । ६ आर्या का एक भेद । —कुसुभ-पु० आकाश
पुष्प । —गति, वर-पु० नभचारी । पक्षी । विमान । सूर्य,
चन्द्रादि ग्रह । देवता । असुर । बादल । —ध्वज-पु० सूर्य ।
बादल । —पति-पु० उद्भ । —भेदी-वि० अधिक ऊंचा ।
अधिक जोर का । —मंडळ-पु० नभमंडल । मस्तिष्क ।
—मिण-पु० सूर्य । —वटी-पु० सूर्य । —बांली-स्त्री०
आकाशवाणी । —स्पर्सी-वि० गगनचुम्बी ।

गगनांगना-स्त्री० देवांगना, अप्सरा ।

गगनांग-पु० एक मात्रिक छंद विशेष ।
 गगनांबु-पु० वर्षा का पानी, वृष्टि-जल ।
 गगनाग-पु० मात्रिक छंद विशेष ।
 गगनापति (पती)-पु० [सं० गगनपति] सूर्य । बादल ।
 गगनि-देखो 'गगन' ।
 गगनेचर-देखो 'गगनचर' ।
 गगन्न-देखो 'गगन' ।
 गगराड़ी, गगराड़ी-स्त्री० मिट्टी का छोटा पात्र जो लक्ष्मी पूजन में काम आता है ।
 गगराज-देखो 'गधराज' ।
 गग-पु० ऊंट ।
 गधराज (राज)-पु० ऊंट ।
 गधळ-स्त्री० पशुओं की जुगाली की ध्वनि ।
 गधरनिसाणी-स्त्री० निसाणी छंद का एक भेद ।
 गड़ग-देखो 'गिड़कंद' ।
 गड़-पु० [सं० गड़ु] १ गांठ व पीपदार बड़ा फोड़ा । २ ग्रंथि, गांठ । ३ बराहप्रवतार । ४ देखो 'गिड़' ।
 गड़कंद-देखो 'गिड़कंद' ।
 गड़कणी (बो) गड़काणी (बो)-देखो 'गुड़काणी' (बो) ।
 गड़क्क-स्त्री० १ डुवकी की आवाज । २ नक्कारे की ध्वनि ।
 गड़क्कणी (बो)-१ देखो 'गुड़कणी' (बो) । २ देखो 'गड़गड़णी' (बो) ।
 गड़गड़-स्त्री० १ गड़गड़ ध्वनि, गड़गड़ाहट । २ तोप की आवाज । ३ नगाड़े की ध्वनि । ४ बादलों की गर्जन । ४ अपच से पेट में होने वाली ध्वनि ।
 गड़गड़णी (बो)-क्रि० १ गड़गड़ाहट होना । २ नगाड़े बजना । ३ गर्जना । ४ दहाड़ना । ५ भागना, दौड़ना । ६ डुवके की गुड़गुड़ होना । ७ लुड़कना । ८ कोप करना । ९ तोप की आवाज होना । १० समुद्र की ध्वनि करना । ११ मस्ती से चिंताड़ना (हाथी) ।
 गड़गड़ाट-स्त्री० गड़गड़ाहट, गर्जन, ध्वनि ।
 गड़गड़ाणी (बो)-क्रि० १ गड़गड़ाना । २ नगाड़े बजाना । ३ भगाना, दौड़ना । ४ लुड़काना । ५ हुक्का पीना ।
 गड़गड़ी-स्त्री० १ अपराधियों को दण्ड देने का एक काष्ठ यन्त्र २ बड़ी गिरी ।
 गड़गड़ी-देखो गुड़गुड़ी ।
 गड़गूबड़-पु० चिथड़े, लत्ते ।
 गड़गूबड़ (गूमड़)-पु० फोड़े फुंसों का चर्मरोग ।
 गड़गणी (बो)-देखो 'गड़गड़णी' (बो) ।
 गड़थल, गड़थली-देखो 'गड़थल' ।
 गड़दनी (वांनी)-स्त्री० गर्दन का पिछला भाग ।
 गड़बड़-स्त्री० १ क्रम भंग । २ बाधा, विघ्न । ३ नियम विरुद्ध

कार्य । ४ अव्यवस्था, कुप्रबंध । ५ खराबी । -वि० १ ऊंचा-नीचा । २ क्रमविहीन । ३ अनियमित । ४ बुरा, खराब ।
 गड़बड़ाट-स्त्री० १ घबराहट । २ गड़बड़ी ।
 गड़बड़ाणी (बो), गड़बड़ावणी (बो)-क्रि० १ क्रम भंग होना । २ विघ्न पड़ना । ३ भूल पड़ना । ४ घबराना । ५ अव्यवस्था होना । ६ बिगड़ना, नष्ट होना । ७ खराब करना, बिगाड़ना ।
 गड़बो-पु० १ टूटा हुआ मिट्टी का पात्र । २ विकृत हिंदवानी का फल ।
 गड़गड़-पु० १ लुड़कने का क्रम । २ लुड़कने की ध्वनि । -क्रि० वि० लुड़कते हुए ।
 गड़ासंध (सिध)-पु० सीमा, हद ।
 गड़िड़ी-पु० १ लुड़क कर पड़ने की क्रिया । २ मिर टकराने की ध्वनि । ३ किमी वस्तु के गुड़कने की ध्वनि ।
 गड़ियणी (बो) गड़ियणी (बो)-१ देखो 'गड़गड़णी' (बो) । २ देखो 'गुड़कणी' (बो) ।
 गड़ोजणी (बो)-क्रि० [सं० गुर्वणम्] १ भैरव का गर्भ धारण करना । २ गड़ा जाना ।
 गड़ूकणी (बो)-क्रि० १ गड़गड़ शब्द करना । २ गर्जना । ३ मांसाहारी पक्षियों का मस्ती में चीं-चीं । ४ दहाड़ना ।
 गड़ूथल, गड़ूथल, गड़ूथली, गड़ूथल, गड़ूथली-पु० कुलांच ।
 गड़ूस-देखो 'घड़ूस' ।
 गड़ो-पु० ओला, हिमकण ।
 गड़ूथल-देखो 'गड़ूथल' ।
 गच-स्त्री० १ पैनी वस्तु का किसी में घुसने की क्रिया या ध्वनि । २ आंगन का मसाला । ३ मसाला जमाया हुआ आंगन ।
 गचक-पु० धक्का, भटका ।
 गचकारी (गोरी)-स्त्री० गच भरने का कार्य, घूने का कार्य ।
 गचगर-पु० गच भरने वाला कारीगर ।
 गचरकी-देखो 'गुचरकी' ।
 गचलाणि-देखो 'गिचलाणि' ।
 गच्छ-पु० [सं०] १ वृक्ष । २ अंक मणित का पारिभाषिक शब्द विशेष । ३ जैन मानुषों का समूह या समुदाय । ४ साधु समुदाय । ५ एक ही जैन मध्प्रदाय के अनुयायी ।
 गच्छी-स्त्री० मकान की छत ।
 गछत-स्त्री० जाने की क्रिया, गमन ।
 गजंद, (द्र)-देखो 'गजेद्र' ।
 गज-पु० [सं०] १ हाथी, हस्ती । २ महिषामुर का पुत्र एक राजा । ३ राम सेना का एक वानर । ४ गंडासा, परशु ।

५ एक प्रकार का सर्प । ६ बंदूक में बारूद जमाने की छड़ ।
 ७ वस्त्र नापने का उपकरण । ८ बेलगाड़ी के पहिये में
 लगने वाली एक पतली लकड़ी । ९ सारंगी बजाने का
 धनुषाकार उपकरण । १० ज्योतिष की नक्षत्र बाधियों में
 से एक । ११ आठ की संख्या । १२ चार मात्रा के ङण
 के प्रथम भेद का नाम । १३ अंत गुरु की चार मात्रा का
 नाम । —अंतन-पुं० गणेश । —अर, अरि-पुं० सिंह ।
 —उछाछ, उपाड़-पुं० भीम । —वि० बलवान, शक्तिशाली ।
 —उज्ज-पुं० सफेद हाथी । इन्द्र का हाथी । —कान-वि०
 चंचल । —कुंभ-पुं० हाथी के मस्तक के दोनों ओर उठे
 हुए भाग । —खंभ-पुं० शक्तिशाली, बलवान, प्रचंड, प्रबल
 वीर । —गत, गति-स्त्री० हाथी की चाल । मस्त चाल ।
 डिंगल का एक गीत । एक छंद विशेष । रोहिणी, मृगशिरा
 और आर्द्रा में शुक्र की स्थिति या गति । —गमणी, गवणी,
 गांभिणी-स्त्री० हाथी की तरह मस्त चाल से चलने वाली
 स्त्री । —गाह, गा, गाव, गाह, ग्राह-स्त्री० हाथी की भूल । घोड़े
 के चारजामे के साथ बांधा जाने वाला उपकरण । युद्ध ।
 संहार नाश, ध्वंस । हाथियों का दल । वीर पुरुष । एक
 प्रकार का घोड़ा । हाथी का दान । —वि० गजगामिनी ।
 —गोरी-स्त्री० बड़िया लोहा । —घडा-स्त्री० हस्ती
 सेना । —छाया-स्त्री० ज्योतिष का एक योग ।
 —जिबा-स्त्री० योग की नौ नाड़ियों में से
 एक । —झल, (त्ल)-वि० जबरदस्त, शक्तिशाली ।
 —ठेल-वि० शक्तिशाली, बलवान । —ढल, ढाल-स्त्री०
 हाथी के मस्तक का कवच । —तार, तारण-पुं० विष्णु ।
 —थट्ट, थाट-पुं० हस्ती सेना । —वंत-पुं० हाथी का दांत ।
 दांत पर निकला दांत । एक प्रकार का घोड़ा । नृत्य की
 एक मुद्रा । —वंती-वि० हाथी दांत का बना । —दसा-
 स्त्री० अष्ट ज्योतिष में ग्रह की दशा । —घर-पुं० मकान
 बनाने वाला मिस्त्री । दर्जी । सरकारी बड़ई । एक प्रकार
 की बनावट का भवन विशेष । —नांमौ-पुं० हाथी चलाने
 का अंकुश । —नाळ, नाळी-स्त्री० एक बड़ी तोप । हाथी पर
 रखी जाने वाली एक अन्य तोप । —पत, पति, पत्ति-पुं०
 हाथियों वाला राजा । ऐरावत हाथी । —स्त्री० बुद्धि, अस्म ।
 मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम । —पात-पुं०
 वह कवि जिसे राजा द्वारा हाथी दिया गया हो ।
 —पाळ-वि० महावत । —पीपर, पीपळ (ळी)
 —स्त्री० मंभोले रुद का पौधा विशेष । बड़ी पीपल ।
 —पुट-पुं० धातुओं को फूटने की प्रक्रिया । —पुर-पुं०
 हस्तिनापुर । —बंद, बंध-पुं० एक प्रकार का चित्रकाव्य ।
 हाथी वाला । —बंधी-वि० हाथी रखने में समर्थ ।
 —बदन-पुं० गणेश । —बध-पुं० भीम का एक नामान्तर ।

—बांश, बाण-पुं० हाथी का अंकुश । —बीथो-स्त्री० शुक्र
 की गति । —बेल-पुं० कांतिमार, लोहा । —बोह, बोह=
 'गजाबोह' । —भांत-पुं० एक प्रकार का वस्त्र ।
 —भार, भारा-पुं० हाथियों का दल । —भीम-वीर,
 घोड़ा । —भ्रयो-पुं० भीम । —मली, मुक्ता-स्त्री० हाथी के
 मस्तक से निकलने वाली एक मणि, मोती । —मुख, मुखी
 —पुं० गणेश । गजानन । एक तोप विशेष । —वि०
 हाथी के समान मुंह वाली । —मोवण-पुं० विष्णु ।
 —मोती='गजमुक्ता' । —रथ-पुं० हाथी से चलने वाला
 रथ । —रद-पुं० हस्तीदंत । —राज-पुं० बड़ा हाथी ।
 ऐरावत । डिमल के वेलियो 'सांणीर' का एक भेद ।
 —रिपु-पुं० सिंह, ग्राह । —ववन-पुं० गणेश । —शान-पुं०
 महावत । —वाग-पुं० अंकुश । —विभाड़-पुं० हाथी को
 पछाड़ने वाला वीर । —वेळ, वेळि='गजबेल' ।
 —साळा-स्त्री० हस्तीशाला । —सिखा-स्त्री० बहतर
 कलाओं में से एक ।

गजक (ग)-स्त्री० १ शराब आदि पीने के बाद मुंह का स्वाद
 मधारने के लिए खाई जाने वाली वस्तु । २ तिलपट्टी,
 तिलशकरी । ३ भोजन ।

गजट-पुं० [ग्र०] सरकारी समाचार-पत्र ।

गजणी-वि० १ गर्जने वाला । २ नाश करने वाला ।

गजणी (बी)-क्रि० १ गर्जना करना, गर्जना । २ क्रोध से
 बोलना । ३ नाश करना ।

गजनोय-स्त्री० नींव ।

गजब (बी, ब्ब)-पुं० [ग्र० गजब] (स्त्री० गजबरा) १ कोप,
 गुस्सा । २ खोफनाक कार्य या घटना । ३ आफत,
 विपत्ति । ४ देवी प्रकोप । ५ आश्चर्यजनक बात ।
 ६ आश्चर्य । —वि० १ अद्भुत, अजीब । २ भयकर, प्रचण्ड ।
 ३ अत्यन्त अधिक । ४ विशेष । ५ अद्भुत कार्य करने वाला ।

गजर-पुं० [सं० गर्जन] १ निरन्तर होने वाला प्रहार । २ ऐसे
 प्रहार से उत्पन्न ध्वनि । ३ खट-खट ध्वनि । ४ प्रहार का
 घंटा बजने का स्वर । ५ प्रातः काल, उपाकाल । ६ हंसी,
 मजाक । ७ तमाशा । ८ तगाड़ा । ९ शोरगुल, कोलाहल ।
 १० गर्जन । ११ प्रातः चार बजे का घंटा । —वि० विशाल,
 बड़ा । —प्रबंध-पुं० स्वर माधने की क्रिया ।

गजरी-स्त्री० १ स्त्रियों की कलाई का आभूषण । २ छोटी गजर ।
 गजरी-पुं० १ पत्तों की माला । २ एक आभूषण विशेष ।
 ३ गजर का पत्ता ।

गजल-स्त्री० [ग्र०] ऊर्ध्व-फारसी में 'गुजार रस की कविता ।

गजवड-पुं० एक प्रकार का बड़िया कपड़ा ।

गजाबोह-पुं० [सं० गज-अ्यूह] गजअ्यूह, हाथीदल ।

गजाङ्गणो (बो)—देखो 'गजाङ्गणो' (बो) ।

गजाङ्गण—देखो 'गजाङ्गण' ।

गजाङ्गणो (बो)—क्रि० १ गुंजायमान करना । २ गजना करना ।

गजानन, गजानन—पु० [सं० गज-प्रानन] १ हाथी के समान
गस्तक वाला । २ गणेश ।

गजारि—पु० [सं० गज-प्रारि] सिंह ।

गजारोहण—पु० १ हाथी पर सवारी । २ वहत कलाओं में
से एक ।

गजारोही—पु० हाथी पर सवार व्यक्ति ।

गजाव—देखो 'गज' ।

गजासन—पु० [सं० गज-प्रसन] अश्वत्थ का वृक्ष । पीपल ।

गजिन्द्र—देखो 'गजेंद्र' ।

गजि—स्त्री० १ एक प्रकार का मोटा वस्त्र । २ हस्तिनी ।

गजेंद्र—पु० [सं०] १ गजराज । २ ऐरावत । ३ हाथी । —गुण—
पु० रुद्र ताल का एक भेद ।

गजोवर—पु० अच्छा हाथी ।

गज्ज—देखो 'गज' । —गाहू= 'गजगाहू' । —नाळ= 'गजनाळ' ।

गज्जणी—देखो 'गजणी' ।

गज्जणी (बो)—देखो 'गजणी' (बो) ।

गज्जायो—स्त्री० एक प्रकार का कीट ।

गज्ज—देखो 'गजर' ।

गटक—स्त्री० १ निगल ने का भाव । २ ग्रन्थि विशेष । ३ देखो
'घटक' ।

गटकणी (बो), गटकाणी (बो), गटकावणी (बो)—क्रि०
[सं० गजगलन] १ निगलना । २ गुटका भरना । ३ हड़पना,
दबा लेना ।

गटकड़ी—स्त्री० फास्ता, पंडुकी ।

गटकड़ी—वि० (स्त्री० गटकड़ी) १ सुन्दर, सुडील । २ प्रिय ।
३ छोटासा । —पु० कबूतर ।

गटकी—पु० १ घूँट । २ रस । ३ आनन्द । ४ मजा, चस्का ।
५ नतीजा, परिणाम । ६ हड़पने का भाव ।

गटकणी (बो)—देखो 'गटकणी' (बो) ।

गटकी—देखो 'गटकी' ।

गटगट, गटगट—पु० १ घूँट-घूँट पीने की क्रिया या भाव ।
२ इस प्रकार पीने से उत्पन्न ध्वनि । —क्रि० वि० निरन्तर ।
लगातार, घड़ा-घड़ ।

गटपट—स्त्री० १ परस्पर मेल, मिलावट । २ सहवास, प्रसंग ।
३ संयोग । ४ गुप्त भंत्रणा । ५ काना-पूसी ।

गटरपू (गू)—पु० कबूतर या पंडुकी के बोलने की आवाज ।

गटली—वि० छली, कपटी, धोखेबाज ।

गटगट—देखो 'गटगट' ।

गटाणी (बो), गटावणी (बो)— १ देखो 'गटाणी' (बो) ।
२ देखो 'गिटाणी' (बो) ।

गटी—स्त्री० १ अनाज पीसने की चकरी । २ घोड़े के पैर की
लोहे की कड़ी । ३ काष्ठ की छोटी गोल चकरी ।

गटकड़ी—देखो 'गटकड़ी' ।

गटी—पु० १ एक पक्षी विशेष, जिसका मांस अच्छा होता है ।
२ तम्बाकू की डिबिया । ३ एक प्रकार का घोड़ा । ४ बेसन
या मोठ का गट्टा । ५ पांच की नली के नीचे की गांठ ।
६ हथेली और पंहुँचे के बीच का जोड़ स्थान । ७ धाने
का गट्टा । ८ टुकड़े के नीचे की गांठ । ९ आभूषण विशेष ।
१० एक देशी खेल । ११ घने बादल ।

गट्ट—पु० गुटकी भरने की आवाज ।

गट्टी—स्त्री० १ हाथी दांत का खण्ड जिसकी बुडियां उतारी
जाती हैं । २ धाने की गट्टी या लच्छी ।

गट्टी—देखो 'गटी' ।

गठकटी—वि० जेवकतरा, चोर ।

गठजोड़, गठजोड़ी—पु० [सं० ग्रंथि-जोड़] १ गांठ लगाकर
जोड़ने की क्रिया । २ वर-वधु का गठबंधन । ३ गांठ
का जोड़ ।

गठण—पु० [सं० ग्रंथन] १ बनावट, रचना । २ क्रमशः जमाना ।
क्रमबद्ध करना । ३ व्यवस्था प्रबन्ध । ४ एकीकरण ।

गठणी (बो)—क्रि० १ गांठ लगकर जुड़ना । २ बनाना या रचा
जाना । ३ क्रमबद्ध होना । ४ मेल-मिलाप होना ।
५ सिलना । ६ किसी गुप्त विचार में सहमत या सम्मिलित
होना ।

गठबंधन (न)—पु० [सं० ग्रंथि-बंधन] १ गांठ का बंधन ।
२ जुड़ाव । ३ गठजोड़ । ४ किसी कार्य या बात के लिए
गुप्त समझौता ।

गठरी—स्त्री० पोटली, गठरी ।

गठाणी (बो), गठावणी (बो)—क्रि० [सं० ग्रंथन] १ गांठ
लगाकर जुड़वाना । २ बनवाना, रचवाना । ३ क्रमबद्ध
करवाना । ४ मेल-मिलाप कराना । ५ सिलवाना । ६ गुप्त
विचार में सहमत या सम्मिलित कराना ।

गठाली—वि० [सं० ग्रंथिल] (स्त्री० गठीली) १ गांठदार,
जिसमें कई गांठें हों । २ गठा हुआ, मुडील । ३ हड़,
मजबूत ।

गठुली—स्त्री० १ घोड़े का एक रोग । २ देखा 'गुठली' ।

गठूण—पु० गठिया नामक वात रोग ।

गठक (ग)—पु० १ ऊंट । २ कुत्ता ।

गड—पु० [सं०] १ झोट, ग्राह । २ जाडर दिवारी । ३ गड़,
किना । ४ पर्दा, टट्टी । ५ खाई । ६ रोकथाम ।
७ अटकवा । ८ एक प्रकार की मछली ।

गडगड-स्त्री० द्रव पदार्थ के पीने से होने वाली ध्वनि ।
 गडगडणी (बो)-देखो 'गडगडणी' (बो) ।
 गडणी (बो)-क्रि० १ धंसना, चुभना । २ मिट्टी के नीचे दबना ।
 ३ जमीन में धंसना । ४ समाना, पँटना ।
 गडत-स्त्री० हल्की नींद, तंद्रा ।
 गडत्थल, गडचल (त्स)-देखो 'गडूथल' ।
 गडदार-पु० मदोन्मत्त हाथी के साथ भाला लेकर चलने वाला व्यक्ति ।
 गडमडणी (बो)-क्रि० प्रति ध्वनि होना या करना ।
 गडमेळ-वि० १ गहरा, गम्भीर, घना । २ पहाड़ के समान, गढ़ के समान ।
 गडवाडी-पु० [सं० गडवृत्ति] चारणों को जागीर में दिया हुआ गांव ।
 गडवी-पु० १ चारण कवि । २ राजा । -स्त्री० लुटिया ।
 गडवी-पु० १ छोटा लोटा, कलसा, जलपात्र । २ चारण । ३ कवि ।
 गडसूर (रो)-देखो 'गंडसूर' ।
 गडागड-क्रि० वि० १ जगह-जगह, स्थान-स्थान पर । २ पास-पास । -पु० घनिष्ठ प्रेम ।
 गडाणी (बो), गडावणी (बो)-क्रि० १ घंसाना, चुभाना । २ मिट्टी के नीचे दबाना । ३ जमीन में घंसाना । ४ समवाना, पँटाना ।
 गडि, गडी-क्रि० वि० पास, निकट । -स्त्री० १ गाड़ी । २ छोटा लोटा, जलपात्र ।
 गडुघी (बो)-पु० छोटा जल पात्र विशेष ।
 गडुळ-पु० कुवड़ा व्यक्ति ।
 गडूँबी-पु० १ इन्द्रायन फल । २ विकृत तरबूज ।
 गडू-वि० जीर्ण-शीर्ण, पुराना ।
 गडूथल, गडूथल-देखो 'गडूथल' ।
 गडूर (रो)-स्त्री० १ आवाज, ध्वनि । २ देखो 'गंडसूर' ।
 गडूस (त्स)-देखो 'घडूस' ।
 गडै-क्रि० वि० पास, निकट ।
 गडो-पु० [सं० गंड] १ हाथी का गंडस्थल । २ बड़ा पत्थर ।
 गडोत्थल, गडोथल, गडोथली-देखो 'गडूथल' ।
 गडू-पु० १ गड्ढा, खड्डा । २ गढ़ किला ।
 गड्डी-स्त्री० १ एक ही प्रकार की वस्तुओं को तह करके रखा हुआ ढेर । २ ढेर, समूह, गंज ।
 गडो-पु० १ खड्डा । २ खेलने का छोटा कंकर । ३ वृद्ध व्यक्ति ।
 गडड़, गड-पु० १ किला, दुर्ग, कोट । २ खाई । ३ एक देशी खेल । -किला-पु० एक मरकाही लगान ।
 गडणी (बो)-क्रि० १ बनाना, निर्माण करना । २ गढ़कर तैयार करना । ३ कल्पित बात करना । ४ मारना, पीटना ।

गडत-स्त्री० वनाबट, निर्माण कला । रचना ।
 गडपत, (पति, पती, पत्ति)-पु० १ गढ़ का स्वामी, राजा । ३ गढ़ रक्षक, किलादार । ३ चारण ।
 गडबंध-पु० राजा ।
 गडमंगो-पु० राजाओं का याचक होली ।
 गडराज (राव)-पु० राजा ।
 गडरोह (रोहऊ, रोहो)-पु० गढ़ पर किया जाने वाला आक्रमण ।
 गडव-पु० चारणों की एक उपाधि ।
 गडवाडी-देखो 'गडवाडी' ।
 गडवो (बो)-पु० १ राजा, ठाकुर । ३ चारण । ३ कवि । ४ छोटा जलपात्र विशेष ।
 गडांपति-देखो 'गडपति' ।
 गडाणी (बो)-देखो 'गडाणी' (बो) ।
 गडी-स्त्री० १ छोटा किला, गढ़ । २ गांव के चारों ओर का आहता । ३ खार की फसल खाने वाला कीड़ा ।
 गडोस-पु० गडपति, दुर्ग रक्षक ।
 गडोई-पु० मकान की नालियों का पानी एकत्र होने वाला गड्ढा ।
 गण-पु० [सं०] १ जण्ड, समूह, । २ गिरोह, संघ, दल । ३ श्रेणी, कक्षा । ४ नौकारों को टोली । ५ शिव के गण । ६ संस्था । ७ एक सम्प्रदाय । ८ परिषद का सदस्य जो किसी वर्ग या क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हो । ९ सैनिकों की छोटी टोली । १० संख्या । ११ कविता में पाद । १२ गणेश का एक नाम । १३ एक ही श्रेणी के मनुष्यों का समुदाय । १४ नक्षत्रों की तीन कोटियों में से एक । १५ छन्द शास्त्र में तीन-तीन वर्णों के आठ गण । १६ दूत, सेवक । १७ हाथी । १८ आर्या छन्द की चार भाषा का नाम । १९ मात्रिक छंदों के पांच गण । -ईस-पु० गणेश, गजानन । -तंत्र-पु० लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र । -धर-पु० जनाचार्य । महावीर स्वामी का पट्ट शिष्य । -बाध, नायक, पत, पति (तौ)-पु० गणेश । -नायिका-स्त्री० दुर्गा, पार्वती । -परधत-पु० कैलास पर्वत । -राज-पु० गणेश । गणराज्य ।
 गणक-पु० [सं०] १ अंकगणित जानने वाला । २ ज्योतिषी, वैज । ३ गणना करने का उपकरण । ४ बनिया, वणिक । -केतु-पु० घुमकेतु ।
 गणका-देखो 'गणिका' ।
 गणगवर, गणगौर-स्त्री० [सं० गुणगवरी] १ पार्वती, गौरी । २ राजस्थान का एक पर्व विशेष । ३ इस पर्व पर पूजा जाने वाली गौरी की मूर्ति ।
 गणगोरियो-पु० शमी वृक्ष के पुष्प के बाद होने वाले फल का नाम ।
 गणपभ, (घाभ)-पु० [सं० ग्रहग्राम] आकाश, नभ ।

गणनकरणी (बौ)—क्रि० १ पक्षियों का आकाश में मंडराना ।
 २ ध्वनि विशेष का होना ।
 गणरा—स्त्री० ध्वनि विशेष ।
 गणराक—पु० १ आकाश में पक्षियों के मंडराने की क्रिया ।
 ३ ध्वनि विशेष ।
 गणराणी (बौ)—क्रि० १ प्रतिध्वनि होना । २ व्यतीत होना, गुजरना ।
 गणरा—देखो 'गणना' ।
 गणराट, (टौ)—पु० १ चक्कर, परिभ्रमण । २ चहल कदमी ।
 ३ जोर की ध्वनि । ४ आकाश में पक्षियों के मंडराने से उत्पन्न ध्वनि ।
 गणराणी (बौ), गणराकणी (बौ)—क्रि० १ चक्कर खाना ।
 २ भनभनाना । ३ मंडराना । ४ गुनगुनाना । ५ गणना कराना । ६ प्रतिध्वनित करना ।
 गणराटी (जोटी)—देखो 'गणराट' ।
 गणरा (बौ)—देखो 'गणराणी' (बौ) ।
 गणती—देखो 'गणती' ।
 गणधर, गणधार—पु० [सं० गणधर] तीर्थंकर भगवान का प्रधान या मुख्य शिष्य ।
 गणन, गणना—स्त्री० [सं०] १ गिनने की क्रिया । २ गिनती ।
 ३ वर्गीकरण ।
 गणप—पु० [सं०] गणेश ।
 गणपल—पु० [सं० गणकल] चन्द्रमा, शशि ।
 गणली—देखो 'गणली' ।
 गणव—पु० गणेश ।
 गणहर—देखो 'गणधर' ।
 गणाई—स्त्री० १ गिनने की क्रिया । २ गिनने की मजदूरी ।
 गणानी (बौ), गणावणी (बौ)—क्रि० १ गिनती करना, गिनना ।
 २ समझना । ३ संख्यातय कराता । ४ जुड़वाना ।
 ५ प्रतिष्ठा कराना ।
 गणावपत, (घिप, घीस, पत)—पु० १ गणेश, गणपति ।
 २ शिव । ३ वृद्ध या प्रतिष्ठित जैन साधु । ४ सेनापति ।
 ५ गुरु ।
 गणिनी (गणियो)—पु० [सं० गणक] ज्योतिषी ।
 गणिका—स्त्री० [सं०] १ रण्डी, वेश्या । २ नर्तकी ।
 ४ हस्तिनी । ४ पुष्प विशेष ।
 गणित—पु० [सं०] १ संख्याओं की जोड़-बाकी कर परिणाम ज्ञात करने की विद्या । २ हिसाब-किताब । ३ जोड़ ।
 ४ बहसर कलाओं में से एक । ५ ज्योतिष ।
 गणितम्ब—वि० [सं० गणितम्ब] १ गणित जानने वाला ।
 २ ज्योतिषी ।
 गणी—पु० [सं० गणिन्] आचार्य या सूरि, गच्छ का प्रधान ।

गणीस, गणीस—पु० [सं० गणेश] १ गणों के ईश, गजानन ।
 २ छप्पय छन्द का बाईसवां भेद । —खूँटी—स्त्री० हाथ करघे की एक खूँटी । —चतुरथी, चौथ—स्त्री० भादव कृष्ण चतुर्थी । —पुराण—पु० एक उपपुराण ।
 —भूसण—पु० सिद्धर ।
 गणीसर, (सुर)—पु० [सं० गणेश्वर] १ शिव । २ गणेश ।
 ३ हाथी । ४ ईश्वर, परमात्मा । ५ चित्रकूट पर्वत ।
 गण्णी—देखो 'गणणी' ।
 गतङ—न० [सं० गताण्ड] हिजड़ा, नपुंसक ।
 गत—वि० [सं०] १ बीता हुआ, बिगल । २ गया हुआ । ३ मृत, मरा हुआ । ४ रहित, हीन । ५ रिक्त, खाली । ६ आया हुआ, पहुँचा हुआ । ७ अवस्थित, स्थापित । ८ गिरा हुआ ।
 ९ कम किया हुआ । १० संबंधित । —स्त्री० १ समय, अवधि । २ अवस्था, हालत । ३ बाघों का मिलान ।
 ४ नृत्य की मुद्रा । ५ तरह, प्रकार । ६ गति, चाल । ७ मोक्ष, मुक्ति । ८ लीला, रचना । ९ गाय । —अग—स्त्री० गंगा ।
 —तार—पु० आभूषण । —पंचमी—स्त्री० मोक्ष, मुक्ति ।
 —वंत—पु० पाँव, चरण । —वन्ही—स्त्री० केसर ।
 गतबायरी—वि० (स्त्री० गतबायरी) १ हतप्रभ । २ बुद्धिहीन ।
 ३ नाकुछ ।
 गतराड़ी—न० १ हिजड़ा, नामर्द । २ कायर, डरपोक ।
 —वि० अनाड़ी ।
 गतागत—वि० [सं०] आया-गया । —स्त्री० १ आवागमन ।
 २ जन्म-मरण । ३ गति, लीला, रचना । ४ ढग ।
 गति (ती, ली)—स्त्री० [सं० गतिः] १ गति, चाल । २ गमन ।
 ३ हरकत, हलचल । ४ चलने की क्रिया । ५ प्रवेश ।
 ६ विस्तार । ७ पथ, रास्ता । ८ हालत, दशा । ९ फल, परिणाम । १० उपाय, तरकीब । ११ पहुँच । १२ शरण स्थान । १३ बचाव । १४ रंग, रूप । १५ उत्पत्ति, विकास ।
 १६ कर्म फल । १७ भाग्य । १८ नक्षत्र पथ । १९ षाव, नासूर । २० ज्ञान, बुद्धि । २१ पुनर्जन्म । २२ आयु की दशा । २३ लीला, रचना, माया । २४ मुक्ति, मोक्ष ।
 २५ तरह, प्रकार । २६ कुस्ती की चाल । २७ ग्रहों की चाल । २८ संगीत में लय । २९ बाघों का मिलान ।
 ३० पाँच की संख्या । —कार—वि० गति वाला । गति देने वाला । —वंत—पु० पाँव, चरण ।
 गतू (तू)—वि० पूर्ण, सम्पूर्ण । —क्रि० वि० पूर्ण रूप से ।
 गत्त—१ देखो 'गत' । २ देखो 'गत' ।
 गत्ति (ली)—देखो 'गति' ।
 गत्तौ—पु० [सं० ग्रंथ] १ किताब के ऊपर की दस्तरी । २ पुस्तक का आवरण । ३ मोटा कागज या दपती ।

गत्र-पु० [सं० गात्रं] शरीर देह, तन ।

गत्वर-वि० [सं०] १ गमनशील । २ नाशवान् । ३ चल, चलायमान ।

गय (स्थ)-देखो 'गरय' । २ देखो 'गाया' । ३ देखो 'गत' ।

गथियो-न० [सं० गत] नपुंसक, नामर्द, हिजड़ा ।

गद-पु० [सं०] १ विष । २ एक रोग । ३ पीड़ा । ४ श्रीकृष्ण का छोटा भाई । ५ राम सेना का एक बंदर । ६ एक ग्रामुर । ७ कवि पंडित । ८ संभाषण, भाषण । ९ वाक्य । १० गर्जन, गर्जना ।

गवका-पु० नाज-नखरा ।

गवकाळ-पु० अनार, दाड़िम ।

गदगद-वि० [सं० गद्-गद्] १ शब्दा व हर्ष के आवेग में निमग्न । २ अत्यन्त हँसित । ३ प्रेम रत भीना ।

गदगदी-स्त्री० १ आल्लाद, उल्लाम, गुदगुदी । २ हँसी, ठठ्ठा । ३ एक प्रकार का रोग ।

गदचाम-पु० [सं० गदचर्म] हाथी का एक रोग ।

गदपाळ-पु० अनार ।

गदफड़-पु० एक मांसाहारी पक्षी ।

गदबंधवचनिका-स्त्री० अनुप्रास व समास युक्त राजस्थानी गद्य ।

गदबड़णी (बौ), गदबड़णी (बौ)-क्रि० घाव या फोड़े में मवाद भरना ।

गदर-स्त्री० [ग्र०] १ क्रांति, विप्लव, विद्रोह । २ उपद्रव, हंगामा । ३ देव मूर्ति को पहनाने की रूईदार बगलबंदी । —गडोडी-स्त्री० उपद्रव ।

गदरी-पु० [फा० गद्दा] रूई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा ।

गदळ-पु० [सं० गजदल] हाथियों का समूह, गजदल ।

गदहड़ी-देखो 'गधी' ।

गदहरणी-स्त्री० हरें, हरीतकी ।

गदहलोट-पु० कुस्ती का एक पेंच ।

गदा-स्त्री० [सं०] १ लोहे का बना मोटा भारी शस्त्र, गुर्ज । २ कसरत करने का एक उपकरण । —घर, घर धारी, —घोस-पु०-विष्णु । हनुमान । भीम । —पांलि, पांसी-पु० त्रिष्णु, भीम, हनुमान । —वि० जिनके हाथ में गदा हो । —बळवान-पु० भीम ।

गदारी-पु० एक प्रकार की नलवार ।

गधियो-पु० १ तावे या चांदी के मिश्रण से बना एक प्राचीन मिक्का । २ देखो 'गधी' ।

गधी-वि० [सं०] १ रोगी । २ गदा लिये हुए । —स्त्री० त्रिष्णु की एक उपाधि ।

गदेड़ियो, गदेड़ी-पु० १ चरखे का एक डंडा । २ देखो 'गधी' । गदेकी-वि० गंदला, धुंधला, मटमैला । —पु० १ गद्दा । २ देखो 'गदेल' ।

गदरी-देखो 'गदरी' ।

गदहड़ी-पु० सर्दी में पशुधों की पीठ पर रखा जाने वाला वस्त्र । गद्दा-देखो 'गदा' ।

गद्दी-देखो 'गद्दी' ।

गद्य-पु० [सं०] १ कविता या पद्य रहित लेखन, वाक्तिक । २ वाक्तिक काव्य का एक भेद ।

गधाचीतरी-स्त्री० छितरे हुए बादल ।

गधापचीती-स्त्री० १६ से २५ वर्ष तक की अलहड़, अवस्था ।

गधामस्ती-स्त्री० ऊधम, उल्लास, धक्का-मुक्की ।

गधेड़ियो, गधेड़ी-१ देखो 'गदेड़ियो' । २ देखो 'गधी' ।

गधी-पु० [सं० गर्दभ] घोड़े की जाति का कुछ छोटा चौपाया जानवर जो बोझा ढोने में मजबूत होता है । खर । —वि० मूर्ख, नासमझ ।

गनका-देखो 'गणिका' ।

गनगीर-देखो 'गणगीर' ।

गनायत-देखो 'गितायत' ।

गनिका-देखो 'गणिका' ।

गनीम-पु० [ग्र०] १ लुटेरा, डाकू । २ शत्रु, वैरी ।

गनीमत-स्त्री० [ग्र०] १ संतोषजनक बात या दशा । २ खैरियत । ३ लूट का माल । ४ शत्रु सेना का माल । —वि० उत्तम, अच्छा ।

गनीमाण-देखो 'गनीम' ।

गनीस, गनेस-देखो 'गणेश' । —खूंटो= 'गणेशखूंटो' ।

गनी, गन्न, गन्नी-पु० १ संबंध, रिश्ता । २ ईख, गन्ना ।

गप (प्प)-स्त्री० [सं० गल्प] १ कल्पित या झूठी बात, गप्प । २ जो बहलाने की निरर्थक बात । ३ डींग । ४ अफवाह । ५ किसी चीज को एक साथ निगलने की क्रिया । ६ कोई चीज कहीं धंसने से उत्पन्न ध्वनि ।

गपड़बोथ-स्त्री० १ गड़बड़ी । २ वेईमानी । ३ व्यर्थ की गोष्टी ।

गपसप-देखो 'गप' ।

गपागप-क्रि०वि० झटझट, जल्दी, शीघ्र ।

गपियो, (हो) गपी (प्पी)-वि० १ गप्प हांकने वाला । २ मिथ्याभाषी ।

गपीड़, (डो)-पु० १ कोई बड़ी गप्प, अफवाह, डींग । २ निरर्थक या थोथी बात ।

गल्की (पकी)-पु० १ खाने का बड़ा घास । २ स्वादिष्ट भोजन या मिठाई । ३ फायदा, लाभ ।

गफलत-गफिलाई-स्त्री० [अ० गफलत] १ असावधानी, लापरवाही ।
२ भूल, भ्रम, गूक ।

गफूर-वि० [अ० गफूर] दया करने वाला । -पु० ईश्वर ।

गब-क्रि० वि० एकाएक अचानक, अकस्मात् ।

गबड़काणो (बो). गबड़कावणो (बो)-क्रि० फटकारना, दुस्कारना ।

गबड़की-पु० व्यर्थ की बात ।

गबन-पु० [अ०] १ चोरी । २ अमानत में खयालत । ३ सोंचा हुआ माल दबा लेने की क्रिया ।

गबरू-वि० [फा० सबरू] १ उभरती जवानी का तरण ।
२ भोला-भाला, सीधा । ३ बेखबर ।

गबरोळी-देखो 'गबोळी' ।

गबागब-स्त्री० गड़बड़ी, अव्यवस्था । बेईमानी ।

गबोड़ी-पु० १ नुकसान, हानि । २ धोखा । ३ चोट, आघात ।
४ अफवाह ।

गबूरियो-पु० फटा हुआ वस्त्र ।

गबोळणी (बो)-क्रि० १ गड़बड़ी में डालना । २ उलझन में डालना । ३ गंदला करना । ४ डुबकी लगाना ।

गबोळी-पु० १ गड़बड़ घोटाला । २ उलझन । ३ विघ्न ।
४ भ्रंश, बखेड़ा । ५ भूल ।

गब-पु० [सं० गर्व] १ अभिमान, गर्व । २ नासमझी ।
३ देखो 'गब' । ४ देखो 'मर्' ।

गबू-वि० १ भूख, नासमझ । २ भोला । ३ दबू ।

गब-पु० [सं० गर्म] १ गर्म । २ देखो 'गब' ।

गबूती-देखो 'गबूति' ।

गभी, गभी-पु० (स्त्री० गभी, गभी) १ वस्त्र, कपड़ा ।
२ गाय का बछड़ा ।

गबूति-स्त्री० [सं० गबूति:] १ चार मील की दूरी । २ चार मील की दूरी का माप ।

गभु-देखो 'गरम' ।

गभेलउ-वि० [सं० गभिल] गर्भ में निवास करने वाला, गर्मस्थ बालक ।

गभ-पु० [सं०] १ गमन । २ प्रस्थान । ३ आक्रामक कूच ।
४ मार्ग, रास्ता । ५ अविवेक । ६ अज्ञानता । ७ स्त्री मैथुन । ८ चौपड़ का खेल । ९ प्रवेश, पहुँच । १० बुद्धि ।
११ विचार शक्ति । १२ पता, इल्म । [अ०] १३ दुःख, शोक, रंज । १४ क्षमाशीलता, क्षमा । १५ पता, खबर ।
१६ जानने योग्य बात । १७ क्रोध । -क्रि० वि० दफा, वार ।
-खोर-वि० सहिष्णु । -गोन-वि० दुःखी । उदास ।
खिन्न ।

गभक-स्त्री० १ तबले घुंघरू आदि की आवाज । २ संगीत की एक प्रणाली । ३ आनंद, मोज । ४ स्वर का कंपन ।
५ पाँच मात्रा का मात्रिक छंद विशेष ।

गभगत-स्त्री० शोक या चिंता दूर करने का भाव या प्रयास ।

गभछी-स्त्री० घोड़े के जोन को रस्मी ।

गभछी-पु० शरीर पोंछने का छोटा वस्त्र, तोलिया ।

गभसु-देखो 'गभन' ।

गभली (बो)-क्रि० १ खोना, खो जाना । २ गायब हो जाना ।

३ नष्ट होना । ४ भूलना । ५ चलना । ६ जाना ।

७ बिताना, गुजारना । ८ धर्म मर्यादा के अनुकूल होना ।

९ मानना । १० नाश करना ।

गभत-देखो 'गभत' ।

गभन (स)-पु० [सं०] १ चलने-फिरने या जाने की क्रिया ।

२ रवानगी, प्रस्थान । ३ पलायन । ४ यात्रा । ५ संभोग,

मैथुन । ६ राह, रास्ता । ७ पैर । ८ नाश । ९ वैशेषिक

दर्शन के अनुसार पाँच प्रकार के कर्मों में से एक ।

गभर-पु० [प्रा० गय] हाथी ।

गभली-पु० फुलवारी का पीछा लगाने का पात्र ।

गभगभ-क्रि० वि० १ चारों ओर । २ घमक या झमक के साथ ।

गभा-स्त्री० १ दिशा । २ भेद, रहस्य । ३ जानकारी ।

गभगभ-क्रि० वि० [सं०] १ यत्र-तत्र, जहाँ-तहाँ । २ निरंतर

लगातार । ३ चारों ओर । ४ एक साथ । ५ धमाधम ।

-पु० १ आवागमन । २ रहस्य, भेद ।

गभाणी (बो), गभावणी (बो)-क्रि० १ खो देना । २ लुप्त या

गायब कर देना । ३ नाश करना । ४ व्यर्थ बिताना ।

५ व्यर्थ खर्च करना । ६ मिटाना ।

गभार-देखो 'गभार' ।

गभी-स्त्री० [अ० गभ] १ मृत्यु, मौत । २ गम या शोक की अवस्था ।

गभे-क्रि० वि० १ एक तरफ, एक ओर । २ अथवा, या ।

गभेगभे-क्रि० वि० १ चारों ओर । २ इधर-उधर ।

गभेताई-स्त्री० १ गांव के मुखिया का कार्य या पद ।

गभेती-पु० १ ग्रामीण । २ गांव का मुखिया ।

गभोगभ-देखो 'गभगभ' ।

गभत-स्त्री० १ हंसी, दिल्लगी । २ मोज, आनंद । ३ खेल, क्रीड़ा ।

गभ्य-वि० [सं०] १ जाने योग्य । २ गमन योग्य । ३ संभोग या मैथुन योग्य । ३ सहज, सरल । ४ माध्य । ५ प्राप्य ।

गभंडीयल-देखो 'गड़ूयल' ।

गभं (बो)-पु० [सं० गजेन्द्र] १ हाथी, ऐरावत । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ दोहे का दशवां भेद ।

गघ-पु० [सं०] १ आकाश, गगन । २ अन्तरिक्ष । ३ घर । ४ धन ।
 ५ प्राण । [सं० गज] ६ गज, हाथी । ७ ऊंट । ८ गति,
 चाल । —गमणि, गमणी, गमणी-स्त्री० गजगामिनी ।
 गयगण, गयंगण, गयणंगण, गयणंगणि, गयण, (छु) गयणग-
 देखो 'गयन' ।
 गयणमण, (मणि, मिला, मिणि, मिसी)-पु० [सं० गगन-मणि]
 सूर्य, भानु ।
 गयणांग, (गण) गयणांग, गयणि-देखो 'गगन' ।
 गयणिमणी (मिसी)-देखो 'गयणमणि' ।
 गयणि (जी) गयण-पु० १ बादल, मेघ । २ सूर्य । ३ नक्षत्र ।
 ४ नभ ।
 गयवन्तो-पु० हाथी के समान दांतों वाला सूअर ।
 गयनाळ-स्त्री० नजनाल ।
 गयन्न-देखो 'गगन' ।
 गयमर-देखो 'गयवर' ।
 गयराज-देखो 'गजराज' ।
 गयलो-वि० (स्त्री० गयली) पागल, मूर्ख ।
 गयवर-पु० [सं० गजवर] १ श्रेष्ठ हाथी । २ इन्द्र का हाथी ।
 गयसिर-पु० [सं० गयशिर] १ आकाश, अन्तरिक्ष । २ गया
 तीर्थ । ३ इस तीर्थ के पास का पर्वत ।
 गया-पु० [सं०] बिहार का एक प्राचीन तीर्थ स्थान जहां पितरों
 को पिंडदान किया जाता है ।
 गयीबीती (बीती)-वि० (स्त्री० गयीबीती) १ गया गुजरा,
 निकम्मा । २ जीर्ण-शीर्षा ।
 गरंद, गरंद-पु० [मं० गिरींद] १ हिमालय पर्वत । २ सुमेरु
 पर्वत । ३ पर्वत ।
 गर-पु० [मं० गरं, गरः] १ जहर, विष । २ वत्सनाभ । ३ रोग,
 बीमारी । ४ ज्योतिष का पांचवां करण । ५ पर्वत ।
 ३ घर, गृह । ७ गर्दन । ८ समूह, झुण्ड । ९ दल, सेना ।
 [फा०] करने वाला या बनाने वाले का अर्थ बोधक प्रत्यय ।
 गरक, (काब, काव, ककाव)-वि० [मं० गर्क] १ डूबा हुआ,
 निमग्न । २ विभोर्ग । ३ संलग्न, लीन । ३ सना हुआ,
 भोगा हुआ । ४ रंता हुआ । ५ नष्ट, बरबाद । ६ नशे
 आदि से मस्त, चुरा । ८ गहरा, घना । ९ काला ।
 १० आवेष्टित ।
 गरकी-स्त्री० [मं० गर्की] १ डूबने या निमग्न होने का भाव ।
 २ बाढ़ का फैलाव ।
 गरक-देखो 'गरक' ।
 गरण-पु० [सं० गर्ग] १ एक प्राचीन ऋषि । २ बिल, सांड ।
 ३ ब्रह्मा के एक मानस पुत्र । ४ संगीत में एक ताल ।
 गरगज-पु० १ किले की बुज, जहां तोपें रहती हैं । २ कृत्रिम
 दीवार । ३ फांसी का नक्का ।

गरगराट-देखो 'गिरगिराट' ।
 गरगाव (गाव)-देखो 'गरकाव' ।
 गरगेवड़ा-स्त्री० शमी वृक्ष की विकृत फलां ।
 गरड़-पु० १ बन्दूक की आवाज । २ देखो 'गरड़' ।
 गरड़गोमी-देखो 'गरड़गोमी' ।
 गरड़धज-देखो 'गरड़धज' ।
 गरड़णी (बी), गरड़ाणी (बी), गरड़ावणी (बी)-क्रि० १ गध
 का रेंगना । २ गर्जना ।
 गरड़ा-देखो 'गरड़ा' ।
 गरड़ी-पु० १ एक रंग विभेय का घोड़ा । २ चावल का पीघा ।
 ३ भूरी आंख का घोड़ा । ३ देखो 'गरड़ी' ।
 गरज-स्त्री० [सं० गर्जन] १ गम्भीर व तुमुल ध्वनि, गम्भीर
 गर्जना । २ गड़गड़ाहट । ३ वज्र ध्वनि । ४ क्रोध भरी
 आवाज । [मं०] ४ स्वार्थ, मतलब । ५ आशय प्रयोजन ।
 ६ आवश्यकता, जरूरत । ७ इच्छा, कामना । ८ खुशामद ।
 —क्रि० वि० १ निदान, आखिर । २ अस्तु, खैर ।
 गरजण-स्त्री० [सं० गर्जन] गर्जना ।
 गरजणी-वि० गर्जने वाला ।
 गरजणी (बी)-क्रि० १ गम्भीर व तुमुल ध्वनि होना या करना ।
 गर्जना । २ वज्रपात होना । ३ क्रोध में बोलना ।
 ४ गड़गड़ाना ।
 गरजदार-वि० १ जरूरत मंद । २ स्वार्थी ।
 गरजदारी-स्त्री० गरज, स्वार्थ ।
 गरजमंद (खान)-वि० जरूरतमंद । इच्छुक ।
 गरजापत-पु० [सं० गिरिजा-पति] शिव, महादेव ।
 गरजित-पु० मस्त हाथी । —वि० गर्जा हुआ ।
 गरजिपी, (जी, जू)-वि० १ स्वार्थी, मतलबी । २ इच्छुक ।
 गरज-देखो 'गरज' ।
 गरजणी (बी)-देखो 'गरजणी' (बी) ।
 गरमणी (बी)-देखो 'गरजणी' (बी) ।
 गरट (ट्ट, ट्ट, ठ)-पु० [मं० घट्ट] १ समूह, दल, झुण्ड ।
 २ सेना, फौज । ३ राशि, ढेर । ४ घेरा । ५ वृक्ष ।
 ६ पाताल, गर्त । —वि० १ घना, गहरा । २ देखो 'गरिस्ट' ।
 गरडणी (बी)-देखो 'गरड़णी' (बी) ।
 गरडापण-पु० वृद्धावस्था ।
 गरडू-पु० १ वेग व शमी वृक्ष की टहनियों की ग्रंथि । २ आंख
 की गांठ ।
 गरडी, गरडु, (डी)-पु० [सं० गरिड] (स्त्री० गरडी) ।
 १ वृद्ध पुरुष । २ पुराना, वरिष्ठ ।
 गरण-देखो 'गिरण' ।

गरुडगट, गरुडाट, गरुडाटी-पु० १ चक्कर, वात चक्र ।
 २ वृत्ताकार तेज घूमने की छवि । ३ शून्य स्थान की वायु की आवाज ।
 गरुडाणी (बौ), गरुडावणी (बौ)-क्रि० १ वृत्ताकार घूमना, चक्कर खाना । २ दर्द भरी आवाज करना, कराहना ।
 ३ गुंजायमान होना । ४ भिनभिनाना । ५ फैलना, छितरना ।
 गरुणी-स्त्री० [सं० गलन] अफीम गला कर छानने का उपकरण ।
 गरुणी-पु० [सं० गलन] जल छानने का वस्त्र ।
 गरुत (त्त)-पु० [सं० गर्त] १ गहरा मोटा खड्डा । २ जलाशय ।
 ३ एक नरक का नाम । ४ पाताल । ५ दरार । ६ घर ।
 ७ रथ ।
 गरुतमान-पु० [सं० गुरुत्-मान] गड्ढा ।
 गरुता-पु० [सं० गर्त] पाताल ।
 गरुतय, एरुय-पु० [सं० ग्रंथ, प्रा. गत्य] १ धन, संपत्ति ।
 २ द्रव्य । ३ गूढ़ार्थ । ४ भार, तत्त्व । ५ सामग्री ।
 ६ खर्चा । —ग्रत-स्त्री० हवन की अग्नि ।
 गरुव (हु)-पु० [सं० गरुद] १ विष, जहर । २ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । ३ सभा, मंडली । [फा० गर्द] ४ धूलि, गर्द । ५ नाश, संहार । ६ झुंड, समूह । ७ पृथ्वी ।
 —वि० १ विषप्रद । २ मस्त, मदोन्मत्त ।
 गरुवन-स्त्री० [फा० गर्दन] १ घड़ व मस्तक को जोड़ने वाला अंग, शीवा । २ किसी पात्र का लंबा संकरा मुंह ।
 —घुमाव-पु० कुश्ती का एक दाव । —तोड़-पु० कुश्ती का एक दाव । एक प्रकार का ज्वर । —बांध-पु० कुश्ती का एक दाव ।
 गरुव (व)-पु० [सं० गर्दभ] गघा ।
 गरुव-स्त्री० [फा० गर्द] १ धूलि, रज । २ संहार, छंभ ।
 गरुवाणी (बौ), गरुवावणी (बौ)-क्रि० १ घेरा डाल कर आक्रमण करना । २ घेरना, आवेष्टित करना । ३ धूल उड़ाना ।
 गरुवावळि-स्त्री० धूल की परत । रजकण ।
 गरुवस-स्त्री० [फा० गर्दिश] १ चक्कर, घुमाव । २ विपत्ति, संकट ।
 गरुवी-स्त्री० [फा० गर्दी] १ भीड़, समूह । २ परिवर्तन ।
 ३ धूलि, रज । ४ कति ।
 गरुद, गरुदन-१ देखो 'गरुद' । २ देखो 'गरुदन' ।
 गरुदी-देखो 'गरुदी' ।
 गरुदव (व)-देखो 'गरुदव' ।
 गरुनळि-स्त्री० चोड़े मुंह की एक तोप ।
 गरुनार (नार)-देखो 'गिरनार' ।
 गरुव-१ देखो 'गरुव' । २ देखो 'गरुव' ।

गरुवणी-देखो 'गरुवणी' ।
 गरुवणी (बौ)-देखो 'गरुवणी' (बौ) ।
 गरुवरफ-पु० [सं० गिरि + फा. बरफ] हिमालय पर्वत जो सदैव बर्फ से ढका रहता है ।
 गरुवाण-देखो 'गिरुवाण' ।
 गरुवाणी (बौ), गरुवावणी (बौ)-देखो 'गरुवणी' (बौ) ।
 गरुवी-वि० १ धैर्यवान, गंभीर । २ गविला । ३ साफ ।
 —पु० १ दो खिड़कियों के बीच रखा जाने वाला पत्थर ।
 २ एक प्रकार का मायन ।
 गरुवी-पु० एक लोक गीत विशेष ।
 गरुव-१ देखो 'गरुव' । २ देखो 'गरुव' ।
 गरुवणी (बौ), गरुवावणी (बौ)-देखो 'गरुवणी' (बौ) ।
 गरुवित-देखो 'गरुवित' ।
 गरुव-१ देखो 'गरुव' । २ देखो 'गरुव' ।
 गरुवणी-देखो 'गरुवणी' ।
 गरुवणी (बौ)-देखो 'गरुवणी' (बौ) ।
 गरुव-पु० [सं० गर्भ] १ पेट के अन्दर का बच्चा, हमल, भ्रूण ।
 २ गर्भाशय । ३ पेट, उदर । ४ भीतरी भाग । ५ गहराई, तह । ६ चक्र का मध्य भाग, केन्द्र । ७ फलित ज्योतिष में नए मेषों की उत्पत्ति । ८ छेद । ९ अग्नि । १० भोजन ।
 ११ देखो 'गरुव' । —केसर-पु० पुष्प के मध्य के पतले तंतु । —ग्रह-पु० घर का मध्य भाग या मध्य कक्ष । निज मन्दिर जहाँ मूर्ति स्थापित हो । —वास-पु० दासी पुत्र ।
 —दिवस-पु० गर्मकाल । १९५ दिन की अवधि जिसमें मेष का गर्भ होता है । (वि. वि. यह समय प्रायः कार्तिक की पूर्णिमा के बाद आता है ।) —नाळ-स्त्री० पुष्प की नाल ।
 —पात-पु० गर्भ का असमय पतन । —मास-पु० गर्भाधान का मास । —बंती, बती-स्त्री० गर्भिणी स्त्री ।
 —वास-पु० गर्भ में निवास । गर्भ की अवधि । गर्भाशय ।
 —व्यूह-पु० सेना की एक व्यूह रचना विशेष । —संकु-पु० पेट में मरे बच्चे को निकालने का प्रयोग । —हृत्वा-स्त्री० गर्मपात ।
 गरुवज-वि० [सं० गर्मज] १ गर्म से उत्पन्न । २ जिसे माय लेकर कोई उत्पन्न हो ।
 गरुवणी-स्त्री० [सं० गर्मणी] जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी ।
 गरुवणी (बौ)-क्रि० १ गर्भ धारण करना, गर्भ रहना ।
 २ देखो 'गरुवणी' (बौ) ।
 गरुवद-वि० [सं० गर्मद] १ गर्म देने वाला । २ जिसमें गर्म रहे ।
 गरुवाणी (बौ)-क्रि० १ गाय, बैल आदि का रंभाना ।
 २ देखो 'गरुवाणी' (बौ) ।
 गरुवाधान-पु० [सं० गर्भाधान] गर्भ धारण ।

गरभावास-देखो 'गरभवास' ।

गरभासन-पु० [सं० गर्भासन] योग के चौरासी आसनों में से एक ।

गरभासय-पु० [सं० गर्भासय] वचनादानी ।

गरभिलो-देखो 'गरभली' ।

गरभीजली (बो)-कि० १ गर्भ धारण किया जाना । २ गर्वित होना ।

गरभु-पु० [सं० गर्व] १ गर्व, अभिमान । २ देखो 'गरभ' ।

गरम-वि० [फा० गर्म] १ जिसमें गर्मी हो, उष्ण । २ जो उष्ण कारक हो । -वि० ३ तीक्ष्ण, तेज । ४ उग्र । ५ उत्साह व आवेश पूर्ण । ६ तपता हुआ ।

गरमाळी-पु० अमलतास वृक्ष ।

गरमास (हट)-स्त्री० उष्णता, गर्मी ।

गरमी-स्त्री० [फा० गर्मी] १ उष्णता, ताप, जलन । २ गर्म ऋतु । ३ हरायत । ४ तेजी, क्रोध । ५ आवेश, जोश, उत्साह । ६ गर्व, घमंड । ७ उपद्रव रोग । ८ उग्रता, प्रचण्डता । ९ शीघ्रता, त्वरा । १० हाथी घोड़े आदि पशुओं का रोग ।

गरमीजली (बो)-कि० १ हाथी घोड़े आदि के 'गरमी' का रोग होना । २ ताप लेना, गरम होना ।

गरर-स्त्री० एक ध्वनि विशेष ।

गरल-पु० [सं० गरल] १ जहर, विष । २ सर्प विष । ३ घास का गट्टर ।

गरलक-पु० [सं० गरल-क] १ शेषनाग । २ सर्प ।

गरलधर-पु० [सं० गरलधर] १ जो विष को धारण करे, शिव । २ सर्प ।

गरलस-पु० [सं० गरल-स] साँप, सर्प ।

गरलाही (बो), गरलावली (बो)-कि० १ रुदन करना, विलाप करना । २ चिल्लाह । ३ मुँह में पानी डाल कर गरारा करना ।

गरली-पु० गरारा ।

गरव-पु० [सं० गर्व] १ अभिमान, दर्प । २ ऐंठन, प्रकड़ ।

गरवणियो-पु० रूढ़ के ऊपर बनाया जाने वाला एक चतुर्तरा ।

गरवली (बो)-कि० १ गर्व करना, घमंड करना । २ प्रकड़ना, ऐंठना । ३ मान करना ।

गरवत-पु० १ डिगल के 'मांछोर' गीत का एक भेद । २ गंभीरता । -वि० गर्वित । -निसाणी-स्त्री० डिगल का निमाणी नामक छन्द ।

गरवर-पु० [सं० गर्व] १ घमंड, दर्प । [सं० गिरिवर] २ पहाड़, पर्वत ।

गरवरणी (बो)-कि० समूह के रूप में झुकना होना ।

गरवाण-देखो 'गिरवाण' ।

गरवा (गरवित)-वि० [सं० गर्वित] गर्विला, अभिमानी ।

गरवाली (बो), गरवावली (बो)-कि० घमंड करना, गर्व करना ।

गरविता-स्त्री० [सं० गर्विता] गर्व एवं मान करने वाली नायिका ।

गरवी-देखो 'गरवी' ।

गरवीली-वि० [सं० गर्विता] (स्त्री० गरवीली) १ घमंडा, अहंकारी २ गम्भीर ।

गरबु, गरवी-वि० (स्त्री० गरवी) १ गंभीर । २ धैर्यवान । ३ बड़ा । -राजा-पु० दामाद के आने पर गाया जाने वाला गीत ।

गरवली (बो)-देखो 'गरवली' (बो) ।

गरसली-स्त्री० एक आभूषण विशेष ।

गरह-देखो 'ग्रह' ।

गरहणा-स्त्री० [सं० ग्रहणम्] १ फटकार, डाँट । २ उपालंभ, शिकायत । ३ निंदा, आलोचना । ४ घृणा । ५ नकलाने की ध्वनि । ६ शब्द, ध्वनि ।

गरहर-स्त्री० आवाज, ध्वनि ।

गरहरणी (बो)-कि० १ रण बाद्य बजना । २ नगाड़े बजना । ३ बिजली कड़कना, बादल गर्जना । ४ दहाड़ना ।

गरहा-स्त्री० [सं० ग्रहा] १ निंदा, भर्त्सना । २ शिकायत । ३ गाली ।

गरांजली-देखो 'गुरांजली' ।

गरांपत-पु० [सं० गिरिपति] मुमरु पर्वत ।

गरा-देखो 'गिरा' ।

गराज-पु० उपाय, तरकीब ।

गराजा-स्त्री० गर्जना ।

गराड़-पु० गर्व, घमंड ।

गराव-पु० ऊँट खींच सके ऐसी छोटी तोप ।

गरावरी, गरारी-पु० १ मुँह में पानी भर कर गल-गल करने की क्रिया । २ डींगी मोरी का पञ्जामा ।

गराळ-पु० [सं० गिरि] पहाड़, पर्वत ।

गरासली (बो)-कि० [सं० प्रास] १ निगलना, गुठकी भर लेना । २ घम लेना, घमना ।

गरासिया-देखो 'ग्रासिया' ।

गरासियो-देखो 'ग्रासियो' ।

गरिठु-देखो 'गरिष्ठ' ।

गरिमा-स्त्री० [सं०] १ महिमा, प्रतिष्ठा, विशिष्टता, महत्त्व । २ गौरव । ३ उत्तमता । ४ भारीपन, गुरुता, बोझ । ५ आठ मिद्धियों में से एक । ६ गर्व, अहंकार ।

गरिस्ट (स्थ)-वि० [सं० गरिष्ठ] १ अत्यन्त भारी, गुरुतर ।
२ पचने में कठिन । ३ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण । -पु० १ एक
राजा । २ एक राक्षस । ३ एक तीर्थ विशेष ।

गरी-१ देखो 'गली' । २ देखो 'गिरी' ।

गरीट-देखो गरिस्ट ।

गरीठ, गरीठी-वि० [सं० गरिष्ठ] १ प्रबल, प्रचंड ।
२ शक्तिशाली । ३ भयंकर । ४ प्रभावशाली । -पु० १ हाथी ।
२ ऊंट । ३ देखो 'गरिस्ट' ।

गरील-वि० १ दीर्घ, विशाल । २ बड़ा ।

गरीत (च)-देखो 'गरिस्ट' ।

गरीब (डौ)-वि० [अ०] (स्त्री० गरीबरा, एी) १ निर्धन,
कंगाल । २ दरिद्र । ३ दीन-हीन । ४ तन्त्र । —डानी-
पु० घर । गरीब का घर । —गुरबो-पु० गरीब आदमी ।
—नवाज, निवाज, नेवाज-वि० दयालु, कृपालु ।
—पु० ईश्वर । —परवर-वि० गरीबों का पालन करने
वाला, ईश्वर ।

गरीबो-स्त्री० १ दरिद्रता, निर्धनता । २ दीनता, तन्त्रता ।

गर-देखो 'गुरु' ।

गरप्रत-पु० बड़प्पन, गौरव । -वि० बड़ा, महान ।

गरप्रडो-स्त्री० माहात्म्य, बड़प्पन, मोटाई ।

गरुड, गरुडो (बो)-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ गंभीर ।
३ बोझिल, भारी । ४ महान, बड़ा ।

गरुडाल-पु० धातु का बना बड़ा घंटा । -वि० अत्यन्त चतुर ।
धूर्त, चालाक ।

गरुड-पु० [सं० गरुड] १ पक्षियों का राजा एक बड़ा पक्षी ।
२ उकाव पक्षी । ३ सेना की एक व्यूह रचना । ४ गरुड-
तृमा भवन । ५ चौदहवें कल्प का नाम । ६ छप्पय छंद का
५५ वां भेद । ७ देवालियों में पूजा की घटी । ८ रंग विशेष
का घोड़ा । —ग्राह्य-पु० श्री विष्णु । —ग्रासण (न)
—पु० चौरामी ग्रासणों में से एक । विष्णु, ईश्वर ।
—केतु-पु० विष्णु । —गाम, गामी-पु० विष्णु ।
—घंटी-पु० देवालियों में पूजा का घंटा । —घज, हजज-पु०
विष्णु । गरुड की आकृति में बना स्तम्भ । —वक्ष-पु०
नृत्य की एक मुद्रा । —पति-पु० विष्णु । —पास-स्त्री०
शत्रुओं को बांधने का फंदा, पाग । —पुराण-पु० अठारह
उप पुराणों में से एक । —वाह-पु० विष्णु । —वेग
—पु० अत्यन्त तीव्र गति । —व्यूह-पु० सेना की एक
व्यूह रचना विशेष ।

गरुडा-स्त्री० चमारों के गुरु, एक ब्राह्मण जाति ।

गरुडो-पु० चमारों के गुरु गरुडा जाति का व्यक्ति ।

गरुत-पु० [सं०] पक्षी का पर, पंख ।

गरुतमान-पु० [सं० गरुतम्] गरुड ।

गरुतत्व-पु० [सं०] १ गौरव । २ महत्त्व, बड़प्पन । ३ भारीपन,
बोझ ।

गरुवाई-स्त्री० १ बड़ाई, गौरव । २ अहंकार, गर्व । ३ भारीपन,
गुरुता ।

गरुवो-देखो 'गरुवो' ।

गरुठ-वि० जबरदस्त, प्रचण्ड ।

गरुतमान-देखो 'गरुतमान' ।

गरु (रो)-पु० [अ० गुरु र] १ अभिमान, घमंड, गर्व । २ शेखी,
अहंवाद । -वि० १ बड़ा, दीर्घ । २ प्रचंडकाय, जबरदस्त ।
३ भयंकर ।

गरु-वि० गर्व युक्त ।

गरेडो (डो)-पु० वृक्षों की टहनी के बीच में हाने वाली ग्रंथि ।

गरै-कि० वि० १ पास, समीप, निकट । २ देखो 'ग्रह' ।

गरोळणी (बो)-कि० मिलाना, मिश्रण करना ।

गरोळणी (बो), गरोळावणी (बो)-कि० मिलवाना, मिश्रण
करवाना ।

गरोळी-स्त्री० छिपकली ।

गरोह-देखो 'गिरोह' ।

गरौ-पु० १ भड़बेरी के पौधों का बड़ा गोला । २ ढेर, समूह ।
३ झुंड । ४ नाश, संहार । ५ साहस, हिम्मत । ६ शक्ति,
बल । ७ देखो 'गिरोह' ।

गल्हो-स्त्री० दूध निकालने का बर्तन (मिवात) ।

गल-पु० [सं० गल] १ गला, गर्दन, कंठ । २ स्वर, आवाज ।
३ वाद्ययंत्र । ४ मछली, मीन । ५ मांसपिंड । ६ फांसी ।
७ डाली, शाखा । -वि० मीठा, मधुर । -कि० वि० पास,
निकट, समीप । इर्द-गिर्द ।

गल-देखो 'गल्ल' ।

गलकवळ-स्त्री० गाय के गले के नीचे लटकने वाला भाग ।

गलकट-वि० हत्यारा ।

गलका-स्त्री० १ स्वादिष्ट पदार्थ खाने की क्रिया । २ देखो
'गिल्ला' ।

गलकाणी (बो), गलकावणी (बो)-कि० [सं० गलकलितम्]
१ खाना, निगलना । २ हजम करना ।

गलकोड़-स्त्री० बेलगाड़ी के जूए के नीचे लटकने वाली लकड़ी
जिसके सहारे गाड़ी खड़ी की जाती है ।

गलकोर-स्त्री० जट की बनी पतली रस्मी जो बेल के गले पर
बांधी जाती है ।

गलकी-पु० पास ।

गलकोड़-स्त्री० घोड़े के गले में बांधने की चमड़े की पट्टा ।

गलगठ, (गंडो, गंड)-पु० [सं० गलगण्ड] गले में होने वाला
ग्रंथि रोग ।

गळगळ-वि० अधिक घृत युक्त भोजन या कौर ।

गळगळ-स्त्री० मुंह या गले में पानी भर जाने की अवस्था, गद्गदवस्था ।

गळगळणी (बो)-क्रि० निगलना ।

गळगळी-वि० [सं० गद्गद्] (स्त्री० गळगळी) १ अश्रुपूर्ण नेत्रों वाला । २ गद्गद् या आर्द्र कण्ठयुक्त । ३ भाव विभोर । ४ पी से तर । ५ मुंह तक भरा पाय ।

गळगेटी-पु० खिचड़ी घाट आदि में पकते समय पड़ने वाली गांठ ।

गळगोत-स्त्री० गिलोल ।

गळग्रह-पु० गले का एक रोग ।

गळग्रहवाई-स्त्री० घोड़े के गले का एक रोग ।

गळघट-वि० १ टुकड़ खोर, भिखारी । २ घृत से तर ।

गळघेदक-पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

गळजोड़ (जोड़ी)-पु० १ वर-वधू का गठबंधन । २ दो पशुओं को गले में रस्सी से गरस्पर बांधने का ढंग । ३ बांधने का उप-करण । ४ जोड़ा, युग्म ।

गळभूप-स्त्री० हाथी के गले का कवच ।

गळक्षट-देखो 'गळघट' ।

गळटी-पु० १ पशु की गर्दन के चारों ओर लपेटा जाने वाला, वस्त्र या रस्सी । २ गले का बंधन ।

गळडव (डवी)-पु० १ तलवार रखने का चमड़े का पट्टा विशेष । २ हाथ में चोट आने पर हाथ व गले से बांधने की पट्टी । ३ पशुओं के गले का पट्टा ।

गळडळ-पु० मांस पिंड ।

गळणी-स्त्री० [सं० गलनी] १ अन्तम गलाने का उपकरण । २ गर्दन ।

गळणी-देखो 'गरणी' ।

गळणी(बो)-क्रि० १ किसी वस्तु का विकृत हो कर क्षय होना, रज-रज होकर गिरना । २ घुलना, सूखमाणु होकर घुलना । ३ जीर्ण-शीर्ण होना । ४ नाश होना, मिटना । ५ अधिक पकने पर ठोसपना समाप्त हो जाना । ६ मिटना, नष्ट होना । ७ कृष या क्षीण होना । ८ खेल में खिलाड़ी का हारना । ९ बीतना, समाप्त होना । १० ठलना । ११ निगलना, हजम करना । १२ खाना । १३ पिघलना ।

गळतंग-पु० काठी कसने के लिए ऊंट के गले से बांधा जाने वाला तंग ।

गळत-वि० [प्र० गलत] १ जो ठीक, उचित या सही न हो । २ असत्य, भ्रूट । ३ अशुद्ध । ४ दोष या त्रुटिपूर्ण । ५ अनुचित, नाजायज । ६ अमूलक । -पु० १ एक प्रकार का कुष्ठ रोग । २ लावारिस सम्पत्ति ।

गळतकियो-पु० १ मिरहाने का तकिया । २ मकान की पट्टियों के संश्लिखलों पर लगाया जाने वाला पत्थर ।

गळतकोड़-पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।

गळतनांभी-पु० शुद्धि-पत्र ।

गळतफहमी, (फैमी)-स्त्री० भ्रम, भ्रामक बोध ।

गळताण (तान)-वि० १ भल्लीन, निमग्न । २ अनुरक्त । ३ मस्त, उन्मत्त । ४ नशे में चूर ।

गळतिथी-पु० १ ऊंटों का एक रोग । २ एक रोग विशेष जिससे शरीर दिन प्रति दिन क्षीण होता जाता है ।

गळनी-स्त्री० १ भूल । २ अनुचित कार्य । ३ त्रुटि । ४ लापर-वाही । ५ अशुद्धि । ६ कमी ।

गळगणियो-वि० [सं० गलगण] १ बकरी के गले के नीचे लटकने वाली स्तननुमा ग्रंथि । २ पशुओं के गले का बंधन । ३ देखो 'गळयो' ।

गळपैली-स्त्री० बंदरों के गले के नीचे की ग्रंथि ।

गळयो-पु० [सं० गल-हस्त] १ गले को पकड़ कर दिया जाने वाला धक्का । २ देखो 'गळगणियो' ।

गलस्थण, गळस्थियो-पु० [सं० गलस्थानु] गले का बंधन ।

गळवाई-स्त्री० मंदग्नि के कारण होने वाला एक कंठ रोग ।

गळनहो-पु० हाथियों का एक रोग ।

गळपटियो (पटो)-पु० १ स्त्रियों के कंठ का आभूषण । २ कुत्तों के गले का पट्टा । ३ गर्दन के चारों ओर का वृत्ताकार भाग । ४ कुरते, कमीज आदि का वह भाग जो उक्त भाग पर रहता है ।

गळपूँछियो-पु० एक प्रकार का वास ।

गळप्रोत-पु० कंठ का आभूषण ।

गळफडी-पु० गाल का भीतरी भाग ।

गळफांसी-स्त्री० १ गले की फांसी । २ आपत्त, कष्टप्रद कार्य ।

गळबंध-पु० १ कंठावरोध । २ कंठ का आभूषण ।

गळबत्थ (बथ)-स्त्री० आलिंगन ।

गळबळ-पु० १ कोलहल । २ गड़बड़ी, खलबली ।
--वि० अस्पष्ट ।

गळबाई (बाह, बांही, बाखड़ी, बाथ)-स्त्री० गले में बाँहे डाल कर मिलन, आलिंगन, भेंट ।

गळबाह-पु० रजट के स्तंभ पर लगा लकड़ी का अंकोड़ा ।

गळबूचियो (बूचो)-पु० हथेली की अर्द्धचंद्राकार अवस्था जिससे गला पकड़ कर धक्का दिया जाता है ।

गळबोबो-देखो 'गळगणियो' ।

गळत्रो-पु० १ गले का फंदा, बंधन । २ अस्पष्ट ध्वनि ।

गळमाळ-स्त्री० गले में डालने की जयमाला ।

गळमुच्छी-पु० गालों पर बड़े बालों का गुच्छा ।

गळमुद्रा-स्त्री० [सं० गल-मुद्रा] शिव पुजा में गाल बजाने की मुद्रा, गलमंदरी ।
 गळमेव-स्त्री० गले में होने वाली बड़ी गांठ ।
 गलर-पु० १ वृक्ष या पीपे का रस भरा भाग । २ स्वाद या रस लेने की क्रिया ।
 गळ-पु० १ निगलने की क्रिया या भाव । २ द्रव पदार्थ के निकलने से उत्पन्न ध्वनि ।
 गळठाटी-पु० १ निगलने का शब्द । २ शोक का विलाप, रुदन ।
 गळठाणी (बी), गळठाणी (बी)-क्रि० १ रोना, विलाप करना । २ डबडबाना । ३ मुंह में पानी भरकर गल-गल ध्वनि करना ।
 गळवांणी-स्त्री० आटे व गुड़ के योग से बना सीठा पेय पदार्थ ।
 गळवांणी-पु० १ गले का बंधन, फंदा । २ एक प्रकार का चरमाती घास । ३ देखो 'गळवांणी' ।
 गळवांन-वि० नष्ट्वर ।
 गळवाह-पु० गर्दन पर किया जाने वाला प्रहार ।
 गळसरी, (सिरी)-स्त्री० [सं० गलसरी] कंठघ्नी नामक आभूषण ।
 गळसांकळी-पु० कंठ का आभूषण विशेष ।
 गळसुंड (डी)-स्त्री० १ गले के अन्दर की उल्टी जीभ । २ तालू का एक रोग । ३ देखो 'गोघ्री' ।
 गळसुघी-पु० [सं० गलसूती] शीतकाल में मस्त ऊंट के मुंह से निकलने वाला गुल्ला ।
 गळहार-पु० गले का आभूषण ।
 गळांछळी गळांठी-पु० [सं० गलोच्छ्रत] गले तक भरा हुआ बर्तन ।
 गळांझी-देखो १ 'गळकोर' । २ देखो 'गळांठी' ।
 गलांण-देखो 'गलांनि' ।
 गलांणी, गलांणणी-पु० १ किसी पात्र के गले का बंधन । २ गले में बांधने की रस्सी । ३ एक प्रकार का वर्षा ऋतु में होने वाला घास जिसे पशु नहीं चरते हैं ।
 गलांबडी-पु० पशुओं के गले से बांधी हुई रस्सी ।
 गळा-क्रि० वि० पास, निकट, समीप ।
 गळाई-स्वो० १ किसी घातु को पिघालने का कार्य । २ इस कार्य की मजदूरी । -पु० प्रकार, तरह, मानिद, समान ।
 गळाको-पु० १ गला निकाल कर भांकने की क्रिया । २ निगलने की क्रिया ।
 गळगळ-स्त्री० जल्दी-जल्दी निगलने की क्रिया ।
 -क्रि० वि० शीघ्रता से ।
 गळाणी (बी)-क्रि० १ पिघलाना, द्रव मान कराना । २ खिलाना । ३ हजम कराना । ४ बीताना, समाप्त कराना । ५ खेल में किसी खिलाड़ी को परास्त कराना ।

६ कृशकाय या क्षीण कराना । ७ मिटवाना, नष्ट कराना । ८ अधिक पकाना । ९ जीर्ण-शीर्ण कराना । १० सूक्ष्माणु करके धुलाना, धुलवाना । ११ विकृत कर रज-रज करके गिरवाना, क्षय कराना ।
 गलांनि (नी)-स्त्री० १ ग्लानि, घृणा । २ अरुचि । ३ खिन्नता, पश्चाताप, दुःख । ४ खेद, प्रफसोस । ५ थकान । ६ ह्वास । ७ निर्वलता बीमारी ।
 गळाफडी-देखो 'गळफडी' ।
 गलार-स्त्री० १ भेड़ की ध्वनि । २ गिद्ध पक्षी की ध्वनि । ३ आनन्द, मोज ।
 गलाळ-पु० १ मांस पिंड । २ गोश्त खण्ड । ३ देखो 'गुलाल' ।
 गळावट-स्त्री० १ गनाने की क्रिया या भाव । २ गलने का गुण ।
 गळि-स्त्री० १ गर्दन, गला । २ देखो 'गळी' ।
 गळिचो, गलिचो-देखो 'गलीचो' ।
 गळिघाणी-पु० १ यज्ञोपवीत धारी ब्राह्मण । २ द्विज । ३ जनेऊ, यज्ञोपवीत ।
 गळियांघवर-पु० गलियों में घूमने का शौकीन ।
 गळियार, (रो)-वि० [सं० गली-चार] १ गली-गली घूमने वाला, भ्रमारा । २ ग्राह्य, धायन । ३ उन्मत्त, मस्त । -पु० गली, वीथी ।
 गळियोगळसरी-पु० गला हुआ अफीम ।
 गळियो-वि० मोठा, स्वादिष्ट ।
 गळिलानी (बी)-देखो 'गरळानी' (बी) ।
 गळी-स्त्री० [सं० गली] १ घरों के बीच का तंग व पतला रास्ता, गली । २ मुहल्ला । ३ उपाय, तरकीब । ४ सुगम रास्ता । ५ भेद, रहस्य । ६ छिद्र, छेद । -रूंची-स्त्री० भेद, रहस्य । -वि० मोठी (वस्तु) ।
 गलीच-वि० १ मीला-कुचला, गंदा । २ घृणित । -पु० १ मल-विषा । २ भूत, प्रेतादि ।
 गलीचो-पु० [फा० गलीचा] मोटा बुना, रोंददार व चित्रित एक विछोना, गलीचा ।
 गलीकुणियो-पु० गुल्मी डंडे का खेल ।
 गळु-देखो 'गळी' ।
 गळेबाज-वि० अच्छी आवाज वाला, अच्छा गाने वाला ।
 गळेहाथ-पु० शपथ के लिए गले के लगाया जाने वाला हाथ ।
 गळेटी-देखो 'गळोटी' ।
 गळे-क्रि० वि० पास, समीप, निकट ।
 गळोबळ (वळ)-वि० गुल्मगुल्म । -क्रि० वि० १ चारों ओर । २ देखो 'गळबंथ' ।
 गळी-पु० १ शरीर का, मस्तक व धड़ जोड़ने वाला अंग । गर्दन । २ कंठ । ३ कंठस्वर । ४ टेंदुवा, लंगर । ५ मुंह ।

६ पहनने के वस्त्र का गले के पास रहने वाला भाग ।
 ७ पाय का मुँह ।
 गलौ-पु० १ कोलाहल, शोरगुल । २ झुंड, समूह, दल ।
 ३ अनाज । [सं० लौ] ४ चन्द्रमा ।
 गळीघ-पु० गाल में सूजन आने का एक रोग ।
 गल्ल (ड़ी)-स्त्री० १ छोटी कहानी या कथा । २ कल्पित बात । ३ गप्प, डींग । ४ कपोल, गाल । ४ यज्ञ, कीर्ति ।
 ६ पुकार । ७ बात ।
 गल्लका (की)-स्त्री० गंडक नदी ।
 गल्ल-बल्ल-पु० १ कोलाहल । २ अस्पष्ट ध्वनि ।
 गल्लघर-पु० हाथी ।
 गल्लवल्ली-देखो 'गल्ल-बल्ल' ।
 गल्लिका-पु० डिगल का एक वर्ण वृत्त ।
 गल्लौ-पु० १ दुकानदार की पंसा रखने की पेट्टी, सन्दूक ।
 २ अनाज । ३ देखो 'गल्लसुखी' ।
 गल्ल-देखो 'गल्ल' ।
 गल्लौ-वि० १ पागल, मूर्ख । २ देखो 'गल्लौ' ।
 गव-स्त्री० [सं० गो] १ गाय, गो । २ राम सेना का एक वानर । —गवंती-स्त्री० दुधारा गाय ।
 गवड़-१ देखो 'गोड़' । २ देखो 'गवाड़' ।
 गवण-देखो 'गमन' ।
 गवणि (णी)-स्त्री० मादा भालू । —वि० १ गमन करने वाली ।
 २ गाने वाली ।
 गवणी (बी)-क्रि० गमन करना, जाना ।
 गवतम-१ देखो 'गौतम' । २ देखो 'गौतम' ।
 गवन-देखो 'गमन' ।
 गवय-स्त्री० [सं०] १ नील गाय । २ बैल की एक जाति ।
 ३ गैंडा । ४ देखो 'गव' ।
 गवर-वि० गौरे रंग का, गौर वर्ण । —स्त्री० १ गौरी, पार्वती ।
 २ गणगौर ।
 गवरजा (ज्या)-देखो 'गोरज्या' ।
 गवरमिट (मिट)-स्त्री० [सं०] १ सरकार, शासन, शासक मंडल । २ राज्य ।
 गवरल, गवरावे-स्त्री० १ पार्वती, गौरी । २ गणगौर ।
 गवराणी, (बी) गवरावणी, (बी)-देखो 'गवाणी' (बी) ।
 गवरि-देखो 'गौरी' ।
 गवरिजा-देखो 'गोरज्या' ।
 गवरी-स्त्री० पार्वती । —नब, तंबन, पुत्र-पु० गोरी पुत्र परमेश ।
 गवल-पु० [सं०] १ जगन्नी मँसा । २ नोत्र गाय ।
 गवळ-पु० १ बाल, गोपान्न । २ देखो 'गोळ' ।
 गवाई-देखो 'गवाड़ी' ।

गवाक्ष (न) गवाख, (खि, खेस)-पु० [सं० गवाक्ष] १ छोटी खिड़की । २ झरोखा । ३ राम सेना का एक सेनापति ।
 गवाड़-पु० १ चौक । २ बाड़ा, ग्राहता । ३ मुहल्ला ।
 गवाड़ी-पु० मकानों के सामने या बीच का खुला स्थान ।
 गवाणी (बी) गवावणी (बी)-क्रि० गाने के लिए प्रेरित करना, गवाना ।
 गवार-पु० १ गवार का पौधा व उसका बीज । २ देखो 'गंवार' ।
 गवारणी (नी)-स्त्री० १ गंवार स्त्री । २ चुड़ी आदि बेचने वाली स्त्री ।
 गवारपाठी-पु० घी कुंवा, गवारपाठा ।
 गवारफळी-स्त्री० गवार की फली जिसका शाक बनाया जाता है ।
 गवारिया-स्त्री० एक जन जाति विशेष ।
 गवारियो-पु० (स्त्री० गवारण) उक्त जाति का व्यक्ति ।
 गवालंव-पु० [सं० गवालम्भ] यज्ञोपवीत किया जाने वाला गो-दान ।
 गवाळ (लौ)-पु० [सं० गोपाल] १ गाय चराने वाला, खाला गोप । २ रहट का गोल चक्र जहाँ बैल घूमते हैं । ३ रक्षा ।
 ४ देखो 'गोपाळ' । —वि० रक्षक ।
 गवाळणी-स्त्री० गवालिन । गोपिका ।
 गवाळणी (बी)-क्रि० १ गायें चराना । २ रक्षा करना ।
 गवाळियो-देखो 'गवाळ' ।
 गवाळी-स्त्री० १ गाय चराने का कार्य । २ इस कार्य की मजदूरी । ३ रक्षा ।
 गवास-पु० [सं० गवाशन] गो हथियारा, कसाई ।
 गवाह-पु० [फा०] १ किसी घटना या मुकद्दमे में साक्षी देने वाला, साक्षी । २ देखो 'गवाही' ।
 गवाही-स्त्री० [फा०] किसी घटना की साक्षी ।
 गविल-वि० दूध का बना (मीठा) ।
 गवेसा-स्त्री० [सं० गवेपणा] अनुसंधान, खोज ।
 गवे-पु० राम सेना का एक वानर ।
 गवेयी-पु० गायक ।
 गव्य-वि० [सं०] १ गाय से उत्पन्न । २ गाय से प्राप्त ।
 ३ मवेशियों के लिए उचित । —पु० १ गायों का झुण्ड, समूह । २ गोचर भूमि । ३ गाय का दूध । ४ पीला रंग ।
 ५ पीला रोगन या पदार्थ । ६ क्रमान की डोरी । ७ चार मील के बराबर एक माप ।
 गस-स्त्री० [फा० गश] १ मूच्छा, बेहोशी । २ नेत्रों में होने वाली लाल रेखा ।
 गसत, (ती)-देखो 'गस्त' ।
 गसा (सो)-देखो 'गस' ।

गस्त-स्त्री० [फा० गस्त] १ घुमाई, भ्रमण, टहलाई ।
 २ पहरा, चौकीदारी के लिए लगाया जाने वाला चक्कर ।
 ३ वेश्याव्री का एक नाच । ४ दौरा । —सलामी-स्त्री०
 धीरे पर आने वाले अधिकारी को दी जाने वाली भेंट ।
 गस्ती-स्त्री० [फा० गस्ती] १ गस्त का कार्य, चौकीदारी ।
 २ दौरा । ३ चौकीदार, सिपाई । -वि० १ गस्त लगाने
 वाला । २ मुराया या चौकसी करने वाला । ३ व्यभिचारिणी
 कुल्ला ।
 गह-पु० [सं० गवें, गह] १ गर्व, अभिमान, घमंड । २ मस्ती,
 उन्माद । ३ बहादुर व्यक्ति । ४ ग्राह, घड़ियाल । ५ घर
 गृह । ६ ध्वनि, आवाज । ७ मान, प्रतिष्ठा । ८ मकान
 का एक भाग । ९ शक्ति, बल । १० युद्ध । ११ मारकाट,
 संहार । १२ ग्रहण करने की क्रिया । -वि० १ महान,
 जबरदस्त, भयंकर । २ गहरा, गंभीर । ३ मस्त । ४ घना,
 सघन । ५ दुर्गम ।
 गहक-स्त्री० १ कविता की लय, ध्वनि । २ एकत्रीकरण ।
 गहकणी (बो)-क्रि० १ इकट्ठा या एकत्रित होना । २ नगाड़ा
 बजना । ३ गाना । ४ गर्व करना । ५ पक्षियों का बोलना,
 चहकना । ६ मंडराना । ७ जोश पूर्ण आवाज करना ।
 ८ चाह या उमंग में भरना । ९ प्रफुल्लित होना,
 विकसित होना ।
 गहकाणी (बो), गहकावणी (बो)-क्रि० १ इकट्ठा या एकत्र
 करना । २ नगाड़ा बजाना । ३ गवाना । ४ जोश पूर्ण
 आवाज कराना ।
 गहकौ-पु० १ राग, तान । २ लय, ताल । ३ चहक । ४ हर्ष
 ध्वनि । ५ ढंग प्रयास ।
 गहकणी (बो)-देखो 'गहकणी' (बो) ।
 गहगंध-स्त्री० [सं० ग्रह + गंध] घ्राणेन्द्रिय, नाक ।
 गहगह-वि० प्रसन्न, प्रफुल्लित, आनंदमग्न । -क्रि० वि०
 धूमधाम से ।
 गहगहणी (बो), गहगहणी (बो)-क्रि० १ प्रसन्न या खुश
 होना । २ प्रफुल्लित होना । ३ धूम मचाना । ४ मचन,
 धन होना । ५ महकना । ६ जोश करना । ७ उत्साहित
 होना । ८ उत्सुक होना । ९ हसित होना ।
 गहगीर-वि० १ वीर बहादुर । २ गंभीर ।
 गहगाह-पु० १ झुण्ड, समूह । २ पक्षियों का झुण्ड ।
 ३ देखो 'गहगह' ।
 गहघट्ट-पु० १ समूह, झुण्ड । २ जमघट । ३ युद्ध, समर ।
 -वि० घना, सघन ।
 गहघूमणी (बो)-क्रि० मंडराना ।
 गहड़, गहड़-र-वि० १ गंभीर । २ वीर बहादुर । ३ विकट,
 भयंकर ।

गहट्ट, (ट्ट)-पु० १ नाश, विध्वंस, संहार । २ वैभव, ऐश्वर्य ।
 ३ समूह ।
 गहडंबर, (भर, मर)-वि० घना, सघन, गहरा ।
 गहण, (णि, णी)-पु० १ युद्ध, समर । २ सेना, फौज ।
 ३ फेरा, चक्कर ४ समूह । -वि० १ गंभीर, गहरा ।
 २ देखो 'गहन' ।
 गहणौ-पु० गहना, आभूषण, अलंकार ।
 गहणी (बो)-क्रि० १ रोदना, लूंदना । २ कुचलना, नष्ट
 करना । ३ धारण करना । ४ पकड़ना । ५ आच्छादित
 करना । ६ ध्वंस करना । ७ ग्रसित करना ।
 गहतंग (तंत)-वि० नशे में चूर, उन्मत्त ।
 गहन-वि० [सं०] १ गंभीर । २ गहरा । ३ दुर्गम, कठिन ।
 ४ गुप्त । ५ सघन, गाढ़ा ६ घना । ७ क्लिष्ट ।
 ८ दुःखदायी । ९ प्रखर, प्रचण्ड । १० रहस्यमय ।
 -पु० [सं० गहनम्] १ वन, जंगल । २ गुप्त स्थान ।
 ३ कष्ट, विपत्ति । ४ बंधक, रेहन । ५ ग्रहण, पकड़ ।
 ६ युद्ध लड़ाई । ७ सेना, फौज । ८ फेरा, चक्कर ।
 ९ झुण्ड समूह । १० गहराई । ११ गर्त । १२ श्रुपने का
 स्थान । १३ गुफा । १४ कलंक, दोष ।
 गहपति-देखो 'ग्रहपति' ।
 गहपूर-पु० सिंह ।
 गहबरणी (बो)-क्रि० घबराना, आकुल होना ।
 गहबरा-स्त्री० [सं० गह्वरी] पृथ्वी, भूमि ।
 गहबळ-वि० बलवान, जबरदस्त ।
 गहम-पु० गर्व, घमंड ।
 गहमत, (मत्त, मत्ती)-स्त्री० सलाह, राय, सम्मति ।
 -वि० १ गंभीर । २ उन्मत्त । ३ मदोन्मत्त ।
 गहमह, (गहमहाट)-स्त्री० १ भोड़, समूह । २ अधिकता,
 बहुलता । ३ उत्सव, धूमधाम । ४ जगमगाहट । ५ ध्वनि
 विशेष ।
 गहमहणी (बो)-क्रि० प्रफुल्लित होना ।
 गहमाती-वि० (स्त्री० गहमाती) मदोन्मत्त । गर्वोन्मत्त ।
 गहभ्रग-पु० [सं० गृह-भृग] श्वान, कुत्ता ।
 गहर-वि० १ गंभीर । २ भयंकर । ३ अथाह । ४ घना,
 अधिक । -पु० १ घमंड, गर्व । २ बड़प्पन । ३ ध्वनि
 विशेष ।
 गहरणी (बो)-क्रि० ध्वनि करना, गर्जना ।
 गहराई-स्त्री० १ गहरापन, गंभीर्य । २ आह ।
 गहराणी (बो)-क्रि० १ गर्जना । २ गदगद होना । ३ अधिकार
 में करना ।
 गहरापण (णी)-देखो 'गहराई' ।

गहरी-स्त्री० [सं० गह्वरी] पृथ्वी ।
 गहरी-वि० [सं० गहन] (स्त्री० गहरी) १ गंभीर, अथाह ।
 २ अत्रिक, ज्यादा । ३ घोर, प्रचंड । ४ दृढ़, मजबूत ।
 ५ भारी, कठिन । ६ पर्याप्त । ७ घना, घनीभूत ।
 गहळ-स्त्री० [सं० गहल] नशा, उन्माद ।
 गहळीजणो (बो)-क्रि० १ नशे में घूर होना । २ उन्माद या
 उदासी छाना । ३ सर्पविष से प्रभावित होना ।
 गहलोत-पु० एक राजपूत वंश ।
 गहली-वि० [सं० ग्रहिल] (स्त्री० गहली) पागल, बावला ।
 गहल्ल-स्त्री० १ आवड़ देवी की बहन, एक देवी । २ देखो 'गल्ल' ।
 गहवंत (तौ)-वि० १ गंभीर, गहरा । २ वीर, बहादुर ।
 ३ गविला । ४ अटल, स्थिर ।
 गहवग-पु० मल्ल युद्ध ।
 गहवर-पु० [सं० गह्वर] १ गुफा, कंदरा । २ बड़ा छेद या
 खड्डा । ३ वन । ४ गहराई, अतलता । ५ अगम्य स्थान ।
 ६ दम्भ, पाखंड ।
 गहवरणी (बो)-क्रि० १ गर्व करना । २ निडर होना । ३ घना,
 सघन होना । ४ उत्तेजित होना । ५ फूलना ।
 गहवरा (री)-स्त्री० [सं० गह्वरी] पृथ्वी, भूमि ।
 गहवान-वि० १ गविला, अभिमानी । २ जबरदस्त ।
 गहांणी-स्त्री० वेलिया गीत का एक भेद ।
 गहाणी, (बो) गहावरणी, (बो)-क्रि० १ सहार कराना । २ ग्रहण
 कराना, पकड़ाना । ३ आरगण कराना ।
 गहि-पु० [सं० गृही] कुत्ता, श्वान ।
 गहिर-देखो 'गहीर' ।
 गहितारणी (बो)-क्रि० प्रवाहित होना, बहना ।
 गहिलो (ल्लो)-देखो 'गहली' । (स्त्री० गहळी) ।
 गहीर (ह)-वि० [सं० गम्भीर] १ गम्भीर, गहरा । २ अथाह ।
 ३ घना, सघन । ४ जटिल, गहन । ५ भारी । ६ सोम्य,
 शांत । ७ मधुर । -पु० १ महादेव, शिव । २ हाथी ।
 ३ समुद्र ।
 गहीली-देखो 'गहली' । (स्त्री० गहीली) ।
 गहूँ (हूँ)-देखो 'गेहूँ' ।
 गहेठो-देखो 'गाम्ठो' ।
 गहेलड़ी, गहेल (लो)-१ देखो 'गेली' । २ देखो 'गहली' ।
 गह्वर-देखो 'गहवर' ।
 गह्वरी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि ।
 गांगड़ी-स्त्री० १ एक प्रकार का पौधा । २ इस पौधे के फल ।
 ३ डूंगरपुर की एक नदी ।
 गांगड़ी-पु० हल का एक उपकरण ।
 गांगणिय (यो)-पु० 'गांगड़ी' का फल ।

गांगनी-वि० (स्त्री० गांगनी) १ मूर्ख, विक्षिप्त । २ चंचल,
 अस्थिरचित्त ।
 गांगरत, गांगरी-पु० १ धर्म की टांय-टांय । २ बकवास ।
 गांगली-स्त्री० १ श्रावण व आषाढ़ मास में चलने वाली दक्षिण
 पश्चिम की हवा । २ एक संन्यासी का नाम ।
 गांगवरण, गांगरणी, गांगी, गांगुरा-देखो 'गांगड़ी' ।
 गांगेड़ी-पु० १ किसी बर्तन के मुंह का टूटकर अलग हुआ
 घेरा । २ मरखोपगन्त किया जाने वाला गंगाप्रवादी का
 भोज ।
 गांगेउ, गांगेय, गांगोय-पु० [सं० गांगेय] १ भीष्म । २ स्वामि
 कार्तिकेय । ३ सोना, स्वर्ण ।
 गांगो-पु० बर्तन के मुंह का घेरा । -वि० विक्षिप्त ।
 गांछा-स्त्री० धांस की डलिया आदि बनाने वाली जाति ।
 गांछउ, गांछी-पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।
 गांज (ली)-वि० १ नाश करने वाला । २ नोडने वाला ।
 गांजणी (बो)-क्रि० १ तोड़ना । २ खंडित करना । ३ मिटाना,
 नाश करना । ४ पराजित करना ।
 गांजर-स्त्री० मोट के माथ बंधा रहने वाला रस्सा, बरवा ।
 गांजरी-वि० (स्त्री० गांजरी) दुलमूल ।
 गांजवणी (बो)-देखो 'गांजणी' (बो) ।
 गांजागिर-पु० १ राजा, नृप । २ भाग्यविधाता ।
 गांजोथ-देखो 'गांजीव' ।
 गांजेड़ी-वि० गांजे का नशाबाज ।
 गांजो-पु० [सं० गंजा] १ मंग की तरह का एक अतिमादक
 पदार्थ । २ भाला, बरछा ।
 गांठ, गांठ, गांठड़ी (ड़ी)-स्त्री० [सं० ग्रंथि] १ रस्सी व धागा
 आदि में पड़ी हुई ग्रंथि, गिरह । २ वस्त्र के छोर में लगाई
 जाने वाली ग्रंथि । ३ गठरी गट्टा । ४ ईख, बांस आदि
 की पेरी । ५ अंग का जोड़ । ६ गांठदार जड़ । ७ एक
 प्रकार का गहना । ८ समूह । ९ गिल्टी, गुमड़ा ।
 १० टेढ़ापन । ११ सूजन । -गोमी-स्त्री० एक प्रकार
 की गोभी ।
 गांठड़ी-पु० १ बड़ा गट्टर । २ ऊंट के पेट में होने वाला
 एक रोग ।
 गांठली (बो)-क्रि० [सं० ग्रंथनम्] १ गांठ लगाना । २ मिलाई
 करना, टांका लगाना । ३ जुते की मिलाई करना ।
 ४ अपने पक्ष में करना । ५ वश में या काबू में करना ।
 ६ किसी से पैसा या कोई वस्तु छेँट लेना । ७ प्राप्ति
 करना । ८ दबाना, दबोचना । ९ किसी स्त्री को सम्भोग
 के लिए राजी करना । १० कल्पना करना ।

गांठाई-स्त्री० गांठने का कार्य, इस कार्य की मजदूरी ।
 गांठाणी-स्त्री० बुताई के लिए मृत के घाघों को साधने का कार्य ।
 गांठियो-पु० १ हल्दी, सोंठ आदि की जड़ । २ गांठ के रूप में
 प्याज, लहसुन आदि । ३ एक प्रकार का घास ।
 गांठी(उ)-वि० मन में तनाव या ऐंठन रखने वाला । -पु०
 १ स्त्रियों का एक प्रकार का आभूषण । २ देखो 'गांठी' ।
 गांठे-क्रि० वि० पास में, अधिकार में ।
 गांठी-पु० १ केसर की गठरी । २ देखो 'गांठी' ।
 गांड़-स्त्री० [प्रा० गड्ड] १ मल-ठार, गुदा । २ धोनि ।
 ३ पेंदी, तला ।
 गांड़र-स्त्री० १ किसी वस्तु की पेंदी, तला । २ एक प्रकार
 की घास ।
 गांडोच-पु० [सं०] अर्जुन का धनुष ।
 गांङ्क-वि० १ गुदा में छुन कराने वाला । २ कायर, डरपोक ।
 गांण-देखो 'गांन' ।
 गांणपत-देखो 'गणपति' ।
 गांणवर-पु० शिव, महादेव ।
 गांती-देखो 'गाती' ।
 गांती-देखो 'गांथी' ।
 गांथणी (बी)-क्रि० [सं० ग्रंथन] १ सूचना, गुंथाई करना ।
 २ मोटी सिलाई करना, गांठना । ३ दो पशुओं को परस्पर
 बांधना ।
 गांथी-पु० [सं० ग्रंथन] १ बांधन । २ दो पशुओं का परस्पर
 का बांधन ।
 गांथिनी-स्त्री० [सं०] १ गंगा । २ अक्रूर की माता ।
 गांधरव-वि० [सं० गांधर्व] १ गांधर्व संबंधी । २ गांधर्व देशोत्पन्न ।
 -पु० १ गांधर्व । २ घोड़ा, अश्व । ३ सामवेद का एक
 उपवेद । ४ आठ प्रकार के विवाहों में से एक, प्रेम विवाह ।
 ५ गांधर्वों की कला । —बेव-पु० संगीत शास्त्र ।
 गांधार-पु० [सं०] १ एक पश्चिमी प्रदेश, कांधार । २ संगीत
 में तीसरा स्वर । ३ एक राग विशेष । —पंचम-पु० एक
 पांडव राग । —भैरव-पु० एक राग विशेष ।
 गांधारी-स्त्री० [सं०] १ गांधार देश की राज कन्या जो कौरवों
 की माता थी । २ मेघ राग की पांचवीं रागिनी । ३ तंत्र के
 अनुसार एक नाडी । ४ जैनों के एक नामक देवता ।
 गांधी-पु० [सं० गांधिक] (स्त्री० गांधिण, गांधिणी) १ तेल, इत्र
 का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
 २ वर्षाकालिक एक कीड़ा विशेष । ३ हींग । ४ राष्ट्रपिता
 महात्मा गांधी ।
 गान (नि)-पु० [सं० गान] १ गायन । २ गीत, गाना ।
 ३ संगीत । —गर-पु० गायक । —बंस-वि० गाने वाला,
 गान योग्य ।

गांन, गांमडियो (डो)-पु० [सं० ग्राम] १ गांव, देहात । २ पुरा ।
 ३ जाति, समाज । ४ समूह, समुदाय । ५ सरगम के स्वर ।
 ६ राग । —खेर-पु० गांव की गायों का समूह । —गोचर-
 पु० चारागाह भूमि । —भाभी-पु० गांव में हरकारे का
 कार्य करने वाला भांडी ।
 गांमड़ी-वि० ग्रामीण, ग्रामवासी ।
 गांमतरी-पु० [सं० ग्रामान्तर] एक गांव से दूसरे ग्राम की
 यात्रा, ग्राम यात्रा । यात्रा ।
 गांमाऊ-वि० गांव का, गांव संबंधी ।
 गामि, गांमो-वि० [सं० गामिन्] १ चलने वाला, गतिमान ।
 २ घूमने वाला । ३ सवार होने वाला । ४ संबंध रखने
 वाला । ५ संभोग या रमण करने वाला । ६ श्रीकृष्ण ।
 गामेडू-देखो 'गविडू' ।
 गामेट (ठ)-पु० मुहल्ले में एकत्र होकर बहने वाला वर्षा
 का पानी ।
 गामेतो-वि० घास-वासी, ग्रामीण । गांव का स्वामी ।
 गांमोगांम-क्रि० वि० प्रत्येक व सभी गांवों में । एक गांव से
 दूसरे गांव तक ।
 गांव-पु० ग्राम । —खेर-पु० गायों का समूह । —घाट-पु०
 मरणोपरान्त किया जाने वाला भोज ।
 गांवडियो, गांवडो-देखो 'गांम' ।
 गांवेडू-पु० ग्रामीण, ग्राम का निवासी ।
 गांस, गांसी, गांसु-स्त्री० १ रोक-टोक, प्रतिरोध । २ प्रतिबंध ।
 ३ बांधन । ४ ईर्ष्या, द्वेष । ५ कपट, छल । ६ वैर भाव ।
 ७ नोक, मुकीला भाग । ८ तीर, बारा । ९ दुष्ट स्वभाव,
 दुष्ट प्रकृति ।
 गा-स्त्री० [सं०] १ पार्वती । २ लक्ष्मी । ३ गंगा । ४ पृथ्वी ।
 ५ सरस्वती । ६ शक्ति । ७ गाय । ८ नाभि । —पु० १ बुद्ध ।
 १० ज्ञान, विवेक । ११ धनी । १२ बुद्धिमान, पंडित ।
 १३ गीत, भजन ।
 गाअठी-पु० १ खलिहान में अनाज की बालों व डंठलों का
 किया जाने वाला चूर्ण, रोदन, कुचलना । २ रोदने,
 कुचलने की क्रिया, कचूमर । ३ नाश, विध्वंस ।
 गाअरणी-देखो 'गायणी' ।
 गाअरणी (डो)-क्रि० १ खलिहान में अनाज की बालों व डंठलों
 को रोदना, कुचलना । २ रोदना, कचूमर निकाल देना ।
 ३ नष्ट करना । ४ देखो 'गाएणी' (बी) ।
 गाइ-स्त्री० गाय ।
 गाइक-देखो 'गायक' ।
 गाइडमल-देखो 'गायडमल' ।
 गाइणी (ए)-देखो 'गायणी' ।
 गाइब-देखो 'गायब' ।

गाई-स्त्री० गाय, गी ।

गाऊ-पु० दो मील या एक कोस की दूरी या लम्बाई ।

गाग-स्त्री० घाव या चोट से पड़ने वाला खट्टा, घाव ।

गागड़ (डो)-पु० कच्चा बेर, बेर ।

गागड़णी, (डो)-क्रि० दर्द भरी आवाज करना, चिल्लाना ।

गागड़दा-वि० अधिक गाढ़ा, घना ।

गागरी, (डो)-क्रि० १ चिल्लाना, कुहराम मचाना ।

२ विलाप करना, रोना ।

गागर-स्त्री० [सं० गगर्] गगरी, घट, घडा ।

गागरी-देखो 'घाघरी' ।

गागोलिया-स्त्री० गुजराती नटों की एक शाखा ।

गाघ-देखो 'घाघ' ।

गाघणी, (डो)-क्रि० कराहना, दर्द भरी आवाज करना ।

गाघराणी-पु० पुनर्विवाह, विशेषकर देवर के साथ ।

गाघरियो, गाघरी-१ देखो 'घाघरी' । २ देखो 'गाघराणी' ।

गाछ-पु० १ दीर्घकाय वृक्ष । २ वृक्ष ।

गाज-स्त्री० [सं० गर्जन] १ गर्जना । २ बादल की गर्जना ।

३ बिजली, वज्र । ४ मधोमत्त ऊंट की आवाज ।

५ भारी या तेज आवाज ।

गाजणी-वि० (स्त्री० गाजणी) १ गर्जने वाला । २ दहाड़ने वाला । ३ बजने वाला । ४ जोर से बोलने वाला ।

गाजणी, (डो)-क्रि० १ गर्जना, कड़कना । २ दहाड़ना ।

३ हुंकार भरना । ४ जोर से बोलना । ५ बजना ।

६ प्रसन्न होना । ७ चिल्लाना ।

गाजनमाता-स्त्री० बनजारों की कुलदेवी ।

गाजर-स्त्री० मूली की तरह का एक भीठा कंदफल ।

गाजरियो-पु० १ गाजर का बना खाद्य पदार्थ । २ गेहूं की फसल के साथ होने वाला घास ।

गाजी, गाजीऊ-पु० [घ० गाजी] १ घर्म के लिए लड़ने वाला वीर पुरुष । २ एक प्रकार का ऊंट । ३ घोड़ा । -वि० श्रेष्ठ वीर । -मरद-पु० बहुत बड़ा वीर । घोड़ा ।

गाटक-पु० १ गुटका । २ घूट ।

गाटा-पु० बेलगाड़ी के धाटे के नीचे लगने वाले डंडे ।

गा'टी (डो)-देखो 'गाप्रटी' ।

गाढ-पु० [सं० गर्त] १ गर्त, गड़हा । २ गाड़ी, बेलगाड़ी । ३ भय । ४ आपत्ति । ५ देखो 'गाढ़' ।

गाड़णी (डो)-क्रि० [सं० गर्तन] १ गड़हा खोदकर भजवृत्त रोप देना । २ खड्डे में डालकर ऊपर मिट्टी से दबा देना । दफनाना, गाड़ना । ३ धुसेड़ना, धसा देना । ४ जमाना, जमाकर स्थिर करना ।

गाडर, (री)-स्त्री० भेड़, मेघ । -तातिथी-पु० वर्षा ऋतु का एक घास ।

गाडरियो-पु० १ एक लता फल विशेष । २ श्वेत बादल ।

गाडरी-पु० नर भेड़, मेघ ।

गाडलिया-देखो 'गाडोलिया' ।

गाडलियो-देखो 'गाडोलियो' ।

गाडांसल-पु० गाड़ी या छकड़े पर रखा सामान ।

गाडी-स्त्री० [सं० शकटी] १ बेल या घोड़ों से खींचा जाने वाला पहियादार यान । बेलगाड़ी, शकट, रथ । २ इसी तरह मशीन द्वारा चलने वाले यान यथा रेलगाड़ी, मोटर गाड़ी, आदि । ३ अंगोठी, छोटा चूल्हा । ४ बेल गाड़ी के अग्रभाग में लगाया जाने वाला लकड़ी का गुटका ।

गाडीणी-पु० मिट्टी के बड़े-बड़े जल पात्रों से लदा हुआ शकट या बेलगाड़ी ।

गाडीत, गाडीती-पु० १ देमवाली मुसलमानों का एक भेद । २ गाडोलिया लुहार । ३ गाड़ी चलाने वाला ।

गाडूली-पु० १ छोटी बेल गाड़ी । २ शकट । ३ सामान लाने का ढेला । ४ तीन पहियों का, बच्चों का खिलौना जिसके सहारे बच्चा चलना सीखता है ।

गाडैती-पु० १ गाड़ी में ही घर रखने वाले लुहार । २ गाडीवान ।

गाडैसर (हर)-पु० गाड़ी आने-जाने का मकान का बड़ा द्वार ।

गाडोलिया-पु० गाडैती लुहार ।

गाडोली-स्त्री० १ भूरी-छोटी चिड़िया । २ छोटी गाड़ी ।

गाडी-पु० [सं० शकट] १ बड़ी गाड़ी । २ सामान से भरी गाड़ी । ३ गाड़ी में एक बार में भरा जाने वाला सामान, चारा आदि । ४ बीस मन का परिमाण ।

गाढ़-पु० १ शक्ति, बल । २ मान प्रणिष्ठा । ३ गर्व अभिमान । ४ कडाई, कठोरता । ५ दृढ़ता, मजबूती । ६ ठोसपन । ७ धैर्य, धीरज । ८ सहनशीलता । ९ गंभीरता, गहराई । १० प्रेम, आग्रह । ११ साहम, हिम्मत । १२ वृद्धावस्था । १३ पादापन । १४ सघनता, घनत्व । १५ कपट । १६ श्रवान, कुत्ता । १७ ध्यान, सतर्कता । १८ भ्रम, डर, आतंक । -वि १ अत्यधिक, ज्यादा, बहुत । २ दृढ़, मजबूत । ३ घना, गाढ़ा । ४ कठिन, विकट । ५ पूर्ण, युक्त, परिपूर्ण । -गुर-वि० महान, बड़ा । वीर, घोड़ा । अहंकारी, अभिमानी । -धंभ-वि० वीर । -बाळ-वि० धीर, गंभीर ।

गाडउ-देखो 'गाढी' ।

गाडूम-स्त्री० [सं० गाडूम] १ गर्व । २ गंभीरता । ३ वीरता, बहादुरी । ४ मान, प्रणिष्ठा । ५ शक्ति, बल ।

गाडूमल-देखो 'गायडूमल' ।

गाडांगुर-देखो 'गाडगुर' ।

गाडाक-देखो 'गाढी' ।

गाढामाह-पु० १ शौकीन, ठेना । २ आर्य पुत्र । ३ लोक गीतों में पति के प्रति प्रयुक्त शब्द ।

गाढिम-देखो 'गाढम' ।

गाढीनो, गाढू, गाढेराव, गाढेल, गाढेराव-वि० (स्त्री० गाढीली, गाढेली) १ श्रैयवान, गंभीर । २ वीर बहादुर । ३ शक्तिशाली, बलवान ।

गाढी-वि० [सं० गाढ़] (स्त्री० गाढी) १ जो पतला न हो, मोटा, गाढ़ा । २ जिसमें तरलता कम हो, पानी कम हो, गाढ़ा द्रव । ३ गहरा, घना । ४ बहुत अधिक सख्त, मजबूत, ठोस, दृढ़ । ५ जिसमें घनिष्ठता हो, घनिष्ठ । ६ अत्यधिक बहुतायत में । ७ बनावट में मोटा । ८ धीर, गंभीर । ९ जबरदस्त, शक्तिशाली । १० जोशीला, जोश वाला ।

गाणो-पु० [सं० गान] १ गायन की क्रिया । २ गाना, गीत ।

गा'णो (बो)-देखो 'गाग्रणो' (बो) ।

गाणो (बो)-क्रि० १ गायन करना । २ गीत-भजन आदि गाना । ३ मधुर ध्वनि करना । ४ स्वर ताल में ध्वनि प्रलापना । ५ गुनगुनाना । ६ स्तुति करना । ७ वर्णन करना ।

गात-पु० [सं० गात्र] १ शरीर, अंग, तन । २ शरीर का अवयव ।

गातरियो, गातरी, गातो-पु० १ कपाट के बीच लगने वाला डंडा । २ निश्रेणी में आड़ा लगने वाला डंडा । ३ देखो 'गात' ।

गातियो-पु० १ जबड़ा । २ देखो 'गाती' ।

गातरी, गाति, गाती-स्त्री० [सं० गात्रिका] १ साधुओं का शरीर पर वस्त्र लपेटने का एक ढंग । २ उक्त ढंग से लपेटा जाने वाला वस्त्र, चादर ।

गाती-देखो 'गातरी' ।

गात्र-देखो 'गात' ।

गात्रगुप्त-पु० श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

गात्रवरण-पु० स्वर साधन की एक प्रणाली ।

गात्रसंत-पु० हाथी ।

गाथ-स्त्री० १ गाथा । २ कीर्ति । ३ दीवत, धन । ४ यश । ५ देखो 'गात' ।

गाथा (बो)-स्त्री० १ स्तुति । २ काव्यात्मक कथा । ३ वृत्तान्त, हाल । ४ वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो । ५ छन्द । ६ गीत । ७ फारसियों के धर्म ग्रंथ का एक भेद । ८ एक प्रकार का अर्द्ध मात्रिक छन्द । ९ यशगान ।

गाव-पु० शब्द, वचन ।

गावड़, गावड़ियो, गावड़ो-पु० गोदड़, सियार । -वि० कायर, डरपोक ।

गावरणी-पु० मंजरी, कोपल ।

गावरणी, (बो)-क्रि० १ अंकुरित होना । २ उत्पन्न होना । ३ गदराना ।

गावरित-वि० १ गद्गद, प्रसन्न । २ मुडोल, पुष्ट । ३ गदराया हुआ । ४ स्थूल ।

गावह-पु० गर्दभ, गधा ।

गावो-स्त्री० १ छोटा गद्दा । २ गद्देदार बिछौना । ३ जौन पर डाला जाने वाला वस्त्र । ४ बैठक । ५ राज्य सिंहासन । ६ उत्तराधिकार में प्राप्त पद । ७ गाय, भैंस, बकरी आदि का घन । -खर-पु० राजा । उत्तराधिकारी । -नसीन-पु० सिंहासनारूढ़ ।

गावेल-पु० रहट में लगा मोटा लट्ठा जिसके एक शिरे पर बैठ कर बैल हके जाते हैं ।

गावोतरी-पु० [सं० गोवधोतर] १ जमींदार या शासक से ऊब कर किसी वंश या जाति का गांव या देश त्याग । जाते समय वे गांव या प्रदेश की सरहद पर गौ-शिर की पत्थर की मूर्ति खड़ी कर जाते थे । २ भूमिदान के समय उस भूमि की सीमा पर गाय व बछड़े का चित्रांकित पत्थर खड़ा करने की क्रिया ।

गावो-पु० १ कीचड़ । २ गधा ।

गाघ-पु० कुत्ता, श्वान ।

गाधि-पु० [सं०] विश्वामित्र के पिता का नाम । -तंड, पुत्र, सुत, सुनंद-पु० विश्वामित्र । -पुर-पु० कान्य कुब्ज ।

गाधेय-पु० [सं०] विश्वामित्र ।

गाधोतरी-देखो 'गादोतरी' ।

गाफल, गाफिल-वि० [अ० गाफिल] १ बेखबर, असावधान । २ लापरवाह ।

गाफलो-स्त्री० असावधानी, गफलत । लापरवाही ।

गाबड़ (ठ)-स्त्री० ग्रीवा, गर्दन ।

गाबरू-वि० जवान, युवा (मेवात) ।

गाबलियो, गाबो-देखो 'गाभो' ।

गाभ-देखो 'गरभ' ।

गाभो-पु० १ वस्त्र, कपड़ा । २ हल्का भोजन ।

गाय-स्त्री० [सं० गो] १ अत्यन्त सीधा सादा व दुधार मादा चौपाया जानवर, गऊ । २ सीधा-सादा प्राणी ।

गायक (बो)-पु० [सं० गायक] १ गाने वाला, गवैया । २ ग्राहक ।

गायड़-पु० गवै, अभिमान । -वि० १ गंभीर । २ बहादुर । ३ अभिमानी, स्वाभिमानी । -गाडो-वि० गंभीर ।

-मस-पु० लोक गीतों का नायक । वीर योद्धा ।

गायटो, (डो) देखो 'गाग्रटो' ।

गायण (न)-पु० [सं० गायन] १ गाने की क्रिया, गायन । ३ गीत, भजन । ३ ईश्वर का नाम, संकीर्तन । ४ गायक । ५ वेश्या ।
गायणी, (नी)-स्त्री० १ गाने वाली, गायिका । २ गणिका, वेश्या ।

गायणी-पु० विष्नादियों का गुरु ।

गायत्री (य)-स्त्री० [सं०] १ आर्या द्वारा उपास्य एक अत्यन्त पवित्र वैदिक मंत्र । २ चौबीस अक्षरों का एक वैदिक छन्द विशेष । ३ दुर्गा । ४ गंगा । ५ गाय । —ईस-पु० ब्रह्मा, ईश्वर ।

गायब-वि० [प्र०] लुप्त, गुप्त, अन्तर्धान । —पु० गाने की क्रिया ।

गायबिट-पु० [सं०] गोबर ।

गार-स्त्री० [सं० गाल] १ गोबर में चिकनी मिट्टी मिला दीवार या आंगन का लेपन । २ मिट्टी, रेत । ३ कीचड़, पंक । ४ दल-दल । ५ चिकनी मिट्टी का गारा । ६ गहरा खड्डा । ७ गुफा, कंदरा ।

गारक-पु० [सं० गैरिक] सोना, स्वर्ण ।

गारणी-स्त्री० [सं० गार्गी] १ अत्यन्त विदुषी एवं बहानिष्ठ वैदिक स्त्री । २ दुर्गा ।

गारडव (डी डू)-देखो 'गारडव' ।

गारह-पु० [प्र० गारत] समूह, गुण्ड ।

गारडव (डी, डू डू)-पु० [सं० गारडिक] १ सपेरा । २ सपे विष उतारने वाला ।

गारत-वि० [प्र०] नष्ट, बरबाद ।

गारव-स्त्री० १ सेना की एक टुकड़ी । २ गहरा, चौकी । ३ गारदी ।

गारब-देखो 'गारब' ।

गारवण-स्त्री० रबी की फसल को प्रथम बार सिचाई करने की क्रिया ।

गारि (री)-देखो 'गार' ।

गारड़ पु० [सं० गारड़] १ सोना, स्वर्ण । २ गरुड़ पुराण । ३ बहुतर कलाशो में से एक । ४ गरुड़ । ५ बड़ा, महान ।

गारड़ि (ड़ी)-पु० [सं० गारुडी] १ सपेरा । २ विष वैद्य ।

गारड़िष, गारुडी-देखो 'गारडव' 'गारडी' ।

गारुतमत-पु० [सं० गारुतमत] १ मरकत मणि । २ गरुड़देव का अस्त्र ।

गारौ-पु० १ चुनाई में काम आने वाला चुने या मिट्टी का लेपन, गारा । २ कीचड़ ।

गाल-स्त्री० [सं० गालि] १ अपशब्द, गाली । २ संबंधियों को सम्बोधित करते हुए व्यंग्य वचनों में गाया जाने वाला लोकगीत । ३ कलक । ४ दुराजीय । ५ मध्य, बीच ।

६ दर्रा । ७ बड़ा छेद । ८ जहर, विष । ९ संहार, नाश । १० गाड़ा द्रव पदार्थ, गाढ़ा नमक युक्त द्रव पदार्थ जो पशुओं को 'गाल' में पिलाते हैं । ११ समय, काल । १२ कीचड़ में खेलने से बच्चों के पैरों में होने वाला विकार । १३ बरग चुकने वाले बादल । —क, गर-वि० १ गलाने वाला । २ नाश करने वाला ।

गाल, गालड़ि, गालड़ी-पु० कपोल ।

गालण-स्त्री० १ तपाकर पिघलाने या गलाने की क्रिया । २ मिटाने या नष्ट करने की क्रिया । —वि० १ मिटाने वाला । २ गलाने वाला ।

गालणी (घो)-क्रि० १ गलाना, पिघलाना । २ मिटाना, नष्ट करना । ३ मर्दन करना । ४ क्षीण करना, कृश करना ।

गालफवार-पु० अर्द्ध चन्द्राकार दरवाजे के कपाट ।

गालवी-पु० गर्व अभिमान ।

गालमसूरी (री)-पु० गले के नीचे लगने वाला नर्म तक्रिया ।

गालनौ-वि० (स्त्री० गालनी) गला हुआ, तरल । —पु० गला हुआ अफीम ।

गालरकोटे, (गोट, पोटे)-वि० १ बाले या सिट्टे निकलने की अवस्था में । २ पूर्ण युवा । ३ योवनोन्मुखी ।

गालव-पु० विश्वामित्र के शिष्य एक ऋषि ।

गाला-स्त्री० १ एक वृक्ष विशेष । २ एक औषधि विशेष । —बंध-पु० गले के बाधने की रस्सी ।

गालि-१ देखो 'गाल' । २ देखो 'गाली' ।

गालिब-वि० [सं० गालिब] १ विजयी, जीतने वाला । २ समर्थ, बलवान । —पु० उर्दू के एक प्रसिद्ध शायर ।

गाली-स्त्री० १ कान के आभूषण का पिछला गोल भाग । २ डोरे की गोल गिर्री, गिट्टी (वासर) । ३ छोटा फंदा । ४ घोड़े की रकाब से लगी चमड़े की रस्सी । ५ अपशब्द, गाली । —गलोच-पु० अपशब्दों का आदान-प्रदान ।

गाली-पु० १ गले का बंधन । २ फंदा । ३ जुलाहों की डरकी के मध्य का रिक्त स्थान । ४ घोड़े के पाँव का एक भाग । ५ पीसने के लिए चक्की में एक बार में डाला जाने वाला अनाज । ६ अनाज डाला जाने वाला चक्की का मुँह । ७ घास, कौर ।

गाबत्री-१ देखो 'गायत्री' । २ देखो 'गाय' ।

गाव-पु० [सं० गाव] १ पहाड़ । २ चट्टान, पत्थर । ३ बादल । ४ देखो 'गाय' ।

गावकुस-स्त्री० [सं० ग्रीवाकुण] लगाम ।

गावकोहान-पु० पीठ पर कुबड़ वाला घोड़ा ।

गावड़-स्त्री० १ गर्दन, गीवा । २ गाला, गोप ।

गान्धर्वयो-पु० १ गायों में रहने वाला बैल । २ गायें चराने वाला ।

गावड़ी-स्त्री० गाय ।

गावची-स्त्री० कलई पर का धाभूषण ।

गावण-देखो 'गायण' ।

गावणी (बो)-देखो 'गाणी' (बो) ।

गावणी (बो)-देखो 'गाहणी' (बो) ।

गावतकियो-पु० बड़ा, गोल तकिया ।

गावत्रि. गावत्री-१ देखो 'गायत्री' । २ देखो 'गाय' ।

गावसुम्मी-पु० फटे सुम का घोड़ा ।

गावाळणी-देखो 'गवाळी' ।

गावाळणी (बो)-क्रि० १ गायों को चराना । २ गायों की रक्षा करना । ३ रक्षा करना ।

गावित्रि. गावित्रो-१ देखो 'गायत्री' २ देखो 'गाय' ।

गावो-वि० गाय का, गाय संबंधी । —घी-पु० गाय का घी ।

गासमारी-देखो 'घासमारी' ।

गास, गामियो-पु० [सं० ग्राम] कोर, निवाला घास ।

गाह-पु० [सं० गृह] १ गृह, मकान, घर । २ रक्षक । ३ विष्टवंस, नाश । [सं० गाथा] ४ गाथा, कथा । ५ गीत, गायन । —वि० विष्टवंस, संहार करने वाला ।

गाहक-पु० [सं० ग्राहक] १ लेने वाला, खरीदने वाला, खरीददार, क्रेता । २ चाहने वाला इच्छुक । ३ कद्रदान ।

गाहकी-स्त्री० १ बित्री । २ देखो 'गाहक' ।

गाहड़-देखो 'गायड़' । —मल, मल्ल-गायड़मल' ।

गाहड़णी (बो)-देखो 'गाहणी' (बो) ।

गाहटी (ठी)-देखो 'गाघटी' ।

गाहणी-स्त्री० १ गाने वाली । २ ढोली जाति की स्त्री । ३ आर्या छन्द का एक भेद ।

गाहणी (बो)-क्रि० [सं० गाह] १ संहार करना, नाश करना । २ मथना । ३ कुचलना, रोदना । ४ लूटना । ५ दबाना । ६ थाह लेना । ७ भवगाहन करना ।

गाहा-देखो 'गाथा' ।

गाहड़-देखो 'गायड़' । —मल, मल्ल-गायड़मल' ।

गाह-पु० २८ मात्राओं का एक छन्द ।

गाहेणि (णी)-स्त्री० गाथा छन्द का एक भेद ।

गाही-देखो 'गाथा' ।

गिजी-देखो 'गंजी' ।

गिडक-देखो 'गंडक' ।

गिडग-देखो 'गंडग' ।

गिडी-स्त्री० गेंद ।

गिदड़ी-स्त्री० गंदगी ।

गिदणी (बो)-क्रि० [सं० गंदनम्] १ सड़ना, बदबू देना ।

२ गंदा होना ।

गिदफड़-देखो 'गदफड़' ।

गिदाणी (बो), गिदावणी-क्रि० सड़ाना । गंदा करना । बदबू फैलाना ।

गिदियो, गिदोयी-१ देखो 'गंदियो' । २ देखो 'गंदी' ।

गिदुक-पु० उपधान, तकिया ।

गिमर, गिधार-देखो 'गंमार' ।

गिबारो-देखो 'गंवारी' ।

गिग-स्त्री० छुहारे की गुठली ।

गिगन (न्न)-पु० घ्राकाश । —पल, पति-पु० सूर्य, भानु । —मंडळ-गगनमंडळ' ।

गिगनार-देखो 'गिरनार' ।

गिगाय-स्त्री० १ एक देवी का नाम । २ वच्चे का जोर से रुदन ।

गिड'ग-देखो 'गिडकंद' ।

गिड'व-पु० [सं० गिरींद्र] १ पहाड़, पर्वत । २ हिमालय । ३ ऊंट ।

गिड-पु० १ योद्धा । २ सूप्रर । ३ फोड़ा । ४ ऊंट । ५ पर्वत । ६ हिमकण । —वि० जबरदस्त, शक्तिशाली ।

गिडकंद (कंध)-वि० [सं० गिरिकस्कंध] जिसके कंधे विशाल हों । —पु० १ सूप्रर, बराह । २ ऊंट ।

गिडकणी (बो)-देखो 'गुडकणी' ।

गिडकाणी (बो), गिडकावणी (बो)-देखो 'गुडकाणी' (बो) ।

गिडगिडाणी (बो)-क्रि० [सं० गद्गद्] १ विनम्र प्रार्थना करना । २ दया की भीख मांगना । ३ गिगियाना ।

गिडगिडाहट-स्त्री० विनम्र, प्रार्थना । दयनीय अवस्था ।

गिडगिडी-स्त्री० १ कूरे पर लगी गोल चकरी । २ पतंग की डोर या डोरा लपेटने की चरखी । ३ देखो 'गड़गड़ी' ।

गिडणी (बो)-देखो 'गुडणी' (बो) ।

गिडव-देखो 'गिडदी' ।

गिडवाव-पु० १ विस्तार । २ घरा । ३ क्षेत्रफल ।

गिडवी-स्त्री० भीड़, जमघट, झुंड ।

गिडवी-पु० १ सिर का पिछला भाग, गुद्दी । २ देखो 'गुडवी' ।

गिडराज-पु० १ शूकर राज, सूप्रर । २ ऊंट ।

गिडराय-स्त्री० ग्रावह देवी ।

गिडि (डी)-देखो 'गिड' ।

गिडी-पु० १ घोला, हिमकण । २ बड़ा व वेडीय पत्थर ।

गिचणी (बो)-क्रि० अधिक भार से दबना, पिचकना ।

गिचपिच-वि० उलभन मरा, अस्पष्ट । —पु० हिचकिचाहट ।

गिचपिचियो-पु० छोटे तारों का पूंज, कृत्तिका नक्षत्र ।

गिचरकी-पु० १ नर्म वस्तु के जोर से दबने से होने वाली आवाज । २ दबाव पड़ने पर निकलने वाला शूदा ।
 ३ हिचकिचाहट । ४ देखो 'गुचरकी' ।
 गिचरपिचर-स्त्री० अस्पष्ट बात, भिन्न ।
 गिचछाण-स्त्री० मिचलाहट, घृणा, अरुचि ।
 गिचली-देखो 'गुचली' ।
 गिचर-पिचर-देखो 'गिचर-पिचर' ।
 गिजा-स्त्री० [अ०] १ स्वादिष्ट व पौष्टिक खाद्य पदार्थ ।
 २ आफत ।
 गिट, गिटक-स्त्री० १ ग्रंथि । २ निगलने की क्रिया या भाव ।
 ३ गोज कंकर ।
 गिटकिरी-स्त्री० तान लेने में स्वर का विशेष प्रकार का कंपन ।
 गिटली (बो)-क्रि० [सं० गृ] निगलना, घुटक भरना ।
 गिटपिट-स्त्री० निरर्थक शब्द या वार्ता ।
 गिटायी (बो), गिटायणी (बो)-क्रि० निगलाना, निगलने के लिए प्रेरित करना ।
 गिटक-देखो 'गिटक' ।
 गिटक, गिट, गिटि-देखो 'गिट' ।
 गिरणगोर, गिरणगौर-देखो 'गणगौर' ।
 गिरणगी (बो)-क्रि० [सं० गणन्] १ गणना करना, गणना करना । २ संख्या तय करना । ३ हिसाब लगाना, गणित करना । ४ जोड़ना । ५ कुछ महत्व या कीमत समझना ।
 ६ प्रतिष्ठा, सम्मान या आदर करना । ७ प्रभाव मानना ।
 ८ निगलना ।
 गिरत, गिरती-स्त्री० [सं० गणन्] १ गणना, गिनती ।
 २ संख्या । ३ तादाद । ४ किसी भाषा की अंक माला ।
 ५ उपस्थिति, हाजरी । ६ लेखा-जोखा । ७ मान्यता ।
 प्रतिष्ठा ।
 गिरायी (बो), गिरायणी (बो)-क्रि० १ गिनवाना, गणना कराना । २ संख्या तय कराना । ३ हिसाब लगवाना ।
 गिर-पु० [सं० गद] १ कवि । २ वक्ता । ३ एक रोग विशेष ।
 ४ भाषण ।
 गिरबदणी (बो)-देखो 'गदबदणी' (बो) ।
 गिररी-देखो 'गदरी' ।
 गिरलणी (बो)-क्रि० गंदला होना, गाढ़ा होना ।
 गिरावड़ (डो)-स्त्री० पर्वत के पास की कटी भूमि । (मेवात)
 गिर (ध)-पु० [सं० गृ] तेज उड़ने वाला एक मांसाहारी बड़ा पक्षी, जिसकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण होती है । —पंख-पु० नीर, बाण । —राज-पु० जटावु । गहड़ ।
 गिरका-देखो 'गिरिका' ।
 गिरर, (त)-स्त्री० खयाल, ध्यान, पर्याप्त ।

गिरान-देखो 'ग्यान' ।
 गिरानी-देखो 'ग्यानी' ।
 गिरायत (तो)-पु० १ स्वजातीय व्यक्ति । २ संघर्षी, गिरेदार ।
 ३ लड़की या लड़के के समुदाय वाला कोई व्यक्ति ।
 गिरारणी (बो)-क्रि० १ ध्यान देना, पर्याप्त करना । २ महत्त्व देना । ३ समझना । ४ गिनना ।
 गिनी-स्त्री० सोने का एक सिक्का ।
 गिनी-देखो 'गनी' ।
 गिप्ती-स्त्री० मरुपत्नी ।
 गिरान-देखो 'ग्यान' ।
 गिरानी-देखो 'ग्यानी' ।
 गिरार-देखो 'गवार' ।
 गिराड्यो-पु० सूखा गोबर ।
 गिरद (दर, दू, घ)-पु० [सं० गिरिद्र] १ हिमालय । २ सुमेरु ।
 ३ बड़ा पर्वत । —स्त्री० गर्द, धूलि । —मेर-पु० सुमेरु पर्वत ।
 गिर-पु० पर्वत । —अठार, अठार-अठारगिर ।
 —चर-पु० पर्वतों पर विचरण करते वाला । —पु० मेर सुमेरु पर्वत ।
 गिरकद-देखो 'गिरकंध' ।
 गिरक-पु० १ गर्व, घमंड । २ ईर्ष्या, द्वेष, डाह ।
 गिरगड़ी-देखो 'गिरगड़ी' ।
 गिर-गिराट-पु० १ हिचकिचाहट । २ मिचलन । ३ पश्चाताप ।
 ४ असन्तोष ।
 गिर-ग्रहण-पु० श्रीकृष्ण, गिरिधारी ।
 गिरज (झ, डो)-देखो 'गिद्ध' ।
 गिरजपत, (पति, पती)-देखो 'गिरिजापति' ।
 गिरजा-स्त्री० पावती । —नर्दन-पु० गणेश । —पत, पति, वर-पु० शिव ।
 गिरजाधर-पु० ईमाइयों का चर्च ।
 गिरजी-पु० १ गिद्ध । २ गिरजाधर ।
 गिरम-देखो 'गिद्ध' ।
 गिरट्ट-वि० [सं० गरिष्ठ] १ महान् बड़ा । २ देखो 'गरिष्ठ' (ठ) ।
 गिरडू, (डो)-पु० पेड़ों के रस विकार से निकलने वाला पदार्थ ।
 गिरल-स्त्री० १ कराह, टीस । २ ग्रहण । ३ कष्ट-क्रन्दन ।
 गिरलणी, (बो) गिरलणी, (बो) गिरलवणी, (बो)-क्रि० १ कराहना, दर्द भरी आवाज करना । २ जहलाने का शब्द कहना । ३ गिरगिड़ाना ।
 गिरली, (बो)-क्रि० १ गिर पड़ना, गिरना । २ खड़ी अवस्था में न रहना । ३ ह्रास, अवतति या पतन होना । ३ लकी

आदि का समुद्र में मिलना । ५ कहीं पड़ जाना । ६ घेरे में
आजाना । ७ जकड़ जाना, प्रसित होना । ८ दुबल या
झीण होना । ९ प्रतिष्ठा में कम हो जाना । १० युद्ध में
मारा जाना । ११ विफल होना ।

गिरत-पु० पर्वत ।

गिरथ-देखो 'गरथ' ।

गिरव-पु० [फा०] चारों ओर का घेरा । -क्रि० वि० चारों ओर
घास-पाम । देखो 'गरद' ।

गिरवम-देखो 'गरदम' ।

गिरववाह (वाय)-पु० विस्तार, फैलाव, प्रसार ।

गिरवांणी-पु० चुननदार पहनावे के नीचे का घेरा ।

गिरवाणी, (बो)-क्रि० घेरा लगाना घेरना ।

गिरवाव-पु० १ चक्कर । २ विस्तार, फैलाव ।

गिरवावर-पु० [फा० गिर्दावर] भूप्रबंध विभाग का कर्मचारी ।

गिरवावरी-स्त्री० [फा० गिर्दावरी] १ 'गिरदावर' का पद या
कार्य । २ कृषि भूमि की मोके पर जाकर की जाने
वाली जांच ।

गिरह-१ देखो 'गरद' । २ देखो 'गिरद' । ३ देखो 'गिद्ध' ।

गिरध-देखो 'गिद्ध' ।

गिरधर, (धरण, धरिणी)-पु० [सं० गिरिधर] १ श्रीकृष्ण ।

३ हनुमान । ३ ईश्वर । -स्त्री० ४ पृथ्वी । -नागर-पु०
श्रीकृष्ण । -सात-पु० श्रीकृष्ण का एक नामान्तर ।

गिरधरिणी (णी)-स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

गिरधार (धारण, धारन, धारी)-देखो 'गिरधर' ।

गिरनार-पु० १ गुजरात के एक पर्वत का नाम । २ इस पर्वत
पर स्थित तीर्थ ।

गिरनारी-पु० १ गिरनार का निवासी । २ सर्प को रिझाने
वाली एक राग ।

गिरपत (पति, पती)-देखो 'गिरिपति' ।

गिरपतार-वि० [फा०] १ पकड़ा हुआ । २ हथकड़ी डाला
हुआ । ३ कैदी । ४ प्रसित ।

गिरवांण, (झांण)-देखो 'गिरवांण' ।

गिरमट, (मिट)-पु० बड़ई का एक औजार ।

गिरमा-देखो 'गरिमा' ।

गिरमाथ-पु० [सं० गिरि-मस्तक] १ सुमेरु पर्वत । २ पहाड़
की चोटी ।

गिरमाळ-स्त्री० १ पर्वत श्रेणी । २ अमलतास ।

गिरमास-देखो 'गरमास' ।

गिरमिर-पु० [सं० गिरिमेरु] सुमेरु पर्वत ।

गिरमी-देखो 'गरमी' ।

गिरमेर (मेरु)-पु० [सं० गिरिमेरु] सुमेरु पर्वत ।

गिरयंद-देखो 'गिरीद' ।

गिरमणी-स्त्री० [सं० गिरिमणि] पार्वती, गौरी ।

गिरराक (राका)-पु० [गिरि + आरक] सुमेरु पर्वत ।

गिरराज-देखो 'गिरिराज' ।

गिरराय-स्त्री० १ श्री ग्रावड़ देवी । २ पार्वती ।

गिरवर-पु० पहाड़ । बड़ा पहाड़ । -धणी, धर-पु० श्रीकृष्ण ।

गिरवांण, (न)-पु० [सं० गीर्वाण] १ देव, देवता, सुर । २ ऊँट
की नकेल । -पत-पु० इन्द्र ।

गिरवांणी-स्त्री० १ देवी । २ अप्सरा, मुखाला । ३ देववाणी,
संस्कृत भाष ।

गिरवाणी (बो)-क्रि० १ गिराने का कार्य कराना, गिरवाना ।
२ घेरने के लिए प्रेरित करना । ३ प्रतिष्ठा कम कराना ।
४ विफल कराना । ५ पटकवाना ।

गिरवी (वें)-वि० [फा०] बंधक, रेहन । -नांमो, पत्र-गिरवी
का शर्तनामा ।

गिरवर, गात-वि० प्रचंड शरीर धारी ।

गिरव्वर-देखो 'गिरवर' ।

गिरस-देखो 'गिरीस' ।

गिरसर-पु० पर्वत शिखर ।

गिरसार-पु० [सं० गिरिसार] लोहा ।

गिरसुता-देखो 'गिरिसुता' ।

गिरस्ती-देखो 'ग्रहस्ती' ।

गिरह-स्त्री० [फा०] १ ग्रंथि, गांठ । २ गज का सोलहवां भाग,
एक नाप । ३ कलाबाजी । ४ पर्वत, पहाड़ । ५ मुसीबत ।
६ देखो 'ग्रह' ।

गिरांमणी (णी)-स्त्री० एक प्रकार की घास ।

गिरा-स्त्री० [सं०] १ सरस्वती । २ वाणी, बोली । ३ भाषा ।
४ विद्या । ५ जिह्वा । ६ कविता, शायरी ।
७ सरस्वती नदी ।

गिराई-पु० १ पुलिस या आरक्षी विभाग । २ पुलिस का बड़ा
अफसर, महानिरीक्षक ।

गिराक (ग)-पु० ग्राहक ।

गिराणी (बो)-क्रि० १ गिराना, पटकना । २ खड़ी दशा में न
रहने देना । ३ पतन या अवनति कराना । ४ पदावनति
कराना । ५ मिलाना, समाहित करना । ६ कहीं डाल देना,
खो देना । ७ प्रतिष्ठा में कमी करना । ८ युद्ध में मार
गिराना । ९ विफल करना । १० उखाड़ना, फाड़ना ।

गिरापति (पितु)-पु० [सं०] ब्रह्मा ।

गिराव-पु० १ छरेंदार तोप का गोला । २ ऊमरकोट क्षेत्र
की भूमि ।

गिरायक-देखो 'ग्राहक' ।

गिरारक-पु० [सं० गिरि + आरक] सुमेरु पर्वत ।

गिराळ-पु० पर्वत, पहाड़ ।

गिराव, गिरावट—स्त्री० १ गिरने की क्रिया या भाव, पतन, कमी, ह्रास । २ उतार, घटती । ३ हीन भावना, तुच्छता । ४ घेराव ।

गिरावणौ (बौ)—देखो 'गिराणी' (बौ) ।

गिरास—पु० १ उपाय, तरकीब । २ मास ।

गिरासिया—स्त्री० अरावली पहाड़ के घास-पास बसने वाली एक जाति ।

गिरासियौ—पु० १ उक्त जाति का व्यक्ति । २ थोड़ी भूमि का मालिक ।

गिरालमो—पु० [सं० गिरालमो] १ कवि । २ पंडित ।

गिरिव—देखो 'गिरींद' ।

गिरि—पु० [सं०] १ पर्वत, पहाड़ । २ टीला । ३ चट्टान । ४ एक प्रकार का नेत्र रोग । ५ दसनामियों का एक भेद । ६ आठ की संख्या ॥ ७ खेलने की गेंद । ८ बूँहा, मूसा । —घार—पु० पीतल । —कंटक—पु० वज्र । —गुड़—पु० कन्दुक, गेंद । —ज—पु० लोहा । —जा—स्त्री० पार्वती । —घर, घरन—पु० श्रीकृष्ण । हनुमान । —घातु—पु० गेरू । —धारन, धारी—पु० श्रीकृष्ण । —बबज—पु० इन्द्र । —त्रिणि—स्त्री० पार्वती । गंगा । नदी, सरिता । —नाय—पु० शिव, महादेव । —राज—पु० बड़ा पर्वत, हिमालय, सुमेरु, गोवर्धन पर्वत । —सार—पु० शिलाजीत । लोहा । —सुत—पु० मैताक पर्वत । —सुता—स्त्री० पार्वती । गंगा । —खग—स्त्री० पर्वत की चोटी ।

गिरिघो—देखो 'गिरिघौ' ।

गिरिक—पु० [सं० गिरिकः] १ गेंद । २ शिव, महादेव ।

गिरिज—पु० [सं०] १ लोहा । २ भ्रूक । ३ शिलाजीत । ४ गेरू ।

गिरिजा—स्त्री० पार्वती, उमा । —पत, पति, पती—पु० शिव महादेव ।

गिरिजावोज—पु० [सं०] गंधक ।

गिरिज—पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ समुद्र ।

गिरिमा—देखो 'गिरिमा' ।

गिरिमांडोब—क्रि० वि० टखने लक ।

गिरिघौ—पु० ऐड़ी के ऊपर बने हड्डी के गुटके, टखना ।

गिरिसंधि—स्त्री० [सं० गिरि-संधि] दो पहाड़ों के बीच की नीची भूमि, पाटी ।

गिरिस—देखो 'गिरीस' ।

गिरींद (द्र)—पु० [सं०] १ हिमालय । २ बड़ा पर्वत । ३ सुमेरु ।

गिरी—स्त्री० १ नागिल का गूदा या उसका टुकड़ा । २ मिनी, गूदा ।

गिरीघो—देखो 'गिरिघौ' ।

गिरीयक—देखो 'गिरिक' ।

गिरीस—पु० [सं० गिरीश] १ शिव, महादेव । २ हिमालय, पर्वत । ३ कोई बड़ा पर्वत । ४ शिव लिंग ।

गिरिघो—वि० १ सुन्दर मनोहर । २ सम्पन्न । ३ गम्भीर । ४ गुणज्ञ ।

गिरि—स्त्री० [सं० ग्रह] १ आपत्ति, संकट, मुसीबत । २ देखो 'गिरिह' । ३ देखो 'ग्रह' । —गोबर—'गोचर' । —बाज—पु० कलाबाजी दिखाने वाला कबूतर ।

गिरीघर—देखो 'गिरिघर' ।

गिरिका—स्त्री० हंसी, दिलगी ।

गिरिका—स्त्री० नदी । —सिला—स्त्री० गंडक नदी ।

गिरिगिरी—देखो 'गुल्लिगिरी' ।

गिरिगिरी—स्त्री० १ गुदगुदी । चुनचुनाहट । २ हल्की खुजली । ३ चोड़ों की एक जाति ।

गिरिट—पु० १ मुलम्मा । २ एक सफेद व चमकीला, हल्का धातु ।

गिरिटो—स्त्री० १ ग्रंथि गांठ । २ एक प्रकार का रोग । ३ एक प्रकार का छोटा कीटाणु ।

गिरिण—वि० निगलने वाला । —पु० १ गला, गर्दन । २ देखो 'गिरिणी' ।

गिरिणी, (नौ)—स्त्री० १ भोजन उतरने की गले की नलिका । २ हड्डी के नीचे का भाग ।

गिरिणी (बौ)—क्रि० १ निगलना, खाना । २ अधिकार में करना । ३ संहार करना । ४ पिघलना, द्रवित होना । ५ घूट घूट कर पीना ।

गिरिबिला—पु० मुसलमान ।

गिरिबिलाणौ, (बौ)—क्रि० १ व्याकुल होना । २ प्रलाप करना, बकना ।

गिरिबो—पु० १ कोलाहल, शोर । २ गाने की ध्वनि । ३ शिकायत । ४ देखो 'गलबो' ।

गिरिस, गिरिसो—पु० १ मुलायम गद्दा, बिछोना । २ तकिया ।

गिरिण, (णी) गिरिण, (नौ)—देखो 'गिरिणि' ।

गिरिण—पु० १ आवरण । २ स्थान ।

गिरार—स्त्री० १ गला, गर्दन । २ देखो 'गलार' ।

गिरारी—स्त्री० गिरहरी नामक छोटा जानवर ।

गिरास—स्त्री० पानी आदि पीने का लम्बा पात्र ।

गिरिजि—वि० निगला हुआ ।

गिरि—१ देखो 'गुल्ली' । २ देखो 'गिरिगिरी' ।

गिरिड़ी—स्त्री० १ गुड़-घी के मेल से बनी मोटी रोटी । २ घी का छोटा पात्र ।

गिरिणी (बौ)—क्रि० १ पीला करना । २ पानी डाल कर पीला करना । ३ मिश्रित करना । ४ सूँटना ।

गिरिण—स्त्री० [फा०] वृक्षों पर चढ़ने वाली लता, गृह्य ।

गिलोरो-मांझिया-स्त्री० घी युक्त रोटी ।
 गिलोळ-देखो 'गुलेल' ।
 गिलोळी-पु० १ मिट्टी की बनी छोटी गोली । २ गुलेल से फेंका जाने वाला कंकड़ ।
 गिलोवणी, (बो)-देखो 'गिलोणी' (बो) ।
 गिली-पु० १ भगडा, टंटा । २ निंदा, अपकीर्ति । ३ खबर, सन्देश । ४ हंसी, मजाक ।
 गिल्ली-स्त्री० १ गुदगुदी । २ गुल्ली ।
 गिबल-पु० रोझ ।
 गिबवर-पु० [सं० गिरिवर] पर्वत, पहाड़ ।
 गिसी-वि० [सं० मिश्र] अशुभ, भयंकर ।
 गिस्ती-देखो 'ग्रहस्ती' ।
 गीऊ-देखो 'गऊ' ।
 गीगणी-स्त्री० पीले नेत्री का एक छोटा पक्षी ।
 गींडवो-देखो 'गींदवो' ।
 गींडाळियो, गींडाळी, गींडोळियो, गींडोळी-पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक मोटा कीड़ा ।
 गींववो-पु० [सं० गेंदुक] उपधान, छोटा गोल तकिया ।
 गो-स्त्री० १ शोभा, छबि । २ स्त्री । ३ वाणी । ४ सरस्वती । ५ अमृत । -वि० १ कठोर । २ गत ।
 गीग्रामाळतो-स्त्री० एक मात्रिक छंद विशेष ।
 गीखम-देखो 'ग्रीस्म' ।
 गीगली, गीगी-पु० (स्त्री० गीगली, गीगी) छोटा बच्चा, शिशु ।
 गीगणी, (बो)-क्रि० १ जोर से रोना । २ करुण क्रंदन करना ।
 गीगोड़ी-स्त्री० वरसाती कीट विशेष ।
 गीजड़-पु० आंस का मेल ।
 गीजा-स्त्री० बिना नगीने की अंगूठी ।
 गीड-पु० [सं० किट्ट] आंस का मेल ।
 गील-स्त्री० टीस, कसक ।
 गीणणी (बो)-क्रि० १ कराहना । २ चीखना । ३ रोना ।
 गीत-पु० [सं० गीतम्] १ गाने योग्य कविता । २ भजन, पद । ३ लोक गीत । ४ डिगल का छंद विशेष । ५ चौसठ कलाओं में से एक । ६ बहत्तर कलाओं में से एक । ७ मांगलिक गायन । ८ यश, कीर्ति ।
 गीतका-पु० १ एक मात्रिक छंद विशेष । ३ बीस वर्णों का एक छंद विशेष ।
 गीतणी-स्त्री० १ गीतों की गायिका । २ एक पक्षी विशेष ।
 गीता-स्त्री० [सं०] १ भगवद् गीता । २ राम गीता आदि वेदान्त ग्रंथ । ३ वृत्तान्त, हाल । ४ कथा । ५ छब्बीस मात्रा का एक मात्रिक छंद । ६ छब्बीस वर्णों का एक वृत्त ।
 गीतारथ-वि० [सं० गीतार्थ] बहुभुत (त्रैत) ।

गीतारी-स्त्री० १ झुण्ड बनाकर रहने वाला एक पक्षी । २ गायन विद्या में प्रवीण स्त्री ।
 गीतिका-देखो 'गीतका' ।
 गीतेरण-देखो 'गीतणी' ।
 गीवड़-पु० सियार, शृगाल ।
 गीवल-स्त्री० १ आंधी निकलने के बाद आकाश पर छायी रहने वाली गर्द । २ देखो 'गिद्ध' ।
 गीवी-देखो 'गादी' ।
 गीघ-देखो 'गिद्ध' ।
 गीया-स्त्री० एक मात्रिक छंद विशेष ।
 गीरंव-देखो 'गिरींद' ।
 गीरथ-पु० [सं०] १ बृहस्पति का नाम । २ जीवात्मा ।
 गीरदेवी-स्त्री० [सं० गीर्देवी] सरस्वती, शारदा ।
 गीरपति (ती)-पु० [सं० गोपति] १ बृहस्पति । २ विद्वान, पंडित ।
 गीसापण (पणी)-पु० भ्रातृता, नमी, तरी ।
 गीसी-वि० (स्त्री० गीली) भीगा हुआ, नम, तर ।
 गीलोपनी (पणी)-वि० सुकुमार, सुन्दर, नाजुक ।
 गील्लसणी (बो)-क्रि० निगलना, प्रसना ।
 गीसम-देखो 'ग्रीस्म' ।
 गुंगट-पु० १ घूं-घूं का शब्द । २ घूंघट ।
 गुंघळ-देखो 'गूँछळी' ।
 गुंज-देखो 'गूँज' ।
 गुंजणी (बो)-देखो 'गूँजणी' (बो) ।
 गुंजन-पु० [सं०] १ भ्रमर गुंजार की आवाज । २ मधुर ध्वनि ।
 गुंजा-स्त्री० [सं०] १ घुंघची नामक लता । २ इस लता का फल या बीज । ३ धीमी आवाज । ४ ढोल । ५ ध्यान । ६ खाद्य पदार्थ विशेष ।
 गुंजाइस (ईस, यस)-स्त्री० [फा० गुंजाइश] १ स्थान, जगह । २ मुभीता । ३ व्यवस्था, प्रबंध ।
 गुंजाणी (बो)-क्रि० १ ढीलापन मिटाना, कसना, कसावट लाना (बढ़ई) । २ देखो 'गूँजणी' (बो) ।
 गुंजाफळ-पु० घुंघची, चिरमी ।
 गुंजामाळ-स्त्री० घुंघचियों की माला ।
 गुंजार-स्त्री० १ धीरों की गूँज । २ ध्वनि विशेष । [सं० गुह्यागार] ३ सामान गृह, भण्डार । ४ गोदाम । ५ ताल गृह ।
 गुंजारणी (बो)-क्रि० [सं० गुञ्जनम्] १ गुनगुनाना । २ गर्जना । ३ भङ्कृत होना । ४ दहाड़ना ।
 गुंजारब (रखल)-पु० १ मधुर ध्वनि । २ गर्जना ।

गुंजावणी (बो)— १ देखो 'गुंजावणी' (बो) । २ देखो 'गुंजावणी' (बो) ।

गुंजाहल-देखो 'गुंजाहल' ।

गुंजो-पु० एक प्रकार की मिठाई ।

गुंजारणी (बो)-देखो 'गुंजारणी' (बो) ।

गुंज-देखो 'गुंज' ।

गुंठही-पु० [सं० गुंठि] घूँघट ।

गुंठो-पु० ताटे कद का घोड़ा ।

गुंङ-पु० १ मल्हार राग का एक भेद । २ गुण्डा ।

गुंङी (ढी)-स्त्री० १ कमीज आदि का बटन । २ ग्रंथि ।

गुंङी-वि० [सं० गुंङक] (स्त्री० गुंङी) १ दुर्वृत्त, बदमाश ।

२ मन में गांठ रखने वाला । ३ लुच्चा, लफंगा, धूर्त ।

गुंढेल-देखो 'गुंढेल' ।

गुंथित-वि० [सं० ग्रंथित] गुंथा हुआ ।

गुंवरह-क्रि० वि० निकट, पास, समीप ।

गुंफ-पु० [सं०] १ जाल । २ उलझन । ३ गुच्छा । ४ बंधन ।

५ गुंथाई । ६ एकीकरण । ७ रचना । ८ क्रम निर्धारण ।

९ कराभूषण ।

गुंबज-पु० [फा० गुंबद] भवन या देवालय का गोलाकार शिखर ।

गुंमार (रौ)-पु० १ तहखाना । २ गुम्बज ।

गु-पु० [सं०] १ अर्क । २ प्राण । ३ कामदेव । ४ नर ।

५ गुण । ६ पय । ७ कुत्ता । ८ खर । ९ भय । १० समाज ।

११ विष्टा, मल । १२ युक्ति, उपाय ।

गुमार-देखो 'गुमार' ।

गुमाळ (ळी)-पु० १ गांव के बीच का चौक । २ ग्वाल, भाला ।

गुख-पु० गवाक्ष, खिड़की ।

गुगर-पु० घुंघरू ।

गुगळ (गुगळ, गुगुळ)-पु० [सं० गुग्गुल] १ एक कांटेदार वृक्ष ।

२ सलाई का पेड़ जिसमें धूप या राल निकलती है ।

—धूप-पु० उक्त गौंद से बना धूप ।

गुग्घर-पु० घुंघरू । —माळ-स्त्री० घुंघरू की माला ।

गुग्घस-पु० १ बिना जल के बादल । २ मृगी रोग । ३ मृगी रोग से पीड़ित व्यक्ति के मुख के भाग ।

गुग्घो, गुग्घो-स्त्री० रूई या भेड़ की ऊत का बना वस्त्र विशेष ।

गुड़-पु० १ पका कर जमाया हुआ गन्ने का रस, गुड़ । २ हाथों का कवच । ३ गेंद ।

गुड़कणी (बो)-क्रि० लुढ़कना ।

गुड़कणी (बो) गुड़कावणी (बो)-क्रि० १ लुढ़काना ।

२ धमकाना, डराना ।

गुड़की-देखो 'घुड़की' ।

गुड़को-पु० १ लुढ़कने की क्रिया या भाव । २ ध्वनि, शब्द ।

गुड़गांठ-पु० १ एक प्रकार का खेल । २ इस खेल में काम आने वाला मोल बड़ा पत्थर । ३ अत्यन्त कसी हुई गांठ ।

गुड़गुड़-स्त्री० १ द्रव पदार्थ में वायु घुसने से उत्पन्न ध्वनि ।

२ वात विकार से पेट में होने वाली ध्वनि या हलचल ।

गुड़गुड़ाणी (बो)-क्रि० १ गुड़-गुड़ शब्द करना । २ हुक्का पीना ।

गुड़गुड़ियो-पु० १ हुक्का । २ हुक्के के नीचे का जल-पात्र ।

गुड़गुड़ी-१ देखो 'गुड़गुड़' । २ देखो 'गुड़गुड़ियो' ।

गुड़गुड़ीलो-वि० गांठ-गंठीला, ग्रंथि युक्त ।

गुड़गुड़ी-वि० (स्त्री० गुड़गुड़ी) मुंह या किनारे तक भरा हुआ ।

गुड़णी (बो)-क्रि० १ लुढ़कना । २ गिर पड़ना । ३ खड़ी दशा

में न रहना । ४ जाना, गमन करना । ५ मरना ।

६ गुजरना, बीतना । ७ मोना, सो जाना । ८ बजना ।

९ झूमना, झूमकर चलना । १० कवच युक्त करना या होना । ११ गुड़गुड़ शब्द करना । १२ कवच धारण

करना । १३ निर्वाह होना । १४ देखो 'गुड़णी' (बो) ।

गुड़थल (थेली)-देखो 'गुड़थल' ।

गुड़द, गुड़दापेच-पु० गिराने, पटकने या मारने की क्रिया या भाव ।

गुड़दी-पु० [फा० गुर्दा] १ रोड़ के भ्रगल-बगल रहने वाला शरीर का एक अवयव । २ कान का एक आभूषण विशेष ।

३ एक प्रकार की छोटी बन्दूक ।

गुड़-पाखर-वि० १ सुसज्जित । २ कवच धारण किया हुआ ।

गुड़फळ-पु० पीलू जाति का एक वृक्ष ।

गुड़बांणियो-पु० चींटा ।

गुड़मच-स्त्री० एक ध्वनि विशेष ।

गुड़वरण (णी)-स्त्री० [सं० गौरवरण] कंसर ।

गुड़वाड़-स्त्री० [सं० गुड़वाट] ईख, गन्ना ।

गुड़हल-देखो 'गुड़हल' ।

गुड़केस-देखो 'गुड़केस' ।

गुड़ाणी (बो), गुड़ावणी (बो)-क्रि० १ लुढ़काना । २ गिराना,

पटकना । ३ खड़ा न रहने देना । ४ मारना । ५ गुजारना,

बिताना । ६ सुलाना । ७ बजाना । ८ कवच युक्त कराना ।

९ निर्वाह कराना । १० निभाना ।

गुड़िपाखर-देखो 'गुड़िपाखर' ।

गुड़ियो-वि० कवच युक्त ।

गुड़ी-देखो 'गुड़ी' ।

गुड़ीकेस-देखो 'गुड़केस' ।

गुड़रक-पु० कौर, पास ।

गुडपांसी

(३३४)

गुड़ी

गुडपांसी-देखो 'गुडपांसी' ।

गुडरकी, गुडरकियी, गुडरकौ-पु० १ पानी में लगाया जाने वाला गोता, हुक्की । २ उकार के साथ गले में घाने वाला पदार्थ । ३ भिन्नक, संकोच, हिचकिचाहट ।

गुडची, (चूँची)-स्त्री० १ खेलने के लिए बच्चों द्वारा जमीन या प्रांगन में बनाया जाने वाला छोटा खड्डा । २ एक देशी खेल । ३ पानी का छोटा खड्डा ।

गुडछ-वि० १ बेहोश । २ प्रगाढ़ निद्रा में । ३ देखो 'गुड्छी' ।

गुड्छी-पु० द्रमका, गुड्छा । समूह ।

गुजर-पु० [फा०] १ निर्वाह, बसर । २ गमना-गमन क्रिया । ३ पहुँच, पेठ । ४ कालक्षेप । ५ देखो 'गुजर' । —बसर-पु० निर्वाह ।

गुजरणी (बौ)-क्रि० १ बीतना, व्यतीत होना । २ आवागमन करना । ३ किमी रास्ते से चलना । ४ चल बसना, मरना ।

गुजराण-देखो 'गुजर' ।

गुजराणी, (बौ)-क्रि० १ निवेदन करना । २ गुजर कराना ।

गुजरात-पु० [सं० गुर्जर गोत्रा] भारत का एक प्रान्त ।

गुजराती-वि० गुजरात का, गुजरात संबंधी । —पु० १ गुजरात का निवासी । २ एक प्रकार का ज्वर, तमूनिधा रोग । ३ नदों का एक भेद । ४ गुजरात की भाषा । ५ छोटी इलायची । ६ ब्राह्मणों का एक वर्ग ।

गुजराणी, (बौ)-क्रि० १ बिताना, व्यतीत करना । २ निर्वाह करना, निभाना । ३ पूरा करना । ४ निवेदन करना ।

गुजारिस-स्त्री० [फा० गुजारिश:] प्रार्थना, अर्जी ।

गुजारी-देखो 'गुजर' ।

गुजारिक-पु० [सं० गुड्दक] देवयोनि विशेष, यक्ष ।

गुजी, (ज्जी)-स्त्री० [सं० गो-दधि] १ छाछ का गाढ़ा पेय पदार्थ । २ गेहूँ मिला जी, यव ।

गुज्जर-स्त्री० १ तीसरे विवाह की स्त्री । २ देखो 'गुजर' । ३ देखो 'गुजर' । ४ देखो 'गुजर' ।

गुज्जरी-देखो 'गुजरी' ।

गुडबी-वि० जुलम करने वाला, अत्याचारी, अन्यायी ।

गुडियी-पु० मिश्री व इलायची युक्त खोए की मिठाई विशेष ।

गुटक-देखो 'गुटकी' ।

गुटकणी, (बौ)-क्रि० १ निगलना, घूँट-घूँट पीना । २ कबूतर, फास्ता आदि का मस्ती में बोलना ।

गुटकी-स्त्री० १ घूँट । २ जन्म घुट्टी । ३ घोषधि की घूँट ।

गुटकी-पु० १ काष्ठ, रबर आदि का टुकड़ा, खण्ड । २ छोटी पुस्तक, गुटका । ३ एक प्रकार की तांत्रिक सिद्धि । ४ नीम का फल या बीज । ५ घूँट, गुटक । ६ गोली ।

गुटरगू-पु० कबूतर आदि की बोली ।

गुटिका-स्त्री० १ गोली । २ दवा की गोली । ३ घूँट ।

गुटिपी-पु० छोटा गोला पत्थर ।

गुट्ट-पु० १ संगठन, गुट, दल । २ समूह, भुण्ड । ३ एक ध्वनि विशेष ।

गुट्टी, गुट्टी(ठी)-पु० १ नीम का फल । २ नाटे कद का व्यक्ति ।

गुठली-स्त्री० आम, बेर आदि का बीज जिस पर ठोस आवरण होता है ।

गुड-पु० हाथी का कवच । —पाखर-देखो 'गुडपाखर' ।

गुडगिरि-स्त्री० गेंद ।

गुडगडोली-वि० १ धूर्त, चालाक । २ कपटी । ३ गांठ-गंठीला ।

गुडणी, (बौ)-देखो गुडणी (बौ) ।

गुडळक, गुडळकियी-१ देखो 'गोवूळिक' । २ देखो 'गूडालियी' ।

गुडळणी, (बौ)-क्रि० १ गंदा होना, गंदलाना । २ धूल आदि धूलना । ३ धूल से गाढ़ा होना ।

गुडळता, गुडळपण, (रौ)-स्त्री० १ गन्दलापन । २ गाढ़ापन ।

गुडळणी, (बौ) गुडळापणी (बौ)-क्रि० १ गंदा करना, मथना । २ धूल आदि धूलना । ३ धूल से आच्छादित करना । ४ गाढ़ा करना ।

गुडळि-स्त्री० अधिकता ।

गुडळियी, गुडळी-वि० (स्त्री० गुडळी) १ गंदला, गंदा । २ धूल से आच्छादित । ३ धूल मिश्रित । ४ घना । ५ गाढ़ा । ६ देखो 'गूडली' ।

गुडहल-पु० १ अड़हर का वृक्ष या पुष्प, जया । २ एक प्रकार का छोटा पौधा विशेष ।

गुडा-पु० १ कवचधारी हाथी । २ दाख । ३ कुलाख ।

गुडाकेस-पु० [सं० गुडाकेश] १ अर्जुन । २ शिव, महादेव । —वि० नींद को वश में करने वाला ।

गुडापली-पु० लोहे का एक पात्र ।

गुडाळियां, गुडाळ्यां-क्रि० वि० पुटनों के बल ।

गुडि-पु० १ गुड । २ देखो 'गुडी' । —पाखर-वि० सुसज्जित । कवच युक्त (हाथी) ।

गुडिया-स्त्री० कपड़े आदि की बनी पुतली, खिलौना ।

गुडियो-पु० १ समाचार, खबर । २ गप्प, टीग । ३ कवचधारी हाथी ।

गुडी-स्त्री० १ रस्सी आदि में एंठन से पड़ने वाली ग्रंथि । २ कपट, धूर्तता । ३ गुप्त या रहस्य की बात । ४ पतंग, किनका । ५ ध्वजा, झंडी । ६ कवच । ७ इच्छा । ८ मांस ।

गुडेळ-पु० काष्ठ का एक गुटका जो चुनाई आदि में काम आता है ।

गुडी-पु० १ रुपये रखने का धौला । २ देखो 'गुडी' ।

गुडी-देखो 'गुडी' ।

गुड़ी-१ देखो 'गुड़ी' । २ देखो 'गुड़ी' ।

गुड़ी-पु० एक पुन विशेष ।

गुड़ी-पु० १ रक्षास्थल । २ छोटा गांव । ३ रहस्य ।

गुड़-१ देखो 'गुड़' । २ देखो 'गुड़ी' ।

गुणंतर-वि० सत्तर से एक कम, उनहत्तर । -पु० साठ व नौ की संख्या, ६९ ।

गुणंतरी-पु० उनहनर का वर्ष ।

गुण-पु० [सं०] १ किसी वस्तु या जीव का अच्छा स्वभाव, धर्म या लक्षण, विशेषता । २ निपुणता । ३ कला या विद्या । ४ असर, प्रभाव । ५ सदाचार, शील । ६ एहसान । ७ उपकार, भलाई । ८ आदत, प्रकृति, सिफत । ९ श्रेष्ठता । १० नामवरी, प्रतिष्ठा । ११ रस्सी, डोरी । १२ धनुष की प्रत्यंवा । १३ बाजे की डोरी । १४ नस । १५ सांख्य के अनुसार सत्त्व, रज व तम तीन गुण । १६ तीन की संख्या । १७ सूत की बत्ती । १८ ज्ञानेन्द्रिय । १९ नीति के अनुसार राजा के छः गुण । २० त्याग, वैराग्य । २१ भीम की उपाधि । २२ मित्र । २३ काव्य, कविता । २४ प्रशस्ति काव्य । २५ यश, कीर्ति । २६ डिंगल का गीत या छन्द । २७ दासी, परिचायिका । २८ रूप, स्वरूप, आकार । २९ लगाम, बल्मा । -वि० १ अति तीक्ष्ण । २ बड़ा, गुरु । -अतीत-वि० गुण रहित, निर्गुण । -पु० ईश्वर, ब्रह्म । -आकर-पु० इन्द्रिय । -कर कारक, कारी-वि० लाभदायक, गुणकारी, सार तत्त्व । -पु० पाक शास्त्री । भीम । -गाथ गाथा-स्त्री० कीर्तिगान । प्रशंसा । -गाळ-वि० कृतघ्न । -ग्राहक, ग्राही-वि० गुणीजनों का आदर करने वाला, कदरदान । -घोर-वि० कृतघ्न । -जोड़ी-पु० कवि । कीर्तिगान करने वाला । -निधान, निधि-वि० गुणवान सर्वगुण सम्पन्न । विद्वान् । -माळ, माळा-स्त्री० काव्य, कविता । -रासि-पु० चन्द्रमा । गुणों का भण्डार । -बंत, बान-वि० गुणी, विद्वान्, पंडित । -साण, सागर-वि० गुणवान् । श्रेष्ठ । -हौण, हौण, हौणी-वि० गुण रहित, निर्बुद्धि, मूर्ख । कृतघ्न ।

गुणक-पु० [सं०] १ गुणा करने का अंक । २ गुणा करने वाला ।

गुणगुण, गुणगुणाहट-स्त्री० गुणगुणाने की ध्वनि ।

गुणगुणाली, (बी)-क्रि० मन ही मन कुछ बोलना, गाना, गुणगुणाना ।

गुणग्य, (ग्याता)-वि० [सं० गुणज] गुणवान् ।

गुणग्यांत-पु० इन्द्रिय ।

गुणग्राम-वि० [सं० गुणग्राम] सद्गुणों की खान । विद्वान् । चतुर ।

गुणचाळी, (स)-वि० चालीस से एक कम, उनचाळीस । -पु० तीस व नौ की संख्या, २६ ।

गुणचाळीसो, गुणचाळी-पु० [सं० ऊनचत्वारिंशत्] उनचाळीस का वर्ष ।

गुणचास गुणपचास-वि० [सं० ऊनपंचाशत्] पचास से एक कम, उनपचास । -पु० चालीस व नौ की संख्या, ४६ ।

गुणचासो, गुणपचासो-पु० उनपचास का वर्ष ।

गुणणी-स्त्री० [सं० गुणनी] छात्रों द्वारा बोली जाने वाली एक से सौ तक की गिनती ।

गुणणी, (बी)-क्रि० [सं० गुणन्] १ समझना, समझ लेना । २ विचार करना, ध्यान करना । ३ मनन करना । ४ गुणा करना । ५ वर्णन करना । ६ बोलना । ७ गुणगुणाना । ८ बखान करना । ९ अनुभव प्राप्त करना । १० पालन करना, निभाना । ११ पुनरावृत्ति करना ।

गुणती, (स)-वि० [सं० ऊनत्रिंशत्] तीस से एक कम, उनतीस । -पु० बीस व नौ की संख्या, २६ ।

गुणतीसो-पु० उनतीसवां वर्ष ।

गुणद-वि० [सं०] गुणदायक ।

गुणदा-स्त्री० हल्दी ।

गुणन-पु० [सं०] १ गुणा । २ गिनती । -फल-पु० गुणा करने पर आने वाली संख्या, परिणाम ।

गुणनिल-वि० गुणवान् ।

गुणनेऊ-वि० नब्बे से एक कम । -पु० अस्सी व नौ की संख्या, ८९ ।

गुणनेवो-पु० नब्बासी का वर्ष ।

गुणपंचासि-देखो 'गुणचास' ।

गुणपत, (पति, पती, पत्त)-देखो 'गुणपति' ।

गुणयत्त-पु० [सं० गुणिकल] चन्द्रमा ।

गुणवणी, (बी)-क्रि० विचार करना, मनन करना ।

गुणवरदान-पु० गणेश, गजानन ।

गुणवाण (न)-वि० गुणवान्, गुणी ।

गुणवाचक-वि० [सं०] गुणों की प्रशंसा करने वाला । -स्त्री० एक प्रकार की संज्ञा ।

गुणवाद-पु० [सं०] मीमांसा के अर्थवाद का एक मंद ।

गुणवेलड़ी-स्त्री० गुणलता ।

गुणसठ-देखो 'गुणसाठ' ।

गुणसठो-देखो 'गुणसाठी' ।

गुणसाठ-वि० [सं० ऊनषष्ठि] साठ से एक कम । -स्त्री० पचास व नौ की संख्या, ५९ ।

गुणसाठो-पु० उनसठ का वर्ष ।

गुणसिन्धु-वि० [सं० ऊनसप्तति] सत्तर से एक कम । -पु० साठ व नौ की संख्या, ६९ ।

गुणसिस्तरौ-पु० उनसिस्तर का वर्ष ।

गुणांक-पु० [सं०] गुणा करने का अंक ।

गुणांकारी (ह)-देखो 'गुणांकारी' ।

गुणांगहीर-वि० गुणवान ।

गुणांणी-स्त्री० माला ।

गुणाम-वि० गुणवान ।

गुणातीत-वि० गुणों से परे । निगुण । -पु० ईश्वर ।

गुणानुवाद-पु० [सं०] यश-स्तवन ।

गुणाद्ग-वि० गुण सम्पन्न । -पु० पंजाबी भाषा का प्रसिद्ध कवि ।

गुणाधपति-पु० गणेश, गजानन ।

गुणावळ-स्त्री० सन्यासियों के गले की माला ।

गुणावळि (ळी)-स्त्री० १ प्रशंसा, यश । २ हार, माला ।

गुरिन्द-पु० [सं० गुणइन्द्र] कवि ।

गुरिप्रण गुलिजण (न), गुलिमजण, गुलिपण (न)-पु० [सं० गुणीजन] १ गुणवान । २ विद्वान, पंडित । ३ कवि । ४ भाष्यक । -खांनो-पु० कलाकारों का विवरण रखने वाला विभाग ।

गुरित-वि० [सं०] गुणा किया हुआ ।

गुरियासियो-पु० उन्यासी का वर्ष ।

गुरियासी-वि० अस्सी से एक कम, उन्यासी । -पु० सत्तर व नौ की संख्या, ७९ ।

गुरियो-पु० १ कमान, प्रत्यंचा । २ डोर । ३ तंत । ४ शिल्पियों का एक उपकरण । ५ बढई का एक योजार ।

गुरी-वि० [सं० गुगिन्] १ जिसमें कोई गुण हो, गुण युक्त, गुणवान । २ दक्ष, निपुण । ३ उत्कृष्ट । ४ सराहनीय । ५ नेक, शुभ । ६ मुख्य । -पु० १ कवि । २ विद्वान, पंडित । ३ गर्वया । ४ डोर, रस्सी । ५ प्रोक्ता । ६ प्रत्यंचा । ७ कमान । -अण, अण, यण-देखो 'गुरिअण' ।

गुरीजनखानो-पु० कलाकारों का विवरण रखने का विभाग या महकमा ।

गुरीयण-देखो 'गुरिअण' ।

गुरीस-देखो 'उगरीस' ।

गुरीस, (सर, स्वर)-देखो 'गुरीस' ।

गुरी-पु० [सं० गुगिन्] १ गुरित की एक प्रक्रिया । २ देखो 'गुरी' । ३ देखो 'गुरी' ।

गुरी-वि० [सं०] १ गुरी, गुणवान । २ श्लाघ्य, प्रशंसनीय । ३ गुणा करने योग्य ।

गुरीमगुरी-क्रि० वि० परस्पर लिपटे हुए, हाथा-पाई करने हुए । -स्त्री० १ हाथापाई । २ उलझन ।

गुरी-स्त्री० १ गांठ, गंध । २ उलझन, समस्या ।

गुरी (बी)-क्रि० १ गुंया जाना, पिरोया जाना । २ उलझना, फंमना । ३ रचना ।

गुरी (बी), गुरीवणी (बी)-क्रि० १ गुंथाना, पिरोवाना । २ उलझाना, फंमाना ।

गुरी-देखो १ 'गुरी' । २ देखो 'गुरी' ।

गुरीगुरी (बी)-क्रि० १ गुदगुरी करना, खजलाना । २ विनोद करना ।

गुरीगुरी-स्त्री० [सं० गुद क्रीड़ाया] १ कांख, तलने आदि में अंगुली से खजलाहट करना, फुनचुनाहट । २ उत्कण्ठा । ३ विनोद, हंसी ।

गुरीगुरी-पु० १ गुदगुरी पहनने या घोड़ने वाला । २ फटे पुराने वस्त्र पहनने वाला । ३ दरी, शामियाने आदि किराये पर देने वाला । ४ गुदगुरी सम्प्रदाय का साधु ।

गुरी (डी)-स्त्री० १ फटे पुराने वस्त्रों का बनाया हुआ विस्तर, बिछोना । २ फटे पुराने वस्त्रों की कथा ।

गुरीस-पु० गुदा द्वार से कांच निकलने का रोग ।

गुरी (बी)-देखो 'गुरीगुरी' (बी) ।

गुरी (न)-देखो 'गुरीगुरी' ।

गुरीगुरी (बी), गुरीगुरी (बी)-क्रि० १ पेश करना, प्रस्तुत करना, सामने रखना, उपस्थित करना । २ निवेदन करना । ३ हाल कहना ।

गुरी-देखो 'गुरीगुरी' ।

गुरी (कियी)-देखो 'गुरीगुरी' ।

गुरीगुरी (बी)-देखो 'गुरीगुरी' (बी) ।

गुरीगुरी-देखो 'गुरीगुरी' ।

गुरीगुरी (बी) गुरीगुरी (बी)-देखो 'गुरीगुरी' (बी) ।

गुरीगुरी, गुरीगुरी-देखो 'गुरीगुरी' । (स्त्री० गुरीगुरी)

गुरी-स्त्री० [सं० गुद] १ मल द्वारा, गुदा । २ प्रथोमुख ।

गुरी (बी)-क्रि० १ गोदना । २ चुभाना । ३ प्रेरित करना । ४ कुंघ करने के लिए जोर देना ।

गुरीगुरी (बी)-देखो 'गुरीगुरी' (बी) ।

गुरीगुरी-पु० एक प्रकार की घास ।

गुरी-स्त्री० १ पशुओं के चरने के बाद चारे का अवशिष्ट भाग । २ देखो 'गुरी' ।

गुरी गुरी-स्त्री० १ गुदा, पाग, तन्त्र । २ गर्दन का पिछला भाग । ३ गर्दन के पिछले भाग के बाल । ४ हथेली का ऊपरी शिरा ।

गुरीगुरी, गुरीगुरी-देखो 'गुरीगुरी' ।

गुरीगुरी (बी)-देखो 'गुरीगुरी' (बी) ।

गुरीगुरी (बी), गुरीगुरी (बी)-देखो 'गुरीगुरी' (बी) ।

गुरीगुरी-स्त्री० एक राग विशेष ।

गुरीगुरी-वि० [सं० कदुपण] मासूकी मा गर्म, हल्का उष्ण ।

गुनह-देखो 'गुनी' ।

गुनहगार-देखो 'गुनाहगार' ।

गुनहगारी, गुनहरी-स्त्री० [फा०] १ किसी अपराध के बदले दिया जाने वाला दण्ड । २ दोष, अपराध ।

गुनागार-देखो 'गुनाहगार' ।

गुनागारी-देखो 'गुनहगारी' ।

गुनाइय-देखो 'गुणाइय' ।

गुनाछो-स्त्री० १ प्रशंसा, कीर्ति । २ गुण ।

गुनाह-देखो 'गुनी' ।

गुनाहगार-वि० १ दोषी, अपराधी । २ पापी ।

गुनाहगारी-देखो 'गुनहगारी' ।

गुनाही-वि० १ दोषी, अपराधी । २ सजा याप्राप्त ।

गुनु-देखो 'गुनी' ।

गुनेगारी-देखो 'गुनहगारी' ।

गुनेगार-देखो 'गुनाहगार' ।

गुनेगारी-देखो 'गुनहगारी' ।

गुनी-पु० [फा० गुनाह] १ अपराध, दोष । २ पाप । ३ गलती, भूल ।

गुनहगार-देखो 'गुनाहगार' ।

गुनहगार-देखो 'गुनाहगार' ।

गुनहगारी-देखो 'गुनहगारी' ।

गुनही-देखो 'गुनी' ।

गुपचुप-क्रि० वि० १ गुप्त रूप से । २ छुपे तौर पर । ३ चुपचाप ।
-पु० १ गुप्त बात, रहस्य की बात । २ गुप्तगू ।

गुप्त-वि० [सं० गुप्त] १ छुपा हुआ, गुप्त । गोपनीय । २ छुपाने लायक । ३ अदृश्य । ४ ढका हुआ, ढका रहने वाला । ५ जुड़ा हुआ । ६ सुरक्षित । -पु० १ एक प्राचीन राजवंश । २ वैश्यों के नाम के साथ लगने वाला शब्द ।

—अंग-पु० अधोअंग, गुप्तांग । कछुआ, कमठ । —कासी-पु० हरिद्वार व बद्रीनाथ के बीच का तीर्थ स्थान ।

—दान-पु० गुमनाम से किया जाने वाला दान । —मार-पु० आन्तरिक चोट । छन, घोखा ।

गुपता-स्त्री० [सं० गुप्ता] १ भुरति छिपाने वाली नायिका । २ रखैल स्त्री ।

गुपतिपंचअंग-पु० कछुआ ।

गुपती, गुपतिय, गुपत्ती-क्रि० वि० गुप्त रूप से । -स्त्री० शस्त्र विशेष । देखो 'गुपत' ।

गुप्त-वि० अदृश्य, छुपा हुआ । -गंगा-स्त्री० एक पौराणिक नदी । -चर-पु० जामूस ।

गुफा-स्त्री० [सं० गुहा] १ जमीन या पहाड़ के अन्दर का अथकार युक्त गड्ढा । कंदरा । २ छिपाव दुराव । ३ हृदय । ४ मिला ।

गुप्तगू-स्त्री० [फा०] १ गुप्त बातें, मंत्रणा । २ गोपनीय बात । ३ गुपचुप ।

गुफागुध-क्रि० वि० १ रह आतिथन पूर्वक । २ गुप्तगुप्त । गुबार, गुब्बार-पु० [म०] १ गर्द फूल । २ आकोश, आवेश, जोश । ३ मन में दबी बात । ४ फुलाव ।

गुब्बारी-पु० [अ० गुबारा] १ हवा या गैस भरी हुई स्वर की बेली । २ धूल आदि का गोठ । ३ भेद, रहस्य ।

गुमानगी-स्त्री० [सं० गो + विभाजन] पृथ्वी के विभाग ।

गुम-पु० १ गर्व, घमंड । २ ज्ञान, जानकारी, पता । ३ रहस्य । -वि० १ अप्रकट, गुप्त । २ अप्रमिद्ध । ३ खोया हुआ । ४ अनोप अदृश्य । —नाम-क्रि० वि० बिना नाम के । नामरहित । —नामखत-पु० वह खत जिसमें ऋण दाता का नाम न हो ।

गुमटी-स्त्री० १ इमारत के ऊपर का गोल गुंबज, गुंबद । २ इसी प्रकार का शमशान में बना स्मारक ।

गुमर-पु० १ गर्व, घमंड । २ मन में छिपा क्रोध । ३ कानाफुसी । ४ देखो 'धूमर' ।

गुमराह-वि० [फा०] १ अमित । २ भटका हुआ । ३ कुपय गामी । ४ भूला हुआ ।

गुमराही-स्त्री० [फा०] १ गुमराह होने की अवस्था या भाव, पथ भ्रष्टता २ भटकाव ।

गुलमुम-वि० [फा० गुम + अनु. मुम] १ अवाक्, स्तब्ध । २ बिना दिले हुले । ३ विलकुल चुपचाप ।

गुमान-पु० [फा० गुमान] १ गर्व, घमंड । मान । २ गौरव ।

गुमांती, (डो)-वि० १ अहंकारी, घमंडी । २ मान करने वाला । -पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

गुवाणी, (बो)-क्रि० १ खोना, खो देना । २ गायब करना, चुराना । ३ व्यर्थ जाने देना ।

गुमास्ती-पु० [फा० गुमास्ता] व्यापारी का मुनीम ।

गुवी-स्त्री० एक प्रकार की वीणा ।

गुवेज-पु० गर्व, घमंड, अहम् । अभिमान ।

गुम्मज-देखो 'गुंबज' ।

गुम्बर-१ देखो 'गुमर' । २ देखो 'धूमर' ।

गुरंड-देखो 'गरांडी' ।

गुरंडी-देखो 'गुंडी' ।

गुरमंतर, (त्र)-देखो 'गुरुमंतर' ।

गुर-देखो 'गुरु' ।

गुरगळ, गुटगमि-देखो 'गुगगम' ।

गुरमळ-पु० एक पक्षी विशेष ।

गुरगावी-स्त्री० एक प्रकार का देशी जूता ।
 गुरड-पु० १ रंग विशेष का घोड़ा । २ देखो 'गरुड' । ३ देखो 'गुराडो' ।
 गुरडधज-देखो 'गरुडधज' ।
 गुरडा-देखो 'गरुडा' ।
 गुरडासल, (न)-देखो 'गरुडामन' ।
 गुरडेस-देखो 'गरुड' ।
 गुरडो-पु० १ गरु । २ एक रंग विशेष का घोड़ा । ३ देखो 'गुरड' । ४ देखो 'गरुडो' ।
 गुरज-पु० [फा० गुर्ज] १ गदा जैसा शस्त्र । २ सोंटा । ३ कोट या शहर की प्राचीर की बुर्ज ।
 गुरजणकुत्ती-पु० एक प्रकार का कुत्ता ।
 गुरजदार, गुरजबरदार-पु० गुर्ज रखने वाला घोड़ा या सिपाई ।
 गुरजमार-पु० गुर्ज धारी मुखलमान फकीर ।
 गुरजर-पु० [सं० गुर्जर] १ गुजरात प्रान्त । २ एक राजपूत वंश । ३ एक जाति या वर्ग ।
 गुरजरी-स्त्री० [सं० गुर्जरी] १ गुजरात प्रान्त की स्त्री । २ गुजर जाति की स्त्री । ३ एक रायिनी ।
 गुरजी-वि० [फा० गुर्ज] १ जात्रिया नामक देश का कुत्ता । २ इस देश का निवासी । ३ सेवक, नौकर ।
 गुरज-देखो 'गुरज' ।
 गुरड-१ देखो 'गुरड' । २ देखो 'गरुड' ।
 गुरडि-१ देखो 'गरुड' । २ देखो 'गुडी' ।
 गुरडी-स्त्री० १ गुडी, गेंठन । २ कपट, छल ।
 गुरडु-१ देखो 'गरुड' । २ देखो 'गरुड' ।
 गुरडोदगार-पु० मांमर का मींग ।
 गुरली-१ देखो 'गुरली' । २ देखो 'गुरली' ।
 गुरमाई-पु० एक ही गुरु के शिष्य ।
 गुरराणी, (बी)-कि० [सं० गुरम्] १ क्रोध में गुरना । २ मजना । ३ जौर की आवाज करना ।
 गुरख-देखो 'गुरख' ।
 गुरवाविस्थ-पु० सूर्य और बृहस्पति एक ही राशि में आने की दशा ।
 गुरवार-देखो 'गुरुवार' ।
 गुरसा-स्त्री० गगमा चिड़िया ।
 गुरांजली-स्त्री० [सं० गुरु अंजनी] आँख की पलक पर होने वाली कृमी ।
 गुरांणी-स्त्री० गुरुपत्नी ।
 गुरांसा-पु० [सं० गुरु] १ गुरुजी । २ जैन यति ।
 गुराड, (डी)-पु० (स्त्री० गुराडी) अंग्रेज, गौरा ।
 गुराब, (बी)-स्त्री० १ छोटी तोप । २ बोड़े या ऊंट से खींची जाने वाली तोप । ३ एक प्रकार की नाव, नौका ।

गुरावी-देखो 'गौरावी' ।
 गुरज-पु० [सं० गुरुज] १ हाथी । २ गदा । ३ गुरज ।
 गुरु-पु० [सं०] १ दीक्षा देने वाला आचार्य, मंत्रदाता । २ शिक्षक, अध्यापक । ३ माता-पिता । ४ वृद्ध । ५ शासक, अण्यक्ष । ६ देवाचार्य, बृहस्पति । ७ नये सिद्धान्त का प्रचारक, प्रवर्तक । ८ पुण्य नक्षत्र । ९ ग्रह । १० दो मात्राएँ । ११ यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला । १२ गायत्री मंत्र का शिक्षक । १३ गणित आदि की वह प्रणाली जिससे हल निकाला जाता है । १४ ब्रह्मा । १५ विष्णु । १६ शिव । १७ ब्राह्मणों की एक जाति जो चमारों के विवाह आदि का कार्य करवाती है । १८ तीन की संख्याङ्क । -वि० १ भारी, वजनी । २ महान । ३ दीर्घ । ४ श्रेष्ठ । ५ क्लिष्ट । ६ प्रचण्ड । ७ सम्मानित । ८ गरिष्ठ । ९ प्रिय । १० अहंकारो । -कुंडली-स्त्री० ज्योतिष के अनुसार एक चक्र । -कुल-पु० शिक्षा देने का स्थान । विद्यालय । -गंधरव-पु० इंद्रजाल के छः भेटों में से एक । -गम-पु० गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान, उपदेश, गुरु शिक्षा, तत्त्वज्ञान, रहस्य । -घंटाळ-वि० घटान धूर्त, निपट मुख । -घन-वि० गुरुवाती । -जन-पु० गुरु, माता-पिता आदि । -दक्षिणा, दखला, दखिला, दखणा-स्त्री० शिक्षा के बदले गुरु को दी जाने वाली भेंट । -देवत-पु० पुण्य नक्षत्र । -द्वारौ-पु० गुरु गृह । -पूनम-स्त्री० आषाढ़ मास की पूर्णिमा । -मंतर, मंत्र-पु० गुरु द्वारा दी जाने वाली शिक्षा, गायत्री मंत्र । -मुख-वि० याद कंठस्थ । -मुखी-स्त्री० १ पंजाबी भाषा । २ इस भाषा की लिपि । ३ कंठस्थ । ४ आत्मजानी । -वार, वासर-पु० बृहस्पति वार । -संधा-स्त्री० गुरु से प्राप्त शिक्षा, ज्ञान ।
 गुरुधन-वि० महान, बड़ा ।
 गुरुच-स्त्री० [सं० गुरुची] गिलोय ।
 गुरुड-देखो 'गरुड' ।
 गुरुवत्त-पु० दत्तात्रेय ।
 गुरुभ-पु० [सं० गुरुभ] १ पुण्य नक्षत्र । २ मीन राशि । ३ धन राशि ।
 गुरु-देखो 'गुरु' ।
 गुरुप-पु० दल, झुण्ड, समूह, संघ ।
 गुलंबर-पु० द्वार पर त्रिभुजाकार बना आंतरिक ताखा ।
 गुल-पु० गुड़ ।
 गुल-पु० [फा०] १ गुलाब का पुष्प । २ चिह्न, दाग । ३ पुष्प, फूल । ४ दीपक की बत्ती का जला हुआ अंश । ५ चिसम की तंबाबू की राख । ६ किसी चीज पर बना भिन्न रंग का कोई गोल निशान । -वि० वंद । लुप्त ।

गुलधनार-पु० एक प्रकार का पुष्प ।

गुलप्रभास-पु० वर्षा ऋतु में होने वाला लाल पीले रंग के फूलों का पौधा ।

गुलप्रसरफो-पु० एक प्रकार का पीले रंग का फूल ।

गुलकंद-पु० गुलाब के फूल व शकर से बनी एक ठण्डी शीघ्रि ।

गुलक-देखो 'गोलक'

गुलकागड़ी-स्त्री० सफेद, लाल व काले धब्बों वाली बकरी ।

गुलकारस-पु० मोती । —उद्भव-पु० हीरा । मोती ।

गुलक्यारी-स्त्री० फूलों की ब्यारी

गुलगुच्छिणी-देखो 'गुलगुच्छिणी' ।

गुल्लगली-पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

गुलगांठ-स्त्री० अधिक खिंची या कसी हुई गांठ ।

गुलगीर-पु० चिराग का गुल काटने की कैंची ।

गुलगुच्छिणी-पु० १ चिकना गोल कंकर । २ छितराने वाला एक कंटीला पौधा ।

गुलगुली-देखो 'गिलगिली' ।

गुलगुली-पु० गुड़ व घाटे का मोठा पकोड़ा, पुष्पा ।

गुलचिथी-पु० गोता डुबकी ।

गुलछरार-स्त्री० ऐश्वर्याराम । शीकर-मीज ।

गुलचार-पु० उद्यान, वाटिका । -वि० १ हरा-भरा । २ आनन्दयुक्त । ३ चहल-पहल से परिपूर्ण । ४ आबाद ।

गुलजार-पु० फूल, पुष्प ।

गुलबस्ती-पु० [फा० गुलदस्त] १ फूलों का गुच्छ । २ गमला । ३ एक प्रकार का घोड़ा ।

गुलदान-पु० [फा० गुलदान] फूल रखने का पात्र, गमला ।

गुलदाउद-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।

गुलदाउदी-स्त्री० एक प्रकार की फुलवार ।

गुलदार(री)-स्त्री० [फा०] १ एक रंग विशेष का घोड़ा । २ सन्दि कबूतर ।

गुलधुपहरिया-स्त्री० एक पौधा विशेष ।

गुलनरगस (गुल)-स्त्री० [फा०] एक लता विशेष ।

गुलनार-पु० [फा०] १ धनार का फूल । २ सहारा लाल रंग ।

गुलफानूस-पु० एक वृक्ष विशेष ।

गुलबदन-पु० एक कीमती रेशमी वस्त्र ।

गुलमंड-पु० एक पौधा व उसका फूल ।

गुलम-पु० [सं० गुलम] १ झाड़ी, झुरमुट । २ वन, जंगल । ३ जड़ से फलने वाला पौधा । ४ एक रक्षक दल विशेष ।

५ दुर्ग, किला । ६ पुलिस चौकी । ७ घाट । ८ प्लीहा ।

९ आभूषणों की खुदाई का काम । १० ऐसी खुदाई का प्रोजेक्ट ।

गुलमट, (मटिथी)-पु० सीने तक घुटने समेट कर सोने का एक ढंग ।

गुलमवाय-पु० घोंड़े का एक रोग विशेष ।

गुलमेहंदी-स्त्री० आश्विन मास में फलने वाला एक पौधा व इसका फूल ।

गुलरंगवार-वि० गुलाब के फूल के रंग का ।

गुलराब-स्त्री० गुड़ की मीठी राबड़ी ।

गुलरि. (री)-पु० गुलर का वृक्ष ।

गुलरोबाह-शस्त्र का पैना भाग ।

गुलसंजा-स्त्री० सुन्दर स्त्री ।

गुलवाड़, (डि)-स्त्री० गन्ने की फसल, गन्ना ।

गुलसन-पु० [फा० गुलशन] बाग, उद्यान, वाटिका ।

गुलसफा-स्त्री० रात में फूलने वाला एक छोटा पौधा ।

गुलसरसक-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

गुलहजारी-पु० १ एक फूलदार पौधा, मैदा, हजार । २ एक प्रकार का घोड़ा ।

गुलांच. (ची)-स्त्री० १ कलाबाजी, कुत्ताव । २ क्लांग ।

गुलाम-पु० [अ० गुलाम] १ खरीदा हुआ नौकर । २ सेवक, दास । ३ ताज का एक पत्ता । ४ लड़का, बानक । ५ परतन्त्र, पराधीन व्यक्ति ।

गुलामी-स्त्री० [अ०] १ दासता, नौकरी । २ परतन्त्रता, पराधीनता ।

गुलाच-देखो 'गुलांच' ।

गुलाब-पु० [फा०] १ सुगन्धित फूलों का एक कंटीला पौधा । २ पौधे का फूल । ३ तलवार की एक मूठ विशेष ।

—जळ-पु० गुलाब के फूलों का धर्क । —जांघु, जांघुन-पु०

खोए व मेदे के योग से बनी एक मिठाई ।

—लाठू-पु० एक प्रकार का हाथी । —वास-स्त्री० गुलाब जल का पात्र ।

गुलाबबाई-स्त्री० करनी देवी की बड़ी बहन ।

गुलाबी-वि० [फा०] १ गुलाब के रंग का । २ हल्का या फीका लाल । -पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

गुलास-स्त्री० [फा० गुलाला] १ एक प्रकार का ताल चूर्ण जो होली या मांगलिक अवसरों पर एक दूसरे पर डाला जाता है । २ सहान धूलि, गर्द । ३ एक प्रकार का ताल पुष्प । ४ रंग विशेष का घोड़ा ।

गुलाला-स्त्री० मोन-चांदी के आभूषणों पर की जाने वाली खुदाई ।

गुलाली-वि० गुलाल संबंधी, गुलाल के रंग का ।

गुलिक-स्त्री० गुटिका ।

गुणियल्ल, गुली-स्त्री० १ नील का पीछा या इस पीछे से बनने वाला रंग । २ बड़े कान की भेड़ । ३ लहसुन का बीज ।

गुलीबंदी-पु० [सं० कीलबंद] एक प्रकार का देशी खेल ।

गुलीबंद-पु० [म० गलबंद] १ गले का एक आभूषण विशेष । २ मर्दी में बचाव के लिए कान पर डाला जाने वाला वस्त्र, मफलर ।

गुलीबावळी-स्त्री० एक प्रकार का बबूल ।

गुलेंचा, गुलेंटी-स्त्री० १ कुलांच । २ डुबकी, गोता ।

गुलेंडी-पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

गुलेल-स्त्री० [फा० गिलूल] १ छोटे पक्षियों का कंकर से शिकार करने की छोटी कमान । २ गहरा आसमानी रंग । —घी-पु० गुलेल से शिकार करने वाला व्यक्ति ।

गुलेली-पु० [फा० गुल्ला] गुलेल से चलाई जाने वाली मिट्टी की गोली ।

गुल्या-पु० बीज ।

गुल्साली-पु० [फा० गुल्लाना] पोस्त के पीछे के समान एक पीछा । इस पीछे का लाल फूल ।

गुल्लो-स्त्री० चार या पांच इंच की काष्ठ की कीली जो खेलने के काम आती है ।

गुल्लो-पु० १ ताश का गुलाम । २ सर्दी की खीज में ऊंट के मुंह से निकले वाला गुल्ला । ३ देखो 'गोली' ।

गुवाड़ (झी)-१ देखो 'गवाड़' । २ देखो 'गवाड़ी' ।

गुवार-१ देखो 'गवार' । २ देखो 'गंवार' ।

गुवारफळी-देखो 'गवारफळी' ।

गुवारवा-पु० वह खेत जिसमें गवार बोया गया हो ।

गुवाळ, गुवाळियो, गुवाळो-देखो 'गवाळ' ।

गुवाळी-देखो 'गवाळी' ।

गुवाणी (बो), गुवावणी (बी)-देखो 'गवाणी' (बो) ।

गुविद, (बो)-देखो 'गोविद' ।

गुसट-देखो 'गोस्टी' ।

गुसळ-देखो 'गुसल' ।

गुसळखानी-पु० [फा० गुस्लखान] स्नानागार ।

गुसाई, गुसांडर-देखो 'गोस्वामी' ।

गुसल-वि० क्रोधो स्वभाव वाला ।

गुसो-देखो 'गुस्ती' ।

गुसल-पु० [ग्र०] स्नान, मज्जन । —खानी-पु० स्नानागार ।

गुस्साळ, गुस्सेल(सल)-देखो 'गुसल' ।

गुस्ती-पु० [ग्र० गुस्सा] १ क्रोध, रोष । २ जोश, आवेश ।

गुह-पु० [सं० गृह] १ स्वामिकांतिकेय । २ घोड़ा । ३ निषादराज । ४ विष्णु । ५ कुबेर । ६ देखो 'गृह' । ७ देखो 'गृह' ।

गुहछठ-स्त्री० अग्रहृत शुक्ला षष्ठी तिथि ।

गुहराज-पु० निषादराज ।

गुहांजणी-देखो 'गुरांजणी' ।

गुहा-स्त्री० गुफा, कंदरा ।

गुहाचर-पु० ब्राह्मण ।

गुहिक-स्त्री० [सं० गुहकः] एक देव जाति, यक्ष ।

गुहियण-देखो 'गुणियण' ।

गुहिर गुहिरड (ई) गुहीर-वि० १ गहरा, गंभीर । २ भारी ।

३ देखो 'गहीर' । —पु० २४ मात्रा का एक छंद ।

गुह्यक-पु० [सं०] कुबेर के खजाने का रक्षक एक यक्ष ।

—ईश्वर, पति-पु० कुबेर ।

गू'गट (टो)-देखो 'गू'घट' ।

गू'गल, (लियो, लो)-वि० (स्त्री० गू'गली) गू'गा, मूक । —पु० १ गोबर का एक कीड़ा, जिसके आठ पांव व दो पर होते हैं । २ मर्दी में मस्ती भरा ऊंट । ३ गेहूँ की फसल का एक रोग । ४ एक छोटा जंतु । ५ नाक का मेल ।

गू'गिका-स्त्री० एक देवी विशेष ।

गू'गियो-देखो 'गू'गो' ।

गू'गी-स्त्री० १ एक छोटा जंतु । २ मूक स्त्री । ३ दो मुंहा सर्प ।

गू'गी-वि० (स्त्री० गू'गी) १ मूक, गू'गा । २ बोलने में असमर्थ । —पु० १ नाक का कीट । २ इमली का बीज ।

गू'घट (टो)-देखो 'गू'घट' ।

गू'घळी-वि० १ मस्ती में आया हुआ वह ऊंट जिसका गलमुष्ण न निकलता हो । २ ऊंट ।

गू'छळ (ळो)-वि० मूर्छित । —पु० जेवड़ी का पुनिदा, गड्डो ।

गू'छी-स्त्री० बलों का एक रोग ।

गू'ज (झ)-स्त्री० [सं० गुंज] १ गुंजन, गुंजार । २ तेज आवाज, झंकार । ३ देर तक सुनाई देने वाली ध्वनि । ४ गुप्त रूप में बचाया या मंजित धन । ५ गुप्त बात । ६ सलाह परामर्श । ७ इरादा, विचार । ८ अंगूठी (मेवात) ।

गू'जली (बो)-क्रि० [सं० गुंजन] १ गुनगुनाना, धनधनाना । २ तेज आवाज होना । ३ प्रतिध्वनित होना । ४ गर्जना, दहाड़ना । ५ जोश में आना ।

गू'जा-स्त्री० दो तख्तों को जोड़ने के लिए लगाई जाने वाली कील ।

गू'जाणी (बो), गू'जावणी (बी)-क्रि० १ तेज आवाज करना । २ जोर से बजाना । ३ प्रतिध्वनित करना । ४ गर्जना । ५ जोश दिलाना ।

गू'जियो-देखो 'गू'जी' ।

गूँजी-स्त्री० [सं० गूँज] १ गुप्त रूप से संचित धन । २ एक प्रकार की मिठाई ।
 गूँजी, गूँजी-पु० १ जेब, पाकेट । २ सूखा मेवा । ३ एक प्रकार की मिठाई ।
 गूँज-देखो 'गूँज' ।
 गूँड-देखो 'गूँट' ।
 गूँठ-पु० १ मूल स्थान । २ आधार । ३ तना ।
 गूँठड़ी-पु० १ अ'गूँठ । २ तला । ३ देखो 'गूँघट' ।
 गूँड-पु० [सं० गूँड] १ पेड़ के तने के नीचे का भाग । २ मूल, जड़ । ३ मूल स्थान ।
 गूँडर-पु० १ तम्बू, शामियाना । २ देखो 'गूँडर' ।
 गूँडलणी (बो)-देखो 'गुडलणी' (बो) ।
 गूँडल-पु० काष्ठ का गुटका ।
 गूँडी-पु० १ समूह, दल, झुंड । ३ देखो 'गुदी' । ३ देखो 'गुडी' ।
 गूँड, (डो)-देखो 'गूँड' ।
 गूँण, (ती)-स्त्री० [सं० गोणी] १ बोरी, बोरा । २ गंध या वेल की पीठ पर सामान भरकर लादा जाने वाला बोरा विशेष ।
 गूँणी-पु० १ मूँग, मोठ आदि पौधों के सूखे डंठल । २ देखो 'गूँणी' ।
 गूँत, (ती)-पु० १ गोमूत्र । २ प्रसव के बाद गाय भैंस का पहली बार निकाला जाने वाला दूध ।
 गूँधणी, (बो)-क्रि० [सं० ग्रंथिन्] १ कई तागों को कलात्मक ढंग से परस्पर लपेटना, गूँधना । २ बुनाई करना । ३ जोड़ना । ४ पिरोना, तारबद्ध करना । ५ एक सूत्र में बंधना । ६ रचना, बनाना । ७ संवारना । ८ काव्य रचना करना ।
 गूँधाणी, (बो)-क्रि० १ गूँधाने का कार्य करवाना । २ बुनाई कराना । ३ जुड़वाना । ४ तारबद्ध कराना । ५ एक सूत्र में बंधवाना । ६ रचवाना, बनवाना । ७ संवारना । ८ काव्य रचवाना ।
 गूँधाळ-पु० १ गूँधने की क्रिया या भाव । २ गूँधने में दक्ष ।
 गूँधावणी, (बो)-देखो 'गूँधाणी' (बो) ।
 गूँड-पु० [सं० गूँड] १ वृक्ष के तने से निकलने वाला चिपचिपा तरल पदार्थ, वृक्षों का निर्वास गोद । २ मांस-पिंड । ३ एक राजपूत वंश । —गरी-पु० एक प्रकार का पौष्टिक पदार्थ । एक प्रकार का गन्ना । —बानी-स्त्री० चिपकाने का गोद रखने का पात्र ।
 गूँडड़ी-१ देखो 'गुदड़ी' । २ देखो 'गूँद' ।
 गूँडणी (बो)-क्रि० घाटा आदि भिगोना ।
 गूँडरी देखो 'गुदरी' ।

गूँडलणी, (बो)-देखो गुडलणी (बो) ।
 गूँदाळ-पु० मांस पिंड ।
 गूँदाळक-पु० मांसाहारी प्राणी ।
 गूँधिया-स्त्री० छोटी गूँदी के फल ।
 गूँबी-स्त्री० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ इस वृक्ष का छोटा फल ।
 गूँबी-पु० १ एक वृक्ष विशेष । २ इस वृक्ष का फल, लिमोडा ।
 गूँधणी, (बो)-क्रि० घाटा, मिट्टी आदि में पानी डाल कर मसलना, रौंदना ।
 गूँधलणी, (बो)-देखो गुडलणी (बो) ।
 गूँधलियो, गूँधली-१ वह ऊंट जो 'खीज' में भ्राया हुआ गल-सूत्रा न निकाले । २ एक बरसाती कीट ।
 गूँघणी, (बो)-क्रि० गूँधने का कार्य कराना ।
 गूँघड़, (डो, डो) गुंमड़, (डो, डो) देखो 'गुमड़ी' ।
 गूँघली-पु० घोंसला ।
 गूँमर-१ देखो 'गुमर' । २ देखो 'गुमर' ।
 गूँ-पु० [सं० गूँ] १ मल, निष्ठा, पाखाना । २ कूड़ा, कचरा । ३ मैल । ४ गदगी ।
 गूँगरमाळ (ळा)-स्त्री० घुंघरू की माला ।
 गूँगरियो-पु० १ करील का फूल । २ छोटा घुंघरू ।
 गूँगरी-स्त्री० १ उबाले हुए गेहूँ । २ एक प्रकार का कर जो रूपकों से अनाज के रूप में लिया जाता था । ३ कृषि पंदावार की एक निश्चित राशि जो बोये हुए अनाज के हिसाब से कर के रूप में ली जाती थी ।
 गूँगलिघा (या)-स्त्री० हाथियों की एक जाति ।
 गूँगलीड, गूँगलीघो-पु० गूँगलिघा जाति का हाथी ।
 गूँगली-वि० १ मट मैला । २ घुंघला । ३ अस्पष्ट, अस्वच्छ । —पु० दो गलमुष्टों का ऊंट ।
 गूँगस, (बाड़ी)-पु० १ बादलों से आच्छादित मौसम । २ बिना जल के बादल ।
 गूँगू (राजा)-पु० [सं० गूँक] उलूकपक्षी, उल्लू ।
 गूँघर-देखो 'गूँघर' । —माळ=गूँगरमाळ ।
 गूँघरिघूँ (बो)-देखो 'गूँगरी' ।
 गूँघरी-देखो 'गुमरी' ।
 गूँजर (डो, डो)-पु० [सं० गुंजर] (स्त्री० गुंजरी डी, डी) १ एक हिन्दू जाति जिसके व्यक्ति खेती व पशु-पालन का कार्य करते हैं । २ तीसरे विवाह की स्त्री । —गोड़-पु० ब्राह्मणों का एक भेद । —पठांस-पु० मुसलमानों का एक भेद ।
 गूँजरात-देखो 'गुजरात' ।
 गूँजरी-स्त्री० [सं० गुंजरी] १ गहीरनी, ग्वालिन । २ कलाई का आभूषण । ३ कट का आभूषण विशेष । ४ एक राग विशेष ।

गूह-स्त्री० [सं० गूह] १ गुप्त मंत्रणा, सलाह । २ गुप्त बात ।
 -पु० ३ शामियाना, तंबू । ४ संघि स्थान की हड्डी ।
 गूठली-पु० पैरों की झगुडी (मेवात) ।
 गूडण-वि० १ लुडकाने वाला, गिराने वाला । २ मारने वाला ।
 गूडणी (बी)-क्रि० १ लुडकाना, गिराना । २ मारना ।
 ३ गाड़ना ।
 गूडर-पु० १ पीठ में कटिप्रदेश के ऊपर का भाग ।
 २ देखो 'गूडर' ।
 गूडळ, गूडळियो-पु० १ मांस सहित हड्डी जो खाते समय चूसी जाती है । २ हड्डी । ३ देखो 'गूडळ' । ४ देखो 'गूडळकियो' ।
 गूडळी-वि० (स्त्री० गूडली) धूल से आच्छादित ।
 गूडी-देखो 'गूडी' ।
 गूड-पु० [सं०] १ आयादार बड़ा वृक्ष । २ छिपने का स्थान ।
 ३ गुफा । ४ स्मृति में पांच प्रकार की साक्षियों में से एक ।
 ५ एक सूक्ष्मालंकार । -वि० १ गुप्त । २ लुपा हुआ ।
 ३ ढका हुआ । ४ गहन, गंभीर । ५ अस्पष्ट । ६ सार गभित । ७ रहस्यमय । -चर-पु० चोर । -पण, पण-
 पव, पाव-पु० सर्प, मांप । मन । पगडंडी । -अंग-पु० लक्षणा शैली का वचन या वाक्य ।
 गूडा-स्त्री० पहेली ।
 गूडावाच-पु० मंत्री ।
 गूडोक्ति-स्त्री० [सं०] एक अलंकार विशेष ।
 गूडोत्तर-पु० [सं०] एक काव्यालंकार विशेष ।
 गूडो-पु० [सं० गूड] १ वृक्ष का मूल । २ रक्षा स्थान, सुरक्षित स्थान ।
 गूण (ती)-देखो 'गूण' ।
 गूणियो-पु० १ रहट का बड़ा गड्ढा जिसमें बड़ा चक्र घूमता है ।
 २ इस गड्ढे के किनारे लगा बड़ा पत्थर । ३ दूध दूहने या जल भरने का पीतल का पात्र विशेष ।
 गूणी-स्त्री० १ चरस खींचते समय बैलों के चलने का स्थान ।
 २ देखो 'गूण' ।
 गूणी-पु० १ जनाने वस्त्रों की किनार पर लगाई जाने वाली गोठ । २ देखो 'गूण' । ३ देखो 'गूणी' । ४ देखो 'गूणी' ।
 गूणवत्थ, (गूणावत्थर)-वि० गुत्थमगुत्थ ।
 गूणरा-स्त्री० १ गूँथने की क्रिया या भाव । २ गूँथने का ढंग ।
 गूणणी, (बी)-देखो 'गूणणी' (बी) ।
 गूड-पु० [प्रा० गुत्त] १ मांस । २ मांस का गूदा, मज्जा ।
 ३ गर्त, गड्ढा । ४ संन्यासियों का एक भेद ।
 गूडर, गूडरियो, गूडरौ-पु० १ फटा पुराना वस्त्र, चिथड़ा ।
 २ ऐसे चिथड़ों को तह कर बनाया हुआ बिस्तर ।
 ३ चिथड़ों को जोड़ कर बनाया हुआ बीगा । ४ एक मोटे छिलके का नीव । ५ संन्यासियों का एक भेद ।

गूबर, गूबरी-पु० मणिबंध के आगे का भाग । -क्रि० वि०
 १ पास, निकट, समीप । २ देखो 'गूडरौ' ।
 गूडळणी, (बी)-देखो 'गूडळणी' (बी) ।
 गूडळी-देखो 'गूडळी' ।
 गूदाळ-देखो 'गूदाळ' ।
 गूदाळक-देखो 'गूदाळक' ।
 गूदी-पु० फूलों का गूदा, मिथी । २ मांस, मज्जा ।
 ३ भेजा, मज्जा ।
 गूडळणी, (बी)-देखो 'गूडळणी' (बी) ।
 गूडळियो, गूडळी-वि० (स्त्री० गूडळी) धूलि आच्छादित ।
 गूधोळ-स्त्री० धूलिकण ।
 गूमड़, (डी, डौ)-पु० १ कोई बड़ा फोड़ा । २ बड़ी ग्रंथि, गांठ ।
 ३ चोट लगने से आने वाली सूजन ।
 गूलर-पु० १ वट या पीपल जाति का एक वृक्ष विशेष । २ इस वृक्ष का फल । -कबाब-पु० मसालों के साथ भूनकर बनाया हुआ मांस ।
 गूलरियो-पु० गूलर का फल या इस फल का कीड़ा ।
 गूलरी-पु० एक फल विशेष ।
 गूली-स्त्री० यावड़ देवी की बहन ।
 गूह-पु० [सं० गूद] १ मांस पिंड । २ देखो 'गूह' । ३ देखो 'गुप्त' । ४ देखो 'गू' ।
 गेआळ-देखो 'गंवाळ' ।
 गेडो-पु० [सं० गंडक] गैसे के आकार का एक जंगली पशु
 जिसके चमड़े की डालें बनती थी ।
 गेती-स्त्री० जमीन खोदने की कुदाल ।
 गेब-स्त्री० [सं० गेदुक] १ रबर, कपड़े आदि की खेलने की बड़ी गोली, बडी, गेद, बाल । २ इसी प्रकार की कोई वस्तु ।
 गेबो-देखो 'गेदवो' ।
 गेबर-पु० [सं० गजवर] १ हाथी । २ घांड़ा ।
 गेबार-पु० १ गंवार । २ गवार ।
 गेबाळ-देखो 'गंवाळ' ।
 गे-पु० [सं० ग+ई] १ सूर्य । २ कामजन्य प्रेम । ३ यमका-
 नुप्रास । ४ मूर्ख व्यक्ति । ५ पाप । ६ छन्द । ७ गीत ।
 ८ हाथी । ९ मल्हार राग ।
 गेऊ-देखो 'गंऊ' ।
 गेऊआळ-देखो 'गंवाळ' ।
 गेगरी-स्त्री० चने के पीछे पर लगने वाला डोडा जिसमें दाने पड़ने हैं ।
 गेगरी, गेवर-पु० १ ज्वार का सिट्टा । २ ज्वार का मीठा पौधा । ३ चना ।

मेड़, (ड़ी)-पु० १ घुमाव । २ चक्कर, फेरा । ३ पारी, घवसर, नम्बर । ४ कारण । ५ परिश्रमण । ६ समूह, भुण्ड ।
 मेड़णी, (बी)-क्रि० १ चक्कर देना, घेरना । २ घवसर देना । ३ घेरना । ४ गिराना ।
 मेड़-वि० आच्छादित । -पु० सोंठा ।
 मेड़ियो, (जी)-पु० १ डंडा, सोंठा । २ लाठी । ३ गेद का बत्ता । ४ एक शिरे से कुछ मुड़ी हुई छड़ी । ५ होकी । ६ जुलाहे के काम माने वाला डंडा ।
 मेड़ी, (ड़ी)-स्त्री० १ वस्त्र या चमड़े की गेंदुरी । २ ऊन या सूत की गोल चकरी । ३ रहट की एक लकड़ी । ४ लाठी लकड़ी, डंडा, सोंठा । ५ स्त्रियों के शिर का आभूषण, बोर के पीछे की नलिका ।
 मेम-पु० पाप, दुष्कर्म ।
 मेमर-देखो 'मेमर' ।
 मेमी-वि० १ पापी, दुष्कर्मी । २ बागी, विद्रोही ।
 मेय-वि० [सं०] १ मेय, गाने योग्य । २ जानने योग्य ।
 मेर-देखो 'मेर' ।
 मेरक-देखो 'मेरक' ।
 मेरकी-स्त्री० आभूषण के किनारे पर लगने वाली सोने की गोल चकरी ।
 मेरणी-स्त्री० छोटी चलनी ।
 मेरणी-पु० १ लोहे की बनी बड़ी चलनी । २ खलिहान में अनाज साफ करने की तीलियों बनी बड़ी चलनी ।
 मेरणी, (बी)-क्रि० १ छोड़ना, निस्सरित करना । २ गिराना । ३ संहार करना ।
 मेरमोहल-देखो 'मेरमहल' ।
 मेरियो-देखो 'मेरियो' ।
 मेरी-स्त्री० १ फास्ता पक्षी । २ चमड़े की चकरी ।
 मेरुवाँ, मेरुवाँ-वि० मेरुवाँ, भगवा । -पु० गेहूँ की फसल का एक रोग ।
 मेरु, (रु)-पु० कड़ी व नाल मिट्टी के रूप में होने वाला एक खनिज पदार्थ । -वि० भगवाँ मेरिक ।
 मेरी-पु० कबूतर ।
 मेस-देखो 'मेसी' ।
 मेसड़, (डी)-पु० १ लम्बे पैरों वाला एक बड़ा जन्तु । २ पुन-विवाहित स्त्री की पूर्व पति की संतान । -वि० पगला ।
 मेसि-देखो 'केसि' ।
 मेसी-पु० १ मार्ग, रास्ता । २ राह, उपाय । ३ देखो 'गेली' ।
 मेस्यी-देखो 'मेली' ।
 मेवाळियो, मेवाळी-पु० [सं० गोपालः] ग्वाला, चरवाहा ।
 मेह-पु० [सं० गृह] १ घर, मकान, गृह । २ समूह, भुण्ड । ३ भण्डार । ४ देखो 'मे' । -पति-पु० घर का मालिक ।

मेहणी-स्त्री० [सं० गृहिणी] घर की स्त्री, पत्नी, गृहलक्ष्मी ।
 मेहर-देखो 'मेर' ।
 मेहरियो (र्यो)-देखो 'मेरियो' ।
 मेहली-देखो 'मेली' ।
 मेहा मेहि-देखो 'मेह' ।
 मेही-वि० घर का, घर संबंधी । गृहस्थ ।
 मेहंमन-पु० गुरे रंग का एक भयंकर विषधर सांप ।
 मेहू, (गेहूँडी)-पु० [सं० गोधूम] रबी की फसल में होने वाला प्रमिद अनाज, गेहूँ ।
 मेहूँवाळ-देखो 'गंवाळ' ।
 मे-पु० [सं० गज] हाथी ।
 मेगज-देखो 'गांगड़ी' ।
 मेंडी-देखो 'मेंडी' ।
 मेरा, ऐरांग, (घर)-पु० [सं० गगन] गगन, आकाश ।
 मे'णी-देखो 'गहणी' ।
 मे'नी-देखो 'मेनी' ।
 मेद-पु० १ हाथी । २ देखो 'गेद' ।
 मेदगडा-स्त्री० हाथियों की टोली, दल ।
 मेदा-स्त्री० १ गेद । २ हजार नामक पीछा व उसका फूल । ३ तोंद ।
 मेवाळ-वि० बड़ी तोंद वाला ।
 मेवर-देखो 'मेवर' ।
 मेवार-देखो 'मेवार' ।
 मे-पु० १ हाथी, गज । २ आकाश । ३ शिव । ४ मूँये । ५ शोक । ६ पलास । ७ गति, चाल । ८ शोभा, छटा । ९ गर्व घमंड । १० मंजिन । ११ मकान । १२ मकान का हिस्सा । १३ मकान की ऊँचाई ।
 मेगमणि (णी)-देखो 'गयगमणी' ।
 मेगाद, (घाट)-पु० तेज जल प्रवाह की छवि ।
 मेघटाळ, मेघट्ट-स्त्री० [सं० गज-घटा] १ हस्ती सेना । २ गजदल । ३ बहलता । ४ खुशो ।
 मेघू बली, (बी), मेघू'मली, (बी)-क्रि० मंडराना, उमड़ना, आ जाना ।
 मेजुह, (जूह)-स्त्री० [सं० गज-जूह] १ हस्ती सेना । २ हस्ती सेना की जूह रचना ।
 मेडंबर-पु० [सं० गगन-म्राडंबर] बिना जल का बादल ।
 मेडसणि, (णी)-वि० बोर, बहादुर ।
 मेणंग (णि)-देखो 'गगन' ।
 मेरा, (क)-पु० १ गगन । २ देखो 'अहण' ।
 मे'णकियो (की)-देखो 'गहणी' ।
 मेराग-देखो 'गगन' ।

गैरागङ्ग-वि० लम्बा और पतला, लम्बोतरा ।
 गैरावटो-पु० सूर्य ।
 गैरागंगी-वि० आकाशचारी । -पु० आकाश मार्ग ।
 गैरागंगि, (गिरा)-पु० सूर्य ।
 गैरांग, गैराण गैराङ्ग. (ग गि)-पु० गगन ।
 गैराघट-पु० स्वर्णकार ।
 गैराण, गैराणव. गैराङ्ग, गैराळी-देखो 'गगन' ।
 गै'रू', गै'रणी-देखो 'गहरी' ।
 गै'रू, (ली) पु० १ आंधी, नूफान । २ सेना, फौज । ३ गर्द, भल । ४ समूह । ५ वायु, हवा ।
 गै'रंत-पु० १ हाथी का दांत । २ हाथी ।
 गै'रंतड़ी, गै'रंतो-पु० सूअर ।
 गै'र-वि० [अ०] अप्रत्यक्ष, परोक्ष । -क्रि० वि० अचानक ।
 गै'रकी-क्रि० वि० मझा, यकाशक ।
 गै'रवांणी (वांणी)-स्त्री० अदृश्य आवाज, आकाशवाणी ।
 गै'रवांणी, गै'रवा-वि० १ गुप्त, छुपा हुआ । २ परोक्ष, अप्रत्यक्ष । ३ अचानक होने वाला ।
 गै'रवाळ-पु० गुप्त गोला ।
 गै'वी-वि० [अ० गै'व] १ गुप्त, छुपा हुआ । २ अज्ञात । ३ अवोधगम्य । ४ अपराधी । -क्रि० वि० महसा, अचानक ।
 गै'मूळी-वि० (स्त्री० गै'मूली) १ गाफिल । २ अस्थिरचित्त ।
 गै'मर-पु० [सं० गजवर] हाथी ।
 गै'या-स्त्री० गाय ।
 गै'र-वि० [अ०] १ पराया । २ अन्य, दूसरा । ३ अपरिचित । ४ विरुद्ध, खिलाफ । ५ अनुचित । -स्त्री० निन्दा । -अव्य० वगैरह, उग्यादि ।
 गै'र-स्त्री० १ होली के दूसरे रोज खेला जाने वाला पानी या गुलाल आदि का खेल । २ डफली पर होली के गीत गाने वाला दल । ३ दोनों हाथों में डंडे लेकर घूमर नाचने का खेल । ४ मस्सा, उड़कता ।
 गै'रक-देखो 'गैरिक' ।
 गै'रगढ़ी-स्त्री० एक देशी खेल ।
 गै'रवाल-स्त्री० १ कुमारी । २ व्यभिचार । ३ कपट चाल, चोखा ।
 गै'रजवान-स्त्री० अशिष्ट भाषा । अपशब्द ।
 गै'रत, (ध)-पु० [सं० गौरथ] १ आकाश, गगन । -स्त्री० [अ०] २ लज्जा, शर्म । ३ स्वाभिमान ।
 गै'रमनकूला-वि० [अ०] स्थिर, अचल, स्थावर ।
 गै'रमहल-पु० [अ०] १ पराया गृह या महल । २ कैलिगृह, जनाना महल ।

गै'रमामूली-वि० [अ०] १ असाधारण, विशेष । २ नित्य-नियम से विपरीत ।
 गै'रमुनासिब-वि० अनुचित ।
 गै'रमुमकिन-वि० असंभव ।
 गै'रव-पु० [सं० गजवर] हाथी, गज ।
 गै'रवाजिब-वि० अयोग्य । अनुचित ।
 गै'रसाली-वि० १ कपटपूर्ण, गन्दी । २ देखो 'कैरसाली' ।
 गै'रहाजरी-स्त्री० [अ० गैरहाजिरी] अनुपस्थिति ।
 गै'रहाजिर-वि० अनुपस्थित ।
 गै'राई-स्त्री० गहरापन, थाह ।
 गै'रिक, (रक)-पु० [सं० गैरिक] १ सोना । २ गेरू ।
 गै'रियो-वि० होली खेलने वाला, होली के गीत गाने वाला ।
 गै'री-पु० १ शत्रु, दुश्मन । २ दुष्ट गुरूप ।
 गै'री-वि० (स्त्री० गै'री) १ अग्नाह, गम्भीर । २ अधिक, पर्याप्त । ३ गहरा ।
 गै'र-स्त्री० १ नशा, मदहोशी । २ बेहोशी । ३ नींद । ४ गफलत ।
 गै'र-स्त्री० १ राह, मार्ग । २ पीछा । -क्रि० वि० पीछे, बाद में ।
 गै'रक-वि० १ मदहोश, बेहोश । २ लापरवाह । ३ गाफिल ।
 गै'रक-देखो 'गैरक' ।
 गै'रली-वि० (स्त्री० गै'रली) पागल, मूर्ख, नादान ।
 गै'रलत-पु० राहगीर, पथिक ।
 गै'रलाई-स्त्री० पागलपन, नादानी ।
 गै'रलागीर-पु० राहगीर, पथिक ।
 गै'रली-१ देखो 'गैली' । २ देखो 'गै'ली' ।
 गै'रलीली, (वी)-क्रि० मादक पदार्थ या विष के प्रभाव से बेहोश होना ।
 गै'रली-स्त्री० [अ०] बाहरशाली ।
 गै'ली-पु० १ रास्ता, मार्ग । ३ गली । ३ उपाय । ४ पीछा, अनुगमन । -क्रि० वि० पीछे ।
 गै'ली-वि० (स्त्री० गै'ली) १ पागल, मूर्ख । २ नासमझ, नादान । ३ मदहोश ।
 गै'व-देखो 'गैव' ।
 गै'वर, (री)-पु० [सं० गजवर] हाथी, गज ।
 गै'वरियो-१ देखो 'गै'रियो' । ३ देखो 'गैवर' ।
 गै'स-स्त्री० [अ०] १ वायु मण्डल में व्याप्त एक अगीचर-सूक्ष्म द्रव्य, वाष्प । २ अपानवायु । ३ पेट का वात रोग । ४ किसी पदार्थ की तीव्रगंध । ५ घुटन ।
 गै'सोत-वि० वर्णसंकर, दोनना ।
 गै'रालियो-देखो 'गहरी' ।
 गै'रली-देखो 'गहरी' ।
 गै'रबंत-पु० गृहस्थ, गृहस्थी ।

गोंगरी-१ देखो 'गांगरी' । २ देखो 'गांगड़ी' ।

गोनी-पु० खिड़की पर लगने वाला अर्धचन्द्राकार पत्थर ।

गोंदल-देखो 'कंदल' ।

गो-पु० [सं०] १ पशु, मवेशी । २ जल । ३ गौ का दूध ।
४ सांड । ५ बैल । ६ रोम, लोम । ७ नेत्र । ८ चन्द्रमा ।
९ घोड़ा । १० सूर्य । ११ नक्षत्र । १२ आकाश । १३ इन्द्र
का वज्र । १४ स्वर्ण । १५ तीर, बाण । १६ हीरा ।
-स्त्री० १७ वाली । १८ सरस्वती । १९ माता । २० गौ ।
२१ इन्द्रिय । २२ वृष राशि । २३ नौ की संख्या ।
२४ किरण । २५ दिशा । २६ पृथ्वी । -अव्य० [फा०]
यद्यपि, अगच्छे ।

गो'-देखो 'गोह' ।

गोश्रम-देखो 'शेतम' ।

गोइंतरी-पु० (स्त्री० गोइंतरी) १ छिपकली की जाति का एक
जंतु । २ गाय का बछड़ा ।

गोइव-पु० [सं० गो + इव] १ श्रेष्ठ, हाथी, ऐरावत ।
२ देखो 'गोविद' ।

गोइ-देखो 'गोई' ।

गोइड़ी-पु० १ विष खोपरा नामक जंतु । २ पशुओं का खून
चूसने वाला कीड़ा । ३ देखो 'गोयड़ी' ।

गोइयाल-देखो 'गोहीयाल' ।

गोइली-देखो 'गोयली' ।

गोईंतरी-स्त्री० गाय ।

गोई-पु० १ घुमाव । २ मोड़ । ३ चक्कर । ४ छल, कपट ।
५ कूए पर चरस खाली करने वाला व्यक्ति । ६ शत्रु,
दुश्मन ।

गोईड़ी-देखो 'गोइड़ी' ।

गोईंतरी-देखो 'गोईंतरी' ।

गोऊं-देखो 'गऊं' ।

गोऔ-पु० १ मस्ती बढ़े ऊंट के मुंह से निकलने वाली
गलसुंड़ी । २ देखो 'गोबी' ।

गोकन्ह, गोकरण-पु० [सं० गोकर्ण] १ बनास नदी के तट पर
पहाड़ी शिखर पर स्थित शिव मंदिर । २ मालाबार के
पास स्थित एक शिव मूर्ति । ३ शिव का एक गण ।
४ गाय का कान । ५ नृत्य में एक प्रकार का हस्तक ।
६ खच्चर । ७ मांप । ८ बालिश । ९ अवध प्रांत में
गोरखनाथ का एक तीर्थ ।

गोकल-देखो 'गोकुल' । -नाथ='गोकुलनाथ' ।

गोकलेश-पु० [सं० गोकलेश] श्रीकृष्ण ।

गोकुल-पु० [सं० गोकुल] १ जमुना किनारे बसा ब्रज का एक
गांव जहां श्रीकृष्ण ने बाल लीला की थी । २ गायों का

समूह । ३ गोशाला । -चंब, चत्र, नाथ-पु० श्रीकृष्ण ।
ईश्वर ।

गोकुलस्थ-वि० १ गोकुल में स्थित । २ गोकुलवासी ।

गोकुलसरजी-पु० १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।

गोखंबर-पु० जानीदार वस्त्र ।

गोख (डो)-पु० [सं० गवाक्ष, गोक्ष] १ वातायन । २ झरोखा ।
३ आंख, का नाक की ओर का कोना । ४ कान का विवर ।
५ डिगल का एक गीत, छंद । ६ मीस, हद ।

गोखर(रु)-पु० [सं० गोधुर] १ वर्षा ऋतु में होने वाला एक
पौधा । २ इस पौधे का कंटीला फल । ३ इस फल के समान
लोहे का एक कांटा । ४ स्त्रियों का आभूषण विशेष ।
-कांटी-स्त्री० जमीन पर छितरने वाला पौधा व
इसका फल ।

गोखानी-देखो 'गऊखानी' ।

गोखी-देखो 'गोख' ।

गोय-पु० १ भाग, फल । २ सांप, सर्प । -घोड़ी-पु० वर्षा ऋतु
में होने वाला एक लंबी टांगों का कीट ।

गोगर-स्त्री० सर्पिली, नागिन । -पु० गायों का झुण्ड,
समूह ।

गोगरा-स्त्री० गंगा की सहायक घाघरा नदी ।

गोगाश्रंगली-स्त्री० मध्यमा श्रंगली, मध्यमिका ।

गोगाजोरीभासी-स्त्री० छिपकली जाति का एक जंतु ।

गोगानम-स्त्री० भादव कृष्णा नवमी तिथि ।

गोगापीर-देखो 'गोगी' ।

गोगामंडी-स्त्री० गोगादेव का जन्म स्थान ।

गोगाराखड़ी-स्त्री० गोगापीर के नाम पर बांधा जाने वाला
एक तांत्रिक धागा ।

गोगी-स्त्री० १ मुंह पर आने वाले भाग । २ देखो 'घुग्घी' ।

गोगोचर-पु० ईश्वर । श्रीकृष्ण ।

गोगी-पु० १ ददोड़ा गांव के प्रसिद्ध गोगादेव चौहान जो पीर
के रूप में पूजे जाते हैं । २ इनके नाम का एक लोक गीत ।
३ सर्प, सांप ।

गोघास-पु० [सं०] परोसी थाली में से भोजन करने से पूर्व
निकाला जाने वाला भास ।

गोघड़-स्त्री० वैवाहिक रस्म के अनुसार बनाई जाने वाली
पुतली ।

गोघड़मिनो (नो)-पु० बड़ी बिल्ली ।

गोघाट-पु० जलाशयों का, पशुओं के पानी पीने का, घाट ।

गोघात-स्त्री० गौ हत्या, गौ-वध ।

गोघाती-वि० गौ हत्यारा । महापापी ।

गोघी-देखो 'घुग्घी' ।

गोघोष-पु० गोमाला ।

गोड़-पु० १ समूह, झुण्ड । २ नाश, संहार । ३ बीर हाक, ललकार । ४ प्रवाह की ध्वनि । ५ हाथी की चिंघाड़ । ६ मस्ती, उन्मत्तता ।

गोड़णी (बौ)-क्रि० १ हाथी का चिंघाड़ना । २ ललकारना । ३ प्रहार करना । ४ गिराना । ५ ध्वंसकरना । ६ गुड़ाना । ७ मारना, संहार करना ।

गोड़ण-स्त्री० लम्बे कद का एक पक्षी जिसका मांस खाने में स्वादिष्ट होता है ।

गोड़ारव-देखो 'गोड़ारव' ।

गोड़ोबी-पु० [ग्र० गोइन्दः] १ मुखविर । २ गुप्तचर, भेदिना । गोड़ी-स्त्री० १ हाथी की चिंघाड़ । २ मस्ती, उन्मत्तता । ३ ध्वनि, आवाज । ४ गर्जना ।

गोड़ोड़-वि० १ दृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा । २ विशालकाय, दीर्घकाय ।

गोचणी (णी)-स्त्री० गेहूँ व चने का मिश्रण ।

गोचर-पु० [सं०] १ गोचर भूमि, चारामाह । २ जिला या प्रान्त । ३ विभाग । ४ इन्द्रियों की पहुँच के विषय । ५ पहुँच, लक्ष्य । ६ पकड़ शक्ति । ७ प्रभाव, काबू । ८ दिग्-मण्डल । ९ गगनमंडल । १० नाम राशि के अनुसार निकाले हुये ग्रह योग । -वि० १ गौ का चरा हुआ । २ पृथ्वी पर घूमने वाला । ३ लक्ष्य के भीतर । ४ जानबू योग्य ।

गोचरी-स्त्री० १ योग की एक मुद्रा विशेष । २ कपट से बचाया हुआ धन । ३ भिक्षानृत्ति । ४ जैन मुनियों का भिक्षार्थ भ्रमण ।

गोचार-पु० ग्वाला, गोप ।

गोछी-पु० वस्त्र विशेष ।

गोजरी-पु० गेहूँ व जौ का मिश्रण ।

गोजित-वि० जितेन्द्रिय ।

गोट-स्त्री० [सं० गोष्ठ] १ किनारा, छोर । २ वस्त्र की किनार । ३ किनार पर लगाया जाने वाला फीता । ४ चौसर की गोटी । ५ नातचक्र, नूकान, झंघड़ । ६ समूह ।

गोटकी-पु० १ सूखी कचरी । २ देखो 'गुटकी' ।

गोटमगोट-क्रि० वि० गोट के रूप में, बादलों की तरह । -वि० ग्रंथाधुन, बेदुगा, अव्यवस्थित । -पु० बड़ी राशि, बड़ा समूह ।

गोटाजाय-पु० एक पुष्प विशेष ।

गोटाळी-देखो 'घोटाळी' ।

गोटोबी-पु० खरबूजा ।

गोटो-स्त्री० [सं० गुटिका] १ खेल का मुहरा, गोट । २ टिकिया, गोली । ३ उपाय, युक्ति । ४ देखो 'गोस्ठी' ।

गोटोचणी (बौ)-क्रि० १ बादलों का उमड़-उमड़ कर एकत्र

होना । २ दम घुटना, सूछित होना । ३ घुटन होना । ४ विशूचिका रोग से पीड़ित होना । ५ ऊंट के बदहजमी का रोग होना ।

गोटेमिसुर-पु० सुनहरे बादले का फीता ।

गोटो-पु० १ वातचक्र । २ झांघी, बवंडर । ३ नारियल का गोला । ४ घुटन । ५ हैजा रोग । ६ उन्माद रोग । ७ गड़-बड़ी । ८ इन्द्रजाल । ९ रस्सी आदि का गट्टा ।

गोट (डी)-स्त्री० [सं० गोष्ठी] १ मित्र मण्डली का सामूहिक भोजन, गोष्ठी । पिकनिक । २ वन-भोजन । ३ भेजवानी । ४ दल, टोली । ५ समूह, दल । ६ छोटा गांव, खेड़ा । ७ प्रेम भरी बात । ८ देखो 'गोट' । -गुगरी, गुगरी-स्त्री० वन-भोजन ।

गोठाण-पु० [सं० गौ-स्थान] गाय बांधने का स्थान ।

गोठि-देखो 'गोष्ठी' ।

गोठियो गोठी-पु० (स्त्री० गोठण, णी) १ मित्र, साथी । २ प्रियतम, प्रेमी ।

गोठी-देखो 'गोस्ठी' ।

गोड, (उ)-पु० १ वृक्ष का तना । २ जड़-मूल । ३ मूली नामक आक की जड़ । ४ बाजीसर । ५ देखो 'गोडी' । ६ देखो 'गौड़' ।

गोइणी, (बौ) गोडवणी, (बौ)-क्रि० १ भूमि को खोद कर पोली करना । २ गिराना, पटकना । ३ देखो 'गोड़णी' (बौ) ।

गोडवाड़-पु० [सं० गोडपाटक] राजस्थान के पाली जिले का एक क्षेत्र ।

गोडवाड़ी-स्त्री० १ गोडवाड़ की बोली । २ गोडवाड़ का निवासी -वि० गोडवाड़ का, गोडवाड़ संबंधी ।

गोडां-देखो 'गोडे' ।

गोडांण-देखो 'गोडावण' ।

गोडाकूट, (फोड़ सार)-पु० १ ऊंट की एक ऐव विशेष (अशुभ) २ इस ऐव वाला ऊंट ।

गोडाणी, (बौ)-क्रि० १ भूमि खुदवा कर पोली कराना । २ गिरवाना, पटकवाना ।

गोडापाही-स्त्री० एक प्रकार की सजा, दण्ड ।

गोडाळ-पु० घुटनों पर झुकने का भाव ।

गोडासकड़ी-स्त्री० दोनों हाथों की पांवों से बांधकर बीच में लकड़ी फंसा कर दिया जाने का कठोर दण्ड ।

गोडाळियां, गोडाळिये-देखो 'गुडाळियां' ।

गोडावण-स्त्री० एक पक्षी विशेष जिसका मांस खाने में अच्छा होता है ।

गोडि, (घ)-देखो 'गोडे' ।

गोडियो-पु० १ बेलगाड़ी का एक भाग । २ रहट का एक उपकरण । ३ पुंघुरू लगे चमड़े की पट्टी । ४ देखो 'गोड' । ५ देखो 'गोडी' ।

गोडी-स्त्री० १ ऊँट का अगला पांव समेटकर बांधने की क्रिया । २ बंधन । ३ गोडा, घुटना । ४ चरखे के लगने वाला डंडा । ५ उदण्ड गाय या बैल का घुटने के साथ सींग का बंधन । ६ देखो 'गोडी' ।

गोडीरव-देखो 'गोडीरव' ।

गोडूबो-पु० विद्युत तरबूज ।

गोडे-कि० वि० १ पास में, निकट । २ सामने, सम्मुख । ३ अधिकार में, कब्जे में ।

गोडी-पु० १ घुटना । २ बेलगाड़ी का एक भाग ।

गोडीबोलावण-पु० मृतक के संबंधियों के सामने संवेदना प्रगट करने की क्रिया ।

गोडू-देखो 'गोड' ।

गोडल (ला)-कि० वि० निकट, पास, समीप ।

गोडा, गोड़ा, गोड़ि, (डूँ)-देखो 'गोडे' ।

गोण-पु० १ गमन । २ गगन । ३ पृथ्वी, भूमि । ४ प्रत्यंचा ।

गोणियो-पु० १ बड़ई, लूहार आदि का एक समकीर्ण औजार जिससे दीवार नापी जाती है । २ देखो 'गोणियो' ।

गोणो-पु० [सं० गमन] १ वधू की प्रथमवार सुसराल गमन की रश्मि । २ गमन ।

गोत-पु० [सं० गोत्र] १ कुल, वंश, खानदान । २ वंशगत जाति । ३ समूह, दल । ४ लुप्त होने का भाव । ५ नास । ६ संज्ञा । ७ गोशाला । ८ वन । ९ खेत । १० मार्ग । ११ वर्ग । १२ पर्वत, पहाड़ । —कबज-पु० १ वंश के व्यक्ति की हत्या का पाप । २ निकटतम कुल की स्त्री के साथ संभोग, मैथुन ।

गोतर-स्त्री० कुल में जन्म लेने वाली स्त्री ।

गोतम, (म्म)-पु० १ गोत्र प्रवर्तक ऋषि । २ एक संन्यास ऋषि । ३ एक क्षत्रिय वंश । ४ वसा, चर्बी । ५ देखो 'गोतम' ।

गोतमी-स्त्री० [सं०] १ गोतम ऋषि की पत्नी अहिन्त्या । २ देखो 'गोतमी' ।

गोतर-देखो 'गोत्र' ।

गोतराड़-देखो 'गोतार' ।

गोतहत्या-स्त्री० सगोत्रीय की हत्या का पाप ।

गोतार-पु० भादवशुक्ला अष्टमी, नवमी व दशमी को किया जाने वाला यज्ञ विशेष । मनांतर से भादव शुक्ला १३, १४ और पृणिमा को किया जाने वाला यज्ञ ।

गोतमी-१ देखो 'गोतमी' । २ देखो 'गोतमी' ।

गोतियो, गोती-वि० [सं० गोत्रीय] अपना, सगोत्रीय ।

गोतीत-वि० [सं०] जो इन्द्रिय ज्ञान से परे हो, अगोचर ; अदृश्य । —पु० ईश्वर, विष्णु ।

गोतीरथक-पु० [सं० गोतीर्यक] शल्य चिकित्सा की एक विधि ।

गोते-वि० समान, सहज, तुल्य ।

गोतो-पु० १ डुबकी, गोता । २ निराशाजन्य यात्रा । ३ चक्कर । ४ धोखा । ५ कष्ट ।

गोत-देखो 'गोत्र' । —गोवाळ='गोत्र-गोवाळ' ।

गोत्र-पु० [सं०] १ वंश, कुल । २ कुल के अनुसार जाति । ३ संतान । ४ वर्ग । ५ कुटुम्ब । ६ समूह, झुण्ड । ७ पहाड़, पर्वत । —गवाळ, गोवाळ-वि० वंशरक्षक, गोत्र रक्षक । —गुता-स्त्री० पार्वती, गौरी ।

गोत्रज-पु० [सं०] १ एक ही गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति । २ शिला-जित । ३ पत्थर ।

गोत्रमित्री (मित्री)-पु० [सं०] १ इन्द्र । २ वज्र ।

गोत्रहर-पु० [सं०] वज्र ।

गोत्रहरी-पु० इन्द्र ।

गोत्रा-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । २ गाय ।

गोत्राचार-पु० विवाहादि अवसरों पर किया जाने वाला कुल का उच्चारण ।

गोत्रो-वि० वंशज । स्वजातीय ।

गोथणी-देखो 'गोस्तनी' ।

गोथणी-पु० [सं० गोस्तनी] ढरीसा के छोर पर लगी काष्ठ की किल्ली ।

गोथली-देखो 'कोथली' ।

गोदंती-स्त्री [सं०] १ एक प्रकार की मर्ग या मुख्यवान पत्थर । २ हरताल । —वि० १ कच्चा । २ श्वेत ।

गोद-स्त्री० [सं० गोड] १ अंक, गोडी, उत्सर्ग, श्रेष्ठ । २ घांचल । ३ मुखप्रद स्थान ।

गोदड़-पु० साधुओं का एक सम्प्रदाय व इस सम्प्रदाय का साधु । गोदणी-स्त्री० सुई या कोई नुकीला औजार ।

गोदणी (घो)-कि० १ सुई या नुकीली चीज चुभाना, घुंसेटना, गड़ाना । २ छेड़-छाड़ या तंग करना । ३ अनिच्छित कार्य करने के लिए बार-बार कहना ।

गोदांन-पु० [सं० गोदान] गाय का दान । गोदांम-पु० बड़ा कोठा या प्रांगण ।

गोदा, गोदाबरी-स्त्री० [सं०] गोदाबरी, नदी । गोदि, (दी)-देखो 'गोद' ।

गोदी-देखो 'गोधी' ।

गोध-पु० [सं०] १ मनुष्य । २ नर । ३ बबूत की फली ।

गोधन-पु० [सं०] १ गड्यों के रूप में सम्पत्ति । २ गायों का झुण्ड, समूह ।

गोघम (घाम)-पु० १ भगड़ा, टंटा, फिसाद । २ ऊधम ।
३ उपद्रव, विद्रोह, । ४ उद्वण्डता, बदमाशी । ५ युद्ध,
समर । ६ विद्रोह, विप्लव ।

गोधर-पु० [सं०] १ पर्वत, पहाड़ । २ चन्द्रमा ।

गोघळियो-पु० छोटा बैल ।

गोघार-पु० [सं०] १ इन्द्र । २ गोह नामक जंतु ।

गोघि-स्त्री० [सं०] १ ललाट, भाल । २ मस्तक । ३ गंगा का
नक्र ।

गोघुळिक (ळोक)-देखो 'गोघुळिक' ।

गोघुळक-पु० गायों के खुरों से उड़ने वाली धूल, रज ।

गोघूम-पु० [सं०] गेहूँ ।

गोघुळ-पु० १ गायों के खुरों से उड़ने वाली धूल । २ वह समय
जब उक्त धूल उड़ती है ।

गोघुळक (ळिक)-स्त्री० [सं० गोघुळिक] १ सूर्यास्त का समय,
जब गायें जंगल में चरकर लौटती हैं । २ इस समय होने
वाला मांगलिक मृहत् ।

गोघुळकियो (क्यौ), गोघुळकियो-पु० गोघुळिक समय का
वैवाहिक मृहत् । -वि० गोघुळिक वेला का या उस संबंधी ।

गोघेय, गोघेर, (रक)-पु० [सं०] गोह नामक जन्तु ।

गोघी-पु० १ बड़ा बछड़ा । २ युवा बैल । ३ मांड ।

गोनंब-पु० [सं०] १ स्वामिकात्तिकेय का एक गण । २ बछड़ा ।
३ एक पौराणिक देश ।

गोपंगण (न, ना)-स्त्री० [सं० गोपंगना] गोप जाति की
स्त्री, गोपी ।

गोप-पु० १ गायों का पालक, भाला । २ गोपाल का प्रधान ।
३ राजा, भूपति । ४ श्रीकृष्ण । ५ ब्रजभूमि । ६ गाय ।
७ एक गंधर्व का नाम । ८ एक स्वर्गाभूषण । ९ माली,
अपशब्द । १० उत्तेजना । ११ दीप्ति, चमक, कान्ति ।
१२ छिपाव । -वि० १ गुप्त । २ रक्षक ।

गोपण-१ देखो 'गोपन' । २ देखो 'गोफण' ।

गोपत (पति)-पु० [सं० गोपति] १ शिव । २ विष्णु । ३ सूर्य ।
४ राजा । ५ भाल । ६ श्रीकृष्ण । ७ वृषभ, मांड ।

गोपय-पु० अथर्ववेद का एक ब्राह्मण ।

गोपय-पु० गाय के खुर का चिह्न या गड़ड़ा ।

गोपबान-पु० गुप्तदान ।

गोपन-पु० [सं०] गोपनीयता, लुकाव-छिपाव ।

गोपपति-पु० श्रीकृष्ण ।

गोपानसि-पु० कच्चे मकानों की छाजन का दीवार से बाहर
निकला हुआ भाग ।

गोपाचळ-पु० १ ग्वालियर शहर का प्राचीन नाम । २ इस
शहर के पास का पर्वत ।

गोपारडा-स्त्री० एक प्रकार की गोह ।

गोपायित-वि० [सं०] १ गुप्त, गोपनीय । २ रक्षित ।

गोपाळ, (क)-पु० [सं० गोपाल] १ गउवों का पालन करने
वाला, भाला, गहीर । २ श्रीकृष्ण । ३ राजा । ४ परमे-
श्वर । ५ इन्द्रियों का पालन करने वाला, मन । ६ एक
मात्रिक छन्द विशेष । -खवास-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

गोपालिका-स्त्री० १ गिजाई या गुबरला नामक बरसाती
कीड़ा । २ गोपालन करने वाली भालिन, भालिन ।

गोपाळी-स्त्री० स्कन्द की एक मातृका ।

गोपाळ-देखो 'गोपाल'

गोपि, गापिका, गोपी-स्त्री० १ गोप की स्त्री, भालिन,
गहीरनी । २ ब्रज-बाला । -रास रमण (न)-पु०
श्रीकृष्ण । -सिरमण, सिरमणि-पु० श्रीकृष्ण ।

गोपीवंण, गोपीवं (चंद्र)-पु० - एक प्राचीन राजा जिन्होंने
माता के उपदेश से वैराग्य लिया था ।

गोपीचंदण (न)-पु० [सं०] द्वारका के मरोवर की पीली
मिट्टी जिसका वैष्णव लोग तिलक लगाते हैं ।

गोपीजनवल्लभ-पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।

गोपीध-पु० [सं०] १ गउवों का, पानी पीने का, जलाशय ।
२ एक प्राचीन तीर्थ ।

गोपीनाथ, गोपीपत (पति) गोपीवर, (वल्लभ), गोपीस-पु०
[सं०] श्रीकृष्ण ।

गोपुर-पु० १ बड़े किले, नगर, मंदिर आदि का ऊंचा द्वार ।
२ त्रिलोक, स्वर्ग लोक ।

गोपेद्र-पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण । २ गोप सरदार नंद ।

गोपी-पु० १ गाय का बछड़ा । २ गाय बांधने का स्थान ।
३ गोप ।

गोप्रवेश-पु० गायों का जंगल में लौटने का समय, गोघुळि
वेला ।

गोफण, गोफणियो, गोफा-स्त्री० [सं० गोफण] १ चमड़े की दो
छोटी रस्सियों के बीच बनी फल जैसी पट्टी, जिस पर कंकर
रख कर धुमा कर फेंका जाता है । यह फसल की रखवाली
में काम आता है । २ स्त्री के बानों की वेणी में गुंथा जाने
वाला आभूषण ।

गोफियो-पु० १ 'गोफण' में रख कर फेंका जाने वाला कंकर ।
२ देखो 'गोफण'

गोबद्धन-देखो 'गोवरधन' ।

गोबर-पु० [सं० गोविट] गौ-मल, गाय का का विष्टा, भैंस का
विष्टा । -गणेश-वि० वेडील, भट्टा । मूर्ख, नासमझ ।

गोबरधन (धन)-देखो 'गोवरधन' ।

गोबरी-पु० कंडा, उपला, गोहरा ।

गोबी- देखो 'गोभी' ।

गोब्यंब- देखो 'गोविंद' ।

गोभी-स्त्री० एक प्रकार का शाक ।

गोघ्नत-पु० [सं० गोभृत] पर्वत, पहाड़ ।

गोर्ग-पु० १ आकाश । २ पृथ्वी ।

गोमंद- देखो, 'गोविंद' ।

गोम-स्त्री० [सं० गो] १ पृथ्वी, भूमि । २ आकाश, नभ ।
३ नगाड़ा । ४ मेघ । —पु० ५ वह छोड़ा जिसके पेट के नीचे भंवरी हो । —वि० गुम, छुपा हुआ । —गंगा, गमण- स्त्री० गंगामदी ।

गोमठ- स्त्री० पोंकरण नगर के पास का स्थान जहाँ के ऊँट बढ़िया होते हैं ।

गोमठिणी-पु० गोमठ के 'ढोले' का ऊँट, एक जाति का ऊँट ।

गोमतसर-पु० राजस्थान के भीनमाल नगर का प्राचीन नाम ।

गोमती, (स्त्री)-स्त्री० [सं०] १ जाह्नवापुर की भील से निकल कर सैदपुर के पास गंगा में मिलने वाला एक नदी ।
२ गोमत पर्वत की देवी । ३ टिपरा को एक छोटी नदी ।
४ ग्यारह मात्राओं का एक छंद । ५ स्त्री का एक आभूषण ।

गोमय-पु० [सं०] गोबर । [सं० गोमायु] सियार, गीदड़ ।
—जात-पु० गुवरैला, भालिन, गिजाई ।

गोमर-पु० १ आकाश, नभ । २ पृथ्वी ।

गोमरी-वि० १ भूखा । २ गंवार, असम्य । ३ ग्रामीण ।

गोमल-पु० गोबर ।

गोमसावमड़ी-पु० डिगल का एक गीत विशेष ।

गोमान-पु० [सं० गोमान] गायों का स्वामी ।

गोमर-स्त्री० गोमती नदी ।

गोमाय (पु, पू)-पु० सियार, गीदड़ ।

गोमाळ-स्त्री० गायों का भुण्ड ।

गोमी-पु० [सं० गोमिन] १ सियार, गीदड़ । २ गायों का स्वामी । ३ पृथ्वी ।

गोमुख-पु० [सं०] १ गाय का मुख । २ मगर, घड़ियाल ।
३ एक वाद्य यंत्र । ४ एक प्रकार का शंख । ५ एक योगासन विशेष । ६ इन्द्र-पुत्र जयंत के सारथी का नाम ।
७ चित्तोडगढ़ के एक तीर्थ का नाम ।

गोमुखी-स्त्री० [सं०] १ माना रखकर जाप करने की एक श्रृंखला ।
२ चित्तोड़ का एक तीर्थ स्थान । ३ संगोत्री का एक स्थान विशेष । ४ घांड़े के ऊपरी ओठ पर होने वाली एक भंवरी ।
—वि० गोमुख के अनुसार ।

गोमूत्र, गोमूत, (मूत्र)-पु० [सं० गोमूत्र] गाय का मूत्र ।
—वि० पीला ।

गोमूत्रिका-स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य ।

गोमेड, (वक)-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि ।

गोमेध-पु० [सं०] अश्वमेध की तरह का गौ यज्ञ ।

गोमोवक-पु० १ नग । २ देखो 'गोमेद' ।

गोमेड, (स्त्री)-पु० [फा० गोईंद] गुप्तचर, जासूस ।

गोय-पु० वचन, बोल ।

गोयड़ी-पु० १ छिपकली जाति का, कुछ बड़ा, विषैला जंतु ।
२ रहट का एक पुर्जा ।

गोयणी-पु० १ पशुओं के शरीर से चिपक कर रक्त चूसने वाला एक कीड़ा । २ विषमोद्यों का पुरोहित ।

गोयणी (बो)-क्रि० छुपाता ।

गोयरी-देखो 'गोयड़ी' ।

गोयली-पु० गेहूँ की फसल के साथ होने वाला एक शाक ।
—वि० (स्त्री० गोवली) द्वेय रखने वाला, नीध ।

गोयल्या-स्त्री० पक्षी विशेष ।

गोया-क्रि० वि० अगारने, यदि ।

गोरंभी-देखो 'गौरांभी' ।

गोरंभ-१ देखो 'गोरम' । २ देखो 'गावरधन' ।

गोरम, (मी)-पु० १ घोड़ा, वीर । २ गुद्ध लड़ाई । ३ शत्रु ।
४ मण्डार । ५ पृथ्वी, भूमि । ६ घरावली पर्वत का एक भाग ।
गोर-स्त्री० १ किनारा, तट । २ झोर । ३ मीमा हृद ।
४ कन्न, समाधि । ६ गौरी, पार्वती । ७ सुन्दर स्त्री ।
= गरी । ८ देखो 'गौर' ।

गौर-पु० १ गांव के बीच का चौक । २ गायों का भुण्ड ।
३ रात में मवेशी रखने का बाड़ा, आहूता ।

गोरक, (वख) गोरक्ष गोरख-पु० [सं० गोरक्षक] १ एक देव वृक्ष विशेष । २ प्रसिद्ध हठयोगी गोरखनाथ । ३ गोरक्षक ।
४ जितेन्द्रिय । —आसल, (न)-पु० योग के चौरासी आमतों में से एक ।

गोरख आबली-स्त्री० एक मोटे तने का वृक्ष विशेष जिसके फल व बीज श्रौषधि में काम आते हैं ।

गोरखघोषी-पु० १ कच्चा सूत मलभाने का कार्य । २ निरर्थक व उलझन भरा कार्य । ३ गूढ़ बात ।

गोरखनाथ-पु० [सं० गोरक्षनाथ] पन्द्रहवीं शताब्दी के एक सिद्ध योगी ।

गोरखपथ-पु० उक्त योगी के द्वारा बताया हुआ सम्प्रदाय ।

गोरखमुंजी-स्त्री० एक श्रौषधि विशेष ।

गोरखी-पु० उत्तर भारत के पर्वतीय प्रदेश का निवासी ।

गोरड़ी-देखो 'गोरी' ।

गोरज-स्त्री० गोहूँति ।

गोरजा, (ज्या)-१ पार्वती, गौरी । २ गौर वरों की सुन्दर स्त्री ।
३ गगनगौर ।

गोरजी-पु० ब्राह्मण, द्विज ।

गोरडी-देखो 'गोर' ।

गोरण-पु० १ विवाह का दूसरा दिन । -स्त्री० २ खालिन ।

गोरणी-स्त्री० १ स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रतोत्सव ।

२ इस व्रतोत्सव पर गृहाग्नि स्त्रियों को चौबीस पात्रों में भेवा आदि वितरित करने की क्रिया या संकल्प ।

गोरपत (पति)-पु० १ शिव महादेव । २ बादशाह ।

गोरबंद (बंध)-पु० १ ऊंट के गले का एक आभूषण विशेष ।
२ एक लोकगीत विशेष ।

गोरभ-पु० १ नाथ सम्प्रदाय का एक सिद्ध । २ अरावली का एक भाग विशेष जहाँ हिजड़ों का मेला लगता है ।
३ हिजड़ों का देवता ।

गोरमटियो-पु० खराफ की फसल का खेत ।

गोरमिट-पु० १ सरकार, शासन, राज्य, सत्ता । २ शासक दल ।

गोरमिटी-स्त्री० सरकारी, सत्ता ।

गोरमौ-पु० गांव का खुला चौक ।

गोरयो, (यौ)-पु० १ एक पक्षी विशेष । २ गौरी चमड़ी का पुरुष । ३ मवेशियों का बाड़ा । ४ गौरा ।

गोरल-स्त्री० गणगौर ।

गोरबु, गोरबो-पु० १ ग्राम के बीच का या बाहर का खुला स्थान । २ सीमा । ३ जंगल । ४ देखो 'गोरब' ।

गोरस-पु० [सं०] १ दुध, दुग्ध । २ दही । ३ तक्र, मट्ठा ।
४ मक्खन । ५ इन्द्रिय-सुख ।

गोरस्थी-पु० गोरस बेचने वाला ।

गोरह-देखो 'गोरम' ।

गोरहर-पु० जैसलमेर के गढ का नाम ।

गोरा-स्त्री० १ पार्वती, गौरी । २ गौर वर्णी स्त्री ।

गोराई-स्त्री० गोरापन । सुन्दरता ।

गोरायी, (यौ)-गौर वर्ण का सर्प विशेष ।

गोरि-१ देखो 'गोर' । २ देखो 'गोर' । ३ देखो 'गौरी' ।

गोरियावर-देखो 'गोरायी' ।

गोरियांराड-पु० मुसलमान बादशाह ।

गोरियो-पु० १ अंग्रेज । २ पशुओं का छोटा बाड़ा ।
-वि० गौरा ।

गोरिली, (ली)-पु० १ अफ्रीका के जंगलों में पाया जाने वाला एक वनमानुष । २ छापामार सैनिक ।

गोरिसुत-पु० १ गजानन, गणेश । २ स्वामि कालिकेय ।

गोरी-पु० [फा.] १ फारस के गोर प्रदेश का निवासी ।
२ बादशाह । ३ देखो 'गौरी' ।

गो'री-पु० [प्रा० गोहरी] गाय चराने वाला, खाला ।

गोरोराय, (राय)-पु० १ शिव, महादेव । २ मुसलमान ।
३ बादशाह ।

गोरीसर-पु० हंसराज नामक जड़ी ।

गोरीसुत-देखो 'गोरिसुत' ।

गोरुत-पु० [सं० गोरुत] चार मील की लंबाई का नाप ।

गोरु-पु० गायों को चराने वाला, खाला ।

गोरुप-पु० [सं०] १ महादेव । २ पृथ्वी ।

गोरेल-पु० ढोलियों की एक शाखा ।

गोरैया-स्त्री० कृष्ण वर्ण का एक जल पक्षी विशेष ।

गोरोचन-पु० [सं० गोरोचन] गाय के मस्तक से, मतान्तर से पित्ताशय से निकलने वाला मुग्धित पीला पदार्थ विशेष ।
-वि० पीला, पीतः ।

गोरी-पु० १ गौर वंश का एक भैरव । २ अंग्रेज, युरोपवासी ।
-वि० १ गौरवर्णी । २ गोद य स्वच्छ ।

गोळटोळ-वि० बिल्कुल गोल ।

गोळदाज-पु० तोपची ।

गोळ (क)-वि० [सं० गोल] १ अंडाकार, सर्ववर्तुल ।
२ वृत्ताकार या चक्करदार । ३ लुप्त । -पु० १ दल, झुण्ड, समूह । २ सेना, फौज । ३ पड़यंत्र, जाल । ४ घेरा, घेरावा ।
५ सेना का रक्षक दल, चंदावल । ६ सेना का केन्द्र दल ।
७ दुष्काल पड़ने पर अन्य प्रदेश में मवेशियों के साथ गमन या ऐसा स्थान जहाँ मवेशी सहित ठहरा जाता हो ।
८ पीपल का फल । ९ नहाने की क्रिया, स्नान ।
१० गडबड़, गोठाला । ११ एक प्रकार का भाला ।
१२ संडलाकार क्षेत्र, घेरा । १३ गोलाकार पिंड, गोला ।
१४ अक्सर, पारी, बारी । १५ फुटबाल आदि खेल में किसी दल की हार की परिधि । १६ आकाश । १७ पृथ्वी ।
१८ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

गोल-पु० [सं०] १ दाम, सेवक । २ गुलाम । ३ दासी पुत्र ।
४ वेष्या पुत्र । ५ गूड़ । -वि० १ वर्णान्तर, दोगला ।
२ हुरामी ।

गोलक-पु० [सं०] १ विश्व का गोल पुत्र । २ अर्धगोल संतान । ३ पैमा वचन का छोटे मुह का पात्र । ४ आँख का डला, कोया ।

गोलकाकड़ी-स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी ।

गोळकूडियो (कूडो)-पु० वृत्ताकार चक्र ।

गोळछांती-पु० दरबार या सभा करने का गोलाकार कक्ष ।

गोळण्ट (ट्ट)-देखो 'गोळमटोळ' ।

गोळची-पु० १ तोप या बन्दूक का निशाने बाज । २ खेल में गोल की रक्षा करने वाला खिलाड़ी । ३ बहई का एक अजीवार ।

गोसणी-पु० [अ० गुलाम] दाम, सेवक भृत्य ।

गोळती-वि० गोलाकार ।

गोलनी

(३५१)

गोसाला

गोलनी- स्त्री० मिट्टी का बड़ा पात्र, मटकी, घड़ा ।

गोलमटोल- वि० १ बिल्कुल गोल । २ अस्पष्ट । ३ नाटा एवं मोटा-ताजा ।

गोलमदाज- देखो 'गोलंदाज'

गोलमाळ- स्त्री० १ अव्यवस्था, गड़बड़ी । २ छल, धड़यंत्र ।

गोलर- देखो 'गूलर'

गोलवाळ (ठौ)- पु० दुष्काल में घास-पानी वाले स्थानों पर पशु लेकर जाने वाला व्यक्ति ।

गोलविद्या- स्त्री० [सं० गोलविद्या] ज्योतिष विद्या का एक ग्रंथ ।

गोलवी- पु० एक प्रकार का व्यंजन ।

गोलागूल- पु० [सं०] गाय की पूंछ जैसी पूंछ वाला बंदर ।

गोलाई- स्त्री० १ गोल वस्तु की परिधि । २ वृत्त, घेरा ।

गोलाड़ी- स्त्री० एक बरसाती लता व उसका फल ।

गोलिया- स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

गोलियो- पु० १ स्त्रियों के पैर की अंगुलियों का आभूषण । २ गेहूं की फसल में होने वाला रोग । ३ कांसी का छोटा कटोरा । ४ पीतल का छोटा जल पात्र । ५ पके हुए मांस की हड्डियों का संधिस्थल । ७ एक प्रकार की तलवार ।

गोळी- स्त्री० १ काच या धातु का बना कोई बिल्कुल गोल दाना, गोली । २ औषधि की टिकिया, गुटिका । ३ बन्दूक आदि का कारतूस । ४ दही की मयनी, गोल पात्र । ५ वृक्ष का तना । ६ शरीर का गठन ।

गोली- स्त्री० १ दासी, सेविका । २ देखो 'गोलाई' ।
—जराबी-पु०- दासी पुत्र ।

गोळीड़ाळ- पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

गोलीपी- पु० दासत्व, गुलामी ।

गोलीयो- देखो 'गोलियो' ।

गोलीवाड़- स्त्री० एक जंगली लता ।

गोलू- वि० दुष्काल में 'गोल' जाने वाला ।

गोळे (ळें) वि० अधीन, वश में ।

गोळोचन- देखो 'गोरोचन' ।

गोळी-पु० धातु आदि का बड़ा गोल पिण्ड । २ तोप का गोला । ३ पेट में बात विकार से होने वाला गुल्म । ४ नारियल की साबुत गिरी, गोटा । ५ कोई गोल उपकरण । ६ सूत या ऊन का समेटा हुआ गोला । ७ लालटेन या चिमनी आदि का काच का गोला, हण्डा । ८ एक प्रकार की तलवार ।

गोली-पु० [सं० गोलक] (स्त्री० गोली) १ गुलाम, दास । २ वर्णसंकर संतान ।

गोळी-पु० जूए की कोली ।

गोलीयो- १ देखो 'गोलियो' । २ देखो 'गोली' ।

गोवंब-देखो 'गोविंद' ।

गोवड़ी-स्त्री० १ पशुओं के शरीर पर चिपका रहने वाला कीड़ा, ईत । २ एक प्रकार की घास । ३ गौर वर्ण की स्त्री ।

गोवणियो-पु० पीतल का मध्यम आकार का जल-पात्र, इसी में दूध दूहा जाता है ।

गोवणी-पु० १ खलिहान में अनाज साफ करने की क्रिया । २ अधिक पीटने से शरीर की अवस्था । ३ नाश ध्वंस ।

गोवणी, (बी)-क्रि० गुप्त रखना, छिपाना ।

गोवघ-पु० [सं०] गाय की हत्या ।

गोवर-स्त्री० १ गाय, । २ गुफा । ३ रहस्य, गुप्तबात । ४ गोबर ।

गोवरदन, (घन)-पु० १ ब्रज का एक प्रसिद्ध पहाड़ । २ श्रीकृष्ण का एक नाम । ३ दीपावली के दूसरे रोज पूजन के लिए बनाया गया गोबर का पिण्ड । —धर. धारी-पु० श्रीकृष्ण ।

गोवळ-पु० १ गुड़ । २ गोप, खाला । ३ गाय । —वि० १ रखक । २ देखो 'गोळ' ।

गोवाळ, गोवाळियो, (ठौ)-१ देखो 'गोपाल' । २ देखो 'ग्वाळ' ।

गोविंद, (री)-पु० [सं० गोपेन्द्र] १ श्रीकृष्ण । २ परब्रह्म, ईश्वर । ३ वेदांतवेत्ता । ४ बृहस्पति । ५ शंकराचार्य के गुरु । ६ पितृवर्ग के एक गुरु । —देव-पु० विष्णु का एक रूप । —पद्म-पु० मोक्ष, निर्वाण ।

गोवी-पु० १ दो खेतों की मेढ़ों के बीच का मार्ग । २ देखो 'गोघ्री' ।

गोव्यद-देखो 'गोविंद' ।

गोवत-पु० [सं०] गौ हत्या के प्रायश्चित्त में किया जाने वाला व्रत ।

गोस-पु० [फा० गोश] १ श्रवणेन्द्रिय, कान । २ देखो 'गोस' ।

गोसक-पु० [सं० गोसक] इन्द्र ।

गोसणी, (बी)-क्रि० १ दुःख देकर धन लेना । २ धन का अपहरण करना ।

गोसमायस-पु० पगड़ी का, कान पर नटकने वाला छोर, जिस पर मोती जड़े हों ।

गोसमाळी-स्त्री० [फा० गोशमाली] १ प्रताड़ना, झिड़की । २ कान उमेठना ।

गोसळ-देखो 'गुसळ' । —खानी-देखो 'गुसळखानी' ।

गोसवारी-पु० [फा० गोशवारा] १ जोड़ योग । २ किसी मद के प्राय ध्यय का लेखा । ३ किसी पंजिका का कोष्ठक ।

गोसाईं, गोसाईं-देखो 'गोस्वामी' ।

गोसाला-स्त्री० [सं० गोशाला] १ वृद्ध व अशक्त गायों को रखने का स्थान । २ गायों के रखने का स्थान ।

गोसियल, (सेल) — वि० गुस्सल, कोधी ।

गोसी-पु० कुए पर पानी का मोट खाली करने वाला व्यक्ति ।

गोसूक्त-पु० गोदान के समय पढ़ा जाने वाला अथर्ववेद का ग्रंथ ।

गोसी-पु० [फा० गोशः] १ कोना । २ कोष्ठक । ३ कमान की नोक । ४ आंख की गलकों के बीच का स्थान । ५ एक रोग विशेष । ६ मण्डकोष्ठ । —वि० गुप्त ।

गोस्टो-स्त्री० [सं० गोष्ठी] १ लोगों का समूह । २ सभा । ३ मण्डली । ४ वार्तालाप । ५ परामर्श, सलाह । ६ सैर, सपाटे व खाने-पीने का आयोजन । ७ गुप्त मंत्रणा ।

गोस्त-पु० [फा० गोश्त] मांस, भ्रामिष ।

गोस्तनो-स्त्री० [सं०] दाख, मुनक्का ।

गोस्त्रंग-पु० [सं० गोश्रंग] १ एक पौराणिक पर्वत । २ बबूल वृक्ष । ३ एक ऋषि का नाम ।

गोस्वामी-पु० [सं०] १ गाय का स्वामी । २ ईश्वर । ३ सन्यासियों का एक भेद । ४ विरक्त साधु । ५ जितेन्द्रिय । —वि० श्रेष्ठ ।

गोह-स्त्री० [सं० गोवा] १ छिपकली जाति का एक बड़ा व विषैला जंतु । २ उदयपुर राजवंश का एक पूर्व पुरुष । ३ निषाद राज गृह ।

गोहली-देखो 'गहली' ।

गोहर-देखो 'गो'र' ।

गोहरी-पु० गायों को चराने वाला ग्वाला ।

गोहरी-देखो 'गोह' ।

गोहिर-पु० १ गांव या मोहल्ले के बीच का खुला स्थान । गायों को रखने का स्थान ।

गोहरी-देखो 'गोहरी' ।

गोहली-देखो 'गहली' । (स्त्री० गोहली)

गोही, गोहीयाळ-वि० १ कपटी, घुर्त, चालाक । २ देखो 'गोई' ।

गोहू, गोहू-देखो 'गऊ' ।

गोहू, गाळ (वाळ)-देखो 'गंवाळ' ।

गोहो-देखो 'गोवो' ।

गो-स्त्री० [सं०] १ गाय, गऊ । २ किरण । ३ सरस्वती । ४ वाली । ५ जिह्वा । ६ पृथ्वी । ७ माता । ८ वृष राशि । ९ आंख । १० दृष्टि । ११ बिजली । १२ नोका । १३ दिशा । १४ इन्द्रिय । १५ सुगंध । १६ रोमावली । १७ बकरी । १८ भेड़ । १९ वसंत । —पु० २० सूर्य । २१ चन्द्रमा । २२ घोड़ा । २३ बल । २४ बंदर । २५ तीर, बाण । २६ स्वर्ग । २७ कल्पवृक्ष । २८ वज्र । २९ घर । ३० वृक्ष । ३१ पक्षी । ३२ हाथी । ३३ जल । ३४ शिव का गण । ३५ अंक । ३६ शब्द । ३७ केश । —अव्य० यद्यपि । अगरेच ।

गोख (झी)-देखो 'गोख' ।

गोड़-पु० १ बंग देश का प्राचीन नाम । २ कायस्थों का एक भेद । ३ एक ब्राह्मण वर्ग । ४ एक क्षत्रिय वंश । ५ जलाशय की तरंग या हिलोर । ६ पशुओं के गले में होने वाला एक ग्रंथि रोग । ७ देखो 'गोड़' । —नव-पु० एक संकरराग । —पाव-पु० शंकराचार्य के दादा गुरु । —मत्सार-पु० राग विशेष । —सारंग-पु० एक राग विशेष ।

गोड़ा-स्त्री० निदा, आलोचना ।

गोड़ाटी, गोड़ावटी-स्त्री० गोड़ वंशीय क्षत्रियों के राज्य को भूमि ।

गोड़ारव, (गोड़ीरव) गोड़ीरव-पु० १ समुद्र, सागर । २ प्रवाह । ३ प्रवाह की ध्वनि । ४ हाथी की मस्ती की ध्वनि । ५ समुद्र की लहरों के टकराहट की ध्वनि । ६ हाथी ।

गोड़िया-बाजो-स्त्री० १ नट-विद्या । २ ऐन्द्रजानिक, जादूगरी । ३ छन, कपट ।

गोड़ियो-पु० [सं० गारुडिकः] १ जादूगर, बाजीगर । २ संपेरा । ३ गोड़ रोग से पीड़ित पशु ।

गोड़ी-स्त्री० अोज गुण काव्य की एक रीति । २ एक रागिनी ।

गोडा, गोदै-देखो 'गोडा' ।

गोण-वि० [सं०] १ जो मुख्य न हो । २ कम महत्त्व का । ३ प्रधान का उल्टा । ४ गुणवाचक ।

गोणो-स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा ।

गोणी-पु० १ खलिहान । २ गमन, विदाई । ३ देखो 'गोणी' ।

गोतम (क)-पु० १ भरद्वाज ऋषि का नाम । २ सतानन्द मुनि का नाम । ३ द्रोणाचार्य के साले कृपाचार्य का नाम । ४ बुद्ध भगवान का नाम । ५ न्यायशास्त्र प्रवर्तक का नाम । —संभवा-स्त्री० गोदावरी नदी ।

गोती-देखो 'गोती' ।

गोदान-देखो 'गोदान' ।

गोन-पु० [सं० गमन] १ गमन । २ विदाई । ३ देखो 'गोण' ।

गोम-देखो 'गोम' ।

गोमुछी-देखो 'गोमुछी' ।

गोमूत-देखो 'गोमूत' ।

गोमेव-देखो 'गोमेव' ।

गौरंशि-देखो 'गौरांग' ।

गौर-वि [सं०] १ सफेद, श्वेत । २ पीला । ३ लाल । ४ चमकीला, दीप्ति युक्त । ५ गौरवर्णी । ६ विशुद्ध, स्वच्छ । ७ मनोहर । —पु० १ सफेद रंग । २ पीला व लाल रंग । ३ चन्द्रमा । ४ एक प्रकार का हिरन । ५ एक भैंसा विशेष । ६ चैतन्य महाप्रभु । ७ कमल-नाल । ८ केसर । ९ स्वर्ण, सोना ।

गौ'र-देखो 'गौ'र' ।

गौरता-स्त्री० गौरापन । सफेदी ।

गौरम-पु० १ आकाश, नभ । २ देखा 'गौरम' ।

गौरव-पु० [सं०] १ प्रतिष्ठा, इज्जत । २ बड़प्पन । ३ कुलीनता ।

४ भारीपन । ५ वजन । ६ जरूरत । ७ सम्मान, प्रादर ।

८ कीर्ति, यश । ९ वृद्धि ।

गौरवो-पु० १ चटक पक्षी, चिड़ा । २ देखो 'गौ'र' ।

गौरहर-देखो 'गौरहर' ।

गौरांग-पु० [सं०] १ विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ चैतन्य महाप्रभु ।

४ अंग्रेज । -वि० गौरांगी ।

गौरांतीज-स्त्री० चैत्र शुक्ला तृतीया तिथि ।

गौरा-देखो 'गौरा' ।

गौरियो (वौ)-देखो 'गौरियो' ।

गौरी-स्त्री० [सं०] १ पार्वती, उमा । २ दुर्गा । ३ चौमठ

योगिनियों में से दूसरी । ४ आठ वर्ष की कन्या । ५ गौरवर्ण

की व सुन्दर स्त्री । ६ युवा स्त्री । ७ लाल रंग की गाय ।

८ गंगा नदी । ९ क्वारी कन्या । १० पृथ्वी । ११ हल्दी ।

१२ मोरोचन । १३ वरुण की स्त्री । १४ मलिनका लता ।

१५ तुलसी का पीछा । १६ अर्था छन्द का एक भेद ।

१७ देखो 'गौहरी' । -वि० गौर वर्ण की, सुन्दरी ।

—संकर-पु० शिव-पार्वती । हिमालय की एक चोटी ।

—सर-पु० पु० शिव ।

गौळ-पु० बादामी रंग के तने का बड़ा वृक्ष विशेष ।

गौळणी-स्त्री० ग्वाल की स्त्री, ग्वालन ।

गोस-पु० [प्र०] १ बली में बड़ा पद रखने वाला मुसलमान फकीर । २ गोता लगाने का किया, हुक्की । ३ न्यायकर्ता ।

गोसळ-देखो 'गुसळ' । —खानो= गुसळखानो ।

गौह, गौहक, गौहकेसर-पु० १ एक देव जाति । २ कुबेर ।

गौहव-पु० [सं० गुट्टः] निषादराज गुह जो शृंगवेरपुर का राजा था ।

गौहर-पु० १ जैसवमेर का किया । २ प्रसाद, महल । ३ मोती, मुक्ता । ४ देखो 'गौहर' ।

ग्यान-पु० [सं० ज्ञान] १ जानकारी, पता । २ समझदारी ।

३ दक्षता, निपुणता । ४ बोध । ५ विद्वत्ता । ६ विवेक ।

७ आत्मज्ञान । ८ ज्ञानेन्द्रिय । ९ विषय विशेष का अध्ययन । —कांड-पु० वेद का एक विभाग । —कृत-पु०

ज्ञानवृक्ष का किया हुआ कर्म । पाप । —गोसा-स्त्री०

ज्ञान की जड़, ज्ञान का गर्भ । —जग्य-पु० आत्मा व

परमात्मा का एकीकरण । ब्रह्मज्ञान । —चढ़-वि० अनुभवी ।

—साधन-पु० ज्ञान प्राप्ति का प्रयत्न । इन्द्रिय ।

ग्यानजया-स्त्री० डिग्व के गीतों की रचना का वह नियम विमर्ष अवधानों का यथा मंथन वर्णन हो ।

ग्यानलक्षण-पु० [सं० ज्ञान लक्षण] न्याय में अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद ।

ग्यानलिंग-पु० शिव का एक लिंग ।

ग्यानसत-पु० [सं० ज्ञानियत] स्वयं ।

ग्यानासन (न)-पु० [सं० ज्ञानासन] एक प्रकार का योगासन ।

ग्यानी-वि० [सं० ज्ञानिन्] (स्त्री० ग्यानण) १ ज्ञानवान्,

अनुभवी । २ आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी । ३ बुद्धिमान, प्रति-

भावान । ४ ज्योतिषी । —पु० १ ऋषि, मुनि ।

२ कवि । ३ हंस ।

ग्यात-वि० [सं० ज्ञात] विदित, जाना, हुआ अवगत ।

ग्यातजोबना (जोबना)-स्त्री० [सं० ज्ञान योबना] मुग्धा नायिका जिसे जीवन का ज्ञान हो ।

ग्याता-वि० [सं० ज्ञातृ] १ जानने वाला, जानकार ।

२ अनुभवी, भुक्तभोगी । ३ कवि, पंडित । ४ वेदान्ती ।

ग्याति (ती)-देखो 'जाति' ।

ग्याव-पु० [सं० गर्भ] गर्भ ।

ग्यावण (णी)-वि० गर्भवती । (मादा पशु)

ग्यारमौ (वौ)-वि० दक्ष के बाद वाला ।

ग्यारस (सि, सी)-स्त्री० [सं० एकादशी] एकादशी की तिथि ।

ग्यास-स्त्री० हथो, मजाक ।

ग्यासी-स्त्री० वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री ।

ग्येय-वि० [सं० ज्ञेय] जानने योग्य । ज्ञानव्य ।

ग्रंजन-पु० [सं०] व्याज ।

ग्रंथ-पु० [सं० ग्रंथः] १ किताब, पुस्तक । २ साहित्यिक रचना ।

३ धार्मिक पुस्तक । —क, करता, कार- ग्रंथकर्ता, रचयिता, रचनाकार ।

ग्रंथण (न)-पु० [सं० ग्रन्थन्] १ दो वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया या भाव । २ ग्रंथि, गांठ । ३ ग्रंथना क्रिया ।

४ साहित्य रचना ।

ग्रंथसाहब-पु० मित्रों का धार्मिक ग्रंथ ।

ग्रंथाण-देखो 'ग्रंथ' ।

ग्रंथि-स्त्री० १ गांठ वंघन । २ जोड़, संधि । ३ फोड़ा ।

ग्रंथीलो-वि० [सं० ग्रंथिल] १ गांठदार । २ गूथा हुआ ।

ग्रंदप, ग्रंघप, ग्रंघप-१ देखो 'गंधरव' । २ देखो 'गंधक' ।

ग्रग-देखो 'गरग' ।

ग्रगाचार-पु० [सं० गगाचार्य] गगं ऋषि ।

ग्रसड (ड़ी)-देखो 'गिड' ।

ग्रव, ग्रद, ग्रध-१ देखो 'गरद' । २ देखो 'गिड' ।

ग्रवसी-स्त्री० [सं० गृध्रसी] एक प्रकार का घात रोग जो कूल्हे से उठता है ।

ग्रव (ख, ब, स)-१ देखो 'गरभ' । २ देखो 'गरव' ।

—बास= गरभवाम ।

प्रसल

(३४४)

ग्राम

प्रसल (न)-पु० [सं० प्रसल] १ निगलने व खाने की क्रिया या भाव । २ पकड़ने की क्रिया । ३ जकड़न, कसाव । ४ ग्रहण ।
 प्रसली (बो)-क्रि० [सं० ग्रम] १ निगलना, खाना । २ पकड़ना । ३ कसना, जकड़ना । ४ प्रसना ।
 प्रस्त-वि० [सं०] १ पकड़ा हुआ । २ पीड़ित । ३ ग्रसा हुआ । ४ जकड़ा हुआ, कसा हुआ । [सं० गृहस्थ] ५ गृहस्थ ।
 ग्रह-पु० [सं० ग्रहः] १ नक्षत्र, तारा । २ सूर्य-चन्द्रमा । ३ ग्रहण । ४ पकड़ । ५ मकर, नक्र । ६ भूत-पिशाच । ७ ज्ञानेन्द्रिय । ८ भेद, रहस्य । ९ कृपा । १० नी की संख्या । [सं० गृह] ११ घर, मकान । १२ आवास । १३ कुटुम्ब । १४ कैदी । —हंघ-पु० सूर्य, भानु । —कल्लोल-पु० राहु । —गण-पु० ग्रह समूह, ग्रहावली । —गति, गोचर-पु० ग्रहों का चालु क्रम । —चार-पु० सभोग, ममागम, मंगुन । —चारी-वि० गृहस्थ, घर संवधी । —चितक-पु० ज्योतिषी । —वि० घर की चिता करने वाला । —जुध-पु० गृह कलह, झगड़ा । किसी राज्य का आन्तरिक विद्रोह । मौर सिद्धान्त के अनुसार एक प्रकार का ग्रहण । —जोग-पु० एक राशि पर दो ग्रहों का योग । —वसा-स्त्री० ग्रहों की स्थिति । ग्रहों के अनुसार किसी का अच्छा बुरा समय । अभाय्य । —घारी-पु० गृहस्थी । —नार-स्त्री० ग्रहिणी, भार्या । —नेम, नेमि-पु० आकाश । चन्द्रमा । चन्द्रमा को एक गति । —प, पत, पति, पती-पु० घर का स्वामी । श्वान, कुत्ता । पति, खाँविद, चौकीदार । सूर्य, भानु । —पसु-पु० कुत्ता । गाय । —पाळ, पाळक-पु० घर का चौकीदार । सेवक, दास, दासी । श्वान, कुत्ता । —पुसु-पु० सूर्य, भानु । —मंडल-पु० धन, दौलत, द्रव्य । —मणि-स्त्री० दीपक । प्रकाश, ज्योति । सूर्य, भानु । —मंत्र, मंत्री-स्त्री० वर-वधू के ग्रहों की अनुकूलता । —म्रग-पु० श्वान, कुत्ता । —राज, राव-पु० सूर्य । चन्द्रमा । गृहस्पति । —वंत-वि० भाग्यवान, सौभाग्यशाली । गृहस्थ । —वार-स्त्री० मछली । —वास-पु० किसी के घर में रहवास, निवास । पत्नी के रूप में आवास । महवास, समागम । —वेध-पु० ग्रह की स्थिति का ज्ञान ।

ग्रहकेश्वर-पु० [सं० गृहकेश्वर] कुबेर ।

ग्रहकली (बो)-देखो 'ग्रहकली' (बो) ।

ग्रहण-पु० [सं० ग्रहणम्] १ सूर्य या चन्द्र ग्रहण । २ लेना क्रिया, ग्रहण करना । ३ दुःख, कष्ट, पीड़ा । ४ हाथ । ५ इन्द्रिय । —गंध, गंध-पु० भौरा, नाक । —बैरी-पु० माला । —सुगंध-पु० नाक ।

ग्रहण (ली)-स्त्री० [सं० ग्रहणः] १ पेट में रहने वाली एक

नाड़ी । २ ग्रहणी रोग । ३ युद्ध । ४ ग्रहण । [सं० ग्रहिणी] ५ घर की मालकिन । ६ पत्नी, भार्या ।

ग्रहणी-देखो 'ग्रहणी' ।

ग्रहणी (बो)-क्रि० [सं० ग्रहणी] १ लेना । २ स्वीकार करना । ३ पकड़ना । ४ धारण करना । ५ अधिकार में करना ।

ग्रहमिण (मिण)-देखो 'ग्रहमणि' ।

ग्रहसली (बो)-क्रि० १ ग्रहण करना, स्वीकार करना । २ छीनना, भ्रष्टना ।

ग्रहस्थ-पु० [सं० गृहस्थ] १ पत्नी व बाल बच्चों वाला, घरबारी व्यक्ति । २ ब्रह्मचर्य के बाद जीवन का दूसरा चरण । —आश्रम-पु० व्यक्ति के जीवन की दूसरी सीढ़ी जब वह विवाह करके गृहस्थी बसाता है व सांसारिक कर्म करता है ।

ग्रहस्थो-स्त्री० [सं० गृहस्थी] १ कुटुम्ब, परिवार, बाल-वच्चे । २ घर का सामान । ३ गृहस्थ का कार्य । ४ गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट व्यक्ति ।

ग्रहस्वर-पु० १ किसी राग का मुख्य स्वर । २ गृहस्वामी ।

ग्रहग्रहण-पु० [सं० ग्रह-ग्रहण] रावण ।

ग्रहांचोआवास, (ग्रहण)-पु० आकाश, नभ ।

ग्रहांपत, ग्रहांपति-देखो 'ग्रहपति' ।

ग्रहांराज-पु० [सं० ग्रहराज] सूर्य, भानु ।

ग्रहाधार-पु० [सं०] ध्रुव नक्षत्र ।

ग्रहाराम-पु० [सं० गृह+आराम] छोटा बगीचा, वाटिका ।

ग्रहावणी (बो)-क्रि० ग्रहण करना ।

ग्रहात्मो-पु० गृहस्थी ।

ग्रहि (हो)-पु० [सं० गृह] १ घर, गृह । २ श्वान, कुत्ता । [सं० ग्रह+ई] ३ चन्द्रमा ।

ग्रहिण (ली)-देखो 'ग्रहणी' ।

ग्रहित-वि० ग्रहण किया हुआ ।

ग्रहिमिण-देखो 'ग्रहमणि' ।

ग्रहीत-वि० [सं०] १ घिरा हुआ, आवृत । २ लिया हुआ ।

ग्रहेस-पु० [सं० ग्रहेश] मूर्य ।

ग्रहसली (बो)-देखो 'ग्रहसली' ।

ग्रह-पु० [सं०] १ यज्ञ का एक पात्र विशेष । २ पालतू पक्षी । —वि० ग्रहण करने योग्य । —सूत्र-पु० संस्कार संवधी पद्धति की पुस्तक ।

ग्रंजली-देखो 'गुरांजली' ।

ग्राम (डो)-पु० [सं०] १ छोटी बस्ती, गांव, देहात । २ जन्म भूमि । ३ समूह, ढेर । ४ शिव । ५ नवों का सप्तक । —जाचक-पु० गांव के सभी घरों में याचना करने वाला । —पाळ-पु० गांव स्वामी, जागीरदार । गांव का चौकी-

दार । —घृत-पु० ग्राम मेवक । —वल्गु-स्त्री० वेण्या,
रंडी नगर वधू । —सिंह, सोह-पु० श्वान, कुत्ता ।
प्राप्ती-वि० गांव का, गांव संबंधी, देहाती ।
प्राप्ति-पु० [सं० ग्राम्य] १ रतिबंध, शृंगार का एक भासन ।
२ काव्य का एक दोष । —वि० १ ग्राम सम्बन्धी ।
२ मूढ़ ।
प्राप्त-देखो 'ग्राहक' ।
प्राप्त-पु० [सं० ग्रावन्] १ पत्थर । २ ओला । ३ पर्वत । ४ मगर-
मच्छ । —वि० दृढ़, मजबूत ।
प्राप्त(ण)-पु० [सं०] १ भोजन का कौर, निवाला । २ पकड़न,
जकड़न । ३ ग्रहण । ४ विभाग, हिस्सा । ५ प्राय,
ग्रामदनी । ६ खाद्य पदार्थ । ७ छोटा भू-भाग जो प्राप्ति
के अधिकार में हो ।
प्राप्ति-पु० खाने, निगलने, प्रसने आदि की क्रिया ।
प्राप्ती (बी)-क्रि० १ खाना, निगलना । २ प्रसना ।
३ पकड़ना ।
प्राप्तवेध-पु० प्रसने, पकड़ने, काबू करने का मौका, अवसर ।
प्राप्ति-स्त्री० एक पर्वतीय जाति विशेष ।
प्राप्ती-पु० १ प्राप्त, कौर । २ छोटा भू-स्वामी । ३ लुटेरा ।
४ वागी । ५ नया राज्य पाने वाला ।
प्राह-पु० [सं० ग्राहः] १ मगर, घड़ियाल । २ ग्रहण ।
प्राहक (ग)-पु० [सं० ग्राहक] खरोददार, श्रेता । —वि० १ ग्रहण
करने वाला । २ इच्छुक ।
प्राहगम-पु० भ्रमर, भौरा ।
प्राहगू-देखो 'ग्राहक' ।
प्राहग्रह-पु० हाथी, मज ।
प्राहणी (बी)-देखो 'ग्रहणी' (बी) ।
प्राही-पु० [सं०] १ ग्रहण या स्वीकार करने वाला व्यक्ति ।
२ पहिचान वाला ।
प्राह-देखो 'गिद्ध' ।
प्राह-देखो 'ग्रह' ।
प्राहवास-देखो 'ग्रहवास' ।

प्राज (ए)-देखो 'गिद्ध' ।
प्री-स्त्री० ग्रीवा, गर्दन ।
प्रीक-पु० [प्र०] १ यूनान देश । २ इस देश की भाषा ।
प्रीकम-देखो 'प्रीक' ।
प्रीज, प्रीस, प्रीध, प्रीधड़ (ट) प्रीधण-देखो 'गिद्ध' । —बख=
गिद्धपंख ।
प्रीधल प्रीधस-पु० १ गरुड़ । २ देखो 'गिद्ध' ।
प्रीधली-स्त्री० मादा गिद्ध, गिद्धनी ।
प्रीधल-पु० १ गिद्धों का समूह । २ बड़ा गिद्ध । ३ गरुड़ ।
प्रीध-देखो 'गिद्ध' ।
प्रीव, प्रावा-स्त्री० [सं० ग्रीवा] गर्दन, यला । —देख-स्त्री०
तीन की संख्या ।
प्रीवाज-पु० हयग्रीव अवतार ।
प्रीसम, प्रीस-स्त्री० [सं० ग्रीष्म] १ गरमी का मौसम, ग्रीष्म
ऋतु । २ उष्णता, गर्मी । —वि० गर्म, उष्ण ।
प्रीवड़, (डी)-पु० वृक्षों के तनों में निकलने वाला विकार ।
प्रीह-देखो 'ग्रह' ।
प्रीहण (ए)-देखो 'ग्रहण' ।
प्रीहणी-देखो 'ग्रहणी' ।
प्रीवक-पु० एक देव विमान का नाम ।
प्रीवळ-देखो 'गिद्ध' ।
प्रीलण (ए), प्रीलनि (नी)-स्त्री० [सं० प्रीलनि] १ घृणा,
नफरत । २ प्ररुचि । ३ उदासीनता ।
प्री-पु० [सं०] चन्द्रमा । —प्राळ-पु० शिव, महादेव ।
प्रीवड़ (डी)-देखो 'गवाड़' ।
प्रीव-देखो 'गवार' । —प्राठी= 'गवारपाठी' । —कली=
'गवारफली' ।
प्रीलंब-देखो 'गवालंब' ।
प्रीळ, प्रीळी, प्रीळी-पु० [सं० गोपालः] १ गोपालक, ग्वाला,
ग्रहीर । २ श्रीकृष्ण । ३ गडरिया । —प्री-पु० श्रीकृष्ण ।
प्रीळ-पु० [सं० गोपालगिरि] ग्वालियर की रियासत व
शहर ।

- घ -

घ-क' वर्ग का चौथा वर्ण ।
घंघळ (ल)-स्त्री० १ भगड़ा, टंटा । २ बेचैनी घबराहट ।
घंघळणी (बी)-क्रि० १ पानी को हिलाना, हाथ डालकर
हिलाना । २ घोलना, मथना ।

घंट-पु० [सं० घट] १ मला, कंठ । २ देखो 'घंटो' ।
३ देखो 'घट' ।
घंटका-पु० १ घुंघरू । २ देखो 'घंटिका' ।
घंटकरण (न)-पु० [सं० घंटकर्ण] शिव का एक गण ।

घंटाघर-पु० स्तंभनुमा ऊंची इमारत पर स्थित बड़ी घड़ी
जिनकी आवाज दूर तक सुनाई देती है ।

घंटाघर-पु० घंटे की आवाज ।

घंटाळ, घंटाळी-स्त्री० १ देदी, दुर्गा । २ एक प्रकार का मृग ।
-वि० जिसके घंटा बंधा हो । जिसके सामने घंटा
बजता हो ।

घंटावलि (ळी)-स्त्री० घंटिकाओं की पंक्ति ।

घटिका, घंटीका, घटी-स्त्री० [सं० घटिका] १ छोटा-घंटा,
बटी । २ घुंघरू । ३ गले में लटकने वाला टेंदवा, कीवा ।

घटियाळ-स्त्री० देवी का विशेषण, दुर्गा, देवी ।

घंटी-पु० [सं० घंटा] १ टन्-टन् ध्वनि उत्पादक बड़ा यन्त्र,
घटा । २ दिन व रात का चौबीसवां भाग या साठ मिनट
को एक अवधि । ३ निश्चित समय में बजने वाली घड़ी,
घड़ियाल । ४ लियेंद्रिय (बाजारू) ।

घंस-पु० [सं० घष] १ संहार, नाश । २ रास्ता, मार्ग ।
३ दल, समूह । ४ फौज, सेना । ५ युद्ध । ६ पीछा,
अनुधावन । -वि० संहारक ।

घसणी (बो)-क्रि० १ संहार, करना, नाश, करना । २ पीछा
करना । ३ देखो 'घसणी' (बो) ।

घंसार-देखो 'घीसार' ।

घंसि (सो)-१ देखो 'घस' । २ देखो 'घीसार' ।

घ-पु० [सं०] १ सुधर्म । २ हाथी । ३ शिव । ४ नरक ।
५ ककण । -स्त्री० ६ शची । ७ वसुमती । ८ राक्षसी ।
९ घंटा । १० घंघर शब्द । -वि० घातक ।

घउंटहुली-स्त्री० नागर नेल ।

घकार-पु० 'घ' वर्ण ।

घक्की-पु० १ होश-ठवास । २ ध्यान, ख्याल । ३ चेतना ।
४ व्यवस्था ।

घघरि-देखो 'गृगरी' ।

घघ (राव, राज)-पु० ऊट ।

घघर-स्त्री० एक नदी का नाम ।

घघरी-स्त्री० १ छोटा लहंगा । २ बच्चियों की फराक ।
३ छोटा घट ।

घघियो, घघो-पु० 'घ' वर्ण ।

घघू-पु० उल्लू ।

घड़ (उ)-स्त्री० [सं० घट, घटा] १ सेना, फौज । २ मेघ,
बादल । ३ करदट । ४ बड़ा घड़ा । ५ समूह, झुंड ।
६ वस्तुओं की तह । ७ शरीर, तन ।

घड़उषळ (ळ)-पु० डिगल का एक छंद (गीत) विशेष ।

घड़कलियो-पु० छोटा घड़ा ।

घड़घड़, घड़घड़ाट-स्त्री० १ गाड़ी या भारी वाहन के चलने की

आवाज । २ बादलों की गर्जन । ३ तोप आदि की
आवाज ।

घड़घड़ाणी (बो)-क्रि० घड़घड़ ध्वनि होना, गर्जना ।

घड़ड़-स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष ।

घड़ण (न)-स्त्री० १ शिल्प क्रिया । २ गढ़ने की क्रिया ।
३ आभूषण ।

घड़णी-पु० गहना आभूषण ।

घड़णी (बो)-क्रि० १ गढ़ना, बनाना, रचना, घड़ाई करना ।
२ कल्पना करना । ३ गप्प हांकना । ४ मारना, पीटना ।
५ वस्तु देचकर पैसा बनाना ।

घड़त-स्त्री० १ घड़ाई, कारीगरी । २ बनावट । ३ गढ़ाई का
पारिश्रमिक ।

घड़नाव-स्त्री० कई घड़ों को बांध कर बनाई हुई नाव ।

घड़बंद-पु० १ रहंट की माल की रस्सी । २ सेनापति ।

घड़भोड़-वि० शूरवीर, गोढ़ा ।

घड़लियो-पु० कृष्ण पर काम आने वाली 'पंजाली' में लगने वाला
ढंडा । २ देखो 'घड़ी' ।

घड़ली-स्त्री० [सं० घटिका] रहंट की माल का जल-पात्र
जिसमें पानी भर कर निकलता है ।

घड़ली-देखो 'घड़ी' ।

घड़वं-देखो 'घड़वंद' ।

घड़बो-पु० १ गढ़ा हुआ पत्थर । २ घड़ा गागर ।

घड़स, घड़ा-देखो 'घड़' ।

घड़ाई-स्त्री० १ आभूषण, पत्थर आदि गढ़ने की क्रिया या
भाव । २ गढ़ने की मजदूरी ।

घड़ाणी (बो)-क्रि० १ आभूषणों की घड़ाई कराना, बनवाना ।
२ पत्थर, गढ़ाने का कार्य कराना ।

घड़ाभिड़, (मोड़), घड़ाळ (ळो)-वि० शूरवीर, गोढ़ा ।

घड़ावणी (बो)-देखो 'घड़ाणी' (बो) ।

घड़िय, (उ)-देखो 'घड़ी' ।

घड़िया-स्त्री० भिषती का कार्य करने वाली जाति ।

घड़ियाल-पु० [सं० घटिकावलि] १ देवस्थान का बड़ा घंटा ।
२ बड़ी घड़ी । ३ घटाघर । ४ ग्राह, मकर ।

घड़ियाली, घड़ियो-पु० १ स्वर्णकार । २ पहाड़ा, गिनती ।
३ छोटा घड़ा । ४ घड़े से पानी भरने वाला व्यक्ति ।
५ घड़ाई करने वाला कारीगर, शिल्पी ।

घड़ी-स्त्री० [सं० घटिका] १ समय सूचक यंत्र । २ समय या
काल का एक विभाग । ३ अवसर, मौका । ४ मुहूर्त ।

घड़ीक-क्रि० वि० १ एक घड़ी के लगभग । २ कभी ।

घड़ीभिड़-देखो 'घड़ाभिड़' ।

घड़ीयक-देखो 'घड़ेक' ।

घड़ीसाज—पु० घड़ियों की मरम्मत करने वाला कारीगर ।
 घड़ूकी—देखो 'घटोत्कच' ।
 घड़ूचल—पु० डिगल का एक गीत ।
 घड़ूली (लूनी)—पु० छोटा घड़ा ।
 घड़ूस—पु० १ गहरे बादल । २ सेना, फौज । ३ समूह, दल ।
 घड़ोटियो—पु० १ छोटा घड़ा । २ मृतक के बारहवें दिन का भोज । ३ मृतक के बारहवें दिन का एक संस्कार ।
 घड़ी—पु० [सं० घट] १ मिट्टी का जल-पात्र, घड़ा, गगर । २ इसी के अनुरूप किसी धातु का बना पात्र । ३ कलसा ।
 घव—देखो 'गव' ।
 घवोसणी—पु० विघ्न ।
 घजोड़—पु० पहाड़ी भागों में होने वाला वृक्ष विशेष ।
 घट—पु० [सं०] १ तन, देह, शरीर । २ मन, हृदय । ३ घड़ा, जल-पात्र । ४ कुम्भराणि । ५ हाथी का मस्तक । ६ प्राणायाम का एक भेद । ७ बीस द्रोण का एक तौल ।
 —कंचुकी—स्त्री० वामभागियों की एक तांत्रिक रीति ।
 —करकट—पु० संगीत में एक ताल । —करण—पु० कुम्भकर्ण । कुम्हार । —करतार, कार—पु० कुम्हार ।
 —चक—पु० शरीर, देह । इकाई । —ज, जात—पु० अग्रस्त्य मुनि । —तोणी, (नी)—पु० अग्रस्त्य मुनि । —सचल—पु० अग्रस्त्य मुनि ।
 घटल—स्त्री० घटने की क्रिया या भाव । कमी । न्यूनता ।
 घटणी (बी)—क्रि० १ कम होना, क्षय होना । २ न्यून होना । ३ घटित होना । ४ उपस्थित होना । ५ सम्पन्न या पूर्ण होना ।
 घटत (ती)—स्त्री० १ कमी, क्षय, न्यूनता । २ हानि, घाटा ।
 घटना—स्त्री० [सं०] वारदात, वाक्या, कोई बात ।
 घटलड़—स्त्री० कमी बेगी ।
 घटवाछियो—पु० तीर्थ स्थान या सरोवर पर दान लेने वाला याचक ।
 घटाण—पु० [सं० घोटक] १ घोंड़ा, अश्व । २ देखो 'घटा' ।
 घटा—स्त्री० [सं०] १ बादलों का समूह मेघमाला । २ झुंड, समूह । ३ घूँघ या धूल का गुब्बारा । ४ सेना, फौज । ५ धूमधाम, समारोह । ६ सभा, गोष्ठी । ७ हाथियों का समूह । —कास—पु० घड़े का खाली स्थान । —घूम—स्त्री० घनघोर घटा । —घोर, टोप—वि० बादलों से आच्छादित । आच्छादित, छाया हुआ । मुमज्जित । ढका हुआ ।
 घटाणी (बी)—क्रि० १ कम करना । २ न्यून करना । ३ बाकी निकालना । ४ सम्पन्न या पूर्ण करना । ५ क्षीण करना । ६ काटना ।
 घटाळ—पु० सेना, फौज ।
 घटाज—पु० १ कमी, न्यूनता । २ अवनति, पतन ।

घटावणी (बी)—देखो 'घटाणी' (बी) ।
 घटावली—स्त्री० १ एक देवी विशेष । २ मेघमाला ।
 घटि—वि० न्यून, कम ।
 घटिकावधान (सत)—पु० [सं०] एक हो घड़ी में अनेक काय करने की क्रिया ।
 घटित—वि० [सं०] १ घटा हुआ, हुवा हुआ । २ निमित्त ।
 घटिया—वि० १ बढ़िया का विपर्याय । २ निम्न कोटी का, हल्का । ३ कम कीमती, सस्ता । ४ अव्यय, मीच, तुच्छ ।
 घटियाळी—स्त्री० आवड़देवी की बहन एक देवी ।
 घटी—देखो 'घड़ी' ।
 घटीजंत्र—पु० १ घड़ी । २ रहस्य ।
 घटलियो—पु० पत्थर की छोटी चक्की ।
 घटूकी, घटोत्कच—पु० भीम व हिडिम्बा का पुत्र ।
 घटोडूव—पु० अग्रस्त्य मुनि ।
 घटोर, (री)—पु० [सं० घटोदर] मेंढा, भेड़, मेघ ।
 घट्ट—१ देखो 'घट' । २ देखो 'घाट' । ३ देखो 'घटा' ।
 घटित—पु० [सं०] १ नाच में पैर रखने की एक क्रिया । २ देखो 'घटित' ।
 घट्टी—स्त्री० १ अनाज पोसने की पत्थर की चक्की । २ देखो 'गट्टी' ।
 घड—१ गड़, किला । २ देखो 'घड़' । ३ देखो 'घटा' । ४ देखो 'घट' ।
 घडलियो—१ देखो 'घरलियो' । २ देखो 'घड़ी' ।
 घडहडो—देखो 'घड़ी' ।
 घल (न)—पु० [सं० घनः] १ लोह कूटने का मोटा हथौड़ा । २ लोहा । ३ मुख । ४ गदा । ५ शरीर । ६ समूह, समुदाय । ७ संख्या का गुणनफल । ८ सेना, फौज । ९ पत्थर । १० ताब देने वाला बाजा । ११ चने या मोट में पड़ने वाला एक कीड़ा । १२ संगठन । १३ बादल, मेघ । १४ प्रथम लघु व दो दीर्घ मात्रा का नाम ।—वि० १ अधिक, बहुत, ज्यादा । २ ठोस, दृढ़ । ३ श्वेत-कृष्ण । ४ घूमिल । ५ सपन, घना । ६ संकीर्ण । ७ चिता, फिक । —अप—पु० पानी, जल । —आणंद—पु० विष्णु । आनंद, हर्ष । —उत्का—वि० अद्भुत, विचित्र । चमत्कार पूर्ण । अधिक उक्ति वाला । —कठ—पु० डिगल का एक छंद । —कील—पु० लोहा । —कोदंड—पु० इन्द्र धनुष । —करौ, छरौ—वि० अधिकतर । —खाऊ—वि० अधिक खाने वाला पेट । —घणा—वि० अत्यधिक । —घोर—वि० घना गहरा । घटा टोप । भीषण । —पु० मेघ गर्जन । —चक, चकर, चक्क, चक्कर, चक—पु० युद्ध, रण । भीड़-भाड़ । गर्दिश, चक्कर । मूर्ख । अवारा । —जाण, जाणग—वि० चतुर, बुद्धिमान, विद्वान, पंडित । बहुत जानने वाला । —जीवी—

वि० चिरायु । — जुग-वि० प्राचीन । — जूमी, भूमी-वीर, योद्धा । — जोर-पु० शक्तिशाली । — ताळ-पु० चातक । करताल । — दाता-वि० बड़ा दानी । ईश्वर । — दोही-वि० वृद्ध, बूढ़ा । पुराना । — नामी-पु० ईश्वर । श्रीकृष्ण । श्रीराम । प्रसिद्ध विख्यात । — नाव-पु० रावण पुत्र मेघनाद । मेघ गर्जना । मोर । — नादानळ-पु० मोर, मयूर । — पटल-पु० बादलों का दल, समूह । — पति-पु० उन्ट । वरुण । — पत्र-पु० अधिक पत्तों वाला वृक्ष । — पथ-पु० आकाश, नथ । — पात=‘घण-पत्र’ । — पुसप-पु० पानी । — प्रिय-पु० मोर, मयूर । — फल-पु० गुणफल । — मंड-पु० मोर, मयूर । — मंड-पु० मेघ घटा । — माया-पु० ईश्वर । विष्णु । कृष्ण । — माळ-स्त्री० मेघमाला । घन घटा । मुंड माला । — मूळ-पु० घनफल का मूल श्रंक । — मोल मोलोह, मोली-वि० बहुमूल्य, कीमती । — रस-पु० पानी । हाथियों का एक रोग । राट-पु० मेघ । मेघ गर्जना । — राव-पु० मेघनाद, इंद्रजीत । — रूप, वरण-पु० ईश्वर । विष्णु । बहुरूपिया । — वह, वाह-पु० हवा, पवन । — वाहण-पु० इन्द्र । पवन । — बाही-पु० लोह कूटने वाला । — सगण, सघण-वि० अत्यधिक, बहुत । — सह-पु० घन घटा की ध्वनि । — सही-वि० सहनशील । — सार-पु० जल पानी । कपूर । डिगल का एक छंद । — सुर-पु० रावण पुत्र मेघनाद । — सेड, सेड-वि० बहुत कार्यों का जानकार । चतुर, बुद्धिमान । उदार, दातार । अधिक दूध देने वाली । — हर-स्त्री० मेघमाला । बादल ।

घण-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ चक्र की गति ।
घणस्याम-पु० [सं० घनश्याम] १ श्रीकृष्ण । २ काला बादल ।
—वि० श्याम वर्णी ।
घणाक-वि० १ ज्यादा, अधिक । २ प्रायः ।
घणाक्षरी-पु० [सं० घनाक्षरी] ३२ वर्णों का दण्डक छंद विशेष ।
घणाखर-क्रि० वि० [सं० घनकार] प्रायः अधिकतर ।
घणाघण-पु० [सं० घनाघन] १ इन्द्र । २ बादल । ३ मस्त हाथी ।
घणावणी-स्त्री० [अनु०] १ अन्याय, गैर इन्माफ । २ अत्याचार ।
३ अधिकता, आधिक्य ।
घणात्पय-पु० [सं०] शरद ऋतु ।
घणारंग-पु० साधुवाद, धन्यवाद, वाहवाही ।
घणियेर, घणीक-वि० अधिक, ज्यादा ।
घणीवात-स्त्री० १ विशेषता । २ मान प्रतिष्ठा ।
घणु (खूँ)-वि० [सं० घन] बहुत, पर्याप्त ।
घणघणी-वि० अत्यधिक ।
घणेर-वि० १ दातार, दानवीर । २ बहुधंधी ।

घणेरड़, घणेरड़ी, घणेररी-वि० (स्त्री० घणेररी) बहुत, अधिक ।
घणोत्तम-पु० [सं० घनोत्तम] मुख ।
घणी-वि० [सं० घन] (स्त्री० घणी) १ बहुत, अधिक ।
२ पर्याप्त । ३ गहरा ।
घतणी (बी)-क्रि० डाला जाना ।
घताणी (बी), घतावणी (बी)-क्रि० हलवाना, अन्दर करवाना ।
घनस्याम-देखो ‘घणस्याम’ ।
घनाक्षरी (खरी)-देखो ‘घणाक्षरी’ ।
घबड़ाणी (बी), घबरावणी (बी)-देखो ‘घबराणी’ (बी) ।
घबर, घबराट-स्त्री० १ भय । २ बेचैनी, व्याकुलता ।
३ उतावली हड़बड़ी । ४ परेशानी ।
घबराणी (बी), घबरावणी (बी)-क्रि० १ भयभीत होना ।
२ बेचैन या व्याकुल होना । ३ उतावली या हड़बड़ी करना । ४ परेशान होना । ४ चकित होना, हक्का-बक्का होना । ५ ऊबना ।
घबराहट-देखो ‘घबराट’ ।
घमक-स्त्री० १ आघात से उत्पन्न ध्वनि । २ धमाका । ३ गर्जन ।
४ भस्कार । ५ हिनहिनाहट । ६ प्रहार । ७ यथाशक्त्य परिश्रम । ८ घूमर नामक लोक नृत्य ।
घमकणी (बी)-देखो ‘घमकणी’ (बी) ।
घमघम-देखो ‘धमधम’ ।
घमंड-पु० १ गर्व, अभिमान । २ बल, शौर्य । ३ शेखी ।
४ सहारा, भरोसा ।
घमंडी-वि० १ गविला, अभिमानी । २ शोख ।
घम-स्त्री० भारी आघात या भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।
घमक-देखो ‘घमक’ ।
घमकणी (बी)-क्रि० १ आघात से ध्वनि होना । २ धमाका होना । ३ नाचना । ४ तेज बरसना । ५ अचानक आना ।
६ तेजी करना । ७ बजना । ८ ध्वनि होना । ९ गर्जना ।
घमकाणी (बी), घमकावणी (बी)-क्रि० १ प्रहार करना, मारना, पीटना । २ नचाना । ३ धुंधलू बजाना । ४ घमकी देना । ५ बजाना । ६ वेग पूर्वक बरसना ।
घमकार-स्त्री० झनझन शब्द, ध्वनि विशेष ।
घमकी-पु० १ आघात या पड़ने की ध्वनि । २ चलने से उत्पन्न पांवों की ध्वनि । ३ धुंधलू की झनकार ।
घमघम-स्त्री० १ धमधम । २ झनकार । —क्रि० वि० १ शीघ्र, तेजी से । २ निरंतर, लगातार ।
घमघमणी (बी)-देखो ‘घमकणी’ (बी) ।

घमघमाणी

(२५९)

घरघारी

घमघमाणी (बौ)—देखो 'घमकाणी' (बौ) ।

घमड़—१ देखो 'घमक' । २ देखो 'घुमड़' ।

घमबाळ (चौळ)—स्त्री० [सं० घर्मचाल] १ फौज, सेना ।

२ युद्ध । ३ शस्त्र प्रहार । ४ मिचलाहट, मितली । ५ ऊंट की एक चाल । ६ अनकार । ७ वमन, कै । ८ बौद्धार ।

९ नशा खुमारी । १० कोलाहल, शोरगुल ।

घमचोळणी (बौ)—कि० १ जी मचलाना, घबराहट होना ।

२ आघात करना, प्रहार करना । ३ कोलाहल करना, शोरगुल करना ।

घमशोली—पु० भोगना, विघ्न, टंटा ।

घमडी—स्त्री० घुमाव, चक्कर ।

घमर—स्त्री० १ डोल, नगरे आदि की ध्वनि । २ बादलों की गर्जन । ३ गभीर ध्वनि ।

घमराळ (रोळ)—१ युद्ध, रण । २ शस्त्रों की बौद्धार । ३ तेज महक । ४ उल्लू-कूद, घमा चौकड़ी । ५ शोरगुल, कोलाहल ।

घमरोळणी (बौ)—कि० १ युद्ध करना । २ संहार करना । ३ रौदना । ४ महकना ।

घमस—स्त्री० १ थोड़े की टाप की ध्वनि । २ पद-चाप । ३ आवाज, ध्वनि ।

घमसाण (सांन)—वि० १ भयंकर, भीषण । २ घनघोर, घमासान । —पु० १ भयंकर युद्ध । २ संहार, नाश । ३ फौज, सेना । ४ समूह, दल । ५ भीड़, समूह जमघट ।

घमसाळ—वि० विभाल, बड़ा ।

घमहम, घमांघम—देखो 'घमघन' ।

घमाकी—देखो 'घमाकी' ।

घमाघम (मी)—१ देखो 'घमाघम' । २ देखो 'घमघम' ।

घमाड़ी, घमाड़, घमाड़ी, घमाँर घमेड़, घमेड़ी—पु० १ प्रहार, चोट, आघात । २ घमाका । ३ घम की आवाज । ४ दुःख या शोक में छाती पीटने की क्रिया या भाव । ५ दही मथन की ध्वनि ।

घमोड़णी (बौ)—कि० १ मारना, पीटना, आघात करना । २ प्रहार करना, बाज करना । ३ दही मथना ।

घमोड़ी—देखो 'घमोड़ी' ।

घमोय—स्त्री० सन्यानाशी नामक पौधा ।

घमोर—देखो 'घमोड़' ।

घम्म—देखो 'घम' ।

घम्मघमतड़—कि० वि० १ घेरा बनाते हुए । २ घूमते हुए ।

घर—पु० [सं० गृह, घर] १ भवन, मकान, इमारत, बंगला । २ निवास स्थान, आवास । ३ जन्म भूमि, जन्म स्थान, मातृ भूमि । ४ स्वदेश । ५ कुल, वंश, घराणा । ६ किसी वस्तु का खोखा, चोगा । ७ खाना, कोष्ठक । ८ किसी वस्तु का निश्चित स्थान । ९ छेद, बिल । १० राग का स्वर ।

११ उत्पत्ति स्थान । १२ मूल कारण । १३ गृहस्थी, परिवार । १४ घर का मामान । १५ कार्यालय, कारखाना । १६ कोठरी, कक्ष । १७ चौखटा, फ्रेम । १८ भण्डार, खजाना । १९ देवालय, मंदिर । २० युक्ति, दाव ।

घरकणी (बौ)—देखो 'घुड़कणी' (बौ) ।

घरकूतियो, घरकोलियो—पु० मिट्टी का घरोँदा ।

घरखूँडियो—पु० एक देशी खेल ।

घरगिलाती—स्त्री० जन गणना ।

घरगिरस्ती—स्त्री० घर-गृहस्थी, परिवार ।

घरघराणी—पु० वंश, कुल ।

घरघराट (हट)—स्त्री० घर-घर की ध्वनि ।

घरघाल, घर-घालणियो—वि० १ घर का नाश करने वाला । २ कुल में कलंक लगाने वाला ।

घरघेटियो (घोटियो)—वि० (स्त्री० घरघेटकी) १ निरंतर घर पर ही रहने का आदि । २ अंतः पुर में ही रहने वाला ।

घरड़क—स्त्री० वर्षण ।

घरड़की—पु० १ रगड़, वर्षण । २ कुरेख । ३ खरौंच । ४ मृत्यु के समय कंठ से निकलने वाली ध्वनि ।

घरड़णी (बौ)—कि० १ घिसका लगाना । २ रगड़ना । ३ परिश्रम करना । ४ तंग करना ।

घरचारी—वि० गृहस्थी ।

घरचारी—पु० १ घरबार । २ गृहस्थाश्रम । ३ पति मानना ।

घरजमाई—पु० १ श्वसुर के घर में रहने वाला व्यक्ति । २ विवाह से पूर्व, कुछ निश्चित अवधि तक अपने भावी श्वसुर के यहाँ रह कर कार्य करने वाला व्यक्ति ।

घरजाम, (जामी) घरजायो—वि० घर में जन्मा । दास, गुलाम ।

घरट, घरटियो—पु० [सं० घरट्ट] १ इमारती कार्य में चूना तैयार करने का पत्थर का मोटा चक्कर । २ इस चक्कर के फिरने का घेरा । ३ बड़ी चक्की । ४ एक जलचर पक्षी । ५ डिगल का एक गीत ।

घरटी—देखो 'घट्टी' ।

घरट्ट—देखो 'घरट' ।

घरट्टू—स्त्री० गले में होने वाली खराश ।

घरण (णि, णी)—स्त्री० [सं० गृहिणी] १ पत्नी, भार्या । २ घर की मालकिन ।

घरत—देखो 'घिरत' ।

घरतार—पु० गृह घर । निवास, आवास ।

घरवासी—स्त्री० गृहिणी, पत्नी ।

घरघणी—पु० (स्त्री० घरघणियाणी) १ घर का मालिक, गृह स्वामी । २ पति, खाविद ।

घरघारी—वि० गृहस्थी, घरबारी ।

घरनायक-पु० घर का स्वामी ।

घरनाछ-स्त्री० एक प्रकार की तोप ।

घरनी (नी)-देखो 'घरणी' ।

घरफोड़ी-पु० १ घर का भंगड़ा, कलह । २ घरेलु कष्ट । ३ घर में चोरी हेतु किया गया छेद, सेंध । ४ चोरी, तकब । ५ घर का भेदी ।

घरवतावली-स्त्री० हाथ की प्रथम अंगुली, तर्जनी ।

घरबार-पु० १ घर-गृहस्थी । २ घर का सामान । ३ परिवार ।

घरबारी-वि० घर-गृहस्थी वाला । बाल-बच्चेदार ।

-पु० पारिवारिक साधु ।

घराँवकरी (बिखरी)-स्त्री० मिल्कियत, जायदाद ।

घरभुङ्गो-वि० घर को बर्बाद करने वाला, डूबोने वाला ।

घरबोब-पु० प्रति गृह से लिया जाने वाला कर विशेष ।

घरभमतौ पु० १ मकान में फैलने वाला धूँआ । २ भवारा घुमने वाला ।

घरभेद-पु० घर का रहस्य ।

घरभेदू-वि० घर का भेद देने वाला ।

घरमंड (ण) -पु० १ घरन दीनत । २ पति ।

घरम-वि० अनुरागी ।

घरमकर-पु० सूर्य ।

घरमणि (णी), घरमेढी-स्त्री० १ घर का दीपक, ज्योति । २ कुल का दीपक ।

घरमपुसप-पु० महल, भवन, घटारी ।

घरर-स्त्री० १ घर-घर ध्वनि । २ मेघ गर्जन । ३ वर्षण की ध्वनि ।

घरराट-देखो 'घरघराट' ।

घरराणी (बी), घररावणी (बी)-क्रि० १ घर-घर की ध्वनि होना । २ धड़कना । ३ कोपना । ४ गर्जना ।

घरलिपो (घुरलिपो)-पु० चड़म खींचने के जूए का बाण्ड का डडा ।

घरलीचू-वि० १ बुद्धिमान गृहस्थ । २ घर का शुभ चिंतक ।

घरवट (वाट)-स्त्री० [सं० गृह-वर्ति] १ वंश, कुल । २ कुल की मर्यादा ।

घरवतावली-देखो 'घरवतावली' ।

घरवताऊ-वि० घर की आवश्यकताओं को पूरा करने लायक ।

घरवाली-पु० (स्त्री० घरवाली) १ पति । २ गृह स्वामी ।

घरवास (सी)-पु० १ गृहस्थाश्रम, गृहस्थी । २ पत्नी वन कर रहना । ३ गृहस्थ जीवन । ४ पति-पत्नी का संबंध ।

घरवासीवार-वि० बाल-बच्चेदार ।

घरविद (विध)-स्त्री० [सं० गृहविधि] १ स्नेह, प्रेम । २ पारिवारिक सदस्यों का परस्पर स्नेह । ३ धनिष्ठता, आशीर्षता । -वि० घर संबंधी, घर की ।

घर-वेध-पु० गृहकलह ।

घरसूत-पु० [सं० गृहसूत्र] घर की व्यवस्था ।

घरस्याळ-स्त्री० पशु-पक्षियों का बसेरा ।

घरहर-स्त्री० घर-घर ध्वनि, गर्जना ।

घरहरणी (बी)-क्रि० १ घर-घर करना । २ गर्जना । ३ गुंजना । ४ बजना ।

घराणी-पु० १ वंश, कुल, खानदान । २ घर ।

घराघरू-वि० १ स्वयं का, निजी । २ घर संबंधी ।

घरिणी-देखो 'घरणी' ।

घरियो-पु० रहंट की लाट में बना छेद ।

घरिसूत, घरसूत्र-देखो 'घरसूत' ।

घरुवी-पु० विवाह में दीवार पर बनाये जाने वाले चित्र ।

घरू-वि० १ घर का, घर संबंधी, घरेलु । २ निजी । - साण-पु० हाकिम के घरेलु खर्चों को पूरा करने के लिए लगाया जाने वाला कर ।

घरेचो, घरेरी-पु० पुनर्विवाह ।

घरोचियो (चो)-वि० प्रति घर ।

घरोघर (घरि)-वि० प्रति घर, प्रत्येक घर से ।

घरो'घर-वि० निजी, स्वयं का, घर का । -क्रि० वि० घर-घर, एक घर से दूसरे घर ।

घलणी (बी)-क्रि० १ डाला जाना, डसना । २ बंधना । ३ फंसना । ४ लिपटना । ५ घुसना ।

घलाणी (बी), घलावणी(बी)-क्रि० १ डलवाना । २ बंधवाना । ३ फंसवाना । ४ लिपटवाना । ५ घुसवाना ।

घल्लणी (बी)-देखो 'घलणी' (बी) ।

घल्लाणी (बी)-देखो 'घलाणी' (बी) ।

घवको-पु० आंख का दर्द ।

घम-पु० १ मार्ग, रास्ता, पथ । २ पथ चिह्न । -क्रि० वि० १ शांति, जल्दी । २ देखो 'घम' ।

घसक-स्त्री० १ मुरत, शक्ल । २ डाँचा, ढंग । ३ हैसियत । ४ गप्प, डोंग । ५ ठसक । ६ शक्ति बल ।

घसकणी (बी), घसकाणी (बी), घसकावणी (बी)-क्रि० १ रगड़ना, रगड़ाई करना । २ धमकाना, दुत्कारना । ३ स्त्री प्रमंग करना । ४ घिसकना ।

घसको-देखो 'घमक' ।

घसड़को-पु० १ घर्षण, रगड़ । २ अव्यवस्था । ३ लापरवाही का कार्य । ४ व्यय, खर्च । ५ खरोच ।

घसटी-पु० [सं० घृष्टि] सूझर ।

घसण-पु० [सं० घर्षण] १ घिसने या रगड़ने की क्रिया या भाव । २ मार्ग, राह, रास्ता । ३ युद्ध, रण । ४ सेना फौज ।

घसली (बौ)—क्रि० [सं० धर्पण] १ रगड़ना, घिसना, मलना ।
 २ धोटना । ३ अधिक काम लेना । ४ भक्षण करना ।
 ५ पुनरावृत्ति करना । ६ भोटा होना । ७ शस्त्र की धार निकालना ।
 घसर, घसरी—पु० [सं० घम] १ एक दिन । २ सूर्य । ३ केसर ।
 —वि० हानिकारक ।
 घसाई—देखो 'घिसाई' ।
 घसाणी (बौ), घसावणी (बौ)—क्रि० १ रगड़वाना, घिसवाना ।
 २ घुटवाना । ३ अधिक काम लिराना । ४ भक्षण कराना ।
 ५ पुनरावृत्ति कराना । ६ भोटा कराना । ७ धार निकालवाना ।
 घसि—पु० १ आहार, भोजन । २ खाद्य सामग्री । ३ देखो 'घस' ।
 घसियारी—पु० घास का व्यापारी ।
 घसीट—स्त्री० १ घसीटने की क्रिया या भाव । २ अस्पष्ट लिखावट । ३ रगड़ की रेखा, लकीर । ४ खरोंच । ५ लिखावट ।
 घसीटणी (बौ)—क्रि० १ जमीन पर पड़े प्राणी या वस्तु को खींच कर लेजाना, घसीटना । २ अस्पष्ट लिखना । ३ अपनी ओर आकर्षित करना । ४ निभाना । ५ रगड़ना ।
 घस्त—देखो 'ग्रहस्थ' ।
 घस्र—देखो 'घमर' ।
 घससणी (बौ)—देखो 'घसणी' (बौ) ।
 घहर-घुमेर-वि० १ घना, गहरा । २ घना पल्लवित ।
 घहरणी (बौ), घहराणी (बौ), घहरावणी (बौ)—क्रि० १ गर्जना, गंभीर गर्जन करना । २ घोर शब्द करना । ३ भारी गड़गड़ाहट करना ।
 घां—पु० बादल, जलद ।
 घाघल—स्त्री० कण्ठ, तकलीफ ।
 घाघां—क्रि० वि० स्थान-स्थान, ठोर-ठोर । घरे-घरे ।
 घाघी—स्त्री० दूध का व्यवसाय करने वाली हिंदू जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
 घाघी—वि० १ वीर, शक्तिशाली । २ अडिगल । ३ देखो 'घोघी' ।
 घांठ (कौ. टी)—स्त्री० [सं० ग्रीवा] १ गर्दन, ग्रीवा । २ कंठ ।
 घांठाळ—पु० १ हाथी, गज । २ घैटा बारण करने वाली देवी ।
 घांतीतोड़गुर—पु० एक प्रकार का ज्वर, गर्दन तोड़ बुखार ।
 घांटे—क्रि० वि० पास, समीप ।
 घांटी—पु० १ गला, कंठ । २ गर्दन, ग्रीवा ।
 घांण—पु० १ पानी की धार से भूमि के कटाव को रोकने के लिये रखा जाने वाला आघार । २ घाव, जखम । ३ युद्ध, संग्राम, लड़ाई । ४ छंय, नाश । ५ अघकवरा होने की अवस्था । ६ पिसाई । ७ समूह, झुण्ड । ८ कोल्हू । ९ सुगंध । —वि० १ लघु-पथ सराबोर । २ तर ।

घांणमवाण (राी)—पु० १ युद्ध, लड़ाई । २ नाश, संहार । ३ उथल-पुथल । ४ मंथन । ५ अस्थिर विचार ।
 घांणियौ—पु० १ एक ही बार में एक साथ निकाला हुआ पदार्थ । २ कोल्हू में एक बार में पेरा जाने वाला पदार्थ ।
 घांणी (राी)—स्त्री० १ तेल निकालने का कोल्हू । २ कोल्हू में एक बार में डाला जाने वाला पदार्थ । ३ नाश, संहार ।
 —कुँतो—पु० तिल पैन्ने वानों से लिया जाने वाला कर विशेष ।
 घांतरडी—पु० गला, कंठ ।
 घानर, (राी)—पु० १ बहग, व्यक्ति । २ बकरी ।
 घाम—पु० १ गर्मी । २ प्रकाश । ३ धूप । ४ फौज, सेना ।
 —कर—स्त्री० रश्मि, किरण । —धूम—वि० उदास, सुस्त, स्तब्ध, चुपचाप ।
 घांघ—देखो 'घाम' ।
 घांस—पु० एक प्रकार का पत्थर ।
 घांसाड़—स्त्री० सेना फौज ।
 घांसाड़णी (बौ)—क्रि० चीखना, चिल्लाना (बन्दर) ।
 घांसाड़ी—पु० योद्धा, वीर ।
 घांसार, घांसारु, घांसाहड़ (हर), घांसाहर—पु० १ दल समूह । २ फौज, सेना । ३ देखो 'घीसार' ।
 घा—स्त्री० १ देवी । २ ध्वनि । ३ वसुमती । ४ राक्षसी । ५ ब्रह्मा ।
 घा—देखो 'घाम' ।
 घाघ—पु० १ नरक । २ कंकण । ३ प्रहार, चोट । —स्त्री० १ शची । २ धारा ।
 घाड़ (ई)—स्त्री० १ नकल । २ चोट, प्रहार । ३ घाव ।
 घाड़ल—देखो 'घायल' ।
 घाउ (र)—देखो 'घाव' ।
 घागड़ा—देखो 'गागड़ा' ।
 घाघ—वि० १ अनुभवो, मयाना । २ दक्ष, निपुण । ३ चतुर, चालाक । —पु० १ बड़ा जखम, घाव । २ वर्षा विज्ञान का एक पंडित ।
 घाघड़ि (बौ)—वि० गंभीर, गहरा ।
 घाघड़ी—देखो 'गागड़' (डो) ।
 घाघरट—पु० १ युद्ध, लड़ाई । २ समूह, झुण्ड । —वि० अबरदस्त, बड़ा ।
 घाघरा—स्त्री० सरयू नदी ।
 घाघरी—पु० स्त्रियों का बड़ा लहंगा, पेटीकोट, घाघर ।
 घाघस—वि० खराब, हल्का, न्यून ।
 घाट—पु० [सं० घट्ट] १ नदी या जलाशय का किनारा, घाट । २ तंग पहाड़ी रास्ता । ३ ढंग, प्रकार । ४ रचना, बनावट । ५ विचार । ६ स्थान, जगह । ७ दशा, हालत, स्थिति ।

८ घात, दाव । ९ समूह, झुंड, दल । १० घड़ों का समूह ।
 ११ पड़पत्र । १२ घोखा, कपट । १३ बनावट, गठन ।
 १४ निंदा, बुराई । १५ शरीर । १६ गड़े हुए
 पदार्थ । १७ मेना, फीज । १८ निंदा, बुराई । १९ तलवार
 की धार । २० तह किये हुए वस्त्र । २१ मार्ग, रास्ता ।
 २२ छात्र के साथ पका हुआ दलिया । —वि० कम, थोड़ा ।
 —घट्ट-स्त्री० मोच-विचार । —बराड़, बराळ-वि०
 भयंकर । जबरदस्त, शक्तिशाली । —बाज-पु० शरीर की
 रचना, डील-डोल । —वाल-पु० घाट पर दान लेने वाला ।
 घाटि-१ देखो 'घाट' । २ देखो 'घाटी' ।
 घाटी-स्त्री० १ पर्वतों के बीच का रास्ता । २ पर्वतीय ढाल ।
 ३ ढालु जमीन । ४ संकीर्ण या तंग रास्ता । ५ कठिनाई,
 धामा । ६ भयंकर संकट ।
 घाट्ट-वि० १ कम थोड़ा । २ वह जो गढ़ा जासके (पत्थर)
 —पु० हानि, क्षति ।
 घाटे-बराड़ देखो 'घाटबराड़' ।
 घाटी-पु० १ कमी । २ हानि, नुकसान । ३ शरावली पर्वत ।
 ४ पर्वतीय घाटी । ५ पहाड़ी रास्ता । ६ मार्ग, रास्ता ।
 ७ व्यापारिक तोटा, घाटा । ८ देखो 'घाट' ।
 घाठ-देखो 'घाट' ।
 घाणी (बी)-क्रि० १ प्रसित होना, घिराना । २ पछाड़ना,
 पटकना, मारना । ३ रोदना, कुचलना ।
 घात-स्त्री० [सं०] १ चोट, प्रहार । २ हत्या, वध, संहार ।
 ३ मार । ४ नाश, विनाश । ५ कपट, छल, धूर्तता ।
 ६ मौका, अवसर । ७ घोखा । ८ तीर । ९ गुणनफल ।
 १० प्रवेश, संक्रांति । ११ तलवार । १२ पड़पत्र, दाव ।
 १३ पत्थर । १४ उपला, कंड़ा । १५ विपत्ति, संकट ।
 १६ मृत्यु, मौत । १७ चुगली ।
 घातक (की, कू)-वि० [सं०] (स्त्री० घातकी, गिण, गी)
 १ घात करने वाला । २ संहारक, विनाशक । ३ मारने
 वाला । ४ हत्याघात । ५ शत्रु । ६ हानिकारक । ७ भयंकर ।
 घातणी (बी)-क्रि० १ घात करना । २ संहार करना ।
 ३ डालना । ४ स्थापित करना । ५ निर्माण करना ।
 ६ रखना । ७ मिलाना ।
 घातली, घाता, घाती, घातीक, घातू-देखो 'घातक' ।
 घाय-१ देखो 'घाव' । २ देखो 'घायक' ।
 घायक (त)-वि० १ घायल । २ क्षत-विक्षत । ३ देखो 'घातक' ।
 घायन-पु० प्रहार, चोट, वार ।
 घायल (ल्ल)-वि० १ चोट खाया हुआ, जखमी, घाहत ।
 २ क्षत ।
 घारवाट-पु० फसल की मिनाई का किराया ।
 घासणी-वि० संहारक, विध्वंसक ।

घासणी (बी)-क्रि० १ डालना । २ घुसेड़ना । ३ किसी से
 समाहित करना । ४ स्थापित करना । ५ रखना । ६ फेंकना ।
 ७ छोड़ना । ८ विगाड़ना । ९ नष्ट करना । १० मारना ।
 ११ प्रहार करना । १२ प्रवेश करना । १३ निर्माण
 करना । १४ मिलाना ।
 घासनेल, घासाबेली-पु० १ डालने-निकालने का कार्य ।
 २ उखाड़-पछाड़ । ३ कपट, छल । ४ चुगली ।
 ५ घनिष्ठता ।
 घाव-पु० [सं० घात] १ आघात, चोट आदि से होने वाला
 जखम । २ फोड़ा । ३ जखम का गड्ढा । ४ चोट, प्रहार ।
 ५ दो मील का फासला ।
 घावक-वि० १ घाव करने वाला । २ चोट या प्रहार करने
 वाला । ३ घातक । ४ देखो 'घाव' ।
 घावछक-वि० १ घावों से क्षत । २ घायल ।
 घावड़-वि० १ घातक । २ प्रहार करने वाला । ३ शूरवीर,
 पराक्रमी । ४ विचारशील, चतुर ।
 घावणी (बी)-देखो 'घाणी' (बी) ।
 घावबेल-स्त्री० समुद्र पान नामक शोधधि ।
 घावरियो-पु० चिकित्सक ।
 घावांपूर-वि० घावों में परिपूर्ण ।
 घावी-देखो 'घाव' ।
 घास-पु० [सं०] १ वर्षा होने पर स्वतः उगने वाले पौधे,
 उद्भिज, तृण, चारा । २ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।
 घासण-वि० १ काटने वाला । २ संहार करने वाला ।
 —पु० घास-फूस ।
 घासणी (बी)-देखो 'घासणी' (बी) ।
 घासपात, (कूस, भूसी)-पु० १ घास व पत्तों आदि का समूह ।
 २ कूड़ा-करकट ।
 घासमारी-स्त्री० १ भवेशियों की गणना । २ भवेशियों की
 चराई पर लिया जाने वाला कर ।
 घासाण-स्त्री० घिसने की क्रिया ।
 घासाहड़, घासाहर-देखो 'घासाहड़' ।
 घासियी-पु० गढ़ा, मोटा बिस्तर ।
 घासी-पु० पानी आदि में घिसकर दी जाने वाली दवा ।
 घाह-पु० १ वृत्त, घेरा, घेर । २ झुल ।
 घिटाळ, घिटियाळ-पु० १ 'फोग' के फूल । २ फोग का फल ।
 ३ देखो 'घटियाळ' ।
 घिवड़ा-स्त्री० एक मुमलमान जाति ।
 घियाळणी (बी)-क्रि० १ खींचना । २ घसीटना ।
 घिसार-देखो 'धीसार' ।
 घियाळी (घोळी)-स्त्री० १ लकीर, रेखा । २ देखो 'घियोड़ी' ।

घि-स्त्री० १ मृगतृणा । २ चंवर, चामर । ३ धर्म ।
४ विस्तार, फैलाव ।

घिचपिच-वि० १ प्रस्पष्ट । २ गड़बड़ । ३ गंढगी । ४ चेतनतीव्र ।
-पु० १ स्थानाभाव । २ संकरापन, तंगी । ३ भीड़-भाड़ ।

घिटोरङ्गो-स्त्री० वह भेड़ जिसने बच्चा न दिया हो ।

घिया-स्त्री० लोकी, भाल ।

घियोड़ो-स्त्री० लकड़ी का वह उपकरण जिस पर हल रख कर
खींचा जाता है ।

घिरणा-देखो 'घरणा' ।

घिरणी-स्त्री० १ घुमाव, मोड़ । २ देखो 'घरणी' ।

घिरणी (बो)-क्रि० १ किसी घेरे में भ्राना, आवृत्त होना ।
२ आवेष्टित होना, लपेट में भ्राना । ३ एकत्र होना,
संगृहीत होना । ४ पुष्ट होना । ५ प्राप्त या उपलब्ध
होना । ६ चारों ओर घटना । ७ देखो 'गिरणी' (बो) ।

घिरत (रित)-पु० [सं० घृत] घृत, घी, गोरस, मक्खन ।

घिरलणी (बो)-देखो 'घुरलणी' (बो) ।

घिराई, घिराव-स्त्री० १ घेरने की क्रिया या भाव । २ घेराव ।
३ आवेष्टन । ४ घेरने की मजदूरी । ५ मवेशी चराने का
कार्य व इसका पारिश्रमिक ।

घित, घिलोड़िया घिलोड़ी-स्त्री० घी रखने का छोटा पात्र ।

घिल्यो-देखो 'घुरल्यो' ।

घिव, घिवड़ी-पु० [सं० घृत:] घी, घृत ।

घिस-पु० [सं० घृष] घोजन ।

घिसघिस-स्त्री० १ बिचार्ने की शम्यिरता । २ कानाफूसी ।
३ गड़बड़ी ।

घिसटरणी (बो)-देखो 'घसीटरणी' (बो) ।

घिसणी (बो)-देखो 'घसणी' (बो) ।

घिसपिस-देखो 'घिचपिच' ।

घिसाई-देखो 'घसाई' ।

घिसाली (बो), घिसावली (बो)-देखो 'घसाली' (बो) ।

घिसिरपिसर-देखो 'घिसपिच' ।

घिस्सो-पु० १ धोखा । २ भ्रमसा । ३ डींग ।

घीगल-पु० गोबर का कीड़ा विशेष ।

घीचणी (बो)-देखो 'घीसणी' (बो) ।

घीचणी (बो), घीचावणी (बो)-देखो 'घीसाली' (बो) ।

घीघो-पु० मिचाई की नालियां साफ करने का घास आदि का
गुच्छ ।

घीसलपूछो-पु० लक्ष्मी पूछ का बेल ।

घीसली (बो)-क्रि० १ घसीटना । २ खींचना, खेंचना ।
३ रगड़ना । ४ हकना । ५ चलाना ।

घीसाली (बो), घीसावली (बो)-क्रि० १ घसीटवाना । २ खिच-
वाना । ३ रगड़वाना । ४ हकवाना । ५ चलवाना ।

घीसार-पु० [सं० घृष्टचार] १ बड़ा मार्ग, राज पथ । २ दल,
समूह । ३ सेना, फौज ।

घीसोड़ो-देखो 'हिघोड़ो' ।

घी-पु० [सं० घृत] १ घृत, गोरस, मक्खन । २ गन्ध, मार ।

घीघ्रा-देखो 'घिया' ।

घीकणी (बो)-क्रि० प्रहार करना । बार करना ।

घीकुमार (कुंवार, कुमार)-पु० [सं० घृत कुमार] स्वार पाठा ।

घीघाली (बो), घीघावली (बो)-देखो 'घीसाली' (बो) ।

घीड़-पु० एक बरसाती कीड़ा । बड़ी दीमक ।

घीतामलियी (तामलियी)-पु० मक्खन को तपाकर घी निकालने
का पात्र ।

घीतोळ-स्त्री० एक प्रकार की तोराई ।

घीतोळी-पु० जलामयों में होने वाला एक लता फल ।

घीव-देखो 'गिढ' ।

घीघड़-देखो 'घीड़' ।

घीघाई-पु० घी उत्पादकों से लिया जाने वाला एक जागीरदारी
कर ।

घीघा-भाटो-पु० एक प्रकार का पत्थर । संगेजरहित ।

घीरत-देखो 'घिरत' ।

घीव-देखो 'घी' ।

घीवेल-स्त्री० वर्षा ऋतु में होने वाली एक लता विशेष ।

घीसलपूछो-देखो 'घीसलपूछो' ।

घीसणी (बो)-देखो 'घीसणी' (बो) ।

घीसाली (बो), घीसावली (बो)-देखो 'घीसाली' (बो) ।

घीसार-देखो 'घीसार' ।

घीसाल-पु० दुर्ग, किला ।

घुंगचो, घुंगची-स्त्री० [सं० गुंजा] चिरमो का गीघा व फल ।

घुंगट-देखो 'घूंगट' ।

घुंगराळी घुंगरेवार-पु० घुसावदार, छल्लेदार, घुंगराला ।

घुंगरी-देखो 'घूंगरी' ।

घुंडो-स्त्री० १ पन्खि, गांठ । २ बटन । —वार-पु० बटन
वाना ।

घ-पु० [सं०] १ कबूतर की गूटरगू । २ प्रस्पष्ट शब्द ।
३ ग्रहि । -वि० १ मछ, दुष्ट । २ दयालु, कृपालु ।

घुकरो (कातो)-स्त्री० १ कौघ्रा, काक । २ उल्लू । ३ कुत्ते आदि
के बैठने का खड्डा ।

घुघर-पु० घुंघरू ।

घाघो-स्त्री० रुई व ऊन की धोबी ।

घुघू (घुघु)-पु० उल्लू पक्षी ।

घुघ-स्त्री० झड़ी ।

घुघराळी-देखो 'घुंगराळी' ।

घुङ्कणी

(१६४)

घुरङ्की

घुङ्कणी (बो)—क्रि० १ लुठकना । २ जोर से बोलना । ३ फट-कारना, धमकाना ।

घुङ्कणी (बो), घुङ्कावणी (बो)—क्रि० १ लुठकना । २ फट-कारना, धमकाना ।

घड़की—स्त्री० धमकी, डाँट ।

घड़की—देखो 'धरड़की' ।

घड़बड़ी—स्त्री० १ एक वैवाहिक रस्म । २ बोड़े पर रखकर चलाई जाने वाली तोप ।

घड़बोड़—स्त्री० १ घोड़ों की दौड़ । २ अश्व सेना की कवायद ।

घड़नाळ—स्त्री० घोड़े पर रखी जाने वाली तोप ।

घुड़बैहल—स्त्री० घोड़ागाड़ी, रथ ।

घुड़ली (स्त्री)—पु० १ घोड़ा । २ विवाह में पुत्री की विदाई पर गाया जाने वाला एक लोक गीत । ३ गणगौर का गीत । ४ इस गीत के माथ, दीप रख कर घुमाया जाने वाला छोटा घड़ा ।

घुड़साळ—स्त्री० अश्वशाला । अस्तबल ।

घुड़ी—स्त्री० घोड़ी ।

घुचरियो—पु० कुत्ते का बच्चा, पिल्ला ।

घुट—पु० १ टखना, गुल्फ, घुटना । २ गुटका ।

घुटकी—देखो 'गुटकी' ।

घुटकाणी (बो)—क्रि० १ घूँट भरना, घूँट लेना, घूँट-घूँट पीना । २ निगलना ।

घुटरणी (बो)—क्रि० १ बूँट आदि का कहीं एकत्र होना, घनदर ही अन्दर बंदना । २ सांस, दम या कोई भावना का अवरोध होकर अन्दर दबना । ३ मन में घटन होना । ४ रगड़ खाकर चिकना होना । ५ अधिक मेल-जोल होना । ६ दक्षता या निपुणता प्राप्त करना । ७ क्रोध करना । ८ तंद्रित होना । ९ ठंडाई आदि घोटा जाना । १० माल-ममाले बनना । ११ मुँडित होना ।

घुटरणू—स्त्री० १ कबूतर की आवाज । २ कानाफुसो ।

घुटरू—पु० १ घुटना । २ कबूतर की आवाज ।

घुटाणी (बो), घुटावणी (बो)—क्रि० १ धुँए को एकत्र करना, चुकाना । २ सांस अवरोध करना । ३ गला दबाना । ४ अनावश्यक रूप से दबाव डाल कर बोलने न देना । ५ रगड़ना, चिकना करना । ६ अधिक मेल-जोल कराना । ७ दक्ष व निपुण बनाना । ८ ठंडाई आदि घटवाना । ९ माल-माल बनवाना । १० मुँडित कराना ।

घुट्टी—देखो 'घूँटी' ।

घुणंतर (रि)—वि० सत्तर से एक कम । —स्त्री० साठ व नौ की संख्या, ६६ ।

घुण-घुण-मोंगणी—पु० एक देशी खेल ।

घुण, घुणियो—[सं० घुणः] १ मोठ, मूँग, चना आदि का छोटा कोड़ा, धुन । २ कोई आन्तरिक बीमारी ।

घुत—स्त्री० चोट या आघात से होने वाली सूजन ।

घुतकी, घुती—स्त्री० छोटे कानों की बकरी ।

घुव—पु० धोदने का जस्त्र विशेष । —वि० पूर्ण, निपट ।

घुदी—देखो 'घोदी' ।

घुवारियो—पु० तहखाना, तलमूह ।

घुमंड—पु० १ घूमने की क्रिया या भाव । २ एक प्रकार की मस्त चाल । ३ देखो 'घमंड' ।

घुमंडणी (बो)—देखो 'घुमड़णी' (बो) ।

घुमंडी—देखो 'घमंडी' ।

घुमड़—स्त्री० १ बादलों की घटा । २ घनघोर घटा छाने की अवस्था । ३ ध्वनि विशेष ।

घुमड़णी (बो)—क्रि० घटाएँ उठाना, छाना । उमड़ना ।

घुमणी (बो)—देखो 'घूमणी' (बो) ।

घुमरणी (बो)—क्रि० १ घमघम शब्द करना । २ घोर शब्द होना । ३ एक प्रकार का लोक नृत्य करना ।

घुमाणी (बो), घुमावणी (बो)—क्रि० १ घुमाना, फिराना । २ दहलाना । ३ मोड़ना । ४ लोटाना । ५ चक्कर लगवाना । ६ मरोड़वाना ।

घुमाव—पु० १ चक्कर, पेरा । २ दहलाव । ३ मोड़ । ४ बल । —बार—वि० चक्करदार । बलवाना ।

घुम्मणी (बो)—देखो 'घुमड़णी' (बो) ।

घुम्मरणी (बो)—देखो 'घुमरणी' (बो) ।

घुम्मी—पु० १ घूँसा, मुण्डिका । २ गोल ककड़ी ।

घुर—स्त्री० नक्कारे की आवाज ।

घुरक—स्त्री० १ छोटी गुफा । २ कुत्ते, सियार आदि के बैठने का गड्ढा । ३ घुराहट ।

घुरकाणी (बो)—देखो 'घुङ्काणी' (बो) ।

घुरकाणी (बो)—देखो 'घुङ्काणी' (बो) ।

घुरकी (को)—स्त्री० घुराहट ।

घुरख, घुरखाली—देखो 'घुरक' ।

घुरघुर—स्त्री० १ सूअर आदि की घुराहट । २ एक टक देखने की क्रिया ।

घुरघुराणी (बो)—क्रि० १ घुराना । २ एक टक देखना ।

घुरड़—स्त्री० १ घषेरा, रगड़ । २ रगड़ का निशान, खरोंच । ३ झगड़ा ।

घुरड़की—पु० १ कफ, सर्दी आदि में होने वाली धरधराहट । २ अंतिम समय दिया जाने वाला दान । ३ अंत समय की श्वास क्रिया, अंतिम सांस । ४ जोर से खींची जाने वाली लकीर । ५ खरोंच । ६ रगड़ ।

घुरइणी (बो)—क्रि० १ रगड़ना । २ उस्तरे से बाल साफ करना । ३ कुचर देना । ४ खरोंचना ।

घुरणी (बो)—क्रि० १ किसी बाद्य का गुंजरित होना, गुंजना । २ बजना, गर्जना । ३ देखो 'घुरणी' (बो) ।

घुरनाळ—देखो 'घुड़नाळ' ।

घुरराणी (बो), घुररावणी (बो)—देखो 'गुरराणी' (बो) ।

घुरळणी (बो)—क्रि० बच्चे का वमन करना, कं करना ।

घुरळियो-पु० १ जूए में लगने वाला डंडा । २ रस्सी या जेवड़ी में बल देने का उपकरण ।

घुरळी-स्त्री० १ लगाम । २ वमन, कं ।

घुरस-स्त्री० पोड़े का भूमि खोदते समय पैर रखने का ढंग ।

घुरसली-स्त्री० १ मैना पक्षी । २ देखो 'घुरसाली' ।

घुरसाळ (ळो)—स्त्री० १ अश्वशाला, अस्तबल । २ उल्लू का घोंसला । ३ कुत्ते आदि के बैठने का गड्ढा ।

घुरसाळो-पु० घोंसला ।

घुरस्याळ—देखो 'घुरसाळ' ।

घुराणी (बो), घुरावणी (बो)—क्रि० १ घुराना । २ पीटना, मारना । ३ डराना, आँखें निकालना । ४ घोर शब्द करना । ५ जोर से बजाना, गुंजरित करना । ६ प्रगाड़ निद्रा लेना ।

घुरी—देखो 'घुरक' ।

घुळणी (बो)—क्रि० [सं० घूणन] १ किसी पदार्थ का पानी आदि द्रव में मिल जाना, घुल जाना । २ किसी गांठ का कसना, गाढ़ा होना । ३ निरन्तर कमजोर होना, क्षीण होना । ४ व्यतीत होना, गुजरना, व्यर्थ जाना । ५ निद्रा युक्त होना, भ्रमकना । ६ सुस्त होना । ७ बजना । ८ अधिक प्रेम होना ।

घुळणी (बो), घुळावणी (बो)—क्रि० १ किसी पदार्थ को पानी आदि द्रव में मिला देना, घोलना । २ गांठ का कसना, गाढ़ा करना । ३ क्षीण करना, कमजोर करना । ४ व्यर्थ गुजारना, व्यतीत करना । ५ नींद लेना । ६ बजना । ७ अधिक प्रेम करना ।

घुळावट-स्त्री० १ घुलने की क्रिया या भाव । २ घुलनशीलता । **घुसण-स्त्री०** प्रवेश की क्रिया । प्रवेश का ढंग । घसावट, फसावट ।

घुसणी (बो)—क्रि० १ घुसना, प्रवेश करना । २ घंसना, फंसना । ३ चुभना । ४ देखल देना । ५ पैठना । ६ ध्यान से काम करना ।

घुसाणी (बो), घुसावणी (बो)—क्रि० १ घुसना, प्रवेश करना । २ घंसना, फंसना । ३ चुभना । ४ देखल दिशना । ५ पैठना । ६ ध्यान से काम करने के लिये प्रेरित करना ।

घुसाळ—देखो 'घुरसाळ' ।

घुमेइणी (बो)—देखो 'घुमाणी (बो)' ।

घुसौ-पु० १ गुप्तेन्द्रिय के बाल । २ देखो 'घूसौ' ।

घुसण (न)—स्त्री० [सं० घुसृण] १ केसर, जाफरान । २ आवाज, ध्वनि ।

घुसर-स्त्री० सेना, फौज, दल ।

घूंगटो, घूंगट, घूंगटो, घूंगटो-स्त्री० स्त्रियों की ओढ़नी का वह छोर जो वे सज्जावश मुंह पर डाल देती हैं । ---घट-पु० घूंगट निकालने का वस्त्र ।

घूंगर-पु० १ बालों की मरोड़, छल्ले । २ घूंगरू । ---वाळी-पु० छल्लेदार बालों वाला ।

घूंगरी-पु० घूंगरू ।

घूंधो-पु० १ नाक का मेल । २ हमली का बीज ।

घूंचो-स्त्री० कोल्हू में लगने वाला लकड़ी का डंडा ।

घूंट-स्त्री० द्रव पदार्थ की गुटकी ।

घूंटणी (बो)—क्रि० घूंट-घूंट कर पीना, पीना, गुटकना ।

घूंटळवाळो-पु० पांव समेट कर सोने की क्रिया । ---घि० पांव समेट कर सोने वाला ।

घूंटियो—देखो 'घूंट' ।

घूंटो-स्त्री० १ दवा की गुटकी । २ घूंट । ३ जन्म जात बच्चे को दी जाने वाली श्रौषधि । ४ अपस्मार या मृगी रोग । ५ गुह मंत्र ।

घूंडी—देखो 'घुंडी' ।

घूंदणी (बो)—देखो 'गूंदणी (बो)' ।

घूंदरी-पु० एक काटेदार वरसाती पीछा विशेष ।

घूंदणी (बो), घूंदणी (बो)—देखो 'गूंदणी (बो)' ।

घूमटणी (बो)—देखो 'घूमइणी (बो)' ।

घूमणी (बो)—देखो 'घूमणी (बो)' ।

घूमाइणी (बो)—क्रि० घमाना ।

घूस-स्त्री० १ चूहे की जाति का बड़ा जंतु । २ रिश्वत, उत्कोच ।

घूसणी (बो)—क्रि० १ प्रहार करना, चोट करना । २ मुठिका प्रहार करना ।

घूसो-पु० १ मुक्का, मुठिका । २ मुक्क का प्रहार ।

घू-पु० १ देवता । २ आकाश । ३ हाथी । ४ उल्लू । ---स्त्री० ५ गृध्री । ६ गुदा । ७ मदिरा । ८ ग्यारह की संख्या ।

घूक, घूकार-पु० १ उल्लू पक्षी । २ भय, डर । ---स्त्री० ३ उल्लू की बोली । ४ ध्वनि, घोष । ५ घुराहट । ---घरि-पु० कौघा ।

घूगरी—देखो 'घूगर' ।

घूगस-स्त्री० हेमंत ऋतु के बादल ।

घूघ-पु० शिर का कवच, शिरजारा ।

धूधर, धूपरियो, धूधरी, धूधरी-पुं० धुंधरू । छल्ला । --माळ,
माळा-स्त्री० १ धूपर । २ धुंधरू की माला जो पशुओं की
गर्दन पर डाली जाती है ।

धूधरी-देखो 'धूमरी' ।

धूधी-देखो 'धूमधी' ।

धूधू-पुं० उन्म पक्षी, उल्लू ।

धूड-पुं० १ नूपर के मुँह का अग्र भाग । २ इस भाग से किया
जाने वाला प्रहार ।

धूडिया-स्त्री० चरस की गिरी की खुंटी ।

धूबो-स्त्री० कोल्ह के ऊपर की धोर का एक उपकरण ।

धूदणी (बी) देखो 'धूदणी' (बी) ।

धूतकार-पुं० उल्लू की आवाज ।

धूथो-पुं० एक देशी खेल ।

धूव-पुं० धूसा, मुष्टिका । प्रहार ।

धूव-स्त्री० १ कुबड़ा । २ टेढ़ापन । ३ मोच ।

धूबी-वि० १ कुबड़ा । २ मोच पड़ा हुआ ।

धूम-स्त्री० धुमाव, चक्कर, मोंड ।

धूमधूमाळी-वि० १ गहरे पत्ते व शाखाओं वाला । २ घेरदार ।
३ धुमकड़ ।

धूमणी (बी)-क्रि० १ धूमना, फिरना । २ टहलना । ३ सफर,
करना, यात्रा करना । ४ लौटना । ५ पीछे या दायें-बायें
मुड़ना । ६ चक्कर खाना, गोल-गोल फिरना । ७ डोलना ।
८ उन्मत्त होना, धूमना ।

धूमर-स्त्री० एक प्रकार का लोक नृत्य ।

धूमरी-पुं० १ समूह, झुंड । २ घेरा, वृत्त ।

धूमाळी-देखो 'धूमधूमाळी' ।

धूमू, धूमो-पुं० १ धूसा, मुष्टिका । २ देखो 'धूमो' ।

धूर-पुं० १ पंती चीज के धाघात से पशुओं के पेट पर होने
वाला रोग । २ नाश, ध्वंस । ३ तीक्ष्ण दृष्टि, ताक ।

धूरण-स्त्री० धूरने की क्रिया या भाव ।

धूरणी (बी)-क्रि० १ दृष्टि गढ़ाकर देखना, ताकना । २ क्रोध
में आँखें दिखाना । ३ प्रगाढ़ निद्रा में श्वास के साथ धर-
धर शब्द होना । ४ 'धूरणी' (बी) ।

धूराणी (बी), धूरावणी (बी)-देखो 'धूराणी' (बी) ।

धूरी-स्त्री० मियार घाटि की माद ।

धूस-देखो 'धूस' ।

धूसी, धूही-पुं० गुप्तेन्द्रिय के बाल ।

धूचणी (बी)-देखो 'धूसणी' (बी) ।

धे-स्त्री० १ गर्दन, प्रोवा । २ बड़ी । ३ चौकी । ४ कीली ।
५ कुत्ता ।

धेउर (ऊर)-देखो 'धेवर' ।

धेधूचणी (बी)-क्रि० १ मिलना । २ आलिंगन करना ।

धेधूचणी (बी)-क्रि० १ मंडराना । २ लूँबना, लटकना ।
३ भिड़ना ।

धेड़-देखो 'घड़ली' ।

धेचणी (बी)-क्रि० १ हांकना, हांक कर ले जाना । २ खदेड़ना ।
३ घसीटना ।

धेठियी (धेठो)-पुं० १ भेड़ का पुष्ट बच्चा, मेमना । २ नाटा व
पुष्ट व्यक्ति ।

धेठुधी-पुं० टेंदुवा ।

धेबी-वि० मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।

धेर-पुं० १ वृत्त, घेरा, परिधि । २ मोड़, घुमाव । ३ चक्कर,
फेरा । ४ घर, गृह ।

धेरड-पुं० १ झुंड, समूह । २ देखो 'धेरो' ।

धेरघार-पुं० १ चारों ओर से घिरने या आच्छादित होने की
अवस्था । २ घेरा, परिधि । ३ खुशामद । ४ विस्तार ।
५ हांकने की क्रिया या भाव ।

धेरघुमाळी, धेरघुमेर-वि० १ मघन, घनी छाया वाला ।
२ विस्तृत परिधि वाला ।

धेरणी-स्त्री० १ चरखे का हत्था । २ चलनी ।

धेरणी (बी)-क्रि० १ घेरा लगाना, आवेष्टित करना, किसी घेरे
में लेना । २ मनेशियों को हांकना । ३ हथ पलटना,
विचारधारा बदलना । ४ मोड़ना, घुमाना ।

धेरवार-वि० ज्यादा घेरे वाला ।

धेराई-स्त्री० घेरने की क्रिया या भाव ।

धेराणी (बी), धेरावणी (बी)-क्रि० १ घेरा लगवाना, आवृत्त
कराना, किसी घेरे में लिराना । २ हांकने के लिए प्रेरित
करना । ३ विचारधारा बदलाना । ४ मुड़वाना,
धुमवाना ।

धेराव-पुं० १ घेरा । २ घेरने की क्रिया या भाव ।

धेरो-पुं० १ चारों ओर का विस्तार, फैलाव । २ वृत्त, आवृत्ति,
परिधि । ३ मोलाई । ४ चारों ओर से सुरक्षित या
अधिकृत करने के लिए की जाने वाली व्यवस्था । ५ किसी
चीज का गोल चकरा ।

धेवर-पुं० एक प्रकार की मिठाई जो चक्रनुमा होती है ।

धेसली-पुं० १ हास्य रस की भिन्न तुकांत कविता । २ छोटो
डंडा ।

धंणी-स्त्री० धुंध्रा ।

धंसाड़ (हड़, हर)-देखो 'धंसाहर' ।

धंड़ (ली)-देखो 'घड़ली' ।

धंघूचणी (बी)-क्रि० १ भिड़ना, टक्कर लेना । २ आच्छादित होना ।

धोई-स्त्री० सिचाई की नालियां साफ करने वाला झाड़ी का
गुच्छ ।

घोंघो

(२६०)

घोटेबरवार

घोंघो-पु० शंखनुमा एक जल कीट । -वि० १ मूर्ख, मूढ़ ।
 २ जड़, निवृद्धि । ३ निस्सार ।
 घोंटी-स्त्री० गर्दन, ग्रीवा ।
 घोंसली-पु० पक्षियों का नीड ।
 घोई-स्त्री० १ वक्रता, टेढ़ापन । २ घुमाव, मोड़ ।
 घोउकार-स्त्री० वाहों की ध्वनि ।
 घोऊ-पु० [सं० घोष] १ गर्जना, घोष । २ तेज वर्षा की आवाज । ३ किनारा, तट । ४ ग्रहीरों की बस्ती ।
 ५ नमस्कार, प्रणाम । ६ तीव्र प्रवाह ।
 घोऊणी (बो)-देखो 'घोखणी' (बो) ।
 घोखणी (बो)-देखो 'घोखणी' (बो) ।
 घोकार-स्त्री० प्रत्यंचा की ध्वनि ।
 घोख-पु० [सं० घोष] १ तेज आवाज, भारी शब्द । २ उद्घोष ।
 ३ गौशाला ।
 घोऊणी (बो)-क्रि० [सं० घोषणम्] १ गिनती, पहाड़े या मंत्र रटना, याद करना । २ किसी बात को बार-बार कहना ।
 ३ तेज आवाज होना ।
 घोखणी (बो). घोखणी (बो)-क्रि० १ रटाना, रटाकर याद कराना । २ बार-बार बोलाना । ३ तेज हांकना, दीडाना ।
 ४ तेज आवाज करना ।
 घोघ-पु० भाग, घंटा ।
 घोघमिधो-पु० बड़ी बिल्ली, बिलाव ।
 घोघी-स्त्री० मूर्च्छा ।
 घोघी-पु० चने की फसल खाने वाला कीड़ा ।
 घोड़ (तो)-पु० १ घोड़ा, अश्व । २ गधा । -वि० बयस्क एवं चंचल ।
 घोड़ी-पु० १ अश्वारोही, घुड़सवार । २ छोटी घोड़ी ।
 ३ छोटे बच्चों को सुनाने का भोलीनुमा पालना ।
 घोड़राई-स्त्री० बड़ी राई ।
 घोड़रोज-पु० तेज भागने वाली नील गाय ।
 घोड़लियो, घोड़ली-पु० (स्त्री० घोड़ली) १ घोड़ा, अश्व ।
 २ घोड़े की मुखाकृति जैसा कोई उपकरण । ३ बच्चों का भोलीनुमा पालना विशेष ।
 घोड़सार, घोड़साठ-स्त्री० प्रस्तबन, घड़शाला ।
 घोड़ाकरंज-पु० एक वृक्ष विशेष ।
 घोड़ाकांमळ-पु० एक प्रकार का जागीरदारी कर ।
 घोड़ागांठ-स्त्री० रस्मी की एक मजबूत गांठ ।
 घोड़ाबोली-स्त्री० बंदक में एक औषधि ।
 घोड़ाबनो-पु० डिगल का एक गीत ।
 घोड़ानस-स्त्री० मनुष्य के पैर की एक बड़ी नख ।
 घोड़ामाख (माखी)-स्त्री० बड़ी मक्खी ।
 घोड़ियो-१ देखो 'घोड़ी' । २ देखो 'घोड़लियो' ।

घोड़ी-स्त्री० १ मादा अश्व, घोड़ी । २ बच्चों को सुनाने का एक प्रकार का काष्ठ का भूला । ३ काठ की पट्टी जो चढ़ने के लिए बनाई जाती है । ४ बैशाखी । ५ छाजन में लगने वाला काष्ठ का उपकरण । ६ लंगड़े व्यक्ति के चलने के लिए बना लकड़ी का उपकरण । ७ घाटे या मेढ़े की मेढ़ निकालने का उपकरण । ८ ऊंट के 'पिलांग' का एक भाग । ९ एक लोक गीत । १० एक देशी खेल ।
 ११ देखो 'घोड़लियो' । —बराड़-पु० मरहटों के घोड़ों को दूर रखने के लिए दिया जाने वाला कर जो किसानों से प्रति बीघा चार आना और दूसरों से प्रति परिवार एक रु. था ।
 घोड़ी-पु० [सं० घोटक] (स्त्री० घोड़ी) १ सवारी के लिए सबसे अच्छा व तेज दौड़ने वाला चौपाया जानवर, जिसे रथ या तांगे में भी जोता जाता है, अश्व । २ बंदूक का खटका । ३ शतरंज का एक मोहरा । ४ बार पायों का लकड़ी का कुंदा जो कसरत में काम आता है । ५ बार पायों का तस्ता । ६ घोड़े की मुखाकृतिनुमा बना लकड़ी आदि का कोई उपकरण ।
 घोखियो, घोखी-पु० [सं०] १ तृण तिनका । २ कोई काष्ठ खण्ड ।
 घोट (क, बो)-पु० [सं०] १ घोड़ा । २ सुपारी का वृक्ष, सुपारी । ३ युवक, जवान ।
 घोटली-स्त्री० १ दाल आदि घोटने का उपकरण । २ घुटाई करने का उपकरण । ३ बार-बार बोल कर याद करने की क्रिया रटाई ।
 घोटली (बो)-क्रि० १ सिल-बट्टे पर पीसना, महीन करना । २ ठीक जमाने व जमाकर चमक लाने के लिये खूब रगड़ना । ३ परस्पर रगड़ना । ४ खूब रटना । ५ बाल साफ करना, मुँडना । ६ सांस अवरोध करना, दम घोटना ।
 घोटमघोट-वि० १ खूब घुटा हुआ । २ चिकना । ३ मोल व मरुत (स्तन) । ४ हूट-पुष्ट ।
 घोटलियो-देखो 'घोट' ।
 घोटारई-स्त्री० १ घोटने की क्रिया या भाव, घुटाई । २ इस काम की मजदूरी ।
 घोटाली (बो)-क्रि० १ सिल बट्टे पर पीसवाना, महीन करवाना । २ रगड़वाना । ३ खूब रटाना । ४ बाल साफ कराना, मुँडवाना । ५ सांस अवरोध कराना ।
 घोटारस-पु० एक प्रकार का मसूर ।
 घोटाली-पु० मड़बड़ी अवस्था ।
 घोटाली (बो)-देखो 'घोटाली' (बो) ।
 घोड़-वि० घोटने वाला ।
 घोटेबरवार-पु० चला जाति के व्यक्तियों की उपाधि ।

घोटो-पु० १ घोटने का उपकरण । २ मिल-बट्टा । ३ बड़ा व मोटा डंडा । ४ गदा ।
 घोड़-देखो 'घोड़ी' ।
 घोस-स्त्री० [सं० घ्राण] १ नाक । २ बकरी के स्तनों पर किया जाने वाला एक लेपन ।
 घोसा, घोसी-पु० सूअर ।
 घोसी-पु० १ कोई नुकीली वस्तु चुभाने की क्रिया । २ धक्का । ३ बाधा, भड़चन, विघ्न ।
 घोनी-पु० (स्त्री० घोनी) १ बकरी । २ वृद्ध बकरी । ३ वृद्ध व्यक्ति । ४ नितान्त बहुरा व्यक्ति ।
 घोबी-पु० १ घास के किसी पौधे का कटने के बाद जमीन में रहा अंश । २ नुकीली चीज का धक्का । ३ अखि आदि में होने वाला शूल, पीड़ा । ४ बात-विकार की पीड़ा ।
 घोषणी (बी)-क्रि० नष्ट करता ।
 घोर-वि० [सं०] १ भयंकर, डरावना । २ जबरदस्त । ३ सघन, घना । ४ अत्यधिक गहरा । ५ कठिन, दुर्गम । ६ कठोर । ७ उग्र । -स्त्री० [अ० गोर] १ कब, समाधि । २ समाधि पर अंकित शब्द । ३ शब्द ध्वनि । ४ गर्जना, घोष । ५ प्रगाढ़ निद्रा का शब्द । ६ नगाड़े की आवाज । [सं० घोरः] ७ भय, डर । ८ जहर । ९ शिव ।
 घोरणी (बी)-क्रि० १ पीटना, मारना । २ देखो 'घुरणी' (बी) । ३ देखो 'घूरणी' (बी) ।
 घोरमघोर-देखो 'घोर' ।
 घोरखबर-पु० गहरे वादलों की घटाएँ ।
 घोरारध-पु० १ शोक सूचक भयंकर शब्द । २ घोर ध्वनि । ३ उल्लू की ओली ।
 घोरणी (बी), घोरणी (बी)-१ देखो 'घुरणी' (बी) । २ देखो 'घूरणी' (बी) ।
 घोळ-पु० १ घुला हुआ पदार्थ । पानी में घोल कर खा हुआ पदार्थ । २ न्योछावर । ३ धार कर दिया हुआ दान ।
 घोळणी (बी)-क्रि० १ किसी द्रव पदार्थ या पानी में कोई वस्तु मिलाना, घोलना । २ घुल जाने के लिये हिलाना । ३ न्योछावर करना, वारना । ४ जहरीले जंतुओं का घटना । ५ क्रोधित होना । ६ आँखों में नींद या नशा

छाना । ७ बच्चों का वसन करना ।
 घोळणी-पु० १ मांस पकाने की एक प्रक्रिया । २ इस प्रक्रिया से पका हुआ मांस ।
 घोळणी (बी), घोळणी (बी)-क्रि० घोलने का कार्य कराना ।
 घोळणी-देखो 'घोळ' ।
 घोळी-स्त्री० न्योछावर होने की क्रिया ।
 घोल्या-स्त्री० १ खैरित, कुशल । २ अस्तु । ३ देखो 'घोली' ।
 घोस-पु० [सं० घोष] १ शब्द, आवाज । २ गर्जना, भागी शब्द । ३ तालों का एक भेद । ४ शब्द-उच्चारण के ग्याग्रे बाह्य प्रयत्न में से एक ।
 घोसणी-स्त्री० [सं० घोषणी] १ सूचना, इत्तला । २ सार्वजनिक सभा में किसी नेता या अधिकारी द्वारा जारी की गई सूचना । ३ आदेश । ४ मरकागी कार्यवाही का प्रकाशन या विज्ञापन । ५ गर्जना, आवाज ।
 घोसनी-स्त्री० वीणा ।
 घोसी-पु० दूध बेचने वाली मुसलमान जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
 घ्राण-स्त्री० [सं० घ्राण] १ नफरत । २ ग्लानि । ३ दया, कृपा ।
 घृत-पु० [सं० घृत] घी । -आहूत (न)-स्त्री० अग्नि ।
 घृताची, घृतायची-स्त्री० १ स्वर्ग की एक अप्सरा । २ अप्सरा ।
 घृति-पु० घी ।
 घृष्टी-पु० [सं० घृष्टिः] सूअर ।
 घ्राण, घ्राणा-पु० [सं० घ्राणः] १ नाक, नासिका । २ सुगंध । ३ सूंघने की शक्ति ।
 घ्राई-पु० भयंकर प्रहार करने वाला ।
 घ्रित (ति, ती)-पु० १ घी । २ यज्ञ । ३ अग्नि । -वि० तृप्त ।
 घ्रिताची, घ्रिताची-देखो 'घृताची' ।
 घ्रिसि (सी)-पु० भोजन ।
 घ्रिस्ती-पु० सूअर ।
 घ्रोण, घ्रोणा-देखो 'घ्राण' ।
 घ्रोणी (नी)-पु० सूअर ।

-घ-

घ-देवनागरी वर्णमाला का छठा व्यंजन ।
 बक-देखो 'बक' ।
 बक-देखो 'बक' ।
 बंग-वि० सुंदर, मनोहर ।
 बंग (डी, डी)-पु० [का०] १ डफ । [सं० बं] २ पतंग,

गुड़ी । ३ झंडी, पताका । ४ पवित्रता, शुद्धता । ५ उत्तमता, श्रेष्ठता । ६ घोड़ों की एक जाति व इस जाति का घोड़ा । ७ बवन, मुसलमान । ८ सितार पर बड़ा हुआ स्वर । ९ स्वस्थ व्यक्ति । १० दिगंल का एक गीत । ११ देखो 'बंगी' ।

चंगारण-पु० चक्कर, घेरा, घुमाव ।

चंगारण-पु० गोमूत्र ।

चंगारणी (बो)-क्रि० गाय का मूतना ।

चंगी-स्त्री० १ कीर्ति, यश । २ श्रेष्ठता । -वि० १ स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट । २ उत्तम ।

चंगुल-पु० [फा०] १ जाल, फंदा । २ बड़यंत्र । ३ हाथ की अंगुलियों का फंदा ।

चंगोड़ी (री)-स्त्री० १ मिठाई रखने का पात्र । २ छाव, टोकरी ।

चंगी-वि० [सं० चंग] (स्त्री० चंगी) १ निरोग, स्वस्थ । २ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा । ३ साफ, पवित्र, निर्मल । ४ दृढ़, मजबूत । ५ सुन्दर, मुहावना । ६ उत्तम, श्रेष्ठ । -पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ ढफ ।

चंचड (डी)-देखो 'चांचडली' ।

चंच (न,तु)-स्त्री० [सं० चंचु] १ चोंच । २ पार्वती, दुर्गा । चंचरी, चंचरीक-पु० [सं०] १ अमर, भौंरा । २ भारत में स्थाई रूप से रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया । ३ एक मात्रिक छंद विशेष । ४ एक वर्ग वृत्त विशेष ।

चंचल (ली)-वि० [सं० चंचल] १ चलायमान, गतिशील । २ कांपने वाला, कंपकंपा । ३ अस्थिर । ४ अशान्त । ५ चंचल, नटखट । ६ फुर्तीला, चुस्त । ७ उद्विग्न, व्यग्र । ८ विह्वल । ९ डांवाडोल । १० कामुक, ११ क्षणिक । -पु० १ पवन । २ घोड़ा । ३ मन । ४ चन्द्रमा । ५ पारा । ६ देखो 'चंचला' । -क्रि० वि० तुरन्त, शीघ्र ।

चंचलता (ई)-स्त्री० [सं०] १ अस्थिरता । २ गतिशीलता । ३ नटखटपना । ४ स्फूर्ति ।

चंचला-स्त्री० [सं० चंचला] १ बिजली, विद्युत् । २ लक्ष्मी । ३ माया । ४ नर्तकी । ५ मछली । ६ घोड़ी । ७ पिप्पली । ८ एक वर्ग वृत्त ।

चंचलाई, चंचलाट (हट)-देखो 'चंचलता' ।

चंचली-१ देखो 'चंचल' । २ देखो 'चंचला' ।

चंचली-देखो 'चंचल' । (स्त्री० चंचली)

चंचल-पु० १ पक्षी । २ देखो 'चंचल' ।

चंचाली-स्त्री० मांसाहारी पक्षी ।

चंचु-स्त्री [सं०] १ पक्षी की चोंच । २ तुंड । ३ अरंड का पेड़ । ४ मृग, हिरन । -का, पुट-पु०- चोंच, तुंड । -अत, मान-पु० पक्षी ।

चंचेइण, चंचेइ, चंचेइण-पु० मकखन को तपाने पर निकलने वाला छाछ का अंग ।

चंचेइणी (बो)-क्रि० १ हिलाना, झकझोरना । २ छेड़ना, तंग करना ।

चंट, चंटेन-वि० १ धूर्त, बदमाश । २ चतुर, होशियार ।

चंड-पु० [सं०] १ गर्मी, ताप । २ रोष, क्रोध । ३ एक दंत्य का नाम । ४ शिव का एक गण । ५ राम सेना का एक बंदर । ६ एक मौरव । ७ कुबेर के घाट पुत्रों में से एक । ८ कात्तिकेय । -वि० १ भयानक, उग्र । २ क्रुद्ध । ३ गर्म, उष्ण । ४ कर्मठ, फुर्तीला । ५ तेज, तीक्ष्ण । ६ कठोर । ७ कठिन, विकट । ८ घोर । ९ प्रबल । १० देखो 'चंडी' ।

चंडकर-पु० [सं०] सूर्य भानु ।

चंडका-देखो 'चंडिका' ।

चंडघंटा-स्त्री० चौसठ योगिनियों में से एक ।

चंडडाक-पु० युद्ध का वाद्य ।

चंडता-स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता, उग्रता, प्रबलता ।

चंडनगर-देखो 'चंडीनगर' ।

चंडनायिका-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा । २ अष्टनायिकाओं में से एक ।

चंडमुंड-पु० देवी के हाथों मारे गये दो राक्षस ।

चंडमुंडा (डी)-देखो 'चांपुंडा' ।

चंडवती-स्त्री० [सं०] १ देवी । २ अष्टनायिकाओं में से एक ।

चंडवारण-पु० [सं०] ४९ क्षेत्रपालों में से एक ।

चंडांशु-पु० [सं० चण्डांशु] सूर्य, भानु । -स्त्री० १ कोप, गुस्सा, क्रोध । २ देखो 'चंडालिणी' ।

चंडातक-पु० [सं० चंडातकः] १ कुर्ती, छोटा कोट । २ लहंगा ।

चंडाल-पु० [सं० चंडाल] (स्त्री० चंडालण, गी) स्वपच, मंगी, मेहतर । -वि० दुष्ट, पतित, नीच ।

चंडालणी-स्त्री० १ एक प्रकार का दोहा छंद । २ चंडाल की स्त्री ।

चंडालिका-स्त्री० एक प्रकार की बीणा ।

चंडाली-स्त्री० कोप, गुस्सा ।

चंडाबल-देखो 'चंदाबल' ।

चंडिक (का)-स्त्री० [सं० चंडिका] १ देवी, दुर्गा । २ कर्कशा स्त्री । -वि० कर्कशा, खड़ाकु ।

चंडी-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा, देवी । २ महिषासुर मर्दिनी देवी । ३ चंडिका । -नगर-पु० दिल्ली शहर का नाम । -पति-पु० शिव, महादेव । बादशाह । -पुर-पु० दिल्ली नगर । -पुरी-पु० दिल्ली का बादशाह । दिल्ली निवासी । सुमलमान । चोहान राजपूत ।

चंडीस (सुर)-पु० १ शिव । २ एक तीर्थ स्थान । ३ बादशाह ।

चंडू-पु० अफीम व शहद के योग से बना एक अत्यन्त नशीला अवलेह । -खानो-पु० उक्त पदार्थ उपलब्ध होने का स्थान । -बाज-पु० चंडू पीने का व्यसनी ।

चंद्र-स्त्री० छाखी रंग की एक चिड़िया विशेष । -वि० मूख ।
 भण्डाल ।
 चंडेश्वर-पु० [सं० चण्डेश्वर] शिव का एक गण ।
 चंडेश्वरी-स्त्री० [सं० चण्डेश्वरी] देवी का एक रूप ।
 चंडोदरी-स्त्री० [सं०] सीता के पाम नियुक्त रावण की एक
 मनुचरी ।
 चंडोल, चंडोल-स्त्री० १ हाथी की ग्रंवाड़ीनुमा एक पालकी,
 डोली । २ मिट्टी का एक खिलोना । ३ चंदोल ।
 चंडौली-१ देखो 'चंदावल' । २ देखो 'चंडोल' ।
 चंद (उ)-पु० [सं० चंदः] १ चंद्रमा । २ कपूर । ३ चंदन ।
 ४ नाक का बायां छिद्र (योग) । ५ चंदक रागिनी ।
 ६ डिगल के 'वेलियो सांगोर' का एक भेद । ७ राजा
 हरिश्चंद्र । ८ देखो 'चंदौल' । -वि० १ श्वेत, सफेद ।
 २ काला । [फा०] ३ थोड़ा, किंचित् । ४ देखो 'चांद' ।
 चंदक-पु० [सं०] १ चंद्रमा, चांद । २ चांदनी, चंद्रिका ।
 चंदकांत-देखो 'चंद्रकांत' ।
 चंदगी-स्त्री० १ धन, दौलत, सम्पत्ति । २ आर्थिक सहायता ।
 चंदण (न)-पु० [सं० चंदनं] १ सुगन्धित लकड़ी वाला एक
 प्रसिद्ध वृक्ष । २ इस वृक्ष की लकड़ी का टुकड़ा जिसे
 घिसकर देव मूर्ति पर चढ़ाया जाता है । ३ उक्त प्रकार
 का घिसा हुआ लेपन । ४ छप्पय छन्द का तेरहवां भेद ।
 ५ डिगल का एक छंद विशेष । ६ डिगल के वेलियो सांगोर
 का एक भेद । ७ केसर । -वि० १ श्वेत, सफेद । —गोह-
 स्त्री० मकर की जाति का एक विषेला छोटा जंतु । —धेनु-
 स्त्री० चंदन से अंकित कर दान में दी जाने वाली गाय ।
 चंदरुता-स्त्री० ठंडक, चन्दनत्व ।
 चंदरुहार-पु० कीमती चंद्रहार ।
 चंदशु-देखो 'चंदण' ।
 चंदणी-देखो 'चांदणी' ।
 चंदनगिरी-पु० [सं०] मलयगिरी पर्वत ।
 चंदनांस (नांमो)-पु० १ यश, कीर्ति । २ उज्ज्वलता ।
 चंदनि (नी)-१ देखो 'चांदनी' । २ देखो 'चंदण' ।
 चंदपहास (प्रहास)-स्त्री० चंद्रहास, तलवार ।
 चंदप्रभु-देखो 'चंद्रप्रभु' ।
 चंदबाण-पु० एक प्रकार का तीर ।
 चंदभागा-देखो 'चंद्रभागा' ।
 चंदमा-देखो 'चंद्रमा' ।
 चंदमारो-स्त्री० १ घोड़ों का एक रोग । २ चांदमारी ।
 चंदमुखी-देखो 'चंद्रमुखी' ।
 चंदरगढ़-पु० चित्तौड़गढ़ का एक नाम ।
 चंदरमणि-स्त्री० चंद्रकान्त मणि ।

चंदल-पु० चंद्रमा ।
 चंदलाई (लाई), चंदलपौ चंदलेखी-पु० एक छोटा पीघा
 जिसकी पंत्तियों का शाक बनता है ।
 चंदववण (णी), चंदववनी, चंदववरिण (णी)-देखो 'चंद्रवदणी' ।
 चंदवाल-देखो 'चंदावल' ।
 चंदवी-पु० [सं० चंद्रातप] देवी-देवता या राजा-महाराजाओं के
 सिंहासन के ऊपर तना रहने वाला छोटा मण्डप ।
 वितान ।
 चंदारणि (णी)-स्त्री० चंद्रवदनी, चंद्रमुखी ।
 चंदावल-स्त्री० सेना के पीछे का भाग ।
 चांदका-देखो 'चंद्रिका' ।
 चंदिर, चंदिल-पु० [सं० चंदिर] १ चंद्रमा, चांद । २ हाथी ।
 चंदेली-देखो 'चंदलाई' ।
 चंदोउ-देखो 'चंदवी' ।
 चंदोल-देखो 'चंदावल' ।
 चंदौली-कि०वि० १ पृष्ठ भाग में, पीछे । २ देखो 'चंदावल' ।
 चंदौ-पु० [सं० चंद्र] १ चंद्रमा, चांद । [फा० चंद] २ किसी
 धार्मिक या सामाजिक कार्य में दान स्वरूप दिया या
 लिया जाने वाला धन । ३ किसी पत्र-पत्रिका का वार्षिक
 शुल्क । ४ किसी संस्था का निर्धारित शुल्क ।
 चंदौल-देखो 'चंदावल' ।
 चंदूर-१ देखो 'चंदिर' । २ देखो 'चंद्र' ।
 चंछा-स्त्री० छोटी रोटी ।
 चंद्र, चंद्रई-पु० [सं०] १ चंद्रमा, चांद । २ कपूर । ३ अठारह
 उपमहाद्वीपों में से एक । ४ पिगल में टगण के दसवें भेद का
 नाम । ५ मृगसिरा नक्षत्र । ६ एक की संख्या । ७ मोर पंख
 की चंद्रिका । ८ जल । ९ मुवर्ग ।
 चंद्रउ-देखो 'चंदवी' ।
 चंद्रक-पु० [सं०] १ चंद्रमा । २ नख । ३ चंद्राकार मण्डल ।
 ४ मोर, मयूर ।
 चंद्रकन्या-स्त्री० [सं०] इलायची ।
 चंद्रकला-स्त्री० [सं० चंद्रकला] १ चंद्र किरण । २ चांदनी ।
 ३ स्त्रियों की एक बहुमूल्य घोड़नी । ४ सोलह की संख्या ।
 ५ चंद्रमा का एक अंग । —धर- पु० शिव, महादेव ।
 चंद्रकांत-पु० [सं०] १ एक काल्पनिक मणि, चंद्रकान्त मणि ।
 २ एक राग विशेष ।
 चंद्रकांता-स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की पत्नी । २ रात, रात्रि ।
 ३ चांदनी ।
 चंद्रका-देखो 'चंद्रिका' ।
 चंद्रकार-पु० एक प्रकार का वाण ।
 चंद्रकीरति (ती)-पु० जलाट पर दो मंवरियों वाला घोड़ा ।

चंद्रकुलया-स्त्री० काश्मीर की एक नदी ।
 चंद्रकूट-पु० [सं०] कामरूप प्रदेश में स्थित एक पर्वत ।
 चंद्रकूप-पु० काशी स्थित एक तीर्थ स्थान ।
 चंद्रगुप्त-पु० [सं०] १ चित्रगुप्त का एक नामान्तर । २ मौर्य वंशीय प्रथम सम्राट् ।
 चंद्रगोल-पु० चन्द्र मंडल ।
 चंद्रघंटका (घंटा)-स्त्री० नव दुर्गाओं में से एक ।
 चंद्रचूड़-पु० शिव, महादेव ।
 चंद्रज-पु० [सं०] चन्द्रमा का पुत्र, वृक्ष ।
 चंद्रदारा-स्त्री० [सं०] १ दक्ष की २७ कन्याएं जो चन्द्रमा की स्त्रियां हैं । २ सत्ताईस नक्षत्र ।
 चंद्रदुरंग-पु० चितौड़गढ़ का नाम ।
 चंद्रद्युति-स्त्री० [सं०] चांदनी, चन्द्र प्रकाश ।
 चंद्रधर, (पीड़)-पु० शिव, महादेव ।
 चंद्रप्रभा-स्त्री० [सं०] चांदनी ।
 चंद्रप्रभु-पु० [सं०] चंद्रप्रभु अठारहवें तीर्थंकर का नाम ।
 चंद्रप्रहास-देखो 'चंद्रप्रहाम' ।
 चंद्रबधूटी-स्त्री० वीरबहूटी ।
 चंद्रवासा-स्त्री० [सं०] १ बड़ी इलायची । २ चांदनी । ३ चन्द्र किरण । ४ चन्द्रमा की स्त्री । ५ स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष ।
 चंद्रबिंदु-पु० [सं०] सानुनाशिक अश्रुओं पर लगने वाली अर्ध-चन्द्राकार बिंदी ।
 चंद्रभांगु-पु० श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा का पुत्र ।
 चंद्रभाग-पु० [सं०] १ चन्द्रमा की कला । २ हिमालय का एक शिखर । ३ मोलह की संख्या ।
 चंद्रभागा-स्त्री० चंद्रभाग शिखर से निकलने वाली एक नदी ।
 चंद्रभाळ-पु० शिव महादेव ।
 चंद्रमणि (मणि, मणी)-स्त्री० चन्द्रकांत मणि ।
 चंद्रमा-पु० [सं०] चंद्रमस] पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला एक उपग्रह, चांद । —सलाह-पु० शिव, महादेव । —माळा-स्त्री० चन्द्रहार । १९ वर्गों का वर्णिक छन्द । २८ मात्राओं का एक छन्द विशेष ।
 चंद्रमणि (मिणी)-स्त्री० चन्द्रकांत मणि ।
 चंद्रमौली-पु० शिव, महादेव ।
 चंद्रलोक-पु० चन्द्रमा का लोक ।
 चंद्रवंस-पु० एक क्षत्रिय वंश ।
 चंद्रवल्ली (नी, वयणि, वयणी)-स्त्री० [सं०] चंद्रवदनी ।
 चंद्रमा के समान उज्ज्वल मुख वाली सुन्दर स्त्री ।
 चंद्रवधू-स्त्री० वीरवहूटी ।
 चंद्रवी-देखो 'चंद्रवी' ।
 चंद्रवन-देखो 'चंद्रायण' ।

चंद्रसार-पु० डिगल का एक मोत विशेष ।
 चंद्रसाळ-पु० १ छत के कमरे के मामने का खुला भाग, अटारी । २ चांदनी, चंद्रिका ।
 चंद्रसूरि-पु० ललाट पर दो मंजरी वाला घोड़ा ।
 चंद्रसेखर-पु० [सं०] चन्द्रशेखर] १ शिव, महादेव । २ एक पर्वत । ३ संगीत की एक ताल ।
 चंद्रस्वारथी-पु० श्वेत-नारंग वर्ण व श्वेत नेत्र का घोड़ा ।
 चंद्रहार-पु० मणियों का एक हार विशेष ।
 चंद्रहास-स्त्री० तलवार, वृद्ध ।
 चंद्रायण (णि, णी), चंद्राणी-स्त्री० १ दुर्गा का एक नाम । २ चन्द्रमुखी, सुन्दरी ।
 चंद्रापीड़-पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ अर्जुन का एक मित्र ।
 चंद्रायण (णी)-पु० १ गौरी पूजन के समय गाया जाने वाला एक लोक गीत । २ देखो 'चंद्रायण' ।
 चंद्रालोक-पु० चन्द्रमा का आलोक, प्रकाश ।
 चंद्रायल-पु० चान्द्रायण व्रत ।
 चंद्रायली-स्त्री० श्रीकृष्ण पर अनुरक्त एक गोपी ।
 चंद्रिका-स्त्री० [सं०] १ चांदनी, ज्योत्स्ना । २ मथूर पंख का सुनहरा मंडल । ३ पंजाब की चिनाव नदी । ४ जुही । ५ चमेली । ६ संस्कृत व्याकरण का एक ग्रंथ । ७ टीका, व्याख्या ।
 चंद्रा-देखो 'चंद्रवी' ।
 चंद्रयुज, चंद्रोदय-पु० १ चन्द्रमा का उदय । २ मंथक, पारा व स्वर्गभस्म के योग से बना एक रस । ३ देखो 'चंद्रवी' ।
 चंन-पु० १ चंदन । २ प्रकाश ।
 चंप-पु० १ भय, डर । २ आशंका, शंका । ३ चंपा का वृक्ष व पुष्प । ४ मार, प्रहार ।
 चंपई-देखो 'चंपाई' ।
 चंपड-देखो 'चंपी' ।
 चंपक-पु० १ चंपा । २ सम्पूर्ण त्रास का एक राग । ३ पीला, पीत वर्ण । —कली-स्त्री० स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष । —माळा-स्त्री० चंपा के फूलों की माना । एक वर्ग वृत्त । —वल्ली, वरणी-स्त्री० गौर वर्ण की स्त्री ।
 चंपकली-स्त्री० १ चंपा की कली । २ चंपा के समान नेत्र ।
 चंपणी (बी)-कि० १ भयभीत होता, डरना । २ छुपना । ३ शंका खाना, संकोच करना । ४ पैर रखना, पैर जमाना । ५ दबाना, दाबना । ६ पकड़ना । ७ चौकना । ८ खिजित होता ।
 चंपत-वि० गायब, लुप्त, भगा हुआ ।
 चंपल, चंपली-देखो 'चंपी' ।
 चंपा-स्त्री० एक प्राचीन नगरी ।
 चंपाई-वि० चंपा के फूल के रंग का, पीला ।

चंपाकली-स्त्री० १ चंपा की कली । २ स्त्रियों के मले का प्राभूषण विशेष ।
 चंपाली (बो)-क्रि० १ भयभीत करना । २ चौकाना । ३ लज्जित कराना । ४ छुपाना । ५ दबवाना । ६ रखवाना, जमवाना ।
 चंपाघष (घिष)-पु० [सं० चंपाघिष] कर्ण का एक नाम ।
 चंपानगरी (नयरी, नरी)-स्त्री० १ चंपानगरी । २ एक प्रकार की तलवार ।
 चंपारण्य (रन)-पु० एक प्राचीन वन ।
 चंपी-स्त्री० १ चांपने या दवाने की क्रिया या भाव । २ शिर की मालिश । ३ चापलूसी ।
 चंपू-पु० [सं०] १ गद्य व पद्य मिश्रित काव्य या ग्रंथ । २ देखो 'चंपी' ।
 चंपेल, चंपेली, चंपेलू-पु० १ चमेली का तेल । २ चमेली ।
 चंपी-पु० [सं० चंपक] १ हल्के पीले रंग के फूलों वाला एक वृक्ष । २ इस वृक्ष का फूल । ३ चंपे के पुष्प के रंग का घोड़ा । ४ एक देशी खेल ।
 चंबक-देखो 'चुंबक' ।
 चंबल-स्त्री० राजस्थान की प्रसिद्ध नदी ।
 चंबुक-देखो 'चुंबक' ।
 चंबेली-देखो 'चमेली' ।
 चंमांट-देखो 'चिमटी' ।
 चंमर-देखो 'चंवर' ।
 चंवर-पु० [सं० चामर] चामर, चंवर, चौरी । -वि० श्वेत, सफेद* । -गाय-स्त्री० सफेद बालों की पूछ वाली गाय ।
 ---दार-पु० चंवर हुलाने वाला सेवक ।
 चंखरी-स्त्री० १ घोड़े के पूछ के बालों का छोटा चामर । २ विवाह की वेदी । ३ विवाह के समय वर पक्ष से लिया जाने वाला एक कर । ४ एक लोक गीत । ५ सफेद पूछ वाली गाय । -बापौ-पु० पाणिग्रहण संस्कार के बाद कुलगुरु को दिया जाने वाला द्रव्य ।
 चंखरी-पु० १ सफेद बालों की पूछ वाला बेल । २ छाजन । ३ स्नान करने समय मल उतारने का उपकरण । ४ छोटा चामर ।
 चंखळी-१ देखो 'चंदळी' । २ देखो 'चंखळी' ।
 चंखळी (छोड़ी)-स्त्री० चौले की दाल, चौले की फली ।
 चंखली-पु० चौला नामक द्विदल अनाज, राजभाप ।
 चंखार-स्त्री० मूंग, मोठ आदि के पुष्प ।
 चंखळियो-पु० बड़े-बड़े पत्थर होने वाला मजदूर ।
 च-पु० [सं०] १ चन्द्रसा । २ चकवा । ३ चोर । ४ दुर्जन । ५ कच्छप । ६ मुख । ७ समूह । ८ आलिंगन । ९ उवाला । १० अग्नि । ११ संपत्ति । १२ ग्रह । -वि० १ मनोहर । २ मूर्ख । -अव्य० श्रीर, तथा ।

चउ-स्त्री० हाथी को हांकने का शब्द । -अव्य० के ।
 चइसी, चईसी-पु० १ रेल गाड़ी का रास्ता, पटरी, रेखा । २ पहिया, चक्र । ३ परिपाटी, रूढ़ी ।
 चउ-पु० जमीन का छोटा खड्डा जिसमें तापने के लिए आग रखी जाती है ।
 चउर-देखो 'चंवर' ।
 चउ-वि० [सं० चतुर] १ चार । २ देखो 'चर' । -अव्य० का ।
 चउभाळीस-देखो 'चमानीस' ।
 चउक-देखो 'चौक' ।
 चउकी-स्त्री० चौकी । -बट, बट्ट-पु० काण्ठ की चौकी ।
 चउगठि (ट्टी)-देखो 'चौखट' ।
 चउगणउ, (गणौ, गिणउ, गुणउ, गुणौ)-देखो 'चौगुणौ' ।
 चउगणइ-स्त्री० [सं० चतुर्गति] देव, मानव, नारक और तिर्यच इस प्रकार की चार गति (मोक्ष) ।
 चउघड़णउ, चउघड़िउ-देखो 'चौघड़ियाँ' ।
 चउचाळक-पु० कलुषा ।
 चउडोतरसउ-देखो 'चौडोतरसी' ।
 चउतरी-देखो 'चबूतरी' ।
 चउत्थ-पु० १ चार दिन का उपवास (जैन) । २ देखो 'चौथ' । ३ देखो 'चौथी' ।
 चउत्थौ, चउथु-देखो 'चौथी' ।
 चउत्रीस-देखो 'चौतीस' ।
 चउथ, (थि, थो)-१ देखो 'चौथ' । २ देखो 'चौथी' ।
 चउथउ, चउथौ-देखो 'चौथी' ।
 चउवंती (ती)-पु० [सं० चतुर्वन्ती] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत । २ एक प्रकार का घोड़ा । -वि० चार दांत वाला ।
 चउवस, चउवसी-देखो 'चोदस' ।
 चउवह, (हू)-देखो 'चवद' ।
 चउपट-क्रि० वि० १ खुले आम । २ देखो 'चौपट' ।
 चउपन-देखो 'चौपन' ।
 चउफळा-क्रि० वि० चारों ओर ।
 चउरसउ-वि० [सं० चतुस्र] १ चौसर, चौकांर । २ चार ।
 चउराणू (णू)-देखो 'चौराणू' ।
 चउरासियो-देखो 'चौरासियों' ।
 चउरासी-देखो 'चौरामी' ।
 चउरिअ, चउरिआ, चउरि (री, घा)-१ देखो 'चंवरी' । २ देखो 'चूरी' ।
 चउदीस-देखो 'चौईस' ।
 चउदीसमउ-देखो 'चौईसमो' ।
 चउवीह-क्रि० वि० [सं० चतुर्विधन्] चार प्रकार से ।
 चउसठि (ठि)-देखो 'चौसठ' ।
 चउसाळउ-देखो 'चौमाळा' ।

चउहट्ट (हट्ट) — देखो 'चीवटी' ।

चउहूँगमाह — क्रि० वि० चारों ओर ।

चऊ — स्त्री० हथ की नोक के नीचे लगी रहने वाली एक छोटी नुकीली लकड़ी ।

चऊव, चऊवह, (वै) — देखो 'चवद' ।

चऊवमई — देखो 'चवदमो' ।

चऊपट — देखो 'चीपट' ।

चऊरस — पु० १ छै वर्ण का एक वृत्त । २ देखो 'चौरस' ।

चक — पु० [सं० चक्र] १ जमीन का बड़ा भाग, भू-खण्ड ।
२ हठ, जिद्द । ३ दांतों से काटने की क्रिया या भाव ।
४ दांतों से काटने का चिह्न । ५ दिशा । ६ पृथ्वी, जमीन ।
७ देखो 'चक्र' । — क्रि० वि० ओर, तरफ । — वि० संतुष्ट, तृप्त ।

चकई — स्त्री० मादा चकवा, चकवा ।

चकड़ीकम — वि० १ स्तब्ध, चकित । २ प्रज्ञा शून्य ।

चकड़ीटोप — पु० शिरस्त्राण, लोहे का टोप ।

चकचक, (काहट) — स्त्री० १ पक्षियों का कलरव चहचाहट ।
२ चकवास, जतरव । ३ लोकोपवाद । ४ चर्चा । ५ निदा ।

चकचकी — स्त्री० १ एक प्रकार की छुरी । २ देखो 'चकचक' ।

चकचक — देखो 'चकचक' ।

चकचाळ — स्त्री० १ चर्चा । २ बात की शुरुआत । ३ छेड़छाड़ ।

चकचाळी — पु० १ उपद्रव, उत्पात । २ युद्ध, लड़ाई ।

चकचूँधियो (चूँध, चूँधियो) — पु० १ चकाचौंध । २ शाम का धुंधला वातावरण । ३ बाह्य प्रदर्शन, तड़क-भड़क ।
४ चूँ-चूँ करके गोल घूमने वाला झूला । — वि० घ्राकर्षक । मनोहर, सुन्दर ।

चकचूर (र) — पु० [सं० चक्रचूर्ण] १ नाश, ध्वंस, विनाश ।
२ मर्दन । ३ चूर-चूर, खण्ड-खण्ड । — वि० १ मदीन्मत्त, नष्ट में चूर । २ मग्न, मस्त । ३ तल्लीन ।

चकचोळ — वि० १ क्रुद्ध, कुपित । २ लाल । ३ मादक, मदगुक्त ।
— स्त्री० १ क्रीड़ा । २ लाल नेत्र । ३ चपलता, चंचलता ।

चकचौघ (चौह) — देखो 'चकाचौघ' ।

चकडोळ (डोळ) — वि० १ उन्मत्त, पागल । २ मूर्ख । — स्त्री० १ पालकी डोली । २ मादकता, लुमारी । ३ शव ले जाने का उपकरण ।

चकत — १ देखो 'चगताई' । २ देखो 'चकित' ।

चकती, (त्ती, र्थी, थो) — पु० १ दंतशत । २ खंड, टुकड़ा ।
३ रक्त विकार के चिह्न । ४ देखो 'चगताई' ।

चकनचूर, चकनाचूर — वि० १ टुक-टुक, खण्ड-खण्ड । २ बका हुआ, बचाव ।

चकपत्त — पु० दिग्पात्र ।

चकबंदी — स्त्री० कृत्रिम भूमि की सीमाबंदी का कार्य ।

चकबंधु — पु० [सं० चक्र-बंधु] मूर्य ।

चकबस्त — पु० भूमि की हदबंदी ।

चकबी — देखो 'चकवी' ।

चकमक — स्त्री० [तु०] १ एक प्रकार का पत्थर जिसमें वर्षण से माग पैदा होती है । २ वह यन्त्र जिसमें उक्त पत्थर लगाकर प्राग जलाई जाती है, लाइटर । ३ चमक-चमक । ४ माग, अग्नि ।

चकमार — देखो 'चुकमार' ।

चकमाळा (ळी) — स्त्री० छेड़छाड़ ।

चकमी — पु० [सं० चक्र-भ्रम] १ भुलावा, भ्रम । २ धोखा । ३ हानि, नुकसान । ४ एक प्रकार का ऊती वस्त्र ।

चकर — पु० १ चक्कर, फेर । २ चक्र-पट्टिया । — अणवीठ, अवीठ, अवीठी, अवीठी — पु० देवी आपत्ति या प्रकोप । — धर, धरण = 'चक्रधर' ।

चकरड़ी — देखो 'चकरी' ।

चकरवरती — देखो 'चक्रवरती' ।

चकराणी (बी), चकरावणी (बी) — क्रि० १ विस्मय या चकित होना । २ स्तब्ध या भौचक्का होना । ३ वान विकार से शिर में चक्कर घाना । ४ भ्रम में पड़ना । ५ बुद्धि चकरा जाना ।

चकरायत — वि० शूरवीर ।

चकरियो — पु० १ जुलाहों का एक मीशर । २ देखो 'चक्र' ।

चकरी — स्त्री० [सं० चक्रिका] १ वृत्ताकार घूमने वाला कोई छोटा चक्र । २ फिरकी, फिरकनी । ३ छोटी गिरी । ४ डोर लपेटने की चरखी । ५ प्रातिष्ठा बाजी । ६ ढेर, समूह । ७ एक प्रकार की लता व उसका फल । ८ देखो 'चक्री' । — वि० १ भ्रमित । २ अस्थिर, चंचल ।

चकळ (ळी) — वि० भ्रमित ।

चकळोटो (ळी) — पु० [सं० चक्रलोट] १ रोटी बेचने का चकवा । २ चौराहा, कटला ।

चकव — देखो 'चकवी' ।

चकवत (ती, त्तो) — देखो 'चक्रवरती' ।

चकवन — देखो 'चगताई' ।

चकवाय — देखो 'चकवी' ।

चकवाविरह — पु० चक्रवाक पक्षी को विरह में डारने वाला, चन्द्रमा ।

चकवे (वै) — देखो 'चक्रवर्ती' ।

चकवी — पु० [सं० चक्रवाक] (स्त्री० चकवी) १ चक्रवाक नामक पक्षी । २ एक प्रकार का घोड़ा ।

चकस्या — देखो 'चकितसा' ।

चका — देखो 'चक्र' ।

चक्राक्षर-वि० १ घी-तेल आदि से तरबतर । २ चक्रचक्र ।

चक्राबध, चक्राबोध (धो)-स्त्री० १ अत्यन्त तीव्र प्रकाश ।
२ अत्यधिक तड़क-भड़क । ३ तीव्र प्रकाश से आँखों की
अस्थिरता, चौंधापन । ४ तिलमिलाहट ।

चक्राबध-पु० [सं० चक्रबध] सेना, फौज ।

चक्राबोह, (बो, बोह)-पु० [सं० चक्रव्यूह] १ सेना, फौज ।
२ सैन्य संगठन । ३ आक्रमण, हमला । ४ युद्ध, समर ।
५ कोलाहल, हल्ला । ६ भूड, समूह ।

चक्रार-पु० १ वर्णमाला का 'च' वर्ण । २ गोलाकृति, वृत्त ।
३ चारणों की जागीरी । ४ जमघट, भीड़ । ५ योनि ।

चकारी-पु० १ फेरा, चक्कर, घुमाव । २ घुमाने की क्रिया ।
३ दन्तक्षत । ४ मसूह, डेर । ५ बंध, बंधन, गाँठ । ६ म्यान
या अस्त्रों का आवरण ।

चक्राबल-पु० घोड़ों के पाँवों का एक रोग ।

चक्रास-वि० [सं० चक्रास दीप्ति] १ चमकने वाला, प्रकाश युक्त ।
२ भगड़ालु ।

चक्रासी-पु० १ लड़ाई, भगड़ा । २ प्रकाश, चमक ।

चक्रित-वि० १ आश्चर्य युक्त, विस्मित । २ भयभीत, स्तब्ध ।

चक्रिमान-पु० [सं० चक्रीवन्त] गधा ।

चक्रो-देखो 'चक्रो' ।

चक्रोय-स्त्री० चक्रवी ।

चक्रोली-वि० (स्त्री० चक्रोली) १ सुन्दर, छबिला । २ चक्रमा
देने वाला ।

चक्रू-देखो 'चक्रू' ।

चक्रोट-पु० चन्द्रमा ।

चक्रोतरी-पु० बड़ा तीव्र ।

चक्रोर (डो)-पु० [सं०] १ एक प्रकार का बड़ा तीतर ।
२ एक वर्ण वृत्त । -वि० सावधान, सतर्क । -बंधु-पु०-
चन्द्रमा ।

चक्र-१ देखो 'चक्र' । २ देखो 'चक्र' । -धरी='चक्रवर्ती' ।

चक्रय-देखो 'चक्रो' ।

चक्र-पु० [सं० चक्र] १ घूमने-फिरने या घुमाने की क्रिया ।
२ चक्कर, फेरा, घुमाव । ३ पहिये का घुमाव, फेरा ।
४ व्यर्थ का आवागमन । ५ बात विकार से शिर की
चकराहट । ६ जटिलता, उलझन । ७ पानी का मांवर ।
८ जंजाल । ९ बलि पशु पर किया जाने वाला प्रहार ।
१० तलवार । ११ रास्ते का घुमाव । १२ देखो 'चक्र' ।
-जीवन-पु० कुंभकार, कुम्हार । -दार-वि० जिसमें
चक्कर हों । उलझनपूर्ण ।

चक्रवर्तरी, चक्रवत्, चक्रवर्त, चक्रवर्ति-
देखो 'चक्रवर्ती' ।

चक्र-स्त्री० [सं० चक्र] १ घनाज पीसने का यन्त्र ।
२ चौकोर काटी हुई मिठाई । ३ दांतों से काटने का
निशान । ४ तलवार । ५ आर्या छन्द का एक भेद ।

चक्रो-देखो 'चक्र' ।

चक्र-१ देखो 'चक्र' । २ देखो 'चक्र' ।

चक्रो-देखो 'चक्रो' ।

चक्रो-देखो 'चक्र' ।

चक्र-वि० [सं० चक्रित] चक्रित, स्तब्ध ।

चक्र-देखो 'चक्रांग' ।

चक्र-स्त्री० [सं० चक्रांगी] १ मादा हंस, हमिनी । २ देखो
'चक्रांग' ।

चक्र-पु० [सं०] १ भगवान विष्णु का आयुध । २ पहिया ।
३ हथियार, शस्त्र । ४ कुम्हार का चाक । ५ नेनी का
कोल्हू । ६ गोला, वृत्त, मण्डल । ७ दल, समूह । ८ राष्ट्र,
राज्य । ९ प्रान्त । १० सेना, फौज । ११ सैनिक व्यूह ।
१२ युग । १३ अन्तरिक्ष । १४ भंवर । १५ नदी का
घुमाव । १६ चक्रवाक । १७ वायु, पवन । १८ वायु का
गोला । १९ वृत्ताकार गति । २० राजा, नृप । २१ देवी
का एक शस्त्र । २२ योग के षड्चक्र । २३ फेरा, चक्कर ।
२४ घेरा, वृत्त । २५ परिधि । २६ क्रोध, रोष । २७ सर्प ।
२८ विस्मय, आश्चर्य । २९ भ्रम, भूल । ३० सामुद्रिक
चिह्न । ३१ शरीर पर लगाये जाने वाले चिह्न विशेष ।
३२ कुत्ता । ३३ काव्य रचना का एक भेद । ३४ एक छन्द
विशेष । ३५ नदी की गूँज । ३६ मभा । ३७ घनाज पोसने
का यंत्र । ३८ विष्णु पूजन के समय शरीर पर लगाया जाने
वाला चिह्न । ३९ फेर, दौर । ४० कुंभकार । ४१ तेली ।
४२ जामूम । -अंग='चक्रांग' । -कुंड-पु० चक्रव्यूह
का मध्य भाग । -चर-पु० तेली । कुम्हार ।
-जीवक-पु० कुम्हार । -ताळ-पु० संगीत की एक
तान । -तीरथ-पु० तुंगभद्रा नदी किनारे का एक तीर्थ ।
-दंड-पु० एक प्रकार का व्यायाम । -बंस्ट-पु० सूत्र ।
-धर, धरण, धारि, धारी-पु० श्रीकृष्ण । श्रीविष्णु ।
मूर्त्य । सर्प, साँप । बाजीगर । -पारि, (रि, एी)-पु०
श्रीविष्णु । श्रीकृष्ण । -पाव-पु० रख । गाड़ी ।
-फळ-पु० एक अस्त्र विशेष । -बंध-पु० एक प्रकार का
चित्रकाव्य । -बंधु, बांधव-पु० मूर्त्य । -अत-पु० चक्र-
धारी भगवान । -भेदिनी-स्त्री० रात्री । -अमर-पु०
एक प्रकार का नाच । -संडळ-पु० एक प्रकार का नृत्य ।
-मडली-पु० अजगर, सर्प । -मुख-पु० मूखर । -मुदा-
स्त्री० शरीर पर लगे विष्णु आयुध के चिह्न ।

चक्रणपुर-पु० [सं० चक्रधुरीण] रथ ।
 चक्रत-देखो 'चकित' ।
 चक्रति-देखो 'चकित' ।
 चक्रवत् (त्त, त्ति, त्ती)-स्त्री० १ एक वर्णिक छन्द विशेष ।
 २ देखो 'चक्रवरती' ।
 चक्रवरत (त्ती)-पु० [सं० चक्रवर्तिन्] १ घासमुद्रांत भूमि का स्वामी, राजा, सम्राट । २ बायें पार्श्व में भीरी वाला घोड़ा । ३ बड़ा राजा । ४ राजा ।
 चक्रवात-पु० चौथे समुद्र में स्थित एक पर्वत ।
 चक्रवाक-पु० [सं०] १ चक्रवा पक्षी । २ वह घोड़ा जिसके चारों पैर सफेद, शरीर पीला व नेत्र श्याम वर्ण के हों ।
 -वि० पीला, पीत रंग । —विद्योत-पु० चन्द्रमा ।
 चक्रवाळ-पु० १ एक प्रसिद्ध पौराणिक पर्वत । २ घेरा । ३ वृत्त, मण्डल ।
 चक्रवीर-पु० [सं०] सूर्य ।
 चक्रव्यूह, चक्रव्यूह (व्यूह, व्यूह)-पु० [सं० चक्रव्यूहः] युद्ध के समय सेना की व्यूह रचना विशेष ।
 चक्रवत् (त्ति, त्ती)-देखो 'चक्रवरत' ।
 चक्रसुवस्तर-देखो 'मुदरसराचक्र' ।
 चक्रांक-पु० [सं०] शरीर पर लगाये जाने वाले विष्णु आयुध के चिह्न ।
 चक्रांग-पु० [सं०] (स्त्री० चक्रांगी) १ हंस । २ चक्रवाक ।
 ३ रथ या गाड़ी । ४ कुटकी नामक ग्रीष्मि ।
 चक्रांश-पु० [सं० चक्रांश] राशि चक्र का ३६० वां अंश ।
 चक्रा-पु० सर्प, साँप ।
 चक्राकृत-पु० चक्र, चक्रव्यूह । -वि० स्तम्भित ।
 चक्राथ-पु० [सं०] कौरव पक्ष का एक योद्धा ।
 चक्रायुध-पु० भगवान विष्णु ।
 चक्राळ-पु० रथ, गाड़ी ।
 चक्रावळ-पु० घोड़ों के पैरों में होने वाला एक रोग ।
 चक्रि-१ देखो 'चक्र' । २ देखो 'चक्रो' ।
 चक्रिक-वि० [सं०] चक्रधारी ।
 चक्रित-देखो 'चकित' ।
 चक्रित-देखो 'चक्रो' ।
 चक्रियवत्-पु० गथा ।
 चक्रियांण-वि० चक्रधारी ।
 चक्रो-पु० [सं० चक्रिन्] १ श्रीविष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ चक्रधारी । ४ देवी, दुर्गा । ५ देखो 'चक्र' । ६ देखो 'चकित' ।
 ७ देखो 'चकरी' । ८ देखो 'चक्रवरती' । —वात-पु० गथा ।
 चक्रवर् (री)-स्त्री० राठीघों की कुल देवी ।

चख-पु० [सं० चक्षुस्] १ आँख, नेत्र । २ दृष्टि, नजर । [फा०] ३ लड़ाई, झगड़ा । ४ घोड़ों के जबड़ों का एक रोग ।
 —एक-पु० देख्य गुरु भुक्ताचार्य । एक घाँस वाला, काना ।
 —चख-वि० 'चकनका' ।
 चखचांगी-देखो 'चकाचौध' ।
 चखचूंदरी-स्त्री० छच्छूंदर नामक जीव ।
 चखचूंधी-देखो 'चकाचौध' ।
 चखचूंधी-वि० (स्त्री० चखचूंधी) १ बहुत छोटी-छोटी आँखें व धुंधली नजर वाला । २ धुंधला व चमकीला ।
 चखचौध-देखो 'चकाचौध' ।
 चखचौळ-वि० १ रक्ताभ नेत्र वाला । २ क्रुद्ध, कुपित ।
 चखण-स्त्री० १ चखने की क्रिया या भाव, स्वाद । २ चखने का पदार्थ ।
 चखणी (बी)-देखो 'चाखणी' (बी) ।
 चखताळी-पु० एक प्रकार का पकाया हुआ मांस ।
 चखती-देखो 'चगताई' ।
 चखवेव-पु० [सं० चखवेव] स्वामि कार्तिकेय ।
 चखधूसहस-पु० शेषनाग ।
 चखबाहर-पु० [सं० द्वादश चक्षु] स्वामि कार्तिकेय ।
 चखमग-पु० [सं० चक्षुमार्ग] दृष्टि-पथ, नजर ।
 चखसबा-पु० [सं० चक्षु श्रवस्] सर्प, साँप ।
 चखांमज्जीठी-वि० गाल नेत्रों वाला, क्रोधित ।
 चखांतरव-पु० [सं० सर्व चक्षु] सूर्य, रवि ।
 चखाणी (बी), चखावणी (बी)-क्रि० १ किमी वस्तु को चखाना, स्वाद लेने के लिए प्रेरित करना । २ अनुभव करना ।
 ३ थोड़ा सा खिलाना ।
 चखि, चखु, चख-देखो 'चख' ।
 चखड़ाई-स्त्री० चखड़ा चारण की पुत्री एक देवी ।
 चखु-देखो 'चख' ।
 चग-स्त्री० १ एक प्रकार की घास । २ तंतु क्षुप ।
 चगचगाट-देखो 'चहचाहट' ।
 चगणी (बी)-क्रि० १ बूंद-बूंद टपकना, छूना रिसना ।
 २ चिट्ना, गुस्सा करना । ३ बहकना, धोमे में प्राना ।
 ४ चूकना, भूलना ।
 चगत, चगताण, चगताई, चगताळ, चगताह, चगती, चगरथ, चगथ, चगथाणी, चगथा-पु० १ चगताईखां से चला मध्य एशिया का एक तुर्की वंश । २ वादगाढ़ । ३ यवन, मुसलमान । ४ चंगेजखां का पुत्र ।
 चगदायळ-वि० बावों से पूर्ण, घायल ।
 चगवी-पु० १ घाव, क्षत, चोट । २ खरोंच । ३ चोट का निशान । ४ कुचलने का भाव । ५ लुगटो ।
 चगर-स्त्री० घोड़ों की एक जाति ।

चगाणी (बो), चगावणी (बो)-देखो 'चिगाणी' (बो) ।

चगाहट-पु० १ ध्वनि, आवाज, जनरव, चकचक । २ कीर्तिगान ।
चड़'-देखो 'चड़स' ।

चड़खणी (बो)-क्रि० १ चूसना । २ चाटना । ३ क्रोध करना ।

चड़खाणी(बो), चड़खावणी(बो)-क्रि० १ चूसना । २ चटाना ।
३ गुस्सा दिलाना ।

चड़ड़, चड़चड़-स्त्री० [अनु०] १ सूखी लकड़ी के टूटने या चिरने
से उत्पन्न ध्वनि, चड़ड़ । २ पेय पदार्थ चूसने की ध्वनि ।
३ दांत भींच कर पानी आदि पीने की ध्वनि ।

चड़णी (बो)-देखो 'चिड़णी' (बो) ।

चड़चड़ (मड़)-स्त्री० १ तकरार, बोल-चाल, लड़ाई, वाग्युद्ध ।
२ बकभक ।

चड़भड़णी (बो)-क्रि० १ लड़ना, भगड़ना । २ क्रोध करना ।

चड़भड़णी(बो), चड़भड़ावणी (बो)-१ लड़ना, भगड़ा करना ।
२ क्रोध कराना । ३ ललकारना ।

चड़स-स्त्री० १ गांजे के पेड़ का गोंद जो अत्यन्त मादक होता
है । २ कूप से पानी निकालने का चमड़े या लोह का बड़ा
पात्र, मोट ।

चड़सियो-वि० १ कूप पर 'चड़स' खाली करने वाला । २ 'चरस'
पीने वाला । ३ देखो 'चड़स' ।

चड़ावड़-स्त्री० १ चड़चड़ की ध्वनि । २ छोटी-छोटी
प्रातिशब्दाजो । ३ देखो 'चटापट' ।

चड़ावड़-देखो 'चटापट' ।

चड़ापी-पु० प्रहार, चोट ।

चड़ियड़-स्त्री० चड़चड़ ध्वनि ।

चड़ी-स्त्री० [सं० चटक] १ अधिक चर्बी से उत्पन्न सिकुड़न ।
२ अधिक दबाव से होने वाली ग्रंथि । ३ देखो 'चिड़ी' ।

चड़ोकली-देखो 'चिड़ोकली' । (स्त्री० चड़ोकली)

चड़ी-देखो 'चिड़ी' ।

चटपट-स्त्री० भ्रांभ, मंजीरे की ध्वनि ।

चचो-पु० १ 'च' वर्ण । २ चाना, काका ।

चचोक (चक)-वि० [सं० चकित] १ विस्मित, चकित ।
२ लौकज्ञ । ३ भयभीत । ४ मशकित ।

चचो-देखो 'चचो' ।

चज-पु० १ छल, कपट । २ लक्षण । ३ बुद्धि ।

चट-क्रि० वि० [सं० चटल] तुरन्त, शीघ्र । -पु० १ गर्मी का
दाग । २ घाव, जलम । ३ छत पर कंकरीट जमने की
क्रिया । ४ पर्वतीय चौड़ी जिला, चट्टान । ५ किसी कड़ी
वस्तु के टूटने की आवाज । ६ देखो 'चट्ट' ।

चटक-स्त्री० १ गर्व, दर्प, प्रमंड़ । २ एक प्रकार की चिड़िया ।
३ तारियल की गिरी का टुकड़ा । ४ चालाकी ।
५ चटकीलापन, चमक-दमक । ६ स्फूर्ति, शीघ्रता ।

-वि० १ चंचल, चपल । २ नाजुक, नखरे युक्त ।

३ चटपटा, चरपरा, तोड़ण । ४ शोष । ५ फुर्तीला, तेज ।

चटकड़-देखो 'चटको' ।

चटकरणी-देखो 'चिटकरणी' ।

चटकणी-वि० १ चटकने वाला, टूटने वाला । २ चलने पर चट-
चट ध्वनि होने वाला । (बैल, भ्रशुभ) ।

चटकणी, (बो)-क्रि० १ चटकना, टूटना, तड़कना । २ चट-चट
ध्वनि होना । ३ विप्लवा जंतु का काटना, डंक मारना ।

चटकमटक-स्त्री० १ तड़क-भड़क । २ चटकीलापन । ३ नाज-
नखरा । ४ चुलबुलाहट ।

चटकाणी, (बो), चटकावणी, (बो)-क्रि० १ 'चट' करते हुए
तोड़ देना, तड़काना । २ चट-चट ध्वनि करना । ३ विप्लवा
जंतु का काटना, डंक, मारना ।

चटकाहट-स्त्री० १ चटकने या तड़कने की क्रिया या भाव ।
२ कलियों के विकसित होने का भाव ।

चटकियो-पु० वह बैल जिसके पैरों से चटचट आवाज होती हो ।

चटकी-स्त्री० १ छड़ी, बेंत । २ शीघ्रता, स्फूर्ति । ३ चट-चट
ध्वनि । ४ गाय बैल आदि की लांत ।

चटकीली-वि० (स्त्री० चटकीली) १ चटक-मटक से रहने वाला
तड़क-भड़क वाला । २ नाज-नखरा । ३ जल्दी चटकने
या टूटने वाला ।

चटकी-पु० १ बिच्छु द्वारा डंक मारने की क्रिया । २ तड़क-
भड़क । ३ नाज-नखरा । ४ प्रहार-चोट, मार । ५ दर्द,
कमक, टोस । ६ स्वर्ण साफ करने का मसाला । ७ दी
लकड़ियों को जोड़ने के लिए लगाया जाने वाला लोह का
टुकड़ा । ८ अंगुलियां चटकाने की ध्वनि । ९ चट-चट शब्द
या ध्वनि । १० टुकड़ा, खण्ड । ११ शीघ्रता, त्वरा ।
---मटक-पु० नाज, नखरा ।

चटक-देखो 'चटक' ।

चटकड़ी-पु० १ प्रहार, चोट, आघात । २ छड़ी प्रहार
की ध्वनि ।

चटकरणी, (बो)-देखो 'चटकरणी' (बो) ।

चटको-देखो 'चटको' ।

चटचट-स्त्री० [अनु०] १ चटकने, तड़कने या टूटने की
ध्वनि । २ चटपट ।

चट्टणी, (बो)-क्रि० १ जीभ से चाटना । २ चटचट शब्द
करना ।

चटणी-स्त्री० १ धनिया, पुदीना आदि मसालों को पीस कर
बनाया हुआ अवलेह । २ चाटने की वस्तु । ३ किमी
शोध का अवलेह ।

चटपट-स्त्री० शीघ्रता । -क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।

चटपटाणो, (बो)—क्रि० १ शीघ्रता करना, जल्दी मचाना ।
 २ भातुर होना । ३ घबराना ।
 चटपटी—स्त्री० १ शीघ्रता, उतावली, त्वरा । २ बेचनी ।
 ३ भातुरता । ४ घबराहट ।
 चटपटी—वि० (स्त्री० चटपटी) तेज मसालेदार, चरपरा ।
 चटल—वि० [सं० चटल] चंचल, चपल ।
 चटसाळ, (साळा)—स्त्री० पाठशाला, विद्यालय ।
 चटोत्तद—स्त्री० १ टक्कर, भिड़ंत । २ युद्ध । ३ गुल्मगुल्म ।
 चटाई—स्त्री० १ घास-तृण आदि को बुनकर बनाया हुआ बिछावन, आसन । २ आभूषण विशेष ।
 चटाक—क्रि० वि० चट से, शीघ्र, तुरंत ।
 चटाकी—पुं० चट की आवाज, चटकी ।
 चटाचट—क्रि० वि० १ फटाफट, शीघ्र, तुरंत । २ चटपटी ।
 चटाणो, (बो)—क्रि० १ चाटने के लिए प्रेरित करना, देना ।
 २ अवलेह आदि पदार्थ अंगुली पर लेकर किसी के मुँह में देना । ३ रिश्वत देना । ४ ताजायज ढंग से किसी को कुछ खिलाना या सहायता देना ।
 चटापड़, चटापट, (टी)—देखो 'चटपटी' ।
 चटावरण—पुं० चाटने योग्य पदार्थ ।
 चटावरणो, (बो)—देखो 'चटाणी' (बो) ।
 चटिणो—देखो 'चिटिणो' ।
 चटी—स्त्री० १ लड़ाई, मुठभेड़ । २ कुस्ती । ३ चिड़िया ।
 —बाळ—वि० लड़ने वाला, झगड़ालु ।
 चट्ट—पुं० [सं०] १ प्रिय वचन । २ चापलुसी भरे शब्द । ३ पेट ।
 ४ कनिष्ठा अंगुली । ५ देखो 'चट्ट' ।
 चट्टी—स्त्री० कनिष्ठा अंगुली ।
 चट्टी—देखो 'चट्ट' ।
 चटल—वि० धूर्त । —पुं० शीघ्रता का भाव ।
 चटोकड़ी, चटोरी—देखो 'चट्टी' । (स्त्री० चटोकड़ी, चटोरी)
 चट्ट—स्त्री० १ चोटी । २ विद्यार्थी । ३ देखो 'चट' ।
 —साळ='चट'।
 चट्टाण—स्त्री० प्रस्तरखण्ड, शिलाखण्ड ।
 चट्टी—स्त्री० १ पड़ावस्थल । २ मंजिल । ३ देखो 'चटी' ।
 ४ देखो 'चट्टी' ।
 चट्ट, चट्टी—वि० (स्त्री० चट्टी) १ स्वादिष्ट भोजन खाने का लोभी, माल मलीदा खाने वाला, स्वादू । २ रसलोलुप, लोभी । ३ चोटो, चोटी, शिखा ।
 चठठ—स्त्री० बोझा लदी गाड़ी से चलते समय होने वाला चटचट शब्द ।
 चठठणो (बो)—देखो 'चट्टणो' (बो) ।
 चठठाक (ख)—खो 'चठठ' ।
 चठमट्टी वि० कृपाण, कजूस ।

चट्टी—पुं० खुशी, उत्साह ।
 चडणी (बो)—देखो 'चड़णी' (बो) ।
 चडतव—पुं० समुद्र, सागर ।
 चडमी—वि० १ चढ़ने योग्य । २ उन्नत । ३ सवारी योग्य ।
 चडवा—स्त्री० वस्त्रों की बंधाई करने वाली जाति ।
 चडबो—पुं० इस जाति का व्यक्ति ।
 चडाचड—स्त्री० १ लड़ाई । २ आक्रमण, हमला । ३ चढ़ने उतरने की क्रिया ।
 चडाणो (बो)—देखो 'चड़ाणी' (बो) ।
 चडारो—देखो 'चड़ापो' ।
 चडावणी (बो)—देखो 'चड़ाणी' (बो) ।
 चडाबो—देखो 'चड़ापो' ।
 चड्ड—देखो 'चाड' ।
 चढ़ण—स्त्री० १ चढ़ने की क्रिया या भाव । २ उन्नति ।
 ३ विकास । —सितधारण—पुं० इन्द्र ।
 चढ़णी (बो)—क्रि० [सं० उच्चलन] १ नीचे से ऊपर या ऊंचाई पर जाना । ऊपर चढ़ना । २ ऊपर उठना । ३ बढ़ना, विकसित होना । ४ उन्नति करना । ५ आगे बढ़ना ।
 ६ सिकुड़ना, तंग होना । ७ उड़कर छा जाना ।
 ८ आवेष्टित होना, आवरण युक्त होना । ९ आक्रमण के लिए तैयार होना, लड़ाई के लिए तैयार होना । १० सवारी करना । ११ बाजार भावों का बढ़ना, तेजी आना ।
 १२ नदी का पानी बढ़ना, वृद्धि होना । १३ किसी की शरण लेना, आश्रय लेना । १४ प्रस्थान करना, रवाना होना । १५ बाघों में खिचाव दिया जाना स्वर से अधिक बढ़ना । १६ नैवेद्य आदि देव मूर्ति या मंदिर में अर्पित होना, भेंट होना, समर्पित किया जाना । १७ अंकित होना, लिखा जाना । १८ निश्चित तिथि या अवधि से अधिक समय होना । १९ देय होना, बाकी निकलना । २० ऋण आदि बढ़ना । २१ आवेश या जोश आना । २२ पकने के लिए आंच पर रखा जाना । २३ रोगन आदि का लेपन होना । २४ पसंद आना, अच्छा लगना । २५ सामूहिक प्रयाण करना । २६ नशे का प्रभाव होना । २७ लदना, मास लादा जाना ।
 चढ़ती—वि० (स्त्री० चढ़ती) १ अधिक । २ उन्नत, बढ़कर ।
 —क्रि० वि० वृद्धि या उन्नति की ओर ।
 चडमी—देखो 'चडमी' ।
 चडाई—स्त्री० १ चड़ाई, चढ़ने की क्रिया । २ भूमि या रास्ते की ऊंचाई । ३ आक्रमण या हमले का प्रयाण । ४ चढ़ावा ।
 ५ उन्नति ।
 चडाऊपरी—स्त्री० प्रतिस्पर्धी ।

चढ़ाक—वि० चढ़ने वाला, चढ़ने में दक्ष । सवारी करने में निपुण ।

चढ़ाचढ़ी—स्त्री० प्रतिस्पर्धा । प्रतियोगिता ।

चढ़ाणो (बो), चढ़ावणो (बो)—क्रि० १ नीचे से ऊपर जाने के लिये प्रेरित करना, ऊपर चढ़ाना । २ ऊपर उठाना । ३ बढ़ाना, विकसित करना । ४ उत्तत करना, तरक्की देना । ५ आगे बढ़ाना । ६ सिकोड़ना, समेटना, ऊपर करना । ७ उठाना । ८ आवेष्टित या आवरण युक्त करना । ९ आक्रमण के लिये तैयार करना, उद्यत करना । १० सवारी कराना । ११ भावों में तेजी लाना, बढ़ाना । १२ वृद्धि करना । १३ किसी की शरण में जाने के लिये प्रेरित करना । १४ रवाना करना । १५ बाधों को तनाव देकर स्वर युक्त करना । १६ नैवेद्य आदि भेंट करना, समर्पित करना । १७ अंकित करना, लिखना । १८ अवधि में अधिक समय होने देना । १९ देय या बाकी निकालना । २० ऋण बढ़ाना । २१ आवेश या जोश दिलाना । २२ पकने के लिये आंच पर रखना । २३ रोगन आदि का लेपन करना । २४ पसंद कराना, ध्यान में लाना । २५ प्रयाण कराना । २६ लदवाना, चढ़वाना । २७ पीना, पी जाना । २८ वधू के लिये जेवर भेजना । २९ धनुष की प्रत्यंचा कसना ।

चढ़ावो (बो)—पुं० देव मन्दिर में चढ़ाया जाने वाला नैवेद्य, फल-फल, द्रव्य आदि ।

चढ़ीरो—पुं० १ सवारी के लिये तैयार ऊंट या घोड़ा । २ चारजामा ।

चण चण्ड, चणक—स्त्री० १ शरीर में पड़ने वाली मोच, लचक । २ एक ऋषि का नाम । ३ देखो 'चणी' ।

चणकार—पुं० १ चने का खेत । २ चने की बोवाई के लिये संधार की गई भूमि । ३ ध्वनि विशेष ।

चणग—पुं० १ खिनगारी । २ अग्निकण । ३ देखो 'चणक' ।

चणक—स्त्री० १ रोमांचित होने का भाव । २ छन-छन की आवाज ।

चणकणी (बो)—क्रि० जोश या भय से रोमांचित होना ।

चणश—स्त्री० १ रोमांचित होने का भाव । २ छन-छन की आवाज । ३ तीर व गोलियों की बौछार की ध्वनि ।

चणलाट (टिथी, टी)—पुं० १ विनाश, विध्वंस । २ बरबादी । ३ ध्वनि विशेष । ४ भ्रष्टाटा ।

चणलाणो (बो)—क्रि० १ रोमांचित होना । २ भ्रष्टाटा आना । ३ चिन्चिनाना ।

चणणी (बो)—देखो 'चणणी (बो)' ।

चणार्ह—१ देखो 'चणारी' । २ चणार्ह ।

चणखार—पुं० चने के पीछे का सार ।

चणायकां—स्त्री० १ चाणक्य नीति के श्लोक । २ इन श्लोकों की पुस्तक ।

चणारी—स्त्री० १ एक प्रकार का काला जंतु । २ पैर के तलवे में होने वाला मोटा फफोला ।

चणो—पुं० [सं० चणक] १ रबी की फसल में होने वाला प्रसिद्ध द्विदल अन्न । २ इस अन्न का पीछा ।

चत—देखो 'चित' ।

चतुर्चाचीय—स्त्री० भादव शुक्ला चतुर्थी, गणेश चतुर्थी ।

चतमाठी—देखो 'चितमाठी' ।

चतरंग—स्त्री० १ चतुरंगिनी सेना । २ शतरंज । ३ चित्तौड़गढ़ ।

—वि० १ चतुर, निपुण, दक्ष । २ चालाक ।

चतरंगणी—देखो 'चतुरंगिनी' ।

चतर—देखो 'चतुर' । —भुज='चतुरभुज' ।

चतरणी (बो)—क्रि० १ चित्रकारी करना । २ चित्रण करना ।

चतराम—देखो 'चित्राम' ।

चतराई—देखो 'चतुराई' ।

चतारण—पुं० [सं० चतुरानन] ब्रह्मा ।

चतारो—देखो 'चित्तारो' ।

चतुरंग—पुं० [सं०] १ सेना के चार अंग, रथ, हाथी, घोड़े और पैदल । २ सेना, फौज ।

चतुरंगण (णि, णी)—देखो 'चतुरंगिनी' ।

चतुरंग पत (पति)—पुं० चतुरंगिनी सेना का स्वामी, सेनापति या राजा ।

चतुरंगिणी (नी), चतुरंगी—स्त्री० रथ, हाथी, घोड़े व पैदल चारों अंगों से पूर्ण सेना । —वि० १ दक्ष, निपुण । २ चार अंगों वाली ।

चतुरंत—वि० [सं० चतुर्थ] चौथा, चतुर्थ ।

चतुर—वि० [सं०] १ निपुण, दक्ष, पटु । २ तीक्ष्ण बुद्धि सम्पन्न । ३ फुर्तीला, तेज । ४ चलता पुर्जा, होशियार । ५ मनोहर, सुन्दर, प्रिय । ६ अनुकूल । ७ धूर्त, चालाक ।

—पुं० [सं० चत्वार] १ ब्रह्मा । २ चार की संख्या । ३ कवि । ४ भृंगार रस का संभोग—चतुर नायक । ५ कपट ।

चतुरक—पुं० चतुर व्यक्ति या नायक ।

चतुरगति—पुं० कच्छप, कछुआ ।

चतुरजातक—पुं० इलायची, दालचीनी, तेजपत्र व नागकेसर का मिश्रण ।

चतुरभुग—पुं० चार भुग ।

चतुरजोणि (जोणी)—पुं० [सं० चतुर्थोनि] प्राणियों की चार योनि, अंढज, जराभुज, स्वेदज, उद्भिज ।

चतुरथ—वि० [सं० चतुर्थ] चौथा ।

चतुरथी

(३७६)

चत्वारि

चतुरथी-स्त्री० [सं० चतुर्थी] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि । -वि० चौथी, चतुर्थ ।
 चतुरवत (वती)-पु० गेरावत हाथी ।
 चतुरवस-वि० [सं० चतुर्वस] दस व चार, चौदह ।
 -स्त्री० चौदह की संख्या, १४ ।
 चतुरदसी-स्त्री० [सं० चतुर्दशी] प्रत्येक मास के प्रत्येक पक्ष की चौदहवीं तिथि ।
 चतुरदष्ट-पु० [सं० चतुर्दष्ट] १ ईश्वर । २ स्वामि कार्तिकेय । ३ एक राक्षस का नाम ।
 चतुरदिक, (दिस)-स्त्री० [सं०] चारों दिशाएं । -क्रि० वि० चारों ओर ।
 चतुरधाम-पु० चारों धाम तीर्थ ।
 चतुरपणई-पु० चातुर्य, चतुराई ।
 चतुरपदी-पु० १ चौपाया जानवर । २ एक मात्रिक छंद विशेष ।
 चतुरबाह (बाहु)-पु० [सं० चतुरबाहु] चारमुजा वाला देव ।
 चतुरबूह-पु० [सं० चतुर्व्यूह] १ चार पदार्थों का योग । २ चार मनुष्यों का समूह । ३ विष्णु ।
 चतुरभुज-पु० [सं० चतुर्भुज] १ विष्णु आदि चार भुजा वाले देव । २ मंगल ग्रह । ३ सूर्य । ४ ब्रह्मा । ५ परमेश्वर । ६ दुर्गा, देवी । - बाह्य-पु० गरुड़ । हंस ।
 चतुरभुजा-स्त्री० [सं०] गायत्री आदि चारभुजा वाली देवियां ।
 चतुरभुजी-स्त्री० [सं०] १ एक वैष्णव सम्प्रदाय विशेष । २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी । ३ विष्णु । ४ दुर्गा, देवी । ५ एक प्रकार की तलवार ।
 चतुरमास-पु० [सं०] वर्षा ऋतु के चार मास ।
 चतुरमुख-पु० [सं०] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ अनिरुद्ध का एक नाम । ४ सगीत में एक ताल । -वि० चारमुख वाला ।
 चतुरमुगती-स्त्री० सायुज्य, मामीप्य, मारूप्य व मालीक्य चार प्रकार के मोक्ष ।
 चतुरवरग-पु० [सं० चतुर्वर्ग] धर्म, धर्म, काम और मोक्ष का समुच्चय ।
 चतुरवरण-पु० [सं० चतुर्वर्ण] १ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र चार वर्ण । २ अनिरुद्ध का एक नाम ।
 चतुरविद्या-स्त्री० चारों वेदों की विद्या ।
 चतुरविध-क्रि० वि० चार प्रकार से ।
 चतुरवेद-पु० १ चारों वेद । २ ईश्वर ।
 चतुरा-स्त्री० नृत्य की एक मुद्रा ।
 चतुराई-स्त्री० १ निपुणता, दक्षता, पटुता । २ पूर्वता, चालाकी ।
 चतुराणल-देखो 'चतुरानन' ।
 चतुरातमक-वि० कुशाग्र बुद्धि ।
 चतुरातमाविष-पु० अनिरुद्ध का एक नाम ।
 चतुरात्मा-पु० [सं०] ईश्वर । विष्णु ।

चतुरानन-पु० [सं०] ब्रह्मा ।
 चतुराश्रम-पु० [सं० चतुराश्रम] भनूष्ण जीवन की चार अवस्थाएं, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बाणप्रस्थ व संन्यास ।
 चतुरेस-पु० [सं० चतुरेण] विष्णु । -वि० दक्ष, प्रवीण, निपुण ।
 चतुसकळ-वि० चार मात्रा वाला ।
 चतुसपद-पु० [सं० चतुष्पदी] १ चार पैरों वाला प्राणी । २ चार पदों वाला एक छन्द । -वि० चार मात्राओं वाला ।
 चतुसपदी-स्त्री० १ प्रत्येक चरण में १४ मात्रा वाला एक छन्द । २ चार पद का एक गीत ।
 चतुस्कोण-वि० [सं० चतुष्कोण] चार कोणों वाला ।
 चतुष्टय-पु० [सं० चतुष्टय] १ चार वस्तुओं का समूह । २ चार की संख्या । ३ जन्म कृष्णली में केन्द्र लगन और लगन से सातवां तथा दसवां स्थान ।
 चतुस्पथरता-स्त्री० एक स्कन्द मातृका ।
 चतुस्पद-देखो 'चतुसपद' ।
 चतुस्पदा-देखो 'चतुसपदा' ।
 चतुस्पदी-देखो 'चतुसपदी' ।
 चतुष्पाणी-वि० [सं० चतुष्पाणि] चार हाथ वाला । -पु० विष्णु, ब्रह्मा आदि देव ।
 चित्ति-देखो 'चित' ।
 चित्र-१ देखो 'चित्रंग' । २ देखो 'चतुरंग' । ३ देखो 'चित्तीड़' ।
 चित्रगढ़-देखो 'चित्तीड़' ।
 चित्र-देखो 'चित' ।
 चित्रकोट, (कोठ, गढ़)-पु० चित्तीड़गढ़ ।
 चित्रधा-वि० चार प्रकार का ।
 चित्रबाहु, (बाहु)-पु० योद्धा, वीर ।
 चित्रभाण (न. नु)-देखो 'चित्रभाण' ।
 चित्रभुज (भुज, भूज)-देखो 'चतुरभुज' ।
 चित्रसाळ (साळा)-देखो 'चित्रमाळा' ।
 चित्रांम-देखो 'चित्रांम' ।
 चित्रांगु-देखो 'चतुरंग' ।
 चित्र-वि० १ चार । २ देखो 'चतुर' ।
 चत्वर-पु० [सं०] चतुतरा या मंडप ।
 चत्वरवासिनी-स्त्री० एक स्कन्द मातृका ।
 चत्वार-वि० [सं० चत्वर] चार । -पु० १ चतुतरा । २ चौराहा ।
 चदिर-पु० [सं०] १ चन्द्रमा । २ हाथी । ३ भांप, सर्प । ४ कपूर ।
 चनल-देखो 'चंदल' । -गो, गोह= 'चंदलगाह' ।
 चनलियी-पु० १ चन्दन । २ चन्दन जैसा रंग । -वि० चन्दन के रंग का ।
 चनरसा-देखो 'चंद्रमा' ।
 चनवाई, चनवायी-स्त्री० स्वर्ण मंडित हाथी दांत की चुड़ी ।
 चनाब-देखो 'चिनाब' ।

चनेयक-वि० थोड़ा, तनिक, किञ्चित् ।

चक्षुर-देखो 'चंदर' । ---गो, गोहू= 'चंदरणोह' ।

चप-क्रि० वि० १ तुरन्त, फौरन, चट । २ अकस्मात्, यकायक ।

चपक-पु० मेना का वाम भाग । -क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।

चपकणी (बो)-देखो 'चिपकणी' (बो) ।

चपकाणी (बो), चपकावणी (बो)-देखो 'चिपकाणी' (बो) ।

चपको-पु० रोग के स्थान पर लोहे की गर्म मलाका से दग्ध करने की क्रिया ।

चपड़-चपड़-स्त्री० १ चप-चप की ध्वनि । २ बकवास, हुज्जत ।

चपड़ास-स्त्री० १ चपरासी का बिल्ला । २ मालखंभ की एक कसरत ।

चपड़ासी (रासी)-पु० (स्त्री० चपड़ासण) १ राज्य का छोटा कर्मचारी । २ अनुचर, परिचायक ।

चपड़ी-स्त्री० १ माफ की हुई लाख जो मुहर लगाने के काम आती है । २ तख्ती, पटिया । ३ परत ।

चपड़ी-पु० १ शक्कर की चासनी की जमाई हुई पत्तरनुमा मिठाई । २ अनाज का छिलका, भूसा ।

चपट-१ देखो 'चपत' । २ देखो 'चपेट' ।

चपटणी (बो)-देखो 'चिपटणी' (बो) ।

चपटाणी (बो), चपटावणी (बो)-देखो 'चिपटाणी' (बो) ।

चपटी-१ देखो 'चिमटी' । २ देखो 'चपटी' । (स्त्री०)

चपटी-वि० (स्त्री० चपटी) १ सपाट, फेला हुआ, पथराया हुआ । २ जिसमें उभार न होने, दबा हुआ, चिपका हुआ ।

चपणी (बो)-१ देखो 'चपणी' (बो) । २ देखो 'चिपकणी' (बो) ।

चपन-स्त्री० [सं० चपट] १ थप्पड़ तमाचा । २ हथेली का प्रहार । ३ चोट, आघात । ४ हाति, नुकसान ।

चपवस्त-पु० सफेद पैर का घोड़ा विशेष ।

चपराको-पु० १ एक प्रकार का प्रहार । २ चुभन । ३ तीक्ष्ण स्वाद ।

चपल-वि० [सं० चपल] १ चंचल, अस्थिर । २ चूस्त, फुर्तीला । ३ कांपने या थरथराने वाला । ४ आतुर, व्यग्र ।

५ जन्मदाज । ६ चुलबुला, नटखट । ७ अस्थायी, क्षणिक ।

८ कायर । ९ नश्वर, निबल । १० अविवेकी । -पु०

१ कामदेव । २ पारा । ३ वेग । ४ मछली । ५ बिजली ।

६ चातक पक्षी । ७ मुग्ध द्रव्य । -क्रि० वि० शीघ्र, चन्दी ।

---चाव-पु० चंचलता ।

चपलता-स्त्री० १ चपल होने की अवस्था या गुण । २ चंचलता, स्फूर्ति । ३ चालाकी, धूर्तता । ४ कांपन, थरथराहट ।

५ कायरता ।

चपलमती-वि० १ कुशाग्र बुद्धि । २ अस्थिर चित्त ।

चपलवास-पु० गरुड़ ।

चपला-स्त्री० [सं० चपला] १ दुर्गा । २ लक्ष्मी । ३ बिजली

विद्युत् । ४ पुंश्चली स्त्री, कुलटा स्त्री । ५ जिह्वा, जीभ ।

६ पिप्पली वृक्ष । ७ मदिरा । ८ आर्या छंद का एक भेद ।

-वि० पोलाक ।

चपलाई (लात)-स्त्री० चपलता, चंचलता ।

चपलाहार-पु० हार विशेष ।

चपलु-देखो 'चपल' ।

चपली-पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ देखो 'चपल' ।

चपाचप-क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।

चपेट-स्त्री० १ तमाचा, थप्पड़ । २ वेग पूर्ण चलती हुई वस्तु की लपेट, धक्का, भौका, रगड़ । ३ मार करने की परिधि ।

चपेटणी (बो)-क्रि० १ तमाचा या थप्पड़ मारना, पीटना । २ वेग में लपेटना, भौका देना, आघात करना । ३ मार की परिधि में लेना । ४ दबाव में लेना ।

चपेटाणी (बो), चपेटावणी (बो)-क्रि० १ तमाचा या थप्पड़ लगवाना । २ वेग में लपेटाना, भौका दिराना, आघात कराना । ३ दबाव में लिराना ।

चप्पल-स्त्री० खुली ऐड़ी की पट्टीनुमा जूती ।

चबक-स्त्री० १ डर, शंका । २ चुभन । ३ पीड़ा, कसक ।

चबकणी (बो)-क्रि० १ चुभन होना, कसकना । २ भय खाना, शंका मानना ।

चबकी-पु० १ मुई आदि नोकदार वस्तु की चुभन । २ ऐसी वस्तु के आघात से होने वाला क्षत । ३ रह-रह कर उठने वाली पीड़ा ।

चबणी (बो)-१ देखो 'चावणी (बो)' । २ देखो 'चवणी (बो)' । ३ देखो 'चुभणी' (बो) ।

चबरक (को)-पु० १ विवाह में सह भोज की प्रणाली । २ देखो 'चबकी' ।

चबलियो-देखो 'चबोलियो' ।

चबाणी (बो), चबावणी (बो)-क्रि० १ दांतों से कुचलना, चबाना । २ काटना, खाना । ३ नाजायज ढंग से हजम कर जाना ।

चबीण (णी)-पु० १ चर्वना । २ चुरबन ।

चबूतरी (री)-पु० [सं० चतुरस्त, चत्वर] मकान के आगे या किसी खुले स्थान में, बैठने हेतु बनाया हुआ चौकोर व कुछ ऊँचा स्थान ।

चबेणी-देखो 'चबीणी' ।

चबोलियो-पु० छोटी डलिया ।

चबबलियो-पु० १ पानी से भरा छोटा गड्ढा । २ छोटी डलिया ।

चबबू-वि० बहुत चबाने वाला, चट्ट ।

चबकी-देखो 'चबकी' ।

चबड़-चमड़-स्त्री० १ किसी वस्तु को दांतों से चबाने की क्रिया । २ चबाने से उत्पन्न ध्वनि ।

चमक

(३८१)

चमरी

चमक (उ)-देखो 'चमक' ।

चमकी-स्त्री० १ तलवार । २ डुबकी । ३ देखो 'चमक' ।

चमकी-देखो 'चमक' ।

चमक-क्रि० वि० शोध, तुरंत, चटपट ।

चमक-पु० दिनाश, तट ।

चमका-देखो 'चामुंडा' ।

चमक-स्त्री० १ प्रकाश, ज्योति । २ कांति, दीप्ति, आभा ।
३ लज्जा, शर्म । ४ शंका, भ्रम । ५ कमर में पड़ने वाली लचक । ६ चौकने की क्रिया या भाव । ७ भय, डर, आशंका । ८ मिर्च, मसाले आदि रखने का खानेदार पात्र ।
—भारती-स्त्री० तोरणद्वार पर सासु द्वारा दूल्हे की, गल में दीपक रख कर की, जाने वाली भारती ।
—चादणी-स्त्री० रह-रह कर होने वाला प्रकाश । तड़क-भड़क से रहने वाली कुल्हा स्त्री । —चोट-स्त्री० अचानक की चोट ।

चमकचूड़ी-स्त्री० [सं० चमकृत] आभूषण विशेष ।

चमकणी (बो)-क्रि० १ प्रकाशित होना, ज्योतिर्मय होना ।
२ कांति युक्त या दीप्ति युक्त होना । ३ शर्म करना ।
४ भ्रमना, शंका करना । ५ लचकना । ६ चौकना । ७ भय खाना डरना । ८ चौकला होना, सावधान होना । ९ जागृत होना । १० कौशला, दमकना । ११ उभरना, प्रगट होना ।
१२ प्रसिद्ध या प्रभावशाली होना । १३ भड़कना ।

चमकवाय-पु० जंटों के होने वाला एक रोग ।

चमकाणी (बो), चमकावणी (बो)-क्रि० १ प्रकाशित करना, ज्योतिर्मय करना । २ आभा या कांति युक्त करना ।
३ लज्जित करना । ४ भ्रमना । ५ लचकाना । ६ चौकाना ।
७ भयभीत करना, डराना । ८ चौकला करना, सावधान करना ।
९ जागृत करना । १० उभारना, प्रगट करना ।
११ प्रसिद्ध करना । १२ भड़काना ।

चमकीली-वि० (स्त्री० चमकीली) १ चमकदार, ज्योतिरयुक्त, आभा या कांति युक्त । २ चौकने वाला ।

चमकी-देखो 'चमकी' ।

चमकणी (बो)-देखो 'चमकणी' (बो) ।

चमगादड़, चमगावुड़-स्त्री० [सं० चर्मचटका] १ अंधेरे, निर्जन स्थान में उलटा लटका रहने वाला, उड़ने वाला एक प्राणी जो मांसाहारी भी होता है । २ चमगादड़ के समान उड़ने वाला प्राणी जो मांसाहारी नहीं होता है ।

चमड़-पु० चमड़ा ।

चमड़पोस-पु० एक प्रकार का हुक्का ।

चमड़ी-स्त्री० त्वचा चर्म ।

चमड़ी-पु० १ जानवरों की खाल । २ चर्म, त्वचा ।

चमचम-स्त्री० १ खोए की बनी एक प्रकार की मिठाई ।
२ देखो 'चमाचम' ।

चमचमाट, चमचमाहट-स्त्री० १ चमक, तड़क-भड़क । २ ज्योति, प्रकाश ।

चमचमाणी (बो)-क्रि० १ चमकना, प्रकाशमान होना ।
२ चमकाना, आभा युक्त करना ।

चमचमी-वि० (स्त्री० चमचमी) अधिक मिर्च भगालों वाला, तीक्ष्ण स्वादिष्ट, नमकीन ।

चमचाटक-स्त्री० चमगादड़ ।

चमची-स्त्री० १ छोटा चम्मच । २ आचमनी । ३ चापलुमी करने वाली ।

चमचेड़-स्त्री० चमगादड़ ।

चमची-पु० [फा० चमचा] (स्त्री० चमची) १ चम्मच ।
२ चापलुम ।

चमचुई, चमजू-स्त्री० [सं० चर्म-युक्त] शरीर के बालों की जड़ों में उत्पन्न होने वाला एक छोटा कीड़ा ।

चमटकार-देखो 'चमत्कार' ।

चमठाणी (बो)-क्रि० कान ऐंठना, कान खींचना ।

चमठी-स्त्री० [सं० मुचुटो] चुटकी ।

चमट्टणी (बो)-क्रि० १ चुटकी में पकड़ना । २ चुटकी भरना ।

चमतकार-देखो 'चमत्कार' ।

चमतकारी-देखो 'चमत्कारी' ।

चमत्करण-पु० [सं०] चमत्कार में कुछ होने की क्रिया ।

चमत्कार-पु० [सं०] १ अद्भुत घटना या कार्य । २ करामात, जादू । ३ आश्चर्य, विस्मय । ४ उत्सव, तमाशा ।
५ काव्योत्सर्ग ।

चमत्कारिक (री)-वि० [सं०] १ चमत्कार, प्रकट करने वाला, विलक्षण कार्य करने वाला । २ करामाती, सिद्ध ।
३ विचित्र, विस्मयकारी ।

चमन-पु० [फा०] १ हरि क्यारी । २ उपवन, बगीचा, फुलवारी । ३ गुलजार ।

चमर-देखो 'चंवर' ।

चमरक (ख, खी)-स्त्री० चरखे का एक उपकरण ।

चमरबध (बध)-पु० चमरधारी व्यक्ति, राजा, सम्राट ।

चमरबाळ-वि० १ महान, शक्तिशाली । २ बौर, बहादुर ।
३ योद्धा । ४ महान, तेजस्वी ।

चमरसिखा-स्त्री० घोड़े की किलंगी ।

चमराळ (ळी)-पु० १ मुसलमान, यवन । २ शीड़ा ।
३ देखो 'चमरबंध' ।

चमरी-देखो 'चंवरी' ।

चलस-पु० १ एक ऋषि का नाम । २ नौ योगेश्वरों में से एक ।
३ चम्पव ।

चमसा-स्त्री० यज्ञ में आहुति देने का उपकरण, चम्पव, श्रवा ।

चमसाहूँ-पु० [सं०] प्रभाम क्षेत्र के पास का एक तीर्थ ।

चमाचम-स्त्री० चमचमाहट, चमक, प्रकाश, कांति तेज ।

चमार-पु० [सं० चर्मकार] (स्त्री० चमारी) चमड़े का कार्य करने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

चमाळ-देखो 'चमाळीस' ।

चमाळियो-पु० बड़े व भारी पत्थर उठाने वाला मजदूर ।

चमाळी-देखो 'चमाळीस' ।

चमाळीस-वि० [सं० चतुश्चत्वारिणत्] चालीस व चार, चवालीस । -स्त्री० चवालीस व चार की संख्या ४४ ।

चमाळीसी-स्त्री० चवालीस गांवों की जागीर ।

चमाळीसी, चमाळी-पु० ४४ का वर्ष ।

चमीर, चमीरळ-देखो 'चामीकर' ।

चमू (मू)-स्त्री० [सं० चम्] १ वह मेला जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ प्रश्वगीही तथा ३६४५ पैदल सिपाही हों । २ सेना, फौज । ३ चांग की सख्या ३६ ।

चमूय (पत, पांति)-पु० [सं०] मेला नायक, सेनापति ।

चमूय-देखो 'चमू' ।

चमेड़ी-स्त्री० चमगादड़ ।

चमेली-स्त्री० [सं० चम्पकवेलि] १ झाड़ीनुमा एक लता जिसमें सफेद व मुगंधित फूल लगने हैं । २ उक्त लता का पुष्प ।

चमोटियो-देखो 'चिरमोटियो' ।

चमोडो-पु० [सं० चर्मपुट] १ चायुक, कोड़ा । २ बंडी के नीचे लगने वाला चमड़ा । ३ नाई का उस्तरा साफ करने का चमड़ा । ४ सांन को घुमाने का चमड़े का फीता । ५ देखो 'चूटियो' ।

चम्पर, चम्परी-देखो 'चंवर' ।

चम्परबवाळ-देखो 'चंवरबवाळ' ।

चम्पाळीम-देखो 'चमाळीस' ।

चम्पाळीसी-देखो 'चमाळीसी' ।

चय-पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड । २ डेर । ३ टीला । ४ परकोटा । ५ दुर्गद्वार । ६ इमारत, भवन । ७ गड़ । ८ दिग्पाल, दिग्गज । ९ धैर्य, शान्ति । १० लकड़ी की टाल ।

चयन-पु० [सं०] १ चुनाव । २ संग्रह । ३ कमशः लगाने की क्रिया, चुनाई । ४ बीनाई ।

चयार (रि, री)-देखो 'चार' ।

चर-पु० [सं०] १ दूत । २ जामूम, भेदिया । ३ अनुचर, नाकर, मेवक । ४ खंजम पक्षी । ५ मंगल, भाग्य । ६ पैदल व्यक्ति ।

७ चोर । ८ रेत, धूलि, रज । ९ सूअर । १० हाथी का अनुचर । ११ चरने की क्रिया या भाव । १२ घास, चारा । १३ किसी चीज के फटने से उत्पन्न चर्र की आवाज । १४ विचरण । १५ जुआ । १६ मंगलवार । १७ ज्योतिष का देशांतर । १८ फलित ज्योतिष का एक योग । -वि० १ चलने वाला, चलायमान । २ जंगम । ३ कांपने वाला । ४ जीवघाती । ५ चरने वाला, खाने वाला । ६ अस्थिर ।

चरक-पु० [सं०] १ अनुचर, नाकर । २ दूत । ३ वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य । ४ इस आचार्य द्वारा रचित ग्रंथ । ५ रमता साधु । ६ पाण्ड । -सहिता-स्त्री० चरक ऋषि का ग्रंथ ।

चरकचूंडी-देखो 'चकचू घियो' ।

चरकटो-पु० हाथियों का चरवादार । -वि० नावायक, नीच ।

चरकणो (बो)-देखो 'निरकणो' (बो) ।

चरकाई-स्त्री० १ मिर्च का स्वाद, चरवापन, चरपराहट । २ तीक्ष्णता, तेजी ।

चरकीकौली-स्त्री० बलि के बकरे का मांस ।

चरकीन-स्त्री० [ग्र०] विष्टा, मल, पाखाना । -वि० हीन, अधम, निकृष्ट ।

चरकू-फरकू, चरकू-मरकू-पु० १ चरफरा या चटपटा, नमकीन पदार्थ । २ एक प्रकार की ध्वनि ।

चरकूडियो-देखो 'चकचू दियो' ।

चरकी-वि० (स्त्री० चरकी) १ मिर्च-मसालेदार, चरका । २ तेज, तीक्ष्ण । ३ नमकीन । ४ तेज स्वभाव का ।

चरकी-फरकी (मरकी)-देखो 'चरकू-फरकू' ।

चरक्क, चरक्ख, चरख-स्त्री० १ तोप खींचने की गाड़ी । २ देखो 'चरखी' ।

चरखणो (बो)-क्रि० १ गाड़ी का चलने समय चर्र-चर्र करना । २ आवाज या ध्वनि होना ।

चरखलियो, चरखली, चरखियो-देखो 'चरखी' ।

चरखी-स्त्री० १ तोप खींचने की गाड़ी । २ तोप । ३ छोटा पहिया, चकरी । ४ कुए पर लगी गिड़गिड़ी । ५ सूत लपेटने की चकरी । ६ छोटा चरखा । ७ कुम्हार की चाक । ८ कपाम की ओटनी । ९ गोल फिरने वाली घातिशबाजी । १० मस्त ऊंट के दांत बजने की क्रिया । ११ मुंज या रम्सी बनाने का यंत्र, उपकरण । १२ प्राचीन काल में मृत्युदण्ड देने का एक यंत्र । १३ पतंग की डोर लपेटने की गिरी ।

चरखी (हथी)-पु० १ हाथ से सूत या ऊन आदि कातने का यंत्र विशेष । २ कपाम में रुई पृथक् करने का औजार ।

३ पानी खींचने का रहस्य । ४ सूत की चरखी । ५ बड़ा पहिया । ६ भ्रंश का कार्य । ७ कुपती का एक दाव । ८ गन्ने का कोल्हू ।

चरङ्ग-स्त्री० एक प्रकार की ध्वनि जो बैलगाड़ी के चलने, नई जूती या किसी वस्त्र के फटने से उत्पन्न होती है ।
—वि० लाल ।

चरङ्ग (की)-पु० १ गर्म धातु के स्पर्श से होने वाला दाह । २ ऐसे स्पर्श से चमड़ी पर होने वाला दाग । ३ किसी बात पर होने वाला गुस्सा । ४ हानि, नुकसान ।

चरङ्गणी (बी)-क्रि० १ गर्म धातु से शरीर पर दाग लगाना, जलाना । २ पशु का पोखर में पानी पीना । ३ श्लोष करना ।

चरङ्गी-पु० एक छोटा पक्षी जो झुंड बनाकर चलता है ।

चरख-पु० [सं० चर्चन] १ लेपन, उबटन । २ अध्ययन, पुनरावृत्ति । [सं०] ३ गिरजाघर ।

चरकणी-स्त्री० अनामिका ।

चरकणी (बी)-क्रि० [सं० चर्चन] १ उबटन करना, लेपन करना । २ अध्ययन करना । ३ समझना । ४ चरचा करना । ५ पूजा, अर्चना करना । ६ लक्ष्य हीना ।

चरकर-स्त्री० तेज बोलने की क्रिया या भाव । २ देखो 'चराचर' ।

चरचराणी (बी)-क्रि० १ चर-चर करना, चरमराना । २ जलन होना, जलना । ३ पीड़ा या दर्द होना ।

चरचराहट-स्त्री० १ चर-चर ध्वनि । २ जलन । ३ दर्द ।

चरचरिका, चरचरी-स्त्री० [सं० चर्चरी] १ वसंत ऋतु का एक गीत । २ एक रागिनी । ३ होली का शोर । ४ ताल का मुख्य भेद । ५ आभोष, क्रीड़ा । ६ चीं-चीं की आवाज । ७ एक वर्ण वृत्त विशेष । ८ चापलूमी ।

चरचरी-वि० (स्त्री० चरचरी) १ स्वाद में चरका, तीक्ष्ण, चरफरा । २ तेज मिजाज । ३ सुन्दर, सलीमा ।

चरचा-स्त्री० [सं० चर्चा] १ वर्णन, बयान, जिक्र । २ वार्तालाप, बातचीत । ३ शास्त्रार्थ, वाद-विवाद । ४ बक-भक, प्रलाप । ५ कुबेर की नी निधियों में से एक । ६ पाठ, पुनरावृत्ति । ७ खोज, अनुसंधान । ८ लेपन ।

चरचाणी (बी), चरचावणी (बी)-क्रि० १ लेपन कराना । २ पूजा कराना । ३ अनुमान कराना । ४ अध्ययन कराना, समझाना । ५ लक्ष्य कराना । ६ वर्णन या जिक्र कराना ।

चरचारी-वि० १ चर्चा करने वाला । २ निंदक ।

चरचित-वि० [सं० चर्चित] १ जिसकी चर्चा की गई हो, वर्णित । २ पूजित । ३ लेपन किया हुआ ।

चरचणी (बी)-देखो 'चरचणी' (बी) ।

चरज-पु० एक पक्षी विशेष ।

चरजा-स्त्री० [सं० चरचा] देवी की स्तुति जो लय से गाई जाती है ।

चरट-पु० [सं०] खंजन पक्षी ।

चरण, चरण-पु० [सं० चरण] १ पैर, पांव । २ पैर का चिह्न । ३ किसी वस्तु या कार्य का चतुर्धा । ४ मूल, जड़ । ५ आवागमन । ६ चरने का कार्य । ७ भक्षण । ८ मृत पशु के आमाशय से निकलने वाला मल । ९ सहारा । १० स्तंभ । ११ श्लोक का एक पाद । १२ वेद की शाखा । १३ जाति नस्ल । १४ चाल-चलन । १५ व्यवहार, बर्ताव । —**पांठ-स्त्री०** ऐड़ी के ऊपर का टखना । —**गुप्त-पु०** एक प्रकार का चित्र काव्य । —**चिह्न-पु०** पैर के निशान । किसी बड़े व्यक्ति या महापुरुष का आगमन । पांव की रेखाएं । —**त्राण-पु०** जूती । —**दास-पु०** एक प्रसिद्ध महात्मा । सेवक, दास । —**दासी-स्त्री०** उक्त महात्मा द्वारा प्रचलित संप्रदाय का अनुयायी । जूती । सेविका । —**हूँ-पु०** गरुड़ पक्षी । मनुष्य । —**पातुका, पीठ-स्त्री०** खड़ाऊ । पत्थर पर बने चरण चिह्न । —**सेवा-स्त्री०** सेवा-शुश्रूषा, टहल-बंदगी । पांव दबाने की क्रिया ।

चरड-पु० चोर, लुटेरा, डाकू । —**राय-पु०** चोरों का राजा ।

चरणप-पु० [सं०] पेड़, वृक्ष ।

चरणजुघ-पु० [सं० चरणजुघ] मुर्गा ।

चरणजूही-पु० एक प्रकार का मायिक छन्द ।

चरणानुग-वि० अनुगामी । शरणागत ।

चरणान्त, (ति)-पु० [सं० चरणान्त] १ किसी देव मूर्ति या सहायता के चरण प्रक्षालन का जन, चरणोदक । २ पैरों का धोवन ।

चरणायका-स्त्री० चाणक्य नीति ।

चरणजुघ, (क)-देखो 'चरणजुघ' ।

चरणारुह-पु० [सं० चरणारुह] १ किसी वस्तु का आठवां भाग । २ किसी छंद या श्लोक का आठवां चरण ।

चरणारुह (विह)-पु० १ चरण कमल । २ कमल के समान सुन्दर पांव ।

चरणि-पु० १ मनुष्य, आदमी । २ देखो 'चरण' ।

चरणिपा-पु० १ शिकार किये पशु के पांव । २ देखो 'चुनियो' ।

चरणिपा-वि० १ चरने वाला । २ विचरण करने वाला । ३ राज-दरबार के सभासदों के पादप्राणों का चौकीदार ।

चरणी-स्त्री० १ चरने की क्रिया या भाव । २ चरने की वस्तु । ३ चरने वाली ।

चरणोई-स्त्री० १ घाम । २ चरने का स्थान या भूमि । ३ चरने का हंग ।

चरणोष्क-पुं [सं० चरण-उदक] चरणामृत ।
 चरणौ-पुं चुननदार पहनावा विशेष ।
 चरणौ (बौ)-क्रि० १ पशुओं का घास खाना, चारा चरना ।
 २ दिन भर खाते रहना । ३ खाना, भक्षण करना ।
 ४ विचरण करना, घूमना ।
 चरण्यौ-१ देखो 'चरणियो' । २ देखो 'चुनियो' ।
 चरत-देखो 'चरित्र' ।
 चरतणी (बौ)-क्रि० १ ठगना, छलना । २ निंदा करना ।
 चरताली-देखो 'चिरताली' । (स्त्री० चरताली)
 चरन-देखो 'चरण' ।
 चरनक्षत्र (नक्षत्र)-पुं [सं०] स्वाति, पुनर्वसु आदि नक्षत्र ।
 चरनाकुलक-पुं सोलह मात्रा का एक मात्रिक छंद विशेष ।
 चरनिसा-देखो 'निसाचर' ।
 चरपट-पुं १ चौरासी सिद्धों में से एक । २ एक मात्रिक छंद विशेष ।
 चरपराणी (बौ)-क्रि० मिरच आदि के स्पर्श से जलन होना ।
 २ घाव में जलन होना ।
 चरपराट, चरपराहट, चरफराट, चरफराहट-स्त्री० १ स्वाद की तीक्ष्णता । २ घाव की जलन । ३ ईर्ष्या, डाढ़ ।
 ४ वाचालता ।
 चरपरी-वि० (स्त्री० चरपरी) १ तेज मसालेदार, नमकीन ।
 २ चुस्त, फुर्तीला । ३ वाचाल ।
 चरवण-पुं [सं० चर्वण] १ चना, चबना । २ मुना हुआ या सिका हुआ खाद्य पदार्थ । ३ भोजनोपरान्त मुंह साफ करने के लिए खाये जाने वाले पान, सुपारी आदि पदार्थ ।
 ४ चबा कर खाई जाने वाली वस्तु ।
 चरबी-स्त्री० [फा०] १ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से एक । मेद, बसा ।
 चरवेचर-पुं १ जड़ व चेतन चगचर । २ संसार, मृष्टि ।
 चरघ-पुं [सं०] चर राशि । चर गृह ।
 चरघर-पुं एक प्रकार का खेल ।
 चरघवन-पुं चर नामक राशि ।
 चरम-पुं [सं०] १ अंत । २ पतन या विकास की अंतिम अवस्था । ३ सीमा । [सं० चर्म] ४ चमड़ी, चर्म, त्वचा ।
 ५ छान । ६ ढाल । -वि० १ अंतिम, आखिरी । २ हृदयों का । ३ सर्वोत्कृष्ट । -कार-पुं चमार, मोची ।
 -काळ-पुं अन्त समय । -कील-स्त्री० एक प्रकार का रोग । बवासीर । -चड़ी-स्त्री० चमगादड़ । चर्मचटी ।
 -तित्थयर-पुं महावीर स्वामी । (जैन) -दळ-पुं एक प्रकार का कुष्ठ रोग । -नग-पुं अस्ताचल पर्वत ।
 -फालिका-स्त्री० कुल्हाड़ी, फरसा ।

चरमणवती-स्त्री० [सं० चर्मण्यवती] चंबल नदी ।
 चरमराट, चरमराटो (हट)-स्त्री० १ चरमर की ध्वनि ।
 २ स्वाद की तीक्ष्णता । ३ घाव की जलन ।
 चरमवस्त्र-पुं कवच ।
 चरमीचोळ-वि० गुंघची के रंग का, ताल ।
 चरम्म-देखो 'चरम' ।
 चररासि-स्त्री० [सं० चरराशि] मेष, कर्क, तुला और मकर राशि ।
 चरचराहट-स्त्री० १ सन्नाटा । २ जलन । ३ चर-चर ध्वनि ।
 ४ कटु व तीक्ष्ण वाणी ।
 चरवण-देखो 'चरवण' ।
 चरवाई-देखो 'चराई' ।
 चरवाबार-पुं १ घोड़ों की देखभाल करने वाला, सईस ।
 २ चरवाहा ।
 चरवौ-पुं १ ताँवे, पीतल आदि का छोटा जल-पात्र ।
 २ शिकार किये पशु का ग्रामाशय साफ करने की क्रिया ।
 चरस-स्त्री० १ रीति, रिवाज, परंपरा, रूढ़ि । २ आनन्द, उत्साह, खुशी । ३ एक प्रकार का मादक पदार्थ, चढ़स ।
 ४ ग्राह्य । ५ देखो 'चढ़म' । -वि० उत्तम श्रेष्ठ । -क्रि० वि० परंपरा से ।
 चराई-स्त्री० १ मवेशी चराने का कार्य । २ इस कार्य का पारिश्रमिक ।
 चराक (की), चराग-देखो 'चिराग' ।
 चराचर-पुं [सं०] १ चर व अचर, जड़ व चेतन । २ संसार, सृष्टि, विश्व । ३ आकाश अन्तरिक्ष । -गुर, गुरु-पुं ब्रह्मा । ईश्वर, परमेश्वर ।
 चराणी (बौ)-क्रि० १ पशुओं को घास खिलाना, चारा चराना । २ खिलाना, खाने के लिये प्रेरित करना ।
 ३ बार-बार व जोर देकर खिलाना । ४ विचरण कराना, घुमाना ।
 चरावण गाय-पुं १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।
 चरावणो-स्त्री० १ चराने की क्रिया या भाव । २ चराने का ढंग । ३ चराई ।
 चरावणी (बौ)-देखो 'चराणी' (बौ) ।
 चरास-पुं [सं० चर+आस] सेवक, दास, चर ।
 चरिष चरिह, चरिउ, चरिनु, चरिष-देखो 'चरित्र' ।
 चरित (र), चरीत-देखो 'चरित्र' । -नायक='चरित्रनायक' ।
 -वान='चरित्रवान' ।
 चरितारथ-वि० [सं० चरितार्थ] १ सफल । २ पूर्ण, पूर्ण रूप में । ३ मनुष्य । ४ क्रिया रूप में उचित ।

५ वह जिसके अर्थ व अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो ।

कृतकृत्य । ६ जो ठीक पूरा या खरा उतरा हो ।

चरिताली-पुं० (स्त्री० चरिताली) १ चरित्र करने वाला, चरित्रवान । २ प्रज्ञान, चरित्र वाला । ३ चक्रित करने वाला । ४ पाखंडी, ढोंगी, धूर्त । ५ वीर ।

चरित-देखो 'चरित्र' ।

चरितपुरस (पुस्त)-पुं० चरित्रवान व्यक्ति ।

चरितपुसाय-पुं० दोष सहित चरित्र वाला साधु (जैन) ।

चरितबुद्ध-पुं० [सं० चारित्र-बुद्ध] चरित्र रूप में प्राप्त बोध ।

चरितबोहि-पुं० चरित्र रूप में धर्म प्राप्ति ।

चरितमोह (मोहण)-पुं० चरित्र का प्रतकाव ।

चरितसोय-पुं० [सं० चारित्र लोक] सामायिकादि पांच चारित्र रूप लोक (जैन) ।

चरित्र (घ)-पुं० [सं०] १ स्वभाव, आचरण, चाल-चलन । २ करनी । ३ व्यवहार । ४ शील, संयम, सदाचार । ५ नैतिकस्तर । ६ लीला, माया । ७ आदत, टेव । ८ करतव, कार्य । ९ कर्त्तव्य । १० हांग, पाखंड । ११ छल, कपट । १२ स्वांग । १३ अभिनय । १४ धूर्तता । १५ नखरा । १६ बहाना । १७ पालन, रक्षा । १८ अनुष्ठान । १९ इतिहास, वृत्तान्त । २० साहसिक कार्य । २१ नाटक का पात्र । २२ दीक्षा । —नायक-पुं० किसी नाटक, कथानक या काव्य का प्रमुख नायक । —बाल-वि० सदाचारी, नेक, कर्त्तव्यनिष्ठ ।

चरी-स्त्री० १ पीतल आदि धातु का छोटा जल-पात्र । २ मवेशियों के चरने हेतु छोड़ी गई जमीन । ३ चरित्र ।

चरिय, चरीय, चरीह, चरीतु चरितो-देखो 'चरित्र' ।

चर-पुं० [सं०] १ हवन के लिये पकाई हुई सामग्री । २ ऐसी सामग्री पकाने का बड़ा पात्र, बड़ी चरी । ३ कड़ेदार मोटा पात्र । —सुकाळ, सुगाळ-वि० दानो, उदार ।

चरुटियो-देखो 'चूटियो' ।

चरु-देखो 'चर' । —सुकाळ, सुगाळ= 'चरसुकाळ' ।

चरी-पुं० प्रबोध चरुड़ा ।

चर्या-स्त्री० क्रिया, आचरण ।

चल, चल-पुं० [सं० चल] १ शिव । २ विष्णु । ३ पारद, पारा । ४ शरीर । ५ सेना । ६ स्वभाव, प्रकृति । ७ चलने की क्रिया । ८ कंपकपी । ९ पवन । १० घबराहट विकलता । ११ सात प्रकार के चौपड़ियों में से छठा । १२ दोहे छन्द का १२वां भेद । —वि० १ अस्थिर, चंचल । २ चलायमान । ३ कपित, डोलता हुआ । ४ निर्बल । ५ नाशवान । ६ प्रयत्न ।

चलकणी (बो)-देखो 'चलकणी' (बो) ।

चलकरण-पुं० घोड़ा, प्रश्व ।

चलकाणी (बो), चलकाषणी (बो)-देखो 'चलकाणी (बो)' ।

चलकेतु-पुं० पश्चिमोद्भव एक पृच्छनतारा ।

चलगत (ति)-स्त्री० १ चाल चलन, आचरण । २ स्वभाव । ३ चरित्र ।

चलचल-वि० [सं० चलचित्र] अस्थिर चित्त, चंचल । विक्षिप्त ।

चलचल-वि० १ चलायमान । २ विचलित । ३ कंपायमान ।

४ देखो 'चलचल' ।

चलचलणी (बो)-क्रि० १ चलायमान होना । २ विचलित होना ।

३ कंपायमान होना ।

चलचल-वि० [सं० चलचल] चंचल, अस्थिर, चल ।

चलचित-वि० १ अस्थिर चित्त । २ चितानुरा ।

चलचु-पुं० चकोर । —वि० अस्थिर, चलायमान ।

चलचल-देखो 'चलचल' ।

चलण-पुं० [सं०] १ चलने का भाव । २ चाल, गति । ३ पैर, चरण । ४ रस्म रिवाज । ५ प्रयोग उपयोग । ६ हरित । ७ लहंगा, धाघरा । ८ ज्योतिष में वह गति जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं । —सार-वि० प्रचलित । चिर प्रचलित । बढ़िया लोह ।

चलणी, चलणी-स्त्री० १ घाटा, मेदा आदि छानने का उपकरण । २ प्रथा, परंपरा । ३ प्रचलन । प्रथा, रस्म ।

चलण-देखो 'चली' ।

चलणी (बो)-क्रि० १ बामी होना, सड़ना । २ विकृत होना । ३ छनना ।

चलणी (बो)-क्रि० १ गतिमान होना । २ एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, गमन या प्रस्थान करना । ३ हिलना-डुलना । ४ प्रारंभ होना, छिड़ना । ५ प्रवाहित होना, बहना । ६ प्रचलित होना । ७ काम में घाना, व्यवहार में घाना । ८ तीर, गोली आदि छूटना । ९ मरना, प्रवसान होना । १० कार्य निकलना, निभना । ११ प्रयुक्त होना, व्यवहृत होना । १२ परंपरा बनना । १३ आचरण करना । १४ वितरण या भेंट करना । १५ टिकना, अधिक काम देना ।

चलती-पुं० (स्त्री० चलती) १ चलने वाला । २ चुस्त, चंचल । ३ प्रचलित ।

चलचल (हल)-पुं० [सं० चलदल] पीपल का वृक्ष । —वि० १ चंचल । २ घधीर ।

चलपत (पत्र)-पुं० [सं० चलपत्र] पीपल का वृक्ष ।

चलचल-वि० १ घबराया हुआ । २ आतुर ।

चलचल-देखो 'चलचल' ।

चलवणी (बो)-देखो 'चलणी' (बो) ।

चलचल, (ल)-पुं० [सं० चलतल] १ रक्त, लून । २ देखो 'चलचल' ।

चलचलणी (बो)—क्रि० १ धराना, विचलित होना । २ सड़ना ।
 ३ विकृत होना । ४ किलबिलाना ।
 चलचलणी—वि० (स्त्री० चलचलणी) १ चित्तानुर, उदास । २ चंचल ।
 चलचलणी, चलचलणी—वि० १ जो विचलित हो गया हो,
 अस्थिर, डावांड़ोल । २ चलायमान । ३ ऊटपटांग ।
 ४ कंपायमान ।
 चलसी—देखो 'चौरासी' ।
 चलाए (न)—स्त्री० १ चलाने की क्रिया या भाव । २ रवानगी ।
 ३ रवानगी संबंधी पत्र ।
 चलाए—पु० पिप्पल का वृक्ष ।
 चला—स्त्री० [सं० चला] १ लक्ष्मी । २ भूमि, पृथ्वी । ३ नारी,
 स्त्री । ४ बिजली । ५ पिप्पली । ६ एक सुगन्ध द्रव्य
 विशेष ।
 चलाऊ—वि० १ चलने योग्य । २ टिकाऊ । ३ काम निकालने
 लायक । ४ उपयोग में लाने लायक ।
 चलाक—वि० १ चलने में दक्ष । २ देखो 'चालाक' ।
 चलाकी—देखो 'चालाकी' ।
 चलाचल—वि० १ चंचल, अस्थिर । २ चलायमान, गतिमान ।
 —पु० १ गति, चाल । २ चमचमाहट ।
 चलाचला—स्त्री० देवी, दुर्गा ।
 चलाचली—स्त्री० १ चलने की शीघ्रता । २ आवागमन ।
 ३ चलने की तैयारी । ४ तकरार, लड़ाई । ५ तनाव ।
 ६ प्रतिस्पर्धा ।
 चलाणी (बो)—क्रि० १ चलने के लिए प्रेरित करना, चलाना ।
 २ रवाना करना, भेजना । ३ गतिमान करना, चालू
 करना । ४ हिलाना, डुलाना । ५ आरंभ करना ।
 ६ प्रवाहित करना । ७ प्रचलित करना । ८ कार्य या
 व्यवहार में लाना । ९ तीर, गोली आदि छोड़ना ।
 १० फेंकना । ११ काम निकालना । १२ परंपरा बनाना ।
 १३ वितरित या प्रसारित कराना । १४ निर्वाह कराना ।
 १५ अधिक काम में लेना, टिकाऊ करना ।
 चलापल—स्त्री० चमक-दमक, तड़क-भड़क ।
 चलावकी—देखो 'चालाक' ।
 चलावणी (बो)—देखो 'चलाणी' (बो) ।
 चलावो—पु० १ चलाने की क्रिया या भाव । २ किसी कार्य
 विशेष को पूर्ण करने की प्रक्रिया । ३ मृतक की अर्थी
 आदि तैयार करने की क्रिया । ४ जोहर की तैयारी ।
 चसित—वि० [सं०] १ चला हुआ, प्रचलित । २ गतिमान,
 चलायमान । ३ चंचल, चलायमान । ४ हिला हुआ,
 आन्दोलित । —पु० नृत्य की एक मुद्रा । —ग्रह—पु० भोगा
 हुआ ग्रह । एक ग्रह ग्रह विशेष ।
 चलुप्रल—देखो 'चलवल' ।

चलू—पु० [सं० चलक] १ भोजनोपरान्त आचमन । २ एक हाथ
 की हथेली में पानी भरने की मुद्रा । अंजली । ३ एक हाथ
 में समाने लायक पानी की मात्रा । ४ भोजनोपरान्त हाथ
 प्रक्षालन की क्रिया ।
 चलू—वि० चालू, प्रचलित । —क्रि० वि० प्रारंभ, शुरू ।
 चलू (लौ)—वि० रक्त की तरह लाल । —पु० यवन, मुसलमान ।
 चलोप्रल, चलोप्रल—देखो 'चलवल' ।
 चलो—पु० मंस, गधे, घोड़े आदि का पेशाब ।
 चल्लणी—देखो 'चलणी' ।
 चल्लणी (बो)—देखो 'चलणी' (बो) ।
 चल्लो—देखो 'चिल्ली' ।
 चबंड—देखो 'चामुंडा' ।
 चब—वि० १ चार, चतुर्थ । २ चारों ओर का । ३ देखो 'चऊ' ।
 चबई—देखो 'चोड़े' । —घाई = 'चोड़ेघाई' ।
 चबड़ी—देखो 'चोड़ी' ।
 चबणी (बो)—क्रि० १ चूना, टपकना, रिसना । २ बूंद-बूंद कर
 गिरना । ३ कहना । ४ तर होना, लथपथ होना ।
 ५ भरना ।
 चबत्थ—१ देखो 'चोथ' । २ देखो 'चोथी' ।
 चबत्थी—वि० [सं० चतुर्थ] तीन के बाद का, चौथा ।
 चबथ—देखो 'चोथ' ।
 चबबंत—वि० प्रगट, प्रकाशित ।
 चबब, (ई)—देखो 'चबदै' ।
 चबबमों—वि० (स्त्री० चबदमी) तेरह के बाद वाला, चौदहवां ।
 चबबस—स्त्री० चतुर्थदशी की तिथि, चौदस ।
 चबबह, चबबा, चबबे, चबबै—वि० [सं० चतुर्दश] तेरह व एक,
 चौदह । —पु० दस व चार की संख्या, १४ ।
 चबबो—पु० चौदह का वर्ष ।
 चबबूस—देखो 'चबदस' ।
 चबबूह, चबबूह—देखो 'चबदह' ।
 चबबार—देखो 'चोघार' ।
 चबबंग—देखो 'चौरंग' ।
 चबबरण, चबबरण—पु० 'च' वर्ग, वर्ण ।
 चबरसि (सो)—देखो 'चौरासी' ।
 चबरी—देखो 'चंवरी' ।
 चबळी—देखो 'चंवळी' ।
 चबसठ (टठ, टिठ, ठ, ठि)—देखो 'चोसठ' ।
 चबहठ (टठ)—वि० कठोर, शक्त ।
 चबाणी—स्त्री० छत से टपकने वाला पानी ।
 चबाणी (बो)—१ देखो 'चबाणी' (बो) । २ देखो 'चवणी' (बो) ।
 चबुबही—वि० चौदहवां ।

चवू

(३८०)

चवू

चवू-देखो 'चऊ' ।

चवेली-देखो 'चमेली' ।

चव्य-स्त्री० पीपरामूल की डंडी ।

चसक-पु० [सं० चषक] १ शराब पीने का पात्र । २ द्रव पदार्थ पीने से उत्पन्न ध्वनि । ३ देवी का खप्पर । ४ जायका लेते हुए पीने की क्रिया या भाव । ५ शोक, आदत । ६ कसक, पीड़ा ।

चसकणी (बो)-क्रि० १ जायका लेते हुए पीना । २ शराब पीना । ३ चुस्की लेना । ४ कसकना, टसकना ।

चसकौ-पु० [सं० चषण] १ स्वाद । २ शोक, आदत । ३ दर्द, पीड़ा ।

चसरणी (बो)-क्रि० १ चमकना, दमकना । २ ज्योतिर्मय होना, प्रकाशित होना ।

चसम (मांण)-स्त्री० [फा० चश्म] १ आंख, नेत्र । २ दृष्टि, नजर । —बोध-वि० प्रत्यक्षदर्शी, आंखों से देखने वाला ।

चसमसारणी (बो)-क्रि० कसकना, दर्द करना ।

चसमौ (झ)-पु० [फा० चश्मा] १ झरना, झोत । २ ऐनक । —वि० स्नेहपूर्ण नेत्रों वाला ।

चसलक-देखो 'चसलकौ' ।

चसलकणी (बो)-क्रि० १ बोझ से लदी गाड़ी का आवाज करना । २ मस्ती में ऊंट का दांत किटकिटाना ।

चसलकौ-पु० ऊंट के दांत किटकिटाने की ध्वनि या क्रिया ।

चसावणी (बो)-क्रि० १ चमकाना, दमकाना । २ ज्योतिषुक्त करना, प्रकाशित करना ।

चसीड़णी (बो), चसेड़णी (बो), चसोड़णी (बो), चसोड़णी (बो) क्रि०-१ खूब चाव से पीना, पेट भर पीना । २ खाना भक्षण करना । ३ दांतों को भींच कर पीना । ४ बाटना ।

चस्की-देखो 'चसकौ' ।

चस्म-देखो 'चसम' । —बोध-चसमदीद ।

चस्मौ-देखो 'चसमौ' ।

चह-स्त्री० १ चिता । २ इच्छा, चाह । ३ गड़्हा, गर्त ।

चहक-स्त्री० पक्षियों की चहचाहट । कलरव ।

चहकणी (बो), चहकणी (बो), चहचहणी (बो), चहकाणी (बो)-क्रि० १ पक्षियों का चहचाहना । २ हर्ष पूर्ण ध्वनि करना । ३ जोश में कोलहल करना ।

चहचाहट, चहचह-स्त्री० १ पक्षियों का कलरव । २ ध्वनि, शोर । ३ मुंह से खींचकर पीने की क्रिया या भाव । ४ हर्ष-ध्वनि ।

चहटणी (बो)-क्रि० चिपकना, चिमटना ।

चहटाणी (बो), चहटावणी (बो)-क्रि० चिपकाना, चिमटाना ।

चहडुणी (बो)-देखो 'चड़णी' (बो) ।

चहणी (बो)-देखो 'चाहणी' (बो) ।

चहन-पु० [सं० चिह्न] १ लक्षण, चिह्न । २ संकेत । ३ ध्वजा, पताका ।

चहबची-पु० [फा० चाहबच्चा] १ छोटा जल कुण्ड, पोखर । २ हाथी का हौदा । ३ चारजामा । ४ गुप्त रूप से धन रखने का स्थान ।

चहर-पु० [सं० चिकुर] १ शिर के केश, बाल । २ कलंक । ३ निंदा । —वि० श्रेष्ठ, उत्तम । —बाजी-स्त्री० कलरव ।

चहरणी (बो)-क्रि० १ निंदा करना, आलोचना करना । कलरव करना ।

चहराणी (बो), चहरावणी (बो)-क्रि० १ निंदा कराना । २ कलरव करना ।

चहरी-पु० १ शकल, सूरत, मुखाकृति । २ आकृति ।

चहस-क्रि० वि० चारों ओर । —स्त्री० रौनक । —पहल-स्त्री० हलचल । रौनक । धूमधाम । बहुत से लोगों की उपस्थिति ।

चहलम-पु० [फा० चेहलुम] मृतक का जालीसवां दिन । (मुसलमान)

चहलावहल-स्त्री० बिजली की चमक ।

चहलावणी (बो)-क्रि० चमकना ।

चहवची-देखो 'चहवची' ।

चहि-स्त्री० चिता ।

चहिजं, चहिये (यं)-देखो 'चाहिजं' ।

चहिरो-देखो 'चहरी' ।

चही-१ देखो 'चहि' । २ देखो 'चहिये' ।

चहीजं-अव्य० चाहिये ।

चहीलौ-देखो 'चईली' ।

चहुं-वि० चार, चारों । —क्रि० वि० चारों ओर, सर्वत्र । —आण-पु० चौहान । —ऐवळा, ओर, गमां, गमे, गम्मा, घा, चक्कां, तरफ, धां, बळ, बळ, बळा-क्रि० वि० चारों ओर, सर्वत्र ।

चहुंमळ, चहुंळ, (बळ, बळा)-वि० चंचल, अस्थिर । —क्रि० वि० चारों ओर ।

चहुंवां-क्रि० वि० चारों ओर । —वि० चारों ।

चहुंबाण-देखो 'चौहान' ।

चहुंवे (ककां, बिस, बळ, बळ, बळां)-क्रि० वि० चारों ओर ।

चहुट, चहुटी-पु० १ बाजार । २ देखो 'चौवटी' ।

चहुर-पु० [सं० चिकुर] बाल, केश ।

चहुळ-देखो 'चहुंल' ।

चहुवां-क्रि० वि० चारों ओर ।

चहुवे (वे)-देखो 'चहुंवे' ।

चहुं-देखो 'चहुं' । —कूट, कोर, गमां, बकां, बळ, बळ = 'चहुंवळा' ।

बहोड़णी

(३८८)

बाबमुरज

बहोड़णी (बो)—क्रि० १ उखाड़ना । २ काटना । ३ मानना, चाहना । ४ देखो 'बसोड़णी' (बो) ।
 बहोतर (त्तर)—वि० मत्तर व दार । -पु० मत्तर व दार की संख्या, ७४ ।
 बहोतरी, बहोतरा—पु० बहोतर का वर्ष ।
 बां—अव्य० के ।
 बांक—पु० १ खलियान में अन्न की राशि पर चिह्न लगाने की क्रिया । २ चिह्न ।
 बांकणी—पु० पशुओं का पहिचान चिह्न ।
 बांकणी (बो)—क्रि० १ प्रांकना, चिह्नित करना । २ बोवाई के लिये खेत में अन्न बिखेरना । ३ पशुओं के दाग लगाना । ४ अन्न की राशि पर सीमा रेखा खींचना ।
 बांकाणी (बो), बांकाषणी (बो)—क्रि० १ अंकवाना, चिह्नित करना । २ बोवाई के लिये खेत में अन्न बिखरवाना । ३ पशुओं के दाग लगवाना । ४ सीमा रेखा खिचवाना ।
 बांख—स्त्री० हल की रेखा, सीता ।
 बांग—देखो 'छांग' ।
 बांगलाई—स्त्री० चंचलता, शैतानी, उद्दण्डता । नटखटपन ।
 बांगली—वि० (स्त्री० बांगली) इतराया हुआ । -पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।
 बांगल्यो—पु० मिट्टी के बर्तनों में तैयार किया हुआ अवैधानिक शराब ।
 बांच—देखो 'चोच' ।
 बांचड़—पु० १ परिपक्वावस्था में बाजरी की बाल । २ देखो 'चोंच' ।
 बांचड़ली, बांचड़ी, बांचली—स्त्री० १ बाजरी की बाल । २ देखो 'चोंच' ।
 बांचली—वि० चोंचवाला । (स्त्री० बांचली) -पु० १ पक्षी । २ देखो 'चांची' ।
 बांचल्य—पु० [सं०] चंचलता, चपलता, नटखटपन ।
 बांचबो—पु० ऊंट आदि पशुओं के शरीर पर लगा गोलाकार दाग ।
 बांचाळ, बांचाळी—वि० नोंचदार, चोंचवाला । (स्त्री० बांचाळी) —पु० १ पक्षी । २ गिद्ध ।
 बांचियो—पु० १ कृषा खोदने का उपकरण । २ पक्षी । ३ नीचला होठ दवा हुआ प्राणी । ४ ठेकली से पानी निकालने का कृषा । ५ देखो 'चोंचो' ।
 बांचू—देखो 'चोंच' ।
 बांची—पु० १ वह ऊंट जिसके दांत बाहर दिखाई देने हों । २ देखो 'चांचियो' ।
 बांठिय, बांटी—देखो 'छांटी' ।

बांटीली—पु० (स्त्री० बांटीली) १ मुफ्त कार्य करने वाला व्यक्ति, बेगारी । २ शीघ्रता से काम करने वाला ।
 बांटी (ठो)—पु० १ तमाचा, थप्पड़ । २ देखो 'चौटो' ।
 बांढ—देखो 'चंड' ।
 बांढम—पु० प्राभूषण, जेवर ।
 बांढाळ—देखो 'चंडाल' ।
 बांण—स्त्री० एक देवी का नाम ।
 बांणक (क्य)—पु० [सं० चाणक्य] १ चन्द्रगुप्त मौर्य का महा-मात्य, कीटिल्य, विष्णुगुप्त । २ चिंता ।
 बांणचक (क्य)—क्रि० वि० अचानक, सहसा ।
 बांणूर, (गूर)—पु० [सं० चाणूर] कंस का एक मल्ल जो कृष्ण द्वारा मारा गया ।
 बांतरणी (बो)—क्रि० पीछे हटना ।
 बांतरा—पु० चबूतरा ।
 बांव, बांवड़ली (ल्यो), बांवड़ी—पु० [सं० चन्द्र] १ चन्द्रमा, राशि । २ एक घर्षचन्द्राकार आभूषण । ३ ढाल के ऊपर की फुलड़ी । ४ चांदमारी का लक्ष्य चिह्न । ५ घोड़े के शिर पर होने वाली भंवरी । ६ भालू की गर्दन के नीचे की श्वेत-केश-राशि । ७ मोर पंख की चंद्रिका । ८ चन्द्राकार कोई आकृति । ९ गंजापन, टाट ।
 बांवरियो—पु० १ चन्द्रमा का प्रकाश, ज्योति । २ प्रतिबिम्ब ।
 बांवरणी—स्त्री० १ चन्द्रमा का प्रकाश, चांदनी । २ प्रकाश, ज्योति, ज्योत्स्ना । ३ पर्दानशीन स्त्रियों के पर्दा करने का वस्त्र । ४ बिछाने की सफेद चदर । ५ चमेली की तरह सफेद फूलों वाला वृक्ष । ६ पशुओं का एक रोग । ७ श्वेत नेत्रों वाली भैंस । ८ शिर पर सफेद टीके वाली भैंस । ९ रथ या गाड़ी पर तानने का कपड़ा । १० मकान के ऊपर का खुला स्थान ।
 बांवरू (णी)—देखो 'बांवरणी' । -पु०= 'बांवरणीपख' ।
 बांवरारी—पु० १ चांद व तारों की छाप वाला वस्त्र । २ एक आभूषण विशेष ।
 बांवराला—स्त्री० कानों का चन्द्राकार दाग ।
 बांवरारी—स्त्री० १ बन्दूक आदि चलाने का अभ्यास । २ निशान, चिह्न ।
 बांवरारण (ईण, यण)—देखो 'चांद्रायण' ।
 बांवरणी—देखो 'बांवरणी' ।
 बांवर (उ)—पु० चन्द्रमा, चांद ।
 बांवरसलाम, बांवरसलामी—पु० १ अमावस्या के बाद चन्द्रोदय के समय प्रजा से लिया जाने वाला एक प्राचीन कर । २ इस अवसर पर छोड़ी जाने वाली तोप ।
 बांवरज—पु० स्त्रियों के सिर का एक आभूषण ।

चाँदी-स्त्री० १ आभूषण आदि बनाने का एक श्वेत धातु, रजत, रूप्य । २ मांस तक पहुँचा घाव । ३ एक प्रकार की लाल मिट्टी । ४ शरीर पर घाव करते हुए किया जाने वाला सत्यग्रह ।

चाँदी-स्त्री० मेवाड़ के राणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय प्रचलित एक मिकका ।

चाँदी (चाँची)-पु० [सं०चंद्र] १ चंद्रमा । २ दूर दर्शक यंत्र लगाने का लक्ष्य-स्थान । ३ भूमि के नाप का स्थान विशेष । ४ कच्चे छाजन की दीवार का उठा हुआ भाग । ५ रेखा गणित का उपकरण । —रांणी-पु० एक लोक गीत ।

चाँद-पु० [सं०] १ चंद्रमास । २ शुक्ल पक्ष । ३ चान्दायण व्रत । ४ चन्द्रकांत मणि । —वि० १ चंद्रमा संबंधी । २ देखो 'चाँद' । —मसायण-पु०— बुध ग्रह । —माण-पु० चन्द्रमा की गति के अनुसार निर्धारित मसय । —मास-पु० वर्तमान में प्रचलित मास, महीना । —वरती व्रतिक-पु० राजा । —वि० चान्दायण व्रत करने वाला ।

चाँदायण-पु० [सं०] १ चन्द्रकला की स्थिति के अनुसार घटत-बढ़त आहार पर मास भर किया जाने वाला एक कठिन व्रत । २ एक मासिक छन्द विशेष ।

चाँदिली-देखो 'चाँदली' ।

चाँदिल-देखो 'चाँदली' ।

चाँदिलखट-स्त्री० १ भावव मास की शुक्ल पक्ष की पष्ठी । २ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की पष्ठी ।

चाँदिलियो-देखो 'चाँदली' ।

चाँदली-देखो 'चाँदली' ।

चाँदली-पु० १ प्रकाश, उजाला । २ खुशहाली का प्रतीक । —पख-पु० शुक्ल पक्ष ।

चाँदी-स्त्री० १ गहनों पर खुदाई करने का उपकरण विशेष । २ देखो 'चाँदी' ।

चाँप (उ)-स्त्री० १ चंपा का वृक्ष । २ चंपी ।

चाँपणी-स्त्री० १ चाँपने की क्रिया या भाव । २ सेवा, टहल । ३ डर, भय ।

चाँपणी (बी)-क्रि० १ पाँव धादि दबाना, चाँपना । २ सेवा करना, बंदगी करना । ३ अधिकार या कब्जे में करना । ४ कुचलना । ५ भड़काने वाली बात करना । ६ डराना, भयभीत करना या होना । ७ क्रोध करना । ८ जागृत होना, चेतन होना । ९ गिरना । १० लज्जित होना । ११ दाबना, भींचना । १२ भीघ्रता करना ।

चाँपर-वि० १ हड़, पक्का । २ नैयार, सन्नद्ध ।

चाँपली-पु० छोटे होठों वाला ऊँट जिसके दाँत दिखाई देने हों ।

चाँपाधिप-पु० दानवीर राजा का कर्ण ।

चाँपेयक-पु० चंपावृक्ष ।

चाँपी-पु० १ देववृक्ष, चंपा । २ गायों का समूह । —कूल-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

चाँब-१ हल की गहरी व मोटी रेखा, सीता । २ देखो 'चाँम' ।

चाँबड़ (उ, डी)-देखो 'चाँम' ।

चाँबर-पु० एक प्रकार का घास ।

चाँबळ-देखो 'चंबळ' ।

चाँबळी (रं, रास, राह)-स्त्री० चर्म पटिका, चमड़े की रस्सी ।

चाँबोचाँब-पु० पूरा खेत । —वि० सम्पूर्ण, पूर्ण । (खेत) ।

चाँबी-पु० [सं० चर्म] १ चर्म, चमड़ी । २ खाल ।

चाँमंड-देखो 'चामुंडा' ।

चाँमंघर-पु० [सं० चर्मधारिन्] शिव, महादेव ।

चाँम-स्त्री० [सं० चर्म] १ चमड़ी, त्वचा, चर्म । २ खाल । ३ देखो 'चाँब' । —कस, घस-पु० जमीन पर छितरने वाला क्षुप ।

चाँमडियाळ-पु० यवन, मुसलमान ।

चाँमड़ी (डी)-देखो 'चाँम' ।

चाँमचोर-पु० व्यभिचारी व्यक्ति ।

चाँमचोरी-स्त्री० व्यभिचार, दुराचार ।

चाँमटो (ठी)-स्त्री० [सं० चर्म+यष्टि] चाबुक ।

चाँमणी-स्त्री० घ्रात्र, नेत्र ।

चाँमर (रि)-पु० १ चंवर । २ पूँछ । ३ एक वर्णिक छंद विशेष । —घाळ, घाळ-पु० यवन, मुसलमान ।

चाँमरहारी-स्त्री० चंवर धुलाने आला ।

चाँमरियो-पु० चमड़े का कार्य करने वाला, चर्मकार ।

चाँमरी-पु० [सं० चामरिन्] घोड़ा, घोष । —घाळ = 'चामरिघाळ' ।

चाँमळ-देखो 'चंबळ' ।

चाँमस-पु० [फा० चश्म] १ नेत्र । २ चश्मा, ऐनक ।

चाँमासी-देखो 'चोमासी' ।

चाँमिकर-देखो 'चामोकर' ।

चाँमी-स्त्री० लाल मिट्टी ।

चाँमीकर, चाँमीर-पु० [सं० चामीकर] १ स्वर्ण, सोना । २ धतूरा । —वि०—१ उज्ज्वल, उदार । २ सुंदर, मनोहर ।

चाँमुंड, चाँमुंडा-स्त्री० शुभ-निशुभ तथा चंड-मुंड नामक दैत्यों की मारने वाली देवी । २ पार्वती, गिरिजा ।

३ चामुंड योगिनियों में से एक । —नंदन-पु० मंदार ।

चाँमीवर-पु० चमड़े का बड़ा पैला ।

चांय-पु० शिर व दाढ़ी-मूछ के बाल उड़ने का एक रोग ।
 चांपली-वि० (स्त्री० चांपली) उक्त रोग से पीड़ित ।
 चांवटी-देखो 'चौवटी' ।
 चावळ-वि० १ उज्ज्वल, श्वेत । २ देखो 'चावल' ।
 ३ देखो 'चंबल' ।
 चा-स्त्री० १ कार्य । २ कन्या । ३ द्रौपदी । ४ अग्नि ।
 ५ कन्नोजिया शाह्या । ६ चाह । ७ चाय । -अव्य० का ।
 चाधली (बो), चा' ली (बो)-देखो 'चाहणी (बो)' ।
 चाधरी-पु० चौपाया पशु ।
 चाह-स्त्री० १ चाह, तमन्ना । २ लगन । ३ प्रकार, तरह ।
 चाहजे (जं), चाईजं-अव्य० चाहिये, आवश्यक है ।
 चाउ-पु० दान, त्याग ।
 चाउर (रि)-१ देखो 'चावर' । २ देखो 'चत्वर' ।
 चाउळ-देखो 'चावळ' ।
 चाऊ-वि० १ शुभचिंतक । २ चाहने वाला, प्रेमी । ३ भोजन, भट्ट । ४ चटपटा व तर पदार्थ खाने का शौकीन ।
 ५ रिश्वत खोर ।
 चाक, (चाकड़ली)-स्त्री० [सं० चाक] १ मिट्टी के बर्तन बनाने का मोटा पत्थर, चक्र, चक्कर । २ चक्र । ३ गिरी, चकरी ।
 ४ चक्की । ५ चाकू आदि पर धार देने की शान ।
 ६ खड़िया मिट्टी । ७ इस मिट्टी की कलम । ८ स्त्री के सिर की चोटी में धारण करने का आभूषण । ९ वात चक्र बवंडर । १० सेना, फौज । -वि० १ तैयार, सन्नद्ध ।
 २ स्वस्थ, तंदुरुस्त । ३ पूर्ण रूप में तैयार, सुसज्जित ।
 ४ तृप्त, संतुष्ट, छका हुआ । —बांगर-पु० सेवक, दास आदि ।
 चाकरणी (बो)-देखो 'चाखणी (बो)' ।
 चाकर-पु० [फा०] (स्त्री० चाकरणी) सेवक, दास, नौकर ।
 चाकरी-स्त्री० [फा०] १ नौकरी । २ सेवा, टहल । ३ दरबार की सेवा में रहने वाले आगीरदारों के छोड़े व सवार ।
 चाकलियौ-१ देखो 'चक्की' । २ देखो 'चक्की' । ३ देखो 'चाकली' ।
 चाकली-स्त्री० १ घोड़ों का एक रोग विशेष । २ देखो 'चक्की' ।
 चाकली-पु० १ कुए पर लगा रहने वाला काष्ठ का मोल चक्र ।
 २ चक्की का पाट । ३ छोटा बिछौना । ४ देखो 'चकली' ।
 चाकवी-देखो 'चक्की' ।
 चाकाबंध-पु० १ वीर पुरुष । २ योद्धा ।
 चाकी-देखो 'चक्की' ।
 चाकू-पु० [तु०] सब्जी आदि काटने का उपकरण । —चुगी-
 पु० एक प्रकार का अस्त्र ।
 चाकोर-देखो 'चकोर' ।
 चाकी-पु० १ रहुट का मूल चक्र । २ देखो 'चक्र' ।

चाख-स्त्री० १ व्यवसन, दुर्व्यसन । [सं० चक्षु] २ दृष्टिकोण ।
 ३ दृष्टि, नजर । ४ देखो 'चाक' ।
 चाखड़ (झा, झी)-स्त्री० १ चक्की के ऊपरी पाट के बीच में लगी काष्ठ की मुष्ठिका । २ टूटी हड्डी को जोड़ने के लिये बांधी जाने वाली बांस की खपची । ३ खड़ाऊ । ४ भवेशियों के मुंह में हाथ डालते समय सुरक्षार्थ लगाया जाने वाला उपकरण । ५ मय दंड के नीचे रहने वाला उपकरण ।
 ६ सेना ।
 चाखणी (बो)-क्रि० [सं० चष] १ चखना, चख कर देखना ।
 २ स्वाद लेना, आस्वादन करना । ३ अनुभव करना ।
 ४ भुगतना ।
 चाखाळ-पु० रक्त, खून ।
 चाणी-स्त्री० नकल, प्रतिकृति ।
 चाड़-वि० १ चुगलखोर । २ निंदक ।
 चाड़ी-स्त्री० १ चुगली, निंदा, आलोचना । २ शिकायत ।
 चाखपुट-स्त्री० ताल का एक भेद ।
 चाखर(रि, री)-पु० [सं० चत्वर, चर्चरी] १ मस्तक, सिर ।
 २ ललाट भाल । ३ भाग्य । ४ होली संबंधी लोक गीत ।
 ५ उपद्रव । ६ शोरगुल । ७ युद्धस्थल, रणभूमि । ८ मैदान ।
 ९ नगाड़ा । १० सात मात्राओं की ताल । ११ योग की एक मुद्रा । १२ चर्चरी नृत्य विशेष ।
 चाचरे (रं)-क्रि० वि० १ ऊपर से, ऊपर, पर । २ अत्यन्त दूर से । ३ ललाट पर ।
 चाचरी-पु० १ मस्तक । २ भाग्य । ३ योनि, भग । ४ देखो 'चाचर' ।
 चाचरी-वि० चाचा के परिवार का ।
 चाची-पु० पिता का छोटा भाई, काका ।
 चाट-स्त्री० १ तेज मसालेदार व दही चटनी मिला स्वादिष्ट पदार्थ । २ स्वादिष्ट पदार्थ खाने की आदत, चसका ।
 ३ प्रबल इच्छा, कामना । ४ लत, टेव ।
 चाटकाणी (बो), चाटकावणी (बो)-क्रि० १ तेज भगाना ।
 २ चाबुक मारना, फटकारना ।
 चाटकौ-पु० (स्त्री० चाटकी) १ शोषण द्वारा घनत्व किया हुआ पदार्थ । २ चाबुक आदि का प्रहार । -वि० १ रस लोलुप ।
 २ चालाक, धूर्त ।
 चाटण-स्त्री० १ चाटने की क्रिया या भाव । २ चाट कर खाने योग्य पदार्थ । ३ स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ -वि० चाट खाने का शौकीन ।
 चाटणी (बो)-क्रि० १ जीभ या अंगुली से रगड़कर खाना ।
 २ चट कर जाना, साफ कर जाना । ३ बार-बार जीभ फेरना, चाटना ।

चाटाळ-वि० १ रसलोलुप । २ रिश्वतखोर । ३ चाटने वाला ।

४ गिजा खाकर दूध देने वाला ।

चाट्ट, (कार)-वि० चापलूस, लुशामदी ।

चाट्टकारी-स्त्री० लुशामद, चापलूसी ।

चाट्ट-पु०-काष्ठ का बड़ा चम्मच । -वि० १ लुशामदी, चापलूस । २ रसलोलुप । ३ चाटने वाला । ४ चाट खाने वाला ।

चाटो (चा' टौ)-पु० १ चाटकर खाया जाने वाला पदार्थ । २ स्वादिष्ट वस्तु । ३ नाजायज ढंग से कुछ खिलाने की क्रिया या भाव । ४ दूध देने वाले पशु को खिलाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ । ५ दाग, घब्बा ।

चाठ-१ देखो 'चाट' । २ देखो 'छाट' ।

चाठी-पु० १ घब्बा, दाग । २ निशान, चिह्न । ३ दूध देने वाले पशु को खिलाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ ।

चाड-स्त्री० १ रक्षार्थ बुलाने की आवाज, पुकार । २ त्राहि-त्राहि का आर्तनाद । ३ रक्षा, सुरक्षा । ४ सहायता, मदद । ५ वमन, कं । ६ उन्नति, बढ़ोतरी । ७ युद्ध, लड़ाई । ८ घोड़े का नयूता । ९ चाह, इच्छा । १० ऊंचाई, चढ़ाई । ११ अभिप्राय, प्रयोजन । १२ घर का भेद । १३ कुएं से पानी खींचने के लिये खड़े होने का स्थान । १४ विपत्ति, बाधा । -वि० १ दुर्जन, कपटी (जैन) । २ चुगलखोर । ३ रक्षक ।

चाडणी (बी)-क्रि० [सं० चडि] १ सत्ता के विरुद्ध विद्रोह करना, बगावत करना । २ कोप करना । ३ देखो 'चढ़ाणी (बी)' ।

चाडव-पु० [सं० चदियावने] कवि, काव्यकार ।

चाडाउ-स्त्री० संकट के समय अपने इष्ट से की जानी वाली प्रार्थना ।

चाडापुरी-स्त्री० अप्सरा, परी ।

चाडूड-वि० चुगली करने वाला, निंदा करने वाला ।

चाडो-पु० १ बुद्धि या विचार शक्ति का अंश । २ दही मथने का पात्र । ३ छोटी मटकी ।

चाड़-स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा । २ देखो 'चाड' ।

चाड़णी (बी)-देखो 'चढ़ाणी' (बी) ।

चातक (ग)-पु० [सं०] (स्त्री० चातकी) पपीहा नामक पक्षी ।

—आनंदन-पु० वर्षा ऋतु । बादल ।

चातरंग, चातर, चातरक-देखी 'चतुर' ।

चातळ-पु० बड़ा कटुवा ।

चातो-स्त्री० फोड़े, फुंसी पर लगाने की मरहम-पट्टी । -वि० १ अनावश्यक रूप से चिपकने वाला । २ जबरदस्ती साथ होने वाला ।

चातक-देखो 'चातक' ।

चातरंग-देखो 'चतुरंग' ।

चातर-स्त्री० १ गणिका, वेश्या । २ बुद्धि । ३ देखो 'चतुर' ।

चातरई-देखो 'चतुराई' ।

चातरज-पु० [सं० चातुर्य] छल, कपट ।

चातरजात-पु० [सं० चातुर्जात] १ नाग केसर । २ इलायची । ३ तेज पात आदि का समूह ।

चातरदस-वि० [सं० चतुर्दश] १ चौदह । २ चतुर्दशी को उत्पन्न होने वाला । -पु० राक्षस ।

चातराई, चातुरी, चातरघ-स्त्री० [सं० चातुर्य] १ चतुराई । निपुणता, दक्षता । २ बुद्धिमानी ।

चातरिम-देखो 'चतुराई' ।

चात्रंग (गि, गी), चात्रक (क्क, ग, गग)-१ देखो 'चातक' । २ देखो 'चतुर' । ३ देखो 'चतुरंग' ।

चात्रण-पु० शत्रुदल का संहार ।

चात्रणी (बी)-क्रि० १ शत्रुओं का संहार करना । २ मारना । ३ विध्वंस करना ।

चात्रिग, चात्रिग-१ देखो 'चतुर' । २ देखो 'चातक' ।

चावर-स्त्री० [फा०] १ बिछाने या ओढ़ने का वस्त्र, चद्दर । २ किसी घातु की परत, पत्तर । ३ कंधे पर रखने का छोटा वस्त्र । ४ साधुओं का वस्त्र । ५ देव मूर्ति पर चढ़ाई जाने वाली पुष्प राशि । ६ बांध या जलाशय के ऊपर से बहने वाली पानी की परत । ७ जल की चौड़ी धारा । ८ शामियाना, तंबू । ९ साधुओं की चद्दर के प्रतीक रूप में दो जाने वाली घन राशि ।

चावरी-पु० बिछाने, ओढ़ने या पर्दा लगाने का बड़ा वस्त्र ।

चाप-पु० [सं०] १ धनुष । २ इन्द्र धनुष । ३ धनुष राशि । ४ अर्धवृत्त क्षेत्र, वृत्तांश । ५ पैर की आहट । ६ आहट । ७ प्रस्तर पट्टिका । ८ रस्सी की डोरी । ९ ठग के तृतीय भेद का नाम । -धारी-पु०-धनुर्धारी ।

चापड़-देखो 'चापड़ी' ।

चापड़णी (बी)-क्रि० [सं० चपेटम्] १ दबाना, चापना । २ भयभीत होना । ३ तीतर पक्षी का बोलना । ४ भागना । ५ पीछा करना । ६ युद्ध करना ।

चापड़-क्रि० वि० १ खुले घास, प्रकट रूप में, प्रत्यक्ष में । २ युद्ध में ।

चापड़ी-पु० १ अनाज पीसकर छानने से निकलने वाला भूसा । २ रहंट के चक्र में मजबूती के लिये लगाया जाने वाला काष्ठ खण्ड ।

चापट-स्त्री० [सं० चपेट] १ चपत । २ चपेट, लपेट । ३ चोट । ४ देखो 'चापड़ी' ।

चापटिया-स्त्री० कुंभट की फली व बीज ।

चापटी-स्त्री० १ पतले कान वाली बकरी । २ चाबुक ।
 ३ देखो 'चपटी' ।
 चापटी-वि० (स्त्री० चापटी) चपटा । -पु० हाँकने का डंडा या चाबुक ।
 चापर (रि. री)-स्त्री० [सं० चापलं, चापल्य] १ शीघ्रता, ताकीद । २ टिड्डीदल से प्रच्छादित भूमि ।
 चापलणी(बो)-क्रि० १ दुबक कर बैठना । २ तक लगाकर बैठना । ३ शांत किन्तु सावधान होकर बैठना ।
 चापली-स्त्री० [सं० चपला] विद्युत, बिजली ।
 चापलूस-वि० [फा०] १ झूठी प्रशंसा करने वाला । २ हाँ में हाँ मिलाने वाला । ३ लुशामदी ।
 चापलूसी-स्त्री० [फा०] १ झूठी प्रशंसा । २ लुशामद, चाटुकारी ।
 चापी-वि० [सं० चापिन्] धनुर्धारी । -पु० १ शिव महादेव । २ धनुराणि ।
 चाफळणी(बो)-देखो 'चापळणी (बो)' ।
 चाब-स्त्री० [सं० चव्य] १ एक पौधा विशेष (वैद्यक) । २ वस्त्र, कपड़ा ।
 चाबक, चाबकयौ, चाबिकौ, चाबख-पु० बेल, छोटा आदि हाँकने का चमड़े का कोड़ा । चाबुक ।
 चाबल-स्त्री० १ चाबने या चवाने की क्रिया । २ बचाकर खाने लायक पदार्थ ।
 चाबली(बो)-क्रि० १ दाँतों से कुचलना, चवाना । २ खाना । ३ हजम करना । ४ दंत क्षत लगाना ।
 चाबली-स्त्री० १ एक प्रकार की खंजरी, बाजा । २ इस बाजे पर गाय जाने वाला गीत । ३ छोटी डलिया ।
 चाबो-स्त्री० १ ताले आदि की कुंजी, ताली । २ यंत्र का वह पुर्जा जिसको घुमाने से यंत्र चलता है । ३ किसी भेद या रहस्य को समझने की विधि, आधारा या सूत्र ।
 चाबुक-पु० हाँकने का कोड़ा । -सवार-पु० घोड़े का शिक्षक । अश्वचालक ।
 चाबुकियौ-देखो 'चाबक' ।
 चाबेबार-देखो 'चोबदार' ।
 चाय-स्त्री० १ पूर्वी भारत में होने वाला एक प्रसिद्ध पौधा । २ इस पौधे की सूखी पत्ती या पत्ती का भूसा जिसे दूध व पानी में उबाल कर पीया जाता है । ३ इच्छा, कामना । ४ उत्साह, जोश ।
 चायक-देखो 'चाहक' ।
 चायगुर-पु० योद्धा, वीर ।
 चायती-वि० (स्त्री० चायती) १ चहेता, प्रिय । २ इच्छित वांछित ।
 चायना-स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा । २ जरूरत, आवश्यकता ।

चार-वि० [सं० चत्वार] १ तीन और एक । २ थोड़ा, कुछ । [सं० चारु] ३ सुन्दर, मनोहर । ४ सुकुमार । -पु० १ चार की संख्या, ४ । २ गति, चाल । ३ बंधन । ४ कारागार । ५ गुप्तचर । ६ कृत्रिम विष । ७ चारा, घास । ८ मोठ की सूखी पत्तियाँ । ९ भोज्य पदार्थ । —घानी-स्त्री० चार घाने का सिक्का । —घाइनौ-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
 चारक-पु० [सं०] १ भेदिया, जासूस, गुप्तचर । २ गरिया । ३ गोपाल भाल । ४ नेता । ५ हाँकने वाला, सारथी । ६ सईस । ७ घुड़सवार । ८ बंदी-गृह । ९ गति, चाल । १० सहचर । ११ ब्रह्मचारी ।
 चारखी-देखो 'चरखी' ।
 चारखासी-स्त्री० जीव की उत्पत्ति की चार गतियाँ व इनसे उत्पन्न होने वाले जीव ।
 चारजामी-पु० घोड़े या ऊँट की पीठ पर कसा जाने वाला घासन ।
 चारण-पु० (स्त्री० चारणी) १ राजस्थान, मध्यप्रदेश व गुजरात में फैली एक प्रसिद्ध जाति । २ इस जाति का व्यक्ति । ३ कवि । -विद्या-पु० प्रथर्ववेद का एक ग्रंथ ।
 चारणियावंट-पु० भूमि या जायदाद का समान बंटवारा, भाईबंट ।
 चारणी-स्त्री० १ चारण जाति की स्त्री । २ चारण कुलोत्पन्न देवी । ३ चलनी । -वि० चारण संबंधी, चारण का ।
 चारणी(बो)-देखो 'चराणी' (बो) ।
 चारदिवारी, (बोवारी)-स्त्री० किसी भवन या शहर के चारों ओर की दीवार, परकोटा ।
 चारलोक-पु० १ दूत, हलकारा । २ चार प्रकार के लोक ।
 चाराजाई-स्त्री० [फा०] नालिग, करियाद ।
 चारि-देखो 'चार' ।
 चारिणी-देखो 'चारणी' ।
 चरित, (तु)-१ देखो 'चरित्र' । २ देखो चारित्र ।
 चरिताली-वि० (स्त्री० चारिताली) विभिन्न चरित्र करने वाला ।
 चारित्र-पु० [सं० चारित्रम्, चारित्र] १ आचरण । २ बाल-चलन । ३ स्थाति, कीर्ति । ४ साधुता । ५ चरित्र ।
 चारी-वि० [सं० चारित्] १ विचरण करने वाला, भ्रमण करने वाला । २ चलने वाला, गतिमान ।
 चाश-वि० [सं०] सुन्दर, मनोहर । —घारा-स्त्री० इन्द्र की पत्नी, शची । —विष-पु० श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

—वेस—पु० श्रीकृष्ण व हविसणी का पुत्र । —धवा—पु० श्रीकृष्ण का एक अन्य पुत्र ।

चारु—वि० चारों ।

चारुमेर—क्रि० वि० चारों तरफ, चारों ओर ।

चारु—वि० चरने वाला । —बल, बला—क्रि० वि० चारों ओर ।

चारोली—स्त्री० १ चिरोजी मेवा । २ नारियल की गिरी का खंड । ३ होली का दूसरा दिन ।

चारो—पु० १ पशुओं का घास आदि खाद्य । २ मूंग मोठ के सूखे पत्ते । ३ भोजन, खाद्य । [फा० चारा] ४ उपाय, तरकीब । ५ वन, काबू । ६ रास्ता ।

चाळ—स्त्री० १ कुर्ते के अग्रभाग की झोली । २ घरा, धरती । ३ खलिहान में अनाज साफ करने की बड़ी चलनी । ४ छेड़ छाड़ । ५ क्रोध, गुस्सा । ६ परगना । ७ भवन, लोक । १ वस्त्र का छोर ।

चाल—स्त्री० [सं०] १ चलने की क्रिया या भाव । २ गति । ३ चलने का ढंग । ४ आचरण, चरित्र । ५ आकार, आकृति । ६ रीति-रिवाज, परंपरा । ७ चालाकी, कपट, धूर्तता । ८ विधि, ढंग । ९ खेल में गोटी या पत्ता चलने की पारी । १० हलचल, घूमघाम । ११ नकल, अनुकरण । १२ मर्प । १३ चर, जंगम ।

चाळक—पु० आवड़ देवी का एक नामान्तर ।

चालक—वि० १ चलाने वाला, गतिमान करने वाला । २ युद्ध करने वाला । ३ संचालक, निर्देशक । —पु० १ निरंकुश हाथी । २ नृत्य की एक क्रिया ।

चालकराय (नेचो)—स्त्री० आवड़ देवी का एक नाम ।

चालकरी—वि० छेड़छाड़ करने वाला, युद्ध प्रिय ।

चालगारी—वि० चाल करने वाला, धोखा करने वाला ।

चालचलगत (चलन)—स्त्री० आचरण, व्यवहार, चरित्र ।

चालढाल—स्त्री० चलने का ढंग, तरीका, ऊठ-बैठ ।

चालणी—देखो 'चलणी' ।

चाळणी (बो)—क्रि० १ छानना । २ उकसाना । ३ छेड़ना । ४ प्रहार करना ।

चासणी (बो)—देखो 'चलणी' (बो) ।

चाळनेच—स्त्री० आवड़ देवी ।

चाळबंद (बंध)—पु० १ राजा, भूपति । २ जागीरदार, भूस्वामी ।

चालबाज—वि० कपटी, धूर्त ।

चालबाजी—स्त्री० धूर्तता, कपट ।

चाळराय—स्त्री० आवड़ देवी ।

चाळवणी (बो)—देखो 'चाळणी' (बो) ।

चालान—पु० न्यायाधीश अदालत में अपराधी की उपस्थिति का आदेश या रवानगी । —बार—पु० रवानगी देने वाला व्यक्ति ।

चालाक—वि० १ धूर्त, कपटी । २ निपुण, दक्ष । ३ चतुर, बुद्धिमान ।

चालाकी—स्त्री० १ चाल, धोखा, कपट । २ धूर्तता पूर्ण व्यवहार । ३ दक्षता, निपुणता । ४ चतुराई, बुद्धिमानी ।

चालाकी—वि० गतिवान, तेज चलने वाला ।

चाळानगर (गारिणी, गारी)—वि० (स्त्री० चाळगारी) १ उपद्रवी, भगड़ालु । २ पाखंडी, आडंबर । ३ राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ । ४ वीर, योद्धा । ५ बहाने वाज ।

चाळबंद—वि० १ उद्दण्ड, उपद्रवी । २ पाखंडी ।

चाळि (ळी)—१ देखो 'चाळ' । २ देखो 'चाळीस' ।

चाली—देखो 'चाल' ।

चाळीस—वि० [सं० चत्वारिंशत्] तीस और दश । —पु० चालीस की संख्या, ४० ।

चाळीसवाँ (बौं)—वि० चालीसवाँ, चालीस के स्थान वाला ।

चाळीसो—पु० १ चालीसवाँ वर्ष । २ चालीस पदों का ग्रंथ । ३ चालीस वस्तुओं का संग्रह । ४ मृतक के चालीसवें दिन का भोजन । ५ चालीसवाँ दिन । (मुसलमान)

चालुक (क्य)—पु० [सं० चालुक्य] दक्षिण भारत का एक राजवंश ।

चालू—वि० [सं० चल] १ गतिमान, चलायमान । २ प्रचलित । ३ जो चल रहा हो । —क्रि० वि० प्रारंभ, शुरू ।

चालेवो—पु० शव यात्रा, जनाजा ।

चाळोरी—देखो 'चारोली' ।

चाळी चाळही—पु० [सं० चल] १ वैहिक या वैविक प्रकोप । २ युद्ध, भगड़ा, लड़ाई । ३ उपद्रव, विद्रोह । ४ छेड़छाड़ । ५ चाल । ६ भूत-प्रेतादि का उपद्रव, बाधा । ७ खेल-तमाशा । ८ प्रेम । ९ उमंग, उत्साह । १० आकस्मिक घटना, चमत्कार । ११ पाखंड, ढोंग, आडंबर । १२ वस्त्र का छोर, आंचल । १३ रहस्य, भेद । १४ कल्लोल, क्रीड़ा ।

चावडदे—स्त्री० चामुण्डा देवी ।

चाव—पु० १ चाह, हचि । २ इच्छा, अभिलाषा । ३ उत्साह, उमंग, जोश । ४ उत्सव । ५ आनन्द, हर्ष । ६ स्वभाव । ७ मान, प्रतिष्ठा । ८ दान ।

चावक—पु० एक प्रकार का बाण ।

चावगर (गुर)—वि० १ कद्र करने वाला, कद्रदान । २ रुच रखने वाला, चाहक । ३ आकांक्षी, महत्वाकांक्षी ।

चावड़—स्त्री० १ चार लटिकाओं की रस्सी । २ वस्त्र की चार परतें । ३ चौड़ाई ।

चावड़—देखो 'चोड़' ।

चावणी (बो)—१ देखो 'चावणी' (बो) । २ देखो 'चाहणी' (बो) ।

चावर-पु० जुताई के बाद भूमि को समतल करने के लिए फेरा जाने वाला मोटा पाट, हैगा ।
 चावरो-स्त्री० एक रंग विशेष की बकरी । -वि० ठिगनी, बीनी ।
 चावल, चावळी, चावल्पो-पु० सफेद रंग का एक प्रसिद्ध अन्न, भात । -वि० श्वेत, सफेद ।
 चावोड़ी, चावो-वि० (स्त्री० चावी) प्रख्यात, प्रसिद्ध । -पु० कृषा खोदने के लिए काटी जाने वाली भूमि की सतह ।
 चास-स्त्री० [सं०] १ नीलकण्ठ पक्षी । २ खबर, सन्देश । ३ शोक । ४ घरती, पृथ्वी । ५ हल से खींची रेखा, सीता ।
 चासणी (नीं)-स्त्री० १ चीनी या गुड का लसीला रस । २ चस्का । ३ नमूना । ४ रंगत । ५ आभूषण विशेष ।
 चासणी (बो)-क्रि० दीपक जलाना ।
 चास-सास-स्त्री० खबर, सूचना ।
 चासविदार-पु० १ हल । २ सूअर ।
 चासू, चासो-वि० चुस्त, फुर्तीला । -पु० १ बंगाली कृषक । २ कृषक ।
 चाह-स्त्री० [सं०] १ इच्छा, अभिलाषा । २ प्रेम । ३ लगन । ४ आवश्यकता, जरूरत । [फा०] ५ कृषा, कृष ।
 चाहक-वि० चाहने वाला । प्रेमी ।
 चाहण-स्त्री० चाहने का भाव, चाह, इच्छा कामना । -देवी-स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।
 चाहणी-वि० चाहने वाला ।
 चाहणी (बो)-क्रि० १ चाहना, इच्छा करना । २ प्रेम करना, स्नेह रखना । ३ हित करना, भला करना ।
 चाहरो-देखो 'चाग्रो' ।
 चाहल-पु० उत्सव समारोह । जलसा ।
 चाहि-देखो 'वाह' ।
 चाहिजे, (जै, यह, यै)-अव्य० चाहिए, जरूरत है, उपयुक्त, अपेक्षित है ।
 चाहो-स्त्री० बूँद के पानी से सींचित भूमि । -वि० इच्छित ।
 चाहु (ह)-वि० चाहने वाला ।
 चाहू-वि० इच्छित, वांछित ।
 चाग्रो-पु० इमली का बीज, चिया ।
 चागण-स्त्री० [सं० चितागण] श्मशान भूमि की आग । चिता ।
 चागरज-स्त्री० [सं० चिह्नरज] भूमि, पृथ्वी ।
 चागी-पु० घोड़ा, अश्व ।
 चिघाड़-स्त्री० १ हाथी की आवाज । २ चीख, चिल्लाहट ।
 चिघाड़णी (बो)-क्रि० १ हाथी का बोलना । २ चीखना, चिल्लाना ।

चिचड़ी-देखो 'चीचड़ी' ।
 चिचो-देखो 'चिचो' ।
 चिजो-वि० चिरंजीव ।
 चिडाळ-देखो 'चंडाळ' ।
 चिडाळी-देखो 'चंडाळी' ।
 चित-१ देखो 'चिता' । २ देखो 'चितन' । ३ देखो 'चित' ।
 चितक-वि० [सं०] १ चिता करने वाला । २ चितन करने वाला । ३ सोच-विचार करने वाला ।
 चितकरि-स्त्री० छल, कपट ।
 चितन (न)-पु० [सं० चितन] १ ईश्वर का चितन, स्मरण, ध्यान, भजन । २ विषय चितन । ३ सोच-विचार, खयाल । ४ अन्वेषण, शोध । ५ सम्मान, आदर । ६ अभ्यास, मनन ।
 चितणीय-वि० [सं० चितनीय] १ सोचने विचारने योग्य । २ मनन करने योग्य । ३ जिसका चितन या ध्यान किया जावे । ४ चिंता करने योग्य । ५ सोचनीय ।
 चितणी (बो), चितवणी (बो)-क्रि० [सं० चितनम्] १ चितन, मनन या ध्यान करना । २ याद करना, स्मरण करना । ३ चिंता करना, फिकर करना ।
 चिता-स्त्री० [सं०] १ फिक, सोच । २ दुःख, शोक, उदासी । ३ घ्राशंका, भय । ४ खेद, अफसोस । ५ व्यग्रता, आकुनाई । ६ ध्यान, चितन । ७ याद, स्मरण । ८ परवाह । ९ करुण रस का व्यभिचारी भाव । -आकुल, आतुर-वि०-चिंता से व्याकुल, व्यथित । उत्सुक ।
 चितागियो-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
 चितामण, (मणि, मणी, मिलाणी)-स्त्री० [सं० चितामणि] १ वांछित फल देने वाली एक कल्पित मणि । २ ब्रह्मा । ३ परमेश्वर, ईश्वर । ४ सरस्वती का एक मंत्र । ५ कपिल के यहाँ जन्म लेने वाला एक गणेश । ६ घोड़े के नाक या गले पर होने वाली एक भौरी । ७ ऐसी भौरी वाला घोड़ा । ८ यात्रा का एक योग ।
 चितार-स्त्री० स्मृति, याद ।
 चितारणी (बो)-देखो 'चितारणी' (बो) ।
 चितारंत-वि० चिता, सोच, फिकर, चितन करने वाला ।
 चितारहर-वि० चिता का हरण करने वाला । -पु० ईश्वर, परमात्मा ।
 चितित, चितिय-वि० [सं० चितित] १ चिता करने वाला, उदास, खिन्नचित्त । २ जिसका चितन किया गया हो ।
 चितो-वि० चित्तवाली, बुद्धिवाली ।
 चितू-देखो 'चित' ।
 चित्या-देखो 'चिता' ।

चिदी-स्त्री० वस्त्र की घंजी, वस्त्र पट्टिका ।

चिध-पु० [सं० चिह्न] १ चिह्न, निशानी । २ देखो 'चीध' ।

—पट्ट-पु० खास निशान युक्त पट्टा (जैन) ।

चिम-स्त्री० घ्रांथ के काले कोये पर होने वाला सफेद दाग ।

चियौ-पु० [सं० चिवा] १ जलाशय या पानी के किनारे उत्पन्न होने वाला घास । २ अविकसित कच्चा फल ।

३ इमली का बीज । ४ वणिक, बनिया । ५ व्यापारी ।

चि-पु० [सं०] १ सूर्य, भानु । २ संग्रह, ढेर । ३ आवाज । ४ दीवार । ५ चित्र । ६ बकरी । ७ पिंड । ८ भय ।

—अव्य० की ।

चिघार, (रि, रे)-वि० [सं० चत्वार] चार ।

चिऊआलीस-स्त्री० चालीस और चार के योग की संख्या, ४४ ।

चिक-स्त्री० [तु०] १ बांस की खपचियों का पर्दा । २ गले का एक स्वर्णभूषण । —चिकतौ-वि० तर, चकाचक ।

चिकचिकी-स्त्री० १ तर माल के प्रति ग्रहचि । २ पसीने से होने वाली गंदगी ।

चिकछा-देखो 'चिकित्सा' ।

चिकट-देखो 'चीकट' ।

चिकटणी (बी)-क्रि० मेल या चिकनाई के कारण चिपचिपा होना ।

चिकटाई-देखो 'चीकट' ।

चिकडोर-पु० जालीदार, कपाट ।

चिकनाई, चिकणाट-स्त्री० १ स्निग्धता, चिकनाई । २ घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थ । ३ खुरदरेपन का अभाव, फिसलन ।

चिकलाणी (बी)-क्रि० १ चिकना करना, स्निग्ध करना । २ लर करना । ३ घिस कर चिकना करना, फिसलने योग्य करना ।

चिकलाय (घट, स, हट)-स्त्री० १ चिकनाहट, स्निग्धता । २ खुरदरेपन का अभाव, फिसलन की अवस्था । ३ शक, आशंका । ४ स्निग्ध पदार्थ ।

चिकली (बी)-क्रि० १ द्रव पदार्थ का चूना, टपकना । २ घाव से रक्त आदि उबकना । ३ देखो 'छिकली' (बी) ।

चिकित्साल-पु० चिकित्सालय ।

चिकन (अ)-पु० [फा० चिकिन] एक प्रकार का कसीदा ।

चिकर-पु० [सं० चिकुर] १ रेंगने वाला जीव । २ छछुंदर । ३ गिलहरी । ४ चिकुर ।

चिकल(सी)-पु० [सं० चिकिल] १ कीचड़, पंक । २ पानी आदि फैलने से होने वाली गंदगी ।

चिकाणी (बी)-क्रि० घीषधियों में पुट देना ।

चिकार-पु० [सं० चिकीषति, चीत्कार] १ भुण्ड, समूह । २ चीख, पुकार । ३ चिघाड़ ।

चिकारी-पु० १ एक प्रकार का हरित । २ सारंगी की जाति का एक वाद्य यंत्र ।

चिकाळ-स्त्री० मदिरा, शराब ।

चिकिछा-देखो 'चिकित्सा' ।

चिकित्सक-पु० [सं०] रोगों का उपचार करने वाला वैद्य, हकीम, डाक्टर ।

चिकित्सा-स्त्री० [सं०] १ रोग का उपचार, इलाज । २ उपाय, व्यवस्था ।

चिकिल-पु० [सं०] कीचड़, पंक ।

चिकोरसव-स्त्री० [सं० चिकीर्षा] इच्छा, अभिलाषा ।

चिकुर-पु० [सं०] १ सिर के बाल । २ पर्वत । ३ रेंगने वाला जीव । ४ केश । -वि० [सं०] १ चंचल, अस्थिर । २ कांपने वाला । ३ अविचार, दुस्साहसी ।

चिककट-देखो 'चीकट' ।

चिककण, चिककण, (ली)-स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की ककड़ी । २ एक प्रकार की सुपारी । ३ देखो 'चिकन' ।

-वि० १ चिकना, स्निग्ध । २ कोयल । ३ चमकीला । ४ फिसलाहट वाला ।

चिककरणी, (बी)-क्रि० १ हाथी का चिघाड़ना । २ चीखना, चिल्लाना ।

चिककस-स्त्री० [सं०] १ यव या जौ का बना भोज्य पदार्थ । २ उबटन ।

चिकखल (ली) चिखिल-देखो 'चोखलो' ।

चिख-पु० [सं० चक्षु] १ नेत्र, आंख, चक्षु । २ दृष्टि, नजर । ३ देखो 'चिक' ।

चिगंदी-देखो 'चिगदी' ।

चिग-देखो 'चिक' ।

चिगचिगी-स्त्री० कमजोरी या बुखार में होने वाला पसीना ।

चिगट-देखो 'चीकट' ।

चिगणी, (बी)-क्रि० चिढ़ना, सीफना, चिढ़ाया जाना ।

चिगत, चिगथली, चिगथी-१ देखो 'चगताई' । २ देखो 'चिगथी' ।

चिगथी-पु० वस्त्र या कागज का टुकड़ा ।

चिगदरी, (बी)-क्रि० कुचलना, चूरा करना, रोंदना ।

चिगदी-पु० १ कूट-पीट कर किया गया चूरा, धूसा । २ घाव, जखम । ३ घबड़ा । ४ खंड, टुकड़ा । ५ खरोंच । ६ चोट, आघात या टक्कर का निशान ।

चिगळणी, (बी)-क्रि० १ मुंह में रखकर धीरे-धीरे खाना । २ दांतों से कुचलने का प्रयास करना । ३ तरसाना ।

चिगाइली (बी), चिगाणी, (बी)-क्रि० १ तरसाना । २ दिखा-दिखा कर चिढ़ाना । ३ मुलावा देना, फुसलाना । ४ लेने के लिए प्रेरित करना मगर नहीं देना ।

चिगाळी-स्त्री० चिड़ाने के लिए की जाने वाली किसी की नकल ।

चिगावली, (बो)-देखो 'चिगाणी' (बो) ।

चिगी-देखो 'चिगाळी' ।

चिगा-देखो 'चिक' ।

चिड़-स्त्री० १ चिड़-चिड़ाने या चिड़ने की क्रिया या भाव ।
२ वह बात या संकेत जिससे कोई चिड़ता हो । ३ कुड़न ।
४ नफरत, घृणा । ५ अप्रसन्नता । ६ विरक्ति । ७ चिड़ियों का समूह । ८ एक प्रकार का छोटा पक्षी । ९ देव मूर्ति का आभूषण ।

चिड़-देखो 'चिड़ी' ।

चिड़कल, चिड़कली-स्त्री० १ चरखे के हस्थे पर बना चिड़ी की आकृति का उपकरण । २ देखो 'चिड़ी' । ३ देखो 'चिड़कली' (स्त्री०) ।

चिड़कली, चिड़कली, चिड़कली-पुं० १ चित्रा नक्षत्र ।
२ अश्लेषा नक्षत्र । ३ देखो 'चिड़ी' । ४ देखो 'चिड़कली' ।

चिड़चिड़ (हट)-स्त्री० चिड़ने की क्रिया या भाव ।
चूँ-चप्पड़ ।

चिड़चिड़ियों-पुं० एक प्रकार का घास ।

चिड़चिड़ी-वि० (स्त्री० चिड़चिड़ी) बात-बात पर चिड़ने वाला,
तुनक मिजाज ।

चिड़ली, (बो)-क्रि० १ चिड़ना, चिड़चिड़ाना । २ क्रोध करना । ३ झल्लाना । ४ बकना । ५ द्वेष करना ।
६ डांटना, फटकारना । ७ कुड़ना, खीजना ।

चिड़पड़ी-वि० (स्त्री० चिड़पड़ी) १ तुनक मिजाज । २ नीला,
कीचड़युक्त ।

चिड़भड़णी, (बो) चिड़भड़णी, (बो)-देखो 'चड़भड़णी' (बो) ।

चिड़ाणी, (बो), चिड़ाणी (बो)-क्रि० १ चिड़ाना, चिड़ने वाली बात कहना, चिड़ने वाला संकेत करना । २ कुड़ाना खिजाना । ३ गुस्सा या क्रोध दिलाना । ४ नाराज करना ।
५ किसी का उपहास करना ।

चिड़िया-स्त्री० [सं० चटक] उड़ने वाला एक छोटा पक्षी,
चिड़ी । —खानी-पुं० चिड़ियों को पालने का स्थान ।
—चूँटी-स्त्री० एक प्रकार की घास । —छट-स्त्री० भादव कृष्ण पष्ठी तिथि । —टूँक-पुं० वह पहाड़ी जिस पर जोधपुर का किला स्थित है । —नाथ-पुं० उक्त पहाड़ी पर रहने वाले एक सिद्ध ।

चिड़ियाळ-स्त्री० एक प्रकार की गंध ।

चिड़ी-स्त्री० [सं० चटक] एक छोटा पक्षी । —खेत, खेतियों,
घाँसियों-पुं० वर्षा ऋतु में होने वाला एक घास ।
—मार-पुं० शिकारी, व्याध । —मोठ, मोठियों-पुं० एक प्रकार की घास ।

चिड़कल-पुं० १ चिड़ियापक्षी । २ देखो 'चिड़कली' ।

चिड़कड़ (कड़ी, कली)-वि० (स्त्री० चिड़कड़ी, चिड़कली)
१ चिड़चिड़े स्वभाव वाला, चिड़ने वाला । २ तुनक मिजाज ।

चिड़ी-पुं० [सं० चटक:] (स्त्री० चिड़ी) चिड़िया नामक नर पक्षी ।

चिचिकियों-पुं० भग, योनि ।

चिचान-पुं० [सं० सचान] एक प्रकार का बाज पक्षी ।

चिचिचि-स्त्री० तेज व भयंकर आवाज (जैन) ।

चिचिका-स्त्री० एक वाद्य विशेष ।

चिजारी-देखो 'चेजारी' ।

चिट-स्त्री० [सं० चीठिका] १ कागज का टुकड़ा, पर्ची ।
२ छोटा रुक्का । ३ वस्त्र का छोटा टुकड़ा । ४ जिह्वा, हठ,
दुराग्रह । ५ रट ।

चिटक-स्त्री० १ नारियल की गिरी का टुकड़ा । २ टुकड़ा,
खण्ड, भाग । ३ पपड़ी । ४ चमक ।

चिटकण-पुं० १ बैलों का एक रोग । २ इस रोग से पीड़ित बैल ।

चिटकणी (नी)-स्त्री० दरवाजे की छोटी अंगला या कुंदी ।

चिटकणी (बो)-देखो 'चटकणी' (बो) ।

चिटकी-देखो 'चटकी' ।

चिटनी-देखो 'चिट्' ।

चिटियों-पुं० १ हाथ में रखने की छड़ी । २ ऐसी लकड़ी जिसका एक शिरा अर्ध चन्द्राकार मुड़ा हुआ हो । ३ छोटा कुल्हड़ा ।
(मेवात)

चिट्टी-स्त्री० [सं०] १ चाण्डाल वेश धारी एक योगिनी ।
२ देखो 'चिट्टी' । ३ देखो 'चिट्' ।

चिट्टी (सी)-देखो 'चिट्' ।

चिट्टी-पुं० काले नाग का बच्चा ।

चिट्ट-स्त्री० कनिष्ठा अंगुली । —वि० छोटा, अल्प ।

चिट्टी-वि० १ स्पष्ट, खुलासा । २ श्वेत, सफेद ।

चिट्ट-देखो 'चिट' ।

चिट्टी-स्त्री० १ एक देशी खेल । २ देखो 'चिट्टी' ।

चिट्टी-देखो 'चिट्टी' ।

चिट्ट-वि० बहुत, अधिक । (जैन)

चिट्टण-वि० खड़ा, सीधा । (जैन)

चिट्ठाणा-स्त्री० स्थिति, बंठक । (जैन)

चिट्ठा-स्त्री० चेष्टा । (जैन)

चिट्ठ, चिट्ठत-पुं० [सं० चेष्टित] १ चेष्टा, सविकार
ग्रंथ । (जैन) २ अवस्था, स्थिति । (जैन)

चिट्ठी-स्त्री० [सं० चीठिका] १ कुशल-समाचार का पत्र, खत । २ लिखा हुआ कोई पत्र । ३ सन्देश या आज्ञा पत्र ।
 ४ मृत्यु संदेश का पत्र । ५ हिदायत या शिक्षा का पत्र ।
 चिट्ठी-पु० १ प्राय-व्यय का विवरण-पत्र । २ हिसाब रखने की बही । ३ किसी के खाते का व्योरा ।
 चिड़-देखो 'चिड़ी' ।
 चिड़िया-पु० [सं० चिटिक] पक्षी । (जैन)
 चिड़-देखो 'चिड़' ।
 चिल-स्त्री० चिनगारी ।
 चिलक (ख, ग)-स्त्री० १ बुरी लगने वाली बात । २ बात से होने वाला गुस्सा । ३ अग्निकण । ४ ताव, जोश । ५ तुनतुनाहट । ६ देखो 'चणक' ।
 चिलगटी-स्त्री० १ चपत, चप्पड़, तमाचा । २ छोटी जुं ।
 चिलगार (री)-स्त्री० [सं० चूर्ण-भंगार] १ छोटा अग्निकण, चिनगारी । २ कलह कराने वाली बात ।
 चिलगियी-पु० पेशाब में जलन या दर्द होने का रोग ।
 चिलगी-१ देखो 'चिलगारी' । २ देखो 'चणक' ।
 चिलगी (बी)-देखो 'चुणगी' (बी) ।
 चिलगी-१ देखो 'चुणगी' । २ देखो 'चणगारी' ।
 चिलगणी (बी), चिलगणी (बी)-देखो 'चुणगणी' (बी)
 चिलगणकपूर-पु० एक प्रकार का कपूर ।
 चिलू-देखो 'चणो' ।
 चिलोठी (ठी)-स्त्री० [सं० चित्रपृष्ठा] घुंघची, गुंजा ।
 चिली-पु० १ बन्दूक के कान पर लगाया जाने वाला उपकरण । २ तृण, तिनका । ३ चीनी कपूर । ४ देखो 'चणो' ।
 चित-पु० [सं० चित्त] १ मन, दिल, हृदय । २ बुद्धि, अक्ल । ३ ज्ञान, चेतना, वृत्ति । ४ विचार, विचार शक्ति । ५ मनोयोग । ६ इच्छा । ७ प्रतिभा । ८ आत्मा । -वि० १ मुँह ऊपर करके लेटा हुआ । २ जिसका मुख्य भाग ऊपर हो, सीधा । ३ देखो 'चित्र' । -इसोळ-पु०-डिंगल का एक गीत । -कबरी-वि० काला व श्वेत, मिश्रित वर्ण का । -बोजी-वि० मन मौजी । छैला, शौकीन, उत्साही । -पुट-पु० एकदेशी खेल । -घारी-वि० उदार । -बंकी-वि० उदार । वीर, साहसी । -बंगी-वि० मति भ्रम । पागल । हीन बुद्धि । -बाहु-पु० तलवार का एक हाथ । मति भ्रम । -भंग, भंगी-वि० उन्माद रोग से पड़ित । उदास । -भरम, भरमियो-वि० चित्त भ्रम । पागल । -मठियो, मठी-वि० कृपण कंजूस ।
 चितरंगताळ-पु० सुन्दर व छोटे-छोटे ताल-तलैया ।
 चितरंगमहळ-पु० रंग महल, सुरतिमहल ।
 चितरणी (बी)-क्रि० १ चित्रित होना, चित्र बनना । २ नक्काशी किया जाना । ३ खराद उतरना ।

चितराण (री)-पु० चित्तौड़ का राणा ।
 चितराम-पु० चित्र, तस्वीर ।
 चितराणी (बी), चितरावणी (बी)-क्रि० १ चित्रित करना, चित्र बनाना । २ नक्काशी करना । ३ खराद उतरना ।
 चितळ-स्त्री० [सं० चित्रल] १ मोटे आकार का चकतेदार सर्प । २ एक प्रकार का हिरन ।
 चितळती-स्त्री० चितकबरी बकरी ।
 चितळी-वि० मन में बसी, चित्त चढ़ी ।
 चितवण (णि, णी)-स्त्री० १ चितवन । २ दृष्टि । ३ कटाक्ष ।
 चितवणी (बी)-क्रि० [सं० चितन] १ मन में सोचना, विचार करना, चिंतन करना । २ इच्छा करना । ३ निश्चय करना । ४ देखना ।
 चितवाळी-वि० (स्त्री० चितवाळी) १ चंचल, चपल । २ सुंदर, मनोहर । ३ उदार ।
 चितविलास-पु० डिंगल का एक गीत, छंद विशेष ।
 चितहर (ण)-पु० [सं० चित्तहर] वस्त्र । -वि० मनोहर, सुन्दर ।
 चितामण (णि, रणी)-देखो 'चितामणि' ।
 चिता-स्त्री० १ शव दाह के लिये चुनी हुई लकड़ियाँ । २ चित्रक नामक औषधि । ३ चगतई वंश का मुगल ।
 चिताणी (बी)-क्रि० १ सचेत या सावधान करना । २ स्मरण कराना, याद दिलाना । ३ आत्म-बोध कराना । ४ सुलगाना प्रज्वलित करना ।
 चितानळ-स्त्री० दाहसंस्कार की अग्नि ।
 चिताभूमि-स्त्री० श्मशान भूमि । मरघट ।
 चितारणी-स्त्री० १ स्मृति, याद । २ स्मृति चिह्न ।
 चितारणी (बी)-क्रि० १ याद करना, स्मरण करना । २ चित्र बनाना ।
 चितारी-पु० (स्त्री० चितरी) १ चित्रकार । २ नक्काशी करने वाला । ३ चित्रित करने वाला, वर्णन करने वाला । ४ याद करने वाला ।
 चिताळ-स्त्री० स्नान करने की शिला या पत्थर ।
 चितावणी (बी)-देखो 'चितारणी' (बी) ।
 चितावर-पु० चित्तौड़ ।
 चिति-पु० [सं० चैत्य] १ समाधि स्थान । २ देखो 'चित' (जैन) ।
 चितेरण-स्त्री० १ चित्र बनाने वाली स्त्री । २ चित्रकार की स्त्री । ३ व्योरा, वर्णन ।
 चितेरणी (बी)-क्रि० चित्र बनाना । चित्रित करना ।
 चितेरी-देखो चितारी ।
 चितौड़-पु० १ मेवाड़ की राजधानी का नगर । २ इस नगर में स्थापित प्राचीन गढ़ ।

चित्तौड़ी, चितौड़ी-पु० १ चांदी का एक प्राचीन सिक्का ।
 २ सिसोदिया राजपूत ।
 चिरांग-पु० [सं० चित्राङ्ग] एक प्रकार का कल्प वृक्ष । (जैन)
 चितंगी-वि० (स्त्री० चितंगी) चित्तभ्रम, पागल । -पु० चितौड़ ।
 चित्त-१ देखो 'चित' । २ देखो 'चित्र' ।
 चित्तउत्त-पु० सोलहवें तीर्थंकर का नाम । चित्रगुप्त ।
 चित्तकल्याण-स्त्री० [सं० चित्रकनका] विद्युत्कुमारी नामक देवी
 विशेष (जैन) ।
 चित्तकूट-१ देखो 'चित्तकूट' । २ देखो 'चितौड़' ।
 चित्तग-पु० [सं० चित्रक] १ चीता । २ एक पशु विशेष (जैन)
 चित्तगुप्त-पु० चित्रगुप्त ।
 चित्तगुप्ता-स्त्री० [सं० चित्रगुप्ता] १ सोम नामक दिक्पाल की
 ग्रथ महिषी । २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसने वाली एक
 दिक्ककुमारी (जैन) ।
 चिरांगी-वि० (स्त्री० चितंगी) उज्ज्वल, पाक दिल ।
 चित्तकावी-वि० अभीष्ट, वांछित ।
 चित्तगण-वि० [सं० चित्तग] मन की जानने वाला । (जैन)
 चित्त-पक्ष-पु० [सं० चित्रपक्ष] वेणुदेव नामक इन्द्र का एक
 लोकपाल । (जैन)
 चित्तपत्तन-पु० [सं० चित्रपत्तन] १ चार इन्द्रियधारी जीव ।
 २ विचित्र पंख वाला जंतु विशेष । (जैन)
 चित्तप्रसादण (न)-पु० चित्त का एक संस्कार ।
 चित्तमंग-देखो 'चित्तमंग' ।
 चित्तभू-पु० [सं०] कामदेव ।
 चित्तभूमि-स्त्री० चित्त की पांच अवस्थाएँ । (योग)
 चित्तभ्रम-वि० मूर्ख, पागल, मतिभ्रम ।
 चित्तरस-पु० [सं० चित्ररस] एक कल्प वृक्ष । (जैन)
 चित्तल-देखो 'चितल' ।
 चित्तविक्षेप-पु० चित्त की अस्थिरता ।
 चित्तविभ्रम, (विभ्रम)-पु० मतिभ्रम ।
 चित्तहिलोळ-पु० डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष ।
 चित्तारी-देखो 'चित्तारी' । (स्त्री० चित्तारी) ।
 चित्तसाळा, (सषा)-स्त्री० चित्रशाला ।
 चित्ता-स्त्री० १ चित्रा नक्षत्र । २ देखो 'चिता' ।
 चित्तार-पु० चित्रकार । (जैन)
 चित्ति-देखो 'चित' ।
 चित्र-पु० [सं०] १ किसी वस्तु या जीव की तसवीर, फोटो,
 चित्र, आकृति । २ किसी तसवीर या आकृति का ढांचा,
 खाखा । ३ ध्वजा, दाग । ४ स्वरंग, आकाश । ५ कई प्रकार
 के रंगों का समूह । ६ काव्य में एक अलंकार । ७ रस,
 अलंकार युक्त कविता या काव्य । ८ कुष्ठ रोग का एक
 भेद । ९ चित्रगुप्त । १० इश्य । ११ यवन मुसलमान ।

१२ अशोक वृक्ष । १३ शृंगार में एक आसन । १४ चम-
 कीला आभूषण । -वि० १ चमकीला । २ स्पष्ट, साफ ।
 ३ विलक्षण, अद्भुत । ४ रंग-विरंगा । ५ रुचिकर, प्रिय ।
 -कर-पु० चित्रकार । -करम-पु० बहूतर कलाओं के
 अन्तर्गत एक । -कळा-स्त्री० चित्र बनाने की कला ।
 -कार-पु० चित्र बनाने वाला । -कारी-स्त्री० ६४
 कलाओं में से एक । -काव्य-पु० चित्र के रूप में लिखा
 हुआ कोई काव्य । -मंभिर, महळ-पु० चित्रशाला ।
 -योग-पु० ६४ कलाओं में से एक । -चिछा-स्त्री०
 चित्रकला । -सारी, साळा, साळी-स्त्री० चित्रशाला ।
 चित्रक-पु० [सं०] १ एक प्रकार का छोटा क्षुप । २ हिरन ।
 चित्रकूट, (कोट)-पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध पर्वत । २ चित्तौड़ ।
 चित्रकेतु-पु० [सं०] १ चित्रित पताका रखने वाला व्यक्ति ।
 २ लक्ष्मण का एक पुत्र । ३ गरुड़ का एक पुत्र ।
 चित्रगढ़-पु० चित्तौड़गढ़ ।
 चित्रगुप्त-पु० [सं०] चौदह यमराजों में से एक ।
 चित्रघंटा-स्त्री० नौ दुर्गाओं में से एक ।
 चित्रण-स्त्री० [सं०] १ चित्रित करने का कार्य । २ वर्णन ।
 ३ व्याख्या ।
 चित्रणी-स्त्री० [सं०] चार प्रकार की स्त्रियों में से एक ।
 चित्रणी (बो)-क्रि० १ चित्रित करना । २ वर्णन करना ।
 चित्रपटा-पु० [सं०] एक प्रकार का छंद । -स्त्री० मंता पक्षी ।
 चित्रपुंख (पूख)-पु० [सं०] तीर, बाण ।
 चित्रविचित्र-वि० १ अद्भुत, विचित्र । २ रंग विरंगा ।
 चित्रभाण (भाणू, भांनु)-पु० [सं० चित्रभाणु] १ अग्नि ।
 २ सूर्य । ३ अश्विनीकुमार । ४ मरु । ५ मणिपुर के
 राजा व अर्जुन के श्वसुर । ६ माठ संवत्सरों के बारह
 युगों में से चौथे युग का प्रथम वर्ष । ७ चित्रक । ८ आक
 का वृक्ष ।
 चित्रमणि-स्त्री० घोड़े के पेट पर होने वाली सीप के आकार
 की मोरी ।
 चित्रमद-पु० नायक का चित्र देखकर नायिका का विरह
 प्रदर्शन ।
 चित्ररथ-पु० [सं०] १ सूर्य । २ एक गंधर्व । ३ श्रीकृष्ण का
 एक पीठ । ४ एक यदुवंशी राजा । ५ अंग देश के राजा
 का नाम ।
 चित्ररेखा-स्त्री० [सं०] बाणासुर की कन्या उषा की एक
 सहेली ।
 चित्रस-वि० [सं०] चितकबरा ।
 चित्रलेख-देखो 'चित्रगुप्त' ।
 चित्रलेखा-स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा । २ चित्ररेखा ।
 ३ चित्र बनाने की कुंजी । ४ एक वर्णवृत्त विशेष ।

चित्रवन-पु० [सं०] गंडक नदी के किनारे का वन ।
 चित्रताळा (छो)-स्त्री० [सं० चित्रशाला] १ रंग महल ।
 २ वह स्थान जहाँ चित्र बनाये जाते हैं । ३ चित्रों की सजावट का स्थान ।
 चित्रसिखंडी-पु० [सं०] सप्त ऋषि ।
 चित्रसिखंडी-पु० वृहस्पति ।
 चित्रभेन-पु० [सं०] १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । २ एक पुरुवंशीय राजा ।
 चित्रांग (गडु)-पु० [सं०] १ राजा शांतनु का एक पुत्र ।
 २ गंधर्वों के राजा का नाम ।
 चित्रांगदा-स्त्री० [सं०] १ अर्जुन की एक स्त्री । २ रावण की एक स्त्री ।
 चित्रांग-पु० १ चित्र, तस्वीर । २ नक्काशी ।
 चित्रांगण (मणि, मिए)-स्त्री० एक देवी विशेष ।
 चित्रांगि-देखो 'चित्र' ।
 चित्रा-स्त्री० [सं०] १ सत्ताईश नक्षत्रों में से चौदहवां नक्षत्र ।
 २ चितकबरी गाय । ३ एक नदी का नाम । ४ एक अप्सरा का नाम । ५ संगीत में एक भूच्छना । ६ एक प्राचीन तार वाद्य । ७ एक सर्प का नाम । ८ एक छंद विशेष ।
 चित्रारी-देखो 'चितारी' ।
 चित्रावेनि-स्त्री० [सं० चित्रकवली] चित्रकवली ।
 चित्रित-वि० [सं०] १ वर्णित । २ चित्र द्वारा दर्शाया हुआ ।
 ३ चित्रांकित ।
 चित्र (त्रु)-पु० १ शिकार के लिए शिक्षित चीता या कुत्ता ।
 २ चीता । ३ चित्र ।
 चित्रोत्तर-पु० [सं०] एक प्रकार का काव्यालंकार ।
 चिपड़ी (री)-देखो 'चीथड़ी' ।
 चिदाकास-पु० [सं० चिदाकाश] परब्रह्म ।
 चिदानंद (नंद)-पु० [सं० चिदानन्द] परब्रह्म, ईश्वर ।
 चिदानंदी-वि० चित्त से प्रसन्न रहने वाला ।
 चिदाभास-पु० [सं०] जीवात्मा ।
 चिद्रूप-पु० [सं०] चैतन्य स्वरूप परमेश्वर ।
 चिन्नंग-देखो 'चिगंग' ।
 चिनकियेक, चिनकियेक, चिनकीक-वि० किंचित, अल्प, जरासा ।
 चिनख-देखो 'चिराग' ।
 चिनाब-स्त्री० पंजाब की एक नदी ।
 चिनिपाकेली-पु० छोटी जाति का केला ।
 चिनियोक-वि० किंचित, अल्प ।
 चिनियोघोड़ी-पु० वह घोड़ा जिसके चारों पांव सफेद हों ।
 चिनोक-वि० अल्प, किंचित ।
 चिनो-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।

चिन्न-वि० [सं० चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित । २ विहित, कृत । ३ चिह्न, निशान । (जैन)
 चिन्थोक-देखो 'चिन्थोक' ।
 चिन्ह-पु० [सं० चिह्न] १ निशान, संकेत । २ दाग, धब्बा ।
 ३ मोहर, निशानी । ४ लक्षण । ५ चपरास, बिल्ला ।
 ६ राशि । ७ लक्ष्य दिशा । ८ पताका, झण्डा । ९ प्रथम लघु दण्ड के भेद का नाम ।
 चिन्हार्द्ध-पु० चीन देशोत्पन्न एक प्रकार का घोड़ा ।
 चिपक-पु० १ शिकार में सहायता करने वाला पक्षी विशेष ।
 २ चिपटने या सटने की क्रिया या भाव ।
 चिपकण-पु० आभूषण विशेष । (मेवात)
 चिपकणी (बी)-क्रि० [सं० चिपट] १ गोंद आदि लसीली वस्तु के योग से किन्हीं दो वस्तुओं का परस्पर जुड़ना, सटना, चिपटना । २ प्रगाढ़ रूप से लिपटना । ३ संयुक्त होना ।
 ४ आलिंगनबद्ध होना । ५ किसी काम में लगना, संलग्न होना ।
 चिपकाणी (बी), चिपकावणी (बी)-क्रि० १ लसीली वस्तु के योग से किन्हीं दो वस्तुओं की परस्पर जोड़ना, सटाना, चिपटाना । २ गाढ़ा लिपटाना । ३ संयुक्त करना ।
 ४ आलिंगनबद्ध करना । ५ किसी काम में लगाना, संलग्न करना ।
 चिपड़ी-देखो 'चपड़ी' ।
 चिपचिप, चिपचिपाहट-स्त्री० १ लसीलापन । २ चिपचिपाने की अवस्था या भाव ।
 चिपचिपाणी, (बी)-क्रि० १ लसीलापन होना । २ चिपचिप करना । ३ छूने से चिपकना ।
 चिपचिपी-वि० (स्त्री० चिपचिपी) लसीला, चिपदार ।
 चिपटणी, (बी)-देखो 'चिपकणी' (बी) ।
 चिपटाणी (बी), चिपटावणी (बी)-देखो 'चिपकाणी' (बी) ।
 चिपटी-१ देखो 'चपटी' । २ देखो 'चिमटी' ।
 चिपटी-देखो 'चपटी' ।
 चिपटी-देखो 'चिमटी' ।
 चिपणी, (बी)-देखो 'चिपकणी' (बी) ।
 चिपाणी, (बी), चिपावणी, (बी)-देखो 'चिपकाणी' (बी) ।
 चिपिड-वि० चिपिट, चपटा । (जैन)
 चिप्प-पु० नाखून के नीचे होने वाला एक फोड़ा ।
 चिप्पिड-पु० १ एक अन्न विशेष । २ क्यारा । (जैन)
 चिबटियों-पु० १ छोटा कंकड़ । २ अंगुष्ठ में अंगुली को घटका कर मटके से की जाने वाली चीट । ३ देखो 'चिरमोटियों' ।
 चिबटो, (ठी)-स्त्री० [सं० चुमुटि] १ चुटकी । २ चुटकी बजाने की ध्वनि । ३ अंगुलियों के पंजों में पकड़ा जा सकने वाला पदार्थ । ४ अंगुलियों की ऐसी ही मुद्रा ।

चिबलणी, (बौ)—क्रि० चबाना मुंह में डाल कर जिल्हा पर इधर-उधर करना ।

चिबुक, चिबुक—स्त्री० [सं० चिबुक] ठोड़ी, ठुड़ी ।

चिम्पड़—पु० १ ककड़ी विशेष । (जैन) २ सूअर का बच्चा ।

चिम—स्त्री० [सं० चिल्ल] १ भ्रांख के काले कोये पर होने वाला, सफेद दाग । २ भ्रांख में चोट लगने से होने वाला दर्द या चिल्ल ।

चिमक—देखो 'चमक' ।

चिमकणी (बौ)—देखो 'चमकणी' (बौ) ।

चिमकणी, (बौ)—देखो 'चमकणी' (बौ) ।

चिमकी—स्त्री० डुबकी, गोता ।

चिमचिमाही—स्त्री० एक प्रकार का दर्द ।

चिमचिमी—स्त्री० मस्सा, भगंदर आदि से होने वाली पीड़ा विशेष ।

चिमचौ—देखो 'चमचौ' ।

चिमटणी, (बौ)—क्रि० १ सटना, जुड़ना । २ चिपकना । ३ संलग्न होना । ४ गुंथना । ५ आलिग्नबद्ध होना । ६ किसी कार्य में अधिक व्यस्त होना । ७ अधिक सम्पर्क में आना या साथ रहना ।

चिमटाणी (बौ), चिमटावणी (बौ)—क्रि० १ सटाना, जोड़ना । २ चिपकाना । ३ संलग्न करना । ४ गुंथाना । ५ आलिग्नबद्ध करना । ६ अधिक व्यस्त रखना । ७ अधिक सम्पर्क में करना, साथ लगाना ।

चिमटी, (ठौ)—स्त्री० १ तर्जनी व अंगुष्ठ से पकड़ी जाने वाली नमक आदि की मात्रा । २ घाटे की मात्रा जो भिखारियों को डाली जाती है । ३ मुरकी । ४ स्वर्णकारों का छोटा औजार । ५ चिमटे का सूक्ष्म रूप ।

चिमटी, (ठौ)—पु० जलते अंगारे आदि को पकड़ कर उठाने का लोहे की पत्ती का बना उपकरण, चिमठा ।

चिमठाणी (बौ)—देखो 'चिमटाणी' (बौ) ।

चिमतकारी—देखो 'चमत्कारी' ।

चिमनी—स्त्री० १ मिट्टी के तेल से जलने वाला छोटा दीपक । २ घृग्घ्रा निकलने के लिए लगाया हुआ लम्बा पाईप या इसी तरह की कोई बनावट ।

चिमोटी—पु० उस्तरे की धार तेज करने का चमड़े का उपकरण ।

चिमोतर—वि० [सं० चतुस्सप्तति] सत्तर व चार, चौहत्तर । —स्त्री० चौहत्तर की संख्या, ७४ ।

चिमोतरी—पु० चौहत्तरवां वर्ष ।

चिय—पु० [सं० चित] १ उपचय, बुद्धि । (जैन) २ जोर से उच्चारण किया हुआ शब्द ।

चियका, (गा)—स्त्री० [सं० चिता] शव दाह के लिए चुनी गई चिता ।

चियत्त—वि० [सं० त्यक्त] छोड़ा हुआ, त्यक्त । (जैन)

चियां—पु० १ कच्चे मकानों की छाजन के आजू-बाजू का भाग । २ हमली का बीज ।

चिया—स्त्री० चिता ।

चियाग, (घ)—पु० [सं० त्याग] त्याग । (जैन)

चियाप—स्त्री० मितव्ययता ।

चियापू—वि० मितव्ययी ।

चियादास—पु० चैत्यदास ।

चियार (इ) (रि, री)—देखो 'चार' ।

चियारं—वि० चारों । —पु० चार ।

चिरजी—पु० १ एक प्रकार का सूखा मेवा । २ देखो 'चिरंजीव' ।

चिरंजीत—क्रि० वि० चिरकाल तक ।

चिरजीव, (बौ)—वि० [सं०] दीर्घायु, चिरायु । —पु० १ मात की संख्या । २ चिरायु होने का आशावाद । ३ कामदेव की उपाधि ।

चिर—वि० [सं०] १ बहुत दिनों का, पुराना । २ बहुत, अधिक । —क्रि० वि० दीर्घकाल से, अधिक समय तक । —पु० दीर्घकाल । —काळ—पु० अधिक समय । —जीव, जीवी, जीवो—पु० विष्णु । मार्कण्डेय ऋषि । सेमर का वृक्ष । कौआ ।

चिरकणी (बौ)—क्रि० १ अपान वायु के साथ थोड़ा मल निकल जाना । २ बच्चों का मल त्यागना ।

चिरकी—पु० अपान वायु के साथ निकला थोड़ा मल ।

चिरचणी—स्त्री० प्रनामिका ।

चिरचणी (बौ)—क्रि० १ पूजन करना । २ चंदन आदि लगाना । ३ चंदन का लेपन करना । ४ देखो 'चरचणी' (बौ) ।

चिरजा—देखो 'चरजा' ।

चिरटिड (टिठय)—वि० दीर्घकाल तक जीवित रहने वाला ।

चिरलोटियो—पु० सधवा स्त्रियों के मोड़ने का वस्त्र ।

चिरली (बौ)—क्रि० १ फटना, विदीर्ण होना । २ सतह में दरार पड़ना । ३ लकीर की तरह का घाव बनना । ४ शस्त्र या चाकू से चीरा जाना । ५ लकड़ी आदि का कटना, विभक्त होना ।

चिरत, चिरतत, चिरत—देखो 'चरित्र' ।

चिरताळ, (ळू, ळी)—वि० (स्त्री० चरताळी) १ चरित्र करने वाला । २ चर्चित करने वाला । ३ पाखंडी, घूर्त । ४ अद्भुत चरित्रवाला । ५ वीर ।

चिरनाटियो—पु० नाश, विध्वंस ।

चिरपड़ी—पु० १ रह-रह कर होने वाली वर्षा । २ ऐसी वर्षा से होने वाला कीचड़ ।

चिरपटी—स्त्री० १ ककड़ी । २ चिड़प ।

चिरपोटण—स्त्री० काक माची ।

चिरपोटियो-पु० एक पीछा विशेष जिसके बीज श्रौषधि में काम आते हैं ।

चिरचरणी (बौ)-क्रि० घाव में जलन होना ।

चिरभट-स्त्री० [सं० चर्मट] ककड़ी ।

चिरम-देखो चिरमी ।

चिरमठड़ी, चिरमठि, चिरमही, चिरमिटी, चिरमी-स्त्री० चिरमी, घुंघची या गुंजाफल । —छो'लौ पु०-एक देशी खेल ।

चिरमेह (ही)-पु० [सं० चिरमेहिन्] गंधा, गर्दभ ।

चिरमीटियो-पु० १ चिमठी से चलाया जाने वाला कंकड़ । २ देखो चिबटियो ।

चिरछाणी (बौ)-क्रि० चीखना, चिल्लाना ।

चिरवाई, चिराई-स्त्री० १ लकड़ी आदि चोरने का पारिश्रमिक । २ चोरने का कार्य ।

चिरस्थाई (यो)-वि० [सं०] १ सदा के लिए हट् । २ दीर्घ काल तक टिकाऊ । ३ दीर्घ काल तक चालु रहने वाला ।

चिराक, चिराग-पु० १ मसाल । २ दीपक । ३ जोत ।

चिराकी, चिरागी-पु० १ मसालची । २ दीपक जलाने वाला अनुचर । ३ मजार पर जोत जलाने वाला ।

चिराणी (बौ), चिरावणी (बौ)-क्रि० १ फड़वाना, विदीर्ण कराना । २ सतह में दरार कराना । ३ शस्त्र या चाकू से चिरवाना । ४ लकड़ी आदि कटवाना, विभक्त कराना ।

चिरायत-पु० जागीर के क्षेत्रों में कर निर्धारित करने वाला अधिकारी ।

चिरायती-पु० [सं० चिरतिक्त] पर्वतीय क्षेत्रों में होने वाला एक पीछा जो श्रौषधि में काम आता है ।

चिरायु (यू)-वि० [सं०] १ अधिक जीने वाला, दीर्घायु । २ बहुत वर्षों तक टिकने वाला, स्थाई ।

चिराळ-पु० दगर का एक भेद जिसमें प्रथम लघु फिर गुरु हो ।

चिरिताळी-देखो 'चिरताळी' ।

चिरी-स्त्री० चिड़िया ।

चिरंजो, चिरौजो-पु० एक प्रकार का सूखा मेवा ।

चिळंस्कत-पु० कवच ।

चिलक, चिलका-स्त्री० चमक, श्रुति, आभा, कांति ।

चिलकणी (बौ)-क्रि० १ चमकना, चमचमाना । २ श्रुतिमान होना । ३ प्रकाशित होना । ४ सीमोर्ल्लघन करना, मर्यादा के बाहर होना ।

चिलकाणी, (बौ) चिलकावणी (बौ)-क्रि० १ चमकाना, चमचमाना । २ श्रुतिमान करना । ४ प्रकाशित करना । सीमोर्ल्लघन करना, मर्यादा के बाहर करना ।

चिलकारी-पु० १ सूर्यास्त से कुछ पूर्व का समय । २ प्रकाश । ३ चमक । ४ झलक ।

चिलकौ-पु० १ चमक, प्रकाश । २ आभा, कांति । ३ प्रतिबिम्ब ।

चिलगौजा-पु० एक प्रकार का मेवा, नेजा ।

चिलड़ी-पु० छोटा क्षुण विशेष ।

चिलणी (बौ)-क्रि० १ चमकना । २ फटना । ३ चीग जाना ।

चिलत (तो)-पु० एक प्रकार का कवच ।

चिलबिली-वि० (स्त्री० चिलबली) नटखट, उदण्ड ।

चिलम (डो)-पु० १ हुक्के का ऊपरी भाग जिसमें तम्बाकू भर कर ऊपर धाग रखी जाती है । २ तम्बाकू पीने का उपकरण । —गरबा-स्त्री० हुक्के की नलिका —चट, खो-वि० चिलम का व्यसनी । —पोस-पु० धातु की जाली या पात्र जो हुक्के पर ढका जाता है ।

चिलमरदो-पु० बेलगाड़ी के अग्र भाग में बंधी रहने वाली एक रस्सी ।

चिलमियो, (म्यो)-पु० चिलम पर रखा जाने वाला अंगारा ।

चिलाइया-स्त्री० किरात देश की स्त्री । (जैन)

चिलाईपूत-पु० एक जैन साधु विशेष ।

चिलातिया, चिलाती-स्त्री० किरात देशोत्पन्न एक दासी । (जैन)

चिलाय-पु० किरात देश ।

चिलिचिल्ल, (चिल, च्चोल) चिलिण-वि० अपवित्र, अशुद्ध (जैन) ।

चिलिमणी, (मिलिया)-स्त्री० १ ढकने का वस्त्र । २ पर्दा ।

चिल्लग-वि० प्रकाश मान, देदीप्यमान । (जैन)

चिल्लङ्ग-पु० १ शिकारी पशु विशेष । २ चीता । (जैन)

चिल्लाणी (बौ)-क्रि० १ जोर से बोलना, चीखना । २ हल्ला या शोर करना । ३ करुण क्रन्दन करना । ४ बकना ।

चिल्लाहट-स्त्री० १ जोर से बोलने की क्रिया या भाव । २ चीख पुकार । ३ हल्ला । ४ क्रन्दन ।

चिल्लित, चिल्लिय-वि० १ प्रदीप्त, चमकयुक्त । २ देखो 'चिल्लो' ।

चिल्लो-पु० [फा० चिल्ल] १ धनुष की प्रत्यंचा । २ चमक-माहट, प्रकाश ।

चिल्लो-स्त्री० चील पक्षी ।

चिवटी, (ठी)-देखो 'चिमटी' ।

चिह-देखो 'चह' ।

चिहउ-क्रि० वि० चारों ओर ।

चिहन-देखो 'चिन्ह' ।

चिहर-देखो 'चिहुर' । —बंघ, बंध—'चिहुरबंद' ।

चिहुर-वि० चार, चारों । —क्रि० वि० चारों ओर । —बळी-क्रि० वि० चारों ओर ।

चिहुर, चिहुर-पु० [सं० चिकुर] वाल, केश । —बंघ, बंध-पु० बंधन, बंध ।

चिहुरे, चिहुरे-वि० चार, चारों । —क्रि० वि० चारों ओर ।

चिहुरेबळी-क्रि० वि० चारों ओर ।

चिह्न

(४०२)

चोखणी

चिह्न-पु० [सं० चिह्न] १ निशान, चिह्न । २ दाग, धब्बा ।
 ३ ध्वजा, पताका । ४ मार्का । ५ संकेत ।
 ची-स्त्री० १ पक्षियों की चहूँचाहट । २ चीं की आवाज या
 शोर । ३ बक-भक । ४ चीख । ५ कराह ।
 चीकरणी, (बी)-क्रि० १ जानवरों का नाक से आवाज करना ।
 २ चीं-चीं करना । ३ चीखना ।
 चीकलमांसी-पु० गोबर का कीड़ा ।
 चीकट-देखो 'चीकट' ।
 चीगण-पु० १ ग्रामेय कोण । २ देखो 'चिगण' ।
 चीगराड़ि-स्त्री० रहट की 'पानड़ी' की आवाज ।
 चीगौ-पु० थोड़ा, अल्प ।
 चीधल-स्त्री० १ दाह संस्कार में जलने से शेष रही लकड़ियां ।
 २ चिता को व्यवस्थित करते रहने की लम्बी लकड़ी ।
 ३ शमशान भूमि, मरघट । ४ चींघण, चिगण ।
 चींचड़ (डो)-पु० (स्त्री० चींचड़ी) १ पशुओं के शरीर से
 चिपक कर रक्त पीने वाला कीड़ा । २ हल में लगने वाली
 किल्ली ।
 चींचपड़-देखो 'चींचाट' ।
 चींचाड़णी, (बी)-देखो 'चींचाणी' (बी) ।
 चींचाट-पु० चीं-चीं करने की क्रिया, शोर ।
 चींचाणी (बी)-पु० चीं-चीं करना, चीखना, चिल्लाना ।
 २ बकना, बक-भक करना । ३ चिढ़ाना, रुलाना । ४ कष्ट
 देना, परेशान करना ।
 चींटी-स्त्री० कीड़ी, चिउंटी, चींटी ।
 चींटो-पु० कीड़ा, चींटा ।
 चींण-स्त्री० १ लहंगे के ऊपर की पट्टी जिसमें नाड़ा डाला
 जाता है । २ रहट में बंधने वाली मोटी भंभीर या रस्ती ।
 ३ पत्थर की लम्बी पट्टी ।
 चींत-स्त्री० चिता । —गर-वि० चिता करने वाला, शुभेच्छु ।
 चींतणी, (बी)-देखो 'चितणी' (बी) ।
 चींतरिया, चींतरी-देखो 'चींधड़ी' ।
 चींतवणी (बी)-देखो 'चितणी' (बी) ।
 चींतगणी, (बी), चींतावणी (बी)-देखो 'चिताणी' (बी) ।
 चींतारी-पु० चित्रकार, चित्रा ।
 चींधड़, (डो, डी)-पु० १ वस्त्र बंड । २ फटा-पुराना वस्त्र ।
 चींधणी (बी)-क्रि० १ रोंदना, कुचलना । २ चलते समय किसी
 पर पैर रख देना ।
 चींधर, (रो, री)-देखो 'चींधड़ी' ।
 चींधाणी (बी), चींधावणी (बी)-क्रि० रोंदवाना, कुचलवाना ।
 चींध-देखो 'चींध' ।
 चींधड़, चींधड़िया, चींधळ, चींधळिया-देखो 'चींधड़' ।
 चींदी-देखो 'चिंदी' ।

चींध-स्त्री० [सं० चिह्न] १ झण्डी, पताका । २ धूल, रज ।
 चींधड़, चींधड़िया, चींधळ, चींधळिया-पु० अपने झंडे की रक्षा
 करने में समर्थ घोड़ा, वीर । २ धर्मव्यक्ति ।
 ३ भिखारी । ४ नीच-मलिन व्यक्ति ।
 चींधळ (डो)-पु० १ झंडा बंधा रहने वाला हाथी । २ चींधड़ ।
 चींधो-देखो 'चिंदी' ।
 चींनणी, (बी)-देखो 'चींनणी' (बी) ।
 चींप-१ देखो 'चींप' । २ देखो 'चींपिया' ।
 चींपड़, (डो, डी)-पु० १ नाई का छोटा चिमटा जिससे नाक के
 बाल उखाड़े जाते हैं । २ आंखों का मल । ३ जिसकी आंखों
 में मल रहता हो ।
 चींपटी-स्त्री० चिमटे का अत्यन्त लघु रूप ।
 चींपटी-देखो 'चिमटी' ।
 चींपिया-देखो 'चिमटी' ।
 चींमड़ी-पु० [सं० चिमटी] १ छोटी ककड़ी विशेष, कचरी ।
 २ सूअर का बच्चा ।
 चींमटी, (डो)-देखो 'चिमटी' ।
 चींयो-देखो 'चियो' ।
 चींबटी-पु० १ कच्चा फल । २ भ्रूण । ३ देखो 'चिमटी' ।
 ची-स्त्री० १ स्याही । २ कंधी । ३ हस्तिनी । ४ माया ।
 ५ शिव की जटा । —अव्य० षष्ठी विभक्ति 'की' ।
 चीक-देखो 'चीख' ।
 चीकट-पु० १ चिकनापन, चिकनाहट, स्निग्धता । २ घी, तेल
 आदि चिकने पदार्थ । ३ स्निग्धता से जमा हुआ मल ।
 चीकणई-देखो 'चिकणई' ।
 चीकणी-वि० चिकनी, स्निग्ध । —चुट-वि० गहरी चिकनी ।
 चीकणी-वि० (स्त्री० चीकणी) १ चिकना, स्निग्ध । २ फिसलन
 युक्त । ३ सपाट व घुटा हुआ । ४ साफ, सुपरा । ५ चादु-
 कार, खुशामदी । —पु० चिकनी सुपारी का वृक्ष ।
 चीकल-देखो 'चीखल' ।
 चीकार-पु० [सं० चीत्कार] १ चीख, पुकार, चिल्लाहट ।
 २ चियाड़ ।
 चीकू-पु० १ एक प्रकार का मोठा फल जो गेंद की तरह होता
 है । २ देखो 'चीखड़' ।
 चीकूण-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
 चीखल-देखो 'चीखल' ।
 चीख-स्त्री० १ जोर की व तीक्ष्ण आवाज, चिल्लाहट । २ हाय-
 त्राय ।
 चीखड़-पु० एक देशी खेल, इसका दूसरा नाम 'चीखू' भी है ।
 चीखणी, (बी)-क्रि० १ जोर से बोलना, चिल्लाना । २ जोर-
 जोर से बकना । ३ कराहना । ४ हाय-त्राय करना ।

चीखल, (सि, लियौ, ली, स्स)—पु० [सं० चिकिलः] १ कीचड़, पंक । २ गीलापन । ३ दलदल । ४ मिट्टी का छोटा जल-पात्र । ५ सर्प का बच्चा ।

चीखू—देखो 'चीखड़' ।

चीगट, (झी)—देखो 'चीकट' ।

चीगटास—पु० चिकनाई, चिकनापन ।

चीगटो—देखो 'चीकणो' (स्त्री० चीगटो) ।

चीघट—देखो 'चीकट' ।

चीघटियो—१ देखो 'चीकणो' । २ देखो 'चीकट' ।

चीड़—पु० १ ऊंट का मूत्र । २ पहाड़ी क्षेत्रों में होने वाला वृक्ष जिसको लकड़ी मुलायम होती है । ३ बारीक मोती । ४ काच की पुरिया ।

चीड़णी, (बो)—कि० ऊंट का पेशाब करना ।

ची'ड़ी—स्त्री० वस्त्र पट्टिका, लीरी ।

ची'ड़ी—पु० चिथड़ा ।

चीज, (झी)—स्त्री० १ वस्तु, पदार्थ । २ द्रव्य । ३ आभूषण, गहना । ४ महत्वपूर्ण व विलक्षण वस्तु । ५ अच्छा गाना या गीत ।

चीटल, (ली)—पु० सर्प का बच्चा ।

चीठ—स्त्री० १ कंजूसी । २ मेल । ३ बिपकने की अवस्था या भाव ।

चीठणी, (बो)—देखो 'चिंठणी' (बो) ।

चीठी—१ देखो 'चिट्ठी' । २ देखो 'चींठी' ।

चीठी—वि० (स्त्री० चींठी) १ स्निग्ध, चिकना । २ आसानो से न छूटने वाला । ३ मजबूती से सटने वाला । ४ कृपण, कंजूस । ५ मजबूत, दृढ़ । ६ सटा हुआ ।

चीडोत्र—पु० चित्तोड़गढ़ ।

चीड़—देखो 'चीड़' ।

चीख—स्त्री० लहंगे के ऊपर की पट्टी । —दार—पु० वह वस्त्र जिसमें 'चीख' लगी हो ।

चीणसुय—पु० [सं० चीनांशुक] १ चीन देश का बना रेशमी वस्त्र (जैन) । २ चीन देश की बनावट का वस्त्र ।

चीणपिट्ट, (चिट्ट)—पु० चीन देश का बना उत्तम वस्त्र । (जैन)

चीणी—स्त्री० १ शक्कर । २ बारीक शक्कर । ३ चीन देश की मिट्टी । ४ देखो 'छीणी' । ५ देखो 'चीनी' । —वि० बारीक । —चंपी—पु० एक प्रकार का केला । एक प्रकार का घोड़ा । —माटी, मिट्टी—स्त्री० सफेद माटी ।

चीणीटियो—पु० [सं० चीन-पट] स्त्रियों के धोड़ने का वस्त्र ।

चोली—पु० १ चना, चने का दाणा । २ एक रंग विशेष । ३ एक रंग विशेष का घोड़ा । ४ सफेद रंग का कबूतर । ५ घटिया किम्ब का अनाज । —वि० बारीक, महीन ।

चीत—१ देखो 'चित्त' । २ देखो 'चित्र' । ३ देखो 'चीता' । ४ देखो 'चिता' ।

चीतकार—पु० [सं० चीत्कार] १ चीख, चिल्लाहट, हुल्ला । २ करुणकन्दन । ३ चित्रकार ।

चीतगढ़—पु० चित्तोड़गढ़ ।

चीतणी (बो)—देखो 'चित्तणी (बो)' ।

चीतदुरंग—पु० चित्तोड़ का दुर्ग ।

चीतर—देखो 'चीतरी' ।

चीतरी—स्त्री० १ छितरे हुए छोटे-छोटे बादलों की गरत । २ गीले या द्रव पदार्थ पर जमने वाली पपड़ी । ३ मादा बघेरा ।

चीतरी—पु० (स्त्री० चीतरी) नर बघेरा ।

चीतल—पु० १ चीते के रंग का मृग । २ एक जाति विशेष का अजगर । —स्त्री० ३ शिला खण्ड । ४ खरगोश आदि का शिकार करने का लकड़ी का उपकरण ।

चीतळती—स्त्री० चितकन्नरी बकरी ।

चीतली—पु० रंग विशेष का घोड़ा ।

चीतवणी (बो)—देखो 'चित्तणी (बो)' ।

चीतवर—वि० साहसी, वीर ।

चीताणी (बो)—देखो 'चित्तणी (बो)' ।

चीतारणी (बो)—देखो 'चित्तारणी (बो)' ।

चीताळकी—वि० चीते के समान पतली कमर वाली ।

चीताळ—स्त्री० कपड़े धोने की शिला ।

चीति—१ देखो 'चित्त' । २ देखो 'चीती' ।

चीती—स्त्री० १ मादा चीता । २ एक सर्प विशेष जिसके बिंसे से प्राणी सड़-सड़ कर मरता है । ३ देखो 'चित्त' ।

चीतेरण—स्त्री० चित्रकार स्त्री ।

चीतेवाण—पु० चीते पाल कर शिक्षा देने वाला व्यक्ति ।

चीतोड़ी—देखो 'चित्तोड़ी' ।

चीतोड़बे—पु० चित्तोड़पति, महाराणा ।

चीतोड़ी—देखो 'चित्तोड़ी' ।

चीती—पु० (स्त्री० चीती) १ शेर की जाति का एक हिंसक जानवर । २ जामुन की पत्तियों से मिलती-जुलती पत्तियों का एक बड़ा पौधा ।

चीत्र—पु० १ तन, शरीर, देह । २ चित्र ।

चीत्रउड़, (कोट, गढ़)—पु० चित्तोड़गढ़ ।

चीत्रणी (बो)—देखो 'चित्रणी (बो)' ।

चीत्रस—पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

चीत्रांस—पु० चित्रांस, चित्र ।

चीत्रारौ—देखो 'चित्तारौ' ।

चीत्रुड़ी, चीत्रोड़, (ड़ि, डी), चीत्रोड़ (डी)—पु० चित्तोड़गढ़ ।

चीपडो—देखो 'चीयडो' ।

चीयाणी (बी)—देखो 'चीयाणी' (बी) ।

चीव, चीवड़—देखो 'चीघड़' ।

चीघ, चीघड़—देखो 'चीघड़' ।

चीनणी (बी)—क्रि० १ मांस काट कर छोटा करना ।
२ पहिचानना, समझना । ३ भ्रंदाज करना । ४ चिह्नित करना ।

चीनवड़ी—पु० एक विशेष रंग का घोड़ा ।

चीनार—पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

चीनी—पु० १ चीन देश का निवासी । २ चीन की मिट्टी ।
—वि० १ चीन का, चीन संबंधी । २ चीन में बना हुआ ।
३ देखो 'चीणी' । —**फरोस**—पु० चीनी मिट्टी के खिलौनों का व्यापारी ।

चीहणी (बी)—देखो 'चिनगी' (बी) ।

चीप—पु० १ ऊंट के चमड़े का बना बड़ा पात्र । २ होल या डफ वजाते समय अतिरिक्त रूप में काम ली जाने वाली कोई खपनी । ३ चुनाई में खाली जगह भरने के लिये दिया जाने वाला पत्थर का छोटा टुकड़ा । ४ संघिस्थलों पर लगाया जाने वाला पत्थर ।

चीपटी, चीपटी—पु० १ ज्वार के कच्चे पौधों का चारा ।
२ देखो 'चिमटी' ।

चीपडीउ चीपडउ—पु० [सं० चिपटः] १ आंख का मेल ।
२ चपटी नाक वाला व्यक्ति ।

चीपी—स्त्री० १ दूध दूहने का पात्र । २ चीप की खपची ।
३ लड़ाई या द्वेष बढ़ाने वाली बात ।

चीपियो—पु० १ चूल्हे में रखा जाने वाला खीरा पकड़ने का औजार । २ कांटा निकालने का छोटा औजार ।

चीपूँछियो—पु० घास विशेष ।

चीफाड़—पु० चित्तस्फोटक ।

चीब—स्त्री० १ स्वभाव, आदत । २ ऐब ।

चीबड़ी (ड़ी)—स्त्री० [सं० चिर्मटी] १ ककड़ी । २ सूअर का बच्चा ।

चीबटी (ठी)—देखो 'चीपटी' ।

चीबर, चीबरी—स्त्री० चमगादड़ ।

चीबरी—पु० १ उल्लू जाति का, कबूतर से छोटा एक पक्षी ।
२ मुसलमान ।

चीबी—स्त्री० १ ऊंट के बच्चे की मस्ती जिसमें वह इधर-उधर कुदता है । २ मादा ऊंट का ऋतुमती होने का भाव ।

चीबी—पु० १ मुसलमान । २ यवन ।

चीबड़वाल—पु० बहुत से बच्चों वाली मादा सूअर ।

चीबड़ी—देखो 'चीबड़ी' ।

चीबड़ी—पु० १ सूअर या सूअर का बच्चा । २ चिरभट ।

चीमड़—स्त्री० एक देवी विशेष ।

चीमड़ियो (ड़ी)—देखो 'चीमड़ी' ।

चीमटी—पु० १ प्रायः लोहे की पत्ती को मोड़कर बनाया हुआ उपकरण जो अंगारे आदि को पकड़कर उठाने में काम आता है । २ उन्मत्त हाथी को वश में करने का उपकरण ।

चीये (यै)—स्त्री० एक देवी विशेष ।

चीर—पु० १ स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र । २ वस्त्र, कपड़ा ।
३ पुराना वस्त्र, चिथड़ा । ४ गाय का स्तन । ५ गुग्गुल का पेड़ । ६ साईं । ७ वृक्ष की छाल । ८ चीर-फाड़ ।

चीरड़ (ड़ी, डी)—पु० पुराना वस्त्र, चिथड़ा, लत्ता ।

चीरणी (णी)—स्त्री० १ चीरने की क्रिया या भाव । २ बड़ई का एक औजार । ३ पत्थर की खुदाई का एक औजार ।
३ लोहे की छेनी ।

चीरणी (बी)—क्रि० [सं० चीर्णम्] १ फाड़ना, विदीर्ण करना, चीरना । २ सतह में दरार करना । ३ लकीर की तरह का घाव करना । ४ शस्त्र या चाकू से चीर देना । ५ लकड़ी आदि को काटना, विभक्त करना ।

चीर-फाड़—स्त्री० १ चीरने फाड़ने की क्रिया या भाव । २ शल्य चिकित्सा ।

चीरतल—पु० [सं०] एक पक्षी विशेष । (जैत)

चीराई—स्त्री० १ चीरने का कार्य । २ इस कार्य की मजदूरी ।

चीरागुर (गुर)—पु० नाथ सम्प्रदाय में कान चीर कर दीक्षित करने वाला साधु ।

चीराजिण (न)—पु० [सं०] व्याघ्र या मृगचर्म । (जैत)

चीराणी (बी)—क्रि० १ फड़वाना, विदीर्ण करवाना, चिराना ।
२ सतह में दरार कराना । ३ लकीर की तरह का घाव कराना । ४ शस्त्र या चाकू से चीरा चिराना । ५ लकड़ी फड़वाना ।

चीरापुस—पु० देवता । —वि० दीर्घायु ।

चीराळी—स्त्री० [सं० चर्तल] १ किसी वस्तु की चीरी हुई फाड़ ।
२ छोटे-छोटे खण्ड । ३ लंबा घाव । ४ चीख ।

चीरावणी (बी)—देखो 'चिराणी' (बी) ।

चीरिग, चीरिय—पु० [सं० चीरिक] १ एक जैनी भिक्षु वर्ग ।
२ फटे कपड़े पहनने वाला साधु ।

चीरी—स्त्री० [सं० चू०] १ फल आदि को चीरी हुई फाड़, भाग । २ लम्बा घाव । ३ भीगुर । ४ मृत्यु भोज की चिट्ठी ।
५ चिट्ठी, पत्री । ६ पर्दा । ७ देखो 'चीर' ।

चीरी—पु० १ नक्षत्र आदि से किया हुआ घाव, चीरा । २ चीरने की क्रिया । ३ चीर । ४ पगड़ी, उष्णी । ५ वस्त्र का टुकड़ा, खण्ड, धज्जी । ६ कृषकों या प्रजासे लिया जाने वाला एक जमीरदारी कर । ७ मकान बनाने समय दीवार के बहार छोड़ी जाने वाली चार इंच जगह । ८ द्वार के ऊपर लगाया जाने वाला चित्रित पत्थर । ९ कपड़े की छोटी

पट्टी जो साफ़े या पगड़ी पर बांधी जाती है । १० लगान पर कर निर्धारण का क्षेत्र ।

बील, (क, ख) बीलड़ी-स्त्री० [सं० चिल्ल] १ गिद्ध की जाति का एक मादा पक्षी । २ सर्प । ३ शेषनाग । ४ मार्ग, रास्ता । ५ गेहूँ की फसल में उगने वाला एक घास । ६ आभूषण विशेष ।

बीलड़ी-पु० [सं० चिल्लीशाकम्] १ गेहूँ की फसल में होने वाला 'बील' नामक घास । २ बेसन आदि का परांठा ।

बीलपट्टी-पु० एक देशी खेल ।

बीलपत (पति)-पु० शेषनाग ।

बीलप्यार-पु० चंदन वृक्ष ।

बीलभण (भणि)-स्त्री० सर्प की भणि ।

बीलम्मी-देखो 'चिलमिमी' ।

बीलर-स्त्री० १ रेजगारी, सिक्के । २ पोखर, छोटा जलाशय ।

बीलराज (सेख)-पु० शेषनाग ।

बीलरियो-देखो 'बीलर' ।

बीलवी-पु० पत्तीदार शाक ।

बीलहांडी-स्त्री० एक देशी खेल ।

बीलार-पु० १ देवता । २ गरुड़ ।

बीलू-देखो 'चिल्ली' ।

बीली (स्त्री)-१ देखो 'चइली' । २ देखो 'चिल्ली' ।

बीलह, (रि)-१ देखो 'बील' । २ देखो 'चिलड़ी' ।

बीलहर-पु० १ सूअर का बच्चा । २ देखो 'बीलर' ।

बीलहाराव-पु० शेषनाग ।

बीलही-१ देखो 'चइली' । २ देखो 'चिल्ली' ।

बीबली-स्त्री० कपाटों की किनारी, सजावट ।

बीबर-देखो 'बीर' ।

बीस-स्त्री० १ रह-रह कर होने वाली तीक्ष्ण पीड़ा, कमक । २ चीख । ३ क्रन्दन ।

बीसली (बी)-क्रि० १ रह-रह कर दर्द होना । २ कसकना, कराहना । ३ चीखना, चिल्लाना । ४ सिसकना । ५ क्रन्दन करना ।

बीसल, बीसाळी, बीह-देखो 'बीस' ।

बीहली-देखो 'चइली' ।

बीहिटिया-स्त्री० श्मशान भूमि, श्मशान ।

बीहोर-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

बुं-देखो 'बू' ।

बुंगळ-देखो 'बुंगळ' ।

बुंनवाल-पु० १ यवन । २ मुसलमान ।

बुंगाणी (बी), बुंगावणी (बी)-क्रि० १ शिशु को स्तन पान कराना । २ चुमाना ।

बुंगी-स्त्री० किसी व्यापारिक वस्तु का नगर पालिका का कर ।

बुंधाली (बी), बुंधावणी (बी)-देखो 'बुंगाणी (बी)' ।

बुंनडी-देखो 'बुंनडी' ।

बुंबक-पु० १ लोहे को आकर्षित करने वाला पत्थर या धातु । २ चुंबन करने वाला या चुम्बने वाला व्यक्ति । ३ धूर्त व्यक्ति ।

बुंबणी (बी)-देखो 'बूंबणी (बी)' ।

बुंबन-पु० प्रेमीतिरेक की अभिव्यक्ति के लिये ओठों से दिया जाने वाला चुम्मा, बोसा, पप्पी ।

बुंबित-वि० [सं०] १ चुम्मा हुआ । २ स्पर्श किया हुआ, छुआ हुआ ।

बुंबी-वि० चुम्बने वाला ।

बुंबी-पु० चुंबन, बीमा ।

बुंबी-स्त्री० डुबकी, गोता ।

बुंबळी-पु० चवला नामक द्विदल अन्न ।

बुंहटी-स्त्री० चुटकी, चिमटी ।

बु-स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि । २ अग्नि । ३ कान । ४ बन्ध । ५ उपधान ।

बुभणी (बी)-क्रि० १ बूंद-बूंद टपकना, रिसना । २ भरना । ३ तर होना । ४ रसमय होना ।

बुभणी (बी), बुभवाणी (बी)-क्रि० १ बूंद-बूंद टपकाना, रिसाना । २ भरना । ३ तर करना । ४ रसमय करना ।

बुहणी (बी)-देखो 'बुभणी (बी)' ।

बुई-स्त्री० कपड़ा बुनने का औजार ।

बुकंदर-पु० [फा०] एक प्रकार की गाजर ।

बुकडड (डी)-पु० कान का आभूषण विशेष ।

बुकली (बी)-क्रि० [सं० चुत्कृ] १ समाप्त होना । २ पूर्ण होना । ३ उच्छ्रय होना । ४ निवृत्त होना । ५ चुगता होना । ६ देखो 'बुकली (बी)' ।

बुकमार-देखो 'बुकमार' ।

बुकली (बी)-क्रि० १ बढहवास होना, धवसान । २ चुकना ।

बुकली (बी)-क्रि० १ बढहवास करना । २ भयभीत करना । ३ भ्रमित करना । ४ क्रम भंग करना । ५ गणना क्रम भंग करना । ६ ध्यान भंग करना ।

बुकलियी (ल्यी)-पु० मिट्टी का छोटा घड़ा ।

बुकली-स्त्री० १ मिट्टी की छोटी हड्डिया । २ मृतक के वारसों के दिन भरे जाने वाले छोटे-छोटे मिट्टी के पात्र । ३ मृतक के दादशे का भोज ।

बुकाई-स्त्री० चुकाने का कार्य । भुगतान ।

बुकाणी (बी), बुकावणी (बी)-क्रि० १ समाप्त करना । २ पूर्ण करना । ३ उच्छ्रय करना । ४ निवृत्त करना । ५ चुगता करना, भुगताना । ६ चुलाना, भ्रमित करना । ७ छोखे में डालना । ८ लक्ष्य भ्रष्ट करना । ९ अक्सर चुकवाना ।

चुकुमार-देखो 'चुकमार' ।

चुकणो(बो)-१ देखो 'चुकणी'(बो) । २ देखो 'चुवणी(बो)' ।

चुखड़-देखो 'चुखड़ो' ।

चुख-पु० टुकड़ा, खण्ड, भाग ।

चुखड़ी-वि० कृपण, कंजूस ।

चुखचुख, चुखचुख, चुखचुख-वि० खण्ड-खण्ड ।

चुग-पु० १ पक्षियों का चुगा । २ आहार, भोजन ।

चुगणी(बो)-क्रि० [सं० चयन] १ पक्षियों द्वारा चोंच से कोई वस्तु उठाना, चुगा करना । २ बीनना, एकत्र करना, चुन-चुन कर रखना । ३ चयन करना, चुनाव करना ।

४ घनाज साफ करना । ५ पशुओं द्वारा चारा खाना ।

चुगब-वि० [फा०] मूर्ख, बेवकूफ ।

चुगल-पु० [फा०] १ चिलम के छेद में फंसाया जाने वाला कंकड़ । २ राक्षस, असुर । ३ निदक । ४ चुगली करने वाला । —खोर-वि० चुगली करने वाला । निंदा करने वाला । —खोरी-स्त्री० किसी की शिकायत करने का कार्य, निंदा ।

चुगलणी(बो)-क्रि० १ चूसना । २ स्वाद लेकर खाना । ३ टोकने के कारण भूलना, चुक जाना ।

चुगलाल(बो), चुगलियो-वि० १ चुगली करने वाला । २ निदक । —पु० १ यवन । २ मुसलमान । ३ बादशाह ।

चुगली-स्त्री० १ शिकायत । २ बुराई, निंदा । ३ किसी की पीठ पीछे उसके दोष कहने की क्रिया । ४ शिखा, चोटी ।

चुगवो-पु० चुनिन्दा, चुना हुआ, छंटा हुआ, बढ़िया ।

चुगाई-स्त्री० १ चुगने का कार्य । २ इस कार्य का पारिश्रमिक । ३ बीनाई ।

चुगाणी(बो), चुगावणी(बो)-क्रि० १ पक्षियों को घनाज घादि डाल कर चुगवाना । २ बीनवाना, एकत्र कराना, चुनवाना । ३ चयन कराना, चुनाव कराना । ४ घनाज साफ कराना । ५ पशुओं को चारा खिलाना ।

चुगलखोर-देखो 'चुगलखोर' ।

चुगो(गो)-पु० १ पक्षियों के खाने का दाना, घनाज । २ आहार, भोजन । ३ चारा । ४ एक प्रकार का बाण । ५ स्वर्णकारों का एक योजार । ६ बहुत छोटी सी कैंची ।

चुड़-१ देखो 'चूड़ो' । २ देखो 'चिड़ी' ।

चुड़कली-स्त्री० चिड़िया ।

चुड़खली(बो)-क्रि० १ पीड़ा या वेदना से कराहना । २ छोटा-छोटा घास चरना, चूटना ।

चुड़खो-पु० छोटा हरा घास ।

चुड़लियो-देखो 'चूड़ी' ।

चुड़ली-देखो 'चूड़ी' ।

चुड़नी(ल्यो)-देखो 'चूड़ी' ।

चुड़स, चुड़स-स्त्री० १. भूतनी, डायन, प्रेतनी, पिशाचिनी ।

२ क्रूर स्वभाव वाली कर्कशा स्त्री । ३ कुसपा स्त्री ।

चुचुक-पु० [सं०] स्तन या कुच का अग्रभाग, कुच की घुंड़ी

चुजेण-स्त्री० चतुराई ।

चुटकली-पु० १ विनोद पूर्ण बात, हंसी की बात । २ चमत्कार पूर्ण उक्ति ।

चुटकी(की)-स्त्री० १ अंगुठे व तर्जनी से किसी चीज को पकड़ने का भाव । २ इस प्रकार से पकड़ में आने वाली वस्तु की मात्रा । ३ अंगुठे व मध्यमा को मिलाकर उत्पन्न की जाने वाली ध्वनि । ४ सम्पूर्ण अंगुलियों के बीच समाने वाली वस्तु । ५ अंगुठे व तर्जनी से चमड़ी पकड़ कर भरी जाने वाली चिकोटी ।

चुटियो-देखो 'चिटियो'

चुटणी(बो)-देखो 'चूटणी'(बो)

चुडलिय (सिय)-पु० गुरु वन्दना का एक दोष । (जैन)

चुणणी(बो)-क्रि० १ चुन-चुन कर एकत्र करना । २ चयन करना, चुनाव करना । ३ छंट-छंट कर लेना । ४ बीनना । ५ पसंद करना । ६ एक पर एक या तह पर तह रख कर सजाना, जमाना । ७ पत्थरों की दीवार बनाना, चुनाई करना ।

चुणाई-स्त्री० १ चुनने का कार्य । २ चयन, चुनाव । ३ छंटाई । ४ बीनाई । ५ दीवार की चुनाई । ६ चुनने की मजदूरी ।

चुणाणी(बो)-क्रि० १ चुन-चुन कर एकत्र करना । २ चयन कराना, चुनाव कराना । ३ छंटाई कराना । ४ बीनाना । ५ पसंद कराना । ६ एक पर एक या तह पर रखवा कर सजवाना, जमवाना । ७ दीवार बनवाना, चुनाई कराना ।

चुणाव-पु० [सं० चयन] १ बहुतां में से कुछेक का चयन, चुनाव । २ मतदान, निर्वाचन । ३ पसंद ।

चुणावट-स्त्री० १ चुनने की कला । २ देखो 'चुणाई' ।

चुणावणी(बो)-देखो 'चुणाणी'(बो) ।

चुणावो-पु० चुने हुए पदार्थ या व्यक्तियों का समूह ।

चुणिंदी-वि० १ चुना हुआ, छंटा हुआ । २ खास, विशेष, मुखिया, प्रधान । ३ मन पसंद, बढ़िया ।

चुणीतो-स्त्री० १ ललकार, चुनोती । २ उत्तेजना ।

चुणल-पु० चूर्ण, संश्रित चूर्ण । (जैन)

चुणकोसय-पु० एक ही जातीय खाद्य पदार्थ । (जैन)

चुणिलो(यो)-वि० [सं० चूर्णितः] चूर्ण किया हुआ । (जैन)

चुतरंग-देखो 'चतुरंग' । —बल= 'चतुरंगदल' ।

चुतराबेल-स्त्री० एक लता विशेष ।

चुतरेस-पु० विष्णु, ईश्वर ।

चुतरी-पु० ब्रह्मा, चतुरानन ।

चुवक्कड़-वि० १ बहुकामी, अधिक स्त्रियों से संभोग करने वाला । २ बहुत संभोग कराने वाली स्त्री, संभोग प्रिय स्त्री ।

चुवणी-वि० बहु संभोग प्रिया ।

चुवणी (बी)-क्रि० किसी स्त्री का संभोग किया जाना । भोगा जाना ।

चुववाई, चुवाई-स्त्री० १ संभोग कराने का कार्य । मैथुन । २ वेश्या वृत्ति से प्राप्त धन ।

चुवाणी-स्त्री० अति कामी स्त्री ।

चुवाणी (बी), चुवावणी (बी)-क्रि० संभोग कराना, पुरुष से समागम कराना ।

चुवास-स्त्री० मैथुनेच्छा ।

चुवा-स्त्री० दाख, किसमिस,

चुनड़ियौ-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

चुनड़ी-देखो 'चूँदड़ी' ।

चुनियोबूँब-पु० पलास का गूँद, कमरकस ।

चुनियो-पु० भीठा आदि खाने से बच्चों के पेट में होने वाला र्वेत व बारीक कीड़ा ।

चुनी (न्नी)-स्त्री० १ रत्न कण । २ छोटा नमीना । ३ छोटी लड़कियों की छोटी मोड़नी ।

चुप-वि० १ मौन, शान्त, खामोश । २ अवाक् ।-स्त्री० १ खामोशी, शान्ति । २ चुप्पी ।

चुपके (कँ)-क्रि० वि० धीरे से, चुपचाप । छुपे तीर पर । शान्त भाव से ।

चुपकौ-वि० मौन, शान्त ।

चुपड़णी (बी)-क्रि० १ रौटी आदि पर धी लगाना । २ चिकना करना, स्निग्ध करना । ३ लेप करना । ४ चापलूसी करना ।

चुपड़णी (बी), चुपड़ावणी (बी)-क्रि० १ रौटी आदि पर धी लगवाना । २ चिकना कराना, स्निग्ध कराना । ३ लेपन कराना ।

चुपचाप-वि० मौन, शान्त ।-क्रि० वि० १ बिना कुछ बोले । २ शान्त भाव से । ३ निरुद्योग मे बिना प्रयत्न किये ।

चुपट-पु० चौगान ।

चुपाखर-पु० चारों ओर, चारों बाजू । (जैन)

चुप्पक-वि० मौन, शान्त ।

चुप्पालय-पु० १ विजय नामक देवता का शस्त्रागार । २ शस्त्रागार ।

चुबारी-देखो 'चोबारी' ।

चुमकी-स्त्री० डुबकी, गोता ।

चुमणी (बी)-क्रि० १ किसी कांटे या नुकीली वस्तु का किसी ग्रंथ में धुम जाना, धंस जाना । २ बार-बार स्पर्श होने

पर कष्ट प्रद लगना । ३ मन में खटकना । ४ व्यथा पैदा होना । ५ हृदय में प्रकित होना, दिल में बैठ जाना ।

चुमाणी (बी), चुमावणी (बी), चुमोणी (बी)-क्रि० १ कांटा या कोई नुकीली वस्तु किसी ग्रंथ में घसाना, घंसाना । २ स्पर्श कराकर कष्ट देना, तकलीफ देना । ३ व्यथा पैदा करना । ४ मन में कोई बात बैठा देना ।

चुमकार (रौ)-स्त्री० १ चुम्बन आदि की किया । २ लाड-प्यार से शान्तवना देना, पुचकार ।

चुमकारणी (बी)-क्रि० १ चुम्बन आदि देना । २ लाडप्यार से शान्त करना, धैर्य देना पुचकारना ।

चुमाणी (बी), चुमावणी (बी)-क्रि० १ चूमने के लिये प्रेरित करना, आग्रह करना । २ चूमने के लिये प्रस्तुत करना, आगे करना । ३ चुम्बन लिराना ।

चुमास-देखो 'चौमासी' ।

चुम्मक-देखो 'चूँबक' ।

चुम्मी-देखो 'चुंवन' ।

चुरड़णी (बी) क्रि० १ द्रव पदार्थ को श्वास के जरिये मुँह में खींचना । २ चूसना ।

चुरड़ी-पु० चुल्लू, अंजली ।

चुरट (ठ)-वि० १ लाल । २ हृष्ट-पुष्ट । -पु० एक प्रकार की चिलम जिसमें तम्बाखू भर कर बीड़ी की तरह पिघा जाता है ।

चुरणादी (ठी)-पु० १ एक ध्वनि विशेष । २ नाश, ध्वंस ।

चुरणियो, चुरनियो-देखो 'चुनियो' ।

चुरमली-स्त्री० काण्ठ की छोटी फांस ।

चुररी-पु० चूरा, चूर्ण ।

चुरस, (सि, सी)-वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ देखो 'चरस' ।

चुराई-स्त्री० चोरी का कार्य ।

चुराणी (बी), चुरावणी (बी)-क्रि० १ किसी का धन या वस्तु चुपके से उठाकर ले जाना । २ हरण करना, अपहरण करना । ३ कोई वस्तु छुपा लेना । ४ कोताई करना, निश्चित कार्य न करना । ५ किसी कार्य के प्रति उदासीन रहना, बचना, बहाने बनाना । ६ मोह लेना, आकृष्ट कर लेना ।

चुरी-स्त्री० १ लगन मंडप के चारों कोने पर चार मिट्टी के जल पात्र रखने का ढंग या व्यवस्था । २ देखो 'चंबगी' ।

चुरु-देखो 'चरु' ।

चुळ-स्त्री० [सं० चल] १ खुजलाहट, खुजली । २ गुदगुदी । ३ मैथुनेच्छा (स्त्री०) । ४ हरकत ।

चुळकी-पु० १ हरकत, हलचल । २ एक मासिक छंद विशेष ।

चुळबुळणी (बी)-क्रि० १ खुजली चलना । २ गुदगुदी होना । ३ मैथुनेच्छा होना । ४ हरकत करना ।

बुलबुलहाट, बुलबुली-स्त्री० १ खजली होने की क्रिया या भाव ।

२ गुरगुदी । ३ मैपुनेच्छा । ४ चंचलता । ५ हरकत ।

बुलली-स्त्री० द्रुपद राजा की स्त्री । (जैन)

—बिध- पु० भगवान महावीर का एक उपासक । (जैन)

बुलली (बी)-क्रि० १ हिलना-डुलना । २. हरकत करना ।

३ पथ भ्रष्ट होना, पतित होना । ४ कोई पदार्थ विकृत होना । ५ खजलाहट होना ।

बुलबुल, बुलबुल-स्त्री० १ हल-चल, हरकत । २ नटखटपन ।

३ चंचलता । ४ रक्त खून ।

बुलबुलानी (बी)-क्रि० १ हलचल करना, हरकत करना ।

२ उड़पड़ता करना । ३ चंचल होना । ४ शान्त न रहना ।

बुलबुली-वि० (स्त्री० बुलबुली) नटखट, चंचल ।

बुलबुल-देखो 'बुलबुल' ।

बुलसी (इ)-स्त्री० अस्सी व चार की संख्या, बीरसी । (जैन)

बुलानी (बी), बुलावणी (बी)-क्रि० १ स्थान से हटाना,

हिलाना, डुलाना । २ अस्थिर करना, डावांझील करना ।

३ पथ भ्रष्ट करना, पतित करना । ४ सड़ाना, विकृत करना । ५ हरकत कराना ।

बुल्ल-पु० छोटा बच्चा, शिशु । -वि० छोटा, लघु । —सयक(ग)

-पु० महावीर स्वामी का एक श्रावक । (जैन)—हिमवत-पु० एक पर्वत । (जैन)

बुल्ली-स्त्री० १ छोटा बूल्हा । २ अंजली ।

बुल्लू (ल्लौ)-पु० [सं० बुलुकः] १ एक हाथ का पात्र बताने

की मुद्रा । बुल्लू, अंजली । २ अंजली भर पानी ।

३ चिड़ियों की चहचाहट (मेवात) ।

बुवटी-देखो 'बौवटी' ।

बुवणी (बी)-देखो 'बुमणी' (बी) ।

बुवाणी (बी)-देखो 'बुमणी' (बी) ।

बुबारी-पु० मुन्नत करने वाला व्यक्ति ।

बुबौ-पु० मज्जा ।

बुसकी-स्त्री० [सं० चएक] १ शराब पीने का पात्र । २ पेय पदार्थ की घुटकी, चुस्की । ३ चुस्की के साथ पीने की क्रिया ।

बुसट-देखो 'बौसट' ।

बुसणी (बी)-क्रि० १ चुसा जाना । २ सोखा जाना ।

३ निचुड़ना, सारहीन होना । ४ शक्तिहीन होना ।

५ सूखना ।

बुसाई-स्त्री० चूसने की क्रिया या भाव ।

बुसाणी (बी), बुसावणी (बी)-क्रि० १ चूसने के लिये प्रेरित

करना, आग्रह करना, प्रस्तुत करना । २ सोखाना ।

३ निचुड़ाना, सारहीन कराना । ४ निर्बल कराना ।

५ सूखाना ।

बुसाळ-देखो 'बौसाळ' ।

बुस्त-वि० [फा०] १ फुर्तीला, स्फूर्ति वाला । २ सावधान, चौकन्ना । ३ तत्पर, तैयार । ४ दृढ़ । ५ हृष्ट-पुष्ट ।

बुस्ती-स्त्री० [फा०] १ स्फूर्ति । २ सावधानी । ३ तत्परता । ४ दृढ़ता । ५ हृष्ट-पुष्टता ।

बुसणी (बी)-१ देखो 'बुमणी' (बी) । २ देखो 'बूसणी' (बी) ।

बुहल-स्त्री० १ हंसी, मजाक, ठिठोली । २ छेड़-छाड़ । ३ गंदी

हरकत । —बाज-वि० बुहल करने वाला । —बाजो-

स्त्री० बुहल करने का कार्य, हंसी, ठिठोली ।

बुहियो-पु० लोह की गर्म सलाका का दाग । २ अग्नि दग्ध की क्रिया । ४ देखो 'बूही' ।

बुहि, बुही-स्त्री० १ खान से पत्थर तोड़ने के लिये सेंध लगाने की क्रिया । २ देखो 'चार' ।

बुहटली-स्त्री० चंचुपुट, चोंच ।

बुहुट, बुहुटी-देखो 'बौवटी' ।

बू-पु० १ चिड़िया की बोली । २ बू-बू की ध्वनि ।

बूक-देखो 'बूप' ।

बूकणी (बी)-क्रि० १ ऊंट के छेँ बाद दो दांत ग्रीर निकलना । २ टोकना । ३ देखो 'बूकणी' (बी) ।

बूकळणी (बी)-क्रि० १ घंसना, घुसना, चुभना । २ टोकना । ३ चूकना ।

बूकली-पु० १ शस्त्रादि का नुकीला भाग । २ शस्त्र का प्रहार । ३ म्यान के शिर पर लगा धातु का उपकरण ।

बूकरी-पु० १ बू-बू की ध्वनि । २ विरोध में कहा शब्द । ३ आपत्ति, एतराज ।

बूकी-पु० १ रुई या ऊन का छोटा गुच्छा । २ छोटा बादल ।

बूखणी (बी)-क्रि० १ स्तनपान करना । २ रुई या ऊन के रेशों को अलग-थलग करना । ३ चूसना ।

बूखाणी (बी), बूखावणी (बी)-क्रि० १ स्तनपान कराना ।

२ रुई या ऊन के गुच्छों को पृथक-पृथक कराना । ३ चूसना ।

बूखी-देखो 'बूकी' ।

बूग-पु० एक प्रकार का श्रवण ।

बूगणी (बी)-क्रि० १ स्तनपान करना । २ चूसना ।

बूगणी (बी)-पु० दूध मुँहा बच्चा, शिशु ।

बूगाणी (बी), बूगावणी (बी)-क्रि० १ स्तनपान कराना । २ चूसना ।

बूगी-देखो 'बुंगी' ।

बूघणी (बी)-देखो 'बूगणी' (बी) ।

बूघणी (बी), बूघावणी (बी)-देखो 'बूगाणी' (बी) ।

बूच-स्त्री० [सं० चंचु] १ पक्षी की चोंच, चंचु । २ चोंच की तरह का कोई तीखा मुख । ३ उमंग, उत्साह । ४ जोश,

प्रावेण । -वि० १ पूर्ण, तुप्त, परितुष्ट । २ धुत्त ।
 ३ मदोन्मत्त ।
चूँचक (की)-पु० १ कन्या के प्रथम प्रसव के बाद विदाई के समय दिया जाने वाला सामान । २ देखो 'चूँची' ।
चूँचड़ी, चूँचाड़ी-देखो 'चूँची' ।
चूँचाणी (बी), चूँचावणी (बी)-क्रि० १ गाड़ी आदि को अधिक दौड़ाना । २ अधिक काम में लेना । ३ स्त्री-संभोग करना ।
चूँची-स्त्री० १ स्तन, कुच । २ स्तन का अध्र भाग, नोक, घुंड़ी ।
 ३ स्लेट पर लिखने की वर्तिका, कलम । ४ जलती हुई तीलिका । ५ प्राग । ६ कलह कराने वाली बात ।
चूँची-पु० १ प्राग, पत्नीता । २ स्तन, कुच ।
चूँट-स्त्री० १ अंगुलियों से तोड़ने की क्रिया या भाव, बीनवाई ।
 २ फुटकर व्यय । ३ एक ही कार्य पर थोड़ा-थोड़ा व्यय ।
 ४ शोषण ।
चूँटणी (बी)-क्रि० [सं० चुट] १ चुन-चुन कर अंगुलियों से तोड़ना, तोड़-तोड़ कर एकत्र करना । २ चुनना, बीनना । ३ ऊपर से काटकर छोटा करना, छांटना । ४ नोचना, नोच कर खाना । ५ शोषण करना । ६ व्यर्थ का खर्च कराना ।
चूँटाणी (बी), चूँटावणी (बी)-क्रि० १ चुन-चुन कर तोड़ना, तुड़ा-तुड़ा कर एकत्र कराना । २ चुनवाना, बीनवाना ।
 ३ कटवाना, छांटवाना । ४ नुचवाना । ५ शोषण कराना ।
 ६ व्यर्थ का खर्च करवाना ।
चूँटियाँ-पु० १ अंगुष्ठ व तर्जनी की नोक से चमड़ी पकड़ कर ली जाने वाली चुटकी, कचौटी, चमोटी । २ मर्म वचन ।
 ३ एक प्रकार का चूरमा ।
चूँटी-पु० १ छोटा घाम । २ छोटा डंठल । ३ मक्खन की टिकिया ।
चूँडणी (बी)-क्रि० १ बनाना । २ आकृति या डील तैयार करना ।
चूँडाली-पु० (स्त्री० नूँडाली) एक पक्षी विशेष ।
चूँण-पु० १ चुरागा, दागा । २ चूर्ण । ३ घाटा, चून । ४ जो का घाटा ।
चूँणी (बी)-देखो 'चूँणणी' (बी) ।
चूँतरी-स्त्री० चवूतरी, चीतरी ।
चूँतरी-पु० चवूतरा, चीतरा ।
चूँथणी (बी)-क्रि० १ किसी वस्तु को निरर्थक, मगलना उधर-उधर करना । २ बार-बार छूकर मंदा करना । ३ कुचलना रोंदना । ४ लूटना, डाका डालना ।
चूँथाणी (बी), चूँथावणी (बी)-क्रि० किसी वस्तु को व्यर्थ ममलाना, उधर-उधर कराना । २ बार-बार हाथ में लेकर

मंदा कराना । ३ कुचलाना, रोंदना । ४ लुटवाना, डाका डालवाना ।
चूँथी-स्त्री० छोटा कागज, छोटा पत्र ।
चूँथी-पु० १ चूँथा हुआ पदार्थ । २ खाने के बाद अवशिष्ट बचा भाग । -वि० १ चूँथा हुआ । २ उच्छिष्ट, अवशिष्ट ।
 ३ उत्पन्न वाला । (कार्य)
चूँवड़ी-स्त्री० १ दुल्हन या सधवा स्त्रियों की चमकीदार लाल, पीली ओढ़नी । २ रंग विशेष की साड़ी या ओढ़नी ।
 —साफी-पु० उक्त प्रकार के रंग का साफा ।
चूँवी (बी)-वि० (स्त्री० चूँदी) १ छोटी घासों वाला ।
 २ कमजोर नजर वाला ।
चूँध-स्त्री० तेज प्रकाश में होने वाली चकाचौंध ।
चूँधीजणी (बी)-क्रि० चोंधिया जाना ।
चूँन-पु० १ घाटा । २ चूर्ण । -वि० ध्वेत, मफेद ।
चूँनड़ (बी)-देखो 'चूँदड़ी' ।
चूँप-स्त्री० १ शौक, चाव, उन्माह । २ लगन । ३ उत्कंठा, प्रबल इच्छा । ४ स्वच्छता । ५ चतुराई, दक्षता । ६ तग, नमीना । ७ ऊपर के दांतों में डीक सामने फंसा कर पहनने का आभूषण । ८ चतुराई, दक्षता । ९ छोटी वस्तु के चटकने या तिड़कने पर, मजबूती के लिये लगाया जाने वाला तार का बंद । १० शोभा, सुन्दरता । —चाप-स्त्री० सफाई ।
चूँपणी (बी)-क्रि० १ चूसना । २ श्वास से खींचकर पीना ।
 ३ स्पृशं करना, छूना । ४ देखो 'चूँथणी (बी)' ।
चूँवणी (बी)-क्रि० १ किसी का चुंबन लेना, चूमना । २ स्नेह प्रदर्शन करना । ३ पुचकारना ।
चूँधाणी (बी)-क्रि० १ किसी का चुंबन लिराना । २ चूमने के लिये प्रस्तुत करना । ३ स्नेह प्रदर्शन कराना ।
चूँमणी (बी)-देखो 'चूँवणी' (बी) ।
चूँमाणी (बी), चूँमावणी (बी)-देखो 'चूँवाणी' (बी) ।
चूँरी-देखो 'चवरी' ।
चूँलाई-स्त्री० एक प्रकार का पत्तीवाला शाक ।
चूँलाफली-स्त्री० चोला नामक फलज की फली ।
चूँली-पु० चोला नामक दिव्य अन्न ।
चूँवालीस-देखो 'चमालीस' ।
चूक-स्त्री० १ भुल, भुटि, गलती । २ थोखा, छल, कपट ।
 ३ पड़यंत्र । ४ कमी, अभाव । मंथन, मफलन, लापरवाही ।
 ५ प्रदूषित कार्य । ७ अमलबंद या खड़ा शाक विशेष ।
 ८ अपराध ।
चूकणी (बी)-क्रि० १ भुलना, भुटि या गलती करना । २ अप-राध करना । ३ धोखा खाना, पड़यंत्र में फँसना । ४ कमी, रहना । ५ अमावधानी करना । ६ लथय भ्रष्ट होना ।

७ अक्सर खोना । ८ क्रम तोड़ना । ९ निपटना, तप होना, निर्णीत होना ।

चूकमार-पु० एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

चूकाणी (बो), चूकावणी (बो)-देखो 'चुकाणी' (बो) ।

चूकी-पु० एक प्रकार का खट्टा साग ।

चूड़-स्त्री० १ स्त्रियों के हाथ का आभूषण । २ शिर के बाल ।

चूड़लियो (ली, ल्यो)-देखो 'चूड़ी' ।

चूड़ाकरण, 'क्रम'-पु० [सं०] बच्चे का मुण्डन संस्कार ।

चूड़ामण, (णि, णी)-स्त्री० [सं० चूड़ामणि] १ शीशफूल नामक आभूषण । २ प्रधान, मुखिया । ३ सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति ।

चूड़ाळ-पु० दोहा नामक छंद का एक भेद ।

चूड़ाळी-स्त्री० १ मधवा स्त्री । २ चूड़ा पहनी हुई स्त्री ।

चूड़ावण (न)-स्त्री० १ प्रेतनी, डाकनी, चुड़ैल । २ दुष्टा स्त्री ।

चूड़ावळ (ळि, ळी)-स्त्री० १ सौभाग्यवती स्त्री । २ चुड़ैल, पिशाचिनी ।

चूड़ी-स्त्री० १ परिधि, गोलाई, वृत्त । २ स्त्रियों के हाथ या पैर में पहनने का गोल व पतला कंगन । ३ ओजार आदि पर पड़ी धारी जिससे उसे परस्पर कसा जाता है । ४ ग्रामोफोन की रिकार्ड । ५ तंग मोरी (पत्रामा) । ६ सफेद पैरों वाली एक प्रकार की बकरी । —गर-पु० गोल चूड़ियाँ उतारने वाला कारीगर । —दार-वि० जिसमें चूड़ियाँ पड़ी हों ।

—बाजी-पु० ग्रामोफोन नामक वाद्य ।

चूड़ेल, चूड़ेलण-स्त्री० प्रेतनी, पिशाचिनी ।

चूड़ी-पु० १ हाथी दांत आदि की चूड़ियों का समूह जो प्रायः विवाह के समय (कुछ जातियों में स्थाई रूप से) बांह में पहना जाता है । २ सौभाग्य चिह्न । ३ चोटी, शिखा । ४ हरिजन, भंगी ।

चूची-देखो 'चूची' ।

चूजी-पु० मुर्गी का बच्चा ।

चूड़ी-देखो 'चूड़ी' ।

चूण, चूणि-पु० १ मो कीड़ियों के योग की संख्या । २ देखो 'चूण' ।

चूणी (बो)-देखो 'चुमणी' (बो) ।

चूत स्त्री० [सं० च्युति] स्त्री का गुमांग, योनि, भग ।

चून देखो 'चून' ।

चूनउ-पु० [सं० चूर्णकः] १ भुना हुआ या पिसा हुआ अनाज । २ चूना ।

चूनगर-पु० चूने का कार्य करने वाला कारीगर ।

चूनड़ (डी)-देखो 'चूनड़ी' ।

चूनारी-देखो 'चूनगर' ।

चूनी-स्त्री० १ रत्न कण । २ नग, नगीना । ३ देखो 'चुनी' ।

—रंग-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।

चूनु-वि० श्वेतः । २ देखो 'चूनी' ।

चूनेवाळियाँ-स्त्री० मुसलमान वेश्याएँ ।

चूनो (न्यो)-पु० [सं० चूर्णकः] १ पत्थर आदि को फूंक कर तैयार किया हुआ एक तीक्ष्ण क्षार । चूना । २ हीरे, जवाहरात ।

चूप-देखो 'चूप' ।

चूपणी (बो)-देखो 'चूपणी' (बो) ।

चूषारा-स्त्री० रुई घुनने व चूने आदि का कार्य करने वाली एक जाति विशेष ।

चूमणी (बो)-देखो 'चूमणी' (बो) ।

चूमाणी (बो), चूमावणी (बो)-देखो 'चूमाणी' (बो) ।

चूर-पु० [सं० चूर्ण] १ चूर्ण, चूरा । २ ध्वंस, विनाश । —वि० १ अत्यन्त महीन । २ नष्ट, समाप्त । ३ अत्यधिक, बेहद । ४ घुत्त, पूर्ण ।

चूरण-पु० [सं० चूर्ण] १ किसी वस्तु का महीन बुरादा, आटा । २ आटे की तरह कूटी हुई कोई शीषधि । ३ हाजमें आदि के चूर्ण । ४ चूर-चूर होने का भाव । ५ आर्या छन्द का एक भेद ।

चूरणियो-देखो 'चुनियो' ।

चूरणी (बो)-क्रि० [सं० चूर्णम्] १ किसी पदार्थ को कूट-पीट कर महीन करना, आटा बनाना । २ चूरा करना । ३ रोटी या बाटी के महीन टुकड़े करना । ४ नाश करना, ध्वंस करना ।

चूरण्यो-पु० मल में पड़ने वाले कीट ।

चूरमियो, चूरमू (मू)-देखो 'चूरमी' ।

चूरमुर-वि० १ चूर्ण के समान महीन, बारीक । २ चूर-चूर । —क्रि० वि० चूर करके ।

चूरमी-पु० [सं० चूर्ण] १ रोटी या बाटी को बारीक कर धी-शक्कर मिला कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ । २ आटे या दाल को पीस कर धी में भुनकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

चूरी-स्त्री० प्याज, मूली आदि को छीलकर किए हुए छोटे-छोटे टुकड़े ।

चूरीमाटी-पु० धीया पत्थर ।

चूरी-पु० [सं० चूर्ण] १ किसी चीज का बुरादा, चूर्ण । २ बारीक टुकड़ों के रूप में कोई वस्तु ।

चूळ-पु० १ रहट का एक उपकरण । २ अन्य लकड़ी में फंसाने के लिये निकाला हुआ किसी लकड़ी का साल ।

१ कूल्हे की लड़ी। ४ देवी की मुजाबों का एक आभूषण।

५ फरसे की तेज धार। ६ चूल्हा।

चूल्ही-स्त्री० छोटा चूल्हा।

चूळिका-पु० [सं० चूलिका] १ स्त्रियों का कर्णफूल। २ एक भाषा विशेष।

चूळियाळ (ळी)-पु० एक मासिक छंद विशेष।

चूळिया-पु० १ कपाट की नोक। २ कूल्हा।

चूलियों-देखो 'चूल्ही'।

चूळी (ळी)-१ देखो 'चूल्ही'। २ देखो 'चुली'।

चूल्हड़ी, चूल्हो-देखो 'चूलड़ी'।

चूल्ही-पु० लकड़ी आदि जला कर खाना बनाने का उपकरण, चूल्हा।

चूवणी (बी)-देखो 'चुमणी' (बी)।

चूवाणी (बी), चूवावणी (बी)-देखो 'चुमणी' (बी)।

चूसणी (बी)-क्रि० १ होठों या दांतों के बीच दबा कर किसी वस्तु का जीम व स्वास से रस खींचना। चूसना। २ सार तत्व ग्रहण करना। ३ किसी से नाजायज फायदा उठाना।

चूसमार-पु० एक प्रकार का हिसक पक्षी।

चूसा-स्त्री० [सं० चूषा] हाथी के कमर में बांधने की पट्टी।

चूसाणी (बी), चूसावणी (बी)-क्रि० १ चूसने के लिये देना, प्रस्तुत करना। २ सार वस्तु ग्रहण करना। ३ किसी को नाजायज फायदा उठाने देना।

चूसी-पु० १ छूँता। २ सारहीन खोखला भाग। ३ किसी प्रकार का रेशा।

चूही-पु० चूहा, मूगा।

चैं-देखो 'ची'।

चैंठणी (बी)-देखो 'चैंठणी' (बी)।

चे-पु० १ रवि। २ चन्द्रमा। ३ कृष्ण। ४ मन। ५ तलवार। ६ समूह। ७ पट्टी विभक्ति, के।

चेइ-पु० [सं० चेदि] १ चेदि देश। (जैन) २ चैत्य।

चेइय-देखो 'चैत्य'।

चेइयवृक्ष (वृक्ष)-पु० [सं० चैत्यवृक्ष] १ कैवल्य ज्ञान प्राप्ति का देव वृक्ष (जैन)। २ विश्वामदायक कोई वृक्ष (जैन)। ३ ऐसा वृक्ष जिसके नीचे चबूतरा हो।

चेउखेप-स्त्री० वस्त्र वृष्टि।

चेइ-पु० १ बड़ा भोज। २ विशाल मृत्युभोज।

चेड़ी-पु० १ भूत-प्रेतादि का उपद्रव। प्रेत बाधा। २ आफत, झूलत विपत्ति। ३ वस्त्र का छोर। ४ अंग, छोर।

चेचक-स्त्री० शीतला नामक रोग।

चेजारी-पु० दीवार की चुनाई का कार्य करने वाला कारीगर।

जेजी-पु० १ दीवार की चुनाई का कार्य। २ आहार, भोजन। ३ गुणाग, निर्वाह। ४ देखो 'चुम्मी'।

चेट-पु० [सं०] १ दास, सेवक, नौकर। २ पति, स्वामी।

३ अनुसूची, आशिक। ४ नायक, नायिका का मध्यस्थ।

चेटक (की)-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा। -वि० १ क्रोधी स्वभाव का, उग्र। २ उद्धत, उद्दण्ड।

चेटल-पु० सिंह का बच्चा।

चेड-देखो 'चेद'।

चेड़ोमणी-वि० योद्धा, वीर, पराक्रमी।

चेढ़ी-पु० १ रत्न। २ नगीना।

चेत-पु० [सं० चेतस्] १ चेतना, हंश, संज्ञा। २ चित की वृत्ति। ३ विवेक, ज्ञान। ४ बुद्धि, विचार शक्ति। ५ सावधानी। ६ तर्कना शक्ति। ७ मन, आत्मा। ८ स्मरण, याद।

चेतकी-स्त्री० १ हरीतकि, हरड़। २ तीन धारियों वाली हरड़े। ३ एक रागिनी।

चेतणी (बी)-क्रि० [सं० चेतनम्] १ चेतन होना, होश में आना, संज्ञामय होना, जागृत होना। २ सावधान होना, होशियार होना। ३ प्रज्वलित होना। ४ विचार करके संभल जाना।

चेतन-पु० [सं०] १ आत्मा, जीव। २ प्राणी, जीव। ३ मनुष्य, आदमी। ४ ईश्वर, परमात्मा। -वि० १ सजीव, जीवित। २ जीवधारी, प्राणवान। ३ जो जड़ न हो। ४ विकास-वान। ५ दृश्यमान।

चेतनता-स्त्री० चैतन्य होने की अवस्था या भाव। जागृति।

चेतना-स्त्री० [सं०] १ होश, संज्ञा, सचेतावस्था। २ बुद्धि, ज्ञान। ३ याद, स्मृति। ४ सावधानी, सतर्कता। ५ समझ, विवेक। ६ जीवन।

चेतावक-वि० १ बढहवास भयभीत। २ असंतुलित। ३ नाफिल, बेमुग्ध। ४ व्याकुल। ५ अमित।

चेताणी (बी), चेतावणी (बी)-क्रि० १ चेतन करना, होश में आना। २ जागृत करना। ३ सावधान करना। ४ प्रज्वलित करना। ५ विचार कर संभलना।

चेतावणी (नी)-स्त्री० १ सावधान या सतर्क होने के लिये दी गई सूचना। २ असावधानी करने पर दी जाने वाली हिदायत। ३ हिदायती-पत्र।

चेतुरा-स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया।

चेती-पु० [सं० चेतः] १ होश, संज्ञा। २ बोध, ज्ञान। ३ स्मरण। ४ सावधानी।

चेत्रि-देखो 'चैतरी'।

चेदि-पु० एक प्राचीन जनपद। -राज-पु० शिशुपाल।

चेप-पु० १ निपकने का गुण या शक्ति। २ चिपकाने की क्रिया।

चेपकी-स्त्री० १ आवरण, ढक्कन। २ चुम्बी, निदा। ३ चापट्टी।

चेपणी (बो)-क्रि० १ चिपकाना, चेपना, गोंद आदि लगा कर परस्पर जोड़ना । २ संलग्न करना । ३ सटाना । ४ प्रहार या घाघात करना । ५ जड़ना ।

चेपाणी (बो), चेपावणी (बो)-देखो 'चिपकाणी' (बो) ।

चेपाचापो-पु० १ जोड़-तोड़, साधारण व्यवस्था । २ निर्वाह, गुजारा । ३ समझौता ।

चेपो-पु० १ आहार, भोजन । २ गुजारा, निर्वाह । ३ किसी को मुहरबंद करने के लिये द्वार या ठक्कन पर लगाई जाने वाली चिटिका । ४ सरसों की फसल का रोग । (मेवात)

चेबड़ी (री)-पु० सूअर का छोटा बच्चा ।

चेघ-पु० चित्त । (जैन)

चेर-पु० सेवक, दाम, नौकर । शिष्य ।

चेराई-स्त्री० नौकरी, गुलामी । सेवा ।

चेरियो-पु० चरमे का एक उपकरण ।

चेरी-स्त्री० [सं० चेटक] १ दासी, सेविका । २ शिष्या, चेनी ।

चेरी-पु० [सं० चेटक] १ दाम, सेवक, नौकर । २ शिष्य ।

चेठ-पु० कपड़ा, वस्त्र ।

चेल (क, कड़ी)-पु० १ बच्चा । २ चेला ।

चेलकाई-स्त्री० १ वचपन । २ शिष्यत्व ।

चेलको-देखो 'चेनी' ।

चेलकी-देखो 'चेनी' ।

चेसर-पु० सूअर का बच्चा ।

चेना-स्त्री० एक मजदूर जाति विशेष ।

चेसिप, चेनी-स्त्री० १ शिष्या । २ दासी । ३ भक्तित ।

चेनुखेप-पु० [सं० चेनोत्क्षेप] आकाश में से वस्त्रों की वर्षा ।

चेठी-पु० १ तराजू का पलड़ा, तुला पाट । २ पक्ष, पलड़ा ।

चेली-पु० (स्त्री० चेनी) १ शिष्य । २ भक्त । ३ दास ४ सूअर का बच्चा ।

चेल्हर-पु० सूअर का बच्चा ।

चेसटा-देखो 'चेस्टा' ।

चेस्टक-वि० [सं० चेष्टक] चेष्टा या प्रयत्न करने वाला ।

चेस्टा-स्त्री० [सं० चेष्टा] १ मन के भावों को प्रगट करने वाले कायिक व्यापार । २ नायक-नायिका के प्रेम प्रदर्शन के प्रयत्न । ३ प्रयत्न, उपाय, यत्न । ४ इच्छा । ५ हाव भाव । —बठ-पु० गति के अनुसार ग्रहों की प्रबलता ।

चेह-स्त्री० [सं० चिता] १ चिता । २ मरघट, श्मशान ।

चेहरणी (बो)-देखो 'चैरणी' (बो) ।

चेहरी-देखो 'चैरी' ।

चंकणी (बो)-क्रि० १ चौकना, चमकना । २ चहकना ।

चंकाणी (बो), चंकावणी (बो)-क्रि० चौकाना, चमकाना ।

चंचाट-स्त्री० चहचाहट ।

चंचे-स्त्री० १ पक्षियों का कलख । २ चूँ-चूँ । ३ बकवास ।

चेंट (ठ)-स्त्री० १ चिपकने की क्रिया या भाव । २ चिपकने का गुण । ३ प्रयत्न, चेष्टा । ४ लगन, लाग । ५ चिता । ६ एक प्रकार का विकार । ७ अंकुरित होने का भाव । ८ चिड़चिड़ाहट ।

चेंटणी (बो), चेंठणी (बो)-क्रि० १ चिपकना । २ संलग्न होना । ३ प्रयत्न करना, चेष्टा करना । ४ लगन रखना, लाग करना । ५ चिता करना । ६ चिड़चिड़ाना । ७ अंक या दांत से काटना । ८ अंकुरित होना ।

चेंठाणी (बो), चेंठाणी (बो), चेंठावणी (बो), चेंठावणी (बो)-क्रि० १ चिपकाना । २ संलग्न कराना । ३ प्रयत्न कराना । चेष्टा कराना । ४ लगन रखवाना । ५ चिता कराना । ६ चिड़चिड़ाने के लिये प्रेरित करना । ७ अंक या दांत से काटवाना ।

चै-अव्य० संबंध सूचक अव्यय 'के' । —पु० १ दूत । २ चोर । ३ युद्ध । —वि० १ प्रेरक । २ दुष्ट ।

चेंड़ी-१ देखो 'चेरी' । २ देखो 'छेंड़ी' ।

चेंट-पु० [सं० चैत्र] फाल्गुन के बाद पड़ने वाला मास ।

चैतव्य-वि० [सं०] १ जागृत, चेतन । २ सचेत, सावधान । —पु० १ चित्त स्वरूप आत्मा । २ परमात्मा । ३ ज्ञान बुद्धि । ४ एक प्रसिद्ध धर्म प्रचारक । ५ जीवन । —चैरवी-स्त्री० एक मैरवी विशेष ।

चैतरी-वि० चैत्र मास में होने वाला ।

चैतवाड़ी-पु० वसंत ऋतु ।

चैती-स्त्री० रबी की फसल । —वि० चैत्र का, चैत्र संबंधी ।

चैत्य-पु० [सं०] १ मंदिर, देवालय । २ यज्ञशाला । ३ देवमूर्ति । ४ जैनियों का धार्मिक केन्द्र । ५ शव स्मारक । ६ चिता । ७ श्मशान स्थान, मरघट । —परवाड़ी-स्त्री० अनुक्रम से मंदिरों की यात्रा । (जैन)

चैत्र (क)-देखो 'चैत' ।

चैत्ररथ-पु० [सं०] १ कुबेर का बगीचा । २ एक प्राचीन ऋषि ।

चैत्रावळि (ळी)-स्त्री० १ चैत्र मास की पूणिमा । २ चैत्रशुक्ला त्रयोदशी ।

चैत्रि (बो)-देखो 'चैतरी' ।

चैव-वि० चेदी देश का, चेदी देश संबंधी ।

चैन-पु० १ आराम, सुविधा, सुख । २ शांति, तसल्ली । ३ आनन्द हर्ष । ४ कष्ट, पीड़ा आदि से मुक्ति । ५ ऊंट का आभूषण विशेष । ६ देखो 'चहन' ।

चैनाळ-देखो 'छिनाळ' ।

चैवची-देखो 'चहचची' ।

चैवरी-पु० सूअर का बच्चा ।

चोगर-पु० उल्लू के समान आँखों वाला घोड़ा ।
 चोगान-देखो 'चोगान' ।
 चोगुड़ाई-स्त्री० चोड़ाई । -क्रि० वि० चारों ओर, चोतरफ ।
 चोगी-पु० डीला कुर्ता, बोला, चोगा ।
 चोघड़ियो-देखो 'चोघड़ियो' ।
 चोघरी (बी) -क्रि० १ ढूँढना, तलाश करना । २ शोध करना ।
 ३ देखना, गौर करना ।
 चोघरी (बी), चोघारी (बी) -क्रि० १ ढूँढना, तलाश
 कराना । २ शोध कराना । ३ दिखाना, गौर कराना ।
 चोड़े-घाड़-देखो 'चोड़े-घाड़े' ।
 चोच-स्त्री० [सं०] १ चर्म, चमड़ी । २ छाल । ३ छाव
 ४ बल्कल । ५ आडम्बर । ६ छल, कपट ।
 चोचला-पु० नाज-नखरे ।
 चोचली (बी) -वि० नखरेबाज ।
 चोचा-स्त्री० १ लड़ाई । २ कलह । निदा, आलोचना ।
 -कारी-वि० भगड़ालु । निदक ।
 चोचाळी-वि० (स्त्री० चोचाळी) कलह प्रिय, भगड़ालु ।
 चोचो-वि० १ घोड़ी भ्रष्ट । २ साधारण ।
 चोचो-पु० १ भगड़ा, लड़ाई । २ उपद्रव, दंगा । ३ प्रताप,
 बकवाद । ४ आडम्बर ढोंग ।
 चोज-पु० १ विनोद पूर्ण बात, हंसी, मजाक । २ उमंग,
 उत्साह । ३ साहस । ४ चतुराई । ५ छल, कपट, धोखा ।
 ६ रसास्वादन । ७ आनन्द, मीज, मस्ती । ८ स्थान, जगह ।
 ९ आभा, कांति । १० प्रभाव, भ्रसर ११ उदारता ।
 चोजाळी, चोजौली-वि० (स्त्री० चोजाळी, चोजौली) १ हंसी
 मजाक करने वाला, विनोदी । २ भेदिया । ३ धोखेबाज ।
 ४ निपुण-वाक्पटु । ५ मस्त ।
 चोजौ-पु० १ धोखा, छल । २ चोज ।
 चोट-स्त्री० १ आघात, प्रहार । २ टक्कर । ३ जश्म, घाव ।
 ४ वार, आक्रमण । ५ क्षति, नुकसान । ६ मानसिक
 आघात, दुःख । ७ चाल, पड़यंत्र । ८ धोखा, विश्वास-
 घात । ९ ताना, व्यंग । १० छेड़-छाड़ । ११ भटका ।
 चोटियाळ (ळी)-देखो 'चोटियाळ' ।
 चोटिलियो, चोटली-देखो 'चोटी' ।
 चोटियाळ (ळी)-पु० (स्त्री० चोटियाळी) १ एक प्रकार का
 गीत । २ चोटी वाला । ३ हिन्दू । ४ दोहे का एक भेद ।
 ५ चोटो या रेशवाला नारियल । जटावाला नारियल ।
 चोटियो-पु० [सं० चूड़] १ डिगल का एक गीत । २ राजस्थानी
 में दोहे का एक भेद । ३ छोटा रम्मा । ४ एक प्रकार का
 घोड़ा । ५ घास के पेदानों में खड़ी घास में बनाया विभाजक
 चिह्न । ६ प्राक के रेशों की पगड़ी । ७ शिखर वाली ढेरी ।

८ वास का पुआल । ९ चूटा । १० तराजू की डंडी के मध्य की डोरी ।

चोटी-स्त्री० [मं०] १ बानों को शिखा । २ स्त्रियों को बेसी । ३ शिर की किलंगी । ४ ऊपरी भाग, शिखर, पर्वत शिखर । ५ कुर्ची । ६ सारंगी का ऊपरी भाग । —आल-आली= 'चोटियाळ' । —कट-पु० अनुयायी शिष्य । —बंघ-पु० स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष । २ शिष्य । —बडियो-पु० चोटी कटा । मुसलमान । ईसाई शिष्य विशेष कृपा पात्र । —वाळ, याळी='चोटियाळ' । —वाळ वाळी='चोटियाळ' ।

चोटी-पु० १ मोटी शिखा । २ चोटा ।

चो'ट्टी-वि० चोर ।

चोडाळ-पु० एक प्रकार की सवारी । वाहन ।

चोडी-स्त्री० कूए के मध्य का भाग, बीच का गड्ढा ।

चोडोळ (ळी)-पु० हाथी, गज ।

चोदरी-पु० सवार, सवारी करने वाला ।

चोतरफ-देखो 'चौतरफ' ।

चोताळी-देखो 'चौताळी' ।

चोय-स्त्री० १ आभूषण विशेष । २ देखो 'चोय' ।

चोवक (ककड़)-वि० स्त्री संभोग करने वाला, बहुकामी ।

चोवणी (बी)-क्रि० संभोग करना, स्त्री प्रसंग करना ।

चोवन-स्त्री० स्त्री प्रसंग, मैथुन ।

चोवस-स्त्री० चतुर्थ क्षी की तिथि ।

चोवाई-स्त्री० १ मैथुन का कार्य । २ संभोग करने का पारि-
श्रमिक ।

चोबास-पु० कामेच्छा, मैथुनेच्छा ।

चोदू-वि० भीम, डरपोक ।

चोदण-वि० चोदह । (जंत)

चोधरी-देखो 'चौधरी' ।

चोधार (रण, रौ)-देखो 'चौधार' ।

चोप-स्त्री० १ सेवा, पूजा । २ प्रार्थना, विनती । ३ ध्यान । ४ श्रम । ५ भक्ति । ६ श्रद्धा । ७ कृपा, दया, अनुकम्पा । —क्रि० वि० चारों ओर ।

चोपह. चोपई-स्त्री० एक मात्रिक छंद विशेष ।

चोपण (नी)-देखो 'चौपण' ।

चोपड़-पु० १ घी आदि स्निग्ध पदार्थ । २ देखो 'चौपड़' ।

चोपड़णी (बी)-क्रि० १ घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ लगा कर चिकना करना । २ खिचड़ी आदि पर घी डालना ।

चोपड़णी (बी), चोपड़वणी (बी)-क्रि० १ घी आदि स्निग्ध पदार्थ लगाकर चिकना कराना । २ खिचड़ी आदि पर घी डालना ।

चोपड़ास-देखो 'चौपड़' ।

चोपड़ी-पु० १ तिलहन की फसल में होने वाला एक रोग ।

२ देखो 'चौपड़ी' ।

चोपल-स्त्री० लोहे की सुधारने का एक उपकरण । २ आभूषणों की खुदाई का उपकरण ।

चोपहार-देखो 'चौबहार' ।

चोपन-देखो 'चौपन' ।

चोपाड़-स्त्री० चौपाल ।

चोपायो-स्त्री० १ चौपाई छन्द । २ चारपाई ।

चोपाळी-पु० डोली, पासकी, गिविका ।

चोप्पालण-पु० मस्त हाथी । (जंत)

चोफाड़-देखो 'चौफाड़' ।

चोफाड़णी (बी)-क्रि० १ चार भागों में विभक्त करना । २ चार फाड़े करना । ३ काटना । ४ नष्ट करना ।

चोफाड़, चोफाड़ा-क्रि० वि० १ चारों ओर, चौतरफ । २ चार फाड़ों से ।

चोफेर-देखो 'चौफेर' ।

चोब-स्त्री० १ चुभने के क्रिया या भाव । २ चुभन । ३ तीक्ष्ण दर्द, पीड़ा । ४ कूए की खुदाई का प्रारंभ । ५ छोटे-छोटे पीछों की खुदाई, अंकुरण । ६ इस प्रकार गाड़े जाने वाले पीछे । ७ तालाब के मध्य का गहरा गड्ढा । ८ शामियाने का बीच का खंभा । ९ नगाड़े का डंडा । १० सोने चांदी की मूँठ वाली छड़ी ।

चोबचीणी-स्त्री० दीपान्तरवचा नामक जड़ी जो रक्त शोधन करती है ।

चोबशी-पु० जूते का कसीदा ।

चोबणी (बी)-क्रि० १ चुभाना, तीक्ष्ण वस्तु भ्रमाना । २ धार की रगड़ लगाना । ३ कूए की खुदाई प्रारंभ करना । ४ छोटे पीछों को प्रलग-प्रलग गठाना, अंकुरित करना ।

चोबदार-पु० राजा व जमीरदारों का एक अनुचर ।

चोबाई-स्त्री० चुभने की क्रिया या भाव ।

चोबाणी (बी), चोबावणी (बी)-क्रि० १ चुभाना, तीक्ष्ण वस्तु को घंसवाना । २ धार की रगड़ लगवाना । ३ कूए की खुदाई प्रारंभ कराना । ४ छोटे पीछों को प्रलग-प्रलग गड़वाना ।

चोबारी-देखो 'चौबारी' ।

चोबोली-पु० एक मात्रिक छंद विशेष ।

चोबी-पु० शक सन्देश, घाशंका ।

चोब-देखो 'चोब' ।

चोबको-देखो 'चभको' ।

चोबणी-देखो 'चौबणी' ।

चोबणी (बी)-देखो 'चौबणी' (बी) ।

चोबी देखो 'चौबी' ।

शोमकदीवी-पु० चार धुँह का दीपक ।

शोमुखो-देखो 'शोमुखो' ।

शोय-स्त्री० १ त्वचा, चमड़ी । २ छाल । (जैन)

शोयध-पु० एक प्रकार का फल ।

शोयण-वि० प्रेरणा करने वाला ।

शोयण-स्त्री० प्रेरणा । (जैन)

शोयस-स्त्री० गढ़ के ऊपर का स्थान । (जैन)

शोयाळा, शोयाळीसा-वि० चमालीस ।

शोरग-देखो 'शोरंग' ।

शोर-पु० [सं०] १ चुपके से किसी वस्तु का हरण कर लेने वाला, अपहरणकर्ता । उचक्का । २ ठग । ३ डाकू । ४ छिपा कर रखा ताश का पत्ता । ५ एक प्रकार का गंध द्रव्य । ६ एक प्रकार का सर्प । -वि० १ जिसके वास्तविक बाह्य स्वरूप का पता न चले । २ काला, श्याम श्वेत । -आळी-पु० गुप्त ताका । -कार, कारी, कळी, काळी-स्त्री० चोर का कार्य, चोरी । -खानी-पु० गुप्त खाना, कोष्ठक, दराज । -खिड़की-स्त्री० गुप्त द्वार । -गळी-स्त्री० गुप्त व संकरा रास्ता । -गाय-स्त्री० दूध दूहते समय दूध न उतारने वाली गाय । -जमी, जमीन-स्त्री० ऊपर से ठोस व अन्दर से पोखी जमीन । -ताळी-पु० गुप्त ताका । -वात-पु० प्रतिरिक्त दांत । -पहरी, पैरो-पु० गुप्त प्रहरा, जागृती ।

शोरग-पु० एक सुगंधित वनस्पति । (जैन)

शोरडी, शोरटी-देखो 'शोर' ।

शोरणी (बी)-कि० १ कोई वस्तु चुपके से लेना, उठा लेना । २ अपहरण करना । ३ आकर्षित करना । ४ मोह लेना ।

शोराफूटी-पु० चोरी-डकैती का कार्य ।

शोराचोरी-कि० वि० चुपके-चुपके, गुप्त रूप से ।

शोरावणी (बी)-देखो 'चुराणी' (बी) ।

शोरिय-स्त्री० १ चोरी । २ मारपीट । ३ डकैती । (जैन)

शोरियी-पु० पुताई आदि के समय रह जाने वाला घन्ना ।

शोरी-स्त्री० १ चुपके से किसी वस्तु को हथियाने की क्रिया । २ अपहरण, हरण । ३ ठगी । ४ डकैती ।

शोळ (ल)-पु० [सं० चोल] १ दक्षिण भारत का एक जनपद । २ एक प्राचीन राजपूत वंश । ३ लाल रंग । ४ लाल रंग का वस्त्र । ५ चोला । ६ मजीठ । ७ वक्च । ८ आनंद, उमंग । ९ रति क्रिया । १० क्रीड़ा, विनोद । ११ रुति, लगन । १२ कंचुकी । -वि० लाल ।

शोळग-पु० रक्त ।

शोळगोळ-पु० प्राग से तथा लाल गोला ।

शोळवंचोळ पु० क्रोध से लाल नेत्र ।

शोळचछ-पु० शेर ।

शोळचछी (खी)-वि० क्रोध से लाल नेत्रों वाला ।

शोळबोळ-वि० १ लाल रंगा हुआ, रक्ताभ । २ उन्मत्त, मस्त ।

शोळरंग-पु० लाल रंग, मजीठ रंग ।

शोळपट (उ)-पु० [सं० चोलपट्ट] लाल वस्त्र, टूल ।

शोळवांन (वन्न)-वि० रक्त वर्ण, गहरा लाल ।

शोळियी-देखो 'चोळी' ।

शोळणी (बी)-कि० मसलना ।

शोळी-स्त्री० [सं० चोली] १ स्त्रियों के कुर्चों पर पहनने का वस्त्र, झंगिया । २ मजीठ । ३ झंगरखीनुमा एक स्त्रियों का वस्त्र विशेष । ४ पान रखने की डलिया —मारग —पु० वाममार्ग का एक भेद ।

शोळीय-पु० नौ नाथों में से एक ।

शोळुवी-वि० लाल ।

शोळी-पु० १ साधु फकीरों का चोंगा । २ ढीला-ढाला कुर्ता । ३ देह, शरीर, तन । ४ इल्लत, आफत ।

शोळी-पु० १ टोकरा । २ देखो 'चोळी' ।

शोवखी-देखो 'चीखी' ।

शोवड़ी-देखो 'चीवड़ी' ।

शोवडियो, शोवटी-देखो 'चोवटी' ।

शोवाचनण-पु० चंदनादि सुगंधित द्रव्य ।

शोवी-पु० एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ ।

शोसंगी-देखो 'चोसंगी' ।

शोस-स्त्री० कामी ।

शोसणी (बी)-देखो 'चूमणी' (बी) ।

शोसर-देखो 'चोसर' ।

शोसरी-देखो 'चोसरी' ।

शोसांगी, शोसांगी-पु० [सं० चतुःशृंगी] १ चार सींग वाला । २ एक प्रकार का कृषि उपकरण ।

शोहट (टी)-देखो 'चोवटी' ।

शोहणी-देखो 'चोहणी' ।

शोहां-वि० चारों ।

शौकणी (बी)-कि० १ चमकना, भिन्नकना । २ सावधान होना, जागृत होना । ३ गुस्सा करना ।

शौकली-देखो 'चूकली' ।

शौकणी (बी)-कि० १ चमकाना, भिन्नकवाना । २ सावधान करना, जागृत करना । ३ गुस्सा कराना ।

शौगियी-देखो 'चौगियी' ।

शौलरी-देखो 'चलूरी' ।

शौलीस-देखो 'चौलीस' ।

शौप-स्त्री० १ कीर्ति, यश । २ देखो 'चौप' ।

चौरी-देखो 'चवरी' ।

चौवटी-देखो 'चौवटी' ।

चौ-पु० १ मनुष्य । २ बैल । ३ अश्व, घोड़ा । ४ महावत ।
५ रस । ६ गी, गाय । -वि० चार ।

चौहस-वि० बीम व चार, चौबीस । -पु० चौबीस की संख्या, २४ ।

चौहसी-पु० २४ की संख्या का वर्ष या सवत ।

चौघी-१ देखो 'चौभी' । २ देखो 'चौबी' ।

चौक-पु० [सं० चतुष्क] १ मुहल्ले या मकान के बीच की खुली जगह । २ चौराहा । ३ खुला मैदान । ४. चार कोने का खुला चतुर्तरा । ५ पीठ । ६ काष्ठ या धातु की चौकी । ७ भूत-चूक । ८ मांगलिक अवसरों पर घाटे, प्रबीर आदि में बनाया हुआ श्रेष्ठ । ९ एक देशी खेल ।

चौकड़ा-पु० मटों के कान के आभूषण ।

चौकड़ालगाम-स्त्री० एक प्रकार की लगाम ।

चौकड़ी-स्त्री० १ चार व्यक्तियों की मंडली । २ चार का समूह । ३ चार युग । ४ चारों ओर से होने वाला तलवारों का प्रहार । ५ चारों पैरों से एक साथ भरी जाने वाली छलांग । ६ चार कोने का खड्डा । ७ बाण के पिछले शिरे पर लगने वाला उपकरण । ८ पगड़ी बांधने की एक विधि । ९ चार घोड़ों की बग्घी । १० चार व्यक्तियों द्वारा खेला जाने वाला ताश का एक खेल ।

चौकड़ी-पु० १ घोड़े के मुँह पर लगाई जाने वाली लगाम । २ एक प्रकार का आभूषण । ३ एक विषैला जन्तु विशेष ।

चौकणी (बौ)-क्रि० १ भूमि की जुताई करना । २ बुवाई के लिये खेत में अनाज के दाने बिखेरना, छितराना । ३ चारों ओर से आवेष्टित करना, घेरना । ४ चकित होना ।

चौकतोख-स्त्री० मान प्रतिष्ठा ।

चौकनी-देखो 'चौमांगी' ।

चौकन्नी-वि० (स्त्री० चौकन्नी) १ सतर्क, सावधान, सन्नद्ध । तत्पर, तैयार । २ चार कान वाला ।

चौकल-पु० [सं० चतुष्कल] चार मात्राओं का समूह । -वि० चार कलाओं वाला ।

चौकल्लो, चौकली-वि० १ चार कलाओं वाला । २ चार-चार मात्रा के समूह वाला छन्द । ३ देखो 'चौधल्लो' ।

चौकस-वि० १ मंचित, सतर्क, सावधान । २ ठीक, सही । ३ पक्का निश्चित । ४ स्पष्ट । -पु० १ दूढ़ने का प्रयाम, खोज । २ शोध । ३ जांच, पड़ताल । -क्रि० वि० १ प्रत्यक्ष सामने । २ निश्चय ही, अवश्य ।

चौकसाई, चौकसी-स्त्री० १ सावधानी, सतर्कता । २ खोज, तलाश । ३ छान-बीन । ४ चौकीदारी । ५ गुरक्षा ।

चौका-स्त्री० तलवार की मुठ का एक भाग ।

चौकाणी (बौ), चौकाणी (बौ)-क्रि० १ भूमि की जुताई करवाना । २ बोवाई के लिये खेत में अनाज छितरवाना, छंटवाना । ३ देखो 'चौकाणी' (बौ) ।

चौकी-स्त्री० [सं० चतुष्की] १ चार पाये या चार कोनों का आसन । २ मंदिर के ऊपर का चौकोर घेरा । ३ सिपाहियों का एक दल जो स्थान-स्थान पर चौकसी के लिये तैनात रहता है । इस दल का कार्य स्थान । ४ निगरानी, पहरा । ५ पड़ाव ठहराव । ६ चार कोनों की तावीज, गंडा । ७ चार कोने का आभूषण । ८ गले का एक आभूषण । ९ सेना की टुकड़ी । १० चकला । ११ राजा या जागीरदार को आमंत्रित कर बैठ की जाने वाली घन राशि । १२ छोटा चतुर्तरा । १३ खेत की चौकीदारी के बदले दिया जाने वाला लगान । १४ चार पत्तियों वाला ताश का पत्ता । -खानी-पु० पहरा देने का स्थान -बार-पु० पहरेदार, रखवाला । -दारी-स्त्री० पहरे का कार्य, निगरानी । चौकीदार का पद । चौकीदार का वेतन या पारिश्रमिक । -घट-पु० काष्ठ की चौकी, आसन, पाट ।

चौकूंट-देखो 'चौकूंट' ।

चौकूंटो-देखो 'चौकंटो' ।

चौकूणी-वि० १ चार कोने का । २ समचौरस ।

चौकोर-वि० चार कोनों का, चारों ओर से बराबर । -स्त्री० क्षत्रियों की एक शाखा ।

चौको-पु० [सं० चतुष्क] १ चार कोने का कोई खण्ड । २ चार का अंक । ३ गोबर लीप कर शुद्ध किया स्थान । ४ ब्राह्मणों का रसोईघर या रसोई के लिये निश्चित स्थान । ५ एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह । ६ चार पत्तियों का ताश का पत्ता । ७ दंत-क्षत का निशान । ८ सामने का दंत समूह । ९ चार की संख्या का वर्ष ।

चौखंड-पु० १ चार खण्ड । २ चौथी मंजिल । ३ चार भाग वाला ।

चौखंडी-स्त्री० चौथी मंजिल ।

चौखड़ी-देखो 'चौकड़ी' ।

चौखट-स्त्री० १ चार मोटी लकड़ियों का ढांचा जिसमें कपाट के पल्ले अटकाये जाते हैं । २ देहलीज । ३ ताश के पत्तों की चौकोर बूंदी ।

चौखटियों (टो)-पु० १ तस्वीर आदि की फ्रेम । २ आकृति, शवल ।

चौखणी-वि० चार कोणिक या खण्डों वाला ।

चौखली-पु० १ किसी गांव या प्रदेश के चारों ओर का क्षेत्र या प्रदेश । २ चारों ओर का समुदाय ।

चौखूंट-पु० [सं० चतुष्कोटि] १ चारों दिशा । २ चारों कोने ।

चौखूंटो-वि० चार कोने का ।

चौगड़, चौगड़वाई-क्रि० वि० चारों ओर ।

चौगड़ी-वि० चार ।

चौगट-देखो 'चौखट' ।

चौगड़ी-वि० चार गुना ।

चगणी-वि० [सं० चतुर्गुण] चार गुणा ।

चोगणी (बो)-क्रि० देखना ।

चोगरब-देखो 'चौगड़द' ।

चोगस-देखो 'चौकस' ।

चोगान-पु० [फा०] १ खुला व विस्तृत मैदान । २ खुला प्रांगण ।

चोगानिया-वि० चार तहों या परतों का । -पु० दशहरे के दिन काटा जाने वाला मस्त मँसा ।

चोगिरब, चोगुड़वा-देखो 'चौगड़द' ।

चोगुणी-वि० (स्त्री० चोगुणी) चार गुणा ।

चोगी-पु० १ चार दांत वाला छोटा बैल या मँसा । २ चोगा, चोला । ३ चार का अंक । ४ चार का वर्ष ।

चोगोनी-स्त्री० १ छड़ी, बेंत । २ गेंद का बल्ला ।

चोघड़ियो चोघड़ी-पु० १ लगभग चार पड़ी का समय, समय का एक विभाग । २ उक्त समय के घन्टे में बजने वाला घंटा । ३ मुहूर्त विशेष ।

चोड़-पु० नाश, ध्वंस ।

चोड़ाई-स्त्री० चौड़ापन, मोटाई । अर्ज ।

चोड़-क्रि० वि० खुले में, प्रत्यक्ष में, प्रगट रूप में । —घाड़-क्रि० वि० खुले आस, दिन दहाड़े ।

चोबोतरसी-पु० एक सौ चार की संख्या ।

चोड़ी-वि० (स्त्री० चोड़ी) १ विस्तृत, फैला हुआ । २ लम्बाई से भिन्न दिसा में फैला हुआ ।

चोज-देखो 'चोज' ।

चोजुगी-स्त्री० चार युगों का समूह ।

चोडोळ-पु० १ हाथी । २ पालकी ।

चोतरफ-क्रि० वि० चारों ओर ।

चोतरी-देखो 'चौधड़ी' ।

चोतरी-देखो 'चवूतरी' ।

चोतारी-पु० चार तारों का एक वाद्य । एक प्रकार का कपड़ा ।

चोताळी-पु० किसी क्षेत्र के गांवों का समूह ।

चोतीलो-पु० चार मोट या चार रहंटे एक साथ चलने लायक बड़ा कृषा ।

चोतीस-वि० [सं० चतुस्त्रिंशत] तीस व चार । -पु० तीस व चार की संख्या, ३४ ।

चोतीसी-पु० चौतीस का वर्ष ।

चोटुकी-वि० चार तुकों वाला ।

चोत्रप-देखो 'चोतरफ' ।

चोत्रीस-देखो 'चोतीस' ।

चोच-स्त्री० [सं० चतुर्थी] १ चतुर्थी तिथि । २ विवाह के बाद का चौथा दिन । ३ चौथा भाग । ४ मराठों द्वारा लिया जाने वाला एक कर । ५ लुटेरों से रक्षा करने के लिये दिया जाने वाला कर । ६ ब्राह्मण विशेष । —पण, पणो-पु० चौथापन, वृद्धावस्था । —मक्त-पु० उपवास । (जैन)

चोचड़ी-स्त्री० छोटा चवूतरा ।

चोचड़ी-पु० बड़ा चवूतरा ।

चोचाई-स्त्री० चौथा भाग ।

चोचाली-देखो 'चोताली' ।

चोचियो-पु० १ हर चौथे रोज आने वाला ज्वर । २ चौथे भाग का हकदार । ३ 'चौथ' वसूल करने वाला व्यक्ति ।

चोचोपेखेवड़ी-स्त्री० वृद्धावस्था ।

चोचो-वि० [सं० चतुर्थ] (स्त्री० चोची) तीन के बाद वाला, चौथा, चतुर्थ । —आसरम-पु० संन्यास आश्रम । वृद्धावस्था ।

चोचंत (तो)-वि० १ प्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त । २ प्रतिष्ठित । ३ चार दंत वाला ।

चोच-देखो 'चवदै' ।

चोचस (सि, सस)-स्त्री० चतुर्दशी की तिथि ।

चोचर-स्त्री० चोघराहट, चोघराई ।

चोघरण-स्त्री० चौघरी की स्त्री ।

चोघराई (रात)-स्त्री० १ चौघरी का पद व कार्य । २ इस पद का या कार्य का वेतन ।

चोघरी-पु० [सं० चतुर्वरी] १ जागीरदार के पास गांव का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति । २ राज्य का बड़ा सामन्त जिसकी स्वीकृति हर महत्वपूर्ण कार्य में जरूरी होती थी । (स्त्री० चौघरण) ३ जाट, सीरबी, पटेल आदि ।

चोघरी-पु० चार दरवाजा का कमरा या कक्ष ।

चोघार, चोघारण, चौघारी-पु० १ चार धारों वाला भाला । २ एक प्रकार का बाण । —घारी-वि० भाला रखने वाला ।

चोनिजर, चोनिजरे, चोनीजर-क्रि० वि० १ आमने-सामने । २ सम्मुख, समक्ष ।

चोपइया, चौपई-स्त्री० एक मांत्रिक छंद विशेष ।

चोपग (गो, गौ)-पु० चार पैर वाला पशु ।

चोपड़-पु० [सं० चतुष्पट] १ चौघर में खेलने का चार पट्टियों का खेल । २ चौघर के खाने के अनुसार पत्तों की बनावट । ३ चौराह । ४ देखो 'चौपड़' ।

चोपड़ी-स्त्री० १ छोटी बही । २ छोटी पत्रिका । ३ कोपी । ४ छोटी पुस्तक । ५ चौपड़ । ६ चार परतों वाली वस्तु ।

चोपड़ो

(४१५)

चौरग्रथ

चोपड़ी-पु० १ पचांग-पत्र । २ कुंकुम पत्रिका । ३ पूजा के लिये कुंकुम-चावल रखने का पात्र । ४ वंशावली लिखने की बट्टी । ५ बट्टी । ६ चार परतों वाला पदार्थ ।
 चोपट-वि० १ खुला । २ चारों ओर से खना । ३ नाश, श्वस । ४ देखो 'चोपड़' ।
 चोपथ-पु० [सं चतुष्पथ] चौराहा, चौरास्ता ।
 चोपव (बी)-पु० [सं चतुष्पद] चोपाया जानवर ।
 चोपवार-देखो 'चोबदार' ।
 चोपन-वि० पचास व चार ।-पु० पचास व चार का अंक, ५४ ।
 चोपनिधो-पु० १ छोटी बट्टी, रोजतामचा । २ चार पन्ने का ।
 चोपनो-पु० ५४ का वर्ष ।
 चोपाई-स्त्री० एक मांत्रिक छंद विशेष ।
 चोपायो-पु० [सं चतुष्पद] चार पैरों वाला पशु ।
 चोफळी-पु० १ चारों ओर धारों वाला शस्त्र । २ चारों पांवों से चौकड़ी भरने वाला पशु ।
 चोफाड़-देखो 'चोफाड़' ।
 चोफूली-स्त्री० १ एक प्रकार की परेख । २ आक के पुष्प के अन्दर का भाग ।
 चोफेर-क्रि० वि० चारों ओर ।
 चोफेरी-स्त्री० १ चारों ओर की परिक्रमा । २ विवाह की प्रथम रात्रि । (राजपूत)
 चोबंदी (बंदी)-स्त्री० १ छोटी व चुस्त अगिया । २ घोड़ों के चारों पावों में लगाई जाने वाली नालें ।
 चोबगळी-पु० कुरती, फुतही, अंगे आदि का एक भाग ।
 चोबळ-क्रि० वि० चारों ओर ।
 चोबळदी-स्त्री० चार बैलों की गाड़ी ।
 चोडा-स्त्री० एक ब्राह्मण जाति ।
 चोडाई-स्त्री० एक प्रकार की गांठ, ग्रंथि ।
 चोदायो-वि० चारों ओर का ।
 चोदार-वि० १ चार द्वार वाला । २ प्रगट, खुले आम ।
 चोदारी-पु० १ चारों ओर से खुला कक्ष । २ बंठक का कक्ष । ३ एक प्रकार की शराब ।
 चोबीस, चौबीस-वि० बीस और चार । -पु० बीस और चार की संख्या, २४ ।
 चौबीसी-पु० चौबीस का वर्ष ।
 चौबीसी-स्त्री० १ एक मांत्रिक छंद विशेष । २ एक अन्य मांत्रिक छंद ।
 चौबंग-वि० निर्भय, निशंक ।
 चौसट-वि० खुला प्रकट ।
 चौभुजा-वि० चार भुजाओं वाला । -पु० श्रीविष्णु ।
 चौमक-स्त्री० ढट्टी ।
 चौमाळ, चौमाळी, चौमाळीस-देखो 'चमाळीस' ।

चौमास-पु० चातुरमास, वर्षा ऋतु ।
 चौमासियो-पु० वर्षा ऋतु संबंधी ।
 चौमासी-स्त्री० वर्षा ऋतु सम्बन्धी एक लोकगीत ।
 चौमासी-पु० [सं चतुर्मास] १ वर्षा ऋतु, वर्षा काल । २ बारिस का वातावरण ।
 चौमुंडा-देखो 'चांमुंडा' ।
 चौमेळी-पु० दृष्टि मिलन, चार प्रांखें होना ।
 चौमुख (मुखी)-पु० १ ब्रह्मा । २ चार खानों का पात्र ।
 चौरंग (गि, गी, गी)-पु० १ तलवार का एक वार विशेष । तलवार का हाथ । २ युद्ध, समर । ३ संसार का प्रावागमन । ४ प्राणियों की चार योनियां । ५ मैदान, क्षेत्र । ६ योद्धा, वीर । ७ चतुरंगिनी सेना । ८ सैना, फौज । ९ एक प्रकार का शस्त्र । १० हाथ-पांव काट डालने की क्रिया । ११ बलिदान में चार अंग दांध कर लाया गया भैंसा । १२ चार प्रकार की लक्ष्मी । १३ युद्ध स्थल । -वि० १ चार । २ चार अंगों वाला । ३ जिसके हाथ पैर काट दिये हों । ४ चार रंगों वाला । ५ चार प्रकार का ।
 चौरक (ग, गी)-पु० श्वास पी कर मारने वाला सर्प ।
 चौरस-वि० [सं चतुरस्र] १ चारों कोनों से समतल एवं बराबर । २ वर्गाकार । -स्त्री० चोपड़ नामक खेल ।
 चौरसा-पु० एक वरिष्ठ छंद विशेष ।
 चौरसियो-पु० अत्यन्त छोटा हथौड़ा ।
 चौरसी-स्त्री० १ बड़ई का एक औजार । २ घंटियों की माला ।
 चौरांगि-पु० १ खुला मैदान । २ युद्ध ।
 चौराणबी-वि० तराणु के बाद वाला ।
 चौराणु (रू)-वि० नब्बे व चार । -पु० चौराणु की संख्या, ९४ ।
 चौराणुमी (बी)-वि० चौराणु के स्थान वाला । -पु० चौराणु का वर्ष ।
 चौरा-पु० १ चौवारा । २ महल । ३ कक्ष ।
 चौराई-देखो 'चौरासी' ।
 चौरायी-पु० चौराहा, चौरास्ता ।
 चौरासियो-पु० १ ८४ का वर्ष । २ बिना भूमि का राजपूत, भूमिहीन राजपूत ।
 चौरासी-वि० [सं चतुरशीति] अस्सी और चार । -पु० १ चौरासी की संख्या, ८४ । २ चौरासी लाख जीव योनि । ३ पावों के घुंघुरू विशेष । ४ पत्थर तोड़ने की छेणी । ५ योग के आसन । ६ काम शास्त्र के आसन । ७ चौरासी गावों का समूह । ८ घुंघुरू की माला ।
 चौरासीबंध-पु० डिगल का एक गीत ।
 चौरिद्रय-पु० चार इन्द्रियों वाला जीव । (जैन)

चौरी-१ देखो 'चंवरी' । २ देखो 'चोरी' ।
 चौल-देखो 'चोल' ।
 चौलड़ी-देखो 'चोलड़ी' ।
 चौलाई-देखो 'चोलाई' ।
 चौसावी-पु० वह कूप जिसका पानी चार मोट से निकाला जाता है ।
 चौबड़ी-वि० (स्त्री० चौबड़ी) १ चार परतों वाला । २ चार गुणा । ३ चार लड़ों वाला ।
 चौबटियों, चौबटों-पु० १ गांव के बीच खुला मैदान । २ चौराहा । ३ बाजार में दुकानों के मध्य का भाग ।
 चौबल, (ळी, ळी)-क्रि० वि० चारों ओर ।
 चौबळी-देखो 'चोलड़ी' ।
 चौवाळ-क्रि० वि० चारों ओर ।
 चौवास्या-पु० वर्षा ऋतु के चार मास ।
 चौबितार-पु० चार प्रकार के आहार । (जैन)
 चौबीस-देखो 'चौईस' ।
 चौबीसटी, चौबीसी-देखो 'चौईसी' ।
 चौबी-पु० १ हाथ की ग्रंथियों का समूह । २ देखो 'चोबी' ।
 चौसंगी-देखो 'चोसांगी' ।
 चौस-पु० फूलों का हार ।
 चौसट (टी)-देखो 'चौसठ' ।
 चौसठ (ठि, ठी)-वि० [सं० चतुषष्टि] साठ व चार । -पु० १ साठ व चार की संख्या, ६४ । २ चौसठ शक्तियां, योग-नियों का समूह ।
 चौसठी-पु० ६४ का वर्ष ।
 चौसर-पु० १ केश, बाल । २ चौपड़ की गोटी । ३ चौथी पत्नी । ४ मूँछ, श्मश्रु । ५ चौसरी ।
 चौसरा (रा, रिये, रे)-क्रि० वि० चारों ओर ।
 चौसरियों, चौसरी-पु० १ पुष्प हार । २ हार, माला । ३ मुँड माला । ४ अविरल श्मश्रु प्रवाह । ५ एक प्रकार की शराब ।

चौसाकी-पु० चार कटोरियों या खानों का पात्र ।
 चौसारी-देखो 'चौसरी' ।
 चौसाळा (ळी)-स्त्री० १ मकान का, चारों ओर से खुला वक्ष । २ बेलगाड़ी में लगे लंबे डंडे ।
 चौसी-पु० चार सौ तागों का ताना ।
 चौहट (टी)-स्त्री० १ पंड़ की शाखा । २ देखो 'चौवटी' ।
 चौहटी (टी)-देखो 'चौवटी' ।
 चौहतर (तर)-वि० [सं० चतुस्सप्तति] सत्तर व चार । -पु० चौहतर की संख्या, ७४ ।
 चौहतरी-पु० ७४ का वर्ष ।
 चौहथी-स्त्री० १ चार हाथ लंबी या चौड़ी वस्तु । २ बकरी के बालों की बनी मोटी पट्टी । ३ चार हथों वाली ।
 चौहवटी-देखो 'चौवटी' ।
 चौहान-पु० एक क्षत्रिय वंश ।
 चौहोतर-देखो 'चौहतर' ।
 च्यांत, च्यांत-स्त्री० चिता, सोच ।
 च्याहपरि (परी)-क्रि० वि० चार प्रकार से ।
 च्यादणी, च्यानणी-देखो 'चांदणी' ।
 च्यार-देखो 'चार' ।
 च्यारघानी-स्त्री० चौवन्नी ।
 च्यारहपासड (ई)-क्रि० वि० चारों ओर ।
 च्यारमी (वौ)-वि० चौथा ।
 च्यार, च्यारि-पु० चार । —भुज-पु० विष्णु । ग्रहा ।
 च्याह (ह)-वि० चारों । —मेर-क्रि० वि० चौरफ ।
 च्यारे-क्रि० वि० चारों ।
 च्यारयमेर-क्रि० वि० चारों ओर ।
 च्योरी-देखो 'चंवरी' ।

- छ -

छ-नागरी वणमाला के 'च' वर्ग का द्वितीय व्यंजन ।
 छ-देखो 'छे' ।
 छंगा-वि० कटा हुआ ।
 छंगाणी (बी), छंगावणी (बी)-क्रि० १ कड़वाना । २ छंटवाना, काट-छांट कराना ।

छंचेड़, छंचेड़ (डू)-पु० मरुखन को गर्म करने पर निकलने वाला सैल ।
 छंचाळ (ळी)-पु० १ हाथी, गज । २ एक प्रकार का घोड़ा । -वि० मस्त, उग्रमन ।
 छंट-स्त्री० १ छंटाई, छंटनी । २ समुद्र के बीच पड़ी भूमि ।

३ बदल, दुर्गन्ध । ४ देखो 'चट' । ५ देखो 'छाटी' ।

छटणी-स्त्री० १ छटाई, छटनी । नयन । २ छित गाव, बिखराव । ३ पृथक्करण ।

छटणी (बी)-क्रि० १ छटाई होना, छटनी होना । २ काटा जाना । ३ छितराया जाना, बिखरना । ४ पृथक् होना । ५ पिछड़ना, बिछड़ना । ६ चुना जाना, चयन होना । ७ माफ होना, मैन निकलना । ८ अंगीण होना, दुबला होना, पतला होना ।

छटवाड़ी-पु० हल्की वर्षा । छींटे ।

छटाई-स्त्री० १ छटने की क्रिया । छटनी । कटाई । २ चयन । ३ सफाई । ४ ऐसे कार्यों की मजदूरी ।

छटाणी (बी)-क्रि० १ छटाई करवाना, छटनी करवाना । २ कटाई कराना । ३ छितरवाना, बिखरवाना । ४ पृथक् करवाना । ५ चुनवाना, चयन कराना । ६ साफ कराना, मैन निकलवाना । ७ अंगीण बनवाना ।

छटाव-पु० छटाई ।

छटेल-वि० १ धूर्त, चालाक । २ बदमाश, उदण्ड । ३ छटा हुआ । ४ प्रसाधारण, विशेष ।

छंडणी (बी)-क्रि० १ छोड़ना, त्यागना । २ बगावत करना । ३ लूटमार करना ।

छंडाणी (बी), छंडावणी (बी)-क्रि० १ छोड़ना, त्यागवाना । २ बगावत कराना । ३ लूटवाना, लूटमार कराना ।

छणकणी (बी)-क्रि० १ छोंक लगाना, छोंकना । २ छन-छन करना ।

छणका-स्त्री० ध्वनि विशेष ।

छंगेरी-स्त्री० उपले या कण्डे रखने का शालय या कोष्ठक ।

छं-पु० [सं० छंदम्] १ वर्ण या मात्रा के अनुसार बना वाक्य, वृत्त, कविता, काव्य, पद्य । २ छंद शास्त्र । ३ वेद । ४ पक्षों की गणना के अनुसार वेद वाक्यों का भेद । ५ उच्छ्वा, कामना । ६ अभिप्राय, आशय । ७ वंश, काव । ८ चालाकी, धोखा । ९ विष, जहर । १० प्रसन्नता । ११ आज्ञा, आदेश । १२ हृदय गत गुप्त भाव । १३ बहतर कलाओं में से एक ।

छं-पु० १ श्रीकृष्ण का एक नाम । २ छल, कपट । -वि० कपटी, छलिया ।

छंदागर (गारी, गाळ, गाळी)-देखो 'छंदागारी' । (स्त्री० छंदागारी, छंदागाली)

छंदाणा (ना)-स्त्री० [सं०] जैन माधुर्यों की भिक्षा संबंधी एक विधि ।

छंदणी (बी)-क्रि० १ स्वच्छंद होना, स्वतंत्र होना । २ उच्छेद होना ।

छंदनाच-पु० जल तरंग पर नाच करने वाला, चन्द्रमा ।

छंदागार, छंदागारी (गाळी)-वि० (स्त्री० छंदागारी, गाळी)

१ अपना भेद न देने वाला । कपटी, चालाक । २ सम्य, व्यवहार कुशल । ३ आज्ञाकारी ।

छंदोबद्ध-वि० १ जिसमें छन्द शास्त्र के नियमों का गालन किया गया हो । २ छन्दों से युक्त ।

छंदोभंग-पु० छन्द के नियम का भतिक्रमण, छन्द रचना का दोष ।

छंदी-पु० [सं० छन्द] १ ब्राह्म षेम, दिखावा । २ गुप्त भेद, रहस्य । ३ छिपाव, दुगाव । ४ देखो 'छंद' ।

छंम (म्)-वि० [सं० क्षम] १ क्षमता वाला, सशक्त । २ उपयुक्त । ३ योग्य । ४ समर्थ । -स्त्री० १ वचना क्रिया । २ ध्वनि विशेष । ३ झमका ।

छंयाळीस-वि० चालीस व छः । -पु० ४६ की संख्या ।

छंयाळीसी-पु० ४६ का वर्ष ।

छंवरिणी, छंवरणी-पु० १ गेहूं की फसल का एक रोग । २ कड़वी, ज्वार के पुष्पों को खड़ा रख कर बनाया जाने वाला मोल डेर ।

छ-पु० १ केकी । २ रवि । ३ ध्वनि । ४ शशि । ५ कुंज । ६ हाथ । ७ छवि । ८ कटाई । ९ खण्ड, टुकड़ा । १० घर, कोष्ठक । -वि० १ निर्मल, स्वच्छ । [सं० षट्] २ छै ।

छइ-देखो 'छै' । --बरसण= 'छटदरसण' ।

छहल-देखो 'छैल' ।

छजम-पु० [सं० छज्जम्] १ कपट, माया । २ आत्मा का आच्छादन करने वाले घाट कर्म । ३ छत्रस्थ प्रवस्था । (जैन)

छजमस्थ-वि० [सं० छज्जस्थ] १ अपूर्ण ज्ञान वाला । २ गम द्वेष वाला । (जैन)

छएक-वि० छः के लगभग ।

छएल-देखो 'छैल' ।

छक-पु० १ वैभव, ऐश्वर्य । २ गर्व, अभिमान । ३ नशा, मादकता । ४ उत्साह, जोश । ५ आनन्द, बहार । ६ अवसर, मौका । ७ युवावस्था, यौवन । ८ कांति, दीप्ति, शोभा । ९ शौर्य, बहादुरी । १० बल शक्ति । ११ भय, घातक, डर । १२ दल, मेला । १३ लालसा, इच्छा । १४ हर्ष, प्रसन्नता । १५ सहज, हिम्मत । १६ मस्ती, उन्मत्तता । -वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम । २ गुन्दर । ३ मस्त, मदोन्मत्त । ४ तीव्र, तीक्ष्ण । ५ पूर्ण । ६ तृप्त । -**झाळ-पु०** कवच । -**झाळी-वि०** कवचधारी । प्रचण्ड । बलवान । पुरुषार्थी ।

छकड़-पु० [सं० शकट] बेलगाड़ी, छकड़ा ।

छकड़िया-पु० १ कवचधारी, थोड़ा । २ छकड़ा ।

छकड़ी-स्त्री० १ छः का समूह । २ तास का खेल । ३ तीव्र गति । ४ छः कहारों द्वारा उठाई जाने वाली पायकी ।
 ५ छोटा शकट । ६ होश-हवास । ७ छः से बना हुआ ।
 छकड़ी-पुं० [सं० शकट] १ बैलगाड़ी, शकट, छकड़ा ।
 २ कवच । -वि० ढीले ढाले अस्थी पंजर का, टूटा-फूटा ।
 छकणी-वि० १ तुम, छका हुआ । २ मस्त, मदोन्मत्त ।
 छकणी (बो)-क्रि० [सं० चक] १ तुम होना, अघाना । २ नशे में चूर होना, मदोन्मत्त होना । ३ चकराना । ४ प्राश्चर्य करना, हैरान होना ।
 छकबंदा-वि० महान शक्तिशाली । जबरदस्त ।
 छकसार-पुं० द्वारपाल, छड़ीबरदार ।
 छकाछक-वि० १ पूर्ण रूपेण । २ तृप्त, संतुष्ट । ३ उन्मत्त, नशे में ।
 छकाणी (बो)-क्रि० १ तृप्त करना, संतुष्ट करना । २ नशे में चूर करना । ३ हैरान करना, परेशान करना । ४ थकाना ।
 ५ चकित करना । ६ पूर्ण करना, पूर्ण करना, मुक्त होना ।
 छकार (रो)-पुं० हरिन, मृग ।
 छकियार-वि० मध्याह्न में खेत में भोजन लाने वाला ।
 छकी-वि० मस्त । तृप्त ।
 छकीली-वि० (स्त्री० छकीली) १ मस्त, मदोन्मत्त । २ छकाने वाला ।
 छकेल, छकैल-वि० मद मस्त, उन्मत्त, पूर्ण तृप्त ।
 छकी-देखो 'छक्की' ।
 छकीड़ी-पुं० समूह, पुंज ।
 छक्कड़ी-देखो 'छकड़ी' ।
 छक्कणी (बो)-देखो 'छकणी' (बो) ।
 छक्की-पुं० १ छः की संख्या का अंक, ६ । २ ताश का छः बूँटी वाला पत्ता । ३ चौपड़ में छः का दाव । ४ छः का समूह ।
 ५ छः अक्षरों की वस्तु । ६ पांच जानेदियों व मन का समूह । ७ छः अंगुलियों वाला पंजा । ८ छः दांतों वाला पशु । ९ होश हवास । १० छः की संख्या का वर्ष ।
 छग, छगड़ी-पुं० [सं० छगल] बकरा ।
 छगल-पुं० सुखा गोबर ।
 छगनमगन-पुं० छोटे व प्यारे बच्चे ।
 छगल (ल, ल्ल)-पुं० [सं० छगल] बकरा, छाग ।
 छगा-छगा-स्त्री० एक चाल या गति विशेष । -क्रि० वि० विशिष्ट चाल से ।
 छगाछिपी-पुं० १ छः दांत वाला बेल । २ बकरा ।
 छगी (गौ)-देखो 'छक्की' ।
 छगली-पुं० चाबुक ।
 छङ्ग-वि० अकेला, एकाकी ।
 छड़-पुं० १ भावा, नेजा । २ लोहे की छड़ी, मलाका : ३ छड़ी ।

४ भाले का डंडा । ६ भाले की नोक । -स्त्री० ५ आभूषण विशेष ।

छड़कणी (बो)-देखो 'छड़कणी' (बो) ।

छड़कणी (बो)-देखो 'छड़कणी' (बो) ।

छड़छड़ीली, छड़छड़ीली-पुं० [सं० शैलेय] एक लच्छंदार पीषा विशेष जो शोषधियों में भी काम आता है ।

छड़णी (बो)-क्रि० १ ओखली में कूट कर सूप से अनाज साफ करना । २ घोड़े का फुदक-फुदक कर चलना ।

छड़वड़ी (बड़ी)-वि० १ झुकमुखा, झुटपुटा । २ थोड़ा, कम । ३ समवयस्क ।

छड़हड़, छड़हड़ी-पुं० घोड़े के टापों की ध्वनि ।

छड़ाछड़-स्त्री० १ छींक से उत्पन्न ध्वनि । २ ध्वनि विशेष । -क्रि० वि० १ शीघ्र, जल्दी । २ निरंतर लगातार ।

छड़ाळ (ळि, ळी), छड़ियाळ-पुं० १ भाला, नेजा । २ भावा-चारी योद्धा ।

छड़ी-स्त्री० १ सीधी व पतली लकड़ी । २ मजार या देवालय में चढ़ाई जानी भंडी । ३ लात लगाने की क्रिया या भाव । ४ छेड़-छाड़, झगड़ा ५ सिलाई का एक ढंग । -वि० १ अकेली, एकाकी । २ स्वतंत्र, आजाद । ३ सन्तानहीन । -शाल, वार, बरदार-पुं० राज दरबार का एक अनुचर । एक प्रकार का घोड़ा ।

छड़ीली-पुं० कंटीली झाड़ी ।

छड़ी-पुं० १ बाँदी या सोने की पायल । २ मोती या पीत की लड़ों का गुच्छा । ३ लड़, लटिका । ४ रस्सी । -वि० १ अकेला, एकाकी । २ खाली हाथ, बिना सामर्थ्य का । ३ स्वतंत्र । ४ सन्तानहीन ।

छचोफियी-पुं० छः चौक वाला मकान, बड़ा मकान ।

छच्छोह, छच्छीह-देखो 'छछोह' ।

छछक-स्त्री० घारा ।

छछवी (बो)-पुं० स्वेद कण ।

छछवी-वि० (स्त्री० छछवी) तीव्र, तेज । चंचल ।

छछही-देखो 'छछोही' ।

छछियार-पुं० दही मंत्रन का पात्र ।

छछुंर (रो)-पुं० [सं०] १ चूहे की जाति का एक जंतु । २ एक प्रकार का यंत्र या ताबीज ।

छछूंक-वि० १ गुनहवार । २ शत्रु या घात करने वाला ।

छछोरी-देखो 'छिछोरी' ।

छछोह, छछोहक, छछोही, छछी-पुं० १ आभा, कांति । २ फुहार, पर्वारा । ३ 'छ' वर्ण । ४ स्पृति । -वि० १ तीक्ष्ण, तेज । २ स्वच्छ, निर्मल । ३ उत्साह युक्त, जोश पूर्ण । ४ शीघ्र-गामी । ५ योद्धा, वीर । ६ रफात वाला । -क्रि० वि० १ घना में, अलछताता हुआ । तीव्र गति में ।

छज-पु० १ बुद्धि, अक्ल । २ व्यवहार, पटुता । ३ छाजन की मामूली । ४ छत । ५ छाजन । -वि० मर्यादा रखने वाला ।
छजरी (बी)-क्रि० १ छाया जाना । आच्छादित होना ।
२ शोभित होना । ३ जंचना, फबना ।
छजेड़ी-स्त्री० कच्चे मकान की छाजन ।
छज्ज-देखो 'छाजड़ी' ।
छज्जीबलि-(नी)स्त्री० जीवों की छः योनियां । (जैन)
छज्जी-देखो 'छाज्जी' ।
छटक-पु० रुद्रनाल के ग्यारह भेदों में से एक । -क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत, कुर्मी से ।
छटकणी-वि० उड़ने वाला, उछलने वाला, चटकने वाला ।
छटकणी (बी)-देखो 'छिटकणी' (बी) ।
छटकाणी (बी), छटकावणी (बी)-देखो 'छिटकाणी' (बी) ।
छटपट-क्रि० वि० शीघ्र, झटपट, तुरंत । -स्त्री० बेचैनी, पबराहट, तड़फ ।
छटपटाणी (बी)-क्रि० १ छटपटाना, तड़फना । २ बेचैन होना, पबराना । ३ व्याकुल होना, अधीर होना ।
छटपटी-स्त्री० पबराहट, बेचैनी ।
छटाक-स्त्री० मेर का सोचहवां भाग, एक बोल ।
छटान-स्त्री० छटा, कान्ति, दीप्ति ।
छटा-स्त्री० [सं०] १ किरण-समूह, प्रकाश, चांदनी । २ प्राभा, कान्ति, दीप्ति । ३ विजनी । ४ समूह, समुदाय । ५ प्रभाव, गौरव । ६ शोभा । ७ सूअर के बाल । ८ अविच्छिन्न पंक्ति ।
—टोप-पु० २३वां क्षेत्रपाल । —पत-वि० कान्तिवान ।
छटाघर-पु० योद्धा ।
छटाघाब-पु० शेर, सिंह ।
छट्ट-छट्ट-स्त्री० [सं० पष्ठी] माग के प्रत्येक पक्ष की छठी तिथि ।
—पत-पु० लगातार दो दिनों का उपवास । (जैन)
छट्ट-देखो 'छट्टी' (स्त्री० छट्टी) ।
छट्टी-स्त्री० [सं० पष्ठी] १ जन्म दिन से छठा दिन या रात ।
२ एक देवी । ३ मौत, मृत्यु । -वि० छः के स्थान वाली, छठी ।
छट्टी-वि० [सं० पष्ठी] (स्त्री० छट्टी) छः के स्थान वाला, छठा । -पु० छः की संख्या का वर्ष ।
छठ-देखो 'छट्ट' ।
छठारीहाण-पु० छः दांत वाला युवा ऊंट ।
छठोड़ी, छठी, छठोड़ी, छठो-देखो 'छट्टी' ।
छब (छबी)-देखो 'छट्टी' (स्त्री० छट्टी)
छडक-पु० छिड़काव ।
छडणी (बी)-क्रि० छिड़कना ।
छडणी (बी)-क्रि० १ छोड़ना, त्यागना ।
२ देखो 'छाडणी' (बी) ।

छणक-स्त्री० १ तपे हुए पत्थर या चातु पर पानी लगने से उत्पन्न ध्वनि । २ सन-सन ध्वनि । ३ छन्छनाहट ।
छण-देखो 'सण' ।
छणकणी (बी), छणकणी (बी)-क्रि० १ चमकना, दमकना ।
२ छन-छन शब्द करना । ३ भूतभूताना ।
छणक-मणक-स्त्री० १ पायल की भन्का । २ तलवार की भन्का । ३ छन्छनाहट ।
छणकार-स्त्री० भूतकार ।
छणछणणी (बी)-क्रि० भूतभूताना, छन्छनाहट ।
छणकणी (बी)-देखो 'छणकणी' (बी) ।
छणणी (बी)-क्रि० १ छनना, छनकर निकलना । २ छाना जाना । ३ स्वच्छ होना, साफ होना । ४ आवरण भेद कर निकलना (धूप) । ५ चूना, टपकना । ६ चोट खाना, विध जाना । ७ छान-बीन होना । ८ गाढ़ा प्रेम होना ।
छणश-स्त्री० [सं० क्षणश] रात्रि, रात ।
छणमण छणहण-पु० १ छनछनाहट । २ खनखनाहट । ३ ध्वनि ।
छणाई-स्त्री० १ छानने का कार्य । २ छानने का पारिश्रमिक ।
३ पैर के तलुवे में होने वाला फोड़ा । ४ एक प्रकार का जीव ।
छणाकी-पु० खन्माटा, भन्माटा ।
छणारी-स्त्री० १ चूल्हे के पास उपले रखने का स्थान । २ देखो 'छणाई' ।
छणारी-पु० १ गुदा द्वार । २ उपलों का व्यवस्थित ढेर ।
छणायारी-पु० १ कांसी के बर्तनों का व्यापारी । २ एक लोक गीत । ३ देखो 'छणारी' ।
छणरी-१ देखो 'छणारी' । २ देखो 'छणाई' ।
छत-स्त्री० [सं० छत्र] १ किसी मकान या कक्ष का ऊपरी प्रांगण । २ ऊपरी प्रांगण में जमाया जाने वाला चूना, कंकरीट आदि का मसाला । ३ भूमि, पृथ्वी । ४ स्थान, जगह । ५ छटा, शोभा । ६ छत्र । ७ पाय, व्रण, फोड़ा । ८ छतरा, जोखिम । ९ प्रभुता, प्रधानता ।
छतड़ी-देखो 'छतरी' ।
छतड़ी-पु० छाता ।
छतज-पु० [सं० क्षतज] रुधिर, खून । -वि० लाल ।
छतप-पु० [सं० छत्रपति] राजा, नरेश ।
छतर-देखो 'छत्र' । -छियां, छीयां= 'छत्रछाह' । -धर, धारण, धारी= 'छत्रधारी' । -पत= 'छत्रपति' ।
छतरी-स्त्री० १ छाता । २ शव दाह के स्थान पर बनाया गया छज्जेदार मण्डप, स्मारक । ३ वर्षा ऋतु में होने वाला एक उद्भिज । ४ क्षत्रिय ।
छतलोटे-स्त्री० एक प्रकार की कसरत ।

छतां-कि० वि० १ होते हुए, रहते हुए । २ लिये, वास्ते ।
 -वि० तैयार, मौजूद ।
 छति (ती) -पु० [सं० छत्र] १ बादशाह, राजा ।
 [सं० क्षति, क्षिति] २ हानि, नुकसान । ३ वक्षस्थल,
 छाती । ४ भूमि, पृथ्वी ।
 छतीस-वि० [सं० छत्रिणत्] तीस व छः । -पु० तीस व छः
 की संख्या, ३६ ।
 छतीसका, छतीसी-स्त्री० १ छतीस छन्दों का काव्य । २ छतीस
 वस्तुओं का समूह । -वि० कुलटा, कुलक्षणा ।
 छतीसी-पु० ३६ का वर्ष । -वि० सक्कार, घूर्त ।
 छतै-देखो 'छता' ।
 छतौ-वि० (स्त्री० छती) १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ प्रकट,
 जाहिर । ३ मौजूद, तैयार । -कि० वि० होते हुए,
 रहते हुए ।
 छतधारी-देखो 'छत्रधारी' ।
 छत्तर-देखो 'छत्र' ।
 छति (ती)-स्त्री० १ एक अस्त्र विशेष । २ देखो 'छत्ती' ।
 ३ देखो 'छाती' ।
 छत्ती-देखो 'छती' ।
 छत्र-पु० [सं०] १ छाता, छतरी । २ देव मूर्ति पर लटकाई
 जाने वाली सोने या चांदी की छोटी छतरी । ३ राजा महा-
 राजाओं के ऊपर तनी रहने वाली छतरी । ४ राजा,
 नृप । ५ क्षत्रिय । ६ चांदनी, चंदौवा । ७ मंडप ।
 ८ ज्योतिष का एक योग । ९ डिगल के बेलियो सागौर का
 भेद । १० छाजन, आच्छादन । ११ उद्भिज, खूमी ।
 -वि० श्रेष्ठ । -छाहि-स्त्री० संरक्षण, शरण । कृपा ।
 छत्रक-पु० [सं०] १ कुकुरमुता, खूमी । २ छाता । ३ स्मारक ।
 ४ देवालय । ५ मण्डप । ६ मधुमक्खी का छाता ।
 ७ शिवालय ।
 छत्रछांगीर (छांहंगीर)-पु० बादशाह का छत्र ।
 छत्रघर (छरण, धार, धारी)-पु० [सं०] १ राजा, नृप ।
 २ देवता । ३ सर्प । ४ राजा, बादशाह का छत्र पकड़े रहने
 वाला अनुचर । ५ राज्य चिह्न । ६ छाताधारी ।
 छत्रधीस-पु० १ देवता । २ राजा, बादशाह ।
 छत्रधीड़-पु० क्षत्रिय, धर्म ।
 छत्रपति (पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती) छत्रप्यत्ती-पु०
 [सं० छत्रपति] १ देवता । २ राजा, बादशाह । ३ सर्प,
 नाग ।
 छत्रबंध-पु० १ राजा नृपति । २ एक प्रकार का चित्रकाव्य ।
 छत्रभंग-पु० [सं०] १ राजा का नाशक एक योग । (ज्यो०)
 २ अराजकता । ३ हाथी का एक भ्रमगुण । ४ एक प्रकार
 का घोड़ा (भृशृभ) ।

छत्ररत्न-पु० १ सेना के ऊपर बनाया जाने वाला कई योजन
 लंबा चौड़ा छत्र । (जैन) २ नक्षत्रों के चौदह रत्नों में से
 नौवां रत्न । (जैन)
 छत्राधार-देखो 'छत्रघर' ।
 छत्राकार-वि० छत्र के आकार का छातानुमा ।
 छत्राधीस-देखो 'छत्रधीस' ।
 छत्राळ (ळो)-वि० छत्रधारी । -पु० राजा, नृप । बादशाह ।
 छत्रिय (याँस)-पु० [सं० क्षत्रिय] राजपूत, क्षत्रिय । -धर्म
 पु० क्षात्र-धर्म । -वि० लाल ।
 छत्री-स्त्री० [सं० छत्रिण] १ छतरी, छाता । २ स्मृति-भवन या
 देवालय । [सं० क्षत्रिय] ३ क्षत्रिय, राजपूत । -वि०
 छत्रधारी । -धर्म-पु० क्षात्रधर्म । -बट-स्त्री० राजपूती
 क्षत्रिय गौरव । क्षात्रधर्म ।
 छत्रीस-देखो 'छतीस' ।
 छत्रेत-वि० छत्रधारी, छत्रपति ।
 छत्रेस्वर-पु० [सं०] (स्त्री० छत्रेस्वरी) १ ईश्वर । २ देवता ।
 ३ छत्रपति । ४ राजा ।
 छत्रेस्वरी-स्त्री० देवी, दुर्गा ।
 छत्रंभ-देखो 'छत्र' ।
 छब, छबन-पु० [सं०] १ पत्र, पत्ता । २ कागज, पत्र । ३ पंख
 पर । ४ आवरण, आच्छादन । ५ ध्यान । ६ चादर ।
 ७ देखो 'छत्र' ।
 छबम-देखो 'छत्र' ।
 छबमस्ती-वि० मस्त, मीकीन ।
 छबमी-देखो 'छत्री' ।
 छबर-देखो 'छिद्र' ।
 छबाम-स्त्री० १ पैसे का चौथाई भाग । २ एक प्राचीन तौल ।
 छबामी-पु० एक रुपये पर छदाम की दर में लिया जाने वाला
 एक रियासती कर ।
 छदांमी-देखो 'मुदांमी' ।
 छद्य-पु० [सं०] १ छत्र, कपट । २ दुराव, छिपाव । ३ व्याज ।
 ४ कपट वेश । ५ धोखा, बेईमानी । ६ मोपनीयता । ७ डोंग,
 दिखावा । -घातक-वि० छुप कर मारने वाला ।
 छद्यस्व-पु० वह व्यक्ति जिसका अनंतज्ञान प्रकट न हुआ हो,
 जो सर्वज्ञ न हो । (जैन)
 छद्यी-वि० [सं०] १ छलिया, कपटी । २ कपट वेश धारी ।
 ३ डोंगी, पाखंडी । ४ बेईमान । ५ भेदिता ।
 छइम-देखो 'छत्र' ।
 छनकणी (बो)-देखो 'छणकणी' (बो) ।
 छन-देखो 'क्षण' ।
 छनीचर-देखो 'सनिचर' ।
 छन्नी-स्त्री० हाथ का आभूषण । (मेवात)

छपाई-देखो 'छप्पय' ।

छपाकी-पु० १ पानी का छपाका । २ बड़ा छीटा । ३ ध्वनि विशेष ।

छपाटी-स्त्री० लकड़ी का छिनका, टुकड़ा, छत्तू ।

छपाणी (बी)-क्रि० १ मुद्रित होना, छपाया जाना । २ चिह्नित होना, अंकित होना ।

छपाव-पु० [सं० षटपट] भ्रमर, भौंगा ।

छपन-देखो 'छप्पन' ।

छपनमी (बी)-देखो 'छप्पनमी' ।

छपनी-देखो 'छप्पनी' ।

छपन्न-देखो 'छप्पन' ।

छपय-देखो 'छप्पय' । देखो 'छपाव' ।

छपर-देखो 'छपरी' ।

छपरबंदी-स्त्री० छपरा बनाने का कार्य ।

छपरी, छप्परी-स्त्री० १ ऊटों की एक जाति । २ खुला मैदान ।

छपरी-पु० १ घास फूस का छपर । २ छपरी जाति का ऊट ।

छपा-स्त्री० [सं० क्षिपा] रात्रि निशा । —कर-पु० चन्द्रमा ।

छपाई-स्त्री० १ मुद्रण, मुद्रण का कार्य । २ अंकन ।

छपाकी-पु० १ बड़े छीटे की छावाज । २ पानी में कोई वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि, छपाका । ३ बड़ा छीटा ४ चकत्ता ।

५ रक्त विकार का एक रोग विशेष ।

छपाणी (बी), छपावणी (बी)-क्रि० १ मुद्रित कराना । २ मुद्रांकित कराना । ३ छिपाना ।

छपे, छप्पई-देखो 'छप्पय' ।

छप्पन-वि० [सं० षट्पञ्चाशत्] पचास व छः । —पु० छप्पन की संख्या, ५६ ।

छप्पनमी (बी)-वि० छप्पन के स्थान वाला ।

छप्पनी-पु० ५६ का वर्ष ।

छप्पय-पु० [सं० षट्पद] १ छः चरणों का एक मात्रिक छन्द । २ देखो 'छपाव' ।

छप्पर-देखो 'छपरी' ।

छप्परड़ी, छप्परिणी-देखो 'छपरी' ।

छप्पे-देखो 'छप्पय' ।

छप्रभंग-स्त्री० थोड़े के पीठ की भौरी ।

छब-वि० [सं० सर्व] सब, सर्व, समस्त । —स्त्री० छबि, शोभा, स्पर्श । —काळ (ळी)-पु० डिंगल छंद रचना का एक दोष । —वि० बच्चे वाला, चकत्ते वाला । —काळी-स्त्री० रंग-बिरंगी ।

छबकी-पु० धब्बा, चकत्ता ।

छबस्कणी (बी)-क्रि० धारण करना ।

छबड़ि (ड़ो, डी, डी)-देखो 'छाब' ।

छबजाण-पु० [सं० सर्वज] ईश्वर, सर्वज ।

छबली-पु० द्वार की चौखट के ऊपर लगने वाला बड़ा पत्थर ।

छबली (बी)-क्रि० १ स्पर्श करना, छूना । २ छवि देना, शोभा देना । ३ छाया जाना, प्राच्छादित करना ।

छबभुत-वि० [सं० अद्भुत] विचित्र, अद्भुत ।

छबर-छबर-स्त्री० [सं० जंबर] अशुधारा । —अव्य० सिसक-सिसक कर ।

छबस (सो, ल्यो)-देखो 'छाब' ।

छबि, छबी-स्त्री० [सं० छवि] १ शोभा । २ कांति, आभा, दीप्ति । ३ प्रभा, किरण । ४ मौन्द्य । ५ तस्वीर, चित्र । ६ रूप, स्वरूप । ७ रंग वर्ण ।

छबिसी, छबीसी-वि० १ सुन्दर, छवि वाला । २ सजा हुआ । ३ शोकीन ।

छबीनी-पु० रात्रि में सेना के चारों ओर चक्कर लगाने वाला घुड़सवार ।

छब-पु० एक प्रकार का सुगंधित पुष्प ।

छबील (ड़ी, डी)-छबील (ली)-देखो 'छाब' ।

छबीस-वि० बीस व छः, छबीस । —स्त्री० बीस व छः की संख्या, २६ ।

छबीसी-पु० छबीस का वर्ष ।

छबी-पु० टोकरा ।

छबदिठय-पु० हाथी का गंडस्थल ।

छभा-देखो 'सभा' ।

छमक-स्त्री० पायल की झंकार ।

छमटा-स्त्री० घ्राण की लपट ।

छम-स्त्री० घुंघरू की ध्वनि, पायल की छम-छम । झंकार । —वि० [सं० छम] समर्थ, बलवान ।

छमकणी (बी)-क्रि० १ घुंघरू, पायल आदि बजाना । २ झंकार होना । ३ सज्जी छोकना, छोंका लगाना ।

छमकणी (बी), छमकारणी (बी), छमकावणी (बी)-क्रि० १ घुंघरू, पायल आदि बजाना । २ झंकार करना । ३ सज्जी छोकाना, छोंक लगाना ।

छमकी-पु० १ छोंका, तड़का । २ तूफान ध्वनि ।

छमच्छर-पु० [सं० संवत्सर] साल, वर्ष, संवत् ।

छमछम-स्त्री० छमछमाहट । मजीरा । —क्रि० वि० झनकारते हुए ।

छमछमणी (बी)-क्रि० छम-छम करना, झंकार होना ।

छमछमणी (बी)-क्रि० घुंघरू या पायल बजाना, झंकार करना ।

छमछरी-स्त्री० [सं० संवत्सर] १ वरसी, मृत्यु दिन । २ पर्युषण का प्राप्तिरी दिन । (जैन)

छमा-देखो 'क्षमा' ।

छमाई-देखो 'छमासी' ।

छमाछम-स्त्री० छम-छम की ध्वनि ।

छमाघो-पु० छः मास का गर्भ ।

छमास-पु० [सं० षाण्मासुर] १ स्वामि कार्तिकेय । २ छः मास की अवधि ।

छमासिघो-देखो 'छमाघो' ।

छमासो, छमाहो-स्त्री० १ छः मास की अवधि । २ छः मास की अवधि पर्यन्त मृतक के पीछे किया जाने वाला श्राद्ध प्रादि कर्म । ३ अर्ध वार्षिकी परीक्षा ।

छमुख-पु० [सं० षड्मुख] स्वामि कार्तिकेय, षडानन ।

छमो-वि० (स्त्री० छमी) छठा ।

छम्मास-देखो 'छमाम' ।

छम्माछोळ-स्त्री० उपद्रव, उत्पात ।

छपस (जु, लल)-देखो 'छेल' ।

छयां-देखो 'छाया' ।

छयाणवड (वे, वे)-वि० नब्बे तथा छः, छिनवे ।

छयांळो-वि० छियालीस ।

छयांसी-वि० छियासी ।

छरंडो-स्त्री० १ होली का दूसरा दिन । २ इस दिन का उत्सव ।

छर-पु० [सं० क्षर] १ सिंह का भगला पंजा । २ कलंक, दोष ।
३ किसी वस्तु के वेग से निकलने की क्रिया व आवाज ।

छरछर, छरछराहट-स्त्री० ध्वनि विशेष ।

छरणो-स्त्री० बड़ई का एक भोजार ।

छरबी-स्त्री० [सं० छर्बी] वमन, कं, उल्टी ।

छरभर-पु० वर्षा होने का शब्द, भरभर ।

छररी-पु० १ जर्जर, कण । २ बजरी, रेत ।

छरहरी-वि० (स्त्री० छरहरी) १ पतला-दुबला । २ चंचल ।

छराळज-वि० मस्त ।

छराळो, छरेळ-पु० १ सिंह का बच्चा । २ सिंह । ३ योद्धा, वीर ।

छरो-पु० १ सिंह का पंजा । २ कलंक, दोष । ३ हाथ ।
४ तलवार । ५ इजारबन्द । ६ आक, सण प्रादि की छाल की रस्सी ।

छलंग- देखो 'छलांग' ।

छळ (ळ)-पु० [सं० छल] १ कपट, धोखा, दगा । २ ठगी ।
३ चालाकी, बेईमानी । ४ बहाना । ५ दुष्टता । ६ युद्ध, रण । ७ बार, प्रहार । ८ यश, कीर्ति । ९ रक्षा, बचाव ।
१० कार्य, सेवा । ११ आभूषण, गहना । १२ अवसर, मौका । १३ मान, प्रतिष्ठा, मर्यादा । १४ भेद, रहस्य ।
१५ बहादुरी, शौर्य, पराक्रम । १६ गुस्सा, क्रोध, कोप ।
१७ कर्तव्य । -वि० १ श्याम, कालाक्ष । २ श्रेष्ठ ।
-क्रि० वि० लिए, वास्ते ।

छळकण-स्त्री० १ छलकने की क्रिया या भाव । २ उद्गार ।

छळकणो (बो)-क्रि० १ द्रव पदार्थ का उबक कर बाहर आना, उबकना, छलकना । २ उछलना, उमड़ना । ३ अश्रु निकलना ।

छळकणो (बो)-क्रि० १ द्रव पदार्थ को हिला-डुला कर बाहर निकालना, उछालना । २ उबकाना, उमड़ाना ।

छळगारी-वि० (स्त्री० छळगारी) कपटी, छली ।

छलडी-पु० १ चरखे का एक उपकरण । २ रेगिस्तान का एक जंतु । -वि० छः परतों या तलों का ।

छळछंड (छंड)-पु० कपट पूर्ण कार्य, ढोंग, पाखंड, चरित्र ।

छळछळो-वि० (स्त्री० छळछळो) १ अश्रु पूर्ण, डबडबाया हुआ । २ पूर्ण । ३ तबालब भरा हुआ ।

छळछिद्र-पु० १ छल, कपट, ठगी । २ ढोंग, पाखंड । ३ प्रेत लीला ।

छळरण, छळणो-स्त्री० छलने की क्रिया या भाव ।

छळणो (बो)-क्रि० १ धोखा देकर कार्य कराना, धोखा देना, ठगना । २ भ्रमित करना, मुलावा देना । ३ षडयंत्र में फंसाना । ४ मर्यादा का उल्लंघन करना । ५ मारना, संहार करना । ६ लहलहाना ।

छळवार-वि० १ कपटी, प्रपंची, धोखेबाज । २ कुटनीतिज्ञ ।

छळभोम-स्त्री० युद्ध भूमि ।

छळां-क्रि० वि० लिये, वास्ते ।

छलांग-स्त्री० पांखों से कूदने की क्रिया, कुदान फलांग ।

छलांगणो (बो)-क्रि० १ कूद कर जाना कूदना, कूद कर पार करना । २ चौकड़ी भरना ।

छळाई-स्त्री० छलने का कार्य ।

छळाबी-पु० छल, कपट, धोखा । -वि० फुर्तीला ।

छलास-स्त्री० किसी धातु के तार से बनी सादी भंगुठी ।

छळि-१ देखो 'छळ' । २ देखो 'छळी' ।

छळिघो, छळी-वि० [सं० छलिन] १ छल करने वाला, धोखे-बाज, कपटी । २ ढोंगी, पाखंडी । -पु० चरखे का एक उपकरण ।

छळ (ळ)- देखो 'छळ' ।

छळो-पु० १ घोड़े, गधे या भैंस का पेशाव । २ बकरा ।

छळी-पु० १ रेगिस्तान का एक जन्तु विशेष । २ देखो 'छल्लो' ।

छल्लेबार-वि० जिसमें छोटे-छोटे वृत्त या मण्डल हों, घुंघराला ।

छल्लो-पु० १ कोई छोटा वृत्त या घेरा । २ भंगुठी, मुंदरी, छल्ला । ३ बालों का घुंघरालापन ।

छव-वि० [सं० षट] छः, पांच व एक । -स्त्री० १ छः की संख्या, ६ । २ छबि, शोभा ।

छवगाळ (ळो)- देखो 'छीगाळी' । (स्त्री० छवगाळी) ।

छवडउ- देखो 'छोडी' ।

छवणी (बो)—क्रि० १ स्पर्श करना, छूना । २ छाना, आच्छादित करना ।
छवरी—पु० वृक्ष, पेड़ ।
छवाई—स्त्री० १ छाने का कार्य । २ इस कार्य की मजदूरी । ३ ग्रंथी, गांठ ।
छवाणी (बो), छवाणी—(बो)—क्रि० १ छाने का कार्य कराना, आच्छादित कराना । २ स्पर्श कराना ।
छवारी—पु० खजूर ।
छवि—स्त्री० १ चर्म, चमड़ी । २ शोभा ।
छविताण, छविह—पु० [सं० छविश्राण] १ शरीर के वस्त्र । २ कंबल । ३ कवच, वर्म । (जैन) ४ देखो 'छव्विह' ।
छवीस—देखो 'छव्वीस' ।
छब्यो—पु० छाने वाला कारीगर ।
छवो—पु० १ ऊगर भूमि । २ बच्चा ।
छव्विह—वि० [सं० पट्ठविह] छः प्रकार का । (जैन)
छसि—वि० [सं० पट्ठतानि] छः सौ ।
छह—देखो 'छे' ।
छहड़ी—पु० कलह, भगड़ा, विवाद ।
छहत्तरी—पु० छिहत्तर का वर्ष ।
छहसी—वि० (स्त्री० छहली) अन्तिम, आखिरी ।
छहोड़णी (बो)—देखो 'चहोड़णी' (बो) ।
छहीतरी—देखो 'छियंतरी' ।
छो—अव्य० [सं० अस्] है, होने का भाव । --स्त्री० छाया ।
छोग—स्त्री० १ मवेशियों का दल या समूह । २ वृक्ष की कटी टहनी ।
छांगड़ी—वि० काटने वाला, संहार करने वाला ।
छांगणी (बो)—क्रि० [सं० छजि] १ वृक्ष की टहनियां काटना । २ काट-छांट करना । ३ सारना । ४ कम करना ।
छांगी, छांगीर—देखो 'छांहगीर' ।
छांगळी—स्त्री० बड़ी, भयंकर तोप ।
छांट, छांटनी, छांटड़ी—स्त्री० १ छांटने की क्रिया, छंटाई । २ काट, छांट । ३ कतरन । ४ चयन, चुनाव । ५ वर्षा की बूंद ।
छांटणी—स्त्री० १ छांटने का कार्य । २ छंटनी । ३ छिनाराना, उखाल कर फैलाना आदि क्रिया ।
छांटणी (बो)—क्रि० १ चयन, चुनाव करना । २ छंटनी करना । ३ छिनाराना, बिखेरना । ४ काट-छांट करना । ५ कतराना । ६ छींटे लगाना, छिड़कना । ७ कूटना, फटकना । ८ शेखी बघारना ।
छांटाणी (बो)—देखो 'छंटाणी' (बो) ।
छांटी—स्त्री० १ बेगार, मुक्त का कार्य । २ सेवा, चाकरी । ३ नेज गति, दौड़ ।

छांटो—पु० १ जल का छींटा । २ छींटा, घब्बा । ३ छोटा दाग । ४ अनुचर ।
छांडणी (बो)—देखो 'छोडणी' (बो) ।
छाण—स्त्री० १ छान-चीन, जांच । २ अनुसंधान, शोध । ३ छानने की क्रिया या भाव । ४ सूखा गोबर ।
छाणणी—स्त्री० चलनी, जरिया ।
छाणणी (बो)—क्रि० १ आटे, चूर्ण या द्रव पदार्थ को बारीक वस्त्र या चलनी में से निकालना, छानना । २ मिश्रित वस्तुओं को जुदा-जुदा करना । ३ जांच पड़ताल करना । ४ ढूंड़ना, खोजना । ५ छेदना ।
छाणत—स्त्री० १ कलंक, दोष । २ चुभने वाली बात ।
छाणबीण—स्त्री० १ जांच, पड़ताल । २ शोध, अनुसंधान ।
छाणस—पु० आटा छान कर साफ करने पर निकला हुआ भूसा ।
छाणी—पु० [सं० छाण] गोबर का उपला कण्डा ।
छान—स्त्री० [सं० छन्न] १ कच्चे छाजन वाला कक्ष । २ कच्चा छाजन । ३ गुप्त रखने का भाव । ४ गुप्त धन । ५ देखो 'छाण' ।
छानउ—देखो 'छांनी' ।
छानके (कं)—क्रि० वि० छुपे तौर पर ।
छानवरण (बांण)—स्त्री० गुप्त रूप से संगृहीत सम्पत्ति ।
छानु (तु)—देखो 'छांनी' ।
छान—क्रि० वि० गुप्त रूप से, चुपके से । —छुरके (कं), सीक—क्रि० वि० गुप्त रूप से, चुपके-चुपके ।
छानेउ, छांनी—वि० [सं० छन्न] (स्त्री० छांनी) १ गुप्त, छुपा हुआ । २ शांत, चुपचाप । ३ अप्रकट । —मांती—वि० चुपचाप, शांत ।
छामोदरी—वि० [सं० क्षामोदरी] छोटे पेट वाली ।
छाय, छायाड़ी, छाया, छाव, छांवड़ी—देखो 'छाया' ।
छाया—छकड़ी—स्त्री० एक देशी खेल ।
छावणी—देखो 'छावणी' ।
छावळ (ळो)—स्त्री० १ प्रतिछाया, परछाई । २ छोटे-छोटे बादलों से होने वाली हल्की-हल्की छाया । ३ एक प्रकार का वाद्य ।
छाह (इ, ङी)—देखो 'छाया' ।
छाहगीर—पु० राजछत्र । बड़ा छाता ।
छाहड़ी—पु० छोटा कंदीला पौधा ।
छाहरी, छाही—देखो 'छाया' ।
छा, छा—स्त्री० १ कान्ति । २ छाया । ३ रक्षा । ४ छाछ । ५ आवरण, ढक्कन । ६ चिन्ता या दुःख के कारण चेहरे पर होने वाला काला दाग । ७ एक प्रकार का नेत्र रोग । --वि० थे, था ।
छाय—देखो 'छाया' ।

छाग्रण-स्त्री० १ साग-सब्जी में दी जाने वाली खटाई ।
 २ छाजन ।
 छाई-देखो 'छाईस' ।
 छाईजणी (बो)-क्रि० छाया जाना, छाच्छादित होना ।
 छाईस-वि० बीस और छः, छब्बीस ।
 छाईसी-पु० छब्बीस का वर्ष ।
 छाक-स्त्री० १ नशा, मादकता । २ मस्ती । ३ हल्के नशे के लिये ली जाने वाली शराब की कुछ मात्रा । ४ शराब पीने का प्याला । ५ किसान के लिये खेत में ले जाने वाला भोजन, पाथेय । ६ दोपहर, मध्याह्न । ७ डलिया । -वि० १ मस्त, उन्मत्त । २ लबालब, पूर्ण ।
 छाकटाई-स्त्री० १ बदमाशी । २ दुष्टता । ३ चंचलता । ४ नीचता । ५ धूर्तता, चालाकी ।
 छाकटी-वि० [सं० माकट] (स्त्री० छाकटी) १ बदमाश, दुष्ट । २ दुश्चरित्र । ३ चतुर, चालाक । ४ चंचल, नटखट । ५ कृपण, कंजूस । ६ क्रुतघ्न ।
 छाकणी (बो)-क्रि० १ अघाना, खा-पीकर तृप्त होना । २ शराब आदि के नशे में मस्त होना । ३ ललचाना ।
 छाकां-स्त्री० दुपहरी, मध्याह्न ।
 छाकी-वि० उन्मत्त, मस्त, मदोन्मत्त ।
 छाकोटी-वि० मस्त, मदोन्मत्त ।
 छाग, (इ, डी)-पु० [सं० छग] १ बकरा । २ मेघ राशि ।
 छागटाई-देखो 'छाकटाई' ।
 छागटी-देखो 'छाकटी' ।
 छागण-स्त्री० १ उपले की अग्नि । २ घाग ।
 छागमुख-पु० स्वामि कार्तिकेय का छटा मुख । स्वामि कार्तिकेय का एक अनुचर ।
 छागर-स्त्री० बकरी ।
 छागरत (घ)-पु० [सं० छागरथ] अग्नि ।
 छागल-पु० [सं० छागल] १ बकरा । २ बकरे के चमड़े का जल-पात्र । ३ पानी की केतली । ४ पायल, तूपुर ।
 छागळियो, छागळी-पु० [सं० छागल] १ यात्रा में साथ रखने का जल पात्र । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ बकरा ।
 छागो-स्त्री० १ बकरी । २ नकल ।
 छाछ, छाछड़, छाछड़ली, छाछड़ली-स्त्री० [सं० छच्छिका] १ दही मथ कर मक्खन निकाल लेने के बाद पीछे रहने वाला पानी, मट्ठा, तक्र । २ चाच देश ।
 छाछण-स्त्री० साग-सब्जी में दी जाने वाली खटाई ।
 छाछरी-वि० १ टिंगना, बीना, नाटा । २ मस्त ।
 छाछि, छाछी-स्त्री० १ आवड़ देवी की जहन एक देवी । २ देखो 'छाछ' ।

छाछेती, छाछेती-वि० छाछ का, छाछ संबंधी ।
 छाछ्यो-पु० जीरे की फसल का एक रोग ।
 छाज, छाजइयो, छाजड़-पु० [सं० छाद] १ अनाज फटकने का उपकरण, मूप । २ छप्पर, छाजन । ३ छज्जा ।
 छाजड़करी-वि० बड़े-बड़े कानों वाला । (हाथी)
 छाजण-पु० [सं० छादन] १ छप्पर, छाज । २ कच्चे मकान की छाजन, छप्पर । ३ छाने का ढंग । ४ शोभित होने का भाव ।
 छाजणी (बो)-क्रि० १ शोभा देना, फबना । २ सुशोभित होना । ३ आच्छादित होना ।
 छाजन-देखो 'छाजण' ।
 छाजरसि (मु)-पु० एक प्रकार का घास ।
 छाजलियो-१ देखो 'छाजली' । २ देखो 'छाजो' ।
 छाजली-स्त्री० डलिया, टोकरी, छबड़ी ।
 छाजली-पु० अनाज फटकने का उपकरण, मूप ।
 छाजारी-स्त्री० रहंट में लगने वाली घास या लोहे की बनी टट्टी ।
 छाजियो-पु० मृतक के पीछे गाया जाने वाला विरह गीत ।
 छाजो-पु० १ दरवाजे या खिड़की पर छाजन की तरह लगा पत्थर या लकड़ी का पाटिया । छज्जा । २ छज्जे पर बनी वालकानी । ३ टोप के आगे निकला हुम्रा भाग । ४ सर्प का फन ।
 छाट (ण)-स्त्री० १ विपत्ति, संकट, उच्चाट । २ ऊपर से आच्छादित जलकुण्ड । ३ चट्टान, शिला । (जैन)
 छाटक (की)-पु० प्रहार, चोट । -वि० (स्त्री० छाटकी) चतुर, दक्ष, होशियार, धूर्त, चालाक ।
 छाटकाई-स्त्री० चतुरता, दक्षता, होशियारी, चालाकी, धूर्तता ।
 छाटी-स्त्री० सामान लाद कर ऊंट पर रखने का बकरी के बालों का बना मोटा थैला ।
 छाड-स्त्री० [सं० छदि:] १ वमन, कै, उल्टी । २ वर्षा के पानी से घास उत्पन्न होने का स्थान । ३ नुए पर मोट खाली करने का स्थान । ४ त्याग ।
 छाडणी (बो)-क्रि० [सं० छर्दनम्] १ वमन, कै या उल्टी करना । २ छोड़ना, त्यागना । ३ बगावत या विद्रोह करना ।
 छाडाणी-वि० विद्रोही, क्रान्तिकारी । -पु० बगावत, विद्रोह ।
 छाडाणी (बो)-क्रि० १ वमन कराना । २ छुड़वाना, त्यागाना । ३ विद्रोह कराना ।
 छाडाळ (ळी)-पु० १ भाला, नैजा । २ ईडर भुका हुम्रा ऊंट ।
 छाडि (डो)-स्त्री० १ गुफा, कदरा । २ रहंट में लगी रहने वाली एक नलिका ।
 छाडीणी, छाडोणी-देखो 'छाडाणी' ।

छाणी (बी)-क्रि० [सं० छादन] १ फैलना, पसरना । २ व्याप्त होना । ३ आच्छादित होना । ४ आच्छादित करना । ५ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना या करना । ६ बसना । ७ छिपना । ८ गोभित होना । ९ आवृत करना । १० तानना । ११ ढकना । १२ विछाना, फैलाना ।

छात-स्त्री० [सं० छत्र] १ छत का प्रांगण । २ समूह । ३ राज्य । ४ पाव, क्षत । ५ विवाह में नाई द्वारा किया जाने वाला दस्तूर विशेष व इस रस्म पर दिया जाने वाला नेग । -वि० हुन्हे की पीठ के पीछे नाई अपना वस्त्र फैला कर रखता है, तब दूल्हा ऊपर से नेग की रकम नाई के वस्त्र में डालता है । ६ देखो 'छत्र' । -वि० श्रेष्ठ, उत्तम । -पत, पति, पत्नी-छत्रपति । -रंगी-वि० जबरदस्त, प्रबल, चतुर, दक्ष ।

छातर-१ देखो 'छत्र' । २ देखो 'छात्र' ।

छातरकी-पु० छिलका ।

छातरणी (बी)-क्रि० १ जलमग्न होना, डूबना । २ फैलना, पसरना । ३ छितरना ।

छाती-स्त्री० १ किसी प्राणी के पेट व गर्दन के बीच का भाग, सीना । २ स्त्रियों के कुक्ष, उरोज । ३ हृदय, कलेजा । ४ नित, मन । ५ हिम्मत, साहस, दृढ़ता । ६ आवेश, जोश । -कूटी-पु० निरर्थक श्रम । परेशानी, मगजपच्ची । कलह, लड़ाई, दुःख, मजबूरी में किया जाने वाला कार्य । -छोली-वि० दुःखदायी, कलह करने वाला । -बंद-पु० घोड़ों का एक रोग ।

छाती-पु० १ छतरी, छाता । २ देशी शराब । ३ जूँड, समूह । ४ मधु मक्खी का छत्ता ।

छात्र-पु० [सं०] १ विद्यार्थी, शिष्य । २ छत्रपति, राजा । ३ एक प्रकार की शहद । -पत, पति-पु० राजा, नृप । -व्रति-स्त्री० विद्यार्थी को पुरस्कार स्वरूप या सहायतार्थ दिया जाने वाला धन ।

छात्राछ-वि० छत्र धारण करने वाला राजा, नृप ।

छाबण (णी)-पु० [सं० छादन] १ उल्टी, वमन, कै । २ आच्छादन ।

छाबणी (बी)-क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना । २ उल्टी करना, वमन करना । ३ छा देना ।

छाबन-देखो 'छादण' ।

छाप-स्त्री० १ वह वस्तु जिसका अंकन किसी अन्य वस्तु पर किया जावे । २ मुद्रा, मुहर । ३ मुद्रांकन, चिह्न । ४ विष्णु के आयुधों के चिह्न । ५ किसी प्रकार का सांकेतिक चिह्न विशेष । ६ काव्य, गीत, पद आदि के अंत में लगा रचनाकार का नाम । ७ चित्र, तस्वीर । ८ आभूषण विशेष ।

छापणी (बी)-क्रि० १ मुद्रांकित करना, ठप्पा लगाना । २ चिह्नित करना । ३ मुद्रित करना, छापना । ४ वस्त्रों पर छपाई करना । ५ भड़बेरी के कांटों से आवेष्टित करना ।

छापर (रि, री)-स्त्री० १ पहाड़ी, डूंगरी । २ पथरीली भूमि । ३ ऊसर भूमि । ४ रणक्षेत्र । ५ समतल भूमि, मैदान ।

छापरी-वि० १ ठिगना, बीना, नाटा । २ फैला हुआ, विस्तृत ।

छापाछांनी-पु० मुद्रणालय, प्रेस ।

छापि (पी)-पु० जल, पानी ।

छापी-पु० १ मुद्रण । २ देखो 'छाप' ।

छाब-स्त्री० १ बांस की पतली खपचियों की बनी छोटी टोकरी, डलिया । २ डलियानुमा कोई धातु का पात्र ।

छाबक-स्त्री० छिपकली ।

छाबड़ (ली)-देखो 'छाब' ।

छाबड़ि (ड़ी)-स्त्री० टोकरी ।

छाबड़ी-पु० १ बड़ा टोकरा । २ कुंकुम रखने का काष्ठ-पात्र ।

छाबल (लि, ली)-स्त्री० १ खंजरी से मिलता-जुलता एक वाद्य । २ इस वाद्य के साथ गाया जाने वाला गीत । ३ देखो 'छाब' ।

छाबोली, छाबोली-देखो 'छाबड़ी' ।

छाय-देखो 'छाया' ।

छायस-वि० १ बीर, बहादुर । २ शौकीन, रसिक ।

छायीक-पु० [सं०] चन्द्रमा, चांद ।

छाया-स्त्री० [सं०] १ परछाई । २ पेड़ या इमारत की परछाई । ३ छोटे बादलों की प्रतिछाया । ४ प्रकाश में व्यवधान से होने वाला अंधेरा । ५ कालिमा । ६ प्रतिबिंब, प्रतिकृति । ७ साया, आकृति । ८ अनुकरण, नकल । ९ देव माया या भूत-प्रेतादिक का प्रभाव । १० प्रभाव, असर । ११ सूर्य की पत्नी का नाम । १२ भारण, रक्षा । १३ कान्ति, दीप्ति, भलक । १४ दुःख या चिंता के कारण छाँव के नीचे पड़ने वाला कुछ काला दाग । १५ समानता । १६ रंग की गड़बड़ी । १७ माया । १८ भ्रम, धोखा । १९ सुन्दरता । २० पंक्ति । २१ दुर्गा देवी । २२ रिवत । २३ आर्या छन्द का भेद विशेष । -जंघ-पु० समय सूचक यन्त्र, यड़ी । -टोडी-स्त्री० एक राग विशेष । -पथ-पु० आकाश गंगा, आकाश । -पुत्र-पु० शनिश्चर । -पुद्गल-पु० मनुष्य की परछाई । -मान, बाल-पु० चन्द्रमा, चांद ।

छायोड़ी-वि० (स्त्री० छायोड़ी) आच्छादित, आवेष्टित ।

छारंडी-स्त्री० हंगरी का दूसरा दिन ।

छार-पु० [सं० क्षार] १ राख, भस्म । २ क्षार ।

छाळ-देखो 'छाळी' ।

छाळउ-देखो 'छाळी' ।

छाल (लि, ली)-स्त्री० [सं० छल्लि] १ वृक्ष का छिलका, बल्कल । २ छिलका, आवरण । ३ चर्म, त्वचा । ४ वमन, कं ।

छालबो (बो)-क्रि० १ छिलका उतारना, छीलना । २ छानना । ३ पूरा भर देना ।

छालबो-स्त्री० आकांक्षा, इच्छा, वासना ।

छाली-स्त्री० [सं० छाली] बकरी । —ना'र, ना'रियो-पु० बकरी आदि छोटे जानवरों का शिकार करने वाला हिसक जानवर, भेड़िया ।

छाली, (ली, ली)-पु० [सं० छाग] (स्त्री० छाली) १ फफोला, फोड़ा । २ बकरा । ३ छाज ।

छाव-देखो 'छावी' ।

छावउ, छावक, छावड़-पु० [सं० शावक] १ बच्चा । २ युवक ।

छावड़ी-स्त्री० रस्सी ।

छावड़ी-१ देखो 'छावड़ी' । २ देखो 'छावड़' ।

छावणी-स्त्री० १ सैन्य शिविर, सेना का पड़ाव । २ सेना का बड़ा विभाग या केन्द्र । ३ छाने की क्रिया या भाव ।

छावणी (बो)-देखो 'छाणी' (बो) ।

छावली-देखो 'छावली' ।

छाबीस-देखो 'छबीस' ।

छाबो-पु० [सं० शावक:] (स्त्री० छावी) १ बच्चा, शिशु । २ पुत्र, लड़का । ३ युवक । ४ विद्यार्थी, प्रसिद्ध ।

छासठ (ठ)-वि० [सं० षट्षष्टि] साठ व छः । —पु० साठ व छः की संख्या, ६६ ।

छासटी (टी)-पु० ६६ का वर्ष ।

छाह (झी, डी, ली)-१ देखो 'छाया' । २ देखो 'छाछ' ।

छाकणी (बो)-क्रि० छोंक लेने के लिए प्रेरित करना ।

छागास-देखो 'छंगास' ।

छिछ-देखो 'छोछ' ।

छिछनारी-देखो 'छंदनारी' ।

छिपा (झी)-देखो 'छाया' ।

छिपाळी (स)-वि० [सं० षट्षत्वारिणत्] चालीस व छः । —पु० छियालीस की संख्या, ४६ ।

छियाळीसी, छियाळी-पु० छियालीस का वर्ष ।

छियासियौ-पु० ५६ का वर्ष ।

छियासो-वि० [सं० षड्शीति] षस्सी व छः । —पु० ५६ की संख्या ।

छियासीमी (बो)-वि० छियासी के स्थान वाला ।

छियो-देखो 'चियो' ।

छिवरी (री)-स्त्री० घने पत्तों वाली वृक्ष की टहनी ।

छिहसर-देखो 'छियंतर' ।

छि-स्त्री० [सं०] १ मर्यादा । २ नींव । ३ छिक्कार । ४ गाली । ५ घृणा सूचक ध्वनि । ६ घृणित वस्तु । ७ कुम्हार । ८ शिकारी । ९ कुठार १० समय । ११ देवता ।

छिभंतर-देखो 'छियंतर' ।

छिभंतरौ-देखो 'छियंतरौ' ।

छिकरणी-स्त्री० छितराने वाली घाम ।

छिकरणी-वि० १ जिसमें स्याही या रंग फैलता हो । २ कम धुटा हुआ, छिनछिना ।

छिकरणी (बो)-क्रि० १ स्याही आदि का फैलना । २ छितराना । ३ देखो 'छिकरणी' (बो) ।

छिकरी, छिक्कर-पु० [सं० छिक्कर] तीव्र गति वाला एक मृग विशेष ।

छिक्की-स्त्री० विवाह की एक रस्म विशेष । (पुष्करणा)

छिगो-स्त्री० कमजोरी की दशा में ग्राने वाला पसीना ।

छिड़कणी (बो)-क्रि० १ छिड़काव करना । २ पानी आदि पदार्थ के छीटे उछालना । ३ छितराना, फैलाना, बिखेरना । ४ न्योछावर करना ।

छिड़काई-स्त्री० १ छिड़कने का कार्य, छिड़काव । २ छिड़कने का पारिश्रमिक ।

छिड़काणी (बो)-क्रि० १ छिड़काव कराना । २ छीटे उछलवाना । ३ बिखरवाना, छितरवाना । ४ न्योछावर कराना ।

छिड़काव-पु० पानी, द्रव पदार्थ आदि को छिड़कने, फैलाने, छितराने की क्रिया ।

छिड़कावणी (बो)-देखो 'छिड़काणी' (बो) ।

छिड़णी (बो)-क्रि० १ प्रारंभ होना, शुरू होना । २ युद्ध होना । ३ छेड़ा जाना । ४ कुपित होना ।

छिड़णी (बो), छिड़वणी (बो)-क्रि० १ प्रारंभ कराना, शुरू कराना । २ युद्ध कराना । ३ छेड़ने के लिये प्रेरित करना । ४ कुपित कराना ।

छिछ, छिछकारी, छिछको-स्त्री० १ उकसाने, जोश दिलाने का भाव । २ जोश दिलाने का इशारा, ध्वनि ।

छिछड़ी-पु० १ मांस का निरर्थक खण्ड, भाग, प्रंश । २ पशुओं के मल की थैली ।

छिछली, छिछिसी-वि० (स्त्री० छिछनी) जो गहरा न हो, उथला ।

छिछोर (री)-वि० (स्त्री० छिछोरी) १ होन विचारों वाला, घोड़ा । २ धुंन । ३ घटिया किस्म का । —पल, पली-पु० क्षुब्धता, घोड़ापन ।

छिजाणी (बो) -क्रि० १ नष्ट होने देना, क्षय कराना ।
 २ सोखाना । ३ कुड़ाना, चिढ़ाना । ४ चितित करना ।
 ५ चूर्ण करना ।
 छिटक-स्त्री० १ जल्दी, शीघ्रता । २ पालकी के सामने का भाग ।
 ३ चमक, शोभा ।
 छिटकणी (बो) -क्रि० १ अलग होना । २ बिछुड़ना । ३ गिर कर फेलना । ४ दूर-दूर रहना । ५ तितर-बितर होना ।
 ६ अनियंत्रित होना ।
 छिटका-क्रि० वि० शीघ्रता से, तुरंत ।
 छिटकाणी (बो), छिटकावणी (बो) -क्रि० १ अलग करना ।
 २ बिछुड़ाना । ३ गिरा कर फेलाना । ४ दूर-दूर करना ।
 ५ तितर-बितर करना । ६ अनियंत्रित करना । ७ छोड़ना, मुक्त करना । ८ त्यागना ।
 छिटकी-पुं० १ छींटा, बूंद । २ धक्का, झटका, आघात ।
 ३ किसी जीव के काटने की क्रिया ।
 छिरा-पुं० [सं० क्षण] क्षण, पल ।
 छिरागारी-वि० रसिक, शोकीन ।
 छिरागो-पुं० [सं० शृंग] १ साफे के पीछे लटकने वाला धोर, पल्लु । २ तुरा । ३ घास की बाल ।
 छिराछिरा-वि० जो गाढ़ा या घना न हो, जालीनुमा ।
 छिरामिण-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ हल्की, रुग्णावस्था ।
 -क्रि० वि० इधर-उधर ।
 छिरामिणी-वि० (स्त्री० छिरामिणी) रुग्ण, बीमार ।
 छिरावो-देखो 'छिनवो' ।
 छिराव्य-क्रि० वि० [सं० क्षण] क्षण भर ।
 छिरावो-देखो 'छीणी' ।
 छिरुघो, छिरुघो-देखो 'छिनवो' ।
 छित-स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी, भूमि । —नायक, पति-पुं० नृप, राजा ।
 छितरणी (बो) -क्रि० १ बिखरना, फैलाना । २ अलग-अलग होना ।
 छितराणी (बो) -क्रि० १ बिखराना, फैलाना । २ अलग-अलग करना ।
 छिता देखो 'छिति' ।
 छिति-स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी, भूमि । —कंत-पुं० राजा, नृप । —रुह-पुं० पेड़, वृक्ष ।
 छिती-वि० १ श्वेत । २ कृष्ण । ३ देखो 'छिति' ।
 छितोस-पुं० [सं० क्षितीश] राजा, नृप ।
 छिव-पुं० [सं० छिद्र] १ छेद, सूराख । २ घाव ।
 छिदणी (बो) -क्रि० [सं० छिद्रणम्] १ छेद युक्त होना, छिद्रित होना । २ छेदा जाना । ३ बिधना, बेधा जाना । ४ घायल होना । ५ क्षत होना ।

छिबर-देखो 'छिद्र' ।
 छिबराळो-वि० [सं० छिद्रित] (स्त्री० छिदराळी) १ पाखंडी, ढोंगी । २ दोषी, अवगुणी । ३ छेद वाला, जालीनुमा ।
 छिवाणी (बो), छिवावणी (बो) -क्रि० १ छेद मुक्त कराना, छिद्रित कराना । २ बिधवाना । ३ घायल कराना । ४ क्षत कराना ।
 छिद्र-पुं० [सं०] १ छेद, सूराख । २ घाव, क्षत । ३ दोष, अवगुण । ४ कमी, कमजोरी । ५ चूटि, गलती । ६ पाखंड । ७ दरार ।
 छिद्रघंटिका-स्त्री० [सं० क्षुद्रघंटिका] करघनी ।
 छिद्रवरसी-वि० १ दूसरों के अवगुण देखने वाला । २ कमजोरी निकालने वाला ।
 छिद्रावली-स्त्री० करघनी ।
 छिद्री-पुं० एक प्रकार का वाण ।
 छिन-पुं० [सं० क्षण] १ क्षण, पल । २ आभूषण विशेष ।
 छिनक-वि० थोड़ा, अल्प ।
 छिनकी (कीक)-वि० थोड़ी, तुच्छ, क्षणिक ।
 छिनगारी-वि० १ रसिक, शोकीन, छेला । २ स्वरूपवान । ३ शृंगार युक्त ।
 छिनणी (बो) -क्रि० १ छीना जाना, छिनना । २ कोसा जाना, झपट लिया जाना । ३ हरण होना । ४ बलात् ले जाना ।
 छिनवा-स्त्री० [सं० क्षणदा] रात्रि, निशा ।
 छिनवो-पुं० ६६ का वर्ष । -वि० ६६ के स्थान वाला ।
 छिनाणी (बो) -क्रि० १ छिनवाना, छिनने के लिये प्रेरित करना । २ कोसाना, झपटवाना । ३ हरण कराना । ४ बलात् लेने में सहयोग करना ।
 छिनाळ-स्त्री० १ कुन्टा, कर्कशा व कुलक्षिणी स्त्री । २ व्यभिचारिणी स्त्री । ३ पर-पुरुषगामिनी स्त्री ।
 छिनी-१ देखो 'छिन' । २ देखो 'छीणी' ।
 छिनुघो, छिनुवो-देखो 'छिनवो' ।
 छिन्न, छिन्न-वि० [सं० यणवति] नब्बे और छः । -पुं० नब्बे और छः की संख्या ।
 छिनेक-क्रि० वि० क्षण भर के लिये ।
 छिन्न-वि० [सं०] १ कटा हुआ । २ निश्चित, निर्धारित । ३ खण्डित । ४ भग्न । —गण्य-वि० स्नेहरहित । -पुं० साधु, त्यागी । —मिन्न-वि० खण्डित, टूटा-फूटा, जीर्ण-शीर्ण, अस्त-व्यस्त । —रुह-स्त्री० वनस्पति । —सोय-वि० जिसने शोक का छेदन कर दिया हो ।
 छिन्नाळ-देखो 'छिनाळ' ।
 छिपकली-स्त्री० गोह की तरह का एक बहुत छोटा जन्तु ।

छिपणो (बो)—क्रि० १ किसी छोट या सहारे से, सामान्यतया न दिखने की दिशा में होना । २ अदृश्य या अलोप होना । ३ भूमिगत या गुप्त होना । ४ भेष बदल कर रहना ।
छिपली—पु० मुहं छुपाने या गुप्त रहने का भाव ।
छिपा—स्त्री० [सं० क्षपा] १ रात, निशा । २ हल्दी । ३ तम्बू, खेमा । —वि० घना, सघन । —कर—पु० चन्द्रमा । —सत्र, सत्रु—पु० सूर्य ।
छिपाणो (बो), छिपावणो (बो)—क्रि० १ सामान्यतया न दिखने की दिशा में करना, छोट में करना, छुपाना । २ अदृश्य या अलोप करना । ३ भूमिगत या गुप्त करना । ४ भेष बदल कर रखना । ५ गुप्त रखना ।
छिपाव—पु० १ छुपाने या गुप्त रखने का भाव । २ भेद रहस्य । ३ गोपनीयता । ४ दुराव, भेद-भाव ।
छिब—देखो 'छबि' । —काळी='छबकाळी'
छिबणी—देखो 'छबणी' ।
छिबणो (बो)—देखो 'छबणी' (बो) ।
छिबवार (वत)—वि० छवि युक्त कांतियुक्त ।
छिबि, छिबी—स्त्री० [ध० शबी] १ माला, जयमाला । २ छवि, शोभा । —वि० १ तेज, तीक्ष्ण । २ पहली ।
छिम—देखो 'चिम' ।
छिमछिमिया—पु० मजीरे की जोड़ी, छोटे भांभ ।
छिमता—देखो 'क्षमता' ।
छिमा—देखो 'क्षमा' ।
छियंतर—वि० [सं० षट्सप्तति] सत्तर और छः, छिहत्तर । —पु० छिहत्तर की संख्या, ७६ ।
छियंतरमी (बो)—वि० ७६ के स्थान वाला ।
छियंतरु—पु० ७६ का वर्ष ।
छिया—देखो 'छाया' ।
छियाळीस—देखो 'छियाळीस' ।
छिरंग (गो)—पु० [सं० शृंग] १ किसी वस्तु का ऊपरी शिरा या भाग । २ शिखर का ऊपरी शिरा । ३ घास की बाल ।
छिरमिर—देखो 'फिरमिर' ।
छिररी—१ देखो 'छररी' । २ देखो 'छेरी' ।
छिरेंटी—स्त्री० जस जभनी लना । (नैद्यक)
छिरेबी—पु० हाथी का प्रथम बार टपकने वाला मद ।
छिलक, छिलक—स्त्री० हल्का गुस्ता, धापेश ।
छिलकणी (बो)—देखो 'छलकणी' (बो) ।
छिलकाणी (बो)—देखो 'छलकाणी' (बो) ।
छिलकारी, छिलकारी—पु० १ बकरे या बकरी का पेशाब । २ देखो 'चिलकारी' ।
छिलकावणी (बो)—देखो 'छलकाणी' (बो) ।

छिलकौ—पु० १ किसी कंद, मूल, फल या वृक्ष आदि के ऊपर की भित्ती, छाल, छिलका । २ त्वचा, चर्म । ३ आवरण ।
छिलपी (बो)—क्रि० १ छिलका उतरना, छोला जाना । २ जोर को रगड़ लगने से चमड़ी उतरना । ३ छलकना, उमड़ना, उबकना । ४ सीमा या मर्यादा खोना । ५ धापे में न रहना । ६ गले में खराश होना । ७ पूर्ण भर जाना । ८ फैलना, विस्तृत होना ।
छिलर, छिलरियो—देखो 'छीलर' ।
छिलिह्वा—स्त्री० एक लता विशेष ।
छिलोड़ी—स्त्री० १ पांव के तले में होने वाला फफोला । २ एक प्रकार का जंतु विशेष ।
छिल्लणी (बो)—देखो 'छिलणी' (बो) ।
छिल्लर, छिल्लरू—देखो 'छीलर' ।
छिल्लो—पु० बकरा ।
छिब—देखो 'छवि' ।
छिबणी (बो)—देखो 'छबणी' (बो) ।
छिवारी—पु० छुमारा, खजूर ।
छिहंतर—देखो 'छियंतर' ।
छिहंतरी—देखो 'छियंतरी' ।
छीक—स्त्री० [सं० छिक्का] १ नाक में चुनचुनाहट होने पर भटके के साथ नाक से निकलने वाली हवा । २ इस हवा से उत्पन्न 'छूँ' की तीव्र ध्वनि ।
छीकणी (बो)—क्रि० छीक लेना, छीकना ।
छीकल (बो)—पु० (स्त्री० छीकली) एक जाति विशेष का मृग ।
छोकाखाई—स्त्री० एक घोषधि विशेष ।
छोकी—स्त्री० शीत काल में मद चढ़े ऊंट के मुंह पर बांधी जाने वाली जाली ।
छोकी—पु० १ सीकों, तारों या रस्सियों को बुन कर बनाया गया टोकरा जो छत, खूँटी आदि पर लटका रहता है । २ टोकरा ।
छोछ—स्त्री० तेज धारा ।
छोट—स्त्री० [सं० क्षिप्त] १ जल कण, बूँद, छोट, छोटा । २ चिह्न, दाग । ३ रंग-बिरंगे बेल-बूँटों वाला वस्त्र । ४ टुकड़ा, भाग ।
छोटणी (बो)—क्रि० १ मवेशियों द्वारा पतला गोबर करना । २ दस्त लगना । ३ छांटना, छिड़कना ।
छोटो—पु० १ छोटा, बूँद, जल कण । २ पतला गोबर ।
छोण—स्त्री० पत्थर की पट्टी । चीण ।
छोतरी—स्त्री० १ वस्त्र पट्टिका । २ हूँटी-फूटी डलिया । २ छोटे-छोटे बादल ।
छोपा, छोपी—देखो 'छोपा' ।
छोपी—पु० (स्त्री० छोपी) चंगरेज ।

छोबडी-देखो 'बीभडी' ।

छोया-देखो 'छाया' ।

छी-प्रव्य० [सं० छीः] तिरस्कार या घृणा सूचक ध्वनि ।
विशेष । -स्त्री० १ बच्चे का पाखाना । २ घृणित वस्तु ।
३ कटि मेखला । ४ जीव । ५ मद । ६ सार । ७ कांति ।
८ झूठ्ठरी ।

छोकरी स्त्री० [सं० छिकिका] एक क्षुप जो शीपध के रूप
प्रयुक्त होता है ।

छोछी-प्रव्य० घृणा सूचक ध्वनि । -स्त्री० घृणित वस्तु ।
पाखाना ।

छोज-स्त्री० १ कमी, हानि, घाटा । २ खोज, कुढ़न । ३ क्षय ।
४ व्याकुलता, बेचैनी ।

छोजली (बी) -क्रि० [सं० क्षीप्] १ कमी, घाटा या हानि
होना । २ क्षय होना, ह्रास होना, क्षीण होना । ३ खोजना,
कुढ़ना । ४ दुःखी होना । ५ डरना । ६ जलना, शुष्क
होना । ७ झुंझलाना । ८ व्याकुल होना ।

छोजत-स्त्री० [सं० क्षीप्] १ कमी, घाटा । २ क्षय, ह्रास ।
३ कुढ़न, खोज । ४ चिंता, फिकर । ५ घटन ।

छोजली (बी), छोजावली (बी) -क्रि० १ कमी करना, घटाना ।
२ क्षय करना । ३ खोजाना, कुढ़ाना । ४ दुःखी करना ।
५ डराना । ६ जलाना, शुष्क करना ।

छोजी-वि० (स्त्री० छोजी) १ डाह करने वाला, कुढ़ने वाला ।
२ क्रोधी ।

छोबरियो-पु० छिछला ताल, तलैया ।

छोरा-१ देखो 'क्षीरा' । २ देखो 'वीरा' ।

छोरासन-वि० कृण काय, पतला-दुबला ।

छोरी-स्त्री० पत्थर नीड़ने या गढ़ने की लोहे की मोटी कील,
टांकी ।

छोरो, (ण) -क्रि० वि० टूटने में, कटने में ।

छोरोटगी-स्त्री० बारीक जूँ ।

छोली-देखो 'छोग' ।

छोतर-स्त्री० १ पथरीली या गहाड़ी भूमि । २ एक प्रकार का
पत्थर । -वि० [सं० छित्वर] कपटी, धूर्त ।

छोतरी-स्त्री० पतली छाछ, अधिक पानी मिला मट्ठा, छोटे-
छोटे बादल । -वि० छिछली, छितराई हुई ।

छोतरी-वि० (स्त्री० छोतरी) छिछला, बिखरा हुआ, छितराया
हुआ ।

छोदगत-स्त्री० कपट, धोखा, चाल, घूर्तता ।

छोदरियो, छोदरी, छोदो-पु० (स्त्री० छोदरी) १ तरल पदार्थ ।
२ अधिक पानी मिली वस्तु । -वि० १ छिछला, पतला ।
२ छेददार, छिद्रित । ३ त्रिल, बारीक । ४ नोड़ा ।

छोद-देखो 'क्षीण' । २ देखो 'छीण' ।

छीनली (बी) -क्रि० १ कोसना, लुटना, भ्रष्ट कर लेना ।
२ बलात् ले लेना । ३ अनुचित कब्जा करना ।

छीनवी-देखो 'छिनवी' ।

छीनाली (बी), छीनावली (बी) -क्रि० १ कोसाना, लुटवाना ।
२ बलात् लेने के लिए प्रेरित करना । ३ अनुचित कब्जा
कराना ।

छीनी-वि० [सं० क्षीण] खिन्न, दुःखी, उदास ।

छीप-स्त्री० [सं० क्षिप्र] शीघ्रता, जल्दी । -वि० तेज,
जल्दबाज ।

छीपली (बी) -क्रि० स्पर्श करना, छूना ।

छीपा-स्त्री० १ वस्त्र रंगने का कार्य करने वाली जाति ।
२ गुजराती नटों की एक शाखा ।

छीब-देखो 'छबि' ।

छीबरी-स्त्री० १ एक पक्षी विशेष । २ पतली छाछ । ३ पतले व
सफेद बादल ।

छीय, छीया-स्त्री० [सं० क्षुत] छींक । (जैन)

छीया-स्त्री० छाया । -छाबछी-स्त्री० एक देशी खेल ।

छीर-पु० [सं० क्षीर] दूध । -ज-पु० दही, चन्द्रमा, कमल,
शंख । -जा-स्त्री० लक्ष्मी । -समुद्र, सागर-पु० क्षीर
सागर ।

छीरप-पु० [सं० क्षीरप] वच्चा, शिशु ।

छीरल-पु० [सं० क्षीरल] एक प्रकार का सर्प ।

छीरोवधजा-स्त्री० लक्ष्मी ।

छीसली (बी) -क्रि० १ किसी वस्तु का छिलका उतारना,
छीलना । २ छावरण हटाना । ३ मींगी या गूदा निकालना ।
४ काटना ।

छीसल-स्त्री० आभूषण विशेष ।

छीसर-स्त्री० १ रेजगारी, रेजगी । २ देखो 'छिलरि' ।

छीलरि, छीलरियड, छीलरियो, छीसरी-पु० [सं० छिलरि]
१ छिछले पानी का गड्ढा, तलैया । २ छोटा तालाब ।
३ बेसन का तमकीन परांठा ।

छीसी-पु० पलाश वृक्ष, ढाक ।

छीब-वि० मस्त, उन्मत्त ।

छीवोत्सव-पु० निदार्थक मुख विकार । (जैन)

छुंछुंछी-स्त्री० रूई धुनने की आवाज ।

छुंछुमुसय-स्त्री० उत्कण्ठा । (जैन)

छुंइ-वि० अधिक, ज्यादा । (जैन)

छु-स्त्री० १ मशक । २ जुगुप्सा । ३ वृष्णा । -प्रव्य० कुत्ते की
उत्साहित करने की ध्वनि ।

छुआछुत-स्त्री० किसी को स्पर्श करने, साथ रखने या सम्पर्क
करने आदि का परहेज, अस्पृश्यता ।

कुमाराणी (बो)-देखो 'कुमाराणी' (बो) ।
 कुम्भ-स्त्री० लाजवंती नामक पौधा ।
 कुम्भ-स्त्री० बक पंक्ति ।
 कुम्भकारण-स्त्री० निंदा, धिक्कार । (जैन)
 कुम्भ-वि० [सं० तुम्भ] क्षुद्र, तुम्भ । (जैन)
 कुम्भ-देखो 'सूक्ष्म' ।
 कुम्भकार (धकार)-पु० [सं० कुम्भकार] कुत्ते को उत्साह दिलाने की क्रिया या भाव ।
 कुम्भक, कुम्भक-पु० पुत्री के संतान हो जाने पर दी जाने वाली भेंट । (मेवात)
 कुम्भ-देखो 'सूक्ष्म' ।
 कुम्भकारी-पु० १ बंधन, मुक्ति । २ कार्य या उत्तरदायित्व से मुक्ति । ३ कष्ट निवारण ।
 कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।
 कुम्भणी, कुम्भणी-पु० १ पद या मान मर्यादा में वंश का छोटा व्यक्ति । २ लघु भ्राता, छोटा भाई ।
 कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।
 कुम्भणी-पु० १ एक लोक गीत विशेष । २ गेद खेलने की लकड़ी । ३ छड़ी ।
 कुम्भ-देखो 'कुम्भ' ।
 कुम्भ-पु० कुम्भकार, कुम्भ ।
 कुम्भ-स्त्री० कुम्भ, मुक्ति, छोटापन ।
 कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।
 कुम्भ-स्त्री० १ अवकाश । २ कार्य या बंधन से मुक्ति । ३ कुम्भकार, निस्तार । ४ कुम्भ । ५ कुम्भ, अनुमति ।
 कुम्भ-वि० (स्त्री० कुम्भ) १ खुला, मुक्त, स्वतंत्र । २ प्रकेला, एकाकी । ३ खाली हाथ । ४ अवरोध या भार से मुक्त ।
 कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।
 कुम्भणी-स्त्री० छोड़ने की क्रिया या भाव ।
 कुम्भणी (बो), कुम्भणी (बो)-क्रि० १ बंधन मुक्त कराना, स्वतंत्र कराना । २ उलझन या फांसी से मुक्ति दिलाना । ३ जेल से छोड़वाना । ४ चिह्न मिटाना । ५ त्याग कराना । ६ रिश्ता तुड़ाना ।
 कुम्भ-क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।
 कुम्भ-वि० [सं० कुम्भ] तुम्भ, लघु । (जैन)
 कुम्भणी-देखो 'कुम्भणी' ।
 कुम्भ-वि० [सं० कुम्भ] १ मोझे विचारों वाला । ३ नीच, दुष्ट । ३ उद्गण्ड । ४ निपटुर । ५ गरीब । ६ कंजूस ।
 कुम्भण्ट, (घंटा, घंटिका, घंटी)-स्त्री० करघनी, मेखला ।
 कुम्भ-स्त्री० दाख, किशमिश ।
 कुम्भ, कुम्भ-स्त्री० [सं० कुम्भ] भूख, इच्छा ।
 कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।

कुम्भ-वि० [सं० कुम्भ] १ चूर-चूर, चूर्णित । २ नष्ट । ३ अभ्यस्त । ४ नपुंसक ।
 कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।
 कुम्भणी (बो), कुम्भणी (बो)-देखो 'कुम्भणी' (बो) ।
 कुम्भणी (बो)-क्रि० टुकड़े-टुकड़े करना, काटना, छीनना ।
 कुम्भ-स्त्री० ध्वनि विशेष ।
 कुम्भार-वि० [सं० कुम्भार] आचार-च्युत । (जैन)
 कुम्भणी-देखो 'कुम्भणी' ।
 कुम्भ-पु० [सं० कुम्भ] १ कुम्भ, कुम्भ । २ उत्तरा । ३ पणु का नख । ४ बाण, तीर । ५ वृक्ष विशेष । ६ गोखरू । ७ तृण विशेष ।
 कुम्भर, (धर) -पु० कुम्भर का खोल, धंला ।
 कुम्भर-पु० हज्जाम, नापित ।
 कुम्भ (भा, का, गा, या), कुम्भ (का)-स्त्री० [सं० कुम्भ] काटने व चीरने का तेजधार का उपकरण, कुम्भ, चाकू ।
 कुम्भ-पु० [सं० कुम्भ] १ तेज धार का हथियार, कुम्भ । २ सिंह का पंजा ।
 कुम्भणी (बो)-क्रि० १ थोड़ा-थोड़ा मूतना । २ छलकना ।
 कुम्भणी (बो)-क्रि० १ वृक्ष आदि की छाल उतरना । छोला जाना । २ रंगड़ लगाने से चमड़ी उतरना । ३ छिलका उतरना । ४ छाल या पानी के साथ पके हुए पदार्थ का विकृत होना ।
 कुम्भणी (बो), कुम्भणी (बो)-क्रि० १ वृक्ष आदि की छाल उतरवाना । २ चमड़ी उतरवाना । ३ छिलका उतरवाना ।
 कुम्भणी-देखो 'कुम्भणी' ।
 कुम्भणी (बो)-क्रि० १ स्पर्श कराना, कुम्भणी । २ हाथ लगवाना । ३ सटाना, प्रहाना ।
 कुम्भणी-देखो 'कुम्भणी' ।
 कुम्भ-स्त्री० [सं० कुम्भ] १ प्रमत्त, पीथूप । २ चूना । ३ कुम्भ ।
 कुम्भणी-पु० खजूर का फल ।
 कुम्भणी-वि० [सं० कुम्भणी] भूखा, कुम्भणी ।
 कुम्भ-स्त्री० एक ध्वनि विशेष । -क्रि० वि० हूँ ।
 कुम्भणी-स्त्री० छोका, तड़का ।
 कुम्भणी (बो)-क्रि० छोका लगाना, छोक्ना ।
 कुम्भ-स्त्री० हृदय की उमंग, भावविश । -वि० तम, धवाया हुआ ।
 कुम्भ (क, की), कुम्भणी-पु० छिलका ।
 कुम्भणी, कुम्भणी-पु० १ फूलों का ढेर । २ पलाश वृक्ष । ३ देखो 'कुम्भणी' ।
 कुम्भ-पु० १ वाट । २ शब्द । ३ गज । ४ कुम्भ, ईश्वर । ५ मंत्र पढ़कर फूलों की क्रिया । ६ कुत्ते को उत्साहित करने की ध्वनि ।

लृच्छक-देखो 'लृच्छक' ।

लृच्छी-वि० (स्त्री० लृच्छी) रिक्त, खाली ।

लृष्ट-स्त्री० १ लृष्टने का भाव, लृष्टकारा, मुक्ति । २ स्वतन्त्रता, आजादी । ३ रियायत, किरायात । ४ अवकाश, फुर्सत । ५ अनुमति । ६ मुला या विमृत्त स्थान । ७ कारणवश न जोती हुई भूमि । ८ विच्छेद ।

लृष्टक-वि० १ फेंका हुआ । २ छोड़ा हुआ । -पु० १ स्फुट पद । २ मुक्तक ।

लृष्टणी (बी)-क्रि० [सं० लृष्ट, लृष्ट] १ बंधन मुक्त होना, स्वतंत्र होना । २ पकड़ से निकल जाना । ३ अलग होना, मिलग होना । ४ मुक्त होना, लृष्टकारा पाना । ५ अभाव या कमी रह जाना । ६ मिटना । ७ अभ्यास न रहना । ८ अधूरा रहना । ९ शेष या बाकी बचना । १० पीछे रह जाना । ११ बिछुड़ना । १२ अस्त्रादि चलना, दगना । १३ फेंका जाना । १४ स्थलित होना । १५ रिस-रिस कर निकलना, चूना । १६ प्रसव पीड़ा से मुक्त होना । १७ घोंड़े का मरना ।

लृष्टपत्नी, लृष्टापी-पु० १ दम्पति का संबंध विच्छेद, तलाक । २ प्रसव से मुक्ति ।

लृष्टी (ट्टी)-देखो 'लृष्टी' ।

लृष्टी (ट्टी)-देखो 'लृष्टी' ।

लृणी (बी)-क्रि० [सं० लृण] १ स्पर्श करना, हाथ लगाना । २ छेड़ना, इधर-उधर करना । ३ सटाना, घड़ाना । ४ आलिंगन करना । ५ प्रतिस्पर्धा में बराबर आना । ६ निश्चित ऊंचाई पर पहुँचना । ७ थोड़ा उपभोग करना ।

लृन्त-स्त्री० १ लृन्ते या स्पर्श करने का भाव । २ अपवित्र वस्तु या अप्रसृथ को लृन्ते का दोष, अशौच । ३ भूत-प्रेतादिक का प्रभाव ।

लृन्तकी, लृन्तरी-पु० छाल, छिलका, छूँता ।

लृन्तणी (बी)-क्रि० १ छोटे-छोटे टुकड़े करना । (मांस) २ काटना ।

लृन्ती-वि० (स्त्री० लृन्ती) बढ़िया, श्रेष्ठ ।

लृन्त-पु० १ अकस्मात गायब होने की क्रिया या भाव । २ जाहू, टोना ।

लृन्-स्त्री० बीछार, लृष्ट ।

लृन्-देखो 'लृन्' ।

लृन्णी (बी)-देखो 'लृन्णी' (बी) ।

लृन्-स्त्री० १ ऊपर भूमि । २ फांगी । ३ इन्द्रिय । ४ वेणी । ५ वसुधा । ६ सियार । ७ छे, छः । ८ ध्वनि विशेष ।

लृन्-देखो 'लृन्' ।

लृन्-वि० १ छेदने वाला । २ कसकने वाला, दद करने वाला । ३ चतुर । -पु० १ छिद्र, सूरख । २ छेकानुप्राय ।

लृन् (बी)-पु० छेद, सूरख । -क्रि० वि० १ अंत में । २ एक ओर, एक तरफ ।

लृन्सी-वि० (स्त्री० लृन्सी) आखिरी, अन्त का ।

लृन्-देखो 'लृन्' ।

लृन्नी (बी), लृन्नी (बी)-क्रि० १ छेद करना, सूरख करना । २ चीरना । ३ काटना । ४ धार-पार निकलना । ५ आगे बढ़ना ।

लृन्नी-पु० छेद, सूरख ।

लृन्नी-स्त्री० छेद करने या पानी वस्तु घुसाने की क्रिया ।

लृन्-वि० (स्त्री० लृन्) उतावला, आतुर ।

लृन्-स्त्री० १ स्पर्श करने की क्रिया । २ व्यंग, उपहास । ३ हंसी, ठिठोली । ४ तंग करने की क्रिया । ५ झगड़ा, टंटा । ६ किसी वाद्य का निरन्तर बजने वाला स्वर । ७ बड़ा भोज । ८ द्वादशे का भोज । ९ प्रारंभ ।

लृन्नी (बी)-क्रि० १ स्पर्श करना, इधर-उधर करना । २ कुरेदना । ३ व्यंग या उपहास करना । ४ हंसी करना । ५ तंग करना, दुःखी करना, चिढ़ाना । ६ झगड़ा करना । ७ प्रारंभ करना, शुरू करना । ८ किसी कार्य के लिये कहना, प्रेरित करना । ९ चीरना, फाड़ना । १० छेद या सूरख करना । ११ कामोद्दीपन करना ।

लृन्नी, लृन्नी-वि० (स्त्री० लृन्नी) आखिरी, अन्तिम ।

लृन्नी-स्त्री० १ लृन्नी-दुहित के वस्त्रों का परस्पर बंधन । २ लृन्नी-छाड़ ।

लृन्नी-पु० १ रहंत की भाल का अन्तिम छोर । २ स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष । ३ जुलाहों का एक प्रोजार । ४ चरखे का एक उपकरण । ५ देखो 'लृन्नी' ।

लृन् (ई)-क्रि० वि० १ किनारे पर, छोर पर । २ एक तरफ, एक ओर । ३ अलग, दूर । ४ तटस्थ । ५ तत्पश्चात् ।

लृन्-पु० १ छोर, किनारा । २ घूँघट, पत्ता । ३ दृढ़, सीमा । ४ अंत, समाप्ति । ५ चमड़े का रस्सा । ६ गठ-बंधन ।

लृन्नी-क्रि० बकरी का ऋतुपति होना ।

लृन्-पु० जीव-जंतुओं का साथ ।

लृन्-वि० [सं० लृन्] १ छेदने या बेधने लायक । २ लृन् करने योग्य । -पु० छेद, सूरख ।

लृन्-स्त्री० [सं० लृन्] १ फासला, दूरी, अन्तर । २ बीच की दरा । ३ कसर, कमी ।

लृन्-क्रि० अंत में, आखिर में ।

लृन् (ए)-स्त्री० १ पथरीली भूमि । २ श्मशान भूमि । ३ छल, कपट । ४ श्रेय ।

लृन्नी (बी)-क्रि० १ धोखा देना, लृन्ना । २ ठगना । ३ संहार करना, मारना । ४ लृन्ना, तलाश करना ।

छेतरा-वि० छली कपटी ।

छेतालीस-देखो 'सैतालीस' ।

छेनी-देखो 'छेटी' ।

छेत्त-पु० [सं० क्षेत्र] १ कृषि-भूमि, खेत । २ जमीन, भूमि ।
३ आकाश । ४ बस्ती, नगर । ५ स्त्री, पत्नी ।

छेव-पु० [सं० छिद्र] १ छेद, सूराख । २ बिल, विवर । ३ ऐब, दोष, अवगुण । ४ छेदन क्रिया । ५ कटाई । ६ नाश, ध्वंस । ७ खण्ड, टुकड़ा । ८ छः जनागम ग्रंथ ।

छेदक (ग)-वि० छेद करने वाला, छेदने वाला ।

छेदणी (बो)-क्रि० [सं० छिदिर] १ छेद या सूराख करना ।
२ बिल या विवर करना । ३ छेदन करना । ४ काटना ।
५ नाश करना । ६ दोष निकालना ।

छेदन-पु० छेदने की क्रिया या भाव ।

छेदनी-स्त्री० पांचवीं स्वरा का नाम ।

छेवाणी (बो), छेवावणी (बो)-क्रि० १ छेद या सूराख कराना ।
२ बिल या विवर कराना । ३ छेदन कराना । ४ कटाना ।
५ नाश कराना । ६ दोष निकालवाना ।

छेम-देखो 'क्षेम' ।

छेमकरी-देखो 'क्षेमकरी' ।

छेय-वि० [सं० छेक] अवसर का जानकार, होशियार, चतुर, दक्ष । (जैन) -पु० १ प्रायश्चित्त । २ विच्छेद ।

छेयग-देखो 'छेदक' ।

छेयण-देखो 'छेदन' ।

छेव-देखो 'छेरी' ।

छेरे-देखो 'छेदे' ।

छेरी-पु० १ काष्ठ खण्ड, टुकड़ा । २ एक प्रकार का टोकरा ।
३ ऊंट का पतला पाखाना ।

छेस (ग)-पु० (स्त्री० छेली) १ बकरा, भ्रज । २ देखो 'छैल' ।

छेलण-वि० मर्यादा भंग करने वाला ।

छेलणी (बो)-क्रि० १ मर्यादा भंग करना, मीमा तोड़ना ।
२ लांघना । ३ छल करना । ४ पूर्ण करना, भरना ।

छेलिण (य)-पु० १ छींक । २ चीख, चीत्कार ।

छेलिया, छेली-स्त्री० बकरी ।

छेली, छेली-देखो 'छेहली' ।

छेवड़ी-देखो 'छेड़ी' ।

छेवट-क्रि० वि० आखिरकार । अंत में ।

छेवटी-स्त्री० घोड़े का चारजामा विशेष ।

छेवट्ट, छेवट्ट-पु० [सं० सेवार्त] शारीरिक रचना ।

छेह(उ)-स्त्री० १ अन्त । २ किनारा, छोर । ३ सहन शक्ति की अंतिम अवस्था । ४ विश्वासघात, धोखा । ५ पाह

गहराई । ६ हानि, नुकसान । -क्रि० वि० १ ओर, तरफ ।
२ अंत में ।

छेहडली, छेहड़ी, छेहलउ, छेहली-वि० (स्त्री० छेहडली, छेहली)
आखिरी, अंतिम । -पु० अंतिमस्थान, किनारा ।

छेह, छेहि, छेह-देखो 'छेह' ।

छेतालीस-देखो 'सैतालीस' ।

छे-वि० [सं० षट्] पांच व एक । -पु० १ छः की संख्या । २ देव लोक । ३ मद पात्र । ४ तीक्ष्ण वस्तु ।
५ सेना । -क्रि० वि० होना क्रिया के वर्तमान काल का रूप, है ।

छेबासी-देखो 'साबासी' ।

छेमायी, छेमाहियै-वि० १ छः मास का । २ छः मासिक, छः माही ।

छेर-पु० भाले की तरह का तलवार का प्रहार ।

छैल-१ चतुराई, दक्षता । २ देखो 'छेली' । ३ देखो 'छैल' ।

छैलकड़ी-स्त्री० कान का एक ग्राम्भण ।

छैलकड़ी-पु० १ हाथ का ग्राम्भण । २ देखो 'छेली' ।

छैलछेलीनी (भंवर)-वि० शोकीन, रंगीला, रसिक । -पु०
१ प्रपितामह के जीवित अवस्था में जन्म लेने वाला बालक । २ ग्राम्भण विशेष ।

छेली-वि० (स्त्री० छेली) १ शोकीन, रंगीला, रसिक ।
२ जिसका प्रपितामह जिंदा हो । ३ सजा-धजा । ४ सुन्दर ।
५ प्रिय, वल्लभ । ६ चतुर, दक्ष, होशियार ।

छोंक-देखो 'छोंक' ।

छोंकणी (बो)-देखो 'छोंकणी' (बो) ।

छोंत-देखो 'छूत' ।

छोंतकी (री), छोंती-देखो 'छूतरी' ।

छो-पु० १ क्रोध । २ जोश । ३ पवन । ४ मृग । ५ शृंगार ।
६ भय । ७ नरक ।

छोष-पु० [सं० छोद] छिलका, छाल ।

छोइ (ई)-पु० १ क्रोध, गुस्सा । २ मट्टा, छाछ ।

छोकरड़ी, छोकरी-देखो 'छोरी' ।

छोग-पु० १ शोक । २ कष्ट, दुःख ।

छोगी-देखो 'छोगी' ।

छोछीनीब-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

छोछी-वि० (स्त्री० छोछी) १ सारहीन, थोथा । २ व्यर्थ, निरर्थक ।

छोट-स्त्री० लघुता ।

छोटकड़ी (कली, कियो) छोटकी, छोटक्यो-देखो 'छोटो' ।

छोटई-स्त्री० लघुता, थोड़ाई ।

छोटी-वि० लघु, अल्प ।

छोटोतीज-स्त्री० श्रावण शुक्ला तृतीया ।

छोटोमाता-स्त्री० हल्की चेचक ।

छोटोझी-देखो 'छोटी' (स्त्री० छोटीझी) ।

छोटोसांणोर-पु० धिगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

छोटो-वि० (स्त्री० छोटी) १ आकार प्रकार से न्यून, छोटा, लघु । २ प्रायु में कम । ३ महत्त्व के हिसाब से हल्का । ४ छोटे विचारों वाला ।

छोड (ए)-पु० १ त्याग । २ छुटकारा । ३ विच्छेद ।

छोडणी (बी), छोडवणी (बी)-कि० १ बंधन या पकड़ से मुक्त करना । २ माफ करना, क्षमा करना । ३ त्यागना, त्याग करना । ४ संबंध विच्छेद करना । ५ वसूली का विचार स्थगित कर देना । ६ स्थगित करना । ७ अस्वीकार करना । ८ पीछे या अलग रख देना । ९ वंचित करना । १० छूरा रख देना । ११ भूल करना । १२ शेष या बाकी रखना । १३ खुला करना । १४ डालना, पटकना ।

छोडवण-स्त्री० मुक्ति, छुटकारा, त्याग । -वि० छुटकारा दिलाने वाला, मुक्ति दिलाने वाला ।

छोडाणी (बी), छोडावणी (बी)-देखो 'छुडाणी (बी) ।

छोण-पु० [सं० सुनु] (स्त्री० छोणी) १ पुत्र लड़का । २ शोण, लून । २ देखो 'छोणी' ।

छोणी-स्त्री० [सं० छोणी] पृथ्वी, धरती । -सळ-पु० पाताल ।

छोट-स्त्री० १ छिलका, छाल । २ छूत । ३ दोष, प्रशोच ।

छोटकी, छोटरी, छोती-देखो 'छूतरी' ।

छोनिष, छोनी-देखो 'छोणी' ।

छोनीतळ-पु० पाताल ।

छोनीमंडळ-पु० भू-मण्डल ।

छोनी-पु० [सं० सुनु] पुत्र, लड़का ।

छोभ-वि० [सं० क्षोभ्य] १ खल, दुर्जन, पिशुन । २ क्षोभनीय । (जैन)

छोभ-पु० [सं० क्षोभ, क्षोभ्य] १ दुःख, क्षोभ । २ विकलता । ३ कष्ट । ४ क्रोध । ५ दीन, असहाय । ६ कलंक, दोषा-रोपण । ७ बंदन विशेष । ८ आघात । (जैन)

छोभणी (बी)-कि० १ दुःखी होना, क्षोभ करना । २ क्रोध करना । ३ विचलित होना ।

छोयेसी-पु० (स्त्री० छोयली) पुत्र, लड़का ।

छोर-पु० १ किनारा, कोर । २ तट । ३ सीमा, हद्द । ४ नोक, सिरा ।

छोरड़ी-देखो 'छोरी' ।

छोरणी-देखो 'चाळनी' ।

छोरवेड, छोरंतर-पु० बाल-बच्चे ।

छोरारोळ-स्त्री० उद्दण्डता, नादानी, नटखटपन, बचपना, खिलवाड़ ।

छोरियो, छोरीटी-देखो 'छोरी' ।

छोष, छोह, छोह, छोरो-पु० [सं० शोकहर] (स्त्री० छोरी) १ पुत्र, बेटा । २ लड़का, बालक । ३ संतान, प्रोलाद । ४ सेवक, दास ।

छोरेट-देखो 'छोरवेड' । (मेषात)

छोळ-देखो 'छोळ' ।

छोळणी-पु० जंग कुचलने का उपकरण ।

छोळणी (बी)-कि० १ जंग कुचर कर दूर करना, मेल मिटाना । २ वासना मिटाना ।

छोलणी (बी)-कि० १ छिलका उतारना, छीलना । २ किसी भारदार शस्त्र से कुचरना । ३ भिगी या गुदा निकालना ।

छोलवारी-स्त्री० १ तंबू, शामियाना । २ मोटा पर्दा ।

छोळवणी (बी)-कि० १ वासना को नष्ट करना, मिटाना । २ देखो 'छोळणी' (बी) ।

छोळवि-स्त्री० वासना, वासना की तरंग, आकांक्षा ।

छोलो-पु० चने का कच्चा दाना ।

छो'स्लो-देखो 'छोरी' ।

छोह-पु० [सं० क्षोभ] १ क्रोध, गुस्सा । २ जोश, उत्साह । ३ गर्व, अभिमान । ४ प्रेम । ५ मिलन, योग, संयोग । ६ छोट, आड, पर्दा । ७ बर्छी की नोक । ८ दरवाजे के आड़ी लगाई जाने वाली पत्थर की शिला । ९ कांति, दीप्ति । १० शोभा, कीर्ति, यश ।

छोहणी (बी)-कि० १ सोखना, चूसना । २ पीना ।

छोहू (री)-देखो 'छोरी' ।

छोहिथो-वि० १ अभिमानी, गविला । २ क्रोधी, क्रुद्ध । ३ कांतिवान ।

छोक-स्त्री० तड़का, बघार ।

छोकणी (बी)-कि० साग, सब्जी आदि को छोकना, छोका लगाना ।

छोत-देखो 'छोत' ।

छोतकी, छोटरी, छोती-पु० छिलका, छाल ।

छो-पु० १ केतकी । २ विरक्ति । ३ दुकूल । ४ पर्वत । ५ वानर ।

छो'-अव्य० सहमति सूचक संकेत । अच्छा, ठीक ।

छोगाळ (ळी)-वि० [सं० भृंग-प्रालुच] १ श्रेष्ठ, उत्तम । २ वीर, बहादुर । ३ रमिक, शौकीन । ४ दिवासी । -पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ साफा वाला व्यक्ति, माफे के पीछे लटकने वाला पल्ला । ३ भीकृष्ण । ४ मुर्गा । ५ मोर, मयूर ।

छोनी-पु० [सं० नृ०] १ साफे का सुरा, पीछे लटकने वाला पत्ता । २ छोड़े के सिर पर लगा सुरा । ३ गुच्छा ।
-वि० श्रेष्ठ शिरोमणि ।
छोड़-स्त्री० स्त्रियों के गर्भाशय का एक रोग ।
छोड़, छोड़ण, छोड़ियो, छोड़ो-पु० १ छिलका, छाल, छूता ।
२ नाक का सूखा मल । ३ खुरद ।
छोत-देखो 'छोत' ।
छोती-देखो 'छोती' ।
छोन-देखो 'छोन' ।

छौरावो-देखो 'छौरा' ।

छोळ (ळि)-स्त्री० १ पानी की लहर, तरंग, हिलोर ।
२ बौछार । ३ उमंग, उत्साह । ४ खुशी का संचार ।
५ क्रोड़ा । ६ हर्ष, खुशी । ७ धारा, प्रवाह । ८ जोश ।
छोल-स्त्री० फीत ।
छोळामाष-पु० १ समुद्र । २ दानी व्यक्ति ।
छयाळी-देखो 'छाळी' । —ना'रियो= 'छालीना'र' ।
छयाळी-देखो 'छियाली' ।
छयासठ-देखो 'छासठ' ।

— ज —

ज-देवनागरी वर्णमाला के 'च' वर्ग का तीसरा वर्ण ।
जं-क्रि० वि० [सं० यत्] क्योंकि, कारण कि । (जैन)
जंकिचि-ग्रन्थ० [सं० यत्किचि] १ जो कुछ । २ थोड़ा, न्यून ।
जंसेरो-पु० १ वायु का झोंका । २ साधारण वस्तुओं का समूह ।
जंग-पु० [फा०] १ लड़ाई, युद्ध । २ आनंद का प्रसंग । ३ लोहे का मुरवा । ४ पीतल की गुरिया, छोटा घंटा । —आवर-पु० थोड़ा । —काली-वि० युद्धोन्मत्त । —चाळ-पु० युद्ध के लिये उपयुक्त थोड़ा । —जूट-पु० शूरवीर, योद्धा ।
जंगड़ी-स्त्री० छोटी कच्छी, जांगिया ।
जंगम (माण)-वि० [सं० जंगम] १ चलायमान, चंचल ।
२ अस्थिर, चल । ३ जीवधारी । ४ चैतन्य । —पु० १ एक प्रकार का संन्यासी । २ थोड़ा । ३ छप्पय छंद का एक भेद ।
—काय-पु० द्वीन्द्रिय प्राणी, त्रस जीव । —विस-पु० एक तीव्र विष ।
जंगरी-पु० थोड़ा ।
जंगळ-पु० [सं० जंगल] १ वन, अरण्य । २ जन भूमि भूमि ।
३ रेगिस्तान । ४ थोड़ा । ५ दिशा, मैदान । ६ मांस ।
—घर, घरा-स्त्री० जांगलू देश, बीकानेर राज्य । —राय, राव-पु० बीकानेर का राजा । श्री करणीदेवी । सिंह, जेर ।
जंगळवं-वि० [सं० जंगलपति] जांगलू देश का, बीकानेर का ।
—पु० बीकानेर का राजा ।
जंगळायन-पु० वन विभाग ।
जंगळी-वि० १ जंगल का, जंगल संबंधी । २ जंगल में रहने वाला । ३ जो पालतू न हो, स्वतंत्र । ४ असभ्य, गंवार ।
५ भूख, बेवकूफ । —पु० थोड़ा ।
जंगसारधारण-पु० वीर, योद्धा ,

जंगाळ-पु० १ गुहाग बिन्दी लगाने का लाल रंग । २ थोड़ा ।
३ सेना का दक्षिणी भाग । ४ युद्ध का नगाड़ा ।
जंगाळी-वि० लाल रंग का ।
जंगिय-वि० जंगम का, जंगम संबंधी । (जैन)
जंगी (गु)-वि० [फा०] १ लड़ाई या युद्ध संबंधी । २ फौजी, सैनिक । ३ बड़ा, दीर्घकाय । ४ मजबूत, हड़ । ५ वीर, योद्धा । ६ लड़ाकू । —कार-पु० एक प्रकार का तीर ।
—राग-स्त्री० सिंधु राग । —लाठ, लाठ-पु० फौज का अफसर । —हरड्ड-पु० काली हरड्ड ।
जंगेज-स्त्री० [सं० यजज] अग्नि ।
जंगेब-पु० १ जंग के लिये उत्सुक व्यक्ति । २ युद्ध, जंग ।
जंगोळ-पु० [सं० जांगलु] विष उतारने की चिकित्सा ।
जंघ-१ देखो 'जंघा' । २ देखो 'जंग' । ३ देखो 'जांघ' ।
जंघस्थल, जंघा-स्त्री० [सं० जंघा] १ जांघ, रान । २ ऐड़ी से घुटने तक का पांव, पिडली ।
जंघात्र-पु० [सं०] जांघ का कवच ।
जंघाळ-वि० [सं० जंघाल] १ तेज दौड़ने वाला । २ देखो 'जंगाळ' ।
जंघाळस-पु० [सं० जंगार] १ तांबे का कसाव । २ एक रंग विशेष ।
जंघाळी-देखो 'जंगाळी' ।
जंघावरत-पु० एक प्रकार का अणुभ थोड़ा ।
जंचणी (बी)-देखो 'जचणी' (बी) ।
जंचा-वि० जांचा हुआ, परीक्षित ।
जंचाणी (बी). जंचावणी (बी)-देखो 'जंचाणी' (बी) ।
जंज-पु० [सं० यजन] संन्यासी, फकीर ।
जंजण-पु० [सं० यजन] यज्ञ ।

जंजर-पु० १ ताला । २ एक प्रकार का शस्त्र ।

जंजळ-देखो 'जरजर' ।

जंजाळ, जंजाल-पु० १ भंक्कट, बखेड़ा, प्रपंच । २ बंधन, घटकाव, अवरोध । ३ उलझन, परेशानी । ४ स्वप्न । ५ एक प्रकार की दंडूक । ६ बड़े मुंह की तोप । -वि० असत्य, झूठा ।

जंजाळी, जंजाळी-वि० उपद्रवी, किसान, प्रपंची ।

जंजीर, जंजीरा-स्त्री० १ शृंखला, सांकल । २ किवाड़ की कुंडी । ३ किमी वस्त्र की जंजीरनुमा किनार । ४ जंजीरनुमा कोई वस्तु ।

जंजीरदार-वि० [फा०] १ जंजीर की तरह मिला हुआ । २ जंजीरनुमा ।

जंजीरी-पु० १ एक प्रकार का मंत्र । २ मोटी जंजीर ।

जजर-देखो 'जंजीर' ।

जजरी-स्त्री० एक प्रकार का वाद्य ।

जंजेड़णी (बी)-क्रि० भक्कभोरना, छेड़ना, हिलाना-डुलाना ।

जंजी-वि० [सं० योद्धा] योद्धा, वीर ।

जडे-स्त्री० जंसलमेर राज्य की भूमि ।

जंत-पु० [सं० यंत्र] १ बैलगाड़ी के पहियों की पंजनी में बंधी रहने वाली रस्मी । २ यंत्र, उपकरण । ३ बख्तर की कड़ी । ४ कोई तांत्रिक मंत्र । ५ शामक । ६ छोटी जाति का व्यक्ति । ७ जंतु । ८ जूता । ९ स्वर्णकारों का औजार ।

जंतर-पु० १ ताला । २ देखो 'जंत्र' । -मंतर-पु० जादू-टोना ।

जंतरड़ी, जंतरपट्टी-देखो 'जंतरी' ।

जंतरणी (बी)-क्रि० १ सजा देना, दण्डित करना । २ मारना, पीटना । ३ तंत्र-मंत्र से रक्षित करना ।

जंतरणी (बी), जंतरावणी (बी)-क्रि० १ सजा दिराना, दण्डित कराना । २ मार-पीट करना, कराना । ३ तंत्र-मंत्र से रक्षित कराना ।

जंतरी-स्त्री० [सं० यंत्र; संकीर्ण] १ स्वर्णकारों का औजार । २ तिथि-पत्रक । ३ बाजा बजाने वाला । ४ जादूगर ।

जंतुकळ-पु० [मं० जंतुकल] गूलर, उदुंबर ।

जंतो-देखो 'जंत्र' ।

जंत्र, जंत्रक-पु० [सं० यंत्र] १ कल, यंत्र । २ तांत्रिक यंत्र । ३ ताबीज या गंडा । ४ बाजा, वाद्य । ५ बीणा । ६ तोप, बंदूकादि अस्त्र । ७ अस्त्र विद्या । ८ जन्म पत्रो । -घर, धार, पोणी-पु० नारद । -बाण-पु० एक अस्त्र विशेष । -मंत्र-पु० जादू-टोना । -सार-पु० तार वाद्य ।

जंत्रणी-देखो 'जंतरी' ।

जंत्राणि (णी)-स्त्री० [मं० यंत्र] १ जंतर-मंतर । २ यंत्र कला ।

जंत्राणी (बी), जंत्रावणी (बी)-देखो 'जंतरावणी' (बी) ।

जंत्रि (त्री)-पु० [सं० यंत्रिन्] १ नारद । २ वाद्य बजाने वाला, वादक । ३ तांत्रिक । ४ देखो 'जंतरी' ।

जब्-पु० १ पारसियों का धर्म-ग्रन्थ । २ इस ग्रन्थ की भाषा । ३ देखो 'जिद' ।

जप-पु० १ नवकारे की आवाज । २ चैन, शांति ।

जपण, जपय-वि० [सं० जपन] बोलने वाला, रटने वाला ।

जपणी (बी)-१ देखो 'जपणी' (बी) । २ देखो 'भंपणी' (बी) ।

जपति, जपती-पु० [सं० जप्ती] १ पति-पत्नी दम्पति । २ जायापति ।

जपाण-पु० एक प्रकार की डोली ।

जंपिर-वि० [सं० जल्पिन्] बोलने वाला । (जैन)

जफ-पु० पुद्ग, लड़ाई ।

जफीरी-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

जंबक-देखो 'जंबुक' ।

जंबवह-देखो 'जंबवती' ।

जंबाळ-पु० [सं० जंबाल] १ कीचड़, पंक । २ काई, सिवार । ३ केतकी का पौधा । ४ जरायु ।

जंबाळणी (नि)-स्त्री० [सं० जंबालिनी] नदी ।

जंबीर, जंबीरी-पु० एक प्रकार का नींबू ।

जंबु पु० १ जंबुक । २ जंबुद्वीप । ३ जंबुस्वामी । -ग्रहद्वीप-पु० जंबुद्वीप । -खंड, बीव, द्वीप, द्वीप-पु० जंबुद्वीप । -मत्त-पु० जामवंत -मति-स्त्री० एक अम्परा का नाम । -स्वामी-पु० जैन स्वविर ।

जंबुक-पु० [सं०] १ बड़ा जामुन । २ एक प्रकार का फूल । ३ सियार, मोदड़ । ४ कुत्ता, श्वान ।

जंबू-पु० [सं०] १ जामुन का वृक्ष व फल । २ जंबुद्वीप । -एव, एय-पु० सोना, स्वर्ण । -बीव, बीव, द्वीप-पु० जंबुद्वीप । एक शुभ रंग का घोड़ा । -नवी-स्त्री० जंबुद्वीप की एक नदी । -पीठ, पेठ-पु० एक प्रदेश का नाम । -फळ-पु० जामुन । एक सामुद्रिक चिह्न ।

जंबूर (क, नाळ)-स्त्री० १ ऊट पर लादी जाने वाली तोप विशेष ।

जंबूरणी-पु० 'जंबूर' नामक तोप चलाने वाला ।

जंबूरी-स्त्री० १ एक प्रकार का औजार । २ एक शस्त्र विशेष ।

जंबूरी-पु० १ संडासीनुमा एक औजार । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ बाण का फल । ४ बाजीगर के साथ वाला लड़का ।

जंबेरी-देखो 'जंबोरी' ।

जंभ-पु० [सं०] १ जंबोरी नींबू । २ प्रह्लाद का एक पुत्र । ३ डाढ़, चौमड़ । ४ दांत । ५ एक दंत्य । ६ भाग, अंश । ७ तरकस, तूणीर । ८ ठोड़ी । ९ जमुहाई । -भेरी, राति-पु० इन्द्र ।

जंभली-स्त्री० [सं० जम्भली] एक प्रकार की विद्या ।
 जंभा, (घाह, ई)-स्त्री० [सं०] जम्भाई, उबासी । (जैन)
 जंभाली (बो)-क्रि० १ गायों का बोलना, रंभाना ।
 २ जमुहाई लेना ।
 जंभारात, जंभाराति, जंभारि-पु० [सं०] जंभ दंत्य का
 शत्रु, इन्द्र ।
 जंभाळणी-स्त्री० नदी ।
 जंभासुरमारण-पु० इन्द्र ।
 जंभियो-पु० घुरा ।
 जंभीरीबीजू, जंभेरी-पु० एक प्रकार का नींबू ।
 जंभ-देखो 'जन्म' ।
 जंभजाळ-वि० यमराज मे प्रबल । -पु० यम का फंदा ।
 जंभण-देखो 'जन्म' ।
 जंभले-वि० [ग्र० जुम्ला] सब, कुल, समस्त । एक मुशत ।
 जंभेरी-देखो 'जंवेरी' ।
 जंभणावर-पु० द्रोणपुर ।
 जंभर-पु० १ तलवार आदि पर दिखाई देने वाली धारियां ।
 २ जोहर । ३ यमराज, मृत्यु, भौत ।
 जंभरी-पु० १ जोहरी । २ जोहर ।
 जंभरी-वि० १ जबरदस्त, शक्तिशाली । २ देखो 'जंवर' ।
 जंभर, जंभार-पु० जवाहरात ।
 जंभरी-देखो 'जोहरी' ।
 जंभाह (ई)-पु० [सं० जामातृ] १ दामाद, जामाता । २ एक
 लोक गीत ।
 जंभाड़ो-देखो 'जूझो' ।
 जंभार-स्त्री० १ नमस्कार, जुहार । २ नमस्कार करने पर जमाई
 आदि को दिया जाने वाला धन ।
 जंभारा-पु० पर्व दिनों में बोये जाने वाले गेहूँ या जव के पीधे ।
 जंभारी-देखो 'जंवार' ।
 जंभाह-पु० जवाहरात ।
 जंभाळिनी-देखो 'जंभाळनि' ।
 जंहंगम-पु० [सं० अजिहाग] तीर, बाण ।
 जंही-वि० जैसा, समान ।
 ज-पु० [सं०] १ जन्म । २ जीव । ३ विजय । ४ योगी ।
 ५ मृत्युञ्जय । ६ पिता । ७ विष्णु । ८ विष । ९ तेज ।
 १० विशाच । ११ जड़, मूल । १२ उत्पत्ति । १३ आभा,
 काति । १४ छन्द शास्त्र का 'जगण' । -प्रत्य० उत्पन्न,
 जात । -ग्रन्थ० ही । -सर्व० १ जिस । २ उस ।
 जइ-क्रि० वि० १ जहाँ । २ जो, यदि । ३ जब । -पु० १ साधु,
 संन्यासी । २ छत्रों की यति । ३ मालती । -वि० जीतने
 वाला, विजयी ।
 जइजइकार-देखो 'जैजकार' ।

जइस-पु० [सं० जैन] जिनदेव का भक्त । -वि० १ जीतने
 वाला । २ वेग वाला ।
 जइरा-वि० १ जितना । २ देखो 'जयरा' ।
 जइ-देखो 'यदि' ।
 जइत-स्त्री० जीत । -खंभ-पु० विजयस्तंभ । -वि० विजय
 करने वाला ।
 जइतवादी-देखो 'जैनवादी' ।
 जइतवार-वि० जीतने वाला ।
 जइतेल-पु० मालती का तेल ।
 जइय-पु० [सं० जीव] जीव, प्राणी ।
 जइयां (या)-सर्व० जिन्होंने, जिसने ।
 जइलच्छि-स्त्री० जयलक्ष्मी ।
 जइबंत-स्त्री० [सं० जयवती] एक देवी का नाम । -वि० विजयी ।
 जइसर-पु० [सं० यतीश्वर] यतीश्वर ।
 जइसी-देखो 'जैसी' ।
 जई-वि० जीतने वाला, विजयी । -स्त्री० लकड़ी के दो सींगों
 वाला एक कृषि-उपकरण । -सर्व० जिस, उस ।
 -क्रि० वि० जब ।
 जईन-देखो 'जैन' ।
 जईक-वि० वृद्ध, वृद्धा ।
 जईफी-स्त्री० [ग्र०] वृद्धापा, वृद्धावस्था ।
 जईमैल-पु० [सं० मदनजयी] महादेव, शिव ।
 जउं, जउ-ग्रन्थ० [सं० यत्] जो, यदि, अगर, कि । -सर्व०
 [सं० यः] जो । -पु० [सं० जतु] लाख ।
 जउख-देखो 'जोख' ।
 जउणा-देखो 'जमना' ।
 जउराणउ-पु० [सं० यमराज] यमराज ।
 जउखेय-पु० यजुर्वेद ।
 जउहर (रि)-देखो 'जोहर' ।
 जऊ-देखो 'जउं' ।
 जक-पु० १ चैन, आराध । २ शान्ति, तसल्ली । ३ विश्राम ।
 ४ यज्ञ । ५ कंजूस व्यक्ति । ६ देखो 'भूख' ।
 जकड़-स्त्री० कड़ा बंधन । जोर की पकड़ ।
 जकड़णी (बो)-क्रि० १ कस कर बांधना । २ जोर से
 पकड़ना । ३ ऐंठन पड़ जाना ।
 जकण-देखो 'जिकण' ।
 जकणी (बो)-क्रि० १ चैन पड़ना । २ लज्जित होना ।
 जकसेस-पु० [सं० जक्षेत्र] ऊँट ।
 जका-सर्व० जो ।
 जकात-स्त्री० [ग्र०] १ दान, खैरात । २ चुंगी, महमूल ।
 जकाती-पु० चुंगी वसूल करने वाला व्यक्ति ।

अकार-पु० 'ज' वर्ण ।

अकियो, अकीयो-पु० वृत्तान्त, हाल ।

अकौ-सर्व० (स्त्री० अकी) १ जो । २ वह, उस ।

अक-देखो 'अक' ।

अकष पु० यक्ष । —मह-पु० यक्ष द्वीप का अधिपति, देवता ।

अकषा-देखो 'यक्षी' ।

अकषद-देखो 'यक्षेद्र' ।

अकषि (अक्षी)-स्त्री० [सं० याक्षी] १ एक प्रकार की लिपि ।
२ देखो 'अक्ष' ।

अकषोद-पु० [सं० यक्षोद] एक समुद्र का नाम ।

अक्ष-पु० [सं० यक्ष] (स्त्री० अक्षणी) एक प्रकार की देव
जाति, यक्ष । —नायक-पु० कुबेर । —पति, पति-पु०
कुबेर । —पुर, पुरी-पु० अलकापुरी । —रात-स्त्री०
कात्तिक मास की पूर्णिमा की रात्रि । —लोक पु० यक्षपुर ।

अक्षस-पु० [सं० यक्षप] यक्षपति, कुबेर ।

अक्षाधिप-पु० [सं० यक्षाधिप] कुबेर ।

अक्षेस-पु० [सं० यक्षेस] कुबेर ।

अख-वि० १ धनवान घनाढ्य । २ देखो 'अक्ष' । ३ देखो 'अक' ।

अखेर-पु० कुबेर ।

अखण-पु० [सं० अक्षरम्] १ आहार । २ देखो 'अक्ष' ।

अखणी-स्त्री० [सं० यक्षिणी] १ यक्ष की पत्नी । २ दुर्गा की
एक अनुचरी ।

अखन-देखो 'अखण' ।

अखम-पु० [फा० अरुम] १ घाव, क्षत । २ मर्महत दुःख ।
३ सदमा ।

अखमाइल (मायल), अखमी-वि० ग्राह्य, घायल, जरमी ।

अखराज (राट)-पु० [सं० यक्षराज] यक्षराज, कुबेर ।

अखरी-पु० सिंध का एक यादव राजा ।

अखाणी-स्त्री० १ यक्ष कन्या । २ यक्ष पत्नी, यक्षिणी ।

अखाराज-पु० [सं० यक्षराज] कुबेर ।

अखाधय (धिप)-पु० कुबेर ।

अखाधी (धीस)-पु० कुबेर ।

अक्षि (क्षी)-स्त्री० [सं० यक्षी] १ यक्षिणी । २ कुबेर की
स्त्री । ३ यक्ष ।

अखीर (री)-पु० [अ०] १ वस्तुओं का संग्रह, ढेर, राशि ।
२ खजाना ।

अखेंद्र-देखो 'यक्षेंद्र' ।

अखीर-देखो 'अखीर' ।

अखेसर (सुर, स्वर)-पु० [सं० यक्षेश्वर] कुबेर ।

अखखणी-देखो 'अखणी' ।

अख्यप्रति-पु० [सं० यक्ष प्रीति] शिव ।

अगंनाथ-देखो 'जगन्नाथ' ।

अग-पु० [सं० जगत्] १ संसार, विश्व । ३ सांसारिक लोग ।
३ देखो 'यक्ष' । —ईस-पु० परमेश्वर, ईश्वर ।

अगद (ई)-स्त्री० [सं० जगती] पृथ्वी, भूमि ।

अगकरण (करता)-पु० १ सृष्टि कर्ता ईश्वर । २ ब्रह्मा, विधि ।

अगकरम-पु० १ यज्ञ कर्म । २ सांसारिक कार्य ।

अगकळपंत-पु० १ संहार । २ युगान्त, प्रलय काल ।

अगकारण-पु० ईश्वर ।

अगकाळ-पु० [सं० यज्ञकाल] १ यज्ञ करने का समय ।
२ पूर्णमासी ।

अगगुह, अगगुह-देखो 'अगदगुह' ।

अगघण-पु० [सं० यज्ञघ्न] राक्षसादि ।

अगचक्ष (चक्ष, चक्षु, चख, चख चख्य, चक्षु, चख)-पु०
[सं० जगचक्षु] सूर्य ।

अगजगानी (बी)-क्रि० १ जगमगाना, प्रज्वलित करना ।
२ जगाना ।

अगजगानी, अगनी-स्त्री० १ जगत की माता पार्वती । २ देवी,
दुर्गा । ३ गंगा नदी ।

अगजामी-पु० ईश्वर, परमेश्वर ।

अगजा'र-वि० प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात ।

अगजीत-वि० संसार को विजय करने वाला ।

अगजीव (जीवण, जीवन)-पु० [सं० जगज्जीव] १ शंकर, शिव ।
२ ईश्वर, विष्णु ।

अगजेठ (जेठी, जेठ)-पु० [सं० जगत्-जेष्ठ] १ ईश्वर ।
२ ब्रह्मा । ३ राजा । ४ योद्धा, शूरवीर । ५ पहलवान ।

अगजोनि-पु० ब्रह्मा ।

अगजंप-पु० एक प्रकार का रणवाद्य ।

अगकाळ-पु० जगत का रक्षक, विष्णु ।

अगण-पु० १ छन्द शास्त्र में एक गण । २ जलना, दाह ।

अगणी-स्त्री० अग्नि ।

अगणी (बी)-देखो 'अगणी' (बी) ।

अगत-पु० [सं०] १ संसार, विश्व । २ सांसारिक लोक । ३ शिव ।
४ वायु । —अगनी-स्त्री० पार्वती, दुर्गा । —उपाता-पु०
ब्रह्मा । —गुह, गुह= 'अगदगुह' । —चक्ष= 'अगचक्ष' ।
—ठास-पु० ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु । —पति, पति-पु०
ईश्वर । —पिता-पु० ब्रह्मा । —प्राण-पु० वायु ।
—भेषण-पु० शिव, विष्णु । —मावीत्र-पु० राजा ।
—मोहणी-स्त्री० महामाया, दुर्गा । —रोषण-पु० विष्णु,
ईश्वर । —साखी-पु० ईश्वर, सूर्य । —साधार-पु०
ईश्वर । —सेठ-पु० धनी व दानी सेठ ।

अगतण-स्त्री० १ सांसारिक स्त्री । २ वेश्या । (मेवात)

जगतारण

(४४१)

जगमोहण

जगतारण-पु० ईश्वर, विष्णु ।
 जगति-स्त्री० १ द्वारिका । २ देखो 'जगती' ।
 जगती-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती । २ मानव जाति ।
 ३ गौ । ४ संसार । ५ जंबूद्वीप का कोट । ६ एक छन्द
 विशेष । —तल्ल-पु० पृथ्वी, भूमि ।
 जगतेस-पु० ईश्वर ।
 जगतेसुर-पु० शिव, महादेव ।
 जगति (त्ति)-देखो 'जगती' ।
 जगत्माता-स्त्री० दुर्गा ।
 जगत्पोहिनी-स्त्री० महामाया दुर्गा ।
 जगत्र-देखो 'जगत' ।
 जगन्नाथ-पु० [सं० जगन्नाथा] १ संसार की रक्षा करने वाला,
 ईश्वर । २ राजा । ३ यज्ञ की रक्षा करने वाला ।
 ४ पंडित ।
 जगत्साक्षी-पु० [सं०] सूर्य ।
 जगदंब (बा, बि, बिका, बी, भा)-स्त्री० [सं० जगदम्बा]
 १ देवी, दुर्गा । २ पार्वती । ३ करुणी देवी ।
 जगद-देखो 'जगत' ।
 जगदगुर (ह, हू)-पु० १ परमेश्वर, ईश्वर । २ शिव ।
 ३ शंकराचार्य । ४ पूजनीय व्यक्ति । ५ ब्राह्मण ।
 जगदगोरी-स्त्री० १ दुर्गा, देवी । २ मनसा देवी ।
 जगदजोषी-स्त्री० १ शिव । २ विष्णु । ३ पृथ्वी ।
 जगदत-पु० [सं० यज्ञदत्तक] यज्ञ के फल स्वरूप प्राप्त पुत्र ।
 जगदातार-पु० [सं०] १ ईश्वर । २ दानवीर ।
 जगदाधार-पु० [सं०] विष्णु ।
 जगदानंद-पु० १ ईश्वर । २ श्रीकृष्ण ।
 जगदिवली (दीप)-पु० [सं० जगदीप] १ सूर्य । २ शिव ।
 ३ परमात्मा ।
 जगदीस (सर, सवर, स्वर, स्वरू)-पु० [सं० जगदीश्वर]
 १ परमात्मा । २ श्रीकृष्ण । ३ विष्णु । ४ शिव ।
 जगदीस्वरी-स्त्री० [सं०] भगवती, दुर्गा ।
 जगद्धाता-पु० [सं० जगद्धातृ] १ ब्रह्मा । २ विष्णु ।
 जगद्धात्री-स्त्री० १ दुर्गा । २ सरस्वती ।
 जगध-पु० [सं० जग्धि] भोजन ।
 जगधणी-पु० ईश्वर ।
 जगधर (धार)-पु० १ ईश्वर । २ ज्ञेयनाथ ।
 जगन-देखो 'जिगम' ।
 जगनराय-पु० चंद्रमा ।
 जगनांभी-वि० विश्वान, प्रसिद्ध ।
 जगनाती-पु० १ एक ही प्रकार का कपड़ा । २ छोटा जल
 पात्र ।
 जगनाथ-देखो 'जगन्नाथ' ।

जगनायक-पु० विष्णु, ईश्वर ।
 जगनाह-देखो 'जगन्नाथ' ।
 जगनेरसेप-पु० [सं० जगन्निर्लेप] विष्णु ।
 जगनेर-पु० [सं० जगन्नयन] सूर्य ।
 जगन्नाथ-पु० [सं०] १ संसार के स्वामी, ईश्वर । २ विष्णु ।
 ३ पुरी नामक स्थान पर स्थित विष्णु की मूर्ति ।
 जगन्नाथ-पु० [सं०] परमेश्वर ।
 जगपत (ति, त्त, त्ती)-देखो 'जगतपति' ।
 जगपात्र-पु० यज्ञ पात्र ।
 जगपाठ (पाठक)-पु० १ विष्णु । २ राजा ।
 जगपावन-स्त्री० गंगा नदी ।
 जगपुङ्ग-स्त्री० जमीन, पृथ्वी ।
 जगपुरस-पु० [सं० यज्ञपुरुष] विष्णु ।
 जगप्रारण-पु० वायु, हवा ।
 जगफल-पु० यज्ञ फल । —बाता-पु० विष्णु ।
 जगबंद-वि० विश्वबंध ।
 जगबंदक-पु० चन्द्रमा ।
 जगबंधव (घु, बांधव)-पु० परमात्मा ।
 जगबाहु-पु० आग, अग्नि ।
 जगभल-वि० १ यशस्वी, कीर्तिमान । २ हितैषी, भला चाहने
 वाला ।
 जगभाग-पु० यज्ञ का एक भाग ।
 जगभाक्षण-पु० आंख ।
 जगभावण (न)-पु० ईश्वर, परमात्मा ।
 जगभासक-पु० १ प्रकाश । २ सूर्य ।
 जगभूमि, (भीम)-पु० [सं० यज्ञभूमि] यज्ञ स्थल ।
 जगमंडल-पु० यज्ञ मण्डल ।
 जगमग-वि० तारों या दीपों आदि से प्रकाशित । २ चमकीला,
 प्रकाशित ।
 जगमगणी (बी)-क्रि० १ चमकना, प्रकाशित होना ।
 २ झलकना । ३ प्रज्वलित होना ।
 जगमगाट (हट)-स्त्री० रोशनी, तारों या दीपों की रोशनी ।
 जगमगणी (बी)-क्रि० १ चमकना, प्रकाशित होना ।
 २ प्रज्वलित होना ।
 जगमग-देखो 'जगमिग' ।
 जगमनमोहणी-स्त्री० जमीन ।
 जगमाप-स्त्री० [सं० जगन्मातृ] जगत की माता, दुर्गा ।
 जगमिश-पु० सूर्य ।
 जगमूरति-स्त्री० १ ईश्वर । २ विष्णु ।
 जगमोहण (मोहन)-पु० [सं० जगन्मोहन] १ ईश्वर । २ विष्णु ।
 ३ एक ही प्रकार की शराब ।

जगय-पु० [सं० यकृत] कलेजा । (जैन)
 जगरंजल (न)-पु० ईश्वर ।
 जगर-देखो 'जिगर' ।
 जगराणी-स्त्री० १ लक्ष्मी । २ दुर्गा । ३ सरस्वती ।
 जगराज-पु० १ चन्द्रमा । २ ऋषि, तपस्वी ।
 जगराय (व)-पु० ईश्वर । शिव ।
 जगराया-स्त्री० देवी, दुर्गा ।
 जगरी-पु० १ आग की बड़ी लपट । २ शीघ्र प्रज्वलित होने वाला, कचरा बूझा ।
 जगसिग-पु० [सं० यजसिग] श्रीकृष्ण का एक नाम ।
 जगळ (ळाल)-पु० कोलू में ग्रथ कचरे तिल ।
 जगबंच-वि० संसार को धोखा देने वाला ठग, धूर्त ।
 जगबंदन (न)-पु० [सं० जगद्वंदन] ईश्वर ।
 जगबलक-पु० याजवल्क के पिता ।
 जगवाणी (बो)-क्रि० १ जगाने के लिये प्रेरित करना । २ जागरण दिराना । ३ उत्साह दिलाना । ४ जलवाना, प्रज्वलित करना ।
 जगवाराह-पु० विष्णु का एक नाम ।
 जगवासप-पु० ईश्वर ।
 जगवीरय-पु० विष्णु का एक नाम ।
 जगवेल-स्त्री० गोमलता ।
 जगसंतोष-स्त्री० नदी ।
 जगसत्र-पु० असुर, राक्षस ।
 जगसाई (सामी)-पु० जगत का स्वामी, ईश्वर ।
 जगसाक्षी-पु० [सं० जगत्साक्षी] सूर्य ।
 जगसाधन-पु० विष्णु का एक नाम ।
 जगसाधार-पु० विष्णु, ईश्वर ।
 जगसाळा-स्त्री० [सं० यजशाला] यजशाला ।
 जगसाळी-पु० [सं० जगश्यालक] वेश्या का भाई ।
 जगसास्त्र-पु० यज शास्त्र ।
 जगसूकर, जगसेन-पु० विष्णु ।
 जगसेच-पु० शिव ।
 जगस्वामी-पु० ईश्वर, विष्णु ।
 जगह-देखो 'जायगा' ।
 जगहृत्थ (हृथ)-पु० दिग्विजय । —९३-पु० दिग्विजय का चुनौती पत्र ।
 जगहरता-पु० ईश्वर, शिव ।
 जगहेत-पु० ब्रह्मा ।
 जगहोता-पु० यज में देवताओं का आह्वान करने वाला ।
 जगा-देखो 'जायगा' ।
 जगचख-देखो 'जगचख' ।
 जगजोत (जोति)-स्त्री० जगमगाहुट ।

जगाणी (बो)-क्रि० १ जागृत करना, जगाना । २ नींद से उठाना । ३ होश दिलाना । ४ ठीक दशा में लाना । ५ प्रज्वलित करना । ६ विशेष तौर से तैयार करना । ७ देव को सिद्ध करना । ८ जागरण दिराना ।
 जगात-स्त्री० [सं० जकात] १ दान, खैरात । २ कर, महसूल ।
 जगातमा-स्त्री० [सं० यज्ञात्मा] विष्णु ।
 जगाबीस-देखो 'जगदीस' ।
 जगामग, (मगि, मगो)-देखो 'जगमग' ।
 जगार (रि, रौ)-पु० [सं० यज्ञारि] राक्षस, असुर ।
 जगावणी (बो)-देखो 'जगाणी' (बो) ।
 जगि (गो)-पु० [सं० यज्ञि, यजि:] १ यज्ञ की क्रिया । २ यज्ञ करने वाला । ३ यज्ञ ।
 जगोस (सौ)-स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा । २ जिज्ञासा । ३ कीर्ति, यश । ४ युद्ध । ५ ईश्वर ।
 जगु, जगू-देखो 'जग' ।
 जगेसर (सुर, स्वर)-पु० [सं० यज्ञेश्वर] श्रीविष्णु ।
 जग-देखो 'जग' ।
 जगोस-देखो 'जगोस' ।
 जगय, जग्य-देखो 'यग्य' ।
 जगामेनी-स्त्री० [सं० यज्ञसेनी] द्रौपदी ।
 जग्योषवीत पु० [सं० यज्ञोषवीत] उपनयन संस्कार, जनेऊ ।
 जगभ्य-वि० [सं०] १ अंतिम । २ निकृष्ट, हेय । ३ नीच, दुष्ट । ४ गहित । ५ शूद्र ।
 जगभ्यभ-पु० [सं०] छः नक्षत्र—मार्द्रा, मृगशिरा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा ।
 जङ्ग-वि० [सं० जङ्ग-ग्रंथ] मूर्ख, असम्य, गंवार ।
 जङ्ग-स्त्री० [सं० जङ्ग, जटा] १ किसी वृक्ष, पीधे, लतादि का मूल, जड़ । २ नींव, बुनियाद । ३ मूल तत्त्व, मूल बात । ४ असली कारण । ५ सर्दी, शीतकाल । ६ ठण्डक । —वि० १ ठण्डा, शीतल । २ निर्जीव, अचेतन । ३ गतिहीन, निश्चल । ४ मूढ़, मूर्ख । ५ विवेक या ज्ञान शून्य । ६ सुप्त । ७ गूंगा, मूक ।
 जङ्कणी (बो), जङ्कणी (बो)-क्रि० १ प्रहार करना । २ मारना । ३ झटका देना । ४ फटकारना ।
 जङ्कणी (बो), जङ्कणी (बो)-क्रि० [सं० जटन] १ कपाट बन्द करना, सटाना । २ नगीने आदि की जड़ाई करना, बँटाना । ३ प्रहार करना । ४ शस्त्र-कवच से मज्जित होना । ५ कान भरना, चुगली करना । ६ जमाना, स्थिर करना । ७ प्रविष्ट करना, जम कर रहना । ८ मजबूत बाँधना, कसना । ९ संश्लिष्ट होना । १० पतन होना, गिरना ।
 जङ्ग-स्त्री० पच्चीकारी, जड़ाई ।
 जङ्गब-वि० समूल, जड़ सहित ।

जड़ाई-स्त्री० जड़ने का कार्य, इस कार्य का पारिश्रमिक ।

जड़ाउ (ऊ)-वि० [सं० जटित] १ जड़ा हुआ । २ पच्चीकारी किया हुआ ।

जड़ाकड़-वि० समूल नष्ट करने वाला ।

जड़ाग-पु० १ आभूषण । २ पुत्र, बेटा । ३ घोड़ा ।

जड़ाणी (बो)-क्रि० १ कपाट बंद कराना, सटवाना । २ नगीने आदि की जड़ाई कराना । ३ प्रहार कराना । ४ शस्त्र कवच से सजित कराना । ५ जमवाना, स्थिर करवाना । ६ मजबूत बंधवाना, कसवाना । ७ संश्लिष्ट कराना । ८ पतन कराना, गिरवाना ।

जड़ाव (वट)-पु० १ नगीना । २ जड़ाई का कार्य । ३ शिर के बालों का जड़ा ।

जड़ावणी (बो)-देखो 'जड़ाणी' (बो) ।

जड़ित-वि० जड़ा हुआ ।

जड़िया-स्त्री० एक स्वर्णकार जाति ।

जड़ियाळ-वि० जिससे प्रहार किया जाय ।

जड़ियो-पु० १ आभूषणों में नगीने जड़ने वाला । २ जड़ाई का कार्य करने वाला स्वर्णकार ।

जड़ी-स्त्री० पीये या वनस्पति की जड़ जो औषधि में काम आती हो ।

जड़ी-पु० धरेलु अशिक्षित पणु ।

जचणी (बो)-क्रि० १ जांच में पूरा उतरना । २ ठीक या उचित लगना । ३ ठीक बैठना । ४ शोभित होने की दशा में होना । ५ फटना । ६ कोई बात समझ में आना, किसी विचार का मन में निश्चय होना ।

जचा-देखो 'जचना' ।

जचाणी (बो), जचावणी (बो)-क्रि० १ जांच में पूरा उतरना । २ ठीक या उचित लगवाना । ३ ठीक बैठाना । ४ शोभित होने की दशा में करना । ५ फटाना । ६ कोई बात समझाना, किसी विचार का मन में निश्चय कराना ।

जचव-वि० [सं० जात्य] १ स्वाभाविक । २ प्रधान, श्रेष्ठ । ३ सजातीय ।

जचवणिय-वि० [सं० जात्यान्वित] कुल में श्रेष्ठ, कुलीन ।

जचवणी (बो)-देखो 'जचणी' (बो) ।

जचवा-स्त्री० [का०] प्रसूता स्त्री ।

जचवाघा-स्त्री० एक मांगलिक लोक गीत ।

जचव-देखो 'जच' ।

जज-पु० १ कठोर बंधन । २ यज्ञ । ३ न्यायाधीन । ४ निर्णय ।

जजक-देखो 'जिजक' ।

जजकणी (बो)-देखो 'जिजकणी' (बो) ।

जजटळ-देखो 'जुविठर' ।

जजण-पु० [सं० यजन] यज्ञ ।

जजणी (बो)-क्रि० १ दान करना । २ उदारता दिखाना । ३ यज्ञ करना ।

जजमणी (बो)-क्रि० शान्ति प्राप्त करना या होना ।

जजमाण (मान)-पु० [सं० यजमान] १ यज्ञ करने वाला ।

२ दान दक्षिणा देने वाला । ३ खातिरदारी करने वाला ।

जजमानता (मानी)-स्त्री० १ यजमान का धर्म या कार्य । २ दान दक्षिणा । ३ खातिरदारी ।

जजमाणी (बो), जजमावणी (बो)-क्रि० [सं० यजमान] क्रोध शांत कराना, धैर्य दिलाना ।

जजरंग-पु० १ यमराज । २ वज्र । -वि० भयंकर ।

जजर-पु० १ यमराज । २ वज्र । ३ देखो 'जरजर' ।

जजरबो-देखो 'जुजरबो' ।

जजराग (राट)-वि० १ भयंकर, डरावना । २ क्रुद्ध । -पु० १ यमराज । २ वज्र ।

जजात (ति, ती)-पु० [सं० ययाति] यादव वंशी एक राजा ।

जजावळ-स्त्री० ऊंट पर लाद कर चलाई जाने वाली बड़ी बंदूक ।

जजार, जजाळ (ळी)-पु० एक प्रकार की बड़ी बंदूक ।

जजियो-पु० मुगलकालीन एक कर ।

जजी-पु० यज्ञ ।

जजुवेद, जजुरवेद-पु० [सं० यजुर्वेद] चार वेदों में से एक ।

जजुरवेदो-वि० उक्त वेद का ज्ञाता ।

जजुवेद-देखो 'जजुरवेद' ।

जजेसर (स्वर)-पु० [सं० यक्षेश्वर] कुवेर ।

जजोनी-पु० [सं० योनिज] किसी योनि विशेष का जीव ।

जजजर-देखो 'जरजर' ।

जजजरिय-वि० [सं० जर्जरित] जीर्ण-शीर्ण, पुराना । (जैन)

जजजीव-वि० [सं० यावज्जीव] प्राणी मात्र ।

जज, जजक-देखो 'जजर' ।

जजजीव-पु० १ यम । २ काल । ३ सिंह ।

जजर-स्त्री० १ एक प्रकार की छोटी बंदूक । २ देखो 'जरजर' ।

जजाट-देखो 'जजराग' ।

जजकणी (बो)-देखो 'जिजकणी' (बो) ।

जट-स्त्री० १ ऊंट व बकरी के बाल । २ देखो 'जटा' । -गंग-पु० शिव । -जुट-पु० जटा का समूह । -घर, घरण, घार, घारी-पु० शिव, महादेव । मंन्यासी, फकीर । -पंख-पु० जटाघारी मर्प । -बाड़-स्त्री० जाटों का समूह । जाटों का मुहल्ला । -संकरी-स्त्री० गंगा ।

जटा-स्त्री० [सं०] १ शिर व दाढ़ी-मूँछ की केश राशि । २ अयास । ३ उलझा हुआ बाल । ४ तारिख के ऊपर की चाँटी । ५ किसी प्रकार के रेशों की लटिका । ६ जूड़ा ।

७ जटामासी । ८ जड़ या मूल । —चीर-पुं शिव, महादेव । —जूट-पुं जटामासी का समूह । शिव की जटा । —घर, धार, धारी-पुं शिव महादेव । संन्यासी, फकीर । एक भैरव । —माळी-पुं शिव ।
 जटामासी-स्त्री० एक मुमंघित वनस्पति विशेष ।
 जटाय-देखो 'जटायु' ।
 जटाय-पुं शिव, महादेव ।
 जटायु-पुं [सं० जटायुः] एक प्रसिद्ध गिद्ध ।
 जटायुज-पुं घोड़ा, घोष ।
 जटाल (ळि, ङी, ङी)-पुं [सं० जटाल, जटालः] १ शिव, महादेव । २ जटाधारी व्यक्ति । ३ २४वां क्षेत्रपाल । ४ वट वृक्ष । ५ ८८ ग्रहों में से ५३वां ग्रह । (जैन) ६ जटा समूह । ७ शेर, सिंह । —वि० जटाधारी ।
 जटामुर-पुं एक राक्षस ।
 जटि-पुं [सं० जटिः] १ जटाजूट । २ मूलर का वृक्ष । ३ जमाव । ४ शिव । ५ जटा । ६ वट वृक्ष ।
 जटित-वि० जड़ा हुआ, जड़ित ।
 जटिपल-पुं शिव ।
 जटिया-स्त्री० १ जमावों की एक जाति । २ कुम्हारों की एक शाखा ।
 जटिल-वि० [सं०] १ पेचीदा, दुरूह । २ कुर, दुष्ट । ३ परेशान करने वाला । —पुं [सं० जटिलः] १ शेर, सिंह । २ बकरा । ३ ब्रह्मचारी । ४ शिव, महादेव । ५ फकीर ।
 जटिसा-स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मचारिणी । २ गौतमवंशीय एक ऋषि की कन्या ।
 जटो-वि० [सं०] १ जटाधारी । २ देखो 'जटि' । —क्रि० वि० जहाँ, तहाँ ।
 जटीय-पुं [सं० जूजटि] शिव, महादेव ।
 जटेल, जटेल, जटेल, जटेल, जटेल, जटेल-पुं [सं० जटा-ईश्वर] १ सिंह, शेर । २ शिव । ३ घोड़ा, कीर । ४ जटाधारी ।
 जट्ट-१ देखो 'जट' । २ देखो 'जटा' । ३ देखो 'जट' ।
 जट्टा-देखो 'जटा' ।
 जट्टाय-देखो 'जटायु' ।
 जट्टि (ट्टी, ट्टी)-१ देखो 'जटि' । २ देखो 'जट' । ३ देखो 'जटी' ।
 जठर-वि० [सं०] १ कठोर । २ दृढ़, मजबूत । ३ वृद्ध, बूढ़ा । ४ निष्ठुर । —पुं १ उदर, पेट । २ मेदा, उदराग्नि । ३ कुक्षि, कोख । ४ गर्भाशय । ५ आन्तरिक भाग या हिस्सा । —अग्नि, अग्नि, अमल-स्त्री० अन्न पचाने वाली पेट की अग्नि ।
 जठराळ-देखो 'जठर' ।

जठरि-देखो 'जठर' ।
 जठा-क्रि० वि० जहाँ, तहाँ, तत् । —अग्नि='जठराग्नि' ।
 जठी (ठी, ठी)-क्रि० वि० १ जिस ओर, जिस तरफ । २ जहाँ, जिधर । ३ वहाँ ।
 जड्ढा-स्त्री० चौसठ योगिनियों में से एक ।
 जड-देखो 'जड़' ।
 जडचर-पुं [सं० जडचर] ४९ क्षेत्रपालों में से एक ।
 जडटोप-पुं शिरस्त्राण, टोप ।
 जडणी (ढी)-क्रि० १ टिड्डी दल का घनी भूत होना । २ अधिक या घना होना । ३ मोटा होना । ४ देखो 'जडणी' (ढी) ।
 जडता-स्त्री० १ मुटापा । २ देखो 'जड़ता' ।
 जडघर (घार, धारी)-पुं [सं० जटघर] १ शिव, महादेव । २ कटारी, कृपाण ।
 जडभरत (भरतरी)-पुं एक पौराणिक राजा ।
 जडलक (लग)-पुं १ तलवार । २ कटार, कृपाण ।
 जडलगघी-स्त्री० कटारी ।
 जडलग-देखो 'जडलग' ।
 जडा-देखो 'जटा' । (जैन) —गि='जडाग' । —घर, धार, धारी='जटाधारी' ।
 जडाई-देखो 'जडाई' ।
 जडाळी-स्त्री० कटारी, कृपाण ।
 जडि-देखो 'जटि' ।
 जडिल-देखो 'जटिल' ।
 जडोड-देखो 'जडुयो' ।
 जडो-देखो 'जाडो' ।
 जडु-पुं हाथी । (जैन)
 जडु-देखो 'जाडो' ।
 जण-स्त्री० १ जन्म, उत्पत्ति । २ संतान, भौलाद । ३ देखो 'जन' । —वि० १ उत्पादक । २ सज्जन । —सर्व० जिस । क्रि० वि० जब ।
 जणअ-देखो 'जनक' ।
 जणइ-वि० [सं० जननी] उत्पन्न करने वाली । (जैन) —क्रि० वि० उसी वक्त, तुरंत ।
 जणइउ, जणईत्तर, जणईत्तु-पुं [सं० जनयितृ] जनक, पिता ।
 जणउ-१ देखो 'जग' । २ देखो 'जन' ।
 जणक-देखो 'जनक' ।
 जणजण, जणजण-वि० प्रत्येक, हरेक ।
 जणज-देखो 'जनन' ।
 जणजि (जी)-देखो 'जननी' ।
 जणजी (बी)-क्रि० १ संतान को जन्म देना, प्रसव करना । २ जानना ।
 जणपय-देखो 'जनपद' ।

जणमिळ पु० झुंड, समूह, दल ।
 जणवद्-देखो 'जनपति' ।
 जणवय-देखो 'जनपद' ।
 जणवयकल्लाणिष्ठा-स्त्री० जनपद कल्याणी, चक्रवर्ती राजा की रानी । (जैन)
 जणवा-स्त्री० सीरवियों की एक शाखा ।
 जणा-क्रि० वि० जब । -पु० लोग, जन ।
 जणाणी (बो)-क्रि० १ प्रजनन कराना, प्रसव कराना । २ बतलाना, प्रकट कराना, जतलाना ।
 जणाव-पु० जानकारी, ज्ञान ।
 जणावणी (बो)-देखो 'जणाणी' (बो) ।
 जणि-स्त्री० [सं० जनि] १ माता, जननी । २ नारी, युवती ।
 जणिपांणी-वि० प्रजनन करने वाली, माता ।
 जणिया-स्त्री० [सं० यामिनी] रात्रि ।
 जणियार-पु० (स्त्री० जणियारी) १ राजा । २ उत्पादक । ३ पिता ।
 जणियारी-स्त्री० माता, जन्मदात्री ।
 जणियी-पु० १ पुत्र, बेटा । २ संतान ।
 जणी-सर्व० १ उस । २ जिस । -क्रि० वि० १ जब । २ देखो 'जणि' ।
 जणीतर (तो)-स्त्री० जन्मदात्री, माता ।
 जणीतो-पु० पिता ।
 जणुम्मि-स्त्री० [सं० जनोमि] तरंग के समान मनुष्यों की पंक्ति ।
 जणे (जै)-क्रि० वि० जब ।
 जणेता-स्त्री० माता ।
 जणी-पु० [सं० जनक, जनितः] १ पिता । २ जन ।
 जण्ण-पु० [सं० यज्ञ] १ यज्ञ । २ इष्टदेव की पूजा । ३ देखो 'जन' ।
 जण्ह-अव्य० जहां, जिसलिये । (जैन)
 जण्हवी-स्त्री० [सं० जाल्ही] गंगा, भागीरथी ।
 जतंद्र, जतंद्रोधी-देखो 'जितेंद्रिय' ।
 जत-पु० [सं० यतित्व] १ जितेन्द्रिय होने की दशा । २ शील, सतीत्व । ३ जन्म । ४ एक मुसलमान कौम । -घार-पु० हनुमान, जितेन्द्रिय ।
 जतन (नां, नि, नी)-पु० [सं० यत्न] १ प्रयत्न, कोशिश । २ उपाय । ३ साधन, व्यवस्था । ४ रक्षा, हिफाजत । ५ प्रबंध । ६ आदर, सत्कार । ७ प्रमाण, पुष्टि । -क्रि० वि० लिए, वास्ते ।
 जतराव-वि० जितेन्द्रिय ।
 जतरे (रं)-क्रि० वि० तब तक, जितने ।
 जतरी-देखो 'जितरी' (स्त्री० जतरी) ।

जतळाणो (बो), जतळावणी (बो)-देखो 'जताणी' (बो) ।
 जतसी-देखो 'जितरी' (स्त्री० जतली) ।
 जताणी (बो)-क्रि० १ जात कराना, जताना । २ बतलाना, दिखाना । ३ आगाह करना ।
 जतासी-वि० [सं० यतवान] १ साहसी । २ ब्रह्मचारी ।
 जताव (बो)-पु० १ बतलाने का कार्य । २ प्रकट होने का भाव । ३ घसर, प्रभाव ।
 जतावणी (बो)-देखो 'जताणी' (बो) ।
 जतिंद्र-देखो 'यतींद्र' ।
 जति-देखो 'जती' ।
 जतिईस-पु० [सं० यतीश] १ यति । २ हनुमान ।
 जतिचांद्रायण-पु० यतियों का एक व्रत विशेष ।
 जती-पु० [सं० यति] १ जितेन्द्रिय एवं मोक्ष के लिये प्रयत्नशील व्यक्ति, विरक्त प्राणी । २ श्वेताम्बर जैन साधु । ३ योगी । ४ हनुमान । ५ लक्ष्मण । ६ संन्यासी, ऋषि । ७ ब्रह्मा का एक पुत्र । ८ नहुष का एक पुत्र । ९ ब्रह्मचारी । १० रोक, अवरोध । ११ मनोविकार । १२ छप्पय छंद का एक भेद । १३ प्रध्विराम । १४ विद्यवा । -अव्य० यदि, अगर । (जैन)
 जतीवाह-पु० गरुड़ ।
 जतीवती-वि० जितेन्द्रिय, बनी ।
 जतु-पु० १ वृक्ष का गोंद । २ शिलाजीत । ३ लाख, लाक्षा ।
 जतेंद्र-देखो 'जितेंद्रिय' ।
 जनेक-वि० जितने ।
 जतें जतें-क्रि० वि० जब तक, तब तक ।
 जत्त-देखो 'जत' ।
 जत्ता-स्त्री० [सं० यात्रा] प्रयाण, यात्रा । (जैन) ---भयघ्न, भयघ-पु० यात्रा में साथ रहने वाला नीकर । -सिद्ध-पु० बारह बार समुद्र की यात्रा किया हुआ व्यक्ति ।
 जलिय-वि० [सं० यावत्] जितना । (जैन)
 जत्ती-देखो 'जती' ।
 जत्ते-क्रि० वि० जब तक ।
 जत्ती-अव्य० [सं० यतस्] जहां । (जैन)
 जत्थ, जत्थी-पु० [सं० यूथ] १ समूह, झुण्ड । २ गिरोह । -क्रि० वि० [सं० यत्र] जहां ।
 जत्र-क्रि० वि० [सं० यत्र] जहां, जहां पर । -पु० नाश संहार ।
 जत्रकत्र-पु० नाश, संहार ।
 जथा-अव्य० [सं० यथा] जिस प्रकार, जैसे, ज्यों । -स्त्री० १ डिगन गीत रचना की एक विधि । २ एक प्रकार का शब्दालंकार । ३ मंडली, समूह । ४ पूजा, संपत्ति । ५ सत्य, सच्चाई । ६ यथा । -कर्म-क्रि० वि० क्रमशः, तत्परीवार । -अव्य० यथातथ्य, ज्यों का त्यों ।

—जात-वि० मंद बुद्धि । मूर्ख, सुस्त, काहिल । —जोग, जोग्य-प्रव्य० यथायोग्य, उपयुक्त । —तथ, तथि-प्रव्य० ज्यों का त्यों । —वि० सत्य । —नियम-क्रि० वि० नियमानुसार । —न्याय-प्रव्य० यथान्याय । —रत, रथ-वि० यथार्थ, सही । —प्रव्य० ज्यों का त्यों । —विधि-प्रव्य० विधि पूर्वक । —संसर्ग-प्रव्य० जहाँ तक हों सके । —सकती, सक्ति, सगती-प्रव्य० सामर्थ्य के अनुसार । —समै-प्रव्य० ठीक समय । —स्थान-प्रव्य० निश्चित स्थान पर ।

जघो-देखो 'जतघो' ।

जव-क्रि० वि० [सं यदा] १ जब । २ देखो 'जादव' ।

जवपत-पु० [सं यादवपति] श्रीकृष्ण ।

जवपि(षी)-क्रि० वि० [सं यद्यपि] घगरचे, यद्यपि ।

जदरथ-पु० जयद्रथ ।

जदराण-पु० [सं यदुराज] श्रीकृष्ण ।

जदवंस-देखो 'जदुवंस' ।

जदि (दी)-क्रि० वि० [सं यदि] १ जब । २ घगर ।

जदीक-क्रि० वि० जद मी ।

जदु(दु)-पु० [सं यदु] १ राजा ययाति के सबसे बड़े पुत्र ।

२ यदुवंशी यादव । ३ श्रीकृष्ण । —कुळ-पु० यदु का वंश । —जंबल, नंबल, नंदन-पु० श्रीकृष्ण । —नाथ, पत, पति-पु० श्रीकृष्ण । —पाळ-पु० श्रीकृष्ण । —पुर-पु० मथुरा नगरी । —राम-पु० बलराम । —राई, राज, राय-पु० श्रीकृष्ण । —वंस-पु० यदुराजा का वंश । —बंसी-पु० यादव, श्रीकृष्ण । —बर, बीर-पु० श्रीकृष्ण ।

जदूली-क्रि० वि० जबसे ।

जदे (दे, हँ)-देखो 'जद' ।

जद्-वि० [फा० ज्यादा] १ अधिक, ज्यादा । २ प्रचंड, बलवान । ३ देखो 'जद' । ४ देखो 'जिद्' ।

जदव-देखो 'जादव' ।

जहाली-वि० यादव वंश का, यादव वंश संबंधी ।

जदुराण-देखो 'जदुराण' ।

जदे (हँ)-देखो 'जद' ।

जहोली-देखो 'जहाली' ।

जद्यपि-क्रि० वि० [सं यद्यपि] घगरचे, यद्यपि ।

जनकेस-पु० राजा जनक ।

जनंगम-पु० [सं०] भंगी, चांडाल ।

जन-पु० [सं०] १ लोक, लोग, मनुष्य । २ प्राणी, जीव ।

३ प्रजा, रथ्यत । ४ व्यक्ति, गण, संसार, दुनिया ।

५ अनुयायी, दास । ६ शृणु, समूह । ७ भक्त । ८ गण ।

९ जन्म, उत्पत्ति । १० संतान, श्रीवाद । ११ सात लोकों में से एक । १२ एक राक्षस का नाम । —वि० १ उत्पादक,

उत्पन्न करने वाला । २ सज्जन । —सर्व० जिस । —क्रि० वि० जब ।

जनम-पु० [सं० जनक] पिता । (जैन)

जनक (कक)-पु० [सं०] १ जन्म दाता, पिता । २ उत्पादक ।

३ मिथिला के राजा निमि के पुत्र एक तत्त्व-ज्ञानी राजा ।

—वि० योग्य । —बंदिणी-स्त्री० सीता ।

—महेस-पु० ब्रह्मा ।

जनकता-स्त्री० उत्पादक शक्ति ।

जनकाणी-स्त्री० सीता, जानकी । —वि० जनक के वंश का या वंश संबंधी ।

जनखौ-पु० [फा०] हिजड़ा ।

जनघर-पु० [सं० जनशृङ्ख] १ मंडप । २ विद्याम स्थल ।

जनचक्षु (चख)-पु० [सं०] १ सूर्य । २ मनु ।

जनचरचा-स्त्री० लोकवाद ।

जनता-स्त्री० [सं०] १ जन समूह । २ प्रजा । ३ उत्पत्ति ।

४ मानव जाति ।

जनन-देखो 'जणण' ।

जननी-देखो 'जणणी' ।

जनपद-पु० [सं०] १ देश, प्रदेश । २ जनता, प्रजा ।

३ राज्य । ४ लोक, जाति । ५ नगरी । ६ मानव जाति ।

जनपाळ-पु० राजा ।

जनमंतर (रि)-पु० [सं० जन्मान्तर] दूसरा जन्म ।

जनमव (मंघ)-वि० [सं० जन्मांघ] जो जन्म से ही भ्रष्टा हो, जन्मांघ ।

जनम-पु० [सं० जन्म] १ उत्पत्ति, पैदाइश । २ उदय, आविर्भाव ।

३ विकास, उद्गम । ४ सृष्टि । ५ जीवन । ६ अस्तित्व ।

७ जन्म कुंडली का एक लग्न । —आठम-स्त्री० मादव

कृष्णा अष्टमी । —गांठ-स्त्री० जन्मदिन । —घूँटी

—स्त्री० बच्चे के जन्म पर दी जानी घूँटी । —तंत्र-पु०

जन्म पत्री । —बिल-पु० प्रति वर्ष आने वाली जन्म की

तिथि । —धरती, भोम-स्त्री० जन्म भूमि, मातृभूमि ।

—संघाती-पु० जन्म भर साथ रहने वाला साथी ।

जनमली (बी)-क्रि० १ जन्म लेना, पैदा होना । २ विकास

होना, उद्गम होना । ३ सृष्टि होना । ४ अस्तित्व में आना ।

जदभ-भरण-मेटण-पु० यी० ईश्वर, परमात्मा ।

जनमांत-पु० [सं० जन्मांत] १ जीवन, जिंदगी । २ जन्मान्तर ।

जनमासी (बी)-क्रि० प्रसव कराना, उत्पन्न कराना ।

जनमेज, जनमेजय, जनमेजे-पु० [सं० जन्मेजय] १ परीक्षित का

पुत्र एक राजा । २ तीप का वंशज एक कुल धातक राजा ।

३ राजा कुरु का पुत्र एक चंद्रवंशी राजा । ४ अविशित का

वंशज एक राजा । ५ एक नाग विशेष । ६ राजा कुरु का

पुत्र एक अन्य राजा । ७ विष्णु ।

जनमोजनम-अव्य० जन्म-जन्म तक ।

जनम्-देखो 'जनम' ।

जनमणी (बो)-देखो 'जनमणी' (बो) ।

जनयतो, (त्री)-स्त्री० [सं० जनयित्री] माता, जननी ।

जनयता-पु० [सं० जनयितृ] पिता, जनक ।

जनया-स्त्री० [सं० जन्या] रात्रि ।

जनरथ-पु० [सं०] १ जनश्रुति । २ लोक निदा । ३ शोर, कोलाहल ।

जनलोक-पु० सात लोकों में से पांचवां लोक ।

जनवास-पु० १ सार्वजनिक निवासस्थान, विश्रामस्थल । २ सभा । ३ देखो 'जानीवासी' ।

जनवासी-देखो 'जानीवासी' ।

जनसंख्या-स्त्री० [सं०] किसी देश या राज्य के निवासियों की संख्या, छाबादी ।

जनस-देखो 'जिनस' ।

जनश्रुति, (ती)-स्त्री० [सं० जनश्रुति] १ अफवाह । २ लोकोपवाद । ३ किवंदती ।

जनहरण-पु० [सं०] दण्डकवृत्त का एक नाम ।

जनां-सर्व० जिस ।

जनांखानी-पु० [फा०] रनिवास ।

जनांनीइयोदी-स्त्री० १ रनिवास । २ रनिवास का द्वार ।

जनानी-वि० [फा० जनात] १ नामर्द, नपुंसक । २ डरपोक, कायर । ३ स्त्रियों की तरह आचरण करने वाला । -स्त्री० १ स्त्री, औरत । २ स्त्री समाज । ३ रानियों का दरबार ।

जनाख (खि)-पु० [फा० जनाख] ठोड़ी, चिबुक ।

जनाजो-पु० [फा०] १ शब्द । २ अर्थी ।

जनाह-पु० देश, राष्ट्र ।

जनारजन, जनारदन-पु० [सं० जनार्दन] १ विष्णु, ईश्वर । २ श्रीकृष्ण ।

जनावर-देखो 'जानवर' ।

जनि-अव्य० निषेध सूचक शब्द 'नहीं' ।

जनित्री-स्त्री० [सं० जनित्रि, जनित्रु] १ माता, जननी । २ पिता ।

जनी-स्त्री० [सं० जनि] १ माता, जननी । २ दासी, सेविका । ३ देखो 'जनि' ।

जनीयित-पु० [सं० जनयितृ] पिता ।

जनु-अव्य० मानो ।

जनुख-पु० [सं० जनुम्] जन्म, उत्पत्ति ।

जनुवी-स्त्री० तलवार ।

जनून-पु० [अ०] पामलपन, उन्माद ।

जनुनी-वि० [अ०] १ पागल । २ देखो 'जगणी' ।

जनमणी-स्त्री० शरीर का श्याम, लाल व चिकना भाग जो जन्म के समय होता है ।

जनैद्र-पु० [सं०] राजा, नृप ।

जनेऊ-पु० १ यज्ञोपवीत, उपनयन संस्कार । २ इस संस्कार के उपरंत शरीर पर धारण किया जाने वाला घागा । ३ जनेऊ की तरह का एक स्वर्णाभूषण । ४ यज्ञोपवीत पहनने के स्थान पर होने वाला रक्त विकार । -उत्तार, कट बढ़, बाढ़, बड़-पु० कंधे से कमर तक तिरछा निकलने वाला तलवार का वार, प्रहार ।

जनेत जनेता-स्त्री० [सं० जनयित्री] माता ।

जनेती देखो 'जानेती' ।

जनेब-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

जनेसर(स्वर)-पु० [सं० जनेश्वर] १ जितेन्द्रिय । २ विष्णु । ३ सूर्य । ४ कुवेर । ५ बुद्ध ।

जनोई-देखो 'जनेऊ' ।

जनो-पु० तलवार की मूठ का एक भाग ।

जन्न-पु० यज्ञ । (जैन)

जन्नक-देखो 'जनक' ।

जन्नट्टी-वि० यज्ञ की इच्छा रखने वाला । (जैन)

जन्नत-स्त्री० [अ०] स्वर्ग ।

जन्नवाइ-पु० यज्ञवादी । (जैन)

जन्नवाड-पु० यज्ञवाट । (जैन)

जन्नसिद्ध-पु० आध्यात्मिक यज्ञ । (जैन)

जन्नारजन-देखो 'जनारजन' ।

जन्म-देखो 'जन्म' । -अष्टमी='जनमआठम' ।

जन्मकील-पु० जन्म-मरण मिटाने वाला, विष्णु ।

जन्मकुंडली-स्त्री० जन्म के समय के ग्रहों का पता लगाने वाला चक्र ।

जन्मभक्त-पु० [सं०] माता-पिता ।

जन्मग्रहण-पु० [सं०] उत्पत्ति ।

जन्मणी (बो)-देखो 'जनमणी' (बो) ।

जन्मतिथि-स्त्री० जन्म का दिन ।

जन्मप, (पति)-पु० [सं०] जन्म की राशि का स्वामी ।

जन्मपत्र (पत्री)-पु० [सं०] जन्म का समय, राशि व लग्नादि के विवरण का पत्रक ।

जन्मप्रहार-पु० जन्म-मरण, छावागमन ।

जन्मभूमि (भूमि)-देखो 'जनमभूमि' ।

जन्मांत, जन्मांतर-पु० [सं०] दूसरा जन्म ।

जन्माधिप-पु० [सं०] १ शिव का एक नाम । २ जन्म लक्ष्म का स्वामी । ३ जन्म राशि का स्वामी ।

जन्माष्टमी-देखो 'जनमआठम' ।

जन्मेस-पु० [सं० जन्मेश] जन्म राशि का स्वामी ।

जन्म-पु० [सं०] १ साधारण मनुष्य, जन । २ राष्ट्र । ३ पुत्र ।
४ पिता । ५ बराती । ६ जन्म । ७ मित्र । ८ किंवदन्ती ।
९ उत्पत्ति, सृष्टि । १० शरीर । -वि० १ उत्पन्न हुआ,
पैदा हुआ । २ किसी कुल या वंश संबंधी । ३ ग्रामीण,
गंवारू । ४ राष्ट्रीय । ५ योग्य, अनुरूप ।

जन्म-देखो 'जन्म' ।

जन्म-स्त्री० [सं० जाह्नवी] गंगा ।

जन्म-पु० [सं०] १ किसी नाम, मंत्र या श्लोक का बारबार किया
जाने वाला उच्चारण । रट, पाठ । २ स्मरण, याद ।
३ सेवा, बंदगी । ४ साधना । -जाप-पु० साधना, मंत्र
पाठ, जप-तप ।

जपणी-स्त्री० १ जप करने की माला । २ ऐसी माला रखने की
थेली । -वि० जप-जाप करने वाला ।

जपणी (बो) -कि० [सं० जप] १ किसी नाम, मंत्र या श्लोक
को बार-बार जपना, रटना, पढ़ना । २ स्मरण करना
याद करना । ३ सेवा करना, बंदगी करना । ४ साधना
करना । ५ कथना, कहना । ६ नींद लेना, झपकी लेना ।
७ शांत होना ।

जपत-देखो 'जन्त' ।

जपतप-सं०पु० [सं०] पूजा-पाठ, संकथा वंदन, तपस्या ।

जपता-स्त्री० जटा ।

जपा-स्त्री० [सं०] गुलाब का फूल या पौधा, झड़वूल ।

जपाणी (बो) -कि० जप कराना, पाठ कराना, रट लगवाना,
जपने के लिये प्रेरित करना ।

जपियो-वि० जप करने वाला ।

जप्त-देखो 'जन्त' ।

जफरतकिया-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

जब-कि०वि० जिस समय ।

जबक-स्त्री० चोट, मार ।

जबड़ी-देखो 'जवाड़ी' ।

जबत-देखो 'जन्त' ।

जबरंग-वि० जबरदस्त ।

जबर-वि० [ग्र०] (स्त्री० जबरी) १ बलवान, शक्तिशाली,
शूरवीर । २ क्रूर, घाततायी । ३ प्रबल । ४ तीव्र, तेज ।
५ अधिक । ६ भयंकर । ७ बढ़िया, श्रेष्ठ । ८ महान् ।

जबरई-देखो 'जबराई' ।

जबरजगनाली-स्त्री० एक प्रकार की तोप ।

जबरण जबरण-कि० वि० [ग्र० जबर] जबरदस्ती, बलात् ।

जबरबस्त-वि० [ग्र०] १ शूरवीर, बलवान, शक्तिशाली ।
२ भयंकर । ३ क्रूर, जुल्मी ।

जबरबस्ती-स्त्री० [ग्र०] १ ज्यादाती, अन्याय, अत्याचार ।
२ प्रबलता । ३ जोरावरी । -कि० वि० बल पूर्वक, बलात्

जबरन-कि० वि० [ग्र० जबर] बलात्, हठात्, दबाव डाल कर ।
मजबूर करके, अनिच्छा से ।

जबराई-स्त्री० [ग्र०] १ ज्यादाती, अन्याय । २ सख्ती ।
३ जबरदस्ती, जोरावरी ।

जबरायल, (येल)-वि० शक्तिशाली, जबरदस्त ।

जबरी-स्त्री० १ ज्यादाती, अन्याय । २ कष्टप्रद कार्य ।
३ जबरदस्ती ।

जबरेल (रैल)-देखो 'जबरायल' ।

जबरोड़ी, जबरी-देखो 'जबर' । (स्त्री० जबरोड़ी, जबरी)

जबल-पु० [ग्र० जबल] पहाड़, पर्वत ।

जबह-देखो 'जिबह' ।

जबां, जबांन-स्त्री० १ जिह्वा, जीभ । २ दासी, बोली ।
३ वचन, शब्द । ४ वादा, संकल्प, प्रतिज्ञा । ५ वाचालता,
तर्क-वितर्क । ६ बहस ।

जबांनो-वि० [फा०] १ मौखिक, मुख से कहा हुआ । २ कंठस्थ ।
३ जो हर समय याद रहे, जबांन पर रहे ।

जबाड़ी-पु० [सं० जबा] मुंह का दाहों वाला भाग ।

जबाघ-स्त्री० एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ विशेष ।

जबाब-पु० [ग्र०] १ उत्तर । २ बदला । ३ मनाही, इन्कार ।
४ जोड़, बराबरी । -तलब-पु० पूछताछ, समाधान ।

-दाबी-पु० मजालत में प्रतिवादी का प्रत्युत्तर । -बैह
-वि० उत्तरदाई, जिम्मेदार । -बेही-स्त्री० जिम्मेदारी,
उत्तरदायित्व । -सवाल-पु० प्रश्नोत्तर, पूछताछ, बहस ।

जबाबी-वि० १ जबाब के लिये किया गया । २ जबाब संबंधी ।

जबाबू-देखो 'जबाब' ।

जबुफल-पु० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।

जबून-वि० [फा० जबून] बुरा, खराब, नीच ।

जबेह-देखो 'जिबह' ।

जबोड़, जबोड़ी-पु० १ प्रहार, चोट । २ देखो 'जवाड़ी' ।

जब्त-पु० [ग्र०] १ शासन द्वारा किसी वस्तु या संपत्ति का
बलात् हरण, कब्जे में लेने का कार्य या भाव । २ प्रबंध,
निगरानी । ३ सहनशीलता । -वि० अधिकार में, कानू में ।

जब्ती-स्त्री० [ग्र०] जब्त होने की क्रिया ।

जब्ब-देखो 'जब' ।

जब्बर-देखो 'जबर' ।

जब्बू-देखो 'जबून' ।

जबन-देखो 'जबरन' ।

जबै-देखो 'जिबह' ।

जमंद-पु० जामुनी रंग का घोड़ा ।

जमंधर-देखो 'जमधर' ।

जम-पु० [सं० यम] १ एक साथ पैदा होने वाले वस्त्रों का
जोड़ा, यमज । २ दक्षिण दिशा का दिक्पाल और मृत्यु का

देवता । ३ मन व इंद्रिय का निग्रह । ४ मन को धर्म की ओर उन्मुख रखने का साधन, योग के आठ अंगों में से एक । ५ कौवा । ६ शनिश्चर । ७ विष्णु । ८ वायु । ९ यमराज, १० दो की संख्या । -वि० अन्धा । -क्रि० वि० जैसे ।

जमक-देखो 'यमक' ।

जमकात, जमकातर-पु० १ संवर । २ यम का खांडा । ३ एक प्रकार की छोटी तलवार ।

जमन-पु० [सं० यमक] १ देव कुह । २ उत्तर कुक्षेत्र के एक पर्वत का नाम । ३ एक पक्षी विशेष ।

जमघंट-पु० [सं० यमघंट] १ यमराज का घंटा । २ दीपावली का दूसरा दिन । ३ देखो 'जमघंटजोग' ।

जमघंटजोग (योग)-पु० [सं० यमघंटयोग] शास्त्रोक्त एक अशुभ मुहूर्त विशेष ।

जमघट (ट्ट)-पु० १ मनुष्यों की भीड़ । २ जमाव । ३ एकत्रीकरण । ४ समूह ।

जमड़ी-देखो 'जमी' ।

जमचक-पु० [सं० यमचक्र] यमराज का शस्त्र ।

जमज-पु० एक साथ जन्मे बच्चों का युग्म ।

जमजनक-पु० [सं० यमजनक] सूर्य ।

जमजाळ-पु० १ यम का फंदा, यमपाश । २ बीर, योद्धा । ३ एक प्रकार की छोटी तोप, बन्दूक ।

जमसमा-स्त्री० तार बाजों को बजाने की एक क्रिया ।

जमसाळ-देखो 'जमजाळ' ।

जमडंड (डो)-पु० १ यमराज द्वारा प्रदत्त दण्ड । २ यमराज का डंडा ।

जमडड (डड, डड, डडा, डडड)-स्त्री० [सं० यमदंष्ट्रा] १ कुपाण । २ कटार ।

जमडांण (डांणी)-पु० यमदूत ।

जमडाड (डाड)-देखो 'जमडड' ।

जमडाडाळ-वि० यमराज के समान बीर, योद्धा ।

जमण, जमणा-देखो 'जमना' ।

जमणवार-देखो 'जोमणवार' ।

जमणिका-देखो 'जवनिका' ।

जमणिपा-स्त्री० [सं० जमनिका] साधुओं का एक उपकरण विशेष (जैन) ।

जमणी-देखो 'जमना' ।

जमणौ (बौ)-क्रि० १ पानी का बर्फ होना । २ द्रव पदार्थ का ठोस बनना । ३ ठंडा पूर्वक बैठना । ४ निश्चित होकर बैठ जाना । ५ एकत्र, जमा होना । ६ दूध का दही होना । ७ चोट लगना । ८ अश्वस्त होना, दक्ष होना । ९ टिकना, ठहरना । १० उचित प्रबंध होना । ११ घोड़े का दमक चलना ।

जमतात-पु० [सं० यमतात] सूर्य ।

जमवंत-पु० [सं० यमदंष्ट] प्राण घातक वस्तु ।

जमडड, जमडडड (डडडा)-देखो 'जमडड' ।

जमदास-पु० यमदूत ।

जमदिस (दिसा)-स्त्री० [सं० यमदिशा] दक्षिण दिशा ।

जमदूत-पु० [सं० यमदूत] यम का दूत ।

जमदेवता-पु० १ यमराज । २ भरणी नक्षत्र ।

जमदड़, (दाड़)-देखो 'जमडड' ।

जमद्वार-पु० यमलोक का द्वार ।

जमघर-पु० कटांगीनुमा एक शस्त्र ।

जमन-पु० १ यवन । २ जमुना । -घात-पु० यमराज ।

जमना-स्त्री० [सं० यमुना] १ उत्तर भारत की एक बड़ी नदी । २ दुर्गा, देवी । ३ संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक पुत्री । ४ यम की बहन, यमी ।

जमनायण-पु० मुसलमान ।

जमनाह-पु० यमराज ।

जमनि (जी)-पु० १ एक बहुमूल्य पत्थर, रत्न । २ देखो 'जमना' ।

जमनीतरी-स्त्री० गढ़वाल के पास का एक पर्वत ।

जमना-देखो 'जमना' ।

जमपास-स्त्री० [सं० यमपाश] यमपाण, मृत्यु का बंधन ।

जमपिता-पु० नूर्य ।

जमपुर (पुरी)-पु० १ यमलोक । २ नरक । -स्यांस-पु० यमराज ।

जमबाहण-पु० [सं० यम-बाहन] भैंसा ।

जमबीज-स्त्री० [सं० यम-द्वितीया] १ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया । २ कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया ।

जममगनी-स्त्री० [सं० यममगिनी] यमुना ।

जमया-स्त्री० [सं० यमया] नक्षत्र संबंधी एक योग ।

जमरथ-पु० [सं० यमरथ] भैंसा ।

जमराण (णी), जमराउ (राज, राव)-पु० [सं० यमराज] १ मृत्यु के देवता, यम, काल । २ मृग ऋषि । ३ योद्धा, बीर । -पिता-पु० सूर्य ।

जमरुव-पु० एक प्रकार का फल ।

जमरुप-पु० कटार ।

जमरौ-देखो 'जमराण' ।

जमल (उ)-वि० [सं० यमल] १ युग्म, जोड़ा । २ दूग्म । ३ साथ ।

जमलज्जुणभंजग-पु० [सं० यमलाज्जुनभंजक] श्रीकृष्ण ।

जमलपय-पु० [सं० यमलपद] आठ-आठ का एक जत्था । (जैन)

जमला-क्रि० वि० [सं० यमल] एक माथ, एक मुश्त ।

जमला-स्त्री० [सं० यमला] एक प्रकार का दिक्का रोग ।

जमलारजुण(न)-पु० [सं० यमलार्जुन] गोकुल स्थित दो अर्जुन वृक्ष विशेष ।

जमलि, जमली (तु)-देखो 'जमला' ।

जमलोडप-पु० [सं० यमलोकि] यमलोकवासी देवता ।

जमलोकि-पु० [सं० यमलोक] १ यमपुरी । २ नरक ।

जमवान-देखो 'जवान' ।

जमवार-स्त्री० [सं० यम-वेला] १ मृत्यु का समय, अवसान काल । २ जीवन ।

जमवारउ, जमवाक (वारी)-देखो 'जमारी' ।

जमवाहण-देखो 'जमवाहण' ।

जमसाव-पु० [सं० यम-माद] प्रिय की मृत्यु पर किया जाने वाला रुदन ।

जमहंता-वि० [सं० यमहंत] काल का विनाश करने वाला ।

जमहनक-पु० सफेद पाँव व काले शरीर वाला घोड़ा ।

जमहर-पु० [सं० जन्म-हर] १ यमराज । २ चिता । ३ जीहर ।

जमहार-पु० जवाहरात ।

जमानत-स्त्री० [अ० जमानत] किसी अपराधी की अदालत में उपस्थिति तथा कर्जदार के चुकारे के प्रति ली जाने वाली जिम्मेदारी । —नामो-पु० उक्त कार्यों के प्रति लिखा जाने वाला पत्र ।

जमानती-वि० जमानत देने वाला, जामिन ।

जमानावाज (साज)-वि० अवसरवादी ।

जमानासाजी-स्त्री० अवसरवादिता ।

जमानो-पु० [अ० जमानः] १ समय, वक्त, काल । २ फसल, पैदावार । ३ संसार, दुनिया । ४ वर्ष, साल ।

जमारत-देखो 'जुमेरात' ।

जमा-वि० [अ०] १ एकत्र, इकट्ठा, संग्रहीत । २ अमानत के तौर पर रखा हुआ । ३ प्राप्त किया हुआ । —स्त्री० १ मूल धन, पूँजी । २ रूपया, धन । ३ मालगुजारी, लगान । ४ योग, जोड़ । ५ आय, आमदनी । ६ आय लिखने का बही का भाग । ७ यमुना नदी । ८ दक्षिण दिशा । ९ यम लोकपाल की राजधानी । १० यमराज ।

जमाइ (ई)-पु० [सं० जामात] १ दामाद, जामाता । २ एक लोक गीत विशेष । ३ जमाने की क्रिया । ४ इस कार्य की मजदूरी ।

जमाउ-वि० १ अविचल निश्चल । २ अटल ।

जमाखरच-पु० आय-व्यय ।

जमाखातर (री), जमाखातिर-स्त्री० [अ० खातिरजमा] इतमिनात, तमली ।

जमाज-पु० [सं० यमाद] ऊँट ।

जमाशी (बी)-क्रि० १ पानी का बर्फ करना । २ द्रव पदार्थ को ठोस बनाना । ३ दहला पूर्वक बैठाना । ४ ठीक व्यवस्था करना । ५ अपने अधिकार या प्रभुत्व में करना । ६ एकत्र या इकट्ठा करना । ७ दूध में छाछ मिलाकर दही बनाना । ८ चोट लगाना, घायात करना । ९ अभ्यास करना, हाथ साफ करना । १० डट कर खाना । ११ अच्छी तरह से कार्य संचालन करना । १२ छोड़े का ठुमक-ठुमक चलना । १३ प्रयोग या सेवन करना ।

जमात-स्त्री० [अ० जमाअत] १ बहुत से व्यक्तियों का गिरोह, जत्था । २ सेना, फौज । ३ साधुओं की मंडली । ४ कक्षा, दर्जा, वर्ग । —बार=जमादार' ।

जमाता-पु० जवाई, जामाता ।

जमातात-पु० [सं० यमुना-तात] सूर्य, रवि ।

जमाति (ती)-वि० जमात में रहने वाला । —पु० १ जमाता । २ देखो 'जमात' ।

जमाद-देखो 'जमाज' ।

जमावार-पु० [फा०] १ कुछ सिपाहियों का प्रधान । २ बड़ा सिपाही । ३ पहरेदार । ४ नगरपालिका का एक कर्मचारी ।

जमावारी-स्त्री० [फा०] १ जमादार का कार्य । २ जमादार का पद ।

जमापिता-पु० यमुना पिता, सूर्य ।

जमाबंदी-स्त्री० १ कई व्यक्तियों द्वारा एक ही स्थान पर जमा कराई हुई रकम । २ लगान संबंधी, पटवारी का एक प्रपत्र ।

जमाभेवण-देखो 'जमुनाभेदी' ।

जमावरद-देखो 'जवानरद' ।

जमावत-देखो 'जमात' ।

जमार, जमारइ, जमारउ-देखो 'जमारी' ।

जमारी-पु० [सं० यमारी] विष्णु ।

जमारीक-पु० जीवनधारी, प्राणी ।

जमारी-पु० [सं० जन्म-कार] १ जीवन, जिन्दगी । २ आयु । ३ जन्म । ४ योनी, जूग ।

जमालगोटी (घोटी)-पु० १ एक पीवे का बीज जो दस्तावर होता है । २ दन्ती पेड़ का फल ।

जमासि-पु० [सं०] महावीर स्वामी के दामाद का नाम ।

जमाव (डी, बट)-पु० १ जमाने की क्रिया या भाव । २ हुकूमत या शासन जमाने का भाव । ३ गोष्ठी । ४ जमघट, भीड़ । ५ पड़ाव, देरा । ६ जमा होने की क्रिया या भाव । ७ संग्रह, एकत्रीकरण । ८ दूध का जावण । ९ एक उदर विकार । १० टिकाव ।

जमावणियो

(४५१)

जयलट्ट

जमावणियो (णी)-पु० दूध जमाने का पात्र । -वि० जमाने वाला ।
 जमावणी (बी)-देखो 'जमाणी' (बी) ।
 जमियत-देखो 'जमीयत' ।
 जमी-देखो 'जमीन' ।
 जमीदार-देखो 'जमींदार' ।
 जमी-स्त्री० [सं० यमी] १ यमुना नदी । २ जमीन ।
 जमीकंब-पु० एक प्रकार का कंद, सूरन ।
 जमीक, जमीकरवत-पु० ऊंट ।
 जमीत-देखो 'जमीयत' ।
 जमीयम-पु० १ योद्धा, वीर । २ राजा ।
 जमीवार-पु० [फा०] भू-स्वामी, जमीन का मालिक ।
 जमीवारी-स्त्री० [फा०] १ जमींदार की जमीन । २ जमींदार का हक ।
 जमीबोज (बोट)-वि० [फा०] १ जमीन के बराबर, समतल । २ जमीन के प्रन्दर । ३ नष्ट, छ्वस्त ।
 जमीन-स्त्री० [फा०] १ पृथ्वी, भूमि । २ पृथ्वी की ऊपरी सतह । ३ कृषि भूमि । ४ मैदान । ५ भू-भाग । ६ कपड़े या कागज की ऊपरी सतह । —भरतार-पु० पृथ्वीपति राजा । जमींदार ।
 जमीयत (रत)-स्त्री० [प्र० जमईयत] सेना, फौज ।
 जमीरोक्षरोत-देखो 'जमीकरवत' ।
 जमुण (णा, ना)-स्त्री० यमुना । —अनुज-पु० यमराज । —भेदो-पु० बलराम ।
 जमुद, जमुदक-पु० [फा० जंबूदक] एक प्रकार की छोटी तोप ।
 जमुरी-पु० [फा० जंबूर] घोड़ों के नाखून काटने का एक नालबंदी का औजार ।
 जमूरक, जमूरी-देखो 'जमुदक' ।
 जमेखातर (खातरौ)-देखो 'जमाखातिर' ।
 जमेरात-देखो 'जुमेरात' ।
 जमेरी-स्त्री० १ मिथी । २ देखो 'जंबोरीनींबू' ।
 जमे-देखो 'जमा' । —खातर='जमाखातिर' । —भरव 'जवांभरद' ।
 जमी-देखो 'जुमी' ।
 जम्म-पु० यम । —घंटा-स्त्री० चौमट योगिनियों में से एक । जमघंट योग ।
 जम्मण-देखो 'जमना' ।
 जम्मणवरिष-पु० जीवन चरित्र ।
 जम्मणभवण-पु० प्रसूती घर ।
 जम्मणी-स्त्री० देवी, शक्ति ।
 जम्मवूती-स्त्री० [सं० यमदूती] यमदूती, दुर्गा, कालिका ।
 जम्मना, जम्मना-देखो 'जमना' ।

जम्मभूमि-स्त्री० [सं० जम्मभूमि] मातृ भूमि ।
 जम्मराण-देखो 'जमराज' ।
 जम्मा-स्त्री० [सं० याम्मा] दक्षिण दिशा ।
 जम्माह (ई)-देखो 'जमाई' ।
 जम्मात-देखो 'जमात' ।
 जम्मारी-देखो 'जमागै' ।
 जम्मी-देखो 'जमीन' ।
 जम्मु-१ देखो 'जनम' । २ देखो 'जबु' ।
 जम्मुना-देखो 'जमना' ।
 जम्मी-देखो 'जुमी' ।
 जयंत-पु० [सं०] १ एक रुद्र । २ इन्द्र के एक पुत्र का नाम । ३ संगीत में एक ताल । ४ स्वामि कार्तिकेय, स्कंद । ५ अक्रूर के पिता का नाम । ६ भीम का एक नामान्तर । ७ दशरथ का एक मंत्री । ८ एक पहाड़ । ९ यात्रा का एक योग । १० जम्मुद्वीप का पश्चिमी द्वार । ११ शिव । १२ चंद्रमा । १३ एक जैन मुनि । १४ रुचक पर्वत का एक शिखर । —यत्र-पु० अश्वमेधीय अश्व के ललाट पर बांधा जाने वाला पत्र ।
 जयंता (ती)-स्त्री० [सं० जयंती] १ ध्वजा, पताका । २ विजयिनी । ३ इन्द्र पुत्री । ४ दुर्गा का नाम । ५ पार्वती । ६ किसी महापुरुष की जन्म तिथि का महोत्सव । ७ ज्योतिष का एक योग । ८ सातवें जिन देव की माता का नाम । ९ प्रत्येक पक्ष की नवमी रात्रि का नाम ।
 जय-स्त्री० [सं०] १ विजय, जीत । २ सफलता । ३ संयम, निग्रह । ४ सूर्य । ५ इन्द्र पुत्र जयंत । ६ युधिष्ठिर । ७ विष्णु के द्वारपालों में से एक । ८ अर्जुन की एक उपाधि । ९ पताका विशेष । १० मार्ग । ११ ज्योतिष में ३, ८ व १३ की तिथियां । १२ विश्वामित्र का एक पुत्र । १३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । १४ संसार । १५ छप्पय छंद का एक भेद । १६ प्रयत्न, कोशिश । —कंकण-पु० विजयी पुरुष को दिये जाने वाले स्वर्ण कंकण (कंगन) । —करणसत्र-पु० वीर अर्जुन । —कार, कारौ-पु० जयध्वनि, जयजय कार । —गोपाल-पु० एक प्रकार का अभिवादन । —घोस-पु० जैजकार का भारी शब्द । —ठक-पु० विजय सूचक वाद्य । —माळी-स्त्री० विजय, जीत के उल्लास में धारण कराई जाने वाली माला ।
 जयजयकार (कारू), जयजयकार-देखो 'जैजकार' ।
 जयण-पु० [सं० यजन] १ याम, पूजा । २ अभयदान । ३ विजय, जीत । ४ प्राणी की रक्षा । ५ यत्न, उद्योग । —वि० १ वेगवान । २ जोरने वाला ।
 जयलट्ट-क्रि० वि० [सं० यत्नार्थ] जीव रक्षार्थ ।

जयगा-स्त्री० [सं० यत्ना] १ चेष्टा, प्रयत्न कोशिश। (जैन)
 २ प्राणी की रक्षा। (जैन) ३ हिंसा का परित्याग।
 ४ दया। ५ विवेक। ६ उपयोग। (जैन)
 जयत-पु० १ जयघोष, जयध्वनि। २ जय-विजय।
 जयतसिरी-देखो 'जयस्त्री'।
 जयती-देखो 'जयंती'।
 जयदेव-पु० गीत गोविन्द के रचयिता एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि।
 जयद्रह (द्रव्य, द्रव्य, द्रवि, द्रवू, द्रव्य)-पु० [सं० जयद्रव्य]
 दुर्योधन का वहनोई व सिंधु देश का राजा।
 जयध्वज-पु० [सं०] जयध्वजा, पताका, जयंती।
 जयनी-स्त्री० [सं०] इंद्र की कन्या।
 जयनैर-पु० जयपुर नगर।
 जयपत्तु, जयपत्र-पु० [सं०] १ पराजित राजा द्वारा विजयी
 राजा को लिखा जाने वाला पत्र। २ अश्वमेध यज्ञ के अश्व
 के ललाट पर बंधा रहने वाला पत्र।
 जयपाल-पु० [सं० जयपाल] १ जमाल गोटा। २ विष्णु।
 ३ राजा।
 जयप्रिय-पु० [सं०] एक प्रकार की ताल।
 जयमंगल-पु० [सं० जयमंगल] १ विजयी राजा की सवारी का
 हाथी। २ ताल का एक भेद। ३ शुभ रंग का एक
 घोड़ा विशेष। ४ ऊपर की एक भौषधि।
 जयमल्लार-पु० सम्पूर्ण जाति का एक राग।
 जयमाताजी-स्त्री० शाक्त लोभों का एक अभिवादन।
 जयमाल (माला)-स्त्री० [सं० जयमाला] १ विजयी राजा को
 पहनाई जाने वाली माला। २ स्वयंवर में किसी पुरुष को
 वरण करके स्त्री द्वारा पहनाई जाने वाली माला।
 जयरामजी-स्त्री० एक अभिवादन विशेष।
 जयवंत, जयवन्त-वि० [सं०] विजयी, जीता हुआ।
 जयसंधि-पु० [सं०] पुंडरीक राजा का एक मंत्री। (जैन)
 जयसद्-पु० जयध्वनि।
 जयसागर-पु० [सं० जयसागर] एक मुनि का नाम। (जैन)
 जयस्तम्भ-पु० [सं०] विजय स्तम्भ।
 जयस्त्री-स्त्री० [सं० जयस्त्री] १ विजयस्त्री, लक्ष्मी। २ संक्षय
 समय की एक रागिनी। ३ ताल के साठ भेदों में से एक।
 जयहाथ-पु० [सं० जयहस्त] अर्जुन।
 जयहार-पु० विजय माला।
 जया-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ पार्वती। ३ हरी दूब।
 ४ हरीतकी, हड़। ५ दुर्गा की एक सहचरी। ६ ध्वजा,
 पताका। ७ तृतीया, अष्टमी व त्रयोदशी की तिथियां।
 ८ माघ शुक्ल एकादशी। ९ यमुना नदी। १० सोलह
 मातृकाओं में से एक। ११ भाग। १२ बारहवें तीर्थंकर की

माता का नाम। (जैन) १३ चौथे चक्रवर्ती की मुख्य स्त्री।
 १४ एक प्रकार की मिठाई।-वि० विजय दिलाने वाली।
 -क्रि० वि० जब, जिस वक्त, यदा।
 जयार-सर्व० जिनका।-क्रि० वि० १ जब। २ तक, पर्यन्त।
 -मयार-पु० 'ज' कार 'म' कार। अपभ्रंश। (जैन)
 जयावती-स्त्री० १ एक स्कन्द मातृका। २ एक रागिनी विशेष।
 जयी-पु० [सं० ययी] १ शिव। २ घोड़ा। ३ मार्ग, रास्ता।
 ४ अश्वमेध का घोड़ा।
 जयु-पु० [सं० ययु] अश्वमेध का घोड़ा।
 जयेत-पु० [सं०] एक राग विशेष।-गोरी-स्त्री० एक संकर
 रागिनी।
 जयोड़ी-देखो 'जायोड़ी' (स्त्री० जयोड़ी)
 जयी-पु० 'जय हो' का अभिवादन।
 जरंत-पु० मैसा, महिष।
 जरंब-पु० १ प्रहार, चोट। २ प्रहार की ध्वनि। ३ किसी के
 गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
 जरंबी-वि० हजम करने वाला।-पु० १ एक ध्वनि विशेष।
 २ दुसाला। ३ उपयोग।
 जर-स्त्री० १ चम्मचनुमा चलनी। २ धन, सम्पत्ति। ३ गर्भस्थ
 बालक पर रहने वाली किल्ली। ४ वृद्धावस्था। ५ सोना,
 स्वर्ण। ६ लोहे का मुरचा। ७ ऊपर।
 जरई-स्त्री० अंकुर निकले हुए धान के बीज।
 जरक-स्त्री० १ मोच, चोट। २ खरोंच, घाव। ३ प्रहार
 की ध्वनि। ४ स्वर्ण स्रण्ड। ५ देखो 'जरख'।
 जरकणी (बी)-क्रि० १ मोच पड़ना, चोट लगना। २ खरोंच
 लगना, घाव पड़ना। ३ प्रहार की ध्वनि होना। ४ गिरना।
 जरकस (कसिया), जरकसी (सौ, सस)-वि० १ स्वर्ण मंडित।
 २ स्वर्ण तारों में से युक्त।
 जरकाणी (बी), जरकावणी (बी)-क्रि० १ मारना, पीटना।
 २ जमकर खाना। ३ प्रहार करना।
 जरकी-वि० १ कायर, डरपोक। २ देखो 'जरक'।
 जरकी (वक)-देखो 'जरक'।
 जरख (ख)-पु० [सं० जरख] लकड़बग्घा।-बाहरी-स्त्री०
 डाकिनी, चुड़ैल।
 जरखेज-वि० [फा०] उपजाऊ, उर्वरा।
 जरगारखाना-पु० राजा-बादशाह या शासक का हीरे-जवाहरात,
 आभूषणों का भण्डार।
 जरग-त्रि० [सं० जरक] १ जीर्ण, पुराना। २ देखो
 'जरगव'।
 जरगव-पु० [सं० जरगव] १ लकड़बग्घा। २ बूढ़ा बैल।
 जरघर-पु० स्वर्णकार, मुनार।

जरड़-स्त्री० १ वस्त्र के फटने या चिरने से उत्पन्न ध्वनि ।
 २ सहसा चीरने या फाड़ने की क्रिया या भाव ।
 जरड़ो-वि० १ अशिक्षित । २ स्वतंत्र रहा हुआ । -पु० छेद, मूराख ।
 जरजर-वि० [सं० जरजर] १ जीर्ण-शीर्ण । २ पुराना ।
 ३ टूटा-फूटा, खंडित । ४ वृद्ध ।
 जरजराना-स्त्री० स्वामि कात्तिकेय की एक अनुचरी ।
 जरजरित-वि० [सं० जरजरित] १ पुराना, जीर्ण-शीर्ण ।
 २ टूटा-फूटा । ३ बूढ़ा । ४ निर्बल । ५ घिसा हुआ ।
 ६ खण्ड-खण्ड व बिखरा हुआ । ७ निकम्मा किया हुआ ।
 जरजरी-स्त्री० १ एक प्रकार का आभूषण । २ एक प्रकार का जलपात्र ।
 जरजीत-पु० [सं० जरजित] कामदेव ।
 जरठ, जरड़-वि० [सं० जरठ] १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना । २ वृद्ध, बूढ़ा । ३ कर्कश । ४ कठिन ।
 जरण-स्त्री० [सं० जरा] १ वृद्धावस्था, जरा । २ दश प्रकार के ग्रहणों में से एक । ३ चन्द्रमा । ४ सहिष्णुता ।
 -वि० १ हजम करने वाला, पचाने वाला । २ वृद्ध ।
 जरणा-स्त्री० १ सहन शक्ति । २ क्षमा । ३ वृद्धावस्था ।
 जरणी-स्त्री० १ वृद्धा । २ देशी, दुर्गा । ३ माता ।
 जरणी (बो)-क्रि० १ हजम होना, पचना । २ सहन होना ।
 ३ जलना, भस्म होना । ४ लोहे के जंग लगना ।
 ५ परिपक्व होना । ६ संहार करना ।
 जरत-वि० [सं० जरत्] १ प्राचीन, पुराना । २ वृद्ध ।
 जरतार (ताब)-वि० सलमे सितारे का काम किया हुआ ।
 जरव-पु० १ कवच २ पीला रंग । -वि० पीला । -गव-
 स्त्री० एक नक्षत्र वीथि विशेष । -पोस, बंध-पु० कवच धारी योद्धा ।
 जरवाउळि (बाळ, बाळि, बाळू, बाळी)-पु० १ कवच । २ कवच-
 धारी योद्धा । ३ खुरबानी मेवा । -वि० तंबाकू का व्यसनी ।
 जरबी-स्त्री० १ पीलापन । २ अंडे के भीतर का पीला माग ।
 जरबुस्त-पु० [फा०] फारसी धर्म का प्रतिष्ठता ।
 जरबेत-पु० [फा०] कवचधारी योद्धा ।
 जरबोज-पु० [फा०] कपड़ों पर कलाबूँती का कार्य करने वाला कारीगर ।
 जरबोजी-स्त्री० कपड़ों पर की जाने वाली दशतकारी ।
 जरबी-पु० [फा० जरदा] १ चावल व मांस के योग से बना एक व्यंजन । २ तम्बाकू के सूखे पत्ते जो पान बाँड़ी में डाले जाते हैं । ३ खाने की मुगंधित सुरती । ४ कवच ।
 ५ पीले रंग का घोड़ा ।
 जरबीत-देखो 'जरबेत' ।
 जरद-देखो 'जरद' ।

जरहाळ-देखो 'जरदाळ' ।
 जरख-स्त्री० [अ० जर्ब] १ चोट, घाघात । २ जंगल, वन ।
 ३ तबले, मृदंग आदि पर लगाई जाने वाली थाप ।
 ४ जूता ।
 जरखफत (बपत)-पु० [फा० जरखफत] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । २ तारी का काम किया हुआ वस्त्र ।
 जरखाफ (खाफ)-पु० [फा० जरखाफ] १ वस्त्रों पर मलमें आदि का कार्य करने वाला कारीगर । २ ऐसा काम किया हुआ वस्त्र ।
 जरखाफी-वि० जिम पर जरखफत किया हुआ हो ।
 जरमी-देखो 'जमीन' ।
 जरघ-पु० [सं० जरक] मेरु के दक्षिण का एक नरक । (जैन)
 -मध्य-पु० उत्तर दिशा का एक नरक । (जैन)
 जरघावस्त-पु० [सं० जरकावर्त] पश्चिम दिशा का एक बड़ा नगर । (जैन)
 जररार-वि० [अ० जरर] बहादुर, वीर ।
 जररारी-स्त्री० बहादुरी, वीरता ।
 जरराही-स्त्री० [अ० जर्राही] शल्य चिकित्सा ।
 जररो-पु० [अ० जर्राह, जर्रा] १ शल्य चिकित्सक ।
 २ कण, धाना ।
 जरस-देखो 'जरख' ।
 जरसो-स्त्री० पूरी आस्तीन का स्वेटर ।
 जरहजोर-पु० एक प्रकार का कवच ।
 जरहर-पु० [सं० जलधर] १ बादल । २ वर्षा ।
 जरा-क्रि० वि० जब ।
 जरा-स्त्री० [सं०] १ वृद्धावाथा, बुढ़ापा । २ निर्बलता कमजोरी । ३ पाचन शक्ति । ४ गहरी नींद । ५ एक राक्षसी । ६ देखो 'जरागुज' । -वि० कम, थोड़ा, किंचित ।
 जराउम्र, (उज, उय, उया)-देखो 'जरागुज' ।
 जराक-वि० जरासा, तनिक । -पु० चोट प्रहार ।
 जराको-पु० १ भय, आतंक । २ चोट, प्रहार । ३ धक्का, भटका ।
 ४ मार ।
 जराशस्त-वि० [सं०] वृद्ध, बुढ़ा ।
 जराजर-क्रि० वि० शीघ्रता से, लगातार । -स्त्री० प्रहार की ध्वनि ।
 जराकूत-पु० श्वेत बाल ।
 जरापाखर-वि० १ मजबूत, दृढ़ । २ मन्द कटिबद्ध ।
 जराबीर (बीर)-पु० [सं० जराबीर] कामदेव ।
 जरापु-पु० [सं०] १ गर्मस्थ शिशु पर रहने वाली भिल्ली ।
 २ केंचुली । ३ गर्भाशय । ४ योनि, भग । ५ जटायु ।
 -ज-पु० गर्म से उत्पन्न होने वाला, पिड्ड ।
 जरारहित-पु० देवता । -वि० जो बूढ़ा न हो ।

जरासंध, (ध) जरासिंध, जरासिंधु(धि,घो)-पुं० [सं० जरासंध]

मगध देश का राजा (महाभारत) ।—खय-पुं० भीम ।

जरासुत (सेन)-पुं० जरासंध का एक नाम ।

जरि, जरिअ-वि० [सं० जरिन्, उवरिन्] १ जरायुक्त, वृद्ध, अतिवृद्ध । २ बुझार से पीड़ित ।

जरिउ-वि० [सं० जीर्ण] पुराना ।

जरियो-पुं० [सं० जरिया] १ चम्पचनुमा छोटी चलनी । २ लगाव, संबंध । ३ साधन । ४ सहारा । ५ संबंध स्थापित करने का तत्त्व, माध्यम ।

जरीब, जरीबो-देखो 'जरब' ।

जरी-स्त्री० [फा०] १ वस्त्रों में लगने वाले सोने, चांदी आदि के नसकीले तार । २ उक्त प्रकार के तारों से युक्त वस्त्र ।

जरीको-पुं० १ चोट, प्रहार, आघात । २ टक्कर ।

जरीब-पुं० [फा०] १ भूमि का एक माप विशेष । २ उक्त माप का उपकरण । —कस-पुं० उक्त उपकरण को खींचने वाला व्यक्ति ।

जरीबानो (मानो, बानो)-देखो 'जुरमानो' ।

जरह (रु)-पुं० १ काबू, वश । २ इस्तिफार, अधिकार । ३ अत्यधिक शीत । —वि० १ वशमें, काबू में । २ मजबूर, विवश । ३ मजबूत, दृढ़ । ४ जबरदस्त, प्रबल । ५ देखो 'जरूर' ।

जरूर-क्रि० वि० [अ०] १ अवश्य, निस्संदेह । २ जब ।

जरूरत-स्त्री० [अ०] आवश्यकता, प्रयोजन ।

जरूरी-वि० [फा०] १ आवश्यक, अनिवार्य । २ खास, विशेष ।

जरूसा-स्त्री० [सं० जरुसा] चार इन्द्रियधारी जीवों की एक जाति । (जैन)

जरे (रे)-क्रि० वि० जब, तब ।

जरोबणीय-पुं० [सं० जरोपनीत] वृद्ध पुरुष । (जैन)

जरो-पुं० १ भय, आतंक, डर । २ देखो 'जर' ।

जलंधर (धर)-पुं० [सं० जलंधर, जलोदग] १ नाथ सम्प्रदाय का एक मिठ । २ एक राक्षस । ३ जालौर नगर । ४ एक उदर रोग विशेष ।

जलंधरी (री)-पुं० १ एक वृक्ष । २ देखो 'जलंधर' । —पाव=देखो 'जलंधरनाथ' ।

जलनिध (निध)-देखो 'जलनिधि' ।

जलंबल-स्त्री० नदी ।

जल-पुं० [सं० जल, ज्वल] १ पानी, नीर । २ शीतलता । ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र । ४ एक सुगंध द्रव्य । ५ किसी पदार्थ का पतला रस । ६ जन्म कुण्डली में चौथा स्थान । ७ कोप, गुस्सा । = आभा कांति, दीप्ति । ८ वीरत्व, वीर्यता । —वि० १ सुस्त । २ शीतल, ठंडा । —आधीन-पुं०

इन्द्र । —आसय-पुं० जलकुण्ड, सरोवर । —ओक-पुं० जलकीट विशेष । —कंत-पुं० मणि विशेष । दक्षिण दिशा का इन्द्र । इन्द्र का एक लोकपाल । —कंतार, कान्त, कांतार-पुं० वरुण । —काक, काग-पुं० जल में रहने वाला कोआ । —कार, कारी-पुं० मेघ, बादल । चारइन्द्रिय एक जीव जाति । —किट्ट-पुं० जल का मेल, काई । —किड़ा, कीड़ा, कीला-स्त्री० श्रीकृष्ण, जलकीड़ा । —कुंभो-स्त्री० जलाशयों के पानी पर फैली रहने वाली वनस्पति । —कूंडियो, कूंडो-पुं० चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई देने वाला वृत्त । —केतु-पुं० पश्चिम में उदय होने वाला पुच्छलतारा । —कोआ= 'जलकाग' । —कीड़-पुं० ईश्वर, श्रीकृष्ण । —कीड़ा-स्त्री० जल विहार । —खानो-पुं० पीने का पानी रखने का कक्ष । —खार-पुं० समुद्र । —ख्यात-पुं० नाविक, केवट । —गंग-पुं० गंगा नदी । —गार-पुं० जलाशय, सरोवर । —गो-पुं० अग्नि । —घस-पुं० मेघ, बादल । —घड़ियो-पुं० विष्णु पूजन में जल लाने वाला व्यक्ति । —घड़ी-स्त्री० कटोरीनुमा एक पात्र जिसमें छेद होता है और जिसे जल में छोड़ कर समय ज्ञात किया जाता है । —चर-पुं० जलजंतु । —चरी-स्त्री० मछली । —चारण-वि० पानी पर चलने वाला । —चारी= 'जलचर' । —छत्र-पुं० कमल । —जत्र-पुं० फव्वारा । —जान-पुं० जलपान, जहाज । —जनम, जात-पुं० कमल, जोंक । —जाळ-पुं० मेघमाला, वनघटा । —जीब, जीवि-पुं० पानी में रहने वाले जीव । —जेता-पुं० वरुण । —जैत-स्त्री० कान्ति, शोभा, यश, कीर्ति । —जोग-पुं० वर्षा का योग । —मूलणी-स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी । —ठाण-पुं० जलाशय, पानी रखने का स्थान । —दाग-पुं० शव को नदी में बहा देने की क्रिया । —दुरग-पुं० चारों ओर पानी से सुरक्षित दुर्ग । —देव, देवता-पुं० वरुणदेव, पूर्वाषाढा नक्षत्र । —द्रव्य-पुं० मुक्ता, शंख आदि द्रव्य । —धारी-पुं० मेघ, इन्द्र, जल पिलाने वाला । —पक्षवद, पक्षवदण-पुं० पानी में डूबने की क्रिया । (जैन) —पत, पति (तो)-पुं० वरुण, समुद्र । —पथ-पुं० नाली, नहर, समुद्री मार्ग । —प्रिय-स्त्री० मछली, चातक । —बाळा, बाळि-स्त्री० विद्युत्, बिजली । —संड, संडण, संडळ-पुं० बादल; मेघ । —संडूक-पुं० एक प्रकार का बाजा । —मारण-पुं० यात्रा का समुद्री मार्ग । —माळ, माळगिरण, माळा-स्त्री० नदी, सरिता । —मुक, मुच-पुं० मेघ, बादल । —रमण (णि, णी)-स्त्री० बिजली, विद्युत्, जलकीड़ा । —रांण, राइ, राट-पुं० समुद्र । —रुट, रुत-पुं० कसन । —सता-स्त्री० लहर । —विभू-पुं० वरुण ।

जलकण्ठी (बी), जलकणी (बी)-देखो 'झलकणी' (बी) ।

जलज-पु० [सं० जलज] १ कमल । २ मोती । ३ शंख ।
 ४ चन्द्रमा । ५ वरुण । —वि० शीतल । —आसन-पु०
 ब्रह्मा । —खल-पु० ईश्वर । —खर-पु० कमल । —हुर-पु०
 हंस, बादल ।
 जलजलाकार-पु० जहाँ सर्वत्र जल ही जल हो ।
 जलजलित-वि० [सं० जाज्वल्यमान] देदीप्यमान ।
 जलजली-वि० १ सजल नयन, डबडबाया हुआ । २ द्रवित ।
 जलजातधूह-पु० कमल के फूल के समान सेना की व्यूह रचना ।
 जलजीव (वि)-पु० जलचर प्राणी ।
 जलजुत-वि० कान्तियुक्त, दीप्तियुक्त ।
 जलण-स्त्री० [सं० ज्वलन] १ दाह, जलन । २ मर्मी, उष्णता ।
 ३ अग्नि । ४ ईर्ष्या, डाह । ५ क्रोध, गुस्सा ।
 ६ अग्नि कुमार देवता ।
 जलणी (बी)-क्रि० [सं० ज्वलनम्] १ आग लगना । २ लपट
 या आगारे के रूप में होना । ३ दग्ध होना । ४ भस्म
 होना । ५ झुलसना । ६ बहुत अधिक ईर्ष्या करना ।
 ७ कोप करना, क्रुद्ध होना ।
 जलसंग (तरंग)-पु० एक प्रकार का बाजा ।
 जलतर (तरण)-पु० १ जहाज नाव । २ ७२ कलाओं में से एक ।
 जलतवाई (ताई)-स्त्री० १ तेल के दीपक व उसके आस-पास
 जमने वाला कीट । २ गंदे स्वभाव का व्यक्ति ।
 जलतोष (ह)-स्त्री० मछली, मीन ।
 जलव (ह)-पु० [सं० जलद] १ मेघ, बादल, घन । २ कपूर
 —वि० १ जल देने वाला । २ देखो 'जल्दी' । —काष्ठ-पु०
 वर्षा ऋतु । —तिताली-पु० संगीत में एक ताल ।
 जलवि (बी)-देखो 'जल्दी' ।
 जलद-वि० जल से भीगा हुआ, आर्द्र, नम ।
 जलध-पु० समुद्र । —आधीन-पु० इन्द्र ।
 जलधर (धरण)-पु० [सं० जलधर] १ बादल, मेघ । २ समुद्र,
 सागर । —केवारा-स्त्री० एक संकर रागिनी । —माळा
 —स्त्री० मेघमाला ।
 जलधरियो-पु० १ मेघ, बादल । २ जल लाने वाला व्यक्ति ।
 जलधरी-स्त्री० १ पत्थर या धातु की बनी अर्घा जिस पर
 शिवलिंग स्थापित किया जाता है । २ देखो 'जलेरी' ।
 जलधार (धारा)-स्त्री० [सं० जलधारा] १ नदी । २ नहर ।
 ३ पानी का प्रवाह । ४ तेज धार वाली कटारी या तलवार ।
 ५ पानी की धारा के नीचे बैठकर की जाने वाली तपस्या ।
 जलधि-पु० [सं० जलधि] समुद्र ।
 जलधिगा-स्त्री० [सं० जलधिगा] १ नदी, सरिता । २ लक्ष्मी ।
 जलधिज-पु० [सं० जलधिज] चन्द्रमा, शशि ।
 जलधिपा-स्त्री० [सं० जलधिगा] १ नदी, सरिता । २ लक्ष्मी ।
 जलनध-देखो 'जलनिधि' ।

जलनवास (निवास)-पु० [सं० जल-निवास] १ पानी के बीच
 बना महल । २ जल के अन्दर निवास ।
 जलनायिका-स्त्री० जलक्रीड़ा या स्नानागार में साथ रहने
 वाली स्त्री ।
 जलनिध (निधि, निधी)-पु० १ समुद्र, सागर । २ जल का
 भण्डार । —राज-पु० महासागर ।
 जलनिर्वाण-पु० [सं० जल-निर्वाण] पाताल, रसातल ।
 जलपणी (बी), जलपणी (बी)-क्रि० [सं० जल्प] १ बोलना,
 कहना । २ बातचीत करना । ३ आवाज करना । ४ बड़-
 बड़ाना । ५ तुतलाना । ६ गप्प लगाना ।
 जलपरवा (वाई)-स्त्री० ईशान कोण की वायु ।
 जलपराधी-क्रि० वि० समुद्र पर्यन्त । (जैन)
 जलपवेश-पु० [सं० जलप्रवेश] पानी में घुसने या डूबने की क्रिया ।
 जलपान-पु० स्वल्पाहार, नाश्ता ।
 जलपू (पी, फू)-पु० १ अन्नक, भोडल । २ घटिया किस्म का
 वरक । ३ पतला व चमकीला कागज ।
 जलप्यम (ह)-पु० [सं० जलप्रभ] १ इन्द्र के चौथे लोकपाल का
 नाम । २ एक इन्द्र विशेष । (जैन)
 जलफळ-पु० बांस ।
 जलबब-वि० कान्ति युक्त । —पु० जल प्रलय ।
 जलबटो-देखो 'जलवट' ।
 जलबलजामी-पु० इन्द्र ।
 जलबालक-पु० विध्याचल पर्वत ।
 जलबिडाल-पु० ऊदबिलाव ।
 जलबेत-पु० जलाशयों के निकट होने वाला एक वृक्ष विशेष ।
 जलबोल-देखो 'जलाबोल' ।
 जलमगरी (मांगरी)-पु० एक श्रौषधि विशेष ।
 जलम-देखो 'जनम' । २ देखो 'जुस्म' । —पतरी='जनम-
 पत्री' । —धीम='जनमधूमि' ।
 जलमई-वि० जलयुक्त, जलपूर्ण ।
 जलमणी (बी)-देखो 'जनमणी' (बी) ।
 जलमांतर-देखो 'जनमांतर' ।
 जलमानस-पु० एक कल्पित जल मानव जिसका आधा भाग
 मछली का होता है ।
 जलमणी (बी)-देखो 'जनमणी' (बी) ।
 जलमात्रका-स्त्री० [सं० जलमानृका] जल में रहने वाली सात
 मातृकाएं ।
 जलमाखणी (बी)-देखो 'जनमणी' (बी) ।
 जलमित, जलमित्र-पु० [सं० जलमित्र] दूध ।
 जलमुरगाई-स्त्री० छोटी बतख ।
 जलय-१ देखो 'जलद' । २ देखो 'जलज' ।

जलधर (री)-पु० [सं० जलचर, चरी] १ जल के प्राणी ।
 २ मछली ।
 जलयात्रा-पु० [सं० जलयान] १ नाव । २ जहाज ।
 जलयात्रा-स्त्री० १ समुद्रीमार्ग से की जाने वाली यात्रा । २ पवित्र
 जल लाने के लिये की जाने वाली यात्रा । ३ देवोत्थापिनी
 एकादशी का उत्सव । ४ ज्येष्ठ की पूर्णिमा का एक उत्सव ।
 जलयात्रा-पु० जलागार, समुद्र ।
 जलरश्मि-पु० [सं० जलरत्न] इन्द्र के लोकपाल का नाम । (जैन)
 जलरक्षक-पु० [सं० जलरक्षस] १ राक्षसों का पाँचवाँ भेद ।
 २ देखो 'जलरक्षक' ।
 जलरक्षक-पु० [सं०] वरुण ।
 जलरास (सि, सी)-पु० [सं० जलराशि] १ कर्क, मकर, कुंभ
 और मीन राशियाँ । २ समुद्र ।
 जलरिप-पु० वायु, पवन ।
 जलरूप, जलरूप-पु० [सं० जलरूप] १ मगर घड़ियाल ।
 २ उदधि कुमार के इन्द्र जलकांत के तीसरे लोकपाल का
 नाम । (जैन)
 जलल-वि० १ प्रति क्रोधी । २ भयंकर । ३ भारी ।
 -पु० १ दण्ड, सजा । २ युद्ध, संग्राम ।
 जलघट (टो, टू)-पु० [सं० जलवाट] १ जल मार्ग । २ समुद्र ।
 ३ द्वीप, टापू । -राघ-पु० विष्णु ।
 जलघटजामी-पु० इन्द्र ।
 जलघट (वहण)-पु० [सं० जलवाह] मेघ, बादल ।
 जलवा-स्त्री० नव प्रसूता स्त्री द्वारा किया जाने वाला जल पूजन ।
 जलवाणी (बी)-देखो 'जलाणी' (बी) ।
 जलवासी-पु० जलचर जीव ।
 जलवाह-पु० [सं० जलवाह] मेघ, बादल ।
 जलधिभू पु० [सं० जलविभू] वहण ।
 जलधिमुव-पु० [सं० जलविपुव] तुला संक्रान्ति का योग ।
 जलध्यात्र-पु० [सं० जलध्यात्र] सीन जानि का एक
 हिंसक जीव ।
 जलध्याल-पु० १ पानी में रहने वाला सर्प । २ मेंढक ।
 जलवृक्ष (वृक्ष)-पु० [सं० जल वृक्ष] कमल आदि पौधे ।
 जलसंवत-पु० वहण ।
 जलसपणी-स्त्री० [सं० जलसपिणी] जौक ।
 जलसाई (साई)-पु० [सं० जल स्वांमी, जलशायिन्] १ ईश्वर ।
 २ विष्णु । ३ इन्द्र । ४ वहण ।
 जलसीप-स्त्री० [सं०] मोतीवाला सीप ।
 जलसीर-स्त्री० जमीन ।
 जलमुत-पु० कमल ।

जलमृग-पु० [सं० जलमृग] जलकांत इन्द्र के दूसरे लोक
 पाल का नाम ।
 जलसोयवाह-स्त्री० [सं० जलसोचवादिन] पानी से शुद्धि मानने
 वाले तपस्वियों की शाखा ।
 जलसी-पु० [सं० जलसा] ध्यानन्दोत्सव ।
 जलस्तंभिनी-स्त्री० एक प्रकार की विद्या ।
 जलसाय-पु० [सं० जलसाय] सूर्य, भानु ।
 जलहड्ड-पु० मोती, मुक्ता ।
 जलहर-१ सूर्य, भानु । २ पवन, वायु । ३ देखो 'जलधर' ।
 -जामी-पु० इन्द्र ।
 जलहल-स्त्री० चमक, रोशनी ।
 जलहलणी (बी)-कि० चमकना, झलकना ।
 जलहली-वि० आग वज्रला, अतिक्रुद्ध ।
 जलहली-पु० सात-आठ फुट लंबा सील जाति का जल जंतु ।
 जलहि-देखी 'जलधि' ।
 जलजली-स्त्री० पानी से भरी झंजली ।
 जलधीस-देखो 'जलाधीस' ।
 जला-स्त्री० १ फौज, सेना । २ अपार सम्पत्ति, द्रव्य, धन ।
 ३ लक्ष्मी । ४ माया । ५ बड़ी आपत्ति । ६ फैला हुआ
 सामान । ७ आशा, कांति ।
 जलाकांक्ष-पु० हाथी ।
 जलाकार-पु० सर्वत्र जल ही जल हो जाने की अवस्था ।
 जलाणी (बी)-कि० [सं० जलान्] १ किसी वस्तु के आग लगाना,
 आग में संयुक्त करना । २ अधिक गर्मी या ताप देकर
 झुलसाना । ३ चढ़ाना, कुढ़ाना । ४ सताना, व्यथित
 करना । ५ दग्ध करना, दागना । ६ जलन पैदा करना ।
 जलापर-देखो 'जलधर' ।
 जलाधिप-पु० [सं० जलाधिप] १ वहण । २ संवत्सर में जल
 का अधिपति ग्रह ।
 जलाधीस-पु० [सं० जलाधीश] १ समुद्र । २ वहण ।
 जलाबोळ-वि० १ भयंकर, विकट । २ जलप्लावित । ३ वैभव
 पूर्ण, ऐश्वर्य पूर्ण । ४ गहरा व पूर्ण हुआ, रंग से तर ।
 ५ चमकता हुआ । ६ क्रोधपूर्ण । -पु० १ समुद्र ।
 २ विनाश । ३ संहार । ४ बुरा समय, खराब ससय ।
 जलायत-देखो 'जलायत' ।
 जलाल-पु० १ प्रेमी, प्रियतम । २ पति । ३ राजस्थानी लोक
 गीतों का एक उदार नायक । -वि० १ प्रकाश मान ।
 २ नेजस्वी, कान्तिमान ।
 जलालिनी-पु० [सं० जलालिनी] १ दरवाजे के बीच लगा रहने
 वाला पत्थर । २ बलवान व्यक्ति । ३ ईश्वर के जलाली
 रूप का उपासक । ४ एक प्रकार का फकीर ।
 जलालोक-पु० [सं० जलालुक] जौक ।

जलाली (ल्यौ)-वि० १ दृढ़, मजबूत । २ जबरदस्त, जोरदार ।
 ३ देखो 'जलाल' । ४ देखो 'जलालियौ' ।
 जलावण-वि० जलाने वाला, भस्म करने वाला ।
 जलावणौ (बी)-देखो 'जलाणी' (बी) ।
 जलासय-पु० [सं० जलाशय] सरोवर, तालाब, जल-कुण्ड ।
 जलाहल-स्त्री० १ चमक-दमक । २ तेज प्रकाश । ३ समुद्र ।
 -वि० १ देशीयमान । २ प्रखलित ।
 जळि-देखो 'जळ' ।
 जळियोतस-वि० १ ईर्ष्यालु । २ तुनक मिजाज । ३ असहिष्णु ।
 जलिर-वि० [सं० जलिर] जलने के स्वभाववाला ।
 जळिहर-१ देखो 'जळहर' । २ देखो 'जलहर' ।
 जलीस-वि० [ग्र०] १ तुच्छ, बेकदर । २ अपमानित । ३ लज्जित, शर्मिदा ।
 जळू (लू)-देखो 'जळ' ।
 जळूक, जळूग, (गा), जलूपा-देखो 'जळोक' ।
 जळूस-पु० [ग्र० जुलूस] १ भीड़, समूह । २ लोगों का समूह के रूप में कहीं जाने या भ्रमण करने की क्रिया । ३ खुशी मनाने का आयोजन ।
 जळूसी-स्त्री० शान, शौकत । -वि० जुलूस से संबंधित ।
 जळेंद्र-पु० [सं० जलेन्द्र] १ वरुण । २ महासागर । ३ इन्द्र ।
 जळेब, जलेब-स्त्री० [ग्र०] १ हाजरी, उपस्थिति । २ व्यवस्था, तैयारी । ३ राजा की सवारी निकलते समय रास्ते के इर्द-गिर्द लगाया जाने वाला मोटा रस्सा । ४ इस रस्से को पकड़ने वाला अनुचर । ५ प्राप्त या घेरा । -चौक-पु० राजमहल के आगे का चौक । -बार-पु० राजा का निकट-वर्ती अनुचर ।
 जळोबिष, जळोबी-स्त्री० कुण्डलीनुमा बनी हुई मिठाई विशेष ।
 जळेरिय, जळेरी-स्त्री० [सं० जलधरी] १ मूर्ध या चन्द्रमा के चारों ओर बनने वाला एक वृत्त । २ शिव लिंग के नीचे बना छोटा कुण्ड । ३ छोटा जलकुण्ड ।
 जलेला-स्त्री० [सं०] एक स्कन्द मातृका विशेष ।
 जळेस, जळेसर (स्वर)-पु० [सं० जलेज, जलेश्वर] १ वरुण । २ समुद्र । ३ इन्द्र ।
 जळोक (का)-पु० [सं० जलुका] जौक ।
 जळोवर-पु० [सं० जलोदर] एक प्रकार का उदर रोग ।
 जलौ-देखो 'जलाल' ।
 जल्व-क्रि० वि० [ग्र०] शोध, तुरंत, चटपट । -बाज-वि० उतावला । -बाजी-शीघ्रता, तेजी ।
 जल्वी-स्त्री० [ग्र०] शीघ्रता, उतावली, फुर्ती ।
 जल्व, (ल)-पु० [सं०] १ कथन । २ प्रलाप । ३ बहस, तर्क ।
 जल्वणी(बी)-क्रि० १ कहना, बोलना । २ प्रलाप करना, बकना । ३ बहम करना ।

जलफुकार-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
 जल्लं, जल्ल-पु० १ शरीर का मैल । २ एक देश का नाम । ३ प्रस्वेद ।
 जल्लाद-पु० [ग्र०] १ हत्या करने वाला । २ प्राण दण्ड की सजा में फांसी या मूली पर चढ़ाने वाला अनुचर ।
 जल्लास-पु० [सं० जलाल] घातक, प्रभाव ।
 जल्लोसहि-स्त्री० [सं० जल्लोषधि] एक आध्यात्मिक शक्ति विशेष ।
 जल्वन-देखो 'जवन' ।
 जल्व-पु० [सं०] १ वेग, गति । २ शीघ्रता, फुर्ती । ३ तेजी । ४ 'जौ' नामक घनाज । ५ अंगुली का आठवाँ भाग । ६ अंगुली का एक सामुद्रिक चिह्न । ७ कन्या को पहनाई जाने वाली चोली । -क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत । -वि० वेगवान, फुर्तीला । देखो 'जब' ।
 जल्व-पु० भूत, प्रेत, जिद ।
 जल्वार-देखो 'जवाहार' ।
 जल्वुडापलौ-पु० आभूषण पर सुदाई करने का औजार ।
 जल्वी (डी)-वि० (स्त्री० जल्वी) १ जैसा, तुल्य, समान । २ जितना । -क्रि० वि० जिस माथा में ।
 जल्वजल्व-वि० खण्ड-खण्ड, टुक-टुक ।
 जल्व-१ देखो 'जब' । २ देखो 'जवन' । -पुर-जवनपुर' ।
 जल्वपुर-दीरापुर' ।
 जल्वणी-स्त्री० [सं० यापना] १ शरीर निर्वाह, जीवन निर्वाह । २ संयम ।
 जल्वणिया-स्त्री० [सं० यवनानिका] एक लिपि विशेष । (जैन)
 जल्वणिया-स्त्री० [सं० यवनानिका] कन्या को पहनाई जाने वाली चोली । (जैन)
 जल्वलि देखो 'जमना' ।
 जल्वणज-पु० यापन, निर्वाह ।
 जल्वण-देखो 'जवनिका' ।
 जल्वणी-स्त्री० यवन स्त्री ।
 जल्वोस-पु० रत्नों का एक दोष ।
 जल्वन (जल्वण)-पु० [सं० यवन, जवन] १ मुसलमान, यवन । २ राक्षस, दैत्य । ३ घोड़ा । ४ वेग, गति । ५ पवन । ६ यूनान का निवासी, यूनानी । ७ काल यवन । -वि० वेगवान, फुर्तीला । -पत, पति-पु० राजा, बादशाह । -पुर-पु० यवनों का देश, नगर । दिल्ली ।
 जल्वणी-स्त्री० यवन स्त्री । -वि० यवन की ।
 जल्वनापत, (पति, पती)-देखो 'जवनपति' ।
 जल्वनाचारज-पु० [सं० यवनाचार्य] १ यवनों का एक ज्योतिषा-चार्य । २ ऋकाचार्य ।

जवनाळ-पु० [सं० यवनाळ] १ जुहार का पौधा । २ ज्वार नामक अन्न । ३ जो के सूखे डंठल ।
 जवनाशव (सु)-पु० [सं० यवनाशव] एक सूर्यवंशी राजा ।
 जवनिका-स्त्री० [सं० यवनिका] १ नाटक का पर्दा । २ कनात । ३ चिक ।
 जवनिस्ट-पु० [सं० यवनिष्ठ] यवन ।
 जवनेंद्र-पु० [सं० यवनेंद्र] बादशाह ।
 जवनेस-पु० [सं० यवनेस] बादशाह ।
 जवन्न-देखो 'जवन' ।
 जवन्निय-वि० यवन की ।
 जवफळ-पु० [सं० यवफल] १ बांस । २ इन्द्र जी ।
 जवर-पु० १ जवाहरात । २ जवाहरखाना । ३ देखो 'जोहर' ।
 -वार-पु० जवाहरखाना का अधिकारी ।
 जवराती-देखो 'जमराज' ।
 जवरी-पु० जोहरी ।
 जवरीभोरी-पु० यम द्वितीया का व्रत ।
 जवलि-वि० [सं० यमल] एक साथ, शामिल, एक मुश्त ।
 जवलियो-पु० १ स्त्रियों का आभूषण । २ देखो 'भाउली' ।
 जववारण-पु० [सं० यववारण] जव के अंकुर ।
 जववेदी-पु० इन्द्र ।
 जवस-पु० [सं० यवस] १ घास । २ तृण । ३ धान की बाल ।
 जवसट (स्ट)-पु० [सं० यवसट] १ छोटा भाई । २ देखो 'जविस्ट' ।
 जवहर-पु० जवाहरात ।
 जवहरड़ी (हरड़, हरड़)-स्त्री० छोटी हरड़े ।
 जवहरी-स्त्री० १ जोहरी । २ जवाहरात ।
 जवहार-स्त्री० १ जुहार, अभिवादन । २ जवाहरात ।
 जवाई-पु० [सं० जामात] १ दामाद, जमाता । २ जमावट ।
 जवाण(न)-वि० [फा० जवान] युवा, तरुण । -पु० १ युवक, तरुण पुरुष । २ युवावस्था का प्राणी । ३ योद्धा, सुभट । ४ सिपाही । ५ मैनिक । ६ मुसलमान । -पण, पण्नी-पु० युवावस्था, जवानी ।
 जवानियवेस-स्त्री० युवावस्था ।
 जवानी-स्त्री० [फा० जवानी] युवावस्था, यौवन, तरुणाई ।
 जवामरद-पु० [फा० जवामर्द] बहादुर व्यक्ति, युवापुरुष, सिपाई ।
 जवामरवी-स्त्री० [फा० जवामर्दी] वीरता, बहादुरी, युवावस्था ।
 जवाहर-पु० रत्न, जवाहरात ।
 जवा-स्त्री० [सं० जवा] १ हरड़, हरीतकी । २ एक प्रकार की वनस्पति । ३ जवा कुमुम । -खार-पु० एक प्रकार का क्षार ।
 जवाद-पु० घोड़ा, अश्व ।

जवाबिकस्तूरी-स्त्री० एक सुगंधित द्रव्य, गौरासार ।
 जवाबु-पु० योद्धा, वीर ।
 जवाछ, जवाधि-पु० एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ ।
 जवाधिक-पु० बहुत तेज दौड़ने वाला घोड़ा ।
 जवार-स्त्री० १ सफेद दाने का एक अन्न । २ देखो 'जुहार' ।
 जवारड़ा(ड़ी)-पु० जुहार ।
 जवारमल-पु० एक लोक गीत ।
 जवारात-देखो 'जवाहरात' ।
 जवारी-स्त्री० १ दूल्हे या जवाई द्वारा किया जाने वाला अभिवादन । २ इस अभिवादन के बदले में दिया जाने वाला द्रव्य ।
 जवाल-पु० [अ०] १ जंजाल, भ्रंशट । २ आफत, विपत्ति । ३ अवनति, क्षय ।
 जवालाजोह-स्त्री० [सं० जवाला-जोह] अग्नि ।
 जवाली-स्त्री० कायस्थों की एक वैवाहिक रश्मि ।
 जवास (सी)-देखो 'जवासी' ।
 जवासीर-पु० [फा० जवासोर] गंधाविरोजा ।
 जवासी-पु० [सं० यवासक] १ एक कंटीला पौधा विशेष । २ एक प्रकार की घास ।
 जवाहड़ (ड़, ड़)-देखो 'जवहरड़े' ।
 जवाहर-पु० १ जवाहरात । २ रत्न । -खानी-पु० रत्नादि रखने का स्थान, भवन ।
 जवाहरात, (जवाहिर, रत्न)-पु० [अ० जवाहरात] रत्न, मणि, नगीने, हीरे ।
 जवाहरी-देखो 'जोहरी' ।
 जवि(ण)-वि० [सं० जविन्] १ वेगवान । (जैन) २ चंचल ।
 जविस्ट-पु० [सं० यविष्ट] अग्नि, आग । -वि० छोटा, कनिष्ठ ।
 जवेरी-पु० जोहरी ।
 जवी-पु० १ शुभ रंग का घोड़ा । २ एक प्रकार का कीड़ा ।
 जव्वाहर-देखो 'जवाहरात' ।
 जसंसी-स्त्री० [सं० यशस्विन्] यशस्वी ।
 जस-पु० [सं० यश] १ कीर्ति, बढ़ाई, स्थापति । २ प्रशंसा, बढ़ाई । ४ डिगल का एक गीत विशेष । -सर्व० जिस । -कर, करण-पु० यशगान करने वाला । ऋषभदेव का ४२ वां पुत्र । -कित्ति-स्त्री० यश, कीर्ति । -छाटक-वि० यशस्वी -गाथ, गाथा-स्त्री० यशगान, यश की गाथा । -ग्राहण-वि० यशस्वी । -डाक, डोल-पु० कीर्तिवाद्य । -घर-वि० यशस्वी । -नांभी-पु० यशस्वियों में नाम । -बर-वि० यशस्वी । -माळ, माळा-स्त्री० कीर्ति की गूँदला । एक छन्द विशेष । -लढ, लुढ-वि० यश लोभी, यश-योनुग । -बणी, बान-वि० यशस्वी । -बाउ, बाय-पु०

यशवाद, धन्यवाद । —वास, ध्वास—पु० यश । एक छंद विशेष ।

जसकळस—पु० [सं० यशकलण] वह घोड़ा जिसके तीन पांव श्वेत हों ।

जसघोस—पु० [सं० यशघोष] एक जैन तीर्थंकर ।

जसड़ी—वि० (स्त्री० जसड़ी) १ जैसा, वैसा । २ देखो 'जस' ।

जसजोड़ी—वि० १ यशस्वी । २ उदार । —पु० कवि ।

जसत—पु० [सं० यमद] एक घातु, जस्ता ।

जसतलक (तिलक)—पु० वह घोड़ा जिसके चारों पांव श्वेत हों ।

जसतारण—पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

जसधानी—स्त्री० मुसलमानों की एक जाति ।

जसधूल—पु० [सं० यश-स्थूल] यशस्वी ।

जसब—देखो 'जमत' ।

जसब—पु० [सं० यशब] एक प्रकार का हरे रंग का पत्थर ।

जसभद्र—पु० [सं० यशोभद्र] १ शय्यम्भव सूरि के एक शिष्य का नाम । २ एक आचार्य । ३ एक कुल का नाम । ४ एक गणधर ।

जसमंगळ—पु० एक घोड़ा विशेष ।

जसमंत—वि० यशस्वी । —पु० एक कुलकर । (जैन)

जसर—देखो 'जूसर' ।

जसरघवंसी—पु० [सं० यश रघुवंशी] लक्ष्मण का एक नाम ।

जसबई (बती)—स्त्री० [सं० यशोमति] १ सगर चक्रवर्ती की माता का नाम । २ महावीर स्वामी की दोहित्री । ३ तृतीया धष्टमी व त्रयोदशी की राशि । (जैन)

जसवाउ—पु० [सं० यशवाद] यशवाद ।

जसस्ति—वि० यशस्वी ।

जसहर—पु० [सं० यशोघर] १ मोलहवां तीर्थंकर । २ प्रत्येक पक्ष का पांचवां दिन । (जैन) ३ दक्षिण रुचक पर्वत की चौथी दिशा कुमारी । ४ प्रत्येक पक्ष की चौथी रात्रि का नाम । ५ जम्बू मुदर्शन नामक वृक्ष । (जैन) —वि० यशस्वी ।

जसा—वि० जैसा । —स्त्री० [सं० यशा] १ कपिल की माता । २ भृगु पुरोहित की स्त्री । (जैन)

जसाम्रां—स्त्री० एक मांगलिक लोक गीत ।

जसाई—पु० यश का नगाड़ा, यशवाज ।

जसियो—वि० जैसा ।

जसो—वि० जैसी, यशस्वी ।

जसोली—वि० यशप्रिय, यशोलुप ।

जसु—सर्व० १ जिसकी । २ देखो 'जम' ।

जसे—क्रि० वि० जैसे । —वि० जैसा ।

जसोदा—स्त्री० [सं० यशोदा] गोकुल के नंद गोप की स्त्री, श्रीकृष्ण की एक माता । —नंद, नंदन—पु० श्रीकृष्ण ।

जसोधन (धन)—वि० [सं० यशोधन] यशस्वी । —पु० एक राजा ।

जसोघर—पु० [सं० यशोघर] श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

जसोधरा—स्त्री० [सं० यशोधरा] १ गीतम बुद्ध की पत्नी ।

२ पक्ष की चौथी रात्रि । ३ दक्षिण रुचक पर्वत की एक दिशा कुमारी ।

जसोनाम—पु० [सं० यशोनामन्] नाम कर्म की एक प्रकृति जिसके उदय से यश की प्राप्ति होती है ।

जसोमत (मति, मती)—देखो 'जसोदा' ।

जसोमाधव—पु० [सं० यशोमाधव] विष्णु ।

जसोधा—देखो 'जसोदा' ।

जसोल—वि० जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला ।

जसी—वि० जैसा ।

जस्त, जस्तो—पु० [सं० यषद] एक घातु विशेष ।

जस्थी—देखो 'जैसी' ।

जस्तुवा—देखो 'जसोदा' ।

जहंगम—पु० [सं० जिहाग] तीर, बाण, सर्प सांप ।

जहं, जह—अव्य० [सं० यथा] १ जिस जगह, जहां । २ जिस प्रकार, जैसे ।

जहकस—क्रि० वि० [सं० यथाक्रम] क्रमानुसार, तरतीब-बार । (जैन)

जहकखाय—पु० [सं० यथाख्यात] १ यथाख्यात नाम का पांचवां चरित्र । २ निर्दोष चरित्र । (जैन)

जहड़ी—वि० (स्त्री० जहड़ी) जैसा ।

जहटिठय—क्रि० वि० [सं० यथास्थित] यथास्थित । (जैन)

जहतह—क्रि० वि० जैसे-तैसे । (जैन)

जहत्व—वि० [सं० यथार्थ] यथार्थ (जैन) ।

जहत्स्वार्था—स्त्री० [सं० जहत्स्वार्था] लक्षणा का एक भेद ।

जहब—स्त्री० [सं०] प्रयत्न, उद्योग ।

जहन, जहनि—पु० [सं० जिहन] १ मस्तिष्क । २ स्मरण शक्ति । ३ बुद्धि, दिमाग । ४ देखो 'जहान' ।

जहनु—पु० [सं० जहनु] १ विष्णु । २ गंगा को पी जाने वाला ऋषि । —तनया—स्त्री० गंगा नदी, जाह्नवी ।

जहन्न—देखो 'जहन' ।

जहनुम—पु० [सं०] नरक, दोखज ।

जहर—पु० [सं० जह] १ विष, हलाहल । २ आठवीं बार उलट कर निकाला हुआ मरदाब । —जर—पु० शिव, महादेव ।

घर, घार—पु० सर्प, नाग । जेप नाग । जहरीले जीव ।

—बाव—पु० एक प्रकार का रक्त विकार, जहर भाव ।

—वायु—स्त्री० धोड़ों का एक रोग ।

जहरील—पु० जेपनाग ।

जहरी (ली)—वि० (स्त्री० जहरीली) विषयुक्त, जहरीला, विषाक्त ।

जहयंत-वि० यथास्वी ।

जहसत्ति-अव्य० यथा शक्ति ।

जहां-अव्य० [सं० यत्र] जिस स्थान पर । -पु० [फा० जहान]
संसार, जगत ।

जहांण (न)-पु० [फा० जहान] संसार, विश्व ।

जहानमी (बी, नेबी, नबी)-देखो 'जान्ही' ।

जहांपनाह-पु० [फ०] १ संसार का रक्षक, पालनहार ।
२ राजा, बादशाह । ३ ईश्वर ।

जहा-अव्य० [सं० यथा] जैसे, जिस प्रकार । (जैन)

जहाच्छंद-वि० [सं० यथाच्छन्द] स्वच्छन्द । (जैन)

जहाजाय, (जायत्ति)-वि० [सं० यथाजात] १ माता के गर्भ से
निकला जैसा नम । २ जड़, मूख ।

जहाजी-वि० [अ०] जहाज से संबंधित । -पु० १ तलवार बनाने
का अच्छा लोहा । २ एक प्रकार की तलवार ।

जहाजेठ-अव्य० [सं० यथाज्येष्ठ] बड़ाई के क्रम में,
वरिष्ठता से ।

जहाजोग-अव्य० यथायोग्य । (जैन)

जहाठाण-अव्य० यथास्थान । (जैन)

जहातच्च-वि० यथातथ्य, वास्तविक, सत्य । (जैन)

जहातह-पु० वास्तविकता, सच्चाई । (जैन)

जहाव-देखो 'जिहाद' ।

जहाभूत (भूय)-वि० [सं० यथाभूत] वास्तविक । (जैन)

जहार-वि० [अ० जाहिर] १ प्रकट, विहित, जाहिर ।
२ प्रकाशित ।

जहालत-स्त्री० [अ०] सूर्यता, अशानता ।

जहासुय-अव्य० यथाश्रुत । (जैन)

जहासुह-अव्य० यथासुख । (जैन)

जहि(हि)-सर्व० १ जो, जिस । २ देखो 'जहीं' ।

जहिच्छ (च्छा), जहिच्छिय-अव्य० १ यथेच्छ । (जैन)
२ यथेच्छा । (जैन)

जहीं (ही)-वि० जैसी । -अव्य० १ जैसेही, ज्यों ही । २ जब ।
३ जहां ।

जहीई-क्रि०वि० यदा-कदा । (जैन)

जहीन-वि० [अ०] समझदार, विवेकशील ।

जहूटिली-देखो 'जुधिसठर' ।

जहूरी-पु० जोहरी ।

जहूर-वि० [फा० जुहर] १ प्रगट, जाहिर । २ प्रकाशमान ।
-स्त्री० १ प्रगट व जाहिर करने की क्रिया या भाव,
प्रकाशन । २ कांति, आभा ।

जहेज-पु० दहेज ।

जहोश् (चित, चिय, चिचप)-वि० यथोचित, मुनासिब, ठीक ।

जहोषइठ-अव्य० यथा उपदेश ।

जहनवी-देखो 'जान्ही' ।

जहनुसप्तमी-स्त्री० [सं०] बंशाख शुक्ला सप्तमी, गंगा सप्तमी ।

जह्हार-देखो 'जुहार' ।

जां-सर्व० जिन, उन, जिस । -क्रि० वि० जब, जबतक, जहां ।
-वि० जितना ।

जाई-पु० १ जवाई, जमाता । २ देखो 'भाई' ।

जाउ-क्रि० वि० जब, जबतक ।

जांग-स्त्री० १ घोड़ों की एक जाति । २ जांघ, जंघा ।

जांगड़-देखो 'जांगड़ी' ।

जांगड़ा-स्त्री० १ भाटों की एक शाखा । २ नाइयों की एक
शाखा । ३ ढोलियों की एक शाखा । ४ वीर रस पूर्ण एक
राग । ५ एक बड़ई जाति विशेष (शेखावटी) ।

जांगड़ियो-पु० 'जांगड़ा' शाखा का व्यक्ति ।

जांगड़ी-पु० १ ढोली, दमामी । २ वीर रस पूर्ण राग । -वि०
१ जबरदस्त, जोरदार । २ महान । ३ जांगड़ा जाति का
व्यक्ति । -सांखीर-पु० डिगल का एक छन्द विशेष ।

जांगळ-पु० [सं०] १ तीतर । २ सोराष्ट्र प्रदेश । ३ मरु प्रदेश ।
४ मांस । ५ हिरन का मांस । ६ जहर, विष । -वि०
१ रम्य, सुन्दर । २ जंगली । ३ देहाती । ४ उजाड़, सूना ।

जांगळी-देखो 'जांगळी' ।

जांगळवा (बं), जांगळवी, जांगळ, जांगळवी-पु० जांगलु देश ।
बोकातेर । -राय-पु० उक्त देश का अधिपति । श्री
करणीजी ।

जांगळी-वि० योद्धा, वीर ।

जांगियो-देखो 'जांगियो' ।

जांगी-पु० १ नगाड़ा, ढोल । २ ढोली, दमामी । -हरडे,
हरडे-पु० बड़ी हरड ।

जांगेस-पु० युद्ध का राग, सिधुराग ।

जांघ-स्त्री० [सं० जंघा] १ घुटने से कमर तक का भाग ।
२ देखो 'जंघा' ।

जांघियौ-पु० १ जंघा पर पहनने का वस्त्र, अधोवस्त्र, कच्छी ।
२ एक प्रकार की कसरत ।

जांच-स्त्री० १ निरीक्षण, देखभाल । २ परख, परीक्षण ।
३ पूछताछ, पड़ताल । ४ शोध, खोज । ५ याचना ।

जांचणी (बी)-क्रि० १ निरीक्षण करना, देख भाल करना ।
२ परखना, परीक्षण करना । ३ पूछताछ करना, पड़ताल
करना । ४ शोध करना, खोजना । ५ याचना करना ।

जांजण-स्त्री० १ पोतल की बनी छोटी घंटिका । २ घुंघुंरु,
गुरिया ।

जांजर-देखो 'जांभर' ।

जांजर-पु० १ बिच्छु । २ विष जंतु । ३ देखो 'जांभर' ।

जांजळी-स्त्री० पावस ऋतु में वर्षा के अभाव का समय ।
 जांजा-देखो 'जांदा' ।
 जांस-स्त्री० [सं० जंभा] १ वर्षा के समय चलने वाली तेज हवा । भूभावात । २ शमी वृक्ष की फली । ३ भांभर ।
 जांसर-पु० स्त्रियों के पैरों की पायल, नूपुर, पैजनी ।
 जांसरकी-पु० बड़ा सवेरा, तड़का, ब्राह्म मुहूर्त ।
 जांसरियाळ, जांसरियाळ-स्त्री० १ 'जांभर' पहनने वाली ।
 २ देवी. दुर्गा ।
 जांसळी-देखो 'जांजळी' ।
 जांसी-वि० १ बहुत सी, अधिक । २ देखो 'जांभ' ।
 जांट-पु० शमी वृक्ष ।
 जाणंग, जाणंगी-वि० [सं० जायक] १ जानकार, विज्ञ ।
 २ चतुर ।
 जांण-स्त्री० [सं० ज्ञान, यान] १ ज्ञान, जानकारी । २ जान-पहचान, परिचय । ३ जानने की क्रिया या भाव । ४ सवारी ।
 ५ यमुना नदी । -वि० [सं० ज्ञानी] जानने वाला, विज्ञ । -प्रव्य० मानो, मानली ।
 जांणई-देखो 'जानकी' ।
 जांणक-वि० जानने वाला, विज्ञ । -प्रव्य० मानो, जानो, जैसे ।
 जांणकार-वि० १ जानकार, विज्ञ । २ चतुर । ३ अनुभवी ।
 ४ जान-पहचान वाला ।
 जांणकारी-स्त्री० १ जानने का गुण, विज्ञता । २ ज्ञान ।
 ३ परिचय । ४ अभिज्ञता । ५ निपुणता ।
 जांणग (गर)-देखो 'जांणंग' ।
 जांणण, जांणणा-स्त्री० १ जानने की क्रिया या भाव । २ ज्ञान ।
 जांणणी (बी)-क्रि० [सं० ज्ञानम्] १ जानकारी करना, जानना । २ परिचय करना, परिचित होना । ३ ज्ञान प्राप्त करना, अनुभव करना । ४ समझना । ५ सूचना पाना ।
 ६ सहायता करना, मदद करना । ७ पोषण करना ।
 जांणणु (पणु, पणौ)-पु० [सं० ज्ञान+त्वन्] ज्ञान, जानकारी ।
 जांणपिछाण-स्त्री० जान-पहचान, परिचय ।
 जांणय-वि० [सं० जायक] जानकार, बुद्धिमान । (जैन)
 जांणया-स्त्री० [सं० ज्ञान] ज्ञान, समझ । (जैन)
 जांणरह-पु० [सं० ज्ञानरथ] एक प्रकार का रथ ।
 जांणवणी (बी)-देखो 'जांणणी' (बी) ।
 जांणवय-वि० [सं० जानपद] देश का, देशी । (जैन)
 जांणसात्ता-स्त्री० [सं० यानशाला] वाहन कक्ष । (जैन)
 जांणायी (बी), जांणायी (बी)-क्रि० १ जानकारी कराना, जानवाना । २ परिचय कराना, परिचित कराना । ३ ज्ञान कराना, अनुभव कराना । ४ समझाना । ५ सूचना देना ।
 जांणि-प्रव्य० मानो । -सर्व० जिस । देखो 'जांण' ।
 जांणिक-देखो 'जांणक' ।

जांणियार-वि० विज्ञ, जानकार ।
 जांणी-देखो 'जांणि' ।
 जांणीगर-देखो 'जांणंग' ।
 जांणीजै-प्रव्य० मानो ।
 जांणीणी (बी)-देखो 'जांणणी' (बी) ।
 जांणीती-वि० (स्त्री० जांणीती) १ प्रसिद्ध । २ जानकार ।
 जांणीबाण-वि० १ जानकार, ज्ञाता । २ परिचित ।
 जांणु-वि० ज्ञाता । (जैन)-पु० घटना । (जैन)-प्रव्य० मानो ।
 जांणे (जे)-प्रव्य० मानो ।
 जांणेत (ती)-वि० १ जानकर, वाक्पिफकार । २ देखो 'जांणीती' ।
 जांत-स्त्री० खाट, चारपाई ।
 जांवा-स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा । २ भुक्तिस ।
 जान-स्त्री० [फा०] १ प्राण, जीव । २ जीवन । ३ प्रवास ।
 ४ बल, सामर्थ्य । [सं० जन्म] ५ वर यात्रा, वारात ।
 -[सं० यान] ६ सवारी, वाहन ।
 जानउत्र-स्त्री० [सं० जन्म-यात्रा] वारात ।
 जानकी-स्त्री० [सं० जानकी] जनक की पुत्री, सीता । -जीवन-पु० श्रीराम । -माथ-पु० श्रीराम । -मंगळ-पु० सीता के विवाह सम्बन्धी काव्य । -रमण, वरण-पु० श्री रामचन्द्र ।
 जानकीस-पु० [सं० जानकी-ईश] श्रीरामचन्द्र ।
 जानड़, जानड़ली, जानड़ी-देखो 'जान' ।
 जानणी-स्त्री० वारात में जाने वाली युवती, स्त्री ।
 जानवार-वि० [फा०] १ जिसमें जान, प्राण या जीव ही । सजीव । २ बलवान, शक्तिशाली, । ३ दृढ़, मजबूत ।
 जानवणी-स्त्री० एक अक्सरा विशेष ।
 जानपात्र-पु० [सं० यान-पात्र] नाव, नौका ।
 जानमाज-स्त्री० [फा० जानमाज] नमाज पढ़ने का आसन ।
 जानराय-पु० राठीड़ों के कुल देव, विष्णु ।
 जानवर-पु० [फा०] १ प्राणी, जीव । २ पशु । ३ चौपाया पशु ।
 ४ हewan । -वि० मूर्ख, बेवकूफ ।
 जानसीन-पु० [फा० जानशीन] उत्तराधिकारी ।
 जानि, जानिड़ी, जानियो जानी, जानीड़ी-पु० [सं० जन्म] बाराती, वर पक्ष का व्यक्ति । -वि० प्राण संबंधी ।
 जानीवासउ, जानीवासो-पु० [सं० जन्म-प्रवासक] बारात का डेरा, जान का प्रवास ।
 जानु-पु० [सं० जानु] १ जांघ व पिंडली के मध्य का भाग ।
 २ जोघ । ३ देखो 'जान्हो' । -सर्व० उनको ।
 -प्रव्य० मानो ।
 जानुकीकत-पु० श्रीरामचन्द्र ।
 जानुविजानु-पु० तलवार का एक हाथ ।

जांनु-देखो 'जांनु' ।
 जनेतो-पु० बाराती ।
 जनेसी-पु० एक प्रकार का घास ।
 जनेस-देखो 'जान' ।
 जनेसुरी-स्त्री० दुर्गा, महामाया ।
 जानोई-देखो 'जनोई' ।
 जानोटण-पु० बारात के प्रस्थान से पूर्व घर पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोज ।
 जानोसी-स्त्री० विवाह के बाद लौटते समय किसी बीच स्थान पर बारात को दिया जाने वाला भोजन ।
 जानी-१ देखो 'जान्ही' । २ देखो 'जांनु' ।
 जान्यो-देखो 'जानी' ।
 जान्हूक-पु० पोंडों का एक रोग ।
 जान्हूको-स्त्री० [सं० जाहूतबी] गंगा, भागीरथी ।
 जान्हो-पु० [सं० जानु] १ घुटने में होने वाला एक रोग । २ देखो 'जांनु' ।
 जांबक-पु० [सं० जवुंक] १ सियार, गोंदड़ । २ कुत्ता ।
 जांबकळ-पु० अमरूद ।
 जांबवंत (वत)-देखो 'जांबवान' ।
 जांबवंती (वती)-स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी ।
 जांबवान-पु० [सं० जाम्बवान] ब्रह्मा का पुत्र व सुग्रीव का मंत्री, रीद्धपति ।
 जांबवि-पु० [सं०] वज्र ।
 जांबुमाळी-पु० [सं० जाम्बुमाली] हनुमान द्वारा मारा गया, रावण का एक राक्षस ।
 जांबू-पु० [सं० जाम्बू] १ जामुन । २ रक्त विकार से शरीर पर होने वाले चकत्ते । ३ एक प्रकार का घोंडा ।
 जांबूणय-देखो 'जांबूनद' ।
 जांबूनद-पु० [सं०] १ स्वर्ण, सोना । २ धनुरा ।
 जांबूफळ-पु० जामुन । -वि० काला, श्याम ।
 जांबो (जो)-पु० विश्वोई सम्प्रदाय का प्रवर्तक एक सिद्ध ।
 जांमंत-देखो 'जांबुवान' ।
 जांमति (ती)-देखो 'जांबवंती' ।
 जाम-पु० [का० जाम, याम] १ प्याला । २ शराब का प्याना । ३ शराब पीने का पात्र । ४ क्षण, पल । ५ समय । ६ प्रहर, घड़ी । ७ पिता, जनक । ८ पुत्र, बालक । ९ वस्त्र, कपड़ा । १० यादों की एक शाखा । ११ रात्रि, यामिनी । -वि० दाहिना । -क्रि० वि० जब ।
 जामकी. (खी, गि, गौ)-स्त्री० प्रातिशवाजी बन्दूक का पलीता ---दार-पु० जिसमें पलीता लगा हो ।
 जामघोस-पु० [सं० यमघोष] मुर्गा ।

जामण-स्त्री० [सं० जामिन्] १ माता, जननी । २ जन्म । ३ संतान । ४ पुत्री । ५ बहिन । -पु० ६ दूध को जमाने के लिये उसमें डाली जाने वाली द्वाछ या खटाई । ७ किसी पदार्थ में रासायनिक परिवर्तन के लिये किया जाने वाला अन्य पदार्थ का मिश्रण । ८ जामुन । ९ देखो 'जामणी' ।
 ---जाई-स्त्री० सहोदरा । ---जाधो-पु० सहोदर ।
 ---मरण, अत-पु० जन्म-मरण ।
 जामणि (णी)-स्त्री० १ दूध जमाने का पात्र । २ जननी, माता । ३ रात्रि, यामिनी । ---खर-पु० निशाचर, असुर ।
 जामणी-पु० प्रथम प्रसव के उपरान्त कन्या को दिया जाने वाला वस्त्र आभूषणादि ।
 जामणी (बी)-क्रि० [सं० जनि] जन्म लेना, जन्मना, पैदा होना ।
 जामबगनि (नी)-पु० [सं० जामदग्न्य] परशुराम के पिता, एक ऋषि ।
 जामबानी-स्त्री० चमड़े की सन्दूकची विशेष ।
 जामदेवामुरी-पु० ब्रह्मा, विधि ।
 जामन-देखो 'जामण' । देखो 'जामिन' ।
 जामनि (नी)-स्त्री० [सं० यामिनी] १ रात्रि, निशा । २ देखो 'जामिन' ।
 जामनीस-पु० [सं० यामिनीश] चन्द्रमा, शशि ।
 जामनेमी-पु० इन्द्र ।
 जामन्न-देखो 'जामिन' ।
 जामफळ-पु० १ एक देव वृक्ष विशेष । २ अमरूद नामक फल ।
 जामय-स्त्री० रात्रि, निशा ।
 जामळ (सी)-वि० [सं० यामल] १ अनुत्पन्न । २ मिला हुआ । ३ युग्म । ४ दोनों । ५ साथ-साथ । -पु० १ जोड़ा, युग्म २ जन्म । ३ जुड़वां बच्चे ।
 जामळणी (बी)-क्रि० १ मिलना, शामिल होना । २ एकाकार होना । ३ मिश्रित होना ।
 जामवंत (वत)-देखो 'जांबवान' ।
 जामवंती-देखो 'जांबवंती' ।
 जामाहल-पु० यमराज ।
 जामात(ता)-पु० [सं० जामातु] जवाई, दामाद ।
 जामामस्जिब-स्त्री० मुख मस्जिद ।
 जामि-स्त्री० [सं० जामि] १ बहिन । २ लड़की । ३ पुत्र-वधू । ४ नातेदार स्त्री । ५ सती, साध्वी ।
 जामिए-पु० योगी ।
 जामिक-पु० [सं० यामिक] १ चौकीदार, पहरेदार । २ रक्षक । -पण-पु० चौकीदारी । रक्षा ।
 जामित्र-पु० [सं० जामित्र] १ लग्न से सातवां स्थान । २ जन्म से सातवां लग्न । ---वेध-पु० ज्योतिष का एक योग ।

जामिन-वि० [प्र० जामिन] १ जमानत देने वाला, साख भरने वाला, माफी । २ गवाह । ३ जिम्मेदारी लेने वाला ।
 —धार-वि० जमानत देने वाला ।
 जामिनी-स्त्री० [फा०] १ जमानत, जिम्मेदारी । [सं० यामिनी] २ रात्रि, निशा ।
 जामिप-पु० [सं० जामिप] बहिन का पति, यहनोई ।
 जामिय, जामो-पु० १ पिता । २ स्वामी, मालिक । ३ योगा-म्यासी, योगी । ४ यमराज, यम ।
 जामोत-पु० पिता ।
 जामुं, जामु-क्रि० वि० [सं० यावत्] जब, जब तक । -पु० १ दन्तक्षत, दाग । २ जामुन । ३ देखो 'जान्ही' ।
 जामुण (न)-पु० [सं० जंबु] १ जामुन का पेड़ । २ जामुन का फल ।
 जामुणी (नी)-वि० जामुन के फल के रंग का, जामुनी ।
 जामित-पु० योद्धा, बहादुर ।
 जामोपत-पु० सन्तानोत्पत्ति । -वि० जन्मा हुआ ।
 जामी-पु० [फा० जाम:] १ एक प्रकार का घेरदार पहनावा । २ पुत्र, बेटा । ३ जन्म ।
 जाम्य-वि० [सं० याम्य] १ यमराज संबंधी, यमराज का । २ दक्षिण का । -स्त्री० १ दक्षिण । २ विष्णु । ३ शिव । ४ यमदूत । ५ चंदन वृक्ष । ६ अगस्त्य मुनि ।
 जाम्या-स्त्री० [सं० याम्या] १ दक्षिण दिशा । २ रात्रि, निशा । ३ भरणी नक्षत्र ।
 जाम्बळणी (बो)-क्रि० साथ होना, शामिल होना ।
 जाम्बळि(ळी)-देखो 'जामळ' ।
 जाम्बी-पु० एक सरकारी कर ।
 जाम्बारी-स्त्री० जूवा, छूत का खेल ।
 जाम्बवी-देखो 'जाम्बवी' ।
 जा-स्त्री० १ माता, जननी । २ योनि । ३ फांसी । -वि० १ वृद्ध । २ चतुर । ३ उत्पन्न । -सर्व० जो, जिस, जिन ।
 जाइ-वि० [सं० यामिन] १ जाने वाला (जैन) । २ जितना । ३ देखो 'जाति' । -सर्व० जिन, जिस ।
 जाइप्राजीव-पु० [सं० जात्याजीव] जाति जान कर भ्राह्मण लेने वाला साधु (जैन) ।
 जाइप्रासीविस-पु० [सं० जात्याजीविस] जन्म से ही विपरीत प्राणी ।
 जाइगह (ह) जाइगा, जाइगाह (ई)-देखो 'जायगा' ।
 जाइतिग-पु० [सं० जातिनिग] ग्यारह प्रकृति का समुदाय ।
 जाइयेर-पु० [सं० जातिस्थिर] साठ वर्ष से अधिक आयु वाला जैन साधु ।
 जाइयम्मय-देखो 'जातिधरम' ।
 जाइयह-पु० [सं० जातिगय] ब्राह्मण का स्थान, संसार ।

जाइफळ-देखो 'जायफळ' ।
 जाइय-वि० [सं० याचित] मांगा हुआ । (जैन)
 जाइयसा-स्त्री० [सं० जातिबंध्या] बांभ स्त्री । (जैन)
 जाईदौ-वि० [फा० जाईद:] (स्त्री० जाईदी) जन्मा हुआ, उत्पन्न ।
 जाई-स्त्री० [सं० जाया] १ स्त्री । २ कन्या, पुत्री । ३ देखो 'जाति' -सर्व० उस ।
 जाउ-पु० [सं० जायु] दवा, औषधि ।
 जाऊडो-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
 जाकजमाळा-वि० मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।
 जाकेडो, जाकोडो-देखो 'जाखोडो' ।
 जाखत-पु० एक प्रकार का वृक्ष व इसका फल ।
 जाखमानि-पु० यक्ष ।
 जाखळ-पु० [सं० यक्ष] १ यक्ष । २ देखो 'जाखी' ।
 जाखालपट्टी-स्त्री० बीकानेर राज्य का एक क्षेत्र ।
 जाखी-वि० १ दुष्ट, भ्रातृतापी । २ पापी । -पु० १ बलि का बकरा, बलिपशु । २ ऊंट ।
 जाखंडो, जाखोडो-पु० ऊंट ।
 जागंगी-पु० [सं० यज्ञांग] १ उदुंबर वृक्ष । २ देखो 'जोगंगी' ।
 जाग-पु० [सं० याग] १ यज्ञ । २ विवाह । ३ जागरण । ४ अग्नि । -स्त्री० ४ घोड़ी की योनि । ५ घोड़ी का ऋतुमती होने का भाव । ६ देखो 'जायगा' ।
 जागर-१ देखो 'जागरण' । २ देखो 'जाग' ।
 जागरी-वि० (स्त्री० जागरी) जगने वाला ।
 जागरी (बो)-क्रि० [सं० जागरणम्] १ जागते रहना, नींद न लेना । २ नींद से उठना । ३ सावधान होना, जागरुक होना । ४ प्रचलित होना, चेतन्य होना । ५ उत्तेजित होना । ६ जगमगाना । ७ उन्नति करना ।
 जागतारण-पु० [सं० यागत्रातृ] यज्ञ का उद्धार करने वाला देव ।
 जागती-देखो 'जगती' ।
 जागतीकळा (जोत)-१ दीपक, ज्योति । २ देवी चमत्कार । -वि० १ प्रभावशाली । २ कुछ करने योग्य ।
 जागदत्तो-पु० [सं० याज्ञदत्ति] कुवेर ।
 जागबळिक-पु० याज्ञवल्क्य ऋषि ।
 जागर-पु० [सं०] १ श्वान, कुत्ता । २ कवच । ३ जागृति । -वि० जागने वाला । जागृत ।
 जागरण-पु० [सं०] १ रात भर जागते रहने की क्रिया या भाव । २ रात भर जागकर ईश्वर भजन करने की क्रिया या भाव । ३ निद्रा का अभाव । ४ जागृति । ५ सावधानी, सतर्कता ।
 जागरि-पु० १ जागरण, जागृति । २ देखो 'जागरी' ।
 जागरिका-स्त्री० जागृति ।

जागरिया

(४६४)

जाडायाती

जागरिया-स्त्री० [सं० जागर्या] १ चिन्तन । २ विचार ।
 जागरी-स्त्री० एक जाति विशेष ।
 जागरक (रुक)-वि० [सं०] १ जागृत, जगा हुआ । २ सतर्क
 सावधान । ३ चेतन्य ।
 जागल-स्त्री० एक मछली विशेष ।
 जागवणी (बो)-देखो 'जागणी' (बो) ।
 जागवलक देखो 'जागवलिक' ।
 जागवो-स्त्री० अग्नि, आग ।
 जागसेनी-स्त्री० [सं० याजमेनी] द्वीपदी ।
 जागा-देखो 'जायगा' ।
 जागीर-स्त्री० १ राजा या बादशाह की ओर से दिया जाने
 वाला गांव या क्षेत्र, अपने शासन का गांव या भूमि ।
 २ जोतने के लिए दी गई लगान मुक्त भूमि । —बार-पु०
 किसी जागीर का मालिक ।
 जागीरी-स्त्री० [फा०] जागीरदार का गांव, क्षेत्र या भूमि ।
 शासन, हुकूमत ।
 जागेबो-स्त्री० [सं० जागुबी] अग्नि, आग ।
 जागेसर (स्वर)-देखो 'जोगीस्वर' ।
 जागे-स्त्री० ऋतुमती घोड़ी ।
 जाग्या-देखो 'जायगा' ।
 जाग्रत-वि० [सं० जागृत] १ जो जग रहा हो, जागृत, जगा
 हुआ । २ सतर्क, सावधान । ३ चेतन्य । —स्त्री० जगते रहने
 की अवस्था । चेतना, सतर्कता की अवस्था ।
 जाग्रति-स्त्री० [सं० जागृति] १ जगे रहने की अवस्था ।
 २ उत्तेजना । ३ चेतना । ४ होश ।
 जाग्रषो-स्त्री० [सं० जाग्रुषी] अग्नि, आग ।
 जाड़-१ देखो 'जाड़ो' । २ देखो 'भाड़' ।
 जाड़ी-स्त्री० १ दाढ़ी के बालों पर बांधी जाने वाली पट्टी ।
 २ दाढ़ी, जवड़ा ।
 जाड़ो-पु० १ शीतकाल, सर्दी । २ ठंडा मौसम । ३ जवाड़ा ।
 ४ समूह । ५ मयाज । ६ देखो 'भाड़ो' ।
 जाचक (ग. रा)-वि० [सं० याचक] १ याचना करने वाला,
 २ मित्रारी, मंगता । ३ जांच करने वाला ।
 जाचणी (बो)-[सं० याचनम्] १ याचना करना, मांगना ।
 २ भिक्षा वृत्ति करना । ३ जांच करना ।
 जाचा-देखो 'जुचा' ।
 जाचिक (ग)-देखो 'जाचक' ।
 जाचेल-पु० तिल्ली का तेल ।
 जाज, जा'ज-स्त्री० [सं० जहाज] १ पानी में चलने वाला यान,
 जलयान, जहाज । २ बैलगाड़ी का याटा ।
 जाजत्री-स्त्री० एक शस्त्र विशेष ।

जाजम-स्त्री० [फा०] १ जमीन पर बिछाने का लंबा चौड़ा व
 मोटा वस्त्र, दरी । २ गलीचा, कालीन ।
 जाजमसार-पु० [तु० जाजामसार] सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
 जाजमाज (माट, माठ)-वि० कम धोड़ा ।
 जाजरउ-वि० [सं० जर्जरः] (स्त्री० जाजरी) १ जीर्ण-शीर्ण ।
 २ वृद्ध, वृद्धा । ३ क्षीण, कमजोर ।
 जाजरणी (बो)-क्रि० १ संहार करना, मारना । २ नष्ट
 करना ।
 जाजव (रु)-पु० १ शौचालय, टट्टी । २ शौचालय का कूआ ।
 जाजरी-वि० (स्त्री० जाजरी) फटा पुराना ।
 जाजल-पु० १ स्नान का पानी गर्म करने का बर्तन ।
 २ देखो 'जाजुल' । —मान= 'जाजुलमान' ।
 जाजली-देखो 'जाजुल' ।
 जाजामसार-स्त्री० सम्पूर्ण जाति की एक राग ।
 जाजी-वि० [सं० याजि] १ यज्ञ करने वाला, याज्ञिक ।
 २ देखो 'जाजी' ।
 जाजीव-अव्य० [सं० यावज्जीवन्] जब तक जिये,
 जीवन पर्यन्त ।
 जाजुल (ठि)-वि० [सं० जाज्वली, जाज्वत्य] १ भयंकर,
 जबरदस्त । २ क्रुद्ध, क्रोधित । ३ तेजस्वी जाज्वल्यमान ।
 ४ शक्तिशाली, बलवान । —मान-वि० तेजस्वी ।
 जाजी-वि० (स्त्री० जाजी) १ अत्यधिक, बहुत । २ सघन, घना
 गहन । ३ गाढ़ा ।
 जा'ज-देखो 'जा'ज' ।
 जाजेरा-वि० पर्याप्त, बहुत ।
 जाट (व)-पु० (स्त्री० जाटण, जाटणी) १ उत्तर, पश्चिम व
 मध्य भारत से बसने वाली एक प्रसिद्ध जाति व इस जाति
 का व्यक्ति । इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि है । २ कोल्हू का
 एक उपकरण ।
 जाटाबांसी (बांसी)-स्त्री० जमारों की एक शाखा व शाखा
 का व्यक्ति ।
 जाटाळिका-स्त्री० एक स्कन्द मातृका विशेष ।
 जाट-वि० १ जाटों संबंधी, जाटों जैसा । २ देखो 'जाट' ।
 जाठर-वि० [सं०] १ पेट संबंधी । २ गर्भज । ३ पाचन शक्ति ।
 जाठरागनी-देखो 'जठराग्नि' ।
 जाड (उ)-स्त्री० १ शक्ति, सामर्थ्य । २ मोटापा । ३ मूर्खता ।
 ४ जड़ता । ५ कठोरता । ६ झुंड, समूह । ७ एक देश का
 नाम । ८ अकर्मण्यता । ९ सुस्ती । —वि० १ जड़ । २ देखो
 'जाडो' । —अव्य० जाड़े, भल से ।
 जाडा-स्त्री० जबरदस्ती, जोरावरी ।
 जाडायाती-क्रि० वि० हठात्, जबरदस्ती से ।

जाडीजली (बी)—क्रि० १ मोटा होना, मोटाई घाना । २ घना होना, गहरा होना । ३ अधिक होना । ४ गाढ़ा होना ।
जाडो—वि० १ जिसकी मोटाई अधिक हो, मोटा । २ हूँटपुष्ट, तगड़ा । ३ अधिक, बहुत । ४ ठोस । ५ दृढ़, मजबूत । ६ सघन, घना । ७ मोटे-मोटे ताने या तंतु वाला ।
जाणी (बी)—क्रि० १ जन्म देना, पैदा करना, प्रजनन करना । २ देखो 'जावणी' (बी) ।
जात—वि० [सं०] १ जन्मा हुआ, उत्पन्न । २ कुलीन । ३ निकला हुआ । —स्त्री० १ जीव, प्राणी । [सं० यात्रा] २ मनौती । ३ वर-वधु या दम्पति का किसी तीर्थ या देवस्थान पर जाकर अभिवादन करने की क्रिया या भाव । ४ तीर्थ यात्रा । ५ देखो 'जाति' ।
जातक—पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष का एक भेद । २ बौद्ध कथानक । ३ वच्चा । ४ भिक्षुक । ५ जात कर्म । ६ समान वस्तुओं का जोड़ ।
जातकर्म, जातकर्म, जातकर्म्य—पु० [सं० जातकर्म] हिन्दुओं के दश संस्कारों में से चौथा संस्कार ।
जातण—पु० यात्री । सती, सेवक ।
जातणा—देखो 'यातना' ।
जातणौ (बी)—क्रि० [सं० यात्रण] यात्रा करना ।
जातघान—देखो 'जातुघान' ।
जातना—देखो 'यातना' ।
जातपांत—देखो 'जातिपांति' ।
जातवेद (वेध)—स्त्री० [सं० जातवेदस्] अग्नि ।
जातरा—स्त्री० [सं० यात्रा] १ यात्रा । २ तीर्थाटन ।
जातरी (रु)—पु० [सं० यात्री] १ यात्री, पथिक । २ तीर्थयात्री ।
जातरूप जातरूपक (रूप)—पु० [सं० जातरूपम्] १ सोना, स्वर्ण । २ धतूरा । ३ चांदी । —वि० सुन्दर । कांतिकान्त ।
जातविहद (विहद)—पु० १ डिंगल गीतों में एक दोष । २ जाति परंपरा के विपरीत कर्म ।
जातवेद—स्त्री० [सं० जातवेदस्] अग्नि, आग ।
जातसिखंडी—पु० [सं० शिखंडो-जात] बृहस्पति ।
जातसंख, जातासंख—वि० मूर्ख, देवकूफ ।
जाति—स्त्री० [सं०] १ जीवों या प्राणियों की श्रेणी, वर्ग योनि । २ वर्ग, समूह, समुदाय । ३ समाज । ४ वंश परम्परा के अन्तर्गत होने वाला कोई एक वर्ग । ५ समान धर्म या संस्कृति वाला वर्ग । ६ कुल, गोत्र । ७ वंश । ८ जन्म, उत्पत्ति । ९ एक ही कर्म करने वाला समुदाय । १० क्षेत्र विशेष के निवासी । ११ चमेली का पौधा या फूल । १२ मालती का पौधा या फूल । १३ मनुष्यों के चार विभागों में से कोई एक । —कर्म, करम—पु० एक

संस्कार विशेष । —धरम—पु० किसी जाति या वर्ग का कर्त्तव्य, धर्म ।

जातिका-भरण—पु० ज्योतिष का एक ग्रंथ ।

जाति-पांति—स्त्री० जात-विरादरी, जाति व वर्ग, श्रेणी ।

जातिफल—पु० [सं०] जायफल ।

जातिब्राह्मण—पु० केवल जन्म से ब्राह्मण, कर्म से नहीं ।

जातिसंकर—वि० वर्गसंकर, दोगला ।

जाती—देखो 'जाति' ।

जातीफल—देखो 'जातिफल' ।

जातीयता—स्त्री० जातीयत्व, जाति गत भावना ।

जातीली—वि० जाति संबंधी ।

जातीसमर, जातीस्मर—वि० पूर्व जन्म का ज्ञान रखने वाला ।

—पु० पूर्व जन्म का ज्ञान ।

जातुघान—पु० [सं० यातुघान] प्रसुर, राक्षस ।

जातू—पु० बैलगाड़ी के 'माकड़े' में खड़ा लगने वाला मोटा डंडा ।

जात्र—देखो 'जातरा' ।

जात्रणि—स्त्री० [सं० यात्रिणी] स्त्री यात्री ।

जात्रर—देखो 'जातरी' । २ देखो 'जातू' ।

जात्रा—देखो 'जातरा' । —बाळ= 'जातरी' ।

जात्रिणु, जात्री—देखो 'जातरी' ।

जाव—पु० [सं० याद] १ पानी । २ यादव । —पति, पति—पु० समुद्र । श्रीकृष्ण । —प्रत्य० [अ० याद] उत्पन्न, पैदा हुआ ।

जावर (रु)—पु० १ एक प्रकार का सफेद रेशमी वस्त्र । २ रेशमी माला ।

जावरियो—पु० गेहूँ या चने के कच्चे दानों का हलुवा ।

जावव—पु० [सं० यादव] १ यदु के वंशज, यादव । २ श्रीकृष्ण ।

—वि० (स्त्री०) जादवण, जादवणी, जादवी) यदु संबंधी ।

—पति, पति—पु० श्रीकृष्ण । —राइ, राई, राऊ, राज,

राजा राव—पु० श्रीकृष्ण । —बंसउजाळ—पु० श्रीकृष्ण ।

जावधांपति (पति)—देखो 'जादवपति' ।

जाववेन्द्र—पु० [सं० यादवेन्द्र] श्रीकृष्ण ।

जाववो (वव)—देखो 'जादव' ।

जावस—पु० [सं० यादव] १ मछली । २ जलजंतु । —पति, पति, पती—पु० वरुण । समुद्र ।

जादा—वि० [अ० जिपादः] १ अधिक, बहुत । २ तुलना में अधिक, बढ़कर । ३ अति ।

जाडू—पु० [सं० यादस्] १ जल, पानी । २ यादव । ३ देखो 'जाडू' । —नाथ—पु० श्रीकृष्ण । समुद्र । —पति, पति—पु० श्रीकृष्ण । समुद्र । —राण—पु० श्रीकृष्ण ।

जाडू—पु० [फा०] १ इन्द्रजाल । २ चमत्कारी घटना । ३ अमानवीय कार्य । ४ कुछ तांत्रिक क्रियाएँ जिनका किसी

पर प्रयोग किया जाता है । ५ वशीकरण । ६ यादववंशी शत्रिय । — गर-पु० ऐन्द्रजालिक । जादूई खेल दिखाने वाला । — गरी-स्त्री० जादू के खेल । ऐसे खेल करने की वृत्ति । — नजर-वि० आकर्षित करने की शक्ति वाला ।
जादो-वि० [सं० जात फा० जादः] (स्त्री० जादी) १ उत्पन्न, पैदा हुआ । २ वंशज । —पु० १ पुत्र, बेटा । २ यादव ।
 — राय-पु० यादवपति श्रीकृष्ण ।
जाप-देखो 'जप' ।
जापक-वि० जाप करने वाला ।
जापमप-पु० जप-तप । साधना ।
जापणी (बो)-देखो 'जपणी' (बी) ।
जापत-स्त्री० [ग्र० जियाफत] १ भोज, दावत । २ व्यवस्था, प्रबन्ध ।
जापताई-देखो 'जापती' ।
जापती-पु० [ग्र० जावितः] १ प्रबंध, इन्तजाम । २ सुरक्षा, हिफाजत । ३ कानून । ४ कानूनी न्याय ।
जापाघर-पु० प्रसूती घर ।
जापायती-वि० प्रसूता । जच्चा ।
जापी-वि० जप करने वाला ।
जापुनी-वि० (स्त्री० जापुनी) अशक्त व निर्बल । निकम्मा ।
जापेलेबिन, जापेलेबिन-पु० पांचवां या छठा दिन ।
जापी-पु० प्रसव, प्रसवकाल ।
जाप्य-पु० [सं० याप्य] १ दुस्साध्य रोग । २ असाध्य रोग जिसमें पथ्य व साधन रख कर ही जिन्दा रहा जा सकता है ।
जाफ-स्त्री० [ग्र० जोफ] बेहोशी, मूर्च्छा, गण ।
जाफत-स्त्री० [ग्र० जियाफत] १ भोज, दावत । २ अतिथि मत्कार । ३ जावत ।
जाफरां (रांन)-स्त्री० [ग्र० जाफरान] १ केसर । २ फूल, पुष्प ।
जाफरांनी-वि० १ केसर का, केसर संबंधी । २ केसर युक्त । ३ केसरिया । — तांब-पु० उत्तम श्रेणी का तांबा ।
जाफरी-स्त्री० [ग्र० जाफरान] १ केसर । २ जाली लगा बरामदा । ३ जाली का दरवाजा ।
जाब-पु० १ हिमाव, लेखा । ३ जवाब, उत्तर । ३ प्रश्न, मवाल । ४ आज्ञा, आदेश ।
जाबक-वि० १ सब, समस्त । २ मूर्ख । —क्रि० वि० कतई, विस्कुल ।
जाबड़ी-देखो 'जबाड़ी' ।
जाब-ज्वाब-क्रि० वि० [फा० जा-ब-जा] १ स्थान-स्थान पर, जगह-जगह । २ यदा-कदा ।
जाबताई-देखो 'जापती' ।
जाबली-देखो 'जापती' ।
जाबर-वि० [सं० जर्बर] बृद्ध, बृद्धा ।

जाबसाल-पु० सवाल-जवाब, प्रश्नोत्तर ।
जाबाड़ी-देखो 'जबाड़ी' ।
जाबाळ-पु० [सं० जाबाल] मत्स्यकास नामक ऋषि ।
जाबालि-पु० [सं० जाबालि] राजा दशरथ के गुरु व मंत्री एक कश्यप वंशी ऋषि ।
जाबली-देखो 'जापती' ।
जामात-देखो 'जमाता' ।
जाय-स्त्री० [सं० यूथिका] १ सफेद जूही । [सं० याग] २ यज्ञ । ३ देखो 'जायो' ।
जायउ-देखो 'जायो' ।
जायक-स्त्री० १ जूही । २ लौंग ।
जायकम्म-पु० [सं० जातकम्मन्] १ प्रसूती कर्म । २ जातकर्म ।
जायकेदार-वि० [ग्र०] स्वादिष्ट, मजेदार, सरस ।
जायकी-पु० [ग्र० जायका] स्वाद, मजा, आनन्द, लज्जत ।
जायग-पु० [ग्र० याजक] यज्ञ करने वाला । (जैन)
जायगा-स्त्री० [फा० जायगाह] १ स्थान, जगह । २ पद, मोहदा, ३ मौका, अवसर । ४ भवन ।
जायधल-पु० [सं० जायाधन] ज्योतिष का एक अशुभ योग ।
जायज-वि० [ग्र०] १ उचित, ठीक, वाजिब । २ नियमानुसार । ३ अपेक्षित ।
जायण-स्त्री० [सं० यातना] १ कष्ट, पीड़ा । २ याचना ।
जायतेथ-स्त्री० [सं० जाततेजस] अग्नि, प्राण ।
जायव-वि० [फा०] अधिक, ज्यादा ।
जायदाद-स्त्री० [फा०] सम्पत्ति, धन । — गैरममकूला-स्त्री० अचल सम्पत्ति । — जोजियत-स्त्री० स्त्री के अधिकार की सम्पत्ति । — ममकूला-स्त्री० गिरवी रखी सम्पत्ति । — मनकूला-स्त्री० चल सम्पत्ति । — मुतनाजिधा-स्त्री० विवाद ग्रस्त संपत्ति । — सौहरी-स्त्री० पति की सम्पत्ति ।
जायनमाज-पु० [फा०] नमाज पढ़ते समय बिछाने का वस्त्र ।
जायपत्री-स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल का छिलका ।
जायफळ-पु० [सं० जातिफन] बेर के आकार की एक सुगंधित औषधि जो खाद्य पदार्थों में भी डाली जाती है ।
जायकब-पु० [सं० जातरूप] सोना, स्वर्ण । (जैन)
जाया-स्त्री० [सं०] १ स्त्री, महिला । २ पत्नी । ३ जन्म कुण्डली का एक योग । ४ यात्रा । ५ शरीर निर्वाह । — जीव-पु० पत्नी की कमाई पर जीने वाला ।
जायाड (ई)-पु० [सं० यायाजिन्] यज्ञकर्त्ता, याजक ।
जायो-स्त्री० [सं० जायिन] १ संगीत में एक ताल । २ बेटी, पुत्री ।
जायोड़ी, जायो-वि० [सं० जात] (स्त्री० जायोड़ी, जायो) १ जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ । २ उत्पन्न, जन्मा हुआ । —पु० १ पुत्र, लड़का । २ वच्चा ।

जारंग-वि० हजम करने वाला ।

जार-वि० [सं०] १ परस्त्री गामी । २ आशिक, प्रेमी ।
३ व्यभिचारी । -पु० १ रुस के सम्राट की उपाधि ।
२ ध्वंस, संहार । —कर्म-पु० व्यभिचार, परस्त्रीगमन ।
—ज-वि० पर पुरुष या यार की संतान ।

जारजयोग-पु० [सं० जारजयोग] फलित ज्योतिष में कुण्डली का एक योग ।

जारही-देखो 'जार' ।

जारठ-वि० वृद्ध, बूढ़ा ।

जारण-पु० [सं०] १ जलाने या भस्म करने की क्रिया या भाव । २ पारे का ग्यारहवां संस्कार । ३ नाश, ध्वंस ।

जारणी-वि० (स्त्री० जारणी) १ मारने वाला, संहार करने वाला । २ नाश करने वाला । ३ जलाने वाला । ४ पचाने वाला ।

जारणी (बी)-क्रि० [सं० जृ] १ जलाना, भस्म करना । २ पचाना, हजम करना । ३ मारना, संहार करना । ४ सहन करना । ५ शांत करना ।

जारत, जारता-स्त्री० [अ० जियारत] तीर्थयात्रा ।

जारदबी (बी)-स्त्री० [सं०] ज्योतिष में मध्य मार्ग की एक बीधी ।

जारां-क्रि० वि० जब ।

जारिणी-स्त्री० [सं०] छिनाल औरत, व्यभिचारिणी स्त्री । दुश्चरित्रा ।

जारिसि (सी)-वि० [सं० याज्ञ] जैसे (जैन) ।

जारी-क्रि० वि० [अ०] बहता हुआ, चलता हुआ । -स्त्री० १ बदमाशी, बर्झमाना । २ व्यभिचार, पर स्त्री गमन । ३ देखो 'भारी' ।

जारोबकस (बगस)-पु० [फा० जारुबकस] भाड़ लगाने वाला, मंगी ।

जासंग-पु० बकरी के बालों से बना मोटा वस्त्र ।

जाळंधरा-स्त्री० एक देवी विशेष ।

जाळंधरी, जाळंधरीविद्या-स्त्री० १ माया, इन्द्रजाल । २ एक प्रकार की विद्या ।

जाळंधरीनाथ, जाळंध्री-देखो 'जळंधरनाथ' ।

जाळ-पु० [सं० जाल] १ एक प्रकार का बड़ा वृक्ष । २ एक प्रकार की बंदूक । ३ डोरी या तारों का बना फंदा, जाल । ४ मकड़ी का जाल, जाली । ५ पड़यंत्र । ६ किसी बात का ताना-माना । ७ मछली पकड़ने का फंदा । ८ रोगन दान । ९ कवच । १० खिड़की । ११ माया । १२ भ्रम । १३ जादू । १४ झुण्ड, समूह । १५ सांसारिक प्रपंच ।

१६ कर्मबंधन । १७ मोतियों का गुच्छा । १८ पाखंड । १९ झांख की पुतली पर की झिल्ली । २० प्याज की परत की भीतरी झिल्ली । २१ तीव्र की जड़ में होने वाला एक रोग । २२ चासनी या बगार की परिपक्ववस्था । २३ देखो 'झाळ' ।

जाळवर-पु० [सं० ज्वालापुर] जालौर नगर का प्राचीन नाम । जाळक-वि० जलाने वाला ।

जाळकार-वि० जाल रचने वाला, जाली, पड़यंत्रकारी, पाखंडी । -स्त्री० मकड़ी ।

जाळकिरच-स्त्री० परतला मिली बह पेटी जिसके साथ तनवार भी हो ।

जाळकोसी-स्त्री० किसी वस्तु में बने छोटे-छोटे छेदों का समूह ।

जालन-पु० [सं० जालक] द्विन्द्रिय जीव समूह (जैन) ।

जाळजीवी-पु० [सं० जालजीवी] मछुआ, धीवर ।

जाळण-वि० [सं० ज्वलन] जलाने वाला । -स्त्री० अग्नि ।

जाळणी-पु० जालीदार झरोखा ।

जाळणी (बी)-देखो 'जळाणी' (बी) ।

जाळदार-वि० १ जिसमें जाली लगी हों । २ कपटी, पड़यंत्रकारी, धोखेबाज ।

जाळपादेवी-स्त्री० एक देवी विशेष ।

जाळप्राया-पु० [सं० जालप्राया] कवच ।

जाळव-पु० बलराम द्वारा मारा गया एक दैत्य ।

जासवडणी (बी)-देखो 'झालणी' (बी) ।

जाळवणी (बी)-क्रि० १ जलाना । २ सुरक्षित रखना, संभालना ।

जाळसाज-वि० धोखेबाज, पड़यंत्रकारी ।

जाळसाजी-स्त्री० धोखाधड़ी । धूर्तता । पड़यंत्र, कुचक्र ।

जाळा (जाला)-स्त्री० [सं० ज्वाला] १ अग्नि, आग । २ अग्नि की लपट, लौ ।

जालाज-पु० [सं० जालायुष] एक प्रकार का द्विन्द्रियजीव ।

जाळानळ-स्त्री० [सं० ज्वालानल] अग्नि, आग ।

जाळाहळ-पु० [सं० ज्वालन] १ ज्वाला, अग्नि । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ जलाशय, तालाब ।

जाळि-१ देखो 'जाली' । २ देखो 'जाल' ।

जाळिक-पु० [सं० जालिक] १ मछुआ, केवट । २ जाल बनाने वाला । ३ जाल बिछाने वाला । ४ बाजीगर । ५ मकड़ी । ६ चिड़ी मार, बहेलिया । ७ गुण्डा, बदमाश ।

जाळिका-स्त्री० [सं० जालिका] १ जाली, फंदा । २ मकड़ी । ३ समूह । ४ कपट, छल । ५ एक जाति विशेष । ६ जौक । ७ कवच । ८ लोहा । ९ घूंघट ।

जाळिधर-पु० जालोर का एक नाम ।

जालिम-वि० [अ०] १ गुण्डा, वदमाश । २ क्रूर, निर्दयी ।
३ आततायी, जुल्मी । ४ झूठा । ५ जबरदस्त, जोरदार ।
६ वीर, योद्धा ।

जालिय-पु० [सं० जालिक] गले का एक आभूषण विशेष ।

जाळियल-स्त्री० अग्नि, आग ।

जाळिया-पु० जाल वृक्ष के फल, पीनू ।

जाळिपौ-वि० जालसाज, धोखेबाज ।

जाळी-स्त्री० [सं० जालिका] १ डोरों या तारों की बनी कोई चादरनुमा वस्तु । २ एक प्रकार का कमीदा । ३ छिद्रित वस्त्र । ४ भरोखा, गवाक्ष । ५ जालीनुमा कवच । ६ जूट के मुंह पर बांधने का उपकरण । ७ लट्टू चलाने की डोरी । ८ चासनी या छौंक के मसालों की परिपक्ववास्था । -वि० १ कपटी, जालसाज, धूर्त । २ तकली, झूठा, फर्जी ।

जाळीका-स्त्री० १ एक प्रकार का कवच । २ जाली ।

जाळीदार, जाळीबंद (बंध)-वि० जिसमें जाली लगी हो । -पु० डिंगल में एक प्रकार का चित्रकाव्य ।

जाळीयल-देखो 'जाळियल' ।

जाळोट्ट-पु० फोग वृक्ष का एक रोग विशेष ।

जाळोडुसाली-पु० एक लोग गीत ।

जाळोवाळि (ळी)-स्त्री० अग्नि, आग ।

जाळी-पु० [सं० जाल] १ मकड़ी का जाल । २ आंख की पुतली पर पड़ने वाली झिल्ली । ३ जाल । ४ अंधेरा ।
५ किसी पात्र में जमाया हुआ कंडों का ढेर ।

जावत-वि० [सं० यावत्] जितने । (जैन)

जाव-पु० १ कुए के पास की कृषि भूमि । २ मेहवी । ३ देखो 'जाव' । -क्रि० वि० [सं० यावत्] जब तक । (जैन)

जावक-पु० [सं० यावक] महावर ।

जावजीव, जावज्जीव-अर्थ० [सं० यावज्जीव] जीवन पर्यन्त ।

जावण-पु० [सं० यापन] १ निर्वाह । (जैन) २ दूध की जमाने के लिए डाली जाने वाली छाछ या खटाई ।

जावणी (बो)-क्रि० [सं० यानम्] १ एक स्थान से चलकर कहीं दूसरे स्थान पर जाना । २ प्रस्थान करना, रवाना होना । ३ यात्रा करना । ४ चलना, फिरना । ५ अलग होना, दूर होना । ६ स्थान छोड़ कर कहीं अन्यत्र होना । ७ अधिकार या काबू से बाहर होना । ८ चोरी होना । ९ गुम होना, गायब होना । १० व्यतीत होना, गुजर जाना बीतना । ११ नष्ट होना, बिगड़ना । १२ सरना, अवसान होना । १३ बहना, जारी होना । १४ अकर्मण्य होना । १५ मिटना, शान्त होना । १६ भागना । १७ किसी बात या प्रसंग को छोड़ देना ।

जावत-अव्य० जब तक, यावत् ।

जावती-वि० [सं० यावत्] जितना । (जैन)

जावती, जावती-स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल का सुगंधित छिलका ।

जावनी-स्त्री० यवन भाषा ।

जावय-वि० [सं० यापक] १ व्यतीत करने वाला (जैन) ।
[सं० जापक] २ राग-द्वेष को जीतने वाला (जैन) ।

-पु० [सं० यावक] लाख का रंग (जैन) ।

जावरी (री)-वि० १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना । २ वृद्ध (जैन) ।

जावालि-स्त्री० अग्नि ।

जावेल-पु० [सं० जात्यतेलम्] चमेली का तेल ।

जावो-पु० पशुधर्म की मंदाग्नि मिटाने की औषधि ।

जास-क्रि० वि० जिससे, जैसे । -सर्व० जिस । जिन । -पु० [सं० जाष] १ एक प्रकार का पिशाच (जैन) । २ समूह । ३ देखो 'ज्यास' ।

जासती-वि० अधिक, अति । -स्त्री० अत्याचार । ज्यादाती ।

जासु (सू, सू)-सर्व० जिस, जिन ।

जासूल-स्त्री० चमेली ।

जासूस-पु० [अ०] गुप्तचर, भेदिगा ।

जासूसी-स्त्री० [अ०] जासूस का कार्य, गुप्तचरी ।

जाह-स्त्री० [सं० ज्या] वनुष की डोरी, प्रत्यंचा । -सर्व० जिस ।
-वि० संकोची, शमीला ।

जाहर-देखो 'जाहिर' ।

जाहरां-क्रि० वि० १ जब, तब । २ देखो 'जाहिरा' ।

जाहरात-१ देखो 'जाहिरा' । २ देखो 'जवाहरात' ।

जाहरी-स्त्री० प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा ।

जाहू (हू)-देखो 'जाहिर' ।

जाहिर-वि० [अ०] १ प्रकट, विदित । २ प्रसिद्ध, मशहूर ।

जाहिरां (रां)-क्रि० वि० प्रत्यक्ष में, प्रकट में ।

जाहिल-वि० [अ०] १ मूर्ख, बेवकूफ । २ अज्ञानी, अनाड़ी, असम्य । ३ नादान ।

जाही-स्त्री० [सं० जाति] चमेली, जूही ।

जि-सर्व० जिस ।

जिद-पु० [अ० जिन] १ प्रेत, भूत । [फा० जिन्दः] २ जीव, प्राण । ३ शरीर ।

जिदगानी (गानी), जिदगी-स्त्री० [फा० जिदगानी, जिदगी] १ जीवन । २ जीवन काल, आगु ।

जिदड़ी-स्त्री० १ फूहड़ व अनाड़ी स्त्री । २ काया, शरीर । ३ प्रेतनी ।

जिदबाराभात-पु० दामाद को परोसा जाने वाला चावल-भात ।

जिदु, जिदौ-वि० [फा० जिन्दः] १ जीवित, जीता-जागता । २ जी उठने वाला । -पु० १ मुल्ला । २ देखो 'जिद' ।

जिञ्झाळी-पु० जंभासुर राक्षस ।
जिस-स्त्री० [फा०] १ वस्तु । २ सामान, सामग्री । ३ भदद,
नग । — वार-क्रि० वि० वस्तु वार, भ्रम-भ्रमलग ।
जिह-सर्व० १ जो । २ जिस ।
जिह्नी-क्रि० वि० जैसे ।
जि-सर्व० १ जो, जिस । २ उस, वह । —अव्य० निश्चय
सूचक, ही ।
जिञ्जती-स्त्री० [सं० जीवती] एक प्रकार की लता (जैन) ।
जिञ्ज-वि० [सं० जित] १ जीतने वाला । २ देखो 'जीव' ।
— ट्ठाण-पु० जीव का स्थान भेद । (जैन)
जिञ्जा-सर्व० जो, जिन, जिन्होंने । —क्रि० वि० जैसे, ऐसे, इस
प्रकार ।
जिञ्जार-क्रि० वि० जब ।
जिञ्जारी-देखो 'जीवारी' ।
जिञ्ज-अव्य० उधों, जैसे ।
जिञ्ज-देखो 'जीव' ।
जिए (ऐ)-सर्व० जो, जिस ।
जिकण-सर्व० जो, जिस । उस ।
जिका, जिका-सर्व० देखो 'जिकण' ।
जिकिर, जिक-पु० [अ० जिक्र] बातचीत । प्रसंग । चर्चा ।
जिके (कै)-सर्व० वे उस ।
जिकी-सर्व० [सं० यः + कोऽपि] जो, वह । उस ।
जिञ्ज्याली-स्त्री० यक्षिणी ।
जिगंन, जिग (न, नि, नी)-पु० [सं० यज्ञ] १ यज्ञ । २ विवाह ।
३ मांगलिक जलसा, समारोह । उत्सव । ४ यज्ञाग्नि ।
जिगर-पु० [फा०] १ कलेजा, हृदय । २ यकृत । ३ दिल, चित्त,
मन । ४ होसला ।
जिगरी-वि० [फा०] १ अत्यन्त प्रिय, खास प्रेमी । २ दिल
संबंधी, दिली ।
जिगवासपत-पु० [सं० यज्ञाशिपति] इन्द्र ।
जिगसाळ-स्त्री० [सं० यज्ञशाला] यज्ञशाला ।
जिगान-पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ ।
जिगि, जिगिन-देखो 'जिग' ।
जिगिर-देखो 'जिगर' ।
जिगीसा-स्त्री० [सं० जिगीषा] जय प्राप्ति की इच्छा ।
जिग-देखो 'जिग' ।
जिग्यास, जिग्यासा-स्त्री० [सं० जिज्ञासा] १ जानने की इच्छा ।
२ उत्कृष्टता उत्कण्ठा ।
जिग्यासु जिग्यासू-वि० [सं० जिज्ञासु] उत्सुक, इच्छुक ।
जिञ्जभाण-क्रि० वि० [सं० जोयमानः] हारता हुआ (जैन) ।
जिञ्जक-देखो 'भिञ्जक' ।
जिञ्जमान-देखो 'जजमान' ।

जिङ्ठ-वि० [सं० ज्येष्ठ] १ बड़ा । २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ । (जैन)
जिङ्ठा-वि० बड़ी । —स्त्री० १ बड़ी बहन । २ जिठानी ।
३ भगवान महावीर की पुत्री । ४ ज्येष्ठा नक्षत्र ।
—मूळ-पु० ज्येष्ठ मास ।
जिठाणी-स्त्री० जेष्ठ की स्त्री, पति की भाभी ।
जिडो-वि० जितना ।
जिणंब (वक, राघ) जिणंबू-पु० [सं० जिनेंद्र] जैनियों के
तीर्थंकर ।
जिण-सर्व० जिन, जिस । —वि० [सं० जिन] १ जीतने वाला ।
२ राग द्वेष से परे । ३ चौदह वर्ष पूर्व के ग्रंथों को जानने
वाला । ४ अतींद्रिय ज्ञान वाला । —पु० १ जन, भक्त ।
२ संतान । ३ जिनदेव । ४ देखो 'जिन' । —कप्पि,
कप्पिय-पु० उत्कृष्ट आचार वाला जैन साधु ।
जिणख्खाय-वि० [सं० जिनाख्यात] जिनेन्द्र का कहा हुआ ।
जिणगी-क्रि० वि० जिस जगह, जिस तरफ ।
जणचंद-पु० ग्रहन् देव । एक जैनाचार्य ।
जिणणी-देखो 'जननी' ।
जिणणी (बी)-देखो 'जगणी' (बी) ।
जिणविट्ठ-वि० [सं० जिनद्रष्टृ] जिनेन्द्र द्वारा अनुभूत ।
जिणदेव-पु० जैन तीर्थंकर ।
जिणदेसिअ (देसिय)-वि० [सं० जिनदेशितः] जिनेन्द्र द्वारा
प्रतिपादित ।
जिणधम्म-पु० जैन धर्म । (जैन)
जिणपडिमा-स्त्री० [सं० जिनप्रतिमा] १ ग्रहन्देव की मूर्ति ।
२ वृषभ, वर्द्धमान, चन्द्रानन आदि के नाम से पहिचानी
जाने वाली शाश्वती प्रतिमा ।
जिणभद्-पु० एक जैन आचार्य, ग्रंथकार ।
जिणमय-पु० [सं० जिनमत] जैन दर्शन ।
जिणवय-पु० जिनपति ।
जिणवयण-पु० जिन वचन ।
जिणवर (वहू)-पु० [सं० जिनवर] जिनदेव, ग्रहन्देव ।
जिणिआर-वि० प्रसिद्ध, विख्यात । —स्त्री० जननी माता ।
जिणिणि, जिणिणी-स्त्री० [सं० जननी] माता ।
जिण्ण-१ देखो 'जिण' । २ देखो 'जिन' । —तम =
'जिणोत्तम' ।
जिणोसर (सरु, सरु, सरो)-देखो 'जिनेसर' ।
जिणोत्तम-पु० जैन तीर्थंकर ।
जिणोवडिट्ठ-पु० [सं० जिनोपदिष्ट] जिनदेव द्वारा प्रतिपादित ।
जिण्ण-१ देखो 'जिण' । २ देखो 'जिन' । ३ देखो 'जीरण' ।
जिण्णकुमारी-स्त्री० वृद्धा स्त्री ।
जिण्णास-स्त्री० [सं० जिज्ञासा] इच्छा, अभिलाषा, उत्सुकता ।

जिन

(४७०)

जियादा

जित-वि० [सं०] १ जीता हुआ, वशवर्ती । २ प्रातः ।
 ३ कविकृत । ४ जल्दी स्मरण आने वाला । (जैन)
 ५ जीतने वाला । -क्रि० वि० जहाँ, जहाँ पर । देखो 'जीत' ।
 —इंद्रिय, इंद्रि= 'जितेन्द्रिय' ।
 जितणा-वि० जितना ।
 जिततित-क्रि० वि० जहाँ-तहाँ, यत्र-तत्र ।
 जितरे-क्रि० वि० जब तक, तब तक, इतने में ।
 जितरी-वि० (स्त्री० जितरी) १ जिस मात्रा में जितना ।
 २ परिमाण विशेष का ।
 जिताणी (बो)-देखो 'जीताणी' (बो) ।
 जितिदिय, (द्रिय)-देखो 'जितेन्द्रिय' ।
 जितू-देखो 'जितो' (स्त्री० जितो) ।
 जितेंद्र, जितेंद्रि (द्रिय, द्रो)-वि० [सं० जितेन्द्रिय] १ इन्द्रियों
 को वश में रखने वाला, संयमी । २ समवृत्ति, शांत ।
 जिते (तें)-क्रि० वि० जब तक, तब तक ।
 जितोक, जितो, जितोक, जितो-वि० (स्त्री० जितो, जितो, जितो)
 जितो) जितना, परिमाण विशेष के बराबर ।
 जिद, जिह-स्त्री० [प्र० जिद] १ शत्रुता, वैर । २ हठ, दुराग्रह ।
 जिही-वि० [प्र० जिही] १ हठी, दुराग्रही । २ शत्रु, वैरी ।
 जिन-पु० [सं०] १ शिष्ट । २ सूर्य । ३ अर्जुन । ४ बुद्ध ।
 ५ जैनों के तीर्थंकर । ६ जैन साधु । ७ भूत-प्रेत । -सर्व०
 जिस का बहुवचन रूप । -अव्य० निषेध सूचक ध्वनि, भत ।
 जिनकल्पी-पु० उत्कृष्ट आचार वाला साधु । (जैन)
 जिनचंद-देखो 'जिणचंद' ।
 जिन्यति, जिनपास-पु० जैनों के तीर्थंकर ।
 जिनमत-पु० [सं०] जैन दर्शन ।
 जिनराइ (राज, राजी, राय, रायी, रिस, रिसी, वर, वर वरौ)-
 -पु० [सं० जिनराज, जिनकृषि, जिनवर] जैनों के तीर्थंकर ।
 जिनस-स्त्री० [प्र० जिन्म] १ कोई वस्तु, चीज, पदार्थ ।
 २ सामग्री । ३ खाद्य पदार्थ । ४ चित्र, नक्शा । ५ तरह,
 प्रकार, किस्म ।
 जिना-पु० [प्र०] व्यभिचार ।
 जिनाकार-वि० [क्रि०] व्यभिचारी ।
 जिनाकारी-स्त्री० व्यभिचार ।
 जिनावर-देखो 'जानवर' ।
 जिनिस-देखो 'जिनस' ।
 जिनेवा-१ देखो 'जनेता' । २ देखो 'जनेत' ।
 जिनेसर (राय), जिनेसर, जिनेस्वर-[सं० जिन-ईश्वर] जिन
 देव, अहंत् ।
 जिनोई-देखो 'जनेऊ' ।
 जिन्न-वि० [सं० जीर्ण] १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना । २ देखो
 'जिण्ण' । ३ देखो 'जिन' ।

जिन्ना-देखो 'जिन' ।
 जिन्नावर-देखो 'जानवार' ।
 जिन्ह-देखो 'जिन' ।
 जिबह, जिबा-स्त्री० [प्र० जिबह] गला काट कर मारने की
 क्रिया ।
 जिम्म, जिम्मा-स्त्री० जीम, जिम्मा । -ईश-वि० जिम्मा का
 दमन करने वाला ।
 जिम्मिन्ना-स्त्री० [सं० जिम्मिन्ना] १ पानी निकालने की नाली ।
 २ देखो 'जीम' ।
 जिम्मिदिय-पु० जिम्मा, रसना ।
 जिम्मे-देखो 'जिबह' ।
 जिम्मा-देखो 'जीम' ।
 जिम्माप-पु० [सं० जिम्माप] कुत्ता, श्वान ।
 जिम्म-अव्य० [सं० यिव] १ जिस प्रकार, जैसे । २ देखो 'जम' ।
 जिम्माउ (खु)-१ देखो 'जीवणी' । २ देखो 'जीमण' ।
 जिम्मावार, जिम्मार-देखो 'जीमणवार' ।
 जिम्मित-क्रि० वि० जैसे-तैसे ।
 जिमाणी (बो), जिमावणी (बो)-देखो 'जीमाणी' (बो) ।
 जिमि (मी)-१ देखो 'जिम' । २ देखो 'जमी' ।
 जिम्माप-पु० [सं० जिम्माप] तीर, बाण ।
 जिम्मावार, जिम्मार-देखो 'जिम्मेवार' ।
 जिम्मेवारी-देखो 'जिम्मेवारी' ।
 जिम्मेवार-वि० [प्र०] १ किसी कार्य या बात का उत्तर-
 दायित्व रखने वाला ।
 जिम्मेवारी-स्त्री० [प्र०] १ उत्तरदायित्व, जबाबदेही ।
 २ गंभीरता ।
 जिम्मा-पु० [प्र० जिम:] उत्तरदायित्व, भार ।
 जिम्मा, जिम्मा-पु० [सं० जिम्मा] सर्प, साँप ।
 जियंतग, जियंतय-पु० [सं० जीवान्तक] एक प्रकार की
 वनस्पति ।
 जियंतो-स्त्री० [सं० जीवन्ती] एक प्रकार की लता विशेष ।
 जिय-पु० [सं० जीव] १ जीव, प्राणी । २ जीवन, प्राण ।
 ३ हृदय, मन, दिव । ४ ध्वन्यात्मक शब्द । -स्त्री० [सं० जित]
 ५ विजय, जीत ।
 जियसत् (तू)-वि० [सं० जितशत्रु] जीतने वाला । -पु०
 अजीतनाथ के पिता (जैन) ।
 जियसेण-पु० [सं० जितसेन] भरत क्षेत्र के तृतीय कुलकर का
 नाम । (जैन)
 जिपां (न)-क्रि० वि० जैसे । -सर्व० जिन, जिन्होंने ।
 जियान-पु० यज्ञ, हवन ।
 जियावती-देखो 'ज्यादती' ।
 जियादा-देखो 'ज्यादा' । -सर= 'ज्यादातर' ।

जियाकत-स्त्री० [प्र०] १ मेहमानदारी । [प्र० हिफाजत]
२ हिफाजत, देखरेख, रक्षा ।

जियार-क्रि०वि० जिस समय, जब । -पु० जीवन ।

जियारत-स्त्री० [प्र०] १ तीर्थ यात्रा । २ दर्शन, दीदार ।

जियारती-पु० १ तीर्थ यात्री । २ दर्शनार्थी ।

जियारां-क्रि०वि० जिस समय, जब ।

जियारि-पु० [सं० जितारि] तीसरे तीर्थंकर के पिता (जैन) ।

जियारी-देखो 'जीवारी' ।

जिरह-स्त्री० [प्र० जुरह] १ सच्ची बात उगलवाने के लिए
धुमा फिरा कर को जाने वाली पूछताछ । २ बकीलों की
बहस । ३ तर्क-वितर्क । [फा० जिरह] ४ कवच ।

जिरही-वि० १ कवचधारी । २ बहस करने वाला ।

जिराफ-पु० [प्र० जुराफ] अत्यन्त लंबी गर्दन व ठिगनी पीठ
का एक जानकार विशेष, जराख ।

जिलबत-स्त्री० [प्र० जिल्बत] स्वयं की प्रगट करने की क्रिया
या भाव ।

जिलह-देखो 'जिले' । —बार= 'जिलेदार' ।

जिलहरी-पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।

जिलाइयत-देखो 'जिलायत' ।

जिलाशी (बो)-देखो 'जीवाशी' (बो) ।

जिलाबारी-स्त्री० [फा०] १ जिलेदार या जिलायत का पद ।
२ इस पद के कर्तव्य ।

जिलायत-पु० [फा०] १ जिलाधीश, जिले का अधिकारी ।
२ छोटा जागीरदार ।

जिलासाज-पु० सिकलीगर ।

जिलो-वि० १ कमजोर, निर्बल । २ पतला, क्षीण । ३ देखो
'मिल्ली' ।

जिलेबार-देखो 'जिलायत' ।

जिलेबी-देखो 'जलेबी' ।

जिले-स्त्री० [प्र० जिला] १ आभा, कांति । २ शोभा छवि ।
—बार-वि० चमकदार, कांति युक्त । बड़े जागीरदार के
अधीनस्थ छोटा जागीरदार ।

जिलो-पु० [प्र० जिला] १ किसी एक जिलाधीश या प्रशासक
के अधिवासन में रहने वाला क्षेत्र, प्रान्त । २ किसी बड़े
जागीरदार के अधीन छोटे-छोटे जागीरदारों का एक
मिश्रित क्षेत्र । ३ सेना, फौज । [तु०] ४ अधिकार, वश,
काबू । ५ लगाम । ६ राजाओं की सवारी का कोतल
घोड़ा ।

जिल्ब-स्त्री० [प्र०] १ ऊपर का चमड़ा । २ पुस्तक का
आवरण । ३ दपती लगाकर किसी पुस्तक के आवरण की
मजबूत सिलाई । ४ किसी ग्रंथ की एक कृति, भाग या उप-
खण्ड । —गर, बद्-वि० जिल्द बनाने वाला । —बंदी-स्त्री०

जिल्द बनाने का कार्य । —साज-पु० जिल्द बनाने वाला
कारीगर । —साजी= 'जिल्दबंदी' ।

जिल्सायत-देखो 'जिलायत' ।

जिल्सी, जिल्ही-देखो 'जिनो' ।

जिवड़ी-वि० १ जैसा, वैसा, समान । २ देखो 'जीव' ।
(स्त्री० जीवड़ी) ।

जिवणी (बो)-देखो 'जीवणी' (बो) ।

जिवतसिभ-देखो 'जीवतसिभ' ।

जिवाणी-देखो 'जीवाणी' ।

जिवाई-स्त्री० जीने की क्रिया या भाव । जीवन । आयु ।

जिवाशी (बो)-देखो 'जीवाशी' (बो) ।

जिवारी-देखो 'जीवारी' ।

जिह्वा-स्त्री० [मं० जिह्वा] जीभ, रमना ।

जिस (उ)-वि० विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ 'जो' का रूप ।

—क्रि०वि० जैसे, जिस प्रकार । —सर्व० विभक्ति लगने के
पहले 'जो' का रूप ।

जिसउ, जिसड़ी-देखो 'जिमो' ।

जिसन (नु)-पु० [सं० जिणु] १ अर्जुन । २ इन्द्र । ३ विष्णु ।
४ सूर्य । —वि० जोतने वाला, बिजयी ।

जिसम, जिसिम-पु० [फा० जिस्म] शरीर, देह, तन ।

जिसी-वि० (स्त्री० जिमिड, जिमी) जैसा, वैसा ।

जिस्थु (स्थू)-देखो 'जिसन' ।

जिस्थान-क्रि०वि० जैसे, जिस प्रकार । —वि० जैसा ।

जिस्थू, जिस्थी-क्रि०वि० जैसे । —वि० जैसा ।

जिहं-सर्व० जिस । —क्रि० वि० जहाँ ।

जिह-देखो 'जिम' ।

जिहग-पु० [सं० जिहग] सर्प । तीर, बांस ।

जिहड़ी-देखो 'जिमो' ।

जिहां-क्रि०वि० जहाँ, जिन जगह । —सर्व० जिन ।

जिहानी-वि० संसार, संबंधी, सांसारिक ।

जिहाब-पु० [प्र०] मुसलमानों का धार्मिक शुद्ध धार्मिक
प्राग्दोलन ।

जिहाळत-स्त्री० [प्र० जहालत] मूर्खता । अज्ञानता ।

जिहि, जिहि-सर्व० जिस । —क्रि०वि० जैसे । —वि० जैसा ।

जिह्ग, जिह्ग-वि० [सं० जिह्ग] १ घोमा, मंद । २ टेढ़ा-
मेढ़ा चलने वाला । —पु० सर्प ।

जिह्गति-पु० सर्प, सांप ।

जिह्वापूछ-पु० जीभ का पिछला भाग ।

जिह्वापूछी. (मूछीय)-वि० जिह्वापूछ से संबंधित ।

जिह्वालिह-पु० [मं०] श्वान, कुत्ता ।

जिह्वास्तंभ-पु० [मं०] एक प्रकार का वात रोग ।

जी-सर्व० जिस ।

जीका (जी)-स्त्री० १ ईंट व खपरैल का महीन चूर्ण ।
२ बारीक वृद्धि ।

जीगड़ी-पु० (स्त्री० जीगड़ी) छोटा बड़ड़ा । (मेवात)

जीजणियाळ-स्त्री० देवी शक्ति ।

जीजणी-स्त्री० एक कंटीली भाड़ी विशेष ।

जीजो जीझ, जीझी-पु० १ कांसी या पीतल का बना एक वाद्य,
भांज । २ एक कंटीली भाड़ी विशेष । ३ एक वृक्ष विशेष ।

जीमणी-देखो 'जीवणी' ।

जीमणी (बी)-देखो 'जीमणी' (बी) ।

जीवणी-वि० (स्त्री० जीवणी) १ दाहिना, दायाँ । २ दक्षिणी
पार्श्व का । -पु० दाहिना हाथ ।

जी-पु० १ पिता । २ पितामह । ३ हाँ का आदर सूचक रूप ।
[सं० जीव] ४ प्राण, जीव, आत्मा । [सं० आश्रय]
५ घृत, घी । -प्रत्य० १ एक संयोजक शब्द, कि ।
२ किसी के नाम के अन्त में या किसी वात के प्रत्युत्तर में
बोला जाने वाला शब्द ।

जीउ, जीऊ-१ देखो 'जिउ' । २ देखो 'जीव' ।

जीकार, जीकारी-पु० बोलते समय 'जी' शब्द का प्रयोग करने
की क्रिया ।

जीकाळी-देखो 'जीका' ।

जीसेस-पु० [सं० ऋषभेय] शिव का बँल, नदी ।

जीजा, जीजी-स्त्री० बड़ी बहन ।

जीजासा, जीजोसा, जीजी-पु० वहनोई, बड़ी बहन का पति ।

जीण-स्त्री० १ एक प्रकार का मोटा व मजदूत सूती वस्त्र ।
२ घोड़े का चारजामा । ३ देखो 'जीवन' । ४ देखो 'जूरण' ।
५ देखो 'जीरण' । ६ देखो 'जिण' । -गर-पु० चारजामा
बनाने वाला मोची । -माता-स्त्री० एक देवी विशेष ।
गीरर जिने में स्थित इस देवी की अष्टभुजी प्रतिमा । -पोस
-पु० चारजामे पर बिछाने का वस्त्र विशेष । -सवारी-स्त्री०
चारजामा रखकर की गई सवारी । -साज-पु० चारजामा
वनाने वाला । -साव, सावित्री-पु० एक प्रकार का
कवच ।

जीली-१ देखो 'जिण' । २ देखो 'भीली' ।

जीली (बी)-देखो 'जीवणी' (बी) ।

जीत-स्त्री० [सं० जिति] १ विजय, जय । २ सफलता ।
३ लाभ, फायदा ।

जीतणी-वि० (स्त्री० जीतणी) विजयी ।

जीतणी (बी)-क्रि० १ विजय प्राप्त करना, जीतना, विजयी
होना । २ सफल होना । ३ अधिकार में करना, पक्ष में
करना । ४ लाभ प्राप्त करना ।

जीतव (व)-पु० [सं० जीवितव्य] जीवन, जिन्दगी ।

जीतरणताळ-पु० [सं० रणतालजित] तलवार, खड्ग ।

जीताइणी (बी), जीतणी (बी), जीतावणी (बी)-क्रि०
१ विजय प्राप्त कराना, जीताना । २ सफलता प्राप्त
कराना । ३ अधिकार या वश में कराना । ४ लाभ कराना,
फायदा कराना ।

जीनत-स्त्री० [फा०] १ तैयारी । २ शोभा ।

जीनोई-देखो जनेऊ ।

जीनो-पु० सीढ़ी, जीना ।

जीप-स्त्री० १ जीत, विजय । २ एक प्रकार की मोटरगाड़ी ।

जीपणी (बी)-देखो 'जीतणी' (बी) ।

जीपल-वि० जीतने वाला, विजयी ।

जीब (बी)-स्त्री० [सं० जिह्वा] १ बड़ई का एक औजार ।
२ जीभ का मैल उतारने की चिप्पी । ३ जीभ, जिह्वा ।
४ जिह्वानुमा कोई उपकरण ।

जीभ, जीभइली, जीभड़ी-स्त्री० [सं० जिह्वा] १ मुँह के अन्दर
स्थित एक मुख्य अंग जो खाने-पीने व बोलने की क्रिया
करता है, जिह्वा । २ वाणी, बोली, जवान । ३ कलम
की नोक ।

जीभप-पु० कुत्ता, श्वान ।

जीमण(न)-पु० [सं० जेमनस] १ खाना, भोजन । २ मिष्टान्न,
मिठाई । ३ भोज, भोज का खाना — चार-पु० बड़ा भोज ।
कई व्यक्तियों का सामूहिक भोजन ।

जीमणियाळ-वि० दक्षिणी पार्श्व का या भाग का, दाहिना ।

जीमणी (बी)-क्रि० [सं० जिम्] १ खाना, भोजन करना ।
२ हजम करना ।

जीमाइणी (बी), जीमाणी (बी), जीमावणी (बी)-क्रि०
भोजन कराना, खाना खिलाना ।

जीमूत-पु० [सं०] १ बादल, मेघ । २ इन्द्र । ३ एक मल्ल
विशेष । ४ एक ऋषि । ५ शालमनी द्वीप का एक देश ।
—रिखि-पु० एक ऋषि । —वाहण (न)-पु० शानि वाहन
राजा का पुत्र । इन्द्र ।

जीमूणी (बी)-देखो 'जीमणी' (बी) ।

जीय-पु० १ परम्परा, प्रथा, रीति । २ व्यवस्था । ३ कर्तव्य,
धर्म । ४ देखो 'जीव' । —कण्ठ-पु० परम्परागत आचार ।
—कण्ठी-वि० उक्त प्रकार के आचार वाला । —निश
—स्त्री० पाप की निंदा । पापी के स्थान पर पाप की निंदा
करने वाला । स्वल्प निंदा लेने वाला । —परिखह, परितह
—वि० परिमर्हों को जीतने वाला । —मांख-वि० नियम
से मान को पराजित करने वाला । —माय-वि० माया को
पराजित करने वाला । —लौह-वि० लोभ को पराजित
करने वाला ।

जीयापोती-स्त्री० एक प्रकार की जड़ी, पुत्रजीवक ।

जीयै-सर्व० जो, जिस ।

जोर, जीरज, जीरक, जीरय-देखो 'जीरी' ।

जीरण-वि० [सं० जीर्ण] १ पुराना, प्राचीन । २ पुराना होने से फूटा-टूटा, जर्जर । ३ कमजोर, निर्बल । ४ बुढ़ा, वृद्ध । ५ थिसा हुआ । ६ पचा हुआ । ७ नष्ट किया हुआ । —ज्वर-पु० एक प्रकार का बुखार । —ता-स्त्री० पुरानापन, बुढ़ापा ।

जीरणा-स्त्री० चार गुरु वर्णों का एक वृत्त विशेष ।

जीरणोद्धार-पु० मरम्मत, सुधार ।

जीरवणा-स्त्री० १ धैर्य, धीरज । २ सहनशक्ति ।

३ पाचन क्रिया ।

जीरवणी (घी)-क्रि० १ हजम करना, पचाना । २ धैर्य रखना ।

जीराण-पु० श्मशान, मरघट । —वि० जीर्ण-शीर्ण ।

जीर्य-पु० एक प्रकार की वनस्पति ।

जीरी-पु० [सं० जीरक] १ सोंप के आकार का एक पदार्थ जो छोंक में डाला जाता है, जीरा । २ एक लोक गीत विशेष ।

३ शून्य का अंक, गोला ।

जीस-स्त्री० सारंगी के तार ।

जीवजीवक (जीवग, जीव)-पु० [सं० जीवज्जीवक] १ चकोर पक्षी । २ जीवन । ३ जीव का आधार, आत्म पराक्रम ।

४ एक वृक्ष विशेष । ५ एक प्रकार की वनस्पति ।

जीवती-स्त्री० १ संजीवनी । २ हरडे, हरीतकी । ३ एक लता विशेष ।

जीवदो-वि० जो जिंदा हो, जीवित, सजीव ।

जीव-पु० [सं०] १ प्राणियों का चेतन तत्त्व, जीवात्मा, आत्मा । २ प्राण, जान । ३ प्राणी, प्राणधारी । ४ मन, दिल, तबियत । ५ शरीर का मर्मस्थल । ६ बृहस्पति । ७ कर्ण का एक नाम । ८ सात द्रव्यों में से एक (जैन) । ९ नौ तत्त्वों में से प्रथम तत्त्व । (जैन) १० खाट की बुनाई के मुख्य ताने । ११ बल, पराक्रम । १२ श्वास । १३ कटने से रहा हुआ सूक्ष्म अंश । १४ खाद्य पदार्थ आदि में पड़ने वाला कीड़ा ।

जीवक-पु० [सं० जीविक] १ जीवधारी, प्राणी । २ जीव, प्राण । ३ सेवक । ४ सूदखोर । ५ नौका । ६ बौद्धभिक्षुक । ७ संदेरा, गाड़ही । ८ वृक्ष, पेड़ । ९ एक काष्ठौघ ।

जीवका-स्त्री० [सं० जीविका] १ जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, रोजी । २ निर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य व आमदनी ।

जीवकाय-पु० [सं०] जीवलीक, जीवराशि ।

जीवगाह-वि० [सं० जीवगाह] जीवों का प्रसन करने वाला ।

जीवइली, जीवइली-देखो 'जीव' ।

जीवजनावर, जीवजानवर-पु० जीव-जन्तु ।

जीवज्ज-देखो 'जीवाज्ज' ।

जीवजोग-वि० विश्वसनीय, विश्वस्त ।

जीवहुण-पु० [सं० जीवस्थान] गुप्त-स्थान । मर्म । (जैन)

जीवण-पु० [सं० जीवन] १ जीवित रहने की अवस्था, अस्तित्व । २ प्राण, उन्न । ३ प्राण रहने की अवस्था या भाव । ४ जीने का आधार । ५ जल-पानी । ६ रक्त । ७ पवन । ८ पुत्र । ९ प्राणधारी जीव, प्राणी । १० पेशा, जीविका । ११ संजीवनी शक्ति । १२ हड्डी के भीतर का गूदा, मज्जा । १३ मक्खन, घी । १४ परमेश्वर । —वि० १ परमप्रिय, प्यारा । २ जीवनी शक्ति देने वाला ।

जीवणसाल-देखो 'जीणसाल' ।

जीवणिकाय-पु० [सं० जीव-निकाय] जीव राशि (जैन) ।

जीवणज्ज-वि० [सं० जीवनीय] जीने योग्य ।

जीवणी-वि० १ दायीं, दाहिनी । २ देखो 'जीवती' ।

जीवणो-वि० (स्त्री० जीवणी) १ जीने वाला । ३ दायां, दाहिना ।

जीवणी (बौ)-क्रि० [सं० जीवनम्] १ जिंदा रहना, सजीव रहना । २ प्राण युक्त होना, जीना । ३ जीवन का समय निकालना, जिंदगी काटना । ४ निर्वाह करना । ५ होश में आना, चैतन्य होना ।

जीवत-देखो 'जीवित' ।

जीवतत (तत्त्व)-पु० [सं० जीवतत्त्व] १ शरीरस्थ चेतन तत्त्व, आत्मा, जीव, प्राण । २ जीवन, जिंदगी ।

जीवतसंभ (सिंभ), जीवतांसंभ (सिंभ)-पु० [सं० जीवित+शुंभ] युद्ध में धावों से क्षत हुआ वीर ।

जीवती-देखो 'जीवित' । (स्त्री० जीवती)

जीवतीसंभ (संभू)-देखो 'जीवतसंभ' ।

जीवत्विकाय-पु० [सं० जीवास्तिकाय] १ चैतन्य उपयोग लक्षण वाला छः द्रव्यों में से एक द्रव्य । २ जीव समूह । ३ कर्म के करने व फल भोगने वाला । ४ सम्बन्ध ज्ञानादि के वश से कर्म समूह का नाश करने वाला ।

जीवव-पु० [सं०] १ वैद्य, चिकित्सक । २ शत्रु । ३ जीवनदाता ।

जीववज्ज-पु० [सं० जीवद्रव्य] छः द्रव्यों में से एक, जीवद्रव्य ।

जीववान (वांनु, वांनू)-पु० [सं० जीवदान] प्राण रक्षा, प्राण दान । मृत्यु से बचाव ।

जीवधन-पु० [सं०] १ पशु धन । मवेशी । २ जीवनधन ।

जीवधारी-वि० [सं०] प्राणवान, चेतन प्राणी, जानवर ।

जीवन-देखो 'जीवण' ।

जीवनचरित (चरित, चरित्र)-पु० [सं० जीवन चरित्र] १ किसी के जीवन के अछड़े कार्यों का विवरण, वृत्तान्त । २ ऐसे वृत्तान्त की पुस्तक ।

जीवनद-पु० १ कमठ । २ बादल मेघ ।

जीवनघन-पु० [सं०] १ परमप्रिय, जीवनसर्वस्व ।

२ प्राणाधार, प्राणप्रिय ।

जीवनवृत्ती-स्त्री० संजीवनी ।

जीवनवृत्त (वृत्त)-पु० [सं० जीवनवृत्ति] किसी आदर्श पुरुष के जीवन चरित्र का विवरण । जीवनी ।

जीवनवृत्ति-स्त्री० [सं० जीवनवृत्ति] आजीविका, रोजी ।

जीवना-स्त्री० हिम्मत, साहस ।

जीवनि, जीवनी-स्त्री० [सं० जीवनी] १ किसी व्यक्ति विशेष के जीवन का परिचय । २ किसी व्यक्ति के आदर्श पूर्ण कार्यों का विवरण ।

जीवनीय-पु० [सं०] १ पानी । २ दूध । -वि० १ जीवन संबंधी । २ जीने योग्य । -गण-पु० बलवर्धक औषधि ।

जीवन्मुक्त-वि० [सं०] सांसारिक मायाजाल से मुक्त ।

जीवणसिय-पु० विष्णुगुप्त आचार्य के मत का अनुयायी ।

जीवपति-पु० [सं०] धर्मराज ।

जीवबंधु (बंधु)-[सं०] जीव बंधु, बंधुजीव, बंधूक ।

जीवभासा-स्त्री० जीव जन्तुओं, जानवरों की भाषा ।

जीवमाता, (मात्रिका)-स्त्री० [सं० जीवमातृका] जीवों का पालन करनेवाली सप्त देवियां ।

जीवरखी-स्त्री० एक प्रकार का सन्ताह, कवच ।

जीवरखी-पु० १ बड़े दुर्ग की रक्षार्थ चारों ओर बने छोटे-छोटे दुर्गों में से एक, गढ़ी । २ जीवन रक्षा का उपाय । ३ कवच सन्ताह । ४ प्राण रक्षक ।

जीवरि (खि)-देखो 'जिपूतरिखि' ।

जीवलोक-पु० [सं०] भूलोक, मृत्युलोक ।

जीवसंभ-देखो 'जीवतसंभ' ।

जीवसम (समी)-वि० (स्त्री० जीवसमी) परम प्रिय, प्यारा ।

जीवहत्या, (हिंसा)-पु० [सं०] १ जीवों को मारने की क्रिया जीववध । २ इस कार्य के करने से लगने वाला पाप । ३ शिकार ।

जीवाण-पु० जलाशय, तालाब ।

जीवाणी-पु० जल छानने से बचे जल जीव, जीव ।

जीवाणुशासन-पु० [सं० जीवाणुशासन] १ जीव की शिक्षा एवं समझ । २ इससे सम्बन्धित ग्रंथ । (जैन)

जीवांतक-वि० [सं०] जीवों का हत्यारा, वधक, व्याध ।

जीवा-स्त्री० [सं०] १ संजीवनी । २ पृथ्वी । ३ धनुष की डोरी ।

४ जीवन । ५ जल, पानी । ६ जीवनवृत्ति । ७ भंकार, ध्वनि । ८ वृत्तांशों को मिलाने वाली रेखा ।

जीवाउली (बी), जीवाइली (बी)-देखो 'जीवाणी' (बी) ।

जीवाजीव-पु० [सं०] १ जीव और अजीव पदार्थ । २ जीव अजीव समझने का उत्तराध्ययन का ३६वां अध्यायन ।

जवाजूल (जोण)-पु० [सं०] जीवयोनि । प्राणी मात्र ।

जीवाणी (बी)-क्रि० १ जिंदा रखना सजीव, रखना । २ प्राण युक्त करना, जिलाना । ३ जिंदगी कटवाना । ४ निर्वाह कराना । ५ होश में लाना, चैतन्य करना । ६ चिंताओं से मुक्त करना । ७ आराम देना । ८ कष्ट निवारण करना ।

जीवात्मा-स्त्री० [सं०] किसी जीव की आत्मा, प्राण, चैतन्य तत्त्व ।

जीवाद-पु० [सं० जीव-आदि] जीव जंतु, प्राणी ।

जीवाधार-वि० प्राणों का अवलम्बन, परमप्रिय ।

जीवापोती-पु० [सं० पुत्र जीवक] पुत्र जीवक ।

जीवारी-स्त्री० [सं० जीव] १ जीविका, रोजी । २ जीवन, प्राण । ३ जिंदा रहने का साधन । ४ निर्वाह, गुजारा ।

जीवाळु (ळी)-वि० [सं० जीव+आलुच्] (स्त्री० जीवाळी) १ साहसी, हिम्मतवर । २ जानदार, दमवाला । ३ तेज चलने वाला । -पु० प्राण, जीवन ।

जीवावली (बी)-देखो 'जीवाणी' (बी) ।

जीवाहन-देखो 'जीमूतवाहन' ।

जीवि-देखो 'जीवी' ।

जीवित-वि० [सं०] जो जिंदा हो, जिसमें प्राण हों, जो जी रहा हो, सजीव चैतन्य ।

जीवितेस-पु० [सं० जीवितेश] १ सूर्य । २ इन्द्र । ३ यम । ४ देह की इड़ा-पिंगला नाड़ी । ५ प्राण प्रिय ।

जीविष-देखो 'जीवित' ।

जीविषट्ठ-क्रि० वि० जीवन के लिये, जीवनार्थ । (जैन)

जीविषत-पु० जीवन का अन्त, जीवितान्त । (जैन)

जीवी-वि० [सं० जीविन्] जीने वाला, प्राणवान, प्राणी, जीव । -पु० जीवन ।

जीवेस-पु० [सं० जीवेश] ईश्वर, परमात्मा ।

जीवोपाधि-स्त्री० [सं०] जीव की तीन अवस्थाएँ ।

जीसा-पु० पिता, पिता के बड़े भाई के लिए उच्चारण किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

जीह-क्रि० वि० जहां ।

जीहडा-स्त्री० घोड़ों की एक जाति ।

जीहाळ-पु० १ बकरा । २ बकरे के रूप में लिया जाने वाला कर ।

जीह्विय-स्त्री० [सं० जिह्वेन्द्रिय] जीभ, रसना । रसनेन्द्रिय जीह्व, जीह्व-क्रि० वि० जिस प्रकार, जैसे ।

जीहें (हैं)-सर्व० जो, जिस ।

जीही-क्रि० वि० जैसा, जिस प्रकार ।

जुं-क्रि० वि० जैसे, ज्यों, जिस तरह ।

जुंभाड़ी-देखो 'जुम्री' ।

जुंग, जुंगड़ी, जुंगलो, जुंगु. जुंगी-१ देखो 'जंग' । २ देखो 'जुंग' ।
जुंजण-पु० [सं० योजन] १ जोड़ने, संलग्न करने की क्रिया ।
२ योजन ।

जुंजाउ (ऊ)-देखो 'जूंभाऊ' ।

जुंजार-देखो 'जूंभार' ।

जुंजावाण-वि० जूंभने वाला, वीर ।

जुंठौ-पु० १ ब्राह्मता बनाने के लिए खड़ा किया हुआ पत्थर ।
२ एक छोटा पौधा विशेष ।

जुंवाड़ी-देखो 'जुम्री' ।

जुंवारी-१ देखो 'जंवारी' । २ देखो 'जुमारी' ।

जुंही-क्रि० वि० जैसे, ज्योंही ।

जु-प्रव्य० १ संयोजक अव्यय, कि, जो । २ पाद पूरक अव्यय ।
३ अवधारण सूचक अव्यय । -पु० [सं० द्यूत] जुवा, द्यूत ।
-सर्व० जो ।

जुघ-१ देखो 'जुग' । २ देखो 'जुम्री' । ३ देखो 'जो' ।

जुअति (तो)-देखो 'जुवती' ।

जुअळ (ळहं, ळि)-देखो 'जुगल' ।

जुमारी (नी)-देखो 'जवांनी' ।

जुमा-स्त्री० [सं० द्यूत] १ द्यूत का खेल, द्यूत । २ छाछ में अंगूठी
हाल कर वर-वधू को खेलाया जाने वाला एक खेल ।
३ जोखम । ४ देखो 'जुदा' ।

जुमाड़ी-पु० १ जेष्ठा नक्षत्र । २ देखो 'जुम्री' ।

जुमाजूई-देखो 'जूवाजूबी' ।

जुमार-१ देखो 'जुहार' । २ देखो 'जुमारी' । ३ देखो 'जवार' ।

जुमारी-पु० [सं० द्यूत-कारक] १ द्यूत का खिलाड़ी, जुमा
खेलने वाला । [सं० युगन्धर] २ बैल वृषभ । ३ देखो
'जंवारी' ।

जुमाळी-वि० जुवान, युवा ।

जुह (ई)-स्त्री० [सं० द्यूति] १ शोभा, कांति । २ ज्योति ।
३ देखो 'जुही' । -वि० १ भिन्न, जुदा ।
२ देखो 'जुम्री' ।

जुघो-जुघा-देखो 'जुदाजुदा' ।

जुघी-पु० [सं० युग] १ वेलगाड़ी, हल आदि का वह भाग
जिसमें बैल जोते जाते हैं । [सं० द्यूत] २ द्यूत का
खेल । -वि० जुदा, पृथक, अलग ।

जुकुत-१ देखो 'जुकत' । २ देखो 'जुकतो' ।

जुकति (ती)-स्त्री० [सं० युक्ति] १ उपाय, तरकीब । २ विधि,
तरीका । ३ मार्ग दर्शन ।

जुखाम-देखो 'जुखाम' ।

जुक्ष-वि० [सं० युक्त] १ जुड़ा हुआ, मिला हुआ । २ सहित,
संयुक्त ।

जुखाम-पु० [अ०] अधिक सर्दी या सर्द-गर्म से छाती में कफ
या श्लेष्मा जमने का रोग, जुखाम ।

जुगंत-देखो 'जुगांत' ।

जुगंतर-देखो 'जुगांतर' ।

जुग-पु० [सं० युग] १ पुराणानुसार सृष्टि के चार युगों में से
कोई एक । २ संसार, विश्व । ३ समय, काल । ४ बृहस्पति
का पांच वर्ष तक एक राशि में रहने का समय । ५ पुष्ट ।
६ पीढ़ी । ७ दो वस्तुओं का जोड़ा, युगम । ८ यजुर्वेद ।
९ पुरुष । १० एक वाद्य विशेष । ११ चार की संख्या* ।
-वि० जुड़ा हुआ, युगम । २ दो । ३ युक्त, संयुक्त ।

—अंत-पु० प्रलयकाल, युगान्त । —अंतक-पु० वर्ष साल
युग का विभाजक । —पति (तो)-पु० चन्द्रमा ।

जुगणी-देखो 'जोगणी' ।

जुग(ति, तो)-स्त्री० [सं० युक्ति] १ विधि, ढंग । २ उपाय,
तरकीब । ३ कौशल, चतुराई । ४ मेल, योग । ५ तर्क,
दलील । ६ तरह, भांति प्रकार । ७ यथार्थ, सत्य ।
८ देखो 'जगत' ।

जुगनी-स्त्री० विष्णु मूर्ति के शिर का आभूषण ।

जुगनू-पु० एक पतंगा विशेष, खद्योत ।

जुगधर-पु० [सं० युग-प्रवर] किसी समय या काल विशेष का
महान् व्यक्ति ।

जुगधरान्ध-पु० [सं० युग-प्रधान] अपने युग का प्रधान पुरुष ।

जुगपसा-स्त्री० [सं० जुगुप्सा] निंदा, बुराई, घृणा ।

जुगबाहु-पु० [सं० युग-बाहु] जैनियों का नौवां तीर्थंकर ।
-वि० आज़ानबाहु । (जैन)

जुगमंघर-पु० एक जिनदेव ।

जुगम-पु० [सं० युगम] १ दो वस्तु या प्राणियों का जोड़ा,
युगम । २ सम्मिलन, संगम । ३ यमज संतान । ४ दो की
संख्या । ५ मिथुन राशि । -वि० १ दो, युगम । २ यमज ।
-क्रि० वि० जोड़े से ।

जुगमित-पु० [सं० युगमात्र] क्षेत्र से चार हाथ प्रमाण देखने
वाला (जैन) ।

जुगराणि (स्त्री)-स्त्री० १ नगर वधू, वेश्या । २ संसार की
स्वामिनी, देवी, शक्ति ।

जुगराज-पु० [सं० युवराज] युवराज ।

जुगळ-वि० [सं० युगल] १ दो, दोनों । २ पृथक, भिन्न, अलग ।
-पु० १ जोड़ा, युगम । २ दम्पति का जोड़ा । ३ चरण;
पैर । ४ वस्त्र ।

जुगळी-स्त्री० १ मित्र-मंडली । २ जोड़ा, युगल । ३ समूह,
गुण्ड ।

जुगवं, जुगव-प्रव्य० [सं० युगपत्] एक ही साथ, एक ही समय में ।

जुगवर-वि० [सं० युगवर] युग में श्रेष्ठ, उत्तम ।

जुगांत (क)-पु० [सं० युगांत] १ किसी युग का अन्त । २ प्रलय काल । ३ ४६ क्षेत्रपालों में से एक ।

जुगांतर-पु० [सं० युगांतर] दूसरा युग, दूसरा जमाना ।

जुगावाली-स्त्री० अनादि काल से बाल्यावस्था में रहने वाली देवी ।

जुगाड़-पु० १ व्यवस्था, प्रबंध । २ साधन जुटाने की मुश्किल ।

जुगात-स्त्री० आठ पक्ष की चतुरदशी की तिथि ।

जुगाव(दि, बी, दु)-पु० [सं० युगादि] १ युग का आदि, प्रारंभ । २ मृष्टि का आरंभ । ३ अतिप्राचीन । ४ युग के प्रारंभ की तिथि । -क्रि०वि० परम्परा से, अनादि काल से ।

जुगाळ-१ देखो 'जुगळ' । २ देखो 'जुगाळी' ।

जुगाळणी (बी)-क्रि० [सं० उद्गलन्] मवेशियों द्वारा जुगाली करना, उगालना ।

जुगाळी-स्त्री० [सं० उद्गाली] मवेशियों द्वारा निगले हुए चारे को धीरे-धीरे चबाने की क्रिया, रोमंथ, पागुर ।

जुगि-देखो 'जुग' ।

जुगेस-पु० [सं० युग-ईश] १ ईश्वर, परमात्मा । २ देखो 'जोगेस' ।

जुगोजुग-प्रव्य० [सं० युगोयुग] प्रतियुग, युग-युग ।

जुग-देखो 'जुग' ।

जुगावि-देखो 'जुगादि' ।

जुड़, जुड़ा (णि, णी)-पु० युद्ध, संग्राम ।

जुड़ाणी (बी)-क्रि० १ होना । २ संबंध होना, बनना ।

३ भिड़ना, टक्कर लेना । ४ झड़ना, मटना । ५ संलग्न होना । ६ जोड़ में आना । ७ एकत्र होना । सम्मिलित होना । ८ शामिल होना, सरीक होना । ९ जमा होना । १० चिपकना, चिमटना । ११ आलिगनबद्ध होना । १२ परस्पर बंधना । १३ मिलकर एकाकार होना । १४ बंद करना । मटाना, भिड़ना । १५ युद्ध करना । १६ संभोग करना, मैथुन करना । १७ धारण करना, पहनना । १८ व्यवस्था होना, प्रबंध होना । १९ उपलब्ध होना । २० गाड़ी में बैलों का जुतना । २१ अभिसंधित होना, एक मत होना ।

१४ बंद करना । मटाना, भिड़ना । १५ युद्ध करना । १६ संभोग करना, मैथुन करना । १७ धारण करना, पहनना । १८ व्यवस्था होना, प्रबंध होना । १९ उपलब्ध होना । २० गाड़ी में बैलों का जुतना । २१ अभिसंधित होना, एक मत होना ।

जुड़ाई-देखो 'जोड़ाई' ।

जुड़वी-वि० युग्म, मिला हुआ । -क्रि०वि० जोड़े से ।

जुड़ाई-देखो 'जोड़ाई' ।

जुड़ाणी (बी), जुड़ाणी (बी)-क्रि० १ संबंध बनवाना, करवाना । २ भिड़ना, टक्कर लिराना । ३ झड़ना,

सटाना । ४ संलग्न कराना । ५ जोड़ में लाना । ६ एकत्र कराना । ७ सम्मिलित कराना, शामिल कराना, सरीक कराना । ८ जमा कराना । ९ चिपकवाना, चिमटवाना । १० आलिगनबद्ध कराना । ११ परस्पर बंधवाना । १२ मिलवाना, एकाकार कराना । १३ बंद कराना, सटवाना । १४ युद्ध कराना । १५ धारण कराना, पहनवाना । १६ व्यवस्था कराना, प्रबंध कराना । १७ गाड़ी में बैलों को जुतवाना । १८ मैथुन कराना, अभिसंधित कराना ।

जुज-स्त्री० १ जिल्दबंदी में एक प्रकार की सिलाई । २ छपे कागजों का फर्मा । ३ शतरंज की एक चाल विशेष । —बंदी, बंधी-स्त्री० पुस्तकों की जिल्द बांधने की एक विधि ।

जुजटळ, जुजठर, जुजठळ, (राघो) जुजठिर (ठिळ, ठिल्ल), जुजथर (थिर)-देखो 'जुधिस्टर' ।

जुजमाण-देखो 'जजमान' ।

जुजरबौ-पु० १ तोपनुमा एक अस्त्र । २ छोटी तोप ।

जुजवळ, जुजवौ-वि० जुदा, अलग, पृथक् ।

जुजसटळ (स्टळ, स्टळ)-देखो 'जुधिस्टर' ।

जुजांण-पु० युद्ध ।

जुजायळची-पु० 'जजायल' नामक बंदूक धारी ।

जुजिठळ, जुजिठळ (ठिळि) जुजिस्टळ, जुजिस्तर, जुजीठळ, जुजीस्टर, जुजीस्टळ, जुजुठळ, जुजुठल्ल-देखो 'जुधिस्टर' ।

जुजुधान-पु० [सं० युयुधान] १ सात्यकि का एक नाम (महाभारत) । २ इन्द्र । ३ क्षत्रिय । ४ योद्धा ।

जुज-१ देखो 'जुज' । २ 'जुजरबंद' ।

जुजर, जुजुर-देखो 'जुजरबंद' ।

जुजस-देखो 'जुध' ।

जुजसल-वि० [सं० योधन] युद्ध में जूझने वाला ।

जुजसणी (बी)-देखो 'जूझणी' (बी) ।

जुजसाहुजुजस-पु० [सं० यद्धातिपुद्ध] द्वन्द्वयुद्ध (जैत) ।

जुजबौ-देखो 'जुजरबौ' ।

जुजाट-देखो 'जजराट' ।

जुसक-स्त्री० स्फूर्ति, फुर्ती ।

जुसाऊ-देखो 'जुंभाऊ' ।

जुसार-देखो 'जूंभार' ।

जुट-स्त्री० १ परस्पर जुड़ी या बंधी दो वस्तु । २ जोड़ी ।

३ मंडली, गुट । ४ समूह । ५ अति मेल वाले दो मनुष्य ।

६ जोड़ का आदमी या वस्तु । ७ साथ । ८ मेल-जोल ।

जुटणी (बी)-देखो 'जूटणी' (बी) ।

जुटाइली (बी), जुटाणी (बी)-क्रि० १ किसी कार्य में रत करना, संलग्न करना, लगाना । २ परस्पर मजबूती से

जोड़ना । ३ सटाना, सटा कर रखवाना । ४ भिड़ाना ।
 ५ युद्ध कराना । ६ आलिप्त कराना, लिपटाना ।
 ७ संभोग के लिए प्रेरित करना । ८ शामिल करना,
 बातचीत कराना, मिलाना । ९ एकत्र करना, इकट्ठा
 करना । १० व्यवस्था व प्रबंध करना । ११ जमा करना,
 जुटाना । १२ प्राप्त व उपलब्ध करना । १३ अभिसंधि
 कराना, मर्तव्य कराना । १४ भीड़ जमा करना ।
जुटाळ (ळो)—वि० युद्ध में जूझने या भिड़ने वाला ।
जुटावणी (वो)—देखो 'जुटाणी' (वो) ।
जुटी—स्त्री० बैलों की जोड़ी ।
जुटंत—वि० जूझने वाला ।
जुतणी (वो)—क्रि० [सं० युज] १ बैल, घोड़े, ऊंट आदि का
 किसी वाहन, हल आदि के आगे जुड़ना । २ कार्य में पूर्ण
 मनोयोग से लगना । ३ सहयोग में लगना । ४ भिड़ना,
 लड़ना । ५ भूमि का जोता जाना ।
जुतबेध—पुं० [सं० युतबेध] ज्योतिष का एक योग ।
जुताई—देखो 'जोताई' ।
जुताइणी (वो), जुताणी (वो), जुतावणी (वो)—क्रि० १ बैल,
 घोड़े, ऊंट आदि को किसी वाहन, हल आदि के आगे
 जुड़वाना । २ किसी कार्य में लगाना, संलग्न कराना ।
 ३ सहयोग में लगाना । ४ लड़ाना, भिड़ाना । ५ भूमि या
 खेत जुतवाना, जुताई कराना ।
जुति—स्त्री० [सं० दूति] १ कांति, आभा । २ शोभा । (जैन)
 ३ देखो 'जुक्त' ।
जुत्त—देखो 'जुक्त' ।
जुत्तसेण, जुत्तसेण—पुं० [सं० युक्तिपेण] जम्बूद्वीप के ऐरावत
 क्षेत्र का आठवां तीर्थंकर ।
जुत्थ, जुथ, जुथ्य—देखो 'जूथ' ।
जुथप—देखो 'जूथप' ।
जुव—देखो 'जुव' ।
जुवाई, जुवावणी—स्त्री० [फा०] १ मिलने का विपर्याय ।
 २ अलग या पृथक् होने की क्रिया या भाव । ३ विच्छेद,
 वियोग । ४ पार्थक्य ।
जुवासिध—पुं० [सं० युद्धसिद्धि] दलदेव ।
जुवो—वि० [फा० जुदा] (स्त्री० जुदी) १ पृथक्, अलग, भिन्न ।
 २ प्रतिरिक्त, अलावा । ३ विरक्त, मुक्त, तटस्थ ।
जुद्ध—देखो 'जुध' ।
जुद्धत—वि० युद्ध में प्रवृत्त ।
जुद्धस्यर—देखो 'जुधिस्रर' ।
जुद्धाजुद्ध—पुं० [सं० युद्धातिमुद्ध] दारुण व भयंकर युद्ध । (जैन)
जुध—पुं० [सं० युद्ध] संग्राम, लड़ाई, युद्ध, समर । —**जुध**—पुं०
 हाथ । —**बंध**—पुं० युद्ध के नियमों को जानने वाला योद्धा ।

—**बाहु**—पुं० मल्लयुद्ध । —**राव**—पुं० योद्धा, वीर ।
 —**विद्या**—स्त्री० रणविद्या ।
जुधस्रर, (स्रर)—देखो 'जुधिस्रर' ।
जुघाजित—पुं० [सं० युघाजित] कैकेयी के भाई का नाम ।
जुघिठळ (ठिळ), जुघिस्रर, जुघिस्रर (स्रर)—पुं० [सं० युघिष्ठिर]
 पांच पांडवों में से सबसे बड़ा पाण्डव । युधिष्ठिर ।
जुन—स्त्री० झूल, चारजामा ।
जुनाळी—वि० प्राचीन, पुरानी ।
जुनीकरीठ—स्त्री० [सं० कृपीटयोनि] अग्नि, आग ।
जुनीगुजरात—स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
जुन्हा, जुन्हाई—स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना] १ चांदनी, ज्योत्स्ना ।
 २ प्रकाश, रोगनी ।
जुपणी (वो)—क्रि० १ दीपक का प्रज्वलित होना । २ सुलगना,
 जलना । ३ देखो 'जुतणी' (वो) ।
जुपाणी (वो), जुपावणी (वो)—क्रि० १ दीपक को प्रज्वलित
 कराना । २ सुलगवाना, जलवाना । ३ देखो 'जुताणी' (वो) ।
जुधती—स्त्री० [सं० युधती] तरुण या युवा स्त्री, युवती ।
जुधान—१ देखो 'जधान' । २ देखो 'जवान' ।
जुधानी—१ देखो 'जधानी' । २ देखो 'जवानी' ।
जुब्बन—देखो 'जोबन' ।
जुमले (ले)—वि० एक मुश्त । —पुं० कुल योग ।
जुमल्सा—वि० साथ ।
जुमामसजित (मस्जिद)—देखो 'जामामस्जिद' ।
जुनालि (लो)—पुं० एक प्रकार का घोड़ा ।
जुमेरात—पुं० बृहस्पतिवार (मुसलमान) ।
जुमे (म्मे)—वि० १ अधीन, वश में । २ उत्तरदायित्व में,
 जिम्मेवारी में ।
जुमो (म्मो)—पुं० १ शुक्रवार (मुसलमान) । २ उत्तरदायित्व ।
 ३ किसी पीर के नाम पर किया जाने वाला रात्रि आगरण ।
जुध—पुं० [सं० युग] पांच वर्ष का समय । (जैन)
जुर—पुं० [सं० जर] १ निरन्तर रहने वाला हल्का बुखार,
 ज्वर । २ देखो 'जर' ।
जुरक—स्त्री० १ चोट, आघात, प्रहार । २ झटका ।
जुरड़ी—पुं० कांटों की बाड़ के बीच बना रास्ता । २ देखो 'सेरी' ।
जुरठ—देखो 'जरठ' ।
जुरणी (वो)—क्रि० १ याद करना । २ याद में रीना, विरह
 करना । ३ देखो 'जुड़णी' (वो) ।
जुरती—स्त्री० प्रावश्यकता, जरूरत ।
जुरम—पुं० [अ० जुर्म] १ अपराध, दोष, गलती । २ चीनी,
 उकती आदि के कार्य । —**पेसा**—पुं० चोर, डकैत, गुग्गु
 अपराधी ।

जुरमानो-पु० [फा० जुमाना.] सजा के रूप में बनूल किया गया धन, अर्थ दण्ड ।

जुररी-पु० [ग्र० जराह] १ शल्य चिकित्सक । २ धाज या शिकारी पक्षी ।

जुरा-देखो 'जरा' ।

जुराधोस-पु० [सं० जराधीश] कामदेव ।

जुराफ-देखो 'जिराफ' ।

जुरारि (री)-पु० [सं० ज्वर+अरि] १ ताप या ज्वर नाशक औषधि । २ ईश्वर ।

जुराळ वि० १ गहरा । २ बहुत ।

जुरासंद (संध, सिध, सिध, सौंद)-देखो 'जुरासंध' ।

जुळ-वि० पृथक्, भिन्न, अलग । -स्त्री० हल्की खुजली ।

जुळकणी (बो)-कि० टकटकी लगाकर देखना ।

जुळख-वि० व्याकुल, घातुर ।

जुळगी-पु० अलायन के आस-पास का घास का मैदान ।

जुळणी(बो)-कि० १ मंदगति से चलना, विचरण करना ।

२ गमन करना, जाना । ३ संयोग होना, योग बनना ।

४ मिलना । ५ हलचल करना, हरकत करना ।

६ प्रज्वलित होना । ७ स्पर्श होना । ८ हल्की सी खुजली होना, गुदगुदी होना ।

जुलफ-स्त्री० बालों की लट, अलक ।

जुलफकार-स्त्री० [सं० जुलफकार] हजरत अली की तलवार का नाम ।

जुलम-पु० [सं० जुलम] १ अत्याचार । २ अग्रगण्य । ३ अन्याय अनीति । ४ अधन्य कार्य ।

जुलमाणी, जुलमी-वि० अत्याचारी, आततायी, जुल्मी ।

जुळाणो (बो)-कि० १ मंदगति से चलना, विचरण करना ।

२ गमन करना, भेजना । ३ संयोग बैठाना । ४ मिलाना ।

५ हलचल करना । ६ प्रज्वलित करना । ७ स्पर्श कराना ।

८ मलाना ।

जुलाब-पु० [ग्र० जुल्लाब] १ दस्तावर दवा । २ दस्त, रेचन ।

जुलाळ-स्त्री० एक प्रकार की बड़ी बन्दूक ।

जुलाहा (ल्लाहा)-स्त्री० [फा० जौलाह] कपड़े बुनने का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति ।

जुलाही (ल्लाही)-पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।

जुलूस-देखो 'जलूस' ।

जुलफ-देखो 'जलफ' ।

जुबंगव-पु० [सं० जुबगव] तरुण बेल । (जैन)

जुव-वि० [सं० जुवन्] युवा, तरुण । (जैन)

जुवड़-देखो 'जुवनी' ।

जुवक-पु० [सं० जुवक] नौजवान, युवक, तरुण ।

जुवति (ती)-स्त्री० [सं० युवती] युवा स्त्री, युवती, तरुणी ।

जुवनासव-पु० [सं० युवनाश्व] एक सूर्यवंशी राजा का नाम ।

जुवरज-पु० [सं० यौवराज्य] १ राजा के मरणोपरान्त युवराज का अभिषेक होने तक का समय । २ युवराज का राज्याभिषेक होने से दूसरे युवराज की नियुक्ति होने तक का समय । ३ युवराजत्व । ४ देखो 'जुवराज' ।

जुवराज, जुवराजकुमार, जुवराय-पु० [सं० युवराज] किसी राजा का ज्येष्ठ पुत्र व राज सिंहासन का उत्तराधिकारी ।

जुवळ-१ 'जुआ' । २ देखो 'जुगळ' ।

जुवलिप-कि० वि० [सं० युगलित] युग्म रूप से, युग्म से ।

जुवाण (न)-१ देखो 'जवान' । २ देखो 'जबान' ।

जुवाणी (नी)-स्त्री० १ छनांग, कुलांच । २ देखो 'जवानी' । ३ देखो 'जबानी' ।

जुवाडौ-देखो 'जुआ' ।

जुवाब-देखो 'जवाब' ।

जुवारी-१ देखो 'जुआरी' । २ देखो 'जंवारी' ।

जुसिय, जुसिय-वि० [सं० जुष्ट] प्रसन्न (जैन) ।

जुसीई-स्त्री० [सं० सेवायाम] आज्ञा, आदेश ।

जुहर-देखो 'जोहर' ।

जुहल-पु० युद्ध ।

जुहविडार-वि० सेना का संहार करने वाला ।

जुहार-पु० [सं० युगधार] १ अभिवादन, नमस्कार । २ हीरा, पन्ना आदि जवाहरात । ३ जोहरी । ४ नैवेद्य । ५ पूजा, अर्चना, विनय । ६ मनोती, मानता । ७ जवाहिर । ८ वीरगति प्राप्त योद्धा जो पीर माना जाता हो । ९ देखो 'जंवारी' । १० देखो 'जवार' ।

जुहारड़ा (डौ)-देखो 'जुहार' ।

जुहारणी (बौ)-कि० १ अभिवादन करना, नमस्कार करना । २ पूजा करना, अर्चना करना । ३ प्रसाद चढ़ाना । ४ मनोती मनाना ।

जुहारा-१ देखो 'जंवारा' । २ देखो 'जुहार' ।

जुहारि (री)-१ देखो 'जंवारी' । २ देखो 'जुहार' ।

जुहिय, जुहो-स्त्री० [सं० युधिका] सुगंधित सफेद फूलों वाला एक पौधा व इसका फूल ।

जू-स्त्री० [सं० यूका] १ मैल व पसीने से बालों में उत्पन्न होने वाला एक कीड़ा जो कपड़ों में भी फैल जाता है ।

२ देखो 'जुआ' ।

जूअडौ-देखो 'जुआ' ।

जूअरी-पु० १ घाग का मैदान । २ देखो 'जूआ' ।

जूआडौ-देखो 'जूआ' ।

जूंग, जूंगडौ, जूंगाली, जूंगी-पु० [सं० जांधिका] १ ऊंट, उष्ट्र । २ धावक ।

जूंजणी (बी)-देखो 'जूंभणी' (बी) ।
 जूंजळ-देखो 'जूंभळ' ।
 जूंजळी-स्त्री० एक प्रकार की घास जिसकी दुहारी बनती है ।
 -वि० मंद गति से काम करने वाली ।
 जूंजळी-पु० गोबर आदि में पैदा होने वाला एक मृग-कीट ।
 -वि० (स्त्री० जूंजळी) धीमी गति से काम करने वाला ।
 जूंजाऊ-देखो 'जूंभाऊ' ।
 जूंजार-देखो 'जूंभार' ।
 जूंझ-देखो 'जूध' ।
 जूंभणी (बी)-कि० [सं० युद्ध] १ युद्ध करना, युद्ध में जूंभना ।
 २ किसी महान् कार्य के करने में कठोर परिश्रम करना ।
 ३ कोई महान् कार्य करना ।
 जूंभमंड, जूंभमल्ल-वि० योद्धा, वीर, सुभट ।
 जूंभळ, जूंभळाट-स्त्री० झुंभलाहट, क्रोध का आवेग ।
 जूंभाऊ-वि० [सं० यौद्धिक] १ युद्ध संबंधी, युद्ध का । २ वीर
 रस पूर्ण । ३ कठोर परिश्रम का ।
 जूंभार-वि० [सं० युद्धकार] १ परोपकार के लिए युद्ध में वीर
 गति प्राप्त करने वाला । २ पीर । ३ शक्तिशाली ।
 ४ वीर योद्धा ।
 जूंभट-देखो 'जूंभट' ।
 जूंठी-पु० १ ज्वार बाजरे आदि का जड़ सहित उखाड़ा हुआ
 पीधा । २ उक्त पीधे की जड़ ।
 जूंण (न)-स्त्री० [सं० योनि] १ जन्म । २ योनि, जीव योनि ।
 ३ जीवन, जिन्दगी । ४ शरीर, देह । [देशज] ५ मूँज या
 घास की बनी छोटी रस्सी । ६ कच्चे मकान की
 छाजन में ऐसी रस्सी से लगाया हुआ बंध । ७ ऊँट की
 खिलाया जाने वाला मांस । ८ ऊँट के पैरों का ऊपरी
 भाग । ९ ऊँट के बैठने का एक ढंग । १० खाट की दुनाई
 के मध्य के ताने । ११ मरुस्थल में होने वाला खीप
 नामक पीधा । १२ इस पीधे से बनी रस्सी ।
 जूंनी-देखो 'जूनी' । (स्त्री० जूनी)
 जूंवरिक-पु० [सं० जंवरक] छोटी, तोप ।
 जूंवाड़ी-देखो 'जूघी' ।
 जूंसर (रु). जूसहरी, जूसारी-देखो 'जूसर' ।
 जूंहर-देखो 'जौहर' ।
 जू-पु० १ हरिभक्त, हरिजन । २ मित्र । ३ राक्षस । ४ आकाश ।
 ५ वाक्य । ६ सांप, नाग । ७ देखो 'जुघ्रा' । -वि० जीर्ण-
 शीर्ण, पुराना, अति प्राचीन । -कि० वि० जीघ्र, जल्दी ।
 जो कि । -सर्व० १ जो । २ देखो 'जुघ्री' ।
 जूंभट्टघ' (उं)-देखो 'जूंभट्ट' ।
 जूंघड़ी-देखो 'जुघी' ।

जूंभळ-पु० १ कदम, ढग, पैड । २ पांव, पैर । ३ देखो 'जुगल' ।
 जूंभ्राड़ी-देखो 'जुघ्री' ।
 जूंभार-१ देखो 'जुहार' । २ देखो 'जवार' ।
 जूंभारड (रत, रो)-देखो 'जुवारी' ।
 जूंभारीपणी-पु० [सं० घृतकरित्व] जुझा खेलने का कार्य ।
 जूई-देखो 'जूई' ।
 जूउं-देखो 'जुघ्री' ।
 जूउ-वि० [सं० युत] १ सहित, साथ । २ सम्पन्न ।
 जूघी-पु० १ हंस । २ देखो 'जुघ्री' । ३ देखो 'जुघ्री' ।
 जूडणी (बी)-१ देखो 'जुडणी' (बी) । २ देखो 'जोडणी' (बी)
 जूझाजूझ-वि० सघन, घना ।
 जूडियो-पु० ऊँट या बकरी के बालों की बनी रस्सी ।
 जूड़ी-स्त्री० १ तंबाखू के पत्तों का छोटा पूआल । २ शीत लगकर
 आने वाला ज्वर ।
 जूड़ी-पु० १ स्त्रियों के फिर के बालों की मोटी गाँठ । २ एक
 साथ बंधे दो पशु । ३ पशुओं के पैर बांधने की रस्सी ।
 ४ देखो 'जुघ्री' । ४ देखो 'जोड़ी' ।
 जूज-१ देखो 'जुध' । २ देखो 'जुज' ।
 जूजघी (बी)-देखो 'जूजुघी' ।
 जूजाऊ-देखो 'जूंभाऊ' ।
 जूजार-देखो 'जूंभार' ।
 जूजिघार (घार), जूजीघार-पु० [सं० युद्धकार] योद्धा, सुभट,
 बहादुर ।
 जूजुघी, जूजुवी, जूजुउं (घो, यो, धो)-वि० [सं० युतायुत]
 (स्त्री० जूजुइ, जूजुई, जूजुवी जूजुइ जूजुई, जूजुवी) पृथक,
 भिन्न, अलग ।
 जूस-देखो 'जूध' ।
 जूभणी (बी)-देखो 'जूंभणी' (बी) ।
 जूसार-देखो 'जूंभार' ।
 जूट-पु० [सं०] १ समूह । २ समुदाय । ३ पटसन, वस्त्र ।
 ४ बेलों की जोड़ी । ५ जोड़ी, युग्म ।
 जूटणी (बी)-देखो 'जूटणी' (बी) ।
 जूठउ-देखो 'जूठी' ।
 जूठन-स्त्री० १ खाते-खाते छोड़ा हुआ पदार्थ । २ उच्छिष्ट भाग ।
 -वि० व्यवहार या काम में लिया हुआ । भुक्त ।
 जूठलो, जूठलु, जूठली (लु)-१ देखो 'जुधिसठर' ।
 २ देखो 'जूठी' ।
 जूठी-वि० [सं० जुष्, जुष्ठ] (स्त्री० जूठी) १ खाने से बचा हुआ,
 खाते-खाते छोड़ा हुआ । २ व्यवहार में लाया हुआ, भोगा
 हुआ । -पु० १ खाते समय छोड़ा हुआ खाना, अवशिष्ट
 खाना । २ देखो 'जूठी' ।

जूल, जूलिष-देखो 'जूल' ।

जूल, जूलड़-१ देखो 'जूती' । २ देखो 'जूत' ।

जूलणी (बो)-देखो 'जुतणी' (बो) ।

जुताखोर-वि० १ जूतों से मार खाने का आदि । २ बेशर्म, निलंज ।

जूती, जूतीड़, जूती-पु० [सं० युक्त] पांजों में पहने की चमड़े आदि की पगरसकी, उपानह पादत्राण, बूँट, जूता ।
-वि० युक्त, साथ, सहित ।

जूथंग, जूथ-पु० [सं० यूथ] १ समूह, झुण्ड, यूथ । २ समुदाय ।
३ दल, सेना । —नाथ, प, पत, पति, पती, पाळ—पु० सेनापति, दल-नायक ।

जूथका-स्त्री० [सं० यूथिका] सोन जुही ।

जूथप-पु० [सं० यूथप] १ समूह, दल । २ सेनापति ।

जूथार-पु० हाथी ।

जूनउं, जूनु-देखो 'जूनी' । (स्त्री० जूनी)

जूनेजा-स्त्री० सिंधी मुसलमानों की एक शाखा ।

जूनीड़ी, जूनी-वि० [सं० जीर्ण] १ पुराना, प्राचीन । २ जीर्ण-शीर्ण, टूटा-फूटा, जर्जर । ३ बुढ़ा, वृद्ध । —देव—पु० महादेव, शिव ।

जूप-पु० [सं० यूप] पशु बलि करने का स्थान ।

जूपणी-वि० (स्त्री० जूपणी) १ जूतने वाला । २ प्रज्वलित होने वाला ।

जूपणी (बो)-१ देखो 'जुतणी' (बो) । १ देखो 'जुपणी' (बो) ।

जूय-पु० [सं० यूप] १ यज्ञ-स्तंभ । २ हाथ-पावों का सामुद्रिक चिह्न विशेष ।

जूयड़-पु० [सं० यूत] जूझा, यूत (जैन) ।

जूया-पु० [सं० यूका] १ जू, यूका (जैन) । २ देखो 'जूवा' ।

जूर-देखो 'हजूर' ।

जूस-देखो 'झूल' ।

जूसई-स्त्री० १ सामग्री । २ तैयारी ।

जूवटउं, जूवट, जूवट्ट (टो)-पु० [सं० यूत-वृत्तकम्] १ यूत, जुआ । २ देखो 'जुआ' ।

जूवण, (यू, रू)-देखो 'जोवन' ।

जूवताइ (ई)-स्त्री० १ युवती । २ युवापन, जवानी ।

जूवळ-पु० [सं० युगल] पैर, चरण । —वि० दोनों, युगल ।

जूवाण, जूवान-देखो 'जवान' ।

जूवा-वि० [सं० युवा] १ युवा, जवान । २ पृथक, अलग ।
भिन्न । ४ देखो 'जूवाजूवी' ।

जूबाछवी-स्त्री० परात में छाछ भरकर उसमें चांदी का छल्ला डाल कर घर-बधू को सेलाया जाने वाला एक खेल ।

जूबाड़ी-देखी-जुघों ।

जूबारी-देखो 'जुवारी' ।

जूसरण (णी)-पु० [सं० युष, फा० जोशन] १ कवच । २ आवरण ।

—वि० १ लिपटा हुआ, चिपका हुआ । २ आवेष्टित ।

जूसरण-स्त्री० १ सेवा (जैन) । २ देखो 'जुमर' ।

जूसर-पु० [सं० युग-सर] १ जूझा । २ कवच ।

जूसरणी (बो)-क्रि० १ कवच पहनना । २ बैलों के कंधों पर जुआ रखना ।

जूहणी (बो)-क्रि० युद्ध करना, जूझना ।

जूहवइ-पु० [मं० यूथपति] १ यूथपति (जैन) । २ गौ वर्ग का स्वामी (जैन) ।

जूहार-देखो 'जुहार' ।

जूहारणी (बो)-क्रि० अभिवादन करना ।

जूहारी-१ देखो 'जुहारी' । २ देखो 'ज'वारी' । ३ देखो 'जवार' ।

जूहिय, जूहिषा-देखो 'जूही' ।

जूही-देखो 'जुही' ।

जे-पु० १ बेटा, पुत्र । २ समूह । ३ सिंह । ४ टांड । —क्रि० वि० [सं० यदि] १ यदि, अगर, जो । २ संयोजक अव्यय ।

३ क्योंकि । —सर्व० १ वह, वे, जो । २ जिस ।

जेई-स्त्री० मोटी लकड़ी के एक शिरे पर लकड़ी के दो सींग लगाकर बनाया हुआ एक कृषि उपकरण ।

जेउ-सर्व० जिस । —अव्य० षष्ठी विभक्ति, के ।

जेखल-पु० [सं० ज्याखल] सूअर, शूकर ।

जेखाधीस-पु० [सं० यसाधीश] कुबेर ।

जेज-स्त्री० १ बिलम्ब, देरी । २ समय, अवधि । ३ किसी कार्य की पूर्णता के लिए अवशिष्ट समय ।

जेजकार-देखो 'जैजकार' ।

जेस-देखो 'जेज' ।

जेसळ-स्त्री० ज्वाला, आग ।

जेठ-स्त्री० १ तह पर तह किया हुआ वस्तुओं का ढेर, समूह, राशि । २ गद्दी । ३ आवृत्ति । ४ देखो 'जैठ' ।

जेठणी (बो)-क्रि० १ तह पर तह लगाकर रखना । २ खूब खाना । ३ जमाना ।

जेठो-पु० समूह, ढेर ।

जेठ्ठा, जेठ्ठा-देखो 'जेष्ठा' ।

जेठ्ठामूळ, जेठ्ठामूळमांस-पु० ज्येष्ठ मास ।

जेठ्ठामूळी-स्त्री० ज्येष्ठमास की पूर्णिमा ।

जेठ (झो)-पु० [सं० ज्येष्ठ] (स्त्री० जेठाणी, नी) १ पति का बड़ा भाई । २ ज्येष्ठ मास । ३ ज्येष्ठा नक्षत्र । —वि० बड़ा, ज्येष्ठ, अग्रज ।

जेठळ (ल)-पु० [सं० ज्येष्ठ] १ ज्येष्ठ भ्राता, बड़ा भाई । २ देखो 'जैठ' । ३ देखो 'जुधिस्ठर' ।

जेठा-देखो 'जेष्ठा' ।

जेठाई-स्त्री० १ बड़ाई, बड़प्पन । २ ज्येष्ठता । ३ बड़े भाई का वंशज ।

जेठि, जेठिय, जेठी-वि० [सं० ज्योष्ठिन्] १ बड़ा, ज्येष्ठ । २ ज्येष्ठ मास संबंधी । -पु० १ ज्येष्ठ भ्राता, बड़ा भाई । २ पहलवान, मल्ल ।

जेठीपाथ, (पारथ, पाराथ)-पु० अर्जुन का बड़ा भाई युधिष्ठिर, भीम ।

जेठीमधु-स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलैठी, मोठी-काठी ।

जेठीमल-पु० [सं० जेष्ठमल्ल] योद्धा, वीर, पहलवान ।

जेठूतौ-देखो 'जेठूतौ' ।

जेठूत, जेठूतरौ, जेठूतौ (श्री)-पु० [सं० ज्येष्ठ + पुत्र] (स्त्री० जेठूतरौ, जेठूतौ, जेठूत्री) पति का भतीजा, जेठ का पुत्र ।

जेठणी (बौ)-क्रि० विलंबकरना, देरी करना ।

जेण, जेण, जेणी-सर्व० [सं० यः, येन] १ जो, जिस, जिससे, जिसने । २ उन, उन्होंने, वे -क्रि० वि० जहां ।

जेत-देखो 'जेथ' ।

जेतळई (लई, लइ, लई)-क्रि० वि० जब तक, तब तक, इतने में । -वि० (स्त्री० जेतळी) इतना, जितना ।

जेतलज जेतळुं (ळू, लौ)-वि० (स्त्री० जेतली) जितना ।

जेति-देखो 'जेथ' ।

जेतिथ, जेती-वि० १ जितनी । २ देखो 'जेथ' ।

जेते (तै)-क्रि० वि० १ जब तक । २ देखो 'जेथ' ।

जेठाई-देखो 'जेठाई' ।

जेथ, (थि, थो, थे, थै)-क्रि० वि० [सं० यथ] जहां, जिस जगह । वहां ।

जेब-स्त्री० [अ०] १ सिले हुए वस्त्र आदि में बनी छोटी थैली, खोसा । [फा०] २ शोभा, सौंदर्य । -कठ-पु० जेब कतरा, चोर । -खरच-पु० निजी खर्च, हाथ खर्च । -घड़ी-स्त्री० जेब में रखने की छोटी घड़ी ।

जेबि (बी)-वि० [अ०] १ जेब का, जेब संबंधी । २ जेब में रहने लायक, छोटा । ३ सुन्दर ।

जेम-क्रि० वि० [सं० येम] १ ऐसे, इस प्रकार, जैसे, जिस प्रकार । २ ज्यों, ज्योंहि । -वि० समान, तुल्य ।

जेमण-देखो 'जीमण' ।

जेमिण (थी)-देखो 'जैमिनी' ।

जेथार-वि० [सं० जेत्] जीतने वाला । -क्रि० वि० जब ।

जेर-वि० [फा०] १ परास्त, पराजित । २ मजबूर, विवश । ३ वश व काबू में । ४ बहुत तंग किया हुआ । ५ सजबूत बांधा हुआ । -स्त्री० गर्भस्थ शिशु पर रहने वाली भिल्ली ।

जेरणी (बौ)-क्रि० १ परास्त करना, पराजित करना ।

२ मजबूर करना विवश करना । ३ वश में करना ।

४ अत्यधिक तंग करना । ५ मजबूत बांधना ।

जेरदस्त-वि० [फा०] १ अधीन, वशवर्ती । २ परास्त, पराजित ।

जेरपाई-स्त्री० [फा०] स्त्रियों के पैर की हल्की जूती ।

जेरबद (बंध)-पु० [फा०] घोड़े के अगले पांवों में बांधा जाने वाला कपड़े या चमड़े का तस्मा ।

जेरबाद-पु० [फा०] घोड़े का एक रोग विशेष ।

जेरबार-वि० [फा०] १ विपत्तिग्रस्त । २ तंग, परेशान, दुःखी । ३ क्षतिग्रस्त ।

जेरबारी-स्त्री० [फा०] दुःखी होने की क्रिया ।

जेरांणी-स्त्री० सूत व्यक्ति के पीछे गाया जाने वाला शोक सूचक लोकोक्ति ।

जेराजेर-पु० १ हाकी का खेल । २ देखो 'जेर' ।

जेरीबरियां-पु० एक प्रकार का पका हुआ मांस ।

जेळ-स्त्री० १ कैद, बंदीगृह । २ कैद में रखने की सजा ।

२ इस सजा की अवधि । ४ खेल के मैदान की सीमा ।

५ अंतिम छोर । ६ लक्ष्यस्थान । ७ एक प्रकार का खेल ।

-खानी-पु० बंदीगृह ।

जेळड़-पु० एक प्रकार का आभूषण ।

जेळणी (बौ)-क्रि० १ भेजना । २ बराबर करना ।

जेळडडी-स्त्री० हाकी की तरह का एक प्रकार का देशी खेल ।

जेळियो-पु० १ एक शिरे से मुड़ा हुआ खेलने का डंडा । २ खेल के मैदान का छोर । -दोटी-पु० उक्त खेल में गोल की तरफ गेंद फेंकने की क्रिया ।

जेवड़ी-स्त्री० रस्सी । -वि० जैसी ।

जेवड़ी, जेवडउ, जेवडौ-पु० १ बड़ा रस्सा । २ तोरण पर सामु द्वारा दूल्हे को आंचल से बांधने की एक रस्म । -वि० [सं० यावत्] जैसा । जितना ।

जेवर-पु० [फा०] आभूषण, गहना, अलंकार ।

जेवली-देखो 'जैई' ।

जेवहौ-वि० (स्त्री० जेवहौ) जैसा ।

जेवां-क्रि० वि० जैमे, जिस प्रकार ।

जेवालयौ-देखो 'जैई' ।

जेबी-वि० (स्त्री० जेबी) जैसा ।

जेस-पु० बारहवीं बार उलट कर तैयार किया हुआ शराब ।

जेसतालम, जेसतालम-देखी 'जेस्टाक्षम' ।

जेसौ-क्रि० वि० १ इस, प्रकार, ऐसे । २ देखो 'जैमो' ।

जेस्टमुर-देखो 'जेस्टमुर' ।

जेस्टा-देखो 'जेस्टा' ।

जेस्टाक्षम-देखो 'जेस्टाक्षम' ।

जेस्टी, जेस्टी, जेस्ट-वि० [सं० ज्येष्ठ] बड़ा, अग्रज । -पु०
बड़ा भाई । पति का बड़ा भाई । —सुर-पु० ब्रह्मा ।
जेस्टा-स्त्री० [सं० ज्येष्ठा] सत्ताईश नक्षत्रों में से छठारहवां
नक्षत्र । —खम-पु० गृहस्थ आश्रम, श्रेष्ठ आश्रम ।
जेह-स्त्री० [फा० जेह] १ प्रत्यंचा । २ प्रत्यंचा का मध्य भाग ।
-वि० जैसा । -सर्व० १ वे । २ देखो 'जे' ।
जेहऊं (जेहऊ) -वि० जैसा ।
जेहड़ि (ड़ी) -क्रि० वि० जैसे ही, ज्योंही । -वि० जैसी ।
जेहड़ी-वि० (स्त्री० जेहड़ी) जैसा ।
जेहनउं (उ) -वि० (स्त्री० जेहनवी) जिसका ।
जेहर-पु० पांव का एक आभूषण ।
जेहरान-पु० आभूषण, जेहरात ।
जेहरि (री) -वि० १ जैसी । २ देखो 'जेहर' ।
जेहरी, जेहवउ, जेहवी-वि० (स्त्री० जेहरी, जेहवी) जैसा ।
जेहांण (न) -देखो 'जहांन' ।
जेहा-स्त्री० [सं० जिह्वा] १ जीभ, रसना । २ देखो 'जैमा' ।
जेहि (हि) -देखो 'जेही' ।
जेहिर-१ देखो 'जेवर' । २ देखो 'जेहर' ।
जेहिल्ल-पु० [सं०] वशिष्ठ गोत्रोत्पन्न आर्य नाग का शिष्य,
एक मुनि । (जैन)
जेहो-सर्व० जिस । उसी । -क्रि० वि० जैसे, ज्यों । -वि० जैसी ।
जेहु, जेही-वि० (स्त्री० जेही) १ जैसा । २ समान, तुल्य, सदृश ।
३ एक निश्चित रूप-रंग या आकृति जैसा । ४ जो ।
जेंगड़ी-पु० बछड़ा । (मेवात)
जेंट-पु० १ शमी वृक्ष । २ देखो 'जेंट' ।
जै-पु० १ बृहस्पति । २ पुण्य नक्षत्र । ३ सूर्य । ४ ब्रह्मा ।
५ पतंगा । ६ अग्नि । ७ जय-विजय । ८ जयकार शब्द,
घोष । ९ देखो 'जे' ।
जैई-देखो 'जैई' ।
जैकरी-स्त्री० [सं० जयकारी] चौपाई छन्द का एक भेद ।
जैकार-देखो 'जयकार' ।
जैकारणी (बी) -क्रि० वि० जयध्वनि का उद्घोष करना, जय
बोलना ।
जै'डू-क्रि० वि० जब तक । तब तक ।
जै'डी-वि० (स्त्री० जै'डी) जैसा ।
जैजय, जैजैकार-वि० १ विजय का घोष । २ विजय की संगत
कामना ।
जैजैवंती-स्त्री० मीरव राग का एक भेद ।
जैहक-पु० [सं० जय-ठक] विजय के उपलक्ष में बजाया जाने
वाला ढोल ।
जैत-स्त्री० जीत, विजय । -कारी-वि० विजयी, विजय दिवाने
वाला । —खंभ-पु० विजयस्तम्भ । -वि० अजेय ।

—पत्र-पु० जीत की सनद । —वंत, वान, वादी, वार,
वाह-वि० जीतने वाला, विजयी ।
जैतरति (ती)-वि० [सं० जैत्र + रति] शक्तिशाली, बलवान ।
जैतली-स्त्री० एक रागिनी विशेष ।
जैतहथ, (हथ, हथी)-वि० [सं० जैत्र-हस्त] जिसके हाथ में
विजय हो, विजयी ।
जैता-स्त्री० एक पतिव्रता क्षत्रिय स्त्री ।
जैताई-वि० १ विजयी । २ जीतने वाला ।
जैतार-वि० १ जीतने वाला । २ उद्धार करने वाला ।
जैतून-पु० [अ०] एक सदावहार वृक्ष ।
जैत्र-स्त्री० [सं०] विजय, जीत, जय । —वादी, वार-वि०
विजयी । —साव-पु० जयघोष । —हथ, हथी=
'जैतहथ' ।
जैत्राई-स्त्री० जीत, विजय । -वि० १ विजयी । २ जितने ही ।
जैषहथ (हथी)-पु० देखो 'जैतहथ' ।
जैवरथ (थी, ध्यी)-जयद्रथ ।
जैन-पु० [सं०] १ अहिंसा को परम धर्म मानने वाला एक
प्रसिद्ध सम्प्रदाय । २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।
जैनगर, जैनेर, जैपर-पु० जयपुर नगर ।
जैपरियो-पु० १ जयपुर का निवासी । २ जयपुर की रंगाई का
साफा ।
जैपरी-वि० जयपुर का, जयपुर संबंधी । -स्त्री० १ जयपुर की
बोली, भाषा । २ देखो 'जैपरियो' ।
जैपाळ-स्त्री० एक दस्तावर ग्रीष्मि ।
जैपुर-देखो 'जैपर' ।
जैपुरियो-देखो 'जैपरियो' ।
जैपुरी-देखो 'जैपरी' ।
जैपेल्लेदिन-क्रि० वि० वर्तमान से पांचवें या छठे दिन को ।
जैबी-जैसा ।
जैमंगल-देखो 'जयमंगल' ।
जैमती-स्त्री० [सं० जयमती] १ ईहड़देव चालुक्य की दुश्चरित्रा
पुत्री । २ दुश्चरित्रा स्त्री ।
जैमाळ (माळा)-स्त्री० [सं० जयमाला] १ विजय के उपलक्ष में
पहनवाई जाने वाली माला । २ धरण करने लिये पहनाई
जाने वाली माला ।
जैमिनि (नी)-पु० [सं०] पूर्व मीमांसा का प्रवर्तक, व्यासजी
का एक शिष्य ।
जैयो-पु० १ पशुओं के शरीर से चिपकने वाला एक कीड़ा ।
२ जवा ।
जै'र-देखो 'जेहर' ।

जै'रमो'री (जै'रीमो'री)- १ सर्प का विष सोखने वाला एक काला पत्थर । २ औषधि में काम आने वाला एक हरा पत्थर ।

जै'रबाय-स्त्री० जहरवायु ।

जै'री (लौ)-वि० विष युक्त विपत्ति, जहरीला ।

जैवंत, जैवत-वि० विजयी ।

जैसलगर, जैसलमेर-पु० राजस्थान की पश्चिमी सीमा स्थित एक ऐतिहासिक नगर जहाँ भाटी राजपूतों का राज्य था ।

जैसलमेरी-स्त्री० जैसलमेर की भाषा या बोली ।

२ देखो 'जैसलमेरी' ।

जैसलमेरी-वि० जैसलमेर का, जैसलमेर संबंधी । -पु० जैसलमेर का निवासी ।

जैसी-वि० वैसा । —रांशी-पु० एक लोक गीत ।

जैहर-पु० १ सांप, सर्प । २ देखो 'जहर' ।

जैहरी-वि० जहरी ।

जौ-वि० उथो, समान । -क्रि० वि० उथो, जैसे ।

जौईड़ी-स्त्री० यूका का बच्चा ।

जौज, जौट-पु० शमी वृक्ष व इसका फल ।

जो-सर्व० [सं० यः] सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, वह । -क्रि० वि [सं० यत्] यदि, अगर । -पु० जो, जब ।

जोघरा- १ देखो 'जोवरा' । २ 'जोगरा' । ३ देखो 'जोजरा' ।

जोमली (बौ)-देखो 'जोवली' (बौ) ।

जोइ-स्त्री० [सं० जोषित्, ज्योति] १ स्त्री, महिला । २ अग्नि । ३ ज्योति, प्रकाश । (जैन)

जोइजली (बौ)-क्रि० आवश्यक होना, जरूरी होना । जरूरत महशूस करना ।

जोइठाण-पु० [सं० ज्योति-स्थान] अग्नि-कुण्ड । (जैन)

जोइरा-स्त्री० १ जोशी की स्त्री, जोशरा । २ देखो 'जोवरा', जोगरा, जोजरा ।

जोइरा (ली)-देखो 'जोगली' ।

जोइली (बौ)-देखो 'जोवली' (बौ) ।

जोइय-वि० [सं० योजित] जोता हुआ । (जैन)

जोइयली (बौ)-देखो 'जोवली' (बौ) ।

जोइयाली-स्त्री० 'जोइया' वंश की स्त्री या कन्या ।

जोइया-पु० एक प्राचीन श्रत्रिय वंश । -बड़ी, बार-स्त्री० सतलज नदी व बहावलपुर के पास का क्षेत्र ।

जोइस-पु० [सं० ज्योतिष्क] १ ज्योतिषी । २ ज्योतिष । ३ ज्योतिषीदेव ।

जोइसप-वि० [सं० ज्योतिसमः] अग्नि के समान । (जैन)

जोइसवंत-वि० ज्योतिषवांन ।

जोइसालय-पु० ज्योतिष देवों का आलय ।

जोइसी-पु० [सं० ज्योतिषी] ज्योतिष विद्या का जानकार, ज्योतिषी ।

जोईजली (बौ)-देखो 'जोइजली' (बौ) ।

जोईज-अव्य० चाहिये, आवश्यक है, उचित है, मुनागिब है ।

जोक-देखो 'जळोक' ।

जोख-स्त्री० [सं० योषा] १ स्त्री, महिला, नारी । २ इच्छा, अभिलाषा, इवाहिष । ३ रुचि । ४ खुशी, मोज । ५ वैभव, ऐश्वर्य । ६ तोलने का कार्य । ७ वजन । ८ तोलने के उपकरण, वाट । ९ दावत । १० कामक्रीड़ा । ११ जेवर । १२ भय, डर । १३ देखो 'जळोक' ।

जोखली (बौ)-क्रि० १ किसी वस्तु को तोलना । २ वजन ज्ञात करना । ३ भयभीत करना, आतंकित करना ।

जोखत (ता)-स्त्री० [सं० योषिता] १ स्त्री, औरत । २ वेश्या, गणिका ।

जोखम-स्त्री० १ धन, दौलत, अधिक रुपया । २ मूल्यवान वस्तु । ३ संभाल कर रखने लायक कोई अमानत । ४ कोई बड़ी जिम्मेदारी । ५ आपत्ति, संकट । ६ खतरा, भय ।

जोखमली (बौ), जोखमिली (बौ)-क्रि० १ वीर गति को प्राप्त करना । २ दृष्टना । ३ भागना । ४ मरना ।

जोखनी-वि० 'जोखम' माना जाने वाली, विपत्ति लाने वाली वस्तु ।

जोखसोख-पु० १ धन, दौलत । २ ऐश्वर्य, वैभव । ३ विषय-विलास ।

जोखहारी-वि० १ आमोद-प्रमोद का कार्य करने वाला । २ हास्यास्पद वेश-भूषा व क्रियाएँ करने वाला । ३ हानिकारक । -पु० १ मजाकिया । २ हास्य अभिनेता । ३ योद्धा । ४ शत्रु ।

जोखा-स्त्री० [सं० योषा] स्त्री, नारी, महिला ।

जोखाई-स्त्री० तोलने या वजन ज्ञात करने की क्रिया ।

जोखारा-स्त्री० [सं० योषा] नुसने वाली स्त्री, वेश्या ।

जोखित, जोखिता-देखो 'जोखता' ।

जोखिया-स्त्री० मोज, खुशी, मस्की ।

जोली-पु० १ हानि, नुकसान । २ खतरा, भय । ३ उत्तर-दायित्व, जिम्मेदारी । ४ पीड़ा, दर्द । ५ दुःख, कष्ट । ६ धन, दौलत । ७ जोखम । ८ अमानत । ९ आशंका । १० आपत्ति, विपदा, संकट । ११ हिसाब, लेखा । १२ भविष्य में विपदा लाने वाली वस्तु या कार्य ।

जोगंगी-पु० [सं० योगांगी] योगाभ्यास करने वाला ।

जोगंद (द्र)-देखो 'जोगेंद्र' ।

जोगंधर-पु० शत्रु के प्रहार से बचने की युक्ति ।

जोग-पु० [सं० योग, युजिर] १ अवसर, मौका । २ समय, वक्त । ३ जिव, महादेव । ४ चन्द्रमा । ५ संगीत, मेल ।

मिलाप । ६ शुभ अवसर, शुभ काल । ७ उपाय, युक्ति ।
 ८ औषधि, दवा । ९ ध्यान, तप, वैराग्य । १० प्रेम ।
 ११ मुक्ति या मोक्ष के उपाय । १२ यौगिक क्रियाएँ, योगाभ्यास । १३ ईश्वर भक्ति में चित्त की एकाग्रता ।
 १४ संगति । १५ धोखा, छल । १६ धन, दौलत ।
 १७ साम, दाम, दण्ड, भेदादिक उपाय । १८ वशोकरण क्रिया । १९ लाभ, फायदा । २० सुभीता । २१ भजन करने की विधि । २२ सम्बन्ध । २३ लेख, प्रारब्ध ।
 २४ संन्यास । २५ आज्ञा । २६ गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़ा । २७ फलित ज्योतिष के अनुसार बार व नक्षत्रों का एक समय विशेष । २८ सूर्य व चन्द्रमा के राशि, ग्रंथ, कला और विकला के योग के काल का भान ।
 २९ संबंध, संसर्ग । ३० प्रयोग, उपयोग । ३१ परिणाम, नतीजा । ३२ पेशा, धंधा । ३३ कवच । ३४ उत्साह ।
 ३५ नियम । ३६ निर्भरता । ३७ वाहन, सवारी । ३८ चिकित्सा, इलाज । ३९ जादू टोना, इन्द्रजाल ।
 ४० जासूस, भेदिया । ४१ पंचार वंशोत्पन्न एक देवी ।
 -वि० १ योग्य, काबिल, लायक । २ उचित, योग्य ।
 -अठंग=‘अष्टांगयोग’ । -अधीस-पु० योगाधीश, ब्रह्मा ।
 -क्षेम, क्षेम-पु० योगक्षेम, कुशल-क्षेम । -जोगी-पु० योगासन पर बैठा योगी । -घाता-पु० महादेव, शिव ।
 नन्दा, निन्दा-स्त्री० योगनिन्दा । निर्विकल्प समाधि । युगान्त में विष्णु की नींद । तन्दा, भ्रपकी । देवी, दुर्गा, शक्ति ।
 -निन्दाळ, निन्दाळ-पु० प्रलय के समय योग निन्दा लेने वाले भगवान विष्णु । -निधान- पु० योग का खजाना, योगस्थान । -पंथ-पु० योग का रास्ता । -पति, पति, पती-पु० योगपति महादेव, शिव, विष्णु । योगी -परिणाम-पु० जीव के परिणाम का एक प्रकार । (जैन) -परिवाह्या-स्त्री० समाधि वाली परित्राजिका, संन्यासिनी । -पारंग, पारंगत-पु० शिव । -वि० योग विद्या में पारंगत । -पीठ-पु० देवताओं का योगासन । -बळ-पु० योग साधना से प्राप्त शक्ति, योगबल, तपोबल । -अस्ट-वि० योग साधना से च्युत । -माता, माय, माया-स्त्री० देवी शक्ति, दुर्गा । महामाया, पार्वती, विष्णु की माया भगवती । जसोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या । श्रीकरणी । -मुद्रा, मुद्रा-स्त्री० योग साधना की कोई मुद्रा । -राणी-स्त्री० पार्वती, देवी, रणचण्डी । -राज-पु० शिव, विष्णु । -राया=‘जोगराणी’ । -वंत, वत-पु० शुभ प्रवृत्ति वाला योगी, संन्यासी । -बट-पु० योगाभ्यास । -बटउ-पु० प्राचीन कालिक एक वेशभूषा । योगपट्ट । -वाण, वाई-स्त्री० वैभव, सम्पत्ति, दौलत, योग्यता, स्थिति, ढंग । अवसर, मौका, व्यवस्था, प्रबंध । -बिसोही-स्त्री० योग शुद्धि ।

-संथा, संस्था-स्त्री० योग मंत्र, योग शिक्षा । -सकति, सकती, सक्ति, सकी, सगति, सगती, सगती-स्त्री० योगबल, तपोबल । -समाउत्त-वि० योगों से युक्त । (जैन)
 -साधन-पु० योग साधना, तपस्या । -सास्त्र=‘योगशास्त्र’ ।
 -साहण=‘जोगसाधन’ । - सिधो=‘योग सिद्धि’ ।

जोगड़ी (टौ)-देखो ‘जोगी’ । (स्त्री० जोगड़ी, जोगटी)

जोगरा (गि, रा)-स्त्री० [सं० योगिनी] १ देवी, शक्ति, योगमाया ।
 २ रण चण्डी । ३ विधवा । ४ संन्यासिनी । ५ तपस्विनी ।
 ६ योगाभ्यासिनी । ७ भिखारिन । ८ आठ विशिष्ट देवियों में से कोई एक । ९ ज्योतिष की आठ देवियों में से कोई एक । १० पार्वती । ११ तिथि विशेष को किसी दिशा विशेष में स्थित योगिनी । १२ रण प्रिय चौसठ योगिनियां ।
 १३ ज्वार की फसल का एक रोग । १४ आषाढ़ कृष्ण एकादशी । १५ दिल्ली नगर का एक नाम । -नगर, नगर पीठ, पुर, पुरी-स्त्री० दिल्ली नगर का एक नाम । -पुरी-पु० बादशाह, दिल्ली, निवासी, मुसलमान, यवन । चौहान राजपूत, दिल्ली नगर ।

जोगरोस-पु० [सं० योगिनीश] १ दिल्लीपति, बादशाह ।
 २ योगेश । ३ शिव, महादेव ।

जोगतंत (तत, तत्त तत्व) -पु० [सं० योग-तत्त्व] योग रहस्य, योगतत्व ।

जोगत-स्त्री० [सं० योगतत्त्व] योग विद्या ।

जोगता-स्त्री० योग्यता, कुशलता, काबलियत ।

जोगती-वि० योग्य ।

जोगतीजोत-देखो ‘जागतीजोत’ ।

जोगदोस-पु० [सं० योगदोष] पैर के ऊपर लेप करने से जो सिद्धि होती है उससे आहार आदि लेना । (जैन)

जोगरंभ-देखो ‘जोगारंभ’ ।

जोगराज गुगळ (गुग्गळ, गुग्गळ)-देखो ‘योगराजगुग्गळ’ ।

जोगव-पु० [सं० योगवान] योग वाला, स्वाध्यायी । (जैन)

जोगाण-पु० महादेव, शिव ।

जोगांतराय-देखो ‘योगांतराय’ ।

जोगांतिक-पु० [सं० योगांतिक] बुध ग्रह की चाल विशेष ।

जोगाग्नि-स्त्री० योगाग्नि ।

जोगाणंद-पु० [सं० योगानन्द] शिव, महादेव ।

जोगानळ-स्त्री० योगानल, योगाग्नि ।

जोगाभास (भ्यास)-देखो ‘योगाभ्यास’ ।

जोगारंब, (रंभ, रम)-पु० [सं० योग + आरम्भ] १ योग क्रिया, साधना, योगाभ्यास । २ योग ।

जोगासन-देखो ‘योगासन’ ।

जोगिन्द, जोगिन्द्र—पु० [सं० योगीन्द्र] १ बड़ा योगी, तपस्वी, महायोगी । २ महादेव, शिव । ३ श्रीकृष्ण । —वि० संयमी ।

जोगि, जागिय—१ देखो 'जोगी' । २ देखो 'जोग' ।

जोगिया—स्त्री० एक रागिनी विशेष । —वि० १ येरू रंग का । २ योगी संबंधी । ३ मटमैले रंग का ।

जोगिया-बाट्या—पु० स्वादिष्ट मांस वाला एक पक्षी विशेष ।

जोगियो—१ देखो 'जोगी' । २ देखो 'जोगिया' ।

जोगिंद (द्र)—देखो 'जोगिन्द्र' ।

जोगी (डौ)—पु० [सं० योगिन्] (स्त्री० जोगण, जोगण, जोगणी) १ ईश्वर । २ शिव, महादेव । ३ श्रीकृष्ण । ४ अलौकिक शक्ति सम्पन्न सिद्ध पुरुष । ५ बाजीगर, मदारी । ६ योगदर्शन का अनुयायी । ७ संन्यासी । ८ एक जाति विशेष । —वि० १ वैरागी, जितेन्द्रिय, आत्मज्ञानी । २ योग द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वाला । ३ योग्य, उपयुक्त । —कुंड़= 'योगीकुंड' । —नाथ= 'योगीनाथ' । —राज= 'योगीराज' ।

जोगीस (सर, स्वर), जोगेंद्र, जोगेस (वर सर, सुर, स्वर)—पु० [सं० योगीश, योगीश्वर, योगेंद्र, योगेश, योगेश्वर] १ शिव, महादेव । २ श्रीकृष्ण । ३ ईश्वर । ४ योगियों के स्वामी । ५ ज्ञानवत्स्य मुनि का नाम । ६ बड़ा सिद्ध, महात्मा । ७ संन्यासी । ८ स्वरूप । (नाथ, योगी)

जोगेसरी (स्वरी)—देखो 'योगीस्वरी' ।

जोगी—वि० [सं० योग्य] १ योग्य, लायक, काबिल । २ उपयुक्त, ठीक । ३ उचित, वाजिब । ४ अधिकारी । ५ सम्माननीय । **जोग्य**—देखो 'जोग' ।

जोगया—स्त्री० [सं० योगयता] योग्यता, लायकी (जैन) ।

जोग्य—देखो 'योग्य' ।

जोग्यजोग्यजथा—स्त्री० यी० [सं० योग्यायोग्यथा] योग्य-अयोग्य पदार्थों के साथ-साथ वर्णन की काव्य की एक शैली ।

जोग्याभ्यास (भ्यास)—पु० [सं० योगाभ्यास] योगाभ्यास ।

जोड़—वि० [सं० युज] १ समान, तुल्य, बराबर । २ मुकाबले का । —स्त्री० १ जोड़ी, युग्म । २ टोली, मंडली, दल, समूह । ३ काव्य रचना । ४ अंकों का योग । ५ योगफल । ६ संघिस्थल । ७ संघि । ८ जोड़ा जाने वाला भाग । ९ समानता, बराबरी । १० परस्पर आश्रित दो प्राणी । ११ साथ काम आने वाली समानधर्मी दो वस्तुएं । १२ जोड़ने की क्रिया या भाव ।

जोड़ग (गर)—वि० १ रचनाकार, रचयिता । २ कवि । ३ समान शक्ति या क्षमता वाला । ४ संग्रहकर्ता ।

जोड़ण—स्त्री० १ जोड़ने की क्रिया या भाव । २ योग, जोड़ । ३ जोड़ने वाला पदार्थ ।

जोड़णो (बो)—क्रि० [सं० जुड़-बंधने] १ दो या दो से अधिक वस्तुओं को परस्पर संबंधित करना, जोड़ना । २ टूट-फूट ठीक करना । ३ इकट्ठा करना, एकत्र करना । ४ संग्रह करना, जमा करना । ५ कविता करना । ६ किसी से संबद्ध करना । ७ परस्पर बांधना । ८ मिलाना । ९ क्रमशः रखना । १० अंकों का योग करना । ११ यथा स्थान स्थापित करना । १२ प्रार्थना या विनय करना । १३ संयुक्त या संश्लिष्ट करना । १४ बनाना, रचना । १५ जोतना । १६ समा बनाकर बैठना । १७ दीप जलाना । १८ संबंध स्थापित करना । १९ अनुरक्त या लीन करना । २० मन लगाना ।

जोड़नी—वि० १ पास की, समीप वाली । २ बराबर की । ३ देखो 'जोड़ी' ।

जोड़नी—वि० (स्त्री० जोड़नी) १ एक ही समय में होने वाला । मम-सामयिक । २ पास का । ३ बराबर का । ४ जोड़ी से होने वाला, यमज । ५ जोड़ी का । ६ जुड़ा हुआ । ७ देखो 'जोड़ी' ।

जोड़बां—स्त्री० रबी की फसल की अंतिम जुताई । —वि० जुड़े हुए, युग्म ।

जोड़बाई—देखो 'जोड़ाई' ।

जोड़वाळ (वाळी)—देखो 'जोड़नी' ।

जोड़ा—स्त्री० १ मिरासियों की एक शाखा । २ सारंगी के मुख्य दो तार ।

जोड़ाघत (हत)—देखो 'जोड़ाघत' ।

जोड़ाई—स्त्री० १ जोड़ने की क्रिया या भाव । २ जोड़ने की मजदूरी । ३ चुनाई ।

जोड़ाउ (ऊ)—वि० संग्रहकर्ता, जमा करने वाला, जोड़ने वाला ।

जोड़ागुण—पु० काव्यकार, कवि ।

जोड़ाजोड़ी—क्रि० वि० १ जोड़े से । २ ग्रासपास । ३ निकट से । —स्त्री० १ पति-पत्नी, दम्पति । २ जोड़ने की क्रिया या भाव ।

जोड़ाणी(बो)—क्रि० १ दो या दो से अधिक वस्तुओं को परस्पर संबंधित कराना, जुड़वाना । २ टूट-फूट ठीक कराना । ३ इकट्ठा या एकत्र कराना । ४ संग्रह कराना, जमा कराना । ५ कविता कराना । ६ किसी से संबद्ध कराना । ७ परस्पर बांधवाना । ८ मिलवाना । ९ क्रमशः रखवाना । १० अंकों का योग कराना । ११ यथास्थान स्थापित कराना । १२ प्रार्थना या विनय कराना । १३ संयुक्त या संश्लिष्ट कराना । १४ बनवाना, रचवाना । १५ जुटवाना । १६ मभा कराना ।

जोड़ापत

(४८६)

जोतरणी

१७ दीप जलवाना । १८ संबंध स्थापित कराना ।
 १९ अनुरक्त या लीन कराना । २० मन लगवाना ।
 जोड़ापत-स्त्री० पत्नी, अर्धांगिनी । -वि० जोड़ का, तुल्य,
 बराबर ।
 जोड़ाळ (ळी)-पु० भुमलमान, यवन । -वि० जोड़ी का,
 जोड़ का ।
 जोड़ावणी (वो)-देखो 'जोड़ाणी' (वो) ।
 जोड़ावो-पु० युग्म, जोड़ा ।
 जोड़ियाळ-वि० जोड़ी का, बराबर का, साथ रहने वाला,
 साथी ।
 जोड़ी-स्त्री० १ एक ही प्रकार की दो वस्तु या प्राणियों का
 जोड़ा, युग्म । २ परस्पर आश्रित समानधर्मी दो प्राणी ।
 ३ पति-पत्नी, दम्पति । ४ नर व मादा । ५ जूती,
 पादरक्षी । ६ ताल, मंजीरा । ७ युग्म, सेट । ८ बराबरी,
 समानता । -दार, बाळ, वाळी-वि० बराबरी का, समान-
 धर्मी । साथी, पति-पत्नी ।
 जोड़ीक-देखो 'जोड़ग' ।
 जोड़ीगर-पु० जूती बनाने वाले मोची । कवि, काव्यकर्ता,
 कवि ।
 जोड़े, जोड़-क्रि०वि० १ साथ-साथ, पास में, बगल में ।
 २ दोनों ओर ।
 जोड़ी-पु० १ युग्म, जोड़ा । २ समानता, बराबरी । ३ पुनर्वसु
 नक्षत्र का नाम । ४ देखो 'जोड़ी' ।
 जोज-पु० [ग्र० जोज] १ सेवक, दास, चाकर । २ पत्नी ।
 जोजबांन-पु० एक प्रकार की सन्दूकची ।
 जोजन (ति, त्र)-पु० [सं० योजन] १ लगभग आठ मील की
 दूरी का एक माप । २ संयोग । ३ मेल-मिलाप ।
 जोजनगंधा-स्त्री० [सं० योजन गंधा] १ वेदव्यास की माता
 सत्यवती । २ सीता । ३ कस्तूरी । -जात-पु०
 वेदव्यास ।
 जोजरी-स्त्री० १ लूनी नदी की एक सहायक नदी ।
 २ वृद्धावस्था । -वि० १ वृद्ध । २ जोशी-शीर्ण ।
 ३ खोखली । ४ बेसुरी ।
 जोजरू-पु० वर्षा ऋतु में होने वाला घास का एक पौधा ।
 जोजरी-वि० [सं० जर्जर] (स्त्री० जोजरी) १ पोपला, थोथा,
 खोखला । २ दरार खाया हुआ । ३ बेसुरा । ४ जीर्णशीर्ण,
 जर्जर । ५ शिथिल । ६ वृद्ध ।
 जोजा-स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
 जोजिया-स्त्री० [सं० योधिक] योद्धाओं की नकल ।
 जोजे (जं)-स्त्री० [ग्र० जोज] स्त्री, पत्नी ।

जोट-पु० [सं० योटक] १ जोड़ा, युग्म । २ समूह, ढेर, राजि ।
 ३ दम्पति । ४ भैंसा । -वि० १ बलवान, शक्तिशाली ।
 २ हृष्ट-पुष्ट । ३ दो ।
 जोटे (टे)-प्रव्य० साथ-साथ, शामिल ।
 जोटी-पु० १ तेज प्रवाह, हिलौल । २ गोक, बंध । ३ हकावट ।
 ४ जोड़ा ।
 जोड, जोडलियो (लो)-पु० १ घास का मैदान । २ तलैया,
 पोखर । ३ एक प्रकार का सरकारी लगान । ४ एक क्षेत्र
 विशेष । -झाळ-पु० एक प्राचीन कर । -दरी-स्त्री०
 एक वस्त्र विशेष ।
 जोडी-देखो 'जोड़ी' ।
 जोण-देखो 'जूण' ।
 जोणग्र-पु० उत्तर भारत का एक प्रान्त (जैन) ।
 जोणग-पु० एक प्राचीन देश, प्रान्त ।
 जोण (णी)-पु० [सं० योनि] १ पन्नवण सूत्र के नौवें पद का
 नाम । २ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र । ३ योनि । -पद-पु०
 पन्नवण सूत्र का एक पद ।
 जोणिय-वि० जन्म लेने वाला ।
 जोणिविहाण-पु० [सं० योनिविधान] उत्पत्ति शास्त्र ।
 जोणिसूळ-पु० [सं० योनिशूल] योनि का एक रोग ।
 जोणीद-देखो 'जोणंद' ।
 जोणी (वो), जोणी (वो)-देखो 'जोवणी' (वो) ।
 जोत-स्त्री० [सं० ज्योति] १ ज्योति, प्रकाश, उजाला ।
 २ दीप, दीपक । ३ दीप शिखा । ४ अग्नि, ज्वाला ।
 ५ अग्नि शिखा । ६ दीपक की बत्ती । ७ देवी-देवताओं
 को किया जाने वाला धूप-दीप । ८ आख । ९ दृष्टि नगर ।
 १० किरण । ११ कान्ति, दीप्ति । १२ तारा । १३ संगीत
 में घटतात का एक भेद । १४ यज्ञ की अग्नि । १५ सूर्य ।
 १६ नक्षत्र । १७ विष्णु । १८ ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म ।
 १९ ब्रह्म का प्रकाश । २० जूण के दोनों ओर बंधी रहने
 वाली छोटी रस्सियाँ । -वि० मुन्दर ।
 जोतक (ख, ग)-देखो 'जोतिस' ।
 जोतकी (खी, गी)-देखो 'जोतिमी' ।
 जोतणी-स्त्री० १ जोतने की क्रिया या भाव । २ भूमि की
 जुताई ।
 जोतणी (वो)-क्रि० १ घोड़े, बैल आदि को गाड़ी आदि में
 जोड़ना । २ वाहन आदि के आगे बांधना । ३ भूमि की
 जुताई करना । ४ बल पूर्वक लगाना ।
 जोत-बळ-पु० [सं० ज्योतिर्वल] पाला ।
 जोतर-देखो 'जोत' ।
 जोतरणी (वो)-देखो 'जोतणी' (वो) ।

जोतरियो

(४८७)

जोमधराज

जोतरियो, जोतर (रू, रौ)-वि० जोतने योग्य । -स्त्री० हल की आड़ी रेखा । देखो 'जोत' ।
 जोतलिग-पु० ज्योतिलिग, शिव ।
 जोतली-पु० (स्त्री० जोतली) कृषक, किसान ।
 जोतवंत-वि० ज्योतिवान ।
 जोतसरू (सरूपो)-देखो 'जोतिसरूप' ।
 जोतसिघाल-पु० ज्योति बढ़ाने वाला, ईश्वर ।
 जोतसि (सी)-देखो 'जोतिसी' ।
 जोतसुभ-पु० वज्र ।
 जोताई-देखो 'जुताई' ।
 जोताइणी (बौ), जोताणी (बौ)-कि० १ घोड़े, बल आदि को गरुड़ आदि में जुड़वाना, जुतवाना । २ वाहन आदि के आगे बंधवाना । ३ भूमि की जुताई कराना । ४ बलात् कार्य में लगवाना ।
 जोतात-स्त्री० खेत की मिट्टी की ऊपरी सतह ।
 जोतावणी (बौ)-देखो 'जोताणी' (बौ) ।
 जोति-देखो 'जोति' ।
 जोतिक (ख, ग)-देखो 'जोतिस' ।
 जोतिप्रकाश (प्रकासी)-पु० [सं० ज्योति प्रकाश] ईश्वर ।
 जोतिलिग-देखो 'जोतलिग' ।
 जोतिवंत-देखो 'जोतवंत' ।
 जोतिवृक्ष (विक्ष)-पु० [सं० ज्योतिवृक्ष] रात की सूर्य के समान प्रकाशित रहने वाला वृक्ष । (जैन)
 जोतिस-पु० [सं० ज्योतिष] १ ग्रह, नक्षत्रों की स्थिति बताने वाला छः वेदांगों में से एक । २ ज्योतिष विद्या । ३ प्रकाश, प्रभा । ३ सूर्य ।
 जोतिसप्रकासी-देखो 'जोतिप्रकास' ।
 जोतिसरूप (स्वरूप)-पु० [सं० ज्योतिस्वरूप] १ ईश्वर परमात्मा । २ विष्णु । ३ श्रीकृष्ण । ४ सूर्य ।
 जोतिसिखा-स्त्री० [सं० ज्योतिशिखा] दीपक, लौ, बत्ती ।
 जोतिसी-पु० [सं० ज्योतिषी] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, ज्योतिषी । २ नक्षत्र, तारा । ३ डंक ऋषि की संतान एक जाति, डाकौत ।
 जोती-देखो 'जोत' ।
 जोतीवंत (वत, वंती)-देखो 'जोतवंत' ।
 जोतीसरूप (स्वरूप)-देखो 'जोतिसरूप' ।
 जोत्रणी (बौ)-देखो 'जोतणी' (बौ) ।
 जोत्रणी (बौ), जोत्रावणी (बौ)-देखो 'जोतणी' (बौ) ।
 जोत्रु-देखो 'जोत' ।
 जोत्तरा (ना)-देखो 'ज्योत्स्ना' ।
 जोवी-देखो 'जोवी' ।
 जोद्धार-देखो 'जोधार' ।

जोध-पु० [सं० योधः] १ योद्धा, शूरवीर, सुभट, वीर । २ पुत्र बेटा । ३ मौरव । -वि० १ जवान, युवा । २ शक्तिशाली, बलवान । -पु०, पुह(रू)-पु० मंत्री, महावीर ।
 -जवाण (न)-वि० पूर्ण युवा । शक्तिशाली, बलवान ।
 -जूंलार-पु० एक प्रकार का घोड़ा । -जूंलार (न) जूवांन='जोध-जवांन' ।
 जोधण-पु० [सं० योधनम्] १ युद्ध । २ सैनिक, सिपाई ।
 जोधपुरी (रौ)-वि० जोधपुर का, जोधपुर संबंधी । -स्त्री० १ जोधपुर की बोली । २ एक प्रकार की तलवार । -पु० ३ जोधपुर का निवासी । ४ राठीड़ राजपूत ।
 जोधविद्या-स्त्री० [सं० युद्ध-विद्या] अस्त्र-शस्त्रों की विद्या, युद्ध कौशल ।
 जोधाल-पु० जोधपुर नगर ।
 जोधाला-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
 जोधाली, जोधानेर-पु० जोधपुर नगर ।
 जोधारंभ-पु० युद्ध, समर ।
 जोधार, जोधाळी-पु० योद्धा, शूरवीर ।
 जोधी-पु० [सं० योद्धा] सुभट, वीर ।
 जोन-देखो 'जूण' ।
 जोनशपीट-पु० [सं० कृपीटयोनि] अग्नि ।
 जोनि (नी)-देखो 'जूण' ।
 जोनिकंठ-पु० योनि का एक रोग ।
 जोनै-कि० वि० जिसको ,
 जोन्ह-देखो 'जूण' ।
 जोपणी-स्त्री० शोभा । आभा, कांति ।
 जोपणी (बौ)-कि० १ जोश में आना । २ उत्साहित होना । ३ शोभित होना । ४ देखो 'जोतणी' (बौ) ।
 जोपे (पे)-अव्य० [सं० यद्यपि] यदि, अगर, यद्यपि ।
 जोबर-देखो 'जोबन' ।
 जोबरी-स्त्री० एक देवी का नाम ।
 जोबन, जोबनियी-पु० [सं० योवन] १ युवा होने का भाव, दीवन, जवानी, तरुण्य । २ युवावस्था । ३ विकास की चरम सीमा । -वंत, वत-वि० योवनयुक्त, तरुण्य लिए हुए, जवान ।
 जोबरली-देखो 'जिबरली' । (स्त्री० जोबरली)
 जोबराज-देखो 'जुबराज' ।
 जोमंग (गो)-वि० जोशीला, उत्साही । -पु० योद्धा ।
 जोमंड (डो)-वि० बलवान, शक्तिशाली ।
 जोम-पु० [अ०] १ जोश, उत्साह । २ बल, शक्ति । ३ आवेश, क्रोध । ४ मस्ती, मदमस्ती । ५ गर्व, अभिमान । -अंगी='जोमंगो' ।
 जोमधराज, जोमायत (ती)-वि० जोश पूर्ण, जोशीला ।

जोय-स्त्री० [सं० जाया] १ पत्नी, स्त्री, जोरू । २ देखो 'जोग' ।
 जोयण(ख)-पु० १ नेत्र, आंख । २ दर्शन । ३ देखो 'जोजन' ।
 जोयणी (बी)-देखो 'जोवणी' (बी) ।
 जोयस (सी)-पु० ज्योतिषी ।
 जोयल-स्त्री० १ इष्टि, नजर । २ आंख, नेत्र ।
 जोयोर्ज-देखो 'जोईर्ज' ।
 जोयोणी (बी)-देखो 'जोवणी' (बी) ।
 जोर-पु० [फा०] १ शक्ति, बल, ताकत । २ अधिकार, वश
 काबू । ३ परिश्रम, मेहनत । ४ तेजी, प्रवृत्ति । ५ आवेश,
 वेग । ६ आसरा, सहारा । -वि० प्रबल, तेज ।
 जोरजट-पु० एक प्रकार का उत्तम रेशमी वस्त्र ।
 जोरजुलम-पु० [फा०] अत्याचार, ज्यादाती ।
 जोरतलब-वि० आसानी से आज्ञा न मानने वाला ।
 जोरदार-वि० शक्तिशाली, बलवान ।
 जोरवंत (वर, वान)-देखो 'जोरावर' ।
 जोरसिंह-पु० एक मारवाड़ी लोक गीत ।
 जोरसोर-पु० [फा० जोर-शोर] अत्यधिक प्रबलता, प्रचण्डता ।
 जोराजोरी-क्रि० वि० बलपूर्वक, जबरन । -स्त्री० ज्यादाती ।
 जोरावर-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ प्रबल, प्रचण्ड ।
 -पु० सुभट, सैनिक ।
 जोरावरी-स्त्री० [फा०] १ जबरदस्ती, ज्यादाती । २ शक्ति,
 बल, ताकत । ३ बलात्कार । ४ अत्याचार, अन्याय ।
 -क्रि० वि० बलात्, बलपूर्वक, जबरदस्ती से ।
 जोरावल, जोरावार-देखो 'जोरावर' ।
 जोरिंगण (न)-पु० जुगनू ।
 जोरी-स्त्री० जोरावरी ।
 जोरीजपती-स्त्री० १ हुज्जत, तकरार । २ आनाकानी ।
 ३ बकवाद । ४ लड़ाई । ५ अत्याचार । ६ छीना-भपटी ।
 ७ खोचातान ।
 जोरू, जोरू-स्त्री० [फा०] पत्नी, स्त्री ।
 जोरी-पु० १ जुलम, अत्याचार । २ जवानी । ३ देखो 'जोर' ।
 जोल-पु० [सं० युगल] पैर ।
 जोलहा-पु० जुलाहा ।
 जोवंत-वि० [सं० ज्योतिवंत] प्रकाशवान, आभावान, कांतवान ।
 जोवण-स्त्री० १ देखने की क्रिया या भाव । २ तलाश, खोज ।
 -वि० १ देखने वाला, ढूँढने वाला । २ देखो 'जोवन' ।
 जोवणी (बी)-क्रि० वि० १ तलाश करना, ढूँढना । २ देखना ।
 ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना । ४ जलाना, प्रज्वलित
 करना । ५ देखो 'जोताणी' (बी) ।
 जोवन, जोवनराय, जोवनिया, जोवन-देखो 'जोवन' ।
 जोवरली-देखो 'जवरली' । (स्त्री० जोवरली) ।
 जोवराज-देखो 'युवराज' ।

जोवाड़णी (बी), जोवाणी (बी), जोवावणी (बी)-क्रि०
 १ तलाश, कराना, ढूँढवाना । २ दिखाना, देखने को प्रेरित
 करना । ३ प्रतीक्षा कराना, राह देखाना । ४ जलवाना,
 प्रज्वलित कराना । ५ देखो 'जोताणी' (बी) ।
 जोव्ण (न)-देखो 'जोवन' ।
 जोव्वाणिया-स्त्री० [सं० यौवनिका] युवावस्था (जैन) ।
 जोसनी-पु० शूरवीर, योद्धा ।
 जोस-पु० [फा० जोश] १ मनोवेग, आवेश । २ क्रोध, तेजी ।
 ३ उफान, उबाल । ४ उमंग, उत्साह । ५ बल, शक्ति ।
 ६ रक्त, खून ।
 जोसण (न)-स्त्री० [सं० जोषा] १ ज्योतिषी की स्त्री ।
 २ ब्राह्मणी । ३ प्रीति (जैन) । ४ सेवा (जैन) । -पु०
 [फा० जोशन] ५ जिरह-बस्तर, कवच ।
 जोसणिया-वि० कवचधारी ।
 जोसा, जोसिया, जोसित, जोसिता-स्त्री० [सं० जोषा, जोषित]
 स्त्री, ग्रीत ।
 जोसिया, जोसी, जोसीड़ी-पु० [सं० ज्योतिषी] १ ज्योतिषी ।
 २ जोशी ब्राह्मण ।
 जोसीली, जोसेस-वि० (स्त्री० जोसीली) १ आवेश युक्त, क्रोध
 युक्त । ३ उमंग भरा, उत्साही ३ तेजमिजाज ।
 जोह-पु० [सं० योषः] १ योद्धा, सुभट । २ देखो 'जोस' ।
 ३ देखो 'जोम' ।
 जोहटल-पु० [सं० योधस्थान] युद्ध के समय का शरीर
 विन्यास ।
 जोहण (न)-पु० [सं० योधन] १ योद्धा, वीर । २ देखो 'जोवण' ।
 जोहर-१ देखो 'जोहर' २ देखो 'जवाहिर' ।
 जोहरी-देखो 'जोहरी' ।
 जोहल्ल-पु० मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम ।
 जोहार-पु० [सं० योधकार] १ युद्ध करने वाला, योद्धा (जैन) ।
 २ देखो 'जुहार' ।
 जोहि-पु० [सं० योधिन] योद्धा (जैन) ।
 जोहिया-देखो 'जोइया' ।
 जोही-देखो 'जोधो' ।
 जौबत, जौबती-स्त्री० [फा० नीवत] नगाड़ा, नोबत ।
 जौहरी-देखो 'जोहरी' ।
 जी-देखो 'जी' ।
 जीक-पु० १ सच्च, मत्स्य । २ देखो 'जळीक' ।
 जीख-देखो 'जोख' ।
 जोखार-पु० यवाक्षार ।
 जोड़-पु० १ कवच । २ देखो 'जोड़' ।
 जोवणी-स्त्री० जी ध चने का मिश्रण । (मेवात)
 जोजा-देखो 'जोमा' ।

जोतुक-पु० [सं० योतुकः] दहेज, योतुक ।
 जोधिक-पु० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक ।
 जोवन-देखो 'जोवन' ।
 जोर-देखो 'जोहर' ।
 जोळा-वि० युक्त, सहित । -क्रि० वि० साथ-साथ ।
 जोवन-देखो 'जोवन' ।
 जोहर-पु० १ जवाहिरात, रत्न । २ अच्छे लोहे की तलवार की धारियां । ३ विशेषता, तूबी, गुण । ४ राजपूत स्त्रियों द्वारा अपनी सेवा की हार व आततायियों से अपने धर्म की रक्षार्थ किया जाने वाला सामूहिक आत्म-दहन । ५ इस प्रकार के आत्मदहन हेतु बनाई गई चिता । ६ आततायी शासन के विरुद्ध किया जाने वाला आत्म-दहन ।
 जोहरि (री)-पु० [फा०] १ जवाहिरात, रत्न, हीरों का व्यापारी । २ रत्न परीक्षक । ३ गुण ग्राहक । पारखी ।
 जोहारि, जोहारी-१ देखो 'जवारी' । २ देखो 'जुहार' ।
 जसाण-पु० ध्यान (जैन) ।
 ज्यउं, ज्यउ, ज्यऊ, ज्यऊ-देखो 'जिउं' ।
 ज्यां-१ देखो 'ज्या' । २ देखो 'जां' ।
 ज्यांन-पु० [फा० जियान] हानि नुकसान । -क्रि० वि० १ जैसे, जिस तरह । २ देखो 'जैन' । ३ देखो 'जान' । ४ देखो 'जाण' ।
 ज्यांनकी (खी)-देखो 'जानकी' ।
 ज्या-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती । २ प्रत्यंचा ।
 ज्याग-देखो 'जाग' ।
 ज्याब-देखो 'ज्यादा' ।
 ज्याबती-स्त्री० [सं० जियादती] १ प्रचुरता, बाहुल्य, अधिकता । २ अत्याचार, अन्याय ।
 ज्यादा-वि० [अ० जियादा] अधिक, बहुत ।
 ज्यार-क्रि० वि० १ जब । २ देखो 'जार' ।
 ज्यारत (ता)-देखो 'जारत' ।
 ज्यारां-क्रि० वि० जब । -वि० जिनका ।
 ज्यास-पु० [सं० जयाश] १ विश्वास, भरोसा । २ आशा । ३ विश्राम, शान्ति । ४ धैर्य, धीरज । ५ गरमास, निवास ।
 ज्यासती-देखो 'जासती' ।
 ज्युं, ज्यूं-देखो 'जिउं' ।
 ज्येस्ट (स्ट)-देखो 'जेठ' ।
 ज्येष्ठता-स्त्री० [सं० ज्येष्ठता] बड़ाई, श्रेष्ठता ।
 ज्येष्ठा-स्त्री० [सं० ज्येष्ठा] १ गंगा नदी का एक नाम । २. २८वां नक्षत्र । ३ समुद्र मंथन पर प्रथम निकलने वाली लक्ष्मीदेवी । ४ मध्यमा अंगुली । -वि० बड़ी ।
 ज्येष्ठावमी-पु० [सं० ज्येष्ठावमी] गृहस्वी ।

ज्येष्ठिकासण (न)-पु० [सं० ज्येष्ठिकासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन ।
 ज्यों-क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकार ।
 ज्यो-देखो 'जो' ।
 ज्योत-देखो 'जोत' ।
 ज्योतखी-पु० १ तारा । २ नक्षत्र । ३ देखो 'जोतिसी' ।
 ज्योति-देखो 'जोत' ।
 ज्योतिक(ख)-देखो 'जोतिस' ।
 ज्योतिकी (खि,खी)-देखो 'जोतिसी' ।
 ज्योतिधारी-वि० द्युतिवंत ।
 ज्योतिरलिंग-पु० [सं० ज्योतिर्लिंग] १ शिव, महादेव । २ शिव के प्रधान बारह लिंग ।
 ज्योतिरूप-पु० [सं० ज्योतिस्वरूप] परब्रह्म, परमात्मा ।
 ज्योतिस-देखो 'जोतिस' ।
 ज्योतिसी-देखो 'जोतिसी' ।
 ज्योतिस्पथ-पु० [सं० ज्योतिष्पथ] आकाश, व्योम ।
 ज्योतिष्पुंज-पु० [सं० ज्योतिष्पुंज] नक्षत्रों का समूह ।
 ज्योतिस्वरूप-देखो 'जोतिसरूप' ।
 ज्योत्सना, ज्योत्स्ना-स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना] चन्द्रमा का प्रकाश, चांदनी ।
 ज्यों-क्रि० वि० जैसे, जिस तरह ।
 जिआळी-पु० पर्वत, पहाड़ ।
 जिअित-पु० शृंगार का एक आसन ।
 ज्वर-पु० [सं०] १ बुखार, ताप । २ एक प्रकार का रत्न ।
 ज्वलंत (ती)-वि० [सं० ज्वलंत] (स्त्री० ज्वलंती) १ जलता हुआ, प्रकाशमान, दीप्त । २ प्रत्यक्ष, दिखता हुआ ।
 ज्वळणी (बी)-देखो 'जळणी' (बी) ।
 ज्वाब-देखो 'जवाब' ।
 ज्वाब-ज्वाब-क्रि० वि० स्थान-स्थान, जहां-जहां ।
 ज्वार-पु० १ समुद्री लहरों का उफान । २ देखो 'ज्वार' ।
 ज्वार-माटी-पु० समुद्र के जल का विशेष चढ़ाव ।
 ज्वाळ-देखो 'ज्वाळा' ।
 ज्वाळका-स्त्री० [सं० ज्वालिका] १ ज्वालाग्नि । २ क्रोधाग्नि ।
 ज्वाळजीह-स्त्री० [सं० ज्वालजिह्वा] अग्नि ।
 ज्वाळ-ज्वाळा-स्त्री० [सं० ज्वाला-ज्वाला] १ अग्नि । २ आग की लपट । ३ ज्वालामुखी । ४ दुर्गा का एक रूप ।
 ज्वाळमथाल-स्त्री० १ ज्वाला । २ बिजली ।
 ज्वाळमाळा-स्त्री० अग्नि, आग ।
 ज्वाळमाळी-पु० [सं० ज्वालमानिन्] सूर्य ।
 ज्वाळा-स्त्री० [सं० ज्वाला] १ ताप, जलन । २ विष आदि के ताप का प्रभाव । ३ अग्नि, आग । ४ आग की लपट । ५ क्रोध, क्रोधाग्नि । ६ एक देवी का नाम । -कार-वि० अग्निमय ।

ज्वालामुखीजोग

(४९०)

अंपरणी

—देवी-स्त्री० शारदापीठ स्थित एक देवी । —नस-स्त्री० आग की लपट । —माळिणी (नी)-स्त्री० एक तांत्रिक देवी । —मुख-पु० सुदर्शन चक्र । —मुखी-पु० वह पर्वत जिसमें से आग की ज्वाला पटती रहती हो । ज्वालादेवी । ज्वालामुखी-जोग-पु० एक अशुभ योग ।

ज्वाळिका-स्त्री० [सं० ज्वालिका] १ अग्नि, आग । २ ज्वाला मुखी । ३ एक जड़ी विशेष । ज्हांतू-देखो 'जान्ही' । ज्हाज-देखो 'जा'ज' । ज्हीड-देखो 'जोड' ।

-अ-

अ-देवनागरी वर्णमाला के 'अ' वर्ग का चौथा वर्ण ।
 अ-स्त्री० ध्वनि विशेष ।
 अक-पु० १ संताप, उत्पन्न । २ देखो 'अंख' ।
 अकण (न)-पु० समुदाय, झुण्ड ।
 अकणी (बो)-देखो 'अंखणी' (बो) ।
 अकार-स्त्री० [सं०] १ अमर गुंजार, भौरे की आवाज । २ किसी धातु खण्ड का 'छन्' शब्द । ३ पायल, घुंघरू आदि की आवाज । ४ छनछनाहट, झनझनाहट । ५ तार वाद्यों की आवाज ।
 अकारणी (बो)-कि० [सं० अंकार] १ किसी धातु खण्ड से छन्-छन् आवाज कराना, बजाना । २ पायल, घुंघरू आदि बजाना । ३ तार वाद्य बजाना, झंकृत करना ।
 अकारतन-पु० स्त्रियों के पैर का आभूषण, नूपुर ।
 अकारी-पु० अमर, भौरा, मधुप ।
 अकाळ (ढो)-पु० पत्ते बिहीन या सूखा पेड़ ।
 अकि-पु० एक वाद्य विशेष ।
 अकी-वि० (स्त्री० अंकी) १ गर्द आदि से आच्छादित, धुंधला । २ नीरस । ३ उदास, खिन्न ।
 अंकीळणी (बो)-देखो 'अंकीळणी' (बो) ।
 अंख-पु० १ धुंधला दिखने का भाव या अवस्था । २ दीप शिखा पर पतंगों का गिरना । ३ मोहित या आशक्त होने का भाव । ४ चमक, आभा । ५ उदासी खिन्नता ।
 अंखड़-पु० १ ग्रीष्मकाल की गर्म हवा, लू । २ देखो 'अंखर' ।
 अंखणी (बो)-कि० १ झलकना, चमकना । २ प्रकाशित या रोशन होना । ३ झलक दिखना । ४ दुःखी होना, परेशान होना । ५ चीकना । ६ देखना । ७ धूमिल होना, धुंधला होना । ८ शर्मना । ९ बोलना, बकना ।
 अंखर (रौ), अंखाड़-पु० १ सूखा वृक्ष या सूखी झाड़ी । २ वृद्ध, बूढ़ा । ३ झाड़ी ।

अंखरी, अंखेरी-पु० १ बरसाती आंधी, तूफान, वातचक्र । २ जखीरा, सामान ।
 अंगर-पु० १ घने वृक्षों का समूह, झाड़ी । २ वन, जंगल ।
 अंगरी-स्त्री० १ कब्रिस्तान । २ कब्र । ३ देखो 'अंगर' ।
 अंगार, अंगो-स्त्री० १ एक जंगली जाति । २ देखो 'अंगर' ।
 अंगीव-पु० [सं० अंगव] ४९ क्षेत्रपालों में से २५ वां क्षेत्रपाल ।
 अंगी-पु० छाछ, मट्ठा ।
 अंजीर-देखो 'जंजीर' ।
 अंश-पु० १ मर्प, नाग । २ देखो 'अंभ' ।
 अंशट-पु० १ व्यर्थ का झगड़ा, बखेड़ा । २ परेशानी, आफत ।
 अंशर, अंशरा-देखो 'जंभर' ।
 अंशरी-वि० १ ढीला-ढाला, जर्जरी भूत । २ देखो 'जंभर' ।
 अंशा-स्त्री० [सं०] १ वर्षा के साथ आंधी, तूफान । २ इस तूफान का शब्द, भन्-भन् शब्द ।
 अंशावत (वात, वातू)-पु० [सं० अंभावात] १ बरसाती तूफान । २ बरसाती शीतल वायु । ३ वातचक्र ।
 अंशेड़णी (बो), अंशेरणी (बो), अंशोड़णी (बो), अंशोरणी (बो)-कि० हिलाना, झकझोरना । छेड़ना ।
 अंशाळ-वि० १ झंडा रखने वाला । २ देखो 'अंड़ी' ।
 अंड़ी, अंड़ी-पु० १ किसी धातु या लकड़ी के डंठे पर बांध कर फहराया जाने वाला विविध रंगीय वस्त्र, पनाका । २ राष्ट्रीय ध्वज । ३ देवालय पर लगी ध्वजा ।
 अंनोकार-पु० ध्वनि या शब्द विशेष ।
 अंप-देखो 'अंफा' ।
 अंपटाळ (ताळ)-पु० १ चौदह मात्राओं का छन्द विशेष । २ संगीत में एक ताल ।
 अंपणी (बो)-कि० १ दीपक की लौ का हिलना । २ अस्थिर रहना । ३ आग का बुझना । ४ छलांग भरना, कूदना ।

५ भपटना, हूट पड़ना । ६ पकड़ना, भांपना । ७ नींद लेना, भरकी लेना । ८ शर्माना, भौंपना ।
 संपा-स्त्री० [सं०] १ छलांग, कुदान । २ गिरते समय किसी को पकड़ने का भाव, भपटी ।
 संपाणी (बो), सपावणी (बो)-क्रि० १ दीपक की लौ को हिलाना । २ अस्थिर रखना । ३ आग को बुझाना । ४ छलांग भराना, कुदाना । ५ भपटाना, छिनवाना । ६ पकड़वाना । ७ निद्रा या भपकी लिराना । ८ लज्जित करना ।
 संपी-देखो 'भापी' ।
 संफणी (बो)-देखो 'भंफणी' (बो) ।
 संव-स्त्री० १ पेड़ की शाखा, टहनी । २ वृक्ष समूह, झुंड । ३ आश्रय, सहारा । ४ शरण, पनाह ।
 संम-स्त्री० १ दीपक की बत्ती । २ प्रकाश ।
 संवरी-पु० १ पतियां युक्त वृक्ष की टहनी । २ टहनियों का गुच्छा । ३ शरीर का मेल उतारने का एक मिट्टी का उपकरण ।
 स-पु० [सं०] १ हाथ । २ मछली, मच्छ । ३ आम । ४ निदान । ५ नाश । ६ मैथुन । ७ बरसाती तूफान, भंभावात । ८ वृहस्पति । ९ दैत्यराज । १० ध्वनि ।
 सईवर-पु० [सं० धीवर] नाविक ।
 सउड़ी-१ देखो 'जुमो' । २ देखो 'जाऊड़ी' ।
 सक-स्त्री० १ सनक, धुन, तरंग । २ देखो 'जक' । ३ देखो 'भक्क' । ४ देखो 'भक्क' ।
 सकक-स्त्री० छाया, प्रतिबिंब ।
 सककेतु (तू)-पु० [सं० भपकेतु] अतंग, कामदेव ।
 सकड़-स्त्री० १ वर्षा के पूर्व की आंधी । २ तूफान । ३ तू ।
 सकड़ी-वि० रहस्यपूर्ण, गुप्त । -पु० दूध दूहने का बर्तन ।
 सकड़ी-पु० जुम्रा ।
 सकक-स्त्री० बकवास ।
 सकसकाहट-स्त्री० १ चमक, दीप्ति, कांति । जगमगाहट । २ बकवास ।
 सकसोर-स्त्री० १ हिलाने की क्रिया या भाव, छेड़-छाड़ । २ झटका । ३ क्रीड़ा । -वि० १ तेज, तीव्र, भौंकेदार । २ रक्ताभ, लाल ।
 सकसोरणी (बो)-क्रि० १ पकड़ कर जोर से हिलाना । २ झटका देना । ३ छेड़छाड़ करना, परेशान करना ।
 सकसोरी-पु० भौंका, झटका ।
 सकसोळ-देखो 'भक्कसोर' ।
 सकट-पु० [सं०] मारकाट, युद्ध ।
 सकणी (बो)-क्रि० १ व्यर्थ की बकवास करना, बकना । २ क्रोध में बड़बड़ाना ।

सकबोळ-वि० सीमा हुआ, तर । लय-पथ, सना हुआ ।
 सकबोळणी (बो)-क्रि० १ पानी या अन्य तरल पदार्थों में भिगोना, तरबतर करना । २ गहरा रंगना ।
 सकासक-वि० उज्ज्वल, स्वच्छ ।
 सकाणी (बो)-क्रि० आग सुलगाना, जलाना ।
 सकाळ-स्त्री० बकवास, बक-बक ।
 सकी-स्त्री० १ लड़खड़ाते की क्रिया या भाव । २ भौंका, हिलोर । ३ देखो 'भक्की' ।
 सकोड़ी-स्त्री० पञ्चाताप ।
 सकोर (ळ)-पु० १ वायु का भौंका । २ क्रीड़ा, केलि । ३ युद्ध, लड़ाई । ४ उत्सव, झलसा । ५ प्रक्षालन ।
 सकोरणी (बो), सकोळणी (बो)-क्रि० १ मुलम्मा या गिलट चढ़ाना । २ भिगोना, तर करना । ३ वायु का भौंका लगाना । ४ क्रीड़ा करना । ५ प्रक्षालन करना, धोना । ६ स्नान करना । ७ गाना ।
 सकोळी-स्त्री० १ झकोलने की क्रिया या भाव । २ स्नान ।
 सकोळी-पु० १ लहर, तरंग, हिलोर । २ आघात, टक्कर, झटका । ३ अस्थिरता का भाव । ४ देखो 'भकोळी' ।
 सकक (ड)-वि० १ स्वच्छ, उज्ज्वल । २ अतिश्वेत । ३ चमकदार, चमकीला । ४ मस्त, मुग्ध । ५ देखो 'भक्क' ।
 सककी-वि० १ व्यर्थ बकने वाला, बकवादी । २ सनकी । ३ धुन का पक्का ।
 सक-पु० [सं० भक्क] १ जंगल, निर्जन वन । २ रेगिस्तान । ३ मत्स्य, मछली, मोन । ४ मोन राशि । ५ गर्मी, ताप । ६ इच्छा, आशा । ७ देखो 'भक्क' । —केत, केतु (तू) = 'भक्केतु' । —भूर-वि० चूर-चूर, नाश, ध्वंस । —ध्वज-पु० कामदेव । —निकेत-पु० समुद्र, जलाशय । —बोळ = 'भक्कबोळ' । —बधक-पु० मछली पकड़ने का यंत्र ।
 सकणी (बो)-क्रि० इच्छा करना, आकांक्षा करना ।
 सकोरणी (बो)-देखो 'भक्कसोरणी' (बो) ।
 सकड़णी (बो)-क्रि० [सं० भक्कट] १ झगड़ा करना, लड़ाई करना । २ विवाद, तकरार करना । ३ कलह करना ।
 सकड़ातू, सकड़ी, सकड़ेल-वि० [सं० भक्कट + आलुच] १ युद्ध प्रिय, कलह गारा । २ विवाद करने वाला । ३ दुष्ट ।
 सकड़ी-पु० [सं० भक्कट] १ लड़ाई, युद्ध । २ टंटा, फिसाद । ३ विवाद । ४ मत-मुटाव, वैमनस्य ।
 सकसग, सकसगा'ट, सकसगाहट-स्त्री० १ प्रज्वलित होने की क्रिया या भाव । २ दहकन । ३ तंग मुँह के पात्र से द्रव पदार्थ के निकलने की ध्वनि ।
 सकसगणी (बो)-क्रि० प्रकाशित होना, प्रज्वलित होना, दहकना ।

अगणो (बो)—देखो 'जागणो' (बो) ।

अगमग (मगि)—देखो 'जगमग' ।

अगमगणो (बो)—देखो 'जगमगणो' (बो) ।

अगर—स्त्री० १ मूर्य की गर्मी । २ लू ।

अगरो—पु० १ जलने के लिये एकत्र किया हुआ, घास-फूस आदि का ढेर । २ उक्त ढेर के जलने से प्रज्वलित अग्नि ।

अगिया—पु० भाग, फेंक ।

अगो—पु० १ छोटा, बच्चा । २ छोटे बच्चे की अगिया ।

अघाट—वि० [सं० भकट] १ भगड़ालु, युद्ध प्रिय । २ जबरदस्त, जोरदार ।

अड़—पु० १ समूह, ढेर । २ पद्य, छंद या गीत का चरण, पंक्ति । ३ देखो 'जड़' । ४ देखो 'भड़' ।

अड़लट—पु० 'कुंडलिया' छंद का एक भेद ।

अड़क—स्त्री० भटका ।

अड़कणी (बो) अड़काली (बो) अड़कावणी (बो)—क्रि० १ भटका देना, भटकना । २ फटकारना, तिरस्कृत करना ।

अड़क्की—पु० १ भटका प्रहार । २ प्रहार की ध्वनि ।

अड़ज्जड़—स्त्री० शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

अड़ झड़—स्त्री० शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

अड़-सांकड़, (सांकळ, सांकी)—स्त्री० निरन्तर होने वाली हल्की बारिस, बूँदा-बांदी, फूहार ।

अड़णी (बो)—क्रि० वि० १ पत्ते, फल आदि की तरह टूट कर गिरना, टूटना । २ खण्ड-खण्ड, कण-कण होना । ३ ढह पड़ना, गिरना । ४ टपकना । ५ प्रहार होना, बार होना । ६ टूटना । ७ कट कर गिरना, कटना । ८ वीरगति को प्राप्त होना । ९ मरना । १० वीर्य का स्थलित होना । ११ शस्त्रादि की धार टूटना । १२ चेचक रोग से मुक्ति पाना । १३ दुर्बल होना, कृशकाय होना । १४ कम होना । १५ मिटना । १६ निर्धन होना, कंगाल होना ।

अड़प—स्त्री० १ छत में लटकने वाला कपड़े का बड़ा पंखा । २ लड़ाई, भगड़ा, मुठभेड़ । ३ विवाद, तकरार, हुज्जत । ४ गलफदार खिड़की के अन्दर की बाजू का पत्थर । ५ लकड़ी को घिसने का औजार । ६ भपटने या पकड़ने की क्रिया । ७ टक्कर, भपट । ८ हवा भलने की क्रिया या भाव । ९ सहसा किसी प्रकार के धन की उपलब्धि । १० आग की लौ, लपट ।

अड़पणी (बो)—क्रि० १ स्थान से अलग होना, गिरना, टूटना । २ द्रुतगति से भागना । ३ आक्रमण या हमला करना । ४ भगड़ा करना, उलझना । ५ भपट कर ले लेना । ६ छीनना । ७ किसी तरीके से प्राप्त कर लेना । ८ हवा करना । ९ काटना, मारना, संहार करना । १० द्रुतगति

से भागना । ११ भटके से गिराना, भटकना । १२ काबू या अधिकार में करना ।

अड़पा-अड़पी-स्त्री० १ गुत्थमगुत्था, हाथापाई । २ छीना भपटी ।

अड़पी, अड़फ (फो)—देखो 'भड़प' ।

अड़फड़णी (बो)—क्रि० रोग विशेष के कारण निर्बल होना, दुर्बल होना ।

अड़फड़ाणी (बो)—क्रि० १ पीटना, मारना । २ कष्ट देना, तकलीफ देना । ३ छीनना, लूटना । ४ पक्षियों द्वारा परों को फड़फड़ाना । ५ भटका देना ।

अड़फणी (बो), अड़फणी (बो)—देखो 'भड़पणी' (बो) ।

अड़बेरी-स्त्री० छोटे-छोटे बेरों की कांटेदार झाड़ी ।

अड़बोर—पु० उक्त झाड़ी का फल, बेर ।

अड़मुगट—पु० खुडद सांगोर गीत के अन्तर्गत एक गीत (छंद) विशेष ।

अड़लपत, (लुपत)—पु० डिगल का एक गीत विशेष ।

अड़वांण (वांणी)—स्त्री० १ एक प्रकार की तोप । २ वर्षा की झड़ी ।

अड़वायौ—वि० वर्षा संबंधी ।

अड़कौ—पु० १ तिरछी, चितवन, कटाक्ष । २ मुठभेड़, लड़ाई, भड़प ।

अड़झड़, अड़झड़ी—क्रि० वि० लगातार, बिना रुके, निरन्तर । —स्त्री० भड़ने की क्रिया या भाव ।

अड़पड़, (पड़ि, फड़, फड़ि)—स्त्री० १ फड़फड़ाहट । २ छीना-भपटी । ३ फिसाद-टंटा ।

अड़ियाळ—वि० वीरगति प्राप्त करने वाला ।

अड़ी—स्त्री० [सं० भटि] १ लगातार होने वाली वर्षा । २ छोटी-छोटी बूँदों की बारिस । ३ लगातार गिरने या भड़ने की क्रिया । ४ लगातार कहने या करने की क्रिया या भाव । ५ निरन्तर प्रहार । ६ निरन्तर काव्य पाठ । गायन । ७ डिगल का एक छंद विशेष ।

अड़थळ, अड़थळ—पु० डिगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

अड़ूसी—पु० [सं० चूडा, चूडाल] १ बच्चे के जन्म के समय के बाल । २ इन बालों का मुण्डन संस्कार, चूड़ाकरण संस्कार ।

अड़ोफड़—वि० गुत्थमगुत्थी, मालिगनबद्ध ।

अड़ोली—देखो 'भड़ली' ।

अझक—देखो 'भिभक' ।

अझकाङणी (बो), अझकाणी (बो), अझकावणी (बो)—देखो 'भिभकाणी' (बो) ।

अझरण—स्त्री० १ वाद्य ध्वनि । २ भनभन का शब्द, भन्कार । ३ भनभनाहट ।

अझारी—पु० स्वर्णकारों का एक औजार ।

अक्षिणी, भभौ—पु० 'भ' वर्ण । भन्कार ।

मट-क्रि० वि० [सं० भटिति] तत्काल, तत्क्षण, तुरंत, शीघ्र ।
-पु० १ वेग, गति । २ देखो 'भाट' ।

मटक-स्त्री० मटका देने की क्रिया या भाव, मटका ।-क्रि० वि०
तुरंत, शीघ्र ।

मटकणी (बो), मटकारणी (बो)-क्रि० १ मटका देना । २ मटक
कर भ्रमण करना । ३ वस्त्रादि को फटकारना । ४ भाड़ना,
बुहारना । ५ जोर से हिलाना । ६ गिराना पटकना ।
७ तिरस्कृत करना, भर्त्सना करना । ८ ठगना ।
९ कोई वस्तु बलात् लेना । १० मंत्रादि से प्रेत बाधा
हटाना । ११ डांवाडोल होना । १२ देखो 'भड़णी' (बो) ।

मटके (कै)-क्रि० वि० [सं० भटिति] १ तत्काल, शीघ्र ।
२ द्रुत गति से । ३ फटाफट । ४ मटकते हुए ।

मटकी-पु० [सं० भटिति] १ धक्का, मटका । २ चोट
आघात । ३ प्रतिघात । ४ शस्त्र प्रहार । ५ वार ।
६ सदमा, मानसिक, आघात । ७ कुशती का दाव ।
८ इधर-उधर भौंका खाने की क्रिया या भाव । ९ आर्थिक
हानि । ११ विद्युत् का झन्नाटा ।

मटकणी (बो)-देखो 'मटकणी' (बो) ।

मटकें-देखो 'मटकें' ।

मटवकी-देखो 'मटकी' ।

मटपंख-पु० गरुड़ पंखी ।

मटपट-क्रि० वि० तुरन्त, तत्काल, शीघ्र ।

मटपटी-स्त्री० १ शीघ्रता । २ देखो 'मटपट' ।

मटपटी-पु० १ बड़ा सवेरा, तड़का, उपाकाल । २ देखो
'मटपट' ।

मटसार-स्त्री० तलवार ।

मटा-स्त्री० भपट, चोट, प्रहार ।

मटाकी-पु० १ विवाद, तकरार । २ बहस । ३ देखो 'मटकी' ।

मटाछ-क्रि० वि० [सं० भटिति] शीघ्र, तुरन्त, मटपट ।

मटाभट-क्रि० वि० शीघ्र हो, तुरन्त, फुर्तसे । -स्त्री० शस्त्र
प्रहारों की ध्वनि ।

मटायत-पु० योद्धा, वीर, बहादुर ।

मटारी-पु० प्रहार, आघात ।

मटित-देखो 'जड़ित' ।

मटेल-क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत ।

मटोमट-देखो 'मटाभट' ।

मट्ट-१ देखो 'भट' । २ देखो 'भाट' ।

मट्टाक, मट्टाक-क्रि० वि० शीघ्र तुरंत ।

मटाली (ली)-वि० १ भयंकर । २ जलाने वाला ।

मणक (की)-देखो 'भणक' ।

मणका, मणकार-स्त्री० १ वीणा । २ भंकार । ३ ध्वनि ।

मणक-स्त्री० १ भन्भन् शब्द, ध्वनि । २ भंकार, मधुर ध्वनि ।
३ वीणा आदि की ध्वनि । ४ भ्रमर गुंजार । ५ शस्त्रों
की ध्वनि ।

मणकणी (बो)-क्रि० १ भंक्रत होना, भन्भनाना । २ तार
वाद्य का बजना । ३ भीरे आदि का गुंजार करना ।
४ शस्त्रों का शब्द होना ।

मणकवाल-पु० घोड़े का एक रोग ।

मणकणी (बो)-क्रि० १ भंक्रत करना, भन्भनाना । २ तार
वाद्य बजाना । ३ शस्त्रों का शब्द कराना ।

भणकार (कारो)-देखो 'भंकार' ।

भणकारणी (बो), मणकावणी (बो)-देखो 'भंकारणी' (बो) ।

भणक्कणी (बो)-देखो 'भणकणी' (बो) ।

भणभण-स्त्री० भंकार, भन्-भन् शब्द ।

भणभण'ट, मणभण'हट-स्त्री० १ भंकार । २ छन्-छनाहट ।

भणभणौ, मणभण-देखो 'भणभण' ।

भणण-स्त्री० [भनु०] भंकार, छन्-छनाहट ।

मणहण-देखो 'भणभण' ।

मण'ट, मण'हट, मण'ण'ट, मण'ण'हट-देखो 'भणभण'हट' ।

मत्ति-क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।

मनकार-देखो 'भणकार' ।

मप-स्त्री० १ दीपक की लौ भनकने की क्रिया । २ इस क्रिया
से उत्पन्न ध्वनि । ३ देखो 'भब' ।

मपक-१ देखो 'भपकी' । २ देखो 'भबक' ।

मपकणी (बो)-क्रि० १ नींद की भपकी लेना । जंचना ।
२ पलकें गिराना । ३ आंख भपकना । ४ भँपना, शमिदा
होना । ५ भपटना, भपट पड़ना, हमला करना ।
६ चौंकना । ७ डरना, महम जाना ।

मपकाणी (बो), मपकावणी (बो)-क्रि० १ थपकी देकर निद्रित
करना । २ पलकें गिराना । ३ शमिन्दा करना ।
४ भपटाना । ५ चौंकाना । ६ डराना ।

मपकी-स्त्री० १ हल्की नींद, तंद्रा, ऊंघ । २ पलकों को भपकने
की क्रिया । ३ लज्जा, शर्म, भँप ।

मपके (कै)-क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत, तेजी से ।

मपट-स्त्री० १ सहसा किसी चीज को भपटने की क्रिया या
भाव, चोट । २ छोटी लड़ाई, मुठभेड़ । ३ विवाद,
तकरार । ४ हल्की चोट, प्रहार । ५ फटकार, मटका ।
६ टक्कर, धक्का । ७ ख-खेच । ८ छीनने की क्रिया या
भाव । ९ हवा का भौंका । १० हवा करने की क्रिया ।
११ तेज चलने की क्रिया या भाव ।

मपटणी (बो)-क्रि० १ मटके के साथ किसी वस्तु को बलात् ले
लेना । २ पंखे आदि से हवा करना । ३ फटकारना ।
४ दौड़ कर जाना । ५ सहसा आक्रमण करना ।

६ भागना । ७ उलझना, भगड़ना । ८ छोना-भपटी करना । ९ आघात या प्रहार करना । १० टक्कर या धक्का मारना । ११ काटना मारना ।

अपटाङ्गो (बो), अपटाणो (बो), अपटावणो (बो)—क्रि० १ तेज भगाना, दौड़ाना । २ दौड़ा कर आगे बढ़ाना । ३ हमला या आक्रमण कराना । ४ परस्पर लड़ाना, भगड़ा कराना । ५ काबू में कराना, पकड़वाना । ६ छिनवाना । ७ भपट कर ले लेना । ८ हवा कराना । ९ टक्कर लगवाना । १० चोट करवाना, प्रहार करवाना । ११ संहार करवाना, मरवाना ।

अपटी—देखो 'भपट' ।

अपटैत—वि० १ भपटने वाला । २ प्रहार करने वाला । ३ आक्रामक । ४ तेज भागने वाला । ५ लड़ने वाला । ६ विवादी । ७ पकड़ने वाला । ८ मारने वाला ।

अपटी—पु० १ भपटा, हमला । २ प्रहार, चोट । ३ फटकारा । ४ भटका । ५ चपेट ।

अपट्ट—देखो 'भपट' ।

अपट्टणो (बो)—देखो 'भपटणो' (बो) ।

अपट्टी—देखो 'भपटी' ।

अपणो (बो)—१ देखो 'भपणो' (बो) । २ देखो 'जपणो' (बो) ।

अपताळ—स्त्री० संगीत में एक ताल विशेष ।

अपां—स्त्री० टहती, शाखा ।

अपांण (न)—स्त्री० पहाड़ी सवारी विशेष ।

अपांणी (नी)—पु० 'अपांण' उठाने वाला, कहार ।

अपाक (को)—क्रि० वि० तुरंत, शीघ्र, फौरन । —स्त्री० शीघ्रता, जल्दी ।

अपासप—क्रि० वि० द्रुतगति से, शीघ्रता से ।

अपाटी—देखो 'भपटी' ।

अपीड़—पु० १ चोट, प्रहार । २ भटका, चपेट ।

अपेट (टी)—देखो 'भपटी' ।

अपोसप—देखो 'भपासप' ।

अफसमुद्र—पु० समुद्र लांघने वाला, हनुमान ।

अब, कबक—पु० १ समय का कोई ग्रंथ । २ बार, दफा, मर्तवा । २ रह-रह कर चमकने की क्रिया, चमक । ३ झिलमिलाहट । —क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत ।

अबकड़ (ई)—क्रि० वि० शीघ्र ही, तुरंत ।

अबकणी (बो)—क्रि० १ रह-रह कर कौंधना, चमकना । २ झलकना दिखाई देना । ३ झिलमिलाना, टिमटिमाना । ४ भमकना ।

अबकाणी (बो), अबकावणी (बो)—क्रि० १ रह-रह कर कौंधाना, चमकाना । २ झलकाना, दिखाना । ३ झिलमिल कराना, टिमटिमाना । ४ भमकाना ।

अबकारी—देखो 'भबकी' ।

अबकी—पु० १ क्षण भर दिखाई देकर ओझल होने की क्रिया या भाव, भांकी । २ क्षणिक प्रकाश, दमक । ३ झलक, प्रकाश । ४ किसी वस्तु के होने का आभास । ५ कभी-कभी धुंधलासा दिखने की अवस्था या भाव ।

अबकणी (बो)—देखो 'भबकणी' (बो) ।

अबजब—क्रि० वि० चमक-दमक के साथ, चमकता हुआ ।

अबजवणी (बो)—देखो 'भबकणी' (बो) ।

अबरक—स्त्री० १ झिलमिलाहट, टिमटिमाहट । २ चमक-दमक । —वि० चमकता हुआ, प्रकाशित ।

अबरकणी (बो)—क्रि० झिलना-झुलना, झूमना । २ हिलोरें खाना, भौंके खाना । ३ देखो 'भबकणी' (बो) ।

अबरकी—पु० १ शस्त्र की नोक । २ देखो 'भबकी' ।

अबरकणी (बो)—देखो 'भबरकणी' (बो) ।

अबरखी—देखो 'भबरकी' ।

अबळक—स्त्री० १ जल आदि का विलोडन । २ विलोडन से उत्पन्न ध्वनि । ३ वस्त्र को पानी में डाल कर हिलाने की क्रिया या भाव । ४ छलकन, उफान । ५ देखो 'भबरक' ।

अबळकणी (बो)—क्रि० १ देदीप्यमान होना, चमकना । २ जल आदि विलोडित होना । ३ विलोडन से ध्वनि होना । ४ छलकना, छलक कर बाहर आना । ५ झिलमिलाना, टिम-टिमाना । ६ हिलना-झुलना, झूमना । ७ देखो 'भबळणी' (बो) ।

अबळकी—पु० १ स्नान के लिये लगाई जाने वाली डुबकी । २ देखो 'भबकी' ।

अबळणी (बो)—क्रि० वस्त्र को पानी में भिगोना, भिगोकर हिलाना, मसलना ।

अबाक—क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत ।

अबाकी—पु० १ छपाकी । २ छपाके की ध्वनि । ३ देखो 'भबकी' ।

अबासारी—स्त्री० एक प्रकार का दीपक ।

अबू—पु० १ ऊंट के चमड़े का एक वर्तन विशेष । २ ताश का काला रंग । ३ काले रंग का इक्का ।

अबूकड़ी, अबूकड़ी—देखो 'भबकी' ।

अबूकणी (बो)—क्रि० १ लटकना, लूबना, पकड़ कर झुलना । २ झटकना । ३ देखो 'भबकणी' (बो) । ४ देखो 'भबरकणी' (बो) ।

अबूकु, अबूकी—देखो 'भबकी' ।

अबोल—स्त्री० १ शरीर पर वस्त्र की लपेट । २ पानी में वस्त्र डालकर हिलाने की क्रिया । ३ तरल पदार्थ में वस्तु डालने की क्रिया ।

अबोलणी (बो)-क्रि० १ शरीर पर वस्त्र लपेटना । २ पानी में वस्त्र भिगोकर हिलाना । ३ तरल पदार्थ में कोई वस्तु डुबाना ।

अबोलो-पु० १ विघ्न, बाधा । २ कोई बड़ा काम । ३ देखो 'अबलकी' ।

अबो-पु० १ स्त्रियों की चोली । २ वस्त्रों के पहनने का वस्त्र । ३ अनाज बोने की बीजणी का ऊपरी मुँह । ४ चमक, प्रकाश । ५ देखो 'आबो' ।

अबोलो-देखो 'अबोलो' ।

अबो-पु० १ गुच्छा । २ समूह । ३ आभूषण विशेष (मेघात) । ४ देखो 'अबो' । ५ देखो 'आबो' ।

अमकणी (बी)-देखो 'अमकणी' (बी) ।

अम-स्त्री० १ छम-छम ध्वनि । २ देखो 'अब' ।

अमक-स्त्री० १ छमक, भन्कार । २ घुंघरू की घोर । ३ चमक, प्रकाश । ४ नखरे से चाल, ठसक । ५ थमक अलंकार । ६ मजाक हँसी । ७ शस्त्रों की खनक ।

अमक-अमक-क्रि० वि० छम-छम ध्वनि करते हुए ।

अमकणी (बी)-क्रि० १ छमकना, भन्कृत होना । २ घुंघरू का बजना । ३ चमकना, प्रकाशित होना । ४ ठसक से चलना । ५ मजाक करना, हँसाना । ६ शस्त्र खनकना । ७ चेचक रोष का विकृत होना ।

अमकणी (बी), अमकावणी (बी)-क्रि० १ छमकाना, भन्कृत करना । २ घुंघरू बजाना । ३ चमकाना, प्रकाशित करना । ४ ठसक से चलाना । ५ मजाक कराना । हँसाना । ६ शस्त्र खनकाना ।

अमकीली-वि० (स्त्री० अमकीली) १ ठसक या नखरे से चलने वाला । २ छल-छलीला । ३ चमकने वाला ।

अमके (कै)-क्रि० वि० शीघ्रता से, तुरंत ।

अमकी-पु० १ पायल या घुंघरू का शब्द, ध्वनि, ठमका । २ देखो 'अमकी' ।

अमअम-स्त्री० छमाछम की ध्वनि, भन्कार । -क्रि० वि० छमा-छम करते हुए ।

अमअमा'ट-स्त्री० छमाछम की ध्वनि, भन्कार ।

अमअमाणी (बी)-क्रि० छमाछम करना, ध्वनि करना, भन्कारना ।

अमअमी-पु० एक प्रकार का वाद्य ।

अमर-पु० वालों का गुच्छा ।

अमरतली-स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।

अमाकी-पु० घुंघरू या आभूषणों का घोर, शब्द, ध्वनि । जोर की भन्कार ।

अमाळ-स्त्री० दिगल का एक छन्द विशेष ।

अमाळ (लि, ली)-स्त्री० १ किरण-जाल । २ गुच्छा, समूह । ३ भन्कर जाति का एक पतंगा । -वि० चमकदार, चमकता हुआ ।

अमेल-पु० १ एक उपकरण विशेष । २ देखो 'अमेनी' ।

अमेलियो-वि० अमेला या उलभन डालने वाला, विघ्नकारक । भगड़ाल ।

अमेली, अमेली-पु० १ भगड़ा, टंटा, बखेड़ा । २ उलभन, पेचीदगी । ३ पेचीदा कार्य । ४ विघ्न, बाधा ।

अर-स्त्री० १ किमी द्रव पदार्थ के रिसने या टपकने की क्रिया, स्राव । २ जलपात्र, बड़ा घड़ा (सेवात) ।

अरड़क-स्त्री० १ शस्त्र का प्रहार । २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ३ दधि मथन का घोष । ४ खरोंच या रगड़ लगने की क्रिया या भाव ।

अरड़कणी (बी)-क्रि० १ रगड़ लगाना, खरोंच लगाना । २ फाड़ना, चीरना । ३ प्रहार करना । ४ प्रहार की ध्वनि होना ।

अरड़की-पु० १ खरोंच, रगड़ । २ खरोंच पड़ने का स्थान । ३ दधि मथन का घोष । ४ प्रहार, आघात । ५ प्रहार की ध्वनि ।

अरड़णी (बी)-क्रि० १ खरोंचना, रगड़ना । २ दधि मथना । ३ नोचना । ४ चीरना, फाड़ना ।

अरड़मरड़-पु० दही मथने की ध्वनि ।

अरहर, अरहरकंती (कंथी), अरहररी-वि० १ फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण । २ तर-बतर, टपकता हुआ ।

अरणा'ट, अरणाटी, अरणाहट-स्त्री० १ घुंघरू, आभूषण, शस्त्रादि की तीव्र भन्कार । २ किसी वाद्य या धातु की वस्तु पर आघात पड़ने से होने वाली भन्-भन् ध्वनि । ३ बिच्छू के काटने या बिजुत के स्पर्श आदि से शरीर में होने वाली सनसनाहट । ४ पोड़ा, दर्द ।

अरणि, अरणी (णी)-क्रि० [सं० अरण] १ जल प्रपात, मोता, चश्मा । २ बहाव, प्रवाह । ३ अरण, पतन । -वि० १ भरने वाला, भरने योग्य । २ असहिष्णु ।

अरणी (बी)-स्त्री० [सं० अरणम्] १ किसी तरल पदार्थ का रिसना, टपकना, स्राव होना । २ गिरना, पतन होना । ३ प्रपात होना, ऊपर से निरन्तर गिरना । ४ टुकड़े-टुकड़े होकर पड़ना । ५ वग्मना । ६ स्थलित होना ।

अरपट-स्त्री० १ साधारण गाँ चोट या घाव । २ खरोंच । ३ भपट, चपेट ।

अरमर-१ देखो 'अरमर' । २ देखो 'अरड़मरड़' ।

अरी-स्त्री० १ भूमि खोद कर बनाई गई भट्टी, भाड़ । २ नीवार की दरार । ३ भरता, चपचा, प्रपात । ४ एक प्रकार

का ज्वर । ५ एक प्रकार का रोग । ६ देखो 'जरी' ।
७ देखो 'भङ्गी' ।

मल्लटिथी-पु० खरोंच, रगड़ ।

मल्लको (खो), मल्लोक, मल्लोड़, मल्लोको, मल्लोख, मल्लोखी-पु०
मकान के द्वार या खिड़की के ऊपर बना जालीदार गवाक्ष,
मोखा, गौला । जालियों से आच्छादित बालकानी ।

मल्लब-स्त्री० १ चमक, आभा, कांति । २ देखो 'मिलम' ।
-वि० कांतिवान, चमकदार ।

मल्ल-स्त्री० १ भङ्गी, भागी । २ आग की लपट, अग्नि शिखा
ज्वाला । ३ गरमी, ताप । ४ अग्नि, आग । ५ उग्रकामना,
उत्कट इच्छा । ६ कांति, दीप्ति । ७ चमक-दमक ।
८ खुजलाहट, खुजली । ९ स्त्री की कामेच्छा, चुल ।
१० उष्ण वायु, लू । ११ मृगशिरा नक्षत्र का उदय-स्थान,
पूर्व दिशा ।

मल्ल-स्त्री० १ पकड़ने की क्रिया या भाव । २ धारण करने की
क्रिया या भाव । -वि० १ पकड़ने वाला । २ धारण करने
वाला । ३ पूर्ण ।

मल्लक-स्त्री० [सं० ज्वलन्] १ आभा, कांति, युति । २ चमक-
दमक, प्रकाश । ३ प्रतिबिम्ब । ४ आभास । ५ तरंग,
उर्मि । ६ क्षणिक, प्रकाश ।

मल्लकणी-वि० आभावान, कांतिवान, चमकीला ।

मल्लकणी (बो), मल्लकणी (बो)-क्रि० १ आभा देना, चमकाना,
प्रकाशित होना । २ हल्का दिखाई देना, स्फुटित होना ।
३ दीखना, दृष्टिगोचर होना । ४ आभास होना । ५ कुछ-
कुछ प्रगट होना । ६ प्रतिबिम्ब पड़ना, प्रतिबिम्बित होना ।
७ शोभा देना । ८ क्रोधित होना, क्रोध करना । ९ मर्यादा
तोड़ना । १० छलकना, छलक कर बाहर होना ।
११ हिलना-डुलना ।

मल्लकणी (बो)-क्रि० १ आभा या युति युक्त करना, चमकाना,
प्रकाशित करना । २ हल्कामा दिखाना, स्फुटित करना ।
३ दिखाना, दृष्टि गोचर करना । ४ आभास देना । ५ कुछ-
कुछ प्रगट करना । ६ प्रतिबिम्ब पटकना । ७ शोभित
करना । ८ क्रोधित करना, क्रोध दिलाना । ९ मर्यादा
तुड़ाना । १० छलकाना, छलका कर बाहर करना ।
११ हिलाना-डुलाना ।

मल्लकारी-वि० (स्त्री० मल्लकारी) १ जगमगाता हुआ ।
२ चमकदार, युतिवान । ३ देखो 'मल्लकी' ।

मल्लकी (बकी)-पु० १ चमक-दमक, भलक । २ आकृति,
आभास, प्रतिबिम्ब । ३ प्रकाश, कौंध । ४ लपट, ली ।

मल्लकी-पु० गाड़ी में एक साथ भरे हुए घास या बाजरी
आदि के सूखे डंठल ।

मल्लजीहा-स्त्री० [सं० ज्वाला-जिह्वा] अग्नि, आग ।

मल्लमलणी (बो), मल्लमलणी (बो)-क्रि० जगमगाना,
चमकना ।

मल्लमल्ल-वि०, मल्लमल्लहट-स्त्री० जगमगाहट, चमक-दमक ।

मल्लमाखसड-स्त्री० [सं० चलद्वांशम्] उड़ती हुई या
काल्पनिक बात, अविश्वसनीय बात ।

मल्लमल्लि-स्त्री० अग्नि, आग ।

मल्लण (न)-देखो 'जलन' ।

मल्लणी (बो)-क्रि० १ पकड़ना । २ भ्रष्ट कर ग्रहण करना ।
३ देखो 'जलणी' (बो) ।

मल्लणी (बो)-क्रि० १ सहन या बर्दाश्त करना । २ फैलना,
छितराना । ३ पकड़ा जाना, पकड़ में आना । ४ शोभित
होना ।

मल्लवकार-वि० ज्वालामय ।

मल्लपट-स्त्री० अग्नि की ज्वाला, आग की लौ । आंच ।

मल्लम-देखो 'मिलम' । -टोप='मिलमटोप' ।

मल्लमलणी (बो)-देखो 'मिलमिलणी' (बो) ।

मल्लमल्लणी (बो)-देखो 'मिलमिललणी' (बो) ।

मल्लमाळा-स्त्री० अग्नि, आग ।

मल्लर-पु० एक प्रकार का पेय पदार्थ ।

मल्लल-स्त्री० १ जगमगाने या चमकमाने की क्रिया या भाव ।
२ चमक-दमक । ३ जलने की क्रिया या भाव । ४ आग
की लपट । ५ सूर्य । ६ देखो 'मल्लहल' ।

मल्लसी-देखो 'जलसी' ।

मल्लहर-पु० डिगल में बेलियो साणोर खंद का एक भेद विशेष ।

मल्लहल-स्त्री० १ अग्नि, आग । २ कांति, दीप्ति, ३ चमक-
दमक । -वि० १ देदीप्यमान, आभा युक्त । २ तेजस्वी ।
३ चमक-दमक वाला । ४ घषकता हुआ, प्रज्वलित ।

मल्लहलणी (बो)-क्रि० [सं० मल्लहल] १ देदीप्यमान होना,
चमकना । २ प्रकाश फैलाना, प्रकाशित होना ।
३ चमकना, कौंधना । ४ फहरना । ५ जाज्वल्यमान होना ।
६ जगमगाना । ७ शोभित होना । ८ उमड़ना, सीमा
बाहर होना । ९ प्रज्वलित होना, अधकना ।

मल्ला-स्त्री० अग्नि, आग ।

मल्लासल-देखो 'मल्लाहल' ।

मल्लासल्लि-वि० चमकदार, चमकीला ।

मल्लाणी (बो)-क्रि० १ लोटाना, वापस करना । २ पकड़ना ।
३ देना । ४ फैलाना, छितराना । ५ शोभित करना ।
६ सहन कराना ।

शब्दावली

(४९७)

श्रांती

शब्दावली-वि० १ जाज्वल्यमान, तपा हुआ । २ आग-बबूला, अतिकुपित । ३ देदीप्यमान । जगमगाता हुआ । ४ भयंकर । ५ ज्वरदस्त ।

शब्दामळ-स्त्री० १ चमक-दमक । २ एक प्रकार का घोड़ा । -वि० चमकदार, चमकीला । —**भारती-स्त्री०** तोरण द्वार पर दीपको से की जाने वाली दूल्हे की भारती ।

शब्दामाळा-स्त्री० सघनतायुक्त कांति, दीप्ति ।

शालार-वि० पकड़ने वाला ।

शालाळ-वि० चमकयुक्त, तेज ।

शालाळी-वि० धारण करने वाला, ग्रहण करने वाला ।

शलाखणी (बी)-देखो 'भलाणी' (बी) ।

शलास, शलाहळ-स्त्री० १ ज्वाला, आग । २ आग की लपट । ३ अग्नि शिखा । ४ कांति दीप्ति । -वि० १ तेजस्वी । २ तीव्र, तेज । ३ भयंकर । ४ देदीप्यमान, जगमगाता हुआ । ५ चमकता हुआ । ६ जलता हुआ ।

शलू-वि० जिम्मेदारी लेने वाला ।

शळूस-वि० १ चमक-दमक युक्त । २ देखो 'जळूस' ।

शळेब-वि० १ कानियुक्त । २ देखो 'जलेब' ।

शळोहाळ-देखो 'भाळोभाळ' ।

शलोहास-वि० पूर्ण ।

शली-पु० टक्कर, अघात, आक्रमण ।

शल्स-पु० रोकने या थामने की क्रिया या भाव ।

शल्सण (णी)-वि० १ झेलने, पकड़ने या धारण करने वाला । २ उत्तरदायित्व लेने वाला । ३ चमकने वाला ।

शल्सणी (बी)-देखो 'भलणी' (बी) ।

शल्सरि (री) शल्लिय-स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का वाद्य । २ हाथी को पहनाई जाने वाली घुंघरू की मात्ता ।

शवकणी (बी)-देखो 'भवकणी' (बी) ।

शवाडी-देखो 'जुग्री' ।

शवेरी-देखो 'जाहरी' ।

शसङ्क (को, क)-पु० १ शस्त्र, प्रहार । २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

शसणी (बी)-कि० १ चवाना । २ काटना ।

शसोयर-वि० [सं० भषोदर] मत्स्य के सामन उदर तथा विशाल वक्ष वाला (जैन) ।

शांड (ई)-स्त्री० १ भुंघला दिखाई देने की अवस्था या भाव । २ महशूस, प्रतीति या आभास होने की अवस्था या भाव । ३ प्रतिविंब, छाया । ४ हल्का प्रकाश, रोशनी । ५ झलक । ६ अत्यन्त मंद दृष्टि । ७ आभा । ८ आंखों के नीचे पड़ने वाला काला दाग ।

शांक-स्त्री० १ झलक, भाँई । २ आंधी । ३ झंकने की क्रिया या भाव ।

शांकणी (बी)-देखो 'भांखणी (बी) ।

शांकळी, शांकली-स्त्री० लड़-खड़ाना क्रिया ।

शांकी-देखो 'भांखी' ।

शांकी-देखो 'भांखी' ।

शांख, शांखड़ (ड़ी)-स्त्री० तेज आंधी, भंभावात ।

शांखणी-वि० (स्त्री० भांखणी) उदासीन, स्लान, निस्तेज ।

शांखणी (बी)-कि० १ किसी छोट, छिड़की या किसी माध्यम से देखना, ताकना । २ देखना, दृष्टि डालना । ३ लुक-छिप कर देखना । ४ ताक-भांख करना । ५ झलकना, दिखाई देना । ६ सहसा कहीं देखना । ७ मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना । ८ दुःखी होना, पल्लताना ।

शांखळ-पु० नाश्ता, अल्पाहार, कलेवा ।

शांखी-स्त्री० १ भांखने या देखने की क्रिया या भाव । २ दर्शन, अवलोकन । ३ झलक, आभास । ४ झरोखा, गवाक्ष । ५ प्रकाश, चमक । ६ दर्शनार्थ किया गया देवमूर्तियों का शृंगार । ७ भंभावात, आंधी । ८ मंद प्रकाश, रोशनी । ९ एक देवी का नाम । -वि० १ उदास, खिन्न । २ धुंधली, मैली ।

शांखी-पु० १ मंद प्रकाश, ज्योति । २ बहुत कम दिखने की अवस्था या भाव । ३ झलक, भाँई, आभास । ४ दर्शन, अवलोकन । ५ मंद दृष्टि । -वि० धुंधला, अस्पष्ट ।

शांगरिया-पु० भिंगुर ।

शांगी-स्त्री० एक पौधा विशेष । -वि० घना, गहरा घनीभूत ।

शांज-पु० १ अनाज बीने के पश्चात् अधिक समय तक वर्षा न होने की अवस्था । २ तेज हवा, आंधी तूफान, भंभावात । ३ वर्षा के उपरान्त शीतल वायु । ४ वायु के साथ वर्षा । ५ मजीरा नामक वाद्य । ६ स्त्रियों की पैजनी । ७ छड़ी । —**वार-पु०** छड़ीदार ।

शांझर-पु० १ घोड़ों के घुटनों का आभूषण । २ देखो 'जांभर' ।

शांझरकौ-देखो 'जांभरकौ' ।

शांझरि-देखो 'भांझरी' ।

शांझरियाळ-स्त्री० झांडार धारण करने वाली देवी ।

शांझरी-स्त्री० १ एक प्रकार का वाद्य । २ देखो 'जांभर' ।

शांड (ठ)-पु० १ गुप्तेन्द्रिय पर होने वाले बाल । २ तुच्छ, हेय वस्तु ।

शांण-पु० [सं० ध्यान] ध्यान ।

शांती-वि० अन्तर्मुखी ।

ज्ञाप-स्त्री० [सं० भंप्, भंप्] १ छलांग, कुदान, उछाल ।
 २ छीना-झपटी । ३ श्वास या श्वास न लेने देने की
 अवस्था । —भैरव=भैरव-भंप् ।
 ज्ञापणी (बी)-देखो 'भंप्णी' (बी) ।
 ज्ञापरी-देखो 'भंप्री' ।
 ज्ञापी-वि० [सं० ज्ञाप्] १ लुटेरा, डाकू । २ छीना-झपटी करने
 वाला । ३ बलवान, जबरदस्त । —पु० भंप्ने की क्रिया
 भाव । २ भाड़ी की मूखी टहनी ।
 ज्ञाफ-१ देखो 'भंप्' । २ देखो 'जाफ' ।
 —भैरव=भैरव-भंप् ।
 ज्ञाफरी (री)-वि० घुंघरू या झल्लेदार ।
 ज्ञांब-स्त्री० वृक्ष की टहनी, शाखा ।
 ज्ञांमड़ी-देखो 'भांब' ।
 ज्ञांमरझोळ (झोळी)-पु० १ उलझान, इन्द्रजाल । २ ढीला वस्त्र ।
 ज्ञांमलउ-पु० [सं० ध्यामन्] तेज प्रकाश ।
 ज्ञांय-भंप्-स्त्री० १ व्यर्थ की बकवाद । २ हवा का मन्नाटा,
 सांय-सांय ध्वनि ।
 ज्ञांवड़ी-स्त्री० १ वृक्ष, पेड़ । २ एक साथ उगने वाला वृक्ष समूह ।
 ज्ञांवळी-१ स्त्री० ग्रांख की कनखी । २ झलक । ३ देखो 'ज्ञांवळी' ।
 ज्ञांवळी-पु० [सं० ध्याम] कमजोरी या मंद ज्योति के कारण
 ग्रांखों के आगे ग्रंथकार छा जाने की अवस्था ।
 ज्ञांस-स्त्री० भाड़ी, गुल्म ।
 ज्ञांसणी (बी)-क्रि० १ भांसा देना, ठगना । २ धोखा देना ।
 ३ किसी स्त्री को व्यभिचार के लिये प्रवृत्त करना ।
 ज्ञांसाबाज ज्ञांसियो, ज्ञांसू, ज्ञांसेबाज-वि० १ धोखेबाज, ठग ।
 २ गप्पी । ३ झूठा आशवासन देने वाला । ४ डींग हंकाते
 वाला ।
 ज्ञांसी-पु० [सं० ध्यास] १ बहकाने की क्रिया, छल, बुता ।
 २ झूठा आशवासन । ३ छल, धोखा । ४ डींग । ५ झूठा
 वादा ।
 ज्ञा-पु० [सं० उपाध्याय] १ मैथिली ब्राह्मणों की उपाधि
 २ मैथुन । ३ मुर्गा । ४ मत्स्य । ५ भरुना । ६ पानी, जन ।
 ज्ञाई-पु० न्याय ।
 ज्ञाउलियो ज्ञाउली, ज्ञाउल्यो-पु० कांटेदार व गेंद के समान
 शरीर वाला एक जंतु ।
 ज्ञाऊ-पु० १ छोटा भाड़ विणेष । २ देखो 'भाउलियो' । —वि०
 मूँच, नासमझ ।
 ज्ञाओलियो, ज्ञाओली-पु० १ मिट्टी का बना पात्र । २ देखो
 'भाउलियो' ।
 ज्ञाक-समाळ (समाळ)-वि० १ उत्साह के साथ विजय घोष
 करने वाला । २ चमकदार, देदीप्यमान । ३ तेज, तीव्र ।
 ४ चंचल । ५ चमक-दमक ।

ज्ञाकजमाळा-स्त्री० १ जोर की ध्वनि । २ शोर गुल, हल्ला ।
 ३ हो-हा । ४ देखो 'जाकजमाळा' । ५ देखो
 'भाक-जमाळ' ।
 ज्ञाकझीक-स्त्री० १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । २ वक-भक ।
 ज्ञाकझोळ-वि० पसीना से तर, लथपथ ।
 ज्ञाकरो-पु० घी रखने का पात्र ।
 ज्ञाकळ, ज्ञाकल-पु० ओस की बूंद, छोटी बूंद ।
 ज्ञाकाझीको-पु० १ छोटे-बड़े जेवर, आभूषण । २ टूटा-फूटा
 सामान ।
 ज्ञाकी-देखो 'भांखी' ।
 ज्ञाखणी (बी)-देखो 'भांखणी' (बी) ।
 ज्ञाखळ-देखो 'भाकळ' ।
 ज्ञाग-पु० पानी आदि पर उठने वाला फैन, गाज ।
 ज्ञागझणी (बी)-देखो 'भगझणी' (बी) ।
 ज्ञागडू-वि० [सं० भकट] १ लड़ाई करने वाला, भगड़ा करने
 वाला । २ उद्दण्ड, वदमाश । ३ मुकद्देबाज ।
 ज्ञागड-पु० ऊपर के बोल से संबंधित वाच का एक बोल ।
 ज्ञागणी (बी)-क्रि० जगना, प्रज्वलित होना ।
 ज्ञागनाग-पु० गफीम ।
 ज्ञागला, ज्ञागूंड, ज्ञागूड-पु० १ भाग, फैन । २ पानी का
 बुदबुदा ।
 ज्ञाड़-पु० [सं० भाटः] १ छोटी भाड़ी । २ भाड़ीनुमा कोई
 पीघा या वृक्ष । ३ वृक्ष, पेड़ । ४ भाड़ीनुमा रोगनदान ।
 ५ एक प्रकार की ग्रातिशबाजी । ६ लोक देवी या देवता
 का शाप या वरदान । ७ जुलाब, रेचन । ८ वध, हत्या ।
 ९ पछाड़, झटका । १० झाड़-पोंछ या फटकार । ११ भाड़ी
 का चित्र या चिह्न । १२ बेर का पेड़ । —वि० १ तमाम,
 समस्त । २ बिल्कुल ।
 ज्ञाड़कियो, ज्ञाड़की, (बयो)-पु० १ जड़ बेरी का पीघा या
 वृक्ष । २ भाड़ी ।
 ज्ञाड़खंड-पु० अधिक भाड़ियों वाला जंगल ।
 ज्ञाड़खंडाड़-पु० १ कांटेदार झाड़ियों का समूह । २ वन ।
 ३ घने वृक्षों का समूह ।
 ज्ञाड़ण (न) ज्ञाड़णी-पु० १ भाड़-पोंछ करने का उपकरण ।
 २ झाड़-पोंछ कर उतारा जाने वाला गंदा पदार्थ ।
 ज्ञाड़णी (बी)-क्रि० १ वार करना, प्रहार करना । २ काटना ।
 ३ संहार करना, मारना । ४ दागना, छोड़ना । ५ झाड़
 फटकार कर गर्द आदि उतारना । ६ झाड़ फटकार कर
 सफाई करना । ७ डंटना, फटकारना । ८ गिराना,
 ढहाना । ९ बूंद-बूंद या कण-कण के रूप में गिराना,
 टपकाना । १० मंत्रादि से रोग या प्रेत बाधादि

दूर करना । ११ हटाना, पृथक करना । १२ तोड़ना ।
 १३ कम करना । १४ मिटाना । १५ निर्धन करना,
 कंगाल करना । १६ सब कुछ ले लेना । १७ बंधन खोलना ।
 १८ वृक्ष या पीथे को हिलाकर फल-फूल नीचे गिराना ।
 झाड़दार-वि० १ बेल-बूटेदार । २ कंटीला ।
 झाड़पूँछी-पु० १ भांडू के समान पूँछ वाला हाथी । २ वह
 बैल जिसकी पूँछ जमीन से स्पर्श करती हो ।
 झाड़फाँस (फाँस)-पु० कान के बने झाड़, हंडिया और
 ग्लास जो छत में टांगे जाते हैं ।
 झाड़फूँक (फूँकी)-पु० मंत्रों द्वारा रोग या प्रेतबाधा निवारण
 की क्रिया ।
 झाड़बट, (बट)-पु० झाड़वेरी के पीथे काटने का फरसा ।
 झाड़बुहार-पु० सफाई की क्रिया ।
 झाड़बोर (बोरड़ी)-पु० १ छोटा बर । २ झाड़वेरी का पौधा ।
 झाड़साही-पु० जयपुर राज्य का एक प्राचीन सिक्का ।
 झाड़ाणी (बो)-क्रि० १ छुड़ाना । २ सफाई कराना ।
 झाड़ि, झाड़ी-स्त्री० १ कंटीले पौधों का समूह, झुरमुट ।
 २ छोटा व घना पौधा । ३ मूषर के बालों की कुँची ।
 झाड़ीगर-पु० मंत्रोपचार करने वाला ।
 झाड़ीदार-वि० १ जहाँ झाड़ी हो । २ देखो 'झाड़ीगर' ।
 झाड़ीबोर-देखो 'झाड़बोर' ।
 झाड़ू-पु० फूस बुहारने का उपकरण, बुहारी । भाड़न ।
 —हुमो= 'झाड़पूँछी' ।
 झाड़ूबरदार, (वाळी)-पु० झाड़ू देने वाला, मेहत्तर ।
 झाड़ौली-पु० चमड़े का मौजा ।
 झाड़ी-पु० १ मंत्रोपचार, झाड़फूँक । २ मल, पाखाना ।
 ३ सफाई का कार्य । —झपटो, झपाटी-पु० मंत्रोपचार ।
 झाझउ, झाझुं, झाझेरड़ी, झाझी-वि० (स्त्री० भाड़ी) १ अधिक,
 ज्यादा । २ गहरा, घना । ३ तेज, तीव्र । ४ बढ़िया,
 श्रेष्ठ । ५ सुन्दर । ६ प्रश्रिय, कटु । ७ बड़ा, महान् ।
 ८ दृढ़, मजबूत । ९ सुहाना, मनमोहक ।
 झाठ-स्त्री० [सं० झाट] १ चोट, प्रहार । २ भिड़ंत, टक्कर ।
 ३ फटकार । ४ मुकाबला । ५ डाइप, झपट । ६ चपेट ।
 ७ लड़ाई । ८ चपत, तमाचा । ९ डाड़ी । १० डसना
 क्रिया । ११ ध्वनि आवाज ।
 झाटक-वि० [सं० झाट + इति] १ प्रहार व वार करने
 वाला । २ योद्धा । ३ देखो 'झाट' ।
 झाटकणी-पु० झटकने या भाड़ने का उपकरण ।
 झाटकणी (बो)-क्रि० १ झटका लगा कर भ्रमल करना ।
 २ चिपकी वस्तु को झटके से हटाना । ३ गर्द साफ करना ।
 ४ सफाई करना । ५ प्रहार या चोट करना । ६ मारना,

पीटना । ७ फटकारना, डांटना, झिड़कना । ८ घोड़ा
 दौड़ाना । ९ वेग से खींचना । १० आहरण करना ।
 ११ देखो 'झटकणी' (बो) ।
 झाटकपट-पु० राजपूताने के प्रतिष्ठित सरदारों को मिलने वाली
 ताजीम ।
 झाटकी-पु० १ चंवर डुनाने की क्रिया या भाव । २ देखो
 'झटकी' ।
 झाटवक-देखो 'झाटक' ।
 झाटवकणी (बो)-'झाटकणी' (बो) ।
 झाटसड़ी-स्त्री० १ शस्त्र प्रहरों की ध्वनि । २ शस्त्र प्रहरों की
 शृंखला ।
 झाटणी (बो)-क्रि० १ संहार करना, मारना । २ सांप का
 डसना । ३ देखो 'झाटकणी' (बो) ।
 झाटी (टी)-स्त्री० १ कांटेदार वृक्ष की टहनी । २ कांटेदार
 छोटा वृक्ष । ३ जिद्द, हठ । ४ कष्ट, दुःख, आपत्ति ।
 ५ कंटीली भाड़ियों का बना फाटक ।
 झात्कारि (री)-स्त्री० भल्लरी नामक वाद्य की ध्वनि ।
 झापड़, झापट-स्त्री० [सं० चाट] तमाचा, चपत, थप्पड़ ।
 झापणी (बो)-देखो 'झांपणी' (बो) ।
 झापाभूँपो-पु० छीना-झपटी ।
 झाफ-स्त्री० १ झपकी । २ देखो 'जाफ' ।
 झाव-स्त्री० मिट्टी का एक पात्र विशेष ।
 झावकि (की)-क्रि० वि० १ एकाएक, महमा । २ शीघ्र, तुरंत ।
 झावरी-वि० घने बालों वाला ।
 झावी-स्त्री० कोल्हू से तेल निकालने का लकड़ी का
 छोटा पात्र ।
 झावूकणी (बो)-देखो 'भावकणी' (बो) ।
 झाबोलियौ, झाबोली, झाबो-पु० १ घी तेल आदि रखने का ऊंट
 के चमड़े का पात्र । २ चिथड़ों आदि को कूट कर बनाया
 हुमा पात्र । ३ सुरखाई वाद्य का खुना मुँह । ४ बच्चे के
 पहनने का वस्त्र । ५ चौड़े मुँह का वर्तन । ६ किसी वस्तु
 के आगे का चौड़ा भाग । ७ सिर, मस्तक । ८ आड़, रोक ।
 झायणी (बो)-क्रि० [सं० ध्यै] १ ध्यान लगाना, मन लगाना ।
 २ चिन्तन करना । मनन करना ।
 झार-पु० १ समूह, झुण्ड, यूथ । २ देखो 'जार' ।
 झारणी-वि० मिटाने वाली, नष्ट करने वाली ।
 झारणी (बो)-क्रि० १ टपकाना, खवाना । २ निचोड़ना ।
 ३ द्रव पदार्थ को बूँद-बूँद कर गिराना । ४ टुकड़े-टुकड़े
 करके गिराना । ५ बरसाना । ६ स्थलित करना ।
 ७ छिड़कना । ८ प्रहार करना, वार करना । ९ मारना ।
 झारा-पु० ब.व. सारणी के छोटे मान तार ।

भारिया

(५००)

भिमभिम

भारिया-स्त्री० छनी हुई मंग ।

भारी-स्त्री० १ टोंटीदार पात्र । २ चम्मचनुमा छेददार एक उपकरण विशेष । —बरबार-पु० पानी को भारी रखने वाला व्यक्ति ।

भारोली-स्त्री० वर्षा की धारा ।

भारी-पु० १ टोंटीदार एक जल-पात्र विशेष । २ नास्ता, कलेवा । ३ कम्बोइयों का एक उपकरण । ४ छोटा भारिया । ५ घाव आदि की सफाई के लिए गर्म जल या द्रव पदार्थ की डाली जाने वाली धारा । ६ द्रव पदार्थ को भारने की क्रिया ।

भाळ-स्त्री० [सं० ज्वलन] १ अग्नि, आग । २ अग्नि शिक्षा, ज्वाला, ली । ३ क्रोधाग्नि, क्रोध । ४ सूर्य किरण, रश्मि । ५ तीव्र कामेच्छा । ६ चरपराहट, तीखापन । ७ देखो 'भाळण' । ८ देखो 'भाल' । —बंभाळ-वि० अत्यन्त क्रोधी ।

भाल-स्त्री० १ स्त्रियों का एक कर्णभूषण । २ भूसा आदि भरने के लिए बेलगाड़ी पर खीप, कपास की टहनियों या बकरी के बालों के पट्टु की बनाई गई कनात । ३ उक्त प्रकार की बेलगाड़ी में एक बार में आने वाला मामान । ४ पकड़ना, क्रिया, पकड़ । ५ एक प्रकार का बड़ा जल-पात्र । ६ देखो 'भाळ' ।

भासड़-१ देखो 'भाल' । २ देखो 'भालर' । ३ देखो 'भालरी' ।

भाळण-स्त्री० धातु की वस्तुओं को जोड़ने का टांका, जोड़ ।

भालण-पु० १ अनाज ढोते समय गाड़ी पर बिछाया जाने वाला वस्त्र । २ पकड़ना क्रिया, पकड़ ।

भाळणी (बो)-क्रि० १ धातु की वस्तुओं के टांका लगाना । २ जानना, भस्म करना ।

भासणी (बो)-क्रि० १ पकड़ना, धामना । २ सहन करना । ३ स्वीकार करना । ४ धारण करना । ५ ग्रहण करना । ६ प्राप्त करना, लेना । ७ धामना, रोकना । ८ उत्तर-दायित्व लेना । ९ आश्रय देना । १० बंधन में डालना ।

भाळपूळो-वि० १ अत्यन्त क्रुद्ध, आग बबूला । २ तेजस्वी, तेजवान ।

भालर (झी)-स्त्री० [सं० भल्लरी] १ पूजा या आरती के समय बजाया जाने वाला थालीनुमा बाद्य । २ एक अन्य बाद्य विशेष । ३ एक लोक गीत । ४ जल-पात्र विशेष । ५ देखो 'भालरी' । ६ देखो 'भालरी' । —वि० सूख, पागल । —बार= 'भालरीदार' । —बाद्य, बाद्य । —पु० एक सज्जारी कर्म विशेष ।

भालरियो-पु० १ फेन युक्त छाछ । २ भल्लरीदार वस्त्र । ३ पुराना कपड़ा । ४ देखो 'भालरी', 'भालर', 'भालरी' ।

भालरी-स्त्री० [सं० भल्लरी] १ वस्त्र या किसी वस्तु की शोभा के लिए नीचे लगाया जाने वाला हाशिया, भल्लरी । २ देखो 'भालर' । —बार-वि० जिसमें भल्लरी लगी हो ।

भाळहळ-देखो 'भाळहळ' ।

भालरी-पु० १ बड़ा कूप जिसमें चारों ओर सीढ़ियां बनी हों । २ स्त्रियों के गले का एक आभूषण विशेष ।

भाळामुख-पु० भाला ।

भाळ-देखो 'भाळ' ।

भाला-स्त्री० तार बाद्य बजाने की एक विधि विशेष ।

भालाळी-वि० १ भल्लरीदार । २ संकेत करने वाला, हाथ का इशारा देने वाला ।

भालि-देखो 'भाल' ।

भालियौ-पु० बेलगाड़ी की 'भाल' में लगने वाली लम्बी व मोटी लकड़ी ।

भाळोभाळ-स्त्री० १ क्रोधाग्नि । २ कलहाग्नि । ३ अग्नि की पूर्ण रूपेण प्रज्वलित होने की अवस्था ।

भाली-पु० १ संकेत, इशारा । २ हाथ का इशारा । २ दोहों के बोल में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

भावलियो, भावल्यौ-देखो 'भावलियो' ।

भाबी-स्त्री० स्त्रियों के पहनने का आभूषण ।

भाबू-देखो 'भाऊ' ।

भाबो-पु० १ मिठाई परोसने का मिट्टी का पात्र विशेष । २ एक प्रकार की जड़ी विशेष जो नदी के किनारे मिलती है ।

भिंगर, भिंगार-पु० १ वृक्ष व लताओं का झुरमुट, घनी झाड़ी । २ देखो 'भिंगोर' ।

भिंगुर, भिंगोर-पु० १ एक छोटा जंतु जो रात में भी-भी की आवाज करता है । भिंगुर, कसारी । २ मस्ती में झुमने की क्रिया या भाव, कल्लोल । ३ भिंगुर की आवाज ।

भिंगोरणी (बो)-क्रि० १ मस्ती करना, मोज करना । २ कल्लोल करना । ३ भी-भी शब्द करना ।

भिंगोर-देखो 'भिंगोर' ।

भिंगोटी-स्त्री० सम्पूर्ण जाति की एक राग ।

भिकाङ्गणी (बो), भिकाणी (बो), भिकावणी (बो)-देखो 'भिकाणी' (बो) ।

भिकाळ-स्त्री० बकवास, बकभक्त ।

भिकोळणी (बो)-देखो 'भिकोळणी' (बो) ।

भिखणी (बो)-क्रि० १ प्रकाशित होना । २ शोभा देना । ३ क्रोध करना । ४ टिपटिमाना । ५ चमकना । ६ बक-भक्त करना ।

भिंगभिंग, भिंगभिंगा'ट, भिंगभिंगाहट-स्त्री० १ बमक-दमक । २ जगमगाहट । ३ व्यर्थ की बकवाद ।

झिगली (बो)—क्रि० १ प्रकाशित होना, जगमगाना, चमकना ।

२ मयना, विलोड़ना । ३ कुचलना, मसलना ।

झिगमिग—देखो 'जगमग' ।

झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट—देखो 'जगमगाहट' ।

झिड़कणी (बो)—क्रि० १ फटकारना, तिरस्कार करना, क्रोध करके बात कहना । २ देखो 'भड़कणी' (बो) ।

झिड़की—स्त्री० १ डाँट, फटकार, प्रताड़ना । २ अवज्ञा भरे शब्द, तिरस्कार ।

झिसक—स्त्री० १ सहसा चौंकने की क्रिया या भाव । २ कुछ करते हुए सहसा रुकने की क्रिया या भाव, ठिठक । ३ शंका; संकोच, हिचक । ४ शर्म, लज्जा । ५ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव, झिड़की । ६ सनक, पागलपन ।

झिसकणी (बो)—क्रि० १ सहसा चौंकना । २ कुछ करते हुए सहसा रुकना, ठिठकना । ३ संकोच करना, हिचकना । ४ शर्म करना, लज्जा करना । ५ क्रोध से बोलना, झिड़कना । ६ चमकना, भड़कना ।

झिझकाणी (बो)—क्रि० १ सहसा चौंकाना । २ सहसा रोकना, ठिठकाना । ३ संकोच कराना, हिचकाना । ४ शर्म कराना, लज्जित करना । ५ झिड़काना । ६ चमकाना, भड़काना ।

झिझकारणी (बो)—क्रि० १ किसी को दुस्कारना, तिरस्कार करना । २ डाँटना, फटकारना । ३ गर्व करना, ग्रहंकार करना । ४ चौंकाना, भड़काना ।

झिझिकार—स्त्री० १ डाँट, फटकार । २ तिरस्कार, अवज्ञा । ३ चौंकाने या भड़काने की क्रिया या भाव । ४ अभिमान, घमण्ड । ५ झिड़की ।

झिझिम—स्त्री० वाद्य का एक बोल विशेष ।

झिझोटो—स्त्री० एक रास विशेष ।

झिण—पु० १ दलियः आदि खाद्य पदार्थ । २ पतली छाछ, मट्ठा ।

झिणकार—देखो 'भरणकार' (बो) ।

झिणकारणी (बो)—देखो 'भरणकारणी' (बो) ।

झिबळ, झिबळक—देखो 'भबळक' ।

झिबळणी (बो)—१ देखो 'भबळणी' (बो) । २ देखो 'भबळकणी' (बो) ।

झिरणी (बो)—देखो 'भरण' (बो) ।

झिरमट, झिरमटियो—पु० १ बालिकाओं का एक खेल विशेष । २ वृक्ष समूह, कुंज । ३ एक लोक गीत विशेष । ४ एक प्रकार का घास ।

झिरमिर—स्त्री० १ धीरे-धीरे होने वाली वर्षा, वर्षा की झड़ी । २ इस प्रकार की वर्षा से होने वाली ध्वनि ।

झिलंब—देखो 'भिलम' ।

झिल—वि० १ पूर्ण, परिपूर्ण । २ ठीक ।

झिलकाणी (बो), झिलकावणी (बो)—देखो 'भलकाणी' (बो) ।

झिलकी—देखो 'भलकी' ।

झिलणी (बो)—क्रि० १ चमकना, देदीप्यमान होना तपना । २ ऐश्वर्य प्रकट करना, प्रभाव दिखाना । ३ पूर्ण होना । ४ शोभा देना, शोभित होना । ५ समृद्ध होना, वैभवयुक्त होना । ६ मस्त होना । ७ देखो 'भलणी' (बो) ।

झिलम (टोप)—पु० युद्ध के समय पहनने का लोहे का टोप, शिरभरण ।

झिलमिळ—स्त्री० १ मंद व क्षीण उद्योति । २ हल्की चमक; झिलमिलाहट । ३ टिमटिमाहट । ४ चमक-दमक । ५ लोह-कवच । —वि० रह-रह कर चमकने वाला ।

झिलमिळणी (बो), झिलमिळानी (बो)—क्रि० १ दीपक का मंद-मंद प्रकाश होना, मंद-मंद दीपक जलना । २ टिमटिमाना, झिलमिलाना । ३ चमकना । ४ रह-रह कर चमकना । ५ हिलना, कांपना । ६ अस्थिर होना ।

झिलमिलाहट—स्त्री० झिलमिलाने की क्रिया या भाव ।

झिलमिस्—देखो 'झिलमिळ' ।

झिलम—देखो 'झिलम' ।

झिलाइणी (बो), झिलाणी (बो), झिलावणी (बो)—१ देखो 'भलाणी' (बो) । २ देखो 'झुलाणी' (बो) । ३ देखो 'भीलाणी' (बो) ।

झिळोमिळ—देखो 'झिलमिळ' ।

झिलोरी (झी)—पु० लहर, तरंग, हिलोरा । झोल ।

झिस्सणी (बो)—१ देखो 'झिलणी' (बो) । २ देखो 'झुलणी' (बो) ।

झिस्तो—स्त्री० [सं०] १ चमड़े या रबबर का अत्यन्त पतला आवरण या तह । २ बहुत पतला छिलका । ३ आँख का जाला । ४ झिगुर । —बार—वि० जिस पर झिल्ली लगी हो ।

झीक—देखो 'भीक' ।

झीकरी—पु० कूए को गहरा करने के लिए तोड़ा हुआ पत्थर ।

झीखणी—देखो 'भीकणी' ।

झीखणी (बो)—देखो 'भीकणी' (बो) ।

झीखा, झीखाळी—देखो 'जीका' ।

झीगड़ि (झी)—स्त्री० १ नीचत वाद्य की ध्वनि । २ वाद्य वजाने के लिए किया जाने वाला आघात ।

झींगर—पु० [सं० धोवर] १ मछुवा, धोवर, केवट । २ देखो 'झिगोर' ।

झींगर निसाणी (नी)—स्त्री० निसानीछंद का एक भेद ।

झींगोर, झींगीर—देखो 'झिगोर' ।

झोसी—पु० १ एक पहाड़ी वृक्ष विशेष । २ देखो 'जीजी' ।

श्रीट-पु० १ बाल, केश । २ देखो 'भीय' । —श्रीटाळी-पु० घने वालों वाला ।

श्रीण, श्रीणउ, श्रीणी-देखो 'भीणी' ।

श्रीत, श्रीथ-स्त्री० १ अनाज या कपड़े भर कर पीठ पर लादने की गठरी, बोरा । २ कपड़े का एक झोला विशेष ।

भीपरी, भीफरी-वि० (स्त्री० भीपरी, भीफरी) जिसके शरीर पर घने बाल हों, घने वालों वाला ।

भीवर-पु० [सं० भीवर] मछुवा, मछेरा ।

भीक-स्त्री० १ भीखने की क्रिया या भाव, बकवाद । २ शस्त्र प्रहार । ३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ४ ध्वंस, संहार । ५ युद्ध । ६ वर्षा की झड़ी ।

भीकणी-पु० १ दुःख वर्णन, अपना दुःख रोने की क्रिया या भाव । २ बकना ।

भीकणी (बो)-क्रि० १ इच्छा करना, लालायित होना, तरसना । २ दुःखी होकर पछताना । ३ खीजना । ४ कुढ़ना । ५ अपना दुःख व्यक्त करना, दुखड़ा रोना । ६ शस्त्र प्रहार करना । ७ युद्ध करना । ८ बकना ।

भीख-देखो 'भीक' ।

भीखणी (बो)-देखो 'भीकणी' (बो) ।

भीखा-देखो 'जीका' ।

भीखाळणी (बो)-क्रि० १ खपरैलों को परस्पर रगड़कर महीन चूर्ण बनाना । २ पढ़ने की तल्ली पर उक्त चूर्ण छितराना ।

भीण-स्त्री० [सं० ध्वनि] १ आवाज, ध्वनि । २ देखो 'जीण' । ३ देखो 'भीणी' ।

भीणउ, भीणीडी, भीणी-वि० [सं० क्षीण] (स्त्री० भीणी) १ जो मोटा न हो महीन, पतला, बारीक । २ हल्का, पारदर्शक । ३ मधुर, सुरीला । ४ कर्ण प्रिय । ५ जो स्थूल न हो, छरहरा । ६ कृशकाय । ७ मुकुमार, कोमल, लचीला । ८ नर्म, मुलायम, मृदुल । ९ धीमा, हल्का, मंद । १० अधिक छितराने से पतली सतह का । ११ जिसमें वेग न हो, धीमा । १२ जो भारी न हो, हल्का । १३ सूक्ष्म । १४ गुढ़ । १५ दुर्गम, कठिन । १६ संकटा, तंग । १७ अगम्य, दुर्बोध । १८ अत्यन्त छोटा । १९ सूक्ष्मगु युक्त । २० जिसमें प्रखरता न हो, क्षीण, मंद । २१ जिसमें उग्रता न हो, मरल, महज । २२ धुंधला । २३ अधिक तरल । २४ फैला हुआ । —पु० १ घूँघट निकालने का एक ढग । २ महीन वस्त्र । —मोरिणी-पु० एक लोक गीत विशेष ।

भीथरी-पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ देखो 'भीपरी' ।

भीनातिशीन-वि० अत्यन्त बारीक, महीनतम ।

भीमर-पु० [सं० भीवर] १ कहार जाति का एक भेद । २ मछुवा, भीवर ।

भीरोकी, भीरोख, भीरोखी-देखो 'भरोकी' ।

भीरोहर-वि० चूर-चूर ।

भील, भीलडी (डो)-स्त्री० १ कुदरतन बना बड़ा तालाब, सरोवर । २ एक छोटा पीछा ।

भीलणी (बो)-क्रि० १ नदी या तालाब आदि में नहाना । २ पानी में तेरना । ३ डुबकी लगाना । ४ मग्न होना, मस्त होना ।

भीलाणी (बो), भीलावणी (बो)-क्रि० १ स्नान कराना । २ पानी में तेरने के लिए प्रेरित करना । ३ मग्न या मस्त करना । ४ डुबकी लगवाना ।

भीवर-देखो 'भीमर' ।

भुंकार-स्त्री० ध्वनि, हुंकार ।

भुंभलाणी (बो)-क्रि० १ चिड़चिड़ाता, खिजलाना । २ परेशान होना ।

भुंभाऊ-देखो 'जूंभाऊ' ।

भुंभार, भुंभारि-देखो 'जूंभार' ।

भुंभ-पु० प्राणियों का समूह, गिरोह ।

भुंभडी-देखो 'भुंभडी' ।

भुंभ-देखो 'भुंभ' ।

भुंभाड़णी (बो), भुंभाणी (बो), भुंभावणी (बो)-देखो 'भुंभाणी' (बो) ।

भुंभिखी-देखो 'भुंभो' ।

भुकणी (बो)-क्रि० [सं० युज्] १ किसी खड़ी वस्तु का नीचे की ओर मुड़ना, नवना । २ समानान्तर बनी वस्तु का बीच या किसी शिरे से नीचे धंसना, दबना, नीचे की ओर झुकना । ३ नीचे की ओर उन्मुख होना । ४ किसी विशेष दिशा या अक्षांश की ओर उन्मुख होना । ५ बादल, तारे आदि का पृथ्वी के अधिक पास आना या पास दिखाई देना । ६ मजबूर होना, हारना, विवश होना । ७ प्रवृत्त होना, मुखातिब होना, रज्जु होना । ८ तल्लीन होना । ९ ढीला या शिथिल होना । १० मंडराना । ११ शोभित होना । १२ व्यापक होना, चारों ओर फैलना । १३ हरा-भरा या सघनता युक्त होना । १४ नत मस्तक होना, विनीत होना । १५ प्रणाम करना । १६ मोहित होना । १७ सीधे खड़े रहने की अवस्था में न रहना ।

भुकवाई, भुकाई-स्त्री० १ झुकने की क्रिया या भाव । २ इस कार्य की मजदूरी ।

भुकाड़णी (बो), भुकाणी (बो)-क्रि० १ किसी खड़ी वस्तु को नीचे की ओर मोड़ना नवाना । २ समानान्तर बनी वस्तु को नीचे धसाना, दबाना, झुकाना । ३ नीचे की ओर उन्मुख करना । ४ किसी विशेष दिशा या अक्षांश की ओर

उन्मुख करना । ५ मजदूर करना, विवश करना, हराना ।
६ प्रवृत्त करना, मुखातिब करना । ७ रज्जु करना । ८ तल्लीन
करना । ९ डीला या शिथिल करना । १० शोभित करना ।
११ व्यापक करना, चारों ओर फैलाना । १२ नत मस्तक
करना, विनीत करना । १३ प्रणाम करना । १४ मोहित
करना । १५ सीधे खड़े न रहने देना ।

भुकाव-पु० १ भुक्ने की क्रिया, अवस्था या भाव । २ प्रवृत्ति ।
३ मोड़, दबाव । ४ भुका हुआ भाग । ५ ढल-उतार ।

भुकावट-स्त्री० १ भुक्ने की क्रिया या भाव । २ प्रवृत्ति, इच्छा,
चाह । ३ मुड़ी या दबी हुई अवस्था ।

भुकावणी (बो)-देखो 'भुकाणी' (बो) ।

भुकेड़ी-पु० धक्का ।

भुक्कणी (बो)-देखो 'भुकाणी' (बो) ।

भुखण-पु० भड़बेरी के कांटों का समूह ।

भुज्जमल (मल्ल)-वि० [सं० युद्ध + मल्ल] वीर, वीर ।

भुटपट्टी, भुटपटी, भुटपुट्टी, भुटपुटी-पु० संध्या या बड़े
सवेरे का समय, मुंह अंधेरे का समय ।

भुटाळक-वि० उत्पाती, उपद्रवी ।

भुठाई-स्त्री० १ असत्यता । २ शरारत, बदमाशी ।

भुणकणी (बो)-देखो 'भणकणी' (बो) ।

भुणभुण-देखो 'भणभण' ।

भुण-स्त्री० मन-मन की ध्वनि, ध्वनि विशेष ।

भुणि-स्त्री० [सं० ध्वनि] आवाज, ध्वनि ।

भुबभुब-पु० १ स्त्रियों की कलाई का आभूषण विशेष ।
२ देखो 'भबभब' ।

भुबी-स्त्री० पिछड़ी जाति की स्त्रियों का एक आभूषण विशेष ।

भुमाङ्गी (बो), भुमाणी (बो) भुमावणी (बो)-क्रि० झुमने
के लिए प्रेरित करना, मस्त करना ।

भुरंट-स्त्री० खरोंच ।

भुरकण-स्त्री० १ भाड़ी का मुखा चूरा । २ ई धन की पतली
लकड़ियां ।

भुरकी-पु० ऊंट की एक चाल ।

भुरङ्गी (बो)-क्रि० १ खुजली मिटाना, खुजलाना । २ खरोंच,
लगाना, कुरेदना । ३ वृक्ष की टहनियों के पत्ते सूत लेना ।
४ किमी को नष्ट करना । ५ कष्ट पहुँचाना ।

भुरणी-देखो 'भुरनी' ।

भुरणी-पु० १ वियोग जन्तु दुःख, विरह । २ विलाप, रुदन ।

भुरणी (बो)-क्रि० १ दुःख होना, शोक करना । २ बेचैन
होना, विकल होना । ३ विलखना, सुबकना । ४ रुदन
करना, विलाप करना । ५ तरमना, आँसू बहाना । ६ रोग,
चिंता या अधिक श्रम से दुर्बल होना । ७ घुलना, घुटना ।

८ झुमना, लटकना । ९ याद करना, स्मरण करना ।

भुरनी-स्त्री० १ वृक्ष की शाखाओं से लटक कर खेला जाने
वाला खेल । २ उक्त खेल में काम आने वाला लकड़ी
का डंडा ।

भुरमट, भुरमट्टी, भुरमुट, भुरमुट्टी-पु० १ भाड़ी या लताओं
का कुंज । २ झुंड, समूह । ३ वस्त्रादि से शरीर
को पूरा ढक लेने की क्रिया या भाव । ४ सिकोड़ कर
बैठने का ढंग ।

भुररी-स्त्री० शरीर की चमड़ी की सिकुड़न, सिकन, सलवट ।

भुररी-पु० आँसुओं की झड़ी ।

भुराङ्गी (बो), भुराणी (बो)-क्रि० १ दुःखी करना, शोकाकुल
करना । २ बेचैन करना, विकल करना । ३ विलखना ।

४ रुदन कराना, विलाप कराना । ५ तड़फाना, तरसाना ।

६ अधिक चिंता ग्रस्त करना । ७ घुलाना, घुटाना ।

८ झुमाना, लटकवाना । ९ याद या स्मरण कराना ।

भुरापी-पु० वियोग का दुःख, विलाप, रुदन ।

भुरापी-देखो 'भुरापी' ।

भुळक-स्त्री० १ आँसू ढलकाने की क्रिया या भाव । २ चमक-
दमक ।

भुळकणी (बो), भुलभुळणी (बो)-क्रि० १ जगमगाना,
चमकना । २ आँसू ढलकाना ।

भुळणी (बो)-क्रि० खूजलाहट होना, गुदगुदी होना ।

भुलर-देखो 'झूलर' ।

भुलराणी (बो), भुलरावणी (बो)-क्रि० झूना झुलाना,
हिडोला देना ।

भुलसणी (बो)-क्रि० १ अधिक ताप या गर्मी के कारण काला
पड़ जाना । २ अधजला होना । ३ जल जाना ।

४ कुहलाना, मुरझाना । ५ अधिक ताप से ताल हो
जाना । ६ तपाना । ७ जलाना ।

भुलसाङ्गी (बो), भुलसाणी (बो), भुलसावणी (बो)-क्रि०
१ अधिक ताप या गर्मी से काला पटक देना, तपाना ।

२ अधजला करना । ३ जलाना । ४ तपा कर लाल करना ।

भुलाङ्गी (बो) भुलाणी, (बो) भुलावणी (बो)-क्रि० १ स्नान
कराना, नहलाना । २ लटका कर हिलाना, भोंका देना ।

३ भगोसे पर रखना । ४ झूला झुलाना । ५ झुमाना,
डोलाना । ६ मोहित करना । ७ जल में विचरण कराना ।

८ अग्नि कुण्ड के पास बैठा कर तपस्या कराना ।

भुल्ल, भुल्ली-वि० १ वृद्ध, बुढ़ा । २ देखो 'भूली' ।

भुलाण-देखो 'भूलाण' ।

भूङ्गणी (बो)-देखो 'जू-भणी' (बो) ।

भूङ्गल-स्त्री० १ अटपटी, असहनीय दशा । २ दुःख व कोष
मिश्रित खिजलाहट । ३ भलकी, तेजी । ४ देखो 'जाङ्गली' ।

भूभार (रि)-देखो 'जूभार' ।
 भूभो-पु० [सं० योद्धा] १ योद्धा, वीर । २ देखो 'जुध' ।
 भूट-देखो 'झूठ' ।
 भूटण, भूटणियो-१ देखो 'भूटणी' । २ देखो 'जूठण' ।
 भूटणी-पु० स्त्रियों के कान का एक आभूषण विशेष ।
 भूट-साच-पु० झूठ-सच्च ।
 भूटि-स्त्री० भपटी ।
 भूटिणी (बो)-क्रि० १ भपटने की चेष्टा करना, भपटना ।
 २ हमला करना, आक्रमण करना ।
 भूठ, भूठण-१ देखो 'जूठण' । २ देखो 'झूठ' ।
 भूठणियो, भूठणी-देखो 'भूटणी' ।
 भूठो-१ देखो 'झूठो' । २ देखो 'जूठो' ।
 भूथरा-पु० घने वाल ।
 भूथरियो, भूथरी-वि० घने वालों वाला ।
 भूप, भूपकी, (की)-देखो 'भूपड़ी' ।
 भूपड़, भूपड़की, भूपड़ली, भूपड़ली, भूपड़ियो, भूपड़ी,
 भूपड़ी, भूपली, भूपली, भूपियो-पु० लकड़ियां खड़ी करके
 घास-फूस से छा कर बनाया हुआ कक्ष, कुटिया, परांशाला,
 भोंपड़ी ।
 भूपी-स्त्री० १ भोंपड़ी, कुटिया । २ एक प्राचीन कर ।
 भूपी-पु० १ बड़ी कुटिया, भोंपड़ा । २ भोंपड़ियों वालों की
 बस्ती या मुहल्ला ।
 भूफ, भूफकी-देखो 'भूपी' ।
 भूफकी, भूफड़, भूफड़ी, भूफी-देखो 'भूपी' ।
 भूव-स्त्री० १ झूठने की क्रिया या भाव । २ गुच्छा ।
 ३ देखो 'झूबो' ।
 भूबड़ (की)-देखो 'झूबो' ।
 भूबड़ी, भूबड़ी-देखो 'झूबो' ।
 भूबणी (बो)-क्रि० १ आलिंगनबद्ध होना, गले मिलना, अंक
 में भरना, लिपटना । २ युद्ध करना, भिड़ना । ३ धावा
 बोलना, भपटना । ४ लूटना, लूट-पाट करना । ५ लटकना,
 झूलना । ६ हाथापाई करना । ७ जीव जंतुओं अथवा
 पशुओं का काटना ।
 भूबर, (री, री)-पु० एक प्रकार का कर्णभूषण ।
 भूबाङणी (बो), भूबाणी (बो), भूबावणी (बो)-क्रि०
 १ आलिंगनबद्ध कराना, गले मिलाना, अंक में भराना,
 लिपटाना । २ युद्ध कराना, भिड़ाना । ३ धावा बोलाना ।
 भपटवाना । ४ लूटवाना, लूट-पाट कराना । ५ लटकाना,
 झूलाना । ६ हाथापाई कराना । ७ जीव जंतुओं या
 पशुओं से नटवाना ।
 भूबियो, भूबो, झूबो, झूबो, भूम (क, की), (ख, खी, खी),
 (झी, झी)-पु० १ छोटी-छोटी वस्तुओं का समूह ।

२ फलों-फूलों आदि का गुच्छा । ३ समूह, झुण्ड । ४ दल,
 टोली । ५ पीघा ।
 भूभणी (बो)-देखो 'झूबणी' (बो) ।
 भूमल, भूमलड़ी (लियो), भूमली, भूमियो, भूमी, भूमी-
 देखो 'झूबो' ।
 भूसणी (बो)-देखो 'झूलसणी' (बो) ।
 भूसाङणी (बो), भूसणी (बो), भूसावणी (बो)-
 देखो 'झूलसणी' (बो) ।
 भूड-पु० १ भाड़ने की क्रिया या भाव । २ लूटने की क्रिया
 या भाव ।
 भूङणी-स्त्री० घास महीन करने का लोहे का लंबा छड़ ।
 भूङणी (बो)-क्रि० १ एकत्र करना, बटोरना । २ काटना ।
 ३ पीटना । ४ लूटना ।
 भूङी-स्त्री० १ ऊंट के तंग में लटकने वाला फूँदा । २ बच्चे के
 पालने के बंधा चीथड़ों का खिलौना । ३ समूह, झुण्ड ।
 ४ स्त्रियों के बालों को बांधकर बनाया जड़ा ।
 भूझ, भूझ-देखो 'जुध' ।
 भूझणी (बो)-देखो 'जूभणी' (बो) ।
 भूझवारी-पु० युद्ध, लड़ाई ।
 भूभार-देखो 'जूभार' ।
 भूभाङणी (बो), भूभाणी (बो), भूभावणी (बो)-
 देखो 'जूभणी' (बो) ।
 भूटण-१ देखो 'जूठण' । २ देखो 'भूटणी' ।
 भूटणियो, भूटणी-देखो 'भूटणी' ।
 झूठ-वि० [सं० द्यूतस्थ] १ सत्य का विपर्याय, असत्य ।
 २ अवास्तविक, निराधार । कल्पित । -पु० १ असत्य
 कथन, झूठी बात । २ गप्प, कल्पित बात । ३ क्रोध,
 कोप । ४ उत्पात, शैतानी । ५ चंचलता नटखटपन ।
 ६ देखो 'जूठ' ।
 झूठण-१ देखो 'जूठण' । २ देखो 'भूटणी' ।
 झूठणियो, झूठणी-देखो 'भूटणी' ।
 झूठो-वि० क्रोध युक्त, क्रोध वाली, क्रोधी ।
 झूठ-झूठ (झूठी)-क्रि० वि० बिना किसी आधार से, झूठ के
 आधार पर । व्यर्थ हो ।
 झूठिय, झूठी-वि० [सं० द्यूतस्थ] (स्त्री० झूठी) १ असत्य
 वक्ता, असत्यवादी, झूठा । २ असत्य पर आधारित, झूठ ।
 ३ जो असली न हो, नकली । ४ जिसमें सच्चाई न हो ।
 ५ जबरदस्त, बलवान । ६ प्राण लेने वाला, खूंखार ।
 ७ क्रोध युक्त, क्रोधी । ८ चंचल । ९ उत्पात करने वाला,
 शैतानी करने वाला, उद्दण्ड । १० देखो 'जूठो' ।
 ११ देखो 'भूठ' ।

भूव(की की) भूपड़ (डो, डी) भूपली, भूपियो भूपी, भूपी,
भूप, भूपड़ (डी, डी) भूपली (ली) भूपियो, भूपी, भूपी—
देखो 'भूपी' ।

भूव (कु, कौ)—देखो 'भूवो' ।

भूम-पु० १ भूमने की क्रिया भाव । २ गायन विशेष ।
३ देखो 'भूमो' ।

भूमकड़ी(डी), भूमकियो भूमकी (की)—देखो 'भूवो' ।

भूमख, (डी, डी), भूमखियो, भूमखी (खी), भूमड़ (की की)

भूमड़ली (ली) भूमड़ियो, भूमड़ो (डो)—देखो 'भूवो' ।

भूमण (ण, एण)—पु० १ एक प्रकार का कर्णभूषण । २ गुच्छा,
भूमखा । ३ कंठ का एक प्रकार का हार ।

भूमणी (बी)—पु० १ भोंका खाना । २ मस्ती में घूमना, मदोन्मत्त
होना । ३ हवा से हिलना, लहराना । ४ लटकना, लुमना ।
५ किसी आधार के संलग्न होना ।

भूमर-स्त्री० १ स्त्रियों द्वारा गाने के साथ, वृत्ताकार किया जाने
वाला सामूहिक लोक नृत्य । २ इस नृत्य में गाया जाने
वाला गीत । ३ संगीत में एक ताल । ४ काष्ठ का एक
खिलौना विशेष । ५ स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष ।
६ देखो 'भूमरी' ।

भूमरवे (वं)—पु० एक रंग विशेष का वस्त्र ।

भूमरियो-पु० १ एक कर्णभूषण विशेष । २ देखो 'भूमरी' ।

भूमरी-स्त्री० १ स्त्रियों के कान का आभूषण । २ हाथी के कान
का आभूषण । ३ मोटी लकड़ी को भोगरी । ४ देखो
'भूमर' । ५ देखो 'भूमरी' ।

भूमरी-पु० १ लोहे का मोटा व भारी हथौड़ा । २ सड़क जमाने
का उपकरण ।

भूपी (मी)—देखो 'भूवो' ।

भूरटियो-पु० खरोव, रगड़, नखशत ।

भूर, भूरडियो-स्त्री० १ कंटोली भाड़ी की सूखी टहनियां ।
२ बारीक लकड़ियों का ढेर । ३ महीन चूर्ण । ४ किसी
पदार्थ के छोटे-छोटे टुकड़े । ५ झुण्ड समूह । ६ देखो
'भूर' ।

भूमर, भूर (भूरी)—पु० १ महीन चूर्ण । २ नाश, ध्वंस ।
भूरियो-देखो 'भूर' ।

भूरी-स्त्री० किसी मकान या खेत के चारों ओर खोदी
हुई खाई ।

भूळ-पु० १ झुण्ड सूय, समूह । २ सेना, फौज, दल ।

भूळ-स्त्री० १ कवच, पाखर । २ चौपाये जानवरों की पीठ पर
पहनाया जाने वाला वस्त्र । ३ चारजामा । ४ चारजामे
के नीचे शोभः के लिये बिछाने का वस्त्र ।

भूळकियो, भूळकी-पु० १ मथने का थोड़ा व साधारण दही ।
२ दही का विनोडन । ३ देखो 'भूळी' ।

भूळड़, झूळड़की, झूळड़ियो-१ देखो 'भूल' । २ देखो 'झूली' ।
भूलण (णो)—स्त्री० १ झूठने की क्रिया या भाव । २ मोल,
दीलापन । ३ स्नान । ४ तैरना क्रिया । ५ दुबकी ।
६ ऊंट का एक अवगुण ।

भूलण (णो)—स्त्री० १.३७ मात्राओं का एक छन्द विशेष ।
२.४० मात्राओं का एक अन्य छन्द विशेष । ३.२४ वर्णों
का एक वर्णिक वृत्त । ४ जलने की क्रिया या भाव ।
—इयारस-स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी । इस दिन
देवभूतियों की सगीवर स्नान कराने का उत्सव ।

भूलणी-वि० (स्त्री० भूलणी) १ विचरण करने वाली ।
२ देखो 'जली' ।

भूलणी (बी)—कि० १ हिंडोले खाना, झूले में बैठकर झूलना ।
२ हिलना, डोलना । ३ भौंके खाना । ४ मस्ती में घूमना ।
५ लटकना, लहराना । ६ मंडराना । ७ किसी कार्य का
अधुरा पड़ा रह जाना । ८ मोहित होना । ९ स्नान
करना, तैरना । १० जल विहार करना । ११ अग्नि कुण्ड
के पाम बैठकर तपस्या करना । १२ देखो 'भीलणी' (बी) ।

भूलरियो-वि० १ झुण्ड में रहने वाला । २ देखो 'भूलरी' ।

भूसरी-पु० झुण्ड, समूह, टोली ।

भूला-स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

भुसाळ-वि० १ हिंडोले खाने वाला, झूलने वाला । २ हिलने-
डुलने वाला । ३ लटकने वाला । ४ झूमने वाला ।
५ भरोसे रहने वाला । ६ अनिश्चित रहने वाला । ७ स्नान
करने वाला । ८ जल विहार करने वाला । ९ तपस्या
करने वाला । १० मंडराने वाला । ११ कवचधारी योद्धा ।
१२ मग्न, मस्त रहने वाला । १३ देखो 'भूली' ।

भूलि-स्त्री० एक प्रकार का भूलानुमा पलंग ।

भूळी-पु० १ अस्त्र-शस्त्रों की खड़े व सीधे जमा कर बनाया
हुआ ढेर । २ कड़वी आदि के पूछालों की खड़े व गोलाकार
रखकर बनाया हुआ ढेर । ३ सूखने के लिए अलग-अलग
रखे घास के गट्ठर । ४ झुण्ड, टोला, समूह । ५ जटाजूट ।
६ पहनने का एक वस्त्र विशेष ।

भूली-पु० १ हिंडोला, पालना । २ बड़ी-बड़ी रस्सियों का
भूला । ३ रस्सियों या तारों का पुल । ४ श्रावण शुक्ला
तृतीया से पूर्णिमा तक होने वाला देव भूलाने का उत्सव ।
५ श्रावण मास में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।
६ देखो 'भूल' ।

भूस, भूसण-पु० १ कवच, वस्त्र । २ तलवार, खड़ग ।
३ 'जुआ' ।

भूसणी (बी)—कि० १ कवच आदि पहनना । २ शस्त्रों से
मुसज्जित होना । ३ जोतना ।

भूसर, (री, री), भूसाण-देखो 'भूम' ।

भूसिय-वि० [सं० जूषित] युक्त, सहित । (जैन)

भे-भे-अव्य० भन्-भन् ।

भे पु० १ राम । २ लक्ष्मण । ३ वन । ४ शशि मण्डल ।

५ चमार । ६ मर्यादा । ७ अग्नि ।

भे-अव्य० मर्वेणियों को पानी पिलाने समय की जाने वाली अव्यय ध्वनि ।

भेङ्गणी (बी)-क्रि० १ प्राप्त करना । २ देखो 'भाङ्गणी' (बी) ।

भेङ्गर-पु० एक लोक गीत विशेष ।

भेर-स्त्री० १ नौद का भौका, तेंद्रा । २ भरना, चरमा । ३ देखो 'जेर' ।

भेरण, भेरणयी, भेरणू, भेरणी-पु० १ मथने का उपकरण, मथ दण्ड, मथानी । २ एक प्रकार का घास ।

भेरणी (बी), भेरवणी (बी)-क्रि० १ काटना, मारना । २ तंग या परेशान करना । ३ प्राप्त करना । ४ देखो 'जेरणी' (बी) ।

भेल, भेलण-स्त्री० १ खेलने की क्रिया या भाव । २ खुले द्वार, भग्ने आदि के कमानदार पत्थरों पर लगा पत्थर ।

भेलणी (बी)-देखो 'भालणी' (बी) ।

भेलवी, भेलवी-पु० १ हाथ से पकड़ कर खाली किया जाने वाला कृण का मोट । २ उक्त प्रकार का मोट चलने वाला कूआ । -क्रि० हाथ से पकड़ने योग्य ।

भेला-स्त्री० वनों के शिर पर बांधी जाने वाली रस्सी । (मेवात)

भेलाजोड़ (जोड़ी)-स्त्री० एक कर्णाभूषण विशेष ।

भेली-स्त्री० १ कांटा उठाने की चिमटानुमा लकड़ी । २ उत्तरदायित्व लेने वाला ।

भेलू-वि० १ खेलने, पकड़ने या थामने वाला । २ रक्षक मददगार । ३ सहायक ।

भेली-पु० १ एक कर्णाभूषण विशेष । २ स्त्रियों के ललाट व मिर का आभूषण । ३ हाथी के गर्दन में डाली जाने वाली वस्त्रियों की माना । ४ सहारा, मदद । ५ कृण पर लगा पत्थर जहाँ मोट खाली की जाती है । ६ मकान के आगे का आहता । ७ करघे पर लयी एक लकड़ी विशेष । ८ जल भरी जड़म बाहर आने पर लाव से कोल निकालने का स्थान ।

भे-देखो 'भै' ।

भेकणी (बी), भेकवणी (बी)-क्रि० ऊंट को बैठाना, बैठने के लिए प्रेरित करना ।

भेकाङ्गणी (बी), भेकाणी (बी), भेकारणी (बी), भेकावणी (बी)-क्रि० ऊंट को बिठवाना, बैठाने के लिए प्रेरित करना ।

भेवणी (बी)-क्रि० लज्जित होना, सकपकाना ।

भेवाङ्गणी (बी), भेवाणी (बी), भेवावणी (बी)-क्रि० लज्जित करना ।

भे-पु० १ बृहस्पति । २ गुरु । ३ नाक, नासिका । ४ मैनुन । ५ स्वर्ग । ६ कृतिका । ७ आत्मा । -अव्य० ऊंट बैठाने की सांकेतिक अव्यय ध्वनि ।

भेकाङ्गणी(बी), भेकाणी (बी), भेकारणी(बी), भेकावणी (बी) देखो 'भैकाणी' (बी) ।

भेवाङ्गणी (बी), भेवाणी (बी), भेवावणी (बी)-देखो 'भैवाणी' (बी) ।

भोक-देखो 'भोक' ।

भोकौ-देखो 'भोको' ।

भोपड़ी-स्त्री० कुटिया, पर्णकुटी ।

भोपड़ी-देखो 'भूपड़ी' ।

भोक-स्त्री० १ ऊंट के बैठने का स्थान, बाड़ा । २ ऊंट के बैठने लायक भूमि । ३ मादा ऊंट के प्रसव करने की क्रिया । ४ जोश, उत्साह, साहस । ५ तराजू के पलड़े का झुकाव । ६ झुकाव, प्रवृत्ति । ७ झुकना क्रिया का भाव । ८ तिरछी चितवन, कटाक्ष । ९ तरंग, लहर । १० इधर-उधर हिलने-डुलने की क्रिया । ११ शोभा । १२ शावासी, प्रशंसा ।

भोकड़ी-स्त्री० १ मस्ती, भूम । २ नौद की भागी ।

भोकणी (बी)-क्रि० १ प्रहार करना, वार करना । २ जोश पूर्वक आगे बढ़ाना । ३ जबरदस्ती आगे बढ़ाना, ढकेलना, डेलना । ४ प्रवृत्त करना । ५ किसी वस्तु को भटके के साथ आगे फेंकना । ६ अंधाधुंध व्यय करना । ७ आहुति देना । ८ किसी कार्य में संलग्न करना, लगाना । ९ आपत्ति में डालना, बुरी जगह ढकेलना, भेजना । १० डालना, पटकना । ११ अत्यधिक कार्य भार डालना । १२ बन्दूक दागना । १३ देखो 'भैकणी' (बी) ।

भोका-अव्य० बाह. शावान ।

भोकाइत, भोकाई, भोकाऊ-वि० १ वीर, यहादुर । २ लुटेरा, डाकू ।

भोकाङ्गणी (बी), भोकाणी (बी)-क्रि० १ प्रहार कराना, वार कराना । २ जोश पूर्वक आगे बढ़वाना । ३ जबरदस्ती आगे बढ़वाना, ढकेलाना, डेलाना । ४ प्रवृत्त कराना । ५ किसी वस्तु को भटके के साथ आगे फिकवाना । ६ अंधाधुंध व्यय कराना । ७ आहुति दिराना । ८ किसी कार्य में संलग्न कराना, लगवाना । ९ आपत्ति में डालना, बुरी जगह भिजवाना । १० डलवाना, पटकवाना । ११ अत्यधिक कार्य भार डलवाना । १२ बन्दूक दगवाना । १३ देखो 'भैकाणी' (बी) ।

श्लोकायत (ती)-देखो 'भोकाइत' ।

श्लोकावणी (बो)-देखो 'भोकाणी' (बो) ।

श्लोकी-पु० १ भ्रपट्टा, धक्का । २ भटका, आघात । ३ हवा का प्रवाह भोकोरा । ४ रेला । ५ हिलने-डुलने की क्रिया । ६ प्रवाह । ७ लहर, तरंग ।

श्लोखणी(बो)-१ देखो 'भोकाणी'(बो) । २ देखो 'भोकाणी'(बो) ।

श्लोखाइत, श्लोखाई, श्लोखाऊ-देखो 'भोकाइत' ।

श्लोखणी (बो) श्लोखावणी (बो)-देखो 'भोकाणी' (बो) ।

श्लोड-स्त्री० १ टक्कर, आघात । २ देखो 'भोड़' ।

श्लोट-१ देखो 'भोटो' । २ देखो 'भोटो' ।

श्लोटी-स्त्री० युवा भैंस ।

श्लोटी-पु० १ भूले का भौंका । २ धक्का, टक्कर । ३ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव । ४ युवा भैंस । -वि० हूण्ट-पुण्ट ।

श्लोतिखिक, श्लोतिसिक-देखो 'ज्योतिसी'

श्लोबा-श्लोब-वि० पत्नी से तरबतर ।

श्लोर-पु० समूह, झुण्ड ।

श्लोरी-पु० १ गुच्छा, भूमका । २ देखो 'भोरी' ।

श्लोठ-पु० १ धातुओं पर चढ़ाया जाने वाला मुलम्मा, निकल, कलाई । २ तरकारी का द्रव भाग, शोरबा । ३ वह घोल जो अन्न के आटे में मसाले मिलाकर पकाया जाता है । ४ परदा, ओट । ५ हाथी की चाल का दुर्गुण । ६ देखो 'भोली' । -दार-वि० जिसमें भोल हो, रसदार, शोरखेदार ।

श्लोल-स्त्री० १ रस्सी आदि का तनाव कम होने के कारण ढीलेपन का झुकाव । २ बीच में से मुड़कर झुक जाने की दशा । ३ शिथिलता । ४ लटकाव । ५ दुःख । ६ देखो 'भोली' । -वार-वि० जिसमें भोल हो, ढीला-ढाला ।

श्लोलड-देखो 'भोली' ।

श्लोलणी-पु० यात्रा में साथ ले जाने का कपड़े का थैला ।

श्लोलणी (बो)-क्रि० १ हिलाना-डुलाना । २ भ्रक-भोरना, मथना ।

श्लोलणी-पु० लोहे का बना दीपक ।

श्लोळायत-पु० गोद लिया पुत्र, दत्तकपुत्र ।

श्लोळि-स्त्री० १ तलझड़ी । २ देखो 'भोली' ।

श्लोळियां-क्रि० वि० अंक में, गोद में ।

श्लोळीयी-पु० १ दही का मट्ठा, पतला दही । २ बच्चे का पालना । ३ बच्चों को मृगाने की कपड़े की भोली ।

श्लोळी-स्त्री० १ किसी वस्त्र के चारों कोणों को रस्सी से बांधकर बनाया हुआ भोला । २ वस्त्र के चारों शिरों को परस्पर बांधकर बनाया हुआ थैला । ३ वस्त्र को शरीर से ऐसे बांधना कि पीछे थैलानुमा बन जाय । ४ थैली । ५ घायलों को ले जाने के लिये प्रयोग किया जाने वाला बड़ा थैला, भोला, उपकरण । ६ बच्चों को हिंडाने की भोली । ७ याचना के लिये फैलाया जाने वाला दामन । ८ अंक, गोद । -झंडो, डंडो-पु० साधुओं की भोली व डंडा ।

श्लोळी-पु० १ बड़ा थैला । २ कपड़े के चारों छोर मिला कर बनाई गई गठरी । ३ होला-ढाला आवरण । ४ साधुओं का चोला । ५ गोद, अंक । ६ पहनने के वस्त्र का कोई वस्तु डालने के लिये बनाया हुआ भोला ।

श्लोली-पु० १ वायु का प्रवाह, भौंका टक्कर, आघात । २ वायु-प्रकोप । ३ प्रवाह । ४ तरंग, हिलोर । ५ भूलने की क्रिया या भाव । ६ जल-विलोडन । ७ वात रोग विणप । ८ आश्विन मास में सप्तषि के अस्त होने के स्थान से चलने वाली वायु जो फसल के लिये हानि-कारक होती है । ९ आपत्ति, संकट । १० पीड़ा, दुःख । ११ विक्षेप, बाधा । १२ संग, तोहबत । १३ शोभित होने का भाव । १४ चितवन, दृष्टि । १५ आक्रमण, भ्रष्ट । १६ उलभन, फंदा । १७ प्रभाव, असर ।

श्लोवरी-स्त्री० एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

श्लोवो-पु० मिट्टी का एक पात्र विशेष ।

श्लोक-स्त्री० १ ध्वनि, आवाज । २ देखो 'भोक' ।

श्लोप-पु० शमी वृक्ष की टहनियों का बना उपकरण ।

श्लोक-१ देखो 'भोक' । २ देखो 'भौंक' ।

श्लोका-देखो 'भोका' ।

श्लोड-स्त्री० १ भ्रंश, प्रपंच । २ कलह, झगड़ा, टंटा । ३ राड़, तकरार । ४ बहस । ५ युद्ध । ६ विवाद । -सपाड़, झपोड़-पु० टंटा, फिसाद ।

श्लोडी-पु० विवरण, हाल, वृत्तान्त ।

श्लोर-देखो 'भोरी' ।

श्लोरापो (बो)-देखो 'झरापो' ।

श्लोरी-पु० गुजलाहट, खुजली ।

श्ल्यकारतन-पु० स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष ।

श्ल्यास-देखो 'जा'ज' ।

श्रंग-पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

—ट—

ट-देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवां व्यंजन वर्ण ।

ट-पु० [सं० टम्] १ अंकुश । २ पुत्र । -स्त्री० ३ आंख ।
४ पृथ्वी । ५ भौह । -वि० १ गंभीर । २ वीर ।

टंक(उ)-पु० [सं० टकि, टंक] १ भोजन का समय ।
२ तलवार की नोक । ३ मिक्का । ४ तलवार ।
५ कुदाली । ६ छेनी । ७ म्यान । ८ पढ़ाई की डलान ।
९ एक ओर से टूटा हुआ पर्वत । १० कोष । ११ ग्रहंकार ।
१२ टांग । १३ सुहागा । १४ चारमासे का एक तोल ।
१५ टकमाल में मिक्कों का धातु तोलने का एक मान । १६ धनुष की डोरी पर लटकाया जाने वाला एक मान । १७ सम्पूर्ण जाति का एक राग । -अठार, अठार= 'अठारटंकी' ।

टंकण-पु० [सं० टंकणम्] १ सुहागा । २ घोड़े की जाति विशेष व इस जाति का घोड़ा । ३ एक मानव जाति विशेष । ४ टंकित करने की क्रिया ।

टंकणी-देखो 'टांकणी' ।

टंकणी(बौ)-कि० १ टंकित करना, टाईप करना । २ टांका जाना । ३ देखो 'टांकणी' (बौ) । ४ देखो 'टंगणी' (बौ) ।
टंकपरीक्षा-स्त्री० बहुतर कताघों में से एक ।

टंकसाळ-स्त्री० १ धनुष विद्या सिखाने का स्थान । २ देखो 'टकमाल' ।

टकाई-स्त्री० १ टांकने का कार्य । २ टांकने की मजदूरी ।

टंकाग्राळि, टंकाउळि-देखो 'टंकावली' ।

टंकाडिली-वि० बहुमूल्य, कीमती ।

टंकार-स्त्री० १ धनुष की डोरी की ध्वनि । २ कगी हुई डोरी या तार से निकलने वाली ध्वनि ।

टंकारणी (बौ)-कि० १ प्रत्यंवा से आवाज करना । २ आघात से ध्वनि करना । ३ गिनना । ४ मानना, मापभना ।

टंकारव, टंकारी-देखो 'टंकार' ।

टंकावळ (ळि,ळी)-वि० बहुमूल्य, कीमती । -पु० हार, कंठाहार ।

टंकी-स्त्री० १ लोहे आदि का बड़ा पात्र, कोठी । २ पानी के लिए बनाया छोटा जल-कुण्ड । ३ धनुष ।

टंकेत-वि० खड़गधारी, कृपागुधारी ।

टंकोर-देखो 'टंकार' ।

टंकोरियो, टंकोरी-पु० १ देवपूजन के समय बजाया जाने वाला छोटा घंटा । २ ऐसा ही छोटा घंटा जो किसी स्थान या पशु के गले में लटकाया जाता है ।

टंकी-१ देखो 'टकी' । २ देखो 'टंक' । ३ देखो 'टांकी' ।

टंग, टंगड़ी-देखो 'टांग' ।

टंगणी (बौ)-कि० टांका जाना, लटकना, अटकना ।

टंगपांणी-पु० [सं० टंकपाणि] ४६ क्षेत्रपालों में से २७ वां क्षेत्रपाल ।

टंगली-वि० (स्त्री० टंगली) पैरों से चलने में अग्रमर्थ ।

टंच-वि० १ तैयार । २ पूर्ण । ३ प्रस्तुत । ४ कृपण, कंजूस ।

टंचणी (बौ)-कि० टांचा जाना ।

टंचर-पु० शिर, शीश ।

टंट, टंटी-स्त्री० घुटने से नीचे का भाग ।

टंटेर-पु० १ मरे पशु का अस्थिपंजर । २ दुर्बल प्राणी ।

टंटेरणी (बौ)-कि० लटकाना, लटकाये हुए फिरना ।

टंटीळणी (बौ)-कि० १ ढूँढना, खोजना । २ संभातना, देखना । ३ स्पर्श करना, छूना । ४ थाह लेना । ५ परखना, आजमाना । ६ सहलाना ।

टंटी-पु० १ भगड़ा, लड़ाई । २ कलह, तकरार । ३ परेशानी, दिक्कत । ४ उलझन ।

टंडोरी, टंडेरी-पु० घरेलु सामान, व्यर्थ सामान ।

टंपणी (बौ)-कि० छुवांग, भरना, वृद्धता ।

टंपाघोड़ी-पु० बच्चों का एक खेल विशेष ।

टंपाड़णी (बौ), टंपाणी (बौ), टंपावणी (बौ)-कि० छुवांग भराना, कुदाना ।

टंमकी-पु० १ ध्वनि । २ शब्द, आवाज । ३ तगाड़ा । ४ चमक । ५ हल्का प्रकाश ।

ट-पु० १ योद्धा । २ देवदार । ३ पीपल । ४ चांदी ।

टओवी-पु० पैदा, तल ।

टक-स्त्री० १ बिना पलक भरे देखने की क्रिया या भाव । २ नजर, दृष्टि । ३ तक, पर्यन्त । ४ स्थिति । ५ क्षण, पल । ६ देखो 'टंक' । ७ देखो 'ठक' । ८ देखो 'ठाक' ।

टकएक, टकेक-कि० वि० १ पलभर, क्षणिक । २ निरन्तर ।

टकटकणी (बौ), टकटकाणी (बौ)-कि० १ निरन्तर देखना, टकटकी लगाना । २ टक-टक शब्द करना ।

टकटकी (वकी)-स्त्री० १ बिना पलक भरे निरन्तर एक ही जगह देखने की क्रिया या भाव । २ स्थिर दृष्टि ।

टकटकी-वि० (स्त्री० टकटकी) चकित, स्तब्ध ।

टकर-देखो 'टबकर' ।

टकरणी

(५०९)

टपटप

टकरणी (बौ)—क्रि० १ टकराया जाना । २ टक्कर होना ।
३ मिलना, साक्षात्कार होना ।

टकराणी (बौ), टकरावणी (बौ)—क्रि० १ परस्पर भिड़ना, टकराना । २ ठोकर लगना । ३ धक्का लगाना । ४ लड़ना, तकल करना । ५ सम्पर्क में आना । ६ मिलना ।
७ स्वार्थ मिट्टि के लिए मारा-मारा फिरना । ८ मिलान करना, जोच करना ।

टकसाळी—स्त्री० [गं० टकणाला] वह संस्था, विभाग या कारखाना जहां राज्य द्वारा प्रचलित मुद्रा व मिककों का निर्माण किया जाता है ।

टकसाळी, टकसाळीक—वि० १ टकमाल का, टकमाल संबंधी ।
२ सर्वमान्य, प्रामाणिक । ३ पठित । —पु० टकमाल का कर्मचारी ।

टकाणी—स्त्री० बैलगाड़ी का एक उपकरण ।

टकाणी (बौ)—देखो 'टिकाणी' (बौ) ।

टकार—पु० 'ट' प्रथम ।

टकियाई, टकियारी—स्त्री० टके-टके के लिए व्यभिचार करने वाली स्त्री ।

टकियारी—वि० अत्यधिक लालची, नीच, घन-लोलुप, शूद्र ।

टकोर—देखो 'टंकोर' ।

टकोरी—देखो 'टंकोरी' ।

टकी—पु० [सं० टक] १ दो पैसे का मिकका, दो पैसे । २ ग्राही छटांक का एक तौल । ३ कर, टेक्स ।

टक्कदेस—पु० एक प्राचीन देश ।

टक्कर—स्त्री० १ दो वस्तुओं की वेग से होने वाली परस्पर भिड़ंत । टकराव । २ धक्का, भटका । ३ ठोकर ।
४ मुकाबला । ५ घाटा, हानि ।

टक्कणी, टक्कणी, टक्कणी—पु० गड़ी के ऊपर पांव के जोड़ की हड्डी । पाद ग्रंथि । गट्टा, टखना ।

टग—स्त्री० किसी वस्तु के सहारे के लिए या ऊंचा रखने के लिए नीचे लगाया जाने वाला खण्ड । सहारा ।

टगटगी—क्रि० वि० मंदगति से, धीरे-धीरे ।

टगटगणी (बौ)—क्रि० निरन्तर देखना, ताकना, टकटकी लगाना ।

टगटगाट (टौ)—पु० एक प्रकार की ध्वनि विशेष ।

टगटगाणी (बौ)—देखो 'टकटकाणी' (बौ) ।

टगटगी (गौ)—देखो 'टकटकी' ।

टगण—पु० छः मात्रा का एक मात्रिक गण ।

टगमण—स्त्री० विशेष प्रकार से देखने की क्रिया ।

टगे—पु० थोड़े आदि का चलने-बलते ग्रहानक रुक जाने की क्रिया ।

टगी—पु० विशेष अवसर, समय ।

टवटव—स्त्री० मुंह में निक्कली जाने वाली एक ध्वनि विशेष ।

टचरकी—पु० १ भगड़ा, कलह । २ व्यंग, ताता ।

टचली—स्त्री० कनिष्ठा अंगुली, छगनिया ।

टच्च—क्रि० वि० तुरंत, शीघ्र ।

टटपूजियो—वि० कम पूजा वाला । तुच्छ । माधारण ।

टटोलणी (बौ)—देखो 'टंटोलणी' (बौ) ।

टट्टी—स्त्री० १ मल, पाखाना, शौच । २ पाखाना करने का स्थान । ३ पाखाना करने की क्रिया । ४ देखो 'टाटी' ।

टट्टू—पु० १ छोटे कद का छोड़ा विशेष । २ शिपन ।

टट्टी—पु० 'ट' वर्ग ।

टडो, टडु—पु० स्त्रियों के भुजा का आभूषण विशेष ।

टण—स्त्री० १ घण्टा ध्वनि । २ टन्-टन् ध्वनि । २ देखो 'टणी' ।

टणकचंद (चंदजी, सौंग, सौघ)—वि० १ बलवान, शक्तिशाली ।
२ विशेष प्रभाव या मान-मर्यादा वाला ।

टणकाई—स्त्री० १ जोर-जबरदस्ती । २ शक्ति का गर्व ।

टणकार—स्त्री० घंटे या किसी धातु की वस्तु पर आघात पड़ने से होने वाली 'टन्' ध्वनि ।

टणकेल, टणकैल, टणकी—वि० १ बलवान, शक्तिशाली, जबरदस्त । २ विशाल, बड़ा । ३ महान्, भारी । —पु० स्त्रियों के पांव का चांड़ी का एक आभूषण ।

टणटणणी (बौ)—क्रि० टन्-टन् ध्वनि होना, टनटनाना ।

टणक—स्त्री० ध्वनि विशेष ।

टणकणी (बौ)—क्रि० टन्-टन् ध्वनि होना ।

टणमण—स्त्री० घंटियों की ध्वनि ।

टणमणणी (बौ)—क्रि० टन्-टन् ध्वनि होना ।

टणियो, टणी—पु० स्त्रियों की योनि के मध्य का उभरा हुआ भाग ।

टप—स्त्री० १ बूंद टपकने की ध्वनि । २ बूंद पड़ने की क्रिया ।
३ तांगे के ऊपर मोटे कपड़े का बना मायबान । ४ छोटी भोंपड़ी । ५ पानी रखने का चौड़ा पात्र ।

टपक—स्त्री० १ बूंद-बूंद टपकने की क्रिया या भाव ।
२ शीघ्र, जल्दी ।

टपकणी (बौ)—क्रि० १ बूंद-बूंद कर गिरना । २ टूट कर गिरना (फलादि) । ३ प्रतीत होना, आभास होना ।
४ सहसा प्रकट करना ।

टपकाणी (बौ)—क्रि० १ बूंद-बूंद कर गिराना । २ फलादि गिराना । ३ प्रतीत कराना, आभास कराना । ४ सहसा प्रकट करना ।

टपकार—स्त्री० तजर, कुशष्टि । दृष्टि दोष ।

टपकावणी (बौ)—देखो 'टपकाणी' (बौ) ।

टपकी—पु० १ बूंद, छींटा । २ टपकी हुई वस्तु ।

टपटप—क्रि० वि० टप-टप ध्वनि के साथ ।

टपर, टपरिणी, टपरी, टपरी-पु० १ छोटासा छप्पर, छान ।
 २ भोंपड़ी, कुटिया । ३ देखो 'टापरी' ।
 टपली-स्त्री० १ छोटी खाट । २ शिर, टाट ।
 टपसियो, टपसी-पु० छोटी भोंपड़ी ।
 टपाक-क्रि०वि० तुरंत शीघ्र । महंगा ।
 टपाटप-क्रि०वि० १ जल्दी-जल्दी शीघ्र । २ टप-टप करते हुए । ३ बूंद-बूंद कर । -पु० बूंद-बूंद गिरने का भाव ।
 टपूकड़ी-पु० १ तरल या द्रव पदार्थ । २ मिह, शेर ।
 टपी-१ देखो 'टिपी' । २ देखो 'टपकी' ।
 टप्प-क्रि०वि० १ तुरंत, शीघ्र, भट । २ महंगा ।
 टप्पर-देखो 'टपर' ।
 टष-पु० १ नांद के आकार का खुला पात्र । २ उपाय, तरकीब ।
 टबकियो-पु० १ छोटी डनिया । २ मिट्टी का छोटा बर्तन ।
 टबबक-पु० शब्द, ध्वनि, रव ।
 टबबकड़ी टबरकी-देखो 'टबूकी' ।
 टबारी-पु० १ गृहस्थी का कार्य, गुजर-बसर । २ साधारण धंधा, उद्योग ।
 टबूकी, टबूकी-पु० १ संगीत की ध्वनि । २ बूंद ।
 टब्बर-पु० [सं० तर्परः] कुटुंब, परिवार ।
 टब्बा-स्त्री० राजस्थानी में संक्षिप्त भाषानुवाद ।
 टमकणी(बी)-१ देखो 'टमकणी'(बी) । २ देखो 'तमकणी'(बी) ।
 टमकणी (बी)-क्रि० १ चमकना, दमकना । २ झलकना ।
 ३ प्रगट होना, मालूम होना । ४ सही आना । ५ नगाड़े आदि की ध्वनि होना । ६ कांपना, कंपन होना ।
 ७ टमटमाना ।
 टमकाइणी(बी), टमकाणी (बी)-क्रि० १ चमकाना, दमकाना ।
 २ झलकाना । ३ प्रकट करना । ४ नगाड़े की ध्वनि करना । ५ कांपना । ६ टमटमाना । ७ गलकें हिलाना ।
 आंख मीचना ।
 टमकार-देखो 'टमकारी' ।
 टमकारणी (बी)-देखो 'टमकाणी' (बी) ।
 टमकारी-पु० १ आंख मीचकर किया जाने वाला इशारा ।
 २ घड़ियाल का शब्द ।
 टमकावणी (बी)-देखो 'टमकाणी' (बी) ।
 टमकीली-वि० (स्त्री० टमकीली) बनावटी शृंगार वाला, नखरे वाला ।
 टमकी-पु० साज-शृंगार, नाज-नखरा ।
 टमचरी-पु० मस्तक, शिर, खोपड़ी ।
 टमटम-पु० १ एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी । २ ध्वनि विशेष ।
 टमटमाणी (बी)-देखो 'टिमटिमाणी' (बी) ।
 टमरकू-स्त्री० फाहता गधे की बोली ।

टमरियो-पु० वृक्ष विशेष ।
 टमरु (रु)-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
 टमाटर-पु० लाल या हरे रंग का, खट्टा फल व इसका पौधा ।
 टमोरी-पु० आंख का इशारा, मटरका ।
 टर-पु० १ अप्रिय या कटु शब्द । २ वकवाद । ३ गेंठन भरी बात । ४ अक्कड़, घमंड । ५ तुच्छ बात । ६ मेंढ़क की आवाज ।
 टरकणी (बी)-क्रि० १ धीरे से चला जाना, खिसकना ।
 २ कहीं से टपना ।
 टरकाणी(बी), टरकावणी(बी)-क्रि० १ किसी की रवाना करना, खिसकाना । २ कहीं भेजना । ३ टालना, हटाना ।
 टरड़-स्त्री० १ गेंठ, गर्व । २ भेड़ । ३ अपान वायु की आवाज । -पंच-पु० स्वतः बना पंच ।
 टरड़की-पु० १ क्रोध करने का भाव । २ कगहट । ३ घोड़े की एक दौड़ । ४ अपान वायु की ध्वनि ।
 टरटराणी (बी), टरणाणी(बी)-क्रि० १ मेंढ़क का बोलना ।
 २ वकना, वकवाद करना ।
 टलकणी (बी)-क्रि० १ कंपायमान होना । २ चीरना फाड़ना ।
 काटना, विभाजित करना । ३ डिगना । ४ टरकना, खिसकना । ५ धीरे-धीरे चलना । ६ स्थान से दूर होना ।
 ७ लुढ़कना । ८ देखो 'टरकणी' (बी) ।
 टलकाणी (बी)-क्रि० १ कंपायमान करना, डिगाना ।
 २ टरकाना, खिसकाना । ३ धीरे-धीरे चलाना ।
 ४ स्थान से दूर करना । ५ लुढ़काना । ६ देखो 'टरकाणी' (बी) ।
 टलवकणी (बी)-देखो 'टलकणी' (बी) ।
 टलटलणी (बी)-टलटलणी (बी)-क्रि० १ बुल-बुलाना, छटपटाना, तड़पना । २ कंपायमान होना । ३ रेंगना टालमटोल करना ।
 टलणी (बी)-क्रि० [सं० टल] १ स्थान से अलग हटना, खिसकना । २ पृथक, होना, अलग होना । ३ दूर होना ।
 ४ मिटना, निवारण होना । ५ मर्यादा से हटना ।
 ६ कर्तव्य विमुख होना । ७ डोलना, कांपना । ८ अस्थिर होना । ९ नाश होना, मिटना, क्षय होना । १० बचना, बचित रहना । ११ व्यतीत होना, समाप्त होना ।
 १२ अनुपस्थित होना । १३ स्थित होना, गुजरना, चला जाना । १४ विपत्ति आदि का टलना । १५ लागू न होना, प्रभावशील न होना । १६ ऊंट का रोग विशेष से पीड़ित होना । १७ गाय, भैंस व वक्की का दूध देना बंद कर देना ।
 टलन-स्त्री० आघात, टक्कर ।

टलबलणी (बो)—क्रि० १ हिलना, डुलना । २ अस्थिर होना, चंचल होना । ३ छटपटाना, तड़पना, कुल बुलाना । ४ व्याकुल होना, परेशान होना । ५ लालायित होना, इच्छुक होना । ६ रेंगना, चलना ।

टलबलाहट टलबलाहट—स्त्री० १ वेचनी, घबराहट । २ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव । ३ हरकत ।

टलबलाणी (बो), टलबलावणी (बो)—क्रि० १ हिलाना, डुलाना । २ अस्थिर या चंचल करना । ३ तड़पाना । ४ व्याकुल करना । ५ लालायित करना, इच्छा कराना । ६ रेंगाना चनाना ।

टलबाड़णी (बो)—क्रि० खींचकर निकालना ।

टली, टल्ली—पु० हल्कासा धक्का, टक्कर, भटका ।

टवरग—पु० [मं० ट वर्ग] ट ठ ड ढ ए इन वर्णों का समूह ।

टवाली—स्त्री० १ खेत की रखवाली । २ चौकीदारी ।

टवो—पु० भाले का अग्र भाग ।

टस—स्त्री० १ अत्यन्त भारी वस्तु के खिसकने की क्रिया । २ खिसकने से उत्पन्न शब्द ।

टसक—स्त्री० १ दर्द, कसक, टीस । २ देखो 'ठसक' ।

टसकणी (बो)—क्रि० १ दर्द से कराहना, दर्द में टसकना । २ खिसकना, हिलना । ३ कब्ज की दशा में मलत्याग के लिए जोर करना । ४ चरमराना ।

टसकाई—स्त्री० टसकने की क्रिया या भाव ।

टसकीली—वि० (स्त्री० टसकीली) १ अधिक कराहने वाला । २ देखो 'ठसकीली' ।

टसकी—पु० १ कराहने का शब्द । २ टसकने की क्रिया या भाव । २ देखो 'ठसकी' ।

टसणी (बो)—देखो 'ठसणी' (बो) ।

टसर—स्त्री० [मं० तसर] एक प्रकार का मोटा व मजबूत वस्त्र ।

टसरियो, टसरीयो, टसरीयो, टसरीयो—पु० १ ऊंट को एक चाल विशेष । २ अफीम रखने का पात्र । ३ एक प्रकार का वस्त्र ।

टहकणी (बो)—१ देखो 'टसकणी' (बो) । २ देखो 'टहकणी' (बो) ।

टहकाणी (बो)—क्रि० १ बजाना । २ ध्वनि करना ।

टहकी—पु० १ बाज ध्वनि । २ देखो 'टहकी' ।

टहटह—स्त्री० १ हलने की क्रिया । २ अट्टहास । ३ ध्वनि विशेष ।

टहटहली (बो)—क्रि० १ बाज ध्वनि होना, नगारा बजना । २ खिलखिलाना ।

टहनी—स्त्री० वृक्ष या पौधे की छोटी शाखा ।

टहल—स्त्री० १ मेका, खिदमत, चाकरी । २ देखभाल । ३ धूमने-फिरने की क्रिया या भाव । —दार—पु० खिदमतगार, चाकर । कमाई ।

टहिटी—स्त्री० एक वाद्य विशेष ।

टहुकड़ी—देखो 'टहुकी' ।

टहुकणी (बो)—क्रि० १ कोयल, मोर आदि पक्षियों का बोलना ।

२ ऊंची व लम्बी आवाज करना । ३ ध्वनि करना ।

टहुकी—पु० १ कोयल, मोर आदि पक्षियों की बोली । २ ऊंची व लम्बी आवाज । ३ ध्वनि, शब्द । ४ लंबी व तेज आवाज देने का ढंग । ५ ताना, व्यंग । ६ ऊंट की बोली ।

टहुकणी (बो)—देखो 'टहुकणी' (बो) ।

टांक—स्त्री० १ धनुष । २ देखो 'टंक' । ३ देखो 'टाकी' ।

टांकड़ी—देखो 'टांकणी' ।

टांकणी—पु० १ शुभाशुभ अवसर, विशेष अवसर, मुहूर्त ।

२ ऐसे अवसर पर पढ़ने वाला कार्य, घर का विशेष कार्य ।

३ समय । ४ स्त्री के मासिक धर्म का समय । ५ शिल्पी का एक औजार विशेष । ६ ऊपर लटकता हुआ मांस ।

७ लटकाने या घटकाने की क्रिया या भाव ।

टांकणी (बो)—क्रि० १ ऊपर लटकाना, अटकाना, टेरना ।

३ सिलाई करना । ३ बटन आदि लगाना । ४ चिपकाना, चपका करना ।

टांकमी—वि० (स्त्री० टांकमी) १ लटकाया हुआ, टांका हुआ ।

२ लटकता हुआ ।

टांकरी—पु० एक तोले का वजन ।

टांकल—वि० कुपुत्र ।

टांकलउ टांकली—१ देखो 'टांकणी' । २ देखो 'टंक' ।

टांकी—स्त्री० १ पत्थर गढ़ने का लोहे का उपकरण । २ सोना, जवाहिरात आदि तोलने का तराजू । ३ देखो 'टाकी' । —बंद—पु० इमारत में लगे पत्थर के टुकड़ों या आमने-सामने की कीलों की मजबूत जुड़ाई । उक्त प्रकार से बनी इमारत ।

टांकीली—पु० पुनर्वसु नक्षत्र का एक नाम ।

टांकी—पु० [मं० टकि-बंधने] १ भूमि को खोदकर अथवा ऊपर दीवार उठाकर बनाया हुआ जलकुण्ड । २ सोने चांदी के आभूषणों में मिलाया जाने वाला विजातीय घातु । ३ कपड़े या किसी घाव की सिलाई । ४ चोर के पद चिह्नों की खोज । ५ भूमि संबंधी एक प्राचीन कर ।

टांग (ड़ी डी)—स्त्री० [मं० टंगा] १ पैर, पांव, पग । २ रहट के कूए के भीतर लगने वाली लकड़ी ।

टांगण—देखो 'टैंगण' ।

टांगणी (बो)—देखो 'टांकणी' (बो) ।

टांगर—पु० भैंस ।

टांगरियो, टांगरी—पु० १ फेरी लगाकर मीठा बेचने वाला व्यापारी । २ किसी बात की गट ।

टांगाटोळी-स्त्री० १ दोनों हाथ व दोनों पांव पकड़कर ले जाने की क्रिया या भाव । २ खींचातान ।

टांगण-देखो 'टेंगण' ।

टांचणो (बो)-क्रि० १ पीमने की चक्की आदि की टंचाई करना, टांचना । २ चोंच का प्रहार करना । ३ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना । ४ धोखे से ले लेना, हड़पना ।

टांचाणो (बो). टांचावणो (बो)-क्रि० १ पीमने की चक्की आदि की टंचाई कराना । टांचवाना । २ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार कराना । ३ हड़पवाना, धोखा कराना ।

टांचो (जी)-स्त्री० धामदनी का धंधा, रोजी ।

टांट-स्त्री० १ पैर, टांग । २ टाट । -वि० १ दुबला-पतला । २ अशक्त, कमजोर । ३ अयोग्य ।

टांटली-पु० मांस ।

टांटळ-देखो 'टांट' ।

टांटियो-पु० १ पाट व पलंग के पायों की मजबूती के लिए लगाई जाने वाली लोहे की शलाख । २ बरं नामक पतंगा । ३ टेढ़े मुख का व्यक्ति । -वि० दुबला-पतला, अशक्त ।

टांटो. टांटो-वि० अपाहिज, अपंग ।

टांड-पु० १ किसी दीवार के सहारे सामान रखने के लिये लागाया जाने वाला लम्बा पत्थर । २ मचान । ३ मकान के बीच लगा गहरी । ४ शोभा । ५ देखो 'टांडो' ।

टांडी-वि० [सं० तुण्डकम्] शोभा युक्त, सीमाथ्य युक्त ।

टांडो-पु० १ अंगारा, अग्निकण । २ बनजारे के बैलों का मगूह । ३ गांव के बाहर का, पशुचर्म निकालने का स्थान । ४ अधिक संतान के लिये प्रयुक्त शब्द ।

टाणू, टाणी-पु० १ विवाहादि विशेष कार्य । २ वह समय जब विशेष कार्य हों । ३ उत्सव का दिन । ४ त्यौहार । ५ समय, वक्त । ६ अवसर, मौका ।

टानर-दूधर-देखो 'टामण-दूधण' ।

टापी-स्त्री० १ शमी वृक्ष । २ छोटा वृक्ष । ३ भोंपड़ी ।

टांपक, टांपक-पु० १ नगाड़ा । २ नगाड़े पर प्रहार या चोट ।

टांपकी-स्त्री० डोलक ।

टामटीम, टामदूम-देखो 'टीपटाप' ।

टामण-कांमण, टामण-दूमण-पु० जादू-टोना, वशीकरण मंत्र ।

टामेर-पु० एक प्राचीन राजपूत वंश प उमका व्यक्ति ।

टाप-टाप-स्त्री० १ पक्षियों की अग्रिम या कर्कश बोली । २ वकवाद, बकभक । ३ टिट्ठिम पक्षी की बोली । ४ चिड़-चिड़ाने की क्रिया या भाव ।

टांस-स्त्री० धैर्य, धीरज । -वि० तृप्त ।

टांसणी-वि० १ मजबूत, दृढ़ । २ ताकतवर, शक्तिशाली ।

टांसणी (बो)-वि० १ खूब खाना-पीना । २ तृप्त होना । ३ वस्त्रादि जबरदस्ती धारण करना, पहनना । ४ देखो 'टांसणी' (बो) ।

टा-स्त्री० १ बड़वानल । २ मच्छी । -पु० ३ देवता । ४ वस्त्र । ५ तोता । ६ भजन । ७ सिद्ध । ८ यश ।

टाक-पु० [सं० तक्षक] १ नाग क्षत्रिय वंश की एक शाखा व इस शाखा का सदस्य । [मं० टक्क] २ मिथु व व्यास नदी के बीच का प्रदेश ।

टाकर-स्त्री० १ टक्कर, झपट । २ घाव, चोट । ३ जरूम पर जमने वाली पपड़ी । ४ रगड़ या घर्षण के कारण सस्त पड़ने वाली चमड़ी । ५ धूल, रेणु ।

टाकर-स्त्री० ऊंटों की एक जाति विशेष व इस जाति का ऊंट । टाकरो-पु० १ भूमि का ऊंचा उठा हुआ भाग । २ ऊसर भूमि । ३ देखो 'टाकर' ।

टाकी-स्त्री० १ जरूम, घाव, क्षत । २ जरूम का निशान । ३ बंद तरबूज या खरबूजे का काटा जाने वाला चोकौर छोटा खण्ड ।

टाकणो (बो)-क्रि० १ आक्रमण या हमला करना । २ आक्रमण के लिये तैयार होना । ३ हमले के लिये उछलना । ४ उछल कर आगे आना ।

टाचरको-पु० १ विशेष अवसर, मौका । २ देखो 'टचरको' ।

टाचरणो (बो)-क्रि० १ दूर करना । २ पृथक् या अलग करना ।

टाचरो-पु० शिर, मस्तक । -वि० शक्तिशाली ।

टाट-स्त्री० १ बकरी, अज्ञा । २ बिना वालों की खोपड़ी । ३ कपाल । ४ शिर के बाल उड़ने का एक रोग । ५ बोरी, बारदाना । -वि० १ कायर, डरपोक । २ मूर्ख, अयोग्य ।

टाटर-पु० घोड़े को झूल । -वि० विवस्त्र, नंगा, वस्त्रहीन ।

टाटली, टाटियो-वि० (स्त्री० टाटली) गंजा ।

टाटी-स्त्री० १ बांस की खपचियों से बनी कोई झाड़ । २ पत्थर की पट्टियों की दीवार । ३ छोटी दीवार ।

टाटी-पु० १ खस या कांटों की बनी टट्टी । २ बकरी, अज्ञा । ३ बकरा । ४ देखो 'टाटी' ।

टाड-पु० आभूषण विशेष ।

टाडूकणी (बो)-देखो 'ताडूकणी' (बो) ।

टाढ-स्त्री० सरदी, ठंड ।

टाढी-देखो 'ठाढी' ।

टाप-स्त्री० १ घोड़े का झुर । सुग । २ इस झुर का बना चिह्न । ३ घोड़े के पांव की आवाज । ४ घोड़े के अगले पांव का प्रहार । ५ छान, छप्पर । ६ टाटा । ७ फिट किया हुआ किसी का ढक्कन । ८ बिड़की या आलस के पीछे लगा पत्थर ।

टापवार-वि० जिसमें टाप लगी हो ।

टापर-स्त्री० १ घोड़े की भूल । २ घोड़े की जीन का एक उपकरण । ३ सर्दी में पशुओं को छोड़ा जाने वाला मोटा वस्त्र ।

टापरिषो, टापरी, टापरी-पु० १ घास-फूस का मकान, कच्चा मकान । २ झोंपड़ी । ३ पुराना मकान । ४ घर । -वि० आगे से मुड़ा हुआ, छोटा (कान) ।

टापी-स्त्री० १ पतली, सीधी व नरम लकड़ी । २ खेत में बनी झोंपड़ी ।

टापू-पु० चारों ओर से जल से घिरा हुआ भू-खण्ड, द्वीप ।

टापी-पु० १ टक्कर । २ आघात । ३ टापरी ।

टाबर, टाबरियी-पु० [सं० तर्प] १ बालक, लड़का, बच्चा-बच्ची, शिशु । २ संतान, श्रोलाव । ३ नादान प्राणी ।

—टोंगर-पु० संतान । —बार-वि० बाल-बच्चों वाला ।

—पण-पु० बचपना, नादानी ।

टाबरीवार-वि० बाल-बच्चों वाला ।

टार (झी, झी)-पु० [सं० टार:] दुबला-पतला या छोटे कद का घोड़ा ।

टाळ-स्त्री० १ कंधी से बनाई गई बालों के बीच की रेखा । २ गहराई । ३ बेल के गले में बंधी घंटी । ४ पृथक करने की क्रिया या भाव । -क्रि० वि० १ सिवाय, अलावा । २ अलग करने पर ।

टास-स्त्री० १ ईंधन की लड़कियों की दुकान । २ बूढ़ी गाय ।

टाळसी (बो)-क्रि० १ पृथक करना, अलग करना । २ दूर करना, निवारण करना । ३ मिटाना, दूर करना, नाश करना । ४ बचाना, छिपाना । ५ रक्षा करना, बचाना । ६ चुनना, छांटना । ७ स्थगित करना, आगे तथ्य करना । ८ इन्कार करना, उल्लंघन करना । ९ सबके साथ न रखना । १० किसी स्थान से हटाना, दूर करना ।

टाळमटूळ, टाळमटोळ-स्त्री० हीला, हवाला-इन्कार करने का भाव । बहाना ।

टाळसी (बो)-वि० (स्त्री० टाळमी, टाळवी) १ चुनिंदा, विशिष्ट । २ छांट हाथ ।

टाळपोळी-देखो 'टाळमटोळ' ।

टाळी-स्त्री० १ पशुओं के गले में बांधी जाने वाली घंटी । २ देखो 'टाली' ।

टाली-स्त्री० १ गिलहरी । २ वृद्ध गाय ।

टालउ, टाली-पु० १ टालने की क्रिया या भाव । २ निवारण करने की क्रिया या भाव । ३ व्यतीत करने की क्रिया या भाव । ४ इन्कार । ५ रुकावट या बचाव की क्रिया या भाव । ६ निवारण करना । ७ दूर रहने या बचने की

क्रिया या भाव । ८ अलगवा । ९ चमत्कार पूर्ण एक खेल । १० देखो 'टाली' ।

टाली-पु० १ वृद्ध व निर्बल बेल । २ ऊंट पर लदा ईंधन का गट्ठर ।

टाबळ-स्त्री० घोड़ी ।

टावाटेबो-पु० विशेष अवसर ।

टावो-पु० १ विशेष अवसर । २ समय, मौका । ३ भृत्य भोज ।

टाहुली-स्त्री० टहल करने वाली, परिचायिका, दासी ।

टिचर-पु० १ पत्थर गढ़ने का औजार । २ धाव पर लगाने की एक तरल औषधि ।

टिमची टिवची-देखो 'तिमची' ।

टि-स्त्री० १ पैदा । २ देवता । ३ हथिनी । ४ पुतलीवर । ५ पृथ्वी । ६ क्षमा । -वि० १ जिद्दी । २ बहुत ।

टिकड़िणी-१ देखो 'टिकड़' । २ देखो 'टिकड़ी' ।

टिकड़ी-स्त्री० टिकिया ।

टिकड़ो-पु० एक आभूषण विशेष ।

टिकटिक-स्त्री० १ घड़ी आदि के चलने की आवाज । २ देखो 'किचकिच' ।

टिकटिकी-देखो 'टिकटकी' ।

टिकणी (बो)-क्रि० १ किसी आधार पर ठहरना, टिकना । २ ठहरना, रुकना । ३ बसना । ४ सतह या आधार को छूना । ५ बना रहना । ६ थमना, रुकना, ठहरना । ७ पैदे में जमना । ८ रुक रहना । ९ मार पड़ना ।

टिकाई-स्त्री० १ टिकाने की क्रिया या भाव । २ टिकाने की मजदूरी ।

टिकाउ (ऊ)-वि० कई दिन काम में आने लायक, मजबूत, दृढ़ ।

टिकाली (बो)-क्रि० १ किसी आधार पर ठहराना, टिकाना । २ ठहराना, रोकना, थमाना । ३ बसाना । ४ सतह या आधार को छुपाना । ५ बनाये रखना । ६ रुक रखना । ७ मारना, पीटना ।

टिकाव-पु० १ ठहराव, पड़ाव । २ टिकने की क्रिया या भाव । ३ धर्म । ४ रुकने का स्थान । ५ स्थाइत्व । ६ स्पर्श । ७ दृढ़ता, मजबूती ।

टिकंत-देखो 'टीकायत' ।

टिकोर, टिकोरियी-पु० १ वाद्य ध्वनि । २ देखो 'टंकोरी' ।

टिकोरी-स्त्री० १ बड़ई का एक औजार । २ देखो 'टंकोरी' ।

टिकोरी-देखो 'टंकोरी' ।

टिक्कड़-पु० १ मोटी रोटी । २ मोटा वस्त्र । -वि० मोटा, दृढ़, मजबूत ।

टिंगटी-स्त्री० जल पात्र रखने की तिपाई ।

टिंगस-पु० [मं० टिकट] यात्री टिकट ।

टिचकारणी

(४१४)

टीकी

टिचकारणी (बो)—क्रि० १ मुंह से टिच या किच की ध्वनि करना । २ उसी ध्वनि से पशुओं को हांकना, इन्कार करना, आश्चर्य व्यक्त करना, पर्दानशील औरतों द्वारा संकेत देना । टिचकारी, टिचकारी, टिचटिच—पु० मुंह से की जाने वाली टिच या किच की ध्वनि, संकेत ।
 टिचगळी—स्त्री० हाथ की सबसे छोटी अंगुली कनिष्ठा ।
 टिपिभ, टिटिहो, टिटिभ—देखो 'टींटीडी' ।
 टिड्डी—देखो 'तीड' ।
 टिण्ण—स्त्री० चिता, जिम्मेदारी ।
 टिप—देखो 'टप' ।
 टिपकी—देखो 'टपकी' ।
 टिपटिप—स्त्री० १ बूंद-बूंद टपकने की क्रिया । २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।
 टिपण (णी)—स्त्री० काव्य आदि की टीका, व्याख्या ।
 टिपली, टिपली—पु० मस्तक, खोपड़ी ।
 टिपस—स्त्री० उपाय, युक्ति ।
 टिपुड़ी, टिपुड़ी—पु० (स्त्री० टिपूड़ी) छोटा बच्चा, बालक ।
 टिपी—पु० १ गायन । २ देखो 'टिप्पी' ।
 टिप्पस—देखो 'टिपस' ।
 टिप्पी—पु० १ अंदाज से कही हुई बात । २ संकेत । ३ याददास्त के लिए लिखकर रखी जाने वाली इबारत । ४ सांकेतिक लिखावट । ५ गेंद आदि की जमीन से टकराकर उछलने की क्रिया । ६ शुभ संयोग । ७ एक रागिनी । ८ बूंद, कतरा । ९ भौका, झूला ।
 टिमकी—स्त्री० बिन्दी ।
 टिमची—स्त्री० तिपाई । जल पात्र रखने की तिपाई ।
 टिमटिमाणी (बो)—क्रि० मन्द प्रकाश देना, झिलमिलाना ।
 टिरड़ी—वि० १ घमंडी, अभिमानी । २ सनकी । —स्त्री० १ सनक । २ गर्व ।
 टिरणी (बो)—क्रि० लटकना, लुंबना ।
 टिसायत—देखो 'टीकायत' ।
 टिलो, पिल्लो—पु० धक्का, टक्कर, भटका ।
 टिबची—देखो 'टिमची' ।
 टींगण, टींगणयो, टींगणी—देखो 'टींगणी' ।
 टींगणी (बो)—क्रि० किसी चीज के लिए खड़े-खड़े तकना, लालायित होना । दीन होना ।
 टींगर, टींगरिणी—पु० बाल-बच्चे, संतान । —टीळी—स्त्री० बाल-बच्चों का समूह ।
 टींगा-टीळी—देखो 'टींगाटीळी' ।
 टींगाणी (बो), टींगावणी (बो)—क्रि० कोई वस्तु दिखा-दिखा कर ललचाना, लालायित करना ।
 टींच रणी० लड़ाई, युद्ध ।

टीचणी—पु० पशु के पिछले पैर का संधिस्थान ।
 टीचणी (बो)—क्रि० लड़ना, युद्ध करना ।
 टीट—स्त्री० पक्षी का विण्टा, बीट ।
 टींटीडी, टींटीडी, टींटीहड़ी—स्त्री० [सं० टिटिभः] जल के पास रहने वाली बड़ी चिड़िया, टिटहरी ।
 टींडरी, टींडसी, टींडसी, टींडी, टींडो—पु० सच्ची बनाने का गेंद के आकार का एक लता फल ।
 टींडू—पु० काले रंग का एक वृक्ष विशेष ।
 टींवणी (बो)—देखो 'टीगाणी' (बो) ।
 टींवाणी (बो)—देखो 'टीगाणी' (बो) ।
 टी—पु० १ आकाश । २ बादल । ३ पर्वत । —स्त्री० ४ पृथ्वी । ५ गर्दन । ६ हानि ।
 टीकड़ी—१ देखो 'टिकड़ी' । २ देखो 'ठीकरी' ।
 टीकणी (बो)—क्रि० टीका लगाना, तिलक करना ।
 टीकम (मो)—पु० [सं० त्रिविक्रम] १ वामनावतार । २ विष्णु । ३ एक राजा विशेष । ४ श्रीकृष्ण ।
 टीकर—पु० बबूल का वृक्ष ।
 टीकली-कमेड़ी—स्त्री० १ मुखिया व्यक्ति । २ दक्ष, प्रवीण । ३ पंच ।
 टीकली—पु० (स्त्री० टीकली) १ शिर पर टीके वाला बैल । २ सफेद चिल्लों वाला पशु । —वि० तिलकधारी ।
 टीका—स्त्री० किसी काव्यादि की व्याख्या, भाषा, सरल भावार्थ, अर्थ ।
 टीकाइत, टीकाई, टीकाईत—देखो 'टीकायत' ।
 टीकाकार—पु० टीका करने वाला, व्याख्या करने वाला ।
 टीका-बोड़—स्त्री० नए राजा के गद्दी पर बैठने ही पड़ोसी राज्य पर हमला करने की रणम ।
 टीकायत—पु० १ राज्य का उत्तराधिकारी । २ ज्येष्ठ पुत्र । ३ पट्ट शिष्य, महंत का उत्तराधिकारी । ४ तिलकधारी । ५ मुखिया, प्रधान, नेता ।
 टीकाळ—वि० १ जिसके भाल में तिलक हो । २ देखो 'टीकायत' ।
 टीकी—स्त्री० १ गोल बिन्दु, विंदी । २ भाल का छोटा गोल टीका । ३ ललाट पर गोल टीके वाली गाय या भैंस । ४ एक लोक गीत विशेष । ५ स्त्रियों के ललाट पर धारण करने का एक आभूषण विशेष ।
 टीकंत—देखो 'टीकायत' ।
 टीकौ—पु० १ ललाट या शरीर पर चंदन, रंगी आदि का चिह्न, तिलक । २ मंगनी के समय कन्या पक्ष की ओर से दूल्हे की दी जाने वाली भेंट । ३ राजतिलक । ४ राज सिंहासन । ५ ललाट का मध्य भाग । ६ स्त्रियों का एक आभूषण ।

७ पुरुषों की पगड़ी में बांधने का आभूषण विशेष । ८ घोड़े का भाल जहाँ संवरी या चिह्न होता है । ९ हैजे आदि रोगों के बचाव हेतु लगाई जाने वाली औषधि की सुई । १० मृतक के पीछे बारहवें दिन को संबंधियों द्वारा दिया जाने वाला रुपया, वस्त्रादि सामान । ११ राजा, अधिपति । १२ राज सिंहासन पर बैठने पर पड़ोसी राजा द्वारा दिया गया बघाई का संदेश ।

टीवियो-पु० १ हल्का घाव । २ घाव, चोट आदि का निशान ।

टीटण-स्त्री० एक प्रकार का छोटा जानवर ।

टीटण, टीटो, टीटू-देखो 'टीटोड़ी' ।

टीड, टीडी-देखो 'नीड' ।

टीडो-मलकी-पु० स्त्रियों के भाल का एक आभूषण विशेष ।

टीप-स्त्री० १ दीवार आदि में पत्थरों को जोड़ने के लिये लगाया जाने वाला चूने, सीमेंट का मसाला । २ पुराने मकान की मरम्मत । ३ चूने की पिटाई । ४ गाने का ऊंचा स्वर तान, अलाप । ५ चंदे का घन । ६ चंदा देने वालों की नामावली । ७ खर्च का व्योरा । ८ याददाश्त के लिये की जाने वाली लिखावट । ९ संमीत का स्वर विशेष । १० वाद्य ध्वनि । -वि० अत्यधिक ठण्डा । -टाप-स्त्री० तैयारी, सजावट । दिखावटी शृंगार । मरम्मत । -वि० सडा हुआ, तैयार, पूर्ण ।

टीपणी-स्त्री० १ चंदे की सूची । २ देखो 'टिपणी' ।

टीपणी-पु० [सं० टिप्पनकम्] तिथि-पत्रक, पंचांग ।

टीपणी(बो)-क्रि० लिखना, अंकित करना । टांकना ।

टीपर, टीपरियो, टीपरी, टीपरी-पु० घी, तेल दूध आदि लेने का उपकरण जिसके खड़ा डंडा बना होता है ।

टीपाटोव-वि० १ पूर्ण भरा हुआ, लबालब । २ शौकीन ।

टीबर, टीबरण, टीबरणी-स्त्री० १ एक वृक्ष विशेष जिसके पत्तों की बीड़ियां बनती हैं । २ एक पौधा जिसकी पत्तियां औषधि के काम आती हैं ।

टीबरी-पु० १ फूटा हुआ मिट्टी का जल पात्र । २ देखो 'टीबर' ।

टीबी-स्त्री० १ क्षय रोग । २ छोटा टीबा । ३ एक देश का नाम ।

टीबी-पु० १ बालू का पहाड़नुमा ढेर । २ रेगिस्तानी पहाड़ी ।

टीभक-स्त्री० खरगोश के शिकार में काम आने वाली कावड़ ।

टीभर, टीभरओ-पु० लकड़बग्घा ।

टीभल-पु० कार्य, कान कृत्य ।

टीली-स्त्री० १ बिन्दी, तिलक । २ एक प्रकार का आभूषण । ३ गिलहरी ।

टीलु (लू)-देखो 'टीली' ।

टीलीड़ी-स्त्री० गिलहरी ।

टीली-पु० १ ढेर, टीबा । २ बालू का ढेर । ३ राजतिलक । ४ अगवानी । ५ तिलक, टीका । ६ एक प्रकार का आभूषण ।

टीवरणी (बो)-देखो 'टींगणी' (बी) ।

टीस-स्त्री० १ तीव्र दर्द, कसक, पीड़ा । २ दर्द भरी आवाज, चीख ।

टीसणी (बो)-क्रि० १ तीव्र दर्द, होना, कसकना । २ दर्द में चीखना, कराहना ।

टीसी-स्त्री० १ चोटी, शिखर, शिरा । २ टहनी । ३ नाक का अग्रभाग ।

टुंकार-देखो 'टोकार' ।

टुंगरी, टुंगरी-वि० तुनक मिजाज, चिड़चिड़ा ।

टुंटी-देखो 'टूटी' (स्त्री० टूटी) ।

टुंडी-स्त्री० [सं० ठुण्डी] १ छोटी । २ नाभि । ३ देखो 'तूंडी' ।

टु-पु० १ हाथ । २ सुहागा । ३ मुर्गा । ४ मुकुट । ५ चोटी । ६ सुदर्शन चक्र ।

टुक-वि० १ किंचित, थोड़ा, न्यून । २ देखो 'टक' । ३ देखो 'टूक' । ४ देखो 'टुकी' ।

टुकड़-१ देखो 'टिक्कड़' । २ देखो 'टुकड़ी' ।

टुकड़गवाई-स्त्री० भीख मांगने का कार्य ।

टुकड़गवौ, टुकड़तोड़-पु० १ मिखारी । २ रिश्वतखोर । ३ केवल उदर पूर्ति का ध्यान रखने वाला । ४ मुफ्त की खाने वाला ।

टुकड़ी-स्त्री० १ कर्धे से बुना एक मोटा कपड़ा । २ मांस रखने का बर्तन । ३ सेना का एक दल, भाग । ४ छोटा खेत ।

टुकड़ेल, टुकड़ैल-वि० १ भिखारी । २ रिश्वतखोर । ३ खिलाने वाले का पसधर ।

टुकड़ौ-पु० [सं० स्तोक] १ खण्ड, टुकड़ा । २ अंश, भाग । ३ रोटी का कोर । ४ रिश्वत का पैसा ।

टुकड़क, टुकड़क-वि० १ थोड़ामा, तनिक । २ क्षण या निमिष मात्र ।

टुकरी-स्त्री० रोटी ।

टुकिया, टुकी-स्त्री० स्त्रियों के उरोज पर रहने वाला चोली का भाग ।

टुक्कड़-१ देखो 'टिक्कड़' । २ देखो 'टुकड़ी' ।

टुग-देखो 'टुक' ।

टुगटुग-क्रि० वि० धीरे-धीरे चलते हुए ।

टुगमुग-क्रि० वि० एक टक देखते हुए ।

टुगर-स्त्री० स्थिर दृष्टि से देखने की क्रिया या भाव ।

टुचकार-देखो 'टिचकारी' ।

टुचकारणी (बो)-देखो 'टिचकारणी' (बी) ।

हचको, हचियो-वि० १ छोटे कद का, नाटा । २ तुच्छ माधारण । ३ मोझे स्वभाव का ।
 हच्चापण (पणी)-पु० मोछापन, नीचता, धूर्तता ।
 हचो-वि० चालाक, धूर्त, नीच ।
 हटहूँ-स्त्री० फारूता नामक पक्षी की बोली ।
 हणहणाट, हणहणाहट, (टी) स्त्री० १ वकवाद । २ टन्-टन् ध्वनि । ३ तुनतुनाहट ।
 हणणी-स्त्री० एक वाद्य विशेष ।
 हणियो-देखो 'हणी' ।
 हबकियो-पु० १ मिट्टी का छोटा जल-पात्र । २ छोटी डलिया, टोकरी ।
 हरण-स्त्री० आवेग, क्रोध ।
 हराणी (बो)-कि० १ रवाना होना, जाना । ३ लालायित होना, तकना । ३ चलना । ४ गिरना, ध्वस्त होना । ५ खिसकना ।
 हराणी (बो)-कि० १ रवाना करना, भेजना । ३ लालायित करना, तकना । ३ चलाना । ४ गिराना, ध्वस्त करना । ५ खिसकाना ।
 हळ-वि० पृथक, अलग, विलग ।
 हळक-स्त्री० गुदगुदी (मेवात) ।
 हळकणी (बो)-कि० १ मंद गति से चलना । २ धीरे से खिसकना, जाना । ३ इधर-उधर घूमना, फिरना । ४ टपकना, छलकना । ५ अस्थिर या चंचल होना ।
 हळकाणी (बो)-कि० १ मंदगति से चलाना । २ धीरे से खिसकाना, भेजना । ३ इधर-उधर घुमाना, फिराना । ४ टपकाना, छलकाना । ५ अस्थिर या चंचल करना ।
 हळणी(बो)-कि० १ पीछे-पीछे जाना । २ देखो 'हळकणी' (बो) ।
 हळणी (बो)-कि० १ पीछे-पीछे रवाना करना । २ देखो 'हळकणी' (बो) ।
 हसी-स्त्री० स्त्रियों के गले का एक आभूषण ।
 हूँ-स्त्री० ध्वनि विशेष ।
 हूँक-पु० १ पर्वत की चोटी । २ शिखर । ३ छोटा टांका, सिलाई ।
 हूँकनी-पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।
 हूँकनी-स्त्री० छोटी पहाड़ी ।
 हूँकियो, हूँक्यो-पु० १ निगरानी करने के लिए बैठने का ऊंचा स्थान । २ ऐसे स्थान पर बैठकर निगरानी करने वाला व्यक्ति । ३ इस कार्य का पारिश्रमिक । ४ भालू, रोछ ।
 हूँच-स्त्री० [सं० श्रोटी] १ चौच । २ नोक, अंगी । ३ देखो 'हूँचकी' ।
 हूँचकी-पु० १ किसी वस्तु का तीक्ष्ण भाग । २ छोटा काष्ठ खण्ड । ३ फल या पत्ते के साथ लगा डण्डल ।
 हूँचणी (बो)-देखो 'टांचणी' (बो) ।

हूँचरी-स्त्री० हथौड़े के समान एक मीजार विशेष ।
 हूँट-स्त्री० १ हाथ-पांवों में होने वाला एक वात रोग । २ इस रोग के कारण हाथ-पैरों में होने वाला मोड़ । ३ एहसान, आभार । ४ फोग वृक्ष का एक रोग । ५ तकल ।
 हूँड-१ देखो 'हूँटो' । २ देखो 'हूँटो' ।
 हूँटो-स्त्री० [सं० श्रोटी] १ पानी के तल के आगे लगा उपकरण । २ जल-पात्र आदि के लगी मलिका ।
 हूँटो, हूँट्यो-वि० (स्त्री० हूँटो) १ वात रोग से मुड़े हुए हाथ-पांव वाला । २ हाथों में अशक्त । ३ बिना हाथों का ।
 हूँड-देखो 'तुँड' ।
 हूँडाळ, हूँडाहळ-पु० [सं० तुण्डम्] सूअर, वराह ।
 हूँडो-१ देखो 'तुँडो' । २ देखो 'तुँडो' ।
 हूँडो-पु० पैदा, तल ।
 हूँपणी (बो)-कि० १ गला घोटना । २ फांसी देना । ३ गले में फंदा डाल कर कसना । ४ किसी कार्य के लिए मजबूर करना ।
 हूँपियो हूँपी-पु० १ फांसी । २ गला घोटने की क्रिया या भाव । ३ गला घोट कर की जाने वाली आत्महत्या । ४ खाते समय गले में खाना अटकने से होने वाला कष्ट । ५ एक कंठाभरण विशेष । ६ श्वास अवरोधन ।
 हूँस-स्त्री० १ आभूषण, गहना । २ हंसी-मजाक । ३ तकल ।
 हूँ-पु० १ वाहन । २ गणेश । ३ डर, भय । ४ भार, बोझा । -स्त्री० ५ दौड़ । ६ मारवाड़ । ७ छाया ।
 हूँक-पु० [सं० स्तोक] १ खण्ड, टुकड़ा । २ देखो 'हूँक' । -कि० वि० टूटना हुआ ।
 हूँकड़-१ देखो 'टुकड़ी' । २ देखो 'हूँक' ।
 हूँकियो, हूँक्यो, हूँक्यो-पु० १ जोर से पुकारने के लिए किया जाने वाला शब्द । २ देखो 'हूँकियो' ।
 हूँक-एक प्रकार का वस्त्र ।
 हूँट-स्त्री० १ खण्डन, खण्डित होने की क्रिया । २ टूटा हुआ भाग, खण्ड । ३ विच्छेद । ४ जब कोई कम न हो । ५ टूटन ।
 हूँटणी (बो)-कि० [सं० ब्रूट] १ खण्ड-खण्ड या टुकड़े होना । २ खण्डित होना । ३ विभक्त होना । अलग होना । ४ विच्छेद होना । ५ क्रम भंग होना । ६ शरीर का अंग उखड़ना । ७ जोड़ ढीला पड़ना । ८ निष्क्रिय होना, बेकार होना । ९ शरीर में दर्द होना । १० कमजोर या अशक्त होना । ११ भयट कर आक्रमण करना । १२ दरिद्र होना । १३ क्षय होना । १४ विक्षेप होना, व्यवधान पड़ना । १५ स्थानच्युत होना ।

हटोड़ी, हटो-वि० (स्त्री० हटोड़ी) १ भग्न, खण्डित, उखड़ा हुआ ।

२ अशक्त । ३ श्रुत । —फूटो-वि० भग्न, खण्डित ।

हपी-देखो 'हूँपी' ।

हूर-पु० १ अधिक बच्चे । २ बहुत अधिक अफीम खाने वाला, अफीमचो । —वि० १ अतिवृद्ध । २ मूर्ख ।

हूळियो, हूळो-पु० तनेदार करील का वृक्ष ।

हें-स्त्री० १ एक ध्वनि । २ तोते की बोली । ३ बकवाद, बकभक्त ।

हेंकिका-स्त्री० [सं०] तान का एक भेद ।

हेंकी-स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का नृत्य । २ शुद्ध राग का एक भेद ।

हेंगण-पु० १ ऊंट । २ देखो 'टिंगण' ।

हेंट-पु० १ गर्व, अभिमान । २ करील वृक्ष का फल ।

हेंटवो, हेंटुवो, हेंटुवो-पु० गर्दन के आगे उपरी हुई ग्रंथि । स्वरयंत्र ।

हेंलवो, हेंलवो-देखो 'हेंलवो' ।

हे-स्त्री० १ स्त्री । २ पक्षी ।

हेक-स्त्री० १ हठ, जिद्द । २ प्रण, प्रतिज्ञा, मर्यादा । ३ मान, प्रतिष्ठा । ४ गीत या पद की टेर । ५ आश्रय, अवलम्बन ।

हेकणी (बो)-क्रि० १ तन्मय करना, मग्न करना । २ स्थित करना, ठिकाना । ३ अन्दर डालना, घुसाना, पैठाना । ४ हाथ की वस्तु गिराना, फेंकना । ५ एक वस्तु में दूसरी डालना, छोड़ना । ६ कार्य भार डालना, जिम्मे छोड़ना थोपना । ७ लगाना, उपयोग करना । ८ सहारा लेना, आश्रय लेना । ९ आधार पर रखना, टहराना । १० देखो 'टिकाणी' (बो) ।

हेकर, हेकरी-स्त्री० छोटी पहाड़ी ।

हेकळी-वि० १ रद्द प्रतिज्ञा । २ प्रण निभाने वाला । ३ भान-बान वाला । —पु० बड़ी जूँ ।

हेको-पु० १ बड़ा व मोटा रससा । २ आवेष्टन, बंधन । ३ साहस, सहारा । ४ देखो 'टांकी' । ५ देखो 'टैकी' ।

हेगड़ियो, हेगड़ी-पु० (स्त्री० हेगड़ी) कुत्ता, श्वान ।

हेटुवो-देखो 'हेंटुवो' ।

हेटूणी-पु० वर्तन विशेष ।

हेडो-वि० (स्त्री० हेडी) १ जो सीषा न हो, टेढ़ा, बक्र । २ कुटिल । ३ किसी ओर झुका हुआ । ३ तिरछा । ४ मुश्किल, कठिन, पेचीदा । ५ अड़ियल, उद्दण्ड, उग्र ।

हेड-स्त्री० १ वक्रता टेढ़ापन । २ तिरछापन । ३ कुटिलता । ४ मुश्किल, कठिनाई । ५ उद्दण्डता, उग्रता । — विडंगो, वेडंगो-वि० टेढ़ा-मेढ़ा, वेडंगा, वेडोल ।

हेडार्ई, हेडारण-स्त्री० टेढ़ापन, वक्रता ।

हेडी-देखो 'हेडी' । (स्त्री० हेडी)

हेणो (बो)-क्रि० चूल्हे पर चढ़ाना ।

हेपो-वि० मुड़ा हुआ (कान) ।

हेपो-पु० सूअर का बच्चा, छोटा सूअर ।

हेर-स्त्री० १ शब्द, आवाज । २ बुलाने की ऊंची आवाज । ३ गाने का ऊंचा स्वर । ४ पुकार, प्रार्थना । ५ रट । ६ गाने या पद की पहली पंक्ति जो बार-बार गाई जाती हो ।

हेरणी (बो)-क्रि० १ शब्द करना, आवाज करना । २ ऊंची आवाज से किसी को पुकारना । ३ बुलाना । ४ प्रार्थना करना । ५ रटना, रट लगाना । ६ ऊंचा स्वर लगाना, तान लगाना । ७ लटकाना ।

हेरो-पु० गाढ़े द्रव पदार्थ की दूँद । —वि० १ मूर्ख, मूढ़ । ऐंचाताना, मैगा ।

हेव-स्त्री० [सं० स्थापयति] १ आदत, बान । २ अभ्यास । ३ प्रकृति, स्वभाव । ४ प्रथा, रीति । ५ देखो 'टेक' ।

हेवकी-स्त्री० १ एक मात्र सहारा । २ मदद, सहायता । ३ प्रोत्साहन का भाव । ४ द्वार के चौड़े पत्थर के नीचे का पत्थर । ५ किसी वस्तु के लिये लगाया जाने वाला सहारा ।

हेवकी-पु० सहारा ।

हेवटियो, हेवटो-देखो 'तेवटो' ।

हेवाटेज-पु० आश्रय, सहारा ।

हेवो-पु० [सं० टिप्पन] जन्म, लग्न, राशि आदि का पत्र, जन्म-पत्रिका ।

हेसू-पु० [सं० किमुक] पलाश या ढाक का फूल ।

हेंगण, हेंगणियो-पु० १ टट्टू । २ देखो 'टिंगणी' ।

हेंगणी-वि० (स्त्री० हेंगणी) १ छोटे कद का, ठिगना, नाटा, बीना । २ देखो 'टिंगण' ।

हेंगार-स्त्री० मद, अहंकार, गर्व ।

हेंगारी-वि० अहंकारी, गविला ।

हेंवण-देखो 'टिंगण' ।

हेंटो-पु० १ वट वृक्ष या पीपल वृक्ष का फल । २ कच्ची ककड़ी ।

हें-पु० १ भाई का लड़का, भतीजा । २ आकाश, नभ । ३ घन, द्रव्य । ४ भोजन, भक्षण । ५ शत्रु, दुश्मन । ६ ग्रंथा प्राणी । ७ पुत्र का पुत्र, पौत्र ।

हेंगियो-पु० १ वर्तन विशेष । —वि० १ नाटा, बीना । २ देखो 'टिंगणी' ।

हेंणी-स्त्री० पेड़ आदि की टहनी, शाखा ।

हेंणी-वि० (स्त्री० हेंणी) १ बीना, नाटा, ठिगना । २ देखो 'टिंगणी' । ३ देखो 'टिंगणी' ।

हेंर-पु० १ शिर, मस्तक (मेवान) । २ देखो 'टेंर' ।

टंरकी-पु० १ किसी विशेष बात का संकेत । २ तखरा ।
 ३ तमक-रमक । ४ व्यंग्य वाक्य, कटु प्रत्येक । ५ गर्व,
 अभिमान । ६ गुस्सा, क्रोध । ७ ठसक ।
 टेंल-देखो 'टहल' ।
 टेंलणी (बी)-क्रि० १ वायु सेवन के लिए घूमना । २ शीकिया
 घूमना, फिरना ।
 टेंलदार-देखो 'टहलदार' ।
 टेंलघो. टेंलियौ-पु० लोकर, चाकर, सेवक, टहलुवा ।
 टोंक-पु० तलवार का सबसे नीचे का तुकीला भाग ।
 टो-पु० १ नारियल । २ लगन । ३ चंपक । ४ चोटी ।
 ५ दांत । ६ गुरु ।
 टो'-देखो 'टोह' ।
 टोक-स्त्री० रोक, मनाही, नियंत्रण, चौकसी ।
 टोकणी. टोकणी-पु० धातु का बना एक बर्तन विशेष ।
 टोकणी (बी)-क्रि० १ मना करना, निषेध करना । २ कुछ
 करने में रोकना । ३ विरोध करना । ४ चौकसी करना ।
 टोकर-पु० १ आभूषण विशेष । २ देखो 'टोकरी' ।
 टोकरियौ-पु० १ आरती करने का छोटा घंटा, कीर घंटा ।
 २ देखो 'टोकरी' ।
 टोकरी-स्त्री० १ बड़े तालाब के समीपस्थ थोड़ी सी जमीन ।
 २ खपचियों की डलिया, छाब । ३ डलिया ।
 टोकरी-पु० १ बांस आदि की खपचियों का बना डलियानुमा
 बड़ा पात्र । टोकरा । छबड़ा । २ देखो 'टोकरी' ।
 टोकळ (खी)-पु० १ बड़ी जू । २ किसी विशिष्ट व्यक्तित्व के
 प्रति व्यंग्य । -वि० मूर्ख ।
 टोकार-स्त्री० कुण्डित, नजर । दृष्टिदोष ।
 टोकी-स्त्री० शिखर, चोटी ।
 टोगड़, टोगड़ियौ, टोगड़ी, टोघड़, टोघड़ियौ, टोघड़ी-पु०
 [गं० लोक] (स्त्री० टोगड़ी) गाय का बछड़ा । -वि०
 मूर्ख, मंदार ।
 टोचकी-पु० १ अंगुलियों के जोड़ पर किया जाने वाला प्रहार ।
 २ व्यंग्य, टोंट । ३ शिर, मस्तक । ४ देखो 'टूचकौ' ।
 टोट-वि० १ हूँट-पुँट, शक्तिशाली । २ देखो 'टोटी' ।
 टोटकी-पु० १ किसी व्याधि की रोकथाम के लिए किया जाने
 वाला तांत्रिक प्रयोग । २ जादू-टोना ।
 टोटह-पु० पक्षी विशेष (मेवात) ।
 टोटली-पु० भुना हुआ चना ।
 टोटी-स्त्री० [सं० टोटी] स्त्रियों का कर्णाभूषण । -भूमर.
 भूमरी-स्त्री० उक्त आभूषण में संलग्न करने का अन्य
 आभूषण । -सांकळी-स्त्री० आभूषण विशेष ।
 टोटी-पु० [सं० टांटी] १ घाटा, हानि । २ अभाव, कमी ।
 ३ शहनाई से मिलता-जुलता एक वाद्य विशेष ।

टोड-पु० १ ऊंट । २ युवा मादा ऊंट ।
 टोडकी, टोडड़ी-स्त्री० १ मादा, ऊंट । २ ऊंट का मादा
 बच्चा ।
 टोडड़ी-पु० १ युवा ऊंट । २ ऊंट का बच्चा । ३ देखो 'टोडी' ।
 टोडती-स्त्री० ऊंट का मादा बच्चा ।
 टोडर-पु० १ हाथी । २ पुरुष के पावों के स्वर्णाभूषण विशेष ।
 टोडरमल (स्ल)-पु० एक लोक गीत ।
 टोडरू-पु० पक्षी विशेष (मेवात) ।
 टोडरी-पु० स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष ।
 टोडियौ-पु० ऊंट का बच्चा ।
 टोडी-स्त्री० १ एक रागिनी विशेष । २ कूए पर लगी पत्थर
 विशेष । ३ दीवार आदि में चुने पत्थर का बाहर निकला
 हिस्सा । ४ देखो 'टोड' ।
 टोडी-पु० १ छज्जे से सहारे का ऊंचा उठा हुआ भाग ।
 २ कच्चे मकान की दीवार का ऊंचा उठा हुआ भाग ।
 ३ मकान के द्वार पर आड़ के लिये बनाई गई दीवार ।
 ४ जमीन की सरहद का पत्थर । ५ घोड़े के मुख के
 आकार का बना लकड़ी का उपकरण ।
 टोली (बी)-क्रि० १ आंखों में अंजन डालना । २ संवारना ।
 ३ देखो 'टोहली' (बी) ।
 टोनी-पु० जादू-टोना, तांत्रिक क्रिया ।
 टोप-पु० [सं० टुप्] १ शिरत्राण । २ शिर की टोपी ।
 ३ तत्त्व पदार्थ की बूंद ।
 टोपरी-पु० फल विशेष ।
 टोपली-स्त्री० १ डलिया, टोकरी । २ देखो 'टोपी' ।
 टोपली-पु० १ बड़ा टोकरा । २ देखो 'टोप' ।
 टोपसी-देखो 'टोपाळी' ।
 टोपाळी-स्त्री० नारियल की जटा के नीचे के शक्त भाग की
 कटारी ।
 टोपियौ-पु० १ बर्तन विशेष । २ देखो 'टोपी' ।
 टोपी-स्त्री० १ शिर पर धारण करने का टोपा, छोटा टोपा ।
 २ अनाज के दानों पर होने वाला छिलका । ३ कटोरी
 नुमा कोई आवरण । ४ बन्दूक का पटाखा । ५ लिंग का
 अग्र भाग । ६ विष्णु मूर्ति के शिर का आभूषण, मुकुट ।
 टोपी-पु० १ शिर पर मे कान तक ढकने का वस्त्र विशेष, टोप ।
 २ शिरत्राण । ३ रहट के स्थंभ के नीचे लगा लोहे का
 टुकड़ा । ४ तरल पदार्थ की बूंद । ५ देखो 'टोपी' ।
 ६ खण्ड, टुकड़ा ।
 टोप-स्त्री० १ आंख का गिछला छोर । २ चोटी, शिखर ।
 ३ देखो 'टोह' ।

टोयो-पु० १ स्त्री की योनि के मध्य का उभरा भाग । २ खंराद की लकड़ी में लगी लोहे की कील । ३ ऊपरी शिरा ।
 टोर-स्त्री० कटारी ।
 टोरड़ियो, टोरड़ो-देखो 'टोड़ियो' ।
 टोरणो (बो)-क्रि० १ पद चिह्नों को पहचानना । २ पद चिह्नों के आधार पर चोर का पीछा करना । ३ देखो 'टोळणो' (बो) ।
 टोराबाज-वि० डोंग हांकने वाला गप्पी ।
 टोरियो, टोरी-पु० १ डोंग, गप्प । २ भावावेश में कही बात । ३ असत्य बात । ४ गेंद आदि के लगाई जाने वाली चोट ।
 टोळ (ल)-पु० [सं० प्रतोली] १ निवास स्थान, घर । २ बड़ा पत्थर । ३ सम्पूर्ण जाति का एक राग । ४ पिशाच । ५ देखो 'टोळी' ।
 टोळगड-स्त्री० [सं० टोलगति] वंदना संबंधी एक दोष । (जैन)
 टोळणी (बो)-क्रि० चलने के लिए प्रेरित करना, हांकना ।
 टोळाटोळ-स्त्री० भोड़-भाड़ ।

टोळी-स्त्री० १ दल, झुण्ड, समुदाय । २ पंक्ति, कतार ।
 टोळू, टोळो-पु० १ झुण्ड, समूह । २ संघ, गुट । ३ एक ही जाति के पशुओं का झुण्ड । ४ घर । ५ बड़ा पत्थर । -वि० सुख, गवार ।
 टोबण-स्त्री० ऊंट की नाक में लगी लकड़ी के बंधा सूत का फंदा ।
 टोबारव-पु० ध्वनि विशेष ।
 टोवाळी-देखो 'टवाळी' ।
 टोह-स्त्री० १ ध्यान । २ सजगता । ३ तकन, ताक । ४ खोज, तलाश । ५ पता, खबर । ६ स्रोत ।
 टोहणो (बो)-क्रि० १ दर्द के स्थान पर सेक करना । २ गर्म पानी का सेक करना । ३ दर्द वाले स्थलों पर आक का दूध लगाना ।
 टोत-स्त्री० [सं० तमसा] अयोध्या के पास की छोटी नदी ।
 टो-पु० १ छत्र । २ बैल । ३ समुद्र । ४ पुरुष । ५ दावानल । ६ नीति ।
 टिड्यास-वि० [सं० स्थितिका] स्थिति वाली । (जैन)

-४-

ठ-देव नागरी वर्णमाला का बारहवां वर्ण ।
 ठ-पु० १ शरद । २ पानी । ३ मदिरा । ४ अमृत । ५ बंसत । ६ छिद्र । -वि० निर्मल, स्वच्छ ।
 ठ-वि० [सं० स्थाणु] सूखा हुआ, शाखाओं रहित । -पु० सूखा पेड़ ।
 ठंठा-स्त्री० मूर्खता । -पाल-वि० मूर्ख, गवार ।
 ठंठाणो (बो)-क्रि० १ दूसरे का माल हड़पना । २ वस्त्रादि धारण करना ।
 ठंठारी-स्त्री० जुधाम, ठंड, सर्दी ।
 ठंठियो-पु० सूखी लकड़ी, पेड़ी मात्र ।
 ठंठेरणो (बो)-क्रि० १ भटकना । २ हल्की-हल्की, चोटें मारना, प्रहार करना । ३ हिलाना ।
 ठंठेरी-देखो 'ठंठारी' ।
 ठंठेरणो (बो)-देखो 'ठंठेरणो' (बो) ।
 ठंठी-देखो 'ठंड' ।
 ठंठ-स्त्री० १ शीत, सर्दी, जाड़ा । २ शीतकाल ।
 ठंठक-स्त्री० १ शीतलता । २ तृप्ति । ३ संतोष । ४ उष्णता की शांति । ५ तरी । ६ महामारी या उपद्रव जान्त होने की अवस्था । ७ क्रोध की समाप्ति ।

ठंठकार-पु० ठंडा मौसम, सर्दी ।
 ठंठाई-स्त्री० १ शरीर में तरी या ठंडक लाने वाला पेय । २ शीतलता ।
 ठंठी-स्त्री० १ शीतला, चेचक । २ देखो 'ठंड' ।
 ठंठोड़ी, ठंठी-वि० [सं० स्तब्ध] (स्त्री० ठंठी) १ शीतल, ठंडा । २ सर्द । ३ शीतलता देने वाला । ४ उष्णता रहित । ५ बुझा हुआ । ६ शांत । ७ नामर्द, नपुंसक । ८ उत्साह रहित । ९ अचंचल । १० सुस्त, कमजोर । ११ मरा हुआ, प्राण रहित । १२ पूर्व का बना, बासी । -पु० बासी खाना । -ठरियो, बासी-पु० शीतलाष्टमी के समय खाया जाने वाला ठंडा खाना, बासी भोजन । -ताव-पु० शीतल ज्वर । -पीर-पु० सूर्योदय या सूर्यास्त का काल जब गर्मी कम होती है ।
 ठंठ-देखो 'ठंड' ।
 ठंठाई-स्त्री० १ विश्रान्ति । २ देखो 'ठंठाई' ।
 ठंठि-देखो 'ठंडी' ।
 ठंठी-देखो 'ठंडी' (स्त्री० ठंडी) ।
 ठ-पु० [सं०] १ चन्द्रमा । २ बृहस्पति । ३ ज्ञानी । ४ महादेव । ५ श्रीकृष्ण । ६ वेग । ७ बादल, मेघ ।

८ बाबाल, वक्ता । ९ रव । १० सूर्य या चन्द्र मण्डल ।
 ११ वृत्त । १२ शून्य । १३ पवित्र स्थान । १४ सूति ।
 १५ देव ।
 ठइत-पु० [सं० स्थापित] माधु के निमित्त पृथक रखा
 पदार्थ । (जैन)
 ठइय-वि० [सं० स्थगित] ठका हुआ (जैन) ।
 ठउइणो (बो)-क्रि० अपमान करना ।
 ठक-स्त्री० १ धाधात या टक्कर से उत्पन्न ध्वनि ।
 २ मंकेतात्मक ध्वनि ।
 ठकठकणो (बो)-क्रि० १ किसी वस्तु पर चोट कर ठक-ठक
 ध्वनि पैदा करना । २ बजाना, ठक-ठक करना । ३ खट-
 खटाना, ठीकना । ४ बजा कर देखना, जांच करना ।
 ठकठोली-स्त्री० हंसी, मजाक, ठिठोली ।
 ठकराणो-स्त्री० १ ठाकुर की पत्नी । २ मालकिन, स्वामिनी ।
 ३ लक्ष्मी ।
 ठकराई-देखो 'ठकुराई' ।
 ठकाणो-देखो 'ठिकाणो' ।
 ठकार-पु० 'ठ' अक्षर ।
 ठकावळ-स्त्री० टक्कर, धक्का ।
 ठकुर-देखो 'ठाकर' ।
 ठकुराणो-स्त्री० ठाकुर की पत्नी ।
 ठकुराई-स्त्री० १ शासन, हुकूमत । २ राज्य, जागीर ।
 ३ स्वामित्व, अधिकार, कब्जा । ४ धाक, रोब ।
 ५ घमण्ड, गर्व ।
 ठकुरात, ठकुरायत-स्त्री० ठकुराई । हुकूमत ।
 ठक्कुर-देखो 'ठाकर' ।
 ठग-वि० [सं० ठक] (स्त्री० ठगण, ठगणी) १ छल या
 धोखे से लूटने वाला । २ छलिया, धूर्त । ३ भ्रम या
 भुलावे में डालने वाला ।
 ठगठगतउ-वि० स्तम्भित ।
 ठगठगी-स्त्री० स्तब्धता, विस्मय ।
 ठगठगो-वि० (स्त्री० ठगठगी) १ चकित, स्तब्ध, ठगासा ।
 २ अस्थिर, डांवाडोल ।
 ठगण-पु० छंद शास्त्र में ५ मात्राओं का एक गण ।
 ठगणी-स्त्री० १ ठगने की क्रिया या भाव । २ ठगी करने
 वाली स्त्री ।
 ठगणो (बो)-क्रि० १ छल या भुलावे में डालकर धन लूटना ।
 २ दगा देना, धोखा करना । ३ व्यापार में बेईमानी
 करना । ४ भ्रम में डालकर अनुचित कार्य करना ।
 ठगणो, ठगबाजी, ठगविद्या-पु० १ धूर्तता, छल, चालाकी ।
 २ ठगने की क्रिया या भाव ।

ठगांण, ठगाई-स्त्री० १ धोखा, नुकसान, हानि । २ ठगने का
 कार्य ।
 ठगाठगी-स्त्री० धूर्तता, धोखेबाजी ।
 ठगारो-वि० ठग, धूर्त ।
 ठगी-देखो 'ठगाई' ।
 ठगोरी-स्त्री० ठगों की विद्या । -वि० धोखा देने वाली ।
 ठगोरी-देखो 'ठग' ।
 ठगोसरौ-वि० (स्त्री० ठगोसरी) ठग, छलिया ।
 ठड़, ठड़हड़-स्त्री० १ घोड़े के नाक की ध्वनि । २ बंदूक की
 आवाज ।
 ठ'इणो (बो)-देखो 'ठरइणो' (बो) ।
 ठट-पु० [सं० स्थाता] १ बहुत से लोगों का समूह, भीड़,
 झुण्ड । २ ढेर, समूह ।
 ठटरी-स्त्री० अस्थिपंजर, हड्डियों का ढांचा ।
 ठट्ठी-पु० १ हंसी, विनोद । २ 'ठ' अक्षर ।
 ठठकणो (बो)-देखो 'ठिठकणो' (बो) ।
 ठठकार-स्त्री० १ दुत्कार, डांट-फटकार । २ शाप, बदुआ ।
 ३ अत्यधिक शीत, सर्दी । -वि० पापी, दुष्ट ।
 ठठकारणो (बो)-क्रि० १ दुत्कारना, डांटना, फटकारना ।
 २ शाप देना, बदुआ देना । ३ तिरस्कार या अपमान
 करना ।
 ठठणो (बो)-क्रि० घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना ।
 ठठर-वि० सिकुड़ा हुआ । -स्त्री० तलवार ।
 ठठळणो (बो)-क्रि० बेकार होना, अनुपयोगी होना ।
 टठार, ठठियार-देखो 'ठठारो' ।
 टठारा-स्त्री० धातु के बर्तन बनाने वाली जाति ।
 ठठारो-पु० (स्त्री० ठठारण, ठठारी) १ उक्त जाति का व्यक्ति ।
 २ घरेलु सामान । ३ घर की दशा । ४ आर्थिक स्थिति ।
 ठठुरी-स्त्री० तोप का ठाठा ।
 ठठेरणो (बो)-देखो 'ठठेरणो' (बो) ।
 ठठेरी-देखो 'ठठारो' ।
 ठठेरणो (बो)-देखो 'ठठेरणो' (बो) ।
 ठठोळ(ळी)-स्त्री० हंसी, दिलगी ।
 ठठो, ठठुपी-पु० १ 'ठ' अक्षर । २ विनोद ।
 ठठोळ (ळी)-देखो 'ठठोळ' ।
 ठठ्ठो, ठठ्ठो-वि० खड़ा, स्थिर ।
 ठणकणो (बो)-क्रि० १ किसी धातु की वस्तु पर आघात से
 ठन्-ठन् ध्वनि होना । २ वाद्य, बजना । ३ अनिष्ट का मन
 में आभास होना । ४ दर्द, पीड़ा होना, कसकना ।
 ५ भागना ।
 ठण, ठणक-स्त्री० १ धातु की वस्तु में होने वाली ठन् ध्वनि ।
 आवाज । २ वाद्य ध्वनि ।

ठणकाणी (बो) क्रि० १ किसी वस्तु पर आघात से टन्-टन् ध्वनि पैदा करना । २ बाद्य बजाना । ३ अनिष्ट का आभास देना । ४ भगाना ।

ठणकार-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ टणकार ।

ठणकी-पु० १ बल, शक्ति । २ संदेह, आशंका । ३ ऐश्वर्य, ठाट-बाट । ४ ध्वनि, शब्द । ५ रौने का भाव । ६ गर्व, घमण्ड । ७ देखो 'ठुणकी' ।

ठणण, ठणणण, ठणणहट-स्त्री० टन्-टन् ध्वनि ।

ठणणी (बो)-क्रि० १ सज्जित होना तैयार, होना । २ बनना, रूप लेना । ३ निश्चित होना, तय होना । ४ ठहरना, स्थिर होना । ५ युद्ध, प्रतियोगिता आदि की स्थिति आना ।

ठणहणणी (बो)-देखो 'ठणकाणी' (बो) ।

ठणकी-देखो 'ठणकी' ।

ठणी (बो)-देखो 'ठणणी' (बो) ।

ठणकाणी (बो) ठणकारणी (बो)-क्रि० १ कील आदि ठोकना । २ ढीले हुए कल पूजों को ठोक-ठाक कर मजबूत करना । ३ हल्की चोट कर बजाना ।

ठण्य-पु० [सं० स्थाप्य] एकाएक रुक जाने की दशा । -वि० १ पूर्ण रूप से रुका हुआ, बंद, क्रियाहीन । २ अवरोधित । ३ अनुपयोगी । (जैन)

ठणी-पु० १ गत्ता । २ कोई मुद्रा या मोहर । ३ ऐसी मुद्रा का चिह्न । ४ वस्त्र छापने का उपकरण । ५ सांचे से बनाया हुआ बेल-बूँटा, छाप ।

ठबक, ठबकी-पु० १ दोष, कलंक, दाग । २ उपालंभ । ३ हानि, नुकसान ।

ठमणी (बो)-क्रि० १ स्तब्ध, दंग, चकित होना । २ देखो 'यमणी' (बो) ।

ठमकी (बो)-देखो 'ठमकी' ।

ठम-स्त्री० चलते समय पांव रखने की क्रिया ।

ठमक-स्त्री० १ चलते समय एड़ी की लचक, ठसक । २ मंद एवं सुन्दर चाल । ३ किसी घातु को वस्तु से होने वाली ध्वनि ।

ठमकणी (बो)-क्रि० १ डग रखना, पैर रखना । २ चलना, गतिमान होना । ३ मंद गति से गमन करना । ४ बजना ।

ठमकाणी (बो), ठमकावणी (बो)-क्रि० १ चलना, गतिमान करना । २ बजाना, ध्वनि करना ।

ठमकी-पु० १ चलने का सुन्दर ढंग । २ चलते समय पायल की ध्वनि । ३ चटक-मटक, नखरा । ४ नृत्य का एक ढंग । ५ चलते समय पांव की आवाज । ६ धमका ।

ठमणी-देखो 'ठवणी' ।

ठमणी (बो)-देखो 'यमणी' (बो) ।

ठमाणी (बो)-देखो 'यमाणी' (बो) ।

ठयो-ठायो-वि० [सं० स्थापित] बना-बनाया तैयार, स्थापित ।

ठरक-स्त्री० १ हानि, नुकसान । कमी । २ देखो 'ठसक' ।

ठरकणी (बो)-क्रि० १ होना । २ पीटा जाना । ३ देखो 'टरकणी' (बो) ।

ठरकाणी (बो), ठरकावणी (बो)-क्रि० १ करना । २ पीटना, मारना । ३ देखो 'टरकाणी' (बो) ।

ठरकिण्डी-वि० (स्त्री० ठरकियी) १ मूर्ख, गंवार, अयोग्य । २ चोट खाया हुआ ।

ठरकेत-वि० 'ठरका' रखने वाला । ठाट-बाट वाला । क्षमता वाला, सक्षम ।

ठरकेल-वि० १ हीन । २ अयोग्य । ३ निर्बल । ४ निर्धन, कंगाल ।

ठरकल-देखो 'ठरकेल' ।

ठरको-पु० १ वंभव, सम्पत्ति । २ ठाट-बाट । ३ क्षमता, श्रीकांत । ४ गर्व, घमण्ड, ठसक । ५ चोट, प्रहार । ६ बलि पशु को काटने के लिए दिया जाने वाला शस्त्र का भटका । ७ बल, शक्ति । ८ प्रतिष्ठा, गौरव ।

ठरङ्ग-स्त्री० पांव या किसी वस्तु को घिसने या रगड़ने की ध्वनि ।

ठरङ्गणी (बो)-क्रि० १ घसीटना, खींचना । २ पांव रगड़ कर चलना ।

ठरङ्गी-पु० १ घटियास्तर का शराब । २ पथरीली, समतल भूमि । ३ पीकरण (राजस्थान) के समीप का एक भू-भाग ।

ठरठम-वि० ऐंठन युक्त ।

ठरणी (बो)-क्रि० १ नीतल पड़ना, ठंडा होना । २ उष्णता हीन होना । ३ सर्दी से जकड़ना, ठिठुरना । ४ क्रोध शांत होना । ५ जोश समाप्त होना । ६ शांत होना । ७ निर्बल होना ।

ठल-स्त्री० सेना, दल ।

ठलक-स्त्री० १ आंसू छतकने की क्रिया या भाव । २ रुलाई ।

ठलकणी (बो)-क्रि० १ आंसू बहना, रोना । २ द्रव पदार्थ का छलकना । ३ प्रहार होना, आघात पड़ना ।

ठलकाणी (बो)-क्रि० १ आंसू बहाना । २ द्रव पदार्थ का छलकाना । ३ प्रहार कराना ।

ठलकी-पु० ठेस, आघात । चोट ।

ठलणी (बो)-क्रि० १ तय किया जाना । २ निश्चित होना । ३ चुना जाना ।

ठलठाड़णी (बो), ठलठाणी (बो), ठलठावणी (बो)-क्रि० हुक्का गुड़गुड़ाना ।

ठल्लिकड़ी-स्त्री० हंसी, दिल्लगी ।

ठल्ल-स्त्री० १ धकेलने की क्रिया या भाव । २ देखो 'ठाली' ।

ठल्लणी (बो)-१ देखो 'ठेलणी' (बो) । २ देखो 'ठालणी' (बो) ।

ठवणा-देखो 'ठवणी' ।

ठवड़-देखो 'ठौड़' ।

ठवण-पु० [सं० स्थापन] संस्थापन (जैन) ।

ठवणा-स्त्री० [सं० स्थापना] स्थापना, स्थापित करने की क्रिया । (जैन) ---कर्म, कम्म-पु० उक्त प्रकार का कर्म ।

ठवणी-स्त्री० [सं० स्थापनी, स्थापिका] १ न्यास रूप में रखा हुआ द्रव्य, न्यास । २ पुस्तक रखने का काष्ठ का उपकरण । ३ चार तीलियों का ढांचा, आसन (जैन) ।

ठवणुठव-पु० स्थापनोत्सव ।

ठवणी (बो)-क्रि० १ रखना, टेकना । २ सजाना । ३ स्थापित किया जाना । ४ कहना, कथना । ५ होना ।

ठविय-पु० [सं० स्थापित] साधु-साध्वी के लिए रखा पदार्थ, भोजन ।

ठविया-स्त्री० [सं० स्थापिता] भविष्य में प्रायश्चित्त करने का निश्चय (जैन) ।

ठस-वि० १ अपने स्थान पर जमा हुआ, दड़, मजबूत । २ जो हिल न सके, खिसक न सके । ३ कठोर, कड़ा । ४ अड़ा हुआ । ५ पूर्ण भरा हुआ । ६ ठूँसा हुआ । ७ कंजूस, कृपण । ८ मुस्त, निष्क्रिय । ९ पूर्ण, परिपूर्ण ।

ठसक-स्त्री० १ स्वाभिमान, आन, शान । २ अहंकार, गर्व । ३ ऐंठ, अकड़ । ४ चटक-मटक, नखरा । ५ ठेस, धक्का । ६ बनावटी शृंगार । ७ शेखी, गल्ल । ८ टीस दर्द, कसक । ---बार-वि० स्वाभिमानी । गौरवशाली । गविला । ऐंठिला ।

ठसकाळी, ठसकीली-वि० (स्त्री० ठसकीली) १ स्वाभिमानी, गौरवशाली, गविला, आन-बान वाला । २ नखरे वाला । ३ शेखी बघारने वाला ।

ठसकी-पु० १ ठेस, धक्का । २ ठोकर, टक्कर । ३ शान । ४ नखरा । ५ घमंड । ६ रह-रह कर चलने वाली खांसी ।

ठसणी (बो)-क्रि० [सं० स्तब्ध] १ धी आदि तरल पदार्थ का ठंडक पाकर जमना, तरल न रहना । २ तरल धातु का ठोस होना । ३ रुकना, गतिहीन होना । ४ प्रविष्ट होना पैठना । ५ फंमना, फंस कर रुक जाना ।

ठसाठस-वि० ठूँस-ठूँस कर भरा हुआ । -क्रि० वि० १ अधिक सटकर या भिड़ाकर । २ ठूँस-ठूँस कर, खचाखच । ३ गुंजाइश से अधिक डालकर ।

ठसाणी (बो)-क्रि० १ धी आदि तरल पदार्थ को ठंडा करना, जमाना । २ तरल धातु को ठोस करना । ३ रोकना, गति हीन करना । ४ फंसाना । ५ प्रविष्ट कराना, पैठाना । ५ कोई वस्त्र जवरदस्ती पहनना ।

ठसी, ठसी-पु० १ विशेषता, खासियत । २ बोल-बाला । ३ प्रभाव । ४ विशेष महत्व । अभिमान, गर्व में झुमने की क्रिया ।

ठह-वि० १ कटिवद्ध, सन्नध, तैयार । २ सुसज्जित । ३ देखो 'ठें' ।

ठहक-स्त्री० १ नगारे की ध्वनि, ठहका । २ प्रहार या चोट की ध्वनि । ३ हंसी की आवाज । ४ स्तब्धता ।

ठहकणी (बो)-क्रि० १ नगाड़ा, वाद्य आदि बजना । २ ध्वनि होना । ३ चोट या आघात करने से ध्वनि होना । ४ कोपल, मीर आदि का बोलना ।

ठहकणी (बो)-क्रि० १ नगाड़ा वाद्य आदि बजाना । २ ध्वनि करना । ३ चोट या आघात से ध्वनि करना । ४ बजा कर जांचना ।

ठहकी-देखो 'ठेंकी' ।

ठहकणी (बो)-देखो 'ठहकणी' (बो) ।

ठहकणी (बो)-देखो 'ठहकणी' (बो) ।

ठहठहणी (बो)-क्रि० १ उचित ढंग से कार्य होना । २ युद्ध होना । ३ होना ।

ठहठहणी (बो)-क्रि० १ उचित ढंग से कार्य कराना । २ युद्ध कराना ।

ठहणी (बो)-क्रि० [सं० स्था] १ निश्चित होना, निर्धारित होना । २ उचित व्यवस्था होना । ३ स्थिर होना, ठहरना । ४ लगना, पड़ना (चोट) । ५ स्थापित होना, जमना । ६ शोभित होना । ७ आघात पहुँचाना । ८ बजना । ९ ठोस होना, जमना, ठसना । १० धारण करना ।

ठहरणी (बो)-क्रि० १ रुकना, ठहरना । २ गतिहीन होना । ३ रहना, मानना, मान जाना । ४ साथ देना, अडिग रहना, अटल रहना । ५ दड़ रहना, पक्का रहना । ६ स्थिर रहना, टिका रहना । ७ स्थान पर रहना, डेरा देना, विश्राम करना । ८ बना रहना । ९ स्थिर रहना, अविचलित रहना, धैर्य रखना । १० थमना, रुकना । ११ निश्चित होना, तय होना । १२ एकत्र होना, जमा होना । १३ गर्भ धारित होना । १४ प्रतीक्षा करना । १५ बंद होना ।

ठहराण-देखो 'ठहराव' ।

ठहराई-स्त्री० १ ठहराने की क्रिया या भाव । २ मजदूरी, पारिश्रमिक ।

ठहराणी (बो)-क्रि० १ रोकना, ठहराना । २ गतिहीन करना । ३ रखना, मनवाना । ४ साथ दिराना । अडिग रखना, अटल रखना । ५ दड़ रखना, पक्का रखना । ६ स्थिर रखना । टिकाये रखना । ७ स्थान पर रखना, डेरा दिराना, विश्राम कराना । ८ बनाये रखना । ९ स्थिर रखना, अविचलित रखना । १० थमाना, रोकना । ११ निश्चित करना । तय करना । १२ एकत्र करना, जमा करना ।

ठहरा

(४२३)

ठाह

१३ गर्भवती करना । १४ प्रतीक्षा करना । १५ पक्का जमाना । १६ ज्ञात करना, जानना । १७ बंद करना । १८ धैर्य देना ।

ठहराव-पुं० १ स्थिरता, विश्राम । २ ठहरना क्रिया या भाव । ३ निश्चय, निर्धारण । ४ विश्रामस्थल । ५ धैर्य शान्ति । ६ छन्द शास्त्र में यति ।

ठहरावणी (बौ)-देखो 'ठहराणी' (बौ) ।

ठहानी (बौ)-क्रि० १ निश्चित करना, तय करना । २ उचित बैठाना, जमाना । ३ रोकना, ठहराना । ४ लगाना । ५ मारना । ६ स्थापित करना । ७ शोभित करना । ८ प्रहार करना । ९ नगारा बजाना । १० ध्वनि करना । ११ ठसाना । १२ स्थिर करना । १३ ठोस करना । १४ धारण करना ।

ठहोक-स्त्री० १ प्रहार करने का भाव । २ ध्वनि, आवाज ।

ठहोड़णी(बौ)-१ पीटना, मारना । २ बजाना । ३ ध्वनि करना ।

ठहोड़ो-पुं० १ आवाज, ध्वनि । २ प्रहार, चोट, आघात । ३ प्रहार की ध्वनि । ४ सहसा उठने वाला दर्द ।

ठहोड़णी (बौ)-देखो 'ठहोड़णी' (बौ) ।

ठां-पुं० [सं० स्था] १ स्थान, जगह । २ धनीभूत भाड़ियों का स्थान ।

ठांवर-स्त्री० सुगमता से दूध न दूहने देने वाली गाय ।

ठांगळणी (बौ)-क्रि० १ मारना, पीटना । २ दण्ड देना । ३ अधीन करना, काबू में करना ।

ठांगळो-पुं० १ कैदी, बंदी । २ वश, काबू ।

ठांड, ठांडर-स्त्री० बांझ मवेशी, बंध्या मादा पशु । -वि० १ सूखा, नीरस । २ अत्यन्त ठंडा ।

ठांडरखी (बौ)-क्रि० १ सूखना, नीरस होना । २ ठंडा पड़ना । ३ ठंडा होना ।

ठांडराणी (बौ)-१ नीरस करना, सुखाना । २ ठंडा करना ।

ठांडी-स्त्री० बंध्या ऊंटनी ।

ठांडी-वि० तील में कम ।

ठांण (उ)-स्त्री० [सं० स्थान] १ मवेशियों को नियमित बांध कर रखने का स्थान । २ ऐसे स्थान पर बना खाना, कुण्ड आदि जिसमें चारा चराया जाता है । ३ उत्पत्ति का स्थान, जन्म भूमि । ४ स्थान । ५ गति की निवृत्ति, स्थिति, अवस्थान (जैन) । ६ कारण, निमित्त । ७ स्वरूप प्राप्ति (जैन) । ८ आसन (जैन) । ९ निवास, आवास । १० स्थान, पद (जैन) । ११ प्रकार, भेद (जैन) । १२ धर्म, गुण (जैन) । १३ आश्रय, मकान, घर, बस्ती, आश्रार (जैन) । १४ 'ठांणांग' सूत्र (जैन) । १५ कायिक क्रिया, ममत्व आदि का त्याग (जैन) ।

ठांणगुण-पुं० [सं० स्थानगुण] अधर्मास्तिकाय (जैन) ।

ठांणठिय-वि० स्थानास्थित (जैन) ।

ठांणणी (बौ)-क्रि० १ विचार करना । २ निश्चय करना । तय करना । ३ जर्जरित करना, ढीला करना । ४ रखना, स्थापित करना । ५ करना । ६ दृढ़ संकल्प करना ।

ठांणपूर-वि० १ स्थान की प्रतिष्ठा रखने वाला, मान-मर्यादा वाला । २ प्रतिष्ठित । ३ गंभीर ।

ठांणबंधु-पुं० [सं० ठाणबंधु] ४९ क्षेत्रपालों में से २८ वां क्षेत्रपाल ।

ठांणभट (भट्ट, भिस्ट)-वि० [सं० स्थानभ्रष्ट] पदच्युत । (जैन)

ठांणसंणगार-वि० केवल स्थान की शोभा बढ़ाने वाला (व्यंग्य) ।

ठांणांग-पुं० [सं० स्थानांगम] १ सूत्र का अध्ययन । २ एक सूत्र का नाम ।

ठांणा-पुं० व्यक्ति (जैन) ।

ठांणाइय-वि० [सं० स्थानातिग] भौतिक तत्वों से विरक्त एवं ध्वानावस्थित ।

ठांणाओठांण-वि० स्थानान्तरित ।

ठांणाग्यंग-पुं० एक सूत्र-ग्रंथ । (जैन)

ठांणायय-पुं० [सं० स्थानायय] ऊंचा स्थान (जैन) ।

ठांणि-वि० [सं० स्थानिन्] स्थान वाला (जैन) ।

ठांणियो-पुं० १ अस्तबल की सफाई करने वाला । २ देखो 'ठांण' ।

ठांबणी (बौ), ठांसणी (बौ)-क्रि० १ चलते क्रम को रोकना, बंद कर देना । २ रोकना, ठहराना । ३ गिरते हुए को पकड़ना, संभालना, बचाना । ४ पकड़े रहना, पकड़ना । ५ मदद या सहायता करना । ६ कार्यभार संभालना, उत्तरदायित्व लेना । ७ चौकसी या पहरे में रखना ।

ठांस (झी)-पुं० [सं० स्थाम] १ स्थान, जगह । २ पात्र, वर्तन । ३ मकान का भीतरी कक्ष । ४ कमरा ।

ठांसडो-स्त्री० कुएँ पर लगे चक्र की गति को नियंत्रित करने की रस्सी ।

ठांसणी (बौ)-देखो 'ठांसणी' (बौ) ।

ठांसी-वि० स्थान पर रहने वाला ।

ठांय-स्त्री० १ बन्दूक आदि के चलने की ध्वनि । २ देखो 'ठांय' ।

ठांय (झी)-देखो 'ठांय' ।

ठांसण-स्त्री० एक प्रकार की घास ।

ठांसणी-स्त्री० सहारा ।

ठांसणी-देखो 'ठांसणी' ।

ठांसणी (बौ)-१ देखो 'ठांसणी' (बौ) । २ देखो 'ठांसणी' (बौ) ।

ठांसी-पुं० १ फँला हुआ केर का पेड़ । २ धन्ना ।

ठांह-देखो 'ठा' ।

ठा-पु० १ शून्य । २ ऋषि । -स्त्री० ३ पृथ्वी । ४ पीठ ।
 ५ ज्ञान, इत्तम, पता । -वि० धनवान ।
 ठा'-देखो 'ठाह' ।
 ठाढ़ (ई)-स्त्री० जगह, स्थान । -वि० [सं० स्थायिन्] १ स्थिर रखने वाला । २ देखो 'ठावी' ।
 ठाउ (ऊ)-देखो 'ठांव' ।
 ठाप्रोठा-क्रि०वि० उपयुक्त स्थान पर, यथास्थान ।
 -वि० १ यथायोग्य । २ जहाँ जैसा आवश्यक हो ।
 ठाप्रो-१ देखो 'ठावी' । २ देखो 'ठायी' ।
 ठाक-स्त्री० १ प्रतिज्ञा, प्रण, नियम । २ चुनाई में काम आने वाला लकड़ी का उपकरण । ३ पीटने या मारने का भाव । ४ पत्थर का टुकड़ा ।
 ठाकणी (बो)-क्रि० १ पत्थर गढ़ना । २ पत्थर तोड़ना ।
 ठाकर (डो)-पु० [सं० ठक्कुर] (स्त्री० ठकरांगी) १ किसी भू-भाग का अधिष्ठाता । २ गांव का मालिक, जमींदार । ३ स्वामी, मालिक । ४ क्षत्रियों की उपाधि । ५ प्रतिष्ठित व्यक्ति, माननीय व्यक्ति । ६ ईश्वर, भगवान, विष्णु । ७ देव-मूर्ति, प्रतिमा । ८ राजपूतों के लिए सम्बोधन विशेष । ९ नाइयों की उपाधि ।
 -द्वारी, दुवारी-पु० देवालय, देवस्थान । विष्णु मंदिर ।
 ठाकराड़ (ई), ठाकरि (री)-देखो 'ठकुराई' ।
 ठाकुर-देखो 'ठाकर' । -द्वारी, दुवारी-ठाकरद्वारी ।
 ठाकुराड़ (ई), ठाकुरी-देखो 'ठकुराई' ।
 ठागो-पु० १ आडंबर, ढोंग । २ कपट, छल । ३ धूर्तता ।
 ठाड़ो-पु० स्थान, जगह ।
 ठाट-पु० १ सजावट । २ सज-भूषण । ३ शोभा । ४ प्रान-शीकत । ५ तड़क-भड़क, आडम्बर, दिखावा । ६ आराम, चैन । ७ आयोजन-तैयारी । ८ वैभव । ९ सितार का तार । १० समूह, झुण्ड । ११ देखो 'थाट' । -बाट-पु० सजावट । शृंगार । तड़क-भड़क । प्रान-शीकत ।
 ठाटियो-१ देखो 'ठाटी' । २ देखो 'थाटियो' ।
 ठाटी-पु० १ वेलगाड़ी के ऊपर का तख्ता, थाटा । २ भीगे कागज की लुगदी का बना गोल व चौड़ा पात्र ।
 ठाठड़ी-१ देखो 'ठाठी' । २ देखो 'ठाठी' ।
 ठाठर-पु० अस्थिपंजर, हड्डियों का ढांचा ।
 ठाठरणी (बो)-१ देखो 'ठाठरणी' (बो) । २ देखो 'ठाठरणी' (बो) ।
 ठाठी-स्त्री० बाधा, अड़चन, रोक, विघ्न ।
 ठाठाया-स्त्री० एक प्रचीन जाति ।
 ठाठी-पु० १ अंड के चमड़े का तरकस । २ देखो 'ठाटी' ।
 ठाड-स्त्री० १ सीड़ी या जीने के बीच-बीच लगने वाला पत्थर । २ सर्द, ठंडक ।

ठाडी-स्त्री० १ लम्बी लकड़ी का रूट में लगा एक उपकरण । २ चूल्हे की राख । -वि० १ ठण्डी, शीतल । २ बासी । ३ खड़ी, सीधी ।
 ठाडील-स्त्री० शीतलता, ठण्डक ।
 ठाडी-पु० १ दर्द वाले अंग पर दिया जाने वाला अग्नि दग्ध । २ जाड़ा, सर्दी, ठंड । -वि० (स्त्री० ठाडी) १ शीतल, ठण्डा । २ बासी । ३ उष्णता रहित । ४ बलवान, शक्तिशाली । ५ खड़ा, ठहरा, रुका हुआ । ६ शान्त । ७ सुस्त । ८ गंभीर । -ठरियो-पु० शीतलाग्रष्टमी को बनाया जाने वाला बासी भोजन आदि । -पौर-पु० सूर्योदय या सूर्यास्त के समय का ठण्डा मौसम ।
 ठाढ़-देखो 'ठाड' ।
 ठाढ़ेसर (सरो, स्वर, स्वरि)-पु० [सं० स्तब्ध+ईश्वर] निरन्तर खड़ा रह कर तपस्या करने वाला तपस्वी ।
 ठाड़ी-देखो 'ठाडी' ।
 ठा'णी (बो)-क्रि० १ करता, कर देना । २ निश्चित करना, तय करना । ३ ठहराना, रोकना । ४ लगाना (चोट) । ५ स्थापित करना, जमाना । ६ थोप देना । ७ कल्पित बात कहना । ८ रखना । ९ सुशोभित करना ।
 ठायो-पु० [सं० स्थान] १ स्थान, जगह । २ निश्चित स्थान विशेष स्थान । ३ देखो 'ठावी' । ४ देखो 'ठायी' ।
 ठार-स्त्री० १ स्थान, जगह, ठौर । २ ठंडक, सर्दी । ३ आराम, शांति । ४ पता, इत्तम, ठिकाना । ५ देखो 'अठारह' ।
 ठारक-वि० १ शीतल करने वाला । २ शान्त करने वाला । ३ संतोष दिलाने वाला ।
 ठारणी (बो)-क्रि० १ ठंडा करना, शीतल करना । २ गर्मी या उष्णता मिटाना । ३ आग आदि बुझाना । ४ अट्टी आदि के भोम लगाना । ५ शान्त करना, तृप्त करना । ६ संतुष्ट करना ।
 ठारी-स्त्री० १ सर्दी, ठण्डक । २ शीतलता ।
 ठाल-स्त्री० १ खोज तलाश । २ छलांग । ३ चुनाव, चयन ।
 ठाल-स्त्री० १ रिक्तता, खालीपन । २ अभाव, कमी ।
 ठालउ-देखो 'ठाली' ।
 ठालणी (बो)-क्रि० [सं० ठाल] १ तलाश करना, खोजना, ढूँढ़ना । २ चुनाव, चयन करना । ३ निश्चित करना, तय करना । ४ देखना । ५ स्थापित करना ।
 ठालप (फ)-स्त्री० १ बेकार या निकम्मा रहने का भाव । २ रिक्तता, अभाव ।
 ठालबरी-वि० चुनिन्दा ।
 ठाली-वि० १ खाली, रिक्त । २ केवल, सिर्फ । ३ गर्म रहित, गर्म हीन ।

ठालु-देखो 'ठाली' ।

ठालेड़-स्त्री० १ रिक्तता, खालीपन । २ बिना गर्म की मादा पशु । ३ चोर, उचकवा । ४ देखो 'ठाली' ।

ठाली-वि० (स्त्री० ठाली) १ रिक्त, खाली । २ रहित, हीन । ३ निकम्मा, बेकार, निष्फल । ४ अवकाश में । ५ निर्जंत एकान्त । ६ केवल, मात्र । -पु० १ सोने या चांदी की देव मूर्ति । २ एक प्रकार का आभूषण । -भूली-वि० हत भाग्य । निकम्मा । दुष्ट ।

ठावग्र-पु० [सं० स्थापक] १ पक्ष का स्थापन (जैन) । २ देखो 'ठावो' ।

ठावकी-देखो 'ठावो' (स्त्री० ठावकी) ।

ठावड-स्त्री० ठौर, जगह, स्थान । (जैन)

ठावणी (बो)-क्रि० [सं० स्था] १ स्थिर करना, रखना । २ स्थापित करना । ३ बनाना । ४ करना । ५ समझना । ६ सुसज्जित करना, सजाना । ७ शोभित करना । ८ निवास करना । ९ चुनना । १० मनोनीत करना ।

ठावोली-वि० निपट, निश्चित, मुकर्रर ।

ठावो-वि० (स्त्री० ठावी) १ प्रतिष्ठित, मान्य । २ विश्वसनीय । ३ ईमानदार, जिम्मेदार । ४ फैला हुआ, व्यापक । ५ प्रसिद्ध, विख्यात । ६ महान्, श्रेष्ठ । ७ उपस्थित, हाजिर । ८ योग्य, होशियार, चतुर । ९ पक्का, दृढ़ । १० प्रकट, जाहिर । ११ खास, विशेष । १२ मुखिया, अग्रगण्य । १३ गंभीर, धैर्यवान् । १४ बुद्धिमान् । १५ सुरक्षित ।

ठाह-स्त्री० [सं० स्था] १ स्थान, जगह । २ पता, ठिकाना । ३ खबर, मालूम । ४ खोज, जानकारी ।

ठाहर-स्त्री० [सं० स्था] १ स्थान, जगह । २ निवास स्थान, जगह, डेरा । ३ कदम, डग ।

ठाहक-पु० [सं० स्था-रूपक] मृदंग की एक ताल ।

ठाहकणी (बो)-क्रि० १ ठोकना, पीटना, मारना । २ खटकाना ।

ठाहो-पु० १ पात्र । २ देखो 'ठायी' ।

ठिगणी-देखो 'ठिगणी' (स्त्री० ठिगणी) ।

ठिङ्कम्प-पु० [सं० स्थिति-कर्मन्] १ कर्म की स्थिति । २ स्थिति कर्म, जन्म संस्कार । (जैन)

ठिङ्कल्लण-वि० [सं० स्थिति-कल्याण] उत्कृष्ट स्थिति वाला । (जैन)

ठिङ्कख-पु० [सं० स्थितिक्षय] आयु का क्षय, मरण । (जैन)

ठिङ्कपद-पु० [सं० स्थितिपद] प्रज्ञापन सूत्र के चतुर्थ पद का नाम । (जैन)

ठिङ्कबंध-पु० [सं० स्थितिबंध] कर्मबंध की काल मर्यादा । (जैन)

ठिङ्क-स्त्री० [सं० स्थितिका] स्थिति । (जैन)

ठिई-स्त्री० [सं० स्थिति] स्थिति । (जैन)

ठिथी-वि० [सं० स्थितः] १ ठहरा हुआ । २ देखो 'ठियी' ।

ठिकरी-देखो 'ठीकरी' ।

ठिकानी-पु० [सं० स्था] १ स्थान, जगह । २ निवास-स्थान, आवास । ३ रहने की जगह, पता, ठिकाना । ४ खोज, खबर, पता । ५ प्रबंध, इन्तजाम । ६ सहारा, आश्रय, आलंबन । ७ उपयुक्त स्थान । ८ भरोसा । ९ यथार्थता, प्रमाण । १० अंत, हद, सीमा । ११ परिवार, वंश, घराना । १२ किसी जागीरदार का मकान, निवास स्थान । १३ जागीरदार की जागीरी का प्रदेश । १४ वंश गौरव, मर्यादा ।

ठिठकणी (बो)-क्रि० [सं० स्थिति-करणम्] १ चलते-चलते यकायक रुकना । २ क्रिभ्रकना, चौंकना । ३ चकित होना, आश्चर्य में पड़ना ।

ठिठरणी (बो) ठिठुरणी (बो)-क्रि० [सं० स्थित] १ सर्दी में अधिक ठरना । २ अधिक सर्दी के कारण ऐंठना, सिकुड़ना ।

ठिठोराई-स्त्री० १ तंग करने की क्रिया या भाव । २ ठिठाई ।

ठिठकणी (बो), ठिठगणी (बो)-क्रि० रोना, बिलखना ।

ठिभर-वि० १ गंभीर । २ धैर्यवान् । ३ बुद्धिमान् ।

ठिथी-पु० १ शीघ्र क्रिया करते समय बैठने का पत्यर । २ घूल्ने का एक भाग । ३ स्थान, जगह । ४ वस्त्र विशेष ।

ठिलणी (बो)-वि० १ दूर होना । २ पीछे हटना । ३ धक्का खाना । ४ गतिमान होना, चलना । ५ डाला जाना ।

ठिल-ठिल, ठिलठािल-क्रि० वि० लवालव । -स्त्री० हंसने की क्रिया या भाव खिलखिलाहट ।

ठिबणी (बो)-क्रि० १ चलना । २ डग भरना ।

ठींगणी-वि० (स्त्री० ठींगणी) १ छोटा कद का, नाटा । २ बीना । ३ अन्य की अपेक्षा छोटा ।

ठींगळ, ठींगळी, ठींगळो-पु० टूटे मटके का बड़ासा भाग खण्ड ।

ठींगा-ठीळी-देखो 'ठींगाठीळी' ।

ठींगी-वि० (स्त्री० ठींगी) १ जबरदस्त, जोरदार । २ बलवान शक्तिशाली । -पु० १ धौंस घमकी डांट-फटकार । २ प्रभाव ।

ठींजी-पु० बारहवें दिन का मृत्यु भोज ।

ठींजी-पु० छेद, छिद्र ।

ठींभर, ठीभर-देखो 'ठिभर' ।

ठी-स्त्री० १ पौत्री । २ धुंघ । -पु० ३ क्षय । ४ कुल । ५ कुहूँब ।
 ठोक-वि० [सं० स्थितक] १ उचित, वाजिब । २ अच्छा,
 बढ़िया । ३ योग्य, उपयुक्त । ४ यथार्थ, प्रामाणिक ।
 ५ दुस्त, सुधरा हुआ । ६ शुद्ध । ७ आवश्यकता अनुसार ।
 ८ प्राकृतिक । ९ नम्र, विनयी, सरल । १० निश्चित,
 उपयुक्त । ११ पक्का, स्थिर । १२ अखण्ड, कायम ।
 -क्रि० वि० १ अच्छी तरह । २ उचित ढंग से । ३ पूर्ण रूप
 से, निश्चित रूप से । -स्त्री० १ हड़ बात । २ निश्चय ।
 ३ ठिकाना, पता । ४ पता, इल्म, खबर । ५ स्थिर
 प्रबंध । -ठाक-क्रि० वि० उचित रूप से, वाजिब ढंग से ।
 -वि० व्यवस्थित । निश्चित । -पु० प्रबंध, व्यवस्था ।

ठीकर-देखो 'ठीकरी' ।

ठीकरी-स्त्री० मिट्टी के पात्र का छोटा टुकड़ा ।

ठीकरी-पु० १ बर्तन, पात्र (व्यंग) । २ टूटा-फूटा बर्तन, पुराना
 बर्तन । ३ मिट्टी के पात्र का बड़ा खण्ड । ४ तुच्छ या
 निकम्मी वस्तु । ५ भीख मांगने का पात्र । ६ ब्रह्माण्ड ।
 ७ शरीर, देह । ८ खाली पात्र ।

ठीठी-स्त्री० हंसी की ध्वनि ।

ठीडो-वि० खड़ा ।

ठीडो-पु० [सं० स्था] खबर, पता, ठिकाना ।

ठीणली (बो)-क्रि० उपालंभ देना, बुरा भला कहना ।

ठीणो-वि० [सं० स्तब्ध] सर्दी के कारण जमा हुआ, ठसा
 हुआ । गाढ़ा ।

ठीमर-देखो 'ठिमर' ।

ठीयो-देखो 'ठियो' ।

ठु-पु० १ कदम । २ यमदूत । -स्त्री० ३ मक्खी । ४ रज ।
 ५ त्वचा । -वि० १ रोगी । २ दरिद्री ।

ठुकाणी (बो)-क्रि० पीटा जाना, मारा जाना, पिटना, कुटना ।

ठुकराणी-देखो 'ठकराणी' ।

ठुकराणी (बो)-क्रि० १ पांव की ठोकर मारना । २ तिरस्कार
 करना । ३ नामंजूर करना । ४ त्यागना, छोड़ देना ।

ठुकाणी (बो)-क्रि० १ अंगुलियों या किसी वस्तु से हल्की
 चोट पहुंचाना । २ ऐसी चोटें मस्तक में दिराना (स्त्री) ।

ठुण, ठुणक-स्त्री० १ रौने की ध्वनि । २ बच्चे का रुदन ।

ठुणकी-स्त्री० दो अंगुलियों को चटका कर मस्तक पर की जाने
 वाली हल्की चोट (स्त्री) ।

ठुणकी-पु० १ बच्चे की रह-रह रौने की ध्वनि । २ रुदन ।

ठुमक-स्त्री० १ उमंग भरी चाल । २ चलने का सुन्दर ढंग ।
 ३ चलने से एड़ी से होने वाली ध्वनि ।

ठुमकणी (बो)-क्रि० १ उमंग से चलना । २ ठसक से चलना ।
 ३ बच्चे का धीरे-धीरे चलना ।

ठुमकार-स्त्री० ठुमक चाल से होने वाली ध्वनि ।

ठुमराई-स्त्री० मंद-मंद व मस्त चाल ।

ठुमरी-स्त्री० एक ही अंतरे का एक गीत विशेष । -संशोटी-
 स्त्री० एक राग विशेष ।

ठुरणी (बो)-क्रि० १ पिटना, मारा जाना । २ हल्की चोट से
 फंसना, घंसना, गढ़ना ।

ठुरियो-पु० ऊंट की चाल विशेष ।

ठुठियो-पु० लकड़ी का छोटा डंडा ।

ठुसकणी (बो)-क्रि० सुबक-सुबक कर रौना ।

ठुसकी-स्त्री० १ रौने की सुबकी । २ धीरे से अपान वायु
 निकलने की ध्वनि ।

ठुसणी (बो)-क्रि० १ ठूस-ठूस कर भरा जाना । २ मुश्किल से
 घुसा जाना । घुसना, पैठना ।

ठुसी-स्त्री० स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष ।

ठूंक-स्त्री० [सं० तुंड] १ चोंच, चंचु । २ चोंच की चोट,
 प्रहार ।

ठूंग-स्त्री० शराब के साथ खाया जाने वाला चुर्बन ।

ठूंगार-स्त्री० १ भांग के नशे को शांत करने के लिए खाया
 जाने वाला खाद्य पदार्थ । २ छौंक, बघार ।

ठूठ-वि० १ मूर्ख, गंवार । २ देखो 'ठूठी' ।

ठूठा-स्त्री० पंवारों की एक शाखा ।

ठूठियो-पु० १ बैलगाड़ी के पहिये में लगने वाला एक
 उपकरण । २ देखो 'ठूठी' ।

ठूठी-पु० १ सूखा पेड़ । २ जमीन में धंसा कर खड़ा किया
 सूखे पेड़ का खूंट ।

ठूठणी (बो)-देखो 'ठूसणी' (बो) ।

ठूँ, ठूँकियो, ठूँकी-देखो 'ठूँठी' ।

ठूसणी (बो)-क्रि० १ दबा-दबा कर या ठूस-ठूस कर भरना ।
 २ जबरदस्ती घंसाना । ३ जोर से घुसाना, चोट मार कर
 घुसाना । ४ अधिक खाना । ५ छीनना, हड़पना ।
 ६ संजोना, सजाना ।

ठूसियो-पु० ऊंटों का एक रोग विशेष ।

ठू-पु० १ विष्णु । २ बुध । ३ प्रेस । ४ धैर्य । ५ धर्म । -स्त्री०
 ६ लक्ष्मी ।

ठूसरी-पु० सिंध व बलोचिस्तान की पहाड़ियों के बीच पाया
 जाने वाला पत्थर कण ।

ठूळ-पु० जड़ सहित निकाला हुआ पौधा या झाड़ी ।
 -वि० १ मूर्ख । २ अल्हड़, गंवार । ३ मजबूत ।

ठूसणी (बो)-देखो 'ठूसणी' (बो) ।

ठेंण-पु० कठोर व समतल भूमि ।

ठे-पु० १ वामन । २ शेष । ३ स्थान । ४ मन । ५ संक्षेप ।
 ६ शिक्षा ।

ठेक-स्त्री० १ मजाक, हंसी । २ छलांग ।
 ठेकणी-वि० (स्त्री० ठेकणी) छलांग लगाने वाला ।
 ठेकणी (बी)-क्रि० छलांग लगाना, कूदना ।
 ठेकागाड़ी-स्त्री० एक प्रकार का सरकारी लगान ।
 ठेकाड़ी-वि० (स्त्री० ठेकाड़ी) छलांग लगाने वाला ।
 ठेकी-स्त्री० छलांग ।
 ठेकेदार-वि० १ किसी कार्य को करने का एक मात्र अधिकारी ।
 २ किसी कार्य का जिम्मेवार । ३ किसी कार्य का ठेका लेने वाला । -पु० १ भवन निर्माण आदि कार्यों को एक निश्चित खर्च में पूरा करके देने वाला व्यक्ति । २ इसी प्रकार किसी कार्य को कुछ निश्चित शर्तों पर पूरा करने का अनुबंध करने वाला व्यापारी ।
 ठेकी-पु० १ किसी कार्य का जिम्मा, उत्तरदायित्व । २ किसी कार्य को करने व उसमें आग्र करने का अधिकार । ३ ऐसे कार्यों के प्रति कुछ निश्चित शर्तों पर किया जाने वाला अनुबंध, इकरार, इजारा । ४ तबले का वायां । ५ तबले आदि पर बजाई जाने वाली कोई ताल । ६ छलांग ।
 ठेगड़ी-पु० (स्त्री० ठेगड़ी) कुला, श्वान ।
 ठेगण-स्त्री० सहारे की लकड़ी ।
 ठेकरी-स्त्री० १ मखौल, मजाक । २ हंसी, दिल्लगी ।
 ठेठ, ठेठ-पु० १ सोमा, हृद । २ छोर । ३ पार, अंत । ४ तल ।
 ५ प्रारंभ, शुरु ।
 ठेठर, ठेठरिपौ, ठेठरी-पु० १ पुराना व सूखा जूता । २ पशुओं के धुरों की कठोरता ।
 ठेठी-स्त्री० कानों के अन्दर का मैल । कर्णमल । -काढ़णियो -पु० उक्त मैल निकालने का उपकरण । -वि० दण्ड-दाता, सुधारक ।
 ठेप-स्त्री० १ टक्कर । २ चोट, आघात ।
 ठेपाड़-स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।
 ठेरणी (बी)-देखो 'ठहरणी' (बी) ।
 ठेठ-वि० १ निर्भय, निडर । २ प्रभावशाली । ३ देखो 'ठेठो' ।
 ठेस-पु० १ टक्कर, धक्का । आघात, चोट । २ डालने या भोंकने की क्रिया या भाव ।
 ठेलण-पु० बैलगाड़ी के अग्रभाग में लगाया जाने वाला लकड़ी का डंडा ।
 ठेलणी (बी)-स्त्री० [सं० स्थलपति] १ पोछे हटाना । २ धक्का देना, धकेलना । ३ प्रहार से दूर करना । ४ डालना, दूर करना । ५ आगे बढ़ाना । ६ भोंकना, डालना । ७ व्यतीत करना, गुजारना । ८ खदेड़ देना, निकाल देना । ९ पराजित करना । १० उड़ेलना, डालना । ११ मिटाना, नाश करना । १२ खूब खिलाना-पिलाना ।

ठेलमठेल, ठेलाठेल-स्त्री० १ अत्यधिक भीड़ । २ अधिक भीड़ की खस्माखसी, धक्कामधक्का । ३ रेलमपेल । -वि० बहुत अधिक, पूर्ण, परिपूर्ण ।
 ठेलियौ-देखो 'ठेली' ।
 ठेली-पु० १ कूड़े करकट का ढेर । २ घाम-फूस का ढेर । ३ छोटी लाठी, डंडा । ४ डंडे से गिल्ली पर चोट करने की क्रिया ।
 ठेली-पु० १ आदमी द्वारा ठेल कर चलाई जाने वाली सामान वाहक, गाड़ी । २ छोटी बैलगाड़ी । ३ भौंका ।
 ठेस-स्त्री० चोट, आघात, धक्का ।
 ठहरणी (बी)-देखो 'ठहरणी' (बी) ।
 ठैठाणी (बी)-देखो 'ठैठाणी' (बी) ।
 ठै-पु० १ शास्त्र । २ आकाश । ३ शिष्य । -वि० मूर्ख ।
 ठै-स्त्री० किसी वस्तु पर चोट करने से उत्पन्न ध्वनि, ठक ।
 ठैथकी, ठैकी-पु० १ तबला आदि के बजने की आवाज । २ ऐसे वाद्यों को बजाने की विशेष विधि, ताल । ३ तगाड़े पर डके की चोट । ४ हल्का आघात ।
 ठै'रणी (बी)-देखो 'ठहरणी' (बी) ।
 ठैराण-देखो 'ठहराव' ।
 ठैराणी (बी)-देखो 'ठहराणी' (बी) ।
 ठै'राव-देखो 'ठहराव' ।
 ठी-पु० १ रक्त । २ शिर, मस्तक । -स्त्री० ३ पीड़ा । ४ मूर्खता, गंवारपन ।
 ठोकणी (बी)-क्रि० १ प्रहार करना, चोट करना, मारना, पीटना । २ लात, धूँसे, डंडे आदि से मारना, पीटना । ३ चोट मारकर धंसाना, फंसाना । ४ हाथ के प्रहार से ध्वनि करना । ५ जड़ना, बंद करना । ६ खट-खट करना । ७ संभोग या मैथुन करना । ८ आहार करना । ९ स्थित, चोरी आदि का कार्य करना ।
 ठोकर-स्त्री० १ चलते समय किसी वस्तु से पांव टकराने की क्रिया । २ इस प्रकार टकराने से पांव में लगने वाली चोट । ३ रास्ते में पड़ी वस्तु जिससे चलते समय पांव टकरा जाय । ४ जूते पहने हुए पांव के अग्र भाग से किया जाने वाला प्रहार । ५ तेज प्रहार, चोट, धक्का । ६ जूते का अग्र भाग । ७ एक सवारी की बैलगाड़ी । ८ कुप्ती का एक दांव । ९ एक आभूषण विशेष ।
 ठोकाक-वि० १ खाने का इच्छुक, खाने वाला, अधिक खाने वाला । २ इच्छुक । ३ पीटने वाला ।
 ठोकाबाटी-स्त्री० मैथुन, संभोग ।
 ठोट, ठोठ-वि० १ मूर्ख, गंवार । २ मंद बुद्धि । ३ अपठित । ४ अनभिज्ञ, अज्ञ ।

ठोड-स्त्री० बेलगाड़ी का अग्रभाग ।

ठोडो-स्त्री० [सं० तुंड] १ मुंह के नीचे का भाग, चिबुक ।
२ पशुओं के मुंह का अग्रभाग, तुंड । ३ सांप का फन ।

ठोडरी-पुं० फूटा हुआ बर्तन ।

ठोर (ड़)-स्त्री० १ प्रहार करने की क्रिया या भाव । २ ध्वनि, आवाज । ३ घाक, रौब । ४ एक प्रकार की मिठाई ।
५ देखो 'ठीड़' । -वि० स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

ठोरणी (बी)-क्रि० १ पीटना, मारना । २ ऊपर से चोट मार कर घसाना, गाड़ना । ३ प्रहार करना, चोट मारना । ४ चोट मार कर फंसाना ।

ठोर-पाखर-वि० १ कटिबद्ध, तैयार, सन्नद्ध । २ पूर्ण स्वस्थ ।

ठोरमठोर-वि० हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, मजबूत ।

ठोरियों-पुं० स्त्रियों के कान का आभूषण ।

ठोरी-पुं० लाठी, लकड़ी ।

ठोळी-स्त्री० हंसी, मजाक ।

ठोली-पुं० १ हाथ की अंगुली की समेटने पर पीछे उभरने वाला तीक्ष्ण भाग । २ इस तीक्ष्ण भाग से किया जाने वाला प्रहार ।

ठोस-वि० १ जो नर्म, द्रव रूप में या खोखला न हो, कठोर, शक्त । २ जमा हुआ । ३ दृढ़, मजबूत ।

ठो-पुं० १ गौतम ऋषि । २ समुद्र । ३ कुल-धर्म । -स्त्री० ४ तरंग, लहर । ५ मर्यादा ।

ठीड़-स्त्री० [सं० स्थान] १ स्थान, जगह । २ रहने का निश्चित स्थान ।

ठीड़-ठीड़-क्रि० वि० १ यथा स्थान, उचित जगह पर ।
२ स्थान-स्थान पर ।

ठीर-१ देखो 'ठोर' । २ देखो 'ठीड़' ।

ठीळ-स्त्री० हंसी-मजाक, दिल्लगी ।

-ड-

ड-देव नागरी वर्णमाला का तेरहवां वर्ण ।

डं-पुं० १ दांत । २ दूध । ३ जल । ४ मृत्यु । ५ आंख ।
६ चमेली ।

डंक-पुं० [सं० दंश] १ बिच्छु का कांटा । २ किसी पतंगे के मुंह का जहरीला कांटा । ३ सर्प दंश । ४ नगाड़ा ।
५ नगाड़े की ध्वनि । ६ तखल्लत । ७ दंश का स्थल ।
भाग । ८ सांप का विष दंत । ९ अनाज में लगने वाला कीड़ा । १० कलम की जिह्वा । ११ राजस्थान का एक प्रसिद्ध ज्योतिषी । १२ इस ज्योतिषी का वंश ।
१३ देखो 'डंकी' । -वि० अभिमुख । -दार-वि० जिसके डंक हो ।

डंकणी (बी)-क्रि० १ बिच्छु का डंक मारना, । २ सर्प आदि विषैले जंतुओं का डसना, दंश मारना । ३ अनाज में कीड़ा लगना । ४ नगाड़ा बजना ।

डंकरणी (बी)-क्रि० १ ध्वंस करना । २ क्रोध करना, क्रुद्ध होना ।

डंका-री-पछंबड़ी-स्त्री० एक वस्त्र विशेष ।

डंकि-वि० १ विध्वंसक, संहारक । २ जिसमें डंक लगा हो ।
३ देखो 'डंकी' ।

डंकिणी-देखो 'डाकणी' ।

डंकी-पुं० १ छोटा मच्छर । २ योद्धा, वीर । ३ संहार करने वाला ।

डंकीली-वि० जिसके डंक लगा हो ।

डंकीली-पुं० [सं० डक्का] ज्वार, बाजरी आदि के पौधे का डंठल ।

डंकी-पुं० [सं० डक्का] १ नगाड़ा । २ नगाड़ा बजाने का डंडा ।
३ नाम, प्रभाव, प्रसिद्धि ।

डंग-स्त्री० १ टोहनी । २ देखो 'डंग' ।

डंठकड़ी-पुं० भुजा पर धारण करने का कड़ा, आभूषण ।

डंठळ-पुं० सूखा पीछा । टहनी ।

डंड-पुं० [सं० दण्ड] १ किसी अपराध के बदले मिलने वाली सजा । २ जुर्माना, हर्जाना । ३ डंडा । ४ व्यायाम की एक प्रक्रिया । ५ सेना की एक व्यूहरचना । ६ साष्टांग प्रणाम । ७ ध्वज दण्ड । ८ डंडे जैसी कोई वस्तु ।
९ तराजू की डंडी । १० इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रों में से एक । ११ चौबीस मिनट का एक समय ।

डंडकार, डंडकारन-पुं० [सं० दण्डकारण्य] एक प्राचीन वन जो विन्ध्य पर्वत से गोदावरी तक फैला हुआ था ।

डंडरणी (बी)-क्रि० १ दण्ड देना, सजा देना, सजा के रूप में मारना, पीटना । २ जुर्माना तय करना ।

डंडभ्रत-पु० [सं० दण्डभ्रत] १ यमराज । २ कुम्हार, कुम्भकार ।
 डंडव्यूह-पु० सेना की एक व्यवस्था ।
 डंडाकार-वि० १ दण्ड के आकार का । २ निर्जन, शून्य ।
 डंडाणी (बो)-क्रि० १ दण्ड दिराना, सजा दिराना । २ जुर्मना भरवाना, हर्जाना भरवाना ।
 डंडारोपण-स्त्री० माघ शुक्ला पूर्णिमा को गांव में रोपा जाने वाला लकड़ा जो होली पर्यन्त रहता है ।
 डंडाळ-वि० जिसके डंडा लगा हो, डंडेदार । -पु० वह पक्ष जिसमें डंडा लगा हो ।
 डंडाळी-वि० डंडे के बल से कार्य करने वाला ।
 डंडाळी-वि० १ डंडा रखने वाला, दण्डधारी । २ डंडेदार । -पु० दण्डधारी साधु, दण्डीस्वामी ।
 डंडाहड़, (हड़ि, हळ)-पु० १ नगाड़ा, दुंदुभि । २ देखो 'डंडियो' ।
 डंडि-पु० [सं० दण्डिन्] दण्डधारी, दण्डी स्वामी । -खंड-पु० चौथड़ों को जोड़ कर बनाया हुआ वस्त्र ।
 डंडिप्रळ, (अळि)-पु० एक मात्रिक छन्द विशेष ।
 डंडिया-पैर, डंडियानाच-स्त्री० होली के पर्व पर, हाथों में लकड़ियां लिए रात भर किया जाने वाला गोल नृत्य ।
 डंडिओ-देखो 'डंडो' ।
 डंडो (ड)-पु० [सं० दण्डिन्] १ द्वारपाल, ड्योडोदार । २ संन्यासियों का एक भेद । ३ दण्ड देने वाला ।
 डंडकळी-स्त्री० काण्ड का छोटा डंडा ।
 डंडूर, डंडूळ, डंडूळी-पु० १ हवा से छितराई हुई वर्षा की बुंदें । २ वातचक्र, बवंडर । ३ एक दैत्य का नाम । ४ देखो 'डंडाळी' ।
 डंडेहड़, डंडेहड़ि, (डंडोहड़)-देखो 'डंडाहड़' ।
 डंडोत-स्त्री० [सं० दंडवत्] पृथ्वी पर उल्टा सोकर किया जाने वाला प्रणाम, साष्टांग प्रणाम ।
 डंडोतियो-वि० दंडवत् करने वाला ।
 डंडोळ, डंडोळी-पु० १ नगरा, दुंदुभि, डंडी । २ किसी बात का प्रचार ।
 डंडी-पु० [सं० दण्ड] १ लकड़ी का छोटा टुकड़ा, डंडा । २ बांस का टुकड़ा । ३ छड़ी । ४ डंडे की मार । ५ अहाते की छोटी दीवार । ६ देखो 'डंडो' ।
 डंडर, डंड-पु० मांडबर, ढोंग, पाखण्ड । वाह्य उपांग ।
 डंडक-वि० बेडोल, वेतुका । -डोल-वि० बेडौल शरीर वाला । -डोळी-वि० उभरा हुआ ।
 डंडणी (बो)-क्रि० लटकना ।
 डंडर-पु० [सं०] १ वैभव, गौरव । २ बादल, घटा । ३ घूंघ्रा । ४ सेना, दल । ५ समूह, यूथ । ६ उमंग, जोश । ७ वन, जंगल । ८ ध्वनि, आवाज । ९ प्रवाह । १० चकाचौंध ।

११ सुगंध, महक । १२ शान्त-शोकत, ठाट-बाट । १३ मड़क पर बिछाने का काला पदार्थ, कोलतार । १४ जमाव । १५ चटक-मटक । १६ समानता । १७ अभिमान, अहंकार । १८ लाली । १९ आच्छादन । २० तंत्र । -वि० १ सजन, अश्रुपूर्ण । २ आच्छादित । ३ लाल । ४ घना, सघन । ५ तरबतर ।
 डंडाणी (बो), डंडावणी (बो)-वि० लटकाना ।
 डंड-१ देखो 'डिम' । २ देखो 'डाम' ।
 डंडण-वि० [सं० दंभन] १ ठग, घोखाबाज । २ पाखण्डी, ढोंगी । (जैन)
 डंडणया, डंडणा-स्त्री० [सं० दंभना] १ ठगाई । २ माया । ३ कपट, छल (जैन) ।
 डंडरणी (बो)-क्रि० १ आनन्दित होना । २ उमंगित होना । ३ प्रफुल्लित होना, खिलना ।
 डंडर-पु० १ जोश, उमंग । २ ऐश्वर्य, वैभव, ठाट । ३ देखो 'डंडर' ।
 डंस-पु० [सं० दंश] १ सर्पादि विषैले जीवों के काटने की क्रिया, दंश । २ ईर्ष्या, द्वेष । ३ देखो 'डंस' ।
 डंसण-पु० [सं० दंशन] विषैले जीवों का डंसन, दंश ।
 डंसणी (बो)-देखो 'डंसणी' (बो) ।
 ड-पु० १ महादेव । २ महादेव का गण । ३ डमरू । ४ अर्जुन । ५ ताड़ वृक्ष । -स्त्री० ६ वृद्धावस्था । ७ ध्वनि । ८ गाय । ९ बड़वाग्नि ।
 डक-स्त्री० १ नगाड़े की ध्वनि । २ एक प्रकार का वाद्य । ३ एक प्रकार का मोटा कपड़ा । ४ देखो 'डाकौ' । ५ देखो 'डग' । -चूक='डाकचूक' । -डक-स्त्री० हंसने की क्रिया । हंसने की ध्वनि । छोटे मुंह के पात्र से द्रव पदार्थ के निकलने से उत्पन्न ध्वनि । द्रव पदार्थ के पीने से उत्पन्न ध्वनि ।
 डकडकणी (बो)-क्रि० १ हंसने की क्रिया, ध्वनि । २ ध्वनि विशेष ।
 डकडकि (की)-स्त्री० १ कंपकंपी, धरहट । २ हंसने की ध्वनि । ३ देखो 'डकडक' ।
 डकडक-देखी 'डकडक' ।
 डकणी (बो)-क्रि० कूदा जाना, लांघा जाना ।
 डकर-स्त्री० [सं० डाटकार] १ जोश, आवेश । २ प्रातंकपूर्ण आवाज । ३ जोशीली आवाज । ४ बोर ध्वनि । ५ दहाड़ । ६ धाक, मय, प्रातंक । ७ धमकी । ८ ध्वनि, आवाज । ९ दबाव, रौब ।
 डकराणी (बो), डकरावणी (बो)-क्रि० भयभीत करना, डराना, धाक जमाना ।

डकरेल

(५३०)

डफळाणी

डकरेल, (रैल)-वि० बलवान, वीर, बहादुर । -पु० सिंह ।

डकळ-डकळ-स्त्री० १ जल्दी-जल्दी पीने की क्रिया व इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि । २ हंसने की क्रिया व ध्वनि ।

डकाणी (बी), डकावणी (बी)-क्रि० १ कूदने, फांदने या लांघने के लिए प्रेरित करना । २ क्रमशः न बढ़ाकर बीच में कुछ छोड़ते हुए आगे बढ़ाना । लंघाना ।

डकार-स्त्री० १ कुछ खाने के बाद पेट की वायु गले से निकलने की क्रिया, ऊर्ध्ववायु । २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।

डकारणी (बी)-क्रि० १ पेट की वायु गले से निकालना । २ खाना, हजम करना । ३ अनुचित तरीके से आग्रह करना ।

डकत-देखो 'डाकू' ।

डकी-पु० १ वाद्य विशेष । २ देखो 'डाकी' ।

डक्क-देखो 'डक' ।

डक्कण, डक्कणी-देखो 'डाकणी' ।

डक्कर-पु० १ छोटे वक्त्रों के खेलने का डंडा । २ देखो 'डकर' ।

डक्का-स्त्री० [सं०] शिव का वाद्य, डमरू ।

डग-स्त्री० १ हाथी के पिछले पैरों में बांधने की रस्मी । २ हथकड़ी । ३ कदम, पैड । ४ कदम रखने की क्रिया । ५ एक कदम का स्थान । ६ पांव, पैर ।

डगडगाणी (बी)-क्रि० हिलना, डगमगाना । विचलित होना ।

डगडगारी-पु० बकवास, भ्रंश ।

डगडगि (गो)-स्त्री० १ एक वाद्य विशेष । २ ध्वनि विशेष । ३ कंपन ।

डगडोलणी (बी)-क्रि० हिलना-डुलना, डगमगाना ।

डगमगणी (बी)-क्रि० १ कांपना, धरना । २ डरना, भयभीत होना । ३ विचलित होना, अस्थिर होना । ४ स्थान छोड़ना, खिसकना । ५ हिलना-डुलना । ६ डांवा-डोल होना ।

डगमगा'ट-स्त्री० १ कंपन, अस्थिरता । २ हिलने-डुलने या डांवाडोल होने की क्रिया या भाव ।

डगमगाणी (बी), डगमगावणी (बी)-देखो 'डगमगणी' (बी) ।

डगर-पु० १ पथ, मार्ग, रास्ता । २ निरन्तर चलने से रास्ते में बनने वाली लकीर, चिह्न । ३ चाकर, सेवक ।

डगरिपौ, डगरी-पु० १ वृद्ध या दुर्बल ऊंट । २ अधटित पत्थर, बेडौल पत्थर । ३ लड़की का चौकीर या गोल खण्ड ।

४ मिट्टी का एक पात्र विशेष । ५ देखो 'डगर' ।

डगळ-वि० १ शून्य । २ निर्जन । ३ देखो 'डगळी' ।

डगलग-पु० कंकड़, पत्थर (जैन) ।

डगळिघी-देखो 'डगळी' ।

डगली (नू)-स्त्री० रुई भरकर बनाया हुआ पहनने का वस्त्र विशेष, अंगरक्षिका ।

डगळू, डगळी-पु० १ मिट्टी का डेला । २ किसी पदार्थ का डेला । ३ देखो 'डगरी' ।

डगाणी (बी), डगावणी (बी)-देखो 'डगाणी' (बी) ।

डग-देखो 'डग' ।

डचकण-पु० १ दिन भर शिर हिलाता रहने वाला घोड़ा । -स्त्री० २ कफ से खांसने की क्रिया या भाव ।

डचकणी (बी)-देखो 'डचकणी' (बी) ।

डचकी-पु० १ खांसी के साथ निकला कफ । २ देखो 'डाची' ।

डचकणी (बी)-क्रि० १ निगलना । २ खांस कर कफ गिराना ।

डचळ-डचळ-स्त्री० जल्दी-जल्दी भोजन करने की क्रिया ।

डचळी-स्त्री० १ खाने पर टूट पड़ने की क्रिया, भपटो । २ जल्दी-जल्दी खाने की क्रिया ।

डचाडच-स्त्री० १ अत्यन्त तेजी से खाने की क्रिया । २ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।

डचिपौ-पु० १ भपट कर खाने वाला कुत्ता । २ देखो 'डाची' । ३ देखो 'डचकी' । -वि० १ जल्दी-जल्दी खाने वाला । २ क्षीण ।

डटणी (बी)-१ रुकना, ठहरना । २ दबना, काबू में आना । ३ जमकर खड़ा होना, टिकना, दृढ़ रहना । ४ भिड़ना, डटना । ५ अडिग होना । ६ अवरुद्ध होना ।

डटाणी (बी), डटावणी (बी)-क्रि० १ रोकना, ठहराना । २ दबना, काबू में करना । ३ जमकर खड़ा करना, टिकाना, दृढ़ रखना । ४ भिड़ना, डटाना । ५ अडिग करना । ६ अवरुद्ध करना ।

डडियो-१ देखो 'दादो' । २ देखी 'डंडी' ।

डडौ, डडू-पु० १ 'ड' अक्षर । २ दादो ।

डडड़, डड-वि० [सं० दग्ध] १ जला हुआ (जैन) । २ देखो 'दादो' ।

डडिपळ-वि० दाढ़ीवाला, बड़ी दाढ़ी वाला ।

डणडणणी (बी)-क्रि० हंमना, खिल-खिलाना ।

डपटणी (बी)-क्रि० १ डांटना, फटकारना । २ वस्त्र में लपेट कर सुरक्षित करना । ३ पंखा झलना, हवा करना । ४ तेज दौड़ना । ५ जम कर खाना ।

डपोरसंख-वि० दिखने में अच्छा पर मूर्ख, मूढ़ ।

डप्पी-वि० मूर्ख, गंवार ।

डफ-पु० [प्र० दफ] १ लकड़ी के धेरे पर चमड़ा मंड कर तैयार किया वाद्य, डफ । २ मूर्ख, मूढ़ ।

डफणी (बी), डफळणी (बी)-क्रि० १ भीचवका होना, स्तम्भित होना । २ घबराना । ३ भूलना, चूकना । ४ भ्रमित होना, चूकना ।

डफळाणी (बी), डफळावणी (बी)-देखो 'डफाणी' (बी) ।

इफली-स्त्री० छोटा डफ ।

इफाल, इफाल-स्त्री० १ आंठवर, डोंग, पाखण्ड । २ गर्व, अभिमान ।

इफाली-वि० १ धूर्त, कपटी । २ पाखंडी, डोंगी । ३ अभिमानी ।

इफाली (बौ), इफाली (बौ)-क्रि० १ भीचका करना, स्तंभित करना । २ भयभीत करना । ३ भुलाना, चुकाना । ४ अभित करना, चुकाना ।

इफाली-पु० १ खंजरी बजाने वाला । २ एक मुसलमान जाति । इफाल, इफाली-वि० मूर्ख, नासमझ । —पल, पली-पु० मूर्खता, नासमझी । —संख=डपोरसंख ।

इब-स्त्री० द्रव पदार्थ में किसी वस्तु के डूबने की ध्वनि । —वि० पूर्ण, लवालब ।

इब-पु० एक प्रकार की घास ।

इबक (स्क)-१ देखो 'डबकी' । २ देखो 'डुबकी' ।

इबकणी (बौ)-क्रि० १ इधर-उधर भटकना, फिरना । २ पानी में डूबना, पैठना । ३ द्रव पदार्थ में कोई वस्तु डूबना ।

इबकणी (बौ), इबकणी (बौ)-१ इधर-उधर भटकना, फिरना, घुमाना । २ पानी में डूबना, पैठना । ३ द्रव पदार्थ में कोई वस्तु डूबना ।

इबकी-देखो 'डुबकी' ।

इबकी-पु० [सं० द्रव एवं द्रवकः] १ डूबने का भाव । २ तरल पदार्थ में कोई वस्तु पड़ने से उत्पन्न ध्वनि । ३ डब-डब ध्वनि । ४ मानसिक आघात । ५ वस्त्रों पर फूल-पत्तियों का छाया ।

इबगर-पु० डोल, नगाड़े, तबले आदि पर चमड़ा मढ़ने का कार्य करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

इबड़ी-स्त्री० १ एक लोक गीत विशेष । २ छोटी डिबियों का बच्चों का एक खेल । ३ दीवार में लगा सुन्दर पत्थर । ४ बड़े पात्र का छोटा ढक्कन । ५ तरबूज आदि फलों के बीच से काटा हुआ छोटा खण्ड । ६ आलय के पीछे लगा पत्थर । ७ देखो 'डबी' ।

इबडवली (बौ)-क्रि० १ प्रभु पूर्ण होना, सजल नेत्र होना । २ छोटे मुंह के पात्र को जल में डुबाकर भरते समय डब-डब ध्वनि होना । ३ डमरू बजना ।

इबडवली (बौ)-क्रि० १ सजल नेत्र करना । २ छोटे मुंह के पात्र को जल में डुबाना । ३ डमरू बजाना ।

इबडबी-वि० प्रभुपूर्ण, सजल ।

इबर-पु० १ आडम्बर, तड़क-भड़क । २ गंभीर शब्द । ३ बड़ा डोल । ४ तम्बू ।

इबरी-पु० १ एक पात्र विशेष । २ पलाश के पत्तों का दोना ।

इबक-पु० १ किसी वस्तु के टपकने की ध्वनि । २ वमन की अवस्था, उबकाई । ३ वमन, कै ।

इबाइब-स्त्री० १ वस्तु की अपूर्णता, ममागति । २ अव्यवस्था । ३ देखो 'डबोइब' ।

इबी-स्त्री० १ ढक्कनदार छोटा पात्र । २ डिविया । ३ शीशे आदि पर लगने का घातु का ढक्कन ।

इबोइब-वि० लवालब, पूर्ण भरा हुआ ।

इबोइली (बौ), इबोली (बौ), इबोवली (बौ)-देखो 'डुवाली' (बौ) ।

इबी-पु० १ सामान डालने का ढक्कनदार पात्र । २ रेलगाड़ी की बोगी । ३ बच्चों का एक रोग । ४ पानी का बुदबुदा । ५ वस्त्रों पर फूल-पत्तियों की छपाई । —वि० मूर्ख, नासमझ ।

डम-स्त्री० ध्वनि विशेष ।

डमकली (बौ)-क्रि० १ चमकना । २ डगर आदि का बजना । ३ ध्वनि होना ।

डमकली-पु० वाद्य विशेष ।

डमकाइली (बौ), डमकाली (बौ), डमकावली (बौ)-क्रि० १ चमकाना । २ डमरू आदि बजाना । ३ ध्वनि करना ।

डमडम-स्त्री० डमरू आदि वाद्यों की ध्वनि ।

डमडेर-देखो 'डमडेर' ।

डमडोली (बौ)-क्रि० १ चंचल होना । २ डांवाडोल होना ।

डमर-पु० [सं०] १ कोलतार । २ डमरू । ३ उपद्रव । ४ शासन संबंधी उपद्रव । ५ शान-शौकत, आडम्बर, ठाट-बाट । ६ देखो 'डंबर' ।

डमरू (अ क, ग, घ), डमरू-पु० [सं० डमरू] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष । २ शिव का प्रिय वाद्य । ३ कापालिक शैवों का वाद्य यंत्र । ४ बालक । ५ बायें घुटने में होने वाला क्रोष्ट्र वात रोग । ६ डमरू के आकार की कोई वस्तु । —कर-पु० शिव, महादेव । —जंत्र-पु० अर्क निकालने, सिगरफ का पारा, कर्पूर, नीमादर आदि उड़ाने का यंत्र । —छरण, नाथ-पु० शिव, महादेव । —मध्य-पु० जल या स्थल का पतला-संकरा मार्ग ।

डमांमो-पु० १ वाद्य विशेष । २ दमाही ।

डमरू-स्त्री० १ लड़ाई । २ प्रतिस्पर्धा । —वि० १ बहुत, अधिक । २ भयानक, विकट ।

डमरू(रू)-देखो 'डमरू' ।

डमाडमा-वि० १ भयभीत । २ कंपावमान ।

डर-पु० [सं० दर] १ भय, खौफ, डर । २ आतंक । ३ घनिष्ट की आशंका । ४ ध्वनि विशेष । ५ मेढक के बोलने की ध्वनि । ६ संकोच । —वि० सघन, गहरा, काला ।

डरकड़ी

(५३२)

डहलणी

डरकड़ी-देखो 'टरकड़ी' ।

डरकण-वि० कायर, डरपोक ।

डरड़ी-पु० बूढ़ा ऊंट ।

डरणी-स्त्री० भय, श्रस ।

डरणी(बी), डरपणी(बी)-क्रि० १ भय खाना, घबराना त्रसित होना । २ आतंकित होना । ३ अनिष्ट की आशंका करना ।

४ मेंढक का बोलना । ५ संकोच करना ।

डरपाणी(बी), डरपावणी(बी)-देखो 'डराणी' (बी) ।

डरपोक-वि० कायर, भीरु । —पणी-पु० कायरता ।

डरमछ-पु० शुभ माना जाने वाला एक प्रकार का घोड़ा ।

डरर-स्त्री० १ जोशीली आवाज । २ मेंढक के बोलने की ध्वनि ।

डररा'ड-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ मेंढक की आवाज । ३ क्रोध-पूर्ण ध्वनि ।

डरांमणी-देखो 'डरावणी' ।

डराणी(बी)-क्रि० १ भयभीत करना, त्रसित करना । २ आतंकित करना । ३ अनिष्ट की सूचना देना । ४ संकोच कराना ।

डरावणी-वि० भयानक, डरावना, खौफनाक ।

डरावणी(बी)-देखो 'डराणी' (बी) ।

डरू-फरू-वि० भयभीत, शंकित ।

डळणी(बी)-क्रि० १ गिरना, पड़ना । २ देखो 'डुळणी' (बी) ।

डळी-स्त्री० १ घोड़े की जोन के नीचे रहने वाला गद्दीनुमा उपकरण । २ गुड़ आदि पदार्थों का छोटा खंड ।

डळी-पु० १ किसी पदार्थ का बेडोल खण्ड । टुकड़ा । २ लौदा, पिंड । ३ देखो 'डळो' ।

डल्ली-पु० ऊंचे पायों की चारपाई ।

डवरू-देखो 'डमरू' ।

डस-स्त्री० १ तराजू की डांडी के मध्य बांधी जाने वाली डोरी । २ ताले आदि का अवयव । ३ डाह, ईर्ष्या । ४ नेत्र में होने वाली लाल रेखा । ५ नक्कारा ।

डसकी-देखो 'डुमकी' ।

डसण-पु० [सं० दशन] १ दांत, दंत । २ दंश करने की क्रिया या भाव । ३ देखो 'डसणि' ।

डसणि(णी)-स्त्री० १ कटार । २ डसने की क्रिया या भाव ।

डसणी(बी)-क्रि० [सं० दशन] १ सर्पादि जहरीले जंतुओं का काटना, दंश करना, डसना । २ दांतों से काटना, चबाना । ३ डक मारना ।

डसा-स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] १ दाढ़, डाढ़ । २ सिंह के आगे के दांत ।

डसी-स्त्री० १ कष्ट निवारणार्थ किसी देवस्थान पर, पहनने के वस्त्र की लगाई जाने वाली ध्वजा । धज्जी । २ देखो 'डम' ।

डहक-स्त्री० १ नगाड़े की ध्वनि । २ घाड़म्बर, ढोंग । ३ कपट, छल । ४ देखो 'डहक' ।

डहकणी(बी)-क्रि० १ नगाड़ा आदि बजना, ध्वनि होना । २ डमरू बजना । ३ भौचक्का होना, स्तब्ध होना । ४ धोखा खाना, ठगा जाना । ५ वहकना । ६ हंसना । ७ मेंढक का बोलना । ८ लहलहाना, हराभरा होना । ९ खिलना, प्रफुल्लित होना । १० सुगंधित होना, महकना । ११ सतर्क होना, चौकन्ना होना । १२ पक्षियों का मस्ती में बोलना । १३ मस्ती में चलना । १४ उर्मगित होना, उल्लसित होना । १५ रुक-रुक कर रोना, सिसकना ।

डहकाणी-वि० जो चमकाता हो, चमकाने वाला ।

डहकाणी(बी), डहकावणी(बी)-क्रि० १ गुमराह करना, वहकाना । २ भ्रम में डालना । ३ सशंकित करना । ४ नगाड़ा, डमरू आदि बजाना । ५ भौचक्का करना । ६ धोखा देना, ठगना । ७ खुश करना । ८ हरा-भरा करना । ९ सुगंध फैलाना, महकाना । १० सतर्क करना । ११ हंसना । १२ सिलाना, प्रफुल्लित करना । १३ उर्मगित करना । १४ सिसकाना ।

डहक-स्त्री० १ प्रस्फुटन, विकास । २ ध्वनि, आवाज । ३ देखो 'डहक' ।

डहकणी(बी)-देखो 'डहकणी' (बी) ।

डहकाणी(बी), डहकावणी(बी)-देखो 'डहकाणी' (बी) ।

डहचक्क-क्रि० वि० १ निरन्तर, लगातार । २ चिल्लाते हुए ।

डहडह-स्त्री० १ हंसने की ध्वनि । २ वाद्य ध्वनि ।

डहडहणी(बी)-क्रि० १ प्रफुल्लित होना, खिलना । २ भयातुर होना, भयभीत होना । ३ प्रसन्न, हर्षित होना । ४ नगाड़ा, डमरू आदि बजना । ५ लहलहाना, हरा-भरा होना । ६ मेंढक का बोलना ।

डहडहाड-देखो 'डे' डाट' ।

डहडहाव-पु० हरापन, ताजगी ।

डहडही-वि० हरा-भरा, प्रफुल्लित, ताजगी युक्त ।

डहणी(बी)-क्रि० १ संभाले रखना, उठाये हुए रखना । २ स्थापित करना, रखना । ३ धारण करना । ४ पहनना । ५ ग्रहण करना, पकड़ना । ६ ध्वनि करना, बजाना । ७ झारूढ़ होना । ८ शोभित होना । ९ होना, बनना । १० सुसज्जित होना, सजना । ११ दुःखी होना ।

डहरी(उ)-पु० [सं० दहरः] १ बालक (जैन) । २ जानवर का बच्चा । ३ तरुण, युवक (जैन) । ४ छोटा भाई, भ्रातृज । ५ चूहा । ६ शक्त जमीन (मेवात) । ७ देखो 'डंगी' ।

डहरी-स्त्री० १ प्रतिनी, डाकिनी । २ देखो 'डैरी' ।

डहरी-१ देखो 'डहर' । २ देखो 'डैरी' ।

डहलणी(बी), डहलाणी(बी)-क्रि० हाथी का चिघाड़ना ।

डहली-वि० गंदला, मैला :

डहाली (बी), डहावली (बी)-क्रि० १ निमित्त करना, बनाना ।
२ शोभित करना । ३ सुसज्जित करना । ४ दुःखी करना,
संतप्त करना । ५ देखो 'डहणी' (बी) ।

डहाल-स्त्री० तलवार ।

डहकली (बी)-देखो 'डहकणी' (बी) ।

डहडहली (बी)-देखो 'डहडहणी' (बी) ।

डहोली-पु० १ भय, डर । २ उपद्रव, आंदोलन । ३ खलबली,
आकुलता । ४ अव्यवस्था । ५ क्षोभ ।

डहोली-पु० १ काठ का बड़ा चम्मच । २ देखो 'डोली' ।

डांक, डांकल-स्त्री० १ सोने चांदी के आभूषणों में लगाया
जाने वाला जोड़ । २ देखो 'डांखली' ।

डांकली-देखो 'डांखली' ।

डांकियो-देखो 'डांखियो' ।

डांखणी (बी)-देखो 'डांखणी' (बी) ।

डांखरी-वि० घुंघुला ।

डांखल, डांखलियो, डांखली, डांखली-पु० १ डंठल । २ तिनका ।
३ टहनी आदि का छोटा व पतला टुकड़ा ।

डांखणी (बी)-क्रि० १ क्रोधित होना । २ आकाश में विचरण
करना, उड़ना । ३ चोंच से कुरेदना ।

डांखियो-पु० भूखा व क्रुद्ध सिंह । -वि० क्रुद्ध, कुपित ।

डांग, डांगड़ी, डांगड़ी-स्त्री० १ लाठी । हाथ में रखने की
कोई लकड़ी । २ क्षेत्र या खुली भूमि का आहूता ।
३ बेलगाड़ी के पाटों से लगने वाली लकड़ी । -रात-
पु० तीर्यादि से लौटकर करावाया जाने वाला रात्रि
जागरण ।

डांगड़ियो-पु० सारवियों की देवी की पूजा करने वाला साधु ।

डांगपटेलई-स्त्री० १ मारपीट । २ डराने धमकाने की क्रिया
३ किसी को बेवकूफ बनाने की क्रिया ।

डांगर-पु० पशु, मवेशी । -वि० मूर्ख, गंवार । -जंत्र-पु० एक
प्रकार की तोप ।

डांगर (रु)-वि० १ घोषणा करने वाला । २ देखो 'डांगर' ।

डांगरी-देखो 'डांगर' ।

डांगी-पु० हंमिया लगा लंबा वस्त्र ।

डांचो-पु० ऊंचे पाथों का पसंग ।

डांजी, डांजी-स्त्री० रेगिस्तान की खुली भूमि जहां पेड़ पीथे
आदि कुछ न हों ।

डांटणी (बी)-देखो 'डांटणी' (बी) ।

डांड-पु० १ नाव खेने का बल्ल, चप्पू । २ सीधी लकड़ी, डंडा ।

३ अकुश का हथियार । ४ देखो 'डंडी' । -वि० १ मूर्ख,
गंवार । २ जवरदस्त ।

डांडणी (बी)-१ देखो 'डंडणी' (बी) । २ देखो 'डांडणी' (बी) ।

डांडहड़ि (डी)-१ देखो 'डंडाहड़' । २ देखो 'डंडी' ।

डांडि-१ देखो 'डांडी' ।

डांडियो-देखो 'डंडियो' । २ देखो 'डंडी' ।

डांडी-स्त्री० [सं० दण्डिका] १ पंगडंडी । २ संकरा व पतला
रास्ता । ३ नाक का ऊपरी भाग । ४ तराजू की लकड़ी,
डंडी । ५ सीधी लकीर । ६ चम्मच या किसी उपकरण
का हथियार, दस्ता । ७ पालकी के डंडे ।

डांडीड़-१ देखो 'डांडी' । २ देखो 'डांडी' ।

डांडीयो-देखो 'डंडियो' ।

डांडेमीढ़-वि० क्रोधी ।

डांडी-पु० १ फाल्गुन मास के प्रारंभ में रोपा जाने वाला होली
का डंडा । २ औजार का हथियार, दस्ता । ३ डंडा ।
४ पालकी का डंडा ।

डांण-पु० [सं० दान] १ चौपड़ आदि का सेल, दाव । २ दाव ।
३ कर, टेक्स । ४ दण्ड, जुमाना, सजा । ५ सिंह, हाथी
तथा ऊंट की गर्दन के बाल । ६ सिंह, हाथी व ऊंट की
गर्दन से झरने वाला मद । ७ गर्व, अभिमान । ८ जोश ।
९ जुलूस । १० मचान, मंच । ११ खाता, मद ।
१२ विभाग । १३ मस्ती । १४ उपाय, युक्ति, तरीका ।
१५ ऐश, आराम, मौज । १६ ऊंट की पीठ पर सवारों के
लिए कसी जाने वाली गद्दी । १७ घोड़े की जीन ।
१८ छत्रांग, चौकड़ी । १९ डग, कदम । २० सीमा, हद ।
२१ सजावट । २२ युद्ध के लिए सेना की तैयारी ।
२३ पारी, बारी । -वि० १ स्वस्थ, निरोग । २ समान,
तुल्य । ३ तीव्र, तेज ।

डांणणी (बी)-क्रि० ऊंट की पीठ पर गद्दी कसना ।

डांणरोजगार-पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।

डांणहली-वि० वीर, योद्धा ।

डांणी-वि० लगान वसूल करने वाला ।

डांणे, (णै)-क्रि० वि० आनन्द से, मौज से ।

डांणी-पु० कूप पर लगी शिला ।

डांफर-स्त्री० १ बाह्याडंबर, दिखावटी ठाट । २ बातचक्र,
आंधी । ३ अत्यन्त डंडी हवा । ४ शीतकाल की तेज
बर्फाली हवा ।

डांफी-स्त्री० १ शीतल वायु । २ देखो 'डांफी' ।

डांब-देखो 'डाम' ।

डांबियो-पु० एक कांडेदार वृक्ष विशेष ।

डांणणी (बी)-देखो 'डामणी' (बी) ।

डाम-पु० १ तपी हुई सलाई से किसी प्राणी के शरीर पर
लगाया जाने वाला दाग, अग्नि-दग्ध । २ इस प्रकार दग्ध
करने से बनने वाला चिह्न ।

डामड़ी-पु० १ मवान । २ देखो 'डाम' ।

डामणी (बो)-क्रि० अग्नि दग्ध करना, दाग लगाना ।

डामर-वि० [सं० डामर] १ भयानक, भयंकर । २ विप्लवकारी, उपद्रवी । ३ मनोहर, सुन्दर । -पु० १ कोलाहल, हल्ला । २ उपद्रव । ३ चीत्कार । ४ कोलतार । ५ काँति, चमक । ६ भव्यता । ७ वैभव, शान । ८.४९ क्षेत्रपालों में से २९ वां क्षेत्रपाल । ९ एक प्रकार का तंत्र । १० डमरू नामक वाद्य । ११ इस वाद्य की ध्वनि ।

डामरी-स्त्री० १ अंधेरा । २ धुंधलापन ।

डामणी (बो), डामावणी (बो)-क्रि० अग्नि दग्ध करना, दाग लगवाना ।

डालवणी (बो)-क्रि० मेंढक का बोलना ।

डांव-१ देखो 'डाम' । २ देखो 'दांव' ।

डांवणी (बो)-देखो 'डामणी' (बो) ।

डांवांडोल, डांवाडोल-वि० १ हिलने-डुलने वाला, अस्थिर । २ झूलता हुआ । ३ चलचित्त, अग्रित । ४ विचलित । ५ अनिश्चित, अव्यवस्थित ।

डांस, डांसर-पु० [सं० दंश] १ बड़ा मच्छर । २ पशुओं को काटने वाली एक मक्खी, पतंगा । -वि० १ जबरदस्त, जोरदार । २ बहुश्रुत, वयोवृद्ध ।

डांसरियो-पु० १ मंमोले कंद का एक पहाड़ी वृक्ष व उसका फल । २ देखो 'डांसर' ।

डांसू-पु० दंश ।

डा-पु० १ सूर्य । २ भूत । ३ समूह । -स्त्री० ४ पृथ्वी । ५ उमा । ६ रमा । ७ डायन ।

डा'-१ देखो 'आवड़ी' । २ देखो 'डाह' । ३ देखी 'डाव' ।

डाइमाल-देखो 'डाइयाळ' ।

डाइचउ, डाइची-देखो 'दायजी' ।

डाइरा, डाइरि, डाइणी, डाइन-देखो 'डायण' ।

डाइयाळ-वि० १ बायीं तरफ चलने वाला । २ कुछ बड़ा ।

डाई-स्त्री० १ बारी, पारी, नम्बर, क्रम । २ बच्चों के खेल में हार की दशा । ३ देखो 'डाकी' । -वि० सीधी-सादी, विनम्र ।

डाउड़ी-देखो 'डावड़ी' ।

डाक-स्त्री० १ ध्वनि, आवाज । २ वाद्यों की ध्वनि । ३ रणवाद्य । ४ विजयी दुंदुभि, नगाड़ा । ५ शिव का डमरू । ६ युद्ध प्रिय देवता का वाजा । ७ उल्लू को आवाज । ८ तंग लेकिन लम्बा भू-भाग । ९ हाथी को वश में करने का छोटा भाला । १० हाथी के शरीर में उक्त भाले का घाव । ११ डग, कदम । १२ डाकुओं का दल । १३ पत्र, चिट्ठी । १४ चिट्ठियों-पत्रों को यथा-स्थान भेजने की व्यवस्था करने वाला विभाग । १५ सरकारी पत्र, चिट्ठी ।

१६ डाक लेजाने वाली व बड़े स्टेशनों पर ही रुकने वाली द्रुतगामी गाड़ी । १७ दूरी, फासला । १८ हाथियों का हैजा रोग । १९ शिव का गण-समूह । २० देखो 'डाकी' । -खरख-पु० पत्र या किसी वस्तु को डाक द्वारा भेजने का खर्च । -खांनो-पु० डाक विभाग । -गाड़ी-स्त्री० डाक ले जाने वाली द्रुतगामी गाड़ी । -घर-डाकखांनो' । -बंगळी-पु० पर्यटकों के ठहरने का सरकारी आवास गृह ।

डाकचूक-वि० यबरया हुआ, डांवाडोल ।

डाकडमाळ (डमाळी)-स्त्री० १ आडम्बर, ढोंग दिखावा । २ एक प्रकार की लता ।

डाकरण, डाकण, (णी)-स्त्री० [सं० डाकिनी] १ बच्चों की नजर लगाने वाली स्त्री, डायन । २ चूड़ेल, प्रतिनि । ३ राक्षसी । ४ काली देवी की एक सहचरी । -पोड़ी-पु० लयकड़बग्धा ।

डाकणी (बो)-क्रि० १ कूदना, फांदना । २ कूद कर पार करना, लांघना । ३ छलांग लगाना । ४ दुधारू पवेशी का दूध देना बंद कर देना ।

डाकवार-पु० १ मस्त हाथी को काबू में करने वाला महावत । २ सरकारी डाक ले जाने वाला कर्मचारी । ३ डाकिया, चिट्ठी रसा ।

डाकमुंसी-पु० किसी डाक घर का प्रभारी ।

डाकर-देखो 'डकर' ।

डाकरडोर-पु० भय, डर ।

डाकरणी (बो)-क्रि० १ सिंह या सूअर का क्रोध में बोलना, गर्जना । २ डांटना, फटकारना ।

डाकळी-स्त्री० एक प्रकार का वाद्य ।

डाकवेल-स्त्री० नाँव खोदने या क्यारो बनाने के लिए बनाई जाने वाली सीपी रेखा ।

डाकापांचम-स्त्री० फाल्गुण कृष्ण पंचमी की तिथि ।

डाकाबंध-वि० १ जिसके यहां नगारे-निशान बजते रहते हों । २ योद्धा, वीर ।

डाकणी (नि, नो)-देखो 'डाकण' ।

डाकियो-पु० चिट्ठी रमा, पोस्टमेन ।

डाकी, डाकीड़-वि० (स्त्री० डाकण) १ बच्चों को नजर लगाने वाला । २ अधिक खाने वाला, पेदू । ३ महान् शक्तिशाली, जबरदस्त । ४ भयानक डील-डील वाला । ५ नरमझी, प्रसुर, दैत्य । ६ दुष्ट, आततायी । ७ वीर, बहादुर । -स्त्री० १ वृद्ध मादा ऊँट । २ सोलंकी वंश की एक शाखा ।

डाकू-पु० १ लुटेरा, धाड़ायत । २ पेदू ।

डाकोत, डाकोतियो-पु० 'डाक' नामक ज्योतिषी के वंशजों को एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

डाकी-पु० १ लुटेरों का आक्रमण, घाड़ा, लूट का कार्य ।
 २ भय, आतंक । ३ डोल, नगाड़ा आदि बजाने का डंडा ।
 ४ देखो 'डंकी' । ५ देखो 'डागी' ।
 डाग-स्त्री० १ वृद्ध मादा ऊंट । २ टहनी, शाखा, डाली ।
 ३ साग, भाजी, तरकारी । (जैन)
 डागड़, डागड़िया, डागड़ो-देखो 'डागी' ।
 डागळ-वि० १ जो आकार में बड़ा हो । २ देखो 'डागळो' ।
 डागळियो-देखो 'डागळी' ।
 डागळो-स्त्री० १ बेलगाड़ी का थाटा । २ देखो 'डागळे' ।
 ३ देखो 'डागळी' ।
 डागळे (ळै)-कि० वि० छत पर ।
 डागळी-पु० छत, मकान के ऊपर का आंगन ।
 डागाळ-पु० एक प्रकार का माला ।
 डाच-देखो 'डान्ची' ।
 डाचकी-पु० मिचली, मतली, ओकाई ।
 डाची-पु० मादा, ऊंट ।
 डाची-पु० १ मुंह, मुख । २ बड़ा घास । ३ मुंह से काटने की क्रिया । ४ मुंह से काटने का निशान ।
 डाट-स्त्री० १ घुड़की, क्रोध पूर्वक फटकार । २ रोक ।
 ३ शीशी आदि के मुंह में कुछ फंसा कर दिया जाने वाला ढक्कन, कार्क । ४ दबाव । ५ आसन ।
 ६ देखो 'डाटी' ।
 डाटड-देखो 'डाटी' ।
 डाटकिया-स्त्री० घोड़ों की एक जाति ।
 डाटकियो-पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।
 डाटणी (बी)-कि० १ फटकारना, प्रताड़ना देना, डांटना ।
 २ क्रोध पूर्ण स्वर में बोलना । ३ गाड़ना । ४ दबाना, दबा कर रखना । ५ बंद करना, ढकना । ६ छेद या मुंह बंद करना, फंसाना । ७ किसी वस्तु को भिड़ाकर ठेलना ।
 ८ खूब पेट भर खाना, कसकर खाना । ९ ठाट से पहनना ।
 डाटो-देखो 'डाट' ।
 डाटी-पु० १ शीशी आदि को मुंह या किसी छेद को बंद करने के लिये फंसाया जाने वाला ढक्कन, डाट । २ रोक ।
 ३ मस्तक ।
 डाड, डाडड़ी-स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] १ चबाकर खाने वाला बड़ा दांत, दाढ़ । २ रहट में लगने वाला एक उपकरण ।
 ३ रुदन, बिलाप । ४ क्रूर दृष्टि ।
 डाडणी (बी)-कि० १ जोर में रोना, गला फाड़कर रोना, कूकना । २ चिल्लाना ।
 डाडर, डाडरी-पु० १ वक्षस्थल, सीना । २ पीठ । ३ भेंदक ।
 डाडाळ (ळी)-देखो 'डाढाळी' ।
 डाढाळी-देखो 'डाढाळी' ।

डाडी-देखो 'डाढी' ।
 डाढ (डो)-देखो 'डाड' ।
 डाङणी (बी)-देखो 'डाङणी' (बी) ।
 डाङवाळ, डाढाळ, डाढाळी-स्त्री० १ देवी, दुर्गा, शक्ति ।
 २ वह स्त्री जिसके चिबुक पर दाढ़ी हो । ३ बड़ी-बड़ी दाढ़ों वाली कोई मादा ।
 डाढाळी-पु० १ वराह अवतार । २ सूअर, शूकर । ३ सिंह, शेर । ४ बड़ी-बड़ी दाढ़ों वाला प्राणी । ५ यवन, मुसलमान ।
 डाढी-स्त्री० १ ठोड़ी, चिबुक । २ चिबुक पर के बाल, हजामत ।
 ३ चिबुक के बाल काटने की क्रिया ।
 डाङेराव-वि० बड़े-बड़े दांतों वाला ।
 डाङ्याळी-देखो 'डाढाली' ।
 डात्कार-पु० डमरू की ध्वनि । शब्द ।
 डाफर-देखो 'डांफर' ।
 डाफळ-वि० १ छिनराया हुआ । २ बड़ा ।
 डाफी-स्त्री० १ मति, बुद्धि । २ मति शीघ्रता से पानी पीने से पेट में बनने वाला वायु का गोला ।
 डाफो-पु० चक्कर, व्यर्थ की भटकन ।
 डाब, डाबड़ी-पु० [सं० दर्भ] १ कुश जाति की घास, कुश ।
 २ बन्दूक में लगा चमड़े का तस्मा । ३ देखो 'दाव' ।
 डाबड़ी-पु० १ रहट का घेरा । २ देखो 'डाब' ।
 डाबर-पु० १ आंखों का सौन्दर्य । २ बड़े व गोल नेत्र ।
 ३ छोटा तालाब, पोखर ।
 डाभ-देखो 'डाब' ।
 डायची-देखो 'दायजी' ।
 डायजावाळ-पु० दहेज में दिया हुआ व्यक्ति या सामान ।
 डायजो-देखो 'दायजो' ।
 डायण, (णि, णी, नि, नौ)-स्त्री० १ एक प्रकार की लता ।
 २ देखो 'डाकण' ।
 डायल-देखो 'डाहल' ।
 डायली-वि० (स्त्री० डायली) १ जबरदस्त, जोरदार ।
 २ समर्थ । ३ देखो 'डावी' ।
 डायां-स्त्री० बेलगाड़ी के अग्रभाग में लटकने वाली दो लकड़ियां ।
 डायी-वि० [सं० दक्ष] (स्त्री० डाई, डायी) १ चतुर, दक्ष, समझदार । २ छटा हुआ, धूर्त, चालाक । ३ सीधा, सरल, सहज । ४ कुछ बड़ा । ५ बायां ।
 डार (इ), डारड़ियो (डो)-पु० १ लुण्ड, समूह । २ पंक्ति, अवली । ३ दल, टोली ।
 डारण-वि० १ योद्धा, वीर । २ शक्तिशाली, बलवान जबरदस्त । ३ दीर्घकाय, भीमकाय ।

डारणी

(५३६)

डिस्ती

डारणी (बो)—क्रि० १ भयभीत करना, डराना । २ देखो 'डालणी' (बो) ।

डारपत, (पति, पत्नी) पु० भूधर, भूकर ।

डारी-पु० १ सूअर । २ देखो 'डार' । ३ देखो 'डारण' ।

डाळ (ल)—स्त्री० १ तलवार की भूठ के ऊपर का भाग । २ तलवार का फल । ३ दराट, शिगाफ । ४ द्वार पर कमान की तरह लगे दो पत्थर । ५ शाखा, टहनी ।

डालणी (बो)—क्रि० १ किसी में कुछ डालना, घुसाना, मिराना, मिलाना । २ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैलाना । ३ पहनना ।

डाळामंग-पु० केवट, नाविक ।

डाळामायी-पु० सिंह, शेर ।

डाळि, डाळी-स्त्री० वृक्ष आदि की शाखा, टहनी ।

डाळी-पु० [सं० दारः] वृक्ष आदि की बड़ी शाखा ।

डाली-पु० [सं० डल्ल] १ बांस की खपचियों का बड़ा टोकरा, डलिया । २ ट्रक के पीछे का भाग, जहां सामान भरा जाता है ।

डाव-पु० १ नृत्य, नाच । २ एक बार में किया जाने वाला नृत्य । ३ देखो 'दाव' ।

डावड़ी-देखो 'डावड़ी' ।

डावड़ी-स्त्री० १ पुत्री, बेटो । २ कन्या, बालिका । ३ दासी, सेविका ।

डावड़ी-पु० (स्त्री० डावड़ी) १ बालक, लड़का । २ पुत्र, बेटा ।

डावरी-देखो 'डावड़ी' ।

डावरी-देखो 'डावड़ी' ।

डावलिया, डावली-वि० १ बायें हाथ से अधिक कार्य करने वाला । २ देखो 'डावी' ।

डावांडोल, डावाडोल-देखो 'डावाडोल' ।

डावु, डावू, डावी-वि० [सं० वाम] (स्त्री० डावी) १ बायां, वाम । २ प्रतिकूल, विरुद्ध । ३ उल्टा । ४ देखो 'डावी' । -पु० १ बायां हाथ । २ बायां अंग ।

डाह-स्त्री० [सं० द'ह] ईर्ष्या, द्वेष, जलन ।

डाहणी (बो)—क्रि० धारण करना, पहनना ।

डाहर-पु० एक जाति विशेष ।

डाहळ-स्त्री० १ एक वाद्य विशेष । २ देखो 'डाळी' ।

डाहम-पु० [सं०] १ शिशुपाल । २ एक देश । ३ इस देश के अधिवासी । ४ देखो 'डाहली' ।

डाहळी-देखो 'डाळी' ।

डाहली-वि० (स्त्री० डाहली) १ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु । २ देखो 'डावी' । ३ देखो 'डावी' । ४ देखो 'डाहल' ।

डाहापणी-पु० चतुरता, दक्षता, सरलता, सीधापन ।

डाह्णि (णी)-स्त्री० छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक ।

डाही-देखो 'डाई' ।

डाहुड-पु० एक देश का नाम ।

डाहुलिया, डाहुली-देखो 'डायली' ।

डाह्रार-देखो 'डाइयाळ' ।

डाहरी, डाही-देखो 'डायी' । (स्त्री० डाही) ।

डिगळ-स्त्री० राजस्थान या मरुप्रदेश की एक प्राचीन काव्य भाषा ।

डिगळियो, डिगळ्यो-वि० डिगल का जानकार, 'डिगल' का पंडित ।

डिडिम, डिडिम, (भि, मो)-स्त्री० [सं० दुंदुभी] एक प्रकार का वाद्य ।

डिडीर-पु० फेन, भाग ।

डिव, डिम, डिमक-पु० [सं०] १ पुत्र, बेटा । २ युद्ध, लड़ाई । ३ जानवर का बच्चा ।

डिमकरास्त्र-पु० एक प्रकार का अस्त्र ।

डिकामाळी-स्त्री० दक्षिण या मध्य भारत में पाया जाने वाला वृक्ष ।

डिगंबर, डिगंबर-देखो 'दिगंबर' ।

डिगणी (बो)—क्रि० १ खड़े या चलते हुए का संतुलन बिगाड़ना । २ संतुलन बिगाड़ने से गिर पड़ना । ३ हिलना-डुलना । ४ डगमगाना । ५ स्थान छोड़ना, हटना । ६ नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना । ७ प्रण पर बढ़ न रहना, उसूलों से भिरना । ८ विचलित होना । ९ चारित्रिक कमजोरी आना ।

डिगपाळ-देखो 'दिगपाल' ।

डिगमिग-देखो 'डगमग' ।

डिगमिगाहट-देखो 'डगमगाहट' ।

डिगर-पु० [सं० डिगर] नौकर, चाकर, परिचायक ।

डिगाणी (बो), डिगावणी (बो)—क्रि० १ खड़े या चलते हुए का संतुलन बिगाड़ना । २ नीचे गिरना । ३ धक्का या टक्कर लगाना । ४ हिलाना-डुलाना । ५ डगमगाना । ६ स्थान छोड़ना, हटना । ७ नीचे की ओर प्रवृत्त करना, झुकाना । ८ प्रण पर बढ़ न रहने देना, उसूलों से गिराना । ९ विचलित करना । १० चरित्र से गिराना ।

डिचकारी-देखो 'टिचकारी' ।

डिचडिच-देखो 'टिचटिच' ।

डिड-देखो 'द्रह' ।

डिमर-देखो 'डमरू' ।

डित्ति-देखो 'डोल' ।

डित्ती-पु० १ एक मात्रिक छंद विशेष । २ एक वर्णिक छंद विशेष ।

डीग-स्त्री० शेखी, गप्प । प्रतिशयोक्ति पूर्ण बात ।

डीगड़-देखो 'डीगी' ।

डींगर, डींगरी-पु० १ एक शिरे में छेद कर या रस्सी बांध कर वदभाष पशु के गले में लटकायी जाने वाली लकड़ी ।

२ मूर्ख प्राणी ।

डींगल-देखो 'डिगल' ।

डींगलियाँ-देखो 'डिगलियाँ' ।

डींगली-देखो 'डींगली' ।

डींगाड़, डींगार-देखो 'डीगाड़' ।

डींगोड़, डींगोड़ियाँ, डींगोड़ी-देखो 'डीगी' ।

डींगी-पु० १ लकड़ी का टुंडा । २ मूर्ख व्यक्ति । ३ देखो 'डीगी' ।

डीघड़, डीघल, डीघोड़-देखो 'डीगी' ।

डीच-पु० पत्ती या फूल के पीछे का डंठल ।

डीहू-पु० जल में रहने वाला सर्प ।

डीडोळियाँ-१ देखो 'डंडोळी' । २ देखो 'डंडियाँ' ।

डीधु (बू), डीधू-पु० भिड़ नामक कोट, तर्तया, बर ।

डीधा-स्त्री० [सं० दृष्टि] १ नजर, दृष्टि । २ नेत्र, नयन ।

डी-पु० १ घासन । २ आमला । ३ आकाश । ४ समुद्र ।

५ पेन, भाग । -स्त्री० ६ हरीतकी । ७ जंजीर ।

डीकर, डीकरड़ी-देखो 'डीकरी' ।

डीकरड़ी, डीकरियाँ-देखो 'डीकरी' ।

डीकरी-स्त्री० १ पुत्री, बेटा । २ लड़की, बालिका ।

डीकरी-पु० [सं० दीप्तिकर] (स्त्री० डीकरी) १ पुत्र, बेटा ।

२ लड़का, बालक ।

डीकामळी-स्त्री० गाड़ी ।

डीगड़, डीगड़ियाँ, डीगड़ी, डीगळ, डीगलियाँ, डीगली-देखो 'डीगी' ।

डीगाड़, डींगार-पु० रहट में लगने का लकड़ी का एक डंडा ।

डीगोड़, डीगोड़ियाँ, डीगोड़ी-देखो 'डीगी' ।

डीगी, डीघड़, डीघड़ियाँ डीघड़ी, डीघल, डीघलियाँ, डीघली, डीघोड़,

डीघोड़ियाँ, डीघोड़ी, डीघी-वि० [सं० दीर्घ] (स्त्री० डीगी)

ऊँचे या लंबे कथ का, लंबा ।

डीठ-देखो 'दीठ' ।

डीबसियाँ-देखो 'डीबसियाँ' ।

डीबी, डीभू, डीबी, डीभ, डीभी-पु० १ मानसिक कष्ट, आघात, सदमा । २ ईर्ष्या, डाह, जवन । ३ कोड़ा ।

डीर-पु० वृक्षों की मौर, बोर । मंजरी ।

डीरा-स्त्री० डोलियों की एक शाखा ।

डील-पु० १ शरीर, देह, तन । २ व्यक्ति, मनुष्य, प्राणी ।

३ योनि, भग । -घांगी-पु० व्यापार या कृषि में श्रम

के बदले मिलने वाला भाग । -डील-पु० शरीर का आकार, ढाँचा, बनावट, विस्तार । -वड़ी=हाड़-वड़ी' ।

डीलायती, डीलायती-वि० १ शरीर या देह संबंधी । २ भीमकाय, दीर्घकाय ।

डील-देखो 'डील' ।

डीली-देखो 'दिल्ली' ।

डीलीडील-पु० अंग-उपंग ।

डीवा पांणल-पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।

डीसा-मूली-स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति ।

डुंगर-जोवी-देखो 'डूंगरजोवी' ।

डुंगरि (री)-देखो 'डूंगरी' ।

डुंडि, (डो)-देखो 'डूंडी' ।

डुंब, डुंबड़ियाँ, डुंबड़ी-देखो 'डूम' ।

डुंवलिय-स्त्री० एक अनार्य जाति एवं इस जाति का व्यक्ति ।

डुंहकलि, (ली)-स्त्री० एक वनस्पति विशेष ।

डु-पु० १ रक्त । २ स्तंभ । ३ यमुद्र । ४ कवूतर । -स्त्री०

५ पार्वती । ६ शक्ति । ७ लता । ८ साँख ।

डुकलियाँ, डुकली-पु० जीर्ण-शीर्ण या ढीली-ढाली खाट ।

डुकी, डुक्की-पु० १ मुक्का, मुष्ठिका । २ मुष्ठिका प्रहार ।

डुखलियाँ, डुखली-देखो 'डुकली' ।

डुगडुगाणी (बी), डुगडुगावणी (बी)-क्रि० डुगडुगी बजाना ।

डुगडुगी, डुगी-स्त्री० चमड़ा मंडा एक छोटा वाद्य, डुगी ।

डुइंद, डुइंद, डुइइंद-पु० मूयं, रवि ।

डुपटी-देखो 'दुपटी' ।

डुपटी, डुपट्टी-देखो 'दुपट्टी' ।

डुबकी-स्त्री० १ पानी में डूबने की क्रिया, गोता । २ अवगाहन ।

डुबाणी (बी), डुबावणी (बी), डुबोणी (बी), डुबोवणी

(बी)-क्रि० १ पानी आदि द्रव पदार्थ में पैठा देना,

धुसाना, गोता लगवाना । २ गहरे पानी में ऐसे धुसाना कि

सही सलामत वापस न निकल सके । ३ भिगोना, तरबतर

करना । ४ नष्ट करना, बरबाद करना । ५ लीन या मग्न

करना । ६ गलत हाथों में दे देना । गलत जगह रखना ।

गलत जगह भेजना । ७ मिटाना ।

डुरकी-स्त्री० कछगरस प्रधान एक गीत विशेष ।

डुरगलियाँ, डुरगली, डुरगली-पु० स्त्रियों का कर्णाभूषण

विशेष ।

डुळणी (बी)-क्रि० १ विचलित होना, अस्थिरचित्त होना ।

२ हिलना-डुलना, डोलना । ३ तरसना, लालायित होना ।

डुलणी (बी)-देखो 'डोलणी' (बी) ।

डुलहर-देखो 'डोलर' ।

डुळाणी (बो), डुळावणी (बो)—क्रि० १ विचलित करना, अस्थिरचित्त करना । २ हिलाना-डुलाना । ३ लालायित करना । तरमाना ।

डुलाणी (बो), डुलावणी (बो)—देखो 'डोलाणी' (बो) ।

डुळियो—वि० विचलित, अधीर, आवुर, अस्थिर ।

डुलीसुत—पु० कलुषा ।

डुसकणी (बो), डुसकाणी (बो), डुसकावणी (बो)—क्रि० १ मुक्क-मुक्क कर रोना, सिसकना । २ हिचकिचां भरना ।

डुसकी डुसकी, डुसक्यो—पु० १ मुक्क कर रोने की क्रिया, सिसकी, हिचकी । २ रुकती हुई लम्बी सांस । ३ मरणासन्न अवस्था में आने वाली हिचकी ।

डूँख डूँख, डूँखळियो, डूँखळी डूँखळी—पु० १ पीछे का सूखा डंठल । २ सूखी जड़ ।

डूँगर (झी)—पु० [सं० तुंग] पहाड़, पर्वत । —जीबो-वि० पर्वत के समान दीर्घायु वाला । पर्वतों में रहने वाला ।

डूँगरडी, डूँगरि—देखो 'डूँगरी' ।

डूँगरियो—देखो 'डूँगर' ।

डूँगरी—स्त्री० छोटी पहाड़ी, पहाड़ की चोटी ।

डूँगरेची—स्त्री० आवड़ देवी का एक नाम ।

डूँगळी—पु० एक प्रकार का धास ।

डूँगी—वि० गहरी, अधिक गहरी । —पु० तबले का बायां ।

डूँच—१ देखो 'डूँचकी' । २ देखो 'डूँज' ।

डूँचकी—पु० १ डंठल । २ पौधा कटने के बाद पीछे रहने वाला भाग । २ देखो 'डाचकी' ।

डूँचणी (बो)—क्रि० १ ज्वार, बाजरे आदि की फसल की बालें तोड़ना । २ काटना । ३ इकट्ठा करना । ४ डाट, लगाना, रोकना ।

डूँचियो—१ देखो 'डूँचकी' । २ देखो 'डूँजी' ।

डूँचोड़, डूँचो—पु० १ खेत में बना मचान । २ देखो 'डूँजी' ।

डूँज—पु० १ तूफान, अंधड़, तेज हवा । २ देखो 'डूँजी' ।

डूँजिबी, डूँजी—पु० १ शीशी आदि के संकरे मुँह या छेद को बंद करने के लिए फंसाई जाने वाली वस्तु, कार्क, डाट । २ श्वास अवरोध की अवस्था, बेहोशी । ३ खाते समय गले में शास अटकने से होने वाला कष्ट ।

डूँड—पु० १ तेज वायु के साथ उड़ने वाली गर्द । २ वात चक्र ।

डूँडळी—स्त्री० १ बिना सींग की गाय या भैंस । २ देखो 'डूँडी' ।

डूँडि, डूँडी—स्त्री० १ नगाड़ा । २ नगाड़ा आदि वाद्य बजा कर गली-गली में दी जाने वाली सूचना । ३ नाव ।

डूँडी—पु० १ नाव, नौका । २ वृद्ध भैंस ।

डूँब, डूँबड़ियो, डूँबड़ी—देखो 'डूँम' ।

डूँबो—देखो 'डूँमी' ।

डूँघी—पु० रहट को उल्टा घूमने से रोकने वाला उपकरण ।

डूँकरा, डूँकरियो, डूँकणी—पु० कूल्हे की हड्डी जो रीढ़ से जुड़ी रहती है ।

डूँकळ, डूँकळियो, डूँकळी—पु० खलिहान में पड़ा वह भूसा जिसमें थोड़ा-थोड़ा अनाज हो ।

डूँगली—पु० [सं०दोलः दोलिका] एक विशिष्ट प्रकार की पालकी ।

डूँचकी—१ देखो 'डूँचकी' । २ देखो 'ठोलौ' ।

डूँचणी (बो)—देखो 'डूँचणी' (बो) ।

डूँचियो, डूँचोड़, डूँचो—देखो 'डूँजी' ।

डूँब, डूँबड़ियो, डूँबड़ी—देखो 'डूँम' ।

डूँवणी (बो)—क्रि० १ पानी आदि तरल पदार्थ में घुस जाना, बूझना, पंठना । २ गहरे पानी में बूझ कर मरना ।

३ विचार मन या लीन होना । ४ किसी कार्य में पूर्ण मनोयोग से लगना । ५ बुरे स्थान पर चला जाना ।

६ गलत हाथों में पड़ जाना । ७ बरबाद या नष्ट होना ।

बिगड़ना । ८ मिटना । ९ हानि या घाटा लगना ।

१० ऋण या व्यवसाय का धन प्राप्त न होना ।

११ सूर्य, ग्रहों आदि का अस्त होना । १२ भीगना ।

डूँवाँण—स्त्री० १ वर्षा का पानी रुकने की नीची भूमि ।

२ गहराई, गंभीरता । ३ डूबना क्रिया या भाव ।

डूँबोड़ी—वि० डूबाहुआ, भीगा हुआ, लीन, मन, अस्त ।

डूँम, डूँमड़, डूँमल, डूँमलियो, डूँमली—पु० [सं० डम]

(स्त्री० डमण, डमणी) १ एक जाति व इस जाति का

व्यक्ति, डोम । २ ढोली ।

डूँमी—पु० गौर-वर्ण व काले मुँह का भयंकर विषैला सर्प ।

डूर—पु० १ बाजरी का दाना निकलने के बाद बचा हुआ फूमदा

तुंतड़ा । २ देखो 'दूर' ।

डूँळ—पु० वड़ी हड्डी ।

डूँल—स्त्री० १ भ्रान्ति, गलतफहमी, भ्रम । २ भूमि पर लिया जाने

वाला एक कर्ज । —वि० चलायमान, डोलता हुआ, चलित ।

डूँलाणी (बो), डूँलावणी (बो)—देखो 'डोलाणी' (बो) ।

डे—पु० १ धर्मराज । २ धर्म । ३ मृग । ४ जिह्वा, वाणी ।

डेग, डेगड़, डेगड़ियो, डेगड़ी, डेगड़ी, डेगची—१ देखो 'देगड़ी' ।

२ देखो 'देगची' ।

डेडण (णी)—स्त्री० ढाड़ी जाति की स्त्री ।

डेडर, डेडरड़ी, डेडरियो, डेडरी—पु० [सं० ददुर] (स्त्री० डेडरी)

१ मेंढक, दादुर । २ मेंढक की तरह आवाज करने वाला

एक मिट्टी का खिलौना । ३ दोहे छन्द का एक भेद ।

डेडी—पु० आंख, आंख का डोला ।

डेणकी—स्त्री० घड़ियाल के टूटने पर बचा हुआ नीचे का भाग ।

डेर—स्त्री० १ एक वाद्य विशेष । २ देखो 'डिरी' ।

डेरउ, डेरकियो, डेरड़, डेरड़ी, डेरियो, डेरी—पु० १ धन, द्रव्य ।

२ उहरने के लिए फैलाया हुआ सामान । ३ यात्रा में साथ

रहने वाला सामान । ४ यात्रा के बीच का विश्राम ।
५ प्रवास में रहते समय ठहरने का स्थान । ६ निवास
स्थान । ७ किसी सामंत का निवास स्थान । ८ तंबू
शामियाना, खेमा । ९ कैप, अस्थायी आवास । १० नाच-गाने
वालों की मंडली । ११ फौज का पड़ाव । १२ दल ।

डेढ-वि० १ पथ भ्रष्ट, भ्रष्ट । २ सुस्त ।

डेढटी-पु० १ वह स्थान जहां नदी समुद्र में गिरती है । नदी का
मुहाना । २ इस स्थान पर बने रेत आदि के टीले जो नदी
को कई धारा में विभक्त करते हैं ।

डेढही, डेढी, डेहरी-स्त्री० १ निथर । २ देखो 'देहरी' ।

डेघणी (बो)-देखो 'देणी' (बो) ।

डेण-वि० अति वृद्ध, बूढ़ा सठिया बुद्धि का ।

डे-पु० १ वृक्ष । २ कान । ३ एक प्रकार का घास, कांस ।
-स्त्री० ४ कोयल । -वि० सफेद, श्वेत ।

डेकाणी (बो), डेकावणी (बो)-१ देखो 'डहकाणी' (बो) ।
२ देखो 'डकाणी' (बो) ।

डेहाट-पु० १ हरायन, ताजगी । २ गाय, भैंस आदि के बच्चे की
चिल्लाहट ।

डेही-देखो 'डीही' ।

डेण-देखो 'डेण' ।

डैर-१ देखो 'डैरी' । २ देखो 'डैरी' ।

डैरी-स्त्री० १ काली व चिकनी मिट्टी वाली भराव की कृषि
भूमि । २ आस-पास के धरातल से कुछ नीची भूमि ।
३ जंगल, वन । ४ देखो 'डैरी' । —माता-स्त्री० गुजराती
की एक देवी विशेष ।

डैरु, (रू रू)-पु० १ डमरू नामक एक वाद्य । २ बायें घुटने का
एक वात रोम, घुटने का क्रोष्ठुशीर्ष ।

डैरी-पु० धातु का चौड़े मुँह का गोल-पात्र जिसके खड़ा दस्ता
लगा हो ।

डेढकी-पु० मानसिक आघात, दुःख ।

डेलाण-पु० द्वार के ऊपर बना खिड़की व झरोखे वाला कक्ष ।

डेहकाणी (बो), डेहकावणी (बो)-देखो 'डहकावणी' (बो) ।

डो-पु० १ पाप । -स्त्री० २ प्रीड़ा । -वि० १ पापी । २ मुग्ध ।

डोइलउ, डोइलियी-देखो 'डोई' ।

डोइली, डोई, डोईली-पु० १ पात्र विशेष । २ देखो 'डोई' ।
-स्त्री० [सं० दाहस्त] ३ काष्ठ का बना बड़ा चम्मच ।

डोक-पु० १ घोड़े, गधे आदि के लोटने से भूमि पर बना
चिह्न । २ देखो 'डोकी' ।

डोकर (डो)-१ देखो 'डोकरा' । २ देखो 'डोकरा' ।

डोकरडी, डोकरि, डोकरी-वि० वृद्ध, वृद्धा । वूढ़ी । -स्त्री०
१ वृद्ध स्त्री । २ अधिक पानी में रहने से हाथ की अंगुली
में पड़ने वाली झुर्रि ।

डोकरियो, डोकरू, डोकरा-पु० [सं० डोलत्करः] वृद्ध पुरुष,
बूढ़ा आदमी । -वि० (स्त्री० डोकरडी, डोकरा) वृद्ध, बूढ़ा ।
डोकी, डोकी-पु० १ ज्वार, बाजरी के पौधे का डंठल, गोचा ।

२ गाय व भैंस के स्तनों की प्रसव के पूर्व की अवस्था ।

डोगी-पु० मधुर स्वर वाला एक तार वाद्य विशेष ।

डोटकिया-स्त्री० घोड़ों की एक जाति विशेष ।

डोटी-स्त्री० मोढ़ने का वस्त्र, चादर ।

डोड-पु० [सं० द्रोण] १ एक प्रकार का बड़ा कौआ । २ पंवार
वंश की एक शाखा । ३ देखो 'डोडो' । ४ देखो 'डोड' ।

डोड खुरकीय-स्त्री० घोड़े की एक चाल विशेष ।

डोडकी-स्त्री० एक प्रकार की लता ।

डोडर-स्त्री० कमर, कटि ।

डोडल-स्त्री० सृजन, शोध ।

डोडिक डोडीकी-पु० एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

डोडिया-स्त्री० एक राजपूत वंश ।

डोडियो-पु० १ जैमलमेर राज्य का प्राचीन सिक्का । २ 'डोडिया'
वंश का राजपूत । ३ देखो 'डोडी' ।

डोडो-स्त्री० १ भुजा के छूटे के नीचे पहना जाने वाला
आभूषण । २ पुरुषों की गुजा का आभूषण विशेष ।
३ देखो 'डोडी' ।

डोडी-पु० १ भुट्टा, बाल । २ आक या मदार का फूल ।
३ इलायची, खशखश, कपास आदि का फल । ४ गीखरू
तथा कांटी नामक घास का कटिदार गोल फल । ५ आंख
का कोया । ६ बड़ा कौआ । ७ 'डोड' शाखा का पंवार
राजपूत । ८ देखो 'डोडी' ।

डोफाई-स्त्री० मूर्खता, नासमझी ।

डोफी-वि० मूर्ख, नासमझ ।

डोब-स्त्री० १ गहराई, याह । २ डुबाने की क्रिया या भाव ।
३ डुबकी, गोता । ४ नीची भूमि । ५ सदमा ।
६ एक देश का नाम ।

डोबणी (बो)-देखो 'डुवाणी' (बो) ।

डोबरी-पु० १ दरार वाला मिट्टी का बर्तन । २ फटा बांस ।
३ फटे बांस की ध्वनि ।

डोबल-पु० १ गड्ढा, खड्डा । २ देखो 'डोबी' ।

डोबली-स्त्री० १ किसी बड़े पत्थर या दीवार में किया जाने
वाला छोटा छेद । २ उक्त छेद में फंसाने का लकड़ी का
गुटका । ३ देखो 'डोबी' ।

डोबी-स्त्री० वृद्ध भैंस ।

डोबी-पु० (स्त्री० डोबी) १ वृद्ध भैंसा, पाडा । २ वृद्ध
भैंस । ३ आंख । ४ आंख का डोना । ५ देखो 'डोब' ।

डोम (डो)-देखो 'डूम' ।

डोयठी-पु० [सं० द्रुस्थ] एक प्रकार की मिठाई ।

डोयलियो

(५४०)

डोहणी

डोयलियो, डोयली, डोयली, डोयौ-देखो 'डोई' ।

डोर-स्त्री० [सं० दोरः] १ पतंग का डोरा, मंजा, डोर ।

२ रस्सी, रज्जु । ३ लगाम, बाग । ४ डोरी ।

डोरड़ी-देखो 'डोरी' ।

डोरड़ी-देखो 'डोरी' ।

डोरणी (बौ) क्रि० ऋतुमती घोड़ी का घोड़े से संसर्ग करना ।

डोरवांस-स्त्री० मारंगी के तांतों की मड़तंग पर घोड़े के बालों से बांधने वाली वस्तु ।

डोरांतर-स्त्री० [सं० दोलांतर] बच्चे को सुलाकर पोथ पर लादने की झोली ।

डोराणी (बौ), डोरावणी (बौ)-क्रि० ऋतुमती घोड़ी का घोड़े से प्रसंग कराना ।

डोराबंद-वि० १ किमी सम्प्रदाय या देवता के नाम का डोरा बांधने वाला । २ अनुयायी ।

डोरियो-पु० १ अनाज ढोते समय गाड़ी पर लगाने का मोटा वस्त्र । २ शामियाने बनाने का मोटा कपड़ा । ३ बिछाने या ओढ़ने का मोटा वस्त्र । ४ जालीदार मोटा सूती वस्त्र ।

डोरी-स्त्री० [सं० दोरः] १ रस्सी, रज्जु, डोर । २ फाल्गुन मास में गाया जाने वाला एक अश्लील गीत । ३ लगाम, बाग । ४ कूए से पानी निकालने के काम आने वाली रस्सी । ५ आंख में पड़ने वाली लाल रेखा । ६ ध्यान, लगन । ७ स्नेह बंधन । ८ खलिहान में अनाज के ढेर के चारों ओर फेर कर नापने की रस्सी । ९ डोरी से नाप कर अनाज का निश्चित भाग राज्य सरकार द्वारा वसूल करने का ढंग ।

डोरीजणी (बौ)-क्रि० घोड़ी का घोड़े के साथ संसर्ग होने से गर्भवती होना ।

डोरी-पु० [सं० दोरः] १ वस्त्रों की सिलाई आदि में काम आने वाला बारीक तागा, धागा, डोरा । २ सूत, ऊत आदि का डोरा, धागा जो कुछ बांधने के काम आता है । ३ स्त्रियों के शिर में बांधने का मोटा तागा । ४ गले में धारण करने का मोने या चांदी का आभूषण । ५ विवाह संबंध स्थापित करने पर वर को दिया जाने वाला धन, टीका । ६ मांगलिक सूत्र । ७ तंत्र द्वारा अभिमंत्रित धागा, गंडा, ताबीज । ८ रहट की माल में बांधने की रस्सी । ९ गर्द की लकीर । १० प्रवाह, मंद धारा । ११ द्रव पदार्थ की पतली धारा । १२ शाकादि में डालने का खट्टा पदार्थ । १३ तलवार की धार । १४ प्रेमसूत्र । १५ डोरी । १६ शक्कर की चासनी बनने पर बनने वाले तंतु । —डांडी-पु० अभिमंत्रित सूत्र, गंडा, डोरा ।

डोळ-वि० १ मूढ़, मूर्ख । २ गंदा, गंदला । —पु० १ गंदलापन । २ गप्प, घसक । ३ देखो 'डोळ' ।

डोल, डोलकी, डोलची-देखो 'डोली' ।

डोलण-पु० स्वान पर बंधा शरीर हिलाने वाला घोड़ा ।

डोळणी (बौ)-देखो 'डोळणी' (बौ) ।

डोळणी (बौ)-क्रि० [सं० दोलयति] १ चक्कर लगाना, घूमना, फिरना । २ भ्रमण करना, विचरना । ३ भटकना । ४ झूलना । ५ किसी एक वृत्त में घूमना । ६ हिलना-डुलना । ७ कांपना-थराना । ८ स्थिर न रहना । ९ डावां डोल होना । १० डगमगाना, विचलित होना । ११ अधीर होना । १२ चलना । १३ भ्रम में पड़ना ।

डोलमां, डोलमा-पु० महुड़ा के बीज ।

डोलर, डोलहर-पु० [सं० दोलः] पालनों वाला बड़ा झूला ।

डोलाजंत्र-देखो 'दोलाजंत्र' ।

डोलाणी (बौ), डोलावणी (बौ)-क्रि० १ चक्कर कटाना, फिराना । २ भ्रमण कराना, घुमाना । ३ भटकाना । ४ झुलाना । ५ विचरण कराना । ६ गतिमान कराना, चलाना । ७ हिलाना-डुलाना । ८ कांपासमान करना । ९ डावां डोल करना । १० विचलित करना । ११ अधीर करना । १२ प्रसारित करना । १३ वृत्ताकार घुमाना । १४ चलाना । १५ भ्रम में डालना ।

डोलियो-देखो 'डोली' ।

डोळी-स्त्री० [सं० दोला] १ पालकी, जिसे कहार उठाते हैं । २ वायल या रगण प्राणी को लिटाकर इधर-उधर ले जाने की सवारी । ३ लगान भाफी की कृषि भूमि । ४ ऊपर उठी हुई छोटी दीवार । ५.२०० पन्नों की गड़ी ।

डोली, डोलीड़-स्त्री० [सं० दोलिका] १ कूए से पानी निकालने का पात्र । २ पानी की गैर (होली) खेलने का छोटा पात्र ।

डोळी-पु० १ आंख का कोया, पैला । २ नेत्र, नयन । ३ मिट्टी की दीवार । ४ कन्या को वर के घर भेज कर ब्याहने की एक प्रथा । ५ गंदा द्रव पदार्थ ।

डोली, डोली-पु० [सं० दोलः] १ खुले मुंह का खड़ा जल-पात्र ।

२ पानी निकालने की डोली । ३ दूध नापने का पात्र ।

डोल्लहार, डोल्लर-देखो 'डोलर' ।

डोव-देखो 'डोव' ।

डोवटी-स्त्री० [सं० दोपट्टी] दो पट्टियों का वस्त्र, चादर ।

डोवणी (बौ)-देखो 'डोहणी' (बौ) ।

डोसी-स्त्री० बूढ़ा, बूढ़ी ।

डोसी-वि० (स्त्री० डोसी) १ बूढ़, बूढ़ा । २ प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध । —पु० १ बूढ़ पुरुष । २ उड़द की दाल की पोस कर बनाया एक खाद्य पदार्थ ।

डोह-पु० १ आनन्द, हर्ष । २ मस्ती, मौज । ३ रसास्वादन ।

डोहणी (बौ)-क्रि० १ मथना, विलोना । २ संहार करना, नाश करना । ३ ध्वस्त करना । ४ बर्बाद करना ।

५ गिराना । ६ बार-बार ढूँढना, टोह लेना । ७ लांघना, पार करना ।

डोहळणी (बो)—कि० [सं० दोलयति] १ पानी आदि गंदा करना । २ देखो 'डोहणी' (बो) ।

डोहळियो—पु० १ उदक से प्राप्त भूमि का स्वामी । २ माफी की छोटी जागीर का स्वामी ।

डोहली—पु० [सं० दोहदम्] गर्भवती स्त्री की इच्छा, अभिलाषा ।

डो—पु० १ नृमिह भवतार । २ पति । ३ व्यभिचारी । —स्त्री० ४ गाय ।

डोड—वि० [सं० अघ्यर्द्ध] १ एक ओर आधा, टेढ़ा । २ किसी इकाई से आधा अधिक । —पु० व्यंग, ताना ।

डोडवणी (बो)—कि० १ डेढ़गुना करना, डेढ़ा करना । २ कपाट बन्द करना । ३ कार्य बंद करना ।

डोडहती, डोडहत्थी, डोडह्यो—स्त्री० तलवार ।

डोडो—स्त्री० १ मुख्य द्वार, दरवाजा, फाटक । २ किसी मकान का मुख्य द्वार के साथ बना कक्ष । ३ एक तरह का पहनावा, पोशाक । —वि० एक व आधी । —वस्तु—पु० एक प्रकार का सरकारी लगान । तेग । —दार, बांन—पु० द्वार का पहरेदार, द्वारपाल ।

डोडो—वि० (स्त्री० डोडो) १ एक से आधा अधिक, एक व आधा । २ टेढ़ा, सीधा न हो, तिरछा । ३ बंद, सटा हुआ । ४ विध्वंस, उल्टा । —पु० १ गायन में आधा स्वर अधिक । २ टेढ़े अंक का पहाड़ा ।

डोड—देखो 'डोड' ।

डोडवणी (बो)—देखो 'डोडवणी' (बो) ।

डोडहती, (हत्थी, हथी)—देखो 'डोडहत्थी' ।

डोडो—देखो 'डोडो' । —वस्तु—'डोडोवस्तु' । —दार, बांन—'डोडोदार' ।

डोडो—देखो 'डोडो' ।

डोर—स्त्री० १ सिंह की दहाड़ । २ सिंह की गुर्राहट । ३ बाह्याढंबर, आढंबर । ४ देखो 'डोर' ।

डोळ—पु० १ वैभव, ऐश्वर्य । २ ढंग, व्यवस्था । ३ दशा, स्वरूप, हालत । ४ लम्बे छेदों वाली चलनी । ५ किसी वस्तु को ठीक बनाने की क्रिया या भाव । ६ ऊंट की काठी की तरह बनाई कोई वस्तु । ७ रंग-ढंग, तखमीना । ८ तरह, प्रकार । ९ युक्ति, उपाय । १० गुजारे का प्रबंध । —डाळ—पु० ढंग, व्यवस्था । उपाय, युक्ति, प्रयत्न । —दार—वि० सुन्दर सुडौल ।

डोळणी (बो)—कि० १ काट-छांट कर सुन्दर बनाना । गठना । २ ढांचा, आकृति या स्वरूप बनाना । ३ ठीक व दुरुस्त करना ।

ड्युटि—स्त्री० [अ०] १ नौकरी । २ किसी कार्य पर तैनाती । ३ सेवा, चाकरी । ४ बूंगी, सहसून । ५ कर्तव्य, धर्म ।

ड्योडो (दो)—देखो 'डोडो' ।

ड्योडो (दो)—देखो 'डोडो' ।

ड्योड—देखो 'डोड' ।

—ढ—

ढ—देवनागरी वर्णमाला का चौदहवां वर्ण ।

ढक—पु० १ एक पक्षी विशेष । २ कौआ । ३ कुम्हार जाति का एक जैन उपासक । ४ देखो 'ढकणी' ।

ढकण—पु० १ चार इन्द्रियों वाला एक जीव । २ देखो 'ढकणी' ।

ढकणउ, ढकणीयो, ढकणी—देखो 'ढकणी' ।

ढकणी—देखो 'ढकणी' ।

ढकणी (बो)—देखो 'ढकणी' (बो) ।

ढकर—वि० शून्य, निर्जन । —स्त्री० एक प्रकार का वाद्य ।

ढकुण—पु० १ एक प्रकार का वाद्य । २ खटमल । (जैन)

ढको—वि० १ ढका हुआ । २ अमुहावना, अप्रिय ।

ढंखर, ढंखरी—वि० १ उदाम, खिन्न । २ अप्रिय, अमुहावना । ३ वेदंगा । —पु० पत्ते भड़ा हुआ वृक्ष ।

ढंग—पु० १ व्यवस्था, प्रबंध । २ प्रणाली, पद्धति, तरीका । ३ उपाय, युक्ति । ४ वैभव । ५ प्रकार, तरह, भांति ।

६ हाल, दशा, स्थिति । ७ स्वरूप, बनावट, ढांचा ।

८ संकेत, आभास । ९ चाल-ढाल, आचरण । १० लक्षण, चिह्न । ११ रीति, शैली । १२ पाखंड । १३ कुशलता ।

—डाळ, डाळो—पु० व्यवस्था, प्रबंध । दशा, हालत । चाल-ढाल ।

ढंग-उजाड़—पु० घोड़े की दुम के नीचे की संवरी ।

ढंगणी (बो)—कि० १ किसी परिमाण विशेष से अनाज मापना । २ तोलना ।

ढंगसर—कि० वि० १ अच्छी तरह, ठीक ढंग से । २ क्रमशः । ३ सुचारु रूप से ।

ढंगो-पु० १ खेल या प्रतियोगिता में हारा हुआ खिलाड़ी या कलाकार । २ भंगी, हरिजन ।
 ढंगो-ढंग-देखो 'ढंगसर' ।
 ढङ्-स्त्री० १ कृषि में काम आने वाला पुराना तालाब ।
 २ कीचड़, पंक । ३ सूखा कूप । -वि० सूखें, मूढ़ ।
 ढङ्गण-पु० एक जैन मुनि ।
 ढङ्गेर-पु० १ घरे पशु का प्रस्थिपंजर । २ खण्डहर ।
 ढङ्गेरी, ढङ्गेरी-पु० १ किसी बात की सार्वजनिक तौर पर दी जाने सूचना । ढूँडी । २ प्रचार, विज्ञापन । ३ ऐसी सूचना देते समय बजाया जाने वाला ढोल ।
 ढङ्गेरचो-वि० 'ढङ्गेर' पीटने वाला, प्रचारक ।
 ढङ्गेरणी-वि० १ घुमाने वाला, फिराने वाला । २ तलाश करने वाला, ढूँढ़ने वाला । ३ लूटने वाला । ४ संहार करने वाला । ५ पीटने वाला । ६ नगाड़ा, ढोल आदि बजाने वाला । ७ सहलाने वाला । ८ टंटोलने वाला ।
 ढङ्गेरणी (बो)-क्रि० १ लूटना । २ घुमाना, फिराना । ३ संहार करना, मारना । ४ पीटना, मारना । ५ बजाना, पीटना । ६ तलाश करना, ढूँढ़ना । ७ ढूँढ़ना, टंटोलना । ८ सहलाना ।
 ढङ्गेरणी-देखो 'ढङ्गेरी' ।
 ढंगणी (बो)-क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना । २ लपेटना, आवेष्टित करना ।
 ढङ्क-स्त्री० सेना, फौज ।
 ढ-पु० १ ढोल । २ भैरव । ३ यंत्र । ४ ढक्कन । ५ पुग । ६ दांत । ७ गधा । ८ स्वाद । ९ शब्द । १० बिल्ली । -वि० निर्गुण ।
 ढक-पु० [सं० ढक्का] १ बड़ा, ढोल । २ सूली नामक तरकारी । ३ ढक्कन ।
 ढकवाळ (वाळी)-देखो 'धकवाळ' ।
 ढकण-स्त्री० १ ढकने की क्रिया या भाव, ढक्कन लगाने या पर्दा डालने की क्रिया । २ ढक्कन । -सरोर-पु० वस्त्र ।
 ढकणज-देखो 'ढकणी' ।
 ढकणी-स्त्री० १ छाने की तरह बना मिट्टी का ढक्कन । २ घुटने के ऊपर की गोल हड्डी, जांवील ।
 ढकणी-पु० १ ढक्कन । २ आवरण । ३ आच्छादन ।
 ढकणी (बो)-क्रि० १ ढक्कन लगाना, ढकना । २ पर्दा डालना, छुपाना, बात दबाना । ३ आच्छादित करना । ४ आवेष्टित करना । ५ मुंह या सूराख बंद करना ।
 ढकवत्थुल-पु० [सं० ढकवास्तुल] एक प्रकार की हरी तरकारी (जैन) ।
 ढकेलणी (बो)-देखो 'धकेलणी' (बो) ।

ढकोळी-स्त्री० पलाश वृक्ष का फल ।
 ढकोसळी-पु० [सं० ढंग-कौशल] आडम्बर, पाखण्ड ।
 ढको, ढक्क-देखो 'ढक' ।
 ढक्कण-देखो 'ढकणी' ।
 ढक्काराव-पु० ४९ क्षेत्रपालों में से ३० वां क्षेत्रपाल ।
 ढक्कियण-वि० आच्छादित करने वाला ।
 ढगण-पु० [सं०] तीन मात्राओं का एक गण ।
 ढगमगणी (बो)-देखो 'ढगमगणी' (बो) ।
 ढगळ-१ देखो 'ढळी' । २ देखो 'ढगळी' ।
 ढगळणी (बो)-क्रि० प्रहार करना ।
 ढगली-देखो 'ढिगली' ।
 ढगळी-पु० १ मिट्टी का ढेला, ढेला । २ देखो 'ढिगली' । -वि० १ अचंचल, शान्त । २ सुस्त, आलसी ।
 ढगास-पु० डेर, राशि ।
 ढवकी-पु० १ खांसी चलने की क्रिया या भाव । २ देखो 'धक्की' ।
 ढवरकी-पु० १ लंगड़ा कर चलने की क्रिया या भाव । २ एक चाल विशेष ।
 ढचरी-स्त्री० डाकिनी, डायन, प्रेतिनी । -वि० वृद्धा । अशक्त ।
 ढचरी-पु० १ ढंग, तरीका । २ परंपरा, प्रथा । -वि० (स्त्री० ढचरी) वृद्ध, अशक्त ।
 ढड्ड, ढड्डर-पु० [सं० ढड्डर] १ वक्षस्थल । २ राहुदेव का नाम (जैन) । ३ एक प्रकार की ध्वनि विशेष (जैन) ।
 ढणगं-स्त्री० ध्वनि विशेष ।
 ढणहण-स्त्री० किसी पदार्थ के चूने, रिसने, टपकने की क्रिया या भाव ।
 ढपणी (बो)-क्रि० १ ढकना, आच्छादित करना । २ आवेष्टित करना ।
 ढपला-पु० ढोंग, आडम्बर, बहाना, चरित्र ।
 ढपलागारी, ढपलाळी-वि० (स्त्री० ढपलागाने) ढपला करने वाला, ढोंगी, बहानेबाज ।
 ढप्पणी (बो)-देखो 'ढपणी' (बो) ।
 ढफ-वि० सूखें, नासमझ ।
 ढफल (ता)-पु० पाखण्ड, आडम्बर ।
 ढफलागारी, ढफलाळी-देखो 'ढपलागारी' ।
 ढबंदी-पु० किसी भारी वस्तु के पानी में गिरने से उत्पन्न शब्द, धमाक ।
 ढव-पु० १ मोका, अवसर । २ सहारा, मदद । ३ तरकीब, उपाय, युक्ति । ४ ढंग, रीति, तौर । ५ व्यवस्था, प्रबंध, इंतजाम । ६ भेल-जोल । ७ डफ, डफली ।

ढवक-स्त्री० १ पानी में कोई पात्र डूबने या कोई वस्तु गिरने से उत्पन्न ध्वनि । २ पात्र में पानी हिलने से उत्पन्न ध्वनि । ३ भपकी, निद्रा । ४ कलंक, दोष ।

ढवकण-स्त्री० कूए के पानी को समान सतह पर बताने वाला माप दण्ड ।

ढवणी (बो)-क्रि० १ रुकना, ठहरना । २ बंद होना ।

ढवू-पु० १ ताँवे का एक प्राचीन सिक्का । २ गुब्बारा । ३ गुब्बारे की तरह फूला हुआ कोई प्राणी या वस्तु ।

ढवूसी-पु० हाथ की अर्द्धचन्द्राकार मुद्रा से गर्दन पकड़ कर धक्का देने की क्रिया या भाव ।

ढबोढ़ब-क्रि० वि० १ ठीक ढंग से, उचित रीति से । २ क्रम पूर्वक ।

ढबण, (न)-वि० १ अटन, अडिग, रूढ़ । २ देखो 'ढबण' ।

ढबेर-पु० गंदे पानी का खड्डा (मेवात) ।

ढबू-देखो 'ढवू' ।

ढमक-स्त्री० नगाड़ा आदि वाद्य की ध्वनि ।

ढमकणी (बो)-देखो 'ढमकणी' (बो) ।

ढमकारी-पु० नगाड़ा, ढोल आदि की ध्वनि ।

ढमकौ-देखो 'ढमकौ' ।

ढमकणी (बो)-देखो 'ढमकणी' (बो) ।

ढम, ढमक-पु० १ नगाड़े की ध्वनि । २ गति या चाल विशेष ।

ढमकणी (बो)-क्रि० १ वाद्य का बजना, ध्वनि होना । २ ढोल की ध्वनि होना ।

ढमकणी (बो), ढमकावणी (बो)-क्रि० ढोल नगाड़ा आदि वाद्य बजाना ।

ढमकौ-पु० १ वाद्य ध्वनि । २ शोभा, चमक-दमक ।

ढमकणी (बो)-देखो 'ढमकणी' (बो) ।

ढमढमकार-स्त्री० ढोल आदि की ध्वनि ।

ढमढमणी (बो)-क्रि० ढोल को बजाना, बजाने के लिए ढोल पर प्रहार करना, डंका लगाना ।

ढमड़ेर-पु० १ सूना व बड़ा भवन । २ बड़े भवन का खण्डहर । ३ मलवे का ढेर । ४ लंबा-चौड़ा घेरा हुआ क्षेत्र ।

ढमली-पु० मिट्टी का कटोरा (मेवात) ।

ढमाढम-स्त्री० ढम-ढम ध्वनि ।

ढयोड़ी-वि० ढहा हुआ, गिरा हुआ, पड़ा हुआ ।

ढर-स्त्री० भेड़, बकरी आदि के संकेत के लिए मुंह से की जाने वाली ध्वनि, टरं ।

ढरकणी (बो), ढरकावणी (बो)-देखो 'ढळकाणी' (बो) ।

ढरकणी (बो)-देखो 'ढळकाणी' (बो) ।

ढरङ्की-पु० ध्वनि विशेष ।

ढरङ्गी-देखो 'ढररी' ।

ढरणी (बो)-क्रि० १ गिरना, पड़ना । २ लुढ़कना । ३ ढहना । ढररी-पु० १ जैली, प्रणाली, तरीका ढंग । २ पथ, मार्ग, रास्ता । ३ परम्परा प्रथा । ४ जराय, युक्ति । ५ चाल चलन, आचरण ।

ढळ-स्त्री० १ शासक या सरकार द्वारा रक्षित नीची व ढालू भूमि । २ देखो 'ढळी' ।

ढल-स्त्री० ढाल ।

ढळकंती-पु० हाथी, गज ।

ढळक-स्त्री० १ ढीला चलने की क्रिया या भाव । २ ढालू या ढलवा भूमि । ३ लुढ़कने की क्रिया या भाव । ४ घ्रांसू गिरने का भाव । ५ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव ।

ढळकणी (बो)-क्रि० १ इधर-उधर हिलना-डुलना । २ झलकना, चमकना । ३ नीचे की ओर घुड़कना, लुढ़कना । ४ लटकना । ५ फहराया जाना, फहरना । ६ खिसकना, सरकना । ७ वृत्ताकार घूमना, फिरना । ८ एक ओर से क्रमशः सूक्ष्म या पतला होना ।

ढळकाणी (बो), ढळकावणी (बो)-क्रि० १ इधर-उधर हिलना-डुलना । २ झलकाना, चमकाना । ३ नीचे की ओर लुढ़काना, घुड़काना । ४ लटकाना । ५ फहराना । ६ खिसकाना, सरकाना । ७ वृत्ताकार घूमना । ८ एक ओर से क्रमशः पतला करना ।

ढळकौ-पु० नेत्रों का एक रोग ।

ढळकणी (बो), ढळखणी (बो)-देखो 'ढळकणी' (बो) ।

ढळखाणी (बो), ढळखावणी (बो)-देखो 'ढळकावणी' (बो) ।

ढळणी (बो)-क्रि० [सं ध्वरित] १ पानी आदि तरल पदार्थ का नीचे की ओर बहना, ढरकना । २ गिरना, पड़ना । ३ सरकना, खिसकना । ४ भेंट धरना, रखना । ५ बिछना । ६ घेरा या पड़ाव ढाला जाना । ७ जाना, खिसकना । ८ लोटना । ९ भवेशी का चरने के लिये दूर जाना । १० किसी निश्चित स्थान से आगे बढ़ना । ११ एक निश्चित ऊंचाई पर जाने के बाद नीचे की ओर बढ़ना । १२ अस्ताचल की ओर बढ़ना । १३ गुजरना, बीतना । १४ निमित्त होना, वत कर उतरना । १५ गला कर संचे में जमाया जाना । १६ किसी मयादी रोग की प्रचण्डता कम होने की अवधि आना । १७ वीर गति की प्राप्त होना । १८ अवमान होना, मरना । १९ कट कर गिरना । २० प्रवृत्त होना, झुकना । २१ आकर्षित होना । २२ रीकना, आकर्षित होना । २३ अनुकूल होना । २४ चवर आदि डुलाया जाना ।

ढळपति-पु० दिल्लोपति, बादशाह ।

ढळहळणी (बो)-क्रि० शिथिल होना ।

ढळांख, ढळांत-स्त्री० १ ढालू भूमि । २ रास्ते में कहीं-कहीं पर होने वाला ढलाव, उतार ।
 ढळाई-स्त्री० १ ढालने की क्रिया या भाव । २ ढालने की मजदूरी । ३ उतार ।
 ढळावो-पु० गिरती दशा, बुरा समय ।
 ढलंत, ढलंती-पु० ढाल बांधने या रखने वाला थोड़ा ।
 ढळी-वि० [सं० ढलिः] १ अचंचल, शांत । २ सुस्त, आलसी । ३ मूर्ख, गंवार । -पु० ढेला ।
 ढल्ल-१ देखो 'ढाल' । २ देखो 'ढल' । ३ देखो 'ढोल' ।
 ढल्लोप, ढल्लोस-देखो 'ढल्लपति' ।
 ढल्लो-वि० (स्त्री० ढल्ली) मुक्त ।
 ढसणी (बो)-१ देखो 'ढहणी' (बो) । २ देखो 'घसणी' (बो) ।
 ढसाणी (बो), ढसावणी (बो)-१ देखो 'ढहाणी' (बो) । २ देखो 'घसाणी' (बो) ।
 ढहकणी (बो)-क्रि० १ गिरना, पड़ना । २ बंसना, गड़ना । ३ देखो 'ढहकणी' (बो) ।
 ढहकाणी (बो), ढहकावणी (बो)-क्रि० १ गिराना, पटकना । २ घंसाना, गाड़ना, गड़ाना । ३ देखो 'ढहकाणी' (बो) ।
 ढहणी (बो)-क्रि० १ गिरना, पड़ना । २ मकान, दीवार आदि की कोई चुनाई या चुनाई कर रखी वस्तुओं का नीचे गिरकर बिखरना, ढह जाना । ३ ध्वस्त होना । ४ नष्ट होना । ५ वीर गति प्राप्त होना । ६ कटना । ७ मिटना । ८ दूर होना । ९ दमन होना ।
 ढहाणी (बो), ढहावणी (बो)-क्रि० १ गिराना, पटकना । २ मकान, दीवार या कोई चुनाई को नीचे गिराकर बिखेरना । ३ ध्वस्त करना । ४ नष्ट करना । ५ वीर गति प्राप्त कराना । ६ काटना । ७ मिटाना । ८ दूर करना । ९ दमन करना ।
 ढांक-स्त्री० १ बदनामी, कलंक । २ देखो 'ढाक' ।
 ढांकण, ढांकणउ-देखो 'ढाकणी' ।
 ढांकणी-देखो 'ढकणी' ।
 ढांकणी (बो)-देखो 'ढकणी' (बो) ।
 ढांगी-देखो 'ढोंगी' ।
 ढांगी-वि० (स्त्री० ढांगी) १ आपत्तिजनक । २ बुरा, खराब ।
 ढांच-स्त्री० १ पालना लटकाने का लकड़ी का उपकरण । २ देखो 'ढांचो' ।
 ढांचियी, ढांची-पु० १ सामान भरकर पशुओं की पीठ पर लादने का लकड़ी का उपकरण । २ ठठरी, पंजर । ३ किसी वस्तु की आकृति, शकल, डील, नमूना । ४ देखो 'ढांचो' ।
 ढाढ (ढांढियी)-देखो 'ढांढी' ।
 ढांढकी-देखो 'ढांढी' ।

ढांढवाड़ (वेड़)-स्त्री० मवेशी, पशुघन, चौपाये पशु ।
 ढांढापरणी-पु० पशुता, पशुत्व ।
 ढांढी-स्त्री० १ बूढ़ी माय । २ छोटी तलैया, पोखरी । -वि० मूर्ख, गंवार ।
 ढांढी-पु० चौपाया पशु, मवेशी । -वि० (स्त्री० ढांढी) १ मूर्ख, नासमझ । २ अनाड़ी, उज्जड़ ।
 ढांण-स्त्री० १ ऊंट की एक चाल विशेष । २ मार्ग, रास्ता । ३ नाश, संहार । ४ युद्ध, लड़ाई । ५ ढंग प्रकार, भांति । ६ गड़ । ७ समूह । ८ ढेर । ९ प्रहार । १० कूए पर बैल जोतने का स्थान । ११ स्थान, आवास । १२ डेरा, सेमा, पड़ाव ।
 ढांणी-स्त्री० [सं० स्थान] १ खेत में रहने के लिए बनाई गई भोंपड़ी । २ कच्चे मकानों की बस्ती, जो गांव से कुछ दूर बनी हों । ३ रेतीले टीलों वाली भूमि ।
 ढांणी-पु० १ कूए से निकला पानी खाली करने का स्थान । २ 'ढांणियो' का समूह । ३ डेरा, पड़ाव ।
 ढांपणी (बो)-देखो 'ढकणी' (बो) ।
 ढांमक-पु० १ ढोल । २ नगाड़ा । ३ ढोल नगाड़े आदि की आवाज ।
 ढांहर-स्त्री० काटेदार वृक्ष या झाड़ी की टहनो ।
 ढा-स्त्री० १ सरस्वती, शारदा । २ वाणी, बोली । ३ नाभि । ४ गदा । -पु० ५ ब्रह्मा । ६ सुमेरु पर्वत । ७ पलाश वृक्ष ।
 ढाई-वि० [सं० अर्द्ध-द्वितीय] दो और आधा, अर्धाई । -पु० १ उक्त मान की संख्या व अंक २॥ । २ कौड़ियों से खेलने का बच्चों का एक खेल ।
 ढाक-पु० १ पलाश वृक्ष । २ कुम्हार का चाक । ३ कूल्हे की हड्डी । ४ ढोल । ५ रणचण्डी का वाद्य । ६ देखो 'ढकणी' ।
 ढाकण-देखो 'ढकणी' ।
 ढाकणपूखी-पु० आध में ज्वेत व काले वालों वाले पूंछ का वेल ।
 ढाकणउ, ढाकणियी-देखो 'ढकणी' ।
 ढाकणी-देखो 'ढकणी' ।
 ढाकणी-वि० १ ढकने वाला । २ आच्छादित करने वाला । ३ छुपाने वाला । ४ बन्द करने वाला । ५ रक्षा करने वाला । ६ मर्यादा रखने वाला । ७ देखो 'ढकणी' ।
 ढाकणी (बो)-देखो 'ढकणी' (बो) ।
 ढाग-१ देखो 'ढाक' । २ देखो 'ढागी' । ३ देखो 'ढागी' ।
 ढागी-स्त्री० १ वृद्ध माय । २ वृद्ध मादा ऊंट ।
 ढागीड़, ढागी-पु० (स्त्री०-ढागी) १ वृद्ध बैल । २ वृद्ध ऊंट ।
 ढाडणी (बो)-क्रि० देना, अर्पण करना, सौंपना ।
 ढाड, ढाडी, ढाडीडी-देखो 'ढाडी' ।
 ढाढस-पु० [सं० ढड़] धैर्य, सान्त्वना ।

डाढ़ी, डाढ़ीड़ (डो)—पु० (स्त्री० डाढ़ण) एक शूद्र या अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

डा'णी—देखो 'डाहणी' ।

डा'णी (बो)—देखो 'डाहणी' (बो) ।

डाप—पु० मिट्टी का बना वर्तन (मेवात) ।

डाब—पु० छोटी तलैया ।

डाबणी (बो)—क्रि० १ ठहराना, रोकना । २ थामना, पकड़ना, ढेलना । ३ निभाना । ४ महारा या आश्रय देना । ५ पकड़ना ।

डाबो—पु० १ भोजन की दुकान, भोजनालय, होटल । २ गिजरा । ३ पक्षियों को पकड़ने का उपकरण । ४ चौथड़े या कागजों आदि की लुग्दी का बना वर्तन । ५ भैंस का का पांव बांधने की लोह की सांकल, शृंखला । ६ रंगीन ओढ़नी के बीच लगने वाली बड़ी छाप । ७ अरावली पर्वत ।

डारो—पु० घास-फूस रखने का पक्का मकान । —वि० मूर्ख ।

डाल—स्त्री० १ भूमि आदि की नीचाई, उतार । २ गाने की तर्ज, टेर । ३ संगीत में नाच, गायन व वाद्यों का मेल । ४ रीति, ढंग । ५ पड़ाव, डेरा । ६ तरह, भांति, प्रकार । —वि० घटिया किस्म का, हल्का ।

डाल—स्त्री० १ युद्ध आदि में शस्त्रास्त्रों के प्रहारों को रोकने का वालीनुमा शस्त्र । २ युद्ध के समय हाथी की ललाट पर बांधने का उपकरण । ३ बड़ा झंडा । ४ रक्षक । —गर—पु० डाल बनने वाला शिल्पी ।

डालड़ियो, डालड़ो—पु० १ कागज, वस्त्रादि की लुग्दी का बना वर्तन विशेष । २ कोई पीछा विशेष । ३ देखो 'डाल' ।

डालणी(बो)—क्रि० [सं० ध्वर] १ पानी आदि द्रव पदार्थ को धीरे से बहा देना, बहाना । २ ढरकाना, गिराना, प्रवाहित करना । ३ अभिसिंचन करना । अभिवेक करना । ४ डेरा डालना । ५ लौटाना, भेजना । ६ मवेशी को चरने के लिये खुला छोड़ना । ७ व्यतीत करना, गुजारना । ८ किसी संवे आदि में जमाना । ९ उड़ेलना । १० गिराना, पटकना । ११ रखना । १२ बिछाना । १३ यंत्र आदि से निमित्त करना । १४ अर्पण करना, चढ़ाना । १५ दूर करना । १६ मारना, संहार करना, काटना । १७ आच्छादित करना, ढकना । १८ ओढ़ाना । १९ नीचे करना, झुकाना । २० निगलना । २१ देखो 'डोळणी' (बो) ।

डालमो (बो)—वि० किसी संवे में ढलकर बना हुआ ।

डालाळ, डालाळो—पु० डालघारी योद्धा ।

डालियो—पु० १ लोहे की चद्दर या घास-फूस की छाजन वाला खुला कक्ष । २ छप्पर । ३ सिचाई के खेत का एक भाग । ४ छोटा डाल घास ।

डालू—पु० उतार वाला, ढलवां ।

डालू—पु० करील का पका फल ।

डालेत (ती)—पु० डालघारी योद्धा ।

डालें—क्रि० वि० ढंग से, तरीके से । —वि० ठीक, अच्छा । देखो 'ढोले' ।

डालोडाल—क्रि० वि० १ उतार की ओर, नीचाई की तरफ । २ क्रमशः । —वि० यथोचित ।

डालो—पु० १ पड़ाव, डेरा । २ तरह, भांति, प्रकार । ३ ढंग । ४ दशा, हालत । ५ रूप, शक्ल, आकृति । ६ व्यवस्था । ७ देखो 'डालियो' ।

डावणी (बो)—देखो 'डाहणी (बो)' ।

डावो—पु० १ तट, किनारा । २ छोटा टीका ।

डाहडह, डाहडोह—पु० हाथी, गज ।

डाहणी—वि० (स्त्री० डाहणी) १ मकान, दीवार आदि गिराने वाला, ध्वस्त करने वाला । २ गिराने, पटकने वाला । ३ मारने वाला । संहार करने वाला । ४ नष्ट, बर्बाद करने वाला । ५ काटने वाला । ६ मिटाने वाला । ७ निशाना लगाने वाला । ८ दूर करने वाला । ९ दमन करने वाला । १० कहने वाला ।

डाहणी (बो), डाहवणी (बो)—क्रि० १ मकान, दीवार आदि गिराना, ध्वस्त करना । २ गिराना, पटकना । ३ मारना । ४ नष्ट करना, उजाड़ना । ५ संहार करना । ६ मिटाना । ७ दूर करना । ८ दमन करना । ९ कहना । १० निशाना लगाना । ११ देखो 'डाहणी (बो)' ।

डाहो—स्त्री० गाय ।

डाहो—पु० (स्त्री० डाहो) १ बैल । २ देखो 'डावो' ।

डिक, डिकण, डिकुण—पु० १ खटमल । २ एक पक्षी विशेष ।

डिडोरणी (बो)—क्रि० १ तलाश करना, ढूँढना । २ विज्ञापित करना ।

डिडोरो—देखो 'डिडोरी' ।

डि—स्त्री० १ पतंग । २ मोरनी । ३ निंदा । ४ गदा । ५ भुख । ६ लिंग ।

डिकड़ियो—देखो 'डीकड़ो' ।

डिकीर—स्त्री० मिट्टी का पात्र विशेष ।

डिग—क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ पाम, निकट । ३ देखो 'डिगलो' ।

डिगलियो—देखो 'डिगलो' ।

डिगलो—स्त्री० छोटी डेरी ।

डिगलो, डिगास—पु० १ किसी वस्तु का ढेर, सपूह । २ राशि, पुंज । ३ अधिक मात्रा ।

डिग—१ देखो 'डिग' । २ देखो 'डिगलो' ।

डिरलणी (बो)—क्रि० पसीटना, खींचना ।

दिलंगी-वि० १ सुस्त, आलसी । २ ढीला-ढाला ।
 दिलाई-स्त्री० १ ढीलापन । २ सुस्ती, आलस्य ।
 दिलाणी (बो) दिलावणी (बो)-क्रि० १ ढीला करवाना ।
 २ शिथिल करवाना ।
 दिली-१ देखो 'दिल्ली' । २ देखो 'दीली' । ३ देखो 'दीन' ।
 दिल्लिय, दिल्ली, दिल्लीउ-देखो 'दिल्ली' । —पत, पत्तो, पतु= 'दिल्लीपति' ।
 दिल्ली-देखो 'दीली' । (स्त्री० दिल्ली)
 दिससौ-पु० सत्त मिट्टी का टीबा । कठोर टीबा ।
 दीक-पु० १ लाल मुँह का एक पक्षी विशेष । २ मुष्ठिका प्रहार ।
 दीकड़जी, दीकड़ो-वि० (स्त्री० दीकड़ी) अमुक । दिकका ।
 दीकणी-वि० (स्त्री० दीकणी) रंभाने वाला ।
 दीकणी (बो)-क्रि० रंभाना, रंभना ।
 दीकाळी-स्त्री० एक प्रकार की लता विणप ।
 दीकेल-स्त्री० रहट के स्तम्भ को स्थिर रखने वाले डंडों की जोड़ने वाली कील ।
 दींगळ, दींगळियो, दींगळी, दींगळ, दींगळियो, दींगळी, दींगळी-पु० १ मिट्टी के टूटे बर्तन का घेड़ल भाग ।
 २ बड़ा छेद ।
 दींगी-वि० (स्त्री० दींगी) १ जबरदस्त, जोरदार । २ बड़ा ।
 दींच, दींचाळ, दींचाळी-पु० १ जलाशयों के किनारे रहने वाला पक्षी । २ कंक पक्षी । ३ कूप, कूआ । ४ ऊंट, भैंसे आदि से पानी ढोने का काठ का उपकरण । ५ हाथी । -वि० १ बड़े डोखडोल वाला । २ प्रभावशाली ।
 दीब, दीबड़, दीबड़ियो, दीबड़ी-देखो 'दीमड़ी' ।
 दीम, दीमड़, दीमड़ियो, दीमड़ी-देखो 'दीमड़ी' ।
 दी-पु० १ विल्व वृक्ष । २ ब्रह्मचर्य । ३ शिष्य । ४ गधा ।
 ५ वृक्ष । -स्त्री० ६ पृथ्वी । ७ पति, बुद्धि ।
 दीक-पु० १ अनाज में पड़ने वाला एक कीड़ा विशेष ।
 २ गरीब । ३ अमीर, धनाढ्य । ४ देखो 'दीक' ।
 दीकड़जी, दीकड़ियो-देखो 'दीकड़ी' ।
 दीकड़ी-१ देखो 'दीकली' । २ देखो 'दीकड़ो' । (स्त्री०)
 दीकड़ो-देखो 'दीकड़ो' ।
 दीकणी (बो)-देखो 'दीकणी' (बो) ।
 दीकली-स्त्री० १ पत्थर फेंकने का तोप-नुमा एक प्रचीन यंत्र ।
 २ देखो 'दीकली' ।
 दीकुली-देखो 'दीकली' ।
 दीकीळ-पु० युद्ध, संग्राम ।
 दीगळ-वि० [सं० दीर्घाल] महान्, बड़ा ।
 दीच-देखो 'दीच' ।
 दीचकनळियो-पु० एक पक्षी विशेष ।

दीचाळ, दीचाळी-देखो 'दीच' । (स्त्री० दीचाळी)
 दीठ-वि० [सं० घृष्ट] १ जिद्दी, हठी । २ हठधर्मी, दुराग्रही ।
 ३ निष्ठुर, घृष्ट । ४ अशिष्ट ।
 दीठता-स्त्री० [सं० घृष्टता] १ जिद्द, हठ । २ दुराग्रह ।
 ३ घृष्टता, निष्ठुरता । ४ अशिष्टता ।
 दीठी-देखो 'दीठ' । (स्त्री० दीठी)
 दीब, दीबड़, दीबड़ियो, दीबड़ी-देखो 'दीमड़ी' ।
 दीबस, दीबसियो, दीबसो-पु० मिट्टी का नन्हा दीपक ।
 दीम, दीमड़-पु० बड़ा फोड़ा या गांठ । -वि० १ मूर्ख, नासमझ ।
 २ देखो 'दीमड़ो' ।
 दीमड़ियो, दीमड़ो-पु० १ शरीर के किसी अंग में होने वाली ग्रंथि, फोड़ा । २ रहट का कूआ । ३ बालू का टीबा ।
 -वि० मूर्ख, नासमझ ।
 दीमर-पु० [सं० दीवर] मछुआ, मल्लाह ।
 दीर, दीरकियो, दीरकी, दीरकौ, दीरड़ी, दीररियो, दीरी, दीरो-पु० १ काटेदार वृक्ष या झाड़ी की टहन्य । २ सूखी झाड़ी का पुंज ।
 दील-स्त्री० १ विलम्ब, देरी । २ छूट । ३ समय, अवसर ।
 ४ सुस्ती । ५ सुविधा । ६ स्थिति ठीक करने का विशेष अवसर । ७ बंधन का ढीलापन । ८ रस्सी के खिंचाव में कमी । ९ यूका, जू । १० पलंग को बढ़ाने की क्रिया ।
 -वि० जिसके ठहरे या बंधे हुए छोरों के बीच झोल हो ।
 दीलउ-देखो 'दीली' ।
 दीलड़ी-१ देखो 'दिल्ली' । २ देखो 'दिलड़ी' । ३ देखो 'दील' ।
 दील-ढाली-पु० हाथी, गज ।
 दीलणी-वि० (स्त्री० दीलणी) १ सुस्त, आलसी । २ ढीला ।
 दीलणी (बो), दीलवणी (बो)-क्रि० १ बंधन मुक्त करना ।
 २ ढीला छोड़ना । ३ डोरी आदि आगे बढ़ाना ।
 ४ छोड़ना, नियंत्रण में न रखना ।
 दीलणी-पु० (स्त्री० दीलणी) दिल्लीवासी ।
 दीलपति (पत्तो)-पु० दिल्लीपति, बादशाह ।
 दीतो-१ देखो 'दिल्ली' । २ देखो 'दीली' (स्त्री०) । —पति, पत्तो= 'दिल्लीपति' ।
 दीलु, दीलू, दीली-वि० [सं० शिथिलक] (स्त्री० दीली) १ मंद, धीमा । २ जिसका बंधन शिथिल हो ।
 ३ शिथिल । ४ सुस्त, आलसी । ५ कमजोर, निर्बल, अशक्त । ६ जिसमें तनाव या खिंचाव न हो । ७ जिसकी पकड़ ढीली हो । ८ अतत्पर, असावधान । ९ नाप आदि में कुछ बढ़ा हो । १० जो अडिग न रह न हो । ११ जो भली प्रकार न जुड़ा हो, असंलग्न । १२ स्वभाव में शान्त, नर्म । १३ रिक्त, खाली । १४ अपने नियंत्रण में मुक्त ।

१५ नपुंमक । १६ अस्थिर । १७ जो कड़ा या मस्त न हो, नर्म । १८ गोला ।
 ढीह, (हौ)-पुं [सं दीर्घ] बड़ा टीबा, ढूहा ।
 ढुई-देखो 'ढुई' ।
 ढुंढ-देखो 'ढुंढ' । २ देखो 'ढुंढी' । —बेस='ढुंढाड़' ।
 ढुंढराव-पुं मिह, पंचानन ।
 ढुंढा-स्त्री० १ हिरण्य कश्यप की बहन एक राक्षसी । २ देखो 'ढुंढाड़' ।
 ढुंढाड़ ढुंढार, ढुंढाहड़-देखो 'ढुंढाड़' ।
 ढुंढि-[सं] गणेश का एक नाम ।
 ढु-पुं १ कर्म । २ दुष्ट । ३ हाथी । ४ सर्प । ५ सूर । ५ बन्दर ।
 ढुई-स्त्री० १ रीढ़ की हड्डी का नीचला भाग । २ पीठ के नीचे का कूल्हे पर्यन्त भाग । ३ बाजरी के सूखे डंठलों का महीन चारा । ४ रीढ़ के नीचले भाग में होने वाला दर्द ।
 ढुम्रो-देखो 'ढुवो' ।
 ढुकाणो (बो), ढुकावणो (बो)-क्रि० १ काम में लगाना । २ कार्य प्रारंभ कराना । ३ किसी कार्य विशेष से किसी स्थान विशेष पर जाने को प्रवृत्त करना ।
 ढुक्कणी (बो)-देखो 'ढूकणी' (बो) ।
 ढुगली-देखो 'ढिगली' ।
 ढुक्की-पुं धीरे-धीरे दौड़ते हुए चलने की क्रिया ।
 ढुक्की-वि० (स्त्री० ढुक्की) १ वृद्ध, बूढ़ा । २ अशक्त, निबल ।
 ढुरियो-पुं ऊंट को एक चाल विशेष ।
 ढुळकणी (बो)-देखो 'ढळकणी' (बो) ।
 ढुळकाणी (बो), ढुळकावणी (बो)-देखो 'ढळकाणी' (बो) ।
 ढुळढुळ-स्त्री० १ मगाड़े प्रादि वाद्य की निरन्तर होने वाली आवाज । २ ऐसे वाद्य बजने की क्रिया ।
 ढुळणी (बो)-क्रि० १ गिर जाना, ढुलक जाना, बहजाना । २ बोर गति प्राप्त होना । ३ छितराया या फैलाया जाना, फैलना, बिखरना । ४ अधिक स्नेह से द्रवित होना । ५ कृपालु, दयालु या लुब्धमान होना । ६ चंवर प्रादि ऊपर से घुमाया जाना । ७ झुकना, प्रवृत्त होना ।
 ढुळलाई, ढुळई-देखो 'ढोळई' ।
 ढुलार, ढुलारी-पुं झुण्ड, समूह ।
 ढुलारी-पुं एक प्रकार का कीड़ा ।
 ढुवो-पुं १ झुण्ड, समूह । २ मिट्टी का छोटा टीबा । ३ ढेर । ४ पीठ के नीचे का भाग । ५ सेना, दल । ६ आक्रमण, हमला ।
 ढुही-देखो 'ढुई' ।
 ढुही-देखो 'ढुवो' ।

ढूकणी (बो)-क्रि० १ घुमना, प्रवेश करना (मेवात) ।
 २ देखो 'ढूकणी' (बो) ।
 ढूंग, ढूंगड़-देखो 'ढूंगी' ।
 ढूंगरी-स्त्री० सूखे घाम का व्यवस्थित रखा ढेर ।
 ढूंगलियो, ढूंगली, ढूंगियो, ढूंगीड़, ढूंगी-पुं १ कुल्हा, नितम्ब । २ गुप्तांग ।
 ढूँचो-पुं माढ़े चार की संख्या का पहाड़ा ।
 ढूँड, ढूँडड़-१ देखो 'ढूँड' । २ देखो 'ढूँडी' ।
 ढूँडी-देखो 'ढूँडी' ।
 ढूँड-स्त्री० १ खोजने, तलाश करने की क्रिया या भाव । २ अन्वेषण, शोध । ३ नितम्बों वाला भाग । ४ बच्चे के जन्म की प्रथम होली पर किया जाने वाला एक संस्कार । ५ पूर्वी राजस्थान की एक नदी । ६ देखो 'ढूँडी' । ७ देखो 'ढूँडियो' ।
 ढूँडड़, ढूँडड़ियो-१ देखो 'ढूँडियो' । २ देखो 'ढूँडी' ।
 ढूँडणी (बो)-क्रि० १ खोजना तलाश करना, ढूँडना । २ नवजात शिशु का प्रथम होली पर संस्कार करना । ३ अन्वेषण या शोध करना । ४ पीटना ।
 ढूँडाड़-स्त्री० जयपुर व उसके आस-पास का प्रदेश ।
 ढूँडाड़ी-वि० 'ढूँडाड़' का, ढूँडाड़ संबंधी । -स्त्री० १ इस प्रदेश का निवासी । २ इस प्रदेश की बोली ।
 ढूँडाड़ी-वि० (स्त्री० ढूँडाड़ी) 'ढूँडाड़' का, ढूँडाड़ संबंधी । -पुं १ इस प्रदेश का व्यक्ति । २ कच्छवाहा राजपूत ।
 ढूँडाहड़ (हर)-देखो 'ढूँडाड़' ।
 ढूँडाहड़ो(हरी)-देखो 'ढूँडाड़ी' ।
 ढूँडियो-पुं १ जैन साधु, भिक्षु । २ देखो 'ढूँडी' । ३ देखो 'ढूँड' ।
 ढूँडी-स्त्री० मरे पशु का अस्थिपंजर ।
 ढूँडी-पुं १ पुराना, मकान । २ बड़ा भवन (गढ़, किला) । ३ किसी इमारत का खण्डहर । ४ शरीर का पृष्ठ भाग, पीठ ।
 ढू-पुं १ सेतु । २ अधर्म । ३ शरीर । -स्त्री० ४ हथिनी । ५ हरिताल । -वि० स्थिर ।
 ढूक-स्त्री० पट्टेच ।
 ढूकड़ी (डो)-वि० [मं० डोकलि] (स्त्री० ढूकड़ी, डो) समीप, निकट, पास ।
 ढूकड़ाक-क्रि० वि० कुछ नहीं ।
 ढूकणी (बो)-क्रि० १ किसी काम पर लगना, संलग्न होना । २ कई कार्यकर्त्ताओं के साथ काम में मम्मिलित होना । ३ मम्मिलित होना । ४ झुकना । ५ पहुँचना । ६ प्रारंभ होना, शुरू होना ।

हूकवी-वि० (स्त्री० हूकवी) समीप, निकट ।

हूडी-स्त्री० रीढ़ की हड्डी के नीचे का भाग । त्रिकास्थि ।

हूब, हूबड़-स्त्री० १ कूबड़ । २ धातु के वर्तन में पड़ी मोच ।
३ एक ओर अधिक निकला भाग । ४ देखो 'हूबी' ।

हूबड़िया, हूबड़ी, हूबस, हूबलिया, हूबली, हूबिया, हूबी-पु०
(स्त्री० हूबी) १ वह प्राणी जिमकी पीठ में कूबड़ हो ।
कूबड़ा । २ झुकी हुई पीठ वाला व्यक्ति । ३ मोच पड़ा
वर्तन ।

हूमरी-स्त्री० रसोई में काम याने वाला वर्तन (मेवात) ।

हूमलिया, हूमली-पु० कागज आदि की लुग्दी का बना पात्र ।

हूळ, हूल, हूळकिमी, हूलकिमी, हूलकी-पु० १ झुण्ड, समूह ।
२ देखी 'हूली' ।

हूलड़, हूलड़ी-देखो 'हूली' ।

हूसी-स्त्री० १ गुड़िया । २ देखो 'दिल्ली' ।

हूली-पु० [सं० दुर्लभ] १ गुड़ड़ा । २ बच्चों या स्त्रियों जैसी
आदतों वाला पुरुष ।

हूवी-देखो 'हुवी' ।

हूसर-पु० बनियों की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

हूह, हूही-पु० १ डेर, टीला । २ देखी 'हूवी' ।

हैकली-देखो 'हैकली' ।

हैकौ-पु० मादा मोर की बीली का शब्द ।

हैचाळ-देखो 'हैचाळ' ।

है-पु० १ मन । २ मृग । ३ गढ़ । ४ चर्म । ५ हींग ।

हैक, हैकड़, हैकस, हैकलिया-देखो 'हैकी' ।

हैकली-स्त्री० कम गहरे कूप से पानी सींचने का उपकरण ।

हैकिया, हैकीड़, हैकी-पु० १ चूतड़, कूल्हा । २ गुदा ।

हैखळ-पु० पंवार वंश की एक शाखा व इस शाखा
का व्यक्ति ।

हैटी-वि० [सं० धृष्ट] ढीठ, हठी, जिद्दी, दुराग्रही ।

हैद-पु० (स्त्री० हैदणी) १ चमार । २ कौआ । -वि० मूर्ख,
नासमझ ।

हैदनींग, हैदनींगी, हैदळनींगी-स्त्री० [सं० भृंग] टिड्डी
के आकार का एक पतंगा, मृग ।

हैदवाड़ (वाड़ी)-स्त्री० १ चमारों का समूह । २ चमारों
का मुहल्ला । ३ गंदी वस्तुओं वाला स्थान । ४ हेय
कर्म, हेय भावना ।

हैदियानट-पु० नट क्रिया करने वाले नट ।

हैदी-देखो 'हैद' ।

हैण-स्त्री० १ सख्त, कठोर भूमि । २ समतल भूमि ।

हैणियालय, हैणियालिया-स्त्री० [सं० हैणिकालक] एक
पक्षी विशेष । (जैन)

हैपाळी-वि० (स्त्री० हैपाळी) तहवाला, तहयुक्त ।

हैपी-पु० १ किसी पदार्थ का डेले की तरह जमा हुआ खण्ड ।
२ अधिक रेत वाला ऊपला । ३ शरीर के अन्दर बनी
कोई बड़ी ग्रंथि । -वि० १ मूर्ख, नासमझ । २ आलसी
सुस्त ।

हैबरी-स्त्री० १ तरबूज आदि फल का काटा जाने वाला छोटा
चौकोर खण्ड । २ दीवार या पत्थर में खुदा करके
फंसाया जाने वाला का काष्ठ खण्ड । ३ लकड़ी का गोल
या चौकोर खण्ड । ४ देशी कपाटों के नीचे लगने
वाला काष्ठ, धातु या पत्थर का गुटका । ५ बच्चों का
बड़ा पेट । -वि० बड़े पेट वाली

हैबरी-देखो 'हैबी' ।

हैबल, हैबलिया, हैबली, हैबिया, हैबीड़, हैबी-वि० (स्त्री० हैबी)
१ बड़े पेट वाला । २ देखो 'हैपी' ।

हैमकी-स्त्री० छोटी ढोलक ।

हैर(डी)-पु० राशि, समूह । संग्रह ।

हैरणी (बी), हैरणी (बी)-क्रि० १ शिथिल या ढीला करना ।
२ निष्क्रिय होकर बैठना ।

हैरिया-पु० १ डोरे से बंधा कंकड़ । २ देखो 'हैरी' ।

हैरी-देखो 'हैर' ।

हैरी-पु० १ डोरा, रस्ती आदि बनाने का छोटा उपकरण ।
२ इस उपकरण से एक बार में काती हुई ऊन, सूत
आदि की मात्रा । ३ बड़ी जूँ, यूका । ४ देखो 'हैर' ।
-वि० मूर्ख नासमझ ।

हैल, हैलड़ी, हैलणी-स्त्री० मादा मोर, मोरनी ।

हैली-पु० मिट्टी का कंकड़, डेला ।

हैक-पु० एक मांसाहारी पक्षी ।

हैकणी (बी)-क्रि० १ रम्भाना । २ मोरनी का बोलना ।

हैचाळ, हैचाळी-पु० हाथी, गज । -वि० मोटा, ताजा ।
हृष्ट-पुष्ट ।

हैरा-देखो 'हीरा' ।

है-पु० १ मेघ, बादल । २ कामदेव । स्त्री० ३ दामिनी ।
४ बक पंक्ति । ५ वीर बहूटी । ६ आशा ।

हैणी (बी)-देखो 'हैहणी' (बी) ।

हैमक (की), हैमक (की)-स्त्री० ढोलक के आकार का एक
वाद्य विशेष ।

हैर-१ देखो 'हैर' । २ देखो 'हैरी' ।

हैहणी (बी)-देखो 'हैहणी' (बी) ।

हैंग-पु० पाखण्ड, आडम्बर ।

है-पु० १ सुख । २ साधन । ३ धनवान । ४ प्रधान । ५ बाल ।
६ आदत, स्वभाव । ७ अभ्यास ।

ढोगी-पु० 'ढोकली' यंत्र से फेंका जाने वाला पत्थर ।

ढोउ-पु० प्रहार, घाघात, टक्कर ।

ढोक-देखो 'धोक' ।

ढोकणी (बी)-देखो 'ढोकणी' (बी) ।

ढोकळ-देखो 'धोकळी' ।

ढोकळियो, ढोकळी, ढोकळी-पु० १ चना, गेहूँ, बाजरी आदि के चून की बनी, बंद बर्तन में बाष्प से सीकी बाटी । २ बड़ी जूँ । ३ डलिया, छबड़ी । ४ दही नापने का पात्र (मेवात) -वि० मूखं, नाममभ ।

ढोटो-स्त्री० पुत्री, बेटी ।

ढोटो-पु० (स्त्री० ढोटो) पुत्र, लड़का, बेटा ।

ढोणी (बी)-क्रि० [सं० ढोक] १ भेंट धरना, चढ़ाना । २ बोझा लाद कर चलना । ३ कोई सामान उठा कर इधर-उधर रखना । ४ चलाना । ५ प्रवृत्त करना ।

ढोबलो, ढोबो-पु० बड़े जल पात्र का मिट्टी का ढक्कन ।

ढोमनिया-स्त्री० गाने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

ढोमनियो-पु० उक्त जाति का ध्यक्ति ।

ढोमरी-स्त्री० मिट्टी का बना पात्र (मेवात) ।

ढोर-पु० [सं० धुर्य] १ पशु, मवेशी । २ किसी व्यक्ति को समुराल से मिली गाय । -वि० मूर्ख, गंवार, अनाड़ी ।

-बाल, बाळ-पु० मवेशियों की पूँछ के बाल ।

ढोरी-देखो 'ढोरो' ।

ढोर (रु)-देखो 'ढोर' ।

ढोस-पु० [सं० ढोल] १ लकड़ी या लोहे के गोल घेरे के दोनों ओर चमड़ा मंड कर तैयार किया वाद्य । २ लोहे आदि का गोल बड़ा पात्र, टंकी ।

ढोलक(की)-स्त्री० [सं० ढोल] ढोल के अनुरूप बना छोटा वाद्य ।

ढोलकियो-पु० 'ढोलक' बजाने वाला कलाकार ।

ढोलकौ-देखो 'ढोली' ।

ढोलड़ी-स्त्री० १ बच्चों की छोटी खाट । २ देखो 'ढोलक' ।

ढोलड़ी-देखो 'ढोल' ।

ढोलष, ढोलणी-स्त्री० १ ढोली जाति की स्त्री । २ देखो 'ढोलड़ी' ।

ढोलणी-देखो 'ढोली' ।

ढोलणी (बी)-क्रि० [सं० ढोलन] १ किसी पदार्थ को गिराना, बिखेरना, बहाना । २ कोई द्रव पदार्थ किसी के ऊपर उड़ेलना । ३ मकान की पुताई करना । ४ चंवर आदि डुलाना ।

ढोलर-स्त्री० खड़ी फसल से घान खाने वाली बड़ी चिड़िया ।

ढोलाई-स्त्री० १ ढोलने की क्रिया या भाव । २ ढोलाई पोताई की मजदूरी ।

ढोलि-१ देखो 'ढोल' । २ देखो 'ढोली' ।

ढोलियो-पु० मृत या निवार से बुनी सुन्दर खाट, पर्लंग ।

ढोली-स्त्री० विवाह आदि अवसरों पर ढोल बजाने व गाने का कार्य करने वाली एक गायक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

ढोलीड़-देखो 'ढोलियो' ।

ढोळी-पु० सफेदी, कली ।

ढोली-पु० [सं० दुर्लभ] १ पति, खाविद । २ दूल्हा । ३ लोक गीतों का नायक । ४ नरवरगढ़ का राजकुमार । ५ बालक, बच्चा । ६ रहट में लगने वाली एक लकड़ी विशेष । ७ सड़क के पुल के नीचे बना मोरा, ताला । ८ सीमा चिह्न ।

ढोली-देखो 'ढोलियो' ।

ढोवणी (बी)-क्रि० १ लाना । २ देखो 'ढोणी' (बी) ।

ढोवाई-स्त्री० १ ढोने का कार्य । २ ढोने की मजदूरी ।

ढोवो-पु० १ आक्रमण, हमला, चढ़ाई । २ युद्ध लड़ाई । ३ रण क्षेत्र ।

ढोसरो-स्त्री० एक प्रकार की घास ।

ढोहणी(बी)-१ देखो 'ढोणी' (बी) । २ देखो 'ढोवणी' (बी) ।

ढोहो-देखो 'ढोवो' ।

ढो-पु० १ चंपक । २ देवता । -स्त्री० ३ पत्ति । ४ सुगंध । ५ पृथ्वी । -वि० १ सज्जन । २ दुष्ट ।

ढोळी-पु० पशु की अशक्त अवस्था जिसमें बैठने के बाद उठना मुश्किल होता है ।

-ण-

ण-पु० १ देवनागरी लिपि का पन्द्रहवां व्यंजन । २ कूष्मा ।

३ बंबूल । ४ प्रचण्ड शरीर । -स्त्री० ४ विजय । ५ मेघा ।

६ वक्रगति ।

णगण-पु० [सं०] दो मात्राओं का एक मात्रिक गण ।

-त-

त-देवनागरी वर्णमाला का मोलहवां वर्ण ।

तं-पु० १ पुण्यफल । २ युग । ३ सुर, देवता । ४ चरण ।

५ भ्रमण । -मर्व० [सं० तद्] उस, [सं० युस्मद्] तुम, आप ।

तंघासिधौ-पु० तेरासी का वर्ष ।

तंघासी-वि० [सं० व्यशीति] अस्सी व तीन, तेरासी । -स्त्री० अस्सी व तीन की संख्या, ८३ ।

तंई-कि० वि० [सं० तंत्र] लिये, निमित्त । -मर्व० [सं० त्वम्] तुम, तू ।

तंउड़ी-देखो 'तसतू' ।

तंग-पु० १ छोड़े, ऊट आदि का चारजामा बांधने का पट्टा । २ शरीर का कमर के नीचे का या ऊपर का भाग । ३ पशुओं के शरीर का पिछला भाग । -वि० १ दुःखी, विकल, हिरान । २ संकुचित, संकरा । ३ चुस्त । ४ छोटा । ५ अभाव, कमी । ६ अकड़ा हुआ, ऐंठा हुआ ।

तंगड़-देखो 'तांगड़' ।

तंगड़ी-स्त्री० १ कच्छी, जांगिया । २ गुजराती नटों का कच्छा विशेष ।

तंगी-स्त्री० चार से अधिक सींगों वाली जेई, कृपि उपकरण । तंगड़, तंगी-स्त्री० [फा० तंगी] १ तंग या संकरा होने की अवस्था या भाव । २ निर्धनता, गरीबी । ३ कमी, न्यूनता, अभाव । ४ तकलीफ, दुःख, कष्ट ।

तंगोटी-स्त्री० छीलदारी, छोटा तंबू ।

तंजेघ-स्त्री० [फा०] बढ़िया मलमल ।

तंटर-पु० [सं० तट] किनारा, कुल, नट ।

तंड-पु० तांडव नृत्य ।

तंडण-पु० १ मंथन । २ नृत्य नाच । ३ उछल कूद ।

तंडणी (बी)-कि० १ नृत्य करना, नाचना । २ तांडव नृत्य करना । ३ उछल-कूद करना । ४ मंथन करना । ५ खेल आदि का जोश में बोलना ।

तंडल-पु० [सं० तंड] १ ध्वंस, नाश । २ संहार । ३ टुकड़ा हिस्सा, खण्ड । [सं० तंडुल] ४ चावल ।

तंडव (वि)-स्त्री० १ जोश भरी आवाज, दहाड़ । २ देखो 'तांडव' ।

तंडिल-पु० एक वृक्ष विशेष ।

तंडोर, तंडोरव-पु० तरकस, तुलीर ।

तंडुल-पु० [सं० तंडुल] १ चावल, धान । २ खण्ड, टुकड़ा भाग । ३ शरीरका कटा हुआ कोई भाग । ४ तमाल-पत्र ।

तंडुलकुसुमावलीविकार-पु० [सं० तंडुल कुसुमावली विकार] ६४ कलाग्रों में से एक ।

तंडेघ देखो 'तांडव' ।

तंडमल-वि० बीर, युद्ध ।

तंण-देखो 'तण' ।

तंणी-देखो 'तणी' ।

तंत-पु० [सं० तत्त्व] १ सत्यता, असलियत । २ ओज, तेज । ३ शक्ति । ४ मौका, अवसर । ५ समय । ६ रहस्य, भेद । ७ सार, तत्त्व, सारांश । ८ तथ्य । १ जीघ्रता, आतुरता । [सं० तंत्री] १० सारंगी, सितार । ११ तार । १२ तार वाद्य । १३ निश्चय । १४ देखो 'तंत्र' । -बापरौ, बापरौ -वि० तत्त्व या सारहीन, निस्सार । शक्तिहीन, क्षमता रहित । तेजहीन ।

तंतर (री)-देखो 'तंत्र' ।

तंतसपत-पु० [सं० रामतंतु] यज्ञ ।

तंताळ-पु० [सं० तंतु] जल-जंतु ।

तंति (ती)-स्त्री० [सं० तत] १ तारवाद्य । २ देखो 'तंत्री' ।

तंतु-पु० [सं०] १ सूत । २ तागा, डोरा । ३ रेशा । ४ घाम का नृण । ५ तांत । ६ देखो 'तंतौ' ।

तंतुण-पु० [सं०] १ मरस्य, नक्र । २ मकड़ी का जाला ।

तंतुनाग-पु० नक्र, मगर ।

तंतुल-स्त्री० कमलनाल ।

तंतुसप्त-पु० [सं० सप्त तंतु] यज्ञ, होप ।

तंतुवाय-पु० [सं० तंतुवाय] बुनकर, जुलाहा ।

तंत्र-पु० [सं०] १ तागा, डोरा, धागा । २ सूत, सूत । ३ तांत । ४ मकड़ी का जाला । ५ सेना । ६ वस्त्र । ७ चीमठ कलाग्रों में से एक । ८ जादू, टोना । ९ तार वाद्यों का तार । १० मंत्र । ११ करघा । १२ ताना । १३ वंश । १४ परंपरा । १५ मिथ्यात, नियम । १६ मुख्य विषय । १७ विज्ञान शास्त्र । १८ अध्याय, पर्व । १९ तंत्र शास्त्र । २० किसी कार्य की उचित पद्धति । २१ राजकीय परिवार । २२ प्रांत, प्रदेश । २३ शासन । २४ ढेर, समूह । २५ घर । २६ धन, सम्पत्ति । २७ यज्ञ । -नाळी-स्त्री० तोण । -वाद-पु० ७२ कलाग्रों में से एक । -वादी-वि० जादू टोना जानने वाला ।

तंत्रणी-पु० तंत्र शास्त्र का ज्ञाता, तांत्रिक ।

तंत्रिक-देखो 'तांत्रिक' ।

तंत्रो-पु० [सं०] १ मारंगी, सितार आदि तारवाद्य ।

२ इन वाद्यों को बजाने वाला कलाकार । ३ तांत्रिक, जादूगर । ४ वाद्यों का तार । ५ तांत । ६ डोर, डोरी ।

७ नम । ८ पूंछ ।

तंदरा-देखो 'तद्रा' ।

तंदळ-देखो 'तंदुळ' ।

तंदुख-पु० श्वान, कुत्ता ।

तंदुरस्ती, तंदुरुस्ती-स्त्री० [फा० तंदुरुस्ती] १ स्वस्थता, आरोग्यता । २ स्वास्थ्य ।

तंदुळ-पु० [सं० तण्डुलः] १ चावल, धान । २ मस्तक, शिर ।

तंदुलवेधाली (सूत्र)-पु० [सं० तण्डुल वैकालिक] जैनों का एक सूत्र ग्रंथ, वैकालिक सूत्र ।

तंदूर-पु० [फा० तूर] १ रोटी पकाने का एक भटकीनुमा चूल्हा विशेष । २ बड़ी कीला ।

तंदूरी-पु० १ कीला से मिलता-जुलता एक तारवाद्य । २ देखो 'तंदूर' ।

तंद्रा-स्त्री० [सं०] १ हल्की सी निद्रा, ऊँच, ऋपकी । २ हल्की मूर्च्छा । ३ एक रोग विशेष । ४ सुस्ती, आलस्य ।

तनै-देखो 'तनय' ।

तंषा-स्त्री० [सं० तंषा] सींगों वाली गाय ।

तंब-पु० [सं०] १ बेल । २ अभिमान, गर्व । ३ देखो 'तंब' । ४ देखो 'तांबी' । ५ देखो 'तंबू' ।

तंबक, तंबक-देखो 'तंबक' ।

तंबक-देखो 'तांबापतर' ।

तंषा-स्त्री० [सं०] १ गाय । [फा० तंबान] २ चौड़ी मोरी का पाजामा ।

तंबाकू (खू)-देखो 'तमाकू' ।

तंबाळ-देखो 'तंबाळ' ।

तंबी-स्त्री० १ नगाड़ा । २ भय । ३ जोश पूर्ण आवाज ।

तंबुक-देखो 'तंबक' ।

तंबू-पु० १ शिविर, डेरा, खेमा । २ शामियाना ।

तंबूर (री)-पु० [फा० तंबूर] १ युद्ध में बजने वाला छोटा ढोल । २ तानपुरा । ३ एक तार का वाद्य ।

तंबेरण, तंबेरम, तंबेरव, तंबोरम-पु० [सं० तंबेरम] हाथी, गज ।

तंबोळ-पु० १ मुँह से निकलने वाला भाग, फेन । २ क्रोध, आवेश । [सं० ताम्बूल] ३ पान, वीडा । ४ देखो 'तंबोळी' ।

-वि० १ नाव, रक्ताभ । २ अधिक, बहुत । —खानो-पु० पान की दुकान । पान भण्डार । —नित-स्त्री० नागरवेल ।

तंबोळि, तंबोळी-पु० [सं० ताम्बूलिक] (स्त्री० तंबोलण) १ पान का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

२ पान का व्यापारी, पनवाड़ी ।

तंमाकू-देखो 'तमाकू' ।

तंभारी-सर्व० तुम्हारा, तुम्हारे ।

तंभे-सर्व० तुमको, तुझे ।

तंभाळीस-वि० [सं० त्रिचत्वारिंशत्] चालीस व तीन, तैंतालीस । -पु० चालीस व तीन की संख्या, ४३ ।

तंभाळीसमी (बों)-वि० तैतामीसवां ।

तंभाळीसी, तंभाळी-पु० ४३ का वर्ष ।

तंभासी-देखो 'तंझ्यासी' ।

तंभासीमी (बों)-वि० तैगामी के स्थान वाला ।

तंभासीयो-देखो 'तंझ्यासियो' ।

तंभर-पु० १ एक राजपूत वंश व इस वंश का व्यक्ति ।

२ 'मित्तावटों' की एक शाखा । ३ वह व्यक्ति या वाक्य जिसका प्रपितामह जीवित हो ।

तंभरावटी-स्त्री० 'तंभर' राजपूतों की जागीरी का प्रदेश ।

तंभळाटी-स्त्री० मूर्च्छा, चक्कर, बेहोशी ।

तंवाई-स्त्री० १ मूर्च्छा, बेहोशी । २ घबराहट, खलबली । ३ भय, आतंक ।

तंस-वि० [सं० त्र्यम्स] त्रिकोण, त्रिकोना । (जैन)

तंह, तंहो-कि०वि० १ यहाँ, तहाँ । २ उमी स्थान पर, वहीं ।

त-पु० [सं० तः] १ पुण्य । २ चोर । ३ झूठ । ४ गर्म । ५ रत्न । ६ सुख । ७ तीर्थ । ८ पाप । ९ मोक्ष । १० चित्त, हृदय । ११ स्थान । १२ मगुन, शकुन । १३ नाव । १४ दुम । १५ अस्त्र । -अव्य० [सं० ततः] १ उस दशा या अवस्था में । २ तब । ३ बादपूरक अव्यय । -सर्व० [सं० तुम्यम्] १ तू, तुझ । २ तुम । ३ उस, वह ।

तइ, तइ-सर्व० [सं० त्वम् तुम्यम्, तद्] १ तू, तुम । २ तुझ । ३ तेरे । ४ उस । -प्रत्य० [सं०] १ करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति, से । २ देखो 'तई' ।

तइनात (नाथ)-देखो 'तैनात' ।

तइय-वि० [सं० तृतीया] तीमरी । -सर्व० उस, उन । -कि०वि० तभी, तब ।

तइयां-सर्व० उन्होंने ।

तइया-वि० [सं० तृतीया] तीमरी (जैन) । -कि०वि० [सं० तदा] तब (जैन) ।

तइयार-देखो 'तैयार' ।

तइयो-देखो 'तीयो' ।

तइसे-कि०वि० वैसे ।

तई

(५५२)

तखड़

तई-कि०वि० तव, उस समय । -वि० [सं० आतताई] १ शत्रु, दुष्ट । २ देखो 'तई' ।
 तईनात-देखो 'तैनात' ।
 तईनाती-स्त्री० [अ० तअयुनात] १ तैनाती, नियुक्ति । २ प्रबन्ध ।
 तईयासी-देखो 'तंइयासी' ।
 तईयार-देखो 'तैयार' ।
 तउ, तउ-अव्य० [सं० ततः] पाद पूरक अव्यय । -कि०वि० १ तो, तब । २ तो भी । ३ यदि । ४ तब । ५ इत्यादि । -वि० [सं० श्रीणि] तीन (जैन) । सर्व० [सं० त्वम्] तुम, आप ।
 तउणि (णी)-देखो 'तपणी' ।
 तउय-पु० [सं० तपुय] रांगा, कलाई ।
 तउस-पु० [सं० तपुस] एक प्रकार की लता ।
 तउसमिजगा, तउसमिजिया-स्त्री० [सं० तपुसमिजिका] तीन इन्द्रियों वाला एक जीव विशेष ।
 तऊ-देखो 'तउ' ।
 तकजो-स्त्री० विष्णु मूर्ति के शिर का एक आभूषण ।
 तक-स्त्री० १ तकने की क्रिया या भाव, टकटकी । २ शवल, सूरत । ३ प्रकृति, स्वभाव । ४ प्रकार, ढंग । ५ बकरी को उत्तेजित करने का शब्द । -अव्य० [सं० अंत + क] पर्यन्त । -कि०वि० तरह, भांति ।
 तकख-देखो 'तक्षक' ।
 तकड़तम-वि० तना हुआ, खींचा हुआ ।
 तकण-वि० तकने वाला । -सर्व० वह, उस ।
 तकणी (बो)-कि० १ लगातार एक ओर देखना, टकटकी लगाना । २ गौर से देखना । ३ ताक में रहना । ४ आश्रय लेना ।
 तकत-देखो 'तखत' ।
 तकतूबो-पु० १ विकृत कलिन्दा या हिन्दवानी । २ इन्द्रायण लता का फल ।
 तकतो-पु० तकुआ ।
 तकवीर-स्त्री० [अ०] भाग्य, किस्मत, प्रारब्ध ।
 तकवीर-स्त्री० [अ०] अल्ला हो अकबर की आवाज ।
 तकमीनी-देखो 'तखमीनी' ।
 तकरार-स्त्री० [अ०] १ वाद-विवाद, वहस । २ लड़ाई, वाग्युद्ध । ३ शीघ्रता ।
 तकरीर-स्त्री० [अ०] बातचीत । भाषण, संभाषण ।
 तकली-स्त्री० सूत कातने का छोटा उपकरण ।
 तकलीणी-वि० (स्त्री० तकलीणी) १ सुलभ, महज, सुगम । २ दुर्बल, कृश ।
 तकलीफ, तकलीज-स्त्री० [अ० तफल्लुफ] १ कष्ट, दुःख । २ पीड़ा वेदना । ३ परेशानी ।

तकली, तकवी-देखो 'ताकली' ।
 तकसीम-स्त्री० [अ०] बांटने की क्रिया, बंटाई, वितरण ।
 तकसीर-स्त्री० [अ०] १ अपराध, गुनाह, दोष । २ त्रुटि, गलती ।
 तकां-देखो 'तिका' ।
 तकाई-स्त्री० तकने की क्रिया या भाव, ताक-भांक ।
 तकाजो-पु० [अ० तकाजः] १ बार-बार मांगने की क्रिया या भाव । २ ताकीद, शीघ्रता । ३ कोई वस्तु लौटाने के लिए किया जाने वाला आग्रह ।
 तकात-अव्य० १ तक, पर्यन्त । २ भी ।
 तकावी-देखो 'तकाजौ' ।
 तकावी (बो)-स्त्री० [अ० तकावी] कृषकों से सरकारी ऋण की वसूली ।
 तकार-पु० १ छंद शास्त्र का 'तगण' । २ 'त' वर्ण ।
 तकियाकलाम-पु० [अ०] बात करते समय व्यर्थ में, बार-बार प्रयुक्त होने वाला शब्द ।
 तकियो-पु० [का० तकियः] १ सोते समय शिर के नीचे रखी जाने वाली रुई की मोटी थैली, उपधान, सिरहाना । २ छज्जे के सहारे में लगाई गई पत्थर की पट्टी । ३ मुसलमान फकीरों का निवास स्थान । ४ कब्र का पत्थर विशेष ।
 तकक-स्त्री० १ तर्क । २ देखो 'तक' ।
 तककड़-स्त्री० शीघ्रता, ताकीद, तकाजा, आग्रह ।
 तककणी (बो)-देखो 'तकणी' (बो) ।
 तककर-पु० [सं० तस्कर] १ चोर । २ गैर कानूनी व्यापार करने वाला । ३ चोर बाजारी ।
 तकख-१ देखो 'तक्षक' । २ देखो 'तारक' ।
 तकखण (णि, णी)-अव्य० [सं० तत्क्षण] तत्काल, तत्क्षण ।
 तक, तक-पु० [सं०] छाछ, मट्ठा । -सं०-पु० दही, दधि । -सार-पु० नवनीत, मक्खन ।
 तक-पु० [सं०] भरत का बड़ा पुत्र ।
 तकक-पु० [सं०] १ आठ प्रमुख जातों में से एक । २ सर्प, नाग । ३ एक अनार्य जाति । ४ विश्वकर्मा । ५ बड़ई । -वि० लाल, रक्ताभ ।
 तकण-पु० [सं०] १ बड़ई का कार्य, चौसठ कलाशों में से एक । २ देखो 'तवखण' ।
 तकसिला-स्त्री० [सं०] भरत पुत्र 'तक' की राजधानी, एक प्राचीन नगर ।
 तकण (गि, गी)-पु० [सं० तकक] १ शेषनाग । २ तकक मर्प । ३ मर्प । -वि० तीक्ष्ण, पैना, तेज ।
 तख वि० १ अफीमची । २ मूर्ख, मूढ़ ।
 तखक-पु० [सं० तक्ष-तृ] मुदर्शनचक्र ।
 तखड़-१ देखो 'तखड़ी' । २ देखो 'तवकड़' ।

तखड़ीतुमड़ीका-स्त्री० गुजराती नदों की एक शाखा ।
 तखड़ी-वि० (स्त्री० तखड़ी) १ द्रुतगामी । २ तेज गति वाला ।
 तखण, तखण्ड-पु० गरम पानी से आंखों का सिकताव ।
 तखत-पु० [फा० तख्त] १ सिंहासन, राजगद्दी । २ चौकी, पाट ।
 -वि० चकित, विस्मित दंग । —ताऊस-पु० ग्राहजहां का मयूर सिंहासन । —नसीन-वि० सिंहासनारूढ़ । —पोस-पु० तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर । —बंदी-स्त्री० तख्तों की दीवार । —रकुल-आलमीन-पु० मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान ।
 तखतखो-इन्द्र ।
 तखति-(ती)-स्त्री० [फा० तख्त] १ छोटा तख्त । २ सकड़ी की चौकी । ३ छोटे विद्यार्थियों के लिखने की काष्ठ पट्टिका । ४ कंठ का एक आभूषण विशेष ।
 तखतौ-पु० [फा० तख्त] १ बड़ा पाट, बड़ी चौकी । २ लकड़ी का चौकोर खण्ड, गत्ता । ३ खण्ड भाग । ४ दर्पण, आईना ।
 तखत-देखो 'तखत' ।
 तखफीक-स्त्री० [सं० तख्फीफ] अभाव, कमी, न्यूनता ।
 तखमख-स्त्री० सज-वज । शृंगार ।
 तखमीनन-क्रि० वि० [अ० तखमीनन] अंदाज से, अनुमान से ।
 तखमीनी-पु० [अ० तखमीनः] १ अंदाज, अनुमान । २ अनुमानित व्योरा ।
 तखिक-देखो 'तक्षक' ।
 तखिरण-देखो 'तत्क्षर' ।
 तखिससर-देखो 'तक्षसिला' ।
 तखी-देखो 'तक्षक' ।
 तख-पु० शस्त्र का पेंनापन, तीखापन, तीक्ष्णता ।
 तखक-देखो 'तक्षक' ।
 तग-स्त्री० १ तीव्र गति । २ तीव्रता । —क्रि० वि० तीव्रगति से, तेजी से ।
 तगड़-स्त्री० १ सोने या चांदी की पतली चद्दर । —स्त्री० २ अधिक चलने या कार्य करने से होने वाली थकान । ३ तीव्र गति । ४ देखो 'तक्कड़' ।
 तगड़णी (बी)-क्रि० हांकना, चलाना दोड़ाना ।
 तगड़ी-वि० १ स्वस्थ, तन्दुरुस्त । २ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।
 तगण-पु० [सं०] दो गुरु एक लघु का वणिक गणऽऽ ।
 तगतगई-स्त्री० स्त्रियों के कण्ठ का आभूषण ।
 तगतगणी (बी)-क्रि० १ प्रेरित करना । २ उत्तेजित करना । ३ देखो 'तिगतिगणी' (बी) ।
 तगतगु-स्त्री० सुन्दरता ।
 तगतौ-देखो 'तखतौ' ।
 तगदमा-पु० [अ० तक्दूम] अनुमान, अंदाज ।

तगवीर-देखो 'तकदीर' ।
 तगमी-देखो 'तुकमी' ।
 तगर-पु० [सं०] १ मुंगधित लकड़ी वाला पेड़ । २ इस पेड़ की लकड़ी ।
 तगरी-देखो 'तिगरी' ।
 तगस (सि)-पु० [सं० ताक्ष्य] १ अग्नि, आग । २ गरुड़ । ३ देखो 'तक्षक' ।
 तगसणी (बी)-क्रि० उड़ना ।
 तगसीर, (सीरी)-देखो 'तकसीर' ।
 तगसेस-देखो 'तक्षक' ।
 तगागोर-वि० तकाजा करने वाला ।
 तगाबी-देखो 'तकाजी' ।
 तगारी-स्त्री० १ लोह की चद्दर का बना कुण्ड या डलियानुमा पात्र । २ बड़ा पात्र ।
 तगी-स्त्री० १ सण आदि का रेशा । २ देखो 'तागी' । ३ देखो 'तिगी' ।
 तगीर, तगीरी-पु० [अ० तग्यूर] १ निकालना क्रिया, निष्कासन । २ परिवर्तन, बदलाव, हेर-फेर । ३ क्रांति । ४ जब्ती । —वि० १ निष्कासित, बाहर । २ जब्त । ३ परिवर्तित ।
 तगी-पु० १ ब्राह्मण के लिए अपमान सूचक शब्द । २ देखो 'तागी' ।
 तग्म-देखो 'तागी' ।
 तग्मड़-१ देखो 'तक्कड़' । २ देखो 'तगड़' ।
 तग्म, तग्मी-वि० [सं० तज] १ तत्त्वज्ञ, ज्ञानी । २ दर्शन शास्त्र का ज्ञाता, दार्शनिक ।
 तङ्ग-वि० १ नंगा, वस्त्र-हीन । २ लम्बा ।
 तङ्गी-पु० झुण्ड, समूह ।
 तङ्गी-पु० १ बेंत की चोट । २ चोट की आवाज, ध्वनि । —वि० लम्बा, लम्बायमान ।
 तङ्ग-पु० १ प्रातःकाल, सवेरा । २ वंश, कुल । ३ बेंत मारने की क्रिया । ४ प्रहार या वर्षा की ध्वनि । ५ वांस । ६ वंश या कुल की शाखा । ७ सेना, फौज । ८ दल, पार्टी । —वि० समान, तुल्य ।
 तङ्क-स्त्री० १ चमक-दमक । २ फटने, चिरने की क्रिया । ३ फटने की आवाज । ४ दराज । ५ तालाब, सरोवर । —क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी । चट-चट ।
 तङ्कउ-देखो 'तङ्कौ' ।
 तङ्कण-वि० फटने, चिरने, चटकने वाला । —स्त्री० फटने या चटकने की क्रिया या भाव ।

तड़कणौ

(५४४)

तटिनी

तड़कणौ (बौ)-क्रि० १ 'तड़' शब्द करते हुए फटना । २ क्रोध या आवेश में बोलना । ३ क्रोधित होना । ४ चमकना । ५ दगार पड़ना, चटकना ।

तड़क-भड़क-स्त्री० चमक-दमक ।

तड़कली-स्त्री० स्त्रियों का एक कर्णामूषण ।

तड़कली-देखो 'तड़की' ।

तड़की-देखो 'तड़की' ।

तड़के, तड़कै-क्रि० वि० १ यड़े, मवेरे । २ शीघ्र, जल्दी । ३ घूप में । ४ अगले दिन ।

तड़की, (बकी)-पु० १ प्रातःकाल, सवेरा । २ घूप गर्मी । ३ आगामी प्रातःकाल ।

तड़च्छ, तड़छ-स्त्री० १ तड़फड़ाट, छटपटाहट । २ देखो 'तड़ाट' । ३ देखो 'तड़ाछ' ।

तड़छणौ(बौ)-क्रि० १ तड़फटना, छटपटाना । २ व्याकुल होना । ३ मूर्च्छित होना । ४ संहार करना । ५ काटना ।

तड़छणौ (बौ)-क्रि० १ तड़फाना । २ व्याकुल करना । ३ मूर्च्छित करना । ४ संहार कराना । ५ कटवाना ।

तड़ण-स्त्री० दरार । -वि० 'तड़' करके फटने वाला ।

तड़णौ (बौ)-क्रि० १ 'तड़' की ध्वनि के साथ फटना । २ चटकना, दरार पड़ना । ३ क्रोध करना । ४ पशु का पतला मल करना ।

तड़त, तड़ित, तड़िता, तड़िताळ, तड़ित, तड़ियळ, तड़ियाळ-स्त्री० [सं० तड़िता] बिजली, विद्युत । -देह-पु० ४९ क्षेत्रपालों में से ३२ वां क्षेत्रपाल । -घांन-पु० मेघ, बादल । जल ।

तड़ियौ-पु० १ एक ही बेल अथवा ऊंट से खींचे जाने वाले हल की दो हरिमाओं में से एक । २ देखो 'तड़ौ' ।

तड़िल्लता-स्त्री० [सं० तड़िता] बिजली, विद्युत ।

तड़ौ-स्त्री० १ वृक्ष की पतली टहनी । २ छोटी हमिया लगा लंबा बांस । ३ डंडा, छोटी लकड़ी । ४ छोटी लकड़ी का हाथ पर प्रहार ।

तड़ौत-पु० १ ऊंट के वक्षस्थल का कठोर स्थान । २ देखो 'तड़ित' ।

तड़ेतवान-देखो 'तड़ितवान' ।

तड़बड़े-वि० समान, तुल्य, सदृश । -क्रि० वि० करीब, लगभग ।

तड़ेल-पु० योद्धा, वीर ।

तड़ोबड़ (बड़ी, बड़ि, बड़ी)-स्त्री० समानता, बराबरी ।

तड़ौ-पु० १ हमिया लगा लम्बा बांस । २ डंडा ।

तड़ोबड़पौ-वि० बराबरी वाला, समानता वाला ।

तचणौ (बौ)-क्रि० १ कष्ट सहना । २ संतप्त होना । ३ गर्म होना, तप्त होना । ४ काया को कष्ट देना ।

तचा-स्त्री० [सं० त्वचा] चमड़ी ।

तचाणी (बौ)-क्रि० १ तपाना, गर्म करना । २ दुर्बल करना । ३ कष्ट देना ।

तचौळ-स्त्री० कंपायमान होने की क्रिया या भाव ।

तच्च-स्त्री० १ किसी पने शस्त्र आदि का किसी में सहसा घुसने की क्रिया या भाव । २ त्वचा । -वि० [सं० तथ्य] मत्य, यथार्थ । (जैन)

तच्छ-देखो 'तक्ष' ।

तच्छक-देखो 'तक्षक' ।

तच्छणि-स्त्री० लकड़ी छीलने का उपकरण विशेष ।

तच्छन, तच्छन-क्रि० वि० [सं० तत्क्षण] तत्काल तुरंत ।

तछणौ (बौ)-क्रि० १ संहार करना, मारना । २ काटना ।

तछेक-क्रि० वि० शीघ्र, द्रुतगति से ।

तज-पु० १ एक वृक्ष विशेष की छाल जो ग्रीष्म में काम आती है । २ एक वृक्ष । ३ त्यागने की क्रिया ।

तजणौ (बौ)-क्रि० [सं० त्यज] १ त्यागना, छोड़ना । २ कृश होना, क्षीण होना ।

तजबीज-स्त्री० [अ०] १ निर्णय, फैसला । २ प्रबन्ध, व्यवस्था । ३ उपाय, युक्ति ।

तजबीर-पु० [अ० तज्जिवः] अनुभव ।

तजबी-पु० [अ० तज्जिवः] अनुभव, ज्ञान ।

तजबीज-देखो 'तजबीज' ।

तजोरी-देखो 'तिजोरी' ।

तज्जणा-स्त्री० [सं० तर्जन] तिरस्कार, भर्त्सना । (जैन)

तज्जणी (बौ)-देखो 'तजणी' (बौ) ।

तट-पु० [सं०] १ किनारा, तीर, कूल । २ सीमा, हद । ३ श्वेत । ४ ढालू स्थान । ५ आकाश । ६ महादेव । -क्रि० वि० १ पास, निकट, समीप । २ नीचे ।

तटक-स्त्री० ध्वनि विशेष । -क्रि० वि० तत्क्षण, तुरन्त ।

तटकणौ (बौ), तटवकणौ (बौ)-क्रि० १ टूटना । २ देखो 'तड़कणौ' (बौ) ।

तटणी (नी)-स्त्री० [सं० तटिनी] नदी ।

तटस्थ-वि० [सं०] १ अलग दूर । २ किनारे वाला । ३ निर्लिप्त, उदासीन ।

तटा-स्त्री० [सं० तट] १ नदी, सरिता । २ किनारा, कूल । -क्रि० वि० १ पास, समीप, निकट । २ ऊपर ।

तटाक-पु० [सं० तडाग] १ तालाव, मरोवर, जलाशय । -स्त्री० २ भटके से टूटने की क्रिया । ३ इस प्रकार टूटने से होने वाला शब्द । -क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

तटारी, तटी-स्त्री० [सं० तट] किनारा, कूल ।

तटिनी-देखो 'तटणी' ।

तटी-देखो 'तटा' ।

तटे (टं)-देखो 'तटे' ।

तठा-मर्वं [सं० तन्] उम । -क्रि० वि० [सं० तत्र] १ वहां ।
२ तब ।

तठी-क्रि० वि० [सं० तत्र] १ वहां । २ उधर, उस ओर ।

तठे (ठं)-क्रि० वि० वहां ।

तड-१ देखो 'तट' २ देखो 'तड़' ।

तडकस-वि० तंग, कसा हुआ, रड़ ।

तडकणी (बी)-देखो 'तड़कणी' (बी) ।

तडफडणी (बी)-देखो 'तड़फणी' (बी) ।

तडरकी-पु० जल्दबाजी, शीघ्रता ।

तडल-पु० अभिकण, चिनगारी ।

तडा-स्त्री० [सं० तट] तट, किनारा, कूल ।

तड्डु, तड्डुकी-पु० [सं० तटंक] स्त्रियों के कान का आभूषण ।

तडी-देखो 'टडी' ।

तणक (की)-पु० नार बाधों की भंकार ।

तण-पु० [सं० तनय] १ पुत्र, लड़का । [सं० तनु] २ काया, शरीर, तन । -वि० तीन । -सर्व० उस, उन । -प्रत्य० संबंध या पंढी विभक्ति का चिह्न का, की, के । -क्रि० वि० लिये, इसलिए । देखो 'तिण' ।

तणइ, तणउ-प्रत्य० १ पंढी विभक्ति का चिह्न, का, के ।
२ देखो 'तनय' ।

तणकणी (बी)-क्रि० १ खिचाव में आना, तनना । २ ढील निकलना । ३ बाधों के तार भतभनाना । ४ गुस्सा होना ।

तणकार (कारी)-स्त्री० १ तार बाधों की भंकार । २ तनाव, खिचाव । ३ तनाव देने की क्रिया या भाव ।

तणकारी-पु० १ खींचने या तानने की क्रिया या भाव । २ तार बाधों की भंकार । ३ भटका ।

तणकासप-पु० [सं० कषयपतनय] सूर्य ।

तणकी-वि० १ तना हुआ खिचा हुआ । २ देखो 'तिणकी' ।

तणकणी (बी)-देखो 'तणकणी' (बी) ।

तणखा-देखो 'तनखा' ।

तणच (छ, छ)-स्त्री० तरपव लचीली लकड़ो वाला वृक्ष विशेष ।

तणणी (बी)-क्रि० १ खिचना, तनाव खाना । २ ऐंठना, झकड़ना । ३ ग्रामियाना आदि ऊपर फैलाया जाना, ताना जाना । ४ गर्व करना, शेखी बघारना । ५ बल पूर्वक बढ़ना, प्रवृत्त होना । ६ खिचाव में आना । ७ जोश में आना । ८ युद्धार्थ तत्पर होना । ९ रुठना, गुस्सा करना । १० चित्रित होना । ११ उभगना ।

तणतणणी (बी)-क्रि० १ तनना, तनाव में आना । २ क्रोध करना, कुपित होना ।

तणय-पु० [सं० तनय] पुत्र, लड़का ।

तणया-देखो 'तनया' ।

तणस-स्त्री० वृक्ष विशेष ।

तणहस्तक-पु० [सं० तणहस्तक] घास का पुआल ।

तणाव-पु० १ मादा ऊंट की ऋतुमती होने की अवस्था या भाव ।
२ खिचाव, तनाव । ३ तम्बू आदि का फैलाव । ४ मन मुटाव, वैमनस्य । ५ किसी वस्तु की ऐसी दशा जब उसमें शिथिलता या ढीलापन न हो । ६ जोश या क्रोध पूर्ण अवस्था ।

तणियर-पु० [सं० त्रिनयनः] शिव, महादेव ।

तणी, तणी-स्त्री० १ मांगलिक अवसरों पर चौक या मण्डप में, ऊपर बांधी जाने वाली भूँज की डोरी । २ दीवार के सहारे या खुले मैदान में बांधी जाने वाली डोरी । ३ तराजू की डोरी । ४ किसी वस्त्रादि की कस । ५ पुत्री, लड़की । ६ देखो 'तिरणी' । -प्रत्य० पंढी विभक्ति का चिह्न को । -बंध-पु० पाणिग्रहण संस्कार ।

तणु-प्रत्य० पंढी विभक्ति का चिह्न, का । -पु० [सं० तनय] १ पुत्र । २ देखो 'तन' । -वि० अत्यन्त निकट के रिश्ते वाला, अत्यन्त प्रिय ।

तणुयरी-वि० [सं० तनुतरी] बहुत पतली ।

तणुया-स्त्री० [सं० तनुया] १ पुत्री, बेटी । २ सर्प की कँचुल ।

तणुवाय-स्त्री० स्वर्ग के तन की वायु । (जैन)

तणू-देखो 'तणु' ।

तणो-प्रत्य० पंढी विभक्ति का चिह्न, के । -क्रि० वि० १ पास, समीप, निकट । २ देखो 'तनय' ।

तणी-प्रत्य० पंढी विभक्ति का चिह्न, का । -पु० [सं० तनय] १ पुत्र, बेटा । २ पेट की ग्रांत । ३ पेट का खाली भाग । ४ आश्रय, सहारा बल ।

ततं-१ देखो 'तत' । २ देखो 'तत्व' ।

ततंग-वि० निर्वस्त्र, नग्न ।

तत-सर्व० [सं० नद] वह, उस । -क्रि० वि० [सं० तत्र] १ वहां, तहां । २ देखो 'तत्व' ।

ततकार-पु० नृत्य का बोल । -क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।

ततकारणी (बी)-क्रि० १ बैलों आदि को उकसाना, उत्तेजित करना । २ तेज गति से चलाना । ३ दौड़ाना, भगाना ।

ततकाळ (ळि, ळी, ळो)-देखो 'तत्काळ' ।

ततक्षण, ततक्षणि, ततक्षिण, ततक्षण, ततखिण, ततखिणी, ततखिन, ततखेव, ततखरण-देखो 'तत्क्षण' ।

ततगणान-देखो 'तत्त्वग्यान' ।

ततताथेई, ततत्थी, ततथेई, ततथेयव-पु० नृत्य का बोल विशेष ।

ततपर-देखो 'तत्पर' ।

ततबाउ-पु० [सं० तनुवाय] जुलाहा, बुनकर ।

तत्त्वबीर-देखो 'तदबीर' ।
 तत्तरे-क्रि० वि० इतने में ।
 तत्तवादी-पु० तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञानी ।
 तत्त्वित-पु० तार वाद्य विशेष ।
 तत्त्वबीर-देखो 'तदबीर' ।
 तत्त्ववेग-क्रि० वि० तुरंत, शीघ्र, तत्काल ।
 तत्त्ववेत्ता-देखो 'तत्त्ववेत्ता' ।
 तत्तसार-पु० ११ वर्ण का एक छन्द विशेष ।
 तत्ताथेई-स्त्री० नृत्य का बोल ।
 तत्तारी-पु० तातार देश का घोड़ा । -वि० तातार देश का, तातार संबंधी ।
 तत्तियी-देखो 'तत्ती' ।
 तत्ती-वि० १ क्रोध पूर्ण, क्रोध से लाव । २ तेज, तीक्ष्ण ।
 ३ तप्त, उष्ण । -क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी, तुरंत ।
 तत्तैया-स्त्री० दीड़, गति, चाल ।
 तत्तयो-पु० बर ।
 तत्ती-क्रि० वि० १ तत्पश्चात् । २ देखो 'तत्ती' ।
 तत्तकाल-क्रि० वि० [सं० तत्काल] तुरंत, उसी समय, शीघ्र ।
 तत्तकालीन-वि० [सं०] उसी समय का ।
 तत्तकाली-देखो 'तत्तकाल' ।
 तत्तक्षण-क्रि० वि० [सं०] उसी क्षण, उसी समय, शीघ्र ।
 तत्त-वि० [सं० तत्त] पीड़ित, दुःखी, संतप्त । -क्रि० वि० [सं० तत्त] तत्पश्चात्, तदनन्तर । देखो 'तत्त्व' ।
 देखो 'ताती' ।
 तत्तकाल (छू)-देखो 'तत्तकाल' ।
 तत्त्ववेत्ता-देखो 'तत्त्ववेत्ता' ।
 तत्ती-वि० (स्त्री० तत्ती) १ तीक्ष्ण, तेज । २ तीव्र, तेज ।
 ३ क्रुद्ध, कुपित । ४ देखो 'ताती' । -पु० 'त' वर्ण ।
 तत्त्व-पु० [सं०] १ पृथ्वी, जल, वायु आदि पंच भूत ।
 २ परब्रह्म । ३ जगत् का मूल कारण । ४ ब्रह्माण्ड रचना के २५ पदार्थ, तत्त्व । ५ मार वस्तु । ६ यथार्थता, असलियत । ७ स्वरूप । ८ निष्कर्ष । ९ मन । १० यथार्थ का मिश्रण । ११ वस्तु । १२ नृत्य विशेष ।
 तत्त्वग्रन्थ-पु० [सं० तत्त्वज्ञ] तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक ।
 तत्त्वग्रन्थान-पु० [सं० तत्त्वज्ञान] आत्म ज्ञान, ब्रह्म संबंधी यथार्थ ज्ञान ।
 तत्त्वग्रन्थानो-वि० [सं० तत्त्वज्ञानी] १ आत्मज्ञानी, तत्त्ववेत्ता ।
 २ जीव, ब्रह्म, माया के प्रति यथार्थ ज्ञान वाला दार्शनिक ।
 तत्त्वता-स्त्री० [सं०] सत्यता, यथार्थता ।
 तत्त्वदरसी-वि० [सं० तत्त्वदर्शन] ब्रह्म जीव का ज्ञान रखने वाला, दार्शनिक ।

तत्त्वद्विष्टी-स्त्री० [सं० तत्त्वद्विष्टि] दिव्य दृष्टि, सूक्ष्म दृष्टि ।
 तत्त्ववाद-पु० [सं०] ब्रह्म जीव संबंधी दर्शन ।
 तत्त्वविद्या-स्त्री० [सं०] तत्त्वज्ञान, दर्शनशास्त्र ।
 तत्त्ववेत्ता-वि० [सं०] तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक ।
 तत्त्व-वि० [सं० वस्तु] वास-युक्त, वसित । -क्रि० वि० [सं० तद्] वहां । -सर्व० [सं० तद्] १ उस ।
 २ देखो 'तत्त्व' ।
 तत्त्वथेई-पु० नृत्य का बोल ।
 तत्त्पर-वि० [सं०] तैयार, उद्यत, सन्नद्ध । होशियार, सावधान ।
 तत्त्परता-स्त्री० [सं०] तत्त्पर होने की दशा या भाव ।
 होशियारी सावधानी ।
 तत्त्पुरुष-पु० [सं० तत्त्पुरुष] १ परमेश्वर । २ एक रुद्र । ३ छः समानों में से एक ।
 तत्त्र-क्रि० वि० [सं०] वृद्धों, उस जगह । -पु० लोह का तार ।
 तत्तम-पु० [सं०] किसी भाषा में प्रयुक्त संस्कृत का शब्द ।
 तत्थ-देखो 'तत्त्व' । देखो 'तिथि' ।
 तत्थव्यय-देखो 'तत्क्षण' ।
 तत्था-अव्य० [सं०] और, एवं । उसी प्रकार, वैसेही ।
 -पु० ध्यान ।
 तत्थागत-पु० [सं०] भगवान बुद्ध का एक नाम ।
 तत्थापि-अव्य० [सं०] यद्यपि, तो भी, तबभी ।
 तत्थास्तु, तत्थास्तु-अव्य० [सं० तत्थास्तु] एवमस्तु, ऐसा ही हो ।
 तत्थि-देखो 'तत्त्व' । देखो 'तिथि' ।
 तत्थुंग-पु० नृत्य की एक ताल ।
 तत्थोपगो (बी)-क्रि० जोश दिलाता, उत्तेजित करना, पीठ ठोकना ।
 तत्थ, तत्थ-पु० [सं०] यथार्थ, सच्चाई, सार, तत्त्व ।
 तत्तंतर-क्रि० वि० [सं०] इसके उपरांत, उसके बाद, तत्पश्चात् ।
 तत्तवा-क्रि० वि० तब ।
 तद्-क्रि० वि० [सं० तदा] १ उस समय, तब । २ उसके बाद ।
 तद्गुण-पु० [सं० तद्गुण] १ अगले वस्तु का गुण ।
 २ अर्थालंकार का एक भेद ।
 तद्गण-क्रि० वि० उसके आगे ।
 तद्गपि (भी)-अव्य० [सं०] तिस पर भी, तो भी ।
 तद्बीर-स्त्री० [प्र०] उपाय, युक्ति, तरकीब ।
 तद्दरा-क्रि० वि० तब से, उस समय से ।
 तद्दा-क्रि० वि० तब ।
 तद्दरक, तद्दरक-पु० [प्र० तद्दरक] १ खोई वस्तु की जांच ।
 २ सजा दण्ड । ३ दुर्घटना की रोकथाम ।
 तदि, तदी-देखो 'तद्' ।

तथोक्त-क्रि० वि० तथो ।

तथीय-सर्व० उसके ।

तद्धित-पु० १ संज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण के अन्त में लगने वाला प्रत्यय । २ प्रत्यय लग कर बना शब्द ।
तद्ग्रह-पु० [सं०] संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप ।
परिवर्तित रूप ।

तद्रूप-वि० [सं०] समान, सदृश, तुल्य । -पु० रूपक
अलंकार का एक भेद ।

तन-पु० [सं० तनु] १ शरीर, तन, देह । २ मन । ३ संबंधी,
रिश्तेदार । ४ वंशज, संतान । ५ पुत्र, लड़का ।

तनक-वि० [सं० तनिक] तनिक, थोड़ा, किंचित । -स्त्री०
१ नाज, नजाकत । २ दिखावा । —मिजाजी-स्त्री० चिड़
चिड़ाने का स्वभाव । -वि० चिड़-चिड़े स्वभाव का ।

तनकळानिध-पु० चन्द्रमा ।

तनकीह-स्त्री० जांच, तहकीकत ।

तनखा, तनखाह-स्त्री० [फा० तनखाह] वेतन, तलब ।

तनगणी (बो)-क्रि० अप्रसन्न होना, रुष्ट होना । रुठना ।

तनड़ी-देखो 'तन' ।

तनजा-देखो 'तनुजा' ।

तनताप-पु० शरीर का कष्ट, व्याधि ।

तनत्राण, (न)-पु० [सं० तनुत्राण] कवच, बख्तर ।

तनदोवांण-पु० ग्रंथरक्षक ।

तनधय-पु० [सं० स्तनधय] शिशु, बच्चा ।

तनघर-पु० [सं० तनु घरान] शरीरधारी कोई प्राणी ।

तनापटाट-पु० तर्क-वितर्क, उद्गड़ता, नखरा ।

तनपात-पु० देहावसान, मृत्यु ।

तनबगसी-पु० ग्रंथ रक्षक ।

तनवीचि, तनमघ-स्त्री० कटि, कमर ।

तनमय-वि० [सं० तन्मय] लवलीन, तल्लीन, मग्न ।

तनमात्रा-स्त्री० [सं० तन्मात्रा] मांस्य के अनुसार पंच भूतों का
आदि, अमिश्र व सूक्ष्म रूप ।

तनय-पु० [सं०] १ पुत्र, सुत । २ नर संतान ।

तनयतू (तू)-पु० [सं० स्तनयित्तु] १ मेघ, बादल । २ संबंधी ।
-स्त्री० ३ बिजली । ४ बिजली की चमक । -वि० रक्षा
करने वाला ।

तनया-स्त्री० [सं०] १ पुत्री बेटी । २ मादा संतान ।

तनराग-पु० [सं० तनुराग] १ मुग्धित द्रव्यों का उबटन ।
२ उबटन के मुग्धित द्रव्य ।

तनरुह (रुह)-पु० [सं० तनुरुह] रोम, लोम ।

तनवार-पु० [सं० तनुवार] कवच ।

तनविड-पु० [सं० तनु-व्याध] शत्रु, वैरी ।

तनव्रण-पु० [सं० तनुव्रण] मुहासे ।

तनसणगार-पु० [सं० तनु-शृंगार] वस्त्र, वसन ।

तनसर-पु० [सं० तनुसर] पसीना ।

तनसांच-पु० कामदेव ।

तनसार-पु० [सं० तनुसार] १ मनुष्य । २ देखो 'तनुसार' ।
-वि० शरीर को छेदने वाला ।

तनसुख-पु० १ फूलदार वस्त्र । २ शारीरिक सुख ।

तनसोर-पु० मनुष्य ।

तनहंस-पु० [सं० तनु-हंस] १ हंसावतार, विष्णु । २ आत्मा ।

तनहा-वि० [फा०] अकेला, एकाकी । -क्रि० वि० बिना साथ से ।

तनहाई-स्त्री० [फा०] एकाकीपन, अकेलापन । एकान्त ।

तनाजान-वि० अकेला, एकाकी ।

तनाजो-पु० [अ० तनाआज] १ झगड़ा, टंटा, बसेड़ा ।
२ वैर, शत्रुता ।

तनाती-पु० १ ईश्वर । २ निकट का संबंधी । ३ शरीर
संबंधी ।

तनायत-पु० स्वजन, निकट संबंधी ।

तनारसो-पु० धनुष ।

तनिक-वि० थोड़ा, अल्प, किंचित ।

तनिपा-देखो 'तनया' ।

तनु-पु० [सं०] १ शरीर, देह, तन । २ जन्म कुंडली का
प्रथम स्थान । -वि० १ पतला-दुबला, कृशकाय । २ महीन,
सूक्ष्म । ३ कोमल, मुलायम । ४ कम, थोड़ा । ५ तुच्छ ।
६ छिछला । ७ प्रिय, प्यारा ।

तनुज-पु० [सं०] पुत्र, बेटा ।

तनुजा (ज्जा)-स्त्री० [सं०] पुत्री, बेटी ।

तनुत्राण-देखो 'तनत्राण' ।

तनुधारी-देखो 'तनघर' ।

तनुनपात, तनुनिपात-स्त्री० [सं० तनुनपात्] अग्नि, आग ।

तनुबंध-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

तनुमध्या-स्त्री० [सं० तनुमध्या] पतनी कमर की स्त्री ।

तनुमध्या-पु० एक वर्ण वृत्त ।

तनुराग-देखो 'तनराग' ।

तनुरो-देखो 'तंदुरो' ।

तनुसार-पु० [सं० तनु + मृ] १ शरीर में व्याप्त होकर रहने
वाला । २ कामदेव, मदन । ३ बलवान शरीर वाला ।

तनू, तनू-पु० [सं०] शरीर, देह । -वि० १ अत्यन्त प्रिय ।
२ अत्यन्त निकट का । —ज= 'तनुज' । —जा= 'तनुजा' ।

तनूवर, तनूवरी-स्त्री० स्त्री, महिला ।

तनूर-देखो 'तंदूर' ।

तनेयक-देखो 'तनिक' ।

तनै, तनै-सर्व० १ तुफ, तुफकी । २ देखो 'तनय' ।

तनेरुह

(५५६)

तपोअण

तनेरुह-देखो 'तनेरुह' ।

तन्न-देखो 'तन्न' ।

तन्तु-पु० १ निकट सम्बन्धी, स्वजन । २ आत्मीयजन ।
३ देखो 'तन' ।

तन्मात्रा-देखो 'तनमात्रा' ।

तप-पु० [सं० तपस्] १ तन व मन की श्रुद्धि के लिये किया जाने वाला व्रत, नियम पालन आदि । २ मन व इन्द्रियों को वश में रखने का धर्म । ३ साधना, तपस्या । ४ ताप, गर्मी, उष्णता । ५ ग्रीष्म, ऋतु । ६ माघ का महीना । ७ बुखार, ज्वर । ८ अग्नि, आग । ९ शीतकाल में तापने के लिये जलाई जाने वाली साधारण आग । १० सूर्य । ११ तेज, ओज, कान्ति । १२ पीड़ा, कष्ट । १३ ध्यान । १४ पुण्य कर्म । १५ शिशिर व हेमन्त ऋतु । १६ शास्त्र विहित कर्मानुष्ठान । -करण, करण, घर-पु० सूर्य । -धर, धार, धारी-वि० तपस्या करने वाला । ऐश्वर्य भोगने वाला । -पु० ऋषि, तपस्वी । राजा, बादशाह । -नासी-वि० तपस्या में बाधा डालने वाला । -बळी, वंत-वि० तपस्वी । तेजस्वी, ओजस्वी । ऐश्वर्यशाली, योगी । -साळी, सील-तपवंत ।

तपई-पु० एक प्रकार का कपड़ा ।

तपण-स्त्री० [सं० तपन] १ ताप, गर्मी । २ जलन । ३ मूर्च्छांत मणि । ४ वियोगाग्नि । ५ सूर्य । ६ शिव । ७ मदार या आक । ८ एक नरक विशेष ।

तपणी-स्त्री० १ संन्यासी या योगी के अग्निकुण्ड की अग्नि । २ योगियों के तपस्या का स्थान । ३ अग्निकुण्ड । ४ तापने की अग्नि रखने का पात्र । ५ देखो 'तपण' । [सं० तपनी] ६ गोदावरी, तामी नदी ।

तपणीय-वि० तपाने योग्य । -पु० [सं० तपनीय] सोना, स्वर्ण ।

तपणी (बी)-क्रि० [सं० तप्] १ गर्मी या आंच पर गर्म होना, तपना । २ उमस होना, अधिक गर्मी पड़ना । ३ मूर्च्छा की किरणें तेज होना । ४ दग्ध होना, जलना । ५ संतप्त होना, दुःखी होना । ६ तपस्या करना, तप करना । ७ कष्ट सहना । ८ जलना । [सं० तपऐश्वर्यदीप्ती] ९ चमकना । १० शासन करना । ११ प्रताप या शौर्य फैलाना । १२ ऐश्वर्य या सुख भोगना ।

तपत-स्त्री० [सं० तप्त] १ गर्मी, उष्णता, ताप । २ जलन । ३ कष्ट, पीड़ा । ४ मौसम की गर्मी । ५ तपस्या । ६ तेज, कान्ति । ७ वेदना, व्यथा, संताप । ८ ग्रीष्म ऋतु ।

तपतकी, (छी)-पु० [सं० तपतक्ष] इन्द्र ।

तपती-स्त्री० [सं०] १ ताप्ती नदी । २ देखो 'तपन' ।

तपन-देखो 'तपण' ।

तपनी-स्त्री० गोदावरी नदी, मतान्तर से तामी नदी ।

तपरीय-देखो 'तपरीय' ।

तपरस-पु० [सं० तत्परस] कुत्ता, श्वान ।

तपस-पु० [सं०] १ तपस्वी, संन्यासी । २ चंद्रमा । ३ सूर्य । ४ शंकर । ५ पक्षी ।

तपसा-स्त्री० [सं० तपस्या] १ तपस्या, तप । २ ताप्ती नदी का नाम ।

तपस्विण-स्त्री० [सं० तपस्विनी] १ संन्यासिनी, तपस्विनी योगिनी । २ तपस्वी की स्त्री । ३ सती स्त्री, पतिव्रता । ४ कष्टमय जीवन यापन करने वाली स्त्री ।

तपसी-पु० [सं० तपस्वी] (स्त्री० तपसण, तपसिण) १ ऋषि संन्यासी, तपस्वी, योगी । २ तपस्या व साधना किया हुआ माधु । ३ ऐश्वर्यवान व भाग्यशाली व्यक्ति । ४ दीन, कंगाल । ५ सात्विक पुरुष ।

तपसील-देखो 'तफसील' । -वार-तफसीलवार ।

तपस्य-पु० [सं० तपस्यः] फाल्गुन मास ।

तपस्या-स्त्री० [सं०] तप, व्रत, ब्रह्मचर्य, साधना ।

तपस्विण (न)-देखो 'तपसिण' ।

तपस्वी-देखो 'तपसी' ।

तपा-पु० [सं०] १ तपस्वी । २ ज्येष्ठ मास के प्रारंभ के दस दिन ।

तपाइ-स्त्री० एक वस्त्र का नाम ।

तपाक-पु० [फा०] १ आवेग, जोश । २ वेग, तेज । -क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी, तुरंत । सहसा ।

तपाणी (बी)-क्रि० [सं० तप्] १ तपाना, गर्म करना । २ संतप्त करना, कष्ट देना । ३ जनाना, दग्ध करना । ४ क्रोध दिराना, क्रुद्ध करना । ५ उमस अधिक पैदा करना । ६ अधिक गर्मी देना । ७ चमकाना । ८ शासन कराना ।

तपावत-पु० तपस्वी ।

तपाव-देखो 'तपावस' ।

तपावणी (बी)-देखो 'तपाणी' (बी) ।

तपावस, तपास-पु० १ कृपा, महरबानी । २ न्याय, निर्णय, फैसला । ३ पूछताछ, खानबीन । ४ खोज-खबर, तलाश । ५ जांच-पड़ताल ।

तपिस-स्त्री० [फा० तपिश] गर्मी, उष्णता, तपन, उमस ।

तपी-वि० तप करने वाला, तपस्वी ।

तपीस-पु० [सं० तप-ईश] १ तपस्वी । २ देखो 'तपिस' ।

तपु-देखो 'तप' ।

तपेदिक-पु० [फा० तप + अ० दिक] राज्यक्षमा, शय रोग ।

तपेस, तपेसर, तपेसुर-पु० [सं० तपेस्वर] १ तपस्वी । २ महादेव, शिव ।

तपीअण-देखो 'तपीधन' ।

तपोतम

(५५९)

तबीब

तपोतम-पु० [सं० तप-उत्तम] १ श्रेष्ठ. तपस्वी । २ उत्तम तपस्या ।
 तपोधन-पु० [सं०] १ तपस्वरूपी धन वाला । २ ऋषि, मुनि, महात्मा । ३ ऐश्वर्यवान, भाग्यशाली ।
 तपोनिधि (निधि)-पु० [सं० तपोनिधि] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ सन्ध्यासी, ऋषि ।
 तपोबल-पु० [सं० तपोबल] १ तपस्या से उपाजित शक्ति । २ सिद्धि । ३ राज्यबल । ४ ऐश्वर्यबल, वैभव ।
 तपोभूमि-पु० [सं०] १ तपस्वियों का स्थान । २ तपस्या करने का स्थान, तपोवन । ३ ऋषियों का आश्रम ।
 तपोमूर्ति-पु० [सं० तपोमूर्ति] १ महातपस्वी । २ परमेश्वर ।
 तपोरति-वि० [सं०] तपस्या में लीन, मग्न । तपस्या का अनुरागी ।
 तपोराशि (सी)-पु० [सं० तपोराशि] तपस्वी, मुनि ।
 तपोलोक-पु० [सं०] जन लोक से ऊपर एक लोक ।
 तपोवन-देखो 'तपोभूमि' ।
 तपोवृद्ध-वि० १ जो बहुत तप कर चुका हो । २ तपस्वियों में वृद्ध । ३ महामुनि । ४ तपस्या में श्रेष्ठ ।
 तप्त-वि० [सं०] १ तपा हुआ, उष्ण, गर्म । २ आग पर तपाया हुआ । ३ जला हुआ, दग्ध । ४ तप कर लाल हुआ । ५ संतप्त, पीड़ित । ६ तपस्या में तपा हुआ । ७ दक्ष ।
 —कुण्ड-पु० गर्म जल का कुण्ड । एक तीर्थ स्थान ।
 —सुदा-स्त्री० विष्णु आयुधों के चिह्न ।
 तप्प-देखो 'तप' ।
 तप्पता-स्त्री० तपस्या ।
 तफरीह-स्त्री० [ग्र०] १ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन । २ प्रमत्तता खुशी । ३ हंसी, दिल्लगी । ४ सैर, भ्रमण ।
 तफलीर-स्त्री० [ग्र० तफलीर] १ विस्तृत विवरण, व्योरा । २ व्योरेवार विवरण । ३ टीका । ४ सूची, फहरिस्त, फर्द । —बार-कि० वि० व्योरेवार ।
 तफावज, तफावत-पु० [ग्र० तफावत] १ अन्तर, भेद, फर्क । २ दूरी, फासला ।
 तर्फ-पु० वंश, अधिकार ।
 तफी-पु० १ दन, समूह । २ वजन, योका । ३ कलंक, दोष ।
 तब-ग्रन्थ० [सं० तदा] १ उस समय । २ इस कारण ।
 तबक-पु० [ग्र०] १ ब्रह्माण्ड के कल्पित खण्ड । लोक । तल । २ सोने या चांदी का बरक । ३ परत, तह । ४ मेंढक की चाल । ५ घोड़ों का एक योग । ६ थाली । —तर-पु० सोने-चांदी के बरक बनाकर बेचने वाला ।
 तबकिया-हड़ताळ (हरताळ)-स्त्री० एक प्रकार की हड़ताल ।

तबकी-पु० [ग्र० तबक] १ सोने या चांदी का बरक । २ किसी नुकीले या पंने ग्रीजार या शस्त्र के चुभने का भाव । ३ रह-रह कर उठने वाला दर्द, टीस । ४ दल, पार्टी या संघ ।
 तबड़-पु० अत्युन्मियम को बड़ी तश्तरी (मेवात) ।
 तबड़क-स्त्री० १ दौड़-भाग या कूद-फांद करने की क्रिया या भाव । २ देखो 'तबड़की' ।
 तबड़कणी (बो)-कि० १ उछलते हुए दौड़ना । २ चारों पैरों को उठाते हुए दौड़ना, चौकड़ी भरना ।
 तबड़की-पु० १ छलांग लगा कर दौड़ने की क्रिया या भाव । २ पंने शस्त्र या ग्रीजार की चुभन ।
 तबज्या-स्त्री० [ग्र० तबज्जुह] १ ध्यान, देख-रेख । २ कृपा-दृष्टि ।
 तबवील-वि० [ग्र०] १ बदला हुआ, परिवर्तित । २ तबदीली ।
 तबदीली-स्त्री० परिवर्तन, बदलाव ।
 तबर-पु० [फा०] १ बड़ी कुल्हाड़ी । २ परशु । ३ कुल्हाड़ीनुमा हथियार । ४ देखो 'तबरी' ।
 तबरक-पु० वारूद आदि रखने की कमर-पेटी ।
 तबरियो, तबरी-पु० १ कुछ बड़ा व चौड़ा पात्र । २ बड़ा कटीरा ।
 तबल-पु० [फा०] १ बड़ा ढोल । २ नगाड़ा । ३ कुल्हाड़ीनुमा बड़ा शस्त्र । ४ खाने पकाने का बर्तन । ५ देखो 'तबली' । —बंध-पु० रणवाद्य बजाने वाला । 'तबल' शस्त्रधारी । —बाज-पु० तबला बजाने वाला, 'तबल' बजाने वाला । 'तबल' शस्त्रधारी ।
 तबली-स्त्री० १ मारंगी वाद्य के नीचे का भाग । २ मल-मूत्र करने की थाली, पाला ।
 तबलीयो, तबली, तबल-पु० [ग्र० तबल:] १ ढोलक की सी आवाज करने वाला वाद्य जिसके नर भादा अलग-अलग होते हैं । २ चूतड़ ।
 तबाक-पु० [ग्र०] १ बड़ा थाल, परात । २ तश्तरीनुमा मिट्टी का पात्र (मेवात) ।
 तबाह-वि० [ग्र०] नष्ट-वर्षादि । तहम-तह्य ।
 तबियत-स्त्री० [ग्र० तबीयत] १ चित्त, मन, जी । २ स्वास्थ्य । ३ मिजाज, मानसिक दशा । ४ इच्छा, कामना । ५ प्रकृति, स्वभाव । ६ बुद्धि, समझ भाव । —बार-वि० मनचला, रसिक । समझदार । खुशमिजाज ।
 तबी-देखो 'तबी' ।
 तबीअत-देखो 'तबियत' ।
 तबीड़ (ड़ी)-देखो 'तबकी' ।
 तबीब, तबीव-पु० [ग्र० तबीब] चिकित्सक, वैद्य, हकीम ।

तबेली

(५६०)

तमारि

तबेली-पु० अश्वशाला, अस्तबल ।

तबोड़ी-स्त्री० चोट आदि लगने पर आंख में बढ़ने वाला फूला, मांस ।

तबोड़ी-देखो 'तबकौ' ।

तब्बर-१ देखो 'तबर' । २ देखो 'तबरी' ।

तब्बल-१ देखो 'तबल' । २ देखो 'तबलौ' ।

तब्बो, तब्बी-अव्य० १ उसी समय, उसी वक्त । २ इसीलिये, इसी कारण ।

तमंक-पु० क्रोध, कोप ।

तमंकणी (बौ)-कि० १ क्रोध करना, चिढ़ना । २ आवेश दिवाना । ३ चमकना, चौंकना ।

तमंचय, तमंची-पु० [फा० तमंचा] १ छोटी बन्दूक । २ पिस्तौल । ३ दीपावली पर वारुद छोड़ने का उपकरण । ४ मजबूती के लिए दरवाजे की चौखट के पास लगाया जाने वाला पत्थर ।

तमंस-पु० १ श्यामता, कालिमा । २ अंधकार, अंधेरा ।

तम-पु० [सं०] १ अंधकार, अंधेरा । २ तमाल वृक्ष । ३ राहु । ४ पाप । ५ क्रोध । ६ अज्ञान । ७ कलंक । ८ नरक । ९ सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण, तमोगुण । १० पैर की नोक । ११ नरक का अंधकार । १२ भ्रम । १३ क्लेश, दुःख । १४ पाप । -सर्व० तुम, आप । -वि० काला, श्याम । -कि० वि० वैसे, तैसे ।

तमक-स्त्री० १ आवेश, जोश, तेजी । २ क्रोध । ३ चिढ़न । -सास-पु० दमा रोग विशेष ।

तमकणी (बौ), तमकणी (बौ), तमखणी (बौ)-देखो 'तमंकणी' (बौ) ।

तमगण-देखो 'तमोगुण' ।

तमगो-देखो 'तुकमौ' ।

तमड़-स्त्री० कूए में पत्थर ले जाने के लिए लकड़ी की बनी टोकरी । (मेवात)

तमचर-देखो 'तमीचर' ।

तमचररिपु-पु० [सं० तमीचररिपु] सूर्य ।

तमचार-पु० संध्याकाल ।

तमचारी-स्त्री० रात्रि, निशा ।

तमचुर (चूर)-पु० [सं० ताम्रचूड़] सुर्ग, कुक्कुट ।

तमछोर-वि० श्वेत-श्यामश्च ।

तमजा-स्त्री० १ पार्वती । २ दुर्गा ।

तमजारण-पु० सूर्य ।

तमजाळ-पु० अंधेरा, तिमिर ।

तमणियो, तमण्यो-देखो 'तिमणियो' ।

तमतमासी (बौ)-कि० १ धूप या क्रोध के कारण चेहरा लाल होता, गुस्सा होता । २ चमकना । ३ क्रोध करना ।

तमतमाहट-स्त्री० क्रोध, आवेश या गर्मी के कारण चेहरे पर आने वाली नाली, सुर्खी ।

तमतमी-वि० १ स्वाद में तीक्ष्ण । २ चरपरा, चटपटा । ३ क्रोध युक्त ।

तमता-स्त्री० [सं०] तम का भाव, अंधेरा ।

तमनास-पु० [सं०] दीपक, ज्योति ।

तमनीत-स्त्री० [सं० तमोनीत] रात्रि, निशा ।

तमप्रभ-पु० [सं०] एक नरक का नाम ।

तममात्री-स्त्री० रात्रि, निशा ।

तममाळ-पु० राहु ।

तमरंग-पु० एक प्रकार का नींबू ।

तमर-देखो 'तिमिर' ।

तमरार-पु० [सं० तिमिर-अरि] सूर्य ।

तमरिप (रिपि, रिपु)-पु० [सं० तम-रिपु] प्रकाश । सूर्य ।

तमवाळी-स्त्री० रात्रि ।

तमस-पु० [सं०] १ अंधेरा । २ कूप । ३ अज्ञान । ४ तमोगुण ।

तमसा-स्त्री० [सं०] १ एक नदी, टीम नदी । २ रात्रि ।

तमसि (सो)-स्त्री० रात्रि, निशा ।

तमस-देखो 'तमिस' ।

तमस्वनी, तमस्विनी-स्त्री० [सं० तमस्विनी] १ रात्रि, रात । २ हल्दी ।

तमस्सुक-पु० ऋण-पत्र, ऋण का दस्तावेज ।

तमहडी-स्त्री० हंडिया के आकार का एक ताम्र पात्र ।

तमहर-देखो 'तमोहर' ।

तमां-सर्व० तुम ।

तमांम-वि० [अ० तमाम] सब, सम्पूर्ण ।

तमा-स्त्री० [सं० तम] १ रात्रि, निशा । २ अंधेरा ।

तमाकु, तमाकू, तमाखू-स्त्री० [पूर्त० टबैकौ] प्रायः तीन से छः फुट की ऊंचाई का एक पौधा जिसकी पत्तियां धूम्र पान व पान आदि में खाने के काम आती हैं । तम्बाखू ।

तमाचरो-देखो 'तमीचर' ।

तमाचो-पु० [फ० तवानच] १ चांटा, थप्पड़ । २ तमाशा, खेल ।

तमादी-स्त्री० [अ०] किसी लेन-देन की अवधि गुजरने की अवस्था या भाव ।

तमार-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

तमरा (र, री)-सर्व० तुम्हारा ।

तमारि-पु० [सं० तम+अरि] सूर्य, रवि ।

तमाळ-पु० [सं० तमाल] १ करीब २०-२५ फुट ऊंचा एक वृक्ष जिसकी छाल व पत्तियाँ खाने के मसाले में काम आती हैं । २ वरुण वृक्ष । ३ करम नामक छन्द का एक नाम । ४ एक अन्य माथिक छन्द । ५ तिलक, टीका । -स्त्री० ६ तलवार । ७ मूर्छा, बेहोशी ।
 तमाळक-पु० १ तमाल वृक्ष । २ तेज-पात्र । (पत्ता) ३ बांस की छाल ।
 तमाळी-स्त्री० १ ताम्रदली नाम की लता । २ वरुण वृक्ष । ३ तमाल वृक्ष ।
 तमास तमास-पु० [अ० तमाश] तमाशा, खेल, क्रीड़ा ।
 —गीर, धोल-वि० खिलाड़ी । मजाकिया । तमाशा देखने वाला ।
 तमासाई-वि० तमाशा देखने वाला ।
 तमासा, तमासी-पु० [अ० तमाशः] १ लोगों के मनोरंज के लिये किया जाने वाला खेल, तमाशा । २ नौटंकी का खेल ।
 तमास्ती-सर्व० तुम तुम्हारा । अन्य, अमुक ।
 तमि, तमी-स्त्री० [सं० तमी] रात्रि, निशा ।
 तमिनाथ-पु० [सं०] चन्द्रमा, निशानाथ ।
 तमियो-पु० मिट्टी का पात्र विशेष ।
 तमिन्न-पु० [सं०] १ अंधेरा, अंधकार । २ क्रोध, गुस्सा । ३ एक नरक । ४ अम । ५ द्वेष । ६ एक अविद्या का नाम । —पक्ष-पु० प्रत्येक मास का कृष्णपक्ष ।
 तमिन्ना-स्त्री० [सं०] १ अंधेरी रात, निशा । २ गहरा अंधेरा ।
 तमो-स्त्री० [सं०] रात्रि, निशा । —चर-पु० राक्षस, असुर, निशाचर । उल्लू पक्षी । चन्द्रमा । चोर ।
 तमोज-पु० [अ०] १ ज्ञान, विवेक । २ शिष्टता । ३ अदब, कायदा ।
 तमोणी-सर्व० (स्त्री० तमीणी) तुम्हारा ।
 तमोपति (पती)-पु० चन्द्रमा ।
 तमीस-पु० चन्द्रमा ।
 तमु-देखो 'तम' ।
 तमुक्काय-पु० [सं० तमस्काय] अन्धकार ।
 तमूरी-देखो 'तंदूरी' ।
 तमे-सर्व० तुम ।
 तमेळी-पु० १ भवन की तीसरी मंजिल की छत । २ सबसे ऊपरी छत ।
 तमोगण-देखो 'तमोगुण' ।
 तमोगणी-देखो 'तमोगुणी' ।
 तमोगुण-पु० [सं०] १ सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण । २ मनुष्य की तामसी वृत्ति ।

तमोगुणी-वि० १ जिसके स्वभाव में तमोगुण की प्रधानता हो । २ तामसी वृत्ति या स्वभाव वाला । ३ अहंकारी, क्रोधी ।
 तमोघण(घन)-पु० [सं० तमोघ्न] १ अग्नि, आग । २ चन्द्रमा । ३ सूर्य । ४ विष्णु । ५ शिव । ६ ज्ञान । ७ बुद्ध देव ।
 तमोटी-स्त्री० १ ओढ़ने की चट्टर । २ चट्टर ओढ़ कर मोने की क्रिया ।
 तमोतम-पु० गहन अंधकार ।
 तमोदरसन-पु० [सं० तमोदर्शन] पित्त प्रधान ज्वर ।
 तमोनुद-पु० [सं०] १ ईश्वर । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि ।
 तमोभिद-पु० [सं०] १ जुगनू । २ दीपक । ३ सूर्य । ४ चंद्रमा ।
 —वि० अंधकार को दूर करने वाला ।
 तमोमणि-पु० [सं०] जुगनू ।
 तमोमय-वि० [सं०] १ तमोगुणी । २ क्रोधी । ३ अज्ञानी । ४ अंधकार युक्त । —पु० [सं०] राहु ।
 तमोरी-देखो 'तंबोळी' ।
 तमोळ-पु० १ तांबूल, पान, बीड़ा । २ उमंग । ३ क्रोध, गुस्सा ।
 तमोळी-स्त्री० १ मूर्च्छा । २ क्रोध । ३ देखो 'तंबोळी' ।
 तमोविकार-पु० [सं०] तमोगुण से होने वाला विकार ।
 तमोहंत-पु० [सं०] १ ग्रहण के दश भेदों में से एक । २ सांसारिक मोह-माया को नाश करने वाला ।
 तमोहपह-पु० [सं० तम + अप-हन्] १ सूर्य । २ चंद्रमा । ३ अग्नि । ४ ज्ञान । —वि० अंधकार को दूर करने वाला ।
 तमोहर, तमोहरि-पु० [सं०] १ सूर्य । २ चंद्रमा । ३ अग्नि । ४ ज्ञान । —वि० अंधकार व अज्ञान मिटाने वाला ।
 तम्मक्कू-देखो 'तमाकू' ।
 तम्माम-देखो 'तमाम' ।
 तम्हं-सर्व० तेरे, तुम्हारे, तुझे ।
 तम्हां-सर्व० तुम ।
 तम्हारा-सर्व० तुम्हारा, तेरा ।
 तम्हीण, तम्हीणा (णी)-सर्व० तुम्हारा, आपका ।
 तम्हे, तम्है-सर्व० तुम ।
 तय-वि० [अ०] १ निश्चित, स्थिर । २ पूरा किया हुआ; निर्णीत । —पु० निश्चय, निर्णय ।
 तयाळी, तयाळीस-देखो 'तंयाळीस' ।
 तयाळीसी-देखो 'तंयाळीसी' ।
 तयांसी-देखो 'तंझ्यासी' ।
 तयार-देखो 'तैयार' ।
 तयारी-देखो 'तैयारी' ।
 तयाळीसी, तयाळी-देखो 'तंयाळीसी' ।
 तय्यार-देखो 'तैयार' ।

तरंग-पु० [सं०] १ तालाब, सरोवर । २ लहर, हिलोर ।
३ ग्रंथ का अष्टम्य । ४ घोड़ा । ५ वस्त्र । ६ छलांग ।
७ शुभ रंग का घोड़ा विशेष । ८ हवा का भोंका, लहर ।
९ मन की मौज, उमंग । १० स्वरों का उतार-चढ़ाव ।
११ हाथों में पहनने की चूड़ी विशेष । —बाज-वि०
मनगोजी । सनकी ।

तरंगक-पु० [सं०] १ पानी की लहर । २ स्वर-लहरी ।
तरंगण, (णी, नि, नी)-स्त्री० [सं० तरंगिणी] नदी, सरिता ।
तरंग-आजण-पु० [सं० तरंग-आजन] जल, पानी ।
तरंगवती-स्त्री० [सं०] नदी ।

तरंगाळि (ळी)-स्त्री० नदी, सरिता ।
तरंगित-वि० [सं०] १ तरंगों वाला । २ बाढ़ ग्रस्त । ३ शक्ति,
वस्तु । ४ उर्मित ।

तरंगी, तरंगिली-वि० (स्त्री० तरंगिली) १ तरंग युक्त ।
२ मनमौजी । ३ लापरवाह । ४ सनकी ।

तरंग-स्त्री० लाख की बनी चूड़ी ।

तरंगप्रथी-पु० लोहा ।

तरंड-पु० [सं०] १ नाव । २ वेड़ा । ३ डांड । ४ वृक्ष ।
तरंत-क्रि० वि० १ जोर से, तेजी से । २ देखो 'तुरंत' ।
-पु० [सं० तरंतः] १ समुद्र । २ अतिवृष्टि । ३ मेंढक ।
४ दैत्य या राक्षस ।

तरंती-स्त्री० [सं०] नाव । वेड़ा ।

तरंद-पु० [सं० तरंद-इन्द्र] कल्पवृक्ष ।

तर-पु० [सं०] १ तिरछा, टेढ़ा गमन । २ चौराहा । ३ मार्ग ।
४ सड़क । ५ उतारा । ६ तरने की क्रिया या भाव ।
७ पार होने की क्रिया या भाव । ८ अग्नि । [सं० त्वरा]
९ शीघ्रता, उतावली । १० वेग, तेजी । ११ देखो 'तरु' ।
-वि० [फा०] १ भीगा हुआ, गीला, नम । २ हरा-भरा,
सर-सब्ज । ३ घी, दूध आदि से परिपूर्ण । ४ गहरा हरा ।
५ सम्पन्न, मालदार । -अर्थ० [सं० तर्हि] तो ।
-क्रि० वि० १ तले, नीचे । २ शीघ्र, तुरंत । -प्रत्य०
गुणवाचक प्रत्यय ।

तरअरि-पु० [सं० तरुअरि] हाथी, गज ।

तरई-स्त्री० [सं० तारा] नक्षत्र ।

तरक-स्त्री० [सं० तर्क] १ विचार-विमर्श, सोच-विचार ।
२ किसी बात या विषय के पक्ष-विपक्ष संबंधी विचार ।
३ बहस । ४ विचार । ५ कल्पना, अनुमान । ६ मंदाज,
अटकल । ७ वाद-विवाद । ८ संदेह । ९ कारण, हेतु ।
१० आकांक्षा । ११ तर्क शास्त्र । १२ न्याय शास्त्र ।
-वितरक-पु० वाद-विवाद । सोच विचार ।

तरकक-पु० [सं० तार्किक] १ तर्क करने वाला, तार्किक ।
२ याचक ।

तरकणी (बी)-क्रि० [सं० तर्क] १ वाद-विवाद करना, तर्क
करना । २ विचार-विमर्श करना । ३ चमकना ।
४ बोलना । ५ देखो 'तड़कणी' (बी) ।

तरकस-पु० [फा० तरकश] तीरों का भाथा, तूणीर । —बंध-
-पु० तीर-तरकश धारी योद्धा ।

तरकाभास-पु० [सं० तर्काभास] कुतर्क ।

तरकारी-स्त्री० [फा०] १ शाक, साग-पाल, भाजी, सब्जी ।
२ कुछ पौधों के पत्ते, फल, मूल आदि जिनकी सब्जी बनती
है । ३ खाने योग्य पका हुआ मांस ।

तरकी-स्त्री० [सं० ताटंकी] १ फटे वस्त्र के लगाई जाने वाली
कारी, जोड़ । २ कर्ण-फूल नामक आभूषण । ३ देखो
'तरक्की' । -वि० तर्क करने वाला ।

तरकीब-स्त्री० [फा०] १ युक्ति, उपाय । २ शैली, प्रणाली,
तरीका । ३ संयोग मेल । ४ चतुराई, होशियारी ।

तरकुंज-पु० तरु कुंज ।

तरक्क-देखो 'तरक' ।

तरक्कणी (बी)-क्रि० १ जोर से आवाज करना । २ जोर से
बोलना । ३ देखो 'तरकणी' (बी) ।

तरक्की-स्त्री० [फा०] उन्नति, वृद्धि, बढ़ोतरी ।

तरक्क-पु० [सं०] हरिण, मृग ।

तरक्ष-पु० [सं०] १ लकड़ बगधा । २ सेई नामक कांटों
वाला जीव ।

तरखांसी-स्त्री० बलगम की खांसी ।

तरखा-स्त्री० [सं० तृषा] १ प्यास । २ इच्छा । ३ लोभ ।
तरगस, तरगस-देखो 'तरकस' । —बंध='तरकसबंध' ।
तरङ्गणी (बी)-क्रि० १ पशु का पतला मल करना । २ बार-बार
दस्त करना । ३ क्रोध करना ।

तरङ्गी-पु० १ पशु का पतला मल । २ भिड़की, चिड़चिड़ाहट ।
३ गर्म पानी का सेक ।

तरच्छ, (च्छु)-पु० [सं० तार्क्ष्य] १ गरड़ । २ अरुण ।
३ गाड़ी । ४ घोड़ा । ५ सर्प । ६ पक्षी ।

तरच्छी-देखो 'तिरछी' ।

तरछणी-(बी)-देखो 'तरमणी' (बी) ।

तरछाणी (बी), तरछावणी (बी)-देखो 'तरसाणी' (बी) ।

तरछी-देखो 'तिरछी' ।

तरछीळ-वि० १ तरंगी, सनकी । २ मनमौजी । ३ चालक, धूर्त ।

तरज-स्त्री० [फा० तर्ज] १ गीत या पद्य की लय, ढेर ।
२ राग । -पु० [सं० तर्ज] ३ बादल, मेघ ।

तरजहो-स्त्री० [सं० तर्जनी] १ अंगुष्ठ के पास की, हाथ की
अंगुली । २ डांट, फटकार । —पुशा-स्त्री० हाथ की
एक तांत्रिक मुद्रा ।

तरजणी (बो)-क्रि० [सं० तर्जनम्] १ डाँटना, फटकारना ।
 २ धमकाना, डराना । ३ संकेत करना ।
 तरजमी-देखो 'तरजुमी' ।
 तरजुई-पु० [फा० तराजू] छोटा तराजू ।
 तरजुमी-पु० [अ० तरजुमा] अनुवाद, भाषानुवाद, भाषांतर ।
 तरसंगर-पु० १ वृक्ष समूह । २ भाड़ी समूह । ३ कुंज ।
 ४ वन, जंगल ।
 तरभणी (बो)-देखो 'तरजणी (बो)' ।
 तरण-पु० [सं०] १ नाव, बेड़ा । २ डांड । २ विजय, जीत ।
 ४ स्वर्ग । ५ सूर्य । ६ प्रकाश, उजाला । [सं० तरुण]
 ७ युवक । ८ बछड़ा । ९ देखो 'तरुणी' । -वि० १ युवा,
 वयस्क । २ तीरने वाला । -जा='तरणिजा' । -सुत,
 सुतल='तरणिसुत' ।
 तरणाई-देखो 'तरुणाई' ।
 तरणाट (टी, टी)-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ तार वाद्यों की
 ध्वनि । ३ क्रोध की तरंग । ४ कोप, गुस्सा ।
 तरणापउ (पी)-पु० तरुणाई, युवावस्था ।
 तरणाय, तरणि (ली)पु० [सं० तरणि] १ सूर्य । २ आक,
 मंदार । ३ किरण । ४ नौका, नाव । ५ प्रकाश किरण ।
 -कुमार-पु० यमराज । कर्ण । शनिश्चर । -जा-स्त्री०
 यमुना नदी । -तनय='तरणिकुमार' । -तनूजा=
 'तरणिजा' । -सूव='तरणिकुमार' ।
 तरणी-पु० तृण, तिनका ।
 तरणी (बो)-देखो 'तिरणी' (बो) ।
 तरत-पु० १ पेड़ का पत्ता, तरुपत्र । २ देखो 'तुरंत' ।
 तरतम-स्त्री० फल देने की न्यूनाधिक शक्ति ।
 तरतर-पु० [अनु०] ध्वनि विशेष । -क्रि० वि० धीरे-धीरे ।
 तरतात-पु० [सं० तरु-तात] जल, पानी ।
 तरतीव-स्त्री० [अ०] १ क्रम, सिलसिला । २ प्रक्रिया ।
 ३ व्यवस्था ।
 तरतोज-पु० उपाय ।
 तरतड-क्रि० वि० जल्दो-जल्दी, तुरंत ।
 तरदीव-स्त्री० [अ० तर्दीद] १ काटने या खण्डन करने की
 क्रिया । निरस्तीकरण । २ किसी बात को प्रमाणित करने
 की क्रिया या भाव ।
 तरदोज-पु० थोड़ा, षड्यंत्र ।
 तरन-देखो 'तरण' ।
 तरनिजा-देखो 'तरणिजा' ।
 तरनी-देखो 'तरणि' ।
 तरप-स्त्री० १ तड़पने की क्रिया या भाव । २ चमक-दमक ।
 ३ सारंगी के मुख्य तारों के नीचे कसे तार । ४ देखो
 'तरफ' ।

तरपण-पु० [सं० तर्पण] १ प्रसन्न या संतुष्ट करने की क्रिया
 या भाव । २ कर्मकाण्ड में देव, पितरों आदि को जल-
 अंजलि देने की क्रिया । ३ पितृयज्ञ । ४ समिधा ।
 ५ ईंधन । ६ तृप्ति ।
 तरपणी-स्त्री० [सं० तर्पणी] १ गंगा नदी । २ खिरनी का
 वृक्ष । -वि० १ तृप्ति देने वाली । २ तर्पण देने वाली ।
 तरपत-देखो 'तिरपत' ।
 तरपी-वि० [सं० तर्पिन्] १ तर्पण करने वाला । २ तृप्त
 करने वाला ।
 तरपोख-स्त्री० [सं० तरुपोषः] नदी ।
 तरफ-स्त्री० [अ०] १ दिशा । २ पार्श्व, बगल । ३ पक्ष,
 पक्षधारी । ४ ओर । ५ पास । -बार-वि० पक्षधर ।
 समर्थक । -दारी-स्त्री० पक्षपात । मदद । हिमायत ।
 तरफणी (बो)-क्रि० १ बिजली का चमकना, दमकना ।
 २ पक्षपात करना । ३ देखो 'तड़फणी' (बो) ।
 तरफळणी (बो)-देखो 'तड़फणी' (बो) ।
 तरफाणू-क्रि० वि० ग्रीर से, तरफ से ।
 तरब-देखो 'तरप' ।
 तरबतर-वि० [फा०] लुब भीगा हुआ, सराबोर ।
 तरबहणी-पु० पीतल या ताँबे का परातनुमा पात्र ।
 तरबूज (जी)-पु० [फा० तरबूज] खरबूजे से कुछ बड़ा एक
 लता फल ।
 तरभव-पु० [सं० तरुभव] पुष्प, सुमन ।
 तरमवार-पु० [सं० मंदार-तरु] कल्पतरु, कल्पवृक्ष ।
 तरमीम-स्त्री० [अ०] संशोधन । दुरुस्ती । त्रुटि निवारण ।
 तरय-क्रि० वि० [सं० त्वरया] शीघ्र, जल्दी ।
 तरर-स्त्री० १ कांतिहीन या निस्तेज होने की क्रिया या भाव ।
 २ रेंगने की क्रिया या भाव ।
 तररा-स्त्री० चाबुक की डोरी या फीता ।
 तरराज-पु० [सं० तरराज] कल्पवृक्ष ।
 तरराट (टी, टी)-स्त्री० १ तर शब्द की ध्वनि । २ कोप,
 गुस्सा । ३ नशे आदि की सुखी ।
 तरसंग-पु० [सं० तरल-अंग] थोड़ा, अश्व । -वि० चंचल,
 चपल ।
 तरळ-वि० [सं० तरल] १ जो सूखा या ठोस न हो, द्रव ।
 २ चंचल । ३ अस्थिर, क्षणभंगुर । ४ तेज, तीव्र ।
 ५ सजल । -पु० १ वृक्ष, तरु । २ दोहे छंद का एक
 भेद । ३ छप्पय छंद का एक भेद । ४ चन्द्रमा । ५ थोड़ा ।
 ६ तंतु ।
 तरळकी-पु० सनक, तरंग, गुस्सा ।
 तरळता-स्त्री० [सं० तरलता] १ द्रवत्व । २ चंचलता, चपलता ।
 ३ मजलता ।

तरलनयण

(५६४)

तरियो

तरलनयण (न)-पु० [सं० तरल-नयन] १ एक वर्ण वृत्त विशेष । २ सजल नयन ।
 तरलभाव-पु० [सं० तरल-भाव] १ पतलापन, द्रवत्व ।
 २ चांचल्य, चपलता । ३ सहृदयता ।
 तरला-वि० [सं० तरल, तरला] १ चंचल, चपल । २ चमकीला ।
 -स्त्री० १ चावलों की मांड । २ लस्सी । ३ घोड़ों की एक जाति ।
 तरलाई-स्त्री० १ चंचलता, चपलता । २ द्रवत्व ।
 तरवक्र-पु० सुदर्शन चक्र ।
 तरवण-पु० १ निरगुंडी का पीघा । २ पर-दार एक जंगली जंतु ।
 तरवर-देखो 'तरह' ।
 तरवरय-क्रि० वि० [सं० त्वरयँव] शीघ्र, जल्दी, तुरंत ।
 तरवरौ, तरवाड़ी-देखो 'तरवाळी' ।
 तरवार (रि)-स्त्री० [सं० तरवारि] १ लोहे की पत्ती का धारदार शस्त्र, तलवार, भ्रमि । २ तलवारनुमा दोब काटने का औजार । —पिघान-स्त्री० म्यान ।
 तरवारिघी-पु० तलवार चलाने वाला योद्धा ।
 तरवाळी, तरवाळी-पु० १ पानी आदि पर तेरने वाली चिकनाई, स्निग्धता । २ काष्ठ की बनी तिपाई ।
 तरविस्तार-पु० [सं० स्तरविस्तार] भूमि, पृथ्वी, धरा ।
 तरसंग-पु० [सं० तरु-संग] पक्षी ।
 तरस-स्त्री० [सं० त्रस्] १ करुणा, दया, रहम । २ डाल । ३ डर, भय । [सं० तर्ष] ४ तृष्णा, प्यास । ५ इच्छा, अभिलाषा । ६ लालच, लोभ । ७ समुद्र, सागर । ८ नाव । ९ सूर्य । [सं० तरसम्] १० गोشت, मांस । -क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।
 तरसणी-स्त्री० १ दया, रहम, करुणा । २ देखो 'तरस' ।
 तरसणी (बी)-क्रि० [सं० तर्षणम्] १ किसी वस्तु के लिए तालायित होना, तरसना । २ व्याकुल होना, आतुर होना । ३ छीलना । ४ बढ़ना ।
 तरसळणी (बी)-देखो 'तिरसळणी' (बी) ।
 तरसा-क्रि० वि० [सं० तरस्] शीघ्र, जल्दी । -स्त्री० [सं० तृषा] प्यास, तृषा ।
 तरसाणी (बी), तरसावणी (बी)-क्रि० १ किसी वस्तु के विषे लालायित करना, तरसाना । २ व्याकुल करना । ३ दिखा-दिखा कर चिढ़ाना । ४ तड़पाना ।
 तरसाळी-पु० घोड़े को गर्दस का एक बंधन ।
 तरसि-देखो 'तरस' ।
 तरसित-वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषातुर ।
 तरसींग-वि० १ बनवान, शक्तिशाली । २ प्रभावशाली ।
 तरसुतर-पु० १ चन्दन का वृक्ष । २ इस वृक्ष की लकड़ी ।

तरसुर-पु० [सं० सुर-तरु] कल्पवृक्ष ।
 तरस्थो-वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषित ।
 तरस्स-देखो 'तरस' ।
 तरस्सणी (बी)-देखो 'तरसणी' (बी) ।
 तरस्सी-क्रि० वि० [सं० तरस्] जल्दी, शीघ्र ।
 तरह-स्त्री० [अ०] १ भांति, प्रकार । २ बनावट, रचना, डील । ३ हाल, दशा ।
 तरहटी-देखो 'तळहटी' ।
 तरहदार-वि० [फा०] १ सुन्दर, सुडौल । २ शोकीन ।
 तरहर-क्रि० वि० तले, नीचे । -वि० निकुष्ट, नीच ।
 तरा-क्रि० वि० १ तब । २ तरह से, प्रकार से ।
 तराणि-देखो 'तरणि' ।
 तराई-स्त्री० १ पर्वत के नीचे का मैदान । २ तगी वाला क्षेत्र ।
 तराछ-देखो 'तरास' ।
 तराछणी (बी)-देखो 'तरासणी' (बी) ।
 तराज-वि० १ समान, तुल्य, सदृश्य । २ देखो 'तराजू' ।
 तराजू-स्त्री० [फा०] तुला, तकड़ी ।
 तराज-वि० समान, बराबर, तुल्य, सदृश ।
 तराङ्गणी (बी), तराणी (बी)-देखो 'तिराणी' (बी) ।
 तरायळ-वि० १ वीर, योद्धा । २ जबरदस्त ।
 तराळ-वि० १ भयंकर, भयानक । २ ममान तूल्य । -पु० वृक्ष, तरु, पेड़ ।
 तरावट-स्त्री० [फा०] १ नमी, तरी, गीलापन । २ ठंडक, शीतलता । ३ धी, मावा आदि से तर पदार्थ । ४ तर माल खाने पर आने वाली तृप्ति । ५ सम्पन्नता । -वि० वैभवशाली, सम्पन्न ।
 तरास-स्त्री० [फा० तराश] १ पत्थर, गहने आदि में की जाने वाली काट-छांट । २ गड़ाई । ३ प्रहार, चोट । ४ ढंग, तर्ज । [सं० त्रास] ५ भय, आतंक । ६ कष्ट, पीड़ा ।
 —खरास-स्त्री० काट-छांट । कतर-व्यंजित ।
 तरासणी (बी)-क्रि० [फा० तराशना] काटना, करतना ।
 तरांहि, (ही)-देखो 'त्राहि' ।
 तरिंद-पु० तरुराज, कल्पवृक्ष ।
 तरि-स्त्री० [सं०] १ नाव, नौका । [सं० तरणि] २ सूर्य । [सं० तरु] ३ वृक्ष, पेड़ ।
 तरिण-पु० [सं० तरणि] १ सूर्य, रवि । -स्त्री० [सं० तरुणि] २ युवा स्त्री, युवती ।
 तरियल-पु० मस्त हाथों को काबू में करने वाला ।
 तरिया-देखो 'तिरिया' ।
 तरियो-पु० १ पतली, लंबी व लचकीली लकड़ी । २ तर ककड़ी । -वि० प्यासा, तृषातुर ।

तरी

(५६५)

तळपकणी

तरी-स्त्री० [सं०] १ नाव, नौका । २ तमी, आर्द्रता । ३ शीतलता
ठंडक । ४ तरावट । ५ महंगाई । ६ अधिकता ।
७ पर्वत की तलहटी ।

तरीकी-पु० १ ढंन, विधि । २ उपाय, युक्ति । ३ चाल,
व्यवहार ।

तरीख-स्त्री० [सं० तरीष] १ नाव, नौका । २ समुद्र ।

तर, तरघर, तरघरि, तरघरी-पु० [सं० तर] पेड़, वृक्ष ।

तरघार, तरघारई, तरघारि-देखो 'तरवार' ।

तरकांम-पु० [सं० कामतर] कल्प वृक्ष ।

तरुण-पु० [सं०] युवा व्यक्ति, युवक । -वि० १ जवान, युवा ।
२ वयस्क । ३ छोटा । ४ कोमल, मुलायम । ५ नवीन,
ताजा । -ज्वर-पु० सात दिन का ज्वर । -तरणि-पु०
मध्याह्न का सूर्य ।

तरुणाई, तरुणापी-स्त्री० १ युवावस्था, जवानी । २ वयस्कता ।
३ नवीनता, ताजगी ।

तरुणि, तरुणी, तरुणीय-स्त्री० [सं० तरुणि] १ युवा स्त्री,
युवती । २ स्त्री, औरत ।

तरुणीपरिकरम्-पु० [सं० तरुणीपरिकर्म] ७२ कलाओं में
से एक ।

तरुलिका-स्त्री० [सं०] चमगादड़ ।

तरुपंच-पु० पांच की संख्या* ।

तरुपत-पु० [सं० तरुपति] कल्प वृक्ष ।

तरुयर (यह)-देखो 'तरह' ।

तरुज-पु० [सं०] १ कल्प वृक्ष । २ ताड़-वृक्ष ।

तरुवर-देखो 'तरह' ।

तरुवारि, तरुवारी-देखो 'तरवार' ।

तरुसार-पु० [सं०] कपूर ।

तरु, तरुघर-देखो 'तरह' ।

तरुघार, तरुघारि-देखो 'तरवार' ।

तरुणी-देखो 'तरुण' ।

तरुनावत-स्त्री० घोड़े के कान के पीछे होने वाली भंवरी ।

तरुघारि-देखो 'तरवार' ।

तरे-देखो 'तर' ।

तरेपन-देखो 'तिरेपन' ।

तरेस-पु० [सं० तर-ईश] कल्प वृक्ष ।

तरै-क्रि० वि० तब । -वि० जैसा, समान, तुल्य । देखो 'तरह' ।

तरैवार-वि० १ होशियार, चतुर । २ शौकीन, मस्त । ३ अच्छे
ढंग का, सुन्दर, मनोहर ।

तरोवर, तरोहर-पु० [सं० तर+वर] १ कल्प वृक्ष ।
२ वृक्ष, पेड़ ।

तळ-पु० [सं० तल] १ नीचे का भाग । २ किसी वस्तु के नीचे
घाने वाला भाग । ३ तला, पैदा । ४ कूमा, कूप ।
५ जल के नीचे का भाग । ६ नीचे की सतह, घरातल ।
७ हथेली । ८ तलवा । ९ बांह । १० थप्पड़ ।
११ ताड़-वृक्ष । १२ आधार, सहारा । १३ सप्त पातालों
में से प्रथम । १४ एक तरक का नाम । १५ तलहटी,
तराई । १६ नीचता । १७ बाण चलते समय बांधा जाने
वाला पट्टा । -क्रि० वि० नीचे, पास में ।

तल-देखो 'तिल' ।

तळई-देखो 'तळे' ।

तलक-पु० १ ऊंट के पैर की ध्वनि । २ देखो 'तिलक' ।
-स्त्री० ३ इच्छा, चाह । -क्रि० वि० तक, पर्यन्त ।

तलकणी (बो)-देखो 'तलवकणी (बो) ।

तळका-पु० चक्कर, फेरा, धमण ।

तलकार-स्त्री० राजलीक, पीरलीक ।

तलवकणी (बो)-क्रि० १ शीघ्र चलना, दौड़ना । २ भपटना,
भपट पड़ना ।

तलग-क्रि० वि० तक पर्यन्त ।

तळगटी-स्त्री० चरखे में लगी एक लकड़ी की पट्टी ।

तलगू-स्त्री० तैलंग देश की भाषा ।

तळघरी-पु० [सं० तल-ग्रह] तहखाना ,

तळछट-स्त्री० पानी आदि तरल पदार्थों के नीचे जमने
वाला मैल ।

तळछणी (बो)-क्रि० मारना, काटना, संहार करना ।

तळछ-मळछ-पु० तड़पड़ाहट, बेचैनी (मेवात) ।

तळणी (बो); तळतळणी (बो)-क्रि० १ खोलते हुए धी या तेल
में कोई पदार्थ डाल कर पकाना, तलना, भुनना । २ कष्ट
देना, सताना ।

तळतळाट (टो)-पु० १ खोलने की क्रिया या भाव । २ कलह ।

तलप-स्त्री० [सं० तल्प] १ शय्या । २ चारपाई, खाट ।
३ महिला, स्त्री । ४ स्त्री, भार्या । ५ गाड़ी में बैठने का
स्थान । ६ मकान के ऊपर की गुम्फा ।

तलपकाउ-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

तलपकोट-पु० [सं० तलपकोट] खटमल, मत्कुरण ।

तळपट-पु० १ नाश, विनाश, बरबादी । २ वर्ष भर के आय-व्यय
का विवरण-पत्र ।

तळफ-वि० [प्र०] १ नष्ट, बरबाद । २ देखो 'तड़फ' ।

तळफणी (बो)-देखो 'तड़फणी' (बो) ।

तळफाणी (बो)-देखो 'तड़फाणी' (बो) ।

तळफी-स्त्री० बरबादी, नाश, खराबी ।

तळपकणी (बो)-देखो 'तड़पकणी' (बो) ।

तलब, तलब-स्त्री० [अ० तलब] १ खोज, तलाश । २ इच्छा, स्वादिष्ट । ३ नशीली वस्तु खाने की तीव्र इच्छा । ४ आवश्यकता, मांग । ५ वेतन । ६ बुलावा, बुलाहट । ७ सरकार का कर लगने वाली जमीन ।
 तलबगार-वि० [फा०] १ चाहने वाला, इच्छुक । २ मांगने वाला । ३ बुलाने वाला ।
 तलबजात-स्त्री० स्वयं अधिकारी का वेतन ।
 तलबकाट (टो)-पु० व्याकुलता बेचैनी ।
 तलबाणो-पु० [फा० तलवाना] १ गवाहों को बुलाने के लिए अदालत को दिया जाने वाला खर्चा । २ सरकारी बकाया जमा कराने का आदेश । ३ एक प्रकार का सरकारी कर ।
 तलबियो-वि० १ सांग करने वाला, मांगने वाला । २ चाहने वाला, इच्छुक । ३ बुलाने का काम करने वाला । ४ रुकम वसूल करने वाला । -पु० सरकारी बकाया वसूल करने वाला कर्मचारी ।
 तलबी-देखो 'तलब' ।
 तलमल-पु० [सं० तलमल] १ पानी या तरल पदार्थ के नीचे जमने वाला मैल । -स्त्री० २ तिलमिलाहट ।
 तलमलानी(बी), तलमलानी(बी)-देखो 'तिलमिलाणी' (बी) ।
 तलमलाहट-देखो 'तिलमिलाहट' ।
 तलमीरोटी-स्त्री० परांठा । तली हुई रोटी ।
 तलवर-पु० १ नगर रक्षक, कोतवाल । २ राजा द्वारा सम्मानित व्यक्ति । ३ अटक, अवरोध ।
 तलवाणो-देखो 'तलबाणो' ।
 तलवा-स्त्री० बंलों के खुरों में होने वाला एक रोग ।
 तलवाईजणो(बी)-क्रि० अधिक चलने से पैरों में विकार होना ।
 तलवार-देखो 'तरवार' ।
 तलवी-पु० [सं० तल] १ पैर का तल, तलवा । २ जूते का तल ।
 तलसारणी(बी)-क्रि० सजा देना, दण्ड देना ।
 तलसीर-पु० भूमि के अन्दर से स्फुटित होने वाली जल धारा, स्रोत ।
 तलहटी(ट्टी)-स्त्री० [सं० तल-पट्ट] १ पहाड़ के नीचे की भूमि, तराई, तलहटी । २ किसी ऊँचे स्थान के नीचे की भूमि । ३ अधीनस्थ भाग ।
 तलहासणी(बी)-देखो 'तलासणी' (बी) ।
 तलवां-पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।
 तलाई-स्त्री० १ छोटा तालाब । २ उलने का कार्य । ३ तलने की मजदूरी । ४ रुई आदि से भरा गद्दा ।
 तलाज-देखो 'तलाव' ।

तलाक-स्त्री० [अ०] १ पति-पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद । २ त्याग । ३ प्रण, प्रतिज्ञा । ४ अवरोध, निषेध, रोक । ५ शपथ ।
 तलाकणी(बी)-क्रि० १ पति-पत्नी का कामन संवन्ध विच्छेद होना । २ छोड़ना, त्यागना । ३ प्रण लेना ।
 तलाची-पु० [सं०] चटाई ।
 तलातल-पु० [सं० तलातल] सात पातालों में से एक ।
 तलाब, तलाय-देखो 'तलाव' ।
 तलार, तलारख-पु० १ नगर-रक्षक, कोतवाल । २ कोतवाल के खर्च संबंधी कर ।
 तलाह-स्त्री० सेवा, चाकरी ।
 तलाल-पु० एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
 तलाब-पु० [सं० तड़ाग] जलाशय, सरोवर, तालाब ।
 तलाबड़ी-स्त्री० छोटा तालाब, तलाई, पोखर ।
 तलाबट-स्त्री० एक प्रकार का जागीरदारी बिक्री कर ।
 तलाबटियो-पु० १ उक्त कर वसूल करने वाला कर्मचारी । २ उक्त कर देने वाला ।
 तलावरत-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
 तलाबळी-देखो 'तलाव' ।
 तलावो-पु० बेलमाड़ी के पहिये में लगने वाला डंडा ।
 तलास, तलास-स्त्री० [तु० तलाश] १ खोज, अनुसंधान । २ आवश्यकता, चाह । ३ पगचपी ।
 तलासणी(बी)-क्रि० पांव चांपना ।
 तलासणी(बी)-क्रि० खोजना, अनुसंधान करना, शोध करना । ढूंढना ।
 तलासी-स्त्री० [फा० तलाशी] १ खोज का कार्य । २ खोई या छुपी वस्तु के प्रति देखभाल । ३ सामान आदि का निरीक्षण ।
 तलि-देखो 'तली' ।
 तलिछणी(बी)-क्रि० १ संहार करना, मारना । २ प्रहार करना ।
 तलिन-वि० [सं०] १ दुर्बल, क्षीण । २ थोड़ा, कम, अल्प । ३ साफ, स्वच्छ । ४ पृथक । -स्त्री० १ सेज, शय्या । २ पलंग ।
 तलियो-पु० १ मवन निर्माण के लिए निश्चित भू-खण्ड । २ देखो 'तली' । -तोरण-पु० एक प्रकार का तोरण ।
 तलींगण-पु० [सं० तलेंगण] 'चूल्हे आदि पर चढ़ने वाले' बर्तनों के बहरी पैदे पर किया जाने वाला मिट्टी का लेप ।
 तली-स्त्री० [सं० तल] १ किसी वस्तु का पैदा । २ मतह, धरातल । ३ जलाशय या गड्ढे आदि का तल । ४ ऊंट के पांव का तलुवा । ५ हथेली की गहराई । ६ जूते का तल ।

७ खलिहान का निचला भाग । ८ रहट की लाट में लगने वाली चन्द्राकार पत्ती । ९ मकान की पक्की छत । १० मोट खाली करने के स्थान पर जमाया हुआ पत्थर ।
११ तनहटी, तराई । —क्रि० वि० नीचे ।

तळोफड-पु० बैठते समय पांव का तलुवा बाहर रखने वाला ऊंट ।

तळुप्रौ-देखो 'तळवी' ।

तळूजी-स्त्री० पैदी, तन, तली ।

तळे-देखो 'तळे' ।

तळेक्षण-पु० [मं० नलक्षण] शूकर, सूअर ।

तळेचौ-पु० जीखट के नीचे का डंडा ।

तळेटी-देखो 'तळहटी' ।

तळेम-देखो 'तमलीम' ।

तळे-क्रि० वि० १ नीचे । २ तल के नीचे ।

तळेचौ-देखो 'तळेचौ' ।

तळेटी-देखो 'तळहटी' ।

तळोट-पु० घोड़े के अगले पांव का एक भाग ।

तळोदरी-स्त्री० [सं० तलोदरी] स्त्री, भार्या ।

तळोदा-स्त्री० नदी, दरिया ।

तळोसणौ (बी)-देखो 'तलासणी' (बी) ।

तळी-पु० [सं० तल] १ कूप, कूआ । २ पैदा । ३ सतह, धरातल । ४ तलुवा । ५ जूते का तला ।

तलो-पु० १ संबंध । २ छुटकारा, विच्छेद । —बलो-पु० रिश्ता, संबंध । —मलो-पु० संबंध, वास्ता ।

तलक-पु० [सं०] वन, जंगल ।

तल्प-स्त्री० [सं०] १ चारपाई । २ पलंग । ३ सेज, शय्या । ४ स्त्री, भार्या । —क-पु० शय्या बिछाने वाला परिचायक । —ज-पु० क्षेत्रज पुत्र ।

तल्पिका-देखो 'तल्प' ।

तल्ल-पु० [सं०] १ धिल, गड़ड़ा । २ ताल । ३ नाश ।

तल्लड़-पु० लम्बा डंडा, लाठी ।

तल्ली-स्त्री० [सं०] १ जवान स्त्री । २ देखो 'तली' ।

तल्लीण, तल्लीन-वि० १ चिन्तन, मनन या अध्ययन में लीन, मग्न । २ किसी कार्य में पूर्ण मनोयोग से लगा हुआ ।

तब-सबं० [सं०] १ तेरा, तुम्हारा । २ देखो 'तब' । ३ देखो 'तप' ।

तबकिया-स्त्री० एक प्रकार की हरताल ।

तबक्षोर-पु० [सं०] तब शोर, तीखुर नामक पदार्थ ।

तबखीरी-स्त्री० कनकधूर लता की जड़ से निकलने वाला तीखुर पदार्थ ।

तबज्जा, तबज्जै-स्त्री० [अ० तबज्जह] ध्यान, गौर, देखभाल ।

तबण, तबणु-१ देखो 'तपण' । २ देखो 'स्तवन' ।

तबणौ (बी)-क्रि० [सं० स्तवन] १ कहना, उच्चारण करना । २ वर्णन करना, विस्तार पूर्वक कहना । ३ स्तुति करना, प्रार्थना करना । ४ देखो 'तपणौ' (बी) ।

तब-तेण-वि० [सं० तपः+तेन] तपस्या का चोर । (जैन)

तवन-पु० [सं० स्तवन] १ स्तुति, प्रार्थना । २ स्तोत्र ।

३ स्तोत्र गायन ।

तबलता-स्त्री० इलायची की लता ।

तबसमायारी-स्त्री० [सं० तपः समाचारी] चार प्रकार के तप अनुष्ठान । (जैन)

तबह-स्त्री० बेल, बल्लरी, लता ।

तबाइफ-देखो 'तवायफ' ।

तबाखोर-पु० [सं० तबकक्षोर] वंश लोचन ।

तवायफ-स्त्री० [अ०] १ वेश्या रंडी । २ वेश्याओं की मंडली ।

तवारा-क्रि० वि० उस समय, तब ।

तवारोख-स्त्री० [अ०] इतिहास ।

तविखि (सि)-पु० [सं० तविष] स्वर्ग ।

तवी-स्त्री० १ भट्टी पर झोंधा रखा जाने वाला बड़ा तवा । २ मिट्टी का छोटा तवा । ३ सपाट तली वाली कढ़ाई ।

तवोकम्म-पु० [सं० तपः कर्मन्] तपकर्म, तपोनुष्ठान । (जैन)

तवोधन-देखो 'तपोधन' ।

तवौ-पु० [सं० तरः] १ भोटी सेकने का तवा । २ चिलम पर रखने का मिट्टी का गोल ठीकरा । ३ वक्षस्थल या पीठ का कवच । ४ ललाट का मध्य भाग । ५ हाथी के मस्तक पर लगाया जाने वाला कवच । ६ बख्तर का ऊपरी भाग ।

तस-पु० १ हाथ, हस्त । २ द्वीन्द्रियादि प्राणी । ३ प्यास । ४ इच्छा । —सर्व० उस । —क्रि० वि० तैसे-वैसे ।

तसकर-देखो 'तस्कर' ।

तसटा-पु० [सं० तष्ट] १ वस्तु को छील-छाल कर गड़ने वाला, विश्व कर्मा । २ एक आदित्य का नाम ।

तसटौ-देखो 'तसळौ' ।

तसणा-देखो 'तिसण' ।

तसतरी-स्त्री० [फा० तशतरी] धालीनुमा पात्र, रकाबी ।

तसतूबौ-पु० इंद्रायण का फल ।

तसवीक-स्त्री० [अ० तस्वीक] १ प्रमाणीकरण । २ किसी प्रमाण से की गई पुष्टि । ३ समर्थन । ४ गवाही ।

तसवीह-स्त्री० पीड़ा, दर्द ।

तसफियो-पु० निर्णय, फैसला ।

तसधी-देखो 'तसवीह' ।

तसवीर-देखो 'तसवीर' ।

तसवीह, तसवी-स्त्री० [अ० तस्वीह] माला, जाप की माला, सुमरनी ।

तसमाह-कि० वि० [सं० तस्मात्] इसलिये ।
 तसमो-पु० [फा० तस्मः] चमड़े का फीता । कस्सा, तसमा ।
 तसरीफ-स्त्री० [ग्र० तशरीफ] १ इज्जत प्रतिष्ठा । २ बड़प्पन ।
 ३ महत्व । ४ व्यक्तित्व । ५ स्वागत संबंधी शब्द ।
 ६ पदार्पण, शुभागमन ।
 तसल्लिखी-पु० मित्र, साथी, दोस्त ।
 तसल्ली-स्त्री० १ मित्र मण्डली । २ छोटा तसला । ३ देखो 'तसल्ली' ।
 तसलीम-पु० [ग्र० तस्लीम] १ प्रणाम, अभिवादन । सलाम ।
 २ स्वीकार, कबूल । ३ अनुपालना ।
 तसल्ली-पु० १ बड़ा कटोरा । २ भाल पर पड़ने वाली तीन सलवटे ।
 तसल्ली-स्त्री० [ग्र०] धैर्य, धीरज, सान्त्वना, शान्ति, संतोष ।
 तसवीर-स्त्री० [ग्र० तस्वीर] १ कागज, वस्त्र, पट्टी आदि पर
 अंकित कोई चित्र, फोटो । २ काच आदि में मंडा उक्त
 प्रकार का चित्र । ३ प्रतिकृति । ४ मूर्ति, प्रतिमा, बुत ।
 तसस-देखो 'तस' ।
 तसां-कि० वि० उसी ओर, उसी दिशा में, उसी तरह ।
 तसिथी-पु० १ संकट, कष्ट । २ छेह, अन्त । -वि० १ तृषातुर,
 प्यासा । २ लालची, लोभी । -सर्व० वैसा, ऐसा ।
 तसु-सर्व० [सं० तद्] १ उस । २ उसके, अपने ।
 तसु-पु० इमारती गज का २४ बां भाग, एक माप ।
 तसो-सर्व० (स्त्री० तसी) तैसा, वैसा ।
 तस्कर-पु० [सं०] १ चोर, दस्यु । २ चोर बाजारी । ३ अनैतिक
 व्यापार करने वाला ।
 तस्करता-स्त्री० १ चोरी, डकैती । २ काला-बाजार का
 व्यापार ।
 तस्करस्नायु-पु० [सं०] काकनासा नामक लता ।
 तस्करी-स्त्री० [सं०] १ चोरी का कार्य । २ काला व्यापार ।
 ३ चोर स्त्री । ४ चोर की स्त्री । ५ व्यभिचारिणी स्त्री ।
 तस्गर-देखो 'तस्कर' ।
 तस्दीक-देखो 'तसदीक' ।
 तस्बीर-देखो 'तसबीर' ।
 तह-कि० वि० १ तहाँ, वहाँ । २ तथा, एवं । -सर्व० वह, उस ।
 तह-स्त्री० १ यथार्थ, ज्ञान । २ चेतना, संज्ञा । ३ सतह,
 गहराई । ४ पैदी । ५ परत । ६ सलवट । ७ देखो 'तह' ।
 तहक-देखो 'त्रहक' ।
 तहकणी (बी)-कि० १ चलना । २ नगाड़े का बजना ।
 ३ भयभीत होना ।
 तहकाणी (बी)-कि० १ चलाना । २ नगाड़े बजाना ।
 ३ भयभीत करना ।

तहकीक-स्त्री० [ग्र०] १ सच्चाई, यथार्थता । २ जांच-पड़ताल,
 छान-बीन । ३ निरीक्षण । ४ तलाश, ढूँढ़ाई । ५ जिज्ञासा ।
 ६ खोज, शोध ।
 तहकीकत, तहकीकात-स्त्री० [ग्र०] १ किसी घटना की जांच-
 पड़ताल, छान-बीन । २ सच्चाई जानने का प्रयास ।
 ३ निरीक्षण ।
 तहखानी-पु० [फा० तहखाना] मकान के नीचे भूमि में बना
 कक्ष, तलशुह ।
 तहड़-स्त्री० करोब, अनुमान, अंदाज ।
 तहजोब-स्त्री० [ग्र०] शिष्टता, सभ्यता, शिष्ट-आचरण ।
 शिष्टाचार ।
 तहत-वि० [ग्र० तहत] १ नीचे, अधीन । २ अधिकृत ।
 ३ अपेक्षा में । ४ देखो 'तहत' ।
 तहतावणी (बी)-कि० १ आग्रह करना, अनुगोध करना ।
 २ हठ करना ।
 तहतीक-देखो 'तहकीक' ।
 तहत-पु० १ तथ्य, सत्य । २ देखो 'तहत' । (जैन)
 तहत्ति-ग्रन्थ० [सं० तथेति] ठीक है, ऐसा ही, तथेति ।
 तहवरज-वि० [फा०] जिसकी तह न खुली हो, तहबंद ।
 तहशुदा ।
 तहना-सर्व० तुम ।
 तहनारी-सर्व० तुम्हारी ।
 तहनाळ-स्त्री० १ तलवार की म्यान का माने या चांदी का
 बंद । २ तसवार के नीचे का भाग ।
 तहपेच-पु० [फा०] पगड़ी के नीचे का कपड़ा ।
 तहबंद, तहमत, तहमद, तहमद-पु० [फा० तहबंद] कमर पर
 बांधने का अधोवस्त्र, लूंगी ।
 तहमल-पु० [ग्र० तहम्मल] १ धैर्य, सब्र, संतोष । २ शान्ति ।
 तहरउ-सर्व० तेरा, तुम्हारा ।
 तहरि-सर्व० तुमको, तुमको ।
 तहरीर-स्त्री० [ग्र० तहरीर] १ लिखित मजबूत । २ लिखित
 आदेश । ३ लिखावट । ४ जौलो, लेखन । ५ प्रमाण ।
 ६ लिखने की मजदूरी । ७ लेख-पत्र, दस्तावेज । ८ हाथ
 की लिखावट ।
 तहलकी-पु० [ग्र० तहलक] १ हंगामा, हो हल्ला । २ भगदड़,
 खलबली । ३ उपद्रव, विप्लव । ४ किसी बात का सहमा
 फैलाव । ५ नाश, बरबादी । ६ मौत, मारकाट ।
 तहवि-देखो 'तथापि' ।
 तहवील-स्त्री० १ धरोहर, अमानत । २ किमी मद विशेष की
 आय की जमा । ३ खजाना, कोष । ४ रोकड़, नगद राशि ।
 ५ प्रवेश । ६ हस्तान्तरण । ७ पोते बाकी । -दार-पु०
 कोषाध्यक्ष, खजांची ।

तहस-नहस, तहस-महस-वि० नष्ट, बरबाद । ध्वस्त ।

तहसील-स्त्री० [अ०] १ प्रशासन के अनुसार जिले का एक भाग । २ इस भाग की भूमि का लगान बसूल करने वाला कार्यालय । ३ राजस्व विभाग का एक कार्यालय ।
—दार-पु० 'तहसील' का अधिकारी । —दारी-स्त्री० 'तहसीलदार' का पद । तहसीलदार का कार्य ।

तहां-कि० वि० उस जगह, वहां ।

तहारत-पु० १ शौचालय । २ शुद्धता, पवित्रता ।

तहावि-देखो 'तथापि' ।

तहि, तहि-कि० वि० १ तब, तो । २ वहां ।

तहीम-सर्व० तुम्हारा ।

तहु-सर्व० उस ।

तह्यो-सर्व० तुम । तुमने ।

तां-सर्व० उन । —कि० वि० १ तब । २ वहां । [सं० तावत्] ३ तो । ४ देखो 'ता' ।

ताई-अव्य० [सं० तावत्] १ तक, पर्यन्त । २ वास्ते, निमित्त, लिए । ३ पास, समीप । —सर्व० १ उस । २ देखो 'ताई' ।

तांड-कि० वि० ती, तब ।

तांग-पु० पतला व विपैला एक सर्प विशेष ।

तांगड़-पु० १ ऊंट के गले में बांध कर हल के बांधा जाने वाला रस्सा । २ हाथी की बांधने का रस्सा । ३ एक देशी खेल ।

तांगली-पु० एक छोटा सिक्का ।

तांगी-स्त्री० [सं० तंग, त्वंग] १ पैरों की लड़खड़ाहट । २ एक देशी खेल ।

तांगी-पु० १ एक घोड़े की घोड़ागाड़ी । २ छोटी बैलगाड़ी । ३ असफल यात्रा, चक्कर । ४ यात्रा की थकान ।

तांजी-सर्व० (स्त्री० तांजी) तुम्हारा तेरा ।

तांड (ऊ)-पु० १ धधकता अग्नि कण, बड़ी चिनगारी । २ संतान, पुत्र । [सं० तांडव] ३ नृत्य, नाच । ४ बैल या सांड की दहाड़ । [सं० तुण्डकम्] ५ मुख, श्रुथन । ६ शिर, मस्तक ।

तांडणी (बौ)-कि० वि० १ बैल या सांड का दहाड़ना । २ गरजना । ३ दहाड़ मारना । ४ नृत्य करना, नाचना ।

तांडळ-पु० १ बड़ा सर्प । २ देखो 'तंडळ' । ३ देखो 'तंडुळ' ।

तांडव-पु० [सं०] १ पुरुषों का नाच, नृत्य । २ शिवजी का नृत्य । ३ एक प्रकार की घास । ४ तीनों लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम ।

तांडवी-पु० [सं०] गंगीत की एक ताल ।

तांडि, तांडी-पु० १ तांडि मनु का नृत्य शास्त्र । २ सामवेद की तांडव शाखा का अध्ययन करने वाला । ३ यजुर्वेद का एक कल्पग्रन्थकार ।

तांडीर-पु० बड़ा व काला सर्प ।

तांडीस-पु० [सं० तांड] नृत्य ।

तांडी-पु० १ झुण्ड, समूह । २ तूफ के पास का खुला मैदान । ३ फीज के तंबू आदि का सामान । ४ अग्नि कण, अंगारा । ५ वनजारे के बैलों का झुण्ड ।

तांण-स्त्री० [सं० तनु] १ दबाव शक्ति । २ खिंचाव, तनाव । ३ जिद्द, हठ । ४ विवाद । ५ आग्रह । ६ खींचातान । ७ ऐंठन । ८ वात रोग से होने वाली ऐंठन । ९ धनुषाकार पत्थर की जुड़ाई विशेष । १० गर्व, अहंकार । ११ लोहे की छड़ या लकड़ी जो मजबूती के लिये किसी उपकरण में लगाई जाती है । १२ पतंग की डोरी । [सं० त्राण] १३ रक्षा, शरण ।

तांण्यो-पु० गिरासिया जाति में विवाह का एक ढंग । —वि० [सं० त्राण] रक्षक ।

तांण्यो, (बौ)-कि० [सं० तनु] १ खींचना, खींचाव देकर बांधना । २ धनुष पर तीर चढ़ाना । ३ कसना । ४ ताव देना, ऐंठन देना, मरोड़ना । ५ घसीटना । ६ जोर देना, आग्रह करना । ७ बलपूर्वक किसी तरफ करना । ८ प्रवृत्त करना ।

तांण्य-देखो 'तणाव' ।

तांणि, तांणी-१ देखो 'तणी' । २ देखो 'ताई' । ३ देखो 'तांणी' ।

तांणी-पु० [सं० तनु] १ कपड़ा बुनाई में सूत का ताना । २ ऐसे ताने में लगाई जाने वाली लकड़ी ।

तांत-स्त्री० [सं० तंतु] १ भेड़, बकरी की आंत । २ मैस के चमड़े की पतली डोरी । ३ धनुष की प्रत्यंघा । ४ डोरा । ५ धागा । ६ तार वाद्यों का तार । ७ जुलाहों का एक औजार । ८ मगरमच्छ आदि के श्रुथन का तंतु । ९ सुधि, खबर, परवाह । [सं० तंत्र] १० सेना । १० देखो 'तांतो' ।

तांतण-पु० तागा, धागा, सूत का तार ।

तांतण्यो-पु० १ गले का एक आभूषण विशेष । २ देखो 'तांतण' ।

तांतळ, तांतळि (ळी)-स्त्री० १ शीघ्रता, त्वरा । २ बकरूक । ३ कलह ।

तांतवी-पु० [सं० तंतुण] मगरमच्छ, मत्स्य ।

तांति (तो)-पु० [सं० तन्तुः] १ तंतु नुमा स्नायु रोग का कीड़ा । २ गैर का एक आभूषण विशेष । ३ तांत्रिक सूत्र, गंडा, तावीज । ४ संतान । [सं० तंति] ५ खलियान में अनाज की वाले कुचलने वाले बैलों की पंक्ति । ६ पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए लगी अस्थाई हाट । ७ देखो 'तांत' ।

तांतिथी-पु० लम्बे तंतुओं का घास ।

तांत-पु० १ ग्राह । २ देखो 'तांती' ।

तांती-पु० [सं० तंति] १ श्रेणी, पंक्ति, कतार । २ मिलसिला, क्रम । ३ भगड़ा, लड़ाई । ४ किसी बात की बार-बार की जाने वाली चर्चा । [सं० तंतु] ५ लता का अग्र भाग । ६ लता से निकलने वाला तंतु । ७ कोई रेशा । ८ मुख्य द्वार की चौखट पर लगाई जाने वाली कलात्मक खुदाई की लकड़ी । ९ संबंध, रिश्ता । १० बंधन । १० गृह की माल में बंधा वृक्ष की छाल का रस्ता । ११ वंश, परम्परा । १२ डोरा, धागा । १२ देखो 'तांत' ।

तांत्रिक-वि० [सं०] १ तंत्रों का ज्ञाता, तंत्रों को मानने वाला । २ तंत्र संबंधी । ३ तंत्रों में मुगठित । ४ किसी कला या मिश्रांत को जानने वाला ।

तांद-स्त्री० [सं० तुन्दम्] बढ़ा हुआ पेट, तोंद ।

तांदळ-१ देखो 'तंदुळ' । २ देखो 'तांदाळ' । ३ देखो 'तांदळी' । तांदाळ, तांदाळी, तांदी, तांदोली-वि० [सं० तुंदिल] मोटे पेट वाला, तोंद वाला, तोंदू । (स्त्री० तांदोली)

तांन-स्त्री० [सं० तान] १ मूर्च्छना आदि से किसी राग का स्वर विस्तार । २ अवसर, मौका । ३ गान क्रिया का एक अंग । ४ मेल, घनिष्ठता । ५ व्यवस्था । -वि० तैयार, कटिबद्ध । -सर्व० उन, उनको ।

तांनपुरी (पूरी)-पु० बड़ी वीणा ।

तांनसेन-पु० अकबर कालीन एक महान् संगीतज्ञ ।

तांनारीरी-स्त्री० १ साधारण रागालाप । २ साधारण चर्चा ।

तांनियो-पु० तुनक मिजाज व्यक्ति ।

तांतौ-पु० १ व्यंग्य, ताना । २ चुभती बात ।

तांन्यो-१ देखो 'तांनियो' । २ देखो 'तांतौ' ।

तांबड़ी, तांबड़ी-देखो 'तांमड़ी' ।

तांबपत्र-देखो 'तांबापत्र' ।

तांबरस-देखो 'तांमरस' ।

तांबागळ-पु० [सं० ताम्रागल] १ तक्कारा । २ ढोल । -वि० तांबा संबंधी, तांबे का ।

तांबाङ्गणी (बौ)-क्रि० गाय का रंभाना ।

तांबाङ्गी-पु० गाय के रंभाने की ध्वनि ।

तांबात्रासिया-देखो 'तांबात्रासिया' ।

तांबाप्तर (पत्र)-पु० [सं० ताम्रपत्र] १ तांबे की छोटी चट्ट । २ किसी प्रशस्ति या दान आदि का वर्णन खुदा हुआ तांबे का पत्र ।

तांबुल, तांबूल, तांबूलपत्र-पु० [सं० ताम्बूलम्] नागरबेल का पत्ता, पान । -बेल, बेली-स्त्री० नागरबेल, नागवल्ली ।

तांबूलिक-पु० [सं० ताम्बूलिकम्] पान बेचने वाला, तमोली ।

तांबूली-स्त्री० नागवल्ली ।

तांबेड़ी, तांबेटी-१ देखो 'तांमड़ी' । २ देखो 'तांमड़ी' ।

तांबेसर-देखो 'तांमेसर' ।

तांबेसरी-देखो 'तांमेसरी' ।

तांबी-पु० [सं० ताम्र] लाल रंग का एक धातु, तांबा, ताम्र ।

तांबाङ्गणी (बौ)-देखो 'तांबाङ्गणी' (बौ) ।

तांबाङ्गी-देखो 'तांबाङ्गी' ।

तांम-पु० [सं० तामस्] १ क्रोध, रोष । २ अंधकार, तिमिर । -सर्व० १ उस,उन । २ तुम, आप । -वि० [सं० तमाम] सब, ममस्त । -क्रि० वि० [सं० तावत्] १ तब । २ उस समय में । ३ तहां, वहां ।

तांमग-पु० घमंड, गर्व ।

तांमङ्गानकमुंह-पु० घोड़ा ।

तांमङ्गायन-पु० ताम्रपत्र द्वारा अधिकृत भूमि का मालिक ।

तांमड़ी, तांमड़ी-वि० तांबे के वर्ण का, ताम्रवर्णी । -पु० तांबे का बना बड़ा पात्र ।

तांमजांन, तांमजांम (जांमा)-पु० [सं० ताम्रयान] खुली पालकी ताम्रयान ।

तांमण-पु० १ घास का तूण, तिनका । २ एक प्रकार की हरी घास ।

तांमणियो, तांमणी-पु० [सं० तेमनी] शाक बनाने का छोटा मिट्टी का पात्र ।

तांमरस-पु० [सं० तामरस] १ कमल । २ तांबा । ३ मोता । ४ घतुरा । ५ एक वर्ण वृत्त ।

तांमलिसि-स्त्री० [सं० ताम्रलिप्ति] बंग देश की एक प्राचीन नगरी ।

तांमळोट, तांमळोट-पु० टीन का एक चमकदार छोटा पात्र ।

तांमस-पु० [सं० तामस] १ क्रोध, गुस्सा । २ प्रकृति का एक गुण, तमोगुण । ३ अंधकार । ४ दुष्ट व्यक्ति । ५ सांप । ६ उल्लू । ७ अज्ञान । ८ चौथे मनु का एक नाम । ९ एक अस्त्र का नाम । १० तैत्तिरीय प्रकार के केतु । -वि० (स्त्री० तांमसी) १ कृष्ण, काला । २ दुष्ट । ३ अज्ञानी । ४ तमोगुणी । ५ क्रोधी ।

तांमसकीलक-पु० [सं० तामसकीलक] राहु के पुत्र ३३ केतु ।

तांमसमय-पु० [सं० तामसमय] कई बार खींची हुई शराब ।

तांमसबाण-पु० [सं० तामसबाण] १ युद्धस्थल में अंधकार फैलाने वाला बाण । २ एक अस्त्र का नाम ।

तांमसी-वि० [सं० तामस] १ तमोगुणी । २ क्रोधी । ३ अज्ञानी । -स्त्री० १ अंधेरी रात । २ एक तांत्रिक विद्या । ३ रात्रि ।

तांमस-देखो 'तांमस' ।

तामिल-स्त्री० १ भारत के दक्षिण में रहने वाली एक द्रविड़ जाति । २ उक्त जाति के लोगों की भाषा ।

तामिस्र-पु० [सं० तामिस्र] १ एक नरक का नाम । २ देखो 'तमिस्र' ।
 ताम्रो-स्त्री० [सं० ताम्र] १ तांबे का तमला, तप्तरी । २ द्रव पदार्थों को नापने का पात्र । ३ तांबे की करछी ।
 ताम्रोल-स्त्री० [अ० तामील] १ अनुपालना । २ किसी फरमान आदि का निष्पादन ।
 ताम्रोली-स्त्री० आज्ञा पालन । अनुपालना का कार्य ।
 -वि० १ पालन करने योग्य । २ आज्ञा पालक ।
 ताम्रिणी-पु० [सं० ताम्र+रा प्र ङी] १ तांबे का बना जल पात्र, तांबा का बना कलसा । २ देखो 'ताम्रिणी' ।
 ताम्रिसर-पु० [सं० ताम्र+ईश्वर] १ ताम्र-भस्म । -स्त्री० २ एक लता विशेष ।
 ताम्रिसरी-पु० गेरू के योग में बना एक रंग विशेष ।
 ताम्रिसुर (स्वर)-पु० [सं० ताम्र+ईश्वर] १ ताम्र, तांबा । २ एक प्रकार का सर्प विशेष ।
 ताम्र-पु० [सं० ताम्र] १ तांबा । २ एक प्रकार का कोढ़ ।
 -कर्म-स्त्री० बीर बहूटी । -चूड़-पु० कुकरोधा का पोधा । मुर्गा । -तुंड-पु० मुर्गा । -पट्ट, पत्र-पु० तांबे का पत्र । -पुष्प-पु० लाल रंग का पुष्प । -वरण-वि० तांबे के रंग का, लाल । -सिखी-पु० मुर्गा । -सार, सारक-पु० लाल चंदन का वृक्ष ।
 ताम्रपरणी-स्त्री० [सं० ताम्रपर्णी] १ बावड़ी २ तालाब, ३ दक्षिण भारत की एक नदी ।
 ताम्रवरण-पु० [मं० ताम्रवर्ण] १ मनुष्य के शरीर की चौथी चमड़ी । २ भारत का एक द्वीप, सिंहलद्वीप ।
 ताम्रा-स्त्री० [सं० ताम्रा] १ सिंहली, पीपल । २ दक्ष प्रजापति की कन्या व कश्यप की स्त्री ।
 ताम्र-प्रत्य० तृतीया या पंचमी विभक्ति का चिह्न, से ।
 ताम्रण-पु० [सं० ताम्र] तेल औटाने का तेलियों का पात्र ।
 ताम्रण्यी-देखो 'ताम्रण्यी' ।
 ताम्र-स्त्री० १ ताप, ज्वर । २ मूर्च्छा । ३ देखो 'ताम्र' ।
 ताम्र-सर्व० उस, उन । तुम । -कि० वि० १ वहां । २ उस प्रकार, उस तरह, तब ।
 ताम्रजी-सर्व० (स्त्री० ताम्रजी) तेरा, तुम्हारा ।
 ताम्रा-कि० वि० तब उस समय ।
 ताम्रा-कि० वि० १ वहां । २ तब । ३ देखो 'ताम्र' ।
 ताम्र-स्त्री० १ तान । २ ताल । ३ माता । ४ स्त्री । -पु० ५ विस्तार । ६ शिव । ७ ईश । ८ मधुत । ९ वस्त्र । १० तरुण पुरुष । ११ तिल । १२ तार । -सर्व० १ उस । २ इस । -प्रत्य० करण या अपादान कारक का चिह्न, से । देखो 'तां' ।

ताम्रली-देखो 'ताम्रली' ।
 ताम्रली-देखो 'ताम्रली' ।
 ताम्र, ताम्र-सर्व० वह । उम । उन । -कि० वि० १ वहां, तहां । २ इससे । ३ उससे । -वि० १ शत्रु, दुश्मन । २ आततायी । ३ विधर्मी, दुष्ट । ४ मोक्ष को प्राप्त होने वाला । ५ रक्षक, परिपालक । ६ तापयुक्त । ७ देखो 'ताम्र' । ८ देखो 'ताम्र' ।
 ताम्र-पु० [सं० ताम्र] रक्षक ।
 ताम्र-देखो 'ताम्र' ।
 ताम्र-देखो 'ताम्र' ।
 ताम्र-स्त्री० १ बड़ी माता, पिता की भाभी । २ कपड़ा बुनने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति । ३ घोड़ों की एक जाति । -वि० [सं० आततायी] १ शत्रु, दुश्मन । २ आततायी, दुष्ट ।
 ताम्र-स्त्री० [अ० ताम्र] १ आराधना, उपासना । २ धातु के चौकोर या अष्ट कोणी खण्ड पर बना ताबीज, जंत्र । ३ हाथी का एक आभूषण विशेष ।
 ताम्र-पु० [सं० आततायी + ताम्र] ज्योति, प्रकाश ।
 ताम्र-स्त्री० [अ०] १ महायता, मदद । २ पक्षपात । ३ समर्थन, पुष्टि । ४ ताकीद ।
 ताम्र-वि० बीर, योद्धा ।
 ताम्र-पु० [सं० आततायी + प्रयात] युद्ध ।
 ताम्र, ताम्र-कि० वि० १ तक, पर्यन्त । २ तब ।
 ताम्र-वि० १ शीघ्रता करने वाला, उतावला । २ तेज चलने वाला । ३ क्रोधी । -पु० (स्त्री० ताम्र) पिता का बड़ा भाई ।
 ताम्र-पु० [अ०] एक घातक संक्रामक रोग, प्लेग ।
 ताम्र-पु० [अ०] १ मोर, मयूर । २ सारंगी व सितारनुमा एक वाद्य विशेष ।
 ताम्र-वि० [अ०] १ मोर के सदृश । २ बैंगनी रंग का ।
 ताम्र-स्त्री० १ ताकने की क्रिया, ताक-भांक । २ स्थिर दृष्टि, टकटकी । ३ अवसर, मौका । ४ घात । ५ खोज, तलाश । ६ उपाय, तरकीब । -पु० [अ०] ७ दीवार में रखा जाने वाला खाली स्थान, आलम । ताख । ८ दो से अविभाजक अंक । ९ अंत । -कि० वि० तरह से, प्रकार से ।
 ताम्र-स्त्री० ताकीद, शीघ्रता ।
 ताम्र-स्त्री० [सं० ताम्र] १ तोलने का तराजू । तुला । २ पांच सेर का तौल । -वि० १ उतावली, शीघ्रता करने वाली । २ हूण्ट-पुण्ट, मुडौल ।
 ताम्र-वि० (स्त्री० ताम्र) १ उतावला, जल्दबाज । २ तेज, जोशीला । ३ हूण्ट-पुण्ट, मुडौल । ४ शक्तिशाली, बहादुर ।
 ताम्र-वि० टकटकी लगाकर देखने वाला ।

ताकणी

(५७२)

ताछटणी

ताकणी (बो)—कि० [सं० तर्कण] १ सोचना, विचारना ।
 २ टकटकी लगाना, स्थिर दृष्टि से देखना । ३ अवसर की प्रतीक्षा करना, मौका देखना । ४ राह देखना । ५ दृष्टि रखना, ध्यान रखना । ६ रख करना, प्रवृत्त होना । ७ गौर करना ।
 ताकत-स्त्री० [अ०] १ बल, शक्ति, जोर । २ सामर्थ्य, क्षमता ।
 ... घर-दि० शक्तिशाली । क्षमता वाला ।
 ताकघिन-पु० तबले की ध्वनि ।
 ताकलियो, ताकळी-पु० [सं० ताकुंक] १ लोहे का लम्बा सुईया । तकुवा । २ एक प्रकार का सर्प । -वि० कृश, दुबला ।
 ताकव-पु० [सं० ताकिंक] १ तर्क, मीमांसा आदि शास्त्रों का पंडित । २ कवि । ३ चारण ।
 ताकि-प्रत्य० [फा०] इसलिये कि, जिससे ।
 ताकीद (दी)-स्त्री० [अ०] १ शीघ्रता, जल्दबाजी । २ किसी कार्य को शीघ्र करने के लिए दी जाने वाली प्रेरणा ।
 ३ आदेश, आज्ञा, दबाव ।
 ताकू-देखो 'ताकळी' ।
 ताकौ-पु० १ ताकने की क्रिया या भाव । २ अवसर, मौका ।
 ३ ध्यान, ताक ।
 ताखंगी-पु० १ तक्षक । २ वीर, बलवान, योद्धा ।
 ताखड़ी-देखो 'ताकड़ी' ।
 ताखड़ी-१ देखो 'ताकड़ी' । (स्त्री० ताखड़ी) २ देखो 'ताखी' ।
 ताखणि-क्रि० वि० [सं० तक्षण] उसी समय, तत्काल, फौरन ।
 ताखणी (बो)—कि० १ क्रोधित होना, कुपित होना । २ जल्दी मचाना ।
 ताखति-स्त्री० शीघ्रता, जल्दबाजी । ताकीद ।
 ताखा-ताखी, ताखा-तोखी-पु० छोटे-बड़े जेवर व उनके ग्रंथ ।
 ताखी-पु० १ अलग-अलग तरह की दोनों आंखों वाला घोड़ा विशेष । २ छोटे बच्चों का शिर ढकने का वस्त्र विशेष ।
 ताखी-वि० १ जोशीला, उत्साही । २ महान्, जबरदस्त । ३ वीर बहादुर । -पु० [सं० ताख्यं] १ गरुड़ । २ कपड़े आदि का पूरा धान । ३ एक प्रकार का कपड़ा । ४ देखो 'तक्षक' ।
 ताग, तागउ-पु० [सं० तडाग] १ तालाब । २ देखो 'तागी' ।
 तागइदी-पु० तबले का बोल ।
 तागड़ी-स्त्री० १ धागे आदि में घुंघुरू पिटोई करघनी, करघनी ।
 २ कटिसूत्र ।
 तागणी (बो)—कि० १ सुई में धागा डालना । २ दूर-दूर की मोटी सिलाई करना । ३ सुई आदि नुकीली वस्तु को चुभाना, गोदना ।
 तागत-देखो 'ताकत' ।

तागभरणी-स्त्री० करघे में लगी एक पतली लकड़ी ।
 तागावरण-पु० [सं० त्याग + वरण] ब्राह्मण, संन्यासी, जोगी, जंगम, भाट और साधु इन जातियों का समूह ।
 तागीर-पु० किसी जागीर या संपत्ति का जब्तीकरण ।
 तागीरात-स्त्री० जागीर क्षेत्र में किसानों द्वारा स्वेच्छा से राजा को दिया जाने वाला कर ।
 तागी-पु० १ कच्चे सूत का धागा । २ डोरा, धागा । ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ । [सं० त्याग] ४ ब्राह्मणों व पुजारियों द्वारा शाप देने के अभिप्राय से शरीर पर धाव करके दिया जाने वाला रक्त का छीटा । ५ देवता के आगे किया जाने वाला अर्पण ।
 ताड़-पु० [सं० ताड] १ विना शाखा का बहुत लंबा वृक्ष । २ पर्वत, पहाड़ । -स्त्री० [सं० ताडः] ३ ताड़ना, फटकार । ४ प्रहार, आघात । ५ बीछार । ६ कूप से पानी निकालने के 'पाट' के नीचे की सीधी लकड़ी ।
 डों का एक रोग ।
 ताड़का-स्त्री० [सं० ताडका] मारीच व सुवाहू की माता, एक राक्षसी । -श्रि-पु० श्रीरामचन्द्र ।
 ताड़काफळ-पु० बड़ी इलायची ।
 ताड़केय-पु० [सं०] मारीच ।
 ताड़य-पु० बेंत या कोड़ा मारने वाला, जल्लाद ।
 ताड़ण, ताड़णा-स्त्री० [सं०] १ डांट, फटकार, ताड़ना, भत्सना । २ मारपीट । ३ हंकाई । ४ प्रहार, आघात । ५ दुत्कार । -वि० प्रताड़ना देने वाला ।
 ताड़णी (बो)—कि० १ डांटना, फटकारना । २ भत्सना करना । ३ पीटना, मारना । ४ हंकना । ५ दुत्कार कर निकालना । ६ खतरा भांपना । ७ सतर्क होना ।
 ताड़पत्र-पु० १ ताड़ वृक्ष । २ ताड़ वृक्ष का पत्ता । ३ ताड़ वृक्ष की छात का पत्र ।
 ताड़रीग-पु० घोड़ों का एक रोग ।
 ताड़ासन-पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों में से एक ।
 ताड़िका-देखो 'ताड़का' ।
 ताड़ो-स्त्री० १ ताड़ वृक्ष की शराब । २ छाते, साईकिल आदि में लगने वाला लोहे के तार का खण्ड । ३ लोहे की शताखा । ४ मथानी की खपची ।
 ताचकणी (बो), ताचणी (बो)—कि० १ हमला करना । २ उचक कर आना । ३ नाक लगाना, घात लगाना । ४ छलांग लगाना ।
 ताछ-देखो 'तास' ।
 ताछटणी(बो)—कि० १ पछाड़ना, गिराना । २ देखो 'नाचणी'(बो) ।

ताडणी (बौ)—क्रि० १ बलिदान करना, बलिदेना । २ सोने आदि के जेवरों को कुरेद कर साफ करना । ३ बार करना, प्रहार करना ।

ताज-पु० [अ०] १ राज मुकुट । २ मुकुट । ३ किलंगी, तुरी । ४ मोर, मुर्गा आदि की चोटी । ५ मकान की शोभा के लिये उम पर बनी बुर्ज । ६ मुख्यद्वार पर बनी बालकानी । ७ ताज महल । ८ अरबी घोड़ा । ९ एक देश का नाम—वि० उच्च श्रेष्ठ ।

ताजक-स्त्री० १ जोड़ी । ३ एक ईरानी जाति । -पु० ३ यवनाचार्य कृत ज्योतिष का एक ग्रंथ ।

ताजगी-स्त्री० [फा०] १ ताजापन, चुस्ती, प्रफुल्लता । २ शुष्कता एवं सूखेपन का अभाव, तरी ।

ताजण-स्त्री० १ घोड़ी । २ एक लोक नृत्य विशेष । ३ चाबुक, कोड़ा ।

ताजणियो, ताजणी-पु० [फा० ताजियाना] चाबुक, कोड़ा, हंटर ।

ताजणी (बौ)—क्रि० [सं० तज्जन] १ डांटना, फटकारना । [सं० त्यक्त] २ छोड़ना, तजना ।

ताजदार-वि० [फा०] १ ताजधारी, मुकुटधारी । २ ताज के ढंग से बना । -पु० राजा, बादशाह ।

ताजपोसी-स्त्री० [फा० ताजपोशी] राज्याभिषेक का उत्सव । राज्याभिषेक ।

ताजमहल-पु० आगरे में यमुना किनारे बना इतिहास प्रसिद्ध महल ।

ताजिणी-देखो 'ताजणी' ।

ताजियो-पु० [अ० तज्जियो] मोहरम, ताजिया ।

ताजो-पु० (स्त्री० ताजण) १ अरबी घोड़ा । २ ताज देशोत्पन्न एक विशेष जाति का कुत्ता । -स्त्री० ३ अरब की भाषा । -वि० १ अरब का, अरब संबंधी । २ देखो 'ताजो' (स्त्री०) ।

ताजोम-स्त्री० [अ० तज्जोम] सम्मान, आदर, सत्कार ।

ताजोमी-सरदार-पु० दरबार का प्रतिष्ठित सामंत ।

ताजीर-स्त्री० [अ० ताजीर] १ दण्ड, सजा । २ ईर्ष्या ।

ताजी-वि० [फा० ताज:] (स्त्री० ताजी) १ तुरंत का बना । २ जो पुराना न हो । नवीन । ३ हरा-भरा, तर । ४ स्वस्थ प्रसन्न चित्त, प्रफुल्लित । ५ हृष्ट-पुष्ट । ६ मद्य उत्पन्न । ७ सद्य प्रस्तुत ।

ताटक-पु० [सं०] १ कर्ण फूल, कान का आभूषण । २ लावणी से संबंधित एक छंद । ३ छप्पय का २४ वां भेद । ४ डिगल का एक गीत । ५ आर्या या स्कंधक का एक भेद । ६ प्रथम गुण के एगण के प्रथम भेद का नाम । ७ कान का बाला ।

ताट-स्त्री० १ मिट्टी के पात्र में पड़ी दरार । २ आक की छाल की रस्सी जो लकड़ी के बांध कर घुमाने पर आवाज करती है ।

ताटकणी (बौ)—क्रि० १ बादर्ती का गर्जना । २ मूसताधार वर्षा होना । ३ बिजली का जोर से कड़कना । ४ आक्रमण करना । ५ झपटना ।

ताटाबरड़-वि० जबरदस्त । जोरदार ।

ताटियो-पु० रहट के पानी गिरने की कुण्डी के बाजू में लगाई जाने वाली झाड़ ।

ताटी-देखो 'टाटी' ।

ताटीसेबी-पु० १ नौकर, दास । २ आश्रित ।

ताटी-देखो 'टाटी' ।

ता'टी-पु० १ चौड़े पैदे व छोटी दीवार का धातु का पात्र । २ वृक्ष, पेड़ । ३ देखो 'टाटी' ।

ताठणी (बौ), ताठसकणी (बौ)—क्रि० १ छीनना, खोसना, झपटना । २ अधिकार से कर लेना ।

ताठक-देखो 'ताटक' ।

ताड-देखो 'ताड़' ।

ताडणी (बौ)—क्रि० १ पहनना, धारण करना । २ तमतमाना, क्रुद्ध होना । ३ देखो 'ताडकणी' (बौ) । ४ देखो 'ताड़णी' (बौ) ।

ताडियो-पु० स्वर्णकारों के कार्य का कांसी का छोटा डंडा ।

ताडकणी (बौ)—क्रि० सांड या बैल का दहाड़ना ।

ताड़-देखो 'ताडक' ।

ताड़ज-देखो 'ताड़ी' ।

ताड़क-स्त्री० १ शीत, ठंड, सर्दी । २ शीतलता, ठंडक ।

ताड़ी-वि० (स्त्री० ताडि, टी) ठंडा, शीतल ।

ता'णी (बौ)-देखो 'तावणी' (बौ) ।

ताण्यू-पु० कोपीन ।

तात-पु० [सं०] १ पिता । २ पूज्य व्यक्ति, गुरु । ३ पति । ४ ईश्वर । ५ स्वामी । ६ प्रिय वाची सम्बोधन । -स्त्री० ७ चिता । ८ पीड़ा, कष्ट ।

तातउं (उ)-देखो 'ताती' ।

तातर-पु० समुद्र, यागर ।

ताताथई-स्त्री० नृत्य, नाच । नृत्य का बोत ।

तातार-पु० [फा०] भारत व फारस के उत्तर में स्थित एक देश ।

तातारी-वि० तातार देश का, तातार देश संबंधी । -पु० तातार देश का निवासी ।

तानाळ-वि० तेज चलने वाला, उतावला ।

ताति (ती)-स्त्री० १ रटन । २ देखो 'तात' । ३ देखो 'ताती' (स्त्री०) । -बेछा-स्त्री० बाल्यावस्था ।

तापील-स्त्री० [अ०] १ भवकाश, छुट्टी । २ छुट्टी का दिन ।
 तातेइखानो-पु० १ स्नानागार, हमाम । २ मंडार ।
 ताते-क्रि० वि० दसरे, इसलिये । इस कारण ।
 तातो-वि० [सं० तात] (स्त्री० ताती) १ गर्म, उष्ण ।
 २ तप्य हुआ । ३ तृप्त, पूर्ण । ४ उतावला, जल्दबाज ।
 ५ चंचल, नटखट । ६ तीव्रगामी । जीघ्रगामी ।
 -क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत ।
 तात्परज-पु० [सं० तात्पर्य] तात्पर्य, अभिप्राय, मतलब ।
 तात्त्विक-वि० [सं०] दत्त्व संबंधी, तत्त्व ज्ञान संबंधी ।
 ताथेइ-देखो 'ताताथेई' ।
 तादागल, तादात्म्य-पु० [सं० तादात्म्य] १ एक वस्तु का दूसरी
 वस्तु से संबंध । २ अभिन्नता, एकता । ३ आत्मसात होने
 का भाव । ४ तत्त्व रूपता ।
 तादाइ-स्त्री० [अ० अदाद] १ संख्या, गिनती । २ कुल योग ।
 ३ मात्रा, परिमाण ।
 तादस-वि० [सं० तादस] उसके समान, ठीक वैसा ।
 ताप (उ)-पु० [सं०] १ उष्णता, गर्मी । २ अग्नि, आग ।
 ३ ज्वाला, लपट, आंच । ४ कष्ट, पीड़ा । ५ दुःख ।
 ६ ज्वर, बुखार । ७ भय, आतंक । ८ प्रताप, तेज ।
 ९ जोश, साहस ।
 तापड़-पु० [सं० ताप+पट] १ बिछाने का, जूट का वस्त्र ।
 २ मैले कुचेरे वस्त्र । ३ ऊंट के चारजामे के नीचे बिछाने
 का वस्त्र । ४ ऊंट की चाल विशेष । ५ किसी व्यक्ति की
 मृत्यु के बाद उसके परिवार वालों द्वारा शोक में बैठने के
 लिये बिछाया जाने वाला वस्त्र ।
 तापड़णी (बो)-क्रि० १ भागना, दौड़ना । २ दुःखी होना,
 कष्ट गाना । ३ तड़पना । ४ ऊंट का चारों पावों से
 दौड़ना ।
 तापड़धिन, तापड़धिन-पु० तबला आदि के बजने की ध्वनि ।
 तापड़णी (बो)-क्रि० थोड़े, ऊंट आदि को दौड़ाना ।
 तापड़णी (बो)-देखो 'तापड़णी (बो) ।
 तापण-देखो 'तापन' ।
 तापणी (बो)-क्रि० १ चेचक के व्रण निकलना । २ आग या
 आंच से गर्माना, गर्मी लेना । ३ धूप सेवन करना ।
 ४ देखो 'तापणी' (बो) ।
 तापतिल्ली-स्त्री० तिल्ली बढ़ने का एक रोग ।
 तापती-स्त्री० [सं०] १ सूर्य की कन्या, नापी । २ दक्षिण
 भारत की एक नदी ।
 तापत्रय-पु० [सं०] तीन प्रकार के ताप ।
 तापन-पु० [सं०] १ ताप देने वाला सूर्य । २ काम के पांच
 वाणों में से एक । ३ सूर्यकान्त मणि । ४ एक नरक का

का नाम । ५ एक तांत्रिक प्रयोग । ६ ग्रीष्म ऋतु ।
 ७ जलन । ८ कष्ट । ९ दण्ड ।
 तापमानजंत्र (यंत्र)-पु० ताप मापने का यंत्र, थर्मामीटर ।
 तापल-पु० [सं० ताप] १ क्रोध । २ श्वास रोग से पीड़ित पशु ।
 तापस-पु० [सं०] १ तपस्वी । २ तेज पत्ता । ३ एक प्रकार की
 ईख । ४ शिव । ५ माधु ।
 तापसक-पु० [सं०] सामान्य श्रेणी का तपस्वी ।
 तापसतर (द्रुम)-पु० [सं०] हिमालय वृक्ष, ईगुदी वृक्ष ।
 तापस्वेद-पु० [सं०] १ गर्मी से उत्पन्न पसीना, स्वेद ।
 २ गर्म बालू-कण । ३ नमक ।
 तापहरी-स्त्री० एक पकवान या व्यंजन का नाम ।
 तापाड़ी-स्त्री० चोट के कारण आंख की पुतली में बना मफेद
 चिह्न ।
 तापी-वि० [सं० तापिन्] १ ताप देने वाला, उष्णता देने
 वाला । २ दुःख देने वाला, सताने वाला । -पु० १ बुद्ध
 देव । २ तपस्वी, मुनि । ३ देखो 'तापती' ।
 तापु-देखो 'ताप' ।
 तापेंद्र-पु० [सं०] सूर्य ।
 तापेलेदिन, तापेलेदिन-पु० आज से पांचवां या छठा दिन ।
 तापी-पु० १ ऊंट की, चारों पावों से उछलने की क्रिया ।
 २ ऊंट का पदाघात ।
 तापी-देख 'तापती' ।
 ताफती-पु० [सं० ताफतः] १ एक प्रकार का चमकदार रेशमी
 वस्त्र । २ उक्त वस्त्र के रंग जैसा थोड़ा ।
 ताब-स्त्री० [फा०] १ ताप, गर्मी, उष्णता । २ आभा कान्ति
 चमक । ३ शक्ति, सामर्थ्य । ४ हिम्मत, साहस ।
 ५ सहिष्णुता, धैर्य । ६ आतंक, रौब । ७ ज्योति ।
 ताबड़तोड़-क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी, झट-पट, लगातार ।
 -स्त्री० उतावली, शीघ्रता ।
 ताबची-स्त्री० प्रकार की बन्दूक ।
 ताबदान-पु० [फा० ताबदान] १ ताब, आला, आलस्य ।
 २ कमरे के द्वार पर 'सिलदरी' पर गोलाकार स्थान जहाँ
 भरोखे भी होते हैं । ३ रोशनदान, खिड़की ।
 ताबादार-देखो 'ताबेदार' ।
 ताबादारी-देखो 'ताबेदारी' ।
 ताबि-देखो 'ताब' ।
 ताबीज-देखो 'ताबीज' ।
 ताबीत-पु० [अ० ताबीत] १ अधीनता, मातृहता । २ देखो
 'ताबीज' ।
 ताबीन-वि० अधीन, मातृहता । -दार-पु० नौकर, सेवक,
 परिचायक । सिपाही ।

तावूत-पु० १ जनाजा, ग्रथी । २ लाश रखने की संदूक ।
३ मकबरा, मजार । ४ ताजिया । ५ तानिया की तरह
बना कोई ढाँचा ।

ताबे-वि० [ग्र० ताब ५] १ वशीभूत, अधीन, आज्ञानुवर्ती ।
२ अनुयायी ।

ताबेदार-वि० [ग्र०] १ आज्ञाकारी । २ अधीन, वशवर्ती ।
३ अधीन, मातहत । -पु० १ सेवक, चाकर । २ अनुयायी ।

ताबेदारी-स्त्री० [ग्र०] १ अधीनता । २ आज्ञापालन ।
३ अनुयायित्व ।

ताबे-देखो 'ताय' ।

ताबेदार-देखो 'ताबेदार' ।

ताबेदारी-देखो 'ताबेदारी' ।

ताय-पु० [सं० तात] १ पिता । २ रात्रि, रात । -सर्व० १ उस ।
२ क्रिय । -वि० ममान, तुल्य । -क्रि० वि० १ तव ।
२ लिए, बस्ने । ३ वैसे ही, ज्यों ।

तायक (ग)-वि० १ बोर, योद्धा । २ संहारक, नाश करने
वाला । ३ शीघ्रता युक्त, स्वरायुक्त । ४ शत्रु । ५ एक देश
का नाम । -सर्व० तेरा, तेरी ।

सायत, तापतयो-देखो 'ताईत' ।

तायतोसग-पु० [सं० त्रायस्त्रिंशंक] इन्द्र के स्थानीय देवता । (जैन)
तायफ-पु० [ग्र०] १ चारों ओर घूमने का भाव, परिक्रमा ।
२ चौकीदार । ३ चौकीदारी । ४ देखो 'तवायफ' ।

तायफो-पु० [फा०] १ बन्वाओं का समूह या मण्डली । २ नाच
गान करने वाली मण्डली ।

तायल-वि० १ बोर, शक्तिशाली, समर्थ । २ उग्र, तेज ।
३ संहारक । ४ शत्रु ।

तायली-नर्व० (स्त्री० तायली) १ तेरा, तुम्हारा । २ देखो
'तायल' ।

तायां-पु० [सं० आततायी] ग्रन्थाचार्य, आतताई ।

तायोड़ी-वि० (स्त्री० तायोड़ी) १ सताया हुआ । २ तपाया
हुआ । ३ पिथलाया हुआ । ४ कष्टों से संतप्त ।

तायो-वि० चंचल ।

तारंग-देखो 'तारक' ।

तारंगमंत्र-देखो 'तारकमंत्र' ।

तारंगसिला-स्त्री० त्रींशद् गोमिनियों के सामूहिक नृत्य करने
की मित्रा ।

तार-पु० [सं०] १ सूत, तागा, तंतु । २ धातु का तागा ।
३ चांदी, रौप्य । ४ विजली आदि का तार । ५ शक्ति
सहायता में भेजी खबर या संदेश, टेलीग्राम । ६ सिलसिला,
क्रम । ७ हल्का मादक पदार्थ । ८ संयोग, अवसर ।
९ सार, तत्त्व, निष्कर्ष । १० वंश, परंपरा । ११ सुभीता,
अवस्था । १२ बुक्ति, उपाय, तरीका । १३ राम की सेना

का एक वानर । १४ तारकासुर । १५ मय दानव का एक
साथी । १६ परिणाम, नतीजा । १७ ध्यान लगन ।
१८ तार बाद्य । १९ शुद्ध मोती । २० संगीत में स्वरों
का सप्तक । २१ प्रकाश, आभा । २२ शक्कर की चासनी
बनने की अवस्था । २३ आंख की पुतली । २४ पर्याप्त
भोजन से होने वाली तृप्ति । २५ सूच्छा, वेहोशी ।
२६ क्रोध, गुस्सा । २७ ईश्वर । २८ शिव । २९ मोती की
स्वच्छता । ३० नदी तट । ३१ उच्चस्वर । ३२ देखो 'तारौ' ।
-वि० १ निर्मल, स्वच्छ । २ थोड़ा, किंचित, अल्प ।

तारक-पु० [सं०] १ नक्षत्र, तारा । २ आंख की पुतली ।
३ इन्द्र का शत्रु, तारकासुर । ४ चांदी, रौप्य । ५ वह जो
पार उतारे, तारने वाला । ६ मृतक के पीछे किया कर्म कराने
वाली व दान लेने वाली जाति । ७ ईश्वर । ८ कर्णधार,
मल्लाह । ९ तेरह वर्ग का एक छन्द । [सं० ताक्ष्यः]
१० गण्ड । ११ थोड़ा । -असवारी-पु० ईश्वर ।
-गाह, जित-पु० स्वामि कार्तिकेय । -ठोड़ी-पु०
ऋषभ व कोमल स्वरों से गाया जाने वाला एक राग ।
-तीरथ-पु० गया के पास का एक तीर्थ । -ब्रह्म, मंत्र-पु०
राम का षडक्षरी मंत्र ।

तारकवाणी-स्त्री० [सं०] नगीने काटने का धनुषाकार एक
झौजार ।

तारकस-पु० १ धातु का तार बनाने वाला । २ धातु के पतले
तारों से युक्त वस्त्र ।

तारकसी-स्त्री० १ पतले तार खींचने का कार्य । २ इग कार्य
की मजदूरी ।

तारका-स्त्री० १ बाली की पत्नी, तारा । २ इन्द्र वारुणी ।
३ नक्षत्र, तारा । ४ ज्योति, प्रकाश । ५ घोड़ों की एक
जाति विशेष । ६ आंख की पुतली । ७ धूमकेतु ।

तारकाक्ष-पु० [सं०] तारकासुर का ज्येष्ठ पुत्र ।

तारकायण-पु० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

तारकार, तारकारि-पु० [सं० तारक-अरि] स्वामि कार्तिकेय,
षडानन ।

तारकासुर-पु० [सं०] स्वामि कार्तिकेय द्वारा वधित एक अमुर ।

तारकिक-पु० [सं० तारिक] १ तर्क शास्त्र का पंडित । २ तर्क
करने वाला ।

तारकिणी, तारकित-वि० [सं०] तारों से युक्त, तारों भरी ।

तारकी-वि० [सं० तारकित] १ तारकित । २ थोड़ा, किंचित ।
३ देखो 'तारक' ।

तारकूट-पु० [सं०] चांदी व पीतल के योग से बना धातु ।

तारकेस, तारकेस्वर-पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ कलकत्ते के
पास का एक शिव विम । [सं० तारिक] ३ तर्क शास्त्र ।
४ तर्क करने वाला ।

तारकी

(५७६)

तारुण

तारकी-देखो 'तारक' ।

तारखी, तारक्ष, तारख, तारखी, तारिख, तारिग-देखो 'तारक' । — भंत्र = 'तारकभंत्र' ।

तारगा-स्त्री० १ यक्षों के इन्द्र पूर्ण भद्र की चतुर्थ पटरानी । २ नक्षत्र ।

तारपर-पु० [सं० तार-भृह] विजली के तारों व यंत्रों से संदेश भेजने का कार्यालय ।

तारच्छ-देखो 'तारक' ।

तारजोड़-पु० कमीदाकारी का कार्य ।

तारस-वि० [सं०] (स्त्री० तारणी) उद्धार करने वाला, तारने वाला । —पु० १ उद्धार करने की क्रिया, उद्धार, निस्तार । २ पार उतारने का कार्य । ३ ईश्वर । ४ सोने के बदले लिया ऋण न चुकने व व्याज बढ़ जाने पर रखा जाने वाला प्रतिरिक्त सोना । ५ नौका, वेड़ा । ६ बचाव, छुटकारा । —पारण-पु० आश्विन की पूर्णिमा से प्रारंभ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलता रहने वाला एक व्रत ।

तारणी-स्त्री० [सं०] १ देवी, दुर्गा । २ वेड़ा, नाव । ३ उद्धार करने वाली । ४ कश्यप की एक पत्नी । —तेरस-स्त्री० बुधवार की त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत ।

तारणी (बी)-क्रि० [सं०तृ] १ पार लगाना । २ उद्धार करना, मुक्त करना । ३ वचाना, रक्षा करना । ४ तिराना ।

तारत, तारतखानी, तारथ-पु० [अ० तहारत] पाखाना, शौचालय ।

तारबी-स्त्री० एक प्रकार का कांटेदार पेड़ ।

तारन-देखो 'तारण' ।

तारपीन-पु० चीड़ के पेड़ का तेल ।

तारवसौ (बी)-देखो 'तारणी' (बी) ।

तारसार-पु० [सं०] एक उपनिषद् का नाम ।

तारहो-सर्व० तेरा ।

तारां-क्रि०वि० १ तब । २ देखो 'तारा' ।

ताराण-देखो 'तारायण' ।

तारा-पु० १ युद्ध का एक वाद्य । २ सुरणाई वाद्य के छेदों का नाम । —स्त्री० ३ बालि नामक वनर की स्त्री ।

४ राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी । ५ ज्योति, प्रकाश । ६ बृहस्पति की स्त्री । ७ आंध्र की पुतली ।

ताराइण-देखो 'तारायण' ।

ताराई-स्त्री० एक घास विशेष ।

ताराक्ष-पु० एक असुर का नाम ।

तारापह-पु० [सं०] मंगल, बुध, गुरु, शुक और शनि ग्रहों का समूह ।

ताराज-देखो 'तराज' ।

तारावूतो-स्त्री० जुगली करने वाली स्त्री ।

ताराधिप, ताराधीस, तारानाथ-पु० १ चंद्रमा, शशि । २ शिव । ३ बृहस्पति । ४ बालि । ५ सुग्रीव । ६ राजा हरिश्चन्द्र ।

तारापंत-स्त्री० [सं० तारा + पंक्ति] तारावली, तारों की पंक्ति ।

तारापत (पति)-देखो 'ताराधिप' ।

तारापथ, तारापह-पु० [सं० तारापथ] १ आकाश । २ आकाश गंगा ।

तारापीड़-पु० [सं०] १ चंद्रमा । २ अयोध्या का एक राजा । ३ काश्मीर का एक प्राचीन राजा ।

तारापेंसानी-पु० ललाट पर सफेद तिलक वाला धोड़ा ।

तारामंडल-पु० [सं० तारामण्डल] १ तारागण, नक्षत्र-समूह । २ एक प्रकार की आतिशबाजी । ३ खगोल । ४ आंध्र की पुतली ।

तारामंडूर-पु० [सं०] अनेक द्रव्यों के योग से बनी एक औषधि ।

ताराभ्रग-पु० [सं० ताराभ्रग] मृगशिरा नक्षत्र ।

तारायण-पु० [सं०] १ आकाश । २ भस्मक, कपाल । ३ अधिक चोट आदि के कारण आंखों के आगे छा जाने वाला ध्वेरा । —स्त्री० ४ तारों की पंक्ति । ५ नेत्र-ज्योति, दृष्टि । ६ देखो 'तारण' ।

तारायणी-स्त्री० नक्षत्र-समूह । तारागण ।

तारिक-वि० [अ०] १ तर्क करने वाला, तर्क छेड़ने वाला । २ त्यागी । ३ देखो 'तारक' । [सं०] ४ किराया, उतराई ।

तारिका-स्त्री० [सं०] १ एक देवी (जैन) । २ आंध्र की पुतली ।

तारिख, तारिख-देखो 'तारक' ।

तारिया-देखो 'तारिका' ।

तारिस-क्रि०वि० [सं० ताटण] वैसा ही ।

तारो-स्त्री० १ चाबनों में आलु आदि मसाले डाल कर बनाई गई खिचड़ी, चटपटा व्यंजन । २ तार का बना उपकरण । ३ देखो 'ताड़ी' ।

तारीक-वि० [फा०] १ काला, म्याह । २ धुंधला ।

तारीकी-स्त्री० [फा०] १ कालापन, स्याहो । २ धुंधलापन । ३ अंधेरा ।

तारीख-स्त्री० [फा०] १ चौबीस घंटे की एक अवधि विशेष, दिन । २ तिथि, दिनांक । ३ घटना विशेष की प्रसिद्ध तिथि । ४ कार्य विशेष के लिए निश्चित किया हुआ दिन । ५ इतिहास ।

तारीफ-स्त्री० [अ०] १ प्रशंसा, श्लाघा । २ प्रशंसा में कहे जाने वाले शब्द । सराहना के परिचय । ४ वर्णन, बखान ।

तारु-देखो 'तारु' ।

तारुण-पु० [सं० तारुण्य] १ युवावस्था । २ वयस्कता । ३ देखो 'तारुण' ।

तारणी-देखो 'तारणी' ।

तारणी, तारणी, तारणी-देखो 'तारणी' ।

तारु-वि० १ उद्धार करने वाला, मुक्त करने वाला । २ पार करने वाला । ३ देखो 'तेरु' । ४ देखो 'तारु' ।

तारक-क्रि० वि० यदा-कदा, कभी-कभी ।

तारु-क्रि० वि० तब ।

तारु-पु० [सं० तारा] १ नक्षत्र, सितारा, तारा । २ आँख की पुतली । ३ अश्विनी नक्षत्र । ४ भाग्य । ५ प्रकाश । ६ नैचे के मध्य में लगाये जाने वाले धातु के फूल । ७ मोती ।

तारु-सर्व० तेरा, तुम्हारा ।

तारु-रांगी-पु० एक लोक गीत विशेष ।

तालक-पु० छप्पय छंद का २४ वां भेद ।

ताळ-स्त्री० १ वेला, समय, अवधि । २ करतल, हथेली । ३ करतल ध्वनि । ४ जाँघ आदि पर करतल के आघात से उत्पन्न ध्वनि । ५ घोड़े की टाप की ध्वनि । ६ टहनी । ७ हरताल । ८ हाथियों के कान फड़फड़ाने की ध्वनि । ९ तलवार की सूठ । -पु० १० माल, नलाट । ११ खड़े मनुष्य के हाथ ऊँचे करके लिया जाने वाला ऊँचाई या गहराई का माप । १२ तालाब, जलाशय । १३ सलाह, राय । १४ उपाय, तरीका । १५ दांव, पेच । १६ लय, धुन । १७ भाँझ बाझ, मजोरा । १८ ताड़ वृक्ष । १९ तालीश-पत्र । २० बिल्व फल, बिला, वेल । २१ महादेव । २२ खजूर का वृक्ष । २३ संगीत में लय का समय । २४ तबले का वर्गीकृत कोई बोल । २५ ढंग के दूसरे भेद का नाम । २६ देखो 'ताळी' ।

ताल-स्त्री० १ शिर के मध्य में बाल उड़ जाने की अवस्था । २ नाच-गाने के लय का समय । -पु० ३ ऊसर भूमि का समतल विस्तृत मैदान । ४ कठोर भूमि । ५ देखो 'ताळ' । ६ तमाल-पत्र । ७ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

ताळ-पु० १ तमाल-पत्र । २ देखो 'ताळी' ।

तालड-पु० [सं० तालपुट] तालपुट नामक प्राण नाशक विष ।

तालकर-स्त्री० १ कर्ताल, वाद्य । -पु० २ प्रथम गुरु के ढंग के भेद का नाम ।

तालके-वि० वि० १ अधीन, कब्जे में । २ हवाले, सुपुर्द । ३ जिम्मेदारी में । ४ हिस्से में, पक्ष में ।

तालकेतु-पु० [मं०] १ भीष्म पितामह । २ बलराम । ३ जिसकी पताका पर ताड़ वृक्ष का चिह्न हो ।

तालकेशवर-पु० [मं० तालकेशवर] एक औषधि विशेष ।

तालकी-पु० [मं० तालकु] बहुत से गांवों की जमींदारी, बड़ी रियासत ।

ताळजंघ-पु० [सं० तालजंघ] एक यदुवंशी राजा ।

ताळताळी-स्त्री० दोनों हाथों की करतल ध्वनि । ताली । -क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।

ताळधर (धारी)-वि० ताल प्रगट करने वाला ।

तालपत्र-पु० ताड़वृक्ष के पत्ते ।

ताळपल्लव-पु० [सं० तालपल्लव] गौशाला का एक श्रावक ।

ताळपिसाय-पु० [सं० तालपिसाच] ताड़ वृक्ष के समान लम्बे कद का राक्षस ।

ताळपुङ्गविस-पु० [सं० तालपुटकविष] शीघ्र प्राण नाशक विष ।

ताळपुत्र-पु० १ ताल-फल । २ पंखी, पंखा ।

तालबखानौ-पु० [फा०] १ अन्तःपुर । २ अन्तःपुर की सुरक्षा व्यवस्था ।

तालवेइल्म-पु० [मं० तालवेइल्म] १ शिक्षार्थी, विशार्थी । २ जिज्ञासु ।

ताळवेताळ-पु० राजा विक्रमादित्य के सेवक, दी वेताल ।

तालमकांण (मखांण)-पु० एक औषधि विशेष ।

तालमान-पु० ६४ कलाओं में से एक ।

ताळमेळ-पु० १ स्वर-ताल का संयोग । २ मेल-मिलाप । ३ परस्पर निर्वाह होने की अवस्था ।

ताळयर-पु० [सं० तालनर] १ एक मानव जाति (जैन) । २ नट या नृत्यकारों का एक वर्ग । ३ ताल देने वाला ।

तालरंग-पु० एक प्रकार का वाजा ।

तालर, तालरौ-पु० १ कंकरीली ऊसर भूमि, मैदान । २ छोटा गड्ढा, पोखरा ।

ताळलक्षण (लखण, लखन)-पु० [सं० ताललक्षण] तालध्वजी, बलराम, भीष्म ।

तालवन-पु० [सं०] ताड़ वृक्षों वाला जंगल ।

ताळवाही-पु० [सं० तालवाही] भाँझ, मजोरा आदि वाद्य ।

ताळविमाळ-वि० नष्ट-भ्रष्ट, लुप्त ।

ताळवी-वि० [सं० तालवी] तालु संबंधी । -पु० तालु से उच्चरित होने वाला वर्ण ।

तालविलंब-पु० नारियल ।

ताळवी-पु० [सं० तालु] मुंह के अन्दर की ऊपरी सतह, तालु ।

ताळसम-पु० ताल के अनुसार स्वर ।

तालांक-पु० [मं०] बलराम ।

ताळा-स्त्री० १ करताल, ताली । २ देखो 'ताळ' । --नर-स्त्री० नाच गान करने वाली जाति ।

ताळातोड़-पु० धोर ।

ताळाघारी-वि० भाग्यशाली ।

ताळाब-देखो 'ताळाब' ।

ताळाबिळद (बुळंद)-देखो 'ताळविलंद' ।
 ताळाबेली-स्त्री० बेचैनी, परेशानी ।
 ताळायर-देखो 'ताळयर' ।
 ताळायरकम्म-पु० [सं० तालचर कम्म] ताल क्रिया (जैन) ।
 ताळावयाडणी-स्त्री० [सं० तालोद्घाटनी] ताल प्रगट करने वाली विद्या (जैन) ।
 ताळाबिळद-वि० भाग्यशाली, धनी ।
 ताळि-स्त्री० १ समय । २ देखो 'ताळी' ।
 तालिब-वि० [अ०] १ चाहने वाला, जिज्ञासा करने वाला ।
 २ हूँदने वाला, तलाश करने वाला ।
 तालिस-वि० [सं० तादृश] समान, वैसा, उसी प्रकार का ।
 ताळी-स्त्री० [सं० ताली] १ ताले की कुंजी, चाबी । २ हथेली करतल । ३ करतल ध्वनि । ४ ध्यानावस्था, समाधि ।
 ५ छोटा तालाब । ६ छोटा ताला । ७ ताड़ी वृक्ष । ८ समय, वेला । ९ छः मात्रा का एक छन्द ।
 ताळी-स्त्री० १ खलिहान के लिये तैयार की गई भूमि ।
 २ खलिहान में पड़ा अनाज का ढेर । ३ जागीरदार द्वारा खलिहान में अनाज के रूप में लिया जाने वाला कर ।
 ४ गिलहरी ।
 ता'ळी-देखो 'तासळी' ।
 तालीकी-पु० १ सनद, पट्टा, जागीरनामा । २ देखो 'तालुकी' ।
 ताळीतड़-स्त्री० करतल ध्वनि ।
 ताळीपत्र-देखो 'ताळीसपत्र' ।
 तालीमखानो-पु० शिक्षण संस्था और गाठशालाओं की देख-भाल करने वाला विभाग ।
 ताळीहर-पु० महादेव ।
 तालु-पु० १ मजीरा, भांभ । २ तालु, तालव्य ।
 ताळुकंटक-पु० बच्चों के तालु का एक रोग ।
 तालुक-पु० [अ० तम्रलुक] १ सम्बन्ध, रिश्ता । २ लगाव, सम्पर्क । ३ बड़ा इलाका । —दार-पु० बड़े इलाके का अधिपति, अधिकारी । —दारी-पु० उक्त अधिकारी का पद ।
 तालुकी-पु० [अ० तम्रलुक] बहुत से मोर्जों की जमीन, बड़ा इलाका ।
 ताळुप (पी)-देखो 'ताळपी' ।
 ताळुसोख-पु० [सं० तालुशोध] तालु सूखने का एक रोग ।
 ताळू, ताळूड, ताळूझी-देखो 'ताळवी' ।
 ताळूकंठ-पु० पुरुषों के तालु में होने वाला एक रोग विशेष ।
 ताळूफाड़-पु० हाथियों के तालु का एक रोग ।
 ताळूरव्यव-पु० छप्पय छंद का एक भेद ।
 ताळेर-वि० १ भाग्यशाली । २ धनी, ऐश्वर्यवान ।
 तालोटा-पु० एक वैवाहिक लोक गीत (पुष्करणा) ।

ताळोवळी, ताळोवीळी-स्त्री० १ व्याकुलता, बेचैनी ।
 २ उन्मुक्तता ।
 ताळी-पु० [सं० तालक] १ लोहे, पीतल आदि का बना उपकरण, ताला, कुंफ । [अ० ताचय] २ भाग्य ।
 ३ ललाट ।
 ता'ळी-देखो 'तामळी' ।
 ताव-पु० [सं० ताप] १ गर्मी, उष्णता । २ ताप, आंच ।
 ३ गुस्सा, क्रोध । ४ जोग, आवेश । ५ उत्साह, उमंग ।
 ६ ज्वर, बुखार । ७ कष्ट, पीड़ा, संताप । ८ तेज, ओज ।
 ९ पराक्रम । १० सूर्य का ताप, घूप । ११ जोर, दबाव ।
 १२ प्रकाश, चमक । १३ शीघ्रता, तेजी । १४ भय, आतंक ।
 १५ गति चाल । —कि० वि० १ तब, तब तक ।
 २ तरह से ।
 ताकलेत-पु० [सं० ताप क्षेत्र] सूर्य के प्रकाश का क्षेत्र । (जैन)
 तावख-देखो 'ताविधि' ।
 तावड़, तावड़ियी-देखो 'तावड़ी' ।
 तावड़ी, तावडि, तावडी, तावडू-स्त्री० [सं० ताप] १ सूर्य का प्रकाश, घूप, गर्मी । २ ज्वर, बुखार ।
 तावणियो-पु० [सं० ताप] धी तपाने या साग बनाने का मिट्टी का छोटा पात्र ।
 तावणी-१ देखो 'तपणी' । २ देखो 'तावरियो' ।
 तावणीय-वि० [सं० तापनीय] तापने योग्य, तपाने योग्य ।
 तावणी (बी)-कि० [सं० तापन] १ तापना, गर्म करना ।
 २ कष्ट देना, मताना ।
 तावत-कि० वि० [सं० तावत्] १ उतने काल तक, तब तक ।
 २ उतनी दूरी तक, वहाँ तक ।
 तावतप-पु० ज्वर, बुखार आदि बीमारी ।
 तावदान-देखो 'तावदान' ।
 ताव-भाव-पु० उपयुक्त अवसर, मौका । —वि० थोड़ा सा, जरासा ।
 तावली(बी)-कि० ज्वर होना, बुखार आना ।
 तावलीयो-वि० ज्वर पीड़ित, बुखार से पीड़ित ।
 तावळी-देखो 'उतावळी' ।
 तावली-वि० ज्वर ग्रस्त ।
 तावस-देखी 'तापस' ।
 तावसा-स्त्री० जैन पुनियों की एक शाखा ।
 तावह-स्त्री० नौकरी, सेवा ।
 तावान-पु० [फा० तावान] दण्ड स्वरूप, क्षति-पूर्ति में दी जाने वाली वस्तु ।
 ताविख, ताविखि, (खो)-[सं० ताविषी] स्त्री० १ देव कन्या ।
 २ पृथ्वी ।
 ताविच्छ-स्त्री० [सं० तापिच्छ] तमाल वृक्ष ।

तावीज

(५७९)

तिउण

तावीज-पु० [ग्र० तअवीज] १ तंत्र-मंत्र लिखित कागज, गंडा ।
 २ सोने, चांदी आदि धातु की छोटी डिबिया जिसमें उक्त गंडा डाल कर बांधा या पहना जाता है ।
 तावीली-पु० १ एक प्रकार का आभूषण । २ देखो 'तावीज' ।
 तावुरि, तावुरी-पु० वृष राशि ।
 ताव-क्रि० वि० विषय में, संबंध में ।
 तावौ-देखो 'तावी' ।
 तास-स्त्री० [ग्र०] १ पतले गत्ते पर छपे हुए खेलने के वाहन पत्ते, ताश । २ एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा । [ग्र० तासीर] ३ प्रभाव, असर । [सं० त्रास] ४ कष्ट, पीड़ा, संताप । ५ भय, आतंक । ६ मोह, तृष्णा । —सर्व० [सं० तस्य] उस, वह । —क्रि० वि० इस प्रकार, इस तरह ।
 तासक-देखो 'तामली' ।
 तासकारी-वि० [सं० त्रास-कारी] १ नाश करने वाला, मिटाने वाला । २ सताने वाला । ३ असर या प्रभाव डालने वाला ।
 तासतु, तासती-पु० [ग्र० तास] एक प्रकार का जरदोजी वस्त्र ।
 तासना-स्त्री० [सं० त्रास] पीड़ा, कष्ट, संताप ।
 तासली-स्त्री० थालीनुमा छोटा पात्र । तश्तरी, रकाबी ।
 तासली-पु० कांसी या पीतल का, चौड़े मुंह का बड़ा कटोरा ।
 तासि-वि० [सं० त्रासिन] जीम्रो और जीने दो वाली भावना रखने वाला ।
 तासिय-वि० [सं० त्रासित] कष्ट प्राप्त, संतप्त ।
 तासियाली, तासियी-वि० [सं० तृपित] १ प्यासा, तृपातुर । २ जोभी । —पु० दो दिन प्यासा व तीसरे दिन पानी पीने वाला पणु ।
 तासीर-स्त्री० [ग्र०] १ असर, प्रभाव । २ गुण । ३ शारीरिक प्रकृति ।
 तासीसा-पु० एक छन्द विशेष ।
 तामु-सर्व० उस, उमको ।
 तामू, तासौ-पु० [ग्र० तास] १ चमड़े से मंडा एक वाद्य विशेष । २ कांसी का बना एक भीभा । ३ तावे आदि मिश्र धातु का बना बड़ा कटोरा । ४ अभाव, कमी । ५ प्यासा पणु । ६ जल-संकट ।
 ताह-स्त्री० १ तेज गर्मी, उष्णता । २ देखो 'तांह' ।
 ताहजा-सर्व० तेरा, तेरे, तुम्हारे ।
 ताहम-ग्रन्थ० [फा०] तो भी, तिम पर भी ।
 ताहरइ-सर्व० तेरे ।
 तारहउ-देखो 'ताहरी' ।
 ताहरां, ताहरि-क्रि० वि० तब ।
 ताहण (ह, रुं, रुं)-देखो 'ताहरी' ।
 ताहरे (रं)-क्रि० वि० तब, तदुपरांत ।

ताहरी-सर्व० (स्त्री० ताहरी) तेरा ।
 ताहो-सर्व० उस, वह । —क्रि० वि० तहां ।
 ताहे-क्रि० वि० तब ।
 तितिड, तितिडि, तितिडिका, तितिडीका-स्त्री० [सं०] इगली ।
 तितिणभ, तितिणयी-वि० १ पतला-दुबला, क्षीण काय । २ तुनक मिजाज ।
 तितुकतीरथ-पु० [सं० तितुकतीर्थ] ब्रज मंडल के अतगंत एक तीर्थ ।
 तितुय-पु० [सं० तितुक] १ ग्यारहवें तीर्थंकर का चैत्य वृक्ष । २ एक प्रकार का वृक्ष ।
 तिदू-पु० तेंदू का पेड़ ।
 निमची-स्त्री० १ तीन पायों की मेज । २ छोटी तिपाई । ३ तीन पायों का किसी पात्र के लिये बनाया गया आधार ।
 तिय-सर्व० उस ।
 तियाली (स)-देखो 'तयालीस' ।
 तियाली-पु० ४३ वां वर्ष ।
 तियासी-देखो 'तइयासी' ।
 तिंधरी-पु० एक छोटा जीव, किंगुर ।
 तिंदार-पु० त्योहार, पर्व, मांगलिक दिवस ।
 तिंवारी-स्त्री० त्योहार का भोजन या अन्न जो मेहत्तर आदि को दिया जाता है ।
 तिंवारीक-मरजावीक-पु० पोशाक एवं शस्त्रादि से सज्जित हाकर दरवार में जाने की एक प्रथा ।
 तिंवाळ(ली)-देखो 'तंवळाटी' ।
 तिंह-क्रि० वि० वहां, उसमें ।
 तिंहा-क्रि० वि० वहां ।
 तिंही-क्रि० वि० वैसे, तैसे । —सर्व० उसने ।
 तिंह, तिंह (हं, हूं)-वि० तीन, तीनों ।
 ति-सर्व० १ उम, वह । २ देखो 'तीन' । ३ देखो 'ती' ।
 तिअ-देखो 'तिय' ।
 तिअतर-वि० तिहत्तर, सत्तर व तीन ।
 तिअतरी-पु० तिहत्तर का वर्ष ।
 तिअसिंद-पु० [सं० त्रिशेन्द्र] इन्द्र ।
 तिआर-देखो 'तयार' ।
 तिआळ-वि० तयाळीस ।
 तिहंबिया-पु० तीन इंद्रिय जीव ।
 तिइक्खा-स्त्री० [सं० तितिक्षा] १ क्षमा । २ सहिष्णुता ।
 तिउण(उ)-वि० [सं० त्रिगुण] १ त्रिगुणा । २ देखो 'त्रिगुण' ।

तिउल

(५५०)

तिघट

तिउल-वि० [सं० त्रितुल] मन, वचन और काया इन तीनों की तुलना कर जीतने वाला ।
 तिऊ-क्रि० वि० बैसे, उस प्रकार ।
 तिऊए-देखो 'त्रिकूट' ।
 तिकडम-पु० उपाय, तरकीब ।
 तिकल-सर्व० उस, वह । उसने ।
 तिकत-वि० [सं० तिकत] १ तीक्ष्ण, तेज । २ सूत । ३ चरपरा ।
 तिकम-देखो 'टीकम' ।
 तिकर-स्त्री० कटारी ।
 तिकरि-सर्व० उस, वह । -क्रि० वि० के लिये, वास्ते ।
 तिका-सर्व० वे, उन ।
 तिका-स्त्री० वह, उस ।
 तिकाळ-देखो 'त्रिकाळ' ।
 तिकावरक्तक-पु० १ कटि पर तीन भौरी वाला घोड़ा ।
 तिकी-सर्व० १ वह, उस । २ देखो 'तिगी' ।
 तिकू-तिकू-सर्व० वह, उस ।
 तिकूणी-वि० [सं० त्रिकोणी] तीन कोण वाला । -पु० जैसलमेर के दुर्ग का नाम ।
 तिकू-देखो 'तिकू' ।
 तिकूड-देखो 'त्रिकूट' ।
 तिके(कं)-सर्व० वे, उन ।
 तिकोरी-पु० १ तीन कोनों का एक छोटा लंबा ओजार । २ बड़ई का एक ओजार ।
 तिको-सर्व० (स्त्री० तिकी) वह, उस ।
 तिक्की-१ देखो 'तिकी' । २ देखो 'तिगी' ।
 तिख-वि० [सं० तीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज । २ वेगवान । ३ कठोर । ४ देखो 'तीखी' ।
 तिखुतौ-पु० [सं० त्रिकृत्वस्] तीन बार ।
 तिखुत्ता-पु० [सं० त्रिकृत्वस्] तीन प्रदक्षिणा देकर वन्दना करने की क्रिया । (जैन)
 तिक्त-वि० [सं०] तीता, कड़ुआ । -पु० [सं०] १ पित पापड़ा २ कुटज ।
 तिखग-पु० [सं० तक्षक] सर्प, नाग ।
 तिखडो-वि० तीन मंजिल का, तिमजला । -पु० तीसरी मंजिल ।
 तिख-वि० १ तीक्ष्ण, तीखा । २ देखो 'तक्षक' ।
 तिखट-पु० तराने के समान गाया जाने वाला एक गीत ।
 तिखण-स्त्री० [सं० तीक्ष्ण] १ मिचं, मिरची । २ देखो 'तीक्ष्ण' । (जैन)
 तिखता-स्त्री० [सं० तीक्ष्ण] काली मिचं ।
 तिखनख-पु० तीखे पैरों वाला घोड़ा ।

तिखराव-पु० [सं० तक्षक-राज] १ शेषनाभ, नागराज । २ तक्षक, नाग । ३ कद्रु पुत्र कालिय नाग ।
 तिखूंटो, तिखूणी-पु० १ मोने-चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का आभूषण । २ देखो 'तिकूणी' ।
 तिखणो-वि० [सं० तीक्ष्ण] १ तीखा, तीक्ष्ण । २ देखो 'तिकूणी' ।
 तिग-स्त्री० १ कमर, कटि । २ कमर के नीचे का भाग । ३ हिलने-डुलने की क्रिया । ४ लड़खड़ाने की क्रिया । ५ तीन मार्ग का संगमस्थल ।
 तिगता-स्त्री [सं० तिकतम्] काली मिचं ।
 तिगतिगणो (बो)-क्रि० १ लड़खड़ाना, डगमगाना । २ लटकना । ३ देखो 'तिगतगणो' (बो) ।
 तिगतिगणो (बो), तिगतिगणो (बो)-क्रि० १ लटकाना । २ धक्का मार कर संतुलन बिगाड़ना ।
 तिगम-पु० [सं० तिगम] १ वज्र । २ पिप्पली । ३ प्रत्येक चरण में २६ मात्रा का छंद विशेष । ४ गर्भी । [सं० तिगमकर] ५ सूर्य । -वि० [सं० तिगम] तीक्ष्ण, तेज ।
 तिगमअंस, (अमोसु) तिगमांसु, तिगमहर-पु० [सं० तिगमांशु] १ सूर्य, रवि । २ अग्नि । ३ शिव ।
 तिगरण-पु० [सं० त्रिकरण] मन, वचन और काया । (जैन)
 तिगरी-स्त्री० [सं० तुग्रही] १ सकट कष्ट, पीड़ा । २ जन संकट ।
 तिगरी-पु० १ फूटे हुए मिट्टी के पात्र का बड़ा खण्ड । २ खण्ड, भाग ।
 तिगिच्छकूड-पु० [सं० तिगिच्छकूड] पर्वत विंशति ।
 तिगिच्छिद्रह-पु० [सं० तिगिच्छिद्रह] निषेध पर्वत के ऊपर का भाग ।
 तिगिच्छ, तिगिच्छग-पु० चिकित्सक । (जैन)
 तिगिच्छा-स्त्री० चिकित्सा । (जैन)
 तिगी-स्त्री० १ तीन बूटियों द्वारा ताश का पत्ता । २ अत्यन्त पतली टहनी ।
 तिगुडय-स्त्री० [सं० त्रिकटुक] सूँठ, कालीमिचं, पीपर ।
 तिगुत्त(त्तो)-पु० [सं० त्रिगुप्ति] मन, वचन और काया से गुप्त, सुरक्षित । (जैन)
 तिगुभिगु-पु० सूर्यास्त से ठीक पहले का समय ।
 तिगी-पु० १ तीन का वर्ष । २ तीन का अंक ।
 तिगी-देखो 'तिगी' ।
 तिगम-देखो 'तिगम' ।
 तिगमकर-पु० [सं०] सूर्य ।
 तिगमता-स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता, तेजी ।
 तिगमवीधिति-पु० [सं०] सूर्य ।
 तिगमन्यु-पु० [सं०] शिव, महादेव ।
 तिगमरस्मि-पु० [सं० तिगमरश्मि] सूर्य ।
 तिघट-देखो 'तिवट' ।

तिङ्

(४८१)

तिथ

तिङ्-पु० १ निवास स्थान । २ जलाशय । ३ भाग, हिस्सा ।
४ शाखा ।

तिङ्कणी (बो)-देखो 'तङ्कणी' (बो) ।

तिङ्की-स्त्री० तेज धूप, धूप की प्रचरता ।

तिङ्की-देखा 'तङ्की' ।

तिङ्णी (बो)-देखो 'तङ्णी' (बो) ।

तिङ्गोतरसड, तिङ्गोतरसौ-वि० एक सौ तीन, एक सौ व तीन ।
-पु० एक सौ तीन का अंक, १०३ ।

तिङ्गु-पु० [सं० त्रिचक्षु] चक्षु ज्ञान, परमश्रुत ज्ञान रखने
वाला माधु । (जैन)

तिङ्ग, तिङ्गा-स्त्री० १ तलवार । २ कटार ।

तिङ्गी (बो)-देखो 'तङ्गी' (बो) ।

तिङ्गी-देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गाव-पु० [फा०] किसी धार पदार्थ का तरल रूप में
अभ्यन्त मार ।

तिङ्गाबी-वि० [फा० तेजाबी] तेजाब संबंधी ।

तिङ्गारत-स्त्री० [अ०] व्यापार या रोजगार ।

तिङ्गारती-वि० [अ०] व्यापार या रोजगार संबंधी ।

तिङ्गारसी-पु० अफीम ।

तिङ्गारी-पु० १ खस-खम, पोस्त । २ पोस्त के बारीक दाने ।
३ तीसरी बार निकाला हुआ शराब ।

तिङ्गीणी (बो)-देखो 'तङ्गीणी' (बो) ।

तिङ्गीड़ी. तिङ्गीरी-स्त्री० लोहे की मोटी चादर या फौलाद की
बनी मजबूत सड़क, जिसमें गहने या रुपये रखे जाते हैं ।

तिङ्ग, तिङ्गु-पु० १ पक्ष । २ देखो 'तीङ्ग' ।

तिङ्गा-स्त्री० १ चिनगारी । २ बुरा मानने का भाव ।

तिङ्गा-पु० [सं० तृण] १ तिनका, तृण, तंतु । २ घास । ३ घास
फूस की बनी वस्तु । -वि० [सं० त्रिणि] तीन । -सर्व०
१ वह, उम् । २ इस । -क्रि० वि० इसलिये । इससे ।

तिङ्गकली. तिङ्गी, तिङ्गखली, तिङ्गखी-पु० [सं० तृण] १ घास
का तृण, तंतु । २ घास ।

तिङ्गा, तिङ्गागर (गारी)-देखो 'तिङ्गांग' ।

तिङ्गाणी-देखो 'तिङ्गाणी' ।

तिङ्गावत-पु० [सं० तृणावत] श्रीकृष्ण द्वारा वधित एक दैत्य ।

तिङ्गी (जी)-१ देखो 'तिङ्गी' । २ देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गी-प्रत्यय के । -सर्व० उन ।

तिङ्गी-वि० दुबला, पतला, कृश । -पु० [सं० तृण] १ तिनका,
तृण । २ अँद, मूराख ।

तिङ्गी-वि० तान ।

तिङ्गी-स्त्री० तृण ।

तिङ्गी-क्रि० वि० १ वहाँ, तहाँ । २ देखो 'तिथि' ।

तिङ्गी-स्त्री० नृत्य के ढोल ।

तिङ्गी-देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गी-क्रि० वि० इतने में, तब तक । -वि० इतना, उतना ।

तिङ्गी-तिङ्गी-वि० १ विखरा हुआ, छिन्न-भिन्न । २ अस्थि-
वस्थित ।

तिङ्गी-क्रि० वि० तब तक । इतने में ।

तिङ्गी-वि० (स्त्री० तिङ्गी) उतना, जितना ।

तिङ्गी-स्त्री० रंग-विरंगे पंखों वाला एक छोटा पतंगा ।

तिङ्गी-देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गी-स्त्री० [सं० तिङ्गी] १ क्षमता, महिष्णुता, धैर्य ।
२ त्याग की भावना ।

तिङ्गी-वि० [सं० तिङ्गी] १ धैर्यवान, सहनशील । २ त्यागी ।

तिङ्गी-देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गी-स्त्री० [सं०] १ सहनशीलता, धैर्य, क्षमता । २ त्याग ।

तिङ्गी-वि० [सं०] १ सहनशील, धैर्यवान । २ त्यागी । -पु०
पुरुषोत्तम एक राजा ।

तिङ्गी-क्रि० वि० १ तब तक, उम समय पर्यन्त । २ वहाँ, उधर ।

तिङ्गी-वि० (स्त्री० तिङ्गी) उतना, उस परिमाण में ।

तिङ्गी-देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गी-पु० [सं० तिङ्गीनामन्] नाम और कर्म की एक
प्रकृति ।

तिङ्गी (री)-१ देखो 'तीतर' । २ देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गी-१ देखो 'तिङ्गी' । २ देखो 'तिङ्गी' ।

तिङ्गीकर-देखो 'तीरथंकर' ।

तिङ्गी-पु० [सं० त्रिस्थ] १ श्रावक-श्राविकाओं का समूह ।
२ देखो 'तीरथ' । ३ देखो 'तिथ' ।

तिङ्गीकर, तिङ्गीकर-देखो 'तीरथंकर' ।

तिङ्गीनाह-देखो 'तीरथनाथ' ।

तिङ्गीयर-देखो 'तीरथंकर' ।

तिङ्गीहिव-पु० [सं० तीर्थोधिप] चार प्रकार के तीर्थों के
अधिपति । (जैन)

तिङ्गी-क्रि० वि० १ वहाँ । २ देखो 'तिथ' ।

तिङ्गीय-वि० [सं० तीर्थीय] दर्शन शास्त्र संबंधी । दार्शनिक ।

तिङ्गी-देखो 'तीरथ' ।

तिङ्गीगाळीय-वि० [सं० तीर्थोद्गालित] दर्शन का ज्ञाता
दार्शनिक ।

तिङ्गीकर-देखो 'तीरथंकर' ।

तिथ, तिथि-स्त्री० [सं० तिथि] १ चन्द्र दिवस, तारीख,
दिनांक । २ शक या विक्रमी संवत् के अनुसार प्रति मास
के पूर्वाह्ण या उत्तराह्ण का कोई दिन । ३ वृत्तान्त,
गाथा, हाल, खबर । ४ समय । ५ पन्द्रह की संख्या ।
-पति पु० प्रत्येक तिथि का स्वामी देवता । -पञ्च
-पु० पंचांग, कलेण्डर ।

तिथि-क्रि० वि० कहाँ । वहाँ ।

तिथी-देखो 'तिथ' ।

तिथे (यै)-क्रि० वि० कहा ।

तिदड-पु० [सं० त्रिदण्ड] मंत्र्यासियों का एक उपकरण ।

तिदंडि (डी)-पु० [सं० त्रिदण्डिन्] तिदंडधारी मंत्र्यासी ।

तिदिस, तिदिसा-देखो 'त्रिदिस' ।

तिदुल-वि० [सं० त्रिदोल] मन, वचन व काया को झुलाने वाला । (जैन)

तिद्व-स्त्री० हल्को नींद, तन्द्रा ।

तिधारी-स्त्री० बड़ई का एक औजार ।

तिधारीकटारी-स्त्री० आभूषणों में खुदाई करने का एक औजार ।

तिधारी-पु० [सं० त्रिधार] १ झूहर जानि का एक वृक्ष ।
२ एक प्रकार का भाला ।

तिन-सर्व० १ उन । २ देखो 'तिण' ।

तिनका-स्त्री० नथनी ।

तिनकड़ी, तिनको-देखो 'तिणकली' ।

तिनगनी-स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

तिनवड-स्त्री० [सं० त्रिनवति] ९३ की संख्या । (जैन)

तिना-पु० एक छन्द विशेष ।

तिनि-वि० [सं० त्रीणि] तीन ।

तिन-वि० १ नम, तर, आर्द्र । २ देखो 'तिन' ।

तिन्नाख-पु० [सं० त्रिज्ञान] पति, श्रुति, और अवधि के तीन ज्ञान (जैन) ।

तिन्नि-वि० [सं० त्रिणि] तीन । (जैन)

तिन्ह, तिन्ह, तिन्हां-सर्व० उन ।

तिपंच-वि० [सं० त्रिपंच] पन्द्रह, १५ ।

तिपड़ो-पु० १ भवन की तीसरी मंजिल । २ दूसरी मंजिल की खुली छत ।

तिपति-स्त्री० [सं० तृप्ति] संतोष, तृप्ति ।

तिप्नी-स्त्री० एक प्रकार की घास । -वि० [सं० त्रि+पन्नी] तीन पत्तों वाली ।

तिपाई-स्त्री० [सं० त्रि-पाद] १ तीन पायों की मेज । २ तीन पायों का कोई आधान ।

तिपाट-पु० क्रम से तीसरी बार लिया जाने वाला अफीम ।

तिपाटो-पु० वह स्थान जहाँ तीन गांवों की सीमा लगती है ।

-वि० १ तीन तह या परत वाला । २ तीन हिस्सों वाला ।

तिपुंज-पु० [सं० त्रिपुंज] शुद्ध, अशुद्ध व मिश्र तीन प्रकार के पुद्गलों का समूह । (जैन)

तिपुर-देख 'त्रिपुर' ।

तिपुरारि(री)-देखो 'त्रिपुरारि' ।

तिपोकड़-पु० तीन लड़कियों के बाद जन्मने वाला लड़का या लड़की ।

तिपोछियौ-पु० [सं० त्रि-प्रतोली] १ वह स्थान जहाँ एक माघ तीन बड़े द्वार या पोलें बनी हों । २ राजमहल का प्रथम प्रवेश द्वार ।

तिफास-पु० [सं० त्रिस्पर्श] तीन स्पर्श दोष । (जैन)

तिवणौ-देखो 'तिवणी' ।

तिणौ (बी)-देखो 'तीवणौ' (बी) ।

तिबर-देखो 'तीव' ।

तिबरसी-पु० [सं० त्रि-वर्ष] ऊंटों का एक रोग ।

तिबारियौ-देखो 'तिवारौ' ।

तिबारी-स्त्री० [सं० त्रिद्वार] १ तीर, बन्दूक आदि चलाने के, दीवार में बने छेद । २ तीन द्वार या खिड़की का खुला बरामदा या कक्ष । ३ व्यापारियों से लिया जाने वाला कर ।
तिबारी-पु० १ तीन बार लिया जाने वाला अफीम । २ तीसरी बार निकाला हुआ मद्य । ३ तीन द्वार या खिड़की वाला कक्ष ।

तिब्बत-पु० हिमालय के उत्तर में स्थित एक देश ।

तिब्बती-पु० १ तिब्बत का निवासी । २ इस देश की भाषा ।
-वि० तिब्बत का, तिब्बत संबंधी ।

तिब-देखो 'तीव' ।

तिबवण-देखो 'त्रिभुवन' ।

तिमंगल-पु० [सं० तिमिगल्] १ बड़ा मत्स्य । २ बड़ी मछली ।
३ ठाट-बाट, झाड़म्बर ।

तिमंजळ (डी)-वि० तीन खण्ड का, तीन मंजिल का ।

तिम-क्रि० वि० १ तैसे, वैसे । २ त्योंही, तैसेही । -स्त्री० [सं० तिमि] १ एक बड़ी मछली । २ देखो 'तम' ।

तिमण-पु० [सं० तिमंगण] सूर्य ।

तिमची-देखो 'तिमची' ।

तिमणियो-पु० स्त्रियों के गले का आभूषण ।

तिमणौ-वि० (स्त्री० तिमणी) तिगुणा ।

तिमतिमाट-स्त्री० १ क्रुद्ध होने का भाव, तमतमाहट । २ प्रबल चमक ।

तिममंगल-देखो 'तिमंगल' ।

तिमर-पु० [सं० तिमिर] १ अंधेरा, अंधकार । २ तैमूरलंग, बादशाह । ३ गुफा, खोह, कन्दरा ।

तिमरखतैन, तिमरत, तिमरहर-पु० सूर्य, भानु ।

तिमराण-पु० अंधेरा, अंधकार ।

तिमरार, तिमरारि-पु० सूर्य ।

तिमरि-देखो 'तिमर' ।

तिमहर-पु० सूर्य ।

तिमहर-पु० [सं० त्रिमधुर] घी, शक्कर और शहद ।

तिमासिय

(५६३)

तिरवाळी

तिमासिय (घो)—वि० [सं० त्रैमासिक] तीन मास का । -पु० तीन मास का गर्भ ।
 तिमासियभक्त—पु० [सं० त्रिमासिकभक्त] तीन मास का उपवास ।
 तिमिगळ, (गिळ)—देखो 'तिमगळ' ।
 तिमि—देखो 'तिम' ।
 तिमिकोस—पु० ममुद्र ।
 तिमिज—पु० [सं०] तिमि मछली से प्राप्त होने वाला मोती ।
 तिमिध्वज—पु० शंवर नामक दैत्य ।
 तिमिर—देखो 'तिमर' ।
 तिमिरनुद (भिद, रिपु, हर) तिमिरार, तिमिरारि, तिमिरारो—पु० सूर्य ।
 तिमिराय—पु० एक प्रकार का अम्र ।
 तिमिसा (स्सा)—स्त्री० [सं० निमिसा] वैताल्य पर्वत की एक गुफा ।
 तिमोस—पु० [सं० तिमोश] १ समुद्र । २ बड़ा मत्स्य, तिमिगल ।
 तिय, तिय—स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, औरत । २ पत्नी, भार्या । ३ देखो 'त्रिक' । -वि० [सं० तृतीय] तीन । -सर्व० उस, वह ।
 तियउ—सर्व० उस ।
 तियलोय—देखो 'त्रिलोक' ।
 तियस—पु० [सं० त्रिदश] देव, देवता ।
 तियह—पु० [सं० त्रि-अहन्] तीन दिन ।
 तियां—क्रि० वि० १ तैसे, इस प्रकार । २ वहाँ, उस जगह । -सर्व० उन, वे ।
 तिया—देखो 'तिय' ।
 तियाग—देखो 'त्याग' ।
 तियागी—देखो 'त्यागी' ।
 तियार—क्रि० वि० १ उम ममय, तब । २ देखो 'तैयार' ।
 तियाळीस—देखो 'तंयाळीस' ।
 तिये—सर्व० उम, उसकी ।
 तियोतर—देखो 'तिहोतर' ।
 तियोतररी—देखो 'तिहोतररी' ।
 तियो—पु० १ तीन । २ देखो 'तीयो' । -वि० १ तीसरा । २ प्यासा, तृषातुर । -सर्व० उस ।
 तिरंगी—वि० (स्त्री० तिरंगी) तीन रंगों वाला । -पु० भारत का राष्ट्रीय ध्वज ।
 तिरंवी—वि० तैरने वाला, तैराक ।
 तिर—देखो 'तिन्स' ।
 तिरग्र—वि० [सं० तिर्यक] पशु, पक्षी आदि ।

तिरकाल—पु० [सं० त्रिकाल] १ भूत, भविष्य और वर्तमान काल । २ प्रातः, मध्याह्न व सायंकाल । -वि० मूर्ख, पागल ।
 तिरख (खा)—देखो 'तिरमा' ।
 तिरगस—देखो 'नरगस' ।
 तिरगुण—देखो 'त्रिगुण' ।
 तिरछुडड़ी—स्त्री० मणखंभ की एक कमरत ।
 तिरछाई—स्त्री० तिरछापन, यक्रना ।
 तिरछी बंठक—स्त्री० मालखंभ की एक कमरत ।
 तिरछीळ—वि० १ दुष्ट, बदमाश । २ कठोर हृदय ।
 तिरछी—वि० [सं० तिरघचीन] (स्त्री० तिरछी) १ टेढ़ा, वक्र, तिरछा जो सीधा न हो । बांका । २ कुटिल ।
 तिरजच, तिरजंची—पु० [सं० तिर्यञ्च, तिर्यक] १ पशु, पक्षी । २ सर्प । ३ मृत्यु लोक । ४ मध्य ।
 तिरजक—वि० तिरछा, टेढ़ा ।
 तिरणी—स्त्री० १ पेट में वायु के बढ़ने या आधिक पानी पीने से होने वाला तनाव, फुलाव । २ तैराकी ।
 तिरणू (णौ)—पु० तृण, तिनका ।
 तिरणो (बी)—क्रि० [सं० तृ] १ पानी पर तैरना । २ पानी आदि द्रव पदार्थ पर ऊपर-ऊपर बहना या चलना । ३ पानी पर ठहरना, न डूबना । ४ उठार, होना, मोक्ष होना । ५ भुद्र प्राणियों का ऊपर-ऊपर हिलना-डुलना ।
 तिरथ—देखो 'तीरथ' ।
 तिरप—स्त्री० [सं० त्रि] १ नृत्य में एक प्रकार की ताल । २ नृत्य की मुद्रा, मंगिमा ।
 तिरपण—१ देखो 'तिरेपन' । २ देखो 'तरपण' ।
 तिरपत—वि० [सं० तृप्त] १ तृप्त, तुष्ट । २ संतुष्ट, आश्वस्त । ३ प्रसन्न, खुश ।
 तिरबंड—वि० बदमाश, घुत ।
 तिरबेणी (बेनी)—देखो 'त्रिवेणी' ।
 तिरमाळी—देखो 'तरवाळी' ।
 तिरमिरा—पु० [सं० तिमिर] १ कमजोरी के कारण दृष्टि मंदता । २ चकाचौंध ।
 तिरमिराणी (बी)—क्रि० चकाचौंध होना, चँधियाना ।
 तिरयण—पु० [सं० त्रिरत्न] मोक्ष के तीन रत्न-सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन व सम्यग् चरित्र ।
 तिरलोई, तिरलोक—पु० [सं० त्रिलोक] त्रिलोक, तीन लोक । —मणि—पु० सूर्य ।
 तिरलोफि (की)—स्त्री० [सं० तिर्यलोक] १ तीनों लोक । २ तिर्यकलोक ।
 तिरवाळी—देखो 'तरवाळी' ।
 तिरवाळी—पु० १ सूक्ष्म, बेहोशी, गण । २ देखो 'तरवाळी' ।

तिरवेणा

(५८४)

तिसकणी

तिरवेणा (वेणी)-देखो 'त्रिवेणी' ।
 तिरस. (ड,ई)-देखो 'तिरमा' ।
 तिरसठ-देखो 'तिरेसठ' ।
 तिरसठी-देखो 'तिरेसठी' ।
 तिरसणी (बी)-देखो 'तरसणी' । (बी) ।
 तिरसलणी (बी)-क्रि० फिसलना ।
 तिरसा-स्त्री० [सं० तृषा] तृषा, प्यास ।
 तिरसाणी (बी), तिरसावणी (बी)-देखो 'तरसाणी' (बी) ।
 तिरसातु-वि० तृषावान, प्यासा ।
 तिरसिध-१ देखो 'तरसीध' । २ देखो 'त्रमीध' ।
 तिरसू-क्रि० वि० तीसरे दिन ।
 तिरसूळ-देखो 'धिमूल' ।
 तिरसूळिषाळीलगाम-स्त्री० उड़ण्ड घोड़े को बश में करने के लिये मृद् में डाली जाने वाली कीलदार लगाम ।
 तिरसी-वि० [सं० तृणित] प्यासा, तृणित ।
 तिरस्कार-पु० [सं०] अपमान अनादर ।
 तिरस्थो-देखो 'तिरमा' ।
 तिरहुत-पु० [सं० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश ।
 तिरहुतियो-वि० तिरहुत प्रदेश का ।
 तिरां-क्रि० वि० १ तब । २ पाम, निकट ।
 तिराणवे-देखो 'तेराणू' ।
 तिराणवी-देखो 'तेराणवी' ।
 तिराणू-देखो 'तेराण' ।
 तिराई-देखो 'तेराई' ।
 तिराक-देखो 'तेराक' ।
 तिराणी (बी), तिरावणी (बी)-देखो 'तेराणी' (बी) ।
 तिरास-देखो 'त्रास' ।
 तिराह-अव्य० आहि-आहि । -पु० एक स्थान विशेष ।
 तिराही-स्त्री० तिराह नामक स्थान की बनी कटारी, तलवार ।
 तिरि, तिरिअ, तिरिबख, तिरियंब-देखो 'तिरजंत' ।
 तिरिय-१ देखो 'तिरजंत' । २ देखो 'तिरिया' ।
 तिरियलोग, (लोय)-पु० [सं० तिर्यग्लोक] मृत्यु लोक ।
 तिरिया-स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, औरत । २ पत्नी, भार्या ।
 तिरोड-पु० [सं० किरोड] मुकुट । (जंत)
 तिरोडी-वि० [सं० किरोटी] मुकुटधारी ।
 तिरुडि-स्त्री० १ उपजाऊ भूमि । २ तीर की पहुँच तक की दूरी या भूमि ।
 तिरेपन-वि० [सं० त्रिपंचाशत्] पचास व तीन, त्रेपन । -पु० पचास व तीन की संख्या, ५३ ।
 तिरेपनमी (बी)-वि० ५३ के स्थान वाला, ५२ के बाद वाला ।
 तिरेपनेक-वि० त्रेपन के लगभग ।

तिरेपनी-पु० ५३ का वर्ष ।
 तिरेसठ-वि० [सं० त्रिषष्टि] साठ व तीन । त्रेसठ । -पु० साठ व तीन की संख्या, ६३ ।
 तिरेसठमी (बी)-वि० त्रेसठ के स्थान वाला, ६२ के बाद वाला ।
 तिरेसठेक-वि० त्रेसठ के लगभग ।
 तिरेसठी-पु० ६३ का वर्ष ।
 तिरेह-वि० [सं० त्रिरेख] तीन रेखा वाला ।
 तिरेहण-वि० १ पार करने वाला, उद्धारक । २ रक्षक ।
 तिरै-क्रि० वि० तब । -पु० हाथियों के लिये बोला जाने वाला एक शब्द ।
 तिरोभाव-पु० [सं०] अदृश्यता, अदर्शन, गोपन ।
 तिरोभूत-वि० [सं०] गुप्त, अदृष्ट ।
 तिरोहित-वि० [सं०] १ छिपा हुआ, अंतर्हित, गुप्त । २ आच्छादित, ढका हुआ । ३ अस्त, डूबा हुआ । -पु० मुजफ्फरपुर व दरभंगा जिलों का एक प्रदेश ।
 तिलंग-पु० १ अंग्रेजी सेना का भारतीय सिपाही । २ देखो 'तैलग' ।
 तिलंगणी-स्त्री० तिलपपड़ी ।
 तिल-पु० [सं०] १ ढेर दो फुट का पीछा जिसके डोड़े लगकर उसमें दाने पकते हैं । २ उक्त पीछे का बीज, तिल । [सं० तिलक] ३ शरीर पर होने वाला बारीक काला मस्सा । ४ तिल के समान कोई छोटा टुकड़ा । ५ स्त्रियों के अंगों पर गोदी हुई काली बिंदी । ६ आँख की पुतली के बीच की बिंदी । ७ तिलक । ८ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ३१ वां ग्रह । -क्रि० वि० तिलमात्र ।
 तिलउ-देखो 'तिलक' ।
 तिलकंड-पु० एक प्रकार का पास ।
 तिलक-पु० [सं०] १ ललाट पर लगाया जाने वाला केसर, चंदन आदि का टीका । २ राज्याभिषेक, राजतिलक । ३ वैवाहिक संबंध स्थिर होने पर वस्त्राभूषण एवं अन्य भेंट के साथ वर के किया जाने वाला टीका । ४ स्त्रियों का एक आभूषण । ५ श्रेष्ठ व्यक्ति या चरित्र । ६ एक जाति विशेष का घोड़ा । ७ शरीर पर छोटा काला चिह्न । ८ वृक्ष विशेष । ९ दो मण का एक वृत्त विशेष । १० मुसलमान स्त्रियों का एक पहनावा । -कामोद-स्त्री० एक रागिनी विशेष ।
 तिलकड़ी-पु० १ एक घोड़ा विशेष । २ तिलक ।
 तिलकणी (बी)-क्रि० १ फिसलना, रपटना । २ मूलगना, प्रज्वलित होना ।
 तिलकणी (बी)-क्रि० १ टीका लगाना तिलक करना । २ राज्याभिषेक करना ।

तिलक-पद्येवड़ी

(२५५)

तिलाड़ी

तिलक-पद्येवड़ी-पु० मेंट स्वरूप दिया जाने वाला वस्त्र विशेष ।
 तिलकमग (मारण)-पु० नासिका, नाक ।
 तिलकमणी-स्त्री० चूड़ामणि, शिरोभूषण ।
 तिलकमुद्रा-स्त्री० [सं०] चंदन आदि के, विष्णु आयुधों के चिह्न ।
 तिलका-पु० एक वर्णिक छन्द विशेष ।
 तिलकायत-पु० १ वल्लभसम्प्रदाय का पीठाधीश । २ देखो 'टीकायत' ।
 तिलकारक-पु० [सं० तिल-कालक] देह पर तिल का काला चिह्न ।
 तिलक-देखो 'तिलक' ।
 तिलगांण-देखो 'तिलंग' ।
 तिलड़ी-१ देखो 'तील' । २ देखो 'तेलड़ी' ।
 तिलड़ी-१ देखो 'तेलड़ी' । २ देखो 'तिल' ।
 तिलचावळी-स्त्री० तिल व चावलों की खिचड़ी ।
 तिलट-पु० तिलहन, तिल ।
 तिलताम-स्त्री० [सं० तिलोत्तमा] १ एक अप्सरा विशेष । २ कोई अप्सरा ।
 तिलपपड़ी(पापड़ी)-स्त्री० गुड़ या शक्कर की चासनी में तिल मिला कर बनाई पपड़ी ।
 तिलभंगक-पु० एक आभूषण विशेष ।
 तिलम-वि० १ अपूर्ण । २ अद्भुत, विचित्र ।
 तिलमंडेस्वरी-स्त्री० १ प्रयाग वट के पास शिवजी का स्थान ।
 तिलमिलाट-स्त्री० १ क्रोध पूर्ण अवस्था । २ सनकीपन ।
 तिलमिलाणी (ढी)-क्रि० १ क्रोध होना । २ क्रोध में तपतमाना ।
 तिलवट/वठ-पु० १ नाश, संहार । २ तिलों के योग से बना खाद्य विशेष ।
 तिलवडो-स्त्री० एक वृक्ष विशेष ।
 तिलवा-स्त्री० १ तिलों की बोवाई । २ तिलों की बोवाई का क्षेत्र ।
 तिलवाड़ा-स्त्री० १६ मात्रा की एक त्रयी ताल ।
 तिलवाड़ी-देखो 'तिलवा' ।
 तिलवाण-वि० भीगा हुआ, तर, सगावारा ।
 तिलवात-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
 तिलसकरांत (सकरांति, ती)-स्त्री० मकर संक्रांति का पर्व ।
 तिलसांकळी-स्त्री० तिल ढालकर आटे की बनाई हुई मोठी पपड़ी ।
 तिलगण-स्त्री० [सं० तिलागि] तिल के पौधों की घास ।
 तिलांजळी-स्त्री० [सं० तिलांजलि] मृतक को पीछे तर्पण आदि में तिल, डाल आदि के साथ दी जाने वाली अंजलि ।
 तिलाकारी-स्त्री० मोने का मुलम्मा चढ़ाने का कार्य ।
 तिलाकूटी-स्त्री० तिलों को कूट कर बनाया खाद्य पदार्थ ।

तिलार-पु० एक पक्षी विशेष ।
 तिलिक-देखो 'तिलक' ।
 तिलिम, तिलिमा-पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।
 तिलियक-वि० किंचित, जरा ।
 तिलियो-वि० १ दुबल, क्षीण, कृश । २ तिल संबंधी ।
 तिलो-१ देखो 'तिल' । २ देखो 'तिल्ली' । ३ देखो 'तीली' ।
 तिलुषक-पु० [सं० त्रैलोक्य] स्वर्ग, पाताल व मृत्युलोक ।
 तिलू-पु० १ तूण, तिनका । २ घास का तिनका ।
 तिलेक-वि० किंचित, थोड़ा ।
 तिलोश-देखो 'त्रिलोक' ।
 तिलोड (ई)-देखो 'त्रिलोकी' ।
 तिलोक-देखो 'त्रिलोक' । --पति='त्रिनोकपति' ।
 तिलोकी-देखो 'त्रिनोकी' ।
 तिलोड़ी-स्त्री० [सं० तैलकुटी] तेल रखने का पात्र ।
 तिलोड-स्त्री० तिलकूटी ।
 तिलोत्तमा, तिलोत्तमा-स्त्री० [सं०] अत्यन्त सुन्दरी एक अप्सरा । २ अप्सरा ।
 तिलोर-स्त्री० उत्तरी एशिया से शीतकाल में आने वाला एक पक्षी ।
 तिली-१ देखो 'तिल्ली' । २ देखो 'तिलक' ।
 तिल्ला-पु० एक वर्णिक छन्द विशेष ।
 तिल्ली-स्त्री० १ पेट के अन्दर का एक अवयव, प्लीहा । २ देखो 'तिल' ।
 तिल्लोत्तमा-देखो 'तिलोत्तमा' ।
 तिल्लोर-देखो 'तिलोर' ।
 तिल्लो-पु० १ कलावतू या वादले का कार्य । २ लिंगेन्द्रिय पर मलने का एक तेल । ३ एक जंगली वृक्ष ।
 तिलग-देखो 'त्रिवरग' ।
 तिलट (ठ)-देखो 'त्रिवट' ।
 तिलट्ट-पु० १ भग्न खण्ड के नौवें भागो वासुदेव । २ देखो 'त्रिवट' ।
 तिलडो-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
 तिलणी-वि० तिगुना ।
 तिलरस-पु० [सं० त्रिवर्ष] १ तीन वर्ष की दीक्षा वाला साधु, माध्वी । २ देखो 'तिवरसी' ।
 तिलरसी, तिलरस्यो-वि० तीन वर्ष का ।-पु० ऊंटों का एक रोग ।
 तिलरारि-देखो 'त्रिपुरारि' ।
 तिलव (ळि, ळी)-पु० १ एक प्रकार का वाद्य । २ स्त्रियों की पोषाक विशेष । ३ देखो 'त्रिवलि' ।
 तिलाश-पु० [सं० त्रिपात] मन, वचन और काया तीनों को गिराना ।
 तिलाड़ी-पु० त्रिपाठी ।

तिवायण

(५०६)

तीकम

तिवायण, तिवायणा-पु० [सं० त्रिपानन] मन, वचन और काया का विनाश ।
 तिवारां-क्रि० वि० तब ।
 तिवारी-देखो 'तिवाड़ी' ।
 तिवारी-देखो 'तिवारी' ।
 तिवाव पु० [सं० त्रिवाद] बड़ी तिपाही ।
 तिविल-देखो 'तिवल' ।
 तिविह-देखो 'त्रिविध' ।
 तिव्व-देखा 'तीव्व' ।
 तिह्वार-देखो 'तिवार' ।
 तिसञ्ज, तिसंस, तिसंझ-स्त्री० [सं० त्रिसंध्या] त्रिकाल संध्या ।
 तिसंधि-स्त्री० [सं० त्रिसंधि] आदि, मध्य व अन्त ।
 तिस-स्त्री० [सं० तृषा] १ प्यास, तृषा । २ तीव्र अभिलाषा ।
 तिसउ-सर्व० उस, वह ।
 तिसई-क्रि० वि० तब ।
 तिसड़ी-वि० (स्त्री० तिसड़ी) १ बैसा, तैसा । २ तिसो ।
 तिसटणी (बो)-क्रि० १ स्थिर रहना । २ अनुमूल होना ।
 ३ तुष्टमान होना । ४ अनुग्रह करना ।
 तिसटाणी (बो)-क्रि० १ स्थिर करना । २ अनुमूल बनाना ।
 ३ तुष्टमान करना । ४ अनुग्रह करना ।
 तिसणा (ना)-स्त्री० [सं० तृष्णा] १ प्यास, तृषा । २ तीव्र इच्छा, लालसा । ३ लोभ, लालच ।
 तिसमारी-स्त्री० प्यास, तृषा ।
 तिसयतिहुत्तर-देखो 'तिहोतरमो' ।
 तिसर-देखो 'तिसर' ।
 तिसळणो (बो)-क्रि० १ फिसलना, रपटना । २ फिसल कर गिरना ।
 तिसला-स्त्री० भगवान महावीर की माता ।
 तिसळारो (बो)-क्रि० १ फिसलाना, रपटाना । २ फिसला कर गिराना ।
 तिसाइयउ, तिसाइयो, तिसायो-वि० तृषित, प्यासा ।
 तिसाळो, तिसाळु, तिसाळो-वि० प्यासा, तृषित ।
 तिसाली-पु० १ तीन साल से इकट्ठा लिया जाने वाला लगान ।
 २ ऊंट का एक रोग ।
 तिसाह्यो, तिसियो-वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषित ।
 तिसं-क्रि० वि० तब ।
 तिसोतरी-स्त्री० तृषा, प्यास ।
 तिसोता-स्त्री० [सं० त्रिस्रोता] गंगा नदी ।
 तिसोवण-पु० [सं० त्रिसोपन] जीने की तीन मोड़ियों का समूह ।
 तिसी-वि० (स्त्री० तिसी) १ तैसा, बैसा, जैसा । २ वही ।
 ३ प्यासा ।

तिस्टी-वि० [सं० तुष्ट] संतुष्ट, खुश ।
 तिस्णा-देखो 'तिसणा' ।
 तिस्पां-क्रि० वि० वैसे, उसी प्रकार, जब तक ।
 तिस्रनाक-पु० एक आभूषण विशेष ।
 तिहं-क्रि० वि० वहां । -सर्व० उन ।
 तिह-सर्व० उस ।
 तिहतरि (तर)-देखो 'तिहोतर' ।
 तिहवर, तिहवार-देखो 'तिवार' ।
 तिहवारी-देखो 'तिवारी' ।
 तिहां-क्रि० वि० वहां ।
 तिहारइ-क्रि० वि० तब ।
 तिहारडो, तिहारी-सर्व० (स्त्री० तिहारी) तेरा, तुम्हारा ।
 तिहि, तिहि, तिही-सर्व० १ सन । २ देखो 'तिथि' ।
 तिहुं-देखो 'तिह' ।
 तिहुंमण, तिहुंमण, तिहुंमण-पु० [सं० त्रिभुवन] त्रिभुवन, तीन लोक ।
 तिहूं, तिहू-देखो 'तिह' ।
 तिहुंमण (अणि, यण, यणि)-देखो 'तिहुंमण' ।
 तिहोतर, तिहोतर-वि० [सं० त्रयमतति] भत्तर और नीन ।
 -पु० सत्तर व तीन की संख्या का ग्रंथ, ७३ ।
 तिहोत्तरी-पु० ७३ का वर्ष ।
 तीं-सर्व० १ उम । २ इम ।
 तीखोळी-स्त्री० १ शिखर, शृंग । २ वृक्ष की चोटी ।
 तीछे-क्रि० वि० वहां ।
 तीण-देखो 'तीण' ।
 तीडुळो, तीडुलो-पु० मिह की जाति का एक हिंसक पशु ।
 वेंडुभा ।
 तीमण-देखो 'तीवण' ।
 तीय-सर्व० उस ।
 तीयाळो-पु० ४३ का वर्ष ।
 तीयासी-देखो 'तंड्यासी' ।
 तीवण-[सं० तेमतम्] १ पकी हुई माग-सज्जी । २ पकवान, व्यंजन ।
 ती-स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, नारी, औरत । २ पत्नी, भार्या ।
 ३ नदी । ४ भ्रमरावली । ५ भट । ६ मित्र, दोस्त ।
 ७ समुद्र, सागर । -वि० १ तीन । २ तीमरी । -प्रत्य०
 तृतीया और पंचमी विभक्ति का वाचक शब्द, 'ते' ।
 तीम-वि० [सं० तृतीय] तीमरा ।
 तीऊ-क्रि० वि० जैसे, तीसे ।
 तीक-देखो 'तीख' ।
 तीकम-पु० [सं० त्रिविक्रम] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु । ३ ईश्वर
 ४ वामन अवतार ।

तीकोरी-देखो 'तिकोरी' ।

तीकी-देखो 'तीकी' ।

तीक्ष-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्णसंग-पु० लवंग ।

तीक्ष्ण-वि० [सं०] १ तेज धार या लोक वाला, पैना, नुकीला ।

२ प्रखर, तीव्र, तेज । ३ प्रबल, प्रचंड, उग्र । ४ चरपरा, तीखा । ५ गर्म, ताता । ६ कड़ा हड़ । ७ कर्कश । ८ हानिकर । ९ विषैला । १० कुशाग्र । ११ बुद्धिमान, चतुर । १२ त्यागी, भक्त । -पु० १ सोहा । २ इस्पात । ३ विष । ४ युद्ध । ५ हथियार । ६ मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा व अश्लेषा नक्षत्र । -स्त्री० १ गर्मी, ताप । २ मृत्यु । ३ लाल मिर्च । ४ काली मिर्च । ५ राई । ६ शीघ्रता ।

तीक्ष्णरस्मि-पु० [सं० तीक्ष्णरश्मि] सूर्य, रवि । -वि० तेज किरणों वाला ।

तीक्ष्णानु, तीक्ष्णक्रम, तीक्ष्ण-पु० [सं० तीक्ष्णांशु, तीक्ष्णांशक्रम] सूर्य ।

तीक्ष्-स्त्री० १ तीक्ष्णता, तीखापन । २ श्रेष्ठता, विशेषता । ३ महत्व, बड़प्पन । ४ गुरुता । ५ मान, प्रतिष्ठा । ६ अधिकता । ७ कटाक्ष । ८ उत्कंठा, जिज्ञासा । ९ शिखर, चोटी । १० तीव्रता, तेजी । ११ काली मिर्च । -वि० १ तेज, चरपरा । २ विशेष । ३ श्रेष्ठ ।

तीक्ष्णसं-देखो 'तीक्ष्णांशु' ।

तीक्ष्ण-पु० १ द्वार पर अन्दर की ओर बना त्रिभुजाकार आलथ । ताख ।

तीक्ष्ण-स्त्री० १ विशेषता, अधिकता । २ मर्यादा, प्रतिष्ठा । ३ स्पष्टता । ४ आदर, मान । ५ बड़प्पन ।

तीक्ष्ण-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्षाचंद-पु० एक प्रकार का देशी सेल ।

तीक्ष्ण-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण-वि [सं० तीक्ष्ण] (स्त्री० तीक्ष्णी) १ तेज नोक या धार वाला । २ तीव्र, तेज । ३ विशेष, अधिक । ४ अच्छा, बढ़िया । ५ नोकदार, सुन्दर (नेत्र) । -पु० एक प्रकार का पक्षी ।

तीक्ष्ण-पु० १ एक सरकारी लगान । २ तीन का वर्ष । ३ एक सौ तीन की संख्या ।

तीक्ष्ण (न)-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण-स्त्री० [सं० तृतीया] १ माह के प्रत्येक पक्ष की तृतीया । २ श्रावण शुक्ला तृतीया का पर्व दिन । ३ भाद्रव कृष्ण तृतीया को, विवाहित कन्या के पिता द्वारा भेजा जाने वाला वस्त्र, मिठाई आदि । ४ वीरवहटी, इन्द्रवधु ।

तीक्ष्ण (स्त्री)-स्त्री० १ तीक्ष्ण का पर्व मनाने वाली कन्या या स्त्री । २ देखो 'तीक्ष्ण' (५) ।

तीक्ष्ण (वर)-पु० [सं० तृतीय-वर] तीसरी बार विवाह करने वाला व्यक्ति ।

तीक्ष्णाण(न)-स्त्री० तीन बच्चे वाली मादा पशु ।

तीक्ष्णो, तीक्ष्ण-वि० [सं० तृतीय] (स्त्री० तीक्ष्णी, तीक्ष्णी) १ तीसरा, तृतीय । २ अन्य । -पौ० तीसरा प्रहर ।

तीक्ष्ण-स्त्री० [सं० तृष्टि] १ अभिनाया, इच्छा । २ दया । तीक्ष्ण-वि० निर्मोही, रूखा ।

तीक्ष्ण-पु० [सं० टिट्ठि] फसल को खाने वाला एक बड़ा पतंगा । टिट्ठु ।

तीक्ष्णमल्ल-पु० स्त्रियों का एक आभूषण ।

तीक्ष्ण-पु० १ पेड़ पौधों पर पाया जाने वाला बड़ा पतंगा । २ देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण-पु० १ कूप का पानी खाली करने का स्थान । २ कूप या जलाशय के पानी का उपभोग करने का अधिकार । ३ कूप से पानी निकालने की क्रिया । ४ आय का स्रोत ।

तीक्ष्णी-सर्व० उसी ।

तीक्ष्णी-पु० छिद्र, छेद, मूलाख ।

तीक्ष्णी-पु० बच्चा, बालक । -वि० [सं० अतीत] १ बीता हुआ, अतीत । २ विरक्त, निर्लभ ।

तीक्ष्णाणीड-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

तीक्ष्ण-पु० [सं० तित्तर] कबूतर के आकार का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका शिकार किया जाता है ।

तीक्ष्णी-स्त्री० १ छितराये हुए छिछले बादल । २ दूध आदि पर आने वाली पतली मलाई । ३ तितली । ४ कागज का टुकड़ा, बिट । ५ किंगुर ।

तीक्ष्णी-स्त्री० धोनि, भग ।

तीक्ष्ण-पु० तीक्ष्ण ।

तीक्ष्णी-वि० [सं० तित्त] १ स्वाद में तीक्ष्ण, चरपरा, तिक्त । २ कड़वा । ३ देखो 'तीक्ष्णी' ।

तीक्ष्ण-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण (वि)-देखो 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण-वि० वि० कहां, किधर ।

तीक्ष्ण-वि० [सं० त्रि] दो में एक अधिक, तीन । -पु० तीन की संख्या, ३ । -काळ-पु० भूत, भविष्य व वर्तमान काल । प्रातः, मध्याह्न व सायंकाल । -नयन, नेयन-पु० शिव, महादेव । -सङ्गी-वि० तीन लटिकाओं वाली ।

-सिर-पु० कुंवर, अक्षेयवर ।

तीक्ष्णी-वि० [सं० त्रि] दो में एक अधिक, तीन । -पु० तीन की संख्या, ३ । -काळ-पु० भूत, भविष्य व वर्तमान काल । प्रातः, मध्याह्न व सायंकाल । -नयन, नेयन-पु० शिव, महादेव । -सङ्गी-वि० तीन लटिकाओं वाली ।

-सिर-पु० कुंवर, अक्षेयवर ।

तीक्ष्णी-पु० आभूषणों की खुदाई का एक औजार ।

तीनरेख-पु० शंख ।

तीना-क्रि० वि० तैम ।

तीना-देखो 'तीन' ।

तीने'क वि० तीन के करीब, तीन के लगभग ।

तीन्ही-पु० एक प्रकार का छोड़ा विशेष ।

तीब-स्त्री० १ टूटी वस्तु के लगाया गया जोड़ । २ ऐसे जोड़ पर लगाया जाने वाला धातु का छोटा तार । ३ छोटा टांका । ४ लोहे, पीतल आदि की बारीक कील, पिन । ५ दानों पर लगाई जाने वाली स्वर्ण मेख ।

तीबगट्टी-स्त्री० मुहाविन मित्रों का एक शिरोभूषण ।

तीबरी (बो)-क्रि० १ नुकीले औजार से बारीक छेद करना । २ किसी वस्तु के तार का जोड़ लगाना । ३ वस्त्र में टांका लगाना ।

तीबारी-देखो 'तिवारी' ।

तीमण-देखो 'तीवण' ।

तीमणियों-देखो 'तिमणियों' ।

तीनारबारी-स्त्री० [फा०] सेवा-शुश्रूषा, चाकरी ।

तीथ-पु० त्रैतायुग । (जैन)

तीथ-देखो 'तिथ' । २ देखो 'तीत' ।

तीयल-देखो 'तोल' ।

तीयां-सर्व० उन ।

तीयाग-देखो 'त्याग' ।

तीयार-देखो 'तैयार' ।

तीये (ये)-सर्व० उस, वह । -वि० तीसरा, तृतीय ।

तीयी-पु० [सं० वि०] १ तीन का अंक । २ तीन बूँटी का ताश का पत्ता ३ मृतक का तीसरा दिन व इस दिन को किया जाने वाला संस्कार ।

तीरंदाज-वि० [फा०] तीर चलाने में निपुण, दक्ष ।

तीरंदाजी-स्त्री० [फा०] तीर चलाने की कला ।

तीर-पु० [सं०] १ नदी या जलाशय का तट, किनारा । २ छोर किनारा, हाशिया । ३ बाग, शर । ४ बाण जैसा चिह्न । ५ सीमा । ६ जस्ता, टान । ७ बन्दूक की नाल का छेद । ७ जहाज का मस्तूख । ९ रहट से चक्र के बीच खड़े रहने वाले लड़के के नीचे का नुकीला भाग । -क्रि० वि० पास निकट, समीप ।

तीरह-देखो 'तीरे' ।

तीरकस-पु० १ द्वार पर बना धनुषाकार आनय । २ दीवार में बने तीर चलाने के छेद ।

तीरकारी-स्त्री० तीर चलाने की क्रिया ।

तीरगर-पु० [फा०] तीर बनाने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

तीरत-देखो 'तीरथ' ।

तीरथंकर-पु० [सं० तीर्थंकर] जैनियों के उपास्यदेव जो २४ माने गये हैं ।

तीरथ-पु० [सं० तीर्थ] १ वह पवित्र स्थान जहाँ श्रद्धानु जन यात्रा, स्नान, पूजा आदि के लिये जाते हैं । २ धार्मिक व पुण्य क्षेत्र । ३ हाथ के कुछ विशिष्ट स्थान । ४ शास्त्र । ५ दशनामी संन्यासियों की एक शाखा । ६ माता-पिता । ७ ब्राह्मण । ८ अतिथि, मेहमान । ९ साधु-साध्वी । १० तीर्थंकर का शासन । ११ जिन तीर्थंकर का नाम । १२ यज्ञ-क्षेत्र । १३ रोग का निदान । १४ घाट । १५ घाट की सीढ़ी । १६ गुरु, उपाध्याय । १७ दर्शन, आगम । १८ अग्नि । १९ स्त्री का रज । २० योनि । २१ उद्गम स्थान । २२ माध्यम । २३ उपाय । २४ सचिव, पुरोहित । २५ उपदेश निर्देश । २६ उपयुक्त स्थान या काल । २७ रास्ता, मार्ग । २८ जल स्थान । २९ श्रेष्ठ गुरु । ३० पुण्यात्मा । —जात्रा-स्त्री० तीर्थयात्रा । —देव-पु० शिव, महादेव । जिन, तीर्थंकर । —नायक-पु० तीर्थप्रदेश, तीर्थंकर । —पति-पु० तीरथ राज । —पाद-पु० श्रीत्रिणु । —यात्रा-स्त्री० पवित्र स्थानों की यात्रा, तीर्थोदन । —राई, राज, राजी, राव-पु० तीर्थों का राजा प्रयाग, काशी ।

तीरथाटण (टन)-पु० [सं० तीर्थोदन] पवित्र स्थानों की यात्रा, तीर्थयात्रा ।

तीरथीयो-पु० १ तीर्थों का निवासी । २ तीर्थों पर भेंट लेने वाला ।

तीरथु, तीरथ्य-देखो 'तीरथ' ।

तीरबार-पु० तीर चलाने के लिये बने, दीवार के छेद ।

तीरबुबती-स्त्री० [सं०] गंगा, गंडक और कौशिकी नदियों से घिरा प्रदेश ।

तीरमवाज-देखो 'तीरंदाज' ।

तीरवरती-वि० [सं० तीरवर्ती] १ तटवर्ती, किनारे या समीप रहने वाला । २ पड़ोसी ।

तीरां-क्रि० वि० पास, निकट, नजदीक ।

तीराण-स्त्री० तैरने की क्रिया या दंग ।

तीराई-स्त्री० तीर चलाने की क्रिया ।

तीराब-स्त्री० तिपाई ।

तीरी-पु० तट, किनारा । -क्रि० वि० पास, समीप ।

तीरीया-स्त्री० १ रहट में लगी एक लकड़ी विशेष । २ देखो 'तिरिया' ।

तीरीयो-वि० १ तीर चलाने वाला । २ तीर पर या तीर के पास रहने वाला । ३ देखो 'तीर' ।

तीरे, तीरे, तीरे, तीरे-क्रि० वि० निकट, पास, समीप ।

तीरी-देखो 'तीर' ।

तीस-पु० १ एक आभूषण विशेष । २ एक पोशाक विशेष ।
 ३ देखो 'तिल' ।
 तीसक-देखो 'तिलक' ।
 तीली-स्त्री० १ बड़ा तृण, सीक । २ धातु का पतला तार ।
 ३ जुलाहे के करघे के उपकरण (ढरकी) की सीक ।
 ३ देखो 'तूली' ।
 तीवरा, तीवरिणी, तीवरणी-स्त्री० १ कूप से पानी निकालने की
 क्रिया । २ देखो 'तीवरा' ।
 तीवरणी(बी)-१ देखो 'तीवरणी' (बी) । २ देखो 'तेवरणी' (बी) ।
 तीव्य-वि० [सं०] १ तेज । २ तीक्ष्ण । ३ अत्यन्त, अतिशय ।
 ४ गर्म, उष्ण । ५ बेहद, नितांत । ६ उग्र, प्रबल, प्रचण्ड ।
 ७ वेगयुक्त । ८ अमह्य । ९ ध्वनि व स्वर के विचार से
 ऊँचा । १० अनन्त, असीम । ११ चमकीला । १२ व्यापक ।
 १३ मात्रा से अधिक । -पु० लोहा, इस्पात ।
 तीव्रकंठ-पु० [सं०] जमीकंद ।
 तीव्रपति-स्त्री० [सं०] बायु, हवा ।
 तीव्रता-स्त्री० [सं०] १ तेजी, उन्नावली । २ तीक्ष्णता, अधिकता ।
 ३ प्रखरता ।
 तीव्रतेज-पु० लवंग, लौंग ।
 तीव्रा-स्त्री० [सं०] पड़ज स्वर की चार श्रुतियों में से
 प्रथम श्रुति ।
 तीवानुराग-पु० [सं०] एक प्रकार का अतिवार । (देन)
 तीस-वि० [सं० त्रिशति] दश का तीन गुना, बीस और दश ।
 -पु० तीस की संख्या, ३० ।
 तीसटंकी-पु० एक प्रकार का मजदूर घनूप ।
 तीसमार-वि० डींग मारने वाला, डींग हाँकने वाला । दिखावटो
 बहादुर ।
 तीसमी (वीं)-वि० (स्त्री० तीसमी) तीस के स्थान वाला,
 तीसवां ।
 तीसरी-वि० (स्त्री० तीसरी) १ तीन के स्थान वाला, दो के
 बाद वाला । २ तृतीय, अन्य ।
 तीसलणी (बी)-देखो 'तिसलणी' (बी) ।
 तीसी-वि० नमी, वैसी ।
 तीसे'क-वि० तीस के लगभग ।
 तीसी-पु० ३० का वर्ष । -वि० वैसा, तैसा ।
 तीह-पु० १ वृक्ष । २ पक्षी । -सर्व० वे, उन ।
 तीहुं-क्रि० वि० तैसे, वैसे, उस प्रकार ।
 तुं, तुंअ-देखो 'तू' ।
 तुंकार-देखो 'तुंकारो' ।
 तुंकारणी (बी)-क्रि० १ 'तू-तू' कर हल्के शब्दों में संबोधन
 करना । २ उलाहना देना, प्रताड़ना देना ।

तुंकारी-पु० [सं० त्वंकार] १ तू या तुम का संबोधन, अपने
 से छोटे या बराबरी वाले का संबोधन, । २ प्रतिष्ठित
 व्यक्ति के प्रति हल्का बोल ।
 तुंग-पु० [सं०] १ सेना, फौज । २ दल टुकड़ी । ३ झुण्ड,
 समूह । ४ पर्वत । ५ शिखर, चोटी । ६ नारियल ।
 ७ ऊँचाई । ८ बुध ग्रह । ९ गेंडा । १० शराब का पात्र ।
 ११ एक वर्ण वृत्त । १२ बावन बीरों में से एक ।
 -वि० १ ऊँचा, उन्नत । २ प्रचंड, प्रबल । ३ लंबा ।
 ४ प्रधान, मुख्य । ५ हड़ । ६ देखो 'तूंग' ।
 तुंगक-पु० [सं०] १ नाग केसर । २ महाभारत के अनुसार
 एक तीर्थ ।
 तुंगणी (बी)-क्रि० फटे वस्त्र के टांका लगाना, लूनना ।
 तुंगता-स्त्री० [सं०] उग्रता, ऊँचाई ।
 तुंगधज(ध्वज)-पु० [सं० तुंग-ध्वज] १ पर्वत । २ एक राजा ।
 तुंगनाथ-पु० [सं०] हिमालय पर्वत स्थित एक शिवलिंग जो
 तीर्थस्थान है ।
 तुंगनाथ-पु० [सं०] एक कीड़ा विशेष ।
 तुंगवाहु-पु० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक ।
 तुंगधद्र-पु० [सं०] मतवाला हाथी ।
 तुंगधद्रा-स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की कृष्णा नदी की
 महायक नदी ।
 तुंगल-देखो 'तुंगल' ।
 तुंगवेला-स्त्री० तुंगधद्रा नदी ।
 तुंगरी-पु० १ सफेद कनेर का पेड़ । २ देखो 'तूंग' ।
 तुंगिनी-स्त्री० [सं०] महाशतावरी, बड़ी सतावर ।
 तुंगी-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि । २ रात्रि । ३ हल्दी ।
 ४ वन तुलसी ।
 तुंगीपति, तुंगीस, तुंगेस-पु० [सं० तुङ्गीपति] १ चंद्रमा ।
 २ राजा, नृप ।
 तुंगी-देखो 'तुंग' ।
 तुंजाळ-पु० मक्खी, मच्छर आदि के बचाव के लिये घोड़े की
 पीठ पर डाला जाने वाला जाल ।
 तुंड-पु० [सं०] १ मस्तक, शिर । २ मुख, मुँह । ३ सूअर की
 धूँधन । ४ हाथी की सूंड । ५ पक्षी की चोंच । ६ तलवार
 का अग्रभाग । ७ औजार की नोक ।
 तुंडकेसरी-पु० मुँह का एक रोग ।
 तुंडि, तुंडिका-स्त्री० [सं०] १ बिबाफल । २ नाभि । ३ तुंड ।
 ४ चोंच ।
 तुंडिकेसी-स्त्री० [सं० तुण्डिकेसी] कुंदरू ।
 तुंडिल-वि० [सं० तुंडिल] १ बड़ी तोंद वाला । २ जिसकी
 नाभि निकली हुई हो । ३ बकबादी, वाचाल ।

तुंडी-वि० [सं० तुंडिन्] १ मुंह वाला २ चोंच वाला ।
 ३ मुंह वाला । -स्त्री० ४ नाभि ।
 तुंभ-पु० मरमों ।
 तुंब-वि० [फा०] १ तेज प्रचंड । २ 'तुंद' ।
 तुंबिक-वि० [सं०] बड़े पेट वाला, तोंद वाला ।
 तुंबिका-स्त्री० [सं०] नाभि ।
 तुंबिभ-स्त्री० तोंद, उदर ।
 तुंबी-स्त्री० [सं०] १ नाभि । २ देखो 'तुंद' । ३ देखो 'तुंबिक' ।
 तुंदल, तुंदली-वि० तोंद वाला, बड़े पेट वाला ।
 तुंब, तुंबक, तुंबग-देखो 'तुंबुक' ।
 तुंबड़ी-देखो 'तुंबी' ।
 तुंबर, तुंबरि (री), तुंबर (रु)-पु० [सं० तुंबर] १ एक देव जाति, इस जाति का देव । [सं० तुंबरम्] २ एक वाद्य यंत्र । ३ एक गंधर्व जाति । ४ प्रथम लघु ढगण का एक भेद ।
 तुंबिका, तुंबी-स्त्री० [सं० तुंबी] १ छांटी व कड़वी घीया । २ मूखे कड़ू व घीया का बना पात्र । इनको संस्कृत में इक्ष्वाकु कहते हैं ।
 तुंबुक-पु० [सं०] कड़वे कड़ू का फल, घीया, लोकी ।
 तुंबुरी, तुंबुरु-देखो 'तुंबर' ।
 तुंबरब-पु० [सं०स्तुंबरम्] हाथी ।
 तुंबर-देखो 'तुंबर' । २ देखो 'तुंबर' ।
 तुंबरावटी-स्त्री० तुंबर क्षत्रियों के शासन का क्षेत्र ।
 तुंबेरी-पु० दोहा छन्द का एक भेद ।
 तुंह-देखो 'तु' ।
 तुंहनि-सर्व० तब, तेरा ।
 तुंहारी-सर्व० (स्त्री० तुंहारी) तुम्हारा ।
 तुंहो-सर्व० तुम ।
 तु-पु० १ कमल । २ सुरपुर । ३ रक्त । ४ कष्ट । ५ रमा ।
 ६ देखो 'तु' । -सर्व० तेरा, तेरे । -क्रि०वि० तब ।
 -प्रत्य० करण और अपादान कारक चिह्न ।
 तुभ-सर्व० तब, तेरा, तुम्हारा । -क्रि०वि० तब ।
 तुभर-पु० [सं० तुवरी] अरहर ।
 तुभाळी-सर्व० (स्त्री० तुभाळी) तुम्हारा, तेरा ।
 तुड-तुई-स्त्री० १ वस्त्रों के किनारे पर लमाई जाने वाली पट्टी, गोटा, किनार । २ धौंकनी के आगे लगने वाली नलिका । ३ एक प्रकार की चिड़िया ।
 तुईजणी (बो)-देखो 'तुईजणी' (बो) ।
 तुक-स्त्री० १ किसी पद, गीत आदि की कड़ी । २ पद्य के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों का परस्पर मेल । ३ एक प्रकार की चिड़िया । ४ जोड़, भेट ।

तुकणी (बो)-देखो 'तुकणी' (बो) ।
 तुकबंदी-स्त्री० १ काव्य के तूकांत का मेल । २ तुक मिलाने लायक साधारण कविता ।
 तुकम-तेखो 'तुकम' ।
 तुकमो-पु० पदक, तगमा । भेड़ल ।
 तुकांत-पु० १ पद्य के चरणों के अंतिम अक्षर । २ इन अक्षरों का परस्पर मेल । ३ अंत्यानुप्रास ।
 तुकार-देखो 'तुंकारी' ।
 तुकारणी (बो)-देखो 'तुंकारणी' (बो) ।
 तुकारी-देखो 'तुंकारी' ।
 तुकी-देखो 'तुक्की' ।
 तुकड़-वि० तुक मिलाने वाला ।
 तुक्की-पु० [फा० तुका] १ छोटा तोर । २ तुकबंदी । ३ जोड़, मेल ।
 तुख-पु० [सं० तुष] १ भूमी, छिनका । २ घड़े का छिनका । ३ देखो 'तुक' ।
 तुखाट-देखो 'तुरासाट' ।
 तुखानळ-पु० [सं० तुपानल] भूसी की आग ।
 तुखार-पु० [फा० तोखार] १ एक प्रचीन देश का नाम । २ घोड़ा, अश्व । [सं० तुपार] ३ हिमकण, हिम । ४ कोहरा । ५ ठंड, मर्दी ।
 तुखारी, तुखाळ-पु० [फा०] १ तुखार देश का निवासी । २ इस देश का घोड़ा ।
 तुखम-पु० [फा०] १ बीज । २ वीर्य, शुक्र ।
 तुगम-पु० १ किसी देवता या पीर के पद चिह्न । २ घोड़ा । [फा० तगमा] ३ पदक ।
 तुगल-स्त्री० १ कानों का बाला, आभूषण । २ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायियों द्वारा कान में पहनने की मुद्रा ।
 तुगा, तुगाक्षिरी-स्त्री० [सं० तवक् क्षीरी] वंशलोचन ।
 तुगो-देखो 'तुक्को' ।
 तुगस-देखो 'तुगस' ।
 तुप-पु० [सं०] वैदिक कालीन एक ऋषि ।
 तुड़कणी (बो)-क्रि० १ थोड़ा-थोड़ा व रुक-रुक कर पेशाब करना । २ मादा मवेशी का रुक-रुक कर थोड़ा-थोड़ा दुध देना ।
 तुड़की-पु० १ टुकड़ा, खण्ड । २ तुलु भर, अल्प मात्रा ।
 तुड़छी-वि० [सं० तुच्छ] निम्न, नीच ।
 तुड़णी (बो)क्रि० मारना, संहार करना ।
 तुड़ताण-वि० १ वंश गोख बढ़ाने वाला । २ थोड़ा, वीर ।
 तुड़वाणी (बो)-क्रि० १ किसी वस्तु को खडित कराना, तुड़ाना । ३ खण्ड-खण्ड कराना । ३ नष्ट कराना । ४ मरवाना, संहार कराना । ५ बीताना, व्यतीत कराना ।

६ क्षीण या कमजोर करना । ७ तोड़-फोड़ करने के लिये प्रेरित करना । ८ क्रम भंग कराना । ९ विच्छेद कराना ।

तुड़ाई-स्त्री० १ तोड़ने की क्रिया या भाव । २ इस कार्य का पारिश्रमिक ।

तुड़ाणी (बौ), तुड़ावणी (बौ)-देखो 'तुड़ावणी' (बौ) ।

तुड़ि-पु० योड़ा, वीर ।

तुड़िताण-देखो 'तुड़िताण' ।

तुच, तुचा, तुची-स्त्री० [सं० त्वच्, त्वचा] १ शरीर की चमड़ी चर्म, त्वचा । २ छाल । ३ आवरण । ४ स्पर्श ज्ञान । ---मेल-पु० रोम ।

तुचोसार-पु० [सं० त्वचिसार] बांस ।

तुच्छ-वि० [सं०] १ अत्यन्त थोड़ा, किञ्चित्, अल्प, न्यून । २ छोटा, लघु । ३ हीन, नीच, क्षुद्र, अकिञ्चन । ४ हल्का । ५ खाली, रहित । ६ व्यर्थ, निरर्थक । ७ त्यक्त । ८ कमीना, नीच, हीन विचारों का । ९ अभागा, गरीब । १० निकम्मा । -स्त्री० भूमी, छाल ।

तुच्छता-स्त्री० [सं०] १ घलपता, न्यूनता । २ लघुता, छोटापन । ३ हीनता, नीचता, क्षुद्रता । ४ हल्कापन । ५ खालीपन । ६ व्यर्थता, निरर्थकता । ७ त्याग की भावना । ८ कमीनापन । ९ गरीबी । १० निकम्मापन ।

तुच्छो, तुछ, तुछय-देखो 'तुच्छ' ।

तुज-देखो 'तुभ' ।

तुजक-पु० [प्र० तुजुक] १ गोमा, वंभव । २ आत्मचरित्र (लिखित) । ३ प्रबंध, व्यवस्था ।

तुजफवार-पु० सैन्य-सज्जा करने वाला ।

तुजकमीर-पु० [प्र०] अभियान या उत्सव आदि का व्यवस्थापक ।

तुजमात-स्त्री० पार्वती, गौरी ।

तुजी, तुजीह-पु० [सं० त्रिजिह्व] धनुष ।

तुज्ज-वि० [सं० तृतीय] १ तीसरा । (जैन) -[सं० तृप] २ चौथा । ३ देखो 'तुभ' ।

तुज्ज, तुज्जी, तुस, तुस-मर्व० तुभे, तेरा, तेरा, तेरे ।

तुजे-मर्व० तुम्हें, तुमको ।

तुट-वि० १ तनिक, जरासा, टुक । २ देखो 'टुट' ।

तुटण-स्त्री० १ फूट, विरोध । २ कलह, झगडा । -वि० कलह करने वाला ।

तुटणी (बौ)-देखो 'टुटणी' (बौ) ।

तुट्ट-देखो 'तुस्ट' ।

तुट्टणी (बौ)-१ देखो 'टुटणी' (बौ) । २ देखो 'तुस्टणी' (बौ) ।

तुट्टि-देखो 'तुस्टि' ।

तुठणी (बौ), तुठणी (बौ)-१ देखो 'तुस्टणी' (बौ) । २ देखो 'टुटणी' (बौ) ।

तुड-वि० १ वीर, योद्धा । २ हृष्ट-पुष्ट । ३ तृप्त ।

तुडि-स्त्री० [सं० तेलित] स्पर्धा, बराबरी ।

तुडिकार-पु० मल्लयुद्ध करने वाला ।

तुडियाण-पु० [सं० तूर्याण] एक प्रकार का वाद्य । (जैन)

तुडुम-पु० [सं० तुरम्] तुरही, बिगुल ।

तुणकी-वि० तुच्छ, अकिञ्चन । -पु० १ किसी कार्य में आना-कानी । २ तनका, नखरा । [सं० तृण] ३ तृण, तिनका ।

तुणपार (गारी)-देखो 'तिणपारी' ।

तुणणी (बौ)-कि० [सं० तुण्] फटे वस्त्र को सीना, तुनना, तुनाई करना ।

तुणि-पु० [सं०] तुन का वृक्ष ।

तुणोर-देखो 'तुणीर' ।

तुतकारी-पु० कुत्ते को बुलाने का तू-तू शब्द ।

तुतलाणी (बौ)-कि० १ तुतला कर बोलना, तोता बोलना, टकलाना । २ अस्पष्ट बोलना ।

तुतली-देखो 'तोतली' । (स्त्री० तुतली)

तुत्थ, तुत्थक-पु० [सं०] नीला थोथा, तुतिया ।

तुवन-पु० [सं०] व्यथा या कष्ट देने की क्रिया, पीड़न, पीड़ा ।

तुन-पु० [सं० तुन्न] मजबूत लकड़ी वाला एक वृक्ष विशेष ।

तुनतुनियो, तुनतुनो-पु० बंजो नामक वाद्य ।

तुनवाय-पु० [सं० तुनवाय] दरजी ।

तुनी-देखो 'तुन' ।

तुनीर-देखो 'तुणीर' ।

तुन्न-देखो 'तुन' ।

तुन्नवाय-देखो 'तुनवाय' ।

तुन्नीर-देखो 'तुणीर' ।

तुन्ह-सर्व० तुने, तुभको ।

तुपक, तुपक-स्त्री० [सं० तुपक] १ छोटी तोप । २ बन्दूक ।

तुपाणी (बौ), तुपावणी (बौ)-कि० बीज बोना, बुवाई करना ।

तुफण-स्त्री० [फा० तोप] तोप ।

तुवणी (बौ)-देखो 'तिवणी' (बौ) ।

तुषणी (बौ)-कि० १ स्तब्ध रहना, अचंचित रहना । २ स्थिर रहना । ३ तुभना ।

तुभ्यो-सर्व० [सं० तुभ्य] तुम्हें, तुमको ।

तुम-सर्व० [सं० त्वम्] द्वितीय पुरुष का संबोधन, तू का बहुवचन, तू, आप ।

तुमड़ी-देखो 'तुंबी' ।

तुमण-पु० चरखे के मध्य का डंडा ।

तुमणी-मर्व० तुम्हारी ।

तुमतड़ाक-स्त्री० [फा० तुमतड़ाक] १ तड़क-भड़क, डाट-बाट । २ माली-मालीच, बोल-चाल ।

तुमती-स्त्री० एक प्रकार का शिकारी पक्षी ।
 तुमर-देखो 'तोमर' ।
 तुमरा, तुमरी-सर्व० (स्त्री० तुमरी) तुम्हारा ।
 तुमल-देखो 'तुमल' ।
 तुमां-देखो 'तुम' ।
 तुमार-पु० [म० तूमार] १ जान, परीक्षा । २ अनुमान, अंदाज ।
 ३ परिमाण । ४ हृद, सीमा । ५ बात का बर्बर, विस्तार ।
 ६ व्यर्थ बातों का डेर । ७ पुलिदा ।
 तुमाह, तुमारी-देखो 'तुम्हारी' ।
 तुमुर-स्त्री० १ एक क्षत्रिय जाति । २ देखो 'तुमुल' ।
 तुमुल-पु० [सं०] १ ध्वनि, शब्द । २ शोर, कोलाहल, युद्ध का शोर । ३ भीषण युद्ध । ४ द्वन्द्व युद्ध । -वि० १ भयंकर, घोर । २ भयानक क्रोधी । ३ व्याकुल । ४ परेशान ।
 तुम्मर-देखो 'तुंबर' ।
 तुम्बी-सर्व० तुम्हें, तुमको, तुम्हें ।
 तुम्ह-सर्व० तुम, तुमको, आपका । तुम्हारा ।
 तुम्हा, तुम्हां-सर्व० तुम, तुमको, तुम्हें, आपका, तुम्हारा ।
 तुम्हारइ, तुम्हारउ, तुम्हारइ, तुम्हारइ, तुम्हारइ-देखो 'तुम्हारी' ।
 तुम्हारी-सर्व० (स्त्री० तुम्हारी) आपका, तुम्हारा ।
 तुम्हि, तुम्ही-सर्व० तुम, तुम ही, तुम से ।
 तुम्हीणी-सर्व० तुमको, तुम्हें, तुम्हारा ।
 तुम्हें, तुम्हें-सर्व० तुमको, तुम्हें ।
 तुय-सर्व० तेरा ।
 तुरंग-पु० [सं०] (स्त्री० तुरंगण) १ घोड़ा, अश्व । २ चित्त, मन । ३ सात की संख्या । *
 तुरंगगोड़-पु० [सं०] गोड़ राग का एक भेद ।
 तुरंगण-स्त्री० घोड़ी, मादा अश्व ।
 तुरंगप्रिय-पु० [सं०] जो, यव ।
 तुरंगवदण (मुख, वदन)-पु० [सं०] एक देव जाति, किन्नरगण ।
 तुरंगम-देखो 'तुरंग' ।
 तुरंगमसिखा-स्त्री० [सं०] १ शालीहोत्र संबंधी ज्ञान । २ वह-तर कलाओं में से एक ।
 तुरंगसंज्ञ-पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक ।
 तुरंगसाठ (साठ्या)-स्त्री० [सं० तुरंग + शाला] षडशाला अस्तबन ।
 तुरंगाण-देखो 'तुरंगण' ।
 तुरंगारि-पु० [सं०] कनेर ।
 तुरंगी-स्त्री० १ घोड़ी । २ अश्वगंधा ।
 तुरंगु-१ देखो 'तरंग' । २ देखो 'तुरंग' ।
 तुरंज-पु० [फा० तुरंज] १ चकोतरा नींबू । २ बिजौरा नींबू ।

तुरंजका-स्त्री० हड़, हरीतकी ।
 तुरंजबोन-स्त्री० [सं०] नींबू का शर्बत ।
 तुरंजिया-पु० बेल गाड़ी के बाटे में लगने वाला कीला ।
 तुरंज-पु० एक प्राचीन देश ।
 तुरंत, तुरंतउ, तुरंतौ-क्रि० वि० [सं० त्वरितम्] शीघ्र, तत्क्षण, त्वरित ।
 तुर-क्रि० वि० [सं० त्वर] शीघ्र । -वि०-शीघ्रगामी, वेगवान ।
 -स्त्री० [सं० तुरी, तुरंग] १ कपड़ा बुन कर लपेटने की जुलाहे की लकड़ी । २ घोड़ा, अश्व । ३ तूरान देश का निवासी ।
 तुरई-देखो 'तुररी' ।
 तुरक, तुरकड़ी-पु० [सं० तुरक] (स्त्री० तुरकड़ी, तुरकण, तुरकणी, तुरकाणी) १ मुगल । २ तुर्किस्तान । ३ तुर्किस्तान का निवासी । ४ देखो 'तुरग' ।
 तुरकाण-पु० १ यवनों का राज्य । २ देखो 'तुरक' ।
 तुरकाणी-स्त्री० १ तुर्क की स्त्री । २ इस्लाम धर्म । ३ तुर्कों का राज्य तुर्कों का क्षेत्र । -वि० तुर्क संबंधी, तुर्कों की ।
 तुरकाबड़ी-पु० करघे की तुर में लगा काष्ठ का कीला ।
 तुरकिया बोहरा-पु० एक व्यावसायिक मुसलमान जाति ।
 तुरकिस्तान-पु० पश्चिमी एशिया का एक देश । तुर्की ।
 तुरकी-वि० [तु० तुर्क] तुर्किस्तान का, तुर्क का -पु० १ घोड़ों की एक जाति व इस जाति का घोड़ा । -स्त्री० २ तुर्किस्तान की भाषा ।
 तुरकीय-स्त्री० घोड़े की एक चाल ।
 तुरक-देखो 'तुरक' ।
 तुरककी-देखो 'तुरकी' ।
 तुरखूँटो-पु० कपड़े का एक खड़ा डंडा ।
 तुरग-क्रि० [सं०] शीघ्रगामी, द्रुतगामी । -पु० १ घोड़ा । २ मन विचार ।
 तुरगगंधा-स्त्री० [सं०] अश्वगंधा ।
 तुरगगानव-पु० [सं०] केशो नामक दंत्य ।
 तुरगवदन (वदन)-पु० [सं०] किन्नर ।
 तुरगलोतक-पु० [सं०] संगीत में एक ताल ।
 तुरगबंध-पु० [सं०] अश्वचिकित्सक ।
 तुरगसाठ्या-स्त्री० [सं० तुरग + शाला] अश्वशाला ।
 तुरगसिखा-स्त्री० ७२ कलाओं में से एक ।
 तुरंगाण-स्त्री० घोड़ी ।
 तुरगारोहण-पु० [सं०] घुड़सवारी ।
 तुरगि (गी)-पु० [सं० तुरगिन्] १ घुड़ सवार, अश्व चालक । २ घोड़ों की एक जाति । ३ देखो 'तुरंग' ।
 तुरगु-देखो 'तुरंग' ।

तुरजका

(५९९)

तुळजा

तुरजक-स्त्री० हरड़, हरें ।

तुरजाळ-पु० थोड़ा, अथवा ।

तुराजका-देखो 'तुरजका' ।

तुरण-त्रि० वि० [सं० तुराण] तुरन्त, शीघ्र ।

तुरणी-देखो 'तुरणी' ।

तुरन्त-देखो 'तुरन्त' ।

तुरन्तवृद्धि-त्रि० हाजिर जवाब ।

तुरतां-देखो 'तुरन्त' ।

तुरताण-देखो 'तुरन्त' ।

तुरती-स्त्री० १ गली । २ देखो 'तुरन्त' ।

तुरतुरियो-पु० दान या वेसन का बड़ा, पकीड़ा ।

-वि० जल्दवाज । उनादल ।

तुरपंग-पु० नृत्य का एक भेद ।

तुरप-देखो 'तुरप' ।

तुरपण-स्त्री० हाथ की मजबूत मिलाई । तुरपाई ।

तुरपणी (बो)-वि० हाथ में मिलाई करना, तूनना । तुरपाई करना ।

तुरपाई-स्त्री० महीन व मजबूत हाथ की मिलाई ।

तुरफ-देखो 'तुरफ' ।

तुरफरी-स्त्री० अंकुश का एक भाग ।

तुरमती-स्त्री० [सं० तुरमता] शिकार करने वाली एक चिड़िया ।

तुरमनामो-पु० एक अंग्रेजी वाद्य ।

तुरम्या-पु० [सं० तुर्या] १ मुक्ति प्राप्त होने का ज्ञान, तुरीय ज्ञान । २ एक प्रकार की मन्त्री ।

तुररो-स्त्री० [सं० तुरम्] गृह में पूँक कर बजाने का बाजा ।

तुररो पु० [सं० तुरी] १ घुँघराले वालों की लट, अलक ।

२ टापी, पमड़ी आदि पर लगने वाली कलगी । ३ इट्टे के

शिर पर लगाने की सुन्दरी कलगी । ४ पुष्प विशेष,

गुनतुरी । ५ पूँकों का गुच्छ । ६ भस्त्र, मूख । -वि० श्रेष्ठ,

शिरमौर ।

तुळ-पु० प्रच्छन्न वायु, वज्रण्डर ।

तुरखसु-पु० [सं० तुरखसु] राजा ययाति का एक पुत्र ।

तुरस-वि० [फा० तुर्ज] खट्टा । -स्त्री० दान ।

तुरसाई, तुरसाही-स्त्री० १ खट्टाई, खट्टापन । २ जायका, स्वाद ।

तुरस-देखो 'तुरम्' ।

तुरह-क्रि० वि० [सं० तुर] शीघ्र, जल्दी ।

तुरही-देखो 'तुरही' ।

तुराण-पु० [सं० तुराण] थोड़ा, अथवा ।

तुरांन-पु० मध्य एशिया का एक भाग ।

तुरांनो-पु० उक्त भाग में बसने वाला, मुगल ।

तुरा-स्त्री० [सं० तुरा] शीघ्रता, जल्दवाजी ।

तुराखाट, तुराखाड-पु० [सं० तुरापाट] इन्द्र, सुरराज ।

तुराट-पु० थोड़ा ।

तुराटी-स्त्री० हल्का नशा, सपने की लहर ।

तुरातुर-क्रि० वि० अतिशीघ्र, भट्भट ।

तुरापांचम-स्त्री० माघ शुक्ला पंचमी, वसंत पंचमी ।

तुरायण-पु० [सं०] चैत्र शुक्ला पंचमी व वैशाख शुक्ला पंचमी को किया जाने वाला यज्ञ ।

तुरावत-वि० [सं० तुरावत्] (स्त्री० तुरावती) वेगवान, वेगयुक्त ।

तुरासाट, तुरासाह-पु० [सं० तुरापाट] इन्द्र ।

तुरि, तुरिड, तुरिए-क्रि० वि० [सं० तुरित्] १ शीघ्र, जल्दी । २ देखो 'तुरी' ।

तुरित-देखो 'तुरन्त' ।

तुरियद-देखो 'तुरंग' ।

तुरिय-१ देखो 'तुरन्त' । २ देखो 'तुरी' ।

तुरिया-स्त्री० [सं० तुरीय] १ मोक्ष ज्ञान । ज्ञान की चतुर्थावस्था । २ चौथा भाग । ३ घोड़ा । -वि० चतुर्थ, चौथा ।

तुरियो-देखो 'तुरंग' ।

तुरी-स्त्री० [सं०] १ चित्रकार की कुँची । २ ढरकी, नारी ।

३ जुलाहों का एक अजीगर । [सं० तुरंग] ४ घोड़ी ।

५ लगाम, बाग । ६ तुरही नामक वाद्य । ७ छोटी

कलगी । ८ घोड़ा ।

तुरीजंत्र-पु० [सं० तुरीयंत्र] सूर्य की गति बताने वाला यंत्र ।

तुरीय-देखो 'तुरिय' ।

तुरीयतरंग-पु० दो नलियों का एक वाद्य विशेष ।

तुरीया-देखो 'तुरिया' ।

तुरीस-क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त । -पु० थोड़ा ।

तुरक-देखो 'तुरक' ।

तुरप-पु० नाच के खेल में रंग की बाल ।

तुरपणी (बो)-देखो 'तुरपणी' (बो) ।

तुरपाई-देखो 'तुरपाई' ।

तुरही-देखो 'तुरही' ।

तुरेस-पु० [सं० तुरंगेण] श्रेष्ठ घोड़ा ।

तुरंगा-देखो 'तुरंग' ।

तुरी-देखो 'तुरी' ।

तुरी-देखो 'तुरी' ।

तुळ तुल-पु० [सं० तुल] १ एक लगन । २ घास । ३ तुला राशि । ४ तराजू, तुला । -वि० [सं० तुल्य] समान ।

तुळछ, तुळछां तुळछी-देखो 'तुळमी' । -दळ='तुळमीदळ' ।

तुळछांतेवा-पु० कार्तिक शुक्ला अष्टमी से ग्यारस तक किये जाने वाले तीन व्रत ।

तुळजा, तुळजाड, तुळजा, तुलज्या-स्त्री० [सं० तुल्य-ज्या] पार्वती । दुर्गा । एक देवी का नाम । -वि० वृद्धा, बूढ़ी ।

तुलसी (बौ)—क्रि० [सं० तुल्] १ तराजू आदि से तोला जाना, तुलना, वजन किया जाना। २ किसी तौल के बराबर होना। तुल्य होना। ३ वजन देखने के लिये हाथ में लेना। ४ मधना। ५ नैयार होना। ६ समझ में आना जंचना। ७ आछार पर संतुलित होना। ८ उन्नत होना, उतारु होना। ९ समान व तुल्य होना।

तुलना-स्त्री० [सं०] १ समता, समानता, मुकाबला, बराबरी। २ मेल, ताल-मेल। ३ उपमा। ४ परीक्षा, जांच।

तुलनी-स्त्री० [सं० तुला] तराजू की डंडी।

तुलवाई-देखो 'तुलाई'।

तुलसी-स्त्री० [सं० तुलसी] १ दो-तीन फुट की ऊंचाई का भांडीनुमा पौधा जिसकी पत्तियां देव-पूजन व औषधियों में काम आती हैं। वृन्दा, वैष्णवी। २ प्रसिद्ध कवि तुलसीदास। ३ एक लोक गीत। —ठांण, ठांणी, ठांणी-पु० वह चतुर्तरी या स्थान जहां तुलसी का पौधा उगाया जाता है। —तेला='तुलसीतेला'। —पांणी='तुलसीठांणी'। —दळ—पत-पु० तुलसी के पत्ते।

तुलसीवांसी-पु० एक स्वर्णभूषण।

तुलसीदास-पु० 'रामचरित मानस' के रचयिता प्रसिद्ध कवि तुलसी।

तुलसीपतियो-पु० स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष।

तुलसीमंजर (मंजरी)-स्त्री० तुलसी के पौधे की बालें, मंजरी।

तुलसीवन-पु० तुलसी के पौधों की अधिकता वाला वन खण्ड।

तुला-स्त्री० १ तराजू, तकड़ी। २ छोटा तराजू, कांटा। ३ गुंजा। ४ ज्योतिष की एक राशि। ५ तौल, मान।

तुलाई-स्त्री० १ तौलने की क्रिया। २ इस कार्य की मजदूरी। ३ देखो 'तुली'।

तुलाकोट, तुलाकोटि-पु० एक आभूषण, दूबुर।

तुलाजंत्र-पु० [सं० तुलायंत्र] तराजू, कांटा।

तुलादंड-देखो 'तुलादंड'।

तुलाणी (बौ)—क्रि० १ तौल कराना, तुलवाना, वजन कराना। २ खरीदना। ३ समता कराना। ४ तुलना कराना।

तुलादंड-पु० तराजू का डंडा।

तुलावांन-पु० [सं०] स्वयं के तौल के बराबर द्रव्य का दान।

तुलाधार-पु० [सं०] १ वणिक, बणिषा। २ माता-पिता का भक्त काशी का एक व्याघ्र। —स्त्री० ४ तुलाराशि। ५ तराजू की डोरी, रस्सी।

तुलामांन-पु० [सं०] १ तौल का अभ्यास, अंदाज। २ बाट, तौल।

तुलाबट-वि० तौलने वाला। —स्त्री० तौलने की क्रिया।

तुलावणी (बौ)—देखो 'तुलाणी' (बौ)।

तुलि-वि० [सं० तुल्य] समान, सदृश, तुल्य। —स्त्री० १ तराजू, २ तुलाराशि।

तुली-पु० १ तराजू। २ तराजू का पलड़ा।

तुल्य-वि० [सं०] १ समान, बराबर। २ उपयुक्त।

तुल्यता-स्त्री० [सं०] बराबरी, समता।

तुल्यप्रधानव्यंग-पु० [सं०] समान वाच्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ वाला व्यंग्य।

तुल्ययोग, तुल्ययोगिता-स्त्री० [सं०] एक अलंकार विशेष।

तुल्ययोगी-वि० समान संबंध रखने वाला।

तुल्य-देखो 'तुल्य'।

तुल-सर्व० १ तुल। २ तेरा तुम्हारा। ३ तुने तम्की।

तुल-पु० १ अरहर। २ कसेला। ३ देखो 'तुल'।

तुलाळी-सर्व० तुम्हारा, तेरा।

तुसंडा-सर्व० तेरा, तुम्हारा।

तुसंडौ-पु० अपराध गुनाह। —गर्व० तेरा, तुम्हारा।

तुस-पु० [सं० तुष] १ अन्न के दाने के ऊपर का छिनका, भूसी। २ आटा छानने पर निकलने वाला फुम। ३ सोने, चांदी आदि का छोटा कण जर्री। ४ देखो 'तुच्छ'।

तुसग्रह-पु० [सं० तुषग्रहः] अग्नि।

तुसर-पु० तृण, तिनका।

तुसल्यी-पु० अशुभ रंग का एक घोड़ा विशेष।

तुसाग-देखो 'तुसानल'।

तुसाड, तुसाड़ी, तुसाड (डौ)-सर्व० (स्त्री० तुसाड़ी, तुमाड़ी) तेरा, तुम्हारा।

तुसानळ-पु० [सं० तुषानल] भूसी या ग्रामफूस की आग।

तुसार-पु० [सं० तुषार] १ अधिक शीत के कारण वस्तुओं पर जमने वाली हिम की परत। २ हिम, वर्ष। ३ ठंडक, मर्दी, शीत। ४ एक प्राचीन देश। ५ इस देश का घोड़ा। —वि० अत्यन्त ठंडा, शीतल। —कर, कांति-पु० हिमकर, चन्द्रमा। —पाखाण, पासाण-पु० हिमकण, ओला। —मूरति, रसमि, रस्मि-पु० चन्द्रमा।

तुसारांसु-पु० [सं० तुषारांशु] चन्द्रमा।

तुसारात्रि-पु० [सं० तुषारात्रि] हिमालय पर्वत।

तुसिलीअ-स्त्री० [सं० तूष्णीक] मोन भाव, मोन वृत्ति (जंन)।

तुसित-पु० [सं० तुषिताः] १ एक प्रकार के गरुदेव जो १२ ऋतु माने जाते हैं। २ विष्णु। ३ एक स्वर्ग का नाम।

तुसियो-देखो 'तुस'।

तुसी-१ देखो 'तुस'। २ देखो 'तस'।

तुसे (सं)-सर्व० तुम्हारा, तेरा।

तुस्ट-वि० [सं० तुष्ट] १ संतुष्ट, तृप्त। २ प्रसन्न, खुश। ३ वीतराग।

तुष्टणी (बी)-क्रि० १ संतुष्ट होना, तृप्त होना । २ प्रसन्न होना, खुश होना । ३ वीतराग होना । ४ देखो 'तूठणी' (बी) ।
 तुष्टता-स्त्री० [सं० तुष्टता] १ संतोष, तृप्ति । २ प्रसन्नता, खुशी ।
 तुष्टमान-वि० [सं० तुष्टमान] १ प्रसन्न, खुश । २ अनुकूल ।
 ३ किसी पर मेहरबान, अनुग्रह करने वाला ।
 तुष्टि-स्त्री० [सं० तुष्टि] १ संतुष्टि, संतोष । तृप्ति ।
 २ अनुकूलता । ३ प्रसन्नता ।
 तुष्णि-वि० [सं० तूषीण] शांत, मौन ।
 तुस्तुरंग-पु० घोड़ा ।
 तुसांडी-देखो 'तुसाडी' ।
 तुह-सर्व० तुम्ह । -क्रि० वि० [सं० ततः खलु] तदपि, तो भी ।
 तुह-अव्य० तदपि, तो भी ।
 तुहको-देखो 'तोफो' ।
 तुहमत-देखो 'तोहमत' ।
 तुही-सर्व० आप, तू ।
 तुहाळी-देखो 'तुहाली' ।
 तुहार, तुहारइ, तुहारी-सर्व० (स्त्री० तुहारी) तेरा, तुम्हारा ।
 तुहाळ, तुहाळोय, तुहाळी-सर्व० (स्त्री० तुहाळी) तेरा, तुम्हारा ।
 तुहि-सर्व० तू ।
 तुहितउ-क्रि० वि० [सं० तथापि] तथापि, तो भी ।
 तुहिन-पु० [सं०] १ पाला, हिमकण । २ हिम, वरफ ।
 ३ चांदनी । ४ शीनलता । -गिरि-पु० हिमालय पर्वत ।
 तुहिनांसु, तुहिनासु-पु० [सं० तुहिनांशु] चंद्रमा ।
 तुहुंजि-क्रि० वि० केवल तब ।
 तुहें-सर्व० तुम्हें ।
 तुहारडी-देखो 'तुम्हारी' ।
 तुह्य-सर्व० तुम्हारा, तेरा ।
 तू-सर्व० [सं० त्वम्] तुम, तू, द्वितीय पुरुष ।
 तूअ-सर्व० तूपाण, तू भी ।
 तूअर-देखो 'तुवर' ।
 तूअरइ, तूअरि-देखो 'तुबरि' ।
 तूंकार, तूंकारणउ, तूंकारी-देखो 'तुंकारी' ।
 तूंग-स्त्री० १ आग की चिनगारी । २ देखो 'तुंग' ।
 तूंगणी (बी)-देखो 'तुंगणी' (बी) ।
 तूंगिम-स्त्री० [सं० तूंग] १ महिमा, माहात्म्य । २ प्रतिष्ठा, गौरव । ३ उज्ज्वला, श्रेष्ठता । ४ ऊंचाई ।
 तूंगियरी, तूंगियो-पु० फोज का एक भाग, दल, टुकड़ी ।
 तूंगी-स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि । २ नाव, नौका ।
 तूंगी-पु० सैन्य दल, फोज की टुकड़ी ।

तूँछणी (बी)-क्रि० [सं० तृष्ट] १ तृपित होना, प्यासा होना ।
 २ प्यासा रहना ।
 तूँज-पु० एक प्रकार का बर्तन ।
 तूँजी-देखो 'तुजीह' ।
 तूँअ-सर्व० १ तुम्हको, तुम । २ तुम्हारा । ३ देखो 'तुअ' ।
 तूँइ-देखो 'तुँइ' ।
 तूँडी-स्त्री० १ नाव, नौका । २ पेदा । ३ मध्य भाग ।
 तूँडी-पु० पेदा, तल ।
 तूँण-देखो 'तूणीर' ।
 तूँणणी (बी)-देखो 'तुणणी' (बी) ।
 तूँणी-स्त्री० कमर, कटि ।
 तूँणी-पु० समय से पूर्व गिरा हुआ गम (पशु) ।
 तूँतइ, तूँतड़ी, तूँतड़्यो-पु० १ बाजरी के दाने के ऊपर की टोपी, फूमदा । २ बाजरी की बाल या भुट्टा । ३ बाल के भन्दर का कच्चा दाना । ४ निकम्मी वस्तु । ५ घास विशेष । ६ लड़का पुत्र । -वि० दुर्बल, पतला, क्षीण ।
 तूँतळी-पु० १ बाजरी या ज्वार के भुट्टे का वह भाग जिसमें दाना रहता है, भूसी । २ काटेदार फसों वाली एक लता विशेष ।
 तूँब-स्त्री० बड़ा पेट, उदर, तोंद ।
 तूँभा-सर्व० तेरा, तुम्हारा ।
 तूँबड़ियाळी-पु० १ 'तूँबड़ी' बाघ बजाने वाला । २ साधु, फकीर ।
 तूँबड़ियो, (डो)-देखो 'तूँबी' ।
 तूँबड़ी-देखो 'तुँबी' ।
 तूँबर-देखो 'तुंमर' ।
 तूँबिणि-स्त्री० एक प्रकार की लता व इसका फल, कद्दू ।
 तूँबी-देखो 'तुँबी' ।
 तूँबु-देखो 'तूँबी' ।
 तूँबेल-पु० १ चारणों की एक शाखा व इस शाखा का चारण ।
 २ दोहा छंद का एक भेद ।
 तूँबी-पु० [सं० तुम्ब] १ कद्दू की जाति का एक फल । २ इस फल के मुँह को काटकर बनाया हुआ खोखला पात्र, तुम्बा ।
 तूँर, तूँबर-पु० गौड़ राजपूतों की एक शाखा ।
 तूँराटी-देखो 'तुंवरवटी' ।
 तूँहइ-सर्व० तेरा ।
 तूँहळि-सर्व० तेरी ।
 तू-पु० १ कुत्ते को पुकारने का शब्द । २ युद्ध । ३ अंगुली ।
 ४ हाथ । ५ कटाक्ष । -वि० १ अशुद्ध । २ तुच्छ ।
 तूअर-पु० अरहर नामक द्विदल अनाज, तूवर ।

तूईजणी (बो)—क्रि० भादा पशु का गर्भस्त्राव होना ।

तूकार—देखो 'तूकारो' ।

तूकारणी (बो)—क्रि० [सं० त्वंकारः] १ कुत्ते को पुकारना ।

२ देखो 'तूकारणी' (बो) ।

तूल—देखो 'तुम' ।

तूड़ी—देखो 'तमतू बो' ।

तूछ—देखो 'तूच्छ' ।

तूछरेल—वि० तूच्छ ।

तुज—देखो 'तुम्ह' ।

तुजो—देखो 'तुजोह' ।

तुस, तूछ—देखो 'तुम्ह' ।

तूठणी—स्त्री० नसों में होने वाला दर्द ।

तूठणी (बो)—देखो 'तूठणी' (बो) ।

तूठ—देखो 'तुस्ट' ।

तूठणी (बो)—देखो 'तुस्टणी' (बो) ।

तूण—पु० [सं०] तूणीर, तरकम, माता ।

तूणियज—वि० [सं० तूणितः] बुना हुआ ।

तूणी, तूणीर—स्त्री० [सं०] तरकम, निपण ।

तूणी—वि० तिगुना ।

तूणी (बो)—देखो 'तूईजणी' (बो) ।

तूत—पु० १ स्तम्भ, खंभा । [सं० तूद] २ शहतूत ।

तूतक—वि० १ सुख, अज्ञानी । २ लम्बा ।

तूतड़, तूतड़ी—देखो 'तूतड़' ।

तूताड़ियो—पु० भेड़-बकरी के छोटे बच्चे को रखने का स्थान ।

तूताड़ी—स्त्री० १ फूँक कर बजाने का एक बाजा । २ मूत्र आदि पदार्थ की छोटी धारा ।

तूतिथी—पु० नीला बोधा, मोर बोधा ।

तूतो—स्त्री० १ मुँह से बजाने का एक वाद्य विशेष । २ भटमेल रंग की एक तिडिया । ३ हाहाकार, चीत्कार । ४ कीर्ति, प्रसिद्धि ।

तूदाप—पु० [सं०] पेट का अग्र भाग, नोद ।

तूत—देखो 'तूण' ।

तूना, तूना—देखो 'तुना' ।

तूनारा—स्त्री० तुनाई का व्यवसाय करने वाली एक जाति रफूगर ।

तूनारो—पु० रफूगर ।

तूनी—स्त्री० १ एक रोग विशेष । २ देखा 'तूणी' ।

तूनीर—देखो 'तूनीर' ।

तूप—पु० [सं० पृथ] घृत, घा ।

तूफान—पु० [अ०] १ वायु का तीव्र बग, दानवक । २ उपद्रव, उत्पात । ३ डुबाने वाली बाढ़ । ४ प्रलय । ५ विपत्ति संकट ।

तूफानी—वि० [अ०] १ तूफान जैसा, तूफान की तरह का ।

२ उत्पाती, उपद्रवी । ३ प्रलयकारी ।

तूबणी (बो)—देखो 'तीबणी' (बो) ।

तूमड़ी—देखो 'तूबो' ।

तूमड़ी—देखो 'तूबो' ।

तूमां—सर्व० तुम ।

तूमार—देखो 'तुमार' ।

तूमी—देखो 'तूबो' ।

तूरंग, तूरंगम—देखो 'तूरंग' ।

तूर—पु० [सं० तूर्य] १ मुँह से बजाने का एक बाजा ।

२ देखो 'तूरर' । ३ देखो 'तूर' ।

तूरण—क्रि० वि० [सं० तूराम्] शीघ्र, तुरंत ।

तूरही—स्त्री० एक बाजा ।

तूरान—देखो 'तूरान' ।

तूरानी—देखो 'तूरानी' ।

तूरी—स्त्री० १ भाटों की एक शाखा । २ देखो 'तूरी' ।

३ देखो 'तोरु' ।

तूरीड—देखो 'तूरिण' ।

तूरुष, तूरु—देखो 'तूर' ।

तूळ, तूल—पु० [सं० तूल] १ कदम का वृक्ष । २ शहतूत का वृक्ष । ३ रुई । [अ० तूल] ४ लम्बाई, विस्तार । ५ किसी बात को दिया जाने वाला महत्व या बढ़ावा ।

तूळक—स्त्री० रुई ।

तूलता—स्त्री० [सं० तुल्यता] समता, समानता, बराबरी ।

तूळिका, तूळी, तूली—स्त्री० [सं० तूलिः] १ चित्ते की कूँची ।

२ सीक, तीली । ३ नार आदि का छोटा टुकड़ा । ४ आग

जलाने की काड़ी, माचिस ।

तूस, तूसण—पु० १ इन्द्रायण का फल । २ भय, डर ।

३ खुरासान का एक प्रदेश व शहर । ४ देखो 'तूस' ।

तूसणी (बो)—क्रि० [सं० तूष] १ प्रसन्न होना, खुश होना ।

२ सतुष्ट होना । ३ अनुग्रह करना । ४ तुष्टमान होना ।

तूसी—वि० १ तूम देश का, तूम देश संबंधी । २ देखो 'तूम' ।

तूह—१ देखो 'तूम' । २ देखो 'तू' ।

तूहिन, तूहिन—पु० [म० तूहिन] १ शीत, जाड़ा, सर्दी ।

२ देखो 'तूहिन' ।

तें—देखो 'ते' ।

तेंण—सर्व० उस उन ।—क्रि० वि० उमम । उनके ।

ततीस—देखो 'तेतीस' ।

तेतीसी—देखो 'तेतीसी' ।

तेदूमी—पु० नीने की जाति का एक हिंसक पशु ।

तेंदिय, तेंदिय—देखो 'तींदिय' ।

तेहवार-देखो 'निवार' ।

ते (ते)-पु० १ यमुना का जल । २ नामिका, नाक । ३ देवता ।
४ राक्षस । ५ पुत्र । ६ ज्ञान । [फा० तह] ७ कृपि भूमि
की आर्द्रता, नमी । ८ परत । [फा० तय] ९ निश्चित ।
-मर्व० [सं० एप] १ तू, तुम, आप । २ इस । ३ वह, वे ।
४ उन । ५ अपने । -क्रि० वि० इमलिये । -प्रत्य० तृतीय
या पंचमी विभक्ति का चिह्न, से ।

तेज-१ देखो 'तेज' । २ देखो 'ते' ।

तेह्रिय, तेह्रिय-देखो 'त्रीह्रिय' ।

तेइयो-देखो 'तीयो' ।

तेइस-देखो 'तेईन' ।

तेइसमी (बौ)-देखो 'तेईसमी' ।

तेईस-वि० [सं० त्रयोविंशति] बीस और तीन । -पु० बीस व
तीन की संख्या, २३ ।

तेईसमी (बौ)-वि० तेईस के स्थान वाला, बाईस के बाद वाला ।

तेईसेक-वि० तेवीस के लगभग ।

तेईसी-पु० तेवीस का वर्ष ।

तेउ, तेऊ-सर्व० १ उम, वह । २ देखो 'तेज' ।

तेघोतर-देखो 'तिहोतर' ।

तेघोतरी-देखो 'तिहोतरी' ।

तेख-पु० १ भान, प्रतिष्ठा, आदर । २ इज्जत, आबरू ।
[सं० तीक्ष्ण] ३ क्रोध, गुस्सा । ४ घमंड, अभिमान ।
-स्त्री० ५ बढ़ई की नेज धार की पत्ती विशेष ।

तेखट, तेखटिणी-पु० आभूषणों की खुदाई करने का एक औजार ।

तेखडिणी-वि० १ क्रुद्ध, कुपित । २ बिगड़ा हुआ । ३ नाराज,
अप्रसन्न ।

तेखणी (बौ)-क्रि० १ क्रुद्ध होना, कांप करना । २ नाराज
होना, अप्रसन्न होना । ३ बिगड़ना । ४ गर्व करना ।

तेखळ, तेखळी-पु० [सं० त्रिणुखल] १ घोड़े या गधे के दोनों
पैर आगे के व एक पिछला बांधने की क्रिया । २ ऊंट के
पांच बांधने की क्रिया । ३ एक दिन छोड़कर दो दिन क्रिया
जाने वाला दधि संघन ।

तेखानी-पु० [फा० तहखाना] भूमिगत कक्ष, तलघर, तहखाना ।

तेखा-स्त्री० होलियों की एक शाखा ।

तेखियो वि० पापी, दुराचार्य ।

तेखी, तेखीयो, तेखीतो-वि० क्रुद्ध, कुपित ।

तेग-स्त्री० [श०] तलवार, कुशाग्र । -साट-स्त्री० तलवार
का बाग धुद्ध । -घर-वि० खड्गधारी योद्धा । -बघ-
नेमण

तेगळ-पु० १ तलवारधारी योद्धा । २ देखो 'तेग' ।

तेगिच्छ-पु० रोग का निदान, चिकित्सा ।

तेगून-स्त्री० तलवार ।

तेगी-पु० १ तलवार की धार । २ देखो 'तेग' ।

तेघड़-स्त्री० स्त्रियों के पैर का विशेष आभूषण ।

तेड़-स्त्री० १ किसी वस्तु में होने वाली दरार । २ बड़े भोज का
आयोजन । ३ भोज के लिए आमंत्रित जाने श्रद्धियों का
समूह । ४ योगि, भग । ५ बुलावा ।

तेइणी (बौ), तेइवणी (बौ)-क्रि० १ बुलाना, पुकारना ।
२ बच्चे को गोद में उठाना ।

तेइणी (बौ), तेइवणी (बौ)-क्रि० १ बुलवाना, पुकार
लगवाना । २ बच्चे को गोद में उठवाना ।

तेइयो-पु० स्त्रियों के गले का स्वर्णभूषण ।

तेड़ी-स्त्री० घोड़ों की एक जाति ।

तेड़ी-पु० १ बुलाने की क्रिया या भाव, बुलावा । २ बुलाने के
लिए जाने वाला । ३ बाजरे या ज्वार की फसल के शामिल
बोये जाने वाले मूंग, मोठ आदि द्विदल अन्न । ४ घाटा,
कमी, अन्तर ।

तेजंगी-वि० [सं० तेजोअंगी] तेजस्वी, जोशीला, पराक्रमी ।

तेज, तेजह-पु० [सं० तेजस्] १ दीप्ति, कांति, चमक । २ शौर्य,
पराक्रम । ३ अोज, वीर्य । ४ पंच भौतिक तत्त्वों में से तीसरा,
अग्नि । ५ प्रकाश ज्योति । ६ वस्तु का सार, तत्त्व, पदार्थ ।
७ गर्मी ताप । ८ सूर्य । ९ किरण । १० स्वर्ण, सोना ।
११ तारा । १२ सत्वगुण से उत्पन्न लिंग शरीर ।
१३ प्रताप, रौब । १४ तेजी । १५ प्रचंडता, प्रयत्नता ।
१६ घोड़ा । १७ पित्त । १८ मस्खन । १९ घोड़े की चाल
का वेग । २० दीपक । २१ सौन्दर्य । २२ चरित्रबल ।
२३ स्फूर्ति । २४ आध्यात्मिक शक्ति । २५ व्रत ।
२६ तीक्ष्ण धार । -वि० १ तेज या तीक्ष्ण धार का ।
२ तीक्ष्ण, तेज । ३ वेगवान, फुटिला । ४ चंचल, चपल ।
५ महंगा । ६ उग्र, प्रचंड । ७ कांतियुक्त । ८ सुन्दर ।
९ शीघ्र व तेज प्रभावशाली । १० कुशाग्र बुद्धि ।
११ अधिक । -आनूप-पु० राजा, तृप । -काय-पु०
अग्नि, प्राण । तेजस्वी व्यक्तित्व वाला । -किरण-पु०
सूर्य । -ग्रह-पु० दीपक, प्रकाश ज्योति । -चंड-पु०
सूर्य । -धार, धारी-वि० तेजस्वी, अोजरवी । -पु० सूर्य ।
-पुंज-पु० सूर्य । -वि० अप्रतिहत, तेजस्वी । -वळ-पु०
प्रताप, पराक्रम । एक कांटेदार जंगली वृक्ष । बत, बत
वान-वि० तेजस्वी । प्रतापी । -पु० घन, घां । -पुंजी-
आग्नेय दिशा का नाम ।

तेजगळ-वि० तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी ।

तेजण-स्त्री० घोड़ी ।

तेजपत्ती, तेजपात-पु० [सं० तेजपत्र] दास्य चीनी वृक्ष के पत्ते ।

तेजर-पु० [सं० त्रिजय] १ प्रति तीसरे दिन आने वाला ज्वर ।
२ क्रुद्धावस्था में ज्वर पर पड़ने वाली तीन सिलबद्धें ।

तेजळ-पु० चातक, पपीहा ।

तेजस-वि० [सं० तेजस्वी] १ बहादुर, पराक्रमी, ओजस्वी ।

२ प्रतापी । ३ तपस्वी, आत्म तेज वाला । ४ तेज धार वाला, तीक्ष्ण । ५ शीघ्रगामी, फूर्तीला । ६ महंगा ।

-पु० सूर्य । —पुं०-वि० प्रकाशवान, तेजस्वी ।

तेजसवती, तेजसवी-देखो 'तेजस्वी' ।

तेजस-सरीर-पु० सूक्ष्म शरीर (जैन) ।

तेजसी-पु० १ सूर्य । २ देखो 'तेजस्वी' ।

तेजस्व-पु० [सं०] १ महादेव, शिव । २ देखो 'तेजस्वी' ।

तेजस्वन्-वि० [सं०] तेजस्वी ।

तेजस्विनी-स्त्री० [सं०] मालकांगनी ।

तेजस्वी-वि० [सं०] १ तेजवान, प्रतापी, ओजस्वी । २ कांतिवान, प्रकाशवान । ३ वेगवान । ४ तपस्वी । -पु० इन्द्र के एक पुत्र का नाम ।

तेजागळ-देखो 'तेजगळ' ।

तेजाब-देखो 'तिजाब' ।

तेजारत-देखो 'तिजारत' ।

तेजारी-देखो 'तिजारी' ।

तेजाळ, तेजाळू, तेजाळी-पु० १ सूर्य । २ तेज, प्रताप । ३ घोड़ा ।

-वि० १ तेजस्वी । २ तेज गति वाला ।

तेजि-१ देखो 'तेज' । २ देखो 'तेजी' ।

तेजिउ-वि० उत्तेजित ।

तेजिय-पु० घोड़ा, अश्व ।

तेजी-स्त्री० [फा०] १ तेज होने की अवस्था या भाव, तीव्रता ।

२ उग्रता, प्रचंडता । ३ प्रबलता । ४ गुस्सा, क्रोध, जोश, आवेश । ५ महंगाई । ६ शीघ्रता । ७ तीव्र गति । ८ एक प्रकार का घोड़ा ।

तेजेयु-पु० [सं०] रोद्राक्ष राजा के एक पुत्र का नाम ।

तेजोमंडळ-पु० सूर्य चन्द्रमा के चारों ओर बना प्रकाश का घेरा ।

तेजोमई, तेजोमय-वि० १ तेजस्वी, प्रतापी । २ वेगवान । -पु० सूर्य ।

तेजो-लेस्या-स्त्री० [सं० तजोलेस्या] तपोबल में उत्पन्न तेज, कांति, ज्वाला ।

तेजी-पु० १ राजस्थान का एक प्रतिज्ञापालक एवं सन्धनिष्ठ जूझार, जाट । २ उक्त जाट की याद में गाया जाने वाला लोक गीत ।

तेजीवितान-पु० सूर्य ।

तेटलि-क्रि० वि० [सं० ततुल्य] वहां ।

तेटली-वि० उतना ।

तेडणी (बी)-देखो 'तेडणी' (बी) ।

तेडी-देखो 'टेडी' ।

तेढ़, तेढ़क-स्त्री० १ टेढ़ापन, वक्रता । २ गेंठन । ३ देखो 'तेढी' ।

तेढीमणी तेढी-वि० १ टेढ़ा, वक्र । २ बांका, बहादुर ।

३ कठिन, दुर्गम ।

तेण, तेणि-सर्व० [सं० तस्मिन्] १ उस । २ वह । ३ उसके ।

-क्रि० वि० उससे । -पु० [सं० स्तेन] चोर, तस्कर ।

तेतख-वि० उतना ।

तेतजुग-देखो 'जेनायुग' ।

तेतळइ (ई)-क्रि० वि० १ वहां, तहां । २ तब तक ।

तेतलउ-देखो 'तेतली' । (स्त्री० तेतली)

तेतला-वि० उतना, उतने ।

तेतलु, तेतली-वि० [सं० तत्रत्य] (स्त्री० तेतली) १ वहां का । २ उतना ।

तेता-१ देखो 'जेता' । २ देखो 'तेते' ।

तेताळीस-देखो 'तयाळीस' ।

तेतीस-वि० [सं० त्रयस्त्रिंशत्] तीस व तीन, तेतीस । -पु० तीस व तीन की संख्या, ३३ ।

तेतीसमी (वी)-वि० तेतीसवां, बत्तीस के बाद वाला ।

तेतीसू-वि० पूरे तेतीस ।

तेतीसे'क-वि० तेतीस के लगभग ।

तेतीसौ-पु० ३३ का वर्ष ।

तेते-वि० (स्त्री० तेती) उतने । उतना । -क्रि० वि० तब तक ।

तेत्रिस, तेत्रीस-देखो 'तेतीस' ।

तेथ, तेथि, तेथी, तेथी-क्रि० वि० [सं० तत्र] तहां, वहां ।

तेन-पु० [सं० स्तेन] चोर ।

तेनाळ-देखो 'तहनाळ' ।

तेनेता-पु० [सं० त्रिनेत्र] शिव, महादेव ।

तेपन-वि० पचाम व तीन । -पु० पचाम व तीन की संख्या, ५३ ।

तेपनी, तेपनी-पु० ५३ का वर्ष ।

तेपरार-देखो 'तैपरार' ।

तेपैसंदिन-देखो 'तैपैसंदिन' ।

तेम-क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे । तैसे ।

तेमड़ा, तेमड़ाराय-स्त्री० भावड़ देवी का एक नाम ।

तेमड़ी-पु० जैमलमेर का एक पर्वत ।

तेमण-देखो 'तीवण' ।

तेमरू-पु० भावनूस का वृक्ष ।

तेमा-क्रि० वि० तैसा ।

तेयसी-देखो 'तेजस्वी' । (जैन)

तेव-देखो 'तेज' । (जैन)

तेयलेस्या-देखो 'तजोलेस्या' ।

तेथी-देखो 'तीथी' ।

तेर, तेरइ-देखो 'तेरै' ।

तेरतेरम, तेरमुउ, तेरसू, तेरमी-वि० [सं० त्रयोदशमः] तेरहवां, बारह के बाद वाला ।

तेरस, तेरसि, तेरसी-स्त्री० [सं० त्रयोदशी] प्रत्येक मास के प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी तिथि ।

तेरह-वि० दश व तीन ।

तेरहमी (बौं)-वि० (स्त्री० तेरहमी, बौं) तेरह के स्थान वाला, बारह के बाद वाला ।

तेरही-स्त्री० १ मृतक का तेरहवां दिन । २ इस दिन किया जाने वाला पिंडदान, ब्राह्मण भोजन आदि ।

तेराणमी (बौं)-वि० तिराण के स्थान वाला, ९३ वां, बराण के बाद वाला । -पु० ९३ का वर्ष ।

तेरा-देखो 'तेर' ।

तेराताळी-स्त्री० १ शरीर पर तेरह स्थानों पर बंधे मजीरों को बजाने की क्रिया । २ उक्त प्रकार से मजीरे बजाने से उत्पन्न ध्वनि । ३ उक्त प्रकार के वाद्य बजाने वाली मंडली ।

तेरापंथ-पु० जैन ध्वेतांबर शाखा की एक प्रशाखा ।

तेरापंथी-पु० उक्त शाखा का अनुयायी ।

तेरापळ-वि० १ वदमाश, दुष्ट । २ श्लोधी । ३ दोगला ।

तेराड्यो-पु० [सं० व्यहिक] प्रति तीसरे दिन आने वाला ज्वर ।

तेरिदी-पु० तीन इन्द्रियों वाला जीव या प्राणी ।

तेरिमु-देखो 'तेरमउ, तेरमी' ।

तेरीर-देखो 'तहरीर' ।

तेरुंडी-पु० मकर संक्रांति के दिन किया जाने वाला विभिन्न प्रकार की तेरह-तेरह वस्तुओं का कन्याओं को दान ।

तेरु, तेरुड़ी, तेरु-वि० तैरने की कला में प्रवीण, तैराक ।

तेरे-देखो 'तेर' ।

तेरेक-वि० तेरह के लगभग या करीब ।

तेर-वि० [सं० त्रयोदश] दश और तीन । -पु० दश और तीन की संख्या, १३ । -सर्व० तुम्हारे । -क्रि० वि० तब ।

तेरोड़ी, तेरी-सर्व० (स्त्री० तेरी, तेरोड़ी) तेरा, तुम्हारा ।

तेरी-पु० तेरह का वर्ष ।

तेलंग-देखो 'तैलंग' ।

तेल-पु० [सं० तैल] १ तिल, बीजों व वनस्पतियों से निकलने वाला स्निग्ध व तरल पदार्थ । तेल । २ मिट्टी का तेल व इसी प्रकार के अन्य तेल ।

तेलकार-पु० [सं० तैलकार] १ तेल का व्यापारी । २ तेली ।

तेलगू-देखो 'तैलंग' ।

तेलड़ी-स्त्री० तीन लटिकाओं की माला । -वि० तीन परत की । तीन लड़ी ।

तेसड़ी-वि० (स्त्री० तेलड़ी) १ तीन परत का । २ तीन लड़ों का । ३ तीन पंक्ति का ।

तेलण-स्त्री० तेली की स्त्री ।

तेलपाल-पु० तेलियों से लिया जाने वाला कर ।

तेल-फुल्ल-पु० पुष्पसार, इत्र ।

तेला, तेलास-स्त्री० ऊंट पर मवार तीन व्यक्ति ।

तेलायो-पु० तीन व्यक्तियों की सवारी वाला ऊंट ।

तेलार-पु० तेली ।

तेलिरण-देखो 'तैलंग' ।

तेलियो-वि० १ तेल की तरह चिकना, चमकीला । २ तेल के रंग का भटमैला । -पु० १ तेल के रंग का एक ऊंट विशेष ।

२ उक्त रंग का घोड़ा । ३ एक प्रकार का बबूल ।

४ सींगिया नामक विष । ५ श्याम रंग का मँरव । ६ एक

तरह का साँप । ७ तेल में भीगा वस्त्र । ८ एक प्रकार का

मिह । ९ वर्षा ऋतु में होने वाला एक कीड़ा । -कंद-पु०

एक प्रकार का जमीकंद । -कस्थौ-पु० एक प्रकार का

काला कत्था । -कुमैत-पु० कुमैत या काले रंग का घोड़ा ।

-पांणी-वि० तेल की चिकनाई वाला पानी । -सुरंग-

पु० एक प्रकार का घोड़ा । -सुहागो-पु० चिकना व

श्याम रंग का सुहागा ।

तली-पु० [सं० तैलिक] (स्त्री० तेलण) कोल्हू में सरसों या तिल घेर कर तेल निकालने का व्यवसाय करने वाली

जाति व इस जाति का व्यक्ति । -बाड़ी-पु० तेलियों का

मूहला ।

तेलू-स्त्री० चिकनाई, स्निग्धता ।

तेळी, तेली-पु० १ तीन दिन तक लगातार किया जाने वाला उपवास, व्रत । २ मादव शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक

का गौ मेवा का व्रत । ३ एक साथ उत्पन्न होने वाले तीन

बच्चे । ४ देखो 'तैलियो' ।

तेवड़-स्त्री० १ तैयारी । २ तीन तार या लड़ की रस्सी ।

-पु० ३ विचार । ४ निश्चय, इरादा । ५ प्रबन्ध ।

-वि० तीन तह वाला, तिगुना, तिहरा ।

तेवड़णी (बौं)-क्रि० [सं० त्रिगुणाकरणम्] १ विचार करना, सोचना । २ निश्चय करना, तय करना । ३ दृढ़ निश्चय

करना ।

तेवड़ी-वि० (स्त्री० तेवड़ी) १ तीन परत का, तीन तह का । २ तीन गुना ।

तेवट-स्त्री० १ तबले की एक ताल । २ देखो 'तेवटियो' ।

तेवटियो, तेवटी-पु० १ स्त्रियों के गले का एक आभूषण विशेष । २ तीन पाट का ओढ़ने का वस्त्र, चादर ।

तेवडउ-वि० इतना, उतना ।

तेवण-देखो 'तैवण' ।

तेवणियो-पु० कूए से पानी निकालने वाला ।

तेवणी (बौं)-क्रि० कूए से चरस द्वारा पानी निकालना ।

तेवर, तेवरी-स्त्री० १ क्रोध भरी चितवन, खोरी ।

२ भौंह, भ्रुकुटी ।

तेवाणी (बी), तेवावणी (बी)-क्रि० चरम द्वारा कृष्ण से पानी निकलवाना ।

तेवारी-देखो 'निवारी' ।

तेवीस-देखो 'मईस' ।

तेवीसी-देखो 'तेईगी' ।

तेस-क्रि०वि० १ वहां । २ देखो 'तंस' ।

तेसठ-देखो 'तिरेसठ' ।

तेसठी-देखो 'तिरेसठी' ।

तेसी-सर्व० वैसा, तैसा ।

तेह-पु० [सं० तेहण्य] १ क्रोध, गुस्सा । २ अहंकार, गर्व । ३ देखो 'ते' ।

तेहखानी-देखो 'तहखानी' ।

तेहड़ी-वि० (स्त्री० तेहड़ी) तैसा, वैसा ।

तेहत्त-देखो 'तहत्त' ।

तेहथी-स्त्री० बकरी के बालों का बना, आंगन में बिछाने का मोटा वस्त्र ।

तेह्नि-सर्व० उसे, उसको ।

तेहरी-देखो 'तेहड़ी' । (स्त्री० तेहरी)

तेहघड़-वि० तैसी, वैसी । -क्रि०वि० तब ।

तेहवउ-वि० तैसा, वैसा । -क्रि०वि० तब ।

तेहवि (बी)-वि० तैसी, वैसी । -क्रि०वि० तब, उस समय ।

तेहवै-क्रि०वि० तब ।

तेहवी-वि० [सं० ताहण] (स्त्री० तेहवी) वैसा, तैसा ।

तेहस्पू-क्रि०वि० उससे ।

तेहि-क्रि०वि० वहां, तहां । -सर्व० उस ।

तेही-वि० [सं० तीक्ष्ण] १ गुस्सिल, क्रोधी । २ तैसा, वैसा । -क्रि०वि० उसी प्रकार ।

तेहीतर-देखो 'तिहीतर' ।

तेहीतरी-देखो 'तिहीतरी' ।

तेही-वि० (स्त्री० तेही) तैसा, वैसा । -सर्व० वह ।

ते-देखो 'ते' ।

तैडी-सर्व० (स्त्री० तैडी) तैसा ।

तैनाळ-देखो 'तहनाळ' ।

तैयासियों-देखो 'तंइयासियों' ।

तैयासी-देखो 'तंइयासी' ।

ते पु० [अ०] १ निर्माण, निष्पन्न, फैलना । २ नमी, आर्द्रता । ३ मोह । ४ हित । -स्त्री० ५ काति । ६ ध्वनि । ७ तह, परत । ८ पूर्णता । -वि० निर्णीत, निर्धारित । निश्चित, तबहुदा । पूर्ण, पूरा । -सर्व० जिनको, उसको । तू, तुम, आप । वह, उस । -अव्य० किसी शब्द पर जोर देने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय । -प्रत्यय० तृतीय व पंचम विभक्ति में ।

तैई-सर्व० तेरी ।

तै'कीकत, तै'कीकात, तै'कीयात-देखो 'तहकीकात' ।

तै'खानी-देखो 'तहखानी' ।

तैपधारी-देखो 'निगधारी' ।

तैडी-वि० तैसी, वैसी ।

तैडी-वि० (स्त्री० तैडी) तैसा, वैसा ।

तैजस-देखो 'तेजस' ।

तैडी-देखो 'तैडी' । (स्त्री० तैडी)

तैए-वि० तैसा, वैसा । -सर्व० उस, वह ।

तैतळ, तैतिल-पु० [सं० तैतिल] १ ज्योतिष में ग्यारह करणों में से चौथा । २ देवता ।

तैतिरि-पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम ।

तैतिरीय-स्त्री० कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा । -अरण्यक-पु० उक्त शाखा का एक अंग ।

तैतिरीयक-पु० [सं०] तैतिरीय शाखा का अनुयायी ।

तैतिल-देखो 'तैतिल' ।

तैयु, तैयू-क्रि०वि० [सं० तय] वहां । तहां ।

तैनात-वि० १ निपुक्त, मुक़र्रर । २ तत्पर, तैयार ।

तैनाती-स्त्री० नियुक्ति ।

तैनाळ-देखो 'तहनाळ' ।

तैपरार-पु० [सं० तत्परारि] विगत तीसरा वर्ग ।

तैपेलैदिन-पु० आगामी पांचवां या छठा दिन ।

तैम-वि० तैसे ।

तैयाळी, तैयाळीस-देखो 'तैयाळीम' ।

तैयाळीसी-देखो 'तैयाळी' ।

तैयार-वि० [प्र०] १ तत्पर, उद्यत, तैयार । २ कार्य के लिए उपयुक्त, ठीक । ३ मौजूद, उपस्थित । ४ हृष्ट-गुष्ट, मोटा-ताजा । ५ बनकर पूरा, पूर्ण । ६ प्रयोग में आने लायक । ७ कटिबद्ध, सज्ज । ८ मजा हुआ, व्यवस्थित ।

तैयारी-स्त्री० १ तैयार होने की क्रिया या भाव । २ तत्परता, मुस्तैदी । ३ धूमधाम । ४ मजावट । ५ व्यवस्था, प्रबंध ।

तैयी-पु० मिट्टी का छोटा पात्र विशेष ।

तैरणी (बी) देखो 'तिरणी' (बी) ।

तैराई-स्त्री० १ तैरने की क्रिया या भाव । २ तैरने की कला । ३ तैरने के कार्य में मिलने वाला धन ।

तैराक-वि० तैरने के कार्य में दक्ष, निपुण ।

तैराणी (बी), तैरावणी (बी)-देखो 'तिराणी' (बी) ।

तैरापळ-देखो 'तिरापळ' ।

तैरीख-देखो 'तारीख' ।

तैलंग-पु० १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश । २ इस प्रदेश का निवासी ।

तैलगी-स्त्री० उक्त प्रदेश की भाषा । -वि० उक्त प्रदेश संबंधी ।

तैलंगी-पु० उक्त प्रदेश का निवासी ।

तैलकार-देखो 'तैलकार' ।

तैलकी-देखो 'तहकी' ।

तैलिंग-पु० ब्राह्मणों का एक भेद विशेष ।

तैवड़ी-देखो 'तैवड़ी' ।

तैवार, तैवार-देखो 'तिवार' ।

तैस-पु० १ यावेश, जोश । २ क्रोध, गुस्सा ।

तैस-नैस-देखो 'तहस-नहस' ।

तैसील-देखो 'तहसील' । —दार= 'तहसीलदार' ।

तैसी-वि० (स्त्री० तैसी) उस प्रकार का, वैसा ।

तैहू-पु० हाथी की पीठ पर चारजामे के नीचे रखा जाने वाला वस्त्र ।

तैही-देखो 'तैसी' । (स्त्री० तैही)

तों-देखो 'तो' ।

तोंग-देखो 'तामड़' ।

तोंद-स्त्री० बड़ा पेट, उदर ।

तोंदल-वि० बड़े पेट वाला, तोंदू । (स्त्री० तोंदली)

तोंदो-स्त्री० [सं० तुंदा] तामर ।

तोंदीली, तोंदेल-वि० बड़े पेट वाला, तोंदू । (स्त्री० तोंदीली)

तो-सर्व० [सं० ततः] १ तुम्हारा, तेरा । २ तुझ । ३ 'तू' का कर्म और सम्प्रदान कारक रूप, तुम्हको । ४ तेरे, तुम्हारे । —अव्य० [सं० तद्] १ उस दशा में, तब । २ किसी शब्द पर जोर देने के लिए प्रयुक्त अव्यय ।

तोड़ (ई)-पु० [सं० तोय] १ तेज, कांति, आभा, दीप्ति । २ दृष्टि 'तोय' । —सर्व० १ तेरी । २ तुमसे, तुझसे, तुझे । —अव्य० इस पर भी, तो भी, तब भी ।

तोड़व-देखो 'तोयव' ।

तोक-पु० [अ० तोक] १ हंसुनी के आकार का गले का एक आभूषण विशेष । २ हंसुनी के आकार का अपरार्ध के गले का फंदा । ३ पक्षियों के गले का घुलाकार चिह्न । ४ देखो 'तोय' । —वि० [सं० स्तोकम्] थोड़ा, कम, तुच्छ ।

तोकणी (वी)-क्रि० १ प्रहार के लिए शस्त्र उठाना । २ प्रहार या वार करना । ३ संभालना, धामना, पकड़ना ।

तोकायत-वि० १ शस्त्र उठाने वाला । २ शस्त्रधारी ।

तोछ-पु० [सं० तोप] १ संतोष, तृप्ति । २ मान, प्रतिष्ठा । ३ देखो 'तोफ' ।

तोछणी(वी)-क्रि० १ संतुष्ट करना । २ देखो 'तोकणी'(वी) ।

तोछार-देखो 'तुखार' ।

तोछारी-पु० घण्ट, थोड़ा ।

तोछारी-देखो 'तोक' ।

तोम-पु० [नं० तूम] १ मुगल शासनकाल में मनसबदारों को सम्मान के लिए दिया जाने वाला ध्वज । २ सेना का झंडा या निशान ।

तोड़-पु० १ तोड़ने की क्रिया या भाव । २ नदी, बांध आदि का टूटा हुआ भाग । ३ टूटा हुआ कोई भाग । ४ कुश्ती का एक दांव । ५ रांग से शारीरिक क्षीणता । ६ वजन उठाने में शरीर के संघिम्थलों की क्षति । ७ चीसर तेल का एक दांव । ८ संगीत में ताल का मान । ९ पहले-पहल निकाला हुआ शराब । १० युवती का कौमार्य खण्डन । ११ जवाब । १२ मुलायमे में ठहरने वाली वस्तु । १३ समाधान । १४ काट । १५ कमी, घटत ।

तोड़की-वि० (स्त्री० तोड़की) १ काटने वाला । २ तोड़ने वाला ।

तोड़जांड-पु० १ जाल, युक्ति । २ दांव, पेच । ३ अपना मतलब का स्वार्थ सिद्धि ।

तोड़णी (वी)-क्रि० १ भटका या ग्राधात लगा कर किसी वस्तु का खंडित करना, तोड़ें-टुकड़ें करना । २ वारीक करना, टूटना । ३ विभक्त करना, अलग करना । ४ नष्ट करना । ५ मारना, संहार करना । ६ काटना । ७ बिलाना, ध्वंसीय करना । ८ क्षीण या कमजोर करना । ९ भाव आदि घटाना, कम करना । १० तोड़-फोड़ करना । ११ तूफ का पानी खाली कर देना । १२ किसी युवती का कौमार्य भंग करना । १३ मंथ लगाना । १४ क्रम भंग करना, बंद करना । १५ मर्पदा का उल्लंघन करना । १६ मिटाना । १७ निर्धन करना । १८ पृथक् करना, दूर करना ।

तोड़ादार-स्त्री० पल्ले से छोड़ी जाने वाली एक प्रकार की बन्दूक ।

तोड़ायत-देखो 'तोटायत' ।

तोड़ासाट-पु० स्त्रियों के पैरों का आभूषण, झुपूर ।

तोड़िणी-देखो 'तोड़ी' ।

तोड़िदार-देखो 'तोड़ादार' ।

तोड़ी-पु० १ स्त्रियों के पांव का आभूषण । २ हाथी के पैर का आभूषण । ३ रुपये रखने की धैली । ४ नदी का किनारा । ५ घाटा, कमी । ६ न्यूनता, अभाव । ७ बन्दूक या तोप का पानीता । ८ मोने-चांदी के तारों की रस्सी । ९ रस्सी का टुकड़ा । १० चकमक लगाने से आग निकलने वाला थोड़ा । ११ कष्ट, तकलीफ । —वि० १ काटने वाला । २ मारने वाला ।

तोच, तोचो, तोछ-वि० १ थोड़ा, कम, न्यून । २ अल्प, तुच्छ । ३ दिखला । ४ क्षुद्र । —बुद, बुध-वि० अल्प बुद्धि, अल्पमति ।

तोछड़ी-देखो 'तोच, तांचो' ।

तोछी-देखो 'तोचो' । (स्त्री० तोछी)

तोचड़-स्त्री० ग्रधूरा गर्भ गिराने वाली गाय ।

तोजी-स्त्री० १ उपाय, तरकीब, युक्ति । २ विकल्प ।

तोड-स्त्री० १ कंगाली, निर्धनता । २ कमी, घाटा, अभाव ।

तोडक-पु० [सं०] १ शंकराचार्य के चार प्रधान शिष्यों में से एक । २ एत वर्ण वृत्त ।

तोडकियौ-पु० दम-वारह क्यारियों का समूह ।

तोडकी-देखो 'टोडकी' ।

तोडणी-वि० टूटने वाला, खंड-खंड होने वाला ।

तोटापत-वि० १ निर्धन, गरिब । २ दुःखी, संतप्त । ३ अभाव ग्रस्त ।

तोटी-देखो 'टोटी' ।

तोठी-वि० [सं० तुष्ट] १ प्रसन्न खुश । २ संतुष्ट, तृप्त ।

तोड-देखो 'टोड' ।

तोडइली-स्त्री० १ एक मारवाड़ी लोक गीत । २ देखो 'टोड' ।

तोडड़ी-देखो 'टोडिरी' ।

तोडर-पु० १ स्त्रियों के पांव का एक आभूषण । २ देखो 'टोडर' ।

तोडरी-१ देखो 'टोडरी' । २ देखो 'टोडिरी' ।

तोडारू-पु० ऊट, छोटा ऊट ।

तोडियों पु० १ ऊट का बचना । २ एक लोक गीत विशेष ।

तोडी-स्त्री० एक प्रकार की सरसों । २ मकानों व दीवारों में लगने वाला अथवा मूखी पन्थर । ३ देखो 'टोडी' ।

तोडूकणी (बो)-देखो 'ताडूकणी' (बो) ।

ताडी-देखो 'टोडी' ।

तोत, तोतक-पु० १ घोड़ा, छल, कपट । २ पड़यंत्र । ३ डोंग, पाखंड । ४ झूठ, असत्य । ५ हकलाहट ।

तोतळा-स्त्री० १ पार्वती । २ दुर्गा देवी ।

तोतळी-वि० (स्त्री० तोतळी) हकला कर बोलने वाला ।

तोतापुरी-स्त्री० ग्रामों की एक किस्म व इस किस्म का ग्राम ।

तोतीबलाय-वि० भूख ।

तोती-पु० [फा० तोता] १ हर रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, कीच, शुक्र । २ बन्दूक की कल । -वि० (स्त्री० तोती) तुतला कर बोलने वाला, हकलाने वाला ।

तोत्र-पु० [सं०] १ बरछा, भाला । २ अंकुश । ३ कीलदार चाबुक । ४ मंवेजी हाकिम की छड़ी । —महानट-पु० शिव, महादेव ।

तोद-पु० [सं०] कष्ट, पीड़ा, व्यथा । -वि० कष्ट देने वाला, मताने वाला ।

तोदन-पु० १ तोत्र, चाबुक । २ कष्ट, पीड़ा ।

तोदनी-स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।

तोप-स्त्री० [तु०] युद्धादि में गोला चलाने का बड़ा यंत्र, बड़ी बन्दूक । —खानो-पु० उक्त यंत्र व इसका सामान रखने का कक्ष ।

तोपची-पु० [तु०] तोप चलाने वाला व्यक्ति, गोलंदाज ।

तोफ-देखो 'तोप' ।

तोफगी-स्त्री० [फा० तुहफा] १ अच्छापन, खूबी, विशेषता । २ नमूना ।

तोफान-देखो 'तूफान' ।

तोफी-पु० [अ० तुहफ] १ उपहार, भेंट । २ भेंटस्वरूप दी जाने वाली वस्तु । ३ बनाव, आडंबर । -वि० बढ़िया, सुन्दर, अच्छा ।

तोब-देखो 'तोबा' ।

तोबड़, तोबड़ियो, तोबड़ी-वि० १ मोटा, ताजा, हृष्ट-पुष्ट । २ देखो 'तोबर' । ३ देखो 'थोबड़ी' ।

तोबची-देखो 'तोपची' ।

तोबणी (धो)-देखो 'चोबणी' (धो) ।

तोबर-पु० [फा०] १ घोड़े को दाना खिलाने का थैला । २ नीब ।

तोबरदार-वि० गोबरदार ।

तोबरळ-पु० थोड़ा, अथवा ।

तोबरी-१ देखो 'तोबर' । २ देखो 'थोबरी' ।

तोबा-स्त्री० [अ० तोब] १ अपने कुटुंबियों या गलतियों के प्रति किया जान वाला गश्वाताप । २ प्रायश्चित्त । ३ खेद, अकर्मिता । ४ आश्रयजनक खेद । ५ धृत्ता व भर्त्सना सूचक शब्द । ६ त्याग । ७ बुरे कार्यों के त्याग का संकल्प ।

तोबाकू-देखो 'तमाकू' ।

तोम-पु० [सं० स्तोम] १ यज्ञ, हवन । २ अधिकार । ३ दल । ४ सेना । ५ गुण्ड, समूह । -वि० १ सब, समस्त । २ अधिक, बड़ा ।

तोमड़ी-देखो 'तुंबी' ।

तोमर-पु० [सं०] १ लोहे का बड़ा फल लगा भाले के आकार का शस्त्र । २ बरछा । ३ बाण, तीर । ४ एक प्राचीन देश । ५ एक छन्द विशेष । ६ देखो 'तंबर' ।

तोमरार-पु० शस्त्र ।

तोप-पु० [सं०] १ जल, पाना । २ पुष्पापाटा नक्षत्र । -वि० तो भी, तथापि । -सर्व० तेरा, तुम्हारा ।

तोपची-पु० एक नृत्य विशेष ।

तोपद-पु० [सं०] १ बादल, मेघ । २ छाया, धी । ३ नाशक मोघा । -वि० जलदात करने वाला । जल देने वाला ।

तोपदानम-स्त्री० [सं०] वर्ण वृत्त ।

तोयध

(६०३)

तीसक

तोयध, (धर, धार)-पु० [सं० तोय-धर] १ बादल, मेघ ।
२ देखो 'तोयधि' ।

तोयधि (धी, निध, निधी)-पु० [सं०] समुद्र, सागर ।

तोयनीवी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि ।

तोयेस-पु० [सं० तोयज] समुद्र ।

तोरे-पु० [सं० तुवर] १ अरहर । २ देखो 'तोरे' । -सर्व०
तेरा, तुम्हारा ।

तोरेड (ई)-१ देखो 'तोरू' । २ देखो 'तोरे' ।

तोरेड-सर्व० तेरा, तुम्हारा ।

तोरेवी, तोरेकू, तोरेकू-१ देखो 'तुरकी' । २ देखो 'तुरक' ।

तोरेडी-पु० (स्त्री० तोरेडी) १ ऊट का वज्र । २ शतरंज का
एक मोहरा । -सर्व० तेरा, तुम्हारा ।

तोरेण (णि)-पु० [सं०] १ किसी नगर या भवन का
मण्डपकार व मजा हुआ मुख्य प्रवेश द्वार । २ मेहराबदार
द्वार । ३ विद्याहादि मांगनिक अवसरों पर बनाया हुआ
अस्थायी द्वार । ४ बांस की खपचियों व काठ की निडियों
का बना उपकरण जो कन्या के विवाह के समय पिता के
द्वार पर बांधा जाता है । ५ मजावट की मालायें बंदरवार
आदि । ६ दूधली में होने वाला एक सामूहिक चिह्न
विशेष । ७ ऊट की नकल का पदार्थ । ८ विशाखा नक्षत्र
का एक नाम । -घोड़ी-पु० जिस घोड़े पर बैठकर दूल्हा
तोरेण बंदना करता है । -छड़ी-स्त्री० तोरेण के अभिवादन
की कोई हरी टहनी । -धब, धंभ, धांस-पु० कन्या के
विवाह पर घर में स्थापित किया जाने वाला काष्ठ का
छोटा स्तंभ विशेष । -पूठी-स्त्री० विवाह के अवसर
पर ब्राह्मण द्वारा किया जाने वाला एक मंत्रोच्चार ।
-वार-स्त्री० बंदनवार । -स्तंभ-स्तंभ-तोरेण-धांस' ।

तोरेणदारलगाम-स्त्री० पंती व छांटी कीलें सभी छोड़े की
लगाम ।

तोरेणमाल (छ)-स्त्री० [सं०] अवलिकापुरी ।

तोरेणयी-पु० १ मध्य लम्बाट पर भीरी वाला बेल ।
२ देखो 'तोरेया' ।

तोरेणी-पु० १ गहूँ आदि की फसल काटने का क्रम । २ क्रमशः
काटा जाने वाला पसल का भाग । ३ एक प्रकार का
घोड़ा । ४ देखो 'तोरेण' ।

तोरेणी (बी)-देखो 'तोड़णी' (बी) ।

तोरी-सर्व० १ तेरी, तुम्हारी । २ देखो 'तोरू' ।

तोरे, तोरे-सर्व० १ तुम्हारा, तेरा । २ देखो 'तोरू' ।

तोरेड-स्त्री० तुरई से मिलती-जुलती एक देवदाली नामक लता ।

तोरे, तोरे-स्त्री० १ छोड़े पत्ते व पीले फूलों की एक लता ।
२ इस लता का पतला व लंबा फल जिसकी सब्जी बनती
है, तुरई ।

तोरे-कि०वि० तब । -सर्व० तेरे, तुम्हारे ।

तोरी-सर्व० (स्त्री० तोरी) तेरा, तुम्हारा । -पु० १ रंग-रूप,
बाल-रंग । २ प्रभाव । ३ सीमा, किनारा । ४ देखो
'तोड़ी' ।

तोल-पु० [सं० ताल] १ तराजू । २ तोलने का उपकरण ।
३ वजन, भार । ४ परिमाण का अंदाज, अनुमान ।
५ थाह । ६ स्थिरता, रहता, अटलता । ७ मान, प्रतिष्ठा,
बड़प्पन । ८ अधिकार, कब्जा, वश । ९ शक्ति, बल ।
१० विपदा, विपत्ति । ११ इज्जत । १२ स्वभाव, प्रकृति ।
१३ विचार । १४ ध्वज । -वि० समान, तुल्य ।

तोलडी-स्त्री० मिट्टी का छोटा पात्र ।

तोलणी-वि० तोलने वाला ।

तोलणी (बी)-कि० [सं० तोलनम्] १ तराजू या तकड़ी में
रख कर किसी वस्तु का वजन या भार ज्ञात करना ।
२ कुछ निश्चित वजन के लिए वस्तु को तराजू में डाल
कर संतुलन करना । ३ सौदा बेचने के लिए वस्तुओं का
तोल-जोख करना । ४ तुलना करना, मिलान करना ।
५ प्रहार के लिए शस्त्रादि को हाथ में लेकर साधना ।
६ युद्ध करना, मुकाबला करना, सामना करना । ७ संहार
करना, मारना । ८ चिन्तन करना, विचार करना, मनन
करना । ९ अनुमान या अंदाजा लगाना । १० समझ में
बैठाना । ११ उचित-अनुचित का ध्यान करना ।

तोलरिण-पु० युद्ध का झण्डा, पताका ।

तोलाई-देखो 'तुलाई' ।

तोलाछपाई-पु० एक प्रकार का प्राचीन सरकारी कर ।

तोलाणी (बी), तोलावणी (बी)-देखो 'तुलाणी' (बी) ।

तोलापत-पु० १ खलिहान में अनाज तोलने का कार्य करने वाला
अनुचर । २ तोलने वाला । ३ उक्त नाम से लिया जाने
वाला कर ।

तोलयी-देखो 'तौलयी' ।

तोले, तोलें-वि० [सं० तुल्य] समान, सदृश, बराबर ।

तोली-पु० [सं० तोलक] १ बारह मासे भर का एक तोल ।
२ इस तोल का बाट या सिक्का । ३ ऊँटी का एक रोग ।
४ इस रोग से पीड़ित ऊँट ।

तौली-पु० [सं० तोल] १ तोलने का उपकरण, बाट । २ अण्ड-
कोश । ३ देखो 'तोल' । ४ देखो 'तोली' ।

तोयी-देखो 'तवी' ।

तोस-पु० [सं० तोष] १ संतोष, तृप्ति । २ प्रसन्नता ।
[फा० तोश] ३ भोज्य पदार्थ, खाने का सामान । ४ वस्त्र,
कपड़ा । ५ सफर का सामान । ६ शक्ति, बल ।

तोसक-स्त्री० [फा० तोशक] १ गद्देदार, बिछोना, बिस्तर ।
२ गद्दी-तकिया । ३ गृहस्थी का सामान । ४ खाने-पीने का

सामान । -वि० [सं० तोषक] संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला ।
 तोषण-पु० [सं० तोषण] तृप्ति, संतोष । प्रमत्तता । -वि० संतुष्ट, प्रमत्त ।
 तोषणी (बो)-क्रि० प्र० [सं० तोषणम्] संतुष्ट करना, तृप्त करना । संतुष्ट होना ।
 तोषवांन-पु० [फा० तोषादान] १ यात्रा आदि में भोजन सामग्री साथ ले जाने का थैला । २ रुपये पैसे रखने का थैला । ३ सिपाहियों की, कारतुन की कमर पेटी ।
 तोषल-पु० [सं० तोषल] १ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया कंस का एक मल्ल । २ मूलल ।
 तोषाखानो-पु० [फा० तोषः खानः] १ खाद्य सामग्री रखने का कक्ष, रसोईघर । २ प्रमूल्य वस्त्राभूषण रखने का कक्ष ।
 तोषित-वि० [सं० तोषित] संतुष्ट, तृप्त ।
 तोहफी-देखो 'तोफी' ।
 तोहमत-स्त्री० [प्र०] १ मिथ्या अभियोग । २ झूठा कलंक, झूठी बदनामी ।
 तोहारी, तोहाळी-सर्व० तेरा, तुम्हारा ।
 तोहि, (ही)-देखो 'तोई' ।
 तोहीन-देखो 'तोहीन' ।
 तो-देखो 'तो' ।
 तोइ, तोई-देखो 'तोइ' ।
 तोक, तोख-देखो 'तोक', 'तोख' ।
 तोड़ी-देखो 'तोड़ो' ।
 तोड़-देखो 'तोड़' ।
 तोदार-वि० प्रोजम्बी, नेजम्बी ।
 तोबत-स्त्री० [प्र०] १ अपमान, अनादर । २ देखो 'तोहमत' ।
 तोम-देखो 'तोम' ।
 तोमर-देखो 'तोमर' ।
 तोर पु० [प्र०] १ चाल-चलन । चाल-डाल । २ मान, प्रतिष्ठा । ३ अश्वर्य, वैभव । ४ प्रभाव, रीब । ५ तेज, पराक्रम । ६ अवस्था, दशा । ७ गर्व, अभिमान । ८ इगदा, हब । ९ रंग-रंग । १० जौली, पद्धति, तरीका । ११ लक्षण ।
 तीरणी (बो)-क्रि० १ जोश पूर्वक आगे बढ़ना । बढ़ाना । २ देखो 'तोड़णी' (बो) ।
 तीरां-क्रि० वि० वहाँ, तहाँ ।
 तीरात-देखो 'तीरेत' ।
 तीरावटी (वाटी)-देखो 'तिवरावटी' ।
 तीरी-पु० १ मोट की लाव का एक भाग । २ देखो 'तीरी' ।
 तील-देखो 'तील' ।
 तीलणी (बो)-देखो 'तीलणी' (बो) ।
 तीलाई-देखो 'तुलाई' ।

तीलाणी (बो), तीलावणी (बो)-देखो 'तुलाणी' (बो) ।
 तीलियौ-पु० [प्र० टावल] स्नान करके शरीर पीछने का छोटा वस्त्र, अंगोछा ।
 तीहि, तीही-देखो 'तोई' ।
 तीहीन, तीहीनी-स्त्री० [सं० तीहीन] अपमान, अनादर, अप्रतिष्ठा ।
 त्नी-अव्य० ऊट आदि को पानी पिनाते समय बोला जाने वाला शब्द ।
 त्यंहार-देखो 'तिवार' ।
 त्यउं-क्रि० वि० व्रमे, नमे ।
 त्यजउ-वि० [सं० त्यक्तः] छोड़ा हुआ, त्यक्त ।
 त्यजणी (बो)-देखो 'तजणी' (बो) ।
 त्यां-सर्व० १ उन । २ उनके, उनके । ३ उनका । ४ उनकी । ५ उन्होंने । -क्रि० वि० १ वहाँ तहाँ । २ तैसे । ३ देखो 'ता' । -अव्य० तत्क पयन्त ।
 त्याही-सर्व० उमा । व्रमे ही ।
 त्या-सर्व० वह, उम ।
 त्याग-पु० पु० [सं०] १ छोड़ने की क्रिया या भाव । २ किसी धान, आदत या वस्तु को हमेशा के लिए छोड़ देने की अवस्था । ३ परहेज । ४ किसी वस्तु आदि से अपना स्वत्व हटा लेने की अवस्था । ५ उत्सर्ग, दान । ६ विरक्ति, तटस्थता । ७ दान स्वरूप दिया जाने वाला द्रव्य । ८ उदारता । ९ विरक्ति, उदासीनता । १० पसेव । ११ विच्छेद ।
 त्यागण-पु० परित्याग, उत्सर्ग आदि की क्रिया । -वि० त्याग करने वाला ।
 त्यागणी (बो)-क्रि० १ नजना, छोड़ देना । २ हमेशा के लिए छोड़ देना । ३ परहेज करना । ४ संबंध न रखना । ५ विरक्त होना । ६ तटस्थ होना । ७ उत्सर्ग करना, दान करना । ८ उदारता करना ।
 त्यागघारी-वि० [सं०] १ जिसने त्याग किया हो । २ उदासी, विरक्त । ३ दानी, उदार । ४ त्यागी ।
 त्याग-पत्र-पु० [सं०] १ इस्तीफा । २ तलाकनामा ।
 त्यागी-वि० १ त्याग करने वाला । २ उदासी, विरक्त । ३ उदार, दानी, दातार । ४ वीर, बहादुर । ५ फल की आशा न रखने वाला ।
 त्यार-देखो 'तैयार' ।
 त्यारणी-देखो 'तारणी' ।
 त्यारां-क्रि० वि० तब । -सर्व० उनका ।
 त्यारी-देखो 'तैयारी' ।
 त्यारु (रु)-देखो 'तारु' ।
 त्याव-पु० [सं० त्रिपाद] बड़ी तिपाई ।

व्याहार-क्रि० वि० तब ।

त्युं, त्युं-क्रि० वि० १ तैमे, जैमे । २ वंसा ।

त्युंहार-देखो 'तिवार' ।

त्यो-क्रि० वि० १ उम, भांति । उस प्रकार, उस तरह । २ वंसा ।

त्योरी-स्त्री० चितवन, दृष्टि, ग्रन्थोक्त । भृकुटि ।

त्योहार-देखो 'तिवार' ।

त्यो, त्यो-मव० १ तेरे । २ उनके । ३ देखो 'त्यो' ।

त्योणो-वि० त्रिगुणा ।

त्योर, त्योरी-देखो 'त्योरो' ।

त्योहार-देखो 'तिवार' ।

त्रंब-स्त्री० [मं० वम्बिका] १ देवी । २ देखो 'नव' ।
३ देखो 'त्रंबक' ।

त्रंबक-पु० [सं० त्र्यम्बक] १ महादेव, रुद्र । २ नगाड़ा ।

त्रंबगळ, त्रंबट, त्रंबटी, त्रंबगळ-पु० नगाड़ा ।

त्रंबा-स्त्री० १ बोटी । २ देखो 'नव' ।

त्रंबाक, त्रंबाकयी, त्रंबागळ, त्रंबागळी, त्रंबाट, त्रंबाळ
त्रंबाळी, त्रंबोक, त्रंबक, त्रंबाट, त्रंबाळ, त्रंबाळी-पु०
[मं० त्रायिक] नगाड़ा, गंगावाय ।

त्रंबट त्रंबट-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

त्रंबाट-देखो 'नगाड़ा' ।

त्रंबाळ-स्त्री० १ मूर्छा, बेहोशी । २ देखो 'त्रंबाळ' ।

त्र-वि० तीन ।

त्रइ, त्रई-वि० [सं०] तीन । —लोक-पु० तीनों लोक, त्रिलोकी ।
—लोकनाथ= 'त्रिलोकनाथ' ।

त्रईतन-पु० [सं० त्रयीतनुः] सूर्य, भानु ।

त्रईविक्रम-देखो 'त्रिविक्रम' ।

त्रकाळ-देखो 'त्रिकाळ' ।

त्रकाळण्य-देखो 'त्रिकालण्य' ।

त्रकाळवरसी-देखो 'त्रिकालदग्भी' ।

त्रकुत-पु० [सं० त्रिकुट] पहाड़, पर्वत ।

त्रकुट-पु० १ एलचो । २ लंका का एक पर्वत । —बासी,
बासी-पु० लंकावासी । राजरा ।

त्रकुटाण-पु० लंका का पर्वत ।

त्रकुटाचल-पु० त्रिपूट पर्वत ।

त्रकुटी-देखो 'त्रिकुटी' ।

त्रकुण-देखो 'त्रिकोण' ।

त्रकुटबंध-पु० हिंगल का एक छन्द या गीत ।

त्रकुणी-पु० १ जैसलमेर के गढ़ का नाम । २ देखो 'त्रिकोण' ।

त्रख, त्रख, त्रखा-स्त्री० [सं० तृषा] १ प्यास । २ तृष्णा ।
३ अभिलाषा, इच्छा । ४ लोभ, लालच । ५ कामदेव
की कन्या ।

त्रखलुर, त्रखावंत, त्रखित-वि० [मं० तृषार्त, तृषावान, तृषित]

प्यासा, तृषातुर । अभिलाषी । लोभी ।

त्रखणी-१ देखो 'त्रकुणी' । २ देखो 'त्रिकोण' ।

त्रखण-देखो 'त्रखा' ।

त्रगुट-देखो 'त्रिकुट' ।

त्रगुण-देखो 'त्रिगुण' । —नाथ= 'त्रिगुणनाथ' ।

त्रघाई-स्त्री० डोल या नगाड़े की ध्वनि ।

त्रड़-देखो 'तड़' ।

त्रड़त्रड़णी (बो)-देखो 'नड़नड़णी' (बो) ।

त्रजड़-देखो 'त्रिजड़' ।

त्रजड़ाहत (हथ, हाथ)-देखो 'त्रिजड़ाहथ' ।

त्रजड़ी-देखो 'त्रिजड़' ।

त्रजट-पु० १ शिव, महादेव । २ देखो 'त्रिजटा' ।

त्रजमा, त्रजामा-स्त्री० [मं० त्रियामा] रात्रि, विद्या ।

त्रटक-देखो 'ताटक' ।

त्रट-स्त्री० १ प्यास । २ लोभ । ३ देखो 'तट' ।

त्रटकणी (बो)-देखो 'तड़कणी' (बो) ।

त्रटको-पु० १ नाज-नखरा । २ तड़क-भड़क ।

त्रट-देखो 'तट' ।

त्रण-देखो 'त्रिण' ।

त्रणकाळ-पु० [सं० तृण-प्रकाळ] १ घास का अभाव । २ घास
के अभाव वाला वर्ष । ३ देखो 'त्रिकाल' ।

त्रणकेतु (केतुक)-पु० [सं० तृणकेतु] १ बांस । २ ताड़वृक्ष ।

त्रणवीठ-पु० [सं० त्रिदृष्टि] शिव, महादेव ।

त्रणद्रुम-पु० [सं० तृण-द्रुम] खजूर ।

त्रणधज, त्रणपुज-स्त्री० [सं० तृण-ध्वज] बांस ।

त्रणनेण-देखो 'त्रिनयन' ।

त्रणराज (राजक)-पु० [सं० तृणराज] १ ताड़ वृक्ष । २ बांस ।

त्रणवाळ-वि० [सं० त्रिण-वाल] नीला, आसमानी ।

त्रण-देखो 'त्रिण' ।

त्रताप-देखो 'त्रिताप' ।

त्रताळीस-देखो 'त्रताळीस' ।

त्रनी, त्रनीस-वि० [सं० तृतीय] १ तीन, तीसरा ।
२ देखो 'तेतीस' ।

त्रनीया-देखो 'त्रिनीया' ।

त्रनडडणी (बो)-क्रि० टपकना, भरना ।

त्रदम, त्रदव-देखो 'त्रिदव' ।

त्रदवसा-देखो 'त्रिदवसा' ।

त्रदस-वि० १ तेरह । २ देखो 'त्रिदस' । —तप= 'त्रिदसतप' ।

त्रदसा-देखो 'त्रिदस' ।

त्रदसाविभू-पु० [मं० त्रिदशः विभूः] इन्द्र ।

त्रदीख, त्रदीस-देखो 'त्रिदीग' ।

त्रया-देखो 'त्रिधा' ।

त्रधार, त्रधात्रै-पु० १ एक प्रकार का तीर । २ तीन तीक्ष्ण धारों का एक लक्ष्य । ३ श्रृङ्खल ।

त्रन देखो 'त्रिण' ।

त्रनयण-देखो 'त्रिनयन' ।

त्रनया-स्त्री० दुर्गा, भवानी, देवी ।

त्रनत्र, त्रनैत्र-देखो 'त्रिनत्र' ।

त्रप-पु० पलाश वृक्ष ।

त्रपट-त्रि० [सं० त्रपया] तीव्र, दुष्ट, पापी ।

त्रपण-पु० [सं० तर्पणकम्] १ तर्पण । २ तृप्ति ।

त्रपणी (बी)-त्रि० तृप्त होना, संतुष्ट होना ।

त्रपत, त्रपतक, त्रपत्त-वि० [सं० तृप्त] तृप्त, संतुष्ट ।

त्रपय, त्रुण ।

त्रपति-स्त्री० [सं० तृप्ति] सतोष, तृप्ति, तृप्ति ।

त्रपथा-स्त्री० [सं० त्रिपथगा] गंगानदी ।

त्रपरार-देखो 'त्रिपुरारि' ।

त्रपा-स्त्री० [सं०] १ लज्जा, शर्मा । २ संकोच, निहाज ।

३ स्वाति, प्रसिद्धि । ४ छिनाल स्त्री । —वत, वत-वि०

लज्जालु, शर्माता । उष्ण, गर्म ।

त्रपु-पु० रागा नामक धातु ।

त्रपुर-देखो 'त्रिपुर' ।

त्रपुरांत-पु० [सं० त्रिपुर-अंतक] महादेव, शिव ।

त्रपुर-देखो 'त्रिपुरा' ।

त्रपुरार, त्रपुरारि-देखो 'त्रिपुरारि' ।

त्रपुरा-सुर-स्वामणी-स्त्री० पार्वती ।

त्रपुरी-स्त्री० छोटी इलायची ।

त्रप्त-वि० [सं० तृप्त] संतुष्ट, तृप्त ।

त्रबंक, त्रबंकड़ी-पु० १ डिंगल का एक गीत या छंद । २ देखो 'त्रंबक' ।

त्रबाक-देखो 'त्रबागळ' ।

त्रबंड-देखो 'त्रबांड' ।

त्रबणी-देखो 'त्रिभणी' ।

त्रबांड-वि० कुरुवात, बदनाम, निन्दित ।

त्रभाग, त्रभागी, त्रभागी-पु० १ भाला । २ त्रिशूल । —वि० तीन भागों में विभक्त, तीन भाग वाला ।

त्रभुयण-देखो 'त्रिभुवन' । —नाथ=त्रिभुवननाथ ।

त्रमक, त्रमक-देखो 'त्रंबक' ।

त्रमागळ-देखो 'त्रबागळ' ।

त्रमाड-देखो 'त्रमाट' ।

त्रमाळ, त्रमाळी-देखो 'त्रवाळ' ।

त्रम्भक-देखो 'त्रंबक' ।

त्रय-वि० १ तीन । २ तीसरा, तृतीय ।

त्रयदत्त, (दत्त)-त्रि० [सं० त्रयोदश] तेरह ।

त्रयनयण-देखो 'त्रिनयन' ।

त्रयस्व-पु० १ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर । २ दत्तात्रेय ।

त्रयलोक-देखो 'त्रिलोक' ।

त्रयाळी-देखो 'त्रियाळी' ।

त्रयानेता-पु० ब्रह्मा, विष्णु, महेश । —वि० तीन, तीसरा ।

त्रयासिद्धी-देखो 'तृड्यासिद्धी' ।

त्रयी-पु० [सं०] १ तीन वस्तुओं का समूह । २ तीनों वेद ।

त्रयैतन-पु० सूर्य ।

त्रयोदस-त्रि० [सं० त्रयोदश] तेरह ।

त्रयोदसी-स्त्री० तेरह की तिथि, तेरस ।

त्रयोसळ-देखो 'त्रिमळी' ।

त्ररेख-पु० [सं० त्रिरेख] १ शंख । २ ललाट पर पड़ने वाली तीन रेखाएँ ।

त्रलोक-देखो 'त्रिलोक' । —पति='त्रिलोकपति' । —राव='त्रिलोकराव' ।

त्रलोचण-देखो 'त्रिलोचन' ।

त्रलोचना-देखो 'त्रिलोचना' ।

त्रबक, त्रबकड़ी, त्रबक्री-वि० १ धीर, योद्धा, बहादुर ।

२ गहाराक, नाश करने वाला । ३ देखो 'त्रंबक' ।

त्रबळ-वि० टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, बाका ।

त्रबळि (ळी)-देखो 'त्रिबळ' ।

त्रयवेसा-देखो 'त्रयम' ।

त्रवाळी-पु० १ चक्कर । २ देखो 'त्रिवाळी' ।

त्रविक्रम-देखो 'त्रिविक्रम' ।

त्रवेणी-देखो 'त्रिवेणी' ।

त्रवेळू-वि० तीन समय का ।

त्रसदा-स्त्री० [सं० त्रिसंध्या] संध्या ।

त्रस-पु० [सं०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की शक्ति रखने वाला जाव । २ जगन, धन । ३ वास, भय । ४ तृषा, प्यास ।

त्रसका-पु० १ हाथ । २ देखो 'त्रिमकान' ।

त्रसगति, त्रसगती-स्त्री० [सं० त्रिशांति] देवी, शक्ति ।

त्रसटणी (बी)-देखो 'त्रिमटणी' (बी) ।

त्रसणा-देखो 'त्रिसणा' ।

त्रसणी (बी)-त्रि० १ डरना, भय खाना । २ फटना ।

त्रसत-वि० [सं० तृपित] प्यासा ।

त्रसान-पु० भय, डर ।

त्रसना, त्रसना-देखो 'त्रिसना' ।

त्रसर-स्त्री०—ललाट पर कोप के कारण होने वाली तीन मलवटें ।

त्रसरी-स्त्री० तीन रेखाएँ ।

ब्रसळ, ब्रसळी-पु० १ जोश, आवेग । २ भय । ३ घोड़ा, घोष ।
 ४ ललाट । ५ देखो 'ब्रिसळी' ।
 ब्रसा-देखो 'ब्रसा' ।
 ब्रसाकी-वि० प्वासा ।
 ब्रसाणी (बो)-कि० भय दिखाना, डराना ।
 ब्रसावत-वि० [सं० वृषावत] १ प्वासा । २ अतृप्त, असंतुष्ट ।
 ब्रसिध, ब्रसोंघ, ब्रसोंघ-वि० बहादुर, जवरदस्त ।
 ब्रसुर-वि० [सं०] भीरु, डरपोक ।
 ब्रसुळ, ब्रसुळ-१ देखो 'ब्रिसळी' । २ देखो 'ब्रिसुळ' ।
 ब्रस्त-वि० [सं०] १ डरा हुआ, भयभीत । २ सताया हुआ, पीड़ित । ३ जिसे ब्राम दी गई हो । ४ दुःखी ।
 ब्रस्सरा-देखो 'ब्रमिरा' ।
 ब्रह्-पु० १ भय, डर । ३ नगाड़े की ध्वनि । -वि० तीन ।
 ब्रह्क-स्त्री० नगाड़े की ध्वनि । वाद्य ध्वनि ।
 ब्रह्कणी (बो), ब्रह्कणी (बो)-कि० १ नगाड़ा बजना, बजाना । २ रण भेरी बजना, बजाना ।
 ब्रह्णी (बो)-कि० नगाड़ा बजना, वाद्य ध्वनि ।
 ब्रह्ब्रह्णी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्ब्रह्मि-स्त्री० नगाड़े की ध्वनि ।
 ब्रह्ब्रह्मणी (बो) ब्रह्ब्रह्मणी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रहासणी (बो)-कि० नगाड़ा बजाना ।
 ब्रह्, ब्रह्-वि० तीन, तीनों ।
 ब्रह्ग देखो 'ब्रह्ग' ।
 ब्रह्गड़ी-स्त्री० एक प्रकार का शाक ।
 ब्रह्ग-पु० [सं० ब्रह्ग] १ कवच । २ डाल । ३ रक्षा, सुरक्षा ।
 ४ गजत, संश्लेष । ५ शरण, पनाह । ६ सहायता ।
 ७ छुटकारा, मुक्ति ।
 ब्रह्गपत्र-पु० [सं० ब्रह्गपत्र] एक वृक्ष विशेष ।
 ब्रह्गपौरस-पु० गर्व, अभिमान ।
 ब्रह्णी-वि० [सं० ब्रह्ग] १ रक्षक । २ शरण देने वाला ।
 ३ देखो 'ब्रह्ग' ।
 ब्रह्-देखो 'ब्रह्ग' ।
 ब्रह्णी (बो)-कि० ऊंट का उछलना, कूदना ।
 ब्रह्गळ-देखो 'ब्रह्गळ' ।
 ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्कट-देखो 'ब्रह्कट' ।
 ब्रह्क-ब्रासिया-स्त्री० ताम्र-पात्र में उबाली हुई भांग ।
 ब्रह्कळ, ब्रह्कळी-देखो 'ब्रह्कळ' ।
 ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्कड-देखो 'ब्रह्कड' ।
 ब्रह्क-ब्रासिया-स्त्री० ताम्र-पात्र में उबाली हुई भांग ।
 ब्रह्कळ, ब्रह्कळी-देखो 'ब्रह्कळ' ।
 ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्कड-देखो 'ब्रह्कड' ।
 ब्रह्कडणी (बो)-देखो 'ब्रह्कडणी' (बो) ।

ब्रह्कडणी-देखो 'ब्रह्कडणी' ।
 ब्रह्कळ-देखो 'ब्रह्कळ' ।
 ब्रह्कळ, ब्रह्कळी-देखो 'ब्रह्कळ' ।
 ब्रह्कड-देखो 'ब्रह्कड' ।
 ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्कड-पु० १ भय, आतंक, डर । २ ताड़ वृक्ष । -स्त्री० ध्वनि विशेष ।
 ब्रह्कणी (बो)-कि० मारना, नष्ट करना, संहार करना ।
 ब्रह्कणी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्कणी-स्त्री० [सं० ब्रासन] काटने की क्रिया या भाव ।
 ब्रह्कणी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्क-स्त्री० तराजू, तकड़ी ।
 ब्रह्क-स्त्री० १ एक प्रकार की तश्तरी । २ शस्त्र प्रहार ।
 ३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ४ चोट, आघात, वार ।
 ५ देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्क-पु० १ योग के षट्कर्मा में से छठा कर्म या साधन क्रिया ।
 २ देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्क-पु० १ डिगल का एक गीत या छन्द । २ देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्क, ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्कहर-पु० ब्रह्मियों से बनाया हुआ मकान, घर ।
 ब्रह्क-वि० (स्त्री० ब्रह्क) १ भयभीत, डरा हुआ । २ पीड़ित ।
 ब्रह्कड-वि० [सं० ब्रह्क] भयभीत, डरा हुआ ।
 ब्रह्कणी (बो)-कि० [सं० ब्रह्क] १ भागना, घौटना । २ भयभीत होना, डरना । ३ पीड़ित होना, संतप्त होना ।
 ब्रह्क-स्त्री० दहाड़, गर्जना ।
 ब्रह्कणी (बो)-कि० १ सिंह का गर्जना । २ सांड या बिल का दहाड़ना ।
 ब्रह्कड-वि० दहाड़ने या गर्जने वाला ।
 ब्रह्कणी (बो)-कि० दहाड़ना, गर्जना ।
 ब्रह्कणी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्क, ब्रह्क-वि० [सं० ब्रह्क] १ रक्षा करने वाला, सुरक्षा करने वाला । २ बचाने वाला । ३ संरक्षक । ४ सुरक्षित ।
 ब्रह्क-देखो 'ब्रह्क' ।
 ब्रह्कणी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्क-स्त्री० टपरी, भोंवड़ी ।
 ब्रह्कणी (बो)-देखो 'ब्रह्कणी' (बो) ।
 ब्रह्कणी (बो)-कि० १ भयभीत होना, डरना । २ भागना, घौटना ।
 ब्रह्कणी, ब्रह्कणी, ब्रह्कणी-स्त्री० [सं० ब्रह्कणी] ब्रह्मण की लता । -वि० ब्रह्म ।

प्रास-स्त्री० [सं०] १ डर, भय । २ पीड़ा, कष्ट, वेदना ।
 ३ मराने की क्रिया । ४ किसी रत्न का दोष ।
 ५ प्यास, तृषा ।
 प्रासणी (बो)-क्रि० [सं० प्रासनम्] १ डरना, भयभीत होना ।
 २ कष्ट देना, पीड़ा देना । ३ सताना । ४ दूर भागना ।
 प्रासन-वि० आतंकित, भयभीत ।
 प्रासमाण-वि० आतंकित, भयभीत । २ त्रस्त । ३ दुःखी ।
 प्रासवणी (बो)-क्रि० १ भयभीत करना, डराना । २ देखो
 'प्रासणी' (बो) ।
 प्रासा-देखो 'प्रास' ।
 प्रासी-वि० १ प्यासा, तृषायुक्त । २ अस्त, दुःखी । ३ भयभीत
 भरा हुआ ।
 प्राहि-ग्रन्थ० [सं०] वचासो-वचासो की पुनरावृत्ति, करुण क्रन्दन ।
 प्राहिमाण-देखो 'प्रासमाण' ।
 त्रिवागळ-देखो 'त्रिवागळ' ।
 त्रिसांस-पु० [सं० त्रिशांश] १ किसी वस्तु का तीसवां अंश ।
 २ तीसवां भाग ।
 त्रि-वि० [सं०] तीन । -स्त्री० नारी, त्रिया ।
 त्रिमा-देखो 'त्रिया' ।
 त्रिकटक-पु० [सं०] १ त्रिशूल । २ गोखरू नामक लता ।
 -वि० तीन कांटे या नोक वाला ।
 त्रिक-पु० [सं०] १ तीन का समूह । १ तिराहा । ३ त्रिकला ।
 ४ त्रिकुट । ५ कमर । ६ रीढ़ का नीचला भाग । ७ शोक,
 खेद । -वि० १ तीन गुणा, त्रिगुना । २ तिहरा ।
 ३ तीन शत ।
 त्रिकुट-पु० [सं०] १ त्रिकूट पर्वत । २ विष्णु ।
 त्रिकटबंध-देखो 'त्रिकूटबंध' ।
 त्रिकरण-पु० १ मन, वचन व काया (जैन) । २ एक प्रकार का
 घोड़ा । ---सुद्धि-पु० मन, वचन व काया की शुद्धि ।
 त्रिकळ-पु० १ तीन मात्राओं का शब्द । २ दोहे छन्द का एक
 भेद ।
 त्रिकळस-पु० विशेष प्रकार का भवन या कक्ष ।
 त्रिकळाचळ-पु० त्रिकूट पर्वत ।
 त्रिकळाचळधितगति-पु० रावण ।
 त्रिकलिंग-देखो 'तैलंग' ।
 त्रिकसूळ-पु० रीढ़ व कमर का दर्द, एक रोग ।
 त्रिकाड-पु० [सं०] १ अमर कोश का दूसरा नाम । २ निरुक्त
 का दूसरा नाम । -वि० तीन काण्ड या अध्याय वाला ।
 त्रिकांडी-वि० तीन काण्ड वाला । -पु० कम, उपासना तथा
 ज्ञान संबंधी ग्रंथ ।

त्रिकाल-पु० [सं० त्रिकाल] १ भूत, भविष्य व वर्तमान तीनों
 काल । २ प्रातः, मध्याह्न व संध्या, तीनों समय ।
 -वि० पागल, उन्मत्त ।
 त्रिकाल्य-पु० [सं० त्रिकाल्य] १ तीनों काल व समय की
 जानकारी रखने वाला, सर्वज्ञ । २ ईश्वर ।
 त्रिकालवरसी-पु० [सं० त्रिकालदर्शी] तीनों कालों की जानकारी
 रखने वाला ।
 त्रिकालनरेस-पु० परब्रह्मा, परमात्मा ।
 त्रिकिम-पु० [सं० त्रिकिम] श्रीकृष्ण, विष्णु ।
 त्रिकुट-पु० १ कालोमित्र, मोठ व पीपर का मिश्रण । २ देखो
 'त्रिकूट' । ---गढ़ 'त्रिकूटगढ़' । ---बंध='त्रिकूटबंध' ।
 त्रिकुटा-देखो 'त्रिकूट' ।
 त्रिकुटि, त्रिकुटी-स्त्री० [सं० त्रिकूट] १ ललाट का मध्य भाग ।
 २ ललाट, भान ।
 त्रिकुटी-पु० मोठ, काली मिर्च व पीपल के मिश्रण से बनी
 औषधि ।
 त्रिकूट-पु० [सं०] १ तीन चीटियों वाला लंका का एक पर्वत ।
 २ लंका । ३ लंका गढ़ । ४ पर्वत, पहाड़ । ५ सैधा नमक ।
 ६ मेवाड़ का एक पर्वत । ७ मेवाड़ का एकलिख महादेव
 के आस-पास का प्रदेश । ८ मस्तक के कल्पित छः चक्रों में
 से पहला चक्र । ९ जैसलमेर के किले का नाम ।
 १० जैसलमेर का एक पहाड़ । ---गढ़-पु० लंका । ---बंध=
 'त्रिकूटबंध' ।
 त्रिकूटा-स्त्री० १ त्रिकुटी की एक भैरवी । २ मेवाड़ की
 एक नदी ।
 त्रिकूटी-देखो 'त्रिकुटी' ।
 त्रिकोण-पु० [सं०] १ तीन कोण, त्रिभुज । २ तीन कोण का
 क्षेत्र, त्रिभुज क्षेत्र । ३ तीन कोनों की वस्तु । ४ धोनि,
 भय । ५ जन्म कुण्डलों में जन्म से पावना या नौवां स्थान ।
 ६ तीन धागा, तीन पक्ष । -वि० तीन कोण वाला ।
 ---घटी-स्त्री० तीन कोण का बड़ा घंटा ।
 त्रिकोणा-वि० तीन कोने वाला, त्रिकोणी ।
 त्रिकोणासन-पु० योग का एक आसन ।
 त्रिसार-पु० [म०] जवा, सज्जी व मुहागा, तीन क्षार ।
 त्रिख-देखो 'त्रिखा' ।
 त्रिखत-वि० [सं० तृपित] १ प्यासा, तृपित । २ अभिलाषी ।
 -स्त्री० तलवार ।
 त्रिखनही-पु० एक प्रकार का घाड़ा ।
 त्रिखा-देखो 'त्रिखा' । ---वत='त्रिखावत' ।
 त्रिगंग-पु० एक तीर्थ विशेष ।
 त्रिगङ्ग-पु० एक राक्षस का नाम ।
 त्रिगङ्गी, त्रिगङ्गी-पु० तीन नदियों से घिरा स्थान, उपदेश स्थल ।

त्रिगरत (स, य)-पु० १ उत्तर भारत का एक प्राचीन प्रदेश ।
 २ हर्ष, खुशी ।
 त्रिगुट-देखो 'त्रिगुट' ।
 त्रिगुण-पु० [सं०] १ सत, रज, तम तीनों गुण । २ इन्हीं तीन गुणों की प्रकृतियों का समूह । ३ शीतल, मंद व सुगंध युक्त पवन । -वि० तिगुणा । —नाथ, पति-पु० परमात्मा ।
 त्रिगुणा-स्त्री० १ देवी, दुर्गा । २ माया ।
 त्रिगुणी-पु० [सं०] बेल का वृक्ष । -वि० तीन गुनी ।
 त्रिगुण, त्रिगुणी-वि० १ तीनों गुणों से युक्त । २ तीन गुना ।
 त्रिगुह-पु० स्त्री वेश में पुरुषों का नृत्य ।
 त्रिङ्गणी (बौ)-देखो 'तिङ्गणी' (बौ) ।
 त्रिचक्र-पु० अश्विनी कुमारों का रथ ।
 त्रिचक्षु, त्रिचक्षु-पु० [सं० त्रिचक्षुस्] शिव, महादेव ।
 त्रिजंज-देखो 'तिरजंज' ।
 त्रिजग-पु० तीनों लोक । त्रिलोकी ।
 त्रिजङ्ग, त्रिजङ्ग-स्त्री० १ शस्त्र । २ तलवार ।
 त्रिजङ्गाह्व-पु० खड्गधारी योद्धा ।
 त्रिजटा-स्त्री० [सं०] विभोषण की वहित एक राक्षसी ।
 त्रिजान, त्रिजामा-स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि, निशा ।
 त्रिजात-वि० १ वर्ण संकर, जांरज । २ त्रिजातक ।
 त्रिजातक-पु० [सं०] इलायची, दाल चीनी व तेजपत्र का मिश्रण ।
 त्रिजुग-देखो 'त्रिजग' ।
 त्रिजोणी-वि० [सं० त्रिजोनि] तृतीय योजिज, तमोगुण से उत्पन्न ।
 त्रिजो-देखो 'तोजी' ।
 त्रिजङ्ग-देखो 'त्रिजङ्ग' ।
 त्रिजोरियो-पु० एक वाद्य विशेष ।
 त्रिण, त्रिणउ-पु० [सं० तृण] १ घास । २ घास का तन्तु ।
 ३ रेशा । -वि० १ अत्यन्त तुच्छ, साधारण ।
 २ देखो 'तिण' ।
 त्रिणकाळ-देखो 'त्रिणकाळ' ।
 त्रिणता-स्त्री० [सं०] धनुष ।
 त्रिणधज-देखो 'त्रिणधज' ।
 त्रिणपद-पु० तीन कदम, तीन डग ।
 त्रिणवडि-वि० तिगुनी ।
 त्रिणि-देखो 'तिण' ।
 त्रिणिय-वि० तीन ।
 त्रिणी-वि० १ तीन । २ देखो 'तिण' ।
 त्रिणी-पु० तिनका, तृण । घास ।

त्रिण, त्रिणि, त्रिण्ह, त्रिणिह, त्रिण्है, त्रिण्हौ-१ देखो 'तिण' ।
 २ देखो 'त्रिण' ।
 त्रितंत्री-स्त्री० [सं०] तीन तार की धीणा ।
 त्रिताप-पु० देहिक, दैविक व भौतिक, तीन प्रकार के दुःख ।
 त्रिताल-स्त्री० १६ मात्रा की एक ताल ।
 त्रितिय, त्रिती, त्रितीय-वि० [सं० तृतीय] तीसरा ।
 त्रितोया-स्त्री० तीसरी तिथि, तोज । -वि० तीसरी ।
 त्रित्र-वि० [सं० त्रि] तीन । -पु० तृण, तिनका ।
 त्रिदंड-पु० [सं०] १ सन्यास आश्रम का चिह्न । २ सन्यासियों का डंडा ।
 त्रिदंडी, त्रिदंडपञ्च-पु० [सं०] १ मन, वचन और कर्म पर नियन्त्रण रखने वाला साधु । २ एक साधु सम्प्रदाय विशेष । ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
 त्रिदण्ड-पु० [सं० त्रिदिव] १ स्वर्ग । २ आकाश । ३ सूत्र ।
 त्रिदल-पु० [सं० त्रिदल] १ बेल का वृक्ष । २ बेल-पत्र ।
 त्रिदव-देखो 'त्रिदिव' ।
 त्रिदवेस-पु० [सं० त्रिदिवेश] देवता, सुर ।
 त्रिदस-पु० [सं० त्रिदश] देवता, सुर । -गुरु-पु० बृहस्पति ।
 त्रिदसतप-पु० [सं० त्रिदश-तप] स्वर्ग ।
 त्रिदसपति-पु० इन्द्र ।
 त्रिदसधनु-स्त्री० १ अस्तरा । २ वीर बहूटी ।
 त्रिदसांकुस-पु० वज्र ।
 त्रिदसाधिप-पु० इन्द्र ।
 त्रिदसायन-पु० विष्णु ।
 त्रिदसायुध-पु० वज्र ।
 त्रिदसारि-पु० राक्षस, असुर ।
 त्रिदसालय, त्रिदसासन-पु० १ स्वर्ग । २ सुमेरु पर्वत ।
 ३ देव मन्दिर ।
 त्रिदसाहार-पु० अमृत ।
 त्रिदसेस्वर-पु० इन्द्र ।
 त्रिदसेस्वरी-स्त्री० दुर्गा, भवानी ।
 त्रिदिव-पु० [सं०] देवलोक, स्वर्ग ।
 त्रिदिवाघोस-पु० देवराज इन्द्र ।
 त्रिदिवेस-पु० इन्द्र ।
 त्रिदेव-पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
 त्रिदोष, त्रिदोस-पु० [सं० त्रिदोष] १ वात, पित्त व कफ तीन शारीरिक दोष । २ सन्निपात । -ज-पु० सन्निपात ।
 त्रिधज-पु० [सं० तृण-ध्वज] बांस ।
 त्रिधन्वा-पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा ।
 त्रिधा-वि० [सं०] तीन प्रकार का । -वि० तीन प्रकार से, तीन तरह से ।

त्रिधाई

(११०)

त्रिभुवन

त्रिधाई-स्त्री० १ ताल वाद्य का बोल । २ तीन 'धा' की एक ताल ।
 त्रिधार-देखो 'त्रिधारी' ।
 त्रिधारा-स्त्री० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक में बहने वाली गंगा ।
 त्रिधारी-पुं० १ एक प्रकार का भाला । २ शूहर । -वि० तीन धार वाला ।
 त्रिधासी-पुं० [सं० त्रिध्वंशिन] यमराज ।
 त्रिनयन (न)-पुं० [सं० त्रिनयन] शिव, महादेव, रुद्र ।
 त्रिनाम-पुं० [सं०] विष्णु ।
 त्रिनेत्र, त्रिनेत्र-पुं० [सं०] १ शिव, महादेव । २ एक मँरव का नाम । ३ सोना, स्वर्ण । -रस-पुं० एक रसोपधि विशेष ।
 त्रिन-वि० फैला हुआ ।
 त्रिपंख, त्रिपंखी-पुं० डिगल का एक गीत या छंद ।
 त्रिपट-वि० १ दुष्ट, नीच । २ पायल, भूख ।
 त्रिपण, त्रिपण्ड-देखो 'त्रिपण' ।
 त्रिपत-वि० [सं० तृप्त] संतुष्ट, तृप्त । प्रसन्न, खुश ।
 त्रिपति-स्त्री० [सं० तृप्ति] १ संतोष, तृप्ति । २ प्रसन्नता ।
 त्रिपथ-पुं० [सं०] १ तीन मार्गों का समूह, तिराहा । २ पृथ्वी, माकाश व पाताल । ३ कर्म, ज्ञान व उपासना ।
 त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी, त्रिपथा-स्त्री० [सं०] तीनों लोकों में बहने वाली गंगा ।
 त्रिपद-पुं० [सं०] १ तीन चरण, तीन डग । २ यज्ञ की वेदी मापने का उपकरण । ३ त्रिभुज । ४ षोड़ा । ५ तिपाई । -वि० तीन चरण का ।
 त्रिपदा-स्त्री० [सं०] १ गायत्री । २ एक लता का नाम, हंस पदी ।
 त्रिपदिका-स्त्री० [सं०] १ देव-पूजन में शंख रखने की तिपाई । २ तिपाई ।
 त्रिपदी-स्त्री० १ हाथी का जेर-बंद । २ तीन पंक्ति का पद । ३ देखो 'त्रिपदा' ।
 त्रिपरण-पुं० [सं० त्रिपरण] पलास का पेड़ ।
 त्रिपाठी-पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा । -वि० तीन वेदों का ज्ञाता ।
 त्रिपाद-पुं० [सं०] १ ज्वर, बुखार । २ परमेश्वर ।
 त्रिपादी-देखो 'त्रिपदिका' ।
 त्रिपाप-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति के, किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जानने का चक्र ।
 त्रिपिण्ड-पुं० कर्मकाण्ड के अनुसार तीनों पिण्डों का दान ।
 त्रिपिटक-पुं० [सं०] बुद्ध के उपदेशों का संग्रह ।
 त्रिपुंड्र, त्रिपुंड्र-पुं० [सं०] ललाट पर तीन ग्राही रेखाओं का तिलक ।

त्रिपुटी-स्त्री० [सं०] १ दृश्य और दर्शन का समाहार करने की क्रिया । २ दुर्गा ।
 त्रिपुर-पुं० [सं०] १ तीन लोक, त्रिलोक । २ मयदानव के द्वारा निर्मित, स्वर्ण, रजत व लोहमय नगर । ३ बाणासुर का एक नाम । ४ एक दानव । ५ महादेव, शिव । ६ चंदेरी नगरी का एक नाम । ७ तीन की संख्याश्च ।
 -अघ्न, दहन-पुं० शिव, महादेव । -मँरव-पुं० एक रसोपधि विशेष । -मँरवी-स्त्री० एक देवी । -मल्लिका-स्त्री० एक प्रकार की चमेली ।
 त्रिपुरांतक-पुं० महादेव, शिव ।
 त्रिपुरा-स्त्री० [सं०] १ पार्वती । २ कामाख्या देवी ।
 त्रिपुरार, त्रिपुरारि-पुं० [सं० त्रिपुर+अरि] महादेव ।
 त्रिपुरारिरस-पुं० [सं०] एक रसोपधि विशेष ।
 त्रिपुरारी-देखो 'त्रिपुरारि' ।
 त्रिपुरासर, त्रिपुरासुर-पुं० [सं० त्रिपुरासुर] त्रिपुर नामक असुर ।
 त्रिपुरा-स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष ।
 त्रिपुरस्कर-पुं० [सं० त्रिपुरस्कर] कलित ज्योतिष में एक योग ।
 त्रिप्त-वि० [सं० तृप्त] संतुष्ट, प्रसन्न ।
 त्रिप्रस्त-पुं० [सं० त्रिप्रश्न] दिशा व देश-काल संबंधी प्रश्न ।
 त्रिप्रसत-पुं० [सं०] मस्तक, कपोल व नेत्रों से मद बहने वाला हाथी ।
 त्रिफळा (ली)-पुं० [सं० त्रिफला] हड़, बेहड़ा व आंवला का मिश्रण ।
 त्रिबंक-पुं० [सं० त्र्यंबक, ताम्रक] १ महादेव, शिव । २ नगाड़ा । -वि० तीन बलवाला, टेढ़ा ।
 त्रिवळि, त्रिवळी-देखो 'त्रिवळि' ।
 त्रिवळीक-पुं० १ वायु । २ मल द्वाग, मुदा ।
 त्रिवाहु-पुं० [सं०] १ तलवार के ३२ हाथों में से एक । २ रुद्र का एक अनुचर ।
 त्रिवेणी (नी)-देखो 'त्रिवेणी' ।
 त्रिमंग-वि० तीन जगह बल खाया हुआ, टेढ़ा, तिरछा । -पुं० तिरछा खड़े होने की एक मुद्रा ।
 त्रिमंगी-पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु । ३ ईश्वर, परमात्मा । ४ शुद्ध राग का एक भेद । ५ ताल का एक भेद । ६ एक मात्रिक छंद विशेष । ७ देखो 'त्रिमंग' ।
 त्रिम-वि० [सं०] तीन नक्षत्रों से युक्त ।
 त्रिमंग-पुं० [सं०] भाला, सेल ।
 त्रिभवन (न)-देखो 'त्रिभुवन' । -नाथ='त्रिभुवननाथ' ।
 त्रिभागी-पुं० भाला, सेल । -वि० तीन धार वाला ।
 त्रिभुंइषी, त्रिभुंइषी-वि० [सं० त्रि-भूमि] तीन मंजिला, तीन छण्डों वाला ।
 त्रिभुवन-देखो 'त्रिभुवन' । -घरणी='त्रिभुवनघरणी' ।

त्रिभुज-पु० [सं०] १ तीन रेखा या कोणों का आकार, त्रिकोण ।
 २ तीन दिशाओं या रेखाओं से घिरा हुआ स्थान या क्षेत्र ।
 त्रिभुवन, (न), त्रिभुवन्, त्रिभोवन-पु० [सं० त्रिभुवन] स्वर्ग
 पृथ्वी, पाताल, तीनों लोक । ब्रह्माण्ड । — धरणी, नाथ-पु०
 रुद्र, महादेव । विष्णु । ईश्वर, परमात्मा । — सुंदरी-स्त्री०
 दुर्गा, पार्वती ।
 त्रिभोलन-पु० [सं०] क्षितिज पर पड़ने वाले कान्तिवृत्त का
 ऊपरी मध्य भाग ।
 त्रिभोवन (न)-देखो 'त्रिभुवन' ।
 त्रिमद-पु० [सं०] १ विद्या, धन व कुटुंब के कारण होने वाला
 गर्व । २ मोथा, चीता व बायबिडंग, इन तीनों का समूह ।
 त्रिमय, त्रिमधुर-पु० [सं०] ब्रह्म, चीनी व घी, तीनों का समूह ।
 त्रिमात, त्रिमात्रिक-वि० [सं० त्रिमात्रिक] तीन मात्राओं का,
 प्लुत ।
 त्रिमार्गगोमिनी, त्रिमार्ग-स्त्री० [सं० त्रिमार्गगामिनी, त्रिमार्गी]
 गंगा, सुरसरी ।
 त्रिमासिक-देखो 'त्रैमासिक' ।
 त्रिमुकुट-पु० [सं०] तीन चोटियों वाला पहाड़ ।
 त्रिमुख-पु० १ गायत्री जाप की चौबीस मुद्राओं में से एक ।
 २ शाक्य मुनि ।
 त्रिमुखी-स्त्री० बुद्ध की माता, माया देवी ।
 त्रिमुनि-पु० [सं०] पाणिनी, कात्यायन व पतंजलि मुनि ।
 त्रिमूर्ति-पु० [सं० त्रिमूर्ति] ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देव ।
 त्रियच-देखो 'त्रिरजंघ' ।
 त्रिय-वि० [सं० त्रि] १ तीन । २ तोसरा । ३ देखो 'त्रिया' ।
 त्रियामा-देखो 'त्रिजामा' ।
 त्रिया-स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, औरत । २ पत्नी, भार्या ।
 त्रिग्रह-पु० [सं०] एक रंग विशेष का धोड़ा ।
 त्रिग्रो-वि० [सं० तृतीय] १ तीसरा, तृतीय । २ देखो 'तीयी' ।
 त्रिरसक-पु० [सं०] तीन प्रकार के रस या स्वाद वाली मदिरा ।
 त्रिरासिक-पु० [सं० त्रैरासिक] गरिष्ठ की एक क्रिया ।
 त्रिरूप-पु० [सं०] अश्वमेध यज्ञ का विशिष्ट धोड़ा ।
 त्रिरेख-वि० [सं०] तीन रेखाओं वाला । — पु० शंख ।
 त्रिल, त्रिलघु-पु० [सं०] १ तीन लघु वाला 'नगण' । २ छोटी,
 गर्दन, जांघ या मूत्रेद्रिय वाला पुरुष ।
 त्रिलवण-पु० [सं०] सेंधा, सांभर व कान्हा नमक ।
 त्रिलोक-पु० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ।
 — नाथ, पत, पति, पती-पु० ईश्वर । विष्णु । शिव ।
 — मणि, मिरा-पु० सूर्य । — राव-पु० ईश्वर ।
 त्रिलोकी-स्त्री० [सं०] तीनों लोकों का समूह । तीनों लोक ।
 — वि० तीनों लोकों का । — तात, तारण, नाथ-पु० पर-
 मात्मा । विष्णु । इन्द्र । शिव ।

त्रिलोकेस-पु० [सं० त्रिलोक-ईश] १ सूर्य । २ तीनों लोकों का
 स्वामी, ईश्वर ।
 त्रिलोचन-देखो 'त्रिलोचन' ।
 त्रिलोचना-देखो 'त्रिलोचना' ।
 त्रिलोचन-पु० [सं०] शिव । रुद्र ।
 त्रिलोचना-स्त्री० [सं०] १ पार्वती । २ अप्सरा ।
 त्रिलोत्तमा-देखो 'तिलोत्तमा' ।
 त्रिवङ्ग-पु० डिङ्गल का एक गीत या छन्द ।
 त्रिवट-पु० [सं०] दोपहर में गाया जाने वाला सम्पूर्ण
 जाति का एक राग ।
 त्रिवरग-पु० [सं० त्रिवर्ग] १ तीन प्रधान जातियाँ-ब्राह्मण,
 क्षत्रिय, वैश्य । २ तीन प्राकृतिक गुण-सत्त, रज व तम ।
 ३ अर्थ, धर्म व काम का समूह । ४ वृद्धि, स्थिति और क्षय
 तीन दशाएँ । ५ एक प्रकार का काव्य ।
 त्रिवलि, त्रिवली-स्त्री० [सं० त्रिवलि] १ सुन्दर स्त्री के पेट पर
 पड़ने वाली तीन सलवटें । २ उक्त प्रकार की स्त्री ।
 ३ योनि, भग । ४ देखो 'त्रिवल' ।
 त्रिवस्ट, त्रिवस्टप-पु० [सं० त्रिविष्टप] स्वर्ग, देवलोक ।
 त्रिवायड-वि० [सं० त्रिपाद] १ त्रिपाईतुमा । २ तीन पांवों
 वाला । ३ तीन चौथाई ।
 त्रिविक्रम-पु० [सं०] १ विष्णु, ईश्वर । २ वामन अवतार ।
 त्रिविद्ध-देखो 'त्रिविध' ।
 त्रिविध, (छद्म, ध्यो)-वि० [सं०] १ तीन प्रकार का, तीन तरह
 का । २ तिगुना । — कि० वि० तीन तरह से, तीन प्रकार से ।
 त्रिविस्टप-देखो 'त्रिविस्टप' ।
 त्रिविस्तीरण-पु० [सं० त्रिविस्तीर्ण] विशाल सीने, लबाट व
 कमर वाला, भाग्यशाली पुरुष ।
 त्रिवेणी-स्त्री० [सं०] १ गंगा, यमुना व सरस्वती का संगम,
 प्रयाग । २ तीन नदियों का संगम । ३ तीन विचारों का
 समन्वय । ४ इड़ा, पिगला व सुषुम्ना नाड़ियों का संगम ।
 ५ तीन की संख्या ✽ ।
 त्रिवेदी-पु० ब्राह्मणों की एक उपशाखा । — वि० तीन
 वेदों का ज्ञाता ।
 त्रिवेनी-देखो 'त्रिवेणी' ।
 त्रिसक, त्रिसंकु, त्रिसंघ-पु० [सं० त्रिजंघ] १ हरिश्चंद्र का पिता
 एक सूर्यवंशी राजा । २ इसी नाम का एक तारा । ३ मत्स्य
 व्रत नामक एक पराक्रमी राजा । ४ चातक पक्षी ।
 ५ पतंगा । ६ जुगनू, खगोल । — वि० [सं० त्रिजंघ]
 १ तीस की संख्या वाला । २ तीस के भूत का ।

त्रिसंकुज-पु० [सं० त्रिङ्कुज] राजा हरिश्चन्द्र ।
 त्रिसंविज-पु० एक प्रकार का आभूषण ।
 त्रिसंख्या-स्त्री० [सं०] १ प्रातः, मध्याह्न व सायंकाल की की जाने वाली संख्या । २ दिन का तीसरा पहर ।
 त्रिस-स्त्री० [सं० त्रिः] प्यास, तृषा ।
 त्रिसकत, त्रिसकति त्रिसकती, त्रिसकत्-स्त्री० [सं० त्रिणक्ति] १ पार्वती । २ देवी दुर्गा । ३ गायत्री । ४ इच्छा, ज्ञान व क्रिया, तीन ईश्वरीय शक्तियाँ । ५ तांत्रिकों की तीन देवियाँ-काली, तारा और त्रिपुरा ।
 त्रिसखरमुड़-पु० तीन शिखर का पहाड़ ।
 त्रिसणा (ना)-देखो 'तिसणा' ।
 त्रिसपरसा-स्त्री० [सं० त्रिस्पृशा] वह एकादशी जिसके अंत में त्रयोदशी पड़ती हो ।
 त्रिसप्त-पु० [सं०] सौंठ, गुड़ और हड़ तीनों का समूह ।
 त्रिसर-पु० [सं० त्रिशिर] १ चिपटी फलियों वाला एक मटर । २ कुबेर । ३ एक प्रकार का आभूषण । ४ देखो 'त्रिसिर' ।
 त्रिसरकरा-स्त्री० [सं० त्रिषर्करा] गुड़, चीनी और मिथी ।
 त्रिसरण-पु० [सं० त्रिषरण] १ बुद्ध । २ एक जैनाचार्य ।
 त्रिसरनायक-पु० एक प्रकार का आभूषण ।
 त्रिसरी-स्त्री० तीन लड़की ।
 त्रिसठा-स्त्री० महावीर स्वामी की माता ।
 त्रिसठ्ठी-पु० १ त्रिशूल । २ क्रोध के कारण ललाट पर पड़ने वाली तीन रेखाएँ ।
 त्रिसांश-व्यापणी-वि० [सं० त्रिसंध्यव्यापिनी] सूर्योदय से सूर्यास्त तक बराबर रहने वाली ।
 त्रिसा-स्त्री० [सं० तृषा] प्यास ।
 त्रिसाख-वि० १ तीन शाखा वाला । २ तीन फसलों वाला ।
 त्रिसिद्ध-देखो 'त्रिसि' ।
 त्रिसिद्ध-पु० [सं० त्रिशिद्ध] १ मुकुट । २ त्रिशूल । ३ रावण का एक पुत्र ।
 त्रिसिद्धर-पु० [सं० त्रिशिद्धर] १ तीन चोटियों का पर्वत । २ त्रिकुट पर्वत ।
 त्रिसिद्ध, त्रिसिद्धी-देखो 'त्रिसि' ।
 त्रिसिर-पु० [सं० त्रिशिरस्] १ कुबेर । २ रावण का भाई एक राक्षस । -वि० तीन शिरों वाला ।
 त्रिसौघ-वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ देखो 'त्रिसंकु' ।
 त्रिसौरस-पु० [सं० त्रिशीर्ष] तीन शिखर वाला पहाड़ ।

त्रिसौरसक-पु० [सं० त्रिशीर्षक] त्रिशूल ।
 त्रिसौस-पु० तीन फल का भाला ।
 त्रिसुगधि-स्त्री० [सं०] दान चीनी, इलायची व तेज पत्र, तीनों की सुगन्ध ।
 त्रिसूळ-त्रिसूळ-पु० [सं० त्रिशूल] १ शिव का आयुध, तीन शूल का शस्त्र । २ दैहिक, दैविक व भौतिक दुःख । ३ हाथ की अंगुलियों की एक मुद्रा । ४ तीन की संख्या ।
 ---घात-पु० एक तीर्थ विशेष । ---घर-पु० शिव, महादेव ।
 त्रिसूळ-१ देखो 'त्रिमल्ली' । २ देखो 'त्रिसूळ' ।
 त्रिसूळि, तिसूळी(ली)-वि० त्रिशूल धारी । -स्त्री० १ देवी, दुर्गा । २ देखो 'त्रिसूळ' ।
 त्रिसी-देखो 'त्रिसि' ।
 त्रिस्कंध-पु० [सं०] ज्यातिष शास्त्र ।
 त्रिस्टुप-त्रिस्टुभ-पु० [सं० त्रिष्टुप] संस्कृत का व्यासह वर्ण का एक वृत्त ।
 त्रिस्णा-देखो 'तिसणा' ।
 त्रिस्तंभासन-पु० [सं०] योग के चौगुनी आसनों के अन्तर्गत एक ।
 त्रिस्थली-स्त्री० [सं० त्रिस्थली] गया, प्रयाग व काशी तीन तीर्थ ।
 त्रिस्नान-पु० [सं०] प्रातः मध्याह्न व सायंकाल की तीन स्नान ।
 त्रिस्त्र-पु० [सं० त्रिजृंग] त्रिकुट पर्वत ।
 त्रिह (उं)-वि० [सं० त्रि] तीन ।
 त्रिहत्तर-देखो 'तिहोतर' ।
 त्रिहलोचन-देखो 'त्रिलोचन' ।
 त्रिहु, त्रिहु-वि० [सं० त्रि] १ तीन, तीनों । २ देखो 'त्रिधा' ।
 त्रिहत्तरो-देखो 'तिहोतरो' ।
 त्रिह्-देखो 'त्रिहु' ।
 त्रिहोतरो-देखो 'तिहोतरो' ।
 त्रिह्लोचन-देखो 'त्रिलोचन' ।
 त्रोगड़ी, त्रोगड़ी-वि० तीक्ष्ण ।
 त्रीदिव, त्रीदिव-पु० [सं० त्रीन्द्रिय] तीन इन्द्रियों वाला जीव ।
 त्री-देखो 'त्रि' ।
 त्रीकम, त्रीकमी, त्रीक्रम-देखो 'त्रिविक्रम' ।
 त्रीक्षण-देखो 'तीक्ष्ण' ।
 त्रीखी-देखो 'तीखी' ।
 त्रीछण-देखो 'तीक्ष्ण' ।
 त्रीज-देखो 'तीज' ।
 त्रीजड़, त्रीजड़-देखो 'तांजी' ।
 त्रीजली, (ली)-देखो 'तीनी' ।

त्रिजांभ, त्रिजांभा-देखो 'त्रिजांभा' ।
 त्रिजी-१ देखो 'तीजी' । २ देखो 'तीज' ।
 त्रिठ-देखो 'तीठ' ।
 त्रिठणी (बी)-कि० थ्यामा होना ।
 त्रिणि, त्रीणी, त्रीन-१ देखो 'तिण' । २ देखा 'त्रिन' ।
 ३ देखो 'तीन' ।
 त्रीनेण, त्रीनेयण, त्रीनेण-देखो 'त्रिनयन' ।
 त्रीपत्रक-पु० पलास वृक्ष ।
 त्रीष-त्रि० [सं० तृतीय] १ तीसरा । २ तीन । ३ देखो 'त्रिया' ।
 ---लोक='त्रिलोक' ।
 त्रीवङ्ग्या-स्त्री० ढाँफ स्त्री, वङ्ग्या ।
 त्रीसटंकी-देखो 'तीसटंकी' ।
 त्रीसमउ, त्रीसमी-देखो 'तीसमी' ।
 त्रीहायन-वि० [सं०] तीन वर्ष का ।
 त्रुक, त्रुकी-पु० एक प्रकार का तीर ।
 त्रुगट-देखो 'त्रिकूट' । ---गड='त्रिकूटगड' । ---बंघ='त्रिकूटबंध' ।
 त्रुटि, त्रुटी-स्त्री० [सं०] १ भूल, चूक । २ कमी, कसर ।
 ३ स्मृता, अल्पता । ४ अभाव । ५ दोष, अवगुण ।
 ६ हासि, मुक्ता । ७ तोड़-फोड़ । ८ छोटा हिस्सा, अणु ।
 त्रुपरार-देखो 'त्रिपुरारि' ।
 त्रुरकी-देखो 'तुरकी' ।
 त्रुरहड़ी-पु० एक प्रकार का बोड़ा ।
 त्रुळ-देखो 'तुळ' ।
 त्रूटणी (बी), त्रूटणी (बी)-देखो 'टूटणी' (बी) ।
 त्रूठि, (ठी)-देखो 'त्रुटि' ।
 त्रूख-देखो 'तेख' ।
 त्रूखणी (बी)-कि० १ रोकना । २ बांधना ।
 त्रूगडि, त्रूगति-पु० त्रिकाठिका ।
 त्रूता-पु० [सं०] १ जूए (यूत) का एक दाव । २ त्रैतायुग ।
 त्रूताग्नि-स्त्री० तीन प्रकार की अग्नियाँ ।
 त्रूतायुग-पु० त्रैतायुग ।
 त्रूतायुगाव-पु० [सं० त्रैतायुगाव] कालिक शुक्ला नवमीतिथि ।
 त्रूतायुग-पु० [सं०] चार युगों में से दूसरा युग ।
 त्रूतीस-देखो 'तेतीस' ।
 त्रूपन-देखो 'तिरेपन' ।

त्रूभवण, त्रूभुयण, त्रूसूयण, त्रूसूयण, त्रूसूयण-देखो 'त्रिभुवन' ।
 त्रूवड़ (ड़ि, डी)-देखो 'तेवड़' ।
 त्रूवड़ी, (डो)-पु० १ काव्य छन्द का एक भेद ।
 २ देखो 'तेवड़ी' ।
 त्रूवीस-देखो 'तेवीस' ।
 त्रूवीसी-देखो 'तेईसी' ।
 त्रूसठ (ठि)-देखो 'तिरेसठ' ।
 त्रूसठी-देखो 'तिरेसठी' ।
 त्रूह-देखो 'ते' ।
 त्रू-देखो 'त्रि' ।
 त्रूगुण-देखो 'त्रिगुण' ।
 त्रूसासिक, त्रूमासीक-वि० [सं०] हर तीसरे महीने होने वाला ।
 ---पु० हर तीसरे सास प्रकाशित होने वाला पत्र, पत्रिका ।
 त्रूयंबीका-स्त्री० [सं०] गायत्री ।
 त्रूलोक-देखो 'त्रिलोकी' ।
 त्रूलोकनाथ, (पति, राव)-देखो 'त्रिलोकनाथ' ।
 त्रूलोकी-देखो 'त्रिलोकी' ।
 त्रूटक-देखो 'तोटक' ।
 त्रूटि, त्रूटी-स्त्री० [सं० त्रूटि] १ चोंच । २ देखो 'टीटी' ।
 त्रूटी-देखो 'टीटी' ।
 त्रूड़णी (बी), त्रूड़णी (बी)-देखो 'तोड़णी' (बी) ।
 त्रूण-पु० [सं०] तरकस ।
 त्रूयंबक-देखो 'यंबक' ।
 त्रूयंबका-स्त्री० [सं०] देवी, दुर्गा, शक्ति ।
 त्रूयंबाट-देखो 'यंबाट' ।
 त्रूयभ्रतयोग-पु० फलित ज्योतिष में एक योग ।
 त्रूयंगू-देखो 'तेरांगू' ।
 त्रूयासी-देखो 'तेरासी' ।
 त्रूयूण, त्रूसूण-पु० [सं० त्रूयूण] १ सीठ, पीपल व मिर्च का समूह, त्रिकूटा । २ चरक के अनुसार एक प्रकार का घृत ।
 त्रूवंतरात-स्त्री० एक प्रकार की पुष्पलता ।
 त्रूवक, त्रूवग, त्रूवचा-स्त्री० [सं० त्रूवचा] चर्म, चमड़ी ।
 त्रूवरित-कि० तुरंत, शीघ्र ।
 त्रूवस्टा-पु० [सं० त्रूवस्टा] एक महाग्रह जो बिना पर्व के ही सूर्य-चंद्र पर ग्रहण करता है ।
 त्रूवां, त्रूवी-सर्व० तुम, तू ।
 त्रूहारी-सर्व० तेरा, तुम्हारा ।

—थ—

थ-देवनागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन ।

थङ-पु० १ समूह, दल । २ सेना, फौज । ३ सचनता । ४ डेर, राशि । ५ देखो 'ठंड' । -वि० घना, सघन ।

थंडणी (बी)-क्रि० १ पराजित करना, हराना । २ खदेड़ना, निकालना, भगाना । ३ ठूस-ठूस कर भरना । ४ एकत्र करना ।

थंडाक-देखो 'थंड' ।

थंडिल, थंडिल्ल-पु० [सं० स्थंडिल] १ जैनियों के 'संधारा' करने का स्थान । २ वेदी, वेदिका । ३ डेलों का डेर । ४ सीमा, हद्द । ५ क्रोध, गुस्सा । ६ शीवादि का स्थान । ७ शीघ्र, मल, विष्टा । (जैन)

थंडी, थंडीस-पु० १ सर्प, नाग । २ शेष नाग ।

थंडी-१ देखो 'ठंडी' । २ देखो 'थंड' ।

थंथ-पु० धनगल प्रलाप, बकवाद ।

थंथायली, थंथी, थंथी-वि० प्रलाप करने वाला, बकवादी ।

थंथ-पु० [सं० स्तंभ] १ राजपूतों का एक भेद । २ सहारा, आश्रय । ३ रक्षक, संरक्षक । ४ देखो 'थंबी' । ५ देखो 'थांबी' ।

थंथजंग-पु० योद्धा, सुभट, वीर ।

थंथणी (बी)-देखो 'थंथणी' (बी) ।

थंबली-१ देखो 'थंबी' । २ देखो 'थोबली' ।

थंबियी, थंबी, थंबीड़, थंबी, थंभ-पु० [सं० स्तम्भ] १ पत्थर या लकड़ी का स्तंभ, खंभा । २ पेड़ का तना । ३ सहारा, अवलंब । ४ रोक । ५ योद्धा, वीर । ६ अहंकार (जैन) । ७ मान, प्रतिष्ठा (जैन) । —जम्भी-पु० योद्धा वीर ।

थंभण-वि० [सं० स्तम्भन] १ धामने या रोकने वाला । २ रक्षक, सहायक । -पु० १ रोकने, ठहराने आदि की क्रिया । २ रुकावट, ठहराव । ३ पकड़-धकड़ । ४ रक्त, वीर्य, मल-मूत्र आदि के स्राव पर नियंत्रण । ५ कामदेव के पांच बाणों में से एक ।

थंभणी(बी)-क्रि० [सं० स्तम्भनम्] १ चलते हुए रुकना, ठहरना । २ क्रम या गति न रहना, ठहरना । ३ बंद हो जाना, जारी न रहना । ४ धैर्य रखना । ५ पकड़ा जाना, संभाले रखना । ६ टिकना, टिके रहना । ७ स्राव या बहाव न रहना ।

थंभली-१ देखो 'थोबली' । २ देखो 'थंबी' ।

थंभवाय-पु० थोड़ों का एक रोग ।

थंभारी (बी), थंभावणी (बी)-क्रि० १ चलते हुए को रुकवाना, ठहराना । २ क्रम या गति न रखना । ३ जारी न रखना, बंद करना । ४ धैर्य दिलाना । ५ पकड़ना, संभालना । ६ टिकाना । ७ स्राव या बहाव रोकना ।

थंभियी, थंभी, थंभीड़, थंभी-देखो 'थंबी' ।

थ-स्त्री० १ सरस्वती । २ छाक । -पु० ३ गणेश । ४ गरुड़ । ५ ऊपर का मोठ । ६ पहाड़ । ७ देखो 'त' ।

थई, थड़-देखो 'थई' ।

थईप्रायत-पु० पान-बीड़ा लिए साथ रहने वाला नौकर ।

थईणी (बी)-देखो 'थावणी' (बी) ।

थईली-देखो 'थैली' ।

थई-स्त्री० [सं० स्था] १ डेर, राशि । २ एक प्रकार की चमड़े की थैली । ३ पान की डिबिया । ४ देखो 'थेई' ।

थईप्रादतु, थईप्रायतु-देखो 'थईप्रायत' ।

थईघर-पु० [सं० स्थगीघर] राजा का ताम्बूल-वाहक ।

थईयात, थईप्रायत, थईयार-देखो 'थईप्रायत' ।

थक-देखो 'थोक' ।

थकड़ (ई)-ग्रन्थ० से ।

थकणी (बी)-देखो 'थाकणी' (बी) ।

थकां, थकाई-क्रि० वि० [सं० पठा] १ होते हुए, रहते हुए । २ मौजूदगी में । ३ तक, पर्यन्त । ४ होकर । ५ ही । ६ पर, से ।

थकाण, थकांत-देखो 'थाकावट' ।

थका-देखो 'थकां' ।

थकाणी (बी)-क्रि० १ अधिक परिश्रम या मेहनत करना । २ शिथिल या श्रान्त करना । ३ मांस फूँटने लायक करना । ४ मंदा या घीमा करना । ५ हैरान करना, ऊवाना । ६ उत्साह, जोश आदि को ठंडा करना । ७ आवेग कम करना । ८ कमजोर या अशक्त करना । ९ मुग्ध करना, मोहित करना, लुभाना ।

थकार-पु० 'थ' वर्ण ।

थकाव, थकावट-स्त्री० १ थक जाने की अवस्था या भाव ।
२ शिथिलता, कमजोरी । ३ आवेग, उत्साह आदि की
कमी । ४ मंदी, धीमापन ।

थकावणी (बो)-देखो 'थकाणी' (बो) ।

थकित-वि० [सं० स्थकितः] १ थका हुआ, शिथिल । २ मुग्ध,
मोहित । ३ आश्चर्य चकित, भीचवका ।

थकियो-देखो 'थकी' ।

थकी-प्रत्य० [सं० स्थित] से । -क्रि० वि० १ लिए, वास्ते ।
२ के समय में । ३ कारण से । ४ पर । ५ होते हुए ।
-वि० ६ स्थित, विद्यमान ।

थकेली-देखो 'थाकेली' ।

थक-देखो 'थकी' ।

थकी-वि० [सं० स्थित] (स्त्री० थकी) १ होता हुआ, रहता हुआ,
स्थित । २ हुआ हुआ । ३ वाला, का । -क्रि० वि० १ से ।
२ ही । ३ होकर । ४ रूप से ।

थकणी (बो)-देखो 'थाकणी' (बो) ।

थक्यो-देखो 'थकी' ।

थन-पु० १ हृद, सोमा । २ तट, किनारा । ३ थाह । ४ ढेर,
समूह ।

थगणा-स्त्री० [सं० स्थगणा] पृथ्वी, भूमि ।

थगवणी (बो)-क्रि० लड़खड़ाना, डगमगाना ।

थड़-देखो 'थड़ी' ।

थड़क-स्त्री० थड़कन, कंपन, थराहट ।

थड़कणी (बो)-क्रि० थड़कना, कंपना, थराना ।

थड़णी (बो)-क्रि० १ भीड़ होना, समूह बनना । २ घक्का-
मुक्की होना । ३ पचना, खपना । ४ देखो 'थुड़णी' (बो) ।

थड़वड़-स्त्री० लड़खड़ाने की क्रिया या भाव ।

थड़ियो-देखो 'थड़ी' ।

थड़ी-स्त्री० १ छोटे बच्चे के खड़े होने की अवस्था । २ अनाज
का छोटा ढेर । ३ पंचायत भवन (सेवात)

थड़ी-पु० [सं० स्थल] १ मृत व्यक्ति के दाह संस्कार के स्थान
पर बनाया हुआ भवन, स्मारक । २ बैठने की जगह,
बैठक । ३ दुकान की गद्दी, गद्दी । ४ दुकान का अग्र भाग ।
४ ऊंट के चारजामे के साथ लगी गद्दी ।

थन-पु० किमी गाढ़े पदार्थ के गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।

थट-पु० [सं० स्थात] १ ढेर, राशि । २ समूह, दल ।
३ देखो 'थाट' ।

थटक, थटक-देखो 'थाट' ।

थटणी (बो)-क्रि० १ शोभित, होना, शोभायमान होना ।
२ गुसज्जित होना । ३ तैयार होना, उद्यत होना, कटिबद्ध
होना । ४ इकट्ठा होना । ५ डटना । ६ प्रकट होना,
उत्पन्न होना । ७ प्रविष्ट होना, घुसना । ८ अवस्थित
होना । ९ हटना, मिटना, प्रभाव समाप्त होना ।
१० संगृहीत या एकत्र होना । ११ खदेड़ा जाना,
पराजित होना ।

थटा-स्त्री० सेना, फौज ।

थटाबट-देखो 'थटोबट' ।

थटोली-वि० (स्त्री० थटोली) १ ठाट-बाट से रहने वाला ।
२ शोकीन । ३ मस्त, प्रसन्न ।

थटेत, थटेल, थटेत, थटेल-वि० १ योद्धा, वीर । २ ठाट-बाट
से रहने वाला, ऐश्वर्यवान ।

थटोबट-वि० पूर्ण, पूर्ण भरा हुआ । -क्रि० वि० लबाब ।

थट-वि० १ बहुत अधिक, अत्यधिक । २ देखो 'थाट' ।

थटणी (बो)-देखो 'थटणी' (बो) ।

थट्टी-१ देखो 'थट' । २ देखो 'थाट' ।

थड-१ देखो 'थट्टी' । २ देखो 'थड़ी' ।

थडउ, थडियो, थडो, थडु, थडो-पु० १ कच्चे आदि से दिपा गया
धक्का, टक्कर, आघात । २ देखो 'थड़ी' ।

थडंकणी (बो) थडकणी (बो) थडणी (बो)-क्रि० १ संहार
करना, मारना । २ गिराना, पटकना । ३ धक्का देना ।

थरा, थराचो-पु० [सं० स्तन] १ स्त्री या मादा पशुओं के कुच,
दूध वाले ग्रंथ, स्तन । २ पुरुषों के वक्षस्थल के स्तन
चिह्न । ३ स्तनों का दूध । -अंतर-पु० हृदय ।
-कड़-पु० ताजा दूध, धारोष्ण ।

थराय-वि० [सं० स्तनीय स्तन्य] स्तन का, स्तन संबंधी । -पु०
स्तन का दूध । -सद-पु० अत्यधिक रति भुख से
उत्पन्न शब्द ।

थराणी-स्त्री० १ बकरी के गले में स्तन की तरह लटकने वाला
मांस । २ हाथियों के कान के पास तथा घोंडे के लिंग
के पास लटकने वाला मांस । ३ देखो 'थरा' ।
-वि० स्तन वाली ।

थराणी-देखो 'थरा' ।

थराणी (बो)-देखो 'थावणी' (बो) ।

थन-पु० [सं० स्थिति] बंभव, ठाट ।

यताथेई, (ई)-देखो 'ताताथेई' ।

यथोपणी (बो)—क्रि० १ धैर्य देना, धीरज बंधाना । सान्त्वना देना । २ हिम्मत बंधाना, प्राश्वस्त करना ।
 यथोबादाज, यथोदेबाज—वि० फुसलाने वाला, चकमा देने वाला ।
 यथोबो—पु० १ झूठा विश्वास, धोखा, भांसा । २ धैर्य, प्राश्वसन, सान्त्वना ।
 यज्ञ—वि० [सं० स्तब्ध] १ अहंकार युक्त, अहंकारी (जैन) । २ रोका हुआ । ३ आश्चर्यमय ।
 यज्ञ—१ देखो 'धान' । २ देखो 'यण' ।
 यपउथप—देखो 'यापउथाप' ।
 यपकणी (बो)—१ देखो 'थपकाणी' (बो) । २ देखो 'थापणी' (बो) ।
 यपकाणी, (बो) यपकाणी, (बो) थपकाणी, (बो)—क्रि० १ थपकी देना, थपकी देकर सुलाना । २ पोठ ठोक कर उत्साह वर्धन करना, प्रेरित करना । ३ दिलासा देना, पुचकारना । ४ सहलाना । ५ थपथपाना ।
 यपकियो—पु० १ एक प्रकार की रोटी । २ मिट्टी के बर्तन वाला कुम्हार ।
 यपकी—स्त्री० थापी ।
 यपड़—देखो 'थप्पड़' ।
 यपड़ी—क्रि० १ ताली बजाने की क्रिया, ताली, थापी । ३ ताली का शब्द । ३ देखो 'थेपड़ी' ।
 यपणी—वि० १ स्थापन करने वाला, प्रतिष्ठित करने वाला । २ स्थापित होने वाला । ३ मुकर्रर करने वाला । पु० पत्थर या लकड़ी का, पिटाई करने का उपकरण ।
 यपणी (बो)—क्रि० १ स्थापित या प्रतिष्ठित होना । २ निश्चित होना, तय होना । ३ स्थिर होकर रहना । ३ देखो 'थापणी' (बो) । ५ देखो 'थापलणी' (बो) ।
 यपप्रियो—देखो 'थपकियो' ।
 यपथपी—स्त्री० १ हल्की सी थपकी । २ देखो 'थापी' ।
 यपेट, यपेट—स्त्री० १ टक्कर, आघात, झपट । २ थप्पड़, चांटा । ३ लपेट । ४ थपकी ।
 यपेटणी (बो)—क्रि० १ थपकी देना, थपथपाना । २ टक्कर, आघात या चांटा लगाना । ३ पीटना, मारना । ४ थप्पड़ लगाना ।
 यप्पड़—स्त्री० १ हथेली का प्रहार चोट । तमाचा, झपट । २ चोट, नुकसान, हानि । ३ आघात, धक्का । ४ व्यय भार । अनावश्यक व्यय ।
 यप्पणिय—देखो 'थापण' (गो) ।
 यप्पणी (बो)—१ देखो 'थपणी' (बो) । २ देखो 'थापणी' (बो) ।
 यप्पलणी (बो)—देखो 'थापलणी' (बो) ।

यप्पी—देखो 'थापी' ।
 यबोली—पु० हिलोर, लहर, तरंग ।
 यमणी (बो)—देखो 'थमणी' (बो) ।
 यमाणी (बो) यमावणी (बो)—देखो 'थमाणी' (बो) ।
 यम—देखो 'थे' ।
 ययणी (बो)—क्रि० १ होना । २ रहना ।
 यर—पु० [सं० स्तर] १ चुनाई का स्तर, परत, तह । २ डेर, राशि । ३ ठंडा होने पर, गर्म दूध या लोहे पर जमने वाली परत । ४ कांपने की क्रिया या भाव । [सं० स्थल] ५ शेर की मांस, गुफा । ६ स्थल, जगह । ७ देखो 'थिर' ।
 यरक—स्त्री० १ भय, डर, शंका । २ कंफकी, थर्राहट । —वि० १ कांपमान, कंपित । २ देखो 'थिरक' ।
 यरकण (न)—स्त्री० १ दूध पर जमने वाली मलाई । २ द्रव पदार्थ पर जमने वाली परत ।
 यरकणी (बो), यरकणी (बो)—क्रि० १ डरना, भय खाना, शंका मानना । २ कांपना, थरना । ३ हिलना-डुलना, विचलित होना । ४ धीरे-धीरे चलना, खिसकना । ५ गिरना, पड़ना । ६ देखो 'थिरकणी' (बो) ।
 यरकाणी (बो), यरकाणी (बो)—क्रि० १ गिराना, पटकना । २ ऊपर से नीचे डालना, ढकेलना । ३ डराना, घमकाना । ४ कांपना । ५ हिलाना-डुलाना, विचलित करना । ६ खिसकाना ।
 यरलणी (बो)—देखो 'थरकणी' (बो) ।
 यरणी—पु० [सं० स्वर्य] १ हृदय, दिल । २ धैर्य ।
 यरथरणी (बो)—देखो 'थरथरणी' (बो) ।
 यरथरा'ट, यरथराहट—स्त्री० कांपकी, थर्राहट ।
 यरथराणी (बो)—क्रि० १ कांपना, थरना । २ अत्यधिक डरना, घबराना ।
 यरथरी—देखो 'थरथराहट' ।
 यरपड़—स्त्री० लड़खड़ाहट ।
 यरपणी (बो), यरपणी (बो)—क्रि० १ रचना, बनाना । २ स्थापित करना । ३ देखो 'थापणी' (बो) ।
 यरमी—पु० १ एक प्रकार का वस्त्र । २ अंगुठी के ऊपर नगीने का घेरा ।
 यररा'ट—देखो 'थरथरा'ट' ।
 यरसळणी (बो), यरसळणी (बो)—क्रि० १ कांपना, थरना । २ भयभीत होना, घबराना ।
 यरहर (थरहरी)—स्त्री० १ भय के कारण होने वाली घबराहट, कंफकी । २ कंफन, घड़कन ।
 यरहणी (बो), यरहणी (बो)—क्रि० १ भय से कांपना, घबराना । २ हिलना-डुलना ।

थरावणी (बो)—देखो 'थरथराणी' (बो) ।

थर, थरू-वि० [सं० स्थिर] १ अटल, स्थिर । २ अनादि, सनातन । ३ चिर स्थायी ।

थल-पु० [सं० स्थल] १ स्थान, जगह । २ पृथ्वी, भूमि, जमीन । ३ धरातल । ४ वैभव, सम्पत्ति, धन, दौलत । ५ बालू रेत का टीला । ६ मरु प्रदेश । ७ भवन, घर । ८ भाव । ९ देखो 'थली' ।

थलकण-देखो 'थलगत' ।

थलकणी (बो)—क्रि० १ स्थूल शरीर के मांस का हिलना । २ तनाव या खिंचाव न रहना, ढीला पड़ना, झोल खाना । ३ पिचकना ।

थलगत, थलगटी-स्त्री० [सं० स्थल-स्कंध] द्वार की चौखट के नीचे वाली आड़ी लकड़ी ।

थलगांभी-वि० [सं० स्थलगामी] भूमि पर रहने व विचरण करने वाला ।

थलघट-वि० १ पगया माल खाने वाला, चटोरा । २ द्वार-द्वार भीख मांगने वाला ।

थलचर, थलचारी-पु० [सं० स्थल-चर] पृथ्वी पर रहने वाला जीव ।

थलथलणी (बो), थलथलणी (बो)—क्रि० स्थूल शरीर के मांस का हिलना-डुलना ।

थलपति-पु० [सं० स्थल-पति] १ राजा, नृपति । २ भू-स्वामी ।

थलभारी-पु० कहारों का एक संकेत ।

थलघर-देखो 'थलघर' ।

थलवट, (वटी, वट्ट, वट्टी)—देखो 'थली' ।

थलाधूणी-स्त्री० गुठभेड़, बुद्ध, टक्कर ।

थलि-देखो 'थली' ।

थलियामारू-पु० एक लोक गीत विशेष ।

थलियाँ-पु० मरु प्रदेश या रेगिस्तान का निवासी । -वि० मरुस्थल या रेगिस्तान संबंधी ।

थली-स्त्री० [सं० स्थल] १ मरुस्थल, रेगिस्तान । २ रेगिस्तानी इलाका । ३ देखो 'थलगत' ।

थलू-देखो 'थल' ।

थलैची-देखो 'थलियो' ।

थलैरी-देखो 'थलगत' ।

थलैवरी-स्त्री० [सं० स्थल-ईश्वरी] देवी, शक्ति, दुर्गा ।

थलवक, थलवकी-पु० [सं० स्तवक] समूह ।

थवणी-स्त्री० [सं० स्तवतिका] स्मृति, स्मृति-चिह्न ।

थवणी (बो)—क्रि० होना । हो जाना ।

थविर-वि० [सं० स्थविर] १ वृद्ध, बुढ़ा । २ स्थिर व परिपक्व बुद्धि वाला । ३ अनुभवी । ४ स्थविर कल्पी साधु (जैन) ।

थह, थहक-स्त्री० [सं० स्था] सिंह आदि की नांद, घुरसाली । गुफा ।

थहण-स्त्री० [सं० स्था] स्थान, जगह ।

थहरणी (बो)—क्रि० १ ठहरना, ठिकना, रुकना । २ कांपना, धरना ।

थहरणी (बो), थहरावणी (बो)—क्रि० १ ठहराना, ठिकाना । २ कांपना, धरना ।

थां-सर्व० आप, तुम ।

थांअली-देखो 'थांहरी' । (स्त्री० थांअली)

थांए-देखो 'थान' ।

थांएगिद्धि-स्त्री० [सं० स्थानगृद्धि] छः मास तक का शयन ।

थांणथप-देखो 'थांणायप' ।

थांणबंध-देखो 'थांणायबंध' ।

थांणायप-वि० एक ही स्थान पर स्थाई रहने वाला । -पु० चलने फिरने में असमर्थ साधु (जैन) ।

थांणदार-देखो 'थांणेदार' ।

थांणदारी-देखो 'थांणेदारी' ।

थांणबंध-पु० [सं० स्थानबंध] डिगल का एक गीत या छंद ।

थांणायत-पु० १ चौकीदार । २ पुलिस या सेना का एक कर्मचारी । ३ देखो 'थांणैत' । ४ देखो 'थांणायप' ।

थांण (शू)-पु० [सं० स्थाणु] १ शिव, महादेव । २ सूखा वृक्ष । ३ देखो 'थांणी' ।

थांणेत, थांणैत-पु० १ किसी स्थान का अधिपति । २ चौकी या झूड़े का मालिक । ३ पुलिस थाने का प्रभारी । ४ चुंगी वसूल करने वाला अधिकारी । ५ किसी स्थान का देवता ।

थांणेदार, थांणैदार-पु० [सं० स्थान + का० दार] १ पुलिस थाने का प्रभारी । २ जकात या चुंगी वसूल करने वाला अधिकारी ।

थांणेदारी, थांणैदारी-स्त्री० थानेदार का पद या कार्य ।

थांणी-पु० [सं० स्थान] १ घास-पास के क्षेत्र का सुरक्षार्थ स्थापित सैनिक चौकी । २ पुलिस विभाग का एक उप खण्ड । पुलिस स्टेशन । ३ ठिकने या ठहरने का स्थान । ४ स्थान, जगह । ५ समूह । ६ वृक्ष या पौधे के चारों ओर बनाया हुआ घेरा । थाला, थांधला । ७ एक प्रकार का सरकारी लगान । -सर्व० (स्त्री थांणी) आपका, तुम्हारा ।

थान-पु० [सं० स्थान] १ कोई देव-स्थान या चबूतरा । २ स्थान, जगह, ठिकाना । २ एक निश्चित लंबाई का कपड़े का बड़ा टुकड़ा या भाग । ४ देखो 'थण' । —अनाद-पु० देवालय ।

थानक-पु० [सं० स्थानक] १ श्वेताम्बर जैन साधुओं का उपाश्रम । २ देखो 'थान' । —थासी-पु० श्वेताम्बर जैन साधु ।

थानकबल्ल-पु० [सं० स्थान-बलि] पाताल ।

थान-वन्दावणी-पु० विवाह के लिये प्रस्थान करते समय दूल्हे को माँ का स्तन पान कराने की रस्म ।

थानिक-स्त्री० १ राजधानी । २ देखो 'थानक' ।

थापण, थापणि (जी)-देखो 'थापण' ।

थांब थांबड़-देखो 'थंबी' ।

थांबणी (बी)-देखो 'थांबणी' (बी) ।

थांबली, थांबली, थांबियी, थांबी-देखो 'थंबी' ।

थाम-१ देखो 'थंब' । २ देखो 'तोरणथाम' ।

थामउ-देखो 'थंबी' ।

थामणी (बी)-कि० १ रोकना, ठहराना । २ पकड़ना, पकड़ रखना, संभाले रहना । ३ जारी न रखना, बंद कर देना । ४ धैर्य रखना । ५ कोई कार्य अपने नियंत्रण में रखना ।

थामलियो-देखो 'थंबी' ।

थामली, थामली-देखो 'थंबी' ।

थामायत-पु० वंश या कुल की शाखा या उपशाखा का प्रमुख पुरुष ।

थामियो-देखो 'थंबी' ।

थामोड़, थामु, थामो-पु० [सं० स्तम्भ] १ वंश या कुल की शाखा या उपशाखा । २ देखो 'थंबी' ।

थाम-१ देखो 'थंबी' । २ देखो 'तोरणथाम' ।

थामणी (बी), थाम्हणी (बी)-देखो 'थांबणी' (बी) ।

थारउ, थारो, थारो-देखो 'थाहरी' ।

थांबली-देखो 'थाणी' ।

थाहरी-सर्व० (स्त्री० थाहरी) आपका, तुम्हारा ।

था-स्त्री० १ गंगा । २ पृथ्वी, भूमि । ३ क्षुति । ४ मृदंग । —सर्व० तुम, तुम । —वि० 'है' का भूत कालिक रूप । —प्रत्य० करण और अपादान कारक चिह्न, तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, से ।

थाक-स्त्री० १ थकावट । २ देखो 'थाग' ।

थाकउ, थाकड़ी-देखो 'थाकी' ।

थाकणी-वि० (स्त्री० थाकणी) जल्दी थक जाने वाला, जल्दी शिथिल होने वाला । —पु० १ विश्राम, ठहराव । २ थकावट ।

थाकणी (बी)-कि० १ चलते या श्रम करते-करते थकना, थक जाना । २ शिथिल पड़ना, जोश ठंडा होना । ३ श्रान्त होना, वलान्त होना । ४ अशक्त होना, शक्तिहीन होना । ५ दुर्बल होना, कुश होना । ६ निर्धन होना । ७ कम पड़ना, घटना । ८ हैरान होना, ऊबना । ९ मंद पड़ना, धीमा पड़ना ।

१० रुकना, बंद होना । ११ मन्त्र मुग्ध होना, मोहित होना । थाकल-वि० १ थका हुआ, श्रान्त, क्लान्त । २ शिथिल, धीमा, मंद । ३ अशक्त, कमजोर । ४ दुर्बल, कुश । ५ निर्धन, कंगाल ।

थाकी-देखो 'थकी' ।

थाकेली-पु० १ थकान, थकावट । २ दुर्बलता, कुशता । ३ हैरानी । ४ सुस्ती, उदासी । ५ हारारत ।

थाकोड़ी, थाकी-वि० [सं० स्वकित] (स्त्री० थाकोड़ी) १ थका हुआ, श्रान्त, क्लान्त । २ शिथिल, मंद, धीमा । ३ अशक्त, कमजोर । ४ दुर्बल, कुश । ५ निर्धन, कंगाल ।

थाग-स्त्री० [सं० ष्ठा] १ गहराई, थाह । २ गहराई का अन्त, नीचला तल । ३ गहराई का नाप, अंदाज । ४ पार, अंत, परिमिति । ५ सीमा, हृद । ६ पता, इत्तम । ७ रोक, सहारा । ८ गूढार्थ की जानकारी । ९ गंभीरता । १० नदी पानी के कटाव के खड्डे । ११ फूलों के हार के बीच में लगाये गये विभिन्न रंगीन फूल । १२ गरुना ।

थापड़, थागड़ी-वि० १ निडर, निर्भीक । २ धाह लेने वाला ।

थागणी (बी)-कि० १ गहराई की जांच करना । २ धाह लेना, तल तक पहुंचना । ३ अंदाज करना, अनुमान करना । ४ गंभीरता की समझना ।

थागत-स्त्री० थाह ।

थागिइदा-पु० ढोल का बोल ।

थागियल-पु० समुद्र, सागर ।

थागी-वि० १ कम गहरा, उथला । २ देखो 'थाग' ।

थाघ-देखो 'थाग' ।

थाघी-१ देखो 'थाग' । २ देखो 'थागी' ।

थाट-पु० [सं० स्थात] १ समूह, दल । २ सेना, फौज । ३ सैन्य दल । ४ साज-सामान, सामग्री । ५ संपत्ति, वैभव, ऐश्वर्य । ६ आनन्द, प्रलम्बता, हर्ष । ७ मनोरथ, मनोकामना । ८ बाहुल्यता, प्रचुरता । ९ चादर, पतरा, परत । १० किसी राग का स्वर समूह । ११ हाथी, गज । १२ देखो 'ठाट' । —थंभ-पु० योद्धा विशेष जिस पर सेना का दारोमुदार हो । अकेला फौज रोकने वाला वीर । —नाथ, पति, पती-पु० सेनापति ।

थाटणी-वि० (स्त्री० थाटणी) १ शोभा बढ़ाने वाला, वैभव बढ़ाने वाला । २ प्राप्त कराने वाला । ३ सजाने वाला । ४ तय करने वाला, निश्चित करने वाला ।

थाटणी(बी)-कि० १ शोभित करना । २ सुसज्जित होना । ३ तैयार करना, तैयार रखना । ४ एकत्र करना, संग्रह करना । ५ प्रगट करना, उत्पन्न करना । ६ धारण करना । ७ स्थापित करना । ८ तय करना, निश्चित करना । ९ प्राप्त कराना ।

धाट-पाट, धाट-बाट-पु० १ वैभव, ऐश्वर्य । २ सजावट, शोभा ।
 ३ शृंगार । ४ तड़क-भड़क । ५ झाडम्बर । ६ शान शोकत ।
 धाट-पाटौ-वि० १ हृष्ट-पुष्ट । २ सम्पन्न, वैभवशाली ।
 धाटव-पु० कवि । -वि० ठाट-बाट से रहने वाला ।
 धाटवी-पु० युवराज का छोटा भाई ।
 धाटि-देखो 'धाट' ।
 धाटियो-पु० गाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान ।
 अधारिया, मोड़ा ।
 धाटेसरी-पु० संन्यासियों का एक भेद ।
 धाटौ-पु० १ गाड़ी की छत, धाटा । २ खाद या घूल भरी
 गाड़ी । ३ एक गाड़ी खाद या घूल की मात्रा । ४ वक्ष-
 स्थल । -वि० ठहरा हुआ, स्थिर ।
 धाडो-देखो 'ठाडो' । (स्त्री० धाडी)
 धाड़-पु० १ सहारा, रोक । २ स्तंभ । ३ सर्दी, शीतलता ।
 धाड़ी-पु० [सं० स्थातृ] (स्त्री० धाठी) १ सहारा, आश्रय ।
 २ रुकावट । -वि० १ खड़ा, सीधा । २ देखो 'ठाडो' ।
 धाणी (बी)-देखो 'धावणी' (बी) ।
 धात-पु० पैर का तलुवा, पाद-तल । -वि० [सं० स्थात] बैठा
 हुआ, ठहरा हुआ, स्थित ।
 धाप-स्त्री० १ हस्त-तल, थप्पड़, तमाचा । ३ हस्त-तल का
 आघात । ३ तबले आदि पर हाथ का आघात । ४ बिचार
 मंत्रणा । ५ कार्यक्रम, व्यवस्था । -वि० स्थापित करने
 वाला । —उच्चाप-पु० निर्णय फैसला । -वि० स्थापित
 करने या उखाड़ने में समर्थ ।
 धापड़ी-देखो 'धाप' । २ देखो 'धपड़ी' ।
 धापट-देखो 'धाप' ।
 धापण (णि)-स्त्री० [सं० स्थापन, स्थापनिका] १ स्थापित
 करने की क्रिया या भाव । २ धरोहर, अमानत ।
 -वि० स्थापित करने वाला ।
 धापणा-उच्चापणा-देखो 'धाप-उच्चाप' ।
 धापणी-देखो 'धापण' ।
 धापणी (बी)-क्रि० [सं० स्थापना] १ स्थापित करना, स्थापना
 करना, बैठाना । २ जमाना । ३ प्रतिष्ठित करना ।
 ४ पुकरकर करना, तय करना, निश्चित करना । ५ मानना ।
 ६ रखना । ७ एकत्र करना । ८ सौंपना । ९ प्रहार करना,
 आघात करना ।
 धापन-देखो 'धापण' ।
 धापना-स्त्री० [सं० स्थापन] १ किसी देव मूर्ति या देवताओं
 के किसी चिह्न की किसी स्थान पर स्थापित करने की
 क्रिया, स्थापना, प्रतिष्ठा । २ नवरात्रि में दुर्गा पूजा के लिए
 घट-स्थापना । ३ नवरात्रि का प्रथम दिन । ४ अधिकार,
 कब्जा । ५ वास्तविक वस्तु के अभाव में कल्पित वस्तु की

परिकल्पना । (जैन) ६ आकार चित्र, मूर्ति । ७ स्थापन,
 न्यास । ८ अनुज्ञा, सम्मति । ९ जैन साधु को भिक्षार्थ
 रखी हुई वस्तु व इस वस्तु के रखने से होने वाला दोष ।
 —करम-पु० स्थापना कर्म । (जैन) । —धारज-पु०
 स्थापनाचार्य (जैन) । —धारिज-पु० धाचार्य संबंधी वस्तु
 (जैन) । —पुरस-पु० स्थापित की हुई मूर्ति, आकृति,
 चित्र । —सच, सच्च, सत्य, साच-पु० कल्पित वस्तु को
 सत्य मानने की अवस्था ।

धापल-देखो 'धापी' ।

धापलणी (बी)-क्रि० १ पीठ थपथपाना । २ थपकी देना ।
 ३ उत्साहित करना ।

धापिणि, (णी)-देखो 'धापण' ।

धापोटणी (बी)-देखो 'धापलणी' (बी) ।

धापी-पु० १ रंगादि पोत कर चिह्न अंकित करने का सांचा ।
 २ रंगादि से अंकित किया जाने वाला हथेली का चिह्न ।
 ३ किसी वस्तु को ढालने का सांचा । ४ खलिहान में घनाज
 के ढेर पर गीली मिट्टी या गोबर का किया जाने वाला
 चिह्न । ५ ढेर राशि । ६ खलिहान में साफ घनाज का
 ढेर । ७ ऋद्धि के पत्तों का ढेर । ८ रहट के चक्र में
 लगाई जाने वाली लकड़ी । ९ विवाह के समय देवी,
 देवताओं के लिए निश्चित किया हुआ स्थान । १० दोनों
 बाहुमूर्तियों के बीच का वक्षस्थल । ११ विवाह सम्पन्न होने
 पर सातु द्वारा दामाद की पीठ पर अंकित किया जाने
 वाला हाथ का चिह्न । १२ किसी वस्तु या किसी
 स्थान पर जमने वाला मिट्टी का ढेर । १३ किसी वस्तु पर
 एकत्र होने वाला चींटी आदि जीवों का समूह ।

धाबीजणी (बी)-क्रि० अर्थ संकट पड़ना, अर्थाभाव से दुःखी
 होना ।

धाबी-पु० १ कष्ट, पीड़ा । २ निष्फल जाने की क्रिया या भाव ।

धावणी (बी)-देखो 'धावणी' (बी) ।

धावी-देखो 'स्थाई' ।

धारउ-देखो 'धारी' ।

धारोड़ी-देखो 'धारी' । (स्त्री० धारोड़ी)

धारी-सर्व० (स्त्री० धारी) तेरा, तुम्हारा । आपका ।

धाळ-पु० [सं० स्थालम्] १ किसी धातु की बनी बड़ी थाली,
 तश्तरी, छिछला गोल पात्र । २ पगल । ३ आलर नामक
 वाद्य ।

धाळ-पु० १ अपने गाल चाटने वाला घाड़ा । २ पाशवं वदलन
 की क्रिया या भाव । ३ किसी भारी वस्तु को घुड़कान की
 क्रिया या भाव । -वि० ठीक, उचित ।

धाळकड़ी, धाळकली-देखो 'धाळी' ।

धाळकियो-पु० १ छोटी थाली । २ देखो 'धाळी' ।

धातुकी-देखो 'धातु' ।

धातुणी (बी)-क्रि० १ पार्श्व पनटना । २ सीधा करना ।
३ स्थापित करना, रखना । ४ भारी वस्तु को घुड़काना ।
५ देखो 'ठालणी' (बी) ।

धातु-देखो 'धातु' ।

धातुणी-पु० १ गाड़ी पर बना गाड़ीवान के बैठने का स्थान ।
२ देखो 'धातु' । ३ देखो 'धातु' ।

धातु-स्थी० [सं० स्थाली] १ धातु का बना छिछला गोल-
पात्र, तश्तरी । २ बड़ी तश्तरी । ३ थालीनुमा वाद्य,
झालर । ४ घोड़ों के घेर के बीच किया जाने वाला नृत्य ।
५ पाटल वृक्ष ।

धातुड़-१ देखो 'धातु' । २ देखो 'धातु' ।

धातु-पु० [सं० स्थल] १ मकान बनाने की खाली जमीन,
आवासीय भू-खण्ड । २ हड़ व सूखी भूमि, जमीन ।
३ नदी या समुद्र का तट । ४ स्थान, जगह । ५ खेत ।
६ सोने या चांदी की बनी देवमूर्ति । ७ देवमूर्ति युक्त गले
का आभूषण विशेष । ८ गाड़ी की छत । ९ कूए के पास
मवेशियों के पानी पीने का स्थान । १० वृक्ष या पौधे के
चारों ओर किया गया गड्ढा । ११ देखो 'धातु' ।

धातुणी-देखो 'धातु' ।

धातुणी (बी)-क्रि० १ होता । २ रहना । ३ खड़ा होना ।
४ देखो 'ठावणी' (बी) ।

धातु-वि० [सं० स्थावर] १ स्थिर, अचल । स्थावर । २ जड़,
अक्रियाशील । ३ गति रहित, गतिहीन । ४ निर्जीव ।
५ अटल, अडिग । ६ मूर्ख, नासमझ । ७ पागल । ८ ढीठ,
निलज्ज । ९ पुष्टती, पूर्वजों से मिला हुमा । -पु० १ पर्वत,
पहाड़ । २ कोई निर्जीव वस्तु । ३ धनुष की डोरी, कमान ।
४ शनिवार । ५ शनि ग्रह । ६ बपोती का माल, जायदाद ।

धातुणी-पु० १ शनिदेव की पूजा करने वाला ब्राह्मण ।
२ शनिदेव के पूजन का दान लेने वाला ब्राह्मण ।

धातु-पु० [सं० ध्येयस] १ धैर्य, विश्वास । संतोष । २ ठहराव,
स्थिरता । ३ देखो 'धातु' ।

धातु-वि० स्थिर, हड़ ।

धातु-देखो 'धातु' ।

धातुणी-वि० [सं० ठा] १ थाह लेने वाला । २ रोकने वाला ।
धातु-पु० [सं० ठा] १ सिंह की माँद, गुफा, कंदरा । २ स्थान,
जगह । ३ रिक्त स्थान । ४ नगर, शहर । ५ गढ़, किला ।
६ भवन, मकान । -वि० १ कम गहरा, छिछला ।
२ थोड़ा ।

धातुणी (बी)-क्रि० [सं० ठातु] १ थोड़ा रुकना, ठहरना ।
२ खिसकना । ३ गिरना पड़ना । ४ स्थिर होना ।

धातु-सर्व० तेरे, तुम्हारे ।

धातु-सर्व० (स्त्री० धातु) तुम्हारा, तेरा ।

धि-स्त्री० १ यमुना । २ गोदावरी । ३ नौद, निद्रा । ४ बेल ।
धिरक-देखो 'धिरक' ।

धिकां, धिका-देखो 'धिका' ।

धिकु, धिकी-देखो 'धिकी' ।

धिर-स्त्री० [सं० स्थिति] १ डेर, समूह, राशि । २ नृत्य का
योग । ३ लड़खड़ाहट । -क्रि० वि० पास, ढिग ।

धिरणी (बी)-क्रि० वि० [सं० स्थिति] १ लड़खड़ाना,
डगमगाना । २ ठहरना, रुकना । ३ स्थिर होना ।

धिरणी-स्त्री० रुपये रखने की थैली ।

धिरणी (बी)-देखो 'धिरणी' (बी) ।

धिर-देखो 'धिर' ।

धिरणी (बी)-देखो 'धिरणी' (बी) ।

धिरणी (बी)-देखो 'धावणी' (बी) ।

धिर-वि० [सं० स्थिति] १ स्थित, कायम । २ ठहरा हुआ, खड़ा
हुमा । ३ अटल, अचल, हठ । ४ मौजूद, निश्चिन्त ।
५ स्थिर । ६ तैयार । ७ नित्य, हमेशा । ८ केन्द्रित ।
-स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिरता । २ धन, दीलत, लक्ष्मी ।
३ ठहराव, पड़ाव, तेरा । ४ देखो 'धिर' ।

धिर-स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिति, दशा, हालत, अवस्था ।
२ वैभव, ऐश्वर्य । ३ अस्तित्व । ४ क्षमता । ५ रहाव,
मौजूदगी । ६ ग्रहण की अवधि । [सं० धिति] ७ पृथ्वी ।
८ ग्रह, निवास स्थान । ९ हार्नि । १० नाश, प्रलय ।

धिरभव-पु० स्थायी भाव ।

धिरणी-वि० स्थिर, अटल, स्थाई-भूत । -क्रि० वि० निरन्तर,
लगतार । स्थाई रूप से । हमेशा ।

धिर-देखो 'धिर' ।

धिर-वि० [सं० स्तमित] १ भय रहित, निर्भय । २ स्थिर ।
-पु० अंतगड मूत्र के प्रथम वर्ग के पांचवें अध्ययन
का नाम ।

धिरणी (बी)-देखो 'धिरणी' (बी) ।

धिर-स्त्री० [सं० स्थिरा, स्थिर] १ पृथ्वी । २.४९ क्षेत्र-
पालों में से ३३ वां क्षेत्रपाल । ३ ज्योतिष में वृष, मिह,
वृश्चिक व कुम्भ राशियां । ४ ज्योतिष में एक योग ।
५ वृक्ष, पेड़ । ६ जीव को स्थिर अवयव प्राप्त कराने वाला
कर्म । -वि० १ ठहरा हुआ, रुका हुआ, स्थिर । २ स्थाई ।
३ चिर स्थाई । ४ अचल, निश्चल । ५ शांत । ६ हड़,
अटल । ७ मजबूत, हड़ । ८ मुकर्रर, नियत । ९ सदा बना
रहने वाला । १० निश्चित, निर्धारित । ११ सस्त, ठोस ।
१२ हड़ प्रतिज्ञ ।

धिरक-स्त्री० १ चंचल गति, नृत्य की गति । २ चमक ।

धिरकणी (बी)-क्रि० १ नृत्य में पैरों का गतिमान होना ।

२ नाचना, अंग मटकाना । ३ देखो 'धरकणी' (बी) ।
थिरकस-पु० १ चित्त वृत्तियों के निरोध का चिन्तन, चित्त की एकग्रता । २ परब्रह्म ।
थिरचर-पु० [सं० स्थिरा-चर] भूमि पर विचरण करने वाले प्राणी, स्थल चर ।
थिरता, **थिरताई**-स्त्री० [सं० स्थिरता] १ धैर्य, धोरज, शांति । २ स्वायत्तत्व । ३ स्थिर रहने की अवस्था, ठहराव, निश्चलता । ४ मजबूती, दृढ़ता । ५ अचंचलता । -वि० स्थिर, अटल ।
थिरथाप, **थिरथोप**-वि० अटल, दृढ़, स्थिर ।
थिरपणी(बी)-१ देखो 'थापणी'(बी) । २ देखो 'धरपणी' (बी) ।
थिरभी-पु० उत्तम श्रेणी का एक वस्त्र विशेष ।
थिरवत, **थिरवती**-वि० [सं० स्थिरवत] स्थिर, अटल, दृढ़ ।
थिरा-स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी, वसुधा ।
थिरी-देखो 'थड़ी' ।
थिरु (रु)-वि० [सं० स्थिर] स्थिर, अटल, दृढ़ ।
थिवर-देखो 'थिवर' ।
थी-स्त्री० १ गिरा । २ रेखा नदी । ३ स्त्री, धीरत । -पु० ४ समुद्र, सागर । ५ घाव । -प्रत्य० तृतीया या पंचमो विभक्ति का चिह्न, से । -अव्य० 'है' का भूत कालिक स्त्री रूप ।
थीणी-वि० [सं० स्थान्नु] १ जमा या ठसा हुआ (बी) । २ गाढ़ा । ३ दृढ़ ।
थीतंकर-देखो 'तीरथंकर' ।
थीमड़ी-पु० बछड़े के मुँह पर बांधने की, सुलें लगी चगड़े की गट्टी ।
थीवर-देखो 'थिवर' ।
थीवलि (ली)-देखो 'थिवलि' ।
थुंग-पु० नृत्य वा एक बोल ।
थुंडी-स्त्री० स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष ।
थुंभ, **थुंभी**-पु० [सं० स्तूप] १ स्तूप । २ देखो 'थुंभी' ।
थु-पु० १ विष्णु । २ त्याग । ३ झूठ । -स्त्री० ४ कोयल । ५ अविद्या, मूर्खता । ६ झूठन । -वि० १ मैला, कुबेला । २ जूठा, उच्छिष्ट ।
थुड़, **थुई**-स्त्री० १ ऊँट के पीठ पर उभरा हुआ भाग । २ बैल या सांड के अगले पैरों के ऊपर का उभरा भाग, डिल्ला, कोहान । ३ पुष्टता । ४ आगे निकला हुआ पेट, तोंद । [सं० म्नु] ५ स्तुति, प्रशंसा ।
थुघी-देखो 'थुघी' ।
थुकणी (बी)-देखो 'थुकणी' (बी) ।
थुकाई-स्त्री० थूकने की क्रिया या भाव ।

थुकाशी, (बी), **थुकावणी** (बी)-क्रि० [सं० थूत्करण] १ थूकने के लिये प्रेरित करना, थुकवाना । २ उगमवाना ।
थुड़-पु० १ थूक का लना । २ थूक । -वि० गुप्ते, नासमभ ।
थुड़णी(बी)-क्रि० १ लड़ना, भिड़ना, टक्कर लेना । २ जूझना । ३ किसी कार्य में क्षमता से अधिक श्रम करना, जोर लगाना । ४ गुल्यमगुल्य होना । ५ उगमवाना, लड़खड़ाना ।
थुड़ि-देखो 'थुड़' ।
थुड़ि-पु० एक प्रकार का व्यंजन ।
थुड़णी (बी)-क्रि० [सं० थुड़] १ आच्छादिन होना, दाना, फलना । २ देखो 'थुड़णी' (बी) ।
थुणणी (बी)-क्रि० [सं० थुम] १ स्तुति करना, प्रशंसा करना । २ प्रेरणामय मानना, गुणगाना । ३ स्मरण करना, याद करना ।
थुनकारणी (बी)-देखो 'थुथकारणी' (बी) ।
थुतकारिणी, **थुतकारी**-देखो 'थुथकारी' ।
थुतकी, **थुतकी**-देखो 'थुथकी' ।
थुथकारणी (बी)-क्रि० [सं० थूत्करणम्] १ दोष दृष्टि से वचाने के लिये मुँह से थू-थू करना, टीना करना । २ सराहना, नजर लगने योग्य बताना ।
थुथकारी, **थुथकारी**, **थुथकी**, **थुथकी**-पु० [सं० थूत्कार] १ दोष दृष्टि वचाने के लिये मुँह से थू-थू करने की क्रिया । २ मुँह से हल्कासा थूकने की क्रिया ।
थुर-देखो 'थर' ।
थुरन-स्त्री० [सं० स्फुरणम्] १ फड़कन, स्फुरण । २ हिलने की क्रिया या भाव ।
थुरभी-देखो 'थिरभी' ।
थुली, **थुली**, **थुली**-देखो 'थुली' ।
थुवणी (बी)-देखो 'थावणी' (बी) ।
थुवो, **थुवो**-देखो 'थुवो' ।
थू-देखो 'तू' ।
थूक-देखो 'थूक' ।
थूकणी (बी)-देखो 'थूकणी' (बी) ।
थूकमथूड-पु० धक्का-मुक्को, फसाफसी । धींगा मस्ती ।
थूंड, **थूंडर**-स्त्री० थूथन ।
थूणी-स्त्री० [सं० स्थूणा] १ बिल्ली, खंभ । २ घास-फूस की छाजन, खपरैल । ३ मधदंड का फंदा अटकाने की गड़ी हुई लकड़ी ।
थूथकी-देखो 'थुथकारी' ।
थूथी-स्त्री० छोटे कानों वाली बकरी ।
थूब-देखो 'थूवो' ।
थूबड़ी-देखो 'थुई' ।
थूबड़ी-देखो 'थूवो' ।

शुं बली, शुं बी-देखो 'शुई' ।

शुं बी-पु० १ टीबा, भीडा । २ देखो 'शुई' ।

शुं घ-१ देखो 'शुई' । २ देखो 'शुं बी' । ३ देखो 'शुं भ' ।

शुं घड़ी-देखो 'शुई' ।

शुं मली-१ देखो 'शुई' । २ देखो 'शोबली' ।

शुं मी-देखो 'शुई' ।

शुं भी-देखो १ शुं बी' । २ देखो 'शुई' ।

शुं-स्त्री० १ दासी । २ पगड़ी । ३ पराशर । ४ दास । ५ देखो 'तू' । -घव्य० १ धुकने का शब्द । २ भर्त्सना सूचक ध्वनि ।

शुई-देखो 'शुई' ।

शुं ग्री-पु० १ आभूषण, जेवर । २ सम्पत्ति, जायदाद । ३ ककुद डिल्ला ।

शुं क-पु० [सं० शूकृतम्] १ मुंह से निकलने वाला गाढ़ा, लसीला पानी, लार । २ बलगम, खंखार, ष्ठीवन ।

शुं कणी (बी)-क्रि० [सं० शूकरणम्] १ मुंह से गाढ़ा लसीला पानी गिराना, धुकना । २ बलगम निकालने के लिये खांस कर धुकना ।

शुं ड-पु० [सं० तुंड] १ सूअर का धूथन । २ भुजा का आभूषण, भुजबंद ।

शुं गी-देखो 'शुं गी' ।

शुं घड़-देखो 'शुं घी' ।

शुं घण, शुं घणी-पु० [सं० तुंड] १ सूअर आदि का लंबा मुंह, तुण्ड, धूथन । २ हाथियों का एक रोग ।

शुं ची-वि० [सं० तुच्छम्] १ तुच्छ । २ मूर्ख, नासमझ । ३ छोटे कानों वाला । -पु० छोटे कानों वाला बकरा ।

शुं स-देखो 'शुं भ' ।

शुं र-वि० [सं० स्थूल] १ मोटा, बड़ा । २ हृष्ट-पुष्ट । ३ राक्षस, असुर । ४ देखो 'शोर' ।

शुं रणी (बी)-क्रि० [सं० धुर्वणम्] १ नाश करना, सर्वनाश करना । २ संहार करना, मारना । ३ ध्वस्त या तहस-नहस करना ।

शुं ल-पु० [सं० स्थूल] १ डेरा, खेमा, तंबू । २ समूह । ३ असुर, राक्षस । ४ साधारणतया इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करने योग्य पदार्थ । गोचर पदार्थ । ५ अन्नमय कोष । ६ पर्वत शिखर । ७ ईश्वर । ८ विष्णु । -वि० १ जो यथेष्ट स्पष्ट हो । २ नष्ट होने वाला, नाशवान । ३ मूर्ख, जड़ । ४ दृढ़, मजबूत । ५ मोटा, स्थूल, सूक्ष्म का विपर्याय । ६ मोटा, पीन । ७ विस्तृत, अधिक । ८ गाढ़ा, मोटा । ९ सुस्ते । १० असत्य भ्रष्ट । ११ रिक्त, खाली ।

शुं लनास, शुं लीनास-पु० [सं० स्थूलनासिका] सूअर, शूकर ।

शुं लो-स्त्री० १ गेहूँ का दलिया । २ इस दलिये का पकाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

शुं लु-देखो 'शुं ल' ।

शुं ली-देखो 'शुं ल' ।

शुं ली-देखो 'शुं ली' ।

शुं-सर्व० १ आप, तुम । २ देखो 'शे' । ३ देखो 'शे' ।

शे-पु० १ ताल । २ संबोधन । ३ निवास । ४ देखो 'शे' । ५ देखो 'शे' ।

शेद, शेदय, शेई-पु० १ नृत्य व ताल के बोल । २ छोटे बच्चे के खड़े होने की क्रिया या अवस्था ।

शेईकार-पु० कथक नृत्य के बोलों का आधार ।

शेईयास-देखो 'यद्वायत' ।

शेगड़-पु० सहारा ।

शेगड़ी-पु० १ कटि मेखला या हार में लगाया जाने वाला चपटा फूल या चौकी । २ देखो 'थाग' ।

शेगल, शेगली, शेगली-स्त्री० फटे वस्त्र पर लगाई जाने वाली कारी, पैबंद ।

शेगा-पु० एक प्राचीन राजवंश ।

शेगी-पु० सहारा, आश्रय ।

शेघ-पु० १ एक पर एक चुनने की क्रिया, तह, परत । २ सहारा आश्रय ।

शेघल, शेघली-देखो 'शेगल' ।

शेच-देखो 'शेची' ।

शेचाकूटी-वि० मार खाने का आदी, पिटने का आदी, ढोठ । -पु० १ कुम्भकार का औजार विशेष । २ परेशानी का कार्य ।

शेची-पु० १ भैम का एक बार किया गोबर । २ किसी पदार्थ का लोंदा । ३ ढेर ।

शेद-वि० १ निरा, निपट । २ बिल्कुल, एकदम । ३ ममस्त, सब । ४ शुद्ध । ५ वास्तविक, सही । ६ देखो 'शेट' ।

शेद-सय-क्रि० वि० १ अन्त-तक । २ परंपरा से, सदा से ।

शेद-क्रि० वि० १ प्रारंभ से, परंपरा से, अनादिकाल से । २ हमेशा से, नित्य से । -वि० हमेशा, नित्य ।

शेघड़ी (बी)-क्रि० [सं० तेस्तीरणम्] १ बाड़े पदार्थ को किसी आधार पर छितराना, थोपना । २ मलहम आदि का लेपन करना ।

शेघड़-१ देखो 'शेघड़ी' । २ देखो 'शेघड़ी' ।

शेघड़की-देखो 'शेघड़ी' ।

शेघड़ियो-देखो 'शेघड़ी' ।

शेघड़ी-स्त्री० ईंधन के लिये गोबर को थोप कर बनाई हुई गोल टिकिया, उपला ।

शेपड़ी-पु० १ छाजन के लिये मिट्टी का बनाया गया चौड़ा खपड़ा, खपरैल । २ देखी 'शेपड़ी' ।

शेबी-पु० १ गाढे व गीले पदार्थ का लोंदा । २ सहारा । २ दीवार के बड़े पत्थर के सहारे के लिये लगाया गया छोटा पत्थर । ४ देखो 'धोबी' ।

शेर-देखो 'शविर' ।

शेरू-देखो 'शिर' ।

शेलकी, शेलियो, शेली, शेलीड़-देखो 'शैली' ।

शेली-देखो 'शैली' ।

शेवर-देखो 'शविर' ।

शेबी-पु० १ सहारा, मदद । २ देखो 'धूषी' ।

शेह-देखो 'शह' ।

शे,शे-पु० १ ताल । २ देवता । ३ विरुद्ध कीर्ति । ४ कील ।

-वि० १ पूर्ण । २ ऊर्ध्व । -सर्व० आप, तुम । -प्रत्य० तृतीया व पंचमी विभक्ति, से ।

शेई-स्त्री० [सं० स्थिति] १ बारूद रखने की चमड़े की एक थैली विशेष । २ देखो 'थेई' ।

शेलको-देखो 'शैली' ।

शेलियो-देखो 'शैली' ।

शैली-स्त्री० [सं० स्थल] १ कपड़े, टाट आदि की तीन तरफ से सी कर, सामान डालने के लिये बनाया गया उपकरण । २ रुपये डालने का कपड़े आदि का उपकरण । ३ कागज आदि का लिफाफा ।

शैलीड़, शैली-पु० [सं० स्थल] १ कपड़े आदि की बड़ी थैली, थैला, बोरा । २ रुपये डालने का शैलीनुमा पात्र । ३ पायजामे का घुटने से जंघा तक का भाग । ४ मकान के दरवाजों के ऊपरी हिस्से पर लगाये जाने वाले चौड़े पत्थर के नीचे का पत्थर ।

शेह-देखो 'शह' ।

शो-पु० १ तरु, वृक्ष । २ मन । ३ पुत्र । ४ नसिह । ५ चालाक ।

शोक, शोकड़ी-पु० [सं० स्तोमक] १ आनन्द, खुशी । २ वैभव ऐश्वर्य । ३ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत । ४ पदार्थ, चीज । ५ घटना, बात । ६ व्यंग्य, ताना । ७ तरह, प्रकार, भांति । ८ इकट्ठी वस्तु, कुल । ९ खुदरा या फुटकर का विपणन, समूह व्यापार । १० व्यापारिक वस्तु का ढेर, राशि, समूह । ११ झुण्ड, मण्डली, धूध । १२ अटाला, ढेर । १३ तना ।

शोकायती-पु० १ झुण्ड या ढल का नायक । २ शोक व्यापारी ।

शोगणी-वि० (स्त्री० शोगणी) धाह लेने वाला ।

शोगणी (बौ)-क्रि० थाह लेना ।

शोगी-पु० १ सहारा । २ सहारे के लिये लगाया गया उपकरण, वस्तु । ३ आश्रय, अवलंबन ।

शोड़-देखो 'थोड़ी' ।

शोड़-थाड़-वि० किंचित, कुछ-कुछ ।

शोड़ली, थोड़ीरी, थोड़ी-वि० [सं० स्तोक] (स्त्री० थोड़ी) १ घल्प, न्यून, कम । २ किंचित, तनिक । ३ अपेक्षित से कम ।

शोटक-वि० कर विशेष ।

थोड, थोडउ-पु० [सं० तुंड] १ बलमाड़ी का सब से आगे का भाग, जो जमीन पर नीचे झुका रहता है । २ देखो 'थोड़ी' ।

थोडलउं, थोडलउ, थोडली-देखो 'थोड़ी' ।

थोडिउ-देखो 'थोड़ी' ।

थोड़ी-स्त्री० [सं० तुण्ड] १ सर्प का मुंह, फण । २ दाढ़ी ।

थोड़ेर, थोड़ेरू, थोड़ेरी-वि० [सं० स्तोक] अपेक्षाकृत कम, थोड़ा ।

थोली-स्त्री० धूँधन । -वि० पोपली, खोखली ।

थोथ-स्त्री० १ खोखलापन, पोपलापन । २ शून्य स्थान, खाली जगह, बीच में रही खाली जगह । ३ निर्जन भूमि । ४ व्यर्थता ।

थोथरी, थोथी-वि० (स्त्री० थोथरी, थोथी) १ खाली, पोपला । २ खाली, रिक्त, जिसके बीच में पोल हो । ३ निर्जन, कंगाल । ४ अनुपजाऊ । ५ सारहीन, निराम्मा, बेकार । ६ व्यर्थ, फिजूल । ७ मूर्ख, नासमझ ।

थोपणी (बौ)-क्रि० [सं० स्थापन] १ जमाकर रखना । २ आरोपित करना, मथना, लगाना । ३ कोई कार्य किसी पर डालना । ४ गीला व गाढ़ा पदार्थ किसी पर लगाकर छितरा देना ।

थोथ-देखो 'थोथ' ।

थोबड़-देखो 'थोबड़ी' ।

थोबड़ियो, थोबड़ी-पु० [फा० तोवर] मुंह, जवज, मूख ।

थोबणी (बौ)-देखो 'थोपणी' (बौ) ।

थोबली-स्त्री० लकड़ी का स्तंभ, चांड ।

थोबी-पु० १ गाय के स्तनों में बछड़े द्वारा मुंह से दिया जाने वाला भटका, आघात, टक्कर । २ आश्रय, सहारा । ३ स्तम्भ, खंभा ।

थोभ-पु० [सं० स्तम्भ] १ स्तंभ, खंभा । २ मकावट, रोक । ३ सीमा, हद ।

थोभणी (बौ)-क्रि० [सं० स्तम्भ] १ रोकना, रुकावट डालना । २ गिरती वस्तु को संभालना, सहारा देना । ३ पकड़ना, सहारना । ४ सहारा देना । ५ डटना, थडना, ठहरना ।

थोर-स्त्री० जड़ से उत्पन्न एक गुंम जिसके तना न होकर डंडल होते हैं और डंडलों के कटे व छोटी-छोटी पत्तियां लगती हैं, थूहर ।

थोरणी (बौ)-क्रि० १ आग्रह, अनुशील करना । २ मजबूत करना, मज्जहार करना, मनाना । ३ देखो 'थोरणी' (बौ) ।

धोरियो

(१२४)

दंडलक्षण

धोरियो-पुं धूहर का फल ।

धोरो-पुं एक अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

थोरु-देखो 'थोर' ।

थोरो-पुं १ आग्रह, अनुरोध । २ गरज, मनुहार ।

थोलतं-देखो 'थोड़ो' ।

थोली-पुं तलवार की मूठ का एक भाग ।

थोवी-वि० थोड़ा, कम ।

थोहर, थोहरि, थोहरी-१ देखो 'थोर' । २ देखो 'धोरो' ।

थी-पुं १ संग, साथ । २ गमन । ३ मन । ४ मोह, प्रेम ।

५ अष्टसिद्धि । -वि० 'है' का भूतकालिक रूप ।

थीकी-देखो 'थोक' ।

थ्यावस-देखो 'थावस' ।

थ्यु, थ्यौ-वि० [सं० स्था] १ स्थित । २ हुवा हुआ,

३ बना हुआ ।

-द-

द-देवनागरी वर्णमाला का अठारहवां व्यंजन ।

दं-पुं १ इन्द्र । २ युग । ३ अभिमान । ४ दण्ड । ५ दैत्य की स्त्री ।

दंग-वि० [फा०] १ हैरान, विस्मित, आश्चर्यान्वित । २ किकर्तव्य विमूढ़ । -पुं १ भय, घबराहट । २ अग्निकण, चिनगारी । ३ देखो 'दंगी' ।

दंगड़-वि० १ दंगा करने वाला, फिसादी । २ उपद्रवी, आततायी । ३ उग्र, प्रचंड ।

दंगली (बो)-देखो 'दगली' (बो) ।

दंगर-पुं शत्रु, बैरी ।

दंगल-पुं [फा० दंगल] १ पहलवानों की कुश्ती, मल्ल-युद्ध । २ युद्ध, लड़ाई । ३ अखाड़ा । ४ खेल, तमाशा । ५ समूह, जमात, मण्डली ।

दंगी-पुं [फा० दंगल] १ उपद्रव, दंगा, हुल्लड़ । २ भगड़ा । ३ शोरगुल, हल्ला । ४ विद्रोह, बगावत ।

दंडेब-वि० १ जबरदस्त, जोरदार । २ बड़ा, मोटा ।

दंड-पुं [सं० दण्ड] १ छोटी लकड़ी, डंडा । २ राजदण्ड, आतदण्ड, सन्यासियों का दण्ड । २ हाथी का दांत । ३ नाव की बल्लो । ४ मयानी । ५ अर्थ दण्ड, जुर्माना । ६ सजा । ७ चार हाथ का एक माप । ८ लिंग । ९ शरीर । १० यम की उपाधि । ११ शिव । १२ विष्णु । १३ सूर्य का सहचर । १४ समय का एक विभाग, अंश, घड़ी । १५ घोड़ा । १६ हल की हरिस । १७ दो रागण के दूसरे भेद का नाम । १८ काव्य छन्द का एक भेद विशेष । १९, २० प्रकार के दण्डायुधों में से एक ।

दंडक-पुं [सं०] १ डंडा । २ दंड देने वाला अधिकारी, शासक । ३ छवज दण्ड । ४ एक ग्रन्थ विशेष । ५ छंदों का एक वर्ग विशेष । ६ दो छंदों से मिलकर बनने वाला छन्द । ७ इक्ष्वाकु राजा का एक पुत्र । ८ एक प्रकार का वात रोग । ९ शुद्ध राग का एक भेद । १० कर्म दण्ड

भोगने वाले प्राणी या उनके स्थानों का समूह । (जैन)

दंडकल-देखो 'दंडकला' ।

दंडकलस-पुं ध्वजदंड और कलस ।

दंडकला-स्त्री० [सं०] एक छन्द विशेष ।

दंडकार, (कारण, कारण्य, कारी)-पुं [सं० दण्डकारण्य] विध्य पर्वत से गोदावरी तट तक फैला एक प्राचीन वन ।

दंडगौरी-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम ।

दंडजात्रा-स्त्री० [सं० दंड यात्रा] १ सेना का प्रयाण, चढ़ाई । २ दिग्विजय के लिये किया जाने वाला प्रयाण । ३ वर यात्रा, बरात ।

दंडण-पुं [सं०] दंड देने की क्रिया या भाव ।

दंडणी-स्त्री० दण्ड देने वाली ।

दंडणी (बो)-देखो 'डंडणी' (बो) ।

दंडताम्री-स्त्री० [सं०] तांबे की कटोरियों वाला जल तरंग नामक वाद्य ।

दंडधर-पुं [सं०] १ यमराज । २ संन्यासी । ३ शासनकर्ता । -वि० दण्डधारी ।

दंडनायक, (नायिक)-पुं [सं०] १ दण्ड या सजा का निर्धारण करने वाला न्यायाधीश । २ सेनापति । ३ सूर्य के एक अनुचर का नाम ।

दंडनीति-स्त्री० [सं०] दण्ड विधान से शासन चलाने की नीति ।

दंडपात-पुं [सं०] एक प्रकार का सन्निपात रोग ।

दंडपालक-पुं [सं० दण्डपालक] द्वारपाल, ड्यूटीदार ।

दंडपासक-पुं [सं० दण्डपाशक] १ सजा भुगताने वाला कर्मचारी । २ जल्लाद, घातक ।

दंडवाळधि-पुं [सं० दण्डवालधि] हाथी ।

दंडमुद्रा-स्त्री० [सं०] हाथ की एक तांत्रिक मुद्रा ।

दंड्याम-पुं [सं०] १ यमराज । २ दिन, दिवस । ३ अगस्त्य मुनि ।

दंडलक्षण-पुं [सं०] ७२ कलाओं में से एक ।

दंडवत-देखो 'डंडोत' ।

दंडवासी-पु० [सं०] १ गांव का मुखिया । २ हाकिम ।
३ दुःखपात्र ।

दंडविधि-स्त्री० शपराघों के बदले में दण्ड निर्धारित करने का नियम, कानून ।

दंडव्यूह-देखो 'डंडव्यूह' ।

दंडवत-देखो 'डंडोत' ।

दंडा-स्त्री० ७२ कलाओं में से एक ।

दंडाक्ष-पु० [सं०] चंपा नदी के किनारे का एक तीर्थ ।

दंडाधिपति-पु० मुख्य न्यायाधीश ।

दंडापतानक-पु० एक प्रकार का वान रोग ।

दंडायुध-पु० [सं०] वण्ड देने का आयुध, शस्त्र ।

दंडाहड़ि-पु० होली के दिनों में हाथ से डंडे बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य ।

दंडिका-स्त्री० [सं०] १ छड़ी । २ पंक्ति । ३ रस्सी ।
४ मोनियों को माला । ५ बीस भक्षरों की एक वर्ण वृत्ति ।
दंडित-वि० [सं०] जिस पर दण्ड निर्धारित किया गया हो, सजाया जाता ।

दंडी-देखो 'डंडी' ।

दंडीहड़, दंडेहड़, दंडेहृति-देखो 'दंडाहड़ि' ।

दंड्यो-१ देखो 'दंडित' । २ देखो 'डंडी' ।

दंत-देखो 'दांत' ।

दंतक-पु० [सं०] १ पहाड़ की चोटी । २ दांत । ३ पहाड़ की चोटी का आगे निकला पत्थर । ४ दीवार में लगी नूँटी ।

दंतकथा-स्त्री० [सं०] जनश्रुति पर आधारित, अप्रामाणित व अलिखित वार्ता ।

दंतकरम-पु० [सं० दन्त कर्म] ७२ कलाओं में से एक ।

दंतकास्ट-पु० [सं० दन्तकाष्ठ] दांतून, मुलागी ।

दंतकुली-पु० [सं० दन्त-कुली] १ दांतों का समूह । २ हाथी, गज ।

दंतड़, दंतड़ी-देखो 'दांत' ।

दंतच्छद-पु० [सं०] ओष्ठ, अंठ ।

दंतधरसन-पु० [सं० दन्तदर्शन] क्रोधादि में दांत दिखा देने की क्रिया या भाव ।

दंतधावन-पु० [सं० दन्तधावन] १ दांतून करने की क्रिया ।
२ दांतून । ३ करंज का पेड़ । ४ मौलसिरी ।
५ खैर का वृक्ष ।

दंतपुण्ड-पु० [सं० दन्तपुण्ड] ममूँ का एक रोग ।

दंतमूळ-पु० [सं०] १ ममूँड़ा । २ दांत का एक रोग ।
३ दांत की जड़ ।

दंतल, दंतली-स्त्री० १ ग्रामपणों पर खुदाई करने का एक औजार । २ छोटा हथिया । ३ देखो 'दांत' । -वि० बड़े दांतों वाली ।

दंतलू, दंतली-१ देखो 'दांतली' । २ देखो 'दान' ।

दंतवा-पु० दांतों के बाहर गाल पर होने वाला फोड़ा ।

दंतवाली-पु० [सं० दन्तवाली] हाथी गज ।

दंतसंकु-पु० [सं० दन्तशंकु] चीर-फाड़ करने का एक औजार विशेष ।

दंतसकट-पु० [सं० दन्तशकट] हाथी दांत का बना रथ ।

दंताजुध-पु० [सं० दन्तायुध] जंगली सूअर ।

दंताळ-पु० १ गणेश, गजानन । २ देखो 'दंतावल' । -वि० १ बड़े बड़े दांतों वाला । २ दंतेदार ।

दंताळदप-पु० [सं० दन्तावल-दर्पक] गजामुर को मारने वाले, महादेव ।

दंताळपत्र-पु० किसी गांव का, कविता के रूप में मतद पत्र ।

दंताळ्य-स्त्री० [सं० दन्तालय] दांतों का स्थान, मुख ।

दंताळिका-स्त्री० [सं० दन्तालिका] लगाम ।

दंताळियो-१ देखो 'दंताळी' । २ देखो 'दंतावल' ।

दंताळी-स्त्री० १ दांतेदार या कभूरेदार काष्ठ का बना फावड़ा ।
२ लगाम । -वि० बड़े-बड़े दांतों वाला ।

दंताळी-वि० (स्त्री० दंताळी) १ बड़े-बड़े दांतों वाला ।
२ देखो 'दंतावल' । ३ देखो 'दंताळी' ।

दंतावल, दंताहळ-पु० [सं० दन्तावल] हाथी, गज ।

दंतियो-पु० १ स्वर्णकागो का एक औजार । २ देखो 'दांतली' ।

दंतो-पु० [सं० दन्तिन्] १ हाथी, गज । २ अंडी जाति का एक पेड़ । ३ जमाल गोटा । ४ प्रथम लघु की पांच मात्रा का नाम । ५ देखो 'दान' । -वि० [सं० दन्त्य] १ दांतों का, दांतों संबंधी । २ दांतों की सहायता से उच्चरित होने वाला । ३ दांतों वाला । ४ दांतों का हितकारी ।
—उडांण-पु० हाथियों का संहार करने वाला, भीम ।
—धावक-पु० इन्द्र । —ध्रुव-पु० पीपल का वृक्ष ।

दंतोल-देखो 'दंतो' ।

दंतली-१ देखो 'दांतली' । २ देखो 'दंतो' ।

दंतुर, दंतुल, दंतुली-पु० [सं०] १.४६ क्षेत्रपालों में से ३४ वां क्षेत्रपाल । २ हाथी । ३ सूअर, बराह । -वि० जिसके दांत आगे निकले हों, दंतुली ।

दंतुली-देखो 'दांतली' ।

दंतुसळ, दंतुसळि, दंतूसळ, दंतूसळि-पु० [सं० दन्त मूसलः] हाथी या सूअर आदि का मुँह के बाहर निकला लंबा दांत ।

दंतेरू-पु० बच्चों के मुँह ललाट आदि पर होने वाला एक फोड़ा ।

दंव-देखो 'दुंद' ।

दधम-दधम-देखो 'दु'दुभि' ।

दधमुक, दधमुक-पु० [सं० दंतशूक] १ सर्प, नाग । २ राक्षस ।
३ जहरीला जंतु । -वि० १ जहरीला । २ काटने वाला ।
३ उत्पाती ।

दंदोळी वि० उत्पाती, उपद्रवी ।

दंदी-पु० १ ताल देने वाला वाद्य । २ देखो 'दु'द' ।

दधम-देखो 'दु'दुभि' ।

दंपत, दंपति, दंपती-पु० [सं० दंपती] पति-पत्नी का जोड़ा ।
स्त्री-पुरुष ।

दधु-पु० पाटने वृक्ष ।

दध-पु० [मं०] १ गर्व, अहंकार, अभिमान । २ आडंबर,
पाखण्ड । ३ कपट, छल । ४ झूठी शान-शीकत । ५ इन्द्र
का वज्र । ६ शिव । ७ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।
८ देखो 'डाम' । ९ देखो 'दंभी' ।

दंभणी (बी)-पु० [सं० दम्भन्] १ गर्व या अहंकार करना ।
२ आडंबर या ढोंग करना । ३ देखो 'डामणी' (बी) ।

दंभी-वि० [सं० दंभिन्] १ अभिमानी, अहंकारी, घमंडी ।
२ पाखण्डी, ढोंगी । ३ छलिया, कपटी । -पु० [सं० दम्भोलि:]
१ मुदर्शन चक्र । २ क्षोत्री तरफ मुंह वाला सर्प ।

दंभीळ, दंभीळि-पु० [सं० दम्भोलि:] इन्द्र का वज्र ।

दंस-पु० [सं० दंश] १ मुंह से काटने की क्रिया, दंशन ।
२ दांतों से काटने का धाव, दंत-क्षत । ३ विप्लवे जन्तुओं
का डक । ४ दांत । ५ चौर-फाड़ । ६ सर्प का विष दंत ।
७ दोष, त्रुटि । ८ तीखापन । ९ कवच । १० जोड़ ।
११ एक राक्षस का नाम । १२ बनेली मयखो ।
-वि० दुष्ट, पापी ।

दंसक-पु० [सं० दंशक] १ डंस नाम की मक्खी, मच्छर ।
२ कुत्ता । -वि० काटने वाला, डंक मारने वाला ।

दंसटरी, दंसटरीर-देखो 'दंस्ट्री' ।

दंसण-१ देखो 'दरसन' । २ देखो 'दसन' ।

दंसणी (बी)-क्रि० १ दांतों से काटना । २ डसना, काटना । ३ विप
दंत या डंक मारना ।

दंसन-पु० [सं० दंशन] काटने या डसने की क्रिया । दंश ।

दंसो-वि० [सं० दंशिन्] काटने या डसने वाला, काट खाने
वाला । -स्त्री० छोटी गो मक्खी, डंस ।

दंस्टरी-देखो 'दंस्ट्री' ।

दंस्ट-पु० [सं० दंष्ट्र] दांत ।

दंस्टाजुध-पु० [सं० दंष्ट्रायुध] एकर, वराह ।

दंस्टाळ-वि० [सं० दंष्टाल] बड़े-बड़े दांतों वाला ।

दंस्ट्री-वि० [सं० दंष्ट्रिन] बड़े-बड़े दांतों वाला । -पु० १ सूअर,
वराह । २ सर्प, नाग ।

द-पु० १ देवगण । २ खग । ३ साधु । ४ मार ।

दहत-स्त्री० दया । -वि० अरार, अमीम । देखो 'दैत्य' ।

दइ-१ देखो 'दै' । २ देखो 'दैव' ।

दइगपाळ-देखो 'दिकपाल' ।

दैली (बी)-देखो दैणी (बी) ।

दहत-देखो 'दैत्य' । -निकंद, निकंदण='दैत्य निकंदण' ।

दइतड़ी-स्त्री० एक प्रकार की मिठाई, पकवान ।

दइतांगुर-पु० [सं० दैत्य गुरु] १ शुकाचार्य । २ रावण, दशासन ।

दइत-देखो 'दैत्य' ।

दइत्यंत्र-पु० [सं० दैत्य-इन्द्र] १ बलिराजा । २ दैत्य ।

दइवाण-१ देखो 'दीवाण' । २ देखो 'दइवाण' ।

दइवंत-देखो 'दैव' । -गति='दैवगति' ।

दइव-देखो 'दैव' । -राय, रायी='दैवराय' ।

दइवाण (न)-वि० १ विशालकाय, भीमकाय । २ महान,
जबरदस्त । ३ वीर, योद्धा । ४ शक्तिशाली, समर्थ ।
५ देखो 'दीवाण' ।

दइवी-देखो 'दैवी' ।

दई-पु० [सं० दधि] १ गर्म दूध में खटाई डालकर तैयार किया
हुआ खाद्य पदार्थ, दधि, दही । [सं० दैवी] २ आश्चर्य,
विमस्य । ३ प्यारा, प्रिय । ४ देखो 'दैव' ।

दैगत-देखो 'दैवगति' ।

दैतंद्र-देखो 'दइत्यंद्र' ।

दैत-पु० [सं० दैत्य] १ यवन । २ देखो 'दैत्य' ।

दैतंद्रवर-पु० [सं० दैत्य-इन्द्र-वर] महादेव, शिव ।

दैत्यारी-पु० [सं० दैत्य-अरि] देवता ।

दैव, दैय, दैव-देखो 'दैव' ।

दैवगत-देखो 'दैवगति' ।

दैवराय, (रायी)-वि० [सं० देव+राट्] १ महान, बड़ा,
शक्तिशाली । २ देखो 'देवराज' ।

दैव-संजोग-देखो 'देवजोग' ।

दैवाण-१ देखो 'दइवाण' । २ देखो 'दीवाण' ।

दउडणी (बी)-देखो 'दीडणी' (बी) ।

दउढ-देखो 'डीड' ।

दउढी-देखो 'डीढी' ।

दउलत-देखो 'दीलत' ।

दउलेय-पु० [सं० दीलेय] कछुआ ।

दक-पु० [सं०] पानी, जल ।

दकसीर-स्त्री० [सं० दकशिरा] नदी ।

दकार, दकारियो-पु० [सं० दकार] त वर्ग का नीसरा वर्ण 'व' ।

दकाळ-स्त्री० १ फटकार । २ ललकार ।

दकाळणी

(६२७)

दक्षिणाधी

दकाळणी-वि० (स्त्री० दकाळणी) १ उत्साहित करनेवाला, जोश दिलाने वाला । २ ललकारने वाला । ३ फटकारने वाला ।

दकाळणी (बी) क्रि० १ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना । २ ललकारना । ३ फटकारना ।

दकूळ-देखो 'दुकूल' ।

दक्काळी-देखो 'दकाळणी' ।

दक्ख-१ देखो 'दक्ष' २ देखो 'दुख' ।

दक्खण-देखो 'दक्षिण' ।

दक्खणा-देखो 'दक्षिणा' ।

दक्खणी (बी)-देखो 'दाखणी' (बी) ।

दक्खि-देखो 'दुखी' ।

दक्खण-देखो 'दक्षिण' ।

दक्ष-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध प्रजापति । -वि० १ किसी कार्य में निपुण, कुशल । २ चतुर, होशियार । ३ योग्य । ४ विशेषज्ञ । ५ उपयुक्त, उपयोगी । ६ सावधान, तत्पर । ७ फुर्तीला । ८ सच्चा, ईमानदार । ९ दाहिना ।

दक्ष-वि० [सं० दक्ष] १ चतुर, दक्ष, होशियारी, २ देखो 'दक्षिण' । -पंथी='दक्षिणपंथी' ।

दक्षणा-देखो 'दक्षिणा' ।

दक्षता-स्त्री० [सं०] निपुणता, कुशलता, योग्यता । होशियारी, चतुराई ।

दक्षन-देखो 'दक्षिण' ।

दक्षसावरणी-पु० [सं० दक्षमावर्णी] नौवें मनु का नाम ।

दक्षा-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी भूमि । २ देखो 'दक्ष' ।

दक्षिण-वि० [सं०] १ दाहिना । २ वाम का विपर्याय । ३ दक्षिण की ओर अवस्थित । ४ प्रिय, मधुर । ५ शिष्ट, सम्प्र, भद्र । ६ आज्ञाकारी । ७ अवलम्बित । ८ देखो 'दक्ष' -स्त्री० १ उत्तर के सामने की दिशा । २ दक्षिण देश की भाषा । -पु० ३ दक्षिण प्रदेश । ४ सभी नायिकाओं पर समान अनुराग रखने वाला नायक । ५ विष्णु । ६ नञोक्त एक मार्ग या आलाप ।

दक्षिणगोळ-पु० [सं० दक्षिण गोल] विपुल रेखा के दक्षिण में पड़ने वाली राशियाँ ।

दक्षिणचतुरथांशपादांसण (न)-पु० एक प्रकार का योगासन ।

दक्षिणजान्वासण, (न)-पु० [सं०] एक प्रकार का योगासन ।

दक्षिणतरकासण, (न)-पु० [सं०] एक प्रकार का योगासन ।

दक्षिण-पथ, दक्षिणपथी-पु० [सं० दक्षिणपथ] १ दक्षिण प्रदेश ।

२ इस प्रदेशोत्पन्न घोड़ा । ३ दक्षिण मार्गी ।

दक्षिणपावप्रपातगमनासण-पु० [सं०] योग के चौगसी आसनों में से एक ।

दक्षिणपाव तिरासण-पु० योग के चौगसी आसनों में से एक ।

दक्षिण वक्रासण-पु० योग के चौगसी आसनों में से एक ।

दक्षिण साखासण-पु० योग के चौगसी आसनों में से एक ।

दक्षिणा-स्त्री० [सं०] १ यज्ञ कथादि शुभ कार्य करवाने के उपरांत व्राम, ब्राह्मण या पुरोहित को दी जाने वाली भेंट । २ दक्षिण दिशा । ३ दान, भेंट । ४ यज्ञ पुरुष की स्त्री । ५ पुरस्कार, पारिश्रमिक । ६ दुग्धा गौ । ७ दक्षिणी भारत । ८ एक प्रकार की नायिका ।

दक्षिणाचल-पु० [सं० दक्षिणाचल] मलयगिरि, भलयाचल ।

दक्षिणाचारी-पु० [सं०] विशुद्धाचारी, सदाचारी ।

दक्षिणापथ-पु० [सं०] दक्षिण भारत का प्रदेश ।

दक्षिणायण-पु० [सं० दक्षिणायन] १ सूर्य की दक्षिण दिशा में गमन करने की क्रिया या अवस्था । २ कर्क संक्रांति से मकर संक्रांति तक की अवधि जब सूर्य दक्षिणायन में रहता है । -वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर, दक्षिण की ओर का ।

दक्षिणावरत-पु० [सं० दक्षिणावर्त] १ दाहिनी ओर घुमाव वाला शंख । -वि० दक्षिणी या दाहिनी ओर मुड़ा हुआ ।

दख-१ देखो 'दक्ष' । २ देखो 'दुख' ।

दखण-देखो 'दक्षिण' । -पंथी='दक्षिणपंथी' ।

दखणपति (पती)-पु० [सं० दक्षिणपति] १ चन्द्रमा, चांद । २ यमराज ।

दखणांण-स्त्री० १ दक्षिण दिशा । २ देखो 'दक्षिणायण' ।

दखणा-देखो 'दक्षिणा' ।

दखणाव-वि० दक्षिण दिशा का । -स्त्री० १ दक्षिण दिशा । २ देखो 'दक्षिण' । ३ देखो 'दखणी' ।

दखणादि, दखणाधि, (घी, धू)-स्त्री० [सं० दक्षिण-ध्रुव] दक्षिण दिशा की वायु । -क्रि० वि० दक्षिण में, दक्षिण की ओर ।

दखणायण-देखो 'दक्षिणायण' ।

दखणी-पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का निवासी । २ दक्षिण देश की भाषा । ३ दक्षिण दिशा । ४ दक्षिण दिशा की वायु । -वि० दक्षिण का ।

दखणीचचळा-स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति ।

दखणी (बी)-१ देखो 'दाखणी' (बी) । २ देखो 'दखणी' (बी) ।

दखन-देखो 'दक्षिण' ।

दखमा-पु० फारसियों का मुँह रखने का स्थान ।

दखल(ळ)-स्त्री० [प्र दखल] १ हस्तक्षेप । २ पहुँच । २ अधिकार कब्जा । -नांभी-पु० शासक द्वारा प्रदत्त अधिकार पत्र ।

दखसावरणी-देखो 'दक्षसावरणी' ।

दखा-देखो 'दक्ष' ।

दखिण-देखो 'दक्षिण' ।

दखिणा-देखो 'दक्षिणा' ।

दखिणाद, (ध)-देखो 'दखणाद' ।

दखिणाधी (धू)-देखो 'दखणाद' ।

दक्षिणानिल-पु० [सं० दक्षिण-अनिल] दक्षिण की ओर से चलने वाली वायु । मलयानिल ।
 दक्षिणावत-देखो 'दक्षिणावर्त' ।
 दक्षिणांसी-स्त्री० राजा दक्ष की पुत्री, सती ।
 दखोड़ी-स्त्री० पतंगा विशेष ।
 दख-१ देखो 'दक्ष' । २ देखो 'दाख'
 दखणी-देखो 'दखणी' ।
 दखण-देखो 'दक्ष' ।
 दखणा-देखो 'दक्षिणा' ।
 दखणी-वि० कड़ने वाला । दिखाने वाला । प्रगट करने वाला ।
 दखणी (बी)-देखो 'दाखणी' (बी) ।
 दख्यांसी-देखो 'दक्षिणांसी' ।
 दगंत-देखो 'दिगंत' ।
 दगंतर-देखो 'दिगंतर' ।
 दगंबर-देखो 'दिगंबर' ।
 दगंबरी-देखो 'दिगंबरी' ।
 दगंबर-देखो 'दिगंबर' ।
 दग-स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ बूंद । ३ देखो 'दाग' ।
 ४ देखो 'दक' ।
 दग-देखो 'दग' ।
 दगड़-पु० १ लड़ाई में बजाया जाने वाला बड़ा ढोल । २ बड़ा पत्थर । ३ अन्नगढा पत्थर । ४ खुला स्थान । ५ मुसलमान ।
 ६ बड़ा मार्ग, चौड़ा मार्ग । —बार-पु० बड़ा दरवाजा । खुला मैदान ।
 दगणी (बी)-क्रि० १ तोप-बन्दूक आदि का छूटना, दागा जाना । २ जलना, दग्ध होना, झुलसना । ३ चिह्न दागा जाना । ४ धोखा खाना, ठगा जाना । ५ देखो 'दाखणी' (बी) ।
 दगदगी-स्त्री० [सं० दगदगा] १ एक प्रकार की कंडील । २ डर, भय । ३ कंपन, कंपकंपी । ४ शक, संदेह ।
 दगदगणी (बी)-क्रि० १ भयभीत होना, डरना ।
 २ कांपना, धरना ।
 दगध-देखो 'दग्ध' । —अखर, अखिर='दग्धाक्षर' ।
 —संज्ञ='दग्धमंत्र' ।
 दग्धाजीरण-पु० [सं० दग्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग ।
 दगपाळ-देखो 'दिकपाळ' ।
 दगमग-स्त्री० १ चमक-दमक । २ देखो 'डगमग' ।
 दगली-देखो 'डगली' ।
 दगली-पु० एक प्रकार का कवच ।

दगाणी (बी)-क्रि० १ तोप, बन्दूक आदि का छुड़वाना, दगवाना । २ जलवाना, दग्ध कराना, झुलसाना । ३ दग्ध करार चिह्नित कराना । ४ ठगवाना, धोखा दिराना ।
 दगादार-वि० [फा०] धोखावाज, छली ।
 दगावाज-वि० [फा०] १ कपटो, छली, धोखावाज ।
 २ मक्कार ।
 दगावाजी-स्त्री० [फा०] १ छल, कपट, धोखा ।
 २ मक्कारी ।
 दगावणी (बी)-देखो 'दगाणी' (बी) ।
 दगल-देखो 'दागल' ।
 दगी-पु० [फा० दगा] १ धोखा, छल, कपट । २ ठगी ।
 ३ विश्वासघात ।
 दग-देखो 'दाग' ।
 दगड़-देखो 'दगड़' ।
 दगणी (बी)-देखो 'दगणी' (बी) ।
 दग्गाज-देखो 'दिग्गाज' ।
 दगौ-देखो 'दगौ' ।
 दग्ध-वि० [सं०] १ जला हुआ । २ जला कर दागा हुआ ।
 ३ दुःखी, संतप्त । ४ भस्म हुआ हुआ । ५ भूखों मरा हुआ ।
 ६ शुष्क, फीका । —पु० १ दुःख । २ दग्धाक्षर ।
 दग्धमंत्र-पु० [सं०] एक तांत्रिक मंत्र ।
 दग्धा-स्त्री० [सं०] १ कुछ विशिष्ट राशियों वाली तिथि ।
 २ कुछ नामक वृक्ष विशेष । ३ सूर्यास्त की दिशा ।
 दग्धाक्षर, दग्धाखर-पु० [सं० दग्धाक्षर] छन्द के प्रारंभ में वर्जित माना जाने वाला वर्ण ।
 दड़द, दड़दौ-पु० १ किसी वस्तु के गिरने का शब्द । २ देखो 'दिनद' ।
 दड़-स्त्री० १ उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये छोड़ी हुई कृषि भूमि ।
 २ छत पर संदला करने के कंकर आदि । ३ शब्द करते हुए गिरने वाला पदार्थ । ४ वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।
 ५ विवर, बिल ।
 दड़दड़-देखो 'दड़ी' ।
 दड़क-स्त्री० १ अत्यल्पकालिक वर्षा की झड़ी । २ दौड़ ।
 —क्रि० वि० शीघ्र, अचानक, सहसा ।
 दड़कणी (बी)-क्रि० १ भागना, दौड़ना । २ दीवार में गोबर की लिपई करना । ३ कट कर दूर पड़ना । ४ लुढ़कना ।
 दड़कली-देखो 'दड़ी' ।
 दड़कणी (बी)-क्रि० १ भागना, दौड़ना । २ दीवार को गोबर से लिपवाना । ३ उड़ेलना । ४ मारना, काटना ।
 दड़के, दड़कें-क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत । तेज गति से ।
 दड़की-पु० १ दौड़ । २ द्रुतगति । ३ ध्वनि विशेष । ४ गोबर की लिपई । ५ वर्षा की हल्की झड़ी ।

दड़कणी (बो)—देखो 'दड़कणी' (बो)

दड़गल—देखो 'दड़गल' ।

दड़गली—देखो 'दड़ी' ।

दड़गल—पु० १ एक ग्रीष्म विषेय । २ वर्षा ऋतु में होने वाला पौधा विषेय ।

दड़ड़—स्त्री० वर्षा की दूँद या वस्तुओं के निरन्तर गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।

दड़ड़णी (बो)—क्रि० १ बरसना या लगातार गिरना । २ दड़-दड़ ध्वनि होना । ३ गूँजना ।

दड़णी (बो)—क्रि० १ किसी चिबर या दरार को गोबर आदि से बंद करना । २ दीवार में गोबर लोपना ।

दड़दड़, दड़दड़—देखो 'दड़ड़' ।

दड़पणी (बो)—क्रि० १ आच्छादित होना । २ लोपना ।

दड़वड़—देखो 'दड़ड़' ।

दड़वड़णी (बो)—देखो 'दड़वड़णी' (बो) ।

दड़वड़ाट—देखो 'दड़वड़ाट' ।

दड़वड़ाणी (बो)—देखो 'दड़वड़ाणी' (बो) ।

दड़वो—पु० १ छोटा टीबा । २ रेत का जमा हुआ ढेर । ३ डेर, राशि । ४ धन, द्रव्य । ५ अनगढ़ पत्थर । ६ छोटा वंद कमरा ।

दड़वक—स्त्री० [सं० द्रव] द्रुनगति से भागने की क्रिया या भाव ।

दड़वड़—स्त्री० १ दौड़-भाग । २ देखो 'दड़ड़' ।

दड़वड़णी (बो)—क्रि० [सं० द्रव] १ दौड़ना, भागना । २ शरीर पर हल्का मुष्टि प्रहार करना ।

दड़वड़ाट—स्त्री० बाहनों के चलने, दौड़ने आदि से उत्पन्न ध्वनि ।

दड़वड़ाणी (बो)—क्रि० [सं० द्रव] दौड़ना, भागना ।

दड़क—क्रि० वि० अचानक, शीघ्र, सहसा, तुरंत । —स्त्री० किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि ।

दड़छट (छट)—क्रि० निर्भय, निःशंक, निडर । —क्रि० वि० निडरता से, बिना झटके ।

दड़िदक—देखो 'दिदंद' ।

दड़िदड़—१ देखो 'दड़ी' । २ देखो 'दड़ड़' ।

दड़ोदो—पु० १ प्रहार, चोट । २ ध्वनि विषेय ।

दड़ी—स्त्री० गेंद ।

दड़ूकणी—वि० जोश में बोलने वाला, दहाड़ने या गरजने वाला ।

दड़ूकणी (बो)—क्रि० दहाड़ना, गर्जना, ताड़कना ।

दड़ी—पु० १ वड़ी गेंद । २ देखो 'धड़ी' ।

दचकी—देखो 'डचकी' ।

दच्छ—देखो 'दक्ष' ।

दच्छणा—देखो 'दक्षिणा' ।

दछ—देखो 'दक्ष' ।

दछा—देखो 'दसा' ।

दछि—देखो 'दक्ष' ।

दछिणा—देखो 'दक्षिणा' ।

दजोण, बजोण—देखो 'दुरयोधन' ।

दझणी (बो), दझळणी (बो)—देखो 'दाझणी' (बो) ।

दभाड़णी (बो), दभाणी (बो) दभाळणी (बो), दभावणी (बो)—क्रि० [सं० दग्ध] १ जलाना । २ दग्ध करना । ३ झुलमाना । ४ दुःखी करना, कुढ़ाना ।

दट—पु० फलादि किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि । —वि० [सं० दुष्ट] दुष्ट । —क्रि० वि० शीघ्र, भट ।

दटणी (बो)—क्रि० १ दटना, फीका पड़ना, मिटना । २ नष्ट, होना, कटना । ३ किसी विवर, सूराख आदि का बंद होना । ४ नियंत्रण या काबू में आना । ५ रुकना । ६ देखो 'डटणी (बो) ।

दटपट—पु० [सं० दड़पट] एक मात्रिक छंद विषेय ।

दटाक—देखो 'दट' ।

दठि—१ देखो 'द्रस्टि' । २ देखो 'दट' ।

दडउ—देखो 'दड़ी' ।

दडवड़ी—स्त्री० तवला नामक वाद्य ।

दडवड़—देखो 'दड़वड़' ।

दडवड़णी (बो)—देखो 'दड़वड़णी' (बो) ।

दडवड़ाट, (टि)—देखो 'दड़वड़ाट' ।

दडवड़ी—देखो 'दड़वड़ी' ।

दड़िदक—देखो 'दिदंद' ।

दड़ूकणी (बो)—देखो 'दड़ूकणी' (बो) ।

दड़ूकु, (ली)—देखो 'दड़ी' ।

दड़ी—देखो 'दड़ी' ।

दड़ुणो (बो)—क्रि० [सं० दग्धनम्] जलना, भस्म होना ।

दढ—देखो 'द्रढ' ।

दड़णी (बो)—देखो 'दड़ुणो' (बो) ।

ददि—देखो 'दाड़ी' ।

ददियळ—देखो 'डदियाळ' ।

ददड़ा—देखो 'डाड़' ।

दणयर—१ देखो 'दिनकर' । २ देखो 'दुनिया' ।

दणी—स्त्री० धनुष ।

दणीयर—देखो 'दिनकर' ।

दणु (णू)—देखो 'दनु' ।

दत—पु० [सं० दत्त] १ दान, भेंट । २ जंतुओं के ती वामुदेवों में से एक । ३ संन्यासी । ४ पौष्टिक पदार्थ । ५ देखो 'दत्त' । —वायजी—पु० दहेज संबंधी भेंट ।

दतक—देखो 'दत्तक' ।

दतचाळ—पु० दानवीर राजा कर्ण ।

दतणी (बो)—क्रि० १ दान देना । २ पौष्टिक पदार्थ खिलाना ।

दत्तदेव-पु० दत्तात्रेय मुनि ।

दत्तवर-पु० शिव, महादेव ।

दत्ता-देखो 'दाता' ।

दत्तात्रय-देखो 'दत्तात्रेय' ।

दत्तावरी-देखो 'दातावरी' ।

दात-१ देखो 'दत्त' । २ देखो 'दत्त' । ३ देखो 'दत्ति' ।

दातमुत्त-पु० [सं० दत्तिमुत्त] असुर, दैत्य, राक्षस ।

दाती-वि० दाता, उदार । -पु० १ दत्तात्रेय ऋषि । २ देखो 'दान' । ३ देखो 'दत्ति' ।

दातुण-देखो 'दातण' ।

दात-वि० [सं०] १ दिया हुआ । भेंट किया हुआ । २ सीपा हुआ । ३ रखा हुआ । ४ पसारा हुआ । -पु० १ बारह प्रकार के पुत्रों में से एक । २ वैश्य की उपाधि । ३ दत्तात्रेयी । ४ संयासी । ५ दान, भेंट ।

दातक-पु० [सं०] गोद लिया हुआ पुत्र ।

दातचित्त-वि० [सं०] पूर्ण मनोयोग से लगा हुआ, लीन, मान ।

दातणी (बी)-देखो 'दातणी' (बी) ।

दातति-देखो 'दत्तात्रेय' ।

दाततीर्यक-पु० [सं० दत्ततीर्यक] जैन मतानुसार गत उत्स-गिणी के प्रातर्वे प्ररिहंत ।

दातबायजो-पु० दहेज ।

दातव (घ)-पु० [सं० दत्त] दान ।

दाता, दत्तात्रेय-पु० [सं०] अत्रि व धनुसूया के पुत्र एक ऋषि ।

दातावरी-देखो 'दातावरी' ।

दातो-स्त्री० पावती, दुर्गा, शक्ति ।

दातोपनिषद्-पु० [सं० दत्तोपनिषद्] एक उपनिषद् का नाम ।

दातोलि-पु० [सं०] पुलस्त्य मुनि का एक नाम ।

दाती-वि० दाती, उदार ।

दाद-देखो 'उदधि' ।

दादगमखेनिधनी-पु० कल्पवृक्ष ।

दादराज-पु० [सं० उदधि-राज] मागर, समुद्र ।

दादामी-पु० एक वाद्य विशेष ।

दादो-पु० १ 'द' अक्षर । २ देने को कहने का शब्द । ३ देखो 'दादो' ।

दादीच-देखो 'दादीचि' ।

दादी-देखो 'दादो' ।

दाध-स्त्री० [सं० दध] १ डाह, ईर्ष्या । २ देखो 'उदधि' । ३ देखो 'दई' । -खीर='उदधिखीर' । -जा-स्त्री० लक्ष्मी, रमा ।

दाधणी (बी)-कि० [सं० दग्ध] भस्म होना, जलना ।

दाधनाम-पु० [सं० उदधि-नाम] वरुण ।

दाधपुरी-पु० [सं० उदधि-पुरी] द्वारकापुरी ।

दाधभेदी-पु० [सं० उदधि-भेदिन्] केवट, मल्लाह ।

दाधमुख-पु० [सं० दधि-मुख] सुग्रीव का मामा एक बन्दर ।

दाधविधी-पु० [सं० उदधि + विधि] केवट ।

दाधसार-पु० [सं० दधि + सार] १ मक्खन, नवनीत । [सं० उदधि + सार] २ मदिरा ।

दाधसुत-पु० [सं० उदधि + सुत] १ शंख । २ अमृत । ३ चन्द्रमा । ४ प्रवाल मृगा । ५ मोती । ६ विप । ७ कमल । ८ जालघर दैत्य ।

दाधसुतनी (सुता)-स्त्री० [सं० उदधि-सुता] १ लक्ष्मी, पद्मा । २ सीप ।

दाधणी (बी)-कि० [सं० दग्ध] १ दग्ध करना, जलाना । २ दुःखी करना, संतप्त करना ।

दाधि-पु० १ वस्त्र कपड़ा । २ देखो 'उदधि' । ३ देखो 'दई' ।

दाधिकर-पु० [सं०] ३६ राजवंशों में से एक ।

दाधिगामणी, दाधिगामिनी-स्त्री० [सं० उदधिगामिनी] सगिता नदी ।

दाधिजात-पु० [सं०] १ मक्खन, नवनीत । [सं० उदधिजात] २ चन्द्रमा । ३ लक्ष्मी, पद्मा ।

दाधिभव-पु० [सं० उदधि-भव] विष्णु, ईश्वर ।

दाधिमंडोद-पु० [सं०] १ दही का समुद्र । (पीराणिक) २ पृथ्वी के सात खण्डों में से एक ।

दाधिमती-देखो 'दाधिमती' ।

दाधिमणली-स्त्री० [सं० दधि-मंथन] दही मथने की लकड़ी, मध-दण्ड, मथानी ।

दाधिमयी-स्त्री० दाधीच ब्राह्मणों की उपास्य देवी, विष्णु शक्ति । मोहिनी ।

दाधमुख-देखो 'दधमुख' ।

दाधसार-देखो 'दधसार' ।

दाधसुत-देखो 'दधसुत' ।

दाधसुता-देखो 'दधसुतनी' ।

दाधी-१ देखो 'दधि' । २ देखो 'उधदि' ।

दाधीच-देखो 'दाधीचि' ।

दाधीचास्थी-पु० [सं० दधीच + अस्थि] १ वज्र । २ हीरा ।

दाधीचि (बी)-पु० [सं०] एक गौराणिक ऋषि जिनकी हड्डियां से इन्द्र का वज्र बना ।

दाधीली-वि० (स्त्री० दधीली) द्रव्य करने वाला, ईर्ष्यालु ।

दाधीस-पु० [सं० उदधि-ईश] १ समुद्र, मागर । २ वरुण ।

दाधीण-पु० वज्र विशेष ।

दशैस-देखो 'दशीस' ।

वध्न-पु० [सं०] चौदह यमों में से एक यम ।

वन-१ देखो 'दान' । २ देखो 'दिन' । ३ देखो 'दनु' ।

वनहस (ईस)-देखो 'दिनेस' ।

वनकर-देखो 'दिनकर' ।

वनमण, वनमणि-देखो 'दिनमणि' ।

वनमान-देखो 'दिनमान' ।

वनावन-क्रि० वि० १ गोलियों की बीछार की तरह, वन-वन शब्द करते हुए । २ तीव्रवेग से । ३ लगातार ।

वनि-१ देखो 'दिन' । २ देखो 'दनु' । ३ देखो 'दुनिया' ।

वनिषा-देखो 'दुनिया' ।

वनीस-देखो 'दिनेस' ।

वनु-स्त्री० [सं०] १ दानवों की माता जो दक्ष की पुत्री थी ।

२ श्री दानव का पुत्र एक राक्षस । ३ दैत्य, दानव राक्षस ।

वनुज-पु० [सं०] दनु की सन्तान वनुज । असुर । —दळणी,

दलनी-स्त्री० दुर्गा, शक्ति । —राय-पु० राजा बलि ।

हिरण्य कश्यप । रावण ।

वनुज-पु० [सं० वनुज-इन्द्र] दानवों का राजा, बलि, हिरण्य कश्यप ।

वनुज-पु० [सं० वनुजईश] दानवों का राजा, रावण, बलि, हिरण्य कश्यप ।

वनुपति, (पति)-पु० [सं० वनु-पति, दानव-पति] १ कश्यप । २ राजा बलि, असुर राज ।

वनुसंभव-पु० [सं०] वनु से उत्पन्न, दानव ।

वनुज-देखो 'दनुज' ।

वनेस-देखो 'दिनेस' ।

वन्न, वन्नि-स्त्री० १ गति से उत्पन्न ध्वनि । २ देखो 'दान' ३ देखो 'दिन' ।

वन्या-देखो 'दुनिया' ।

वप-पु० मृदंग के बोल ।

वपट-स्त्री० १ छलांग, कुदान । २ घाग को ली, लपट । ३ आक्रमण, धावा । ४ झपट । ५ गति की तीव्रता, त्वरा । ६ विशेष खाने की क्रिया या माव । ७ वस्त्र की लपेट, आवेष्टन । ८ डांट, फटकार । —वि० अधिक तेज ।

वपटणी (बी)-क्रि० १ खूब खाना, जमकर खाना । २ कैंची से दाढ़ी काटना । ३ आक्रमण करना, धावा बोलना । ४ आवेष्टन करना, लपेटना । ५ छलांग भरना, वृद्धता । ६ तेज भागना । ७ संहार करना, मारना । ८ अधिक खर्च करना । ९ डांटना, फटकारना । १० दौड़ना ।

वपटणी (बी), वपटावणी (बी)-क्रि० १ खूब खिलाना, जम कर खिलाना । २ कैंची से दाढ़ी कटवाना । ३ आक्रमण कराना । ४ आवेष्टन कराना, लिपटवाना । ५ छलांग

भरवाना, कुदवाना । ६ तेज भगवाना, दौड़ाना । ७ संहार कराना, मरवाना । ८ अधिक खर्च कराना । ९ डांट फटकार, दिराना । १० दौड़ाना ।

वपट्ट-देखो 'वपट' ।

वपट्टणी (बी)-देखो 'वपटणी' (बी) ।

वपट्टाणी (बी) वपट्टावणी (बी)-देखो 'वपटाणी' (बी) ।

वपणी (बी)-देखो 'दीपणी' (बी) ।

वपेटणी (बी)-देखो 'वपटणी' (बी) ।

वप्पण-देखो 'वरपण' ।

वफण-पु० [अ० वफन] मृतक के शरीर को जमीन में गाड़ने की क्रिया या भाव ।

वफणणी (बी)-क्रि० [अ० वफन] मृत शरीर को जमीन में गाड़ना, दफनाना ।

वफतरी-देखो 'वफतरी' ।

वफती-स्त्री० [अ० वफतीन] कागज का गत्ता, बोर्ड ।

वफा-स्त्री [अ० वफन] १ किसी कानून की धारा, उपकानून, उप नियम । २ बार, मर्तबा । ३ नाश, विनाश । —वि० [अ० वफा] १ दूर किया हुआ, हटाया हुआ । २ तिरस्कृत ।

वफादार-पु० [फा०] १ फौज का एक कर्मचारी । २ पुलिस का जमादार । ३ तहसील का एक कर्मचारी ।

वफादारी-स्त्री० [फा०] वफादार का पद व कार्य ।

वफ-देखो 'वफा' ।

वफतर-पु० [फा०] कार्यालय, आफिस, विभाग, महकमा ।

वफतरी-पु० [फा०] १ कार्यालय का एक कर्मचारी । २ जिवंद साज । —खान्नी-पु०-वफतरी के बैठने का स्थान । जिवंद बंधी का कक्ष ।

वबंग-वि० १ निडर, निर्भीक । २ प्रभावशाली ।

वब-वि० गुप्त ।

वबक-स्त्री० [सं० वमन] १ वबने या छुपने की क्रिया या भाव, दबाव विचकन । २ धातु की पीटाई । ३ मिकुइन, शिकन । ४ भय, डर ।

वबकगर-पु० धातु घाटि को पीटकर तार बनाने वाला ।

वबकणी (बी)-क्रि० [सं० वमन] १ डर जाना, डरना, डरकर बैठ जाना, छुप जाना । २ छुप कर बैठ जाना, टोह लेना । ३ श्रुब्ध होना । ४ धातु को पीटना । ५ शांत होना । ६ घुड़काना, डांटना, डपटना ।

वबकाणी, (बी) वबकावणी (बी)-क्रि० १ डराना, डराकर बैठा देना । २ छुपाकर बैठाना, डुबकाना । ३ श्रुब्ध करना । ४ शांत करना । ५ घुड़काना, डांटना । ६ धातु को पीटवाना ।

दबकी-स्त्री० [सं० दमन] १ छुपने या दुबकने की क्रिया या भाव ।

३ डांट, फटकार, चुड़चुड़ी । ४ टोह लेने की क्रिया या भाव ।

दबक-त्रि० वि० भट भट, तुरन्त ।

दबकी-पु० कामदानी का मूनहरा या चमकीला तार ।

दबगर-पु० १ संस पकाने की एक विधि । २ देखो 'डबगर' ।

दबइकाणी (बो)-देखो 'दहइकाणी' (बो) ।

दबणी-स्त्री० [सं० दमन] १ संकट कालीन दशा या अवस्था ।

२ असहाय होने की अवस्था । ३ विवशता ।

दबणी (बो)-क्रि० [सं० दमन] १ बोझ, भार आदि के नीचे

ग्राना, दबना । २ बोझ, भार या चोट से पिचकना ।

३ किसी का दबाव या प्रभाव मानना, आतंक मानना ।

४ विवश या मजबूर होना । ५ शंका खाना, भय खाना,

लिहाज करना । ६ तुलना में फीका या मंद पड़ना । ७ किसी

के आगे जमने, ठहरने या टिकने की अवस्था में न रहना ।

८ हारना । ९ शान्त रहना, उभड़ न सकना । १० अप्रकाशित

या अप्रचलित होना । ११ नियंत्रण में रहना । १२ गुप्त

रखना जाना । १३ भेषना । १४ परिस्थितियों से घिर

जाना, अर्थ संकट में पड़ना, कमजोर पड़ना ।

दबदबी-पु० [अ० दबदबा] रीव, प्रभाव, आतंक ।

दबमी-पु० [सं० दमन] लकड़ी की छत पर रेत, कंकड़ आदि

डालकर बनाया हुआ मकान ।

दबवार-वि० [सं० दमन] दबने वाला, टबैल, कमजोर ।

दबाऊ-वि० [सं० दमन] १ दबाने वाला । २ अधिक दबाव या भार

वाला । ३ दबू, कमजोर ।

दबाइणी, (बो), दबाणी (बो)-क्रि० १ बोझ, भार आदि के

नीचे करना, दबाना । २ बोझ, भार या चोट देकर

पिचकाना । ३ दबाव डालना, आतंकित करना, भय दिखाना,

धमकी देना । ४ विवश या मजबूर करना । ५ शंका या

लिहाज करना । ६ तुलना में फीका या मंद पटकना ।

७ अपने सामने जमने, टिकने या ठहरने न देना । ८ हारना ।

९ शान्त रखना, उभड़ने न देना । १० प्रकाशित या

प्रचलित न होने देना । ११ गुप्त रखना । १२ नियंत्रण में

रखना । १३ भेषना । १४ परिस्थितियों में जकड़ना, अर्थ

संकट में डालना, कमजोर पटकना । १५ दुःखिते अंगों पर

हाथों का हल्का दबाव देना ।

दबाव-क्रि० वि० प्रतिशीघ्र । एक के बाद एक । भटाभट ।

दबाबी-पु० शत्रु के किले में तोड़-फोड़ या गुप्तचरी करने के

लिये आदमी डाल कर उतारने का संदूक ।

दबाव-पु० [सं० दमन] १ दबाव या भार, बोझ डालने की क्रिया

या भाव । २ रीव, धाक । ३ आतंक, डर, भय । ४ प्रभाव

५ लिहाज । ६ बोझ, भार ।

दबावणी(बो)-देखो 'दबाणी (बो) ।

दबिपारी-स्त्री [सं० दमन] दबाव ।

दबीकल-पु० गांप, सर्प ।

दबू-देखो 'दबू' ।

दबैल, दबैल-वि० [सं० दमन] १ दबने वाला । २ दुबैल, अशक्त ।

३ असमर्थ ।

दबोचणी(बो)-क्रि० [सं० दमन] १ गर्दन पकड़कर दवाना, दबाना,

धर पकड़ना, पकड़कर काबू में करना । २ छुपाना ।

दबो-पु० छुपने की क्रिया या भाव ।

दबइणी (बो)-देखो 'दबइणी (बो) ।

दबुनी-वि० कपाने वाली, दबाने वाली, दहलाने वाली ।

दबू-वि० १ दबने वाला, डरने वाला । २ दुबैल, अशक्त ।

३ असमर्थ, हीन ।

दमगजल-पु० युद्ध, संग्राम, समर ।

दम-वि० [सं०] थोड़ा कम, अल्प । -पु० सागर, समुद्र ।

दमक-देखो 'दमक' ।

दमकणी (बो)-देखो 'दमकणी (बो) ।

दमंग-स्त्री० [सं० दावाग्नि] १ अग्निकण, चिनगारी ।

२ जंगल की आग । ३ देखो 'दमक' । ४ देखो 'दमंग' ।

दमंगल-पु० [फा० दंगल] १ युद्ध, समर, लड़ाई । २ उपद्रव,

उत्पात, बखेड़ा ।

दम-पु० [सं०] १ लालन-पालन । २ आश्रय, सहारा । ३ इन्द्रिय

शमन, दमन, नियंत्रण । ४ मन की दृढ़ता । ५ सज्ज,

दण्ड । ६ कीचड़ । [फा०] ७ श्वास, सांस । ८ श्वास रोग,

दमे का रोग । ९ प्राण, जीव, जान । १० अस्तित्व में

रहने की शक्ति, काम लायक रहने की अवस्था । ११ रक्त,

नून, लहू । १२ प्राण वायु । १३ व्यक्तित्व । १४ क्षमता,

शक्ति । १५ चिन्म, हुक्के आदि का कण, फूंक । १६ जात ।

१७ छल, धोखा । १८ शेखी, डोंग । १९ तेजी, तीक्ष्णता ।

२० समय का अंश, क्षण, पल । २१ अल्प विश्राम ।

२२ मंत्र, टोटका ।

दमक-स्त्री० १ द्युति, आभा, कान्ति, चमक । २ तपन, गर्मी,

उष्णता, ताप । ३ वाद्य ध्वनि । -वि० दमन करने वाला ।

दमकणी (बो)-क्रि० १ चमकना, चमकमाना । दमकना ।

२ वाद्य बजना, ध्वनि करना ।

दमकाणी (बो), दमकावणी (बो)-क्रि० १ चमकाना, दमकाना ।

२ वाद्य बजाना ।

दमकीली-वि० (स्त्री० दमकीली) चमकीला, द्युतिवान् ।

दमकणी (बो)-देखो 'दमकणी (बो) ।

दमकाणी (बो), दमकावणी (बो)-देखो 'दमकाणी (बो) ।

दमंगल-देखो 'दमंगल' ।

दमचूल्ही-पु० एक प्रकार का चूल्हा ।

दमजोड़ी-पु० तलवार ।

दमड़ी-स्त्री० १ पैसे का आठवां भाग, एक सिक्का ।
 २ पैसा, पाई ।
दमड़ी-पु० रुपया, धन, द्रव्य ।
दमण-वि० [सं० दमन] १ दमन करने वाला, दबाने वाला ।
 २ नाश करने वाला । ३ देखो 'दमन' ।
दमणक, दमणी-पु० [सं० दसनक] १ एक धार्मिक छन्द विशेष ।
 २ एक पौधा विशेष । ३ देखो 'दमण' ।
दमणी (बो)-क्रि० [सं० दम्] १ रोकना, वश में करना ।
 २ दमन करना । ३ पीड़ित करना, दबाना । ४ निग्रह करना । ५ जीतना । ६ शान्त करना ।
दमशमी-पु० [फा० दमदम] १ रैलों में मिट्टी भरकर की जाने वाली मोर्चा बंदी । मोर्चा । २ छत पर जाने की सीढ़ियों पर बना कक्ष ।
दमशार-वि० [फा०] १ हड़ मजदूर । २ जीवन वाला ।
 ३ शक्तिशाली, क्षमता वाला, जीवट वाला ।
दमन-पु० [सं०] १ बलात् किसी को दबाने की क्रिया या भाव ।
 २ किसी की आवाज या मांग को बल पूर्वक ठुकराना ।
 ३ दण्ड या सजा । ४ इन्द्रिय निग्रह, अमन । ५ विद्रोहियों को दबाने का कार्य, बल-प्रयोग । ६ एक ऋषि । ७ एक पौधा दमनक । [सं० दान] ७.४९ क्षेत्रपालों में से २१ वां क्षेत्रपाल ८ देखो 'दमण' ।
दमनक, दमनक-वि० [सं०] १ दमन करने वाला, संहारक ।
 २ देखो 'दमणक' ।
दमनी-स्त्री० [सं० दामिनी] विद्युत, बिजली ।
दमबंधी-पु० एक प्रकार का धूप ।
दमबाज-वि० [फा०] १ धोखा देने वाला, फुसलाने वाला ।
 २ दम लगाने वाला । ३ धूस्र पान करने वाला ।
दमबाजी-स्त्री० [फा०] १ धोखा-धड़ी या फुसलाने का कार्य ।
 २ धूस्र पान ।
दमयंती-स्त्री० [सं०] निषध देश के राजा नल की पत्नी ।
दमल-देखो 'दंगल' ।
दमसाज-पु० [फा०] १ मित्र, सखा, दोस्त । २ महायक ।
 ३ गाने में साथ देने वाला ।
दमाम-पु० [फा० दमाम] १ एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा । २ एक प्रकार का रण वाद्य ।
दमामी-पु० [फा०] १ नगाड़ा बजाने वाला ढोली, तक्कारची ।
 २ देखो 'दमाम' ।
दमामी-देखो 'दमाम' ।
दमाक (ग)-देखो 'दिमाग' ।
दमाज-पु० ऊँट, उष्ट्र ।
दमाद-१ देखो 'दामाद' । २ देखो 'दमाज' ।

दमादम-क्रि० वि० १ दमदम करते हुए । २ लगातार, निरन्तर ।
 ३ एक के बाद एक ।
दमि-वि० [सं० दम्] १ दमनशील । २ देखो 'दम' ।
दमिल-१ देखो 'दामिली' । २ देखो 'दमण' । ३ देखो 'दमन' ।
दमित-पु० अन्तर्ग देश का मनुष्य ।
दमितक-पु० १ एक देश का नाम । २ यवनों का एक तीर्थ स्थान ।
दमी-वि० [सं० दम्] १ दमनशील । २ देखो 'दम' । -स्त्री० [फा० दम] १ दम लगाने का नेचा । २ एक प्रकार का छोटा हुस्का ।
दमीदो, दमेदो-पु० बड़ा बतासा ।
दमोद-स्त्री० दो मुखी सर्प, बोगी । -वि० दो मुख वाला ।
दमो-पु० १ 'दमा' नामक रोग । २ देखो 'दम' ।
दम्म-पु० [ग्र० दिरम] १ सोने चांदी का एक प्राचीन सिक्का ।
 २ देखो 'दम' ।
दम्मांम, दम्मांमो-देखो 'दमाम' ।
दयत-वि० १ देने वाला । २ देखो 'दैत्य' ।
दय-स्त्री० [सं०] दया, कृपा, करुणा ।
दयण-वि० [सं० दान] देने वाला, दातार ।
दयत-देखो 'दैत्य' ।
दयतां-दम दयतांद-पु० [सं० दैत्य-दमन] दैत्यों का दमन करने वाला, ईश्वर ।
दयानत-स्त्री० [ग्र० दियानत] १ सत्य निष्ठा, ईमान ।
 २ नियत । -वार-वि० ईमानदार । सच्चा । -वारी-स्त्री० ईमानदारी, सच्चाई ।
दया-स्त्री० [सं०] १ करुणा, कृपा, रहस । २ दक्ष की कन्या व धर्म की पत्नी । -कर-वि० दयालु, कृपालु । -इस्टी-स्त्री० दया करने का भाव । -निध, निधान, निधि-वि० कृपालु दयालु । -पु० ईश्वर । -पात्र-वि० जिस पर दया करनी चाहिये । -मय-वि० दयालु । ईश्वर । -वंत-वि० दयालु । कृपालु । -वत, वान-वि० दयालु, कृपालु । -वीर-वि० दूसरों पर दया करने में समर्थ, परोपकारी ।
दयाणी-वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दयाणी) १ दाहिना, दायां ।
 २ देखो 'दयावणी' ।
दयानद-पु० [सं०] आर्य समाज के प्रवर्तक एवं सत्यार्थ-प्रकाश के रचयिता एक ऋषि ।
दयामण्ड, दयामणी-देखो 'दयावणी' ।
दयारास-पु० ईशान व पूर्वं के मध्य की दिशा ।
दयाळु-पु० १ विष्णु, ईश्वर । २ देखो 'दयाळु' । -मन-वि० उदार, दयालु ।
दयाळु, दयाळु, दयाळी-वि० [सं० दयालु] जिसके हृदय में दूसरों के प्रति दया हो, दयावान । -ता-स्त्री० दया करने की भावना ।

दयावणु

(६३४)

दरबार

दयावणु, दयावणी-वि० (स्त्री० दयावणी) १ जिससे दया उत्पन्न हो । २ उदाम, दीन ।

दयावती-स्त्री० [मं०] कृपम स्वर की तीन श्रुतियों में से पहली । -वि० दया करने वाली ।

दयिता-स्त्री० [सं०] १ पत्नी, भार्या । २ प्रेयसी, प्रेमिका । ३ स्त्री, औरत ।

दरंग-पु० [मं० दुर्ग] १ टीका, टीना । २ देखो 'दुरंग' ।

दर-पु० [सं० दरः] १ शंख । २ गुफा, कंदरा । ३ रंघ, बिल । ४ दरार । ५ गड्ढा । ६ तीर, बाण । ७ आभूषण विशेष । ८ भय, डर । [फा०] १ द्वार, दरवाजा । १० स्थान, जगह । ११ दरवान, छडीदार । १२ हृदय, अन्तरात्मा । १३ ध्यान । १४ भाव । -वि० किंचित, थोड़ा, न्यून । -अव्य० [फा०] में, भीतर ।

दरअसल-क्रि० वि० वास्तव में ।

दरक-पु० ऊंट, उष्ट्र ।

दरकणी (बो) -क्रि० [सं० दी] विदीर्ण होना, फटना ।

दरकाणी (बो) -क्रि० विदीर्ण करना, फाड़ना ।

दरकार-स्त्री० [फा०] १ आवश्यकता, जरूरत । २ इच्छा, अभिलाषा । -वि० आवश्यक, अपेक्षित ।

दरकूंच, दरकूंचा, दरकूंचा, दरकूचा-क्रि० वि० [फा०] मंजिल-दर-मंजिल, क्रमशः आगे बढ़ते हुए ।

दरकी-देखो 'दरक' ।

दरक-देखो 'दरक' ।

दरकणी (बो) -देखो 'दरकणी' (बो) ।

दरखत, दरखतियों-पु० [फा० दरख्त] वृक्ष, पेड़ ।

दरखास्त-स्त्री० [फा० दरखास्त] १ अर्जी, प्रार्थना, निवेदन । २ आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र ।

दरगह, दरगा, दरगाह, दरगाह-स्त्री० [फा० दरगाह] १ दरबार । २ न्यायालय, कचहरी । ३ सभा । ४ तीर्थ स्थान, मठ । ५ मंदिर । ६ किसी सिद्ध पुरुष का समाधि स्थल, मकबरा, मजार । ७ दहलीज, चौखट ।

दरड़-पु० १ किसी वस्तु के निरन्तर गिरने की ध्वनि । २ बहुनाश । ३ देखो 'दरड़ो' ।

दरड़णी (बो) -क्रि० १ दरड़-दरड़ करके गिरना । २ प्रवाहित होना, बहना । ३ ध्वनि करना ।

दरड़णी (बो) -देखो 'दरड़णी' (बो) ।

दरड़णी-देखो 'दरड़णी' ।

दरड़ो-पु० १ आंगन या जमीन में बना विवर, बिल, गड्ढा । २ बिना बंधा कूप ।

दरज-वि० [अ० दर्ज] लिखित, अंकित । प्रविष्ट । फटा हुआ । -स्त्री० दरार । फटन ।

दरजण-स्त्री० १ बारह नगों या वस्तुओं का समूह । २ दर्जी की स्त्री ।

दरजो-पु० [फा०] (स्त्री० दरजण) १ कपड़ों की मिलाई करने वाला कारीगर । २ ऐसा व्यवसाय करने वाला वर्ग, जाति ।

दरजोण दरजोण-देखो 'दुरयोधन' ।

दरणी (बो) -देखो 'डरणी' (बो) ।

दरद-पु० [फा० दर्द] १ कष्ट, दुःख । २ दर्द, पीड़ा । ३ बीमारी, राग । ४ तकलीफ, मुसीबत । ५ यतना । ६ धरणा, दया, तप, ७ दीम, कमक । - धत्, बद्ध- -वि० पीड़ित, दुःखी । दयालु, कृपालु ।

दरदराणी (बो) -क्रि० [सं० दरण] १ किसी वस्तु को दलना, दलित करना, रवे या कण बनाना । २ आँख आदि में खटका होना, दर्द होना, पीड़ा होना, खटकना ।

दरदरी-स्त्री० [सं० दरिया] पृथ्वी, भूमि । -वि० रवेदार, कणदार ।

दरदरी-वि० [सं० दरण] कण के रूप में, रवेदार ।

दरदी-वि० [फा० दर्द] १ दूसरों के दुःख दर्द को समझने वाला, महानुभूति या दया करने वाला । २ जिसके किसी बात का दर्द हो, पीड़ित ।

दरदु-पु० [सं० दद्रु] १ दाद नामक रोग । २ देखो 'दरदी' ।

दरदुर-देखो 'दादुर' ।

दरद-देखो 'दरद' ।

दरप-पु० [मं० दर्प] १ गर्व, घमंड, अभिमान । २ दुस्साहस । ३ चिड़चिड़ापन, तुनकमिजाजी । ४ गर्मी, ताप । ५ मुश्क, मृगमद ।

दरपक-पु० [सं० दर्पक] १ कामदेव । २ प्रद्युम्न ।

दरपण (णी) -पु० [सं० दर्पण] १ मुंह या प्रतिबिंब देखने का शीशा, काच, आगसी, आईना । २ आँख । ३ जलाने वाला । ४ प्रतिबिंब । ५ आदर्श ।

दरपणी (बो) -क्रि० १ गर्व करना, अभिमान करना । २ देखो 'डरपणी' (बो) ।

दरप-देखो 'दरप' ।

दरपण-देखो 'दरपण' ।

दरबंघी-स्त्री० [फा०] किसी वस्तु की कीमत, दर या भाव का निर्धारण, दर ।

दरबर-देखो 'दड़वड़' ।

दरबान-देखो 'दरबान' ।

दरबानी-देखो 'दरबानी' ।

दरबार-पु० [फा०] १ बादशाह, राजा आदि की सभा, राज्य-सभा । २ कचहरी । ३ किसी ऋषि मुनि या वली का आश्रम । ४ मित्रों का धर्म ग्रंथ रखने का स्थान ।

—धर्म-पु० ग्राम सभा । —खास-पु० विषिष्ट सभा ।
 —बारी-स्त्री० दरबार में उपस्थिति । खुशामद, जी हजूरी ।
 दरबारी-पु० [फा०] १ राज सभा का सभासद । २ द्वारपाल, छड़ीदार । ३ एक राग विशेष । —वि० दरबार का, दरबार संबंधी । —कान्हूड़ी-पु० एक राग विशेष ।
 दरबी-पु० १ कबूतर या मुर्गी पालने की संतूक । कोष्ठक । २ काल कोठरी । ३ भूत-प्रेतों का निवास स्थान ।
 दरब्ब-देखो 'द्रव्य' ।
 दरब्बार-देखो 'दरबार' ।
 दरभ-पु० [सं० दर्भ] कुश, डाम नामक घास ।
 दरमजस-देखो 'दरकूच' ।
 दरमाही-पु० [फा० दरमाहा] मासिक वेतन ।
 दरम्यान-पु० [फा० दरमियान] मध्य, बीच । —क्रि० वि० मध्य में, बीच में, दौरान ।
 दरम्यानी-वि० [फा० दरमियानी] बीच का, मध्यवाला । बीच में पड़ने वाला । —पु० मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति ।
 दरयाई-स्त्री० [फा० दारयाई] साटन नामक रेशमी वस्त्र । —वि० [फा० दरियाई] समुद्र संबंधी, समुद्र का । —पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
 दरघाव-देखो 'दरियाव' ।
 दररी-पु० [फा० दर्रः] १ पहाड़ों के बीच का संकरा मार्ग । २ दरार । —वि० [सं० दररा] दरदरा, कणों या रवों वाला
 दरव-पु० [सं० दर्वः] १ हिंस्रजन । २ उपद्रवी या उत्पाती व्यक्ति । ३ राक्षस, दैत्य । ४ कलछी । ५ देखो 'द्रव्य' ।
 दरवरता-स्त्री० [सं० द्रवता] द्रवत्व, तरलता ।
 दरवाण (न)-पु० [फा० दरवान] १ द्वारपाल । २ राजदूत । ३ छड़ीदार ।
 दरवांनी-स्त्री० द्वारपाल का कार्य ।
 दरवाजी-पु० [फा० दरवाजा] १ द्वार, दरवाजा । २ कपाट, किवाड़ ।
 दरवायो-पु० देल का एक उपकरण ।
 दरवो-स्त्री० [सं० दर्वी] १ कलछी, चमचा । २ साँप का फन ।
 दरवीकर-पु० [सं० दर्वीकर] १ फन वाला सर्प । २ साँप ।
 दरवेश-पु० [फा० दरवेश] १ फकीर । २ साधु, महात्मा । ३ बादशाह । ४ मुसलमान । ५ भिखारी, भिक्षुक ।
 दरस-पु० [सं० दर्श] १ दर्शन, दीदार । २ दृश्य, तमाशा । ३ यज्ञ विशेष । ४ अमावस्या की तिथि । ५ छवि, रूप, मुन्दरता ।
 दरसण-पु० [सं० दर्शन] १ साक्षात्कार, भेंट, मुलाकात । २ देखना क्रिया, जाशुक ज्ञान । ३ अवलोकन । मुप्रायना ।

४ आंख । ५ पर्यवेक्षण, सर्वेक्षण । ५ रूप, वर्ण, आकार । ७ समझ, परख, बुद्धि । ८ आईना, दर्पण । ९ धर्म या किसी विषय का तात्त्विक विवेचन, सिद्धान्त । १० नाथ सम्प्रदाय के साधुओं के कानों के कुण्डल । ११ राजस्थान की छः जातियों का समूह । १२.७२ कलाओं में से एक ।
 दरसणी, दरसणीक, दरसणीय-वि० [सं० दर्शनीय] १ सुन्दर, मनोहर । २ देखने योग्य, दर्शन लायक । ३ मिलने, भेंट करने योग्य । —पु० 'खट दरसण' के घन्तर्गत आने वाला व्यक्ति ।
 दरसणी-हुंडी-स्त्री० एक प्रकार की हुंडी ।
 दरसणी (बी)-क्रि० [सं० दर्शन] १ दिखाई पड़ना, दिखना । २ महसूस होना, प्रतीत होना, अनुभव होना । ३ संभावना होना ।
 दरसन-देखो 'दरसण' ।
 दरसनी, दरसनीक, दरसनीय-देखो 'दरसणीय' ।
 दरसाणी (बी), दरसालाणी (बी)-क्रि० [सं० दर्शन] १ दिखाना, दृष्टि गोचर करना, बताना । २ दिखाई देना । ३ नजर आना । ४ मालूम पड़ना । ५ प्रगट होना । ६ अनुभव होना । ७ स्पष्ट करना, समझाना ।
 दरसाव-पु० [सं० दृश] १ दृश्य, तजारा, २ दिखने की क्रिया या भाव, प्रगटन ।
 दरसावणी (बी)-देखो 'दरसाणी' (बी) ।
 दरस-देखो 'दरस' ।
 दरसण-देखो 'दरसण' ।
 दरहरणी (बी)-क्रि० हवा का चलना ।
 दरहाल-क्रि० वि० पल-पल, प्रतिक्षण । हर वक्त । बार-बार ।
 दरांती-स्त्री० [सं० दात्र] दांतेदार एक उपकरण विशेष ।
 दराड़-देखो 'दरार' ।
 दराज-वि० [फा०] (स्त्री० दराजी) १ बड़ा, महान । २ दीर्घ, चिर । ३ अच्छा बढ़िया । ४ अधिक, बहुत । —स्त्री० मेज के नीचे का खन, ड्रायर ।
 दराणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।
 दरार (री)-स्त्री० [सं० दर] १ किसी चीज के फटने की जगह, फटाव, शिगाफ । २ छिद्र, छेद ।
 दरावणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।
 दरि-पु० १ दरबार, राज-सभा । २ दरवाजा । ३ दरियाव, सागर ।
 दरिप्राउ, दरिप्राव-देखो 'दरियाव' ।
 दरिव, दरिव-वि० [सं० दरिद्र] १ निर्धन, कंगाल, गरीब । २ भिखारी । —स्त्री० [सं० दारिद्र्य] निर्धनता, कंगाली ।

वरिद्रता

(६३६)

वसमट्ठी

वरिद्रता-स्त्री० [सं०] निर्धनता, कंगाली ।
 दरिद्रो-वि० १ गरीब, कंगाल । -स्त्री० गरीबी, कंगाली ।
 दरिया-देखो 'दरियाव' ।
 दरियाई-देखो 'दरियाई' ।
 दरियाईघोड़ी-पु० गैडे की तरह का एक जानवर विशेष ।
 दरियाईनारियल-पु० तूबे की तरह का एक नारियल ।
 दरियाखोर-पु० क्षीर सागर ।
 दरियावासी-स्त्री० निर्मुक्त भक्ति धारा के अन्तर्गत एक सम्प्रदाय ।
 दरियाफत, दरियाफ्त-वि० [फा० दरियाफ्त] मालूम, ज्ञात ।
 -स्त्री० जानकारी, पता ।
 दरियाव-पु० [फा० दरिया] समुद्र, सागर ।
 दरियाबजी-पु० रामस्नेही सम्प्रदाय के एक प्रमुख महात्मा ।
 दरिसण-देखो 'दरसन' ।
 दरी-स्त्री० [सं०] १ गुफा, गह्वर । २ घाटी ३ तलगूह, तहखाना । ४ मोटे सूत का बना बड़ा बिछोना ।
 दरीखानो-पु० [फा० दर+खाना] १ दरबार लगाने का स्थल । २ दरबार । ३ घर की मरदानी बैठक ।
 दरीपट्टी-स्त्री० १ जुलाहों का एक औजार । २ संकरी व लंबी दरी ।
 दरीबो-पु० [फा० दर] १ बाजार । २ कोठार । ३ डेर । ४ पान का बाजार ।
 दरीभुत, दरीभूत-पु० [सं० दरीभूत] पर्वत, पहाड़ ।
 दरीमुख-पु० [सं०] राम की सेना का एक बन्दर ।
 दरीयाखाना-पु० कोई वस्तु विशेष ।
 दरीयाव-देखो 'दरियाव' ।
 दरून-पु० १ स्तुति, दुआ । २ हृदय, चित्त, आत्मा ।
 दरेबाण, दरेबाण-देखो 'दरबाण' ।
 दरोग-वि० [प्र०] असत्य, मिथ्या, झूठ । -हलकी-स्त्री०-झूठी मोगध, झूठी गवाही ।
 दरोगी-वि० समीप रहने वाला, निकटवर्ती । -स्त्री० दासी, मेविका ।
 दरोगी-पु० (स्त्री० दरोगण, दरोगी) १ दास, सेवक । २ देखो 'दारोगी' ।
 दरोबोरत-वि० [फा०] कुल, पूरा, पूर्ण ।
 दरोळ, दरोळ-पु० १ विघ्न, बाधा । २ उत्पात, उपद्रव, बगड़, विद्रोह । ३ खलबली ।
 दळ-पु० [सं० दल] १ सेना, फौज । २ दल, टोली, गुट । ३ समूह, गुण्ड । ४ डेर, राशि । ५ जुड़ी हुई वस्तु का एक भाग । ६ तह या परत की मोटाई । ७ फल का गुदा । ८ वृक्षादि की पत्ती । ९ फूल की पंखुड़ी । १० भोज्य पदार्थ ।

११ तमाल-पत्र । १२ पत्र, चिट्ठी । १३ यस्त्र का प्रावरण, म्यान । १४ भौरा । १५ नशा, मद । १६ लड्डू । १७ शरीर ।
 दस्त-१ देखो 'दिल' । २ देखो 'दळ' ।
 दळ-अग्रभाग-पु० [सं० दल अग्रभाग] बलभद्र ।
 दळ-आगळ-पु० सेना का अग्रभाग, हरावल ।
 दस्तक-पु० [अ० दस्तक] १ रोजगीरों का एक औजार । २ भिखारी की गुदड़ी । ३ सूफियों का लिदास । ४ अंग मर्दन ।
 दळकणो (बो)-कि० १ फटना, चिरना । २ रराना, कांपना । ३ चँकना ।
 वसगीर-देखो 'दिलगीर' ।
 दळण-स्त्री० [सं० दलन] १ दलिया बनाने या दलने का कार्य । २ मारने या संहार करने की क्रिया या भाव । -वि० संहार करने वाला, पीसने वाला, नाश करने वाला ।
 दळणो-स्त्री० चक्की ।
 दळणो-वि० १ दलने वाला । २ काटने वाला । ३ मारने वाला, संहार करने वाला ।
 दळणो (बो) दलणो (बो)-कि० [सं० दलन] १ दरदरा करना, दलिया बनाना । २ संहार करना मारना । ३ नष्ट करना, वर्नाद करना ।
 दळयंभ, दळयंभण-पु० [सं० दल-स्तम्भ] १ सेना का श्रेष्ठ वीर । २ बादशाहों द्वारा दी जाने वाली उपाधि ।
 दळव-देखो 'दाळद' ।
 दळवरी-देखो 'दरिद्री' ।
 दळवळ-पु० [सं० दलाद्वय] १ कीचड़, पंक । २ घने कीचड़ वाला भू-भाग । ३ अधिक कचरे वाला सामान । ४ बहुत ही हल्के दर्जे की वस्तु । ५ मैल । ६ बुझी स्त्री ।
 दळदार-वि० मोटी परत या अधिक गूदे वाला ।
 दळद-देखो 'दाळद' ।
 दळद्री-देखो 'दरिद्र' ।
 दलनाथ, (नायक), दलप, दलपति (पति)-पु० १ सेनापति । २ ममुदाय या दल का नेता, सरदार । ३ वीर, योद्धा ।
 दळबट-पु० मच्छर प्रादि के काटने से शरीर पर होने वाला चक्का, दरीरा ।
 दलबलियो-वि० १ खिन्न चित्त, उदाम । २ दुःखी । ३ भूखा ।
 दलबादल-देखो 'दलवादल' ।
 दलभंजन (न)-वि० [सं० दल+भंजन] सेना का संहार करने वाला, महावीर । -पु० काले या लाल, दाग वाला एक धोड़ा विशेष ।
 दलम-देखो 'दुरलभ' ।
 दलम-पु० [सं० दलम] इन्द्र ।
 वसमट्ठी दलमठी-देखो 'दिलमठी' ।

वळमळणी (बो)—क्रि० १ कुचलना, रौंदना, मसल डालना ।
 २ मारना, संहार करना ।
 दलमि—देखो 'दलम' ।
 दलमोड़—वि० श्रेष्ठ वीर ।
 दळवड (बलवड)—देखो 'दळपति' ।
 दळवावस—पु० [सं० दलवारिद] १ बड़ा भारी खेमा, बड़ा
 शामियाना । २ बड़ी सेना । ३ मुलायम व कीमती सेज ।
 दळसणगार—देखो 'दळसणगार' ।
 दळसाह—पु० १ सूअर, बराह । २ सेनापति ।
 दळसणगार—पु० [सं० दल-शूंगार] १ सेना की शोभा बढ़ाने
 वाला वीर । २ सेनापति ।
 वळायंभ—देखो 'दल्यंभ' ।
 वळानाय—देखो 'दळनाय' ।
 वळापति, वळापती—देखो 'दळपति' ।
 दळामुकट—पु० [सं० दल + मुकुट] सर्वश्रेष्ठ योद्धा, महावीर ।
 दळणी (बो)—क्रि० १ अनाज का दलिया कराना । २ दरदरा
 या रवादार कराना । ३ संहार कराना । ४ नष्ट कराना,
 नाश कराना ।
 दलाल—पु० [अ० दलाल] १ वस्तुओं के क्रय-विक्रय में मध्यस्थता
 करने वाला व्यक्ति । २ दो पक्षों में समझौता कराने वाला
 व्यक्ति । -वि० उदार, विशाल हृदय ।
 दलाली—स्त्री० [अ० दलाली] १ वस्तुओं के क्रय-विक्रय में
 मध्यस्थता करने पर मिलने वाला द्रव्य । २ दलाल
 का कार्य ।
 दळावणी (बो)—देखो 'दळाणी (बो)' ।
 वळि—देखो 'दळ' ।
 वळित—वि० [सं० दलित] १ दला हुआ, खण्ड-खण्ड किया
 हुआ । २ कुचला हुआ, रौंदा हुआ । ३ मसला हुआ, मर्दित
 ४ विनष्ट किया हुआ ।
 वळिद, वळिवर वळिह, वळिद्र—देखो 'दरिद्र' ।
 वळिपो—पु० १ अनाज का दलिया । दला हुआ अनाज ।
 २ ऐसे अनाज का पका हुआ खाद्यान्न ।
 वळी—क्रि० वि० चारों ओर, चौरफ ।
 दली—देखो 'दिल्ली' ।
 दलीप—देखो 'दिलीप' ।
 दलीपत, दलीपति—देखो 'दिलीपति' ।
 दलील—स्त्री० [सं०] १ तर्क, बहस, वाद-विवाद । २ युक्ति ।
 दलीस—देखो 'दिल्लिस' ।
 वळूत—वि० [सं० दलन] नाश करने वाला, संहार करने वाला ।
 दलेवी—स्त्री० मकान के बाहर चबूतरी पर बना खुला कक्ष ।
 दलेल—वि० १ विशाल हृदय, उदार । २ बहादुर (मेवात) ।
 दलेस—देखो 'दिल्लिस' ।

दलेसुर—देखो 'दिल्लीस्वर' ।
 दले—अव्य० हाथियों के लिये एक सांकेतिक शब्द ।
 दळी—देखो 'दळ' ।
 दली, बल्ली—पु० कपाटों के बीच-बीच में बनी चौकी ।
 दवंग—१ देखो 'दवंग' । २ देखो 'दमंग' ।
 दव—पु० [सं० दव] १ दावागि, दावानल । २ अग्नि, आग ।
 ३ वन, जंगल । ४ देखो 'दावो' ।
 दवखण, दवखणप—[सं० दवखणप] यमराज ।
 दवटणी (बो)—देखो 'दवटणी' (बो) ।
 दवण—देखो 'दमन' ।
 दवणी (बो)—क्रि० १ जलना, भस्म होना । २ विकृत होना ।
 ३ देखो 'दवणी' (बो) ।
 दवदंति, गवदंती—देखो 'दमयंती' ।
 दवना—पु० [सं० दमुनस्] अग्नि ।
 दवनी—देखो 'दमणी' ।
 दवर—पु० [सं० द्वार] दरवाजा, द्वार ।
 दवांगीर—देखो 'दवागीर' ।
 दवा—स्त्री० [अ०] १ रोग की औषधि । २ चिकित्सा,
 उपचार । ३ उपाय, तदबीर । [अ० दुष्मा] ४ अग्निवादन ।
 ५ दुष्मा । —खांती—पु० औषधालय, अस्पताल । औषधि
 कक्ष ।
 दवाइती—देखो 'दवायती' ।
 दवाई—१ देखो 'दवा' । २ देखो 'दुहाई' । —खांती—'दवाखांती' ।
 दवाग—१ देखो 'दावागि' । २ देखो 'दुवागी' । ३ देखो
 'दुहाग' ।
 दवागण—देखो 'दुहागण' ।
 दवागि, दवागिन, दवागि—देखो 'दावागि' ।
 दवागीर, दवागीरू—वि० [अ० दुष्मा-गो] १ दुष्मा देने वाला,
 आशीर्वाद देने वाला । २ शुभचिंतक । ३ पाचक ।
 दवाजी—पु० १ घावा, आक्रमण । २ देखो 'दवागीर' ।
 दवात—पु० [अ०] स्याही रखने का पात्र । —पूजा—स्त्री०
 दीपावली का तीसरा दिन । इस दिन की जाने वाली
 दवात-पूजा आदि ।
 दवादस—देखो 'द्वादस' ।
 दवादसी—देखो 'द्वादसी' ।
 दवादस—देखो 'द्वादस' ।
 दवानळ—देखो 'दावानळ' ।
 दवावेत—देखो 'दवावेत' ।
 दवायती—स्त्री० अनुमति, स्वीकृति, आज्ञा ।
 दवार—देखो 'द्वार' ।
 दवारका—देखो 'द्वारका' ।
 दवारी—स्त्री० [सं० दव-अग्नि] दावागि ।

दवारी—१ देखो 'द्वार' । २ देखो 'द्वारी' ।
 दवाळ-देखो 'द्वाली' ।
 दवाळ-१ देखो 'दीवार' । २ देखो 'दुवाळ' ।
 दवाळी-स्त्री० तलवार बांधने का उपकरण ।
 दवाळी-१ देखो 'देवाळी' । २ देखो 'द्वाली' ।
 दवावैत-स्त्री० [घ० वैत] राजस्थानी भाषा की एक गद्य रचना ।
 दवानु, दवासू, दवासी-पुं० नगाड़ा ।
 दवि-स्त्री० [सं० दव] दावानि, दावानल ।
 दवायण-देखो 'दुरवचन' ।
 दवैया-पुं० एक छन्द विशेष ।
 दव्व-१ देखो 'द्वय' । २ देखो 'दव' ।
 दस-वि० [सं० दश] नौ और एक । -पुं० दश की संख्या व अंक, १० । देखो 'दिसा' ।
 दसकंठ, (कंध कंध, कंधर)-पुं० [सं० दशकंठ, स्कंध] रावण ।
 दसक-पुं० [सं० दशक] दश का समूह । -वि० दश गुना, दश युक्त ।
 दसकत, दसकत-पुं० [फा० दस्तखत] हस्ताक्षर ।
 दसकरम-पुं० [सं० दशकर्म] स्त्री के विवाह से गर्भाधान तक के दश संस्कार ।
 दसकातर-पुं० मृतक के पीछे दशवें दिन के पिण्डदान आदि ।
 दसकोसी-स्त्री० [सं० दशकोषी] रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक ।
 दसखीर-पुं० [सं० दशखीर] गाय, भैंस, बकरी, स्त्री आदि दश मादा प्राणियों का दूध ।
 दसग्रीव-पुं० [ग० दशग्रीव] रावण ।
 दसचरण-पुं० [सं० दशचरण] रथ ।
 दसजोगबंध-पुं० [सं० दशजोगबंध] ज्योतिष में एक नक्षत्रवेध ।
 दसण-पुं० [सं० दशन] १ दांत, दंत । २ पर्वत, शिखर ।
 दसणाण-पुं० [सं० दशानन] रावण ।
 दस्त-१ देखो 'दस्त' । २ देखो 'दहसत' ।
 दस्तगीर-देखो 'दस्तगीर' ।
 दस्तान (नौ)-देखो 'दस्तानो' ।
 दस्तावेज-देखो 'दस्तावेज' ।
 दस्तावेजी-देखो 'दस्तावेजी' ।
 दस्तूर-देखो 'दस्तूर' ।
 दस्तोदर-पुं० [सं० दस्तोदर] कुबेर ।
 दस्ती-१ देखो 'दस्ती' । २ देखो 'दस्तानो' ।
 दस्तूर-देखो 'दस्तूर' ।
 दसदिनेस-पुं० [सं० दिनेश] सूर्य ।
 दसवोस-पुं० [सं० दशदोष] राजस्थानी काव्य में माने गये दशदोष ।

दसद्वार-पुं० [सं० दशद्वार] कान, नाक आदि शरीरस्थ दश छिद्र, द्वार ।
 दसधा-वि० [सं० दशधा] दश प्रकार का ।
 दसधु-पुं० [सं० दशधु] रावण, दशानन ।
 दसन-देखो 'दसण' ।
 दसनच्छद-पुं० [सं० दशनच्छद] ओंठ । अग्रधर ।
 दसनबीज-पुं० [सं० दशनबीज] अनार ।
 दसनरोग-पुं० [सं० दशन रोग] दांतों का रोग ।
 दसनाम (नामी)-पुं० [सं० दशनामी] संन्यासियों का एक भेद ।
 दसप-पुं० [सं० दशप] दश गावों का अधिपति ।
 दसपधन (धन)-पुं० [सं० दशपधन] दीपक ।
 दसभूतवर-पुं० [सं० दश भूतवर] सत्य, सांच ।
 दसम-वि० [सं० दशम] दशवां । -स्त्री० दशवीं तिथि ।
 दसमउ-देखो 'दसमी' ।
 दसमय, दसमथ-देखो 'दसमाथ' ।
 दसमि, दसमी-स्त्री० माह के प्रत्येक पक्ष की दशवीं तिथि । -वि० दशवीं ।
 दसमुख, दसमुखि, दसमुखी-पुं० [सं० दशमुख] रावण ।
 दसमुद्रा-स्त्री० [सं० दशमुद्रा] योग की दश मुद्रायें ।
 दसमुद्रिका-स्त्री० [सं० दशमुद्रिका] एक आभूषण विशेष ।
 दसमूल-पुं० [सं० दशमूल] एक औषधि विशेष ।
 दसमी-वि० [सं० दशम्] (स्त्री० दसमी) १ नौ के बाद वाला, दशवां । २ दश के स्थान वाला । -पुं० १ मृतक का दशवां दिन । २ इस दिन के संस्कार । —दुआर, द्वार-पुं० ब्रह्म रंध । —साळगरांम-पुं० श्रेष्ठ योद्धा की एक उपाधि ।
 दसमीळि (ळी)-पुं० [सं० दशमीलि] रावण ।
 दसरंग-पुं० माल खंभ की एक कसरत ।
 दसरथ (थि, थो)-पुं० [सं० दशरथ] अयोध्या के एक सूर्य वंशी राजा, श्रीराम के पिता । —तण, राबउत, सुत-पुं० श्रीराम ।
 दसरात्र-पुं० [सं० दशरात्र] दश रात्रियों तक चलने वाला यज्ञ ।
 दसरावो, दसराही-पुं० १ दशहरा । २ विजयादशमी को भेंट दिया जाने वाला द्रव्य । ३ चैत्र शुक्ला दशमी का दिन । ४ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी का दिन ।
 दसळी (ली)-पुं० ताश का एक पत्ता ।
 दसवन-पुं० [सं० दुश्चयवन] इन्द्र ।
 दसवाजी-पुं० [सं० दशवाजित] चंद्रमा ।
 दसवाहु-पुं० [सं० दशवाहु] शिव, महादेव ।
 दसवीर-पुं० [सं० दशवीर] एक सत्र या यज्ञ का नाम ।
 दसवीं-देखो 'दसमी' । —द्वार—'दसमीद्वार' ।
 दससतकमल-पुं० [सं० दशसतकमल] महाराजुं ।

दससिर, दससीस-पु० [सं० दशशिर] रावण, दशानन ।
— धर-पु० रावण ।

दसस्थदन-पु० [सं० दशस्थदन] राजा दशरथ ।

दसांग-पु० [सं० दशांग] एक प्रकार का धूप ।

दसांण-देखो 'दमारण' ।

दसा-स्त्री० [सं० दशा] १ अवस्था, स्थिति, हालत । २ मानव जीवन की अवस्था । ३ साहित्य की दश अवस्थाएँ ।
४ दीपक की वत्ती । ५ ग्रह योग, भोग काल । ६ काल, अवधि । ७ परिस्थिति हालत । ८ मन की प्रकृति ।
९ कपड़े की भाँल । १० उम्र ।

दसाप्रवतार-पु० [सं० दशावतार] १ प्रकाश, उगति ।
२ दीपक ।

दसाइयाँ, दसाइयाँ-स्त्री० लग्न के बाद वर-वधू की दिये जाने वाले दश भोज ।

दसाकरख (करम)-पु० [सं० दशाकर्ष] दीपक ।

दसाणण (णि, णी)-पु० [सं० दशानन] रावण ।

दसालीर-पु० फारसी लोगों की एक धार्मिक पुस्तक ।

दसादहाड़ी, दसादा'ड़ी-देखो 'दमागोदाड़ी' ।

दसाधिपति-पु० [सं० दशाधिपति] १ ज्योतिष का ग्रह । २ दश सैनिकों का प्रभारी ।

दसापत-देखो 'दिशापति' ।

दसापवित्र-पु० [सं० दशापवित्र] दिक्पाल, दिग्पाल ।

दसापोत-पु० [सं० दशापोत] १ प्रकाश । २ दीपक ।

दसभव-पु० [सं० दशाभव] १ दीपक । २ प्रकाश ।

दसार-पु० [सं० दशार्ह] १ धष्ट राजा का पुत्र । २ राजा वृष्णि का पौत्र । ३ वृष्णि, वंशीय राजाओं का अधिकृत देश ।

दसारण-पु० [सं० दशार्ण] १ विध्य पर्वन के पूर्व का एक प्रदेश । २ इस प्रदेश का निवासी या राजा । ३ तंत्र का एक दशाक्षणी मंत्र ।

दसारोडोरी-पु० दश तारों का एक सूत्र विशेष ।

दसा-री-दा'ड़ी-पु० होली के दशवें दिन किया जाने वाला एक वन विशेष ।

दसावळ-कि० वि० दशों दिशाओं में, चारों ओर ।

दसावहारी-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

दसावोसी-पु० एक प्रकार का खेल ।

दसासुत-पु० [सं० दशा-सुत] दीपक ।

दसासूळ-देखो 'दिमासूळ' ।

दसास्वमेध-पु० १ काशी का एक तीर्थ । २ प्रयाग में त्रिवेणी का एक घाट ।

दसिमी-वि० १ नौ के ब्राह्मण, दश के स्थान वाला । २ दश नवरी । वदमाश, लोफर, अवार । ३ उपद्रवी । ४ धोखे बाज । ५ गुंडा । —पु० १ दशवाँ भाग । २ देखो 'दसी' ।

दसी-१ देखो 'दसा' । २ देखो 'दिमा' ।

दसुटण-देखो 'दमोटाण' ।

दसूँव, दसूँदी, दसूँध-स्त्री० [सं० दशमांघ्र्यम्] १ ब्रह्म भटों को प्रदत्त की जाने वाली एक उपाधि । २ इस उपाधि के उपलक्ष्य में दिया जाने वाला द्रव्य । ३ ऐसी उपाधि धारी ब्रह्मभट । ४ कृषि उपज का दशवाँ भाग । —वि० 'दसूँद' लेने वाला ।

दसू-पु० [सं० दस्यु] १ चोर, डाकू । २ शत्रु ।

दसूटण, दसूठण-देखो 'दमोटाण' ।

दसूँधण-पु० [सं० दशा-धनम्] दीपक ।

दसे'क-वि० [सं० दश+एक] दश के लगभग ।

दसेयाँ-देखो 'दमाइयाँ' ।

दसोटण-पु० [सं० दशोत्थान] पुत्र जन्म के दश दिन या दश मास बाद किया जाने वाला उत्सव ।

दसोतरी-स्त्री० [सं० दशोत्तर शतम्] सौ के बाद वाले दश ।

दसौठण-देखो 'दमोटाण' ।

दसी-पु० [सं० दशम्] १ दसवाँ वर्ष । २ दश का अंक, १० ।
३ वर्षों संकर । ४ अपनी जात या गोत्र में नीचा ।

दस्ट, दस्टो-देखो 'दस्ति' ।

दस्तंदाजी-स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप, दखल ।

दस्त-स्त्री० [फा० दस्त] १ हाथ । २ पतला विरेचन । —गीर —वि० हाथ पकड़ कर सहारा देने वाला, सहायक । —ताळ —स्त्री० झुनाझों पर कर्तल मारने की क्रिया । —पनाह —पु० चिमटा, हाथों के दस्ताने व कवच । —पोसी-स्त्री० हाथ चूमने के क्रिया । —फोली-पु० मारने के लिये किया जाने वाला हस्त-प्रहार । —बद, बंध-पु० कलाई का एक आभूषण विशेष । नृत्य का एक भेद । हाथ जोड़ने की क्रिया । कोष्ठ वद्धता । —बुगची-पु० हाथ में रखने का धैला ।

दस्तरि, दस्तरी-स्त्री० १ कागज का मोटा गत्ता । २ मारवाड़ शासन का एक विभाग ।

दस्तान-१ देखो 'दास्तान' । २ देखो 'दस्तांनी' ।

दस्तांनी, दस्तांनी-स्त्री० [फा० दस्तान:] १ हाथ का कवच, हस्तत्राण । २ हाथ का मौजा ।

दस्तार-स्त्री० [फा०] पगड़ी ।

दस्तावर-वि० [फा०] विरेचक, दस्तकारक ।

दस्तावेज-पु० [फा०] लिखित पत्र, व्यवस्था पत्र, ऐसा लिखित पत्र जो भविष्य में साक्षी के रूप में माना जा सके ।

दस्तावेजी-वि० [फा०] दस्तावेज संबंधी ।

दस्तो-वि० [फा०] हाथ संबंधी, हाथ का ।

दस्तूर-पु० [फा०] १ नियम, कायदा । २ रश्म, रिवाज । ३ कानून, विधि । ४ व्यवहार, परंपरा । ५ रियायत, कटौती । ६ भेंट लेने का हक । ७ फारसियों का पुरोहित ।

बस्तूरी-स्त्री० [फा०] कटौती, हक, कमीशन । -वि० वैधानिक, कानूनी ।

बस्तो-पु० [फा० दस्तः] १ किसी शीशर आदि का हस्ता, मूठ, बेंट । २ किसी पात्र का हैंडिल । ३ फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता । ४ सिपाहियों का छोटा दल । ५ चौबीस खाली कागजों का समूह । ६ भमड़ा, टंटा, फिसाद । -वि० हाथ में रहने या आने लायक ।

बस्यावड़-स्त्री० बुने हुए कपड़े के छोर का आधा बुना भाग ।

बस्सण-देखो 'दरमण' ।

बस्सा-देखो 'दसा' ।

बस्ती-देखो 'दमी' ।

बह-पु० [सं० हृद] १ नदी का गहराई वाला स्थान । २ पोखर, गड्ढा । ३ बड़ा खड्डा । ४ कुण्ड, होज । [सं० दह] ५ ज्वाला, लपट । ६ अग्नि, आग । ७ दावाग्नि । -वि० [सं० दण] दण ।

बहकंध, बहकंधर-देखो 'दसकंध' ।

बहक बहकण-स्त्री० [सं० दहन] १ अग्नि का प्रज्वलन । २ ज्वाला, लपट । ३ लज्जा, शर्म । ४ ताप ।

बहकणी(बी)-क्रि० [सं० दहन्] १ अग्नि का जलना, धधकना । २ प्रदीप्त होना, सुलगना । ३ तप्त होना । ४ डरना, भयभीत होना । ५ कांपना ।

बहकमळ-पु० रावण, दशानन ।

बहकाणी (बी), बहकावणी (बी)-क्रि० [सं० दहन्] १ अग्नि को जलाना, धधकाना । २ प्रदीप्त करना, सुलगाना । ३ तप्त करना, तपाना । ४ डराना, भयभीत करना । ५ कांपना ।

बहकणी (बी), बहकवणी (बी)-देखो 'दहकणी' (बी) ।

बहण-स्त्री० [सं० दहन] १ जलन, दाह । २ प्रज्वलन, धधकन । ३ अग्नि, आग । ४ कुढ़न, जलन । ५ एक रुद्र का नाम । ६ ज्योतिष में एक योग । ७ ज्योतिष में एक रीति । ८ तीन की संख्या* । -वि० १ जलने योग्य । २ जलाने वाला, भस्म करने वाला । ३ नाश करने वाला ।

बहणी-देखो 'दाहिणी' ।

बहणी(बी)-क्रि० [सं० दहन] १ जलना, भस्म होना । २ धधकना, प्रज्वलित होना । ३ संतप्त होना, दुःखी होना, कुढ़ना । ४ नष्ट होना, मारा जाना । ५ भस्म करना, जलाना । ६ नाश करना, विनाश करना । ७ दूर करना, मिटाना । ८ दाह संस्कार करना । ९ संतप्त करना ।

बहवहणी (बी)-क्रि० कांपना, धरना, डरना ।

बहन, बहन्न-देखो 'दहण' ।

बहबट्ट, बहबाट-देखो 'दहवट्ट' ।

बहमंग, बहमग-पु० [सं० दण-मार्ग] १ ध्वंस, तहस-नहस । २ विनाश, संहार ।

बहमथ (माथ)-देखो 'दममाथ' ।

बहमुख, बहमुखी-देखो 'दममुख' ।

बहल-स्त्री० [सं० दरः] १ डर, भय, आतंक, श्रास । २ संताप, दुःख । ३ भय से कंपन । ४ घाक, रोब, प्रभाव ।

बहलणी (बी)-क्रि० [सं० दरः] १ डरना, भय खाना । २ संतप्त होना, दुःखी होना । ३ भय से कांपना । ४ घाक या रोब पड़ना ।

बहलाणी (बी), बहलावणी(बी)-क्रि० १ डराना, भय दिखाना । २ संतप्त करना, दुःखी करना । ३ भय से कांपाना । ४ घाक जमाना, रोब लगाना ।

बहली-देखो 'दिल्ली' ।

बहलीत-वि० भयभीत करने वाला, आतंकित करने वाला ।

बहल्ल-देखो 'दहल' ।

बहल्लणी (बी)-देखो 'दहलणी' (बी) ।

बहबट्ट (बटि, बट्ट, बाट, बाटी)-पु० [सं० दण-बाट] १ संहार, विनाश । २ ध्वंस, नाश । ३ आतंक, डर, भय । ४ दशों दिशाओं के मार्ग ।

बहवन-स्त्री० [सं० दधिवर्णा] गाय ।

बहसत बहसति, बहसत्त-स्त्री० [फा० दहशत] १ आतंक, डर, भय, खौफ । २ घाक, रोब ।

बहसोत-देखो 'दिमोत' ।

बहाई-स्त्री० [सं० दह] दण के मान की संख्या, इकाई के पीछे का अंक ।

बहाड़-स्त्री० १ जोर की आवाज, भारी या घोर शब्द । २ शेर आदि की गर्जना । ३ घन-घोर गर्जन ।

बहाड़णी (बी)-क्रि० १ जोर का शब्द करना । २ गर्जना । ३ क्रोध में जोर से बोलना । ४ देखो 'दहाणी' (बी) ।

बहाड़ी-वि० १ आतंक व रोब वाला, आतंकित करने वाला । २ जबरदस्त । ३ गर्जने वाला । ४ वयोवृद्ध, अनुभवी । ५ पुराना, प्राचीन ।

बहाड़ी-देखो 'दिवस' ।

बहाणी (बी), बहावणी (बी)-क्रि० [सं० दहन] १ भस्म करना, जलाना । २ संतप्त करना, कुड़ाना । ३ प्रज्वलित करना । ४ नष्ट करना, मारना । ५ दूर करना, मिटाना । ६ दाह-संस्कार करना ।

बहावन-स्त्री० [सं० दीर्घ + भवन] गाय ।

बहि, बही-देखो 'दस' । २ देखो 'दई' ।

बही-कोरड़ी-पु० एक देशी खेल ।

बहीपी-देखो 'दई' ।

बही-देखो 'दह' ।

बहुए

(६४१)

दांतसूत्र

बहुए, बहुऐ, बहुधा, बहुवां-क्रि० वि० दोनों ओर, दोनों तरफ ।
-वि० दोनों ।

बहु, बहू-वि० दोनों ।

दहेज-पु० [प्र० दहेज] कन्या का विवाह कर विदाई के समय दिया जाने वाला सामान, द्रव्य आदि ।

बहेली-वि० दुर्लभ, कठिन ।

दहोड़णी (बो)-क्रि० संहार करना, मारना ।

दहोतरसौ-वि० [सं० दशोत्तरशत] एक सौ दश ।

वां-स्त्री० [फा०] दफा, वार । -वि० जानने वाला, जाता, सर्वज्ञ ।

वांइंदी-वि० (स्त्री० वांइंदी) समवयस्क, हम उम्र ।

दांड, दाईं-स्त्री० १ आयु, उम्र । २ बार, दफा, मर्तवा ।
३ तरफ, प्रकार, आति ।

दांगड़ी-स्त्री० कपाट के पिछले भाग में लगा काष्ठ का छोटा डण्डा या पट्टी ।

दांगो-स्त्री० १ बाल, मुट्ठा । २ जुलाहों की कंधी में लगी रहने वाली लकड़ी । ३ एक वाद्य विशेष ।

दांगी-वि० हूष्ट-पुष्ट, मजबूत ।

दांडाजिनिक-पु० पाखण्डी या दांगी साधु । -वि० छलिया, कपटी ।

दांडी-देखो 'डांडी' ।

दांडू-देखो 'दाडम' ।

दाण-पु० [सं० दान] १ शतरंज, चौपड़ आदि में चाल, दाव ।
२ चाल के लिए पाशा या कौड़ी फेंकने की क्रिया । ३ दाव पर रखा जाने वाला द्रव्य या सामान । ४ समय, वक्त ।
५ बार, दफा । ६ ऊंट के अगले पैरों का बंधन । ७ देखो 'डांग' । ८ देखो 'दान' ।

दाणउ-१ देखो 'दाणी' । २ देखो 'दान' ।

दाण-दपाण, दाण-दापो-पु० १ सरकारी कर । २ जगात ।

दाणदार-देखो 'दाणदार' ।

दाणपुरघाण-पु० मंत्री ।

दाणमंडही-स्त्री० दान देने का स्थान ।

दाण-नीला-देखो 'दान-नीला' ।

दाणव-पु० [सं० दानव] १ अमुर, राक्षस । २ दुष्ट । ३ यवन
-पुर, गुरु-पु० शुक्राचार्य । -राई, राय, राह-पु०
हरिण्य कथप, राजा बलि, रावण, बादशाह ।

दाणवत-पु० [सं० दानव-पुत्र] मफीम ।

दाणवि, दाणवी-वि० [सं० दानवीय] दानव सम्बन्धी, आसुरी ।
-स्त्री० राक्षसी ।

दाणव-देखो 'दांगव' ।

दाणावार-देखो 'दाणदार' ।

दाणापाणी-पु० १ अन्न-जल । २ जीविका । ३ रहने का संयोग ।

दांगी-पु० १ कर लेने वाला कर्मचारी । २ दाव ।

दाण-१ देखो 'दांतव' । २ देखो 'दांगी' ।

दाणोदार-वि० जिसमें दाने या रवे हों, रवादार । -पु०
१ बढ़िया लोह की तलवार । २ एक प्रकार का बढ़िया फौलाद ।

दांगी-पु० [फा० दानः] १ अनाज, अन्न । २ अनाज या किसी पदार्थ का कण । ३ रवा । ४ घोड़े, सूअर आदि को खिलाने का अनाज । ५ बीज । ६ नग, खण्ड, टुकड़ा ।
७ किसी वस्तु की सतह का रवादार उभार । ८ शरीर पर किसी रोग के कारण होने वाले दाने । ९ एक प्रकार की शक्कर । १० देखो 'दांगव' ।

दांत, दांतड़ली-पु० [सं० दन्त] १ प्राणियों के मुँह में बना, खाना चबाने का ठोस व तीक्ष्ण अवयव, दंत, दशन, रदन ।
२ दांत की तरह बना किसी उपकरण का भाग ।
[सं० दांत] ३ पालतू या सोधा बैल । ४ दाता । ५ दमनक वृक्ष । -वि० १ पालतू । २ वृक्षवर्ती । ३ उदार । ४ त्यक्त ।
५ इन्द्रियजित । -कथ, कथा= 'दंतकथा' ।

दांतड़ल-पु० सूअर, शूकर ।

दांतण, (णि, णी) दांतणियी-पु० [सं० दंत-मज्जन] १ दांत साफ करने की क्रिया, दंत मंजन । २ दांत साफ करने में काम आने वाला पदार्थ, मंजन । ३ नीम, बबूल आदि की हरि टहनो । ४ एक लोक गीत ।

दांतबसन-पु० [सं० दंत-वसनम्] ओष्ठ, अधर ।

दांतळी-वि० १ बड़े दांतों वाली । २ बिना बात हंसने वाली ।
-स्त्री० छोटी हंसिया ।

दांतळल-देखो 'दांतड़ल' ।

दांतळी-वि० [सं० दंतुर] (स्त्री० दांतळी) १ बड़े दांतों वाला ।
२ बिना बात हंसने वाला । -पु० हंसिया ।

दांतळी-देखो 'दांतळी' ।

दांतळी-पु० [सं० दांतवल्] १ हाथी, गज । २ देखो 'दांतळी' ।

दांति-देखो 'दांती' ।

दांतियी-पु० [सं० दांतिक] १ खरगोश । २ तियार । ३ डोली ।
-वि०-दांत का बना ।

दांतिळ-देखो 'दांतळी' ।

दांती-स्त्री० [सं० दंत] १ हाथी दांत आदि के चूड़े बनाने का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
२ कंधी । ३ कंधी से बाल साफ करने के लिये डोंग लपेटने की क्रिया या हथ । ४ कंधीनृमी कुदाली । ५ दांती की पंक्ति, बत्तीमी । ६ एक वृक्ष विशेष । ७ आत्म संयम ।
८ बशीकरण । ९ देखो 'दांती' ।

दांतीळ-पु० [सं० दंतुर] चार दांत वाला ऊंट ।

दांतूसळ-देखो 'दांतूगळ' ।

दांतेरू-देखो 'दांतेरू' ।

दांती-पु० [सं० दांती] १ दांतनुमा कंगूरा । २ नुकीला भाग, बीच में निकली कोई नोक । ३ 'कुली' नामक कृषि उपकरण का एक अवयव । -वि० दांत का ।

दांत्युणी-स्त्री० जमाल घोंटे की जड़ ।

दांत्यो-१ देखो 'दांतियो' । २ देखो 'दांती' ।

दांदरू-देखो 'दांनड़' ।

दान पु० [सं० दान] १ धर्म या पुण्य अर्जन करने के लिये याचकों को कुछ देने की क्रिया । २ याचकों को उदारता पूर्वक नाश जाने वाला द्रव्य या पदार्थ । ३ भेंट, पुष्कार । ४ देना क्रिया, सुपुर्दगी । ५ बटाई, वितरण । ६ धूस, रिश्वत । ७ हाथी का मद । ८ बँठक, घासन । ९ देखो 'दाण' । -अयन-पु० दाता, दानो । -गुर. गुरु-पु० महादानी, दानवीर । -पति-पु० सदा दान करने वाला दानी । अकूर । -पत्र-पु० दान की हुई मत्पत्ति के संबंध में लेख्य पत्र । -पात्र-पु० दान के लिये उपयुक्त याचक । -लीला-पु० श्रीकृष्ण की एक बाल लीला । -धारि-पु० हाथी का मद । -वीर-पु० माइस पूर्वक दान करने वाला, महादानी । -साळा-स्त्री० याचकों को दान देने का स्थान । -सोल-वि० दान करने की भावना वाला ।

दानक, दानख-पु० [सं० दानक] बुरा व कुत्सित दान ।

दांनड़-पु० कूड़ा करकट ।

दांनख-देखो 'दांणव' । -गुर, गुरु= 'दांणवगुरु' ।

दांनवज-पु० [सं० दांनवज] देवताओं की सवारी के अत्यन्त श्रेष्ठ अश्व ।

दांनवी-स्त्री० [सं० दानवी] दानव स्त्री राक्षसी ।

-वि० [सं० दानवीय] आमुरी, दानव संबंधी ।

दांनपू-देखो 'दांणव' ।

दांनवेंद्र-पु० [सं० दांनवेंद्र] १ राजा पति । २ रावण । ३ हरिण्य कशिपु ।

दांनसागर-पु० [सं० दांनसागर] एक प्रकार का महादान ।

दांनार्ई-स्त्री० [फा० दानार्ई] १ बुद्धिमता, अक्लमंदी । २ वृद्धावस्था ।

दांनारकी-स्त्री० [सं० दान] दान लेने का अधिकार ।

दांनार्यक्ष-पु० [सं० दानार्यक्ष] वह जिसके द्वारा दान किया हुआ द्रव्य बाँटा जाय ।

दांनारण-पु० १ अक्लमंदी, बुद्धिमता । २ बुढ़ापा ।

दांनि-१ देखो 'दांनो' । २ देखो 'दांन' ।

दांनिसमंभ-वि० [फा० दांनिसमंभ] बुद्धिमान ।

दांनी-वि० [सं० दानिन्] १ दान करने, पुण्य करने, धर्मादा करने वाला । २ भेंट करने वाला । ३ दाता, उदार । -पु० १ राजा कर्ण । २ दानो व्यक्ति ।

दांनो-वि० [फा०] १ बुद्धिमान, अक्लमंद । २ दान करने वाला, उदार । ३ वृद्ध ।

दांनोरिप-पु० [सं० दानिन्-रिपु] अनुन, पार्थ ।

दांनोसरी दानोसवर, दांनोसुर-वि० [सं० दानोश्वर] दान देने में श्रेष्ठ ।

दांनो-पु० [फा० दाना] (स्त्री० दानी) १ अक्लमंद, बुद्धिमान । २ वयोवृद्ध, अनुभवो । ३ सज्जन । ४ हितैषी, शुभचिन्तक । ५ देखो 'दांणी' । ६ देखो 'दांणव' ।

दांणव-वि० [सं०] दम्पती संबंधी, पति-पत्नी संबंधी । -पु० पति-पत्नी का प्रेम संबंध व व्यवहार ।

दांणिक-वि० [सं०] १ पाखण्डी, आडम्बरी । २ घमण्डी, ग्रहंकारी । ३ धोखेबाज, ठग ।

दांण, दांणिणी, दांणो-पु० [सं० दम्प] १ एक रुपये का ४०वां भाग, एक सिक्का । २ पैसे का पच्चीसवां भाग । ३ पैसे के बराबर एक प्राचीन मिक्का । ४ द्रव्य, धन । ५ वस्तु की कीमत, मूल्य । [सं० दाम] ६ एक प्रकार की नीति । ७ माना, हार, लड़ो । ८ रज्जु, रस्सी । ९ डोरा, धागा । १० कमर बंद । ११ रेखा, धारी । १३ बंधन । -वि० किंचित, जरा, कम ।

दांणटो-पु० [सं० दामिट्टी] इन्द्र की रथ सेना का सेनापति ।

दांणण-पु० [फा० दामन] १ वस्त्र का झोर । २ ओढ़णी ।

३ ओढ़णी का पल्ला । ४ पहाड़ के नीचे की भूमि ।

५ बंधन । ६ धन घटा । ७ देखो 'दांणणी' । ८ देखो 'दांणणी' ।

९ देखो 'दावण' । १० देखो 'दांमी' ।

-वि० १ बंधन में डालने वाला । २ चंचल ।

दांणणणी (बो)-क्रि० ऊंट, बैल, घोड़े आदि के पैर बांधना ।

दांणणणीर-वि० [फा० दामन-णीर] दामन पकड़ने वाला ।

दांणणि-देखो 'दांणणी' ।

दांणणणी-वि० [सं० दमन] १ दमन करने वाला ।

२ देखो 'दांणणी' ।

दांणणी-स्त्री० [सं० दामिनी] १ विजयी, विजुत । [सं० दामनी]

२ रस्मी, रज्जु । [सं० दाम] ३ विधवा स्त्रियों के शिर

की एक ओढ़नी विशेष । ४ शिर का एक आभूषण विशेष ।

दांणणैस-देखो 'दांणणी' ।

दांणणी-पु० [सं० दाम, दामनी] १ दुर्लभ समय गाय के पीछे के पैर बांधने की छोटी रस्सी । २ ऊंट, घोड़े आदि के घुलने पैर बांधने की रस्मी । -वि० बांधने वाला ।

दांणणी (बो)-क्रि० [सं० दमन] १ बंधन में डालना, बांधना । २ दमन करना ।

दांणणद-पु० [फा० दामाद] पुत्री का पति, जमाता ।

दांणण्ठी-वि० १ धन का लोभी । २ धनवान, धनी ।

दांणण, दांणणी, दांणन-देखो 'दांणणी' ।

दांमोदर

। ६४३)

दागणी

दांमोदर-पु० [सं० दामोदर] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु ।
३ ईश्वर । ४ एक जैन तीर्थंकर का नाम । ५ रुपया, पैसा
रखने की लंबी थैली ।

दांमोदांम-वि० पूर्ण ।

दांमो-पु० [सं० दाम] परस्पर जुड़ा ग्रंथियों का जोड़ा ।

दांव-१ देखो 'दाम' । २ देखो 'दाव' ।

दांवण-१ देखो 'दामण' । २ देखो 'दामणी' । ३ देखो 'दावड़' ।
४ देखो 'विदावण' ।

दांवणणी (बो)-देखो 'दामणणी (बो) ।

दांवण (णी)-१ देखो 'दामण' । २ देखो 'दामणी' ।

दांवणणी, दांवणी-१ देखो 'दामणी' । २ देखो 'दामणणी' ।

दांवणी (बो)-देखो 'दामणी' (बो) ।

दांवां-स्त्री० रहट की माल में लगे रस्सी के टुकड़े ।

दांहण-देखो 'दाहिणी' । —वस्तु= 'दक्षिणावस्त' ।

दांहणी-देखो 'दाहिणी' । (स्त्री० दाहिणी) ।

दा-पु० १ दान । २ प्रेम । ३ पर्वत । ४ शुभ । ५ लक्ष्मी ।
—वि० दातार । —अव्य० का ।

दाह-१ देखो 'दाई' । २ देखो 'दाय' ।

दाइज, दाइजज, दाइजी-देखो 'दायजी' ।

दाई-स्त्री० [सं० धात्री] १ प्रसव कराने वाली स्त्री । धात्री ।
२ दूसरे के बच्चे को दूध पिलाकर पालन करने वाली स्त्री,
दाय । ३ आया । ४ तरह, भाति । —वि० १ समान, तुल्य ।
२ देखो 'दाय' ।

दाईजी-देखो 'दायजी' ।

दाउ-पु० १ आक्रमण, हमला । २ अवांनक फेंका पदार्थ ।
३ देखो 'दाव' ।

दाउदी-देखो 'दाऊदी' ।

दाउमू-पु० आभूषणों पर खुदाई करने का औजार ।

दाऊ, दाऊजी-पु० [सं० देव] १ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम ।
२ बड़ा भाई । ३ देखो 'दाव' । ४ एक लोक गीत ।

दाऊखानी-पु० [फा० दाऊदखानी] १ अच्छी जाति का
सफेद गेहूँ । २ एक प्रकार का चावल ।

दाऊदी-पु० श्वेत पुष्पो वाला एक पौधा व उसका फूल ।

दाणी-देखो 'दावी' ।

दाकल-देखो 'धाकल' ।

दाकलणी (बो)-क्रि० ललकारना, फटकारना, धमकाना ।

दाक्षिण-पु० [सं०] १ एक होम का नाम । २ यज्ञीय दक्षिणा
की वस्तुओं का समुच्चय । —वि० १ यज्ञीय दक्षिणा
संबंधी । २ दक्षिण दिशा संबंधी ।

दाक्षिणात्य-वि० [सं०] दक्षिण का, दक्षिण संबंधी । —पु०
१ दक्षिण देश । २ भारत का दक्षिणी भाग । ३ दक्षिण
का निवासी । ४ नागरिक ।

दाक्षिणिक-पु० [सं०] १ एक प्रकार का कम बंधन । २ यज्ञ की
दक्षिणा संबंधी वस्तु ।

दाक्षी-स्त्री० [सं०] १ राजा दक्ष की कन्या । २ पाणिनी
की माता ।

दाख-पु० [सं० द्राक्षा] १ सूखा अंगूर, द्राक्षा, किशमिश ।
२ मुनक्का । ३ अंगूर ।

दाखणी-वि० [सं० दक्ष] १ दिखाने वाला । २ प्रकट करने
वाला । ३ कहने वाला । ४ वर्णन करने वाला,
कथने वाला ।

दाखणी (बो)-क्रि० [सं० दक्ष] १ दिखाना । २ कहना, बोलना ।
३ वर्णन करना, कथना । ४ देखना ।

दाखल-देखो 'दाखिल' । —खारिज= 'दाखिल-खारिज' ।
—वपतर= 'दाखिल-वपतर' ।

दाखली-पु० [अ० दाखिल:] १ प्रवेश, भर्ती पंठ । २ किसी में
घुसना, सम्मिलित होना आदि क्रिया । ३ हवाला, उल्लेख ।
४ लिखावट । दर्ज । ५ लिखित-पत्र । ६ अधिकार ।

दाखली (बो)-देखो 'दाखणी' (बो) ।

दाखिल-देखो 'दाक्षिण' ।

दाखिलात्य-देखो 'दाक्षिणात्य' ।

दाक्षिणिक-देखो 'दाक्षिणिक' ।

दाखिल-वि० [अ०] १ प्रविष्ट । २ मिला हुआ, सम्मिलित,
शरीक । ३ भर्ती । ४ अन्दर पहुँचा हुआ । —खारिज-पु०
जायदाद के कागज पर पूर्व मालिक का नाम काट कर
वारिस का नाम लिखने की क्रिया । अन्दर-बाहर होने की
क्रिया । —वपतर-वि० प्रतिवेदन या पत्र अस्वीकृत होकर
मिसल में नथी ।

दाखली-देखो 'दाखली' ।

दाखी-देखो 'दाक्षी' ।

दाखीण-पु० [सं० दाक्षिण्य] अनुकूलना ।

दाग-पु० [फा० दाग] १ पशुओं के शरीर पर अग्नि दग्ध करके
क्रिया गया निशान । २ वस्त्रादि पर लगा धब्बा । ३ दग्ध
होने का निशान । ४ चिह्न । ५ कलंक, दोष, लाल्छन ।
६ पाप, अध । ७ अपराध । [सं० दग्ध] ८ अग्नि ।
९ जलन । १० दाह । ११ दाह, संस्कार । १२ दुःख ।
१३ शोक ।

दागड़िया-वि० १ युत, बदमाश । २ ठग, लुटेरा ।

दागड़ी-देखो 'धागड़ी' ।

दागणी (बो)-क्रि० [सं० दग्ध] १ पशुओं के दाग लगाना,
दग्ध करना । २ दाह क्रिया करना । ३ जलाना ।
४ चिह्नित करना, निशान लगाना । ५ तोप, बन्दूक
आदि छोड़ना ।

दागभाष-पुं० हाथी का एक रोग ।

दागल-वि० १ जिस पर दाग लगा हो, दागी । २ ध्रुवों वाला ।

३ चिह्नित । ४ कलंक या दोष युक्त । ५ दण्डित, सजा पाया हुआ ।

दागीणी-पुं० १ वस्तु, चीज, पदार्थ । २ किसी वस्तु के नग, अद्व । ३ भ्रामूषण, जेवर । -वि० १ दाग लगा हुआ ।

२ चिह्नित । ३ दोष युक्त । ४ कलंकित ।

दाघ-स्त्री० [सं० दाघः] १ गर्मी, ताप । २ दाह, संताप । ३ पीड़ा, उलेश, दुःख । ४ पित्त प्रकोप का एक रोग ।

५ अंतिम संस्कार । ६ देखो 'दाघी' ।

दाघल-देखो 'दाघी' ।

दाघणी (बो), दाघवणी (बो)-क्रि० [सं० दग्ध] जलाना ।

दाघु, दाघी-वि० [सं० दग्ध] १ जलाने वाला, भस्म करने वाला । २ शव को दाह संस्कार के लिए श्मशान भूमि ले जाने वाला ।

दाड़-देखो 'डाड़' ।

दाड़कली-पुं० १ दाढ़ी के बाल । २ देखो 'दाढ़ी' ।

दाड़म, दाड़मिणी, दाड़मी-स्त्री० [सं० दाडिम] अनार ।

दाड़व-पुं० काशी से दो योजन दूर एक गांव ।

दाड़िम, दाड़िमी-देखो 'दाड़म' ।

दाड़ो-पुं० १ सूर्य । २ देखो 'दिवस' ।

दाछंट-वि० निर्भय, निःशंक ।

दाजणी (बो)-देखो 'दाभणी' (बो) ।

दास, दासण-स्त्री० [सं० दह] १ जलन, दाह । २ ईर्ष्या, डाह ।

दासणी (बो)-क्रि० [सं० दग्ध] १ जनना, तप्त होना ।

२ जल कर विकृत होना । ३ झुलसना । ४ दुःखी होना, संतप्त होना । ५ विरह में झुरना । ६ ईर्ष्या करना, कुड़ना, जलना ।

दाट-पुं० [सं० दान्ति] १ खोतल आदि का मुंह बन्द करने की वस्तु, डाट, कोंक । २ प्रतिबंध, रोक । ३ नाश, ध्वंस । ४ फटकार, प्रताड़ना, डांट ।

दाटक-वि० १ बड़ा, महान् । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ समर्थ । ४ शक्तिशाली, जबरदस्त । ५ भयंकर । ६ दमन करने वाला ।

दाटणी-वि० [सं० दम] १ दमन करने वाला । दवाने वाला । २ नाश करने वाला । ३ काटने वाला । ४ वश में करने वाला । ५ गाड़ने वाला, दवाने वाला ।

दाटणी (बो)-क्रि० [सं० दम्] १ दमन करना, दवाना । २ कब्जा करना, अधिकार करना । ३ वश में करना, काबु करना । दवाना । ४ गाड़ना, छुपाना । ५ देखो 'दाटणी' (बो) ।

दाटी-देखो 'दाटक' ।

दाटीक-देखो 'दाटक' ।

दाटी-देखो 'डाटी' ।

दाटीक, दाटीकर-वि० [सं० दृष्टिकर] १ धैर्यवान्, बुद्धिमान । २ गंभीर । ३ देखो 'दाटक' ।

दाड-देखो 'डाड' ।

दाडल-देखो 'डाडल' ।

दाडिम-देखो 'दाड़म' ।

दाडिम-कुसुम-वि० [सं०] लाल ।

दाडिम-सार-पुं० वस्त्र विशेष ।

दाडिमहलौ-पुं० एक प्रकार का कीमती वस्त्र ।

दाडिमास्टक-पुं० [सं० दाडिमाष्टक] एक प्रकार का अनार का चूर्ण ।

दाडिमि (मो)-देखो 'दाड़म' ।

दाडू, दाड्या, दाडयूम, दाडयू-देखो 'दाड़म' ।

दाड-१ देखो 'डाड' । २ देखो 'डाडी' ।

दाडणी (बो)-क्रि० [सं० दंशन] १ दांतों से चबाना, कुचलना । २ देखो 'डाडणी' (बो) ।

दाडल-देखो 'डाडल' ।

दाडाली-देखो 'डाडाली' ।

दाडाली-देखो 'डाडाली' ।

दाडी-देखो 'डाडी' ।

दादेची-स्त्री० जिसके दाढ़ी हो, दाढ़ी वाली, देवी, दुर्गा ।

दात-पुं० [सं० दत्त] १ दहेज । २ पुण्य नक्षत्र का एक नाम । [सं० दात्र] ३ फल काटने का औजार, हंसिया । [सं० दंत] ४ सूय्र का दांत, खण । ५ दाता ।

दातड़ियाल-देखो 'दात्रड़ियाल' ।

दातड़ी-१ देखो 'दात' । २ देखो 'दाती' ।

दातर-देखो 'दातरण' ।

दातर, दातरड़ी, दातरड़ी, दातरली, दातरली, दातरिणी-१ देखो 'दाती' । २ देखो 'दात' ।

दातरी-स्त्री० १ पक्षी विशेष । २ देखो 'दाती' ।

दातरी-देखो 'दाती' ।

दातल-१ देखो 'दाती' । २ देखो 'दात' ।

दातली-१ देखो 'दाताली' । २ देखो 'दात' ।

दातली-पुं० १ हंसिया । २ देखो 'दाती' ।

दाता, दातार-वि० [सं० दातृ, दाता] १ देने वाला ।

२ दान करने वाला, दानी । ३ उदार । ४ कर्ज देने वाला ।

ऋण-दाता । -पुं० १ शिव, महादेव । २ कुटुंब के वृद्ध पुरुष के लिए सम्मान सूचक शब्द । ३ क्षण्य छंद का एक भेद ।

वातारणी, वातारी-स्त्री० [सं० दातृ] उदारता, दानशीलता ।
 वाताह-देखो 'दातार' ।
 वातावरी-वि० [सं० दात्री] देने वाली, उदारहृदया ।
 -स्त्री० दानशीलता ।
 वाति-पु० दान ।
 वातिव-पु० [सं० दातव्य] १ दान, पुण्य । २ देने योग्य पदार्थ ।
 वाती-१ देखो 'दाति' । २ देखो 'दात' । ३ देखो 'दाती' ।
 वातुण-देखो 'दातरण' ।
 वातौ-पु० [सं० दात्र] हंसिया ।
 वात्र-स्त्री० [सं० दातृ, दात्र] १ देने वाली । २ हंसिया ।
 वात्रङ्गियाळ, वात्रङ्गियाळ, वात्रीङ्गियाळ, वात्रीयाळ-पु०
 [सं० दात्र-पाल] १ सूत्र, बराह । २ बराहावतार ।
 वात-पु० [सं० दद्रु] एक चर्म रोग विशेष । -स्त्री० [फा०]
 १ तारीफ, प्रशंसा, वाहवाही । २ धन्यवाद । ३ न्याय,
 इन्साफ ।
 दावनी-पु० [फा० दादन] देने योग्य ।
 दादर, दादरियो-पु० १ एक प्रकार का वाद्य । २ देखो 'दादुर' ।
 दावरी-पु० १ संगीत में एक ताल, इक ताला । २ देखो 'दादुर' ।
 दादाण, दादाणी-पु० १ दादा का घर, गांव या प्रदेश ।
 २ पिता का ननिहाल ।
 दादाई-स्त्री० उद्दण्डता । -वि० दादा के वंश का ।
 दादागिरी-स्त्री० वदमाशी, जोरावरी, उद्दण्डता ।
 दादागुर, दादागुरु, दादागुरु-पु० गुरु का गुरु ।
 दादाभाई-पु० बड़ा भाई ।
 दादारंग-वि० पागल ।
 दादि-१ देखो 'दाद' । २ देखो 'दादी' ।
 दादी-स्त्री० पिता की माता । -सासू-स्त्री० सासु की मासु ।
 -सुसरी-पु० श्वसुर का पिता ।
 दादुर, दादुरियो, दादुरी-पु० [सं० ददुर] (स्त्री० दादुरी)
 १ मेंढक । २ बादल । ३ गहनार्द्र । ४ पर्वत । ५ दक्षिण
 भारत का एक पर्वत । -बाजउ, बाजी-पु० एक प्रकार
 का वाद्य विशेष ।
 दादू-पु० १ श्रीदादूदयाल । २ दादूपंथी ।
 दादूदयाल-पु० प्रकबरकालीन एक प्रसिद्ध निर्गुणी साधु ।
 महात्मा ।
 दादूदारी-पु० दादूपंथी महात्माओं का निवास स्थान ।
 दादूपंथ-पु० श्रीदादूदयाल द्वारा चलाया गया सम्प्रदाय ।
 दादूपंथी-पु० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी ।
 दादेरी-देखो 'दादाणी' ।
 दादो-पु० १ पिता का पिता, दादा, पितामह । २ बड़े भाई
 का सम्बोधन । ३ वृद्ध पुरुष का सम्बोधन । ४ दादागिरी
 करने वाला । ५ पण्डित, ब्राह्मण ।

दाघ-१ देखो 'दाद' । २ देखो 'दाह' । ३ देखो 'दाघ' ।
 दाघजोग-पु० वार तिथि संबंधी पांच योगों में से दूसरा योग ।
 दाघणी (बो)-क्रि० [सं० दग्ध] १ नष्ट होना । २ भस्म होना ।
 ३ जलना । ४ दग्ध होना, विकृत होना । ५ पीड़ित होना,
 संतप्त होना । ६ जलाना, भस्म करना । ७ दग्ध करना ।
 ८ पीड़ित करना, संतप्त करना । ९ अधिकार करना,
 कब्जा करना ।
 दाघली-पु० मनाप, कष्ट ।
 दाघावडी-पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।
 दाघिच-पु० [सं० दाघीच] १ एक राजपूत वंश । २ एक
 ब्राह्मण वर्ग ।
 दाघीच (चि, चौ)-पु० [सं० दधिची] दधिची ऋषि की संज्ञान,
 एक ब्राह्मण वर्ग ।
 दाघी, दाघ्यो-वि० दुःखी, संतप्त । दग्ध ।
 दाघ-पु० [सं० दाघ] १ वेग । २ देखो 'दरप' ।
 दाघक-पु० [सं० दर्वक] १ कामदेव । २ दबाने वाला ।
 दाघड़-देखो 'दाफड़' ।
 दाघटणी (बो)-क्रि० [सं० दाप्] १ संहार करना, मारना ।
 २ देखो 'दपटणी' (बो) ।
 दाघणी (बो)-क्रि० [सं० दाप्] १ संहार करना । २ दबाना,
 दाबना ।
 दापिक-पु० एक राजवंश ।
 दापी-पु० १ मांगलिक अवसरों पर ब्राह्मणों की बांटा जाने
 वाला द्रव्य । २ कन्या के पिता द्वारा वर के पिता को
 दिया जाने वाला द्रव्य ।
 दाफड़-पु० मच्छर आदि के काटने से शरीर पर उभरने वाला
 चकत्ता ।
 दाब-स्त्री० १ दबने, दबाने की क्रिया या भाव । २ दबाव,
 बोझ, भार । ३ जकड़न । ४ घास का चौकोर ढेर ।
 ५ वमन कांख । ६ शक्कर और धो का मिश्रण, एक
 पथ्य । ७ कलेजे का मांस, कलेजी । ८ शराब पीने का
 प्याला, जाम ।
 दाबड़ियो-पु० सिंचाई के पानी की नाली के मृत्त पर लगाया
 जाने वाला घास, फूस, मिट्टी आदि ।
 दाबड़ी, दाबड़-पु० १ कपूर आदि रखने की डिबिया ।
 २ देखो 'डाबड़ी' ।
 दाबरी (बो)-क्रि० [सं० दमन] १ दबाना, दबाकर रखना ।
 २ बोझ-भार रखना । ३ आचरण व बोलने की स्वतंत्रता
 न रहने देना । ४ किसी कार्य के लिए मजबूर या विवश
 करना । ५ विशेष गुण या प्रभाव के कारण तुलना में मंद,
 फीका या बेअसर कर देना । ६ नीचा दिखाना, मान देना ।

७ प्रतिभा को उभरने न देना । ८ शिकस्त देना, हराना ।
९ शांत करना, उभड़ने न देना । १० अफवाह आदि फैलने
न देना । ११ बन्धपूर्वक अधिकार में करना । १२ हड़पना,
ठगना । १३ दबोचना, धर-दबाना । १४ मंद या धीमा
करना । १५ शर्मिदा करना, भेषाना । १६ गुप्त रखना,
छुपाना । १७ बेबश करना । १८ जमीन में गाढ़ना, दफन
देना । १९ दुंसना, दबाना ।

दावडी-देखो 'दाऊरी' ।

दावेड़ी-पुं० बग पर चड़स खाली करने का स्थान ।

दाबोनरी-पुं० एक प्रकार का सरकारी लगान ।

दाबौ-पुं० [सं० दमन] १ दबाने की क्रिया या भाव । २ किसी
वस्तु को दबाये रखने के लिए रखा जाने वाला भार ।
३ सीमा सुरक्षार्थ तैनात योद्धा । ४ घोड़ा, ठगी । ५ धी-
शक्कर का पशु ।

दाब-देखो 'दाव' ।

दायंदार-देखो 'दावेदार' ।

दाय-पुं० [सं० दायः] १ विभाजन योग्य पैतृक संपत्ति ।
२ दान मेंट । ३ दहेज । ४ भाग । [सं० द्रौ] ५ तरह,
भाति, प्रकार । ६ हानि, विनाश । ७ दुर्भाग्य ।
[सं० ध्रु] ८ इच्छा, मंशा । ९ पसंद, रुचि । -विं०
१ इच्छित । २ रुचिकर । ३ पसंद का । -क्रि० विं०
१ इच्छानुसार । २ तरह से । ३ लिये, वास्ते ।

दायक-विं० [सं०] देने वाला, दाता ।

दायची, दायज, दायजउ-देखो 'दायज' ।

दायजवाळ, दायजाळ, दायजावाळ-पुं० दहेज में दिया जाने
वाला प्राणी, दास-दासी ।

दायजी-पुं० [सं० दाय] विवाहोपरास्त विदाई के समय कन्या
को दिया जाने वाला सामान, द्रव्य आदि । दहेज ।

दायण-देखो 'दाई' ।

दायणी-पुं० एक प्रकार की लगाम ।

दायभाग-पुं० [सं०] १ पैतृक संपत्ति के वितरण का विधान ।
२ पैतृक संपत्ति का भाग ।

दायम-क्रि० विं० [अ०] मदा, हमेशा, नित्य ।

दायमा-देखो 'दाहिमा' ।

दायमो-देखो 'दाहिमो' ।

दायर-विं० [अ०] १ जारी, चालू, गतिमान । २ चलता-
फिरता । ३ देश, प्रस्तुत ।

दायरी-पुं० [अ० दाएर] १ गोल पैरा । २ मंडल । ३ वृत्त,
कक्षा । ४ क्षेत्र । ५ सीमा । ६ फकीरों के रहने का
स्थान ।

दाया-देखो 'दाई' ।

दायाद-विं० [सं० दाय-आद] संपत्ति या जायदाद का
उत्तराधिकारी, दावेदार । -पुं० १ पुत्र । २ रिश्तेदार,
भाई बन्धु । ३ दूर का संबंधी ।

दायाबी-स्त्री० [सं०] कन्या, पुत्री ।

दायिणी (नी)-स्त्री० [सं० दायिनी] देने वाली ।

दायेंदार, दायेदार-देखो 'दावेदार' ।

दायी-पुं० [अ० दावा] अधिकार, हक, कब्जा ।

दार-स्त्री० [सं० दारा] १ पत्नी, भार्या । २ स्त्री, औरत ।
[सं० दारु] ३ काष्ठ, लकड़ी । ४ आग्न, आग । ५ दरार ।
-प्रत्य० [फा०] वाला ।

दारक, (वक)-पुं० [सं० दारक] १ पुत्र लड़का । २ देखो 'दरक' ।
-विं० चोरने वाला, काड़ने वाला, लोड़ने वाला ।

दारण-देखो 'दारुण' ।

दार-मवार-पुं० [फा०] १ अवलंबन, निर्भरता । २ आश्रय,
ठहराव ।

दारा-स्त्री० [सं०] १ स्त्री, पत्नी, भार्या । २ एक प्रकार की
मछली ।

दाराज-देखो 'दराज' ।

दारिद (द्र)-पुं० १ गरीबी । २ देखो 'दाऊद' ।

दारिबी-पुं० [सं० दारक] १ वेश्या पुत्र । २ पुत्र । ३ सोलंकी वंश
की दारिया शाखा का व्यक्ति ।

दारी-स्त्री [सं० दारिका] १ वेश्या, रंडी । २ पुत्री । -वाडउ-
-पुं० वेश्याओं का घर, मुहल्ला ।

दार-स्त्री० [सं०] १ काष्ठ, लकड़ी । २ डंडी । ३ चटकनी ।
४ देवदार का वृक्ष । ५ पीतल । ६ कच्चा लोहा ।
७ देखो 'दारू'

दारक-पुं० [सं०] १ देवदार का वृक्ष । २ श्रीकृष्ण का एक
सारथी ।

दारकदली-पुं० [सं०] जंगली केला ।

दारका-स्त्री० [सं०] कठपुतली ।

दारकावन-स्त्री० [सं०] एक वन विशेष ।

दारुडी, दारुडी-देखो 'दारू' ।

दारुजोखित-स्त्री० [सं० दारुयोषित] कठपुतली ।

दारुण-विं० [सं०] १ भयंकर, भीषण, घोर । २ दुःसह, कठिन,
विकट । ३ प्रचंड, शक्तिशाली । ४ योद्धा वीर ।

दारुणारि-पुं० [सं०] श्रीविष्णु ।

दारुणी-स्त्री० [सं०] १ एक महाविद्या का नाम । २ देखो 'दारुण' ।

दारुन-देखो 'दारुण' ।

दारुनटी, दारुनारी-स्त्री० [सं०] कठपुतली ।

दारुपात्र-पुं० [सं०] काष्ठ-पात्र ।

दारुयोखित-स्त्री० [सं० दारुयोषित] कठपुतली ।

दारुहळदी-स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] १ आल जाति का एक मदावहार वृक्ष । २ एक औषधि ।

दारु-पुं० [फा०] १ शराब, मद्य । २ दवा औषधि । ३ बारूद । ४ देखो 'दारु' । —कार-पुं० शराब बनाने वाला ।

—खारियो, लोरी-पुं० शराब पीने का आदी ।

दारुदी, दारुड़ी-देखो 'दारु' ।

दारुदृष्टी-पुं० नशा-पता, नशा ।

दारुकूल-पुं० पुष्पों से निकला हुआ शराब ।

दारुहळदी, दारुहळदी-देखो 'दारुहळदी' ।

दारोगाई-स्त्री० १ दारोगा का कार्य । २ दारोगा का पद । ३ दारोगा का वेतन ।

दारोगी-पुं० [फा० दारोगा] १ निगरानी रखने वाला अफसर । २ पुलिस का अधिकारी ।

दारोपदार-देखो 'दारमदार' ।

दाळ-स्त्री० [सं० दालि] १ चने, मूंग आदि के दाने का आधा भाग । २ दला हुआ पदार्थ । ३ दाल की तरह की कोई वस्तु । ४ चेचक या फोड़े फुंसी पर जमने वाली काली पपड़ी ।

दाळचिणी, दाळबोणी-स्त्री० [सं० दारु चीन] १ एक वृक्ष विशेष । २ इस वृक्ष की छाल जो औषधि व गरममसालों में काम आती है ।

दाळद, दाळद, दाळद, दाळघ-पुं० [सं० दाग्दघ] १ गरीबी, दरिद्रता, निर्धनता । २ कूड़ा-करकट । ३ बेकार वस्तु । —हरण-पुं० शिव, शंकर । ईश्वर । —वि० गरीबी दूर करने वाला ।

दालदरी, (दो)-वि० निर्धन, कंगाल ।

दालाण, दालान-पुं० [फा० दालान] मकान के आगे बना खुला कक्ष, बरामदा ।

दाळि-देखो 'दाळ' ।

दाळिउत (हुं)-पुं० [सं० दलपति] लघु दल का पति ।

दाळिद, दाळिदर, दाळिद-देखो 'दाळद' ।

दाळियालाडु-पुं० पदार्थ विशेष के लड्डू ।

दाळिपी-पुं० १ पीतल की एक छोटी कड़ी । २ दालनुमी कोई वस्तु ।

दाळीवर-१ देखो 'दरिद्र' । २ देखो 'दाळद' ।

दाळीदरो-देखो 'दरिद्री' ।

दाह्म-पुं० [सं०] इन्द्र, मुरगति ।

दावं, दाव-पुं० [सं० दा] १ उपयुक्त अवसर, मौका । २ वात-प्रतिघात । ३ उपाय, युक्ति । ४ खेल आदिका पेच, कला । ५ छत्र, कपट, धोखा । ६ विचार । ७ प्रहार, चोट । ८ प्रभाव । ९ बार, दफा, मर्तबा । १० पारी, बारी,

अवसर कम । ११ चौपट, जूआ आदि में पासा चलाने की क्रिया । १२ कुश्ती का पेच । १३ देखो 'दाब' । —स्त्री० [सं० दाव] १४ दावानि ।

दावड़-स्त्री० १ सूत की पतली डोरी । २ देखो 'दाविड़' ।

दावड़ी-देखो 'दाविड़ी' ।

दावटण-वि० दवाने वाला, दबोचने वाला ।

दावटणी (बी)-क्रि० [सं० दमन] करना, दबोचना ।

दावण-पुं० १ स्त्रियों का एक वस्त्र विशेष । —[सं० दामन] २ खाट के पायतान में लगी रस्सी । ३ देखो 'दामण' ।

दावणगीर-देखो 'दामणगीर' ।

दावणो-देखो 'दामणो' ।

दावणी (बी)-क्रि० [सं० दह] १ विरह में जलाना, पीड़ित करना । २ जलाना दण, करना ।

दावत-स्त्री० [अ० दमवत] १ भोज, ज्योहार । २ निर्मरण ।

दावदी-स्त्री० १ एक प्रकार की लता । २ देखो 'दाऊदी' ।

दावां-स्त्री० रूढ़ि की मान में बंधे रस्मी के टुकड़े ।

दावाग्रन-देखो 'दावानि' ।

दावागर, दावागिर, दावागीर, दावागीर-पुं० १ अग्र । २ प्रतिवादी ।

दावानि-स्त्री० [सं०] वन की अग्नि ।

दावात-देखो 'दवान' ।

दावादर-देखो 'दावेदार' ।

दावानल (ल)-स्त्री० [सं० दवानल] वन की अग्नि, दावानि ।

दावाबंध-पुं० हकदार, मागीदार ।

दावामुदी-वि० [सं० दावामुर्दी] विगोबी, प्रतिपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी ।

दावापत, दावापत्री-पुं० विरोध करने वाला शत्रु ।

दावेदार-पुं० [अ० दा' वेदार] १ हकदार, हिस्सादार ।

२ भागीदार । ३ दावा रखने वाला, दावा करने वाला ।

दावं-पुं० कारण, हेतु । —क्रि० वि० अवसर पर, मौके पर ।

—वि० समान, तुल्य ।

दावोदार-देखो 'दावेदार' ।

दावो-पुं० [अ० दावा] १ किसी वस्तु या जायदाद पर बताया जाने वाला अधिकार, हक, कब्जा । २ स्वत्व । ३ अपना अधिकार पुष्ट कराने निमित्त न्यायालय में प्रस्तुत किया गया आवेदन, मुकद्दमा । ४ शक्ती, बल । ५ प्रतिकार बदला । ६ स्पर्धा, झोड़ । ७ युद्ध । ८ ऐश्वर्य, वैभव । ९ प्रभाव, जोर, प्रताप । [सं० दावा] १० दावापत्र के कथन । ११ दावानि, दावानल ।

दाँवी-पुं० फलन व वनस्पतियों के लिए हाविकारक पेज व शान्त वायु ।

दास

(६४८)

दिकरी

दास-पु० [सं०] (स्त्री० दासी) १ सेवक, चाकर नौकर ।
२ गुलाम । ३ मछुवा । ४ शूद्र । ५ भक्त [सं० दाश]
६ धीवर, मछुवा ।

दासइली, दासइली, दासइली, दासइली-देखो 'दासी' ।

दासतान-देखो 'दास्तान' ।

दासता-स्त्री० [सं०] १ गुलामी, परतंत्रता । २ मेवावृत्ति ।
३ सेवक का कार्य । ४ नौकरी । ४ भक्ति ।

दासदासान-देखो 'दामानुदास' ।

दासदीकोठा-पु० एक वर्ण विशेष ।

दासनंदणी, दासनदिनी-स्त्री० [सं० दाशनंदिनी] धीवर की
पुत्री, मत्स्यवती, मत्स्यगंधा ।

दासपण (णी)-पु० [सं० दासत्वन] १ दासत्व, गुलामी ।
२ सेवाकर्म ।

दासरत्थ, दासरथ (थि, थी, थ्यी)-पु० [सं० दाशरथः]
१ श्रीराम । २ दशरथ ।

दासतन-पु० [सं० दासत्वन] दासता, गुलामी ।

दासानुदास-पु० [सं०] १ भक्तों का भक्त । २ गुलामों का
गुलाम । ३ छोटा, तुच्छ ।

दासि-देखो 'दासी' ।

दासिक-देखो 'दास' ।

दासी-स्त्री० [सं०] १ सेवा करने वाली स्त्री, सेविका ।
२ पारिवारिका । ३ नौकरानी । ४ वेश्या, गणिका ।
५ गुलाम स्त्री । [सं० दाशी] ६ धीवर की स्त्री । ७ शूद्र
की स्त्री । —जादो-पु० दासीपुत्र ।

दासेर, दासेरक-पु० [सं० दासेरक] १ ऊँट । २ मछुवा ।

दासी-पु० १ देहलीज या किसी द्वार के नीचे लगा पत्थर ।
२ बाहर निकली किनार वाला, दीवार में लगा लम्बा
पत्थर । ३ देखो 'दाम' ।

दास्तान-स्त्री० [फा०] १ वृत्तान्त, हाल । २ कथा, कहानी ।
३ वर्णन । ४ इतिहास ।

दाह-स्त्री० [सं०] १ भस्मीकरण, जलाना क्रिया । २ जलन ।
३ दाह संस्कार । ४ ताप । ५ संताप । ६ आग ।
७ लालिमा । ८ ईर्ष्या, द्वेष । ९ दुःख, पीडा ।
१० देखो 'दाव' ।

दाहक-पु० [सं०] अग्नि, आग । -वि० जलाने वाला ।

दाहकता-स्त्री० [सं०] जलने का भाव, गुण ।

दाहकरम-पु० [सं० दाहकर्म] शव जलाने का कार्य,
दाह संस्कार ।

दाहकास्व-पु० [सं० दाहकाष्ठ] अंगर की लकड़ी ।

दाहकम-देखो 'दाहकरम' ।

दाहक्रिया-स्त्री० [सं०] दाह-भस्कार ।

दाहजनक-वि० [सं०] ताप या अग्नि उत्पन्न करने वाला ।
ताप देने वाला ।

दाहज्वर-पु० [सं०] अधिक ताप वाला ज्वर ।

दाहण-पु० [सं० दाहन] अग्नि, आग ।

दाहणी-वि० [सं० दाह] (स्त्री० दाहणी) १ नाश करने वाला,
संहार करने वाला । २ जलाने वाला, भस्म करने वाला ।
३ मंथन करने वाला । ४ देखो 'दाहिणी' ।

दाहणी (बी)-क्रि० [सं० दाह] १ जलना । २ जलकर भस्म
होना । ३ मंथन होना, दुःखी होना । ४ जलाना ।
५ जलाकर भस्म करना । ६ संतप्त करना, दुःखी करना ।
७ संहार करना, नाश करना । ८ तपाना ।

दाहनी-१ देखो 'दाहणी' । २ देखो 'दाहिणी' ।

दाहा-स्त्री० १ दाह क्रिया । २ देखो 'दाव' ।

दाहिणउ-देखो 'दाहिणी' ।

दाहिणे (णै, नै)-क्रि० वि० [सं० दक्षिण] दाहिनी ओर ।

दाहिणी (बी)-वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दाहिणी) १ बायें
का विपर्याय दायां । २ दाहिनी ओर का ।

दाहिमा-पु० [सं० दाघीच] १ दाघीच ब्राह्मण । २ एक
राजपूत वंश ।

दाहु-देखो 'दाह' ।

दाहो-पु० [सं० दाह] १ उष्णता प्रकट करने वाला ज्वर ।
२ देखो 'दाव' । ३ देखो 'दावो' ।

दिक्कनखत्र, दिक्कनखत्र-पु० [सं० दिक् नक्षत्र] विशिष्ट दिशाओं
संबंधी नक्षत्र ।

दिग्मूढ-देखो 'दिग्मूढ' ।

दिड-पु० एक प्रकार का नृत्य ।

दिडी-पु० (सं०) एक छन्द विशेष ।

दि-स्त्री० १ घाँव । २ दर्शों दिशाएँ । -वि० १ दातार, उदार ।
२ पालने वाला, पालक ।

दिग्रण-वि० (स्त्री० दिग्रणी) देने वाला, दाता ।

दिक्-स्त्री० [सं० दिक्] -पु० १ दिशा । २ युवा हाथी ।
३ श्रय रोग । -वि० (अ० दिक्) १ तंग, हैरान ।
२ अस्वस्थ, बीमार ।

दिक्कन्या-स्त्री० [सं०] दिशा रूपी कन्या ।

दिक्कुमार-पु० [सं०] एक देवता ।

दिक्चक्र-पु० [सं०] १ आठों दिशाओं का समूह ।
२ १६ दिशाओं का समूह ।

दिक्पति-पु० [सं०] दिशाओं का पति । दिक्पाल ।

दिक्पाळ-पु० [सं० दिक्पाल] १ दिशाओं के स्वामी देवता ।
२ हाथी, गज ।

दिक्मूढ-देखो 'दिग्मूढ' ।

दिकरी-देखो 'दीकरी' ।

दिकरेखा-स्त्री० [सं०] क्षितिज ।
 दिकसाधन-पु० [सं० दिक्साधन] दिशाओं का ज्ञान करने का साधन ।
 दिकमूळ-देखो 'दिसामूळ' ।
 दिक्स्वामी-पु० [सं० दिक्स्वामी] दिक्पाल ।
 दिक्कण-देखो 'दक्षिण' ।
 दिक्कत-स्त्री० [अ०] १ समस्या, परेशानी । २ बाधा, अड़चन । ३ तंगी । ४ कठिनाई, मुश्किल ।
 दिक्का-देखो 'दीक्षा' ।
 दिक्कुमारिका-स्त्री० [सं०] तीर्थंकर के जन्म काल में प्रसूति कार्य में सेवा करने वाली कुमारिका ।
 दिक्खण-देखो 'दक्षिण' ।
 दिक्खण्डी-स्त्री० दक्षिण दिशा की, दक्षिण दिशा संबंधी ।
 दिक्सा-देखो 'दीक्षा' ।
 दिक्षागुरु-देखो 'दीक्षागुरु' ।
 दिख-देखो 'दक्ष' ।
 दिखण-देखो 'दक्षिण' ।
 दिखणचीर-देखो 'दिखणीचीर' ।
 दिखणाण-वि० [सं० दक्षिणाण] १ दक्षिण का । २ दक्षिण स्थित । -पु० दक्षिण का निवासी ।
 दिखणा-देखो 'दक्षिण' ।
 दिखणाव-देखो 'दखणाव' ।
 दिखणावू, दिखणावी-देखो 'दिखणावू' ।
 दिखणाघ-देखो 'दखणाघ' ।
 दिखणाघि, (घी)-देखो 'दखणाघि' ।
 दिखणाघू (घी)-देखो 'दखणाघू' ।
 दिखणि, दिखणी-पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का अधिपति । २ दक्षिण देश । ३ देखो 'दखणी' ।
 दिखणी-चीर-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
 दिखव-पु० [सं० दृषद्] पत्थर ।
 दिखलाई-देखो 'देखाई' ।
 दिखलाणी (बी), दिखलावणी (बी)-देखो 'देखाणी' (बी) ।
 दिखलाई-देखो 'देखाई' ।
 दिखाउ(ऊ)-वि० १ केवल देखने या दिखाने योग्य । २ बनावटी ३ दिखावटी ।
 दिखाइली(बी), दिखाइली(घी), दिखानी(बी), दिखाळ नी(बी)-देखो 'देखाणी' (बी) ।
 दिखाव-पु० १ देखने की क्रिया या भाव । २ दर्शन, दीदार । ३ दृश्य । ४ दृष्टि की सीमा, नजर । ५ तड़क-भड़क, आडम्बर ।

दिखावट-स्त्री० १ दिखाने की क्रिया या भाव । २ ऊपरी तड़क-भड़क, बनावट, आडम्बर ।
 दिखावटी-वि० १ जो केवल देखने योग्य हो । २ बनावटी । ३ अवास्तविक । ४ तड़क-भड़क वाला ।
 दिखावणी (बी)-देखो 'देखाणी' (बी) ।
 दिखावी (हौ)-पु० १ बाह्याडंबर । २ तड़क-भड़क । ३ ढोंग, पाखण्ड ।
 दिखिण-देखो 'दक्षिण' ।
 दिखियांगी-देखो 'दखियांगी' ।
 दिगंत-पु० [सं०] १ आकाश का छोर, क्षितिज । २ दिशा का अंत या छोर । ३ दशों दिशाएँ । ४ चारों दिशाएँ ।
 दिगंतर-पु० [सं०] दिशाओं के बीच का स्थान, दो दिशाओं का अंतर ।
 दिगंबर-पु० [सं०] १ निर्वस्त्र रहने वाला जैन साधु, धारणक । २ एक जैन सम्प्रदाय । ३ शिव, महादेव । ४ दिशाओं का वस्त्र, अपेरा, अंधकार । ५ सिद्धि प्राप्त महात्मा । -वि० नग्न, नंगा ।
 दिगंबरता-स्त्री० [सं०] नग्नता, नंगापन ।
 दिगंबरी-पु० [सं०] दिगंबर सम्प्रदाय का साधु या अनुयायी ।
 दिगंस-पु० [सं०] क्षितिज वृत्त का ३६० वां अंश । एक डिग्री ।
 दिग-१ देखो 'त्रय' । २ देखो 'दिक' ।
 दिगज-देखो 'दिग्गज' ।
 दिगवंत-पु० दिशा गज, आशा गज ।
 दिग्दाह-स्त्री० [सं० दिग्दाह] सूर्यास्त के समय दिशाओं में होने वाली लाली ।
 दिग्देवता-देखो 'दिग्देवता' ।
 दिग्पति-देखो 'दिग्पति' ।
 दिग्पाळ-वि० [सं० दिग्पाल] १ समर्थ, वीर, शक्तिशाली । २ देखो 'दिकपाळ' ।
 दिग्मूढ-वि० [सं० दिग्मूढ] आश्चर्य वकित, दंग ।
 दिगर-वि० [फा० दीगर] दूभरा, अन्य ।
 दिगरेखा-देखो 'दिकरेखा' ।
 दिग्वास-पु० [सं० दिक्वामः] शिव, महादेव ।
 दिग्विजई-देखो 'दिग्विजयी' ।
 दिग्बिजय, दिग्बिजेय, दिग्बिजै, दिग्-देखो 'दिग्विजय' ।
 दिग्-स्त्री० ध्वनि विशेष । ढोल की ध्वनि ।
 दिगी-वि० आठवीं ।
 दिगीस-पु० [सं० दिक्-ईण] दिशा का स्वामी, दिक्पाल ।
 दिगीस्वर-पु० [सं० दिगीस्वर] दिशा का स्वामी, दिक्पाल ।
 दिगेस-देखो 'दिगीस' ।

दिग्गज-पु० [सं०] आठों दिशाओं के हाथी । -वि०
 १ दिग्विजयी । २ प्रमुख, मुख्य । ३ बड़ा, महान ।
 ४ जयमदस्त ।
 दिग्गधेव-पु० [सं० दिग्गेन्द्र] दिग्गज ।
 दिग्गीस-देखो 'दिगीम' ।
 दिग्गाह-देखो 'दिग्दाह' ।
 दिग्देवता-पु० [सं०] दिशाओं का स्वामी, देवता, दिक्पाल ।
 दिग्पति-पु० [सं०] दिशापति, दिक्पाल ।
 दिग्बल-पु० [सं० दिग्बल] लगनादि केन्द्रों पर स्थित ग्रहों का बल ।
 दिग्बली-पु० [सं० दिग्बलिन्] किसी दिशा में बली ग्रह ।
 दिग्भ्रम, दिग्भ्रम-पु० [सं० दिग्भ्रम] दिशा-भ्रम । दिशा का भ्रम ।
 दिग्मंडल-पु० [सं० दिग्मंडल] १ दिशाओं का समूह ।
 २ क्षितिज वृत्त ।
 दिग्गज-पु० [सं०] दिशा का राजा, दिक्पाल ।
 दिग्गसन, दिग्गस्त्र-पु० [सं०] १ शंकर, शिव । २ नंगा पत्नी ।
 ३ संन्यासी । ४ क्षपणक ।
 दिग्गारण-पु० [सं०] दिक्पाल ।
 दिग्विजय-स्त्री० १ आठों दिशाओं पर की जाने वाली विजय, विजय यात्रा । २ दशों दिशाओं में ज्ञान आदि की होने वाली क्षाति, प्रभाव ।
 दिग्विजयी-वि० आठों दिशाओं का विजेता । चक्रवर्ती ।
 दिग्विजे (जं)-देखो 'दिग्विजय' ।
 दिग्घापो-वि० [सं०] जो दिशाओं में व्याप्त हो ।
 दिग्घत-वि० [सं०] जेनियों का एक व्रत ।
 दिग्विधुर-पु० [सं०] दिग्गज ।
 दिग्विखा-स्त्री० [सं० दिग्विखा] पूर्व दिशा ।
 दिग्छा-१ देखो 'दीक्षा' । २ देखो 'दिसा' ।
 दिग्छण-देखो 'दक्षिण' ।
 दिज-१ देखो 'दुज' । २ देखो 'दिज' ।
 दिट्ती-देखो 'द्रस्टांत' ।
 दिट्ट-१ देखो 'द्रस्ट' २ देखो 'द्रस्टि' ।
 दिट्टणी (बी)-देखो 'देखणी' (बी) ।
 दिट्टि, दिठ-देखो 'द्रस्टि' ।
 दिठाळी-देखो 'देठाळी' ।
 दिठोण, दिठोणी-पु० हाफ्ट दीप में बचाने के लिये लगाई गई कान्नी विदी ।
 दिढ़-देखो 'दढ़' ।
 दिढ़क-पु० [सं० दढ़] स्वामि कालिक्रिय ।
 दिढ़बंत-पु० [सं० दढ़वान] मरुह ।

दिढ़ाणी (बी), दिढ़ावणी (बी)-क्रि० [सं० दढ़] दढ़ करना, मजबूत करना ।
 दिणकर-देखो 'दिनकर' ।
 दिणंत, दिणदौ-देखो 'दिनंद' ।
 दिणयर, दिणयस-देखो 'दिनकर' ।
 दिणयरी-देखो 'दिनकर' ।
 दिणिद-देखो 'दिनंद' ।
 दिणि-देखो 'दिन' ।
 दिणिमर, दिणिमर-देखो 'दिनकर' ।
 दिणू-देखो 'दिन' ।
 वित-देखो 'दैत्य' ।
 दितवार-देखो 'अदीतवार' ।
 दिति, दितो-स्त्री० [सं० दिति] १ कश्यप ऋषि की पत्नी व दैत्यों की माता । २ उदारता । ३ काट-छांट । -पुत्र-पु० दैत्य, असुर ।
 दितेस-पु० [सं० दैत्येण] १ असुर, राक्षस । २ राजा बलि ।
 ३ रावण ।
 दिदार-देखो 'दीदार' ।
 दिघा-देखो 'द्विघा' ।
 दिनकर-देखो 'दिनकर' ।
 दिनंद-पु० [सं० दिनेन्द्र] १ सूर्य, रवि । २ दिन ।
 दिन-पु० [सं०] १ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय । २ चौबीस घंटे की एक अवधि । ३ समय, काल । ४ निश्चित समय ।
 ५ तिथि, तारीख । ६ सूर्य । ७ जीवन का अच्छा वृत्त समय ।
 -भर-='दिनकर' । -ग्रवसाण-पु० सूर्यास्त, संध्याकाल ।
 -कंत-पु० सूर्य । -कर-पु० सूर्य । -क्षय-पु० तिथि का प्रभाव, तिथिक्षय । -चरघा-स्त्री० नित्य कर्म, दिन का कार्यक्रम । -दसा-='दिनमान' । -दोष-पु० सूर्य ।
 -नाथ, नाह, प, पति-पु० सूर्य । -पात-पु० तिथि क्षय ।
 -पाळ-पु० सूर्य । -मण, मणि, मणी-पु० सूर्य ।
 -मान-पु० गन व दिन का मान । भाग्य । -माळी-पु० सूर्य । -रत्न, राई, राउ, राव-पु० सूर्य ।
 दिनकर, दिनकरण, दिनकरन-पु० [सं०] १ सूर्य । २ एक मासिक छंद विशेष । -कन्या-स्त्री० यमुना । -सुत-पु० कर्ण, यम, शनि, सुग्रीव, अश्विनी कुमार ।
 दिनडो-देखो 'दिन' ।
 दिनत-देखो 'दिनंद' ।
 दिनदुलह (हो)-पु० [सं० दिन दुर्लभ] कामदेव । -वि० वीर, वांकुरा ।
 दिनबल-पु० [सं०] दिन के समय प्रबल रहने वाली राशि ।
 दिनाई-पु० [सं० दिनस्थायी] सूर्य, दिनकर । -क्रि० वि० प्रतिदिन, नित्य ।

दिनांतक-पु० [सं०] अंधकार, अंधेरा ।
 दिनांघ-वि० दिन में भी अंधा । -पु० उल्लू ।
 दिनांस-पु० [सं० दिनांश] दिन के तीन भागों में से एक ।
 दिनागम-पु० [सं०] प्रभात, तड़का ।
 दिनाघोस-पु० [सं० दिन-अघोष] सूर्य ।
 विनि-पु० [सं० दान] १ दान, पुण्य । २ भेंट । ३ देखो 'दिन' ।
 दिनियर-देखो 'दिनकर' ।
 विनी-वि० बहुत दिनों का पुराना ।
 दिनेस, दिनेसर-पु० [सं० दिनेश] सूर्य, रवि ।
 दिनेसात्मज-पु० [सं० दिनेशात्मज] १ शनि । २ यम । ३ सुप्रोव ।
 ४ कर्ण । ५ अश्विनीकुमार ।
 दिनेस्वर-पु० [सं० दिनेश्वर] सूर्य, दिनकर ।
 विन्न-वि० [सं० दत्त] दिया हुआ, दत्त (जैन) ।
 दिन्न, दिन्नि, विन्नी-देखो 'दिन' ।
 दिपणी (बो), विपणणी (बो)-देखो 'दीपणी' (बो) ।
 दिपह-देखो 'दीपक' ।
 विपाणी (बो), दिपावणी (बो)-क्रि० [सं० दीपो] १ चमकाना, प्रकाशित करना । २ प्रज्वलित करना । जलाना ।
 ३ आभा या कान्तियुक्त करना, देदीप्यमान करना ।
 ४ लावण्य युक्त करना । ५ प्रगट करना, प्रकाश में लाना ।
 ६ प्रसिद्ध करना ।
 दिव-१ देखो 'दिव' । २ देखो 'दिव्य' ।
 दिवस-देखो 'दिवस' ।
 दिम-देखो 'दिव' ।
 दिमसु-देखो 'दिवस' ।
 दिमांणियो-पु० [सं० द्विमान] अनाज का एक माप ।
 दिमाक-देखो 'दिमाग' । -दार='दिमागदार' ।
 दिमाग-पु० [अ०] १ मस्तिष्क । २ समझ, बुद्धि । ३ ज्ञान ।
 ४ अहंकार, गर्व । -दार-वि० अच्छे ज्ञान या बुद्धिवाला, बुद्धिमान । अभिमानो ।
 दिमागी-वि० [अ०] दिमाग का, दिमाग संबंधी ।
 दिमण-वि० [सं० दा] देने वाला, दाता ।
 दिपर-देखो 'देवर' ।
 दियासण, दियासणी-स्त्री० [सं० दीपक-प्रासन] दीपक रखने का स्थान, दीवार में लगा दीपक रखने का पत्थर ।
 दियासलाई-स्त्री० [सं० दीपशलाका] आग लगाने की तूलिका ।
 दिधी-देखो 'दीपक' ।
 दिर-पु० १ सितार का एक बोल । २ हाथी । ३ दुर्गंधन का एक भाई । ४ देखो 'दर' ।
 दिरक (ख)-पु० [सं० दक्ष] राजा दक्ष ।
 दिरब-देखो 'द्वय' ।
 दिरस-देखो 'दरम' ।

दिराणी (बो), दिरावणी (बो)-क्रि० दिलवाना, दिलावा, देने के लिये प्रेरित करना ।
 दिल-पु० [फा०] १ हृदय । २ मन, चित्त, जी । ३ कलेजा । ४ इच्छा, प्रवृत्ति ।
 दिलगीर-वि० [फा०] १ खिन्नचित्त, उदास । २ गोकुल दुःखी ।
 दिलगीराई, दिलगीरी-स्त्री० [फा०] १ उदासी, खिन्नता । २ रंज, दुःख ।
 दिलड़ी-देखो 'दिल' ।
 दिलचली-वि० [फा०] १ उदार, दानी । २ खूबमिजाज, मौजी । ३ पागल । ४ साहसी । ५ शूरवीर ।
 दिलचस्प-वि० [फा०] १ चित्ताकर्षक । २ मनोहर, सुन्दर । ३ रुचिकर । ४ आनन्ददायक ।
 दिलचस्पी-स्त्री० [फा०] १ रुचि, चाव, लगाव । २ आकर्षण ।
 दिलजमई-स्त्री० इतमिनान, तमल्ली ।
 दिलजळी-वि० अत्यन्त दुःखी, संतप्त ।
 दिलवराज-वि० [फा०] उदार चित्त, दानार ।
 दिलदार-वि० [फा०] १ रसिक, रसिया । २ प्रेमी । ३ मौजी । ४ मजाकिया । ५ उदार, दाता ।
 दिलवारी-स्त्री० [फा०] १ उदारता । २ रसिकता । ३ प्रेम पात्रना ।
 दिलदूठ-वि० दड़, मजबूत ।
 दिलपसंद-वि० [फा०] मन पसंद, रुचिकर । -पु० बेलबूटेदार एक वस्त्र विशेष ।
 दिलपाक-वि० [फा०] निष्कपट, पवित्र, स्पष्ट ।
 दिलप्यास-पु० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष ।
 दिलबर-वि० [फा०] जिससे प्रेम हो, प्रेमी, प्रिय, प्यारा ।
 दिलबहार-पु० [फा०] खूबशो रंग का एक भेद ।
 दिलमट्ठी, (ठी)-वि० [फा० दिल + सं० मष्ट] कृपण, कंठम ।
 दिलरखी-स्त्री० दासी ।
 दिलरुबा-वि० [फा०] १ मनमोहक । २ प्रिय, प्यारा । ३ प्रेमी ।
 दिलाणी (बो), दिलावणी (बो)-देखो 'दिराणी' (बो) ।
 दिलावर-वि० [फा०] १ शूरवीर, बहादुर । २ साहसी, उत्साही । ३ उदार, दानी ।
 दिलावरी-स्त्री० [फा०] बहादुरी, साहस ।
 दिलासा (सो)-स्त्री० १ ठाढ़स, श्रैयं, तमल्ली । २ आशवासन ।
 दिली-वि० [फा०] १ दिल का, दिल संबंधी । २ देखो 'दिल्ली' । -छात, छातपत='दिल्ली ब्यानपत' ।
 -नाथ='दिल्लीनाथ' । -पत, पति, पती, पत्ति='दिल्लीपति' । -मडळ='दिल्लीमंडल' । -रा, सर, -स्वर='दिल्लीस्वर' ।

दिलीप-पु० [सं०] १ मगीय के पिता षड्वाकुवंशीय एक राजा । २ देखो 'दिलीपति' ।
 दिलीप-स्त्री० एक प्रकार की बन्दुक ।
 दिलेदार-पु० एक प्रकार का कपाट ।
 दिलेर-देखो 'दिलावर' ।
 दिलेरी-देखो 'दिलावरी' ।
 दिलेस-देखो 'दिलीस' ।
 दिलेसर, दिलेसुर दिलेस्वर-देखो 'दिलीस्वर' ।
 दिली-देखो 'दिल्ली' ।
 दिलीगी-स्त्री० [फा०] १ हंसी, मजाक मखोल । २ दिल लगाने की क्रिया या भाव । — बाज-वि० मसखरा । मजाकिया । — बाजी-स्त्री० हंसी-मजाक करने की क्रिया ।
 दिल्ली-स्त्री० भारत का एक प्रमुख नगर । — छात छातपति-पु० दिल्ली का बादशाह । — नाथ-पु० दिल्ली का स्वामी । — पत, पति-पु० दिल्ली सम्राट । — मंडल-पु० भारतवर्ष हिन्दुस्तान । दिल्ली का क्षेत्र । — वई = 'दिल्लीपति' । — वाल-वि० दिल्ली का, दिल्ली संबंधी — पु० दिल्ली का निवासी । — स, सर, मुर, स्वर-पु० दिल्ली का स्वामी, सम्राट ।
 दिलेदार-पु० एक प्रकार का कपाट ।
 दिलेस-देखो 'दिलीस' ।
 दिलेसुर-देखो 'दिलीस्वर' ।
 दिली-देखो 'दिल्ली' ।
 दिव-पु० [सं० दिवम्] १ आकाश । २ स्वर्ग । ३ वन, जंगल । ४ सूर्य, रवि । ५ दिन, दिवस । ६ दीपक । ७ प्रकाश, चमक । ८ देखो 'दिव्य' । — उखद, ओकस, खद-पु० देवता, मुर । चातक पक्षी । — बिस्ट, बिस्टी = 'दिव्यद्विष्टी' । — पुर-पु० स्वर्ग, देवलोक ।
 दिवराट-१ देखो 'देवराज' । २ देखो 'दिवसपति' ।
 दिवराणी (बी), दिवरावणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।
 दिवसी-देखो 'दिवि' ।
 दिवली-देखो 'दीपक' ।
 दिवस-पु० [सं०] १ दिन, वासर । २ सूर्य, रवि । — ग्रंथ-पु० उत्तुक पक्षी । — वि० जिसे दिन में दिखाई न दे । — कर नाथ, प, पति, पती, मणि-पु० सूर्य, रवि । — मुख-पु० सवेरा, प्रातःकाल । — पुत्रा-स्त्री० एक दिन का बेटन ।
 दिवसेस-पु० [सं० दिवस-ईण] सूर्य, भानु ।
 दिवःपति-पु० [सं०] १ इन्द्र । २ दिवसपति, सूर्य ।
 दिवस्स-देखो 'दिवस' ।
 दिवांण-देखो 'दीवाण' । — ग्राम = 'दीवाणग्राम' । — खास = 'दीवाणखाम' ।

दिवांणगी-देखो 'दीवांणगी' ।
 दिवांणी-देखो 'दीवांणी' ।
 दिवांध-पु० [सं०] १ उल्लू । २ दिनोंधी का रोग । — वि० दिन में अंधा रहने वाला ।
 दिवान-देखो 'दीवाण' ।
 दिवांगिरी-देखो 'दीवांणी' ।
 दिवांणी-स्त्री० १ एक प्रकार का पेड़ । २ देखो 'दीवांणी' । ३ देखो 'दीवांती' ।
 दिवांणी-पु० १ दरबार । २ देखो 'दीवांती' ।
 दिवा-पु० [सं०] दिन, दिवस । — ग्रंथ० दिन के समय, दिन में ।
 दिवाकर-पु० [सं०] १ सूर्य, रवि । २ आक, मदार ।
 दिवाकीरती-पु० [सं० दिवाकीति] १ नाई, हज्जाम । २ चाण्डाल । ३ उल्लू ।
 दिवाकंस-देखो 'दिवोकस' ।
 दिवाचर-पु० [सं०] १ विड़िया । २ पक्षी । ३ चाण्डाल ।
 दिवजउ-पु० शोभा ।
 दिवाजी-देखो 'दवाजी' ।
 दिवादन-पु० [सं०] काक, कौआ ।
 दिवाणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।
 दिवानाथ-पु० [सं०] सूर्य, भानु ।
 दिवाप्रस्ट-पु० [सं० दिवापृष्ठ] सूर्य, भानु ।
 दिवाभिसारिका-स्त्री० [सं०] अपने प्रेमी से दिन में मिलने वाली नायिका ।
 दिवामण, दिवामणि-पु० [सं०] सूर्य, रवि ।
 दिवायर, दिवायर (रू)-देखो 'दिवाकर' ।
 दिवारणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।
 दिवारूप-पु० [सं० दिवरूप] आकाश, व्योम ।
 दिवाल-देखो 'दिवाल' ।
 दिवाळगी-स्त्री० देने की क्रिया या भाव ।
 दिवालप-देखो 'देवालप' ।
 दिवावणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।
 दिवि, दिवी-पु० [सं०] १ नीलकंठ पक्षी । २ देवी । ३ राणी, राजमहिषी ।
 दिवीओक-देखो 'दिवोकस' ।
 दिवीरथ-पु० [सं०] पुरुवंशीय एक राजा ।
 दिवीसत-पु० [सं० दिविषत्] देव, देवता ।
 दिवीस्टी-पु० [सं० दिविष्ठ] १ देव, देवता । २ स्वर्ग में रहने वाला, स्वर्गवासी । ३ ईशानकोण के एक देश का नाम ।
 दिवेस-पु० [सं० दिवेश] १ सूर्य । २ दिग्पाल ।
 दिवोकस (कसा)-पु० [सं० दिवोकस] १ देवता । २ चातक पक्षी ।
 दिवोदास-पु० [सं०] चंद्रवंशी राजा भीमय्य का पुत्र ।

दिवोलका-स्त्री० [सं०] दिन में गिरने वाली उल्का ।

दिवो-देखो 'दीपक' ।

दिवोका-देखो 'दिवोकम' ।

दिव्य-वि० [सं०] १ प्रदुभुत, अनोखा, चमत्कारपूर्ण ।
२ स्वर्ग से संबंधित, स्वर्गीय । ३ अच्छा, बढ़िया ।
४ पवित्र, उत्तम । ५ देवी । ६ सुन्दर, मनोहर ।
७ अलौकिक । ८ प्रकाशमान, चमकीला । -पु० १ अलौकिक पुरुष । २ यम । ३ स्वर्गीय जीव । ४ यव, जव । ५ लौंग ।
६ चन्दन । -कवच-पु० अंगरक्षक मंत्र या स्तोत्र ।
-गंध-पु० लौंग । गंधक । -गंधा-स्त्री० बड़ी इलायची ।
एक शाक विशेष । -गायन-पु० गंधर्व । -वल्लु-पु०
जान चक्षु । अंधा । बन्दर । ऐनक, चश्मा । -द्रस्टी-स्त्री०
सूक्ष्म या अंतरिक्ष में देखने की शक्ति । ज्ञान दृष्टि ।
-धरमी-वि० स्वभाव व आचरण से पवित्र, शीलवान ।
-नगर-पु० गेरावनी नगरी । -नदी-स्त्री० एक नदी
विशेष । -नारी-स्त्री० देवांगना । अप्सरा । -पंचांग्रत,
पचांग्रत-पु० घी, दूध, दही, मक्खन और चीनी ।
-पमुना-स्त्री० एक नदी का नाम । -रत्न-पु०
चितामणि रत्न । -सरिता-स्त्री० आकाश गंगा ।
-सांनु-पु० एक विश्वदेव । -सार-पु० साल
वृक्ष । -सूरि-पु० रामानुज सम्प्रदाय के एक आचार्य ।
-स्त्री-स्त्री० अप्सरा । -स्रोत-पु० सब कुछ सुनने
वाला कान ।

दिव्यबाह-स्त्री० [सं०] वृष भानु गोप की छः कन्याओं में से एक ।
दिव्यांगना (ना)-स्त्री० [सं० दिव्यांगना] १ देव वधू ।
२ अप्सरा ।

दिव्यांगु-पु० [सं० दिव्यांगु] सूर्य ।

दिव्या-स्त्री० [सं०] १ स्वर्गीय नायिका विशेष । २ बांभ ।
३ महामेदा । ४ सफेद दूध । ५ हड़, हर । ६ कपूरकचरी ।
७ ब्राह्मी जड़ी । ८ शतावर । ९ बड़ाजीरा । १० आंवला ।

दिशविष्य-पु० [सं०] देवत्व गुणों वाला नायक विशेष ।

दिशविष्या-स्त्री० [सं०] देवत्व गुणों वाली नायिका विशेष ।

दिश्यासन-पु० [सं०] तंत्र में एक आसन ।

दिश्यास-पु० [सं०] देवता से प्रदत्त आयुध ।

दिसंतर-पु० [सं० देशांतर] १ दूर का देश, प्रदेश । २ विदेश
परदेश ।

दिसंतरी-वि० १ गरदशी, विदेशी । २ दिशा संबंधी ।
३ दिशांतरी ।

दिस-देखो 'दिमा' ।

दिसड-क्रि० वि० [सं० दिशा] ओर, तरफ ।

दिसड़ी, दिसड़ी-देखो 'दिमा' ।

दिसट-१ देखो 'दुस्ट' । २ देखो 'द्रस्टी' ।

दिसटांत-देखो 'द्रस्टांत' ।

दिसटांठ(ळी)-देखो 'देठाळी' ।

दिसपति-पु० [सं० दिशापति] दिक्पाल । दिग्गज ।

दिसती-क्रि० वि० १ तरफ से, ओर से । २ तरफ, ओर ।
३ दिशा को ।

दिसली-वि० (स्त्री० दिसली) दिशा संबंधी, दिशा का ।

दिसांतरी-पु० १ डंक ऋषि के वंशज एक जाति । २ डंग
जाति का व्यक्ति ।

दिसा-स्त्री० [सं० दिशा] १ क्षितिज वृत्त के चार भागों में
से एक भाग । दिशा, क्षितिज अंचल । २ चार की संख्या ४ ।
३ दश की संख्या १० । ४ देखो 'दिमा' । ५ देखो 'दीक्षा' ।
-क्रि० वि० ओर तरफ ।

दिसागज-पु० [सं० दिशागज] दिग्गज, दिक्पाल ।

दिसाचक्षु-पु० [सं० दिशाचक्षु] गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।

दिसाजय-पु० [सं० दिशाजय] दिग्विजय ।

दिसाटी-देखो 'दिसोटी' ।

दिसादिसी-क्रि० वि० चारों ओर ।

दिसापाल-पु० [सं० दिशापाल] दिक्पाल ।

दिसावर-पु० १ एक वंश्य जाति । २ देखो 'दिसावर' ।

दिसाभूत, (भ्रम)-पु० [सं० दिशाभ्रम] दिशा का भ्रम, भूत ।

दिसावड़-पु० कपड़ा बुनने का अन्तिम छोर ।

दिसावर-पु० [सं० दिमावर] १ दूर का देश, परगना
प्रदेश । २ विदेश ।

दिसावरी (रु)-वि० दूर देश का, दूर देश संबंधी । विदेशी ।

दिसावळ (ळी)-वि० दिशा भ्रमित ।

दिसाभूत-पु० [सं० दिशाभूत] यात्रा का अनिष्टकारी मुहूर्त ।

दिसि-देखो 'दिमा' ।

दिसिदुरव-पु० [सं० दिशा द्विरद] दिग्गज ।

दिसिनायक-पु० [सं० दिशानायक] दिक्पाल ।

दिसिनियम-पु० जैन साधुओं का एक नियम ।

दिसिप-देखो 'दिसपति' ।

दिसिराज-पु० [सं० दिशाराज] दिक्पाल ।

दिसो-देखो 'दिसा' ।

दिसोटी-देखो 'दिसोटी' ।

दिसो-देखो 'दिसा' ।

दिसट-देखो 'द्रस्टि' ।

दिसटांत-देखो 'द्रस्टांत' ।

दिसि, दिसी-देखो 'द्रस्टि' ।

दिसती-देखो 'दस्तो' ।

दिसा-देखो 'दिसा' ।

विहंसा-वि० [का०] देने वाला दाता ।

विह-१ देखो 'दीह' । २ देखो 'देह' ।

विहड़ी (डो)-देखो 'दिवस' ।

विहरी-देखो 'देवरी' ।

विहांगो-देखो 'दैनगी' ।

विहाड़-देखो 'दिवस' ।

विहाड़ (डो)-क्रि० वि० [सं० दिवस] १ नित्य हमेशा । २ दिन में । ३ देखो 'दीहाड़ी' ।

विहाड़ी, विहाड़, विहाड़ि, (डो, डी)-१ देखो 'दिवस' । २ देखो 'दीहाड़ी' ।

विहात-देखो 'दिहात' ।

विहातो-देखो 'दिहाती' ।

विहि-देखो 'दम' ।

वी-पु० १ अमृत । २ मूर्ध्नि । ३ स्वामिकार्तिकर्ष । ४ दिन । ५ देखो 'दी' । -वि० दानी, उदार । -प्रत्य० वृष्ठी या संबन्ध का चिह्न, की ।

वीघट-देखो 'दीघट' ।

वीघण-वि० [सं० दा] देने वाला, दाता ।

वीघाळी-देखो 'दीघाळी' ।

वीघी-देखो 'दीघी' ।

वीकरी-देखो 'डीकरी' ।

वीकरी, वीकिरउ-देखो 'डीकरी' ।

वीकोडी, वीकोळी-स्त्री० दामी ।

वीक्षक-पु० [सं०] दीक्षा देने वाला गुरु ।

वीक्षांत-पु० [सं०] १ शिक्षा-दीक्षा की समाप्ति, पूर्णता । २ अवभृत् यज्ञ ।

वीक्षा-स्त्री० [सं०] १ गुरु या आचार्य का नियम पूर्वक संन्यास-पदेश । २ गुरु द्वारा उपदेशित संन्यास । ३ गायत्री मंत्र का उपदेश । उपनयन संस्कार । ४ पूजन । ५ यज्ञ का अनुष्ठान, यज्ञ कर्म । ६ संस्कार । ७ आत्म समर्पण । -गुरु-पु० संन्यासपदेश करने वाला गुरु । -पति-पु० यज्ञ का रक्षक, सोम ।

वीक्षित-वि० [सं०] १ दीक्षा प्राप्त, उपदेशित । २ जिसने संन्यास पूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान किया हो । ३ यज्ञ के लिए उद्यत । ४ संस्कारित । -पु० एक ब्राह्मण वर्ग ।

वीख-१ देखो 'दीक्षा' । २ देखो 'दृष्टि' ।

वीखणी (डो)-क्रि० [सं० दृष्टि] १ दृष्टि गोचर होना, दिखाई देना । २ समझ में आना । ३ आभास होना, पूर्वाभास होना । ४ दीक्षा देना ।

वीमेस-पु० [सं० दिक्-ईश] दिक्पाल ।

वीठ-स्त्री० [सं० दृष्टि] १ नेत्र ज्योति, दृष्टि, नजर । २ आंख, नेत्र । ३ दोष दृष्टि, कुरदृष्टि । -अव्य० १ प्रत्येक पर, प्रति व्यक्ति या वस्तु के अनुसार । २ देखो 'दीठी' ।

वीठउ-देखो 'दीठी' ।

वीठि-स्त्री० [सं० दृष्टि] १ नेत्र, नयन । २ देखो 'दीठ' ।

वीठणी-पु० [सं० दृष्टि] नजर लगने से बचाने के लिए मुंह पर लगाया जाने वाला काला टीका ।

वीठोड़ी, वीठोडी, वीठी-वि० [सं० दृष्टि] (स्त्री० दीठोड़ी, डी) देखा हुआ ।

वीण-देखो 'वीन' ।

वीत, वीता-पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य, भानु । २ रविवार ।

वीव-१ देखो 'दीदार' । २ देखो 'दीन्ही' ।

वीवनी-अव्य० [फा०] देखकर ।

वीवम-स्त्री० [फा०] १ दृष्टि । २ दर्शन, दीदार ।

वीदवान-पु० निशाना मिलाने का, बन्दूक पर लगा लोहे का गुटका ।

वीदा-स्त्री० [फा०] दृष्टि, नजर ।

वीदार-पु० [फा०] १ दर्शन । २ छवि । ३ मुख, मुखकृति । ४ अवलोकन । ५ भेंट, साक्षात्कार ।

वीदार (रू)-वि० दर्शनीय, देखने योग्य ।

वीदी-स्त्री० बड़ी बहन ।

वीध-देखो 'दीन्ही' ।

वीधति(ती)-स्त्री० [सं० दीधिति] १ किरण । २ चमक, कांति ।

वीधल-वि० [सं० दा] दिया हुआ, दत्त ।

वीधु, (धु, धू), वीधोड़ी, वीघी-देखो 'दीन्ही' ।

वीन-वि० [सं०] १ हीन दशा का, गरीब, दरिद्र । २ दुःखी, कातर । ३ नम्र, विनीत । ४ दयनीय । ५ उदास, खिन्न । ६ कायर । ७ भाग्यहीन, अभाग । ८ विवश । -पु० [अ०] १ धर्म, मजहब । २ मत । ३ विश्वास । ४ वर पक्ष की ओर से कन्या के पिता को दिया जाने वाला धन । ५ तगर पुष्प । ६ देखो 'दीन्ही' । -बयाळ, दयाळ, दयाळी-वि० दीन पर दया करने वाला । ईश्वर । -दार-वि० धार्मिक । -दारी-स्त्री० धर्म पर विश्वास । -बंधू, बंधू, बंधी-पु० ईश्वर । गरीबों का सहायक, प्याज । वीनता, (ई)-स्त्री० १ नम्रता, अजीजी । २ कातरता, आर्त भाव । ३ उदासी, खिन्नता । ४ दरिद्रता गरीबी । ५ प्रार्थना । ६ करुणा, दया ।

वीनती-स्त्री० [सं० वीनता] विनती, प्रार्थना ।

वीनदुनी-स्त्री० [अ० दीन-दुनिया] लोक-परलोक ।

वीनानाथ-पु० [सं० दीन-नाथ] १ ईश्वर का एक नाम । २ दीनों का स्वामी या रक्षक ।

वीनार-पु० [फा०] १ सोने या चांदी का सिक्का । २ स्वर्ण मुद्रा ।

वीनोड़ी, (डो) वीनी-देखो 'दीन्ही' ।

वीन्ह, वीन्हउ, वीन्होड़ी, वीन्ही-वि० दत्त, दिया हुआ, प्रदत्त ।

दीपंतो-वि० [सं० दीप्त] प्रकाशित, चमकता हुआ । दीप्तिमान ।

दीप-पु० [सं०] १ दीपक, चिराग । २ ज्योति । ३ इन्द्र । ४ छन्द विशेष । ५ एक अन्य छन्द विशेष । ६ छप्पय छंद का ६८ वां भेद । ७ देखो 'दीप' ।

दीपक-पु० [सं० दीपक] १ चिराग, दीप, ज्योति । २ एक अलंकार विशेष । ३ एक राग विशेष । ४ एक ताल का नाम । ५ एक मात्रिक छंद विशेष । ६ एक डिगल गीत विशेष । ७ तेलियो सारणोर का एक भेद । ८ केसर । ९ पीलाङ्ग । १० रोजनी, प्रकाश । ११ कामदेव की उपाधि । १२ बाज पक्षी । —**माळा-स्त्री०** दीप पंक्ति । दीपक अलंकार का एक भेद । एक वर्ण वृत्त । —**सुत-पु०** काजल । कज्जल ।

दीपकमाळ-स्त्री० [सं० दीपमालिका] १ दीपावली । २ दीपों की पंक्ति ।

दीपकाळ-पु० [सं० दीपः + काल] संध्या का समय, संध्याकाल ।

दीपक-देखो 'दीपक' ।

दीपवकी, दीपग-देखो 'दीपक' ।

दीपगर (घर)-पु० [सं० दीप गृह] १ दीपकों का समूह । २ दीपक रखने का कक्ष ।

दीपचंदी-स्त्री० एक ताल विशेष ।

दीपण-देखो 'दीपन' ।

दीपणी-वि० [सं० दीपी] (स्त्री० दीपणी) १ चमकने वाला । २ जग जमगाने वाला, रोशन होने वाला । ३ देदीप्यमान होने वाला । ४ प्रज्वलित होने वाला । ५ शोभित होने वाला । ६ लावण्य युक्त होने वाला । ७ प्रसिद्ध होने वाला । ८ प्रगट होने वाला ।

दीपणी (बी)-क्रि० [सं० दीपी] १ चमकना, जगमगाना, प्रकाशित होना । २ रोशन होना, प्रकाशित होना । ३ देदीप्यमान होना । ४ प्रज्वलित होना । ५ शोभित होना, शोभा देना । ६ लावण्ययुक्त होना, तुर चढ़ना । ७ प्रसिद्ध होना, ख्याति प्राप्त करना । ८ प्रकट होना ।

दीपत-वि० [सं० दीपितकर] १ रमणीय, सुन्दर, अच्छा । २ देखो 'दीप्ति' ।

दीपति(ती)-देखो 'दीप्ति' ।

दीपती-स्त्री० [सं० दीपी] (स्त्री० दीपती) १ चमकता हुआ । २ कानिमान, दीप्तिमान । ३ प्रकाशित, रोशन । ४ प्रज्वलित । ५ शोभित । ६ प्रसिद्ध ।

दीपदध-स्त्री० [सं० उदधिदीप] जमीन ।

दीपदान-पु० [सं० दीपः+दान] १ दीप रखने का स्थान । दीपगृह । २ लकड़ी या घातु का, दीप जलाने का उपकरण । ३ देवता के सामने दीप जलाने का कार्य । ४ दीप मालिका विशेष ।

दीपदानी-स्त्री० दीपक का सामान रखने की डिबिया ।

दीपधुज (ध्वज)-पु० [सं० दीपध्वज] कज्जल, काजल ।

दीपन-पु० [सं०] १ प्रकाशित या प्रज्वलित करने का कार्य । २ भूख उभारने की क्रिया । ३ केसर । ४ तगर की जड़ । ५ मयूर शिखा का वृक्ष । ६ प्याज । —**वि०** जठराग्निवर्धक ।

दीपनगण-पु० जठराग्नि बढ़ाने वाला पदार्थ ।

दीपनम-पु० [सं०] तारा, नक्षत्र ।

दीपनी-स्त्री० [सं०] १ मेथी । २ अजवाइन ।

दीपमाळ, (माळका, माळा, माळिका, माळी)-स्त्री० [सं० दीप मालिका] १ दीप पंक्ति । २ दीपावली, दीवाली ।

दीपवती-स्त्री० [सं० दीपवती] १ पृथ्वी । २ नदी ।

दीपवर्तिक-पु० [सं० दीपवर्तिक] दीपक संभालने वाला ।

दीपसुत-पु० [सं०] काजल, कज्जल ।

दीपसुरलीक-पु० [सं० सुरलीक दीप] इन्द्र ।

दीपाऊ-वि० [सं० दीपी] १ चमकने वाला । २ सुन्दर, मनोहर ।

दीपाणी (बी)-देखो 'दिपाणी' (बी) ।

दीपायण, दीपायन-देखो 'द्वेपायन' ।

दीपारती-स्त्री० दीप आरती ।

दीपावणी (बी)-देखो 'दिपाणी' (बी) ।

दीपावती-स्त्री० [सं०] १ एक रागिनी विशेष । २ दीपावली । [सं० दीपवती] ३ जिस पर दीप स्थिर हो ।

दीपावळि (ळी)-स्त्री० [सं० दीपः+अवली] १ दीप पंक्ति या श्रेणी । २ दीवाली त्योहार ।

दीपिका-स्त्री० [सं०] १ ममाल, पत्नीता । २ एक रागिनी विशेष । —**वि०** उजाला करने वाली ।

दीपित-वि० [सं०] १ चमकता हुआ, प्रकाशित, दीप्त । २ उत्तेजित ।

दीपोत्सव-पु० [सं०] दीवाली त्योहार ।

दीप्त-वि० [सं०] १ चमकता हुआ, जगमगाता हुआ । प्रकाशित । २ जलता हुआ, प्रज्वलित । ३ उत्तेजित । —**पु०** १ सुवर्ण, मोना । २ मिह । ३ नीबू का पेड़ ।

दीप्ताग्नि-वि० [सं०] १ प्रबल पाचन शक्ति वाला । २ तेज भूख वाला, भूखा ।

दीप्ति-स्त्री० [सं०] १ आभा, चमक, कान्ति । २ उजाला प्रकाश, रोशनी । ३ छवि, शोभा । ४ किरण, रश्मि । ५ सुन्दरता । ६ चपड़ी, लाव । —**मान-वि०** प्रकाशमान कान्तियुक्त । प्रकाशित ।

दीप्य-दि० [सं०] १ जलाने योग्य, जलने योग्य ।
 २ चमकने योग्य ।
 दीप्य-पु० [सं० दीप्यते] दीपक में जलाने का तेल ।
 दीप, दीपक-स्त्री० [फा०] चौंटी की तरह का सफेद कीड़ा, बल्मीक ।
 दीपावलि-स्त्री० दिशा भ्रम ।
 दीपावली, दीपासूली-वि० (स्त्री० दीपावली) दिशा भ्रमित ।
 दीपी-पु० [सं० दीप] दीपक, दीप, चिराग ।
 दीरघ, दीरघ, दीरघड़ी-वि० [सं० दीर्घ] १ बड़ा, विनाल ।
 २ महान । ३ लम्बा, चिरलम्बा । ४ स्थूल, मोटा ।
 ५ भारी । ६ गंभीर, ऊँचा । ७ ह्रस्व का उल्टा ।
 -पु० १ ऊँचा स्वर । २ ऊँट । ३ गुरु वर्ण । ४ लंबा गमय, चिरकाल । —करण-पु० गधा, खर । —वि० लंबे कान वाला । —काय-वि० बड़े डोल-डोल वाला ।
 —ग्रीव-पु० ऊँट । —छल-पु० सिंह, शेर । —जीवो-वि० लम्बी आयु वाला । —तपो-वि० बड़ा तपस्वी ।
 —वरसी-वि० दूरदर्शी । विचारवान । —पु० गिद्ध । भालू ।
 —निस्वास-पु० दुःख भरी लंबी श्वास । —पत्र, पत्रक-पु० प्याज । —पत्रिका-स्त्री० सफेद वस्त्र । जाल पर्याय । —पिस्ट, पीठ-पु० मर्प, नाग । हाथी, गज । —फल-पु० अमलतास । —बाहु-वि० आजनबाहु । —पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
 —मास-पु० हाथी । —मुख-पु० एक पक्ष । —वि० बड़े मुख वाला । —मूल-पु० एक प्रकार की घास । एक लता विशेष । —वर्ण-वि० जिनमें चिरकाल तक यज्ञ किया हो ।
 —बाहु-‘दीर्घबाहु’ । —सूत्रता-स्त्री० सुस्ती, आलस्य । धीरे कार्य करने की आदत । —सूत्री-वि० आलसी, प्रमादी । धीरे कार्य करने वाला । —स्थली, स्थनी-वि० बड़े-बड़े स्तन वाली । —स्वर-पु० द्विमात्रिक स्वर, ऊँचा स्वर ।
 दीरघरसन-पु० [सं० दीर्घ रसन] मर्प, साँप ।
 दीरघरोम्भो-पु० [सं० दीर्घरोमन] १ भालू । २ शिव का एक अनुचर ।
 दीरघा-वि० [सं० दीर्घा] बड़े आकार वाली । —स्त्री० लम्बी गेलिरी ।
 दीरघायु-वि० [सं० दीर्घायु] चिरजीव, लंबी आयु वाला ।
 दीरघि-स्त्री० [सं० दीर्घ] लम्बाई, दीर्घता ।
 दीरघिका-स्त्री० [सं० दीर्घिका] १ यापिका । २ भील ।
 दीरघ-देखो ‘दीरघ’ ।
 दीव-पु० [सं० दिवस] १ सूर्य । २ देखो ‘दिव’ ।
 ३ देखो ‘दीप’ । ४ देखो ‘दीप’ ।
 दीवड, दीवक-देखो ‘दीपक’ ।
 दीवड़की, दीवड़ली-देखो ‘दीवड़ी’ ।

दीवड़ली-देखो ‘दीपक’ ।
 दीवड़ी, दीवड़ी-पु० [सं० दृति] १ बकरे की खाल या केन दास की बनी, पानी रखने की लंबी थैली । २ एक पात्र विशेष ।
 दीवट-स्त्री० [सं० दीपस्थ] दीपक रखने का ढण्ड ।
 दीवटिउ, दीवटिघो, दीवटिघड दीवटीउ, दीवटीघो, दीवटीघउ, दीवटीघी, दीवटी-पु० [सं० दीपवतिका] १ कटोरीनुमा मिट्टी का दीपक । २ दीपक धामने वाला, मशालची ।
 ३ देखो ‘दीपक’ ।
 दीवड़-देखो ‘दीवड़ी’ ।
 दीवडु (डू, डी)-१ देखो ‘दीपक’ । २ देखो ‘दीवड़ी’ ।
 दीवळ-देखो ‘दीमक’ ।
 दीवलउ-देखो ‘दीपक’ ।
 दीवलियो-१ देखो ‘दीपक’ । २ देखो ‘दीवटिघो’ ।
 दीवली-देखो ‘दीपक’ ।
 दीवाण-पु० [फा० दीवान] १ राजमभा, दरबार । २ राज सभा का स्थान, सभा स्थल । ३ राजा का मंत्री, प्रधान, वजीर । ४ स्वामी, अधिपति । ५ कचहरी, न्यायालय ।
 ६ उदयपुर के महाराणा की उपाधि । ७ शिव, महादेव । ८ मंदिर । ९ ईश्वर, परमात्मा । —वि० [फा० दीवान] १ मस्त । २ वीर, बहादुर । ३ पागल । ४ देखो ‘दइवाण’ ।
 —ग्राम-पु० ग्राम सभा का स्थल । ग्राम दरबार ।
 —खानो-पु० बैठक का बाहरी कक्ष । —खालसी-पु० राजा या दरबार की मुहर रखने वाला अधिकारी ।
 —खास-पु० खास-खास आदमियों की सभा, विशेष सभा ।
 —गिरी-स्त्री० दीवान का कार्य । दीवान का पद ।
 दीवाणी-स्त्री० [फा० दीवानी] १ दीवान का कार्य व पद ।
 २ जमीन, जायदाद, द्रव्य संबंधी दावा । ३ ऐसे दावों का निर्णय करने वाला न्यायालय ।
 दीवाणी-देखो ‘दीवाणी’ ।
 दीवान-देखो ‘दीवाण’ ।
 दीवानो-वि० [फा० दीवानः] १ पागली, बावली, विक्षिप्ता ।
 २ देखो ‘दीवाणी’ ।
 दीवानो-वि० [फा० दीमानः] (स्त्री० दीवानी) १ पागल, विक्षिप्त । २ उत्मत्ता, मस्त ।
 दीवाड़-वि० [सं० दा] देने वाला दाता । दातार ।
 दीवासाही-स्त्री० एक जल पात्र विशेष ।
 दीवाटड़ी-स्त्री० मिट्टी का दीप ।
 दीवाधरी-वि० [सं० दीप धारित] दीपक धामने वाला ।
 दीवार, दीवाल-स्त्री० [फा० दीवार] १ पत्थर आदि की खड़ी चुनाई । २ परदा, आड, घेरा । ३ पात्र या किसी वस्तु का खड़ा भाग । ४ मनह से वारों ओर उठा हुआ कोई भाग ।

दीवाली-स्त्री० [सं० दीप-प्रवली] १ दीप पंक्ति, दीप मालिका । २ कात्तिक की अमावस्या को होने वाला प्रसिद्ध त्योहार । ३ इस त्योहार पर की जाने वाली दीपकों की रोशनाई ।

दीवाली-१ देखो 'देवाली' । २ देखो 'दीवाली' ।

दीवी-स्त्री० [सं० दीपिका] १ दीपक जलाकर रखने का, लकड़ी या धातु का बना उपकरण । २ मशाल, पलीता । ३ देखो 'दीपक' । —साङ्ग-पु० भाइनुमा रोशनदान ।

दीवी-देखो 'दीपक' ।

दीस-पु० [सं० दिवस] १ दिन, वासर, । २ सूर्य रवि ।

दीसणी (बी)-क्रि० [सं० दृष्ट] १ दिखाई देना, दृष्टि गोचर होना । दीखना । २ पूर्वाभास होना । ३ समक्ष में आना ।

दीसा-क्रि० वि० १ लिए, वास्ते, बाबत । २ देखो 'दसा' ।

दीसी-देखो 'दिसा' ।

दीसोटो, दीसोटो-देखो 'देसोटो' ।

दीह-पु० [सं० दिवस] १ सूर्य । २ देखो 'दिवस' । ३ देखो 'दीरघ' । ४ देखो 'द्रष्टि' ।

दीहड़, दीहड़उ, दीहड़ो-देखो 'दिवस' ।

दीहणी (बी)-देखो 'दीसणी' (बी) ।

दीहपत (पति, पती)-देखो 'दिवसपति' ।

दीहर-देखो 'दीरघ' ।

दीहाड़ी-पु० [सं० दिवस] दिन, वासर । —क्रि० वि० नित्य, प्रतिदिन, रोजाना ।

दीहाड़ी (डी)-देखो 'दिवस' ।

दीहि, दीह, दीहें, दीह-देखो 'दिवस' ।

दीहो-देखो 'दिवस' ।

दुंकारव-पु० दहाड़, गर्जना ।

दुंग-स्त्री० चिनगारी ।

दुंछदुंही (दुडी)-पु० ढोलनुमा एक वाद्य विशेष ।

दुं-पु० [सं० दृढ] १ युद्ध । २ मल्ल युद्ध । ३ दो योद्धाओं का युद्ध । ४ घुरम जोड़ा । ५ कलह । ६ गुप्त बात, रहस्य । ७ उपद्रव, उत्पात, विद्रोह । ८ एक प्रकार का समान । ९ जानवरों का समूह । १० सन्देश । ११ दुंदुभी । १२ तोद ।

दुंभ, दुंभि, दुंभी-देखो 'दुंदुभि' ।

दुंछो-देखो 'धुंछो' ।

दुंभव-देखो 'दुंदुभि' ।

दुंवाळ-स्त्री० १ दुताली बन्दूक । २ देखो 'धुंवाळी' ।

दुंभ (भि, भी)-स्त्री० [सं० दुंदुभि] १ नगाड़ा, धौसा । २ एक राक्षस का नाम ।

दुंदुमार-पु० [सं० धुंघुमार] राजा त्रिजंकु का पुत्र ।

दुंहुह, दुंदुहि-पु० [सं० दुंडभ] १ पानी का सांप ।

२ देखो 'दुंदुभि' ।

दुंधभी-देखो 'दुंदुभि' ।

दुंधमार-देखो 'दुंदुमार' ।

दुधु-पु० मधु दैत्य का पुत्र ।

दुंधुबी-देखो 'दुंदुभि' ।

दुंब-पु० [फा० दुंब] मेद पुच्छ वाला मेढा ।

दुंधायत-पु० मुवाजा देने वाला भूस्वामी ।

दुंधी-देखो 'दुंब' ।

दुंबी-पु० १ सामंतों द्वारा सरकार को दिया जाने वाला कर ।

२ लूट के माल का, बादशाह को दिया जाने वाला भाग ।

३ टीबा, भीडा ।

दुंह-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दु-पु० [सं० द्यु] १ दिन, दिवस । २ पुत्र । ३ हाथ । ४ हाथी ।

५ मूंड । ६ दुख । —वि० १ दरिद्र । २ प्रचंड ।

३ प्रधान । ४ दो ।

दुधंगम-वि० [गं० दुग्म] कठिन ।

दुधट-देखो 'दुष्ट' ।

दुधसपाह, दुधसपो-देखो 'दोसपो' ।

दुध-स्त्री० [ग्र०] प्रार्थना, विनती, याचना ।

दुआइती-स्त्री० दवायती ।

दुघाई-१ देखो 'दवाई' । २ देखो 'दुहाई' ।

दुघागोई-स्त्री० प्रार्थना करने की क्रिया या ढंग ।

दुघापर-देखो 'हापर' ।

दुघार-देखो 'द्वार' ।

दुघारीमती-देखो 'द्वारामती' ।

दुघारी-१ देखो 'द्वार' । २ देखो 'दूवारी' ।

दुघाळी-स्त्री० [फा० ढाल] चमड़े का तस्मा, पट्टा ।

दुघाळी-पु० १ एक प्रकार का बेलन । २ देखो 'द्वाली' ।

दुइ-वि० [सं० द्वि] दो ।

दुइज-देखो 'दूज' ।

दुइण-देखो 'दुरजण' ।

दुई-१ देखो 'द्वैत' । २ देखो 'दुइ' ।

दुधे-वि० [सं० द्वि, द्वै] उभय, दोनों ।

दुधो-पु० [सं० द्वि] १ दो का अंक । २ दो की संख्या ।

३ अपने पूर्वज के समान गुणों वाला व्यक्ति ।

४ देखो 'दूवी' । —वि० दूसरा, द्वितीय ।

दुइहा-वि० तुच्छ, नीच, कमीना ।

दुइघी-पु० दो कड़ों वाला पात्र ।

दुइड़ी-पु० १ तबला । २ तबले के समान ही एक अन्य वाद्य ।

३ दो दमड़ी, छदाम ।

दुकट. (ट्ट)-वि० भयंकर, विकट ।

दुकड़ी-देखो 'दुकड़ी' ।

दुकरणी-देखो 'दुखणी' ।

दुकणो-पुं० [सं० द्विकण] एक साथ दो दाने निकालने वाली ज्वार ।

दुकर-वि० [सं० दुष्कर] १ कठिन, मुश्किल । २ दुष्ट ।

दुक्क-वि० [सं० द्वि-कलि] १ आततायी, दुष्ट ।
२ देखो 'द्विक्क' । ३ देखो 'दुक्क' ।

दुकान-स्त्री० [फा० दुकान] वस्तुओं के क्रय-विक्रय का स्थान केन्द्र । हाट । —दार-पुं० व्यापारी । बनिया । —दारी-स्त्री० दुकान पर बैठकर सामान बेचने का कार्य ।

दुकाणी (बो)-देखो 'दुखानी' (बो) ।

दुकार-देखो 'दुत्कारणी' (बो) ।

दुकारणी (बो)-देखो 'दुत्कारणी' (बो) ।

दुकाळ-पुं० [सं० दुष्काल] १ दुर्भाग, अकाल । २ अभाव, कमी । ३ बुरा समय । ४ प्रलयकाल । ५ शिवजी की उपाधि ।

दुकाळी-वि० [सं० दुष्काली] १ दुःखी संतप्त । २ अभावग्रस्त ।

दुकावणी (बो)-देखो 'दुखानी' (बो) ।

दुकिस्त-स्त्री० दो तरफ़ी हार ।

दुकुल-पुं० [सं० दुक्कल] १ दम्भ, रेशमी वस्त्र । २ दुपट्टा, ओढ़नी ।

दुक्कर, दुक्क-देखो 'दुकर' ।

दुत्कार-देखो 'दुत्कार' ।

दुक्काळी-देखो 'दुकाळणी' ।

दुक्की-स्त्री० [सं० द्विक्] दो बूँटी वाला ताश का पत्ता ।

दुक्की-वि० [सं० द्विक्] १ दो, दूसरा । २ जो अकेला न हो ।

दुक्ख-देखो 'दुख' ।

दुखित-देखो 'दुखित' ।

दुक्कत-पुं० [सं० दुष्कृत] १ पाप । २ कुकर्म, कुकृत्य ।

दुक्कति, दुक्कती, दुक्कती-वि० [सं० दुष्कृति] १ पापी ।
२ कुकर्मी । ३ देखो 'दुक्कत' ।

दुखंड, दुखंडी-वि० [सं० द्विखण्ड] १ दो खण्डों वाला, दो भागों वाला । २ दो मंजिला । —पुं० दो भाग या खण्ड ।

दुख-पुं० [सं० दुःख] १ मानसिक या शारीरिक कष्ट, पीड़ा ।
२ शोक, रंज । ३ तकलीफ, परेशानी, ४ आफत, व्याधि ।
५ क्लेश । ६ संसार । ७ पाप । ८ असुविधा । -वि०
१ पीड़ा कारक, कष्टदायक । २ अप्रिय । ३ कठिन ।
४ प्रतिकूल । ५ तप्त, गर्म । ६ काना, श्याम ।
—घाती-वि० दुःखों को मिटाने वाला ।

दुखड़ी-पुं० [सं० दुःख] १ दुःखभरी गाथा, वृत्तान्त । २ अपने कष्ट का बखान । ३ देखो 'दुख' ।

दुखण-पुं० दुःखने की क्रिया या भाव ।

दुखणवाई-स्त्री० [सं० दुःख-खाद] एक पसंगा विशेष ।

दुखणियो-देखो 'दुखणी' ।

दुखणी (बो)-देखो 'दुखणी' (बो) ।

दुखतर-स्त्री० [सं० दुःखतर] बेटी, कन्या ।

दुखती-वि० [सं० दुःखतृ] दर्द देने वाला, दुःखदायी ।

दुखथी-वि० दुःख पाने वाला, दुःख भोगने वाला ।

दुखथळ-पुं० [सं० दुःख-स्थल] १ दुःखदाई या कष्टप्रद स्थल या स्थान । २ शरीर का दुःखने वाला अंग । दर्द स्थल ।

दुखद-वि० [सं०] दुःख उत्पन्न करने वाला, कष्टदायी ।

दुखदाई-देखो 'दुःखदायी' ।

दुखदायक, दुखदायण, दुखदायी-वि० [सं० दुःखदायी] १ दुःख देने वाला, कष्टप्रद । २ शत्रु, बरी ।

दुखपाळ-पुं० [सं० दुःख-पाल] सोना, स्वर्ण ।

दुखम-पुं० [सं० दुःख] श्रवसापिणी काल का पाँचवाँ भाग, दुःखों का विभाग (जैन) । —दुख-पुं० अत्यन्त दुःखों वाले काल का छठा विभाग (जैन) । —सुख-पुं० काल का चतुर्थ एवं दुःख के पश्चात सुखों वाला विभाग (जैन) ।

दुखर-देखो 'दुसरा' ।

दुखवारण-वि० [सं०] दुःखों को मिटाने वाला, दुःख दूर करने वाला ।

दुखांत-वि० [सं० दुःखांत] जिसके अंत में दुःख हो, अंत में दुःखदायी ।

दुखांतरा-पुं० [सं० दुःखांतर] एक मूत्र रोग विशेष ।

दुखानी (बो)-क्रि० [सं० दुःख] १ पीड़ा देना, कष्ट पहुंचाना ।
२ दुःखी करना, व्यथित करना । ३ धाव या दुःखते अंग को छेड़ देना ।

दुखारी-वि० [सं० दुःख] पीड़ित, दुःखी ।

दुखावणी (बो)-देखो 'दुखानी' (बो) ।

दुखिणी-देखो 'दुखिणी' ।

दुखिणी, दुखित, दुखियारी, दुखियारी, दुखियो-वि० [सं० दुःखित] दुःखी, परेशान, पीड़ित ।

दुखी-वि० [सं० दुःखी] १ दुःख पाने वाला, कष्ट उठाने वाला । २ शोक संतप्त, व्यथित । ३ परेशान, तंग ।
४ अभागा । ५ अपाहिज । ६ बीमार, रोगी । ७ शत्रु ।

दुखीली, दुखीवंत-देखो 'दुखी' ।

दुग-देखो 'दुर्ग' ।

दुर्गाड़ी-पुं० [सं० द्विघटिकम्] १ राजमहल की जनानी हथोड़ी पर प्रातः-साय बजने वाला नगाड़ा । २ मुहूर्त ।
३ दो घड़ी दिन रहने का समय । ४ इस समय किया जाने वाला भोजन ।

दुगड़ी, दुगड़ी-स्त्री० [सं०] स्त्रियों के हाथ का आभूषण विशेष ।

दुगरा-वि० [सं० द्विगुण] दुगुना, दो गुना ।
 दुगणित, दुगणो-वि० [सं० द्विगुणित] दुगुना ।
 दुगदुगो-स्त्री० गले का एक आभूषण विशेष ।
 दुग्ध-पु० [सं० दुग्ध] दूध ।
 दुग्धा-स्त्री० [सं० दुग्धा] १ दूध देने वाली गाय । २ जमीन भूमि ।
 दुग्म-पु० १ सिंह, शेर । २ सूअर । ३ देखो 'दुरगम' ।
 दुग्मी-पु० १ सूअर । २ देखो 'दुगांम' । ३ देखो 'दुरगम' ।
 दुग्म-१ देखो 'दुगम' । २ देखो 'दुरगम' ।
 दुगह-१ देखो 'दुरग' । २ 'दुर्ग' ।
 दुगांणी-स्त्री० एक प्रकार का छोटा सिक्का ।
 दुगांम-वि० [सं० दुगांम] १ वीर, योद्धा । २ जबरदस्त ।
 ३ असह्य । ४ विकट । ५ दुरगम ।
 दुगाय-स्त्री० [सं० दुर्गा] एक देवी का नाम ।
 दुगाल-पु० [सं० द्वि-गंड] शीतकाल में मस्ती से गलसूत्रा निकालने वाला ऊंट ।
 दुगाह-वि० जो जीता न जाय, अजय ।
 दुगो-स्त्री० १ एक प्रकार का वाद्य । २ देखो 'दुवकी' ।
 दुगुं-दुग-पु० [सं० दीगुन्दक] समृद्धिशाली देव विशेष ।
 दुगुच्छा-स्त्री० [सं० जुगुप्सा] १ निंदा बुराई । २ अश्रद्धा, घृणा ।
 दुगं-वि० १ दो भागों वाला । २ दो मंजिला ।
 दुगो-पु० दो दांतों वाला बैल या भैंस ।
 दुग्ग-देखो 'दुरग' ।
 दुग्गम, दुग्गमी-१ देखो 'दुगांम' । २ देखो 'दुरगम' ।
 दुग्ग-१ देखो 'दुरगति' । २ देखो 'दुर्ग' ।
 दुग्गाह-वि० दोहरा ।
 दुग्गो-देखो 'दुवकी' ।
 दुग्ध-पु० [सं०] दूध ।
 दुग्धर-वि० भयंकर, विकट, भयावह ।
 दुग्धसमुद्र-पु० [सं०] क्षीरसागर ।
 दुग्धाक्ष-पु० [सं०] एक प्रकार का नग ।
 दुग्धाब्धि-पु० [सं०] क्षीरसागर ।
 दुघट-पु० दो बार । -वि० विकट, जबरदस्त ।
 दुघड़िथी-देखो 'दुगड़िथी' ।
 दुड़-द-देखो 'दिनंद' ।
 दुड़इंद-देखो 'दिनंद' ।
 दुड़की-स्त्री० १ घोड़े की एक चाल । २ घोड़े की चाल की सी दौड़, झपटी ।
 दुड़गी (बी)-क्रि० १ छोट में होना, छोट लेना । २ छुपना, दुबकना । ३ देखो 'धुड़गी' (बी) ।
 दुड़बड़णी (बी)-देखो 'दड़बड़णी' (बी) ।

दुड़बड़ो, दुड़बड़ो-स्त्री० १ दौड़ । २ शरीर पर हल्का मुष्टि प्रहार ।
 दुड़यंद-देखो 'दिनंद' ।
 दुड़वड़ी-देखो 'दुड़वड़ी' ।
 दुड़िद, दुड़ियंद-देखो 'दिनंद' ।
 दुड़ी-स्त्री० स्त्रियों के कलाई पर धारण करने का आभूषण ।
 दुचित-देखो 'दुचित' ।
 दुचताई-स्त्री० [सं० द्विचित] १ खिन्नता, उदासी । २ चिन्ता ।
 दुचती-देखो 'दुचित' । (स्त्री० दुचती)
 दुचित-पु० [सं० दुश्च्यवन] इन्द्र ।
 दुचाव-पु० एक प्रकार की घास ।
 दुचित, दुचितो-देखो 'दुचित' ।
 दुचित-वि० [सं० द्विचित] १ खिन्न, उदास । २ चितित । ३ नाराज, नाखुश ।
 दुचितई, दुचिताई-देखो 'दुचताई' ।
 दुचितो, दुचितो, दुचोतो-देखो 'दुचित' ।
 दुचित-देखो 'दुचित' ।
 दुच्छरा-स्त्री० [सं० द्वि-क्षुरिका] खड्ग, तलवार ।
 दुछण-पु० सिंह ।
 दुछर, दुछरेल, (रैल)-पु० १ सिंह । २ वीर, योद्धा ।
 दुज-पु० [सं० द्विज] १ ब्राह्मण । २ यज्ञोपवीतधारी व्यक्ति । ३ ज्योतिषी । ४ परशुराम । ५ बृहस्पति । ६ चन्द्रमा । ७ अण्डज प्राणी । ८ पक्षी । ९ गिद्धिनी । १० दांत । ११ भ्रमर । १२ सर्प, मांप । १३ चार मात्रा का नाम । १४ देखो 'दूज' । १५ देखो 'द्विज' ।
 दुजड़-स्त्री० १ तलवार, खड्ग । २ कटार । —भल्ल, हत, हथी-पु० मुभट, वीर ।
 दुजड़ी-स्त्री० कटारी ।
 दुजर-देखो 'दुरजग' ।
 दुजरसाळ-देखो 'दुरजरसाळ' ।
 दुजरसाही-स्त्री० एक प्रकार की धातु ।
 दुजम्भो-वि० [सं० द्वि-जन्म] जिसका जन्म दो बार हुआ हो, द्विज ।
 दुजपंख-पु० [सं० द्विज-पक्ष] १ पक्षी २ गरुड़ । ३ भ्रमर, भौरा ।
 दुजपत, दुजपति (ती)-पु० [सं० द्विज-पति] १ ब्राह्मण । २ परशुराम । ३ चन्द्रमा । ४ कर्पूर । ५ गरुड़ ।
 दुजबर-देखो 'दुजवर' ।
 दुजमंडण-पु० [सं० द्विज-मंडण] तांबूल, पान ।
 दुजरारण, दुजरारम-पु० [सं० द्विज-राम] परशुराम ।

दुजराज (राजा), दुजाराज-पु० [सं० द्विजराज] १ ब्राह्मण ।
 २ परशुराम । ३ ऋषि । ४ चन्द्रमा । ५ गरुड़ । ६ इन्द्र ।
 ७ कर्पूर ।
 दुजवर-पु० [सं० द्विजवर] १ ब्राह्मण । २ छंद शास्त्र में चार
 लय मात्रा का नाम ।
 दुजारा-पु० [सं० द्विजराज] १ ब्राह्मण । २ ऋषि, मुनि । ३ बृहस्पति
 ४ पक्षी । ५ देखो 'दुजियाण' ।
 दुजाराज (राज)-देखो 'दुजराज' ।
 दुजाई-वि० [सं० द्वि] दूसरा ।
 दुजात-पु० [सं० द्विजाति] १ ब्राह्मण, भूदेव । २ देखो
 'दुजाति' ।
 दुजाति-पु० [सं० द्विजाति] १ यज्ञोपवीत धारण करने का
 अधिकारी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य । २ पक्षी । ३ अंज
 प्राणी । ४ दांत ।
 दुजाधगो-स्त्री० १ भिन्नता, भेद । २ परायापन ।
 दुजिद-पु० [सं० द्विजेन्द्र] १ ब्राह्मण । २ चन्द्रमा ।
 ३ गरुड़ । ४ कर्पूर ।
 दुजि-१ देखो 'दुज' । २ देखो 'द्विज' ।
 दुजीष, दुजीह, दुजीह, दुजीहो-वि० [सं० द्विजिह्व] १ दो जीभ
 वाला । २ चुगल खार । ३ दुष्ट । ४ चोर । ५ झूठा,
 मिथ्याभाषी । ६ दुःसाध्य । -पु० १ सर्प, साँप । २ तीर ।
 ३ एक रोग । ४ नगाडा ।
 दुजेस-पु० [सं० द्विजेश] १ ब्राह्मण । २ चन्द्रमा । ३ गरुड़ ।
 ४ कर्पूर । ५ महर्षि । ६ परशुराम ।
 दुजेसर-पु० [सं० द्विजेश्वर] १ महर्षि । २ परशुराम ।
 दुजोड़ियो-पु० एक साथ दो चड़ियों से पानी मीचने लायक कुम्हा ।
 दुजोड़ी-देखो 'दुजो' ।
 दुजोण, दुजोधण, दुजोधन-देखो 'दुर्योधन' ।
 दुजोधन-वि० [सं० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच । २ देखो 'दुर्योधन' ।
 दुजो-देखो 'दुजो' । (स्त्री० दुजी)
 दुज्ज-१ देखो 'दुज' व 'द्विज' । २ देखो 'द्वि' ।
 दुज्ज १ देखो 'दुज' । २ देखो 'दुजड़' ।
 दुज्जण, दुज्जणो-देखो 'दुरजण' ।
 दुज्जय-१ देखो 'दुज' । २ देखो 'दुरजय' । ३ देखो 'द्विज' ।
 दुज्जरांम-देखो 'दुजरांम' ।
 दुज्जोड, दुज्जोध, दुज्जोहण-देखो 'दुर्योधन' ।
 दुज्यु-क्रि० वि० अन्यथा ।
 दुभल, दुभल्ल दुभास, दुभल्ल-वि० १ वीर योद्धा । २ जवरदस्त ।
 ३ पंडित, विद्वान् ।
 दुपटो वि० दोनों ओर की, दुतरफी, दोस्ती ।
 दुट्ट, दुठ-१ देखो 'दुष्ट' । २ देखो 'दूठ' ।
 दुट्टलणी स्त्री० दुष्ट पकृति ।

दुट्टमण्य-वि० दुष्ट मन या स्वभाव वाला ।
 दुठर-देखो 'दुस्तर' ।
 दुठाणी (बो)-क्रि० कोप करना ।
 दुठाळो-वि० (स्त्री० दुठाळी) १ जवरदस्त, शक्तिशाली ।
 २ दोहरे व्यक्तित्व वाला ।
 दुठ्ठ, दुठ्ठि-१ देखो 'दुष्ट' । २ देखो 'दूठ' ।
 दुडव-देखो 'दिनंद' ।
 दुड-वि० खाया-पिया तृप्त, भ्रमाया हुआ ।
 दुडदडी, दुडदुडी-स्त्री० वाद्य ध्वनि विशेष ।
 दुण-देखो 'दूणी' ।
 दुणियर-देखो 'दिनकर' ।
 दुणेटी-पु० १ श्रीों से दुगुना हिम्मा । २ देखो 'दूणी' ।
 दुणी-देखो 'दूणी' ।
 दुतंग, दुतंगर-पु० घोड़े की जीन का तस्मा ।
 दुत-पु० [सं० द्युति] १ कांति, प्रभा, आभा, चमक ।
 २ ज्योति, प्रकाश । ३ किरण । ४ शोभा । ५ दीपक ।
 [सं० द्रुत] ६ वेग । -अव्य० हठ, धृत् ध्वनि । घृणास्पद
 ध्वनि, तिस्कार सूचक ध्वनि । -अंगम-पु० आभूषण ।
 दुतकार-देखो 'दुत्कार' ।
 दुतकारणी (बो)-देखो 'दुत्कारणी' (बो) ।
 दुतभाव-पु० [सं० द्रुत भाव] १ ऐव्यता का अभाव, अनेकता ।
 २ भिन्नता । ३ अज्ञान ।
 दुतमूरति-पु० [सं० द्युति-मूर्ति] सूर्य, भानु ।
 दुतर, दुतरणि-देखो 'दुस्तर' ।
 दुतरफ, दुतरफी-वि० (स्त्री० दुतरफी) १ दोनों ओर का, दोनों
 ओर रहने वाला, दो तरह के आशय वाला । २ दो तरह
 के काम का ।
 दुतलाल-पु० [सं० द्युति-लाल] मंगल ।
 दुतवीस-वि० द्युतिवान, प्रकाश युक्त ।
 दुतार, दुतारो-पु० १ दो तार का वाद्य । २ देखो 'दुस्तर' ।
 दुति-स्त्री० [सं० द्युति] १ आभा, कांति, शोभा, छवि ।
 २ सुन्दरता । ३ किरण । -कर-वि० प्रकाशवान,
 चमकदार -धर-वि० प्रकाशवान चमकदार -मान-
 वि० आभावान, सुन्दर । -माळा-स्त्री० बिजली ।
 दुतियक-देखो 'दुतिवत' । देखो 'दुतीय' ।
 दुतिपा-देखो 'दुतीया' ।
 दुतिथो-देखो 'दुतीय' ।
 दुतिवत-वि० [सं० द्युति-वत] १ आभा व कांति युक्त ।
 २ चमकदार, प्रकाशवान । ३ सुन्दर ।
 दुती-१ देखो 'दुति' । २ देखो 'दुतीय' ।
 दुतीनेज-पु० [सं० द्युति-तेज] सुदर्शन चक्र ।

दुतीय-वि० [सं० द्वितीय] (स्त्री० दुतीया) १ दूसरा । २ अन्य ।
 -पु० १ दूसरा पुत्र । २ भागीदार, हिस्सेदार ।
 दुतीया-स्त्री० [सं० द्वितीया] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज ।
 -वि० दूसरी ।
 दुतीयो-देखो 'दुतीय' ।
 दुतीवान-देखो 'दुतिवत' ।
 दुस्कार-स्त्री० १ फटकार, प्रताड़ना, तिरस्कार, भ्रवहेलना ।
 २ धिक्कार, भर्त्सना ।
 दुस्कारणी (बो)-क्रि० १ फटकारना, प्रताड़ना देना, तिरस्कार करना । २ धिक्कारना ।
 दुत्तर, दुत्तरि-देखो 'दुस्तर' ।
 दुत्ती, दुत्तिय-१ देखो 'दुति' । २ देखो 'दूती' । ३ देखो 'दुतीय' ।
 दुत्थ-वि० [सं० दुत्थ] १ दुःखी । २ द्रविड, कंगाल । —भाव-
 पु० दुःख, द्रविडता, कंगाली ।
 दुत्थिय-पु० [सं० दुत्थ] दारिद्र्य, निर्धनता ।
 दुत्थिणी-पु० [सं० द्वि+स्तर] सूत का एक चारजामा विशेष ।
 दुत्थणी, दुत्थन, दुत्थनी, दुत्थणी (नी)-वि० [सं० द्वि+स्तनी] दो स्तनों वाली । -स्त्री० १ स्त्री । २ बकरी, भ्रजा ।
 दुवन्ती-पु० १ हाथी, गज । २ दो दांतों का युवा वेल ।
 दुवळ-देखो 'द्विदळ' ।
 दुदांम, (मी)-देखो 'ददांम' ।
 दुदीषटी-पु० सूझर, शूकर ।
 दुदेली-देखो 'दूधी' ।
 दुद, दुडी, दुध-१ देखो 'दु'द' । २ देखो 'दूध' ।
 दुधार-वि० [सं० दोग्ध्री] १ दूध देने वाली । २ दो धारा वाली ।
 -स्त्री० [सं० द्वि+धार] १ दोनों ओर धार वाला जश्न ।
 २ तलवार । ३ कटार, बरछी । ४ भाला । ५ रथ ।
 दुधारी-वि० [सं० द्वि+धार] दो धार वाली । दुधार । -स्त्री० कटार, बरछी, तलवार ।
 दुधारु (रु)-१ देखो 'दुधालु' । २ देखो 'दुधार' ।
 दुधारी-पु० [सं० द्विधार] १ बड़ई का एक ओजार ।
 २ देखो 'दुधार' ।
 दुधाल (लु)-वि० [सं० दोग्ध्री] दूध देने वाली, अधिक दूध देने वाली ।
 दुनइ-पु० शत्रु ।
 दुनां-वि० दोनों, दो ।
 दुनाळ (ळि, ली)-स्त्री० [सं० द्वि+नाल] दो नालों वाली बहक ।
 दुनाळी-वि० 'दुनाली' बन्दूक धारी । -पु० दो जीनों वाला मकान ।
 दुनि-देखो 'दुनिया' ।
 दुनियण-पु० [सं० दिनकण] १ सूर्य । २ देखो 'दुनिया' ।

दुनियां (दुनिया)-स्त्री० [अ० दुनिया] १ संसार, जगत । २ संसार के लोग । सांसारिक प्रपंच । —दार-वि० सांसारिक ।
 गृहस्थी । —हारी-स्त्री० जगत के कार्य । गृहस्थी के कार्य ।
 दुनियाण (णी, न)-देखो 'दुनियां' ।
 दुनियाई-वि० संसार का, संसार संबंधी ।
 दुनियादार-पु० सांसारिक व्यक्ति । गृहस्थ । -वि० व्यवहार कुशल ।
 दुनियावारी-स्त्री० १ सांसारिक प्रपंच । २ गृहस्थी के कार्य ।
 ३ रीति-रिवाज, रुढ़ियों । ४ दिखावटी व्यवहार ।
 दुनियासाज-वि० १ चापलूस । २ स्वार्थ साधने वाला ।
 दुनियासाजी-स्त्री० १ चापलूसी । २ स्वार्थ सिद्धि के प्रयत्न ।
 ३ व्यवहार कुशलता ।
 दुनी, दुनी-स्त्री० [अ० दुनिया] १ पृथ्वी । २ देखो 'दुनियां' ।
 —पत, पति-पु० बादशाह । राजा । ईश्वर ।
 दुनीय-देखो 'दुनियां' ।
 दुनुप्रोहित-पु० [सं० दनुज प्रोहित] असुरों का गुरु, शुक्राचार्य ।
 दुने-वि० [सं० द्वि] दोनों ।
 दुस्ति, दुस्ती-वि० [सं० द्वीनि] १ दो । २ देखो 'दुनो' ।
 दुप-देखो 'द्विप' ।
 दुपडती-वि० [सं० द्विर्वाती, द्विर्वाती] १ दो परत या पट वाली २ दो धर्थ रखने वाली, श्लेषात्मक ।
 दुपटी-स्त्री० १ दो पाट का वस्त्र, ओढनी । २ देखो 'दुपडती' ।
 दुपटी-पु० ओढने का वस्त्र ।
 दुपटी-देखो 'दुपटी' ।
 दुपटी-देखो 'दुपटी' ।
 दुपडु-वि० [सं० द्वि+वर्ती] १ दो परत वाला । २ दो अर्थवाला ।
 दुपदी-पु० १ एक मात्रिक हृन्द् विशेष । २ दो पांवों वाला ।
 दुपराणी (बो), दुपरावणी (बो)-क्रि० [सं० दुधराव] रदन करना, विलाप करना ।
 दुपहर, दुपहरा, दुपहरी, दुपार-देखो 'दोपहर' ।
 दुपारी-देखो 'दोपारी' ।
 दुपियारी-वि० [सं० दुधियारी] (स्त्री० दुपियारी) वृषा लगने वाला ।
 दुपो-देखो 'द्विप' ।
 दुपेरी-१ देखो 'दोपहर' । २ देखो 'दोपारी' ।
 दुपेरी-देखो 'दोपारी' ।
 दुपेर-देखो 'दोपहर' ।
 दुपेरी-देखो 'दोपारी' ।
 दुप्याज, दुप्याजी-पु० एक प्रकार का मांस ।
 दुप्रब-वि० [सं० दुध्रभ] १ अत्यन्त तेजोमय । २ चकाचीभ करने वाला ।
 दुफसली-स्त्री० वर्ष में दो फसल होने वाली भूमि ।

द्वकणो (बो)-देखो 'द्वकणो (वी) ।

द्वकी-स्त्री० [सं० द्वि-पदी] १ घोड़े या गधे के अगले पांवों का वंश । २ पीछे की ओर छलांग लगाने की क्रिया । ३ लकड़ी के जोड़ पर लगाई जाने वाली पत्ती । ४ देखो 'द्वकी' ।

द्वगली-स्त्री० मालखंभ की एक कसरत ।

द्वडा द्वया द्वधा द्वध्या-देखो 'द्विधा' ।

द्वराळणो-पु० तोप का लंबा गोला ।

द्वलापण-पु० क्षीणता, कृशता ।

द्वली-वि० [सं० द्वल] (स्त्री० द्वली) १ कमजोर, क्षीण । २ दुरबल ।

द्वक-कि० वि० एकाएक अचानक, सहसा ।

द्वार-देखो 'द्वार' ।

द्वारा-कि० वि० [सं० द्विवार] दूसरी बार । दो बार ।

द्वारो-पु० [सं० द्विवार] एक प्रकार की तेज शराब ।

द्ववाह, द्ववाहियौ, द्ववाही-वि० [सं० दुर्वाह] १ दोनों हाथों से प्रहार करने वाला योद्धा । २ जबरदस्त । -पु० १ तुरंग, घोड़ा । २ सेना, फौज ।

द्वे-पु० [सं० द्विवेदो] एक ब्राह्मण वर्ग ।

द्वो-वि० [सं० द्वि] दूसरा, भिन्न ।

द्वल-देखो 'दुरबल' ।

द्वधा-पु० १ एक धातु का नाम । २ देखो 'द्विधा' ।

द्वार-देखो 'द्वारो' ।

द्वार-देखो 'द्वार' ।

द्वधा-स्त्री० [सं० द्वि-धाति] १ भेदभाव । २ कपट । ३ भिन्नता । ४ दुराव ।

द्वधा-देखी 'द्वधा' ।

द्वधा-पु० [सं० द्वि-धाति] १ दो भाषाएँ जानने वाला । २ दो भाषाएँ बोलने वाला ।

द्वधितो-पु० दो दीवारों का मकान ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो-स्त्री० [सं० द्वि-धाति] १ गीत का निम्न भाग ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो-स्त्री० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।

द्वधितो-स्त्री० [सं० द्वि-धाति] १ घोड़े के पुट्टे का आभूषण । २ घोड़े के साज का तस्मा विशेष । २ पुट्टों के बीच की हड्डी ।

द्वधितो-पु० [सं० द्वि-धाति] उदासीनता, खिन्नता ।

द्वधितो, (त)-वि० [सं० द्वि-धाति] १ दूसरे मत वाला, विरुद्ध । २ भिन्न मत या विचार का ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] १ पूछ वाला । २ पूछ जैसे अंग वाला ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो, द्वधितो, द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] उदास मन, खिन्न-चित्त । खिन्न ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो-पु० १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । २ देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो, द्वधितो-स्त्री० [सं० द्वि-धाति] सीतेली मां । विमाता ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] सीतेली मां का, सीतेला ।

द्वधितो-स्त्री० [सं० द्वि-धाति] १ कण्ठ, तबलीफ, तंगी । २ अभाव कमी ।

द्वधितो-पु० एक प्रकार का कर विशेष ।

द्वधितो-पु० एक वर्ण वृत्त विशेष । —निसाणी-स्त्री० एक निसाणी छंद विशेष ।

द्वधितो-वि० १ दो मुख वाला । २ दुग्धा । (सर्प विशेष) (मेवात) दुग्धि-वि० [सं० द्वि-धाति] कपदी, धूर्त । -पु० दो मुख वाला सर्प ।

द्वधितो, द्वधितो, द्वधितो-पु० मोम मिला मोटा कपड़ा, बरसाती ।

द्वधितो-वि० १ असमान । २ भिन्न प्रकार का । -पु० १ शत्रुता, दुश्मनी । २ डिगल का एक छन्द विशेष ।

द्वधितो-वि० १ असमान । २ भिन्न प्रकार का । -पु० १ शत्रुता, दुश्मनी । २ डिगल का एक छन्द विशेष ।

द्वधितो-पु० योद्धा, वीर ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि] दो ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] १ दो । २ दुग्धा, द्विगुण ।

द्वधितो (गि, गो)-पु० [सं० द्वि-धाति] १ दुग्ध, गढ़, किला । २ वन कानन । -वि० १ दो रंगों वाला, द्विगुण । २ अप्रिय, कटु । ३ खराब, बुरा । ४ बुरी आकृति का ।

द्वधितो-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] (स्त्री० द्वि-धाति) १ दो रंगों वाला द्विगुण । २ दो प्रकार का । ३ अप्रिय, कटु । ४ बुरा, खराब । ५ भिन्न प्रकृति या स्वभाव का । ६ दोनों पक्षों की ओर रहने वाला । ७ दोहरी नीति वाला । ८ वर्ण संकर ।

द्वधितो-वि० कटा हुआ ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] १ शत्रु, दुश्मन । २ भीषण, भयंकर । ३ अनन्त, अपार । ४ दुग्ध, कठिन, दुस्तर । ५ अशुभ, कुत्सित, बुरा ।

द्वधितो-पु० [सं० द्वि-धाति] शिव, महादेव ।

द्वधितो-पु० अंत ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] अति दूर, बहुत दूर ।

द्वधितो-देखो 'द्वधितो' ।

द्वधितो-वि० [सं० द्वि-धाति] १ बुरा या कठिन अर्थ बोधक एक उपमर्ग । [सं० द्वि-धाति] २ दूर, अलग, पृथक । -पु० छपने

का या गुप्त रहने का भाव । —करम-पु० बुरा कार्य, दुष्कर्म ।

दुरह-अव्य० [सं० दूर] दूर, अलग, पृथक् ।

दुरकारणी (बौ)-देखो 'दुत्कारणी' (बौ) ।

दुरखी-स्त्री० [फा० दुरुख] दो तह या परत ।

दुरगंध (घ, घि, घी)-स्त्री० [सं० दुर्गन्ध] बुरी गंध, बदबू । दूषित वायु ।

दुरग-पु० [सं० दुर्ग] १ मढ़, किला । २ महल । ३ सुरक्षित स्थान । ४ संकीर्ण मार्ग । ५ ऊबड़-खाबड़ भूमि । ६ दुर्गम मार्ग । ७ ऊंट । ८ देखो 'दुरगम' ।

दुरगत-स्त्री० [सं० दुर्गति] १ निर्धनता, कंगाली । २ बुरी गति, दुर्दशा, बुरा हाल । ३ नरक गति । ४ बेइज्जती ।

दुरगतरणी-स्त्री० [सं० दुर्गतरणी] एक नदी का नाम ।

दुरगति, (त्ती, त्त)-देखो 'दुरगत' ।

दुरगदास-पु० इतिहास प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठोड़ ।

दुरगपाळ-पु० गढ़ का रक्षक, किलेदार ।

दुरगम-वि० [सं० दुर्गम] १ कठिन, विकट, दुस्तर । २ जहां पहुंचना कठिन हो । अघट । ३ दुर्बोध, सूक्ष्म, गूढ़ । ४ भयावह, डरावना । -पु० १ किला । २ वन, जंगल । कठिन मार्ग । ४ संकटमय-स्थान । ५ विष्णु ।

दुरगमता-स्त्री० [सं०] कठिनाई । विकटता । दुरूहपन ।

दुरगरक्षक-पु० [सं० दुर्गरक्षक] किलेदार ।

दुरगलंघण (न)-पु० [सं० दुर्गलंघन] ऊंट ।

दुरगामी-वि० कुमार्गी, पापी ।

दुरगा-स्त्री० [सं० दुर्गा] १ आदि शक्ति, देवी । २ पार्वती । महामाया । ३ नौ वर्ष की कन्या ।

दुरगाधिकारी-पु० [सं० दुर्गाधिकारी] गढ़ का स्वामी, अधिपति ।

दुरगाध्यक्ष-पु० [सं० दुर्गाध्यक्ष] गढ़ का प्रधान, किलेदार ।

दुरगानवमी-स्त्री० [सं० दुर्गानवमी] १ चैत्र व आश्विन शुक्ला, नवमी । २ कार्तिक शुक्ला, नवमी ।

दुरगाष्टमी-स्त्री० [सं० दुर्गाष्टमी] चैत्र या आश्विन शुक्ला अष्टमी ।

दुरगुण-पु० [सं० दुर्गुण] बुरा गुण या आदत । अवगुण ।

दुरगेश-पु० [सं० दुर्गेश] १ दुर्गाध्यक्ष, दुर्गरक्षक, किलेदार । २ शिव ।

दुरगोत्सव-पु० [सं० दुर्गोत्सव] दुर्गा पूजन का उत्सव ।

दुरग-देखो 'दुरग' ।

दुरग्रह-पु० [सं०] १ दुष्ट ग्रह । २ देखो 'दुराग्रह' ।

दुरघट-वि० [सं० दुर्घट] १ कष्ट साध्य, कठिन साध्य । २ बुरा, खराब । ३ भयंकर, डरावना ।

दुरघटना-स्त्री० [सं० दुर्घटना] १ बुरी घटना । २ जान माल की हानि वाली घटना । ३ अशुभ स्थिति । ४ कष्ट प्रद स्थिति । ५ विपदा, मुसीबत ।

दुरघोस-पु० [सं० दूर्घोष] १ भारी या तीक्ष्ण स्वर । २ भारी आवाज । ३ भालू ।

दुरड़ी-स्त्री० मिट्टी का बना गोल घेरा ।

दुरड़ी-पु० छेद, सूराख ।

दुरचारि, (री)-देखो 'दुराचारी' ।

दुरक्षण (न)-वि० [सं० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच, खल । २ शत्रु, दुश्मन । —साळ-वि० दुष्टों का ताश करने वाला ।

दुरजनता-स्त्री० [सं० दुर्जनता] दुष्टता । खोटाना ।

दुरजनि-देखो 'दुरजन' ।

दुरजय-वि० [सं० दुर्जय] जिसे जीतना कठिन हो । अजेय । -पु० १ विष्णु । २ एक राक्षस का नाम ।

दुरजाति-स्त्री० [सं० दुर्जाति] नीच या बुरी जाति । -वि० नीच कुल या जाति ।

दुरजोब-पु० [सं० दुर्जोब] १ क्षुद्र प्राणी । २ दुष्ट प्राणी ।

दुरजोध, दुरजोध, दुरजोधन, दुरजोधनी-देखो 'दुर्योधन' ।

दुरज्जटा-स्त्री० [सं० दुर्ज्जटा] बिखरे केशों वाली एक देवी ।

दुरज्योधन (न)-देखो 'दुर्योधन' ।

दुरशी (बौ)-क्रि० प्र० १ गुप्त होना, लुप्त होना । २ छुपना, ओट में होना, झाड़ लेना । ३ दूर होना । ४ समाप्त होना, मिटना ।

दुरत, दुरतेस-वि० [सं० दुरित] १ भयंकर, भयावह । २ जबरदस्त । ३ पापी, दुष्ट । ४ जो कठिनता से मड़ा जा सके । ५ गुप्त । -पु० १ क्रोध । २ पाप, पातक । ३ उप पातक, छोटा पाप । ४ शत्रु ।

दुरतौ-पु० ध्वेत-श्याम रंग का घोड़ा ।

दुरत्त-देखो 'दुरत' ।

दुरद, दुरदन-देखो 'द्विद' ।

दुरदम, दुरदमन-वि० [सं० दुर्दम] दुर्दमनीय, प्रबल, प्रचढ़ ।

दुरदर-वि० दुःख से उत्तीर्ण ।

दुरदरस-वि० [सं० दुर्दर] १ जो कठिनता से दिखाई दे । २ अत्यंत सूक्ष्म । ३ जो मयंकर दिखाई दे ।

दुरदरसन-पु० कीरवों का एक सेनापति ।

दुरदसा-स्त्री० [सं० दुर्दशा] बुरी दशा, दुर्गति ।

दुरदांत-पु० [सं० दुर्दान्त] चांदी ।

दुरदाळ-पु० [सं० दुर्दत्त] हाथी ।

दुरदिन, दुरदीह-पु० [सं० दुर्दिन, दुर्दिवस] दुर्दशा का गमय, बुरा दिन । दुःख वक्त । मुसीबत के दिन ।

दुरदुर

(६६४)

दुरवंस

दुरदुर-देखो 'दादुर' ।

दुरदुर्लभ-पुं० [सं० दुर्दुर्लभ] नास्तिक ।

दुरदेव-पुं० [सं० दुर्देव] १ दुर्भाग्य, अभाग्य । २ बुरा संयोग ।

दुरद-देखो 'द्विरद' ।

दुरद्वर, दुरद्वरख, दुरधरस-पुं० [सं० दुर्द्वर] १ पारा । २ एक नरक का नाम । ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ४ महिषासुर का एक सेनापति । ५ शंखासुर का एक मंत्री । ६ रावण का एक सैनिक । ७ विष्णु । -वि० १ प्रबल, प्रचंड । २ दुर्बोध । ३ दुःसाध्य ।

दुरदृष्टी-स्त्री० [सं० दुर-दृष्टि] कुदृष्टि, बुरी निगाह ।

दुरधर, दुरधार-वि० [सं० दुर्द्वर, दुरधर] कठिन, मुश्किल । -पुं० पारा, पारद ।

दुरनिमित्त, दुरनिमित्त-पुं० [सं० दुर्निमित्त] १ बुरा शकुन । २ भावी मुसीबत का संकेत ।

दुरनीति-स्त्री० [सं० दुर्नीति] कुनीति, अन्याय ।

दुरन्याय-पुं० [सं०] अन्याचार, अन्याय ।

दुरपथ-पुं० [सं०] बुरा मार्ग, कुमार्ग ।

दुरपवी-देखो 'द्रौपदी' ।

दुरपारी-वि० [सं० दुष्पार] जो कठिनाई से पार किया जा सके ।

दुरबल-देखो 'दुरभिक्ष' ।

दुरबल-वि० [सं० दुर्बल] १ अशक्त, कमजोर । २ कृशकाय, दुबला-पतला । ३ निर्धन, कंगाल । ४ उत्साह हीन, उदास । ५ श्रोढ़ा, कम ।

दुरबलता-स्त्री० [सं० दुर्बलता] १ कमजोरी, अशक्तता । २ कृशता-पतलापन । ३ निर्धनता, कंगाली । ४ उदासी । ५ कमी ।

दुरबाल-वि० [सं० दुर्बल] जिसके बाल झड़ गये हों, गंजा ।

दुरबास-स्त्री० [सं० दुर्वास] दुर्गन्ध, बदबू ।

दुरबासा-देखो 'दुरवामा' ।

दुरबिध-देखो 'दुरविध' ।

दुरबुद्धी, (बुद्धि, बुधी)-वि० [सं० दुर्बुद्धि] १ दृष्ट या कुबुद्धि वाला, नीच । २ मूर्ख ।

दुरवेस-देखो 'दरवेस' ।

दुरबोध-वि० [सं० दुर्बोध] १ कठिनता से समझा जाने वाला, गूढ़ । सार गंभीर । २ अपार, अथाह । ३ मूर्ख, मूढ़ । -स्त्री० १ बुरी मंत्रणा या मलाह । २ कुबुद्धि ।

दुरब्बा-देखो 'दूरबा' ।

दुरभक्त, दुरभक्त-देखो 'दुरभिक्ष' ।

दुरभग-वि० [सं०] अभागा, भाग्यहीन ।

दुरभर-वि० [सं० दुर्भर] १ अत्यन्त भारी । २ जो वहनीय न हो । ३ जिसे पालना कठिन हो ।

दुरभांत (भांति)-देखो 'दुभांत' ।

दुरभाग-देखो 'दुरभाग्य' ।

दुरभागी-वि० [सं० दुरभागिन्] (स्त्री० दुरभागिणी, राणी) अभागा, भाग्यहीन ।

दुरभाग्य-पुं० [सं० दुर्भाग्य] छोटी किस्मत, मंद भाग्य ।

दुरभाव-पुं० [सं० दुर्भाव] १ बुरा भाव । २ भेद भाव । ३ मनोमालिन्य, द्वेष ।

दुरभावना-स्त्री० [सं० दुर्भावना] १ चिंता । २ आशंका, खटका । ३ बुरी भावना । ४ द्वेष । ५ भेद-भाव ।

दुरभासी (भासू)-वि० [सं० दुर्भासिन्] १ कर्कश स्वर का । २ कटुभाषी ।

दुरभिक्ष (भिक्ष)-पुं० [सं० दुर्भिक्ष] १ अकाल, दुष्काल । २ दुःख, कष्ट । ३ अभाव ।

दुरभेद, (भेद्य)-वि० [सं० दुर्भेद, दुर्भेद्य] १ जो सरलता से न भेदा जा सके । २ दुस्तर । ३ कठिन, दुर्गम ।

दुरमट-देखो 'दुरमुच' ।

दुरमत्त, (मत्ति, मत्ती, मत्ति मत्ती)-स्त्री० [सं० दुर्मत्ति] कुबुद्धि, नाममभी । -वि० १ मूर्ख, मूढ़ । २ अज्ञान, अज्ञानी । ३ दुष्ट, कुबुद्धि ।

दुरमद-वि० [सं० दुर्मद] १ नशे या मद में चूर । २ उन्मत्त, पागल ।

दुरमन-वि० [सं० दुर्मनस्] १ उदास, खिन्न, अनमना । २ बुरे चित्त का, दुष्ट । ३ दुःखी ।

दुरमिल-पुं० [सं० दुर्मिल] एक प्रकार का छन्द ।

दुरमुख-पुं० [सं० दुर्मुख] १ राम की सेना का एक बन्दर । २ महिषासुर का एक सेनापति । ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ४ साठ सवत्सरो में से एक । ५ नाग । ६ गणेश का एक गण । -वि० (स्त्री० दुरमुखी) १ बुरे वचन बोलने वाला, कटु भाषी । २ जिसका मुख बुरा हो ।

दुरमुखी-स्त्री० [सं० दुर्मुखी] रावण की एक अनुचरी । -वि० बुरे मुंह वाली ।

दुरमुच (मुसी)-पुं० [सं० दुर्मुच] कंकड़-मिट्टी पीटने का एक उपकरण ।

दुररांती-स्त्री० [फा० दुरांती] अफगानों की एक जाति ।

दुरल-पुं० उत्पात, उपद्रव, बसेड़ा, भगड़ा, विप्लव ।

दुरलभ-वि० [सं० दुर्लभ] १ जो कठिनता से मिल सके, दुष्प्राप्य । २ कठिन, मुश्किल । ३ दर्दप्य, दुस्तर । ४ बुरा, खराब । ५ अनोखा, विचित्र । ६ प्रिय, प्यारा । -पुं० दूल्हा ।

दुरवंछ, दुरवंछी-वि० [सं० दुर्वांछित] बुरा सोचने वाला, बुरा चाहने वाला, दश्चितक । (स्त्री० दुरवंछी)

दुरवंस-वि० [सं० दुर्वंश] बुरे वंश का, नीच । -पुं० बुरा वंश ।

दुरवच, दुरवचन-पु० [सं० दुर्वचन] कटु वचन, अपशब्द । -वि०
१ प्रति तीक्ष्ण । २ तप्त, गरम ।
दुरवरण, दुरवरणक-पु० [सं० दुर्वर्ण] चांदी, रजत ।
दुरवसनी-देखो 'दुरव्यसनी' ।
दुरवस्था-स्त्री० [सं० दुरावस्था] बुरी हालत या अवस्था ।
दुरवा-देखो 'दुरवा' ।
दुरवाचकजोग (योग)-पु० [सं० दुरवाचक योग] ६४ कलाओं
में से एक ।
दुरवाद-स्त्री० दीवार में लगने का एक पत्थर विशेष ।
दुरवाचाप-पु० [सं० दुर्वाद] १ अनुचित विवाद । २ अपवाद,
निंदा, बदनामी ।
दुरवादी-वि० [सं० दुर्वादिन] १ कुतर्क, बकवास करने वाला ।
२ बुरा बोलने वाला ।
दुरवार-देखो 'दरवार' ।
दुरवासना-स्त्री० [सं० दुर्वासना] १ न पूर्ण होने लायक
कामना । २ खोटी आकांक्षा । ३ बुरी नीयत ।
दुरवासा-पु० [सं० दुर्वसिस्] अत्रि ऋषि के पुत्र एक मुनि ।
दुरविघ-वि० [सं० दुर्विघ] दरिद्र, कंगाल, निर्धन । -स्त्री०
१ निर्धनता, कंगाली । २ भूख । —माघ-पु० निर्धनता,
कंगाली ।
दुरविनीत-वि० [सं० दुर्विनीत] अशिष्ट, अविनीत ।
दुरविवाह-पु० [सं० दुर्विवाह] निन्दित विवाह ।
दुरविस-पु० [सं० दुर्विष] महादेव, शिव ।
दुरविसन-देखो 'दुरव्यसन' ।
दुरविसनी-देखो 'दुरव्यसनी' ।
दुरवेसी-वि० १ दरवेश संबंधी । २ बादशाह का, बादशाही ।
३ देखो 'दरवेश' ।
दुरव्यवस्था-स्त्री० [सं० दुर्व्यवस्था] अव्यवस्था, कुप्रबंध ।
दुरव्यसन-पु० [सं० दुर्व्यसन] बुरी आदत, ऐब ।
दुरव्यसनी-वि० [सं० दुर्व्यसनी] जिसकी आदतें बुरी हों । बुरे
व्यसनवाला ।
दुरवृत्त-पु० [सं० दुर्वृत्त] नीच ब्यालात, बुरी नीयत । -वि०
बुरी नीयत वाला ।
दुरस (सि)-वि० [फा० दुस्त] १ सीधा । २ उचित । ३ ठीक ।
४ श्रेष्ठ । ५ सत्य, यथार्थ । ६ जो टूटा-फूटा न हो ।
७ सुधरा हुआ । ८ स्वस्थ ।
दुरसीस-देखो 'दुरासीस' ।
दुरसी-पु० एक प्रसिद्ध चारण कवि ।
दुरस्त-देखो 'दुरम' ।
दुरहित-पु० [सं० दुर्हित] शत्रु, दुश्मन ।
दुराक-पु० [सं०] १ एक देश का नाम । २ एक म्लेच्छ जाति ।

दुराग्रह-पु० [सं०] १ कुतर्क, बकवास । व्यर्थ की बहस ।
२ हठ धर्मी । जिद्द ।
दुराग्रही-वि० [सं०] कुतर्क करने वाला, जिद्दी, बकवादी ।
दुराचरण-पु० [सं०] खोटा या बुरा आचरण । अनैतिक
आचरण ।
दुराचार-पु० [सं०] १ अत्याचार, अनाचार । २ दुष्टता ।
नुराचारी-वि० [सं०] १ अत्याचारी, आततायी । २ दुष्ट,
नीच । ३ बुरे आचरण वाला ।
दुराज-पु० [सं० दुराज्य] १ बुरा शासन । २ दो राजाओं
का शासन ।
दुराजी-वि० दो राजाओं वाला ।
दुराजौ-पु० [सं० द्वि-राजा] वैमनस्य, द्वेष ।
दुराणी (बी)-क्रि० १ आड़ में होना, छुपना । २ दूर हटना,
टलना । ३ त्यागना । ४ पराजित करना ।
दुरातस्य-पु० [सं०] इन्द्र ।
दुरात्मा-वि० [सं०] दुष्ट, बुरा, खोटा ।
दुराधन-पु० [सं०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
दुरधरस-वि० [सं० दुराधर्ष] १ जिसका दमन कठिन हो,
दुर्दमनीय । २ उग्र, प्रचण्ड । -पु० १ पीली सरसों
२ विष्णु ।
दुराघार-पु० [सं०] शिव, महादेव ।
दुराप (घ)-वि० [सं० दुराप] दुर्लभ्य, अप्राप्य ।
दुराराध्य-वि० [सं०] १ जिसकी आराधना कठिन हो, कठिन
साध्य । २ देर से प्रसन्न होने वाला ।
दुरालंभ, दुरालभ-वि० [सं० दुर्लभ] १ कठिनाई ने मिलने वाला,
दुप्राप्य । २ देखो 'दुरालभ' ।
दुरालभा-स्त्री० [सं०] १ जवासा । २ धमासा ।
दुरालाप-पु० [सं०] १ बुरा वचन, गाली, अपशब्द । २ तू-तू
मैं मैं । -वि० दुर्वचन कहने वाला ।
दुराव-पु० १ कोई बात गुप्त रखने का स्वभाव । २ भेद-भाव ।
३ द्वेष, ईर्ष्या । ४ झल, कपट ।
दुरावणी (बी)-देखो 'दुराणी' (बी) ।
दुरास-वि० [सं० दुरासा] १ जिससे अच्छी आशा न हो ।
२ निराश करने वाला । ३ विकराल, भयंकर ।
दुरासद-वि० [सं० दुर+आमद] १ कठिनता से वन में होने वाला
२ दुःसाध्य, कठिन । ३ दुष्प्राप्य । -पु० दुष्कर्म, पाप ।
दुरासय-पु० [सं० दुराशय] बुरी नीयत । -वि० बुरी
नीयत वाला ।
दुरासा-स्त्री० [सं० दुराशा] व्यर्थ की आशा, झूठी उम्मीद ।
दुरासीस-स्त्री० [सं० दुराशिष] १ बद्धुआ, शाय ।
२ उलाहना । ३ बुरा होने की कामना ।
दुराह, दुराही-पु० दोराहा, दो रास्ते का संघिस्थल ।

दुःखि-देखो 'दूरी' ।
 दुःखि-देखो 'दुरत' ।
 दुःखिजण(जन्म, जज्जण)--देखो 'दुरजण' ।
 दुःखित-देखो 'दुरत' ।
 दुःखितारि-पुं [सं०] ५२ बीरों में से एक ।
 दुःखित-देखो 'दुरत' ।
 दुःखिस्ट-पुं [सं० दुःखिष्ट] १ एक प्रकार का यज्ञ । २ पाप, पातक ।
 दुःखी-वि० [सं० दुःख] १ दुःख देने वाला, दुःखदायी । २ शत्रु ।
 --स्त्री० १ शत्रुता । २ निधनता, कंगाली । ३ गुफा, खोह ।
 दुःखीउ-देखो 'दुरत' ।
 दुःखीय-देखो 'दुरत' ।
 दुःखीस-पुं [सं० दुःखी] दुष्ट राजा ।
 दुःखीह-वि० [सं० दुःख-ईहा] बुरी नीयत वाला, दुष्ट ।
 दुःखंग, दुःखगू-देखो 'दुरग' ।
 दुःखख, दुःखखी-वि० [सं० द्वि+फा० रुख] १ दोनों ओर मुंह वाला । २ जिसके दोनों ओर चिह्न हो । ३ जिमका झुकाव दोनों पक्षों की ओर हो ।
 दुःखण-देखो 'दुरग' ।
 दुःखतर-वि० [सं०] जिसका पार पाना कठिन हो । दुस्तर ।
 --पुं० दुष्ट उत्तर ।
 दुःखधरा, दुःखधरा-स्त्री० जन्म कुण्डली का एक योग ।
 दुःखयोग-पुं [सं०] अनुचित उपयोग । बुरे कामों में उपयोग ।
 दुःखफ-पुं फलित ज्योतिष का एक योग ।
 दुःखस्त-देखो 'दुरग' ।
 दुःखस्तो-स्त्री० मृगधर, संशोधन ।
 दुःखह, दुःखह-वि० [सं० दुःखह] १ गूढ, कठिन । २ मुश्किल ।
 ३ भयंकर, जबरदस्त, प्रचण्ड । --क्रि० वि० दोनों ओर, दोनों तरफ ।
 दुःखेफ-देखो 'दुरेफ' ।
 दुःखोदर-पुं जूआ, घूत ।
 दुःखोधन-पुं [सं० दुःखोधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ।
 --पुं० दुःखि ।
 दुलकी-देखो 'दुड़की' ।
 दुलइ, दुलडी-वि० [सं० द्वि-लटिक] (स्त्री० दुलड़ी) १ दो लड़ों का । २ दोहरा ।
 दुलठठ-पुं हाथी के पैर का बंधन ।
 दुलती-स्त्री० घोड़े, गधे आदि द्वारा पिछले पावों से मारने की क्रिया ।
 दुलबुल-पुं [अ०] मुहम्मद साहब की लज्जरी विशेष ।
 दुलभ-देखो 'दुलभ' ।
 दुलह-१ देखो 'दुल्ही' । २ देखो 'दुलभ' ।

दुलहरण (हरण, हन) दुलहि, दुलही-स्त्री० [सं० दुलभ] १ नव विवाहिता युवती । २ विवाह के लिये तैयार युवती, दुल्हिन । ३ नव वधू ।
 दुलही-देखो 'दुल्ही' ।
 दुलसत-देखो 'दुलसी' ।
 दुलसार-पुं [सं० दुलालिन] १ प्यार, प्रेम पूर्ण क्रिया, चेष्टा । २ ममत्व ।
 दुलारणी (बी)-क्रि० [सं० दुलालिन] प्रेम पूर्ण चेष्टा करना, प्यार करना ।
 दुलारी-वि० [सं० दुलालिन] (स्त्री० दुलारी) प्रिय, प्यारा, लाडला ।
 दुलाबी-पुं दो चड़स वाला कूआ ।
 दुलियो, दुलोयो-पुं कालीन, गलीचा ।
 दुलोही-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
 दुल्लम, दुल्लह-१ देखो 'दुलभ' । २ देखो 'दुल्ही' ।
 दुल्लीच-देखो 'दुलीचो' ।
 दुव-वि० [सं० द्वि] १ दूसरा । २ दो ।
 दुवकी-देखो 'दुबकी' ।
 दुवजोह-पुं [सं० द्विजिह्व] १ कटार । २ सांप, नाग ।
 दुवणी (बी)-देखो 'दूमणी' (बी) ।
 दुवघा-देखो 'दुविघा' ।
 दुवध-क्रि० वि० [सं० द्विविध] दोनों प्रकार से ।
 दुवधा-देखो 'दुविधा' ।
 दुवधार-देखो 'दुधार' ।
 दुवधारी-देखो 'दुधारी' ।
 दुवधारी-देखो 'दुधार' ।
 दुवयण-देखो 'दुवचन' ।
 दुवळ-क्रि० वि० दूसरी ओर ।
 दुवा-स्त्री० [अ० दुआ] १ आशीर्वाद । २ देखो 'दुआ' ।
 --वि० दूसरा ।
 दुवाई-१ देखो 'दवा' । २ देखो 'दुहाई' । ३ देखो 'दूवारी' ।
 दुवाग-देखो 'दुहाग' ।
 दुवागण-देखो 'दुहागण' ।
 दुवागी पुं घोड़े की लगाम विशेष ।
 दुवाघ-वि० [सं० दु-व्याघ्र] दुष्ट व्याघ्र ।
 दुवाड़णी (बी)-देखो 'दुवाणी' (बी) ।
 दुवाठ-वि० [सं० दुःवाट] बुरा मार्ग, कुमार्ग ।
 दुवाणी (बी)-क्रि० १ दूध दुहाना, दूध निकलवाना । २ सार निकलवाना ।
 दुवाती-देखो 'दुवायती' ।
 दुवादसी-देखो 'दवादसी' ।
 दुवापुर-देखो 'दवापर' ।

दुबाय-देखो 'दुभा' ।
 दुबायति (ती)-देखो 'दवायती' ।
 दुबायी-१ देखो 'दवा' । २ देखो 'दुहाई' । ३ देखो 'द्वारी' ।
 दुबार-देखो 'द्वार' ।
 दुबारका (जी)-देखो 'द्वारका' ।
 दुबारि-देखो 'द्वार' ।
 दुवारिका-देखो 'द्वारका' ।
 दुवारी-देखो 'द्वारी' ।
 दुवारी-पु० १ दो बार उलट कर निकाला हुआ बरबाद ।
 २ द्वार । ३ देखो 'द्वारौ' ।
 दुवाळ-पु० १ घंटा, प्रपंच, भ्रम । २ देखो 'द्वाली' ।
 दुवावणी (बी)-देखो 'दुवाणी' (वी) ।
 दुबाह (हो)-देखो 'दुबाह' ।
 दुविधा, (घ्या)-स्त्री० [सं० द्विविधा] १ एक साथ आने वाली दो उलझनें । २ दोहरी विचारधारा । ३ अनिश्चितता की स्थिति । ४ चिंता, दुःख । ५ संदेह, संशय । ६ असमंजस । पशोपेक्ष । धर्म संकट ।
 दुविहार-पु० [सं० द्वि-ग्राहार] दो प्रकार का ग्राहार ।
 दुवीषण-देखो 'दुर्वचन' ।
 दुर्व-वि० [सं० द्वि] १ दोनों, दो । २ दूसरा, द्वितीय ।
 दुर्वी-१ देखो 'दुर्वी' । २ देखो 'दुर्वी' ।
 दुस्त-वि० १ दुष्ट, असाधु । २ देखो 'दुस्त' । -पु० संधि स्थल, जोड़ ।
 दुस-पु० [सं० द्विज] १ ब्राह्मण । २ पंडित, ज्ञानी ।
 दुसकृत, दुसकृत-देखो 'दुस्कृत' ।
 दुसट-देखो 'दुस्ट' । (स्त्री० दुसटा)
 दुसटसासना-पु० [सं० दुष्ट-शामन] दुष्टोचित दण्ड ।
 दुसटांढ-वि० [सं० दुष्ट-दलन] दुष्टों का नाश करने वाला ।
 -पु० ईश्वर, परमात्मा ।
 दुसटी-देखो 'दुस्ट' । (स्त्री० दुसटण, दुसटणी)
 दुसतर-देखो 'दुस्तर' ।
 दुसम-वि० १ बुरा । २ कठिन । ३ देखो 'दुखम' ।
 दुसमण-पु० [फा० दुश्मन] १ शत्रु, वैरी । २ विरोधी, प्रतिपक्षी ।
 दुसमणायणी, दुसमणी-स्त्री० [फा० दुश्मनी] १ शत्रुता, वैर ।
 २ विरोध । ३ बदले की भावना ।
 दुसराणी (बी), दुसरावणी (बी)-क्रि० चूट निकालना, कमी निकालना । निंदा करना ।
 दुसरावण-पु० भोज्य सामग्रों का मजा हुआ थाल ।
 दुसवार-वि० [फा० दुश्वार] १ कठिन, दुर्लभ । २ दुःसह ।
 दुसवारी-स्त्री० [फा० दुश्वारी] कठिनाई, अशुविधा ।

दुसह-वि० [सं० दुःसह] १ भयंकर, भयावह । २ असह, दुःखदायी । ३ कठिन, दुस्तर । -पु० १ शत्रु, वैरी ।
 २ अग्नि । ३ क्रोध । -क्रि० वि० दूर, पृथक ।
 दुसही-वि० [सं० दुःसह] १ जो कठिनता से सह सके, दुस्सह ।
 २ ईर्ष्यालु ।
 दुसही-पु० [सं० दुःसह] शत्रु, वैरी ।
 दुसाकियो-देखो 'दुसाको' ।
 दुसाको, दुसाखियो, दुसाखी, दुसाखी-पु० [सं० द्वि+शाक] १ दो कटोरियों का जुड़ा हुआ पात्र विशेष । २ दो फसलों वाला खेत, भूमि या क्षेत्र ।
 दुसार, दुसारक, दुसारण-क्रि० वि० आरपार । -स्त्री० १ तलवार । २ आरपार छेद । ३ शस्त्र का दोनों ओर का पैना भाग । ४ भाला ।
 दुसारां-क्रि० वि० इस ओर से उस ओर, आर-पार ।
 दुसाल-पु० १ आर-पार का छेद । २ देखो 'दुसाली' ।
 दुसालापोस-वि० [फा० दोशाल-पोश] जो दुशाला ओढ़े हो, अमीर ।
 दुसालाफरोस-पु० [फा० दोशालःफिरोश] दुशाला बेचने वाला ।
 दुसाली-पु० [फा० दोशालः] १ ओढ़ने का रेशमी वस्त्र विशेष ।
 २ दो परत जुड़ी चादर । ३ एक सर्प विशेष ।
 दुसासन, (ख, न)-पु० [सं० दुःशासन] धृतराष्ट्र का एक पुत्र । -वि० निरंकुश ।
 दुसील-वि० [सं० दुःशील] शील रहित, दुष्ट ।
 दुसुपन-पु० [सं० दुःस्वप्न] बुरा स्वप्न, अशुभ स्वप्न ।
 दुसूती-स्त्री० [सं० द्वि-सूत्र] दो तारों से बुना वस्त्र ।
 दुसेन्या-स्त्री० [सं० द्वि-सेना] दोनों ओर की सेना ।
 दुस्कर-वि० [सं० दुष्कर] १ जो सरलता से न किया जा सके ।
 २ दुस्साध्य । -पु० आकाश ।
 दुस्करण-पु० [सं० दुष्करण] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
 दुस्करम-पु० [सं० दुष्कर्म] बुरा कार्य, पाप ।
 दुस्करमो (मौ)-वि० [सं० दुष्कर्म] १ बुरे काम करने वाला ।
 २ पापी, नीच । ३ दुष्ट ।
 दुस्काळ-पु० [सं० दुष्काल] १ बुरा समय । २ अकाल, दुर्भिक्ष । ३ महादेव । ४ प्रलयकाल ।
 दुस्कीरति-स्त्री० [सं० दुष्कीर्ति] अप्रशंसा, कुकीर्ति, बदनामी ।
 दुस्कुळ-वि० [सं० दुष्कुल] नीच कुल का, तुच्छ घराने का ।
 -पु० नीच कुल । बुरा खानदान ।
 दुस्कुलीन-वि० [सं० दुष्कुलीन] नीच कुल का, निम्न वंश का ।
 दुस्कृत, दुस्कृति(ती), दुस्कृत, दुस्क्रात, दुस्क्रती-१ देखो 'दुस्कृत' ।
 २ देखो 'दुस्कृति' ।
 दुस्खदिर-पु० [सं० दुष्खदिर] एक वृक्ष विशेष ।
 दुस्चिक्वय-पु० [सं० दुश्चिक्वय] ज्योतिष में जन्म मृत्यु से तीमरा स्थान ।

दुष्ट पु० [सं० दुष्ट] १ शत्रु । २ चोर । ३ कुष्ठ रोग । -वि०
१ दुर्जन, दुराचारी, आतंकारी । २ पापी । ३ भ्रष्ट,
कलंकित । ४ बिगड़ा हुआ । ५ दुष्ट । ६ जुल्मी, अपराधी ।
७ नीच, ओछा । ८ दोष पूर्ण । ९ कष्टदायी ।
१० निरुद्ध ।

दुष्टता-स्त्री० [सं० दुष्टता] १ बुराई, खराबी । २ बदमाशी ।
३ ऐद, दोष । ४ शत्रुता । ५ नीचता, ओछापन ।
६ जुल्म, अपराध ।

दुष्टी-देखो 'दुष्ट' ।

दुस्तर-वि० [सं०] १ कठिनता से पार होने वाला । २ कठिन,
बिकट ।

दुस्फोट-पु० [सं० दुष्फोट] शस्त्र विशेष ।

दुस्मरण-देखो 'दुस्मरण' ।

दुस्मरणी-देखो 'दुस्मरणी' ।

दुस्यंत-पु० [सं० दुस्यन्त] पुरुवंशीय एक राजा ।

दुस्यासन, दुस्सासन, दुस्सासेण-देखो 'दुसासन' ।

दुहंडणी (बौ)-क्रि० संहार करना, मारना, नाश करना ।

दुह-देखो 'दुख' ।

दुहड़ज, दुहड़ो-देखो 'दुहो' ।

दुहण-देखो 'दुहण' ।

दुहणी (बो)-देखो 'दुहणी' (बो) ।

दुहृत्वि-वि० [सं० द्वि-हृत्] १ दो हाथ वाला । २ दो मूठ
वाला । ३ देखो 'दोहृत्' ।

दुहृत्वि (त्वी)-स्त्री० माल मेष की एक कसरत ।

दुहृत्वि-वि० [सं० द्वि-हृत्] दो हाथ लम्बा ।

दुहृत्वि (वी)-स्त्री० [सं० द्वि-हृत्] तलवार ।

दुहरी-१ देखो 'दोरी' । २ देखा 'दोहरी' ।

दुहवणी (बो)-क्रि० [सं० दुःखापन] नाराज करना, कष्ट
पहुँचाना । पीड़ित करना ।

दुहव-वि० [सं० द्वि] दोनों । -क्रि० वि० दोनों ओर ।

दुहाई-स्त्री० १ घोषणा, भुनाई । २ राजाजा । ३ प्रवाण,
तेज । ४ बचाव पक्ष की पुकार । ५ सहायता की याचना ।
६ मोगध, क्रम । ७ देखो 'दुवारी' ।

दुहाण-पु० [सं० दुर्भाग्य] १ वैधव्य । २ पति परित्यक्तता की
अवस्था । ३ वियोग, विछोह । ४ दुर्भाग्य, बदनीमीबी ।
५ दुःख, कष्ट ।

दुहाण (गण, गिण, गिली, गित, गिनी)-स्त्री०
[सं० दुर्भाग्य] १ पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री । २ भाग्य
हीन स्त्री । ३ विधवा । ४ दुःखी व पीड़ित स्त्री ।

दुहाणियो, दुहाणी-वि० [सं० दुर्भाग्य] -वि० (दुहाण)
१ दुःखी, पीड़ित । २ दुर्भाग्य, अभागा ।

दुहाणिकरोती-पु० [सं० द्वि-हृत्-कर पत्रक] ग्यारी, करोती ।

दुहाण्य-पु० [सं० द्वि-हृत्] सिंह के अगले पांव का पंजा ।

दुहारी-पु० दुहने वाला ।

दुहावणी-स्त्री० १ माय, भैंस आदि का दूध दूहने का कार्य ।
२ दूध दूहने का पारिवर्त्मिक ।

दुहावणी (बो)-देखो 'दुहाणी' (बो) ।

दुहण-पु० [सं० दुहण, दुहण] बह्ना ।

दुहिता-स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या, लड़की । -पति-पु० जमाना,
दामाद ।

दुहिलज, दुहिली-१ देखो 'दोहिली' । २ देखा 'दुहली' ।

दुही-देखो 'दुखी' ।

दुहु-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दुहुवां-क्रि० वि० १ दोनों ओर । २ दोनों से । -वि० दोनों ।

दुहुवै-वि० दोनों ।

दुहु-वि० दोनों ।

दुहुधत-पु० [सं० द्वि + धृत्] स्वामिकांतिकेय ।

दुहू, दुह-देखो 'दुह' ।

दुहेल-पु० [सं० दुहेल] दुःख, विपत्ति, मुसीबत ।

दुहेलज, दुहेलु (बौ)-देखो 'दोहिली' । (स्त्री० दुहेली) ।

दुहेली-वि० [सं० दुहेला] १ संकटयुक्त । २ संकटग्रस्त ।
[सं० दुर्लभ] ३ दुष्प्राप्य । ४ दुर्लभ । ५ देखो 'दोहिली' ।

दुहोतरी-देखो 'दोहिली' ।

दुहो-देखो 'दुहो' ।

दुह्य-पु० [सं०] राजा ययाति का एक पुत्र ।

दुह्निद, दुरह्निद-पु० [सं० दुःहृदयिन्] शत्रु, दुश्मन ।

दुंग-देखो 'दुंग' ।

दुण, दुणू-देखो 'दुणी' ।

दुव-१ देखो 'दुंद' । २ देखो 'दुंद' ।

दुवठाळ, दुंदाळ, दुंदाळी-वि० बड़े उदर वाला, पेटू ।

दुंदुह-देखो 'दुदुह' ।

दुंब, दुंबलियो-देखो 'दुंबो' ।

दुंबाडत, दुंबायत-पु० छोटा जागीरदार ।

दुंबो-पु० १ छोटे गांव के राजस्व का राज्य में दिया जाने वाला
अंश । २ भूमि के बीच उभरा हुआ भाग । ३ धूल
का ढेर ।

दुर्भाग्य-वि० [सं० दुर्गम] १ कठिनता से पार करने योग्य ।
२ दुर्गम, कठिन । ३ भारी असह्य ।

दुर्भार, दुर्भारि (री)-देखो 'दुर्भार' ।

दुर्भासर-पु० एक आभूषण विशेष ।

दुर्दज-देखो 'दुर्ज' ।

दुर्ज-पु० [सं० दोत्य] संदेश, पैगाम । समाचार ।

दुखी-१ देखो 'दुखा' । २ देखो 'दुखी' । ३ देखो 'दुहो' ।

दूकणियो, दूकणी-देखो 'दूखणी' ।

दूकणी(बी)-देखो 'दूखणी' (बी) ।

दूख, दूखड़, दूखड़ी-देखो 'दुख' ।

दूखण-देखो 'दूसण' ।

दूखणावणी-पु० [सं० दुःख] दर्द, पीड़ा ।

दूखणावणी (बी)-देखो 'दुखाणी' (बी) ।

दूखणियो-देखो 'दूखणी' ।

दूखणी-पु० १ फोड़ा, कुंसी । २ घाव, क्षत ।

दूखणी, (बी)-कि० [सं० दुःख] १ पीड़ित होना, दुःखना, दर्द होना । २ प्रसह्य लगना, बुरा लगना । ३ दोष लगाना, कलंकित करना ।

दूखर, (री)-देखो 'दूमण' ।

दूखाणी (बी), दूखावणी(बी)-देखो 'दुखाणी' (बी) ।

दूखियो-देखो 'दूखणी' ।

दूखर-देखो 'दुखर' ।

दूखरल, दूखरेल, दूखरैल-देखो 'दुखर' ।

दूज-स्त्री० [सं० द्वितीया] १ मास के प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि । द्वितीया । २ देखो 'दुज' ।

दूजड़-देखो 'दूजो' । (स्त्री० दूजो) ।

दूजड़-देखो 'दुजड़' ।

दूजण-पु० [सं० द्विजन] १ गृहस्थ, विवाहित । दंपती । २ देखो 'दुरजण' ।

दूजणी-देखो 'दूझणी' ।

दूजणी (बी)-देखो 'दूझणी' (बी) ।

दूजवर, दूजवर-पु० [सं० द्वितीयवर] दूसरा विवाह करने वाला व्यक्ति ।

दूजाण-पु० [सं० द्विज-जन] ब्राह्मण, विप्र । -वि० दूसरा ।

दूजियाण-स्त्री० दूसरी बार बच्चा देने वाली गाय व मादा पशु ।

दूजोड़ी-देखो 'दूजो' । (स्त्री० दूजोड़ी) ।

दूजो-वि० [सं० द्वितीया] (स्त्री० दूजो) १ दूसरा, दो के स्थान वाला, एक के बाद वाला । २ गौर, अन्य । ३ गौर, परायण । ४ स्थान या एवजी वाला । -पु० १ अपने पूर्वज के समान मृग वाला व्यक्ति । २ गौर ।

दूज्यू, दूज्यू-देखो 'दुज्यू' ।

दूझ-१ देखो 'दूज' । २ देखो 'दोझ' ।

दूझड़-देखो 'दुझड़' ।

दूझड़ी-वि० [सं० दोहनी] दूध देने वाला । -स्त्री० गाय, गौ ।

दूझणी (बी)-कि० [सं० दोहन] १ दूध देना । २ आमदनी होना ।

दूझल-देखो 'दुझल' ।

दूझार, दूझाल, दूझाली-वि० [सं० दुग्ध+आलुव] १ अधिक दूध देने वाली । २ देखो 'दुझाल' ।

दूठ-१ देखो 'दुष्ट' । २ देखो 'दूठ' ।

दूटी-स्त्री० ऊट की मांख में होने वाली एक ग्रंथि ।

दूठ-वि० [सं० दुष्ट] १ शीघ्र नाराज होने वाला, उग्र, क्रूर । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ वीर, बहादुर । ४ देखो 'दुष्ट' ।

दूठणी, (बी)-कि० क्रोध करना, कोप करना ।

दूठमल-वि० [सं० दुःस्थ-मल] योद्धा, वीर ।

दूण-पु० [सं० द्विगुण] १ दुगुना भाग, हिस्सा या मात्रा । २ देखो 'दूणी' ।

दूणता-स्त्री० दुगुनी मात्रा ।

दूणभुजंगी-स्त्री० घाठ 'य' गण का छंद विशेष ।

दूणगिर (गिरि, गिरी)-देखो 'द्वोणगिरि' ।

दूणू-देखो 'दूणी' ।

दूणैटी, दूणैटी-पु० १ दुगुना अंश, भाग या मात्रा । २ दुगुना भाग लेने का हक । ३ देखो 'दूणी' ।

दूणी-वि० [सं० द्विगुण] (स्त्री० दूणी) दुगुना, द्विगुण । -पु० एक द्विगल गीत विशेष ।

दूणी (बी)-देखो 'दूवणी' (बी) ।

दूण-छट्टी-सावझड़ी-पु० एक द्विगल गीत ।

दूत-पु० [सं०] (स्त्री० दूती) १ संदेश वाहक, चर, पत्रवाहक । २ इधर की बात उधर ले जाने वाला व्यक्ति । ३ राजा का दूत । ४ यमदूत । -पाळक-पु० एक राज्याधिकारी ।

दूतर-पु० १ चन्द्रमा । २ देखो 'दुस्तर' ।

दूति, दूतिका, दूती-स्त्री० [सं० दूती] १ प्रेमी-प्रेमिका या नायक-नायिका के बीच सम्पर्क कराने वाली स्त्री । २ चुगली करने वाली स्त्री । ३ चुगली । ४ दासी, नौकरानी । ५ कुटनी । ६ संदेश ले जाने वाली स्त्री, परिचायिका । -[सं० द्वि+हस्त] ७ जुलाहे का उपकरण विशेष ।

दूतीय-देखो 'दुतीय' ।

दूतीयो-पु० [सं० द्वितीय] १ द्विधी भाव, द्विधा भाव । २ देखो 'दुतीयो' ।

दूथ-वि० [सं० दुष्ट] यांढा, वीर ।

दूथो-पु० [सं० द्विथः] १ चारण, कवि । २ कवि ।

दूद-१ देखो 'दूध' । २ देखो 'दूदो' ।

दूदड़-देखो 'दूध' ।

दूदड़ली, दूदड़ियो, दूदड़ो-१ देखो 'दूध' । २ देखो 'दूदो' ।

दूदाण-दूदा-पु० राव दूदा के वंशज मेड़तिया गठीड़ ।

दूदियो-१ देखो 'दूध' । २ देखो 'दूधियो' ।

दूदो-देखो 'दूधो' ।

दूदु-पु० पत्तों का बना दोना, पात्र ।

दूदुह-पु० निविण गर्व ।

दूध

(६७०)

दूरबा

दूधो-पु० १ राव जोधा का एक पुत्र व मेड़ता का अधिपति ।
 २ देखो 'दूध' ।
 दूधो-देखो 'दूध' ।
 दूध, दूधई-पु० [सं० दुग्ध] १ मादा प्राणियों के स्तनों का रस,
 दूध । २ क्षीर वृक्षों का रस । ३ अनाज के कच्चे दानों का
 रस । ४ वंश, गौत्र ।
 दूधका-पु० पाटल वृक्ष ।
 दूधकोसी-स्त्री० नेपाल राज्य के अन्तर्गत एक नदी ।
 दूधगिलारी, दूधगिलासड़ी-स्त्री० छिपकली की जाति का
 एक जीव ।
 दूधड़लो, दूधड़ियो, दूधड़ो-देखो 'दूध' ।
 दूधचढ़ी-वि० [सं० दूध-उच्चलन] १ जिसके स्तनों में दूध बढ़
 गया हो । २ गर्भवती (मादा पशु) ।
 दूधड़ियो-पु० १ दो बराबर खण्डों वाला । २ दूध ।
 दूध-बैन-स्त्री० एक ही माता का दूध पीकर पलने से लगने
 वाली बहन ।
 दूध-भाई-पु० एक ही माता का दूध पीकर पलने से लगने
 वाला भाई ।
 दूध-मूँहो-पु० [सं० दुग्ध-मुख] अवोध बच्चा ।
 दूधसेराह-पु० दूधिया रंग का घोड़ा ।
 दूधा-स्त्री० बाह्यणों की एक शाखा ।
 दूधाधारि (री)-वि० [सं० दुग्धाहारी] केवल दूध का आहार
 लेने वाला ।
 दूधापांसी-पु० एक प्रकार का टोना ।
 दूधार, दूधारू, दूधाळ, दूधाळू, दूधाळी-वि० १ दूध वाला ।
 २ दूध जैसे रंग का गाढ़ा ।
 दूधाहारी-वि० [सं० दुग्धाहारी] दूध पीकर निर्वाह करने वाला
 दूधिया पत्थर-पु० दूध के रंग का मुलायम पत्थर विशेष ।
 दूधियादांत-पु० दूध पीती अवस्था में ही आजाने वाले बच्चों
 के दांत ।
 दूधियो-पु० १ एक प्रकार का रत्न । २ मफेद व मुलायम पत्थर ।
 ३ हल्की सफेदी । ४ लकड़ी का कोयला । ५ लौकी ।
 ६ एक जंगली फल । -वि० १ दूध का, दूध संबंधी ।
 २ दूध के रंग का, श्वेत । ३ दूध के योग से बना ।
 दूधी-स्त्री० [सं० दुग्धिका] १ छितराने वाला एक पौधा ।
 २ एक लता विशेष ।
 दूधीउ-पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
 दूधीगडोळियो-पु० १ लौकी । २ एक प्रकार का कीड़ा ।
 दूधेलि (नी)-स्त्री० १ एक प्रकार की लता विशेष ।
 २ देखो 'दूध' ।
 दूधो-देखा 'दूध' ।
 दूधो-पु० [सं० दूधो] पत्ता का कटोरा, दोना ।

दूध्यां-वि० [सं० द्वि] १ दोनों । २ देखो 'दुनियाँ' ।
 दूपराणी (बौ)-क्रि० १ रोना, रुदन करना, विलाप करना ।
 २ करुण क्रन्दन करना ।
 दूपरी-स्त्री० रुदन, विलाप, करुण क्रन्दन ।
 दूब-देखो 'दोब' ।
 दूबक-देखो 'दवक' ।
 दूबड़, दूबड़ी-देखो 'दोब' ।
 दूबळउ-देखो 'दूबळी' ।
 दूबळती-देखो 'दोब' ।
 दूबळी-वि० [सं० दुर्वल] (स्त्री० दूबळी) १ कमजोर, अशक्त,
 निर्बल । २ पतला दुबला, कुशकाम्य । ३ गरीब, निर्धन ।
 दूबारी-पु० [सं० द्वि+बार] १ दो बार चल कर निकाला
 हुआ शराब । २ दूसरी बार । ३ दो द्वार का कक्ष ।
 दूबो-पु० दो मुँह का सर्प ।
 दूब-देखो 'दोब' ।
 दूबर-वि० [सं० दुर्भर] १ दुःख पूर्ण, आपत्तिजनक । २ असह्य
 दुःसह्य । ३ कष्ट कर, कठिन, दुस्तर । ४ जो आसान न
 हो, कठिन । -स्त्री० गर्भहीन मादा ऊँट ।
 दूमणउ, दूमणी-देखो 'दुमनी' । (स्त्री० दूमणी) ।
 दूमणी (बौ)-क्रि० १ बलि किये बकरे के शिर व पैरों के
 बाल जलाना । २ कष्ट देना, पीड़ित करना ।
 दूमळा-पु० घाठ सगण का एक छन्द विशेष ।
 दूय-देखो 'दूत' ।
 दूयभावि-पु० [सं० दूत+भावेन] दूत भाव ।
 दूरंतरी-क्रि० वि० [सं० दूर+अन्तर] दूर ही से ।
 दूरंदाज-वि० १ दूर से निशाना लगाने वाला । २ दूरदर्शी ।
 दूरंदाजी-स्त्री० १ दूर से निशाना लगाने की क्रिया । २ दूरदक्षिता ।
 दूरंदेस-देखो 'दूरअंदेस' ।
 दूरंदेसी-वि० १ दूर देश का, विदेशी, परदेशी ।
 २ देखो 'दूरअंदेसी' ।
 दूर-क्रि० वि० [सं०] १ फासले पर, अंतर पर । २ हट कर,
 अलग रह कर । -वि० १ नजर से ओझल, अलग,
 पृथक । २ जो पास न हो ।
 दूर-अंदेस-वि० [फा० दूर अंदेस] दूरदर्शी, आगे की सोचने
 वाला ।
 दूर-अंदेसी-स्त्री० [फा०] दूरदक्षिता ।
 दूर-तेरी-पु० [सं० दूर+तारी] केवट, नाविक ।
 दूर-दरसक, दूरदरसी-वि० [सं० दूरदर्शक] १ दूर तक देखने
 वाला । २ दूर की सोचने वाला, दूरदर्शी ।
 दूरनेण-पु० [सं० दूर+नयन] गिद्ध ।
 दूरपलो-पु० १ दूरी का छोर । २ बहुत दूर की सीमा ।
 दूरबा-देखो 'दूरवा' ।

दूरभावी

(६७१)

देखानी

दूरभावी-वि० [सं०] भविष्य में होने वाला ।

दूरस-देखो 'दूरस' ।

दूरा-वि० [सं० अर्द्ध+पूरा] १ कम, थोड़ा । २ अपूर्ण ।

—पारी-वि० दूर से बार करने वाला, मारने वाला ।

दूरि-१ देखो 'दूर' । २ देखो 'दूरी' ।

दूरिट्ठ-वि० [सं० दूर+स्थ] दूर रहने वाला, दूरी पर स्थित, दूरस्थ ।

दूरितारवीर-पु० [सं०] बावन बीरों में से एक ।

दूरिपारवीर-पु० [सं०] बावन बीरों में से एक ।

दूरी-स्त्री० १ दो स्थानों या दो पदार्थों के बीच का अन्तर, फासला । २ यात्रा का मार्ग ।

दूरन्तर-क्रि० वि० [सं० दूर+अन्तर] दूर से, फासले पर ।

दूरे-अभिन्न-पु० [सं०] उनचास यक्षों में से एक ।

दूरी-देखो 'दूर' ।

दूलह, दूलो-देखो 'दुल्ही' ।

दूलहण, (रणी), दूलो-देखो 'दुलहण' ।

दूलो-पु० [सं० दुर्लभ] (स्त्री०) दुलहण, दुल्ही) १ विशेष वेश भूषा में, विवाह के लिये उद्यत युवक । २ नवविवाहित युवक ।

दूवणी (बी)-क्रि० [सं० दोहनम्] १ गाय, भैंस के स्तनों से दूध निकालना । २ सार निकालना, दोहन करना ।

दूवाई (यी)-१ देखो 'दूवारी' । २ देखो 'दुवायी' । ३ देखो 'दवाई' ।

दूवारी-स्त्री० १ दूध दूहने की क्रिया या भाव । २ दोहन । ३ दूध निकालने के कार्य का पारिश्रमिक । ४ दूध निकालने वाली स्त्री ।

दूवी-पु० [अ० दुवा] १ आज्ञा, हुक्म । २ प्रारब्ध, भाग्य । ३ देखो 'दुषी' । ४ देखो 'दूजी' । ५ देखो 'दूही' ।

दूष्य, दूष्य-देखो 'द्रोषदी' ।

दूस-पु० [सं० दूष्य] १ कपड़ा, वस्त्र । २ छद्मीन प्रकार के दण्डायुधों में से एक ।

दूसण-पु० [सं० दूषण] १ दोष, कलंक । २ अवगुण, गेह । ३ बुराई, खराबी । ४ दोष लगाने की क्रिया या भाव ।

५ 'खर' का भाई एक राक्षस । ६ सामयिक व्रत में त्याज्य वार्ते (जैन) ।

दूसणारि-पु० [सं० दूषणारि] श्रीरामचन्द्र ।

दूसम-देखो 'दुखम' ।

दूसय-पु० [सं० दूष्यम्] डेरा, खेमा, शामियाना, तंबू ।

दूसर, दूसरी-वि० [सं० द्वितीय] (स्त्री० दूसरी) १ एक के बाद वाला, दो के स्थान वाला, द्वितीय । २ अन्य, गैर ।

३ पूर्वजों के गुण वाला । ४ स्थानापन्न ।

दूसार (री)-देखो 'दूसार' ।

दूसित-वि० [सं० दूषित] १ अभिशप्त । २ दोष युक्त । ३ खराब, बुरा । ४ अशुद्ध । ५ अष्ट । ६ विगड़ा हुआ ।

दूसीविस-पु० [सं० दूषी-विष] विकार के कारण शरीर में पैदा होने वाला विष ।

दूहच, दूहचो-देखो 'दूही' ।

दूहणी (बी), दूहवणी (बी)-१ देखो 'दूवणी' (बी) । २ देखो 'दूमणी' (बी) । ३ देखो 'दुहवणी' (बी) ।

दूहेली-१ देखो 'दुहेली' । २ देखो 'दोहेली' । (स्त्री० दूहेली) ।

दूही-पु० [सं० दोषक] एक प्रसिद्ध मात्रिक लघु छंद ।

दे-पु० [सं० देव] १ धार्मिक ग्रंथ, पुराण । [सं० देवी] २ शिवा, भवानी । ३ एक प्रकार की चिड़िया । ४ स्त्री । —अव्य० १ संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय । २ पाद पूरक अव्यय । ३ से । ४ देखो 'देव' ।

देअणी-वि० [सं० दा] देने वाला ।

देअणी (बी)-देखो 'दैणी' (बी) ।

देअराणी-देखो 'देराणी' ।

देई-१ देखो 'दैई' । २ देखो 'देवी' ।

देउ-१ देखो 'देव' । २ देखो 'देवी' ।

देउर-देखो 'देवर' ।

देउराणी (नी)-देखो 'देराणी' ।

देउळ, देउळि-देखो 'देवळ' ।

देख, देखण, देखणी, देखणी-स्त्री० [सं० दृश्] १ देखने की क्रिया या भाव, अवलोकन । २ निगाह, नजर । ३ ध्यान । ४ दृष्टि । ५ आंख, नेत्र ।

देखणी (बी)-क्रि० [सं० दृश्] १ आंखों से देखना, दृष्टि डालना । अवलोकन करना । २ जांच करना, निरीक्षण करना । ३ तलाश करना, हुंढना । ४ निगरानी रखना, ध्यान रखना । ५ परीक्षा करना । ६ सोचना, विचार करना । ७ पढ़ना । ८ अनुभव करना । ९ भोगना, भुगतना । १० शुद्ध करना, सुधार करना ।

देखमाळ, देखरेख-स्त्री० १ निगरानी, चौकसी । २ रख-रखाव, संभाल । ३ साक्षात्कार, दर्शन । ४ निरीक्षण, जांच ।

देखाई-स्त्री० १ दिखाने की क्रिया या भाव । २ दिखाने का पारिश्रमिक । ३ दिखाने का इनाम ।

देखाऊ-पु० १ घोड़ों की एक जाति । २ देखो 'दिखाऊ' ।

देखानी(बी)-क्रि० [सं० दृश्] १ देखने के लिये प्रेरित करना ।

२ नजर के भासने करना, आंखों के आगे रखना, दिखाना ।

३ अवलोकन कराना । ४ जांच कराना । ५ तलाश कराना, हुंढवाना । ६ निगरानी कराना, ध्यान कराना । ७ परीक्षा कराना, जांच कराना । ८ पढ़वाना । ९ सुधारवाना, शुद्ध कराना । १० भोगाना, भुगतवाना ।

देखादेख, देखादेखी-स्त्री० [सं० दृश्] १ नकल, अनुकरण ।

२ देखने की क्रिया या भाव । अवलोकन । -कि०वि० देख-देख कर, दूसरी की देखादेखी ।

देखाळणी (बी)-देखो 'देखाणी' (बी) ।

देखाव-देखो 'दिखाव' ।

देखावट-देखो 'दिखावट' ।

देखावटी-देखो 'दिखावटी' ।

देखावणी (बी)-देखो 'देखाणी' (बी) ।

देखावो (हो)-देखो 'दिखावो' ।

देग, देगड़, देगड़ियो-पु० १ भोजन पकाने का बड़ा पात्र ।

२ देखो 'देगचो' ।

देगड़ी-पु० १ पानी ढोने का पात्र । २ देखी 'देगचो' ।

देगच, देगचियो, देगचो-पु० भोजन पकाने का बड़ा पात्र, देग ।

देगचो-स्त्री० माग-सब्जी पकाने का पात्र ।

देगव :-पु० अतिथि सत्कार, आतिथ्य ।

देगहत-वि० दानी, शतार ।

देज-पु० १ देना क्रिया । २ दहेज ।

देठाळउ, देठाळी-पु० [सं० दृश्] दिखने की अवस्था या भाव, दर्शन, भणिक दर्शन ।

देतर-देखो 'दैत्य' ।

देतादुयण-पु० [सं० दैत्यः दुर्जन] ईश्वर ।

देदीप्यमान-वि० [सं० देदीप्यमान] १ अत्यन्त प्रकाश युक्त, नेजोमय । २ चमकदार, जगमगाता हुआ ।

देबी-देखो 'देवी' ।

देयणहार-वि० देने योग्य ।

देर-स्त्री० [फा०] १ विलंब, अतिकाल, निर्धारित समय के बाद । २ समय, वक्त ।

देराणी-स्त्री० देवर की पत्नी ।

देराड़ी-स्त्री० मुंडन संस्कार की एक रश्म (पुष्करणा ब्राह्मण) ।

देराणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।

देराळी-स्त्री० लड़के का ब्रह्मचर्य वेश त्याग कराने की रश्म विशेष ।

देरावणी (बी)-देखो 'दिराणी' (बी) ।

देरी-देखो 'देर' ।

देरुतरी (तो, त्री)-स्त्री० [सं० देवर+पुत्री] देवर की पुत्री ।

देरुतरी (तो, त्री)-पु० [सं० देवर+पुत्र] देवर का पुत्र ।

देळी-स्त्री० [सं० देहली] १ देहलीज, देहली । २ मकान के द्वार पर लगी पट्टी ।

देव (उ)-पु० [सं०] १ दिव्य शरीरधारी व स्वर्ग का निवासी अमर प्राणी, मुर । २ उक्त प्राणियों की जाति । ३ इन्द्र ।

४ ब्राह्मण । ५ राजा, शासक । ६ दिव्य शक्तियों से युक्त प्राणी । ७ पूज्य व्यक्ति । ८ आदर सूचक संबोधन ।

९ बाह्याणों की उपाधि । १० देवर । ११ पारा । १२ देव-

दार । १३ ज्ञानेन्द्रिय । १४ ऋत्विज । १५ सूर्य, भानु ।

१६ महेश, रुद्र । १७ घोड़ा । १८ कीचरी । १९ तेतीस

की संख्याः । -[फा०] २० असुर, दैत्य, राक्षस ।

२१ हिन्दू । २२ देखो 'देव' । २३ देखो 'देवी' ।

—अंसी-वि० किसी देवता के अंश से उत्पन्न । —उठणी,

ऊठणी-स्त्री० कार्तिक शुक्ला एकादशी । —करम-पु०

देवता को प्रसन्न करने का कर्म । —कुंड-पु० श्मशान

भूमि में बना पवित्र जलाशय । प्राकृतिक जलाशय ।

—कुल्या-स्त्री० मरीचि और पूर्णिमा की एक कथा ।

गंगा नदी । —कच्छ-पु० एक प्रकार का व्यत । —गंगा-

स्त्री० एक छोटी नदी का नाम । गंगा । —गण-पु० देवता

लोग, देव समाज, नक्षत्र समूह । —गत, गति-स्त्री० भाग्य

की गति, प्रारब्ध, मरने के बाद प्राप्त होने वाली देवयोनि ।

संयोग । —गरम-पु० देवता के गर्म से उत्पन्न होने वाला

पुरुष । —गांधार-पु० एक राग विशेष । —गांधारी-स्त्री०

एक रागिनी । —गायक-पु० गंधर्व । —गायन-पु० गंधर्व ।

—गुह-पु० बृहस्पति । देवताओं के पिता कश्यप ।

—गुही-स्त्री० सरस्वती । —ग्रह-पु० देवालय । —घाली-

पु० एक प्रकार का इन्द्रजाल । —चिकित्सक-पु० अश्विनी

कुमार । दो की संख्याः । —जूर-स्त्री० देवयोनि । —जोग

—पु० संयोग, भाग्य । देवयोग । —जोणी='देवजूल' ।

—भूलणी-स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी तिथि । —ठणी=

'देवऊठणी' । —दसम, दसमी-स्त्री० दशमी तिथि ।

विशेष । —दासी-स्त्री० मंदिरों में नृत्य करने वाली दासी,

नर्तकी, वेश्या । —दुम-पु० कल्पवृक्ष, पारिजात, देवदार ।

—धन-पु० राय । —धाम-पु० स्वर्ग । देवस्थान, मंदिर ।

—धुनि, धुनी-स्त्री० गंगा नदी । —धूप-पु० गुग्गुलु ।

—धेनु-स्त्री० कामधेनु । —नंदी-पु० इन्द्र का द्वारपाल ।

—नदी-स्त्री० गंगा, सुरसरि । सरस्वती नदी । —नाथ

—पु० शिव । विष्णु, इन्द्र । —नायक-पु० इन्द्र, सुरपति ।

—निहंग-पु० सूर्य, रवि । —पत, पति-पु० विष्णु, इन्द्र ।

—पदमणी (नो)-स्त्री० आकाश गंगा । —पसु-पु० बलि

पशु । देव उपासक । —पुत्री-स्त्री० देवता की पुत्री ।

इलायची । कपूरी साग । —पुर, पुरी-स्त्री० इन्द्रपुरी,

अमरावती । स्वर्ग । —पुस्का-स्त्री० सोनजुही । —पौदणी-

एकादशी-स्त्री० आपाढ़ शुक्ला एकादशी । —प्रयाग-पु०

हिमालय का एक तीर्थ विशेष । —प्रसाद-पु० देवता का

प्रसाद । अनुग्रह । —बाळ, बाळा-स्त्री० सुरवाला ।

अम्भरा । —ब्रह्म-पु० नारद । —बाहारा-पु० पुजारी ।

—भाग-पु० देवता का भाग । —भासा-स्त्री० संस्कृत

भाषा । —भिसक-पु० अश्विनी कुमार । —भूमि-पु०

स्वर्गलोक । —भूख-पु० स्वामि कार्तिकेय । —मंदिर-पु० देवालय । —मणि-स्त्री० कौस्तुभमणि । एक श्रौषधि विशेष । सूर्य । धोड़े की मंजरी । —मानि-पु० देवताओं का काल, समय । —माया-पु० ईश्वर या देवता की रचना, क्रिया, प्रभाव, इच्छा । —मास-पु० देवताओं का मास । गर्भ का आठवां मास । —मुनि-पु० नारद । —मूरत, मूरति-स्त्री० देव प्रतिमा । —यजन-पु० यज्ञ की वेदी । —यजनी-स्त्री० पृथ्वी । —रथ, रथ-पु० देवताओं का विमान । —राज, राजा, राट-पु० इन्द्र । —रिषभ, रिषभ-देवमुनि । —रूप-पु० ईश्वरीय रूप, देवी रूप । —लोक-पु० स्वर्ग लोक । —वधू-स्त्री० देवांगना । अप्सरा । —वाणी-स्त्री० संस्कृत भाषा । आकाश वाणी । —बाहुन-स्त्री० अग्नि । —विहाग-स्त्री० एक रागिनी । वक्ष-पु० कल्पवृक्ष । मंदार । मूल । सतिवन । —संजोग-पु० संयोग । भात्री । इत्तफाक । —सच्ची-पु० शक्तिपति इन्द्र । —सदन-पु० देवालय । स्वर्ग । —सभा-स्त्री० देवताओं की सभा । राज सभा । —सरि-स्त्री० गंगा । —साक-स्त्री० एक संकर राग विशेष । —सिंधु-पु० मान सरोवर । —सुनी-स्त्री० देवलोक की कृतिया, सरमा । —सुरह-स्त्री० कामधेनु गाय । गाय । —स्थान-पु० मंदिर, देवालय । —खेणी-स्त्री० देवताओं की पंक्ति । मरोरफती, मूर्ति । —हंस-पु० एक प्रकार की बत्तख ।
 देवउकस-पु० [सं० देवीकस] देवता, सुर ।
 देवक-पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण के नाना एक यदुवंशी राजा । २ देवता, सुर ।
 देवकाळी-पु० [सं० देव-कालः] एक देव, मौरव ।
 देवकी-स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की माता । —नंदन(न)पुत्र-पु० श्रीकृष्ण, ईश्वर ।
 देवकुच-पु० [सं०] जम्बूद्वीप के ६ खण्डों में से एक ।
 देवकूट-पु० [सं०] १ कुबेर का एक पुत्र । २ एक पवित्र आश्रम ।
 देवगण-पु० [सं०] १ देव वर्ग, समाज । २ देवों के अनुचर । —वंव-पु० विष्णु ।
 देवगर-देखो 'देवगिरि' ।
 देवगरी-पु० [सं० देव-करणः] राज्याधिकारी विशेष ।
 देवगरी-पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।
 देवगिर-देखो 'देवगिरि' ।
 देवगिरि-स्त्री० [सं०] देववाणी, आकाशवाणी ।
 देवगिरि (री)-पु० [सं०] १ सुमेरु पर्वत । २ गिरनार पर्वत । ३ देवगिरि पर्वत का पत्थर । ४ एक प्राचीन नगर । ५ सम्पूर्ण जाति को एक राग । ६ घोड़ों की एक जाति ।
 देवगिरी-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

देवड़ी-देखो 'देव' ।
 देवची-पु० १ प्रतिज्ञा । २ देखो 'देवचो' ।
 देवज-वि० [सं०] देवताओं से उत्पन्न ।
 देवजस-पु० [सं० देवयज्ञ] भक्ति रस के गीत, भजन, स्तुति ।
 देवजसा-देखो 'देवयसा' ।
 देवजी-पु० एक इतिहास प्रसिद्ध बगड़ावत वीर, देवजी ।
 देवजीभि-पु० एक प्रकार का चावल ।
 देवजीरोटी-पु० मसालेदार एक मोटा रोटा ।
 देवण-पु० [सं० देवता] १ देवता । २ देने की क्रिया या भाव । —वि० देने वाला ।
 देवणी-देखो 'देणी' ।
 देवणी (बी)-देखो 'देणी' (बी) ।
 देवत, देवतड़ी-पु० [सं० देवत] १ स्वर्ग का अमर प्राणी, देव । सुर । २ देव समूह । ३ मूर्ति । —पणी-पु० देवबल, देवत्व ।
 देवतर-देखो 'देवतह' ।
 देवतरपण-पु० [सं० देवतर्पण] देवता के नाम पर किया जाने वाला तर्पण ।
 देवतर-पु० [सं०] मंदार, पारिजात आदि देव वृक्ष ।
 देवतरेसर-पु० [सं० देवतर-ईश्वर] कल्प वृक्ष ।
 देवता-पु० [सं०] १ स्वर्ग वासी दिव्य एवं अमर प्राणी, सुर । २ ब्राह्मण । ३ चारण । —वि० १ सोधा-सादा, सरल । २ गरीब । ३ शांत एवं गंभीर । —धिप-पु० इन्द्र ।
 देवतावसर-वि० देवताओं के समान ।
 देवतिथी-देखो 'देवता' ।
 देवतीरथ-पु० [सं० देवतीर्थ] १ अंगुलियों का अग्र भाग । २ देव पूजन का उचित समय ।
 देवत्रयी-पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
 देवदत्त-पु० [सं०] १ अर्जुन का शत्रु । २ अष्ट कुल नागों में से एक । ३ देवता के निमित्त दी हुई वस्तु । ४ शरीरस्थ पांच वायु में से एक । —वि० १ देवता द्वारा प्रदत्त । २ देव निमित्त प्रदत्त ।
 देवदार-पु० [सं० देवदारू] गहाड़ी स्थानों में होने वाला वृक्ष विशेष । देवदारू ।
 देवदारावि-पु० [सं० देवदारावि] एक क्वाथ ।
 देवदाळि, (ळी)-पु० [सं० देवदात्री] एक लता विशेष ।
 देवदिवाळी, देवदीवाळी-स्त्री० [सं० देवदीपमालिका] कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा का दिन ।
 देवदुस्य, देवदुस्यवस्त्र, देवदूसितवस्त्र, देवदूस्य, देवदूस्यवस्त्र-पु० वस्त्र विशेष ।
 देवदेव-पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, इन्द्र ।
 देवदेवाधि-पु० [सं०] विष्णु, शिव, इन्द्र ।

देवदेवाळा

(६७४)

देवानुज

देव देवाळा-पु० देवालय ।

देवधुनि (धुनी)-स्त्री० [सं० देवधुनिः] गंगा नदी ।

देवतगां-स्त्री० चारण वंशीय एक देवी विशेष ।

देवनामा-पु० [सं० देवनामन्] १ कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम ।

२ कुश द्वीप के राजकुमार का नाम ।

देवनागरी-स्त्री० [सं०] भारतीय भाषाओं की प्रसिद्ध लिपि ।

देवनीक-वि० [सं० देवनीकः] १ देव तुल्य । २ इन्द्र ।

देवपर-पु० [सं०] आपात्काल में भी निष्क्रिय रहने वाला पुरुष ।

देवबद-पु० [सं०] छोड़े के छाती पर की भंवरी ।

देवमीढ़-पु० [सं०] १ एक यदुवंशी राजा । २ मिथिला का एक प्राचीन राजा ।

देवयसा-पु० [सं० देवयसः] एक जैन मुनि ।

देवयाण (यान)-पु० [सं० देवयान] मरणोपरान्त जीवात्मा के ब्रह्म लोक जाने का मार्ग ।

देवयानी-स्त्री० [सं० देवयानी] १ शुक्राचार्य की पुत्री व राजा ययाति की पत्नी का नाम । २ सांभर का एक तीर्थ ।

देवर-पु० [सं०] पति का छोटा भाई । —बट-प० पति की मृत्यु के पश्चात् देवर की पत्नी बनकर रहने की प्रथा ।

—व्याह-पु० देवर के साथ किया जाने वाला पुनर्विवाह ।

देवराणी-देखो 'देराणी' ।

देवरारित्रोर-पु० [सं०] बावनवीरों में से एक ।

देवरियो-१ देखो 'देवर' । २ देखो 'देवरी' ।

देवरी-पु० [सं० देवगृह] १ देवालय, मंदिर । २ जैन मंदिर । ३ राजा महाराजाओं का स्मृति भवन ।

देवळ, देवल-पु० [सं० देवालय] १ देवस्थान, देव मंदिर । २ स्मृति-भवन । ३ प्रतिहार वंश की एक शाखा । ४ देवल ऋषि की संतान । —स्त्री० ५ सिंहायच चारण कुलोत्पन्न एक देवी । ६ आणंद मीसण की पुत्री एक देवी । ७ देखो 'देवळी' ।

देवळयभी-पु० हाथी ।

देवळी-स्त्री० १ छड़े पत्थर पर बनी मूर्ति या प्रतिमा । २ मूर्ति, प्रतिमा । ३ समाधि ।

देवलोक-पु० देवताओं का निवास स्थान, स्वर्ग ।

देवळी-देखो 'देवळ' ।

देववंसी-स्त्री० दजियों की एक शाखा ।

देववरणिनी-स्त्री० [सं० देववरणिनी] कुबेर की माता ।

देववरधन-पु० [सं० देववर्द्धन] १ श्रीकृष्ण के मामा । २ राजा देवक का पुत्र ।

देववलभा देववलभा-स्त्री० [सं० देव-वल्लभा] केसर ।

देववायु-पु० [सं०] बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम ।

देवसावरणि-पु० [सं०] तेरहवें मनु का नाम ।

देवसुयानी-देखो 'देवयानी' ।

देवसेन-स्त्री० [सं०] १ बावन वीरों में से एक । २ एक तीर्थंकर का नाम ।

देवसेना-स्त्री० [सं०] १ देवों की सेना । २ प्रजापति की कन्या । —पति-पु० स्कंद ।

देवसुधा-पु० [सं० देवश्रवस्] १ विश्वामित्र का एक पुत्र । २ वसुदेव का भाई ।

देवस्व-पु० [सं०] १ देवसेवा में समर्पित धन, सम्पत्ति । २ यज्ञशील मनुष्य का धन ।

देवहर-देखो 'देवरी' ।

देवहालि (ली)-स्त्री० एक प्रकार की लता ।

देवहृति-स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनु की पुत्री व कर्दम मुनि की पत्नी ।

देवहृत्प-पु० [सं० देवहृत्] श्रीपर्वत का एक सरोवर ।

देवांग्राणीवाण, देवांग्रावेवाण-पु० [सं० देव-अग्रगण्य] गणेश, गजानन ।

देवांग, देवांगरी-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

देवांगणा, (ना)-स्त्री० [सं० देवांगना] १ स्वर्ग की स्त्री । २ अप्सरा ।

देवांग-पु० १ ब्रह्मा । २ देवता । ३ पूज्य पुरुष ।

देवांतक-पु० [सं०] रावण का एक पुत्र ।

देवादेव-पु० [सं० देवाधिदेव] १ श्रीकृष्ण । २ श्रीविष्णु ।

देवांपत (पति, पती)-देखो 'देवपति' ।

देवांराज-देखो 'देवराज' ।

देवांसी-१ देखो 'देवधंसी' । २ देखो 'देवासी' ।

देवा-पु० देवर ।

देवाई-स्त्री० देवत्व ।

देवाकर-देखो 'दिवाकर' ।

देवागिर-देखो 'देवगिर' ।

देवाट-पु० हरिहर क्षेत्र नामक तीर्थ ।

देवातणी-पु० देवत्व, देवी वन ।

देवातन-पु० देवी शक्ति, देवी वन ।

देवातिथि-पु० [सं०] एक पुरुषशीय राजा का नाम ।

देवानिदेव-पु० विष्णु ।

देवात्मा-पु० [सं०] १ देव स्वरूप । २ अश्वत्थ, पीपल ।

देवादिदेव-देखो 'देवाधिदेव' ।

देवाधण-स्त्री० [सं० देव-धन] गाय ।

देवाधिदेव, देवाधिप-पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ विष्णु । ३ इन्द्र ।

देवानीक-पु० [सं०] १ एक सूर्यवंशी राजा । २ देवों की सेना ।

देवानुज-पु० [सं०] दैत्य, असुर ।

देवाभ्य-पु० [सं० देवभ्यः] अमृत, सुधा ।
 देवायु-स्त्री० [सं० देवायुस] देवताओं की आयु ।
 देवारण्य-पु० [सं० देवार्यः] अर्हत का एक गण (जैन) ।
 देवारि-पु० [सं०] १ बावन वीरों में से एक । २ असुर, राक्षस ।
 देवाळ-वि० [सं० दा] देने वाला, दाता ।
 देवालय, देवालय-पु० [सं० देवालय] १ देवता का मन्दिर ।
 २ मन्दिर की तरह बना कक्ष । ३ स्वर्ग ।
 देवाळि-स्त्री० देनदारी
 देवाळिथी-वि० [सं० दा] १ जिसकी पूंजी समाप्त हो चुकी, हो अपना ऋण चुकाने में असमर्थ, कंगाल । २ जिसके व्यापार में बड़ा भारी घाटा लग गया हो ।
 देवा-लेई-स्त्री० लेने-देने की क्रिया ।
 देवाळ-देखो 'देवालय' ।
 देवाळी-पु० [सं० दा] १ अत्यधिक ऋण । २ अधिक ऋण के कारण व्यापारी की साख उठ जाने की अवस्था ।
 ३ घाटे के कारण पूंजी समाप्त हो जाने की स्थिति ।
 ४ ऋण न चुकाने व प्रागे व्यापार न करने की घोषणा ।
 ५ देखो 'देवालय' ।
 देवावात-वि० [सं०] १ मन्दिर । २ स्वर्ग । ३ पीपल वृक्ष ।
 देवासी-पु० १ गडरिया जाति का व्यक्ति । २ देव अंशी ।
 देवास्व-पु० [सं० देवाश्व] इन्द्र का घोड़ा, उच्चैश्रवा ।
 देवि-देखो 'देवी' ।
 देविका-स्त्री० [सं०] १ एक पौराणिक नदी । २ घाघरा नदी ।
 देवी-स्त्री० [सं०] १ देव पत्नी, देवता की स्त्री । २ पार्वती, उमा । ३ दुर्गा, शक्ति । ४ सरस्वती, शारदा । ५ ब्राह्मण स्त्री । ६ राजमहिषी । ७ तब प्रसूता माय, मैस या बकरी । ८ दिव्य गुणों वाली स्त्री । ९ मरीच फली, भूर्वा । १० हर, हरीतकी । ११ श्यामा पक्षी । १२ कीचरी । १३ आर्या छंद का एक भेद ।
 देवीक-वि० दैवी चमत्कार वाला ।
 देवीकवच-पु० तन्त्रवार विशेष ।
 देवीपुराण-पु० देवी के अवतारों के वर्णन वाला पुराण ।
 देवीभागवत, (भागोत)-पु० एक उप पुराण विशेष ।
 देव-देखो 'देव' ।
 देवेद्र-पु० [सं०] देवताओं का राजा इन्द्र ।
 देवेस-पु० [सं० देवेश] १ परमेश्वर, ईश्वर । २ शिव । ३ विष्णु । ४ देवराज इन्द्र ।
 देवेस्य-पु० [सं० देवेश्य] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ विष्णु ।
 देवेसी-स्त्री० [सं० देवेशी] १ पार्वती, उमा । २ दुर्गा, देवी ।
 देवेष्ट-पु० [सं० देवेष्ट] गुग्गल, महामेदा । -वि० देवताओं का प्रिय ।

देवैथी-वि० देने वाला ।
 देवीकस-पु० [सं० देवीकस] देवताओं का स्थान, सुमेरु पर्वत ।
 देसंतर-देखो 'देसांतर' ।
 देसंतरि (री)-१ देखो 'देसांतरी' । २ देखो 'देसांतर' ।
 देस, देसड़ु, देसड़ली, देसड़ो, देसड़ो-पु० [सं० देश] १ राष्ट्र, देश । २ एक ही शासन के अधीन माना जाने वाला भू-भाग । ३ स्थान, जगह । ४ प्रान्त । ५ राज्य । ६ जन्म भूमि के आस-पास का क्षेत्र । ७ विभाग, हिस्सा । ८ राग विशेष । -कंत-पु० राजा । -कळी-स्त्री० एक रागिनी । -कार-स्त्री० एक राग विशेष । -कारी-स्त्री० एक रागिनी विशेष । -गांधार-पु० एक राग विशेष । -धणी, पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पह-पु० राजा । राष्ट्रपति ।
 देसचारित्र-पु० श्रावक द्वारा किया जाने वाला आंशिक त्याग ।
 देसज-पु० [सं० देशज] किसी भाषा का मूल शब्द । -वि० देश में उत्पन्न ।
 देसण, देसणा(ना)-स्त्री० [सं० देशना] १ उपदेश । २ व्याख्यान ।
 देसणोक-पु० [सं० देश-नाक] राजस्थान में बीकानेर के पास का एक गांव या कस्बा, जहां करणी माता का मंदिर है ।
 देसणळी-वि० मरु प्रदेश, रेगिस्तानी भू भाग ।
 देसनिकाळी-पु० [सं० देश निष्कास] देश में रहने न देने का दण्ड ।
 देसभासा-स्त्री० [सं० देश-भाषा] १ किसी देश की भाषा, राष्ट्रभाषा । २ बहतर कलाओं में से एक ।
 देसभासाग्यान-पु० [सं० देश-भाषाज्ञान] १ प्राकृतिक बोलियों का ज्ञान । २ चौसठ कलाओं में से एक ।
 देसमंडप-पु० [सं० देशमण्डप] रास्ते में बने विश्राम स्थल ।
 देसमल्लार-पु० [सं०] सम्पूर्ण जाति की एक राग ।
 देसराज-पु० [सं० देशराज] १ राजा, नृप । २ आल्हा व ऊदल के पिता ।
 देसड़ली-देखो 'देस' ।
 देसवट (टी)-देखो 'देसूटी' ।
 देसवरति-स्त्री० [सं० देशविरति] हिंसा आदि का आंशिक त्याग । (जैन)
 देसावळ-पु० [सं० देश-आलुच] स्वदेश का ।
 देसवाळी, देसवाळीपठाण-स्त्री० राजपूतों से मुसलमान बनी एक जाति ।
 देसवासी-पु० [सं० देश-वासिन्] देश का निवासी, स्वदेशी ।
 देसघरति-देखो 'देसवरति' ।
 देसाण (णी)-देखो 'देसणोक' ।
 देसांतर-पु० [सं० देशांतर] १ अन्य देश, विदेश । २ दूर देश । ३ स्वदेश से दूर । ४ पूर्व-पश्चिम की दूरी, लंबाण ।

देशांतर-विमेष-स्त्री० ७२ कलाओं में से एक ।
 देशांतरी-वि० [सं० देशांतरिक] १ विदेशी, परदेशी ।
 २ देखो 'दिमांतरी' । ३ देखो 'दिमांतर' ।
 देसाउर, देसाउरि-देखो 'दिमावर' ।
 देसाखी-स्त्री० [सं० देशाखी] वसंत ऋतु की एक रागिनी ।
 देसाचार-पु० [सं० देशाचार] किसी देश के आचार-व्यवहार ।
 देसाटण-पु० [सं० देशाटन] देश भ्रमण ।
 देसाधिप, देसाधिपति (पति)-पु० [सं० देशाधिप] राजा, नृप, राष्ट्रपति ।
 देसार-स्त्री० होली जाति की एक शाखा ।
 देसालिक-पु० [सं० दिशाभ्रालिक] दिशा-दर्शक, मार्ग-दर्शक ।
 देसाळी-स्त्री० एक जाति विशेष ।
 देसावर-देखो 'दिमावर' ।
 देसि देसी-वि० [सं० देशी] १ देश का, देश संबंधी । २ स्वदेश का बना । ३ स्वदेश में उत्पन्न हुआ । -पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ एक रागिनी विशेष । ३ देखो 'देस' ।
 देसीगोखरू-पु० [सं० देशी + गोक्षुर] जमीन पर फैलकर होने वाली एक कटिदार बूटी ।
 देसूटी, देसोट, देसोट, देसोटी-पु० [सं० देशात् + उत्थानम्] देश निकाले का दण्ड ।
 देसोट-पु० [सं० देशपति] १ देशपति, राजा । २ राजपुत्र, राजकुमार । ३ जागीरदार, मामंत, सरदार । ४ ऊंटों के झुण्ड के साथ रहने वाला व्यक्ति । -वि० १ वीर, थोड़ा । २ सुन्दर, रूपवान ।
 देसोटी-देखो 'देमोटी' ।
 देसोत-देखो 'देमोत' ।
 देह-स्त्री० [सं०] शरीर, तन ।
 देहकरण-पु० ७२ कलाओं में से एक ।
 देहड़ली, देहड़ी, देहड़ी-देखो 'देह' ।
 देहचिता-स्त्री० [सं०] मल त्याग की इच्छा ।
 देहज-वि० [सं०] (स्त्री० देहजा) १ देह से उत्पन्न । २ देह संबंधी ।
 देहतती-पु० [सं० देहतत्वी] मनुष्य ।
 देहत्याग-पु० [सं०] मृत्यु, मोत ।
 देहधारण-पु० [सं०] १ जन्म, उत्पत्ति । २ जीवन रक्षा ।
 देहधारी-वि० [सं० देह धारिन्] शरीरधारी ।
 देहनायक-पु० [सं०] १ देह का निर्माता । २ ब्रह्मा ।
 देहयात्रा-स्त्री० [सं०] १ पालन पोषण । २ भोजन । ३ मृत्यु मरण ।
 देहरइ, देहरइरज, देहरउ-देखो 'देवरी' ।
 देहरांधी, देहरांधी-वि० [सं० देव गृह-पथ] मंदिर मार्ग, पूति-पूजक ।
 देहरामर, देहरासक-पु० [सं० देवता वसरः] देवता का उन्मथ ।

देहरिधी-देखो 'देवरी' ।
 देहरी-देखो 'देहली' ।
 देहव, (रू, रौ)-देखो 'देवरी' ।
 देहळ-देखो 'देहली' ।
 देहली-स्त्री० [सं० देहली] १ मकान के द्वार की देहलीज । २ देखो 'देह' ।
 देहवंत (वान)-वि० देह धारी । -पु० सजीव प्राणी ।
 देहांत-पु० [सं०] मृत्यु, प्राणांत ।
 देहांतर-पु० [सं०] १ जन्मान्तर, दूसरा शरीर । २ पुनर्जन्म । ३ मरण ।
 देहा-देखो 'देह' ।
 देहाड़ी-देखो 'दिवस' ।
 देहात-स्त्री० [फा०] गांव, ग्राम ।
 देहाती-वि० १ गांव का, ग्रामीण । २ गंवार । -पण-पणी-पन-पु० गंवार पन । ग्रामीणों का सा व्यवहार ।
 देहारी-वि० [सं० देह] देह संबंधी, शरीर का, दैहिक ।
 देहिका-स्त्री० [सं०] एक प्रकार का कीड़ा ।
 देही-पु० [सं० देह] १ शरीरधारी प्राणी । २ जीवात्मा । ३ देवता । ४ दही । ५ देखो 'देह' । -वि० १ शरीर का, शरीर संबंधी । २ देने वाला, दाता ।
 देहीपंच-पु० [सं० पंच देही] शरीर ।
 देहु, देहुड़ी-देखो 'देह' ।
 देहुरी-देखो 'देवरी' ।
 दे'ण-देखो 'दै'ण' ।
 दंत, दंत्य-देखो 'दैत्य' ।
 देंण-स्त्री० [सं० दा] १ देने की क्रिया या भाव । २ प्रदत्त वस्तु दी हुई वस्तु । ३ दान । -वि० देने वाला ।
 देंण-स्त्री० [सं० दहन] १ दुःख, कष्ट, पीड़ा । २ जलन । ३ परेशानी, भ्रंश ।
 देंणदार-वि० [सं० दा] १ देने वाला । २ ऋणी, कर्जदार ।
 देंणवारी-स्त्री० १ ऋणी होने की अवस्था । २ चुकाने योग्य राशि । ३ ऋण ।
 देंण-लेण-पु० लेने-देने की क्रिया या भाव । व्यवसाय ।
 देंणवर-पु० स्वामि कातिकेय ।
 देंणायत, देंणायत-वि० १ देने वाला । २ ऋण चुकाने वाला । ३ कर्जदार, ऋणी ।
 देंणी-अव्य० से ।
 देंणी-वि० [सं० दा] (स्त्री० देंणी) देने वाला । -पु० ऋण, कर्ज ।
 देंणी (बौ)-क्रि० [सं० दा] १ कोई वस्तु या धन किसी को देना, दे देना । २ दूसरों को सौंपना, संभलाना । ३ देखने या अवलोकनार्थ हाथ में धरना । ४ देखने या

अवलोकनार्थ हाथ में पकड़ना । ५ पास में रखना ।
६ लगाना, प्रयोग में लाना । ७ निर्धारित करना ।
८ मारना, प्रहार करना । ९ भुगताना, भोगाना । १० उत्पन्न
करके देना । ११ प्रजनन करना । १२ लगाना, बंद करना,
जड़ना । १३ भ्राजा करना, कहना, करना ।
वैत-देखो 'दैत्य' । —अरि='दैत्यारि' । —पति, पति, पती-
'दैत्यपति' ।

दैतार-पु० [सं० दैत्यारि] १ अर्जुन । २ दैत्यारि ।
दैत्य-पु० [सं०] १ कश्यप व दिति के पुत्र, असुर, राक्षस ।
२ विनाल डोल-डोल व डरावनी शक्ल का व्यक्ति ।
३ दुराचारी, पापी । —अरि-पु० विष्णु । देवता । इन्द्र ।
दैत्यों का शत्रु । —गुरु-पु० शुक्राचार्य । —जुग-पु०
मानवीय चार युगों के बराबर दैत्यों का युग । —दैव-पु०
विष्णु, पवन । वरुण । —निकंदण-पु० विष्णु । —पति-पु०
रावण । बलि । हिरण्य कश्यप । —सेना-स्त्री० दैत्यों की
सेना । प्रजापति की एक कन्या ।

दैत्यधूमिणी (नी)-स्त्री० [सं० दैत्यधूमिनी] एक तांत्रिक मुद्रा
विशेष ।

दैत्यारि-पु० [सं०] १ विष्णु । २ देवता । ३ इन्द्र । ४ विष्णु ।
दैत्येंद्र, दैत्येस-पु० [सं०] १ राजा बलि । २ रावण । ३ हिरण्य
कश्यप ।

दैघाण-पु० समुद्र, नागर ।

दैनकी-देखो 'दैनगी' ।

दैनगण, (णी)-स्त्री० [सं० दैनिकी] मजदूर स्त्री, मजदूरनी ।
दैनगियो-पु० [सं० दैनिकी] (स्त्री० दैनगण, दैनगणी) दैनिक
मजदूरी पर कार्य करने वाला व्यक्ति, श्रमिक ।

दैनगी-स्त्री० [सं० दैनिकी] १ मजदूरी । २ एक दिन के श्रम
का निर्धारित द्रव्य ।

दैव्य-पु० [सं०] १ दरिद्रता, गरीबी । २ दीनता व तुच्छता का
भाव । ३ कातरता । ४ काव्य में एक संचारी भाव ।

दैबाइणी (बी), दैबाइणी (बी), दैबाणी (बी), दैबावणी (बी)-
देखो 'दिराणी' (बी) ।

दैव-पु० [सं०] १ भाग्य, शारब्ध । २ विधाता । ३ विष्णु ।
४ एक प्रकार का विवाह । —वि० १ देवता संबंधी ।
२ नैसर्गिक, स्वर्गीय । ३ राजकीय ।

दैवगत, (गति)-देखो 'दैवगति' ।

दैवप-पु० [सं० देवज] ज्योतिषी ।

दैवचित्ता-स्त्री० भाग्य के विषय में चिन्तन या चिन्ता ।

दैवजोग-देखो 'दैवजोग' ।

दैवत-पु० [सं० दैवत] ईश्वर ।

दैवतपति-पु० [सं०] इन्द्र ।

दैवतीरथ-पु० [सं० दैवतीरथ] अंगुलियों की नोक ।

दैववस-क्रि० वि० [सं० दैववस] संयोग से, प्रकस्मात् ।
कुद्रतन ।

दैववादी-वि० [सं०] भाग्यवादी । निरुद्यमी । आलसी ।

दैवविवाह-पु० [सं०] स्मृति के अनुसार एक विवाह ।

दैवसंजोग-देखो 'दैव संजोग' ।

दैवाण-देखो 'दीवाण' ।

दैवाकारी-स्त्री० [सं०] यमुना नदी ।

दैवत-देखो 'दैववस' ।

दैवेच्छा-स्त्री० [सं० दैवेच्छा] १ ईश्वरेच्छा । २ भवितव्यता,
होनी ।

दैवी-वि० [सं०] १ देवकृत । २ देव संबंधी । ३ संयोग से होने
वाला । ४ सात्विक । —स्त्री० दैव विवाह से बनी पत्नी ।

दैवु-देखो 'दैव' ।

दैसल-स्त्री० [फा० दहगत] मय, डर, आतंक ।

दैसाळिक-देखो 'देसाळिक' ।

दैसिक-पु० [सं० देशिक] १ गुरु । २ उपदेशक । ३ राहगीर ।

दैसोटो-देखो 'देसोटो' ।

दैसोत, दैसोत, दैसोतड़ी-देखो 'देसोत' ।

दै, दौकार, दौकारि-स्त्री० नगाड़े, तबले आदि वाद्य की ध्वनि ।

दौगड़ा-पु० कभी-कभी होने वाली वर्षा (मेवात) ।

दो-वि० [सं० द्वि] १ एक का दुगुना, एक तथा एक ।
२ अतिरिक्त । ३ दोनों । —पु० [सं० द्यौ] १ स्वर्ग ।
२ आकाश । ३ वृषभ । ४ दैत्य । ५ स्त्रियों के वालों की
अलक । ६ सिंह । ७ दान । ८ विंग । ९ हाथ । १० पांव ।
—स्त्री० ११ रात्रि । १२. ७२ कलाओं में से एक । १३ दो
की संख्या ।

दो'-पु० [सं० दोष] दैवी कोष, अभिशाप ।

दोआनी-स्त्री० [सं० द्वि+आएक] १ रुपये का घाठवां भाग ।
२ इस मान का मिक्का ।

दोहण-देखो 'दुरजन' ।

दोहतरी, दोहती-देखो 'दोहिती' ।

दोइतरी, दोइती-देखो 'दोहिती' ।

दोई-वि० [सं० द्वि] १ दोनों । २ दो ।

दोईतरी, दोईती, दोईती-देखो 'दोहिती' ।

दोईतरी, दोईनी, दोईनी-देखो 'दोहिती' ।

दोईरद-पु० [सं० द्विरद] हाथी ।

दोउ, दोऊ-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दोकड़ी-पु० रुपये का मोवां अंश, एक प्राचीन मिक्का ।

दोकद-पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

दोको-स्त्री० [सं० द्वि] १ दो की संख्या । २ दो का जोड़ा ।
२ दो अंगुलियों का संकेत । —वि० १ दो । २ देखो
'दोखी' ।

दोखभा-पु० [सं० द्वि-स्तंभ] एक प्रकार का नैचा ।

दोख-पु० [सं० दोष] १ कोप, गुस्सा, क्रोध । २ देखो 'दोस' ।

दोखण-१ देखो 'दुसण' । २ देखो 'दोस' ।

दोखादोग दक, दोगंधक-पु० [सं० दोगन्दुक] अतिशय रति क्रीड़ा करने वाली एक देव जाति ।

दोखियो, दोखी, दोखीलौ-वि० [सं० दोषिन्] १ शत्रु, दुश्मन । २ बुरा चाहने वाला । ३ ईर्ष्या करने वाला ।

दोघड़-स्त्री० [सं० द्वि+घट] १ दो मत, दो विचार । २ असमंजस । ३ देखो 'दोघड़' ।

दोगणी-वि० दुगुना ।

दोगली पु० [फा० दो-गुल्ला] १ वर्णसंकर संतान । २ जारज पुत्र । -वि० (स्त्री० दोगली) १ वर्ण संकर । २ चुगलखोर ।

दोगी-स्त्री० १ नार-कंकरी नामक खेल । २ पीड़ा, दर्द, कष्ट । ३ मंकेट, आगति । ४ दुविधा । ५ रोग । ६ शत्रु, दुश्मन ।

दोघड़-पु० [सं० द्विघट] १ गिर पर रखे दो जल पात्र, दो घट । २ देखो 'दोघड़' ।

दोघड़ी-वि० [सं० द्वि-घट] उदास, चिन्तित, खिन्न ।

दोघणी-पु० अहित, बुराई । हानि ।

दोड़-पु० [सं० द्वि-पट] १ दो सूत का बना वस्त्र, दो सूती वस्त्र । २ देखो 'दौड़' ।

दोचोखट, दोचोखट-स्त्री० आभूषणों पर खुदाई करने का औजार विशेष ।

दोज देखो 'दूज' ।

दोजक-देखो 'दोजख' ।

दोजकी-देखो 'दोजखी' ।

दोजख (ग)-पु० [फा०] १ इस्लाम धर्म के अनुसार 'नरक' । २ दुःख, कष्ट ।

दोजखी (गो)-वि० [फा०] १ नरकगामी, पापी, दुरात्मा । २ दुःखी ।

दोजाणी-देखो 'दोजी' ।

दोजिक (ख, ग)-देखो 'दोजख' ।

दोजियापती, दोजीयापती, दोजीयाती, दोजीयापती-स्त्री० [सं० द्विजीवा] गर्भवती स्त्री या मादा पशु ।

दोजी, दोजाणी-पु० [० संदीध] १ दूध देने वाले मादा पशु का स्तन । २ दूध व दूध में मिलने वाले पदार्थ । ३ दूध देने वाले पशु ।

दोभाळ-वि० १ वीर योद्धा, बहादुर । २ क्रुद्ध, कुपित । -पु० दूध देने वाला मादा पशु ।

दोद-पु० [सं० धाव] १ आंधी, तूफान । २ हवा का तेज झोंका, बवंडर । ३ टक्कर, आघात, धक्का । ४ प्रहार, वार । ५ ठोकर, ठेस । ६ भार, धाव । ७ मवेशी । ८ मूख, नाममक । ९ दान, केश । १० आक्रमण, हमला ।

११ व्यथा, शोक, संताप । १२ समूह, गुब्बार । १३ दौड़ने की क्रिया या भाव । १४ देखो 'दोटी' ।

दोदणी (बी)-कि० [सं० धाव्] १ पैरों से रौदना, कुचलना । २ संहार करना, मारना । ३ ठुकराना, ठोकर मारना । ४ गेंद आदि के चोट लगाना । ५ दबाना । ६ दौड़ना, भागना । ७ वेग से उठ कर गिरना । ८ तेजी से प्रवाहित होना । ९ झोंके लगाना, भटके मारना । १० लपेट में लेते हुए चलना ।

दोटिणी-१ देखो 'दोटी' । २ देखो 'दोट' ।

दोटी-स्त्री० [सं० द्विपटी] १ बच्चों के खेलने का कपड़े, रस्वर या चमड़े का गोला, गेंद । २ एक प्रकार का वस्त्र ।

दोटी-पु० १ देहलीज पर लगी लकड़ी । २ वायु का बवंडर । ३ गेंद पर लकड़ी का प्रहार । ४ झोंका, भटका । ५ तेज, प्रवाह । -वि० १ नष्ट करने वाला । २ देखो 'दोट' ।

दोठी-पु० खाद्य पदार्थ विशेष, व्यंजन ।

दोडंगी-पु० एक प्रकार का फल विशेष ।

दोणकियो, दोणकी-१ देखो 'दोवणियो' । २ देखो 'दोणियो' ।

दोणातार-पु० आभूषणों की खुदाई करने का एक औजार ।

दोणियो-वि० दुहने वाला, दुहारा । -पु० १ दूध दूहने का पात्र । २ देखो 'दोवणियो' ।

दोणी (बी)-देखो 'दूवणी' (बी) ।

दोत-१ देखो 'दवात' । २ देखो 'दुतिया' ।

दोतड-पु० [सं० द्वि + तट] दुविधा ।

दोतडि (डी)-स्त्री० [सं० दुस्तरी] दुष्ट नदी ।

दोति-देखो 'दवात' ।

दोधक-पु० [सं०] १ एक वर्ण वृत्त विशेष । २ एक मायिक छंद विशेष ।

दोधार-देखो 'दुधार' ।

दोधारी-स्त्री० १ आभूषणों पर खुदाई का एक औजार विशेष । २ देखो 'दुधारी' ।

दोधारी-देखो 'दुधार' ।

दोधी-पु० १ दुधिया रस वाला एक पौधा विशेष । २ देखो 'दूध' ।

दोन-१ देखो 'दोनी' । २ देखो 'दूण' ।

दोनवू-देखो 'दोनव' ।

दोनाळी-देखो 'दुनाळी' ।

दोनू, दोनू, दोनू, दोनी-वि० [सं० द्वि] उभय, दोनों ।

दोनी-पु० १ कलंक, दोष । २ ताना, व्यंग । ३ देखो 'दूनी' । ४ देखो 'दोनी' ।

दोण्यां-१ देखो 'दुनियां' । २ देखो 'दोनी' ।

दोण्यु, दोण्यू-देखो 'दोनी' ।

दोपड-स्त्री० [सं०] एक मायिक छंद विशेष ।

दोषहर-पु० [सं० द्वि-प्रहर] दिन का मध्य समय, मध्याह्न ।

दोपहरियो

(६७९)

दोळ

दोपहरियो-देखो 'दोपारियो' ।

दोपहरी-१ देखो 'दोपारी' । २ देखो 'दोपहर' ।

दोपार-देखो 'दोपहर' ।

दोपारियो-पु० १ एक वृक्ष जिसके फूल दुपहर में खिलते हैं ।

२ देखो 'दोपारी' ।

दोपारी, दोपारी-स्त्री० १ मध्याह्न का स्वल्पाहार ।

२ देखो 'दोपहर' ।

दोपाहर, दोपहर-देखो 'दोपहर' ।

दोपेरी-देखो 'दोपारी' ।

दोफसली-देखो 'दुफसली' ।

दोफारी (री)-देखो 'दोपारी' ।

दोव, दोवड़, दोवड़ी-स्त्री० [सं० दूर्वा] दूर्वा घास, दूब ।

दोवारो-पु० [सं० द्वि-द्वार] १ दो द्वार का वक्ष ।

२ देखो 'दुवारो' ।

दोबं-पु० छुपकर या मोर्चा लगाकर बैठने की क्रिया ।

दोबंत-देखो 'दवावैत' ।

दोम, दोमड़ी-देखो 'दोव' ।

दोमाण-पु० [सं० दुर्भाग्य] १ मंद भाग्य, दुर्भाग्य । २ दुहाग ।

दोभौ-वि० सुस्त, आलसी । हीना-हाला ।

दोमंजली, दोमंजली-वि० [सं० द्वि+फा० मंजिल] दो मंजिल का, दो मंजिल वाला ।

दोमज, दोमजि, दोमझि-पु० [सं० द्वि+मध्य] युद्ध, संग्राम ।

दोमल-पु० एक वर्णक छन्द विशेष ।

दोमिण-पु० [सं० द्यो+मणि] सूर्य, भावु ।

दोमो-पु० डूब, डोली ।

दोय-देखो 'दो' ।

दोयक-देखो 'दोयक' ।

दोयककुत-पु० [सं० द्वि-कुत] जट ।

दोयजोह-देखो 'दुजोह' ।

दोयण-पु० [सं० दुर्जन] १ राक्षस, दानव । २ देखो 'दुरजण' ।

दोयतरी, दोयती (त्री)-देखो 'दोहिती' ।

दोयतरी, दोयती (त्री)-देखो 'दोहिती' ।

दोयथणी-देखो 'दुयणी' ।

दोयम-वि० [फा०] दूसरे नंबर का, दूसरा ।

दोयरण-देखो 'दुरजण' ।

दोयली-देखो 'दोहिली' । (स्त्री० दोयली) ।

दोयसपी (पी)-पु० [फा० दो-ग्रस्य] १ दो घोड़ों का मालिक

मैनिक । २ दो घोड़ों की डाक ।

दोयसेक-वि० दो सौ के लगभग ।

दोयेक-वि० [सं० द्वि-एक] दो के लगभग ।

दोरंगी(गो)-देखो 'दुरंगी' ।

दोर-पु० १ एक प्रकार का आभूषण विशेष । [दोस्]

२ हाथ, कर । ३ शक्ति, बल । ४ देखो 'दोर' ।

दोरज-१ देखो 'डोरी' । २ देखो 'दो'री' ।

दोरडी-स्त्री० डोरी ।

दोरडी-पु० डोरी ।

दोरदंडण (न)-पु० दंड व मजबूत भुजा ।

दोरप, दोरप-स्त्री० १ तकलीफ, कष्ट, पीड़ा । २ वियोग ।

३ अभाव जन्म दुःख ।

दोराणी-देखो 'देराणी' ।

दोराई-स्त्री० तकलीफ, कष्ट, पीड़ा । असुविधा ।

दो'राणी (बी)-क्रि० १ किसी कार्य या बात की पुनरावृत्ति करना । २ कोई बात समझा कर पुनः कहना । ३ दो तह करना ।

दोरायती-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

दोरावणी (बी)-देखो 'दो'राणी' (बी) ।

दोरी-१ देखो 'डोरी' । २ देखो 'दो'री' ।

दोरांगी-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

दोरुखी-वि० [फा०] (स्त्री० दोरुखी) १ दोनों पक्षों की ओर रखने वाला । २ दोनों ओर समान स्थिति वाला । ३ दो तरह की विचार-धारा वाला । ४ दोनों ओर भिन्न रंगों वाला । -पु० स्वर्णकारों का एक औजार ।

दो'री-वि० [सं० दुःखधर] (स्त्री० दो'री) १ पीड़ित, दुःखी, कष्ट में । २ व्याकुल, विवश, बेचैन । ३ असुविधा या परेशानी की स्थिति में । ४ असह्य, दुष्कर । ५ कठिन, मुश्किल । ६ उदास, खिन्न, दुःखी, अप्रसन्न । ७ अप्रिय, कटु कर्कस । ८ नाराज । ९ अधिक मेहनत या श्रम वाला । १० जिसे साधना या काबू करना कठिन हो । ११ मकट पूर्ण । -क्रि० वि० निरुत्साही होकर ।

दोलक-देखो 'डोलक' ।

दोलड़ी (डी)-वि० [सं० द्वि+लटिक] १ दो लड़ों वाला । २ दोहरा । ३ मोटा ।

दोलली-वि० (स्त्री० दोलली) पास का, इर्द-गिर्द का ।

दोला-क्रि० वि० चारों ओर, इर्द-गिर्द ।

दोलाजंत्र-पु० अर्क निकालने का एक यंत्र विशेष । (वैद्यक)

दोलाबुध-पु० [सं० दोलायुध] हार-जीत का निर्णय शीघ्र न हो सके, ऐसा युद्ध ।

दोली-क्रि० वि० चारों ओर, इर्द-गिर्द । -वि० समीप, निकट, पास ।

दोलीकियो-पु० १ आभूषणों में खुदाई करने का एक औजार ।

२ पैर की अंगुली का एक आभूषण विशेष ।

दोळ, दोळ-पु० १ दांत, दंत । २ देखो 'दोळ' ।

दोळ-क्रि० वि० इर्द-गिर्द, चारों ओर ।

दोलोत्सव-पु० [सं०] फागुण मास की पूणिमा का, वैष्णवों का एक त्योहार ।

दोली-वि० (स्त्री० दोली) मनीष, पास, निकट । -क्रि० वि० इर्द-गिर्द, चारों ओर ।

दोवड़, दोवड़िया-स्त्री० [सं० द्वि-पट] १ दो पट को चादर, दोहरी चादर । २ देखो 'दोवड़ी' । -चौवड़-पु० दो या चार तह वाला । दुगुना-चौगुना ।

दोवड़ी-वि० १ दो तह की । २ दुहरी । ३ दो लड़ोंवाली । ४ दो प्रकार की । ५ दुगुनी । -स्त्री० दो तह किया हुआ वस्त्र । -ताजीम-स्त्री० सरदारों या सामन्तों को दिया जाने वाला सम्मान (जोधपुर) ।

दोवड़ी-वि० [सं० द्वि+पट] (स्त्री० दोवड़ी) १ दो तह का, दोहरा । २ जिसमें दो लड़े हों । ३ दो प्रकार का । ४ द्वि, दो । ५ दोनों ओर का । ६ दुगुना । -पु० दो तह को मो कर तैयार किया वस्त्र ।

दोवड़ी-कुरब. (कुरब)-देखो 'दोवड़ी-ताजीम' ।

दोवटी-स्त्री० [सं० द्वि-पट] १ दो पट का वस्त्र । २ दपट्टा । ३ घोंती । ४ एक प्रकार का बिछौना, आसन (मथाड़) । ५ एक प्रकार की मिठाई ।

दोवणिया-पु० ब. व. मृतक के बारहवें दिन अणौच निवारणार्थ पानी से भरे जाने वाले बारह घटक ।

दोवणिया-पु० १ दूध दूहने का पात्र । २ मृतक के बारहवें दिन अणौच निवारणार्थ जल भर कर कुटुम्बी को दिया जाने वाला मिट्टी का छोटा घड़ा । -वि० दूहने वाला ।

दोवणी (बो)-देखो 'दुवणी' (बो) ।

दोवटी-क्रि० वि० १ इर्द-गिर्द, चारों ओर । २ दी ओर । ३ दो बार ।

दोवां, दोवाई-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दोवाई-देखो 'दुवारी' ।

दोवाणी (बो), दोवावणी (बो)-देखो 'दुवाणी' (बो) ।

दोवारी-देखो 'दुवारी' ।

दोव-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दोस-पु० [सं० दोष] १ अलग, ऐव । २ बुराई, खराबी । ३ कलंक, लांछन । ४ आरोप, अभियोग । ५ अपराध, कसूर । ६ कमी । ७ अशुद्धि । ८ पाप । ९ दुष्परिणाम । १० रोग । ११ त्रिदोष । १२ खण्डन । १३ साहित्यिक अयगुण । १४ नय्य न्याय की त्रुटि । १५ आठ वसुधों में से एक । १६ तीन की संख्या* । १७ दश की संख्या* । १८ देखी 'दो' । -प्राही-पु० दुष्ट, दुर्जन । -जाण-पु० वैद्य, हकीम, चिकित्सक । दोषों का जाता ।

दोसण-वि० [सं० दोषण] १ दोष उत्पन्न करने वाला । दोष-जनक । २ देखो 'दुसण' । ३ देखो 'दोम' ।

दोसत-पु० [फा० दोस्त] १ मित्र, सखा । २ प्रेमी, स्नेही । -दार-पु० मित्र, स्नेही । -बारी-स्त्री० दोस्ती, मित्रता । दोसतानी-वि० [फा० दोस्ताना] मित्रता का, दोस्ती का । मित्रता जैसा । -पु० १ मित्रता, दोस्ती । २ मित्रता जैसा व्यवहार ।

दोसती-स्त्री० [फा० दोस्ती] १ मित्रता, दोस्ती । २ प्रेम संबंध ।

दोसपी-देखो 'दोयसपी' ।

दोसहटी-स्त्री० [सं० दोषिक+हट्ट] कपड़ा बाजार ।

दोसा-स्त्री० [सं० दोषा] १ रात्रि, रात । २ संध्या । ३ मुजा, बांह । -कर-पु० चन्द्रमा, शशि ।

दोसी-पु० [सं० दोषिक] कपड़े का व्यापारी । -स्त्री० सखी, सहेली (सेवात) । -वि० [सं० दोषिन्] १ जिसमें ऐव या चुगई हो, ऐसी । २ कसूरवार, अपराधी । ३ पापी । ४ मुजरिम, अभियुक्त । ५ दुष्ट । ६ भ्रष्ट । ७ प्रपवित्र ।

दोसली-स्त्री० [सं० द्वि+सूत्र] दुहरे ताने का बना वस्त्र ।

दोसी-देखो 'दोस' ।

दोस्त-देखो 'दोसत' ।

दोस्तदार-देखो 'दोसतदार' ।

दोस्तदारी-देखो 'दोसतदारी' ।

दोस्ती-देखो 'दोसती' ।

दोह-१ देखो 'दो' । २ देखो 'दोस' । ३ देखो 'दोख' ।

दोहखो-देखो 'दोखी' ।

दोहन (ग, गु, गू)-पु० [सं० दोर्भाग्य] १ वियोग जनित दुःख । २ दुर्भाग्य । ३ वैधव्य । ४ संकट, विपत्ति ।

दोहड-वि० [सं० दोहाट] दोह रखने वाला, ईर्ष्यालु दोही, शय ।

दोहन-पु० [सं० दोहनम्] १ दूहने की क्रिया या भाव । २ दोहन । ३ दुग्धन ।

दोहणी-स्त्री० [सं० दोहनी] १ दूहने की क्रिया या भाव । २ दूध दूहने का पात्र । ३ हडिया । ४ मृतक के बारहवें दिन भरा जाने वाला छोटा घटक । ५ देखो 'दुवणी' ।

दोहणी (बो)-देखो 'दुवणी' (बो) ।

दोहती-देखो 'दोहती' ।

दोहती-१ देखो 'दोहती' । २ देखो 'दोहती' । (स्त्री० दोहती) दोहतीकरौती-स्त्री० दो व्यक्तियों द्वारा चलाई जाने वाली बड़ी कारी ।

दोहथी-वि० [सं० द्वि-हस्त] १ दो हाथों वाला । २ दो हथ्यों वाला ।

दोहर-कूटो-पु० सांसियों का एक जातीय दण्ड विधान ।

दोहरीपट-स्त्री० कुष्ठी का एक पेश ।

दोहरीसखी-स्त्री० कुशती का एक पेश ।

दोहरी-वि० [स० द्वि-द्वर] (स्त्री० दोहरी) १ दो परत का, दो पटका । २ दुगुना । ३ दोनों पक्ष का, दोनों ओर का ।

४ दोनों ओर झुकने वाला । ५ देखो 'दो'री' ।

दोहलउ-पु० [सं० दोहलः] इच्छा, अभिलाषा, चाह ।

दोहली-देखो 'दूही' ।

दोहां-वि० [सं० द्वि] दोनों, उभय ।

दोहाई-१ देखो 'दुहाई' । २ देखो 'दुवारी' ।

दोहाग-देखो 'दुहाग' ।

दोहागण, दोहागण, दोहागण-देखो 'दुहागण' ।

दोहाणी (बो), दोहावणी (बो)-देखो 'दुवाणी' (बो) ।

दोहारी-देखो 'दुवारी' ।

दोहाळ-कुंडलिणी-पु० कुंडलिया छंद का एक भेद ।

दोहाळी-१ देखो 'दुहाळी' । २ देखो 'दोहिली' । ३ देखो 'दुहिली' । ४ देखो 'दुहिली' ।

दोहि-वि० दोनों ।

दोहिता-देखो 'दुहिता' ।

दोहिनी (त्री)-स्त्री० [सं० दोहिनी] पुत्री की पुत्री, तानिनी ।

दोहिनी (त्री)-पु० [सं० दोहित] पुत्री का पुत्र, पुत्री का बेटा ।

दोहिलउ दोहिलु, दोहिलु, दोहिलू, दोहिलू, दोहिली-वि० [सं० दुख] (स्त्री० दोहिली) १ दुःखी, पीड़ित । २ क्षति, गुणवत्ता । ३ क्षिप्त उदास । ४ दुःकर । ५ विकट, भयकर । ६ नाराज ।

दोही-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दोहीत, दोहीतरौ, दोहीती, दोहीत्रउ, दोहीत्री-देखो 'दोहितौ' ।

दोहव, - दोहं-वि० [सं० द्वि] दोनों ।

दोही-देखो 'दूही' ।

दौं-स्त्री० [सं० दावाप्ति] दावाप्ति ।

दौनी-पु० १ कृप की सुदाई । २ देखो 'दोनी' ।

दौ-पु० १ योद्धा, सुभट । २ युद्ध । ३ प्राण । ४ काम, कार्य । -वि० १ दंष्ट्र । २ देखो 'दो' ।

दोड़-स्त्री० [सं० घोऊ] १ भागना क्रिया । २ भग-वड्ड । ३ द्रुतगति, वेग । ४ पहुँच । ५ प्रयत्न, कोशिश । ६ परिश्रम, मेहनत । ७ आक्रमण, धावा । ८ देखो 'दौर' ।

--- धपाड़, धूप, भाग-स्त्री० दोड़ने भागने की क्रिया । कोशिश प्रयत्न ।

दोड़की-वि० (स्त्री० दोड़की) दोड़ने वाला, धावक ।

दोड़णी (बो)-वि० [सं० धोरण] १ द्रुतगति से चलना, भागना । २ झपट कर जाना, आना । ३ कोशिश व प्रयत्न करना । ४ परिश्रम करना । ५ व्याप्त होना, छा जाना, फैलना । ६ चढ़ाई करना, आक्रमण करना । ७ झूटमार

करना । ८ अपनी ओर से खूब काम करना । ९ जल्दी मचाना ।

दोड़ा-दोड़, दोड़ा-दोड़ी-स्त्री० १ दोड़ने भागने की क्रिया । २ भग-वड्ड । ३ दोड़-धूप । ४ हड़ बड़ी, आतुराई ।

दोड़ाणी (बो) दोड़ावणी (बो)-वि० १ द्रुतगति से चलाना, भागाना । २ झपट कर जाने-आने के लिये प्रेरित करना । ३ प्रयत्न या कोशिश कराना । ४ परिश्रम कराना । ५ व्याप्त कराना, फैलाना । ६ चढ़ाई कराना, आक्रमण कराना । ७ झूटमार कराना । ८ जल्दी मचवाना । ९ खदेड़ना, निकाल बाहर करना ।

दोड़ी-स्त्री० घोड़े की टापों की ध्वनि ।

दोड़ी-पु० [सं० दौर] १ आक्रमण, धावा । २ समय-समय पर आना-जाना । ३ यात्रा, प्रवास । ४ निरीक्षण हेतु की जाने वाली यात्रा । ५ दिल पर पड़ने वाला वायु का दबाव, दिल का दौरा । ६ गश्त, फेरो । ७ रोग का आवर्तन, प्रभाव ।

दोड़-देखो 'दोड़' ।

दोड़ी-देखो 'दोड़ी' । —दर—'दोड़ीदार' ।

दोड़ी-पु० [सं० द्वि-मर्द] १ एक डिग्य गीत विशेष । २ राज-स्थानी का एक अन्य गीत । ३ देखो 'दोड़ी' । —कुंडलिणी-पु० कुंडलिया छंद का एक भेद ।

दोनी, दोनी-१ देखो 'दुनी' । २ देखो 'दोनी' ।

दोफार-देखो 'दोपहर' ।

दोफारी-देखो 'दोफारी' ।

दोयरद-देखो 'द्विरद' ।

दौर-पु० [सं०] १ घेरा, चक्कर, भ्रमण । २ कालचक्र, दिनों का घेरा । ३ प्रताप, प्रभाव, हुकूमत । ४ शान-शौकत । ५ आकार, ढंग । ६ बहनों का समय, अभ्युदय काल । ७ पहुँच । ८ पुरुषों की वेशभूषा । ९ वारी, पारी । १० देखो 'दौर' । ११ देखो 'दोड़' । १२ देखो 'दोड़ी' ।

दौर-दौरी-पु० [सं० दौर] अत्यधिक प्रभाव ।

दौराणी-देखो 'दौराणी' ।

दौरान पु० [सं० दौरान] १ चक्कर, घेरा । २ मिलमिला, क्रम । ३ घेरा, बारी । ४ कालचक्र । ५ दौरा । ६ बीच, मध्य । -क्रि० वि० बीच में, दरम्यान ।

दौरी-देखो 'दोड़ी' ।

दौल-वि० धि० चारों ओर, पार्श्व या वगल में ।

दोसत दोवति-स्त्री० [सं०] १ धन, संपत्ति । २ जासन, हुकूमत । ३ जायदाद । ४ परिश्रमण । ५ भाग्य, नसीब । —खानि-पु० राजाना, कोष । निवासस्थान, घर । —मंद-वि० धनवान । —मंदी-स्त्री० सम्पत्ति । —वंत, वांत-वि० धनवान, रईस, धनी भाग्यशाली ।

दोलती-वि० १ धनी, दोलतवाला । २ भाग्यशाली ।
 ३ देखो 'दोलत' ।
 दोलेय-पु० [सं०] १ कुमुद नामक एक दिग्गज । २ कछुआ ।
 दीवारिक-पु० [सं०] द्वारपाल ।
 दीप्यिकापण-पु० [सं० दीप्यिकापण] कपड़े की दुकान, बजाज
 हाट, कपड़ा बाजार ।
 दोहित्र (त्री)-देखो 'दोहिती' ।
 दोहित्री-देखो 'दोहिती' ।
 छज-वि० [सं० द्वि] एक और एक । दो, दोनों ।
 छणो, (बो)-देखो 'देणो' (बो) ।
 छांणू, छांणू-देखो 'दाहिणी' । (स्त्री० छांणी)
 छांमणो-देखो 'दयावणो' ।
 छाड़ो, छाड़ि-देखो 'दिवस' ।
 छाळ, छाळ-देखो 'दयालु' ।
 छावड़-स्त्री० रहट के बीच बांधी जाने वाली डोरी, जतनी ।
 छु-पु० [सं०] १ दिन । २ आकाश । ३ स्वर्गलोक । ४ सूर्य
 लोक । ५ अग्नि । ६ चमक ।
 छुगण-पु० [सं०] ग्रहों को मध्यगति के साधक ग्रह, दिन ।
 छुचर-पु० [सं०] १ ग्रह । २ पक्षी ।
 छुजा (ज्या)-स्त्री० [सं०] अहोरात्र वृत्त की व्यास रूप ज्या ।
 छुत-स्त्री० [सं०] किरण ।
 छुति-देखो 'दुति' ।
 छुतिधर-देखो 'दुतिधर' ।
 छुतिमंत (मान)-देखो 'दुतिमान' ।
 छुतिमा-स्त्री० प्रकाश, तेज, प्रभा ।
 छून-पु० [सं०] लग्न से सातवां स्थान ।
 छुनिस-पु० [सं० छुनिश] अह्निश, रातदिन ।
 छुपति-पु० [सं०] सूर्य, इन्द्र ।
 छुम-पु० [सं०] आकाशचारी पक्षी ।
 छुमण-पु० [सं० छुमन] घन, द्रव्य ।
 छुमणि-पु० [सं०] १ सूर्य, रवि । २ मंदार । ३ गुड तांबा ।
 छुलोक-पु० [सं०] स्वर्ग लोक ।
 छून-पु० [सं०] जुआ ।
 छूनभेव-पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक ।
 छूनविसेस-पु० ६४ कलाओं में से एक ।
 छून-पु० [सं०] लग्न स्थान से सातवीं राशि ।
 छोड़-पु० [सं०] १ स्वर्ग । २ आकाश, व्योम । ३ शत पथ
 ब्राह्मण ।
 छोरांणो-देखो 'देरांणी' ।
 छोस-देखो 'दिवस' ।
 छो-वि० [सं० द्वि] दो, दोनों ।

द्वंग द्वंगड़ी-पु० [सं० द्वंग] १ नगर, शहर । २ देखो 'दुरग' ।
 ३ देखो 'द्वग' ।
 द्वंगी-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
 द्वड्डणो, (बो)-देखो 'दोड्डणी' (बो) ।
 द्वक्षेप (खेप)-पु० [सं० द्वक् क्षेप] १ दृष्टिपात, अवलोकन
 २ दशम लग्न के नतांश की भुज्या ।
 द्वकनति-स्त्री० [सं० द्वक् नति] एक याम्योत्तर संस्कार विशेष ।
 द्वकपथ-पु० [सं० द्वक् पथ] दृष्टि का मार्ग । दृष्टि की पहुँच ।
 द्वकपात-पु० [सं० द्वक् पात] दृष्टि पात, अवलोकन ।
 द्वकमति-पु० [सं० द्वक् मति] माप, सर्वे ।
 द्वखद-पु० [सं० द्वषद] पत्थर, पाषाण ।
 द्वग-पु० [सं० द्वग्] १ आंख, नेत्र, लोचन । २ दृष्टि, नजर ।
 ३ बोध, ज्ञान । ४ दो की संख्या* ।
 द्वगपाळ-देखो 'दिग्पाळ' ।
 द्वग्गोचर-वि० [सं० द्वग्गोचर] आंख से दिखने वाला, दृष्टि में
 आने वाला ।
 द्वग्गोळ-पु० [सं० द्वग्गोळ] ग्रह संबंधी एक वृत्त विशेष ।
 द्वग्ज्या-स्त्री० [सं० द्वग्ज्या] ज्योतिष में एक 'ज्या' विशेष ।
 द्वग्लंबण (न)-पु० [सं० द्वग्लंबन] ग्रहण संबंधी एक संस्कार ।
 द्वज्जीत-देखो 'इंद्रज्जीत' ।
 द्वजोण-देखो 'दुर्योधन' ।
 द्वठा-स्त्री० [सं० द्वथ] आंख, नयन ।
 द्वठि-देखो 'द्वस्टि' ।
 द्वढ़-वि० [सं० द्वढ़] १ कसकर बंधा हुआ, कसा हुआ, प्रगाढ़ ।
 २ पक्का, मजबूत । ३ कड़ा, ठोस, कठोर । ४ बलवान,
 बलिष्ठ, पुष्ट । ५ अविचलित, अटल । ६ म्याई, चिर-
 म्यायी । ७ निडर, साहसी । ८ ध्रुव, निश्चित । ९ ठीठ ।
 १० स्थापित । ११ अचंचल । १२ घना । १३ टिकाऊ ।
 १४ विश्वस्त । १५ आन पर अड़ने वाला । -पु० १ विष्णु ।
 २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ३ लोहा । ४ तेरहवां मनु ।
 —करमो-वि० धैर्यवान । साहसी । —सूठी-वि० कंजूम,
 कृपाण ।
 द्वढ़णो (बो)-क्रि० [सं० द्वढ़] १ मजबूत करना, पक्का करना ।
 २ गाढ़ा करना । ३ पुष्ट होना, मोटा होना । ४ कड़ा
 होना ।
 द्वढ़तर-पु० सं० [सं० द्वढ़तर] घव का पेड़ ।
 द्वढ़ता-स्त्री० [सं० द्वढ़ता] १ दृढ़ होने की अवस्था या भाव ।
 २ पक्कापन । ३ मजबूती । ४ स्थिरता, अटलता । ५ धैर्य ।
 द्वढ़नाम-पु० [सं० द्वढ़ नाम] अस्त्रों की एक रोक ।
 द्वढ़नेत्र-पु० [सं०] विश्वामित्र का एक पुत्र ।
 द्वढ़नेमि-वि० [सं०] जिसकी धुरी मजबूत हो ।
 द्वढ़वो-वि० [सं० द्वढ़ घन्वन्] घनुष चलाने में निपुण ।

द्रव्यत्ती-पु० [सं० द्रव्यत्ती] भीष्म पितामह ।
 द्रव्यभूमि-स्त्री० [सं० द्रव्य भूमि] एक योगाभ्यास विशेष ।
 द्रव्यमन्त्र-वि० [सं० द्रव्य मन्त्र] स्थिर चित्त का, द्रव्य ।
 द्रव्यलोम-वि० [सं० द्रव्य लोमन्] कड़े लोम वाला -पु० सुप्र ।
 द्रव्यवत-वि० [सं० द्रव्यवन्त] १ द्रव्य, स्थिर । २ वीर, सुभट ।
 द्रव्यवरमा-पु० [सं० द्रव्य वर्मन्] धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
 द्रव्यबाली-स्त्री० द्रव्यता स्थिरता ।
 द्रव्य्य-पु० [सं० द्रव्य्य] १ एक ऋषि । २ द्रव्यता ।
 द्रव्यवत-पु० [सं० द्रव्यवन्त] स्थिर संकल्प ।
 द्रव्यस्यु-पु० [सं० द्रव्यस्यु] अगस्त्य ऋषि का एक पुत्र ।
 द्रव्यंग-वि० [सं० द्रव्यंग] हृष्ट-पुष्ट, पुष्ट अंगी । मोटा-ताजा ।
 द्रव्या-वि० [सं० द्रव्या] शक्तिशाली, बलवान, मोटी-ताजी ।
 द्रव्याणी-क्रि० [सं० द्रव्य] १ द्रव्य करना, मजबूत करना । २ पक्का, करना, निश्चित करना ।
 द्रव्याव-पु० [सं० द्रव्य] १ द्रव्यता, स्थिरता, मजबूती । २ अडिगता ।
 द्रव्यावणी (बी)-देखो 'द्रव्याणी' (बी) ।
 द्रव्यासन (न)-पु० [सं० द्रव्यासन] एक योगासन विशेष ।
 द्रव्यासु-पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा ।
 द्रव्य-क्रि० वि० [सं० द्रव्य] द्रव्यता से ।
 द्रव्यहर-पु० [सं० द्रव्यहरि] १ वैद्य । २ पानी ढोने वाला पशु ।
 द्रव्य-वि० [सं० द्रव्य] धर्महीन ।
 द्रव्यक-पु० [सं० द्रव्यक] कामदेव ।
 द्रव्यतयो-पु० काव्य छंद का एक भेद ।
 द्रव्य-१ देखो 'द्रव्य' । २ देखो 'द्रव' ।
 द्रव्यउल्लेख-वि० दातार ।
 द्रव्यवकणी (बी)-क्रि० कांपना ।
 द्रव्यवणी (बी)-देखो 'द्रव्यवणी' (बी) ।
 द्रव्यवणी (बी), द्रव्यवणी (बी)-देखो 'द्रव्यवणी' (बी) ।
 द्रव्यश्रिया-स्त्री० [सं० द्रव्य श्रिया] वेश्या, गणिका ।
 द्रव्य-देखो 'द्रव्य' ।
 द्रव्यघर-पु० [सं० द्रव्य-ग्रह] खजाना, भण्डार, कोष ।
 द्रव्यकणी (बी)-देखो 'द्रव्यकणी' (बी) ।
 द्रव्यकणी-पु० धमाका, गर्जना ।
 द्रव्य-पु० १ प्रचण्ड वायु । २ वायु का भीका । ३ मरु प्रदेश ।
 ४ मरु प्रदेश की बालू रेत । [सं० द्रव्य] ५ एक तेल या नाभ विशेष । ६ देखो 'द्रुम' ।
 द्रव्यकणी (बी)-देखो 'द्रव्यकणी' (बी) ।
 द्रव्यारजुन-पु० [सं० द्रुम-अर्जुन] अर्जुन नामक वृक्ष ।
 द्रव्यमणी (बी)-देखो 'द्रव्यमणी' (बी) ।
 द्रव्यमाटि-स्त्री० नगाड़े आदि वाद्यों की ध्वनि ।
 द्रव्य-देखो 'द्रव्य' ।

द्रव्य-पु० [सं० द्रव्य] १ पानी आदि की तरह पतला तरल पदार्थ ।
 २ भ्रमण । ३ गति । गमन । ४ द्रवत्व । -वि० १ दौड़ने वाला । २ टपकने या बहने वाला । ३ बहने वाला । ४ तरल । ५ पिघला हुआ ।
 द्रव्य-देखो 'द्रव्य' ।
 द्रव्य-पु० १ बहाव गति, द्रवत्व । [सं० द्रुम] २ कल्पवृक्ष ।
 -वि० १ देने वाला । २ दया करने वाला । ३ देखो 'द्रव्य' ।
 द्रव्यणी (बी)-क्रि० १ द्रवीभूत होना, पसीजना, दया करना ।
 २ विनम्र होना । ३ पिघलना ।
 द्रव्य-पु० [सं०] १ दक्षिण भारत का एक प्रान्त । २ उक्त प्रान्त का निवासी । ३ आर्यों की तरह भारत की एक प्राचीन मानव जाति । ४ अनाय ।
 द्रव्य-पु० [सं०] १ धन, संपत्ति । २ मोना, हेम । ३ शक्ति, बल, पराक्रम । ४ काम के पांच बाणों में से एक । ५ वस्तु, पदार्थ ।
 द्रव्यणी (बी)-देखो 'द्रव्यणी' (बी) ।
 द्रव्य-देखो 'द्रव्य' ।
 द्रव्य-पु० [सं०] १ गुण एवं क्रिया वाला पदार्थ, वस्तु । २ धन, दौलत, सम्पत्ति । ३ सामान, सामग्री । ४ औषधि, दवा । ५ पीतल । ६ गोद । ७ शराब, मदिरा । ८ गुणों का समूह । ९ शील । १० कांसा, फूल । ११ दाव, हीड़ । १२ नौ की संख्या* । —उजोदरी-स्त्री० बर्तन, उपकरण —निक्षेप-पु० किसी पदार्थ का व्यवहार विशेष । —पति -पु० धनवान व्यक्ति । पदार्थ का अधिपति । —वत, वान -वि० धनी, धनाढ्य ।
 द्रव्याधीश-पु० [सं०] १ कुबेर । २ कोषाधिकारी ।
 द्रव्य-देखो 'द्रव्य' ।
 द्रव्य-पु० [सं० द्रव्य] १ नेत्र, नयन, आंख । २ दृष्टि, नजर ।
 -वि० १ देखा हुआ । २ जाना हुआ । ३ प्रकट, जात ।
 द्रव्य-देखो 'द्रव्य' ।
 द्रव्यकूट-पु० [सं० द्रव्य कूट] पहेली ।
 द्रव्यान्त, द्रव्यान्ति-पु० [सं० द्रव्यान्त] १ उदाहरण, नमूना ।
 २ उदाहरण, मिसाल । ३ स्वप्न, सपना । ४ ऋतुस्नाता स्त्री का पुरुष दर्शन । ५ आस्त्र । ६ मरण । ७ एक अधर्माकार विशेष । ८ विज्ञान ।
 द्रव्य-वि० [सं० द्रव्य] १ देखने वाला । २ साक्षात्कार करने वाला । ३ दर्शक । ४ प्रकाशक ।
 द्रव्य-स्त्री० [सं० द्रव्य] १ आंख की ज्योति, देखने की शक्ति, नजर । २ देखने की क्रिया या वृत्ति, अवलोकन । ३ ध्यान देखने की तत्परता । ४ देखने में प्रवृत्त आंख । ५ दृष्टि प्रसार, दृक् पथ । ६ पहचान, परख । ७ अंदाज अनुमान । ८ कृपादृष्टि । ९ उम्मीद, आशा । १० टकटकी ।

११ नीयत, उद्दृश्य । १२ दृष्टि दोष, कुदृष्टि । — गोचर-
पु० देखने लायक । जो देखा जा सके, दिखने वाला ।
— फल-पु० यहाँ का प्रभाव । — मान-वि० आँख वाला ।
रुष्टि वाला । — बत-वि० हट्टा । जगती । सूझवाला ।
नजर वाला । — वाद-पु० प्रत्यक्ष प्रमाण की प्राप्तिता वाला
मिद्धान्त । जैनियों के बारह ग्रंथों में से एक । — स्थान-पु०
ज्योतिष में कुंडली का एक स्थान ।
दह-पु० [सं० हृद] १ गहरे जल वाला स्थान, दह । २ नदी
या जलाशय का मध्य भाग । ३ नदी के बीच गहरा गड्ढा ।
४ ताल, झील, झर ।
दहदहणी (बी)—कि० वाद्य का वजना, ध्वनि होना ।
दहदहवार-स्त्री० [सं० जयद्रथ बेला] मध्याह्न काल ।
दहदहणी (बी)—कि० वाद्य ध्वनि होना, वजना ।
दददहाट (टि)—स्त्री० वाद्य ध्वनि ।
दवदव (बट्टा), दहवाट, दहवट, (वाट)—वि० १ पराजित ।
२ तितर-बितर । ३ देखो 'दहवाट' ।
द्राक-अव्य० [सं० द्राक्] १ शीघ्र, तुरन्त । २ देखो 'दाख' ।
द्राक्ष, द्राक्षा, द्राख-देखो 'दाख' ।
द्राखणी (बी)—देखो 'दाखणी' (बी) ।
द्रागडो-पु० चोरी या डाका डालने वाला, मीणाग्रों का दल ।
द्राव-पु० [सं० द्रावः] १ पलावन, प्रस्थान । २ बौद्ध-भाग ।
३ देखो 'द्राव' ।
द्रावक-वि० [सं०] (स्त्री० द्रावकी) १ द्रव रूप में करने वाला ।
२ पिघलाने या गलाने वाला । ३ बहाने वाला । ४ लपेट,
लवार । — पु० १ चन्द्रकान्त मणि । २ तरल रूप करने
वाला पदार्थ । ३ चोर । ४ चतुर व्यक्ति । ५ सुहागा ।
६ चुम्बक पत्थर । ७ मोम ।
द्रावड़, (ड)—देखो 'द्राविड़' ।
द्रावण-पु० [सं०] १ भगाने का कार्य । २ द्रवीभूत करने का
काम । ३ कामदेव के पांच बाणों में से एक । ४ पिघलाने
का कार्य ।
द्राविड़-पु० [सं०] १ द्रविड़ देश का वासी । २ द्रविड़ देश ।
द्राविड़गौड़-पु० [सं०] एक राग विशेष ।
द्राविड़ी-स्त्री० [सं०] १ छोटी इलायची । २ द्रविड़ स्त्री ।
—वि० द्रविड़ संबंधी ।
द्रासक-देखो 'द्रहमत' ।
द्रिग, द्रिगन-स्त्री० १ वहतर कलाओं में से एक । २ देखो 'द्रग' ।
द्रिगपाळ-देखो 'दिग्पाल' ।
द्रिठ, द्रिठी-देखो 'द्रिष्टि' ।
द्रिड़-देखो 'द्रकु' ।
द्रिड़ता-देखो 'द्रड़ता' ।
द्रिषाव-देखो 'दरिषाव' ।

द्रिव-१ देखो 'द्रव्य' । २ देखो 'द्रव' ।
द्रिस्टद्युमन, द्रिस्टद्युमनि-देखो 'द्रिस्टद्युमन' ।
द्रिस्टांत-देखो 'द्रिस्टांत' ।
द्रिस्टि बंध विद्या-स्त्री० [सं० दृष्टि बंध-विद्या] नजर बंदी
की विद्या ।
द्रिस्टियुद्ध-पु० [सं० दृष्टियुद्ध] ७२ कलाओं में से एक ।
द्रिस्टिसूळ-पु० [सं० दृष्टिशूल] नेत्रों का एक रोग ।
द्रिश्य-वि० [सं० दृश्य] १ देखने लायक, देखने योग्य । २ दिखने
वाला, जो सहज ही दिखाई दे । ३ जानने योग्य, ज्ञेय ।
४ सुन्दर, मनोहर । — पु० १ देखी जाने वाली वस्तु ।
२ दिखने वाला वातावरण । ३ प्राकृतिक सौन्दर्य का स्थल
४ मनोरंजक व्यापार, तमाशा । ५ नाटक आदि का कोई
दृश्य । ६ जात या दी गई संख्या ।
द्रिहंग द्रिहंगसि-स्त्री० ढोल की आवाज ।
द्रीधी-पु० ऊंट को पुकारने संबंधी शब्द ।
द्रीवल्लह-स्त्री० ढोल आदि की आवाज ।
द्रीह-स्त्री० वृक्षों की भयंकर ध्वनि ।
द्रुंग-देखो 'दुरंग' ।
द्रु-पु० [सं०] १ वृक्ष, पेड़ । २ वृक्ष की शाखा । ३ लकड़ी ।
४ लकड़ी का उपकरण ।
द्रुघण-पु० [सं०] १ लोहे का सुन्दर । २ परशु या फण्डे
के आकार का एक शस्त्र । ३ कुठार, कुल्हाड़ी ।
४ देखो 'द्रुहिण' ।
द्रुण, द्रुणा, द्रुणि (णी)-पु० [सं० द्रुणा] १ धनुष, कमान ।
२ खड्ग । ३ बिच्छु । ४ भृंगी कीट । ५ धनुष की डोरी ।
६ कण्ठी । ७ बाल्टी । ८ डोल । ९ कनखजुरा ।
१० कांतर ।
द्रुत द्रुति(ती)-वि० [सं०] १ वेगवान, तेज, फुर्तीला । २ शीघ्र-
गामी । ३ भागा हुआ । ४ द्रवीभूत । ५ तरल । ६ बहा
हुआ । — कि० वि० जल्दी, तुरन्त, शीघ्र । तेजी से । — पु०
१ कुछ तेज गति, लय । २ ताल की एक मात्रा का आघात ।
३ हल्की शराब । ४ बिच्छु । ५ वृक्ष, पेड़ । ६ बिच्छो ।
— गति-स्त्री० तेजगति । — वि० शीघ्रगामी । — गांभी-
वि० शीघ्रगामी । — रासी-स्त्री० घटिया शराब ।
— बिलंबित-पु० एक वर्ण वृत्त । एक ताल विशेष ।
द्रुपद-पु० [सं०] १ उत्तर पांचाल का राजा । २ एक राग ।
३ देखो 'द्रुपद' ।
द्रुपदी-स्त्री० १ एक मात्रिक छंद विशेष । २ पांडवों की धर्मपत्नी
द्रौपदी ।
द्रुमंडळ (ळि)-देखो 'द्रुमंडल' ।
द्रुमंग, द्रुम-पु० [सं० द्रुम] १ वृक्ष, पेड़ । २ स्वर्ग का एक वृक्ष ।
— पत, पति-पु० कल्पवृक्ष । — पाळ-पु० पर्वत, पहाड़ ।

द्रोह-पु० [सं०] १ प्रतिहिंसा, वैर । २ ईर्ष्या, जलन, द्वेष ।
३ अहित चित्तन । ४ उत्पात, उपद्रव, विप्लव । ५ विद्रोह ।
६ अपराध । ७ विरोध ।
द्रोही-वि० [सं० द्रोहिन] विद्रोह करने वाला, उत्पात मचाने
वाला । ईर्ष्या करने वाला । -पु० शत्रु, वैरी ।
द्रोणि-देखो 'द्रोणि' ।
द्रोपत, द्रौपद-पु० [सं० द्रौपद] १ राजा द्रुपद का पुत्र ।
२ देखो 'द्रौपदी' ।
द्रौपदी (ध्र)-स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की पुत्री व पांडवों की
स्त्री, कृष्णा । -वि० कृष्ण, काली, श्यामः ।
द्रौपदेय-पु० [सं०] द्रौपदी का पुत्र ।
द्रोह-देखो 'द्रोह' ।
द्वंद्व, द्वंद्व-देखो 'द्वंद' ।
द्वंद्वचारी-पु० [सं०] चक्रवापसी ।
द्वंद्वज-पु० [सं०] १ राग द्वेप से उत्पन्न मनोवृत्ति । २ त्रिदोष से
उत्पन्न रोग ।
द्वंद्वर, द्वंद्व-देखो 'द्वंद' ।
द्वंद्वजुष-पु० दो योद्धाओं का युद्ध, कुशती ।
द्वंजराज-देखो 'दुजराज' ।
द्वर्ही-देखो 'बुहर्ही' ।
द्वान-पु० [सं०] जारज पुत्र ।
द्वान-देखो 'दवात' ।
द्वादस-वि० [सं०] १ दश व दो, बारह । २ ग्यारह के बाद
वाला । —आत्म, आत्मा-स्त्री० सूर्य, आदित्य । —कर--
-पु० स्वामि कार्तिकेय । गुरु बृहस्पति । —चख, लोचन ।
-पु० स्वामि कार्तिकेय ।
द्वादसक-वि० [सं० द्वादशक] बारह का ।
द्वादसतूरच निनाद-पु० बारह धार्यों की ध्वनि ।
द्वादसभाव-पु० [सं० द्वादशभाव] जन्म कुंडली में एक स्थान ।
द्वादसवारसिक-पु० [सं० द्वादशवारसिक] ब्रह्म हत्या के प्रावशित
में बारह वर्ष तक किया जाने वाला व्रत ।
द्वादसमुद्रि-स्त्री० [सं० द्वादश मुद्रि] तत्रोक्त बारह प्रकार की
शुद्धियां ।
द्वादसांग-पु० [सं० द्वादशांग] जैनियों का एक ग्रंथ संग्रह ।
२ बारह द्रव्यों का एक धूप विशेष ।
द्वादसि (सो)-स्त्री० [सं० द्वादशी] मास के प्रत्येक पक्ष की
बारहवीं तिथि ।
द्वादसी-पु० १ मृतक का बारहवां दिन । २ इस दिन का संस्कार
व भोज ।
द्वापर, द्वापुर (रि)-पु० [सं० द्वापर] मतयुग आदि चार युगों
में से एक ।

द्वार-पु० [सं०] १ दरवाजा, द्वार । २ दरवाजे के कपाट ।
 ३ मुञ्ज, छिद्र, मुहाना । ४ इन्द्रियों के मार्ग । ५ उपाय,
 साधन, जरिया । ६ रास्ता, निकास ।
 द्वारका-स्त्री० [सं०] गुजरात की एक प्राचीन नगरी । —धोस-
 पु० श्रीकृष्ण ।
 द्वारकेस-पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।
 द्वारपाळ (पाळक)-पु० [सं० द्वारपाल] १ द्वाररक्षक, इयोड़ी
 द्वार, दरवान । २ द्वार पर स्थित देवता । ३ सरस्वती के
 तट का एक तीर्थ ।
 द्वाररोकाई-स्त्री० एक वैवाहिक रथ ।
 द्वारबती, द्वारामत, (मती, मत्त, मत्ति, वत्ति, वत्ति)-देखो 'द्वारका' ।
 द्वार-देखो 'द्वार' ।
 द्वारिक-पु० [सं०] द्वारपाल ।
 द्वारिका-देखो 'द्वारका' ।
 द्वारी-स्त्री० छोटा द्वार, बारी, खिड़की ।
 द्वारी-पु० १ छोटा द्वार, दरवाजा । २ साधुओं का स्थान ।
 द्वाली-पु० गीत के चार चरण का समूह ।
 द्वि-वि० [सं०] दो । दोनों । —स्त्री० दो की गंगा ।
 द्विक-पु० [सं०] कौआ, काक ।
 द्विकर्मक-वि० [सं० द्विकर्मक] जिसके दो कर्म हों ।
 द्विकल-स्त्री० [सं० द्विकला] दो मात्रा का समूह ।
 द्विगु-पु० [सं०] एक प्रकार का समास भेद ।
 द्विगुण-वि० [सं०] १ दुगुना, दूना । २ दो गुणों वाला ।
 द्विज-पु० [सं०] १ ब्राह्मण । २ नारद । ३ वशिष्ठ । ४ पक्षी ।
 ५ सर्प । ६ दांत । ७ दो बार उत्पन्न हुआ जीव । ८ डण्ड
 के पांचवें भेद का नाम । ९ दो की संख्या । १० देखो 'दुज' ।
 —वि० दो बार जन्मा हुआ । —पनि='दुजपति' ।
 — राज, राय='दुजराज' ।
 द्विजन्म-पु० [सं०] १ दूसरा जन्म, पुनर्जन्म । २ ब्राह्मण ।
 ३ यज्ञोपवीत धारण करने वाला । —वि० दो बार
 जन्मा हुआ ।
 द्विजवादन-पु० [सं०] विष्णु ।
 द्विजा-स्त्री० [सं०] ब्राह्मणी ।
 द्विजाग्रज-पु० [सं०] ब्राह्मण ।
 द्विजाति-देखो 'दुजाति' ।
 द्विजेन्द्र-देखो 'दुजेम' ।
 द्वितीय, (यौ)-वि० [सं०] दूसरा । —पु० दूसरा पुत्र । भागीदार
 साथीदार ।
 द्विदल-वि० [सं० द्विदल] १ दो दल वाला । २ दो पत्तों वाला
 ३ दो खण्डों का जुड़ा हुआ । —पु० दो दल का अन्न, दाल ।
 द्विदेह-पु० [सं०] गणेश, गजानन ।

द्विद्वादस-पु० राशियों का मेल ।
 द्विधा-कि० वि० [सं०] दो प्रकार से, दो तरह से, दो भागों में ।
 द्विधातु-वि० [सं०] दो धातु का बना । —पु० गणेश ।
 द्विप-पु० [सं०] हाथी गज ।
 द्विपदी-वि० [सं०] दो पांवों वाला । —पु० १ एक प्रकार का
 चित्र काव्य । २ दो पदों का छन्द या गीत ।
 द्विपादपाश्चासन-पु० [सं० द्विपाद पाश्चासन] योग के चौरासी
 आसनों में से एक ।
 द्विपायी-पु० [सं०] हाथी ।
 द्विपाय-पु० [सं०] गणेश ।
 द्विपुष्कर-पु० [सं० द्विपुष्कर] ज्योतिष का एक योग ।
 द्विप-देखो 'द्विप' ।
 द्विभासी-देखो 'दुभासी' ।
 द्विभुज-वि० [सं०] दो भुजा वाला । —स्त्री० दो भुजाएँ ।
 द्विभूमिक-पु० [सं०] दो मंजिला । दो तल्ला ।
 द्विमात्र-पु० [सं०] दो मात्राओं का वर्ण । ई ई वगैरे ।
 द्विमात्रज, द्विमात्रिज-पु० [सं०] १ गणेश । २ जरासंध ।
 द्विरद-पु० [सं०] १ हाथी, गज । २ दुर्घोषन का एक भाई ।
 ३ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक । —वि० दो दातों
 वाला ।
 द्विरदासन-पु० [सं० द्विरदासन] सिंह ।
 द्विरसत-पु० [सं०] नर्प, सांप ।
 द्विरागमन-पु० [सं०] १ पुनरागमन । २ बंधू का दुवारा
 आगमन ।
 द्विरेफ-पु० [सं०] १ भौरा, अमर । २ वर ।
 द्विविद-पु० [सं०] राम की सेना का एक सेनापति ।
 द्विसरीर-पु० [सं० द्विसरीर] १ ज्योतिष में कन्या, मिथुन धनु,
 और मीन राशियाँ । २ गणेश ।
 द्वीप-पु० [सं०] १ चारों ओर जल से घिरा भू भाग, टापू ।
 २ समुद्र के बीच भूमा देश, प्रदेश । ३ पृथ्वी के सान बड़े
 विभाग । ४ देश, प्रदेश । ५ भात की संख्या ।
 ६ देखो 'दीप' ।
 द्वेष्ट पु० [सं० द्वेष्ट] १ ईर्ष्या, डाह । २ विरोध, वैर । ३ क्रोध
 गुस्सा । —क-पु० शत्रु ।
 द्वेमातर-देखो 'द्विमात्रिज' ।
 द्वेस-पु० [सं० द्वेष्ट] १ ईर्ष्या, डाह, जलन । २ मन की अशुचिकर
 बात, अप्रिय घटना । ३ विरोध, वैर । ४ क्रोध, गुस्सा ।
 द्वेसी-वि० [सं० द्वेष्ट] १ ईर्ष्या । २ विरोधी । ३ क्रोधी ।
 द्वै-वि० [सं० द्वेष्ट] दो, दोनों । —अखरी, अखरी='विप्रखरी'

द्वं

(६५७)

धईइणी

द्वं-पु० [सं०] १ भेद-भाव । अन्तर । २ परायेपन का भाव ।
३ दो का भाव, जोड़ा युग्म । ४ दुविधा, अम । ५ अज्ञान,
जड़ता । ६ द्वैतवाद । —भाव, वाद-पु० ईश्वर व जीव
को अलग-अलग समझने का भाव, भेदभाव ।
द्वैतबल (लि, न)-पु० [सं० द्वैतबल] पांडवकालीन एक
तपोवन ।

द्वैतवाद-पु० [सं०] १ ब्रह्म से जीव को भिन्न मानने का सिद्धान्त ।
२ शरीर व आत्मा को भिन्न-भिन्न मानने का सिद्धान्त ।
द्वैतवादी, द्वैती-वि० [सं०] उक्त सिद्धान्त को मानने वाला ।
द्वैपायण, (न)-पु० [सं०] वेदव्यास ।
द्वैमातुर-पु० [सं०] १ गणेश । २ जरासंध ।
द्वैरद-देखो 'द्विरद' ।

- ध -

ध-देवनागरी वर्ण माला का उन्नीसवां व्यंजन ।
धं-पु० १ दान । २ मान । ३ द्रव्य । ४ सुखासन । —स्त्री०
५ धाय ।
धंक, धंका-स्त्री० [सं० धक, धीक्षा] १ इच्छा, अभिलाषा,
लालसा । २ दृढ़ निश्चय, संकल्प । ३ धक्का, टक्कर ।
४ आघात, चोट । ५ भय, डर, आशंका ।
धंकी-वि० १ इच्छा, अभिलाषा करने वाला । २ संकल्प करने
वाला ।
धंछ, धंछा-पु० १ क्रोध, रोष । २ जोश, आवेश ।
३ देखो 'धंक' ।
धंछी-वि० [सं० धेयिन्] १ वैरी, शत्रु । २ क्रोधी । ३ जोशीला,
४ देखो 'धंकी' ।
धंगी-देखो 'धंगी' ।
धंग-१ देखो 'धरा' । २ देखो 'धन' । ३ देखो 'धनु' ।
धंगी-१ देखो 'धरा' । २ देखो 'धनी' । ३ देखो 'धनु' ।
धंतर-पु० १ धनेर पक्षी । २ देखो 'धनंतर' । ३ देखो 'धतरजी' ।
धंतरजी-वि० १ जबरदस्त, जोरदार, बलवान शक्तिशाली ।
२ देखो 'धनंतर' ।
धंतर, (री)-देखो 'धतूरी' ।
धंद-१ देखो 'धंध' । २ देखो 'धंधी' ।
धंद, धंद, धंदी-देखो 'धंधी' ।
धंध-पु० [सं० दन्ध] १ उपद्रव, उत्पात । २ कष्ट, दुःख ।
३ अंधकार । ४ धुंधलापन । —वि० १ व्यर्थ, फालतू ।
२ आकाशगामी, तमघर । ३ देखो 'धंधी' ।
धंध, धंध-देखो 'धंधी' ।
धंधक-पु० १ एक प्रकार का ढोल । २ काम धंधे का ढोंग,
आडम्बर ।
धंधव-देखो 'धंधी' ।
धंधागर, (गिर)-वि० काम करने वाला, परिश्रमी, क्रियाशील ।

धंधारथी (धु)-वि० कार्य में संलग्न, कार्यरत । परिश्रमी ।
धंधाळी (ळ)-वि० १ कार्य में व्यस्त अधिक काम वाला ।
२ क्रियाशील ।
धंधीगर, धंधीखर-१ देखो 'धंधीगर' । २ देखो 'धंधागर' ।
धंधूणणी (बी)-देखो 'धंधूणणी' (बी) ।
धंधूणी-देखो 'धंधूणी' ।
धंधोळणी-स्त्री० १ वृक्ष विशेष । २ देखो 'धंधूणी' ।
धंधोळणी (बी)-क्रि० [सं० हुतम्] १ हराना, पराजित करना ।
२ झुकझुकाना, जोर से हिलाना । ३ बाधा डालना,
विघ्न डालना ।
धंधोळी-स्त्री० १ परास्त करने की क्रिया या भाव ।
२ देखो 'धंधूणी' ।
धंधी-पु० [सं० दन्ध] १ काम कार्य । २ उपार्जन सम्बन्धी कार्य ।
३ उद्योग, परिश्रम । ४ व्यवसाय, व्यापार । ५ सांसारिक
प्रपंच । ६ पेशा, वृत्ति ।
धंध(नु)-१ देखो 'धन' । २ देखो 'धन्य' ।
धंधजगर-देखो 'धमजगर' ।
धंधरा (ली)-१ देखो 'धमरा' । २ देखो 'धमरा' ।
धंधळ-देखो 'धवळ' ।
धंध-स्त्री० तेज हवा की ध्वनि ।
धंधण-देखो 'धमण' ।
धंधणी (बी)-देखो 'धमणी' (बी) ।
धंधळ-देखो 'धवळ' ।
ध-पु० [सं०] १ गणेश, गजानन । २ विष्णु । ३ स्वामी, नाथ ।
४ वचन । ५ कुवेर । ६ स्वामि कार्तिकेय । ७ व्याख्यान ।
८ कुम्हार । ९ शिर कटी घड़ । १० धर्म । ११ सदाचार,
सद्गुण । १२ धन, द्रव्य । १३ संगीत में सरगम का छठा
स्वर । धैवत ।
धईइणी (बी)-क्रि० धमाधम पीटना, मारना ।

धईवंत (वत)-देखो 'धैवत' ।

धउल धउलउं, धउलउ (ऊं)-देखो 'धवल' ।

धउलणी, (बौ)-देखो 'धौलणी' (बौ) ।

धउलहर-देखो 'धवलहर' ।

धउली-देखो 'धवल' ।

धउसणी (बौ)-क्रि० [सं० ध्वंग] १ संहार करना । २ ध्वंस करना । ३ नष्ट करना, बर्बाद करना ।

धऊकार-देखो 'धाऊकार' ।

धऊस-वि० [सं० ध्वस] १ भूख, जड़ । २ असम्य, जंगली । ३ ध्वस्त । ४ बर्बाद ।

धक-स्त्री० १ अग्नि, आग । २ ताप, जलन । ३ क्रोध, गुस्सा । ४ उमंग, उत्साह । ५ साहस, हिम्मत । ६ वेग । ७ जोश, आवेश । ८ दिल की धड़कन । ९ तंग रास्ते से द्रव पदार्थ के निकलने से उत्पन्न ध्वनि । १० आश्चर्य, विस्मय, स्तब्धता । ११ भाला । १२ देखो 'धक' ।

धकड़ी-स्त्री० लड़खड़ाते की क्रिया या भाव ।

धकचाळ, (चाळण, चाळी)-पु० १ युद्ध, लड़ाई, समर । २ उपद्रव, उत्पात ।

धकण-देखो 'धुकड़' ।

धकणी (बौ)-क्रि० १ किसी तरह काम चलना, निभाना । २ काम निकलना, बनना । ३ धक्का खाकर चलना, धकना । ४ क्रुद्ध होना, कुपित होना । ५ देखो 'धुकणी' (बौ) ।

धकधकणी (बौ)-क्रि० १ उबका कर निकलना । २ वेग से बहना । उमड़ना । ३ कांपना, धरना, धड़कना । ४ प्रज्वलित होना, धधकना । ५ दुःखी होना, पीड़ित होना ।

धकधकाणी (बौ), धकधकावणी (बौ)-क्रि० १ उबका कर निकालना । २ वेग से बहाना, उमड़ाना । ३ प्रज्वलित करना, धधकाना । ४ दुःखी या पीड़ित करना ।

धकधकाहट, धकधकी-स्त्री० १ धधकने की क्रिया या भाव, धड़कन । २ कांपन, धरहट । ३ प्रज्वलन ।

धकधार-स्त्री० १ आवेग, वेग । २ धारा प्रवाह ।

धकधूँण, धकधूण-स्त्री० [सं० धक्] १ जोर से हिलाने या झकझोरने की क्रिया या भाव । २ नाम जपने की ध्वनि, जाप । ३ धुनकी की आवाज । ४ कांपन ।

धकधूँणणी (बौ), धकधूणणी (बौ)-क्रि० [सं० धक्] १ जोर से हिलाना झकझोरना । २ नाम जपना, ध्वनि लगाना । ३ धुनकी चलाना । ४ कम्पायमान करना । ५ गिराना । ६ ध्वंस करना ।

धकपंख (पंखी)-देखो 'धखपंख' । —धज, धज्ज, ध्वज= 'धखपंखध्वज' ।

धकपेल-स्त्री० धक्कमधक्का, रेलापेल ।

धकमधका, धकमधया-देखो 'धक्कमधक्का' ।

धकरूस, धकरोल-स्त्री० १ तेज आंधी से उड़ी हुई धूल, गंद । २ धूँआ धोर । ३ धूँए या गर्द का जोर से उठने वाला प्रवाह । ४ धारा, प्रवाह ।

धकाणी (बौ)-क्रि० १ किसी तरह काम चलाना, निभाना । २ काम निकलवाना बनवाना । ३ धक्का मारकर चलाना, धकाना । ठकेलना । ४ क्रुद्ध करना, कुपित करना । ५ पीछे हटाना खदेड़ना । ६ भगाना । ७ पराजित करना, हराना । ८ चलाना, हांकना । ९ देखो 'धुकाणी' (बौ) ।

धकाधम-स्त्री० १ धक्का पेल, लड़ाई । २ धक्कामुक्की ।

धकार-पु० 'ध' अक्षर ।

धकावणी (बौ)-देखो 'धकाणी' (बौ) ।

धके-देखो 'धक' ।

धकेलणी (बौ)-क्रि० [सं० धक्] १ धक्का देना ठेलना पेलना । २ धक्का देकर आगे बढ़ाना । ३ प्रवृत्त करना । ४ देखो 'धकाणी' (बौ) ।

धक-क्रि० वि० १ आगे, अगाड़ी । २ पूर्व में पहले । ३ भविष्य में । ४ मुकाबले या प्रतियोगिता में, तुलना में । ५ सामने, सम्मुख । ६ ओर, तरफ । ७ सीधे । ८ अतन्त्र, तदनन्तर ।

धकी-पु० [सं० धक्] १ टक्कर, धक्का, आघात । २ झोका भटका । ३ चोट, आघात । ४ ठकेलने की क्रिया या भाव । ५ मुठभेड़, भिड़ंत, लड़ाई, युद्ध । ६ हमला, आक्रमण । ७ मानसिक आघात । ८ दुःख संकट । ९ घाटा । १० हानि, नुकसान । ११ मुकाबला ।

धक्क-देखो 'धक' ।

धक्कमधकी, धक्कमधक्का-पु० १ अत्यन्त भीड़ में होने वाली परस्पर टक्कर । २ रेलापेल ।

धक्कामुक्की-स्त्री० मारपीट, धूसों की चोट, धक्का ।

धक्के-देखो 'धके' ।

धक्की-देखो 'धकी' ।

धख-१ देखो 'धक' । २ देखो 'धक' ।

धखड़ी-पु० एक प्रकार की घास ।

धखचाळ, (चाळी)-देखो 'धकचाळ' ।

धखणी-स्त्री० [सं० धिपण] बुद्धि ।

धखणी (बौ)-देखो 'धकणी' (बौ) ।

धखपंख-पु० [सं० धक्पंख] गरड़ । —धज, धज्ज, ध्वज-पु० विष्णु । श्रीकृष्ण ।

धखाणी (बौ), धखावणी (बौ)-देखो 'धकाणी' (बौ) ।

धखूण-वि० [सं० धिपण] १ पण्डित । २ कवि । ३ वृहस्पति ।

धखे (खं)-देखो 'धक' ।

धखी-देखो 'धकी' ।

धखपंख-देखो 'धखपंख' ।

धग-१ देखो 'धागी' । २ देखो 'दग' ।

धगग-देखो 'दग' ।

धगड़-१ देखो दगड़ । २ देखो 'धगड़' ।

धगड़-पु० १ खड्ग तलवार । २ देखो 'दगड़' ।

धगणी (बो)-क्रि० जलना, प्रज्वलित होना । धधकना ।

धगधगणी (बो)-क्रि० १ कंपित होना, कांपना । धराना ।

२ प्रज्वलित होना, जलना । ३ तपना, गर्म होना ।

४ चमयना, दमकना ।

धगधगी-स्त्री० १ कंपकंपी, कंपन धरहिट । २ धड़कन ।

धगारी-पु० १ आसमान, आकाश । २ जोश ।

धगी-देखो 'दगी' ।

धड़ग-वि० वस्त्रहीन, नंगा ।

धड़दो, धड़िदो-पु० १ नगाड़े की ध्वनि । २ वस्तु के गिरने की ध्वनि । ३ डंके की चोट ।

धड़-स्त्री० [सं० धर] १ गंदन व पांवों के बीच का भाग । शरीर का मध्य भाग । २ कंधा । ३ खण्ड, टुकड़ा, भाग । ४ दल, पार्टी । ५ गेहूं के भूँसे का ढेर । ६ पेड़ का तना । ७ वस्तु के गिरने का घमावा । ८ बन्दूक, तोप आदि की आवाज । ९ धड़कन । १० देखो 'धड़ो' ।

धड़क-स्त्री० १ भय, डर, आशंका । २ हृदय का स्पंदन, धड़कन । ३ भय आदि से होने वाली कंपन, धरहिट । ४ धड़कन की आवाज ।

धड़कण-स्त्री० हृदय का स्पंदन, धड़कन ।

धड़कणी (बो)-क्रि० १ हृदय में स्पंदन होना, दिल धड़कना । २ भयभीत होना, कांपना, धराना । ३ हिलना-डुलना । ४ धड़-धड़ की ध्वनि होना । ५ बन्दूक, तोप आदि का छोटना ।

धड़कन (न) देखो 'धड़कण' ।

धड़काणी (बो), धड़कावणी (बो)-क्रि० १ हृदय में स्पंदन कराना दिल में गति देना । २ भयभीत करना, डराना । ३ हिलाना, डुलाना । ४ धड़-धड़ ध्वनि करना । ५ बन्दूक, तोप आदि छोड़ना ।

धड़कें-क्रि० वि० जल्दी से, अकस्मात् यकायक ।

धड़कौ-पु० १ गाड़ी चलने से लगने वाला धक्का, हिलौरा । २ हृदय का स्पंदन, धड़कन । ३ डर, भय, अदेश । ४ धड़कन का शब्द । ५ वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द ।

धड़क-देखो 'धड़क' ।

धड़कणी (बो)-देखो 'धड़कणी' (बो) ।

धड़काणी (बो), धड़कावणी (बो)-देखो 'धड़काणी' (बो) ।

धड़की-देखो 'धड़की' ।

धड़ड़-स्त्री० बन्दूक आदि छूटने या दीवार आदि ढहने से उत्पन्न ध्वनि ।

धड़ड़णी (बो)-क्रि० १ बन्दूक आदि का छूटना । २ दीवार आदि ढहना । ३ ध्वनि होना । ४ कांपना, धराना । ५ धड़कना । ६ यजना । ७ गुराना ।

धड़ड़णी (बो), धड़ड़ावणी (बो)-क्रि० [अनु] १ बन्दूक आदि छोड़ना । २ दीवार आदि ढहाना । ३ ध्वनि करना । ४ कांपना । ५ धड़कना ।

धड़च-स्त्री० [सं० द] १ तलवार । २ चीरने-फाड़ने की क्रिया या भाव । ३ देखो 'धड़ची' ।

धड़चणी (बो)-क्रि० [सं० द] १ संहार करना, मारना । २ चीरना, फाड़ना । ३ काटना । ४ टुकड़े-टुकड़े करना ।

धड़चाळी-वि० फटी हुई ।

धड़चिपी, धड़ची-पु० १ फटा हुआ वस्त्र । २ वस्त्र का खण्ड, टुकड़ा । ३ धोती ।

धड़च्छणी (बो)-देखो 'धड़चणी' (बो) ।

धड़च्छी-देखो 'धड़ची' ।

धड़छ-देखो 'धड़च' ।

धड़छणी (बो)-देखो 'धड़चणी' (बो) ।

धड़छिपी, धड़छी-देखो 'धड़ची' ।

धड़धड़णी (बो)-देखो 'धड़ड़णी' (बो) ।

धड़धड़ट-स्त्री० १ बन्दूक आदि छूटने, दीवार ढहने या गाड़ी आदि के चलने से उत्पन्न ध्वनि । २ धड़कन । ३ धक्का । ४ कंपन ।

धड़धड़णी (बो), धड़धड़ावणी (बो)-देखो 'धड़ड़णी' (बो) ।

धड़धड़ो-स्त्री० १ भय या मर्दी के कारण शरीर में होने वाली कंपन । २ पशु-पक्षियों द्वारा शरीर की जोर से हिलाने की क्रिया या भाव । ३ अशुचि, उबकाई ।

धड़वाई-देखो 'धड़वी' ।

धड़हड़-देखो 'धड़ड़' ।

धड़हड़णी (बो)-देखो 'धड़ड़णी' (बो) ।

धड़हड़ट-देखो 'धड़धड़ट' ।

धड़ाम-स्त्री० १ सहसा गिरने, कुदने आदि की क्रिया या भाव । २ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।

धड़को-पु० धक्का । गड़गड़ाहट ।

धड़धड़-क्रि० वि० १ फटाफट, शीघ्रता से । २ धड़-धड़ करते हुए । ३ निरन्तर, लगातार ।

धड़बंदी-स्त्री० १ युद्ध से पूर्व किया जाने वाला मेना का सत्तलन । २ गुट बंदी । ३ धड़ा बांधने का कार्य ।

धड़ाधत, (ती)-देखो 'धड़ाधत' ।

धड़ाळ-पु० शरीर । -वि० देहधारी ।

धड़ी-स्त्री० १ स्त्रियों के कान का एक आभूषण विंशप । २ पांच सेर का एक तौल । ३ रेखा, लकीर ।

धड़कणी (बो)—क्रि० १ मेघ का गर्जन । २ सिंह का दहाड़ना । ३ बेल, सांड आदि का जोश में बोलना, ताड़कना । ४ बाद्य बजना । ५ गर्व या जोश में बोलना ।
 धड़कौ—पु० जोश पूर्ण आवाज, जोर का शब्द ।
 धड़क—वि० अधिक, ज्यादा विशेष ।
 धड़—क्रि० वि० तरफ, ओर ।
 धड़ौ—पु० [सं० धटः] १ तराजू या तराजू का पलड़ा । २ किसी पात्र का संतुलन करने के लिये रखा जाने वाला पदार्थ । ३ समूह । ४ एक ही गोत्र या जाति का समूह या पक्ष । ५ वंश, कुटुंब । ६ पक्ष, समूह, दल । ७ विचार । ८ टीका भोड़ा । ९ डेर, राशि । १० हिस्सा, भाग । ११ योग, जोड़ ।
 धक्क—स्त्री० १ किसी गीली वस्तु के गिरने का शब्द । २ किसी गीले पदार्थ में कुछ धंसने की क्रिया व उससे उत्पन्न शब्द । ३ धक्का भटका ।
 धक्कचारी (बो)—क्रि० डराना, धमकाना, दहलाना ।
 धक्कणी, (बो)—क्रि० १ भटका खाना । २ दलदल में धंसना । ३ चोट खाना ।
 धक्कणी (बो), धक्कावणी (बो)—क्रि० १ भटका देना । २ दलदल में धंसाना । ३ चोट लगाना ।
 धक्की—पु० १ धक्का, भटका । २ टक्कर । ३ चोट, आघात ।
 धक्का—क्रि० वि० धक् की ध्वनि करते हुए । अक्स्मात् ।
 धक्कीड़ (डो)—पु० १ प्रहार । २ प्रहार की ध्वनि । ३ टक्कर ।
 धक्क—देखो 'धक्' ।
 धज—पु० [सं० ध्वजः] १ घोड़ा, अश्व । २ योद्धा, वीर । ३ भाला । —वि० १ अग्रणी, अग्रगामी । २ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ सत्य । ४ देखो 'ध्वज' । —कूत—स्त्री० भाले की नोक । —डंड, डंड—पु० ध्वज दण्ड । —घर—पु० देवालय, मन्दिर, गृह । —बंद, बंदी, बंध, बंधी—वि० वीर, योद्धा । पूर्ण विश्वसनीय । सीधा । ध्वजधारी । —पु० राजा, नृप । अश्व, घोड़ा । मन्दिर । ध्वज दण्ड रखने वाला व्यक्ति । —स्त्री० दुर्गा, देवी । —राज, राज—पु० घोड़ा, अश्व । —रूप—पु० बरछी । —रेल, रेल—पु० घोड़ा, अश्व । —वि० ध्वजा धारण करने वाला । ध्वजाधारी ।
 धजकजळ—पु० [सं० कजलध्वज] दीपक, चिराग ।
 धजनी—स्त्री० [सं० ध्वजिनी] मेना ।
 धजबड़, धजबड़—देखो 'धजबड़' ।
 धजभंग—देखो 'ध्वजभंग' ।
 धजभोर—देखो 'मोरध्वज' ।
 धजरंग—वि० [सं० ध्वजरंग] १ ध्वज के समान । २ नोकदार ।
 धजर—स्त्री० १ शक्ति, बल । २ शेखी, शान । ३ कीर्ति, यश । ४ मान, प्रतिष्ठा । ५ ध्वजा, पताका । ६ कटारी, बरछी । ७ भाला । ८ देवालय, मन्दिर । ९ आसमान, आकाश ।

—वि० सुन्दर, मनोहर ।
 धजराज—देखो 'धजाराज' ।
 धजवड़ (बड़ा, बड़ि, बड़ी, बड़, बड़, बड़) —स्त्री० १ खड्ग, तलवार । २ मान, प्रतिष्ठा । —हत, हत्ती, हत्थ, हत्थी, हत्थ, हथौ—पु० खड्गधारी योद्धा ।
 धजसंड—पु० [सं० ध्वज-वण्ड] महादेव, शिव ।
 धजाराज—पु० घोड़ा ।
 धजा—१ देखो 'धज' । २ देखो 'ध्वज' ।
 धजाखोस—पु० [सं० ध्वज-खोस] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु ।
 धजाबंद (बंध)—स्त्री० [सं० ध्वजाबन्ध] १ देवी, दुर्गा । २ देवता । ३ देखो 'ध्वजबंध' ।
 धजारो—पु० आकाश, आसमान ।
 धजाळी—स्त्री० ध्वज धारण करने वाली देवी, शक्ति ।
 धजाळी, धजीळी—वि० १ ध्वज धारी । २ सुन्दर ढंग का, तड़क-मड़क वाला ।
 धज्ज—१ देखो 'धज' । २ देखो 'ध्वज' ।
 धज्जी—स्त्री० १ कपड़े, कागज आदि की पट्टी, लंबा खण्ड । २ लम्बी पट्टी या पत्ती । ३ जगह-जगह से फटे वस्त्र के खण्ड ।
 धट—पु० १ वक् पक्षी, बगुना । २ देखो 'धाट' । —पंख—'धख' ।
 धटी—स्त्री० [सं०] १ वस्त्र, चीर । २ वर-वधू के गठबन्धन का वस्त्र । ३ गर्भाधान के बाद स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र । ४ देखो 'धाटी' ।
 धट्ट—देखो 'धट' ।
 धड—देखो 'धड़' ।
 धडकणी—(बो)—देखो 'धड़कणी' (बो) ।
 धडहड़—देखो 'धड़ड़' ।
 धडहड़णी (बो)—देखो 'धड़ड़णी' (बो) ।
 धडूकणी (बो)—देखो 'धड़ूकणी' (बो) ।
 धरा—स्त्री० [सं० धनिका] १ पत्नी, स्त्री । २ चमड़े की धौकनी के आगे लगी लोहे की नली । ३ देखो 'धन' ।
 धणक—१ देखो 'धगा' । २ देखो 'धनक' । ३ देखो 'धनुम' ।
 धणख—पु० १ एक प्रकार का पीछा । २ देखो 'धनक' । ३ देखो 'धनुस' ।
 धराबंध—वि० दान देने वाला, दाता । —पु० द्रव्य का दान ।
 धणि—१ देखो 'धण' । २ देखो 'धणी' ।
 धणियाप—देखो 'धणियाप' ।
 धणित—१ देखो 'धन्य' । २ देखो 'धनु' ।
 धणिय—वि० [सं० धनित] १ अस्थिर । २ देखो 'धणी' ।
 धणियप—देखो 'धणियाप' ।

धर्मायांसी

(६११)

धनंतरजी

धर्मायांसी-स्त्री० [सं० धनिका] १ स्वामिनी । २ अधिष्ठाता, देवी । ३ माता । ४ स्त्री, गृहिणी ।

धर्माया-देखो 'धर्मा' ।

धर्मायाप (पण,पौ)- स्त्री० [सं० धनिक] १ स्वामित्व, मालिकाना हक । २ अधिकार, वश । ३ कृपा, दया, महरबानी ।

धर्मायाळी-वि० सौभाग्यवती ।

धर्मा-पुं० [सं० धनिक] (स्त्री० धर्मायांसी) १ ईश्वर, परमात्मा । २ स्वामी, मालिक । ३ पति, खाविद । ४ राजा नृप । ५ शासक । ६ देखो 'धनु' । ७ देखो 'धनी' ।
—चोधार-पुं० राजा, नृप । —धोरी-पुं० स्वामी, मालिक कर्ता-धर्ता ।

धर्माप-देखो 'धर्मायाप' ।

धर्मायाळ-पुं० [सं० धनिक-माल] राजा, नृप ।

धर्मायी-वि० [सं० धन्यवयाः] बढ़िया, उत्तम ।

धर्मायांसी-देखो 'धर्मायांसी' ।

धर्मायाप-देखो 'धर्मायाप' ।

धर्मावड-वि० [सं० धन्यवयाः] १ दीर्घजीवी । २ जिसका जीवन मफल एवं धन्य हो ।

धर्मावत-पुं० [सं० धनिक-वत] स्वामित्व, मालिकपन ।

धर्मा, धर्मा, धर्मा-१ देखो 'धनु' । २ देखो 'धर्मा' ।

धर्माह-पुं० [सं० धनुर्धर] धनुर्धर ।

धर्माहि(ही)-देखो 'धनु' ।

धर्मा-पुं० १ देखो 'धर्मा' । २ देखो 'धनु' ।

धर्मा-पुं० [सं० धान्या] धर्माया का पौधा व उसका बीज ।

धर्मा-स्त्री० १ हठ, जिद्द । २ बुरी वान, आदत । ३ कोई बात जो दिमाग में जम जाय । ४ देखो 'धुत' । —अव्य० १ दुत्कारने का शब्द । २ हाथी का एक संबोधन । —वि० मस्त, उन्मत्त । नशे में चूर ।

धर्मा-देखो 'धुत्कार' ।

धर्मा-देखो 'धुत्कारणी' (बी) ।

धर्मा, धर्मासट, धर्मासट-पुं० [सं० धृतराष्ट्र] कौरवों का पिता, धृतराष्ट्र ।

धर्मा-स्त्री० १ हाथी को उत्साहित करने का शब्द । २ एक मात्रिक छन्द विशेष ।

धर्मानव-पुं० एक मात्रिक छन्द विशेष ।

धर्मा-वि० दुराग्रही, जिद्दी ।

धर्मा-देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-पुं० १ एक लोक गीत विशेष । २ देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-पुं० जहरीले एवं नशीले बीजों वाला एक पौधा विशेष ।

धर्मा-पुं० १ धोखा, छल । २ भांसा, झूठा आश्वामन । ३ अविश्वाम ।

धर्मा-देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-देखो 'धर्मा' । —नंद= 'धर्मानंद' ।

धर्मा, धर्मासट, धर्मासट, धर्मा-देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-स्त्री० १ अग्नि का प्रज्वलन, आग की लौ, लपट । २ क्रोध । ३ आवेश, जोश । ४ दुर्गन्ध, बदबू ।

धर्मा (बी)-कि० १ अग्नि का प्रज्वलित होना, लपट या लौ उठना । २ क्रुद्ध होना । ३ आवेश या जोश घाना । ४ सड़ना, दुर्गन्ध या बदबू देना ।

धर्मा (बी)-कि० १ आग को प्रज्वलित करना, जलाना । २ क्रोध दिलाना । ३ जोश दिलाना । ४ मड़ाना, बदबू फैलाना ।

धर्मा (बी)-कि० १ उत्तेजित करना । २ प्रेरित करना । ३ हांकना । ४ देखो 'धुत्कारणी' (बी) ।

धर्मा (बी)-देखो 'धर्मा' (बी) ।

धर्मा (बी)-देखो 'धर्मा' (बी) ।

धर्मा-वि० १ बेडौल, विडरूप । २ मोटी-ताजी ।

धर्मा-पुं० 'ध' वर्ण ।

धर्मा (बी)-कि० कंपना, धरना ।

धर्मा (बी), धर्मा (बी)-कि० कंपना, धरना ।

धर्मा (बी)-कि० १ जोर से हिलाना, झुकाना, झटका देना । २ हराना, पराजित करना ।

धर्मा-स्त्री० १ पकड़ कर जोर से हिलाने की क्रिया या भाव । २ हार, पराजय । ३ झटका ।

धर्मा-पुं० [सं० ध] 'ध' अक्षर, धकार ।

धर्मा-देखो 'धनुस' ।

धर्मा-पुं० [सं० धनुष+स्कंध] धनुषाकार कंधे वाला घोड़ा ।

धर्मा-देखो 'धर्मा' ।

धर्मा-देखो 'धनुस' ।

धर्मा, (धर्मा)-पुं० [मं०] १ अर्जुन का एक नामान्तर । २ अर्जुन नामक वृक्ष । ३ अग्नि की एक उपाधि । ४ अग्नि, आग । ५ विष्णु । ६ जलाशयों का अधीश्वर एक नाम । ७ शरीरस्थ दश वायुओं में से एक । ८ पवन । —वि० धन को जीतने वाला । धन प्राप्त करने वाला ।

धर्मा-पुं० [सं० धन्वतरि] १ देवताओं का वैद्य । २ चौवीस अवतारों में से एक । ३ चिकित्सा का अधिष्ठाता देव । ४ देखो 'धनेर' ।

धर्मा-१ देखो 'धर्मा' । २ देखो 'धर्मा' ।

धनद-पु० [सं० धनदः] धनपति कुबेर ।

धनधर-देखो 'धनुधारी' ।

धन, धनउ-पु० [सं० धनम्] १ धन-दीनत, द्रव्य । २ लक्ष्मी । ३ सम्पत्ति, जमीन, जायदाद । ४ पशु धन, गौ-धन । ५ गणित में जोड़ का चिह्न । ६ जोड़ की संस्था । ७ मूल धन, पूंजी । ८ जन्म कुंडली में जन्म लग्न से दूसरा स्थान । ९ बहुमूल्य वस्तु । १० प्रिय वस्तु । ११ लूट का माल । १२ शिकार । १३ खेल में जीता हुआ खिलाड़ी । १४ पुरस्कार । १५ प्रतियोगिता । १६ देखो 'धनु' । १७ देखो 'धन्य' । १८ देखो 'धन' । १९ देखो 'ध्वनि' । —ईस-पु० कुबेर । धनपति । —कर-पु० धन पैदा करने वाला । —कुबेर-वि० कुबेर के समान धनवान । —केळि-पु० कुबेर । —गैली-वि० आवश्यकता से अधिक पूंजी होने से बना उन्मादी । गविला, घमंडी । —देव-पु० कुबेर । —धारी-पु० सेठ, साहकार । धनवान । —नाथ-पु० कुबेर, धनेश । —पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्तो-पु० कुबेर । —पाळ-पु० धन का रक्षक । —राज-पु० कुबेर, धनेश । —बंत, बंती, बंती, बंन-वि० धनी, धनवान ।

धनक-पु० [सं०] १ स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष । २ लालच, लोभ । ३ एक प्रकार का पतला गोटा । ४ हथेली में होने वाला सामुद्रिक चिह्न । ५ देखो 'धनुस' ।

धनकणी-वि० इन्द्र धनुष के समान ।

धनकधर-देखो 'धनुरधर' ।

धनकार-स्त्री० [सं० धनुष्टङ्कार] धनुष की प्रत्यंजा से की जाने वाली ध्वनि ।

धनख-१ देखो 'धनक' । २ देखो 'धनुस' ।

धनखधारण-१ देखो 'धनुरधर' । २ देखो 'धनुस-धारण' ।

धनतेरस-स्त्री० [सं० धन-त्रयोदशी] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी ।

धनद-पु० [सं० धनदः] १ कुबेर, धनेंद्र । २ अग्नि, आग । ३ चित्रक वृक्ष । ४.४६ क्षेत्रपालों में से एक । —वि० धनदाता । —तीरथ-पु० व्रज का कुबेर तीरथ ।

धनदा-स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण एकादशी का नाम । —वि० धन देने वाली ।

धनदि-देखो 'धनद' ।

धनदिहि-पु० कुबेर ।

धनवाद-देखो 'धन्यवाद' ।

धनरसभाव-पु० हाथियों का एक रोग ।

धनव-देखो 'धनु' ।

धनवती-स्त्री० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र । —वि० धनवान, धनी ।

धनवाद-देखो 'धन्यवाद' ।

धनवाळ-पु० पशु-पालन कर निर्वह करने वाला ।

धनस-देखो 'धनुस' ।

धनसपुरी-स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष ।

धनसारथवाह-पु० [सं० धन-सारथवाह] तेवीसवें तीर्थंकर को प्रथम बार भिक्षा देने वाला धन नामक सेठ ।

धनस्वामी-पु० [सं०] कुबेर ।

धनागार (उ)-पु० [सं० धान्य + आगार] १ अन्न का भण्डार । २ कोष, खजाना ।

धनाड्य, (ह्य)-वि० [सं० धनाड्य] धनवान, लक्ष्मीवान, मालदार ।

धनाधन-क्रि० वि० लगातार, बिना रुके, दनादन, बौद्धार की तरह । —वि० तेज मसालों से युक्त, चटपटा ।

धनाधिप, धनाधेप-पु० [सं० धनाधिप] १ कुबेर, धनेश । २ यक्ष ।

धनाध्यक्ष-पु० [सं०] १ कुबेर । २ कोषाध्यक्ष ।

धनारथी-वि० [सं० धनाधिन्] धन चाहने वाला ।

धनवंती-पु० रामानन्दजी के गिण्य धन्ना जाट के वंशज ।

धनास-स्त्री० [सं० धन + आशा] धन की आशा ।

धनासरी, धनासी, धनाली-स्त्री० [सं० धनाश्री] एक रागिनी विशेष ।

धनि-१ देखो 'धन्य' । २ देखो 'धनी' ।

धनिक-वि० [सं०] धनवान, धनाड्य । —पु० १ धनी पुरुष । २ महाजन । ३ पति । ४ ईमानदार व्यापारी । ५ प्रियंगु वृक्ष । ६ स्वामी, मालिक ।

धनिसा, धनिष्ठा-स्त्री० [सं० धनिष्ठा] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवां नक्षत्र ।

धनी, धनी-वि० [सं० धनिन्] १ धनवान, मालदार । २ किसी विशिष्ट गुण वाला । —पु० धनवान पुरुष ।

धनीसा-देखो 'धनिसा' ।

धनु-पु० [सं०] १ धनुष, चाप । २ ज्योतिष की बारह राशियों में से नौवीं । ३ फलित ज्योतिष में एक लग्न । ४ हठयोग के एक आसन का नाम । ५ देखो 'धन' । ६ देखो 'धनु' ।

धनुश्री-देखो 'धनुस' ।

धनुक-१ देखो 'धनुस' । २ देखो 'धनक' ।

धनुकबाई-स्त्री० [सं० धनुर्वात] लकवे की तरह का एक यान रोग ।

धनुख (खि, खो)-देखो 'धनुष' ।

धनुद-देखो 'धनद' ।

धनुधर, धनुधारी-देखो 'धनुरधर' ।

धनुधत-[सं० धनुर्धत] धनुधारी योद्धा ।

धनुरजग-पु० [सं० धनुर्यज] धनुष की पूजा कर धनुर्विद्या की परीक्षार्थ किया जाने वाला यज्ञ ।

धनुर्द्धर, धनुर्द्धर, धनुर्द्धारी-पु० [सं० धनुर्द्धरः] १ धनुषधारी
योद्धा । २ तीरंदाज । -वि० जिसने धनुष धारण किया हो ।
धनुर्वात-स्त्री० [सं० धनुर्वीत] एक भयंकर वात रोग ।
धनुर्विद्या-स्त्री० [सं० धनुर्विद्या] धनुष चलाने की विद्या ।
धनुर्वेद-पु० [सं० धनुर्वेद] १ धनुष विद्या का शास्त्र ।
२ धनुर्विद्या ।
धनुर्वासर-पु० पुष्प, सुमन, फूल ।
धनुस-पु० [सं० धनुष] १ तीर चलाने का यस्त्र, कमान, धनुष ।
२ इन्द्र धनुष । ३ ज्योतिष की एक राशि । ४ हठयोग का
एक आसन । ५ हाथ का एक माप । ६ एक वात रोग
विशेष । -वि० कुटिल, वक्रः । -घर, घरण-पु० श्रीराम ।
अर्जुन । -वि० धनुर्धारी ।
धनुसाकार-वि० [सं० धनुषाकार] धनुष की तरह टेढ़ा ।
धनुसासन-पु० [सं० धनुषासन] योग के चौरासी आसनों में
से एक ।
धनुस्तम्भ-पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग ।
धनुहड्डी-देखो 'धनु' ।
धनुष-देखो 'धनुस' ।
धनेर-पु० एक पक्षी जिसका मांस प्रसूती रोग में काम आता है ।
धनेर-देखो 'धनेर' ।
धनेस-पु० [सं० धनेश] १ धनपति कुबेर । २ लग्न से दूसरा
स्थान ।
धनेसरी-देखो 'धनेस्वरी' ।
धनेस्था-देखो 'धनिस्था' ।
धनेस्वर-पु० [सं० धनेश्वर] १ धनपति कुबेर । २ धन का
स्वामी ।
धनी-वि० १ धनाढ्य, धनवान् । २ देखो 'धन्य' । -सेठ-पु०
धनाढ्य व्यक्ति ।
धनन्तरि-देखो 'धनन्तर' ।
धन-१ देखो 'धन्य' । २ देखो 'धनु' । ३ देखो 'धान' ।
धनाट-क्रि० वि० १ प्रति शीघ्रता से, तेजी से । २ दनदनाता
हुआ । -स्त्री० धन-धन की ध्वनि, सन्नगटा ।
धनासिका-स्त्री० [सं०] एक रागिनी विशेष ।
धनेस-देखो 'धनेस' ।
धन्य-वि० [सं०] १ पुण्यवान्, भाग्यशाली । २ धन्यवाद का पात्र ।
श्लाघ्य, प्रशंसायोग्य । ३ सफल । ४ सुखी ।
धन्यवाद, धन्यवाद-पु० [सं० धन्यवाद] १ बाह-बाही, प्रशंसा ।
२ आभार प्रदर्शन ।
धन्यवादता-स्त्री० [सं०] १ साधुवाद, जावासी । २ आभार
प्रदर्शन की क्रिया ।
धन्या-स्त्री० [सं०] १ माता, माँ । २ विमाता, उप माता ।
३ वन देवी । ४ मनु की एक कन्या ।

धन्यासिरी, धन्यासी-देखो 'धनासी' ।
धन्व-पु० [सं०] १ मरुप्रदेश । २ कमान । -ज-पु० मरु प्रदेश
में उत्पन्न । -बुरम-पु० जिसके चारों ओर पाँच-पाँच
योजन तक जल का अभाव हो वह दुर्ग । -देस-पु० मरु
प्रदेश, मारवाड़ । निर्जल देश, रेगिस्तान ।
धन्व-पु० [सं० धन्वस्] १ इन्द्र, देवेन्द्र । २ धनुष ।
३ मारवाड़ ।
धन्वी-वि० [सं० धन्विन्] धनुर्धारी, कमानैत ।
धन्वी-पु० [सं० धन्वन्] १ धनुष, चाप । २ सूखी जमीन,
रेगिस्तान, स्थल । ३ मरु भूमि । ४ अन्तरिक्ष, आकाश ।
धप-पु० १ आशूषणों पर खुदाई करने का एक औजार विशेष ।
२ बालक । ३ हस्त-प्रहार, थप्पड़, तमाचा । -स्त्री०
४ वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि । ५ आग की लपट ।
६ सहसा ली उठने से उत्पन्न ध्वनि ।
धपड़-स्त्री० १ अनाज पीसने की चक्की को तेज चलाने की
क्रिया या भाव । २ देखो 'धापड़' ।
धपड़णी (बी)-क्रि० संतुष्ट करना, तृप्त करना ।
धपटणी (बी)-क्रि० १ उत्साह पूर्वक दौड़ना, भाटना । २ कोई
चीज लेकर भाग जाना । ३ लूटना । ४ देखो 'दपटणी' (बी)
धपटनी (बी)-वि० १ अत्यन्त उदारता पूर्ण । २ तृप्त होने
लायक बहुतायत में ।
धपल-स्त्री० १ आग की लपट, ज्वाला । २ आग से उत्पन्न
ध्वनि । -क्रि० वि० १ लपटों के रूप में । २ धप-धप ध्वनि
करते हुए ।
धपलकी-पु० लपट, ज्वाला ।
धपाऊ-वि० [सं० धृ] तृप्त व संतुष्ट होने लायक । इच्छानुसार
प्राप्त करने लायक ।
धपाणी (बी), धपावणी (बी)-क्रि० [सं० धृ] १ भरपेट
खिलाना, धपाना । २ तृप्त करना, संतुष्ट करना । ३ इच्छा,
अमिलावा पूर्ण करना । ४ तंग करना, परेशान करना ।
५ प्रसन्न करना, खुश करना ।
धफणी, (बी)-क्रि० १ गिरना, पड़ना । २ देखो 'धापणी' (बी)
धक्क-पु० धक्का, प्रहार ।
धक्की-देखो 'धाक्की' ।
धक्की-पु० १ अंजली । २ दोनों हाथों में समाने लायक पदार्थ ।
३ देखो 'धोवी' ।
धक्क-देखो 'धमाक' ।
धक्कणी (बी), धक्कणी (बी)-क्रि० १ प्रहार करना, मारना ।
२ फेंकना, उछालना । ३ देखो 'धमोइणी (बी) ।
धवी (बी)-पु० १ दाग, निशान । २ कलंक, दोष । ३ रंग
आदि का कहीं पर पड़ा हुआ छोट्टा, धब्बा ।
धभार-स्त्री० चौदह मात्राओं की एक ताल ।

धमकणी

(१९४)

धमारी

धमकणी (बो)—देखो 'धमकणी' (बो)

धमद—देखो 'धमक'

धमल-मंगल—देखो 'धवल-मंगल' ।

धम-पु० १ महसा कूदने या भारी वस्तु के गिरने की क्रिया ।
२ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि । —क्रि० वि० १ महसा,
अचानक गूद कर या लपक कर । ३ धम्म की आवाज से
साथ ।

धमक-स्त्री० १ 'धम्म' की ध्वनि । २ भारी चाल या तेज गति
से होने वाली कम्पन, थर्राहट । ३ आघात, चोट ।
४ ओखली आदि में वस्तु को कूटने की ध्वनि ।

धमकणी (बो)—क्रि० १ धम-धम ध्वनि करना । २ आघात या
चोट करना । ३ महसा आकर उगस्थित होना ।

धमकाणी(बो), धमकावणी (बो)—क्रि० १ धम-धम ध्वनि करना ।
२ ओखली आदि में कुछ कूटना । ३ आघात या प्रहार
करना । ४ डराना, डोंटना, फटकारना । ५ आलंकित या
भयभीत करना ।

धमकी-स्त्री० १ डोंट, फटकार । २ आलंकित करने के लिये कही
जाने वाली बात । ३ चुनौती ।

धमकी-पु० धम्म की आवाज, धमाकी ।

धमकणी (बो)—देखो 'धमकणी' (बो) ।

धमक्की—देखो 'धमकी' ।

धमगजर, धमगज, धमगज—पु० [सं० धर्म + भ्रकट] १ युद्ध,
लड़ाई । २ उत्पात, उपद्रव, ऊधम ।

धमड़—पु० १ चक्की की चाल । २ जोर से पीसने की क्रिया या
भाव । ३ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।

धतचक, (चक्क, चख) धमचाक—पु० १ युद्ध, लड़ाई ।
२ ऊधम, उत्पात, उपद्रव । ३ शोरगुल, हो हल्ला ।
४ उल्लस-कूद । ५ छलांग, फर्लांग ।

धमचाळ—पु० १ युद्ध संग्राम । २ देखो 'धमगजर' ।

धमण—स्त्री० [सं० धमन] १ भट्टी फूंकने की चमड़े की धौकनी ।
२ मसकनुमा पैला, मसक ।

धमणि (नी)—स्त्री० [सं० धमनि] १ शरीरस्थ नाडी, रक्त
संचार नलिका, धमनी । २ देखो 'धमण' ।

धमणी (बो)—क्रि० [सं० धमा] १ धौकनी से हवा करना ।
२ भट्टी में लोह तपाना । ३ पीटना, मारना । ४ शांति
प्रस्ताव करना ।

धमधमणी (बो)—क्रि० [धनु०] १ धम-धम शब्द करना ।
२ प्रतिध्वनित होना । ३ कूदना, जलना । ४ रोंदना ।

धमधमी—देखो 'दमदमी' ।

धमधमणी (बो)—देखो 'धमधमणी' (बो) ।

धमनि (नी)—देखो 'धमणि' ।

धमरुल, धमरोल—स्त्री० १ झड़ी, बीछार । २ वर्षा । ३ आसमान
में प्रसार, फैलाव । ४ प्रवाह । ५ फैलाव, विस्तार ।
—पु० खुशी व उत्साह के कार्य । —वि० आनन्दमय ।

धमरोलणी (बो)—क्रि० १ संहार करना, मारना । २ तहस-नहस
करना, ध्वस्त करना । ३ हिलाना, धुमाना, भ्रमभोरना ।
४ मथना, विलोड़ना ।

धमरोली—वि० १ व्यस्त, जीन, संलग्न । २ प्रयत्नशील ।

धमल—पु० १ डिंगल का एक गीत या छंद । २ देखो 'धवल' ।

—आरोहण='धवलआरोहण' । —गर, गिर='धवलगिरी' ।

—धुज='धवलधुज' । —मंगल='धवलमंगल' । —हर=
'धवलहर' ।

धमलगिरिबाहणी (बाहणी)—देखो 'धवलगिरि-वासणी' ।

धमलागर, धमलागिर (गिरी)—देखो 'धवलगिरी' ।

धमलागिर-आरोहणी—स्त्री० [सं० धवलगिरि-आरोहणी]
सरस्वती-शारदा ।

धमलागिरीदेवी—स्त्री० [सं० धवलगिरि देवी] शारदा,
सरस्वती ।

धमस—स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ पायल या घुंघुल की भंकार ।
३ महीन गर्द जिससे खांसी उठती हो ।

धमसणी (बो)—क्रि० १ ध्वनि होना । २ पायल या घुंघुल की
भंकार होना । ३ महीन गर्द का उड़ना ।

धमसी—स्त्री० पीसने की चक्की जोर से घुमाने की ध्वनि ।

धमस्स—देखो 'धमस' ।

धमहमणी (बो)—क्रि० १ वजना, ध्वनित होना । २ आवाज
करना ।

धमाक—१ देखो 'धमक' । २ देखो 'धमाकी' ।

धमाकी—पु० १ बन्दूक आदि छूटने या भारी वस्तु के गिरने से
उत्पन्न ध्वनि । धमाका । २ आघात, टक्कर । ३ मनसनी
खेज बात, खबर । ४ जोर की आवाज, ध्वनि । ५ एक
प्रकार की बन्दूक ।

धमाकीकड़ी—स्त्री० १ ऊधम, उपद्रव, हल्ला-गुल्ला । २ कूद-फांद ।

धमाणी, (बो)—क्रि० १ पीटना, मारना । २ द्रुतगति से चक्काना
३ धौकनी से हवा भराना ।

धमाधम—क्रि० वि० १ धम-धम शब्द के साथ । २ धम-धम
करते हुए । ३ फटाफट, खटाखट । ४ निरन्तर, लगातार
—स्त्री० १ प्रहार, चोट, आघात, मारपीट । २ युद्ध, लड़ाई,
भगड़ा । ३ उत्पात, उपद्रव ।

धमार—स्त्री० १ होली का गीत । २ चौदह मात्राओं की एक
ताल विशेष । ३ उपद्रव, उत्पात ।

धमारी—वि० उपद्रवी, उत्पाती ।

धमाल-स्त्री० १ डिगल का एक छन्द, गीत विशेष । २ होली का भौत विशेष । ३ एक ताल विशेष । ४ एक राग विशेष । ५ एक पोथा विशेष ।

धमावणी (बो)-देखो 'धमाणी' (बो) ।

धमासी-पु० [मं० धन्वयास] एक प्रकार का काँटेदार छोटा लुप, दुलाह ।

धमोड़, धमोड़ी-पु० १ जीर का धमाका । २ मुक्के आदि का जोरदार प्रहार । ३ भारी वस्तु के गिरने का शब्द ।

धमूकी-पु० १ घुँसा, मुक्का । २ घूँसे या मुक्के का प्रहार । ३ देखो 'धमाकी' ।

धमोड़-देखो 'धमोड़ी' ।

धमोड़णी (बो)-क्रि० १ प्रहार करना, चोट करना । २ कूटना-पीटना । ३ मारना, पीटना । ४ डटकर खा लेना ।

धमोड़ी-देखो 'धमोड़ी' ।

धमोळी, धमोळी-स्त्री० १ भादव कृष्ण तृतीया की पूर्व रात्रि में ब्रत करने वाली स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला भोजन । २ इस अवसर पर कन्या के समुलाल से आने वाला सामान ।

धम्म-देखो 'धम' ।

धम्मकी-१ देखो 'धमाकी' । २ देखो 'धमकी' ।

धम्मचक्र-१ देखो 'धमचक्र' । २ देखो 'धरमचक्र' ।

धम्मपुत्र-देखो 'धरमपुत्र' ।

धम्मल-देखो 'धवल' ।

धम्मला-देखो 'धवल' । — गिर, गिरी, गिरी = 'धवलगिरी' ।

धम्मस-देखो 'धमस' ।

धम्मिल्ल-पु० [ग०] केशों की वेणी, जूड़ा ।

धम्मोड़-देखो 'धमोड़' ।

धम्मोड़ी-देखो 'धमोड़ी' ।

धम्मु-देखो 'धरम' । — पुत्त = 'धरमपुत्र' ।

धम्मोळी-देखो 'धमोळी' ।

धम्मो-देखो 'धरम' ।

धय-स्त्री० [सं० ध्वज] ध्वजा, पताका ।

धयर-देखो 'धीरज' ।

धयरठ (ठू) धयरठ-देखो 'धनराठ' ।

धयवड-पु० [सं० ध्वज-पट] ध्वज-पट, ध्वजा ।

धयाण-देखो 'धियाण' ।

धयो-पु० १ कलह, टंटा । २ कष्टदायक कार्य । ३ अनिच्छा का कार्य । ४ ईर्ष्या, द्वेष । ५ ऊधम, उपद्रव ।

धरंमो-देखो 'धरमी' ।

धर-वि० [सं०] १ ग्रहण करने वाला, रखने वाला, धारण करने वाला । २ संभालने वाला, थामने वाला । ३ पकड़ने वाला । —पु० १ पर्वत, पहाड़ । २ विष्णु । ३ श्रीकृष्ण

४ रुई का ढेर । ५ कच्छपावतार । ६ एक वसु का नाम । ७ देखो 'धड़' । ८ देखो 'धुर' । ९ देखो 'धरा' । —कोट-पु० लकड़ियों की चहार दिवारी । —छाया-स्त्री० अंधेरा, अंधकार ।

धरज-पु० ताम्र, तांबा ।

धरड़-स्त्री० वस्त्र फटने या चुनी हुई वस्तुएँ ढहने की ध्वनि ।

धरड़णी (बो)-क्रि० १ फटना, विदीर्ण होना । २ ढहना, पड़ना । ३ ध्वनि होना । ४ फाड़ना, विदीर्ण करना । ५ ढहाना, पटकना । ६ ध्वनि करना ।

धरजहर-पु० [सं० धर-फा० जह] सर्प, साँप ।

धरदठ-देखो 'धीरठ' ।

धरण-वि० [सं०] १ धारण करने वाला । २ ग्रहण करने वाला, रखने वाला । ३ थामने, पकड़ने वाला, संभालने वाला । ४ वहन करने वाला । ५ रक्षक । —पु० १ एक नाग का नाम । २ खंभा । ३ बांध, पुल । ४ संसार । ५ सूर्य । —स्त्री० [सं० धरणी] ६ नाभि के नीचे की नश जो श्वास के साथ उछलती रहती है । ७ एक तौल विशेष । ८ स्त्री के स्तन । ९ चावल । १० हिमालय । ११ देखो 'धारण' । १२ देखो 'धारणा' । १३ देखो 'धरणी' । —धर = 'धरणी धर' —नाग-पु० शिव, महादेव । —पीतंबर-पु० ईश्वर, विष्णु ।

धरणिद-पु० [सं० धरण-इन्द्र] नागराज, शेषनाग ।

धरणि-देखो 'धरणी' —धर = 'धरणीधर' ।

धरणी-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती । २ नाभि । ३ नश, नाड़ी । ४ सेमर का वृक्ष । ५ शहतीर । —तल-पु० धरातल, पृथ्वी तल । —धर, धरि, धरी-पु० ईश्वर, परमात्मा । विष्णु । शिव । कच्छप । शेषनाग । पर्वत, पहाड़ । एक प्रसिद्ध तीर्थ । —वि० पृथ्वी को धारण करने वाला । —मुत्त-पु० मंगल । नरकामुर । —मुत्ता-स्त्री० सीता, जानकी ।

धरणू (रू)-पु० [सं० धरणम्] १ गिरवी, रेहन । २ धरोहर अमानत । ३ देखो 'धरणी' ।

धरणी-पु० [सं० धरण] १ शासक या प्रशासक से अपनी माँगें मनवाने के लिये उसके द्वार पर की जाने वाली बैठक । २ उत्सर्ग । ३ सत्याग्रह । ४ किमी देवता के आगे किया जाने वाला अन्नशन ।

धरणी (बो)-क्रि० [सं० धरणम्] १ रूप बनाना, देह धारण करना । २ भारीपित करना । ३ व्ययहार के लिये लेना, काम के लिये रखना । ४ लेना ग्रहण करना । ५ रखना, कहीं पर धर देना । ६ निश्चय करना, निर्धारित करना । ७ महसूस करना, अनुभव करना । ८ बैठना, ग्रहण करना ।

१ विचार करना । १० पास में रखना, रक्षा में रखना ।
११ स्वीकार करना । १२ चौकन्ना होना, सावधान होना ।
१३ ध्यान देना । १४ संकल्प करना, दृढ़ निश्चय करना ।
१५ पहनना, धारण करना । १६ स्थापित करना, ठहराना ।
१७ प्रगट करना । १८ संलग्न होना, काम में लगना ।
१९ चौकीदारी करना, देखभाल करना । २० बहन करना ।
२१ अवस्थित होना, ठहरना, रहना । २२ गिरवी या बंधक
रखना । २३ जोर से पकड़ना, थामना । २४ डींग मारना,
कहना । २५ प्रहार करना, मारना । २६ वश में करना,
काबू करना, रोकना ।

धरती-स्त्री० [सं० धरित्री] १ पृथ्वी, भूमि । २ जमीन,
धरातल, भू खण्ड । ३ आंगन । ४ कृषि भूमि । ५ जागीर,
राज्य । —धर्म-पु० योद्धा, वीर । राजा, नृप ।

धरती-री-करोत-पु० ऊंट ।

धरती, धरत्ती, धरत्ती, धरत्री-देखो 'धरती' ।

धरधर्म, धरधर्मण-पु० [सं० धरा-स्तंभ] १ राजा, नृप । २ वीर
योद्धा ।

धरधर-१ देखो 'धराधर' । २ देखो 'द्रुद्रुहवार' ।

धरधरण-पु० [सं० धरा-धरण] शेषनाग ।

धरधरवेळा-स्त्री० संध्या ।

धरधारक-पु० [सं० धरा-धारक] शेषनाग ।

धरधीस-पु० [सं० धराधीस] १ राजा नृप । २ जागीरदार ।

धरधुख-पु० [सं० धरा धुख] पृथ्वी की गर्मी, उष्णता ।

धरधूस-वि० जमींदोज । भूमिसात ।

धरन-१ देखो 'धरणी' । २ देखो 'धरण' ।

धरपत, (पति, पता, पत्त, पत्ती)-देखो 'धरापति' ।

धरपाड़ी-पु० भूमि छीनने वाला, आतनाथी ।

धरपुड़-पु० धरणी तल, धरातल ।

धरवार-देखो 'दरवार' ।

धरभार उतारण-पु० ईश्वर, परमेश्वर ।

धरमंडण-पु० [सं० धरा-मण्डल] छद्म ।

धरमंडल, धरमंडलि-पु० [सं० धरा-मण्डल] भू मण्डल, पृथ्वी
मण्डल ।

धरम-पु० [सं० धर्म] १ ईश्वरायता की कोई विशिष्ट प्रणाली
या सिद्धान्त, मजहब, धर्म । २ स्वच्छ सामाजिक व्यवस्था
के लिये निमित्त वृत्ति, आचरण या व्यवहार । ३ सदाचार,
मत्कर्म । ४ पुण्य, दान । ५ सदाचार संबंधी सिद्धान्त ।
६ पारलौकिक सुख या मोक्ष प्राप्ति संबंधी कर्म । ७ उच्च
चरित्र, ईमान । ८ वस्तु का मूल गुण, प्रकृति, स्वभाव ।
९ समार्थ बताने का सिद्धान्त या उपदेश । १० कर्तव्य,
फर्ज । ११ गुण, समान गुण । १२ युधिष्ठिर का एक नाम ।
१३ यमराज । १४ वर्तमान अयसपिण्डों के १५ वें अग्रिहत

का नाम । १५ यज्ञ । १६ सत्संग । १७ द्रमण की छः
मात्राओं के बारहवें भेद का नाम । १८ जन्म लग्न से नौवें
स्थान का नाम । १९ अटल व दृढ़ निश्चय । —आत्मज—
—पु० युधिष्ठिर । —कर्म-पु० धार्मिक कर्म, दान पुण्य ।
७२ कलाओं में से एक । —क्षेत्र, खेत, क्षेत्र-पु० कुरु क्षेत्र
भारतवर्ष । —ग्य-वि० धर्म को जानने वाला । धार्मिक ।
—ग्रंथ-पु० किसी धर्म विशेष के निष्पण संबंधी ग्रंथ ।
—घट-पु० काशी खण्ड । हेमाद्रि दान खण्ड । —चक्र-पु०
जिन देव का चक्र । —चर्चा-स्त्री० धर्माचरण । —ज—
—पु० युधिष्ठिर । नर नारायण । —जिहान-पु० सूर्य, भानु ।
—जीवन-पु० धार्मिक कर्म कराकर निर्वाह करने का
कार्य । —बुद्ध-पु० कपट रहित युद्ध । —दांत-पु० ग्रहों
की शान्ति हेतु किया जाने वाला दान । —धकी, धक्की—
—पु० धर्म की आड, दुहाई । —धरा-स्त्री० पुण्य भूमि ।
भारतवर्ष । —ध्यान-पु० धर्म कर्म तथा ईश्वर चिंतन ।
—धारी-पु० धर्म निभाने वाला । —धुज-पु० राजा, नृप ।
धर्म ध्वज । —धूरीण-वि० धर्म में अग्रणी । —ध्वज-पु०
पाखंडी, ढोंगी । —नाथ-पु० जैनों के १५ वे तीर्थंकर का
नाम । —नाभ-पु० दिव्य । —निष्ठ-वि० धर्मज, धार्मिक
धर्म पर दृढ़ । —निष्ठा-स्त्री० धर्म में विश्वास । —नीति—
स्त्री० धर्म पूर्ण नीति । ७२ कलाओं में से एक । ६४
कलाओं में से एक । —पण-पु० धर्म स्थिति । धर्म पराय-
गता । —पतनी, पत्नी-स्त्री० शास्त्र रीति में विवाहता
स्त्री, धर्मपत्नी । —पथ-पु० शास्त्र के अनुसार आचरण,
धर्माचरण । —पाळ-पु० धर्म रक्षक । धर्म पालक । दंड ।
राजा दशरथ का एक मंत्री । —पुत्त, पुत्र-पु० युधिष्ठिर ।
नर नारायण । पुत्र रूप में मान्यता —पुरी-स्त्री० यमपुर ।
यकूठ । न्यायालय, कचहरी । —पुरी-पु० दान-पुण्य एवं
धार्मिक कार्यों की व्यवस्था करने वाला विभाग ।
—पूत, पूतु= 'धरमपुत्र' । —पूल-पु० स्वर्ग । —बुद्धि—
पु० अच्छे-बुरे का ज्ञान । —भाई-पु० भाई के रूप में
महोनीत विजातीय व्यक्ति । —भिक्षुक-पु० धर्मार्थ भिक्षा
मांगने वाला । —भीरु-वि० धार्मिक हृदियों से डरने
वाला । —मंड-पु० विवाह मण्डप, वेदी । —राज-पु०
यमराज । युधिष्ठिर । राजा । धर्म पर चलने वाला ।
—लाभ-पु० जैन साधुओं का आशीर्वाद । —लेस्या-स्त्री०
नेजी, पथ और शुक्ल वेश्या का समूह । —वंत, वत-वि०
धार्मिक, धार्मिक । —वष-पु० एक सूर्य वंशी राजा ।
—वाहन-पु० भैंसा । —विचार-पु० ६४ कलाओं में से
एक । —विवाह-पु० वैदिक रीति से किया जाने वाला
विवाह । कन्या के बदले कुछ न लेकर किया गया विवाह ।

—बोर-वि० धार्मिक विषयों में साहसी । —व्याघ-पु० मिथिला निवासी एक तत्वज्ञानी व्याघ । —व्याह= 'धरमविवाह' । —वता-स्त्री० मरीचि ऋषि की पत्नी । —समा-स्त्री० न्यायालय । धार्मिक कार्यों के लिये आयोजित सभा, बैठक । —साळा-स्त्री० यात्रियों की मुविधा के लिये स्थान-स्थान पर बने भवन । दान पुण्य के लिये चलाया गया सत्र । —सावरणी-पु० ग्यारहवां मनु । —सास्तर, सास्त्र-पु० नीति, आचार, सदाचार के नियमों का ग्रंथ । —सास्त्री-वि० धर्मशास्त्र का ज्ञाता, पंडित । —सीळ-वि० धर्माचरण करने वाला । —सुमाब-पु० तालाब । सरोवर ।

धरमएवेवी-स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

धरमांग-पु० [सं० धर्मांग] बगुला । सारस ।

धरमातमा, धरमात्मा-वि० [सं० धर्मात्मा] धर्म पर दृढ़ रहने वाला । धर्म के अनुसार आचरण करने वाला ।

धरनादे (दे)-क्रि० वि० धर्म हेतु, धर्म के नाम पर, परोपकार निमित्त ।

धरमावी-पु० [सं० धर्म] धर्म, पुण्य, दान । —खाती-पु० दान पुण्य में व्यय हेतु निर्धारित रकम । दान पुण्य में खर्च का लेखा-जोखा ।

धरमाधिक, धरमाधिकारिक-पु० [सं० धर्माधिकारिक] १ न्यायाधीश । २ न्यायालय, कचहरी । —सभा-स्त्री० न्यायाधीशों की सभा । धार्मिकों की सभा ।

धरमाधिकारी-पु० [सं० धर्माधिकारी] १ न्यायाधिकारी । २ पुण्य खाने का प्रबन्धक । ३ धर्मराज । ४ धर्म की व्यवस्था के लिए अधिकृत व्यक्ति ।

धरमाधिरण-देखो 'धरमाधिकारिक' ।

धरमारण-पु० [सं० धर्मारण] १ तपोवन । २ गया के अन्नमंत एक तीर्थ । ३ ऋषि आश्रम । ४ पुराणानुसार एक पुण्य भूमि ।

धरमारथ-वि० [सं० धर्मारथ] धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये ।

धरमावतार-पु० [सं० धर्मावतार] १ धर्मराज का अवतार २ युधिष्ठिर । ३ न्यायाधीश । ४ धर्म के मामले में निर्णय देने वाला अधिकृत व्यक्ति ।

धरमासन-पु० [सं० धर्मासन] न्याय का सिंहासन, न्यायाधीश की कुर्सी ।

धरमास्तिकाय-पु० [सं० धर्मास्तिकाय] गति परिणाम वाले जीव (जैन) ।

धरमियेवीर-देखो 'धरमभाई' ।

धरमी-वि० [सं० धर्मिन्] १ धर्मात्मा, पुण्यात्मा । २ किसी धर्म या गुण से युक्त । ३ धर्म को मानने वाला । —पु० १ विष्णु । २ यम । ३ युधिष्ठिर । ४ धर्म का आश्रय । ५ धर्म पर दृढ़ व्यक्ति ।

धरपुरळी-देखो 'मुरळीधर' ।

धरमेत्तो-पु० धर्म के आधार पर बना पारिवारिक संबंध ।

धरमोपदेश-पु० [सं० धर्मोपदेश] १ धर्म का उपदेश, धर्म सिद्धान्तों की व्याख्या । २ धर्मशास्त्र ।

धरम्म-देखो धरम' । —सभा = 'धरमसभा' ।

धरम्माधिकरणसमा-देखो 'धरमाधिकरणसभा' ।

धरम्माधिकरणा (गरणा)-देखो 'धरमाधिकरणिक' ।

धरम्मी-देखो 'धरमी' ।

धरर-स्त्री० यन्त्र आदि के चलने की ध्वनि ।

धररा'ट-पु० १ धर-धर ध्वनि । २ कंपन, धरहट ।

धरवजर-पु० [सं० वज्र-धर] इन्द्र, देवराज ।

धरवणी (वी)-क्रि० [सं० वी] १ तुप्त करना, अनाना । २ पीटना, मारना । ३ रखना । ४ धर-धर ध्वनि करना । ५ देखो 'धरणी' (वी) ।

धरवर-पु० [सं० धरा-वर] राजा, नृप ।

धरवाणी (वी)-क्रि० १ तुप्त करना, अयवना । २ पीटना, मारना । ३ रखना । ४ धर-धर ध्वनि करना । ५ देखा 'धरवणी' (वी) ।

धरसंडी-देखो 'धरसूंडी' ।

धरसण (णी)-स्त्री० [सं० धरिणी] १ दुश्चरित्रा, दुष्टा स्त्री । २ वेश्या, रण्डी ।

धरसधर-पु० [सं० धराधर] पर्वत, पहाड़ ।

धरसुता-स्त्री० [सं० धरा-सुता] सीता ।

धरसूंडी-पु० बेलगाड़ी का अग्र भाग जो नीचे झुका रहता है ।

धरहड़णी (बी), धरहड़णी (बी)-क्रि० १ धरना, कांपना । २ ध्वनि करते हुए हिलना । ३ देखो 'धरहरणी' (बी) ।

धरहर-स्त्री० ध्वनि विशेष ।

धरहरणी (बी)-क्रि० १ बरसना । २ जल प्लावित होना । ३ गर्जना । ४ तोप आदि का छूटना ध्वनि करना । ५ धड़-धड़ शब्द होना । ६ नगाड़े का बजना । ७ देखो धड़हड़णी (बी) ।

धरापती-देखो 'धरापति' ।

धरा-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि । २ जमीन, भू-भाग । ३ मंसार, दुनिया । ४ राज्य, जागीर । ५ गर्भाजय । ६ योनि । ७ एक वर्ण वृत्त । —आत्सज-पु० मंगल ग्रह । —तळ-पु० पृथ्वी भी मतलब । गन्ध । खंवार-बीड़ाई का गुणनफल । भूमि, पृथ्वी । खंब, खंभ पु० राजा, नृप ।

यादवा, वीर । —धर-पु० शेषनाग । पर्वत । विष्णु ।
—धव-पु० राजा, नृप । —धार-पु० शेषनाग ।
—धिपति, धीस-पु० राजा, नृप । ईश्वर, विष्णु ।
—नायक-पु० राजा, नृप । —पति, पत्नी-पु० राजा, नृप ।
—पुत्र-पु० मंगल ग्रह । —विधूसण-पु० तलवार ।

धराउ (ऊ)-देखो 'धुराऊ' ।

धराज-पु० १ बहई का एक प्रोजेक्ट । २ देखो 'धिराज' ।

धराणी (बी)-क्रि० १ रूप बनवाना, देह धारण कराना ।
२ आरंभित कराना । ३ व्यवहार के लिए लिखाना, काम के
निये रखाना । ४ लिखाना, ग्रहण कराना । ५ रखवाना,
धारवाना । ६ निश्चित कराना, निर्धारित कराना ।
७ महसूम या अनुभव कराना । ८ बैठाना, ग्रहण, कराना ।
९ पास में रखाना, रक्षा में देना । १० स्वीकार कराना ।
११ चौकड़ा व सावधान करना । १२ ध्यान दिखाना ।
१३ संकल्प कराना, दृढ़ निश्चय कराना । १४ पहचाना,
धारण कराना । १५ स्थापित कराना । १६ प्रगट कराना ।
१७ मंगल कराना, काम में लगवाना । १८ देखभाल
कराना । १९ बहन कराना । २० अवस्थित करना ।
२१ गिरवी या बंधक रखवाना । २२ मजबूती से पकड़ाना,
धमवाना । २३ डींग मारवाना । २४ प्रहार कराना,
मारवाना । २५ वश में कराना, काबू में कराना, कबवाना ।

धराधारधारी-पु० [सं०] महादेव, शिव ।

धरापूर-वि० पूर्ण, सम्पूर्ण ।

धराण-स्त्री० भूमि, पृथ्वी ।

धरावर-वि० पर्वत तुल्य ।

धरा-रो-थम-देखो 'धराथम' ।

धराळ-पु० १ स्थलचर प्राणी । २ देखो 'धाराळी' ।
३ देखो 'धुराळ' ।

धराव-पु० १ पशु, मवेशी । २ पशु धन । ३ देखो 'ध्राव' ।
—वि० मूर्ख ।

धरावणी-पु० रखवाने या उठाने की क्रिया या भाव ।

धरावणी (बी)-देखो 'धराणी' (बी) ।

धरावू-देखो 'धुराऊ' ।

धराही-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

धरि-अव्य० प्रारंभ में ।

धरिती-धरि-देखो 'धरती' ।

धरि-धारण-पु० [सं० धरि-धारण] बेल, वृषभ ।

धरू-पु० [सं० ध्रुपद] १ एक राग विशेष, ध्रुपद ।
२ देखो 'ध्रू' ।

धरेट-स्त्री० [सं० दृष्टि] कुदृष्टि, नजर ।

धरेस-पु० [सं० धरा-ईश] १ राजा, नृप । २ शेषनाग ।
३ ईश्वर ।

धरती-स्त्री० १ हेरानी, परेशानी । २ तंगी । ३ देखो 'धरती' ।
धरोड़, धरोहर-स्त्री० [सं० धरण] १ भ्रमान्त, धाती ।
२ गिरवी, रेहन । ३ भ्रमान्त या गिरवी रखी वस्तु ।
धरी-पु० [सं० धी] १ संतोष । २ तृप्ति । ३ डोलक आदि का
भारी आवाज वाला भाग ।

धळ-धू-धळ-स्त्री० रेतीली भूमि । मरुस्थल ।

धव-पु० [सं०] १ पति, स्वामी । २ मनुष्य । ३ सूर्य ।
४ धूर्त व्यक्ति । ५ एक वृक्ष विशेष । ६ कंपन, थरहट ।
७ देखो 'ध्राव' ।

धवई-देखो 'धाय' ।

धवड़ी-स्त्री० बीरंगना ।

धवरि (णी)-१ देखो 'धमर' । २ देखो 'धमरी' ।

धवणी (बी)-क्रि० १ स्तन पान करना । २ देखो 'धमणी' (बी) ।

धवभंग-पु० [सं०] पति या स्वामी का अवसान, मृत्यु । वैधव्य ।

धवर-पु० एक पक्षी विशेष । -वि० उजला, श्वेत ।

धवरहर-देखो 'धवलहर' ।

धवराडणी (बी), धवराणी (बी)-देखो 'धवाणी' (बी) ।

धवरानळ-पु० सूर्य, भानु ।

धवरावणी (बी)-देखो 'धवाणी' (बी) ।

धवलंग-वि० [सं० धवल-अंग] श्वेत, उज्ज्वल । -पु० १ हंस ।
२ प्रासाद, महल ।

धवलंगा-स्त्री० एक वर्ण वृत्त ।

धवल-पु० [सं० धवल] १ बेल, वृषभ । २ हंस । ३ एक लोक
गीत विशेष । ४ सुभट, योद्धा । ५ लघु छंद का एक भेद ।
६ मांगलिक गायन । ७ देखो 'धमळ' । ८ श्वेत पत्र । ९ एक
वृक्ष । -वि० १ श्वेत, उज्ज्वल । २ विशुद्ध, स्पष्ट ।
३ सुन्दर । —आरोहण-पु० शिव, महादेव । —धुज-पु०
शिव । —पक्ष, पख-पु० शुक्ल पक्ष । हंस । —मंदिर-पु०
बड़ा भवन । राज्य प्रासाद । —मिण-स्त्री० दीपक ।
—हर, हरि-पु० बड़ा भवन । राज्य प्रासाद । मीनार ।

धवलगर, (गिर, गिरी)-१ हिमालय की सर्वोच्च चोटी ।
२ कैलाश पर्वत । ३ हिमालय पर्वत । ४ एक प्रकार की
तलवार । ५ दुर्गा देवी । —वासिनी-स्त्री० सरस्वती देवी ।

धवलग्रह (ग्रिह, ग्रहे)-पु० [सं० धवल गृह] १ चूने से पुता
सफेद भवन । २ देखो 'धवलहर' ।

धवलचित्त-वि० [सं०] निष्कपट, स्पष्टवादी ।

धवलणी (बी)-क्रि० [सं० धवलम्] १ उज्ज्वल करना, सफेद
करना । २ चमकाना । ३ प्रकाशित करना ।

धवलता-स्त्री० [सं० धवलता] सफेदी, उज्ज्वलता ।

धवलधन्यासी-स्त्री० [सं० धवल-धन्यासी] एक रागविशेष ।

धवलमंगल

(२९९)

धाञ्जत

धवलमंगल-पु० [सं० धवल-मंगल] १ मांगलिक अक्सरों पर गाया जाने वाला एक लोक गीत विशेष । २ मांगलिक कार्य, उत्सव । ३ आनन्द, हर्ष । -वि० मांगलिक, शुभ ।
 धवलश्री-स्त्री० [सं० धवलश्री] एक रागिनी विशेष ।
 धवलहर (री)-पु० १ बड़ा भवन । २ महल कोठी ।
 धवलंग-देखो 'धवलंग' ।
 धवला-स्त्री० [सं० धवला] १ श्वेत गाय । २ पार्वती, उमा । ३ महामाया । ४ एक नदी का नाम । ५ गौरवर्णी स्त्री ।
 धवलगिरि-देखो 'धवलगिरी' । —वासिनी= 'धवलगिरी-वासिनी' ।
 धवलित-वि० [सं० धवलित] १ सफेद किया हुआ । २ चूने से पोता हुआ । ३ उज्ज्वल, शुभ ।
 धवली-स्त्री० [सं० धवली] १ श्वेत गाय । २ श्वेत मिर्च । -वि० १ श्वेत, मण्ड । २ उज्ज्वल, शुभ ।
 धवल्लेरण-स्त्री० मांगलिक गीत गाने वाली स्त्री ।
 धवली-१ देखो 'धवल' । २ देखो 'धोली' ।
 धवान-देखो 'धवान' ।
 धवा-स्त्री० [सं० धवना] महामाया, शक्ति ।
 धवाणी(बो)-क्रि० १ स्तनपान कराना । २ देखो 'धमाणी' (बो) ।
 धवावण-स्त्री० स्तन पान कराने की क्रिया
 धवावणी-वि० स्तन पान कराने वाली ।
 धवावणी (बो)-देखो 'धवाणी' (बो) ।
 धवी-स्त्री० स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष ।
 धस-स्त्री० १ घुसने या प्रविष्ट होने की क्रिया, अवस्था या भाव । २ घुसने या फंसने से उत्पन्न श्रुति । ३ डुबकी, मोता । ४ दहाड़, गर्जना ।
 धसक, धसकण-स्त्री० १ धाक । २ ललकार । ३ खिसकने या ढहने की क्रिया या भाव । ४ फिसलाव ।
 धसकणी (बो)-क्रि० [सं० दशनम्] १ नीचे खिसकना । २ ढहना । ३ नीचे दबना । ४ फिसलना । ५ देवी 'धसणी' (बो) ।
 धसकाणी (बो), धसकावणी (बो)-क्रि० १ नीचे खिसकाना । २ ढहाना । ३ नीचे दबाना । ४ फिसलाना । ५ देखो 'धमाणी' (बो) ।
 धसकी-पु० १ टक्कर, धक्का, आघात । २ दुत्कार, फटकार । ३ भय, घातक, डर । ४ फटका ।
 धसकणी (बो)-देखो 'धसकणी' (बो) ।
 धसड़-स्त्री० १ प्रहार की ध्वनि । २ देखो 'धसळ' ।
 धसटी-१ देखो 'धिसटी' । २ देखो 'धमट' ।

धसखी (बो)-क्रि० १ बलात् प्रविष्ट होना, घुसना, बलात् घागे बढ़ना । २ प्रवेश करना । ३ चुभना, फंसना, गड़ना । ४ ध्वस्त होना, नष्ट होना । ५ नीचे खिसकना, उतरना । ६ नीचे बैठना, सतह से नीचे होना । ७ मिलना, मिल जाना । ८ देखो 'धसकणी' (बो)
 धसमस-स्त्री० १ धमने की क्रिया या भाव । २ डावांड़ोल होने की अवस्था या भाव । ३ धीर व गंभीर चाल । ४ खींचा-तान, धमामस ।
 धसमसणी (बो)-क्रि० १ धीर व गंभीर चाल में चलना । २ सतर्कता से चलना । ३ आक्रमण करना, हमला करना । ४ तेज चलना । ५ हक-हक कर चलना । ६ नीचे दबना, धंसना । ७ सतह से नीचे होना, दबना । ८ खींचातान होना, कसमसाना ।
 धसळ, धसळक-स्त्री० [सं० धर्षण] १ धमकी, डांट-फटकार । २ ललकार, चुनौती । ३ आक्रमण, हमला । ४ क्रोध या जोश में बोलना । ५ गर्जना, दहाड़ । ६ रोना, जोश । ७ मस्ती की आवाज । ८ जोश व मस्ती । ९ हाका दबाड़, हो-हल्ला ।
 धसळणी (बो)-क्रि० १ डांटना, फटकारना । २ क्रोध में बोलना जोश में बोलना । ३ दहाड़ना, गर्जना । ४ धमकाना, ललकारना ।
 धसान-स्त्री० १ धमने की क्रिया या भाव । २ सतह से नीचे बैठना हुआ हिस्सा । ३ दाब का चिह्न, गड्ढा । ४ डाह, जनन । ५ बुन्देल खण्ड की एक नदी ।
 धसाक-स्त्री० ध्वनि, आवाज । कोलाहल ।
 धसाणी (बो)-क्रि० १ सतह से नीचे दबाना, नीचे बैठाना । २ घमाना, चुभाना, गड़ाना । ३ बलात् प्रविष्ट कराना पैठाना । ४ मिलाना । ५ ध्वस्त करना, नष्ट करना । ६ नीचे खिसकाना, उतारना । ७ प्रवेश कराना । ८ देखो 'धसकणी' (बो) ।
 धसाव-पु० १ धंसना क्रिया । २ दबाव । ३ प्रवेश, फंसाव ।
 धसावणी (बो)-देखो 'धसाणी' (बो) ।
 धसुण-पु० [सं० धिपण] १ कवि । २ पंडित, विद्वान । ३ धृति-स्पति, सुरगुरु ।
 धसुरसरी-स्त्री० दक्षिण की नदी, कावेरी ।
 धह-देखो 'दह' ।
 धहवाळ-देखो 'धहवाळ' ।
 धहळ-देखो 'दहळ' ।
 धहळणी (बो)-देखो 'दहळणी' (बो) ।
 धा-अव्य० १ एक प्रकार का अव्यय शब्द । २ देवा 'धाथ' ।
 धाञ्जत-देखो 'धाञ्जत' ।

घांक-स्त्री० १ चिह्न । २ देखो घंक' ।

घांकणी (बी)-क्रि० [सं० द्राक्षि, ध्वाक्ष] इच्छा करना, चाहना ।

घांकल-देखो 'घुंकल' ।

घाख-देखो घक' ।

घाखणी (बी)-देखो 'घांकणी' (बी) ।

घांगड़ घांगड़ी-देखो 'वांगड़ी' ।

घांगी-पु० एक प्रकार की गधारी, तांगा, रथ ।

घाण-पु० नाश, विध्वंस

घाणका-स्त्री० [सं० धनुष] १ राजस्थान की एक पिछड़ी जाति । २ ध्वपच, चांडाल ।

घाणकी-पु० १ उक्त जाति का व्यक्ति । २ चाण्डाल, हरिजन ।

घाणा-पु० [सं० धान्यक] धनिया नामक पदार्थ जिसकी खेती रबी की फसल के साथ होती है । इसके पत्ते व बीज मिर्च मसाले व औषधि में काम में आते हैं । —पंचक-पु० धनिया के योग से बना पांच औषधियों का मिश्रण ।

—पुणछी-स्त्री० स्त्रियों के हाथ का ग्राम्भूषण विशेष ।

घाणी-स्त्री० अत्यन्त गर्म बालू में सेका हुआ अनाज या जौ का दाना ।

घांछुक-पु० [सं० घानुष्क] धनुर्धर, धनुष चलाने वाला यांढा ।

घांणी-पु० [सं० धान्यक] धनिया का पौधा या बीज ।

घांत-देखो 'ध्वांत' ।

घांछि (ळी)-स्त्री० १ अव्यवस्था, गड़बड़ी । २ बसेड़ा, फिसाद । ३ विवाद, तकरार । ४ उत्पात, उपद्रव । ५ मनमानी । ६ नियम विरुद्ध कार्य ।

घांछेबाज-वि० गड़बड़ी करने वाला, मनमानी करने वाला । उपद्रवी ।

घांछेबाजी-देखो 'घांछली' ।

घांघापसु-स्त्री० तबले की ध्वनि, तबले का बोल ।

घांघी-स्त्री० तगाड़े की ध्वनि ।

घांघु-स्त्री० १ शीघ्रता, जल्दी । २ तकरार ।

घांनक-देखो 'धनुम' ।

घांनकी-देखो 'धानंखी' ।

घांनख, घांनख-देखो 'धनुम' । — धर, धारी 'धनुमधर' ।

घांनखर-पु० धनुर्धारी योद्धा ।

घांनखी-पु० [सं० धानुषक] धनुर्विद्या में प्रवीण ।

घांनतर-देखो 'धनंतर' ।

घांन-पु० [सं० धान्य] अन्न, अनाज, नाज ।

घांनक-देखो 'धनुम' ।

घांनकी-कूल-पु० [सं० पुण्य-धन्वा] कामदेव, मदन ।

घांनख-देखो 'धनुम' ।

घांनड़, घांनल्ली, घांनड़ियो, घांनड़ी-देखो 'घांन' ।

घांनवंडी-स्त्री० [सं० धान्य-मण्डप] धान (अनाज) के क्रय-विक्रय का केन्द्र, अनाज-बाजार ।

घांनमाळी-पु० एक असुर का नाम ।

घांती-स्त्री० [सं० धानी] १ स्थान, जगह । २ बांसुरी । ३ एक राग विशेष । ४ एक वस्त्र वृत्त । ५ एक रंग विशेष ।

घांनुंक, घांनुंख-देखो 'धनुस' । — धर = 'धनुसधर' ।

घांनुकी-पु० धनुष चलाने वाला ।

घांन्य-पु० [सं० धान्य] केवल अन्न मात्र । — धेनु-स्त्री० दान स्वरूप दी जाने वाली गाय । एक दान विशेष । —पंचक-पु० पांच धिशिष्ट धानों का समूह, एक औषधि । —पाळ-पु० एक प्राचीन राजवंश ।

घांम-पु० [सं० धामन्] १ गृह, मकान, घर । २ निवास स्थान । ३ स्थान जगह । ४ देवस्थान, देवालय । ५ तीर्थ स्थान । ६ परलोक वैकुण्ठ, स्वर्ग । ७ देह, शरीर । ८ तेज, प्रकाश । ९ उद्योति, किरण । १० आभा, चमक, कांति । ११ बल, प्रताप । १२ दल, समूह । १३ दशा, परिस्थिति । १४ चार की संख्या । — उजासी-पु० दीपक ।

घांमजप्र-देखो 'धमजप्र' ।

घांमण (णि, ण)-पु० १ एक प्रकार का घास । २ एक वृक्ष विशेष । ३ एक मर्ष विशेष । ४ मांस पकाने की हडिया । ५ मोल-भाव करने की क्रिया । ६ स्वीकार करने के लिये कोई वस्तु किसी के सामने करने की क्रिया ।

घांमणी (वी)-क्रि० १ भेंट मादि सामने रखना, आगे करना, स्वीकारार्थ आग्रह करना । २ निश्चित मोल पर कोई वस्तु मांगना, वस्तु की कीमत मांगना ।

घांमधूम-वि० बात बिकार से फूला हुआ, बात बिकार युक्त ।

—पु० १ मार-काट । २ युद्ध । ३ बात बिकार ।

४ देखो 'धूम-धाम' ।

घांमनीर-पु० [सं० नीर धाम] १ समुद्र, सागर । २ सरोवर ।

घांमखी-स्त्री० [सं० धामखी] एक रागिनी विशेष ।

घांमहर-पु० [सं० धामगृह] देवल

घांमहरि-पु० [सं० धामहरि] वैकुण्ठ, स्वर्ग

घांमाजागर-देखो 'धमजगर'

घांमिणी-स्त्री० कन्या या बहन को दी जाने वाली गाय या भैंस ।

घांमिणी-पु० बहन या भूवा के पास रहने वाला बच्चा या लड़का

घांमिय-वि० [सं० धामिक] धर्माचरण करने वाला, धामिक

घांमो-पु० चीड़े मुंह का गोल पात्र, बड़ा प्याला ।

घांय-स्त्री० १ बन्दूक आदि के छूटने की ध्वनि । २ आग की तेज लपटों की ध्वनि । ३ तेज लपटों में जलने की क्रिया ।

धांस-स्त्री० १ आभूषणों के बीच लगने वाली एक कील विशेष ।
 २ दांतों का आभूषण विशेष । ३ किसी पदार्थ की बारीक गर्द । ४ देखो 'धांसी' । ५ देखो 'धूस' । ६ देखो 'धांसी'
 धांसणी (बी)-क्रि० १ खांसना, खांसी होना । २ रगड़ना, घिसना ।
 धांसारी-पु० भड़बेरी के सूखे कांटे जो एक बार में बैलगाड़ी में भरे जायें ।
 धांसी-स्त्री० कास रोग, खांसी
 धांसी-पु० १ भाला २ देखो 'धूसी'
 धाहणी (बी)-देखो 'धांसणी' (बी) ।
 धा-स्त्री० १ पृथ्वी, धरती । २ लक्ष्मी ३ सरस्वती, शारदा ४ उमा, गार्वती । ५ प्राय । ६ तबले का एक बोल । ६ धैर्यत स्वर का संकेत । ८ वूड़ी स्त्री या दादी आदि के लिये प्रयुक्त संबोधन । -वि० धारण करने वाला । -क्रि० वि० ओर, तरफ ।
 धाई-१ देखो 'धाय' । २ देखो 'धा' ।
 धाईउ-वि० [सं० धावितः] दौड़ा हुआ ।
 धाईधूपी-वि० [सं० ध्रै] १ खाई-पी, तृप्त, प्रघाई हुई । २ स्वच्छ, निर्मल । ३ स्नान की हुई ।
 धाउ-पु० १ धातु । [सं० धाव] २ नाच का एक भेद ।
 धाउधप-वि० १ प्रचुर मात्रा में, तृप्त होने लायक, भर पेट खाने लायक । २ अधिक, बहुत ।
 धाऊ-पु० [सं० धावन] कार्य के लिये दौड़ने वाला व्यक्ति । धावक । -क्रि० वि० ओर, तरफ ।
 धाऊकार-पु० [सं० ध्वंसकार] विध्वंस, नाश ।
 धाऊड़ो-देखो 'धाव' ।
 धाऊधप-देखो 'धाउधप' ।
 धाऊ-स्त्री० [सं० धक्क] १ आतंक, भय, डर । २ रोक, प्रभाव ३ प्रसिद्धि, ख्याति । ४ शौर्य, पराक्रम ।
 धाऊल-स्त्री० [सं० धक्क] १ जोश या रोक भरी आवाज । २ डांट, फटकार प्रताड़ना । ३ धमकी ।
 धाऊलणी (बी)-क्रि० [सं० धक्क] १ डांटना, फटकारना । २ जोश या रोक में दोलना । ३ धमकाना । ४ हांकना, चलाना ।
 धाकाधीकी, धाकाधेकी-क्रि० वि० जंमे, तंमे, किसी तरह । -पु० १ काम चलाऊ व्यवस्था । २ गोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।
 धाकाळ-पु० भयंकर दुःख, अकाल ।
 धाकी-पु० [सं० धाव] १ निर्वाह, गुजारा । २ काम चलाऊ व्यवस्था । [सं० धक्क] ३ धाक, रोक । ४ भय, डर, आतंक । ५ शंका, संशय ।
 धाख-देखो 'धाक' ।

धाखा-धीखी, धाखाधेखी-देखो 'धाकाधेखी' ।
 धाग-स्त्री० [सं० दाह] १ तेज अग्नि, अमल । २ अग्नि क्रोध । ३ देखो 'दाम' ।
 धाणी-पु० [सं० तार्कव] १ सूत का तगा, ताना । २ डोरा, दागा । ३ यज्ञोपवीत । ४ श्वेत पाग पर बांधने का काला सूत्र । ५ ध्यान, लगन ।
 धाड़-स्त्री० [सं० धाटी] १ लुटेरों का दल, समूह । २ आक्रमण-कारियों का दल, शत्रुदल । ३ शत्रुओं का हमला । ४ आतंक, डर । ५ विपत्ति, संकट । ६ जत्या, समूह । ७ डाका, धाड़ा । ८ करुणकन्दन, रुदन । ९ अशुभ समाचार । -अव्य० धन्य, वाह ।
 धाड़णी(बी)-क्रि० १ डाका डालना, लूटना । २ रुदन करना, ३ आक्रमण या हमला करना । ३ डरना, भय खाना ।
 धाड़ती-देखो 'धाड़ायती' ।
 धाड़-काड़-वि० साहसी, निडर । होशियार, सावधान ।
 धाड़यत, धाड़व, धाड़बी-देखो 'धाड़ायत' ।
 धाड़ा-स्त्री० १ आभार या कृतज्ञता सूचक शब्द । २ प्रशंसा ।
 धाड़त-देखो 'धाड़ायत' ।
 धाड़ामरद-पु० १ लुटेरा, डाकू । २ शक्तिशाली व्यक्ति ।
 धाड़ायत, धाड़ायती, धाड़ायत, धाड़ाबी-पु० [सं० धाटी] १ डाकू लुटेरा । २ लूट-मार करने वाला । ३ आक्रामक ।
 धाड़ि-देखो 'धाड़ी' ।
 धाड़ी, धाड़ीत, धाड़ीती, धाड़ेत, धाड़ंत, धाड़ंती-देखो 'धाड़ायती' ।
 धाड़ी-पु० [सं० धाटी] घन-माल के बलात् अपहरण की क्रिया, लूट । डाका, बटमारी ।
 धाट-पु० ऊपर कीट राज्य का एक नाम ।
 धाटि, धाटी-पु० [सं० धाटी] १ डाकू । २ डाकुओं का दल । ३ 'धाट' देश का घोड़ा । ४ सिंधी मुसलमानों का एक भेद । ५ घोड़े की एक चाल विशेष । ६ कान का आभूषण । ७ देखो 'घटी' । -वि० 'धाट' देश का, 'धाट' देश सम्बन्धी ।
 धाड-देखो 'धाड़' ।
 धाड़णी (बी)-देखो 'धाड़णी (बी)' ।
 धाड़व (बी)-देखो 'धाड़ायत' ।
 धाड़ि-देखो 'धाड़ी' ।
 धाड़ी, धाड़ीत, धाड़ीती, धाड़ेत, धाड़ंत, धाड़ंती-देखो 'धाड़ायत' ।
 धाणी (बी)-क्रि० [सं० ध्रै] १ पूर्ण तृप्त होना, अधाना । २ संतुष्ट होना । ३ परेशान होना । ४ इच्छा न रहना । अरुचि होना । ५ गिरना पड़ना । ६ देखो 'धावणी' (बी) ।

धात-पुं० [सं० धातु] १ कामदेव । २ सूर्य । ३ पत्थर, पाषाण ।
 ४ तलवार । ५ स्वभाव, प्रकृति । ६ देखो 'धाता' ।
 ७ देखो 'धातु' । — धर-पुं०-पर्वत, पहाड़ । — बीज-पुं०
 कामदेव, मदन । — स्वापु-वि० धातु का स्वाद लेने वाला ।
 धातरि-स्त्री० एक प्रकार की सवत्री ।
 धातासार-पुं० [सं० धातु-सार] सोना, स्वर्ण ।
 धाता-पुं० [सं० धातु] १ ऋषि, विधाना, विधि । २ विष्णु ।
 ३ जिव, महेश । ४ शेषनाम । ५ बारह आदित्यों में से एक
 ६ रक्षा । ७ ठगण के आठवें भेद का नाम (गाथा) । — वि०
 १ रक्षा करने वाला, रक्षक । २ धारण करने वाला,
 धारक । ३ पालन करने वाला, पालक ।
 धातु स्त्री० [सं०] १ लोहा, ताँबा, मोना आदि मूल द्रव्य, अपार-
 वर्णक पदार्थ । २ शरीर को बनाए रखने वाले पदार्थ ।
 ३ शक्त, वीर्य । ४ शब्द का मूल रूप । — करम-पुं० ७२
 कलाओं में से एक । — क्षय-पुं० शरीर से वीर्य यात का रोग,
 प्रमेह । खांसी । — यमक = 'धातुस्तंभक' । — पुष्ट-वि०
 वीर्य को गाढ़ा व पुष्ट करने वाला । — प्रधान-पुं० प्रधान
 धातु, वीर्य । — धृत-पुं० पर्वत, पहाड़ । — माक्षिक-पुं०
 एक उपधातु, सोनामवली । — रेचक-वि० वीर्य को बहाने
 वाला । — वरद्धक, वरधक-वि० वीर्यवर्द्धक । — वाद-
 पुं० कच्ची धातुओं को साफ करने की क्रिया । ६४ कलाओं
 में से एक । — वाही-पुं० धातुओं को साफ करने वाला ।
 — चंदी-पुं० गंधक । — स्तंभक-वि० वीर्य का स्तंभन करने
 वाला ।
 धातापय-पुं० [सं० धातु-उपमा] सोना ।
 धात्रवादी-देखो 'धातुवाद' ।
 धात्री स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि । २ माता । ३ गंगा । ४
 सेना, फौज । ५ आँवले का वृक्ष या फल । ६ धार्पा छन्द
 का एक भेद । ७ देखो 'धाय' । — फल-पुं० आँवला ।
 धात्रिण-पुं० पुरुषों की बहतर कलाओं में से एक ।
 धातु स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ शीघ्रता से कार्य करने की
 क्रिया या भाव । ३ मार-पीट । ४ प्रहार, चोट, आघात ।
 धाय-स्त्री० [सं० धात्री] धातने की अवस्था या भाव, तपन । संतोष ।
 — वि० वि० पेट भर कर, तृप्त होकर । जी भरकर । उच्छा-
 नुमार ।
 धापड़-पुं० [सं० धापक] १ मोट का पानी गिराने का स्थान ।
 तिलारी, छिड़कावा । २ थपड़, तमाचा, चपल ।
 धापणी (बी) — क्रि० [सं० धात्री] १ पेट भरना, भूख शांत होना ।
 २ तृप्त होना, प्रशान्त । ३ संतुष्ट होना तुष्ट होना । ४ तर
 होना, मराबोर होना, हड़ निश्चय करना । ५ सम्पन्न होना ।
 धापपी (बी) — देखो 'धापाऊ' ।

धाफड़-देखो 'धापड़' ।
 धाब-पुं० कटे घास का ढेर ।
 धावडिया-स्त्री० गेहूँ बोने की एक क्रिया विशेष ।
 धावळ-पुं० १ ऊनी वस्त्र विशेष । २ कपड़ा विशेष, वस्त्र ।
 ३ देखो 'धावळी' ।
 धावळपाळ (ली), धावळवाळ (ली), धावळियाणी,
 धावळियाळ (ली) — स्त्री० १ श्रीकरणी देवी । २ देवी, दुर्गा ।
 ३ 'धावळी' पहनने वाली स्त्री ।
 धावळियो-देखो 'धावळी' ।
 धावळी, धावळीयार-देखो 'धावळपाळ' ।
 धावळी-पुं० १ स्त्रियों का अधीवस्त्र, पाघर । २ लहंगा, धाघरा ।
 धावो-देखो 'दावो' ।
 धाभाई-पुं० [सं० धात्रेय-भ्राता] धाय का पुत्र ।
 धाय-स्त्री० [सं० धात्री] १ अन्य के बच्चे को स्तनपान कराके
 पालने वाली स्त्री । २ लालन-पालन करने वाली स्त्री ।
 उप माता । ३ एक वृक्ष विशेष । ४ बार, दफा ।
 ५ देखो 'धा' ।
 धायक-देखो 'धावक' ।
 धायडेती-देखो 'धाडायत' ।
 धायन-क्रि० वि० निरन्तर, लगातार ।
 धायभाई-देखो 'धाभाई' ।
 धायरठ, धायराठ-देखो 'धतराठ' ।
 धायोड़ी, धायो धि० [सं० धात्री] १ नृत्य, आघाया हुआ । २ जो
 भुजा न हो । ३ बला, मंगल । ४ गिरा हुआ, पड़ा हुआ ।
 धार-स्त्री० [सं०] १ चाक, शस्त्र आदि का तीखा फल, तीक्ष्ण
 शिरा । २ तलवार । ३ द्रव पदार्थ की पतली धारा ।
 ४ प्रवाह, वेप । ५ मूलधाधार वृष्टि । ६ किनारा, तट,
 छोर । ७ क्रम, मिलमिला । ८ पृथ्वी, दला । ९ सीमा,
 हद्द । १० एक प्रदेश का नाम जिसे तल राजा ने विजय
 किया था । ११ देखो 'धारा' ।
 धारक-वि० [सं०] १ धारण करने वाला । २ निभाने वाला ।
 ३ बहन करने वाला । — धरा-पुं० शेषनाम ।
 धारकसुरत-वि० [सं० धृत-धारक] पंडित, ज्ञानी ।
 धारकोर-स्त्री० द्वार या खिड़की के सामने पड़ने वाला दीवार
 का किनारा ।
 धारक-देखो 'धारक' ।
 धारजळ-देखो 'धारूजळ' ।
 धारण-स्त्री० [सं०] १ एक बार तोलने की क्रिया । २ पांच सेर
 का एक तौल विशेष । ३ तराजू का पलड़ा । ४ ग्रहण करने
 की क्रिया या भाव । ग्रहण । ५ प्रवलवन, सहारा । ६ देखो
 'धारण' । — पितंबर, पितोबर-पुं० परमेश्वर । श्रीकृष्ण ।

—माषिका—स्त्री० ६४ कलाओं में से एक । —वज्र—पु० इन्द्र ।
 धारणा—स्त्री० [सं०] १ समझने की वृत्ति, ध्वनि, बुद्धि, समझ ।
 २ पक्का विचार, हृदय निश्चय । ३ स्मृति, याद । ४ विचार-
 धारा, खयाल, भावना । ५ विश्वास । ६ मर्यादा । ७ योग
 के आठ अंगों में से एक । ८ चेहरे की मुद्रा । ९ धारणा
 करने की क्रिया ।
 धारणी—वि० [सं० धारण] (स्त्री० धारणी) धारणा करने
 वाला, वहन करने वाला, पहनने वाला ।
 धारणी (बौ)—क्रि० [सं० धारणम्] १ ग्रहण करना, धारण
 करना । २ स्वीकार करना, मानना । ३ संभालना, थामना
 ४ मानना, पालन करना, निभाना । ५ विचार करना,
 निश्चय करना । ६ पहनना । ७ वहन करना । ८ नेवन
 करना, खाना-पीना । ९ दया, महानुभूति दिखाना ।
 धारधर—पु० [सं० धाराधर] १ उम्बर । २ बादल, घन ।
 धारधूस—पु० डाकूओं का दल ।
 धारमिक—वि० [सं० धार्मिक] १ धर्म को मानने वाला, धर्मत्मा
 २ धर्म करने वाला । ३ धर्म मंत्रधारी । ४ किसी धर्म विशेष
 का अनुयायी । ५ न्यायप्रिय । —ता—स्त्री० धर्म की
 भावना । धर्मचरणा ।
 धारत्रो—पु० [सं० धारा] प्रवाह । धारा ।
 धारसु—पु० [सं० सुधार] मंत्री, सचिव ।
 धारांग—पु० [सं०] १ एक प्राचीन तीर्थ । २ तलवार, खड्ग ।
 धारा—स्त्री० [सं०] १ पानी आदि द्रव पदार्थ का प्रवाह, बहाव
 धारा । २ सोता, झरना, चश्मा । ३ निरन्तर बहने वाला
 द्रव पदार्थ । ४ शृंखला । ५ अनवरत गति । ६ घोड़े की
 पंच विध गतियों का समूह । ७ घोड़े की चाल या गति ।
 ८ तलवार । ९ रथ का पहिया । १० पहिये पर लगने
 वाली धनुषाकार लकड़ी । ११ सेना का अग्र भाग । १२
 वृष्टि, वर्षा । १३ मालवा की प्राचीन राजधानी । १४ सिरा ।
 १५ पहाड़ का किनारा । १६ समूह । १७ कीर्ति ।
 १८ रात । १९ हल्दी । २० समानता । २१ कान का अग्र
 भाग । २२ देखो 'धारा' ।
 धाराक—वि० [सं० धारक] १ तीक्ष्ण व पैनी धार वाला ।
 २ धारणा करने वाला ।
 धारागळ—वि० लंबा चौड़ा, विस्तृत ।
 धाराट—पु० [सं०] १ बादल, मेघ । २ जातक पक्षी । ३ गस्त
 हाथी । ४ घोड़ा ।
 धाराधर—पु० [सं०] १ बादल, मेघ । २ इन्द्र, देवराज । ३ राजा,
 नृप । ४ पर्वत । ५ तलवार, खड्ग ।
 धाराधाम—पु० [सं० धाराधरित] वीरगति प्राप्त करने की क्रिया
 या स्थल ।
 धाराधार—वि० [सं०] खड्गधारी, वीर । योद्धा ।

धारायसी—वि० [सं० धारणी] धारण करने वाली ।
 धारायसचियाव—स्त्री० एक देवी का नाम ।
 धाराव—पु० [सं०] १ शस्त्रों की ध्वनि, खन-खन । २ प्रवाह
 की ध्वनि, कल-कल ।
 धाराळ—पु० १ वीर, योद्धा । २ वर्षा की धारा के चिह्न ।
 ३ देखो 'धाराळी' ।
 धाराळा, धाराळी—स्त्री० १ कटार । २ बरछी । ३ तलवार,
 खड्ग । ४ नदी, प्रवाहिनी । —वि० धारावाली ।
 धारावर—पु० [सं०] बादल ।
 धारावाही—वि० १ धारा की तरह आगे बढ़ने वाला, शृंखलाबद्ध ।
 २ निरन्तर चलने वाला ।
 धाराविस—पु० [सं० धाराविष] खड्ग, तलवार ।
 धाराहर—देखो 'धाराधर' ।
 धारि—देखो 'धारी' ।
 धारिणी—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती । —वि० धारण करने वाली ।
 धारिणी—पु० एक प्रकार का शस्त्र ।
 धारी—वि० [सं० धारिन्] (स्त्री० धारिणी) १ धारण करने
 वाला । २ याद रखने वाला । ३ मानने वाला । —पु०
 १ पीलू का वृक्ष । २ रेखा, पंक्ति । —गंग—पु० शिव,
 महादेव । —गदा—पु० विष्णु । श्रीकृष्ण । हनुमान । भीम ।
 —दार—वि० जिसमें कोई धारी या लकीर हो ।
 धारीचोपण—पु० आशुपणों पर खुदाई करने का मौजारा ।
 धारीजणी—स्त्री० मवेशी के मूल्य में की जाने वाली कमी ।
 धारीजनीई—पु० द्विज, ब्राह्मण । जनेऊधारी ।
 धारूजळ—देखो 'धारूजळ' ।
 धारू—वि० [सं० धारिन्] धारण करने वाला । —जळ—पु०
 समुद्र, मरोवर । तलवार ।
 धारू-धारू—वि० अत्यधिक प्रिय ।
 धारेचणी (बौ)—क्रि० विधवा स्त्री द्वारा किसी पुरुष को पति
 बनाना । नाता करना ।
 धारेत्री—पु० विधवा स्त्री द्वारा किसी पुरुष से पति के रूप में
 किया जाने वाला संबंध । नाता ।
 धारोळी—पु० १ क्वार मास में कभी-कभी होने वाली वर्षा ।
 २ वर्षा का चिह्न । ३ दूर से दिखने वाली वर्षा की धारणा ।
 ४ अशु धारा ।
 धारोष्ण—पु० [सं० धारोष्ण] ताजा दुहा हुआ दूध ।
 धारो—पु० प्रथा, परम्परा, रीति-रिवाज । रुढ़ी ।
 धारथी—देखो 'धारिया' ।
 धाव—स्त्री० १ भावसिक कल्पना । २ हमला, आक्रमण ।
 ३ दूरी, फागला । ४ गति, चाल । ५ दौड़, भाग । ६ दौड़
 की क्षमता । ७ वेग, प्रवाह । ८ विचार । ९ निश्चय ।

१० घाम विशेष । ११ धाय, धात्री । १२ पेड़ विशेष ।
१३ देखो 'धाव' ।

धावक-वि० [सं०] १ दौड़ने वाला । २ जाने वाला । -पु०
१ दूत इरवार । २ धोबी ।

धावड़-पु० १ धाय का पति । २ पत्नीवाल ब्राह्मणों की एक
जाति ।

धावड़ो, धावड़्यो, धावड़ो, धावड़्यो-देखो 'धाव' ।

धावणी (बी) -क्रि० [सं०धाव्] १ दौड़ना, भागना । २ जाना ।
३ स्नान करना, नहाना । ४ प्रवाहित होना, बहना ।
५ ध्यान, स्मरण या भजन करना । ६ पूजा करना, ईष्ट
मानना । ७ स्तन पान करना । ८ देखो 'धाणी' (बी) ।

धावन-पु० [मं०] १ मंदेश वाहक, दूत । २ दौड़-भाग की क्रिया
या भाव । ३ आक्रमण, हमला । ४ बहाव, प्रवाह ।
५ सफाई । ६ रगड़न ।

धावना-स्त्री० [सं०] १ प्रार्थना, स्तुति, ध्यान । २ पूजा ।
३ ईष्ट मानने की क्रिया या भाव ।

धावठ, धावठ्यो-देखो 'धावठो' ।

धावो-पु० [सं० धावन] १ आक्रमण, हमला । २ दौड़-भाग ।
३ झपटी ।

धासक-देखो 'दहसत' ।

धासतो-स्त्री० १ महामारी । २ प्लेग ।

धाह-स्त्री० १ रुदन, क्रन्दन । २ चीख, चीत्कार । ३ हाहाकार,
बाहि-बाहि । ४ कोलाहल, शोरगुल । ५ सामूहिक रुदन ।
६ पुकार । ७ विलाप ।

धाहड़णो (बी)-क्रि० १ भस्म करना, जलाना । २ गरजना ।
३ देखो 'दहाड़णो' (बी) ।

धाहड़ी (डो)-स्त्री० १ धव का फूल । २ एक प्रकार की
झाड़ी । ३ देखो 'धाह' ।

धाहि, (ही)-देखो 'धाह' ।

धाहु, (हु)-स्त्री० १ आग की लपट । २ देखो 'धाह' ।

धिग-१ देखो 'धीक' । २ देखो 'धींगी' ।

धिगांणी-देखो 'धींगी' ।

धिगाई-देखो 'धीगाई' ।

धिगो-देखो 'धींगी' ।

धि-पु० १ धर्म । २ संतोष । ३ धिक्कार । ४ आश्रय । -स्त्री०
५ पृथ्वी, धरती । ६ देखो 'धी' ।

धिक्-प्रत्य० [सं० धिक्] १ तिरस्कार सूचक ध्वनि । २ जानत,
धिक्कार । -वि० १ निरर्थक, व्यर्थ । २ निन्दनीय ।
३ भर्त्सना योग्य ।

धिक्क-स्त्री० [सं० धिक्क] आग, अग्नि ।

धिकणी (बी)-देखो 'धुक्णी' (बी) ।

धिकत-देखो 'दिकत' ।

धिकता-स्त्री० [सं० धिक्] धिक्कार, फटकार, निंदा ।

धिकार-देखो 'धिक्कार' ।

धिक-देखो 'धक्' ।

धिक्कार-स्त्री० [सं०] १ तिरस्कार, घनादर । २ फटकार,
भर्त्सना, निंदा । ३ अपकीर्ति ।

धिक्कारणी (बी)-क्रि० [सं० धिक्] १ तिरस्कार करना, घना-
दर करना । २ फटकारना । ३ निंदा करना ।

धिखण-देखो 'धिसण' ।

धिखण-देखो 'धिसण' ।

धिखणी(बी)-१ देखो 'धुक्णी' (बी) । २ देखो 'धक्णी' (बी) ।

धिग-देखो 'धिक' ।

धिगांणी-देखो 'धींगी' ।

धिठाई-देखो 'धीठाई' ।

धिगाप-देखो 'धणिगाप' ।

धिणिगांणी-देखो 'धणिगांणी' ।

धिणी-देखो 'धणी' ।

धिन्नासट-देखो 'धतराट' ।

धिधक-स्त्री० १ प्राग, अग्नि । २ यदबू ।

धिधिक-स्त्री० तबले की ध्वनि या बोल ।

धिन-स्त्री० १ तबले की ध्वनि या बोल । २ देखो 'धन्य' ।

धिनयांणी-देखो 'धणिगांणी' ।

धिनो-देखो 'धन्य' ।

धितिगांणी-देखो 'धणिगांणी' ।

धिन, धिनो-देखो 'धन्य' ।

धिसवाद-देखो 'धन्यवाद' ।

धिप-स्त्री० दीवार, भीति ।

धिमिद्धमिद्ध-स्त्री० तबले आदि राश की आवाज ।

धिप-देखो 'धी' ।

धियगि-देखो 'धियाग' ।

धियांन-देखो 'ध्यान' ।

धिया-देखो 'धी' ।

धियाग, (गि, गी, गि)-स्त्री० १ क्रोधाग्नि । २ क्रोध, गुस्मा ।

३ आकाश, आसमान । -वि० असीम, अपार ।

धियारी-देखो 'धी' ।

धियावणी, (बी)-देखो 'धावणी' (बी) ।

धियो-पु० [मं० धूत] १ पौत्र, प्रपौत्र । २ पुत्र, बेटा ।

धिरकार (गार)-देखो 'धिक्कार' ।

धिरकारणी (बी)-देखो 'धिक्कारणी' (बी)

धिरट-देखो 'धीरट' ।

धिरांणी-देखो 'धणिगांणी' ।

धिराज-पु० [सं० अधिराज] राजाओं को एक पदवी ।

धिरि-देखो 'धीरज' ।

धिव-देखो 'धी' ।

धीवड़ी-देखो 'धी' ।

धिसट-देखो 'धिसिट' ।

धिसण-पु० [सं० धिषण्यं, धिषण] १ तारा, नक्षत्र । २ ग्रह,

धर । ३ बृहस्पति, गुरु । ४ ब्रह्मा । ५ अग्नि ।

धिसणा-स्त्री० [सं० धिषणा] १ बुद्धि, अक्ल । २ विवेक,

धैर्य । ३ पृथ्वी ।

धिसन, धिसनु-देखो 'धिसण' ।

धिटड-पु० [सं० धृष्ट-दण्ड] यम ।

धिसिट-पु० [सं० द्रयण्ट] ताम्र, तांबा ।

धिसण-देखो 'धिसण' ।

धीक-स्त्री० १ प्रहार हेतु तैयार मुष्टिका, धूँसा । २ मुष्टिका,

प्रहार । ३ शरीर के दर्द स्थलों पर धीरे-धीरे चोट करने की क्रिया या भाव । ४ वृक्ष विशेष ।

धीय, धीयड-देखो 'धीक' । २ देखो 'धीगी' ।

धीयड-१ देखो 'द्रंग' । २ देखो 'धीगी' ।

धीयडमल (मल्ल)-देखो 'धीगी' ।

धीयडो, धीयण धीयणियो, धीयल-१ देखो 'द्रंग' ।

२ देखो 'धीगी' । ३ देखो 'धीयलो' ।

धीयलो-पु० १ गोवर में पैदा होने वाला नृग जाति का कीड़ा ।

२ मेवाड़ का एक प्राचीन सिक्का । ३ देखो 'धीगी' ।

धीयाण (णी, नै)-क्रि० वि० १ बलपूर्वक, जबरदस्ती से ।

२ देखो 'धीयाई' । ३ देखो 'धीगी' ।

धीयाणी-पु० (स्त्री० धीयाण, धीयाणी) १ अत्याचार, अन्याय,

ज्यादती, जबरदस्ती । २ देखो 'धीगी' ।

धीयाई-स्त्री० जबरदस्ती, ज्यादती ।

धीयाणगौर-स्त्री० गणगौर का त्योहार विशेष (उदयपुर) ।

धीयाधीगी, धीयागमस्ती, धीयागुस्ती-स्त्री० १ शराब, वदमाशी

२ उद्वेगता, ऊब । ३ हाथापाई, मस्ती । ४ जबरदस्ती ज्यादती ।

धीगी-वि० (स्त्री० धीगी) १ जबरदस्त, जोरदार । २ वीर,

साहसी । ३ शक्तिशाली, बलवान । ४ समर्थ, सक्षम । ५ धनाढ्य, धनी । ६ हट्टा-कट्टा, स्वस्थ । ७ आकार में बड़ा, बृहत् ।

धीगी-देखो 'धीगी' ।

धी, धीयडो-स्त्री० [सं० धी] १ दीपक, दीया, ज्योति । २ चित्त,

मन । ३ मेधा । ४ चित्रक । ५ बुद्धि, अक्ल । ६ पुत्री, बेटी । ७ विचार, इरादा । ८ कल्पना । ९ भक्ति, प्रार्थना । १० यज्ञ ।

धीक, धीकडो-देखो 'धीक' ।

धीकणी (बो)-देखो 'धुकणी' (बी) ।

धीयडो-१ देखो 'द्रंग' । २ देखो 'धीगी' ।

धीज-स्त्री० [सं० धीज्, धीयध] १ दृढ़ता । २ विश्वास ।

३ धैर्य, धीरज । ४ प्रतिज्ञा, प्रण । ५ प्रतिस्पर्द्धा,

होड़ । ६ न्याय की एक प्राचीन परिपाटी । ७ शर्त ।

८ शंका, संशय ।

धीजणी-वि० [सं० धीज्] (स्त्री० धीजणी) १ विश्वास करने

वाला । २ धैर्य धारण करने वाला । ३ प्रतिस्पर्द्धा करने

वाला । ४ प्रसन्न होने वाला, संतुष्ट होने वाला । ५ प्रण

करने वाला ।

धीजणी, (बो)-क्रि० [सं० धीज्] १ विश्वास करना, आश्वस्त

होना । २ संतुष्ट होना । ३ धैर्य रखना । ४ प्रसन्न होना ।

५ प्रण करना । ६ प्रतिस्पर्द्धा करना ।

धीजाणी (बो), धीजावणी (बो)-क्रि० १ विश्वास कराना,

आश्वस्त करना । २ संतुष्ट करना । ३ धैर्य बंधाना ।

४ प्रसन्न करना । ५ प्रण कराना । ६ प्रतिस्पर्द्धा कराना ।

धीजी-पु० [सं० धीज्] १ विश्वास, भरोसा ।

२ देखो 'धीरज' ।

धीठ-देखो 'धीठ' ।

धीठ-वि० [सं० धृष्ट] १ निलज्ज, बेशर्मा । २ मूर्ख, जड़ ।

३ नीच । ४ वीर, जबरदस्त । ५ शक्तिशाली, बलवान ।

६ अटल, दृढ़ । ७ जिद्दी, हठी, दुराग्रही । ८ लापरवाह,

वेपरवाह । ९ क्रोधी । १० कामचोर । ११ कपटी, धूर्त ।

१२ देखो 'धीठ' । -स्त्री० तोप छूटने की ध्वनि ।

धीठम-पु० [सं० दंजनम्] १ मर्ग, सांप । २ देखो 'धीठ' ।

धीठाई-स्त्री० १ निलज्जता, बेशर्मी । २ मूर्खता, जड़ता ।

३ नीचता । ४ दृढ़ता । ५ हठ, जिद्द, दुराग्रह । ६ लापर-

वाही । ७ वीरता, बहादुरी ।

धीठिप्रो, धीठो-देखो 'धीठ' ।

धीण-पु० ऊन के ताने का आकार, बनावट ।

धीणकियो, धीणकी-देखो 'धीणी' ।

धीणु, धीणू-वि० १ दूध देने वाली । २ देखो 'धीणी' ।

धीणूडो, धीणूडो-स्त्री० दूध देने वाली गाय या भैंस ।

धीणी-पु० १ दूध देने वाली गाय या भैंस की व्यवस्था ।

२ दूध देने वाली गाय या भैंस ।

धीन-पु० लोहा ।

धीप, धापत, धीपति-पु० [सं० धी-पति, अर्थात्] १ दागाद ।

२ बृहस्पति । ३ राजा, नृप ।

धीब-स्त्री० १ प्रहार, चोट । २ प्रहार की ध्वनि । ३ ध्वनि,

आवाज ।

धीबणी, (बो)-क्रि० १ प्रहार या चोट लगाना, आघात करना ।

२ मंहार करना, मारना । ३ भोजन करना, खाना ।

धीबि-देखो 'धीब' ।

धीबर-देखो 'धीबर' ।

धीमान-पु० [सं० धोमत्] १ कवि । २ बृहस्पति ।
-वि० बुद्धिमान ।

धीमं-क्रि० वि० [सं० मध्यम्] १ धीरे से, शनैः शनैः । २ चपके से, आहत किये धिना । ३ हल्की आवाज या नीचे स्वर से ।
४ मन्द गति से । ५ सुस्ती से ।

धीमी-वि० [सं० मध्यम्] (स्त्री० धीमी) १ जिसकी चाल तेज न हो, मंद गति वाला । २ जो उतावला न हो, धैर्य वाला, रम्य । ३ मुस्त, घालसी । ४ धीर्यमूखी ।
५ जिसमें उत्तेजना न हो, शान्त । ६ हल्का, मन्द ।

धीमीमताळी-पु० एक ताल विशेष ।

धीय, धीवड़, धीवड़ी, धीयवी, धोया, धीयारी-देखो 'धी' ।

धीयो-पु० [सं० धीत] पुत्र, लड़का ।

धीर-वि० [सं०] १ धैर्यवान, धीरजवाला । २ विवेकशील ।
३ गर्भीर । ४ सहनशक्ति वाया । ५ बलवान, शक्तिशाली ।
६ विनीत, नम्र । ७ सुन्दर, मनोहर । ८ मन्द, धीमा ।
९ अटल, दृढ़ । १० व्याप्तावस्थित । ११ उत्साहवान ।
१२ चतुर, बुद्धिमान । १३ सुस्त । -पु० [सं० धैर्यम्]
१ धैर्य, धीरज । २ संतोष, सन्न । [सं० धीरः] ३ मूर्धरवि । ४ कवि । ५ एक प्रकार का नायक । ६ बाहि ।
-स्त्री० [सं० धीरम्] ७ केनर ।

धीरच्छ-१ देखो 'धीरट' । २ देखो 'धिरज' ।

धीरज(ज)-पु० [सं० धैर्यम्] १ विपत्ति, सकट, बाधा आदि से विचलित न होने वाली अवस्था या भाव, धैर्य । २ संतोष, सन्न । ३ शक्ति, समत्ती । ४ विवेक । -धार, धर, गान-वत, वान-वि० धैर्यवान, धीर-वीर-गम्भीर ।

धीरट(ठ)-पु० १ हंस पक्षी । २ मांसाहारी पक्षी, पलवर ।
३ देखो 'धीरज' ।

धीरट्ट-वि० [सं० धृष्ट] १ धैर्यवान । २ देखो 'धीरज' ।

धीरणी, (बी)-क्रि० [सं० धीर] १ धैर्य रखना । २ सन्न या संतोष करना । ३ ढाड़स देना ।

धीरत-१ देखो 'धीरज' । २ देखो 'धीरट' ।

धीरतम-स्त्री० [सं०] चित्त की स्थिरता, धैर्य, संतोष, सन्न ।
सहनशीलता, सहिष्णुता ।

धीरप-क्रि० वि० [सं० धैर्यम्] १ शनैः-शनैः, धीरे से ।
२ देखो 'धीरज' ।

धीरपण-पु० धैर्य, धीरज ।

धीरपणी (बी)-क्रि० १ धैर्य बंधाना, ढाड़स देना, सात्वता करना । २ मर्जाना, रखना, संयुक्त होना । ३ दृढ़ रहना, अटल रहना ।

धीरलालत-पु० एक प्रकार का नायक ।

धीरवणी (बी)-देखो 'धीरपणी' (बी) ।

धीरसांत-पु० [सं० धीरशान] शीलवान व पुण्यवान नायक ।
धीरस्ट-देखो 'धीरट' ।

धीरा-क्रि० वि० [सं०] १ धीरे से, ठहर कर, शनैः शनैः ।
२ चुपके से । ३ दृढ़ता से । -स्त्री० १ एक प्रकार की नायिका । २ मालकंगनी ।

धीराणी (बी), धीरावणी (बी)-क्रि० १ धैर्य रखाना । २ सन्न या संतोष कराना । ३ ढाड़स दिराना ।

धीरासन-पु० योग के चौरासी आसनों में से एक ।

धीरिम-देखो 'धीरज' ।

धीरी-स्त्री० आंख की पुतली । -वि० मंद, धीमी ।

धीरु (रु)-देखो 'धीर' ।

धीरुजल-देखो 'धिरुजल' ।

धीरे, धीरं-क्रि० वि० १ मंद गति से, आहिस्ता से । २ चुपके से, शान्ति से ।

धीरोज-देखो 'धीरज' ।

धीरोदात्त, धीरोद्धत-पु० एक प्रकार का नायक ।

धीरौ-वि० १ धैर्यवान । २ मंद, धीमा ।

धीरच-देखो 'धीरज' ।

धीव, धीवड़, धीवड़ली, धीवड़ी-देखो 'धी' ।

धीवर-पु० [सं०] १ मनुष्य, नायक । २ काला गनुष्य । ३ सेवक ।
४ लोहा ।

धीस-पु० [सं० अघोश] १ राजा, नृप । २ स्वामी, मालिक ।

धीसठ्याळ-पु० [सं० व्याल-अघोश] शेषनाग ।

धीइह, धीहड़लो, धीहड़ी-देखो 'धी' ।

धुं-देखो 'धुं' ।

धुंमर-देखो 'धुंर' ।

धुंआधार (धोर)-पु० [सं० धूम] १ धूँ का समूह । २ धूम-धारा । ३ धूलि मिश्रित हवा । -क्रि० वि० १ प्रत्यन्त तीव्र गति से । २ धूँसा या धून उड़ाते हुए, जोरशोर से ।
३ प्रचण्डता से । ४ निरन्तर । -वि० १ प्रचण्ड, मत्सर, तेज । २ धूँसा युक्त । ३ काला स्वाह ।
४ धूम्रकार युक्त ।

धुंआळ-वि० १ धूँ में भरा । २ धूँ जैसा ।

धुई-स्त्री० [सं० धोमी] १ किसी वस्तु को धुकाने की क्रिया या भाव । २ धूँ से ताप देने की क्रिया या भाव ।

धुंम्री-देखो 'धुंवी' ।

धुंकार-स्त्री० १ जोर का शब्द । २ गर्जना, गरज । ३ धूँसा फैलाने की अवस्था । ४ देखो 'धुंकार' ।
५ देखो 'धुंगार' ।

धुंकारणी (बी)-क्रि० १ जोर का शब्द करना । २ गर्जना करना । ३ देखो 'धुंकारणी' (बी) ।

धुंगार

(७०७)

धुङ्ग

धुंगार-पु० [गं धूम+अंगार] १ अंगारे पर धी, तेल आदि डालने पर उठने वाला धूँआ, भाप । २ ऐसी भाप से आनादि पदार्थ में दिया जाने वाला बंधार, छौंक । ३ धुकाने की क्रिया या भाव ।

धुंगारणी (बी)-क्रि० १ राखते, शाक आदि में धी के धुँए का बंधार देना । २ किसी वस्तु को धुका देना । ३ जलाना, सुलगाना ।

धुँव, धुँध-स्त्री० [सं० धूम-अंध] १ धुँए या ओस के बादलों से होने वाला अंधेरा । २ गर्द का अंधेरा । ३ कुहरा । ४ अज्ञान । ५ आँख का एक रोग । ६ देखो 'दुँद' ।

धुँधक-वि० नंग में चूर, मद मस्त ।

धुँधकार-पु० १ आकाश में छाया हुआ धूँआ या कुहरा । २ गर्द या आँधों का अंधेरा ।

धुँधट-स्त्री० रुई की धुनकी की ध्वनि ।

धुँधमार-पु० [सं० धुँधुमार] १ राजा बृहदश्व के पुत्र सुवलयाश्व का नामान्तर । २ एक राक्षस ।

धुँधल-स्त्री० धुँधलापन, अंधेरा ।

धुँधलणी (बी)-देखो 'धुँधलणी' (बी) ।

धुँधली-देखो 'धुँधली' (स्त्री० धुँधली) ।

धुँधली (बी)-देखो 'धुँधली' (बी) ।

धुँधु-पु० [सं०] मधु राक्षस का पुत्र एक राक्षस ।

धुँधुकार, धुँधुकार-पु० १ नगाड़े का शब्द, धुँकार । २ देखो 'धुँधकार' ।

धुँन-स्त्री० [सं० ध्वनि] १ निरन्तर होने वाली ध्वनि, रट । २ चित्त की एकप्रता ।

धुँवाँकस, धुँवाँकान-पु० [सं० धूम+आकाश] धूँआ निकलने की चिमनी ।

धुँवाँधार-देखो 'धुँवाँधार' ।

धुँवाँधुज-देखो 'धुँवाँधुज' ।

धुँवाँधोर-देखो 'धुँवाँधार' ।

धुँवाँपराड़-पु० जलाने की लकड़ी पर जिया जाने वाला कर ।

धुँवौ-पु० [सं० धूस] कोयले की भाप आग के ऊपर या जलने पदार्थों से निकलने वाली भाप । धुँआ, धूम ।

धु-पु० १ शरीर, तन । २ पवन, हवा । ३ दौड़ । ४ धोबी । -वि० १ अधिक ज्यादा । २ कंपावनमान, कंपित । ३ देखो 'धुँवौ' । ४ देखो 'धुँव' । ५ देखो 'धु' ।

धुकट-पु० मृदंग आदि का शब्द, ध्वनि ।

धुकण-स्त्री० [सं० धुक्ष] १ अग्नि, आग । २ धूँए के रूप में ही जलने की अवस्था । ३ जलन । ४ आतुरता, व्यथा ।

धुकणी (बी)-क्रि० [सं० धुका] १ धूँए के रूप में धीरे-धीरे जलना । धूँआ उठना । २ जलना । ३ क्रुद्ध होना, कुपित

होना । ४ दुःखी होना, कुहना । ५ पीड़ित या संतप्त होना ।

६ धक्का खाकर नीचे झुकना । ७ लुढ़कना ।

धुकधुकी-स्त्री० १ कलेजा, हृदय । २ कलेजे की धड़कन । ३ डर, भय, खौफ । ४ देखो 'धुगधुगी' ।

धुकलणी (बी)-क्रि० १ नाश करना, संहार करना, मारना । २ युद्ध करना । ३ मारना पीटना ।

धुकाणी (बी)-क्रि० १ धूँए के रूप में धीरे-धीरे जलाना । सुलगाना, जलाना । २ भभकाना, धूँआ निकालना । ३ क्रोधित करना, कुपित करना । ४ दुःखी करना, सताना । ५ पीड़ा देना, कष्ट देना । ६ नीचे धंसाना, बैठाना । ७ लुढ़काना ।

धुकार-१ देखो 'धुँकार' । २ देखो 'धौँकार' ।

धुकावणी (बी)-देखो 'धुकाणी' (बी) ।

धुकुस-पु० [सं० धुक्ष] आग, अग्नि ।

धुक्कणी (बी)-देखो 'धुकणी' (बी) ।

धुखणी (बी)-क्रि० [सं० धुक्ष-संदोपने] १ उग्र रूप से रहना । २ तनाव बढ़ना । ३ मन में खटकना । ४ देखो 'धुकणी' (बी) ।

धुखानी (बी), धुखावणी (बी)-क्रि० १ जारी रखना, चलाना । २ तनाव बढ़ाना । ३ मन में खटकाना । ४ देखो 'धुकाणी' (बी) ।

धुग-पु० मजबूत व मोटा लड़ू, सौठा ।

धुगधुगी-स्त्री० १ शरीर को जोर से हिलाने या कंपाने की क्रिया या भाव । २ गले का एक आभूषण विशेष । ३ देखो 'धुगधुगी' ।

धुगधुगी-वि० (स्त्री० धुगधुगी) हूण्ट-पूण्ट, मोटा-ताजा ।

धुगली-स्त्री० समूह, झुण्ड ।

धुङ्की-देखो 'दुङ्की' ।

धुङ्की-पु० १ किसी वस्तु के गिरने का शब्द । २ श्वास लेने का शब्द, धड़कन ।

धुङ्ङणी (बी)-क्रि० १ गजना, ध्वनि करना । २ गिरना, ढह पड़ना ।

धुङ्ङणी (बी)-क्रि० गिरना, ढहना ।

धुङ्ङङणी (बी)-क्रि० १ होना, नगाड़े आदि का वजना । ध्वनि करना । २ देखो 'धुङ्ङणी' (बी) ।

धुङ्ङी-देखो 'दुङ्ङी' ।

धुङ्ङणी (बी)-१ देखो 'धुङ्ङणी' (बी) । २ देखो 'धुङ्ङणी' (बी) ।

धुङ्ङ (धुङ्ङ)-वि० १ दबा-दबा कर भरा हुआ । २ पेट भर खाया हुआ तृप्त, भराया हुआ ।

धुज-पु० [सं० ध्वज] कलान जाति व इस जाति का व्यक्ति । -वि० श्रेष्ठ पूज्य । देखो 'धज' । देखो 'ध्वज' । —असमांश-पु० सूर्य । —इंड= 'ध्वजदंड' । —धोम-स्त्री० आग, अग्नि ।
 धुजट्टिय, धुजट्टी-देखो 'धुजट्टी' ।
 धुजा-स्त्री० १ प्रथम लघु के टगण का एक भेद । २ देखो 'ध्वज' ।
 धुजागड़ी-वि० कपाने वाला, थरहिट पैदा करने वाला ।
 धुजाली (बो), धुजावली (बो)-क्रि० [सं० घृ] १ कंपनी, कंफित करना, थरहिट पैदा करना । २ डराना, आतंकित करना । ३ जोर से हिलाना । ४ डोलाना ।
 धुजो-देखो 'ध्रुव' ।
 धुज्जली (बो)-देखो 'धुजली' (बो) ।
 धुज्जाली (बो), धुज्जावली (बो)-देखो 'धुजाली' (बो) ।
 धुण (ह)-१ देखो 'धुन' । २ देखो 'धनु' ।
 धुणकणी (बो)-देखो 'धुणणी' (बो) ।
 धुणकी-देखो 'धुनकी' ।
 धुणणी (बो)-क्रि० [सं० धुज्] १ धुनकी से रूई साफ करना, पीनना । २ जोर से हिलाना, झकझोरना । ३ खूब पिटाई करना, मारना । ४ विलोडित करना । ५ ध्वनि करना । ६ आश्रय घुमाना । ७ पश्चाताप करना ।
 धुणियाळ-वि० धनुषारी, धनुर्धर । -पु० १ भील । २ वीर पावू का एक नामान्तर ।
 धुणी-१ देखो 'धुनी' । २ देखो 'ध्वनि' । ३ देखो 'धुंगी' ।
 धुतकार-देखो 'दुत्कार' ।
 धुतकारणी (बो)-देखो 'दुत्कारणी' (बो) ।
 धुताइय, धुताई-देखो 'धुतता' ।
 धुतारण-पु० [सं० ध्रुवतारण] ध्रुव का उद्धारक, दिग्गु, ईश्वर ।
 धुतारी-वि० [सं० धूर्ता] १ माया रखने वाली, मायावी । २ छल करने वाली । ३ दूती, कुटनी । ४ देखो 'धुतारी' ।
 धुतारी-वि० [सं० धूर्त] (स्त्री० धुतारी) १ बदमाश । २ ठग, कपटी ।
 धुत-वि० १ नींद या नशे में चूर । २ मस्त, पागल । ३ देखो 'धुत' ।
 धुधकट-देखो 'धुधुवट' ।
 धुधकार-देखो 'दुत्कार' ।
 धुधकारणी (बो)-देखो 'दुत्कारणी' (बो) ।
 धुधङ्ग-वि० सीधा, सरल ।
 धुधुकट-पु० तबले का एक बोल विशेष ।
 धुधुकार-स्त्री० १ धु-वु शब्द का शोर । २ आग की लपटों की ध्वनि । ३ भयंकर भूभावात । ४ भूभावात का शोर ।
 धुनकणी (बो)-क्रि० १ ध्वनि करना । २ धुनना ।

धुन-स्त्री० [सं० ध्वनि] १ रट, जाप । २ ईश्वर के नाम का जप । ३ मन की तरंग, मोज । ४ लगन । ५ बुद्धि । ६ गीत या पद की लय । ७ स्वरावली, तान ।
 धुनवेत्ता-पु० [सं० ध्वनि वेत्ता] साहित्य में ध्वनि को जानने वाला ।
 धुनि-स्त्री० [सं० ध्वनि] १ ईश्वर के नाम का जप, रट, माला । २ देखो 'ध्वनि' । ३ देखो 'धुनी' । —ग्रह= 'ध्वनिग्रह' ।
 धुनिया-स्त्री० [सं० धुन] रूई धुनने वाली जाति, पिंजारा ।
 धुनिघो-पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।
 धुनी-स्त्री० [सं०] १ नदी, भरिता । २ देखो 'धुनि' । ३ देखो 'ध्वनि' । ४ देखो 'धुन' । —ग्रह= 'ध्वनिग्रह' ।
 धुनी-वि० श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया । (स्त्री० धुनी)
 धुपघंटी-स्त्री० धूपदानी ।
 धुपटणी (बो)-देखो 'धुपटणी' (बो) ।
 धुपणी (बो)-क्रि० [सं० धूप-संतापे] १ पानी आदि से धोया जाना, धुलना । २ साफ होना, निर्मल होना । ३ मिटना । ४ दूर होना । ५ क्रुद्ध होना । ६ कमजोर होना, क्षीण होना । ७ व्यर्थ एवं अधिक व्यय होना ।
 धुपाली (बो)-क्रि० १ पानी आदि से धुनाना, धुपवाना । २ साफ कराना, निर्मल कराना । ३ मिटवाना । ४ दूर कराना ५ क्रोध दिलाता । ६ कमजोर कराना । ७ व्यर्थ एवं अधिक खर्च कराना ।
 धुपारणी-देखो 'धुपियो' ।
 धुपावणी (बो)-देखो 'धुपाली' (बो) ।
 धुपियो, धुपेड़ी, धुपेरणी-देखो 'धुपियो' ।
 धुब-पु० १ क्रोध, कोप । २ क्रोधाग्नि ।
 धुबधाळ-स्त्री० [सं० धूप-संतापे] कंपन, थरहिट ।
 धुबणी (बो)-क्रि० [सं० धूप-संतापे] १ नगाड़ा, ढोल आदि बजना । २ बाद्य ध्वनि होना । ३ तीव्र बन्दूक आदि छूटना व उमकी ध्वनि होना । ४ क्रोध करना, क्रोधाग्नि में जलना । ५ जलना, प्रज्वलित होना । ६ युद्ध होना, संग्राम होना । ७ नष्ट होना, कटना । ८ तीव्र होना, तेज होना । ९ प्रचण्डता आना । १० जोश में आना । ११ प्रहार करना, वार करना ।
 धुबाक, (ख)-स्त्री० [देण०] १ नीची जगह । २ देखो 'धमाक' ।
 धुबाणी (बो), धुबावणी (बो)-क्रि० १ नगाड़ा ढोल आदि बजाना । २ बाद्य ध्वनि करना । ३ तीव्र बन्दूक आदि छोड़ना । ४ क्रोध कराना । ५ जलाना, प्रज्वलित करना । ६ युद्ध करना संग्राम करना । ७ नष्ट करना, काटना । ८ तीव्र करना, तेज करना । ९ प्रचण्डता लाना । १० जोश में लाना । ११ प्रहार कराना ।

धुखणी, (बो)-देखो 'धुखणी' (बो) ।

धुमचो-देखो 'धुमचो' ।

धुमाळ-स्त्री० मुण्डमाल ।

धुमाळी-पु० एक प्रकार का कर ।

धुम्भोस-पु० भोजन की निन्दा का दोष (जैन) ।

धुरंढी-देखो 'धूलेरी' ।

धुरंधर-वि० [सं०] १ उठाने वाला धारण करने वाला ।

२ प्रबल, जबरदस्त । ३ महान्, श्रेष्ठ । ४ प्रधान, मुख्य ।

५ निपुण, दक्ष । ६ सद्गुण सम्पन्न ।

धुर-पु० [सं० धुर] १ बोझ, भार । २ कर्जदार व्यक्ति, ऋणि ।

३ प्रारंभ, प्रारंभ । ४ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी । ५ कर्त्तव्य,

कार्य । ६ चोटी, शिरा । ७ बंब । ८ निश्चय । ९ यान मुख

१० जुआ । ११ देखो 'धुरी' । १५ देखो 'धुराऊ' ।

१३ देखो 'ध्रुव' । -वि० १ प्रथम, पहला । २ प्रारम्भिक

शुरू का । ३ मुख्य, प्रधान । -क्रि० वि० १ पूर्व में, पहले ।

२ आगे । ३ पास, समीप ।

धुरकारणी (बो)-देखो 'दुत्कारणी' (बो) ।

धुरज-देखो 'धूरज' ।

धुरजटी-देखो 'धूरजटी' ।

धुरजो-देखो 'ध्रुव' ।

धुरज्ज-देखो 'धूरज' ।

धुरणी (बो)-देखो 'धरणी' (बो) ।

धुरधमळ-वि० [सं० धुर-धवल] १ अगुवा, मुखिया, नेता ।

२ सद्गुण सम्पन्न । ३ कर्त्तव्य परायण । ४ महान्, उच्च ।

५ उदार, दानी ।

धुरधर-पु० [सं०] १ शुरूआत, प्रारंभ । २ बोझ ढोने वाला

प्राणी । ३ काम पर लगा मनुष्य ।

धुरपट-देखो 'धूपट' ।

धुरपद-देखो 'धूपद' ।

धुरळ-देखो 'दुर्ळ' ।

धुरबही-वि० [सं० धुवंह] १ बोझ या भार ढोने वाला ।

२ आगे चलने वाला । ३ रथ खींचने वाला । -पु० गाड़ी

खींचने वाला बैल ।

धुरा-क्रि० वि० [सं० धुर] १ प्रथम, पहले । २ शिरे पर,

मुंह पर, आगे ।

धुरा, धुराई-क्रि० वि० १ अन्त में, आखिर । २ अन्त तक ।

३ प्रारम्भ में । -स्त्री० बेलगाड़ी का जुआ ।

धुराउ, (ऊ)-पु० [सं० ध्रुव] ध्रुव तारे की दिशा, उत्तर ।

-वि० उत्तर की ओर का, उत्तर दिशा का ।

धुराव-क्रि० वि० १ आदि काल से, प्रारम्भ से । २ देखो 'धुराउ' ।

धुराळ-वि० १ प्रथम, पहला, पूर्व का, आदि का । २ आगे से

अधिक भारी (गाड़ी) ।

धुरि-वि० [सं० धुर] १ प्रथम, पूर्व । २ मुख्य, प्रधान ।

३ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम । ४ विशेष । ५ दीर्घ, लम्बा । -क्रि० वि

प्रारम्भ में -पु० सिरहाता ।

धुरिया-स्त्री० एक रागिनी विशेष ।

धुरियामलार, धुरीयामलार-स्त्री० मलार राग का एक भेद ।

धुरियो-१ देखो 'धुर' । २ देखो 'धुरी' ।

धुरी-१ देखो 'धुरि' । २ देखो 'धुरी' ।

धुरीण-वि० [सं०] १ बोझा ढोने वाला । २ काम सम्भालने

वाला । ३ प्रधान, मुख्य । ४ पण्डित, विद्वान ।

धुरू-देखो 'ध्रुव' ।

धुरेडी-देखो 'धूलेरी' ।

धुरी-पु० [सं० धुर] १ किसी वाहन या यन्त्र के चक्र के बीच

लगी कील जिस पर वह चक्र घूमता है । अक्ष,

धुरी । २ जुआ ।

धुलंडी-देखो 'धूलेरी' ।

धुलणी (बो)-क्रि० १ पानी आदि से धोया जाना, धुलना ।

२ स्वच्छ व निर्मल होना । ३ निर्विकार होना ।

धुलहड़ी, धुलहड़ी-स्त्री० [सं० धुलिपटिका] एक त्योहार

विशेष, धूलेरी ।

धुलाई-स्त्री० १ धोने का कार्य । २ धोने की मजदूरी ।

धुलाणी (बो)-क्रि० १ पानी आदि से धुलाना, साफ

कराना । २ स्वच्छ निर्मल कराना । ३ निर्विकार

कराना ।

धुलावट-देखो 'धुलाई' ।

धुलावणी (बो)-देखो 'धुलाणी' (बो) ।

धुलिघो-देखो 'धूल' ।

धुळी-देखो 'धूड' ।

धुलंडी, धुलेडी, धुलेरी-देखो 'धूलेरी' ।

धुव-पु० १ क्रोध, क्रोध । २ देखो 'ध्रुव' ।

धुवड-देखो 'धूड' ।

धुवणी (बो)-१ देखो 'ध्रुवणी' (बो) । २ देखो 'धुपणी' (बो) ।

धुवमंडळ-देखो 'ध्रुवमंडळ' ।

धुवराज-देखो 'ध्रुव' ।

धुवळ-देखो 'धवल' ।

धुवसंधि-देखो 'ध्रुवसंधि' ।

धुवांकस-देखो 'ध्रुवांकस' ।

धुवान-देखो 'ध्वनि' ।

धुवाणी (बो), धुवावणी (बो)-१ देखो 'ध्रुवाणी' (बो) ।

२ देखो 'धुपणी' (बो) ।

धुवौ-देखो 'ध्रुवौ' ।

धुसणी (बो)-क्रि० [सं० ध्वंस] १ ध्वंस होना संहार होना ।

२ विनाश होना नाश होना । ३ देखो 'धसणी' (बो) ।

धूसरी, धूसली-स्त्री० [देश] रज, धुलि, रेणु ।

धुस्सी-देखो 'धु' ।

धू-१ देखो 'धु' । २ देखो 'धु' ।

धूँ-धारा (धोर)-देखो 'धुँ' ।

धूँ-धारव-पु० [सं० धूमः रव] धूम धूँ ।

धूँ-१ देखो 'धुँ' । २ देखो 'धुँ' ।

धूँ-देखो 'धुँ' ।

धूँ-देखो 'धुँ' ।

धूँ-कणी (बी)-क्रि० १ गर्जना दहाड़ना । २ जोर से बोलना । ३ जोश में बोलना ।

धूँ-कर-स्त्री० [देश०] १ जोश पूर्ण आवाज । २ फटकार, डांट ।

धूँ-कल-पु० [देश] १ युद्ध, लड़ाई । २ उपद्रव, उत्पात । ३ टंटा, फिसाद, बखेड़ा ।

धूँ-कलणी (बी)-देखो 'धुँ-कलणी' (बी) ।

धूँ-कलसी, धूँ-कली-वि० नाहमी, बीर ।

धूँ-कार, धूँ-कारव-१ देखो 'धुँ-कार' । २ देखो 'धुँ-कार' ।

धूँ-खल-देखो 'धुँ-कल' ।

धूँ-खलणी (बी)-देखो 'धुँ-कलणी' (बी) ।

धूँ-गरि-पु० १ वृक्ष विशेष । २ शाक विशेष ।

धूँ-गार-देखो 'धुँ-गार' ।

धूँ-गारणी (बी)-देखो 'धुँ-गारणी' (बी) ।

धूँ-रा-स्त्री० [सं० धर्म] १ आधा मन का एक तीव्र विशेष । २ आधा मन को मात्रा । [सं० ध्या] ३ धौकती । ४ प्रवृत्ति, ध्यान । -वि० १ आधा मन । २ देखो 'धूँ-न' ।

धूँ-राणी (बी)-देखो 'धुँ-राणी' (बी) ।

धूँ-राव-स्त्री० शरीर को भकभोरने या भटका देने की क्रिया या भाव ।

धूँ-णि, धूँ-णी (बी)-स्त्री० [सं० धूमः] १ साधु-फकीरों के आश्रम में बना छोटा अग्नि कुण्ड । २ उक्त अग्नि कुण्ड में जलाई जाने वाली अग्नि । ३ उक्त अग्नि कुण्ड की राख । ४ नाथ सम्प्रदाय के फकीरों का निवास स्थान । ५ एक शाक विशेष । ६ देखो 'धुँ-ई' । ७ देखो 'धुँ-तु' ।

धूँ-द, धूँ-ध-१ देखो 'धुँ-ध' । २ देखो 'धुँ-तु' ।

धूँ-धल-१ देखो 'धुँ-धली' । २ देखो 'धुँ-धल' ।

धूँ-धली (बी)-क्रि० [सं० धूमः-मानुष] १ धूँ-आ, गर्द, कुहरा आदि आने में कुछ अंधेरा होना । २ अस्पष्ट होना, धुँधला होना ।

धूँ-धलि-देखो 'धुँ-धली' ।

धूँ-धलीमल्ल, (माल)-पु० एक मित्र विशेष ।

धूँ-धली-वि० [सं० धूम-मानुष] (स्त्री० धुँ-धली) १ धूँ-आ, गर्द या कुहरे में आच्छादित । २ अस्पष्ट, धुँधला । ३ जो

माफ दिखाई न दे । ४ भटमैले या भूरे रंग का ।

५ बहुत कम प्रकाश वाला ।

धूँ-धाड़ी-पु० धूँ-ए या गर्द का समूह ।

धूँ-धली (बी)-क्रि० [देश०] १ तेज चलाना । २ तेजी से श्वास लेना । ३ जल्दी मचाना ।

धूँ-धाळ (बी)-वि० [सं० धुँ-आनु] (स्त्री० धूँ-धाळी) १ तीव्र वाला । २ मोटा-नाजा । ३ धूम या धूल युक्त ।

धूँ-धावली (बी)-देखो 'धुँ-धाणी' (बी) ।

धूँ-धि-स्त्री० [देश०] १ आँख का एक रोग । २ धुँधलापन, अस्पष्टता । ३ देखो 'धुँ-धी' ।

धूँ-धि-वि० १ मंद दृष्टि वाला । २ जिसे कम दिखता हो ।

धूँ-धी-स्त्री० १ उमंग, जोश । २ कंपन, भ्रमनाहट । ३ धडधड़ी ।

धूँ-धू-कार-१ देखो 'धुँ-धकार' । २ देखो 'धुँ-धकार' ।

धूँ-धणी (बी)-देखो 'धुँ-धणी' ।

धूँ-धेड़, धूँ-धो-पु० चौहान वंश की एक शाखा व उसका व्यक्ति ।

धूँ-न-वि० [देश०] १ बढ़िया श्रेष्ठ, उत्तम । २ देखो 'धूँ-न' ।

धूँ-नि-पु० १ एक वृक्ष विशेष । २ देखो 'धुँ-नि' ।

धूँ-प-देखो 'धुँ-प' ।

धूँ-पि-देखो 'धुँ-पि' ।

धूँ-पेड़ी-देखो 'धुँ-पि' ।

धूँ-ब-पु० [फा० दुम] १ बेल के पिछले पत्तों का ऊपरी भाग । २ नर भेड़ की पूँछ पर एकत्रित मांस पिण्ड । ३ देखो 'धूँ-बी' ।

धूँ-बड़ी-१ धूँ-मड़ी' । २ देखो 'धूँ-बी' ।

धूँ-बड़-वि० [सं० धूमट] १ तीव्र प्रचण्ड । २ देखो 'धूँ-बी' ।

धूँ-बी-१ देखो 'धूँ-बी' । २ देखो 'धूँ-बी' ।

धूँ-बी-देखो 'धूँ-बी' ।

धूँ-मर-पु० [सं० धूर] गिर, मस्तक ।

धूँ-र-स्त्री० [सं० धूसरी] १ कोहरा । २ गर्द ।

धूँ-वाड़ी-देखो 'धुँ-वी' ।

धूँ-वारवण-पु० धूँ-आ, धूँ-ए का वातावरण ।

धूँ-वावाळ, धूँ-वावास-पु० [देश०] एक प्रकार का कर ।

धूँ-वो-देखो 'धुँ-वो' ।

धूँ-स-स्त्री० [सं० ध्वंस] १ बाघों की ध्वनि, घोष । २ राजा की सेवा में जागीरदारों द्वारा भेजे जाने वाले कर्मचारी । ३ प्रभाव, रीति । ४ आतंक, भय, डर, धाक । ५ घमकी, धुड़की । [सं० ध्वंसिनी] ६ फौज, सेना । ७ समूह, जुंड । ८ नगाड़े पर डंके की चोट । ९ देखो 'धूँ-सी' ।

धूँ-सली (बी)-क्रि० [सं० ध्वंसनम्] १ ध्वंस करना, नाश करना । २ गर्जना, गुराँदा । ३ गिर कर चूर होना । ४ गिर पड़ना । ५ डूबना ।

धूसरी-वि० [सं० धूसलि] (स्त्री० धूसरी) मटमैला, धुंधला ।
 धूसाली-पु० [देश०] १ गप्प, डींग । २ देखो 'धूसी' ।
 धूसी-पु० [सं० धूम] १ धातु का बना नगाड़ा । २ नगाड़ा ।
 ३ नगाड़े पर होने वाला प्रहार । ४ नगाड़ा बजाने का डंडा । ५ एक राजस्थानी लोक गीत । ६ सामर्थ्य ।
 ७ ओढ़ने का ऊनी वस्त्र विशेष ।
 धूँहर (रि, री)-देखो 'धूर' ।
 धूँही-देखो 'धुँवी' ।
 धू, धूम्र-पु० १ शिव, महादेव । २ हाथी, गज । ३ भार, बोझ ।
 ४ विचार । ५ चित्त, मन, हृदय । ६ हाथ, कर ।
 ७ शिर, मस्तक [सं० ध्रुव] ८ निश्चय । ९ दिन, दिवस ।
 १० तबले का बोल -स्त्री० ११ शब्द, ध्वनि । १२ उत्तर दिशा, ध्रुव दिशा । १३ चिता, फिक्र । १४ आग, अग्नि ।
 १५ दुत्कार, फटकार । १६ शीघ्रता करने की क्रिया या भाव । १७ जोश दिलाने की क्रिया । -वि० १ वीर, बहादुर ।
 २ निश्चय, स्थिर, अटल । ३ कांपने वाला, डरने वाला, कायर । ४ धूर्त, कपटी । ५ प्रथम, पहला । -क्रि० वि०
 १ पहले, पूर्व में । २ ओर, तरफ । ३ शीघ्र, तुरंत ।
 ४ देखो 'धी' । ५ देखो 'ध्रुव' ।
 धूयड-देखो 'धुँवी' ।
 धूअर (रि, री)-देखो 'धूर' ।
 धूआ-देखो 'धू' ।
 धूई-१ देखो 'धूणी' । २ देखो 'धुँई' ।
 धूमो-१ देखो 'धू' । २ देखो 'धुँवी' ।
 धूक-देखो 'धूक' ।
 धूकणी (बो)-क्रि० १ ध्वनि करना, बजना । २ देखो 'धूकणी' (बो) ।
 धूकल-देखो 'धूकल' ।
 धूकलणी (बो)-देखो 'धूकलणी' (बो) ।
 धूकार-देखो 'धुँकार' ।
 धूकारणी (बो)-क्रि० ध्वनि करना, बजाना ।
 धूकारव-१ देखो 'धूकार' । २ देखो 'धुँकार' ।
 धूखण, धूखल-देखो 'धूकल' ।
 धूखलणी (बो)-देखो 'धूकलणी' (बो) ।
 धूड, धूडि, धूडिया, धूडोड, धूडोड, धूडोडी, धूडी-स्त्री०
 [सं० धूल] १ मिट्टी, रेणु । रज. गर्व । २ निरर्थक वस्तु ।
 -कोट-पु० मिट्टी का बना कच्चा किला । -गढ़-पु० मोर्चे
 के लिये बनी धूल की दीवार । धूल का गढ़ ।
 धूज-स्त्री० [सं० धू] कंपन, थरीहट ।
 धूजट (टि, टी)-देखो 'धूरजटी' ।
 धूजण (रि, री)-स्त्री० कांपने, थरने की क्रिया या भाव, कंपन ।
 धूजणी (बो)-क्रि० [सं० धू] १ कांपना, थरना । २ भय
 खाना, डरना । ३ हिलना-डुलना । ४ आन्दोलित होना ।

धूजाणी (बो), धूजावली (बो)-देखो 'धुजाणी' (बो) ।
 धूजी-देखो 'ध्रुव' ।
 धूस-देखो 'धूस' ।
 धूसणी (बो)-देखो 'धुसणी' (बो) ।
 धूसण, धूसणल-पु० १ सुमेरु पर्वत । २ देखो 'धुसणल' ।
 धूणी, धूणी-देखो 'धूणी' ।
 धूणी (बो)-देखो 'धूणी' (बो) ।
 धूत-वि० [सं० धूर्त, अवधूत] १ उन्मत्त मस्त । २ पागल ।
 ३ मोढ़ा, वीर । ४ देखो 'धूरत' । ५ त्यागी, वंरागी ।
 धूतईल, धूतईल-देखो 'धूत' ।
 धूतणी (बो)-क्रि० [सं० धूत] धूर्तता करना, ठगना ।
 धूतण-स्त्री० [सं०] काशी की एक छोटी प्राचीन नदी ।
 धूतारण-पु० [सं० ध्रुव+तारण] विष्णु, ईश्वर, परमेश्वर ।
 धूतारणी (बो)-क्रि० [सं० धूर्तम्] भड़काना, सिखाना ।
 धूतारी-स्त्री० [सं० धूर्तम्] पृथ्वी, घरती । -वि० ठगने वाली,
 ठगारी । चालाक, दुष्टा ।
 धूतारी-१ देखो 'धूत' । २ देखो 'धूरत' ।
 धूती-स्त्री० शाक विशेष । -वि० ठगने वाली, चालाक, दुष्टा ।
 धूती, धूती-१ देखो 'धूत' । २ देखो 'धूरत' ।
 धूडक-वि० निडर, निभंघ ।
 धूडई, धूडई, धूडई, (डै)-वि० [सं० ध्रुव+धट] १ अटल,
 दृढ़ । २ निडर, निभंक । ३ चौड़े में, खुले आम ।
 धूधर-पु० शरीर, दह ।
 धूधल-देखो 'धूधल' ।
 धूधलणी (बो)-देखो 'धूधलणी' (बो) ।
 धूधरण-वि० [सं० ध्रुव+धारण] अटल, स्थिर, दृढ़ ।
 धूधर-पु० जोर से चिन्ताने की क्रिया ।
 धूधकट-देखो 'धूधकट' ।
 धूधकार-अव्य० १ अधिकता बोधक अव्यय शब्द । २ देखो
 'धूधकार' ।
 धून-स्त्री० [सं० धून] १ धुने की क्रिया या भाव । २ देखो
 'धून' । ३ देखो 'धून' ।
 धूनी-१ देखो 'धून' । २ देखो 'धूणी' ३ देखो 'धून' ।
 धूनी-पु० १ जाति विशेष का थोड़ा । २ देखो 'धून' ।
 धूप-पु० [सं०] १ देव मूर्ति आदि के सम्मुख जलाने का घग्ग-
 जवन आदि नृगंध द्रव्य । २ नृगंध द्रव्यों का मिश्रण,
 धूप । ३ सूर्य का प्रकाश, आलोक । -स्त्री० ४ तयवार,
 खड्ग । -घड़ी स्त्री० घप क घाघार पर गमय का जान
 कराने वाला यंत्र । -धडी-स्त्री० धूपदानी । -छाया-स्त्री०
 कहीं पर हल्का व कहीं गहरा दिखने वाला धस्त्र ।
 धूपट स्त्री० आनन्द, भोज व खाने-पीने की मस्ती की अवस्था ।

धूपदरणी (बो)—क्रि० १ धूप खर्च करना, वितरण करना ।

२ अधिकार में करना । ३ लुटना । ४ आनन्द मनाना, खुशी मनाना, मीज करना ।

धूपणी—देखो 'धूपियो' ।

धूपणी (बो)—क्रि० [सं० धूप] १ धूप आदि सुगंधित द्रव्य जलाना । २ मृग्य के आतप में रखना, धूप देना ।

धूपत—पु० [सं० ध्रुव-पति] ध्रुव के स्वामी, विष्णु ।

धूपदान (बांती, धाणउ)—पु० १ धूप रखने का पात्र । २ धूप जलाने का पात्र ।

धूपधारकी—वि० तलवारधारी योद्धा । -पु० मृग्य, भानु ।

धूपवत्ती—स्त्री० [सं० धूपवर्ती] धूप द्रव्यों की बनी बत्ती, अगरबत्ती ।

धूपहट—देखो 'धूपघटी' ।

धूपा—देखो 'धूप' ।

धूपारणी—देखो 'धूपियो' ।

धूपियो, धूपेड़ी, धूपेणी—पु० १ धूप दान, धूप करने का पात्र । २ धूप-दीप ।

धूपेरण—पु० सखई या गुग्गुल का वृक्ष ।

धूपेरणी—देखो 'धूपियो' ।

धूपेल—पु० गुग्गुल का तेल ।

धूब—स्त्री० १ पानी में डुबकी लगाने की क्रिया या भाव । २ घोड़े की पीठ पीछे का भाग जहाँ दुमची बंधती है । ३ देखो 'दोब' ।

धूबक—स्त्री० १ मानसिक आघात, श्रवका । २ बन्दूक छूटने का शब्द ।

धूबकी—पु० १ भारी वस्तु के गिरने का शब्द, घमाका । २ देखो 'धूबक' ।

धूबड़-नाथ—पु० नाथ सम्प्रदाय का एक मित्र ।

धूबणी (बो)—देखो 'धुवणी' (बो) ।

धूबाक—स्त्री० १ नीचे की ओर कूदने, छलांग लगाने की क्रिया या भाव । २ देखो 'धूबक' ।

धूबो—वि० १ संहारक विध्वंसक । २ मारने वाला । ३ देखो 'धोबो' ।

धूपगर—पु० [सं०] आग, अग्नि ।

धूमंडल—पु० [सं० ध्रुव मंडल] १ एक पौर्वाणिक लोक विशेष । २ संसार । ३ ध्रुव तारा की दिशा, उत्तर ।

धूम—पु० [सं० धूमः] १ धुंआ, धूम । २ युद्ध । ३ उच्छ्वस-गुद, उत्पात । ४ शरारत, उद्वेगता । ५ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला । ६ कोलाहल, जनरव । ७ कोई बड़ा समागोह । ८ ख्याति, चर्चा, प्रसिद्धि । ९ आहार-दाता की निंदा करने का एक श्लोक । (जैन) १० देखो 'धोम' । -वि० १ धुंए के समान । २ काला, श्याम । -क्रि०-वि० जोर-शोर से,

धूम-धाम से ।

धूमआलम—पु० [सं० धूमअलि] भीम, भ्रमर ।

धूमकधैया—स्त्री० १ उच्छ्वस-गुद, बदमाशी, उद्वेगता । २ शोर गुल हल्ला-गुल्ला । ३ लड़ाई, टंटा ।

धूमकेतन, धूमकेतु—पु० [सं० धूमकेतु] १ आग, अग्नि । २ उत्का, पुच्छलताग । ३ केतु-ग्रह । ४ शिव, महादेव । ५ राक्षस की मेता का एक राक्षस । ६ पूछ पर भंवरी वाला घोड़ा ।

धूमड़ी—देखो 'धूमडी' ।

धूमज—पु० [सं०] १ वादन, मेघ । २ नागरमोघा ।

धूमड़ी—पु० मारवाड़ की एक पर्वत श्रेणी ।

धूमधड़की, धूमधड़ाकी—पु० धूम-धाम ।

धूमधज—स्त्री० [सं० धूमध्वज] अग्नि, आग ।

धूमधर—पु० [सं०] आग, अग्नि ।

धूम-धोम—स्त्री० १ लुकी प्रमत्ता की चहल-पहल । ठाट-ठाट, गाजे-बाजे । २ कोई बड़ा समागोह, मेला ।

धूममारग—पु० आग रास्ता, चहल-पहल वाला रास्ता ।

धूमर—पु० [सं० धूर] १ शिर, मस्तक । २ एक असुर का नाम । ३ देखो 'धूम्र' । -स्त्री० ४ विशेष रंग की गाय । -वि० काला, श्याम ।

धूमरक—पु० [सं० धूम्र] अंधेरा ।

धूमरतन—पु० [सं० धूम्र-तन] धुंआ उत्पादक, अग्नि, आग ।

धूमराई—पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

धूमनोनन (न्न)—पु० [सं० धूम्रनोनन] १ शुभ नामक दैत्य का सेनापति । २ द्यूतर, कपोल ।

धूमचिराल—स्त्री० उच्छ्वसास, आह ।

धूमसी—पु० धुंआ, धूम ।

धूमाळी—पु० सर्दी में मोढ़ने का मोटा वस्त्र । -वि० मोटा-ताजा ।

धूमावती—स्त्री० [सं०] दश तांत्रिक महाविद्याओं में से एक ।

धूमोरण, (प)—पु० यमराज ।

धूमो—पु० गोल ककड़ी विशेष ।

धूम्र—पु० [सं०] १ धुंआ, धूम । २ कलित ज्योतिष का एक योग । ३ पाप गुनाह । ४ धूप । ५ राम की सेना का एक भालू ।

६ दुष्टता । ७ नगीनों का एक श्लोक । ८ अंधकार ।

-वि० १ धुंए के रंग का, भूरा । २ काला । ३ कैमनी ।

--केतु= 'धूमकेतु' । --पान—पु० ओषधि का धुंआ भास से खींचने की क्रिया या भाव । बीड़ी-तम्बाकू आदि सेवन करने की क्रिया ।

धूम्रक—पु० [सं० धूम्रकः] ऊँट, उष्ट्र, कमलक ।

धूम्राक्ष—पु० [सं०] वार व नक्षत्रों संबंधी १८ योगों में से तीसरा योग ।

धूप, धूपर—१ देखो 'धू' । २ देखो 'धो' ।

धूर-देखो 'धूड़' ।

धूरज-पु० [सं० धूर्यः] १ यज्ञ । २ घोड़ा, बाजि ।

धूरजट, (टि, टी, टू, ट्री)-पु० [सं० धूर्जटि] १ शिव, महादेव
२ बट वृक्ष ।

धूरणी (बी)-क्रि० [सं० ध्वरति] १ उलझ होना, खिल होना ।
२ विरह करना ।

धूरत-वि० [सं० धूर्त] १ धोखेबाज, वंचक । २ ठग, चालाक ।
३ पाखंडी, ढोंगी । ४ मायावी । ५ दुष्ट, खल, नीच ।
६ उन्मादी, उपद्रवी । ७ जुमारी । ८ दाव-पेच लगाने
वाला । ९ गुण्डा, दादा । -पु० १ धतुरा । २ चोर नामक
मंघ द्रव्य । ३ साहित्य में एक प्रकार का नायक ।
-चरित-पु० धूर्तों का चरित्र । ढोंग ।

धूरतक-पु० [सं० धूर्तक] १ धूर्तता करने वाला व्यक्ति । जुमारी ।
२ गीदड़, शृगाल ।

धूरतता, धूरतताई-स्त्री० [सं० धूर्तता] १ वंचकता, चालबाजी,
चालाकी । २ माया । ३ धोखा । ४ पाखंड । ५ गुण्डागर्दी ।

धूरतसबल-पु० [सं० धूर्त-सबल] बहत्तर कलाओं में से एक ।
धूरती-वि० १ धूर्तता करने वाला । २ देखो 'धूरतता' ।

धूरधर-पु० [सं० धूर्धर] बोझा ढंभने वाला मजदूर, भारवाही,
कुली ।

धूरां-क्रि० वि० ऊपर, ऊंचाई पर ।

धूरा-देखो 'धूरा' ।

धूरि (री), धूळ, धून-देखो 'धूड़' ।

धूळकोट-देखो 'धूड़कोट' ।

धूळघोषा-स्त्री० [सं० धूलि-धौत] स्वर्णकारों की एक शाखा ।

धूळपांचम-स्त्री० [सं० धूलि-पंचमी] चैत्र कृष्ण पंचमी ।

धूळरोट-पु० नाथ सम्प्रदाय के योगी की मृत्यु के तीसरे दिन
किया जाने वाला एक भोज विशेष ।

धूळहड़ी, धूळहरी-देखो 'धूळेरी' ।

धूळि-देखो 'धूड़' ।

धूळिधूआ-स्त्री० १ एक प्राचीन जाति विशेष । २ गेहूँ की
बोवाई का एक ढंग ।

धूळिगामात-पु० [सं० धवल-भक्त] पाणिग्रहण के पूर्व बरस
को दिया जाने वाला भोज ।

धूळिपालुहार-स्त्री० लुहारों की एक शान्वा ।

धूळिहड़ी-देखो 'धूळेरी' ।

धूळी-देखो 'धूड़' ।

धूळीयौ-पु० एक वृक्ष विशेष ।

धूळेड़ी, धूळेट्टी, धूळेरी-स्त्री० [सं० धूलि] होली के दूसरे दिन
का त्योहार, इस दिन को खेला जाने वाला फाग ।
२ फाल्गुन मास की शुक्ल प्रतिपदा ।

धूव-१ देखो 'धूप' । २ देखो 'धुव' ।

धूवखी (बी)-क्रि० आनोक्ति होना, प्रकाशित होना ।

धूवाजार, धूवघोर-देखो 'धुआंजार' ।

धूवेल-स्त्री० एक लता विशेष ।

धूवी-देखो 'धुवी' ।

धूस-स्त्री० [सं० धूमिनी] १ सेना, फौज । २ समूह, झुण्ड ।
३ देखो 'धूसी' । ४ देखो 'धूस' ।

धूसकी-पु० ध्वनि, आवाज ।

धूसर-वि० [सं०] १ मटमैले या धूल के रंग का । २ धूल से
भरा, धूल सना । ३ धुंधला । ४ भूरा । -पु० १ मटमैला या
भूरा रंग । २ इस रंग का घोड़ा । ३ गधा । ४ ऊँट ।
५ कवुतर । ६ तेली ।

धूसरी-स्त्री० [सं० धूसर] धूलि, रज । -वि० धूसर रंग की ।

धूसल-पु० [देश०] लड़ाई, टंटा ।

धूसली-स्त्री० [सं० धूसर] धूलि, रज ।

धूहकार-देखो 'धाऊकार' ।

धूहड़-देखो 'धूड़' ।

धूँकट-पु० तबले का एक बोल ।

धूँग-देखो 'ध्रुंग' ।

धे-पु० [सं०] १ पारसनाथ । २ वृक्ष, पेड़ । ३ धर्म । ४ पति ।
५ कार्यक्रम । -स्त्री० ५ धरती, भूमि ।

धेप्रभाग-पु० [सं० धेयभाग] धर्म ।

धेऊ-वि० [देश०] १ सहायक, मददगार । २ उत्तरदायित्व
लेने वाला ।

धेक-देखो 'धेन' ।

धेकिणी, धेकी-देखो 'धेखी' ।

धेख-स्त्री० [सं० द्वेष] १ शत्रुता, वैर । २ द्वेष, डाह, ईर्ष्या ।
३ प्रतिस्पर्धा, होड़ ।

धेखिया-देखो 'दोखी' ।

धेखी-देखो 'दोखी' ।

धेग-देखो 'दिगची' ।

धेटाई-देखो 'धीटाई' ।

धेटा, धेट-देखो 'धीठ' । (स्त्री० धेट्टी)

धेट्टाई-देखो 'धीटाई' ।

धेठो-देखो 'धीठ' ।

धेणु-देखो 'धेनु' ।

धेधगर, धेधगर, धेधौग, धेधौगड़, धेधौगर, धेधौग,
धेधौगर-देखो 'धेधौगर' ।

धेनंजय-देखो 'धनंजय' ।

धेन-पु० [सं०] १ समुद्र । २ नद । ३ देखो 'धेनु' ।

धेनक-देखो 'धेनुक' ।

धेनड़िया-पु० १ गोवत्स, बछड़ा । २ पुत्र, बेटा ।

धेनु

(७१४)

धोती

धेनु-स्त्री० [सं०] १ गौ, गाय । २ दुधारा गाय । ३ पुरुष वाची शब्द को स्त्री वाची बनाने वाला एक प्रत्यय । ४ पृथ्वी । ५ देखो 'धनु' ।

धेनुक-पुं० [सं०] १ एक तीर्थ का नाम । २ एक अमुर । ३ मोलह रत्न यंत्रों में से एक ।

धेनु-देखो 'धेनु' ।

धेनु-पुं० [देश०] डेर ।

धेनु-वि० [सं०] १ धारण करने योग्य, धार्य । २ ध्यान देने योग्य, ध्यान करने योग्य । -स्त्री० [सं० धोता] १ पृथ्वी, लक्ष्मी । २ उद्देश्य, लक्ष्य ।

धेनु-अर्थ० हाथी को संकेत देने का मध्यय शब्द । -पुं० [देश०] एक जाति विशेष ।

धेनु-देखो 'धेनु' ।

धेनु-देखो 'धेनु' ।

धेनु-स्त्री० १ पानी में कूदने या छलांग लगाने की क्रिया । डुबकी, गोता । २ एक जाति विशेष का घोड़ा ।

धेनु, धेनु-स्त्री० १ बड़ी रोटी । २ देखो 'धेनु' ।

धेनु-पुं० १ रावण, दशानन । २ गदन, श्रीवा । ३ सुधीव । ४ आश्रय ।

धेनु-देखो 'द्रह' ।

धेनु-स्त्री० (बी)-क्रि० मारना, पीटना ।

धेनु-पुं० [सं० द्रह-काल] भयंकर दुर्मिष्ट ।

धेनु, धेनु-स्त्री० [सं० द्रह] १ नदी में अधिक गहराई वाला स्थान । २ पानी का गड्ढा, पोखर । ३ बड़ा व गहरा खड्डा । ४ कच्चा, वृथा । ५ कूए का खड्डा । ६ पशुओं का खाद्य पकाने का मिट्टी का बना बड़ा बर्तन ।

धेनु-वि० १ बहुत गहरा । २ असीम, अपार (जल) ।

धेनु, धेनु-स्त्री०, धेनु-देखो 'धेनु' ।

धेनुगर, धेनुगर, धेनुग, धेनुगड, धेनुगर, धेनुग, धेनुगर-पुं० [देश०] १ हाथी, मज । २ सांप, नाग । ३ ऊट ।

-वि० १ बड़े डील-डौल का, विनाशनाथ, भीमकाय । २ प्रचण्ड, जबरदस्त ।

धेनु-वि० गाय से उत्पन्न गाय का । -स्त्री० गाय ।

धेनु-देखो 'धेनु' ।

धेनु-देखो 'द्रह' ।

धेनु-स्त्री० (बी)-देखो 'द्रहणी' (बी) ।

धेनु-पुं० [देश०] मिट्टी आदि का बना बड़ा जल पात्र ।

धेनु-पुं० [सं०] मनीष ममरगम का छटा स्वर ।

धेनु-देखो 'द्रह' ।

धेनु, धेनु-स्त्री० १ होलक आदि वायों की ध्वनि । २ धनुष की डोर की ध्वनि, टंकार ।

धेनु-देखो 'धेनु' ।

धो-पुं० १ धर्म । २ सागर, समुद्र । ३ लकट । ४ धर्म ।

५ वृषभ, बैल । -वि० सुखद ।

धोअणी (बी)-देखो 'धोअणी' (बी) ।

धोअकार-देखो 'धोअकार' ।

धोअ-पुं० १ नमस्कार, प्रणाम । २ धव वृक्ष ।

धोअ-पुं० तराजू का झुकाव ।

धोअड़ी, धोअड़ी-देखो 'धोअ' ।

धोअणी (बी)-क्रि० [सं० धोअ] नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

धोअणी (बी)-क्रि० १ गरजना । २ दहलाना, दहाड़ना ।

धोअ-धोअ-स्त्री० धोअ देने का कार्य, धूर्तता, विश्वासघात ।

धोअपती धोअबाज-वि० धोअ देने वाला, कपटी, धूर्त ।

धोअ-देखो 'धोअकार' ।

धोअबाजी-स्त्री० छल, कपट, धूर्तता ।

धोअ-पुं० [सं० धोअता] १ भ्रम, भुलाव । २ छल, कपट ।

३ चालाकी, धूर्तता । ४ विश्वासघात, धोअ ।

५ पञ्चाताप । ६ मानसिक आघात । ७ चिंता, सोच, फिक्र । ८ मिथ्याभास । ९ माया, दिखावटी वस्तु ।

१० अज्ञान । ११ अनिष्ट की आशंका । १२ अक, संशय, संदेह । १३ भय, डर । १४ त्रुटि, चूक ।

१५ अज्ञान । १६ अनिष्ट की आशंका । १७ अक, संशय, संदेह । १८ भय, डर । १९ त्रुटि, चूक ।

धोअ-देखो 'धोअ' ।

धोअणी (बी)-देखो 'धोअणी' (बी) ।

धोअबाज-देखो 'धोअबाज' ।

धोअबाजी-देखो 'धोअबाजी' ।

धोअ-देखो 'धोअ' ।

धोअ-१ देखो 'धोअ' । २ देखो 'धोअ' ।

धोअ-वि० [सं० धोअ] १ वीर, बहादुर । २ डाकू, लुटेरा ।

३ देखो 'धोअ' ।

धोअ-देखो 'धोअ' ।

धोअ-देखो 'धोअ' ।

धोअ-पुं० १ प्रवाह, धारा । २ बड़ा कौआ, काला कौआ ।

धोअ (बी)-क्रि० [सं० धोअ] १ पानी आदि से धोना, प्रक्षालन करना । २ स्वच्छ व निर्मल करना । ३ मिटाना, दूर करना ।

धोअ, धोअ-देखो 'धोअ' ।

धोअपणी-पुं० जलाशय में कूदने की क्रिया या भाव ।

धोअपणी-पुं० [सं० धोअपणी] पुरुषों के पहनने का अधोवस्त्र विशेष, धोती ।

धोअ, धोअ, धोअ, धोअ-स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] १ पुरुषों का अधोवस्त्र विशेष । २ साड़ी । [सं० धोअ] ३ शरीर शुद्धि के लिए हठयोग की एक क्रिया । ४ योगिक क्रिया में काम आने वाली वस्त्र पट्टिका ।

धोघर-पु० ठोड़ी ।

धोघीगर-देखो 'धौघीगर' ।

धोघ-देखो 'धौघ' ।

धोपटो-पु० दावन का खाना ।

धोपणी(बी)-क्रि० १ डराना, धमकाना । २ देखो 'धोणी'(बी)

धोपाणी (बी), धोपावणी (बी)-क्रि० १ डरवाना, धमकवाना ।
२ देखो 'धुपाणी' (बी) ।

धोब-स्त्री० १ धोने की क्रिया, धुलाई । २ देखो 'दोब' ।

धोबण-स्त्री० १ धोबी जाति की स्त्री । २ कपड़े धोने का व्यवसाय करने वाली स्त्री । ३ एक पक्षी विशेष ।

धोबी-पु० [सं० धावक] (स्त्री० धोवण) कपड़े धोकर जीविका कमाने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति । —घट्टी, घाट, घाटी-पु० जलाशय का वह किनारा जहाँ धोबी कपड़े होते हैं । कपड़े धोने का स्थान । —पछाड़-स्त्री० कपड़े को पछाड़ने की क्रिया । कुश्ली का एक पेच ।

धोबी-पु० १ दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाई गई मुद्रा, अंजलि । २ अंजलि में समाने लायक पदार्थ ।

धोमग-देखो 'धूमगर' ।

धोम-पु० [सं० धूमः] १ अग्नि, आग । २ वायु, हवा । ३ तोप । ४ तोप की आवाज । ५ क्रोध, कोप । ६ देखो 'धूम' ।
—वि० १ बड़ा, महान् । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ तेज, तीव्र । ४ प्रचण्ड, भयंकर । —झळ झळ-पु० अग्नि, आग । ताप । —पाव-पु० धूपदान । —बाण-स्त्री० एक प्रकार की तोप । —मारग=धूममारग ।

धोमर-पु० १ भस्मागुर नामक राक्षस । २ धूम, धुआँ ।

धोमरिख-पु० [सं० धूम-ऋषि] पराशर ऋषि का एक नामान्तर ।

धोमानळ-स्त्री० [सं० ध्रुमानल] आग, अग्नि ।

धोमारिख-देखो 'धोमरिख' ।

धोयल-पु० [सं० धावनम्] १ धोना, साफ करने की क्रिया । २ देखो 'धोवण' ।

धोयी-धायी-वि० १ साफ सुथरा, स्वच्छ । २ निष्कलंक, निर्मल ।

धोरंमनाथ-पु० १ विष्णु का एक नाम । २ एक तीर्थ विशेष ।

धोर, धोरड़ी, धोरड़ी-देखो 'धोरी' ।

धोरण, धोरण (णी)-स्त्री० [सं० धोरणम्] १ घोड़े की चाल विशेष । २ सवारी, यान । ३ पक्ति, कतार ।
४ श्रेणी । ५ परंपरा ।

धीरणी-देखो 'धीरणी' ।

धीराऊ-देखो 'धुगाऊ' ।

धीराळी-पु० [सं० धोरणिः] १ कोर, गोटे आदि से सज्जित वस्त्र । २ गोटे की बनी पट्टी ।

धीरिउ-देखो 'धोरी' ।

धीरिखी-पु० [सं० धूरः] १ करघे का एक उपकरण । २ देखो 'धोरी' ।

धीरीघर-देखो 'धुरंधर' ।

धीरी पु० [सं० धोरेय] १ बैल, वृषभ । २ देखो 'धोरी' ।
—वि० १ मुखिया, अगुवा, प्रधान । २ भार उठाने वाला ।

धीरीथाप (यापी)-पु० [सं० धूर-स्थाप] खनिहान में प्रथम बार साफ किये अनाज का ढेर । —वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।

धीरीघर-पु० [सं० धूरंधर] बैल, वृषभ ।

धीरीभाव-पु० [सं० ध्रुव-भाव] सामान्य तौर पर स्थिर दर ।

धीरे (रे)-क्रि०वि० [देश०] निकट, समीप, पास ।

धीरी-पु० [सं० धोरणि] १ स्त्रियों के वस्त्रों पर शोभा के लिए लगने वाली कोर, रोट आदि । २ मार्ग, रास्ता । ३ प्रवाह । ४ लहर । ५ लपट । ६ भीका । ७ परिस्थिति, वातावरण । ८ घूल का टीबा, भीटा, दूह । ९ खेत के किनारे-किनारे बनी मिट्टी को पाज । मेढ़ । १० जल प्रवाह रोकने का बाध । ११ क्यारियों में पानी देने की नाली । १२ तट, किनारा ।

धोवण-पु० [सं० धावनम्] १ पात्र में चिपकी वस्तु को धोकर निकाला हुआ पानी । २ पानी या तरल पदार्थ, जिसमें कुछ धोया गया हो । ३ धोने की क्रिया या भाव । ४ मृतक की भस्मी नदी या तीर्थ स्थान में डाल कर संबंधियों को दिया जाने वाला भोज ।

धोवणी-स्त्री० [सं० धावनिका] १ धोने की क्रिया या भाव । २ धोने की कला । ३ धोने का उपकरण ।

धोवणी (बी)-देखो 'धोणी' (बी) ।

धोवती-देखो 'धोती' ।

धोवन (नु, नू)-देखो 'धोवण' ।

धोह-पु० [सं० द्रोह] १ धोखा, दगा । २ देखो 'द्रोह' ।

धौकणी-स्त्री० [सं० ङमा] १ फूंक कर आग सुलगाने की नलिका भायी । फूंकनी । २ देखो 'धमणी' ।

धौकणी (बी)-क्रि० १ नली द्वारा फूंक लगाकर आग सुलगाना, फूंकना । २ फूंक मारना ।

धौकळ-देखो 'धूंकळ' ।

धौकळणी (बी)-देखो 'धौकळणी' (बी) ।

धौकार-देखो 'धौंकार' ।

धौखळ-देखो 'धूंकळ' ।

धौखळणी (बी)-देखो 'धौकळणी' (बी) ।

धौचक (वक)-देखो 'धमचक' ।

धौस-देखो 'धूस' ।

धौसर, धौसो-देखो 'धूपी' ।

धौ-पुं० १ बैल । २ धर्म । ३ तट, किनारा । -स्त्री०
४ बाणी । ५ धरती ।

धौक-पुं० पर्व ।

धौकळ-देखो 'धौकळ' ।

धौकळणी (बो)-क्रि० [देश०] १ युद्ध करना, लड़ाई करना ।
२ ध्वंस करना, नष्ट करना । ३ प्रहार करना, मारना ।
४ उत्पात करना, उत्पन्न करना ।

धौकार-देखो 'धौकार' ।

धौखळ-देखो 'धौखळ' ।

धौखळणी (बो)-देखो 'धौकळणी' (बो) ।

धौड़-वि० [देश०] १ रक्षा करने वाला, रक्षक । २ देखो 'दौड़' ।
-स्त्री० १ जिह्वा, हठ । २ ध्वनि विशेष ।

धौड़्य, धौड़्य-पुं० वेग ।

धौत, धौति (नी)-वि० [सं०] १ धुला हुआ । २ देखो 'धौती' ।

धौप-स्त्री० १ जोश नरी व डरावनी आवाज । २ आतक,
भय, रोव । ३ तलवार, खड्ग । ४ घुलाई ।

धौपटणी (बो), धौपटणी (बो)-क्रि० [देश०] १ उपद्रव करना,
लूटना । २ अधिकार या कब्जा करना । ३ लूट खूब करना ।
४ आनन्द मनाना ।

धौफ-देखो 'धौफ' ।

धौम देखो 'धूम' ।

धौमधून-देखो 'धूमधून' ।

धौमाळ स्त्री० अग्नि, आग ।

धौम्य-पुं० [सं०] एक ऋषि ।

धौरंग वि० [देश०] लहु-लुहान व क्षत-विक्षत ।

धौरितक-पुं० [सं० धौरितकम्] घोड़े की पांच चालों में
से एक ।

धौळ-पुं० [देश०] १ शिर, मस्तक । २ देखो 'धौळ' ।
३ देखो 'धौळी' । ४ देखो 'धौळख' ।

धौल-पुं० हाथ के पंजे का भारी आघात, यत्पड़ ।

धौळक-देखो 'धौळख' ।

धौलक, धौलकी-देखो 'धौलक' ।

धौलकी-देखो 'धौलक' ।

धौळ-स्त्री० [सं० धवल] मकानों पर पृताई करने की श्वेत
मिट्टी ।

धौळगिर (गिरि, गिरी)-देखो 'धौळगिर' ।

—रांणी-देखो 'धौळगिररांणी' ।

धौळजीभी-पुं० सफेद जीभ का रंग ।

धौळण-स्त्री० [सं० धवल] १ मकान पोतने की श्वेत मिट्टी,
चूना । २ मकान पोतने की क्रिया ।

धौळणी (बो)-देखो 'धौळणी' (बो) ।

धौळी-स्त्री० [सं० धवल] गाय ।

धौळपूँछियो-पुं० [सं० धवल-पुच्छ] १ एक प्रकार का घास ।
२ वह बैल जिसकी पूँछ के बाल श्वेत हों ।

धौळहर-देखो 'धौळहर' ।

धौळा-स्त्री० [सं० धवल] डोलियों की एक शाखा ।

धौळगर (गिर, गिरि)-देखो 'धौळगिरि' ।

धौळहार-देखो 'धौळहर' ।

धौळियो-वि० १ नीर नेजा जाह का एक विशेषण ।
२ देखो 'धौळी' ।

धौळेरण-देखो 'धौळेरण' ।

धौळहर, धौळहर-देखो 'धौळहर' ।

धौळी-पुं० [सं० धवल] १ एक प्रकार का श्वेत पत्थर ।
२ श्वेत बाल । ३ श्वेत प्रदर, सोम रोग । -वि० (स्त्री०
धौळी) १ श्वेत, सफेद । २ देखो 'धौळ' । ३ देखो
'धौळख' ।

धौळी-पुं० [सं० धवल] १ सफेद धव के समान छोटा वृक्ष ।
२ देखो 'धौळी' । ३ देखो 'धौळ' ।

ध्यान-पुं० [सं० ध्यान] १ अन्तःकरण में उपस्थित करने की
क्रिया या भाव । २ मन व इन्द्रियों को केन्द्रित करने की
क्रिया या भाव । ३ ईश्वर या किसी ईष्ट का एकाग्रचित्त से
चिन्तन । ४ चिन्तन, मनन । ५ मानसिक प्रत्यक्ष । ६ खयाल,
विचार, चेतना । ७ दिव्य अन्तर्ज्ञान । ८ बुद्धि, समझ ।
९ प्रगाढ़, चिन्ता । १० स्मृति, याद । ११ मनोयोग से देखने
व समझने की क्रिया या भाव । १२ योग के आठ अंगों में
से एक । १३ बहतर कलाओं में से एक ।

ध्यान-जोग-पुं० [सं० ध्यानयोग] १ वह योग विषय में ध्यान
मुख्य हो । २ एक तांत्रिक क्रिया ।

ध्यान-धारण-पुं० [सं० ध्यानधारिन्] १ शिव, महादेव ।
२ योगी ।

ध्यानवंत-वि० [सं० ध्यानवत्] जो किसी का ध्यान कर रहा हो ।

ध्यान्ती-वि० [सं० ध्यान्तिन्] १ ध्यान लगाने वाला, ध्यान करने
वाला । २ ध्यानयुक्त, समाधिस्थ ।

ध्यान्तु-देखो 'ध्यान' ।

ध्याग (गि)-देखो 'धियाग' ।

ध्याणी (बो)-क्रि० १ ईश्वर या किसी देव का ध्यान
करना, मानना, ईष्ट रखना । २ सेवा-पूजा करना ।
३ देखो 'ध्याणी' (बो) ।

ध्याता-वि० ध्यान करने वाला ।

ध्यावणी (बो)-देखो 'ध्याणी' (बो) ।

ध्यावना-देखो 'ध्यावना' ।

ध्येय-वि० [सं०] १ ध्यान करने योग्य । २ जिसका ध्यान किया
जाय ।

धंखळ-देखो 'धंखळ' ।

ध्रंग, ध्रंगड़ी-देखो 'द्रंग'।

ध्रम-देखो 'धरम'।

ध्र-देखो 'ध्रुव'।

ध्रग(ग)-वि० १ वड़ा। २ देखो 'ध्रिक'।

ध्रगध्रणी-देखो 'ध्रगधनी'।

ध्रतकेतु-पु० [सं०] वसुदेव का वहनोई।

ध्रतदेवा-स्त्री० [सं० धृतदेवा] देवक की एक कन्या का नाम।

ध्रतराष्ट्री-स्त्री० [सं० धृतराष्ट्री] १ धृतराष्ट्र की पत्नी।

२ कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओं में से एक।

ध्रति, ध्रती-स्त्री० [सं० धृति] १ धरने, धारण करने की क्रिया।

२ पकड़ने की क्रिया या भाव। ३ स्थिरता, ठहराव।

४ धीरता, धैर्य। ५ संतोष। ६ मन की दृढ़ता।

७ आनन्द, खुशी। ८ चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

९ फलित ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक। १० राजा जयद्रथ का पौत्र। ११ देखो 'धरती'।

ध्रतु-वि० [सं० धृत] १ ग्रहण किया हुआ, धारित। २ पकड़ा हुआ, धरा हुआ। ३ गिरा हुआ, पतित। ४ स्थिर, निश्चित।

ध्रपण-पु० तृप्ति, संतोष।

ध्रव-पु० नक्कारे का शब्द, आवाज।

ध्रमकणी, (बी)-देखो 'ध्रमकणी' (बी)।

ध्रम-१ देखो 'धरम'। २ देखो 'ध्रम'। —आत्मा= 'ध्रमात्मा'।

ध्रमक-देखो 'ध्रमक'।

ध्रमजगर, ध्रमजघड़-देखो 'ध्रमजगर'।

ध्रमपाळ-देखो 'ध्रमपाळ'।

ध्रमराज, (राय)-देखो 'ध्रमराज'।

ध्रमताम-देखो 'ध्रमताम'।

ध्रमसील-देखो 'ध्रमसील'।

ध्रमी-देखो 'ध्रमी'।

ध्रम्म-देखो 'धरम'।

ध्रवण-पु० [सं० द्रव] मेघ, बादल।

ध्रवणी (बी)-क्रि० [सं० द्रव] १ तृप्त करना; संतुष्ट करना।

२ बूंदों की तरह टपकना। ३ बरसना। ४ द्रवित होना।

५ अधिक उदार होना। ६ मारना, संहार करना।

ध्रवान-देखो 'ध्रवान'।

ध्रसंडी-वि० जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली।

ध्रसकणी (बी)-देखो 'ध्रमकणी' (बी)।

ध्रसकाणी (बी), ध्रसकावणी (बी)-देखो 'ध्रसकाणी' (बी)।

ध्रसकणी, (बी)-क्रि० १ भयभीत होना, कांपना। थराना।

२ देखो 'ध्रमकणी' (बी)।

ध्रसटी-१ देखो 'ध्रिस्टी'। २ देखो 'ध्रिस्ट'।

ध्रसहसणी, (बी)-देखो 'ध्रमकणी' (बी)।

ध्रमुडणी (बी)-क्रि० हांकना, चलाता।

ध्रसकणी (बी)-क्रि० १ ढोल आदि वाद्यों का बजना। २ भयभीत होना, कांपना। ३ देखो 'ध्रसकणी' (बी)।

ध्रसकाणी (बी), ध्रसकावणी (बी)-क्रि० १ ढोल बजाना।

२ भयभीत करना, कांपित करना।

ध्रस्ट-पु० [सं० द्रष्ट, धृष्ट] १ ताम्र, तांबा। २ वेवफा

पति या प्रेमी। -वि० १ निर्लज्ज, वेशमं। २ बार-बार

अपमान सह कर भी नायिका से लगा रहने वाला नायक।

३ वेवफा। ४ दूरगृही, हठी। ५ अभिमान। ६ लंपट।

ध्रस्टकेतु-पु० [सं० धृष्टकेतु] शिशुपाल का पुत्र।

ध्रांसाइणी (बी)-क्रि० गर्जना, दहाड़ना।

ध्रापणी (बी)-देखो 'ध्रापणी' (बी)।

ध्राव-पु० [देश०] पशु, मवेशी।

ध्रासक, ध्रासकी-पु० १ धक्का, आघात। २ प्रघात, सदमा।

ध्रासकणी (बी)-देखो 'ध्रसकणी' (बी)।

ध्राह-देखो 'धाह'।

ध्राहुरणी (बी)-क्रि० भयंकर आवाज करना, गर्जना।

ध्रिक, ध्रिकक, ध्रिग-देखो 'ध्रिक'।

ध्रित, ध्रिति-१ देखो 'ध्रति'। २ देखो 'धरती'।

ध्रिबणी (बी)-देखो 'ध्रिबणी' (बी)।

ध्रियाप-देखो 'ध्रियाप'।

ध्रिसट-देखो 'ध्रिस्टी'।

ध्रिस्टी-पु० [सं० धृष्टि] सूझर, बराह। -वि० [सं० धृष्ट] नीच, दुष्ट, हठी।

ध्रोंगा-स्त्री० नगाड़े आदि की ध्वनि।

ध्री-देखो 'ध्रीह'।

ध्रीब, ध्रीबछड़-अव्य० १ नृत्य के समय नगाड़े, ढोल आदि बजने की ध्वनि। २ देखो 'ध्रीब'।

ध्रीबणी (बी)-देखो 'ध्रीबणी' (बी)।

ध्रीया-देखो 'ध्री'।

ध्रीयाप-देखो 'ध्रियाप'।

ध्रीबणी (बी)-देखो 'ध्रीबणी' (बी)।

ध्रीह-स्त्री० नक्कारे की ध्वनि।

ध्रुपद-पु० [सं० ध्रुवपद] उत्तरी भारत की एक विजिष्ट गायन शैली।

ध्रुव-पु० [सं०] १ उत्तर दिशा स्थित एक प्रसिद्ध तारा।

२ राजा उत्तानपाद का पुत्र। ३ बट वृक्ष। ४ घाठ वसुओं

में से एक। ५ पर्वत, पहाड़। ६ ध्रुवक, ध्रुपद। ७ ब्रह्मा।

८ ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक। ९ फलित

ज्योतिष में एक नक्षत्रगण। १० नाक का अग्र भाग।

११ दृग्ग की छः मात्राओं के ग्यारहवें भेद का नाम

(जग)। १२ भूगोल के अनुसार पृथ्वी का अक्ष स्थान।

१२ उत्तर दिशा । १४ रत्न खम्भा । १५ वृक्ष का तना ।
१६ गीत की टेर । १७ समय, युग । १८ बद्धा ।
१९ विष्णु । २० छिव । २१ छल्प्य छन्द का २३ वां भेद ।
-वि० १ प्रथम, पहला । २ स्थिर, अचल । ३ एक स्थान
पर अटल । ४ सदा एकसा रहने वाला । ५ टुकड़ा पक्का ।
६ नित्य । ७ एकल ।

ध्रुवक-पु० [सं०] १ नक्षत्र की दूरी । २ गीत की टेर ।
३ वृक्ष का तना । ४ खम्भा ।

ध्रुवकेतु-पु० [सं०] एक प्रकार का केतु तारा ।

ध्रुवचरण-पु० [सं०] मन्दाल के बारह भेदों में से एक ।

ध्रुवणी (बी)-देखो 'ध्रुवणी' (बी) ।

ध्रुवतारो-पु० [सं० ध्रुव-तारक] उत्तर दिशा में स्थिर रहने
वाला तारा ।

ध्रुव-दरसक-पु० [सं० ध्रुवदर्शक] १ मत्स्य मंडल । २ कुतुबनुमा,
कंपास ।

ध्रुवदरसन-पु० [सं० ध्रुवदर्शन] विवाह संबंधी एक संस्कार ।

ध्रुवपद-पु० [सं०] ध्रुपद, ध्रुवक ।

ध्रुवमंडल-पु० [सं० ध्रुव-मण्डल] सप्तर्षि तारों का समूह ।

ध्रुवसधि-पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा ।

ध्रू-समध्रू-स-क्रि० वि० जोर-जोर से । तेजी से ।

ध्रू-१ देखो 'ध्रू' । २ देखो 'ध्रुव' ।

ध्रूम-१ देखो 'ध्रूम' । २ 'ध्रू' । ३ देखो 'ध्रुव' ।

ध्रूजटी-देखो 'ध्रूजटी' ।

ध्रूवकणी (बी)-क्रि० टूटना, खण्डित होना ।

ध्रूमाळा-स्त्री० मुण्ड माला ।

ध्रूम-देखो 'ध्रू' ।

ध्रूस-स्त्री० १ काली घटा । २ देखो 'धूस' ।

ध्रूसकणी (बी)-क्रि० ढोल आदि वाद्य बजना ।

ध्रूसटणी (बी)-क्रि० ध्वंस करना ।

ध्रूसमध्रूस-देखो 'ध्रूसमध्रूस' ।

ध्रूठज, ध्रूठी-देखो 'ध्रूठ' । (स्त्री० ध्रूठी)

ध्रूण-पु० मस्तक, शिर ।

ध्रूप (क)-देखो 'ध्रूप' ।

ध्रूब-देखो 'दोब' ।

ध्रुवप्राठम-स्त्री० [सं० दुर्वा + प्रष्टमी] भाद्रपद शुक्ल
प्रष्टमी ।

ध्रुवहर-देखो 'ध्रुवहर' ।

ध्रुह-देखो 'द्रोह' ।

ध्रुही-देखो 'द्रोही' ।

ध्रुही-वि० द्रोह रखने वाला शत्रु ।

ध्वंस-पु० [गं०] नाश, विनाश, हानि, क्षय ।

ध्वंसक-वि० [सं०] नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

ध्वंसन-स्त्री० [सं०] १ विनाश, तबाही । २ नाश करने
की क्रिया ।

ध्वंसी-वि० [सं० ध्वंमिन्] ध्वंस करने वाला ।

ध्वज-पु० [सं०] १ देवालय, राष्ट्रीय इमारतों आदि पर
फहराया जाने वाला झंडा, पताका । २ पताका बांधने की
छड़ या दण्ड । ३ राज चिह्न । ४ देव चिह्न । ५ कोई चिह्न
विशेष । (मार्क) ६ प्रसिद्ध पुरुष । ७ स्त्री या पुरुष चिह्न ।
८ पुरुषेन्द्रिय । ९ किसी वस्तु के पूर्व में अवस्थित मकान ।
१० अभिमान, दंभ । ११ दण्ड के प्रथम भेद का नाम
(15) । १२ फलित ज्योतिष के अनुसार बार व नक्षत्र
संबंधी एक योग । १३ सामुद्रिक शास्त्रानुसार हाथ का
रेखा चिह्न विशेष । -चिध-पु० पताका, निशान । -भंग-
पु० नपुंक्ता । -बान-वि० ध्वज वाला, पताका वाला ।
चिह्न वाला ।

ध्वजा-स्त्री० [सं० ध्वज] १ दण्ड के पांचवें भेद का नाम ।
२ देखो 'ध्वज' ।

ध्वजादिगणना-स्त्री० [गं०] ज्योतिष की एक गणना विधि ।

ध्वनि, (नी)-स्त्री० [सं०] १ शब्द, नाद, आवाज । २ गुंजन,
रव । ३ शब्दों की अर्थव्यंजना की विशेषता । ४ गूढ़ार्थ ।
अशय । ५ स्वर । ६ वाज की लय । ७ वादन की गजना ।
८ खाली शब्द । ९ शब्द । १० उच्चारण । -ग्रह-पु०
कान ।

ध्वस्त-वि० [सं०] १ टूटा-फूटा, खंडित, मग्न । २ नष्ट-भ्रष्ट ।
३ गिरा हुआ, च्युत ।

ध्वंश-पु० [सं०] बार नक्षत्रों संबंधी एक योग ।

ध्वान्त, ध्वान्त-पु० [सं०] १ एक नरक का नाम, तामिस्र ।
२ अंधारा । ३ रात्रि, रात । -चर-पु० निशाचर, राक्षस ।
-सत्र-पु० प्राण, प्रणि । सूर्य । चन्द्रमा । दीपक, ज्योति ।
प्रकाश, उजाला ।

ध्वान-पु० [सं० ध्वान] शब्द, आवाज, ध्वनि ।

ध्वज-देखो 'ध्वज' ।

ध्वेस-देखो 'द्वेस' ।

— न —

न-देवनागरी वर्णमाला का बीसवाँ वर्ण ।

न-पु० १ मुख । २ आंख । ३ संसार । ४ शृंगार । ५ कान ।
६ हर्ष । ७ हाथी । ८ पति । ९ स्वामी ।

नखी-देखो 'नखी' ।

नंग-पु० [सं० अमंग] १ कामदेव । मनोज । २ नंगा ।
३ देखो 'नग' ।

नगर-स्त्री० [देश०] कुलौच ।

नंगलिपी-पु० शत्रु-यात्रा में साथ ले जाने का मिट्टी का एक
जल पात्र ।

नंगाती-वि० खुले वक्षस्थल वाली ।

नंगारची-देखो 'नगरची' ।

नंगारी-देखो 'नगारी' ।

नंगोड़ी-देखो 'नगोड़ी' ।

नगी-देखो 'नागी' ।

नचणी-देखो 'नाचण' ।

नद-पु० [सं०] १ गोकुल के गोपों का मुखिया । २ मगध देश
के राजाओं की उपाधि । ३ पुत्र, लड़का । ४ आनन्द, हर्ष ।
५ विष्णु, परमेश्वर । ६ एक नाग का नाम । ७ श्रीराम
विशेष । ८ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ९ आदि गुरु, त्रिकल
(३) । १० एक प्रकार का मृदंग । ११ एक रागिनी
विशेष । १२ एक प्रकार की बाँसुरी विशेष । १३ ती
निधियों में से एक । १४ देखो 'नदन' । —कंवर, किसौर,
किसौर, कुंभर, कुंभार, कुधार, कुभार-पु० श्रीकृष्ण ।
—गांव, ग्राम-पु० गोकुल । नदिग्राम । —नंद, नवल-पु०
श्रीकृष्ण । विष्णु । ईश्वर । —नदिनी-स्त्री० नंद की
कन्या । योग माया । —राणी-स्त्री० यशोदा । —लाल-
पु० श्रीकृष्ण । —लोक-पु० वृंदावन । —संस-पु० मगध
का प्रसिद्ध राजवंश ।

नंदक-वि० [सं०] १ आनन्ददायक । २ कुलपालक । ३ देखो
'नंदक' । —पु० १ मंदक । २ तलवार । ३ श्रीकृष्ण का
खड्ग । ४ प्रसन्नता ।

नंदगर, नंदगिर, (गिरि, गिरी)-पु० [सं० नंदगिरि] १ आबू
पर्वत की एक चोटी का नाम । २ आबू पर्वत ।

नंदण (शु, एी)-देखो 'नदन' ।

नवणी-देखो 'नदनी' ।

नवणी (बी)-देखो 'नदिणी' (बी) ।

नंदन-पु० [सं०] १ उग्र का उपवन, देवलोक का उद्यान ।
२ महादेव, शिव । ३ विष्णु । ४ लड़का, पुत्र । ५ मंदक ।
६ चंदन की लकड़ी । ७ हर्ष, प्रसन्नता । —वि० मूर्ध,
पागल । —वन, वन-पु० इन्द्र का उद्यान ।

नंदनी-पु० [सं० नंदिनी] १ पुत्री । २ कामधेनु । ३ वसिष्ठ के
आश्रम में रहने वाली कामधेनु की पुत्री ।

नंदप्रयाग-पु० [सं०] बदरिकाश्रम के समीप एक तीर्थ ।

नंदरवारी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नदमेण-देखो 'नदिमेण' ।

नंदा-स्त्री० [सं०] १ मास के प्रत्येक पक्ष की षष्ठी व एकादशी
तिथि । २ भ्रवसर्पिणी के दशवें ग्रहंत की माता का नाम ।
३ मंगीत की एक मूर्च्छना । ४ देखो 'निदा' । ५ प्रसन्नता,
हर्ष । ६ धन, दौलत ।

नंवातीरथ-पु० [सं० नंदातीर्थ] हेमशूट पर्वत का एक तीर्थ और
वहां बहने वाली नदी ।

नंदादेवी-स्त्री० [सं०] दक्षिण हिमालय की एक चोटी ।

नंदावरत-देखो 'नंदावरत' ।

नंदिकर-पु० [सं०] शिव, महादेव ।

नंदिकुंड-पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ ।

नंदिकेस-पु० [सं० नंदिकेश] १ शिव का द्वारपाल, गण । २ शिव ।

नंदिकेश्वर-पु० [सं० नंदिकेश्वर] १ शिव का द्वारपाल, गण ।
२ शिव ।

नंदिपान-पु० [सं० नंदिग्राम] अयोध्या के समीप एक गांव ।

नदिषोष-पु० [सं० नंदिषोष] १ अग्निदेव द्वारा प्रदत्त अर्जुन
का रथ । २ श्रम व मांगलिक घोषणा ।

नदिमुख-पु० [सं०] १ पत्नी विशेष । २ शिव ।

नदिरुद्र-पु० [सं०] शिव ।

नंदिरधन-पु० [सं० नंदिरधन] शिव, महादेव । —वि०
आनन्ददायक ।

नंदिसेण-पु० [सं० नंदिसेन] वर्तमान भ्रवसर्पिणी के चतुर्थ
तीर्थंकर ।

नदी-पु० [सं० नदिन] १ शिव का द्वारपाल व सवारी का
बैल, गण । २ एक सूत्र ग्रंथ । ३ उड़द । ४ विकार के
कारण शरीर पर मांस के लेशे लटकने वाला रेश ।
५ पुत्र । ६ देखो 'नदी' । —गण-पु० शिव का द्वारपाल
व बाहन । मांड, विगजार । —गिर='नंदगिरि' ।

—नमल-पु० श्वेत बैल । नदी । —पति-पु० शिव, महादेव ।

नंदीवन-देखो 'नंदनवन' ।

नदीस-पु० [सं० नदीश] १ शिव । २ संगीत में ताल का एक मेट । [सं० नदीश] ३ समुद्र ।

नदीस्वर-पु० [सं० नदीस्वर] १ शिव । २ नदीश ताल । ३ शिव का गण, नदी ।

नदी-देखो 'नदी' ।

नद्यावरत (क)-पु० [सं०] पश्चिम की ओर द्वार व चारों ओर बरामदे वाला भवन ।

नद्या-देखो 'निद्रा' ।

नवर-पु० [सं०] सख्या, प्रक, क्रम, पारी ।

नवस्वर-पु० मालगुजारी वभुज करने वाला कर्मचारी ।

नवरी-वि० [सं०] १ जिस पर नवर वा ग्रक लगा हो । २ श्रेष्ठ, प्रसिद्ध । ३ कुख्यात । ४ पंजिकृत ।

नहं, नह-देखो 'नही' ।

नहकार-देखो 'नकार' ।

न-पु० [सं०] १ दुष्ट । २ पतित । ३ प्रम । ४ वंध्यत । ५ ग्रहमेव । ६ नीका । ७ गणेश । ८ मोती । —वि० १ प्रसन्न, खुश । २ दूसरा, अन्य । ३ निगिद्ध । ४ रिक्त । —अव्य० नहीं, निपेध ध्वनि । देखो 'नी' । देखो 'नै' ।

नअण-देखो 'नयण' ।

नहं, नह-अव्य० १ चतुर्थी विभक्ति का प्रत्यय । २ देखो 'नदी' । ३ देखो 'नाई' । ४ देखो 'नै' । ५ देखो 'नही' ।

नहडो, नहडव, नहडो-पु० १ हाथ की अंगुली में मायुत के बीच होने वाला फोड़ा । २ देखो 'निकट' ।

नहण-देखो 'नयण' ।

नहति-देखो 'नैरत' ।

नहर-देखो 'नगर' ।

नई-१ देखो 'नदी' । २ देखो 'नही' । ३ देखो 'नवी' (स्त्री०) ।

नईडो-पु० १ नायुत के अंदर होने वाला फोड़ा । २ देखो 'निकट' ।

नईयो-पु० १ बड़ई का एक छोटा औजार विशेष । २ चूतनगर का छोटा औजार ।

नईस-देखो 'नदीस' ।

नउ-देखो 'नै' ।

नव-प्रत्य० १ संबंध सूचक विभक्ति, का । २ देखो 'नवी' । ३ देखो 'नै' । ४ देखो 'नव' ।

नवकार-देखो 'नवकार' ।

नवकारवाळ-देखो 'नवकर-वाळी' ।

नवतणी (बी)-देखो 'निमंत्रणो' (बी) ।

नउद-स्त्री० [सं० नवत] १ हाथी की झूल विशेष । २ ऊनी वस्त्र, झुल । ३ पर्दा ।

नउय-पु० [सं० नयुत] काल का एक विभाग (जैन) ।

नवरता-देखो 'नौरता' ।

नउल-देखो 'नकुल' ।

नउं-स्त्री० १ नवमी तिथि । २ देखो 'नव' ।

नक-देखो 'नाक' ।

नकचूँटी-देखो 'नखचूँटी' । (मेवात)

नकछीकणी-स्त्री० [सं० नासिका-क्षिपकती] महीन पत्तियों वाली एक घास जिसकी गंद से छीक घ्राती है ।

नकटाई-स्त्री० [सं० नक-कर्त्तनम्] १ नाक काटने की क्रिया या भाव । २ निर्लज्जता, घृष्टता । ३ हठ, दुराग्रह । ४ वेह्यापन ।

नकटियो, नकटो-वि० [सं० नक-कर्त्तन] (स्त्री० नकटी) १ कटी हुई नाक का । २ निर्लज्ज, डीट, दुष्ट । ३ हठी, दुराग्रही ।

—कोट-पु० ताश का एक खेल ।

नकताड़-पु० ऊंट की नकेल ।

नकद-देखो 'नगद' ।

नकदी-देखो 'नगदी' ।

नककूल, नककूली-पु० नाक का एक आभूषण विशेष ।

नकवेसर-पु० [सं० नक-वेसर] स्थियों की नाक की वाली में लगा लंबा मोती ।

नकम-पु० मन (मेवात) ।

नकर-देखो 'नक' ।

नकराकन-वि० [सं० नक-आकृति] मगर की आकृति वाला ।

नकळेक-देखो 'निकळेक' ।

नकल-स्त्री० [सं०] १ प्रतिलिपि, प्रतिलिपि । २ देखा-देखी, अनुकरण, अनुसरण । ३ स्वांग, अभिनय । ४ हास्य-अभिनय के लिए बनाई आकृति । ५ मजाक । ६ मुंह से की जाने वाली विशेष आवाज । ७ एक बही । —बी-वि० नकल करने वाला । —नवीस-पु० अदालत का एक कर्मचारी । प्रतिलिपिकर्ता । —नवीसी-स्त्री० प्रतिलिपि का कार्य ।

नकलियो-देखो 'नखलियो' ।

नकली-वि० १ किसी की नकल कर बनाया हुआ । २ कृत्रिम, बनावटी । ३ जाली, झूठा, खोटा ।

नकल्यो-देखो 'नखलियो' ।

नकवाळ-पु० [सं० नक-वान] नाक के भीतर के बाल ।

नकवेसर-देखो 'नकवेसर' ।

नकस-पु० [सं० नकण] १ किस वस्तु पर बेल-बूँटे खोदकर की गई चित्रकारी । २ आकृति । —दार-पु० उक्त प्रकार की चित्रकारी किया हुआ पदार्थ ।

नकसबंदिया-स्त्री० सूँफियों की एक शाखा, एक सम्प्रदाय विशेष ।

नकसानवीस-पु० [ग्र० नवशा-नवीस] नक्शा या खाका बनाने वाला ।

नकसानवीसी-स्त्री० नक्शा बनाने का कार्य ।

नकसीर-पु० [सं० नक्र-शिरा] नाक से बहने वाला रक्त ।

नकसी-देखो 'नक्ससी' ।

नकांम-१ देखो 'निकांम' । २ देखो 'निकम्पो' ।

नका-देखो 'निका' ।

नकाब-पु० मुंह छुपाने के लिए गर्दन तक पहनने की जाली या वस्त्र । —पोस-वि० नकाब पहना हुआ ।

नकार-पु० [सं०] १ निषेध सूचक शब्द । २ अस्वीकृति । ३ 'न' वर्ण । ४ छंद शास्त्र का एक 'नगण' गण । —वि० १ कृपण, कजूस । २ देखो 'नगारी' । ३ देखो 'निकार' ।

नकारखानी-देखो 'नगाखानी' ।

नकारची-देखो 'नगारची' ।

नकारणी (बौ)-देखो 'नागारणी' (बौ) ।

नकारी-१ देखो 'नकार' । २ देखो 'नगारी' । ३ देखो 'नगारी' ।

नकाळ, नकाळी-१ देखो 'निकाळ' । २ देखो 'निकाळी' ।

नकास-१ देखो 'निकास' । २ देखो 'निकाळ' ।

नकासणी (बौ)-क्रि० [सं० निष्कासन्] १ निकलना, बाहर होना । २ प्रस्तान करना, बाहर आना ।

नकासी-स्त्री० [ग्र० नक्काशी] १ आभूषण आदि पर खोदकर बनाये बेल्-खुंदे आदि । २ खुदाई । ३ देखो 'निकासी' ।

—दार-वि० जिस पर नक्काशी या खुदाई की गई हो ।

नकासो-देखो 'निकाळ' ।

नकी-वि० १ निश्चित, निश्चित । २ सही, ठीक । ३ हठ, खरा । ४ पूर्ण । ५ चुकता । —क्रि० वि० १ निश्चित ही, निःसंदेह । २ अवश्य, जरूर । ३ देखो 'नकु' ।

नकीतलाब, (तालाब)-पु० आबू पर्वत पर स्थित एक तालाब ।

नकीब-पु० [ग्र०] १ राजाओं की सवारी के आगे चलने वाला चौबदार । २ दरबार में बादशाह से भेंट करने वालों का नाम पुकारने वाला कर्मचारी ।

नकीर-देखो 'नकसीर' ।

नकुळ-पु० [सं० नकुल] १ पांच पांडवों में से एक । २ नेवला नामक जीव ।

नकुलांध-पु० [सं०] नेत्र का एक रोग ।

नकुलीस-पु० [सं० नकुलीश] तांत्रिकों के एक भैरव का नाम ।

नकुं-अव्य० [सं० नखलु] १ कुछ भी नहीं, नहीं । २ कुछ, कुछ भी ।

नकेर-देखो 'नकसीर' ।

नकेल-स्त्री० [सं० नकल्] १ ऊट को नाक में डाला जाने वाला उपकरण । २ नथ ।

नकेवळ, नकेवळी-देखो 'निकेवळी' ।

नकै-अव्य० [सं० कर्ण] निकट, पास, समाप्त ।

नकी-देखो 'नकु' ।

नक्क-देखो 'नाक' ।

नक्कस-पु० कठ का आसुतण (देवान) ।

नक्कारची-देखो 'नगारची' ।

नक्काल-वि० [ग्र०] १ नकल करने वाला । २ बहुरूपिया । ३ भांड ।

नक्काली-स्त्री० १ नकल करने का काम । २ बहुरूपिया या भांड का कार्य । ३ हास्य अभिनय ।

नक्कासी-१ देखो 'निकासी' । २ देखो 'नक्कासी' ।

नक्कीब-देखो 'नकीब' ।

नक्कू-पु० नाक, शिरा ।

नक्की-पु० [देश०] स्वर्णकारी का एक औजार विशेष ।

नक्खत्त-देखो 'नक्षत्र' ।

नक्क, नक्कण-पु० [सं०] १ मगरमच्छ, घड़ियाल । २ नाक, नासिका । ३ चौखट के ऊपर का भाग । —वि० नाता, श्यामः । —केतन-पु० मगर की ध्वजा वाला, कामदेव ।

नक्की-पु० [ग्र० नक्का] १ रेखा चित्र । २ रेखाओं द्वारा बनाई गई कोई शक्ति । ३ किसी भवन, जमीन या क्षेत्र आदि का नाप लेकर बनाया गया मानचित्र । ४ ढाँचा । ५ डील ।

नक्षत्र-पु० [सं०] १ आकाश में स्थित तारकगुंज या गुच्छ जिनके मध्य क्रान्तवृत्त या पृथ्वी का भ्रमणपथ है । २ क्रांति वृत्त के प्रत्येक १३ अंश २० कला के विभाग का नाम । ३ पंचांग का तृतीय अंग । ४ तारा । ५ ग्रह । ६ मोती । ७ चन्द्रमा । ८ विष्णु । —गण-पु० फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट नक्षत्रों का पृथक्-पृथक् समूह । —चक्र-पु० क्रांति वृत्त के आस-पास स्थित नक्षत्र समूह । —वरस-पु० ज्योतिषी ।

—बान-पु० नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार वान का विधान ।

—धारी-वि० भाग्यशाली । —नाथ-पु० चन्द्रमा, राकेश ।

—प, पति, पत्नी-पु० चन्द्रमा । —वध-पु० आकाश ।

—पुरुष-पु० भिन्न-भिन्न नक्षत्रों के भिन्न-भिन्न अंगों वाला कल्पित पुरुष । —भोग-पु० प्रत्येक नक्षत्र के परिभ्रमण का समय । —माळा-स्त्री० नक्षत्रों की पक्ति । सताईस मोतियों का हार । —याजक-पु० नक्षत्रों के दोषों की शांति कराने वाला ब्राह्मण । —योग-पु० नक्षत्रों के माघ ग्रह का योग । —योनि-स्त्री० फलित ज्योतिष में विशिष्ट नक्षत्रों के अनुसार प्राणियों की कल्पित योनि विशेष ।

—राज-पु० चन्द्रमा । —लोक-पु० नक्षत्र मंडल, आकाश

---वीथि-स्त्री० शुकप्रह द्वारा क्रमशः तीन-तीन नक्षत्रों को पार किये जाने वाले विभाग या मार्ग का नाम। वीथियां भी हैं। --व्यूह-पुं० विविष्ट प्राणियों और पदार्थों के समूह का अधिपति नक्षत्र। --क्षत-पुं० किसी विविष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जाने वाला घत। --संक्षि-स्त्री० पूर्व नक्षत्र मास में से उत्तर नक्षत्र मास में चंद्रादि ग्रहों का संक्रमण। --साधन-पुं० नक्षत्र विशेष व ग्रह विशेष का समय जानने की विधि। --हूचक, सूची-पुं० साधारण ज्ञान वाला ज्योतिषी। --सूळ-पुं० यात्रा के लिये निषिद्ध माना जाने वाला योग।

नक्षत्रावली-स्त्री० [सं०] १ नक्षत्रों की पंक्ति, श्रेणी। २ नवार्दज मोतियों की माला।

नक्षत्री-पुं० [सं० नक्षत्रिन्] १ दिव्यः। २ चन्द्रमा। -वि० भाग्यशाली।

नक्षत्रेस, नक्षत्रेस्वर-पुं० [सं० नक्षत्रेश] १ चन्द्रमा, चांद। २ कर्पूर।

नक्षसानवीस-देखो 'नक्षसानवीस'।

नक्षसानवीसी-देखो 'नक्षसानवीसी'।

नख-पुं० [सं०] १ मनुष्य के हाथ-पावों की अंगुलियों के शिरो पर तथा कुछ प्राणियों के पंजों पर बने नाखून। नाखून। २ सीप या घोंघे आदि के मुखारगण का गन्ध द्रव्य। ३ कुछ जातियों या वर्गों के वंश। ४ लाल रंग या वर्ण। ५ नाखून का घाव, खरोंच। ६ बीस की संख्या। ७ देखो 'नक्षत्र'। --आवध= 'नखायुध'। --क्षत-पुं० नाखून की खरोंच। नख चिह्न। --घात-पुं० नाखून काटने का औजार। नखाघात। --छीकणी-स्त्री० नखचिकनी।

नखचख-देखो 'नखमिख'।

नखचूटी-स्त्री० लोहे की बनी चिमटी (मेवात)।

नखच्छेद्य-स्त्री० [सं०] ७२ कलाशों में से एक।

नखत-देखो 'नक्षत्र'। --चकर= 'नक्षत्रचक्र'। --जोग= 'नक्षत्र-योग'। --जोरी= 'नक्षत्रयोनि'। --धारी= 'नक्षत्रधारी'। --दान= 'नक्षत्रदान'। --नाथ= 'नक्षत्रनाथ'। --बीथी= 'नक्षत्रबीथी'। --माळ, माळा= 'नक्षत्रमाळा'। --व्यूह= 'नक्षत्रव्यूह'। --सूळ= 'नक्षत्रसूळ'।

नखत-नामी-वि० [सं० नक्षत्र-नामिन्] १ विविष्ट नक्षत्र में जन्म लेने वाला। २ भाग्यशाली।

नखतर-देखो 'नक्षत्र'। --गण= 'नक्षत्रगण'। --धारी= 'नक्षत्रधारी'। --पुरुस= 'नक्षत्रपुरुस'। --राज, राय= 'नक्षत्रराज'।

नखतवंत-वि० [सं० नक्षत्र-वत्] भाग्यशाली।

नखतसमाज-पुं० [सं० नक्षत्र-समाज] चन्द्रमा।

नखतावली-देखो 'नक्षत्रावली'।

नखतंत, नखती-वि० [सं० नक्षत्र-गत] मुनश्चर में जन्मा, भाग्यशाली।

नखमी-देखो 'नक्षत्री'।

नखत्र-देखो 'नक्षत्र'। --गण= 'नक्षत्रगण'। --चक्र= 'नक्षत्र-चक्र'। --प= 'नक्षत्रपति'। --माळ, माळा= 'नक्षत्रमाळा'।

--साधन= 'नक्षत्रसाधन'। --सूचक= 'नक्षत्रसूचक'।

नखत्रमण-स्त्री० [सं० नक्षत्रमणि] मूर्त्य।

नखत्रावली-देखो 'नक्षत्रावली'।

नखत्री-देखो 'नक्षत्री'।

नखत्रेस-देखो 'नक्षत्रेस'।

नखानवायो, नखन्यायो-वि० [सं० नख निर्वात] मासूकी उष्ण, गुनगुना।

नखबिंदु-पुं० [सं०] नख पर बनाया जाने वाला चिह्न।

नखर-पुं० [सं०] १ नख, नाखून। २ पंजा।

नखरादार (बाज)-वि० नखरे वाला।

नखराळ (ळी)-वि० (स्त्री० नखराळी) १ नखरे करने वाला, नखरेदार। २ छील-छवीला, शौकीन। ३ बदचलन।

४ नाखून वाला। -पुं० सिंह, चीता।

नखरेखा-स्त्री० [सं०] नाखून की खरोंच। नखक्षत।

नखरेबाज-वि० [फा०] नखरे वाला, नखराला।

नखरेबाजी-स्त्री० [फा०] नखरा करने की क्रिया या भाव।

नखरी-पुं० [फा० नखर] १ बनावटी हाव-भाव व क्रियायें।

२ चंचलता, चुलबुलापन। ३ ऊपरी मन से किया गया

इन्कार। -वि० १ बुरा, अशुभ। २ खोटा।

नखलिथी, नखन्यो-पुं० १ स्थियों के पांव की अंगुलियों का आभूषण विशेष। २ बट्टे का एक औजार विशेष।

३ मितार आदि बजाने के लिए अंगुलियों में पहनने का

उपकरण विशेष। ४ देखो 'नख'।

नखविस-पुं० [सं० नखविष] १ जिसके नखों में विष हो।

२ नख की खरोंच से उत्पन्न होने वाला विष।

नखसिख-पुं० [सं० नखशिख] १ पांव के नखों से चोटी तक

के अंग। २ पैर से चोटी तक पहनने के वस्त्राभूषण।

-वि० सब अंगों का। -क्रि० वि० सब अंगों से।

नखसी-देखो 'नकामी'।

नखहरणी-स्त्री० [सं०] नाखून काटने का औजार।

नखाघात-पुं० [सं०] नख का क्षत, खरोंच, घाव।

नखायुध-देखो 'नखायुध'।

नखानुराग-स्त्री० [सं०] मेंहदी, महावर।

नखापुध-पुं० [सं०] १ जिसके आयुध नख हों, सिंह आदि।

२ नख का शस्त्र। ३ मुर्गा।

नखि-देखो 'नखी'।

नखित्त-देखो 'नखित्त' ।

नखित्र-देखो 'नक्षत्र' । —पाळ, माळा='नक्षत्रमाळा' ।

नखिव-पु० [सं० निपिठ] १ वज्रित कार्य, रोक । २ बुरा कार्य ।

—वि० १ वज्रित, रोक लगा हुआ । २ बुरा ।

नखी-वि० [सं० नखिन्] नखोंवाला, नाखून युक्त । —पु० १ निह, चीना । २ नख नामक मंध द्रव्य ।

नखीयुध-देखो 'नखायुध' ।

नखीर-देखो 'नकमीर' ।

नखेद, नखेध-वि० [सं० न खेद] १ जिसे खेद न हो, दुःख रहित, विरक्त । प्रसन्न । २ वेशर्म, शरास्ती । ३ कुलटा । ४ मुख । —पु० [सं० निपेध] १ वज्रित, मनाई, रोक । २ अस्वीकृति, टक्कार । ३ निषेधवाची नियम । ४ नियम का अपवाद । —स्त्री० ५ मृतक के पीछे संवेदना प्रगट करने की क्रिया या भाव ।

नखेर-देखो 'नकमीर' ।

नखें नखें-देखो नकै ।

नख-देखो 'नख' ।

नख्यत-देखो 'नक्षत्र' ।

नग-पु० [सं०] १ पर्वत, पहाड़ । २ चरण, पैर । ३ वृक्ष, पेड़ । ४ पुत्र (व्यंग) । ५ सतान, श्रौनाद । ६ मोनी । ७ रत्न, जवाहर । ८ नगीना । ९ इकाई, मछ्या । १० अदद । ११ पौधा । १२ सांघ । १३ सूर्य । १४ नागौर शहर का नाम । १५ सान की संख्याः —वि० अचल, स्थिर । —ज-पु० हाथीगज । —जा-स्त्री० पार्वती । नगी । —घर-पु० श्रृंगार, हनुमान, गण्ड । —नदनी-स्त्री० पार्वती । गंगा । नदी । —नायक-पु० पर्वतों का नेता हिमालय । वैजय पर्वत । —पति-पु० पर्वतराज हिमालय, चन्द्रमा । शिव, सुमेरु । —चिद-पु० पर्वत भेदने वाला इन्द्र ।

नगटाई-देखो 'नकटाई' ।

नगटी-देखो 'नकटी' ।

नगण-पु० [सं०] तीन लघु मात्रा का एक शब्द ।

नगणी-स्त्री० एक छंद विशेष ।

नगदंती-स्त्री० [सं०] विशेषण की स्त्री का नाम ।

नगद-पु० [अ० नकद] १ सिक्के व मुद्रा के रूप में धन । मुद्रा । २ सौदा लेने समय किया जाने वाला मुगतान, रोकड़ । —वि० १ तैयार, मुगतान के लिये प्रस्तुत । २ वर्तमान, मौजूद । ३ खास ।

नगन-१ देखो 'लगन' । २ देखो 'नागी' । ३ देखो 'नगण' ।

नगमिणप्रभा-पु० [सं० नगमिणप्रभा] सुमेरु पर्वत ।

नगरंघ्रकर-पु० [सं०] कात्तिकेय ।

नगर-पु० [सं०] शहर, बस्ती । —कीरतन-पु० नगर में फिर-फिर कर किया जाने वाला ईश्वर का कीर्तन । —तीरथ-

पु० गुबर्गन का एक तीर्थ । —डांडका, नायका, नायिका, नारी-स्त्री० नगरवधू, धेया, रही, गणिका । —पाळ-पु० शहर का रक्षक, कोतवाल । —मारण-पु० शहर का राजपथ । —सेठ-पु० नगर का सबसे बड़ा सेठ । राजाओं द्वारा दी जाने वाली उपाधि, ऐसी उपाधि प्राप्त व्यक्ति ।

नगराध्यक्ष-पु० [सं० नगर-अध्यक्ष] किसी शहर का प्रभारी अधिकारी, नगर का स्वामी ।

नगरि, नगरी (रु, री)-देखा 'नगर' ।

नगवार-पु० १ मकान बनाने के लिये विशेष अवसर पर रखा जाने वाला आधार का पत्थर ।

नगापति-देखा 'नगपति' ।

नगाड़ी-देखा 'नगरी' ।

नगरखांदी-पु० [फा० नक्कार-खाना] १ नगाड़े रखने का स्थान । २ नगाड़े बजाने का स्थान ।

नगराची-पु० [फा० नक्कारची] १ राजाओं व सामंतों के द्वार पर नगाड़े बजाने वाला व्यक्ति । २ उक्त कार्य करने वाला वर्ग, जाति ।

नगराबंद (ध), नगरावद (बंध) नगरिय-पु० १ राजा या सामंत जिनके द्वार पर नगाड़े बजते हों । २ उक्त प्रकार का अधिकार प्राप्त वीर ।

नगारी-स्त्री० १ छोटा नगाड़ा । २ देखो 'नगराची' ।

नगरी पु० [फा० नक्कार] बायें तबले के आकार का एक बड़ा वाद्य ।

नगीन-पु० १ प्रवाल, मूंगा । २ देखो 'नग' । —वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।

नगीनासाज-पु० [फा० नगीना-साज] नगीना बनाने वाला या जड़ने वाला कारीगर ।

नगीनी-पु० [फा० नगीना] १ रत्न, जवाहरात । २ राजस्थान का शहर, नागौर ।

नगैर-पु० [सं०] पर्वतराज हिमालय ।

नगेम-वि० [सं० निम्-गमः] निष्पाप, भिक्कुलक ।

नगेस-पु० [सं० नग-ईश] पर्वतों का स्वामी, हिमालय ।

नगोड़ी (झी)-वि० [सं० नक] (स्त्री० नगोड़ी, नगोडी) १ मिलेज्ज, बेगम । २ बुराग्रही, हठी । ३ निकम्मा, बेकार । ४ कमबख्त, नीच । ४ हतभाग्य ।

नगोदर (ह, छ)-देखो 'निगोदर' ।

नगोरी-देखो 'नगरी' ।

नगर-देखो 'नगर' ।

नगौ, नग-देखो 'नागी' ।

नग, नगी-देखो 'नगर' । —सेठ='नगरसेठ' ।

नगोध-देखो 'न्यग्रोध' ।

नधर-पु० [देश०] वैज की नाथ ।

नघात-देखो 'निघात' ।

नङ्ग-पुं० [सं० नल] १ नदी, नाला । २ फूंक कर बजाने का एक वाद्य । ३ नन्दक की नली पर बनी गेवाये व ब्रिवियां । ४ देखो 'नोडिया' । ५ देखो 'नङ्' । ६ देखो 'नाड़ी' । ७ देखो 'नल' । -वि० बंधन में घाले वाला, कायर ।

नङ्गण-पुं० [सं० नङ्] योद्धा, वीर । -वि० बंधन में डालने वाला ।

नङ्गी (बी) -क्रि० [सं० नङ्] १ बांधना । २ बंदी बनाना । ३ म्कावट डालना, रोकना । ४ कष्ट पाना, दुःखी होना ।

नङ्गी-देखो 'नाड़ी' ।

नचत-देखो 'निश्चित' ।

नचणी (बी) -देखो 'नाचणी' (बी) ।

नचनची-स्त्री० [सं० नत्] नाचने की प्रवृत्ति इच्छा । उत्कण्ठा ।

नचाणी (बी), नचावणी (बी) -वि० [सं० नत्] १ नाचने का नाम कराना, नचाना । २ नृत्य कराना नृत्य का आयोजन करना । ३ नाचने के लिए प्रेरित करना, आग्रह करना, सहयोग देना । ४ खोल-गोल फिराना । ५ उधर उधर घुमाना, फिराना । ६ परेशान या खिन्न करना, हैरान करना ।

नचित, नचितो-देखो 'निश्चित' । (स्त्री० नचिती)

नचिकेता-पुं० [सं० नचिकेतम्] १ वाजसनेय ब्रह्म का पुत्र जिसने मृत्यु में ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था । २ अग्नि ।

नचोत, नचोतड़ी, नचोती-देखो 'निश्चित' ।

नचोताई-देखो 'निश्चितता' ।

नचोती-देखो 'निश्चित' । (स्त्री० नचोती)

नचोयण-वि० [सं० नत्] नाचने वाला ।

नचणी (बी) -देखो 'नाचणी' (बी) ।

नचन-पुं० [सं० नर्तनम्] नाच, नृत्य ।

नच्यत-देखो 'निश्चित' ।

नछत्र-देखो 'नक्षत्र' ।

नछत्री-१ देखो 'नक्षत्री' । २ देखो 'निक्षत्री' ।

नजदीक-वि० [फा०] पास, निकट ।

नजदीकी-स्त्री० [फा०] निकटता, सामीप्य । -वि० निकटका, पास का ।

नजर-स्त्री० [अ०] १ दृष्टि, निगाह । २ ध्यान । ३ चितवन ।

४ आँख, नेत्र । ५ कुदृष्टि, दृष्टि-दोष । ६ कृपा दृष्टि, शुभ-दृष्टि । ७ ध्यान, खयाल । = देखरेख, निगरानी ।

८ पहचान, परख । [अ० नज्] १० उपहार, भेंट ।

११ राजा के दरबार में जाने पर राजा को भेंट स्वरूप दिया जाने वाला नकद रुपया आदि । -कंद-स्त्री० कंदी को निश्चित सीमा में रहने का आदेश । -बंद-वि० कड़ी

निगरानी में रखा हुआ । -पुं० इंद्रजाल का खेल ।

---बंदी = 'नजर-कंद' -स्त्री० इंद्रजाल का खेल ।

नजरदीखत-पुं० [अ०] राजा या बादशाह की मर्यादा के आगे नवीय द्वारा बोला जाने वाला शब्द ।

नजरबाग-पुं० [अ०] बंगले के आगने में बना छोटा बगीचा ।

नजरखानी-स्त्री० [अ०] पुनर्विचार, पुनरावलोकन ।

नजराण, नजराणी-पुं० १ भेंट, उपहार । २ भेंट में दी जाने वाली वस्तु ।

नजरि, नजरियां-देखो 'नजर' ।

नजरोझणी (बी) -क्रि० दृष्टि-दोष से प्रभावित होना, कुदृष्टि से ग्रसित होना ।

नजळी-पुं० [अ० नजलः] १ उष्णता के कारण शिर में होने वाला एक रोग । २ जुकाम ।

नजाकत-स्त्री० [फा०] १ कोमलता, मुकुमारता । २ सुक्ष्मता, बागीकी । ३ क्षीणता । ४ नखरा, लडका ।

नजासत-स्त्री० [अ०] नाजिम का पद ।

नजारद-स्त्री० [अ०] नाजिर का पद, नाजिर का कार्यालय ।

नजारेबाजी-स्त्री० [अ० नज्जार-फा० बाजी] स्त्री-पुरुष में परस्पर चार-आँखें होने की क्रिया, ताक-काक ।

नजारी-पुं० [अ० नजारः] १ दृश्य । २ दृष्टि, चिन्तन । ३ वातावरण । ४ दर्शन, दीदार । ५ मर । ६ तमाशा । ७ स्त्री-पुरुष में होने वाली परस्पर चार-आँखें ।

नजिक, नजीक (ग) -देखो 'नजदीक' ।

नजीकी-देखो 'नजदीकी' ।

नजीर-स्त्री० [अ०] १ उदाहरण, मिसाल, दृष्टान्त । २ किसी पूर्व निश्चित बात का उल्लेख ।

नज्ज-देखो 'नजर' ।

नट-पुं० [सं०] (स्त्री० नटणी, नटी) १ नर्तक । २ अभिनेता ।

३ शारीरिक कलाबाजी, बास-रस्सी आदि पर चलकर

तमाशा दिखाने वाला एक वर्ग व इस वर्ग का व्यक्ति ।

४ भ्रष्टीक वृद्ध । ५ एक प्रकार का नरकुल । ६ महादेव,

शिव । ७ श्रीकृष्ण । ८ नाच-नृत्य । ९ एक राग विशेष ।

नट-खट-वि० १ चंचल । २ उपद्रवी, उद्दण्ड । ३ चालाक, चालबाज ।

नट-खटी-स्त्री० १ बदमाशी, शरारत, उद्दण्डता । २ देखो 'नटखट' ।

नटणी (बी) -क्रि० [सं० नट] १ मना करना, इन्कार करना । २ मुकरना । ३ अस्वीकार करना । ४ दुःख पाना, दुःखी होना ।

नटन-पुं० [सं० नर्तन] नृत्य, नाच

नटनागर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।

नटनारायण-पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण । २ एक राग विशेष ।

नट-पट्टी, नटबट, नटबट्ट, नटबट्टी-देखो 'नटवट' ।
 नटबाजी-स्त्री० १ 'नट' द्वारा दिखाये जाने वाले खेल, कला बाजी । २ जादू, इन्द्रजाल ।
 नट-सूखण, नट-मंडण (न)-पु० हस्ताल ।
 नट-मल्लार-स्त्री० एक राग विशेष ।
 नटराज-पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।
 नटवट, (वट्ट)-स्त्री [सं० नट-वर्तनम्] १ नट क्रिया । [सं० नट-वटक्] २ नट का गोला या सेंद । -धि० [सं० नट + वत्] ३ नट के समान ।
 नटवर-पु० [सं०] १ नटों में प्रधान या मुखिया । २ श्रीकृष्ण । ३ श्रीविष्णु । ४ सूत्रधार । -नागर-पु० श्रीकृष्ण ।
 नटवो-देखो 'नट' ।
 नटसाळ, नटसाळा-देखो 'नाटसाळा' ।
 नटारंभ-देखो 'नाटारंभ' ।
 नटेश्वर-पु० [सं० नटेश्वर] महादेव, शिव ।
 नट्ट-देखो 'नट' ।
 नटारंभ-देखो 'नाटारंभ' ।
 नट्ठणो(बो), नट्ठणो(बो), नट्ठणी (बो)-१ देखो 'नटणी' (बो) २ देखो 'नट्ठणी' (बो) । ३ देखो 'नट्ठाणी' (बो) ।
 नड-पु० [देश०] १ कायंघ, धड़ । २ कुवेर का पुत्र नल-कूबर । ३ देखो 'नाडो' । ४ देखो 'नट' ।
 नडणी (बो)-देखो 'नडणी' (बो) ।
 नडर-देखो 'निडर' ।
 नडि-देखो 'नैडी' ।
 नड्डी-देखो 'नाडो' ।
 नड्ढणी (बो)-क्रि० [सं० नड्ढ] जड़ाई करना, जड़ना । पच्चीकारी करना ।
 नणंद, नणदर, नणंदल, नणबलडी, नणदली, नणदिया, नणदो-स्त्री० [सं० ननान्द] पति की बहिन ननद ।
 नणदूतरी, नणदूत्री-स्त्री० [सं० ननान्द-पुत्री] पति की बहिन की पुत्री, ननद की पुत्री ।
 नणदूतरी, नणदूती, नणदूत्री-पु० [सं० ननान्द-पुत्र] पति की बहिन का पुत्र ।
 नणदूली-देखो 'नणद' ।
 नणदोई (ई)-पु० [सं० ननान्द-पति] ननद का पति । पति का बहनोई ।
 नणदोतरी, नणदोती, नणदोत्री-देखो 'नणदूतरी' ।
 नणदोती, नणदोत्री-देखो 'नणदूतरी' ।
 नत-वि० [सं०] १ झुका हुआ । २ नम्र, विनम्र; शिष्ट । ३ अभिवादन या प्रणाम में झुका हुआ । ४ उदास । ५ टेढ़ा ६ देखो 'नित' ।

नत-प्रति-देखो 'नितप्रति' ।
 नतांस-पु० [सं० नतांश] ग्रहों की स्थिति जानने में काम आने वाला एक युक्त ।
 नता-वि० [सं० अनृत] असत्य, झूठा । -स्त्री० झूठ, मिथ्या बान ।
 नति-पु० [सं० नति] १ नम्रता, विनय । २ झुकाव । ३ नमस्कार, प्रणाम । ४ टेढ़ापन, घमाव ।
 नतीजो-पु० [फा० नतीजा] परिणाम, निष्कर्ष, फल ।
 नतीठ (ठो)-देखो 'नत्रीठ' ।
 नत्त-१ देखो 'नत' । २ देखो 'नित' ।
 नत्ताल-देखो 'निराताळ' ।
 नत्तिकांत-पु० [सं० नत्तिकांत] ४९ क्षेत्रपालों में से एक ।
 नत्थ-१ देखो 'नथ' । २ देखो 'नाथ' ।
 नत्थणो-देखो 'नथणी' ।
 नत्थणो (बो)-देखो 'नथणी' (बो) ।
 नत्थि, नत्थो, नत्थीय-स्त्री० [सं० नाथ] १ साथ में जोड़ने, बांधने या संलग्न करने की क्रिया या भाव । २ जोड़ी या संलग्न की हुई वस्तु । -वि० १ साथ जुड़ा हुआ, संलग्न । २ देखो 'नथी' ।
 नत्रीठ, नत्रीठि, नत्रीठी-पु० [सं० न + तृष्टि] १ योद्धा, वीर । २ प्रहारों की भड़ी, बीछार । ३ षोड़ा । -वि० १ निःशंक, निर्भय । २ वीरवान, तीव्र । ३ भयंकर, प्रबल ।
 नथ, नथड़ी, नथणी-स्त्री० १ नाक में पहनने की वाली, आभूषण । २ तलवार की मूठ का छल्ला । ३ वेधने की क्रिया या भाव ।
 नथणो-पु० [सं० नत्त] नाक का अग्रभाग । नथूना ।
 नथणो (बो)-क्रि० [सं० नत्त] १ नत्थी किया जाना । २ नथ आदि नाक में डाला जाना ।
 नथ-बिजळी-स्त्री० नाक का आभूषण विशेष ।
 नथली-देखो 'नथ' ।
 नथि-१ देखो 'नथी' । २ देखो 'नत्थी' ।
 नथिणळ, नथिणळ-पु० १ काली नाग । २ जेषनाग ।
 नथी, नथीय-क्रि० [सं० नास्ति] १ नहीं, ना । २ देखो 'नत्थी' ।
 नथुणी-देखो 'नथ' ।
 नद-पु० [सं० नद, नदी] १ स्त्रियों का एक आभूषण विशेष । २ बड़ी नदी । ३ नाला । ४ जल प्रवाह । ५ समुद्र । ६ देखो 'नाद' ।

नदरत, नदरत-त्रि० [फा०] कृत्, गायव ।

नदि-देखो 'नदी' ।

नदियाग-पु० सागर, समुद्र ।

नदी-स्त्री० [सं०] १ निम्नतर बहता रहने वाला प्राकृतिक जल प्रवाह, नदी शक्ति । २ तेरह की संख्या १०० । —ईसर-पु० समुद्र, सागर । —कूळ-पु० नदी, तट । दो की संख्या १०० । —नाथ-पु० समुद्र, सागर । —निवास, पति-पु० समुद्र । —मुख-पु० नदी का मुहाना । —राज-पु० समुद्र ।

नदीस-पु० [सं० नदीश] सागर, समुद्र ।

नद्व-१ देखो 'नद' । २ देखो 'नाद' ।

नदा-देखो 'नाद' ।

नदी-१ देखो 'नदी' २ देखो 'नाद' ।

नद्ध वि० [सं०] १ बंधा हुआ, बद्ध । २ नष्टा हुआ । ३ अटका हुआ । ४ टका हुआ । ५ गुंथा हुआ ।

नध-पु० [सं० जलनिधि] १ समुद्र, सागर । २ देखो 'निध' । ३ देखो 'निधि' । —पुर-पु० लन्दन नगर ।

नधान-देखो 'निधान' ।

नधि (धो)-देखो 'निधि' ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नद्वि-पु० [सं० नग] १ वृक्ष, पेड़ । २ देखो 'निमग' ।

नद्वि-क्रि० वि० [सं०] कठिना में, मुश्किल में । —अव्य० नदी ।

नद्वि-स्त्री० [सं०] नाना का घर, ननिहाल ।

नद्वि-१ देखो 'नद्वि' । २ देखो 'नदी' ।

नद्वि-स्त्री० [सं०] नाना का घर ।

ननु, ननी, ननी-पु० [सं०] १ 'न' अक्षर या वर्ण । २ अस्वीकृति, इन्कार । ३ मनाही, रोक । ४ इन्कार सूचक शब्द । —अव्य० ननी, ना ।

नपणी (बौ)-क्रि० [सं० मापन्] १ लम्बाई-चौड़ाई के अनुसार, मापा जाना । नाप किया जाना । २ किसी आधार से परिमाण निश्चित किया जाना ।

नपाई-स्त्री० [सं० मापनम्] नापने का कार्य ।

नपाय-वि० [सं० निष्पाप] पाप रहित, निष्कलक ।

नपित-देखो 'नापित' ।

नपुंती-देखो 'निपुंती' । (स्त्री० नपुंती)

नपुंसक-वि० [सं०] १ पुंसत्व या पौंसत्वहीन, नामर्द, हिजड़ा । २ जिसमें कामेच्छा या संभोग शक्ति का अभाव हो । ३ कायर, डरपोक ।

नपुंती-देखो 'निपुंती' । (स्त्री० नपुंती)

नफर-पु० [फा०] १ व्यक्ति, आदमी । २ दास, सेवक, नौकर । ३ मईस । ४ मजदूर, श्रमिक ।

नफरत-स्त्री० [अ०] १ घृणा, परहेज । २ अरुचि । ३ वचाव ।

नफरी-स्त्री० १ मजदूर का एक दिन का श्रम । २ एक दिन की मजदूरी । ३ एक हाजरी । ४ सूनी । ५ सेना का एक दल ।

नफस-पु० [अ० नपस, नफस] १ विषय वासना । २ लिंग, शिश्न । ३ मत्पता । ४ अस्तित्व । ५ प्राण वायु । ६ रुह । ७ ध्वाम, मोस । ८ दम, पल, श्रण ।

नफरी, नफेर, नफेरि, नफेरिय, नफरी-स्त्री० [अ० नफरी] गहननाई नामक वाद्य ।

नफो, नफकी, नफकी-पु० [अ० नफा] १ फायदा, लाभ । २ व्यापार का लाभान् । ३ वचन ।

नबध-देखो 'निबध' ।

नबधणी (बौ)-१ देखो 'निबधणी' (बौ) । २ देखो 'निमधणी' (बौ) ।

नबधणी-देखो 'निमधणी' ।

नमळ-देखो 'निमळ' ।

नवाब-पु० [अ० नवाब] बादशाह का नाइब, किसी रियासत का शासक । —जादी-पु० नवाब का पुत्र ।

नवी-पु० [अ०] १ ईश्वर का दूत । २ पैगंबर । ३ ईश्वर, भगवान । ४ मुखिया, पंच । ५ मूलमान । ६ ईश्वर का अंशावतार ।

नवेइणी (बौ)-देखो 'निवेइणी' (बौ) ।

नवेइणी-देखो 'निवेइणी' ।

नद्वि-स्त्री० [अ०] १ नाड़ी, धमनी । २ नियंत्रक तत्व । ३ जानकारी का सूत्र ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नद्वि-देखो 'नद्वि' ।

नभ-पु० [सं० नभम्] १ आकाश, आसमान । २ अन्तरिक्ष ।

३ वायु मण्डल । ४ मेघ, बादल । ५ कोहरा, वाष्प ।

६ जल । ७ वर्षा ऋतु । ८ जल वृष्टि । ९ वय, उम्र ।

१० रंध । ११ नासिका । १२ आवाग मास । १३ जन्म

कुण्डली में लग्न से दशवां स्थान । १४ सूर्यवंशी राजा

निषध के पुत्र का नाम । —गांभी-पु० सूर्य । चन्द्रमा ।

पक्षी । देवता, सुर । तारा, आकाशचारी । —चक्र-पु०

आकाश, गगन । —चर, चार-पु० पक्षी, खग । पवन,

वायु । बादल, मेघ । देव, गंधर्व, यहादि आकाशचारी ।

—धज, धुज-पु० बादल, मेघ । —नीरप-पु० पपीहा,

चातक । —पंत, पंथ-पु० आकाश मार्ग । —मंडळ-पु०

आकाश-मण्डल । —मल, मलि, मली, मिला-पु० सूर्य ।

रत्रि । —राट-पु० बादल, मेघ । —वांणी-स्त्री० आकाश वाणी । देवधारणी । —वैण-पु० आकाशवाणी । —संगम-पु० पक्षी । —सरणी-स्त्री० आकाश गंगा । —सांस-पु० पवन, हवा ।

नमग-पु० [सं०] पक्षी, खग । —नाथ-पु० गरुड़ ।

नमगेश-पु० [सं० नमगेश] गरुड़ ।

नमवटी-पु० [सं० नमवर्तिन] पंखेक, पक्षी, खग ।

नमवली (बो) —कि० निभाना ।

नमस्य-पु० [सं०] भाद्रपद मास ।

नमोग, नमोगति-पु० [सं०] १ जन्म कुण्डली में लग्न से दशवां स्थान । २ आकाशचारी, देव, पक्षी आदि ।

नमोदुह (द्वीप)-पु० [सं०] मेघ, बादल ।

नमोनदी-स्त्री० [सं०] आकाश गंगा ।

नमंत-देखो 'निमित्त' ।

नमंध-देखो 'निबंध' ।

नमंधणी (बो)-देखो 'निबंधणी' (बो) ।

नम-वि० [फा०] १ भोगा हुआ, आर्द्र, तर, गीला । —पु० [सं० नमस्] १ नमस्कार, प्रणाम । २ झुकता क्रिया । ३ देखो 'नवमी' ।

नमक-पु० [फा०] रोटी, सब्जी आदि भोज्य पदार्थों में डाला जाने वाला क्षार, नवण । —सार-पु० एक प्रकार का कर । —हराम-वि० कृतघ्न, नीच । किसी का प्रत्न खाकर बुरा करने वाला । —हरामी-स्त्री० कृतघ्नता । नीचता । —हलाल-वि० कृतज्ञ । स्वामिभक्त । उपकार मानने वाला । —हलासी-स्त्री० स्वामिभक्ति । उपकार । ऋण चुकाने का भाव ।

नमकीन-वि० [फा०] १ नमक के योग से बना । २ चटपटा, चरमरा ।

नमख-१ देखो 'नमक' । २ देखो 'निमित्त' ।

नमठणी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।

नमठाणी (बो), नमठावणी (बो)-देखो 'निपटाणी' (बो) ।

नमण, नमणि, नमणी-स्त्री० [सं० नमन] १ नमस्कार, प्रणाम । २ झुकने का भाव । ३ नम्रता, विनीतता । ४ नीचा स्थान, झुकाव । ढाल ।

नमणी-वि० [सं० नमन] (स्त्री० नमणी) १ विनयशील, विनीत, नम्र । २ जिसमें झुकने का गुण हो । ३ शिष्ट ।

नमणी (बो)-कि० [सं० नमनम्] १ झुकना । २ नम्र होना, विनीत होना । ३ प्रणाम करना । ४ शिष्टता दिखाना ।

नमत-पु० [सं० नमत] १ नीचा स्थान, ढालु जगह । २ अभिनेता, नट । ३ धूम । ४ स्वामी, प्रभु । ५ मेघ बादल । —वि० १ नम्र, विनीत । २ झुकने वाला । ३ टेढ़ा, तिरछा । ४ देखो 'निमित्त' ।

नमदी-पु० [फा० नमदा] जमाया हुआ ऊर्जा वस्त्र । नमन-देखो 'नमग' ।

नमसकार-देखो 'नमस्कार' ।

नमसकन-पु० [सं० नमस्कृति] नमस्कार, प्रणाम ।

नमस्कार-पु० [सं०] नमस्कार, अभिवादन ।

नमस्ते-पु० [सं०] अभिवादन के लिए प्रयुक्त शब्द ।

नमांम-पु० [सं० नम] १ नमस्कार । २ देखो 'नमांमी' ।

नमांमी-पु० [सं० नमनम्] १ नमस्कार । २ अभिवादन । —वि० बुरा, खराब ।

नमाज-स्त्री० [फा०] मुसलमानों की प्रार्थना । —गावू-स्त्री० नमाज पढ़ने की जगह ।

नमाजी-पु० [फा०] १ नमाज पढ़ने वाला मुसलमान । २ नमाज पढ़ने समय बिछाने का वस्त्र ।

नमाणी (बो), नमावणी (बो)-कि० १ प्रणाम कराना, अभिवादन कराना । २ झुकाना, नीचा करना । ३ मोड़ना, घुमाना । ४ बाध्य करना, मजबूर करना ।

नमि-पु० [सं०] १ चालु अत्रगपिणी के इक्कीसवें तीर्थंकर का नाम । २ देखो 'नमी' । ३ देखो 'नवमी' ।

नमियी-पु० [सं० नवम्] १ मृतक का नौवां दिन । २ इस दिन का स्स्कार ।

नमिस्कार-देखो 'नमस्कार' ।

नमी-स्त्री० [फा०] १ गीलापन, आर्द्रता । २ देखो 'नवमी' ।

नमीयी-देखो 'नमियी' ।

नमुकार-१ देखो 'नवकार' । २ देखो 'नमस्कार' ।

नमुचि-पु० [सं०] १ कामदेव, अनंग । २ एक ऋषि का नाम । ३ इन्द्र द्वारा वधित एक दैत्य । ४ शुभ-निशुभ का भाई एक अन्य दैत्य । —सूदन-पु० इन्द्र ।

नमूनी-पु० [फा० नमूना:] १ किसी पदार्थ का थोड़ासा घंश । २ निर्माणाधीन वस्तु का तैयार किया गया डीज (मॉडल) । ३ किस्म, प्रकार । ४ मिसाल, आदर्श । ५ बानगी । ६ ढग, ढव ।

नमेड़णी (बो)-देखो 'निवेड़णी' (बो) ।

नमोकार-१ देखो 'नवकार' । २ देखो 'नमस्कार' ।

नमी-अव्य० [सं० नमः] अभिवादन सूचक शब्द । नमस्ते । —वि० धाठ के बाद वाला, नवमा । —पु० नौ का संक, ९ ।

नम्म-१ देखो 'नम' । २ देखो 'नवमी' ।

नम्मणी (बो)-देखो 'नमणी' (बो) ।

नम्माज-देखो 'नमाज' ।

नम्र-वि० [सं०] १ विनीत, नम्रता करने वाला । २ झुका हुआ । ३ शिष्ट । ४ टेढ़ा । ५ पूजा करने वाला । ६ भक्त ।

नम्रता-स्त्री० [सं०] १ विनय । २ शिष्टता । ३ झुकाने । ४ टेढ़ापन । ५ पूजा, भक्ति ।

नय-पु० [सं०] १ नीति, राजनीति । २ दूरदर्शिता, विवेक ।
३ न्याय, नीति विद्या । ४ व्यवहार, बतवि । ५ समानता ।
६ विधि । ७ तीर, नरीका । ८ मार्ग, राह । ९ मत, राय ।
१० दार्शनिक सिद्धांत विशेष । ११ देखो 'नदी' ।
१२ देखो 'नै' ।

नयदी, नयदंड, नयडी, नयडु-देखो 'निकट' । (स्त्री० नयडी)
नयण, नयणडी-देखो 'नयन' । —गोचर='नयनगोचर' ।
—पट='नयनपट' ।

नयणी-स्त्री० आंख की पुतली ।

नयणी-देखो 'नयन' ।

नयन, नयनडी-पु० [सं०] १ आंख, नेत्र, चक्षु । २ नेत्र ज्योति,
दृष्टि । —गोचर-वि० आंख के सामने, सम्मुख । —पट-
पु० आंख की पलक ।

नयर (रि)-वि० [सं० निकट] (स्त्री० नयरी) नजदीक, पाम,
समीप । —पु० १ आर्या गति या स्कंध का एक भेद ।
२ देखो 'नगर' ।

नयरी-१ देखो 'नगर' । २ देखो 'नयर' ।

नयसील-वि० [सं० नयशील] १ विनीत, नम्र । २ नीतिज्ञ ।

नयसेन-पु० [सं०] वीर अर्जुन ।

नयी-देखो 'नवी' ।

नरग-स्त्री० [सं० नरांग] १ नारी, स्त्री । २ पुरुष का दिग ।

नरंजण-देखो 'निरंजन' ।

नरंजणी-देखो 'निरंजनी' ।

नरंज-देखो 'नरेंद्र' ।

नरंम-देखो 'नरम' ।

नर-पु० [सं०] (स्त्री० नारी) १ पुरुष, व्यक्ति, आदमी ।
२ प्रत्येक जाति के प्राणियों में पुंसत्व गुण व चित्तों
वाला प्राणी । ३ माहम, पौरुष व बल वाला व्यक्ति,
प्राणी । ४ विष्णु । ५ शिव, महादेव । ६ अर्जुन, पार्थ ।
७ ईश्वर के अंशावतार नारायण के भाई एक ऋषि ।
८ राजा सुवृति के पुत्र का नाम । ९ मय राक्षस के पुत्र का
नाम । १० सेवक, दास । ११ जल, पानी । १२ एक
राजपूत वंश । १३ दोहा छंद का एक भेद । १४ छप्पय
छंद का एक भेद विशेष । १५ आर्या, गति या स्कंध का
एक भेद । १६ नीबट आदि वाद्य का भारी आवाज वाला
भाग । —वि० १ मादा का विपर्याय, पुंसत्व गुण वाला ।
२ वीर, योद्धा । —आसण-पु० पालकी, डोली ।
—हंद्र = 'नरेंद्र' ।

नरक, नरकाण-पु० [सं० नरकः, नरकम्] १ शास्त्र, पुराणानुसार
वह स्थान या लोक जहां पापी जीवात्माओं को अपने
दुष्कर्मों की सजा भुगतनी होती है । दोजख । २ अत्यधिक

पीड़ा या कष्टदायक स्थान । ३ बहुत मंदा स्थान । ४ मल ।
एक असुर का नाम । —गति-स्त्री० नरक भोगने की
दशा । —गांभी-वि० नरक में जाने योग्य । —चतुरदसी,
अवदस-स्त्री० कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी ।

नरकांतक-पु० [सं० नरकांतकृत] श्रीकृष्ण ।

नरकार-देखो 'निराकार' ।

नरकासुर-पु० [सं०] पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक असुर ।

नरकुटक-पु० [सं० नकुटकम्] नाक, नासिका ।

नरकेसरी-पु० [सं०] १ नृसिंह भगवान । २ नरक में गिरने
वाली पापात्मा ।

नरख-देखो 'निरख' ।

नरखणी (बी)-देखो 'निरखणी' (बी) ।

नरखणकार-पु० [सं० नरखणकर] असुर, दैत्य, राक्षस ।

नरग-देखो 'नरक' ।

नरगण-पु० [सं०] कलित ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण ।

नरगत-पु० [सं० नरगति] १ मनुष्य योनि । २ मनुष्य की जाल-
ढाल, रंग-ढंग ।

नरगस-देखो 'नरगिस' ।

नरगियो-कोट-पु० ताश का खेल विशेष ।

नरगिस-पु० [फा०] १ एक पीछा विशेष । २ इस पीछे के
सफेद फूल ।

नरगो-पु० [देश०] एक प्रकार का वाद्य ।

नरङ्गिणी, नरङ्गी-पु० [देश०] चमड़े या लून की रस्मी ।

नरजत्र-पु० [सं० नरयंत्र] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक प्रकार
का शंकु यंत्र ।

नरज-पु० [देश०] १ बड़ा नरगज । २ चन्द्रमा, चांद ।

नरजान-पु० [सं० नर-यान] पालकी, डोली ।

नरजू-पु० [देश०] खपरैल की छाजन की आंखें रखने वाली
लकड़ी ।

नरहर-देखो 'निरहर' ।

नरहेजक-पु० [सं० निर्हेजक] रंगरेज ।

नरणी-देखो 'निरणी' ।

नरत-देखो 'निरत' ।

नरतक-पु० [सं० नर्तक] (स्त्री० नरतकी) १ नाचने वाला ।
२ नट । ३ शिव, महादेव । ४ हाथी । ५ राजा । ६ मयूर ।

नरतकी-स्त्री० [सं० नर्तकी] नाचने वाली, वेश्या, रंडी ।

नरतन-पु० [सं० नर्तन] १ नृत्य, नाच । [सं० नर-तन]
२ मानव-देह । —साछ, साछा-स्त्री० नृत्यशाला,
नाचघर ।

नरतात-पु० [सं०] राजा, नृपति ।

नरति-स्त्री० [सं० निरुक्तिः] मुग्धि, खबर ।

नरत-वि० हल्का, छोटा ।

नरती-वि० [सं० न-रत्तः] (स्त्री० नरती) १ हीन, नीच ।
२ कम शोड़ा ।

नरत्तक-देखो 'नरत्तक' ।

नरत्तकी-देखो 'नरत्तकी' ।

नरत्तन-देखो 'नरत्तन' । —साळ, साळा = नरत्तनसाळ ।

नरत्राण-पु० [सं० नरत्राण] १ श्रीकृष्ण । २ नरपाल, राजा ।

नरदणो (बो)-क्रि० [सं० नर्द] भीषण शब्द करना, भयंकर
आवाज करना, जोर से शब्द करना ।

नरवेव-पु० [सं०] १ ब्राह्मण, विप्र । २ राजा, नृप ।

नरदी-पु० [फा० नाबदान] मैला पानी बहने की नदी ।

नरधरम, नरधरमो-पु० [सं० नरधर्मन्] कुवेर ।

नरनरणी (बो)-क्रि० चिल्लाना, शोर मचाना, पुकारना,
चीखना, पुकारना ।

नरनराणी (बो), नरनरावणी (बो)-क्रि० बड़बड़ाना ।

नरनाथ(बो), नरनाथक-पु० राजा, नृप ।

नरनारण, नरनारायण-पु० [सं० नरनारायण] विष्णु के
अंशावतार नर-नारायण दो ऋषि ।

नरनारि-स्त्री० [सं०] द्रौपदी, पांचाली ।

नरनाह-देखो 'नरनाथ' ।

नरनाहर-पु० [सं० नर-नाहरि] नृसिंहावतार ।

नरप-देखो 'नृप' ।

नरपत (पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती)-पु० [सं० नृपति]
१ राजा, नृप । २ बादशाह, सम्राट ।

नरपसु-पु० [सं० नरपशु] नृसिंह ।

नरपाळ-पु० [सं० नृपाल] प्रजापालक राजा ।

नरपोठ-पु० [सं०] विशेष बनावट का भवन ।

नरपुर-पु० [सं०] मृत्युलोक, भूलोक ।

नरबदा-स्त्री० [सं० नर्मदा] मध्य भारत की एक नदी ।

नरबहिबु-पु० [सं०] निर्वाह ।

नरबाण-देखो 'निरबाण' ।

नरबाह-देखो 'निरबाह' ।

नरबाहण-देखो 'नरबाहण' ।

नरबाहणी (बो)-देखो 'निरबाहणी' (बो) ।

नरभक्षी-पु० [सं० नरभक्षिन्] मनुष्यों को खाने वाला दैत्य,
असुर या हिसक पशु ।

नरभव-पु० [सं०] मनुष्य योनि, मनुष्य-जन्म ।

नरभुवण (न)-पु० [सं० नर-भवन] मर्त्यलोक । पृथ्वी ।

नरभ-देखो 'निरभय' ।

नरम, नरमड-वि० [फा० नर्म] १ मुलायम, कोमल ।

२ मुकुमार, नाजुक । ३ लचकदार, लचीला । ४ सख्त या
कड़े का विपर्याय । ५ नेज का उल्टा मंदा । ६ सुस्त,
घालसी । ७ सरल, सीधा, विनीत । ८ शीघ्र द्रवित होने

वाला । ९ धीमा, मंद, मद्धिम । १० जो गरिष्ठ न हो,
अचक । ११ हल्का फारिक । १२ आलसी, सुस्त ।
१३ जो रुखा न हो । १४ कम बजनी । १५ कमजोर,
निबल । १६ पीछेहीन । —पु० [सं० नर्मन्] १ हंसी,
परिहास । २ देखो 'नरमी' ।

नरमखरब-पु० [दिश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नरमदा-देखो 'नरबदा' ।

नरमदेस्वर-पु० [सं० नर्मदेश्वर] नर्मदा से निकलने वाला शिव
लिंग, शिव ।

नरमयद-पु० नृमिह अवतार ।

नरमळ-देखो 'निरमळ' ।

नरमानी-देखो 'नरमी' ।

नरमाई, नरमी-स्त्री० १ नम्रता विनम्रता । २ वित्त ।
३ कोमलता, मृदुलता । ४ स्वभाव से धीमापन ।
५ लाचारी ।

नरमु-देखो 'नरमी' ।

नरमैध-पु० [सं०] चैत्र में होने वाला एक यज्ञ विशेष जिसमें
नर बलि दी जाती थी ।

नरमी-पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नरम्म-१ देखो 'नरम' । २ देखो 'नरमी' ।

नरम्मी-देखो 'नरमी' ।

नरयंद-पु० [सं० नर-इन्द्र] १ विष्णु । २ शिव, महादेव ।
३ देखो 'नरेंद्र' ।

नरय-देखो 'नरक' ।

नरसंग-देखो 'निरसंग' ।

नरलोक, नरलोग-पु० [सं० नरलोक] मृत्युलोक, भूलोक ।

नरलोम-देखो 'निरलोम' ।

नरलोय-देखो 'नरलोक' ।

नरवस-देखो 'निरवस' ।

नरवइ-देखो 'नरपति' ।

नरवदा-देखो 'नरबदा' ।

नरवय, नरवहि-पु० १ निर्वाह । २ देखो 'नरपति' ।

नरवर (र)-पु० राजा, नरेश । —वि० नरों में श्रेष्ठ ।

नरवाघ-पु० [सं० नरवाघ्र] ऊगर सिंह व नीचे मनुष्य देह
वाला जल जंतु विशेष । —वि० मनुष्यों में श्रेष्ठ ।

नरवाहण (न)-पु० [सं० नरवाहन] कुबेर, धनेश ।

नरवाहणी (बो)-देखो 'निरवाहणी' (बो) ।

नरविही-देखो 'नरेंद्र' ।

नरवैश-पु० [सं०] मनुष्यों का चिकित्सक ।

नरसंग (घ)-देखो 'नरसिंह' ।

नरसळ-पु० [देश०] ईश्व से मिलता-जुलता नरकट का पीधा विशेष ।
 नरसाह-पु० राजा, बादशाह ।
 नरसिका-स्त्री० एक प्रकार की कटार ।
 नरसिग (घ)-देखो 'नरसिंह' ।
 नरसिगौ-पु० [देश०] १ तुर्हीनुमा एक वाद्य विशेष ।
 २ देखो 'नरसिंह' ।
 नरसिंह, नरसिंग, नरसोघ-पु० [सं० नृसिंह] १ विष्णु का चौथा अवतार जिसमें आधा शरीर सिंह व आधा मनुष्य का था ।
 २ राजा, नृप । ३ एक रतिबंध । -वि० मनुष्यों में श्रेष्ठ ।
 -चवदस-स्त्री० वैशाख शुक्ला चतुर्विंशी । -पुराण-पु० नृसिंहावतार । संबंधी एक उप पुराण ।
 नरसी-पु० श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध भक्त, नरसी सेहता ।
 नरसोह, नरस्यत्र-देखो 'नरसिंह' ।
 नरहर (हरि, हरी)-पु० [सं० नरहरि] नृसिंह भगवान ।
 नरही-पु० [देश०] तलवार की मूठ का निचला छोर ।
 नरहारी-पु० [सं० नर-हारीक] एक प्रकार का बड़ा हीरा ।
 नराश्रंतक-देखो 'नरांतक' ।
 नरांड-देखो 'नरेंद्र' ।
 नराण-देखो 'नारायण' ।
 नरांतक-पु० [सं०] रावण का एक पुत्र ।
 नरानाथ-देखो 'नरनाथ' ।
 नरनाथक-पु० [सं० नरनाथक] १ श्रीकृष्ण । २ देखो 'नरनाथक' ।
 नरानाह-देखो 'नरनाथ' ।
 नरापत (पति, पत्नी, पत्त)-देखो 'नरपति' ।
 नरायंद-देखो 'नरेंद्र' ।
 नरायण-देखो 'नारायण' ।
 नराकार-१ देखो 'नकार' । २ देखो 'निराकार' ।
 नराच-देखो 'नाराच' ।
 नराज-१ देखो 'नाराज' । २ देखो 'नाराच' ।
 नराजगी, नराजी-देखो 'नाराजगी' ।
 नराट, नराठ-पु० [सं० नरराट] १ राजा, नृप, नरेंद्र ।
 २ देखो 'निराट' ।
 नराताळ, नराताळा, नराताळी, नराताळी-देखो 'निराताळ' ।
 नराधिप-पु० [सं०] राजा, नृप ।
 नराळ-१ देखो 'निराळ' । २ देखो 'निगाताळ' ।
 नराळी-देखो 'निगाळी' । (स्त्री० निराळी)
 नराहिव, नराहिवु-देखो 'नराधिप' ।
 नरिव, नरिवर, नरिवि, नरिवु नरिवी, नरिव, नरिव-पु०
 १ प्रथम लघु की पांच मात्रा का नाम । २ देखो 'नरेंद्र' ।

नारक, नरिग-देखो 'नरक' ।
 नरिबाहणी (बी)-देखो 'निरबाहणी' (बी) ।
 नरिबंद-देखो 'नरेंद्र' ।
 नरिपण-पु० १ राजा, नृप । २ देखो 'नारायण' ।
 नरिपी-पु० परिपक्वतावस्था की ककड़ी ।
 नरीद-देखो 'नरेंद्र' ।
 नरी-देखो 'नारी' ।
 नरीयंद-देखो 'नरेंद्र' ।
 नरीस-देखो 'नरिस' ।
 नरु, नरु, नरु-देखो 'नर' ।
 नरुका-स्त्री० कच्छवाहों की एक शाखा ।
 नरुकी-पु० उक्त शाखा का व्यक्ति ।
 नरेंद्र-पु० [सं०] १ राजा नृप । २ विपरीत जीवों के काटने पर इलाज करने वाला चिकित्सक, विष वैद्य । ३ अंत में दो गुरु वाला एक छंद विशेष ।
 नरेण-देखो 'नरेहण' ।
 नरेस, नरेसर, नरेसह, नरेसक, नरेसरी, नरेसुर नरेस्वर-पु०
 [सं० नरेण, नरेस्वर] १ राजा, नृप । २ ईश्वर, परमात्मा ।
 ३ श्रीकृष्ण, वासुदेव ।
 नरेह-१ देखो 'नरेहण' । २ देखो 'नरेय' ।
 नरेहण-वि० [सं० निर + ग्राहण] १ गवित्र, उज्ज्वल, निष्कलंक । २ निष्पाप । ३ निष्कपट, शुद्ध । ४ देखो 'नरेंद्र' ।
 नरेहर-१ देखो 'नरहरि' । २ देखो 'नरेहण' ।
 नरोत्तम, नरोत्तम-पु० [सं० नरोत्तम] ईश्वर, भगवान ।
 नरोवर-पु० [सं० नराम्बर] समृद्ध, सागर ।
 नरचंद-देखो 'नरेंद्र' ।
 नलप-पु० [सं० निलिम्प] देवता, सुर ।
 नलपिका-स्त्री० [सं० निलिम्पिका] गाय, गौ ।
 नळ-पु० [सं० नल] १ निम्न देश के चन्द्रवंशी राजा ।
 २ श्रीराम की सेना का एक वानर । ३ यदु के एक पुत्र का नाम । ४ एक दानव विशेष । [सं० नाल] ५ एक नद का नाम । ६ युद्ध का एक वाद्य विशेष । ७ सिंह का भयला पांव । ८ एक प्रकार का आयुध । ९ तलवार का एक भाग । १० तलवार पर होने वाली एक लकीर विशेष । ११ नरकट, नरसल । १२ कमल, पद्म । १३ वह हड्डी जिसके अन्तर्ग नरसल के समान सीधा छेद हो । १४ जानवर का नथुना । १५ तलिका, नाली । १६ पेशाब की तलिका ।
 नळकी, नळकीनी-देखो 'नळी' ।
 नळकूबर-पु० [सं० नलकूबर] १ कुबेर का एक पुत्र । २ ताल के साठ भेदों में से एक ।
 नळणी-देखो 'नलिनी' ।

नळणी (बी)-क्रि० जानवर द्वारा पिछले पांवों पर खड़ा होकर हमला करना ।

नळपुर-पु० [सं० नलपुर] राजा नल की राजधानी का नगर ।

नळवट (टि)-देखो 'निल' ।

नळवार-पु० बछड़ा ।

नळवन-पु० तलवार ।

नळसेतु-पु० [सं० तलसेतु] रामेश्वर के निकट बंधा एक पुल ।

नळांध-पु० रात्रि में न दिखने का एक रोग, रतौंधी ।

नळाड़-देखो 'निलाट' ।

नळि-देखो 'नळ' ।

नळिका-स्त्री० [सं० नलिका] १ वैद्यक में एक प्रकार का प्राचीन यंत्र । २ बंदूक से मिलना-जुलना एक प्राचीन अस्त्र । ३ बाणों का तरकश । ४ पुदीना । ५ देखो 'नळी' ।

नलिन-पु० [सं०] १ कमल, पद्म । २ सारस पक्षी । ३ जल । ४ नील का पौधा ।

नलिन, नलिनी-स्त्री० [सं०] १ कमलिनी, कमल । २ एक प्रकार की सज्जी । ३ नदी, सरिता । ४ नारियल की शराब । ५ नाक का बायां नथुना । ६ गंगा की एक धारा का नाम । ७ कमल का ढेर । ८ अधिक कमलों वाला जलाशय । -वि० नीले रंग का, नीला । -नवन-पु० कुवेर का एक उपवन ।

नलिन, नलिनी-स्त्री० [सं०] १ कमलिनी, कमल । २ एक प्रकार की सज्जी । ३ नदी, सरिता । ४ नारियल की शराब । ५ नाक का बायां नथुना । ६ गंगा की एक धारा का नाम । ७ कमल का ढेर । ८ अधिक कमलों वाला जलाशय । -वि० नीले रंग का, नीला । -नवन-पु० कुवेर का एक उपवन ।

नलिन, नलिनी-स्त्री० [सं०] १ कमलिनी, कमल । २ एक प्रकार की सज्जी । ३ नदी, सरिता । ४ नारियल की शराब । ५ नाक का बायां नथुना । ६ गंगा की एक धारा का नाम । ७ कमल का ढेर । ८ अधिक कमलों वाला जलाशय । -वि० नीले रंग का, नीला । -नवन-पु० कुवेर का एक उपवन ।

नलिन, नलिनी-स्त्री० [सं०] १ कमलिनी, कमल । २ एक प्रकार की सज्जी । ३ नदी, सरिता । ४ नारियल की शराब । ५ नाक का बायां नथुना । ६ गंगा की एक धारा का नाम । ७ कमल का ढेर । ८ अधिक कमलों वाला जलाशय । -वि० नीले रंग का, नीला । -नवन-पु० कुवेर का एक उपवन ।

नळियो-देखो 'नळ' ।

नळी-स्त्री० [सं० नली] १ पैर के घुटने के नीचे से पंजे तक की सामने की हड्डी । २ नलिका नाम का गंध द्रव्य । ३ एक प्रकार का वाद्य विशेष । ४ रस्स, धातु आदि की बारीक भोगली, नलिका । ५ एक वाद्य विशेष । ६ सुरणाई नामक वाद्य का एक भाग । ७ बुनकरों के काम आने वाली काष्ठ की छोटी नलिका । ८ देखो 'नळ' । ९ देखो 'नाळ' ।

नळी-स्त्री० [सं० नली] १ पैर के घुटने के नीचे से पंजे तक की सामने की हड्डी । २ नलिका नाम का गंध द्रव्य । ३ एक प्रकार का वाद्य विशेष । ४ रस्स, धातु आदि की बारीक भोगली, नलिका । ५ एक वाद्य विशेष । ६ सुरणाई नामक वाद्य का एक भाग । ७ बुनकरों के काम आने वाली काष्ठ की छोटी नलिका । ८ देखो 'नळ' । ९ देखो 'नाळ' ।

नळी-स्त्री० [सं० नली] १ पैर के घुटने के नीचे से पंजे तक की सामने की हड्डी । २ नलिका नाम का गंध द्रव्य । ३ एक प्रकार का वाद्य विशेष । ४ रस्स, धातु आदि की बारीक भोगली, नलिका । ५ एक वाद्य विशेष । ६ सुरणाई नामक वाद्य का एक भाग । ७ बुनकरों के काम आने वाली काष्ठ की छोटी नलिका । ८ देखो 'नळ' । ९ देखो 'नाळ' ।

नळीआरड-स्त्री० पेट पर पड़ने वाली त्रिवली ।

नले-देखो 'निल' ।

नळी-पु० [सं० नाल] १ बुनकरों की सूत लपेटने की आक आदि की नलिका । २ भवन निर्माण में काम आने वाला एक औजार विशेष । ३ मिट्ट, घोड़े आदि जानवरों के अगले पांव के घुटने के नीचे की हड्डी । ४ देखो 'नळ' । ५ देखो 'नाळी' ।

नळी-पु० [सं० नाल] १ बुनकरों की सूत लपेटने की आक आदि की नलिका । २ भवन निर्माण में काम आने वाला एक औजार विशेष । ३ मिट्ट, घोड़े आदि जानवरों के अगले पांव के घुटने के नीचे की हड्डी । ४ देखो 'नळ' । ५ देखो 'नाळी' ।

नळी-पु० [सं० नाल] १ बुनकरों की सूत लपेटने की आक आदि की नलिका । २ भवन निर्माण में काम आने वाला एक औजार विशेष । ३ मिट्ट, घोड़े आदि जानवरों के अगले पांव के घुटने के नीचे की हड्डी । ४ देखो 'नळ' । ५ देखो 'नाळी' ।

नल्ली-वि० बुरा, खराब ।

नवंबर-पु० [ग्रं०] ईसा सन् का श्यारहवां मास ।

नव (उ)-वि० [सं० नवन्] १ नया, नूतन, नवीन । २ ताजा, तुरन्त का । ३ आधुनिक । ४ दश में एक कम । -पु० १ नौ की संख्या व अंक । २ काक, कौआ ।

नवका-देखो 'नोका' ।

नवकार, नवकार-पु० [सं० नवस्कार] जैन उपासना का प्रसिद्ध मंत्र । -वळी-स्त्री० उक्त मंत्र का जाप, माला ।

नवकारसी-पु० दश प्रत्याख्यानो में से प्रथम ।

नवकुमारी-स्त्री० [सं०] नवरात्र में पूजी जाने वाली नौ कुमायियां ।

नवकुळी-पु० नाग वंश के नवकुल ।

नवकोट, नवकोटी-पु० नौ कोट या गढ़ों वाला मारवाड़ ।

नवकोटी-पु० १ मारवाड़ का अधिपति । २ राठौड़ ।

नवखंड-पु० [सं०] जंबू द्वीप के नौ खण्ड ।

नवगड्डी, नवगड्डी-पु० [सं० नवगढ़] राठौड़ों का एक सम्बोधन ।

नवगढ़-पु० [सं०] मारवाड़ का एक नाम ।

नवगरी, नवगिरि, नवगीर-देखो 'नवग्रह' ।

नवगुण-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार नौ विशेष ग्रह । २ देखो 'नवग्रही' -बंध-पु० नौ ग्रहों को बांधने वाला, रावण ।

नवग्रही-स्त्री० ग्रहों के रूप में नौ नगों से युक्त एक आभूषण विशेष । -वि० नवग्रहों का सूचक ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवग्रह-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनोई ।

नवध.

(७३२)

नवल्ली

नवधा-क्रि० वि० [सं०] नौ प्रकार से । -वि० नौ गुणा—भक्ति-
स्त्री० भक्ति की नौ विधियाँ ।

नवनध-देखो 'नवनिधि' ।

नवनवड-वि० बिलकुल नवीन, नया । नवीन ।

नवनाडी-स्त्री० [सं०] योग विद्या की, शरीरस्थ नौ नाड़ियाँ ।

नवनाथ-पु० [सं०] नाथ सम्प्रदाय के सिद्धि प्राप्त नौ
महायोगी ।

नवनिद्धि, नवनिद्धी, नवनिध, नवनिधि, नवनिधी-स्त्री० [सं०
नवनिधि] कुवेर की नौ निधियाँ ।

नवनील-पु० [सं०] १ भवखन । २ श्रीकृष्ण । —घेमु-स्त्री०
दान के लिए कल्पित गौ ।

नवपंचम-पु० [सं०] जेष्ठ मास के कृष्ण पक्ष का; धनिष्ठा
नक्षत्र से रोहिणी नक्षत्र तक का नौ दिन का समय ।

नवपण (न)-पु० [सं० नव + पण] १ यौवन, जवानी ।
२ नवीनता ।

नवपत्रिका-स्त्री० [सं०] नवदुर्गा पूजन में काम आने वाले नौ
वृक्षों के पत्र ।

नवपव-पु० [सं०] जैन मतानुसार माने जाने वाले नौ पद ।

नववत, नववती, नववसी, नववती-देखो 'नौवन' ।

नववहारी-नगरी-स्त्री० [सं० नव + द्वार + नगरी] नौ
दरवाजे वाला नगर ।

नवम-वि० [सं० नवम्] नौ के स्थान वाला, नौवाँ ।

नवमई, नवमई-स्त्री० [सं० नवमति] १ सहसा सोचने की
शक्ति । २ शुद्ध बुद्धि या मति । ३ देखो 'नवमौ' ।

नवमहानिधान-पु० नौ प्रकार के महान् कोष ।

नवमासियो-वि० नौ मास में होने वाला ।

नवाम, नवमौ-स्त्री० [सं०] मास के प्रत्येक पक्ष की नौवीं
तिथि । -वि० नौ के स्थान वाली, नौवीं ।

नवमोहरी-पु० नव मुद्रायें अंकित शाही फरमान ।

नवमौ-वि० [सं० नवम्] (स्त्री० नवमौ) नौ के स्थान वाला,
नौवाँ ।

नवपराजलखमण, नवपराजलखमा-पु० [सं० नवपराज लखमण]
युधिष्ठिर ।

नवयोगन-पु० [सं०] १ युवावस्था का प्रारंभ, तरुणई ।
२ नवयुवक, तरुण ।

नवयौवना-स्त्री० [सं०] युवती, तरुणी ।

नवरंग-पु० [सं०] १ छप्पय छंद का ५९ वां भेद । २ एक
वर्णिक छंद विशेष । ३ कामदेव, अनंग । ४ लावण्य,
मोन्दर्प । -वि० १ नये ढंग का, नया । २ सुन्दर, रूपवान् ।

नवरंगी, नवरंगी-वि० [सं० नवरंग] १ अनीखा, अद्भुत,
विचित्र । २ नित्य नये आनन्द वाला ।

नवरतन-पु० [सं० नवरत्न] १ नौ प्रकार के बहुमूल्य रत्न ।

२ नौ ग्रहों के प्रतीक, ती रत्न जड़ा अभूषण । ३ विशिष्ट
गुणों वाले नौ सभामद ।

नवरत्ना, नवरती, नवरत्नी-देखो 'नवरात्र' ।

नवरत्न-पु० [सं०] काव्य में होने वाले शृंगार, करुण आदि
नौ रस ।

नवरा-देखो 'नौरा' ।

नवरात (रात्र, रात्रि)-पु० [सं० नवरात्र] १ चैत्र व आश्विन
के शुक्ल पक्ष के दुर्गा पूजन के, नौ पर्व दिन । २ इन दिनों
में किया जाने वाला दत्त, पूजन आदि ।

नवरोज, नवरोजौ-पु० ईरानियों व मुसलमानों का एक वार्षिक
महोत्सव ।

नवरी-वि० (स्त्री० नवरी) १ जिसके पास कोई काम न हो,
फुरसत वाला । २ सभी कामों से मुक्त । ३ निकम्मा,
बेकार । ४ निष्क्रिय । ५ देखो 'नौ'री' ।

नवस-वि० १ नवीन, नया । २ नवयुवा, नवयौवना ।

नवलघनगा-स्त्री० मृधा नायिका का एक भेद ।

नवलड-देखो 'नवल' ।

नवलकिसोर-पु० [सं० नवलकिशोर] १ श्रीकृष्ण, धनश्याम ।
२ युवक, युवा पुरुष ।

नवलकिसोरी-स्त्री० [सं० नवलकिशोरी] १ युवा स्त्री, युवती ।
२ राधा ।

नवलकख-स्त्री० [सं० नवलक्ष] नौ लाख देवियों का समूह ।
-वि० १ नौ लाख । २ नौ लाख का ।

नवलखी-स्त्री० [सं० नवलक्ष] जुलाहों की ताने दबाने की एक
लकड़ी विशेष । -वि० नवलक्ष की । नौलखी ।

नवलखी-वि० [सं० नवलक्ष] (स्त्री० नवलखी) १ नौ लाख का ।
२ मूल्यवान्, बहुमूल्य । —दरग-पु० पारवाड़ का कोटड़ा
नामक नगर । —हार-पु० नौ लाख की कीमत वाला हार ।

नवलबनी (बनी)-स्त्री० १ दुल्हन, वधू । २ नवोद्वा, नववधू ।
३ नवयुवती ।

नवलबनी (बनी)-पु० १ दूल्हा, बर । २ नवपरगिता युवक ।
३ तरुण ।

नवलसी-वि० नवीन, नूतन ।

नवलिथी-देखो 'नकुल' ।

नवली-देखो 'नौली' ।

नवली-वि० [सं० नव्य] नयी, नवीन । -स्त्री० नवयुवती ।

नवली-पु० [हेल०] खलिहान में पड़ा साफ अनाज का
लम्बा ढेर ।

नवली-वि० [सं० नव्य] नया, नवीन । -पु० नवयुवक, तरुण ।

नवल्ल-देखो 'नवल' ।

नवल्लो (य)-देखो 'नवली' ।

नवल्ली

(७३१)

नवोड़ी

नवल्लो-देखो 'नवली' ।

नववासुदेव-पु० [सं०] जैन मतानुसार नौ वासुदेव ।

नवविस-पु० [सं० नव-विष] नौ प्रकार के विष ।

नवसंगम-पु० [सं०] १ पति-पत्नी या स्त्री-पुरुष का प्रथम समागम । २ प्रथम भेंट ।

नवसदी-पु० [फा० नवीसिन्दः] लेखक, ग्रंथकार, कर्मचारी ।

नवसक्ति-स्त्री० [सं० नवशक्ति] नौ प्रकार की शक्तियाँ ।

नवसदी-स्त्री० [सं० नव + फा० सदी] शाही ग्रहलकारों का विभाग ।

नवसर-वि० [सं० नवसरः] नौ लड़ी का, नौ लड़ वाला ।
-पु० १ नौ लड़ी का हार । २ मारवाड़ का एक किला ।
-हार-पु० नौ लड़ियों या डोरों का हार ।नवसहस्र, नवसहस्रउ, नवसहस्री, नवसहस्र, नवसहस्री,
नवसाहस्री-पु० [सं० नवमहस्र] राठीड़ों की उपाधि का शब्द । राठीड़ ।

नवमूज-पु० [सं० नवमूज] कामदेव, अनंग ।

नवहृत्थ, नवहृत्थी, नवहृत्थ, नवहृत्थी, नवहृत्थ-वि० [सं० नवहृत्थ]
(स्त्री० नवहृत्थी) १ नौ हाथ लंबा, नौ हाथ का ।
२ वीर बहादुर । -पु० सिंह, शेर ।

नवांकोट, नवांकोटि (टी)-देखो 'नवकोटी' ।

नवांणियो-वि० [सं० नव-उष्ण] ताजा दूहा दूध, धारोष्ण दूध ।

नवांणु (रू)-देखो 'निनाण' ।

नवांणी-वि० [सं० नवीन] (स्त्री० नवांणी) नवीन, नया,
नूतन ।

नवांस-पु० [सं० नवांस] किसी राशि का नौवां भाग ।

नवाई-देखो 'निवाई' ।

नवाङ्गी (बी)-देखो 'नवाणी' (बी) ।

नवाज-१ देखो 'नमाज' । २ देखो 'निवाज' ।

नवाजणी (बी)-देखो 'निवाजणी' (बी) ।

नवाणी (बी)-क्रि० १ स्नान कराना, नहलाना । २ देखो
'नमाणी' (बी) ।

नवात-स्त्री० [देश०] मिश्री ।

नवादी-स्त्री० [सं० नव-आदि] १ नववधू, नवीड़ा । २ तरुणी ।
-वि० नयी, नूतन ।

नवाबी-वि० [सं० नव-आदि] (स्त्री० नवादी) नया, नूतन ।

नवाब-देखो 'नवाब' । -जादी = 'नवाबजादी' ।

नवाबी-देखो 'नवाबी' ।

नवायी-देखो 'निवायी' ।

नवार-देखो 'निवार' ।

नवारण-देखो 'निवारण' ।

नवारणमंत्र-पु० [सं० निर्वाण मंत्र] नौ अक्षर का मंत्र विशेष ।

नवारी-स्त्री० नौ हाथ का सूती बस्त्र विशेष ।

नवाळ (ठी)-देखो 'निवाळी' ।

नवावणी (बी)-१ देखो 'नवाणी' (बी) । २ देखो
'नमाणी' (बी) ।

नवास-देखो 'निवास' ।

नवासी-पु० [फा० नवासः] (स्त्री० नवासी) पुत्री का पुत्र,
दोहित ।

नवाह-वि० [सं०] नौ दिन का, नौ दिवसीय ।

नवि-अव्य० [सं० न + अपि] १ न, नहीं । २ नहीं तो ।
३ देखो 'नवी' ।

नवियो-१ देखो 'निवियो' । २ देखो 'नव' ।

नवी-वि० [सं० नव] १ नवीन, नूतन । २ देखो 'नवि' ।
३ देखो 'नमो' ।नवीन-वि० [सं०] १ नया, नूतन । २ हाल का, ताजा ।
३ अद्भुत, अपूर्व । ४ आधुनिक ।नवीनता-स्त्री० [सं० नवीनत्व] १ नयापन, नूतनता ।
२ ताजगी । ३ अद्भुतता, विचित्रता । ४ आधुनिकता ।नवीना, नवीनी-स्त्री० [सं० नवीना] १ नव वधू, दुल्हन ।
२ नवयौवना । -वि० नयी, नवीन ।

नवीन-देखो 'नवीन' ।

नवीनी-पु० [सं० नवीन] (स्त्री० नवीनी) १ नवयुवक,
२ देखो 'नवीन' ।

नवीसदी-देखो 'नवसदी' ।

नवीस-पु० [फा०] लेखक, लिखने वाला कर्मचारी ।

नवीसी-स्त्री० [फा०] लिखने का कार्य । लिखाई ।

नवे-देखो 'नेऊ' ।

नवेक-वि० [सं० नव-एक] नौ के लगभग ।

नवेक्षेत्र-पु० नया क्षेत्र, नई जगह, स्थान ।

नवेखंड-देखो 'नवखंड' ।

नवेड़ी-देखो 'निवेड़ी' ।

नवेद-देखो 'निवेद' ।

नवेनाथ-पु० श्रीकृष्ण ।

नवेनिधि, नवेनिधि-देखो 'नवनिधि' ।

नवेर, नवेरी-वि० [सं० नवतर] नवीन, नया, नूतन ।

नवेली-स्त्री० [सं० नवीन] १ नवयौवना, तरुणी । २ नववधू ।
-वि० नूतन, नवीन ।नवेली-पु० [सं० नवीन] (स्त्री० नवेली) १ नौजवान, तरुण ।
२ देखो 'नवीन' ।नव-१ देखो 'नेऊ' । २ देखो 'नव' । -ग्रह = 'नवग्रह' ।
-निध, निधि = 'नवनिधि' ।

नवोड़ी-देखो 'नवी' ।

नवोद्ध, नवोद्धा-स्त्री० [सं० नव + उद्धा] १ साहित्य में ज्ञात मुग्धा नायिका का एक भेद । २ नव विवाहिता, नववधू । ३ जवान स्त्री तरुणी ।

नवोत्तरी-पुं० नौवां वर्ष ।

नवी नवी, नव्य-वि० [सं० नव, नव्य] (स्त्री० नवी) १ नवीन, नया । २ हाल का, ताजा । ३ आधुनिक । ४ अपूर्व विचित्र । ५ पुनः प्रचलित । ६ क्रमशः आने वाला । ७ प्राचीन का स्थानापन्न । ८ नौ के स्थान वाला । -पुं० १ नौ वा वर्ष । २ देखो 'नव' ।

नव्यांशु-देखो 'निनांशु' ।

नव्यासी-देखो 'निव्यासी' ।

नव्य-देखो 'नव' । २ देखो 'नवी' । —नाथ=नयनाथ । —नीधि = 'नवनिधि' ।

नव्वाब-पुं० [अ०] १ बादशाह द्वारा नियुक्त किसी बड़े प्रदेश का शासक । २ मुसलमानों की एक उपाधि विशेष । ३ अमीर मुसलमान । —जादो-स्त्री० किसी नवाब की पुत्री । —जादो-पुं० नवाब का पुत्र ।

नव्वाबी-स्त्री० [अ०] १ नवाब का पद, उपाधि । २ नवाबों जैसा रहन-सहन । ३ अमीरायत ।

नसक-देखो 'निसंक' ।

नस-स्त्री० [सं० स्नस्] १ प्राणियों के शरीर की रक्त वाहिनी शिरा, नाड़ी, नली, धमनी । २ गर्दन, ग्रीवा । ३ शरीर की मांस पेशियों को परस्पर जोड़ने वाले तंतु, रग । ४ पत्तों के बीच दिखने वाले रेशे, तंतु । ५ सूत्रेन्द्रिय, लिंगेन्द्रिय । ६ कुंजी, नियंत्रक तत्त्व । ७ देखो 'नासा' । ८ देखो 'निस' ।

नसचर-देखो 'निमाचर' ।

नसचार, नसचारी-देखो 'निसाचरी' ।

नसणी (बो)-कि० [सं० नश्] नष्ट होना, नाश होना ।

नसतरंग-पुं० [सं० स्नस् + तरंग] पीतल का बना एक वाद्य विशेष ।

नसतर-पुं० [फा० नश्तर] १ शल्य चिकित्सा का चाकू विशेष । २ चाकू ।

नसतार-देखो 'निसतार' ।

नस-दरबी-स्त्री० [सं० स्नस् + दर्बी] मांस का फल ।

नसयबिब-देखो 'निसाबिब' ।

नसलंब, नसलंबड़-पुं० [सं० स्नस् + लंब] ऊंट, उष्ट्र ।

नसल-स्त्री० [अ० नस्ल] १ वंश, कुल । २ संतान, श्रीलाद । ३ प्राणियों का वर्ग या जाति विशेष । ४ किसी क्षेत्र या प्रदेश विशेष का प्राणी या भवेली । -वि० १ निर्लज्ज, बेशर्म । २ नीच, दुष्ट ।

नसलंबड़-देखो 'नसलंब' ।

नसवार-स्त्री० नाक में मूँघने की पिंसी हुई तम्बाकू ।

नसाखोर वि० [अ०] अधिक नशा करने वाला, नशाबाज ।

नसाङ्गो (बो)-देखो 'नसाणी' (बो) ।

नसाचर-१ देखो 'निमाचर' । २ देखो 'नासाचार' ।

नसाणी (बो)-कि० [सं० नश्] १ भगाना, दूर करना, मिटाना । २ नष्ट करना, बरबाद करना । ३ बिगाड़ना, खराब करना । ४ मिटाना ।

नसाण (फ)-देखो 'इसाफ' ।

नसापत-देखो 'निसापत' ।

नसाबाज-देखो 'नमेशाज' ।

नसाबणी (बो)-देखो 'नसाणी' (बो) ।

नसि-देखो 'निमा' ।

नसियां-स्त्री० [सं० निषया] १ एकान्त में बना देवस्थान । (जंत) २ समाधि स्थान । ३ तीर्थ स्थान ।

नसीजणी (बो)-कि० कंकरीली भूमि में गाड़ी आदि खींचने से बेल के कंधे में सूजन आना, घाव पड़ना ।

नसीत-देखो 'नसीहत' ।

नसीन-वि० [फा० नशीन, नशी] १ बँटा हुआ । २ बँटने वाला । ३ रखने वाला । ४ किसी से युक्त ।

नसीनी-स्त्री० [फा० नशी] बैठने या रखने की क्रिया या भाव ।

नसीब-पुं० भाग्य, किस्मत ।

नसीयत-देखो 'नसीहत' ।

नसीली-वि० (स्त्री० नसीली) १ नशा उत्पन्न करने वाला, नशीला, मादक । २ जिस पर नशे का प्रभाव हो, मदमस्त ।

नसीहत-स्त्री० [अ०] १ उपदेश, शिक्षा, मुसम्मति । २ बुद्धि, अक्ल ।

नसे-सात्तार-पुं० [फा०] पारसी मजहब के अनुयायी, मुर्दा उठाने वाले व्यक्ति ।

नसंगो-देखो 'नीसरणी' ।

नस-बाज, नसेल-वि० [फा०] मादक पदार्थों का सेवन करने वाला, किसी नशे का आदी ।

नसी-पुं० [अ० नशः] १ मादक पदार्थ के सेवन से उत्पन्न उन्माद की अवस्था, उन्मत्तता । २ मादक पदार्थ ।

नश्चित-देखो 'निश्चित' ।

नस्ट-पुं० [सं० नष्ट] पिंगल शास्त्र की एक क्रिया विशेष । -वि० १ जो बरबाद हो चुका हो, नाश हुआ हुआ । २ खराब, बेकार । ३ वंचित, मुक्त । ४ अदृश्य । ५ खोया हुआ, गुम । ६ अधम, नीच । —देव-पुं० दुष्ट देव । —बुद्धि-वि० मूर्ख ।

नस्टचंद्र-पुं० [सं० नष्ट-चन्द्र] भादव मास के दोनों पक्षों की चतुर्थी को दिखने वाला चांद ।

नस्टजातक-पु० [सं० नष्ट-जातक] जन्म कुण्डली बनाने की एक क्रिया विशेष ।

नस्ट-भ्रष्ट-वि० [सं० नष्ट-भ्रष्ट] जो भ्रष्ट या मद्धता होकर नष्ट हो गया हो बरबाद । -पु० नाश, ध्वंस ।

नस्टात्मा-वि० [सं० नष्टात्मा] दुरात्मा, नीच, खल ।

नस्तर-देखो 'नमतर' ।

नस्तरणी (बो)-क्रि० [सं० निस्तरणम्] १ समाप्त होना, नष्ट होना । २ नस्तर लगा कर चीरना । ३ देखो 'निस्तरणी' (बो) ।

नस्तार-देखो 'निस्तार' ।

नस्यां-देखो 'नसिनां' ।

नस्वर-वि० [सं० नश्वर] १ नाश होने वाला, मिटने वाला, नष्ट होने लायक, क्षणिक । २ उपद्रवकारी ।

नस्वरता-स्त्री० [सं० नश्वरता] नाश होने की अवस्था, गुण या भाव ।

नहं-देखो 'नहीं' ।

नहंकार-देखो 'निहंकार' ।

नहंग-१ देखो 'निहंग' । २ देखो 'नैंग' । —राज, राजा = 'निहंगराजा' ।

नहचं-देखो 'निश्चय' ।

नहचो-देखो 'नहचो' ।

नह-१ देखो 'नख' । २ देखो 'नभ' । ३ देखो 'नहीं' । ४ देखो 'नस' ।

नहकुण-देखो 'निहकुण' ।

नहकोड-पु० गोदा, वीर ।

नहच, पहचय-देखो 'निश्चय' ।

नचचळ-देखो 'निश्चळ' ।

नहचे, नहचेण, नहच-देखो 'निश्चय' ।

नहचो, नहचो-पु० [सं० निश्चय] १ धोरज, धैर्य । २ विश्वास, पकीन । ३ शान्ति, संतोष ।

नहच्यंत-देखो 'निश्चित' ।

नहच्यो-देखो 'नहचो' ।

नहाणी (बो)-क्रि० १ धारण करना, उठाना । २ सभालना, संभाले रखना । ३ पकड़ना, धामना । ४ छावेष्टित करना । ५ बनाना ।

नहफूलण-स्त्री० पुष्प की कली ।

नहरणी-देखो 'नखहरणी' ।

नहराळ (ळो)-पु० १ सफेद पीठ वाला घोड़ा । २ देखो 'नखराळो' ।

नहलाणी (बो), नहलावणी (बो)-देखो 'नहाणी' (बो) ।

नहसणी (बो)-देखो 'निहमणी' (बो) ।

नहाणी (बो) क्रि० [सं० निमज्जनम्] १ स्नान करना, नहाना । २ डुबकी लगाना । ३ तीव्र स्नान करना । ४ धुलना । ५ भीगना ।

नहाळ (ल)-पु० [सं० नख-भालुच] १ सिंह शेर । २ देखो 'निहाळ' ।

नहावणी (बो)-क्रि० [देश०] १ निहारना, देखना । २ खचना, पहिचानना ।

नहावण पु० १ स्नान काने की क्रिया या भाव । मज्जन । २ देखो 'नहावण' ।

नहावणी (बो)-देखो 'नहाणी' (बो) ।

नहीतरि-अव्य० नहीं तो ।

नहि नहि नहीं, नही नहं, नह-अव्य० [सं० नहि] निषेधात्मक ध्वनि, नकार ।

नहुतरिउ-वि० निमंत्रण, आमंत्रण ।

नहुस-पु० [सं० नहुष] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक प्रसिद्ध राजा जो अगस्त्य ऋषि के शाप से सर्प बना । २ एक नाग का नाम ।

३ मनुष्य, व्यक्ति । -वि० १ मूर्ख, जड़ । २ नीच, दुष्ट ।

नां-अव्य० [सं० न] निषेधात्मक ध्वनि, नहीं । -प्रत्य० १ पष्ठी विभक्ति या संबंधकारक का चिह्न, का । २ कर्म व मध्यदान का विभक्ति प्रत्यय, को ।

नाई-वि० [देश०] १ समान, तुल्य, जैसा । २ देखो 'नाई' ।

नांउ, नांऊ-देखो 'नांम' ।

नांकणी (बो)-देखो 'नांखणी' (बो) ।

नांख-पु० [देश०] उर्वर होने के लिए छोड़ी गई कृषि भूमि ।

नांखणी (बो)-क्रि० [सं० निक्षिपणम्] १ ऊपर से नीचे डालना, फेंकना, नीचे पटकना । २ किसी पदार्थ में कुछ अन्य वस्तु डालना, मिलाना, संमिश्रण करना । ३ जोश में घ्राणे बढ़ाना, भौंकना । ४ भिड़ाना । ५ किसी पर कोई चीज पटकना, फेंकना । ६ परित्याग करना, छोड़ना । ७ टपकाना, चूसाना, गिराना । बहाना । ८ उछालना, फेंकना । ९ खड़ी वस्तु को गिराना । १० पास में पटकना । ११ लटकाना । १२ भेजना, पहुँचाना । १३ संहार करना । १४ पटकना, गिराना, पछाड़ना । १५ उछाड़ना ।

नांगर-पु० [सं० नागरम्] १ सोंठ । २ लंगर ।

नांगरी-१ देखो 'नवग्रही' । २ देखो 'नोगरी' ।

नांगळ-स्त्री० [सं० नाग + बलि] १ गृह प्रवेश का महोत्सव, प्रतिष्ठा, पूजन । २ देखो 'नांगळी' ।

नांगळणी (बो)-क्रि० [देश०] १ बांधना । २ स्थापना करना, प्रतिष्ठा करना ।

नांगळियो, नांगळी-पु० [देश०] १ मोट की ऊपरी किनारों पर बंधा मजबूत रस्सा । २ रस्सा, रस्सी । ३ फंदा ।

नांड़ियो-देखो 'नौड़ियो' ।

नांज-देखो 'नौज' ।

नांजरण, नांजराणयो, नांजणी-देखो 'नूजणी' ।

नांड, नाड-वि० [देश०] १ मूखं, गंवार । २ अपठित । ३ जो व्यवहार कुशल न हो ।

नांण, नांणि-पु० [सं० ज्ञान] ज्ञान ।

नांणउ-देखो 'नांणी' ।

नांणखी (बो)-क्रि० [सं० ज्ञान] जानना ।

नांणवउ-देखो 'नांणदी' ।

नांणदी-स्त्री० [सं० ननद] ननद की पुत्री, पति की भानजी ।

नांणदी-पु० [सं० नानान्द्र] पति का भानजा, ननद का पुत्र ।

नांणवन-वि० [सं० जानवत] जानवान ।

नांणदउ-देखो 'नांणदी' ।

नांणी-वि० [सं० जानी] जानवान, जानी ।

नांणु-देखो 'नांणी' ।

नांणुटी-स्त्री० [सं० नाणक + हट] १ रेजगारी व नांटों का व्यापार करने वाला व्यापारी । २ रेजगारी व नांटों का व्यापार ।

नांण, नांणी-पु० [सं० नाणक] १ रुपया, पैसा, नगदी । २ धन, द्रव्य । ३ कर, देवम ।

नांव-स्त्री० [सं० नंदक] मवेशियों को चारा आदि खिलाने का बड़ा पात्र ।

नांदियो, नांबी-देखो 'नंदी' ।

नांदीमुख-पु० [सं०] मांगलिक कार्यों से पूर्व किया जाने वाला एक श्राद्ध विशेष ।

नांत-देखो 'नैनप' ।

नांतक-पु० सिख सम्प्रदाय के प्रवर्तक, गुरु नानक ।

नांतकड़ी-देखो 'नैनो' ।

नांतकसाही-वि० गुरु नानक से संबंध रखने वाला । -पु० गुरु नानक का शिष्य या अनुयायी ।

नांतकियो-१ देखो 'नैनो' । २ देखो 'नांतो' । -साही= 'नांतकसाही' ।

नांतड़ियो, नांतड़ी-१ देखो 'नैनो' । २ देखो 'नांतो' ।

नांतत, नांततो-देखो 'लांणत' ।

नांतपारखा-पु० [देश०] रोटी कपड़ा ।

नांतसराद-पु० नाना के लिये किया जाने वाला श्राद्ध विशेष ।

नांतसरी-पु० १ नांती-सासरी । २ नांती ससुर ।

नांतांणियो-वि० ननिहाल का, ननिहाल संबंधी ।

नांताणी-पु० ननिहाल ।

नांता-वि० [सं० नाना] १ अनेक बहुत । २ विभिन्न, विविध । ३ विविध भांति के ।

नांतियो-१ देखो 'नैनो' । २ देखो 'नांतो' ।

नांतो-स्त्री० १ मां की माता, नानी । २ देखा 'नैनो' ।

-बाई='नैनीबाई' ।

नांतीसासरी-पु० पति या पत्नी का ननिहाल ।

नांतोसासु-स्त्री० पति या पत्नी की नानी ।

नांतोसुसरी-पु० पति या पत्नी का नाना ।

नांतु, नांतू-१ देखो 'नैनो' । २ देखो 'नांतो' ।

नांतरी-पु० ननिहाल ।

नांतो-पु० (स्त्री० नांती) १ माता का पिता । २ देखो 'नैनो' ।

नांत्यो, नांतुड, नांतुकड़ी, नांतुकियो, नांतुडियड, नांतुडो, नांतुडियड, नांतुरियो, नांतुरियो, नांतुडो, नांतु, नांतो-देखो 'नैनो' । (स्त्री० नांतो)

नांतरी-देखो 'नांतवरी' ।

नांतजूर-वि० [फा०] १ न कबूला हुआ, नकारा हुआ, अस्वीकृत । २ अमान्य ।

नांत, नांतउ-पु० [सं० नामन्] १ वह शब्द या शब्द समूह जिससे किसी व्यक्ति, प्राणी, समूह आदि का बोध हो, संज्ञा, अभिव्यक्ति । २ व्याप्ति, प्रतिष्ठा, कीर्ति । ३ बकाया रकम का इन्द्राज । ४ यादगार, स्मृति ।

नांतक-वि० [सं० नामक] १ नाम वाला । २ नाम से प्रसिद्ध ।

नांतकम्म-देखो 'नांतकरम' ।

नांतकरण-पु० [सं० नामकरण] १ जन्म के पश्चात् बच्चे का नाम निश्चित करने का संस्कार । २ कोई नाम तय करने की क्रिया ।

नांतकरम-पु० [सं० नामकर्म] १ नामकरण संस्कार । २ कर्म का एक भेद (जैन) ।

नांतकीरत्तन-पु० [सं० नामकीर्त्तन] ईश्वर के नाम का जप, कीर्त्तन, भजन ।

नांतकी, नांतगी, नांतड़ियो, नांतड़ी-देखो 'नांत' ।

नांतजब, नांतजहीक, नांतजही, नांतजाद, नांतजादी, नांतजादीक-वि० [फा० नामजद] १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ मनोनीत ।

नांतणी-वि० (स्त्री० नांतणी) नमाने वाला, झुकाने वाला ।

नांतणी (बो)-क्रि० १ नमवाना, नमस्कार कराना । २ झुकाना, झुकवाना । ३ अधीनस्थ करना, मानहृत करना । ४ तरल पदार्थ को पात्र में डालना, उड़ेलना ।

नांतदार-वि० [फा०] १ नाम बाजा । २ प्रसिद्ध, विख्यात ।

नांतवेव-पु० दर्जों जाति के एक प्रसिद्ध संत जिनका उल्लेख भक्तमाल में आता है ।

नांतदावसी-स्त्री० [सं० नामदावसी] बारह देवियों के पूजन का एक व्रत ।

नांतधन-पु० [सं० नामधन] १ एक संकर राग विशेष । २ ईश्वर भक्ति की पूंजी ।

नामधारक-वि० [सं० नामधारक] १ केवल नाम वाला ही, नाम के अनुसार गुण वाला नहीं । २ नाम धरने वाला ।
 नामधारी-वि० [सं० नामधारिन्] १ जिसका कोई नाम हो, नाम वाला । २ प्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त ।
 नामधेई, नामधेय-पु० [सं० नामधेय] नाम निर्देशक शब्द ।
 नामनिक्षेप, नामनिक्षेप, नामनिक्षेपी, नामनिक्षेप-पु० [सं० नामनिक्षेप] गुण के अनुसार नामकरण ।
 नाममाळका, नाममाळा, नाममाळिका-स्त्री० [सं० नाममालिका] १ नामों की सूची, कोश । २ बहुतर कलाओं में से एक ।
 नामरद-वि० [फा० नामरद] १ पुंस्त्वहीन, नपुंसक । २ हिजड़ा । ३ कायर, भीरु ।
 नामरदी-स्त्री० [फा० नामरदी] १ पुंस्त्वहीनता, नपुंसकता । २ हिजड़ापन । ३ कायरता, भीरुता ।
 नामरूप-पु० [सं० नामरूप] नाम से ही जानी जाने वाली अगोचर वस्तु ।
 नामवर-वि० [फा० नामवर] ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध, नामी ।
 नामवरी-स्त्री० [फा० नामवरी] ख्याति, प्रसिद्धि । कीर्ति ।
 नामवाळी, नामसाद-वि० [सं० नाम-सादः] १ नाम वाला, नामी । २ प्रसिद्ध, कीर्तिवान ।
 नामसेस-वि० [सं० नामशेष] १ नाम मात्र । २ मृत प्रायः ।
 नामा-वि० [सं० नामा] १ नाम धारी, नाम वाला । २ नामी, प्रसिद्ध । -स्त्री० कीर्ति, प्रशंसा ।
 नामाकूळ-वि० [फा० ना-माकूल] १ अनुचित । २ अयोग्य । ३ नालायक ।
 नामाजोड़, नामाजोड़ी-पु० विवाह से पूर्व वर-वधू की जन्म कुण्डलियों को मिलाने की क्रिया या भाव ।
 नामाणी (बौ)-देखो 'नमाणी' (बौ) ।
 नामारूप-वि० [देश०] वेचन, व्याकुल, विकल ।
 नामालय-पु० [सं० नामालय] बहुतर कलाओं में से एक ।
 नामानूम-वि० [फा०] जो मानूम न हो, जिसकी खबर न हो । अज्ञात ।
 नामावणी (बौ)-देखो 'नमाणी' (बौ) ।
 नामावली-स्त्री० [सं० नामावली] १ नामों की सूची । २ राम नाम छपा ओढ़ने का वस्त्र ।
 नामि-देखो 'नामी' ।
 नामित-देखो 'निमित्त' ।
 नामी-वि० [सं० नामिन्] १ नामवाला, नामधारी । २ प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर । ३ उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया । ४ जबरदस्त, महान्, बड़ा । ५ सुन्दर । ६ जो ठीक न हो, बुरा । ७ उचित, यथावत । -पु० [सं० नामिः] विष्णु, नारायण ।
 —गिरामी, गामी, ग्रामी-वि० मशहूर, प्रसिद्ध ।
 नामु-१ देखो 'नाम' । २ देखो 'नामी' ।

नामू, नामू-१ देखो 'नाम' । २ देखो 'नामी' ।
 नामूब, नामून-पु० [सं० नामन्] नाम, प्रतिद्धि, वश । -वि० प्रसिद्ध, विख्यात ।
 नामेक-वि० [सं० नामन्-एक] किञ्चित् थोड़ा । जरामा ।
 नामेदार-वि० हिमाव रखने वाला ।
 नामोसी-स्त्री० [फा० नामूसी] १ बदनामी, अपकीर्ति, निंदा । २ अनादर, बेइज्जती । ३ नाममभी, सुखिता ।
 नामो-पु० [सं० नामन्] १ अभिनेत्र, लिखावट । २ नेत्र-देग का लेखा । बही खाते का कार्य । ३ देखो 'नाम' ।
 नामती-देखो 'नवरात्र' ।
 नारा-देखो 'नोरा' ।
 नारो-देखो 'नौहरो' ।
 नांली-देखो 'नौली' ।
 नांव, नांवड़ी-देखो 'नाम' ।
 नांवजाद, नांवजादी, नांवजादीक-देखो 'नामजद' ।
 नांवणी, (बौ)-क्रि० १ चलाना, सेना । २ उड़ेलना, डालना । ३ देखो 'नामणी (बौ)' ।
 नांवदेव-देखो 'नामदेव' ।
 नांह, नांहि, नांही-देखो 'नहीं' ।
 ना-पु० [सं० नृ] १ मनुष्य, नर । २ मुख । -स्त्री० ३ वनिता । ४ अस्वीकृति, मनाही, इन्कार । -अव्य० १ निषेध सूचक ध्वनि । २ द्वितीया विभक्ति या कर्मकारक का चिह्न को ।
 ना'-१ देखो 'नाथ' । २ देखो 'नाभि' । ६ देखो 'नाह' ।
 नागर-देखो 'नाहर' ।
 नाइ-देखो 'नाई' ।
 नाइक-देखो 'नायक' ।
 नाइतफाकी-स्त्री० [फा० नाइतफाकी] १ विरोध, फूट । २ असंयोग ।
 नाइन-देखो 'नायण' ।
 नाइब-देखो 'नायब' ।
 नशबी-देखो 'नायबी' ।
 नाई-पु० [सं० नापित] (स्त्री० नायण) १ बाल काटने, हजामत बनाने आदि का कार्य करने वाला वर्ग व इस वर्ग का व्यक्ति । हजाम । -स्त्री० २ हल के बांध कर बीज बोने का उपकरण विशेष । बीजनी । ३ बेलगाड़ी के पहिये पर लगने वाला डंडा । ४ देखो 'नाई' ।
 —बंधणी-स्त्री० हल से बीजनी बांधने की रस्सी ।
 नाउ, नाउ, नाऊ, नाऊ-१ देखो 'नाभ' । २ देखो 'नाई' ।
 नाओलाद, नाओलाव-वि० [फा०] जिसके कोई संतान न हो, निम्नस्तान ।
 नाकंद-वि० [फा० ना-कंद] अशिक्षित, अलहड़ ।

नाक, नाकड़ली-पु० [सं० नक्षत्रम्] १ सूँघने व साँस लेने की दृन्द्रिय, नासिका । २ इज्जत, प्रतिष्ठा । [सं० नाक] ३ स्वर्ग । ४ आकाश । —नटी-स्त्री० स्वर्ग की अप्सरा । —पति, पति-पु० स्वर्ग का राजा, इन्द्र । —फूली-स्त्री० नाक का आभूषण विशेष ।

नाकदार-वि० [फा० ना+कर] १ जिमकी कद या इज्जत न हो । २ जो किसी की कद न करता हो ।

नाकदरी-स्त्री० [फा० नाकद्री] १ वेइज्जती, अनादर । २ अनिष्ठा ।

नाकबूल-वि० [फा०] अस्वीकार, नामंजूर ।

नाकबूली-स्त्री० अस्वीकृति ।

नाकवा'-स्त्री० नौका, नाव ।

नाकाम-वि० [फा०] असफल, बेकार, निरर्थक ।

ना'का-देखो 'नायका' ।

नाकादार-देखो 'नाकेदार' ।

नाकाबंदी-स्त्री० १ किसी क्षेत्र विशेष के रास्तों पर की जाने वाली रोक । २ उक्त प्रकार की रोक के लिए तैनात सिपाही । ३ चौकीदारी ।

नाकाबिल-वि० १ अयोग्य । २ अनुपयुक्त । ३ अशिक्षित ।

नकार, नाकारज-वि० १ कृपण, कजूस । २ बुरा, खराब । ३ निकम्मा । ४ देखो 'नकार' ।

नाकारणी, (बी)-क्रि० १ इन्कार, करना, नामंजूर या अस्वीकार करना । २ बर्जना, मना करना ।

नाकारी-देखो 'नकार' ।

नाकासण-पु० [सं०] १ इन्द्र का आसन । २ नाक का मल ।

नाकी-पु० [सं० नाकिन] १ देवराज, इन्द्र । २ देव, सुर । ३ देव जाति विशेष । —स्त्री० ४ इज्जत, प्रतिष्ठा । ५ मर्यादा । ६ डोरे या रस्सी का छोटासा फंदा । ७ बटन लगाने का छेद । —वि० इज्जत रखने वाला ।

नाकूँड़ियो, नाकूँड़ो-पु० [सं० नाक कुँड़िक] १ गौवत्स के नाक में पहनाने का काष्ठ का चन्द्राकार उपकरण । २ पशुओं के नाक का एक रोग विशेष । ३ देखो 'नाक' ।

नाकू-पु० दीमक द्वारा निमित मिट्टी का ढेर ।

नाकेदार-पु० [फा०] १ मुख्य द्वार पर तैनात चौकीदार । २ चुंगीकर बसूल करने वाला कर्मचारी । ३ सीमा का रक्षक । —वि० जिसमें नाका या छेद हो ।

नाकेबंदी-देखो 'नाकाबंदी' ।

नाकेल, नाकेलियो, नाकोलियो-१ देखो 'नकेल' । २ देखो 'नाको' ।

नाकी-पु० [देश०] १ किसी नगर, बस्ती या राज्य की सीमा में प्रवेश करने के रास्ते का छोर, शिरा । २ किमी वस्तु

का छोर, शिरा । ३ किनारा, छोर । ४ रास्ते का अन्तिम भाग । ५ सीमा, हद्द । ६ किसी आभूषण या उपकरण में डोरा आदि डालने का नुक्का या छेद । ७ रस्सी का छोटा, फंदा । ८ साहस, हिम्मत, शक्ति । ९ देखो 'नाक' ।

नाखणी (बी)-देखो 'नाखणी' (बी) ।

नाखत, नाखत्र, नाखित्र-देखो 'नक्षत्र' । —माळा='नक्षत्रमाळा' ।

नाखून-पु० [फा० नाखून] नख, नाखून ।

नागंव, नागद्व-पु० [म० नाग-इन्द्र] १ इन्द्र, देवराज । २ उत्कृष्ट या श्रेष्ठ हाथी । ३ ऐरावत । ४ शेषनाग । ५ देखो 'नागेंद्र' । ६ देखो 'नागद्रह' ।

नाग-पु० [सं०] (स्त्री० नागण, नागणी) १ सर्प, साँप । २ कश्यप व कद्रू की संतान । ३ शेषनाग । ४ सर्प की एक जाति विशेष जो ऊपर से मानव व नीचे सर्प होता है । ५ हाथी, गज । ६ ऐरावत । ७ काजल । ८ जल जीव, शार्क । ९ ज्योतिष के चार स्थिर करणों में से तीसरे करण का नाम । १० शरीरस्थ दश प्रकार के वायु में से छठा वायु । ११ सीसा नासक धातु । १२ एक प्राचीन राज वंश । १३ नाग केसर । १४ एक मानव जाति विशेष । १५ अश्लेषा नक्षत्र । १६ नौ की संख्या* । १७ आठ की संख्या* । १८ कालीद्रह का नाग । १९ नागौर शहर का नामान्तरण । २० निष्ठुर व्यक्ति । २१ कोई प्रसिद्ध पुरुष । २२ बादल । २३ खूँटी । २४ ग्यारह की संख्या* । —कन्या-स्त्री०-नाग जाति की लड़की ।

नागउर-देखो 'नागौर' ।

नागकंद-पु० [सं०] हस्तिकंद ।

नागकुलसंकेत-पु० नागवंश की विरुदावली ।

नागकेसर, (केसरी)-पु० [सं०] एक मदाबहार वृक्ष जिसके पुष्प औषधि में काम आते हैं ।

नागखंड-पु० भारत का एक उप खण्ड जहाँ प्राचीन काल में नागों का राज्य था ।

नागड़, नागड़ियो, नागड़ी-१ देखो 'नाग' । २ देखो 'नागौ' ।

नागचपी-पु० [सं० नागचंपक] नाग चंपा ।

नागचूड़-पु० [सं०] शिव; महादेव ।

नागछतरी-स्त्री० कुकुरमुत्ता नामक पौधा ।

नागछोर-पु० अफीम ।

नागज-पु० [सं०] १ सिद्धर । २ बंग ।

नागजादी-स्त्री० नागकन्या ।

नागशाग-पु० अफीम ।

नागड-पु० १ एक वाद्य विशेष । २ देखो 'नागौ' ।

नागण, (णि, णी)-स्त्री० [सं० नागिनी] १ मादा सर्प, नागिन । २ नाग जाति की स्त्री । ३ कुट्टा एवं दुष्ट स्त्री ।

४ नाग की तरह बनी रोमावली । ५ बैल, घोड़े आदि की पीठ पर होने वाली भौरी । ६ एक प्रकार की तलवार ।

नागशेख, नागशेखियां, नागणैची-स्त्री० राठीड़ों की कुल देवी, चक्रेश्वरी ।

नागदमणि, नागदमनी-स्त्री० [सं० नागदमनी] १ नागदोने का पौधा जो औषधि में काम आता है । २ एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

नागदह, नागदहो, नागदो, नागदह नागदहो, नागदहो, नागदह-पु० [सं० नागदह] । १ मेवाड़ में एकलिंगजी के स्थान के पास का एक जलाशय । २ इस जलाशय के पास बना बापा रावल का समाधि स्थान । ३ इसके पास बसा एक गांव ४ इस गांव से निकला एक ब्राह्मण वर्ग । ५ प्राचीन भारत का एक प्रदेश । ६ यमुना में काली नाग के रहने का स्थान । ७ सिमोदियों की एक उपाधि ।

नागद्वीप-पु० [सं०] प्राचीन भारत के नौ भागों में से एक ।

नागधर-पु० [सं०] शिव, महादेव ।

नागध्रह, नागध्रहो-देखो 'नागद्रह' ।

नागनाथ-पु० [सं०] १ नाग को नाथने वाले श्रीकृष्ण । २ जोगियों के रावलों के आदि पुरुष ।

नागपंचमी-स्त्री० [सं०] श्रावण शुक्ला पंचमी ।

नागपति (ति)-पु० [सं०] १ सर्पराज वासुकि । २ ऐरावत हाथी ।

नागपतिफेण-पु० [सं० नागपतिफेण] एक मादक द्रव्य, अफीम ।

नागपंचम-देखो 'नागपंचमी' ।

नागपांड-पु० [सं० नाग-पापाण] अरावली पहाड़ का एक भाग ।

नागपास-स्त्री० [सं० नाग पाश] शत्रुओं को बांधने का, वरुण का एक अस्त्र, फंदा ।

नागपुत्री-स्त्री० [सं०] नागकन्या ।

नागपुर-पु० [सं०] १ नागलोक । २ मध्य भारत का एक नगर । ३ नागौर का एक नाम ।

नागपुरी-स्त्री० [सं०] १ पाताल का नागलोक, भोगवती । २ देखो 'नागपुर' ।

नागपोतरी-स्त्री० एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

नागफली-स्त्री० १ एक शाक विशेष । २ धूहर जाति का एक पौधा विशेष ।

नागफूली-पु० स्त्रियों का एक आभूषण विशेष ।

नागफेण (न)-पु० [सं०] अफीम ।

नागबला-पु० [सं०] एक वृक्ष विशेष ।

नागबाई-स्त्री० चारण-कुलोत्पन्न एक देवी ।

नागवेच-पु० बड़ई द्वारा लकड़ी में किया गया एक छेद विशेष ।

नागवेणी-स्त्री० एक देवी का नाम ।

नागभगिनी-स्त्री० [सं०] सर्पराज वासुकि की बहन ।

नागभाखा-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन भाषा ।

नागभुवन (न)-पु० [सं० नाग भवन] नागलोक, पाताल ।

नागम-पु० [फा०] १ अज्ञानावस्था । २ लुट्टी, अवकाश ।

नागमरोड़-पु० [सं०] कुश्ती का एक पेच विशेष । दाव ।

नागमाता-स्त्री० [सं०] १ नागों की माता कदू । २ सुरसा ।

नागमुख-स्त्री० [सं०] गजानन, गणेश ।

नागरंग-स्त्री० नारंगी नामक फल ।

नागर-पु० [सं०] १ सभ्य, शिष्ट व्यक्ति । २ चतुर व्यक्ति । ३ स्वामी, मालिक । ४ ईश्वर, प्रभु । ५ नगर का निवासी । ६ नागर मोथा । ७ सोठ । ८ गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति । ९ देवर -स्त्री० १० पनिहारी । ११ नारंगी । १२ थकावट । १३ अज्ञानता । -वि० १ नगर संबंधी, नगर का । शिष्ट । ३ चतुर । ४ चालाक, धूर्त । ५ बुरा, खराब ।

नागरता-स्त्री० [सं०] १ चतुराई, निपुणता । २ शिष्टता । ३ व्यवहार कुशलता । ४ नागरिकता ।

नागरवेळ, नागरबेलड़ी, नागरबेलि, नागरबेली-स्त्री० [सं० नागबेली] ताम्बूल की बेल, लता ।

नागरमुस्ता, नागरमोथा-पु० [सं० नागर मुस्ता] एक प्रकार की घास या तृण जिसकी जड़ें औषधि में काम आती हैं ।

नागरबेल, (बेलड़ी, बेलि, बेली)-देखो 'नागरबेल' ।

नागराड़, नागराज, नागराव-पु० [सं० नागराज] १ शेषनाग । सर्पराज वासुकि । ३ बड़ा व शक्तिशाली सर्प । ४ हाथियों में बड़ा व श्रेष्ठ हाथी । ५ ऐरावत । -वि० १ श्वेत, सफेद* । २ काला, श्याम* ।

नागरिक-पु० [सं०] १ नगर का निवासी । २ सभ्य पुरुष । ३ किसी देश या राष्ट्र का मूल निवासी । ४ वह व्यक्ति जिसे किसी देश की नागरिकता व मताधिकार प्राप्त हों । ५ कारीगर । ६ पुलिस का प्रधानाध्यक्ष । -वि० १ नगर का, नगर संबंधी । २ चतुर, सभ्य, शिष्ट । ३ जिसमें नगर के समस्त गुण-दोष आ गये हों ।

नागरी-स्त्री० [सं०] १ संस्कृत व हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध लिपि, देवनागरी लिपि । २ नगर में रहने वाली स्त्री । ३ चतुर स्त्री । ४ चालाक व धूर्त स्त्री । ५ स्नुही का पौधा, धूहर । ६ देखो 'नगरी' ।

नागरी मासी-स्त्री० एक प्रकार का जीव ।

नागलता-स्त्री० [सं०] पान की बेल, ताम्बूल की बेल ।

नागला-स्त्री० एक प्रकार का आभूषण ।

नागलोक-पु० [सं०] पाताल ।

नागघट-पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नागवल्लरी, नागवल्ली-स्त्री० [सं०] १ पान, ताम्बूल । २ ताम्बूल की लता ।

नागवाड-देखो 'नागवाड' ।

नागवार-वि० [फा०] अप्रिय, असह्य ।

नागवी-देखो 'नागवाई' ।

नागवीथी-स्त्री० [सं०] शुक-ग्रह की चाल में वह मार्ग जो स्वाती, भरणी और कृतिका नक्षत्रों में हो ।

नागवेन-देखो 'नागवल्ली' ।

नागमुद्रि-स्त्री० [सं० नागशुद्धि] भवन की नीच लगाने समय नाग की स्थिति का विचार ।

नागहथ-पु० स्त्रियों का एक आभूषण विशेष ।

नागहारी-वि० [सं०] सर्पों का हार पहनने वाला । -पु० रुद्र, महादेव ।

नागाण (णी)-पु० १ हाथी, गज । २ मारवाड़ का एक कस्बा, नागौर ।

नागांरण-पु० [सं० नागानन] हाथी के मुँह वाला, गणेश, गजानन ।

नागांणराड (राय)-स्त्री० राठीड़ों की कुलदेवी, नागनेची ।

नागांतक-पु० [सं०] १ रावण का एक पुत्र । २ गरुड़, खगेश । ३ सिंह ।

नागांपति-पु० [सं० नागपति] १ शिव, महादेव । २ शेषनाग । ३ ऐरावत ।

नागा-स्त्री० [अ० नागः, सं० लघा] १ अनुपस्थिति, गैर हाजरी । २ नियमित चलने वाले कार्य का क्रम भंग, अन्तर । ३ एक जंगली जाति । ४ दादूपंथी साधुओं की एक शाखा ।

नागाई-स्त्री० १ शरारत, बदमाशी, उद्दण्डता । २ नटखटपना, चंचलता । ३ ज्यादाती । ४ बुरी वृत्ति, खोटाई । ५ देखो 'नागवाई' ।

नागाणंद-पु० [सं० नग्न-आनन्द] शिव, महादेव ।

नागाणन-देखो 'नागांरण' ।

नागारजण, नागारजुण (न)-पु० [सं० नागारजुन] एक प्रसिद्ध बौद्ध महात्मा ।

नागारी-१ देखो 'नगारी' । २ देखो 'नकार' ।

नागासन-पु० [सं० नागाशन] १ गरुड़, खगेश । २ मयूर, मोर । ३ सिंह, शेर ।

नागास्त्र-पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

नागिद, नागिद-देखो 'नागेंद्र' ।

नागिणी-देखो 'नागण' ।

नागेंद्र, नागेंद्र-देखो 'नागेंद्र' ।

नागी-वि० [सं० नगा] १ वस्त्रहीन, निर्वस्त्रता, नग्न, नंगी ।

२ कुन्दा, व्यभिचारिणी । ३ वेशर्म, निर्लज्ज । ४ स्वभाव से क्रूर, उग्र । ५ निरावरण, खुली ।

नागीगायत्री-स्त्री० एक वैदिक छन्द ।

नागीणी-पु० मारवाड़ के नागौर शहर का नाम ।

नागु-देखो 'नागी' । (स्त्री० नागी)

नागुड-पु० [देश०] नक्काची के साथ रहने वाला व्यक्ति ।

नागेंद्र, नागेंद्र, नागेंद्र-पु० [सं० नागेंद्र] १ सर्प राज वासुकि ।

२ शेषनाग । ३ बड़ा सर्प । ४ ऐरावत । ५ बड़ा हाथी ।

६ शिव, महादेव ।

नागेंद्र, नागेंद्र, नागेंद्र-पु० [सं० नागेंद्र नागेंद्र] १ शेषनाग ।

२ सर्पराज वासुकि । ३ लक्ष्मण । ४ ऐरावत । ५ देखो 'नाग' । ६ नागकेशर । ७ देखो 'नागी' ।

नागेंद्र-पु० [सं०] १ उदर पर पहनने का कवच । उदरआण ।

२ गीतबंद कवच ।

नागौर-पु० राजस्थान का एक कस्बा । -पट्टी, पट्टी-स्त्री०

नागौर का क्षेत्र, आस-पास का भू-भाग ।

नागौरण-स्त्री० दक्षिण व पश्चिम के मध्य चलने वाली वायु ।

-वि० नागौर की, नागौर संबंधी ।

नागौरिणी, नागौरिणी-देखो 'नागौरी' ।

नागौरी-वि० नागौर का, नागौर संबंधी । -स्त्री० १ बेलों की

एक उत्तम नम्र । २ मुसलमानों का एक भेद । -गहणी,

गंणी-पु० हथकड़ी ।

नागी-वि० [सं० नग्न] (स्त्री० नागी) १ वस्त्रहीन, नगा ।

२ चालाक, धूर्त । ३ उद्दण्ड, बदमाश । ४ नटखट, चंचल ।

५ जिसने अधोवस्त्र नहीं पहना है । ६ लड़ाकू, कलहप्रिय ।

७ निर्लज्ज, वेशर्म । ८ निरावरण । ९ जबरदस्त,

जोरदार । -पु० १ शैव साधुओं का वर्ग विशेष व इस

वर्ग का साधु । २ आसाम के पूर्व में रहने वाली एक

मानव जाति विशेष । ३ गुरु नातक साहिब के पुत्र का

अनुयायी साधु । ४ नाथ सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो

अविवाहित हो । ५ दशनामी सम्प्रदाय का अविवाहित

रहने वाला व्यक्ति । ६ दादूपंथी सम्प्रदाय के नाथा शाखा

का साधु । -तड़ंग-वि० बिल्कुल नग्न । -बूचो-वि०

परिवारहीन । साधनहीन । -भूगो, भूगो-वि० दरिद्र,

कंगाल । नंगा ।

नागोदहो-देखो 'नागोदहो' ।

नागौर-देखो 'नागौर' । -पट्टी, पट्टी='नागौरपट्टी' ।

नागौरण-देखो 'नागौरण' ।

नागौरी, नागौरी-देखो 'नागौरी' ।

नागेंद्र-१ देखो 'नागेंद्र' ; २ देखो 'नागेंद्र' ।

नाचा-देखो 'नाचा' ।

नाङ-स्त्री० [सं० नाङी] १ ग्रीवा, गर्दन । २ देखो 'नाङी' ।

नाङ्कियो-देखो 'नाङी' ।

नाङ्की-१ देखो 'नाङी' । २ देखो 'नाङ' ।

नाङा-टोकल-स्त्री० [देश०] घाघाड़ व थावण माम में दक्षिण व पश्चिम के मध्य से चलने वाली वायु ।

नाङाली-स्त्री० १ बेलगाड़ी के अग्र भाग में लगने वाली कील विशेष । २ चमड़े का रस्सा ।

नाङि-देखो 'नाङी' । —वण—'नाङीवण' ।

नाङी-स्त्री० [सं० नाङि] १ रक्त धमनी, नस, रग । २ ठठ योग की इड़ा, पिगला व सुपुम्ना नाङियां । ३ चमड़े की रस्सी । ४ हाथी की घंवारी बांधने का रस्सा । ५ नौ की संख्या० । ६ वर-वधू की गणना बैठाने में कल्पित चक्रों में स्थित नक्षत्र समूह । ७ देखो 'नाङ' । —चक्र-पु० नक्षत्रों के भेदों को सूचित करने वाला चक्र । सभी नाङियों का केन्द्र एक अंडाकार ग्रंथि । —जत, जोत-वि० दृढ़, मजबूत । —तोड़-वि० शक्तिशाली, बलवान । —धमण-स्वर्णकार, सुनार । —घण-पु० नासूर, भगन्दर । —नक्षत्र-पु० वर-वधू की गणना बैठाने का नक्षत्र ।

नाङी-पु० [सं० नाङि] १ पाजामा आदि अधोवस्त्र बांधने की डोरी । २ हल की हरिसा पर भूसर बांधने का चमड़े का रस्सा । ३ डोरा । ४ देखो 'नाङी' ।

नाच-पु० [सं० नृत्य] नृत्य । —रूढ़-पु० नृत्य, तमाशा । उद्दण्डता । —घर, महल-पु० नृत्यशाला । —रंग-पु० हंसी-नुशी, आमोद-प्रमोद के कार्य ।

नाचक-वि० [सं०] नर्तक, नाचने वाला ।

नाचण (ण, णी)-स्त्री० [सं० नर्तन] १ नाचने की क्रिया या भाव, नृत्य । २ नाचने वाली, नर्तकी । ३ वेश्या, रंडी । ४ कृत्ता व वेशम स्त्री ।

नाचणी-पु० [सं० नर्तन] नाचने की क्रिया या भाव, नृत्य । —वि० (स्त्री० नाचणी) नाचने वाला ।

नाचणी (घो), नाचवणी (बो)-क्रि० [सं० नृत्] १ ताल-स्वर व वाद्य पर नृत्य करना, नाचना । २ अत्यन्त खुशी में उछलना, कूदना, उमंगित होना । ३ कांपना, थराना । ४ निरन्तर घूमना या हिलना-डुलना । ५ चंचल होना, उद्दिग्न होना । ६ कार्य सिद्धि के लिए भाग-दौड़ करना । ७ उद्दण्डता करना, बदमाशी करना ।

नाचिकेता-पु० [सं० नाचिकेतः] १ अग्नि, प्राण । २ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र ।

नाचीज-वि० [फा०] निकृष्ट, लुच्छ ।

नाचेसी-देखो 'नाचण' ।

नाछत्री-वि० अत्रियन्वहीन ।

नाज-पु० [फा०] १ गवं, घमंड । २ स्वाभिमान । ३ नखरा, ठसक । ४ चोंचला । ५ देखो 'अनाज' ।

नाजक, नाजकड़ी-देखो 'नाजुक' ।

नाजकता-देखो 'नाजुकता' ।

नाजम-पु० [घ० नाजिम] १ बादशाह का एक कर्मचारी विशेष । २ प्रबन्धक । ३ मंत्री, सचिव ।

नाजर, नाजिर-पु० [घ० नाजिर] १ एक प्रकार का सरकारी कर । २ एक कर्मचारी । ३ दर्शक । ४ खोजा, हिजड़ा । ५ कार्यालय का प्रधान लिपिक । ६ निरीक्षक । ७ रंडियों का दयाल ।

नाजुक, नाजुकड़ी-वि० [फा०] १ सुकुमार, कोमल । २ मृदुल, मुलायम, नर्म । ३ हल्का-फुल्का, फारिक । ४ महीन, वारीक, पतला । ५ सूक्ष्म । ६ अपरिपक्व, कच्चा । ७ कठिन, दुरूह । ८ अधिक तकली की । ९ जल्दी टूटने या नष्ट होने लायक । १० क्षीण, कमजोर । ११ तीव्र, तेज । १२ उलझन भरा । —दिमाग-वि० घमण्डी, गविला, चिड़चिड़ा, तुनक मिजाज ।

नाजुकता-स्त्री० [फा०] १ सुकुमारता, कोमलता । २ मृदुलता, मुलायमी, नमी । ३ हल्कापन । ४ महीनता, वारीकी । ५ सूक्ष्मता । ६ कच्चापन । ७ कठिनता । ८ दृढ़ता की कमी । ९ क्षीणता ।

नाजुक-बदन-वि० [फा०] १ सुकुमार, कोमल । २ दुबला, कृश । ३ नर्म, मुलायम ।

नाजुकबदनी-स्त्री० [फा०] १ कोमलता, सुकुमारता । २ दुबलापन । ३ नमी, मुलायमी ।

नाजुक-मिजाज-वि० [फा०] १ स्वभाव से चिड़चिड़ा, तुनक मिजाज । २ अमहिष्णु । ३ घमण्डी, अभिमानी । ४ कोमल ।

नाजुकमिजाजी-स्त्री० [फा०] १ चिड़चिड़ापन, तुनक मिजाजी । २ सुकुमारता, कोमलता । ३ घमण्ड, अभिमान ।

नाजोग, नाजोगी-वि० प्रयोग्य, निकम्मा ।

नाजोर, (री)-वि० [फा०] शक्तिहीन, निर्बल ।

नाजोरी-स्त्री० [फा०] कमजोरी, निर्बलता ।

नाट-पु० [देश०] १ इन्कारी, निषेध, मनाही । २ नृत्य, नाच । ३ एक राग विशेष । ४ देखो 'नट' ।

नाटईउं-पु० [देश०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।

नाटक-पु० [सं०] १ किसी कथानक का रंगमंच पर किया जाने वाला अभिनय । २ हाव-भाव प्रदर्शन । ३ विचित्र नीचा, फ्रीडा । ४ नृत्य, नाच । ५ रण काव्य । ६ अभिनय ग्रंथ । ७ अभिनेता, नट । ८ बहतर कलाओं में से एक ।

नाटकश्री

(७४२)

नायावत

१ स्वांग । १० डोंग, पाखण्ड । —साछा-स्त्री० जहाँ पर नाटक की व्यवस्था होती है, नाट्यशाला ।

नाटकश्री, नाटकश्री-स्त्री० नाटक या अभिनय करने वाली स्त्री ।

नाटकी-वि० नाटक करने वाला, नाटक करके जीवन यापन करने वाला ।

नाटणी (बो)-१ देखो 'नटणी' (बो) । २ देखो 'नाटणी' (बो) ।

नाटारंभ-देखो 'नाटारंभ' ।

नाटवसन-स्त्री० एक राग विशेष ।

नाटवाळ-वि० [देश०] कृपण, कंजूस, सूम ।

नाटसन, (सल्ल, साळ)-वि० [सं० नृष्टि-शल्य] १ खटकने व चुभने वाला । २ बीर, योद्धा । ३ बलवान, शक्तिशाली । -पु० भय, आतंक ।

नाटारंभ, नाटारंभि-वि० [सं० नाट्य-आरंभ] नृत्य, नाच ।

नाटो-वि० १ जवरदस्त, बलवान । २ छोटे कद की । -पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

नाटेश्वर-पु० [सं० नटेश्वर] १ विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ ईश्वर । ४ नृत्य करने वाला, नर्तक । ५ देखो 'नटेश्वर' ।

नाटो-वि० [सं० नत] (स्त्री० नाटो) छोटे कद का, ठिगना । बीना ।

नाटघ-पु० [सं०] १ नाटक, अभिनय । २ नटों का कार्य । ३ नाच, संगीत । ४ चौसठ कलाओं में से एक ।

—अलंकार-पु० नाटक का सौन्दर्य बढ़ाने वाला अलंकार ।

नाटक-देखो 'नाटक' ।

नाठणी, (बो)-देखो 'नहाठणी' (बो) ।

नाड, नाडकियी, नाडकी-देखो 'नाडो' ।

नाडकी-देखो 'नाडो' ।

नाडणी, (बो)-देखो 'नडणी' (बो) ।

नाडिका-स्त्री० एक घड़ी । एक घड़ी का समय ।

नाडियो-देखो 'नाडो' ।

नाडो-स्त्री० १ तालाब, जलाशय । २ देखो 'नाडो' । —त्रोट्ट= 'नाडोतीट्ट' ।

नाडूली नाडोली-देखो 'नाडो' ।

नाडो-पु० [देश०] १ छोटा तालाब, पोखर । २ पानी से भरा खड्डा ।

ना'णी (बो)-देखो 'नहाणी' (बो) ।

नात-देखो 'न्यात' ।

नातणी-पु० पानी छानने का वस्त्र, रुमाल, गमछा ।

नातर-पु० [देश०] रक्त प्रदर ।

नातरउ-देखो 'नातो' ।

नातरायत-स्त्री० १ वह जाति जिसमें स्त्रियों के पुनर्विवाह की प्रथा हो । २ पुनर्विवाह करने वाली स्त्री ।

नातरिया-१ देखो 'नातरायत' । २ देखो 'चौरामिया' ।

नातरनातर-देखो 'नातो' ।

नातालाग-पु० विधवा विवाह पर लिया जाने वाला कर ।

नाती-वि० [सं० ज्ञाती] १ संबंधी, रिश्तेदार । २ जाति का, न्यात का ।

नातेदार-वि० १ रिश्तेदार, संबंधी । २ पुनर्विवाह करने वाली जाति का ।

नातेली-देखो 'नाती' ।

नाती, नात्र, नात्रो-पु० [सं० ज्ञाति] १ संबंध, रिश्ता । २ घनिष्ठता । ३ विधवा स्त्री द्वारा किसी पुरुष से पति के रूप में किया जाने वाला संबंध, रिश्ता । ४ उक्त कार्य पर लगने वाला सरकारी कर ।

नाथ-पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण, गोपाल । २ विष्णु । ३ ईश्वर । ४ स्वामी, प्रभु, मालिक । ५ पति । ६ रक्षक, संरक्षक । ७ नेता । ८ पथ प्रदर्शक । ९ राजा । १० मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय । ११ इस सम्प्रदाय का साधु । १२ संन्यासी, योगी । १३ एक जाति । १४ इस जाति का व्यक्ति । -स्त्री० १५ बेल आदि के नाक में डाली जाने वाली रस्सी, नकेल । १६ धुरी में पहिया डाल कर आड़ी लगाई जाने वाली कील । १७ नौ की संख्या* । देखो 'नथ' । —अनाथ-पु० अशरण-शरण, ईश्वर । —कटो-पु० नाथ निकाला हुआ बेल आदि । -चिड़िया= 'चिड़ियानाथ' —पूत-पु० कामदेव, मदन । —वाळ-वि० नाथ डाला हुआ । अधीन, वशवर्ती । —हर-पु० वृषभ, बैल । हैवान ।

नाथक-पु० [सं०] स्वामी, राजा ।

नाथण-वि० १ नाथ डालने वाला । २ वश में करने वाला । —काळी-पु० श्रीकृष्ण ।

नाथणी (बो)-वि० [सं० नाथ] १ बेल आदि के नाक में छेद कर रस्सी डाल देना । २ काबू में करना, वश में करना । ३ किसी वस्तु को छेदकर डोरा डालना । ४ पिरोना, पोना । ५ उद्दण्ड व वदमाशों को सीधा करना ।

नाथता, नाथत्व-पु० [सं०] प्रभुता, स्वामित्व ।

नाथद्वारी (दुवारी, दूवारी, द्वारी)-पु० [सं० नाथ-द्वार] उदयपुर के पास, बनास नदी पर बना श्रीनाथजी का एक प्रसिद्ध मंदिर ।

नाथावत-पु० [सं० नाथ-पुत्र] १ मोलंकी वंश की एक शाखा व इसका व्यक्ति । २ कछवाहा वंश की एक शाखा व इसका व्यक्ति ।

नाथियउ, नाथियाड़ी-वि० १ नाथा हुआ, नकेल डाला हुआ ।
 २ नत्थी किया हुआ, छेदा हुआ ।
 नाथी-रो-बाड़ी-पु० वेश्याओं का झुंडा, चकला ।
 नाथीत-पु० राठोड़ों की एक उप शाखा ।
 नाथी-वि० [सं० नाथ] १ नाथा हुआ । २ देखो 'नाथ' ।
 नाथंग-देखो 'नाद' ।
 नाद-पु० [सं०] १ ध्वनि, आवाज, शब्द । २ गर्जन, चीत्कार, चिल्लाहट । ३ सानुनासिक स्वर । ४ वर्णों के उच्चारण की क्रिया । ५ संगीत । ६ उद्घोष । ७ योनि, भग । ८ हरिण के सींग का बना बाजा । ९ गुरु मंत्र । १० अनाहत शब्द । ११ अहंकार, गर्व । १२ देखो 'न्याद' ।
 नादलबण, नादबण-पु० कपास ।
 नादमुद्रा-पु० [सं०] तंत्र में हाथ की एक मुद्रा ।
 नादर-१ देखो 'नाजर' । २ देखो 'नादिरसाह' ।
 नादरणी (बी)-क्रि० आदर, सत्कार नहीं करना ।
 नादरसा (साह)-देखो 'नादिरसाह' ।
 नादली-स्त्री० [प्र० नाद-ए-अली] कुरान की आयत खुदी, तावीज या गंडा ।
 नावाण, नावांशियी, नावांशी-देखो 'नादांन' ।
 नादांन-वि० [फा०] १ नासमझ, अवोध । २ मूर्ख । ३ अनजान ।
 नादांनो-स्त्री० [फा० नादांनो] नासमझी, मूर्खता ।
 नादार-वि० [फा०] १ निर्धन, गरीब । २ कायर, डरपोक । ३ देखो 'नाजर' ।
 नादारणी, नादारी-स्त्री० [फा० नादारी] १ निर्धनता, गरीबी । २ कायरता ।
 नादि-देखो 'नाद' ।
 नादिर-वि० [प्र०] १ अनोखा, अद्भुत । २ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ देखो 'नाजर' ।
 नादिरसा, नादिरसाह-पु० [फा० नादिरसाह] फारस का एक क्रूर व शक्तिशाली बादशाह ।
 नादिरसाही-स्त्री० [फा० नादिरसाही] १ निरंकुशता, क्रूरता । २ अत्याचार । ३ नादिरसाह की नीति व कार्य ।
 नादी-वि० [सं० नादिन्] ध्वनि करने वाला ।
 नादु-देखो 'नाद' ।
 नादेसुर-पु० [सं० नंदीश्वर] १ शिव, महादेव । २ नंदी ।
 नादेत-वि० आसुरी वृत्ति से रहित ।
 नादोत-पु० सिसोदिया वंश की एक शाखा व इसका व्यक्ति ।
 नाप-स्त्री० [सं० मापनम्] १ किसी वस्तु या क्षेत्रादि की लंबाई-चौड़ाई का परिमाण । २ नाप करने का उपकरण । ३ मापने की क्रिया या भाव ।

नापणी (बी)-क्रि० [सं० मापन्] १ लंबाई-चौड़ाई आदि का मान निकालना, परिमाण निकालना । २ परिमाण का भंडाज करना, निर्धारित करना । [सं० न - अर्पणम्] ३ नहीं देना, नहीं अर्पण करना ।
 नाप-तौल-पु० १ नापने या तोलने की क्रिया या भाव । २ नाप या तौल का परिमाण ।
 नापसंद-वि० १ जो अच्छा न लगे, पसंद न हो । २ अस्विकार, अप्रिय । ३ जो ठीक न लगे ।
 नापाक-वि० [फा०] १ अपवित्र, अशुद्ध । २ मैला-कुचैला ।
 नापाकी-स्त्री० [फा०] अपवित्रता, अशुद्धता ।
 नापित-पु० [सं०] नाई, हज्जाम ।
 नाफ-स्त्री० [फा०] नाभि, तोंदी ।
 नाफरम, नाफुरम-पु० [फा० ना'-फरमान] एक प्रकार का पीछा ।
 नाफेरी-देखो 'नफेरी' ।
 नाफी-पु० [फा० नाफः] मृग-नाभि में होने वाली कस्तूरी की थैली ।
 नाबाळक-देखो 'नाबानिग' ।
 नाबाळकी-देखो 'नाबाळिगी' ।
 नाबाळण-देखो 'नाबाळिग' ।
 नाबाळणी-देखो 'नाबाळिगी' ।
 नाबाळिग-वि० [फा०] १ अवयस्क, अवोध । २ कानून द्वारा वयस्क होने के लिए निश्चित उम्र से कम ।
 नाबाळिगी-स्त्री० [फा०] १ अवयस्क या अवोध अवस्था । २ कानूनी वयस्कता से कम उम्र ।
 नाबी-स्त्री० [देश०] मानवी चित्र चित्रित करने का उपकरण ।
 नाबूच-वि० [फा०] १ ध्वस्त, बर्बाद, नष्ट । २ लुप्त, गायब । ३ नश्वर ।
 नाबेड़ी-पु० [देश०] हाथ की अंगुली के नाबूच का फोड़ा ।
 नाभंग-देखो 'नाभाग' ।
 नाभ-देखो 'नाभि' ।
 नाभकज-पु० [सं० नाभिः कज] जिसकी नाभि में कमल है, त्रिणु ।
 नाभकवळ (कमळ, कवळ)-पु० [सं० नाभिः कमल] तंत्र के अनुसार शरीरस्थ छः चक्रों में से एक, मणिपुर ।
 नाभनंद-पु० [सं० नाभिनंद] जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ।
 नाभाग-पु० [सं०] १ राजा भगीरथ का पौत्र एक सूर्यवंशी राजा । २ मार्कण्डेय पुराण के कारुष वंश के राजा, जो दिष्ट के पुत्र थे ।
 नाभावास-पु० डूम जाति के प्रसिद्ध संत, जिन्होंने भक्तमाल की रचना की थी ।

नाभारत-स्त्री० [सं० नाभ्यावर्त] छोड़े की नाभि के नीचे होने वाली भौरी ।

नाभि (नाभी)-स्त्री० [सं०] १ जरायुज प्राणियों के पेट के बीच का छोटा गड्ढा या चिह्न, तुंदी । २ पड़िये का मध्य भाग । ३ कस्तूरी । ४ प्रधान, नेता । ५ समीप की नातेदारी । ६ शत्रिय । ७ घर । ८ जैनियों के आदि तीर्थ-कर के पिता । —कंधल, कमल, कवळ—'नाभकंधल' । —नरिंद-पुं० ऋषभदेव के पिता का नाम । —पाक-पुं० बालकों की नाभि में होने वाला एक रोग । —राय= 'नाभिनरिंद' । —घरस-पुं० भारतवर्ष का एक नाम । —संभव-पुं० ब्रह्मा । —सुत-पुं० ऋषभदेव ।

नाभी-देखो 'नाभादाम' ।

नाय-१ देखो 'न्याय' । २ देखो 'नाई' । ३ देखो 'नहीं' । ४ देखो 'न्याय' ।

नायए-पुं० [सं० ज्ञातक] ज्ञातपुत्र श्रीमहावीर (जैन) ।

नायक-पुं० [सं०] (स्त्री० नायिका, नायिका) १ नेता, मुखिया, प्रधान । २ सेनापति । ३ स्वामी, नाथ, मालिक । ४ अधिपति, शासक । ५ प्रभु, ईश्वर । ६ पति । ७ श्रेष्ठ पुरुष । ८ मरदार । ९ किसी काव्य या कथा का मुख्य पात्र, चरित्रनायक । १० संगीत कला में प्रवीण पुरुष, कलावंत । ११ हार के बीच का रत्न । १२ मुख्य दृष्टान्त । १३ मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम (।।।) । १४ मरदम पट्टी करने वाला । १५ एक मुसलमान जाति व इगका व्यक्ति । १६ थोरी जाति या इस जाति का व्यक्ति । १७ भोल जाति व इसका व्यक्ति । १८ शिकारी, आखेटक । १९ वनजारा जाति के व्यक्ति का एक संबोधन ।

नायका-स्त्री० [सं० नायिका] १ किसी कथा या काव्य की मुख्य पात्री, चरित्रनायिका । २ मुख्य अभिनेत्री । ३ भार्या । ४ स्वामिनी । ५ देखो 'नायका' ।

नायकामल्लार-स्त्री० [सं० नायक-मल्लार] सम्पूर्ण जाति की एक राग ।

नायण (णि, णी)-स्त्री० [सं० नापित] नाई जाति की स्त्री, नाइन ।

नायत-पुं० [देश०] १ वैद्य, हकीम । २ देखो 'नायतो' ।

नायता-स्त्री० नाइयों की एक शाखा ।

नायतो-पुं० [देश०] उक्त शाखा का व्यक्ति ।

नायपुत्त-पुं० [सं० ज्ञातपुत्र] जिनेन्द्र श्रीवर्द्धमान स्वामी (जैन) ।

नायब-पुं० [अ० नाइब] १ कार्य की देख-रेख करने वाला कर्मचारी, व्यक्ति, मुख्तार । २ मुख्य कर्मचारी का सहायक । ३ प्रतिनिधि ।

नायबी-स्त्री० १ 'नायब' का कार्य या पद । २ प्रतिनिधित्व ।

नायला-पुं० गेहूँ की बीजनी से बोवाई ।

नायी-देखो 'नाई' ।

नायी-पुं० [सं० नाभि] बेलगाड़ी के पहिये का मध्य भाग ।

नारंग-पुं० १ रक्त, लून, शोणित । २ तीर, बाण । ३ देखो 'नारंगी' । ४ तलवार । ५ देखो 'नारंगिया' । —फळ-पुं० स्तन, कुत्र ।

नारंगिया-वि० १ नारंगी के रंग जैसा, पीला । २ पीलापन लिए लाल ।

नारंगी-स्त्री० [सं० नारङ्ग] १ पीले छिलके वाला नींबू जाति का रम्याला फल । २ देव वृक्षों में से एक । ३ देखो 'नारंगिया' ।

नारंज-स्त्री० [फा० नारंगी] अमरा ।

नार-पुं० [सं०] १ जल । २ जन समूह । ३ जल में रहने वाला नारायण । ४ देखो 'नारी' । ५ देखो 'नाइ' ।

नार-देखो 'नाहर' ।

नारक-पुं० १ नरक । २ नरकवासी । —वि० १ नरक संबंधी, नरक का । २ नरक में गिरा हुआ ।

नारककरी-स्त्री० [सं० नरहरि+ककर] सात छोटी कंकरी व दो बड़े कंकरी से खेला जाने वाला एक देशी खेल ।

नारकांटी-पुं० [देश०] एक लता विशेष जिसको जड़ व बीज औषधि में काम आते हैं ।

नारकियौ-१ देखो 'नारो' । २ देखो 'नाहर' ।

नारकी, नारगी-वि० [सं० नारकिन्] १ नरक में जाने योग्य । २ पापी, अधम । ३ देखो 'नरक' ।

नारङ्गी-स्त्री० १ तरुण शाय । २ देखो 'नाहरी' ।

नारङ्गी-१ देखो 'नाहर' । २ देखो 'नारो' ।

नारद-पुं० [सं०] ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ऋषि । —वि० १ चुनलखोर । २ कलहप्रिय । ३ ध्वेत* । —पत्नी-पुं०— चुनलखोरी । —पुराण-पुं०—प्रठारह पुराणों में से एक । —रख, रिख, रिखि, रिखी-पुं०—नारदमुनि, देवर्षि ।

नारदा-स्त्री० एक देवी का नाम ।

नारदियौ-देखो 'नारद' ।

नारदी-पुं० [सं० नारदिन्] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

नारदी-पुं० [सं० नालि-द्वार] १ मकान के गंदे पानी का नाला, मोरी । २ गंदा पानी, मैला । ३ पेशाबघर ।

नारद-देखो 'नारद' ।

नारमद-वि [सं० नारमदः] नर्मदा संबंधी, नर्मदा का ।

नारसिंह-देखो 'नरसिंह' ।

नारसिंहो-वि० नृसिंह संबंधी । —स्त्री० १ एकदेवी । २ देवी का एक रूप ।

नारसींग, नारसीय, नार'सी-देखो 'नरसिंह' ।

नारांतक-पु० [सं०] रावण का एक पुत्र ।

नारां-री-ओलाद-स्त्री० घोड़ों की एक जाति विशेष ।

नाराइण-देखो 'नारायण' ।

नाराइणि, नाराइणी, नाराईणी-देखो 'नारायणी' ।

नाराच-पु० [सं०] १ लोहे का बना तीर । २ तीर, बाण ।

३ छत्तीस प्रकार के आयुधों में से एक । ४ तलवार ।

५ नव हस्ती, शिशुमार । ६ सोलह वर्ण का एक छन्द

विशेष । ७ एक अन्न वर्णवृत्त विशेष । ८ चौबीस मात्राओं

का एक छन्द विशेष । ९ भाला । १० देखो 'नाराल' ।

नाराज, नाराजक-वि० [फा० नाराज] १ अप्रसन्न, नाखुश ।

२ देखो 'नाराच' ।

नाराजगी-स्त्री० [फा०] अप्रसन्नता, रुष्टता ।

नाराजी-१ देखो 'नाराज' । २ देखो 'नाराजगी' ।

नाराट, नाराय-पु० [सं० नाराच] तीर, बाण ।

नाराधरणी (बी)-क्रि० आराधना न करना ।

नारायण-पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ विष्णु ।

३ श्रीकृष्ण । ४ पीप का महीना । ५ जल में निवास करने

वाला । ६ 'अ' अक्षर का नाम । ७ देखो 'नारायणास्व' ।

८ एक ऋषि का नाम । —क्षेत्र खेत-पु० गंगा के प्रवाह

में ४ हाथ तक की भूमि । —तेल, तैल-पु० आयुर्वेद का

प्रसिद्ध तेल । —प्रिय-पु० महादेव, शिव, सहदेव ।

नारायणास्त्र-पु० [सं०] एक प्रकार का अति विनाशकारी अस्त्र ।

नारायणी-स्त्री० [सं०] १ ज्योतिष शास्त्र की आठ देवियों में

से एक । २ गौड़ क्षत्रियों की इष्ट देवी । ३ दुर्गा, शक्ति ।

४ लक्ष्मी, श्री । ५ गंगा । ६ सप्तावर । ७ दुर्पोषण की

महायता में भेजी श्रीकृष्ण की सेना ।

नारिग-देखो 'नारंगी' ।

नारि-देखो 'नारी' ।

नारिअण-देखो 'नारायण' ।

नारिकेर, नारिकेल-पु० [सं० नालिकेर] नारियल ।

नारिद-देखो 'नारद' ।

नारियळ-पु० [सं० नारिकेल] श्रीफल ।

नारियो-पु० [देश०] १ कूप से पानी निकालने के रस्से (लाव)

के मुंह पर लगा उपकरण । २ हल का जुआ बांधने का

रस्सा । ३ देखो 'नारी' । ४ देखो 'नाहर' ।

नारिसिप-देखो 'नरसिप' ।

नारी-स्त्री० [सं०] १ औरत, स्त्री । २ पत्नी, भार्या ।

३ मादा । ४ तबले आदि का बायां, डुम्पी । ५ छः मात्राओं

का एक छन्द विशेष । ६ पुरुषों की ७२ कलाओं में से

एक । ७ तीन लघु ढगण के तृतीय भेद का नाम (III) ।

८ देखो 'नाड़ी' ।

नारी-देखो 'नाहरी' ।

नारीकवच-पु० [सं०] एक मूर्धवंशी राजा ।

नारीकुंजर-पु० [सं०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नारीतीर्थ-पु० [सं० नारीतीर्थ] महाभारत के अनुसार एक

तीर्थ ।

नारीयण-देखो 'नारायण' ।

नारीवत-पु० [सं०] एक 'पत्नी व्रत' ।

नारू-पु० [देश०] जांप व पांवों में होने वाला एक रोग जिसमें

एक लम्बा सफेद कीड़ा निकलता है ।

नारेळ, नारेळियो-देखो 'नारियळ' ।

नारेळी स्त्री० १ नारियन की जटा के नीचे के सब्ज भाग की

कटांगी । २ देखो 'नारियळ' । —पूज्य-स्त्री० श्रावण

की पूजिमा ।

नारेळो-देखो 'नारियळ' ।

नारी-पु० १ 'जिन्दाबाद' आदि की आवाज । २ देखो 'नारी' ।

३ देखो 'न्यारी' ।

नारी-पु० [सं० नाथ हरि] १ युवा, बेल । २ बेल, वृषभ ।

३ देखो 'नाहर' ।

नाळग-स्त्री० [देश०] १ किवदंती, जनश्रुति । २ अफवाह ।

नालदा-पु० [सं०] बौद्धों का एक प्राचीन मठ ।

नाळ-स्त्री० [सं० नाल, नालि] १ बन्दूक । २ तोप । ३ बन्दूक

या तोप की लम्बी नलिका । ४ कमल का डंठल । ५ किसी

प्रकार की नलिका । ६ नहर । ७ नलिका, नाली ।

८ धमनी, नाड़ी । ९ पोला या पोपला डंठल । १० जल

में होने वाला एक पीछा विशेष । ११ जल बहने का

स्थान । १२ लिंग, शिपन । १३ आभूषण की नलिका ।

१४ पहाड़ी रास्ता, तंग रास्ता । १५ सीढ़ी, जीना ।

१६ मकान के अन्दर कोई तंग या संकरीला भाग । १७ कूप

की एक प्रकार की बंधाई । १८ कूआ बांधने के लिए अन्दर

जाने का तिरछा रास्ता । १९ सुनारों की फूंकनी ।

उपकरण । २० जुलाहों का एक उपकरण विशेष ।

२१ लता का अग्र भाग । २२ बेलों की धी-तेल आदि

पिलाने का उपकरण । २३ चौटियों की पंक्ति । २४ चौटियों

का रास्ता । २५ वंश परंपरा । २६ बेल आदि पशुओं के

नाक का ऊपरी भाग । २७ जंगल में पशुओं के गुरों से

बनी डगर । २८ दशनामी संन्यासियों की दफनाने का

खड्डा । २९ घोड़े की टाप के नीचे लगने वाला अर्ध

चंद्राकार लोहा । ३० खपरेलों की जोड़ पर लगाया जाने

वाला नरिधा । ३१ म्यान की नोक पर मड़ी जाने वाली

माम । ३२ कूप की जोड़ाई के लिए नीचे डाला जाने वाला

लकड़ी का लक । ३३ संगीत एक की मूर्च्छना । ३४ मृदंग

मे मिलता जुलता एक बाध । ३५ देखो 'नळी' ।
 ३६ देखो 'नाळी' । -क्रि० वि० १ आपस में, परस्पर ।
 -अन्व० २ साथ, सहित, से ।
 नाळक-पु० [देश०] उड़द । -वि० परस्परा प्राप्त, प्राचीन ।
 नाळकटाई-स्त्री० [सं० नालि + कत्र] १ नवजात शिशु के
 नाभि से लगी नाल को काटने की क्रिया । २ उस कार्य का
 पारिश्रमिक ।
 नाळकाजंत्र-पु० [सं० नलिकायंत्र] १ बंदूक । २ तोप ।
 नाळकी-देखो 'नाळ' ।
 नाळकेर-देखो 'नारिकेल' ।
 नाळखीसी-स्त्री० [देश०] तलवार डालने की चमड़े की छोटी
 नाकी ।
 नाळम-देखो 'नाळक' ।
 नाळगुगरी-स्त्री० [देश०] किसानों से ली जान वाली बूए
 संबंधी एक लाग ।
 नाळखेद (खेवक)-पु० डिगल गोतों में एक दोष ।
 नाळणी (बो)-क्रि० [देश०] १ देखना, अवलोकन करना ।
 २ निहारना । ३ तलाश करना, खोजना । ४ डालना,
 गिराना । ५ समझना ।
 नाळबंद (बंध)-पु० १ धोड़े की टाप में लोहा जड़ने वाला ।
 २ मवेशी रखने वालों से लिया जाने वाला एक कर ।
 ३ एक प्रकार की 'रेख' ।
 नाळबंदी (बंधी)-स्त्री० १ धोड़े की टाप में लोहा जड़ने का
 काम । २ इस कार्य की मजदूरी । ३ देखो 'नाळबंद' ।
 नाळब-पु० [सं० नालः] पानी निकलने का स्थान ।
 नाळस-देखो 'नालिस' ।
 नाळा-स्त्री० तोप ।
 नालायक-वि० [फा०] अयोग्य, निकम्मा, मूर्ख ।
 नाळि-देखो 'नाळ' ।
 नाळिकेर-देखो 'नारिकेल' ।
 नासिनी-स्त्री० एक प्रकार का जलयान ।
 नाळियर-देखो 'नारिकेल' ।
 नाळियो-पु० [सं० नालः] १ गंदे पानी का नाला, मोरी ।
 २ देखो 'नाळ' । ३ देखो 'नाळी' ।
 नाळिस-स्त्री० [फा० नालिश] किसी के विरुद्ध अभियोग,
 फरियाद ।
 नाळी-स्त्री० [सं० नालिः] १ गंदे पानी के बहने का रास्ता,
 नाली । २ मोरी । ३ नली, नलिका । ४ नाड़ी, धमनी ।
 ५ पतला या संकरा जल मार्ग । ६ नदी । ७ सारंगी के
 बीच का मुख्य अंग । ८ देखो 'नळी' । ९ देखो 'नाळ' ।
 नाळीप्र-देखो 'नारिकेल' ।

नाळीक-पु० [सं० नालिकं] १ कमल । २ सुन्दार कमल नाल ।
 ३ कमल के फूल का डंठल । ४ तीर । ५ एक प्रकार का
 छोटा तीर ।
 नाळीयर-देखो 'नारिकेल' ।
 नाळ नाळू, नाळू-देखो 'नाळी' ।
 नाळकेर नाळर-पु० [सं० नालिकेर] १ देववृक्षों में से एक,
 सुरुवृक्ष । २ देखो 'नारिकेल' ।
 नाळेरगरी-वि० [सं० नालिकेर] नारियल जैसा ।
 नाळेरियो-देखो 'नारिकेल' ।
 नाळरी-देखो 'नारेळी' । -पूनम = 'नारेळी-पूनम' ।
 नाळरी-पु० १ नारियल के कड़े भाग को साफ करके बनाया
 हुआ हुक्का । २ कलेजी (मांस) । ३ देखो 'नारिकेल' ।
 नाळी-पु० [सं० नालिः, नालः] १ नवजात शिशु की नाभि से
 जुड़ी नलिका, जिसको शीघ्र ही काट दिया जाता है ।
 [सं० नालकम्] २ मकान से गंदा पानी निकलने की मोरी,
 नालि । ३ बरसाती पानी बहने का छोटा सोता, नाला ।
 ४ छोटा जल स्रोत । ५ देखो 'नाळ' । [फा० नाला]
 ६ रोना-धोना, दावेला ।
 नाव-स्त्री० [सं० नौः, फा० नाव] १ छोटा जलयान, किश्ती,
 नौका । २ शव यान, रथी, अर्थी । ३ देखो 'न्याव' ।
 नावक-पु० [फा०] १ छोटा बाण विशेष । २ देखो 'नाविक' ।
 नावघाट-पु० नदी या समुद्र तट, जहाँ नावें ठहरती हैं ।
 नावड़-स्त्री० पहुँच । क्षमता ।
 नावड़णी (बो)-क्रि० १ पीछे से आकर साथ कर लेना,
 पहुँचना । २ दौड़कर पकड़ लेना । ३ आना पहुँचना ।
 ४ मुकाबला करना । ५ अधिकार करना, कब्जा करना ।
 ६ कार्य निपटाना, पूर्ण करना ।
 नावड़ियो-पु० केवट, मल्लाह ।
 नावड़ी (डी)-देखो 'नाव' ।
 नावर-स्त्री० १ दौड़ने भागने की क्रिया या भाव । २ देखो
 'न्हावर' ।
 नावणी (बो)-क्रि० [सं० ज्ञापयति] १ बताना, ज्ञात कराना ।
 २ नहीं आना । ३ देखो 'न्हाणी' (बो) ।
 ना'वणी (बो)-क्रि० १ उड़ेलना, डालना । २ देखो
 'न्हावणी' (बो) । ३ देखो 'न्हाणी' (बो) ।
 नावांशकण-पु० केवट, मल्लाह ।
 नावाकिफ-वि० [अ०] अनजान, अपरिचित ।
 नावाजिब-वि० [फा०] अनुचित, अनुपयुक्त ।
 नावावीड़-स्त्री० भाग-दौड़, दौड़-धूप ।

नाविध

(७४७)

नाहली

नाविध, नाविक-पुं० [सं० नाविक] १ नाव चलाने वाला, मल्लाह, केवट । २ जहाज का यात्री । ३ जल मार्ग से यात्रा करने वाला । ४ कण्ठधार ।

नावी-देखो 'नाई' ।

नास-पुं० [सं० नासा] १ नाक, नासिका । २ सूँड । ३ चीखट का ऊपरी बाजु । ४ सूँघने की क्रिया या भाव । ५ सूँघने का पदार्थ । [सं० नाश] ६ नाश, ध्वंस, बरबादी । ७ लोप, समाप्ति । ८ संहार । ९ मृत्यु, मौत । १० हानि, नुकसान । ११ दुर्भाग्य । १२ विपत्ति । १३ त्याग । १४ असफलता ।

नासक-वि० [सं० नाशक] १ नाश करने वाला, मारने वाला । २ ध्वस्त करने वाला । -पुं० १ दीवार के कोने में चुना जाने वाला पत्थर । २ देखो 'नासिका' ।

नासका-स्त्री० [सं० नासिका] १ नाक । २ घ्राणेन्द्रिय । ३ सूँघनी, तंबाखू । ४ सूँघने की दवा ।

नासकारी-वि० [सं० नाशकारिन्] १ नाश करने वाला । २ विनाशकारी ।

नासण-वि० १ नाश करने वाला । २ भागने वाला । ३ देखो 'नास' ।

नासणउ, नासणी-वि० [सं० नश] (स्त्री० नासणी) १ दीड़ने वाला, भागने वाला । २ नष्ट होने वाला, समाप्त होने वाला । ३ नाश करने वाला, विध्वंसक ।

नासणी (बौ)-क्रि० १ भाग जाना, दीड़ जाना । २ भिट जाना । नष्ट होना ।

नासत, नासति-१ देखो 'नास्ति' । २ देखो 'नासती' ।

नासतिक-देखो 'नास्तिक' ।

नासती-स्त्री० [सं० नास्ति] १ अमृत्यता । २ मनाही, इन्कार । ३ अभाय, कमी । -वि० १ बुरा, खराब । २ अनुपयुक्त । -अव्य० नहीं, ना ।

नासतीक-देखो 'नास्तिक' ।

नासपती, नासपाती-स्त्री० [तु० नाशपाती] १ मझीले कद का फलदार पेड़ विशेष । २ इस पेड़ का फल, सेव ।

नासफरिम-वि० [सं० नाशः-फा० फर्मा] वह जिसकी आजा का उत्पन्न होता हो ।

नासमश-वि० जिसमें समझ न हो, निर्बुद्धि, अवोध, मूर्ख ।

नासवंती-स्त्री० [सं० नाश] १ घोड़े की नाक के नथूने पर होने वाली भवरी । २ देखो 'नासवान' ।

नासवान-वि० [सं० नाशवान्] नष्ट होने लायक, नश्वर । अनित्य ।

नासा-स्त्री० [सं०] १ नाक, नासिका । २ नासारंघ, नथना । ३ घ्राणेन्द्रिय । ४ नौच, तुंड । ५ देखो 'नास' । -चर-पुं० नौच से खाने वाले, पक्षी ।

नासानुगी-पुं० [सं०] नाक के बल चलने वाले प्राणी, जानवर ।

नासापुट-पुं० [सं०] नाक के अन्दर का पर्दा ।

नासारोग-पुं० नाक का रोग ।

नासिक-स्त्री० [सं० नासिका] महाराष्ट्र प्रान्त का एक तीर्थ ।

नासिका-स्त्री० [सं०] १ नाक, नासा । २ देखो 'नासका' ।

नासिणउ, नासिणी-देखो 'नासणी' ।

नासिणी (बौ)-देखो 'नासणी' (बौ) ।

नासूर-पुं० [अ०] मवाद वाला फोड़ा, नाड़ी ब्रण ।

नासेद-वि० [सं० नष्टेयिन्] खाये हुए मवेशी की तलाश करने वाला ।

नास्ति-देखो 'नासती' ।

नास्तिक-वि० [सं०] धर्म व ईश्वर में आस्था न रखने वाला । -वरसन, वाद-पुं० उक्त भावना पर आधारित मत, सिद्धान्त ।

नास्तिकता-स्त्री० [सं०] धर्म व ईश्वर में आस्था न रखने की भावना, बुद्धि ।

नास्ती-देखो 'नासती' ।

नास्ती-पुं० [फा० नाश्ता] सुबह का अल्पाहार, कलेवा ।

नाह-अव्य० १ निषेधात्मक ध्वनि, नहीं । २ देखो 'नाथ' । ३ देखो 'नाभि' ।

नाहकंध (कंधो)-पुं० [सं० नाभि-स्कंध] पहिये की धुरी के ऊपर के अवयव । -वि० १ नाभि के समान कंधों वाला । २ बलवान, शक्तिशाली ।

नाहक-क्रि० वि० [फा०] बिना सतबब के, व्यर्थ में, फालतू में ।

नाहण-पुं० [सं० स्नान] स्नान, मज्जन ।

नाहणी (बौ)-क्रि० स्नान करना, नहाना ।

नाह-दुनियाण-पुं० १ राजा, नृप । २ बादशाह, सम्राट ।

नाहर-पुं० [सं० नखरः] (स्त्री० नाहरी) १ सिंह, शेर । २ चीता । ३ भेड़िया । ४ योद्धा, वीर । ५ मक्खीमार एक जीव विशेष । -वि० दुष्ट, आततायी ।

नाहरकांटी-देखो 'नारकांटी' ।

नाहर-मस्तक-पुं० मयूर के समान नील वरुण का घोड़ा ।

नाहरसांस-पुं० घोड़ों की सांस फूलने की बीमारी ।

नाहरी-स्त्री० मादा सिंह, शेरनी ।

नाहरू, नाहरी-पुं० १ मोट खींचने का रस्सा । २ चमड़े का टुकड़ा । ३ देखो 'नारु' । ४ देखो 'नाहर' ।

नाहलउ-देखो 'नाथ' ।

नाहला-स्त्री० एक स्लेच्छ जाति ।

नाहलियौ, नाहलू-देखो 'नाथ' ।

नाहली-देखो 'नाली' ।

नाहली-पुं० १ नाहला जाति का स्लेच्छ । २ देखो 'नाथ' ।

नाहानी-देखो 'नानी' । (स्त्री० नाहानी) ।
 नाहि, नाही-१ देखो 'नाभि' । २ देखो 'नहीं' ।
 नाहु, नाहू-१ देखो, नाभि' । २ देखो 'नाथ' ।
 नाहेट-स्त्री० मवेशी की तलाश ।
 नाहेटू-देखो 'नामेटू' ।
 निगलली (बो)-क्रि० [सं० निर्गलनम्] १ मिट्टी के बर्तन का परिष्कारस्थान में होना, पक्का होना । २ पक्का होना, पकना । [सं० निर्गद] ३ रोगादि से मुक्ति पाना ।
 ४ बिना चबाये गले से नीचे उतारना, गटकना, गिटना ।
 निगलली (बो)-क्रि० १ पकाना, हट कराना, परिष्कारस्थान में करना । २ मिट्टी के ताजे पात्र में पानी डाल कर रखना ।
 निग-देखो 'निगाह' ।
 निद-१ देखो 'निदा' । २ देखो 'नीद' ।
 निदक-वि० [सं०] निदा करने वाला, आलोचक ।
 निदकुली-देखो 'नीद' ।
 निदली-स्त्री० १ निरीक्षण (जैन) । २ देखो 'निदा' ।
 निदली (बो)-क्रि० [सं० निदन] १ निदा करना, आलोचना करना, बदनामी करना । २ अपकीर्ति करना । [सं० नीदि] ३ दीपक का बुझना । ४ निद्रावश होना, सोना ।
 निदरा-देखो 'नीद' ।
 निदवली (बो)-१ देखो 'निदली' (बो) । २ देखो 'नीदली' (बो) ।
 निदाण-देखो 'निदाण' ।
 निदा-स्त्री० [सं०] १ किसी के दोषों का वर्णन, बुराई, कटवी । २ अपकीर्ति, बदनामी । ३ आलोचना । ४ देखो 'नीद' ।
 निदली (बो)-क्रि० १ दीप बुझाना । २ देखो 'नीदली' (बो) ।
 निदाळ-देखो 'नीदाळ' ।
 निदाळवी-देखो 'निदाळ' ।
 निदाळ, निदाळवी-वि० १ निदा करने वाला, निदक । २ नींद के प्रभाव वाला, उनिदा ।
 निदावली (बो)-देखो 'नीदली' (बो) ।
 निदास्तुति-स्त्री० [सं०] निदा के रूप में की जाने वाली स्तुति । व्याजस्तुति ।
 निदित-वि० [सं०] जिसकी निदा की गई हो, अपकीर्ति वाला, हूषित । बुरा । बदनाम ।
 निदिया-१ देखो 'निदा' । २ देखो 'नीद' ।
 निदीजली (बो)-क्रि० १ निदित होना, बदनाम होना । २ देखो 'नीदीजली' (बो) ।
 निदुक-देखो 'निदक' ।
 निदोली (बो)-देखो 'निदोवली' (बो) ।
 निदोवली (बो)-क्रि० [सं० नि + उंदन] १ साफ करना । २ पानी में डालना । ३ भिमोना, तर करना ।
 निदय-वि० [सं० निदय] निदनीय, बुरा, आलोचना करने योग्य ।

निदया-देखो 'निदा' ।
 निद्यावरत-पु० [सं० निद्यावर्त] एक प्रकार का वृक्ष ।
 निद्रा-१ देखो 'निदा' । २ देखो 'निद्रा' ।
 निनाण-देखो 'निदाण' ।
 निवारक-पु० [सं० निवारक] १ निवादित्य द्वारा प्रवर्तित एक सम्प्रदाय । २ निवादित्य ।
 निवादित्य-पु० [सं०] निवारक सम्प्रदाय के प्रादि आचार्य ।
 निबु-देखो 'नीबु' ।
 निबोळी, निबोळी-स्त्री० [सं० निब + फल] १ नीम का फल । २ शिथिलों के कण्ठ का आशुपण विधेय ।
 निवार-देखो 'निवार' ।
 निहंग, निहंग-देखो 'निहंग' ।
 निहसली, (बो)-देखो 'निहसली' (बो) ।
 नि-अव्य० [सं०] १ उपसर्ग । २ एक संयोजक शब्द, और, तथा । [सं०] ३ गदेह व प्रतिष्ठितता सूचक अव्यय । ४ देखो 'नी' ।
 पु० १ नृत्य, नाच । २ निश्चय । -स्त्री० ३ दुर्गति ।
 -वि० १ दग्ध । २ देखो 'नी' ।
 निज-देखो 'निज' ।
 निधद्राळु-देखो 'निद्राळु' ।
 निघाई-देखो 'न्यायी' ।
 निघादर-देखो 'निरादर' ।
 निघामत-देखो 'नियामत' ।
 निउछावर, निउछावरि-देखो 'निछरावळ' ।
 निउजली, (बो)-देखो 'नियोजली' (बो) ।
 निउत्रली, (बो)-देखो 'निमत्रली' (बो) ।
 निउण-देखो 'निपुण' ।
 निउत-देखो 'निपुक्त' ।
 निऊ-देखो 'निऊ' ।
 निकटक-पु० [सं० निष्कटक] १ इन्द्रायन । २ देखो 'निष्कटक' ।
 निकंद, निकंदण-पु० [सं० नि-कंद] नाश, विनाश । -वि० नाश करने वाला ।
 निकंदली-वि० [सं० नि-कंद] (स्त्री० निकंदली) नाश करने वाला, मारने वाला ।
 निकवली (बो)-क्रि० [सं० निकंद] १ संहार करना, मारना । २ नष्ट करना, मिटाना ।
 निकंदन, (नि,नी)-स्त्री० [सं० निकंदनम्] देवी, शक्ति, दुर्गा ।
 -वि० नाश करने वाली, संहार करने वाली ।
 निकंध-देखो 'निकंद' ।
 निकख-पु० [सं० निष्कख] हीरा ।
 निकट-क्रि० वि० [सं०] १ पास, समीप, नजदीक । २ पार्श्व में, बगल में । ३ रिश्ते वा संबंध की दृष्टि से पास । -वि० चनिष्ठ ।

निकटता

(७४९)

निकां

निकटता-स्त्री० [सं०] १ सामीप्य । २ कम दूरी । ३ अनिच्छता ।
निकटवरती-वि० [सं० निकटवर्तिन्] पास वाला, नजदीकी,
समीपस्थ ।

निकटासण-स्त्री० निर्लज्जता, नालायकी, शीतानी, बदमाशी ।

निकटि, निकट्ट-देखो 'निकट' ।

निकट-देखो 'निकट' ।

निकमाई-स्त्री० काम से फुसंत, अवकाश, खाली समय ।

निकमाळी-पु० [सं० निकर्म] अवकाश का समय, फुसंत, में होने
की अवस्था या भाव ।

निकमू, निकमी, निकम्मी-वि० [सं० निकर्म] (स्त्री० निकमी,
निकम्मी) १ जो कुछ करने योग्य न हो निकम्मा, अयोग्य ।
२ व्यर्थ, निरर्थक, फिजूल । ३ जो किसी काम का न हो,
बुग, खराब । ४ काम रहित, कार्य से निवृत्त, मुक्त । ५ नीच,
पतित । ६ अवकार, निकम्मा ।

निकर-पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड । २ ढेर, राशि । ३ निधि,
भण्डार । ४ गट्टर, बडल । ५ सार । ६ द्रव्य कोष । -वि०
१ समस्त, सब, तमाम । २ उचित । ३ देखो 'निकर' ।
[सं० निकर] ४ जिस पर कर न हो ।

निकरकट-वि० स्वार्थी, नीच, क्षुद्र ।

निकरम, निकरमी-देखो 'निकरम' ।

निकरि-देखो 'निकर' ।

निकरौ-वि० [दिश०] १ साफ, स्वच्छ, निर्मल, निखालिस ।
२ निकम्मा ।

निकलंक, निकलंकत, निकलंकि, निकलंकिय, निकलंकी, निकलंकीय
-वि० [सं० निकलंक] १ पवित्र, पावन, शुद्ध । २ कलंक
रहित, बेदाग । ३ निष्पाप, पाप रहित । ४ निर्दोष, दोष
रहित । ५ स्वच्छ, साफ, चमकता हुआ । -पु० विष्णु के
दश अवतारों में से एक ।

निकल निकल-स्त्री० [सं० निकल] चमकने वाली सफेद धातु
जिसकी बर्तनों पर कलई की जाती है ।

निकलणी (बी)-क्रि० [सं० निष्कासनम्] १ भीतर से बाहर आना
निर्गमन होना, निकलना । २ जाना । ३ गुजरना, गमन
करना । ४ गृह त्याग करना । ५ देह त्यागना, मरना ।
६ समाधान होना, हल निकलना । ७ आविष्कृत होना, नई
बात प्रकट होना । ८ अलग-अलग होना, विच्छेद होना, बूना,
टपकना । ९ आगे बढ़ना, क्रमशः बढ़ना । १० पार होना ।
११ द्वार या छेद से पार होना । १२ प्रगट होना उत्पन्न
होना । १३ उदय होना । १४ लक्षित होना, स्पष्ट होना ।
१५ सहसा प्रगट होना, उपस्थित होना । १६ छंटना, छंट
कर-अलग होना । १७ अधिक आगे होना, आगे दिखना ।
१८ प्रकाशित होना । १९ बिकना, बेचा जाना । २० उपलब्ध
होना, बरामद होना । २१ श्रेणी में उत्तीर्ण होना ।

२२ बाकी रहना, नाम पर होना, देव रहना । २३ अवशिष्ट
होना । २४ बीतना, व्यतीत होना । २५ दूर होना,
मिटना । २६ उद्भाषित होना । २७ बनना, निर्मित होना ।
२८ मिट्ट होना, सधना, बनना । २९ प्रचलित होना,
रुढ़ी बनना । ३० उत्पन्न होना, लक्षित होना । ३१ मुक्त
होना, आजाद होना । ३२ साबित होना, प्रमाणित होना ।
३३ अलग होना तटस्थ होना । ३४ लुप्त होना, खोना,
चोरी होना । ३५ पीछे हटना, मुकरना । ३६ मर्यादा
छोड़ना, सीमा में न रहना । ३७ छोड़ना, त्यागना ।
३८ काम से अलग होना, त्याग-पत्र देना, इस्तीफा देना,
बर्खास्त होना । ३९ काम चलना । ४० बचकर आना ।
४१ रहस्य खुलना, गुप्त बात कहना ।

निकलणी (बी), निकलबणी (बी)-क्रि० १ भीतर से बाहर
जाना, निर्गमन कराना, निकलाना । २ भेजना । ३ गमन
कराना, गुजरवाना । ४ गृह त्याग कराना । ५ समाधान
कराना, हल निकलवाना । ६ आविष्कार कराना ।
७ विच्छेद कराना, टपकवाना । ८ आगे बढ़वाना, क्रमशः
बढ़वाना । ९ पार कराना । १० द्वार या छेद से बाहर
कराना । ११ प्रगट कराना, उत्पन्न कराना । १२ लक्षित
कराना, स्पष्ट कराना । १३ सहसा प्रगट कराना ।
१४ छंटवाना, अलग कराना । १५ प्रकाशित कराना ।
१६ बरामद कराना । १७ बिकवाना । १८ बाकी रखाना,
देव रखाना । १९ अवशिष्ट रखाना । २० उद्भाषित
कराना । २१ बनवाना, निर्मित कराना । २२ कार्य
आदि बनवाना, सिद्ध कराना । २३ प्रचलित करवाना ।
२४ मुक्त कराना । २५ अलग या तटस्थ कराना । २६ पीछे
हटवाना, मुकरवाना । २७ काम से हटवाना, बर्खास्त
कराना । २८ काम चलवाना । २९ बचाकर लिवाना ।
३० रहस्य खुलवाना ।

निकस-पु० [सं० निकषः] १ हथियारों पर सान चढ़ाने का
पत्थर । २ कसीटी । ३ कसीटी पर चढ़ाने का कार्य ।
४ देखो 'निकट' । ५ देखो 'निकास' ।

निकसण-पु० [सं० निकषण] १ रगड़ने या घिसने का कार्य ।
२ सान पर चढ़ाने का कार्य । ३ कसीटी पर चढ़ाने का
कार्य ।

निकसणी (बी)-देखो 'निकलणी' (बी) ।

निकसा-स्त्री० [सं० निकषा] १ रावण की माता । २ प्रेतनी,
पिशाचिनी । -सुत-पु० रावण, कुम्भकरण । राक्षस,
अमुर ।

निकां-क्रि० वि० [फा० नेक] अच्छी तरह, भली प्रकार से ।

निकांम-वि० [सं० निष्काम] १ कामना, लालसा व इच्छा रहित । २ स्वार्थ रहित, निस्वार्थी । ३ निकृष्ट, बुरा ।

४ नीच, दुष्ट । ५ व्यर्थ, बेकार । ६ देखो 'निकम्मी' ।

निकांभी-वि० [सं० निष्कामिन्] १ वीतराग, बेरागी, निस्वार्थी । २ देखो 'निकम्मी' ।

निकांमु-१ देखो 'निकम्मी' । २ देखो 'निकांम' ।

निकारी-श्री०-स्त्री० राजा महाराजाओं का वस्त्रागार (उदयपुर) ।

निका-स्त्री० [अ० निकाह] इस्लाम धर्म के अनुसार विवाह, पामि-ग्रहण ।

निकाइय-देखो 'निकाचित' । (जैन)

निकाई-स्त्री० [फा० नेकी] १ भलाई, अच्छापन । २ सुंदरता, मोदर्य, खुबसूरती ।

निकाचित, निकाचिय (करम)-पु० [सं० निकाचित-कर्म] जैन शास्त्रानुसार शुभाशुभ कर्म ।

निकाज-वि० [सं० नि + कार्य] निकम्मा, बेकार ।

निकाय-पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड । २ श्रेणी, दल । ३ सभा, समाज । ४ स्कूल । ५ संस्था । ६ घर, निवासस्थान ।

७ शरीर । ८ लक्ष्य, निशाना । ९ परमात्मा, ईश्वर ।

निकार-पु० [सं०] १ हार, पराभव । २ तिरस्कार, अनादर । ३ अपकार । ४ मान हानि, अपमान । ५ अपशब्द, गाली । ६ दुष्टता । ७ विरोध । ८ खण्डन ।

निकारी-पु० [सं० निः कार्य] (स्त्री० निकारी) १ निकम्मा, अयोग्य । २ व्यर्थ, बेकार । ३ स्वार्थी, मतलबी ।

निकाळ-पु० [सं० निष्कासन्] १ निकलने की क्रिया या भाव । २ निकलने का अवसर, मौका । ३ निकलने का द्वार, छेद, रास्ता । ४ उद्गम । ५ वंश का मूल । ६ मूल । ७ आरम्भ की श्रोत । ८ छुटकारा, मुक्ति । ९ मार्ग, रास्ता । १० किसी दाव का तोड़, काट । ११ कुश्ती का पेच । १२ निकलाने की क्रिया या भाव ।

निकाळणी (बी)-क्रि० [सं० निष्कासन्] १ भीतर से बाहर लाना, निर्गम करना । २ निश्चित करना, ठहराना । ३ समस्या का हल निकालना, समाधान करना । ४ आविष्कार करना, ईजाद करना । ५ जुड़ी हुई वस्तु को अलग करना, पृथक करना । ६ श्रेणी में आगे बढ़ाना, उत्तीर्ण करना । ७ गमन कराना, गुजराना । ८ एक ओर से दूसरी ओर लेजाना, अतिक्रमण कराना । पार कराना । ९ स्पष्ट करना, प्रकट करना, खोलना । १० उपस्थित करना, दिखाना । ११ चुनकर निकालना, छांटना । १२ किसी एक तरफ अधिक बढ़ाना, आगे करना । १३ सर्वसाधारण के सामने लाना, प्रकाशित करना । १४ सीमा से अधिक करना । १५ बेचना,

खपाना । १६ बरामद करना, उपलब्ध करना । १७ वाकी या नाम बताना, बकाया रखना । १८ व्यतीत करना, गुजार देना । १९ दूर करना, मिटाना । २० प्रचलित करना, परंपरा बनाना । २१ कम बनाना, मतलब साधना । २२ निर्माण करना, बनाना । २३ प्रारंभ करना, शुरू करना । २४ उत्पन्न करना । २५ मुक्त करना, छोड़ना । २६ सावित करना, सिद्ध करना । २७ अलग करना, नष्ट करना । २८ भगाना, भागने का मौका देना । २९ चोरी करना, गायब करना । ३० प्रगट करना, चौड़े करना । ३१ कम करना, घटाना । ३२ मार्यादा छोड़ना, सीमा छोड़ना । ३३ हटाना, बर्खास्त करना । ३४ दूर करना, हटाना । ३५ निर्वाह करना, काम चलाना । ३६ संकट से बचाना, उबारना । ३७ प्राप्त करना, लेना । उठाना ।

निकाळी-पु० [सं० निष्कासन्] १ एक प्रकार का भयादी बुखार, आंत्रिक ज्वर । २ निकालने की क्रिया या भाव । ३ वहिष्कार, निष्कासन । ४ देखो 'निकाळ' ।

निकावळी-वि० [देश०] (स्त्री० निकावळी) १ निर्दोष । २ निकालने वाला ।

निकास-पु० निकलने का द्वार, निकलने का स्थान ।

निकासणी (बी)-देखो 'निकाळणी' (बी) ।

निकासी-स्त्री० [सं० निष्कासनम्] १ प्रस्थान, खानगी । २ पलायन, प्रयाण ।

निकाह-देखो 'निका' ।

निकियावरी-पु० अप्रतिष्ठित वंश, कुल या घर ।

निकुंचणी (बी)-क्रि० [सं० निकुंचनम्] संकुचित होना, सिकुड़ना ।

निकुंज-पु० [सं०] १ लता आच्छादित मण्डप । २ कुंज । ३ उपवन, वाटिका ।

निकुंज-पु० एक प्राचीन राजवंश व इस वंश का व्यक्ति ।

निकुंज-पु० [सं०] १ राजा हर्यश्व का पुत्र । २ कुंभकरण का पुत्र एक असुर । ३ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक असुर राजा । ४ कौरवों का एक सेनापति । ५ प्रह्लाद के पुत्र का नाम । ६ एक क्षत्रिय वंश । ७ चौहान वंश की एक शाखा । ८ दत्ती वृक्ष । ९ शिव का एक गण । १० स्वामि कार्तिकेय का एक गण । ११ सुन्द व उपसुन्द के पिता ।

निकुंभी-स्त्री० [सं०] कुंभकरण की कन्या ।

निकुटणी (बी)-क्रि० [सं० नि + कृतम्] १ पत्थर आदि पर खुदाई करना । २ गढ़ना ।

निकुटी-पु० [सं० निष्कुटी] १ पत्थर तोड़ने व पत्थर पर खुदाई करने वाला कारीगर । २ बड़ी इलायची ।

निकुल

(७५१)

निगडित

निकुल-पु० शराब के साथ लिया जाने वाला चर्वण । -वि० (स्त्री० निकुली) बिना कुल या वंश का, निर्वंशी ।
 निकुली-पु० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ देखो 'नकुल' ।
 निकुली-देखो 'नकुल' ।
 निकुप-वि० [सं०] १ बिना किसी कमी के, परिपूर्ण । २ दृढ़, ठोस । ३ देखो 'निकुप' ।
 निकुल-देखो 'नकुल' ।
 निकेत (न)-पु० [सं०] १ मकान, घर । २ जगह, स्थान । ३ भण्डार, निधि । ४ निवास स्थान । ५ प्याज ।
 निकेद-पु० युद्ध, संग्राम ।
 निकेय-देखो 'निकेत' ।
 निकेवळ (ली)-वि० [सं० निष्कैवल्य] (स्त्री० निकेवळी) १ नितान्त, बिल्कुल । २ अकेला, केवल एक । ३ कार्य, उत्तरदायित्व व ऋण से मुक्त, निवृत्त । ४ बंधन मुक्त । ५ रोग मुक्त । -पु० सात वर्णों का एक छन्द विशेष ।
 निको-वि० [देश०] धोष्ठ, उत्तम, बढ़िया ।
 निक्ख-देखो 'निकस' ।
 निक्खेप-देखो 'निक्षेप' ।
 निक-पु० [सं० निकर] समूह ।
 निक्क-वि० [सं० निकुत] १ कपटी, धूर्त । २ छलिया, ठग । ३ नीच, अधम, पतित । ४ तुच्छ, छोटा । ५ दुष्ट, बदमाश ।
 निक्कट-वि० [सं० निकुट] १ नीच, अधम, पतित । २ कमीना, दुष्ट । ३ घृणित । ४ तुच्छ, क्षूद्र । ५ मंद ।
 निक्कटता-स्त्री० [सं० निकुट-ता] १ नीचता, अधमाई । २ कमीनापन, दुष्टता । ३ बुराई, खराबी । ४ तुच्छता । ५ मंदता ।
 निक्षत्री-वि० [सं० नि-क्षत्रिय] १ क्षत्रियत्वहीन । २ क्षत्रियहीन ।
 निक्षेप-पु० [सं०] १ छोड़ने की क्रिया या भाव, त्याग । २ फेंकने की क्रिया या भाव । ३ प्रतिपाद्य वस्तु को समझाने की क्रिया या भाव (जैन) । ४ गिरवी, रेहन । ५ पोंछने की क्रिया या भाव ।
 निखंग-पु० [सं० निषंग] १ तरकस, तूणीर, भाथा । २ तलवार, खड्ग । ३ एक वाद्य विशेष । ४ आलिगन । ५ एकता ।
 निखंगी (गी)-वि० [सं० निषंगिन्] १ तरकसधारी, धनुर्वर । २ बाण चलाने वाला । ३ खड्गधारी । ४ शक्तिशाली, बलवान । -पु० [सं० निषंगी] धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
 निखंड-वि० [सं० निःखण्ड] अखण्ड, पूर्ण ।
 निखकुटी-स्त्री० [सं० निष्कुटी] इलायची ।

निखट्टू-वि० १ इधर-उधर फिरने वाला । २ टिक कर या जमकर न रहने वाला । ३ निष्क्रिय, निकम्मा । ४ आलसी, सुस्त ।
 निखणी (बी)-देखो 'निखणी' (बी) ।
 निखत-वि० १ जबरदस्त । २ देखो 'नक्षत्र' ।
 निखतंत-देखो 'नखतेत' ।
 निखद-वि० [सं० निषध] १ बुरा, नीच, अधम, निकुष्ट । -पु० १ एक प्राचीन देश । २ इस देश का राजा । ३ एक पर्वत का नाम । ४ देखो 'निसाद' । ५ देखो 'निखेद' ।
 निखवणी (बी)-देखो 'निसेधणी' (बी) ।
 निखध, निखधि-देखो 'निखद' ।
 निखरणी (बी)-कि० [सं० निखरणम्] १ स्वच्छ होना, निर्मल होना । २ आभा, कांति या शोभा युक्त होना । ३ सुन्दर होना । ४ अच्छी स्थिति या रंगत में आना ।
 निखरब (व)-वि० [सं० निखर्व] दश हजार करोड़, दश खरब । -पु० उक्त मान की संख्या ।
 निखरी-वि० [देश०] (स्त्री० निखरी) खराब, बुरा । नापाक ।
 निखल-पु० १ गड़ । २ देखो 'निखिल' ।
 निखाख-देखो 'निसाद' ।
 निखात-पु० [सं० खन् व.का.] खजाना, निधि ।
 निखाद-पु० १ लुटेरा, डाकू । २ देखो 'निसाद' ।
 निखार-पु० १ स्वच्छता, निर्मलता । २ कांति, दीप्ति, आभा ।
 निखारणी (बी)-कि० [सं० निखरणम्] १ स्वच्छ करना, निर्मल करना । २ आभा, कांति या शोभा युक्त करना । ३ सुन्दरता लाना । ४ अच्छी स्थिति लाना ।
 निखालस, निखालिस-वि० १ शुद्ध, खालिश, बिना मिलावट का । २ स्वच्छ साफ, निर्मल ।
 निखिल-वि० [सं०] पूर्ण, संपूर्ण । तमाम, सब, समस्त ।
 निखूती-वि० [सं० नि-क्षुत] निमग्न, मग्न, डूबा हुआ ।
 निखेत, निखेद-वि० [सं० निषेध] १ दुष्ट, पाजी, बदमाश । २ पतित, हीन । -पु० रोक, मनाही ।
 निखेध-वि० [देश०] १ मूर्ख, गंवार । २ देखो 'निखेद' । ३ देखो 'निसेध' ।
 निखेधणी (बी)-देखो 'निसेधणी' (बी) ।
 निखोटी-वि० [सं० नि-क्षोट] (स्त्री० निखोटी) १ जिसमें खांट न हो, खरा, शुद्ध । २ खालिश, साफ ।
 निगड, निगड-पु० [सं० निगड] १ हाथी के पैर के बांधने की जंजीर, बेड़ी । २ एक प्रकार का देव वृक्ष । ३ कैद, कारागार, बंधन ।
 निगडित-वि० [सं०] बंधन में डाला हुआ, बद्ध, कैद किया हुआ ।

निगद-पु० [सं० निर्गद] चन्द्र, चन्द्रमा ।

निगध-पु० [सं० निगध] निषधगजा ।

निगम-पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा । २ वेद । ३ वेद गृहिता । ४ वेद का कोई अंग । ५ शास्त्र । ६ वेद का भाष्य । ७ धातु । ८ विष्णु । ९ निश्चय । १० न्याय । ११ व्यापार । व्यवसाय । १२ हाट, मंडी । बाजार । १३ मेला । १४ मोदागर । १५ मार्ग, रास्ता । १६ नगर, शहर । १७ झुण्ड, समूह । १८ किसी कार्य विशेष के लिए बनाया हुआ विभाम, संस्था या मण्डल । -वि० जहाँ पहुँचना संभव न हो, अगम्य । —निवासी-पु० विष्णु, नाबखरा ।

निगमणी (बो)-देखो 'नीगमणी' (बो) ।

निगमी-वि० [सं० नि-गम्य] जी पहुँच के बाहर हो, अगम्य ।

निगम्-देखो 'निगम' ।

निगम्मी-देखो 'निगमी' ।

निगर-पु० [देश०] एक पोधा विशेष ।

निगरगंठ (ठौ)-वि० (स्त्री० निगरगंठी) जो किमो के काम न आ सके ।

निगरव (व, व)-वि० [सं० निगर्व] गर्व व अभिमान रहित ।

-पु० [सं० निगर्व] जो गर्व में न आये, ईश्वर, परमात्मा ।

निगर-भर-वि० [सं० नि-गह्वर] भरपूर, सघन ।

निगरांणी (नी)-स्त्री० देख-रेख, निरीक्षण, जाँच ।

निगरियो-देखो 'निगर' ।

निगर-वि० जबरदस्त, जोरदार ।

निगळणी (बो)-क्रि० [सं० निर्गलनम्] १ बिना चबाये गले के नीचे उतार देना, गटक लेना । २ खा जाना । ३ बलात् हड़प लेना ।

निगल्लिका-स्त्री० चार वहाँ का एक वृत्त विशेष ।

निगस-देखो 'निघस' ।

निगहणी (बो)-क्रि० [सं० निगृहीत] नियंत्रण करना ।

यिगामसिज्जाए-पु० [सं० निगम-सैव्या] अधिक लंबा चौड़ा बिस्तर । (जैन)

निगा, निगाह-स्त्री० [फा०] १ नजर, दृष्टि । २ ध्यान । ३ विचार । ४ पहचान, परख । ५ समझ । ६ तलाश, खोज ।

७ स्थिति, देखभाल ।

निगुडि-पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

निगुण-वि० १ कृतघ्न । २ कायर, डरफोका । ३ देखो 'निरगुण' ।

निगुणी (ली)-१ देखो 'निरगुण' । २ देखो 'निगुण' ।

निगुर, निगुह, निगुरू, निगुरी-१ देखो 'नुरी' । २ देखो 'निरगुण' ।

निगूड-वि० [सं०] १ अत्यन्त गुप्त । २ मजबूत, दृढ़ ।

निगूडारधक-वि० जिनका अर्थ गुप्त हो । गूढार्थी ।

निगे-देखो 'निगाह' ।

निगेम-वि० १ पवित्र, शुद्ध । २ कल्याणकारी, मंगलमय । ३ उज्ज्वल, शुभ्र । ४ निष्कलंक, बेदाग । ५ जबरदस्त, जक्तिशाली । ६ देखो 'निगम' ।

निगे-देखो 'निगाह' ।

निगंदारी, निगंदास्त, निगंदास्ती-स्त्री० [फा०] निगगनी, देख-रेख, जाँच ।

निगोट-वि० [सं० निघोट] १ जो खोखला न हो, ठोस । २ नया, जो पहले काम में न लिया गया हो । ३ शुद्ध, पवित्र ।

निगोद-पु० [सं०] अनन्त जीवों के पिण्ड-मून का एक शरीर । (जैन)

निगोदर, निगोदरी-पु० [देश०] कंठ पर धारण करने का आभूषण विशेष ।

निगोदि-वि० १ 'निगोद' में रहने या निवास करने वाला । २ देखो 'निगोद' ।

निगंथ, निगंथी-देखो 'निरंगंथ' ।

निगत, निगथ-वि० [सं० निर्गत] १ निकलने वाला, दूर होने वाला । २ निकला हुआ, दूरस्थ । (जैन)

निगही-वि० [सं० निग्राही] निग्रह करने वाला (जैन) ।

निगुणी-देखो 'निगुणी' ।

निग-वि० [सं० निघ्न] आजाकारी, अनुगत, अधीन ।

निग्रह-पु० [सं०] १ मन की एकाग्रता, संयम । २ मन को नियंत्रित करने की क्रिया या भाव । ३ दमन । ४ रोक, अवरोध । ५ रोकने का उपाय । ६ बंधन । ७ पकड़, कैद । ८ दण्ड । ९ नाश, विनाश । १० त्रिकित्सा, इलाज । ११ हार, पराजय । १२ अधीन करने की दशा । १३ भर्त्सना, डाँट, फटकार । १४ अर्चन, धृणा । १५ तर्क संबंधी एक दोष । १६ सीमा, हद । १७ दस्ता, घंट ।

निग्रहण-वि० [सं०] रोकने वाला, रोक-थाम करने वाला । -पु० १ दमन करने का कार्य । २ दण्ड देने का कार्य ।

निग्रहणी (बो)-क्रि० [सं० निग्रहणम्] १ दमन करना, रोकना, थामना । २ निग्रह करना, संयम करना । ३ दण्ड देना । मजा देना ।

निग्रहि-पु० १ युद्ध । २ देखो 'निग्रही' ।

निग्रही-वि० [सं० निग्रहित] १ दमन करने वाला । २ रोकने वाला, अवरोध करने वाला । ३ दण्ड देने वाला ।

निघोघ-देखो 'न्यघोघ' ।

निघंट, निघंटु-पु० [सं० निघंटु] १ वैदिक कोश । २ शब्द संग्रह मात्र ।

निघटणी (बो)-क्रि० [सं० निघटनं] १ कम होना, थोड़ा होना, घटना । २ देखो 'निघटणी' (बो) ।

निघट्टणी

(७५३)

निजरि

निघट्टणी (बौ)—क्रि० १ उत्पन्न होना, लगना । २ देखो 'निघट्टणी' (बौ) ।

निघनक—वि० [सं० निघनक] पराधीन, अधीन ।

निघस—पु० [सं० निघस] १ भोजन, खाना । २ खाने की क्रिया या भाव ।

निघात—पु० [सं०] १ प्रहार, चोट, आघात । २ घात ।
३ उच्चारण के लहजे का अभाव । ४ मर्म, भेद, रहस्य ।
५ भेद की बात । —वि० १ विशेष, खास । २ अधिक ।
३ भयंकर । ४ जबरदस्त । —क्रि० वि० १ विशेषतया, विशेषतः । २ बहुत तेजी से ।

निघास—देखो 'निघस' ।

निघिष्ट—वि० [सं० निघृण] निर्दयी, कठोर ।

निघुट—वि० हड़, अटल ।

निघे—देखो 'निगाह' ।

निघोट—वि० [देश०] १ खाली पेट, निराहार । २ पूर्ण, पूरा ।
३ हड़, मजबूत ।

निघोस—स्त्री० [सं० निघोष] आवाज, ध्वनि ।

निचंत (तौ), निचत (तौ)—देखो 'निश्चित' ।

निचली—वि० [सं० नीच] (स्त्री० निचली) १ नीचे वाला, नीचे का, निम्न । २ देखो 'निश्चल' ।

निचाई—स्त्री० १ नीचापन, ढाल । २ नीचे की ओर विस्तार या दूरी । ३ ओढ़ापन, कमीतापन, नीच भावना ।

निचारौ—पु० [देश०] भोजन आदि के बर्तन साफ करने, मांजने का स्थान ।

निचित—देखो 'निश्चित' ।

निचिता, निचिताई, निचिती—देखो 'निश्चितता' ।

निचिती—देखो 'निश्चित' । (स्त्री० निचिती)

निचिताई—देखो 'निश्चितता' ।

निचोत—देखो 'निश्चित' ।

निचोताई—देखो 'निश्चितता' ।

निचोतौ—देखो 'निश्चित' (स्त्री० निचिती)

निचुड़णी (बौ)—क्रि० [सं० नि-च्यवनम्] १ रसदार वस्तु का रस निकाला जाना, रस निकलना । २ गीले कपड़े में ऐंठन देकर पानी निकाला जाना । ३ कस व सार निकलना । ४ शोषण किया जाना । ५ आर्थिक दृष्टि से शोषित होना । ६ शक्ति या तेजहीन होना ।

निचोड़—पु० [सं० नि-च्यवन] १ रस । २ सार, तत्त्व । ३ निचोड़ने से निकलने वाला द्रव पदार्थ । ४ मारांश, तात्पर्य । आशय । ५ मूल बात । ६ गूढ़ार्थ ।

निचोड़णी (बौ)—देखो 'निचोणी' (बौ) ।

निचोणी (बौ), निचोवणी (बौ)—क्रि० [सं० नि-च्यवनम्] १ रसदार वस्तु का रस निकालना, रस निकालने के लिए दबाना । २ गीले कपड़े का पानी निकालने के लिए ऐंठन देना । ३ कस व सार निकालना । ४ शोषण करना । ५ शक्तिहीन करना, तेज विहीन करना ।

निच्य—१ देखो 'नित' । २ देखो 'नीच' ।

निच्यय—देखो 'निश्चय' ।

निच्यल—देखो 'निश्चल' ।

निच्यु—१ देखो 'नित' । २ देखो 'नीच' ।

निछटणी (बौ)—देखो 'नीछटणी' (बौ) ।

निछटणी (बौ), निछटणी (बौ)—देखो 'नीछटणी' (बौ) ।

निछत्र, निछत्री—वि० [सं० निः छत्र] १ छत्रहीन, राज चिह्न से रहित । २ देखो 'निक्षत्री' ।

निछमःछी—वि० [सं० निमिष + रा० आळी] हिलती हुई पलकों वाली ।

निछरावळ (ळि, छी)—स्त्री० [सं० न्यास-आवर्तः] १ न्यौछावर करने की क्रिया या भाव । २ न्यौछावर किया हुआ द्रव्य, वस्तु आदि । —छानी—पु० न्यौछावर करने का स्थान । न्यौछावर करने की प्रथा ।

निछल—वि० [सं० निश्छल] १ कपट व छल रहित । २ देखो 'निश्चल' ।

निछावर, निछावळ—देखो 'निछरावळ' ।

निछोह—वि० [सं० निः छोभ] १ जिसे प्रीति या प्रेम न हो । २ प्रिय भाव से रहित । ३ निर्दयी, कठोर, निष्ठुर ।

निजंत्रणी (बौ)—पु० [सं० नियंत्रणम्] नियंत्रण करना, काबू में करना ।

निज-सर्व० [सं०] स्वयं, खुद । —वि० १ स्वकीय, अपना । २ प्राकृतिक, स्वाभाविक । ३ विलक्षण । ४ सदैव बना रहने वाला, स्थाई । ५ खास, मूल । —मंदिर—पु० देवालय का खास भाग जहाँ देवमूर्ति स्थापित हो ।

निजघास—पु० [सं०] पार्वती के क्रोध से उत्पन्न एक गण ।

निजड़णी (बौ)—क्रि० दृढ़ता, कठना ।

निजर (रि)—देखो 'नजर' । —कैद, कैद='नजर-कैद' । —दौलत='नजर-दौलत' । —बंद='नजर-बंद' । —बंदी='नजर-बंदी' । —बाग='नजर-बाग' । —सांती='नजर-सांती' ।

निजर-बाज—वि० [फा०] तिरछी नजर से देखने वाला ।

निजराण (णी)—देखो 'नजराणी' ।

निजराणी (बौ), निजरावणी (बौ)—क्रि० १ दिखाई देना, दिखना । २ नजर में आना । ३ ध्यान में आना । ४ दृश्य दिखना । ५ नजर लगना । ६ देखना । ७ लखना ।

निजारी—देखो 'नजर' ।

निजरीजणी (बो)—देखो 'नजरीजणी' (बो) ।

निजळ-वि० [सं० निः जल] १ जल रहित, सूखा, शुष्क ।
२ निर्बल, अशक्त । ३ निर्लज्ज ।

निजवा-वि० [सं० निः यव] बिल्कुल, स्वच्छ, निखालिश ।

निजाम-पु० [अ० निजाम] १ प्रबन्ध, इंतजाम । २ नवाबों की पदवी ।

निजामत-स्त्री० [अ० निजामत] १ नाजिम का कार्यालय ।
२ नाजिम का कार्य । ३ नाजिम का पद । ४ प्रबंध, व्यवस्था ।

निजायक-वि० [अ० निजायक] शत्रु, वैरी, दुश्मन ।

निजार-वि० [फा०] १ गरीब, दरिद्र । २ दुबला-पतला ।
३ असमर्थ, कमजोर ।

निजारणी (बो)—क्रि० [फा० नजर] १ देखना, निरखना, लखना । २ नजर फेंकना ।

निजारी-देखो 'नजारी' ।

निजिक, निजोक, निजोको, निजोख-देखो 'नजदीक' ।

निजुगति-देखो 'निरयुक्ति' ।

निजूम-पु० [अ०] ज्योतिषी ।

निजोख-वि० मस्त, बेफिक्र, निशंक ।

निजोग-देखो 'नियोग' ।

निजोड़णी-वि० १ मारने या संहार करने वाला । २ काटने वाला । ३ नाश करने वाला ।

निजोड़णी (बो)—क्रि० [सं० नि-जुड़] १ काटना । २ मारना, संहार करना । ३ नाश करना । ४ पृथक् करना, अलग करना ।

निजोरी-वि० (स्त्री० निजोरी) अशक्त, कमजोर ।

निज्जणी (बो)—क्रि० १ विजय करना, जीतना । २ काबू करना, नियंत्रण करना ।

निज्जर-१ देखो 'निरज्जर' । २ देखो 'नजर' ।

निज्जणी (बो)—देखो 'निज्जणी' (बो) ।

निज्जुत्ति-देखो 'निरयुक्ति' ।

निज्जोड़णी (बो)—देखो 'निजोड़णी' (बो) ।

निम्रख-पु० बांसुरी, वंशी ।

निम्रर, निम्ररण-देखो 'निरम्रर' ।

निम्ररणी-देखो 'निरम्ररणी' ।

निम्ररणी-देखो 'निरम्ररण' ।

निम्रोड़णी (बो)—देखो 'निजोड़णी' (बो) ।

निटोळ, (स, लि)-वि० १ कटु, तीक्ष्ण । २ जो भला न हो, बुरा । ३ असुहावना । ४ गंवार, मूर्ख । ५ उद्दण्ड, बद-
माश । ६ प्रहंकारी, घमंडी ।

निटू, निठ-देखो 'नीठ' ।

निठणी (बो)—क्रि० १ समाप्त होना, खत्म होना । २ कम होना । घटना । ३ हमेशा के लिए खत्म होना । ४ खप जाना ।

निठल्लू, नीठल्ली-वि० [सं० निः स्थल] (स्त्री० निठल्ली)
१ जो कोई काम धंधा न करे, निकम्मा । २ जिसके पास कोई काम न हो, खाली, फुसत वाला । ३ बेरोजगार, बेकार ।

निठाणी, (बो) निठावणी (बो)—क्रि० १ समाप्त करना, खत्म करना । २ कम करना, घटाना । ३ हमेशा के लिए खत्म करना । ४ खपाना ।

निठि-देखो 'नीठ' ।

निठुर-देखो 'निष्ठुर' ।

निठुरई, निठुरता, निठुराई-देखो 'निष्ठुरता' ।

निठुराव-पु० निर्दयता, कठोरता, निष्ठुरता ।

निठोड़-स्त्री० [सं० निः स्थल] बुरी जगह, कुठोर ।

निठोळ, नीठोळ-देखो 'निटोळ' ।

निडर-वि० [सं०] १ भयमुक्त, भय रहित । २ साहसी, वीर ।
३ निशंक, दबंग ।

निडरता, निडराई-स्त्री० १ निर्भयता, साहस । २ भय का अभाव ।

निडार, निडुर निडुर-देखो 'निडर' ।

नितंब-पु० [सं० नितम्ब] १ कटिपश्चाद्भाग, चूतड़ । स्त्रियों के कटि के पीछे जांघों के ऊपर का ऊभरा हुआ भाग ।
२ पर्वत का ढलवां भाग । ३ पहाड़ के बीच का भाग ।
४ नदी का ढलुवा तट । ५ कंधा । ६ खड़ी चट्टान ।
७ पर्वत । -वि० १ बड़ा* । २ अति तीक्ष्ण* ।
—जा-स्त्री० पार्वती, नदी ।

नितंबणी, नितंबिणी-स्त्री० [सं० नितंबिणी] १ बड़े व सुडौल नितंबों वाली स्त्री, कामिनी । २ सुन्दरी । -वि० सुन्दर नितंबों वाली ।

नित-अव्य० [सं० नित्य] १ मदा, सर्वदा, हमेशा, नित्य ।
२ प्रतिदिन, रोजाना । -वि० जो नित्य रहे, अविनाशी, शाश्वत । अनश्वर । -पु० श्रोक्षण । देखो 'नित्य' ।
—कृत-पु० देवालय । -वि० नित्य किया जाने वाला ।
—नेम='नित्यनेम' । —प्रत, प्रति='नित्यप्रति' ।

नितरणी (बो)—देखो 'नीतरणी' (बो) ।

नितळ-पु० [सं०] सात पातालों में से एक ।

नितांत-वि० [सं०] १ सर्वथा, बिल्कुल, निरा, एकदम ।
२ अतिशय, अत्यन्त । ३ असाधारण ।

निता-पु० [सं० नेतृ] १ प्रजापति । २ राजा, नृप । ३ मुखिया ।

नितार-देखो 'नीतार' ।

नितारणी (बो)—देखो 'नीतारणी' (बो) ।

निताळी-पु० [दिश०] योद्धा, वीर ।

निति

(७५५)

निधङ्क

निति-स्त्री० [सं० न्यात] १ जाति, समुदाय । २ देखो 'नित' ।
३ देखो 'नीति' ।

नितोठ, नितोठो-देखो 'नत्रोठ, नत्रोठो' ।

नितु-देखो 'नित' ।

नितुर-वि० [सं० निः स्तुल] नीच ।

नितेई-स्त्री० [सं० नि-तत्त्व] वह गाय या भैंस जिसके दूध में धी कम हो ।

नित्त-देखो 'नित' ।

नित्तायी, नित्तोतायी-वि० [सं० नित्यतूर] (स्त्री० नित्ताई, नित्तोताई, नित्तोतायी) १ अधिक प्यार से उद्दण्ड एवं इतरा हुआ । २ अधिक गर्व या अहंकार वाला ।

नित्य-वि० [सं०] १ रोजाना, प्रतिदिन, हमेशा । २ सदा, सर्वदा, शाश्वत । -पु० नित्य कर्म, नित्य नियम । -कर्म, क्रिया-स्त्री० स्नान, ध्यान आदि नित्य के काम । -चर्या-स्त्री० दिनचर्या । प्रतिदिन का कार्य । -नियम, नेम-पु० नियमपूर्वक किये जाने वाले नित्य के कार्य । -प्रति-क्रि० वि० रोजाना, प्रतिदिन ।

नित्यपिड-स्त्री० [सं०] प्रतिदिन एक ही घर से लिया जाने वाला आहार । (जैन)

नित्यप्रलय (प्रलं)-पु० [सं० नित्य प्रलय] एक प्रकार का प्रलय ।

नित्यांन-अव्य० [सं० नित्य] हमेशा, प्रतिदिन, रोजाना । -पु० प्रातःकाल किया जाने वाला दान ।

नित्या-स्त्री० [सं०] १ उमा, पार्वती । २ एक शक्ति का नाम । ३ मनसादेवी ।

नित्याभियुक्त-पु० [सं०] स्वल्पाहारी योगी ।

नित्यासी-पु० [सं० नित्याशी] भोजन ।

नित्रोठ, नित्रोठो-देखो 'नत्रोठ' ।

निदङ्गली-देखो 'निद्रा' ।

निदरसना-स्त्री० [सं० निदर्शना] एक अर्थालंकार विशेष ।

निदरसी-वि० [सं० निदर्सिन्] प्रकट करने वाला, बताने वाला ।

निदाण-पु० [सं० निदाप] १ फसल या पौधों के बीच उगी घास साफ करने की क्रिया, निराई । २ देखो 'निदान' ।

निदाणणी (बो)-क्रि० [सं० नि-दाप=लवने] १ फसल में उगे घास को साफ करना, निराई करना । [सं० निदलनम्] २ नाश करना, संहार करना, मारना ।

निदाणी-देखो 'निदाण' ।

निदान-पु० [सं० निदान] १ रोग की पहिचान, रोग का निर्णय । २ रोग लक्षण । ३ रोग की जांच । ४ मूल कारण । ५ अन्त छोर । ६ बांधने की रस्मी । ७ बागडोर । ८ पवित्रता । ९ कारण । १० परिणाम, फल, नतीजा । ११ प्रधानता । १२ अंत, नाश । १३ देखो 'निधान' ।

१४ देखो 'निधाण' । -वि० अधिक, बहुत । -अध्य० १ आखिरकार, अंत में । २ अच्छी तरह से । ३ निश्चित रूप से ।

निदानि, निदांनिद, निदांनी-वि० अंतिम, आखिरी । -पु० रोग परीक्षक, वैद्य । -स्त्री० रोग परीक्षण विद्या । देखो 'निदान' ।

निदांळ, निदांळी-देखो 'निद्राळ' ।

निदाग-वि० बेदाग, निष्कलक ।

निदाघ-पु० [सं०] १ गर्मी, आतप, ताप, उष्णता । २ धूप, धाम । ३ ग्रीष्मकाल । ४ पुलस्त्य ऋषि का एक पुत्र । ५ पसीना । -कर-पु० सूर्य, रवि । ताप । -काळ-पु० ग्रीष्म ऋतु ।

निदाडियो, निदाडियो-वि० [सं० नि-दंष्ट्रा] १ बिना दाढ़ी, सूझ का । २ पुरुषत्वहीन ।

निदिध्यास, निदिध्यासन-पु० [सं० निदिध्यासः] ध्यान, स्मरण; जाप ।

निदेस, निदेसन-पु० [सं० निदेशः] १ आज्ञा, आदेश, हुक्म । २ मार्ग दर्शन, निर्देश । ३ शासन । ४ कथन ।

निदङ्गणी (बो)-क्रि० [सं० निदलनम्] १ संहार करना, मारना । २ नाश करना, नष्ट करना ।

निद्रा-देखो 'निद्रा' ।

निद्देस-देखो 'निदेस' ।

निद्र-वि० १ स्निग्ध, चिकना (जैन) । २ देखो 'निधि' ।

निद्रधस-पु० [सं० निद्रन्धसः] निद्रन्धस ।

निद्रङ्गणी (बो)-क्रि० १ परास्त करना, हाराना । २ अधीन करना ।

निद्रनव-देखो 'नवनिधि' ।

निद्रि-देखो 'निधि' ।

निद्र-देखो 'निद्रा' ।

निद्रा-स्त्री० [सं०] १ नींद, सुप्ति । २ सुस्ती । ३ मूर्छित अवस्था । -लखड-वि० निद्रासक्त । -लुड, लुध, लुधी-वि० निद्रा के वशीभूत ।

निद्राळ, निद्रालु, निद्राळी-वि० निद्रावस्था में, नींद के वशीभूत ।

निधंक-वि० १ दृढ़, मजबूत, मटल । २ देखो 'निधङ्क' ।

निध-वि० मटल, अडिग । -पु० १ सतान, घोलाद । २ गाय, धेनु । ३ देखो 'निधि' ।

निधईसवर-देखो 'निधीस्वर' ।

निधगुण-पु० [सं० गुणनिधि] गणन, गजानन ।

निधङ्क-क्रि० वि० [देश०] १ बिना किसी भय या डर के, निर्भय होकर । २ बिना किसी सोच या चिंता में, निःसंकोच होकर । ३ बिना किसी रोक-टोक के, बेगैक । -वि० १ चिंता रहित, निर्भय । २ दृढ़, मटल ।

निधलीको

(७१६)

निपजाणी

निधलीको-वि० (स्त्री० निधलीकी) १ स्वतन्त्र, आजाद ।
 २ महान्, बड़ा । ३ जबरदस्त, शक्तिशाली । ४ प्रसहाय,
 गरीब, दीन । ५ बिना स्वामी का, अनाथ, लावारिस ।
 निधत्तकरम-पु० [सं० निधत्तकर्म] अयोग्य कर्मों को रखने की
 क्रिया विशेष । (जैन)
 निधनं-पु० नवनिधि ।
 निधन-पु० [सं०] १ मृत्यु, अवसान । २ नाश, विनाश ।
 ३ समाप्ति । ४ जन्म नक्षत्र से सातवां, सोलहवां व तेईसवां
 नक्षत्र । ५ फलित ज्योतिष में लग्न से आठवां स्थान ।
 ६ कुटुंब, जाति । -वि० गरीब, धनहीन । -पति-पु०
 शिव । गरीब, कंगाल ।
 निधनव-देखो 'नवनिधि' ।
 निधपत-देखो 'निधपति' ।
 निधवन-देखो 'निधुवन' ।
 निधवाणी-स्त्री० [सं० वाणीनिधि] आरदा ।
 निधस-देखो 'नीधस' ।
 निधसणी (बी)-देखो 'नीधसणी' (बी) ।
 निधसुजल-पु० [सं० निधसुजल] समुद्र, सागर ।
 निधान (नु)-पु० [सं० निधान] १ खान, खजाना, आगार ।
 २ कोष, खजाना । ३ संग्रह कक्ष । भण्डार । ४ निधि,
 धन । ५ आश्रय, आधार । ६ जहां कोई वस्तु लीन हो
 जाय, लय स्थान । ७ मुक्ति, मोक्ष । ८ सागर ।
 निधाङ्गणी (बी), निधाङ्गणी (बी)-क्रि० [सं० निर्घटित] परास्त
 करना ।
 निधि-स्त्री० [सं०] १ कुवेर की नौ निधियां । २ गड़ा हुआ
 द्रव्य । ३ खजाना । ४ धन, द्रव्य, सम्पत्ति । ५ लक्ष्मी ।
 ६ समुद्र । ७ आगार, घर । ८ भण्डार, खजाना । ९ विष्णु ।
 १० अनेक सद्गुणों से भूषित पुरुष । ११ आर्या या स्कंधांग
 का भेद विशेष । १२ नौ की संख्या । -नाथ-पु० कुवेर ।
 -प, पति, पाळ-पु० कुवेर । सेट, साहूकार । खजांची
 निधिध्यासन-देखो 'निदिध्यासन' ।
 निधिजल-देखो 'जलनिधि' ।
 निधी-देखो 'निधि' ।
 निधीस्तर-पु० [सं० निधीस्तर] निधियों का स्वामी, कुवेर ।
 निधुख-देखो 'नहुप' ।
 निधुवन-पु० [सं० निधुवनम्] मंथुन, संभोग ।
 निधू-पु० १ इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र । २ निश्चय । -वि०
 १ अटल । २ अमर ।
 निधूम-वि० [सं० निधूम] १ धूम रहित । धूँ से रहित ।
 २ बिना धूमधाम का ।
 निधूवर-पु० [सं० निधिवाग्] समुद्र, जलधि ।

निध्यमी-वि० [सं० निधि + मि] नवमी ।
 निध्यान-देखो 'निध्यान' ।
 निध्यासन-देखो 'निदिध्यासन' ।
 निधस-देखो 'नीधस' ।
 निधसणी (बी)-देखो 'नीधसणी' (बी) ।
 निधू-देखो 'निधू' ।
 निनंग-पु० [सं० निन्नांग] १ वृक्ष, पेड़ । २ डिंगल गीतों में
 एक दोष ।
 निनद-पु० [सं० निनदः] १ शब्द, आवाज, ध्वनि । २ कोलाहल ।
 निनांग-देखो 'निदांग' ।
 निनांगणी-देखो 'निनांगणी' ।
 निनांगणी, (बी)-देखो 'निदांगणी' (बी) ।
 निनांगे (बी)-देखो 'निनांग' ।
 निनांगणी-पु० ९९ का वर्ष । -वि० (स्त्री० निनांगणी) सौ से
 पहले वाला, ९८ के बाद वाला ।
 निनांग (गू)-वि० [सं० नवनवतिः] सौ से एक कम, नब्बे व नौ
 -पु० नब्बे व नौ की संख्या, ९९ ।
 निनांगक-वि० निन्नांगके के लगभग ।
 निनांगणी-देखो 'निनांगणी' ।
 निनांग, निनांगी-वि० (स्त्री० निनांगी) नाम रहित ।
 निनाङ्ग, निनाङ्ग, निनाङ्ग-पु० [सं० निनाङ्गः] १ नाद, शब्द,
 आवाज । २ एक प्रकार का वाद्य । ३ कोलाहल, रव ।
 ४ भिन्न-भिन्न शब्द ।
 निनिखुणि, निनिखुणी-स्त्री० वाद्य विशेष की ध्वनि ।
 निन्नांग-देखो 'निनांग' ।
 निन्नेह-वि० [सं० निः स्नेह] स्नेह रहित (जैन) ।
 निन्नांगव, निन्नांगव-देखो 'निनांग' ।
 निन्हव-पु० [सं० निन्हव] १ सत्य को छिपाने वाला (जैन) ।
 २ अप्रलाप । (जैन)
 निपग-वि० [सं० नि + पंगु] हाथ-पांवों से लाचार, अपाहिज,
 निकम्मा ।
 निप-पु० [सं० निपः] १ षड़ा, गगरी, कलश । २ कदस का वृक्ष ।
 निपगाई-स्त्री० [सं० नि - पद] अविवश ।
 निपगी-वि० [सं० नि - पद] (स्त्री० निपगी) १ हाथ पांवों से
 हीन, अपाहिज, निकम्मा । २ अविवशनीय ।
 निपज-देखो 'नीपज' ।
 निपजणी (बी)-देखो 'नीपजणी' (बी) ।
 निपजणी, (बी), निपजणी (बी)-क्रि० [सं० निष्पादनं]
 १ उत्पन्न करना, पैदा करना । २ उगाता, बोना । ३ बढ़ाना,

बड़ा करना । ४ घटित करना, सम्पन्न करना । ५ परिपक्व करना, पकाना । ६ तैयार करना, बनाना ।

निपट-वि० [सं निविड] १ बहुत, अधिक । २ केवल, एक मात्र, निरा, बिल्कुल । ३ खाली, विशुद्ध । ४ अद्वितीय, श्रेष्ठ । -क्रि० वि० बिल्कुल, सरामर, नितान्त । -स्त्री० निवृत्ति की क्रिया या भाव ।

निपटणी, (बो)-क्रि० [सं निवर्तन] १ रह जाना, खत्म होना, चुकना । २ निवृत्त होना, फारिक होना । ३ पूर्ण होना । ४ कार्य से छुटकारा पाना, अवकाश पाना । ५ शोचादि से निवृत्त होना । ६ निर्णीत होना, तय होना । ७ देखो 'निवडणी' (बो) । ८ देखो 'नीमडणी' (बो) ।

निपटाणी, (बो)-क्रि० [सं निवर्तन] १ खत्म करना, चुकाना । २ निवृत्त करना, फारिक करना । ३ पूर्ण करना । ४ कार्य से मुक्त करना, अवकाश देना । ५ निर्णय करना, तय करना । ६ देखो 'निवडणी' (बो) ।

निपटारी-देखो 'निवेड़ी' ।

निपटावणी (बो)-देखो 'निपटाणी' (बो) ।

निपटेरी-देखो 'निवेड़ी' ।

निपण-देखो 'निपुण' ।

निपतन-पु० [सं०] अधः पतन, पतन ।

निपत, (त्ती, प्र, त्री)-वि० [सं० निस्पत्र] (स्त्री० निपत्ती, निपत्री) पत्रहीन, जिसके पत्ते न हो ।

निपत, (प्र)-देखो 'निस्पत्र' ।

निपराट-वि० [देश०] निकृष्ट, नीच ।

निपाड़णी, (बो)-१ देखो 'निपाणी' (बो) ।

२ देखो 'निपजाणी' (बो) ।

निपाणी (बो)-क्रि० १ लीपाना, लेपन कराना । २ कच्चे आंगन पर गोबर आदि का लेपन कराना । ३ देखो 'निपजाणी' (बो) । ४ देखो 'निपजणी' (बो) ।

निपात-पु० [सं०] १ पतन, गिराव । २ मृत्यु, मौत । ३ संहार, विनाश, नाश । ४ प्रहार, आघात । ५ अधः पतन । ६ व्याकरण के नियमों से बाहर बना शब्द । -वि० संहार या विनाश करने वाला ।

निपातण (न)-पु० [सं० निपातनम्] १ गिराने की क्रिया या भाव । २ मारने का कार्य । ३ विनाश ध्वंस । ४ वध, हत्या । ५ नियम विरुद्ध शब्द का रूप ।

निपातणी (बो)-क्रि० [सं० निपातन्] १ गिराना, पतन करना । २ वध करना, मारना । ३ विनाश करना, ध्वंस करना । ४ प्रहार, आघात करना ।

निपाप (वी)-वि० [सं० निष्पाप] १ पाप रहित, निष्पाप । २ पवित्र । ३ श्रेष्ठ, उत्तम । ४ कमी या अभाव रहित । ५ निष्कलंक ।

निपावट-वि० [सं० निष्प्रवतः] १ बेडौल, भट्ठा । २ बुरा, खराब । ३ अशक्त, कमजोर ।

निपावणी (बो)-देखो 'निपाणी' (बो) ।

निपीडक-वि० [सं० निपीडक] १ कष्टदायक, दुःखदायक । २ निचोड़ने वाला । ३ पेरने वाला । ४ मलने या दलने वाला ।

निपीड़ण-स्त्री० [सं० निपीडना] १ चोट, आघात । २ घस्याचार । ३ कष्ट, दुःख ।

निपीड़णी (बो)-क्रि० [सं० निपीडनम्] १ कष्ट देना, दुःख देना । २ निचोड़ना । ३ पेरना । ४ मलना, दलना । ५ घायल करना ।

निपुण-वि० [सं०] १ किसी कार्य या कला में प्रवीण, दक्ष । २ चतुर, होशियार । ३ कवि । ४ पंडित । ५ योग्य, काबिल । ६ दयालु । ७ तीक्ष्ण, सूक्ष्म । ८ कोमल । ९ सम्पूर्ण । १० ठीक-ठाक । -पु० चारण ।

निपुणता, निपुणार्थ-स्त्री० १ दक्षता, प्रवीणता । २ चतुराई, होशियारी । ३ योग्यता । ४ सूक्ष्मता ।

निपुन-देखो 'निपुण' ।

निपूत, निपूती-वि० [सं० निष्पुत्र] (स्त्री० निपूती) जिसके संतान या पुत्र न हो, निःसंतान ।

निपीच्यो, निपीचो-वि० (स्त्री० निपीचण, निपीची) १ पुरुषार्थहीन, अशक्त, निर्बल । असमर्थ । २ निकम्मा । ३ आलसी, सुस्त ।

निष्पट-देखो 'निपट' ।

निष्कल-देखो 'निष्कल' ।

निफेरी-देखो 'नफेरी' ।

निबंध-पु० [सं०] १ लिखित प्रबंध, लेख । २ रचना करने की क्रिया या भाव । ३ साहित्य व काव्य । ४ रचना । ५ वाक्य रचना । ६ टीका, भाष्य । ७ आधार, नींव । ८ प्रबंध, व्यवस्था । ९ उद्देश्य, कारण । १० स्थान । ११ अवलम्ब, सहारा । १२ बंधन । १३ बेड़ी । १४ रोक-थाम । १५ बनावट । १६ सद्बृत्ति । १७ बीणा की खूंटी ।

निबंधणी (बो)-क्रि० १ रचना करना, लेखवद्ध करना । २ बनाना, सर्जन करना । ३ टीका करना । ४ प्रबंध या व्यवस्था करना । ५ बांधना । ६ रोकथाम करना । ७ देखो 'निमंथणी' (बो) । ८ संकल्प करना, निमित्त करना । ९ रखना । १० बंध तैयार करना ।

निबंधु-वि० [सं०] १ बंधु रहित, जिसके भाई न हो । २ देखो 'निबंध' ।

निब-पु० [सं०] १ लेखनी के अग्रभाग में लगने वाला धातु का बना नोकदार उपकरण । २ लेखनी का अग्रभाग ।
 निबद्ध-पु० १ सना, फीज । २ शत्रु, दुश्मन, वैरी । -वि०
 १ निःशक्त, निश्चित । २ निर्मय, निडर । ३ देखो 'निबिड' ।
 निबड़णी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निबड़णी (बो), निबड़वणी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निबटणी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निबटाणी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निबटारी-देखो 'निवेड़ी' ।
 निबटावणी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निबटेरी-देखो 'निवेड़ी' ।
 निबणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निबद्ध-पु० [सं०] नियमानुसार गाया जाने वाला गीत ।
 -वि० बधा हुआ, प्रश्रित ।
 निबळ-देखो 'निरबळ' ।
 निबळई-देखो 'निरबळता' ।
 निबळीयो, निबळोड़ी, निबळी-देखो 'निरबळ' । (स्त्री० निबळी)
 निबहणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निबांण-१ देखो 'निवांण' । २ देखो 'निवांण' ।
 निबाणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निबापी-वि० [सं० नि-पितृ] (स्त्री० निबापी) जिसका पिता न हो, पितृ-हीन ।
 निबाब-देखो 'नबाब' । -जाबो='नबाबजादो' ।
 निबाबी-देखो 'नबाबी' ।
 निबाब-देखो 'निभाव' ।
 निबावणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निबास-देखो 'निवास' ।
 निबाह-देखो 'निभाव' ।
 निबाहक, निबाहणी-वि० [सं० निवाहक] निबाहने वाला, निवाह करने वाला ।
 निबीजी-देखो 'निरबीज' ।
 निबीह-वि० निडर, निर्भय ।
 निबूस-वि० [सं० निमूल] १ निर्वृत्त । २ व्यर्थ, फिजूल ।
 ३ खाली । -पु० रक्त ।
 निबे-देखो 'नब्बे' ।
 निबेड़ी-देखो 'निवेड़ी' ।
 निबोळहार-पु० [देण०] स्त्रियों के कण्ठ का आभूषण विशेष ।
 निबोळी-देखो 'निबोळी' ।
 निब्बे-देखो 'नब्बे' ।
 निम्भंत-देखो 'निरम्भंत' ।
 निभ-पु० [सं०] कपट ।

निभचर-देखो 'नभचर' ।
 निभणी (बो)-क्रि० [सं० निर्वहणम्] १ संबंध का निर्वाह होना । २ नियमों आदि का पालन होना । ३ पार पाना, पार पड़ना । ४ निकलना, लुट्टी पाना । ५ लगातार व्यवहार होना । ६ चरितार्थ होना । ७ साथ दिया जाना ।
 निभरम (मो)-देखो 'निरभ्रम' ।
 निभा-वि० [सं० निभ] सदृश्य, समान, तुल्य (जैन) ।
 निभाग-पु० [सं० निर्भाग्य] अभाग्य, बदकिस्मती ।
 निभाणी-वि० [सं० निर्भाग्य] (स्त्री० निभागणी, निभाणी) अभाग्य, बदकिस्मती ।
 निभाणी (बो)-क्रि० [सं० निर्वहणम्] १ संबंध का निर्वाह करना, बनाये रखना । २ नियमों आदि का पालन करना । ३ पार पटकना । ४ निकालना, लुट्टी करना । ५ लगातार व्यवहार करना । ६ चरितार्थ करना । ७ साथ देना । ८ संभाले रखना । ९ पूर्ण करना । १० गुजर करना ।
 निभाव-पु० [सं० निर्वाह] १ संबंध बनाये रखने की अवस्था या भाव । २ बचाव या मुक्ति का रास्ता । ३ गुजारा, जीवन निर्वाह । ४ नियम या कर्तव्य पालन । ५ किसी स्थिति को संभाले रखने या बनाये रखने की अवस्था या भाव ।
 निभावणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निबाहणी-देखो 'निबाहणी' ।
 निभाहणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निभं, निभंमे-देखो 'निरभय' ।
 निभंवणी (बो)-क्रि० [देण०] निरा करना, भर्त्सना करना, फटकारना, बुरा-भला कहना ।
 निभंत-देखो 'निरभ्रांत' ।
 निभ्रमो (मम)-देखो 'निरभ्रम' ।
 निभंत-देखो 'निमित्त' ।
 निमंतण, निमंतरी, निमंत्रण-पु० [सं० निमंत्रण] १ बुलाने की क्रिया या भाव, बुलावा । २ बुलाने के लिए भेजा जाने वाला संदेश, पत्र आदि । ३ भोजन या किसी विशेष आयोजन में सम्मिलित होने का आग्रह । ४ उपस्थित होने की आज्ञा । -पत्र-पु० बुलाने के लिए भेजा जाने वाला पत्र ।
 निमंत्रणी (बो)-क्रि० [सं० निमंत्रणम्] १ बुलाना, बुलावा देना, निमंत्रित करना, निबतना । २ बुलाने का संदेश या निमंत्रण पत्र भेजना । ३ भोजन आदि के लिए आने का आग्रह करना । ४ हाजिर होने की आज्ञा देना । ५ आह्वान करना ।
 निमन्त्रीहार-पु० निमंत्रित व्यक्ति या सदस्य । -वि० निमंत्रित, बुलाया हुआ ।

निमद

(७५९)

निमैस

निमद-देखो 'निबंध' ।
 निमदणी (बो)-देखो 'निमधणी' (बो) ।
 निमध निमधणी-देखो 'निबंध' ।
 निमधणी (बो)-देखो 'निबंधणी' (बो) ।
 निमसी-वि० [देश०] ठोस, सख्त, कठोर ।
 निमक-देखो 'नमक' । —हरामि= 'नमकहराम' —हत्ताल= 'नमकहत्ताल' । —हत्ताली, हत्ताली= 'नमकहत्ताली' ।
 निमकीन-देखो 'नमकीन' ।
 निमख-१ देखो 'नमक' । २ देखो 'निमित्त' । —हरामी= 'नमकहरामी' ।
 निमग-देखो 'निगम' ।
 निमड़णी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निमखालसाई-स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
 निमजणी (बो)-देखो 'निमज्जणी' (बो) ।
 निमजर-देखो 'नीमजर' ।
 निमजा-पु० [देश०] नौजा ।
 निमज्जणी-पु० [सं०] डुबकी, स्नान, मज्जन ।
 निमज्जणी (बो)-क्रि० [सं० निमज्जनम्] १ अवगाहन करना, स्नान करना । २ गोता लगाना, डुबकी लगाना । ३ गहन अध्ययन करना । ४ युद्ध करना ।
 निमसर-देखो 'नीमजर' ।
 निमटणी (बो)-देखो 'निपटणी' (बो) ।
 निमटाणी (बो), निमटावणी (बो)-देखो 'निपटाणी' (बो) ।
 निमल-१ देखो 'निमल' । २ देखो 'नीमल' ।
 निमली-वि० (स्त्री० निमली) १ उदास, चिंतित, खिन्न चित्त । २ परेशान । ३ तुच्छ, ओछा । ४ नमने वाला, नरम ।
 निमणी (बो)-देखो 'नमणी' (बो) ।
 निमित-देखो 'निमित्त' ।
 निमतणी (बो)-देखो 'निमंत्रणी' (बो) ।
 निमतरी, निमतरी-१ देखो 'नैत' । २ देखो 'निमंत्रण' । ३ देखो 'निवती' ।
 निमति-देखो 'निमित्त' ।
 निमितियार-देखो 'निमंत्रोहार' ।
 निमतो-१ देखो 'निवती' । २ देखो 'निमंत्रण' ।
 निमत्त-देखो 'निमित्त' ।
 निमधणी (बो)-देखो 'निबंधणी' (बो) ।
 निमधियण-वि० रचने वाला, रचयिता ।
 निमन-पु० [सं० निमनतः] १ वर्षा का पानी एकत्र होने वाली नीची भूमि । २ गहरा पानी । ३ पूज्य स्थान । ४ देखो 'नीमण' ।

निमनगा-स्त्री० [सं० निमनगा] १ नदी, सरिता । २ पहाड़ी सोता ।
 निमळो-देखो 'निरमळ' । (स्त्री० निमळी)
 निमसकार, निमस्कार-देखो 'नमस्कार' ।
 निमाण-१ देखो 'निमाणी' । २ देखो 'निवाण' ।
 निमाणी-वि० १ डीठ, हठी, दुराग्रही । २ अशिष्ट ।
 निमाणी, निमाण-वि० [सं० नि + मान] (स्त्री० निमाणी) १ मान रहित, निलज्ज, डीठ । २ निम्न, खराब । ३ मर्यादाहीन ।
 निमाई-स्त्री० १ कुम्हार की मिट्टी । २ कुम्हार के बर्तन पकाने का स्थान ।
 निमाज-देखो 'नमाज' । —गाह= 'नमाजगाह' ।
 निमाजी-देखो 'नमाजी' ।
 निमाणी (बो), निमावणी (बो)-१ देखो 'नमाणी' (बो) । २ देखो 'नवाणी' (बो) ।
 निमि-पु० [सं०] १ दत्तात्रेय के पुत्र एक ऋषि । २ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र । ३ पलक भपकने की क्रिया या भाव । ४ देखो 'नेमी' ।
 निमिख-देखो 'निमित्त' ।
 निमिणि-देखो 'नमण' ।
 निमित, निमित्त-पु० [सं० निमित्त] १ कारण, हेतु । २ उद्देश्य, लक्ष्य । ३ शकुन । ४ चिह्न, लक्षण । —क्रि० वि० १ लिए, वास्ते । २ अपेक्षा में । ३ बहाने, बरिये । —कारण-पु० सहायक वस्तु ।
 निमित्तिणी, निमित्ती-वि० [सं० नैमित्तिकः] कारणवश किया जाने वाला । —पु० ज्योतिषी ।
 निमिधणी (बो)-देखो 'निबंधणी' (बो) ।
 निमिराज-पु० [सं०] निमीवंशी राजा जनक ।
 निमिस-स्त्री० [सं० निमिष] १ आँखों के मीचने या पलकों के गिरने या भपकने की क्रिया या भाव । २ पलक भपके जितना समय । ३ पलक पर होने वाला एक रोग । —क्रि० वि० पल भर में, क्षण में ।
 निमिसकार, निमिस्कार-देखो 'नमस्कार' ।
 निमूळ-वि० [सं० निमूल] १ बिना जड़ या मूल का । २ आधारहीन । ३ मिटाया हुआ । ४ जिसमें सच्चाई न हो ।
 निमेख-देखो 'निमैस' ।
 निमेणी (बो)-क्रि० १ दूर करना, मिटाना । २ पूर्ण करना, निपटाना ।
 निमैस-स्त्री० [सं० निमेषः] १ पलक भपकने की क्रिया या भाव । २ पलक भपकने का समय । एक पल का समय ।

३ क्षण, पल । ४ आंख फड़कने का रोग । ५ एक यक्ष का नाम ।

निमोऴी-देखो 'निमोऴी' ।

निमोही-वि० [सं० निमोही] १ प्रेम न करने वाला, निमोही । २ उदासीन, विरक्त । ३ वेददी ।

निमो-देखो 'नमो' ।

निम्पल-देखो 'निरमल' ।

निम्माण (न)-देखो 'निरमाण' ।

निम्माज-देखो 'नमाज' ।

निम्हणी (बो)-देखो 'निभणी' (बी) ।

निम्हणी (बो), निम्हावणी (बो)-देखो 'निभाणी' (यो) ।

नियंठ-१ देखो 'निग्रंथ' । २ देखो 'निरग्रंथ' ।

नियता-पु० [सं० नियंतृ] १ विष्णु । २ शासक, प्रजामुक्त । ३ मालिक, स्वामी । ४ सारथी, रथवान, पञ्चालक । ५ व्यवस्थापक ।

निय-देखो 'निज' ।

नियकं, नियक, नियण, नियग-वि० [सं० नियक] खुर का, अपना ।

नियड़-स्त्री० [सं० निवट] १ नदी तट के आस-पास का भू भाग । २ देखो 'निकट' ।

नियट्ट-वि० [सं० निवृत्त] निपटा हुआ, निवृत्त ।

नियत-पु० [सं०] शिव, महादेव । -वि० १ तय किया हुआ मुकर्त्तर । २ स्थिर, निश्चित । ३ नियम से बंधा हुआ, नियमबद्ध । ४ तैनात, नियोजित । ५ स्थापित, प्रतिष्ठित । ६ देखो 'नियति' । ७ देखो 'नीयत' ।

नियति-स्त्री० [सं०] १ भवितव्यता, होनहार । २ नियत बात, अवश्य होने वाली बात । ३ दैविक योग । ४ भाग्य । ५ अदृष्ट । ६ ठहराव, स्थिरता । ७ पूर्व वृत्त कर्मों का फल । ८ जड़ प्रकृति, स्वभाव । ९ नीति । १० बंधन वद्धता । ११ प्रकृति, स्वभाव । -वंत-वि० जिसका स्वभाव ठीक हो । ईमानदार ।

नियत्तण-क्रि० वि० [सं० निवर्तन] निवृत्ति के लिये ।

नियत्ति-स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ निवृत्ति, मुक्ति । २ देखो 'नियति' ।

नियम-पु० [सं०] १ निश्चित किया हुआ कोई विधान, रीति, तरीका । विधि-विधान । २ कानून, विधि । ३ परम्परा, रूढ़ि । ४ क्रम, दस्तूर । ५ रीति, रिवाज । ६ शासन, दबाव । ७ ऐसी व्यवस्था का निर्धारण जिस पर अन्य बातें निर्भर हो । ८ कार्य प्रणाली । ९ प्रतिज्ञा, व्रत, संकल्प । १० प्रतिबंध, नियंत्रण । ११ एक अर्थालंकार विशेष । १२ विष्णु । १३ महादेव । -बद्ध-वि० नियमों में बंधा हुआ ।

नियमी-वि० [सं०] १ जो नियमों का पालन करे । २ जो नियम पूर्वक आचरण करे । ३ सदाचारी, व्रती ।

नियय-१ देखो 'नियक' । २ देखो 'नियत' ।

नियरि (री)-देखो 'नगरी' ।

नियरु-देखो 'निकर' ।

नियंण, नियंणु, नियणु-पु० [सं० निदान] भौतिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु की जाने वाली याचना ।

नियार्ई-देखो 'न्यायी' ।

नियग-पु० [सं०] मोक्ष । (जैन)

नियगढ़ी-वि० [सं० नियगार्थी] मोक्ष चाहने वाला ।

नियज-स्त्री० [फा०] १ प्रेम, प्रदर्शन । २ दीनता-आजीजी । ३ बड़ों का प्रसाद । ४ इच्छा, कामना । ५ गरीबों को दिया जाने वाला मृत्यु भोज । ६ बड़ों से परिचय, सम्पर्क, संबन्ध । ७ उपहार, भेंट ।

नियात-देखो 'न्यात, न्याति' ।

नियाब-पु० [अ० नियावत] प्रतिनिधित्व ।

नियामकरण-पु० [सं०] ग्रीष्मि समुह विशेष ।

नियामत-स्त्री० [अ० नेग्रमत] उत्तम व स्वादिष्ट भोजन ।

नियायी-पु० १ धन-दोलत । २ दुर्लभ वस्तु, अलभ्य पदार्थ । ३ देखो 'न्यायी' ।

नियार-पु० स्थलकारों की दुकान व दुकान का सामान ।

नियारिया-स्त्री० सुनारों की दुकान की राख आदि छानने वाली एक जाति ।

नियारियो-पु० (स्त्री० नियारी) १ उक्त जाति का व्यक्ति । २ उक्त प्रकार का काम करने वाला व्यक्ति । ३ मिली हुई वस्तुओं को अलग करने वाला व्यक्ति । -वि० चतुर, चालाक ।

नियारी-देखो 'न्यायी' ।

नियाब-१ देखो 'न्याब' । २ 'न्याय' ।

नियुंजणी (बी)-क्रि० [सं० नियुक्ति] १ प्रयत्न करना, व्यवस्था करना । २ नियोजन करना ।

नियुत, नियुक्त-वि० [सं० नियुक्त] १ किसी पद या कार्य पर नियोजित । २ लगाया हुआ, तैनात । ३ लगा हुआ, संलग्न । ४ ठहराया हुआ, स्थिर । ५ प्रेरित किया हुआ, तत्पर ।

नियोग-पु० [सं०] १ तैनाती, नियुक्ति । २ उपयोग । ३ आज्ञा । ४ बन्धन, संलग्नता । ५ अहंमान । ६ उद्योग, प्रयत्न । ७ निश्चय । ८ प्रेरणा । ९ अवधारणा, विचार । १० अपने पति से निःसंतान रहने पर स्त्री द्वारा अन्य पुरुष से किया जाने वाला संयोग ।

नियोऴी-स्त्री० [देश०] नाइयों का एक उपकरण ।

निरंकार

(७६१)

निरंखेह

निरंकार-देखो 'निराकार' ।

निरंकारी-पु० नानक (सिख) सम्प्रदाय की एक शाखा ।

निरंकुत-वि० [सं० निरंकुश] १ परम स्वतन्त्र, मुक्त, आजाद ।
२ जिस पर कोई रोक, दबाव या बन्धन न हो । ३ निर्भय
मिडर । ४ जो किसी नियम को न माने । ५ उद्वण्ड,
अनतायी ।निरंग-वि० [सं०] १ बिना रंग का, जिसका कोई रंग न हो ।
२ वदरंग । ३ बेरीनक, फोका । ४ उदासीन, विरक्त ।
५ जिसमें कुछ न हो, खाली । ६ अंग रहित । -पु० रूपक
अलंकार का एक भेद ।

निरंजण-देखो 'निरंजन' ।

निरंजणा-स्त्री० [सं० निरंजणा] १ दुर्गा एक नाम । २ पूर्णिमा ।

निरंजणी-देखो 'निरंजनी' ।

निरंजन-वि० [सं०] १ दुनिया से विरक्त । २ माया से निरन्त ।
३ दोष रहित, निष्कलक । पवित्र, शुद्ध । ४ मिथ्या से
रहित । ५ सीधा-साधा । -पु० १ ईश्वर, परमात्मा ।
२ शिव, महादेव, शंकर । ३ विष्णु । -राय-पु० परब्रह्म,
ईश्वर ।निरंजनी-पु० १ साधुओं का एक सम्प्रदाय । २ वैष्णव सम्प्रदाय
का एक भेद ।निरंत, निरंतर, निरंतरि, निरन्त्र-क्रि० वि० [सं० निरंतर]
लगातार, हमेशा, सदा । -वि० १ लगातार बना रहने वाला,
सदा रहने वाला । २ स्थाई, अचल । ३ अखण्ड, अविचल
४ अन्तर रहित । ५ जिसमें भेद न हो । ६ निविड़, घना,
गहरा ।

निरंव-देखो 'नरेंद्र' ।

निर-अव्य० [सं० निर] बाहर, दूर, बिना, रहित ।

निरकाम-देखो 'निकांम' ।

निरकामी-देखो 'निकांमी' ।

निरकार, निरकारि-देखो 'निराकार' ।

निरकार-रूपी-वि० लगातार अच्छा काम करने वाला ।
-पु० अर्जुन ।

निरकुरणी (बो)-क्रि० [देश०] खिन्न होना, उदास होना ।

निरकुरी-वि० [देश०] (स्त्री० निरकुरी) उदास, खिन्न ।

निरक्कणी (बो)-क्रि० [सं० निराकृत] १ पराजित करना,
हराना । २ देखो 'निरखणी' (बो) ।निरखणी (बो), निरखणी (बो)-१ देखो 'निरखणी' (बो) ।
२ देखो 'निरक्कणी' (बो) ।निरख-स्त्री० १ देखने की क्रिया या भाव । २ नेत्र, नयन ।
३ राज्य द्वारा निर्धारित भाव । ४ देखभाल । ५ जांच ।
६ ताक-भांक ।निरखणी (बो)-क्रि० [सं० निर-ईक्षणम्] १ देखना, अवलोकन
करना । २ ताकना-भांकना । ३ ध्यान पूर्वक देखना ।
४ परीक्षा करना, जांच करना । ५ देखभाल करना ।निरखदरोगी-पु० बाजार के भावों की निगरानी करने वाला
दारोगा ।

निरखनांमी-पु० बाजार भावों की सूची ।

निरखबंद (बंदी)-स्त्री० बाजार भाव निर्धारण की क्रिया ।

निरखर-वि० [सं० निरक्षर] अनपढ़, निरक्षर । -पु० ब्रह्मा ।

निरगंध-वि० [सं० निर्गंध] जिसमें कोई गंध न हो, गंधहीन ।
—ता-स्त्री० गंधहीन होने की दशा ।

निरगम-पु० [सं० निर्गम] निकास, रवानगी ।

निरगमण (न)-पु० [सं० निर्गमन्] १ निकलना क्रिया ।
२ निकास द्वार, रास्ता । ३ प्रस्थान ।निरगात-वि० [सं० निर्गात] देह रहित, आकार रहित ।
-पु० श्रीविष्णु ।निरगुंडी-स्त्री० [सं० निर्गुंडी] १ एक औषधि विशेष ।
२ इस औषधि का क्षूप । —रूप-पु० निर्गुंडी के योग से
बनी औषधि । —तेल, तेल-पु० बेंचक से एक तेल ।निरगुण-वि० [सं० निर्गुण] १ जो सत्त्व, रज और तम तीन
गुणों से परे हो । २ रूप, गुण व आकार से रहित ।
३ जिसमें अच्छा गुण न हो । ४ बुरा, खराब । ५ मूर्ख,
नासमझ । ६ निकम्मा । ७ जिसमें डोरी न हो । ८ बिना
नाम का । -पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ श्रीविष्णु ।
—गारु, गारी-पु० गुण न मानने वाला, गुणचोर ।
कृतघ्न । गुण रहित, मूर्ख । —ता-स्त्री० गुण रहित होने
की अवस्था या दशा । आकारहीनता ।निरगुणिणी. निरगुणी-वि० १ निराकार ब्रह्म का उदासक ।
२ गुण रहित । ३ अवगुणी । ४ मूर्ख ।

निरगुणी-देखो 'निरगुण' ।

निरगेह-वि० [सं० निर्गृहिन्] १ सर्वत्र निवास करने वाला,
सर्वव्यापी । २ गृहहीन, बिना घर का ।

निरगुण-देखो 'निरगुण' ।

निरगंध-वि० [सं० निर्गंध] १ जिसका कोई मददगार न हो ।
निःसहाय । असहाय । अकेला । २ गरीब, निर्धन ।
३ नासमझ, बेवकूफ, मूर्ख । ४ बंधन रहित । -पु० १ एक
प्राचीन मुनि का नाम । २ बौद्ध क्षणिक । ३ दिगंबर ।
४ राग, द्वेष से रहित माधु । (जैन)निरघात-पु० [सं० निर्घात] १ तेज वायु से उत्पन्न शब्द,
घावाज । २ प्राचीनकालिक एक अश्व ।निरघोष, निरघोस-पु० [सं० निर्घोष] ध्वनि, शब्द, घावाज ।
-वि० ध्वनि रहित ।

निरंखेह-वि० जिसका अन्त हो, अन्त । -पु० ईश्वर ।

निरजणी (बो)—क्रि० [सं० निर-जयति] अजय पद प्राप्त करना, विजय करना, जीतना ।
 निरजर—पु० [सं० निर्जर] १ देवता, सुर । २ अमृत, सुधा ।
 -वि० १ जरा मुक्त । कभी बुढ़ा न होने वाला ।
 २ देखो 'निरभर' । ३ युवा, जवान । ४ अनश्वर ।
 निरजरा-नायक—पु० [सं० निर्जर-नायक] इन्द्र, देवराज ।
 निरजरा—पु० [सं० निर्जर] देवता, सुर । [सं० निर्जरा] तपस्या द्वारा कर्मफल का विच्छेद होने की क्रिया । (जैन)
 निरजल—पु० [सं० निर्जल] १ वह भूमि या क्षेत्र जहाँ जल का अभाव हो । २ रेगिस्तान, मरु प्रदेश । ३ जल का अभाव ।
 -वि० १ बिना जल का, जल रहित । २ जिसमें जल सेवन का निषेध हो । —व्रत—पु० बिना अन्न-जल लिये किया जान वाला व्रत ।
 निरजला, निरजला इषारस (एकादशी)—स्त्री० [सं० निर्जल-एकादशी] ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, जिस दिन बिना अन्न-जल लिये व्रत रखा जाता है ।
 निरजलि (छो)—देखो 'निरजल' ।
 निरजित, निरजीत—वि० [सं० निर्जित] १ वन में किया हुआ, बाव में किया हुआ । २ जीता हुआ । ३ अधीन किया हुआ । ४ अजेय ।
 निरजीव—वि० [सं० निर्जीव] १ प्राण रहित, बेजान । २ मृत ।
 ३ अशक्त, कमजोर ।
 निरजीवण—वि० १ माहम व पुरुषार्थहीन । २ नपुंसक ।
 ३ निर्बल, कमजोर, अशक्त । ४ बेजान, जीव रहित ।
 ५ मृत ।
 निरजुक्ति, निरजुगति—देखो 'निरयुक्ति' ।
 निरजुर—देखो 'निरजर' ।
 निरजोर—वि० १ निर्बल, अशक्त । २ दुर्बल, कुशकाय ।
 निरजरा—देखो 'निरजरा' ।
 निरभर, निरभरण—पु० [सं० निर्भर, (ण)] १ बादल, मेघ ।
 २ भरना, मोता, चश्मा । ३ देखो 'निरजर' । -वि० श्वेत, सफेद । —नदी—स्त्री० गंगा नदी ।
 निरभरणी—स्त्री० [सं० निर्भरिणी] सरिता, नदी ।
 निरडर—देखो 'निडर' ।
 निरणय—पु० [सं० निर्णय] १ फैसला, निपटारा । २ निश्चय ।
 ३ परिणाम, नतीजा, फल । ४ समाधान, हल ।
 ५ न्यायालय का आदेश । ६ गारोश ।
 निरणयोपमा—स्त्री० [सं० निर्णयोपमा] एक अर्थालंकार विशेष ।
 निरणीत—वि० [सं० निर्णीत] १ जिसका निर्णय हो गया हो, फैसला सुदा । २ निश्चित, निर्धारित । ३ आदेशित ।
 निरणे, निरणे—देखो 'निरणय' ।

निरणी—वि० [सं० निरन] (स्त्री० निरणी) १ खाली, भूखा ।
 २ देखो 'निरणय' ।
 निरतंत—स्त्री० [सं० नतंकी] १ अप्सरा, परी । २ नतंकी ।
 ३ वेश्या, नगरवधू । ४ देखो 'निरत' ।
 निरत—पु० [सं० नृत्य] १ नाच, नृत्य । २ चीमठ कलाओं में से एक । ३ बहतर कलाओं में से एक । ४ दृष्टि, निगाह ।
 -वि० [सं० निरत] १ कार्य में व्यस्त, लीन, तत्पर ।
 २ आसक्त, अनुरक्त । ३ देखो 'निरति' । ४ देखो 'नैरित्य' ।
 निरतक—देखो 'नरतक' । (स्त्री० निरतकी)
 निरतकर, निरतकार—वि० [सं० नृत्यकार] नाचने वाला, नृत्य करने वाला । नर्तक ।
 निरतकी—देखो 'नरतकी' ।
 निरतणी (बो)—क्रि० [सं० नृती] १ नृत्य करना, नाचना ।
 २ उछल-कूद करना ।
 निरतत, निरतति—देखो 'निरतंत' ।
 निरतन—देखो 'नरतन' । —साळ, साळा= 'नरतनसाळा' ।
 निरतप्रिय—पु० [सं० नृत्यप्रिय] १ शिव, महादेव । २ स्कन्द का एक अनुचर । -वि० नृत्य का शौकीन ।
 निरतसाळ, निरतसाळा—स्त्री० [सं० नृत्यशाला] नाचघर ।
 नृत्यशाला ।
 निरताई—स्त्री० [देश०] १ कायस्ता । २ नोचना, खूदता ।
 ३ दरिद्रता, गरीबी । ४ अनुराग ।
 निरताणी (बो)—क्रि० १ लीन होना, मन लगाना । २ अनुरक्त होना । ३ द्रव पदार्थ का बहना ।
 निरताळ—देखो 'निरताळ' ।
 निरताळी—वि० [सं० नृत्य-प्राप्त] (स्त्री० निरताळी) १ नाचने वाला, नर्तक । २ उछल कूद करने वाला ।
 निरतावणी (बो)—क्रि० १ नाक का बहना । २ देखो 'निरताणी' (बो) ।
 निरति—स्त्री० १ समाचार, खबर, सुधा । २ जानकारी, मालूम ।
 ३ धैर्य, सान्त्वना । ४ शकुन । ५ रिक्ताता । ६ देखो 'निरत' । ७ देखो 'नैरित्य' । —कुण= 'नैरित्यकोण' ।
 निरतिचार—वि० [सं०] बिना प्रतिचार का, विशुद्ध ।
 निरती, निरतु—वि० [सं० निरुक्त] १ स्पष्ट, निश्चित ।
 २ प्रकट, खुला । ३ व्याख्या किया हुआ, समझाया हुआ ।
 -पु० १ व्याख्या । २ व्युत्पत्ति । ३ वेद के छः अंगों में से एक । ४ यास्क द्वारा, निघण्टु पर की गई एक प्रसिद्ध व्याख्या । ५ देखो 'निरत' ।
 निरती—वि० (स्त्री० निरती) १ कम, न्यून । २ हल्का, पोचा, कटु । ३ नीच, पतित ।
 निरत—देखो 'निरत' ।

निरस्तारणी

(७१३)

निरबल

निरस्तारणी (बौ)—क्रि० उद्धार करना, मोक्ष देना ।

निरस्त्याद-पु० [सं० नृत्य] नृत्य नाद ।

निरथक-देखो 'निरथक' ।

निरथी-वि० खगव, बुग, नीय ।

निरवड-वि० [सं० निवण्ड] सब प्रकार के दण्ड का भागो, शूद्र, नाब ।

निरवद-देखो 'निरवद' ।

निरदम-वि० [सं० निर्दम्भ] जिस दम्भ न हो, निर्भिमानो ।

निरदय-निरदयी-वि० [सं० निर्दयी] १ दयाहीन, क्रूर, निष्ठुर ।

२ हितक वृत्ति वाला । —ता-स्त्री० क्रूरता, निष्ठुरता ।

निरदळग-वि० [सं० निर्दलनम्] १ संहार करने वाला, मारने वाला । २ कष्ट, पीड़ा या दुःख देने वाला ।

निरदळणी (बौ)—क्रि० [सं० निर्दलनम्] १ संहार करना, मारना । २ कष्ट देना, दुःख देना ।

निरदाई, निरदायी, निरदायी-वि० बिना, रहित । विहीन ।

निरदाई-क्रि० वि० १ बिना आपत्ति या उज्ज के । २ देखो 'निरदायी' ।

निरदायी-वि० अधिकारीहीन, अनधिकृत । —पु० दावा हटाने का लेख । राजीनामा ।

निरदिष्ट-वि० [सं० निर्दिष्ट] १ बताया हुआ, सुझाया या समझाया हुआ । २ पूर्व निश्चित । ३ जिसके प्रति निर्देश जारी किया जा चुका हो ।

निरदूख, निरदूखण, निरदूस, निरदूसण-देखो 'निरदोम' ।

निरदेई-देखो 'निरदयी' ।

निरदेस-पु० [सं० निर्देश] १ किसी बात का संकेत, इंगन । २ निश्चित करने या ठहराने की क्रिया या भाव । ३ नाम संज्ञा । ४ उल्लेख, जिक्र । ५ कथन । ६ सुझाव, सलाह । ७ हुक्म, आज्ञा, आदेश । ८ मार्ग दर्शन । ९ वर्णन । १० उपदेश ।

निरदेसक-वि० [सं० निर्देशक] १ सवत देने वाला । २ सुझाव देने वाला । ३ आज्ञा देने वाला । ४ मार्ग दर्शक, उपदेशक ।

निरदेह-वि० [सं०] निराकार ।

निरदोख-देखो 'निरदोम' ।

निरदोखी, निरदोखी-देखो 'निरदोम' ।

निरदोस-वि० [सं० निर्दोष] (स्त्री० निरदोमण) १ जिसमें कोई दोष न हो, बुराई न हो । २ जो अपराधी या दोषी न हो, बेकसूर । ३ निष्कलक, बेदाग । ४ अशुद्ध रहित ।

निरदोसता-स्त्री० [सं० निर्दोषत्व] दोषहीनता, अपराध निष्कलकता । शुद्धता ।

निरदोसी-देखो 'निरदोम' ।

निरदोह, निरदोही-देखो 'निरदोस' ।

निरदय-देखो 'निरदय' ।

निरद्धाटणी (बौ)-देखो 'निरधाटणी' (बौ) ।

निरद्वंद, निरद्वंद्व-वि० [सं० निर्द्वन्द्व] १ जो राग-द्वेष या सुख-दुःख के भगडों से परे हो । २ जिसके कोई भगडा न हो, जो लड़ाई न करता हो । ३ जिसका कोई विरोधी न हो, निर्विरोध । ४ विकार रहित । ५ बाधा रहित, स्वच्छन्द ।

निरधरा, निरधणियो-वि० १ पत्नी रहित, कुंवारा, विधुर । २ स्वामी रहित । बधवारिम । ३ देखो 'निरधन' ।

निरधन-वि० [सं० निर्धन] धन हीन, गरीब । दरिद्र, कंगाल । —पु० बूढ़ा बेल ।

निरधनता-स्त्री० गरीबी, कंगाली ।

निरधनियो-देखो 'निरधन' ।

निरधरम, निरधरम्म-वि० [सं० निर्धम्म] १ जो धार्मिक न हो, धर्म रहित, धर्महीन । २ वेईमान, भ्रष्ट ।

निरधाटणी (बौ)-क्रि० [सं० निर्धाटनम्] १ पगालित करना, हराना अधीन करना । २ नियंत्रण में करना, दवाना ।

निरधार, निरधारण-पु० [सं० निर्धारण] १ निश्चित या तय करने की क्रिया या भाव । २ निश्चय । ३ निर्णय । ४ विवक्षाम । ५ गुण व कर्म आदि के विचार से एक जाति के पदार्थों में से कुछ की छंटनी । —वि० १ पक्का हट । २ देखो 'निरधार' ।

निरधारणी (बौ)-क्रि० [सं० निर्धारणम्] निश्चय करना, तय करना ।

निरधारो-देखो 'निरधार' ।

निरधुंद-देखो 'निर्द्वंद्व' ।

निरधूम, निरधूम-पु० [सं० निर् + धूम] १ धुंआ रहित । २ बिना शंका या संदेह के, निस्संदेह । ३ रुकावट या बाधा रहित, निबांध ।

निरधुण-१ देखो 'निरधन' । २ देखो 'निरधरा' ।

निरधम्म-देखो 'निरधरम्म' ।

निरनड-देखो 'निरणय' ।

निरपक्व (पक्ष, पख)-वि० [सं० निर्पक्ष] १ पक्षहीन दलहीन । २ पक्षपात रहित, निष्पक्ष । ३ मातृ-पितृ पक्ष रहित । ४ मित्र रहित । ५ जिसका कोई समर्थक न हो । —पु० ईश्वर ।

निरफळ-देखो 'निष्फळ' ।

निरबब (बध, बंधन)-वि० [सं० निर्बन्ध] बंधन रहित, मुक्त, स्वतंत्र । खुला ।

निरबस-देखो 'निरबंस' ।

निरबद-वि० [सं० निर्बन्ध] दोष रहित, निर्दोष, विशुद्ध ।

निरबरणन-पु० [सं०] देखने की क्रिया ।

निरबळ-वि० [सं० निर्बल] बलहीन, कमजोर, अशक्त ।

निरवळता

(७६४)

निरम्मळी

निरवळता-स्त्री० [सं० निर्वलता] कमजोरी, अशक्तता ।
 निरवहणी (बो)-देखो 'निरवहणी' (बो) ।
 निरवाण, निरवाणी-पु० १ तीर, बाण । २ पाताल ।
 ३ देखो 'निरवाण' ।
 निरवाचन-देखो 'निरवाचन' ।
 निरवाह-देखो 'निरवाह' ।
 निरवाहणी (बो)-देखो 'निरवाहणी' (बो) ।
 निरविकार-देखो 'निरविकार' ।
 निरबीज-वि० [सं० निर्वीज] १ जिसका वंश चलाने वाला कोई न हो, निर्वंश, निःसंतान । २ जिसमें बीज न हो, बीज रहित । ३ जो कारण रहित हो ।
 निरबुद्धि (बुधी)-वि० [सं० निर्बुद्धि] बुद्धिहीन, नासमझ, मूर्ख ।
 निरबोध-वि० [सं० निर्बोध] जिसे बोध न हो, अबोध ।
 अनजान ।
 निरबोह (बोह)-वि० गंध रहित, वासना रहित ।
 निरबन्ध-देखो 'निरभय' ।
 निरबली-पु० [सं०] सुख ।
 निरभय-वि० [सं० निर्भय] १ जिसे भय न हो, जो डरता न हो, निडर, निर्भीक । २ निश्चित ।
 निरभयता-स्त्री० [सं० निर्भयता] १ भय रहित होने की अवस्था या भाव, निडरता । २ निश्चितता ।
 निरभर-वि० [सं० निर्भर] १ आश्रित, अवलंबित । २ भरा हुआ, पूर्ण । ३ मिला हुआ युक्त ।
 निरभागी-वि० (स्त्री० निरभागण) भाग्यहीन ।
 निरभाणी (बो), निरभाणणी (बो)-देखो 'निभाणी' (बो) ।
 निरभीक-वि० [सं० निर्भीक] निडर, साहसी, भयमुक्त ।
 निरभीकता-स्त्री० [सं० निर्भीकता] १ निडरता, साहस ।
 २ भय से मुक्ति ।
 निरभीत-वि० [सं० निर्भीत] निडर, निर्भय ।
 निरभे, निरभ्ये, निरभ्य-देखो 'निरभय' ।
 निरभ्रम-वि० [सं० निर्भ्रम] १ भ्रम व संदेह रहित ।
 २ निश्चित, निःशंक । -क्रि० वि० देखटके, निःसंकोच होकर, स्वच्छंदता से ।
 निरभ्रांत-वि० [सं० निर्भ्रांत] १ जिसको कोई शंका न हो ।
 २ भ्रांति रहित ।
 निरभ्रांतता-स्त्री० शंका, भ्रांति या अशान्ति का अभाव ।
 निरमणी (बो)-क्रि० [सं० निर्मनम्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना । २ निर्मित होना, बनना ।
 निरमद-वि० [सं० निर्मदः] बिना मद का, नशा रहित ।
 निरमदा-देखो 'नरमदा' ।
 निरमन-वि० [सं० निर्मन] मन या इच्छा रहित ।

निरमळ-वि० [सं० निर्मल] १ मल रहित, स्वच्छ साफ ।
 २ शुद्ध, पवित्र । ३ निष्पाप । ४ निर्दोष, निष्कलंक ।
 ५ चमकदार । ६ श्वेत, सफेद । -पु० १ नेत्र, नयन ।
 २ अश्रक ।
 निरमळा-स्त्री० [सं० निर्मला] १ एक नदी का नाम ।
 २ मांख । ३ नानकशाही साधुओं की शाखा ।
 निरमळी-स्त्री० [सं० निर्मली] १ एक सदा बहार वृक्ष विशेष ।
 २ देखो 'निरमळ' ।
 निरमळी-देखो 'निरमळ' ।
 निरमाण-पु० [सं० निर्माण] १ बनाने का कार्य । २ बनावट रचना । ३ सृष्टि, सर्जन । ४ शवल, आकृति । बनावट ।
 ५ इमारत ।
 निरमास-वि० [सं० निर्मास] जिसके शरीर का मांस सूख गया हो, कृशकाय, दुबला ।
 निरमाणी(बो)-क्रि० १ उत्पन्न करना, पैदा करना । २ निर्माण करना, रचना करना । ३ सृष्टि करना, सर्जन करना ।
 ४ बनाना ।
 निरमाया-वि० [सं० निर्माया] माया रहित ।
 निरमावणी (बो)-देखो 'निरमाणी' (बो) ।
 निरमित-वि० [सं० निर्मित] बना हुआ, रचा हुआ, उत्पादित ।
 निरमुक्त, निरमुगत-वि० [सं० निर्मुक्त] बंधन रहित, बंधन मुक्त । स्वतन्त्र व आजाद । -पु० तुरंत की कंचुल उतारा हुआ सपें ।
 निरमुक्तो, निरमुगती-स्त्री० [सं० निर्मुक्ति] १ स्वतन्त्रता, आजादी, मुक्ति । २ छुटकारा ।
 निरमूळ-वि० [सं० निर्मूल] १ जिसकी जड़ या मूल न हो ।
 २ बेबुनियाद, निराधार । ३ जिसकी बुनियाद या जड़ समाप्त हो चुकी हो । ४ सर्वथानष्ट ।
 निरमूळण(न)-स्त्री० निर्मूल करने की क्रिया या भाव ।
 निरमोक्ष-पु० [सं० निर्मोक्ष] १ मांष की कंचुल । २ देखो 'निरमोक्ष' ।
 निरमोक्ष (मोक्ष)-पु० [सं० निर्मोक्ष] पूर्ण मोक्ष, मुक्ति ।
 निरमोल-वि० [सं० निर्मूल्य] १ जिसका मूल्य असीम हो, अमूल्य, अनमोल । २ बिना मूल्य का ।
 निरमोही, निरमोयो-देखो 'निरमोही' ।
 निरमोह-पु० [सं० निर्मोह] १ मोह, ममता आदि का अभाव ।
 २ विरक्ति, वैराग्य । ३ देखो 'निरमोही' ।
 निरमोही, निरमोहियो, निरमोही-वि० [सं० निर्मोहि] १ जिसे कोई मोह या ममता न हो । मोह, ममता से परे ।
 २ विरक्त, उदासीन । ३ मूढ़, मूर्ख । ४ निरभ्रांत ।
 निरम्मळ (ळी)-देखो 'निरमळ' ।
 निरम्मळी-देखो 'निरमळी' ।

निरय

(७६५)

निरविषय

निरय-स्त्री० [सं०] नरक, बोजख ।

निरयाण-पु० [सं० निर्याण] १ घाँघ की पुतली । २ यात्रा, रवानगी, प्रस्थान ।

निरयात-पु० [सं० निर्यात] १ देश या क्षेत्र से बाहर सामान बेचने की क्रिया या भाव । २ निकास ।

निरयुक्ति-स्त्री० [सं० निर्युक्ति] १ वह ग्रंथ जो युक्ति सहित सूत्र का अर्थ बताता है । २ व्याख्या, टीका ।

निररथ, निररथक-वि० [सं० निरर्थक] १ बिना मतलब का, व्यर्थ, फालतू । २ अर्थशून्य । ३ जिससे कोई लाभ न हो, कार्य सिद्धि न हो । ४ न्याय में निग्रह स्थान ।

निररबुब-पु० [सं० निरबुद] एक नरक का नाम ।

निररूप-वि० [सं० निरूप] रूप व आकार रहित, निराकार ।

निरलङ्ग, निरलङ्ग-वि० [देश०] १ निर्लस, तटस्थ । २ अलग, पृथक, दूर । ३ कटा हुआ । -पु० खण्ड, टुकड़ा ।

निरलज, निरलजी, निरलज्ज-वि० [सं० निरलज्ज] जिसे लज्जा न आती हो, वेशर्ष, बेहया ।

निरलज्जता-स्त्री० [सं० निरलज्जता] वेशर्मियत, बेहयाई ।

निरलाज-देखो 'निरलज्ज' ।

निरलिप्त-वि० [सं० निरलिप्त] १ तटस्थ, पृथक, अलग । २ युक्त । ३ विरक्त ।

निरलेखण, (न)-पु० [सं० निरलेखन] १ सुश्रुत के अनुसार मूल खुरचने का एक उपकरण । २ मूल खुरचने की क्रिया ।

निरलेप-वि० [सं० निरलेप] राग द्वेषादि गुणों से मुक्त, अनासक्त, विरक्त ।

निरलोह, निरलोह, निरलोभ, निरलोभो-वि० [सं० निरलोभी] जिसे लोभ या स्वार्थ न हो, निस्वार्थी ।

निरवंस-वि० [सं० निर्वंश] जिसका वंश न हो, जिसका वंश समाप्त हो गया हो ।

निरवंसता-स्त्री० वंश भटने की अवस्था ।

निरवद्य-वि० [सं०] निर्दोष ।

निरवपण-पु० [सं० निर्वपण] दान ।

निरवलंब-वि० [सं०] १ जिसका कोई आश्रय या आधार न हो । २ जिसका कोई सहायक न हो ।

निरवह-वि० [सं० निर्वहनम्] १ निभाने वाला । २ वहन करने वाला, सहने वाला । ३ पूरा करने वाला । ४ धारण करने वाला । -पु० १ निर्वाह, गुजारा । २ समाप्ति । ३ वहन करना क्रिया ।

निरवहणी, (बी)-क्रि० [सं० निर्वहनम्] १ निभाना । २ वहन करना, सहन करना । ३ पालन करना । ४ पूरा करना । ५ धारण करना । ६ निभाना ।

निरवाण-पु० [सं० निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष । २ शुद्ध चेतन, परब्रह्म । ३ समाप्ति । पूर्णता । ४ शून्य । ५ शान्ति ।

६ मृत्यु । ७ छुटकारा । ८ प्रथम गुरु के द्वाण के द्वितीय भेद का नाम । -वि० १ बिना बाण का । २ मुक्त । ३ शून्यता को प्राप्त । ४ निश्चय । ५ स्वगदाता । ६ मरा हुआ, मृत । ७ बुझा हुआ । ८ अदृश्य, लुप्त । ९ अस्त । १० शान्त ।

निरवाणि (णी)-क्रि० वि० अवश्य, जरूर । -वि० वाणी रहित, मूक । देखो 'निरवाण' ।

निरवाण, (णी)-देखो 'निरवाण' ।

निरवाणी-१ देखो 'निरवाण' । २ देखो 'निरवाण' ।

निरवाचक-वि० [सं० निर्वाचक] निर्वाचन करने वाला, चुनने वाला ।

निरवाचन-पु० [सं० निर्वाचन] चुनाव । चयन ।

निरवात-वि० [सं० निर्वात] १ स्थिर, शान्त, अचंचल । २ हवा या वायु रहित ।

निरवासन-पु० [सं० निर्वासन] १ देश निकाला । २ निकाल देने की क्रिया या भाव । ३ निर्गमन । ४ विसर्जन, समाप्ति, भंग । ५ वध, हत्या ।

निरवाह-पु० [सं० निर्वाह] १ गुजारा, पालन, निर्वाह । २ पूर्णता, समाप्ति । ३ पालन, अनुसरण । ४ परंपरा को रक्षा । ५ प्रचलन । ६ देखो 'निभाव' ।

निरवाहण (न)-वि० निर्वाह करने वाला, निभाने वाला ।

निरवाहणी (बी)-क्रि० [सं० निर्वाहनम्] १ गुजारा करना, निभाना । २ पालन करना । ३ पूर्ण करना, समाप्ति करना । ४ अनुसरण करना । ५ परंपरा निभाना । ६ जिम्मेदारी संभालना ।

निरविकल्प-पु० [सं० निर्विकल्प] १ ज्ञाता एवं ज्ञेय के एक होने की अवस्था । २ बौद्ध शास्त्रों में प्रामाणिक माना जाने वाला ज्ञान । -वि० १ विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों से रहित । २ जो बड़ विचारों वाला न हो । ३ जो पारस्परिक संबंध न रख सके ।

निरविकार-वि० [सं० निर्विकार] १ विकार या विकृति रहित । २ निस्वार्थी । ३ अपरिवर्तनीय स्थिर ।

निरविघ्न, निरविघ्न-वि० [सं० निर्विघ्न] विघ्न या बाधा रहित । -क्रि० वि० निर्बाध गति से ।

निरविचार-पु० [सं० निर्विचार] बुद्धि को सर्व प्रकाशक और चित्त को निर्मल करने वाली सबसे उत्तम मवीज ममाधि । -वि० जिसमें कोई विचार न हो । विचारहीन ।

निरविधि-वि० [सं० निर्विधि] बिना विधि के, विधि रहित ।

निरविवाद-वि० [सं० निर्विवाद] विवाद या तर्क रहित, बिना किसी समस्या या भगड़े का । -क्रि० वि० बिना तर्क या विवाद किये ।

निरविषेक

(७६६)

निरामूळ

निरविषेक-वि० [सं० निर्विवेक] विवेकहीन, विवेकशून्य ।

निरघ्न-वि० [सं० निर्वृत्त] प्रसन्न, खुश ।

निरवेग-वि० [सं० निर्वेगम्] वेग या गति रहित ।

निरवेर-वि० [सं० निर्वेर] राग, द्वेष या वैर रहित ।

निरवती-देखो 'निरवती' ।

निरसक-देखो 'निरसक' ।

निरसंध, निरसंधी-वि० संधि रहित, संधिविहीन ।

निरसंसे (सं)-वि० [सं० निर्वसंशय] संशय रहित ।

निरस-वि० [सं०] १ निम्न, हल्का । २ तुच्छ, छोटा, लघु ।

३ महीन । ४ सूया, शुष्क । ५ जो रसिक न हो

शिरक । ६ जिसमें मार न हो, अमार । ७ फीका ।

८ म्वादहीन ।

निरसण-पु० [सं० निरसत] इष्टाना क्रिया, दूर करना क्रिया ।

निरसहाय-देखो 'निरसहाय' ।

निरसिध-देखो 'निरसिध' ।

निरसिह-देखो 'निरसिध' ।

निरसो-देखो 'निरस' ।

निरस्त-पु० [सं०] १ समर्पित, पूर्णता । २ विनाश, नाश ।

३ मिटना क्रिया । -वि० १ नाष्ट, बर्बाद । २ व्यक्त,

छोटा हुआ । ३ फीका हुआ । ४ रहित, हीन । ५ गद्

क्रिया हुआ, स्थगित । ६ उमला या थूका हुआ ।

७ दवाया हुआ । ८ अलग, पृथक । ९ विकृत, बिगड़ा

हुआ ।

निरस्म-देखो 'निरस' ।

निरस्साग्र, निरस्साय-वि० [सं० निःस्वाद] स्वाद रहित,

फीका ।

निरहार-देखो 'निरहार' ।

निरांत, निरांति-देखो 'निरांत' ।

निराउध-देखो 'निराउध' ।

निराकरण-पु० [सं०] १ समाधान, हल । २ दलील या युक्ति

द्वारा खण्डन । ३ निवारण, परिहार, शमन । ४ दूर

करने की क्रिया । ५ तिरस्कार । ६ निर्वासन । ७ छंटनी ।

निराकरणौ (बौ)-क्रि० १ समाधान करना, हल करना ।

२ खण्डन करना, तर्क देना । ३ शमन करना । ४ दूर

करना । ५ तिरस्कार करना । ६ निर्वासन करना ।

७ छंटनी करना ।

निराकार (रौ)-वि० [सं०] १ आकार या रूप रहित ।

२ शकल या सूरत रहित । ३ बदशकल, कुरूप । ४ भटा ।

५ कपटवेशी, छद्म वेशी । ६ विनम्र, लज्जालु । -पु०

१ परब्रह्म, ईश्वर । २ ब्रह्मा । ३ विष्णु । ४ शिव ।

५ शून्य, आकाश ।

निराकंद-वि० [सं०] १ रक्षा या सहायता न करने वाला ।

२ फरियाद या पुकार न सुनने वाला । ३ असहाय,

विवश, निराश्रित ।

निराखर-वि० [सं० निरक्षर] १ जिसे अक्षर ज्ञान न हो,

अभाष्य अपठित । २ वर्ण या अक्षर रहित । ३ विना

जबद का, मौन ।

निराठ (ठ)-वि० १ अत्यन्त, बहुत । २ सूक्ष्मतम, अतिमूक्ष्म ।

३ केवल, मात्र । ४ जबरदस्त, महान् ।

निराणंद-वि० [सं० निराणन्द] आनन्द रहित ।

निरातक-वि० [सं०] १ भय रहित, निर्भय, निडर । २ मृत्यु

रहित । ३ रोग रहित, निरोग । -पु० रावण का

एक पुत्र, नरातक ।

निरात-देखो 'निरात' ।

निरातप-वि० [सं०] आतप रहित, शीतल, ठंडा ।

निराताळ, निराताळी, निराताळा-वि० १ बहुत, अत्यन्त,

अधिक । २ भयकर ।

निराताळी, निराताळी-क्रि० वि० १ निर्भयता से, बेखटके ।

२ बहुत देर तक ।

निरादर-पु० [सं०] अनादर, तिरस्कार ।

निरादेह-वि० [सं०] देह रहित निराकार, अव्यक्त ।

निराधार-वि० [सं०] १ आधार रहित, आश्रय या अवलंब

रहित । २ अनुन्याय । ३ अप्रामाणिक । ४ कल्पित ।

५ झूठा, मिथ्या । ६ खाली पेट । ७ आज्ञाबिहीन ।

८ मायिक विषयों के आश्रय रहित । ९ जिसे किसी आश्रय

की जरूरत न हो । १० व्यर्थ, निरर्थक ।

निरातंद-पु० [सं०] १ आनन्द का अभाव । २ कष्ट, पीड़ा,

दुःख । ३ वैराग्य, विरक्ति । -वि० १ आनन्द रहित,

शुशी रहित । २ जहां आनन्द न हो ।

निरापड-वि० [सं०] १ जहां पर खतरा या डर न हो । २ जिसे

भय न हो, निर्भय । ३ सुरक्षित । ४ निर्णय, चिन्ता रहित ।

निरापेक्ष, निरापेक्षी, निरापेखी-वि० [सं० निर-पक्ष] १ तटस्थ,

अलग, पृथक । [सं० निरपेक्ष] २ चाह व इच्छा

रहित । ३ कामना शून्य, निष्कामी । ४ निस्वार्थी ।

५ लापरवाह, असावधान । ६ अनुराग रहित ।

निराब-वि० [सं० निर-आभा] १ कांति रहित, आभा रहित ।

२ मंद, धीमा । ३ प्रकाश रहित, चमक रहित ।

निरामय-वि० [सं०] स्वस्थ, तंदुरुस्थ । -पु० १ ईश्वर,

परमात्मा । २ मूखर । ३ जंगली बकरा ।

निरामिस-वि० [सं० निरामिष] १ जिसमें मांस न हो, मांस

रहित । २ जो मांसाहारी न हो । ३ धन-धान्य से रहित ।

निरामूळ-पु० [सं० निर्मूल] १ ईश्वर, परमात्मा । २ देखो

'निर्मूल' ।

निरामोह

(७६७)

निरखणो

निरामोह-वि० मोहरहित ।

निरामुध-वि० [सं०] अस्त्र-शस्त्र रहित ।

निरालंब-वि० [सं०] १ अवलंब या आधार रहित । २ बिना ठिकाने या आश्रय का । -पु० परब्रह्म ।

निराळ, निराल-वि० [सं० निर्-आहार] भूखा, खाली पेट, बिना कुछ खाया-पिया । -क्रि०वि० बिना कुछ खाये-पिये, खाली पेट के । देखो 'निराळो' ।

निराळस-वि० [सं० निरालस] आलस्य व प्रमाद रहित, चुस्त, फुर्तीला ।

निराळ, निरालु, निराळो, निरालो-वि० [सं० निरालय] (स्त्री० निराळी) १ अनोखा, अद्भुत, विचित्र । २ अद्वितीय, अपूर्व । ३ अलग, पृथक, तटस्थ । ४ निर्जन, एकांत । -पु० निर्जन स्थान ।

निरावर-पु० [सं० निर्-रव] शब्द, ध्वनि, आवाज । -वि० शब्द रहित ।

निरावलंब-वि० [सं०] अवलंब या आधार रहित । निराधार ।

निरास-वि० [सं० निराश] १ आशाहीन, उन्मीद रहित । २ निरुत्साह, हताश । ३ देखो 'निरासा' ।

निरासा-स्त्री० [सं० निराशा] १ आशा या उन्मीद न रहने की अवस्था या भाव । २ उदासी ।

निरासिस-वि० [सं० निराशिष] १ जिसे कोई आशीर्वाद या वरदान प्राप्त न हो । २ तृष्णा या इच्छा रहित ।

निरासी-वि० [सं० निराशिन] आशा व तृष्णा से रहित ।

निरालय-वि० [सं० निराश्रय] आश्रय या सहारे से रहित ।

निराहण-पु० निराशापन ।

निराहार-वि० [सं०] १ जिसने कुछ खाया-पिया न हो, खाली पेट, भूखा । २ जो बिना भोजन के रहे । ३ जिसे भोजन का निषेध हो । -क्रि०वि० बिना कुछ खाये-पिये, खाली पेट से ।

निरीक्षक-पु० [सं०] १ जांच व देख-भाल करने वाला अधिकारी । २ परीक्षक ।

निरीक्षण, निरीक्षण-पु० [सं० निरीक्षण] १ देख-रेख, निगरानी । २ जांच, परीक्षा । ३ दर्शन, अवलोकन । -वि० रक्षा से रहित ।

निरखणो (बो)-देखो 'निरखणो' (बो) ।

निरिति-वि० अतिवृष्टि से रहित, अनावृष्टि ।

निरिस-वि० [सं० निरीश] १ अनोश्वरवादी, नास्तिक । २ बिना स्वामी का, लावारिस । -पु० [सं० निरीष] हल का हरीस ।

निरिह-वि० [सं०] १ विरक्त, उदासीन । २ तटस्थ, अलग, पृथक । ३ जिसे कोई चाह न हो । संतोषी । ४ शांति प्रिय । ५ चेष्टा रहित, निश्चेष्ट । ६ निर्दोष । ७ असमर्थ ।

निरिहा-स्त्री० [सं०] १ विरक्ति, उदासी । २ तटस्थता, अलगत्व । ३ इच्छा का अभाव । ४ संतोष, शांति । ५ चेष्टा, प्रयत्न ।

निरिहो-देखो 'निरिह' ।

निरुक्त, निरुक्ती, निरुक्त-पु० [सं० निरुक्त] वेद के छः अंगों में से एक ।

निरुजसिह-पु० [सं०] एक प्रकार का तप (जैन) ।

निरुतउ, निरुतउ-देखो 'निरुतु' ।

निरुत्तर-वि० [सं०] १ जिसका कोई उत्तर या जवाब न हो । २ जो कोई उत्तर न दे सकता हो । ३ कसूरवार ।

निरुत्साह-वि० [सं०] उत्साह रहित ।

निरुद्ध-पु० [सं०] योग में पांच प्रकार की मनोवृत्तियों में से एक । -वि० अवरुद्ध, रुका हुआ ।

निरुद्यम-वि० [सं०] १ जिसके पास कोई उद्यम या धंधा न हो । २ निकम्मा, अयोग्य । अकर्मण्य ।

निरुद्यमता-स्त्री० [सं०] १ उद्यम का अभाव । बेरोजगारी । २ निकम्मापन, अकर्मण्यता ।

निरुद्योग, निरुद्योगी-वि० [सं०] उद्योगहीन, निकम्मा ।

निरुपक्रम-वि० [सं०] १ पलायन रहित । २ ठण ।

निरुपद्रव, निरुपद्रवी-वि० [सं०] १ उपद्रव व उत्पात रहित, शान्त । २ जो उपद्रवी या उत्पाती न हो ।

निरुपम-वि० [सं०] जिसकी कोई समता या उपमा न हो, अद्वितीय, अद्भुत ।

निरुपवाद-वि० अट्टि रहित, अपवाद रहित ।

निरुपाधि-पु० [सं०] ब्रह्म । -वि० १ बिना उपाधि का । २ बाधा रहित । ३ माया रहित ।

निरुपाय-वि० [सं०] १ जिसके लिये कोई उपाय या उक्ति न हो । २ जो युक्ति लगाने में असमर्थ हो ।

निरुखो-वि० (स्त्री० निरुखी) जहां वृक्ष न हो ।

निरुद्धलक्षणा-स्त्री० [सं०] वह शब्द शक्ति जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो ।

निरूप-वि० [सं०] जिसका कोई रूप या आकार न हो । निराकार । -पु० ब्रह्म ।

निरूपण-पु० [सं०] १ विवेचनापूर्वक विचार, निरूपण । २ व्याख्या । ३ दर्शन । ४ प्रकाश । ५ शोध, खोज । ६ परिभाषा ।

निरूपम (मो)-देखो 'निरूपम' ।

निरूपित-वि० [सं०] जिसकी विवेचना कर दी गई हो, परिभाषित, व्याख्या किया हुआ ।

निरुहवस्ति-स्त्री० [सं०] चिकित्सा की एक विधि ।

निरखणो (बो)-देखो 'निरखणो' (बो) ।

निरंजम-वि० [देश०] १ साहसहीन, कायर, डरपोक । २ नामदं, नपुंसक ।
 निरेण-देखो 'नरेहण' ।
 निरेह, निरेहण-वि० १ पतला, कृश । २ देखो 'नरेहण' ।
 निरेहणा-वि० [सं० निरेषण] कामना रहित, इच्छा रहित ।
 निरोग-पु० १ चन्द्रमा, चांद । २ देखो 'नीरोग' ।
 निरोगता-देखो 'नीरोगता' ।
 निरोगी-देखो 'नीरोगी' ।
 निरोगी-देखो 'नीरोग' ।
 निरोध-पु० [सं०] १ अवरोध, बाधा, रुकावट । २ बंधन ।
 ३ चित्त वृत्तियों को एकाग्र करने की क्रिया । ४ घेरा, वृत्त ।
 ५ नाश, न्यस ।
 निरोधणी, (बी)-क्रि० [सं० निरोधनम्] १ रोकना अवरोध करना । २ बांधना । ३ चित्त को एकाग्र करना । ४ घेरना ।
 ५ नाश करना ।
 निरोधन-पु० [सं०] १ बंधक में पारे का छठा संस्कार । २ अवरोध, निरोध ।
 निरोधपरिणाम-पु० योग में चित्त वृत्ति की एक अवस्था ।
 निरोष-देखो 'निरोळ' ।
 निरोषम-देखो 'निरुषम' ।
 निरोळ, निरोल, निरोव-पु० आज्ञा, आदेश ।
 निरोवर-पु० [सं० नीरवर] समुद्र, सागर ।
 निरोस-वि० [सं० नि-रोष] जिसे रोष न हो, जो क्रोधी न हो, शान्त ।
 निरोह-पु० १ युद्ध स्थल । २ देखो 'निरोष' । ३ देखो 'निरोस' ।
 निरोहर-पु० [सं० नीरहर] समुद्र, सागर ।
 निरी-वि० (स्त्री० निरी) १ बहुत, अधिक । [सं० निरालय] २ जिसके साथ और कुछ न हो, केवल, मात्र । ३ विना मेल का, विशुद्ध, खालिश । ४ बिल्कुल, निपट, नितांत ।
 नितपका-देखो 'नलपका' ।
 नित-१ देखो 'निल' । २ देखो 'नीलो' ।
 निलई, निलउ-१ देखो 'निल' । २ देखो 'निलय' । ३ देखो 'नीलो' ।
 निलखणउ, निलखणी-वि० [सं० निलक्षणः] लक्षण या गुण रहित ।
 निलखणी, (बी)-क्रि० [सं० नि-लिख्] अंकित करना, लिखना नितज-देखो 'निरलज्ज' ।
 निलजई, निलजता, निलजताई-देखो 'निरलज्जता' ।
 निलजी, निलज्ज, (ज्जी)-देखो 'निरलज्ज' ।
 निलम-देखो 'नलिन' ।
 निलय-पु० [सं०] १ स्थान, जगह । २ घर मकान । ३ समूह, पुंज । ४ ललाट, भाल ।

निलवट, निलवटि, निलवट्ट-देखो 'निल' ।
 निलांबर-पु० [सं०] १ बलराम २ भासमान ।
 निलांम-देखो 'लीलास' ।
 निलागर-पु० रंग विशेष का घोड़ा ।
 निलाड़, (ड़ी, डी) निलाट, (टी, टी) निलाड, निलाडि-देखो 'ललाट' ।
 निलाव-वि० स्वच्छ, निर्मल ।
 निलो-देखो 'नील' ।
 निलीह-वि० गुप्त ।
 निलं-पु० [सं० निलं, निलिलं] १ ललाट, भाल । २ देखो 'निलय' ।
 निलोह, निलोही, निलोही-वि० जिम शस्त्र या लांह का घाव न लगा हो, अक्षत ।
 निली-१ देखो 'निलय' । २ देखो 'निल' । ३ देखो 'नीली' ।
 निल्लाट-देखो 'ललाट' ।
 निव-देखो 'नय' ।
 निवड़-वि० [सं० निविड] १ दड़, मजबूत । २ बहादुर, वीर पराक्रम । ३ जबरदस्त । ४ अद्वितीय । ५ देखो 'निपट' । ६ देखो 'निविड' ।
 निवड़णी, (बी)-क्रि० [सं० निवर्तनं] १ फलीभूत होना । २ तैयार होना । ३ निवृत्त होना । ४ देखो 'निपटणी' (बी) ।
 निवछावळ, (ळि)-देखो 'निछरावळ' ।
 निवड-वि० [सं० निविड] १ प्रगाढ़, गहरा, घना । २ दड़, मजबूत । ३ भयंकर । ४ देखो 'निपट' । ५ देखो 'निविड' ।
 निवणी, (बी)-देखो 'नमणी' (बी) ।
 निवतणी, (बी), निवतरणी, (बी)-देखो 'निमंत्रणी' (बी) ।
 निवतरी-१ देखो 'निमंत्रण' । २ देखो 'नैत' ।
 निवतेरी, निवतेरी-वि० [सं० नमनम्] १ झलती उम्र का । २ हल्का ।
 निवती-१ देखो 'निमंत्रण' । २ देखो 'नैत' ।
 निवत्ती-वि० [सं० निवर्तिन्] १ निलिप्त । ३ युद्ध से भागा हुआ । ३ पीछे हटने वाला ।
 निवरी-वि० [सं० निवृत्त] (स्त्री० निवरी) १ काम-काज या उत्तरदायित्व से मुक्त, निवृत्त । २ अवकाश या फुसंत वाला । ३ खाली, निठल्ला । ४ व्यर्थ, बेकार । ५ तटस्थ, उदास ।
 निवळ, निवसोड़ी, निवळी-देखो 'निरवळ' ।
 निवसणी, (बी)-क्रि० [सं० निवसनम्] निवास करना, रहना ।
 निवसथ-पु० [सं० निवसथः] १ गांव ग्राम । २ मकान, घर । ३ डेरा । ४ निवास, प्रावास ।
 निवसन-पु० [सं० निवसनं] १ स्त्रियों का अधोवस्त्र । २ नीचे पहनने का वस्त्र । ३ देखो 'निवसथ' ।

निवह

(७६९)

निवारह

निवह-पु० [सं०] १ समूह, ग्रुह । २ सात प्रकार के पवनों में से एक ।

निवहणी, (बौ)-देखो 'निभणी' (बौ) ।

निवाण, निवाणणी-पु० [सं० निवाण] १ जलाशय, मगध, तावाव । २ कूप, कुप्पा । ३ वापिका । ४ समुद्र, सागर । ५ गड्ढा, खड्ढा । ६ पोखर । ७ नीची भूमि । ८ देखो 'निरवाण' । -वि० नीचा । -मर-पु० बादल, घन ।

निवाणणी-वि० [सं० निवाण] धारोष्ण (द्रुह) ।

निवाण, निवाणी-वि० [सं० निवाण] १ साधारण उष्ण, गुन-गुना । २ देखो 'निवाण' ।

निवांन-देखो 'निवाण' ।

निवा-देखो 'न्याव' ।

निवाघ-देखो 'निपात' ।

निवाई-वि० [सं० निवात] १ बिना वायु की, वायु रहित । २ साधारण उष्ण, गुनगुनी । ३ देखो 'न्याव' ।

निवाज-वि० [फा० नवाज] दयालु, कृपानु ।

-पु० १ षोड़ा, अण्व । २ देखो 'निमाज' ।

निवाजण-वि० प्रसन्न होकर दान करने वाला ।

निवाजणी, (बौ)-क्रि० १ खूश होना, प्रसन्न होना । २ कृपा, दया या अनुग्रह करना । ३ तुष्टमान होना । ४ दान देना । ५ पुरस्कार देना ।

निवाजस-मत्री० [फा० निवाजिण] १ पारितोषिक, पुरस्कार इनाम । २ कृपा, महारानी, अनुग्रह । ३ दान ।

निवाजिणी-वि० नमाज पढ़ने वाला ।

निवाजिस-देखा 'नवाजिस' ।

निवाजो-देखो 'निवाज' ।

निवाणी, (बौ)-देखो 'निमाणी' (बौ) ।

निवात-मत्री० मिश्री ।

निवाव-देखो 'नव्वाव' ।

निवावजादी-देखो 'नव्वावजादी' ।

निवावी-देखो 'नव्वावी' ।

निवायी-वि० [सं० निवात] (मत्री० निवाई) १ साधारण उष्ण, गर्म, गुनगुना । २ वायु रहित ।

निवार-मत्री० [दिश०] १ एक प्रकार का अनाज । [फा० नवार] २ पलंग, खाट आदि बुनने की सूत आदि की चौड़ी पट्टी ।

निवारक-वि० [सं०] १ दूर करने वाला, मिटाने वाला । २ रोकने वाला, अवरोधक । ३ समाधान करने वाला ।

निवारण-पु० [सं०] १ रोक, बचाव । २ हटाना किया । ३ वर्जन, निषेध । ४ बाधा, रुकावट । ५ छुटकारा, निवृत्ति ।

निवारणी, (बौ)-क्रि० [सं० निवारणम्] १ दूर करना, मिटाना, हटाना । २ रोकना, अवरोध करना । ३ समाधान करना ।

४ छोड़ना, निवृत्त करना । ५ नाश करना । ६ अलम करना, पृथक् करना । ७ अतिक्रमण करना ।

निवारन-देखो 'निवारण' ।

निवारस-वि० नावारिम, बिना स्वामी का ।

निवाळ-देखो 'निवाळी' ।

निवाळी-पु० [फा० निवाला] १ ग्राम, कौर । २ उष्ट मित्रों को दिया जाने वाला गोपनी भोज ।

निवावणी, (बौ)-देखो 'निमाणी' (बौ) ।

निवास-पु० [सं०] १ रहने की क्रिया या भाव, आवास । २ रहने का स्थान, जगह । ३ घर, मकान । ४ धरा, विश्रामस्थल । ५ रात्रि विश्राम । ६ साधारण उष्णता । ७ आश्रय, सहारा । ८ आराम, चैन । [सं० निवास] ९ षडे में रहने वाला जल । १० दक्षिण दिशा का एक नाम ।

निवासणी, (बौ)-क्रि० [सं० निवासनम्] १ निवास करना, रहना । २ विश्राम लेना, ठहरना । ३ रात बिताना । ४ आश्रय लेना, सहारा लेना ।

निवासस्थान-पु० १ घर, मकान । २ रहने का स्थान । ३ विश्राम स्थल ।

निवासी-वि० [सं०] १ रहने वाला, निवास करने वाला । २ देश या किसी क्षेत्र विशेष का रहने वाला । ३ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा संबंधी । ४ सर्वत्र व्यापक । ५ देखो 'निवासी' ।

निवाह-पु० [सं० निवाम] १ नगाड़े की ध्वनि, आवाज । २ देखो 'निमाव' । ३ देखो 'निरवाह' ।

निवाहण, निवाहणी-वि० १ निवाहने वाला । २ निवाह करने वाला । ३ काश बाधने वाला ।

निवाहणी, (बौ)-देखो 'निमाणी' (बौ) ।

निवाह्य-वि० [सं० निवाम] बजाने वाला ।

निविड-देखो 'निविड' ।

निविडता-देखो 'निविडता' ।

निविड-वि० [सं०] १ महान्, बड़ा । २ घना, घनघोर, गहरा । ३ देखो 'निपट' । ४ देखो 'निनड' ।

निविडता-मत्री० [सं०] १ गहनता, गहरापन, घनापन । २ वंशी आदि वाद्य के स्वर का गंभीरता ।

निविडणी, (बौ)-क्रि० [सं०] निबंधनम् रचना, बनाना, निर्मित करना ।

निविद्यासिमी, (बौ)-मत्री० निवियसिमी, (बौ)-वि० इटियासी के बाद वाला, नवासी के स्थान वाला । -पु० ८९ की संख्या का वर्ष या साल ।

निविद्यासी-वि० [सं० नवाशीति] अस्सी और नौ, नब्बे से एक कम । -मत्री० अस्सी व नौ की संख्या, ८९ ।

निविरड-वि० [सं० निवृत्त] प्रसन्न, खुश ।

निवेद्य-स्त्री० [सं० निवर्तनम्] १ समाप्ति, पूर्णता । २ तय करने की क्रिया या भाव । ३ मुक्ति, छुटकारा, रिहाई । ४ निवृत्ति । ५ निर्णय, फैसला ।

निवेद्यणी, (बौ)-क्रि० [सं० निवर्तनम्] १ फलीभूत, करना, तैयार करना । २ देखो 'निपटारणी (बौ) ।

निवेद्यो-पु० [सं० निवर्तनम्] १ फैसला, निर्णय । २ निपटारा । ३ पूर्णता, समाप्ति । ४ छुटकारा, मुक्ति । ५ निश्चय ।

निवेद्य-देखो 'निवेदन' ।

निवेद्यणी, (बौ)-क्रि० [सं० निवेदनम्] १ विनय करना, प्रार्थना करना । २ आवेदन पेश करना । ३ नैवेद्य चढ़ाना । ४ नजर करना, भेंट करना, चढ़ाना । ५ मुनाना, कहना । ६ सहायता के लिये कहना ।

निवेदन-पु० [सं० निवेदनम्] १ विनय, प्रार्थना, अर्जी । २ अनुनय, प्रार्थना । ३ प्रस्तुतीकरण । ४ भेंट, चढ़ावा । ५ समर्पण, अर्पण । ६ कहने की क्रिया । ७ सौंपना क्रिया ।

निवेदित-वि० [सं०] १ प्रार्थना या विनय किया हुआ, प्रार्थित । २ अर्पित, भेंट । ३ अर्पित । ४ श्रुत । ५ समर्पित ।

निवेद्य निवेद्य (घो)-देखो 'नैवेद्य' ।

निवेद्यणी, (बौ)-क्रि० १ भारना, संहार करना । २ देखो 'निवेद्यणी' (बौ) ।

निवेद्य-पु० [सं० निवेद्यः] १ घर, मकान । २ स्थान, जगह पड़ाव, छावनी, घेरा । ४ नगर, शहर । ५ निवास, रहवास । ६ प्रवेश द्वार । ७ घरोहर । ८ विवाह । ९ मजाबट । १० भूखण । ११ नियोजन ।

निवेद्य-देखो 'निवेदन' ।

निवेद्यणी (बौ)-क्रि० [सं० निवेदनम्] रखना, नियोजित करना ।

निवेद्य-पु० १ रख-रखाव, नियोजन । २ देखो 'निवेद्य' ।

निवेद्य-देखो 'नैवेद्य' ।

निवृत्ति (ती)-स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ मुक्ति, मोक्ष । २ छुटकारा । ३ विदाई । ४ प्रवृत्ति का उल्टा ।

निवृत्त-वि० [सं० निवृत्त] १ मुक्त, स्वतंत्र । २ अवकाश प्राप्त । ३ राज्य सेवा आदि से मुक्त । ४ लौटा हुआ । ५ विरक्त, तटस्थ । ६ रुका हुआ, बंद । ७ निपटा हुआ ।

निवृत्त-स्त्री० [सं० निवृत्त] तलवार बरछी आदि शस्त्रों को बनावट ।

निवृत्त-१ देखो 'निर्वाण' । २ देखो 'निवाण' ।

निवृत्तगुणवह-वि० निर्वाण के गुण धारण करने वाला ।

निवृत्तगुण-पु० मोक्ष मार्ग ।

निवृत्त-वि० [सं० निवृत्त] व्यापार रहित (जैन) ।

निवृत्त-देखो 'निभाव' ।

निवृत्त-वि० [सं० निवृत्त] विशा रहित (जैन) ।

निवृत्त-वि० [सं० निवृत्त] निवृत्त होने का इच्छुक ।

निवृत्त-वि० [सं० निवृत्त] विषय रहित (जैन) ।

निवृत्त-वि० [सं० निवृत्त] जिसका हृदय चिन्ता रहित हो ।

निवृत्त-पु० [सं० निवृत्त] १ वेराग्य, विरक्ति । २ तटस्थता की भावना । ३ खेद, दुःख । ४ अनुताप । ५ अपमान ।

निसक-वि० [सं० निःशंक] १ डर, भय व संकोच रहित, निश्चय । २ संदेह रहित । ३ चिन्ता रहित, निश्चित । ४ लज्जा व संकोच रहित ।

निसकोच-क्रि० वि० [सं० निःसंकोच] बिना संकोच के, बेहिचक ।

निसको-देखो 'निसक' ।

निसंग (गो)-वि० [सं० निःसंग] १ निर्लिप्त, तटस्थ । २ अकेला, एकाकी । ३ स्वार्थ रहित । -पु० १ तरकस, तूणीर । २ आलिंगन । ३ एकता, मेघ । ४ जो संग न करे । ५ देखो 'निसक' ।

निसङ्गी-वि० [सं०] (स्त्री० निसङ्गी) ठोठ, निर्लज्ज, धृष्ट ।

निसंतत, निसंतति-वि० [सं० निःसंतति] निःसंतान, ओलाद रहित ।

निसंतान-देखो 'निसंतान' ।

निसंदेह-देखो 'निसंदेह' ।

निसंबल, निसंबल-वि० [सं० निःशंक] १ बिना भांजन का । भूखा । २ बेमहारा, निराश्रय ।

निसंभ-वि० १ भय रहित, निश्चय । २ देखो 'निसंभ' ।

निस-स्त्री० [सं० निशा] १ रात्रि, निशा, रात । २ हल्दी । -कर-पु० चन्द्रमा, चांद । -काम-पु० निस्वार्थ । -कामो-वि० निस्वार्थी । -कारण-वि० प्रकारण, व्यर्थ । -चर-पु० राक्षस, असुर, चोर । -चरण-पु० चन्द्रमा, चांद । -चारी, नाथ, नाथी, नायक । -पु०-चांद, चन्द्रमा । -नेत, नेत्र-पु० चन्द्रमा, राक्षस । -नैल-पु० चन्द्रमा, चांद । -पन, पति, पत्नी-पु० चन्द्रमा ।

निसकरस-पु० [सं० निष्करस] १ निर्लेप, सारांश, नतीजा, परिणाम । २ स्वर साधन की एक प्रणाली ।

निसकारी-पु० [सं० निष्कार] निराशा मुचक श्वास; निश्वास ।

निसकासित-वि०-[सं० निष्कासित] निकाला हुआ ।

निसकुट-वि० [सं० निष्कुट] घर के पास का छोटा बगीचा, वाटिका ।

निसगवह-स्त्री० [सं० निसर्ग रस] बिना उपदेश के उत्पन्न होने वाली धर्म के प्रति रुचि । श्रद्धा ।

निसचय-देखो 'निसचय' ।

निसचरत्रास-पु० [सं० निःचरत्रास] प्रकाश, उजाला ।

निसचल

(३३१)

निसासी

निसचल निसचल-पु० १ निश्चित धारणा । २ निश्चय, निर्णय । ३ निसाचर, राक्षस । ४ देखो 'निसचन' ।
 निसचारी-पु० [सं० निश्-चारिन्] राक्षस, असुर ।
 निसचं, निसची-देखो 'निसचय' ।
 निसठया-स्त्री० [देश०] एक म्लेच्छ जाति विशेष ।
 निसडु-देखो 'निसडो' ।
 निसरात-वि० [सं० निष्ठात] १ प्रवीण, निपुण । २ चतुर, होशियार । ३ पंडित, विद्वान् । -पु० श्रेय ।
 निसणी, (बी)-क्रि० [सं० निशन्] श्रवण करना, सुनना ।
 निसतस-देखो 'निसत्रंस' ।
 निसत-वि० [सं० नि-मत्य] असत्य, झूठ ।
 निसनर-देखो 'नगत' ।
 निसतरण, निसतरणी-पु० [सं० निस्तरणम्] मोक्ष, उद्धार ।
 निसतरणी, (बी) क्रि० [सं० निस्तरणम्] १ उद्धार होना, मुक्ति होना । २ देखो 'निसतरणी (बी)' ।
 निसतार-देखो 'निसतार' ।
 निसनी-वि० १ कायर, भीरु । २ चमिचहीन ।
 निसलेयस, निसलेस-देखो 'निसत्रंस' ।
 निसत्रंस-स्त्री० [सं० नाग्विश] तलवार ।
 निसत्व-वि० [सं० निःसत्व] सारहीन, तत्त्वहीन ।
 निसदीन, (दीह, दोहा)-क्रि० वि० [सं० निशद्विज, दिवस] नित्य प्रति, रोजाना, रात-दिन । हर समय ।
 निसद-पु० [सं० निःशब्द] ध्वनि रव, और, आवाज ।
 निसध-पु० [सं० निषधः] १ श्रीराज के प्रयोग का नाम । २ विधवावन पर्वत के मपीप का एक प्राचीन देश । ३ इस देश का राजा । ४ एक पर्वत का नाम । ५ देखो 'निसाद' । -वि० कठिन ।
 निसफद-वि० [सं० निम्-वध] सांसारिक उलझनों से रहित ।
 निसफजर, निसफजर-क्रि० वि० नित्य प्रति, हमेशा, रात-दिन ।
 निसफळ-देखो 'निसफळ' ।
 निसबत-१ देखो 'निसबत' । २ देखो 'रिस्वत' ।
 निसबळ-वि० [सं० निस्-बल] निर्बल, कमजोर ।
 निसमंडण-पु० [सं० निश्-मंडन] चन्द्रमा, चांद ।
 निसमुख-पु० [सं० निश्-मुख] मंध्या, मांझ ।
 निसम्बणी, (बी)-क्रि० [सं० निशमनम्] श्रवण करना, सुनना ।
 निसरप-पु० [सं० निरप] १. स्वभाव, आदत । २. प्रकृति । ३. रूप, आकृति । ४. सृष्टि । ५. दान ।
 निसरंडी-देखो 'निसडो' । (स्त्री० निसरंडी)
 निसरण-पु० [सं० निःसरण] १ निकलने का मार्ग, निकाम । उपाय, तरीका । ३ निर्वारण । ४ मरण, मृत्यु । ५ निकलने की या किया भाव ।

निसरणी-स्त्री० [सं० निश्चणी] १ शरीर की बनावट, ढांचा । २ देखो 'नीश्चणी' ।
 निसरणी-बंध-पु० [सं० निश्चणी-बंध] छप्पय शब्द का एक भेद ।
 निसरणी, (बी)-देखो 'नीसगणी' (बी) ।
 निसरम, (मौ)-वि० वेशर्म, निर्लज्ज ।
 निसर-देखो 'नमल' ।
 निसलाक-वि० [सं० निःशलाक] निर्जंत, एकांत, सुवमान ।
 निसवाद-वि० [सं० निःवाद] रहित ।
 निसवावी-वि० [सं० निःस्वाद] १ स्वाद रहित, बिना स्वाद का । २ वाद रहित ।
 निसवासर, निसवासुर-क्रि० वि० [सं० निश्-वासर] १ रात-दिवस । २ नित्य प्रति । ३ हर समय ।
 निसहर-पु० [सं० निश्-घर] १ यवन । २ निशाचर ।
 निसहाय-वि० [सं० निस्-सहाय] जिसका कोई सहायक या मददगार न हो, बेसहारा ।
 निसां-पु० [फा० निशा] छादर, सम्पान । -क्रि० वि० लिए, वास्ते । -खातर, खातिर-पु० प्राव-भगत, स्वागत ।
 निसाण-पु० [फा० निशान] १ चिह्न, निशान । २ भंगुटे या भंगुली का निशान जो अपढ़ व्यक्ति के हस्ताक्षर का प्रतीक होता है । ३ पहचान का लक्षण । ४ शरीर आदि पर पड़ा दाग या धब्बा । ५ अवशेष । ६ स्मृति, चिह्न । ७ यादगार । ८ भंडा, ध्वजा, पताका । [सं० निःस्वान] ९ नगारा ।
 निसाणची-पु० १ सेवा के आगे भंडा लेकर चलने वाला । २ निशान लगाने वाला । ३ नगाड़ा बजाने वाला ।
 निसाण-देही-स्त्री० आसामी की पहचान कराने का कार्य ।
 निसाण-बरदार-देखो 'निसाणची' ।
 निसाणि, निसाणी-स्त्री० [फा० निशानी] १ स्मृति चिह्न, यादगार । २ पहचान, चिह्न । ३ देखो 'निसाण' । ४ देखो 'नीसाणी' ।
 निसाणी-पु० [फा० निशाना] १ बार या घात करने का लक्ष्य, निशाना । २ लक्ष्य साधने का कार्य । ३ किसी की व्यंग करके कही बात, व्यंग ।
 निसांत-पु० [सं० निशांत] रात्रि का अंत, षडका, प्रभान । -वि० शांत एवं गंभीर ।
 निसांध-वि० [सं० निशांध] जिस रात को न दिखाई दे ।
 निसांत-देखो 'निसाण' ।
 निसांतची-देखो 'निसाणची' ।
 निसांत-देही-देखो 'निसाण-देही' ।
 निसांत-बरदार-देखो 'निसाणची' ।
 निसांतो-१ देखो 'निसाणी' । २ देखो 'नीसाणी' ।
 निसांतो-देखो 'निसाणी' ।
 निसांतो-१ देखो 'निस्वास' । २ देखो 'निसांतो' ।

निसा-स्त्री० [सं० निशा] १ रात्रि, रात । २ हल्दी । -वि०
 काला, श्यामः । --कर-पु० चन्द्रमा, चांद । शिव ।
 मृगा । --पूर । --चर-पु० राक्षस, असुर । गोदड़,
 गुगल । उल्लू । भूत, प्रेत । चोर । रात में विचरण करने
 वाला । --चरम-पु० घोर अंधकार । अर्थ रात्रि का
 ममय । --चरो-स्त्री० राक्षसी, पिशाचिनी । कुलटा ।
 अभिसारिका, नायिका । --घोस-पु० चन्द्रमा । --नाथ-
 पु० चन्द्रमा । --पत, पति, पती-पु० चन्द्रमा । --पुसव,
 पुस्प-पु० कुमुदिनी । --मण, मणि-स्त्री० चन्द्रमा, चांद ।
 कर्पूर । --मुख-पु० संध्या, सांझ । --रिप, रिपु-पु०
 मूर्ख । --सरीज-पु० चन्द्रमा ।

निसाचरपति-पु० [सं० निशाचरपति] १ रावण । २ बलि ।
 ३ शिव, महादेव ।

निसाचरो-वि० राक्षस संबंधी, राक्षसी आसुरी ।

निसाचारो-पु० [सं० निशाचारिन्] शिव, महादेव ।
 राक्षस, पिशाच ।

निसाट-पु० [सं० निशाट] १ राक्षस, असुर । २ मुसलमान,
 यवन । ३ उल्लू ।

निसातक-पु० [सं० निशातक] दीपक ।

निसाद-पु० [सं० निषाद] १ एक प्राचीन अनाथ जाति ।
 २ मेहत्तर, भंगी, हरिजन । चाण्डाल । ३ यवन । ४ संगीत
 के सात स्वरों में सबसे ऊंचा स्वर ।

निसादिन-देखो 'निसादिन' ।

निसादित-पु० [सं० निषादित] महावत के पैर हिलाने की
 क्रिया ।

निसादी-पु० [सं० निषादिन्] महावत, हाथीवान ।

निसानन-पु० [सं० निशा-आनन] सायकाल, सांझ ।

निसापाळ-पु० एक वर्णिक वृत्त विशेष ।

निसाफ-पु० इस्साफ, न्याय ।

निसाबळ-पु० [सं० निशाबल] रात में बलवर्ती मानी जाने
 वाली राशि ।

निसार-पु० [ग्र०] १ रुपये के चौथाई भाग के बराबर का
 एक प्राचीन सिक्का । २ न्यौछावर करने की क्रिया या
 भाव । ३ निर्यात । ४ निकलने की क्रिया या स्थान ।
 -वि० १ न्यौछावर किया हुआ । २ देखो 'निसार' ।

निसारण-पु० [सं० निःसारण] १ निकाम का मार्ग ।
 २ निकालना किया ।

निसारक-पु० [सं०] भात प्रकार के रूपक तानों में से एक ।

निसाळ, निसाळा-देखो 'निसाळा' ।

निसास, निसासउ-देखो 'निसास' ।

निसासणी, (बी)-क्रि० [सं० निःश्वासनम्] निश्वास डालना,
 दुःखी होना, चिंतित या खिन्न होना ।

निसातो-वि० (स्त्री० निसासी) १ दुःखी, चिंतित । २ खिन्न,
 बेचैन । ३ देखो 'निसास' ।

निसि-स्त्री० [सं० निशि] १ रात्रि, रजनी । २ हल्दी । -क्रि० वि०
 निश्चय पूर्वक । --नाथ, नायक, पति, पाळ-पु०
 चन्द्रमा, राक्षस ।

निसिचर-पु० [सं० निशिचर] राक्षस, असुर । --राज-पु०
 राजा बलि । रावण । विभीषण । हरिण्यकश्यप ।

निसित-पु० [सं० निशित] लोहा । वि०-तीक्ष्ण, तेज ।

निसिदीस-पु० [सं० निशा+दिवस] रात-दिन ।

निसिद्ध-वि० [सं० निषिद्ध] १ जिस पर रोक लगी हो, जिसका
 निषेध हो, मनाही हो । २ वर्जित । ३ बुरा, खराब ।

निसीअ-पु० [सं० निषीद] बैठने की क्रिया या भाव ।

निसीवान, निसीवानि-पु० [सं० निस्वान] शब्द, आवाज ।

निसीत, निसीथ, निसीषिणी, निसीथीणी-पु० [सं० निशीथ]
 १ रात, रजनी । २ अर्द्धरात्रि, आधी रात ।

निसीनर-पु० [सं० निशि-नर] राक्षस, असुर ।

निसीनेत्र-पु० [सं० निशि-नेत्र] चांद, चन्द्रमा ।

निसीम-वि० [सं० निःसीम] १ असीम, अपार । २ अत्यन्त,
 अत्यधिक ।

निसुंस-पु० [सं० निशुंभ] कश्यप एवं दनु से उत्पन्न एक परा-
 क्रमी असुर । --सरदिनी-स्त्री० दुर्गा, देवी ।

निसुणणी, (बी)-क्रि० [सं० नि+शु] १ सुनना, श्रवण
 करना । २ ध्यान देना । ३ कान लगाना ।

निसुर-वि० [सं० नि-स्वर] स्वर, आवाज, शब्द रहित,
 मूक, मौन ।

निसुरण-वि० [सं० निपूदन] विनाश करने वाला, विनाशक ।

निसेजा, निसेज्ज-स्त्री० [सं० निपेक्षा] १ किसी वस्तु के
 विकने का स्थान, हाट । २ बाट, चारपाई । ३ शय्या ।

निसेणी-देखो 'निसेणी' ।

निसेद, निसेध-पु० [सं० निषेध] १ वर्जन, मनाही, रोक ।
 २ अवरोध, रुकावट । ३ बाधा । ४ अस्वीकृति । ५ निषेध-
 वाची नियम । ६ अपवाद, खण्डन ।

निसेधक-पु० [सं० निषेधक] रोकने वाला, निषेध करने वाला ।

निसेधणी (बी)-क्रि० [सं० निषेधनम्] १ निषेध करना,
 रोकना । २ बाधा देना, अवरोध खड़ा करना । ३ अस्वी-
 कृत करना । ४ अपवाद करना, खण्डन करना ।

निसेधोप-वि० [सं० निषेधित] परिसेधित (जैन) ।

निसेस-पु० [सं० निशीश] चन्द्रमा ।

निसंनी-देखो 'निसेणी' ।

निसोग, निसोच-वि० [सं० निःशोक] १ निश्चित । २ प्रसन्न,
 खुश ।

निसीत, निसीय-स्त्री० [निश०] एक प्रकार की लता ।
 निस्कटक-वि० [सं० निष्कटक] १ कांटों से रहित । २ विघ्नों से रहित । ३ दुःखों से रहित ।
 निस्कंठ-पु० [सं० निष्कंठ] यरुण नामक पेड़ ।
 निस्कण-वि० [सं० निष्कण] कंठ रहित, अर्चवल, स्थिर ।
 निस्कम्भ-पु० [सं० निष्कम्भ] गण्ड के एक पुत्र का नाम ।
 निस्क-पु० [सं० निष्क] एक प्रकार की स्वर्ण मुद्रा ।
 निस्कपट-वि० [सं० निष्कपट] छल रहित, कपट रहित ।
 सीधा, सरल । --ता-स्त्री० कपट रहित होने का भाव, सरलता, सीधापन ।
 निस्कपटी-वि० [सं० निष्कपटी] कपट रहित, छल रहित ।
 सीधा, सरल ।
 निस्करम, निस्करमी-वि० [सं० निष्कर्मन्] जो कर्मों में लिप्त न हो, अकर्मा, कर्म रहित ।
 निस्करुण-वि० [सं० निष्करुण] जिसमें करुणा न हो, निष्ठुर, बेरहम ।
 निस्कलक-वि० [सं० निष्कलक] बिना कलंक वाला, बेदाग, निर्दोष । --तीरथ-पु० एक पौराणिक तीर्थ ।
 निस्कल-वि० [सं० निष्कल] १ कला रहित । २ पूरा, समस्त ।
 ३ नपुंसक । ४ बृद्ध, बुढ़ा । --पु० ब्रह्मा ।
 निस्कांम-देखो 'निकांम' ।
 निस्कांमी-देखो 'निकांमी' ।
 निस्कारण-वि० [सं० निष्कारण] अकारण, व्यर्थ ।
 निस्कमण-पु० [सं० निष्कमण] बाहर निकलने की क्रिया या भाव । निकास ।
 निष्क्रिय-वि० [सं० निष्क्रिय] क्रियाहीन, उद्यमहीन, कर्मशून्य, निश्चेष्ट ।
 निष्क्रियता-वि० [सं० निष्क्रियता] क्रियाहीनता, उद्यमहीनता, कर्मशून्यता, निश्चेष्टता ।
 निस्क्लेश-वि० [सं० निष्क्लेश] क्लेशों से मुक्त ।
 निस्चद, निस्चय-पु० [सं० निश्चय] १ निर्णय, फैसला ।
 २ स्थिर विचार, इरादा । ३ अवश्य घटित होने वाली स्थिति । ४ तय करने की क्रिया या भाव । ५ यकीन, विश्वास । ६ संकल्प । ७ शोध, खोज ।
 निस्चयांतर-धाति-जथा-स्त्री० संदेह अलंकार के योग से रचित डिगल गीत ।
 निस्चर-पु० [सं० निश्चर] एकादश मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक ।
 निस्चल (ल)-वि० [सं० निश्चल] १ मंचल, स्थिर । २ अविचल, दृढ़, अटल । ३ शान्त, अर्चंचल । ४ अपरिवर्तनीय । ५ परब्रह्म । ६ देखो 'निमचल' ।

निस्चलता-स्त्री० [सं० निश्चलता] १ स्थिरता, दृढ़ता । २ अविचलता, शांति ।
 निश्चित-वि० [सं० निश्चित] चिता गृहीत, बांधक, मन्त ।
 निश्चितता-स्त्री० [सं० निश्चितता] वेफिकी, मस्ती । चिताओं से मुक्ति ।
 निश्चित-वि० [सं० निश्चित] १ तय किया हुआ, तयमुदा । २ निर्णीत । ३ पक्का, दृढ़ । ४ अवश्यभावी ।
 निश्चिच्छ-देखो 'निश्चिच्छ' ।
 निश्चि-स्त्री० [सं० निश्चि] प्रसुरों की माता दिति का एक नाम ।
 निष्ठा-स्त्री० [सं० निष्ठा] १ ईश्वर, धर्म या गुरु जनों के प्रति होने वाली श्रद्धा, भक्ति । २ दृढ़ विश्वास । ३ प्रगाढ़, अनुराग । ४ अत्यन्त आदर की भावना । ५ जीव और ब्रह्म की एकता की स्थिति, चरम स्थिति । ६ चित्त की स्थिरता, मन की एकाग्रता । ७ दृढ़ निश्चय । ८ अवस्था, स्थिति । ९ निर्वाह । १० ठहराव । ११ प्रतिष्ठा । १२ उत्कृष्टता । १३ निपुणता । १४ इति, समाप्ति । १५ नाश, विनाश । १६ प्रलय के समय विष्णु की समस्त भूतों में होने वाली स्थिति । --वांत-वि० जो निष्ठा रखता हो, श्रद्धालु ।
 निष्ठुर-वि० [सं० निष्ठुर] १ दया, करुणा आदि कोमल भावनाओं से रहित । रूखा । २ क्रूर, निर्दयी । ३ कटु, अप्रिय । ४ मज्ज, कठोर ।
 निष्ठुरता, निष्ठुराई-स्त्री० १ क्रूरता, बेरहमी, निर्दयता । २ कठोरता, कड़ाई ।
 निस्तरण-पु० [सं० निस्तरणम्] १ तरना, पार होना क्रिया । २ उद्धार, मुक्ति, छुटकारा ।
 निस्तरणी (बी)-क्रि० [सं० निस्तरणम्] १ तरना, पार होना । २ मुक्त होना, छूटना । ३ देखो 'निस्तरणी' (बी) ।
 निस्तरियउ-वि० [सं० निस्तीर्ण] मुक्त, छूटा हुआ । उद्धरित ।
 निस्तार-पु० [सं०] १ छुटकारा, मुक्ति । २ मोक्ष, निर्वाण । ३ पार होना क्रिया । ४ वचाव । ५ उपाय जरिया, माध्यम । ६ ऋण से छुटकारा ।
 निस्तारण-वि० [सं० निस्तारण] १ उद्धार करने वाला । २ तारने वाला, पार करने वाला । ३ मुक्त करने वाला, छोड़ने वाला । ४ बनाने वाला । ५ देखो 'निस्तार' ।
 निस्तारणी (बी)-क्रि० [सं० निस्तरणम्] १ तारना, पार करना । २ उद्धार करना, मुक्त करना । ३ छुड़ाना ।
 निस्तारी-देखो 'निस्तार' ।
 निस्तेज-वि० [सं०] १ तेज, आभा या कांति रहित । २ मंद, फीका । ३ मलिन । ४ अग्निहीन । ५ उष्णता शून्य । ६ नपुंसक । ७ सुस्त, आलसी । ८ धुंधला ।

निष्पक्ष

(७७४)

निहाई

निष्पक्ष (वि०)—वि० [सं० निष्पक्ष] १ पक्षपात रहित । २ तटस्थ ।
३ सही वस्तु वाता ।

निष्पक्षता निष्पक्षता—स्त्री० [सं० निष्पक्षता] १ पक्षपात
हीनता । २ तटस्थता । ३ स्पष्टवादिता ।

निष्पन्न—वि० [सं० निष्पन्न] १ पुर्ण, पूरा । २ समाप्त, पूर्ण ।

निष्प्रभ—वि० [सं० निष्प्रभ] १ कानि, आभा व तेज रहित ।
२ मद धुंधला । ३ अशक्त ।

निष्प्रयोजन—वि० [सं० निष्प्रयोजन] १ प्रयोजन, कारण या
मतलब रहित । २ व्यर्थ, निरर्थक । ३ जिसमें अर्थमिद्धि
न हो । —क्रि० वि० अकारण मे व्यर्थ में ।

निष्प्राण—वि० [सं० निष्प्राण] प्राण रहित मृत ।

निस्प्रिय—वि० [सं० निष्प्रिय] लोभ या कामना रहित ।

निष्फल—वि० [सं० निष्फल] १ फल, रहित, परिणाम रहित ।
२ उणलक्षि रहित । ३ व्यर्थ, निरर्थक ।

निष्पीबटाई—स्त्री० जागीरदार व किसान के बीच फसल का
प्राधा-प्राधा बंटवारा, विभाजन ।

निस्वत, निस्वत—स्त्री० [अ०] १ अपेक्षा, आशा । २ तुलना,
मुकाबला । ३ संबंध, लगाव । ४ समता, बराबरी ।
५ नारी, धीरत । ६ देखो 'रिस्वत' ।

निश्चेष्टका निश्चेष्टिका, निश्चेष्टी—स्त्री० [सं० निश्चेष्टी]
१ सीढ़ी, जीना । २ मुक्ति । ३ खजुर का पेड़ । ४ एक
मात्रिक छंद विशेष ।

निश्चेष्ट—पु० [सं० निश्चेष्ट] प्रपयश, कलंक, बदनामी ।

निश्चेष्टस—पु० [सं० निश्चेष्टस] मोक्ष, कल्याण ।

निश्वास—पु० [सं० निश्वास] १ प्राण वायु नाक से निकलने
का कार्य व्यापार । २ उसास निश्वास । ३ तड़फ, आह ।
—वि० मृत प्रायः, वेदम ।

निश्वासन—पु० [सं० निःस्वासन] चोगसी प्राणनों में से एक ।

निस्संक—वि० [सं० निःशंक] निमंथ, शंका रहित, बेधड़क ।

निस्संतान—वि० [सं० निःसन्तान] संतति रहित, नाश्रीलाद ।

निस्संदेह, निस्संस—क्रि० वि० [सं० निःसंदेह] बिना संदेह के,
वेकश । —वि० १ संदेह रहित । २ पूर्णतया मान्य ।

निस्सार—वि० [सं० निःसार] सारहीन, तस्वहीन । व्यर्थ ।

निस्सेत—पु० [सं० निःश्रेयस] मोक्ष, कल्याण (जैन) । —वि०
[सं० निःश्रेय] सम्पूर्ण, समूचा । बिना बचा ।

निस्संत—पु० [सं० निस्संत] तलवार के ३२ हाथों में से एक ।

निस्सबाहु—वि० [सं०] बिना स्वाद का, स्वाद रहित ।

निस्सकार्य—वि० [सं० निस्सार्थ स्वार्थ] की भावना से रहित ।

निहय—वि० [सं० निःसंग] १ निःशुभ । २ वस्त्रहीन, नग्न ।
३ विरक्त, उदास । ४ पृथक, अलग । ५ जो किसी पर
अनुरक्त न हो । [फा०] एकाकी, अकेला । —पु० [देश०]

१ घोड़ा, अश्व । २ आकाश, आसमान । ३ स्वर्ग ।

४ शिव, महादेव । ५ पक्षी, खग । ६ घड़ियाल, मगर ।

७ देखो 'नैग' । — राज—पु० सूर्य ।

निहंगसावज्ञही—पु० दिगल का एक छन्द विशेष ।

निहाय—देखो 'निहंग' ।

निहटो—वि० यादवा, वीर ।

निहस—देखो 'निहंग' ।

निहंसणी (बो)—देखो 'निहंसणी' (बो) ।

निहकट, निहकंटक—देखो 'निस्कंटक' ।

निहकप—देखो 'निस्कप' ।

निहकरम (सां)—देखो 'निस्करम' ।

निहकांष (सो)—१ देखो 'निमकांष' । २ देखो 'निकांष' ।

निहकुण, निहकुण—पु० [सं० निहकुण] शब्द, आवाज ।

निहखरणी (बो)—क्रि० [सं० निःखटन] खूब तेज दौड़ाना,
हांकना ।

निहघाउ—पु० [सं० निघोष] गहर, घोष ।

निहचंत—देखो 'निश्चिन' ।

निहचळ, निहचल—देखो 'निश्चळ' ।

निहचं, निहचो—देखो 'निश्चय' ।

निहटणी (बो)—देखो 'निहटणी' (बो) ।

निहणणी (बो)—क्रि० [सं० निहणण] १ मारना, संहार
करना । २ दमन करना ।

निहतरणी (बो)—देखो 'निमंत्रणी' (बो) ।

निहतारय—पु० [सं० निहतार्थ] एक माण्डित्यक दोष विशेष ।

निहत्त—पु० [सं० निधत्त] स्थापित करने की क्रिया (जैन) ।

निहत्थो, निहत्थ, निहत्थो—वि० [सं० निःहत्त] १ जिसके हाथ में
अस्त्र-शस्त्र न हो, निहत्था । २ खाली हाथ । ३ निधन ।

निहत्वाळणी (बो)—क्रि० [देश०] खड्डे में डालकर दबा देना ।

निहली, निहल्ल—वि० [सं० निःहल्लतम्] (स्त्री० निहली, निहल्ली)
१ निष्फल, बेकार । २ गतिहीन ।

निहस—स्त्री० [देश०] १ प्रहार, चोट । २ ध्वनि, घोष ।

निहसणी (बो), निहसणी (बो)—क्रि० [देश०] १ बाघ आदि
बजना, ध्वनि करना । २ गरजना । ३ भयानक आवाज
करना । ४ हंसना । ५ जोश में घाना, जोश खाना ।
६ बरसना, बौछार होना । ७ चमकमाना, चमकना ।
८ वीर गति प्राप्त करना मरना । ९ संहार करना,
मारना । १० प्रहार करना ।

निहाण—देखो 'निधान' ।

निहाई, निहाइ, निहाई—स्त्री० [सं० निघात] १ प्रहार ।
२ ध्वनि, आवाज । ३ शोरगुल, हल्ला । ४ स्वर्णकार या
लोहारों का अद्ययन ।

निहाज

(७७५)

नीमेङ्गणी

निहाज (ऊ)-देखो 'निहाज' ।

निहाज-स्त्री० [सं० निहवः निह्विद] १ नगाड़े की ध्वनि, आवाज । २ नाद, शब्द, ध्वनि ।

निहायत-वि० [प्र०] अत्यन्त, बहुत । -स्त्री० सोमा, हृद ।

निहार-पु० [सं० निभालनम्] देखना क्रिया, अवलोकन ।

निहारणी (बो)-क्रि० [सं० निभालनम्] १ देखना, अवलोकन करना । २ दर्शन करना । ३ चाव से देखना । ४ ध्यान से देखना, भांकना । ५ ध्यान देना । ६ जानना, महसूस करना ।

निहारी-वि० पृथक, अलग, दूर ।

निहाळ, निहाल-वि० [फा० निहाल] १ मालामाल, धन दौलत से परिपूर्ण । २ सफल, कृत-कृत्य, कृतार्थ । ३ जिसकी मनोकामना पूर्ण होगई हो । ४ अत्यन्त प्रसन्न, खुश । ५ देखो 'निहार' ।

निहाळणी, (बो), निहालणी, (बो)-क्रि० [सं० निभालनम्] १ खोजना, ढूँढना । २ मनुष्य करना । ३ प्रसन्न, खुश करना । ४ कृत-कृत्य करना । ५ देखो 'निहारणी' (बो) ।

निहाव-पु० [सं० निघाति] १ ध्वनि, शब्द, आवाज । २ प्रहार । ३ लोहे का घन, हथोड़ा । ४ आकाश, ग्राममान ।

निहावणी, (बो)-क्रि० [सं० निभालनम्] १ शोभित होना, शोभा देना । २ सुन्दर लगना । ३ देखो 'निहारणी' (बो) ।

निहिचळ, निहिचल-देखो 'निश्चळ' ।

निहिवास-देखो 'निवास' ।

निहीं, निही-देखो 'नहीं' ।

निहूतणी, (बो)-देखो 'निमगणी' (बो) ।

निहुरा-देखो 'नी'रा' ।

निहेरणी, (बो)-क्रि० [सं० निभालनम्] १ खोजना, ढूँढना । २ देखो 'निहारणी' (बो) ।

निहोर, निहोरणी-देखो 'नी'रा' ।

निहोरणी, (बो)-क्रि० [सं० निछोरणी] १ मनोनी करना, प्रार्थना करना । २ आग्रह करना, अनुरोध करना । ३ गरज करना, खुशामद करना । ४ देखो 'निहारणी' (बो) ।

निहोरा-देखो 'नी'रा' ।

नी-देखो 'नी' ।

नीखणी, (बो)-देखो 'नाखणी' (बो) ।

नीगमणी (बो)-क्रि० [सं० निर्गमयति] १ व्यतीत करता, गुजारना २ जाना, निकलना ।

नीगळणी (बो)-देखो 'निगाळणी' (बो) ।

नीगा-देखो 'नैंगो' ।

नीगाळणी (बो)-देखो 'निगाळणी' (बो) ।

नीगाह-देखो 'नैंगो' ।

नीछटणी (बो)-देखो 'नीछटणी' (बो) ।

नीछारडी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता ।

नीजांमा-देखो 'नीजांमा' ।

नीभर-देखो 'निभर' ।

नीठ-देखो 'नीठ' ।

नीठणी (बो)-देखो 'निठणी' (बो) ।

नीठर-देखो 'निठर' ।

नीडो-देखो 'निसडो' ।

नीत्रेडो-वि० अनुपयुक्त, बेकार ।

नीद-स्त्री० [सं० निद्रा] १ जमाई को गाया जाने वाला गीत, लोक गीत । २ देखो 'निद्रा' ।

नीदक-देखो 'निदक' ।

नीदळणी, नीदड़ी-देखो 'निद्रा' ।

नीदणी (बो)-देखो 'निदणी' (बो) ।

नीदळ-वि० १ अधिक नीद लेने वाला । २ आलसी, सुस्त । ३ निकम्मा ।

नीदव-वि० [सं० निन्द] १ निन्दनीय । २ निन्दक ।

नीदवणी (बो)-१ देखो 'नीदवणी' (बो) । २ देखो 'निदणी' (बो) ।

नीदवो-देखो 'नीदव' ।

नीदाणी (बो)-क्रि० [सं० निद्रा] १ निद्रित करना, सुलाना । २ निद्रा कराना, बुराई कराना । [सं० निदि] ३ दीपक बुझाना ।

नीदाळ-वि० १ जिसकी निद्रा होती हो, निद्रित । २ निद्रित ।

नीदाळकी, नीदाळ-देखो 'निद्राळ' ।

नीदाळुड, नीदाळू (ळी)-वि० निद्रा में मग्न, निद्रित ।

नीद, नीदड़ी, नीदा-देखो 'निद्रा' ।

नीप-देखो 'निप' ।

नीपणी (बो)-देखो 'नीपणी' (बो) ।

नीब-देखो 'नीम' ।

नीबणी-वि० [सं० नेम-गोल] जिसका आधा भाग गोल हो ।

नीबळणी (ली), नीबड़ी, नीबड़ी-देखो 'नीम' ।

नीबज-स्त्री० झालरा पाटण क्षेत्र में बहने वाली एक नदी ।

नीवू, नीवूड़ी-पु० [सं० निम्बूक] १ मध्यम कद का एक झाड़ी नुमा वृक्ष व इसका फल, नीवू । २ एक लोक गीत ।

नीवो-१ देखो 'निवारक' । २ देखो 'नीम' ।

नीम-१ देखो 'नीव' । २ देखो 'नीम' ।

नीमजणी (बो)-१ देखो 'निमजणी' (बो) । २ देखो 'नीमजणी' (बो) ।

नीमजर-देखो 'नीमजर' ।

नीमजाणी (बो), नीमजावणी (बो)-१ देखो 'निमजाणी' (बो) । २ देखो 'निमजाणी' (बो) ।

नीमणी (बो)-देखो 'निमणी' (बो) ।

नीमेङ्गणी (बो)-देखो 'निमेङ्गणी' (बो) ।

नीच-स्त्री० [सं० नेमि] १ दीवार बनाने के लिए खोदा जाने वाला लम्बा और गहरा खड्डा । २ इस खड्डे में बनी दीवार । ३ आधार । ४ स्थिति । ५ जड़, भूल ।

नीचड़णी(बो)-१ देखो 'निपटणी'(बो) । २ देखो 'निवड़णी'(बो) । नीचत-देखो 'नीयत' ।

नीचड़णी (बो)-१ देखो 'निपटणी' (बो) । २ देखो 'निवड़णी' (बो) ।

नीसरणी (बो)-देखो 'नीसरणी' (बो) ।

नीसाण-पु० [सं० निस्वन] नगाड़ा ।

नी-पु० [सं०] १ प्रेम, स्नेह । २ नृप, राजा । ३ शामक । -स्त्री० ४ अनन्य भक्ति । ५ दवा, औषधि । -वि० १ अत्यधिक, ज्यादा । २ निरोग, स्वस्थ । -प्रत्य० सम्बन्ध या पृष्ठी विभक्ति के 'ना' का स्त्री रूप; की । -अव्य० एक भारदर्शक या अनुसंधान सूचक अव्यय । देखो 'नीही' । देखो 'नि' ।

नीह-देखो 'नीति' ।

नीक-स्त्री० [सं० नीका] १ मिथाई के लिये बनी पानी की नाली । २ देखो 'नीकी' ।

नीकड़-पु० [सं० निष्कः] १ स्वर्ण का हार । २ सोना, स्वर्ण । ३ सीने का एक तौल विशेष । ४ देखो 'नीकी' ।

नीकळक-देखो 'निकळक' ।

नीकळणी (बो)-देखो 'निकळणी' (बो) ।

नीकां-क्रि० वि० ठीक तरह से, अच्छी प्रकार से ।

नीकाळ-देखो 'निकाळ' ।

नीकाह-देखो 'निकाह' ।

नीकी-वि० [सं० निरक्त] (स्त्री० नीकी) १ अच्छा, ठीक । २ ओष्ठ, बढ़िया, उत्तम । ३ सुन्दर, भला । ४ सम्मान योग्य । ५ स्वस्थ, दुरुस्थ ।

नीखर-वि० [सं० निखरण] स्वच्छ, निर्मल, साफ ।

नीखरणी (बो)-देखो 'निखरणी' (बो) ।

नीखावा-पु० [देशज] केवट ।

नीयम-देखो 'नियम' ।

नीयमणी (बो)-क्रि० [सं० निर्गमनम्] १ गमन करना, जाना ।

२ निकलना, निकास होना । ३ खोना, गमाना । ४ व्यतीत करना, विताना । ५ प्रदान करना, देना । ६ साबित होना, प्रमाणित होना, सिद्ध होना । ७ प्रसार करना, फैलाना ।

नीगळणी (बो)-देखो 'निगळणी' (बो) ।

नीगवणी (बो)-क्रि० १ पसारना फैलाना । २ देखो 'नीगमणी' (बो) ।

नीघरियो-वि० [सं० नि-गृह] जिसके घेर न हो, गृहहीन ।

नीघात-देखो 'निघात' ।

नीड़-पु० [सं० नोड] १ पक्षियों का घोंसल । २ रहने का स्थान, निवासस्थान । ३ विश्राम स्थल । ४ स्थान, जगह । ५ गुफा, पद । ६ शय्या । ७ नदी किनारे बसा नगर, ग्राम । ८ कूप से सींचा जाने वाला भू-भाग । -स्त्री० ९ नदी, सरिता । -वि० १ स्तुति योग्य । २ देखो 'निकट' ।

नीड़े, नीई-देखो 'निकट' ।

नीड़ी-देखो 'निकट' ।

नीचंग, नीचंग-पु० [सं० नीचंग] पानी, जल ।

नीच, नीचड़-वि० [सं०] १ निकृष्ट, बुरा, अधम । २ कर्म जाति व गुणों से न्यून, तुच्छ । ३ अल्प, थोड़ा । ४ हेय घृणित । ५ निकम्मा । ६ दुष्ट, कमीना, क्षूद्र । ७ छोटा, बौना । ८ मंद । -पु० १ छोछा आदमी, क्षूद्र मनुष्य । २ किसी ग्रह के अग्रण वृत्त का वह स्थान जो पृथ्वी के अधिक निकट हो । ३ फलित ज्योतिष में किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवां स्थान । ४ चौर नामक ग्रन्थ द्रव्य । ५ दशार्ण देश के एक पर्वत का नाम । ६ शूद्र वर्ण । ७ देखो 'नीची' । -कमाई-स्त्री० घुने कामों से अर्जित धन । घृणित धधा । -गामी-वि० नीचे जाने वाला । नीच कर्मी ।

नीचंग-पु० [सं०] १ अपने उच्च स्थान से सातवें स्थान पर पड़ने वाला ग्रह । २ पानी, जल । -वि० १ नीच, पाप्य । २ नीचे जाने वाला ।

नीचगा-स्त्री० [सं०] नदी, सरिता ।

नीचगिरि, नीचगिरी-पु० दशार्ण देश का एक पर्वत ।

नीचग्रह-पु० [सं० नीचग्रह] किसी ग्रह के उच्च स्थान से गिनती में सातवां स्थान ।

नीचता-स्त्री० [सं०] १ क्षूद्रता, नीचा कार्य । २ ओछापन, तुच्छता । ३ दुष्टता, कमीनापन । ४ दुष्कर्म ।

नीचधूणियो-वि० नीची गर्दन करके चलने वाला ।

नीचरली, नीचली-देखो 'निचली' । (स्त्री० नीचली)

नीचांत-स्त्री० नीची भूमि, दलवां स्थान किसी स्थान या वस्तु की नीचाई ।

नीचाई-देखो 'निचाई' ।

नीचित, नीचीत-देखो 'निश्चित' ।

नीचे, नीचै-क्रि० वि० [सं० नीचै] १ निम्न भाग में । २ दबकर । ३ अधीनता में । ५ तुलना में, निम्न स्थिति में । ५ ऊपर से विपरीत दशा में । ७ घटी हुई या न्यूनतर दशा में ।

नीचोड़-देखो 'निचोड़' ।

नीचोड़णी (बो), नीचोणी (बो), नीचोवणी (बो)-देखो 'निचोड़णी' (बो) ।

नोचो

(७७७)

नोपणी

नोचो-वि० [स० नीच] (स्त्री० नीची) १ जो न्यूनता, झुकाव, उतार या तल के पास की स्थिति में हो। २ उच्चता की तुलना में कम। ३ झुका हुआ, नत। ४ ढलुवां, ढालू। ५ निश्चित सीमा में नीचे आया हुआ। ६ नीच, निकृष्ट। ७ क्षुद्र, ओछा। ८ मध्यम, क्षीमा।
-क्रि० वि० नीचे की तरफ।

नोछटणी (बो), नोछटणी (बो), नोछटणी (बो)-क्रि०
१ फेंकना, छोड़ना। २ प्रहार करना।

नोजण, नोजण (णी)-देखो 'निरजण'।

नोजांमा-पु० [देश०] मल्लाह, केवट।

नोजुङणी (बो)-देखो 'निजोङणी' (बो)।

नोजाण (णी)-वि० [सं० निर्वर्णि] ध्वनि रहित, शान्त, सुप।

नोझर, नोझरण-१ देखो 'निरझरण'। २ देखो 'नीझरण'।

नोझरणो-पु० [सं० निर्झर] १ आँसू, अश्रु। २ देखो 'निरझर'।

नोझरणो (बो)-क्रि० [सं० निर्झर] १ टपकना, भरना, चूना।
२ आँसू बहना।

नोझांमणी (बो)-क्रि० पार पड़वाना।

नोठ-क्रि० वि० [सं० निष्ठा] १ मुश्किल से, कठिनाई से।

२ बहुत प्रतीक्षा के बाद। -वि० मुश्किल, कठिन।

नोठणी (बो)-देखो 'निठणी' (बो)।

नोठर-देखो 'निष्ठुर'।

नोठां, नोठांनोठ, नोठांनोठि-क्रि० वि० बड़ी मुश्किल से, कठिनाई से। जंग-तंगे।

नोठाणी (बो)-देखो 'निठाणी' (बो)।

नोठांनोठ, नोठांनोठि-देखो 'नोठांनोठि'।

नोठावणी (बो)-देखो 'निठावणी' (बो)।

नोठि, नोठी-देखो 'नीठ'।

नोठोनीठ-देखो 'नीठांनीठ'।

नोडज-पु० [सं०] पक्षी।

नीत-१ देखो 'नीयत'। २ देखो 'नीति'। ३ देखो 'नेती-धोती'।

नीतचारी-वि० [सं० नीति-चारिन्] नीति के अनुसार आचरण।

नीतरणी (बो)-क्रि० [सं० निस्तरणम्] १ पानी या द्रव पदार्थ में घुली वस्तु का पेंदे या तल में बैठना। २ उक्त क्रिया से द्रव पदार्थ का स्वच्छ होना। ३ सारहीन होना, तत्त्व रहित होना।

नीतवंत, नीतवान-देखो 'नीतिवान'।

नीतसास्त्र-देखो 'नीतिमास्त्र'।

नीतार-पु० १ पानी या द्रव पदार्थ में घुली वस्तु पेंदे में बैठ जाने पर पदार्थ में होने वाली स्वच्छता। २ इस तरह स्वच्छ हुआ द्रव पदार्थ। ३ तल में बैठी हुई वस्तु। ४ सार, सारांश।

नीतारणी (बो)-क्रि० [सं० निस्तरणम्] १ पानी आदि में घुल पदार्थ को तल में बैठने देना। २ ऐसी व्यवस्था करके द्रव पदार्थ को स्वच्छ करना। ३ स्वच्छ हुए द्रव पदार्थ को धीरे-धीरे दूसरे पात्र में लेना। ४ सारहीन करना, तत्त्वहीन करना।

नीति, नीती-स्त्री० [सं० नीति] १ समाज की बुराई न करते हुए अपनी भलाई करने की क्रिया। २ लौकिक व शास्त्रोक्त मर्यादा के अनुसार आचरण। ३ अच्छा आचरण, सदाचार। ४ व्यवहार की रीति, पद्धति। ५ कार्य सिद्धि या स्वार्थ सिद्धि के लिये प्रयुक्त युक्ति। ६ चाल-चलन, व्यवहार। ७ अनुशासन। ८ उपयुक्तता। ९ राज्य या शासन चलाने की प्रमुख चार पद्धतियाँ। १० राजनीति। ११ सिद्धान्त। १२ उपयुक्त कार्य या व्यवहार। —वि० नीतिकुशल। —मान, वंश, वान-वि० नीति को मानने वाला, नीति परायण, सदाचारी। —सास्त्र-पु० वह ग्रंथ या शास्त्र जिसमें आचार-व्यवहार तथा शासन के विधान का वर्णन हो।

नीतीतायो, नीततायो, नीतीतायो-देखो 'नीतीतायो'।

नीद, नीदल्ली, नीदड़ी-देखो 'निद्रा'।

नीदाल, नीदाल, नीदालू-देखो 'निद्रालू'।

नीद्र, नीद्रदं, नीद्रलड़ी-देखो 'निद्रा'।

नीधणि, नीधणिकी, नीधणियो, नीधणी-वि० बिना मालिक का, लावारिस।

नीधनी-देखो 'निधन'।

नीधस-स्त्री० तगाड़े या बाज की ध्वनि।

नीधसणी (बो)-क्रि० [देश०] १ तगाड़े की ध्वनि होना, बजना। २ बाजे बजना।

नीधस-देखो 'नीधस'।

नीधसणी (बो)-देखो 'नीधसणी' (बो)।

नीप-देखो 'निय'।

नीपक-पु० [देश०] १ याचक। २ कवि। ३ पंडित।

नीपज-स्त्री० [सं० निष्पदनम्] १ उपज, पैदावार। २ उत्पत्ति।

नीपजणी (बो)-क्रि० [सं० निष्पदनम्] १ उपजना, पैदा होना। २ प्रकुरित होना। ३ उत्पन्न होना। ४ बढ़ना, बड़ा होना। ५ वृद्धि होना, बढ़ना। ६ पकना। ७ तैयार होना बनना।

नीपजणी (बो), नीपजणी (बो)-देखो 'निपजणी' (बो)।

नीपण-पु० [सं० लेपनम्] १ आंगन में गोबर आदि का लेपन। २ लेपन क्रिया। ३ देखो 'निपुण'।

नीपणी (बो)-क्रि० [सं० लेपनम्] १ आंगन में लेपन करना, लीपना। २ बोपना। ३ पीतना। ४ देखो 'नीपजणी' (बो)।

नीप-

नीपनणी (बो)-देखो 'नीपजणी' (बो) ।

नीपवण (न)-वि० उत्पन्न करने वाला, उत्पादक ।

नीपाणी (बो), नीपावणी (बो)-क्रि० १ आगन में लेपन कराना ।

२ थोपाना । ३ पोताना । ४ देखो 'निपजणी' (बो) ।

नीपियो-पोतियो-वि० लिपा-पुता ।

नीब, नीबड़, नीबड़लौ, नीबड़ियो, नीबड़ी, नीबड़ी-देखो 'नीम' ।

नीबाण-स्त्री० नीबू का वृक्ष ।

नीबात-पु० [सं० नवनीत] १ मक्खन, नवनीत । २ मिश्री ।

-वि० १ कायर, डरपोक । २ कमजोर, अशक्त ।

नीबाव-देखो 'नबाव' ।

नीबी-स्त्री० [सं० निविकृतिक] विकृति पैदा करने वाले पदार्थों के त्याग का नाम (जैन) ।

नीबीजी-देखो 'निरबीजी' ।

नीबू, नीबूड़ी, नीबूड़ी-देखो 'नीबू' ।

नीबीली-देखो 'निबीली' ।

नीभर-१ देखो 'निरभय' । २ देखो 'निरभर' ।

नीमत-देखो 'निमित्त' ।

नीम-पु० [सं० निम्ब] १ एक प्रसिद्ध व बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते, छाल व मजरी औषधि में काम आते हैं । २ गहराई ।

३ तालाब के मध्य स्थान की गहराई व कटोरता ।

४ देखो 'नियम' । -वि० [फा०] आधा, अर्द्ध ।

देखो 'नीव' ।

नीमगिलोय-स्त्री० गिलोय नामक लता ।

नीमड़-देखो 'नीम' ।

नीमड़णी (बो)-क्रि० [सं० निवर्तनम्] १ नष्ट होना, बर्बाद होना । २ समाप्त होना । ३ मर्यादा छोड़ना । ४ उत्तर-दायित्व निभाना । ५ देखो 'निपटणी' (बो) । ६ देखो 'निवड़णी' (बो) ।

नीमड़ली (बो), नीमड़ियो, नीमड़ो, नीमड़ो-देखो 'नीम' ।

नीमचमेली-स्त्री० सफेद फूलों वाला एक वृक्ष ।

नीमचा-स्त्री० [फा०] एक प्रकार की तलवार ।

नीमजणी (बो)-क्रि० [सं० निष्पदनम्] १ ठानना, तय करना । [सं० निमज्जनम्] २ घुमना, प्रविष्ट होना । ३ देखो 'नीपजणी' (बो) ।

नीम-जमीर-स्त्री० [सं० निम्ब-जमीर] एक प्रकार का वृक्ष ।

नीमजर-स्त्री० [सं० निम्ब + रा० जर] नीम पर आने वाली बीर ।

नीमटणी (बो), नीमड़णी (बो)-१ देखो 'निवड़णी' (बो) । २ देखो 'निपटणी' (बो) ।

नीमड़ी-देखो 'नीम' ।

नीमण-वि० [सं० निर्मन] १ जो थोथा या पोपला न हो, ठोम । २ निरोम । ३ पुष्ट । ४ दृढ़, मजबूत । ५ अच्छा, भला ।

नीमणायत-वि० [देश०] मजबूत, दृढ़ ।

नीमणी (बो)-क्रि० [सं० निमित] १ संकल्प करना । २ दृढ़ निश्चय करना । ३ प्राप्त करना, पाना । ४ बनाना, निर्मित करना ।

नीमतणी (बो)-क्रि० [सं० निमितम्] १ किमी के निमित्त करना, किमी के लिए करना । २ देखो 'निमंत्रणी' (बो) ।

नीमवण-वि० [सं० निमंतम्] रचने वाला, रचयिता ।

नीमवर-पु० [फा०] कुश्ती का एक पेश ।

नीमसारण्य-देखो 'नेमिसारण्य' ।

नीमाणी (बो), नीमावणी, (बो)-देखो 'नमाणी' (बो) ।

नीमावत-पु० १ निम्बकाचार्य का अनुयायी । २ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद । ३ रामावत माधुर्यों की एक शाखा ।

४ इस शाखा का अनुयायी ।

नीमियो-वि० १ नियम या वतधारी । २ संकल्पित ।

नीमोली-देखो 'निमोली' ।

नीमी-देखो 'नमी' ।

नीयता-देखो 'नियता' ।

नीय-१ देखो 'निज' । २ देखो 'नीचे' । ३ देखो 'नीच' ।

नीयत-स्त्री० [अ०] १ आन्तरिक इच्छा, मनोवृत्ति । २ भावना, विचारधारा । ३ उद्देश्य, लक्ष्य । ४ संकल्प । ५ नीति ।

नीयति-देखो 'नियति' ।

नीयांणा-देखो 'नियांण, नियांण' ।

नीयाळ-देखो 'निहाल' ।

नीरग, नीरगु-देखो 'निरंग' ।

नीर-पु० [सं० नीरम्] १ जल, पानी । २ रस । ३ ओज । ४ शोभा, कांति, दीप्ति । ५ गौरव, मान, प्रतिष्ठा ।

६ आसू, अश्रु । ७ अर्क । ८ द्रव । -वि० १ श्वेत-श्याम ।

२ कृष्ण, काला* ।

नीरग-देखो 'नीरज' ।

नीरखणी, (बो)-देखो 'निग्खणी' (बो) ।

नीरज, (ज्ज)-पु० [सं० नीरज] १ कमल, पुण्डरीक । २ मोती । ३ पानी में जन्म लेने वाला । ४ मन रहित कर्म (जैन) ।

-वि० रज रहित ।

नीरण, नीरणी-स्त्री० [सं० नीरण] १ मवेशियों के आगे चारा आदि डालने की क्रिया । २ मवेशियों के आगे चलने के लिये एक बार में डाला जाने वाला चारा ।

नीरणी (बो)-क्रि० [सं० नीरण] मवेशियों के आगे चलने का चारा डालना ।

नीरव

(३७९)

नीलघोष

नीरव, नीरध-पु० [सं० नीरध] १ बादल, घन । २ मोर, मयूर ।

-नादानुष्ठ-पु० मोर, मयूर । -बंध-पु० समुद्र, सागर ।

नीरधर-पु० [सं०] १ बादल, मेघ । २ समुद्र ।

नीरधारा-स्त्री० [सं०] १ नदी, सरिता । २ जल धारा ।

नीरधि, नीरनिध, नीरनिधि-पु० [सं०] मगुद्र, सागर ।

नीरनिवास-पु० [सं०] तालाव, जलाशय ।

नीरनेता-पु० [सं०] बहण ।

नीरपत, (पति)-पु० [सं० नीरपति] बहण ।

नीरबहणी, (बहणी)-स्त्री० [सं० नीर-बह] नाव, नौका ।

नीरभव-पु० [सं०] कमल ।

नीरभे-देखो 'निरभय' ।

नीरवाली-स्त्री० एक लता विशेष ।

नीरस-देखो 'निरस' ।

नीरसमोष-पु० [सं०] बहण ।

नीरस्त-पु० [सं० निस्त्रिंश] नीर, बाण ।

नीरांत-देखो 'निरांत' ।

नीरांतर-वि० [सं० निर-प्रतक] जांत, चुप ।

नीरायत-देखो 'निरांत' ।

नीराग, नीरागी-वि० [सं०] १ राग-द्वेष से रहित, विरक्त, उदास । २ आनन्द रहित । -पु० जित-दव । (जित)

नीराजण (न, ना)-स्त्री० [सं० नीरजन] आरती उतारने की क्रिया । दीप-दान । परछत ।

नीराळी-देखो 'निराळी' ।

नीरास-पु० १ निःश्वाम । २ देखो 'निरास' ।

नीरासइ-पु० [सं० नीराश्रय] तालाव, सरोवर ।

नीरि-देखो 'नीर' ।

नीरु, नीरु-देखो 'नीर' ।

नीरोअर-देखो 'नीरोवर' ।

नीरोप-वि० जिसे रोग न हो, तन्दुरुस्त, स्वस्थ ।

नीरोगता-स्त्री० स्वस्थता । आरोग्यता । तन्दुरुस्ती ।

नीरोपी-वि० [सं० निरोपिन्] स्वस्थ । तन्दुरुस्त ।

नीरोपी-देखो 'निरोग' ।

नीरोपम, नीरोपमी-देखो 'निरुपम' ।

नीरोवर, (रि, री)-पु० [सं० नीरवर] १ समुद्र, सागर । २ बहण । ३ पानी, जल ।

नीरौ-पु० [देश०] १ भूसा, चारा, घास । २ देखो 'नीर' ।

नीलक, नीलप, नीलपु-पु० १ एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र । २ शरीर का एक कीड़ा विशेष ।

नीलभ्रगा-पु० [सं०] १ इन्द्र की सेना का एक सहायक । २ विद्युत्, बिजली ।

नीलठ, नीलठी-पु० [देश०] जल, पानी ।

नीलमणो-देखो 'नीलमणि' ।

नील-पु० [सं० नीलिका, नील] १ एक पौधा जिससे नीला रंग निकलता है । २ नीला रंग । ३ लांछन, कलक । ४ श्रीराम की मेना का एक बन्दर । ५ पवन, वायु । ६ डलावृत्त खण्ड का एक पर्वत । ७ मंगल घोष । ८ नृत्य के १०८ करणों में से एक । ९ एक प्रकार की छोड़ा । १० एक नाग का नाम । ११ दस हजार अरब की संख्या । १२ एक प्रकार का सरकारी कर । १३ एक प्रकार का फल । १४ महिष्मती के राजा का नाम । १५ धिप, जहर । १६ एक यम का नाम । १७ आर्या गीति या स्कंधाण का एक भेद । १८ एक वारिक वृत्त विशेष । १९ वर्षों के पानी से मकानों पर जमने वाली पपड़ी, कालिमा । २० पानी पर जमने वाली काई । २१ कपड़ों पर दी जाने वाली नील । २२ नीलापन, नीलाई । २३ चोट के कारण शरीर पर पड़ने वाला दाग । २४ नवनिधियों में से एक । २५ इन्द्र नीलमणि, नीलम । २६ काले स्तनों वाली गाय । २७ जैनियों के ८८ ग्रहों में से एक । -वि० नीले रंग का, आसमानी ।

नीलअजनी-पु० शरीर पर नीले धब्बों वाला छोड़ा ।

नीलउनेत्र, नीलउनेत्र-पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नीलऊ-देखो 'नीली' ।

नीलकठ-वि० [सं०] जिसका कंठ नीला हो । -पु० १ मार, मयूर । २ मूली । ३ एक चिड़िया । ४ शिव, महादेव । ५ मोरा पक्षी ।

नीलकंठी-स्त्री० [सं०] १ हिमालय क्षेत्र में पाई जाने वाली एक चिड़िया विशेष । २ एक पौधा विशेष । ३ देखो 'नीलकंठ' ।

नीलक-वि० नीला, आसमानी । -पु० १ आसमानी या नीला रंग । २ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । ३ नीले रंग का छोड़ा । ४ काला छोड़ा । ५ नीला शीया, तूतिया । ६ नीला इस्पात, बीदरी लोहा । ७ काला नमक ।

नीलकान्त-पु० [सं०] १ हिमालय क्षेत्र में रहने वाली एक चिड़िया । २ एक मणि, नीलम ।

नीलक-देखो 'नीलक' ।

नीलकौच-पु० [सं०] काला बगुला ।

नीलगर-पु० [फा०] १ रंगरेजों की एक जाति । २ देखो 'नीलगिरि' ।

नीलगाय-स्त्री० गाय से मिलता-जुलता भूर रंग का बड़ा द्विरण ।

नीलगिरि, नीलगिरी-पु० [सं० नीलगिरि] दक्षिण देश का एक पर्वत ।

नीलपीठ-पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ मोर, मयूर ।

नीलडो (डु, डी)-देखो 'नीली' । (स्त्री० नीलडो)

नीलचर-पु० [सं०] मच्छ, मछली ।

नीलज-देखो 'निरलज' ।

नीलजा-स्त्री० [सं०] नील पर्वत से निकलने वाली एक नदी ।
जलम ।

नीलजु (जो, जज, जजी)-देखो 'निरलज' ।

नीलटांच, नीलटांस-पु० [देश०] १ गहड़ पक्षी । २ एक
अन्य पक्षी ।

नीलडू, नीलडो-देखो 'नीली' ।

नीलण-स्त्री० हरी मछी ।

नीलणी (बी)-क्रि० १ हड़ित होना, हरा-भरा होना । २ प्रसन्न
होना, खुश होना ।

नीलधुज, नीलध्वज-पु० [सं० नीलध्वज] १ नारद को मोहने
वाली कन्या का पिता, एक राजा । २ तमाल ।

नीलनायक-पु० एक धातुविशेष ।

नीलनेत्र, नीलपट-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

नीलफुरमास-पु० [देश०] एक प्रकार का सरकारी कर ।

नीलम, नीलमण, नीलमणि, नीलमणी, नीलमिण, नीलमिणी-पु०
[सं० नीलमणि] नीले रंग का रत्न । नीलमणि ।

नीलमोर-पु० [सं० नीलमयूर] हिमालय क्षेत्र में रहने वाला
एक कुकरी पक्षी ।

नीलरत्न, नीलरत्न-पु० [सं० नीलरत्न] नीलमणि, नीलम ।

नीलसेता-स्त्री० [सं० नीलसेता] आत्मा की शुभाशुभ कर्मों
में प्रवृत्त करने वाला वस्तु ।

नीलवंत-पु० [सं०] एक पर्वत का नाम (जैन) ।

नीलवट, नीलवड (डि)-पु० १ वस्त्र विशेष । २ देखो 'नीले' ।

नीलवग, नीलवणि-स्त्री० [देश०] १ हरी मछी । २ वनस्पति ।

नीलबी-देखो 'नीलम' ।

नीलवज्र-पु० [सं० नीलवृषभ] १ विशेष प्रकार का सांड या
बछड़ा । २ मृत पुरुष के पीछे सांड बनाया जाने वाला
बछड़ा ।

नीलावर-पु० [सं०] १ नीला वस्त्र । २ राक्षस, दानव ।
३ शनिश्चर, शनिपह । ४ बलराम । ५ नीलाकाश ।
-वि० नीले वस्त्र वाला ।

नीलावरि-स्त्री० एक राग विशेष ।

नीलावुज-पु० [सं०] नीलकमल ।

नीलाम-देखो 'लीलाम' ।

नीलामि-देखो 'लीलामी' ।

नीलांचल, नीलांचल-पु० नीलगिरि पर्वत ।

नीला-स्त्री० [सं० नील] कुबेर की नौ निधियों में से एक ।

नीलाज-पु० [सं०] नीलकमल ।

नीलावट-देखो 'नीले' ।

नीलावर-पु० रंग विशेष का घोड़ा ।

नीलि-वि० ताजी, हरे रंग की ।

नीलुहर-पु० वस्त्र विशेष ।

नीलूड-पु० शाक विशेष ।

नीलोतरि, नीलोती-स्त्री० हरी मछी । वनस्पति ।

नीलोत्पल-पु० [सं० नीलोत्पल] नीलकमल ।

नीलोदवा-पु० [सं० नीलोद्वाह] प्रथमाद्रिक (वर्ष) पर किया
जाने वाला कर्म ।

नीलो-वि० [सं० नीलिन] (स्त्री० नीली) १ आसमानी, नीला,
आकाश जैसा । २ गहरा हरा । ३ नुरंत का, ताजा ।

४ आर्द्र, गीला । -पु० १ रंग विशेष का घोड़ा । २ घास ।
-अजन-पु० नीले धब्बों वाला घोड़ा । -चंपी-पु०

नीले फूलों वाला वृक्ष । -चैर-वि० अत्यन्त नीला,
गहरा हरा । -धूषी, धोषी-पु० ताँबे की उप धातु,
तूनिया ।

नीव, नीव-देखो 'नीवि' ।

नीवडणी (बी), नीवडणी (बी)-क्रि० [सं० निवर्तनम्] १ निवृत्त
होना, निपटना । २ पूर्ण होना, पूरा होना । ३ पृथक्
होना । ४ समाप्त होना, खत्म होना । ५ देह त्यागना ।
ससार छोड़ना । ६ देखो 'निपटणी' (बी) । ७ देखो
'नीमडणी' (बी) ।

नीवतणी (बी)-देखो 'निमवणी' (बी) ।

नीवांण (बी)-देखो 'निवांण' ।

नीवा-देखो 'न्याव' ।

नीवाइ-वि० १ उल्लास, गर्म । २ देखो 'न्याव' ।

नीवार-देखो 'निवार' ।

नीवारणी, (बी)-देखो 'निवारणी' (बी) ।

नीवालूबी-वि० [देश०] निलंब, निगोड़ा ।

नीवाह-देखो 'न्याव' ।

नीवि-स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों द्वारा कमर में धोती बांधने की
गाँठ । २ इजाराबंद, नाडा ।

नीवी-स्त्री० [देश०] १ बचत, बचाया हुआ धन । २ द्रव्य कोष ।
३ देखो 'नीवि' ।

नीवेद-देखो 'नेवेद' ।

नीवत, नीवति-पु० [सं० निवृत्ति] १ देश । २ देखो 'निवृत्त' ।

नीसक-देखो 'निसक' ।

नीसत-वि० [सं० निःसत्त्व] १ कायर, डरपोक । २ अशक्त,
कमजोर । ३ असमर्थ ।

नीसरणी-देखो 'निसरेणी' ।

नीसरणी, (बी)-क्रि० [सं० निःस्थि] १ निर्गमित होना, जाना ।
२ व्यतीत होना । ३ पलायन करना, भागना । ४ गमन

निसाण

(७-१)

नुसखी

करना, चला जाना । १ चलना, विचरना । २ संचरित होना, गुजरना । ३ पाग से होकर गुजरना । ४ बाहर निकलना, सना । ५ प्रदत्त होना, मिलना । ६ पार होना । ११ एक तरफ से दूसरी ओर जाना । १२ छेद कर या रास्ता बनाकर निकलना । १३ प्रयाण या प्रस्थान करना । १४ अभासित होना । १५ जन्म लेना, जन्मना । १६ उत्पन्न होना, पैदा होना । १७ प्रकट होना । १८ प्रकाशित होना, उदय होना । १९ अचानक उपस्थित होना । २० पहुँचना । २१ उद्भूत होना, भ्रमना । २२ अलग होना, पृथक होना । २३ घुसी हुई वस्तु का बाहर होना । २४ देखो 'निवळणी' (बी) ।

नीसाण-१ देखो 'निसाण' । २ देखो 'निसाणी' ।

नीसाणची-देखो 'निसाणची' ।

नीसाण - देही-देखो 'निसाण - देही' ।

नीसाण - बरदार-देखो 'निसाण - बरदार' ।

नीसाण-१ देखो 'निमांग' । २ देखो 'निसांगी' ।

नीसाट-देखो 'निमाट' ।

नीसार-पुं० धुंआ, धूम्र ।

नीसास, नीसासी-देखो 'निस्वास' ।

नीहंउ-किं० वि० निश्चय ही ।

नीहटणी, (बी)-देखो 'निहटणी' (बी) ।

नीहसणी, (बी)-देखो 'निहसणी' (बी) ।

नीहार-पुं० [मं०] १ अधवार, अघेरा । २ कुहरा । ३ हिम, पाना बर्द । घोस । ४ स्वप्न, मयना । ५ अवलोकन, दृष्टि-पात । ६ मल-मूत्र ।

नीहारणी, (बी)-देखो 'निहारणी' (बी) ।

नीहारी-पुं० [मं० निहारी] पर्वत की गुफा में किया जाने वाला अमनन, भरण, भंडारा, ममान ।

नीहाळणी (बी), नीहालणी (बी)-१ देखो 'निहारणी' (बी) । २ देखो 'निहाळणी' (बी) ।

नीहाव-देखो 'निहाव' ।

नुं-देखो 'नू' ।

नुंह-देखो 'नख' ।

नु-पुं० १ राजा जनक, विदह । २ शरीर । ३ वन, कानन । ४ बाल । ५ शक्ति, बल । ६ कमजोरी, अशक्तता । ७ प्रशंसा, तारीफ । ८ पूजा, अर्चना । ९ नीति । १० देखो 'नही' । ११ देखो 'नू' ।

नुई-देखो 'नवी' ।

नुकतावीण, (न)-वि० [फा०] दोष हटाने वाला, छिद्रान्वेषी ।

नुकतावीणी, (नी)-स्त्री० [फा०] दोष निकालने की क्रिया या भाव, छिद्रान्वेषण ।

नुकती-स्त्री० [फा० नखुदी] बेसन का बना बूंदी नामक मिष्ठान्न ।

नुकती-पुं० [अ० नुकतः] १ सूक्ष्म व सारगर्भित बात । २ रहस्य मय विषय । ३ पद्धतत्व । ४ उक्ति । ५ चुटकला । ६ दोष, अवसर या समारोह ।

नुकरी (री,-वि० [अ० नूकरा] चांदी क समान श्वेत, सफेद । -पुं० श्वेत रंग का घोड़ा, घोड़ी । २ चांदी । ३ टुकड़ा, खण्ड ।

नुकळ, नुकल, नुकळी-पुं० [अ० नुवल] १ शराब या अफीम मयन के पश्चात् मुँह साफ करने के लिये खाया जाने वाला पदार्थ । २ देखो 'नकुळ' ।

नुकसान-पुं० हानि, क्षति ।

नुकसान जरायत-पुं० घास, फूस व तालाबों की हानि पहुँचाने पर लिया जाने वाला दण्ड ।

नुकड़-पुं० [फा० नोऊ] १ गरी या रास्ते का सिरा, नुक्का । २ मीमा, हट, छोर ।

नुवस-पुं० [अ०] ऐब, अवगुण । कमी, कमर ।

नुखत, नुखता-स्त्री० [अ० नुखत] ऊट का नकल की रस्सा ।

नुखती-देखो 'नुकती' ।

नुखती-देखो 'नुकती' ।

नुखत, नुखती-देखो 'नुखत, नुखता' ।

नुगट-देखो 'निगोट' ।

नुगणी-देखो 'निगुण' ।

नुगरी-वि० [सं० निर्गुण] १ जिसने गुरु का ज्ञान न लिया हो । २ कृतघ्न । ३ गुणचोर ।

नुगुण, नुगुणी-देखो 'निगुण' ।

नुगुरी-देखो 'नुगुणी' ।

नुचणी (बी)-किं० [सं० नुचन] १ भटके के साथ बान आदि उखाड़ने की क्रिया या भाव । २ तोचा जाना, नुचना । ३ नुचग करना । ४ भटके से खींचना । ५ खरींचना, कुचरना ।

नुति, नुती-स्त्री० [सं० नुतिः] १ स्तुति, वंदना । २ पूजा, अर्चना ।

नुमाइस-स्त्री० [फा० नुमाइश] १ प्रदर्शनी । २ दिखावा, प्रदर्शन । ३ सजावट, लड़क-भड़क । ४ दिखावे के लिये रखी वस्तुएँ । —गाह-पुं० प्रदर्शनी लगाने का स्थान ।

नुमाइसी-वि० [फा०] १ प्रदर्शन लायक । २ दिखावटी । ३ प्रदर्शनी में रखने लायक ।

नुमु-देखो 'नवभ' ।

नुस-पुं० नेवला, नकुल ।

नुतखी-पुं० [अ० नुसखा] १ किसी रोग का समाप्त करने के लिये विभिन्न औषधियों का योग, मिश्रण । २ चिकित्सा की विधि । ३ योगी के लिये चिकित्सक द्वारा अनायास हुआ पथ चिह्न ।

तूहाली, तूहेली-१ देखो 'नवेली' । २ देखो 'नवीन' ।
 (स्त्री० तूहेली)
 तू-प्रत्य० १ कर्म और सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को ।
 २ तृतीया या करण तथा पंचमी या अपादान का विभक्ति प्रत्यय, से । ३ चतुर्थी या संप्रदान का विभक्ति प्रत्यय, लिए ।
 ४ देखो 'नहीं' । ५ देखो 'नख' ।
 तूई-देखो 'नवी' ।
 तूजण-देखो 'तूजणी' ।
 तूजणियो-देखो 'तूजणी' ।
 तूजणो, तूजणी-पु० [सं० न्युञ्जनः] १ दुहते समय गाय के पिछले पांव बांधने की छोटी रस्मी । २ गाय दुहन समय उसके अगले पांव में बछड़े को बांधने की रस्मी ।
 तूजणो (बो)-कि० [सं० न्युञ्जनम्] १ दुहते समय गाय के पिछले पांव बांधना । २ दुहते समय गाय के अगले पांव में बछड़ा बांधना । ३ बांधना ।
 तूत-देखो 'नेत' ।
 तूतणो-देखो 'निमंत्रण' ।
 तूतणो (बो)-देखो 'निमंत्रणो' (बो) ।
 तूतार-पु० [सं० निमंत्रणम्] १ निमंत्रण देने वाला । २ निमंत्रित व्यक्ति ।
 तूतारो-वि० [सं० निमंत्रित] (स्त्री० तूतारी) निमंत्रित ।
 तूती-१ देखो 'निमंत्रण' । २ देखो 'नेत' ।
 तूथर, तूथोर-स्त्री० नाखून में गड़ी फांस ।
 तूब, तूबड़ली-स्त्री० १ हाथी के लिये भोजन रखी मामूरी । २ सामान । ३ भोज, गोठ । ४ याददाशती की लिखावट ।
 तूदणो (बो)-कि० [देश०] १ स्मरणार्थ बही में लिखना । २ दर्ज करना, अंकित करना । ३ नकल उतारना । ४ 'तूद' की सामग्री तोलना ।
 तूद-रो-बही-स्त्री० याददाश या नकल उतारने की बही ।
 तून, तूनी-१ देखो 'तूनी' । २ देखो 'न्यून' ।
 तूनता-देखो 'न्यूनता' ।
 तूपुर-देखो 'तूपुर' ।
 तूर-देखो 'तूर' ।
 तूथी-देखो 'नवी' । (स्त्री० तूथी)
 तूहणो (बो)-देखो 'निमंत्रणो' (बो) ।
 तू-पु० १ स्त्रियों के पांव का आभूषण, तूपुर । २ कंठ । ३ बाण, तीर, शर । ४ नित्य । ५ पति-पत्नी, दम्पति । ६ स्त्री, नारी । ७ देखो 'तू' । ८ देखो 'नहीं' ।
 तूजण, तूजणियो, तूजणी, तूजणी-देखो 'तूजणी' ।
 तूजणो (बो)-देखो 'तूजणी' (बो) ।
 तूत-पु० [सं० तूत] १ घाम, घाम । २ देखो 'नेत' ।
 तूतणो (बो)-देखो 'निमंत्रणो' (बो) ।

तूतन-वि० [सं०] १ नवीन, नया । २ ताजा, हाल का ।
 ३ अनोखा, विलक्षण, अपूर्व ।
 तूतरणो (बो)-देखो 'निमंत्रणो' (बो) ।
 तूतारा-स्त्री० एक जाति विशेष ।
 तूतारी-स्त्री० (स्त्री० तूतारी) 'तूतारा' जाति का व्यक्ति ।
 तूती-१ देखो 'निमंत्रण' । २ देखो 'नेत' ।
 तून-१ देखो 'तूनी' । २ देखो 'न्यून' ।
 तूनकड़ी, तूनकी-देखो 'तूनी' ।
 तूनता, तूनताई-देखो 'न्यूनता' ।
 तूनबायो-देखो 'निवायो' ।
 तूनी-स्त्री० छोटे बच्चे की मूत्रेन्द्रिय ।
 तूप-वि० [सं० तूप] अद्भुत, अनोखा, अपूर्व ।
 तूपर, तूपुर-पु० [सं० तूपुर] १ स्त्रियों के पांवों का आभूषण, पायल । २ एक प्रकार का बाजा । ३ प्रथम गुरु रागण के प्रथम भेद का नाम ।
 तूर-पु० [प्र०] १ कांति, दीप्ति । २ धी, शोभा, आभा । ३ प्रकाश, रोशनी । ४ तेज । ५ शौर्य । ६ जोश । ७ सच्चिदानन्द, ईश्वर । ८ सौंदर्य, सुन्दरता, लावण्य । ९ रूप, स्वरूप, शक्ल । १० नेत्र की वह शक्ति जिससे दिखाई देता है । नेत्र ज्योति । ११ प्रतिबिम्ब, विम्ब । १२ कीर्ति, प्रतिष्ठा, म्यश ।
 तूरतो-देखो 'नवरात्र' ।
 तूरबाणी, तूरणी-स्त्री० [प्र० तूरानी] १ प्रकाश, चमक, दमक । २ रूप, सौंदर्य, लावण्यता । ३ मुख की आकृति, भाव ।
 तूरो-वि० प्रकाशमान, उज्ज्वल ।
 तूरो-१ देखो 'तूर' । २ देखो 'नोहरी' ।
 तूवो-१ देखो 'नवमी' । २ देखो 'नवी' ।
 तूवो-देखो 'नवी' ।
 तूह-पु० [प्र०] एक पंगम्बर ।
 तूडो-देखो 'तिसडो' ।
 ने-पु० १ कुत्ता, खान । २ अग्रज, मार्ग । ३ नेत्र, चक्षु । ४ छड़ी । ५ देखो 'ने' ।
 ने-देखो 'नेम' ।
 नेग्रो-पु० [देश०] १ जलाशय से अनावश्यक पानी निकालने की मोरी, नाला । २ उक्त नाले से निकलने वाला पानी ।
 नेग्र-देखो 'नेवर' ।
 नेउणो-वि० [सं० नवति] नब्बे के स्थान वाला ।
 नेउर, नेउरी-देखो 'नेवर' ।
 नेउल-देखो 'नकुल' ।
 नेउ, नेऊ-वि० [सं० नवति] मी से दश कम, नब्बे ।
 -पु० नब्बे की संख्या, ६० ।

नेऊ'क-वि० नखे के लगभग ।

नेऊमी-वि० (स्त्री० नेऊमी) नखे के स्थान वाला । -पु० नखे का वप ।

नेऊर-देखो 'नेवर' ।

नेक-वि० [फा०] १ शिष्ट, सम्य, सज्जन । २ अच्छा, भला । ३ उत्तम, श्रेष्ठ । ४ ईमानदार, सच्चा । —चलण, चलन-वि० अच्छे चाल-चलन वाला, सदाचारी । —चलनी-स्त्री० सदाचारिता । —नाम-वि० यशस्वी । स्थातिवान । —नामी-स्त्री० यश, छाति । —नीयत-स्त्री० ईमानदारी की भावना । अच्छी नीयत -वि० ईमानदार । —नीयनी-स्त्री० अच्छी नीयत । अच्छा संकल्प ।

नेकर, नेकरियो-स्त्री० १ कमर से घुटनों तक बना पुरुषों या बच्चों का अधोवस्त्र । २ हल में हरीसा फंसाकर लगाई जाने वाली कोल ।

नेकाळ-देखो 'निकाळ' ।

नेकाळी-देखो 'निकाळी' ।

नेकी-स्त्री० [फा०] १ सज्जनता, सौजन्यता । २ भलाई सद्ब्यवहार । ३ ईमानदारी । —बंध-वि० भला, ईमानदार, सज्जन ।

नेखम-वि० १ दृढ़, स्थिर । २ पक्का, स्थाई । ३ सीमा पर गड़ा पत्थर ।

नेखवा-वि० [अ० नेक-स्वाह] शुभचिह्नक ।

नेग-पु० [सं० गिजिर्] १ शुभ कार्यों के साथ जुड़े कुछ रीति-रिवाज, प्रथाएँ । २ शुभ कार्यों में प्रथा के अनुसार संबंधितों, अश्विनों आदि को दी जाने वाली भेंट, पुरस्कार आदि । —दार-पु० 'नेग' पाने का हक रखने वाला । —घर-पु० 'नेग' पाने का अधिकारी ।

नेगट-पु० [देश०] 'नखण' नामक पौध के बीज ।

नेगवीन-देखो 'नेगवीन' ।

नेगायण, नेगी-वि० (स्त्री० नेगाण) नेग लेने वाला, नेग पाने का अधिकारी ।

नेगू-स्त्री० रस्सी (मेवात) ।

नेड़ी-देखो 'नेहड़ी' ।

नेछा-देखो 'नीच' ।

नेचो-देखो 'नीचो' ।

नेज-देखो 'नेजी' ।

नेजबंध, (घी)-वि० भाला नामक शस्त्रधारी ।

नेजबाज-स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बन्दूक । -वि० भाला रखने वाला, भाला चलाने वाला ।

नेजम-देखो 'नेजी' ।

नेजरूप-पु० बरखी ।

नेजाइल-देखो 'नेजायल' ।

नेजादाऊदी, नेजादावदी-स्त्री० एक प्रकार का पुष्प ।

नेजाबरदार-पु० [फा० नेजः बरदार] १ राजा-महाराजाओं की ध्वजा प्रादि लेकर चलने वाला । २ भाला लेकर चलने वाला ।

नेजायत-वि० १ अपना खुद का भण्डा रखने वाला घोड़ा । २ भालाधारी घोड़ा ।

नेजाळ (ळी)-वि० १ भालाधारी वीर । २ अपना भण्डा रखने वाला वीर । ३ देखो 'नेजी' ।

नेजी-पु० [फा० नेजः] १ भंडा, पताका । २ ध्वज दण्ड । ३ भाला । ४ बरखी । ५ देखो 'नेजा' ।

नेठ, नेटि, नेठ-पु० [देश०] १ मम, भेद, थाह । २ निश्चय । -क्रि० वि० १ अन्त में, आखिर में । २ निपट, बिल्कुल । ३ नहीं तो । ४ देखो 'नीठ' ।

नेठवणी (बो)-क्रि० [सं० निष्ठान्] १ प्रसन्न करना, दिखलाना । २ प्रदर्शन करना ।

नेठाउ, नेठाव, नेठाह-पु० [सं० निष्ठा] धीरज, धैर्य, सतोष । [सं० निस्थात] स्थान, जगह ।

ने'ठी-पु० [सं० नष्ट] १ अन्त, समाप्ति, पूर्णता । २ छोर, शिरा, सीमा ।

नेठी-देखो 'नेठाव' ।

नेत-पु० १ भाला । २ भंडा, ध्वज, पताका । ३ मर्यादा । ४ देखो 'नियति' । ५ देखो 'नीयत' । ६ देखो 'नीति' । ७ देखो 'नेत्र' । ८ देखो 'नेतरी' ।

नेतई-क्रि० वि० निश्चय ही ।

नेतत्रण-पु० [सं० त्रि-नेत्रं] शिव, महादेव ।

नेतबंध, नेतबंधी-पु० १ मर्यादा रखने वाला, मर्यादा बांधने वाला । २ अपना भंडा रखने वाला घोड़ा । ३ राजा, नृप ।

नेतर-१ देखो 'नेत्र' । २ देखो 'नेतरी' ।

नेतरी-पु० [सं० नेत्र] १ मयदण्ड घुमाने की रस्ती । २ दुहुते समय गाय के पाँव बांधने की रस्ती ।

नेता-वि० [सं० नेतृ] १ नायक, अगुवा, अग्रगण्य । २ स्वामी, प्रभु । ३ निर्वाहक । ४ देखो 'नित्य' ।

नेति, नेती-वि० [सं० नेति] जिसकी उति न हो, अनन्त । -पु० १ परमात्मा, ब्रह्म । २ अनन्तता सूचक शब्द । ३ राजा, नृप । ४ देखो 'नेत' । ५ देखो 'नीति' ।

नेती-घोती-स्त्री० दृढयोग की एक क्रिया ।

नेती-१ देखो 'नेतरी' । २ देखो 'नेता' ।

नेत्त, नेत्र, नेत्रउ-पु० [सं० नेत्रं] १ आँख, चक्षु, लोचन । २ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । ३ एक प्रकार की लता व उमका फल । ४ देखो 'नेतरी' ।

नेत्रज-पु० [सं०] प्रांसु, अश्रु ।

नेत्रजगदीश्वर-पु० [सं० नेत्रजगदीश्वर] ईश्वर का नेत्र, मूर्ध ।
 नेत्रजल-पु० [सं० नेत्रजल] घांसु, घृथ ।
 नेत्रजृण, नेत्रजोती-पु० [सं० नेत्रजोति] १ इन्द्र । २ चन्द्रमा, चांद ।
 नेत्रपट्ट-पु० [सं०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
 नेत्रपालबली-स्त्री० डिगल का एक । गीत ।
 नेत्रबंध, नेत्रबध्ण, नेत्रबधी-देखो 'नेत्रबंध' ।
 नेत्रबाली-पु० [सं० बाल] एक क्षुण विशेष ।
 नेत्रभाद-पु० [सं०] संगीत या नृत्य संबंधी, नेत्रों द्वारा प्रगट किये जाने वाले भाव ।
 नेत्रमंडल-पु० [सं०] १ नेत्रों का वृत्त घेरा । २ आंख का डेला ।
 नेत्रमल-पु० [सं० नेत्रमल] नेत्रों से निकलने वाला मेल ।
 नेत्रमूक-वि० [सं०] मिलित नेत्रों वाला, बन्द नेत्रों वाला ।
 नेत्रबाली-देखो 'नेत्रबाली' ।
 नेत्री-देखो 'नेत्ररी' ।
 नेदाण, (णी)-देखो 'निदाण' ।
 नेपत, नेपति, नेपती, नेपत्ति-१ देखो 'नेप' । २ देखो 'नेपथ्य' ।
 नेपथ्य-पु० [सं०] १ नृत्य अभिनय आदि के पर्दे के पीछे का स्थान । २ रंग भूमि, रंगशाला । ३ पार्श्व । ४ -करम-पु० ७२ कलाओं में से एक । ५ -योग-पु० ६४ कलाओं में से एक ।
 नेपुर-देखो 'नूपुर' ।
 नेपे-पु० [सं० निष्पदनम्] १ उगज, पैदावार । २ उत्पत्ति क्षेत्र । ३ प्रचुरता, वृद्धि ।
 नेफादार, नेफेदार-वि० जिसमें नेफा लगा हो ।
 नेफो-पु० [फा० नेफः] नहंगे, पायजामे आदि में बना, नाड़ा डालने का स्थान ।
 नेम-पु० [सं० नियम] १ व्रत, उपवास । २ संकल्प, प्रतिज्ञा । ३ व्रत, उपवास का नियम । ४ देखो 'नियम' । ५ देखो 'निमित्त' । ६ देखो 'नेमिनाथ' ।
 नेमणायत, नेमणियायत-वि० [सं० नियम] दृढ़ प्रतिज्ञा, अपनी बात पर पक्का ।
 नेमणी, (बी)-क्रि० [सं० निष्पदनम्] १ निश्चय करना, दृढ़ विचार करना । २ नियम बनाता । ३ गर्भ धारण करना ।
 नेमप्रात-पु० [सं० नियमः + प्रातः] दान वीर राजा कर्ण ।
 नेमा-देखो 'नियम' ।
 नेमि-स्त्री० [सं०] १ वक्र की परिधि, पहिए का वृत्त । २ भूमि, घरती । ३ देखो 'नेमिजन' । ४ देखो 'नेमिनाथ' ।
 नेमिजन, (जिन)-पु० [सं०] १ महाविदेह क्षेत्र में होने वाले २० विरहमानों में से १३ वां । २ नेमिनाथ ।
 नेमिनाथ पु० [सं० २२] वै तीर्थंकर । (जैन)

नेमी-पु० [सं०] १ चन्द्रमा । २ नियम पूर्वक नित्य कर्म आदि करने वाला । ३ नियम पर दृढ़ रहने वाला । ४ देखो 'नेमि' ।
 नेमीसर-देखो 'नेमिनाथ' ।
 नेर-देखो 'नगर' ।
 नेरउ-देखो 'निकट' ।
 नेरणी-देखो 'नैरणी' ।
 नेरतिथी-वि० नैऋत्य कोण वाला । -पु० नैऋत्य कोण से बहने वाला पवन ।
 नेरु-पु० १ नाखूनों से चीर-फाड़ कर खाने वाला मांसाहारी एक जानवर । २ एक रोग विशेष ।
 नेरे-देखो 'नैरे' ।
 नेरिथी, नेली-१ देखो 'नैरणी' । २ देखो 'नैली' ।
 नेव-पु० [देश०] १ मकान या छप्पर का दलुवां भाग । २ देखो 'न्याव' । ३ देखो 'नैव' ।
 नेवग-देखो 'नेग' ।
 नेवगी, (गी)-पु० [स्त्री० नेवगण] १ नाई, हज्जाम । २ देखो 'नेगी' ।
 नेवड़-पु० आंख, नयन ।
 नेवछावर-देखो 'निछगवळ' ।
 नेवज, (जज)-देखो 'नैवेद' ।
 नेवतणी, (घी)-देखो 'निमंत्रणी' (बी) ।
 नेवर-पु० [सं० नूपुर] १ स्त्रियों के पावों का आभूषण विशेष, पायल । २ घोड़े के पैर में पहनाने का आभूषण । ३ घोड़े के पैरों की परस्पर रगड़ से होने वाला रोग विशेष । ४ मनुष्य के टखने की हड्डी ।
 नेवरा -स्त्री० १ सात मात्राओं की एक ताल । २ देखो 'नो' रा' ।
 नेवरिया-देखो 'नोरा' ।
 नेवरिथी-पु० वह घोड़ा जिसके पांव चलते समय परस्पर रगड़ खाते हैं ।
 नेवरी-देखो 'नेवर' ।
 नेवलिथी, नेवळी, नेवली-देखो 'नकुळ' ।
 नेवारी-स्त्री० जुही जाति की एक लता ।
 नेवासी-देखो 'निवामी' ।
 नेवुर-देखो 'नेवर' ।
 नेस, नेसङ्ग, नेसङ्गी, -वि० बना हुआ ।
 नेसङ्ग, नेसङ्गी-पु० [सं० निवेश] १ निवास स्थान, घर । २ चारणों की जागीर का गांव । ३ नगर, शहर । ४ जंगली जानवरों के नुगीले दांत । ५ ऊंट के मुंह के सामने के दांत । ६ अमुर, राक्षस । ७ एक प्रकार की तेज शराब । ८ देखो 'निसा' ।

नेसन

(७८५)

नैनयो

नेसन-पु० [सं० नेशन] १ जाति, वर्ण । २ देश, राष्ट्र ।
 नेसला-स्त्री० [देश०] ऊट के चारजामे की रस्सी विशेष ।
 नेसार, नेसार-देखो 'नेसावर' ।
 नेसाळ, नेसाळा, नेसाळि-स्त्री० [सं० लखशाला] १ पाठशाला, विद्यालय । २ देखो 'नेसाळी' ।
 नेसाळी-पु० १ विद्यार्थी । २ देखो 'नेसाळी' ।
 नेसाळी, नेसावर, नेसावरियौ-पु० चौमड़ के पूरे दातों वाला ऊट ।
 नेसाम, नेसावौ-देखो 'नेसावर' ।
 नेस्ती-पु० जाति विशेष ।
 नेह, नेहलु, नेहलौ-पु० स्नेह, प्यार, प्रेम ।
 नेहड़ी-स्त्री० मथनी के साथ जुड़न वाली लकड़ी ।
 नेहड़ी-देखो 'नेह' ।
 नेहचं, नेहचौ-देखो 'नेमचय' ।
 नेहड़ी (ढी)-देखो 'नेसड़ी' ।
 नेहणी-१ देखो 'नेगणी' । २ देखो 'नेणी' । ३ देखो 'नयन' ।
 नेहणी, (बी)-कि० [सं० स्नेहनम्] स्नेह करना, प्रेम करना ।
 नेहप्रिय, (प्रिय)-पु० [सं० स्नेहप्रिय] दीपक ।
 नेहरू, नेहरौ-देखो 'नेरू' ।
 नेहलउ, नेहलु, नेहलौ-देखो 'नेह' ।
 नेहवाळ, नेहवाळी-वि० (स्त्री० नेहवाळी) संतान के प्रति स्नेह युक्त, वत्सल । मगता वाला ।
 नेहबौ-वि० प्रेमिका, प्रेयसी ।
 नेहानेह, नेहानेह-पु० [सं० स्नेहा] दीपक ।
 नेहा-देखो 'नेह' ।
 नेहलंदी-वि० [सं० स्नेहानंदिनी] प्रेयसी, प्रेमिका ।
 नेहाळ नेहाळ, नेहाळी-वि० (स्त्री० नेहाळी) प्रेमी, प्रिय ।
 नेह-वि० स्नेह वाला, प्रेम वाला ।
 नेहु, नेहौ-देखो 'नेह' ।
 ने-देखो 'ने' ।
 नेम-पु० [सं० न्यक्त] अविवाहित साधु या मन्थारी ।
 नेमी-स्त्री० [सं० न्यूङ्क] घास का बूरा बनाने का काम आने वाला काष्ठ का एक उपकरण । अहुटम ।
 नेज-पु० [देश०] प्रबंध ।
 नेण-देखो 'नयन' ।
 नेणी-देखो 'नेखहरणी' ।
 नेतणी, (बी)-देखो 'निमंत्रणी' (बी) ।
 नेरांत-देखो 'नेरांत' ।
 नेसार-देखो 'नेमार' ।
 ने-अव्य० [सं० कर्णो] एक मयाजक अव्यय । और, एवं ।
 -कि० वि० श्रोः, तरफ । लिय, वास्ते । -प्रत्य० १ कर्मकारक विभक्ति प्रत्यय की । २ पूर्वकालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला प्रत्यय । ३ उत्तर कालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला

प्रत्यय । -स्त्री० [का०] १ हुक्के की निगाली । २ देखो 'नदी' ।
 नेकाळ-देखो 'निकाळ' ।
 नेगदीन-पु० [सं० नवगव्य] नवनीत, मक्खन ।
 ने डी-स्त्री० मथनी के सहारे का उपकरण ।
 नेई, नेईरौ, नेडौ-वि० [सं० निकट] (स्त्री० नेई) पान समीप, निकट ।
 नेचाबद-वि० [का०] हुक्के का नेचा बनाने वाला ।
 नेचौ-पु० [का० नेचः] हुक्के की निगाली ।
 नेचौ-देखो 'नेहचौ' ।
 नेछौ-कि० वि० [सं० निश्चय] १ निश्चितता से, तसल्ली से, धैर्य से, आराम से । २ धीरे से ।
 नेछी-पु० [सं० निश्चय] धैर्य, तसल्ली, आराम । मन्न ।
 नेजण, नेजणयी, नेजणी-देखो 'नूजणी' ।
 नेजणी (बी)-देखो 'नूजणी' (बी) ।
 नेठाव-देखो 'नेठाव' ।
 नेड-देखो 'नांड' ।
 नेण-पु० [सं० नयन] १ आंख, नयन । २ दो की संख्या* ।
 —भर-पु० आंख का एक रोग । —सुख-वि० जो आंखों को भला लगे । —पु० एक प्रकार का वस्त्र । —हजार-पु० इन्द्र ।
 नेणसण-पु० [सं० नयन-सयन] मेघ, बादल ।
 ने'णी-[पु० देश०] पूंग, मोठ, घास आदि, के पौधों का छोटा टेर ।
 नेत-स्त्री० [सं० निमंत्रण] १ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर कुटुंबियों के विशेषदारों द्वारा दिया जाने वाला द्रव्य । २ भेंट, उपहार ।
 नेतणी (बी)-कि० [सं० निमंत्रण] १ मांगलिक अवसरों पर द्रव्यादि भेंट करना । २ देखो 'निमंत्रणी' (बी) ।
 नेतबध (बधी)-देखो 'नेतबध' ।
 नेतरौ-देखो 'निमंत्रण' ।
 नेतियार-देखो 'निमंत्रिहार' ।
 नेतौ-पु० [सं० निमंत्रण] १ मांगलिक अवसरों पर प्रजा से लिया जान वाला कर । २ देखो 'निमंत्रण' ।
 नेन-१ देखो 'नेम' । २ देखो 'नेनम' ।
 नेनकड़ी, नेनकड़ी-देखो 'नेनी' । (स्त्री० नेनकड़ी, नेनकी)
 नेनणी-देखो 'नूजणी' ।
 नेनणी (बी)-देखो 'नूजणी' (बी) ।
 नेनप, नेनम-स्त्री० [सं० न्यक्] अव्ययस्कता, तावालिगी, लड़कपन ।
 नेनयी, नेनी, नेन्यी, नेहौ-वि० [सं० न्यक्] (स्त्री० नेनी) १ छोटा, न्यून, अल्प । २ सत्पापु । ३ लघु । ४ कम

महत्त्व का : ५ जिसमें कुछ सार न हो । ६ ओछा, गूदा, नीच । —पु० वच्चा, शिशु ।

नैपाति-देखो 'नैप' ।

नैमखार, नैमसार, नैमसारण्य-देखो 'नैमसारण्य' ।

नैमित्त्य-कि०वि० [सं०] नियमपूर्वक, नियम से ।

नैमिस-स्त्री० [सं० नैमिष] यमुना के दक्षिण तट पर बसने वाली एक जाति । २ नैमिषारण्य तीर्थ ।

नैमिसारण्य-पु० [सं० नैमिषारण्य] एक प्राचीन तीर्थ ।

नैयण-देखो 'नैण' ।

नैरति-देखो 'नैरित्य' ।

नैर-स्त्री० [फा० नह] नहर, कृत्रिम नदी ।

नैर-देखो 'नगर' ।

नैरणी-देखो 'नैरणी' ।

नैरणी-पु० [देश०] बड़ई का एक शीतार ।

नैरत-देखो 'नैरित्य' ।

नैरतां-देखो 'नैरित्य' ।

नैरांत-स्त्री० [सं० निर्-अंतक] १ शांति, चैन । २ चित्त की स्थिरता, धैर्य, धीरज । ३ संतोष, तृप्ति । ४ आवेश या वेग का प्रभाव । ५ तंदुरुस्ती, स्वस्थता ।

नैराजी-पु० [सं० नीराज] १ बाह्य को भिक्षा में दिया जाने वाला अन्न । २ पूजा, अर्चना । ३ स्वागत, सम्मान ।

नैरित, नैरिती, नैरित्य-स्त्री० [सं० नैरित्य] १ दक्षिण पश्चिम के मध्य की दिशा । २ इस दिशा का देवता । —वि० दक्षिण-पश्चिम के मध्य का । —कोण-पु० इस दिशा का कोना ।

नैरी-वि० [फा० नह] १ नहर से सिंचित । २ नहर संबंधी ।

नैरू, नैरू-देखो 'नैरू' ।

नैर-पु० [सं० निरहर] शब्द होने की क्रिया ।

नैरी-१ देखो 'न्यारी' । २ देखो 'नैडी' ।

नैव-कि०वि० [सं०] बिल्कुल नहीं, कतई नहीं ।

नैवेद, नैवेद्य, नैवेद्य, नैवेद्य, नैवेद्य-पु० [सं० नैवेद्य] मंदिर या देव मूर्ति के आगे रखा जाने वाला प्रसाद, मिष्ठान्न, भोग ।

नैसंक-देखो 'निसंक' ।

नैसंकी-देखो 'निसंक' ।

नैस्टिक, नैस्टिक-वि० [सं० नैस्टिक] उपनयन काल से मृत्यु पर्यन्त ब्रह्मचर्य रखने वाला ।

नैहर्च-देखो 'निम्बय' ।

नैहची-देखो 'नहची' ।

नैहठी-देखो 'निसडी' ।

नैहतणी (बी)-देखो 'निमत्रणी' (बी) ।

नैहतो-१ देखो 'नैत' । २ देखो 'निमंत्रण' ।

नैहराई-स्त्री० [देश०] १ बिलम्ब, देरी । २ शिथिलता । ३ धैर्य ।

नौऊ-देखो 'नव' ।

नौक-स्त्री० [फा० नोक] १ किसी वस्तु का अत्यन्त पतला ब तीक्ष्ण शिरा, छार । प्रप्र भोग । २ सूई आदि की शरी ।

३ चीप । —दार-वि० नुकीला, शरीदार, चुभने लायक, पैना । शानदार ।

नौखचोख, नौकझोंक-स्त्री० १ बनाव-शृंगार, सजावट, ठाट-बाट । २ टीका-टिप्पणी ।

नौरा-देखो 'नौरा' ।

नो-पु० १ स्वामिकान्तिक्य । २ नमस्कार । ३ निषेध । —अव्य० १ संबध या पछी का चिह्न, का । २ नहीं ।

—वि० ३ प्रसिद्ध, विख्यात । ४ देखो 'नव' ।

नोऊ, नोऊ-देखो 'नव' ।

नोऊनिध, नोऊनिधि-देखो 'नवनिधि' ।

नोक-देखो 'नौक' ।

नोकारमंत्र-देखो 'नवकारमंत्र' ।

नोकीरदी-पु० बड़ई का एक शीतार विशेष ।

नोखी-वि० [सं० नवखांगी] अनोखा, विलक्षण ।

नोख-१ देखो 'अनोखो' । २ देखो 'नौक' ।

नोखीली-वि० (स्त्री० नोखीली) १ अनोखा, अद्भुत । २ नुकीला ।

नोखी-देखो 'अनोखी' ।

नोचणी (बी)-कि० [सं० लुंचन] १ नख या पंजे आदि से चीरना, विदीर्ण करना, फाड़ना । २ लुंचन करना । ३ खरोचना, कुचरना । ४ खींच कर उखाड़ना ।

नोछावर-देखो 'निछरावळ' ।

नोजा-पु० चिलगोजा नामक सूखा मेवा ।

नोट-पु० [अ०] १ मक्कार द्वारा प्रचलित कागजी मुद्रा । २ टिप्पणी । ३ लिखावट । ४ याददाश्त के लिये लिखने की क्रिया ।

नोता-पु० [सं० जाति:] संबंधी, रिश्तेदार, नातेदार ।

नोती-पु० निमंत्रण, नैत । न्योता ।

नोषत, नोषत, नोषति, नोषती-देखो 'नौषत' ।

नोष-देखो 'नवमी' ।

नोमाळी-स्त्री० [सं० नव मालिका] नव मालिका ।

नोप-देखो 'नव' ।

नौरा-देखो 'नौरा' ।

नौरा-देखो 'नौहरी' ।

नोळखणी (बी)-कि० नहीं पहिचानना ।

नोहर-पु० [सं० नख-घर] मांसाहारी पक्षी विशेष ।

नोहरा-देखो 'नौरा' ।

नोहली-स्त्री० [सं० नव फलिका] नवीन-निष्पावी, नवीन-फलिका ।

नोहानी-पु० [देश०] १ एक मुशिलम सम्प्रदाय विशेष । २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।

नौजण, नौजण्यो, नौजणी, नौजणी-देखो 'नूँजणी' ।

नौजणी (बी)-देखो 'नूँजणी' (बी) ।

नौक-देखो 'नौक' ।

नौकर-पु० [फा०] (स्त्री० नौकराणी) १ वेतन आदि पर नियुक्त कोई व्यक्ति । २ अनुचर, दास, परिचायक । ३ सरकार या संस्था का कर्मचारी । —साही-पु० नौकरों के हाथ में रहने वाली राजसत्ता, सत्ता पर नौकरों का नियंत्रण होने की अवस्था ।

नौकराणी-स्त्री० दासी, सेविका, परिचायिका ।

नौकरी-स्त्री० १ वेतन लेकर किया जाने वाला कार्य । २ राज्य सेवा । —पेसी-पु० नौकरी करके अर्जित की गई आजीविका ।

नौका-स्त्री० [सं०] नाव, जहाज, तर्गाय ।

नौकार, नौकारमंत्र-देखो 'नवकार' ।

नौकोट, नौकोटी-देखो 'नवकोटी' ।

नौख-१ देखो 'अनौखो' । २ देखो 'नाक' ।

नौखीली-देखो 'नौखीली' । (स्त्री० नौखीली)

नौखी-देखो 'अनौखो' । (स्त्री० नौखी)

नौगरी, नौग्रही-स्त्री० [सं० नवग्रह] १ स्वयं की कलाई पर धारण करने का आभूषण विशेष । २ देखो 'नवग्रही' ।

नौगुण-देखो 'नवगुण' ।

नौघण (न)-वि० [सं० नवघन] अतिवृष्टि वाला, अधिक वर्षा वाला । —पु० नवलडियो का हार । (मेवात)

नौझ्यो-पु० [देश०] 'झोप' नामक क्षुप-तृणों या सिलिये के तनुओं की बनी रस्मी ।

नौछावर, नौछावरि, नौछाहर-देखो 'निछरावळ' ।

नौज-अव्य० [सं० नवज] १ ईश्वर न करे, ऐसा न हो । २ नहीं ।

नौजण, नौजणी-देखो 'नूँजणी' ।

नौजणी (बी)-देखो 'नूँजणी' (बी) ।

नौजवान-देखो 'नवजवान' ।

नौतन-देखो 'नूतन' ।

नौतो-१ देखो 'निमंत्रण' । २ देखो 'नैत' ।

नौधामपति-देखो 'नवधामपति' ।

नौधारियो-पु० [सं० नवम्-धारा] स्वयंकारों का एक अोजार ।

नौनिध, नौनिधि-देखो 'नवनिधि' ।

नौनीत-देखो 'नवनीत' ।

नौपत, नौबत, नौबतड़ी-स्त्री० [फा० नौबत] १ शहनाई के साथ बजने वाला वाद्य जो लगाड़े जैमा होता है । २ दशा, हालत । ३ स्थिति, परिस्थिति । ४ गति । ५ संयोग ।

—खानौ-पु० नौबत रख कर बजाने का स्थान ।

नौबति, नौबतो-पु० १ नौबत बजाने वाला, नक्कारची । २ बिना सवार का सज्जित घोड़ा, कोतल । ३ राजा की सवारी का घोड़ा । ४ देखो 'नौबत' ।

नौमि, नौमी-देखो 'नवमी' ।

नौरंग-पु० [देश०] १ एक प्रकार का पुष्प विशेष । २ देखो 'नवरंग' ।

नौरती-देखो 'नवरात्र' ।

नौरा-पु० [सं० निधोरणः] १ विनती, प्रार्थना । २ आग्रह, अनुरोध ।

नौरियो-पु० [देश०] १ नख, नाखून । २ देखो 'नोहरी' ।

नौरौ-देखो 'नोहरी' ।

नौळ पु० [देश०] ऊंट के पैरों में, ताला लगाकर डालने की जंजीर ।

नौलखी-देखो 'नवलखी' ।

नौलखी-देखो 'नवलखी' ।

नौलासी-देखो 'नवलासी' ।

नौळियो-देखो 'नकुळ' ।

नौळी-स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की घास । २ रुपये डाल कर कमर में बांधने की, चमड़े आदि की धैली । ३ योग साधना की एक क्रिया । ४ अस्थिपंजर, धड़ । ५ सांप की कंचुल । ६ सर्प, सांप । ७ देखो 'नौळ' ।

नौबत (ति, तो)-देखो 'नौबत' ।

नौवीं-वि० [सं० नवम्] आठ के बाद वाला, ती के स्थान वाला । —पु० नी की संख्या का अंक ।

नौसर-देखो 'नवसर' ।

नौसरहार-देखो 'नवसरहार' ।

नौसरी-वि० [सं० नव-सरः] नौ लड़ का, नौ माला का ।

नौसावर-पु० [सं० नरसार] एक प्रकार का धार ।

नौसी-पु० दूल्हा (मेवात) ।

नौहत्तेस-देखो 'नवहत्थी' ।

नौहती-१ देखो 'निमंत्रण' । २ देखो 'नैत' । ३ देखो 'नवहत्थी' ।

नौहत्थेस, नौहत्थेस, नौहत्थी, नौहत्थी-देखो 'नवहत्थी' ।

नौहरी-पु० १ दीवार आदि से घिरा खुला स्थान, आहता । २ सामंतों आदि के निजी कर्मचारियों के रहने का स्थान । मकान । ३ भव्य आदि रखने का स्थान, बाड़ा ।

न्यग्रोध-पु० [सं०] वट वृक्ष । —गण-पु० वृक्ष वर्ग ।

न्यच्छ-पु० एक रोग विशेष ।

न्यजर-देखो 'नजर' ।

न्यहाळणी (बी)-देखो 'निहाळणी' (बी) ।

न्याई-१ देखो 'नाई' । २ देखो 'न्यायी' ।

न्याण-देखो 'न्यान' ।

भूतलानी

अक्षणी (बी)-देखो 'निराक्षणी' (बी) ।

न्याली-देखो 'नवाली'

ग्रथ

(३०९)

श्री

ग्रथ-देखो 'निरत' । —कारी='निरतकारी' । -- प्रिय='निरतप्रिय' । साळ, साळा='निरतसाळा' ।
 ग्रथकी-देखो 'निरतकी' ।
 ग्रथकारी-स्त्री० [सं० नरतकी] नाचने वाली, नरतकी ।
 ग्रथोम-वि० [सं० निर्धूम] धूम रहित ।
 ग्रथ-पु० [सं० नृप] राजा, नरेश ।
 ग्रथत-देखो 'ग्रथति' ।
 ग्रथता-स्त्री० [सं० नृपता] राजा का पुत्र, राजत्व ।
 ग्रथति-पु० [सं० नृपति] १ राजा, नरेश । २ कुवेर ।
 ग्रथयान-पु० [सं० नृप-स्थान] १ राजधानी । २ राजा का नगर ।
 ग्रथद्रोही-पु० [सं० नृप-द्रोही] राजा का शत्रु, परशुराम ।
 ग्रथवास-पु० [सं० नृप-वास] १ नगर, शहर । २ राजधानी ।
 ग्रथाल-पु० [सं० नृपालनम्] प्रजापालक राजा ।
 ग्रथेस-पु० [सं० नृपेण] राजाओं में श्रेष्ठ राजा ।
 ग्रथळ-देखो 'निष्कळ' ।
 ग्रथळ-देखो 'निरवळ' ।
 ग्रथे-देखो 'निरभय' ।
 ग्रथे-मण-वि० [सं० निर्भयमन] जिसके मन में भय न हो, निडर, निःशंक, वीर ।
 ग्रथळ, ग्रथमळ (ळी)-देखो 'निरमळ' ।
 ग्रथळा-देखो 'निरमळा' ।
 ग्रथेप-देखो 'निरलेप' ।
 ग्रथाण-देखो 'निरवाण' ।
 ग्रथिह, ग्रसीण-१ देखो 'नरमिह' । २ देखो 'नरसीधौ' ।
 ग्रिग, ग्रिघ, ग्रिघु-पु० [सं० नृग] १ दानशीलता के लिये प्रसिद्ध एक राजा । २ मनु के एक पुत्र का नाम ।
 ग्रित, ग्रित्य-देखो 'निरत' । -- कार, कारी='निरतकार' ।
 --साळ='निरतसाळा' ।
 ग्रिप-देखो 'ग्रप' ।
 ग्रिपत (ति, ती)-देखो 'ग्रपति' ।
 ग्रिपसेवन-पु० [सं० नृप सेवन] ७२ कलाओं में से एक ।
 ग्रिखीज-देखो 'निरखीज' ।
 ग्रिभे-देखो 'निरभय' ।

ग्रिमळ, (ळी) ग्रिमळ, (ळी)-देखो 'निरमळ' ।
 ग्रिलक्ष्मी-पु० [सं० नृलक्ष्मी] ३२ कलाओं में से एक ।
 ग्रिसंस-वि० [सं० नृषाम्] १ कष्ट दायक, दुःखदायी ।
 २ निर्दय, क्रूर । ३ अत्याचारी, जालिम । --ता-स्त्री० निन्द्यता, क्रूरता । अत्याचार, जुर्म । कष्ट ।
 ग्रीजण, (न)-देखो 'निरजन' ।
 गृहणी, (बी)-देखो 'नांखणी' (बी) ।
 गृहणी, (बी), गृहणी, (बी)-देखो 'गृहणी' (बी) ।
 गृहणी-देखो 'मनां' ।
 गृहणी, (बी), गृहणी, (बी)-देखो 'गृहणी' (बी) ।
 गृहणी, (बी) गृहणी, (बी)-देखो 'नांखणी' (बी) ।
 गृहणी-देखो 'मनां' ।
 गृहणी-स्त्री० स्नानघर, स्नानागार ।
 गृहनि-देखो 'मनां' ।
 गृहनिङ्को, गृहनिङ्गी, गृहनिङ्गी, गृहनि, गृहनि-१ देखो 'नेनी' ।
 २ देखो 'नानी' ।
 गृहणी, (बी)-क्रि० [सं० स्नानम्] १ स्नान कराना । २ दीड़ाना, भगाना ।
 गृहणी (बी), गृहणी (बी)-क्रि० १ दीड़ना, भागना ।
 २ मैदान से हटना । ३ कहीं चला जाना । ४ नष्ट होना ।
 गृहणी (बी)-क्रि० १ स्नान करना, नहाना । २ भागना, दीड़ना ।
 गृहणी, गृहणी-देखो 'नाहरी' ।
 गृहणी-१ देखो 'न्यायी' । २ देखो 'नाहरी' ।
 गृहणी (बी)-१ देखो 'नाहणी' (बी) । २ देखो 'गृहणी' (बी) ।
 गृहणी, (गृ)-पु० १ प्रभु का प्रथम स्नान व उस दिन का संस्कार । २ स्नान ।
 गृहणी (बी)-देखो 'गृहणी' (बी) ।
 गृहणी (बी)-१ देखो 'नामणी' (बी) । २ देखो 'गृहणी' (बी) ।
 गृहणी-देखो 'नही' ।
 गृहणी-देखो 'नींग' ।
 गृहणी-देखो 'नोहरी' ।

